



# धर्मपुस्तक

द्वयार्थ

पुराना और नया धर्म नियम

३।

इवरी और यूनानी भाषा से हिन्दी में किया गया ।

---

THE  
HOLY BIBLE

CONTAINING THE  
OLD AND NEW TESTAMENTS

IN THE  
HINDI LANGUAGE.  
*TRANSLATED OUT OF THE ORIGINAL TONGUES.*

---

ALLAHABAD:  
PRINTED FOR THE NORTH INDIA AUXILIARY BIBLE SOCIETY,  
AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1896.

*2nd Edition.*]

[7,500 Copies.





# पुराने और नये धर्म नियम

## की पुस्तकों के नाम

और

उन का सूचीपत्र और पन्नों की संख्या ।

### पुराने नियम की पुस्तकें ।

नाम	पन्नों	नाम	पन्नों
उत्पत्ति की पुस्तक ... ..	५७	उत्पत्ति की पुस्तक ... ..	५७
यात्रा की पुस्तक .. ...	६७	यात्रा की पुस्तक .. ...	६७
लेख्यधर्म की पुस्तक ... ..	६७	लेख्यधर्म की पुस्तक ... ..	६७
गिनती की पुस्तक ... ..	६७	गिनती की पुस्तक ... ..	६७
विद्या की पुस्तक ... ..	६७	विद्या की पुस्तक ... ..	६७
यहूय की पुस्तक ... ..	६७	यहूय की पुस्तक ... ..	६७
न्यायों की पुस्तक ... ..	६७	न्यायों की पुस्तक ... ..	६७
रत की पुस्तक ... ..	६७	रत की पुस्तक ... ..	६७
समूह की पहिली पुस्तक ... ..	६७	समूह की पहिली पुस्तक ... ..	६७
समूह की दूसरी पुस्तक ... ..	६७	समूह की दूसरी पुस्तक ... ..	६७
राजाओं की पहिली पुस्तक ... ..	६७	राजाओं की पहिली पुस्तक ... ..	६७
राजाओं की दूसरी पुस्तक ... ..	६७	राजाओं की दूसरी पुस्तक ... ..	६७
काल के समाचार की पहिली पुस्तक ... ..	६७	काल के समाचार की पहिली पुस्तक ... ..	६७
काल के समाचार की दूसरी पुस्तक ... ..	६७	काल के समाचार की दूसरी पुस्तक ... ..	६७
गजरा की पुस्तक ... ..	६७	गजरा की पुस्तक ... ..	६७
नदसियाह की पुस्तक ... ..	६७	नदसियाह की पुस्तक ... ..	६७
आमतर की पुस्तक ... ..	६७	आमतर की पुस्तक ... ..	६७
सूय की पुस्तक ... ..	६७	सूय की पुस्तक ... ..	६७
गीतों की पुस्तक ... ..	६७	गीतों की पुस्तक ... ..	६७
मुसमान के दृष्टान्त ... ..	६७	मुसमान के दृष्टान्त ... ..	६७

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
मत्ती रचित सुसमाचार ... ..	२८	थिसलोनिकियों का पावल प्रेरित की	
मार्क रचित सुसमाचार ... ..	१६	दूसरी पत्री ... ..	४
लूक रचित सुसमाचार ... ..	२४	तिमोथिय का पावल प्रेरित की	
योहान रचित सुसमाचार ... ..	२१	पहिली पत्री ... ..	६
प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त...	२८	तिमोथिय का पावल प्रेरित की	
रोमियों का पावल प्रेरित की पत्री	१६	दूसरी पत्री ... ..	४
करिन्थियों का पावल प्रेरित की		तीतस का पावल प्रेरित की पत्री	३
पहिली पत्री ... ..	१६	फिलीमोन का पावल प्रेरित की पत्री	१
करिन्थियों का पावल प्रेरित की दूसरी		द्वित्रियों का (पावल प्रेरित की) पत्री	१३
पत्री ... ..	१३	याकूब प्रेरित की पत्री ... ..	५
गलातियों का पावल प्रेरित की पत्री	६	पितर प्रेरित की पहिली पत्री ... ..	५
इफिसियों का पावल प्रेरित की पत्री	६	पितर प्रेरित की दूसरी पत्री ... ..	३
फिलिपीयों का पावल प्रेरित की पत्री	४	योहान प्रेरित की पहिली पत्री ... ..	५
कलस्सीयों का पावल प्रेरित की		योहान प्रेरित की दूसरी पत्री ... ..	१
पत्री ... ..	४	योहान प्रेरित की तीसरी पत्री ... ..	१
थिसलोनिकियों का पावल प्रेरित की		यिहूदा की पत्री ... ..	१
पहिली पत्री ... ..	५	योहान का प्रकाशित वाक्य ... ..	२२

# उत्पत्ति की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

आरंभ में ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी को मिला । और पृथ्वी घटती ३  
और सूनी थी और गहिराव पर अधियार था और ईश्वर का आत्मा जन के ऊपर ४  
हालता था ॥

और ईश्वर ने कहा कि उजियाना होय और उजियाना हो गया । और ३  
ईश्वर ने उजियाने को देखा कि अच्छा है और ईश्वर ने उजियाने को अधियारे से ४  
विभाज किया । और ईश्वर ने उजियाने को दिन और अधियारे को रात कहा और ५  
सांझ और विहान पहिला दिन हुआ ॥

और ईश्वर ने कहा कि पानियों के मध्य में आकाश होय और पानियों को ६  
पानियों में विभाज करे । तब ईश्वर ने आकाश को बनाया और आकाश के नीचे के ७  
पानियों को आकाश के ऊपर के पानियों में विभाज किया और ऐसा हो गया ।  
और ईश्वर ने आकाश को स्वर्ग कहा और सांझ और विहान दूसरा दिन हुआ ॥ ८

और ईश्वर ने कहा कि स्वर्ग के तले के पानों! सूखी स्थान में एकट्ठे होय ९  
और सूखी दिखायें होय और ऐसा हो गया । और ईश्वर ने सूखी को भूमि कहा १०  
और एकट्ठे किये गये पानियों को समुद्र कहा और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है । और ११  
ईश्वर ने कहा कि भूमि घास को और मागघात को जिन में बीज होय और फलधन  
पेड़ को जो अपनी अपनी भाँति के समान फलें जिन के बीज भूमि पर उन में होय  
उगायें और ऐसा हो गया । और भूमि ने घास और मागघात को अपनी अपनी १२  
भाँति के समान जिन में बीज होय और फलधन पेड़ को जिन का बीज उस में  
होय उस की भाँति के समान उगाया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है । और १३  
सांझ और विहान तीसरा दिन हुआ ॥

और ईश्वर ने कहा कि दिन और रात में विभाज करने को स्वर्ग के आकाश १४  
में उपाति होय और ये चिन्तों और अनुन और दिनों और वर्षों के कारण होय । और १५  
ये पृथ्वी को उजियानी करने को स्वर्ग के आकाश में उपाति के लिये होय और  
ऐसा हो गया । और ईश्वर ने दो बड़ी उपाति बनाई एक बड़ी उपाति दिन पर १६  
प्रभुता के लिये और उम्मे लोटी उपाति रात पर प्रभुता के लिये और तारों को  
भी । और ईश्वर ने उन्हीं स्वर्ग के आकाश में रख्या कि पृथ्वी पर उजियाना करे । १७  
और दिन पर और रात पर प्रभुता करे और उजियाने को अधियारे में विभाज करे १८  
और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है । और सांझ और विहान चौथा दिन हुआ ॥ १९

और ईश्वर ने कहा कि पानी जीवधारी रंगवैषों की बहुताय में भर जाय और २०  
पानी पृथ्वी के ऊपर स्वर्ग के आकाश पर उठे । सो ईश्वर ने बड़ी बड़ी मछलियों २१  
और हर एक रंगवैष जीवधारी को जिन में पानी भरा है उन की भाँति भाँति के  
समान और हर एक पानी को उस की भाँति के समान बहुताय में उत्पन्न किया  
और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है । और ईश्वर ने उन को आशीस देके कहा कि २२

फलवान होओ और बड़े और समुद्रों के पानियों में भर जाओ और पत्तों पृथिवी पर बढ़ें । और सांझ और बिहान पांचवां दिन हुआ ॥

२४ और ईश्वर ने कहा कि पृथिवी पर एक जीवधारी को उस की भांति भांति के समान अर्थात् ठोर और रंगवैये जंतु को और बनने पशु को उस की भांति के समान उपजाये और ऐसा हो गया । और ईश्वर ने बनने पशु को उस की भांति के समान और ठोर को उस की भांति के समान और पृथिवी के हर एक रंगवैये जंतु को उस की भांति के समान बनाया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥

२६ तब ईश्वर ने कहा कि हम आदम को अपने स्वरूप में अपने समान बनायें और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और ठोर और सारी पृथिवी पर और पृथिवी पर के हर एक रंगवैये जंतु पर प्रधान होयें । तब ईश्वर ने आदम को अपने स्वरूप में उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में उत्पन्न किया उस ने उन्हें नर और नारी बनाया । और ईश्वर ने उन्हें आशीस दिया और ईश्वर ने उन्हें कहा कि फलवान होओ और बड़े और पृथिवी में भर जाओ और उसे वन में करो और समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और पृथिवी के हर एक रंगवैये जीवधारी पर प्रभुता करो ॥

२९ और ईश्वर ने कहा तो मैं ने हर एक जीवधारी मागपात को जो सारी पृथिवी पर है और हर एक पेड़ को जिस में फल है जो जीव उपजायता है तुम्हें दिया ३० यह तुम्हारे खाने के लिये होगा । और पृथिवी के हर एक पशु को और आकाश के हर एक पक्षी को और पृथिवी के हर एक रंगवैये जीवधारी को हर एक प्रकार की हरियाली भी खाने को दीई और ऐसा हुआ । फिर परमेश्वर ने हर एक वस्तु पर जिसे उस ने बनाया था दृष्टि किई और देखा कि बहुत अच्छी है और सांझ और बिहान छठवां दिन हुआ ॥

### दूसरा पृष्ठ ।

१ यों स्वर्ग और पृथिवी और उन की सारी सेना बन गई । और ईश्वर ने अपने कार्य को जो वह करता था सातवें दिन समाप्त किया और उस ने सातवें दिन में अपने सारे कार्य से जो उस ने किया था विश्राम किया । और ईश्वर ने सातवें दिन को आशीस दीई और उसे पवित्र ठहराया इस कारण कि उसी में उस ने अपने सारे कार्य से जो ईश्वर ने उत्पन्न किया और बनाया विश्राम किया ॥

४ यह स्वर्ग और पृथिवी की उत्पत्ति है जब वे उत्पन्न हुए जिस दिन परमेश्वर ईश्वर ५ ने स्वर्ग और पृथिवी को बनाया । और खेत का कोई मागपात अब लों पृथिवी पर न था और खेत की कोई हरियाली अब लों न उगी थी क्योंकि परमेश्वर ईश्वर ६ ने पृथिवी पर मेंह न बर्साया था और आदम न था कि भूमि की खेती करे । और पृथिवी से कुहासा उठता था और समस्त भूमि को सींचता था ॥

७ तब परमेश्वर ईश्वर ने भूमि की धूल से आदम को बनाया और उस को नथुनों में जीवन का श्वास फूँका और आदम जीवता प्राण हुआ ॥

८ और परमेश्वर ईश्वर ने अदन में पूरब की ओर एक वारी लगाई और उस आदम ९ को जिसे उस ने बनाया था उस में रखवा । और परमेश्वर ईश्वर ने हर एक पेड़

को जो देखने में सुन्दर और स्थान में अच्छा है और उस धारी के मध्य में जीवन का पेड़ और भले धुरे के ज्ञान का पेड़ भूमि में उगाया । और उस धारी के मोचने के लिये अदन से एक नदी निकली और वहाँ ने विभागा के दो चार मोहाने हुए । पहिली का नाम फिसन जो अर्यालः की सारी भूमि को घेरती है उहाँ मोना जाता है । और उस भूमि का मोना चोग्या है यहाँ मोती और चिल्लार होता है । और दूसरी नदी का नाम जैहून है जो कृष्ण की सारी भूमि को घेरती है । और तीसरी नदी का नाम दिज्जलः है जो अरब की पृथ्वी कोर जाती है और चोली नदी फुरात है ॥

और परमेश्वर ईश्वर ने उस आदम को जेन अदन को धारी में रखया जिसमें उसे सुधारे और उस को सम्प्रधानी करे । और परमेश्वर ईश्वर ने आदम को कहा देके कहा कि तू इस धारी के हर एक पेड़ का फल खाता कर । परन्तु भले और धुरे के ज्ञान के पेड़ से सब खाना क्योंकि जिस दिन तू उसमें खाया तू निश्चय मरेगा ॥

और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि आदम को अकेला रहना अच्छा नहीं है उस के लिये एक उपकारिणी उस के समान बनाऊँगा । और परमेश्वर ईश्वर भूमि में हर एक अनेके घसू और आकाश के सारे पक्षी बनाकर उन को आदम के पास लाया कि देखे कि उन के क्या नाम रखना है और जो कुछ कि आदम ने हर एक जीते अन्तु को खाया था उस का नाम हुआ । और आदम ने हर एक पक्षी और आकाश के पक्षी और हर एक अनेके घसू का नाम रखना पर आदम के लिये उस के समान कोई उपकारिणी न मिली ।

और परमेश्वर ईश्वर ने आदम को पक्षी मोटे में लाया और यह सब रात रात उस ने उस को घसूलियों से से एक निजानी और उस को मरी मरी मर दिया । और परमेश्वर ईश्वर ने आदम को उम घसूली से से उस ने लिये जो एक सारी बनाई और उसे आदम पास लाया । तब आदम देखता वह तो मरी हड्डियों से की हड्डी और तरे मोम से का मोम है यह सारी कलनाइयाँ पत्तीय सब का निजानी गई । इस लिये मनुष्य अपने माता पिता को रोहता और अपने पक्षी से मिला रहता और वे एक मोम लींगे । और आदम और उस को पक्षी देखते को देखते नमू ये और लोइता न थे ॥

तीसरा पर्व ।

अब मर्त्य भूमि के हर एक घसू में जिसे परमेश्वर ईश्वर ने बनाया था मर्त्य का और उस ने मर्त्य से कहा था निश्चय ईश्वर ने कहा है कि तुम इस धारी के हर एक पेड़ से न खाना । और मर्त्य ने मर्त्य से कहा कि हम तो इस धारी के पेड़ों का फल खाते हैं । परन्तु इस पेड़ का फल जो धारी के फल में है ईश्वर ने कहा है कि तुम उसमें न खाना और न छूना न हो कि मर जाओ । अब मर्त्य ने मर्त्य से कहा कि तुम निश्चय न मरेगो । क्योंकि ईश्वर जानता है कि जिस दिन तुम उसमें खाओगे तुम्हारी आँखें खुल जायेंगी और तुम भले और धुरे को पहचान में ईश्वर के समान हो जाओगे ॥

- ६ और जब स्त्री ने देखा कि वह पेड़ खाने में सुस्त्याद और दृष्टि में सुन्दर और  
 वृद्धि देने के योग्य है तो उस को फल में से लिया और खाया और अपने पति को  
 ७ भी दिया और उस ने खाया । तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और वे जान  
 गये कि हम नंगे हैं सो उन्होंने ने गूलर के पत्तों को मिलाके सीखा और अपने लिये  
 ओढ़ना बनाया ॥
- ८ और दिन के ठंढे में उन्होंने ने परमेश्वर ईश्वर का शब्द जो बारी में चलता  
 था सुना तब आदम और उस की पत्नी ने अपने को परमेश्वर ईश्वर के आगे से  
 ९ बारी के पेड़ों में छिपाया । तब परमेश्वर ईश्वर ने आदम को पुकारा और  
 १० कहा कि तू कहां है । और वह बोला कि मैं ने तेरा शब्द बारी में सुना और  
 ११ डरा क्योंकि मैं नंगा था इस कारण मैं ने अपने को छिपाया । और उस ने कहा  
 कि किस ने तुझे बताया कि तू नंगा है क्या तू ने उस पेड़ से खाया जो मैं ने तुझे  
 १२ खाने से बरजा था । और आदम ने कहा कि इस स्त्री ने जो तू ने मेरे संग  
 १३ रखी मुझे उस पेड़ से दिया और मैं ने खाया । तब परमेश्वर ईश्वर ने उस स्त्री  
 से कहा कि यह तू ने क्या किया है और स्त्री बोली कि सर्प ने मुझे यहकाया  
 और मैं ने खाया ॥
- १४ तब परमेश्वर ईश्वर ने सर्प से कहा कि जो तू ने यह किया है इस कारण तू  
 सारे छोर और हर एक वन के पशुन से अधिक खापित होगा तू अपने पेट के चल  
 १५ चलेगा और अपने जीवन भर धूल खाया करेगा । और मैं तुझ में और स्त्री में और  
 तेरे वंश और उस के वंश में बैर डालूंगा वह तेरे सिर को कुचलेगा और तू उस की  
 सड़ी को काटेगा ॥
- १६ और उस ने स्त्री को कहा कि मैं तेरी पीड़ा और गर्भधारण को बहुत बढ़ा-  
 जंगा तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी इच्छा तेरे पति पर होगी और वह तुझ  
 पर प्रभुता करेगा ॥
- १७ और उस ने आदम से कहा कि तू ने जो अपनी पत्नी का शब्द माना है और  
 जिस पेड़ का मैं ने तुझे खाने से बरजा था तू ने खाया है इस कारण भूमि तेरे  
 १८ लिये खापित है अपने जीवन भर तू उससे पीड़ा के साथ खायगा । और वह कांटे  
 १९ और जंटकटारे तेरे लिये उगायेगी और तू खेत का सागपात खायगा । अपने मुंह  
 के पसीने से तू रोटी खायगा अब लो तू भूमि में फिर न मिल जाय क्योंकि तू  
 उससे निकाला गया इस लिये कि तू धूल है और धूल में फिर जायगा ॥
- २० और आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रक्खा इस कारण कि वह समस्त  
 २१ जीवतों की माता थी । और परमेश्वर ईश्वर ने आदम और उस की पत्नी के लिये  
 चमड़े के ओढ़ने बनाये और उन्हें पहिनाये ॥
- २२ और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि देखो आदम भले बुरे के जानने में हम में से  
 एक की नाईं हुआ और अब ऐसा न होवे कि वह अपना हाथ डाले और जीवन  
 २३ के पेड़ में से भी लेकर खावे और अमर हो जाय । इस लिये परमेश्वर ईश्वर ने उस  
 को अदन की बारी से बाहर किया जिसमें वह भूमि की किसनई करे जिसे वह  
 २४ लिया गया था । सो उस ने आदम को निकाल दिया और अदन की बारी की पूरव



और करोधीम ठहराये और चमकते हुए मन्त्र को जो चारों ओर घूमता था जिससे जीवन के पेड़ के मार्ग की रखवाली करें ।

चौथा पर्व ।

और आदम ने अपनी पत्नी हव्वा को गृहण किया और वह गर्भिणी हुई और १  
उसने काइन उत्पन्न हुआ और बोली कि मैं ने परमेश्वर से एक पुत्र पाया । और २  
फिर वह उस के भाई हावील को जनी और हावील भेड़ों का चरवाहा हुआ परन्तु ३  
काइन किमनई करता था ।

और कितने दिनों के पीछे यों हुआ कि काइन भूमि के फलों में से परमेश्वर के ४  
लिये भेंट लाया । और हावील भी अपने मुँह में से घटिनीयों और मोटी मोटी ५  
लाया और परमेश्वर ने हावील का और उस की भेंट का आदर किया । परन्तु ६  
काइन का और उस की भेंट का आदर न किया इस लिये काइन अति कोपित ७  
हुआ और अपना मुँह फुलाया । तब परमेश्वर ने काइन से कहा तू क्यों क्रुद्ध है ८  
और तेरा मुँह क्यों फूल गया । यदि तू भला करे तो क्या तू श्राव्य न होगा और ९  
यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर दृक्ता है और उस की इच्छा तेरी ओर है १०  
पर तू उस पर प्रभुता कर ॥

तब काइन ने अपने भाई हावील से घात कीर्ति और यों हुआ कि जब ये मृत ११  
में थे तब काइन अपने भाई हावील पर भण्डा और उसे घात किया । तब परमेश्वर १२  
ने काइन से कहा तब भाई हावील कहा है और वह धोखा में नहीं जानता क्या १३  
मैं अपने भाई का रखवाल हूँ । तब उस ने कहा तू ने क्या किया तेरे भाई के १४  
लोहू का शब्द भूमि से सुनके पुकारता है । और अब तू पृथिवी में स्थापित है जिस १५  
ने तेरे भाई का लोहू तेरे दाथ में लेने को अपना मुँह म्वाता है । तब तू किमनई १६  
करेगा तो वह तेरे दाथ में न होगा तू पृथिवी पर भगोड़ा और वहेतू रहेगा । तब १७  
काइन ने परमेश्वर से कहा कि मेरा दण्ड मेरे सहाय से अधिक है । देख तू ने आज १८  
देण में से मुझे म्बदेह दिया है और मैं तेरे पापों में गुप्त होऊँगा तब मैं पृथिवी १९  
पर भगोड़ा और वहेतू होऊँगा और मेरा होगा कि जो कोई मुझे पायेगा तब २०  
डालेगा । तब परमेश्वर ने उसे कहा इस लिये जो कोई काइन को मार डालेगा २१  
तो उसने मात गुन पलटा लिया जायगा और परमेश्वर ने काइन पर एक चिन्ह २२  
रखवा न हो कि कोई उसे पाके मार डाले । तब काइन परमेश्वर के धारों से २३  
निकल गया और अवन की पूरव और नूद की भूमि में जा रहा ।

और काइन ने अपनी पत्नी को गृहण किया और वह गर्भिणी हुई और उसने २४  
हनूक उत्पन्न हुआ तब उस ने एक नगर बनाया और अपने घटे हनूक का नाम २५  
उस पर रखवा । और हनूक से ईसाद उत्पन्न हुआ और ईसाद से महुयारेल २६  
और महुयारेल से मनुमारेल और मनुमारेल से लसक उत्पन्न हुआ ।

और लसक ने दो पत्नियाँ कीर्ति पहिली का नाम अदः और दूसरी का नाम २७  
जिहः था । और अदः से यावल उत्पन्न हुआ जो तंयुओं के निधायियों और ठार २८  
के चरवाहों का पिता था । और उस के भाई का नाम गृवल था वह दोन और २९  
वांसली के सारे यजनियों का पिता था । और जिहः से भी तूवलकाइन उत्पन्न ३०



हुआ जो ठठेरों और लोहारेणों का मिश्रण था और तृयन्काइन की यज्ञिन नक्षत्रः  
 २३ थी । और लसक ने अपनी पत्नियों अदः और जिज्ञः से कहा कि हे लसक की  
 पत्नियों मेरा शब्द सुनो और मेरे वचन पर कान धरो क्योंकि मैं ने एक पुष्पा  
 २४ को अपने घाघ के लिये और एक तन्म का अपने दुःख के लिये मार बना ।  
 २५ और आदम ने अपनी पत्नी को फिर ग्राह्य किया और यह घेडा प्रती और उस  
 का नाम सेत रक्खा क्योंकि ईश्वर ने हाथीन की भैंती जिम का काइन ने मार  
 २६ डाला मेरे लिये दूसरा वंश ठाकराया । और सेत को भी एक घेडा उत्पन्न हुआ और  
 उस ने उस का नाम अनूस रक्खा उस समय ने नौम परमेश्वर का नाम मने मने ।  
 पांचवां पत्र ।

१ आदम की वंशावली का पत्र यह है जिस दिन में ईश्वर ने आदम को उत्पन्न  
 २ किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप से बनाया । उस ने उन्हें नर और मारी बनाया  
 और जिस दिन वे मिरले गये उस ने उन्हें आशीम दिया और उन का नाम आदम  
 रक्खा ॥

३ और एक सौ तीस वरस की वय में आदम ने दम की स्वरूप और दम ने  
 ४ एक घेडा उत्पन्न हुआ और उस का नाम सेत रक्खा । और सेत की उत्पत्ति के  
 पीछे आदम की वय आठ सौ वरस की हुई और उसने घेडे घोटियां उत्पन्न हुई ।  
 ५ और आदम की सारी वय नव सौ तीस वरस की हुई और वह मर गया ॥

६ और सेत जब एक सौ पांच वरस का हुआ तब उसने अनूस उत्पन्न हुआ । और  
 अनूस की उत्पत्ति के पीछे सेत आठ सौ सात वरस जीया और उसने घेडे घोटियां  
 ७ उत्पन्न हुई । और सेत की सारी वय नव सौ बारह वरस की हुई और वह मर गया ॥  
 ८ और अनूस जब नव्ये वरस का हुआ तब उसने ... उत्पन्न हुआ । और  
 कीनान की उत्पत्ति के पीछे अनूस आठ सौ बारह वरस जीया और उसने घेडे  
 ९ घोटियां उत्पन्न हुई । और अनूस की सारी वय नव सौ पांच वरस की हुई  
 और वह मर गया ॥

१० और कीनान सत्तर वरस का हुआ और उसने महललिलेल उत्पन्न हुआ । और  
 महललिलेल की उत्पत्ति के पीछे कीनान आठ सौ चारों वरस जीया और  
 ११ उसने घेडे घोटियां उत्पन्न हुई । और कीनान की सारी वय नव सौ दस वरस की हुई  
 और वह मर गया ॥

१२ और महललिलेल जब पैंसठ वरस का हुआ तब उसने विरद उत्पन्न हुआ । और  
 महललिलेल की उत्पत्ति के पीछे आठ सौ तीस वरस जीया और उसने  
 १३ घेडे घोटियां उत्पन्न हुई । और महललिलेल की सारी वय आठ सौ पंचानवे  
 वरस की हुई और वह मर गया ॥

१४ जब विरद एक सौ बासठ वरस का हुआ तब उसने हनूक उत्पन्न हुआ । और  
 हनूक की उत्पत्ति के पीछे विरद आठ सौ वरस जीया और उसने घेडे घोटियां  
 १५ उत्पन्न हुई । और विरद की सारी वय नव सौ बासठ वरस की हुई और वह  
 मर गया ॥

जब हनुक पैंसठ धरम का हुआ तो उसमें सतृसिलह उत्पन्न हुआ । और हनुक २१  
सतृसिलह की उत्पत्ति के पीछे तीन मी धरम नों ईश्वर के साथ साथ चलता था  
और उसमें बड़े बेटियां उत्पन्न हुईं । और हनुक की मारी धर तीन मी पैंसठ धरम २२  
की हुई । और हनुक ईश्वर के साथ साथ चलता था और वह न गिला क्योंकि २३  
ईश्वर ने उसे ले लिया ।

और जब सतृसिलह एक मी सनामी धरम का हुआ तब उसमें लमक उत्पन्न २४  
हुआ । और लमक की उत्पत्ति के पीछे सतृसिलह मान मी दयाली धरम बीया २५  
और उसमें बड़े बेटियां उत्पन्न हुईं । और सतृसिलह की मारी धर तब मी दनहतर २६  
धरम की हुई और वह मर गया ।

और लमक जब एक मी दयाली धरम का हुआ तब उस का एक बेटा उत्पन्न २७  
हुआ । और उस ने उस का नाम नूह रखना और कहा कि यह हमारे हाथों २८  
के पापधर्म और कार्य के विषय में जो पुत्रियों के कारण में हैं जिन्हें परमेश्वर  
ने बाप दिया है हमें जानना होगा । और नूह की उत्पत्ति के पीछे लमक २९  
पांच मी पंचानध धरम बीया और उसमें बड़े बेटियां उत्पन्न हुईं । और लमक ३०  
की मारी धर सात मी सतृसिलह धरम की हुई और वह मर गया ।

और नूह जब पांच मी धरम का हुआ तब नूह में भिन और दाम और माफा उत्पन्न हुए । ३१  
हटया पत्र ।

और यों हुआ कि जब आदमी पृथिवी पर अपने लो और उन में बेटियां उत्पन्न १  
हुईं । तो ईश्वर के पुत्रों ने आदम की पुत्रियों को देखा कि वे सुन्दर हैं और उन २  
में से जिनके बन्नों ने चाहा उन्हें व्याधा ।

और परमेश्वर ने कहा कि मेरा आत्मा आदमी में उन की अधिका के कारण ३  
सदा लों न्याय न करेगा वह सांस है और उन के दिन एक मी बीस धरम के लो ४

और उन दिनों में पृथिवी पर शान्ध रहे और उन के पीछे मी जब ईश्वर के पुत्र ५  
आदम की पुत्रियों में मिले तो उन से बालक उत्पन्न हुए जो पंचानध हुए जो पाने  
से नार्मी थे ॥

और ईश्वर ने देखा कि आदम की दुग्ता पृथिवी पर चलन हुई और उन के ६  
मन की चिंता और भावना प्रान्दिन केवल हुए जाती हैं । तब आदमी का ७  
पृथिवी पर उत्पन्न करने में परमेश्वर परनामा और उसे लो लेक हुआ ।  
तब परमेश्वर ने कहा कि आदमी को जिने में से उत्पन्न किया आदमी में ८  
लेक पशु लों और मंगियों को और आकाश के पक्षियों को पृथिवी पर में नष्ट  
करेगा क्योंकि उन्हें बनाने में मैं परनामा हूँ ॥

पर नूह ने परमेश्वर की दृष्टि से अनुग्रह पाया । नूह को प्रजाधनी था कि ९  
नूह अपने समय में धर्मी और मिह पुण्य था नूह ईश्वर के साथ साथ चलता था ।  
और नूह में तीन बेटे भिन दाम और माफन उत्पन्न हुए । और पृथिवी ईश्वर १०  
के आगे विराड़ गई थी और पृथिवी अधो में भरपूर हुई । और ईश्वर ने पृथिवी ११  
पर दृष्टि किई और देखा वह विराड़ गई थी क्योंकि नारे नारे ने पृथिवी पर  
अपनी चाल को विराड़ दिया था ॥

१३ और ईश्वर ने नूह से कहा कि सारे शरीर का अंत मेरे आगे आ पहुंचा है क्योंकि उन के कारण पृथिवी अंधेर से भर गई है और देख में उन्हें पृथिवी समेत १४ नष्ट करूंगा । तू गोफर लकड़ी की अपने लिये एक नाव बना और उस नाव में १५ कोठरियां बना और उस के बाहर भीतर रात लगा । और उसे चम डौल की बना उस नाव की लंबाई तीन सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस १६ हाथ की होवे । उस नाव में एक खिड़की बना और ऊपर ऊपर उसे हाथ भर में समाप्त कर और उस के अलंग में द्वार बना और उस में नीचे की और दूसरी १७ और तीसरी अटारी बना । और देख कि सारे शरीर को जिन में जीवन का ग्राम है आकाश के तले से नाश करने को मैं अर्थात् मैं ही बाढ़ के पानी पृथिवी पर १८ लाता हूं और पृथिवी पर हर एक वस्तु नष्ट हो जायगी । परन्तु मैं तुम्हें अपनी बाँचा स्थिर करूंगा तू नाव में जाना तू और तेरे बेटे और तेरी पत्नी और तेरे १९ बेटों की पत्नियां तेरे साथ । और सारे शरीरों में से जीवता जंतु दो दो अपने २० साथ नाव में लेना जिसमें दो तेरे साथ जीते रहें दो नर और नारी होयें । पंक्तों में से उस के भाँति भाँति के और ठोर में से उस के भाँति भाँति के और पृथिवी के हर एक रंगवैये में से भाँति भाँति के हर एक में से दो दो तुम्हें पाम आवें २१ जिसमें जीते रहें । और तू अपने लिये खाने का सब सामग्री अपने पाम एकट्ठा कर वह तुम्हारे और उन के लिये भोजन होगा सो ईश्वर की सारी आज्ञा के समान नूह ने किया ॥

सातवां पृष्ठ ।

१ और परमेश्वर ने नूह से कहा कि तू अपने सारे घराने समेत नाव में प्रवेश २ कर क्योंकि इस पीढ़ी में मैं ने अपने आगे तुम्हें धर्मी देखा है । हर एक पवित्र पशु में से सात सात नर और उस की जोड़ी और पशु में से जो पवित्र नहीं दो दो ३ नर और उस की जोड़ी अपने साथ लेना । आकाश के पक्षियों में भी सात सात ४ नर और उस की जोड़ी जिसमें सारी पृथिवी पर थंश जीता रहे । क्योंकि मैं सात दिन के पीछे पृथिवी पर चालीस रात दिन में बरसाऊंगा और हर एक जीवते ५ जंतु को जिसे मैं ने बनाया है पृथिवी पर से मिटा देऊंगा । और नूह ने परमेश्वर की सारी आज्ञा के समान किया ॥

६ और जब पानियों की बाढ़ पृथिवी पर हुई तो नूह और उस के घराने ७ तब नूह और उस के बेटे और उस की पत्नी और उस के बेटों की पत्नियां पानियों ८ की बाढ़ के कारण से उस के संग नाव पर चढ़ीं । पवित्र पशुन से और उन से से ९ जो पवित्र नहीं हैं और पक्षियों से और पृथिवी के हर एक रंगवैयों में से । दो दो नर और उस की जोड़ी ऐसा ईश्वर ने नूह को आज्ञा किई थी नाव में गये । १० और जब सात दिन बीत गये तो यों हुआ कि बाढ़ के पानी पृथिवी पर हुए ॥

११ और नूह की वय के छः सौ बरस के दूसरे मास की सत्तरहवीं तिथि में उसी १२ दिन महा गहिरापे के सारे सेतले फूट निकले और स्वर्ग के द्वार खुल गये । और १३ पृथिवी पर चालीस रात दिन में बरसा । उसी दिन नूह और नूह के बेटे सिम और हाम और याफत और नूह की पत्नी और उस के बेटों की तीनों पत्नियां

उस के साथ नाच में गईं । वे और हर एक पशु अपनी अपनी भाँति के समान १४  
और सारे ठार और भूमि पर के हर एक रेंगावैये जंतु अपनी अपनी भाँति के समान  
और हर एक पंखी अपनी अपनी भाँति के समान हर एक भाँति की हर एक  
चिड़ियां । और वे नृप के पास सारे शरीरों में से दो दो जिन में जीवन का १५  
श्वास था नाच में गये । और जिनमें ने प्रवेश किया तो सारे शरीरों में से जाड़ा १६  
जाड़ा ये जैसा कि ईश्वर ने उसे आज्ञा की है थी और परमेश्वर ने उस के पीछे  
बंद किया ॥

और बाढ़ का पानी चालीस दिन ताँटे पृथिवी पर हुआ और पानी बढ़ १७  
गया और नाच को उभार लिया और वह भूमि पर से ऊपर उठ गई । और जब १८  
पानी बढ़े और पृथिवी पर पहुँचाई में बढ़ गये तो तब नौका पानी के ऊपर उतराने  
लगी । और जब कि पानी पृथिवी पर अन्त में बढ़ गये तो सारे जंते पहाड़ जो १९  
सारे आकाश के नीचे थे उभरे गये । ऊँचे हुए पहाड़ों पर पानी पंद्रह घण्टे २०  
बढ़ गये ॥

और सारे शरीर जो पृथिवी पर चलते थे पंखी और ठार और पशु और भूमि पर २१  
के हर एक रेंगावैये जंतु और हर एक मनुष्य मर गये । सब जिन के मनुष्यों में जीवन २२  
का श्वास था और सब जो मृत्यु पर थे मर गये । और हर एक जीवन्ता जंतु २३  
जो पृथिवी पर था आदमों से लेकर ठार और कौड़े मकोड़े और आकाश के पक्षियों  
तो नष्ट हुए केवल नृप और जो उस के साथ नौका में थे बच रहे । और पानी २४  
उठे सौ दिन तो पृथिवी पर बढ़ते गये ॥

#### पहाड़ों पद्य ।

और ईश्वर ने नृप को और हर एक जीवन्ते जंतु को और सारे ठार को जो १  
उस के संग नाच में थे स्मरण किया और ईश्वर ने पृथिवी पर एक पवन उठाया  
और जल उठर गये । और गहिराव के साते भी और आकाश के गहराये बंद हो २  
गये और आकाश में सारा घस गया । और जल पृथिवी पर ने घटे चने जाते थे ३  
और उठे सौ दिनों के अंगे पर जल घट गये ।

और मातये साम की मनरह निधि से नौका अरागत के पाण्डों पर टिक ४  
गई । और जल दसवें साम तो घटते गये और दसवें साम के पछिने दिन पाण्डों ५  
की चाटियां दिखाई दिईं ॥

और चालीस दिन के पीछे यों हुआ कि नृप ने अपने घनाये हुए नाच के करारों ६  
को खोला । और उस ने एक काग को उड़ा दिया और जब तो पृथिवी पर के ७  
जल सूख न गये वह आया जाया करता था । फिर उस ने अपने पास में एक ८  
पेंडुकी को छोड़ दिया जिसने देखा ने कि पानी भूमि पर से घट गये थाववा नहीं ।  
परन्तु उस पेंडुकी ने अपना चंगुल टिकने का ठिकाना न पाया और वह उस के ९  
पास नौका पर फिर आई क्योंकि जल सारी पृथिवी पर था तब उस ने अपना  
हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया और अपने पास नाच में ले लिया । फिर वह और सात १०  
दिन ठहर गया और फिर उस ने उस पेंडुकी को नाच से उड़ा दिया । और वह पेंडुकी ११  
साँक को उस पास फिर आई और वहा देखता है कि जलपाई की एक पत्ती उस

१२ के मुंह से है तब नूह ने जाना कि अब जल पृथिवी पर से घट गये । और वह और भी सात दिन ठहरा और उस पंडुकी को छोड़ दिया और वह उस के पास फिर न आई ॥

१३ और छः सौ एक दस के पहिले मास की पहिली तिथि में यों हुआ कि जल पृथिवी पर से सूख गये और नूह ने नाव की छत उठा दिई और क्या देखता है कि १४ पृथिवी ऊपर से सूखी है । और दूसरे मास की सताईसवीं तिथि में पृथिवी सूखी थी ॥

१५ तब ईश्वर नूह को यह कहके बोला । कि नौका से निकल आ तू और तेरी १६ पत्नी और तेरे बेटे और तेरे बेटों की पत्नियां तेरे संग । हर एक जीवते जंतु मारे शरीर में से क्या पंखी क्या ठोर और क्या कीड़े मकोड़े जो भूमि पर रंगते चलते हैं १७ सब को अपने संग ले निकल जिसमें उन के वंश पृथिवी पर घटत बढ़ें और फलवंत १८ हों और पृथिवी पर फैलें । तब नूह निकला और उस के बेटे और उस की पत्नी १९ और उस के बेटों की पत्नियां उस के संग । हर एक पशु हर एक रंगधे जंतु २० और हर एक पंखी जो कुछ कि पृथिवी पर रंगते हैं सब अपने अपने भाति के समान नाव से निकल गये ॥

२० और नूह ने परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाई और मारे पवित्र पशु और २१ हर एक पवित्र पंखियों में से लिये और होम की भेंट उस वेदी पर चढ़ाई । और परमेश्वर ने सुगंध सूंघा और परमेश्वर ने अपने मन से कहा कि आदमी के लिये २२ मैं पृथिवी को फिर कधी साप न देजंगा यद्यपि आदमी के मन की भावना उस की लड़काई से दुरी है और जिस रीति से मैं ने सारे जीवधारियों को मारा २३ फिर कभी न मांरंगा । जब लों पृथिवी है बोना और काटना और ठंड और तपन और ग्रीष्म और शीत और दिन और रात थम न जायेंगे ॥

नवां पर्व ।

१ और ईश्वर ने नूह को और उस के बेटों को आशीस दिया और उन्हें कहा २ कि फलो और बढ़ो और पृथिवी को भरो । और तुम्हारा हर और तुम्हारा भय पृथिवी के हर एक पशु पर और आकाश के हर एक पंखियों पर उन सभी पर जो पृथिवी पर चलते हैं और समुद्र की सारी मछलियों पर पड़ेगा वे तुम्हारे हाथ में ३ सौंपे गये । हर एक जीता चलता जंतु तुम्हारे भोजन के लिये होगा मैं ने हरी ४ तरकारी के समान सारी वस्तु तुम्हें दिई । केवल मांस उस के जीव अर्थात् उस ५ के लोहू समेत मत खाना । और केवल तुम्हारे लोहू का तुम्हारे शरीरों के लिये मैं पलटा लेजंगा हर एक पशु से और आदमी के हाथ से मैं पलटा लेजंगा ६ मनुष्य के भाई के हाथ से आदमी के प्राण का मैं पलटा लेजंगा । जो कोई आदमी का लोहू बहावेगा आदमी से उस का लोहू बहाया जायगा क्योंकि ईश्वर ७ के रूप में आदम बनाया गया है । और तुम फलो और बढ़ो और पृथिवी पर बहुताई से जन्मो और उस में बढ़ो ॥

८ और ईश्वर ने नूह को और उस के साथ उस के बेटों को कहा । कि देखो ९ मैं अपना नियम स्थिर करता हूं तुम से और तुम्हारे वंश से तुम्हारे पीछे । और १०

हर एक जीवने अंतु से जो तुम्हारे संग है वया पंकी और वया डार और पृथिवी  
 के मारे चौपायों से और मर्मां से जो नाथ से बाहर जाने हैं पृथिवी के हर एक  
 पशु नों । और मैं अपना नियम तुम से फिर करूँगा और मारे शरीर बाहु के ११  
 पानियों से फिर नष्ट न किये जायेंगे और फिर पृथिवी को नष्ट करने को निगे  
 जलमय न होगा । और ईश्वर ने कहा कि यह उस नियम का चिन्त है जो मैं अपने १२  
 और तुम्हारे और हर एक जीवने अंतु के मध्य में जो तुम्हारे संग है परंपरा  
 की पीढ़ी नों बांधता हूँ । मैं अपने धनुष को मेघ पर रखता हूँ और दह मेरे १३  
 और पृथिवी के मध्य में नियम का चिन्त होगा । और जब मैं मेघ को पृथिवी के १४  
 ऊपर फैलाऊँगा तो धनुष मेघ से दिखाई देगा । और मैं अपने नियम को जो मेरे १५  
 और तुम्हारे और मारे शरीर के हर एक जीवधारों के मध्य में है स्मरण करूँगा  
 और फिर मारे शरीर को नष्ट करने को जनसमय न होगा । और धनुष मेघ में १६  
 होगा और मैं उसे देखूँगा जिनमें मैं उस मनागत के नियम को जो ईश्वर के और  
 पृथिवी के मारे शरीर के हर एक जीवधारों के मध्य में है स्मरण करूँ । और १७  
 ईश्वर ने नृह से कहा कि जो नियम मैं ने अपने और पृथिवी पर के मारे शरीरों से  
 स्थिर किया है उस का यह चिन्त है ।

और नृह के घेरे जो नौजा में उनके मिस और दास और बाफत से और दास १८  
 कनयान का पिता था । नृह के घेरे तीन घेरे से और उन्हीं में मार्ग पृथिवी का मार्ग है । १९

और नृह खेती घासे करने लगा और उस ने एक दास को बाटिका २०  
 लगाई । और उस ने उस का रस पीया और उसे कमल हुआ और अपने नंद में २१  
 नग्न रहा । और कनयान के पिता दास ने अपने पिता का संग्रासन देखा और २२  
 बाहर अपने भाइयों को जनाया । तब मिस और बाफत ने एक घोड़ना लिया २३  
 और अपने दोनों कंधों पर धरा और पीठ के दल जाके अपने पिता का संग्रासन  
 ढाँपा और उन के मुँह पीछे से मो उन्हीं ने अपने पिता का संग्रासन न देखा ।  
 जब नृह अपने अमल में जागा तो जो उन के लगे घेरे ने उम्मे किया था उसे २४  
 जान पड़ा । और उस ने कहा कि कनयान गोपन होगा दह अपने भाइयों के २५  
 दासों का दास होगा । और उस ने कहा कि मिस का परमेश्वर ईश्वर धन्य २६  
 होय और कनयान उस का दास होगा । ईश्वर बाफत को फैलाय और दह २७  
 मिस के तंतुओं से दास करे और कनयान उस का दास हो । और जनसमय के २८  
 पीछे नृह माहें तीन मो दस जोया । और नृह को मारी दह नय मो पचान २९  
 दस की हुई और दह सर गया ।

दसवां पद्य ।

अब नृह के घेरे की शंकावली घेरी है मिस दास और बाफत और जलमय के १  
 पीछे उन से घेरे उत्पन्न हुए । बाफत के घेरे जुम् और माजूज और मादी और २  
 यूनान और तूवन और मसक और तीराम । और जुम् के घेरे शंकावली और ३  
 रिफत और तजरमः । और यूनान के घेरे दलीमः और तरशीज किती और ४  
 दूदाजी । इन्हीं में अन्यदेशियों के टापू हर एक अपनी अपनी भाषा के और ५  
 अपने अपने परिवार के समान अपनी अपनी जाति में बंट गये ।

- ६ और हाम के बेटे कूश और मिस और फूत और कनआन । और कूश के बेटे मद्या और हवीलः और सवतः और रगमः और सवतिका और रगमः के बेटे मिद्या और ददान ।
- ८ और कूश से निमरुद उत्पन्न हुआ वह पृथिवी पर गक मद्यावीर होने लगा ।
- ९ वह ईश्वर के आगे चलवान व्याध्रा हुआ इसी लिये कहा जाता है जैसा कि पर-
- १० मेश्वर के आगे निमरुद चलवंत व्याध्रा । और उस के राज्य का आरंभ दायुन और
- ११ अरक और अकूद और कलनः सिनआर देश में हुआ । उसी देश में से अमूर
- १२ निकला और नीनवः और रिदावात नगर और कलः बनाये । और नीनवः और कलः के मध्य में रसन बनाया जो बड़ा नगर है ॥
- १३ और मिस से लोदी और अनामी और लिटावी और नफतूही उत्पन्न हुए । और फतखसी और कसलूही जिन से फिलिस्ती और कफतूरी निकले ॥
- १४ और कनआन से उस का पहिलौंठा सैदा और टित उत्पन्न हुए । और ययूमौ
- १५ और अमूरी और जिरजाशी । और हवी और अरकी और मोनी । और अरवादी
- १६ और जमारी और हमती और उस के पीछे कनआन के घराने फैल गये । और कनआन के सिवाने सैदा से जिरार के मार्ग में उज्जः लों मद्रूम और अमूरः और
- २० अदमा और जिवियान और लसअ लों हुए । हाम के बेटे अपने घरानों और अपनी भापाओं के समान अपने देशों और अपने जातिगणों में गये हैं ॥
- २१ और सिम से भी वालक उत्पन्न हुए वह सारे इत्र के वंश का पिता था और
- २२ याफत उस का बड़ा भाई था । और सिम के वंश गेलाम और अमूर और
- २३ अरफकसद और लूद और अराम थे । और अराम के वंश ऊज और हल और जतर
- २४ और मश थे । और अरफकसद से सिलह उत्पन्न हुआ और सिलह में इत्र । और इत्र से दो बेटे उत्पन्न हुए एक का नाम फलज था क्योंकि उस के दिनों में पृथिवी
- २५ बांटी गई और उस के भाई का नाम युक्तान था । और युक्तान से अलमूदाद
- २६ और सलफ और हसरिमात और इरख । और हदूराम और ऊजाल और दिक्लह ।
- २७ और ऊबल और अवीमायल और सिवा । और ओफीर और हवीलः और यद्याघ
- २८ उत्पन्न हुए ये सब युक्तान के बेटे थे । और उन के निवास मेसा के मार्ग से जो
- २९ पूरब के पहाड़ सिफार लों था । सिम के बेटे अपने घरानों और अपनी भापाओं
- ३० के समान अपने अपने देशों और अपने अपने जातिगणों में गये थे । नूह के बेटों के घराने उन की पीढ़ी और उन के जातिगणों थे अमान ये हैं और जलमय के पीछे पृथिवी में जातिगण इन्हीं से बांटे गये ॥

अपराधों पृष्ठ ।

- १ और सारी पृथिवी पर एक ही भाषा थी । और ज्यों उन्होंने ने पूरब से यात्रा की तब वेभा हुआ कि उन्होंने ने सिनआर देश में एक चौगान पाया और वहाँ बड़े ॥
- २ तब उन्होंने ने एक-दूसरे के ऊपर कि बलो हम ईंटें बनावें और आग में पकावें सो उन के लिये ईंट पत्थर की संती और गारा की संती शिलाजतु था ।
- ३ फिर उन्होंने ने कहा कि आओ हम एक नगर और एक गुम्मत जिस की चोटी स्वर्ग लों पहुंचे अपने लिये बनावें और अपना नाम करें न हो कि हम सारी पृथिवी



पर छिन्न भिन्न हो जायें । तब परमेश्वर उस नगर और उस गुम्मत को जिसे आदम ७  
 के संतान बनाने थे देखने को उतगा । तब परमेश्वर ने कहा कि देखो लोग एक ८  
 ही हैं और उन सब की एक ही बोली है अब वे मेसा मेसा कुछ करने लगे सो ९  
 वे जिस पर मन लगायेंगे उसमें अलग न किये जायेंगे । आओ हम उतरें और वहाँ १०  
 उन की भाषा को गड़बड़ायें जिसमें एक हमारे की बोली न सम्भवे । तब परमेश्वर ११  
 ने उन्हीं वहाँ में मार्गे पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया और वे उस नगर के बनाने १२  
 में अलग रहे । इस लिये उस का नाम बाबुल कहायना है क्योंकि परमेश्वर ने वहाँ १३  
 सारे जगत की भाषा को गड़बड़ किया और परमेश्वर ने वहाँ में उन की मार्गे १४  
 पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया ॥

मिस की वंशावली यह है कि मिस में बरस का छोके इलमय के दो बरस १७  
 पीछे उसमें अरफकमद उत्पन्न हुआ । और अरफकमद की उत्पत्ति के पीछे मिस १८  
 पाँच नौ बरस जीया और उसमें बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं । और जब अरफकमद १९  
 पैंतीस बरस का हुआ तब उसमें मिनह उत्पन्न हुआ । और मिनह की उत्पत्ति के २०  
 पीछे अरफकमद चार सौ तीस बरस जीया और उसमें बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं । और २१  
 मिनह जब तीस बरस का हुआ तब उसमें बड़ उत्पन्न हुआ । और मिनह बड़ की २२  
 उत्पत्ति के पीछे चार सौ तीस बरस जीया और उसमें बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं । २३  
 और बड़ में चौतीस बरस की वय में फनज उत्पन्न हुआ । फनज की उत्पत्ति २४  
 के पीछे बड़ चार सौ तीस बरस जीया और उसमें बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं । और २५  
 तीस बरस की वय में फनज में रज उत्पन्न हुआ । और रज की उत्पत्ति के पीछे २६  
 फनज दो सौ नव बरस जीया और उसमें बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं । और चत्तीस २७  
 बरस की वय में रज में मरज उत्पन्न हुआ । और मरज की उत्पत्ति के पीछे रज २८  
 दो सौ सात बरस जीया और उसमें बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं । और मरज जब तीस २९  
 बरस का हुआ तब उसमें नहर उत्पन्न हुआ । और नहर की उत्पत्ति के पीछे मरज ३०  
 दो सौ बरस जीया और उसमें बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं । और नहर जब उन्तीस ३१  
 बरस का हुआ तब उसमें तारह उत्पन्न हुआ । और तारह की उत्पत्ति के पीछे नहर ३२  
 एक सौ उन्तीस बरस जीया और उसमें बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं । और तारह जब ३३  
 सत्तर बरस का हुआ तब उसमें अदिराम और नहर और हारन उत्पन्न हुए ॥

और तारह की वंशावली यह है कि तारह में अदिराम और नहर और हारन ३४  
 उत्पन्न हुए और हारन में नूत उत्पन्न हुआ । और हारन अपने पिता तारह के ३५  
 आगे अपनी जन्मभूमि अर्थात् कलदानियों के ऊपर में सर गया । और अदिराम ३६  
 और नहर ने पदियों किहें अदिराम की पत्नी का नाम सरी था और नहर की पत्नी ३७  
 का नाम मिलकः जो हारन की बेटो की बही मिलकः और इसकाह का पिता ३८  
 था । परन्तु सरी बाँक थी उस का कोई संतान न था । और तारह ने अपने बेटे ३९  
 अदिराम की और अपने पीछे हारन के बेटे नूत का और अपनी बहू अदिराम की ४०  
 पत्नी सरी का लिया और उन्हीं अपने साथ कलदानियों के ऊपर में कलदान देश में ४१  
 ले चला और वे हारन में आये और वहाँ रहे । और तारह दो सौ पाँच बरस ४२  
 का छोके हारन में सर गया ॥



## चारहथां पट्य ।

- १ और परमेश्वर ने अबिराम से कहा था कि तू अपने देश और अपने कुनवे से और  
 २ अपने पिता के घर से उस देश को जा जो मैं तुम्हें दिखाने दूंगा । और मैं तुम्हें  
 एक बड़ी जाति बनाऊंगा और तुम्हें आशीस दूँगा और तेरा नाम बड़ा करूँगा  
 ३ और तू एक आशीर्वाद होगा । और जो तुम्हें आशीस दूँगे मैं उन्हें आशीस दूँगा  
 और जो तुम्हें धिक्कारेंगे मैं उसे धिक्काऊँगा और पृथिवी के सारे घराने तुम्हें  
 आशीस पावेंगे ॥
- ४ सो परमेश्वर के कहने के समान अबिराम चला गया और लूत भी  
 उस के संग गया और जब अबिराम हारन से निकला तब वह पचहत्तर वरस का  
 ५ था । फिर अबिराम ने अपनी पत्नी सरी को और अपने भतीजे लूत को और उन  
 की सारी संपत्ति को जो उन्होंने प्राप्त किया था और उन के सारे प्राणिमियों को  
 जो हारन में मिले थे साथ लिया और कनयान देश को जाने के लिये चल निकले  
 सो वे कनयान देश में आये ॥
- ६ और अबिराम उस देश से होके सिकम के स्थान लौ चला गया मारि: के बलूत  
 ७ लौ तब कनयानी उस देश में थे । फिर परमेश्वर ने अबिराम को दर्शन देकर कहा  
 कि यह देश मैं तेरे वंश को देऊँगा तब उस ने परमेश्वर के लिये जिम ने उसे  
 दर्शन दिया था वहाँ एक वेदी बनाई ॥
- ८ फिर वह वहाँ से बैतएल की पूरव एक पट्टण्ड की ओर गया और अपना तंबू  
 बैतएल की पच्छिम ओर खड़ा किया और वहाँ पत्थर और चाँद और वहाँ उस ने  
 ९ परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाई और उस ने उस का नाम लिया । और अबिराम  
 ने जाते जाते दारिद्र्य की ओर गया ॥
- १० और उस देश में अकाल पड़ा और अबिराम वास करने के लिये मिस्र को  
 ११ उतर गया क्योंकि उस देश में बहुत अकाल था । और यों हुआ कि जब वह  
 मिस्र के शिकट पहुँचा तब उस ने अपनी पत्नी सरी से कहा कि देख मैं जानता  
 १२ हूँ कि तू देखने में सुन्दर स्त्री है । इस लिये यों होगा कि जब मिस्री तुम्हें  
 देखें तो वे कहेंगे कि यह उस की पत्नी है और मुझे मार डालेंगे परन्तु तुम्हें  
 १३ जीती रखेंगे । तू कहियो कि मैं उस की बहिन हूँ जिसने तेरे कारण  
 मेरा भला होय और मेरा प्राण तेरे हेतु से जीता रहे ॥
- १४ और जब अबिराम मिस्र में जा पहुँचा तब मिस्रियों ने उस स्त्री को देखा कि  
 १५ अत्यंत सुन्दरी है । और फिरजन के अध्यक्षों ने उसे देखा और फिरजन के आगे  
 १६ उस का सराहना किया सो उस स्त्री को फिरजन के घर में ले गये । और उस ने  
 उस के कारण अबिराम का उपकार किया और भेड़ बकरी और बैल और गधे  
 १७ और दास और दासी और गधियाँ और जंत उस को मिले । तब परमेश्वर ने  
 १८ मरियाँ डालीं । तब फिरजन ने अबिराम को बुलाकर कहा कि तू ने मुझे यह वधा  
 १९ किया तू ने मुझे क्यों न बताया कि वह मेरी पत्नी है । क्यों कहा कि वह मेरी बहिन  
 है यहाँ लौट मैं ने उसे अपनी पत्नी कर लिया होता सो अब देख यह तेरी पत्नी

है तू उसे ले और चला जा । तब फिरकन ने अपने लोगों को उस के विषय में २०  
आज्ञा कीई और उन्होंने ने उसे और उस की पत्नी को जब सब समेत जो उस  
का था जाने दिया ॥

तेरहवां पर्व ।

और अविग्रह मिन ने अपनी पत्नी और मागी मामगी ससेत और नून को अपने १  
संग लिये हुए दक्षिण को चला । और अविग्रह ठौर ठौर माना चांदी में बढ़ा २  
धनी था । और वह गया करने दक्षिण में वनगन नों उगी म्यान को आया ३  
जहां आरंभ में उस का तंघ था वनगन और अरु के साथ में । उस पेदी के ४  
म्यान में जिसे उस ने पहिले वहां बनाया था और वहां अविग्रह ने परमेश्वर  
का नाम लिया ॥

और अविग्रह के मंगी नून के भी भुंठ और गाय वन और तंघ थे । और ५  
साथ रहने के लिये उस देश में उन को समाई न हुई क्योंकि उन को सामगी बहुत  
थी और वे एकट्ठे निवास न कर सके । और अविग्रह के ठौर के चरवाहों में ७  
और नून के ठौर के चरवाहों में भगवा हुग्र और कनकानी और फरिजी उस  
भूमि में रहने थे । तब अविग्रह ने नून से कहा कि मेरे और मेरे वंश और मेरे ८  
चरवाहों में और मेरे चरवाहों में भगवा न होने पावे क्योंकि हम भाई हैं । वर ९  
मारा देश मेरे आगे नदी मुम्मे अनग को जो तू चाहे और जाय तो मैं चाहे और  
जाऊंगा अथवा जो तू चाहे और जाय तो मैं चाहे और जाऊंगा ॥

तब नून ने अपनी आंग्र उठाके यदन को सारे आगान को देगा कि १०  
सदूस और अमूरः को नष्ट करने में पहिले बात सर्वत्र प्रकीर्ति में होना हुआ  
था परमेश्वर की वारी के समान भुग्र के मार्ग में मिन को नाई था । तब नून ने ११  
यदन का मारा आगान अपने लिये हुना और नून पुरख को और चला और वे एक  
दूसरे से अनग हुए । अविग्रह कनकान देश में रहा और नून में आगान के नगरी १२  
में वाम किया और सदूस नों तंघ खड़ा किया । पर सदूस के भाग परमेश्वर के १३  
आगे अत्यंत दुष्ट और पापी थे ॥

तब नून के उससे अनग होने के पीछे परमेश्वर ने अविग्रह में कहा कि १४  
अब अपनी आंग्र उठा और उन स्थान में वहां तू है उत्तर और दक्षिण और  
पूरव और पच्छिम की ओर देर । क्योंकि मैं यह मारा देश जिसे तू देगता है १५  
तुझे और तेरे वंश को नदा के लिये देऊंगा । और मैं तेरे वंश को पृथिवी की १६  
धूल के तुल्य करूंगा यहाँ लों कि यदि कोई पृथिवी को धूल को गिन सके  
तो तेरा वंश भी गिना जायगा । उठके देश को लंबाई और चौड़ाई में तोके १७  
फिर क्योंकि मैं उसे तुझे देऊंगा । तब अविग्रह ने तंघ उठाया और समरे के १८  
बलूतों में जो छयसन में है था रहा और वहाँ परमेश्वर के लिये एक वंदी बनाई ॥

चौदहवां पर्व ।

और मिनआर के राजा असराफिल के राजा अमूरः के मेलाम के १  
राजा किदरलाउमर के और जातिसगों के राजा निदग्रह के दिनों में यों हुआ ।  
कि उन्होंने ने सदूस के राजा अरथ से और अमूरः के राजा थिरगथ से अदसः २

के राजा सिन्धुअथ से और जिब्रियान के राजा शिमिबर से और बालिग के राजा ३ से जो सुग्र है संग्राम किया । ये सब सिद्धीम की तराई में जो खारी समुद्र है ४ एकट्टे हुए । उन्होंने ने बारह बरस लों किदरलाउमर की सेवा कीई और तेरहवें ५ बरस उससे फिर गये । और चौदहवें बरस में किदरलाउमर और उस के साथी ६ राजा आये और इसतारात करनैन में रिफाइम को और हाम में जजियों को ७ और सबी करपातैन में रेमियों को । और उन के सईर पर्वत में धूरियों को ८ फारान के चौगान लों जो वन के पास है मारा । और फिर और ऐनामिगपात ९ को जो कादिस है फिर और अमालीक के सारे देश को और अमूरी को भी जो ८ हस्तुनतमर में रहते थे मार लिया । और सडूम का राजा और अमूरः का राजा और अदमः का राजा और जिब्रियान का राजा और बालिग का राजा जो ९ सुग्र है निकले और सिद्धीम की तराई में उन के संग युद्ध किया । गेलास के राजा किदरलाउमर के संग और जातिगणों के राजा तिदथाल के संग और सिनआर के राजा अमराफिल और इल्लासर के राजा अरयूक अर्थात् चार राजा पाँच १० के संग । और सिद्धीम की तराई में चहले के गड़दे थे और सडूम और अमूरः ११ के राजा भागें और वहाँ गिरे और बचे हुए लोग भागके पछाड़ पर गये । और १२ उन्होंने ने सडूम और अमूरः की सारी संपत्ति और उन के सारे भोजन लूट लिये और अपने मार्ग पकड़े । और अबिराम के भतीजे लूत को जो सडूम में रहता था और उस की संपत्ति को लेके चले गये ॥

१३ तब किसी ने बचके इवरानी अबिराम को संदेश दिया और वह इसकाल और अनेर के भाई अमूरी ममरे के बलूतों के नीचे रहता था और वे अबिराम के सहा- १४ यक थे । और अबिराम ने अपने भाई के ले जाने की बात सुनके अपने घर के १५ तीन सौ अठारह दासों को लिया और दान लों उन का पीछा किया । और उस ने और उस के सेवकों ने आप को रात को विभाग किया और उन्हें मारा १६ और खूबः लों जो दमिश्क की बाँईं ओर है उन्हें रगदे चले गये । और वह सारी संपत्ति को और अपने भाई लूत को भी और उस की संपत्ति को और स्त्रियों को भी और लोगों के ऊँर लाया ॥

१७ और किदरलाउमर को और उस के संगी राजाओं को मारके फिर आने के पीछे सडूम का राजा उसे बैठ करने को सबी की तराई लों जो राजा की तराई है १८ निकला । और सालिम का राजा मलिकिसिदक रोटी और दाखरस लाया और १९ वह अति महान ईश्वर का याजक था । और उस ने उसे आशीस दिया और बोला कि आकाश और पृथिवी के २० धन्य होवे । और अति महान सर्वशक्तिमान को धन्य जिस ने तेरे वरियों को तेरे हाथ में सौंप दिया और उस ने सब का दसवां भाग उसे दिया ॥

२१ और सडूम के राजा ने अबिराम से कहा कि प्राणियों को मुझे दीजिये और २२ संपत्ति आप रखिये । तब अबिराम ने सडूम के राजा से कहा कि मैं ने अपना हाथ अति महान सर्वशक्तिमान परमेश्वर के आगे जो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु २३ है उठाया है । जिस में एक तमगे से लेके जूते के बंद लों आप का कुछ न लेऊंगा

मो मत कहियो कि मैं ने अथिराम को धनधान किया । परन्तु केवल यह जो २४  
तकलों ने खाया और उन मनुष्यों के भाग जो मेरे संग अर्थात् अनेक और  
इसकाल और मसरे के ये अपने भाग लेंगे ॥

पंद्रहवां पद्य ।

इन बातों के पीछे परमेश्वर का यत्न यह कहते हुए दर्शन में आधिराम पर पहुँचा १  
कि हे आधिराम मत डर मैं तेरी दान और तेरा यत्न प्रयोजन है । तब आधिराम २  
ने कहा कि हे प्रभु ईश्वर तू मुझे क्या देगा मैं तो निर्धन जाता हूँ और मेरे ३  
घर का सँभारी दमिश्की रालिखत्र है । और आधिराम ने कहा कि देव तू ने मुझे ४  
कोई वंश न दिया और देव जो मेरे घर में उत्पन्न हुआ यहाँ मेरा अधिकारी ५  
है । और देवो परमेश्वर का यत्न उम्मे यों कहते हुए पहुँचा कि यह तेरा अधिकारी ६  
न होगा परन्तु जो तुम्हों में उत्पन्न होगा सो मेरा अधिकारी होगा । फिर उस ने ७  
उसे याद दिला कि जो तेरा वंश होगा और देव और जो तेरी को तू गिन सके ८  
तो उन्हें गिन फिर उस ने उसे कहा कि तेरा वंश मेरा ही होगा । तब यह ९  
परमेश्वर पर विश्वास लाया और यह उस के लिये धर्म गिना गया ॥

फिर उस ने उसे कहा कि मैं परमेश्वर हूँ जो तुम्हें यह भूमि अधिकार में देने १०  
का कलदाँतियों के घर में निकाल लाया । तब उस ने कहा कि हे प्रभु परमेश्वर ११  
मैं क्योंकि जानूँ कि मैं उस का अधिकारी होऊँगा । तब उस ने उसे कहा कि तू १२  
तीन घरों का एक कनार और तीन घरों का एक यत्न और तीन घरों का १३  
एक सँभाल और एक पट्टा और एक यत्न का एक यत्न मेरे लिये ले । सो उस ने १४  
यह सब अपने लिये लिया और उन्हें सब में दो दो भाग दिये और हर एक १५  
भाग को उस के दूसरे भाग के समान धरा परन्तु पेटियों का भाग न किया । और १६  
जब दिसक पड़ो उन लोगों पर उतरे तब आधिराम ने उनकी आज्ञा दिया । और १७  
मूर्ख अन्ना सोते हुए आधिराम पर भारी नौद पड़ी और वह देखता है कि बड़ा १८  
भयंकर अधिकार उस पर पड़ा । तब उस ने आधिराम को कहा निश्चय जान कि १९  
तेरे वंश लोगों के वंश में परदेजा लोगों और उन का सेवा करेंगे और वे उन्हें सार २०  
मो घरों में सत्तायेंगे । परन्तु जिन की वे सेवा करेंगे मैं उस जाति का भी विचार २१  
करूँगा और वे पीछे यही संपात लेंगे निकलेंगे । और तू अपने पितरों से कुशल में २२  
जायगा और बहुत पुण्यवा होके गाया जायगा । परन्तु सोचो पीछे मैं वे यत्न २३  
फिर आधिराम क्योंकि अमूरियों का अधर्म अब लो भयंकर नारा हुआ । और जब मूर्ख २४  
अन्ना हुआ तो यों हुआ कि अधिराम हुआ कि देवो एक धृष्टता भट्टा और २५  
एक आग का दीपक उन टुकड़ों के साथ मैं से लोके चला गया । उसी दिन २६  
परमेश्वर ने आधिराम से नियम करके कहा कि मैं ने निम्न की नदी में पुण्यवा यों २७  
यही नदी लो यह देश तेरे वंश को दिया है । अर्थात् केना और फनजी और २८  
कदमूनी । और हिर्ती और फरिज्जी और रिफाज्जी । और अमूरी और कनयानी और २९  
जिरजाणी और ययूमी का देश ॥

सोलहवां पद्य ।

अब आधिराम की पत्नी सरी कोट सड़का उस के लिये न जनी और उस की १

२ एक मिखी लैंड़ी थी और उस का नाम हाजिरः था । तब सरी ने अविराम से कहा कि देख परमेश्वर ने मुझे जन्मे से रोका है मैं तेरी धिन्ती करती हूँ कि मेरी लैंड़ी पास जाइये क्या जाने मेरा घर उससे यस जाय और अविराम ने सरी को बात मानी । सो अविराम के कन्यान देश में दस बरस निवास करने के पीछे उस की पत्नी सरी ने अपनी लैंड़ी मिखी हाजिरः को लिया और अपने पति अविराम को उस की पत्नी होने को दिया । और उस ने हाजिरः को गृहण किया और वह गर्भिणी हुई और जब उस ने आप को गर्भिणी देखा तो उस की स्वामिनी उस की दृष्टि में निन्दित हुई । तब सरी ने अविराम से कहा कि मेरा होय आप पर मैं ने अपनी लैंड़ी आप की गोद में दिई और जब उस ने अपने को गर्भिणी देखा तो मैं उस की दृष्टि में निन्दित हुई मेरे और आप के बीच परमेश्वर न्याय करे । तब अविराम ने सरी से कहा कि देख तेरी लैंड़ी तेरे हाथ में है जो तुझे अच्छा लगे सो उससे कर और जब सरी ने उससे कठिनता किई तब वह उस के आगे से भाग गई ॥

७ और परमेश्वर के दूत ने एक पानी के सोते के पास वन में उस सोते के पास जो सूर के मार्ग में है उसे पाया । और कहा कि हे सरी की लैंड़ी हाजिरः तू कहां से आई है और किधर जायेगी और वह बोली कि मैं अपनी स्वामिनी सरी के आगे से भागती हूँ । और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि अपनी स्वामिनी के पास फिर जा और उस के वंश में रह । फिर परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि मैं तेरा वंश अत्यंत बड़ाजंगा ऐसा कि वह बहुतार्ई के मारे मित्ता न जायगा । और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि देख तू गर्भिणी है और एक बेटा जनेगी और उस का नाम इसमअरेल रखना क्योंकि परमेश्वर ने तेरा दुःख सुना । और वह एक वनमनुष्य होगा उस का हाथ हर एक मनुष्य के विरुद्ध और हर एक का हाथ उस के विरुद्ध होगा और वह अपने सारे भाइयों के साथ निवास करेगा । तब उस ने उस परमेश्वर का नाम जिस ने उससे बात किई यों लिया कि हे सर्वशक्तिमान तू मुझे देखता है क्योंकि उस ने कहा कि क्या मैं ने अपने दर्शी का पीछा यहां भी देखा है । इस लिये उस कूरु का नाम मेरे-जीवतेदर्शी का कुआँ रखवा देखो वह क्राडिस और विरद के मध्य में है । सो हाजिरः अविराम के लिये एक बेटा जनी और अविराम ने अपने बेटे का नाम जिसे हाजिरः जनी इसमअरेल रखवा । और जब हाजिरः से अविराम के लिये इसमअरेल उत्पन्न हुआ तब अविराम द्वासो बरस का था ॥

सबहवां पर्व ।

१ और जब अविराम निम्नानवे बरस का हुआ तब परमेश्वर ने अविराम को दर्शन दिया और कहा कि मैं सर्वसामर्थी सर्वशक्तिमान हूँ तू मेरे आगे चल और सिद्ध रहे । और मैं अपने और तेरे मध्य में अपना नियम बांधूंगा और मैं तुझे अत्यंत बड़ाजंगा । तब अविराम औंधा मिरा और ईश्वर ने उससे बात करके कहा । ४ कि मैं जो हूँ देख मेरा नियम तेरे संग होगा और तू बहुत से जातिगणों का पिता हेना । और तेरा नाम फिर अविराम न होगा परन्तु तेरा नाम अविरहाम

होगा क्योंकि मैं ने तुम्हें बहुत से जानिवालों का पिता बनाया है । और मैं तुम्हें ६  
अत्यन्त फलवान करूँगा और तुम्हें जानिवाग्न बनाऊँगा और राजा तुम्हें निकलेगा ।  
और मैं अपना नियम अपने और तेरे मध्य से और तेरे पीछे तेरे वंश के उन की ७  
पीढ़ियों से सदा के लिये एक नियम जो उन के मध्य सदा लगे रहे ठहराऊँगा कि  
मैं तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का ईश्वर हूँगा । और मैं तुम्हें और तेरे पीछे सर्वदा ८  
अधिकार के लिये तेरे वंश की तेरे दिक्काय का देश देऊँगा अर्थात् कनखान का  
सारा देश और मैं उन का ईश्वर हूँगा ।

और ईश्वर ने अबिरहाम से कहा कि तू और तेरे पीछे तेरा वंश उन की ९  
पीढ़ियों से मेरे नियम को माने । तुम मेरा नियम जो तुम्हें दूँगा तुम ने और तेरे १०  
पीछे तेरे वंश में है जिसे तुम मानोगे सो यह है कि तुम में से हर एक पुंस्र  
का गन्तवः किया जाय । और तुम अपने जरीर की गन्तही काटे और वह मेरे और ११  
तुम्हारे मध्य से नियम का चिन्ह देगा । और तुम्हारी पीढ़ियों में हर एक आन् १२  
दिन के पुण्य का गन्तवः किया जाय जो घर से उत्पन्न होय शब्दों को किसी  
परदेशी में जो तेरे वंश का न हो उसे में मोल लिया जाय । जो तेरे घर से १३  
उत्पन्न हुआ हो और जो तेरे रूप से मोल लिया गया हो अवश्य उस का गन्तवः  
किया जाय और मेरा नियम तुम्हारे मांस में सर्वदा निवास के लिये होगा । और १४  
जो अवतनः दानक जिस की गन्तही या गन्तवः न हुआ हो सो प्राणी अपने  
लोग में कह जाय कि उस ने मेरा नियम नोटा है ।

फिर ईश्वर ने अबिरहाम से कहा तेरी पत्नी सरी जो है तू उसे गर्भा न कर १५  
परन्तु उस का नाम सरः रख । और मैं उसे आर्णाम देऊँगा और तुम्हें एक बेटा १६  
उम्मे भी देऊँगा निश्चय मैं उसे आर्णाम देऊँगा और यह जानिवाग्न होगी वंश  
लोगों के राजा उम्मे होंगे । तब अबिरहाम आँखें मूँद होगा और होगा और १७  
अपने मन से कहा क्या सो धरम के दृष्ट में नष्टता उत्पन्न होगा और क्या सरः  
जो नष्ट धरम की है जनेगा । फिर अबिरहाम ने ईश्वर से कहा कि तब कि १८  
हमसअरेल तेरे आगे जीता गे । तब ईश्वर ने कहा कि तेरी पत्नी सरः तेरे लिये १९  
निश्चय एक बेटा जनेगी और तू उस का नाम राजाज रखना और मैं सर्वदा  
नियम के लिये अपना नियम उम्मे और उस के पीछे उस के वंश में निरर करूँगा ।  
और हमसअरेल जो है मैं ने उस के विषय में तेरी सुनी है देख मैं ने उसे आर्णाम २०  
दिया और उसे फलवान करूँगा और उसे अत्यन्त बढ़ाऊँगा उसे बारह सयस्र उत्पन्न  
होंगे और उसे बड़ी सँझनी बनाऊँगा । परन्तु राजाज के मध्य जिसे सरः तेरे लिये २१  
दूसरे धरस इसी ठहराये हुए समय में जनेगी मैं अपना नियम निरर करूँगा ।

तब उससे बात करने में रह गया और अबिरहाम के पास में ईश्वर उभर जाता २२  
रहा । तब अबिरहाम ने अपने घेरे हमसअरेल को और मध्य जो उस के घर में २३  
उत्पन्न हुए थे और सब जो उस के रूप से मोल लिये गये थे अर्थात् अबिरहाम  
के घराने के हर एक पुण्य को लेकर उसी दिन उन की गन्तही का गन्तवः किया  
जैसा कि ईश्वर ने उसे कहा था । और जब उस की गन्तही का गन्तवः हुआ २४  
तब अबिरहाम निदानधे धरस का था । और जब उस के घेरे हमसअरेल की २५



२६ खलड़ी का खतनः हुआ तब वह तेरह वरस का था । उसी दिन अबिरहाम और  
 २७ उस के बेटे इसमअरेल का खतनः किया गया । और उस के घराने के सारे पुत्रों  
 का जो घर में उत्पन्न हुए और जो परदेशियों से मोल लिये गये उस के साथ  
 खतनः किये गये ॥

अठारहवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर उसे ममरे के वल्लतों में दिखाई दिया और वह दिन को घाम  
 २ के समय में अपने तंबू के द्वार पर बैठा था । और उस ने अपनी आंखें उठाईं  
 और देखा और देखो कि तीन मनुष्य उस के पास खड़े हैं और उन्हें देखके वह तंबू  
 ३ के द्वार पर से उन की भेंट को दौड़ा और भूमि लों दंडवत किई । और कहा है  
 मेरे स्वामी यदि मैं ने अब आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं आप की विन्ती  
 ४ करता हूं कि अपने दास के पास से चले न जाइये । इच्छा होय तो थोड़ा जल  
 ५ लाया जाय और अपने चरण धोइये और पेड़ तले विश्राम कीजिये । और मैं एक  
 कौर रोटी लाऊँ और आप तृप्त होजिये उस के पीछे आगे बढ़िये क्योंकि आप इसी  
 ६ लिये अपने दास के पास आये हैं तब वे बोले कि जैसा तू ने कहा तैसा कर ।  
 ७ और अबिरहाम तंबू में सरः पास उतावली से गया और उसे कहा कि फुरती कर  
 ८ और तीन नपुआ चोखा पिसान लेके गंध और उस के फुलके पका । और अबिरहाम  
 भुंड की ओर दौड़ा गया और एक अच्छा कोमल वकड़ा लेके दाम को दिया उस  
 ९ ने भी उसे सिद्ध करने में चटक किया । और उस ने मक्खन और दूध और वह  
 वकड़ा जो पकाया था लिया और उन के आगे धरा और आप उन के पास पेड़  
 तले खड़ा रहा और उन्होंने ने खाया ॥

१० और उन्होंने ने उस से पूछा कि तेरी पत्नी सरः कहाँ है और वह बोला कि  
 देखिये तंबू में है । और उस ने कहा कि जीवन के समय के समान निश्चय मैं तुझ  
 पास फिर आजंगा और देख तेरी पत्नी सरः एक बेटा जनेगी और सरः उस के  
 ११ पीछे तंबू के द्वार पर सुनती थी । और अबिरहाम और सरः दूढ़े और पुरनिये  
 १२ थे और सरः से स्त्री का व्यवहार जाता रहा । और सरः हंसके अपने मन में  
 बोली कि क्या अब मुझे बुढ़ापे में और मेरा स्वामी भी पुरनिया है फिर आनन्द  
 १३ होगा । और परमेश्वर ने अबिरहाम से कहा कि सरः क्यों यह कहके मुसकुराई  
 १४ कि मैं जो बुढ़िया हूँ सचमुच वालक जन्मगी । क्या परमेश्वर के लिये कोई  
 बात असाध्य है जीवन के समय के समान मैं ठहराये हुए समय में तुझ पास फिर  
 १५ आजंगा और सरः को बेटा होगा । और सरः यह कहके मुकर गई कि मैं तो नहीं  
 हंसी क्योंकि वह डर गई थी तब उस ने कहा नहीं परन्तु तू हंसी है ॥

१६ और वे मनुष्य वहाँ से उठके सूदूम की ओर देखने लगे और अबिरहाम उन्हें  
 १७ विदा करने को उन के साथ साथ चला । और परमेश्वर ने कहा कि जो मैं करता  
 १८ हूँ सो क्या अबिरहाम से छिपाऊँ । अबिरहाम तो निश्चय एक बड़ा और  
 बलवान जाति होगा और पृथिवी के सारे जातिगण उस में आशीस पावेंगे ।  
 १९ क्योंकि मैं उसे जानता हूँ कि वह अपने पीछे अपने वालकों और अपने घराने  
 को आह्ला करेगा और वे न्याय और बिचार करने को परमेश्वर का मार्ग पालन

## उत्पत्ति की पुस्तक ।

१६ पर्व

करेंगे जिसमें जो कुछ परमेश्वर ने अधिरक्षाम के विषय में कहा है जो उस पर  
 पहुंचाये । और परमेश्वर ने कहा इस कारण कि मनुष्य और असुर का चिह्नाना २०  
 बढ़ा है और इस कारण कि उन के पाप अत्यंत गहरे हुए । मैं उतरेगा और देखूंगा २१  
 कि उस के चिह्नाने के समान जो सुक लें पहुंची है उन्होंने ने पूरा किया है और  
 यदि नहीं तो मैं जानूंगा । और उन मनुष्यों ने वहाँ से अपने मुँह को और मनुष्य २२  
 की ओर गये परन्तु अधिरक्षाम तब भी परमेश्वर के आगे खड़ा रहा ।  
 और अधिरक्षाम पास गया और कहा कि क्या तू दुष्ट के संग धर्मों को भी नष्ट २३  
 करेगा । यदि नगर में पचास धर्मों के हैं उग तब भी नष्ट करेगा और उस के २४  
 पचास धर्मों के लिये जो उस में हैं उस स्थान को न छोड़ेगा । दुष्ट के संग धर्मों २५  
 को मारना ऐसी बात तुम्हें पते होय क्योंकि धर्मों दुष्ट के समान हो जाय  
 तुम्हें दूर होय क्या सारी पुण्यियाँ का न्यायो न्याय न करेगा । और परमेश्वर २६  
 ने कहा यदि मैं मनुष्य नगर में पचास धर्मों पाऊँ तो मैं उन के लिये सारे स्थान को  
 छोड़ देऊँगा । फिर अधिरक्षाम ने उत्तर देकर कहा कि देख मैं ने परमेश्वर के आगे २७  
 दोलन में छिटाई किंतु यद्यपि मैं भूल और राग हूँ । यदि पचास धर्मों में २८  
 पाँच छट होय तो क्या पाँच के लिये सारे नगर को नष्ट करेगा तब उस ने कहा  
 यदि मैं वहाँ पैंतालिस पाऊँ तो नष्ट न करेगा । और उसने उसने फिर छाने कि २९  
 और कहा यदि चालीस वहाँ पाये जायें तब उस ने कहा मैं चालीस के कारण  
 ऐसा न करेगा । और उस ने कहा जाय कि प्रभु कुछ न होय तो मैं कुछ यदि ३०  
 वहाँ तीस पाये जायें तब उस ने कहा यदि मैं वहाँ तीस पाऊँ तो ऐसा न करेगा ।  
 और उस ने कहा कि देख मैं ने प्रभु के आगे दोलन में छिटाई किंतु यदि बीस ३१  
 ही वहाँ पाये जायें तब उस ने कहा मैं बीस के कारण नष्ट न करेगा । फिर उस ३२  
 ने कहा जाय कि प्रभु कुछ न होय तो मैं अब जो दान फिर कुछ यदि वहाँ दस  
 ही पाये जायें तब उस ने कहा मैं दस के कारण नष्ट न करेगा । तब परमेश्वर ३३  
 अधिरक्षाम से बातचीत समाप्त करके चला गया और अधिरक्षाम अपने स्थान को  
 फिर ।

## उत्तीर्ण पर्व ।

और सोम को दो दूत मनुष्य में आये और दूत मनुष्य के आदेश पर चला था १  
 और दूत उन्हें देखकर उन से भेंट करने को कहा और भूमि में पहुंचा कि २  
 और कहा हे मेरे भ्राता आपने दान के घर को और खोले और रात भर ३  
 ठहरिये और अपने चरण धोइये और तड़के उठके अपने मार्ग लीजिये तब उन्होंने  
 ने कहा कि नहीं परन्तु हम रात भर मनुष्य में रहेंगे । पर अब उस ने उन्हें बहुत ४  
 बताया तब वे उस को और फिरे और उस के घर से आये तब उस ने उन के लिये  
 जेवनार किया और अश्वमोरी राटी उन के लिये पकाई और उन्होंने ने खाई ५  
 उन के नेटने से आगे नगर के मनुष्यों आगे मनुष्य के मनुष्यों ने नगर से दूरे ६  
 लों मध्य लोगों ने चारों ओर में आके उस घर को घेरा । और दूत को पुकारके ७  
 कहा कि जो पुण्य मेरे पास आज रात आये हैं सो पाठो हैं हमारे पास उन्हें  
 बाहर ला और हम उन से संगम करें । और दूत द्वार से उन पास बाहर गया ८



- ७ और अपने पीछे क़ियाड़ बंद किया । और कहा कि हे भाइयो ऐसी दुष्टता न  
 ८ करना । देखो मेरी दो बेटियाँ हैं जो पुरुष से अज्ञान हैं कहे तो मैं उन्हें  
 तुम्हारे पास बाहर लाऊँ और जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे सो उन से करो कंधान  
 उन मनुष्यों से कुछ न करो क्योंकि वे इस लिये मेरी कृत की छाया तले आये हैं ।  
 ९ और उन्होंने ने कहा कि हट जा और कहा कि यह एक जन हमसे टिकने को  
 आया सो अब न्यायी होने चाहता है अब हम तेरे साथ उन से अधिक खराब  
 करेंगे तब वे उस पुरुष पर अर्थात् लूत पर हल्ला करके आये और क़ियाड़ तोड़ने  
 १० को भपटे । परन्तु उन पुरुषों ने अपने हाथ बड़ाके लूत को घर में अपने पास  
 ११ खींच लिया और क़ियाड़ बंद किया । और कोटे से बड़े लों उन मनुष्यों को आ  
 घर के द्वार पर थे अधापन से मारा यहाँ लों कि वे द्वार टूटते टूटते चक गये ॥  
 १२ तब उन पुरुषों ने लूत से कहा कि तेरा कोई और यहाँ है जमाई अथवा  
 तेरे बेटे अथवा तेरी बेटियाँ जो कोई इस नगर में तेरा है उन्हें लेकर हम स्थान  
 १३ से निकल जा । क्योंकि हम इस स्थान को नाश करते हैं क्योंकि इन का चिल्लाना  
 परमेश्वर को आगे बढ़ा है और परमेश्वर ने हमें इस नाश करने को भेजा है ।  
 १४ तब लूत निकला और अपने जमाइयों से जिनमें से उस की बेटियाँ दयाही थीं  
 बोला और कहा कि उठो इस स्थान से निकलो । क्योंकि परमेश्वर हम नगर को  
 नष्ट करता है परन्तु वह अपने जमाइयों की दृष्टि में जैसा कोई ठठेल दिखाने  
 दिया ॥  
 १५ और जब विहान हुआ तब दूतों ने लूत को शीघ्र फरवाके कहा कि उठ  
 अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियाँ जो यहाँ हैं तू जान दो कि तू इस नगर  
 १६ के दंड में भस्म हो जाय । और जब वह खिल्ल कर रहा था तब उन पुरुषों ने  
 उस का और उस की पत्नी का और उस की दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा क्योंकि  
 परमेश्वर की कृपा उस पर थी और उसे निकालकर नगर के बाहर डाल दिया ।  
 १७ और जब लूत बाहर निकाला तो कहा कि अपने प्राण को लिये भाग और पीछे  
 मत देखना और सारे चौगान में न ठहरना पहाड़ पर भाग जा न होवे कि तू भस्म  
 १८ होवे । तब लूत ने उन्हें कहा कि हे मेरे प्रभु ऐसा नहीं । देखिये आप को  
 दास ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और तू ने अपनी दया बढ़ाई है तो  
 तू ने मेरे प्राण बचाने में मेरे साथ किई है मैं तो पहाड़ पर नहीं भाग सकता न  
 २० होवे कि कोई विपत्ति मुझ पर पड़े और मैं मर जाऊँ । देखिये कि यह नगर वहाँ  
 भागने को समीप है और वह छोटा है मुझे उधर जाने दीजिये वह बड़ा छोटा  
 २१ नहीं है । मेरा प्राण बच जायगा । और उस ने उसे कहा कि देख इस बात के  
 विषय । भो ! मैं ने तेरे मुँह को ग्रहण किया है कि मैं इस नगर को जिस की  
 २२ तू ने बनी उर न देऊँगा । शीघ्र कर और उधर भाग क्योंकि जब लों तू वहाँ  
 न पहुँचे मैं कुछ कर नहीं सकता इस लिये उस नगर का नाम सुग्न रखवा ।  
 २३ सूर्य पृथिवी पर उदय हुआ था जब लूत सुग्न में पहुँचा ॥  
 २४ तब परमेश्वर ने सदूम और अमूर पर गंधक और आग परमेश्वर की और  
 २५ से स्वर्ग से बरसाया । और उन नगरों को और सारे चौगान को और नगरों के

सारे निवासियों को और जो कुछ भूमि पर उगता था उगट दिया । परन्तु उस २६  
की पत्नी ने उस के पीछे से फिरके देखा और वह लान का खंभा घन गई । और २७  
अबिरहाम उठके विद्वान को नढ़के उस स्थान में जहाँ वह परमेश्वर के आगे  
खड़ा था आ पहुँचा । और उस ने नटुस और अनूरः और चागान की नारी भूमि २८  
पर दृष्टि किई और देखा कि उस भूमि में भट्टी का सा धुआँ उठ रहा है ।

और यों हुआ कि जब ईश्वर ने चागान के नारों को नष्ट किया तब ईश्वर ने २९  
अबिरहाम को स्मरण किया और उन नारों को बाढ़ों में रक्ता था नष्ट करने हुए  
लून को उस विषय से बुझाया । और लून अपनी छोटियों समेत सुग में पहलू पर ३०  
जा रहा क्योंकि वह सुग में रहने को रहा तब वह और उस को दो छोटियाँ एक  
कंदला में जा रहे । और पहिलीन्टी ने कुटकी में कहा कि हमारा पिता बहुत है ३१  
और पृथिवी पर कोई पुत्र नहीं रहा जो चागान की नारी के समान उसे सुकन  
करे । आओ हम अपने पिता को दाखरम पिनायें और इस उस के साथ शयन ३२  
करें कि हम अपने पिता से धन जुगायें । तब उन्होंने ने उस रात अपने पिता को ३३  
दाखरम पिनाया और पहिलीन्टी गई और अपने पिता के साथ शयन किया और उस  
ने उस के शयन करते और उठने सुन न जिरे । और जब दूसरे दिन हुआ तब ३४  
पहिलीन्टी ने कुटकी में कहा कि देख मैं ने कम रात अपने पिता के साथ शयन  
किया हम उसे आज रात भी दाखरम पिनायें और तू जाके उस के साथ शयन कर  
जिसमें हम अपने पिता का धन जुगायें । तब उन्होंने ने अपने पिता को उस रात ३५  
भी दाखरम पिनाया और कुटकी में उठके उस के साथ शयन किया और उस ने  
उस के न शयन करने न उठने हम सुन किई । सो लून को दोनों छोटियाँ अपने ३६  
पिता से गर्भिणी हुई । और पहिलीन्टी एक छेदा जनी और उस का नाम मेरथाय ३७  
रखया वही आज भी मेरथायों का पिता है । और कुटकी अल भी एक छेदा ३८  
जनी और उस का नाम यिनयर्मा रखया वही आज भी यिनयर्मा के धन का पिता है ।

दोनवां पद्य ।

फिर अबिरहाम ने वहाँ से दक्षिण के देश को गया किई और फादिन और १  
सूर के बीच ठहरा और जिरार में ठिक्ता । और अबिरहाम अपनी पाँच सूर के २  
विषय में बोला कि वह मेरी याद है सो जिरार के राजा अबिरमिनज ने  
मेजके सूर को ले लिया ।

परन्तु रात को ईश्वर ने अबिरमिनज को स्वप्न में जाके उसे कहा कि देख तू ३  
इस स्त्री के कारण जिसे तू ने लिया है तरेगा क्योंकि वह दयाही स्त्री है । परन्तु ४  
अबिरमिनज उस पाम न आया था तब उस ने कहा कि हे प्रभु उजरा धरती जाति  
को भी मार डालेगा । क्या उस ने तुम्हें नहीं कहा कि वह मेरी याद है और वह ५  
आप ही बोली कि वह मेरा भाई है मैं ने अपने मन की मझाएँ और दासों को  
निर्दोषता से यह किया है । तब ईश्वर ने उसे स्वप्न में कहा कि मैं भी जानता हूँ ६  
कि तू ने अपने मन की मझाएँ से यह किया है और मैं ने भी तुम्हें मेरे विरुद्ध पाप  
करने से रोका इस लिये मैं ने तुम्हें उसे कृपे न दिया । सो अब उस पुत्र को उस ७  
की पत्नी केर दे क्योंकि वह भविष्यद्वक्ता है और वह तीनों लिये प्रार्थना करेगा और

तू जीता रहेगा परन्तु यदि तू उसे फेर न देगा तो यह जान कि तू और तेरे सारे जन निश्चय मरेगे ॥

८ तब अबिमलिक ने बिहान को तड़के उठकर अपने सारे सेवकों को बुलाया  
 ९ और ये सारी बातें उन्हें सुनाईं तब वे जन बहुत डर गये । तब अबिमलिक ने  
 अबिरहाम को बुलाया और उसे कहा कि तू ने हम से क्या किया है और मैं ने  
 तेरा क्या अपराध किया कि तू मुझ पर और मेरे राज्य पर एक बड़ा पाप लाया  
 १० है तू ने मुझे ऐसे काम किये जिन का करना उचित नहीं । और अबिमलिक ने  
 ११ अबिरहाम से कहा कि तू ने क्या देखा जो तू ने यह काम किया है । और अबि-  
 रहाम बोला कि मैं ने कहा कि निश्चय ईश्वर का भय इस स्थान में नहीं है और  
 १२ मेरी पत्नी के लिये वे मुझे मार डालेंगे । और वह तो निश्चय मेरी बहिन भी है  
 वह मेरे पिता की पुत्री है परन्तु मेरी माता की पुत्री नहीं सो मेरी पत्नी हो गई ।  
 १३ और यों हुआ कि जब ईश्वर ने मेरे पिता के घर से मुझे भ्रमाया तो मैं ने उसे  
 कहा कि मुझ पर तू यही अनुग्रह करियो कि सब स्थान में जहां कहीं हम जायें  
 १४ मेरे बिषय में कहियो कि वह मेरा भाई है । तब अबिमलिक ने भेड़ बकरी और  
 गाय बैल और दास और दासियां लेकर अबिरहाम को दिया और उस की पत्नी सरः को  
 १५ भी उसे फेर दिया । फिर अबिमलिक ने कहा कि देख मेरा देश तेरे आगे है जहां  
 १६ तेरी दृष्टि में भावे तहां रह । और सरः से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई को सहस्र  
 टुकड़ा चांदी दी है देख तेरे सारे संगियों के लिये और सभी के लिये वह तेरी  
 १७ आंखों की आठ होगी सो वह यों लफ्फनी गई । तब अबिरहाम ने ईश्वर की  
 प्रार्थना कि ईश्वर ने अबिरहाम और उस की पत्नी और उस की दासियों  
 १८ को चंगा किया और वे जड़े लगीं । क्योंकि परमेश्वर ने अबिरहाम की पत्नी सरः के  
 कारण अबिमलिक के सारे कोरों को बंद कर दिया था ॥

### इकौसवां पर्व ।

१ और अपने कहने के समान परमेश्वर ने सरः से भेंट किया और अपने वचन के  
 २ समान परमेश्वर ने सरः के बिषय में किया । और सरः गर्भिणी हुई और अबिरहाम  
 के लिये उस के बूढ़ापे में उसी समय में जो ईश्वर ने उसे कहा था एक बेटा जनी ।  
 ३ और अबिरहाम ने अपने बेटे का नाम जो उस के लिये उत्पन्न हुआ जिसे सरः उस  
 ४ के लिये जनी थी इजहाक रखवा । और ईश्वर की आज्ञा के समान अबिरहाम  
 ५ ने आठवें दिन अपने बेटे इजहाक का खतन किया । जब उस का बेटा इजहाक  
 ६ उस के लिये उत्पन्न हुआ तब अबिरहाम सौ बरस का बृद्ध था । तब सरः बोली  
 ७ कि ईश्वर ने मुझे हंसाया सारे सुनवैये मेरे लिये हंसेंगे । और वह बोली कि कौन  
 अबिरहाम से कहता कि सरः बालक को दूध पिलावेगी क्योंकि उस के बूढ़ापे में  
 मैं बेटा जनी ॥

८ और वह लड़का बड़ा और उस का दूध कुड़ाया गया और इजहाक के दूध  
 ९ कुड़ाने के दिन अबिरहाम ने बड़ी जेबनार किई । और सरः ने मिस्री हाजिरः के  
 १० बेटे को जिसे वह अबिरहाम के लिये जनी थी चिढ़ाते देखा । तब उस ने अबि-  
 रहाम से कहा कि आप इस लौंडी को और उस के बेटे को निकाल दीजिये

क्योंकि यह लौंडी का घेरा मेरे घेरे बजड़ाक के साथ अधिकारी न होगा । और ११  
 अपने घेरे के लिये यह धान अधिकार के घेरे कट्टी लगी । तब ईश्वर ने १२  
 अधिकार से कहा कि लड़के के और लौंडी के लिये मैं तुम्हें कट्टी न लगी  
 सब जो सरः ने तुम्हें कहा मान मे क्योंकि मेरा धन बजड़ाक ने मिला जायगा ।  
 और मैं उस लौंडी के घेरे से भी एक जाति बनाऊंगा क्योंकि यह मेरा धन है । १३  
 तब अधिकार ने यह लड़के उठके रोटी और एक घराने में जन लिया और १४  
 हाबिरः के कंधे पर धर दिया और लड़के को भी उसे नीपके उसे दिया किया ॥

और वह सब निकली और श्रीधर्मवत्त के घर में समता फिर । और जब १५  
 घराने का जन चुक गया तब उस ने उस लड़के को एक सारी के लिये दान दिया ।  
 और आप उस के समस्त एक तीर के लिये पर दूर जा दंडा क्योंकि वह बोली कि १६  
 मैं इस धानक को सुनू को न देखू और वह उस के समस्त घेरे लिये चित्ता चित्ता रोने ।  
 तब ईश्वर ने उस धानक को लज सुना और ईश्वर के दूत ने मर्या में से धारितः १७  
 को पुकारा और उसे कहा कि हे धारितः तुम्हें जग हुआ सब पर क्योंकि जहां  
 वह धानक है वहां ईश्वर ने उस के लज को बना है । उठ और उस लड़के को १८  
 उठा और उसे अपने हाथ में धर ले तो मैं तुम्हें एक धन जाति बनाऊंगा । और १९  
 ईश्वर ने उस को कार्य मंगल दिये तब उस ने धान को एक कुत्ता देखा और उस  
 ने जाके उस घराने को जन मे भरा और उस लड़के को पिलाया । और ईश्वर २०  
 उस लड़के के साथ जा और वह बड़ा और जन मे रग लिया और धनुषधारी हुआ ।  
 और उस ने घराने के जन में निवास किया और उस को मंगल मे मिर देश मे २१  
 उस के लिये एक पर्व मिरः ॥

और उस समय में तो हुआ कि अधिसानिक और उस को मेला के प्रधान फीकुल २२  
 ने अधिकार के कहा कि सब कार्यों में जो न करेगा हे ईश्वर मेरे मंत्र है ।  
 और अब यहां तुम्हें ईश्वर को प्योगा सब कि मैं तुम्हें और मेरे धन और मंगल २३  
 से जन न करेगा उन धनुषधारी के समान हो में ने तुम्हें पर किया है तुम्हें और उन  
 भूमि में जिस में नु दिका है और । तब अधिकार बोला कि मैं प्योगा कराऊंगा । २४  
 और अधिकार ने धान को एक दूत के लिये जिसे अधिसानिक के मंत्रों ने २५  
 वर्यनी में ने लिया वह अधिसानिक को दण्डा । तब अधिसानिक ने कहा कि मैं २६  
 नहीं जानता किम ने यह काम किया है और आप ने भी तो तुम्हें न फात और मैं  
 ने भी तो आज तो सुना । और अधिकार ने भेद और साथ धन लंके अधिसानिक २७  
 को दिये और उन दोनों ने नियम बांधा । तब अधिकार ने भेद में से मान मेरे २८  
 अनग रक्ष्य । और अधिसानिक ने अधिकार से कहा कि आप मे भेद के जात २९  
 मेरे यों अनग रक्ष्य है । और उस ने कहा हम कारण कि नु उन भेद के ३०  
 सात मेरे को मेरे धन मे ने कि वे मेरी माजी छोड़ें कि मैं ने यह कुत्ता रोदा है ।  
 हम कारण उस ने उस धान का नाम श्रीधर्मवत्त रक्ष्य प्योगि उन दोनों ने ३१  
 यहां आपुस में प्योगा कराई । मेा उन्होंने ने श्रीधर्मवत्त में नियम बांधा तब ३२  
 अधिसानिक और उस का प्रधान मंगल फीकुल उठे और फिलिस्तिनियों के देश में  
 फिर गये ॥

३३ तब उस ने बीअरसवअ से कुंज लगाया और वहाँ सनातन के ईश्वर परमेश्वर  
३४ का नाम लिया । और अबिरहाम फिलिस्ती के देश में बहुत दिन लों टिका ॥

वार्डमवां पर्व ।

- १ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि ईश्वर ने अबिरहाम की परीक्षा किई
- २ और उसे कहा हे अबिरहाम और वह बोला कि देख यहाँ हूँ । और उस ने कहा
- कि तू अपने बेटे को अपने एकलौते इजहाक को जिसे तू प्यार करता है ले और
- मेरियाह के देश में जा और वहाँ पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जा मैं तुझे बता-
- ३ जंगा उसे होम की भेंट के लिये चढ़ा । तब अबिरहाम ने तड़के उठकर अपने गदहे
- पर कांठी बांधी और अपने तरुणों में से दो को और अपने बेटे इजहाक को अपने
- साथ लिया और होम की भेंट के लिये लकड़ियां चीरीं और उठके उस स्थान को जा
- ४ ईश्वर ने उसे आज्ञा किई थी चला गया । तीसरे दिन अबिरहाम ने अपनी आंखें
- ५ ऊपर किई और उस स्थान को दूर से देखा । तब अबिरहाम ने अपने तरुणों से
- कहा कि गदहे के साथ यहीं ठहरो और मैं इस लड़के के साथ वहाँ लों जाता हूँ
- ६ और सेवा करके फिर तुम्हारे पास आऊंगा । तब अबिरहाम ने होम की भेंट की
- लकड़ियां लेकर अपने बेटे इजहाक पर लादीं और आग और कुरी अपने हाथ में
- ७ लिई और दोनों साथ साथ गये । और इजहाक अपने पिता अबिरहाम से बोला
- कि हे मेरे पिता और वह बोला हे मेरे बेटे मैं यहीं हूँ तब उस ने कहा कि देखिये
- ८ आग और लकड़ियां तो हैं पर होम की भेंट के लिये भेड़ कहां है । और अबि-
- ९ रहाम बोला कि हे मेरे बेटे ईश्वर होम की भेंट के लिये भेड़ आपही सिद्ध करेगा
- सो वे दोनों साथ साथ चले गये ॥
- १० और उस स्थान में जहां ईश्वर ने कहा था आये तब अबिरहाम ने वहाँ एक
- वेदी बनाई और उन लकड़ियों को वहाँ चुना और अपने बेटे इजहाक को बांधके
- ११ उस वेदी में लकड़ियों पर धरा । और अबिरहाम ने कुरी लेके अपने बेटे को घात
- १२ पुकारा कि अबिरहाम अबिरहाम और वह बोला यहीं हूँ । तब उस ने कहा कि
- अपना हाथ लड़के पर मत बढ़ा और उसे फुट मत कर क्योंकि अब मैं जानता हूँ कि
- तू ईश्वर से डरता है और तू ने अपने बेटे अपने एकलौते को मुझे न रख छोड़ा ।
- १३ तब अबिरहाम ने अपनी आंखें ऊपर करके देखा और व्या देखता है कि अपने
- पीछे एक मंढ़ा भाड़ी में सींगों से अटका हुआ है तब अबिरहाम ने जाके उस
- १४ मंढ़े को लिया और होम की भेंट के लिये अपने बेटे की संती चढ़ाया । और
- अबिरहाम ने उस स्थान का यह नाम रक्खा कि परमेश्वर देखेगा जैसा कि आज
- १५ लों कहा जाता है कि पहाड़ पर परमेश्वर देखा जायगा । फिर परमेश्वर के दूत
- १६ ने दोहराके स्वर्ग में से अबिरहाम को पुकारा । और कहा कि परमेश्वर कहता है
- कि मैं ने अपनी ही किरिया खाई है इस कारण कि तू ने यह कार्य किया और
- १७ अपने बेटे अपने एकलौते को न रख छोड़ा । कि मैं तुम्हें आशीस पर आशीस देऊंगा और
- आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बाल के समान तेरे वंश को बढ़ाऊंगा और
- १८ तेरे वंश अपने बैरी को फाटक के अधिकारी होंगे । और तेरे वंश में पृथिवी के

मारे जातिगण आशीम पावेंगे हम कारण कि तू ने मेरा शब्द माना है । और १९  
अधिरहाम अपने नम्रों के पास फिर आया और वे उठके एकट्ठे अधिरहाम को  
गये और अधिरहाम अधिरहाम में रहा ॥

और इन बानों के पीछे गया हुआ कि अधिरहाम को संदेश पहुंचा कि मित्रकः २०  
भी तेरे भाई नहर के लिये धानक जनी । अर्थात् ऊज उस का पीछेनांठा और उस २१  
का भाई धृज और कमल अराम का पिता । और ऊज और धृज और फिदास २२  
और इदलाफ और धनृण । और धनृण ने रियकः उण्णु दुई मिलकः अधिरहाम २३  
के भाई नहर के लिये ये आठ जनी । और उस की पुत्रीति जिस का नाम रामद २४  
या वह भी तियर और जहम और ताटाग और मयकः जनी ॥

तैहंमयां पश्य ।

और मरः की वय एक सौ सत्तारह वय की दुई मरः के जीवन के धरन रहने १  
ये । और मरः कायतययय में जो कनयन देश में रहने है मर गई तत्र अधि- २  
रहाम मरः के लिये जिलाप करने और रोने को आया ॥

और अधिरहाम अपने मृतक में उठ खड़ा हुआ और हित के घंटों में यह कहके ३  
बोला । कि मैं तुम में परदेगी और टिकवैया हूं तुम अपने यहां मुझे एक समाधि ४  
का स्थान अधिकार में दो जिसमें मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि में गाढ़ूं ॥

और हित के संतान ने अधिरहाम को उत्तर देके कहा । कि हे हमारे स्वामी ५  
हमारी सुनिये आप हमें देखने के अध्याय हैं सो आप हमारी समाधि में से चुनके ६  
एक में अपने मृतक को गाढ़िये हमें कोई अपनी समाधि आप में न रखे छोड़ेगा  
जिसमें आप अपने मृतक को गाढ़ें ॥

तत्र अधिरहाम खड़ा हुआ और उस देश के लोगों अर्थात् हित के संतान को ७  
प्रणाम किया । और उन में वातचीत करके कहा कि यदि तुम्हारा मन होवे कि ८  
मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि में अलग गाढ़ूं तो मेरी सुनो और मेरे लिये सुहर  
के घंटे इफ्फन में बिनो करो । जिसमें वह सकफीलः की कंदला मुझे देवे जो ९  
उस स्वयं के मित्राने पर है उस का पूरा मोल लेके मेरे वय में कर दे जिसमें मैं  
तुम्हें में एक समाधि का अधिकार रखूं ॥

और इफ्फन हित के संतान के सध्य में घास करता था और इफ्फन हित ने १०  
हित के संतान के और सव के सुने में जो नगर के फाटक में जाते थे अधिरहाम  
को उत्तर में कहा । नहीं मेरे स्वामी मेरी सुनिये मैं ने यह स्वयं आप को दिया है ११  
और वह कंदला जो उस में है आप को दिया है मैं ने अपने लोगों के घंटों के आगे  
आप को दिया है अपना मृतक गाढ़िये ॥

तत्र अधिरहाम ने उस देश के लोगों को प्रणाम किया । और उस देश के लोगों १२  
के सुने में वह इफ्फन में यों कहके बोला कि यदि तू देगा तो मेरी सुन ले मैं ने १३  
तुम्हें उस स्वयं के लिये रोकड़ दिया है मुझे ने और मैं अपने मृतक को यहां गाढ़ेंगा ॥

तत्र इफ्फन ने अधिरहाम को उत्तर देके कहा । मेरे स्वामी मेरी सुनिये उस १४  
भूमि का मोल चार सौ शकल चांदी है यह मेरे और आप के आगे क्या धम्नु है १५  
सो आप अपने मृतक को गाढ़िये ॥



१६ और अबिरहाम ने इफरून की मान लिये और अबिरहाम ने उस चांदी को इफरून के लिये तैल दिया जो उस ने दत्त के घंटों के सुनें में कटी थी अर्थात् १७ चार सौ शैकल चांदी जिन का चलन वैपारियों में था । सो इफरून का खेत जो मकफीलः में मसरी के आगे है वह खेत और कंदला जो उस में है और उस खेत १८ में के सारे पेड़ जो चारों ओर उस के मियाने में हैं । दत्त के संतान के आगे और सभी के आगे जो नगर के फाटक में से भीतर जाते थे अबिरहाम के अधिकार के लिये दृढ़ किये गये ॥

१९ और इस के पीछे अबिरहाम ने अपनी पत्नी सरः को मकफीलः के खेत की २० कंदला में जो मसरी के आगे है गाड़ा वही स्वसन कनआन देश में है । और वह खेत और उस में की कंदला दत्त के संतान से अबिरहाम के हाथ में समाधि- ॥ स्थान के लिये दृढ़ किये गये ॥

### चौबीसवां पर्व ।

१ और अबिरहाम बृद्ध और दिनी हुआ और परमेश्वर ने सब बातों में अबिरहाम २ को बर दिया था । और अबिरहाम ने अपने घर के पुराने सेवक को जो उस की ३ सारी संपत्ति का प्रधान था कहा कि अपना हाथ मेरी जांघ तले रख । और मैं तुझ से परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर और पृथिवी के ईश्वर की किरिया लेजंगा कि तू कनआनियों की लड़कियों में से जिन के मध्य में मैं रहता हूं मेरे बेटे के लिये ४ पत्नी न लेना । परन्तु तू मेरे देश और मेरे कुटुम्ब में जाइयो और मेरे बेटे बजहाक के लिये पत्नी लीजियो ॥

५ और उस सेवक ने उसे कहा कि क्या जाने वह स्त्री इस देश में मेरे संग आने को न चाहे तो क्या अवश्य मैं आप के बेटे को उस देश में जहां से आप आये हैं फिर ले जाऊं ॥

६ तब अबिरहाम ने उसे कहा चौकस रह तू मेरे बेटे को उधर फिर मत ले ७ जाना । परमेश्वर स्वर्ग का ईश्वर जो मेरे पिता के घर से और मेरी जन्मभूमि से मुझे निकाल लाया और जिस ने मुझे कहा और मुझ से किरिया खाके बोला कि मैं तेरे वंश को यह देश देजंगा वही तेरे आगे अपना दूत भेजेगा और वहीं से तू ८ मेरे बेटे के लिये पत्नी लेना । और यदि वह स्त्री तेरे साथ आने को न चाहे तो तू मेरी इस किरिया से छूट जायगा केवल मेरे बेटे को उधर फिर मत ले जा । ९ तब उस सेवक ने अपना हाथ आर्जन स्वामी अबिरहाम की जांघ तले रक्खा और उस बात के विषय में उस के आगे किरिया खाई ॥

१० और उस सेवक ने अपने स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट लिये और चल निकला क्योंकि उस के स्वामी की सारी संपत्ति उस के हाथ में थी सो वह उठा और ११ अरामनहरडम में नहूर के नगर को गया । और उस ने अपने ऊंटों को नगर के बाहर पानी के कुए के पास सांभ के समय में जब कि स्त्रियां पानी भरने को बाहर जाती थीं बैठाया ॥

१२ और कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम के ईश्वर मैं आप की विनती करता हूं आज मेरा कार्य सिद्ध कीजिये और मेरे स्वामी अबिरहाम पर दया कीजिये ।

देख मैं पानी के कुण पर खड़ा हूँ और नगर के पुंसों की चेष्टियाँ पानी भरने आनी १३ हैं । तो ऐसा देख कि यह कन्या जिसे मैं कहूँ कि अपना घड़ा उतार जिसमें मैं पीऊँ १४ और यह कह कि पी और मैं तेरे डंठों को भी पिनाऊँगी वही हो जिसे तू ने अपने पास बजड़ाक के लिये ठहराया है और इसी से मैं जानूँगा कि तू ने मेरे स्वामी पर दया किई है ॥

और इतनी बात मनामन करने ही ऐसा हुआ कि देखो रिक्कः जो अविष्टाम १५ के भाई नदूर की पत्नी मिलकः के बेटे वसुणन से उन्मत्त हुई थी अपना घड़ा अपने कांधे पर धरे हुए बाहर निकली । और यह कन्या बहुत अप्रसन्न और १६ कुमारी थी और उसे पुन्य अज्ञान था और वह उन कुण पर गई और अपना घड़ा भरके ऊपर आई । तब यह मयक उस की सेंट को दौड़ा और घाना में १७ तेरी छिनती करना हूँ अपने घड़े से छोड़ा पानी पिना । और वह बोली कि पी- १८ लिये मेरे प्रभु और उस ने फुरती करके घड़ा माथ पर उतारके उसे पिनाया । तब १९ उसे पिना चुकी तो बोली मैं तेरे डंठों के लिये भी जय नों के जल से तुम हो खाँचनी लाऊँगी । और उस ने फुरती करके अपना घड़ा फट्टे में डालेना और फिर २० कुण पर भग्ने को दौड़ी और उस के मय डंठों के लिये खाँचा । और यह पुन्य २१ आश्चर्य करके देख रहा कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सुफल किई है कि नहीं ।

और यों हुआ कि जय डंठ पी चुके तो उस पुन्य ने आधे मैकन भर सोने की २२ एक नथ और दस भर सोने के दो खड़े उस के हाथों के लिये निराने । और २३ कहा कि तू किस की बेटाई है मुझे बता मैं तेरी छिनती करना हूँ घा तेरे पिता के घर में हमारे लिये रात भर टिकने का स्थान है । और उस ने उसे कोता कि २४ मैं मिलकः के बेटे वसुणन की कन्या हूँ जिसे यह नदूर के लिये जनी । और उस ने २५ उसे कहा कि हमारे यहाँ भूसा चारा भी बहुत है रात भर टिकने का स्थान भी । तब उस पुन्य ने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की वंदना किई । और कहा २६ कि परमेश्वर मेरे स्वामी अविष्टाम का दृश्य धन्य है जिस ने मेरे स्वामी को अपनी दया और अपनी मद्दारी दिना न छोड़ा मार्ग में परमेश्वर ने मेरे स्वामी के भाइयों के घर की और मेरी अगुआई किई ॥

तब वह लड़की दौड़ी और अपनी माता के घर में इन बातों के समान संदेश २७ कहा । और लावन नाम रिक्कः का एक भाई था और लावन बाहर कुण पर उस २८ मनुष्य को दौड़ा । और यों हुआ कि जय उस ने यह नथ और खड़े अपनी २९ दाहिन के हाथों में देखे और जय उस ने अपनी दाहिन रिक्कः से ये बातें कहने सुनीं कि इस मनुष्य ने मुझे यों कहा तब यह उस पुन्य पास आया और वधा देखता है कि यह डंठों के पास कुण पर खड़ा है । और फाटा कि हे परमेश्वर के ३० आशीर्षित तू भीतर था तू किस लिये बाहर खड़ा है क्योंकि मैं ने घर सिद्ध किया है और डंठों के लिये स्थान है । और यह पुन्य घर में आया और उस ने अपने ३१ डंठों के पलान खाते और डंठों के लिये भूसा चारा और उस के और लोगों के जो उस के माथ से चरण धाने को जल दिया । और भोलन उस के आगे खड़ा गया ३२ पर यह बोला कि जय सों मैं अपना संदेश न पहुँचाऊँ मैं न खाऊँगा तब यह बोला कहिये ॥



३४ तब उस ने कहा कि मैं अबिरहाम का सेवक हूँ । और परमेश्वर ने मेरे स्वामी  
 ३५ को बहुत सा वर दिया है और वह महान हुआ है और उस ने उसे भुँड और ठोकर  
 ३६ और सोना चांदी और दास और दासियाँ और जंत और गदहे दिये हैं । और मेरे  
 ३७ स्वामी की पत्नी सरः बुढ़ापे में उस के लिये घेठा जनी और उस ने अपना मध्य  
 ३८ कुछ उसे दिया है । और मेरे स्वामी ने यह कदके मुझ से किरिया लिई कि तू  
 ३९ कनआनियों की बेटियों में से जिन के देश में मैं रहता हूँ मेरे घेठे के लिये पत्नी  
 ४० मत लीजियो । परन्तु मेरे पिता के घराने और मेरे कुटुम्ब में जाइयो और मेरे घेठे के  
 ४१ लिये पत्नी लाइयो । और मैं ने अपने स्वामी से कहा गया जाने वह स्त्री मेरे साथ  
 ४२ न आवे । तब उस ने मुझे कहा कि परमेश्वर जिस के आगे मैं चलता हूँ अपना  
 ४३ दूत तेरे संग भेजेगा और तेरी यात्रा सुफल करेगा और तू मेरे कुटुम्ब और मेरे  
 ४४ पिता के घराने से मेरे घेठे के लिये पत्नी लीजियो । और जब तू मेरे कुटुम्ब में  
 ४५ आवे तब तू मेरी किरिया से बाहर होगा और यदि वे तुझे न दें तो तू मेरी  
 ४६ किरिया से बाहर हो जायगा । सो मैं आज के दिन कुए पर आया और कहा कि  
 ४७ हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम के ईश्वर यदि तू अब मेरी यात्रा सुफल करे ।  
 ४८ देख मैं जल के कुए पर खड़ा हूँ और यों होगा कि जो कुमारी जल भरने निकले  
 ४९ और मैं उसे कहूँ कि मैं तेरी विनती करता हूँ कि अपने घड़े से मुझे थोड़ा पानी  
 ५० पिला । और वह मुझे कहे कि तू भी पी और मैं तेरे जंटों के लिये भी भहंगी  
 ५१ तो वही वह स्त्री होवे जिसे परमेश्वर ने मेरे स्वामी के घेठे के लिये ठहराया है ।  
 ५२ इतनी बात मेरे मन में समाप्त न होते ही देखो रिबकः अपने कंधे पर घड़ा लेकर  
 ५३ बाहर निकली और वह कुए पर उतरी और खींचा और मैं ने उसे कहा कि मुझे  
 ५४ पिला । तब उस ने फुरती करके अपना घड़ा उतारा और बोली कि पी और मैं  
 ५५ तेरे जंटों को भी पिलाऊंगी सो मैं ने पिया और उस ने जंटों को भी पिलाया । फिर  
 ५६ मैं ने उससे पूछा और कहा कि तू किस की बेटी है और वह बोली कि नहूर के  
 ५७ घेठे बतूएल की लड़की जिसे मिलकः उस के लिये जनी और मैं ने नथ उस की  
 ५८ नाक में और खड़वे उस के हाथों में डाले । और मैं ने अपना सिर झुकाया और  
 ५९ परमेश्वर की स्तुति किई और अपने स्वामी अबिरहाम के ईश्वर परमेश्वर का  
 ६० धन्य माना जिस ने मुझे ठीक मार्ग में मेरी अगुआई किई कि अपने स्वामी के  
 ६१ भाई की बेटी उस के घेठे के लिये लेजं । सो अब यदि तुम कृपा और सच्चाई से  
 ६२ मेरे स्वामी के साथ व्यवहार किया चाहो तो मुझ से कहो और यदि नहीं तो मुझ  
 ६३ से कहो कि मैं दहिने अथवा दायें हाथ फिहं ॥

५४ तब लावन और बतूएल ने उत्तर दिया और कहा कि यह बात परमेश्वर की  
 ५५ और से है हम तुम्हें बुरा अथवा भला नहीं कह सक्ते । देख रिबकः तेरे आगे  
 ५६ है इसे ले और जा और जैसा परमेश्वर ने कहा है वह तेरे स्वामी के घेठे की पत्नी  
 ५७ हो । और ऐसा हुआ कि जब अबिरहाम के सेवक ने ये बातें सुनीं तब भूमि लों  
 ५८ परमेश्वर के आगे दंडवत किई । और सेवक ने चांदी और सोने के गहने और  
 ५९ पहिरावा निकाला और रिबकः को दिया और उस ने उस के भाई और उस की  
 ६० माता को भी बहुमूल्य वस्तु दिई । और उस ने और उस के साथी मनुष्यों ने

खाया और पीया और रात भर ठहरे और वे विद्यान को उठे और उस ने कहा कि सुभे मेरे म्यामी पास भोजिये । और उस को भाई और उस को माना ने कहा ५५ कि कन्या को हमारे संग एक उस दिन रहने दीजिये उस को पीछे ब्रह्म जायगी । और उस ने उन्हीं कहा कि सुभे मत रोको कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सुफल किई ५६ है सुभे विदा करो कि मैं अपने म्यामी पास जाऊँ । और वे बोले उस उस कन्या ५७ को बुलाये और उमी से पूछे । तब उन्हीं ने रिचकः को बुलाया और उसे कहा ५८ कि तू इस पुरुष के साथ जायगी और ब्रह्म बोली कि जाऊंगी । सो उन्हीं ने ५९ अपनी बलिष्ठ रिचकः और उस को दाई और अचिरहाम के मेयक और उस को लोगों को विदा किया । और उन्हीं ने रिचकः को आशीर्वाद दिया और उसे कहा कि ६० तू हमारी बलिष्ठ है कहोरे की माता हो और तेरा संग उन के द्वारे का दो उसे घर रखते हैं अधिकारी लोग ।

और रिचकः और उस को मछोनियां उठीं और कंटों पर चढ़के उस मनुष्य के ६१ पीछे हुए और उस मेयक ने रिचकः को लिया और अपना मार्ग पकड़ा । और ६२ इज्जदाक सेरेजीयतेदर्जी के कुण पर मार्ग में आ निकला या शोकिक ब्रह्म दक्षिण देश में रहता था । और इज्जदाक संभ्रमकाल को ध्यान करने के लिये गंत को ६३ निकला और उस ने अपनी आंखें ऊपर किई और क्या देखता है कि कंट चले आते हैं । और रिचकः ने अपनी आंखें उठाई और जब उस ने इज्जदाक को देखा ६४ तो कंट पर से उतर पड़ी । और उस ने मेयक से पूछा कि यह जन जो गंत में ६५ हमारी भेंट को चला आता है कौन है और मेयक ने कहा कि यह मेरा म्यामी है और उस ने छूछट लेके अपने तखें ठाँपा । तब मेयक ने सब कुछ जो उस ने ६६ किया था इज्जदाक से कहा । और इज्जदाक उसे अपनी माता सरः के तंत्र में लाया ६७ और रिचकः को लिया और यह उस की पत्नी हो गई और उस ने उसे प्यार किया और इज्जदाक ने अपनी माता के मरने के पीछे शान्ति पाई ॥

पचीसवां पद्य ।

तब अचिरहाम ने एक पत्नी लिई और उस का नाम कतूरः था । और यह उस १ के लिये जिमगन और युक्रमान और मिदान और मिदयान और इसघाक और सूर्य को लनी । और युक्रमान से सिधा और वदान उन्पज हुए और वदान के घेरे अमूर २ और लतूमी और नौमी थे । और मिदयान के घेरे गेफः और गम और इनुक और अविदा और इनुदाआ थे ये सब कतूरः के घेरे थे । और अचिरहाम ने अपना ३ सब कुछ इज्जदाक को दिया । परन्तु उन मूर्खताओं के घेरे को जो अचिरहाम की ४ थीं अचिरहाम ने दान दिये और अपने जीते जी उन्हीं अपने घेरे इज्जदाक पास से पूर्य देश में भेज दिया ॥

और अचिरहाम के जीवन के दिन जिन में ब्रह्म जीता रहा एक सौ पचहत्तर ५ बरस थे । तब अचिरहाम ने अच्छे बृह्म वय में परिपूर्ण और बृह्म मनुष्य लोके प्राण ६ त्यागा और अपने लोगों में बटोरा गया । और उस के घेरे इज्जदाक और इसमय- ७ रेल ने मकफीलः की कंदला में दित्ती सुहर के घेरे एफयन के गंत में जो नमरी के आगे है उसे गाड़ा । यही गंत अचिरहाम ने हित के घेरे से माल लिया था १०

११ अबिरहाम और उस की पत्नी सरः वहीं गाढ़े गये । और अबिरहाम के मरने के पीछे यों हुआ कि ईश्वर ने उस के बेटे इजहाक को आशीस दिया और इजहाक मेरेजीवतेदर्शी के कुए के पास रहता था ॥

१२ और अबिरहाम के बेटे इसमअरेल की वंशावली जिसे सरः की लौंडी मिसी

१३ हाजिरः अबिरहाम के लिये जनी थी ये हैं । और उन की वंशावली की रीति के समान इसमअरेल के बेटों के नाम ये हैं इसमअरेल का पहिलौंठा नवीत और

१४ कीदार और अदविएल और मिवसास । और मिसमाअ और दूमः और मम्सा ।

१५ हदर और तैमा इतूर नफीस और किदिमः । ये इसमअरेल के बेटे हैं और उन के नाम उन की वसतियों और उन की गाढ़ियों में ये हैं ये अपने जातिगणों के द्वार

१६ अध्यक्ष थे । और इसमअरेल के जीवन के वरस एक सौ सैंतीस थे कि उस ने अपना

१७ प्राण त्यागा और मर गया और अपने लोगों में वदुर गया । और वे दूर्यालः से

सूर लों जो असूर के मार्ग में मित के आगे है वसते थे उस ने अपने मारे भाइयों के आगे बास किया ॥

१८ और अबिरहाम के बेटे इजहाक की वंशावली यह है कि अबिरहाम से

२० इजहाक उत्पन्न हुआ । और इजहाक ने चालीस वरस की वय में रिक्कः से

बिवाह किया वह फद्दानअराम के सुरियानी बतूरल की बेटी और सुरियानी

२१ लावन की बहिन थी । और इजहाक ने अपनी पत्नी के लिये परमेश्वर से विनती

२२ किई क्योंकि वह बांझ थी और परमेश्वर ने उस की विनती मानी और उस की

२३ पत्नी रिक्कः गर्भिणी हुई । और उस के पेट में बालक आपुस में छेड़ाछेड़ी करने

लगे तब उस ने कहा यदि यों तो ऐसी ब्यो हूं और वह परमेश्वर से ब्रूकने को

२४ गई । तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे गर्भ में दो जातिगण हैं और तेरे काय

से दो रीति के लोग अलग होंगे और एक लोग दूसरे लोग से बलवंत होगा और

२५ जेष्ट कनिष्ठ की सेवा करेगा । और जब उस के जन्म के दिन पूरे हुए तो देखो कि

२६ उस के गर्भ में यमल थे । सो पहिला ऐसा जैसा रोम का पहिरावा होता है

बालों में छिपा हुआ लाल रंग का निकला और उन्होंने ने उस का नाम ऐसौ

२७ रखवा । और उस के पीछे उस का भाई निकला और उस का हाथ ऐसौ की रङ्गी

से लगा हुआ था और उस का नाम यश्कूब रखवा गया जब वह उन्हें जनी तो

इजहाक की वय साठ वरस की थी ॥

२८ और लड़के बड़े और ऐसौ चतुर अहेरी और खेत का रहजैया था और यश्कूब

२९ सूधा मनुष्य तंबू में रहा करता था । और इजहाक ऐसौ को प्यार करता था

क्योंकि वह उस की अहेर से खाता था परन्तु रिक्कः यश्कूब को प्यार करती

३० थी । और यश्कूब ने लपसी पकाई और ऐसौ खेत से आया और वह थक गया

था । और ऐसौ ने यश्कूब से कहा मैं तेरी विनती करता हूं कि इस लाल लाल

में से मुझे खिला क्योंकि मैं मूर्छित हूं इस लिये उस का नाम अदूम कहा गया ।

३१ तब यश्कूब ने कहा कि आज अपना जन्मपद मेरे हाथ बेच । तब ऐसौ ने कहा

३२ देख मैं मरने पर हूं और इस जन्मपद से मुझे क्या लाभ होगा । तब यश्कूब ने

कहा कि आज मुझ से किरिया खा और उस ने उससे किरिया खाई और अपना

जन्मपद यशकृष्ण के छात्र चेचा । तब यशकृष्ण ने रोटी और मसूर की दाल की ३४  
लपमी गैसा को दिई और उस ने खाया और पीया और उठके चला गया यों गैसा  
ने अपने जन्मपद की निन्दा किई ॥

हज्जामका पद्य ।

और उस देश में पहिले अकाल को छोड़ जो अधिराज्य के दिनों में पड़ा १  
था फिर अकाल पड़ा तब हज्जामक अधिमलिक पास जो फिलिस्तिनियों का राजा  
था जिरार को गया ॥

और परमेश्वर ने उस पर प्रगट होके कहा मिय को मत उतर जा जहाँ में २  
तुम्हें कहें उस देश में निवास कर । न उस देश में ठिक और में तेरे साथ होऊंगा ३  
और तुम्हें आशीस देऊंगा क्योंकि मैं तुम्हें और तेरे वंश को इन सारे देशों को  
देऊंगा और मैं उस किरिया को हो में ने तेरे पिता अधिराज्य में ग्राई है पूर्ण  
करेगा । और मैं तेरे वंश को आकाश के तारों की नाई बट्ठाऊंगा और ये नमन्य ४  
देश तेरे वंश को देऊंगा और पुत्रियों के सारे जालिमन तेरे वंश में आशीस  
पावेंगे । उस लिये कि अधिराज्य ने मेरे जन्म को माना और मेरी आज्ञाओं और ५  
मेरी बातों और मेरी विधि और मेरी दायम्य को पालन किया ॥

मैं हज्जामक जिरार में गया । और वहाँ के घामियों ने उम्मे उस की पर्वी के ६  
विषय में पूछा तब वह बोला कि वह मेरी विधि है क्योंकि वह हमे अपना पर्वी  
फटते हुए डरा न हो कि वहाँ के लोग मियक के लिये हमे मार जाने क्योंकि  
वह देखने में सुन्दरी थी । और यों हुआ कि जब वह वहाँ बहुत दिन लों रहा ७  
तो फिलिस्तिनियों के राजा अधिमलिक ने भोगने में दृष्टि किई और देखा तो क्या  
देखता है कि हज्जामक अपनी पर्वी मियक में करने लगा करता है । तब अधिमलिक ८  
ने हज्जामक को बुलाके कहा देख वह निश्चय तेरी पर्वी है फिर तू ने घोसकर कहा  
कि वह मेरी विधि है तब हज्जामक ने उम्मे कहा इस लिये कि मैं ने कहा न हो  
कि मैं उस के कारण मारा जाऊँ । और अधिमलिक बोला यह क्या है जो तू ने १०  
हम से किया है जाने ही पर था कि लोगों में से कोई तेरी पर्वी के साथ अकर्म  
करता और तू दोष हम पर लाता । तब अधिमलिक ने अपने सत्र लोगों को वह ११  
आज्ञा किई कि जो कोई इस पुनप को अथवा उस की पर्वी को दूँगा निश्चय  
घात किया जायगा ॥

तब हज्जामक ने उस देश में गेली किई और उस घरम मैं गुना प्राप्त किया १२  
और परमेश्वर ने उसे आशीस दिया । और वह मनुष्य बढ़ गया और उन की १३  
बढ़ती होनी चली जाती यों वहाँ लों कि वह अत्यंत बड़ा हो गया । और वह १४  
भुंड और छार और बहुत से सेवकों का स्वामी हुआ और फिलिस्तिनियों ने उम्मे  
डाह किया । और सारे कुर जो उस के पिता के सेवकों ने उस के पिता अधि- १५  
राज्य के समय में खाई थे फिलिस्तिनियों ने डाँप दिये और उन्हें मट्टी से भर दिये ।  
मैं अधिमलिक ने हज्जामक से कहा कि हमारे पास से जा क्योंकि तू हम से अति १६  
सामर्थी है ॥

और हज्जामक वहाँ से गया और अपना तंयू जिरार की तराई में खड़ा किया १७

- १८ और वहीं रहा । और इजहाक ने जल की उन कुओं को जो उन्होंने ने उस के पिता अविरहाम के दिनों में खोदे थे फिर खोदा क्योंकि फिलिस्तीनों ने अविरहाम के मरने के पीछे उन्हें ठांप दिया था और उस ने उन के वही नाम रखे जो उस १९ के पिता ने रखे थे । और इजहाक के सेवकों ने तराई में खोदा और वहां गया २० कुआ जिस में जल का सोता था पाया । और जिरार के चरवाहों ने इजहाक के चरवाहों से यह कहके भगाड़ा किया कि यह जल हमारा है और उन के भगाड़ा २१ करने के कारण उस ने उस कुए का नाम भगाड़ा रक्खा । और उन्होंने ने दूसरा कुआ खोदा और उस के लिये भी भगाड़ा हुआ और उस ने उस का नाम गिरोध रक्खा ॥
- २२ और वह वहां से आगे चला और दूसरा कुआ खोदा और उन्होंने ने उस के लिये भगाड़ा न किया और उस ने उस का नाम फैलाव रक्खा और उस ने कहा कि अब परमेश्वर ने हम को फैलाया है और हम इस भूमि में फलवंत होंगे ॥
- २३ और वह वहां से बीअरसबअ को गया । और परमेश्वर ने उसी रात उसे दर्शन देके कहा कि मैं तेरे पिता अविरहाम का ईश्वर हूं मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और तुझे आशीस देऊंगा और अपने दास अविरहाम के लिये तेरा वंश बढ़ाऊंगा । २४ और उस ने वहां एक वेदी बनाई और परमेश्वर का नाम लिया और वहां अपना तंबू खड़ा किया और इजहाक के सेवकों ने वहां एक कुआ खोदा ॥
- २५ तब जिरार से अविमलिक और एक उस के मित्रों में से अखूजत और उस के २६ सेनापति फीकुल उस पास गये । और इजहाक ने उन्हें कहा कि तुम किस लिये मुझ पास आये हो यद्यपि तुम मुझ से दूर रखते हो और तुम ने मुझे अपने पास २७ से निकाल दिया है । और वे बोले कि देखते हुए हम ने देखा कि परमेश्वर तेरे संग है सो हम ने कहा कि हम और तू आपुस में किरिया खावें और तेरे साथ २८ वाचा बांधें । जैसा हम ने तुम्हें नहीं हुआ और तुम से भलाई होइ कुछ नहीं किया और तुम्हें कुशल से भेजा तू भी हमें न सता तू अब परमेश्वर का आशीषित २९ है । और उस ने उन के लिये जेवनार बनाया और उन्होंने ने खाया पीया । और बिहान को तड़के उठे और आपुस में किरिया खाई और इजहाक ने उन्हें बिदा ३० किया और वे उस पास से कुशल से गये । और उसी दिन यों हुआ कि इजहाक के सेवक आये और अपने खोदे हुए कुए के बिषय में कहा और बोले कि हम ने ३१ जल पाया । सो उस ने उस का नाम सबअ रक्खा इस लिये उस नगर का नाम आज लों बीअरसबअ है ॥
- ३२ और उसी जब चालीस बरस का हुआ तब उस ने हिती बीअरी की बेटी यहु- ३३ दियत को और हिती सेलून की बेटी वशमत को पत्नी किया । और वह इजहाक और रिबक के लिये मन को कड़वाहट का कारण हुई ॥

सत्ताईसवां पर्व ।

- १ और यों हुआ कि जब इजहाक बूढ़ा हुआ और उस की आंखें धुन्धला गईं २ ऐसा कि वह देख न सक्ता था तो उस ने अपने जेठे बेटे इसौ को बुलाया और ३ उसे कहा कि हे मेरे बेटे और वह इससे बोला देखो यहीं हूं । तब उस ने कहा

कि देखिये मैं बूढ़ा हूँ और मैं अपने मरने का दिन नहीं जानता । मेरा अन्न तू ३  
अपना छणियार अर्थात् अपनी निखंग और अपना धनुष लीजिये और वन को  
जाइये और मेरे लिये अछेर कर । और मेरी रुचि के समान स्यादित भोजन पकाके ४  
मेरे पास ला और मैं खाऊँगा जिसमें अपने मरने के आगे मेरा प्राण तुम्हें आशीस  
देवे । और जब इज्जदाक अपने घेरे समीप में घात करेगा था तब रियकः ने सुना ५  
और जब समीप वन में गया कि अछेर करे और लाये ॥

तब रियकः ने अपने घेरे यशकूय से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई समीप में तेरे ६  
पिता को यह कहते सुना । कि मेरे लिये अछेर का सांस ला और मेरे लिये स्या- ७  
दित भोजन पका और मैं खाऊँगा और अपने मरने में पहिले परमेश्वर के आगे तुम्हें  
आशीस देऊँगा । मेरा अन्न है मेरे घेरे मेरी आत्मा के समान मेरी घात का मान । ८  
अन्न भुँड में जाइये और वहाँ से चकरी को दो अच्छे से मेरे लिये लीजिये और मैं ९  
तेरे पिता की रुचि के समान वन में स्यादित भोजन बनाऊँगी । और तू अपने १०  
पिता के पास ले जाइया जिसमें वह खाए और अपने मरने से आगे तुम्हें आशीस  
देवे ॥

तब यशकूय ने अपनी माता रियकः से कहा देख मेरा भाई समीप में रोश्नार मनुष्य ११  
है और मैं चिकना मनुष्य हूँ । कदाचित मेरा पिता तुम्हें टटोलने और मैं उस की १२  
दृष्टि में निन्दक की नाई टटलूँ और आशीस नहीं परन्तु अपने ऊपर गाय लाऊँ ।  
तब उस की माता ने उसे कहा कि तब आप रुक पर लाये हैं मेरे घेरे तू केवल १३  
मेरी घात मान और जाके मेरे लिये ले । सो वह गया और लिया और अपनी १४  
माता पास लाया और उस की माता ने उस के पिता की रुचि के समान स्यादित  
भोजन बनाया ॥

और रियकः ने घर में से अपने जेठे घेरे समीप का अच्छा पहिरावा लिया और १५  
अपने घेरे घेरे यशकूय को पहिनाया । प्राण चकरी के संसों का चमड़ा उस के १६  
हाथों और उस के गले की चिकनाई पर लपेटा । और अपना बनाया हुआ स्या- १७  
दित भोजन और रोटी अपने घेरे यशकूय के हाथ दिई ॥

और वह अपने पिता के पास जाके बोला है मेरे पिता और वह बोला मैं १८  
यहाँ हूँ तू कौन है ते मेरे घेरे । तब यशकूय अपने पिता से बोला कि मैं आप का १९  
पहिलेवाटा ऐसा हूँ आप के कहने के समान मैं ने किया है उठ बैठिये और मेरी  
अछेर के सांस में से खाइये जिसमें आप का प्राण तुम्हें आशीस देवे । तब इज्जदाक २०  
ने अपने घेरे से कहा कि यह क्योंकर है कि तू ने ऐसा घरा पाया है मेरे घेरे और वह  
बोला इस लिये कि परमेश्वर आप का दृश्य मेरे आगे लाया । तब इज्जदाक ने २१  
यशकूय से कहा कि ते मेरे घेरे मेरे पास आइये जिसमें मैं तुम्हें टटोलूँ कि निश्चय  
तू मेरा घेरा समीप है कि नहीं । तब यशकूय अपने पिता इज्जदाक पास गया और २२  
उस ने उसे टटोलके कहा कि शब्द तो यशकूय का शब्द है पर हाथ ऐसा के हाथ  
हैं । और उस ने उसे न पहिचाना इस लिये कि उस के हाथ उस के भाई समीप २३  
के हाथों की नाई रोश्नार थे सो उस ने उसे आशीस दिया । और कहा कि तू २४  
मेरा वही घेरा समीप ही है और वह बोला कि मैं वही हूँ । और उस ने कहा कि २५



- तू मेरे पास ला कि मैं अपने बेटे की अहेर के मांस से खाऊँ जिसमें मेरा प्राण तुझे  
 आशीस दे सो वह उस पास लाया और उस ने खाया और वह उस के लिये  
 २६ दाखरस लाया और उस ने पीया । तब उस के पिता इजहाक ने उसे कहा कि  
 २७ हे मेरे बेटे अब पास आ और मुझे चूम । और वह पास आया और उसे चूसा  
 और उस ने उस के पहिरावा की बास पाई और उसे आशीस दिया और कहा कि  
 देख मेरे बेटे का गंध उस खेत के गंध की नाई है जिस पर परमेश्वर ने आशीस  
 २८ दिया है । और ईश्वर तुझे आकाश की ओस और पृथिवी की चिकनाई और  
 २९ बहुत से अन्न और दाखरस देवे । लोग तेरी सेवा करें और जातिगण तेरे आगे  
 भुक्के तू अपने भाइयों का प्रभु हो और तेरी मा के बेटे तेरे आगे भुक्के जो तुझे  
 खाये सो खापित और जो तुझे आशीर्वाद देवे सो आशीषित होवे ॥
- ३० और यों हुआ कि ज्योंही इजहाक यश्कूव को आशीस दे चुका और यश्कूव  
 के अपने पिता इजहाक के आगे से बाहर जाते ही उस का भाई एसौ अपनी  
 ३१ अहेर से फिरा । और उस ने भी स्वादित भोजन बनाया और अपने पिता पास  
 लाया और अपने पिता से कहा मेरा पिता उठे और अपने बेटे की अहेर के मांस  
 ३२ में से खाये जिसमें आप का प्राण मुझे आशीस देवे । तब उस के पिता इजहाक  
 ने उसे कहा कि तू कौन है और वह बोला कि मैं आप का बेटा आप का  
 ३३ पहिलौंठा एसौ हूँ । तब इजहाक बड़ी कंपकंपी से कांपा और बोला वह तो  
 कौन था और कहाँ है जो अहेर करके मुझ पास अहेर का मांस लाया और मैं  
 ने सब में से तेरे आने के आगे खाया है और उसे आशीस दिया है हाँ वह  
 ३४ आशीषित होगा । एसौ अपने पिता की ये बातें सुनके बहुत चिल्लाया और फूट  
 फूटके रोया और अपने पिता से कहा मुझे भी मुझे हे मेरे पिता आशीस दीजिये ।  
 ३५ और वह बोला कि तेरा भाई छल से आया और तेरी आशीस ले गया । तब  
 उस ने कहा क्या उस का नाम ठीक यश्कूव नहीं कहावता क्योंकि उस ने  
 दोहराके मुझे अड़ंगा मारा उस ने मेरा जन्मपद ले लिया और देखो अब उस ने  
 मेरी आशीस लिई है और उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये कोई आशीस नहीं  
 ३७ रख छोड़ी । तब इजहाक ने एसौ को उत्तर देके कहा कि देख मैं ने उसे तेरा  
 प्रभु किया और उस के सारे भाइयों को उस की सेवकाई में दिया और अन्न और  
 ३८ दाखरस से उस का सहारा किया अब हे मेरे बेटे तेरे लिये मैं क्या करूँ । तब  
 एसौ ने अपने पिता से कहा हे मेरे पिता क्या आप पास एक ही आशीस है हे  
 ३९ मेरे पिता मुझे मुझे भी आशीस दीजिये और एसौ चिल्ला चिल्ला रोया । तब उस  
 के पिता इजहाक ने उत्तर दिया और उम्से कहा कि देख भूमि की चिकनाई और  
 ४० ऊपर से आकाश की ओस में तेरा तंबू होगा । और तू अपने खड्ग से जीयेगा  
 और अपने भाई की सेवा करेगा और यों होगा कि जब तू घूमता फिरता रहेगा  
 तो उस का जूआ अपने कांधे पर से तोड़ फेंकेगा ॥
- ४१ सो उस आशीस के कारण जिसे उस के पिता ने उसे दिया था एसौ ने यश्कूव  
 का घेर रक्खा और एसौ ने अपने मन में कहा कि मेरे पितृशोक के दिन आते हैं  
 ४२ और मैं अपने भाई यश्कूव को मार डालूंगा । और रिबक को उस के जेठे बेटे

समै की ये बातें कही गईं तब उस ने अपने कुछे बैठे यशकृत्य को बुला भेजा और उसने कहा कि देख तेरा भाई समै तुझे बात करने को तेरे विषय में अपने को शान्ति देता है । सो अब हे मेरे बेटे तू मेरा कहा मान और उठ मेरे भाई लायन ४३ पास दरान को भाग जा । और घाटे दिन उस के साथ रह जब तू तेरे भाई ४४ का कोप जाता रहे । जब तू तेरे भाई का क्रोध तुझ में न फिरे और तू ने ४५ उससे किया है सो भूल जाय तब मैं तुझे यहां से बुला भेजूंगा जिस लिये एकही दिन मैं तुम दोनों को ग्राहं ॥

तब विष्णुः ने वज्रदाक से कहा कि मैं दिन की घंटियों के कारण अपने ४६ जीवन में सकल हूं सो यदि यशकृत्य दिन की घंटियों में से जैसी हम देश की लड़कियां हैं लेवे तो मेरे जीवन में क्या फल है ॥

अठारहम्वां पर्व ।

और वज्रदाक ने यशकृत्य को बुलाया और उसे आशीस दिया और उसे आत्मा १ दिई और उसने कहा कि तू कन्यानी लड़कियों में से पदों न लेना । उठ फट्टान- २ ग्राम में अपने नाना वतुगल के घर जा और यहां से अपने नाम लायन की लड़कियों में से पदों ले । और मर्यसामर्षी मर्यशान्तमान तुझे आशीस देवे और ३ तुझे फलदान करे और तुझे बड़ाये जिसमें तू लोगों का भरण होवे । और अवि- ४ रदास की आशीस तुझे और तेरे वंश को देवे जिसमें तू अपने पिताय की भूमि को जो देश्यर ने अविमदास को दिए अधिकार में पावे । तब वज्रदाक ५ ने यशकृत्य को विदा किया और वह फट्टानग्राम में रुगियां वतुगल के घंटे लायन पास गया जो यशकृत्य और समै को माता विष्णुः का भाई था ॥

और समै ने जब देखा कि वज्रदाक ने यशकृत्य को आशीस दिया और उसे ६ फट्टानग्राम में पदों लेने को यहां भेजा और उस ने उसे आशीस देके और आत्मा देके कहा कि तू कन्यानी लड़कियों में से पदों न लेना । और यशकृत्य ने अपने ७ पिता माता को बात मानी और फट्टानग्राम को गया । और समै ने यह भा ८ देखा कि कन्यानी लड़कियां मेरे पिता को दूष्टु नें बुरी हैं । तब समै इसमशरुन ९ कने गया और अविमदास के बेटे इसमशरुन की घंटी साजनत को जो नद्यात की घंटिन थी अपनी पवित्रों में लिया ॥

और यशकृत्य वीश्रमश्रय में निकलके दरान को और गया । और एक स्थान १० में ठिका और रात भर रहा क्योंकि सूर्य अस्त हुआ था और उस ने उस स्थान के पत्थरों में से लिया और अपना उल्लास किया और यहां मान को लेट गया । और ११ उस ने स्वप्न देखा और देखे कि एक माटी पृथिवी पर धरी है और उस की टोंक स्वर्ग में लगी थी और वया देवता है कि देश्यर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं । और देखा कि परमेश्वर उस के ऊपर खड़ा है और बोला कि मैं परम- १३ श्वर तेरे पिता अविमदास का देश्यर और वज्रदाक का देश्यर हूं मैं यह भूमि जिस पर तू लेटा है तुझ और तेरे वंश को देऊंगा । और तेरे वंश पृथिवी की धूल की १४ नाई होंगे और तू पाँचस और पुरख और उत्तर और दक्षिण का फूट निकलेगा और तुझ में और तेरे वंश में पृथिवी के सारे घराने आशीस पावेंगे । और देख मैं तेरे १५



साथ हूँ और सर्वत्र जहाँ कहीं तू जायगा तेरी रखवाली करूँगा और तुझे इस देश में फिर लाजंगा क्योंकि जब लों में तुझ से अपना कहा हुआ पूरा न कर लेजं तुझे न छोड़ूँगा ॥

१६ तब यशकूब अपनी नींद से जागा और कहा कि निश्चय परमेश्वर इस स्थान १७ में है और मैं न जानता था । तब वह डर गया और बोला कि यह क्या ही भयानक स्थान है ईश्वर के घर को छोड़ यह और कुछ नहीं है और यह स्वर्ग का १८ फाटक है । और यशकूब बिहान को तड़के उठा और उस पत्थर को जिसे उस १९ ने अपना उसीसा किया था खंभा खड़ा किया और उस पर तेल ठाला । और उस २० स्थान का नाम बैतएल रखवा पर उससे पहिले उस नगर का नाम लौज था । और यशकूब ने मनौती मानी और कहा कि यदि ईश्वर मेरे साथ रहे और मेरे जाने के मार्ग में मेरा रखवाल हो और मुझे खाने को रोटी और पहिने को कपड़ा २१ देवे । ऐसा कि मैं अपने पिता के घर कुशल से फिर आऊँ तब परमेश्वर मेरा २२ ईश्वर होगा । और यह पत्थर जो मैं ने खंभा सा खड़ा किया ईश्वर का घर होगा और सब में से जो तू मुझे देगा उससे इसका भाग अवश्य तुझे देऊँगा ॥

उन्तीसवां पर्व ।

१ तब यशकूब ने अपने पाँव उठाये और पूरबी पुत्रों के देश में आया । और उस ने दृष्टि किई और देखो खेत में एक कुआ है और देखो वहाँ उस के लग भेड़ बकरी के तीन भुंड बैठे हुए हैं क्योंकि वे उसी कुए से भुंडों को पानी पिलाते ३ थे और उस कुए के मुंह पर बड़ा पत्थर धरा था । और वहाँ सारा भुंड एकट्ठा होता था और वे उस पत्थर को कुए के मुंह पर से ठुलका देते थे और भेड़ बकरियों को पानी पिलाके पत्थर को कुए के मुंह पर उस के स्थान में फिर ४ रखते थे । तब यशकूब ने उन से कहा कि मेरे भाइयो तुम कहाँ के हो और वे ५ बोले कि हम हरान के हैं । और उस ने उन से कहा क्या तुम नहूर के बेटे ६ लावन को जानते हो और वे बोले जानते हैं । और उस ने उन से कहा क्या वह कुशल से है और वे बोले कि कुशल से है और देख उस की बेटी राखिल ७ भुंडों के साथ आती है । तब वह बोला देखो दिन अभी बहुत है ठोरो के एकट्ठे ८ करने का समय नहीं तुम भुंडों को पानी पिलाके चराई पर ले जाओ । और वे बोले हम नहीं सक्ते जब लों कि सारे भुंड एकट्ठे न होवें और पत्थर को कुए के मुंह पर से न ठुलकावें तब हम भुंडों को पानी पिलाते हैं ॥

९ वह उन से यह कह रहा था कि राखिल अपने पिता के भुंडों को लेके १० आई । क्योंकि वह उन की रखवालिनी थी और यों हुआ कि यशकूब अपने मासू लावन की बेटी राखिल को और अपने मासू लावन के भुंडों को देखके पास गया और पत्थर को कुए के मुंह पर से ठुलकाया और अपने मासू लावन के भुंडों ११ को पानी पिलाया । और यशकूब ने राखिल को चूमा और चिल्लाके रोया । और यशकूब ने राखिल से कहा कि मैं तेरे पिता का कुटुम्ब और रिबकः का बेटा हूँ और १३ उस ने दौड़के अपने पिता से कहा । और यों हुआ कि जब लावन ने अपने भांजे यशकूब का समाचार सुना तो उससे मिलने को दौड़ा और उसे गले लगाया और

उसे चूसा और उसे अपने घर लाया और उस ने ये सारी बातें लावन से कहीं । तब लावन ने उससे कहा कि निश्चय तू मेरी बहू और मेरा मांस है और वह एक १४ मास भर उस के यहाँ रहा ॥

तब लावन ने यश्कूत्र से कहा कि मेरा भाई होने के कारण क्या तू मृत से १५ मेरी सेवा करेगा मुझ से कह मैं तुझे क्या दूँ । और लावन की दो बेटियाँ थीं १६ जेठी का नाम लियाह और लहुरी का नाम राग्विन था । और लियाह की आँखें १७ चुन्धली थीं परन्तु राग्विन सुन्दरी और सपत्नी थी । और यश्कूत्र राग्विन को १८ प्यार करता था और उस ने कहा कि तेरी लहुरी बेटी राग्विन के लिये मैं मात दस तेरी सेवा करूँगा । तब लावन बोला कि उसे दूसरे के देने में तुझी को देना भला १९ है मेरे साथ रह । और यश्कूत्र ने मात दस ली राग्विन के लिये सेवा किई और २० उस प्रीति के मारे जो वह उससे रखता था जोही दिन की नारें समझ पड़े ॥

और यश्कूत्र ने लावन से कहा कि मेरी पत्नी मुझे बीत्रिये क्योंकि मेरे दिन पूरे २१ हुए और मैं उसे ग्रहण करूँगा । तब लावन ने दोनों के मारे सुनियों को गफट्टा २२ करके जेवनार किया । और मांस के ये हुआ कि वह अपनी बेटी लियाह को २३ उस पास लाया और उस ने उसे ग्रहण किया । और दासी के लिये लावन ने २४ अपनी दासी जिलफः को अपनी बेटी लियाह को दिया । और ऐसा हुआ कि २५ विद्वान को क्या देखता है कि लियाह है तब उस ने लावन को कहा कि आप ने यह मुझ से क्या किया क्या मैं ने आप की सेवा राग्विन के लिये नहीं किई सो आप ने किम लिये मुझे कला । तब लावन ने कहा कि हमारे देव का यह व्यवहार २६ नहीं कि लहुरी को जेठी से पहिले द्याव दें । इस का अन्धकारा पूरा कर और २७ तेरी और भी मात दस की सेवा के लिये हम इसे भी तुझे देंगे ॥

और यश्कूत्र ने ऐसा ही किया और इस का अन्धकारा पूरा किया तब उस ने २८ अपनी बेटी राग्विन को उसे पत्नी होने के निमित्त दिया । और लावन ने अपनी २९ दासी जिलफः को अपनी बेटी राग्विन की दासी होने के लिये दिया । तब यश्कूत्र ३० ने राग्विन को भी ग्रहण किया और वह राग्विन को लियाह से अधिक प्यार करता था और मात दस अधिक उस ने उस को सेवा किई ॥

और जब परमेश्वर ने देखा कि लियाह धिनित हुई तब उस ने उस का ३१ कोख खोला और राग्विन बाँध रखी । और लियाह गर्भिणी हुई और बेटा जनी ३२ और उस ने उस का नाम यश्विन रखवा क्योंकि उस ने कहा कि निश्चय परमेश्वर ने मेरे दुःख पर दृष्टि किई है कि अब मेरा पात मुझे प्यार करेगा । और वह ३३ फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बाली इस लिये कि परमेश्वर ने मेरा धिनित होना सुनके मुझे इसे भी दिया सो उस ने उस का नाम समझन रखवा । और फिर ३४ वह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बाली कि इस बार मेरा पात मुझ से मिल जायगा क्योंकि मैं उस के लिये तान बेटे जनी इस लिये उस का नाम लेही रखवा गया । और वह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बाली कि अब मैं परमेश्वर ३५ की स्तुति करूँगी इस लिये उस ने उस का नाम यद्वादह रखवा और जन्मे से रह गई ॥

## तीसवां पर्व ।

१ और जब राखिल ने देखा कि यश्नकूब का वंश मुझ से नहीं होता तो उस ने अपनी बहिन से डाह किया और यश्नकूब को कहा कि मुझे बालक दे नहीं तो  
 २ मैं मर जाऊंगी । तब राखिल पर यश्नकूब का क्रोध भड़का और उस ने कहा क्या  
 ३ मैं ईश्वर की संती हूँ जिस ने तुम्हें कोख के फल से अलग रक्खा । और वह बोली देख मेरी दासी बिलहः है उसे ग्रहण कर और वह मेरे घुटनों पर जनेगी  
 ४ और मैं भी उससे बन जाऊंगी । और उस ने उसे अपनी दासी बिलहः को पत्नी के लिये दिया और यश्नकूब ने उसे ग्रहण किया ॥

५ और बिलहः गर्भिणी हुई और यश्नकूब के लिये बेटा जनी । तब राखिल बोली कि ईश्वर ने मेरा विचार किया है और मेरा शब्द भी सुना और मुझे एक बेटा दिया इस  
 ६ लिये उस ने उस का नाम दान रक्खा । और राखिल की दासी बिलहः फिर गर्भिणी  
 ७ हुई और यश्नकूब के लिये दूसरा बेटा जनी । और राखिल बोली कि मैं ने अपनी बहिन से ईश्वरीय मलयुद्ध किया और जीता और उस ने उस का नाम नफताली रक्खा ॥

८ और जब लियाह ने देखा कि मैं जन्मे से रह गई तो उस ने अपनी दासी जिलफः  
 ९ को लेके यश्नकूब को पत्नी के लिये दिया । सो लियाह की दासी जिलफः भी  
 १० यश्नकूब के लिये एक बेटा जनी । तब लियाह बोली कि जथा आती है और उस  
 ११ ने उस का नाम जद रक्खा । फिर लियाह की दासी जिलफः यश्नकूब के लिये एक  
 १२ दूसरा बेटा जनी । और लियाह बोली कि मैं धन्य हूँ क्योंकि पुत्रियां मुझे धन्य कहेंगी और उस ने उस का नाम यशर रक्खा ॥

१३ और गेहूँ के लवने के समय मैं खिन गया और खेत में दूदाफल पाया और उन्हें अपनी माता लियाह के पास लाया तब राखिल ने लियाह से कहा कि अपने  
 १४ बेटे का दूदाफल मुझे दे । तब उस ने उससे कहा क्या यह छोटी बात है जो तू ने मेरे पति को ले लिया और मेरे पुत्र के दूदाफल को भी लिया चाहती है और राखिल बोली इस लिये वह आज रात तेरे बेटे के दूदाफल की संती तेरे साथ  
 १५ रहेगा । और जब यश्नकूब सांझ को खेत से आया तब लियाह उसे आगे से मिलने को गई और कहा कि आज आप को मुझ पास आना होगा क्योंकि निश्चय मैं ने अपने बेटे का दूदाफल देके आप को भाड़े में लिया है सो वह उस रात उस के साथ रहा ॥

१६ और ईश्वर ने लियाह की सुनी और वह गर्भिणी हुई और यश्नकूब के  
 १७ लिये पांचवां बेटा जनी । और लियाह बोली कि ईश्वर ने मेरी बनी मुझे दिई क्योंकि मैं ने अपने पति को अपनी दासी दिई है और उस ने उस का नाम  
 १८ इशकार रक्खा । और लियाह फिर गर्भिणी हुई और यश्नकूब के लिये छठवां बेटा  
 १९ जनी । और बोली कि ईश्वर ने मुझे अच्छा दैजा दिया है अब मेरा पति मेरे संग रहेगा क्योंकि मैं उस के लिये छः बेटे जनी और उस ने उस का नाम जबूलून रक्खा ।  
 २० और अंत में वह बेटा जनी और उस का नाम दीनाह रक्खा ॥

२१ और ईश्वर ने राखिल को स्मरण किया और ईश्वर ने उस की सुनी और उस के

कोस को गोला । और यह गर्भिणी हुई और येटा जनी और गोली कि रंगर २३ ने मेरी निन्दा दूर कीई । और उस ने उस का नाम युमुफ रखवा और गोली कि २४ परमेश्वर मुझे दूसरा येटा भी देवेगा ।

और जब राखिल से युमुफ उत्पन्न हुआ तो यों हुआ कि यशकूय ने लायन से २५ कहा कि मुझे विदा कीजिये और मैं अपने स्थान और अपने देश को जाऊंगा । मेरी स्त्रियां और मेरे लड़के जिन के लिये मैं ने आप की सेवा कीई है मुझे दीजिये २६ और मैं जाऊंगा क्योंकि आप जानते हैं कि मैं ने आप की कैसी सेवा कीई है ।

तब लायन ने उससे कहा कि जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो यह २७ जो मैं ने देख लिया है कि परमेश्वर ने तेरे कारण से मुझे आशीस दिया है । और २८ उस ने कहा कि अब तू अपनी धनी मुझ से दूधरा ने और मैं तुम्हें देखूंगा । तब २९ उस ने उससे कहा आप जानते हैं कि मैं ने क्योंकि आप की सेवा कीई है और आप के डोर जैसे मेरे माथ से । क्योंकि मेरे आने से आगे मेरा खाना ना या पर कुंड ३० के कुंड हो गये हैं और मेरे आने से परमेश्वर ने आप को आशीस दिया है और अब मैं भी अपने घर के लिये दूध ठिकाना करूंगा ।

और यह गोला कि मैं तुम्हें क्या देऊं और यशकूय ने कहा कि आप मुझे कुछ ३१ न दीजिये जो आप मेरे लिये ऐसा करेंगे तो मैं आप के कुंड को फिर चराऊंगा और रखवाली करूंगा । मैं आज आप के सारे कुंड में से चन्न निम्नूंगा और ३२ भेड़ों में से सारी फुटफुटियों और चितकयरीयों और भूरियों को और यकरीयों में से फुटफुटियों और चितकयरीयों को खनन करूंगा और मेरी धनी ऐसी होगी । और कान को मेरा धर्म मेरा उत्तर देगा जब कि मेरी धनी आप के आगे आवे ३३ तो यह जो यकरीयों में चितकयरी और फुटफुटिया और भेड़ों में भूरी न हो तो वह मेरे पास चोरी की गानी जाय ।

तब लायन गोला देवर में आछता है कि जैसा तू ने कहा तैसा ही होवे । ३४

और उस ने उस दिन पट्टेवाले और फुटफुटिया यकरी और चितकयरी और ३५ फुटफुटिया यकरीयों अर्थात् हर एक जिस में कुछ उल्लाह हो और भेड़ों में से भूरी अलग कीई और उन्हें अपने घेड़ों को दाय मांस दिया । और उस ने अपने ३६ और यशकूय के साथ से तीन दिन की यात्रा का राह दूधराया और यशकूय लायन के दरारे हुए कुंडों को चराया किया ।

और यशकूय ने हरे लुयने और दादास और अरसन की घरी लड़ियों से ले उन्हें ३७ गंडेवाल किया जैसा कि लड़ियों की उल्लाह प्रगट हुई । और जब कुंड ३८ पानी पीने को आते थे तब वह उन लड़ियों को जिन पर गंडे घनाये थे कुंडों को आगे कटरीं और नालियों में धरता था कि जब वे मछ पीने आये तो गर्भिणी होवे । और लड़ियों के आगे कुंड गर्भिणी हुए और कुंड पट्टेवाले और फुटफुटियां ३९ और चितकयरी यज्ञे जने । और यशकूय ने मेषों को अलग किया और कुंड के ४० कुंड को चितकयरीयों के और भूरों के जो लायन के कुंड में थे किया और उस ने अपने कुंड को अलग किया और लायन के कुंड में न मिलाया । और यों हुआ ४१ कि जब पुष्ट होर गर्भिणी होते थे तो यशकूय लड़ियों को नालियों में उन के आगे

४२ रखता था कि वे उन छड़ियों के आगे गर्भिणी होवें । पर जब दुर्बल ठोर आते  
 ४३ यज्ञकूब के हुए । और उस पुरुष की अत्यंत बढ़ती हुई और वह बहुत पशु और  
 ४४ दास और दासियों और जंटों और गदहों का स्वामी हुआ ॥

एकतीसवां पर्व ।

४५ और उस ने लावन के बेटों को ये बातें कहते सुना कि यज्ञकूब ने हमारे पिता  
 का सब कुछ ले लिया और हमारे पिता की संपत्ति से यह सब विभव प्राप्त किया ।  
 ४६ और यज्ञकूब ने लावन का रूप देखा और क्या देखता है कि फल परसों की नाईं  
 ४७ वह मेरी और नहीं है ॥  
 ४८ और परमेश्वर ने यज्ञकूब से कहा कि तू अपने पितरों और अपने कुटुम्बों के  
 ४९ देश को फिर जा और मैं तेरे संग होऊंगा । तब यज्ञकूब ने राखिल और लियाह  
 ५० को अपने झुंड पास खेत में बुला भेजा । और उन्हें कहा कि मैं देखता हूं कि  
 तुम्हारे पिता का रूप आगे की नाईं मेरी और नहीं है परन्तु मेरे पिता का ईश्वर  
 ५१ ईश्वर पर प्रगट हुआ । और तुम जानती हो कि मैं ने अपने मारे बल से तुम्हारे  
 ५२ पिता की सेवा किई है । और तुम्हारे पिता ने मुझे छला है और उस वार मेरी  
 ५३ धनी बदल दिई पर ईश्वर ने मुझे दुःख देने को उसे न छोड़ा । यदि वह यों  
 ५४ बोला कि फुटफुटियां तेरी बनी होंगी तो सारे ठोर फुटफुटियां जने और यदि  
 ५५ उस ने यों कहा कि पट्टेवाली तेरी बनी मैं होंगी तो ठोर पट्टेवाले जने । यों  
 ५६ ईश्वर ने तुम्हारे पिता के ठोर लिये और मुझे दिये । और यों हुआ कि जब ठोर  
 ५७ गर्भिणी होते थे तो मैं ने स्वप्न में अपनी आंख उठाके देखा और क्या देखता हूं कि  
 ५८ मैं ठो जों ठोर पर चढ़ते हैं सो पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकवरे थे । और  
 ५९ ईश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझे कहा कि हे यज्ञकूब और मैं बोला कि यहीं हूं ।  
 ६० तब उस ने कहा कि अपनी आंखें उठाइये और देख कि सारे मैं ठो जों भेड़ों पर  
 ६१ चढ़ते हैं पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकवरे हैं क्योंकि जो कुछ लावन ने तुम्हें  
 ६२ से किया मैं ने सब देखा है । बैतल का सर्वशक्तिमान जहां तू ने खंभे पर तेल  
 ६३ डाला जहां तू ने मेरे लिये मनौती मानी मैं हूं अब उठ इस देश से निकल जा  
 और अपने कुटुम्ब के देश को फिर जा ॥

६४ तब राखिल और लियाह ने उत्तर देके उस्से कहा क्या अब लों हमारे पिता के  
 ६५ घर में हमारा कुछ भाग अथवा अधिकार है । क्या हम उस के लेखे पराये नहीं  
 ६६ गिने जाते हैं क्योंकि उस ने तो हमें बेच डाला है और हमारी रोकड़ भी खा  
 ६७ बैठा है । परन्तु ईश्वर ने जो धन कि हमारे पिता से लिया और हमें दिया वही  
 हमारा और हमारे बालकों का है सो अब जो कुछ कि ईश्वर ने आप से कहा है  
 सो करिये ॥

६८ तब यज्ञकूब ने उठके अपने बेटों और अपनी पत्नियों को जंटों पर बैठाया ।  
 ६९ और अपने सब चौपाए और अपनी सब सामग्री जो उस ने पाई थी अपनी कमाई  
 ७० के चौपाए जो उस ने फद्दानअराम में पाए थे ले निकला जिसर्त कनआन देश में  
 ७१ अपने पिता इजहाक पास जावे । और लावन अपने भेड़ों का रोम कतरने को

गया और राखिल ने अपने पिता की मूर्ति चुरा लिये । और यशकृष्ण अरामी लायन २०  
 से अचानक चुराके भागा यहाँ नों कि वह उम्मे न कहिके भागा । सो यह अपना २१  
 सब कुछ लेके भागा और उठके नदी पार उत्तर गया और अपना मुँह जिलिखद  
 पड़ाइ की ओर किया ॥

और यशकृष्ण के भागने का संदेश लायन को तीसरे दिन पहुँचा । सो यह अपने २२  
 भाइयों को अपने संग लेके मार्ग दिन के मार्ग लों उस के पीछे गया और जिलिखद  
 पड़ाइ पर उसे जा लिया । परन्तु ईश्वर अरामी लायन के मन्त्र से रात को आया २३  
 और उम्मे कहा कि चौकस रह तू यशकृष्ण को भला चुग मत कहना । तब लायन २४  
 ने यशकृष्ण को जा लिया और यशकृष्ण ने अपना चेरा पड़ाइ पर किया था और  
 लायन ने अपने भाइयों के साथ जिलिखद पड़ाइ पर चेरा खड़ा किया ॥

तब लायन ने यशकृष्ण से कहा कि तू ने क्या किया जो तू यशकृष्ण मुझ ने २५  
 चुरा निकाला और मेरी पुत्रियों को मरु ने की बंधुआई की नारें ले घना । तू २६  
 किम लिये चुपके से भागा और चोरी में मुझ से निजल आया और मुझे नहीं कहा  
 जिनमें मैं तुम्हें आनंद संगल डोलन और रागों और बीणा के नाच बिटा करणा ।  
 और तू ने मुझे अपने घोटों और अपना घोटियों को चूमने न दिया अथ तू ने सूर्यना २७  
 से यह किया है । तुम्हें दुःख देने का मेरे वश में है परन्तु तुम्हारे पिता के ईश्वर २८  
 ने कल रात मुझे यों कहा कि चौकस रह तू यशकृष्ण को भला चुग मत कहना ।  
 और अथ तो तुम्हें निश्चय जाना है क्योंकि तू अपने पिता के घर का लिपट अभि- २९  
 लार्पी है तू ने जिस लिये मेरे देवों को चुगया है ॥

और यशकृष्ण ने उत्तर दिया और लायन से कहा क्योंकि मैं सरगा था क्योंकि ३०  
 मैं ने कहा क्या जाने आप अपनी पुत्रियों वस्त्रस मुझ से लीन लेंगे । जिस जिनकी ३१  
 के पास आप अपने देवों का पायें उसे जीता मत छोड़िये हमारे भाइयों के आशे  
 देख लीजिये कि आप का मेरे पास क्या क्या है और अपना लीजिये क्योंकि यशकृष्ण  
 न जानता था कि राखिल ने उन्हें चुराया था ॥

और लायन यशकृष्ण के तंत्र में गया और लियाह के तंत्र में और दोनों दामिण्यां ३२  
 के तंत्र में परन्तु न पाया तब यह लियाह के तंत्र से बाहर जाके राखिल के तंत्र में  
 गया । और राखिल मूर्तिन को लेकर जंत की पलान में रखके उन पर घेठी की ३३  
 और लायन ने सारे तंत्र को देख लिया और न पाया । तब उन ने अपने पिता से ३४  
 कहा कि मेरे प्रभु हस्ते अबसन्न न होय कि मैं आप के आशे उठ नहीं सरती क्योंकि  
 मुझ पर स्त्रियों की रीति है सो उस ने हँड़ा पर मूर्तिन को न पाया ॥

और यशकृष्ण कुछ हुआ और लायन से विधाद करके उत्तर दिया और लायन ३५  
 को कहा कि मेरा क्या पाप और क्या अपराध है कि आप इस रीति में मेरे पीछे  
 भ्रष्टे । आप ने जो मेरी मार्गी मामग्री हँडी आप ने अपने घर की सामग्री में क्या ३६  
 पाई मेरे भाइयों और अपने भाइयों के आशे रखिये जिनमें वे हम दोनों के मध्य  
 में विचार करें । यह घीस वरस जो मैं आप के साथ था आप की भेड़ों और ३७  
 वस्त्रियों का गर्भ न गिरा और मैं ने आप के मुँह के मेंढे नहीं खाये । यह जो ३८  
 फाड़ा गया मैं आप पास न लाया उस की घटी मैं ने उटार्ई तू ने मेरे हाथ से उसे



80. माँगा जो दिन को अथवा रात को चोरी गया । मेरी यह दशा थी कि दिन को  
घाम से भस्म हुआ और रात को पाला से और मेरी आँखों से मेरी नींद जाती  
81 रही । यों मुझे आप के घर में बीस बरस बीते में ने चौदह बरस आप की दोनों  
बेटियों के लिये और छः बरस आप के पशु के लिये आप की सेवा किई और आप  
82 ने दस बार मेरी बनी बदल डाली । यदि मेरे पिता का ईश्वर अविरहाम का ईश्वर  
और इजहाक का भय मेरे साथ न होता तो आप निश्चय मुझे अब लूँके हाथ निकाल  
देते ईश्वर ने मेरी विपत्ति और मेरे हाथों के परिश्रम को देखा है और कल रात  
आप को डांटा ॥

83 तब लावन ने उत्तर दिया और यश्कूब से कहा कि ये बेटियाँ मेरी बेटियाँ  
और ये बालक मेरे बालक और ये चौपाए मेरे चौपाए और सब जो तू देखता है  
मेरे हैं और आज के दिन अपनी इन बेटियों अथवा इन के लड़कों से जो वे जनी  
84 हैं क्या कर सकता हूँ । सो अब आ मैं और तू आपुस में एक याचा याँधें और  
वही मेरे और तेरे मध्य में साक्षी रहे ॥

85 तब यश्कूब ने एक पत्थर लेके खंभा सा खड़ा किया । और यश्कूब ने अपने  
भाइयों से कहा कि पत्थर एकट्ठा करो तब उन्होंने ने पत्थर एकट्ठा करके एक ढेर  
86 किया और उन्होंने ने उसी ढेर पर खाया । और लावन ने उस का नाम यगसहदुता  
रक्खा परन्तु यश्कूब ने उस का नाम जिलिअद रक्खा ॥

87 और लावन बोला कि यह ढेर आज के दिन मुझ में और तुझ में साक्षी है इस  
88 लिये उस का नाम जिलिअद रक्खा । और मिसपा क्योंकि उस ने कहा कि जब  
89 हम आपुस से अलग होवें तो परमेश्वर मेरे तेरे मध्य में चौकसी करे । जो तू  
मेरी बेटियों को दुःख देवे अथवा जो तू मेरी बेटियों से अधिक स्त्रियाँ करे तो  
90 हमारे साथ कोई दूसरा नहीं देख ईश्वर मेरे और तेरे मध्य में साक्षी है । और  
लावन ने यश्कूब से कहा देख यह ढेर और देख यह खंभा जो मैं ने अपने और  
91 आप को मध्य में रक्खा है । यही ढेर साक्षी और यह खंभा साक्षी है कि मैं इस  
ढेर से पार तुझे और तू इस ढेर और इस खंभे से पार मुझे दुःख देने को न आवेगा ।  
92 अविरहाम का ईश्वर और नहूर का ईश्वर उन के पिता का ईश्वर हमारे मध्य  
में विचार करे और यश्कूब ने अपने पिता इजहाक के भय की किरिया खाई ॥

93 तब यश्कूब ने उस पहाड़ पर बलि चढ़ाया और अपने भाइयों को रोटी खाने  
94 को बुलाया और उन्होंने ने रोटी खाई और रात पहाड़ पर रहे । और भोर  
को तड़के लावन उठा और अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमा और उन्हें  
आशीस दिया और लावन बिदा हुआ और अपने स्थान को फिरा ॥

बत्तीसवां पर्व ।

95 और यश्कूब अपने मार्ग चला गया और ईश्वर के दूत उसे आ मिले । और  
यश्कूब ने उन्हें देखके कहा कि यह ईश्वर की सेना है और उस ने उस स्थान का  
नाम दो सेना रक्खा ॥

96 और यश्कूब ने अपने आगे अरूम के देश और शरैर की भूमि में अपन भाई एसौ  
8 पास दूतों को भेजा । और उस ने यह कहिके उन्हें आज्ञा किई कि मेरे प्रभु एसौ



को यों कहियो कि आप का दास यशकूय वों कहता है कि मैं नाथन के  
टिका और अब लों बर्ही रहा । और मेरे बेल और गददे मुंड और दास और ५  
दासियां हैं और मैं ने अपने प्रभु को कहला भेजा है किमते मैं आप को दृष्टि में  
अनुग्रह पाऊं ॥

और दूतों ने यशकूय पास फिर आके कहा कि हम आप के भाई समौ पास ६  
गये और यह और उस के साथ चार सौ मनुष्य आप को भेंट को भी आते हैं ॥

तब यशकूय निपट डर गया और व्याकुल हुआ और उस ने अपने साथ के ७  
सोनों और मुंडों और डेरों और जंटों के दो जथा किये । और कहा कि यदि ८  
समौ एक जथा पर आवे और उसे मारे तो दूसरा जथा ला दख रहा है भागेगा ।  
फिर यशकूय ने कहा कि हे मेरे पिता अथिरदास के ईश्वर और मेरे पिता राजदास ९  
के ईश्वर यह परमेश्वर जिस ने मुझे कहा कि अपने डेज और अपने कुन्ने में फिर  
जा और मैं तेरा भला करूंगा । मैं तो उन सब दया और उस नय मन्थता ने जो १०  
तू ने अपने दास के संग किईं चुच्छ हैं क्योंकि मैं अपने रुंहे मे इस यमदन पार  
गया और अब मैं दो जथा बना हूं । मैं नेरी विनती करूंगा हूं मुझे मेरे भाई के ११  
दाय अर्धान् समौ के दाय ने अब ने क्योंकि मैं उम्मे उगता हूं न होवे कि यह  
आके मुझे और लड़कों को माना समेन मार लेवे । और तू ने कहा कि मैं निश्चय १२  
तुम्हें से भलाई करूंगा और तेरे दंग को समुद्र के बान की नावें बनाऊंगा जो  
बहुताई के मारे गिना नहीं जायगा ॥

और यह उस रात चर्गी टिका और जो उस के साथ लता अपने भाई समौ को १३  
भेंट के लिये लिया । दो सौ बकरियां और दोन बकरे दो सौ भैंसे और दोन १४  
मेंढे । तीस दूधवाली जंटनियां उन के बड़े समेत चालीस गाय और दस बैल दोन १५  
गददियां और दस बछे । और उस ने उन्हें अपने सेबकों के दाय दर जथा को १६  
अलग अलग सोंपा और अपने सेबकों को कहा कि मेरे आगे जा उनसे और जथा  
को जथा से अलग रखवो । और पहिले को उस ने आज्ञा दिए कि जय मेरा १७  
भाई समौ तुम्हें मिले और पूछे कि तू किस का है और किधर जाता और ये जो  
तेरे आगे हैं किस के हैं । तो कहियो कि आप के सेबक यशकूय के हैं यह मेरे १८  
प्रभु समौ के लिये भेंट है और देखिये यह आप भी हमारे पीछे हैं । और ऐसा १९  
उस ने दूसरे और तीसरे को और उन सब को जो जथा के पीछे जाते थे यह  
कहिके आज्ञा किई कि जय तूम समौ को पावो तो इन रीति से कहिये । और २०  
अधिक यह कहियो कि देखिये आप का सेबक यशकूय हमारे पीछे जाता है  
क्योंकि उस ने कहा है कि मैं उस भेंट से जो मुझ से आगे जाती है उम्मे सिलाप  
कर लेऊंगा तब उस का मुंड देखूंगा दया जाने यह मुझे श्रद्धा करे ॥

सो यह भेंट उस के आगे आगे पार गई और यह आप उस रात जथा में २१  
टिका । और उनी रात उठा और अपनी दो पत्नियों और अपनी दो भदेलियों और २२  
अपने ग्यारह बेटों को लेकर आह यवूम में पार उतरा । और उस ने उन्हें लेके २३  
नाली पार करवाया और अपना सब कुल पार भेजा ॥

और यशकूय अकेला रह गया और यहां पौ फटे लों एक जन उम्मे मल्लुड २४

२५ करता रहा । और जब उस ने देखा कि वह उस पर प्रबल न हुआ तो उस की  
जांघ की भीतर से कूआ तब यश्मकूब को जांघ की नस उस के संग मल्लयुद्ध करने  
२६ में चढ़ गई । तब वह बोला कि मुझे जाने दे क्योंकि पैर फटती है और वह बोला कि  
२७ मैं तुझे जाने न देऊंगा जब तू मुझे आशीस न देवे । तब उस ने उससे कहा  
२८ कि तेरा नाम क्या और वह बोला कि यश्मकूब । तब उस ने कहा कि तेरा नाम  
आगे को यश्मकूब न होगा परन्तु इसराएल क्योंकि तू ने ईश्वर के और  
२९ मनुष्यों के आगे राजा की नाईं मल्लयुद्ध किया और जीता । तब यश्मकूब ने यह  
कहिके उससे पूछा कि अपना नाम बताइये और वह बोला कि तू मेरा नाम  
३० क्यों पूछता है और उस ने उसे वहां आशीस दिया । और यश्मकूब ने उस स्थान  
का नाम फनुएल रक्खा क्योंकि मैं ने ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा और मेरा प्राण  
बचा है ॥

३१ और जब वह फनुएल से पार चला तो सूर्य की ज्योति उस पर पड़ी और  
३२ वह अपनी जांघ से लंगड़ाता था । इस लिये इसराएल के वंश उस जांघ की  
नस को जो चढ़ गई थी आज तों नहीं खाते क्योंकि उस ने यश्मकूब के जांघ  
की नस को जो चढ़ गई थी कूआ था ॥

तीसवां पर्व ।

१ और यश्मकूब ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं और क्या देखता है कि सैर और  
उस के साथ चार सौ मनुष्य आते हैं तब उस ने लियाह को और राखिल को और  
२ दो सहेलियों को लड़के वाले बांट दिये । और उस ने सहेलियों और उन के  
लड़कों को सब से आगे रक्खा और लियाह और उस के लड़कों को पीछे और  
३ राखिल और यूसुफ को सब के पीछे । और वह आप उन के आगे पार उतरा और  
४ अपने भाई पास पहुंचते पहुंचते सात बार भूमि तों दंडवत किई । और सैर  
उससे मिलने को दौड़ा और उसे गले लगाया और उस के गले से लिपटा और उसे चूमा  
५ और वे रोये । फिर उस ने अपनी आंखें उठाईं और स्त्रियों को और लड़कों को  
देखा और कहा कि ये तेरे साथ कौन हैं और वह बोला वह लड़के जो ईश्वर ने  
६ अपनी कृपा से आप के सेवक को दिये । तब सहेलियां और उन के लड़के पास  
७ आये और दण्डवत किई । और लियाह ने भी अपने लड़के समेत पास आके दण्डवत  
८ किई और अंत को यूसुफ और राखिल पास आये और दण्डवत किई । और उस ने  
कहा कि इस जथा से जो मुझ को मिला तुझे क्या और वह बोला कि अपने प्रभु  
९ की दृष्टि में अनुग्रह पाने के लिये । तब सैर बोला कि हे मेरे भाई मुझ पास  
१० बहुत हैं तेरे तेरे ही लिये होवें । तब यश्मकूब बोला कि मैं आप की बिनती करता  
हूं यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मेरी भेंट मेरे हाथ से ग्रहण  
कीजिये क्योंकि मैं ने जो आप का मुंह देखा है जानो मैं ने ईश्वर का मुंह देखा  
११ और आप मुझ से प्रसन्न हुए । मेरी आशीस को जो आप के आगे लाई गई है  
ग्रहण कीजिये क्योंकि ईश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है और इस लिये कि मुझ  
१२ पास सब कुछ है सो वह यहां तों गिड़गिड़ाया कि उस ने ले लिया । और कहा कि  
१३ आओ कुंभ करें और चले और मैं तेरे आगे आगे चलूंगा । तब उस ने उस से कहा

कि मेरे प्रभु जानते हैं कि बालक कोमल हैं और मुँह और ठोस दूध पिनाने-  
 बालियाँ मेरे साथ हैं और जो वे दिन भर उनके साथ तो मेरे मुँह भर जायेंगे ।  
 मेरे प्रभु अपने मेवक से पहिने पार जाइये और मैं धीरे धीरे जैसा कि ठोस खास १४  
 चलेंगे और बालक सह सकेंगे चलेंगा यहाँ नों कि शरीर को अपने प्रभु पाम आ पहुँचें ।  
 तब समी बोला अपने संग के लोगों में से कई एक आप के साथ कोड़ जाऊँ और १५  
 यह बोला कि यह किस लिये मैं अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाऊँ ॥

तब समी उसी दिन अपने मार्ग पर शरीर को नौटा । और यशकूच चलते १६  
 चलते सुकान्त को आया और अपने लिये एक घर बनाया और अपने ठोस के लिये  
 पतछप्पर बनाये इसी लिये उस म्यान का नाम सुकान्त हुआ ॥

और यशकूच फटानगराम में बाहर टोकें कनयान देश के मानिस के नगर १८  
 मिकम में आया और नगर के बाहर अपना तंबू गढ़ा किया । और जिस पर उस १९  
 का तंबू गढ़ा था उस ने उस खेत को दूसरे के पिता मिकम के मन्तान में नौ टुकड़े  
 रोकड़ पर माल लिया । और उस ने वहाँ एक छोटी बनाई और उन का नाम २०  
 सर्वशक्तिमान हमरागल का ईश्वर रखया ॥

चार्तामयां पर्व ।

और लियार की छोटी दोनः जिसे यह यशकूच के लिये लगी थी उस देश की १  
 लड़कियों के देखने को बाहर गई । और जब उस देश के आश्रय लगे हमर के २  
 छोटे मिकम ने उसे देखा तो उसे ने गया और उसने मिल बैठा और उसे आगुह  
 किया । और उस का मन यशकूच की छोटी दोनः में आगुह और उस ने उस ३  
 लड़की को प्यार किया और उस लड़की के मन को मनाया । और मिकम ने अपने ४  
 पिता दूसरे से कहा कि हम लड़की को सुके पत्नी होने के निमित्त दिनाय्ये । और ५  
 यशकूच ने सुना कि उस ने मेरी छोटी दोनः को आगुह किया और उन के छोटे उस के  
 ठोस के साथ खेत में थे और उन के आन लों यशकूच चुप रहा ॥

और मिकम का पिता दूसरे यातचीत करने को यशकूच पाम आया । और ६  
 सुनते ही यशकूच के छोटे खेत में आ पहुँचे और वे मनुष्य उदाम टोकें ग्रहों कोपित ७  
 हुए क्योंकि उस ने हमरागल में अपमान किया कि यशकूच की छोटी के साथ  
 अनुचित रीति से मिल बैठा ॥

और हमर ने उन के साथ यों यातचीत किई कि मेरे छोटे मिकम का मन ८  
 तुम्हारी छोटी से लालमिल है सो उसे उस को पत्नी होने के निमित्त दीजिये । और ९  
 हमारे साथ समधियाना कीजिये अपनां छोटीयां हमें दीजिये और हमारां छोटीयां  
 आप लीजिये । और तुम हमारे साथ वास करोगे और यह भूमि तुम्हारे आगे होगी १०  
 उस में रहा और व्यापार करे और हम में अधिकार प्राप्त करे । और मिकम ने उस ११  
 के पिता और उस के भाइयों से कहा कि तुम्हारी दृष्टि में मैं अनुग्रह पाऊँ और जो  
 कुछ तुम सुके कलोगे में देजंगा । जितना देजा और भेंट चाओ मैं तुम्हारे कहने को १२  
 समान देजंगा पर लड़की को सुके पत्नी होने के निमित्त देओ ॥

तब यशकूच के छोटी ने मिकम और उस के पिता दूसरे को लल मे उत्तर दिया १३  
 क्योंकि उस ने उन की छोटि दोनः को आगुह किया था । और उन से कहा कि १४

हम यह बात नहीं कर सकते कि एक अखतनः पुरुष को अपनी बहिन देवें  
 १५ क्योंकि इससे हमारी निन्दा होगी । केवल इस में हम तुम्हारी बात मानेंगे यदि  
 १६ तुम हमारे समान होओ कि तुम्हारे हर एक पुरुष का खतनः किया जाय । तब  
 हम अपनी बेटियाँ तुम्हें देंगे और तुम्हारी बेटियाँ लेंगे और हम तुम में निवास  
 १७ करेंगे और हम एक लोग हो जायेंगे । परन्तु जो खतनः कराने में तुम हमारी न  
 सुनोगे तो हम अपनी लड़की ले लेंगे और चले जायेंगे ॥

१८ और उन की बातें हमूरे और हमूरे के पुत्र सिकम की दृष्टि में प्रसन्न हुई ।  
 १९ और उस तरुण ने उस बात में अवेर न किया क्योंकि वह यशकूब की बेटि से  
 २० प्रसन्न था और वह अपने पिता के सारे घराने से अधिक कुलीन था । और हमूरे  
 और उस का बेटा सिकम अपने नगर के फाटक पर आये और उन्हें ने अपने  
 २१ नगर के लोगों से यों बातचीत कीई । कि इन मनुष्यों से हम से मेल है सो उन्हें  
 इस देश में रहने देओ और इस में व्यापार करें क्योंकि देवों यह देश उन के  
 लिये बड़ा है सो आओ हम उन की बेटियों को पत्नियों के लिये लेवें और अपनी  
 २२ बेटियाँ उन्हें देवें । परन्तु हमारे साथ रहने को और एक लोग हो जाने को केवल  
 यह लोग इसी बात से मानेंगे कि खतनः जैसा उन का किया गया है हम में हर  
 २३ पुरुष खतनः करावे । क्या उन के डोर और उन की संपत्ति और उन का हर एक  
 चौपाया हमारा न होगा केवल हम उन की मान लेवें और वे हम में निवास  
 २४ करेंगे । और सभी ने जो नगर के फाटक से आते जाते थे हमूरे और उस के बेटे  
 सिकम की बात को माना और उस के नगर के फाटक से सब जो बाहर जाते थे  
 उन में से हर पुरुष ने खतनः करवाया ॥

२५ और तीसरे दिन जब लों वे घाव में पड़े थे यों हुआ कि यशकूब के बेटों में  
 से दीनः के दो भाई समजन और लावी हर एक ने अपना अपना खड्ग लिया और  
 २६ साहस से नगर पर आ पड़े और सारे पुरुषों को मार डाला । और उन्होंने ने हमूरे  
 और उस के बेटे सिकम को खड्ग की धार से मार डाला और सिकम के घर से  
 २७ दीनः को लेके निकल गये । यशकूब के बेटे जूमे हुआ पर आये और नगर को  
 २८ लूट लिया क्योंकि उन्होंने ने उन की बहिन को अगुष्ट किया था । उन्होंने ने उन  
 की भेड़ चकरी और उन की गाय बैल और उन के गदहे और जो कुछ कि नगर  
 २९ में और खेत में था लूट लिया । और उन के सब धन और उन के सारे बालक  
 और उन की पत्नियाँ और घर में का सब कुछ वे बन्धुआई में लाये और लूट  
 ३० लिया । और यशकूब ने समजन और लावी से कहा कि तुम ने मुझे दुःख दिया  
 कि इस भूमि के वाशियों में कन्यायानियों और फरिजियों के मध्य में मुझे घिनौना  
 कर दिया और मैं गिनती में छोड़ा हूँ और वे मेरे सन्मुख एकट्टे होंगे और मुझे  
 ३१ मार डालेंगे और मैं और मेरा घराना नष्ट होवेगा । तब वे बोले क्या उचित था  
 कि वह हमारी बहिन के साथ वेश्या की नाई व्यवहार करे ॥

पैंतीसवां पर्व ।

१ और ईश्वर ने यशकूब से कहा कि उठ बैतएल को जा और वहीं रह और  
 उस सर्वशक्तिमान के लिये जिस ने तुझे दर्शन दिया था जब तू अपने भाई एसा

के आगे से भागा था वहाँ एक घेरी बना । तब यशकृत्य ने अपने घराने से और २  
 अपने सब संगियों से कहा कि ऊपरी देवों को जो तुम से हैं दूर करो और अपने  
 तहें झुट्ट करो और अपने कपड़े बदलो । और आओ हम उठें और वैतणल को ३  
 जायें और मैं वहाँ उस सर्वगन्तिमान के लिये घेरी बनाऊँगा जिस ने मेरी नकली  
 के दिन तुम्हें उत्तर दिया और जिस मार्ग में मैं चला वह मेरे साथ साथ था । और ४  
 उन्हीं ने मेरे ऊपरी देवों को जो उन के छावों में थे और कुंदल जो उन के कानों  
 में थे यशकृत्य को दिये और यशकृत्य ने उन्हें बहुत पेटु तले बिक्रम के नर गाढ़ ५  
 दिया । और उन्हीं ने कुंज किया और उन के आस पास के नहरों पर ईश्वर का  
 घर पड़ा और उन्हीं ने यशकृत्य के वेटों का पीछा न किया ॥

तो यशकृत्य और जितने लोग उस के साथ थे कनखान की भूमि में लाज को ६  
 जो वैतणल है आये । और उस ने वहाँ एक घेरी बनाई और हम लिये कि जब ७  
 वह अपने भाई के पास से भागा तो वहाँ उसे ईश्वर दिखाई दिया उस ने उस  
 का नाम वैतणल का सर्वगन्तिमान रखया ॥

और बिक्रम की दाईं दूर: सर गई और वैतणल के नर बहुत पेटु तले गाढ़ी ८  
 गई और उस का नाम रान का बहुत रखया ॥

और जब कि यशकृत्य फट्टानगराम से निकला ईश्वर ने उसे फेर दर्शन दिया ९  
 और उसे आगीस दिया । और ईश्वर ने उम्मे कहा कि तेरा नाम यशकृत्य है तेरा १०  
 नाम आगे को यशकृत्य न होगा परन्तु तेरा नाम दूसरागल होगा सो उस ने उस  
 का नाम दूसरागल रखया । फिर ईश्वर ने उम्मे कहा कि मैं सर्वगन्तिमान सर्व- ११  
 सामर्थी हूँ तू कनखान हो और वह तुम्हें से एक जातिगग और जातिगग की  
 मंडली होगी और तेरा कटि से राजा निकर्नेगे । और वह भूमि जो मैं ने अग्रिमाम १२  
 और इजलाक को दिई है तुम्हें और तेरे पीछे तेरे धंग को देऊँगा । और ईश्वर १३  
 उस स्थान में जहाँ उस ने उम्मे वार्ते किई थी उस पास में उठ गया । और १४  
 यशकृत्य ने उस स्थान में जहाँ उस ने उस से वार्ते किई पाथर का एक खंभा खड़ा  
 किया और उस पर तपावन तपाया और उस पर तेल डाला । और यशकृत्य ने उस १५  
 स्थान का नाम जहाँ ईश्वर उम्मे घाना था वैतणल रखया ॥

और उन्हीं ने वैतणल में कुंज किया और वहाँ से एक रात: बहुत दूर न था १६  
 और राखिल को पीर लगी और उस पर बहुत पीड़ा हुई । और उस पीड़ा को १७  
 दशा में जनाई दाईं ने उम्मे कहा कि मत दर अयमी भी तेरे घेरा होगा । और १८  
 यों हुआ कि जब उस का प्राण जाने पर था क्योंकि वह सर ही गई तो उस ने  
 उस का नाम बिलब्रानी रखया पर उस के पिता ने उस का नाम बिलबमीन रखया ।  
 सो राखिल सर गई और एक रात: के मार्ग में जो वैतणल हम से गाढ़ी गई । और १९  
 यशकृत्य ने उस के समाधि पर एक खंभा खड़ा किया वही खंभा राखिल के समाधि २०  
 का खंभा आल ली है ॥

फिर दूसरागल ने कुंज किया और अपना तंयू अड़ के गुम्मत के उस पार खड़ा किया । २१  
 और जब दूसरागल उस देश में जा रहा तो यों हुआ कि खिन गया और अपने पिता २२  
 की सुरीतिन के संग अकर्म किया और दूसरागल ने मुना अब यशकृत्य के बारह वेटे थे ॥

२३ लिपाह के बेटे रुबिन यश्कूव का पहिलौंठा और समजन और लायी और  
 २४ यहूदाह और इशकार और जवूलन । और राखिल के बेटे यूसुफ और विनयमीन ।  
 २५ और राखिल की सहेली विलहः के बेटे दान और नफताली । और लिपाह की  
 २६ सहेली जिलफः के बेटे जद और यसर यश्कूव के बेटे जो फट्टानअराम में उस  
 के लिये उत्पन्न हुए थे हैं ॥

२७ और यश्कूव अरबः के नगर में जो हवस्न है मसरी के बीच अपने पिता  
 २८ इजहाक पास जहां अबिरहाम और इजहाक ने निवास किया था आया । और  
 २९ इजहाक एक सौ अस्सी बरस का हुआ । और इजहाक ने प्राण त्यागा और छूटा  
 और दिनी होके अपने लोगों में जा मिला और उस के बेटे एसौ और यश्कूव ने  
 उसे गाड़ा ॥

### द्वितीय पर्व ।

१ और एसौ की जो अदूम है वंशावली यह है । एसौ ने कनआन की लड़कियों  
 में से पत्नियां किई रेलून हिती की बेटी आदः को और अहलिवामः को जो  
 ३ अनाह की बेटी हवी सबजन की बेटी थी । और इसमअरेल की बेटी वशामत  
 ४ को जो नवायोत की बहिनों में से थी । और एसौ के लिये आदः इलीफज का  
 ५ जनी और वशामत से रजएल उत्पन्न हुआ । और अहलिवामः से यजस और  
 यअलाम और कुरह उत्पन्न हुए थे एसौ के बेटे हैं जो उस के लिये कनआन की  
 भूमि में उत्पन्न हुए ॥

६ और एसौ अपनी पत्नियों और अपने बेटों और अपनी बेटियों और अपने घर के  
 हर एक प्राणी और अपने ठार को और अपने सारे पशु को और अपनी सारी  
 संपत्ति को जो उस ने कनआन देश में प्राप्त किई थी लेके अपने भाई यश्कूव  
 ७ पास से परदेश को निकल गया । क्योंकि उन का धन ऐसा बढ़ गया था कि वे  
 एकट्ठे न रह सक्ते थे और उन के पशु के कारण से उन के ठिकने की भूमि उन  
 ८ का भार न उठा सकती थी । और एसौ जो अदूम है शईर पहाड़ पर जा रहा ॥

९ सो एसौ की वंशावली जो शईर पहाड़ के मनुष्यों का पिता है यह है ।  
 १० एसौ के बेटों के नाम यह हैं एसौ की पत्नी आदः का बेटा इलीफज एसौ की  
 ११ पत्नी वशामत का बेटा रजएल । और इलीफज के बेटे तैमन ओमर सफू और  
 १२ जअताम और कनज थे । और एसौ के बेटे इलीफज की सहेली तिमनअ थी सो  
 वह इलीफज के लिये अमालीक को जनी एसौ की पत्नी आदः के बेटे थे थे ।  
 १३ और रजएल के बेटे थे हैं नहत और जरह सम्माह और मिजजः ये एसौ की पत्नी  
 १४ वशामत के बेटे थे । और एसौ की पत्नी सबजन की बेटी अनाह की बेटी  
 अहलिवामः के बेटे थे थे और वह एसौ के लिये यजस और यअलाम और कुरह  
 जनी ॥

१५ एसौ के बेटों में जो अध्यक्ष हुए थे हैं एसौ के पहिलौंठे इलीफज के बेटे  
 १६ अध्यक्ष तैमन अध्यक्ष ओमर अध्यक्ष सफू अध्यक्ष कनज । अध्यक्ष कुरह अध्यक्ष  
 १७ जअताम अध्यक्ष अमालीक अदूम के देश में ये आदः के बेटे थे । और एसौ के  
 बेटे रजएल के बेटे थे हैं अध्यक्ष नहत अध्यक्ष जरह अध्यक्ष सम्माह अध्यक्ष मिजजः



ये अद्रुस देश में हुए जैसा की पर्वो वशासत के बेटे थे । और जैसा की पर्वो अहलिवासः १८  
 के ये बेटे हैं अध्यन्न यज्ञस अध्यन्न यज्ञलास अध्यन्न कुरह ये अध्यन्न हैं जो जैसा की पर्वो  
 अनाह की बेटो अहलिवासः से थे । जो जैसा की जो अद्रुस हैं ये बेटे हैं ये उन के अध्यन्न हैं ॥ १९

गर्हर के बेटे हूरी जो इस भूमि के वामी थे ये हैं लौतान और मोवल और २०  
 मयजन और अनाह । और दैमन और अमर और दैमान ये हूरियों के अध्यन्न हैं और २१  
 अद्रुस की भूमि में गर्हर के बेटे हैं । और लौतान के सन्तान हूरी और दैमान और २२  
 लौतान की बेटिन निमनअ थी । और मोवल के सन्तान ये हैं अलवान और मनहन २३  
 और सेवान मफू और औनाम । और मयजन के बेटे ये हैं मेयाह और अनाह यह २४  
 वह अनाह है जिस ने वन में जय वह अपने पिता मयजन के गद्यों को चराता  
 था तातकुंड पाये । और अनाह के सन्तान ये हैं दैमन और अहलिवासः अनाह की २५  
 बेटो । और दैमन के सन्तान हसदान और हजवान और वधवान और करान । २६  
 अमर के सन्तान ये हैं विलवान और जयवान और अमान । दैमन के सन्तान ये हैं २७  
 जज और अरान । जो अध्यन्न हूरियों में के थे जो ये हैं अध्यन्न लौतान अध्यन्न २८  
 मोवल अध्यन्न मयजन अध्यन्न अनाह । अध्यन्न दैमन अध्यन्न अमर अध्यन्न दैमान २९  
 ये उन हूरियों के अध्यन्न हैं जो गर्हर की भूमि में थे ॥

और जो राजा अद्रुस देश पर राज्य करता था उन्ने पहिले कि एमरागन के ३१  
 वंश का कोई राजा हुआ सो ये हैं । और उजर का बेटा वालिग अद्रुस में राज्य ३२  
 करता था और उस के नगर का नाम तिनहयः था । और वालिग सर गया और ३३  
 सरह के बेटे मूयाव ने जो छुमरः का था उन की संगी राज्य किया । और मूयाव ३४  
 सर गया और हूशम ने जो नगर्मा की भूमि का था उन की संगी राज्य किया ।  
 और हूशम सर गया और विदद का बेटा गदद जिने ने मोयव के चारान में ३५  
 सिधवान का सारा उन की संगी राज्य किया और उन के नगर का नाम गयीन  
 था । और गदद सर गया और ससरीकः के नमनः ने उन की संगी राज्य किया । ३६  
 और समलः सर गया और नदी के लगे के मूयाव के माजन ने उन की संगी राज्य ३७  
 किया । और माजल सर गया और अकदूर के बेटे अकलतान ने उन की संगी ३८  
 राज्य किया । और अकदूर का बेटा अकलतान सर गया और उदर ने उस की ३९  
 संगी राज्य किया और उन के नगर का नाम फास था और उस की पर्वो का नाम  
 सुहैनयिल था जो मतगि की बेटो मंजतय की बेटो थी ॥

सो उन के घरानों उन के स्थानों उन के नाम के समान जैसा के अध्यन्नों के ये ४०  
 नाम हैं अध्यन्न निमनः अध्यन्न अलिवाह अध्यन्न यतान । अध्यन्न अहलिवासः ४१  
 अध्यन्न हलाह अध्यन्न फेनून । अध्यन्न जनज अध्यन्न गोमान अध्यन्न सिधवार । ४२  
 अध्यन्न मजदियल अध्यन्न ईराम ये अपने अपने स्थान में अपने अपने निवास के ४३  
 समान अद्रुस के अध्यन्न थे जो अद्रुसियों का पिता जैसा है ॥

संतानियों पर्व ।

और यशकूय ने कनयान देश में अपने पिता के टिकने की भूमि में वास १  
 किया । यशकूय की वंशावली यह है ॥ २

यूयुफ सवह वरस था जोके अपने भाइयों के साथ भुंड चराता था और वह



तब आपने पिता की पत्नी विलहः और जिलफः के बेटों के संग था और यूसुफ ने उन के पिता के पास उन के बुरे कामों का संदेश पहुंचाया । अब इसराएल यूसुफ को अपने सारे पुत्रों से अधिक प्यार करता था क्योंकि वह उस के दुष्टाणि का बेटा था और उस ने उस के लिये वहुरंग का पहिरावा बनाया । जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हमारे सब भाइयों से उसे अधिक प्यार करता है तो उन्होंने ने उससे वैर किया और उससे कुशल से न कह सक्ते थे ॥

५ और यूसुफ ने एक स्वप्न देखा और अपने भाइयों से कहा और उन्होंने ने उससे अधिक वैर रक्खा । और उस ने उन्हें यों कहा कि जो स्वप्न मैं ने देखा है सो सुनिये । क्योंकि देखिये कि हम खेत में गट्टियां बांधते थे और दंग्या मेरी गट्टी उठी और सीधी भी खड़ी हुई और देखो तुम्हारी गट्टियां आम पास खड़ी हुई और मेरी गट्टी को दंडवत किई । तब उस के भाइयों ने उससे कहा क्या तू मच-मुच हम पर राज्य करेगा अथवा तू हम पर प्रभुता करेगा और उन्होंने ने उस के स्वप्नों और उस की बातों के कारण उससे अधिक वैर किया । फिर उस ने दूसरा स्वप्न देखा और उसे अपने भाइयों से कहा कि देखो मैं ने एक और स्वप्न देखा १० और देखो सूर्य और चन्द्रमा और ग्यारह तारे मुझे दंडवत करते थे । और उस ने अपने पिता और भाइयों से वर्णन किया पर उस के पिता ने उसे डपटा और उससे कहा कि यह क्या स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या मैं और तेरी माता और तेरे ११ भाई सबमुच तेरे आगे भूमि पर झुकके तुझे दंडवत करेंगे । और उस के भाइयों ने उससे डाह किया परन्तु उस के पिता ने उस बात को सोच रक्खा ॥

१२ फिर उस के भाई अपने पिता के झुंड चराने सिकम को गये । तब इसराएल ने यूसुफ से कहा क्या तेरे भाई सिकम में नहीं चराते या मैं तुझे उन के पास भेजूं १३ और उस ने उससे कहा कि मैं यहीं हूं । और उस ने उससे कहा कि जाइये अपने भाइयों की कुशलता और झुंड की कुशलता देख और मुझ पास संदेश ला सो उस ने उसे दवरन की १४ तराई से भेजा और वह सिकम की ओर गया । तब किसी जन ने उसे पाया और देखो वह १५ खेत में भ्रमता था तब उस पुरुष ने उससे पूछा कि तू क्या ढूंढता है । तब वह बोला मैं १६ अपने भाइयों को ढूंढता हूं मुझे बताइये कि वे कहाँ चराते हैं । और वह पुरुष बोला वे यहां से चले गये क्योंकि मैं ने उन्हें यह कहते सुना कि आओ दूतैन को जावे तब यूसुफ अपने भाइयों के पीछे चला और उन्हें दूतैन से पाया ॥

१८ और ज्योंही उन्होंने ने उसे दूर से देखा तो अपने पास आने से पहिले १९ उस के मार डालने को जुगत किई । और वे आपस में बोले देखो यह स्वप्नदर्शी आता है । सो आओ अब हम उसे मार डालें और किसी कुए में उसे डाल दें और कहें कि कोई बन्धु ने उसे मर्दन किया और देखेंगे कि उस के स्वप्नों का २० क्या होगा । तब रविन ने सुनके उसे उन के हाथ से कुड़ाने चाहा और बोला कि हम उसे मार न डालें । और रविन ने उन्हें कहा कि लोहू मत बहाओ उसे २१ वन के इस कुए में डाल देओ और उस पर हाथ न डालो जिसतें वह उसे उन के हाथ से कुड़ाके उसे उस के पिता पास फिर पहुंचावे ॥

२३ और यों हुआ कि जब यूसुफ अपने भाइयों पास आया तो उन्होंने ने उस का

## उत्पत्ति की पुस्तक ।

३८ पर्व]

यम्भ यूमुफ में उतार लिया अर्थात् वह यमुंगी यम्भ जो वह पटिने था । और २४  
 उन्हीं ने उसे लेंके उसे उस कुण में डाल दिया और वह कुला खंवा था उस में  
 कुछ पानी न था । तब वे रोटी खाने बैठे और अपनी कामें उठाई और था २५  
 देखते हैं कि इसमअगलियों का एक जग जलिनशद में मगंध दृश्य और यम्भमग  
 और मुर जंटों पर लादे हुए मिम को उतार जाते हैं । और यहूदाह ने अपने भाइयों २६  
 से कहा था लाभ कि हम अपने भाई को मार डालें और उस का लोह लिखावे ।  
 आओ हम इसमअगलियों के साथ चलें और उस पर अपने हाथ न डालें प्रयोग २७  
 वह हमारा भाई और हमारा मांस है और उस के भाइयों ने मान लिया । और २८  
 जब सिदियानी व्यापारी उधर में जाते थे तो उन्हीं ने यूमुफ को उस कुण में बाहर  
 निकालके इसमअगलियों के साथ श्रीम दुकहें चौडी पर खेवा और वे यूमुफ को  
 मिम में लाये । तब सोचन कुण पर फिर आया और देखे यूमुफ कुण में नहीं है २९  
 तब उस ने अपने कपड़े फाड़े । और अपने भाइयों के पास फिर आया और कहा ३०  
 कि लड़का तो नहीं अब मैं कहा जाऊँ ॥

फिर उन्हीं ने यूमुफ का पीछाया लिया और एक यमुंगी का मग्रा नाम और ३१  
 उस पीछाये को उस के लोह में खुभाड़ा । और उन्हीं ने उस यमुंगी पीछाये ३२  
 को भेजा और अपने पिता के पास पहुंचाया और कहा कि हम ने इसे पाया था  
 पीछानिये कि यह आय के घंटे का पीछाया है कि नहीं । और हम ने उसे ३३  
 पीछाना और कहा कि यह तो मेरे घंटे का पीछाया है किनी यम्भम ने उसे  
 ग्या लिया है यूमुफ लिमन्देह कहा गया । तब यहूदाह ने अपने कानों को रोटी ३४  
 यम्भ अपनी कटि पर डाला और बहुत दिन लीं अपने घंटे के लिये रोक किया ।  
 और उस के भारे घंटे उस को मारी घोटियां उसे गाली देने उठों पर उस ने गाली गूहम ३५  
 न किई पर बोला कि मैं अपने घंटे के पास रोया हुआ मग्राध में उतरगा मैं उस  
 का पिता उस के लिये रोया किया । और मिलियानियों ने उसे मिम से फिरउन के ३६  
 एक प्रधान मनापति फूतिफर के साथ खेवा ॥

अर्न्तोग्रों पर्व ।

और उस समय में यों हुआ कि यहूदाह अपने भाइयों से यत्ना होकर तीरः नाम १  
 एक अदलामी के पास गया । और यहूदाह ने यहाँ एक जानवारी को मरुका का २  
 देखा जिस का नाम मृथा था और उस ने उसे निपा और उस के साथ मगम  
 किया । और वह गोभिंगी हुई और एक घंटा जनी और उस में उस का नाम ३  
 सर रखवा । और वह फिर गोभिंगी हुई और घंटा जनी और उस में उस का नाम ४  
 ओनान रखवा । और वह फिर गोभिंगी हुई और घंटा जनी और उस का नाम ५  
 मेलः रखवा और जब वह वस जनी तो वह कर्जाय में था ॥

और यहूदाह अपने पीछेलांटे सर के लिये एक स्त्री व्याह लाया जिस का नाम ६  
 तसर था । और यहूदाह का पीछेलांटा सर परसेजर की दृष्टि में दुष्ट था ७  
 परसेजर ने उसे मार डाला । तब यहूदाह ने ओनान को कहा कि अपने भाई ८  
 की पत्नी पास जा और उसमें व्याह कर और अपने भाई के लिये वंश चला । और ९  
 ओनान ने जाना कि यह वंश मेरा न होगा और यों हुआ कि जब वह अपने भाई

की पत्नी पास गया तो वीर्य को भूमि पर गिरा दिया न होवे कि उस का भाई  
 १० उससे वंश पावे । और उस का वह कार्य परमेश्वर की दृष्टि में घुरा था इस लिये  
 ११ उस ने उसे भी मार डाला । तब यहूदाह ने अपनी पतोह तमर को कहा कि अपने  
 पिता के घर में रांड बैठी रह जब लों कि मेरा चेटा सेलः बड़ जाय क्योंकि उस  
 ने कहा न होवे कि वह भी अपने भाइयों की नाईं मर जाय सो तमर अपने  
 पिता के घर जा रही ॥

१२ और बहुत दिन बीते और सूआ की बेटी यहूदाह की पत्नी मर गई और  
 यहूदाह उस के शोक को भूला तब वह और उस का मित्र अदूलामी हीरः अपनी  
 १३ भेड़ों के रोम कतरने तिमनास को गया । और तमर से यह कहा गया कि देव  
 १४ तेरा ससुर अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास को जाता है । तब उस ने अपने  
 रंडसाले के कपड़ों को अपने ऊपर से उतार फेंका और घूंघट ओढ़ा और अपने को  
 लपेटा और एनाइस के द्वार में जो तिमनास के मार्ग पर है जा बैठी क्योंकि उस  
 १५ ने देखा था कि सेलः सयाना हुआ और मुझे उस की पत्नी न कर दिया । जब  
 यहूदाह ने उसे देखा तो समझा कि कोई वेश्या है क्योंकि वह अपना मुंह छिपाये  
 १६ हुए थी । और मार्ग से उस की ओर फिरा और उससे कहा कि मुझे अपने पास  
 आने दे क्योंकि न जाना कि वह मेरी पतोह है और वह बोली कि मेरे पास आने  
 १७ में तू मुझे क्या देगा । तब वह बोला मैं कुंड में से एक मेझा भेजूंगा और उस ने  
 १८ कहा कि तू उसे भेजने लों मुझे कुछ बंधक दे । और वह बोला मैं तुझे क्या बंधक  
 देऊँ सो वह बोली अपनी क्राप और अपने बिजायठ और अपनी लाठी जो तेरे  
 हाथ में है और उस ने उस को दिया और उस को पास गया और वह उससे गर्भिणी  
 १९ हुई । तब वह उठी और चली गई और अपना घूंघट अपने ऊपर से उतार रखवा  
 २० और अपने रंडसाले का वस्त्र पहिन लिया । और यहूदाह ने अपने मित्र अदूलामी  
 के हाथ मेझा भेजा कि उस स्त्री के हाथ से वह बंधक फेर लेवे परन्तु उस ने उसे  
 २१ न पाया । तब उस ने उस स्थान के लोगों से पूछा कि जो वेश्या मार्ग में बैठी  
 २२ थी सो कहाँ है और वे बोले कि यहां वेश्या न थी । तब वह यहूदाह के पास  
 फिर आया और कहा कि मैं ने उसे नहीं पाया और उस स्थान के लोगों ने भी  
 २३ कहा कि वेश्या वहां न थी । और यहूदाह बोला कि उसे लेने दे न हो कि हम  
 २४ निन्दित होवें देख मैं ने यह मेझा भेजा और तू ने उसे न पाया । और तीन मास  
 के पीछे यों हुआ कि यहूदाह से कहा गया कि तेरी पतोह तमर ने वेश्याई किई  
 और देख कि उसे क्रिनाले का गर्भ भी है और यहूदाह बोला कि उसे बाहर  
 २५ लाओ और वह लला दिई जाय । जब वह निकाली गई तो उस ने अपने ससुर  
 को कहला भेट कि मुझे उस जन का पेट है जिस की ये वस्त्र हैं और कहा कि  
 २६ पहिचानिये यह वस्त्र और बिजायठ और लाठी किस की है । तब यहूदाह ने  
 पहिचाना और कहा कि वह मुझ से अधिक धर्मी है इस लिये कि मैं ने उसे  
 अपने चेटे सेलः को न दिया पर वह आगे को उससे अज्ञान रहा ॥  
 २७ और उस के जन्म के समय में यों हुआ कि देखो उस के कोख में यमल थे ।  
 २८ और जब वह पीड़ में हुई तो एक का हाथ निकला और जनाई दाई ने उस के

हाथों में नारा बांधके कहा कि यह पत्ति निकला । और यों हुआ कि उस ने २८  
अपना हाथ फिर खींच लिया और देखा उन का भाई निकल पड़ा तब वह बोली  
कि तू ने यह दार उघा किया इस लिये उस का नाम फारम हुआ । और उस के ३०  
पीछे उस का भाई जिस के हाथ में नारा बांधा था निकला और उस का नाम  
जरह रक्खा ।

उन्नालीसवां पर्व ।

और यूसुफ सिन में लाया गया और फनिफर सिनो ने जो फिरजन का एक १  
प्रधान और राजा का सेनापति था उस को समझानियों के हाथ में जो उसे  
वहां लाये थे मोल लिया । परन्तु परमेश्वर यूसुफ के साथ था और वह भागवान २  
हुआ और वह अपने किनी स्यासी के घर में रहा किया । और उस के स्यासी ने  
यह देखा कि परमेश्वर उस के साथ है और कि परमेश्वर ने उस के बारे कायों ३  
में उसे भागवान किया । और यूसुफ ने उस की दाहि में अनुयाय पाया और उन ने  
उस की सेवा की और उस ने उसे अपने घर पर कराया किया और सब जो कुछ ४  
कि उस का था उस के हाथ में कर दिया । और यों हुआ कि जब से उस ने उसे  
अपने घर पर और अपनी सब वस्तु पर कराया किया तब से परमेश्वर ने उस ५  
सिनी के घर पर यूसुफ के कारण बहुतों दिने और उस की मारी वस्तु में जो  
घर में और गेत में यों परमेश्वर की और से बढ़ती हुई । और उस ने अपना सब ६  
कुछ यूसुफ के हाथ में कर दिया और वह गेटों में अधिक जिसे खा लेता था  
कुछ न जानता था और यूसुफ स्पष्टान और देखने में सुंदर था ।

और इन बातों के पीछे यों हुआ कि उन के स्यासी की पत्नी ने अपनी स्यासी ७  
यूसुफ पर लगाई और वह बोली कि मेरे साथ शयन कर । परन्तु उस ने न माना ८  
और अपने स्यासी की पत्नी से कहा कि देख मेरा स्यासी अपनी रोटों में अधिक  
जिसे खा लेता है किनी वस्तु को नहीं जानता और उस ने अपना सब कुछ मेरे हाथ ९  
में माँप दिया । इस घर में सुक से बढ़ा कोई नहीं और उस ने तुम को बहुत कोरे वस्तु १०  
सुक से अलग नहीं रखी क्योंकि तू उस की पत्नी है तो मैं तेरी सहायता यों करूँ और  
इश्वर का अपराधी होऊँ । और ऐसा हुआ कि वह यूसुफ को प्रतिदिन कहती रही पर ११  
वह उस के साथ शयन करने को अथवा उस के पास रहने को उस की न मानता १२  
था । और उस समय को लगभग ऐसा हुआ कि वह अपने कार्य के लिये घर में १३  
गया और घर के लोगों में से वहाँ कोई न था । तब उस ने उस का पहिरावा १४  
पकड़के कहा कि मेरे साथ शयन कर तब वह अपना पहिरावा उस के हाथ में  
होड़कर भागा और बाहर निकल गया । और यों हुआ कि जब उस ने देखा कि वह १५  
अपना पहिरावा मेरे हाथ में होड़ गया और भाग निकला । तो उस ने अपने घर १६  
के लोगों को बुलाया और उन से कहा कि देखो वह एक चरगनी को हमारे  
घर में लाया कि हम से ठडोली करे वह मेरे साथ शयन करने को मेरे पास १७  
आया और मैं चिढ़ा उठी । और यों हुआ कि जब उस ने सुना कि मैं अपना १८  
शब्द उठाके चिढ़ाई तो अपना पहिरावा मेरे पास होड़ भागा और बाहर निकल १९  
गया । सो जब तों उस का पति घर में न आया उस ने उस का पहिरावा अपने २०

१७ पास रख छोड़ा । तब उस ने ऐसी ही बातें उससे कही कि यह जवरी दाम जो  
 १८ तू ने हम पास ला रक्खा मेरे पास आया कि मुझ में ठट्ठा करे । और जब मैं जिज्ञा  
 १९ उठी तो वह अपना पहिरावा मेरे पास छोड़कर बाहर निकल भागा । और यों  
 हुआ कि जब उस के स्वामी ने अपनी पत्नी की बातें सुनीं जो उस ने उससे कहीं  
 २० कि तेरे दाम ने मुझ से यों किया तो उन का क्रोध भड़का । और यूसुफ के  
 स्वामी ने उसे लेके बंदीगृह में जहां राजा के बंधुग वंद थे बंधन में डाला और  
 २१ वह वहां बंदीगृह में था । परन्तु परमेश्वर यूसुफ के साथ था और उस पर कृपा  
 २२ किई और बंदीगृह के प्रधान को उस पर दयाल किया । और उस बंदीगृह के  
 प्रधान ने बंदीगृह के सारे बंधुओं को यूसुफ के हाथ में मीठा और जो फल वे करते  
 २३ थे उस का कर्ता वही था । उस बंदीगृह का प्रधान कार्यों में निश्चित था इस  
 लिये कि परमेश्वर उस के साथ था और उस के कार्यों में जो उस ने किये ईश्वर  
 ने भाग्यवान किया ॥

चालीसवां पृष्ठ ।

१ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि मिस्र के राजा के पिपाऊ ने और रसोइया  
 २ ने अपने प्रभु मिस्र के राजा का अपराध किया । और फिरउन अपने दो प्रधानों  
 ३ पर अर्थात् प्रधान पिपाऊ पर और प्रधान रसोइया पर क्रुद्ध हुआ । और उस ने  
 ४ उन्हें पहरुओं के प्रधान के घर में जहां यूसुफ बंद था बंदीगृह में डाला । और  
 पहरुओं के प्रधान ने उन्हें यूसुफ को सौंप दिया और उस ने उन की सेवा किई  
 और वे कितने दिन लों बंद रहे ॥

५ और हर एक ने उन दोनों में से बंदीगृह में अर्थात् मिस्र के राजा के पिपाऊ  
 और रसोइया ने एक ही रात एक एक स्वप्न अपने अपने अर्थ के ममान देखा ।  
 ६ और बिहान को यूसुफ उन पास आया और उन पर दृष्टि किई और देखो वे  
 ७ उदास थे । तब उस ने फिरउन के प्रधानों से जो उस के साथ उस के प्रभु के  
 ८ घर में बंद थे पूछा कि आज तुम क्यों कुरूप हो । और वे उससे बोले कि हम ने  
 स्वप्न देखा है जिस का अर्थ करवैया नहीं तब यूसुफ ने उन्हें कहा क्या अर्थ  
 करना ईश्वर का कार्य नहीं मुझ से कहो ॥

९ तब पिपाऊओं के प्रधान ने अपना स्वप्न यूसुफ से कहा और उससे बोला कि  
 १० अपने स्वप्न में क्या देखता हूँ कि एक लता मेरे आगे है । और उस लता में तीन  
 डालियां थीं और आनें उस में कलियां निकलीं और उस में फूल लगे और उस के  
 ११ गुच्छों में पक्षी दाख निकले । और फिरउन का कटोरा मेरे हाथ में था और मैं ने  
 दाखों को लेके उन्हें फिरउन के कटोरे में निचोड़ा और मैं ने उस कटोरे को  
 १२ फिरउन के हाथ में दिया । तब यूसुफ ने उससे कहा कि इस का यह अर्थ है कि  
 १३ ये तीन डालियां तीन दिन हैं । फिरउन अब से तीन दिन में तेरा सिर उभाड़ेगा  
 और तुझे अपना पद फिर देगा और तू आगे की नाईं जब तू फिरउन का  
 १४ पिपाऊ था उस के हाथ में फिर कटोरा देगा । परन्तु जब तेरा भला होय तो  
 मुझे स्मरण कीजियो और मुझ पर दयाल हूजियो और फिरउन से मेरी चर्चा करियो  
 १५ और मुझे इस घर से छुड़ाइयो । क्योंकि निश्चय मैं इब्रानियों के देश से चुराया

गया था और यहाँ भी मैं ने ऐसा काम नहीं किया कि वे मुझे इन चंदीगढ़ में रखें ॥

तब रमोद्यों के प्रधान ने देखा कि अर्थ अच्छा हुआ तो प्रमुख से कहा कि १६ मैं भी स्वप्न में था और क्या देखा है कि मेरे मिर पर प्रवेत रोटी की तीन टोकियाँ हैं । और ऊपर की टोकरी में फिरजन के लिये समस्त रोटी का भोजन १७ था और पंछी मेरे मिर पर उस टोकरी में से खाते थे । तब प्रमुख ने उत्तर दिया १८ और कहा उस का अर्थ यह है कि ये तीन टोकियाँ तीन दिन हैं । फिरजन अब १९ से तीन दिन में तेरा मिर तैरी देह से अन्न खा करेगा और एक पेड़ पर तुझे टांग देगा और पंछी तेरा मांस नाच नाच खाएंगे ।

और यों हुआ कि तीसरे दिन फिरजन के जन्मराठ का दिन था और उस ने २० अपने सारे सैन्यों का नेत्रता किया और उस ने अपने सैन्यों में पिपाठ्यों के प्रधान और रमोद्यों के प्रधान को उभाड़ा । और उस ने पिपाठ्यों के प्रधान को २१ पिपाठ का पद फिर दिया और उस ने फिरजन के हाथ में कटोरा दिया । परन्तु २२ उस ने प्रमुख के अर्थ करने के समान रमोद्यों के प्रधान को फाँसी दिई । तबपि २३ पिपाठ्यों के प्रधान ने प्रमुख को स्मरण न किया परन्तु उसे भूल गया ॥

मकनानीयों पृष्ठ ।

फिर दो बरस बीते यों हुआ कि फिरजन ने स्वप्न देखा और देखे कि आप १ नदी के तीरे पर खड़ा है । और देखे कि नदी में मान सुंदर और मोटी मोटी २ गाँव निकलीं और तबराय पर चढ़ने लगीं । और देखे कि उन के पीछे और सात ३ गाँव कुम्प और हांगर नदी में निकलीं और नदी के तीरे पर उन मान गाँवों के पास खड़ी हुईं । और उन कुम्प और हांगर गाँवों ने उन सुंदर और मोटी मात गाँवों ४ को आ लिया तब फिरजन जागा । फिर सो गया और दूसरे स्वप्न देखा कि ५ अन्न में भरी हुईं और अच्छी मात वालें एक हाँडी में निकलीं । और देखे कि ६ और सात वालें छितरी और पुरखी पथन में सुरक्षाई हुईं उन के पीछे निकलीं । और वे छितरी मात वालें उन अच्छी भरी हुईं सात वालों को निगल गईं और ७ फिरजन जागा और देखे कि स्वप्न है ॥

और चिदान को यों हुआ कि उस का जीव व्याकुल हुआ तब उस ने मिर के ८ सारे टोमहों और बुद्धिमानों को बुला भेजा और अपना स्वप्न उन से कहा परन्तु उन में से कोई फिरजन के स्वप्न का अर्थ न कर सका ॥

तब प्रधान पिपाठ ने फिरजन से कहा कि मेरे अपराध आज मुझे ज्ञात आते ९ हैं । फिरजन अपने दासों पर क्रुद्ध था और मुझे और रमोद्यों के प्रधान को चंदीगढ़ १० के पद के घर में बंद किया था । और एक ही रात हम ने शायान् में ने ११ और उस ने एक एक स्वप्न देखा हम में से हर एक ने अपने स्वप्न के अर्थ समान स्वप्न देखा । और एक हवराजी तमण पदस्थों के प्रधान का संयक हमारे १२ साथ था और हम ने उससे कहा और उस ने हमारे स्वप्न का अर्थ किया और उस ने हर एक के स्वप्न समान अर्थ किया । और जैसा उस ने हमारे लिये अर्थ किया १३ तैसा हुआ मुझे आप ने पद फिर दिया और उसे फाँसी दिई ॥



१४ तब फिरजन ने यूसुफ को बुलवा भेजा और उन्होंने ने उसे खंदीगृह से दौड़ाया  
 १५ और उस ने बाल बनवाया और अपने कपड़े बदल फिरजन के आगे आया । तब  
 फिरजन ने यूसुफ से कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा जिस का अर्थ कोई नहीं कर  
 सकता और मैं ने तेरे विषय में सुना है कि तू स्वप्न को समझके अर्थ कर  
 सकता है ॥

१६ और यूसुफ ने उत्तर में फिरजन से कहा कि सुन्न से नहीं ईश्वर ही फिरजन को  
 कुशल का उत्तर देगा ॥

१७ तब फिरजन ने यूसुफ से कहा कि मैं ने स्वप्न देखा कि मैं नदी के तीर पर  
 १८ खड़ा हूँ । और क्या देखता हूँ कि मोटी और सुंदर सात गायें नदी से निकलीं  
 १९ और चराई पर चरने लगीं । और क्या देखता हूँ कि उन के पीछे अत्यंत कुरूप  
 और बुरी और डांगर और सात गायें निकलीं ऐसी बुरी जो मैं ने मिस्र के सारे  
 २० देश में कभी न देखीं । और वे डांगर और कुरूप गायें अगिली मोटी सात गायों  
 २१ को खा गईं । और जब वे उन के उदर में पड़ीं तब समझ न पड़ा कि वे उन्हें  
 २२ खा गईं और वे वैसी ही कुरूप थीं जैसी पहिले थीं तब मैं जागा । और फिर  
 २३ स्वप्न में देखा कि अच्छी घनी सात बालें एक डांठी में निकलीं । और क्या  
 देखता हूँ कि और सात बालें सुरभाई हुईं और पतली पुरबी पवन से कुम्हलाई  
 २४ हुईं उन के पीछे उगीं । और उन पतली बालों ने उन अच्छी सात बालों को  
 निगल लिया और मैं ने यह टोनहों से कहा परन्तु कोई अर्थ न कर सका ॥

२५ तब यूसुफ ने फिरजन से कहा कि फिरजन का स्वप्न एक ही है जो कुछ ईश्वर  
 २६ को करना है सो उस ने फिरजन को दिखाया है । वे सात अच्छी गायें सात बरस  
 २७ हैं और वे अच्छी सात बालें सात बरस हैं स्वप्न एक ही है । और वे डांगर और  
 कुरूप सात गायें जो उन के पीछे निकलीं सात बरस हैं और वे सात बूझी बालें  
 २८ जो पुरबी पवन से कुम्हलाई हुई हैं सो अकाल के सात बरस हैं । यही बात है  
 जो मैं ने फिरजन से कही ईश्वर जो कुछ किया चाहता है फिरजन को दिखाया ।  
 २९ देखिये कि सात बरस लों मिस्र के सारे देश में बड़ी बढ़ती होगी । और उन के  
 पीछे सात बरस का अकाल होगा और मिस्र देश की सारी बढ़ती भुला जायगी  
 ३० और अकाल देश को नष्ट करेगा । और उस अकाल के सारे वह बढ़ती देश में  
 ३१ जानी न जायगी क्योंकि वह बड़ा भारी अकाल होगा । और फिरजन पर जो  
 स्वप्न दोहराया गया सो इस लिये है कि वह ईश्वर से ठहराया गया है और  
 ३२ ईश्वर छोड़े दिन में उसे करेगा । सो अब फिरजन एक चतुर और बुद्धिमान  
 ३३ मनुष्य ठूँड़े और उसे मिस्र देश पर ठहरावे । फिरजन यही करे और देश पर  
 करोड़ा ठहरावे और सात बढ़ती के बरसों में मिस्र देश का पांचवां भाग लिया  
 ३४ करे । और वे अवैये अच्छे बरसों का सारा भोजन एकट्ठा करें और फिरजन के  
 ३५ बरस में अन्न धर रखें और वे अन्न नगरों में धर रखें । और वही भोजन मिस्र के  
 देश में अकाल के अवैये सात बरसों के लिये देश को भंडार के लिये होगा जिसमें  
 अकाल के सारे देश नष्ट न हो ॥

३६ तब यह बात फिरजन की दृष्टि में और उस के सारे सेवकों की दृष्टि में अच्छी



लगी । तब फिरजन ने अपने मेथकों से कहा क्या हम इस जन के समान या मुक्त ३८  
हैं जिस में ईश्वर का आत्मा है । और फिरजन ने यूसुफ से कहा जैसा कि ईश्वर ३९  
ने यह सारी बातें तुम्हें दिखाई हैं सो तब तुम्हें दुष्टिमान और खतुर कोश नही  
है । तू मेरे घर का करोड़ा हो और मेरी सारी प्रजा मेरी आज्ञा में होगी केवल ४०  
मिंदहसन पर मैं तुम्हें से बढ़ा दूंगा । फिर फिरजन ने यूसुफ से कहा कि देश में ने ४१  
तुम्हें मिस्र के सारे देश पर करोड़ा किया । और फिरजन ने अपने बेटों को अपने ४२  
हाथ से निकालके उसे यूसुफ के हाथ में पड़िना दिया और उसे कोना बस्त्र ने  
विभूषित किया और सोने की सिकरी उस के गले में डाली । और उस ने उसे ४३  
अपने दूसरे रथ से चढ़ाया और उस के आगे प्रचार शाय कि सन्तान करो और  
उस ने उसे मिस्र के सारे देश पर अध्यापन किया । और फिरजन ने यूसुफ से कहा ४४  
कि मैं फिरजन हूँ और तुम्हें बिना मिस्र के सारे देश में कोई मनुष्य अपना हाथ  
पांव न उठावेगा । और फिरजन ने यूसुफ का नाम मफलमफलानियस रखवा और उस ४५  
ने ओन के नगर के याजक फूतिफरथ की बेटी आसनाय को उसने दया दिला ।

और यूसुफ मिस्र देश में सर्वत्र फिर और जब यूसुफ मिस्र के नारा फिरजन ४६  
के आगे खड़ा हुआ तब वह नाम धर्म का जो ओन यूसुफ फिरजन के आगे ने  
निकलके मिस्र के सारे देश में सर्वत्र फिर । और बेटों के साथ घरों में भूमि ४७  
से सुट्टी भर भर उत्पन्न हुआ । तब उस ने उन नाम घरों का नगर भोजन जो ४८  
मिस्र देश में हुआ एकट्टे किया और भोजन के नगरों में घर रखवा तब नगर के  
आस पास के खेतों का अन्न उर्जी बरती में रखवा । और यूसुफ ने मनुष्य को खाद्य ४९  
की नाई बहुत अन्न बटोरा पहा ली कि निम्ना छोड़ दिया प्रोत्ति प्रगतिश पा ।

और अकाल के घरों में आगे यूसुफ के दो बेटे उत्पन्न हुए जो ओन के याजक ५०  
फूतिफरथ की बेटी आसनाय उस के निर्वर्जनी । सो यूसुफ ने पड़िने का नाम ५१  
सुनस्ती रखवा इस लिये कि उस ने कहा ईश्वर ने मेरा और मेरे पिता के घर का  
सब परियस भुलाया । और दूसरे का नाम इफरायम रखवा इस लिये कि ईश्वर ५२  
ने मुझे मेरे दुःख के देश से फलवान किया ॥

और मिस्र देश की बेटों के नाम धर्म रखा गया । और यूसुफ के कहने के ५३  
समान अकाल के साथ धर्म आने नर और सारे देशों में अकाल पड़ा पस्त  
मिस्र के सारे देश में अन्न था । और तब कि मिस्र के सारे देश भूय से लगे लगे ५४  
तो लोग रोटी के लिये फिरजन के आगे चिन्ताय तब फिरजन ने सारे मिस्रियों से  
कहा कि यूसुफ पास जाओ और उस का कथन सोना । और सारी भूमि पर अकाल ५५  
था और यूसुफ ने खेतों खेतों मिस्रियों के हाथ देवा और मिस्र के देश में  
कठिन अकाल पड़ा था । और सारे देशगत मिस्र में यूसुफ ने सोल लगे पाये ५६  
क्योंकि सारे देशों में बढ़ा अकाल था ॥

चयालीसवां पर्व ।

और जब यशकूब ने देखा कि मिस्र में अन्न है तब उस ने अपने बेटों से १  
कहा कि क्यों एक एक को ताकते हो । तब उस ने कहा देश में सुनता है कि २  
मिस्र में अन्न है उधर जाओ और वहाँ से हमारे लिये सोल लेओ जिसमें हम जीवें

३ और न मरे । सो यूसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने को मिस्र में आये । पर यअकूब ने यूसुफ के भाई बिनयमीन को उस के भाइयों के साथ न भेजा क्योंकि उस ने कहा कहीं ऐसा न हो कि उस पर कुछ विपत्ति पड़े ॥

५ और इसराएल के बेटे और आनेवालों के साथ मोल लेने आये क्योंकि ६ कनआन देश में अकाल था । और यूसुफ तो देश का अध्यक्ष था और वह देश के सारे लोगों के हाथ बेचा करता था सो यूसुफ के भाई आये और उन्होंने ने उस ७ के आगे भूमि लें प्रणाम किया । और यूसुफ ने अपने भाइयों को देखके उन्हें पहिचाना पर उस ने आप को अनपहिचान किया और उन से कटोरता से बोला और उस ने उन्हें पूछा कि तुम कहां से आये हो और वे बोले अन्न लेने को कन- ८ आन देश से । यूसुफ ने तो अपने भाइयों को पहिचाना पर उन्होंने ने उस न पहि- ९ चाना । और यूसुफ ने उन के विषय के स्वप्नों को जो उस ने देखे थे स्मरण किया और उन्हें कहा कि देश की कुदशा देखने को तुम भेदिये होकर आये हो ।

१० तब उन्होंने ने उससे कहा नहीं मेरे प्रभु परन्तु आप के सेवक अन्न लेने आये हैं । ११ हम सब एक ही जन के बेटे हैं हम सच्चे हैं आप के सेवक भेदिये नहीं हैं । १२ तब वह उन से बोला कि नहीं परन्तु देश की कुदशा देखने आये हो । तब उन्होंने ने कहा कि हम आप के सेवक बारह भाई कनआन देश में एक ही जन के बेटे १३ हैं और देखिये कुटका आज के दिन हमारे पिता पास है और एक नहीं है । तब १४ यूसुफ ने उन्हें कहा सोई जो मैं ने तुम्हें कहा कि तुम लोग भेदिये हो । इसी से तुम जांचे जाओगे फिरजन के जीवन की किरिया जब लों तुम्हारा छोटा भाई न १५ आवे तुम जाने न पाओगे । अपना भाई लाने को अपने में से एक को भेजो और तुम बंदीगृह में रहोगे जिसतं तुम्हारी बात जांची जावे कि तुम सच्चे हो कि नहीं १६ नहीं तो फिरजन के जीवन की किरिया तुम निश्चय भेदिये हो । फिर उस ने उन १७ को तीन दिन लों बंधन में रक्खा । और तीसरे दिन यूसुफ ने उन्हें कहा यों १८ करके जीते रहो मैं ईश्वर से डरता हूँ । जो सच्चे हो तो एक को अपने भाइयों में से बंदीगृह में बंद रहने देओ और तुम अकाल के लिये अपने घर में अन्न ले १९ जाओ । परन्तु अपने छोटे भाई को मुझ पास लाओ सो तुम्हारी बात ठहर २० जायेगी और तुम न मरोगे सो उन्होंने ने ऐसा ही किया । तब उन्होंने ने आपुस में कहा कि हम निश्चय अपने भाई के विषय में दोषी हैं क्योंकि जब उस ने हम से २१ बिनती किई और हम ने नहीं सुना हम ने उस के प्राण के कण्ट को देखा इस लिये २२ यह विपत्ति हम पर पड़ी है । तब रुबिन ने उत्तर में उन्हें कहा क्या मैं ने तुम्हें नहीं कहा कि इस लड़के के विरुद्ध पाप न करो और तुम ने न सुना इस लिये देखो २३ उस के लोहू का यही पलटा है । और वे न जानते थे कि यूसुफ समुझता है क्यों- २४ कि उन के मध्य में एक दोभाषिया था । तब वह उन में से अलग गया और रोया और फिर उन पास आया और उन से बातचीत किई और उन में से समझन को लेके उन की आंखों के आगे बांधा ॥

२५ तब यूसुफ ने उन के धोरे को अन्न से भरने की और हर जन की रोकड़ उस के धोरे में फेरने की और मार्ग के लिये उन्हें भोजन देने की आज्ञा किई और

उम ने उन्हीं ऐसा ही किया । और वे अपने गदहों पर अपना अन्न लादके वहाँ से २६  
चल निकले । और जब उन में से एक ने टिकान में अपने गदहे को दाना घास २७  
देने को अपना घेरा खोला तो उम ने अपनी रोकड़ देखी और देखे वह उम के  
घेरे के मुँह पर थी । तब उम ने अपने भाइयों से कहा कि मेरी रोकड़ फेंगे गई २८  
है और देखो कि वह मेरे घेरे में है सो उन के ली में ली न राख और वे डरके  
एक दूसरे को कहने लगे कि ईश्वर ने हम से यह क्या किया ।

और वे कनकान देश में अपने पिता यशकूप्य पास पहुँचे और सब जो उन पर २९  
थीता था उस के आगे दोहराया । कि तो पुनः उम देश का न्यासी है सो हम ३०  
से कठोरता में योना और हमें देश का भेदिया टहराया । और हम ने उम्मे कहा ३१  
कि हम तो मरते हैं हम भेदिये नहीं हैं । हम बारह भाई एक पिता के बेटे हैं ३२  
एक नहीं हैं और सब में छोटा आज अपने पिता के पास कनकान देश में है ।  
तब उस पुरुष ने अर्थात् उम देश के न्यासी ने हम से कहा उम्मे में जानूँगा कि ३३  
मरते हो अपना एक भाई मुक्त पास छोड़ो और अपने घराने के लिये अकाल का  
भोजन ले जाओ । और अपने कूटके भाई को मेरे पास ले आओ तब मैं जानूँगा ३४  
कि तुम भेदिये नहीं परन्तु तुम मरते हो फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें माँपूँगा और  
तुम देश में व्यापार कीजिये । और यों हुआ कि जब उन्हीं ने अपना अपना ३५  
घेरा कूड़ा किया तो देखो कि हर जगह की रोकड़ उम के घेरे में है और जब  
उन्हीं ने और उन के पिता ने रोकड़ की प्रीति देखी तो डर गये । और उन के ३६  
पिता यशकूप्य ने उन्हीं कहा कि तुम ने मुझे निःसंतान किया पुरुष तो नहीं है और  
समझन नहीं और तुम लोग विनयमानी को ले जाने चाहते हो ये सब जानें मुक्त  
से विरुद्ध हैं । तब सोचन अपने पिता से कहके बोला कि मैं उसे आप पास न ३७  
लाऊँ तो मेरे दोनों बेटों को मार दालियो उसे मेरे साथ ले माँपिये और मैं उसे  
फिर आप पास पहुँचाऊँगा । और उम ने कहा मेरा बेटा तुम्हारे संग न जायगा ३८  
क्योंकि उम का भाई मर गया है और यह अकाल रह गया हो जाते जाने मार्ग  
में उम पर कुछ विपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्षे वालों को शोक के साथ समाधि  
में उतारोगे ॥

तैत्तलीमयां पर्व ।

और देश में बड़ा अकाल था । और यों हुआ कि जब वे मिर में लगे हुए १  
अन्न को खा चुके तो उन के पिता ने उन्हीं कहा कि फिर जाओ और हमारे लिये  
घोड़ा अन्न मोल लेंओ । तब यशकूप्य ने उम्मे कहा कि उम पुरुष ने हमें चिता ३  
खिता कहा कि जब लो तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो मेरा मुँह न देखोगे ।  
जो आप हमारे भाई को हमारे साथ भेजियेगा तो हम जायेंगे और आप के लिये ४  
अन्न मोल लेंगे । परन्तु जो आप न भेजेंगे तो हम न जायेंगे क्योंकि उम पुरुष ने ५  
हम से कहा कि जब लो तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो तुम मेरा मुँह न देखोगे ।  
तब इसराएल ने कहा कि तुम ने मुक्त से क्यों ऐसा दुःख द्यार किया कि उस ६  
पुरुष से कहा कि हमारा और एक भाई है । तब वे बोले कि उस पुरुष ने हमें ७  
संकेती में हमारा और हमारे कुटुम्ब का समाचार पूछा कि क्या तुम्हारा पिता

- अब लें जीता है क्या तुम्हारा और कोई भाई है सो हम ने इन बातों के व्यवहार के समान उसे कहा क्या हम निश्चय जान सकते थे कि वह कहेगा कि अपने भाई को ले आओ । तब यहूदाह ने अपने पिता इसराएल से कहा कि इस तरुण को मेरे साथ कर दीजिये और हम उठ चलेंगे जिसमें हम और आप और हमारे बालक जीवें और न मरें । मैं उस का विछोई हूँगा आप मेरे हाथ से उसे लीजियो जो मैं उसे आप पास न लाऊँ और आप के आगे न धरूँ तो आप यह १० दोष मुझ पर सदा धरिये । क्योंकि जो हम विलंब न करते तो निश्चय अब लें ११ दोहराके फिर आये होते । तब उन के पिता इसराएल ने उन्हें कहा कि जो अब योंहीं है तो यों करो कि इस देश के अच्छे से अच्छे फल अपने पात्रों में रख लेओ और उस पुरुष के लिये भेंट ले जाओ थोड़ा नियास और थोड़ा मधु कुछ १२ सुगंध द्रव्य और बाल बतम और बदाम । और दूनी रोकड़ अपने हाथ में लेओ और वह रोकड़ जो तुम्हारे वोरों में फेर लाई गई है अपने हाथ में फेर ले जाओ १३ क्या जाने वह भूल से हुआ हो । अपने भाई को भी लेओ उठो और उस पुरुष १४ पास जाओ । और सर्वशक्तिमान सर्वसामर्थी उस पुरुष को तुम पर दयाल करे जिसमें वह तुम्हारे दूसरे भाई और विनयमीन को छोड़ देवे और जो मैं निर्देश हुआ तो हुआ ॥
- १५ तब उन मनुष्यों ने वह भेंट लिया और दूनी रोकड़ को अपने हाथ में विनयमीन समेत लिया और उठे और मिस्र को उतर चले और यूसुफ के आगे जा खड़े हुए । १६ जब यूसुफ ने विनयमीन को उन के संग देखा तो उस ने अपने घर के प्रधान को कहा कि इन मनुष्यों को घर में ले जा और कुछ मारके सिद्ध कर क्योंकि ये मनुष्य १७ दोपहर को मेरे संग खायेंगे । सो जैसा कि यूसुफ ने कहा था उस पुरुष ने वैसा १८ ही किया और वह उन मनुष्यों को यूसुफ के घर में लाया । तब वे मनुष्य यूसुफ के घर में पहुँचाये जाने से डर गये और उन्होंने ने कहा कि उस रोकड़ के कारण जो पहिले बार हमारे वोरों में फेर गई हम यहाँ पहुँचाये गये हैं जिसमें वह हमारे विरुद्ध एक कारण हूँठे और हम पर लपके और हमें प्रकड़के दास बनावे १९ और हमारे गदहों को छीन लेवे । तब उन्होंने ने यूसुफ के घर के प्रधान पास २० आके घर के द्वार पर उससे बातचीत की । और कहा कि महाशय हम निश्चय २१ पहिले बेर अन्न मोंल लेने आये थे । तो यों हुआ कि जब हम ने टिकाग्रय पर उतरके अपने वोरों को खोला तो क्या देखते हैं कि हर जन की रोकड़ उस के वारे के मुँह पर है हमारी रोकड़ सब पूरी थी सो हम उसे अपने हाथ में फिर २२ लाये हैं । और अन्न लेने को हम और रोकड़ अपने हाथों में लाये हैं हम नहीं २३ जानते कि हमारी रोकड़ किस ने हमारे वोरों में रख दी है । तब उस ने कहा कि तुम्हारा कुशल होवे मत डरो तुम्हारे ईश्वर और तुम्हारे पिता के ईश्वर ने तुम्हारे वोरों में तुम्हें धन दिया है तुम्हारी रोकड़ मुझे मिल चुकी फिर वह समजन को उन पास निकाल लाया ॥
- २४ और उस जन ने उन मनुष्यों को यूसुफ के घर में लाके पानी दिया और उन्होंने २५ ने अपने चरण धोये और उस ने उन के गदहों को दाना घास दिया । फिर उन्होंने

ने दोषधर को घुसफ के आने पर भेंट मिह्र किया क्योंकि उन्होंने ने मुना था कि हमें भोजन यहाँ खाना है । और जब घुसफ घर आया तो वे अपने हाथ की उस २६ भेंट को भीतर लाये और उस के आगे भूमि लों दंडवत किए । और उस ने उन २७ से कुशल नेम पूछा और कहा कि तुम्हारा पिता कुशल से है वह बहुत जिन की चर्चा तुम ने किए थी अब लों जीता है । और उन्होंने ने उत्तर दिया कि आप २८ का सेवक हमारा पिता कुशल से है वह अब लों जीता है जिस उन्होंने ने निर भुक्ताके दंडवत किए । फिर उस ने अपनी आंगवें उठाई और अपनी माना के घंटे २९ अपने भाई दिनयमीन को देखा और कहा कि तुम्हारा दुष्टका भाई जिन की चर्चा तुम ने मुझ से किए थी यहाँ है फिर कहा कि वे मेरे घंटे दंडवत तुम पर दयाल रहे । तब घुसफ ने उतावली किए क्योंकि उन का जी अपने भाई के लिये भर ३० आया और रोने चाहा और वह कोठरी में गया देन वहाँ गया । फिर उस ने ३१ अपना मुँह धोया और बाहर निकला और आप को रोका और कहा कि भोजन परेसो । तब उन्होंने ने उस के लिये खाना और उन के लिये खाना और ३२ मित्रियों के लिये जो उस के संग गये थे खाना परेसो हम लिये कि सिरी इवरानियों के संग भोजन नहीं था मन्ते क्योंकि यह मित्रियों के लिये दिन है । और पटिलींठा अपनी पटिलींठाई के और दुष्टका अपनी दुष्टाई के समान वे उन ३३ के आगे बैठ गये तब वे मनुष्य आश्चर्य से मर दुस्सरे को देखने लगे । और उन ३४ ने अपने आगे से भोजन उन पास भेजा वस्तु दिनयमीन का भोजन हर मर को भोजन से पंचगुण था और उन्होंने ने उस के साथ लों भरके पोसा ॥

धौगालीमय पद्य ।

और उस ने अपने घर के प्रधान को यह कहके आज्ञा किए कि उन मनुष्यों १ के दोरों को जितना वे ने जा सके वस्तु से भर दे और हर मर को रोका उस के दोरे के मुँह से डाल दे । और मेरा मर का कटोरा दुष्टके के दोरे के मुँह २ में उस के अन्न के दाम समेत रख दे मेा उस ने घुसफ की आज्ञा के समान किया ॥

ज्योंही दिन निकला वे मनुष्य अपने मरों समेत चला जिय गये । जब वे ३ नगर से थोड़ी दूर बाहर गये तब घुसफ ने अपने घर के प्रधान को कहा कि उठ उन मनुष्यों का पीछा कर और जब तु उन्हें जा नये तो उन्हें कहा कि जिस लिये तुम लोगों ने भलाई की संतो दुगाई किए है । क्या यह वह नहीं जिस से मेरा प्रभु ४ पीता है और जिस को कि वह अग्रय म्याज करेगा तुम ने हम से दया किया है । और उस ने उन्हें जा लिया और वे चली उन्हें कहा । तब उन्होंने ने उम्ने ५ कहा कि हमारा प्रभु ऐसी बातें क्यों कहता है ईश्वर न करे कि आप के सेवक ऐसा काम करे । देखिये यह रोका हुआ हम ने अपने यंत्रों में जपर पाई मेा इस ६ कनयान देश से आप पास फिर लाये थे मेा क्योंकि हमारा कि हम ने आप के प्रभु के घर से रुपा अथवा सोना चुराया था । आप के सेवकों में से जिस के पास ७ निकले वह मार डाला जाय और हम भी अपने प्रभु के दास होंगे । तब उस ने ८ कहा कि तुम्हारी बातों के नमान हो जाय जिस के पास वह निकले मेा मेरा दास होया और तुम निर्दोष ठहराओ । तब हर एक पुत्र ने तुरंत अपना अपना ९१

- १२ वोरा भूमि पर उतारा और हर एक ने अपना वोरा खोला । और वह बड़के से आरंभ करके कुटके लों छूँछने लगा और कटोरा विनयमीन के घैले में पाया गया ॥
- १३ तब उन्होंने ने अपने कपड़े फाड़े और हर एक पुरुष ने अपना गदघा सादा
- १४ और नगर को फिरा । और यहूदाह और उस के भाई यूसुफ के घर आये क्योंकि
- १५ वह अब लों वहीँ था और वे उस के आगे भूमि पर गिरे । तब यूसुफ ने उन्हें कहा कि तुम ने यह कैसा काम किया क्या तुम न जानते थे कि मेरे ऐसा पुरुष
- १६ अवश्य खोज करेगा । तब यहूदाह बोला कि हम अपने प्रभु से क्या कहें क्या बोले अथवा क्योंकि अपने को निर्दोष ठहरावें ईश्वर ने आप के सेवकों की दुराई प्रगट किई देखिये कि हम और वह भी जिस पास कटोरा निकला अपने प्रभु के
- १७ दास हैं । तब वह बोला ईश्वर न करे कि मैं ऐसा कहूँ जिस जन के पास कटोरा निकला वही मेरा दास होगा और तुम अपने पिता पास कुशल से जाओ ॥
- १८ तब यहूदाह उस पास आके बोला कि हे मेरे प्रभु आप का सेवक अपने प्रभु के कान में एक बात कहने की आज्ञा पावे और अपने सेवक पर आप
- १९ का कोप भड़कने न पावे क्योंकि आप फिरजन के समान हैं । मेरे प्रभु ने अपने
- २० सेवकों से यों कहके प्रश्न किया कि तुम्हारा पिता अथवा भाई है । और हम ने अपने प्रभु से कहा कि हमारा एक बृद्ध पिता है और उस का दुड़ापे का एक छोटा पुत्र है और उस का भाई मर गया और वह अपनी माता का एक ही
- २१ रह गया और वह अपने पिता का अति प्रिय है । तब आप ने अपने सेवकों से
- २२ कहा कि उसे मेरे पास लाओ जिसमें मेरी दृष्टि उस पर पड़े । तब हम ने अपने प्रभु से कहा कि वह तरुण अपने पिता को छोड़ नहीं सक्ता क्योंकि जो
- २३ वह अपने पिता को छोड़ेगा तो उस का पिता मर जायगा । फिर आप ने अपने सेवकों से कहा कि जब लों तुम्हारा कुटका भाई तुम्हारे साथ न आवे तुम
- २४ मेरा मुंह फिर न देखोगे । और यों हुआ कि जब हम आप के सेवक अपने पिता
- २५ पास गये तो हम ने अपने प्रभु की वार्तें उससे कहीं । तब हमारा पिता बोला
- २६ फिर जाओ हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल लेओ । तब हम बोले कि हम नहीं जा सकते जो हमारा कुटका भाई हमारे साथ होवे तो हम जायेंगे क्योंकि जब लों
- २७ हमारा कुटका भाई हमारे साथ न हो हम उस पुरुष का मुंह न देखने पावेंगे । और आप के सेवक मेरे पिता ने हमें कहा कि तुम जानते हो कि मेरी पत्नी मुझसे दो बेटे जनी ।
- २८ और एक मुझ से अलग हुआ और मैं ने कहा निश्चय वह फाड़ा गया और मैं ने
- २९ उसे अब लों न देखा । अब जो तुम इसे भी मुझ से अलग करते हो और इस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्के वालों को शोक से समाधि में
- ३० उतारोगे । अब इस लिये जब मैं आप का सेवक अपने पिता पास पहुँचूँ और वह तरुण हमारे साथ न हो और इस कारण से कि उस का जीव इस के जीव से
- ३१ बंधा है । तो यही होगा कि वह यह देखकर कि तरुण नहीं है मरही जायगा और आप के सेवक अपने पिता के पक्के वालों को शोक से समाधि में उतारेंगे ।
- ३२ क्योंकि आप के सेवक ने अपने पिता पास इस तरुण का बिचवाई होके कहा कि यदि मैं इसे आप पास न पहुँचाऊँ तो मैं सर्वदा लों अपने पिता का अपराधी



हूंगा । अब मेरी बिनती सुनिए कि आप का मेवक तरुण जो संगी अपने प्रभु का उठ  
वास होकर रहे और तरुण को उस के भाइयों के संग जाने डीजिये । क्योंकि जो उठ  
तरुण मेरे साथ न होवे मैं अपने पिता पास कैसे जाऊँ ऐसा न होवे कि जो  
विपत्ति मेरे पिता पर पड़े मैं उसे देखूँ ।

पितालीमयां पृष्ठ ।

तब यूसुफ उन सब के आगे जो उस पास पहुँचे अपने को रोकर न सका और १  
चिल्लाया कि हर एक को मुझ पास से बाहर करो सो जब यूसुफ ने अपने को  
अपने भाइयों पर प्रगट किया तब कोई उन के संग न था । और जब खिदाक २  
रोया और सितियों और फिरदन के छानने ने सुना । और यूसुफ ने अपने भाइयों ३  
को कहा कि मैं यूसुफ हूँ क्या संग पिता अब तो जाता है तब उस के भाई उसे  
उत्तर न दे सके क्योंकि वे उस के आगे छपरा गये । और यूसुफ ने अपने भाइयों ४  
से कहा कि मेरे पास आइये तब वे पास आये और यह बोलना मैं सुनाना भाई ५  
यूसुफ हूँ जिसे तुम ने मिस में बेचा । सो इस निवे कि तुम ने मुझे यहाँ बेचा ५  
उदास न होओ और दयाकुल मत होओ क्योंकि ईश्वर ने तुम से दया मुझे प्रदान प्रदान  
का भेजा । क्योंकि दो दम से भोग पर अज्ञान है और लोभी और पीस दम से ६  
बोना लयना न होगा । और तुम्हारे दंग की पूर्णता पर रक्षा करने का फिर यह ७  
उद्धार मे तुम्हारे प्राण प्रदाने का ईश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा । सो अब ८  
तुम ने नहीं परन्तु ईश्वर ने मुझे यहाँ भेजा और उस ने मुझे फिरदन के पिता  
के तुल्य बनाया और उस के सारे घर का प्रभु और सारे मिस देश का अध्यक्ष  
बनाया । फुरती करो और मेरे पिता पास जाओ और उम्मी जाँचो कि साथ ९  
का बेटा यूसुफ यों कहता है कि ईश्वर ने मुझे सारे मिस का न्याया विद्या मुख पास  
चले आइये लहरिये मत । और आप जन्न को भोग में गिनोगा और साथ और साथ १०  
के लड़के और आप के लड़कों के लड़के और साथ के भूत और साथ के दार ११  
और जो कुछ आप का है मेरे पास रहेंगे । और यहाँ मैं खाने का प्रोत्थान १२  
करूँगा क्योंकि अब भी अकाल के पाँच दम हैं न हो कि साथ और साथ का  
घराना और सब जो आप के हैं अज्ञान हो जायें । और देखें तुम्हारे साथ १३  
और मेरे भाई बिनयमीन की आँखें देखती हैं कि मेरा भूत साथ लोगों से घुलना १४  
है । और तुम मेरे पिता से मेरे विभाव को जो मिस में है और सब कुछ कि जो १५  
तुम ने देखा है चर्चा कीजिये और फुरती करो फिर मेरे पिता को यहाँ ले १६  
आओ । और यह अपने भाई बिनयमीन के गले लगाकर रोया और बिनयमीन उस १७  
के गले लगाकर रोया । और उस ने अपने सब भाइयों को घूसा और उस ने मिनके १८  
रोया और उस की पीछे उस के भाइयों ने झुम्मे घाँस किए ।

और इस बात की कीर्ति फिरदन के घर में सुनी गई कि यूसुफ के भाई आये १९  
हैं और उसने फिरदन और उस के मेवक बहुत आनन्दित हुए । और फिरदन ने २०  
यूसुफ से कहा कि अपने भाइयों से कहा कि यह करो अपने पशुन को लाओ और  
कनयान देश में जा पहुँचो । और अपने पिता और अपने घरानों को ले आओ २१  
और मुझ पास आओ और मैं तुम्हें मिस देश की अच्छी धरती दूँगा और तुम इस



१९ देश का पदारथ खाओगे । सो अब तुम्हें यह आज्ञा है यह करो कि मिस्र देश से अपने लड़के बालों और अपनी पत्नियों के लिये गाड़ियां ले जाओ और अपने पिता को ले आओ । और अपनी सामग्री की कुछ चिंता न करो क्योंकि मिस्र देश के सारे पदारथ तुम्हारे हैं ॥

२१ और इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया और यूसुफ ने फिरजन के कहे के समान उन्हें गाड़ियां दीं और मार्ग के लिये उन्हें भोजन दिया । और उस ने उन सब में से हर एक को वस्त्र दिये परन्तु उस ने बिनयमीन को तीन सौ टुकड़े चांदी और पांच जोड़े वस्त्र दिये । और अपने पिता के लिये इस रीति से भेजा दस गदहे मिस्र की अच्छी वस्तुन से लदे हुए और दस गदहियां अनाज और रोटी और भोजन से लदी हुई अपने पिता की यात्रा के लिये । सो उस ने अपने भाइयों को बिदा किया और वे चल निकले तब उस ने उन्हें कहा कि देखो मार्ग में कहीं आपस में बिगाड़ो मत ॥

२५ और वे मिस्र से सिधारे और अपने पिता यश्मकूब पास कनआन देश में पहुंचे । २६ और यह कहके उससे बोले कि यूसुफ तो अब लों जीता है और वह सारे मिस्र देश का अध्यक्ष है और उस का मन सनसना गया क्योंकि उस ने उन की प्रतीति २७ न किई । और उन्होंने ने यूसुफ की कही हुई सारी बातें उससे दुहराईं और जब उस ने गाड़ियां जो यूसुफ ने उसे ले जाने के लिये भेजी थीं देखीं तो उन के २८ पिता यश्मकूब का नया जीवन हुआ । और इसराएल बोला यह बस है कि मेरा बेटा यूसुफ अब लों जीता है मैं जाऊंगा और अपने मरने से आगे उसे देखूंगा ॥

क्रियालीसवां पर्व ।

१ और इसराएल ने अपना सब कुछ लेके यात्रा किई और बीअरसबअ में आके २ अपने पिता इजहाक के ईश्वर के लिये बलिदान चढ़ाया । और ईश्वर ने रात को स्वप्न में इसराएल से बातें करके कहा कि हे यश्मकूब यश्मकूब और वह बोला ३ मैं यहां हूं । तब उस ने कहा कि मैं सर्वशक्तिमान तेरे पिता का ईश्वर हूं मिस्र ४ में जाते हुए मत डर क्योंकि मैं तुम्हें वहां बड़ी जाति बनाऊंगा । मैं तेरे साथ मिस्र को जाऊंगा और मैं तुम्हें भी अवश्य फिर ले आऊंगा और यूसुफ तेरी आंखें ५ मूंदेगा । तब यश्मकूब बीअरसबअ से उठा और इसराएल के बेटे अपने पिता यश्मकूब को और अपने लड़कों और अपनी स्त्रियों को गाड़ियों पर जो फिरजन ने ६ उस के पहुंचाने को भेजी थीं ले चले । और उन्होंने ने अपना ढोर और अपनी सामग्री जो उन्होंने ने कनआन देश में पाई थी ले लिई और यश्मकूब अपने सारे ७ वंश समेत मिस्र में आया । वह अपने बेटों और बेटों के बेटों और बेटियों और अपने बेटों की बेटियों और अपने सारे वंश को मिस्र में लाया ॥

८ और इसराएल के बेटों के नाम जो मिस्र में आये अर्थात् यश्मकूब के बेटे ९ ये हैं यश्मकूब का पहिलौंठा रुबिन । और रुबिन के बेटे हनूक और फलू और १० इसरून और करमी । और समऊन के बेटे यमूरल और यमीन और ईहद और ११ यकान और सुहर और कनआनी स्त्री का बेटा साऊल । और लावी के बेटे १२ जैरुन किहात और मिरारी । और यहूदाह के बेटे एर और ओनान और सेलः

और फारस और जरह परन्तु यह और ओनान कनयान देश में सर गये और फारस  
 के घंटे हमदन और हसूल हुए । और इगकार के घंटे नालुख और फुत्रः और १३  
 यूव और मसदन । और जवृल्लन के घंटे मरह और सुन्न और यहदिल्ल । ये लियाह १४  
 के घंटे हैं जिन्हें यह मद्दानश्रम से ययकृष के लिये जनी उन के नारे घंटे  
 घंटियां नैतीम प्राणी उस की घंटी दीनः के संग थे । और जव के घंटे सिफ्यून १६  
 और हज्जी मूनी और हस्यून गरी और अम्दी और अरेली । और यसर के घंटे १७  
 यिसनः और इनयाह और हसयी और दरीअः और उन की घंटिन मिरा और  
 दरीअः के घंटे लित्र और सल्लिगल । ये उम जिनफः के घंटे हैं जिसे लायन ने १८  
 अपनी घंटी लियाह को दिया था और वन्तें यह ययकृष के लिये जनी अयात्  
 सोल्लह प्राणी । और ययकृष की प्रवी रागिन से यूमुफ और चिनयर्सन । और १९  
 मिन देश से यूमुफ के लिये सुनसरी और इफनारम उन्पन्न हुए जिन्हें लोन के  
 अय्यन फुतिकरअ की घंटी आमनाय जनी । और चिनयर्सन के घंटे यानिग २१  
 और अकर और अमचीन जंग और नवमान खमी और रग हुरिम और हुर्लिस  
 और अरह । वन्तें रागिन ययकृष के लिये जनी नय चारण प्राणी । और दान २३  
 का घंटा होशान । और नफताना के घंटे यहनियल और हुर्ला और विर और २४  
 मनीम । ये विलहः के घंटे हैं जिसे लायन ने अपनी घंटी रागिन को दिया था २५  
 ये नय सात प्राणी हैं जिन्हें यह ययकृष के लिये जनी :

सारे प्राणी जो ययकृष के साथ मिन में गये और उन की कटि में उन्पन्न २६  
 हुए उन में अधिक हो ययकृष के घंटों की मियां की डिवासठ प्राणी थे । और २७  
 यूमुफ के घंटे जो मिन में उन्पन्न हुए को ये सारे प्राणी जो ययकृष के घगने  
 के ये और मिन में गये नगर थे ।

और उन ने यहदाह को अपने कामे कामे जन्न लों अपनी ययकार करने को २८  
 यूमुफ को भेजा और ये जन्न की भूत में गये । और यूमुफ ने अपने रग मिह २९  
 किया और अपने पिता हसरागल में भेंट करने के लिये जन्न को गया और उस  
 पास पहुंचा और उस के गने पर तारके अय्यर लों रोका जिगा । और हसरागल ३०  
 ने यूमुफ से कहा कि अय्य में सन्ने को सिहृ हूं जि में ने गंग सुंद देगा क्योंकि तु  
 अय्य भी जाता है । और यूमुफ ने अपने भाइयों और अपने पिता के घराने में ३१  
 कहा कि मैं संदेश देने को फिरजन पास जाता हूं और उन्में बोलता हूं कि मेरे  
 भाई और मेरे पिता का घराना जो कनयान देश में ने मेरे पास गये हैं । और ३२  
 ये मनुष्य सदुरिये हैं क्योंकि और चराता उन को उयस है और ये अपने सुंद और  
 और और सब कुछ जो उन को है ने आये हैं । और यों होता कि अय्य फिरजन ३३  
 तुम्हें बुलाके तुम्हारा उयस पढ़े । तो कौनयो कि आप के काम मनुष्यार के अय्य ३४  
 लों चरवाही करने रहें हैं क्या हम और क्या हमारे आप दावे जिसकी तुम सोरा  
 जन्न की भूस में रहा क्योंकि सिगियों को घर एक सदुरिये में दिन है ।

सैतानांमवां पृष्ठ ।

तब यूमुफ आया और फिरजन से कहा कि मेरा पिता और मेरे भाई १  
 और उन के भुंड और उन के टार और सब जो उन को हैं कनयान देश से निकल

कनआन देश के मार्ग में राखिल मेरे पास मर गई और मैं ने इफरायम के मार्ग में उसे वहीं गाड़ा वही वैतलहम है ॥

६ तब इसराएल ने यूसुफ के बेटों को देखके कहा ये कौन हैं । और यूसुफ ने अपने पिता से कहा कि ये मेरे बेटे हैं जिन्हें ईश्वर ने मुझे यहां दिया है और  
१० वह बोला उन्हें मुझ पास लाइये और मैं उन्हें आशीस दूंगा । अब इसराएल की आंखें बूढ़ापे के मारे धुंधली हुई थीं कि वह न देख सका और वह उन्हें उस  
११ के पास लाया और उस ने उन्हें चूमा और उन्हें गले लगाया । और इसराएल ने यूसुफ से कहा कि मुझे तो तेरे मुंह देखने की आशा न थी और देख ईश्वर ने  
१२ तेरा वंश भी मुझे दिखाया । और यूसुफ ने उन्हें अपने घुटनों में से निकाला और  
१३ अपने को भूमि पर झुकाया । और यूसुफ ने उन दोनों को लिया इफरायम को अपने दाहिने हाथ में इसराएल के बाएं हाथ की ओर और सुनस्सी को अपने बाएं  
१४ हाथ में इसराएल के दाहिने हाथ की ओर और उस के पास लाया । तब इसराएल ने अपना दाहिना हाथ लंबा किया और इफरायम के सिर पर जो कुटका था रखवा और अपना बायां हाथ सुनस्सी के सिर पर जान बूझके अपने हाथ को  
१५ यों रखवा क्योंकि सुनस्सी पहिलौंठा था ॥

१५ और उस ने यूसुफ को बर दिया और कहा कि वह ईश्वर जिस के आगे मेरे पिता अबिरहाम और इजहाक चलते थे वह ईश्वर जिस ने जीवन भर आज लों  
१६ मेरी रखवाली कीई । वह दूत जिस ने मुझे सारी बुराई से बचाया इन लड़कों को आशीस देवे और मेरा नाम और मेरे पिता अबिरहाम और इजहाक का नाम  
१७ उन पर होवे और वे पृथिवी पर अत्यन्त बढ़ जावें । और जब यूसुफ ने अपने पिता को अपना दाहिना हाथ इफरायम के सिर पर रखते देखा तो उसे बुरा लगा और उस ने अपने पिता का हाथ उठा लिया जिसमें उसे इफरायम के सिर पर से  
१८ सुनस्सी के सिर पर रखे । और यूसुफ ने अपने पिता से कहा कि हे मेरे पिता ऐसा नहीं क्योंकि यह पहिलौंठा है अपना दाहिना हाथ उस के सिर पर रखिये ।  
१९ पर उस के पिता ने न माना और कहा कि मैं जानता हूं हे मेरे बेटे मैं जानता हूं वह भी एक जातिगण बन जायगा और वह भी बड़ा होगा परन्तु निश्चय उस का कुटका भाई उसे भी बड़ा होगा और उस के वंश भरपूर जातिगण बन  
२० जायेंगे । और उस ने उन्हें उस दिन यह कहके आशीस दिया कि इसराएल तेरा नाम लेके यह आशीस देंगे कि ईश्वर तुझे इफरायम और सुनस्सी की नाई बनावे सो उस ने इफरायम को सुनस्सी से आगे किया ॥

२१ और इसराएल ने यूसुफ को कहा कि देख मैं मरता हूं परन्तु ईश्वर तुम्हारे  
२२ साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे पितरों के देश में फिर ले जायगा । और मैं ने तुम्हें तेरे भाइयों से एक भाग जो मैं ने अमूरियों के हाथ से अपनी तलवार और अपने धनुष से निकाला दिया है ॥

उंचासवां पर्व ।

१ और यअकूब ने अपने बेटों को बुलाया और कहा कि एकट्ठे होओ जिसमें जो तुम पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुम से कहूं ॥

हे यशस्कृत्र के बेटे बटुर जाओ और मुने और अपने पिता इसराएल की और २  
कान धरो ॥

हे रुविन तू मेरा पहिलींठा मेरा बूना और मेरे मामर्य का कार्यभ मरिमा की ३  
उत्तमता और पराक्रम की उत्तमता । जल की नाई आसिर तू जेपु न होगा इस ४  
कारण कि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा तब मेरे बिकाने पर चढ़के उसे  
अशुद्ध किया ॥

समरुन और लावी भाई हैं अंधे के बहियार उन की तनवारें हैं । हे मेरे प्राण ५  
तू उन के भेद में सन जा मेरा प्रतिष्ठा तू उन की सभा में नन मिन क्योंकि उन्हीं ६  
ने अपने क्रोध में गक मनुष्य को घान दिया और अपनी छो दल्ला में रेल की  
खंभ मारी । धिक्कार उन की रिस पर क्योंकि वह प्रचेष्ट था और उन के कोप पर ७  
क्योंकि वह क्रूर था मैं उन्हीं यशस्कृत्र में अलग कर्वा और इसराएल में उन्हीं किन्नु  
भिन्न करंगा ॥

यहूदाह तेरे भाई तेरी मूर्ति करंगे मेरा हाथ तेरे शेरियों की गरदन पर होगा ८  
तेरे पिता के थंग तेरे आगे दंडवन करंगे । यहूदाह मिह का बच्चा तेरे बेटे तू ९  
अंदर पर में उठ चला वह मिह की हां बेटे मिह की नाई भुका और ब्रंठा उसे  
कौन छेड़ेगा । यहूदाह में राजदंड अलेग न होगा और न दण्डन्यादायक उस के १०  
चरणों के मध्य में में जत्र लों मिला न आवे और जातिसरा उस के मछीन होंगे ।  
उस ने अपना सदरा दाय्य में और अपनी सदरी का बच्चा चुने हुए दाय्य में बांधके ११  
अपने कपड़े दाय्यरस में और अपना पहिराया दाय्य के नोट में धोया । उस की १२  
आर्य दाय्यरस में नान और उस के दांत दूध में न्येन लोंगे ॥

जवूनन समुद्र के घाट पर सिधाम करंगा और जलजों के लिये घाट होगा १३  
और उस का सिधाना मेदा लों ॥

दणकार धर्ना सदरा है आ देओ कसल सुका है । और उस ने सिधाम का १४  
देखा कि अक्का है और भूमि का कि मुदुन्य है और उस ने अपना कांधा ओक उठाने  
का भुकाया और कर देने का दाम हुन ॥

दान इसराएल की गोष्टियों में के गक की नाई अपने नारों का न्याय १५  
करेगा । दान सारा का मर्य और पय का नारा होगा आ घाट की नालियों का १६  
सेमा हमेगा कि उस का चटुयैया पिलादी सिग पंगगा ॥

हे परमेश्वर मैं ने तेरा मुक्ति की घाट जानी है ॥ १८

गक सेना जद की जानियों पन्तु या अंग का आप जीनेगा ॥ १९

यसर का रोटी निशली होगी और वह राज्य पदाम्य देगा ॥ २०

नफताली गक छोड़ा हुआ होग है जो मुखचन कलता है ॥ २१

यमुफ गक फलमय डाल है वह फलदायक डाल जो साते के लग है जिस की २२  
डालियां भीत पर फैलती हैं । और धनुषधारियों ने उसे निपट मताया और सारा २३  
और उम्मे डाह रखया । और उस का धनुष चल में दृढ़ रहा और उस के हाथों २४  
की भुजाओं ने यशस्कृत्र के सर्वशक्तिमान के हाथों से धल पाया वहां से गहरिया  
इसराएल की चटान है । तेरे पिता का सर्वशक्तिमान तेरी सहायता करेगा और २५

सर्वसामर्थी जो तुम्हें ऊपर से स्वर्गीय आशीस और नीचे गतिराव की आशीस और  
 २६ स्तनों की और कोख की आशीस देगा । तब पिता की आशीस मेरे माता पिता  
 की आशीसों से इतनी अधिक हैं कि सनातन पर्वतों के अंत लों वरु गह्वं ये यूसुफ  
 के सिर पर और उस के सिर के मुकुट पर होंगी जो अपने भाइयों से अलग था ॥

२७ विनयमीन फड़वैया हुंडार होगा विद्वान को अहंर भवेगा और सांभ को लूट  
 बांटेगा ॥

२८ ये सब इसराएल की वारह गोष्टी हैं और उन के पिता ने उन्हें यह कहके  
 २९ आशीस दिया और अपनी आशीस के समान हर एक को हर दिया । फिर उस

ने उन्हें आज्ञा किई और कहा कि मैं अपने लोगों में एकट्टे होने पर हूं मुझे अपने  
 ३० पितरों में उस कंदला में जो हित्ती इफरन के खेत में है गाड़ियो । उस कंदला में

जो सकफीलः के खेत में मसरी के आगे कनआन देश में है जिसे अविग्रहाम ने समा-  
 ३१ धिस्थान के अधिकार के लिये खेत समेत इफरन हित्ती से मोल लिया था । वहां

उन्होंने ने अविग्रहाम को और उस की पत्नी सरः को गाड़ा वहां उन्होंने ने इजराक  
 को और उस की पत्नी रिवकः को गाड़ा और वहां मैं ने लियाह को गाड़ा ।

३२ उन्होंने ने वह खेत उस कंदला समेत जो उस में था हित्ती के वेठों से मोल लिया ॥

३३ और जब यअकूब अपने वेठों को आज्ञा कर चुका तो उस ने विह्वैने पर  
 अपने पांव को समेट लिया और प्राण त्यागा और अपने लोगों में जा मिला ॥

### पचासवां पर्व ।

१ तब यूसुफ अपने पिता के मुंह पर गिर पड़ा और उस पर रोया और उसे

२ चूसा । तब यूसुफ ने अपने पिता में सुगंध भरने के लिये अपने वैद्य सेवकों को

३ आज्ञा किई और वैद्यों ने इसराएल में सुगंध भरा । और उस के लिये चालीस

दिन बीत गये क्योंकि जिस में सुगंध भरा जाता है उतने दिन बीतते हैं और

४ भिक्षियों ने उस के लिये सत्तर दिन लों विलाप किया । और जब राने के दिन उस

के लिये बीत गये तो यूसुफ ने फिरजन के घराने से कहा कि जो मैं ने तुम्हारी

५ दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो फिरजन के कानों में कह दीजिये । कि मेरे पिता ने

मुझ से किरिया लिई कि देख मैं मरता हूं तू मुझे मेरी समाधि में जो मैं ने कनआन

देश में अपने लिये खोदी है गाड़ियो सो मेरे पिता के गाड़ने को मुझे कुट्टी

६ दीजिये और मैं फिर आऊंगा । और फिरजन ने कहा कि जा और तुझ से किरिया

लेने के समान अपने पिता को गाड़ ॥

७ सो यूसुफ अपने पिता को गाड़ने गया और फिरजन के सारे सेवक और

८ उस के घर के प्राचीन और मिस्र देश के सारे प्राचीन उस के संग गये । और

यूसुफ का साग घराना और उस के भाई और उस के पिता का घराना सब उस

के संग गये उन्होंने ने केवल अपने बालक और भुंड और ठोर जश्न की भूमि में

९ छोड़ दिये । और रथ और घोड़चढ़े उस के साथ गये और वह एक अति बड़ी

१० सेना थी । और वे अतद के खलिहान पर जो यरदन पार है आये और वहां

उन्होंने ने अति बड़े विलाप से विलाप किया और उस ने अपने पिता के लिये

११ सात दिन लों शोक किया । जब उस देश के वासी कनआनियों ने अतद के

खलिदान का विलाप देखा तो बोले कि यह मित्रियों के लिये बड़ा विलाप है इस लिये उस का नाम मित्रियों का विलाप कहलाया और यह घरदन के पार है । और उस की आत्मा के समान उस के बेटों ने उम्मे किया । क्योंकि उस के बेटे १७  
उसे कनकान देश में ले गये और उसे उस मकफीलः के खेत की कंदला में जिसे अग्रिहाम ने ममाधिस्थान के अधिकार के लिये इफ्सन हिन्नी में समरी के भाग्रे १८  
मोल लिया था गाढ़ा । और यूसुफ आप और उस के भाई और सब जो उस के साथ उस के पिता को गाढ़ने गये वे उस के पिता को गाढ़के मिर को फिर ।

और जब यूसुफ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता सर गया तो उन्होंने ने १९  
कहा क्या जाने यूसुफ इस में और करेगा और उस सारी घुराई का जो हम ने  
उम्मे किई है निश्चय पकटा लेगा । सब उन्होंने ने यूसुफ को यों कहला भेजा १६  
आप के पिता ने मरने से पहिले आज्ञा किई । कि यूसुफ ने कहियो कि अपने १७  
भाइयों के पाप और उन के अपराध परमा कौजिये क्योंकि उन्होंने ने तुम से घुराई  
किई सो अब अपने पिता के ईश्वर के नामों के पाप परमा कौजिये और जब  
उन्होंने ने यह कहा तो यूसुफ रोया । और उस के भाई भी गये और उस के आरो १८  
तार पड़े और उन्होंने ने कहा कि देखिये हम आप के मेयक हैं । सब यूसुफ ने १९  
उन्हे कहा कि मत हरो कि क्या मैं ईश्वर को संतो हूं । पर तुम जो हो तुम ने २०  
तुम से घुराई करने की इच्छा किई परन्तु ईश्वर ने उसे मनार्द कर दिई कि  
बहुत से लोगों का प्राण बचाये जैसा कि आज्ञा है । तो अब मत हरो मैं तुम्हारा २१  
और तुम्हारे बानकों का प्रतिपान करेगा और उस ने उन्हें धारिल दिया और उन  
से शान्ति की बातें कही ।

और यूसुफ और उस के पिता के घराने ने मिर में निवास किया और यूसुफ २२  
एक मो शम घरन जाया । और यूसुफ ने इजरायल की गोनरी पीढ़ी देखी और २३  
मुनस्सी के बेटे सकोर के भी नहके यूसुफ के घुटनों पर जनाये गये ।

और यूसुफ ने अपने भाइयों में कहा कि मैं मरता हूं और ईश्वर तुम से २४  
निश्चय भेंट करेगा और तुमों हम देश में बाल्य हम देश में जिस के विषय में  
उस ने अग्रिहाम इजरायल और यश्कूत्र ने किमिया म्गार्द यों ले जायगा । और २५  
यूसुफ ने हमरायल के मंतानों में यह किमिया लेज कहा कि ईश्वर निश्चय तुम से  
भेंट करेगा और तुम मेरी पीढ़ियों की बातें में ले जावेंगे । सो यूसुफ एक मो दस २६  
घरन का टाके सर गया और उन्होंने ने उस में मुशंध भरा और उसे मिर में संजुषा  
में रक्खा ।



# यात्रा की पुस्तक ।

## पहिला पर्व ।

१ अब इसराएल के संतानों के नाम ये हैं हर एक जो अपने घराने को लेकर  
 २ यश्मूकूब के साथ मिस्र में आया । रुबिन समऊन लावी और यहूदाह । इसकार  
 ३ जबूलून और बिनयमीन । दान और नफताली जद और यसर । और समस्त प्राणी  
 ४ जो यश्मूकूब की जाँघ से उत्पन्न हुए सत्तर प्राणी थे और यूसुफ तो मिस्र में था । और  
 ५ यूसुफ और उस के सारे भाई और वह समस्त पीढ़ी मर गई । परन्तु इसराएल  
 के संतान फलवान हुए और बहुताई से अधिक हुए और बढ़ गये और अत्यंत  
 ६ सामर्थ्य हुए और देश उन से भर गया ॥

७ तब मिस्र में एक नया राजा उठा जो यूसुफ को न जानता था । और उस  
 ने अपने लोगों से कहा कि देखो इसराएल के संतानों के लोग हम से अधिक  
 १० और बलवंत हैं । आओ हम उन से चतुराई से व्यवहार करें न हो कि वे बढ़  
 जायें और ऐसा होय कि जब युद्ध पड़े तो वे हमारे वीरियों से मिल जायें और  
 ११ हम से लड़ें और देश से निकल जायें । इस लिये उन्होंने ने उन पर करोड़ों को  
 बैठाया कि उन्हें अपने बोकों से सतारें और उन्होंने ने फिरऊन के लिये भंडार  
 १२ नगरों को अर्षात्-पितोम और रामसीस को बनाया । परन्तु ज्यों ज्यों वे उन्हें  
 दुःख देते थे त्यों त्यों वे बढ़ते गये और बहुत हुए और वे इसराएल के संतान  
 १३ के कारण से दुःखी थे । और इसराएल के संतानों से मिस्रियों ने क्लेश से सेवा  
 १४ कराई । और उन्होंने ने कठिन सेवा से गारा और ईंट का कार्य और खेत की  
 भांति भांति की सेवा कराके उन के जीवन को कड़वा कर डाला उन की सारी  
 सेवा जो वे कराते थे क्लेश के साथ थी ॥

१५ तब मिस्र के राजा ने इब्रानी जनार्ई दाइयों को जिन में एक का नाम सिफरः  
 १६ और दूसरी का नाम फूअः था यों कहा । कि जब इब्रानी स्त्री तुम से जनार्ई  
 दाई का कार्य करावें और तुम उन्हें पत्थरों पर देखो यद्यपि पुत्र होय तो उसे  
 १७ मार डालो और यदि पुत्री होय तो जीने दो । परन्तु जनार्ई दाई ईश्वर से डरती  
 थीं और जैसा कि मिस्र के राजा ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसा न किया परन्तु  
 १८ पुत्रों को जीता छोड़ा । फिर मिस्र के राजा ने जनार्ई दाइयों को बुलवाया और  
 १९ उन्हें कहा कि तुम ने ऐसा क्यों किया और पुत्रों को क्यों जीता छोड़ा । तब  
 जनार्ई दाइयों ने फिरऊन से कहा इस कारण कि इब्रानी स्त्री मिस्र की स्त्रियों के  
 समान नहीं क्योंकि वे फुरतीली हैं और उस्से पहिले कि जनार्ई दाई उन पास  
 २० पहुंचे वे जन बैठती हैं । इस लिये ईश्वर ने जनार्ई दाइयों से सुव्यवहार किया  
 २१ और लोग बढ़ गये और अत्यंत बलवंत हुए । और इस कारण कि जनार्ई दाई  
 २२ ईश्वर से डरती थीं यों हुआ कि उस ने उन को बसाया । और फिरऊन ने अपने  
 समस्त लोगों को आज्ञा किई कि हर एक पुत्र जो उत्पन्न होय तुम उसे नील  
 मदी में डाल देओ और हर एक पुत्री को जीती छोड़ो ॥

## दूसरा पृष्ठ ।

और लाठी के धराने के एक मनुष्य ने जाकर लाठी की एक पुत्री ग्रहण १  
 किई । और वह स्त्री गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस ने उसे सुन्दर देखके २  
 तीन मास लों छिपा रखवा । और जब आगे को उसे छिपा न सका तो उस ने ३  
 मरकटों का एक टोकड़ा बनाया और उस पर नामा और रास लगाया और उस  
 बालक को उस में रखवा और उस ने उसे नील नदी के तीर पर भाऊ में रख ४  
 दिया । और उस की बहुत दूर से गड़ी देखती थी कि उस का क्या होगा ॥

तब फिरजन की पुत्री ज्ञान करने को नदी पर उतरी और उस की महेलियां ५  
 नदी के तीर पर फिरती थीं और उस ने भाऊ के साथ में टोकड़ा देखकर अपनी ६  
 महेली को भेजा और उसे ले लिया । जब उस ने उसे ग्याना तो बालक को ६  
 देखा और देखा कि बालक रोता है और वह उस पर दया करके बोली कि यह ७  
 किसी इतराणियों के बालकों में से है । तब उस की बहिन ने फिरजन की पुत्री ७  
 को कहा क्या मैं जाके इतराणी स्त्रियों में से एक दाई तुम धान ले जाऊं जिनसे ८  
 वह लेने लिये इस बालक को दूध पिनायें । और फिरजन की पुत्री ने उससे कहा ८  
 कि जा तब वह कन्या गई और बालक की माता को बुलाया । और फिरजन की ९  
 पुत्री ने उससे कहा कि इस बालक को ले जा और मेरे लिये उसे दूध पिना और ९  
 मैं तुम्हें माहिनवारी दूंगी और उन स्त्री ने उस बालक को लिया और उसे दूध १०  
 पिनाया । और जब बालक बड़ा तब वह उसे फिरजन की पुत्री पाम नाई और १०  
 वह उस का पुत्र हुआ तब उस ने उस का नाम सूमा रखवा और कहा कि मैं ने उसे ११  
 पानी से निकाला ॥

और उन दिनों में यों हुआ कि जब सूमा ब्याना हुआ तब वह अपने भाइयों ११  
 पाम बालक गया और उन के दोस्तों को देखा और अपने भाइयों में से एक १२  
 इतराणी को देखा कि सिंगे उसे मार रहा है । तब उस ने उधर उधर दौड़ किई १२  
 और देखा कि कोई नहीं तब उस ने उस सिंगे को मार डाला और बाल में उसे १३  
 छिपा दिया । जब वह दूसरे दिन बालक गया तो देखा कि दो इतराणी आधुस में १३  
 भागड़ रहे हैं तब उस ने उस आधुरी को कहा कि तू अपने दोस्तों को क्यों मारता १४  
 है । तब उस ने कहा कि किस ने तुम्हें हम पर आधुरा अधुरा न्यायी रहवाया था १४  
 तू चाहता है कि जिन गीत में तू ने सिंगे को मार डाला सुके भी मार डाले तब १५  
 सूमा डरा और कहा कि निश्चय यह बात खुल गई । जब फिरजन ने यह बात १५  
 सुनी तो बोला कि सूमा को मार डाले ॥

परन्तु सूमा फिरजन के आगे में भाग निकला और मिदयान के देश में जा रहा १६  
 और एक कुण के निकट बैठ गया । और मिदयान के राजा की मात पुत्री थीं १६  
 और वे आई और खींचने लगीं और कठरों को भग कि अपने बाप के भुंड को १७  
 पानी पिनायें । तब गड़रियों ने आके उन्हें हांक दिया परन्तु सूमा ने खड़े होके १७  
 उन की सहायता किई और उन के भुंड को पिनाया । और जब वे अपने पिता १८  
 रखल पाम आईं तब उस ने कहा कि आज तुम धोकर मयेरे फिरीं । और वे १८  
 बोलीं कि एक सिंगी ने हमें गड़रियों के साथ से बचाया और हमारे लिये जितना

ने शीघ्रता करके कहा कि जैसा पुआल पाते हुए करते थे वैसे अपने प्रतिदिन  
 १४ के कार्यों की गिनती नित्य पूर्ण करो । और इसराएल के संतानों के प्रधान जिन्हें  
 फिरजन के करोड़ों ने उन पर करोड़ों किये थे सारे गये और पृष्ठे गये कि अपनी  
 ठहराई हुई सेवा को जो ईंटें बनाने की है कल और आज आगे की नाईं क्यों  
 नहीं पूरा किया ॥

१५ तब इसराएल के संतानों के प्रधान फिरजन के आगे आके चिल्लाये और कहा  
 १६ कि अपने दासों से ऐसा व्यवहार क्यों करता है । तेरे दासों को पुआल नहीं  
 मिला है और वे हमें कहते हैं कि ईंटें बनाओ और देख कि तेरे सेवकों ने सार  
 १७ खाई है परन्तु अपराध तेरे लोगों का है । तब उस ने कहा कि तुम आलसी हो  
 आलसी हो इस लिये तुम कहते हो कि हमें जाने दे कि परमेश्वर के लिये दान-  
 १८ दान करें । सो अब तुम जाओ काम करो और पुआल तुम को न दिया जायगा  
 १९ तथापि तुम गिनती की ईंटें दोगे । और इस कहने में कि तुम अपनी प्रतिदिन  
 की ईंटों में से न घटाओगे इसराएल के संतान के प्रधानों ने देखा कि उन की  
 दुर्दशा है ॥

२० और वे फिरजन पास से निकलके मूसा और हारून को जो मार्ग में खड़े थे  
 २१ मिले । और उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हें देखे और न्याय करे इस लिये कि तुम  
 ने हमें फिरजन की और उस के सेवकों की दृष्टि में ऐसा घिनौना किया है कि  
 हमारे मारने के कारण उन के हाथ में खड़्ग दिया है ॥

२२ तब मूसा परमेश्वर पास फिर गया और कहा कि हे प्रभु तू ने इन लोगों को क्यों  
 २३ क्रोध में डाला और मुझे क्यों भेजा । इस लिये कि जब से तेरे नाम से मैं फिरजन  
 को कहने आया उस ने उन लोगों पर घुराई किई और तू ने अपने लोगों को न  
 बचाया ॥

छठवां पृष्ठ ।

१ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अब तू देखेगा मैं फिरजन से क्या करूंगा  
 क्योंकि यह चलवंत भुजा से उन्हें जाने देगा और चलवंत भुजा से उन्हें अपने  
 देश से निकालेगा ॥

२ और ईश्वर मूसा से कहके बोला कि मैं परमेश्वर हूँ । और मैं अविरहाम इजहाक  
 और यश्कूब को सर्वशक्तिमान सर्वसामर्थी के नाम से प्रगट हुआ परन्तु अपने  
 ४ नाम यहोवा से उन पर प्रगट न हुआ । और मैं ने उन के साथ अपना नियम भी  
 बांधा है कि मैं उन को कनआन का देश जो उन के प्रवास का देश है जिस में  
 ५ वे परदेशी थे दूंगा । और मैं ने इसराएल के संतानों का कुटुम्बा भी सुना है  
 ६ जिन्हें मिखी बंधुआई में रखते हैं और अपने नियम को स्मरण किया है । इस  
 लिये तू इसराएल के संतानों से कह कि मैं परमेश्वर हूँ और मैं तुम्हें मिखियों के  
 बोझों के तले से निकालूंगा और मैं तुम्हें उन की दासता से छुड़ाऊंगा और मैं  
 ७ अपना हाथ बढ़ाके बड़े बड़े न्याय से तुम्हें मोक्ष दूंगा । और तुम्हें अपने लोग  
 बनाऊंगा और मैं तुम्हारा ईश्वर हो जाऊंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर  
 ८ तुम्हारा ईश्वर हूँ जो तुम्हें मिखियों के बोझों के तले से निकालता हूँ । और मैं

तुम्हें उस देश में लाऊंगा जिस के विषय में मैं ने अपना हाथ उठाया है कि उसे अखिरहाम इज्जत और यशस्व को हूँ और मैं उसे तुम्हारा अधिकार करूँगा परमेश्वर में हूँ । तब मूसा ने इसराएल के संतानों को योंही कहा परन्तु उन्हीं ने ८ मन के क्रोध के मारे और परिश्रम के कारण मूसा को न सुनी ।

फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा । जा और मिस्र के राजा फिरजन से कह कि १०  
इसराएल के संतानों को अपने देश से जाने दे । तब मूसा ने परमेश्वर के आगे ११  
कहा कि देख इसराएल के संतानों ने तो मेरी बात नहीं मानी है तो मैं जो  
होठ का अखतनः हूँ फिरजन सेरी क्योंकि सुनेगा । तब परमेश्वर ने मूसा और १३  
हाशम को कहा और उन्हें इसराएल के संतान और मिस्र के राजा फिरजन के  
विषय में आज्ञा किई कि इसराएल के संतान को मिस्र के देश से बाहर ले जाये ॥

उन के पित्रों के घराने के प्रधान ये थे इसराएल के पौल्लोहो मरिन के पुत्र १४  
हनुख और पतु हज्जन और करमी ये मरिन के घराने थे । और जमजन के १५  
पुत्र जमुएल और यामीन और ओहाद और याकीन और जोहर और शासन कन-  
आनी स्त्री का पुत्र ये जमजन के घराने थे । और नारी के पुत्रों के नाम उन की १६  
पौल्लियों के समान ये थे जोशूज और केदाथ और मरारी और नारी के जीवन के  
वस एक सौ सैंतीस थे । जोशूज के पुत्र उन के घराने के समान कथनी और १७  
शमई थे । और केदाथ के पुत्र अमराम और उजहार और हिचरन और उज्जीएल १८  
और केदाथ के जीवन के वस एक सौ सैंतीस थे । और मरारी के पुत्र मरती १९  
और सुशी उन की पौल्लियों के समान नारी के घराने थे थे । और अमराम ने २०  
अपने पिता का धर्म युकाविद से व्याप्त किया और वह उस के लिये हामन और  
मूसा को उनी और अमराम के जीवन के वस एक सौ सैंतीस थे । और उजहार २१  
के पुत्र कूरह और नफग और जकरी थे । और उज्जीएल के पुत्र मीमाएल और २२  
इलजाफन और मिथरी थे । और हासन ने नखशन को धर्म अमीनादाथ की पुत्री २३  
अलीशदा की पत्नी किया और उसे नादाथ और अर्याहू एलिअजर और गेतामार  
उस के लिये उत्पन्न हुए । और कूरह के पुत्र अमीर और एनफाना और अदिया- २४  
साफ ये कूरह के घराने थे । और हामन के पुत्र एलिअजर ने पुतिएल की पुत्रियों २५  
में से पत्नी किई और उसे उस के लिये फोनीदान उत्पन्न हुआ लावियों के प्राप  
दादों के घरानों में ये प्रधान थे । ये थे हामन और मूसा हैं जिन्हें परमेश्वर ने २६  
कहा कि इसराएल के संतानों को उन की सेनाओं की रीति मिस्र के देश से  
निकाल लाओ । ये थे हैं जिन्होंने न मिस्र के राजा फिरजन से इसराएल के २७  
संतानों को मिस्र में निकाल ले जाने का कहा ये थे ही मूसा और हासन हैं ॥

और यों हुआ कि जिस दिन परमेश्वर ने मिस्र देश में मूसा को कहा । २८  
तब परमेश्वर ने मूसा से कहा और बोला कि मैं परमेश्वर हूँ मय जो मैं तुम्हें २९  
कहता हूँ मिस्र के राजा फिरजन से कह । और मूसा ने परमेश्वर के सामने कहा ३०  
कि देख मैं होठ का अखतनः हूँ और फिरजन सेरी क्योंकि सुनेगा ॥

सातवां पद्य ।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं ने तुम्हें फिरजन के लिये ईश्वर १

२ बनाया और तेरा भाई हारून तेरा भविष्यवक्ता होगा । तब कुछ जो मैं तुझे आशा  
 करूँगा तू कहेगा और तेरा भाई हारून फिरउन से कहेगा कि इसराएल के संतानों  
 ३ को अपने देश से जाने दे । और मैं फिरउन के मन को कठोर करूँगा और अपने  
 ४ लक्षण और आश्चर्य को मिस्र के देश में अधिक करूँगा । परन्तु फिरउन तुम्हारी  
 न सुनेगा और मैं अपना हाथ मिस्र पर धरूँगा और अपनी सेनाओं को अर्घ्यात्  
 अपने लोग इसराएल के संतान को बड़े न्याय दिखाके मिस्र देश से निकाल  
 ५ लाऊँगा । और जब मैं मिस्र पर हाथ चलाऊँगा और इसराएल के संतानों को उस  
 ६ में से निकालूँगा तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ । और जैसा परमेश्वर ने  
 ७ उन्हें आज्ञा कीई मूसा और हारून ने वैसा ही किया । और जिस समय में उन्होंने ने  
 फिरउन से बातचीत कीई मूसा अस्सी बरस का और हारून तिरासी बरस  
 का था ॥

८ और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा । कि जब फिरउन तुम्हें कहे कि  
 अपने लिये आश्चर्य दिखाओ तो हारून को कहियो कि अपनी कड़ी ले और  
 १० फिरउन के आगे डाल दे वह एक सर्प बन जायगी । तब मूसा और हारून  
 फिरउन कने गये और जैसा परमेश्वर ने आज्ञा कीई थी उन्होंने ने वैसा ही किया  
 और हारून ने अपनी कड़ी फिरउन के और उस के सेवकों के आगे डाल दिई  
 ११ और वह सर्प हो गई । तब फिरउन ने भी पण्डितों और टोन्टों को बुलवाया  
 १२ सो मिस्र के टोन्टों ने भी अपने टोनों से ऐसा ही किया । क्योंकि उन में से हर  
 एक ने अपनी अपनी कड़ी डाल दिई और वे सर्प हो गई परन्तु हारून की कड़ी  
 १३ उन की कड़ियों को निगल गई । और फिरउन का मन कठोर रहा और जैसा  
 परमेश्वर ने कहा था उस ने उन की न सुनी ॥

१४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फिरउन का अंतःकरण कठोर है वह उन  
 १५ लोगों को जाने नहीं देता । तू बिहान फिरउन के पास जा देख कि वह जल  
 की ओर जाता है और तू नील नदी के तट पर जिधर से वह आवे उस के  
 सन्मुख खड़ा हूँजियो और वह कड़ी जो सर्प हुई थी अपने हाथ में लीजियो ।  
 १६ और उससे कहियो कि परमेश्वर इवरानियों के ईश्वर ने मुझे तेरे पास भेजा है  
 और कहा है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतैं वे अरण्य में मेरी सेवा करें और  
 १७ देख कि तू ने अब लो न सुना । परमेश्वर ने यों कहा है कि इससे तू जानेगा कि  
 मैं परमेश्वर हूँ देख कि मैं यह कड़ी जो मेरे हाथ में है नदी के पानियों पर मारूँगा  
 १८ और वे लोहू हो जायेंगे । और मकलियां जो नदी में हैं मर जायेंगी और नदी  
 बसाने लगेगी और मिस्र के लोग नदी का पानी पीने को घिन करेंगे ॥

१९ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी कड़ी ले और  
 अपना हाथ मिस्र के पानियों पर उन की धारों उन की नदियों और उन के कुण्डों  
 और उन के पानियों के हर एक पोखरों पर चला कि वे लोहू बन जायें और मिस्र  
 २० के सारे देश में हर एक काठ और पत्थर के पात्र में लोहू हो जाय । और जैसा  
 कि परमेश्वर ने आज्ञा कीई थी मूसा और हारून ने वैसा ही किया और उस ने  
 कड़ी उठाई और नदी के पानी पर फिरउन के और उस के सेवकों के सामने मारी

और नदी के सब पानी सोख डो गये । और नदी की मछलियाँ मर गईं और नदी २१  
 बसाने लगी और मिस्र के लोग नदी का पानी पी न सके और मिस्र के सारे देश  
 में लोहड़ हुआ । तब मिस्र के टोन्नों ने भी अपने टोना से रेमा ही किया और २२  
 फिरजन का मन कठोर रहा और जैसा कि परमेश्वर ने कहा था वैसा उस ने उन  
 की न सुनी । तब फिरजन फिर और अपने घर को गया और उस ने अपना मन २३  
 बस बात पर भी न लगाया । और सारे सिनियों ने नदी के आस पास ग्योदा कि २४  
 पानी पीयें क्योंकि ये नदी का पानी पी न सके । और परमेश्वर के नदी को मारने २५  
 से पीछे सात दिन बीत गये ।

आठवाँ पद्य ।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फिरजन पास जा और उससे यह कह कि १  
 परमेश्वर या कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसने वे मेरी सेवा करें । और २  
 यदि तू उन्हें जाने न देगा तो देख मैं मेरे समस्त सिनियों को मँहुकों से मारूँगा ।  
 और नदी बहुतार्ह से मँहुकों को उत्पन्न करेगी और वे निकलके तेरे घर में और ३  
 तेरे शयनस्थान में और तेरे बिक्रानों पर और तेरे सेवकों के घरों में और तेरी प्रजा  
 पर और तेरी भट्टियों में और तेरे आटे गूँधने के बाटो में जायेंगे । और मँहुक ४  
 तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे समस्त सेवकों पर चढ़ेंगे ।

और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हासन से कह कि अपनी लड़ी में अपना ५  
 हाथ धारों पर नदियों पर और कुण्डों पर बड़ा और मँहुकों का मिस्र के देश पर  
 चढ़ा । तब हासन ने मिस्र के पानियों पर अपना हाथ चढ़ाया और मँहुकों ने ६  
 निकलके मिस्र के देश को छाप लिया । और टोन्नों ने भी अपने टोना से रेमा ही ७  
 किया और मिस्र के देश पर मँहुक चढ़ाये ।

तब फिरजन ने मूसा और हासन को बुलाया और कहा कि परमेश्वर से विनती ८  
 करो कि मँहुकों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे और मैं उन लोगों को  
 जाने देऊँगा कि वे परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें । और मूसा ने फिरजन को ९  
 कहा कि मुझे बतलाइये कि कब मैं तेरे और तेरे सेवकों को और तेरी प्रजा के  
 लिये विनती करूँ कि मँहुक तुझ से और तेरे घरों से दूर किये जायें और नदी  
 ही में रहें । और यह बोला कि कल तब उस ने कहा कि तेरे बचन के अनुसार १०  
 जिसत तू जाने कि परमेश्वर हमारे ईश्वर के तुल्य कोई नहीं । और मँहुक तुझ ११  
 से और तेरे घरों से और तेरे दामों और तेरी प्रजा से जाते रहेंगे वे केवल नदी  
 में रहेंगे ।

फिर मूसा और हासन फिरजन पास से निकल गये और मूसा ने परमेश्वर के १२  
 आगे मँहुकों के लिये जो उस ने फिरजन के कारण भेजे थे प्रार्थना कीई । और १३  
 परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना के अनुसार किया और मँहुक घरों और गाँवों और  
 खेतों में से मर गये । और उन्होंने ने उन्हें जटां तहाँ सकट्टे कर कर ढेर कर दिये १४  
 और देश बसाने लगा । तब फिरजन ने देखा कि सायकाश मिला तो उस ने १५  
 अपना मन कठोर किया और जैसा परमेश्वर ने कहा था वैसा उन की न सुनी ।

तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हासन से कह कि अपनी लड़ी बड़ा और १६



१७ देश की धूल पर मार जिसमें वह मिश्र के समस्त देश में मच्छड़ बन जायें । और उन्होंने ने वैसा ही किया और हारून ने अपना हाथ अपनी छड़ी के साथ चढ़ाया और पृथिवी की धूल को मारा और वहीं मनुष्य पर और पशु पर मच्छड़ बन गये समस्त धूल मिश्र के सारे देश में मच्छड़ बन गये । और टोन्हेन ने भी चाहा कि अपने टोनों से मच्छड़ निकालें पर निकाल न सके सो मनुष्य पर और पशु पर मच्छड़ थे । तब टोन्हेन ने फिरजन से कहा कि यह ईश्वर की अंगुली है और फिरजन का मन कठोर रहा और जैसा परमेश्वर ने कहा था उस ने उन की न सुनी ॥

२० तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि बिहान को उठ और फिरजन के आगे खड़ा हो देख वह जल पर आता है और तू उसे कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें । क्योंकि यदि तू मेरे लोगों को जाने न देगा तो देख मैं तुझ पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर और तेरे घरों में बड़ी बड़ी माखी भेजूंगा और मिखियों के घर में और समस्त भूमि में जहां जहां वे हैं उन माखियों से भर जायेंगे । और मैं उस दिन जश्न की भूमि को जिस में मेरे लोग वास करते हैं अलग करूंगा कि माखी वहां न हों जिसमें तू जाने कि पृथिवी के मध्य में परमेश्वर मैं हूं । और मैं अपने लोगों में और तेरे लोगों में विभाग करूंगा और यह आश्चर्य कल होगा । तब परमेश्वर ने योंही किया और फिरजन के घर में और उस के सेवकों के घरों में और मिश्र के समस्त देश में माखी आईं और माखियों के मारे देश नाश हुआ ॥

२५ तब फिरजन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा कि जाओ अपने ईश्वर के लिये देश में बलि चढ़ाओ । और मूसा ने कहा कि यों करना उचित नहीं क्योंकि हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये वह बलि चढ़ावेंगे जिसे मिस्री घिन रखते हैं क्या हम मिखियों के घिन का बलि उन की दृष्टि के आगे चढ़ावें और वे हमें पत्थरवाह न करेंगे । हम वन में तीन दिन के पथ में जायेंगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये जैसा वह हमें आज्ञा करेगा बलिदान करेंगे । और फिरजन बोला कि मैं तुम्हें जाने दूंगा जिसमें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये वन में बलि चढ़ाओ केवल बहुत दूर मत जाओ मेरे लिये विनती करो । तब मूसा बोला देख मैं तेरे पास से बाहर जाता हूं और मैं परमेश्वर के आगे विनती करूंगा कि माखी फिरजन से उस के सेवकों से और उस की प्रजा से कल जाती रहे परन्तु ऐसा न हो कि फिरजन फिर कल-करके लोगों को परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को जाने न देवे ॥

३० तब मूसा फिरजन पास से बाहर गया और परमेश्वर से विनती किई । और परमेश्वर ने मूसा की विनती के समान किया और माखियों को फिरजन से उस के सेवकों से और उस की प्रजा पर से दूर किया एक भी न रही । तब फिरजन ने उस वार भी अपना मन कठोर किया और उन लोगों को जाने न दिया ॥

नवां पर्व ।

१ तब परमेश्वर ने मूसा को कहा कि फिरजन पास जा और उसे कह कि परमेश्वर इयराणियों का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसमें वे

मेरी सेवा करें । क्योंकि यदि तू जाने न देगा और अन्न की भी उन्हीं गेकेगा । २  
 तो देख परमेश्वर का हाथ मेरे खेत के पशुन पर घांटों पर गडहों पर जंटों पर ३  
 गाय बैलों पर और भेड़ बकरियों पर अन्यंत भारी सरी पड़ेगी । और परमेश्वर ४  
 हमराएल के और मिगियों के पशुन में विभाग करेगा और उन में से जो हम-  
 राएल के सन्तानों के हैं कोई न मरेगा । और परमेश्वर ने एक समय ठहराया ५  
 और कहा कि परमेश्वर यह कार्य देश में करेगा । और दूसरे दिन परमेश्वर ६  
 ने ऐसा ही किया और मिश्र के ममस्त पशु मर गये परन्तु हमराएल के सन्तानों  
 के पशुन में से एक भी न मरा । तब फिरजन ने भेजा और देखा कि हमराएलियों ७  
 के पशुन में से एक न मरा और फिरजन का मन कटोर रहा और उस ने लोगों को  
 जाने न दिया ॥

और परमेश्वर ने सूमा और दारन से कहा कि भट्ठी में से अपनी भट्ठी भरके राख ८  
 लेा और सूमा उसे फिरजन के सामें आकाश की ओर उड़ा दे । और यह मिश्र ९  
 की ममस्त भूमि में मृदम धूल का जायगी और मिश्र के ममस्त देश में मनुष्यों पर  
 और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकलेंगे । और उन्हीं ने भट्ठी की राख निई १०  
 और फिरजन के आगे खड़े हुए और सूमा ने उसे स्पर्श की और उड़ाया और  
 मनुष्यों पर और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकले । और फोड़ों के सारे ११  
 टोन्हे सूमा के आगे खड़े न रह सकें क्योंकि टोन्हों पर और सारे मिगियों पर  
 फोड़े थे । और परमेश्वर ने फिरजन के मन को कटोर कर दिया और ऐसा कि १२  
 परमेश्वर ने सूमा से कहा था ऐसा उस ने उन की दान न मानी ॥

फिर परमेश्वर ने सूमा से कहा कि कल तड़के उठ और फिरजन के आगे १३  
 खड़ा हो और उसने कहा कि परमेश्वर हमराएलियों का रक्षक था कहता है कि  
 मेरे लोगों को जाने दे जिसे मेरी सेवा करें । क्योंकि मैं अन्न की अपनी भारी १४  
 विपत्ति तेरे मन पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर डालूंगा जिससे तू  
 जाने कि ममस्त पृथिवी पर मेरे तुल्य कोई नहीं । क्योंकि अन्न में अपना हाथ १५  
 बड़ाऊंगा जिसमें मैं तुम्हें और तेरी प्रजा को सरी में मारूँ और तू पृथिवी पर से  
 नष्ट हो जायगा । और निश्चय मैं ने तुम्हें इस लिये उठाया है कि अपना पराक्रम १६  
 तुम्ह पर दिखाऊँ और अपना नाम सारे संसार में प्रगट करूँ । अन्न लो तू मेरे १७  
 लोगों पर अहंकार करता जाता है जिससे उन्हीं जाने न दे । देख मैं कल इसी समय १८  
 मैं अत्यन्त बड़े बड़े आले परमाऊंगा जो मिश्र में उस के आरंभ में अन्न लो न  
 पड़े थे । सो अभी भेज अपने पशु और जो कुछ कि खेत में लगा है सबों को १९  
 एकट्ठे कर क्योंकि हर एक मनुष्य पर और पशु पर जो खेत में होगा और घर में  
 लाया न जायगा ओले पड़ेगी और वे मर जायेंगे ॥

जो परमेश्वर के वचन से डरता था फिरजन के सेवकों में से हर एक ने अपने २०  
 सेवकों को और अपने पशुन को घर में भगाया । और जिस ने परमेश्वर के वचन २१  
 को न माना उस ने अपने सेवकों और अपने पशुन को खेत में रहने दिया ॥

और परमेश्वर ने सूमा को कहा कि अपना हाथ स्पर्श की और बड़ा जिससे २२  
 मिश्र के सारे देश में मनुष्य पर और पशु पर और खेत के हर एक सागपात पर

२३ मिश्र देश में ओले पड़े । और मूसा ने अपनी कड़ी स्वर्ग की ओर बढ़ाई और परमेश्वर ने गर्जन और ओले भेजे और आग भूमि पर चलती थी और ईश्वर ने २४ मिश्र की भूमि पर ओले बरसाये । सो ओले बरसे और ओलों में आग लिपटी हुई इतना अति भारी यहां लों कि मिश्र के समस्त देश में जव से कि वह देश हुआ २५ था ऐसा न पड़ा था । और ओलों ने मिश्र के समस्त देश में क्या मनुष्य को और क्या पशु सब को जो खेत में थे मारा और ओलों ने खेत के सब सागपात को २६ मारा और खेत के सारे वृक्ष को तोड़ डाला । केवल जश्न की भूमि में जहां इसराएल के संतान थे ओले न पड़े ॥

२७ तब फिरजन ने भेजा और मूसा और हाखन को बुलवाया और उन्हें कहा कि मैं ने इस बार अपराध किया परमेश्वर न्यायी है और मैं और मेरे लोग दुष्ट हैं । २८ परमेश्वर से विनती करो कि अब आगे को परमेश्वर का शब्द और ओला न हो २९ और मैं तुम्हें जाने दूंगा और आगे न रहोगे । तब मूसा ने उससे कहा कि मैं नगर से बाहर निकलते हुए परमेश्वर के आगे अपने हाथ फैलाऊंगा गर्ज थम जायेंगे ३० और ओले न बरसेंगे जिसमें तू जाने कि पृथिवी परमेश्वर ही की है । परन्तु मैं जानता हूं कि तू और तेरे सेवक अब भी परमेश्वर ईश्वर से न डरेंगे ॥

३१ और सन और जव मारे पड़े क्योंकि जव की धारें आ चुकी थीं और सन बड़ ३२ चुका था । पर गोहूं और मुंडला गोहूं मारे न पड़े क्योंकि वे बड़े न थे ॥

३३ और मूसा ने फिरजन पास से नगर के बाहर जाके परमेश्वर के आगे हाथ ३४ फैलाये और गर्जना और ओले थम गये और भूमि पर वृष्टि थम गई । जव फिर-जन ने देखा कि मैंह और ओले और गर्जना थम गया तो फेर दुष्टता किई और ३५ उस ने और उस के सेवकों ने अपना मन कठोर किया । और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था वैसा फिरजन का अंतःकरण कठोर रहा और उस ने इसराएल के संतानों को जाने न दिया ॥

दसवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फिरजन पास जा क्योंकि मैं ने उस के अंतःकरण को और उस के सेवकों के अंतःकरण को कठोर कर दिया है जिसमें २ मैं अपने ये लक्षण उन के मध्य में प्रगट करूं । और जिसमें तू अपने पुत्र और अपने पौत्र के सुने में वर्णन करे जो जो मैं ने मिश्र में किया और मेरे लक्षण जो मैं ने उन में दिखलाये और तुम जानो कि परमेश्वर मैं ही हूं ॥

३ सो मूसा और हाखन ने फिरजन पास जाके उससे कहा कि परमेश्वर इब्रानियों का ईश्वर यों कहता है कि कब लों तू मेरे आगे आप को नम्र करने से अलग रहेगा ४ मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें । क्योंकि यदि तू मेरे लोगों के जाने ५ से नाह करेगा तो देख कल मैं तेरे सिवानों में टिड्डी भेजूंगा । और वे पृथिवी को ढांप लेंगी कि कोई पृथिवी को देख न सकेगा और वे उस बचे हुए को जो ओलों से तेरे लिये बचे रहे हैं खा जायेंगी और हर एक वृक्ष को जो तुम्हारे ६ लिये खेत में उगता है चट करेंगी । और वे तेरे घर में और तेरे सेवकों के घर में और समस्त मिश्र के घरों में भर जायेंगी जिन्हें तेरे पितरों ने और तेरे पितरों

के पितरों ने जिस दिन से कि वे पृथिवी पर आएँ आज लों नहीं देखा तब वह फिरा और फिरकन पास से निकल गया ।

तब फिरकन के सेवकों ने उससे कहा कि यह पुरुष कब लों हमारे लिये फंदा ७  
 होगा उन लोगों को जाने दे जिसमें वे परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करें अब  
 ताईं तू नहीं जानता कि मिन नष्ट हुआ । तब मूसा और हामन फिरकन पास ८  
 फिर पहुँचाये गये और उस ने उन्हें कहा कि जाओ परमेश्वर अपने ईश्वर की  
 सेवा करो परन्तु वे कौन से लोग हैं जो जायेंगे । तब मूसा बोला कि हम अपने ९  
 सक्तों और अपने बृद्ध अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों अपनी भेड़ चकरियों और  
 अपने गाय बैल समेत जायेंगे क्योंकि हमें आवश्यक है कि अपने ईश्वर का पर्य  
 मानें । तब उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर यों ही तुम्हारे संग रहे जो मैं तुम्हें १०  
 और तुम्हारे बालकों को जाने दूँ देखा कि दुर्गह तुम्हारे आगे है । ऐसा नहीं ११  
 तुम पुरुषगण जाइयो और परमेश्वर की सेवा करो क्योंकि तुम ने यही चाहा मे  
 वे फिरकन के आगे से निकाले गये ॥

तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ टिट्टी के लिये मिस की भूमि १२  
 पर बढ़ा जिसमें वे मिन के देश पर आइँ और देश के हर एक मागपात जो  
 ओलों से बच रहा है खा लेवें । सो मूसा ने मिन के देश पर अपनी कढ़ी बढ़ाई और १३  
 परमेश्वर ने उस सारे दिन और सारी रात पुरखी पवन चलाई जस बिहान हुआ  
 तो वह पुरखी पवन टिट्टी लाई । और टिट्टी मिस के सारे देश पर आईँ और १४  
 मिस के समस्त सिवाने पर उतरों वे आते बहून यों उन के आगे ऐसी टिट्टी न  
 आई यों और न उन के पीछे फिर आवेंगी । क्योंकि उन्हीं ने समस्त पृथिवी को १५  
 हा लिया यहाँ लों कि देश अधियारा हो गया और उन्हीं ने देश को हर एक  
 हरियाली को और वृक्षों के फलों को जो ओलों से बच गये थे चाट लिया और  
 मिस के समस्त देश में किसी वृक्ष पर अथवा खेत के सागपात में हरियाली न बची ॥

तब फिरकन ने मूसा और हामन को बेरा बुलाया और कहा कि मैं परमेश्वर १६  
 तुम्हारे ईश्वर का और तुम्हारा अपराधी हूँ । सो अब मैं धिनती करता हूँ केवल १७  
 इस बार मेरा अपराध क्षमा कर और परमेश्वर अपने ईश्वर से धिनती करो कि  
 केवल इसी मरी को मेरे ऊपर से दूर करे । सो वह फिरकन के पास से निकल गया १८  
 और परमेश्वर से धिनती किई । और परमेश्वर ने वृष्टी पड़्या भेजी और वह १९  
 टिट्टी को ले गई और उन्हें लाल समुद्र में डाल दिया और मिस के समस्त सिवानों  
 में एक टिट्टी न रही । परन्तु परमेश्वर ने फिरकन के मन को कठोर कर दिया और २०  
 उस ने इसराएल के संतान को जाने न दिया ॥

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ा जिसमें २१  
 मिस के देश पर अधिकार का जाय ऐसा अधिकार जो टटोला जावे । तब मूसा २२  
 ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ाया और तीन दिन लों सारे मिस के देश में  
 गाढ़ा अधियारा रहा । उन्हीं ने एक दूसरे को न देखा और कोई तीन दिन भर २३  
 के अपने स्थान से न उठा परन्तु इसराएल के समस्त संतान के लिये उन के  
 नियासों में उँजियाला था ॥

२४ तब फिरजन ने मूसा को बुलाया और कहा कि जाओ परमेश्वर की सेवा करो केवल तुम्हारे भुंड और तुम्हारे ठोकर यहीं रहें तुम्हारे बालक भी तुम्हारे संग जायें ।  
 २५ तब मूसा ने कहा कि तुम्हें आवश्यक है कि हमें बलिदान और चढ़ावे की भेंट  
 २६ देवें जिसमें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बलि चढ़ावें । और हमारे पशु भी हमारे संग जायेंगे एक खुर छोड़ा न जायगा क्योंकि हम उन में से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा के लिये लेंगे और जब लों उधर न जावें हम नहीं जानते कि कौन सी वस्तुन से परमेश्वर की सेवा करें ॥

२७ परन्तु परमेश्वर ने फिरजन के अंतःकरण को कठोर कर दिया और उस ने  
 २८ उन्हें जाने न दिया । और फिरजन ने उससे कहा कि मेरे आगे मे जा आप को चौकस रख फिर मेरा मुंह मत देख क्योंकि जिस दिन मेरा मुंह देखेगा तू मर  
 २९ जायगा । तब मूसा ने कहा कि तू ने अच्छा कहा मैं फिर तेरा मुंह न देखूंगा ॥  
 ग्यारहवां पर्व ।

१ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं फिरजन पर और मिशियों पर एक मरी और लाजंगा उस के पीछे वह तुम्हें यहां से जाने देगा जब वह तुम्हें जाने दे तो  
 २ निश्चय तुम्हें सर्वथा यहां से धकियावेगा । सो अब लोगों के कानों कान कह कि हर एक पुरुष अपने परोसी से और हर एक स्त्री अपनी परोसिन से रूपे  
 ३ के और सोने के गहने मांग लेवे । और परमेश्वर ने उन लोगों को मिशियों की दृष्टि में प्रतिष्ठा दिई वह जन मूसा भी मिश की भूमि में फिरजन के सेवकों की और लोगों की दृष्टि में महान था ॥

४ और मूसा ने कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं आधी रात को निकलके  
 ५ मिश के बीचोंबीच जाऊंगा । और मिश के देश में सारे पहिलौठे फिरजन के पहिलौठे से लेके जो अपने सिंहासन पर बैठा है उस सहेली के पहिलौठे लों जो  
 ६ चक्री के पीछे है और सारे पशु के पहिलौठे मर जायेंगे । और मिश के समस्त देश में ऐसा बड़ा रोना पीटना होगा जैसा कि कभी न हुआ था न कभी फिर  
 ७ होगा । परन्तु सारे इसराएल के संतान पर एक कूकर भी अपनी जीभ न हिलावेगा न तो मनुष्य पर और न पशु पर जिसमें तुम जानो कि परमेश्वर क्योंकि मिशियों  
 ८ में और इसराएलियों में विभाग करता है । और यह तेरे समस्त सेवक मुझ पास आवेंगे और मुझे प्रणाम करके कहेंगे कि तू निकल जा अपने समस्त पश्चाद्गामी समेत और उस के पीछे मैं निकल जाऊंगा और वह फिरजन के पास से निपट रिसियाके निकल गया ॥

९ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फिरजन तुम्हारी न सुनेगा जिसमें मेरे  
 १० आश्चर्य मिश देश में बढ़ जायें । और मूसा और हारून ने ये सब आश्चर्य फिरजन के आगे दिखाये और परमेश्वर ने फिरजन के मन को कठोर कर दिया और उस ने अपने देश से इसराएल के संतान को जाने न दिया ॥

बारहवां पर्व ।

१ तब परमेश्वर ने मिश के देश में मूसा और हारून को कहा । कि यह मास तुम्हारे लिये मासों का आरंभ होगा यह तुम्हारे बरस का पहिला मास होगा ॥

दूसराएलियों की सारी सड़ली से कहो कि इस मास के दमघें में हर एक ३ पुष्प से अपने पितरों के घर के समान एक सेम्रा घर पीछे सेम्रा अपने लिये लेवें । और यदि वह घर सेम्रा के लिये छोटा हो तो वह और उस का परासी हो उस ४ के घर से लगा हुआ हो प्राणियों की गिनती के समान लेवे तुम एक एक अपने खाने के समान सेवे के लिये लेखा ठहराओ ॥

तुम्हारा सेम्रा निप्याट होवे पीछे घर का नख्य भेड़ों में अथवा बकरियों ५ से लीजियो । और तुम उसे मास के चौदहवें दिन लों रख छोड़ियो और दूसरा- ६ एलियों की समस्त सड़ली सांक को उमे मारें ॥

और वे लोह में से लेवें और उन घरों के जहां वे गायों द्वार की दोनों ओर ७ और ऊपर की चौखट पर छापा दें ॥

और वे उमी रात को आग में भुना हुआ उस का मांस और अखमीरी रोटी ८ कड़वी तरकारी के साथ खावें । उसे कड़ा और पानी में उसनके न खावे परन्तु उस ९ के मिर पात्र और उड़ समेत आग पर भूनके खावें । और उस में से बिहान लों १० कुछ न रहने दीजियो और जो कुछ उस में से बिहान लों रह जायेगा तुम आग से जला दीजियो । और उस में पों खाइयो अपनी कटि बांधे हुए अपनी जूतियां ११ अपने पांखों में पहिने हुए और अपना लठ अपने हाथों में लिये हुए और उसे दंग खा लीजियो वह परमेश्वर का फसद है ॥

इस लिये कि मैं आज रात मिस्र के देश में होके निकलूंगा और नख्य पीछेलाटे १२ मनुष्य के और पशुन के जो उस में हैं मांसगा और मिर के समस्त देवताओं पर न्याय करूंगा मैं परमेश्वर हूँ । और वह लोह तुम्हारे घरों पर जहां जहां तुम हो १३ तुम्हारे लिये एक चिन्ह होगा और मैं वह लोह देखके तुम पर से घीन जाऊंगा और जद्य मिस्र के देश को मांसगा तब मरी तुम पर नाश करने को न आवेगी ॥

और यह दिन तुम्हारे लिये एक स्मरण के लिये होगा और तुम अपनी समस्त पीढ़ियों १४ के लिये उसे परमेश्वर के लिये पर्व रखियो तुम नित्य उस विधि से पर्व रखियो ॥

सात दिन लों अखमीरी रोटी खाइयो पहिले ही दिन खमीर अपने घरों १५ से उठा डालियो इस लिये कि जो कोई पहिले दिन में लेके सातवें दिन लों खमीरी रोटी खायेगा सो प्राणी दूसराएल में काटा जायगा । और पहिले दिन १६ पवित्र घुलावा होगा और सातवें दिन तुम्हारे लिये पवित्र घुलावा होगा उन में कोई कार्य न किया जायगा केवल भोजन ही का कार्य हर एक मनुष्य में किया जाय । और इस अखमीरी रोटी के पर्व को मानोगे क्योंकि उसी दिन मैं तुम्हारी १७ सेनाओं को मिस्र देश में निकाल लाया हूँ इस लिये इस दिन को अपनी पीढ़ियों में विधि से नित्य मानो । पहिले मास की चौदहवीं तिथि से सांक को इक्कीसवीं १८ तिथि लों अखमीरी रोटी खाइयो । सात दिन लों तुम्हारे घरों में खमीर न पाया १९ जावे क्योंकि जो कोई खमीरी वस्तु खायेगा वही प्राणी दूसराएल की सड़ली से काटा जायगा चाहे परदेशी हो चाहे देशी । तुम कोई वस्तु खमीरी मत खाइयो २० तुम अपनी समस्त वस्तियों में अखमीरी रोटी खाइयो ॥

तब मूसा ने दूसराएल के समस्त प्राचीनों को घुलावा और उन्हें कहा कि २१



- २२ अपने अपने घर के समान एक एक मेझा लेओ और फसह का मेझा मारो । और एक मुट्ठी जूफा लेओ और उसे उस लोहू में जो वासन में है चारके ऊपर की चौखट के और द्वार की दोनों ओर उससे ढापो और तुम में से कोई घिहान लो
- २३ अपने घर के द्वार से बाहर न जावे । क्योंकि परमेश्वर मिस को मारने के लिये आरवार जायगा और जब वह ऊपर की चौखट पर और द्वार की दोनों ओर लोहू को देखे तब परमेश्वर द्वार पर से बीत जायगा और नाशक तुम्हारे घरों में
- २४ जाने न देगा कि मारे । और अपने और अपने संतानों के लिये विधि करके इस
- २५ बचन को नित्य मानियो । और ऐसा होगा कि जब तुम उस देश में जा परमेश्वर तुम्हें अपनी बाचा के समान देगा प्रवेश करोगे तब इस सेवा का पालन
- २६ करियो । और ऐसा होगा कि जब तुम्हारे संतान तुम से कहें कि इस सेवा से
- २७ तुम्हारा क्या अर्थ है । तब कहियो कि यह परमेश्वर के फसह का बलिदान है जो मिस में इसराएल के संतानों के घरों पर से बीत गया जब उस ने मिस को मारा और हमारे घरों को बचाया तब लोगों ने सिर झुकाये और प्रणाम किये ।
- २८ और इसराएल के संतान चले गये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा किई थी उन्होंने ने वैसा ही किया ॥
- २९ और यों हुआ कि परमेश्वर ने आधी रात को मिस के देश में सारे पहिलौठे को फिरजन के पहिलौठे से लेके जो अपने सिंहासन पर बैठता था उस धनुआ
- ३० के पहिलौठे लों जो बन्दीगृह में था पशुन के पहिलौठों समेत नाश किये । और रात को फिरजन उठा वह और उस के सब सेवक और सारे मिसी उठे और मिस में बड़ा बिलाप था क्योंकि कोई घर न रहा जिस में एक न मरा ॥
- ३१ तब उस ने मूसा और हारून को रात ही को बुलाया और कहा कि उठो मेरे लोगों में से निकल जाओ तुम और इसराएल के संतान जाओ और अपने कदों के
- ३२ समान परमेश्वर की सेवा करो । जैसा तुम ने कहा है अपना झुंड और बैल भी लेओ और बिदा होओ और मेरे लिये भी आशीस चाहो ॥
- ३३ और मिस के लोगो पर शीघ्रता करते थे कि वे मिस के देश से वेग निकाले
- ३४ जायें क्योंकि उन्होंने ने कहा कि हम सब मरे । और उन लोगों ने आटा गूंधा हुआ उससे आगे कि वह खमीर हो गूंधने के कठरे समेत अपने कपड़ों में
- ३५ बांधके अपने कांधों पर उठा लिया । और इसराएल के संतानों ने मूसा के कहने के समान किया और उन्होंने ने मिसियों से रूपे के और सोने के गहने और वस्त्र
- ३६ मांग लिये । और परमेश्वर ने उन लोगों को मिसियों की दृष्टि से ऐसा अनुग्रह दिया कि उन्होंने ने उन्हें दिया और उन्होंने ने मिसियों को लूट लिया ॥
- ३७ और इसराएल के संतान ने रामसीस से सुक़ात लों कूच किया जो बालकों को
- ३८ छोड़ कर लाख पुरुष थे । और एक मिलीजुली बड़ी मंडली भी और झुंड और
- ३९ बैल और बहुत पशु उन के साथ गये । और उन्होंने ने उस गूंधे हुए आटे के जो वे मिस से ले निकले थे अखमीरी फुलके पकाये क्योंकि वह खमीर न हुआ था इस कारण कि वे मिस से खदेड़े गये थे और ठहर न सके और अपने लिये कुछ भोजन सिद्ध न किया ॥

अब इसरायल के संतानों का निवास तो मिस में रहते थे चार सौ तीस ४०  
वरस था । और चार सौ तीस वरस के अंत में यों हुआ कि ठीक उसी दिन ४१  
परमेश्वर की ममस्त सेना मिस के देश से निकल गई ॥

उन्हें मिस के देश से निकाल लाने के कारण यह रात परमेश्वर के लिये ४२  
पालन करने के योग्य है यह परमेश्वर की वह रात है जिसे चाहिये कि इसरायल  
के संतान अपनी पीढ़ी पीढ़ी पालन करें ॥

और परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा कि फसल की विधि यह है कि ४३  
उसके कोई परदेशी न खावे । परन्तु हर गक का मोल लिया हुआ दान जद्य तू ने ४४  
उस का खतनः किया तब वह उम्मे खावे । विदेशी और अनिष्टा सेवक उम्मे ४५  
न खावे । यह गक ही घर में खाया जावे उन का मांस कुछ घर से बाहर न ४६  
निकाला जावे और न उस की हड्डी तोड़ा जावे । इसरायल के संतान की ममस्त ४७  
संडली उसे पालन करें । और जब कोई परदेशी तुम्में घाम करे और परमेश्वर के ४८  
लिये फसल किया जावे तो उस के मद्य पुनः खतनः करावे तब वह उसे पालन  
करने के लिये मर्त्ताप आवे और वह ऐसा होगा जैसा कि देश में जन्म पाया हो  
और कोई अग्रजनः जन उसके न खावे । देश के उत्पन्न हुआओं के और देगी और ४९  
विदेशी के लिये तुम्हारे मध्य में गक ही व्यवस्था होगी । और मारे इसरायल के ५०  
संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा की है ऐसा ही  
किया ॥

और यों हुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर ने इसरायल के संतानों को उन ५१  
की सेनाओं के समान मिस देश से बाहर निकाला ॥

तेरछा पृष्ठ ।

और परमेश्वर ने मूसा से कहा । कि मद्य पहिलाने सेरे लिये पवित्र कर जो १  
कुछ कि इसरायल के संतानों में शर्म का ग्याले क्या मनुष्य और क्या पशु से  
मेरा है ॥

और मूसा ने लोगों से कहा कि इस दिन का जिस में तुम मिस से बाहर आये और ३  
धंधुआई के घर से निकले स्मरण करियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें बाहुयल से निकाल  
लाया और खसीरी रोटी खाई न जावे । तुम आधीच के मास में आज के दिन बाहर ४  
निकले । और यों होगा कि जब परमेश्वर तुम्हें कनयानियों और दित्तियों और असूमियों ५  
और दवियों और ययूमियों के देश में लावे जिसे उस ने तेरे पितरों से किरिया खाई  
कि तुम्हें देगा जहां दूध और मधु बहता है तब तू उस मास में इस सेवा का पालन  
करियो । सात दिन ताई तू अग्रसीरी रोटी खाइयो और सात दिन परमेश्वर के ६  
लिये पर्व होगा । अग्रसीरी रोटी सात दिन खाई जावे और कोई खसीरी रोटी ७  
तुम्हें पास दिखाई न देवे और न खसीर तेरे ममस्त सिधाने में तेरे आगे दिखाई  
देवे । और तू उसी दिन अपने पुत्र को ममस्तद्वेषे कि यह इस कारण है कि जब ८  
इस मिस से बाहर निकले तब परमेश्वर ने हम से यह किया । और यह एक लक्षण ९  
तुम्हें पास तेरे दाथ में और तेरी दोनों आंखों के बीच स्मरण के लिये होगा जिसमें  
परमेश्वर की व्यवस्था तेरे मुंह में हो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें भुजा के बल से मिस



और सिन्धु के राजा को कहा गया कि लोग भाग गये तब फिरजन का क्रोध ७  
उस के सेवकों का मन लोगों के विरोध में फिर गया और वे बोले कि हम ने  
यह क्या किया कि हमरागल को अपनी सेवा में लाने दिया । तब उस ने अपना ८  
रथ जोता और अपने लोग साथ लिये । और उन ने छः सौ चूने हुए रथ और ९  
सिन्धु के समस्त रथ साथ लिये और उन नभों पर प्रधान बैठायें । और परमेश्वर ने ८  
सिन्धु के राजा फिरजन के मन को कठोर कर दिया और उस ने हमरागल के  
संतानों का पीछा किया पर हमरागल के संतान भाग बढ़ायें हुए निकले । परन्तु ९  
मिनो उन का पीछा किया चले गये और फिरजन के साथ घोड़ों और रथों और  
उस के घोड़चढ़ों और उस की सेना ने समुद्र के तीर कोउनदीगल के समीप  
वज्रमण्डल के मन्सुख उन्टें छावनी खड़ी करने जा ही लिया ५

तब फिरजन पास आया तब हमरागल के संतानों ने कार्यें जपर बिद्वे और १०  
मिनियों को अपने पीछे आने हुए देखा और अत्यंत डर गये तब हमरागल के  
संतानों ने परमेश्वर की सेवाएं दीं । और मृता में कहा कि क्या सिन्धु में मत्स्य ११  
नहीं हैं कि तू हमें मत्स्य के लिये वहां से हमें ले जाया तू ने हम से यह क्या  
व्यवहार किया कि हमें सिन्धु में निहाल नाया । तब यह वही बात नहीं जो १२  
हम ने सिन्धु में तुझ से कही थी कि हम में हाथ डठा जिनमें हम मिनियों की  
सेवा करें कि हमारे लिये मिनियों की सेवा करना हमें मत्स्य से प्रतीत हो ॥

तब मृता ने लोगों को कहा कि मत डरो रहो रथों और परमेश्वर का मोक्ष १३  
देखो जो आज के दिन यह तुम्हें दिखावेगा क्योंकि उन मिनियों को जिनमें तुम  
आज देखने हो उन्टें फिर कहीं न देखोगे । परमेश्वर तुम्हारे लिये पुष्ट करेगा १४  
और तुम चूपचाप रहोगे ॥

तब परमेश्वर ने मृता में कहा कि तू क्यों डर और चिन्ता करना ते हमरागल १५  
के संतान से कह कि वे आगे बढ़ें । परन्तु तू अपनी छड़ी उठा और समुद्र पर १६  
अपना हाथ बढ़ा और उसे दो भाग कर और हमरागल के संतान समुद्र के  
बीचाबीचा में से नृत्यी भूमि पर छोड़े चले जायेंगे । और देख कि मैं मिनियों के १७  
अंतःकर्म को कठोर कर दूंगा और वे उन का पीछा करेंगे और मैं फिरजन और  
उस की समस्त सेना उस के रथ और उस के घोड़चढ़ों पर अपनी सौदमा प्रगट  
करेगा । और तब मैं फिरजन उस के रथों और उस के घोड़चढ़ों पर अपनी सौदमा १८  
प्रगट करेगा तब मिनो जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

और ईश्वर का वृत्त जो हमरागल की छावनी के आगे चला जाता था मो १९  
फिरा और उन के पीछे चला और मेघ का ग्रंभा उन के सन्मुख में गया और उन  
के पीछे जा रुका । और मिनियों की छावनी और हमरागल की छावनी के २०  
मध्य में आया और वह गज आंधियारा मेघ मिनियों के लिये हो गया परन्तु रात  
को हमरागल को डीजियाना देना था सो रात भर एक दूसरे के पास न  
आया ॥

फिर मृता ने समुद्र पर अपना हाथ बढ़ाया और परमेश्वर ने वही प्रचंड २१  
पुखी आंधी से रात भर समुद्र को चलाया और समुद्र को सुखा दिया और पानी

- २२ दो भाग हो गये । और इसराएल के संतान समुद्र के बीच में से सूखे पर होके चले गये और पानी की भीत उन के दाहिने और बायें ओर थी ॥
- २३ और मिखियों ने पीछा किया और फिरजन के सब छोड़े उस के रथ और उस के छोड़चढ़े उन का पीछा किये हुए समुद्र के मध्य लें आये । और यों हुआ कि परमेश्वर ने पिछले पहर उस आग और मेघ के खंभे में से मिखियों की सेना पर
- २४ दृष्टि किई और मिखियों की सेना को घबराया । और उन के रथों के पहियों को निकाल डाला कि वे भारी से हांके जाते थे सो मिखियों ने कहा कि आओ इसराएलियों के सन्मुख से भागें क्योंकि परमेश्वर उन के लिये मिखियों से लड़ता है ।
- २५ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ समुद्र पर बढ़ा जिसमें पानी मिखियों पर उन के रथों और उन के छोड़चढ़ों पर फिर आवे । तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाया और समुद्र विद्वान होते अपनी सामर्थ्य पर फिरा और मिखी उस के आगे भागे और परमेश्वर ने मिखियों को समुद्र में नाश किया ।
- २६ और पानी फिरा और रथों और छोड़चढ़ों फिरजन की सब सेना को जो उन के पीछे समुद्र के बीच में आई थी छिपा लिया एक भी उन में से न बचा । परन्तु इसराएल के संतान सूखी से समुद्र के बीच में से चले गये और पानी की भीत उन के बायें और दाहिने थी ॥
- ३० सो परमेश्वर ने उस दिन इसराएलियों को मिखियों के हाथ से बचाया और
- ३१ इसराएलियों ने मिखियों की लार्थ समुद्र के तीर पर देखीं । और जो बड़ी भुजा परमेश्वर ने मिखियों पर प्रगट किई इसराएलियों ने देखा और लोग परमेश्वर से डरे तब परमेश्वर पर और उस के दास मूसा पर विश्वास लाये ॥
- पंदरहवां पर्व ।
- १ तब मूसा और इसराएल के संतान ने परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति इस रीति से गाया
- और कहके बोला कि मैं परमेश्वर का भजन करूंगा क्योंकि वह बड़े विभव से विभूषित हुआ उस ने छोड़े को उस के चढ़वैये समेत समुद्र में फेंक दिया है ।
- २ परमेश्वर मेरी सामर्थ्य और गान है और वह मेरी सुक्ति हुआ यह मेरा सर्वशक्तिमान है और मैं उस के लिये निवास सिद्ध करूंगा मेरे पिता का ईश्वर है और मैं उस की महिमा करूंगा । परमेश्वर योद्धा है परमेश्वर उस का नाम है । उस ने फिरजन के रथों और उस की सेना को समुद्र में डाल दिया है और उस के चुने हुए प्रधान लाल समुद्र में डूबे हैं । गहिरावां ने उन्हें ठांप लिया वे पत्थर के समान गहिरावों में डूब गये । हे परमेश्वर तेरा दाहिना हाथ सामर्थ्य में महान हुआ हे परमेश्वर तेरे दाहिने हाथ ने बैरी को टुकड़ा टुकड़ा किया । और तू ने अपनी महिमा के महत्त्व से अपने विरोधियों को उलट डाला तू ने अपने कोप को भेजके उन्हें खूंटी की नाईं भस्म किया । और तेरे नथुनों के श्वास से जल एकट्ठे हुए वाढ़ ढेर होके खड़ी हो गई समुद्र के अंतःकरण में गहिरावे जम गये । बैरी बोला कि मैं पीछा करूंगा जा ही लूंगा लूट को बांट लूंगा उन से मेरी लालसा सन्तुष्ट होगी मैं अपना खज्ज खींचूंगा मेरा हाथ उन्हें बश में कर

लेगा । तू ने अपनी पयन से फूंक मारी समुद्र में उन्हे छिपा लिया वे सीमे की १०  
 नाईं महाजलों में डूब गये । हे परमेश्वर शक्तिमानों में तेरे तुल्य कौन है पवित्रता ११  
 में तेरे तुल्य तेजोमय कौन है स्तुति में भयंकर आश्चर्यकर्ता । तू ने अपना दहिना १२  
 हाथ बढ़ाया पृथिवी उन्हे निगल गई । तू ने अपनी दया से अपने कुड़ाये हुए १३  
 लोगों की अमुखाईं किई तू ने अपनी सामर्थ्य से उन्हे अपने पवित्र निवास में  
 पहुँचाया । लोग सुनके डरेंगे फिलिस्तिन्या के निवासियों को भय ने पकड़ लिया १४  
 है । तब अहम के प्रधान विस्मित हुए मोअव के राजवंतों को घबराहट पकड़ेगी १५  
 कनआन के समस्त वासी रान गये हैं । उन पर भय और डर पड़ेगा तेरी भुजा के १६  
 महत्त्व से वे पत्थर की नाईं चुप रह जायेंगे जब लों तेरे लोग पार न जायें हे  
 परमेश्वर जब लों तेरे लोग जिन्हें तू ने माल लिया पार न जायें । तू उन्हे भीतर १७  
 लावेगा और अपने अधिकार के पहाड़ पर उन स्थान पर जो हे परमेश्वर तू ने  
 अपने निवास के लिये बनाया है उस पवित्र स्थान पर हे प्रभु जिसे तेरे हाथों ने  
 स्थापित है तू उन्हे लगावेगा । परमेश्वर सनातन सनातन राज्य करेगा ॥ १८

योंकि फिरजन का छोड़ा उस के गंधों और उस के छोड़वड़े समेत समुद्र में १९  
 पैठा और परमेश्वर ने समुद्र का पानी उन पर पलटाया परन्तु इसराएल के संतान  
 समुद्र के मध्य में नूये नूये चले गये ॥

तब हाबन की घाटिन मिरयम आशमजगिनी ने डोल अपने हाथ में लिया और २०  
 सब स्त्री डोलों के साथ नाचती हुईं उन के पीछे चलीं । और मिरयम ने उन्हे २१  
 उत्तर दिया

कि परमेश्वर का शान करो योंकि वह आगे सजान है उन ने छोड़े का उस  
 के चढ़वैये समेत समुद्र में नष्ट किया ॥

और मूसा इसराएल को लाल समुद्र से ले गया और वे नूर के दन में गये २२  
 और वे तीन दिन लों दन में चले गये और पानी न पाया । और जब वे मारः में २३  
 आये तब मारः का पानी पी न मके योंकि वह कहुआ था इस कारण वह  
 मारः कहाया । तब लोग यह कहके मूसा के विरोध में कुड़कुड़ाने लगे कि इस २४  
 क्या पीयं । तब उस ने परमेश्वर की देखाई दिई और परमेश्वर ने उसे एक पेड़ २५  
 दिखाया जब उस ने उसे पानियों में डाला तब पानी सोटे हो गये वहाँ उस ने  
 उन के लिये एक त्रिवि और वषट्म्या बनाई और वहाँ उस ने उन्हे परखा । और २६  
 कहा कि यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द ध्यान से सुने और जो उस की  
 दृष्टि में अच्छा है उसे करे और उस की आज्ञाओं पर ध्यान धरे और उस की  
 विधि को चेत में रखे तो मैं उन रोगों का जो मित्रियों पर लाया तुझ पर न  
 देऊंगा योंकि मैं वह परमेश्वर हूँ जो तुम्हें चंगा करता है ॥

तब वे ऐलीस को जहां जल के वारह कुर और खजूर के सत्तर घृत थे आये २७  
 और उन्हीं ने जल के तीर डेरा किया ॥

सोलहवां पर्व ।

फिर उन्हीं ने ऐलीस से यात्रा किई और इसराएल के संतानों की समस्त १  
 मंडली मिस्र देश से निकलने के पीछे दूसरे मास की पंद्रहवीं तिथि को सीन के



- २ वन में जो ऐलीम और सीना के मध्य में है पहुंची । और इसराएल के संतानों
- ३ की सारी मंडली मूसा और हाखन पर वन में कुड़कुड़ाई । और इसराएल के संतानों ने उन्हें कहा कि हाय कि हम परमेश्वर के हाथ से मिस्र के देश में मारे जाते जब हम मांस की हांडियों के लग बैठते थे और रोटी मनमनती खाते थे क्योंकि तुम हमें इस वन में निकाल लाये हो जिसमें इस सारी मंडली को भूख से मार डालो ॥
- ४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं स्वर्ग से तुम्हारे लिये भोजन बरसाऊंगा और लोग प्रतिदिन बंधेज से जाके बटोरेंगे जिसमें मैं उन्हें जांचू कि वे मेरी व्यवस्था पर चलेंगे अथवा नहीं । और यों होगा कि वे छठवें दिन और दिन में दूना बटोरेंगे और भीतर लाके पकावेंगे ॥
- ५ सो मूसा और हाखन ने इसराएल के समस्त संतानों से कहा कि सांभ को तुम जानोगे कि परमेश्वर तुम्हें मिस्र देश से बाहर लाया । और विहान को परमेश्वर का विभव देखोगे क्योंकि परमेश्वर के विरोध में वह तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुनता है और हम कौन कि तुम हम पर कुड़कुड़ाते हो । और मूसा ने कहा कि यों होगा कि संध्याकाल को परमेश्वर तुम्हें खाने को मांस और विहान को रोटी मनमनती देगा क्योंकि तुम्हारा झुंझलाना जो तुम उस पर झुंझालाते हो परमेश्वर सुनता है और हम क्या हैं तुम्हारी झुंझलाहट हम पर नहीं परन्तु परमेश्वर पर है ।
- ६ तब मूसा ने हाखन से कहा कि इसराएल के संतान की सारी मंडली से कह कि परमेश्वर के समीप आओ क्योंकि उस ने तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना है ॥
- ७ और यों हुआ कि जब हाखन इसराएल के संतान की सारी मंडली को कह रहा था तब उन्होंने ने वन की ओर दृष्टि कीई और देखो परमेश्वर का विभव ११ मेघ में प्रगट हुआ । और परमेश्वर ने मूसा से कहा । कि मैं ने इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना सुना है उन्हें कह कि तुम सांभ को मांस खाओगे और विहान को रोटी से तृप्त होओगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥
- १३ और यों हुआ कि सांभ को बटोरें ऊपर आईं और छावनी को ठांप लिया १४ और विहान को सेना के आस पास आस पड़ी । और जब आस पड़के ऊपर गई तो देखो वन पर छोटी छोटी गोल वस्तु पाला के टुकड़े की नाईं भूमि पर पड़ी १५ है । और इसराएल के संतानों ने देखके आपुस में कहा कि यह क्या है क्योंकि उन्होंने ने न जाना कि वह क्या है तब मूसा ने उन्हें कहा कि यह वह रोटी जिसे १६ परमेश्वर ने तुम्हें खाने को दिया है । यह वह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा कीई है कि हर एक उस में से अपने खाने के समान मनुष्य पीछे एक ऊसर एकट्टा करे अपने प्राणियों की गिनती के समान उन के लिये जो उस के तंबू में हैं १७ लेओ । तब इसराएल के संतानों ने यों ही किया और किसी ने थोड़ा और १८ किसी ने बहुत एकट्टा किया । और जब हर एक ने अपने को ऊसर से तौला तो जिस ने बहुत एकट्टा किया था कुछ अधिक न पाया और उस का जिस ने थोड़ा १९ एकट्टा किया था कुछ न छटा हर एक ने उन में से अपने खाने भर बटोरा । और २० मूसा ने उन से कहा कि कोई उस में से विहान लो रख न छोड़े । तथापि

१७ पृष्ठ]

उन्होंने ने मूसा की बात को न माना परन्तु कितनों ने विद्वानों में उस में से कुछ रख छोड़ा और उस में कीड़े पड़ गये और घसाने लगा और मूसा उन पर क्रुद्ध हुआ । और उन में से हर एक ने हर विद्वान को अपने खाने के समान बटोरा २१

और यों हुआ कि छठवें दिन उन्होंने ने दूना भोजन बटोरा जन पीछे दो ऊसर २२ और मंडली के समस्त अध्यक्षों ने आके मूसा को जनाया । तब उस ने उन्हें कहा २३ कि यह बली है जो परमेश्वर ने कहा है कि कल विश्राम परमेश्वर का पवित्र विश्राम है तुम्हें जो भूँजना हो सो भूँज लेओ और जो पकाना हो सो पका लेओ और जो बच रहे सो अपने लिये विद्वानों में यव से रख्यो । सो जैसा मूसा ने आज्ञा २४ किई थी वैसा उन्होंने ने विद्वानों में उमे रहने दिया और बच न सड़ा और न उन में कीड़े पड़े । और मूसा ने कहा कि उमे आज गवाओ क्योंकि आज परमेश्वर का २५ विश्राम है आज तुम उसे खेरा में न पाओगे । ऋः दिन लों उमे बटोरो परन्तु २६ सातवां दिन विश्राम है उस में कुछ न होगा । और ऐसा हुआ कि कोई कोई उन लोगों में से सारावें दिन बटोरने को गये और कुछ न पाया । तब परमेश्वर ने २७ मूसा से कहा कि कब लों तुम मेरी आज्ञाओं को और मेरी व्यवस्था को पालन न करोगे । देख्यो कि परमेश्वर ने तुम्हें विश्राम दिया इस लिये यह तुम्हें २८ छठवें दिन में दो दिन का भोजन देता है हर एक तुम्हें से अपने स्थान में बाहर न जावे । तब लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया । और इसराएल के घराने ने २९ उस का नाम मन्नु रख्यो और वह धानियाँ की नाईं ज्येत और उस का म्याद मधु सहित टिकिया की नाईं था ॥ ३०

और मूसा ने कहा कि यह वह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है कि ३१ उस में से एक ऊसर भर अपनी पीढ़ियों के लिये धर रख्यो जिसमें वे उम रोटी को देखें जो मैं ने तुम्हें वन में ग्विलाई जब मैं तुम्हें मिस्र के देश से बाहर लाया । और मूसा ने हारुन को कहा कि एक हाँड़ी ले और एक ऊसर मन्नु उस ३२ में भर और उसे परमेश्वर के आगे रख्यो किई जो तुम्हारी पीढ़ियों के लिये धरा जाय । सो जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा हारुन ने ३३ साक्षी के आगे उसे धर रख्यो । और इसराएल के संतान चालीस वरस जब लों ३४ कि वे बस्ती में न आये मन्नु खाते रहे जब लों कि वे कनयान की भूमि के सिवाने में न आये मन्नु खाते रहे । अब एक ऊसर ईफा का दसवां भाग है ॥ ३५

सत्रहवां पृष्ठ ।

तब इसराएल के संतान की समस्त मंडली ने अपनी यात्रों के लिये परमेश्वर की आज्ञा के समान सोन के वन से याया किई और गफीडीम में डेरा किया और लोगों के पीने का पानी न था । सो लोग मूसा से भगाड़ने लगे और कहा कि २ हमें पानी दे कि पीयें तब मूसा ने उन्हें कहा कि सुक से क्यों भगाड़ते हो परमेश्वर की क्यों परीक्षा करते हो । और लोग पानी के पियासे थे तब वह लोग मूसा पर ३ कुड़कुड़ाये और कहा कि तू हमें मिस्र से क्यों निकाल लाया कि हमें और हमारे लड़कों का और हमारे पशुन को पियास से मारे ॥

४ और मूसा ने पुकारके परमेश्वर से कहा कि मैं इन लोगों से क्या करूँ वे मुझ  
 ५ पर पत्थरबाह कर देने को सिद्ध हैं । और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के  
 आगे जा और इसराएल के संतान के प्राचीनों को अपने साथ ले और अपनी  
 ६ छड़ी जिसे तू ने नील नदी को मारा था अपने हाथ में ले और जा । देख मैं  
 वहाँ हेरेख के पहाड़ पर तेरे आगे खड़ा हूँगा और तू उस पहाड़ को मारेगा  
 और उसे जल निकलेगा कि लोग पीयें और मूसा ने इसराएल के प्राचीनों की  
 ७ दृष्टि में ऐसा ही किया । और इसराएल के संतानों के विवाद के कारण और इस  
 कारण कि उन्होंने ने परमेश्वर की परीक्षा करके कहा था कि परमेश्वर हमारे मध्य  
 में है कि नहीं उस ने उस स्थान का नाम मस्सः और मरीवः रक्खा ।

८ तब अमालीक चढ़ आये और रफीदीम में इसराएल से लड़े । तब मूसा ने  
 यहूसूअ से कहा कि हमारे लिये मनुष्य चुन और निकलकर अमालीक से लड़ कल  
 १० मैं ईश्वर की छड़ी अपने हाथ में लेके पहाड़ की चोटी पर खड़ा हूँगा । सो जैसा  
 मूसा ने उसे कहा था यहूसूअ ने वैसा किया और अमालीक से लड़ा मूसा हाथ  
 ११ और दूर पहाड़ की चोटी पर चढ़े । और यों हुआ कि जब मूसा अपना हाथ  
 उठाता था तब इसराएल जय पाता था और जब अपना हाथ लटका देता था  
 १२ तब अमालीक जय पाता था । और मूसा के हाथ भारी हो रहे थे तब उन्होंने ने  
 एक पत्थर लेके उस के नीचे रक्खा और वह उस पर बैठा और हाथ और दूर  
 एक एक और और दूसरा दूसरी और उस के हाथों को संभाले रहे और उस के  
 १३ हाथ सूर्य के अस्त हो स्थिर रहे । और यहूसूअ ने अमालीक और उस के लोगों  
 १४ को खड़ की धार से जीत लिया । तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि स्मरण के  
 लिये पुस्तक में इसे लिख रख और यहूसूअ के कान में कह दे कि मैं अमालीक  
 १५ के स्मरण को स्वर्ग के नीचे से सर्वथा मिटा देऊँगा । और मूसा ने यज्ञवेदी बनाई  
 १६ और उस का नाम यह रक्खा कि परमेश्वर मेरी ध्वजा । और कहा कि परमेश्वर  
 ने किरिया खाके कहा है कि मैं अमालीक के साथ पीढ़ी से पीढ़ी लड़ता रहूँगा ।

अठारहवां पर्व ।

१ जब मिडियान के राजा मूसा के ससुर पितरू ने यह सब सुना कि ईश्वर ने  
 मूसा और अपने लोग इसराएल के लिये क्या किया कि परमेश्वर इसराएल को  
 २ मिस्र से बाहर लाया । तो पितरू मूसा के ससुर ने सफूरः मूसा की पत्नी को उस  
 ३ के पीछे कि उस ने उसे फिर भेजा था लिया । और उस के दो बेटों को जिन में  
 से एक का नाम गैरसुम इस लिये कि उस ने कहा कि मैं परदेश में परदेशी हूँ ।  
 ४ और दूसरे का नाम इलिअजर क्योंकि मेरे पिता का ईश्वर मेरा सहायक है और  
 ५ उस ने मुझे फिरजन के खड़ से बचाया है । और मूसा का ससुर पितरू उस के  
 पुत्र और उस की पत्नी को लेके मूसा पास बन में आया जहाँ उस ने ईश्वर के  
 ६ पहाड़ पर डेरा किया था । और मूसा से कहा कि मैं तेरा ससुर पितरू तेरी पत्नी  
 ७ और उस के दो पुत्र उस के संग तुझ पास आये हैं । तब मूसा अपने ससुर की  
 भेंट को निकला और उसे प्रणाम किया और उसे चूमा और आपुस में एक ने  
 ८ दूसरे का होम कुशल पूछा और तबू में आये । और सब जो परमेश्वर ने इसराएल

के लिये फिरउन और मित्रियों से किया था उस समस्त कष्ट को जो मार्ग में उन पर पड़े थे और कि परमेश्वर ने उन्हें बचाया मूसा ने अपने समुर पितर से वर्णन किया । और पितर उस सब भलाई पर जिसे परमेश्वर ने इसराएल के लिये किया थी कि उस ने उसे मिस्र के हाथ से बचाया आनंदित हुआ । और पितर बोला कि परमेश्वर धन्य है जिस ने तुम्हें मित्रियों के हाथ और फिरउन के हाथ से बचाया जिस ने लोगों को मित्रियों के वग से छुड़ाया । अब मैं जानता हूँ कि परमेश्वर सब देवों से बड़ा है क्योंकि जिस बात में वह अहंकार करते थे उस में वह उन पर प्रबल हुआ । और मूसा का समुर पितर चढ़ाया और बलिदान ईश्वर के लिये लाया और हाकन और इसराएल के समस्त प्राचीन मूसा के समुर के साथ मोठी खाने के लिये ईश्वर के आगे आये ॥

और दूसरे दिन यों हुआ कि मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा और नोरा मूसा के आगे विद्वान से सांभ लें गये रहे । जब मूसा के समुर ने सब कुछ जो वह लोगों के लिये करता था देखा तब उस ने कहा कि यह नू लोगों से क्या करता है तू क्यों आप अकेला बैठा है और सब नोरा विद्वान से सांभ लें तरे आगे गये हैं । तब मूसा ने अपने समुर से कहा कि यह इस लिये है कि नोरा ईश्वर को छुटने के लिये सब पाम आते हैं । जब उन में कुछ विवाद होता है तब वे मेरे पास आते हैं और मैं मनुष्य में और उस के संगी के मध्य में न्याय करता हूँ और मैं उन्हें ईश्वर की विधि और उस की व्यवस्था में ठिठा देता हूँ । तब मूसा के समुर ने उससे कहा कि तू अलग काम नहीं करता । तू निश्चय लोग हो जायगा तू और यह संडली भी जो तेरे साथ है क्योंकि यह काम तुझ पर निपट भारी है यह तुझ से अकेले न बन पड़ेगा । अब मेरा कहा मान मैं तुम्हें संभ दूंगा और ईश्वर तेरे साथ रहे तू उन लोगों के पास ईश्वर के आगे हो और ईश्वर के पास उन को बचन लाया कर । और तू व्यवहार और व्यवस्था की बातें उन्हें सिखा और वह मार्ग जिस पर चलना और वह काम जिसे करना उन्हें उचित है उन्हें बता । सो तू समस्त लोगों में मे योग्य मनुष्य चुन ले जो ईश्वर से डरते हैं और मत्प- वादी हों और लोभी न होय और उन्हें सहेनो और मैकड़ों और पचास पचास और दस दस पर आज्ञाकारी कर । कि हर समय में उन लोगों का न्याय करे और ऐसा होगा कि वे हर एक बड़ा कार्य तुझ पास लावेंगे पर हर एक छोटे कार्य का विचार वह आप करेंगे यों तेरे लिये सहज हो जायगा और वे दोस्त उठाने में तेरे साथी रहेंगे । यदि तू यह काम करे और ईश्वर तुम्हें आज्ञा करे तो तू सही सकेगा और ये लोग भी अपने अपने स्थान पर कुशल से जायेंगे ॥

सो मूसा ने अपने समुर का कहा सुना और जो उस ने कहा था उस ने सब किया और मूसा ने समस्त इसराएलियों में से योग्य मनुष्य चुने और उन्हें लोगों का प्रधान किया सहनों का प्रधान मैकड़ों का प्रधान पचास का प्रधान और दस दस का प्रधान । और वे हर समय में लोगों का न्याय करते थे कठिन कार्य मूसा पास लाते थे । परन्तु हर एक छोटी बात आप ही चुका लेते थे । फिर मूसा ने अपने समुर को विदा किया और वह अपने देश को चला गया ॥

## उन्नीसवां पृष्ठ ।

- १ इसराएल के संतान मिस्र की भूमि से बाहर होकर तीसरे मास के उसी दिन  
 २ सीना के घन में आये । और रफीदीम से चलकर सीना के घन में आये और घन  
 ३ में डेरा किया और वहां इसराएल ने पहाड़ के आगे तंबू खड़ा किया । तब  
 मूसा ईश्वर पास चढ़ गया और परमेश्वर ने उसे पहाड़ पर से बुलाया और कहा  
 कि तू यश्शकूब के घराने को यों कहियो और इसराएल के संतानों से यों बोलियो ।  
 ४ कि तुम ने देखा कि मैं ने मिस्रियों से क्या किया और तुम्हें मिट्टी के डैनों पर  
 ५ बैठाकर तुम्हें अपने पास ले आया । और अब यदि मेरे शब्द को निश्चय मानोगे  
 और मेरी बाचा का पालन करोगे तो तुम समस्त लोगों से विशेष धनिक होओगे  
 ६ क्योंकि सारी पृथिवी मेरी है । और तुम मेरे लिये याजकमय राज्य और एक  
 पवित्र जाति होओगे ये वह बातें हैं जो तू इसराएल के संतान से कहेगा ।  
 ७ तब मूसा आया और लोगों के प्राचीनों को बुलाया और उन के सम्मुख ये  
 ८ सारी बातें जो परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थीं कह सुनाई । और सब लोगों  
 ने एक साथ उत्तर देकर कहा कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है सो हम करेंगे और  
 मूसा ने लोगों का उत्तर परमेश्वर कने ले पहुंचाया ।  
 ९ और परमेश्वर ने मूसा से कहा देख मैं आंधियारे मेघ में तुझ पास आता हूं  
 कि जब मैं तुझ से बातें करूं लोग सुनं और सदा लों तेरी प्रतीति करें और मूसा  
 १० ने लोगों की बातें परमेश्वर से कहीं । और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों  
 ११ पास जा और आज कल में उन्हें पवित्र कर और उन के कपड़े धुलया । और  
 तीसरे दिन सिद्ध रहें कि परमेश्वर तीसरे दिन सारे लोगों की दृष्टि में सीना के  
 १२ पहाड़ पर उतरेगा । और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बांधियो और  
 कहियो कि आप से चौकस रहो पहाड़ पर न चढ़ो और उस के खूंठ को न छूओ  
 १३ जो कोई पहाड़ को छूयेगा सो निश्चय प्राण से मारा जायगा । कोई हाथ उसे  
 न छूये नहीं तो वह निश्चय पत्थरवाह किया जायगा अथवा बाण से मारा जायगा  
 चाहे पशु चाहे मनुष्य हो जीता न बचेगा जब तुरही अघेर लों बजा करे तो ये  
 पहाड़ पर चढ़ें ॥  
 १४ तब मूसा पहाड़ पर से लोगों के पास उतरा और लोगों को पवित्र किया और  
 १५ उन्हें ने अपने कपड़े धोये । और उस ने लोगों से कहा कि तीसरे दिन सिद्ध  
 रहो स्त्रियों से अलग रहियो ॥  
 १६ और यों हुआ कि तीसरे दिन बिहान को मेघ गर्जन लगे और बिजलियां  
 चमकीं और पहाड़ पर काली घटा उमड़ी और तुरही का आति बड़ा शब्द हुआ  
 १७ यहां लों कि सब लोग कावनी में थरथरा उठे । और मूसा लोगों को तंबू के  
 भीतर से बाहर लाया कि ईश्वर से भेंट करावे और वे पहाड़ की नीचाई में जा  
 १८ खड़े हुए । और समस्त सीना पहाड़ धूआं से भर गया क्योंकि परमेश्वर लौह में  
 होकर उस पर उतरा और भट्टी का सा धूआं उस पर से उठा और सारा पहाड़  
 १९ आति कांप गया । और जब तुरही का शब्द बढ़ता जाता था तब मूसा ने कहा  
 २० और ईश्वर ने उसे शब्द से उत्तर दिया । और परमेश्वर सीना पहाड़ पर उतरा

पहाड़ की चोटी पर और परमेश्वर ने पहाड़ की चोटी पर मूसा को बुलाया और मूसा चढ़ गया । तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा लोगों को चिता २१ ऐसा न हो कि ये सेंड तोड़के परमेश्वर को देखने आवें और यहुतेरे उन में नाश हो आवें । और याज्ञक भी जो परमेश्वर के पास आवें हैं अपने को पवित्र करें २२ कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर उन पर चपेट करे । तब मूसा ने परमेश्वर से कहा २३ कि लोग सीना पहाड़ पर आ नहीं सकते क्योंकि तू ने ना हमें चिता दिया है कि पहाड़ के आस पास बाड़ा बांधें और उसे पवित्र करें । तब परमेश्वर ने उससे २४ कहा कि चल नीचे जा और नू हासन ममेन फिर ऊपर आ परन्तु याज्ञक और लोग सेंड तोड़के परमेश्वर पास ऊपर न आवें न होयें कि वह उन पर चपेट करे । सो मूसा लोगों के पास नीचे उतरा और उन से कहा ॥ २५

द्वीमयां पर्व ।

और ईश्वर ने ये सब बातें यह कहते हुए कहीं ॥ १

कि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुम्हें भित्त की भूमि से अंधुयाई के घर से निकाल लाया मैं हूँ । मेरे सम्मुख तेरे लिये दूसरा ईश्वर न होगा ॥ २

तू अपने लिये खादके किमी की मूर्ति और किमी धनु की प्रतिमा जो ऊपर ४ स्वर्ग पर और जो नीचे पृथिवी पर और जो जल में जो पृथिवी के नीचे है मत बना । तू उन को प्रणाम मत कर और न उन को सेवा कर क्योंकि मैं परमेश्वर ५ तेरा ईश्वर ज्वलित सूर्यशक्तिमान हूँ पितरों के अपराध का दण्ड उन के पुत्रों को जो मेरा धर रखते हैं उन की तीसरी और चौथी पीढ़ी लो देंगा हूँ । और ६ उन में से सदसों पर जो मुझे प्यार करते हैं और मेरी आज्ञाओं का पालन करते हैं दया करता हूँ ॥

परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारध मत ले क्योंकि परमेश्वर उसे जो उस का ७ नाम अकारध लेता है निष्पाप न ठहरावेगा ॥

विश्राम के दिन को उसे पवित्र रखने के लिये स्मरण कर । छः दिन लो तू ८ परिश्रम कर और अपना समस्त कार्य कर । परन्तु सातवां दिन परमेश्वर तेरे १० ईश्वर का विश्राम है उस में तू कुछ कार्य न करेगा न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरे पशु न तेरा प्राहुन जो तेरे फाटकों के भीतर है । क्योंकि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी और नमुड़ और सब कुछ जो ११ उन में है बनाया और सातवें दिन विश्राम किया इस कारण परमेश्वर ने विश्राम दिन को आशीन दिई और उसे पवित्र ठहराया ॥

अपने पिता और अपनी माता का आदर कर जिसमें तेरी वय उस भूमि पर १२ जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुम्हें देता है अधिक होयें ॥

इत्या मत कर ॥ १३

परस्त्रीगमन मत कर ॥ १४

चोरी मत कर ॥ १५

अपने परोसी पर झूठी माफी मत दे ॥ १६

अपने परोसी के घर का लालच मत कर अपने परोसी की स्त्री और उस के १७



## चौथीसवां पर्व ।

- १ फिर नवें वरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में यह कहते हुए परमेश्वर का  
 २ वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र दिन का नाम लिख अर्थात् इसी दिन का  
 बाबुल के राजा ने इसी दिन यरुसलम के विरुद्ध आप को लैस कर रक्खा है ॥
- ३ और दंभइत घराने के लिये एक दृष्टान्त उच्चार और उन से कह कि प्रभु पर-  
 ४ मेश्वर यों कहता है कि एक हंडा चढ़ा और उस में जल भी डाल । उस के टुकड़े  
 उस में बटोर हां जांघ और कंधे का ढर एक अच्छा टुकड़ा और चुनो हुई हड्डियों  
 ५ से भर । और भुंड का चुना हुआ ले और उस के तले हड्डियां जला और उसे  
 अच्छी रीति से उवाल और उन में की हड्डियां उमिन ॥
- ६ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि लोहू बहाऊ नगर पर संताप उस  
 हंडे को जिस का फेन उस में है और जिस का फेन उस में से नहीं गया टुकड़ा  
 ७ टुकड़ा करके उसे निकाल और उस पर चिट्ठी पढ़ने न पावे । क्योंकि उस का  
 लोहू उस के मध्य में उस ने उसे एक पटाड़ की चोटी पर रक्खा उस ने उसे धूल  
 ८ से ढांपने को भूमि पर न उंडेला । जिस्ती पलटा लेने को कोप पहुंचावे मैं ने उस  
 के लोहू को पर्वत की चोटी पर रक्खा है जिस्ती ढांपा न जाये ॥
- ९ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अधिक नगर पर संताप हां में आग  
 १० के लिये बड़ा ढेर बनाऊंगा । ईंधन बटोर आग बार मांस को गला अच्छी रीति  
 ११ से सुगंधद्रव्य दे और हड्डियों को जलने दे । तब कूड़े उसे कोरलों पर धरो जिस्ती  
 उस का पीतल गरमावे और जले और उस का मैल उसी में गल जाये और उस  
 १२ का फेन भस्म होवे । उस ने झूठ से मुझे शकाया है और उस का बड़ा फेन उस  
 १३ में से निकल नहीं गया उस का फेन आग में पड़ेगा । तेरी अशुद्धता में लपटता  
 है इस कारण कि मैं ने तुझे पवित्र किया है और तू पवित्र न हुआ तू फिर  
 अपनी अशुद्धता से पवित्र न किया जायेगा अब लो मैं अपना कोप तुझ पर  
 न उतरवाऊं ॥
- १४ मुझ परमेश्वर ने यह कहा है और वही होगा मैं वही कहूंगा और मैं न हटूंगा  
 न छोड़ूंगा न पकताऊंगा प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तेरी बालों और तेरी  
 कानियों के समान वे तेरा विचार करेंगे ॥
- १५ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र  
 १६ देख मैं एक जोट से तेरी आंखों की बांका को ले लेता हूं तथापि तू शोक और  
 १७ बिलाप न करेगा और तेरे आंसू न बहेंगे । मत रो और मृतक के लिये बिलाप  
 मत कर सिर पर अपनी पगड़ी बांध और पांघ में जूता पहिन और ऊपर के डोंठ  
 मत ढांप और मनुष्यों की रोटी मत खा ॥
- १८ सो बिहान को मैं लोगों से बोला और सांभ को मेरी पत्नी मर गई और  
 १९ जैसी मैं ने आज्ञा पाई थी तैसा मैं ने बिहान को किया । तब लोगों ने मुझ से  
 २० कहा कि तू हमें न बतावेगा जो तू करता है सो हमारे लिये क्या । तब मैं ने उन  
 से उत्तर दिया कि परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा ॥
- २१ इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं

है । तू अपनी बहिन की चाल पर चली है इस लिये मैं उस का कटोरा तेरे हाथ ३१ में देऊंगा । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू अपनी बहिन के बड़े और गहरे ३२ कटोरे से पीयेगी तेरी हंसी और निन्दा क्रिई जायेगी क्योंकि उस में बहुत समाना है । तू मतवालपन मे और जोक से और आश्चर्य और उजाड़ के कटोरे से अपनी ३३ बहिन समस्त के कटोरे से भर जायेगी । और तू उसे पीयेगी और चूम लेगी और उस ३४ का टुकड़ा टुकड़ा करेगी और अपने ही स्तन उखाड़ डालेगी क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ही ने कहा है । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्योंकि ३५ तू सुके भूल गई है और सुके अपने पीछे डाल दिया है इस लिये तू भी अपनी लंपटता और व्यभिचारों का भोग ।

और परमेश्वर ने सुके से यह भी कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू अहलः ३६ और अहलियः के लिये बिबाह करेगा हां उन के घिनित कर्म उन पर प्रगट कर । क्योंकि उन्हीं ने परगमन किया है और लोह उन के हाथों में है और उन्हीं ३७ ने अपनी मूर्तिन से परगमन किया है और जो बेटे वे मेरे लिये जनों उन्हीं ने नाश के लिये उन्हें आग में से चलाया है । उन्हीं ने सुके से यह भी किया है ३८ उन्हीं ने उसी दिन मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध किया है और मेरे विद्याओं को अशुद्ध किया है । और जब उन्हीं ने अपने बालकों को अपनी मूर्तिन के लिये ३९ घात किया तब वे उसी दिन मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध करने को आईं और देख उन्हीं ने मेरे घर के मध्य में ऐसा किया है । और उस्से अधिक जब तुम ४० ने मनुष्यों के पास भेजा जो दूर से आये जिन के पास दूत भेजे गये और देखो वे आये जिन के लिये तू ने नदाया है और अपनी आंखों को रंगाया है और आभूषण से आप को संवारा है । और प्रतिष्ठित पलंग पर बैठी और उस के आगे ४१ एक मंच बिठ था जिस पर तू ने मेरा धूप और मेरा तेल धरा था । और चैन ४२ से हाते हुए एक सगडली का शब्द उस के संग था और मनुष्यों के संग लोगों की सगडली और उन में के साक्षिपानी पहुंचाये गये जिन के हाथों पर खड़वे और मिरों पर सुन्दर सुन्दर सुकुट थे ॥

तब मैं ने व्यभिचारकर्म की पुनिया से कहा कि वे अब उस्से और वह उन ४३ से व्यभिचार करेगी । तथापि वे उस के पास गेसे गये जैसा जेण्या के पास जाते ४४ हैं सो वे लंपट स्त्री अहलः और अहलियः के पास गये । और धर्मी लोग व्यभि- ४५ चारियों की रीति के समान और उन स्त्रियों की नाईं जो लोह बढ़ाती हैं उन का विचार करेंगे क्योंकि वे व्यभिचारिणी और लोह उन के हाथ में है ॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं उन पर एक जथा लाऊंगा और ४६ निकाले जाने और लूट के लिये मैं उन्हें देऊंगा । और जथा उन्हें पंथर से पथ- ४७ रावेगी और अपना तलवार से उन्हें चीन लेगी वे उन के बेटे बेटियों को घात करेंगे और उन के घर आग से भस्म करेंगे । इस रीति से मैं लंपटता का देश ४८ में से मिटवा डालूंगा जिस्ती मारी स्त्रियां चिताईं जाके तुम्हारी लंपटता के समान न करें । और वे तुम्हारी लंपटता का पलटा तुम्हें देंगे और तुम अपनी मूर्तिन के ४९ पाप भोगोगे और जानोगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूँ ॥

- १२ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि अदूम ने यहूदाह के घराने से वीर लेने के लिये वीर से व्यवहार किया और बड़ा अपराध किया है और अपना वीर  
 १३ उन से लिया । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं अपना हाथ अदूम पर बठाऊंगा और उस में से मनुष्य को और पशु को नष्ट करूंगा और तैमन से  
 १४ उसे शून्य करूंगा और ददान तलवार से मारे पड़ेंगे । और अपने इसराएल लोगों के द्वारा मैं अपना वीर अदूम से लेऊंगा और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि वे मेरे कोप और मेरी रिस के समान अदूम से करेंगे और वे मेरा वीर जानेंगे ॥
- १५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि फिलिस्तिनों ने वीर से व्यवहार किया है और पुराने वीर के लिये नाश करने का घातक मन से वीर लिया  
 १६ है । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं फिलिस्तिनों पर अपना हाथ बठाऊंगा और करीबीयों को काट डालूंगा और समुद्र के घाट के रहे हुएों को  
 १७ नाश करूंगा । और मैं अपने कोप के दण्ड से उन से बड़ा पलटा लूँगा और जब मैं उन से पलटा लूँगा तो वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

द्वितीय पर्व ।

- १ और ग्यारहवें बरस में मांस के पहिले दिन परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र इस कारण कि सूर ने यरूशलम के विरुद्ध कहा है कि अहा लोगों के फाटक बंद टूट गईं सो मेरी और फिरी है अब उस के उजाड़े जाने से मैं भर जाऊंगा । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख हे सूर मैं तेरे विरुद्ध हूँ और जैसा समुद्र अपनी लहरों को उठाता है तैसा मैं तेरे विरुद्ध बहुत से जातिगणों को उठाऊँगा । और वे सूर की भीत को नाश करेंगे और उस के गुम्मतों को ठा देंगे और मैं उस पर की धूल भी खुरच डालूँगा और उसे चटान की चोटी की नाई करूँगा । वह समुद्र के मध्य जाल बिछाने के लिये होगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने कहा है वह जातिगणों में एक  
 २ लूट होगा । और उस की बेटियां जो खेत में हैं तलवार से मारी जायेंगी और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥
- ३ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं सूर पर उत्तर से राजाओं के राजा अर्थात् बाबुल के राजा नबूखुदनजर को छोड़ों और रथों और घोड़चढ़ों  
 ४ और जथा बहुत से लोगों के साथ लाऊँगा । वह खेत में तेरी लड़कियों को तलवार से घात करेगा और तेरे विरुद्ध गढ़ बनावेगा और टीला उठावेगा और  
 ५ तेरे विरुद्ध फरी उठावेगा । और संग्राम की सामग्री तेरी भीतों के विरुद्ध लगा-  
 ६ वेगा और वह अपनी कुदारियों से तेरे गुम्मतों को ठा देगा । उस के घोड़ों की बहुताई के मारे उन की धूल तुझे ढांपेगी जब वह टूटे नगरों के प्रवेशों के समान तेरे फाटकों में पैठेगा तब घोड़चढ़ों के और पहियों के और रथों के शब्द  
 ७ के मारे तेरी भीतें हिल जायेंगी । वह अपने घोड़ों की टापों से तेरी सारी सड़कों को लताड़ेगा वह तलवार से तेरे लोगों को घात करेगा और तेरे दृढ़ सैन्यस्थान  
 ८ भूमि पर गिर जायेंगे । और वे तेरा धन लूटेंगे और तेरे व्यापार को नाश करेंगे और वे तेरी भीतें तोड़ डालेंगे और तेरे बांझ घरों को नष्ट करेंगे और तेरे प्रत्यक्ष

अपने पवित्र स्थान को और तुम्हारे बल की उत्तमता को तुम्हारी आंखों की बांछा  
को और तुम्हारे प्राण की मया को अशुद्ध कदंगा और तुम्हारे बेटे बेटियां जो  
बचे हैं सो तलवार से सारे पड़ेंगे । और मेरे कार्य के समान तुम लोग करोगे २२  
तुम झोंठ न ठांपोगे न मनुष्य की रोटी खाओगे । और तुम्हारी पगड़ियां तुम्हारे २३  
बिरें पर और तुम्हारी जूतियां तुम्हारे पांव में दोगी और तुम जोके विलाप न करोगे  
परन्तु अपनी सुराहियों में गले जाओगे और एक दूसरे की ओर विलाप करोगे । इसी २४  
रीति से हिक्किएल तुम्हारे लिये एक चिन्ह है उस के सारे कार्य के समान तुम  
लोग करोगे और जब यह आवे तब जानोगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूँ ॥

और भी ते मनुष्य के पुत्र जब मैं उन के बल उन के विभव की आनन्दता २५  
और उन की आंखों की बांछा और उन के मन के उभाड़ अर्थात् उन के बेटे  
बेटियों को उन से ले लेजंगा । उमी दिन जो वच निकलेगा सो तुम्हें सुनाने को २६  
आवेगा । उस दिन तेरा मुंह उस के लिये जो वच निकला है खुल जायेगा और २७  
तू बोलेगा और फिर गूंगा न रहेगा और तू उन के लिये एक चिन्ह दोगा और  
वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

पच्चीसवां पद्य ।

और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । ते मनुष्य के पुत्र १  
अम्मूनियों के विरुद्ध अपना मुंह कर और उन के विरुद्ध भविष्य कह । और अम्मू- ३  
नियों से कह कि प्रभु परमेश्वर का वचन सुनो प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस  
कारण कि तू ने मेरे पवित्र स्थान के विरुद्ध जब वह अशुद्ध हुआ और इसरा-  
एल के देश के विरुद्ध जब वह उजाड़ हुआ और यहूदाह के घराने के विरुद्ध  
जब वे बंधुआई में पहुंचाये गये अहा कहा । इस लिये देखो मैं तुम्हें पूर्वा पुत्रों ४  
के अधिकार के लिये सौंपूंगा और वे तुम्हें अपने भवन बनावेंगे और अपना  
निवास तेरे मध्य में करेंगे वे तेरा फल खायेंगे और वे तेरा दूध पीयेंगे । और मैं ५  
रख्यः को एक जंटगाला और अम्मूनियों को भेड़गाला बनाऊंगा और तुम लोग  
जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि तू ने थपोड़ी पीठी है और ६  
पांव पीठा है और इसराएल के देश के विरुद्ध अपने सारे मन के साथ आनन्द  
क्रिया है । इस लिये देख मैं तेरे विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा और लूट के लिये ७  
तुम्हें अन्यदेशियों के हाथ सौंपूंगा और लोगों में से तुम्हें काट डालूंगा और  
देशों में से तुम्हें नाश कदंगा और तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि मोआव और सैर कहते हैं कि ८  
देख यहूदाह का घराना सारे अन्यदेशियों की नाई है । इस लिये देख मैं नगरों ९  
से देश के विभव के आगे आगे के नगरों से अर्थात् वैतुलयसीमात और बअल-  
मऊन और करयतैन से मोआव की ओर को खालूंगा । अम्मूनियों के साथ मैं १०  
उसे अधिकार के लिये पूर्वा लोगों को दूंगा जिस्ते जातिगणों में अम्मूनियों का  
स्मरण न किया जाये । और मैं मोआव को दण्ड देऊंगा और वे जानेंगे कि मैं ११  
परमेश्वर हूँ ॥

- ११ टोप तुम्ह में लटकाया उन्हीं ने तेरी सुन्दरता प्रगट किई । अरवाद के लोग तेरी भीतों पर तेरी सेना के संग चारों ओर थे और वीर तेरे गुम्मतों पर थे वे चारों ओर तेरी भीतों पर अपनी ढाल लटकाते थे और उन्हीं ने तेरी सुन्दरता को पूरा किया ॥
- १२ समस्त राति के धन की बहुताई के कारण तरसीस चांदी और लोहे और जस्ते से और सीसे से तेरे व्यापारी थे और वे तेरी हाटों में व्यापार करते थे ।
- १३ यावन और तुखल और मसक तेरे व्यापारी थे वे मनुष्यों का और पीतल के
- १४ पात्र का तेरी हाट में व्यापार करते थे । तजरमः के घराने तेरी हाटों में
- १५ घोड़ों का और घोड़चढ़ों का और खजूरों का व्यापार करते थे । ददान के लोग तेरे व्यापारी थे बहुत से टापू तेरे हाथ के व्यापार थे वे तेरी भेंट के लिये
- १६ हाथीदांत के सींग और आवनूस लाते थे । तेरे बनाये हुए कार्य की अधिकाई के मारे अराम तेरा व्यापारी था वह तेरी हाट में पन्ना और वैजनी और वूटा
- १७ काढ़ा हुआ भीना वस्त्र और मूंगा और नीलम वेंचते कीनते थे । यहूदाह और इसराएल के देश तेरे व्यापारी थे वे मिनियत का गोहूँ और पकवान और मधु
- १८ और तेल और धूना का तेरी हाट में व्यापार करते थे । सारे धन की बहुताई के लिये तेरी बनाई हुई सामग्री की अधिकाई में हलखून के दाखरस और
- १९ श्वेत ऊन में दमिशक तेरे व्यापारी थे । यदान और यावन तेरी हाटों में सूत का व्यापार करते थे और तेरी हाटों में उजला लोहा और तेजपात और दारचीनी
- २० वेंचते थे । रथों के लिये बहुमूल्य वस्त्र से ददान तेरा व्यापारी था । अरब और
- २१ कीदार के सारे अध्यक्ष मेम्ने से और मंढे और बकरी से तेरे हाथों के व्यापार
- २२ थे इन वस्तुन के वे तेरे लिये व्यापारी थे । सिखा और रगमः के व्यापारी तेरे व्यापारी थे वे सारे श्रेष्ठ द्रव्य और बहुमूल्य मखि और सोने से तेरी हाट में
- २३ व्यापार करते थे । हररान और कन्नः और अदन और सिखा और असूर और
- २४ किलमद के व्यापारी तेरे व्यापारी थे । ये लोग नील नीले परत में और वूटा काढ़े हुए में और देवदारु काष्ठ की मंजूपा में बहुमूल्य वस्त्र में डोरों से बंधे हुए तेरे
- २५ व्यापार में वे व्यापारी थे । तेरी हाटों में तरसीस की जहाजें तेरा गान करती थीं तू भरा गया था और समुद्र के मध्य में बड़ा तेजवान हुआ है ॥
- २६ तेरे डांडी तुम्हें गंभीर जलों में लाये हैं समुद्रों के मध्य में पूर्वी पवन ने तुम्हें
- २७ तोड़ा है । तेरे धन और तेरी हाट और तेरे व्यापार और तेरे नाविक और तेरे मांझी और तेरे गहनकार और तेरे व्यापारों के अधिकारी और तेरे योद्धा जो तुम्हें हैं और तेरी सारी जथायें जो तेरे मध्य में हैं तेरे नाश के दिन में समुद्रों
- २८ के बीच तुम्हें गिरेंगे । तेरे मांझियों के चिल्लाने के शब्द से लहरें हलारा मारेंगी ।
- २९ और सारे डांडी और नाविक और समुद्र के सारे मांझी अपनी अपनी जहाजों से
- ३० उत्तरके भूमि पर खड़े होंगे । और तेरे बिरुद्ध अपना शब्द सुनावेंगे और बिलख बिलख रोवेंगे और अपने सिरे पर धूल उड़ावेंगे और आप राख पर लोटेंगे ।
- ३१ और वे तेरे लिये आप को सर्वथा मुंडा करेंगे और आप टाटवस्त्र ओढ़ेंगे और
- ३२ वे तेरे लिये मन की कड़वाहट से बिलख बिलख रोवेंगे । और वे अपने बिलाप

और लट्टे और धूल जल के मध्य में डाल देंगे । और मैं तेरे गान का शब्द बन्द १३  
करूँगा और तेरी चीन्हा का शब्द फिर सुना न जायेगा । और मैं तुम्हें एक पहाड़ १४  
की चाँटी की नाईं करूँगा तू जाल फैलाने के लिये होगा और तू फिर उठाया  
न जायेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मुझ परमेश्वर ने कहा है ॥

प्रभु परमेश्वर सूर से यों कहता है कि जब घायल लोग रोवेंगे और तेरे मध्य १५  
में झूझ होगी तब क्या टापू तेरे गिरने के शब्द से न धर्यरावेंगे । तब समुद्र के १६  
समस्त अध्यक्ष अपने अपने सिंहासन से उतरेंगे और अपने अपने वागे को त्यागेंगे  
और अपने बूटे काढ़े हुए वस्त्रों को उतारेंगे वे धर्यराष्ट्र को पहिर्नेंगे भूमि पर  
वैठ वैठ पल पल धर्यरावेंगे और तुझ से विस्मित होंगे । और वे तेरे लिये एक १७  
विलाप करेंगे और तुझ से कहेंगे कि हे समुद्रों के निवासी तू क्योंकर नष्ट हुआ  
वह विदित नगर जो समुद्र में दृढ़ था वह और उस के निवासी अपना भय अपने  
सारे व्यवहारियों पर दिखाते हैं । अब तेरे गिरने के दिन टापू धर्यरावेंगे और १८  
समुद्र में के टापू तेरे जाने से व्याकुल होंगे ॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं तुम्हें अयमाव नगरों की नाईं १९  
एक उजाड़ नगर बनाऊँगा और जब मैं गछिराव को तुझ पर लाऊँगा और बड़े बड़े  
पानी तुम्हें ढांपेंगे । जब मैं तुम्हें पुरातन समय के लोगों की नाईं गड़दे के उतर- २०  
वैधों के समान उतारूँगा और तुम्हें पृथिवी के नीचे स्थानों में बैठाऊँगा प्राचीन  
उजाड़ स्थानों में उन के संग जो गड़दे में उतरते हैं जिस्तें तू बनाया न जाये  
और मैं जीवतों के देश में विभय रखूँगा । तब मैं तुम्हें भय बनाऊँगा और तू न २१  
होगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि यद्यपि तू डूँढ़ा जाये तथापि तू कधी पाया न  
जायेगा ॥

सत्ताईसवां पर्व ।

फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । और तू हे मनुष्य १  
के पुत्र अब सूर के लिये विलाप कर । और सूर से कह कि अरे तू जिस का ३  
टिकाना समुद्र की पैठ में है और बहुत से टापुओं के लोगों के लिये व्यापारी  
है प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अरे सूर तू ने कहा है कि मैं सुन्दरता में ४  
सिद्ध हूँ । तेरे सिंघाने समुद्रों के मध्य में हैं और तेरे बनवैये ने तेरी सुन्दरता ४  
को पूरा किया है । उन्हीं ने तेरी सारी पटियां सनीर के चीरपेड़ से बनाई हैं ५  
तेरे गुनरखे बनाने को उन्हीं ने लुपनान से देवदारुपेड़ लिया है । उन्हीं ने तेरे ६  
हांडों को वसन के बलतपेड़ों से बनाया है और किस्ती के टापुओं से अमूर की  
जथाओं ने हाथीदांत लाके तेरे बैठकों को बनाया है । तू ने अपने पाल के लिये ७  
मिस्र से बूटा काढ़ा हुआ भीना वस्त्र फैलाया है और इलीसः के टापुओं के  
बैजनी और लाल वस्त्र ने तुम्हें ढाँपा है ॥

सैदा और अरवाद के निवासी तेरे हांडी थे और हे सूर तेरे दुष्टिमान जो ८  
तुझ में थे तेरे मांभी थे । जवल के प्राचीन और बटां के दुष्टिमान तेरे गहनकार ९  
थे तेरे व्यापार के लिये समुद्र की सारी जहाजें हांडी सहित थीं ॥

फारसी और लूदी और फूदी तेरी सेना में तेरे योद्धा थे उन्हीं ने डाल और १०



ने पाप किया है इस लिये मैं तुम्हें ईश्वर के पर्वत में से अशुद्ध की नाईं त्यागूंगा  
 १७ और अरे कंठवैये करूँ। मैं तुम्हें आग के पत्थरों के मध्य में से नष्ट करूँगा । तेरी  
 सुन्दरता के कारण तेरा मन उभाड़ा गया है तू ने अपने तेज के लिये अपनी बुद्धि  
 को बिगाड़ा है मैं तुम्हें भूमि पर फेंकूँगा मैं राजाओं के आगे तुम्हें धरूँगा  
 १८ जिस्तें वे तुम्हें देखें । तू ने अपनी घुराई की अधिकाई से और अपने व्यापार की  
 घुराई से अपने पवित्र स्थानों को अशुद्ध किया है इस लिये मैं तेरे मध्य में से एक  
 आग निकालूँगा जो तुम्हें भस्म करेगी और तेरे सारे देखवैयों की दृष्टि में मैं तुम्हें  
 १९ भूमि पर राख करूँगा । लोगों में तेरे सारे जानकार तुझ से आश्चर्यित होंगे तू  
 भय होगा और फिर कधी न होगा ॥

२० यह कहते हुए फिर परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । कि हे मनुष्य के  
 २१ पुत्र अपना रुख सैदा के विरुद्ध कर और उस के विरुद्ध भविष्य कह । और बोल  
 कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अरे सैदा देख मैं तेरे विरुद्ध हूँ और मैं तेरे  
 मध्य में महिमा पाऊँगा और जय मैं उस पर दण्ड देके उस में पवित्र माना  
 २३ जाऊँगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ । और मैं उस में मरी और उस की  
 सड़कों में लोहूँ भेजूँगा और उस के मध्य में घायल लोग चारों ओर तलवार से  
 २४ बिचारे जायेंगे और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ । और इसराएल के घराने के  
 लिये चुभवैया कांटा न रहेगा और उस के निन्दकों में उस की चारों ओर उन के  
 मध्य में कोई दुःखदाई कांटा न रहेगा और वे जानेंगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूँ ॥  
 २५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जय मैं इसराएल के घराने को लोगों में से  
 जहाँ वे बिचरे हैं बटोरूँगा और अन्यदेशियों की दृष्टि में पवित्र जाना जाऊँगा  
 २६ तब वे अपने देश में रहेंगे जो मैं ने अपने दास यश्मूकूब को दिया है । और वे  
 उस में चैन से रहेंगे और घर उठावेंगे और दाख की घारी लगावेंगे जब मैं उन  
 की चारों ओर के निन्दकों पर न्याय दण्ड देऊँगा तब वे भरोसे से रहेंगे और वे  
 जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूँ ॥

उत्तीसवां पर्व ।

१ दसवें बरस के दसवें मास की बारहवीं तिथि में यह कहते हुए परमेश्वर का  
 २ वचन मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र मिस्र के राजा फिरऊन के विरुद्ध अपना  
 मुँह कर और उस के विरुद्ध और सारे मिस्र के विरुद्ध भविष्य कह ॥  
 ३ बोल और कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मिस्र के राजा फिर-  
 ऊन मैं तेरे विरुद्ध हूँ तू महा अजगर जो अपनी नदियों के मध्य में रहता है  
 जिस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी है और मैं ने उसे अपने ही लिये बनाया है ।  
 ४ परन्तु मैं तेरे गलफरे में कटिया लगाऊँगा और तेरी नदियों की मछलियों को तेरे  
 चोयों में चिपकाऊँगा और तेरी नदी के मध्य में से तुम्हें निकालूँगा और तेरी नदी  
 ५ की सारी मछलियां तेरे चोयों में चिपकींगी । और अरख्य मे मैं तुम्हें और तेरी  
 नदी की सारी मछलियों को कोडूँगा और तू खेतों पर गिरेगा और एकट्ठा न  
 किया जायेगा न बटोरा जायेगा मैं ने तुम्हें खनपशु को और आकाश के पंक्षियों  
 ६ के आहार के लिये दिया है । और मिस्र के सारे निवासी जानेंगे कि मैं परमेश्वर

मैं तेरे लिये एक विलाप उठा उठा तुझ पर विलाप करूँगे कि मूर के समान कौन समुद्र के मध्य में नष्ट हुआ है । जब तेरी सामग्री समुद्र में से निकली तब तू ने बहुत लोगों को भर दिया तू ने अपने धन की और व्यापार की बहुताई से पृथिवी के राजाओं को धनी किया है । तू जिस समय में समुद्र से जलों की शंभीरता में तोड़ी जायेगी उस समय तेरा व्यापार और तेरे मध्य में की सारी जया तुझ में गिरिगी । टापुओं के सारे निवासी तुझ से आश्चर्यित होंगे और उन के राजा बहुत डर जायेंगे और उन का रूप व्याकुल होगा । लोगों में के व्यापारी तुझ पर फुफकारेंगे और तू भयानक होगा और फिर कधी न होगा ।

अट्टाईसवां पर्व ।

फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र मूर के प्रधान से यों कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने मन के उभाड़े जाने में तू ने कहा है कि मैं सर्वशक्तिमान हूँ मैं ही समुद्रों के मध्य में देव के आमन पर बैठा हूँ यद्यपि तू अपने मन को ईश्वर के मन के समान करे तथापि तू मनुष्य है और सर्वशक्तिमान नहीं । देख तू दानिएल से अधिक बुद्धिमान है और वे तुझ से कोई भेद छिपा नहीं सकते । तू ने अपनी बुद्धि और समझ से धन प्राप्त किया है और सोना चांदी अपने भंडारों में प्राप्त किया है । तू ने अपनी बड़ी बुद्धि से और अपने व्यापार में अपना धन बढ़ाया है और तेरे धन के कारण तेरा मन उभाड़ा गया है ।

इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने अपने मन को ईश्वर के मन के समान किया है । इन लिये देख मैं उपरियों को अर्थात् जाति-शायों के भयंकरों को तुझ पर लाऊँगा और वे तेरी बुद्धि की सुन्दरता के विरुद्ध अपनी तलवार खींचेंगे और तेरी चमक अगुह करेंगे । वे तुझे गड़ड़े में उतारेंगे और तू उन की मृत्यु में मरेगा जो समुद्र के मध्य में डूबे जाते हैं । क्या तू अपने घातक के आगे कहेगा कि मैं परमेश्वर हूँ परन्तु तू अपने घातक के हाथ में मनुष्य होगा और सर्वशक्तिमान नहीं । तू उपरियों के हाथ से अखतनों की मृत्यु मरेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ने कहा है ॥

फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । कि हे मनुष्य के पुत्र तू मूर के राजा के विषय में एक विलाप उठाके उम्मे कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू सब वस्तु की सिद्धता है बुद्धि की भरपूर और सुन्दरता का अन्त । ईश्वर के अदन की धारी में तू गया है हर एक मणि अर्थात् पद्मराग और फीरोज और हीरा और वैदूर्य और चंद्रकान्त और नीलमणि और मरकत और पद्मा और गोमेद और सोना तेरा आड़ना था और तू जिस दिन सृजा गया था उन्ही दिन तेरे तबले और बांसुरी के कार्यकारी तुझ में बनाये गये । तू अभिषिक्त छंपयेया कसब है और मैं ने तुझे यों किया है तू ईश्वर के पाँचत्र पर्वत के ऊपर था तू आग के पत्थरों के मध्य भ्रमता था । अपनी उत्पत्ति के दिन से जय लो तुझ में घुसाई न पाई गई तू अपनी चालों में सिद्ध था ॥

तेरे व्यापार की बहुताई से उन्हीं ने तेरे मध्य को आंधेर से भरा है और तू

- ३ भविष्य कहके प्रचार कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम चिला चिला कर  
 ४ कि उस दिन पर संताप । क्योंकि वह दिन अर्थात् परमेश्वर का दिन एक  
 ५ घटा का दिन पास है वह अन्यदेशियों का समय होगा । और तलवार मिस पर  
 ६ आवेगी और जब मिस में जूमे हुए गिरेंगे और वे उस की मंडली को ले जायेंगे  
 ७ और उस की नेवें तोड़ी जायेंगी तब कूश पर बड़ी पीड़ा होगी । और कूश और  
 ८ फूत और लूद और सारे मिले जुले लोग और कूश और मिले हुए देश के सन्तान  
 ९ उस के साथ तलवार से गिरेंगे ॥
- १० परमेश्वर यों कहता है कि जो मिस को संभालते हैं वे भी गिरेंगे और उस  
 ११ के पराक्रम का अहंकार उतर आवेगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि वे मित्रदाल  
 १२ से सयेनी लों तलवार से गिरेंगे । और वे उजाड़ देशों के मध्य में उजाड़ होंगे  
 १३ और उस के नगर उजाड़ नगरों के मध्य में होंगे । और जब मैं मिस में आग  
 १४ लगाऊंगा और उस के सारे उपकारी चूर होंगे तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ।  
 १५ उस दिन दूत मुक्त में से जहाजों में निश्चिन्त कृशियों के डराने को निकलेंगे  
 १६ और उन पर मिस के दिन के समान बड़ी पीड़ा पड़ेगी क्योंकि देख वह आता है ।
- १७ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ से  
 १८ मिस की सारी मंडली को भी मिटा डालूंगा । वह और जातिगणों के भयानक  
 १९ लोग उस के साथ देश नष्ट करने को भेजे जायेंगे और वे मिस के विरुद्ध अपनी  
 २० तलवार खींचेंगे और देश को जूमे हूयों से भर देंगे । और मैं नदियों को सुखा-  
 २१ जंगा और दुष्टों के हाथ में देश बेचूंगा और मैं परदेशियों के हाथ से देश को  
 २२ और उस की भरपूरों को उजाड़ूंगा मैं ही परमेश्वर ने कहा है ।
- २३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं मूर्तिन को भी नष्ट करूंगा और नफ में से  
 २४ मूर्तिन को मिटा डालूंगा और फिर मिस देश का अध्यक्ष न होगा और मैं मिस  
 २५ देश को डराऊंगा । और मैं फतहस को उजाड़ूंगा और जुन्नन में आग लगाऊंगा  
 २६ और नो को दण्ड देऊंगा । और मिस के गढ़ सीन पर अपना कोष उंडेलूंगा और  
 २७ नो की मंडली को काट डालूंगा । और मैं मिस में आग लगाऊंगा और सीन के  
 २८ बड़ी पीड़ा होगी और नो टुकड़ा टुकड़ा किया जायेगा और नफ को प्रतिदि  
 २९ दुःख होगा । अवन के और फिवसत के तरुण तलवार से गिरेंगे और वे बंधु  
 ३० आई में जायेंगे । जब मैं वहां मिस के जूयों को तोड़ूंगा और उस में उस के ब  
 ३१ का अन्त करूंगा तब तिहफनिहीस में भी दिन अधियारा होगा वह जो है सब  
 ३२ मेघ उस पर छा जायेगा और उस की वेटियां बंधुआई में जायेंगी । इस रीति  
 ३३ से मैं मिस को दण्ड देऊंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥
- ३४ और ग्यारहवें बरस के पहिले मास की सातवीं तिथि में ऐसा हुआ कि पर-  
 ३५ मेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा ॥
- ३६ हे मनुष्य के पुत्र मैं ने मिस के राजा फिरजन की भुजा तोड़ी है और देश  
 ३७ तलवार धरने के लिये उसे चंगी करके दृढ़ करने को उस पर पट्टी लपेटके बांधी  
 ३८ न जायेगी । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं मिस के राजा  
 ३९ फिरजन के विरुद्ध हूँ और उस की बलवती और टूटी हुई भुजा को तोड़ूंगा और

हूँ क्योंकि वे इसराएल के घराने के लिये नरकट के एक दण्ड हुए हैं । जय उन्हें ४  
 ने तुम्हें हाथ से पकड़ा तब तू ने तोड़के उन के कंधों को फाड़ा और जय वे  
 तुम्हें पर घोटंगे तब भी तू ने तोड़के सारी काटि को रोका । इस लिये प्रभु परमे- ५  
 श्वर यों कहता है कि देख मैं तुम्हें पर तलवार लाऊंगा और तुम्हें मैं से मनुष्यों  
 को और पशुन को नष्ट करूंगा । और मिस्र देश उजाड़ और शून्य हो जायेगा ६  
 और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ क्योंकि उस ने कहा कि नदी मेरी है और मैं ने  
 उसे बनाया है ।

इस लिये देख मैं तेरे विरुद्ध और तेरी नदियों के विरुद्ध और मैं मिस्र देश १०  
 को सयेनी के गुम्मत से कूण के सिंधाने लों उजाड़ों का उजाड़ करूंगा । किसी ११  
 मनुष्य और किसी पशु का प्राय उस में से न जायेगा और चालीस वरस लों उस  
 में कोई न बसेगा । और मैं मिस्र देश को उजाड़ देशों के मध्य में उजाड़ १२  
 करूंगा और उस के नगर उजाड़ नगरों में और चालीस वरस लों उजाड़ रहेंगे  
 और मैं मिस्रियों को जातिगणों में विधराऊंगा और उन्हें सारे देशों में छिन्न  
 भिन्न करूंगा ।

क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि चालीस वरस के अन्त में मैं मिस्रियों १३  
 को लोगों में से जहाँ जहाँ वे छिन्न भिन्न हुए गकट्टे करूंगा । और मैं मिस्र की १४  
 धंधुआई को फेर लाऊंगा और उन्हें फतस्र देश में उन की वन्मभूमि में फेर  
 लाऊंगा और वे वहाँ एक तुच्छ राज्य होंगे । वह राज्यों में सब से तुच्छ होगा १५  
 और वह आप को फेर देशगणों पर न उभाड़ेगा और मैं उन्हें घटाऊंगा जिसों  
 जातिगणों पर प्रभुता न करेंगे । जय वे उन को पीछे तार्केंगे तब वह फेर १६  
 इसराएल के घराने का भरोसा न होगा जो उन की घुराइयों को चेत दिलाता  
 है परन्तु वे जानेंगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूँ ।

और नत्ताईसवें वरस के पहिले मास की पहिली तिथि में सेवा हुआ कि यह १७  
 कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा ।

हे मनुष्य के पुत्र वावुल के राजा नबूखुदनजर ने मूर के विरुद्ध अपनी बड़ी १८  
 सेना से बड़ी सेवा कराई हर एक सिर मुड़ा हुआ और हर एक कंधा झिल  
 गया तथापि उस ने और उस की सेना ने मूर के लिये अपने विरुद्ध की सेवा के  
 लिये कुछ प्रतिफल न पाया । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं १९  
 वावुल के राजा नबूखुदनजर को मिस्र देश देऊंगा और वह उस की सारी  
 मंडली को लेगा और उस की लूट को लूटेगा और उस के अहेर को अहेरेगा  
 और वही उस की सेना का प्रतिफल होगा । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि २०  
 मैं उस के विरुद्ध उस की सेना के लिये उस के प्रतिफल में उसे मिस्र देश देऊंगा  
 क्योंकि उन्होंने ने मेरे लिये कार्य किया है । उस दिन मैं इसराएल के घराने के २१  
 सींग को उभाड़ूंगा और उन के मध्य में तेरा मुंह खोल देऊंगा और वे जानेंगे  
 कि मैं परमेश्वर हूँ ।

तीसवां पृष्ठ ।

यह कहते हुए फिर परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र २

दास और उस की दासी और उस के बेल और उस के गददे और किसी वस्तु का जो तेरे परामी की है लालच मत कर ॥

१८ और सब लोग गर्जना और बिजली का चमकना और तुरही का शब्द और पर्वत से धूआं उठना देखते थे और जब लोगों ने देखा तो हटे और दूर जा खड़े रहे । तब उन्होंने ने मूसा से कहा कि तूही हम से बोल और हम सुने परन्तु ईश्वर हम से न बोले न हो कि हम मर जायें । तब मूसा ने लोगों से कहा कि भय मत करो इस लिये कि ईश्वर आया है कि तुम्हें परखे और जितने उस का भय तुम्हारे सन्मुख प्रगट होय जिसमें तुम पाप न करो ॥

२१ तब लोग दूर खड़े रहे और मूसा उस गाढ़े अंधकार के समीप गया जहां ईश्वर था ॥

२२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कह कि तुम ने देखा कि मैं ने स्वर्ग से तुम्हारे संग बातें किई । तुम मेरे सन्मुख चांदी का ईश्वर और सोने का ईश्वर मत बनाओ अपने लिये उन्हें मत बनाओ । तू मेरे लिये मट्टी की यज्ञवेदी बना और उस पर अपने चढ़ावे और अपनी कुशल की भेंट अर्थात् अपनी भेड़ बकरी और अपनी गाय बेल चढ़ा हर स्थान में जहां अपना नाम प्रगट करेगा वहां मैं तुझ पास आऊंगा और तुझे आशीस दूंगा । और यदि तू मेरे लिये पत्थर की यज्ञवेदी बनावे तो गढ़े हुए पत्थर से मत बना क्योंकि यदि तू उस पर अपना दधियार उठावे तो उसे अपवित्र करेगा । और तू मेरी यज्ञवेदी पर सीढ़ी से मत चढ़ जिसमें तेरा नंगापन उस पर प्रगट न होवे ॥

इक्कीसवां पर्व ।

१ अब वे विचार जिन्हें तू उन के आगे धरेगा ये हैं ॥

२ कि यदि तू इसी दास को मोल लेवे तो वह कः घरम सेवा करेगा और ३ सातवें में सैत से छोड़ दिया जायगा । यदि वह अकेला आया तो अकेला जायगा ४ यदि वह विवाहित था तो उस की पत्नी उस के साथ जायगी । यदि उस के स्वामी ने उसे पत्नी दिई है और उस की पत्नी उससे बेटे और बेटियां जनी तो उस की पत्नी और उस के बालक उस के स्वामी के होंगे और वह अकेला चला जायगा । और यदि वह दास खोलके कहे कि मैं अपने स्वामी अपनी पत्नी को ६ और अपने बालकों को प्यार करता हूं मैं निर्वन्ध न हूंगा । तो उस का स्वामी उसे न्यायियों के पास ले जायगा और उसे द्वार पर अथवा द्वार की चौखट पर लावेगा और उस का स्वामी सुतारी से उस का कान छेदेगा और वह सदा उस की सेवा करेगा ॥

७ और यदि कोई मनुष्य अपनी कन्या को बेचे जिसमें वह दासी हो तो वह ८ दासी की नाई बाहर न जा सकेगी । यदि वह अपने स्वामी की दृष्टि में जिस ने उसे विवाह किया बुरी होय तब वह उसे कुड़वावे परन्तु उसे सामर्थ्य न होगा ९ कि किसी अन्यदेशी के हाथ बेच डाले क्योंकि उस ने उसे बल किया । और यदि वह उसे अपने बेटे से व्याह देवे तो वह उसे बेटियों का व्यवहार करे ।

१० यदि वह अपने लिये दूसरी को लेवे तो उस का अन्न उस का वस्त्र और उस के

उस के हाथ से तलवारें गिरा देऊंगा । और देशगणों में मैं मित्रियों को बिखरा- २३  
ऊंगा और देशों में उन्हें छिन्न भिन्न करूंगा ॥

और मैं वायुल के राजा की भुजा को बलवती करूंगा और अपनी तलवार २४  
उस के हाथ में देऊंगा परन्तु फिरउन की भुजा तोड़ूंगा और वह उस के आगे मारू  
घाव के कहरने से कहरेगा । परन्तु मैं वायुल के राजा की भुजा को बलवती २५  
करूंगा और फिरउन की भुजा गिर पड़ेगी और जंग में अपनी तलवार वायुल के  
राजा के हाथ में देऊंगा और वह मिस्र देश पर उसे बढ़ावेगा तब वे जानेंगे कि  
मैं परमेश्वर हूँ । और मैं जातिगणों में मित्रियों को बिखराऊंगा और उन्हें देशों २६  
में छिन्न भिन्न करूंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

एकतीसवां पद्य ।

और ग्यारहवें वरस के तीसरे मास की पहिली तिथि में ऐसा हुआ कि परमे- १  
श्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र मिस्र के राजा २  
फिरउन को और उस की मंडली को यह कह कि तू अपने महत्त्व में किम के  
समान है । देख असूरी सुन्दर डालें रखते हुए छायावान और लुबनान का एक ३  
बड़ा देवदानपेड़ था और उस की फुनगी घनी डालों पर थी । पानियों ने उसे ४  
पाला और गहिराव ने अपनी नदियों से उस के झाड़ों की चारों ओर फिरते  
हुए उसे पोसा और उस की नालियां खेत के सारे पेड़ लों पहुँच गईं । इस लिये ५  
उस की ऊँचाई खेत के सारे पेड़ों से बढ़ गई और उस की डालियां फूट फूटके  
पानियों की बहुताई से लंबी लंबी हुईं । उस की डालों पर आकाश के सारे ६  
पंखियों ने बसेरा किया और उस की डालियों के तले चौगान के सारे वनपशु  
बढ़े जने और उस की छाया तले बड़े बड़े जातिगण बसे । यहां लों कि उस की ७  
डालियों की लम्बाई में उस का महत्त्व सुन्दर था क्योंकि उस की जड़ बड़े बड़े  
पानियों के लग थी । ईश्वर की धारी के देवदानपेड़ उसे ठांप न सके थे और ८  
सरोवृत्त उस की डालों की नाईं न थे और असून का पेड़ उस की डालियों की  
नाईं न था उस की सुन्दरता में ईश्वर की धारी का कोई पेड़ उस के तुल्य न  
था । मैं ने उस की डाली की बहुताई से उसे सुन्दर किया यहां लों कि ईश्वर ९  
की धारी अदन के सारे पेड़ों ने उससे डाढ़ किया ॥

इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने ऊँचाई में आप १०  
को उभाड़ा है और उस ने अपनी फुनगी घनी डालों में ऊपर किई और उस की  
ऊँचाई में उस का मन उभड़ा है । इस लिये मैं ने उसे अन्यदेशी के एक पराक्रमी ११  
के हाथ में सौंपा है वह निश्चय उससे व्यवहार करेगा मैं ने उस की दुष्टता के  
लिये उसे दूर किया है । और जातिगणों के भयंकर परदेशियों ने उसे काटके छोड़ १२  
दिया है पर्वतों पर और सारी तराई में उस की डालियां गिरी हैं और उस की  
डालें देश की सारी नदियों के लग टूटी हैं और पृथिवी के सारे लोग उस की  
छाया तले से निकल गये और उसे छोड़ दिया ॥

उस के उजाड़ पर आकाश के सारे पंखी बसेंगे और सारे वनपशु उस की १३  
डालियों पर रहेंगे । जित्ना जल के लग के सारे पेड़ों में कोई अपनी ऊँचाई के १४



लिये अहंकार न करे और अपनी फुनगी मोटी डालों में न उगावे और उन के सारे पेड़ अपनी जंघाई पर न ठहरें जो पानी सोखते हैं क्योंकि वे सब के सब पृथिवी के नीचे के स्थानों के लिये उन के संग जो गड़हे में उतरते हैं मनुष्यों के सन्तान के मध्य में मृत्यु के लिये सौंपे गये ॥

- १३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस दिन वह पाताल में उतरा मैं ने बिलाप करवाया मैं ने उस के लिये गहिराव को ठांपा और उस के बाठों को रोका और बड़े बड़े पानी थम गये और मैं ने उस के लिये लुबनान को अधियारा करवाया १४ और उस के लिये चौगान के सारे पेड़ मूर्छित हुए । जब मैं ने उसे उन के संग जो गड़हे में उतर पड़ते हैं पाताल में उतार दिया तब उस के गिरने के शब्द में मैं ने जातिगणों को कंपवाया और अदन के सारे पेड़ लुबनान के अच्छे और चुने हुए १५ सब जो पानी सोखते हैं पृथिवी के नीचे स्थानों में शान्ति पावेंगे । वे भी उस के संग तलवार से जूझे हुए कने पाताल में उतर गये और उस की खांह अन्यदेशियों के मध्य में उस की छाया तले रहती थी ॥

- १८ माहात्म्य में और प्रतिष्ठा में अदन के पेड़ों में से तू किस के तुल्य है तथापि अदन के पेड़ों के संग तू पृथिवी के नीचे स्थानों में उतारा जायेगा तू अखतनों के मध्य में तलवार से जूझे हुएों के संग पड़ा रहेगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि फिरजन और उस की सारी मंडली यह है ॥

वत्तीसवां पर्व ।

- १ और बारहवें वरस के बारहवें मास की पहिली तिथि में परमेश्वर का अवन २ यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र मिस्र के राजा फिरजन के लिये एक बिलाप निकाल और उससे कह कि तू जातिगणों के एक तरुण सिंह की नाई और समुद्र में के एक कुंभीर की नाई तू अपनी नदियों से निकला है और अपने पांव से पानी हंडोला है और उन की नदियों को गदला किया है ॥ ३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इसी लिये मैं बहुत से लोगों की जघा के ४ संग अपना जाल तुझ पर फैलाऊंगा और वे मेरे जाल में तुझे उठा लेंगे । तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ूंगा मैं तुझे चौगान में फेंक देऊंगा और तुझ पर सारे आकाश के पंक्तियों को बैठाऊंगा और मैं पृथिवी के सारे पशुन को तुझ से तृप्त ५ करूंगा । और मैं तेरे मांस को पर्वतों पर डालूंगा और तेरी जंघाई से तराइयों ६ को भर देऊंगा । और जिस देश में तू पौरता है उसे पहाड़ लों तेरे लोहू से सींचूंगा और नदियां तुझ से भर जायेंगी ॥ ७ और जब मैं तुझे बुझाऊंगा तब मैं स्वर्ग को ठांपूंगा और उस के तारों को अधियारा करूंगा मैं मेघ से सूर्य को ठांपूंगा और चन्द्रमा अपनी ज्योति न ८ देगा । ईश्वर परमेश्वर कहता है कि मैं स्वर्ग की ज्योतिन की ज्योति को तुझ पर ९ अधियारी करूंगा और तेरे देश को अधियारा करूंगा । और जब मैं तेरे बिनाश को जातिगणों में उन देशों में लाऊंगा जिन्हें तू ने नहीं जाना है तब मैं बहुत १० से लोगों को बिजाऊंगा । श्रां में तुझ से बहुत से लोगों को अचंभित करूंगा और जब मैं अपनी शलवार उन के आगे भांजूंगा तब उन के राजा तेरे लिये बहुत डर

जायेंगे और वे तेरे गिराने के दिन हर एक जन अपने अपने प्राण के लिये पल पल शरथरायेगा ॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बाबुल के राजा की तलवार तुझ पर ११ आवेगी । धीरे की तलवारों से मैं तेरी मंडली अर्थात् देशगणों के सारे भयंकरों १२ को गिरवाऊंगा और वे मिस्र का श्रेष्ठ लूटेंगे और उस की सारी मंडली नाश किई जायेंगी । और मैं बड़े बड़े पानियों के लग से उन के सारे पशुन को नष्ट १३ करूंगा और मनुष्य का पांव और पशुन का खुर उन्हें फिर न सतावेगा । प्रभु पर- १४ मेश्वर यों कहता है कि तब मैं उन के पानियों को गहिरा करूंगा और उन की नदियों को तेल की नाईं बहाऊंगा । जब मैं मिस्र देश को उजाड़ूंगा तब देश १५ अपनी भरपूरी से उजड़ जायेगा और जब मैं उस के सारे निवासियों को मारूंगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

इस विलाप से वे उस पर विलाप करेंगे अन्यदेशियों की लड़कियां उस के १६ विषय में विलाप करेंगी प्रभु परमेश्वर कहता है कि वे उस के लिये विलाप करेंगी अर्थात् मिस्र और उस की मंडली के लिये ॥

और बारहवें वरस में मार की पन्द्रहवीं तिथि में भी यों हुआ कि परमेश्वर १७ का वचन यह कहते हुए मेरे पाम पहुंचा ॥

हे मनुष्य के पुत्र मिस्र की मंडली के लिये विलाप कर और उसे अर्थात् १८ उसे और विद्रित जातिगणों की लड़कियों को पृथिवी के नीचे के स्थानों में जो गड्ढे में उतरते हैं उतार दे । तू किस्से अधिक सुन्दर है उतर जा और अश्वतनों १९ के साथ पड़ा रह । वे तलवार से जूझे हुएों के मध्य गिरेंगे बंद तलवार को २० सौंपा गया है उसे और उस की सारी मंडलियों को खींच ले । उस के सहायकों २१ के साथ धीरे में का चलवंत पाताल के मध्य में से उसे कहेगा वे उतर गये वे तलवार से जूझे हुए अश्वतने पड़े हैं ॥

अमूर और उस की सारी जथा वहां है उस की समाधि उस के आसपास सब २२ के सब तलवार से जूझे पड़े हैं । जिन की समाधियां गड्ढे के अलंगों में हैं और २३ उस की जथा उस की समाधि के चारों ओर है वे सब के सब तलवार से मारे हुए जूझे हैं जिन्होंने जीवतों के देश को डराया ॥

वहां ऐलाम और उस की सारी मंडली जो उस की समाधिन की चारों ओर २४ सब के सब तलवार से मारे हुए जूझ गये जो पृथिवी के नीचे के स्थानों में अश्व- तने उतर गये हैं जिन्होंने जीवतों के देश को डराया तब भी उन्होंने ने गड्ढे में के उतरवैयों के संग अपनी लाज भोगी है । उन्होंने ने जूझे हुएों के मध्य में २५ उस की सारी मंडली के साथ उस के लिये एक विह्वाना धरा है उस की समाधियां उस की चारों ओर हैं वे सब अश्वतनः तलवार से जूझे हुए हैं यद्यपि उन का भय जीवतों के देश में पड़ा तथापि उन्होंने ने उन के साथ जो गड्ढे में पड़ते हैं अपनी लाज भोगी वह जूझे हुए के मध्य में रक्खा गया है ॥

वहां मसक और तूवल और उस की सारी मंडली उस की समाधियां उस की २६ चारों ओर वे सब के सब अश्वतनः तलवार से जूझे हुए यद्यपि उन्होंने ने जीवतों

- २७ के देश को डराया है । और वे मारे हुए अश्वतनः धीरों के साथ जो अपने संग्राम के हथियारों से जो पाताल में उतर पड़े हैं पड़े न रहेंगे और उन्होंने अपनी अपनी तलवार अपने अपने सिर तले रखी है परन्तु उन की बुराई उन २८ की हड्डियों पर होगी यद्यपि वे जीवितों के देश में धीरों के भय थे । और तू अश्वतनों के मध्य में तोड़ा जायेगा और तलवार से जूझे हुआओं के साथ पड़ा रहेगा ।
- २९ वहां अदूम और उस के राजा और उस के सारे अध्यक्ष जो अपने पराक्रम समेत तलवार से जूझे हुआओं के लग रखे गये हैं वे अश्वतनों के और गड़हों के उतरवैयों के साथ पड़े रहेंगे ।
- ३० वहां उत्तर के सारे अध्यक्ष और सारे सैदानी हैं जो जूझे हुआओं के साथ उतर गये हैं अपने भय के साथ वे अपने पराक्रम से लज्जित हैं वे तलवार से जूझे हुए अश्वतनों के साथ पड़े हैं और वे गड़हों के उतरवैयों के साथ अपनी लाश सहते हैं ॥
- ३१ प्रभु परमेश्वर कहता है कि फिरजन उन्हें देखेगा और अपनी सारी मंडली पर शान्ति पावेगा अर्थात् फिरजन और तलवार से जूझी हुई उस की सारी ३२ सेना । क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि जीवितों के देश को मैं ने डराया है और वह अर्थात् फिरजन और उस की सारी मंडली तलवार से जूझे हुआओं के साथ अश्वतनों के मध्य में डाले जायेंगे ॥

तीसवां पृष्ठ ।

- १ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों के संतानों से कह और उन से बोल कि जय में किसी देश पर तलवार लाजं तो यदि उस देश के लोग अपने सिवानों के किसी मनुष्य को लेके ३ अपना रखवाल ठहरावे । तलवार को देश पर आते देखके यदि वह तुरही ४ फूंकके लोगों को चितावे । तब जो सुनते हुए तुरही का शब्द सुने और न चेतें जो तलवार आवे और उसे ले जाये तब उस का लोहू उसी के सिर पर ५ होगा । उस ने तुरही का शब्द सुनके चेत न किया उसी का लोहू उसी पर होगा परन्तु जो चेतगा सो अपना प्राण बचावेगा ।
- ६ परन्तु यदि रखवाल उस तलवार को आते देखे और तुरही न फूंकके और लोग चिताये न जायें तब यदि तलवार आवे और उन में से किसी को ले जाये तो वह अपनी बुराई में उठाया गया परन्तु उस के लोहू का लेखा में रखवाल के हाथ से लेजंगा ॥
- ७ और हे मनुष्य के पुत्र मैं ने तुम्ही को इसराएल के घराने के कारण रखवाल ८ ठहराया है इस लिये वचन मेरे मुंह से सुन और मेरी ओर से उन्हें चिता । अब मैं दुष्ट से कहूं कि अरे दुष्ट तू अवश्य मरेगा यदि तू दुष्ट को उस की दुष्ट चाल से उसे न चितावे तो वह अपने अधर्म में मरेगा परन्तु मैं तेरे हाथ से उस के लोहू ९ का लेखा लेजंगा । तिस पर भी यदि तू दुष्ट को उस की चाल से फिरने को चितावे जो वह अपनी चाल से न फिरे तो वह अपने अधर्म में मरेगा परन्तु तू ने अपने प्राण को बचाया है ।

इस लिये हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के घराने से कह कि तुम लोग यह १० कहके बोलते हो कि यदि हमारे अपराध और हमारे पाप हम पर दें और हम उन में गले जायें फिर हम क्योंकर जीयें ॥

उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोह दुष्टों की ११ मृत्यु से मैं प्रसन्न नहीं परन्तु जिसने दुष्ट अपनी चाल से फिरे और जीये हे इसराएल के घराने फिर अपने कुमार्गों से फिरो तुम लोग किस लिये मरेगो ॥

इस लिये हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों के संतान से कह कि धर्मी का धर्म १२ उसे के अपराध के दिन में उसे न बचावेगा और दुष्ट की दुष्टता जो है जब वह अपनी दुष्टता में फिरे वह उसे न गिरेगा और पाप करने के दिन में धर्मी अपने धर्म से न जीयेगा ॥

जब मैं धर्मी से कहूँ कि तू निश्चय जीयेगा यदि वह अपने ही धर्म पर १३ भरोसा रखे और अधर्म करे तब उस का सारा धर्म स्मरण न किया जायेगा परन्तु वह अपने किये हुए अधर्म के लिये मरेगा ॥

फिर जब मैं दुष्ट से कहूँ कि तू निश्चय मरेगा यदि वह अपने पाप से फिरे १४ और न्याय और धर्म करे । यदि दुष्ट बंधक फेर देवे और बटमारी की बस्तु १५ फेर देवे और अधर्म न करके जीवन की विधि का पालन करे तब वह निश्चय जीयेगा और न मरेगा । उस के किये हुए पाप उस के आगे दुहराये न जायेंगे १६ उस ने धर्म और ठीक किया है वह निश्चय जीयेगा ॥

तथापि तेरे लोगों के संतान कहते हैं कि परमेश्वर का मार्ग सम नहीं परन्तु १७ वे जो हैं उन की चाल सम नहीं । जब धर्मी अपने धर्म से फिरके अधर्म करे १८ तब वह उसी से मरेगा । परन्तु यदि दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरे और धर्म और १९ ठीक करे तो वह उसे जीयेगा ॥

तथापि तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर का मार्ग सम नहीं हे इसराएल २० के घराने मैं तुम्हें से हर एक का उस की चालों के समान विचार करेगा ॥

और हमारी बंधुआई के वारहवें वरस के दसवें मास की पांचवीं तिथि में यों हुआ २१ कि यरुसलम से बचके एक जन ने मेरे पास आके कहा कि नगर मारा गया है ॥

और जो बच निकला था उस के आने से पहिले सांभ को परमेश्वर का दाण २२ मुझ पर पड़ा और जब ताईं वह विद्यान को मेरे पास आया मेरे मुँह को खोला और मेरा मुँह खोला गया और मैं फिर गूंगा न रहा । तब परमेश्वर का वचन २३ यह कहते हुए मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र इसराएल देश के उजाड़ों के २४ निवासी कहते हैं कि अविच्छिन्न एक ही था और उस ने देश का अधिकार पाया परन्तु हम बहुत हैं और अधिकार के लिये देश हमें दिया गया है ॥

इस लिये उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग लोहू २५ समेत खाते हो और अपनी मूर्तियों की ओर आंखें उठाके लोहू बढ़ाते हो और क्या तुम लोग देश के अधिकारी होओगे । तुम अपनी अपनी तलवार से लैस २६ होके धिनित कार्य करते हो और तुम्हें से हर एक जन अपने अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध करता है और क्या तुम लोग देश के अधिकारी होओगे ॥

- २७ तू उन से यों कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सेह जो उजाड़ों में हैं सो तलवार से मारे पड़ेंगे और जो चौगान में हैं उन्हें भक्षने के लिये पशुन को देऊंगा और जो लोग गढ़ और खोह में होवें सो मरी से मरेंगे ।
- २८ क्योंकि मैं देश को उजाड़ों का उजाड़ करूंगा और उस के बल का विभव मिटाया जायेगा और इसराएल के पहाड़ उजाड़ होंगे कि कोई उस में से न जायेगा ।
- २९ जब मैं उन के किये हुए सारे घिनितों के कारण उन के देश को अति उजाड़ करूंगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥
- ३० और हे मनुष्य के पुत्र तेरे लोगों के सन्तान भीतों के लग और घरों के द्वारों पर अब भी तेरे विरुद्ध कह रहे हैं और हर एक आपस में अपने अपने भाई को कहता है कि मैं विन्ती करता हूँ कि चलो परमेश्वर से निकले हुए बचन को सुनें । और लोगों के आने के समान वे तेरे पास आते हैं और मेरे लोगों की नाईं तेरे आगे बैठते हैं और तेरी बातें सुनते हैं परन्तु वे उन्हें न मानेंगे क्योंकि वे अपने मुँह से प्रेम दिखाते हैं परन्तु उन के मन उन के लाभ के पीछे चलते हैं । और देख तू उन के लिये अति प्रिय गान के समान है जिस का प्रेमों का गान है और अच्छी रीति से बजा सक्ता है क्योंकि वे तेरे बचन सुनते हैं परन्तु उन्हें नहीं मानते । और जब यह आवेगा देखो आवेगा तब वे जानेंगे कि एक भविष्यद्वक्ता उन में हुआ है ॥

### चौतीसवां पर्व ।

- १ तब परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के गढ़रियों के विरुद्ध भविष्य कह और उन के आगे भविष्य प्रचार प्रभु परमेश्वर गढ़रियों को यों कहता है कि इसराएल के गढ़रियों पर संताप जो आप खाते हैं क्या गढ़रियों को मुँड चराना न चाहिये ।
- २ तुम लोग चिकनाई खाते हो और रोम ओढ़ते हो और पले हुए को घात करते हो परन्तु मुँड को नहीं चराते । तुम लोगों ने दुर्बलों को बल नहीं दिया है और न रोगी को चंगा किया न टूटे पर पट्टी बांधी न खड़े हुए को फेर लाये न खोये हुए को ठूँका परन्तु अरबंस्तों से और क्रूरता से उन पर प्रभुता किई ।
- ३ और बिन गढ़रियो वे किन्न भिन्न हुए और किन्न भिन्न होके वे सारे बनपशुन के आहार हुए । मेरी भेड़ें सारे पर्वतों पर और हर एक ऊँची पहाड़ी पर भटक गईं हां मेरे मुँड सारी पृथिवी पर किन्न भिन्न हुए और किसी ने उन्हें न खोजा और न ठूँका ॥
- ४ इस लिये हे गढ़रियो परमेश्वर का बचन सुनो । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सेह गढ़रिया न होने के कारण मेरे मुँड अहेर हुए और मुँड हर एक बनपशु के लिये आहार हुआ और मेरे गढ़रियों ने मेरे मुँड की खोज न किई परन्तु गढ़रियों ने आप खाया पर मेरे मुँड को न चराया । इस लिये हे गढ़रियो परमेश्वर का बचन सुनो । प्रभु परमेश्वर यों कहता है देख मैं गढ़रियों के विरुद्ध हूँ और उन के हाथों से अपने मुँड का लेखा लेऊंगा और अपने मुँड उन से न चरवाऊंगा और फिर गढ़रियो आप न खायेंगे क्योंकि मैं अपने मुँड को उन के मुँह से छुड़ाऊंगा जिस्तें उन का भोजन न होवें ॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं ही अपनी भेड़ों को ठुंडके उन्हें ११ खोज लेऊंगा । किन्तु भिन्न भेड़ों में जाने के दिन भुंड के गड़गिये के खोजने के १२ समान मैं अपनी भेड़ों को खोजूंगा और उन्हें सारे स्थानों में जहाँ जहाँ अधिपारे और मेघ के दिन में किन्तु भिन्न हुई हैं तैसा मैं खोज खोजके ढुंढाऊंगा । और मैं १३ लोगों में से उन्हें निकाल लाऊंगा और देशों में से उन्हें बटोरेगा और उन्हें उन्हीं के देश में लाऊंगा और उन्हें नदी के तीरे इसराएल के पर्वतों पर और देश के सारे निवासस्थानों में चराऊंगा । मैं उन्हें अच्छी चराई में चराऊंगा और इसराएल के १४ ऊँचे पर्वतों पर उन का बाड़ा होगा वे वहाँ अच्छे बाड़े में लेंगे और इसराएल के पहाड़ों पर पुष्ट चराई में चरेंगे । प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं अपने भुंड १५ को चराऊंगा और उन्हें चैन दिलाऊंगा । मैं खोये हुए को ठुंडूंगा और खड़े हुए १६ को फेर लाऊंगा और टूटे हुए पर पट्टी बांधूंगा और रोगी को बलवान करूँगा परन्तु पुष्ट और बलवान को नाश करूँगा मैं उन्हें न्याय से चराऊंगा ॥

और तू हे मेरे भुंड प्रभु परमेश्वर यों कहता है देख मैं पशु पशु में और मेंढों १७ और बकरों में न्याय करता हूँ । अच्छी चराई को चर लेना और अपनी रही हुई १८ चराई को पाँच से रौंद डालना और गहरे पानियों को पीना और रहे हुए को गदला करना क्या तुम्हारे लिये सहज है । परन्तु जो तुम ने अपने पाँचों से रौंदा १९ है सो मेरे भुंड खाते हैं और जो तुम ने अपने पाँचों से गदला किया है सो पीते हैं ॥

इस लिये प्रभु परमेश्वर उन से यों कहता है कि देख मैं ही मोटे और हाँगर २० पशुन में न्याय करूँगा । क्योंकि तुम ने कटि से और कन्धे से टेला है और अपने २१ सींगों से सारे रोगियों को मार मार उन्हें किन्तु भिन्न किया है । इस कारण मैं २२ अपने भुंड को बचाऊँगा और वे फिर अक्षर न होंगे और मैं पशु और पशु के मध्य में न्याय करूँगा ॥

और मैं उन पर एक गड़गिया ठहराऊँगा और वह उन्हें चरावेगा अर्थात् २३ मेरा सेवक दाऊद वही उन्हें चरावेगा और वह उन का गड़गिया हो जायेगा । और मैं परमेश्वर उन का ईश्वर होऊँगा और मेरा दास दाऊद उन में अध्यक्ष २४ होगा सुभ परमेश्वर ने कहा है । और मैं उन से एक कुशल का नियम बाँधूँगा २५ और क्रूर पशुन को देश से दूर कराऊँगा और वे उन में चैन से रहेंगे और जंगल में सोयेंगे । और मैं उन्हें अपने पहाड़ की चारों ओर के स्थानों को आशीर्षित २६ करूँगा और ऋतु में मैं बरसाऊँगा वहाँ आशीर्षों की वृष्टि होगी । और खेतों २७ के पेड़ अपने फल फलेंगे और पृथिवी अपनी बढ़ती देगी और वे अपने देश में चैन से बसेंगे और जब मैं उन के लूए के बंधनों को तोड़ूँगा और उन के हाथ से जिन्हों ने अपनी सेवा उन से करवाई है उन्हें ढुंढाऊँगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ । और वे फिर अन्यदेशियों के अक्षर न होंगे और वनपशु भी उन्हें २८ फेर न भर्सेंगे परन्तु वे चैन से रहेंगे और कोई उन्हें न डरावेगा । और मैं उन २९ के लिये एक कीर्तिसान पेड़ उगाऊँगा और वे देश में भूख से फिर क्षीय न होंगे और फिर अन्यदेशियों से लाल न उठावेंगे । प्रभु परमेश्वर यों कहता है यों वे ३०



जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर उन के संग हूँ और वे अर्थात् इसराएल के घराने मेरे लोग हैं ॥

३१ और प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम मेरे मुँह मेरी तराई के मुँह मनुष्य हो और मैं तुम्हारा ईश्वर ॥

पैंतीसवां पर्व ।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का यजन मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र शईर पहाड़ के विरुद्ध अपना मुँह कर और उस के विरुद्ध भविष्य कह ॥

३ और उसने बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख हे शईर पहाड़ मैं तेरे विरुद्ध हूँ और मैं अपना हाथ तेरे विरोध में बढ़ाऊँगा और तुझे उजाड़ काँ उजाड़ करूँगा । मैं तेरे नगरों को उजाड़ूँगा और तू खंडहर हो जायेगा और तू जानेगा ५ कि मैं ही परमेश्वर हूँ । इस कारण कि तू ने नित और रक्षणा है और इसराएल की विपत्ति के समय में अथ कि उन की तराई हो चुकी तू ने उन के बालकों के लोहू को तलवार की धार से खाया है ।

६ इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोच मैं तुझे लोहू के लिये मिट्ट कूँगा और लोहू तेरे पीछे पड़ेगा तू लोहू खाने से नहीं घिनाया है इसी ७ कारण लोहू तेरे पीछे पड़ेगा । इस रीति से मैं शईर पर्वत को उजाड़ों का उजाड़ ८ करूँगा और उस में मे जो बाहर भीतर आता जाता है उसे मिटा डालूँगा । और उस के पर्वतों को मैं उस के जूँके छुओं में भर देऊँगा तलवार से जूँके हुए तेरे ९ मारे पहाड़ों में और तेरी तराईयों में और तेरी मारी नदियों में पड़ेंगे । मैं तुझे नित का उजाड़ करूँगा और तेरे नगर न फिरेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं ही परमेश्वर हूँ ।

१० यद्यपि परमेश्वर बटां या और तू ने कहा है कि ये दोनों जातिगण और ये ११ दोनों देश मेरे होंगे और हम उसे वश में करेंगे । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोच तेरी रिस के समान और तेरी डाह के समान जो तू ने उन के विरुद्ध किया है मैं करूँगा और तेरा विचार करने के पीछे मैं उन में १२ आप को जनाऊँगा । और तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हूँ मैं ने तेरी सारी अप-निन्दा जो तू ने इसराएल के पर्वतों के विरुद्ध यह कहके कहा कि वे उजाड़ पड़े १३ हैं वे हमारे भक्षण के लिये हमें दिये गये हैं । इस रीति से तुम ने अपने मुँह से मेरे विरुद्ध आप को बढ़ाया है और मेरे विपरीत अपनी बात बढाई है मैं ने सुना है ।

१४ प्रभु परमेश्वर यों कहता है जब सारी पृथिवी आनन्द करेगी तब मैं तुझे उजाड़ १५ करूँगा । जैसा तू ने इसराएल के घराने के अधिकार के उजाड़ होने के कारण आनन्द किया है तैसा मैं तुझ से करूँगा हे शईर पर्वत तू और सारा अदूम उजाड़ होगा अर्थात् उस का सब कुछ और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

छत्तीसवां पर्व ।

१ और हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के पर्वतों से भी भविष्य कहके बोल और २ कह कि हे इसराएल के पर्वतो परमेश्वर का खचन सुनो । प्रभु परमेश्वर यों कहता

है इस कारण कि वैरी ने तुम्हारे विरुद्ध कहा है अज्ञा अर्थात् पुराने जंजे स्थाने  
 हमारे वश में हुए हैं । इस लिये भविष्य कष्टके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता ३  
 है कि जित्ने तुम लोग वचे हुए अन्यदेशियों के अधिकार हो जाओ और बड़-  
 बड़ियों की कथनी हो और लोगों के अपयश इस कारण कि उन्हें ने तुम्हें उठाड़ा  
 है और तुम्हें चारों ओर निगल गये हैं । इस कारण हे इसरायल के पर्वतो प्रभु ४  
 परमेश्वर का वचन सुनो प्रभु परमेश्वर पहाड़ों को और टीलों को और नदियों  
 को और तराइयों को और उठाड़ खंडहरों को और त्यक्त नगरों को जो चारों  
 ओर के वचे हुए अन्यदेशियों के लिये एक अहेर और ठट्टा हुए हैं यों कहता है ।  
 इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि निश्चय मैं ने अपनी कुल की आग से ५  
 वचे हुए अन्यदेशियों के विरुद्ध और मेरे अहूमियों के विरुद्ध जित्ने ने अपने सारे  
 अन्तःकरण के आनन्द से अहेर के लिये मन के वर से मेरे देश को अपने वश  
 के लिये ठहराया है ॥

इस लिये इसरायल के देश के विषय में भविष्य कष्ट और पर्वतों को और ६  
 टीलों को और नदियों को और तराइयों को कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता  
 है इस कारण कि तुम ने अन्यदेशियों की लाल मछी है देख मैं ने अपनी कुल में  
 और अपने कोप में कहा है । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने ७  
 अपना दाघ उठाया है निश्चय चारों ओर के अन्यदेशी अपनी लाल मछीगे ॥

परन्तु हे इसरायल के पर्वतो तुम अपनी डालियां निकालोगे और मेरे इसरायल ८  
 लोगों के निमित्त अपना फल फलोगे क्योंकि आने में वे पास हैं । क्योंकि देखो ९  
 मैं तुम्हारे लिये हूं और तुम्हारी ओर फिर्ंगा और तुम लोग जाते बाये जाओगे ।  
 और मैं तुम पर मनुष्यों का अर्थात् इसरायल के सारे घगाने को बड़ाजंगा अर्थात् १०  
 सभों को और नगर बसाये जायेंगे और खंडहर बनाये जायेंगे । और मैं तुम्हें ११  
 मनुष्य को और पशुन को बड़ाजंगा वे बड़के फल लायेंगे और मैं तुम्हें आगिले  
 समय की नाईं स्थिर कसंगा और आरंभ से अधिक तुम्हारी भलाई कसंगा और  
 तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं । और मैं तुम पर मनुष्यों का अर्थात् अपने १२  
 इसरायल लोगों को चलाजंगा और वे तुम्हें अपना अधिकार करेंगे और तू उन  
 का अधिकार होगा और फिर उन्हें मनुष्यरहित न करेगा ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि वे तुम से कहते हैं कि तू ने मनुष्यों १३  
 को भत्ता है और तू ने अपनी जाति को क्षीण किया है । इस लिये प्रभु परमेश्वर १४  
 कहता है कि तू मनुष्यों को फिर न भजेगा और अपने जातिगणों को फिर क्षीण  
 न करेगा । प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हें अन्यदेशियों की लाज को फिर १५  
 न सुनाजंगा और तू फिर लोगों की निन्दा न सहेगा और फिर अपने जातिगणों  
 को पतित न करावेगा ॥

फिर परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र १६  
 जद्य इसरायल के घगाने अपने ही देश में रहते थे तद्य उन्हें ने अपनी ही चाल से  
 और अपनी क्रिया से उसे अशुद्ध किया उन की चाल मेरे आगे अलग फिई गई  
 स्त्री की अशुद्धता की नाईं थी । और देश में उन के लोहू बहाने और अपनी मूर्तिन १७

- १९ से उसे अशुद्ध करने के लिये मैं ने अपना कोप उन पर उँडोला । और मैं ने उन्हें  
 २० अन्यदेशियों में किन्न भिन्न किया और वे देशों में सर्वत्र शिथराये गये मैं ने उन की  
 २१ छाल के समान और उन की क्रिया के तुल्य उन का विचार किया । और जब  
 उन्होंने ने अन्यदेशियों में प्रवेश किया जहाँ जहाँ वे गये वहाँ वहाँ उन्होंने ने मेरे  
 पवित्र नाम को अशुद्ध किया जब उन्होंने ने उन से कहा कि ये परमेश्वर के लोग  
 २२ और उस के देश से निकल गये । परन्तु मैं ने अपने पवित्र नाम के लिये उन पर  
 मया किई जिसे इसराएल के घराने ने अन्यदेशियों में जा जा अशुद्ध किया था ।  
 २३ इस लिये इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे  
 इसराएल के घराने मैं तुम्हारे कारण यह नहीं करता परन्तु अपने पवित्र नाम के  
 २४ लिये जो तुम ने अन्यदेशियों में जा जा अशुद्ध किया । और मैं अपने महत नाम  
 को पवित्र करूँगा जो अन्यदेशियों में अशुद्ध किया गया जो तुम ने उन के मध्य  
 में अशुद्ध किया प्रभु परमेश्वर कहता है कि जब मैं तुम्हें उन की आँखों के आगे  
 पवित्र किया जाऊँगा तब अन्यदेशी जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर हूँ ।  
 २५ क्योंकि मैं तुम्हें अन्यदेशियों के मध्य में से लाऊँगा और सारे देशों में से तुम्हें  
 २६ एकट्ठा करूँगा और तुम्हें तुम्हारे ही देश में लाऊँगा । तब मैं निर्मल जल तुम  
 पर छिड़कूँगा और तुम लोग पवित्र हो जाओगे और मैं तुम्हारी सारी मलीनता  
 २७ से और तुम्हारी सारी सूर्तिन से तुम्हें पवित्र करूँगा । और मैं तुम्हें एक नया मन  
 भी देऊँगा और एक नया आत्मा तुम्हें रखूँगा और तुम्हारे मांस में से मैं पथ-  
 २८ रैला मन निकाल लेऊँगा और तुम्हें मांस का मन देऊँगा । और मैं अपना आत्मा  
 तुम्हें देऊँगा और तुम्हें अपनी विधिनु पर चलाऊँगा और तुम मेरे न्यायों को  
 २९ पालन करोगे और उन्हें मानोगे । और जो देश मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया  
 ३० तुम उस में रहोगे और मेरे लोग होओगे और मैं तुम्हारा ईश्वर हूँगा । और मैं  
 तुम्हें तुम्हारी समस्त अशुद्धता से बचाऊँगा और अन्न को घुलाऊँगा और उसे  
 ३१ बढाऊँगा और तुम पर अकाल न धरूँगा । और पेड़ का फल और खेत की  
 ३२ बढती को बढाऊँगा जिस्तें तुम लोग अन्यदेशियों में फिर अकाल की निन्दा  
 न पाओगे ॥
- ३३ तब तुम लोग अपनी अपनी घुरी चालों को और अपनी कुक्रिया को स्मरण  
 ३४ करोगे और अपनी ही दृष्टि में अपनी घुराइयों और अपनी घिनितों के लिये आप  
 ३५ को घिनाओगे । प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम्हें जान पड़े कि मैं तुम्हारे कारण  
 यह नहीं करता हूँ हे इसराएल के घराने तुम अपनी अपनी चालों के लिये लजित  
 होके घबरा जाओ ।
- ३६ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस दिन मैं तुम्हारी सारी घुराइयों से तुम्हें  
 ३७ पवित्र करे हूँगा मैं तुम्हें नगरों में भी बसाऊँगा और खंडहर बनाये जायेंगे । और  
 ३८ उजाड़ देश जोते जायेंगे यद्यपि सारे जवैयों की दृष्टि में उजाड़ पड़ा था ।  
 ३९ और वे कहेंगे कि यह देश जो उजाड़ था अदन की बारी की नार्द्र हुआ है  
 और खंडहर और उजाड़ और नष्ट नगर घरे हुए और बसे हुए हैं ॥
- ४० तब अन्यदेशी जो तुम्हारी चारों ओर छोड़े गये हैं जानेंगे कि मैं परमेश्वर

विवाह का व्यवहार न घटावे । और यदि वह ये तीन उस्से न करे तो वह संत ११ से बिना दाम दिये चली जाय ॥

जो कोई किसी मनुष्य को मारे और वह मर जाय वह निश्चय घात क्रिया १२ जाय । और यदि वह मनुष्य घात में न लगा हो परन्तु ईश्वर ने उस के हाथ में १३ साँप दिया हो तब मैं तुम्हें उस के भागने का स्थान बता दूंगा । परन्तु यदि कोई १४ मनुष्य अपने परोसी पर साहस से चढ़ आवे जिसमें उसे कुल में मारे तो उसे तू मेरी यज्ञदेवी से ले जिसमें वह मारा जाय । और जो अपने पिता अथवा अपनी १५ माता को मारे वह निश्चय घात क्रिया जायगा ॥

और जो मनुष्य को चुरावे और उसे बेच डाले अथवा वह उस के हाथ में १६ पाया जाय तो वह निश्चय घात क्रिया जायगा ॥

और वह जो अपने पिता अथवा अपनी माता पर अधिकार करे निश्चय घात १७ क्रिया जायगा ॥

और यदि दो मनुष्य झगड़ें और एक दूसरे को पत्थर से अथवा मुक्का मारे १८ और वह न मरे परन्तु चिकित्से पर पड़ा रहे । तो यदि वह उठ खड़ा होय और १९ लाठी लेके चले तो जिस ने मारा सो निर्दोष ठहरेगा केवल उस के समय की घटी के लिये भर देवे और चंगा करावे ॥

और यदि कोई अपने दाम अथवा अपनी दासी को लूँधी मारे और वह मर २० खाती हुई मर जाय तो निश्चय उस का पलटा लिया जायगा । तथापि यदि वह २१ एक दिन अथवा दो दिन जीये तो उसे दण्ड न दिया जाये इस लिये कि वह उस का धन है ॥

और यदि मनुष्य झगड़ें और गर्भिणी को दुःख पहुंचावे ऐसा कि उस का गर्भ- २२ घात हो जाय परन्तु वह आप न मरे तो जिस रीति का दण्ड उस पत्नी का पति कह दिया जावे और न्यायियों के विचार के समान उसे डाँड़ देवे । और यदि २३ उसे कुछ जानि होवे तो तू प्राण की संती प्राण दे । आंग्र की संती आंग्र दांत २४ की संती दांत हाथ की संती हाथ पाँव की संती पाँव । जलाने की संती जलाना २५ घाव की संती घाव चोट की संती चोट ॥

और यदि कोई अपने दाम अथवा अपनी दासी की आंग्र में मारे कि उस की २६ आंग्र फूट जाय तो उस की आंग्र की संती में उसे ढाँड़ देवे । और यदि वह २७ अपने दाम का अथवा अपनी दासी का दांत तोड़े तो उस के दांत की संती उसे ढाँड़ देवे ॥

और यदि मनुष्य को अथवा स्त्री को बैल सींग मारे ऐसा कि वह मर जाय २८ तो वह बैल पत्थरवाह किया जाय और उस का मांस ग्याया न जावे परन्तु बैल का स्वामी निर्दोष है । और यदि वह बैल आगे में सींग मारने की वान रखता था २९ और उस के स्वामी को मंदेश दिया गया और उस ने उसे बांध न रखवा परन्तु उस ने पुरुष अथवा स्त्री को मार डाला तो बैल पत्थरवाह किया जाय और उस का स्वामी भी घात क्रिया जाय । यदि उस पर डाँड़ उठराया जाय तो ३० अपने प्राण के प्रायश्चित्त के लिये जा उस के लिये ठहराया गया हो वह देवे ।

- १५ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र  
 एक लकड़ी ले और यहूदाह के लिये और उस के संगी इसराएल के सन्तानों के  
 लिये उस पर लिख तब हमरी लकड़ी ले और यूसुफ के निमित्त इसरायम की  
 १७ लकड़ी और उस के संगी मेरे इसराएल के घराने के लिये लिख । और आपस  
 में उन्हें जोड़के एक लकड़ी कर और वे मेरे हाथ में एक हो जायेंगी ॥
- १८ और जब तेरे लोगों के सन्तान तुझ से यह कहके बोलें कि तू इस का अर्थ  
 १९ हमें न बतावेगा । तब उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं यूसुफ  
 की लकड़ी को जो इसरायम के हाथ में है लेऊंगा और उस के संगी इसराएल  
 की गोष्टियों को भी लेऊंगा और उन्हें उस के साथ अर्थात् यहूदाह की लकड़ी के  
 २० साथ रखूंगा और उन्हें एक लकड़ी बनाऊंगा और वे मेरे हाथ में एक होंगी । और  
 तू जिन लकड़ियों पर लिखेगा सो उन की आंखों के आगे तेरे हाथ में होंगी ॥
- २१ और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इसराएल के  
 सन्तानों को अन्यदेशियों में से जिधर वे गये हैं लेऊंगा और उन्हें हर एक ओर  
 २२ से बटोराऊंगा और उन्हें उन्हीं के देश में लाऊंगा । और मैं उन्हें इसराएल के देश  
 के पर्वतों पर एक जाति बनाऊंगा और एक राजा उन सभी पर राजा होगा और  
 वे फेर दो जातिमान न होंगे और वे फिर कभी दो राज्य में होके विभाग न  
 २३ होंगे । फिर वे अपनी मूर्तियों से और अपनी घिनित वस्तुन से और अपने समस्त  
 अपराधों से आप को अशुद्ध न करेंगे परन्तु मैं उन्हें उन के सारे निवासों में से  
 जिन में उन्होंने पाप किया है उन्हें कुड़ाऊंगा और उन्हें पवित्र करूंगा सो वे मेरे  
 लोग होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा ॥
- २४ और मेरा दास दाऊद उन पर राजा होगा और उन सभी का एक गढ़रिया  
 होगा और वे मेरे न्यायों पर चलेंगे और मेरी विधिनु को मानेंगे और उन्हें  
 २५ पालेंगे । और वे उस देश में बसेंगे जो मैं ने अपने दास यकूब को दिया है  
 जिस में तुम्हारे पित्रों ने वास किया और वे और उन के सन्तान और उन के  
 सन्तानों के सन्तान सर्वदा उस में वास करेंगे और मेरा दास दाऊद सदा के लिये  
 उन का राजा होगा ॥
- २६ और मैं उन से एक कुशल का नियम बांधूंगा और वह उन से एक सनातन  
 का नियम होगा और मैं उन्हें बसाऊंगा और बढ़ाऊंगा और सर्वदा अपना पवित्र-  
 २७ स्थान उन के मध्य में रखूंगा । मेरा तबू भी उन के मध्य में होगा हां मैं उन  
 २८ का ईश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे । और जब मेरा पवित्रस्थान सर्वथा उन  
 के मध्य में होगा तब अन्यदेशी जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर इसराएल को पवित्र  
 करता हूं ॥

अठतीसवां पृष्ठ ।

- १ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र  
 माजूज के देश के जूज अर्थात् रूस और मसक और तूबाल के अध्यक्ष के बिरुद्ध  
 अपना मुंह कर और उस के बिरुद्ध भविष्य कह ॥
- ३ और बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे जूज रूस और मसक और तूबाल

खंडहरों को बनाता हूं और उजाड़ों को बना हूं मुझ परमेश्वर ने कहा है और करेगा ।

प्रभु परमेश्वर यों कहता है तथापि उन के लिये यह करने को मैं इसराएल के ३७ घराने से खोजा जाऊंगा झुंड की नाईं में उन्हें मनुष्यों से बड़ाऊंगा । जैसा पवित्र ३८ यस्तु के झुंड अर्थात् उस के बड़े पर्वों में यरूशलेम के झुंड की नाईं तैसा उजाड़ नगर मनुष्यों के झुंड से भर जायेंगे और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

मैतीमदां पर्व ।

परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और मुझे परमेश्वर के आत्मा में बाहर ले १ गया और मुझे एक तराई के मध्य में उतार दिया जो हड्डियों में भरी थी । और २ मुझे उन के पास पास चारों ओर फिराया और क्या देखता हूं कि खुले चौगान में वे अति बहुत हैं और जो वे बहुत सूखी थीं ॥

और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या ये हड्डियां जी सकती हैं तब ३ मैं ने उत्तर दिया कि हे प्रभु परमेश्वर तू जानता है ।

फिर उस ने मुझ से कहा कि इन हड्डियों पर भविष्य कह और उन से बोल ४ कि हे सूखी हड्डियो परमेश्वर का बचन मुनो । प्रभु परमेश्वर इन हड्डियों से कहता ५ है कि देखो मैं तुम्हें स्वास प्रवेश कराऊंगा और तुम जीओगी । और मैं तुम पर ६ नम लाऊंगा और तुम पर सांस उभाऊंगा और तुम्हें चाम से ढांपूंगा और तुम्हें स्वास डालूंगा और तुम जीओगी और तुम जानोगी कि मैं परमेश्वर हूं ॥

सो आज्ञा के समान मैं ने भविष्य कहा और मेरे भविष्य कहते ही शब्द हुआ ७ और देख कि हड़हड़ाहट और हड्डियां एकट्ठी आईं हड्डी अपनी हड्डी के पास । और देखते ही क्या देखता हूं नम और सांस उन पर आये और चाम ने उन्हें ८ ऊपर से ढांपा परन्तु उन में स्वास न था ।

तब उस ने मुझ से कहा कि पवन से भविष्य कह हे मनुष्य के पुत्र भविष्य ९ प्रचार और पवन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे स्वास चारों पवनों से आ और इन जूके छुओं पर यह जिल्ले वे जीयें ॥

सो आज्ञा के समान मैं ने भविष्य कहा और स्वास उन में आया और वे १० जीये और एक अति बड़ी सेना अपने पांय के चल उठ खड़ी हुई ।

तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र ये हड्डियां इसराएल के सारे ११ घराने हैं देखो वे कहते हैं कि हमारी हड्डियां भुरा गईं और हमारी आशा जाती रही हम अपने अपने टिकाने से कट गये ॥

इस लिये भविष्य प्रचार और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि १२ हे मेरे लोगो देखो मैं तुम्हारी समाधि का खोलूंगा और तुम्हारी समाधि से तुम्हें बाहर निकालवाऊंगा और तुम्हें इसराएल के देश में लाऊंगा । और हे मेरे लोगो १३ जय मैं ने तुम्हारी समाधि खोली है और तुम्हें तुम्हारी समाधि से निकाल लाया हूं तब तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं । और मैं अपना आत्मा तुम्हें १४ डालूंगा और तुम जीओगी और मैं तुम्हें तुम्हारे ही देश में बसाऊंगा परमेश्वर कहता है तब तुम जानोगे कि मुझ परमेश्वर ने कहा और पूरा किया है ॥



- २० शर्यराहट होगी । यहां लों कि समुद्र की मङ्गलियां और आकाश के पंखी और  
वनपशु और पृथिवी पर के सारे रंगवैये और पृथिवी के सारे मनुष्य मेरे आगे से  
२१ भूमि पर गिरेगी । प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं उस के विरुद्ध अपने सारे  
पर्वतों में एक तलवार मंगवाऊंगा और हर एक जन की तलवार उस के भाई  
२२ के विरुद्ध होगी । और मैं उस के विरुद्ध मरी और लोहू से खिवाद करूंगा और  
मैं उस पर और उस की जथाओं पर और उस के संग के बहुत से लोगों पर  
उमड़ी हुई वृष्टि और बड़े बड़े ओले और आग और गंधक बरसाऊंगा ॥
- २३ इसी रीति से मैं अपनी महिमा करूंगा और अपने को पवित्र करूंगा और  
मैं बहुत से जातिगणों की दृष्टि में पहिचाना जाऊंगा और वे जानेंगे कि मैं  
परमेश्वर हूँ ॥

उतालीसवां पृष्ठ ।

- १ और तू हे मनुष्य के पुत्र जूज के विरुद्ध भविष्य प्रचारके कह कि प्रभु परमेश्वर  
यों कहता है कि हे जूज रुस और मसक और तूबाल के अध्यक्ष देख मैं तेरे  
२ विरुद्ध हूँ । और मैं तुझे हटा देऊंगा और केवल तेरा कूठवां भाग छोड़ूंगा और  
३ तुझे उत्तर के अलंगों से लाऊंगा और तुझे इसराएल के पर्वतों पर लाऊंगा । और  
तेरे धनुष को तेरे बायें हाथ से मार निकालूंगा और तेरे बाण को तेरे दाहिने हाथ  
४ से गिराऊंगा । तू और तेरी सारी जथा और तेरे संग के लोग इसराएल के पर्वतों  
पर गिरेगे मैं भक्षण के लिये हर प्रकार के फड़वैये पंखियों को और वनले पशुन  
५ को देऊंगा । तू खुले चौगान पर गिरेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं  
ने कहा है ॥
- ६ और मैं माजूज पर और उन पर जो टापुओं में निश्चिन्त रहते हैं एक आग  
७ भेजूंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ । यों मैं अपने पवित्र नाम को अपने इसराएल  
लोगों के मध्य में जनाऊंगा और फिर अपना नाम अशुद्ध करने न देऊंगा और अन्य-  
८ देशी जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर इसराएल में धर्ममय हूँ । प्रभु परमेश्वर कहता है  
कि देख वह आया है और हुआ है इसी दिन के विषय में मैं ने कहा है ॥
- ९ और जो इसराएल के नगरों में रहते हैं सो निकल जायेंगे और क्या ठाल क्या  
फरी क्या हथियार क्या धनुष क्या बाण क्या खरकी क्या भाले वे उन्हें सात बरस  
१० लों जलावेंगे । यहां लों कि वे खेत में से ईंधन न लावेंगे और वन में से लकड़ी  
न काटेंगे क्योंकि वे हथियारों को आग से जलावेंगे और प्रभु परमेश्वर कहता है  
कि वे अपने लुटवैयों को लूटेंगे और अपने चोरवैयों को चुरावेंगे ॥
- ११ और उस दिन ऐसा होगा कि मैं इसराएल में समुद्र की पूर्व और पश्चिमों  
की तराई में जूज को समाधिन का स्थान देऊंगा वह पश्चिमों की नाक बंद करेगा  
और वहां वे जूज को और उस की सारी मंडली को गाड़ेंगे और वे उस का नाम  
१२ जूज की मंडली की तराई रखेंगे । और देश पवित्र करने के लिये इसराएल  
१३ के घराने सात मास लों उन्हें गाड़ा करेंगे । हां देश के सारे लोग उन्हें गाड़ेंगे  
और प्रभु परमेश्वर कहता है कि जिस दिन मैं महिमा पाऊंगा सो उन के लिये

के अध्यक्ष देख में तेरे विरुद्ध हूँ । और मैं तुम्हें छटाऊंगा और तेरे गनफड़ों में कंटिया ४  
 लगाऊंगा और मैं तुम्हें और तेरी सारी सेना को छोड़ों और छोड़चढ़ों को मय के  
 मय सारे प्रकार से विभूषित अर्थात् एक बड़ी जथा ढाल और फगे के साथ सब  
 के सब खड्गधारी निकाल लाऊंगा । फारस और कूज और फूट उन के साथ मय ५  
 के सब ढाल और टोप लिये हूँ । जुस और उस की सारी जथाओं को और ६  
 उत्तर दिशा में तजरमः के घराने और उस की सारी जथाओं को और तेरे साथ  
 बहुत से लोगों को ॥

तू लैस रह और अपने लिये और अपनी सारी जथा जो तेरे पास बटुगे हैं ७  
 लैस हो और तू उन के लिये पहरा हो । बहुत दिन के पीछे तू दण्ड पा चुकेगा ८  
 और तलवार से फेर लिये गये और बहुत से लोगों में से बटोरे गये देश में इस-  
 राएल के पर्वतों के विरुद्ध जो मदा बजड़े हुए हैं तू पिकले दरसों में आवेगा परन्तु  
 यह जातिगणों से निकाला हुआ है और वे मय के मय चैन से रहेंगे । और तू ९  
 कर्तव्यगमन करके आंधी की नाई आवेगा देश को छा लेने के लिये तू और तेरी  
 सारी जथाएं और तेरे संग बहुत से लोग मेघ की नाई होंगे ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि ऐसा भी होगा कि उसी समय में बहुत सी १०  
 चिन्ता तेरे मन में आवेगी और तू कुचिन्ता करेगा । और तू कहेगा कि मैं भीत- ११  
 रहित देश के गांवों में चढ़ जाऊंगा मैं उन के पास जाऊंगा जो चैन से हैं और  
 भरोसे से रहते हैं मय के मय भीतरहित बसते हैं और न अड़ंगे न फाटक  
 रखते हैं । लूट लूटने को और अछेर अछेरने को बजाइ स्थानों पर और जातिगणों १२  
 में से बटुरे हुए लोगों पर जिन्होंने ठोर और संपत्ति प्राप्त किया है जो पृथिवी  
 के मध्य में रहते हैं अपना हाथ फेरो । सियः और ददान और तरसीस के वैपारी १३  
 उस के सारे तरुण मिष्ट महित तुम्ह से कहेंगे कि क्या तू लूट लेने आया है क्या  
 तू अछेर लेने को मोना चांदी लेने को और ठोर और संपत्ति और बड़ी लूट लेने  
 का क्या तू ने अपनी जथा बटोरी है ॥

इस लिये हे मनुष्य के पुत्र जूज मे भविष्य कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता १४  
 है जय कि मेरे इसराएल लोग चैन से रहेंगे क्या तू न जानेगा । और तू उत्तर १५  
 दिशा में से अपने स्थान में और तेरे संग बहुत से लोग सब के सब छोड़ों पर चढ़े  
 हुए एक बड़ी जथा और एक सामर्थ्य सेना आवेगी । और देश को छा लेने को तू १६  
 मेघ की नाई मेरे इसराएल लोगों के विरुद्ध उठ आवेगा यह पिकले दिनों में  
 होगा और मैं तुम्हें अपने देश में लाऊंगा जिम्मे हे जूज जब मैं तेरी आंखों के  
 आगे तुम्हें पवित्र हूंगा तो अन्यदेशी मुझे पहिचानेंगे ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि क्या तू बटोरी है जिस के विषय में मैं ने पुरातन १७  
 समय से अपने सेवक इसराएल के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा से कहा है जिन्होंने उन  
 दिनों और वरसों में भविष्य कहा कि मैं तुम्हें उन के विरुद्ध लाऊंगा । और प्रभु १८  
 परमेश्वर यों कहता है कि जब जूज इसराएल के देश के विरुद्ध आवेगा उसी  
 समय यों होगा कि मेरा मुँह कोपित होगा । क्योंकि अपनी भूल में और अपने १९  
 कोप की आग में मैं ने कहा है निश्चय उस दिन इसराएल के देश में एक बड़ी

में नगर के लिये जाने के चौदहवें वरस के उसी दिन परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और मुझे वहाँ पहुँचाया । ईश्वरीय दर्शनों में उस ने मुझे इसराएल के देश में पहुँचाया और मुझे एक अति ऊँचे पर्यंत पर बैठाया जिस के दक्खिन और एक नगर का छाँचा था ॥

३ और उस ने मुझे वहाँ पहुँचाया और क्या देखता हूँ कि सन की डोरी और नापने का नल हाथ में लिये हुए एक पुरुष फाटक पर खड़ा है जो पीतल की नाईं दिग्दर्श देता था ।

४ और उस मनुष्य ने मुझ से कहा कि ते मनुष्य के पत्र अपनी आंखों से देख और अपने कानों से सुन और मथ ले । मैं तुझे दिग्दर्श उन पर मन लगा क्योंकि तुझे दिग्दर्शने का मैं तुझे वहाँ नाया हूँ मथ जो तू देखता है इसराएल के घराने का वहाँ ॥

५ और क्या देखता हूँ कि घर के बाहर बाहर चारों ओर एक भीत एक हाथ चार आंगन के हाथ से छः हाथ का नापने का एक नल छट मनुष्य लिये हुए था सो उस ने उस घनाघट की चौड़ाई को नापा एक नल और ऊँचाई एक नल ॥

६ तब वह पूरुष अलंग के फाटक पर आया और उस की मीठी पर चढ़ा और उस फाटक की देहली एक नल चौड़ी नापी और दूसरी देहली एक नल चौड़ी ।

७ और घर एक छोटी कोठरी एक एक नल लम्बी और एक एक नल चौड़ी और छोटी कोठरियों के मध्य पाँच पाँच हाथ और उसारे के फाटक की देहली भीतर

८ भीतर एक नल । और उस ने उसारे का फाटक भी एक नल नापा । तब उस ने फाटक के उसारे का आठ हाथ नापा और उस के खंभे दो हाथ और

१० फाटक का उसारा भीतर था । और पूरुष और के फाटक की छोटी कोठरियाँ तीन इधर तीन उधर थीं उन तीनों का एक ही नाप था और इधर उधर

११ खंभों का एक ही नाप था । और उस ने फाटक के प्रवेशस्थान की चौड़ाई दस हाथ और लम्बाई तेरह हाथ नापी । और छोटी कोठरियों के आगे का अन्त

हाथ भर इधर हाथ भर उधर और छोटी कोठरी कोठरियाँ छः हाथ इधर और

१३ छः हाथ उधर थीं । तब उस ने फाटक की छोटी कोठरी की छत से दूसरी कोठरी लें नापा उस की चौड़ाई पचीस हाथ थी द्वार के सामे द्वार । और उस

१४ ने फाटक की चारों ओर आंगन के खंभे लें साठ हाथ खंभे भी बनाये । और प्रवेश के फाटक के आगे से भीतर के फाटक के आंगन लें पचास हाथ । और छोटी कोठरी कोठरियों की और फाटक के भीतर के खंभों की चारों ओर खिड़कियाँ थीं और उसारे की भी और भीतर भीतर चारों ओर खिड़कियाँ थीं और हर एक खंभे पर ताड़पेड़ थे ॥

१७ फिर उस ने मुझे बाहर के आंगन में पहुँचाया और क्या देखता हूँ कि कोठरियाँ और चारों ओर आंगन के लिये गच थी और उस गच पर तीस कोठरियाँ ।

१८ और फाटकों की लम्बाई के सामे फाटकों के लग की गच नीचे की गच थी ।

१९ तब उस ने नीचे के फाटक के सामे से भीतर के आंगन के सामे लें पूरुष और और उत्तर और बाहर बाहर चौड़ाई सौ हाथ नापी ॥

२० फिर उस ने उत्तर के बाहरी आंगन के फाटक की लम्बाई और चौड़ाई

कीर्तिमान होगा। और वे निरंतर कार्यकारी मनुष्यों को चुन लेंगे जो भूमि पर १४ के बचे हुए पशियों के संग जुद्ध करने का गाड़ने के लिये आरंभ कर लेंगे और सात मास के पीछे वे हटेंगे। और जब देश में के जवैये पशिक किसी मनुष्य १५ के हाड़ देखेंगे तब वह उस के लग एक चिन्ह खड़ा करेगा जब लो गढ़वैये उसे जूज की मंडली की तराई में न गाड़ें। और उस नगर का नाम मंडली भी होगा १६ और उस रीति से वे देश को पवित्र करेंगे।

और हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू सारे पंडितों से और १७ उन के हर एक पशुन से कह कि सकट्टे हो और आओ चारों ओर से जो बलि में तुम्हारे लिये करता हूं उस बलि के लिये एकट्टे होओ अर्थात् इसराएल के पर्वतों पर एक बड़ा बलि जिससे तुम लोग मांस खाओ और लोहू पीओ। तुम १८ लोग वीरों का और पृथिवी के अध्यक्षों का और दमन के पने हुए मैदों का और मैदों का और बड़ी बकरियों का और बैलों का मांस खाओ और लोहू पीओ। और तुम लोग चिकनाई से तृप्त होने लो खाओगे और मेरे बलि का १९ लोहू जो मैं ने तुम्हारे लिये बलि किया है सतबाने होने लो पीओगे। और प्रभु २० परमेश्वर यों कहता है कि इस रीति से तुम मेरे संच पर छोड़ों से और रथों से और बलवत मनुष्यों से और सारे लड़ाकों से तृप्त होओगे।

और मैं अपना विभव अन्यदेशियों में स्थापन करूंगा और मेरे न्यायदण्ड को २१ और मेरा हाथ जो मैं ने उन पर धरा है सारे अन्यदेशी देखेंगे। सो इसराएल के २२ घराने उस दिन से आगे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन्हीं का ईश्वर हूं। और अन्य- २३ देशी जानेंगे कि इसराएल के घराने अपने अधर्म के लिये बंधुआई में चले गये क्योंकि उन्हीं ने मेरे विरुद्ध अपराध किया है इस लिये मैं ने अपना मुंह उन से छिपा लिया और उन्हीं उन के वैरियों के हाथ सौंप दिया सो वे मृत तलवार से मारे गये। उन की अपवित्रता के और उन के अपराधों के समान मैं ने उन २४ से किया है और अपना मुंह उन की दृष्टि से छिपाया है।

इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अब मैं यश्कूब की बंधुआई को २५ फेर लाऊंगा और इसराएल के सारे घराने पर दया करूंगा और अपने पवित्र नाम के लिये झूल लाऊंगा। और वे अपनी लाज का बोझ उठायेंगे और अपने ममत्ता २६ अपराध का जो उन्हीं ने मेरे विरुद्ध किया जब वे चैन से अपने देश में रहेंगे और कोई डरवैया न होगा।

जब मैं उन्हीं लोगों में से फेर लाऊंगा और उन के वैरियों के देशों में से उन्हीं २७ बढाऊंगा और बहुत देशगणों की दृष्टि में मैं उन में पवित्र किया जाऊंगा। तब वे २८ जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर उन का ईश्वर हूं जिस ने उन्हीं अन्यदेशियों में बंधुआई में पहुंचाया परन्तु मैं ने उन्हीं उन्हीं के देश में एकट्टा किया और वहां फिर उन में से किसी को न छोड़ा। और मैं अपने मुंह को उन से फिर न छिपाऊंगा क्योंकि २९ प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ने इसराएल के घराने पर अपना आत्मा उंडेला है॥

चालीसवां पृष्ठ।

हमारी बंधुआई के पचीसवें वरस में वरस के आरंभ के मास की दसवीं तिथि १

४१ ये और फाटक के उसारे के दूसरे अलंग दो मंच थे । फाटक के लग इस अलंग चार मंच और उस अलंग चार मंच थे आठ मंच जिन पर वे बलि करते थे ।  
 ४२ और बलिदान की भेंट के लिये खोदे हुए पत्थर के डेढ़ हाथ लम्बे और डेढ़ हाथ चौड़े और हाथ भर ऊंचे चार मंच थे जिन पर वे बलिदान की भेंट और बलि  
 ४३ के दण्डियार धरते थे । और उन के भीतर भीतर चार अंगुल चौड़ी अंकुरियां चारों ओर लगी थीं और मंचों पर भेंट का सांस था ॥

४४ और भीतर के फाटक के बाहर भीतर के आंगन में जो उत्तर फाटक के अलंग में थीं गायकों की कोठरियां थीं और उन का मुंह दक्खिन की ओर और  
 ४५ पूरव फाटक के अलंग एक जिस का मुंह उत्तर की ओर । तब उस ने मुझ से कहा कि यही दक्खिन और के मुंह की कोठरी घर के रखवाल यात्रकों के  
 ४६ लिये है । और उत्तर और के मुंह की कोठरी यज्ञवेदी के रखवाल यात्रकों के लिये है ये सादूक के घेरे लावियों के घेटों में हैं जो सेवा के लिये परमेश्वर के पास आते हैं ॥

४७ सो उस ने आंगन को सौ हाथ लम्बा नापा और सौ हाथ चौड़ा चौकोर और घर के आगे की वेदी ॥

४८ फिर वह मुझे घर के उनारे में लाया और उसारे के खंभे को नापा पांच हाथ इधर और पांच हाथ उधर और फाटक की चौड़ाई इधर उधर तीन तीन  
 ४९ हाथ । उसारे की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ और उस की चौड़ाई की सीढ़ी पर से मुझे लाया और खंभों के इधर उधर खंभे थे ॥

एकतालीसवां पर्व ।

१ उस के पीछे वह मुझे मन्दिर में लाया और खंभों को नापा तंबू की चौड़ाई  
 २ एक और छः हाथ और दूसरी ओर छः हाथ । और पैठ की चौड़ाई दस हाथ और द्वार के अलंग एक और पांच हाथ और दूसरी ओर पांच हाथ और उस ने उस की लम्बाई को चालीस हाथ नापा और उस की चौड़ाई बीस हाथ ॥

३ तब उस ने भीतर जाके द्वार के खंभे को दो हाथ नापा और द्वार छः हाथ  
 ४ और द्वार की चौड़ाई सात हाथ । वैसा उस ने उस की लम्बाई को बीस हाथ और मन्दिर के सामने की चौड़ाई को बीस हाथ नापा तब उस ने मुझ से कहा कि यही अति पवित्रस्थान है ॥

५ तब उस ने घर की भीत छः हाथ नापी और अलंग की कोठरी की चौड़ाई  
 ६ घर की चारों ओर हर एक अलंग चार हाथ । और अलंग की कोठरियां तीन थीं कोठरी पर कोठरी पांती में तीस और वे भीत के भीतर भीतर थीं जो घर के आसपास के अलंग की कोठरियों के लिये थीं जिस्तें वे दृढ़ होवें परन्तु घर  
 ७ की भीत से वे मिली हुई न थीं । और वह अधिक चौड़ा किया गया था और घेरा ऊपर की आसपास की कोठरी लों था क्योंकि घर का घेरा ऊपर ऊपर घर की चारों ओर इस लिये घर की चौड़ाई ऊपर अधिक थी और नीचे से लेके  
 ८ मध्य से ऊपर लों बढ़ गई । और मैं ने घर की चारों ओर की ऊंचाई भी देखी अलंगों की कोठरियों की नेत्र छः बड़े बड़े हाथ के पूरे नल की थी ॥

नापी । और उस की छोटी कोठरियां तीन इस अलंग तीन उस अलंग थीं और उस २१ के खंभे और उस के उसारे पहिले फाटक के नाप के समान थे उस की लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पचीस हाथ । और उन की खिड़कियां और उन के उसारे और २२ उन के ताड़पेड़ पृथ्व और के फाटक के नाप के समान थे और मात सीढ़ियां पर से उस पर चढ़ते थे और उस के उसारे उस के आगे थे । और भीतर के आंगन का २३ फाटक पूरव और के और उत्तर और के फाटक के सामे था और फाटक से फाटक सौ हाथ के नाप का ॥

तब उस ने मुझे दक्खिन की ओर पहुंचाया और क्या देखता हूं कि दक्खिन २४ की ओर एक फाटक और उस ने उस के खंभे और उस के उसारे इन नापों के समान नापे । और उस में और उस के उसारे में चारों ओर उन खिड़कियों की २५ नाईं खिड़कियां थीं लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पचीस हाथ । और उस पर २६ चढ़ने का मात सीढ़ियां थीं और उस के उसारे उन के आगे थे और उस के खंभों पर ताड़पेड़ थे एक इस अलंग और एक उस अलंग । और भीतर के आंगन की २७ दक्खिन और एक फाटक था और उस ने फाटक से फाटक लौ दक्खिन और सौ हाथ नाप ॥

और वह दक्खिन फाटक से मुझे भीतर के आंगन में लाया और इन के नाप २८ के समान उस ने दक्खिन के फाटक का नाप । और उस की छोटी कोठरियां २९ और उस के खंभे और उस के उसारे इन नापों के समान थे और उस में और उस के उसारे में चारों ओर खिड़कियां थीं वह पचास हाथ लम्बा और पचीस हाथ चौड़ा । और उसारे चारों ओर पचीस हाथ लम्बा और पांच हाथ चौड़ा । और ३० उस के उसारे बाहर के आंगन की ओर थे और उस के खंभों पर ताड़पेड़ और उस की चढ़ाई की आठ सीढ़ियां थीं ॥

और वह मुझे पृथ्व और भीतर के आंगन में लाया और इन नापों के समान ३२ फाटक नाप । और उस की छोटी कोठरियां और खंभे और उसारे इन नापों के ३३ समान थे और उस में और उस के उसारे में चारों ओर खिड़कियां थीं वह पचास हाथ लम्बा और पचीस हाथ चौड़ा । और उस के उसारे बाहर के आंगन की ३४ ओर थे और उस के खंभे के ऊपर इधर उधर ताड़पेड़ और उस की चढ़ाई आठ सीढ़ी की थी ॥

और उस ने मुझे उत्तर के फाटक की ओर पहुंचाया और इन नापों के समान ३५ उसे नाप । उस की छोटी छोटी कोठरियां और उस के खंभे और उस के उसारे ३६ और उस की चारों ओर की खिड़कियां लम्बाई में पचास हाथ और चौड़ाई में पचीस हाथ । और उस के खंभे बाहर के आंगन की ओर थे और इधर उधर उस ३७ के खंभों पर ताड़पेड़ थे और उस की चढ़ाई आठ सीढ़ी की थी ॥

और कोठरियां और उन की पैठ उन के फाटकों के खंभे के लग थीं जहां वे ३८ बलिदान की भेंट छोते थे । और फाटक के उसारे में बलिदान की भेंट और पाप ३९ की भेंट और अपराध की भेंट बलि करने का दो मंच इस अलंग दो मंच उस अलंग थे । और बाहर के अलंग उत्तर फाटक की पैठ को जाते जाते दो मंच ४०



४ गच के आगे तेहरे ऊपरी उसारे थे । और कोठरियों के सामे भीतर भीतर दस हाथ का चौड़ा एक मार्ग एक हाथ का एक पथ और उन के द्वार उत्तर और ५ थे । और ऊपरी कोठरियां उन से कोटी कोटी थीं क्योंकि ऊपरी उसारे इन्हीं से ६ और नीचे से और जोड़ाई के बीच में से जंचे थे । क्योंकि वे तेहरे थे परन्तु आंगनों के खंभों की नाईं उन के खंभे न थे इस लिये जोड़ाई नीचे भूमि से और मध्य से सकेत थी ॥

७ और कोठरियों के आगे के बाहरी आंगन की और ऊपर की कोठरी के आगे ८ बाहर की भीत पचास हाथ लम्बी थी । क्योंकि बाहरी आंगन की कोठरियों की लम्बाई पचास हाथ थी और देखा कि मन्दिर के सामे सौ हाथ ॥

९ और बाहरी आंगन से जाने में उन कोठरियों में प्रवेश करने को पूरब और उन १० के नीचे पैठ थी । अलग स्थान के सामे और जोड़ाई के सामे कोठरियां पूरब और के ११ आंगन की भीत की मोटाई थीं । और उन के आगे का मार्ग उत्तर और की कोठरियों का सा दिखाई देता था जो उन के समान लम्बा चौड़ा और उन के सारे १२ निकास उन के डौल और उन के द्वारों के समान थे । और दक्खिन की कोठरी के द्वारों के समान मार्ग के सिरे पर एक द्वार अर्थात् पूरब और की भीत के सामे उन में जाने के मार्गों में एक द्वार था ॥

१३ तब उस ने मुझ से कहा कि उत्तर की कोठरियां और दक्खिन की कोठरियां जो अलग स्थान के आगे हैं पवित्र कोठरियां हैं जहां याज्ञक जो परमेश्वर के पास जाते हैं अति पवित्र वस्तु खायेंगे वे वहां अति पवित्र वस्तु और भोजन की भेंट १४ और पाप की भेंट और अपराध की भेंट धरेंगे क्योंकि वह स्थान पवित्र है । जब याज्ञक उस में प्रवेश करें तब वे बाहरी आंगन में पवित्रस्थान से न जायें परन्तु वे अपनी सेवा के वस्तु वहीं रखें इस लिये कि वे पवित्र हैं और वे दूसरा वस्तु पहिने और लोगों के लिये पास जावें ॥

१५ सो जब वह भीतर के घर को नाप चुका तो मुझे उस फाटक की ओर लाया १६ जिस का रुख पूरब और है और उसे चारों ओर नापा । उस ने नापने के नल से १७ पूरब अलंग पांच सौ नल चारों ओर नापे । उस ने नापने के नल से उत्तर अलंग १८ चारों ओर पांच सौ नल नापे । उस ने नापने के नल से दक्खिन अलंग पांच सौ १९ नल नापे । उस ने पच्छिम ओर लौटके नापने के नल से पांच सौ नल नापे । २० उस ने उस के चारों अलंग नापे उस की चारों ओर एक भीत पांच सौ नल लम्बी और पांच सौ चौड़ी थी जिस्ते पवित्रस्थान को सामान्य स्थान से अलग करें ॥

तैत्तलीसखां पर्व ।

१ और उस ने मुझे फाटक पर पहुंचाया अर्थात् पूरब मुंह के फाटक पर । और का देखता हूं कि इसराएल के ईश्वर का तेज पूरब और से आया और उस का शब्द ३ बहुत पानियों के शब्द की नाईं और उस के तेज से पृथिवी चमक उठी । और वह मेरे देखे हुए दर्शन की नाईं था अर्थात् मेरे देखे हुए उस दर्शन की नाईं जब मैं नगर को नाश करने को आया और दर्शन उस दर्शन की नाईं थे जो मैं ने किशोर ४ नदी के लग देखे थे और मैं औंधे मुंह गिरा । और पूरब मुंह के फाटक की ओर

बाहर की कोठरी के अलग के निमित्त भीत की चौड़ाई पांच हाथ और छटा ९  
हुआ स्थान भीतर के अलग की कोठरियों के लिये था । और कोठरियों के बीच १०  
में घर के दर एक अलग चारों ओर बीस हाथ की चौड़ाई । और अलग की ११  
कोठरियों के द्वार छूटे हुए स्थान की ओर थे एक द्वार उत्तर ओर और एक द्वार  
दक्षिण ओर और छूटे हुए स्थान की चौड़ाई चारों ओर पांच हाथ की थी ॥

अब पच्छिम ओर अन्त में अलग स्थान के आगे की चौड़ाई मत्तर हाथ १२  
चौड़ी थी और चौड़ाई की भीत चारों ओर पांच हाथ मोटी और उस की  
लम्बाई नव्वे हाथ थी । सो उस ने घर का मो हाथ लम्बा नापा और अलग १३  
स्थान और चौड़ाई उस की भीत मन्दि में मो हाथ लम्बी । और घर के मुँह की १४  
भी चौड़ाई पृथ्वी ओर के अलग स्थान की मो हाथ ॥

और पीछे के अलग स्थान के सामने चौड़ाई की लम्बाई को और ऊपर के १५  
इस अलग और उस अलग के उमारे की भीत के मन्दिर और आंगन के उमारे  
समेत उस ने मो हाथ नापे । द्वार के उत्तर ओर सकेत गिड़कियाँ और द्वार के १६  
सामने की तीनों अटारियों पर चारों ओर के उमारे लकड़ी से चारों ओर मटे  
हुए थे और भूमि से गिड़कियाँ ताँई और गिड़कियाँ ठाँपी हुई थीं । द्वार के १७  
ऊपर लों अर्थात् घर के भीतर और बाहर लों चारों ओर की मारी भीतों के  
लग बाहर भीतर नाप नापके ठंपी हुई थीं ॥

और करोवियों से और ताड़पेड़ों से बना था ऐसा कि एक ताड़पेड़ एक एक १८  
कदम के बीच में था और दर एक कदम के दो दो मुँह थे । ऐसा कि एक अलग १९  
ताड़पेड़ की ओर मनुष्य का मुँह था और दूसरे अलग ताड़पेड़ की ओर युवा  
मिन्द का मुँह घर की चारों ओर ऐसा बना था । भूमि से द्वार के ऊपर लों और २०  
मन्दिर की भीत पर करोवीस और ताड़पेड़ बने थे । मन्दिर का खंभा और २१  
पवित्रस्थान के रख चारस लिये गये थे एक दूसरे के समान दिखाई देता था ॥

काठ की पेदी तीन हाथ जंत्री और उस की लम्बाई दो हाथ और उस के २२  
काने और उस की लम्बाई और उस की भीत काठ की थी और उस ने सुक्त से  
कहा कि यह परमेश्वर के आगे का मंच है ॥

और मन्दिर और पवित्रस्थान के दो द्वार थे । और एक एक द्वार के दो दो २३  
घूमने के पाठ थे एक द्वार के लिये दो पाठ और दूसरे के लिये दो । और जैसे २४  
भीतों पर बने थे तैसे मन्दिर के द्वारों पर करोवीस और ताड़पेड़ बने थे और  
बाहर के उमारे के रख पर मोटी मोटी मिल्हियाँ थीं । और उमारे के अलंगों २५  
पर और घर के अलंगों की कोठरियों पर और मोटी मोटी मिल्हियों पर इस  
अलंग और उस अलंग सकेत सकेत गिड़कियाँ और ताड़पेड़ थे ॥

वयालीमवां पर्व-।

फिर वह मुझे बाहरी आंगन में उत्तर के मार्ग पर लाया और वह मुझे अलग १  
स्थान के मनुष्य की कोठरी में जो उत्तर ओर की चौड़ाई के आगे थी  
पहुँचाया । मो हाथ लम्बाई के आगे उत्तर का द्वार था और उस की चौड़ाई २  
पचास हाथ । भीतर के आंगन के लिये बीस हाथ और बाहर के आंगन के लिये ३

३१ चाहे उस ने सींग से पुत्र को मारा हो अथवा पुत्री को इसी आज्ञा के समान  
 ३२ उस के लिये विचार किया जाये । यदि किसी के दास अथवा दासी को बैल  
 सींग मार बैठे तो वह उस के स्वामी को तीस शैकल रूपा देवे और वह बैल  
 पत्थर खाह किया जाय ॥

३३ और यदि कोई गड़हा खोले अथवा खोदे और उस का मुंह न ढांपे और बैल  
 ३४ अथवा गदहा उस में गिरे । तो उस गड़हे का स्वामी उसे भर देवे और उन  
 के स्वामी को दाम दे और लोथ उस की होगी ॥

३५ और यदि किसी का बैल दूसरे के बैल को संतावे ऐसा कि वह मर जाय तो  
 वह जीते बैल को वेचे और उस के दाम को आधोआध आपुस में बांट लें  
 ३६ और वह मरा हुआ भी उन में आधोआध बांटा जाय । और यदि जाना जाय  
 कि उस बैल को सींग मार बैठने की बान थी और उस के स्वामी ने उसे बांध  
 न रक्खा तो वह निश्चय बैल की संती बैल देवे और मरा हुआ उस का होगा ॥

३७ यदि कोई बैल अथवा भेड़ चुरावे और उसे मारे अथवा वेचे तो वह एक  
 बैल के पांच बैल और एक भेड़ की चार भेड़ें देगा ॥

बाईसवां पृष्ठ ।

१ यदि चोर संध मारते हुए पाया जाय और कोई उसे मार डाले तो उस की  
 २ संती लोहू न बहाया जायगा । यदि सूर्य उस पर उदय होवे तो उस की संती  
 लोहू बहाया जायगा उचित था कि वह उसे भर देता यदि वह कंगाल हो तो  
 ३ अपनी चोरी के लिये बेचा जायगा । यदि चोरी की वस्तु निश्चय उस के हाथ  
 में जीवत पाई जाय चाहे बैल हो चाहे गदहा चाहे भेड़ बकरी तो वह दूना  
 देगा ॥

४ यदि कोई खेत अथवा दाख की बारी खिलावे और अपने पशु उस में छोड़े  
 और दूसरे के खेत में चरावे तो अपना अच्छे से अच्छा खेत और सुंदर से सुंदर  
 ५ दाख की बारी उस की संती देगा । यदि आग फूट निकले और कांटे में जा  
 लगे ऐसा कि अनाज के ढेर अथवा बड़ा हुआ अन्न अथवा खेत जल जाय तो  
 जिस ने आग बारी निश्चय वह भर देगा ॥

६ यदि कोई अपने परोसी को रूपा अथवा पात्र रखने को सौंपे और उस के घर  
 ७ से चोरी जाय तो जब वह चोर हाथ लगे तो वह दूना भर देगा । यदि चोर  
 पकड़ा न जाय तो उस घर का स्वामी न्यायियों के आगे लाया जाय जिसमें जाना  
 जाय कि उस ने अपने परोसी की संपत्ति पर अपना हाथ बढ़ाया कि नहीं ।  
 ८ समस्त प्रकार के अपराध में चाहे बैल चाहे गदहे चाहे भेड़ चाहे कपड़े चाहे  
 किसी खोई हुई वस्तु को जिसे दूसरा अपनी कहता है दोनों की बात न्यायियों  
 के पास लाई जावे और जिस को न्यायी दोषी ठहरावे वह अपने परोसी को  
 दूना देगा ॥

यदि कोई अपने परोसी पास गदहा अथवा बैल अथवा भेड़ अथवा कोई  
 पशु थाती रखे और वह मर जाय अथवा अंग भंग हो जाय अथवा हांका जाय  
 १० और कोई न देखे । तो उन दोनों के मध्य में परमेश्वर की किरिया लिई जाय

से परमेश्वर का तेज घर में आया । और आत्मा ने मुझे उठाके भीतरी आंगन ५ में पहुँचाया और वहाँ देखना हूँ कि परमेश्वर के तेज में घर भर गया । और ६ घर के भीतर से मैं ने उस को अपने से कहते सुना और वह मनुष्य मेरे पास खड़ा था ॥

और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र इसरायल का घराना उन के ७ राजा अपने छिनालपन से अपने ऊँचे स्थानों में अपने राजा की लोचों में मेरे मित्रा-सन के स्थान और पाँच के तालवे के स्थान को जहाँ मैं इसरायल के मुन्तानों के मध्य में सदा बान कहेगा और मेरे पवित्र नाम को फिर अशुद्ध न करेंगे । उन्हीं ८ ने अपनी डेढ़री का मेरी डेढ़रियों के लग और अपने खंभे मेरे खंभों के लग खड़े करने से और मेरे और उन के बीच में भीत खड़ी करने से अपनी छिन्नित क्रिया से मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध किया है इस लिये मैं ने अपनी गिम में उन्हें नष्ट किया । अब वे अपने छिनालपन को और अपने राजाओं की लोचों को मुझ से ९ दूर करें और मैं सर्वदा उन के मध्य में बान कहेगा ।

हे मनुष्य के पुत्र इसरायल के घराने को वह घर दिखा जिन्हीं वे अपनी १० घुराइयों से लजायें और उस के अन्त को नापें । और यदि वे अपने सारे किये ११ हुए कार्य से लजायें तो उन्हें घर का डौल और उस का रूप और उस के बाहर भीतर आना जाना और उस की सारी विधि और उस का सारा डौल और उस की सारी व्यवस्था दिखा और उसे उन की दृष्टि में लिये जिन्हीं वे उस के सारे डौल को और उस की सारी विधिन को पालन करें और उन्हें मानें ॥

घर की व्यवस्था यही है पर्वत की चोटी पर उस के चारों ओर सारे भिचाने १२ अति पवित्र होंगे देख घर की व्यवस्था यही है ॥

और वेदी का नाप दाय के समान यह है दाय एक दाय चार अंगुल का १३ अर्थात् उस के दोहों वंच एक दाय और उस की चौड़ाई एक दाय और उस के कोर चारों ओर चिता भर के और वेदी के ऊपर का स्थान यह होगा । और १४ भूमि पर से नीचे के ठहर लों दो दाय और उस की चौड़ाई दाय भर और छोटी ठहर से बड़ी ठहर लों चार दाय और चौड़ाई दाय भर । इसी रीति से वेदी १५ चार दाय होगी और वेदी के ऊपर चार सींगें होंगी । और वेदी बारह दाय १६ लम्बी और बारह चौड़ी चौकोर होगी । और ठहर चौदह दाय लम्बा और १७ चौदह चौड़ा चौकोर और उस का कोर आधा दाय और उस की पेंदी दाय भर और उस की सीढ़ी पूर्व और होगी ॥

और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर यों कहता है १८ कि जब कि उन पर बलिदान की भेंट चढ़ाने को और लोहू छिड़कने को उसे यनावेंगे तो वेदी की यह विधि होगी । और प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू १९ याज्ञक लावियों को जो सादूक के वंश के हों जो मेरी सेवा के लिये पास आते हैं पाप की भेंट के लिये एक बछड़ा देना । और उस में का लोहू लेना २० और वेदी के चारों सींगों पर और ठहर के चारों कोनों पर और चारों ओर के कोर पर लगाना इस रीति से उसे पावन और शुद्ध करना । तू पाप की भेंट के २१

वैन को भी लेना और यह उसे पवित्रस्थान के बाहर घर के ठहराये हुए स्थान  
 २२ में जलावे । और दूसरे दिन पाप की भेंट के लिये निष्य वकरियों का एक मेला  
 २३ चढ़ाना और जैसा उन्होंने ने वेदी को वैन से शुद्ध किया तैसा उसे अशुद्ध करें । अब  
 तू उसे पवित्र कर चुके तब निष्य बड़ड़ा और निष्य भुंड में का एक भेंडा  
 २४ चढ़ाना । और तू उन्हें परमेश्वर के आगे चढ़ा और याजक उन पर लोन ढिड़के  
 २५ और वे उन्हें बलिदान की भेंट के लिये परमेश्वर के निमित्त चढ़ावे । तू सात  
 दिन लों प्रतिदिन पाप का भेंट के लिये एक एक वकरी सिद्ध करना और वे एक  
 २६ निर्दोष बड़ड़ा और भुंड में से एक निष्य वकरा भी सिद्ध करें । वे सात दिन  
 २७ लों वेदी को पावन और शुद्ध करें और आप को पवित्र करें । और जब ये दिन  
 बीतें तब ऐसा होगा कि आठवें दिन और आगे याजक तुम्हारे बलिदान की भेंट  
 और कुशल की भेंट वेदी पर चढ़ावे और प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हें  
 ग्रहण करूँगा ॥

### चवालीसवां पर्व ।

१ तब यह मुझे पूर्य और के बाहर के पवित्रस्थान के फाटक पर लाया और  
 २ यह बंद था । तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि यह फाटक बंद रहे यह न  
 खोला जाये और न कोई इस में से प्रवेश करे क्योंकि परमेश्वर इसराएल का  
 ३ ईश्वर इस में से भीतर गया है इस लिये यह बंद रहेगा । यह राजा के लिये है  
 परमेश्वर के आगे भोजन करने के निमित्त राजा उस में बैठेगा और यह उस  
 फाटक के ओसारे के ओर से भीतर जायेगा और उस में से बाहर आयेगा ।  
 ४ तब यह घर के आगे के उत्तर फाटक की ओर से मुझे लाया और मैं ने  
 देखा तो क्या देखता हूँ कि परमेश्वर के तेज से परमेश्वर का मन्दिर भर गया  
 ५ और मैं आँधे मुंह गिरा । और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र  
 जो कुछ मैं तुम्हें परमेश्वर के मन्दिर की सारी विधिन के और सारी व्यवस्था के  
 विषय में कहूँ तू उन पर अपना मन लगा और अपनी आँखों से देख और अपने  
 कानों से सुन रख और मन्दिर की पैठ को और पवित्रस्थान के हर एक निकास  
 ६ को चीन्ह रख । और इसराएल के इस दंगड़त घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर  
 यों कहता है कि हे इसराएल के घराने तुम्हारी सारी धिनित क्रिया तुम्हारे लिये  
 ७ बस हैं । इस बात में कि तुम मेरे पवित्रस्थान में मेरे घर को अशुद्ध करने को  
 मन के अखतनः और मांस के अखतनः उपरियों को लाये हो जब कि तुम लोग  
 मेरी रोटी और चिकनाई और लोहू चढ़ाते हो और उन्होंने ने मेरे नियम को अपने  
 ८ सारे धिनित कार्यों से भंग किया है । और तुम ने मेरी पवित्र वस्तुन की रक्षा न  
 किई परन्तु अपने लिये मेरे पवित्रस्थान में रखवालों को ठहराया है ॥  
 ९ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि कोई परदेशी मन का अखतनः और मांस  
 का अखतनः कोई किसी परदेशी में से जो इसराएल के सन्तानों में का है मेरे  
 १० पवित्रस्थान में प्रवेश न करेंगे । और जब कि इसराएल भटक गये जो मुझ से  
 अपनी मूर्तिन के पीछे भटक गये जो लावी मुझ से दूर गये हैं वे अपने अधर्म  
 ११ को भोगेंगे । तथापि वे घर के फाटक पर रखवाली और घर की सेवा करें

मैं मेरे पवित्रस्थान के सेवक होंगे वे लोगों के लिये बलिदान की भेंट और बलि का बधन करेंगे और उन की सेवा करने के लिये उन के आगे खड़े होंगे । प्रभु १२ परमेश्वर कहता है इस कारण कि उन्होंने ने उन की मूर्तिन के आगे उन की सेवा किई और इसराएल के घराने के अधर्म के लिये एक टोकर घे इस लिये मैं ने अपना हाथ उन के विरुद्ध उठाया है और वे अपने अधर्म भोगेंगे । और १३ मेरे लिये याज्ञक के पद की सेवा करने को वे पास न आवें और अति पवित्रस्थान में मेरी किसी पवित्र वस्तु के पास न आवें परन्तु वे अपनी लाज और अपनी घिनित क्रिया भोगेंगे । परन्तु घर की सारी सेवा के लिये और उस में के सारे १४ कार्य के लिये मैं उन्हें उस का रखवाल बनाऊंगा ॥

परन्तु जब कि इसराएल के सन्तान मुझ से भटक गये तब सादूक के बेटे १५ याज्ञक लावी जो पवित्रस्थान की रक्षा करते थे वे सेवा के लिये मेरे पास आवेंगे प्रभु परमेश्वर कहता है कि चिकनाई और लोहू चढ़ाने को वे मेरे आगे खड़े होंगे । वे मेरे पवित्रस्थान में प्रवेश करेंगे और वे मेरी सेवा करने को मेरे मंच १६ पर आवेंगे और मेरी आज्ञा की रक्षा करेंगे । और जब वे भीतर के आंगन के १७ फाटकों में प्रवेश करें तब ऐसा होगा कि वे मूर्ती वस्त्र पहिरेंगे और जब लों भीतर के आंगन के फाटकों में वे भीतर सेवा करें तब लों उन पर कुछ ऊन न होवे । वे सिर पर मूर्ती वस्त्र की टोपी देंगे और कटि पर मूर्ती जांघिया पहिरें १८ और जिस्से कि पसीना निकले उसे न पहिरें । और जब वे बाहर आंगन में जायें १९ अर्थात् लोगों के पास बाहरी आंगन के भीतर जायें तो जिस वस्त्र में उन्होंने ने सेवा किई उन्हें उतारके पवित्र कोठारियों में रखें अथवा और वस्त्र पहिरें परन्तु अपने वस्त्रों को पहिनके लोगों को पवित्र न करें । और वे अपने सिर न मुड़ावे २० और चौटी बढ़ने न दें पर वे अपने सिर के बाल कतरावें । और जब वे भीतरी २१ आंगन में जायें तो कोई याज्ञक दाखरस न पीये । और वे विधवा को अथवा २२ त्यक्त को अपनी पत्नी न करें परन्तु इसराएल के घराने के सन्तान की कन्या को अथवा उस विधवा को जो आगे याज्ञक से विषादी गई थी लेवें । और वे २३ पवित्र और अपवित्र वस्तु का भेद मेरे लोगों को सिखायें और अशुद्ध और शुद्ध का व्यवहार उन्हें बतावें । और विवाद में वे न्यायी हों और वे मेरे विचार की २४ नाईं विचारें और मेरी सारी सभाओं में वे मेरी व्यवस्था और विधिन को पालन करें और मेरे विश्रामों को पवित्र मानें । और वे अपने को अपवित्र करने को २५ मृतक के पास न जायें परन्तु पिता अथवा माता अथवा पुत्र अथवा पुत्री अथवा भाई अथवा अविवाहिता बहिन के लिये वे अपने को अशुद्ध करें । और उस के २६ पवित्र होने के पीछे वे उस के लिये सात दिन गिनें ॥

और प्रभु परमेश्वर कहता है कि जिस दिन वह पवित्रस्थान में सेवा करने के २७ लिये पवित्रस्थान के भीतरी आंगन में जाये तो वह अपने पाप की भेंट चढ़ावे । और वह उन के लिये अधिकार के लिये होगा मैं ही उन का अधिकार हूँ और २८ इसराएल के मध्य तुम लोग उन्हें अधिकार न देना क्योंकि मैं उन का अधिकार हूँ । वे मांस की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट खायें और इसराएल २९



३० में हर एक समर्पण किई हुई वस्तु उन की होगी । और सब वस्तु के पहिले फल का श्रेष्ठ और तुम्हारी सारी रीति के अर्पण और सभी का हर एक अर्पण याजकों का होगा और तुम गूंधा हुआ पिसान का पहिला याजक को देओ जिस्तें  
 ३१ वह तुम्हारे घरों पर आशीर्ष पहुँचावे । जो कुछ आप से आप मर जाये अथवा फाड़ा जाये चाहे पंकी हो चाहे पशु याजक उसे न खाये ॥

पैंतालीसवां पर्व ।

१ और जब तुम लोग अधिकार के लिये चिट्ठी डालके देश को बाँटे तब परमेश्वर के लिये एक नैवेद्य चढ़ाओ अर्थात् देश का पवित्र भाग उस की लम्बाई पचीस सहस्र नल की लम्बाई और चौड़ाई दस सहस्र यही उस के सारे  
 २ सिवानों की चारों ओर पवित्र होगा । इस में से पवित्रस्थान के लिये लम्बाई में पाँच सौ नल और चौड़ाई में पाँच सौ चारों ओर चौकोर और उस के  
 ३ आसपास के लिये चारों ओर पचास हाथ होवें । और इस नाप से तू पचीस सहस्र लम्बाई और दस सहस्र चौड़ाई नाप और वह पवित्रस्थान अति पवित्र  
 ४ होगा । देश का पवित्र भाग पवित्रस्थान के सेवक याजकों के लिये जो परमेश्वर की सेवा के लिये आवें वह उन के घरों के लिये एक स्थान और पवित्रस्थान के लिये पवित्रस्थान होगा ॥

५ और घर के सेवक लावी भी अपने लिये पचीस सहस्र लम्बाई और दस सहस्र चौड़ाई बीस कोठरियों के अधिकार के लिये पावें ।

६ और तुम लोग पाँच सहस्र चौड़ा और पचीस सहस्र लम्बा पवित्र नैवेद्य के सामने नगर का अधिकार ठहराओ वह इसराएल के सारे घराने के लिये होगा ॥

७ और पवित्र नैवेद्य के इधर उधर पूरब और से पूरब और पश्चिम और से पश्चिम और नगर के अधिकार के आगे और उस के आगे की पवित्र नैवेद्य के इस अलंग और उस अलंग अध्यक्ष के लिये भाग होगा उस की लम्बाई पश्चिम  
 ८ सिवाने से पूरब सिवाने लें उस के भागों में से एक भाग के सामने होगा । इस-  
 ९ राएल के मध्य उस का अधिकार देश में होगा और मेरे अध्यक्ष मेरे लोगों को फेर न सतावेंगे और वे देश को इसराएल की गोष्टियों के समान उन्हें देंगे ।

९ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराएल के अध्यक्षो तुम्हारे लिये बस होवे प्रभु परमेश्वर कहता है कि अंधेर और लूट दूर करो और न्याय और धर्म करो  
 १० मेरे लोगों में से अपना अपना दूर करना त्यागो । तुम खरी तैल और खरा इफाह  
 ११ और खरा बत्त रक्खो । इफाह और बत्त एक ही नाप का होवे जिस्तें एक बत्त में होमर का दसवां भाग समावे और इफाह होमर का दसवां भाग उस की तैल  
 १२ होमर के समान होवे । और शेकल बीस गिरह का होगा और बीस शेकल और पंचास शेकल और पंदरह शेकल तुम्हारा माने होवे ॥

१३ यह नैवेद्य चढ़ाओ अर्थात् एक होमर का इफाह का कठवां भाग गोहूँ और एक  
 १४ होमर जब के इफाह का कठवां भाग देना । और तेल की विधि का विषय एक बत्त तेल एक कोर के बत्त का दसवां भाग जो दस बत्त का होमर है क्योंकि दस  
 १५ बत्त का होमर होता है । और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि उन के लिये मिलाप

करने को इसराएल के सोटे चराई के भुंड के दो सौ सेमे होम की भेंट के लिये और बलिदान की भेंट के लिये और कुशल की भेंटों के लिये एक सेमा देओगे । देश के सारे लोग इसराएल में अध्यन्न के लिये यही नैवेद्य देवें ॥ १६

और पर्वों में अमावास्या और विश्राम और इसराएल के घराने के सारे पर्वों १७ में बलिदान की भेंट और होम की भेंट और पीने की भेंट अध्यन्न के देने का काम होगा और इसराएल के घराने के लिये मेल करने को वह पाप की भेंट और होम की भेंट और बलिदान की भेंट और कुशल की भेंटें सिद्ध करे ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि पहिले मास की पहिली तिथि में तू निषय १८ एक बड़ड़ा लेना और पवित्रम्यान को शुद्ध करना । और याज्ञक पाप की भेंट १९ के लोह में से कुछ लेवे और घर के खंभों पर और खेदी के ठहर के चारों कोनों पर और भीतरी आंगन के फाटक के खंभों पर लगावे । और वैसा ही तू मास २० की सातवीं तिथि में हर एक चूक करवैये और भोल के लिये करना और इसी रीति से घर से मिलाप कराओ ॥

पहिले मास की चौदहवीं तिथि में सात दिन पार जाने का पर्व रखना और २१ अखमीरी रोटी खाई जाये । और उस दिन अध्यन्न अपने लिये और देश के सारे २२ लोगों के लिये पाप की भेंट के लिये एक बैल सिद्ध करे । और पर्व के सात दिन २३ वह परमेश्वर के लिये एक बलिदान की भेंट निषय मात बैल और मात मेंटे सात दिन प्रतिदिन और पाप की भेंट के लिये चकरी का सेमा सिद्ध करे । और २४ एक एक बैल के लिये होम की भेंट के लिये एक इफाह और एक मेंटे के लिये एक इफाह और एक इफाह के लिये एक हिन्न तेल सिद्ध करे । मातर्व मास की २५ अंदरहवीं तिथि में मात दिन के पर्व में पाप की भेंट के समान और बलिदान की भेंट के समान और होम की भेंट के समान और तेल के समान वह सेमा ही करे ॥

### द्विवालीसवां पर्व ।

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि भीतरी आंगन के पूरब का फाटक कामकाज १ के छः दिन बंद रहे परन्तु विश्राम में खोला जाये और अमावास्या को खोला जाये । और उसी फाटक के बाहर के आसारे में मार्ग में से अध्यन्न प्रवेश २ करेगा और फाटक के खंभे के पास खड़ा होगा और याज्ञक उस के बलिदान की भेंट और कुशल की भेंटें सिद्ध करे और वह उस फाटक की डेहरी के पाम सेवा करे उस के पीछे वह बाहर जाये परन्तु जब लो सांभ न होवे तब लो फाटक बंद न होवे । वैसा ही विश्रामों में और अमावास्या में देश के लोग ३ फाटक के केवाड़े के पास परमेश्वर के आगे सेवा करें ॥

और जो बलिदान की भेंट अध्यन्न विश्राम के दिन में परमेश्वर के निमित्त ४ चढ़ावे सो निषय छः सेमे और निषय एक मेंटा होवें । और होम की भेंट एक ५ मेंटे के लिये एक इफाह और उस के दाथ लगाने के समान सेमों के लिये होम की भेंट और एक एक इफाह के लिये एक हिन्न तेल । और अमावास्या के दिन ६ निषय एक बड़वा और छः सेमे और एक मेंटा सब निषय चढ़ाये जायें । और ७

वह होम की एक भेंट सिद्ध करे एक वैल के लिये एक इफाह और मेंठा के लिये एक इफाह और मेमों के लिये जैसा उस के हाथ लगे और एक एक इफाह के लिये एक हिन्न तेल ॥

८ और जब अध्यक्ष प्रवेश करे तब वह फाटक के ओसारे में होके प्रवेश करे ९ और उसी मार्ग से बाहर जाये । परन्तु जब देश के लोग बड़े पर्वों में परमेश्वर के आगे आर्च तब जो जन सेवा करने के लिये उत्तर फाटक से प्रवेश करे सो दक्खिन फाटक से बाहर जाये और जो दक्खिन फाटक से प्रवेश करे सो उत्तर फाटक से बाहर जाये जो जिस फाटक से भीतर आवे सो उस में से बाहर न जाये परन्तु उस के सामने से बाहर जाये । और अध्यक्ष उन के मध्य में जब वे भीतर जायें तो वह भीतर जाये और जब वे बाहर आर्च तब बाहर आवे ॥

११ और पर्वों में और उत्सवों में भोजन की भेंट वैल पीछे एक इफाह और मेंठा पीछे एक इफाह और मेमों के लिये जैसा उस के हाथ लगे और एक एक इफाह के साथ एक हिन्न तेल । सो जब अध्यक्ष परमेश्वर के निमित्त मनमन्ता बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करे तब पूरब और का फाटक उस के लिये खोला जाये और उस ने जैसा विश्राम में किया था तैसा अपने बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करे तब वह बाहर जाये और उस के जाने के पीछे एक जन कोई फाटक बंद करे ॥

१३ और तू परमेश्वर के निमित्त प्रतिदिन पहिले दरस का निष्पद्य एक मेम्रा बलि-  
१४ दान की भेंट के लिये सिद्ध करना हर बिहान को वैसा करना । और हर बिहान को उस के निमित्त होम की भेंट सिद्ध करना इफाह का कूठवां भाग और चोखे पिसान में मिलाने को एक हिन्न तेल का तीसरा भाग यह सब परमेश्वर की नित्य १५ की विधि के लिये सदा के लिये होम की भेंट । यों वे मेम्रा को और होम की भेंट को और तेल को हर बिहान नित्य की भेंट के लिये सिद्ध करे ॥

१६ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यदि अध्यक्ष अपने किसी बेटे को कुछ दे तो उस का अधिकार उसी के बेटों का होगा उस अधिकार के वे अधिकारी होंगे । १७ परन्तु यदि वह अपने दासों में से एक को अपने अधिकार में से कुछ दे डाले तो कुटकारे के बरस लों वह उस का होगा और उस के पीछे वह अध्यक्ष कने फिर १८ जायेगा परन्तु उस का अधिकार उस के बेटों के लिये होगा । इससे अधिक अध्यक्ष उन्हें उन के अधिकार से बाहर करने को अंधेर करके लोगों का अधिकार न लेवे परन्तु वह अपने बेटों को अपने ही अधिकार में से देवे जिस्ते मेरे लोगों में से हर एक जन अपने अपने अधिकार से हिन्न भिन्न न होवे ॥

१९ उस के पीछे वह मुझे फाटक के अलंग की पैठ में से याजकों की पवित्र कोठरियों में से लाया जो उत्तर की ओर थी और क्या देखता हूँ कि पश्चिम के २० दोनों अलंग स्थान हैं । तब उस ने मुझे से कहा कि यही स्थान है जहां याजक चूक की भेंट और पाप की भेंट उमिर्ने जहां वे होम की भेंट को भूने जिस्ते वे लोगों को पवित्र करने को बाहर के आंगन में न ले जायें ॥

२१ फिर वह मुझे बाहर के आंगन में लाया और आंगन के चारों कोनों के ला

मुझे चलाया और क्या देखता हूँ कि एक एक आंगन के कोनों में एक एक आंगन । आंगन के चारों कोनों में चालीस हाथ लम्बा और तीस हाथ चौड़ा २२ आंगन से आंगन मिला हुआ उन के चारों कोने एक ही नाप के । और उन से २३ चारों ओर एक पांती स्थान उन की चारों ओर चार और पांतियों के नीचे चारों ओर उमिने के स्थान थे । तब उस ने मुझ से कहा कि यह उदिनवैया के स्थान हैं २४ जहाँ मन्दिर के सेवक लोगों के बलि का उमिनावैया ॥

सैतालीसवां पर्व ।

और वह मुझे फेर घर के द्वार पर लाया और क्या देखता हूँ कि पूरब और १ से घर की देहरी के नीचे से पानी बहते हैं क्योंकि घर का साया पूरब और था और पानी घर की दहिनी ओर के नीचे से वेदी के दक्खिन ओर से बतरे । फिर २ वह मुझे उत्तर के फाटक की ओर से बाहर लाया और मुझे बाहर के फाटक लों जा पूरब की ओर है ले गया और क्या देखता हूँ कि दहिनी ओर से जल बहते हैं ॥

और जय वह जन जिस के हाथ में डोरी थी पूरब ओर बाहर गया तो ३ सहस्र हाथ नापा और मुझे पानी में से लाया और पानी छुट्टी भर थे । फिर ४ उस ने एक सहस्र नापा और मुझे पानी में से लाया और पानी छुटने भर थे फिर उस ने एक सहस्र नापा और मुझे उस में से लाया और पानी कटि लों थे । फिर ५ उस ने एक सहस्र नापा और नदी थी जिसमें मैं पार न हो सका क्योंकि पानी उमड़े और पैरने के जल हुए एक नदी जिसमें पार न हो सका था ॥

और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू ने देखा है तब वह मुझे ६ नदी के तीर फिरवा लाया । सो जय मैं फिरा तो क्या देखता हूँ कि नदी के ७ तीर इधर उधर बहुत से पेड़ थे । तब उस ने मुझ से कहा कि ये जल पूरब ८ देश की ओर बहते हैं और वन में उतरके समुद्र में जाते हैं और जल का अच्छा करेंगे । फिर ऐसा होगा कि जहाँ कहीं ये दो नदियाँ बहेंगी हर एक जीवधारी ९ जो उधर से चलते हैं जीयेंगे और इन पानियों के उधर आने से बहुत ही मछलियाँ होंगी क्योंकि वे अच्छी होंगी और जहाँ कहीं नदी पहुँचती है तहाँ की हर एक वस्तु जीयेगी । और ऐसा होगा कि मछुवे उस पर रेनजदी से १० रेनजलैम लों खड़े होंगे जाल फैलाने के लिये स्थान होंगे उन की मछलियाँ उन की रीति के समान मछामागर की मछलियों की नाईं अति बहुत होंगी । उस ११ के चहले के स्थान और उस के दलदल चंगे न होंगे वे खारी के लिये होंगे । और नदी के दोनों पार तीर पर भोजन के सारे पेड़ उगेंगे उन के पत्ते न १२ सुरक्षायेंगे और उन के फल न मिटेंगे अपने अपने मास के समान नये फल लावेंगे क्योंकि उन के जल पवित्रस्थान में से निकले हैं और उस के फल भोजन के लिये और उस के पत्ते औषध के लिये होंगे ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यही सिधाना होगा जिसमें तुम लोग इसराएल १३ की बारह गोष्टी के समान देश के अधिकारी होंगे यूसुफ के दो भाग होंगे । और १४ तुम लोग क्या एक क्या दूसरा उस के अधिकारी होंगे जिस के विषय में मैं ने हाथ उठाके तुम्हारे पितरों को दिया है और यह देश अधिकार के लिये तुम्हारा होगा ॥

रुविन का एक फाटक और यहूदाह का एक फाटक और लावी का एक फाटक ।  
 ३२ और पूरव अलंग साढ़े चार सहस्र और तीन फाटक यूसुफ का एक फाटक विनय-  
 ३३ मीन का एक फाटक दान का एक फाटक । दक्खिन अलंग साढ़े चार सहस्र नाप  
 और तीन फाटक अर्थात् शमऊन का एक फाटक इशकार का एक फाटक अबु-  
 ३४ लून का एक फाटक । पच्छिम अलंग साढ़े चार सहस्र और उन के तीन फाटक  
 ३५ जद का एक फाटक यसर का एक फाटक नफताली का एक फाटक । चारों ओर  
 छठारह सहस्र नाप था और उस दिन से उस नगर का नाम होगा कि परमेश्वर  
 वहां है ॥

## दानिएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

### पहिला पर्व ।

- १ यहूदाह के राजा यहूयकीम के राज्य के तीसरे वरस बाबुल के राजा नबूखुद-  
 २ नजर ने यहूसलम पर आके उसे घेर लिया । और प्रभु ने यहूदाह के राजा  
 यहूयकीम को अपने मन्दिर के कितने पात्र समेत उस के हाथ में कर दिया जो  
 वह सिनआर देश में अपने देव के मन्दिर में ले गया और उस ने उन पात्रों को  
 अपने देव के मन्दिर के भंडार में पहुँचाया ॥
- ३ और राजा ने अपने नपुंसकों के प्रधान असपिनास से कहा कि इसराएल के  
 ४ सन्तानों में से और राजा के वंशों में से ला । अर्थात् तरुणों को जो निष्पय और  
 सुन्दर और सारी बुद्धि में चतुर और ज्ञान में निपुण और विद्या में प्रवीण हों  
 जो राजभवन में खड़े होने के और कसदियों की विद्या और भाषा सिखलाने  
 ५ के योग्य हों । और राजा ने अपने भोजन में से और दाखरस में से जो वह पीता  
 था उन के लिये प्रतिदिन का भोजन ठहराया और तीन वरस लों उन का प्रतिपाल  
 किया जिस्तें उस के पीछे वे राजा के आगे खड़े हों ॥
- ६ सो उन में यहूदाह के सन्तान में से दानिएल और हननियाह और मीसाएल  
 ७ और अजरियाह थे । और नपुंसकों के प्रधान ने उन के और नाम रक्खे अर्थात्  
 दानिएल का बेलचासर और हननियाह का सदरख और मीसाएल का मीसक  
 और अजरियाह का अबदनजू नाम रक्खा ॥
- ८ परन्तु दानिएल ने अपने मन में ठाना कि मैं अपने को राजा की रसोई के  
 भाग से और उस के पान के दाखरस से अशुद्ध न करूँगा इस लिये उस ने  
 ९ नपुंसकों के प्रधान से चाहा कि मैं अपने को अशुद्ध न करूँ । अब ईश्वर ने  
 दानिएल को नपुंसकों के प्रधान की दृष्टि में अनुग्रह और कामल प्रेम दिया ।  
 १० तब नपुंसकों के प्रधान ने दानिएल से कहा कि मैं अपने प्रभु राजा से डरता हूँ  
 जिस ने तुम्हारे लिये खान पान ठहराया है वह किस लिये तुम्हारे मुँह को

तुम्हारे संगियों के मुँह से मलीन देखे तब तुम राजा के आगे मेरे सिर को जोखिम में लाओगे ॥

तब दानिएल ने मलजार से कहा जिसे नपुंसकों के प्रधान ने दानिएल और ११  
हननियाह और मीसाएल और अजरियाह का करोड़ा किया था । कि मैं तेरी १२  
घिनती करता हूँ इस दिन तों अपने दासों को परख ले कि तम खाने को तरकारी  
और पीने को जल दिला । तब हमारे रूप और उन तनयों के रूप जो राजा की १३  
रमाई से भाग खाने हैं तेरे आगे देखे जायें और जैसा तू देखे तैसा अपने सेवकों  
से कर । सो इस बात में इस ने उन की मान लिई और इस दिन तों उन्हीं १४  
परखा । और इस दिन पीछे उन के रूप उन सब तनयों के रूपों से जो राजा की १५  
रमाई से भाग खाने थे सुन्दर और पुष्ट देख पड़े । तब मलजार ने उन के भोजन १६  
के भाग को और उन के पीने के दान्यरम को ले लिया और उन्हीं तरकारी दिई ॥

सो ईश्वर ने इन चार तनयों को ज्ञान और सारी विद्या और बुद्धि में पहुँच १७  
दिई और दानिएल को सारे दर्जनों और स्वप्नों में समझ दिई ॥

अब कि वे दिन बीत गये जिन के विषय में राजा ने कहा था कि उन्हीं १८  
भीतर लार्च तब नपुंसकों का प्रधान उन्हीं नयूखुदनजर के आगे ले गया । और १९  
राजा ने उन से यातर्चात किई और उन सभों में से कोई दानिएल और हननियाह  
और मीसाएल और अजरियाह के समान न पाया गया सो ये लोग राजा के  
आगे खड़े रहने लगे । और समझ की और बुद्धि की सारी बातों में जो राजा २०  
ने उन से पूछीं तो उस ने उन्हीं सारे टोनों और शयितकारियों से जो उस के  
समस्त राज्य में थे इस गुण भला पाया ॥

और दानिएल खारस राजा के पछिले वरस तों जीता रहा ॥

२१

दूसरा पर्व ।

और नयूखुदनजर के राज्य के दूसरे वरस में नयूखुदनजर ने ऐसे स्वप्न देखे जिन १  
से उस का मन व्याकुल हुआ और उस की नींद उस्से जाती रही । तब राजा ने २  
सारे शयितकारियों और गुणियों और टोनों और कसदियों को बुलाने की आज्ञा  
किई जिस्तें वे राजा के स्वप्नों को बतावें सो वे आये और राजा के आगे खड़े  
हुए । तब राजा ने उन से कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा और उस स्वप्न के जानने ३  
को मेरा मन व्याकुल हुआ है ॥

तब कसदियों ने अरामी बोली में राजा से कहा कि महाराज सदा जाये अपने ४  
दासों से स्वप्न कहिये और इस उस का अर्थ बतावेंगे ॥

राजा ने उत्तर में कसदियों से कहा कि यस्तु मुझ से जाती रही सो यदि तुम ५  
लोग यह स्वप्न अर्थ सहित मुझ से न जनाओगे तो टुकड़े टुकड़े किये जाओगे  
और तुम्हारे घर घूरे किये जायेंगे । परन्तु यदि तुम लोग स्वप्न और उस का अर्थ ६  
बताओगे तो मुझ से दान और प्रतिफल और बड़ी प्रतिष्ठा पाओगे इस लिये स्वप्न  
और उस का अर्थ मुझ से बताओ ॥

उन्हीं ने फिर उत्तर देके कहा कि राजा अपने दासों से अपना स्वप्न कहें और ७  
इस उस का अर्थ बतावेंगे ॥



- ८ राजा ने उत्तर देके कहा कि मैं निश्चय जानता हूँ कि तुम लोग समय लिया चाहते हो क्योंकि तुम देखते हो कि वह वस्तु मुझ से जाती रही । परन्तु जो मेरे स्वप्न को मुझ से न बताओगे तो तुम्हारे लिये एक ही आज्ञा है क्योंकि तुम ने झूठी और सड़ी हुई बातें बना रखी हैं कि मेरे आगे कहे जय ताईं समय टल जाये सो मुझ से स्वप्न बताओ और मैं जानूंगा कि तुम उस का अर्थ बता सकते हो ॥
- १० कसदियों ने राजा के आगे उत्तर देके कहा कि पृथिवी में ऐसा तो एक मनुष्य भी नहीं जो राजा की बात बता सके क्योंकि न कोई राजा न प्रभु न आज्ञाकारी हुआ जिस ने ऐसी बातें किसी टोन्हे अथवा गणितकारी अथवा किसी कसदी से पूछी हों । और वह बात जो राजा पूछता है अति कठिन है और ईश्वरों को छोड़ जिन का वास शरीरों में नहीं कोई नहीं जो उसे राजा के आगे बता सके ।
- १२ इस कारण राजा रिसियाके अत्यन्त कोपित हुआ और बाबुल के सारे बुद्धि-  
१३ मानों को नाश करने की आज्ञा किई । सो बुद्धिमानों को घात करने की आज्ञा निकली तब उन्हों ने दानिएल को और उस के संगियों को घात करने को ठूँडा ।
- १४ तब दानिएल ने मंत्र और बुद्धि से राजा की सेना के प्रधान अरयूक को जो  
१५ बाबुल के बुद्धिमानों को घात करने के लिये निकला था उत्तर दिया । उस ने राजा की सेना के प्रधान अरयूक को उत्तर दिया और कहा कि राजा की और से आज्ञा ऐसी वेग क्यों निकली है तब अरयूक ने वह बात दानिएल को बताई ।
- १६ और दानिएल ने भीतर जाके राजा से धिनती किई कि मुझे अवकाश मिले और मैं राजा को उस का अर्थ बताऊंगा ॥
- १७ उस के पीछे दानिएल ने अपने घर जाके अपने संगी हननियाह और मीसा-  
१८ एल और अजरियाह से कहा । जिस्तें वे इस भेद के विषय में स्वर्ग के ईश्वर के आगे दया मांगें कि बाबुल के बुद्धिमानों के साथ दानिएल और उस के संगी नाश न होवें ॥
- १९ तब वह भेद रात के दर्शन में दानिएल पर खुला तब दानिएल ने स्वर्ग के ईश्वर का धन्य माना ।
- २० दानिएल ने उत्तर दिया और कहा कि ईश्वर का नाम सर्वदा धन्य रहे क्योंकि  
२१ बुद्धि और सामर्थ्य उसी की है । और वह समयों और ऋतुन को पलटता है वह राजाओं को उठा देता है और राजाओं को बैठाता है वह बुद्धिमानों को बुद्धि  
२२ और समझवैयों को समझ देता है । वह गहिरी और गुप्त वस्तुन को प्रगट करता है वह जानता है कि अधियारे में क्या है और उंजियाला उस के पास रहता है ।
- २३ हे मेरे पितरों के ईश्वर मैं तेरा धन्य मानता हूँ और तेरी स्तुति करता हूँ कि तू ने मुझे बुद्धि और पराक्रम दिया है और जो वस्तु हम ने तुझ से चाही तू ने मुझे जनाई क्योंकि तू ने राजा की बात हम पर प्रगट किई ॥
- २४ इस लिये दानिएल अरयूक के पास गया जिसे राजा ने बाबुल के बुद्धिमानों को नाश करने को ठहराया था और उससे यों कहा कि बाबुल के बुद्धिमानों को मत मारिये मुझे राजा के आगे ले चलिये और मैं राजा को उस का अर्थ

कि उस ने अपने परेमी की मंषति में अपना हाथ नहीं बढाया और उस का स्वामी मान ले तब वह उसे भर न देगा । और यदि वह उस के घाम से चुराया ११ जाय तो वह उस के स्वामी को भर दे । यदि वह फाड़ा जाय तो वह उसे सार्नी १२ के लिये लावे और भर न देगा ॥

और यदि कोई मनुष्य अपने परेमी से कुछ भाड़ा लेवे और वह अंग भंग हो १३ जाय अथवा मर जाय और स्वामी उस के साथ न था तो वह निश्चय उसे भर देगा । यदि उस का स्वामी उस के साथ था तो वह भर न देगा यदि भाड़े का १४ होय तो उस के भाड़े के लिये जायगा ॥

और यदि कोई किसी कन्या को फुमलावे जिस की वचनवत न हुई और उस १५ के संग शयन करे वह अवश्य उसे दैजा देके पचा करे । यदि उस का पिता उस १६ के देने में मर्यादा नाह करे तो वह कुंवारीयों के दान के समान उसे दैजा देगा ॥

तू टोनटिन को जाने मत दे ॥

१७

जो कोई पशु में रति करे निश्चय घात किया जायगा ॥

१८

जो कोई परमेश्वर को छोड़ किसी देवता को बलिदान देगा वह निश्चय १९ नाश किया जायगा ॥

और परदेशी को मन विजा और उसे मत मना इस लिये कि तुम मिन के २० देश में परदेशी थे । किसी विधवा को अथवा अनाथ लड़के को दुःख मत देओ । २१ यदि तू उसे किसी गीति से दुःख देवे और वह मेरी दोहाई देवे तो मैं निश्चय २२ उस का चिल्लाता सुनूंगा । और मेरा क्रोध भड़केगा और मैं तुम्हें खड्ग से मारूंगा २३ और तुम्हारी पत्नियां विधवा और तुम्हारे पुत्र अनाथ हो जायेंगे ॥

यदि तू मेरे लोग में के कंगाल को कुछ कृण देवे तो उस पर व्यागगाहक के २४ समान मत हो उसने क्याज मत ले । यदि तू अपने परेमी का वस्त्र धंधक रखे २५ तो चाहिये कि तू सूर्य अस्त होते हुए उसे पहुंचा दे । क्योंकि उस का केवल २६ बली ओढ़ना है वह उस की देह का वस्त्र है जिस में वह सो रहता है और यों होगा कि जब वह मेरे आगे दोहाई देगा तब मैं सुनूंगा क्योंकि मैं ब्याल हूँ ॥

तू अध्यक्षा को दुर्यचन मत कह और अपने लोग के प्राचीन को गाय मत दे ॥ २७

अपने पक्के फलों की बड़नी में से और अपने दाग्रम में से देने में विलंब मत २८ कर अपने पुत्रों में से पोटिलौटा सुके दे । ऐसा ही तू अपने बेलों से और अपने २९ भेड़ों से कीजियो सात दिन तो वह अपनी मा के साथ रहे आठवें दिन उसे सुके दीजियो ॥

और तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य होओगे और जो पशु ग्वा में फाड़ा जाय उस ३० का मांस मत खाइयो तुम उसे कुतों को दीजियो ॥

नेईमया पृथ्वी ।

तू मिथ्या संदेश मत फैलाइयो अधर्म की सार्नी में दुष्टों का माथी मत हो । १  
दुराई करने के लिये मंडला का पीछा मत कर और तू किसी भगड़े में दहूतों की २  
और होके अन्याय का उतार मत दीजियो । और न कंगाल पर उस के व्यवहार  
प्रद में दृष्टि कीजियो ॥



यत्ताजंगा । तब अरयूक ने दानिएल को राजा के आगे शीघ्र लाके यों बिनती किई २५ कि मैं ने यहूदाह के बंधुओं के लइकों में से एक को पाया सो राजा को उस का अर्थ बतावेगा ॥

राजा ने दानिएल से जिस का नाम बेलशामर था उत्तर दिया और कहा क्या २६ तू मुझ से उस स्वप्न को जो मैं ने देखा है और उस के अर्थ को बता सक्ता है ।

दानिएल ने राजा को सन्मुख उत्तर दिया और कहा वह भेद जो राजा ने पूछा २७ बुद्धिमान और गणितकारी और टोन्हे और भविष्यकथक राजा को बता नहीं सक्ते । परन्तु स्वर्ग में एक ईश्वर है जो भेद प्रगट करता है और उस ने न्यू- २८ खुदनजर राजा को वह बात जनाई है जो पिछले दिनों में होगी आप का स्वप्न और आप के विछैन पर के सिर के दर्शन ये हैं । हे राजा तरे विछैन पर चिन्ताएं २९ तुम्हें आ गईं कि आगे को क्या होगा सो वह जो भेद प्रगट करता है तुम्हें जना- बता है कि क्या कुछ होगा । परन्तु यह भेद मुझ पर खुला इस लिये नहीं प्रगट ३० हुआ कि और जीवधारियों से अधिक बुद्धि रखता हूं पर यह इस लिये है कि उस का अर्थ राजा को जनाया जाये और जिस्ते तू अपने मन की चिन्तों को जाने ॥

हे राजा तू देखना था और एक बड़ी मूर्ति देखी यही उत्तम चमक की मछा ३१ मूर्ति तरे आगे खड़ी हुई और उस की मूरत भयावनी थी । उस मूर्ति का सिर ३२ चांगे सेने का उस की छाती और भुजा चांदी की उस का पेट और उस की जांघें पीतल की । उस की टांगें लोहे की उस के पांव कुछ तो लोहे के और ३३ कुछ माटी के । तू देखना ही था कि एक पत्थर बिना हाथ में खोदा हुआ जो ३४ उस मूर्ति के लोहे और माटी के पांवों पर लगा और उन्हें टुकड़ा टुकड़ा किया । तब लोहा और माटी और पीतल और रूपा और सोना सब टुकड़े ३५ टुकड़े हो गये और खलिछान के चैती भूसे के समान हुए और पवन उन्हें यहां लां उड़ा ले गया कि उन के लिये स्थान न रहा और वह पत्थर जिस ने उस मूर्ति को मारा था एक मछा पर्वत बन गया और सारी पृथिवी को भर दिया । स्वप्न ३६ तो यह है और इस राजा के आगे उस का अर्थ बतावेगे ॥

हे राजा तू राजाओं का राजा है क्योंकि स्वर्ग के ईश्वर ने तुम्हें एक राज्य ३७ और पराक्रम और बल और ऐश्वर्य दिया है । और जहां जहां मनुष्य के वंश ३८ बसने हैं जंगली पशुन के और आकाश के पक्षियों को उस ने तरे हाथ में किया है और तुम्हें उन सभी पर आज्ञाकारी कर दिया है वह सेने का सिर तू है । और ३९ तरे पीछे एक और राज्य तुझ से छाट उठेगा और एक तीसरा राज्य पीतल का जो सारी पृथिवी पर प्रभुता करेगा । और चौथा राज्य लोहे के समान दृढ़ ४० होगा और जिस रीति से कि लोहा तोड़ डालता है और सब को धन में करता है और जैसा कि लोहा सब पन्तुन को टुकड़े टुकड़े करता है वह टुकड़े टुकड़े करेगा और चूर करेगा । और जैसा कि तू ने देखा है कि पांव और अंगूठे कुछ ४१ तो कुम्हार की माटी के और कुछ लोहे के सो राज्य का विभाग किया जायेगा परन्तु उस में लोहे का बल होगा और जैसा कि तू ने देखा कि लोहा माटी से मिला हुआ था । और पांव के अंगूठे कुछ लोहे के और कुछ माटी के सो वह ४२

- २३ और ये तीन मनुष्य सदरक और मीसक और अबदनजू अंधे हुए उस आग के जलते भट्टे के मध्य में गिर पड़े ।
- २४ तब नबूखुदनजर राजा आश्चर्यित हुआ और शीघ्रता से उठके बोला और अपने मंत्रियों से कहा क्या हम ने तीन जन को बांधके जलती आग के मध्य में नहीं डाला
- २५ उन्हें ने राजा को उत्तर देके कहा कि सत्य है हे राजा । उस ने उत्तर दिया और कहा कि देखो मैं चार जन को कूटा हुआ आग के मध्य में फिरते देखता हूँ और उन को कुछ हानि नहीं है और चौथे का डौल ईश्वर के पुत्र के ऐसा है ।
- २६ तब नबूखुदनजर जलते भट्टे के द्वार पर आया और यों बोला और पुकारा कि हे सदरक और मीसक और अबदनजू अत्यन्त महान ईश्वर के सेवकों बाहर निकलो और निकल आओ तब सदरक मीसक और अबदनजू आग के मध्य से निकल
- २७ आये । और अध्यक्षों और प्रधानों और सेनापतिन और राजा के मंत्रियों ने एकट्ठे होते इन मनुष्यों को देखा जिन के शरीरों पर आग का कुछ पराक्रम न था और उन के सिर का एक बाल भी न भौंसा था और उन के वस्त्र न बदले थे और उन पर आग की वास न लगी थी ।
- २८ नबूखुदनजर ने उत्तर दिया और कहा कि सदरक और मीसक और अबदनजू का ईश्वर धन्य है जिस ने अपने दूत को भेजा और अपने सेवकों को जो उस पर भरोसा रखते थे बचाया और राजा की घात को पलट दिया और उन के शरीरों को यज्ञ से रक्खा कि वे अपने ही ईश्वर को छोड़ किसी देव की
- २९ सेवा और पूजा न करें । सो मेरी आज्ञा यह है कि हर एक लोग और जाति और भाषा जो सदरक और मीसक और अबदनजू के ईश्वर के विषय में कोई अनुचित बात कहेंगे उन के टुकड़े टुकड़े किये जायेंगे और उन के घर घूरे किये
- ३० जायेंगे क्योंकि ऐसा कोई ईश्वर नहीं जो इस रीति से बचा सके । तब राजा ने सदरक और मीसक और अबदनजू को बाबुल के प्रदेश में बठाया ॥

चौथा पृष्ठ ।

- १ नबूखुदनजर राजा सारे लोगों और जातों और भाषाओं को जो सारी पृथिवी
- २ में बसते हैं यह कहता है कि तुम पर अधिक कुशल होवे । मुझे अच्छा लगा कि उन चिन्हों और आश्चर्यों को जो महान ईश्वर ने मुझ पर किया तुम्हें
- ३ दिखाऊँ । उस के लक्षण क्या ही बड़े और उस के आश्चर्य कैसे शक्तिमान उस का राज्य सनातन का राज्य और उस की प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी लें ।
- ४ मैं नबूखुदनजर अपने घर में चैन करता था और अपने राजभवन में लहलहाता
- ५ था । मैं ने एक स्वप्न देखा जिस ने मुझे डराया और बिछौने पर के सोच और
- ६ सिर के दर्शनों से व्याकुल हुआ । तब मैं ने आज्ञा किई कि बाबुल के सारे
- ७ बुद्धिमानों को मेरे आगे लावे कि वे स्वप्न का अर्थ मुझे बतावें । सो टोन्हे और गणितकारी और कसदी और भाविष्यकथक आये और मैं ने उन के आगे स्वप्न
- ८ कहा परन्तु उन्होंने ने मुझ से उस का अर्थ न बताया । परन्तु अन्त में दानिएल मेरे आगे आया जिस का नाम मेरे देव के नाम के समान खेलचासर था उस में पवित्र ईश्वरों का आत्मा है और उस के आगे मैं ने अपना स्वप्न कहा ॥

ने सींगा और घांसुरी और बीणा और भेरी और डोल और हर एक प्रकार के वाजों का शब्द सुना सारे लोग और जाति और भाषा और धर्म गिरे और उस सेने की मूर्ति की जिसे नव्वखुदनजर राजा ने स्थापित किया था पूजा कीई ।

सो उस समय में कितने कमदी पास आये और यहूदियों पर डोप लगाया । ८ और नव्वखुदनजर राजा के आगे खिन्ती किई कि हे राजा सदा जीयो । हे राजा १० तू ने आज्ञा किई कि हर एक मनुष्य जो सींगा और घांसुरी और बीणा और भेरी और डोल और त्रितार और हर एक प्रकार के वाजों का शब्द सुने सो और धर्म गिरके उस सेने की मूर्ति की पूजा करे । और जो कोई और धर्म गिरके पूजा न करेगा सो ११ आग के जलते भट्टे में डाला जायेगा । कितने यहूदी हैं जिन्हें तू ने बाबुल के १२ प्रदेश के कार्यों पर करोड़ा किया है उन में सदरक और मौसक और अबदनजू हैं हे राजा ये मनुष्य तेरा आदर नहीं करते वे तेरे देव की सेवा नहीं करते और उस सेने की मूर्ति की पूजा जो तू ने स्थापित किया नहीं करते हैं ।

तब नव्वखुदनजर ने क्रोध और क्रोध से आज्ञा किई कि सदरक और मौसक १३ और अबदनजू को लावें तब वे इन मनुष्यों को राजा के आगे लाये । नव्वखुदनजर १४ ने उत्तर दिया और उन से कहा कि अरे सदरक और मौसक और अबदनजू क्या यह सच है कि तुम मेरे देवों की सेवा नहीं करते और उस सेने की मूर्ति की जिसे मैं ने स्थापित किया पूजा नहीं करते । सो यदि तुम सिद्ध रहे कि जिस १५ घड़ी सींगा और घांसुरी और बीणा और भेरी और डोल और त्रितार और हर एक प्रकार के वाजों का शब्द सुनके और धर्म गिरे और उस मूर्ति की जो मैं ने बनाई है पूजा करो तो भला है परन्तु यदि तुम पूजा न करोगे तो तुम उसी घड़ी आग के एक जलते भट्टे में डाले जाओगे और वह कौन सा ईश्वर है जो तुम्हें मेरे हाथ से बचावेगा ।

सदरक और मौसक और अबदनजू ने उत्तर देके राजा से कहा कि हे नव्वखुद- १६ नजर हम इस विषय में तुम्ह से उत्तर देने में चिन्ता नहीं करते । यदि हो तो हमारा १७ ईश्वर जिस की हम सेवा करते हैं हमें उस आग के जलते भट्टे से बचा सक्ता है और हे राजा वही हमें तेरे हाथ से बचावेगा । परन्तु यदि नहीं तो हे राजा तुम्हें १८ जान पड़े कि हम तेरे देवों की सेवा न करेंगे और न उस सेने की मूर्ति की जिसे तू ने स्थापित किया है पूजा करेंगे ।

तब नव्वखुदनजर कोपमय हुआ और उस के सुंद का रूप सदरक और मौसक १९ और अबदनजू पर पलट गया और उस ने कटा और आज्ञा किई कि वे भट्टे को उस परिमाण से जो उस का था सात गुण अधिक धधका दें । फिर उस ने २० अपनी सेना के शक्तिमान बलवानों को आज्ञा किई कि सदरक और मौसक और अबदनजू को बांधके जलते भट्टे में डाल दें ।

तब ये मनुष्य अपने अंगारग्यों और पायजामों और पगड़ियों और वस्त्रों के संग २१ और धर्म गये और जलते भट्टे के मध्य में डाले गये । इस कारण कि राजा की २२ आज्ञा आवश्यक थी और भट्टा अत्यन्त तप्त था उस आग की लहर ने उन मनुष्यों को जिन्हें ने सदरक और मौसक और अबदनजू को उठाया था नाश किया ।



- २४ होवे यहां लों कि सात समय उस पर दीत जायें । सो हे राजा उस का अर्थ यह है और अत्यन्त महान की आज्ञा यह है जो मेरे प्रभु राजा पर आई है ।
- २५ सो वे तुम्हें मनुष्यों में से हांक देंगे और तेरा बसाव बनैले पशुन के संग होगा और वे तुम्हें वैलों की नाईं घास खिलावेंगे और आकाश की ओस से भिगावेंगे और सात समय तुम्ह पर दीतेंगे जय लों तू जाने कि अत्यन्त महान मनुष्यों के
- २६ राज्य में प्रभुता करता है और उसे जिसे चाहता है देता है । और जैसा कि उन्होंने ने उस पेड़ की जड़ों के खूब छोड़ने की आज्ञा किई जय तू जान जायेगा
- २७ कि स्वर्गों का राज्य है तेरा राज्य तेरे लिये निश्चय बना रहेगा । सो हे राजा मेरा मंत्र मान लीजिये और अपने पापों को धर्म से और अपने कुकर्मों को कंगालों पर दया करने से दूर कीजिये क्या जाने तेरी कुशलता की बढ़ती होय ।
- २८ सब कुछ नवखुदनजर राजा पर पड़ीं । बारह मास के अन्त में वह बाबुल
- २९ के राज्य के भवन पर फिरता था । राजा वाला और कहा क्या यह वह महा बाबुल नहीं है जिसे मैं ने अपने पराक्रम के बल से और अपनी महिमा की
- ३० प्रतिष्ठा के लिये राज्य के घर के लिये बनाया । राजा के मुँहीं में यह बात होती ही आकाशवाणी हुई कि हे राजा नवखुदनजर तुम्हें कहा जाता है कि राज्य
- ३१ तुम्ह से जाता रहा । और वे तुम्हें मनुष्यों में से हांक देंगे और तेरा बसाव बनैले पशुन में होगा वे तुम्हें वैलों की नाईं घास खिलावेंगे और तुम्ह पर सात समय दीत जायेंगे यहां लों कि तू जाने कि अत्यन्त महान मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता है वह उसे देता है ॥
- ३२ उसी घड़ी नवखुदनजर पर यह बात सम्पूर्ण हुई और वह मनुष्यों में से निकाला गया और वैलों की नाईं घास खाने लगा और उस की देह आकाश की ओस से भिगाने लगी यहां लों कि उस के बाल गिट्ट की नाईं बड़े और उस के नद पंक्तिओं के समान ॥
- ३३ और उन दिनों के पीछे मुझ नवखुदनजर ने स्वर्ग की ओर आंख उठाई और मेरी छुट्टि फिर मुझे मिली और मैं ने अत्यन्त महान का धन्य माना और स्तुति और उस की प्रतिष्ठा किई जो सर्वदा लों जीता है जिस की प्रभुता सनातन की
- ३४ प्रभुता है और जिस का राज्य पीढ़ी से पीढ़ी लों । और पृथिवी के सारे बासी तुच्छ की नाईं गिने जाते और वह अपनी इच्छा के समान स्वर्ग की सेना में और पृथिवी के बासियों में करता है और कोई उस का हाथ रोक नहीं सक्ता अथवा
- ३५ उसे कहे कि तू क्या करता है । उसी समय मेरा बिचार मुझ में फिर आया और मेरे राज्य के बिभव के लिये मेरी प्रतिष्ठा और बिभव मुझ में फिर आया और मेरे मंत्री और मेरे प्रधानों ने मुझे ठूँड़ा और मैं अपने राज्य पर स्थिर हुआ और अत्युत्तम
- ३६ महिमा मेरे लिये अधिक हुई । अब मैं नवखुदनजर धन्य मानता और स्तुति करता हूँ और स्वर्ग के राजा की प्रतिष्ठा करता हूँ उस के सारे कार्य सत्य और उस की बाल न्याय सहित हैं और जो अभिमान में चलते हैं उन्हें निन्दित कर सक्ता है ॥

पांचवां पृष्ठ ।

१ बेलशजर राजा ने अपने सहस्र प्रधानों के लिये एक बड़ी जेवनार किई और

हे वेलचासर टोन्टे के प्रधान मैं जानता हूँ कि पवित्र ईश्वरों का आत्मा ९ तुम्हें मैं है और कोई भेद तुम्हें व्याकुल नहीं करता उस स्वप्न का दर्शन जो मैं ने देखा है और उस का अर्थ मुझे बता । सो मेरे विछाने पर के सिर का दर्शन १० यह था मैं देखता था और क्या देखता हूँ कि पृथिवी के मध्य में एक पेड़ है जिस की कंचाई बड़ी थी । और वह पेड़ बढ़के पोढ़ हुआ और उस की, कंचाई ११ स्वर्ग लों पहुँची और उस की दृष्टि सारी पृथिवी के अन्त लों । उस के पत्ते सुन्दर १२ थे और उस का फल बहुत और उस में सब के लिये भोजन था जंगली पशु उस के नीचे छाया पावते थे और आकाश के पक्षी उस की डालों पर बसते थे और सारे जीवधारी उससे भोजन पाते थे । मैं अपने विछाने के सिर के दर्शन में क्या १३ देखता हूँ कि एक पक्ष और एक धर्मी जन स्वर्ग से उतरा । वह पराक्रम से १४ पुकारके यों बोला कि उस पेड़ को काट डालो और उस की डालियां छाँटो उस के पत्ते भाड़ो और उस का फल बिथरा दो पशु उस के तले से जाते रहें और पक्षी उस की डालों पर से । तथापि उस की जड़ के खूब को पृथिवी में छाँ लोटे १५ और पीतल के बंधन से खेत की कोमल घास में रहने दो और आकाश की ओस से भीगे और उस का भाग पशुन के संग पृथिवी की घास होवे । उस का मन १६ मनुष्य के से पलट जाये और पशु का मन उसे दिया जाये और उस पर सात समय दीत जायें । सो पक्षियों की आज्ञा से यह बात है और पवित्र जनों की बात से १७ यह वस्तु है जिसमें जीवते जानें कि अत्यन्त सदान मनुष्यन के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे वह चाहता है उसे देता है और उस पर अत्यन्त निन्दित मनुष्यों को बैठाता है । मैं नबूखुदनजर राजा ने यह स्वप्न देखा है सो हे वेल- १८ चासर तू उस का अर्थ दर्शन कर क्योंकि मेरे राज्य के सारे युद्धिमानों में सामर्थ्य नहीं कि मेरे आगे उस का अर्थ करें परन्तु तू सक्ता है क्योंकि पवित्र ईश्वरों का आत्मा तुम्हें मैं है ॥

तब दानिएल जिस का नाम वेलचासर था एक घड़ी भर आश्चर्यित हुआ १९ और उस की चिन्तों ने उसे व्याकुल किया तब राजा वेलचासर से यह कहके बोला कि स्वप्न अथवा उस का अर्थ तुम्हें व्याकुल न करे वेलचासर ने उत्तर देके कहा मेरे प्रभु यह स्वप्न उन के लिये होवे जो तुम्हें से दूर रखते हैं और उस का अर्थ तेरे शत्रुन पर । जो पेड़ तू ने देखा कि उगा और पोढ़ हुआ जिस २० की कंचाई स्वर्ग लों पहुँची और उस की दृष्टि सारी पृथिवी लों । जिस के २१ पत्ते सुन्दर थे और जिस का फल बहुत जिस में सब के लिये भोजन था जिस के तले घनैले पशु रहते थे और जिस की डालों पर आकाश के पक्षी बसेरा लेते थे । सो हे राजा तू है जो बढ़के पोढ़ हुआ है क्योंकि तेरी महिमा बढ़ गई २२ और आकाश लों पहुँची और तेरा राज्य पृथिवी के अन्त लों है । और जैसा २३ कि राजा ने एक पक्ष और एक धर्मी को स्वर्ग से यह कहते हुए उतरते देखा कि उस पेड़ को काट डालो और उसे नाश करो तथापि जड़ों के खूब को पृथिवी में छाँ लोटे और पीतल के बंधन से खेत की कोमल घास में पड़ा रहने दो और आकाश की ओस से भीगे और उस का भाग घनैले पशुन के संग

है अब यदि तू उस लिखे को पढ़ सके और उस के अर्थ मुझ से बता सके तो तू लाल वस्त्र से पहिनाया जायेगा और तेरे गले में सोने का हार डाला जायेगा और राज्य में तीसरा आज्ञाकारी होगा ॥

१७ तब दानिएल ने उत्तर देके राजा के आगे कहा कि तेरे दान तेरे पास रहें और अपना प्रतिफल दूसरे को दीजिये तथापि राजा के आगे इस लिखे हुए को पढ़ूंगा और उस के अर्थ उसे बताऊंगा । हे राजा अत्यन्त महान ईश्वर ने तेरे पिता नबूवुदनजर को राज्य और महिमा और विभव और प्रतिष्ठा दी है । १८ और उस महिमा के कारण से जो उस ने उसे दी है श्री मारे लोग और जाति और भाषा उस के आगे डरते और शर्धराते थे जिसे वह चाहता था उसे बध करता था और जिसे चाहता था उसे जीता छोड़ता था और जिसे चाहता था उसे बैठाता था और जिसे चाहता था उसे उतार देता था । परन्तु जब अहंकार से उस का मन उभारा गया और उस का अन्तःकरण कठोर हुआ तब वह अपने २१ राज्य के सिंहासन से उतारा गया और उस का विभव ले लिया गया । और वह मनुष्य के पुत्रों में से निकाला गया और उस का मन यशु के मन की नाई हो गया और उस का बसाव घनेले गदहों में हुआ और वे उसे बैलों की नाई घास खिलाते लगे और उस की देह आकाश की ओर से भीग गई अब तब उस ने जाना कि अत्यन्त महान ईश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे २२ चाहता है उसे उस पर ठहराता है । और हे बेलशजर यद्यपि तू यह सब जानता २३ था उस का पुत्र होके तू ने अपने मन को नम्र न किया । परन्तु तू ने स्वर्ग के प्रभु के सन्मुख अपने को उभाड़ा और वे उस के मन्दिर के पात्रों को तेरे आगे लाये और तू ने और तेरे प्रधानों ने तेरी पत्नियों और तेरी सुरैतिनों ने उन में दाखरस पीया है और तू ने चांदी और सोने और पीतल और लोहे और काष्ठ और पत्थर के देवों की स्तुति किई जो न देखते हैं न सुनते हैं और न जानते हैं और तू ने उस ईश्वर की महिमा न किई जिस के हाथ में तेरा स्थास है और २४ तेरी सारी चाल हैं । तब उस की ओर से हाथ का भाग भेजा गया और यह लिखा हुआ लिखा गया ॥

२५ और यह वह लिखा हुआ है जो लिखा गया मीनी मीनी टेकल यूफारसिन । २६ मीनी का यह अर्थ है कि ईश्वर ने तेरे राज्य की गिनती किई और उसे समाप्त २७ किया । टेकल कि तू तुला में तौला गया और घाट ठहरा । यूफारसिन कि तेरा २८ राज्य बांटा गया और मादी और फारसी को दिया गया । तब बेलशजर ने आज्ञा किई और उन्हीं ने दानिएल को लाल वस्त्र पहिनाया और सोने का हार उस के गले में डाला और उस के विषय में प्रचार करवाया कि वह राज्य का तीसरा ३० आज्ञाकारी होगा । उसी रात को कसदियों का राजा बेलशजर मारा गया । ३१ अब बासठ बरस की वय में दारा ने जो मद्यानी था इस राज्य को ले लिया ।

कठवां पर्व ।

१ दारा की इच्छा हुई कि राज्य पर सारे राज्यों की प्रभुता के लिये एक सौ

उन मटकों के आगे दाग्वरम पीया । खेलशास्त्र ने जत्र दाग्वरम चीखा तो मोने २  
 चांदी के पात्रों को लाने की आज्ञा किई जिन्हें उस का पिता नवृखुदनजर यर-  
 मलम के मन्दिर में से ले आया था जिनसे राजा और उस के अध्वर्युज उस की  
 स्त्रियां और उस की सुरैतिन उन में पायें । तब ये मोने के पात्रों को लाये जो ३  
 दंडवर के घर के मन्दिर से जो यरमलम में है लाये गये थे और राजा ने और  
 उस के अध्वर्यों ने और उस की स्त्रियों और सुरैतिनों ने उन में पीया । उन्हीं ने ४  
 दाग्वरम पीया और मोने चांदी और पीतल और लोहे और काष्ठ और पत्थर के  
 देवों की स्तुति किई ॥

उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की अंगुलियों ने निकलके राजभवन की भीत के ५  
 गज पर जो दीपक के मन्सुख थी लिखा और राजा ने उस हाथ के भाग को  
 लिखते देखा । तब राजा की भलक बदल गई और उस की चिन्ता ने उसे व्याकुल ६  
 किया यहां लो कि उस की कठि की गांठ गांठ छीनी हो गई और उस के छुटने एक  
 दूसरे से टकुर ग्याने लगे । राजा ने पराक्रम से पूकारा कि शणितकारी और कसदी ७  
 और भविष्यकथक लाये जायें राजा व्याकुल के बुद्धिमानों से बोला और कहा कि  
 जो कोई इन लिखे का पढ़ेगा और उस के अर्थ को सुझ में बतावेगा सो ब्रजनी  
 चम्प से पढ़िनाया जायेगा और उस के गले में मोने का हार डाला जायेगा और  
 राज्य में तौमरा आज्ञाकारी होगा । तब राजा के सारे बुद्धिमान आये परन्तु वे ८  
 उस लिखे का न पढ़ सकें न उस के अर्थ राजा को बता सकें । तब खेलशास्त्र ९  
 राजा अन्यन्त व्याकुल हुआ और उस का भलक बदल गई और उस के प्रधान  
 घरवाये ॥

परन्तु राजा की बातों और प्रधानों की बातों के कारण से रानी भोजनभवन १०  
 में आई और यह कहके बोली कि हे राजा सर्वदा जोआ तेरी चिन्ताएं तुझे व्या-  
 कुल न करें और तेरा स्वरूप न बदले । तेरे राज्य में एक मनुष्य है जिस से पवित्र ११  
 देवों का आत्मा है और तेरे पिता के दिनों में दंडवरीय बुद्धि के समान प्रकाश  
 और बुद्धि और ज्ञान उस में पाये जाते थे जिसे नवृखुदनजर राजा तेरे पिता ने  
 हां हे राजा तेरे पिता ने टोन्टों और शणितकारियों और कसदियों और भविष्य-  
 कथकों का प्रधान किया था । लीया कि एक अत्युत्तम आत्मा और ज्ञान और १२  
 बुद्धि और स्वप्नों के अर्थ कहने और कठिन बातों को बताने की और संदेहों के  
 मिटाने का सामर्थ्य उसी दानिगल में पाई गई जिस का नाम राजा ने खेलचासर  
 रक्खा अब दानिगल बुलाया जाये और अब अर्थ बतावेगा ॥

तब दानिगल राजा के आगे लाया गया और राजा दानिगल से यह कहके १३  
 बोला क्या तू यही दानिगल है जो यहूदाह के बंधुओं के सन्तानों में से है जिसे  
 मेरा पिता राजा यहूदाह से ले आया । और मैं ने तेरा समाचार सुना है कि १४  
 देवों का आत्मा तुझ में है और प्रकाश और बुद्धि और अत्युत्तम ज्ञान तुझ में  
 पाया जाता है । सो बुद्धिमान और गणक मेरे आगे लाये गये कि उस लिखे हुए १५  
 का पढ़े और उस के अर्थ सुझ से बतावे परन्तु उस के अर्थ न बता सके । और १६  
 मैं ने तेरा समाचार सुना है कि तू अर्थों को कह सकता है और संदेह मिटा सकता

पत्थर पहुँचाया जाके माँद के मुँह पर धरा गया और राजा ने अपनी क्राप से और अपने प्रधानों की क्राप से क्राप किई जिस्ते ठहराई हुई थात दानिएल के १८ विषय में पलटी न जाये । तब राजा अपने भवन में गया और रात उपवास में काटी और खाना कोई उस के आगे न लाया और उस की नींद उससे जाती रही ।

१९ तब विहान को बड़े तड़के राजा उठा और जीघ्रता से सिंघों की माँद पर २० गया । और जब वह माँद पर पहुँचा तब उस ने विलाप के शब्द से दानिएल को पुकारा और राजा यह कहके दानिएल से बोला कि हे दानिएल जीवते ईश्वर के सेवक क्या तेरा ईश्वर जिस की तू सेवा करता है सिंघों से तुझे २१ बचा सक्ता है । तब दानिएल ने राजा को उत्तर दिया कि हे राजा सदा २२ जीओ । मेरे ईश्वर ने अपना दूत भेजा और सिंघों के मुँह को बंद किया यहां २३ लों कि उन्हें ने मुझे दुःख न दिया क्योंकि उस के आगे निर्दोषता मुझ में पाई गई और हे राजा मैं ने तेरा भी कुछ अपराध न किया । तब राजा उस के लिये २४ अत्यन्त आनन्दित हुआ और दानिएल को माँद में से निकालने की आज्ञा किई सो दानिएल माँद से निकाला गया और उस पर कुछ दुःख न पाया गया क्योंकि २५ उस का विश्वास ईश्वर पर था ॥

२६ तब राजा ने आज्ञा किई और वे दानिएल के दोपंडायकों को लाये और उन्हें उन के बालकों और उन की स्त्रियों समेत सिंघों की माँद में डाला और सिंघ उन पर प्रबल हुए यहां लों कि माँद के तले न पहुँचते ही सिंघों ने उन की हड्डियों को चकनाचूर किया ॥

२७ तब दारा राजा ने सारे लोगों और जातों और भाषाओं को जो सारी २८ पृथिवी पर वसते थे यों लिखा कि तुम पर कुशल बढ़ता जाये । मैं यह ठहराता हूँ कि मेरे राज्य की हर एक प्रभुता में दानिएल के ईश्वर के आगे मनुष्य डरें और शर्परावे क्योंकि वह जीवता ईश्वर है और सर्वदा स्थिर है और उस के २९ राज्य का नाश न होगा और उस की प्रभुता अन्त लों होगी । वह बचाता है और बड़ाता है वह स्वर्ग और पृथिवी पर आश्चर्य और लक्षण दिखाता है उस ने दानिएल को सिंघों के वश से बचाया है ॥

३० सो यह दानिएल दारा और फारसी खोरस के राज्य में भाग्यमान रहा ॥

सातवां पर्व ।

१ बाबुल के राजा बेलशाजर के पहिले घरस दानिएल ने अपने बिछौने पर के सिर के दर्शनों में एक स्वप्न देखा और उस ने उस स्वप्न को लिखा और उन बातों के मूल को बताया ॥

२ दानिएल बोला और कहा कि मैं ने रात को अपने दर्शन में देखा और क्या देखता हूँ कि स्वर्ग के चार पवन चारों ओर से महा समुद्र पर चढ़ाई करने लगे । और समुद्र से चार महा पशु उठे जो एक दूसरे से भिन्न था । पहिला सिंह की नाई और गिद्ध के से डैने रखता था मैं देखता ही था और उस के डैने उखड़ गये और वह पृथिवी से उठाया गया और मनुष्य के समान पाँवों पर खड़ा किया ३ गया और मनुष्य का मन उसे दिया गया । और क्या देखता हूँ कि एक दूसरा पशु

तीस अध्यक्षाओं को उठराये । और उन पर तीन प्रधान जिन में दानिएल थे २  
कि अध्यक्ष उन्हें लेखा देवे जिनमें राजा घड़ी न बढाये । तब यह दानिएल सारे ३  
प्रधानों और अध्यक्षों पर बढाया गया इस कारण कि एक अत्युत्तम आत्मा उस  
में था और राजा ने चाहा कि उसे सारे राज्य पर उठरावे ॥

तब प्रधान और अध्यक्ष दानिएल के विरुद्ध राज्य के विषय में कोई कारण ४  
हुंकारते थे परन्तु वे कोई दोष और कोई कारण न पा सके क्योंकि यह विषयस्त  
था और उस में कुछ चूक और दोष न पाया गया । तब इन मनुष्यों ने कहा कि ५  
इस दानिएल पर उस के ईश्वर की व्यवस्था के विषय को छोड़ कुछ दोष का  
कारण न पावेंगे ॥

तब ये प्रधान और अध्यक्ष राजा के आगे हुल्लड़ के संग आये और यों उस की ६  
बिन्ती किई कि दारा राजा सदा लों लीधे । राज्य के सारे प्रधान और अध्यक्ष ७  
और कुंशर और सत्री और सेनापतिन ने एकट्ठे होके एक मना किया है कि राज-  
कीय विधि ठहरावे और एक दृढ़ आज्ञा करें कि तुम्हें छोड़ जो कोई किसी ईश्वर  
से अथवा मनुष्य से तीस दिन लों कुछ मांगे है राजा यह सिंह की सांद में डाला  
जाये । अथ है राजा इस आज्ञा को दृढ़ कीजिये और लिखित पर नाम लिखिये ८  
जिन्हें सादी और फारसियों की व्यवस्था के समान जो फिरती नहीं न पलटें । सो ९  
दारा राजा ने उस लिखित और आज्ञा पर नाम लिखा ॥

और जब दानिएल ने जाना कि इस लिखित पर चिन्ह हो गये तब यह १०  
अपने घर गया और उस के शयनगृह के भरोखे दरमलस को और खुले हुए थे  
और वह आगे की नाईं दिन भर में तीन बार घुठनों पर मुकता और प्रार्थना  
करता था और ईश्वर के आगे धन्य मानता था ॥

तब ये लोग एकट्ठे हुए और उन्होंने ने दानिएल को प्रार्थना करते और अपने ११  
ईश्वर के आगे बिन्ती करते पाया । तब वे पास आये और राजा के आगे राजा को १२  
आज्ञा के विषय में कहा कि तू ने इस आज्ञा पर नहीं लिखा कि हर एक मनुष्य  
तुम्हें छोड़ जो किसी ईश्वर से अथवा मनुष्य से तीस दिन के भीतर है राजा कुछ  
मांगे सो सिंहों की सांद में डाला जाये राजा ने उत्तर दिया और कहा कि यह  
थात मृत्य है और सादी और फारसियों की व्यवस्था के समान नहीं पलटती ॥

तब उन्होंने ने उत्तर दिया और राजा के आगे बिन्ती किई कि दानिएल जो १३  
यहूदाह के सन्तान के बंधुओं में से है है राजा तुम्हें नहीं मानता और न तेरी  
आज्ञा को जिस पर तू ने लिखा परन्तु प्रतिदिन तीन बार प्रार्थना करता है । तब १४  
राजा ये बातें सुनके अपने से अत्यन्त उदाम हुआ और दानिएल को कुड़ाने का  
मन किया और सूर्य के अस्त लों उसे कुड़ाने का यत्न करता रहा ॥

तब ये मनुष्य राजा के पास एकट्ठे हुए और राजा से कहा कि जान ले हे १५  
राजा कि सादी और फारसियों का शास्त्र यह है कि जो आज्ञा और रीति राजा  
उठरावे पलटी न जाये । तब वे राजा को आज्ञा में दानिएल को लाये और १६  
उसे सिंहों की सांद में डाल दिया और राजा दानिएल को यह कहके बोला कि  
तेरा ईश्वर जिस की तू सदा सेवा करता है वही तुम्हें बचावेगा । और एक १७



- ४ यदि तू अपने बैरी के बैल अथवा उस के गदहे को बहकते देखे तो उसे  
 ५ अवश्य उस पास पहुंचादियो । यदि तू अपने बैरी के गदहे को देखे कि अपने घोस  
 के नीचे बैठ गया क्या उस की सहाय न करेगा तू निश्चय उस की सहाय  
 कीजियो ॥
- ६ तू अपने कंगाल के व्यवहार पद में न्याय से अलग मत रहियो । झूठी बात  
 से दूर रहियो और निर्दोषी और धर्मी को धात मत कीजियो क्योंकि मैं दुष्ट को  
 निर्दोष न ठहराऊंगा ॥
- ८ और तू अकोर मत लेना क्योंकि अकोर दृष्टमानों को अंधा करती है और  
 धर्मियों के बचन को फेर देती है ॥
- ९ और विदेशी पर अंधेर मत कीजियो क्योंकि तुम परदेशी के मन को जानते  
 हो इस लिये कि तुम आप भी मिस्र के देश में परदेशी थे ॥
- १० और अपनी भूमि में छः बरस वो और उस के फल एकट्टे कर । पर सातवें में  
 ११ उसे पड़ी रहने दे और छोड़ दे जिसतें तेरे लोग के कंगाल उसे खावें और जो उन  
 से बचे खेत के प्रभु चरें इसी रीति अपनी दाख और जलपाई की वारी से व्यवहार  
 कीजियो ॥
- १२ छः दिन अपना काम काज करना और सातवें दिन विश्राम कीजियो जिसतें  
 तेरे बैल और तेरे गदहे चैन करें और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी सुस्तावें ।
- १३ और सब बात में जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है चौकस रहो और उपरी देवतों  
 का नाम लो मत लो वह तेरे मुंह से सुना न जाय ॥
- १४ तू बरस दिन में तीन बार मेरे लिये पर्व मान । तू अखमीरी रोटी का पर्व  
 १५ मान सात दिन लो जैसा मैं ने तुम्हें आज्ञा की है अखमीरी रोटी खा आबीव  
 के मास में क्योंकि उस में तू मिस्र से निकला और कोई मेरे आगे कूड़ा न आवे ।
- १६ और लवने का पर्व तेरे परिश्रम के प्रथम ही फल जो तू खेत में बोवेगा और  
 एकट्टा करने का पर्व बरस के अंत जब तू खेत से अपने परिश्रम के फल एकट्टा  
 १७ कर ले । तेरे समस्त पुरुष बरस बरस तीन बार प्रभु परमेश्वर के सन्मुख  
 हों ॥
- १८ तू मेरे बलिदान का लोहू अखमीरी रोटी के साथ मत चढ़ा और मेरे बलि की  
 १९ चिकनाई बिहाज लां रहने न पावे । अपनी भूमि के पहिले फलों के पहिले को  
 परमेश्वर अपने ईश्वर के घर में ला तू बकरी का मेघा उस की माता के दूध में  
 मत सिंभा ॥
- २० देख मैं एक दूत तेरे आगे भेजता हूं कि मार्ग में तेरी रक्षा करे और तुम्हें उस  
 २१ स्थान में जो मैं ने सिद्ध किया है ले जाय । उससे चौकस रह और उस का कहा  
 मान उसे मत खिजा क्योंकि वह तुम्हारे अपराध को क्षमा न करेगा क्योंकि मेरा  
 २२ नाम उस में है । क्योंकि यदि तू सचमुच उस का कहा माने और सब जो मैं  
 २३ कहता हूं करे तो मैं तेरे शत्रुन का शत्रु और तेरे वैरियों का वैरी हूंगा । क्योंकि  
 मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा और तुम्हें अमूरियों और हितियों और फरिजियों  
 और कनआनियों हवियों और यवूसियों के देश में लावेगा और मैं उन्हें नाश

भालू की नाईं एक ओर सीधा खड़ा हुआ और उस के मुँह में उस के दाँतों के बीच तीन पत्थरी थीं और उन्होंने ने उससे कहा कि उठ बहुत सा सांस भरकर । उस के पीछे मैं ने देखा और देखा कि एक और चीते के समान उठा जिस की पीठ पर पंजा के चार हैंने ये इस पशु के भी चार सिर थे और उसे प्रभुता दिई गई । इस के पीछे मैं ने रात के दर्शनों में देखा और क्या देखता हूँ कि ७ चौथा पशु भयानक और भयंकर और अत्यन्त बलवान और उस के दाँत लोहे के बड़े बड़े थे उन ने भक्षण किया और टुकड़े टुकड़े किये और रहे हुए को अपने पाँच तले लताड़ा और यह उन सय पशुन से जो उस के आगे थे भिन्न था और उस के दस सींग थे । मैं ने उन सींगों को सोचा और क्या देखता हूँ कि उन के मध्य में और एक छोटा सा सींग निकला जिस के आगे आगे लें तीन सींग जड़ से उखड़ गये और क्या देखता हूँ कि उस सींग में मनुष्य की सी आंखें थीं और एक मुँह जो बड़ी बड़ी बातें बोल रहा है ॥

मैं यहाँ लें देखता रहा कि सिंहासन रखे गये और दिनों का प्राचीन बंठा ८ उस का पीछराधा पाला सा प्रेत था और उस के सिर का बाल चाँये उन की नाईं था और उस का सिंहासन आग की लहर और उस के चक्र जलती आग की नाईं थे । एक अग्नीय धारा निकली और उस के आगे से निकल आई महस १० सदसों ने उस को सेधा किई दस सदस गुरी दस सदस उस के आगे खड़े थे न्याय हो रहा था और पुष्पकें खुली थीं । तब मैं ने देखा कि बड़ी बातों के शब्द के ११ कारण जिन्हें उस सींग ने कहीं मैं ने यहाँ लें देखा कि यह पशु मारा गया और उस की देह नाश हुई और जलती लहर को दिई गई । और रहे हुए पशुन का १२ विषय यह है कि उन की प्रभुता लिई गई परन्तु कुछ काल और बड़ी लें उन्हें जीवन दिया गया ॥

मैं ने रात्रा के दर्शनों में देखा और क्या देखता हूँ कि मनुष्य के पुत्र के समान १३ आकाश के मेघों पर आया और दिनों के प्राचीन के पास पहुँचा वे उसे उस के आगे ले आये । और उसे प्रभुता और विभव और राज्य दिये गये कि सारे लोग १४ और जाति और भाषा उस को सेधा करें उस की प्रभुता सर्वदा की प्रभुता है जो जानी न रहेगी और उस का राज्य नाश न होगा ॥

मैं दानिएल देह के मध्य में अपने मन में उदास हुआ और मेरे सिर के दर्शनों १५ ने सुभे व्याकुल किया । मैं ने उन में से जो निकट खड़े थे एक के पास जाके १६ सारा समाचार पूछा और उस ने सुभ से कहा और बातों का अर्थ जनाया । ये १७ चार बड़े पशु चार राजा हैं जो पृथिवी से उठेंगे । परन्तु अत्यन्त महान के सिद्ध १८ लोग राज्य ले लेंगे और राज्य का सर्वदा वग में रखेंगे अर्थात् सर्वदा और सर्वदा के लिये ॥

तब मैं ने चाहा कि चौथे पशु का समाचार जानूँ जो औरों से भिन्न था और १९ अत्यन्त भयानक था जिस के दाँत लोहे के और नष्ट पीतल के जिस ने भक्षण किया और टुकड़े टुकड़े किया और रहे हुए को पाँचों तले लताड़ा । और उन २० दस सींगों का जो उस के सिर पर थे और उस एक का जो निकला और जिस

के आगे तीन गिर गये हों। उस सींग का जिस की आंखें थीं और एक मुँह था २१ जो बड़ी धातें बोलता था और देखने में अपने सिंगियों से अधिक बड़ा था । मैं ने देखा और उसी सींग ने सिद्धों के संग युद्ध किया और उन पर प्रबल हुआ । २२ यहां लो कि दिनों के प्राचीन को और अत्यन्त-महान के सिद्धों को न्याय दिया गया और समय आ पहुँचा कि सिद्ध लोग राज्य के अधिकारी होंगे ॥

२३ वह यों बोला कि चौथा पशु पृथिवी पर चौथा राज्य होगा जो सारे राज्यों से भिन्न होगा और सारी पृथिवी को भक्षण करेगा और उसे लताड़ेगा और उसे २४ टुकड़ा टुकड़ा करेगा । और इस राज्य के दस सींग दस राजा हैं जो निकलेंगे और उन के पीछे एक और निकलेगा वह पहिले से भिन्न होगा और वह तीन २५ राजाओं को वश में करेगा । और अत्यन्त महान के विरोध में धातें करेगा और अत्यन्त महान के सिद्धों को थकावेगा और समयों और व्यवस्थाओं को बदलने चाहेगा और वे उस के हाथ में एक समय और दो समय और आधे समय लों २६ दिये जायेंगे । परन्तु न्याय की बैठक होगी और वे भस्म करने और अन्त लों २७ नाश करने को उस की प्रभुता को ले लेंगे । और राज्य और प्रभुता और राज्य का महत्त्व सारे स्वर्ग के नीचे अत्यन्त महान के सिद्धों को दिया जायेगा जिस का राज्य सर्वदा का राज्य है और सारी प्रभुता उस की सेवा करेंगी और आज्ञा मानेंगी ॥

२८ यहां वात का अन्त है मैं दानिएल अपने ध्यानों से बहुत व्याकुल हुआ और मेरा स्वरूप फिर गया पर मैं ने वात को मन में रख छोड़ा ॥

आठवां पर्व ।

१ बेलशाजर राजा के तीसरे बरस में मुझ दानिएल को पहिले दर्शन के पीछे एक दर्शन दिखाई दिया ॥

२ और मैं ने दर्शन में देखा और ऐसा हुआ कि मैं ने देखा कि मैं शुशान भवन में था जो ऐलाम के प्रदेश में है और मैं ने दर्शन में देखा कि मैं जलार्ई की ३ नदी के तीर था । तब मैं ने अपनी आंखें उठाके देखा और क्या देखता हूँ कि नदी के आगे एक मेंढा खड़ा है जिस के दो सींग थे और दोनों सींग बड़े थे ४ परन्तु एक उन में से दूसरे से बड़ा था और बड़ा पीछे निकला । मैं ने मेंढे को पश्चिम और उत्तर और दक्षिण दिशा को ठेलते देखा ऐसा कि कोई पशु उस के आगे खड़ा न हो सका और कोई उस के हाथ से कुड़ा न सक्ता था परन्तु वह अपनी इच्छा के समान करता था और महान हुआ ॥

५ और सोचते सोचते क्या देखता हूँ कि एक बकरा पच्छिम से सारी पृथिवी पर आया और पृथिवी को न कूता था और उस बकरे की दोनों आंखों के बीचों ६ बीच एक दृष्टिमान सींग था । और वह उस दो सींगों मेंढे के पास आया जिसे मैं ने नदी के आगे खड़ा देखा था और अपने पराक्रम के कोप से उस पर ७ लपका । और मैं ने उसे मेंढा के पास आते देखा और वह उस के विरुद्ध कुड़ हुआ और उस ने उस मेंढे को मारा और उस के दोनों सींग तोड़े और उस मेंढे से उस के आगे खड़ा रहने की कुछ सामर्थ्य न थी परन्तु उस ने उसे भूमि पर

गिरा दिया और लताड़ा और कोई ऐसा न था कि उस मेंटों को उस के हाथ से  
 छुड़ा सके । सो वह बकरा बहुत बढ़ गया और जब वह बलवान हुआ तो उस ८  
 का बढ़ा सींग तोड़ा गया और उस की सन्ती स्वर्ग को पवन की चारों ओर  
 से चार प्रसिद्ध सींग निकले । और उन में से एक छोटा सींग निकला जो दक्षिण ९  
 और पूरव और सुन्दर भूमि की ओर बहुत ही बढ़ गया । और वह स्वर्ग की १०  
 सेना के विरुद्ध में बढ़ गया और उस ने सेना में से कितनों को और तारों को  
 भूमि पर गिरा दिया और उन्हें लताड़ा । हाँ उस ने सेना के अध्यक्ष के विरुद्ध ११  
 में अपने को बढ़ाया और उसके प्रतिदिन का बलिदान छुड़ाया गया और उस का  
 पवित्रस्थान गिराया गया । और प्रतिदिन के बलिदान के विरुद्ध में उन के पाप १२  
 के कारण सेना सौंपी गई और उस ने सच्चाई को भूमि पर डाल दिया और यही  
 किया और भाग्यमान हुआ ॥

तब मैं ने एक साधु को कहते सुना और दूसरे साधु ने उस बोलनेवाले साधु १३  
 से कहा कि पवित्रस्थान और सेना लताड़े जाने के लिये प्रतिदिन के बलिदान  
 और उजाड़ करने की आज्ञा भग के विषय का दर्शन कर लें दिया जायेगा । फिर १४  
 उस ने मुझ से कहा कि दो सप्ताह तीन सौ सांभ विद्या लें तब पवित्रस्थान  
 निर्दोष ठहराया जायेगा ॥

और ऐसा हुआ कि मुझ दानिएल ने यह दर्शन देखा और उस का अर्थ १५  
 ठूँढ़ा तब देखो मेरे मामें एक मनुष्य की नाईं दिखाई दिया । और मैं ने उत्तार १६  
 के मध्य में से एक मनुष्य का शब्द सुना जिस ने पुकारके कहा कि हे जव्वल  
 दर्शन का अर्थ उसे समझा । सो जहाँ मैं खड़ा था वह पास आया और जब १७  
 वह आया तब मैं डरा और मुँह के बल गिरा परन्तु उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य  
 के पुत्र समझ क्योंकि अंत्य के समय में यह दर्शन होगा । सो जब वह मुझ से १८  
 यह कह रहा था तब मैं आँधे मुँह भारी नींद में भूमि पर पड़ा था तब उस ने  
 मुझे 'हुआ और सीधा खड़ा किया । और मुझ से कहा कि देख जो कुछ १९  
 जलजलाहट के अंत्य में होगा मैं तुझे जनायता हूँ क्योंकि ठहराये हुए समय में  
 अंत्य होगा ॥

यह दो मींगा मेंटा जो तू ने देखा मादी और फारस के राजा हैं । और वह २०  
 झूठूआ बकरा यूनान का राजा है और वह बड़ा सींग जो उस की आंखों के  
 बीच में है सो पहिला राजा है । अब वह टूटा हुआ होके जैसा कि उस की २१  
 सन्ती चार निकले चार राज्य उस जाति में खड़े होंगे परन्तु उस के पराक्रम में  
 नहीं । और उन के राज्य के अंत्य समय में जब अपराधी समाप्त होंगे तब एक २२  
 राजा भयानक स्वरूपवान गुप्त बातों का समझायेगा खड़ा होगा । और उस का २३  
 बड़ा पराक्रम होगा परन्तु अपने ही बल से नहीं और वह आश्चर्य से नाश  
 करेगा और भाग्यमान होगा और कार्य करेगा और बलवानों को और पवित्र जनों  
 के लोगों को नष्ट करेगा । और अपनी चतुराई से भी वह कुल को अपने हाथ २५  
 में बढावेगा और वह अपने मन में अपने को बढावेगा और भाग्य से बहुतों को  
 नाश करेगा यह राजाओं के राजा के विरोध में खड़ा होगा परन्तु वह बिन हाथ

२६ से तोड़ा जायेगा । और बिहान और सांझ का दर्शन जो कहा गया सत्य है सो तू उस दर्शन को बन्द कर क्योंकि बहुत दिन के लिये होगा ।  
 २७ और मैं दानिएल मूर्छित हुआ और कितने दिन लों रोगी रहा और उस के पीछे उठा और राजा का कार्य किया और मैं उस दर्शन से अर्चभित हुआ परन्तु किसी ने उसे न समझा ।

### नवां पर्व ।

१ शेरशाह के बेटे दारा के पहिले बरस में जो मादी के वंश से था और  
 २ कसदियों के राज्य का राजा हुआ । उस के राज्य के पहिले बरस में मुक्त दानिएल ने पुस्तकों में उन बरसों की गिन्ती को समझा जिन के विषय में परमेश्वर का वचन यरमियाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुँचा था कि वह यरुसलम के बिनाशों में सत्तर बरस पूरा करेगा ।  
 ३ और मैं ने प्रभु परमेश्वर की ओर अपना मुँह फेरा कि व्रत करके और टाट  
 ४ और राख में प्रार्थना और बिन्ती से हूँटूँ । और मैं ने परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रार्थना किई और पाप को स्वीकार करके कहा कि हे प्रभु महान और भयंकर ईश्वर जो अपने प्रेमियों और आज्ञापालकों के लिये बाचा और दया को रखता  
 ५ है । हम ने पाप किया है और हम ने अपराध किया है और हम ने दुष्टता किई है और हम तेरी आज्ञाओं और तेरे न्यायों से अलग होके फिर गये हैं ।  
 ६ और हम ने तेरे भविष्यद्वक्ता सेवकों की बात जिन्हें ने तेरा नाम लेके हमारे राजाओं और हमारे अध्यक्षों और हमारे पितरों और देश के सारे लोगों को  
 ७ सन्देश दिया न मानी । हे प्रभु धर्म तेरा है परन्तु हमारे लिये और यहूदाह के मनुष्यों के और यरुसलम के बासियों और सारे इसराएल के लिये जो पास और  
 ८ दूर हैं समस्त देशों में जहाँ जहाँ तू ने उन्हें अपने बिरुद्ध पाप करने के कारण  
 ९ से खदेड़ा है मुँह की घबराहट है । हे प्रभु हमारे लिये और हमारे राजाओं और हमारे अध्यक्षों और हमारे पितरों के लिये मुँह की घबराहट है इस कारण कि  
 १० हम ने तेरे बिरुद्ध पाप किया है । प्रभु हमारे ईश्वर की दया और जमा हैं यद्यपि हम उससे फिर गये हैं । और हम ने परमेश्वर अपने ईश्वर की व्यवस्था  
 ११ पर चलने को जो उस ने अपने दास भविष्यद्वक्ता के द्वारा हमारे आगे रक्खी उस का शब्द न माना । हाँ तेरा शब्द न मानने को सारे इसराएल ने फिर जाने से तेरी व्यवस्था को उलंघन किया है इस कारण यह साप हम पर और वह किरिया जो ईश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी है आ पड़ी है क्योंकि  
 १२ हम ने उस के बिरुद्ध पाप किया है । और उस ने अपनी बातों को जो उस ने हमारे और हमारे न्याय करवैये न्यायों के बिरुद्ध कही थीं हम पर यह बड़ी घुराई लाके दृढ़ किया क्योंकि सारे स्वर्ग के तले ऐसा नहीं हुआ है जैसा कि  
 १३ यरुसलम पर बीता है । जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिखा है यह सब घुराई हम पर आ पड़ी है तिस पर भी अपने कुकर्मी से फिरने को और तेरी सच्चाई  
 १४ को समझने को हम ने परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे प्रार्थना न किई । इस लिये परमेश्वर ने हमारी घुराई पर चौकसी किई और उसे हम पर लाया क्योंकि

परमेश्वर हमारा ईश्वर अपने सारे कार्यों में जो यह करता है धर्मी है क्योंकि हम ने उस का शब्द न माना । और अब हे प्रभु हमारे ईश्वर जो अपने लोगों १५ को अपने हाथ के पराक्रम से मिस्र देश में बाहर निकाल लाया और अपना नाम किया जैसा कि आज के दिन है हम ने पाप किया है हम ने दुष्टता की है । हे प्रभु मैं तेरी विन्ती करता हूँ तेरे सारे धर्म के समान तेरा क्रोध और १६ तेरा कोप तेरे नगर यरुसलम से तेरे पवित्र पर्वत से फिर जाये क्योंकि हमारे पापों के कारण और हमारे पितरों के कुकर्मों के कारण से यरुसलम और तेरे लोग आसपास के सभी के लिये निन्दा है । सो अब हे हमारे ईश्वर अपने दाम १७ की प्रार्थना और उस की विनितियां मुन और अपने रूप को अपने उजाड़ पवित्र स्थान पर प्रभु के लिये प्रकाश कर । हे मेरे ईश्वर अपना कान भुका और सुन १८ अपनी आंखें खोल और हमारे उजाड़ों को और उस नगर को देख जिस पर तेरा नाम पुकारा जाता है क्योंकि हम अपने धर्मों के लिये नहीं परन्तु तेरी बड़ी दया के लिये अपनी विन्ती तेरे आगे करते हैं । हे प्रभु सुन हे प्रभु क्षमा कर हे १९ प्रभु कान धर और मान ले हे मेरे ईश्वर अपने ही कारण विलंब मत कर क्योंकि तेरे नगर और तेरे लोग तेरे नाम से पुकारे जाते हैं ॥

और मैं कहता और प्रार्थना करता और अपने पाप और अपने लोग इसराएल २० के पाप को मान लेता हूँ या और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे अपने ईश्वर के पवित्र पहाड़ के लिये विन्ती पहुंचाता या । हां मैं प्रार्थना में बोल रहा था २१ इतने में वही जन अर्थात् जबराल जिसे मैं ने आरम्भ के दर्शन में देखा था शीघ्रता से उड़ते हुए आया और उस ने सोफ की सेंट के समय में मुझे छूआ । और उस २२ ने संदेश दिया और मुझ से बातें किई और कहा कि हे दानिएल अब मैं तुम्हें ज्ञान में निपुण करने को निकल आया हूँ । तेरी विन्ती करने के आरम्भ में वचन २३ निकला और मैं आया कि तुम्हें दिव्यार्ज क्योंकि तू शक्ति प्रिय है सो तू इस बात को समझ ले और दर्शन को सोच ॥

तेरे लोगों पर और तेरे पवित्र नगर पर अपराध रोक्ने को और पापों पर २४ क्षमा करने को और कुकर्म के लिये प्रायश्चित्त करने को और सर्वदा का धर्म लाने को और दर्शन और भविष्यद्वक्ता पर क्षमा करने को और अत्यन्त धर्ममय को अभिषेक करने को सत्तर सप्ताह ठहराये गये हैं । इस लिये ज्ञान ले और २५ समझ कि आज्ञा के निकलने के आरम्भ से यरुसलम के फिर बनाने को मसीह राजा लों सात सप्ताह यासठ सप्ताह हैं और सड़क और दरार सकेती के दिनों में फिरके बनाये जायेंगे । और यासठ सप्ताह के पीछे मसीह मारा जायेगा और उस २६ का कुछ नहीं और उस राजा के लोग जो आवेंगे उस नगर को और पवित्रस्थान को नाश करेंगे और उस का अन्त बाढ़ से होगा और संग्राम के पीछे उजाड़ ठहराया गया है । और यह नियम को बहुतों के संग एक सप्ताह में स्थिर करेगा २७ और सप्ताह के मध्य में वह बलिदान और सेंट को उठा डालेगा और विनित यस्तुन को सिरे पर समाप्त लों उसे उजाड़ेगा और ठहराया हुआ उजाड़ों पर बहाया जायेगा ॥



## दसवां पृष्ठ ।

- १ फारस के राजा खोरस के तीसरे घरस दानिएल पर जिस का नाम बेलचासर था एक बात प्रगट हुई और यह बात सत्य परन्तु संकेतो का समय बढ़ा था
- २ और उस ने उस बात को समझा और उस दर्शन का ज्ञान रखता था । मैं
- ३ दानिएल उन दिनों में पूरे तीन मसाह लों विलाप करता रहा । मैं ने तीन मसाह बीतने लों बांका की रोटी न खाई न मेरे मुंह में घाटी और मदिरा पड़ी और मैं ने अपने घर तेल न मला ।
- ४ और पहिले मास की चौथीसवीं तिथि में जिस समय मैं में महा नदी विषलः
- ५ के तीर पर था । तब मैं ने आंख उठाके दृष्टि किई और क्या देखता हूं कि एक मनुष्य सूती वस्त्र पहिने हुए जिस की कटि पर ऊफाज के चांगे सोने का पटुका
- ६ बांधा था । उस की देह भी लहसनिया के समान और उस का मुंह बिजुली का सा और उस की आंखें आग के दीपकों की नाईं और उस की भुजा और उस के पांख चमकते पीतल के से थे और उस की दातों का शब्द एक मंडली के शब्द
- ७ की नाईं । और मुझ दानिएल ने अकेला यह दर्शन देखा क्योंकि जो मनुष्य मेरे संग थे उन्होंने ने दर्शन न देखा परन्तु उन पर ऐसी कंपकंपी पड़ी कि ये आप आप
- ८ को कृपाने को भागे । सो मैं अकेला रह गया और यह बढ़ा दर्शन देखा और मुझ में शक्ति न रही क्योंकि मेरा स्वरूप बिगड़ने लों-पलट गया और मुझ में बल
- ९ न रहा । तथापि मैं ने उस की दातों का शब्द सुना और जब मैं ने उस की दातों का शब्द सुना तब मैं मुंह के बल भारी नींद में था और मेरा मुंह भूमि की ओर ॥
- १० और देखो एक दाय ने मुझे कूआ जिम ने मुझे मेरे घुठनों और हथेलियों पर
- ११ चढाया । और उस ने मुझ से कहा हे दानिएल अति प्रिय जन उन दातों को जो मैं तुझ से कहता हूं समझ ले और सीधा खड़ा हो जा क्योंकि मैं अब तेरे पास भेजा गया हूं और ज्यों उस ने मुझ से यह बात कही त्यों मैं कांपता हुआ खड़ा
- १२ हो गया । तब उस ने मुझ से कहा कि हे दानिएल मत डर क्योंकि पहिले ही दिन से जब तू ने अपना मन समझने पर और अपने ईश्वर के आगे अपने को ताड़ना करने पर लगाया तेरी दातें सुनी गईं और तेरी दातों के लिये मैं आया
- १३ हूं । परन्तु फारस के राज्य के राजा ने एकूँस दिन लों मेरा साम्रा किया परन्तु देख मीकाएल जो श्रेष्ठ राजपुत्रों में से श्रेष्ठ है मेरी सहायता के लिये पहुंचा और
- १४ वहां मैं फारस के राजाओं के संग रह गया । अब जो कुछ तेरे लोगों पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुझे समझाने को आया हूं क्योंकि यह दर्शन दिनों के लिये है ॥
- १५ और जब उस ने ऐसी दातें मुझ से कहीं तब मैं ने अपना मुंह भूमि की ओर
- १६ किया और गूंगा हो गया । और क्या देखता हूं कि मनुष्यों के पुत्रों की नाईं किसी ने मेरे होठों को कूआ तब मैं ने अपना मुंह खोला और वाला और जो मेरे आगे खड़ा था उसे कहा कि हे मेरे प्रभु इस दर्शन के कारण से मेरे शोक
- १७ मुझ पर लौटे और मुझ में कुछ बल न रहा । क्योंकि यह क्योंकर हो सक्ता है

कि मेरे प्रभु का सेवक इस प्रभु से आर्त्ता करे क्योंकि मैं तो हूँ मुक्त मैं कुछ बल न रहा और न मुक्त मैं स्थान रहा ॥

तब मनुष्य के स्वरूप की नाईं एक ने फिर आके मुझे छुके बल दिया । और १८  
कहा कि हे आर्त्त प्रिय मनुष्य मत डर तुझ पर कुशल दायें बलवान हो हां बल-  
वान हो और जय उस ने मुक्त से यह कहा तब मैं ने बल पाया और कहा कि  
अब मेरा प्रभु कहे क्योंकि तू ही ने मुझे बल दिया है ॥

तब यह बोला क्या तू जानता है कि मैं मेरे पास किस लिये आया हूँ और २०  
अब मैं फारस के राजा ने लड़ने को फिर जाऊंगा और जय मैं चला जाऊंगा  
तो देख यूनान का अध्यक्ष आवेगा । परन्तु मैं तुझे बता देता हूँ कि मृत्यु लिखित २१  
में क्या लिखा है और ऐसा कोई नहीं कि इन बातों में अपने को मेरे संग बल-  
वान्त करे परन्तु केवल तुम्हारा अध्यक्ष मौकाएल ॥

स्मारकयां पृष्ठ ।

दारा माटी के पहिले घर में भी मैं हमें दृढ़ करने और बन देने को खड़ा हुआ ॥ १  
और अब मैं तुझ से मृत्यु बताता हूँ देख फारस में तीन राजा और भी उठेंगे २  
और चौथा सभों से अधिक धनी होगा और यह अपने बल से और अपने धन  
से मय को यूनान के राज्य के विरुद्ध उभाड़ेगा ॥

फिर एक बनवान राजा खड़ा होगा और वही प्रभुता से राज्य करेगा और ३  
अपनी इच्छा के समान करेगा । और जय यह खड़ा होगा तब उस का राज्य ४  
सोड़ा जायेगा और स्वर्ग की चारों पयनों की ओर विभाग किया जायेगा और  
उस के वंश को न पहुंचेगा और न उस राज्य की नाईं जिस का यह प्रभु था  
क्योंकि उस का राज्य औरों के लिये उखाड़ा जायेगा ॥

और दक्षिण का राजा बलवान होगा और उस के राजपुत्रों में से बल में ५  
उम्मे अधिक होगा और राज्य पावेगा और उस का राज्य बड़ा राज्य होगा ।  
और घरों के अन्त में वे आपस में मिलेंगे क्योंकि दक्षिण के राजा की पुत्री ६  
उत्तर के राजा के पास कुछ ठहराने को आवेगी परन्तु यह भुजा का पराक्रम न  
रख सकेगी और न यह न उस की भुजा ठहरेगी परन्तु यह और वे जो उसे लाये  
ये और जिसे यह जनी और यह जिस ने उसे समय में बल दिया था सौंपी  
जायेगी । परन्तु उस की लड़की एक डानी में से उस के स्थान में खड़ा होगा ७  
जो सेना लेके आवेगा और उत्तर के राजा की कोट में प्रवेश करेगा और उन से  
विरोध करेगा और जीतेगा । और उन के देवों और उन की मूर्ति को भी और ८  
उन के बहुमूल्य सोने-चांदी के पात्र सहित धंधुआई में मिस में ले जायेगा और  
यह उत्तर के राजा से घरों तक बना रहेगा । सो दक्षिण का राजा उस के ९  
राज्य में आवेगा और अपने ही देश में लौटेगा । परन्तु उस के बेटे लड़ेंगे और १०  
यही यही सेना बटेरेंगे और निश्चय एक आवेगा और समझेगा और दीत  
जायेगा तब यह फिर जायेगा और वे उस के गढ़ लों लड़ेंगे । और दक्षिण का ११  
राजा क्रोध से उठेगा और निकलके उम्मे लड़ेगा अर्थात् उत्तर के राजा से और  
यह एक बड़ी मंडली सिद्ध करेगा परन्तु मंडली उस के हाथ में दिई जायेगी ।

- १२ और जब वह उस मंडली को दूर करेगा तब उस के मन में घमंड समावेगा और  
 १३ वह दस सदसों को गिरावेगा परन्तु उस का बल अधिक न होगा । क्योंकि उत्तर  
 का राजा फिर जायेगा और एक मंडली जो पहिले से अधिक होगी लावेगा और  
 समर्थों अर्थात् दरसों के पीछे एक बड़ी सेना और बहुत धन ले आवेगा ॥
- १४ और उन दिनों में बहुतरे दक्खिन के राजा पर चढ़ाई करेंगे और बटमारों के  
 १५ बालक दर्शन को स्थिर करने के लिये आप को बठावेंगे पर ये गिर जायेंगे । सो  
 उत्तर का राजा आवेगा और मोरचा धांधेगा और गढ़ के नगरों को ले लेगा और  
 दक्खिन की भुजा और चुने हुए लोग उस के आगे न ठहरेंगे और न साम्रा करने  
 १६ का बल रहेगा । परन्तु जो उस का साम्रा करेगा सो अपनी इच्छा के समान  
 करेगा और कोई उस के आगे ठहर न सकेगा और वह शुभ देश में खड़ा होगा  
 १७ जो उस के हाथ से अन्त पावेगा । और वह अपने सारे राज्य के बल से और  
 अपनी खराई से प्रवेश करने के लिये मुंह फेरेगा वह यों करेगा और वह स्त्रियों  
 की पुत्री को उजाड़ करने के लिये उसे देगा परन्तु वह न ठहरेगी न उस के  
 १८ लिये होगा । तब वह टापुओं की ओर मुंह फेरेगा और बहुतों को ले लेगा परन्तु  
 अर्धशत अपने लिये उस के निन्दित कार्य को उठा डालेगा अपनी ही निन्दा को  
 १९ छोड़ वह उसी पर फिरेगा । तब वह अपने ही देश के गढ़ को अपना मुंह फेरेगा  
 परन्तु वह ठोकर खावेगा और गिर पड़ेगा और पाया न जायेगा ॥
- २० और उस के स्थान पर एक और उठेगा जो राज्य के विभव में करसेवे के  
 २१ भेजेगा परन्तु थोड़े दिनों में वह न तो क्रोधों से न संग्राम में नष्ट होगा । फिर उस  
 के स्थान में एक तुच्छ जन खड़ा होगा जिसे ये राज्य की प्रतिष्ठा न देंगे परन्तु  
 २२ वह मिलाप से आवेगा और लक्षोपत्ती कदके राज्य को लेगा । और वे उस के  
 आगे बाढ़ की भुजा से उमड़ जायेंगे और टूट जायेंगे हां नियम का अध्यक्ष ।  
 २३ और उस बाचा के पीछे जो उससे किई जायेगी वह हल से कार्य करेगा क्योंकि  
 २४ वह चढ़ आवेगा और थोड़े से लोगों के संग बल प्राप्त करेगा । वह कुशल से  
 प्रदेश के अच्छे से अच्छे स्थानों में प्रवेश करेगा और वह ऐसा कुछ करेगा जो न  
 उस के पितरों ने न उस के पितामहों ने किया वह उन के मध्य में अहेर और  
 लूट और धन विधरावेगा हां वह एक समय के लिये दृढ़ गढ़ों को लेने पर अपनी  
 २५ चिन्ताओं को दौड़ावेगा । और वह अपने पराक्रम और हियाँव को दक्षिण के  
 राजा पर बड़ी सेना के संग बठावेगा और दक्खिन का राजा एक अत्यन्त और  
 पराक्रमी बड़ी सेना लेके संग्राम करने को निकलेगा परन्तु वह न ठहरेगा क्योंकि  
 २६ वे उस के बिरुद्ध चिन्तायें दौड़ावेंगे । हां वे जो उस के भोजन में से भाग खाते  
 २७ हैं उसे मार लेंगे और उस की सेना उमड़ जायेगी और बहुतरे जूझ जायेंगे । और  
 इन दोनों राजाओं के मन नटखटी करने में होंगे और एक मंच में झूठ बोलेंगे  
 २८ परन्तु कार्य सिद्ध न होगा तथापि ठहराये हुए समय पर अन्त होगा । तब वह  
 बड़े धन से अपने देश को फिरेगा और उस का मन पवित्र नियम से बिरुद्ध होगा  
 और वह कार्य करेगा और अपने ही देश को फिर जायेगा ॥
- २९ ठहराये हुए समय में वह लौटेगा और दक्षिण की ओर आवेगा परन्तु अगले

अथवा पिछले की नाईं न होगा । और कित्ती के जदात्र उस का साम्रा करेंगे ३०  
 सो वह उदास होगा और फिरगा और पवित्र नियम से क्रुद्ध होगा सो ऐसा ही  
 करेगा हां वह फिर आवेगा और उन के संग जो पवित्र नियम का त्याग करते  
 हैं मेल करेगा । और सेना की मुजा उस की और खड़ी होगी और वे पवित्र- ३१  
 स्थान की दृढ़ता को अशुद्ध करेंगे और प्रतिदिन के बलिदान को उठा देंगे और  
 उस उजाड़क घिन को खड़ी करेंगे । और वह उन से जो नियम से दृढ़ता ३२  
 करते हैं लल्लोपत्तो करके उन्हें भरमावेगा परन्तु वे लोग जो अपने ईश्वर को  
 पहिचानते हैं दृढ़ होंगे और कार्य करेंगे । और जो लोगों में बुद्धिमान हैं सो ३३  
 बहुतों को उपदेश करेंगे तथापि वे बहुत दिन लों खट्ट से और लयर से और  
 धंधुआई से और लूट से गिर जायेंगे । और जय वे गिर जायेंगे तब वे घाड़ी ३४  
 सी सहायता से सहायता पावेंगे परन्तु बहुतरे लल्लोपत्तो से उन से पच्ची होंगे ।  
 और बुद्धिमानों में से कई एक गिरेंगे उन्हें परखने और शुद्ध करने और अन्त लों ३५  
 श्रेत करने को क्योंकि अब भी ठहराये हुए समय के लिये हैं ॥

और राजा अपनी इच्छा के समान करेगा और अपने को बढ़ावेगा और हर ३६  
 एक देव से आप को सहसा देगा और ईश्वरों के ईश्वर का साम्रा करके  
 आश्चर्यित बातें कहेगा और जलजलाट्ट के पूरे होने लों वह भाग्यवान होगा  
 क्योंकि जो ठहराया गया है सो किया जायेगा । और वह अपने पितरों के ३७  
 ईश्वर को और स्त्रियों की बांठा को और किसी ईश्वर को न समझेगा क्योंकि  
 वह आप को मभों पर बढ़ावेगा । परन्तु गढ़ों के ईश्वर को उसी के आसन पर ३८  
 प्रतिष्ठा देगा हां वह एक देव को जिसे उस के पितरों ने न जाना सोना चांदी  
 और बहुमूल्य मणि और मुन्दर वस्तुन से प्रतिष्ठा देगा । और वह गढ़ों के गढ़ों में ३९  
 उषरी देव के संग ऐसा कुछ करेगा जिसे वह मान लेगा उसे वह सहसा से बढ़ावेगा  
 और वह उन से बहुतों पर प्रभुता करावेगा और सोल के लिये देश को बांटेगा ॥

और अन्त समय में दक्षिण का राजा उसे ठेलेगा और उत्तर का राजा बवंडर ४०  
 की नाईं रथों और घोड़चढ़ों और बहुत से जहाजों को लेके उस के विरुद्ध  
 आवेगा और वह देशों में प्रवेश करेगा और उमड़ेगा और पार जायेगा । और ४१  
 वह शुभ भूमि में प्रवेश करेगा और बहुत गिराये जायेंगे परन्तु ये अर्थात् अद्भुत  
 और मोआध और असून के वंश के प्रधान उस के हाथ से बच जायेंगे । और ४२  
 वह अपने हाथ को देशों पर भी बढ़ावेगा और मिस्र की भूमि न बचेगी । परन्तु ४३  
 सोना चांदी और मिस्र की बहुमूल्य वस्तु के भंडार पर वह पराक्रम पावेगा और  
 लवीयून और कूशी उस के डगों पर होंगे । परन्तु पूरब और उत्तर से संदेश उसे ४४  
 व्याकुल करेंगे इस लिये वह बड़े कोष से नाश करने को और बहुतों को सर्वथा  
 उठा देने को निकलेगा । और वह अपने भवनों के तंबू को समुद्रों के बीच ४५  
 आनन्द के पहाड़ की पवित्रता में गाड़ेगा तथापि वह अपने अन्त को पहुंचेगा  
 और उस का कोई सहायक न होगा ॥

चारहवां पृष्ठ ।

और उसी समय मीकाएल खड़ा होगा वह महा प्रधान जो तेरे लोग के वंश १

- के लिये खड़ा होता है और ऐसा ठ्याकुल का समय होगा जैसा कधी न हुआ  
जब से लोग हुए उसी समय लों और उसी समय में तेरे लोग हर एक जन जो  
२ पुस्तक में लिखा हुआ पाया जायेगा छोड़ा जायेगा । और उन में से बहुत जो  
पृथिवी की धूल में शयन करते हैं जाग उठेंगे कितने तो अनन्त जीवन के लिये  
३ और कितने लज्जा और अनन्त निन्दा के लिये । और वे जो उपदेशक होंगे आकाश  
के ज्योतिमान की नाईं और वे जो बहुतों को धर्म की ओर फेरते हैं तारों की  
नाईं सनातन के लिये चमकेंगे ।
- ४ परन्तु तू हे दानिएल इन बातों को बन्द कर और पुस्तक पर अन्त के समय  
लों काप कर बहुत से लोग इधर उधर दौड़ेंगे और ज्ञान बढ जायेगा ॥
- ५ तब मैं दानिएल ने देखा और क्या देखता हूँ कि दो और खड़े थे एक नदी के  
६ इस तीर और दूसरा नदी के उस तीर पर । और एक ने सूती बस्त्र पहिने हुए पुरुष  
७ से जो नदी के पानियों पर था कहा कि इन आश्चर्यों का अन्त कब लों । तब सूती  
बस्त्र पहिने हुए पुरुष को जो नदी के पानियों पर था जब उस ने अपना दाहिना  
हाथ और अपना बायां हाथ स्वर्ग की ओर उठाये तब मैं ने सुना और जीवते ईश्वर  
की किरिया खाके कहा कि समय और समयाँ और आधे समय के लिये होगा और जब  
वह पवित्र लोगों के पराक्रम को विधराने से संपूर्ण कर चुकेगा ये बातें समाप्त होंगी ॥
- ८ और मैं ने सुना परन्तु न समझा तब मैं ने कहा कि हे मेरे प्रभु इन बातों का  
९ अन्त क्या । और उस ने कहा कि दानिएल तू चला जा क्योंकि बातें बन्द  
१० और अन्त के समय लों कापी रहेंगी । बहुत से लोग पवित्र और श्वेत किये  
जायेंगे और परखे जायेंगे परन्तु दुष्ट दुष्टता करेंगे और सब दुष्ट न समझेंगे परन्तु  
११ बुद्धिमान समझेंगे । और जिस समय से प्रतिदिन का खलिदान उठा दिया जायेगा  
और वह उजाड़क घिन स्थापित किई जायेगी सहस्र दो सौ और नब्बे दिन होंगे ।  
१२ धन्य वह जो बाट जोहता है और एक सहस्र तीन सौ पैंतीस दिन लों पहुँचता  
१३ है । परन्तु अन्त लों तू चला जा क्योंकि तू विश्राम करेगा और अपने भाग में  
अन्त के दिनों में उठ खड़ा होगा ॥

## हूसीअ भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

- १ परमेश्वर का बचन जो यहूदाह के राजा उज्जियाह और यूताम और आखज  
और हिजकियाह के दिनों में और इसराएल के राजा यूआस के बेटे यहूशियाम  
के दिनों में विश्रामी के बेटे हूसीअ के पास पहुँचा ॥
- २ हूसीअ के द्वारा से परमेश्वर के बचन का आरम्भ और परमेश्वर ने हूसीअ से  
कहा कि जा और अपने लिये एक ठ्यभिचार की स्त्री और ठ्यभिचार के बालकों  
को ले क्योंकि देश ने परमेश्वर से फिरके बड़ा ठ्यभिचार किया है ॥

कहंगा । तू उन के देवताओं के आगे सत भुक्तियों और न उन की सेवा करना और २४  
न उन के सेवा कार्य करना परन्तु उन्हें खा दे और उन की मूर्तियों को तोड़  
डाल । और परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो और वह तुम्हारे अनु जल में २५  
आशीस देगा और मैं तुम्हारे बीच में से रोग उठा लूंगा । तेरे देश में कोई गर्भ- २६  
पात और वांछ न रहेगी मैं तेरे दिनों की गिनती को पूरा कहंगा । मैं अपने भय २७  
को तेरे आगे भेजंगा और मैं उन समस्त लोगों को जिन पास तू आवेगा नाश  
कहंगा और मैं ऐसा कहंगा कि तेरे बैरी तेरे आगे पीठ फेर देंगे । और मैं तेरे २८  
आगे वरय को भेजंगा और वह उची और कनआनी और हिती को तेरे सामने मे  
भगावेगी । मैं उन्हें एक ही वरम में तेरे आगे से दूर न कहंगा ऐसा न हो कि २९  
देश उजाड़ होवे और वन के पशु तेरे विरोध में बढ़ जायें । मैं उन्हें बोढ़े थोड़े ३०  
करके तेरे आगे से दूर कहंगा यहाँ लो कि तू बढ़ जाय और देश का अधिकारी  
हो जाय ॥

और लाल समुद्र से लंके ज्वालितियों के समुद्र लो और वन से नदी लो तब ३१  
मिवाना बांधूंगा क्योंकि मैं देश के वानियों को तेरे वज से कहंगा और तू उन्हें ३२  
अपने आगे से निकाल देगा । तू न उन में न उन के देवताओं से बाधा बांधना । वे ३३  
तेरे देश में न रहेंगे ऐसा न हो कि वे मेरे विरोध में तुझ से पाप करावें क्योंकि ३४  
यदि तू उन के देवताओं की सेवा करे तो यह तेरे लिये फंदा होगा ॥

चौथीसवां पर्व ।

और उस ने मृमा से कहा कि परमेश्वर पास चढ़ आ तू और हारन नद्व १  
और अद्रिहू और इमराणल के प्राचीनों में से सत्तर मनुष्य और तुम दूर से दण्डवत् २  
करो । और मृमा अकेला परमेश्वर के पास जायगा पर वे पास न आवें और ३  
लोग उस के साथ न चढ़ जायें ॥

और मृमा ने आके परमेश्वर की सारी बातें और न्याय लोगों से कहे और ४  
सारे लोगों ने एक शब्द में उत्तर देके कहा कि मारी बातें जा परमेश्वर ने कही ५  
हैं हम करेंगे । और मृमा ने परमेश्वर की सारी बातें लिखीं और विद्वान को ६  
तड़के उठा और पहाड़ को नीचे एक बंदी बनाई और इमराणल की वाण्ड गोष्टों ७  
के समान आरत खंभे खड़े किये । और उस ने इमराणल के मंगलाओं के तमन ८  
मनुष्यों को भेजा और उन्होंने ने घाम का और कुशल का बलिदान चालों से पर- ९  
मेश्वर के लिये चढ़ाया । और मृमा ने आधा लोह लेके पात्रों में रखवा और १०  
आधा लोह वेदी पर छिड़का । फिर उस ने नियम की पत्थी लिई और लोगों को ११  
पढ़ सुनाई और वे बोले कि सब कुछ जा परमेश्वर ने कहा है हम करेंगे और १२  
अधीन रहेंगे । और मृमा ने उस लोह को लेके लोगों पर छिड़का और कहा १३  
कि यह लोह उस नियम का है जिसे परमेश्वर ने इन बातों के कारण तुम्हारे १४  
साथ किया है ॥

तब मृमा और हारन नद्व और अद्रिहू और इमराणल के सत्तर प्राचीन ऊपर १  
गये । और उन्होंने ने इमराणल के ईश्वर को देखा और उस के घरों के नीचे १०  
जैसे नीलमणि की रात्र के कार्य स्वर्ग की आकृति की नाईं थे । और इमराणल ११



११ और कोई उसे मेरे हाथ से न छोड़ावेगा । और मैं उस का सारा ह्वय उस का पर्व उस की अमावास्या और उस का विश्राम और उस के सारे उत्सव समाप्त  
१२ कहूंगा । और मैं उस के दाख को और उस के गूलरपेड़ों को उखाड़ूंगा जिन के विषय में उस ने कहा कि यह मेरा भोगद्रव्य है जिसे मेरे यारों ने मुझे दिया है  
१३ और मैं उन्हें जंगल बनाऊंगा और वनपशु उन्हें खा जायेंगे । और मैं उसे वृक्षों के दिनों का पलटा लूंगा जिन में उस ने उन के लिये सुगंध जलाया और आप को अपने नथ से और अपने आभूषण से संवारा और अपने यारों के पीछे गई और मुझे भूल गई परमेश्वर कहता है ॥

१४ तिस पर भी देख मैं उसे फुसलाऊंगा और उसे अरण्य में लाऊंगा और उसे १५ शान्तिवचन कहूंगा । और वहां से उस की दाख की दारी उसे दूंगा और अकूर की तराई आशा के द्वार के लिये तब वह युवा अवस्था के दिनों के समान गाया करेगी और उस दिन के समान जिस में वह मिस देश से निकल आई ॥

१६ और उसी दिन ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि तू मुझे इसी कहेगी और १७ कभू फिर मुझे वाअली न कहेगी । क्योंकि मैं उस के मुंह से वृक्षों के नामों को १८ दूर कहूंगा और उन के नाम से वे फिर कभी पुकारे न जायेंगे । और उसी दिन मैं उन के लिये चौगान के पशु के साथ और आकाश के पक्षियों के साथ और भूमि के रंगनेवालों के साथ वाचा वांधूंगा और मैं पृथिवी पर से धनुष और तलवार और १९ संग्राम को तोड़ूंगा और कुशल से उन्हें लेटाऊंगा । और मैं तुझे सदा के लिये अपने साथ मंगनी कहूंगा हां मैं धर्म और न्याय और प्रेम और दया से तुझे २० अपने साथ मंगनी कहूंगा । हां मैं विश्वासता से तुझे अपने साथ मंगनी कहूंगा और तू परमेश्वर को जानेगी ॥

२१ और उसी दिन ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि मैं उत्तर दूंगा मैं स्वर्गों २२ को उत्तर दूंगा और वे पृथिवी को उत्तर देंगे । और पृथिवी अन्न और नये दाख- २३ रस और तेल को उत्तर देगी और वे यजरअएल को उत्तर देंगे । और मैं उसे अपने लिये पृथिवी में बीजंगा और लारहूम पर दया कहूंगा और लाअस्मी से कहूंगा कि तू मेरी जाति और वह कहेगी हे मेरे ईश्वर ॥

तीसरा पृष्ठ ।

१ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि फिर जा और एक स्त्री से प्रेम कर पर जो एक मित्र से प्रियतम है और व्यवहारिणी है जैसा कि परमेश्वर इसराएल के सन्तानों से प्रेम करता है जो उपरी देवताओं की ओर फिरते और दाख की टिकियां २ खाहते हैं । सो मैं ने उसे पन्द्रह रुपये और डेढ़ होमर जव से अपने लिये मोल ३ लिया । और मैं ने उसे कहा कि तू बहुत दिनों तक मेरे लिये रहेगी तू व्यवहार न करेगी न दूसरे पुरुष की हो जायेगी और मैं भी तेरे लिये यों ही रहूंगा ॥

४ क्योंकि इसराएल के सन्तान बिना राजा और बिना अध्यक्ष और बिना बलि ५ और बिना मूरत और बिना अफूद और बिना तराफीम बहुत दिन लों रहेंगे । उस के पीछे इसराएल के सन्तान लौटेंगे और परमेश्वर अपने ईश्वर को और दाऊद अपने राजा को खोजेंगे और अन्त समय में वे परमेश्वर और उस की भलाई से डरेंगे ॥

तो हम ने जाके दिवलाहम की बेटी तुम को लिया वह गर्भिणी हुई और इस के लिये एक बेटा जनी । तब परमेश्वर ने उसने कहा कि उस का नाम यजरथएल रख क्योंकि छोड़े समय में मैं यजरथएल के लोहू का पलटा यादू के घराने में लूंगा और इसराएल के घराने के राज्य को समाप्त करूंगा । और उसी दिन ऐसा होगा कि मैं यजरथएल की तराई में इसराएल के धनुष को तोड़ूंगा ।

और वह फिर गर्भिणी हुई और कन्या जनी और उस ने उसने कहा कि उस का नाम लारहूमः रख क्योंकि मैं इसराएल के घराने पर अथ और दया न करूंगा परन्तु निश्चय उन्हें उठाऊंगा । पर मैं यहूदाह के घराने पर दया करूंगा और परमेश्वर उन के ईश्वर से उन्हें बचाऊंगा और धनुष अथवा तलवार अथवा युद्ध अथवा घोड़े अथवा घोड़चढ़ों से उन्हें न बचाऊंगा ॥

और उस ने लारहूमः का दूध छोड़ाया तब वह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी । और उस ने कहा कि उस का नाम लाथम्मो रख क्योंकि तुम मेरे लोग नहीं हो और मैं तुम्हारा न हूंगा । तथापि इसराएल के सन्तान शिन्ती में समुद्र की धानू की नाईं होंगे जो नापी और शिन्ती नहीं जाती और ऐसा होगा कि जहां उन से कहा गया कि तुम मेरे लोग नहीं बचों उन से कहा जायेगा जीयते ईश्वर के सन्तान हो । और यहूदाह के सन्तान और इसराएल के सन्तान घटोरे जायेंगे और अपने लिये एक प्रधान ठहरावेंगे और वे देश से निकल आवेंगे क्योंकि यजरथएल का दिन बड़ा होगा ।

### दूसरा पर्व ।

अपने भाइयों को अम्मो करो और अपनी बहिनों को रहूमः । विवाह कर अपनी माता से विवाह कर क्योंकि वह मेरी पत्नी नहीं और न मैं उस का पति और वह अपनी वेश्याई अपनी दृष्टि से और अपना व्यवहार अपने दोनों कुत्तों के मध्य से दूर करे । न हो कि मैं उसे नग्न करूं और उसे ऐसा धरूं जैसा कि उस के जन्मदिन में और उसे अरण्य की नाईं बनाऊं और मृत्ती भूमि की नाईं करूं और तिरछा से मार डालूं । और मैं उन के पुत्रों पर दया न करूंगा क्योंकि वे व्यवहार के हैं । क्योंकि उन की माता ने व्यवहार किया और उन की जननी ने लाजकर्म किया क्योंकि उस ने कहा कि मैं अपने पारों के पीछे जाऊंगी जो सुके अन्न और जल जन और सन तेल और मदिरा देते हैं ॥

इस लिये देख मैं तेरे मार्ग को कांटे से रौंदूंगा और भीत उठाऊंगा जिस्ते वह अपने पंथों को न पावे । और वह अपने पारों के पीछे पाछे पड़ेगी पर- उन से न भंटेगी और वह उन्हें खाजेगी पर न पावेगी तब वह कहेगी कि मैं अपने पहिले पति के पास लौट जाऊंगी क्योंकि अथ से तब मेरा भला था ॥

और उस ने न जाना कि मैं ने उसे अन्न और नया दाखरस और तेल दिया और उस का सोना चांदी बढाया जिस्से उन्हें ने बचल बनाया । इस लिये मैं लौटूंगा और उस के समय में अपने अन्न को और उस की कृतु में अपने नये दाखरस को ले लूंगा और अपने जन और सन को जो उस की नग्नता ठांपने के लिये हुआ । और अथ में उस के पारों की दृष्टि में उस की लज्जा प्रगट करूंगा ॥

- घराने कान लगाओ क्योंकि तुम्हारे विरुद्ध विचार हुआ है इस लिये कि तुम मिस्रः  
 २ में फंदा हुए और तबूर पर बिक्राया हुआ जाल । और फिर हुआ ने ठेर सा घात  
 ३ किया पर मैं उन सभी को ताड़ना दूंगा । मैं इफरायम को जानता हूँ और इसराएल  
 ४ मुझ से छिपा नहीं है क्योंकि अब हे इफरायम तू व्यभिचार करता है और इसराएल  
 ५ अशुद्ध है । वे अपने कार्य नहीं सुधारते जो अपने ईश्वर की ओर फिरें क्योंकि  
 ६ उन के मध्य में व्यभिचार का आत्मा है और वे परमेश्वर को नहीं जानते ॥
- ७ और इसराएल का अहंकार उस के मुँह के आगे साक्षी देता है और इसराएल और  
 ८ इफरायम अपनी अपनी बुराई से ठोकर खायेंगे यहूदाह भी उन के साथ ठोकर खायेगा ।  
 ९ वे अपने मुँह और ठेर लेके परमेश्वर को ठूँढ़ने जायेंगे पर उसे न पावेंगे वह उन से अलग  
 १० गया । उन्होंने ने परमेश्वर से विश्वास घात किया है क्योंकि उन्होंने ने उपरी वालकों को  
 ११ जन्माया है अब एक मास उन्हें उन के भागों समेत खा जायेगा ॥
- १२ जबअः मैं सीमा बजाओ और रासः मैं तुरही वैनतवन में पुकारो कि हे बिनयमीन  
 १३ वह तेरे पीछे है । ताड़ने के दिन मैं इफरायम उजाड़ दूँगा इसराएल की गोष्टियों  
 १४ में मैं ने उस घात को जनाया जो निश्चय होगी । यहूदाह के अध्यक्ष उन की नाईं  
 १५ हैं जो सिवाने को सरकाते हैं मैं पानी के समान अपना कोप उन पर उड़ेलूँगा ॥
- १६ इफरायम दबा है न्याय से चकनाचूर है क्योंकि वह एक संग हुआ आज्ञा के  
 १७ समान चला । इस लिये मैं इफरायम के लिये कीड़े की नाईं दूँगा और यहूदाह  
 १८ के घराने के लिये सड़ाहट की नाईं । और इफरायम ने अपना रोग देखा और  
 १९ यहूदाह ने अपना घाव तब इफरायम असूर को गया और दुष्ट राजा कने भेजा  
 २० परन्तु वह तुम्हें चंगा न कर सकेगा और न तुम्हारा घाव भर देगा । क्योंकि मैं  
 २१ इफरायम के लिये सिंह की नाईं दूँगा और यहूदाह के घराने के लिये युवा सिंह  
 २२ की नाईं मैं ही फाड़ डालूँगा और जाऊँगा मैं ले जाऊँगा और कोई न कोड़ा-  
 २३ वेगा । मैं जाके अपने स्थान को लौटूँगा जब तों वे दंड न पावें और मेरे मुँह  
 २४ को न निहारें वे अपने कष्ट में सवेरे मुझे ठूँढ़ेंगे ॥
- २५ कठवां पर्व ।
- १ आओ हम परमेश्वर की ओर फिरें क्योंकि उस ने फाड़ा है और वही हमें  
 २ चंगा करेगा उसी ने मारा है और वही हम पर पट्टी बांधेगा । वह दो दिन  
 ३ में हमें जिलावेगा तीसरे दिन हमें उठावेगा और हम उस की दृष्टि में जीयेंगे ।  
 ४ तब हम जानेंगे हम परमेश्वर के जाने को यह करेंगे उस का निकलना बिहान  
 ५ की नाईं सिद्ध है और वह वर्षा की नाईं हमारे लिये आवेगा पिछली वर्षा की  
 ६ नाईं जो भूमि को सींचती है ॥
- ७ हे इफरायम मैं तुझ से क्या करूँ हे यहूदाह मैं तुझ से क्या करूँ क्योंकि  
 ८ तुम्हारी भलाई बिहान के मेघ की नाईं है और ओस की नाईं जो तड़के जाती  
 ९ रहती । इस लिये मैं ने भविष्यद्वक्ता से उन्हें चीरा अपने मुँह के बचनों से उन्हें  
 १० घात किया तेरे विचार बिजली की नाईं निकले ॥
- ११ क्योंकि मैं ने भलाई चाही न बलि और ईश्वर का ज्ञान बलिदान की भेंटों  
 १२ से अधिक । परन्तु उन्होंने ने आदम की नाईं खाया को तोड़ा है वहाँ उन्होंने ने

## चौथा पर्व ।

हे इसराएल के सन्तानों परमेश्वर का वचन सुनो क्योंकि देश के दासियों से १  
परमेश्वर का विवाद है क्योंकि देश में न मत्स्य है और न दया और न ईश्वर की  
पहिचान है । फिरिया और झूठ और घात और चोरी और व्यभिचार से वे फूट २  
निकले और लोहू लोहू से पहुँच गया । इस लिये देश विलाप करेगा और उस में ३  
के सब निवासी चौगान के पशु और आकाश के पक्षी मर्दित कुम्हला जायेंगे और  
समुद्र की मछलियाँ भी लिई जायेंगी । तथापि कोई विवाद न करे और कोई ४  
उपट न देवे क्योंकि तेरे लोग उन के तुल्य हैं जो याजक से विवाद करते हैं ।  
इस लिये तू दिन को गिरेगा और भविष्यद्वक्ता भी तेरे साथ रात को गिरेगा और ५  
में तेरी माता को नष्ट करेगा ॥

मेरे लोग अज्ञानता से नष्ट किये जाते हैं इस लिये कि तू ने ज्ञान को त्यागा ६  
है मैं भी तुझे याजक होने से त्यागूँगा और इस कारण कि तू ने अपने ईश्वर की  
व्यवस्था को विसराया है मैं भी तेरे सन्तानों को विसराऊँगा । जिस रीति से वे ७  
बड़े उस रीति से उन्हीं ने मेरा अपराध किया इस लिये मैं उन के मेश्वर्य को  
लाज से पलटूँगा । वे मेरे लोगों के पाप के बलिदान को खाते हैं और उन को ८  
खुराई पर अपना मन लगाते हैं । और जैसा लोग पर तैसा याजक पर होगा ९  
और मैं उन की चालों का पलटा उन्हीं दूँगा और उन की फिरियाओं के फल  
उन्हीं दूँगा । और वे खार्चों पर संतुष्ट न होंगे वे व्यभिचार करेंगे पर न बदेंगे १०  
क्योंकि उन्हीं ने परमेश्वर की मूर्त को छोड़ दिया ॥

व्यभिचार और दाखरस और नया दाखरस मन को हर लेता है । मेरे लोग ११  
अपने काष्ठ की मूर्त से मंत्र लेते और उन की लाठी उन को बता देती है क्योंकि  
व्यभिचार के मन ने उन्हीं भटकाया है और व्यभिचार करके वे अपने ईश्वर के  
पीछे होने से फिर आये । वे पर्वतों की चोटियों पर बलि चढ़ाते हैं और टीलों १३  
पर धूप जलाते हैं और बलूत और चनार और हरे बलूत के तले भी क्योंकि उन  
की छाया अच्छी है इस लिये तुम्हारी पवित्राँ किनाला करतीं और तुम्हारी पवित्राँ  
व्यभिचार करती हैं । जब तुम्हारी पवित्राँ किनाला करेंगी और तुम्हारी पवित्राँ १४  
व्यभिचार करेंगी तब मैं उन को दण्ड न दूँगा क्योंकि वे किनाला के संग एकान्त  
में जानीं और वेश्यों के संग बलि चढ़ातीं इसी लिये असमझ लोग गिराये जायेंगे ॥

हे इसराएल यद्यपि तू व्यभिचार करे तथापि यहूदाह अपराध न करे और तुम १५  
जिलजाल में न आना और न चैतश्रवन को ऊपर जाना और फिरिया न खाना  
कि जीवते परमेश्वर सोँह । क्योंकि अहुनेवाली कलार की नाई इसराएल अड़ता १६  
है अथ परमेश्वर उन्हीं सेमे की नाई फैलावस्थान में चरावेगा । इफरायम मूर्तों १७  
से मिल गया है उसे रहने दे । जब वे दाखरस पी चुके तब व्यभिचार करते रहे १८  
उस के आध्यक्षों ने लाज से प्रीति रखी है । पयन ने उन्हीं अपने पंखों में बन्द १९  
कर रक्खा है और वे अपने बलिदानों से लज्जित होंगे ॥

## पाँचवाँ पर्व ।

हे याजकों यह सुनो और हे इसराएल के घराने कान धरो और हे राजा के २

## आठवां पर्व ।

- १ तुरही तेरे तालू पर वह गिद्ध की नाईं परमेश्वर के घराने पर ठूँढ़ता है क्योंकि  
 २ वे मेरी बाचा से बाहर गये और मेरी व्यवस्था को उल्लंघन किया । वे मुझे पुका-  
 ३ रेंगे कि हे मेरे ईश्वर हम इसराएल तुम्हें पहिचानते हैं । जो भला है इसराएल  
 ४ ने त्याग किया बैरी उसे खेदेगा । उन्होंने ने राजाओं को ठहराया पर मेरी ओर  
 ५ से नहीं उन्होंने ने अध्यक्षों को ठहराया पर मैं नहीं जानता अपने रूपे सोने से उन्होंने  
 ६ ने मूर्तों को बनाया कि नष्ट किये जायें ॥
- ७ हे समरुन तेरा बड़ड़ा घिनौना है मेरा कोप उन पर खरता है वे कब तक  
 ८ शुद्ध न होंगे । क्योंकि वह इसराएल की ओर से है कारीगर ने उसे बनाया इस  
 ९ लिये वह ईश्वर नहीं है अवश्य समरुन का बड़ड़ा टूक टूक किया जायेगा ।  
 १० क्योंकि उन्होंने ने पवन बोया है इसी लिये वे खवंडर लवेंगे उस को टहनी नहीं उस  
 ११ के उगने से अन्न उत्पन्न न होगा यदि उस में कुछ उत्पन्न भी होवे परदेशी उसे  
 १२ लील जायेंगे । इसराएल निगला गया अब वे जातिगणों में उस पान्न के समान  
 १३ हैं जिस्से प्रसन्नता नहीं है । क्योंकि वे असूर कने चढ़ गये अकेले बनैले गदहे की  
 १४ नाईं इफरायम ने यारों को भोगद्रव्य दिया है । यद्यपि उन्होंने ने जातिगणों में  
 १५ भोगद्रव्य दिया तथापि मैं अब उन्हें बटोखंगा और थोड़ी देर में अध्यक्षों के  
 १६ राजा के बोझ से वे काष्ठित होंगे ॥
- १७ क्योंकि इफरायम ने पाप करने को वेदियां बढाईं वे वेदियां उस के लिये पाप  
 १८ करने को हैं । मैं अपनी व्यवस्था की बड़ी वार्त उस के लिये लिखता हूँ पर वे  
 १९ उपरी वस्तु की नाईं गिनी गईं । वे मेरी भेंट के खलिदानों के लिये मांस चढ़ाते  
 २० और उसे खाते हैं परमेश्वर उन्हें ग्रहण नहीं करता अब वह उन की बुराई स्मरण  
 २१ करेगा और उन के पापों का पलटा देगा वे मिस को फिर जायेंगे । क्योंकि  
 २२ इसराएल ने अपने कर्ता को बिसराया और मन्दिरों को बनाया और यहुदाह ने  
 २३ खाड़ित नगरों को बढाया इस लिये मैं उस के नगरों पर आग भेजूंगा और वह  
 २४ उस के भवनों को भक्ष लेगी ॥

## नवां पर्व ।

- १ हे इसराएल जातिगणों की भांति मगूता के मारे आनन्दित मत हो क्योंकि  
 २ तू छिनाला करके अपने ईश्वर से फिर गया तू ने हर एक खलियान पर खरची से  
 ३ प्रीति रखी है । खलियान और कोल्हू उन्हें नहीं पालेंगे और नया दाखरस उन  
 ४ को धोखा देगा । वे परमेश्वर के देश में नहीं बसेंगे पर इफरायम मिस को फिर  
 ५ जायेंगे और असूर में अशुद्ध वस्तु खायेंगे । वे परमेश्वर को दाखरस नहीं तपावेंगे  
 ६ और उन के खलि उसे प्रसन्न न आवेंगे वे उन के लिये बिलाप की रोटी की नाईं  
 ७ होंगे जितने उसे खाते हैं अशुद्ध होंगे क्योंकि उन की रोटी अपने लिये है वह  
 ८ परमेश्वर के घर में न आवेगी ॥
- ९ उत्सव के दिन और परमेश्वर के पर्व के दिन में तुम क्या करोगे । क्योंकि देख  
 १० वे विनाश से चले जाते हैं मिस उन्हें बटोरेगा मन्फ उन को गाड़ेगा उन का  
 ११ भावता धन जंटकटारों का अधिकार होगा उन के तंखुओं में कांटे होंगे ॥

सुक्त से विप्रश्यामग्रान किया । जिलिग्रद कुकर्मों का नगर है इगों में लोट्ट के ८  
चिन्ह हैं । जैसा इकैतों की जथा मनुष्यों की घात में लगता है वैसा याजकों ९  
का साक्षा है वे मुक्तम के मार्ग में घात करते हैं हां उन्हीं ने कीट दुष्टता किई  
है । इसरायल के घर में मैं ने एक भयंकर वस्तु देखी है वहां इफरायम का १०  
छिनाला है इसरायल अशुद्ध है ॥

हे यहूदाह तेरे लिये भी कठनी टहरी है जय मैं ने अपने लोगों की कंधुआई ११  
को पलट दिया ॥

भारतीय पर्व ।

जय मैं ने इसरायल को चंगा किया तब इफरायम की घुराई और समरन १  
के कुकर्म खुल गये क्योंकि उन्हीं ने छल किया है और चोर भीतर आता है  
और इकैतों की जथा बाहर लूटनी है । और उन्हीं ने अपने मन में न कहा कि २  
मैं ने उन की नारी दुष्टता को स्मरन किया अब उन के कर्म उन्हें घर रखते  
और वे मेरे सन्तुष्य हैं । वे अपनी दुष्टता में राजा को आनन्दित करते हैं और ३  
अपने मिथ्या वचन से अध्यक्षों को । वे सब के सब व्यभिचार करने हैं वे उस ४  
भट्टी की नाई हैं जो रोटीवाले से मुलगाई गई वह मृत्ती के सान्ने में उस के  
खसीर होने तक आग बारने से रह जाता है । हमारे राजा को दिन में अध्यक्ष ५  
दाग्रम के ताप में रोसित हुए उस ने निन्दकों के साथ अपना हाथ बढ़ाया ।  
क्योंकि वे समीप आते हैं जैसा कि उन का मन भट्टी की भांति तप्त था पर वे घात ६  
में लगते हैं उन का रोटीवाला रात भर नींद में रहता है वह विद्वान को आग की  
लहर की नाई करता है । वे सब भट्टी की नाई तप्त हैं और अपने न्यायों को खा ७  
जाते हैं उन के सारे राजा गिर पड़े उन में से कोई मेरी दोहाई नहीं करता ॥

इफरायम आप को जातिमणों में मिलाता है इफरायम दिन उलटी हुई ८  
छपाती है । परदेशियों ने उन का वन भक्षण किया है और वह नहीं जानता ९  
हां जहां तहां उस पर पकड़े चाल हैं और नहीं जानते । और इसरायल का १०  
अटंकार उस के मुंह के आगे साक्षी देता है तिस पर वे परमेश्वर अपने ईश्वर  
की ओर नहीं फिरते और इस सब को लिये उसे नहीं ठंडते । इफरायम एक भोले ११  
पंडुकों की नाई है जिस को जित नहीं वे जिस की दोहाई देते हैं वे असुर को जाते  
हैं । जय वे जायेंगे तब मैं अपना जाल उन पर फैलाऊंगा आकाश के पंखों की नाई १२  
में उन्हें उतारूंगा मैं उन की ताड़ना करूंगा जैसा कि उन की सभा में सुना गया ॥

हाथ उन पर क्योंकि वे सुक्त से भाग गये हैं विनाश उन पर क्योंकि उन्हीं ने १३  
मेरा अपराध किया है और मैं ने उन्हें छोड़ा है तथापि वे मेरे विरुद्ध झूठ बोले ।  
जय वे अपने अपने विद्वाने पर चिन्ताते हैं तब वे अपने मन में सुक्ते नहीं सुकारते १४  
वे अन्न और दाग्रम को लिये गकट्टे आये और सुक्त से फिर गये । और मैं ने उन १५  
को ताड़ना दिई और उन की भुजां को बल दिया तथापि उन्हीं ने मेरे विरुद्ध  
दुरी युक्ति बांधी है । वे फिरते हैं पर अत्यन्त सद्धान की ओर नहीं वे छला धनुष १६  
के समान हैं उन के अध्यक्ष अपनी जीभ की तलवार से शिरों में मिस देश में यही  
उन की ठोसली होगी ॥



८ मार्ग में मैं घात में लगा रहूंगा । वज्रा हेराये हुए भालू की नाईं में उन से भेंट करूंगा और उन के हृदय का अन्तर फाड़ूंगा और मैं वहां उन्हें सिंह की भांति भक्षूंगा वनपशु उन्हें फाड़ेगा ॥

९ हे इसराएल तू ने अपने को नाश किया पर मुझ से तेरी सहायता है ।  
 १० अब तेरा राजा कहां है जिस ने तुझे तेरे सारे नगरों में बचाया और तेरे न्याय  
 ११ कहां जिन के विषय मैं तू ने कहा कि मुझे राजा और अध्यक्ष दे । मैं अपने क्रोध में एक राजा तुझे दूंगा और अपने कोष में उसे लूंगा ॥

१२ इफरायम की घुराई बन्द है उस का पाप धरा हुआ है । पीड़ित स्त्री की  
 १३ पीड़ें उस पर आवेंगी वह निर्बुद्धि पुत्र है नहीं तो वह बालकों के फूट निकलने  
 १४ के स्थान में देर तक न ठहरता । मैं पाताल के दश से उन्हें कुड़ाऊंगा मैं मृत्यु से उन्हें निस्तार करूंगा हे मृत्यु तेरी मरी कहां है पाताल तेरा नाश कहां पकृताना मेरी आंखों से क्षिपेगा ॥

१५ यद्यपि वह अपने भाइयों से फलवन्त है तथापि पूर्वा प्रथम आविगी परमेश्वर की प्रथम वन से चढ़ेगी और उस का सेता सूख जायेगा और उस की बापी  
 १६ खिलाय जायेगी वह उस के सारे धार्मिक पात्रों का भंडार लूटेगा । समस्त दण्ड पावेगा क्योंकि वह अपने ईश्वर से फिर गया है वे तलवार से गिरेंगे उन के बालक पटके जायेंगे और उन की पेटवाली स्त्रियां चीरी जायेंगी ॥

चौदहवां पर्व ।

१ हे इसराएल परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिर क्योंकि तू अपनी घुराई से  
 २ गिर पड़ा है । तुम बातों को अपने साथ लेके परमेश्वर की ओर फिरो उससे कहो कि सारी घुराई उठा डाल और नेह से हम को ग्रहण कर और हम अपने  
 ३ होठ के बह्नों को भेंट देंगे । असूर हमें न बचावेगा हम घोड़ों पर न चढ़ेंगे और अपने हाथों की क्रिया को फिर न कहेंगे कि तुम हमारे देव हो क्योंकि अनाथ तुझ से दया पाते हैं ॥

४ मैं उन के फिर जाने को चंगा करूंगा मैं उन्हें जी जान से प्यार करूंगा क्योंकि  
 ५ मेरा क्रोध उन से फिर गया । मैं इसराएल के लिये ओस की नाईं दूंगा वह  
 ६ सोसन की नाईं बिकसेगा और लुबनान की भांति जड़ पकड़ेगा । उस की  
 ७ टहनियां फैलेंगी और उस का विभव जलपाई की नाईं होगा और उस का  
 ८ गन्ध लुबनान की नाईं । जो उस की क्राया तले रहते हैं वे फिरेंगे वे अन्न की  
 ९ नाईं हरे होंगे और दाख की नाईं बढ़ेंगे और लुबनान के दाखरस की नाईं उस  
 १० की चर्चा होगी । इफरायम कहेगा कि मुझे फिर मूरतों से क्या काम है मैं ने उसे उत्तर दिया और उसे निहाऊंगा मैं हरे सरो की नाईं दूँ मुझ से तेरा फल पाया जाता है ॥

९ बुद्धिमान कौन है जो ये बातें समझे बिवेकी कौन है जो इन को जाने क्योंकि परमेश्वर के मार्ग सीधे हैं और धर्मी उन में चलेंगे पर अपराधी उन में गिरेंगे ॥

दण्ड के दिन आये पलटे के दिन आये तीरी बड़ी घुराई और तेरे बड़े घेर के ७  
 लिये इसराएल जानेगा भयिष्यदुक्ता मूर्ख हैं और आत्मिक जन बाधला । इफरा- ८  
 यम मेरे ईश्वर की याद चाहता है भयिष्यदुक्ता अपने सारे मार्गों में व्याधा का  
 खाल है वह अपने ईश्वर के घर में चिड़ियों का कारण है । जियअः के दिनों ९  
 की भांति वे अति बिगड़ गये वह उन की घुराई स्मरण करेगा वह उन के पापों  
 का पलटा लेगा ॥

मैं ने इसराएल को अंगूरी की नाईं उन में पाया जैसा कि गृन्तर का पटिला १०  
 पक़ा हुआ फल अपनी पटिली अृतु में वैसा तुम्हारे पितरों को देखा पर वे  
 अन्नफ़ार के पास गये और उस लज्जित वस्तु के लिये आप को न्यारा किया  
 और अपने प्रेम के समान छिनित हुए । इफरायम के विषय उन का देख्य ११  
 चिड़िया की भांति उड़ जायेगा जन्म और कोयल और गर्भ न होगा । क्योंकि यदि १२  
 वे अपने बालकों को पालें तथापि मैं मनुष्यों में उन्हें निर्विशेष करूँगा क्योंकि छाय  
 दाय उन पर जय मैं उन ने जाता रहूँगा । मैं ने इफरायम को मूर की भांति १३  
 बाँधित स्थान में लगाया हुआ देखा इफरायम अपने बालकों को अधिक के लिये  
 निकालेगा ॥

हे परमेश्वर उन को नू फ़्या देगा उन्हें गिरानेवाले पेट और सूखा स्तन दे । १४  
 उन की सारी घुराई जिलजाल में है अत्रश्य मैं ने वहाँ उन का घेर किया उन १५  
 के कामों की दुगई के लिये मैं उन्हें अपने घर से खेदूँगा मैं उन से फिर  
 प्रीति न करूँगा उन के सारे अध्वन उड़नेवाले हैं । इफरायम सारा हुआ है उन की १६  
 जड़ मूख गई वे फल न लायेंगे हाँ यदि वे जनं तथापि मैं उन के गर्भ के  
 प्रियतम को बध करूँगा । मेरा ईश्वर उन्हें त्यागेगा क्योंकि उन्होंने ने उस की न १७  
 सुनी और वे जातिगणों में भ्रमिक होंगे ॥

दसवां पर्व ।

इसराएल घनी लता है जिस में फल लगा उस ने अपने फल की बढ़ती के समान १  
 वेदियों को बढ़ाया अपने देश की सुघराई के समान उन्होंने ने सुधरी मूरतें बनाईं ।  
 उन का मन बट गया अब वे दोषी ठहराये जायेंगे वह उन की वेदियां ठायेगा २  
 वह उन की मूरतें तोड़ेगा । क्योंकि अब वे कहेंगे कि हमारा कोई राजा नहीं है ३  
 हमी लिये कि हम परमेश्वर से न डरें तो राजा हमारा क्या करेगा ॥

वे चार्त बोलते क्रिया खाते यात्रा बाँधते हैं और खेत की लकीरों में ४  
 हन्दायण की नाईं दण्ड उगता है । वैतअघन की बहियों के कारण समरन के ५  
 निवासी डरेंगे क्योंकि उस के लोग उस पर शोक करेंगे और उस के पंहे उस के  
 लिये बढ़लेंगे उस के विभव के कारण क्योंकि वह उसे जाता रहा । वह भी ६  
 अमूर में दुष्ट राजा के भेंट के लिये पहुँचाया जायेगा इफरायम लाल खायेगा  
 और इसराएल अपने संत्र से लज्जित होगा । समरन का राजा कट गया है वह ७  
 जल के ऊपर चैली की नाईं है । और अघन के ऊँचे स्थान इसराएल का पाप ८  
 नष्ट हो जायेंगे और उन की वेदियों पर काँटे और जंटकटारे उगेंगे और वे पर्वतों  
 से कहेंगे कि हमें ठाँपा और टीलों को कि हम पर गिरो ॥

के लिये चिट्ठी डाली और वेश्या के लिये होकरा दिया और मद्य पीने के लिये होकड़ी बेची ॥

४ फिर तुम को सुभ से क्या काम है हे सूर और सैदा और फिलिस्ती के सारे सिवाने क्या तुम सुभ को पलटा दोगे और जो दोगे तो मैं शीघ्र और भटपट ५ तुम्हारा पलटा तुम्हारे सिर पर फिराऊंगा । क्योंकि तुम ने मेरा सोना चांदी ले लिया है और मेरी अच्छी मनभावनी वस्तुओं को अपने मन्दिरों में ले गये हो । ६ और तुम ने यहूदाह और यरुसलम के स्थानों को यूनामियों के सन्तानों के हाथ ७ बेचा है जिस्ते उन्हें उन के सिवानों से दूर करो । देखो जहां तुम ने उन्हें बेचा है वहां से मैं उन्हें उठा लूंगा और तुम्हारा पलटा तुम्हारे सिर पर फिराऊंगा । ८ और मैं तुम्हारे घेरे घेड़ियों को यहूदाह के सन्तानों के हाथ बेचूंगा और वे उन्हें सवाईयों के हाथ बेचेंगे जो दूर के जातिगण हैं क्योंकि परमेश्वर ने कहा है ॥

९ जातिगणों में यह प्रचारो कि संग्राम सिद्ध करो बलवन्तों को उभाड़ो सारे १० गोटों पास चले आधे वे चढ़ धावें । अपने छलों को तलवारों के लिये और ११ अपने अपने हंसुओं को भालों के लिये तोड़ो दुर्बल कहे कि मैं बलवन्त हूं । हे चारों और के जातिगणो शीघ्र करके चले आओ और अपने को एकट्ठे करो हे १२ परमेश्वर तू अपने बलवन्तों को वहां उतार । जातिगण उभाड़े जायें और यहूसफत की तराई में आधे क्योंकि मैं चारों और के सारे जातिगणों का न्याय करने को वहां बैठूंगा ॥

१३ दरांती लगाओ क्योंकि लवनी पक गई है उतरो कि कोल्हू भरा है बहवन्ते १४ झलकते हैं क्योंकि उन की दुष्टता बड़ी है । भीड़ पर भीड़ न्याय की तराई में १५ क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है न्याय की तराई में । सूर्य और चन्द्रमा अधियारे हो गये और तारों ने अपनी चमक खींच लिये है ॥

१६ और परमेश्वर सैहून से गर्जेगा और यरुसलम से अपना शब्द उच्चारेंगा और स्वर्ग और पृथिवी कांपेगी परन्तु परमेश्वर अपने लोगों का आशा और इसराएल १७ के सन्तानों का गढ़ होगा । और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो अपने पवित्र पर्वत सैहून में वास करता हूं तब यरुसलम पवित्र होगा और परदेशी उस में से फेर वीत न जायेंगे ॥

१८ और उस दिन ऐसा होगा कि पर्वत नया टांखरस टपकावेंगे और टीले दूध बहावेंगे और यहूदाह के सारे नाले जलमय होंगे और परमेश्वर के घर से एक सोता निकल आवेगा जो सन्तीन की तराई को सींचेगा ॥

१९ मिश्र उजाड़ होगा और अदूम उजाड़ बन हो जायेगा उस अंधेर के कारण २० जो यहूदाह के सन्तानों ने किया कि उन के देश में निर्दोष लोहू बहाया । परन्तु २१ यहूदाह सनातन लों और यरुसलम पीढ़ी से पीढ़ी लों बसा रहेगा । और मैं उन का लोहू निर्दोष जानूंगा जिसे मैं ने निर्दोष न जाना और परमेश्वर सैहून में वास करेगा ॥

# यूएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

परमेश्वर का दशन जो फतुएल के बेटे यूएल के पास पहुँचा ॥

१

हे यूएल यह सुनो और देश के सारे निवासियों कान लगाओ क्या तुम्हारे २  
दिनों में अथवा तुम्हारे पित्रों के दिनों में ऐसा कभी हुआ । उसे अपने बालकों ३  
से दर्शन करो और तुम्हारे बालक अपने बालकों से और उन के बालक अगिली ४  
पीढ़ी से । कि जो कुछ काटनेवाली टिड्डी ने छोड़ा उसे बटोरी हुई टिड्डी ने ४  
खाया है और जो कुछ बटोरी हुई टिड्डी ने छोड़ा उसे चाटनेवाली टिड्डी ने खाया ५  
और जो कुछ चाटनेवाली टिड्डी ने छोड़ा उसे नाशक टिड्डी ने खाया ॥

अरे मतबाला जागो और बिलाप करो अरे दाखरस के सारे पीनेदारो चिल्लाओ ५  
नये दाखरस के कारण क्योंकि वह तुम्हारे मुँह से जाता रहा । क्योंकि एक जाति ६  
मेरे देश पर चढ़ आई वे बलवन्त और अगणित हैं उन के दाँत सिंह के दाँत हैं ७  
और उन की दाढ़ के दाँत सिंहनी के हैं । उन्होंने मेरे दाख के वृक्ष को उखाड़ा ८  
और मेरे गूलर के पेड़ को तोड़ा उन्होंने उसे सम्पूर्ण उज्जल किया और गिरा ९  
दिया उन्होंने ने उस की डालियों को खेत किया ॥

जिस भाँति तरुणी अपने युवा पति के लिये टाट पहिने बिलाप करती है उसी ८  
भाँति बिलाप करो । परमेश्वर के घर से पिसान की भेंट और पीने की भेंट ९  
जाती रही याजक परमेश्वर के सेवक रोदन करते हैं । खेत उखाड़ा जाता है १०  
भूमि बिलाप करती है क्योंकि अन्न उखाड़ा गया नया दाखरस सूख गया तेल ११  
कुम्हला गया ॥

हे किमानो लज्जित होओ हे दाख के मालियो गेहूँ और जव के लिये चिल्लाओ ११  
क्योंकि खेत की लवनी नष्ट हुई । दाख का वृक्ष सूख गया और गूलरपेड़ सुरक्षा १२  
गया अनार और ताड़ भी और मेव के पेड़ हाँ खेत के सारे पेड़ सूख गये निश्चय १३  
सनुष्य के पुत्रों से आनन्द जाता रहा ॥

हे याजको कटि धाँधो और छाती पीटो हे बेटी के सेवको चिल्लाओ चलो १३  
मेरे ईश्वर के सेवको रात भर टाट ओढ़के पड़े रहो क्योंकि पिसान की भेंट और १४  
पीने की भेंट तुम्हारे ईश्वर के घर से रुक गई । पवित्र द्रव ठहराओ सनादी १४  
प्रचारो प्राचीनों को और देश के सारे निवासियों को परमेश्वर अपने ईश्वर के १५  
घर में बटोरो और परमेश्वर की दोहाई दो ॥

हाय उस दिन के लिये क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है और वह सर्वशक्ति- १५  
मान की ओर से नाश की नाई आवेगा । क्या हमारी आँखों के सामने से भोजन १६  
कट नहीं गया आनन्द और सगनता हमारे परमेश्वर के घर से । अपने ठेलों के १७  
नीचे धोज सड़ गया खलियान उजाड़ पड़े हैं खेत तोड़े हुए हैं क्योंकि अन्न भुरा १८  
गया । पशु क्या ही कराहते हैं ठार के लेंहड़े क्या ही घबराये जाते हैं क्योंकि १९  
उन के लिये चराई नहीं है हाँ भेड़ों के भुंड नष्ट हुए हैं । हे परमेश्वर मैं तेरी १९

के संतानों के अध्यक्षों पर उस ने अपना हाथ न रक्खा और उन्हीं ने ईश्वर को देखा और खाया प्रीया ॥

१२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि पहाड़ पर मुझ पास आ और वहां रह और मैं तुम्हें पत्थर की पटियां और व्यवस्था और आज्ञा जो मैं ने लिखी है दूंगा

१३ जिसमें तू उन्हें सिखावे । और मूसा और उस का सेवक यहूयूअ उठे और मूसा

१४ ईश्वर के पहाड़ पर गया । और उस ने प्राचीनों से कहा कि हमारे लिये यहां ठहरो जब लों तुम पास हम फिर न आवें और देखो कि हाश्म और हूर तुम्हारे साथ हैं यदि किसी को कुछ काम होवे तो उन पास जाय ॥

१५ तब मूसा पहाड़ पर गया और एक मेघ ने पहाड़ को ढांप लिया । और पर-  
१६ मेश्वर का बिभव सीना के पहाड़ पर ठहरा और मेघ उसे छः दिन लों ढांपे रहा

१७ और सातवें दिन उस ने मेघ के मध्य में से मूसा को बुलाया । और परमेश्वर का बिभव इसराएल के संतान की दृष्टि में पहाड़ की चाटी पर धधकती हुई

१८ आग की नाईं देख पड़ता था । और मूसा मेघ के मध्य में चला गया और पहाड़ पर चढ़ गया और मूसा पहाड़ पर चालीस दिन रात रहा ॥

पचीसवां पर्व ।

१ और परमेश्वर ने मूसा से कहा । कि इसराएल के संतान से कह कि वे मेरे लिये भेंट लेवें हर एक से जो अपनी इच्छा और अपने मन से मुझे देवे तुम मेरी

३ भेंट ले लीजियो । और भेंट जो तुम उन से लेओगे सो ये हैं सोना और रूपा

४ और पीतल । और नीला और बैजनी और लाल और भीना कपड़ा और बकरी

५ के रोम । और मेंढों का रंगा हुआ लाल चमड़ा और तुखस की खालें और

६ शमशद की लकड़ी । दीपक के लिये तेल मलने के तेल के लिये और सुगंध

७ धूप के लिये सुगंध द्रव्य । एफोद के लिये और चपरास के लिये सूर्यकांत मणि

८ और जड़ने के मणि । और वे मेरे लिये एक पवित्र स्थान बनावें और मैं उन के

९ मध्य में बास करूंगा । तंबू और उस के समस्त पात्रों को जैसा मैं तुम्हें दिखाऊं वैसा ही बनाइयो ॥

१० और शमशद की लकड़ी की एक मंजूषा बनावें जिस की लंबाई अढ़ाई हाथ

११ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ होवे । और तू उस के भीतर और

बाहर निर्मल सोना मढ़ियो और उस के ऊपर आस पास सोने के कलश बनाइयो ।

१२ और उस के लिये सोने के चार कड़े ढालके उस के चारों कोनों पर दो कड़े एक

१३ अलंग और दो कड़े दूसरी अलंग लगाइयो । और शमशद की लकड़ी के बहंगर

१४ बनाइयो और उन पर सोना मढ़ियो । उस मंजूषा के अलंग अलंग के कड़े में

१५ उन बहंगरों को डाल दीजियो जिसमें उन से मंजूषा उठाई जाय । मंजूषा के

१६ कड़ों में बहंगर डाले जायें वे उस्से अलग न हों । और तू उस साक्षी को जो मैं

तुम्हें देऊंगा उस मंजूषा में रखियो ॥

१७ और तू निर्मल सोने का एक ठकना बनाइयो जिस की लंबाई अढ़ाई हाथ

१८ और चौड़ाई डेढ़ हाथ होवे । और पीटे हुए सोने के दो करोबी उस के ठकने

१९ के दोनों खंडों में बनाइयो । और एक करोबी एक खंड में और दूसरा करोबी

# अमूस भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

## प्रथमा पर्वा ।

सकृत् के अतीरों में से अमूस के वचन जो उस ने यहूदाह के राजा रज्जियाह १ के दिनों में और इसरायल के राजा यूशाम के बेटे यरुवियाम के दिनों में इसरायल के विषय में भुईंढोल के दो वरम आगे देगा ॥

और उस ने कहा कि परमेश्वर सैदून से गर्जेगा और यरुसलम से अपना शब्द उच्चारेशा और गहरियों के निवास खिलाप करेंगे और करमिल की चोटी सूख जायेगी ॥

परमेश्वर यों कहता है कि दमिश्क के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस ३ का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्होंने ने जिलियद का लोह के सूसलों से कृटा है । पर मैं हजाएल के घर पर एक आग भेजूंगा और वह विनहदव के भवनों ४ को भस्म करेगी । मैं दमिश्क का अङ्ग भी तोड़ूंगा और अवन की तराई से ५ निवासी को और अवन के घराने से राजदण्डधारी को काट डालूंगा और अराम के लोग कीर लों बंधुआई में जायेंगे परमेश्वर कहता है ॥

परमेश्वर यों कहता है कि अज्जः के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस ६ का दण्ड न टालूंगा क्योंकि वे सारे बंधुओं को बंधुआई में ले गये कि उन्हें अदूम को सौंपे । पर मैं अज्जः की भीत पर एक आग भेजूंगा और वह उस के भवनों ७ को भस्म करेगी । और मैं अशदूद से निवासी को और असकलून से राजदण्डधारी ८ को काट डालूंगा और मैं अपना हाथ अकून पर फेंकेगा और फिलिस्तियों के बचे हुए नष्ट होंगे प्रभु परमेश्वर कहता है ॥

परमेश्वर यों कहता है कि सूर के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस का ९ दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्होंने ने सारे बंधुओं को अदूम को सौंपा और भयवाद के नियम को स्मरण न किया । पर मैं सूर की भीत पर एक आग भेजूंगा और १० वह उस के भवनों को भस्म करेगी ॥

परमेश्वर यों कहता है कि अदूम के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस ११ का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उस ने तलवार से अपने भाई को खेदा और अपनी सभा को छोड़ दिया और उस का क्रोध सदा फाड़ता रहा और उस ने अपना कोप नित रक्खा । पर मैं तैमन पर एक आग भेजूंगा और वह दूसरों के भवनों १२ को भस्म करेगी ॥

परमेश्वर यों कहता है कि अस्मून के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस १३ का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्होंने ने जिलियद की गर्भिणी स्त्रियों को चीरा कि अपना सिवाना बढ़ावे । पर मैं ख्वर की भीत पर एक आग धाँसेगा और ललका- १४ रने के संग लड़ाई के दिन में और आंधी के संग व्यवहार के दिन में वह उस के भवनों को भस्म करेगी । और उन का राजा वह और उस के अध्यक्ष एकट्टे बंधु- १५ आई में जायेंगे परमेश्वर कहता है ॥



- ६ और मैं ने भी तुम्हारे सब नगरों में दांती की फरकाई और तुम्हारे सब स्थानों में रोटी की कमी तुम को दिई तथापि तुम मेरी और नहीं फिरे परमेश्वर कहता है ।
- ७ और मैं ने भी लवनी के तीन मास आगे तुम से दृष्टि रोक रखी है और मैं ने एक नगर पर बरसाया और दूसरे नगर पर नहीं एक भाग पर बरसा और
- ८ जिस भाग पर न बरसा वह सूख गया । इस लिये दो तीन नगर एक नगर में गये कि जल पिये पर तृप्त न हुए तथापि वे मेरी और नहीं फिरे परमेश्वर कहता है ॥
- ९ मैं ने तुम्हें झोंस और बहुत लेंठे से मारा है तुम्हारी धारियों और दाख की धारियों और गुलरपेड़ और जलपाई के पेड़ों को टिड्डी ने खाया है तथापि तुम मेरी और नहीं फिरे परमेश्वर कहता है ।
- १० मैं ने मिस्र की भांति तुम पर मरी भेजी है मैं ने तुम्हारे तरुणों को तलवार से घात किया है और तुम्हारे घोड़ों को ले लिया और तुम्हारी हाथनी की दुर्गंध तुम्हारे नथुनों में पहुँचाई तथापि तुम मेरी और नहीं फिरे परमेश्वर कहता है ।
- ११ मैं ने तुम में से चलट दिया जैसा कि ईश्वर ने मरूम और अमूर को चलट दिया और तुम आग में की निकाली हुई लुकठी की नाईं हुए तथापि मेरी और नहीं फिरे परमेश्वर कहता है ॥
- १२ इस लिये हे इसराएल मैं तुझ से यों ही करुंगा पर इस लिये कि मैं तुझ से
- १३ यों करुंगा हे इसराएल अपने ईश्वर से भेंट करने को सिद्ध हो । क्योंकि देख वही है जिस ने पर्वतों को बनाया और पवन को सृजा और मनुष्य को उस की चिन्ता करता है जो विद्वान को अधियारा करता है और पृथिवी के ऊँचे स्थानों पर चलता है परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर उस का नाम है ॥

पाँचवां पर्व ।

- १ हे इसराएल के घराने यह वचन सुनो अर्थात् यह खिलाप जो मैं तेरे विरुद्ध
- २ उच्चारता हूँ । इसराएल की कुंवारी गिरी है वह फिर कभी न उठेगी वह अपनी
- ३ भूमि पर पड़ी हुई है उस का कोई उठानेवाला नहीं है । क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस नगर से सहस्र निकल गये इसराएल के घराने के लिये सौ छोड़ेगा और जिसे सौ निकल गये वह दस छोड़ेगा ।
- ४ क्योंकि परमेश्वर इसराएल के घराने से यों कहता है कि मुझे ठूँठो तो जीओगे ।
- ५ पर वैतएल को मत ठूँठो और जिलजाल में प्रवेश न करो और विअरसवः के पार न जाओ क्योंकि जिलजाल अवश्य बंधुआई में जायेगा और वैतएल वृथा में
- ६ आवेगा । परमेश्वर को ठूँठो तो जीओगे न हो कि वह यूसुफ के घराने पर आग की नाईं भपटे और भस्म करे और वैतएल में कोई सुभवेया न होवे ।
- ७ तुम जो विचार को नागदौने से पलटते हो और धर्म को पृथिवी पर छोड़ते
- ८ हो । उसे ठूँठो जिस ने कृत्तिका को और मृगशिर को बनाया है और मृत्यु की काया को विद्वान से पलटा है और दिन को अंधेरी रात बनाता है जो समुद्र के जलों को बुलाता है और उन्हें पृथिवी पर उँडेलता है परमेश्वर उस का नाम है ।
- ९ वह बलवंतों पर एका एकी उजाड़ लाता है और गढ़ पर उजाड़ पड़ता है ।
- १० वे उससे लाग रखते हैं जो फाटक में डाँटता है और उससे घिन खाते हैं जो

खराई से बोलता है । इस लिये कि तुम ने कंगाल को लताड़ा और उन से गोटें ११  
का भाड़ा लेते हो तुम ने गड़े हुए पत्थरों से घरों को खनाया पर उन में न बसोगे  
तुम ने दाख की मनभावती दारियों को लगाया है पर उन का दाखरस न  
पीओगे । क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अपराध बहुत हैं और तुम्हारे पाप बड़े हैं १२  
जो धर्मियों को बताते और घूस लेते और फाटक में कंगालों को लौटा देते हो ॥

इस लिये उस समय में बुद्धिमान चुप रहेंगे क्योंकि वह समय बुरा है । तुम १३  
भलाई को ठूँडो बुराई को नहीं जिसमें तुम जीओ और तुम्हारे कष्टों के समान  
परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर तुम्हारे साथ होगा । बुराई से घिनाओ और भलाई १४  
को चाहो और फाटक में न्याय का स्थान करो कदाचित् परमेश्वर सेनाओं का  
ईश्वर यूसुफ के बच्चे तुम्हारे पर दयाल होवे ॥

इस लिये परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर जो प्रभु है यों कहता है कि सारे चौड़े १५  
स्थानों में विलाप होगा और सारी सड़कों में वे हाथ हाथ करेंगे और वे किसान  
को जोक के लिये और रोदन जाड़ेदारों को विलाप के लिये बुलावेंगे । और १७  
सारी दाख की दारियों में विलाप होगा क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य में से जाऊंगा  
परमेश्वर कहता है ॥

हाथ तुम पर जो परमेश्वर के दिन को चाहते हो वस्त्र तुम से क्या परमेश्वर १८  
का दिन अधिपति है और उंजियाला नहीं । जैसा कि कोई सिंह से भागे और १९  
भालू उसे मिले अथवा घर में जाके अपने हाथ को भीत पर रखे और उसे माँप  
हमें । क्या परमेश्वर का दिन अधिपति न होगा और उंजियाला नहीं अति २०  
अधिपति और उन में कुछ चमक नहीं ॥

मैं तुम्हारे पर्वों से लाग करता और घिन खाता हूँ और तुम्हारी मंडलियों में २१  
सुवान न सुँघूँगा । क्योंकि यदि तुम मेरे लिये बलिदान की भेंटों को और अपने २२  
पिसान की भेंटों को चढ़ाओ तथापि मैं उन्हें ग्रहण न करूँगा और मैं तुम्हारे मोटे  
पशुओं की कुंगल की भेंटों पर सुरत न करूँगा । तुम अपने राजों का शब्द मेरे २३  
आश से दूर करो और तुम्हारी चीनों का सुर मैं न सुनूँगा । और न्याय पानियों २४  
की नाईं बढ़ता रहे और धर्म बढ़ी नदी की नाईं ॥

हे इसरायल के घराने क्या तुम ने मेरे लिये चालीस वरस लों अरथ में बलि २५  
और भेंट नहीं चढ़ाई । तथापि तुम अपने राजा के तंबू को और अपनी मूरतों २६  
के कीपून को अपने देवता का तारा जिन्हें तुम ने अपने लिये बनाया उठाये फिर ।  
इस लिये मैं तुम्हें दमिष्क से परे बंधुआई से ले जाऊँगा परमेश्वर कहता है जिस २७  
का नाम सेनाओं का ईश्वर है ॥

छठवां पर्व ।

हाथ उन पर जो सैहून में कुशल से रहते हैं और समदन के पर्वत पर आस्ता १  
रखते हैं जो जातिगणों के पहिली जाति के श्रेष्ठ हैं जिन कने इसरायल के घराने  
आये हैं । तुम कलनः को पार जाके देखो और वहाँ से बड़ी जमात को जाओ २  
तब फिलिस्तिनों की मात में उतरो क्या वे इन राज्यों से भले हैं और उन का  
सिधाना तुम्हारे सिधाने से बड़ा है ॥

३ हाथ उन पर जो विपत्ति के दिन को दूर करते हैं और अंधेर के सिंहासन के समीप करते हैं । जो द्वाधीदांत के पलंगों पर लेटते हैं और अपनी ग्याटों पर फैलते हैं जो भुंड में से मेमों को और म्यान के मध्य में से बकड़ों को खा लेते हैं । जो खीन के ताल में गाते हैं और दाऊद की नाई अपने लिये गान के साजों के द्रव्यजाते हैं । जो कटोरो में दाखरस पीते हैं और अपने पर सब से उत्तम सुगंध मलते हैं पर यूसुफ के क्लेश के लिये शोकित नहीं हैं । इस लिये वे बंधुओं व अगुए होके बंधुआई में जायेंगे और लेटनेहारों की आनन्द करनेहारी मंडली दू किई जायेगी ॥

८ प्रभु परमेश्वर ने अपने से किरिया खाई है परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर ये कहता है कि मैं यशकूब के ऐश्वर्य से घिनाता हूं और उस के भवनों से लता करता हूं इस लिये मैं नगर को और जो कुछ कि उस में है सौंपूंगा ।

१० और ऐसा होगा कि यदि एक घर में दस जन बच गये तो वे मरेंगे । और मनुष्य का कुनवा वही जिस ने उसे जलाया है घर से उस की टिट्टियों को निकालने के लिये उसे उठावेगा और उससे जो घर के बीच में है कहेगा कि अब तक तेरे साथ कोई और है और वह कहेगा कि नहीं तब वह बोलेगा कि चुप रह क्योंकि परमेश्वर के नाम की चर्चा न करना ॥

११ क्योंकि देख परमेश्वर ने आज्ञा किई और यह बड़े घर को दरारों से और छोटे घर को छेदों से मारेगा ॥

१२ क्या चटान पर छोड़े दौड़ेंगे क्या बहां कोई वेलों से जातेगा क्योंकि तुम ने

१३ न्याय को बिप से और धर्म के फल को नागदौने से पलटा है । तुम जो वृथा से आनन्दित हो और कहते हो कि क्या हम ने अपने लिये अपनी सामर्थ्य से सींग

१४ नहीं लिये । क्योंकि देख हे इसराएल के घराने परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर ये कहता है कि मैं तुम्हारे विरुद्ध एक जातिगण को उठाऊंगा और हमाल की पैठ से वन की नदी लों वे तुम्हें सतावेंगे ॥

सातवां पर्व ।

१ प्रभु परमेश्वर ने मुझे यों दिखाया है और देख कि पिछली घास के उगने के आरंभ में उस ने टिट्टियों को बनाया और देख कि राजा के लवने के पीछे वह २ पिछली घास थी । और यों हुआ कि जब वे देश के सागपात को संपूर्ण खा चुके तब मैं ने कहा कि हे परमेश्वर प्रभु मैं विन्ती करता हूं क्षमा कर यशकूब ३ किस प्रकार से उठेगा क्योंकि वह छोटा है । परमेश्वर इससे प्रकृताया ऐसा न होगा परमेश्वर ने कहा ॥

४ प्रभु परमेश्वर ने मुझे यों दिखाया है और देख कि प्रभु परमेश्वर ने आज्ञा से विचार करने को बुलाया और वह बड़ी गहिराई को खा गई और अधिकार को खा गई ॥

५ तब मैं ने कहा कि हे प्रभु परमेश्वर मैं तेरी विन्ती करता हूं कि थम जा ६ यशकूब किस प्रकार से उठेगा क्योंकि वह छोटा है । परमेश्वर इससे प्रकृताया यह भी नहीं होगा प्रभु परमेश्वर ने कहा ॥

उस ने मुझे यों दिखाया और देख कि प्रभु साहूल से 'यनाई हुई एक भीरा पर ७  
 खड़ा था और साहूल उस के हाथ में था । और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि ते ८  
 अमूस तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि एक साहूल को तब प्रभु ने कहा कि ९  
 देख मैं अपने लोग इसराएल के मध्य में एक साहूल को लगाऊंगा और मैं उन १०  
 से फिर कधी न छीतूंगा । और हजयाक के लंचे म्यान उजाड़े जायेंगे और इसरा- ११  
 एल के पवित्र स्थान सुनमान किये जायेंगे और खड्ग से मैं यरुशिलम के घराने १२  
 के विरुद्ध उठूंगा ॥

तब बैतएल के याजक अममियाह ने इसराएल के राजा यरुशिलम को कहला १३  
 भेजा कि इसराएल के घराने के मध्य में अमूस ने तेरे विरुद्ध युक्ति बांधी है देश १४  
 उस के सारे यजन को सह नहीं सक्ता । क्योंकि अमूस ने यों कहा कि यरुशिलम १५  
 खड्ग से मारा जायेगा और इसराएल अपने ही देश में निश्चय बंधुश्राई १६  
 में जायेगा ॥

और अममियाह ने अमूस से कहा कि हे दर्जी तू यहूदाह के देश को भाग १७  
 जा और वहां रोटी खा और वहां भविष्य कह । पर बैतएल में फिर कधी भविष्य १८  
 न कह क्योंकि वह राजा का पवित्र स्थान और राजा का मघन है ॥

तब अमूस ने उत्तर देके अममियाह से कहा कि मैं न भविष्यद्वक्ता न भविष्य- १९  
 द्वक्ता का पुत्र था पर मैं अहीर था और गूलरफल का बटोरद्वेषी । और परमे- २०  
 श्वर ने मुझे भुंड के पीछे से लिया और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि जा मेरे २१  
 लोग इसराएल से भविष्य कह । और अब तू परमेश्वर का यजन सुन तू कहता २२  
 है कि इसराएल के विरुद्ध भविष्य न कह और हजयाक के घराने पर यजन २३  
 न टपका ॥

इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तेरी पत्नी नगर में व्यवहार करेगी और २४  
 तेरे बेटे बेटियां तालवार से गिरेंगी और तेरा देश डोरी से बांटा जायेगा और तू २५  
 अशुद्ध देश में मरेगा और इसराएल अपने ही देश में निश्चय बंधुश्राई में जायेगा ॥

आठवां पर्व ।

प्रभु परमेश्वर ने मुझे यों दिखाया और देख कि एक टोकारी पकड़े फल से २६  
 भरी हुई है । और उस ने कहा कि हे अमूस तू क्या देखता है और मैं ने कहा २७  
 कि एक टोकारी पकड़े फल से भरी हुई तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि मेरे लोग २८  
 इसराएल पर अन्त आया है मैं उन से फिर कधी न छीतूंगा । और उसी दिन २९  
 मन्दिर का गाना बिलाना होगा प्रभु परमेश्वर कहता है हर एक स्थान में बहुत ३०  
 सी लार्थ हैं उन्हें डाल दो चुप रहे ॥

इस बात को सुनो अरे जो दरिद्रों के पीछे हांपते हो कि देश के कंगालों ३१  
 को नाश करो । जो कहते हो कि अमावास्या कब बीतेगी कि हम अब वर्च ३२  
 और विश्वास का दिन कि हम गौह का गोला खोलें जो ईफा को छोटा करते ३३  
 हो और मिसकाल को भारी करते हो कि छल से भूँटी तुलों को बनाओ । जिस्ते ३४  
 कंगालों को चांदी के लिये और दरिद्र को एक जोड़ा खरपों के लिये सोल लेओ ३५  
 और गौह की छांटों को बेचो ॥

- ० परमेश्वर ने मणिकुय की वनमया की क्रियाया सारे है कि निश्चय में उन के  
 ८ किसी कार्य का काम न भूँगा । क्या हम निश्चय में नहीं कहेंगे और हम का  
 हर एक शरीर विनाश न होगा और यह सब की सारे सर्वत्र उभरेगा और  
 मिस की नदी की नदी उभरेगा और घटेगा ।
- ६ और उस दिन में मेरा होगा । प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं गहवान्द में  
 १० मृग्य का शरीर करेगा और दोहवाले दिन में देश को लौटगा करेगा । और  
 मैं सुन्दार पत्नी को विनाश न और सुन्दार मर्त्य को शाश्वत में घट्ट दूंगा  
 और हर एक पॉट पर हाट करने का और हर एक के मिस पर सुहावन का  
 साखी और मैं उसे रक्तनों के विनाश के समान उभरेगा और उस के बन  
 को कट्टा दिन की नदी ।
- ११ देश के दिन सारे है प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं देश पर प्रकाश भूँगा  
 प्रभु का प्रकाश सारे और उन का मृग्य नहीं प्रभु परमेश्वर के यवन भूँ का  
 १२ प्रकाश । और ये समुद्र में समुद्र में भूँगे और उत्तर में पृथ्वी परमेश्वर का  
 १३ अवन भूँ के निम्न और पृथ्वी दोहरे पर उसे न पारिगे । उस दिन में सपत्नी  
 १४ कुमारीया और मृग्य प्रभु पदम के सारे सुन्दर होगी । हे हो ममरन के पाप की  
 क्रियाया सारे है और कहते हैं कि हे राजा मेरे देश के जीवन में और विकरमयः  
 की रीति के जीवन में मेरा वे सारे और फिर ऊँची न उठेगा ।
- नवी पद्य ।
- १ मैं मे प्रभु को शरी पर खड़ा हुआ होगा और हम ने कहा कि सारे के निरे  
 को सार कि नीचत दिन आये और सारे के निर के ताह हाल और मैं उन के  
 देश को तलवार में घात करेगा भवैया उन में मे न भागेगा और निकलनेवाला  
 २ उन में मे दान न निषेधा । जो वे पानाल में मेरे तो मेरा हाथ यहाँ में उन्हें  
 ३ पकड़ेगा और जो स्वर्ग में यह आये तो यहाँ में मैं उन्हें उभरेगा । और पॉट  
 वे कराल की घाटी पर हाथ का विषाघे मयापि में मयाके उन्हें यहाँ से  
 निकालेगा और यदि वे समुद्र की घाट में मेरे सारे में किर्प यहाँ में सूर्य की  
 ४ आभा दूंगा और यह उन्हें उभरेगा । और यदि वे अपने करियों के आगे धंधुपाई  
 में आये यहाँ में तलवार का आभा दूंगा और यह उन्हें ताश करेगी और मैं  
 अपनी आये उन पर सुराई के निम्न रक्तुंगा और भलाई के निम्न नहीं ।
- ५ क्योंकि प्रभु परमेश्वर मेराही का पद्वर यही है जो देश को कृता है और  
 यह पिघलता है और उस के सारे शरीर विनाश करेगा और यह नदी की नदी  
 ६ सर्वत्र उभरेगा और मिस की नदी की नदी छटेगा । यह जो अपने ऊपरी  
 कोठों को स्वर्ग में बनाता है और अपने गोल आकारों की नेत्र पृथिवी पर  
 डालता है यह जो समुद्र के जलो का सुलाता है और उन्हें पृथिवी पर उडेलता  
 है परमेश्वर उस का नाम है ॥
- ७ हे इसराएल के सन्तानो क्या तुम मेरे लिये कूशियों के सन्तानों के समान  
 नहीं हो परमेश्वर कहता है क्या मैं इसराएल को मिस देश से बका नहीं लाया  
 ८ और फिलिस्तीनों को कफतूर से और अमूरियों को कीर से । देख प्रभु परमेश्वर

की आँखें इस पाप राज्य पर हैं और मैं पृथिवी पर से उसे नाश करूँगा तथापि मैं यशकूट के घराने को सर्वथा नाश न करूँगा परमेश्वर कहता है । क्योंकि देख ९ मैं आजा करूँगा और मैं इमराएल के घराने को मारे जातिगणों में चानूँगा जैसा कि कोई चलनी से चालता है और भूमि पर एक किनका न गिरेगा । परन्तु १० मेरे लोगों के मारे पापी तलवार से मारे जायेंगे जो कहते हैं कि घुराई न तो पीछे से हम को पावेगी और न आगे से हम पर आवेगी ।

उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए तंबू को खड़ा करूँगा और उस के दगरेों को ११ सुधारूँगा और मैं उस के उलाहों को उठाऊँगा और प्राचीन दिनों की नाईं उसे बनाऊँगा । जिसी वे अहम के रहे हुए लोगों को और उन सारे जातिगणों को १२ जिन पर मेरा नाम कहा जाता है अपने अधिकार में लेवें परमेश्वर कहता है जो इस का कर्ता है ।

देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है कि जातवैया लवैया के समान १३ खड़ेगा और दाख का लताडू बिदन के बावैये के समान और पर्यन सीठे दाखरस का टपकावेंगे और सारे पछाड़ पिछलेंगे । और मैं अपने लोग इमराएल को १४ बंधुआई को फेर लाऊँगा और वे उलाह नगरों को बनावेंगे और उन में वसेंगे और दाखों को लगावेंगे और उन का रस पियेंगे और वे बारियां को लगावेंगे और उन के फल खायेंगे । और मैं उन्हें उन के देश पर नगाऊँगा और वे अपने १५ देश पर जिसे मैं ने उन्हें दिया फिर कधी उखाड़े न जायेंगे परमेश्वर तेरा ईश्वर कहता है ।

## अवधियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

अवधियाह का दर्शन । प्रभु परमेश्वर अहम के विषय में यों कहता है कि हम १ ने परमेश्वर से एक चर्चा सुनी है और अन्यदेशियों में एक दूत भेजा गया है कि उठा और उस के विरुद्ध संग्राम को चढ़ ।

देख मैं ने तुम्हें अन्यदेशियों में छोटा किया है तू अति निन्दित है । तेरे मन २ के घमंड ने तुम्हें बढ़काया है हे तू जो पर्यत के गुफों में बसता है जिस का नियाम ऊँचा है जो अपने मन में कहता है कि कौन मुझे भूमि पर उतारेगा । यद्यपि तू आप को उकाव की नाईं उत्तुह करे और अपना वसेरा तारों में बनावे ३ तथापि मैं तुम्हें वहाँ से उतारूँगा परमेश्वर कहता है । यदि चार तेरे पास आवें ४ अथवा बटमार रात को तो तू कैसा नाश है क्या वे अघायें दिन न चोराते यदि दाख के बटोरवैये तेरे पास आते तो क्या वे विनिया दाख न छोड़ जाते ।

यसै की दशा कैसी चिताई गई उस के ठंके हुए स्थान खाजे गये । तेरे सारे ५ साथी लोगों ने तुम्हें सिधाने लों पहुंचाया तेरे मिलापी लोगों ने तुम्हें छला है और



तुम्हें पर प्रवल हुए जिन्होंने ने तेरी रोटी खाई उन्होंने ने तेरे तले जाल बिछाया है उस में कुछ समझ नहीं ॥

८ उसी दिन परमेश्वर कहता है क्या मैं युद्धिमानों को अदम से और शानियों को इसी के पर्यंत से न मिटाऊंगा । और है तैमन तेरे थोर धररा जायेंगे विली इसी के पर्यंत से हर जीव वध से नष्ट किया जाय ॥

१० उस आंधेर के लिये जो तू ने अपने भाई यश्कूय से किया लाज तुम्हें ठांपेगी ११ और तू सदा लों नष्ट किया जायेगा । जिस दिन तू मामे खड़ा हुआ जिस दिन मैं विदेशी उस की सेनाओं को अधुआई में ले गये और उपरी उस के फाटकों में बैठ गये और यरुसलम पर चिट्ठी डाली तू भी उन में से एक की नाई था ॥

१२ अपने भाई के दिन मैं जिस दिन वह परदेशी रों गया तुम्हें को दृष्टि करना न चाहिये न उन के नाश होने के दिन मैं यश्कूय के मन्तानों पर आनन्द करना न

१३ कष्ट के दिन मैं तुम्हें आहंकार से बालना । मेरे लोगों की विपत्ति के दिन मैं उन के फाटक से तुम्हें घुमना न चाहिये न उन की विपत्ति के दिन मैं उन के क्रोध पर

१४ दृष्टि करना न उन की विपत्ति के दिन मैं उन की संपत्ति पर हाथ बड़ाना । और चौराहे पर खड़े होके उस के वचे हुएों को फाट डालना न चाहिये न कष्ट के दिन मैं उस के रहे हुएों को मोप देना ।

१५ क्योंकि सारे जातिगणों पर परमेश्वर का दिन समीप है जैसा तू ने किया है १६ तैसा तुम्हें पर किया जायेगा तेरी करनी तेरे ही नीम पर पलटेगी । क्योंकि जिस भांति तुम ने मेरे पवित्र पर्यंत पर पीया है तिसा भांति सारे जातिगण सदा पीयेंगे हों पीयेंगे और घूंट लेंगे और वे वैसे होंगे जैसे कि न थे ॥

१७ पर सैहून पर्यंत पर वचे हुए होंगे और वह पवित्र होगा और यश्कूय का १८ घराना अपने अधिकारों को प्राप्त करेगा । और यश्कूय का घराना आग होगा और यूसुफ का घराना लयर और इसी का घराना खूया होगा और वे उन्हें धारेंगे और उन्हें भस्म करेंगे और इसी के घराने का कोई न बचेगा क्योंकि

१९ परमेश्वर ने कहा है । और दक्खिन के लोग इसी के पर्यंत को अधिकार में लावेंगे और चौगान के लोग फिलिस्तिनों को और वे इफरायम के खेतों को और

२० समरन के खेतों को अधिकार में लावेंगे और बिनयमीन जिलिश्द को । और इसराएल के सन्तानों के वंधुओं की यह सेना जो कनशानियों में हैं सिफारद लों अधिकार में लावेंगे और यरुसलम की वंधुस जो सिफारद में हैं दक्खिन के नगरों को ।

२१ और सैहून पहाड़ पर इसी पहाड़ के न्याय करने के लिये तारक चढ़ेंगे और राज्य परमेश्वर का होगा ।

# यूनः भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

और परमेश्वर का वचन यह कहता हुआ अमिसै के बेटे यूनः के पास आया । १  
कि उठ उस सदा नगर नीनवः को जा और उस पर पुकार क्योंकि उन की घुराई २  
मेरे आगे पहुंची है । पर यूनः उठा कि परमेश्वर के सन्मुख से तरसीस को भागे ३  
और याफा में उतरा और एक जहाज को जो तरसीस को जाने पर था पाया  
और उस का भाड़ा देके उस पर चढ़ा जिस्ते परमेश्वर के सन्मुख से उन के संग  
तरसीस को जाये ॥

परन्तु परमेश्वर ने समुद्र पर एक बड़ी ध्यार उतारी और समुद्र पर बड़ी आंधी ४  
चली यहां लों कि जहाज टूटने पर था । तब डांडी डर गये और हर एक ने अपने ५  
अपने देव को पुकारा और जहाज टलुक करने को उन्हे ने उस में से सामग्री  
को समुद्र में डाल दिया पर यूनः नाव के अलंगों में उतर गया और लटक के भारी  
नौद में था ॥

तब जहाज का मांकी उस के पास गया और उस्से कहा कि यह क्या है कि ६  
तू भारी नौद में है उठ अपने ईश्वर को पुकार क्या जानें परमेश्वर हमारी सुधि  
लेवे जिस्ते हम नाश न होवें ॥

और वे आपस में कहने लगे कि आओ हम चिट्टी डालें और जानें कि किस ७  
के कारण से यह घुराई हम पर पड़ी है और उन्हे ने चिट्टी डाली और चिट्टी यूनः  
के नाम पर निकली ॥

तब उन्हे ने उस्से कहा कि अब तू हम को बता कि किस कारण से यह ८  
घुराई हम पर पड़ी है तेरा उद्यम क्या है और तू कहाँ से आया है तेरा देश  
कौन सा है और तू किस जातिमान का है । और उस ने उन से कहा कि मैं ९  
इब्रानी हूं और परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर से डरता हूं जो जल थल का  
मृजनहार है ॥

और वे मनुष्य अति डर गये और उसे कहने लगे कि यह तू ने क्या किया है १०  
क्योंकि उन्हे ने जाना कि वह परमेश्वर के सन्मुख से भागता था इस लिये कि  
उस ने उन से कहा था । तब उन्हे ने उस्से कहा कि हम तुम्ह से क्या करें जिस्ते ११  
समुद्र हमारे लिये हलरे से घसे क्योंकि समुद्र आंधियाटा होता चला जाता था ।  
तब उस ने उन से कहा कि सुके उठाके समुद्र में डाल दो और समुद्र तुम्हारे लिये १२  
हलरे से घस जायेगा क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे कारण से यह बड़ी आंधी तुम  
पर पड़ी है ॥

तथापि वे मनुष्य बड़े यत्न से खंचते गये कि तीर पर पहुंचें पर न सके क्योंकि १३  
उन के विरुद्ध समुद्र आंधियाटा होता गया । तब वे यह करते हुए परमेश्वर को १४  
पुकारने लगे कि हे परमेश्वर हम विन्ती करते हैं कि इस मनुष्य के प्राण के लिये  
हम नाश न होवें और निर्दोष रुधिर हम पर मत धर क्योंकि हे परमेश्वर जैसा तू

- १५ ने चाहा वैसा तू ने किया । और उन्होंने ने यूनः को उठाके उसे समुद्र में डाल  
 १६ दिया और समुद्र अपने छलरने से घम गया । तब वे मनुष्य परमेश्वर से शक्ति डरे  
 और परमेश्वर को बलि चढ़ाया और मानता मानी ।  
 १७ और परमेश्वर ने यूनः के लीलने को एक महा मच्छ उहराया और यूनः तीन  
 रात दिन मच्छ के उदर में रहा ॥

### दूसरा पर्व ।

- १ और मच्छ के उदर में से यूनः ने परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रार्थना कीई ।  
 २ और कहा कि मैं ने अपने कष्ट के सारे परमेश्वर को पुकारा और उस ने मेरा  
 ३ उत्तर दिया पाताल के भीतर से मैं चिल्लाया और तू ने मेरा शब्द सुना है । और  
 तू ने मुझे गहिरावे में समुद्र के मध्य में डाला है और बाढ़ ने मुझे घेरा है तेरी  
 ४ सारी लहरें और तेरे ढेख मेरे ऊपर से चीत गये । तब मैं ने कहा कि मैं तेरी दृष्टि से  
 ५ खेदा गया हूं तथापि मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर फिर ताकूंगा । प्राण लों जल  
 ६ मुझे लगता है रसातल मुझे घेर लेता है सेवार मेरे चिर पर लिपट जाता है । मैं  
 पर्वतों के खोहों लों उतर जाता पृथिवी के अड़ंगे मुझ पर सदा के लिये मुँदे हैं  
 पर हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू मेरे प्राण को गड़हे से निकाल लावेगा ॥  
 ७ जब मेरा प्राण मुझ में मूर्छित हुआ तब मैं ने परमेश्वर को स्मरण किया और  
 ८ मेरी प्रार्थना तेरे पवित्र मन्दिर में तेरे पास पहुंची । जो झूठे वृथों को मानते हैं  
 ९ वह अपने दयाल को त्यागते हैं । पर मैं धन्यवाद के शब्द से तुझ को बलि  
 चढ़ाऊंगा जो मनौती मैं ने मानी उसे पूरी करूंगा वचाव परमेश्वर से है ॥  
 १० और परमेश्वर ने मच्छ को आज्ञा दीई और उस ने यूनः को थल पर उगल दिया ॥

### तीसरा पर्व ।

- १ और परमेश्वर का वचन दूसरी बार यूनः के पास यह कहते हुए आया ।  
 २ उठ उस महा नगर नीनवः को जा और जो उपदेश मैं तुझ से कहूँ उस को  
 ३ प्रचार । और यूनः उठा और परमेश्वर के कहने के समान नीनवः को गया अब  
 ४ नीनवः ईश्वर के आगे तीन दिन के मार्ग का एक महा नगर था । और यूनः  
 एक दिन के मार्ग नगर में फिरने लगा और यह कहके प्रचारा कि और चालीस  
 दिन में नीनवः उलटाया जायेगा ॥  
 ५ और नीनवः के लोगों ने ईश्वर की प्रतीति कीई और व्रत प्रचारा और उन  
 ६ में बड़े से छोटे लों टाट पहिना । और यह समाचार नीनवः के राजा के पास  
 पहुंचा और वह अपने सिंहासन से उठा और अपना राजबस्त्र उतारके टाट  
 ७ ओढ़ा और राख पर बैठ गया । और राजा और उस के सहित जनों की आज्ञा  
 से नीनवः में यह कहके प्रचारा गया कि न मनुष्य न ठोर न गाय न भेड़ कुक्कु  
 ८ चखें न खावें और न जल पीवें । पर मनुष्य और ठोर टाट से ओढ़ाये जावें और  
 वल से परमेश्वर की दोहाई देवें और हर एक अपने अपने कुमार्ग से और अपने  
 ९ अपने अन्धेर से जो उन के हाथों में है फिर जाये । क्या जाने ईश्वर फिरे और  
 पकतावे और अपने क्रोध के ताप से फिर जाये कि हम नाश न होवें ॥  
 १० और ईश्वर ने उन के कार्यों को देखा कि वे अपने अपने कुमार्ग से फिरे

दूसरे खूंट में ठकने में उस के दोनों खूंट में करोवियों को बनाइयो । और वे २०  
करोवी पर फैलाये हुए हों ऐसे कि ठकना उन के पंखों के नीचे ठप जाय और  
उन के मुँह आगे मागे ठकने की और देखें । और तू उस ठकने को उस मंजूपा २१  
के ऊपर रखिओ और वह साक्षी जो मैं तुम्हें देऊँ उस मंजूपा में रखिओ । और २२  
वहाँ मैं तुम्हें से भेंट करूँगा और मैं ठकने के ऊपर से दोनों करोवियों के मध्य  
में से जो साक्षी की मंजूपा के ऊपर होंगे उन मध्य वस्तुन के कारण जो मैं इसराएल  
के संतानों के लिये तुम्हें आज्ञा करूँगा तुम्हें से बातचीत करूँगा ॥

और तू शमशाद की लकड़ी का दो हाथ लंबा और एक हाथ चौड़ा और २३  
डेढ़ हाथ लंबा मंच बनाइयो । और उसे निर्मल सोने से सड़ियो और उस पर २४  
चारों ओर सोने का एक कलश बनाइयो । और उस के लिये चार अंगुल भालर २५  
चारों ओर बनाइयो और उस भालर के चारों ओर सोने के मुकुट बनाइयो ।  
और उस के लिये सोने के चार कड़े बनाइयो और उस के चार पायों के चार २६  
कोनों में लगाइयो । भालर के आगे कड़े बहंगर के कारण हों कि मंच उठाया २७  
जाय । और तू बहंगर शमशाद की लकड़ी का बनाना और उन्में सोने से सड़ना २८  
कि मंच उन से उठाया जाय । और तू उस के घरतन और उस के कंगुल और २९  
उस के पात्र ठकने और उस के उँडेलने के कटोरे लिन में उँडेलता जाय बना तू  
उन्में निर्मल सोने से बना । और मंच पर भेंट की रोटियाँ मेरे मन्मुख सदा ३०  
रखिओ ॥

और तू दीपक का एक भाड़ निर्मल सोने का बना पीटे हुए काण्य का भाड़ ३१  
बने और उस की डंडी और उस की डालियाँ उस की कली उन के फल और उस  
के फूल एक ही के देखें । और छः डालियाँ उस की अलंगों से निकलें एक अलंग ३२  
से तीन दूसरी अलंग से तीन हों । तीन कली बदामी एक डाली में फूल फल के ३३  
साथ हों और तीन कली बदामी दूसरी डाली में अपने फूल फल के साथ हों  
इसी रीति से छः डालियों में जो दीअट से निकली हुई हों । और दीअट में चार ३४  
कली बदामी उन के फूल फल के साथ हों । और एक एक फल उस की दो दो ३५  
डालियों के नीचे देखें और छः डालियाँ जो दीअट से निकली हैं उन के नीचे  
ऐसी ही हों । उन के फल और उन की डालियाँ उसी से तैं वह मध्य के सब गढ़े ३६  
हुए निर्मल सोने के हों । और तू उस के सात दीपक बना और उस के दीपक ३७  
जला जिततैं उस के मन्मुख उँजियाला देखें । और तू उस की कतरनी और ३८  
उस के चिमटा निर्मल सोने के बना । वह उसे इन समस्त पात्र समेत मन सदा ३९  
एक निर्मल सोने के बनावे । और चौकस हो कि जैसा तुम्हें पढ़ाई पर दिखाया ४०  
गया तू उसी डाल का बना ॥

कव्योमयां पृष्ठ ।

और तू बटे हुए भीने सूती और नीले और धँजनी और लाल कपड़े के दस १  
ओटों का तंबू बना तू उन्में चित्रकारी के कार्य से करोवियों के साथ बना ।  
हर एक ओट की लंबाई अट्ठाईस हाथ और हर एक ओट की चौड़ाई चार हाथ २  
की हो हर एक ओट एक ही नाप की हो । पाँचों ओट एक दूसरे से जोड़ी ३

# मीकः भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

- १ परमेश्वर का वचन जो यहूदाह के राजा यूताम और आखज और हिजिकियाह के दिनों में मथरसती मीकः के पास आया जो उस ने समरुन और यरुसलम के विषय में देखा ॥
- २ सुनो हे सारे लोगो और कान धरो हे पृथिवी और उस की भरपूरी और प्रभु परमेश्वर तुम्हारे विरुद्ध साक्षी देवे छां प्रभु अपने पाथ्य मन्दिर से । क्योंकि देख परमेश्वर अपने स्थान से निकलता है और वट उतरेगा और पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर पांव धरेगा । और पर्यंत उस के नीचे पिघल जायेंगे और तराई फट जायेंगी जैसा कि मोम आग से और जैसा कि जल कंदला से उंडेला जाता है ॥
- ५ यह सब यश्शूव के अपराध के लिये और इसराएल के घराने के पापों के लिये है यश्शूव का अपराध क्या है क्या समरुन नहीं और यहूदाह के ऊंचे स्थान क्या हैं क्या यरुसलम नहीं । इस लिये मैं समरुन को खेत के एक ठेर की नाई बनाऊंगा और लगाई हुई दाखवारी की नाई और मैं उस के पत्थरों को तराई में कुलकाऊंगा और उस की नेवों को उघाऊंगा । और उस की सारी मूर्तें टुकड़े टुकड़े किई जायेंगी और उस की सारी खरचियां आग में जलाई जायेंगी और उस की सारी मूर्तों को मैं उजाड़ करूंगा क्योंकि उस ने वेश्या की खरची से बटोरा है और वे वेश्या की खरची के लिये फिर जायेंगे ॥
- ८ इस लिये मैं हाय हाय मारूंगा और विलाप करूंगा मैं उघारा और नंगा फिडंगा गीदड़ों की नाई चिल्ला उठूंगा और शुतुरमुर्गी की नाई कुटूंगा । क्योंकि उस का घाव असाध्य है कि वह यहूदाह को आया है वह मेरे लोगों के फाटक पर यरुसलम लों पहुंचा है ॥
- १० तुम जअत मैं मत प्रचारो रो रो विलाप न करो वैतअफरः मैं धूल मैं अपने
- ११ को लोटाओ । हे सफ़ीर की निवासिनी नग्न और घबराई हुई चली जा जानान की निवासिनी निकल नहीं जाती वैतुलअसल का कुठनां अपने ठिकने का स्थान
- १२ तुम से लेगा । क्योंकि मुररात की निवासिनी अपनी संपत्ति के लिये लुटी जाती
- १३ है क्योंकि परमेश्वर की ओर से बुराई यरुसलम के फाटक लों उतरी है । हे लकीस की निवासिनी प्रवनगामी को रथ में जोतो वही सैहून की कन्या के लिये
- १४ पाप का आरंभ था क्योंकि इसराएल के अपराध तुम्ही में पाये गये । इस लिये तू मौरिसतजात का त्यागपत्र देगा अकजीव के घराने इसराएल के राजों के लिये
- १५ झूठे ठहरेंगे । मैं तुम्ह पर भी एक अधिकारी लाऊंगा हे मरीसः की निवासिनी
- १६ वह अदूलाम को आवेगा जो इसराएल का प्रताप है । गंजी हो जा और अपने प्यारे लड़कों के लिये अपना सिर मुंडा उकाव की नाई अपनी गंज को बड़ा क्योंकि वे तुम्ह से बंधुआई में गये हैं ॥

और ईश्वर उस बुराई से पकताया जो वन पर लाने को उस ने कहा था और उस ने न किया ॥

चौथा पद्य ।

पर यूनः को यह अति बुरा बमक पड़ा और वह घर उठा । और यह कहते १  
हुए उस ने परमेश्वर से प्रार्थना किई कि हे परमेश्वर मैं चिन्ती करता हूँ क्या यह २  
मेरा बचन न था जब मैं अपने देश में था इस लिये मैं आशे से तरसीन को ३  
भागा क्योंकि मैं जानता था कि तू कृपाल और दयाल ईश्वर है जो क्रोध में ४  
धीर और दया में बहुत और बुराई से पकताता है । और अब हे परमेश्वर मैं ५  
चिन्ती करता हूँ कि मेरे प्राण को सुझ से ले ले क्योंकि मेरे लिये मरना जीने से ६  
भला है ॥

और परमेश्वर ने उससे कहा कि क्या तू भला करना है जो तू घर उठा है ॥ १४

और यूनः नगर से निकल गया और नगर के पूरव और बैठ गया और वहाँ ५  
अपने लिये एक छप्पर बनाया और उस के नीचे छाया में बैठ गया जब लो देखे ६  
कि नगर पर क्या होगा । और परमेश्वर ईश्वर ने रेंढ़ी का एक पेड़ उटाराया ६  
और उसे यूनः पर उगाया जिस्ते उस के मिर पर छाया करे और उसे उस के दुःख ७  
से बचावे और यूनः उस रेंढ़ी के पेड़ के कारण अति आनन्द से आनन्दित हुआ ॥

पर दूसरे दिन जब भोर हुआ परमेश्वर ने एक जोड़ा उटाराया और उस ने ७  
उस रेंढ़ी के पेड़ को डसा ऐसा कि भुरा गया । और जब सूर्य उदय हुआ तब ८  
ऐसा हुआ कि ईश्वर ने एक बड़ी पर्वी पवन उटाराई और यूनः के मिर पर घाम ९  
पड़ी और वह झूझित हुआ और अपने लिये मृत्यु मांगी और बोला कि मेरे लिये १०  
मरना जीने से भला है ॥

और ईश्वर ने यूनः से कहा क्या तू भला करता है जो उस रेंढ़ी के पेड़ के ९  
लिये तू घर उठा है और उस ने कहा मैं भला करता हूँ जो मरने लो घर उठा ॥

तब परमेश्वर ने कहा कि तू ने उन रेंढ़ी के पेड़ के लिये चिन्ता किई जिस १०  
के लिये तू ने परिश्रम न किया और न उगाया जो रात ही में उगा और रात ही ११  
में नष्ट हुआ । और क्या मैं नीनवः इस सदा नगर की चिन्ता न कहंगा जिस में १२  
एक लाख वीस सहस्र प्राणी से ऊपर हैं जो अपने दहिने हाथ का घेहरा नहीं १३  
जानते और ठोर भी बहुत हैं ॥





## दूसरा पर्व ।

सन्ताप उन पर जो अधर्म की युक्ति करते हैं और अपने विद्वानों पर घुराई की जुगत बांधते हैं और विद्वान होते ही उसे किया करते हैं क्योंकि वह उन के हाथ के वस में है । और वे खेतों का लाभ करते हैं और अंधेर से उन्हें वस में करते हैं और घरों का और उन्हें ले लेते हैं वे सहाजन और उस घराने को सताते हैं हां मनुष्य और उस के अधिकार को ॥

इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस कुटुम्ब पर घुराई की जुगत करता हूँ कि जिसे तुम अपने गले को न खींचोगे और तुम उत्तुङ्ग न चलेगो क्योंकि वह घुरा समय होगा । उसी दिन कोई तुम्हारे विषय में कहावत उठावेगा और यह कहते हुए हाथ हाथ से विलाप करेगा कि हम सर्वथा नष्ट हुए हैं उस ने मेरे लोगों के भाग को पलट डाला है उस ने मुझ से कैसा ले लिया है एक धर्मत्यागी को उस ने हमारे खेतों को विभाग किया । इस लिये तरे लिये कोई न होगा जो परमेश्वर की मंडली में चिट्ठी की रस्मी डाले ॥

भविष्य न कहे वे भविष्य कहेंगे जो ऐसी बातों का भविष्य न कहेंगे निन्दा टल नहीं जाती । हे इसराएल के घराने ये कैसी बातें हैं क्या परमेश्वर का आत्मा संकेत है क्या यह उस के कार्य हैं क्या उस के लिये जो घुराई से चलता है मेरे वचन भले नहीं । पर सनातन से मेरे लोग घेरी की नाईं उठे हैं जो लोग कुशल से घीत जाते हैं जो लड़ाई से फिर आते हैं तुम उन पर से कुर्ते को चादर समेत उतार लेते हो । तुम मेरे लोगों की स्त्रियों को उन के मनभावत घर से निकास देते हो और उन के बालकों से मेरे विभव को सर्वदा के लिये ले लेते हो । उठो और चलो क्योंकि यह तुम्हारा विश्रामस्थान नहीं है कि अशुद्धता के कारण वह तुम्हें विनाश करेगा हां महा नाश से । यदि कोई बौद्धा और मिथ्या मनुष्य झूठ कहे कि मैं दाखरस और तीक्ष्ण सदिरा का भविष्य कहूँगा तो वही इस लोग का भविष्यवृत्ता होगा ॥

हे यशकूब मैं निश्चय तरे सब के सब घटोऊँगा मैं इसराएल के वचे तुम्हें को निश्चय एकट्ठा करूँगा मैं उन्हें दूसरों की भेड़ की नाईं एकट्ठा रखूँगा उस झुंड की नाईं जो अपनी घुराई के मध्य में है मनुष्यों की बहुताई से वे हल्ला करेंगे । तोड़नेवाला उन के आगे आगे चढ़ जाता है वे तोड़ते हुए फाटक से घीत जाते और निकल जाते हैं और उन का राजा उन के आगे आगे चलता है अर्थात् परमेश्वर उन की अगुवाई में ॥

## तीसरा पर्व ।

और मैं ने कहा कि हे यशकूब के अध्यक्ष और इसराएल के घराने के अगुओं में विन्ती करता हूँ कि सुनो क्या तुम को विचार जाना नहीं । जो भलाई से बर रखते हो और घुराई से प्रीति जो उन की खाल उन पर से उतारते हो और उन का मांस उन के हाड़ों पर से । और जो मेरे लोगों का मांस खाते हैं और उन की खाल उन पर से खींच लेते हैं और उन के हाड़ों को टुक टुक करते हैं और उन्हें अलग कर देते हैं जैसा कि छाड़ी में और जैसा कि मांस जो चंडा में है । तब वे परमेश्वर की दोहाई देंगे पर वह उन की न

११ छोड़ों को काट डालूंगा और तेरे स्थों को विनाश करूंगा । और मैं तेरे देश के  
 १२ नगरों को काट डालूंगा और तेरे सारे गढ़ों को ढाह दूंगा । और मैं तेरे हाथ  
 १३ में से उच्चाटनों को काट डालूंगा और तुझ में टोन्हे न होंगे । और तेरी गठी  
 हुई मूर्तों को और तेरी प्रतिमों को तेरे मध्य में से काट डालूंगा और तू अपने  
 १४ हाथों के कार्य को फिर कभी न पूजेगा । और मैं तेरी असीरतों को तेरे मध्य  
 १५ में से उखाड़ डालूंगा और तेरे नगरों को उजाड़ करूंगा । और मैं कोप और  
 जलजलाहट से उन जातिगणों से पलटा लूंगा जिन्हें ने नहीं माना ॥

छठवां पर्व ।

१ जो परमेश्वर कहता है सो सुनो अब उठ पर्वतों के आगे विवाद कर और  
 टीले तेरा शब्द सुनें ॥

२ हे पर्वतों और पृथिवी की दृढ़ नेत्रों परमेश्वर का विवाद सुनो क्योंकि परमे-  
 श्वर का विवाद अपने लोगों से है और वह इसराएल से वादानुवाद करेगा ॥

३ हे मेरी जाति मैं ने तुझ से क्या किया है और किस बात में मैं ने तुझे शकाया  
 ४ है मुझ पर साक्षी दे । क्योंकि मैं तुझे मिस्र देश से चढ़ा लाया और अंधुओं के  
 घर से तुझे छोड़ाया और मैं ने तेरे आगे मूसा और हारून और मिरयम को भेजा ॥

५ हे मेरी जाति स्मरण कर कि मोआब के राजा बलक ने क्या परामर्श किया  
 और बजर के बेटे बलआम ने उसे क्या उत्तर दिया स्मरण कर कि क्या हुआ  
 सन्तीन से जिलजाल लों जिस्तें परमेश्वर के धर्म को जाने ॥

६ मैं क्या लेके परमेश्वर के समीप आऊँ और महेश्वर के आगे दण्डवत करूँ  
 क्या मैं बलिदान की भेंटों और एक बरस के बछड़ों को लेके उस के आगे आऊँ ।

७ क्या परमेश्वर सहस्र सेंकों से अथवा दस सहस्र नदी तेल से प्रसन्न होगा क्या मैं  
 अपने पहिलौठे को अपने अपराध के लिये देऊँ अपने कोख के फल को अपने  
 प्राण के पाप के लिये ॥

८ हे मनुष्य जो भला है परमेश्वर ने तुझे घताया है और परमेश्वर तुझ से और  
 क्या चाहता है कि तू न्याय करे और दया से प्रीति रखे और अपने ईश्वर के  
 साथ दीनताई से चले ॥

९ परमेश्वर का शब्द नगर को पुकारता है और जो दुष्टिमान है उसे ठहराया  
 १० है । क्या अब लों दुष्ट के घर में दुष्टता के भंडार हैं और हलुक सापित बटखरा  
 ११ है । क्या दुष्टता की तुला और कल के बटखरे रखते हुए मैं पवित्र हूँ । क्योंकि  
 १२ उस के धनवान लोग लूटपाट से भरे हैं और उस के निवासी झूठ बोलते हैं और  
 उन के मुंह में उन की जीभ कली है ॥

१३ और मैं भी तुझे असाध्य से माऊंगा और तेरे पापों के कारण तुझे उजाड़  
 १४ करूंगा । तू खायेगा पर तृप्त न होगा और तेरे मध्य में उदासी होवेगी तू ले  
 १५ जायेगा पर न छोड़ावेगा और जो कुछ तू छोड़ावेगा मैं तलवार की सोंपूंगा । तू  
 बोवेगा पर न लवेगा तू जलपाई को रेंदेगा पर तेल से आप को न मलेगा और  
 १६ नये दाख को पर न पीयेगा । क्योंकि उमरी की रीति चलाव हैं और अखिअब  
 के घराने की सारी क्रिया और तुम उन के परामर्शों में चलते हो जिस्तें मैं तुम्हें

और हे झुंड के गढ़ हे सैटून की कन्या के डोले तुम को दोगा हां अगिली ८  
प्रभुता आवेगी यरुसलम की कन्या का राज्य ॥

अब तू क्यों चिन्ताती है क्या तुम में कोई राजा नहीं है क्या तेरा भंजी नष्ट ९  
हुआ क्योंकि जन्मेवाली स्त्री की पीड़ें तुम्हें लगी हैं । हे सैटून की पुत्री जन्मेवाली १०  
स्त्री की नाईं पीड़ें उठा और जन डाल क्योंकि अब तू नगर से बाहर जायेगी और  
चौगान में रहेगी हां तू बाबुल को जायेगी वहां तू बचाव पायेगी वहां परमेश्वर  
तुम्हें तेरे वैरियों के हाथ में छोड़ावेगा ॥

और अब बहुत से जातिगण तेरे विरुद्ध एकट्ठे हैं जो कहते हैं कि वह अशुद्ध ११  
होवे और हमारी आंखें सैटून पर लगीं । पर वे लोग परमेश्वर की चिन्तों को १२  
नहीं जानते और उस का अभिप्राय नहीं समझते क्योंकि वह उन्हें गढ़ों की नाईं  
खलिदान में बटोरेगा । हे सैटून की पुत्री उठके लताड़ क्योंकि मैं तेरे सींग को १३  
लोटा और तेरे गुरों को पीतल बनाऊंगा और तू बहुत जातिगणों को टुकड़ा  
टुकड़ा करेगी और उन की प्राप्ति परमेश्वर को और उन की सम्पत्ति समस्त पृथिवी  
के प्रभु को तू समर्पण करेगी ॥

#### पांचवां पर्व ।

हे जधान की पुत्री बहुतार्ई से अब आप को एकट्ठी कर उन्हीं ने हमें घेर १  
रक्खा है उन्हीं ने इसराएल के न्यायो को गाल पर कड़ी मारी है ॥

और तू हे वैतलहम इफरातह यद्यपि तू यहूदाह के सन्तानों में छोटा है तथापि २  
तुम में से मेरे लिये वह निकलेगा जो इसराएल में महीप होगा जिस का  
निकलना पुरातन से सनातन दिनों से होगा ।

इस लिये वह उन्हें उस समय लों सोंपेगा जब कि जो जनती है जन डालेगी ३  
तब उस के भाइयों के उवरे हुए इसराएल के सन्तानों के पास फिरंगे । और ४  
वह खड़ा होगा और परमेश्वर के चल से चरावेगा हां परमेश्वर अपने ईश्वर के  
नाम की महिमा से और वे ठहरेंगे क्योंकि अब वह पृथिवी के अन्तों लों सहान  
होगा । और वह हमारा कुशल होगा और जब अमूरी हमारे देश में आवेगा ५  
और हमारे भवनों में पांय रखेगा तब हम उस के विरुद्ध सात गड़रिये और  
आठ अध्यक्ष उठावेंगे । और वे अमूरी के देश को तलवार से उजाड़ करेंगे और ६  
निमरद के देश को उस के पैरों लों और अमूरी से बचाव होगा जब वह हमारे  
देश में आवेगा और हमारे निधानों में अपना पांय रखेगा ॥

और यश्कूय के उवरे हुए बहुत से जातिगणों के मध्य में ऐसे होंगे जैसी ७  
ओस परमेश्वर से और जैसी झड़ी घास पर जो मनुष्य के लिये नहीं ठहरती और  
मनुष्यों के सन्तानों के लिये नहीं रहती । और यश्कूय के उवरे हुए जातिगणों ८  
में बहुत से लोगों के मध्य में ऐसे होंगे जैसा सिंह वन के पशुओं में और जैसा  
युधा सिंह भेड़ के झुंडों में कि जब उन में से जाता है तब लताड़ता और फाड़  
डालता है और कोई छोड़ानेवाला नहीं है । तेरा हाथ तेरे वैरियों पर उत्तुङ्ग ९  
होगा और तेरे सारे शत्रु काटे जायेंगे ॥

और उसी दिन में ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि मैं तेरे मध्य में से तेरे १०

१८ तुम सा ईश्वर कौन है जो बुराई को नसा करता है और अपने अधिकार के उबरे हुओं के अपराध से जीत जाता है वह अपना क्रोध सदा लों नहीं रखता  
 १९ क्योंकि वह दया से आनन्दित है । वह लौटेगा वह हम पर कृपा करेगा वह हमारी बुराइयों को दबावेगा और तू उन के सारे पापों को समुद्र के गहिराव में डालेगा । तू यश्कूब से सच्चाई और अखिरहाम पर दया करेगा जो तू ने पुरातन दिनों से हमारे पित्रों से किरिया खाई थी ॥

## नहूम भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

१ नीनवः के विषय में भविष्यवाणी जलकूशी नहूम के दर्शन की पुस्तक ॥  
 २ परमेश्वर उबलित और पलटा लेनेहारा ईश्वर है परमेश्वर पलटा लेता है और कोपमय है परमेश्वर अपने शत्रुओं से पलटा लेता है और अपने वैरियों के लिये ३ क्रोध रखता है । परमेश्वर क्रोध में धीमा है पर वल में महान वह पापिन को निष्पापी नहीं ठहरावेगा परमेश्वर का मार्ग ववंडर और आंधी में है और मेघ उस ४ के चरणों की धूल हैं । वह समुद्र को डांटता और उसे सुखाता है और वह सारी नदियों को सुखाता है वसन कुम्हलाता है और करमिल और लुबनान का फूल ५ कुम्हलाता है । उसे पर्वत शर्शराते हैं और टीले पिघल जाते हैं और देश उस ६ के सन्मुख उकलता है हां जगत और उस के सारे निवासी । उस की जलजलाहट के आगे कौन खड़ा हो सक्ता है और उस के क्रोध की तपन में कौन ठहरता है ७ उस का कोप आग की नाईं उंडेला जाता है और उसे चटान ढाये जाते हैं ॥  
 ८ परमेश्वर भला है विपत्ति के समय वह गढ़ के लिये है और वह उन्हें जानता ९ है जो उस पर आसरा रखते हैं । पर बाढ़ के रेले से वह उस के स्थान का अन्त करेगा और अधियारा उस के वैरियों को खेदेगा ॥  
 १० तुम परमेश्वर के बिखरु क्या युक्ति बांधते हो वह अन्त करेगा विपत्ति दूसरी ११ बेर न उठेगी । यद्यपि वे लिपटे हुए कांटों की नाईं हैं अपने मद से मतवाले हैं १२ तथापि अति सूखी खूथी की नाईं भस्म किये जायेंगे । तुम से कुमन्त्री निकला १३ जिस ने परमेश्वर के बिखरु खूरी युक्ति बांधी है । परमेश्वर यों कहता है यद्यपि वे कुशल से हैं और गिनती में ढेर तथापि वे इस रीति से काटे जायेंगे और वह लील जायेगा यद्यपि मैं ने तुम्हें दुःख दिया तथापि मैं फिर तुम को दुःख १४ न दूंगा । क्योंकि अब मैं तुम पर से उस का जूआ तोड़ूंगा और तेरे बंधनों को भटक डालूंगा ॥  
 १५ और परमेश्वर ने तेरे विषय में आज्ञा किई कि तेरे नाम से और कोई बोया न जायेगा मैं तेरे देवों के घर से खोदी हुई मूर्ति को और ढाली हुई मूर्ति को काट डालूंगा मैं उसे तेरी समाधि ठहराऊंगा क्योंकि तू नीच है ॥

उजाड़ के लिये बनाऊं और उस के निवासियों को पुष्पकार के लिये इस लिये  
तुम मेरे लोगों की निन्दा उठाओगे ॥

सातवां पर्व ।

हाय मुझ पर क्योंकि मैं ऐसा हूँ जैसा कि जब लोग ग्रीष्म के फल बटोरते हैं १  
जैसा कि जब दास्य बीना गया खाने को कच्चा नहीं है अधपका मूलर नहीं है  
जिसे मेरा प्राण चाहता है । भला जीव देश में से नष्ट हुआ और मनुष्यों में २  
कोई खरा नहीं है वे सब के सब लोहू के लिये घात में रहते हैं हर एक जन  
जाल से अपने अपने भाई को अछेर करता है । उन को हाथ बुराई करने को ३  
ठीक सिद्ध हैं राजपुत्र भेंट सांगता है न्यायी भी और सद्धत जन अपने मन की  
नृणा बच्चारता है वे बुरा बंधन बांधते हैं । उन में से जो सब से भला है ४  
भड़बेरी की नाई है और जो सब से खरा है कंटीले चाड़े से चोखा है तेरे  
रखवालों का दिन हां तेरे पलटों का दिन आता है अब उन की व्याकुलता  
होगी । मित्र पर विश्वास न करो प्रीतम पर भरोसा मत रखो उससे जो तेरे ५  
गोद में लेटती है अपने मुंह के कोबाड़े बन्द रख । क्योंकि पुत्र पिता की निन्दा ६  
करता है और पुत्री अपनी माता के विरुद्ध उठती है और पतोद अपनी सास के  
विरुद्ध मनुष्य के शत्रु उस के घराने के लोग हैं ॥

पर मैं परमेश्वर की और ताकूंगा मैं अपने मोक्ष के ईश्वर का मार्ग ताकूंगा ७  
मेरा ईश्वर मेरी सुनेगा ॥

हे मेरे बैरी मुझ पर आनन्द मत कर यद्यपि मैं गिरा हूँ तथापि मैं उठूंगा ८  
यद्यपि मैं अधियारे में बैठा हूँ तथापि परमेश्वर मेरे लिये उंजियाला होगा ।  
मैं परमेश्वर की जलजलाहट सहूंगा क्योंकि मैं ने उस के विरुद्ध पाप किया है जब ९  
लों बट मेरे पद के लिये विवाद न करे और मेरे लिये न्याय न करे वह मुझे उंजि-  
याले में लावेगा और मैं उस का धर्म देखूंगा । तब मेरी शत्रुगी देखेगी और १०  
लाज उसे ढांपेगी जिस ने मुझ से कहा कि परमेश्वर तेरा ईश्वर कहाँ है मेरी  
आँखें उसे देखेंगी अब वह सड़क की कीच की नाई लताड़ी जायेगी ॥

जिस दिन तेरी भीति बनाई जायेगी उसी दिन तेरी आज्ञा दूर लों पहुँचेगी । ११  
उसी दिन लोग तेरे पास आवेंगे अमूर से मित्र लों और मित्र से नदी लों और १२  
समुद्र से समुद्र लों और पर्वत से पर्वत लों । तथापि देश उजाड़ होगा अपने १३  
निवासियों के कारण उन की करनी के फल के लिये ॥

अपनी गोदी से अपने लोगों को चरा अपने अधिकार के भुंड को जो वन में १४  
एकान्त में रहते हैं करमिल के मध्य में उन्हें बसने और जिलिअद में पुरातन दिनों  
की नाई चरने दें ॥

मित्र देश से निकालने के दिनों की नाई मैं उस को आश्चर्यित दस्त १५  
दिखाऊंगा । जातिगण देखेंगे और अपने सारे बल के लिये घबरा जायेंगे वे मुंह १६  
पर हाथ रखेंगे और उन के कान बहिरें होंगे । वे सर्प की नाई धूल चार्टेंगे वे १७  
पृथिवी के रेंगवेये जन्तु की नाई अपने कपे हुए स्थानों से अर्थरावेंगे वे परमेश्वर  
हमारे ईश्वर की और धावेंगे और वे तुझ से डरेंगे ॥



- ४ सुख किनाल के किनाले की बहुताई के कारण जो मोहने में निपुण है जिस ने जातिगणों को अपने किनालपनों से और गोतियों को अपने मोहने से बेचा है ।
- ५ देख मैं तेरे बिरुद्ध हूँ सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मैं तेरे मुंह से तेरा अंचरा उघाहंगा और मैं जातिगणों को नंगापन और राज्यों को तेरी लाज दिखा-  
 ६ दंगा । और मैं तुझ पर बिष्टा डालूंगा और तुझे तुच्छ कहंगा और तुझे अंगूठा सा  
 ७ न ठहराऊंगा । और ऐसा होगा कि हर एक जो तुझे देखेगा सो तुझ से भागेगा  
 और कहेगा कि नीनवः उजाड़ हुआ है कौन उस के लिये कुड़ेगा मैं तेरे लिये  
 कहाँ से शान्तिदायक ढूँढ़ लाऊँ ॥
- ८ क्या तू नोअमून से भला है जो नदियों के मध्य में बसा था जल उस की चारों  
 ९ ओर था जिस की आड़ समुद्र था और उस की भीत समुद्र पर थी । कूश  
 और मिस्र उस का बल था और वे अग्नितप्त थे फूत और लूबीम तेरे सहायक  
 १० थे । तिस पर वह बंधुआई के लिये थी वह बंधुआई में उस के बच्चे भी सारी  
 गलियों के सिरे पर पटके गये और उस के आदरमानों के लिये उन्होंने ने चिट्ठियाँ  
 डालीं और उस के सारे बली लोग सीकरों से जकड़े गये ॥
- ११ तू भी मदमाती होगी तू आप को छिपावेगी तू बैरियों से भी शरणा ढूँढ़ेगी ।  
 १२ तेरे सारे गढ़ गुलरपेड़ की नाईं हैं जिस के अधपके फल हैं यदि हिलाये जायें  
 १३ तो खवैये के मुंह में गिरेंगे । देख तेरे लोग तेरे मध्य में स्त्रियाँ हैं तेरे देश के  
 फाँटके तेरे बैरियों के लिये सर्वत्र खेले जायेंगे आग तेरे अड़गों को भस्म करेगी ॥
- १४ घेरे के लिये जल भरो अपने गढ़ों को पोढ़ करो कीचड़ में पैठा और गारे  
 १५ को लताड़ी पजावे को पोख करो । वहाँ आग तुझे भस्म करेगी तलवार तुझे  
 काट डालेगी वह तुझे चाटनेवाली टिड्डी की नाईं खा लेगी जो तू अपने को  
 १६ टिड्डी की नाईं बढावे जो तू अपने को बटोरी हुई टिड्डी की नाईं बढावे । तू  
 ने अपने बैपारियों को आकाश के तारों से अधिक बढाया चाटनेवाली टिड्डी चढ़  
 १७ आई और उड़ गई । तेरे मुकुटधारी बटोरी हुई टिड्डी की नाईं थे और तेरे  
 अध्यक्ष सब से बड़ी टिड्डियों की नाईं थे जो ठंडे दिन में बाड़े में रहते हैं सूर्य  
 उदय होते ही वे उड़ जाती हैं और उन का स्थान नहीं जाना जाता जहाँ टिकती  
 १८ हैं । हैं असूर के राजा तेरे गढ़ेरिये सोते हैं तेरे कुलीन-चैन से रहते हैं तेरे लोग  
 १९ पर्वतों पर बिथरे हैं और उन्हें बटोरने का कोई नहीं है । तेरे नाश का घना नहीं  
 है तेरा घाव कड़ा है सब जो तेरा संदेश सुनेंगे तुझ पर ताली बजावेंगे क्योंकि  
 किस पर तेरी दुष्टता सदा नहीं बीत गई ॥

उस के पांच पर्वों पर देख लो मंगल समाचार लाता और कुशल प्रचारता १५  
है है यहूदाह अपने पर्व रख अपनी मनोतियां पूनी कर क्योंकि वह दुष्ट रुक से  
फिर बीत न जायेगा वह सर्वथा काट डाला जायेगा ॥

### दूसरा पर्व ।

जो तितर बितर करता है सो नरे मन्मुख अट् आया है गड् की मय्याली कर १  
मार्ग अगार कटि दृढ़ कर पराक्रम को अति ग्यिर कर । क्योंकि हमाराएल की २  
उत्तमता की नाई परमेश्वर यशकूय की उत्तमता को कर लावेगा क्योंकि उजा-  
हियों ने उन्ट उजाड़ा है और उन की डालियों को नष्ट किया है ॥

उस के चलचोंतों की डाल लाल है और रक्त वस्त्र ओढ़े हैं उस के लैस होने ३  
के दिन में रख कटार की आग की नाईं चमकते हैं और भाले टिनाये जाते हैं ।  
महकों में रख दौरा मचाते हैं चौड़े म्यानों में वे धाया मारते हैं वे दीयों की ४  
नाईं दिग्गई देते हैं वे विजली की नाईं दौड़ते हैं ॥

वह अपने ग्रेटों को स्मरण करता है वे अपने चलने में ठोकर खाते हैं वे ५  
भीत की ओर फुरती करते हैं और आट सिद्ध किया जाता है । नदियों को ६  
फाटक खुले हैं और भयन गल जाता है जो निपट दृढ़ था । वह नंगी किई ७  
जाती है वह बंधुआई में पहुंचाई जाती है और उस की मखियां कपोत के  
शब्द से कुटती हैं और वे अपनी छानी पीटें । और प्राचीन दिनों में नीनयः जल ८  
के सरोवर की नाईं हुआ पर वे भागते हैं वे चिल्लाते हैं कि ठहरो ठहरो पर  
कोई अपना मुँह नहीं फेरता ॥

चांदी को लूटो माने को लूटो उस के भंडार का अन्त नहीं है । सारे वांछित १०  
पात्रों की बहुताई है वह कूकी और शून्य और उजाड़ है और मन पिघलता है  
और छुटने कांपते हैं और सारी कटि में अति पीड़ा है और उन सभी के सुगों  
का रंग बदल जाता है ॥

सिंहनियों का निवास कहां है और युवा सिंहों का भोजन स्थान कहां है जहां ११  
सिंह और सिंहनी फिरते थे और उस का वज्रा भी और कोई उन्ट न डराता  
था । सिंह ने अपने वज्रों के लिये विजय काड़ा और अपनी सिंहनियों के लिये १२  
गन्ना घोंटा और अपने सांढों को अहेर से और अपने नियासों को आखेट में  
भर दिया ॥

देख मैं तेरे विकृष्ट हूँ सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मैं उस के रथों को १३  
धूँया में जलाऊंगा और तलवार तेरे युवा सिंहों को खायेगी और मैं देश से तेरा  
अहेर काट डालूंगा और तेरे दूतों का शब्द फिर सुना न जायेगा ॥

### तीसरा पर्व ।

हाथ कधिर के नगर पर वह कल और अंधेर से सर्वत्र भगा है अहेर नहीं १  
सिधारता है । कोड़े का शब्द और पाँधियों के गड़गड़ाने का शब्द घोड़ों का २  
टापना और रथों का उकलना । घोड़चढ़ों का चढ़ना तलवार की खसक और ३  
भाले की झलक जूमे हुएों की मंडली और लोथों का ठेर उन के लोथों का अन्त  
नहीं है वे उन के लोथों पर ठोकर खाते हैं ॥

४ हुई हो और पांच एक दूसरे से जोड़ी हुई हो । और एक ओट के अंचल में मिलाने के खूंट में नीले तुकमे बना और ऐसे ही दूसरी ओट के अंत खूंट में ५ मिलाने की ओर बना । एक ओट में पचास तुकमे बना और पचास तुकमे दूसरी ६ ओट के मिलाने के खूंट में बना जिसमें तुकमे एक दूसरे में जुट जायें । और मोने की पचास घुण्डी बना और उन्हीं घुण्डियों से ओट को जोड़ जिसमें एक तंबू हो जाय ॥

७ और बकरी के बालों की ओट बना जिसमें तंबू के लिये ठांपन हो ग्यारह ८ ओटें तू बना । एक ओट की लंबाई तीस हाथ और एक ओट की चौड़ाई ९ चार हाथ होय ग्यारहों ओट एक ही नाप की हों । और पांच ओट को अलग जोड़ और छः ओट को अलग और छठवीं ओट को तंबू के सामे दोहराव । १० और पचास तुकमे एक ओट की खूंट में जो अंत के जोड़ में है और पचास ११ तुकमे दूसरी ओट के जोड़ में बना । और पीतल की पचास घुण्डियां बना और १२ घुण्डियों को तुकमों में डाल और तंबू को मिला जिसमें एक होवे । और तंबू की ओटों के बचे हुए को आधी ओट जो बची हुई है तंबू के पिछली ओर १३ लटकी रहे । और तंबू के ओटों की लंबाई में जो बचा हुआ हाथ भर इधर और हाथ भर उधर है वह तंबू के अलंगों पर इधर उधर लटकाया जायगा जिसमें उसे ठांपें ॥

१४ और तंबू के लिये एक घटाटोप मेंठों के लाल रंगे हुए चमड़ों से और एक घटाटोप सब के ऊपर तुखस के चमड़ों का बना ॥

१५ और तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से खड़े पाट बना । हर एक पाट की १६ लंबाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ होवे । और हर एक पाट में दो दो चूल हों कि एक दूसरे में किया जाय और यों तंबू के समस्त पाटों में कर ॥

१७ और तंबू के लिये दक्षिण की ओर बीस पाट बना । और बीस पाटों के नीचे चांदी के चालीस पाए दो दो पाए हर एक पाट के नीचे उस की दोनों चूलों के लिये बना ॥

२० और तंबू की दूसरी ओर के लिये जो उत्तर की ओर है बीस पाट । और उन के लिये चांदी के चालीस पाए एक पाट के नीचे दो पाए और दूसरे पाट के लिये दो पाए बना ॥

२२ और तंबू की पश्चिम ओर छः पाट बना । और दो पाट तंबू के कोनों के २४ लिये दोनों ओर बना । और वे नीचे में मिलाये जायें और ऊपर से एक कड़ी में २५ जोड़े जायें ऐसा ही दोनों कोनों के लिये होय । सो आठ पाट और उन के सोलह चांदी के पाए होंगे दो पाए एक पाट के नीचे और दो पाए दूसरे पाट के नीचे ॥

२६ और तू शमशाद की लकड़ी के अड़ंगे बना तंबू के एक अलंग के पाट के २७ लिये पांच । और पांच अड़ंगे तंबू की दूसरी ओर के पाट के लिये और पांच २८ अड़ंगे तंबू के अलंग के पाटों के लिये पश्चिम के दोनों अलंग के लिये । और २९ पाटों के मध्य के बीच का अड़ंगा एक ओर से दूसरी ओर लों पहुंचे । और

# हवकुक भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

यह भविष्यवाणी जो हवकुक भविष्यद्वक्ता ने देखी । हे परमेश्वर मैं कब तक १  
पुकारूँ और तू न सुने तेरे आगे अंधेर से दोहाई दूँ और तू न बचावे । तू क्योंकि २  
मुझे बुराई देखने देता है तू क्यों अनीति पर दृष्टि करता है क्योंकि लूट और ३  
अंधेर मेरे आगे हैं और वे लोग हैं जो टंटा और बखड़ा उठाते हैं । इस लिये ४  
व्यवस्था छीली हुई है और सब न्याय नहीं निकलता क्योंकि धर्मों को दुष्ट घेरते ५  
हैं इस लिये अनीति निकलती है ।

जातिगणों के मध्य देखो और दृष्टि करो बहुत आश्चर्य मानो क्योंकि मैं ५  
तुम्हारे दिनों में एक ऐसा कार्य करूँगा कि यद्यपि तुम्हें कहा जाये तथापि तुम ६  
प्रतीति न करोगे । क्योंकि देखो मैं कर्मादियों को उठाऊँगा वे तीत सुन्न और ७  
फुरतीले जातिगण हैं जो पृथिवी की चौड़ाई पर से जायेंगे कि उन निवासस्थानों ८  
को अधिकार करें जो उन के नहीं हैं । वे भयंकर और भयानक हैं उन का न्याय ९  
और उन की उत्तमता आप ही से निकलती है । उन के छोटे छोटे से भी चालाक १०  
हैं और वे माँक के हुँडारों से अधिक क्रूर हैं उन के घोटचढ़े भी फैलते हैं हाँ हम ११  
के घोटचढ़े दूर से आते हैं गिरह की नाई उड़ते हैं जो भोजन को बेग करते हैं । १२  
सब के सब अंधेर के लिये आते हैं उन के सुंदर का दर्शन परदा पवन की नाई है १३  
और वे बंधुओं को बालू की नाई घटारते हैं । और वे राजाओं को चिढ़ाते हैं और १४  
सहान उन के लिये स्वांग हैं वे हर एक गढ़ से हमते हैं और वे धूल ढेर करके उसे १५  
ले लेते हैं । तब उन का मन नवीन हो जाता है और वे दीत जाते हैं और यह १६  
कहते हुए अपराध करते हैं कि क्या उस का बल उन के देवता से है ।

हे परमेश्वर मेरे ईश्वर हे मेरे प्रिय दया तू मनातन से नहीं है इस नहीं सरंगे हे १७  
परमेश्वर तू ने उन्हे न्याय के लिये ठहराया है और हे चटान तू ने उन्हे ताड़ने के लिये १८  
दृढ़ किया है । तेरी आर्ख प्रिय हैं कि तू बुराई को देख नहीं सक्ता और अनीति १९  
पर दृष्टि कर नहीं सक्ता फिर काहे को तू कालियों पर दृष्टि करता है और जब दुष्ट उसे २०  
निगलने पर है जो उसने धर्म है तू काहे को चुपका रहता है । और तू मनुष्यों को २१  
समुद्र की मछलियों की नाई क्यों घनाता है रंगवैयों की नाई जिन का असुधा नहीं २२  
है । वे उन सभी को यनमी से उठाते हैं वे उन्हे अपने जाल से पकड़ते और उन्हे २३  
अपने मछाजाल में एकट्टे करते हैं इस लिये वे आह्लादित और आनन्दित हैं । इस २४  
लिये वे अपने जाल को बलि बढ़ाते हैं और अपने मछाजाल के लिये सुगंध जलाते हैं २५  
क्योंकि उन के द्वारा उन का भाग-मोटा है और उन का भोजन बहुत है । क्या वे इस लिये २६  
अपने जाल को कूड़ा करेंगे और नित्य जातिगणों को बध करने से अलग न रहेंगे ।

दूसरा पर्व ।

मैं अपने निहारस्थान पर खड़ा हूँगा और गढ़ पर ठहरूँगा और बाट जोहूँगा १  
कि देखो यह मुझे क्या कहेगा और अपने विवाद में क्या उत्तर दूँ ।

- २ तब परमेश्वर ने उत्तर देके मुझ से कहा कि दर्शन को लिख और उसे पटियों  
 ३ पर उज्जल कर कि जो उसे पढ़े सो दौड़े । क्योंकि ठहराये हुए समय के लिये  
 दर्शन है परन्तु अन्त में शीघ्र करेगा और न क्लेशगा यद्यपि वह विलम्ब करे  
 तथापि उस की बाट जोह क्योंकि वह निश्चय आवेगा और बहुत विलम्ब  
 न करेगा ॥
- ४ अभिमान को देख उस का प्राण उस में खड़ा नहीं है पर धर्मी उस के  
 ५ बिश्वास से जीयेगा । तिस पर दाखरस कली है घमंडी मनुष्य अपने घर में नहीं  
 रहता क्योंकि वह पाताल की नाई अपनी बांका को बढाता है वह मृत्यु की  
 नाई है और तृप्त नहीं हो जाता पर सारे जातिगणों को अपनी ओर बटोरता है  
 ६ और सारे लोगों को अपने पास एकट्ठा करता है । क्या ये सब के सब यह कहते  
 हुए उस के विरुद्ध एक दृष्टान्त और उस के विरुद्ध एक ठोली न उठावेंगे कि  
 हाय उस पर जो उसे बटोरता है जो उस का नहीं है कब लों और अपने ऊपर  
 गाड़ी मिट्टी लादता है ॥
- ७ क्या वे अचानक न उठेंगे जो तुम्हें डसेंगे और न जागेंगे जो तुम्हें सतावेंगे और  
 ८ तू उन के लिये लूट होगा । क्योंकि तू ने बहुत से जातिगणों को लूट लिया  
 लोगों के सारे बचे हुए तुम्हें लूट लेंगे मनुष्यों के लोहू के और देश और नगर  
 और उस के सारे निवासियों पर अंधेर करने के कारण ।
- ९ हाय उस पर जो अपने घराने के लिये घुरी प्राप्ति को प्राप्त करता है कि अपने  
 १० खोति को उत्तुङ्ग बनावे जिस्त वह घुराई के हाथ से बच जाये । बहुत जातिगण  
 के कांठ डालने से तू ने अपने घराने के लिये लाज की जुगत किई और अपने  
 ११ विरुद्ध पाप किया । क्योंकि भीत में से पत्थर पुकारेगा और लट्टे में की जोड़ाई  
 उसे उत्तर देगी ॥
- १२ हाय उस पर जो लोहू से वस्तु बनाता है और अनीति से नगर स्थिर करता  
 १३ है । क्या यह सेनाओं के परमेश्वर की ओर से नहीं है कि लोग निराली आग  
 १४ के लिये परिश्रम करें और लोग निराले वैश्वार्थ के लिये आप को थकावें । क्योंकि  
 पृथिवी परमेश्वर के विभव के ज्ञान से भर जायेगी जैसा जल समुद्र को ढांपते हैं ॥
- १५ हाय उस पर जो अपने भरोसे को मद्य पिलाता है जो अपनी कुप्पी से उन्हें  
 १६ लाता है और उसे मतवाला कर देता है जिस्त उस की नग्नता देखे । तू विभव  
 की सन्ती लाज से भरा है तू भी पी और तेरी खलरी उघर जाये परमेश्वर के  
 १७ दहिने हाथ का कटोरा तुम्हें फिरावेगा और तेरे विभव पर अशुद्धता  
 १८ होगी । क्योंकि जो अंधेर लुबनान से किया गया वह तुम्हें ढांपेगा और जैसा  
 पशुओं का नाश उन्हें डराता है वैसा मनुष्यों के लोहू के और देश और नगर  
 और उस के सारे निवासियों पर अंधेर करने के कारण ॥
- १९ खोदी हुई मूर्ति से क्या लाभ जो उस के बनवैये ने उसे खोदा ठाली हुई  
 मूर्ति और झूठ के उपदेशक से क्या लाभ जो उस के कार्य का कर्ता उस पर  
 आसरा रखता है कि अपने लिये गुंगी मूर्तें बनावे ॥
- २० हाय उस पर जो काठ को कहता है कि आग और मौन पत्थर को कि उठ

वह सिखाये देख वह सोने चांदी ने मढ़ा है और उन के मध्य में स्वाम नहीं है । परन्तु परमेश्वर अपने पवित्र सत्त्व में है सारी पृथिवी उस के आगे छुपकी हो रही ॥

तीसरा पर्व ।

द्वयक भविष्यद्वक्ता की प्रार्थना समाप्त करने के पुर से । हे परमेश्वर तेरी मुनाई हुई मैं ने सुनी और मैं डर गया हे परमेश्वर वरसों के मध्य अपने कार्य को कर ला वरसों के मध्य उसे जना कोप से तू स्मरण कर । तैमन ने ईश्वर आया पवित्रमय क्षात्र के पर्वत से सिलाह उस के विभव से स्वर्ग ठंघ गया और पृथिवी उस की स्तुति से परिपूर्ण थी । उस की चमक भी ज्योति की नाई थी किन्तु उन के हाथ से निकलीं पर वहां उस की गौरव्यता का डंजन था । मेरी उस के आगे आगे गई और आग्नि व्याधि उस के पीछे आई । वह खड़ा हुआ और पृथिवी को डराया हम ने देखा और जातिगणों को शरथराया और पुरातन पर्वत विधर गये सनातन के टीले झुक गये उस के पय सनातन हैं ॥

मैं ने कूजान के डेरों को कष्ट में देखा और सिंदियान के देश को ओझल कांप गये । हे परमेश्वर क्या तेरी जिस नदियों पर थी क्या तंग कोप नदियों पर था क्या तेरी जलाहट समुद्र पर थी कि तू अपने घोड़ों पर वचाव के रथों में चढ़ा । तेरा धनुष मर्वथा उधर गया जैसा तू ने कदा हां गोष्टियों से किरिया खाई मिलाह तू ने पृथिवी को नदियों से घेरा है । पर्वतों ने तुझे देखा वे शरथराये जल की याद दीत गई गहिराये ने अपना शब्द उच्चार और अपने हाथों को उठाया । सूर्य और चन्द्रमा अपने निवास में ठहर गये तेरे हाथों की ज्योति से जा चल निकले भलकते भाले की चमक से । जलजलाहट से तू देश से सिंधारा कोप से तू ने जातिगणों को लताड़ा । तू अपने लोगों के वचाव के लिये निकला हां अपने अभिषिक्त के वचाव के लिये दुष्टों के घर में से तू ने सिर को कुचला चटान लो तू ने नेत्र को चघारा सिलाह ॥

तू ने उस के अगुओं के सिर को उमी की वरछियों से छेदा वे मुझे विधराने को वधंडर की नाई धड़धड़ाये छुपके कंगालों को भक्षणा यह उन का आनन्द था । तू अपने घोड़ों के संग समुद्र से हां बड़े पानियों के चलने से घना ॥

सुनते ही मेरी अंतर्द्वियां धड़क उठीं शब्द से मेरे घोंठ कांपने लगे सड़ाहट मेरी छद्दियों में पैठ गई और मेरे छुठने शरथराने लगे पर मैं कष्ट के दिन में विश्राम पाऊंगा जब वे ऊपर आरोग्य को हम पर चढ़ाई करेंगे ॥

यद्यपि गूलरपेड़ न फूलें और दाख में फल न लगे जलपाई की खेती घेप्राप्त हो और खेत अनाज न दें गुंडरे में से भुंड कट जाये और ग्राम में ठौर न होवे । तथापि मैं परमेश्वर से आह्लादित हूंगा मैं अपनी सुक्ति के ईश्वर से आनन्द कंदगा । प्रभु परमेश्वर मेरा वल है और वह मेरे पगों को दरनियों का सा बनावेगा और मुझे मेरे जंघे स्थानों पर चलावेगा प्रधान वलनिये के लिये मेरी बीनों के संग ॥



# सफनियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

## पहिला पर्व ।

- १ परमेश्वर का वचन जो यहूदाह के राजा अमून के बेटे यूसियाह के दिनों में सफनियाह पर आया जो हिजकियाह का बेटा अमरियाह का बेटा जिदलयाह का बेटा कूशी का बेटा था ॥
- २ मैं देश पर से सब कुछ सर्वथा नाश करूँगा परमेश्वर कहता है । मैं मनुष्य और पशु को नाश करूँगा मैं आकाश के पक्षियों को और समुद्र की मछलियों को और दुष्टों के संग ठोकरों को नाश करूँगा और मैं देश पर से मनुष्य को काट डालूँगा परमेश्वर कहता है । और मैं यहूदाह पर और यरूशलम के सारे निवासियों पर अपना हाथ बढाऊँगा और इस स्थान में से बअल के बचे हुएों को और याजकों के संग पंडों के नाम को काट डालूँगा । और उन को भी जो कोठियों पर स्वर्ग की सेना को पूजते हैं और उन को जो परमेश्वर को पूजते और उसे किरिया खाते हैं और मिलकूम के नाम से किरिया खाते हैं । और उन को भी जो परमेश्वर से फिर गये हैं और उन्हें जो परमेश्वर को नहीं ठूँढ़ते और उसे नहीं खोजते ॥
- ७ प्रभु परमेश्वर के आगे चुपका रह क्योंकि परमेश्वर का दिन आ पहुँचा इस लिये कि परमेश्वर ने बलि सिद्ध किया है उस ने अपने पाहुनों को पवित्र किया है । और ऐसा होगा कि परमेश्वर के बलि के दिन मैं मैं अध्वर्यों को और राजपूत्रों को पलटा दूँगा और उन सभी को जो उपरी वस्तु पहिने हैं । और मैं उसी दिन मैं उन सभी को पलटा दूँगा जो देहली के ऊपर से कूदते हैं और अपने प्रभु के घर को अन्धे और कल से भरते हैं ॥
- १० और उसी दिन मैं ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि मच्छफाटक से बिलाने का और दूसरे नगर से बिलाप का और टीलों से बड़े नाश का शब्द होगा । हे मकतीस के निवासियो बिलाप करो क्योंकि सारे जैपारी नष्ट हुए वे सब जो चांदी से लदे हैं कट गये ॥
- १२ और उसी समय यों होगा कि मैं यरूशलम को दीपकों से खोजूँगा और उन लोगों को पलटा दूँगा जो अपने तलछट पर खम गये हैं जो अपने मन में कहते हैं कि परमेश्वर न भला न बुरा करेगा । और उन की संपत्ति लूट के लिये और उन के घर उजाड़ के लिये होंगे और वे घर खनावेंगे पर उन में न बसोंगे और वे दाख की बारी लगावेंगे पर उन का रस न पीयेंगे ।
- १४ परमेश्वर का बड़ा दिन समीप है और निकट दौड़ा आता है परमेश्वर के १५ दिन का शब्द वहाँ बलवन्त जन धाह मारके बिल्लावेगा । वह दिन अलजलाहट का दिन है विपत्ति और पीड़ा का दिन अधियारे और धुंधलाई का दिन मेघों १६ और गाढ़े अधियारे का दिन । बाढ़ित नगरों पर और ऊँचे गुम्मतों पर तुरही और १७ तलकारने का दिन । और मैं मनुष्यों को कण्ठित करूँगा और वे अन्धों की नाई

चलेंगे इस लिये कि वे परमेश्वर के अपराधी हैं और उन का लोह धूल की नाईं उंडेला जायेगा और उन का मांस मल की नाईं । हां परमेश्वर की जलजलाहट १८ के दिन मैं न उन की चांदी न उन का मोना उन्हें कुड़ा सकेगा पर उन के कल की आग से सारा देश भस्म किया जायेगा क्योंकि यह शक्ति शीघ्र देश के सारेवासियों का अन्त करेगा ॥

दूसरा पृष्ठ ।

तुम अपने को एकट्ठा करो और एकट्ठे होओ हे अवांछित जातिगण । उससे १ आगे कि आज्ञा जने दिन भूमे की नाईं बीत जाता परमेश्वर की रिस की तपन तुम पर आने से आगे परमेश्वर की रिस का दिन तुम पर आने से आगे । परमे- ३ श्वर की खोजो हे देश के सारे नम्र लोगो जो उन की विधि की पालने हो और धर्म की ठूंडो नम्रता की खोजो क्या जानें कि परमेश्वर के क्षोभ के दिन मैं तुम छिपाये जाओ ॥

क्योंकि अज्ञः त्यागा जायेगा और असफल उजाड़ के लिये होगा वे सध्यान्त ४ में अशुद्ध को हाँकेगे और अकलन उखाड़ा जायेगा । घाय समुद्र की तीर के ५ वासियों पर करीतियों के जातिगण पर परमेश्वर का वचन तुम्हारे विरुद्ध है हे कनयान फिलिस्तिनियों के देश और मैं तुम्हें नष्ट करूँगा कि कोई निवासी न होगा । और समुद्र तीर चराई होगी जहाँ गड़ेरियों के लिये चटपट्टे और मेढ़ों के लिये ६ गोंहे होंगे । और तू यहूदाह के घराने के घरे हुएों के लिये होगा वे उन में ७ चराई करेंगे वे साँभ को असफल के घरों में लेट रहेंगे क्योंकि परमेश्वर उन का ईश्वर उन से भेंट करेगा और उन को धंघुआई का फिरावेगा ॥

मैं ने मोआव की निन्दा की और अम्मून के पुत्रों की गालियों को सुना जिनमें ८ ने मेरे लोगों की निन्दा की और उन के सिवाने के विरुद्ध आप को बढ़ाया । इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर अपने जीवन सोंप कहता है ९ कि निश्चय मोआव सद्रूम की नाईं और अम्मून के पुत्र अमूर की नाईं होंगे हाँ कांटों का स्थान और लोह गड़हे और सदा उजाड़ मेरे लोगों के घरे हुए उन्हें लूटेंगे और मेरे लोगों के घरे हुए उन्हें अधिकार से लार्चेंगे । यह उन के अधिकार १० के लिये होगा क्योंकि उन्हें ने परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के लोगों की निन्दा की और उन के विरुद्ध आप को बढ़ाया । परमेश्वर उन पर भयानक होगा ११ क्योंकि यह पृथिवी के सारे देवों को दुर्बल करेगा और जातिगणों के सारे टापू हर एक अपने अपने स्थान से उस को दण्डवत् करेगा ॥

तुम भी हे कूशियो मेरी तलवार से सारे जाओगे ॥ १२

और उत्तर के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ावेगा और अमूर को नष्ट करेगा और यह १३ नीनवः को उजाड़ के लिये बनावेगा अरण्य की नाईं सुग्रा । और उस के मध्य में १४ भुंड और जातिगणों के सारे पशु लेट रहेंगे हाँ गरुड़ और साँधी उस के खंभों के सिरों पर असेंगे खिड़कियों में शब्द गावेगा आसारे में उजाड़ होगा क्योंकि देवदारु का कार्य उधारा जायेगा । यही आज्ञादित नगर है जो निश्चयन्त बैठा १५ या जिस ने अपने मन में कहा कि मैं हूँ और मेरे सिवा कोई और नहीं यह कैसा

उजाड़ हो गया पशुओं के लेटने का स्थान जो कोई उससे बीत जाता है फुफकारेगा और अपना हाथ फैलावेगा ॥

### तीसरा पर्व ।

१ हाथ उस हरमुष्ट और अशुद्ध उस उत्पाती नगर पर । उस ने शब्द को न  
माना उपदेश को ग्रहण न किया उस ने परमेश्वर पर भरोसा न रक्खा वह अपने  
२ ईश्वर के समीप न आई । उस के मध्य उस के अध्यक्ष गरजवैद्ये सिंह हैं उस के  
३ न्यायी सांभ के हुंडार हैं वे बिहान लों हड्डियों को नहीं छोड़ते । उस के भविष्यद्वक्ते  
४ अभिमानी और विश्वासघातक जन हैं उस के याजकों ने पवित्रस्थान को अशुद्ध  
किया है उन्होंने ने व्यवस्था को तोड़ डाला है ॥

५ परमेश्वर वही धर्मी उस के मध्य में है वह दुष्टता नहीं करता हर बिहान  
को अपना न्याय प्रकाश करता है वह चूकता नहीं पर दुष्ट लोग लाज नहीं  
६ जानते । मैं ने जातिगणों को काट डाला उन के गुम्मत उजाड़ हुए मैं ने उन  
की सड़कों को नष्ट किया कि उन से कोई नहीं बीता उन के नगर नाश किये  
७ गये कि कोई जन कोई निवासी नहीं । मैं ने कहा कि केवल मुझ से डर शिवा  
ग्रहण कर कि उस का निवास काट डाला न जाये जैसा कि मैं ने उस पर ठह-  
राया पर उन्होंने ने तड़के उठके अपने कार्यों को बिगाड़ा ॥

८ तथापि मेरी बात जोहो परमेश्वर कहता है जब लों कि मैं अहेर के लिये न  
उठूं क्योंकि मैं ने ठाना कि जातिगणों को बटोरूं और राजाओं को एकट्ठा करूं  
जिस्तें अपनी जलजलाहट उन पर उंडेलूं अपने क्रोध की सारी तपन क्योंकि मेरे  
भल की आग से सारी पृथिवी भस्म किई जायेगी ॥

९ क्योंकि मैं उसी समय जातिगणों को पवित्र बोली फिर दूंगा जिस्तें वे सब के  
१० सब परमेश्वर के नाम की दोहाई दें और एक साथ उस की सेवा करें । मेरे  
भक्त मेरे बिश्वरे हुओं की पुत्री कूश की नदियों के पार से मेरे लिये भेंट लावेंगे ॥

११ उसी दिन मैं तू अपने सारे कार्यों से लज्जित न होगा कि जिन से तू ने मेरा  
अपराध किया है क्योंकि तब मैं तेरे मध्य में से तेरे अहंकारी आनन्दितों को दूर  
१२ करूंगा और तू फिर मेरे पवित्र पर्वत पर आप को न फुलावेगा । और मैं तेरे  
मध्य में दीन और कंगाल लोग छोड़ूंगा और वे परमेश्वर के नाम पर भरोसा  
१३ रखेंगे । इसराएल के बचे हुए दुष्टता न करेंगे न झूठ बोलेंगे न उन के मुंह में  
हल की जीभ पाई जायेगी पर वे चराई करेंगे और लेटेंगे और कोई उन्हें न  
डरावेगा ॥

१४ हे सैहून की पुत्री धूम मचा हे इसराएल ललकार हे यरुसलम की पुत्री मगन  
१५ हो और अपने सारे मन से आनन्दित हो । परमेश्वर ने तेरे बिचारे को ले लिया है  
उस ने तेरे बैरियों को निकाल दिया इसराएल का राजा परमेश्वर तेरे मध्य में  
है तू फिर घुराई नहीं देखेगा ॥

१६ उसी दिन मैं यरुसलम से कहा जायेगा कि मत डर और सैहून से कि तेरे  
१७ हाथ ढीले न हों । परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तेरे मध्य में है वह सर्वशक्तिमान है  
वह बचावेगा वह आनन्दता से तुझ पर मगन होगा वह अपने प्रेम में चुपका

रहेगा वह धूम मचाते तुम पर आह्लादित होगा । मैं उन्हें घटोईंगा जो पवित्र १८  
मंडली के लिये जोड़ित हैं वे तुम्हें से ये जिन्होंने उन की निन्दा उठाई । देख १९  
मैं उसी समय उन सभी को साईंगा जो जो तुम्हें मगाने हैं और मैं लंगड़ाती हुई  
को घटाईंगा और खानी हुई को घटोईंगा और मैं उन्हें हर देश में जहाँ वे  
लज्जित हुए हैं स्तुति और नाम के लिये ठहराईंगा । तब समय मैं उन्हें ठहरा- २०  
ईंगा मैं उसी समय तुम को फेर लाईंगा हाँ पृथिवी के सारे जातिगणों के मध्य  
मैं तुम्हें नाम और स्तुति के लिये घनाईगा जब मैं तुम्हारा आँखों के आगे तुम्हारी  
बंधुवाई फेर लाईंगा परमेश्वर कहता है ॥

## हज्जी भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पटिना पर्व ।

दाग राजा के दूसरे वरम में छठवें मास की पटिनी तिथि में परमेश्वर का १  
वचन हज्जी भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहूदाह के अध्यक्ष सियालतियल के बेटे जस-  
बायुल के पास और प्रधान याज्ञक यहूसदक के बेटे यहूसूय के पास यह कहता  
हुआ पहुँचा । कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि ये लोग कहते हैं समय २  
नहीं पहुँचा परमेश्वर के घर बनाने का समय । तब परमेश्वर का वचन हज्जी ३  
भविष्यद्वक्ता के द्वारा से यह कहता हुआ पहुँचा ॥

कि क्या तुम्हारे लिये समय है जो आप मंगल के घरों में बसे और यह घर ४  
उजाड़ रहे ॥

और अब सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि अपने मार्गों को विचारो । ५  
तुम ने बहुत बोया है पर बोड़ा मा प्राप्त किया तुम खाते हो पर तृप्त नहीं होते ६  
तुम पीते हो पर ली भरके नहीं तुम वस्त्र पहिनते हो पर उससे कोई गरमाता  
नहीं और जो मरिचनकारी कमाता है सो फटी चेली के लिये कमाता है ॥

सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि अपने मार्गों को विचारो । पहलू पर ७  
चढ़कर लकड़ी लाओ और घर बनाओ और मैं उससे प्रसन्न हूँगा और मरिचा  
पाईंगा परमेश्वर कहता है । तुम ठेर का मार्ग ताकते थे पर देखो बोड़ा हुआ ८  
और जब घर में लाये तो मैं ने उस पर फूँक मारी सेनाओं का परमेश्वर कहता  
है कि किस कारण मेरे घर के कारण जो उजाड़ है और तुम में से हर कोई  
अपने अपने घर को दौड़ता है । इस लिये तुम्हारे ऊपर आकाश आस से रूढ़ गया ९  
और भूमि अपनी बढ़ती से रूढ़ गई । और मैं ने भूमि और पर्वतों पर और अन्न १०  
और नये दाखरस पर और तेल और उस पर जो भूमि से उत्पन्न होता है और  
मनुष्य और पशु पर और टायों के सारे परियम पर झुराहट डुलाई ॥

तब सियालतियल के बेटे जसबायुल ने और प्रधान याज्ञक यहूसदक के बेटे ११  
ने और सारे वचे हुए लोगों ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को और हज्जी

भविष्यद्वक्ता की बातों को माना जैसा कि परमेश्वर उन के ईश्वर ने उसे भेजा था और लोग परमेश्वर के आगे ढर गये ।

१३ तब परमेश्वर का सन्देशी हज्जी परमेश्वर के सन्देश से लोगों को यह कहके बोला कि मैं तुम्हारे संग हूँ परमेश्वर कहता है ।

१४ और परमेश्वर ने यहूदाह के अध्यक्ष सियालतिएल के छेठे जरुबाबुल के मन को और प्रधान याजक यहूसदक के छेठे यहूसूअ के मन को और सारे बचे हुए लोगों के मन को उभाड़ा और उन्होंने ने आके सेनाओं के परमेश्वर अपने ईश्वर के घर का कार्य किया । दारा राजा के दूसरे घरस में छठवें मास की चौबीसवीं तिथि में ॥

दूसरा पृष्ठ ।

१ सातवें मास की ग्यकीसवीं तिथि में परमेश्वर का बचन यह कहते हुए हज्जी २ भविष्यद्वक्ता के द्वारा से पहुंचा । कि यहूदाह के अध्यक्ष सियालतिएल के छेठे जरुबाबुल से और प्रधान याजक यहूसदक के छेठे यहूसूअ से और बचे हुए लोगों से कह ।

३ कि तुम में कौन बचा है जिस ने इस घर को उस के अगिले विभव में देखा था और अब उसे बया देखते हो बया उस की उपमा में तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ नहीं ।

४ पर हे जरुबाबुल बलवन्त हो परमेश्वर कहता है और हे प्रधान याजक यहूसदक के छेठे यहूसूअ बलवन्त हो और देश के सारे लोगो बलवन्त हो परमेश्वर कहता है और कार्य करो क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूँ सेनाओं का परमेश्वर कहता है । उस बाचा के समान जो मैं ने तुम्हारे संग बांधी जिस समय तुम मिस्र देश से निकल आये और मेरा आत्मा तुम्हों में रहता है मत डरो ॥

५ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि और एक बार तनिक में मैं ६ स्वर्ग और पृथिवी को और समुद्र और सूखी भूमि को हिलाऊंगा । और मैं सारे जातिगणों को हिलाऊंगा और सारे जातिगणों का बांझ आधेगा और मैं इस ७ घर को विभव से भर दूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है । चांदी मेरी है ८ और सेना मेरी सेनाओं का परमेश्वर कहता है । इस पहिले घर का विभव अगिले से अधिक होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और इस स्थान में मैं कुशल दूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

१० दारा के दूसरे घरस में नवें मास की चौबीसवीं तिथि में परमेश्वर का बचन

११ यह कहते हुए हज्जी भविष्यद्वक्ता के द्वारा से पहुंचा । कि सेनाओं का परमेश्वर

१२ यों कहता है कि यह कहके व्यवस्था के विषय में याजकों से पूछो । यदि मनुष्य अपने वस्त्र के अंचल में पवित्र मांस ले जाये और अपने अंचल से रोटी अथवा लपसी अथवा दाखरस अथवा तेल अथवा किसी भांति के भोजन को छूवे क्या

१३ वह पवित्र होगा और याजकों ने उत्तर देके कहा कि नहीं । फिर हज्जी ने कहा कि यदि लोग के कूने से कोई जन अशुद्ध होवे और इन में से किसी वस्तु को छूवे क्या वह अशुद्ध होगी और याजकों ने उत्तर देके कहा कि अशुद्ध होगी ॥

१४ तब हज्जी ने उत्तर देके कहा कि ऐसे ये लोग और ऐसे यह जातिगण मेरी

दृष्टि में हैं परमेश्वर कहता है और ऐसे उन के हाथों के सारे कार्य और जो उन्होंने ने चढ़ाया मो अशुद्ध है । और अब मैं चिन्ती करता हूँ कि विचारो आज १५ से और उस के आगे उस दिन से कि परमेश्वर के मन्दिर में पत्थर पर पत्थर रखना न गया था । उन दिनों से कि जय कोई धीम की छेर पर आया तो उस १६ पाया और जय कोई कोल्हू से पचास निकालने को आया तो बीस पाया । मैं ने १७ तुम्हें सुलस और लेंठ और ओले से मारा तुम्हारे हाथों के सारे कार्यों में तथापि तुम मरे और नहीं फिर परमेश्वर कहता है ॥

मैं चिन्ती करता हूँ कि विचारो आज मे और उस के आगे से नवें मास की १८ चौथीसवीं तिथि से अर्थात् जिस दिन से कि परमेश्वर के मन्दिर की नये हानी गई विचारो । क्या खलिदान में अब लो चीज है हाँ अब लो दाय और गूलर १९ और अनार और जलपाई फल न नाये आज मे मैं आशीष दूंगा ।

और उसी महीने की चौथीसवीं तिथि में परमेश्वर का वचन दूसरी बार २० यह कहते हुए दब्जी के पास पहुंचा । कि यह कहके यहूदाह के अध्यक्ष जन्यायुन २१ से बोले कि मैं स्वर्गों को और पृथिवी को हिलाऊंगा ॥

और मैं राजाओं के विदासन को उलट दालूंगा और जातिमानों के राज्यों २२ के दल को नाश करूंगा और मैं रघों को उन के मारथियों समेत उलट दालूंगा और छोड़े चढ़ावों समेत गिर पड़ेंगे हर एक अपने भाई की तलवार से । सेनाओं २३ का परमेश्वर कहता है कि हे जन्म युन नियानतिहल के बेटे मेरे सेवक मैं उसी दिन तुम्हें लूंगा परमेश्वर कहता है और तुम्हें मरि की भांति उधराऊंगा क्योंकि मैं तुम्हें से प्रसन्न हूँ सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

## जकरियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पृष्ठ ।

दारा के दूसरे घरम के आठवें मास में परमेश्वर का वचन हैदू के बेटे दगकि- १ याह के बेटे जकरियाह भविष्यद्वक्ता के पास यह कहते हुए आया ॥

परमेश्वर तुम्हारे पित्रों पर रिस से रिसिआया । इस लिये उन से बोले कि २ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मेरी और फिरो सेनाओं का परमेश्वर ३ कहता है और मैं तुम्हारी और फिरो सेनाओं का परमेश्वर कहता है । अपने ४ पित्रों के समान मत हो जिन्हें यह कहके अशिले भविष्यद्वक्ता ने पुकारा था कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि अपने दुरे मार्गों ने और अपने दुरे व्यवहारों ५ से फिरो परन्तु उन्होंने ने मेरी न सुनी और न मानी परमेश्वर कहता है ॥

तुम्हारे पितर कहां हैं और क्या भविष्यद्वक्ता सदा जीते हैं । परन्तु जो वचन ६ और जो विधि मैं ने अपने सेवक भविष्यद्वक्ता को आज्ञा किई क्या उन्होंने ने तुम्हारे पित्रों को जा न लिया हाँ वे फिरकर बोले कि जैसा सेनाओं के परमेश्वर



ने हमारे मार्गों को और हमारे व्यवहारों के समान हम से करने को ठाना था तैसा उस ने हम से किया है ॥

७ ग्यारहवें मास की चौबीसवीं तिथि में जो सिखात मास है दारा के दूसरे घर में ईदू के बेटे बरकियाह के बेटे जकरियाह भविष्यद्वक्ता के पास परमेश्वर का खचन यह कहते हुए आया ॥

८ कि रात को मैं ने देखा और क्या देखता हूँ कि एक जन लाल घोड़े पर चढ़ा है और वह सेंहदियों के मध्य में खड़ा था जो काल में थी और उस के पीछे लाल और धूमर और श्वेत घोड़े थे । तब मैं ने कहा हे मेरे प्रभु ये क्या हैं ॥  
१० फिर मेरे संवादी दूत ने मुझ से कहा कि मैं तुम्हें देखाऊंगा कि ये क्या हैं । और जो जन सेंहदियों के मध्य में खड़ा था उस ने उत्तर देके कहा कि ये वे हैं जिन्हें  
११ परमेश्वर ने पृथिवी का फेरा करने को भेजा है । और उन्होंने ने परमेश्वर के दूत को जो सेंहदियों के मध्य में खड़ा था उत्तर देके कहा कि हम ने पृथिवी का फेरा किया और क्या देखता हूँ कि सारी पृथिवी स्थिर और चैन से है ॥

१२ तब परमेश्वर के दूत ने उत्तर देके कहा कि हे सेनाओं के परमेश्वर तू यरूसलम पर और यहूदाह के नगरों पर जिन से इन उत्तर घरों को तू रिसिआया कष्ट लों  
१३ दया न करेगा । और परमेश्वर ने मेरे संवादी दूत को अच्छी बातों से और  
१४ शान्ति की बातों से उत्तर दिया । और मेरे संवादी दूत ने मुझ से कहा कि यह कहके पुकार कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है मैं यरूसलम के लिये और  
१५ सैहून के लिये बड़े झूल से झूलित हूँ । और मैं उन जातिगणों से अति रिसिआया हूँ जो चैन से हैं क्योंकि मैं तनिक रिसिआया था और उन्होंने ने विपत्ति को बढ़ाया ।  
१६ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि मैं दया से यरूसलम को फिर आया हूँ उस में मेरा घर बनेगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और एक रस्सी यरूसलम पर  
१७ फैलाई जायेगी । फिर पुकारके कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मेरे नगर बढ़ती के मारे फिर फैल जायेंगे क्योंकि परमेश्वर फिर सैहून को शान्ति देगा और फिर यरूसलम को प्रसन्न करेगा ॥

१८ तब मैं ने अपनी आंखें उठाई और देखा और क्या देखता हूँ कि चार सींग ।  
१९ और मैं ने अपने संवादी दूत से कहा कि ये क्या हैं और उस ने मुझ से कहा कि ये वे सींग हैं जिन्होंने ने यहूदाह को और इसराएल को और यरूसलम को किन्न  
२० भिन्न किया है । तब परमेश्वर ने मुझ को चार कार्यकारियों को दिखलाया ।  
२१ तब मैं ने कहा कि ये क्या करने को आते हैं और वह यह कहके बोला कि ये वे सींग हैं जिन्होंने ने यहूदाह को किन्न भिन्न किया यहां लों कि किसी ने अपना सिर न उठाया पर ये आये हैं कि उन्हें डरावे और उन जातिगणों के सींगों को गिरा देवे जिन्होंने ने यहूदाह के देश पर अपने सींग को उठाया कि उसे किन्न भिन्न करें ॥

दूसरा पृष्ठ ।

२२ फिर मैं ने अपनी आंखें उठाके देखा और क्या देखता हूँ कि एक जन नापने की रस्सी हाथ में लिये हुए है । तब मैं ने कहा कि तू कहाँ जाता है और उस ने मुझ से कहा कि यरूसलम के नापने को देखने के लिये कि उस की चौड़ाई और

पाटी के सोने से मड़ और अड़गों के लिये सोने के कड़े बना और अड़गों के सोने से मड़ ॥

और तंत्र को जैसा कि मैं ने तुम्हें पढ़ाई पर दिखाया है वैसा ही खड़ा कर ॥ ३०  
और बटे हुए भीने बूटे काढ़े हुए मृत्ती कपड़े से नीला और बैजनी और ३१  
लाल छूँघट करीबी समेत बना । और उसे सोने से मड़ हुए शमशाद की लकड़ी ३२  
के चार खंभे पर लटका उन के सोने के अंकुरे चाँदी की चार चूल्हों पर  
देवें । और छूँघट की छुण्डी के नीचे लटका जिसमें तू छूँघट के भीतर साक्षी ३३  
की मंजूषा जावे और वह छूँघट पवित्र और महापवित्र स्थान में विभाग करेगा ।  
और ठकना साक्षी की मंजूषा पर महापवित्र स्थान में रख । और मंच की छूँघट ३४  
के बाहर रख और दीअट को मंच के मन्मुख तंत्र की गक और दक्षिण अलंग  
और मंच की उत्तर अलंग रख ॥

और तंत्र के द्वार के लिये नीला और बैजनी और लाल और बटे हुए भीने ३५  
वस्त्र से बूटा काढ़ी हुई गक आट बना । और आट के लिये शमशाद के पाँच ३७  
खंभे बना और उन्हें सोने से मड़ उन के अंकुरे सोने के हों और तू उन के लिये  
पीतल के पाँच पाय दान्तके बना ॥

मत्तार्हमयां पृष्ठ ।

और तू शमशाद की लकड़ी की गक यज्ञवेदी पाँच हाथ लंबी और पाँच हाथ चौड़ी १  
बना यज्ञवेदी चौकोर होवे और उस की लंबाई तीन हाथ हो । और उस के चारों २  
कोनों के लिये साँग बना उस की साँग उर्मी से हों और उसे पीतल से मड़ । और ३  
उस की राख के लिये पात्र बना और उस की फावड़ियाँ और उस के कटोरे और  
उस के काँटे और उस की अँगोठियाँ बना उस के समस्त पात्र पीतल के बना ।  
और उस के लिये पीतल के जाल की गक भँभरी बना और उस जाल में पीतल ४  
के चार कड़े उस के चारों कोनों में बना । और उसे वेदी के घेरा के नीचे रख ५  
जिसमें वेदी के मध्य लों पहुँचें । और यज्ञवेदी के लिये शमशाद की लकड़ी का ६  
बहंगर बना और उन्हीं पीतल से मड़ । और उन बहंगरों की कड़ों में हाल और ७  
बहंगर यज्ञवेदी के उठाने के लिये दोनों अलंग में होवें । उस के पाट यों पाले ८  
बना जैसा कि तुम्हें पढ़ाई में दिखाया गया हैना ही उन्हीं बना ॥

और तंत्र के लिये आंगन बना दक्षिण दिशा के आंगन के लिये बटे हुए भीने ९  
मृत्ती कपड़े में साँ हाथ लंबा गक अलंग के लिये आट बना । और उस के बीस १०  
खंभे और उन के बीस पाय पीतल के हों खंभों के अंकुरे और उन के डंडे रुपे  
के हों । और ऐसे ही उत्तर की ओर की लंबाई के लिये साँ हाथ की लंबी ११  
आट और उस के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाय खंभों के अंकुरे  
और उन के डंडे रुपे के हों । और पश्चिम अलंग के आंगन की चौड़ाई में १२  
पचास हाथ की आट हों उन के दस खंभे और उन के दस पाय हों । और पूरव १३  
अलंग के आंगन की चौड़ाई पचास हाथ हो । और गक और की आट पंद्रह १४  
हाथ होय उन के तीन खंभे और उन के तीन पाय हों । और दूसरी ओर की १५  
आट पंद्रह हाथ उन के तीन खंभे और उन के तीन पाय । और आंगन के १६

८ की रक्षा करेगा और उन में से जो पास खड़े हैं मैं तुम्हें अगुए दूंगा । अब हे यहूसूअ प्रधान याज्ञक सुन तू और तेरे संगी जो तेरे आगे बैठे हैं क्योंकि ये मनुष्य ९ दृष्टान्त के लिये हैं क्योंकि देख मैं अपने सेवक डाली को प्रगट करूंगा । क्योंकि उस पत्थर को जो मैं ने यहूसूअ के आगे रक्खा देखो उस एक ही पत्थर पर सात आंखें होंगी देख मैं उस के खोदाय को खोदूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मैं इस देश की घुराई को एक ही दिन में दूर करूंगा ॥

१० उसी दिन सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम एक दूसरे को दाख तले और गूलरपेड़ तले झुलाओगे ॥

चौथा पृष्ठ ।

१ और मेरा संवादी दूत लौट आया और जैसा मनुष्य नींद से जगाया जाता है २ वैसा उस ने मुझे जगाया । और मुझ से कहा कि तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि मैं ने दृष्टि किई और क्या देखना हूँ कि एक सोनहली दीअट और उस के सिर पर एक कटोरा और उस पर उस के सात दीपक और सातों दीपकों में जो उस ३ के सिर पर थे सात नलियां । और उस के समीप दो जलपाईपेड़ थे एक पेड़ कटोरे की दहिनी और और दूसरा उस की बाईं ओर ।

४ तब मैं ने अपने संवादी दूत को उत्तर देके कहा कि हे मेरे प्रभु ये क्या हैं । ५ तब मेरे संवादी दूत ने उत्तर देके मुझ से कहा क्या तू नहीं जानता कि ये क्या ६ हैं और मैं ने कहा नहीं मेरे प्रभु । तब उस ने मुझ से उत्तर देके कहा कि जरुबाबुल के लिये परमेश्वर का यह वचन है कि न बल से और न पराक्रम से ७ परन्तु मेरे आत्मा से सेनाओं का परमेश्वर कहता है । हे महा पर्वत तू क्या है जरुबाबुल के आगे तू चौगान होगा और वही उस के सिरहाने के पत्थर को अनुग्रह अनुग्रह उस के लिये पुकारते हुए निकालेगा ॥

८ फिर परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास आया । कि जरुबाबुल के हाथों ने इस घर की नेब डाली है उसी के हाथ भी उसे पूरा करेंगे तब तू १० जानेगा कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है । क्योंकि छोटी बातों के दिन को कौन तुच्छ जानता है कि परमेश्वर की वे सात आंखें जो सारी पृथिवी पर इधर उधर दौड़ती हैं आनन्द से जरुबाबुल के हाथ में साहुल को देखती हैं ॥

११ तब मैं ने उत्तर देके उससे कहा कि ये दोनों जलपाईपेड़ जो दीअट की १२ दहिनी बाईं ओर हैं क्या हैं । और मैं ने दूसरी बार उत्तर देके उससे कहा कि जलपाईपेड़ की दोनों डालियां जो दो सोनहली नलियों में से सेना सा तेल १३ अपने से उंडेलती हैं सो क्या हैं । और उस ने उत्तर देके मुझ से कहा क्या तू १४ नहीं जानता कि ये क्या हैं और मैं ने कहा नहीं हे मेरे प्रभु । तब उस ने कहा कि ये दो अभिपिक्त जन हैं जो सारी पृथिवी के प्रभु के आगे खड़े हैं ॥

पांचवां पृष्ठ ।

१ फिर मैं ने अपनी आंखें उठाईं और देखा तो क्या देखता हूँ कि एक उड़ता २ हुआ घींड़ा । और उस ने मुझ से कहा कि तू क्या देखता है और मैं ने कहा

उस की लम्बाई कितनी है । और क्या देखता हूँ कि मेरा संघाटी दूत निकल ३  
चला और दूसरा दूत उससे भेंट करने को गया । और उससे कहा कि दौड़ और ४  
यह कहके इस तरफ से जान कि मनुष्यों और देव की बहुताई के कारण  
जो उस में हैं यक्षसलम विद्यात में बढ़के बसाया जायेगा । और मैं उन के लिये ५  
चारों ओर आग की भीत दूंगा परमेश्वर कहता है और मैं उस के मध्य में  
विभक्त दूंगा ।

अबो अबो उत्तर देश से भागो परमेश्वर कहता है क्योंकि चारों पवनों की ६  
नाईं मैं ने तुम्हें बिखराया है परमेश्वर कहता है । हे मैदून तू जो वायुन की ७  
वेटी के संग रहती है अपने को छोड़ । क्योंकि मेनाओं का परमेश्वर यों कहता ८  
है कि विभक्त के पीछे उस ने मुझे उन जातिगणों के पास भेजा जिनमें मैं ने तुम्हें  
लूटा है क्योंकि जो तुम्हें छूता है सो उस की आंख की पुतली को छूता है ।  
क्योंकि देख मैं अपना हाथ उन पर हिलाऊंगा और वे अपने दासों के लिये लूट ९  
होंगे और तुम जानोगे कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे भेजा है ।

हे मैदून की पुत्री गा और आनन्द कर क्योंकि देख मैं आता हूँ और तेरे मध्य १०  
में घूमूंगा परमेश्वर कहता है । और उसी दिन बहुत से जातिगण परमेश्वर से ११  
मिल जायेंगे और वे मेरे लोग होंगे और मैं तेरे मध्य में घूमूंगा और तू जानोगी कि  
सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे तेरे पास भेजा है । और परमेश्वर पवित्र देश में १२  
यहूदाह अपना भाग अधिकार के लिये रखेगा और फिर यक्षसलम को प्रसन्न  
करेगा ॥

हे सारे शरीर परमेश्वर के आगे चुपका रह क्योंकि यह अपने पाँचव निवास १३  
से उठा है ॥

तीसरा पर्व ।

और उस ने प्रधान पाजक यहूसूअ को परमेश्वर के दूत के आगे खड़े होते १  
और गैतान को उस के साम्हना करने को उस के दहिने हाथ की ओर खड़े होते  
मुझे दिखलाया ॥

और परमेश्वर ने गैतान से कहा कि अरे गैतान परमेश्वर तुझे दपटे हाँ यह २  
परमेश्वर जिस ने यक्षसलम को प्रसन्न किया तुझे दपटे क्या यह आग से निकाली  
हुई लकड़ी नहीं है ।

और यहूसूअ अशुद्ध वस्त्र पहिने हुए दूत के आगे खड़ा था । और उस ने यह ३  
कहके अपने आगे के खड़े हुए लोगों से उत्तर देके कहा कि उस पर से अशुद्ध  
वस्त्र उतारो तब उस ने उससे कहा कि देख मैं ने तेरे पाप को तुझ से छोड़ा  
और तुझे सुन्दर वस्त्र पहिनाऊंगा । और उस ने कहा कि वे उस के सिर पर ५  
सुन्दर मुकुट रखें सो उन्होंने ने उस के सिर पर सुन्दर मुकुट रक्खा और उसे वस्त्र  
पहिनाया और परमेश्वर का दूत उस के पास खड़ा रहा । और परमेश्वर के दूत ६  
ने यह कहके यहूसूअ के आगे साक्षी दिई ॥

कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि यदि तू मेरे मार्गों में चलेगा और ७  
मेरी विधि को पालन करेगा तब तू मेरे घर का न्याय करेगा और मेरे आंगनों

- ११ और चांदी और सोना से और मुकुट बना और प्रधान याजक यहूदक के बेटे  
यहूशफ के गिर पर रख ॥
- १२ और यह कहके उम्मे बोले कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख  
वह जन जिस का नाम डाली है वह अपने स्थान से पनपेगा और वही परमेश्वर  
१३ का मन्दिर बनावेगा । हां वही परमेश्वर का मन्दिर बनावेगा और वही महिमा  
पावेगा और अपने सिंहासन पर याजक होगा और कुशल का मंत्र इन दोनों के  
मध्य में होगा ॥
- १४ और वह मुकुट पहन और तूशियाह और यदेशयाह और सफनियाह के बेटे  
१५ इन को परमेश्वर के मन्दिर में स्मरण के लिये होगा । और वे जो दूर हैं सो  
आवेंगे और परमेश्वर के मन्दिर के बनाने में हाथ लगावेंगे और तुम जानोगे कि  
सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और यों होगा यदि तुम परमेश्वर  
अपने ईश्वर का शब्द ध्यान से मानोगे ।

सातवां पद्य ।

- १ और दारा राजा के चौथे घर में यों हुआ कि परमेश्वर का वचन नवें मास  
२ अर्थात् किमलू की चौथी तिथि में जकरियाह के पास पहुंचा । अब कि सराजुर  
और रजिम्मलिक और उस के जन ईश्वर के मन्दिर को भेजे गये कि परमेश्वर के  
३ आगे चिल्ली करें । और कि सेनाओं के परमेश्वर के मन्दिर में के याजकों और  
भविष्यद्वक्ताओं से यह कहके बोले क्या मैं आप को इन बहुत घरों के समान  
अलग करके पांचवें मास में बिलाप करूं ॥
- ४ तब सेनाओं के परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास आया । कि देख  
के सारे लोगों से और याजकों से यह कि अब तुम लोगों ने इन सत्तार घर  
लों पांचवें और सातवें मास में व्रत और बिलाप किया तो क्या मेरे लिये हां  
६ मेरे लिये व्रत किया । और जब तुम ने खाया और पीया तो क्या तुम्हारे ने अपने  
७ लिये न खाया और पीया । क्या ये वे बातें नहीं हैं जो परमेश्वर ने तुम्हारे  
भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा से सुनाई जिस समय कि यहूसलम और उस के आसपास  
के नगर वसे थे और विश्राम थे जिस समय कि लोग दक्खिन के देश में और  
चौगान में बसते थे ॥
- ८ फिर परमेश्वर का वचन यह कहते हुए जकरियाह के पास पहुंचा । कि सेनाओं  
का परमेश्वर यों कहता है सुन्य विचार करो और हर कोई अपने भाई पर दया  
१० और मया दिखावे । और विधवा और अनाथ और परदेशी और कंगाल को न  
सताओ और कोई अपने मन में अपने भाई के विरुद्ध घुरा न समझे ॥
- ११ पर उन्होंने ने माने को नाह किया और अपना कंधा खींच लिया और अपने  
१२ कानों को भारी किया जिस्तें वे न सुनें । हां उन्होंने ने अपने मन को हीरे की  
नाई कर दिया कि व्यथना को और उन बातों को न सुनें जिन्हें सेनाओं के  
परमेश्वर ने अगिले भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा से अपने आत्मा से भेजा था इस लिये  
१३ सेनाओं के परमेश्वर की ओर से बड़ा कोप हुआ । इस लिये यों हुआ कि जैसा  
उस ने कहा और उन्होंने ने न माना तैसा वे पुकारेंगे और मैं न सुनूंगा सेनाओं

कि मैं एक उड़ता हुआ चींड़ा देखना हूँ जिस की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई दस हाथ ॥

और उस ने मुझ से कहा कि यही साप है जो सारे देश पर निकलता है क्योंकि उस के समान घर एक जो चोरी करता है उस की एक ओर से मिट जायेगा और उस के समान घर एक जो क्रिया खाता है उस की दूसरी ओर से मिट जायेगा । मैं उसे निकालूँगा मेनाओं का परमेश्वर कहता है और यह चोर के घर में प्रवेश करेगा और उस के घर में जो मेरे नाम से झूठी क्रिया खाता है और यह उस के घर के मध्य में ठहरेगा और उसे उस के लट्टे और पत्थर समेत नाश करेगा ॥

तब मेरा संघादी दूत निकला और मुझ से कहा कि तू अपनी आंखें उठा और देख कि यह क्या है जो निकल जाता है । और मैं ने कहा कि यह क्या है और यह बोला कि यह जो निकलता है सो रेफा है फिर उस ने कहा कि सारे देश में यह उन का रूप है । और क्या देखता हूँ कि सीमे का एक गोल टुकड़ा और एक स्त्री रेफा के मध्य में बैठी है । और उस ने कहा कि यही दुष्टता है और उसे रेफा के मध्य में ढा दिया और सीमे के भार को रेफा के मुँह पर धर दिया ॥

तब मैं ने अपनी आंखें उठाके देखा और क्या देखता हूँ कि दो म्त्रियाँ निकल आईं और उन के डैनों में पथन था क्योंकि उन के डैने दाढ़तिल के डैनों की नाईं थे और उन्हीं ने रेफा को आकाश और पृथिवी के अधर में उठाया । तब मैं ने अपने संघादी दूत से कहा कि रेफा को ये किधर ले जाती हैं । और उस ने मुझ से कहा कि उस के लिये मिनगार देश में घर बनाने को और यह स्थिर होगा और यहाँ अपने आसन पर बैठाई जायेगी ॥

छठवां पर्व ।

फिर मैं ने मुँह मोड़ा और देखा तो क्या देखता हूँ कि दो पर्वतों के मध्य में चार रथ निकल आये और ये पर्वत पीतल के पर्वत थे । पहिले रथ में लाल घोड़े थे और दूसरे रथ में काले घोड़े । और तीसरे रथ में स्येत घोड़े और चौथे रथ में बहुरङ्ग कथरे घोड़े थे । तब मैं ने अपने संघादी दूत को उत्तर देके कहा कि ये मेरे प्रभु ये क्या हैं । तब उस दूत ने उत्तर देके मुझ से कहा कि ये स्वर्ग के चार आत्मा हैं जो सारी पृथिवी के प्रभु के आगे खड़े होने से निकलते हैं । और काले घोड़े जो उस में हैं उत्तर देश में जाते हैं और स्येत उन के पीछे पीछे जाते हैं और बहुरङ्ग घोड़े दक्खिन देश को जाते हैं । और कथरे निकलकर चाटते थे कि पृथिवी में इधर उधर फिरें और उस ने कहा कि जाओ पृथिवी के इधर उधर फिरो सो वे पृथिवी के इधर उधर फिरे । फिर यह मुझ पर चिल्लाया और यह कहके बोला कि देख ये जो उत्तर देश को जाते हैं वे मेरे ली को उत्तर देश में ठण्डा करते हैं । फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । कि तू बंधन से ले अर्थात् खुलदी और तूधियाह और वदैअयाह से जो बाबुल से आये हैं और उसी दिन जा और सफनियाह के घेरे यूमियाह के घर में प्रवेश कर ।



१५ और मैं न पकृताया । वैसा मैं ने इन दिनों में फिर मन किया कि यहसलम पर  
 १६ और यहूदाह के घराने पर भलाई करूं तुम मत डरो । पर इन बातों को तुम्हें  
 करना है कि हर एक अपने अपने पड़ोसी से सच कहे और अपने फाटकों में सत  
 १७ और कुशल का विचार करे । और हर एक अपने अपने पड़ोसी के विरुद्ध अपने  
 अपने मन में बुराई न समझे और झूठ किरिया से प्रीति न रखे क्योंकि मैं इन  
 सारी बातों से घिन करता हूं परमेश्वर कहता है ॥

१८ फिर सेनाओं के परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा ॥  
 १९ कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि चौथे और पांचवें और सातवें और  
 दसवें मास के व्रत यहूदाह के घराने के लिये आनन्द और मगन के लिये अर्थात्  
 आह्लाद के तेवहार होंगे इस लिये तुम सत और कुशल से प्रीति रखो ॥  
 २० सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि ऐसा होगा कि बहुत से लोग और  
 २१ बहुत से नगरों के निवासी आवेंगे । और एक नगर के निवासी दूसरे नगर को  
 यह कहके जायेंगे कि चलो हम परमेश्वर के आगे प्रार्थना करने को और सेनाओं  
 २२ के परमेश्वर को ठूँढ़ने को शीघ्र जायें मैं भी जाऊंगा । और बहुत से लोग और  
 बलवन्त जातिगण सेनाओं के परमेश्वर को ठूँढ़ने को और परमेश्वर के आगे  
 प्रार्थना करने को यहसलम में आवेंगे ॥  
 २३ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि उन दिनों में ऐसा होगा कि जातिगणों  
 की सारी भाषों में से दस जन पकड़ेंगे हां एक यहूदी जन के अंचल को यह कहके  
 पकड़ेंगे कि हम तुम्हारे साथ जायेंगे क्योंकि हम ने सुना है कि ईश्वर तुम्हारे  
 साथ है ॥

### नवां पर्व ।

१ परमेश्वर के वचन की भविष्यवाणी जो हदरकू के देश पर है और दमिश्क  
 उस का टिकाव है क्योंकि मनुष्य की आंख और इसराएल की सारी गोष्टियों की  
 २ आंख परमेश्वर की ओर लगेगी । और हमारा की आंख भी जो उस के समीप है  
 ३ और सूर और सैदा की यद्यपि वह बहुत बुद्धिमान है । और सूर ने अपने लिये  
 गढ़ बनाया और चांदी को धूल की नाई बटोरा है और चाखे सोने को सड़कों  
 की कीच की नाई ॥  
 ४ देखो प्रभु उसे निकालेगा और समुद्र में उस के बल को मारेगा और वह आग  
 ५ से जलाई जायेगी । असकलून देखकर डरेगा और अज्जः अति पीड़ित होगा  
 अकखन भी कि उस की आस टूटी अज्जः से राजा नष्ट होगा असकलून बसाया  
 ६ न जायेगा । और उपरी जन अशदूद में रहेगा और फिलिस्तियों के अहङ्कार को  
 ७ काट डालूंगा । और मैं उस के लोहू को उस के मुंह से और उस की घिनितों  
 को उस के दांतों के मध्य में से दूर करूंगा और वह हां वही हमारे ईश्वर के  
 लिये बच जायेगा और वह यहूदाह में अध्यक्ष के समान होगा और अकखन  
 ८ यहूदी के समान । और मैं सेना के कारण जो बीत जायेगी और लौट जायेगी  
 अपने मन्दिर का घेरा करूंगा और उन में से सत्ताज फेर कभू न जायेगा क्योंकि मैं  
 ने अब अपनी आंखों से देखा है ॥

का परमेश्वर कहता है । परन्तु मैं ने व्यवहार से उन्हें सारे जातिगणों में किन् १४  
भिन्न किया जिन्हें ये न जानते थे और उन के पीछे देश उजाड़ हुआ कोई  
उस में से न जाता था न लौटता था क्योंकि उन्होंने ने यादित देश को उजाड़  
बना रक्खा ।

आठवां पर्व ।

फिर परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुँचा । कि सेनाओं का १  
परमेश्वर यों कहता है कि मैं सैदून के लिये बड़े भूल से भूलित हुआ हूँ हाँ मैं  
बड़े कोप से उस के लिये भूलित हुआ हूँ ।

परमेश्वर यों कहता है कि मैं सैदून को फिर लौटा दूँ और यरुसलम के मध्य ३  
में वास करेगा और यरुसलम सचाई का नगर और सेनाओं के परमेश्वर का  
पर्यंत पवित्र पर्यंत कहावेगा ।

सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि फिर बूढ़े और बुढ़ियाँ यरुसलम की ४  
सड़कों में बसेंगी और सब कोई बुढ़ापे के कारण अपने हाथ में लाठी पकड़ेंगे ।  
और नगर की सड़क लड़के लड़कियों से भर जायेंगी जो उस की सड़कों ५  
में खेलेंगे ।

सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि यद्यपि इन बचे हुए लोगों की आँखों ६  
में उन दिनों में अचंभा होये तो क्या मेरी आँखों में अचंभा होगा सेनाओं का  
परमेश्वर कहता है ॥

सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देश में उदय के देश से और अस्त के ७  
देश से अपने लोगों को बचाऊंगा । और मैं उन्हें लाऊंगा और वे यरुसलम के ८  
मध्य में वास करेंगे और वे मेरे लोग होंगे और सचाई में और धर्म में मैं उन  
का ईश्वर हूँगा ।

सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि हे लोगो तुम जो इन दिनों में ये बातें ९  
उन भविष्यद्वक्तों के मुँह से सुनते थे जो हम दिन थे जब कि सेनाओं के परमेश्वर  
का घर अर्थात् मन्दिर की नख डाली गई जिस्ती वह धन जाये अपने दाशों को  
दृढ़ करो । क्योंकि उन दिनों से आगे मनुष्यों की प्रतिफल न था न पशु के लिये १०  
प्रतिफल था और जो बाहर भीतर आता जाता था विपत्ति के सारे उन्हें कुशल  
न था क्योंकि मैं ने हर एक जन को अपने अपने परोसी के विरुद्ध किया था ।  
परन्तु मैं इन बचे हुए लोगों के लिये अगिले दिनों के समान न हूँगा सेनाओं का ११  
परमेश्वर कहता है । क्योंकि बीज कुशल से होगा और दाख फलेगा और भूमि १२  
अपनी बढ़ती देगी और आकाश आस गिरावेगा और मैं इस जातिगण के बचे  
हुए लोगों को इन सारी बातों का अधिकारी बनाऊंगा । और यों होगा कि १३  
जैसा तुम लोग जातिगणों में खाप हुए हो वे यहूदाह के घराने और वे इसराएल  
के घराने तैसा मैं तुम्हें बचाऊंगा और तुम आशीष दोगे मत डरो अपने दाशों  
को दृढ़ करो ।

क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि जैसा मैं ने तुम्हें दण्ड देने का १४  
मन किया अब तुम्हारे पुत्रों ने मुझे रिस दिलाया सेनाओं का परमेश्वर कहता है

८ परमेश्वर में आह्लादित होगा । मैं उन के लिये सीटी बजाऊंगा और उन्हें  
 खटोऊंगा क्योंकि मैं ने उन्हें कुड़ाया है और वे खट जायेंगे जैसा वे खट गये  
 ९ थे । और मैं उन्हें जातिगणों में बिथराऊंगा और वे दूर देशों में मुझे स्मरण  
 १० करेंगे और वे अपने लड़केबालों के संग जीयेंगे और फिर लौटेंगे । और मैं उन्हें  
 मिस्र देश से फेर लाऊंगा और असूर से उन्हें खटोऊंगा और मैं उन्हें जिलिअद  
 ११ और लुबनान के देश में लाऊंगा और उन के लिये स्थान न होगा । और वह  
 समुद्र अर्थात् सकेती में से बीत जायेगा और समुद्र की लहरों को मारेगा और  
 नदी के सारे गहिराव सूख जायेंगे और असूर का अहंकार उतारा जायेगा और  
 १२ मिस्र का राजदण्ड जाता रहेगा । और मैं उन को परमेश्वर में खलि दूंगा और  
 वे उस के नाम में आया जाया करेंगे परमेश्वर कहता है ॥

ग्यारहवां पर्व ।

१ हे लुबनान अपने द्वारों को खोल जिस्ते आगे तेरे देवदारों को भस्म करे ।  
 २ हे सनोवर खिलाप करो क्योंकि देवदारु गिर पड़े हैं क्योंकि शोभित नष्ट हुए हैं  
 ३ हे बसन के बलूत खिलाप करो क्योंकि खादित बन गिराया गया । गड़रियों के  
 खिलाप करने का शब्द है क्योंकि उन की शोभा नष्ट हुई युवा सिंहों के गरजन  
 का शब्द है क्योंकि यरदन का अहंकार नष्ट हुआ ॥

४ परमेश्वर मेरा ईश्वर यों कहता है कि जूझ के भुंड को चरा । जिन के  
 स्वामी उन्हें जूझ करते हैं और दोषी नहीं ठहरते और उन के वेचनेहारे कहते हैं  
 कि धन्य परमेश्वर को क्योंकि मैं धनी हूँ और उन के गड़रिये उन पर दया नहीं  
 ५ करते । क्योंकि मैं देश के बासियों पर फिर दया न करूंगा परमेश्वर कहता है  
 और देखो मैं हर एक जन को उस के संगी के और उस के राजा के हाथ में  
 सौंपूंगा और वे देश को कुचल डालेंगे और मैं उन के हाथ से न कुड़ाऊंगा ॥

६ सो मैं ने जूझ के भुंड को चराया भुंड के कंगालों के कारण और मैं ने दो  
 लाठियों को लिया एक को मैं ने सुन्दर कहा और दूसरी को बंधन और मैं ने  
 ८ भुंड को चराया । और मास भर में मैं ने उन तीन गड़रियों को नष्ट किया और  
 मेरा प्राण उन से घिनाया और उन के प्राण ने भी मुझे त्यागा ॥

९ तब मैं ने कहा कि मैं तुम्हें नहीं चराऊंगा जो मरता है सो मरे और जो नष्ट  
 होता है सो नष्ट होवे और जो खच रहे सो हर जन अपने संगी का मांस खाये ॥  
 १० और मैं ने अपनी लाठी सुन्दर को लिया और उसे तोड़ डाला कि मैं उस  
 ११ छाछा को तोड़ूँ जो मैं ने सारे जातिगणों से खांधी । और वह उसी दिन तोड़ी  
 गई और भुंड के कंगालों ने जो मुझे देख रहे थे यों जाना कि यह परमेश्वर  
 का बचन है ॥

१२ तब मैं ने उन से कहा कि जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे तो मेरा प्रतिफल  
 १३ दो नहीं तो मत दो सो उन्होंने ने तीस रुपये मेरा प्रतिफल तौल दिया । और  
 परमेश्वर ने मुझ से कहा कि उन्हें कुम्हार के पास डाल दो उस भारी प्रतिफल  
 को जो मैं उन से आँका गया और मैं ने उन तीस रुपयों को लिया और उन्हें  
 परमेश्वर के मन्दिर में कुम्हार कने डाल दिया ॥

हे मैटून की पुत्री अति मगन हो-हे यस्सलम की पुत्री ललकार देख सैरा ८  
 राजा तेरे पास आता है वह धर्मी और सुक्तिदायक है दोन और गदहे पर चढ़ा  
 है हां गदहे के यंत्रे पर । और मैं इफरायम से रथों को और यस्सलम से घोड़े १०  
 को काट डालूंगा और संग्राम का धनुष काट डाला जायेगा और वह जातिगणों  
 से कुशल की बात कहेंगा और उस का राज समुद्र से समुद्र लें और नदी से पृथिवी  
 के अन्त लें होगा ॥

और तू जो है तेरी याचा के लोहू में मैं तेरे बंधुओं को उस गढ़-दे से निकाल ११  
 लाऊंगा जहां यानी न था । हे आशा के बंधुओं गढ़ को लौटो मैं आज के दिन १२  
 भी कहता हूँ कि मैं तुम्हें दूंगा । क्योंकि मैं ने यहूदाह को अपने लिये १३  
 भुकाया है और मैं ने धनुष को इफरायम से भर दिया है और तेरे बेटों को हे मैटून  
 तेरे बेटों के विरुद्ध हे यूनान उभारा और तुम्हें सहाय्य की तलवार की नाईं  
 बनाया । और परमेश्वर उन पर दिखलाई देगा और उस का वाग बिजली की नाईं १४  
 निकल चलेगा और प्रभु परमेश्वर तुम्हें फूँकेगा और वह दक्षिण के पर्वतों में  
 छीत जायेगा । सेनाओं का परमेश्वर उन की रक्षा करेगा और वे अपने बैरियों १५  
 को भर्तंगे और डेलवास के पत्थरों की नाईं उन्हें दवायेंगे और वे पीयेंगे और  
 मद्य के समान ललकारेंगे और कटोरे की नाईं भर जायेंगे और घेरी के कोनों  
 की नाईं । और उसी दिन परमेश्वर उन का ईश्वर उन्हें अपने लोगों के भुंड की १६  
 नाईं बचावेगा क्योंकि वे सुकुट के पत्थरों की नाईं होंगे जो उस के देश पर उड़ेंगे ।  
 क्योंकि उस की कृपा ब्याही बढ़ी है और उस की सुन्दरता ज्यादा बढ़ी है अब १७  
 युवा पुरुषों को और नया दायरम कुंवारों को वृद्धि देगा ॥

दसवां पर्व ।

पिछले संह के समय मैं परमेश्वर से संह मांगो परमेश्वर विजलियों को बना- १  
 देगा और उन्हें संह की झड़ियां देगा हर एक जन को खेत का सागपात । क्योंकि २  
 कुलपूज्यों ने मिथ्या कहा है और वैद्यों ने झूठ देखा है और झूठा स्वप्न कहा  
 है उन्हें ने वृथा शान्ति दिई है इस लिये वे भुंड की नाईं भटक वे कष्टित हैं  
 क्योंकि उन का कोई गढ़ेरिया नहीं है । गढ़ेरियों पर मेरा क्रोध भड़का और मैं ३.  
 ने धरों को दण्ड दिया परन्तु सेनाओं के परमेश्वर ने अपने भुंड यहूदाह के घराने  
 को प्रतिफल दिया और उन्हें संग्राम में अपने विभव के घोड़े की नाईं किया ।  
 उसी से कोने का पत्थर उसी से कील उसी से संग्राम का धनुष उसी से हर एक ४  
 अध्यक्ष निकल जायेगा । और वे सहाय्य की नाईं होंगे जो संग्राम में अपने  
 बैरियों को सड़कों की कीचड़ की नाईं लताड़ते हैं और वे लड़ेंगे क्योंकि परमे- ५  
 श्वर उन के संग होगा और घोड़चढ़े घघरा जायेंगे ॥

और मैं यहूदाह के घराने को बलवन्त करूंगा और यूसुफ के घराने को ६  
 बचाऊंगा और मैं उन्हें बसाऊंगा क्योंकि मैं उन पर दया करता हूँ और वे ऐसे  
 होंगे जैसा कि मैं ने उन्हें नहीं निकाला क्योंकि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूँ  
 और मैं उन की सुनूंगा । और इफरायम सहाय्य की नाईं होगा और उन का ७  
 मन जैसा मद्य से मगन होगा और उन के पुत्र देखके मगन होंगे उन का मन

- २० उसी दिन घोड़ों की घंटियों पर परमेश्वर के लिये पवित्रता होगी और  
 २१ परमेश्वर के घर के पात्र ऐसे होंगे जैसे वे पात्र जो वेदी के आगे हैं । हाँ  
 यरूशलेम और यहूदाह का हर एक पात्र सेनाओं के परमेश्वर के लिये पवित्र  
 होगा और सारे बलिदायक आवेंगे और उन में से लेंगे और उन में पकावेंगे और  
 उसी दिन सेनाओं के परमेश्वर के घर में कोई कन्यानी फिर न होगा ।

## मलाकी भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

- १ मलाकी के द्वारा से इसराएल के लिये परमेश्वर के बचन की भविष्यवाणी ।  
 २ परमेश्वर कहता है कि मैं ने तुम्हें प्यार किया है तथापि तुम कहते हो कि  
 किस बात में तू ने हमें प्यार किया है क्या ऐसा यश्शकूब का भाई न था परमेश्वर  
 ३ कहता है पर मैं ने यश्शकूब को प्यार किया । और ऐसा से बर रखवा और उस  
 के पर्वतों को और उस के अधिकार को बन के गीदड़ों के लिये उजाड़  
 किया है ॥  
 ४ इस कारण कि अदूम कहता है हम उजाड़े गये पर हम फिरके उजाड़ स्थानों  
 को बनावेंगे सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि वे बनावेंगे पर मैं ठाऊंगा  
 और वे दुष्टता के सिवाने और जिन लोगों से परमेश्वर सदा क्रोधित है कहावेंगे ।  
 ५ और तुम्हारी आंखें देखेंगी और तुम कहोगे कि परमेश्वर इसराएल के सिवाने  
 पर महिमा पावे ॥  
 ६ पुत्र अपने पिता की और सेवक अपने स्वामी की प्रतिष्ठा करता है सो जो मैं  
 पिता हूँ तो मेरी प्रतिष्ठा कहां और जो मैं स्वामी हूँ तो मेरा डर कहां सेनाओं  
 का परमेश्वर तुम्हें कहता है हे याजको जो मेरे नाम की निन्दा करते हो पर तुम  
 ७ कहते हो कि किस बात में हम ने तेरे नाम की निन्दा किई । अशुद्ध भोजन मेरी  
 वेदी पर चढ़ाते हो और कहते हो कि किस बात में हम ने तुम्हें अशुद्ध किया है इस  
 ८ में कि कहते हो परमेश्वर का मंच तुच्छ है । सो जो तुम बलि के लिये अंधा  
 चढ़ाओ क्या बुरा नहीं और जो तुम लंगड़ा और रोगी चढ़ाओ तो क्या बुरा नहीं  
 उसे अपने अध्यक्ष को भेंट देओ क्या वह तुम से प्रसन्न होगा अथवा वह तुम्हें  
 ९ ग्रहण करेगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥  
 १० और अब सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करो जिस्तें वह हम पर दयाल होवे यह  
 तुम्हारे हाथ से होता है क्या वह तुम्हें ग्रहण करेगा सेनाओं का परमेश्वर कहता  
 ११ है । तुम में से कौन है जो द्वारों को खन्द करेगा तुम मेरी वेदी पर आग अमोत्य  
 नहीं बारते मैं तुम से प्रसन्न नहीं हूँ सेनाओं का परमेश्वर कहता है और तुम्हारे  
 १२ हाथ से भेंट ग्रहण न करेगा । क्योंकि सूर्य के उदय से उस के अस्त लों मेरा  
 नाम अन्यदेशियों में महान होगा और हर कहीं सुगंध और पवित्र भेंट मेरे नाम

फिर मैं ने दूसरी लाठी धंधन को तोड़ डाला जिसमें थिरादरी को यहूदाह १४  
और इसरायल के मध्य से मिटाऊँ ॥

फिर परमेश्वर ने मुझ से कहा कि निर्दुष्टि गढ़ेरिये के अधिपतियों को अपने १५  
लिये ले ॥

क्योंकि देख मैं देश में एक गढ़ेरिया को उठाऊंगा जो नष्ट किये गये का १६  
सेखा न लेगा और भटके हुए को न खोजेगा और घाय किये गये को चंगा न  
करेगा और खड़े हुए को न संभालेगा परन्तु वह मोटे का मांस खायेगा और उन  
के खुरों को तोड़ेगा ॥

हाय उस पाजो गढ़ेरिया पर जो झुंड को त्यागता है उस की भुजा पर और १७  
उस की दाहिनी आंख पर तलवार होगी उस की भुजा झुराते झुरा जायेगी और  
उस की दाहिनी आंख अधिपारी होते अध्रा हो जायेगी ॥

चारहवां पर्व ।

इसरायल पर परमेश्वर के यत्न की भविष्यवाणी परमेश्वर कहता है जो १  
आकाश को फैलाता है और पृथिवी की नेत्र ढालता है और मनुष्य में उस के  
आत्मा को उत्पन्न करना है ॥

देख मैं यरुसलम को आसपास के सारे जातिगणों के लिये घघराहट का २  
कटोरा बनाऊंगा और यहूदाह पर भी यरुसलम के घेरे जाने में ऐसा होगा ।  
और उसी दिन मैं ऐसा होगा कि मैं यरुसलम को सारे जातिगणों के लिये एक ३  
भारी पत्थर बनाऊंगा सब जो उसे उठावेंगे सो कटते कट जायेंगे और पृथिवी के  
सारे जातिगण उस के विरुद्ध एकट्टे होंगे ॥

उसी दिन परमेश्वर कहता है मैं हर एक घोड़े को घघराहट से और उस के ४  
खटवैये को पागलपन से मारूंगा पर यहूदाह के घराने पर अपनी आंखें खोलूंगा  
और जातिगणों के हर एक घोड़े को अधापन से मारूंगा । और यहूदाह के ५  
अध्यक्ष अपने मन में कहेंगे कि यरुसलम के निवासी सेनाओं के परमेश्वर उन के  
ईश्वर में मेरे लिये बल है ॥

उस दिन मैं यहूदाह के अध्यक्षों को लकड़ी में अंगोठी की नाई बनाऊंगा ६  
और घूले में आग के दीपक की नाई और ये दाहिने धार्य पर आसपास के सारे  
जातिगणों को भस्म करेंगे और यरुसलम अपने ही स्थान में अर्थात् यरुसलम में  
फिर बसाया जायेगा । और परमेश्वर यहूदाह के तंधुओं को पहिले बचावेगा ७  
जिस्त दाऊद के घराने का विभव और यरुसलम के निवासियों का विभव यहूदाह  
पर बढ न जावे ॥

उसी दिन परमेश्वर यरुसलम के निवासियों की रक्षा करेगा और उसी दिन ८  
जो उन में दुर्बल है सो दाऊद के समान होगा और दाऊद का घराना ईश्वर के  
समान हाँ उन के आगे परमेश्वर के दूत के समान होगा । और उसी दिन यों ९  
होगा कि मैं सारे जातिगणों को जो यरुसलम के विरुद्ध आते हैं नाश करने का  
ठूँडूंगा । और मैं दाऊद के घराने पर और यरुसलम के निवासियों पर कृपा और १०  
विन्ती का आत्मा उड़ेलूंगा और ये मुझ पर दृष्टि करेंगे जिसे उन्हें ने ब्रह्मा है और



फाटक के लिये नीला और बैजनी और लाल रंग का बटे हुए भीने सूती कपड़े से बूटे काढ़े हुए का बीस हाथ की एक ओट बना उन के खंभे चार और उन १७ के पाए चार । आंगन के चारों ओर के समस्त खंभे रुपये के ढंढों से हों उन के १८ अंकुरे रुपये के और उन के पाए पीतल के । आंगन की लंबाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई पांच हाथ भीने बटे हुए सूती कपड़े से और उन के पाए १९ पीतल के । तंबू की समस्त सेवा के लिये समस्त पात्र और उस के सब खूंटें उस के और आंगन के समस्त खूंटें पीतल के हों ॥

२० और इसराएल के संतान को आज्ञा कर कि तेरे पास कूटे हुए जलपाई का २१ निर्मल तेल लावें जिसमें दीपक सदा बरा करे । घूंघट के बाहर जो माघी के आगे है मंडली के तंबू में दारुन और उम के बेटे सांभ से लेके विद्वान तारि परमेश्वर के आगे नित्य उन की पीढ़ी से पीढ़ी लों इसराएल के संतानों के लिये यह विधि है ॥

अठारहवां पर्व ।

१ और इसराएल के संतानों में से अपने भाई दारुन और उस के पुत्रों को अपने पास ले जिसमें वे याजक के पद में मेरी सेवा करें अर्थात् दारुन और दारुन के पुत्र २ नदब और अबिहू इलिअजर और ईतमर को । और अपने भाई दारुन के लिये ३ जिसमें विभव और शोभा हो पवित्र वस्त्र बना । और उन समस्त वृद्धिमानों से जिन्हें मैं ने वृद्धि का आत्मा दिया है कह कि वे दारुन को पवित्र करने के लिये ४ बस्त्र बनावें जिसमें वह मेरे लिये याजक हो । और ये वे वस्त्र हैं जो वे धनार्थी चपरास और एफोद और वागा और बूटा काढ़ी हुई कुरती और मुकुट और कटिबंध और वे पवित्र वस्त्र तेरे भाई दारुन और उस के बेटों के लिये बनावें ५ कि मेरे लिये याजक होवें । और वे सोना और नीला और बैजनी और लाल और भीना कपड़ा लेंगे ॥

६ और वे एफोद को सोने नीले और बैजनी लाल और बटे हुए भीने कपड़े से ७ बूटा काढ़ा हुआ बनावें । दो कंधे का जोड़ा उस की दोनों ओरों से मिले हुए ८ हों जिसमें यों मिलाया जाय । और बूटा काढ़ा हुआ एफोद का पटुका जो उस पर है उसी के कार्य के समान उसी से हो सोने नीले और बैजनी और लाल ९ और भीने बटे हुए सूती कपड़े से हो । और दो वैदूर्यमणि ले और उन पर इस- १० राएल के संतानों के नाम खोद । उन में से छः के नाम एक मणि पर और शेष ११ के छः नाम दूसरे मणि पर उन की उत्पत्ति की विधि से होवें । मणि के खोदवैये के कार्य से कृपा के खोदने के समान दोनों मणि पर इसराएल के संतानों के १२ नाम खोद उन्हें सोने के ठिकानों में जड़ । और दोनों मणि को एफोद के दोनों मोठों पर रख कि इसराएल के संतानों के स्मरण के लिये होवें और दारुन उन १३ के नाम परमेश्वर के आगे अपने दोनों कंधों पर स्मरण के लिये उठावेगा । और १४ सोने के ठिकाने बना । और दोनों सीकर निर्मल सोने से खूंटों में गूथने के कार्य से उन्हें बना और गुथी हुई सीकरों को उन ठिकानों में जड़ ॥

१५ और चित्रकारी से न्याय के लिये एक चपरास बना एफोद के कार्य के समान

के लिये चढ़ाई जायेगी क्योंकि मेरा नाम अन्यदेशियों में सदान होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

पर तुम ने यह कहके उसे शत्रुत्व किया है कि परमेश्वर का मंच शत्रुत्व है और १२  
उस का प्राप्ति उस का भोजन तुच्छ है । तुम ने यह भी कहा कि देव्य व्याधी १३  
शकाय है और तुम ने उस की निन्दा किहू सेनाओं का परमेश्वर कहता है और फाड़ा  
टुट्टा और लंगड़ा और रोगी लाये हो हां तुम सेमी भेंट लाये हो दया में तुम्हारे  
टाश में उसे गृहण करेगा परमेश्वर कहता है । परन्तु उस कृत्नी पर साप हो जो १४  
अपने भुंड में नर रखता है और परमेश्वर के लिये सैन्यो मानता है और नकारा  
बलि चढ़ाता है क्योंकि मैं सदा राज हूँ सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मेरा  
नाम जातिगणों में भयानक होगा ॥

### दूसरा पद्य ।

और अद्य है याजको यह आज्ञा तुम्हारे लिये है । यदि तुम न सुना न मन १  
लगाओ कि मेरे नाम की सटिमा करो सेनाओं का परमेश्वर कहता है तो मैं साप २  
तुम पर भेजंगा मैं तुम्हारे आजीषों का सापंगा हां मैं उसे साप चुका हूँ इस लिये  
कि तुम मन नहीं लगाते । देव्य में तुम्हारे योज को बिगाड़ंगा और तुम्हारे मुंह ३  
पर सल बिछाऊंगा हां तुम्हारे पत्रों का सल और कोई तुम्हें उस के संग ले  
जायेगा । और तुम जानोगे कि मैं ने इस आज्ञा को तुम्हारे पास भेजा है क्योंकि ४  
लाघी से मेरी आज्ञा ठहरी सेनाओं का परमेश्वर कहता है । मेरी आज्ञा जीवन ५  
और कुशल की इस के संग थी और मैं ने वन्दे उसे दिया उस हर के लिये जिम्मे  
वह मुझ से डरता था और मेरे मुंह के आगे विस्मित था । मत्पना की व्यवस्था ६  
उस के मुंह में थी और उस के हांठों में अधर्म न पाया गया यह कुशल और  
खराई से मेरे साथ चला और बहुतों का घुराई से फिराया । क्योंकि अवश्य है ७  
कि याजक के हांठ में ज्ञान भरा रहे और लोग उस के मुंह से व्यवस्था को हूँहूँ  
इस लिये कि वह सेनाओं के परमेश्वर का प्रेरित है ॥

पर तुम मार्ग से मुड़े हो तुम ने बहुतों को व्यवस्था में ठोकर मिलाया तुम ८  
ने लाघी की आज्ञा को बिगाड़ा है सेनाओं का परमेश्वर कहता है । जैसा कि ९  
तुम मेरे मार्ग पर नहीं चले हो और व्यवस्था में लोगों का पल किया है इस  
लिये मैं ने भी तुम्हें मेरे लोगों के आगे तुच्छ और निन्दित किया है ॥

क्या इस सभों का एकही पिता नहीं है क्या एकही सर्वशक्तिमान ने इस सभों १०  
को उत्पन्न नहीं किया फिर किस लिये इस अपने पित्रों की आज्ञा को तोड़कर हर  
एक अपने भाई से कुल करें ॥

यहूदाह ने कुल किया है और इसराएल और यरुसलम में विनित कार्य होता ११  
है क्योंकि जो परमेश्वर के लिये पवित्र था जिसे उस ने प्यार किया है यहूदाह ने  
उसे शत्रुत्व किया है और अपने देश की लड़की को व्याधा है । परमेश्वर उस जन १२  
को जो ऐसा करता है क्या गुरु क्या चेला और उसे जो सेनाओं के परमेश्वर के  
आगे भेंट चढ़ाता है यशकूब के तंघुओं में से काट डालेगा । फिर यह भी तुम १३  
ने दो घेर किया कि परमेश्वर की बंदी को आंशुओं और रोदन और चिल्लाने से

ठांपा है यहाँ लों कि वह भेंट पर सुरत नहीं लगाता और सुइच्छा से तुम्हारे हाथों से ग्रहण नहीं करता ॥

- १४ तब भी तुम कहते हो किस लिये इसी लिये कि परमेश्वर तेरे और तेरी पत्नी के मध्य में साची था जिस्से तू ने छल किया है तथापि वह तेरी संगिनी और १५ तेरी वाचा की पत्नी थी । क्या उस ने एकट्ठी नहीं जनाया तथापि उस के पास आत्मा की खचती थी और काटे को कि एक ईश्वरीय वंश को पावे इस लिये तुम अपने आत्मा से चौकस रहो कि अपनी तरफगाई की पत्नी से कोई विश्वास- १६ घात न करे । क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर कहता है कि मैं परित्याग से घिन खाता हूँ और उससे भी जो अन्धेर से अपने दस्त को ठांपता है सेनाओं का परमेश्वर कहता है इस लिये अपने आत्मा से चौकस रहो कि विश्वासघात न करो ॥

- १७ तुम ने अपनी बातों से परमेश्वर को शकाया है पर तुम कहते हो कि किस बात में हम ने उसे शकाया है इस में जो तुम कहते हो कि हर एक जो घुराई करता है परमेश्वर की दृष्टि में भला है और वह ऐसों से प्रसन्न है अथवा यह कि न्याय का ईश्वर कहाँ है ॥

तीसरा पर्व ।

- १ देख मैं अपने दूत को भेजूंगा और वह मेरे आगे मार्ग को सिद्ध करेगा और प्रभु जिसे तुम खोजते हो अज्ञानक अपने मन्दिर में आवेगा अर्थात् वाचा का दूत जिस्से २ तुम प्रसन्न हो देख वह आवेगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है । परन्तु उस के आने के दिन में कौन ठहरेगा और जब वह दिखाई देगा तब कौन खड़ा रहेगा क्योंकि वह निर्मल करवैये की आग की नाई और धोयी के साधुन की नाई है । ३ और वह चांदी के निर्मल और चोखा करवैये की नाई वैठेगा और वह लाठी के बेटों को पवित्र करेगा और वह उन्हें सोने चांदी की नाई निर्मल करेगा और वे धर्म से परमेश्वर को भेंट चढ़ावेंगे ॥
- ४ तब यहूदाह और यहूसलम की भेंट पुराने दिनों की नाई और अगिले बरसों ५ की नाई परमेश्वर को प्रसन्न आवेंगी । पर मैं न्याय के लिये तुम्हारे पास आऊंगा और मैं टोन्हां पर और व्यभिचारियों पर और झूठे किरियों पर और उन पर जो बनिहार और विधवा और अनाथ की बनी रोक रखते हैं और यात्री को पद से फिराते हैं और मुझ से नहीं डरते चटक साची हूंगा सेनाओं का परमेश्वर ६ कहता है । क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ मैं नहीं पलटता इस लिये हे यश्मूब के पुत्रो तुम भस्म नहीं हो ॥
- ७ अपने पित्रों के दिनों से तुम मेरी विधियों से फिर गये हो और उन्हें पालन नहीं किया है मेरी ओर फिरो और मैं तुम्हारी ओर फिरेगा सेनाओं का परमेश्वर ८ कहता है परन्तु तुम कहते हो कि किस बात में हम फिर । क्या कोई ईश्वर से चुरावेगा तथापि तुम ने मुझ से चुराया परन्तु कहते हो कि किस बात में हम ९ ने तुझ से चुराया है दहेकी और भेंटों में । तुम साप से सापित हो क्योंकि तुम ने हाँ इस सारे जातिगण ने मुझ से चुराया है ॥

तुम मारी दहेकी को भंडार में लाओ जिसे मेरे घर में भोजन होये और १०  
 अब इससे मुझे परबो सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे लिये स्वर्ग  
 की खिड़कियों को न खोलूँ और तुम पर यहाँ लों आर्शोप बहाज कि रखने के  
 लिये स्थान न दोगा । और मैं तुम्हारे लिये भक्त को डांटूँगा और वह तुम्हारी ११  
 भूमि के फलों को नष्ट न करेगा और खेत में तुम्हारा दाख दाख न दोगा  
 सेनाओं का परमेश्वर कहता है । और सारे जातिगण तुम्हें धन्य कहेंगे क्योंकि १२  
 तुम आंकित देश होगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

तुम्हारी बातें मेरे विरुद्ध कही हुईं परमेश्वर कहता है तथापि तुम कहते हो १३  
 कि हम ने तेरे विरुद्ध क्या कहा है ॥

तुम ने कहा है कि परमेश्वर को मेरा वृथा है और क्या लाभ है कि हम १४  
 उस की विधि का पालन करें और सेनाओं के परमेश्वर के आगे उदासी से  
 खलें । और अब हम अहङ्कारियों को धन्य कहते हैं हाँ दुष्टकारी बन गये हाँ १५  
 जिन्होंने ने ईश्वर को छोड़ा है वे यद निकले ॥

तब जो परमेश्वर को डरते थे उन्होंने ने आपस में घाते किए और परमेश्वर १६  
 ने कान धरके सुना और उन के लिये जो परमेश्वर से डरते थे और उन के नाम  
 का ध्यान करते थे स्मरण की पुस्तक उस के आगे लिखी गई । और जिस दिन १७  
 मैं ने ठहराया सेनाओं का परमेश्वर कहता है वे मेरे लिये विशेष भंडार होंगे  
 और मैं उन पर कृपालू हूँगा जैसा मनुष्य अपने पुत्र पर कृपालू है जो उस की सेवा  
 करता है । तब तुम किरोगे और धर्मी और दुष्ट के मध्य उस के मध्य जो ईश्वर १८  
 की सेवा करता है और जो उस की सेवा नहीं करता तुम बेघरा जानोगे ॥

चौथा पर्व ।

क्योंकि देख वह दिन आता है जो भट्टे की नाईं जलेगा और सारे अहङ्कारी १  
 और सारे दुष्टकारी नष्ट होंगे और जो दिन आता है सो उन्हें जला देगा सेनाओं  
 का परमेश्वर कहता है और उन की न जड़ न डाली छोड़ेगा ॥

परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम से डरते हो धर्म का मूर्ख उदय होगा और २  
 उस के डैनों के तले चढ़ाई होगी और तुम निकलोगे और घान के बड़ों की  
 नाईं बढ़ेंगी । और तुम दुष्टों को लताड़ोगे क्योंकि जिस दिन कि मैं यह कहूँगा ३  
 वे तुम्हारे प्राय के तलयों के नीचे राख होंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

मेरे सेवक मूसा की व्यवस्था को जो मैं ने सारे इसराएल के लिये धरिय में ४  
 आज्ञा किई अर्थात् विधि और न्यायों का स्मरण करो ॥

देखो परमेश्वर के बड़े और भयङ्कर दिन के आने से आगे मैं इलियाह ५  
 भविष्यवक्ता को तुम्हारे पास भेजूँगा । और वह पित्रों के मन को पुत्रों की और ६  
 और पुत्रों के मन को उन के पित्रों की और फेरेंगा न हो कि मैं आज और देश  
 को साप से नाश करूँ ॥



धर्मपुस्तक का अन्त भाग ।

अर्थात्

मत्ती और मार्क और लूक और योहान रचित

प्रभु यीशु ख्रीष्ट का सुसमाचार ।

और

प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त ।

और

धर्मापदेश और भविष्यद्वाक्य की पत्रियां ।

जो

यूनानी भाषा से हिन्दी में किये गये हैं ।

---

THE  
NEW TESTAMENT,  
IN HINDI.

---

ALLAHABAD:

REPRINTED AT THE MISSION PRESS FROM THE BAPTIST  
MISSION PRESS EDITION (WITH ALTERATIONS)  
FOR THE NORTH INDIA BIBLE SOCIETY.

1896.





# मत्ती रचित सुसमाचार ।

पटिला पर्व ।

इब्राहीम के सन्तान दाऊद के सन्तान यीशु ख्रीष्ट की वंशावलि । इब्राहीम १  
का पुत्र इसहाक इसहाक का पुत्र याकूब याकूब के पुत्र यिहूदा और उस के भाई २  
हुए । तामर से यिहूदा के पुत्र पेरम और जेरह हुए पेरम का पुत्र हिमोन हिमोन का ३  
पुत्र अराम । अराम का पुत्र अम्मीनादब अम्मीनादब का पुत्र नहशोन नहशोन का ४  
पुत्र सलमोन । राहव से सलमोन का पुत्र वोअस हुआ रत से वोअस का पुत्र ५  
ओवेद हुआ ओवेद का पुत्र यिशी । यिशी का पुत्र दाऊद राजा जरियाह की ६  
विधवा से दाऊद राजा का पुत्र सुलेमान हुआ । सुलेमान का पुत्र रिहबुआम रिह- ७  
बुआम का पुत्र अविषाह अविषाह का पुत्र आमा । आमा का पुत्र यिहोशाफट ८  
यिहोशाफट का पुत्र यिहोरम यिहोरम का सन्तान उज्जियाह । उज्जियाह का पुत्र ९  
योथम योथम का पुत्र आहस आहस का पुत्र जिजकियाह । जिजकियाह का पुत्र १०  
मनस्सी मनस्सी का पुत्र आमोन आमोन का पुत्र योशियाह । बाबुल नगर को ११  
जाने के समय में योशियाह के सन्तान यिखनियाह और उस के भाई हुए । बाबुल १२  
को जाने के पीछे यिखनियाह का पुत्र शलतियन शलतियन का पुत्र जिन्दाबुल ।  
जिन्दाबुल का पुत्र अबीहूद अबीहूद का पुत्र इलियाकीम इलियाकीम का पुत्र १३  
असेर । असेर का पुत्र सादोक सादोक का पुत्र आखीम आखीम का पुत्र इली- १४  
हूद । इलीहूद का पुत्र इलियाजर इलियाजर का पुत्र सन्तान सन्तान का पुत्र १५  
याकूब । याकूब का पुत्र यूसफ जो मरियम का स्वामी था जिस से यीशु जो ख्रीष्ट १६  
कहावता है उत्पन्न हुआ । सो मय पीढ़ियां इब्राहीम से दाऊद लों चौदह पीढ़ी १७  
और दाऊद से बाबुल को जाने लों चौदह पीढ़ी और बाबुल को जाने के समय १८  
से ख्रीष्ट लों चौदह पीढ़ी थीं ॥

यीशु ख्रीष्ट का जन्म इस रीति से हुआ . उस की माता मरियम की यूसफ १९  
से संगती हुई थी पर उन के एकट्टे होने के पीछे वह देख पड़ी कि पवित्र  
आत्मा से गर्भवती है । तब उस के स्वामी यूसफ ने जो धर्मी मनुष्य था और २०  
उस पर प्रगट में फलक लगाने नहीं चाहता था उसे चुपके से त्यागने की इच्छा  
किई । जब वह इन बातों की चिन्ता करता था देखो परमेश्वर के एक दूत ने २१  
स्वप्न में उसे दर्शन दे कहा है दाऊद के सन्तान यूसफ तू अपनी स्त्री मरियम  
को अपने यहां लाने से मत डर क्योंकि उस को जो गर्भ रहा है सो पवित्र  
आत्मा से है । वह पुत्र जनेगी और तू उस का नाम यीशु रखना क्योंकि वह २२  
अपने लोगों को उन के पापों से बचावेगा । यह सब इस लिये हुआ कि जो २३  
वचन परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा मे कहा था सो पूरा होवे . कि देखो २४  
कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और वे उस का नाम इस्मानुएल रखेंगे  
जिस का अर्थ यह है ईश्वर हमारे संग । तब यूसफ ने नौद से उठके जैसा २५  
परमेश्वर के दूत ने उसे आज्ञा दिई थी वैसा किया और अपनी स्त्री को अपने

२५ यहाँ लाया । परन्तु जब लो वरु अपना पहिलीठा पुत्र न बनो तब लो उस को न जाना और उस ने उस का नाम यीशु रखा ॥

दूसरा पृष्ठ ।

- १ हेरोद राजा के दिनों में यह यहूदिया देश के बैतलहम नगर में यीशु का जन्म
- २ हुआ तब देखो पृष्ठ में कितने ज्योतिषी यिस्सलीम नगर में आये . और बोले
- ३ यहूदियों का राजा जिन का जन्म हुआ है कहाँ है क्योंकि हम ने पृष्ठ में उस
- ४ का तारा देखा है और उस को प्रणाम करने आये हैं । यह सुनके हेरोद राजा
- ५ और उस के साथ तारे यिस्सलीम के निवासी चले गये । और उस ने लोगों के
- ६ साथ प्रधान याजकों और अध्यापकों को एकत्र कर उन से पूछा खोजो कहाँ जन्मेगा ।
- ७ उन्हें ने उस से कहा यहूदिया के बैतलहम नगर में क्योंकि भविष्यवक्ता के द्वारा
- ८ यह लिखा गया है . कि हे यहूदा देश के बैतलहम नृ किमी रीति से यहूदा की
- ९ राजधानियों में सत्र मे कोटी नहीं है क्योंकि तुम में से एक अधिपति निकलेगा
- १० जो मेरे दर्यायेनी लोग का चरघारा होगा । यह हेरोद ने ज्योतिषियों को चुपके
- ११ से बुलाके उन्हें यह से पूछा कि तारा किस समय दिखाई दिया । और उस ने
- १२ यह कहेके उन्हें बैतलहम भेजा कि जाके उस बालक के विषय में यह से पूछो
- १३ और जब उसे पाया तब सुनके मन्त्रेण देखा कि मैं भी आके उस को प्रणाम करूँ ।
- १४ वे राजा की सुनके चले गये और देखो जो तारा उन्हें ने पृष्ठ में देखा था सो
- १५ उन के आगे आगे चला यहाँ लो कि जहाँ बालक था उस के स्थान के ऊपर
- १६ पांखके ठहर गया । वे उस तारे को देखके अत्यन्त आनन्दित हुए । और घर
- १७ में पहुँचके उन्होंने ने बालक को उस की माता मरियम के संग देखा और दबडबत
- १८ कर उसे प्रणाम किया और अपनी मर्यादा खालके उस को मोना और सोखान
- १९ और गन्धरम भेंट चढ़ाई । और स्वप्न में ईश्वर ने यह आज्ञा पाके कि हेरोद के
- २० पास मत फिर जाओ ये हमरे मार्ग से अपने देश को चले गये ॥
- २१ उन के जाने के पीछे देखा परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दर्शन
- २२ दे कहा उठ बालक और उस की माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा और
- २३ जब लो मैं तुम्हें न कहूँ तब लो वहीं रह क्योंकि हेरोद नाश करने के लिये बालक
- २४ को ढूँढेगा । यह उठ रात ही को बालक और उस की माता को लेकर मिस्र को
- २५ चला गया . और हेरोद के मरने लो वहीं रहा कि जो यवन परमेश्वर ने
- २६ भविष्यवक्ता के द्वारा से कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिस्र में से बुलाया
- २७ सो पूरा होवे ॥
- २८ जब हेरोद ने देखा कि ज्योतिषियों ने सुन से ठट्ठा किया है तब अति क्रोधित
- २९ हुआ और लोगों को भेजके जिस समय को उस ने ज्योतिषियों से यह से पूछा था
- ३० उस समय के अनुसार बैतलहम में और उस के सारे सिंघानों में के सत्र बालकों
- ३१ को जो दो बरस के और दो बरस से छोटे थे मरवा डाला । तब जो यवन
- ३२ यिरमियाह भविष्यवक्ता ने कहा था सो पूरा हुआ . कि रामा नगर में एक शब्द
- अर्थात् हाहाकार और रोना और खड़ा विलाप सुना गया राहिल अपने बालकों
- के लिये रोती थी और शान्त होने न चाहती थी क्योंकि वे नहीं हैं ॥

हेरोद के मरने के पीछे देखो परमेश्वर के एक दूत ने मिसर में यूसफ को १८  
 स्वप्न में दर्शन दे कहा . उठ बालक और उस की माता को लेकर इजायेल देश २०  
 को जा क्योंकि जो लोग बालक का प्राण लेने चाहते थे सो मर गये हैं । तब २१  
 वह उठ बालक और उस की माता को लेकर इजायेल देश में आया । परन्तु अब २२  
 उस ने सुना कि अखिलाय अपने पिता हेरोद के स्थान में यिहूदिया का राजा  
 हुआ है तब वहाँ जाने से डरा और स्वप्न में ईश्वर ने आकाश पाके गालील  
 के स्थानों में गया . और नासरत नाम एक नगर में आके आस किया कि २३  
 जो वचन भविष्यवृत्ताओं से कहा गया था कि वह नासरी कहावेगा सो  
 पूरा होवे ।

### तीसरा पर्व ।

उन दिनों में योहन बपतिस्मा देनेवाला आके यिहूदिया के जंगल में उपदेश १  
 करने लगा . और कहने लगा कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट २  
 आया है । यह वही है जिस के विषय में यिर्ज्याह भविष्यवृत्ता ने कहा किनी का ३  
 शब्द हुआ सो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ बनाओ उस के राज-  
 मार्ग सीधे करो । इस योहन का वस्त्र ऊँट के रोम का था और उस की कटि ४  
 में चमड़े का पटुका बाँधा था और उस का भोजन टिट्टियाँ और घन मधु था ।  
 तब यिहूदियों के और सारे यिहूदिया के और यर्दन नदी के आसपास सारे देश ५  
 के रहनेवाले उस पास निकल आये . और अपने अपने पापों को मानके यर्दन में ६  
 उस से बपतिस्मा लिया ।

जब उस ने बहुतरे फरीशियों और सद्बुद्धियों को उस से बपतिस्मा लेने को ७  
 आते देखा तब उन से कहा हे साँपों के बंश किस ने तुम्हें आनेवाले क्रोध से ८  
 भागने को बिताया है । पश्चात्ताप के योग्य फल लाओ । और अपने अपने मन ९  
 में यह चिन्ता मत करो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता १०  
 हूँ कि ईश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये मन्तान उत्पन्न कर सकता है । और ११  
 अब भी कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल  
 नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता है । मैं तो तुम्हें १२  
 पश्चात्ताप के लिये जल से बपतिस्मा देता हूँ परन्तु जो मेरे पीछे आता है सो  
 मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस की लूतियाँ उठाने के योग्य नहीं वह तुम्हें १३  
 ध्विज आत्मा से और आग से बपतिस्मा देगा । उस का मूष उस के हाथ में है १४  
 और वह अपना सारा खलिदान गुह्र करेगा और अपने गंछूँ को खत्ते में सकट्टा १५  
 करेगा परन्तु भूमी को उस आग से जो नहीं पुष्कती है जलावेगा ॥

तब यीशु योहन से बपतिस्मा लेने को उस पास गालील से यर्दन के तीर पर १६  
 आया । परन्तु योहन यह कहके उसे दर्जने लगा कि मुझे आप के हाथ से बप- १७  
 तिसमा लेना अवश्य है और क्या आप मेरे पास आते हैं । यीशु ने उस को उत्तर १८  
 दिया कि अब ऐसा होने दे क्योंकि इसी रीति से सब धर्म को पूरा करना हमें १९  
 चाहिये . तब उस ने होने दिया । यीशु बपतिस्मा लेके तुरन्त जल से ऊपर आया और २०  
 देखो उस की लिये स्वर्ग खुल गया और उस ने ईश्वर के आत्मा को फोस की २१

१७ भाई उत्तरते और अपने ऊपर आते देखा । और देखो यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूँ ॥

चौथा पट्टा ।

१ तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया कि शैतान से उस की परीक्षा किई  
२ जाय । वह चालीस दिन और चालीस रात उपवास करके पीछे भूखा हुआ ।  
३ तब परीक्षा करनेवाले ने उस पास आ कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो कह दे  
४ कि ये पत्थर रोटियां बन जायें । उस ने उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल  
५ रोटी से नहीं परन्तु हर एक बात से जो ईश्वर के मुख से निकलती है जीयेगा ।  
६ तब शैतान ने उस को पवित्र नगर में ले जाके मन्दिर के कलश पर खड़ा  
७ किया । और उससे कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने को नीचे गिरा  
८ क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने दूतों को आज्ञा देगा और वे तुझे  
९ हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांव में पत्थर पर चोट लगे । यीशु ने उस  
१० से कहा फिर भी लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कर ।  
११ फिर शैतान ने उसे एक अति ऊंचे पठ्यंत पर ले जाके उस को जगत के सब  
१२ राज्य और उन का विभव दिखाये । और उस से कहा जो तू दंडवत् कर मुझे  
१३ प्रणाम करे तो मैं यह सब तुझे देऊंगा । तब यीशु ने उस से कहा हे शैतान दूर  
१४ हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को प्रणाम कर और केवल  
१५ उसी की सेवा कर । तब शैतान ने उस को छोड़ा और देखो स्वर्गदूतों ने आ  
१६ उस की सेवा किई ॥

१७ जब यीशु ने सुना कि योहान बप्तिस्मा में डाला गया तब गालील को चला  
१८ गया । और नासरत नगर को छोड़के उस ने कफर्नाहूम नगर में जो समुद्र के  
१९ तीर पर जिब्रूलन और नप्ताली के वंशों के सिधानों में है आके वास किया । कि  
२० जो खचन यिशैयाह भविष्यवक्ता से कहा गया था सो पूरा होवे . कि जिब्रूलन  
२१ का देश और नप्ताली का देश समुद्र की ओर यर्दन के उस पार अन्यदेशियों का  
२२ गालील . जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्हें ने खड़ी ज्योति देखी और जो मृत्यु  
२३ के देश और छाया में बैठे थे उन पर ज्योति उदय हुई ॥

२४ उस समय से यीशु उपदेश करने और यह कहने लगा कि पश्चात्ताप करो  
२५ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है । यीशु ने गालील के समुद्र के तीर पर  
२६ फिरते हुए दो भाइयों को अर्थात् शिमोन को जो पितर कहावता है और उस के  
२७ भाई अन्द्रिय को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मकुवे थे । उस ने उन से  
२८ कहा मेरे पीछे आओ मैं तुम को मनुष्यों के मकुवे बनाऊंगा । वे तुरन्त जालों को  
२९ छोड़के उस के पीछे हो लिये । वहाँ से आगे बढ़के उस ने और दो भाइयों को  
३० अर्थात् जबदी के पुत्र याकूब और उस के भाई योहान को अपने पिता जबदी के  
३१ संग नाव पर अपने जाल सुधारते देखा और उन्हें बुलाया । और वे तुरन्त नाव  
३२ को और अपने पिता को छोड़के उस के पीछे हो लिये ॥

३३ तब यीशु सारे गालील देश में उन की सभाओं में उपदेश करता हुआ और  
३४ राज्य का सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगों में हर एक रोग और हर

सोने नीले धेंजनी और लाल और भीने बटे हुए सूती कपड़े से बना । यह चौकोर १६ दोहरा होवे उस की लंबाई एक गिन्ता और उस की चौड़ाई एक गिन्ता । और १० मणि की चार पांती उस में भर दे पहिनी पांती में मलिका पद्मराग और लालड़ी । और दूसरी पांती में मर्कत नीलमणि और हीरा । और तीसरी पांती १८ में लज्जम सूर्यकांत और नीलम । और चौथी पांती में वैदूर्य फीरोजा और अंशु- २० कांत वे सोने के ठिकाने में जड़े जावें । और वे मणि इसराएल के वंश के नामों २१ के समान होंगे उन के नामों के समान वारह वे वारह गोष्टी लों कापे के खादे हुए हर एक अपने अपने नाम के समान होंगे । और चपराम के ऊपर निर्मल सोने की २२ गुथी हुई सीकरें खूंट में बना । और चपराम पर सोने की दो कड़ियां बना और २३ उन्हें चपराम के दोनों खूंटों में लगा । और सोने की गुथी हुई सीकर उन दोनों २४ कड़ियों में दो चपराम के दोनों खूंटों में हैं लगा । और गुथी हुए दोनों के दोनों २५ खूंट उन के दो ठिकाने में जड़ और उन्हें स्फोद के कंधों पर आगे रख । और २६ सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें चपराम के दोनों अंतां पर उस के ऊपर पर जो भीतर स्फोद के सामने है रख । और सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें २७ स्फोद के नीचे दोनों अंतां में उस के आगे की और जोड़के सामने चित्रकारी के स्फोद के ऊपर रख । और वे चपराम को उस की कड़ियों में स्फोद की कड़ियों २८ में नीले गोटे से बांधें कि स्फोद के पटुके के ऊपर हों जिसमें चपराम स्फोद से न हटे । और दारुन नित्य परमेश्वर के आगे स्मरण के लिये जब वह पवित्र २९ स्थान में जावे इसराएल के संतानों के नान न्याय की चपराम पर अपनी छाती पर उठावे ॥

और तू करीम और हुम्मीम को न्याय की चपराम में रख वह दारुन की छाती ३० पर होंगे जब वह परमेश्वर के आगे जायगा और दारुन इसराएल के संतानों के न्याय को अपनी छाती पर परमेश्वर के आगे सदा लिये रहे ॥

और स्फोद का वागा सर्वत्र नीला बना । और उस के ऊपर उस के मध्य में एक ३१ छेद होवे और उस छेद की चारों ओर बिन हुए कार्य के गोटे हों जैसा किलम का मुंठ होता है जिसमें फटने न पावे । और उस के खूंट के घेरे में नीले और ३३ धेंजनी और लाल रंग के अनार बना और घेरे में सोने के घंटे उन के मध्य में बना । सोने का घंटा और अनार सोने का घंटा और अनार वागे के खूंटों के घेरे में । ३४ और मेघा के समय दारुन उसे पहिने और जब वह पवित्र स्थान में परमेश्वर के ३५ आगे जावे और जब निकले तब उस का शब्द सुना जायगा जिसमें वह मर न जाय ॥

और निर्मल सोने की एक पटरी बना और उस पर खादे हुए काप की नाईं ३६ खाद कि परमेश्वर के लिये पवित्रमय । और उसे नीले गोटे पर लगा जिसमें वह ३७ मुकुट पर होवे वह मुकुट पर आगे की ओर होगा । और वह दारुन के ललाट ३८ पर होय कि दारुन पवित्र वस्तुन के पापों को जिन्हें इसराएल के संतान अपनी समस्त पवित्र भेंटों में पवित्र करेंगे और वही उस के ललाट पर सदा हो जिसमें वे परमेश्वर के आगे ग्राह्य होवें ॥



- मैं तुम से कहता हूँ कि जो कोई अपने भाई से अकारण क्रोध करे सो विचार  
 स्थान में दंड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई से कहे कि रे तुच्छ सो  
 न्यायियों की सभा में दंड के योग्य होगा और जो कोई कहे कि रे मूर्ख सो  
 २३ नरक की आग के दंड के योग्य होगा । सो यदि तू अपना चढ़ावा खेदी पर  
 लावे और वहां स्मरण करे कि तेरे भाई के मन में तेरी ओर कुछ है तो अपना  
 २४ चढ़ावा वहां खेदी के सामने ढोड़के चला जा । पहिले अपने भाई से मिलाप  
 २५ कर तब आके अपना चढ़ावा चढ़ा । जब लों तू अपने मुढ़ई के संग मार्ग में  
 है उस से खेग मिलाप कर ऐसा न हो कि मुढ़ई तुम्हे न्यायी को सौंपे और न्यायी  
 २६ तुम्हे प्यादे को सौंपे और तू खन्दीगृह में डाला जाय । मैं तुम्ह से सब कहता हूँ  
 कि जब लों तू कौन्ही कौन्ही भर न देवे तब लों वहां से कूटने न पावेगा ।  
 २७ तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि परस्त्रीगमन मत  
 २८ कर । परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि जो कोई किसी स्त्री पर कुइच्छा से दृष्टि  
 २९ करे वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका है । जो तेरी दहिनी आंख  
 तुम्हे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे  
 अंगों में से एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरक में न डाला जाय ।  
 ३० और जो तेरा दहिना हाथ तुम्हे ठोकर खिलावे तो उसे काटके फेंक दे क्योंकि  
 तेरे लिये भला है कि तेरे अंगों में से एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर  
 नरक में न डाला जाय ॥  
 ३१ यह भी कहा गया कि जो कोई अपनी स्त्री को त्यागी सो उस को त्यागपत्र  
 ३२ देवे । परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि जो कोई व्यभिचार को ढोड़ और किसी  
 हेतु से अपनी स्त्री को त्यागी सो उस से व्यभिचार करवाता है और जो कोई  
 उस त्यागी हुई से विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है ॥  
 ३३ फिर तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि झूठी किरिया  
 ३४ मत खा परन्तु परमेश्वर के लिये अपनी किरियाओं को पूरी कर । परन्तु मैं  
 तुम से कहता हूँ कोई किरिया मत खाओ न स्वर्ग की क्योंकि वह ईश्वर का  
 ३५ सिंहासन है , न धरती की क्योंकि वह उस के चरणों की पीढ़ी है न यिब्रशलीम  
 ३६ की क्योंकि वह महा राजा का नगर है । अपने सिर की भी किरिया मत खा  
 ३७ क्योंकि तू एक बाल को उजला अथवा काला नहीं कर सकता है । परन्तु  
 तुम्हारी खातचीत हां हां नहीं नहीं होवे , जो कुछ इन से अधिक है सो उस  
 दुष्ट से होता है ॥  
 ३८ तुम ने सुना है कि कहा गया था कि आंख के बदले आंख और दांत के  
 ३९ बदले दांत । पर मैं तुम से कहता हूँ खुरे का साम्रा मत करो परन्तु जो कोई  
 ४० तेरे दहिने गाल पर थपेड़ा मारे उस को और दूसरा भी फेर दे । जो तुम्ह पर  
 ४१ नालिश करके तेरा अंग लेने चाहे उस को वोहर भी लेने दे । जो कोई तुम्हे  
 ४२ आध कोश बेगारी ले जाय उस के संग कोश भर चला जा । जो तुम्ह से मांगे  
 उस को दे और जो तुम्ह से अणु लेने चाहे उस से मुंह मत मोड़ ॥  
 ४३ तुम ने सुना है कि कहा गया था कि अपने पड़ोसी को प्यार कर और अपने

एक व्याघ्र को चंगा करता हुआ फिरा किया । उस की कीर्ति सब सुनिया देश २४ में भी फैल गई और लोग सब रोगियों को जो नाना प्रकार के रोगों और पीड़ाओं से दुःखी थे और मृत्युस्तों और मिर्गीदि और अर्द्धांगियों को उस पास लाये और उस ने उन्हें चंगा किया । और गालील और दिकापल और २५ पिच्छलीम और पिटूदिया से और यर्दन के उस पार से यड़ी वड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिये ॥

पाँचवां पर्व ।

यीशु भीड़ को देखके पर्वत पर चढ़ गया और जब वह बैठा तब उस के १ शिष्य उस पास आये । और वह अपना मुँह खोलके उन्हें उपदेश देने लगा ॥ २

धन्य वे जो मन में दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनकी है । धन्य वे ३ जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पावेंगे । धन्य वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथिवी ४ के अधिकारी होंगे । धन्य वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किये ५ जायेंगे । धन्य वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर दया किई जायगी । धन्य वे ६ जिन के मन शुद्ध हैं क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे । धन्य वे जो मेल करवैये हैं ७ क्योंकि वे ईश्वर के मन्तान कहावेंगे । धन्य वे जो धर्म के कारण मताये जाते १० हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनकी है । धन्य तुम हो जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी ११ निन्दा करें और तुम्हें मतावें और भूठ बोलते हुए तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की घुरी घात करें । आनन्दित और आह्लादित होओ क्योंकि तुम स्वर्ग में बहुत फल १२ पाओगे, उनकी ने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से आगे थे इसी रीति से मताया ॥

तुम पृथिवी के लोग हो परन्तु यदि लोग का स्वाद बिगड़ जाय तो वह १३ किस से लोगा किया जायगा, वह तब से किसी काम का नहीं केवल दाहर फेंके जाने और मनुष्यों के पाँवों से रेंदे जाने के योग्य है । तुम जगत के प्रकाश हो, १४ जो नगर पहाड़ पर बसा है सो छिप नहीं सकता । और लोग दीपक को धारके १५ वर्तन के नीचे नहीं परन्तु दीपक पर रखते हैं और वह सबों को जो घर में हैं ज्योति देता है । वैसेही तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के आगे चमके इस लिये कि वे १६ तुम्हारे भले कामों को देखके तुम्हारे स्वर्गवासी पिता का गुणानुवाद करें ॥

मत समझो कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यद्वक्ताओं का पुस्तक लेप करने १७ को आया हूँ मैं लेप करने को नहीं परन्तु पूरा करने को आया हूँ । क्योंकि मैं १८ तुम से सब कहता हूँ कि जब लो आकाश और पृथिवी टल न जायें तब लो व्यवस्था से एक मात्रा अथवा एक बिन्दु बिना पूरा हुए नहीं टलेगा । इस १९ लिये जो कोई इन अति छोटी आत्माओं में से एक को लेप करे और लोगों को वैसेही सिखावे वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहावेगा परन्तु जो कोई उन्हें पालन करे और सिखावे वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहावेगा । मैं तुम से २० कहता हूँ यदि तुम्हारा धर्म अध्यापकों और फरीणियों के धर्म से अधिक न होवे तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे ॥

तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि नरहिंसा मत कर २१ और जो कोई नरहिंसा करे सो विचारस्थान में बँड के योग्य होगा । परन्तु २२

१८ सिर पर तेल मल और अपना मुंह धो . कि तू मनुष्यों को नहीं परन्तु अपने पिता को जो गुप्त में है उपधासी दिखाई देवे और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रगट में फल देगा ।

१९ अपने लिये पृथिवी पर धन का संचय मत करो जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर संध देते और चुराते हैं । परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन का संचय करो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ता है और जहां चोर न संध देते न चुराते हैं । क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा । २२ शरीर का दीपक आंख है इस लिये यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सकल २३ शरीर उजियाला होगा । परन्तु यदि तेरी आंख धुरी हो तो तेरा सकल शरीर अंधियारा होगा . जो ज्योति तुझ में है सो यदि अंधकार है तो वह अंधकार कैसा बड़ा है । कोई मनुष्य दो स्त्रियों की सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एक से दूर करेगा और दूसरे को प्यार करेगा अथवा एक से लगा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा . तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हो । २५ इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण के लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे और क्या पीयेंगे और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिरेंगे . क्या भोजन २६ से प्राण और वस्त्र से शरीर बड़ा नहीं है । आकाश के पंक्तियों को देखो . वे न खाते हैं न लवते हैं न खेतों में घटोरते हैं तौ भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन २७ को पालता है . क्या तुम उन से बड़े नहीं हो । तुम में से कौन मनुष्य चिन्ता करने से अपनी आयु को दौड़ को एक दाय भी बढ़ा सकता है । और तुम वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो . खेत के सोसन फूलों को देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . २९ वे न परिश्रम करते हैं न कातते हैं । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि सुलेमान भी ३० अपने सारे विभव में उन में से एक के तुल्य विभूषित न था । यदि ईश्वर खेत की घास को जो आज है और कल चूल्हे में भोंकी जायगी ऐसी विभूषित करता है तो हे अल्प विश्वासियो क्या वह बहुत अधिक करके तुम्हें नहीं पहिरावेगा । ३१ सो तुम यह चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे अथवा क्या ३२ पहिरेंगे । देवपूजक लोग इन सब वस्तुओं का खोज करते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय ३३ पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं का प्रयोजन है । पहिले ईश्वर के राज्य और उस के धर्म का खोज करो तब यह सब वस्तु भी तुम्हें दिई जायेंगी । ३४ सो कल के लिये चिन्ता मत करो क्योंकि कल अपनी वस्तुओं के लिये आप ही चिन्ता करेगा . हर एक दिन के लिये उसी दिन का दुःख बहुत है ।

सातवां पृष्ठ ।

१ दूसरों का विचार मत करो कि तुम्हारा विचार न किया जाय । क्योंकि जिस विचार से तुम विचार करते हो उसी से तुम्हारा विचार किया जायगा ३ और जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जायगा । जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे तू क्यों देखता है और तेरे ही नेत्र में का लट्टा तुझे ४ नहीं सूझता । अथवा तू अपने भाई से क्योंकर कहेगा रहिये मैं तेरे नेत्र से यह ५ तिनका निकालूं और देख तेरे ही नेत्र में लट्टा है । हे कपटी पहिले अपने नेत्र

देगी मे और कर । परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि अपने देवियों को प्यार करो । जो ४४  
 तुम्हें साप देवे उन को आशीर्वाद देओ जो तुम से और करें उन से भलाई करो और  
 जो तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें मतावे उन के लिये प्रार्थना करो । किन्तु तुम ४५  
 अपने स्वर्गावासी पिता के समान होओ क्योंकि यह धुरे और भले लोगों पर अपना  
 सूर्य उदय करता है और धर्मियों और अधर्मियों पर मँह बरमाता है । जो तुम ४६  
 उन से प्रेम करो जो तुम से प्रेम करते हैं तो क्या फल पाओगे , क्या कर उगाड़नेवाले  
 भी ऐसा नहीं करते हैं । और जो तुम केवल अपने भाइयों को नमस्कार करो तो ४७  
 कौन सा बड़ा काम करते हो , क्या कर उगाड़नेवाले भी ऐसा नहीं करते हैं । जो ४८  
 जैसा तुम्हारा स्वर्गावासी पिता विद्व है तैसे तुम भी विद्व होओ ।

छठवां पटल ।

मन्त्रेय रटो कि तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये उन के आगे अपने धर्म के कार्य १  
 न करो नहीं तो अपने स्वर्गावासी पिता से कुछ फल न पाओगे ॥

इस लिये जब तू दान करे तब अपने आगे तुम्हारी मत बज्जया जैसा कपटी २  
 लोग सभा के घरे और मार्गों में करते हैं कि मनुष्य उन की बड़ाई करें , मैं  
 तुम से मन्त्र कहता हूँ वे अपना फल पा चुके हैं । परन्तु जब तू दान करे तब ३  
 तेरा दाहिना हाथ जो कुछ करे सो तेरा बायां हाथ न जाने , कि तेरा दान गुप्त ४  
 में होय और तेरा पिता जो गुप्त में देयता है आप ही तुम्हें प्रगट में फल देगा ॥

जब तू प्रार्थना करे तब कपटियों के समान मत हो क्योंकि मनुष्यों को दिखाने ५  
 के लिये सभा के घरे में और सड़कों के कोनों में गड़े छोके प्रार्थना करना उन  
 को प्रिय लगता है , मैं तुम से मन्त्र कहता हूँ वे अपना फल पा चुके हैं । परन्तु ६  
 जब तू प्रार्थना करे तब अपनी कोठरी में जा और द्वार मून्दके अपने पिता से  
 जो गुप्त में है प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्त में देयता है तुम्हें प्रगट में ७  
 फल देगा । प्रार्थना करने में दैवपूजकों की नाई बहुत व्यर्थ बातें मत बोलो ८  
 करो क्योंकि वे समझते हैं कि हमारे बहुत बोलने से हमारी सुनी जायगी । जो ९  
 तुम उन के समान मत होओ क्योंकि तुम्हारे मांगने के पहिले तुम्हारा पिता  
 जानता है तुम्हें क्या क्या आवश्यक है । तुम इस रीति से प्रार्थना करो , हे हमारे १०  
 स्वर्गावासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय , तेरा राज्य आये तेरी इच्छा जैसे ११  
 स्वर्ग में जैसे पृथिवी पर पूरी होय , हमारी दिन भर की रोटो आल हमें दे , १२  
 और जैसे हम अपने ऋणियों को क्षमा करते हैं तैसे हमारे ऋणों को क्षमा कर , १३  
 और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से बचा [क्योंकि राज्य और पराक्रम और १४  
 महिमा सदा तेरे हैं , आमीन] ॥

जो तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें भी १४  
 क्षमा करेगा । परन्तु जो तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता १५  
 भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा ॥

जब तुम उपवास करो तब कपटियों के समान उदास रूप मत होओ क्योंकि १६  
 वे अपने मुँह सलीन करते हैं कि मनुष्यों को उपवासी दिखाई देवे , मैं तुम से  
 मन्त्र कहता हूँ वे अपना फल पा चुके हैं । परन्तु जब तू उपवास करे तब अपने १७

२८ जब यीशु यह बातें कह चुका तब लोग उस के उपदेश से आकर्षित हुए ।  
 २९ क्योंकि उस ने अध्यापकों की रीति से नहीं परन्तु अधिकारी की रीति से उन्हें  
 उपदेश दिया ॥

आठवां पट्य ।

१ जब यीशु उस पट्यत से उतरा तब बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई । और  
 देखो एक कोढ़ी ने आ उस को प्रणाम कर कहा हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे  
 ३ शुद्ध कर सकते हैं । यीशु ने हाथ बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो चाहता हूँ शुद्ध हो  
 ४ जा । और उस का कोढ़ तुरन्त शुद्ध हो गया । तब यीशु ने उस से कहा देख  
 किसी से मत कह परन्तु आ अपने सबेँ याजक को दिखा और जो चढ़ाया मूसा  
 ने ठहराया उसे लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा ॥

५ जब यीशु ने कफर्नाटुम में प्रवेश किया तब एक शतपति ने उस पास आ उस  
 ६ से खिन्ती किई . कि हे प्रभु मेरा सेवक घर में अर्द्धांग रोग से अति पीड़ित पड़ा  
 ७ है । यीशु ने उस से कहा मैं आके उसे चंगा करेगा । शतपति ने उत्तर दिया कि  
 ८ हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर में आवें पर यवन मात्र भी कहिये  
 ९ तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा । क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूँ और घोड़ा मेरे  
 १० बट आता है और अपने दास को बट कर तो बट करता है । यह सुनके यीशु ने  
 आचंभा किया और जो लोग उस के पीछे से आते थे उन से कहा मैं तुम से सब  
 ११ कहता हूँ कि मैं ने इसायेली लोगों में भी ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया है । और  
 मैं तुम से कहता हूँ कि बहुतरे लोग पूर्व और पश्चिम से आके इब्राहीम और  
 १२ इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे । परन्तु राज्य के सन्तान  
 १३ बाहर के अधिकार में डाले जायेंगे जहां रोना और दांत पीसना होगा । तब यीशु  
 ने शतपति से कहा जाइये जैसा तू ने विश्वास किया है वैसेही तुम्हें होवे और  
 उस का सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया ॥

१४ यीशु ने पितर के घर में आके उस की सास को पढ़ी हुई और उबर से पीड़ित  
 १५ देखा । उस ने उस का हाथ छूआ और उबर ने उस को छोड़ा और वह उठके  
 उन की सेवा करने लगी ॥

१६ सांभ को लोग बहुत से भूतगुस्तीं को उस पास लाये और उस ने बचन ही से  
 १७ भूतों को निकाला और सब रोगियों को चंगा किया . कि जो बचन यिशैयाह  
 भविष्यद्वक्ता से कहा गया था कि उस ने हमारी दुर्बलताओं को ग्रहण किया और  
 रोगों को उठा लिया सो पूरा होवे ॥

१८ यीशु ने अपने आसपास बड़ी भीड़ देखके उस पार जाने की आज्ञा किई । और  
 एक अध्यापक ने आ उस से कहा हे गुरु जहां जहां आप जायें तहां मैं आप के पीछे  
 २० चलूंगा । यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों को मांर्दे और आकाश के पंक्षियों को बसेरे हैं  
 २१ परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर रखने का स्थान नहीं है । उस के शिष्यों में से दूसरे ने  
 २२ उस से कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिता को गाड़ने दीजिये । यीशु ने उस  
 से कहा तू मेरे पीछे हो ले और मृतकों को अपने मृतकों को गाड़ने दे ॥

से लट्टा निकाल दे तब तू अपने भाई के नेत्र से तिनका निकालने को अच्छी रीति से देखेगा । प्रिय धन्तु कुनों को मत देखा और अपने मोतियों को सूत्रों के आगे मत फेंको ऐसा न हो कि वे उन्हें अपने पांयों से रौंदें और फिरके तुम को फाड़ डालें ॥

सांगो नो तुम्हें दिया जायगा ठूँढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खाला जायगा । क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूँढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है उस के लिये खाना जायगा । तुम मैं से कौन मनुष्य है कि यदि उस का पुत्र उस से रोटी मांगे तो उस को पत्थर देगा । और जो वह मछली मांगे तो क्या वह उस को माँप देगा । सो यदि तुम दूरे होके अपने लड़कों को अच्छे दान देने जानते हो तो किनना अधिक करके तुम्हारा स्वर्गवासि पिता उन्हें को जो उस से मांगते हैं उत्तम धन्तु देगा । जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम से करें तुम भी उन से वैसाही करो क्योंकि यही उपव्या और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक का मार है ॥

मकत फाटक से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और साकर है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है और बहुत हैं जो उस से घैठते हैं । वह फाटक कैसा मकत और वह मार्ग कैसा सकरा है जो जीवन को पहुँचाता है और छोड़े हैं जो उसे पाते हैं ॥

मूठे भविष्यद्वक्ताओं से चौकस रहे जो भेड़ों के भेप में तुम्हारे पास आते हैं परन्तु अन्तर में लुटेर हुंड़ार हैं । तुम उन के फलों से उन्हें पहचानोगे । क्या मनुष्य कांटी के पेड़ से दाय्य अथवा जंटकटारे से गूलर तोड़ते हैं । वही रीति से हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल फलता है और निरुक्ता पेड़ दूरा फल फलता है । अच्छा पेड़ दूरा फल नहीं फल सकता है और न निरुक्ता पेड़ अच्छा फल फल सकता है । जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता है । सो तुम उन के फलों से उन्हें पहचानोगे ॥

हर एक जो मुक्त से है प्रभु है प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गवासि पिता की इच्छा पर चलता है । उस दिन मैं बहुतरे मुक्त से कहूँगा है प्रभु है प्रभु क्या हम ने आप के नाम से भविष्यद्वक्ता नहीं कहा और आप के नाम से भूत नहीं निकाले और आप के नाम से बहुत आश्चर्य कर्म नहीं किये । तब मैं उन से खोलके कहूँगा मैं ने तुम को कभी नहीं जाना है कुकर्म करनेवाले मुक्त से दूर होओ ॥

इस लिये जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं उस की उपमा एक बुद्धिमान मनुष्य से दूँगा जिस ने अपना घर पत्थर पर बनाया । और मैं दारवा और बाढ़ आई और आंधी चली और उस घर पर लगी पर वह नहीं गिरा क्योंकि उस की नेत्र पत्थर पर डाली गई थी । परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन न करे उस की उपमा एक निर्बुद्धि मनुष्य से दीई जायगी जिस ने अपना घर बालू पर बनाया । और मैं दारवा और बाढ़ आई और आंधी चली और उस घर पर लगी और वह गिरा और उस का बड़ा पतन हुआ ॥



सीखा कि मैं दया को चाहता हूँ बलिदान को नहीं . क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूँ ॥

१४ तब योहान के शिष्यों ने उस पास आ कहा हम लोग और फरीशी लोग  
१५ क्यों बार बार उपवास करते हैं परन्तु आप के शिष्य उपवास नहीं करते । यीशु  
ने उन से कहा जब लो दूल्हा सखाओं के संग रहे तब लो क्या वे शोक कर  
सकते हैं . परन्तु वे दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब  
१६ वे उपवास करेंगे । कोई मनुष्य कोरे कपड़े का टुकड़ा पुराने बस्त्र में नहीं  
लगाता है क्योंकि वह टुकड़ा बस्त्र से कुछ और भी फाड़ लेता है और उस का  
१७ फटा बड़ जाता है । और लोग नया दाख रस पुराने कुप्पो में नहीं भरते नहीं  
तो कुप्पो फट जाते हैं और दाख रस बह जाता है और कुप्पो नष्ट होते हैं .  
परन्तु नया दाख रस नये कुप्पो में भरते हैं और दोनों की रक्षा होती है ॥

१८ यीशु उन से यह बात कहता ही था कि देखो एक अध्यक्ष ने आके उस को  
प्रणाम कर कहा मेरी बेटी अभी मर गई परन्तु आप आके अपना हाथ उस  
१९ पर रखिये तो वह जीयेगी । तब यीशु उठके अपने शिष्यों समेत उस के पीछे  
हो लिया ।

२० और देखो एक स्त्री ने जिस का बारह बरस से लोहू बहता था पीछे से  
२१ आ उस के बस्त्र के आंचल को छूआ । क्योंकि उस ने अपने मन में कहा यदि  
२२ मैं केवल उस के बस्त्र को छूआं तो चंगी हो जाऊंगी । यीशु ने पीछे फिरके  
उसे देखके कहा हे पुत्री ठाढ़स कर तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है . सो  
वह स्त्री उसी घड़ी से चंगी हुई ।

२३ यीशु ने उस अध्यक्ष के घर पर पहुंचके बजानियों को और बहुत लोगों को  
२४ धूम मचाते देखा . और उन से कहा अलग जाओ कन्या मरी नहीं पर सोती  
२५ है . और वे उस का उपहास करने लगे । परन्तु जब लोग बाहर किये गये  
२६ तब उस ने भीतर जा कन्या का हाथ पकड़ा और वह उठी । यह कीर्ति उस  
सारे देश में फैल गई ।

२७ जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तब दो अंधे पुकारते और यह कहते हुए उस  
२८ के पीछे हो लिये कि हे दाऊद के सन्तान हम पर दया कीजिये । जब वह घर  
में पहुंचा तब वे अंधे उस पास आये और यीशु ने उन से कहा क्या तुम विश्वास  
२९ करते हो कि मैं यह काम कर सकता हूँ . वे उस से बोले हां प्रभु । तब उस  
३० ने उन की आंखें छूके कहा तुम्हारे विश्वास के समान तुम को होवे । इस पर  
उन की आंखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें चित्ताके कहा देखो कोई इस को न  
३१ जाने । तौभी उन्होंने ने बाहर जाके उस सारे देश में उस की कीर्ति फैलाई ॥

३२ जब वे बाहर जाते थे देखो लोग एक भूतग्रस्त गूंगे मनुष्य को यीशु पास  
३३ लाये । जब भूत निकाला गया तब गूंगा बोलने लगा और लोगों ने अचंभा कर  
३४ कहा इसायेल में ऐसा कभी न देखा गया । परन्तु फरीशियों ने कहा वह भूतों  
के प्रधान की सहायता से भूतों को निकालता है ।

३५ तब यीशु सब नगरों और गांवों में उन की सभाओं में उपदेश करता हुआ

जब यह नाथ पर चढ़ा तब उस के शिष्य उस के पीछे हो लिये । और देखो २३  
समुद्र में ऐसे बड़े हिलकौरे उठे कि नाथ लहरों से डूब जाती थी परन्तु यह सोता २४  
था । तब उस के शिष्यों ने उस पास आके उसे जगाके कहा है प्रभु हमें बचाइये २५  
हम नष्ट होते हैं । उस ने उन से कहा है अल्प विश्वासियों क्यों डरते हो . तब २६  
उस ने उठके व्यापार और समुद्र को डांटा और यह नोया हो गया । और ये २७  
लोग अचंभा करके बोले यह कैसा मनुष्य है कि व्यापार और समुद्र भी उस की  
आज्ञा मानते हैं ।

जब यीशु उस पार गिराशियों के देश में पहुँचा तब दो भूतग्रस्त मनुष्य २८  
कयरस्थान में से निकलते हुए उस से आ मिले जो यहाँ लों अति प्रचंड थे कि  
उस मार्ग से कोई नहीं जा सकता था । और देखो उन्होंने चिल्लाके कहा है २९  
यीशु ईश्वर के पुत्र आप को हम से क्या काम . क्या आप समय के आगे हमें  
पीड़ा देने को यहाँ आये हैं । बहुत से सूअरों का झुंड उन से कुछ दूर चरता ३०  
था । सो भूतों ने उस से यिन्ती कर कहा जो आप हमें निकालते हैं तो सूअरों के ३१  
झुंड में पैठने दीजिये । उस ने उन से कहा जाओ और ये निकलके सूअरों के झुंड ३२  
में बैठे और देखो सूअरों का सारा झुंड कड़ाड़े पर से समुद्र में दौड़ गया और पानी  
में डूब मरा । पर चरवाहे भागें और नगर में जाके सब बातें और भूतग्रस्तों की ३३  
कथा भी सुनाई । और देखो सारे नगर के लोग यीशु में भेंट करने को निकले ३४  
और उस को देखके यिन्ती किहं कि हमारे सिधानों से निकल जाइये ॥

नया पर्व ।

यीशु नाथ पर चढ़के उस पार जाके अपने नगर में पहुँचा ॥

देखो लोग एक अर्द्धांगी को खाट पर पड़े हुए उस पास लाये और यीशु ने २  
उन्हें का विश्वास देखके उस अर्द्धांगी से कहा है पुत्र ठाकुर कर तेरे पाप क्षमा  
किये गये हैं । तब देखो कितने अध्यापकों ने अपने अपने मन में कहा यह तो ३  
ईश्वर की निन्दा करता है । यीशु ने उन के मन की बातें जानके कहा तुम ४  
लोग अपने अपने मन में क्यों दुर्ग चिन्ता करते हो । कौन बात सच है यह ५  
कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ और चल ।  
परन्तु जिसने तुम जाना कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का ६  
अधिकार है (तब उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) उठ अपनी खाट उठाके अपने  
घर को जा । यह उठके अपने घर को चला गया । लोगों ने यह देखके अचंभा ७  
किया और ईश्वर की स्तुति किहं जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया ॥

यहाँ से आगे चढ़के यीशु ने एक मनुष्य को कर उगाधने के स्थान में बैठे ८  
देखा जिस का नाम सती था और उस से कहा मेरे पीछे आ . तब यह उठके  
उस के पीछे हो लिया । जब यीशु घर में भोजन पर बैठा तब देखो बहुत कर ९  
उगाधनेवाले और पापी लोग आ उस के और उस के शिष्यों के संग बैठ गये ।  
यह देखके फरीशियों ने उस के शिष्यों से कहा तुम्हारा गुरु कर उगाधनेवालों १०  
और पापियों के संग क्यों खाता है । यीशु ने यह सुनके उन से कहा निरोगियों ११  
को वैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को । तुम जाके इस का अर्थ १२

२३ स्थिर रहे मोर्ह आग पावेगा । अब ये तुम्हें एक नगर में बतायें तब दूसरे में  
 भाग जाओ । मैं तुम से सत्य कहता हूँ तुम इयाबेल के सब नगरों में नहीं फिर  
 २४ चुकोगे कि उतने में मनुष्य का पुत्र आवेगा । शिष्य गुरु से बड़ा नहीं है और  
 २५ न दास अपने स्वामी से । यही यहुत है कि शिष्य अपने गुरु के तुल्य और दास  
 अपने स्वामी के तुल्य होवे । जो उन्हीं ने घर के स्वामी का नाम बालजिह्वल  
 २६ रखा है तो वे कितना अधिक फरके उस के घरवालों का वैसा नाम रखेंगे । सो  
 तुम उन से मत डरो क्योंकि कुछ कृपा नहीं है जो प्रगट न कृपा जायगा और  
 २७ न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा । जो मैं तुम से अधिपारे में कहता हूँ उसे  
 उंझियाले में कहो और जो तुम कानों में सुनते हो उसे कोठों पर से प्रचार करो ।  
 २८ उन से मत डरो जो शरीर को मार डालते हैं पर आत्मा को मार डालने  
 नहीं सकते हैं परन्तु उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश  
 २९ कर सकता है । क्या एक पैसे में दो गौरैया नहीं बिकतीं तौभी तुम्हारे पिता  
 ३० बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिरेगी । तुम्हारे सिर के बाल भी सब  
 ३१ गिने हुए हैं । इस लिये मत डरो तुम यहुत गौरैयाओं से अधिक मोल के हो ।  
 ३२ जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गवासी पिता के  
 ३३ आगे मान लेऊंगा । परन्तु जो कोई मनुष्यों के आगे मुझ से सुकरे उस से मैं  
 ३४ भी अपने स्वर्गवासी पिता के आगे सुकरूंगा । मत समझो कि मैं पृथिवी पर  
 मिलाप करवाने को आया हूँ मैं मिलाप करवाने को नहीं परन्तु खड्ग चलवाने  
 ३५ को आया हूँ । मैं मनुष्य को उस के पिता से और बेटी को उस की मां से और  
 ३६ पतोद्य को उस की मास से अलग करने आया हूँ । मनुष्य के घर ही के लोग  
 ३७ उस के बैरी होंगे । जो माता अथवा पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है  
 सो मेरे योग्य नहीं और जो पुत्र अथवा पुत्री को मुझ से अधिक प्रेम करता है  
 ३८ सो मेरे योग्य नहीं । और जो अपना क्रूश लेके मेरे पीछे नहीं आता है सो मेरे  
 ३९ योग्य नहीं । जो अपना प्राण पावे सो उसे खोवेगा और जो मेरे लिये अपना  
 ४० प्राण खोवे सो उसे पावेगा । जो तुम्हें ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है  
 ४१ और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है । जो  
 भविष्यद्वक्ता के नाम से भविष्यद्वक्ता को ग्रहण करे सो भविष्यद्वक्ता का फल  
 पावेगा और जो धर्मी के नाम से धर्मी को ग्रहण करे सो धर्मी का फल  
 ४२ पावेगा । जो कोई इन कोठों में से एक को शिष्य के नाम से केवल एक कठोरा  
 ठंडा पानी पिलावे मैं तुम से सब कहता हूँ वह किसी रीति से अपना फल  
 न खोवेगा ॥

संग्रहद्वय पृष्ठ ।

- १ अब यीशु अपने बारह शिष्यों को आज्ञा दे चुका तब उन के नगरों में शिष्या  
 और उपदेश करने को वहां से चला ।
- २ योहान ने बन्दीगृह में खीष्ट के कार्यों का समाचार सुनके अपने शिष्यों में से  
 ३ दो जनों को उस से यह कहने को भेजा । कि जो आनेवाला था सो क्या आपसी  
 ४ हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि जो कुछ तुम

और राज्य का सुमसाचार प्रचार करता हुआ और लोगों में हर एक रोग और हर एक व्याधि को चंगा करता हुआ फिर किया । जय उस ने बहुत लोगों को देखा तब उस को उन पर दया आई क्योंकि वे तिन रखवाले की भेड़ों की नाईं व्याकुल और छिन्नभिन्न किये हुए थे । तब उस ने अपने शिष्यों से कहा कटनी ३७ बहुत है परन्तु यनिहार छोड़े हैं । इस लिये कटनी के स्वामी से चिन्ता करो कि ३८ यह अपनी कटनी में यनिहारों को भेजे ।

दसवां पद्य ।

यीशु ने अपने बारह शिष्यों को अपने पास बुलाके उन्हें अशुद्ध भूतों पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और हर एक रोग और हर एक व्याधि को चंगा करें । बारह प्रेरितों के नाम ये हैं पहिला शिमोन जो पिनर कहावता है और उस का भाई अन्ड्रिय . जयदी का पुत्र याकूब और उस का भाई योहन . फिलिप २ और बर्थलमई . योसा और मती का उगाहनेद्वारा . अलफई का पुत्र याकूब और लिथ्वई जो थड़ई कहावता है . शिमोन कानानो और यहूदा एस्कुरियोती जिस ने उसे पकड़वाया । इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देके भेजा कि अन्यदेशियों की और सत जात्रो और गोमिरोनियों के किसी नगर में मत पैठो । परन्तु ६ येन के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जात्रो । और जाते हुए प्रचार कर ७ कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आया है । रोगियों को चंगा करो कोढ़ियों को शुद्ध करो मृतकों को जिलाओ भूतों को निकालो . तुम ने संतमेत पाया है संतमेत ८ देखो । अपने षट्कुं में न सोना न रूपा न ताम्बा रखो । मार्ग के लिये न कोली ९ न दो अंगो न जूत न लाठी लेओ क्योंकि यनिहार अपने भोजन के योग्य है । जिस किसी नगर अथवा गांव में तुम प्रवेश करो पूछो उस में कौन योग्य है और जय १० सों वहां से न निकलो तब लो उस के वहां रहो । घर में प्रवेश करते हुए उस को आशीस देओ । जो यह घर योग्य होय तो तुम्हारा कल्याण उस पर पहुंचे परन्तु जो ११ यह योग्य न होय तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास फिर आवे । और जो कोई तुम्हें १२ ग्रहण न करे और तुम्हारी बातें न सुने उस के घर से अथवा उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालो । मैं तुम से मच कहता हूं कि बिचार के दिन मैं १३ उस नगर की दशा से सद्दोस और अमोरा के देश की दशा सहने योग्य दोगी ।

देखो मैं तुम्हें भेड़ों के समान हुंवारों के बीच में भेजता हूं सो सांपों की नाईं १४ बुद्धिमान और कपोतों की नाईं मृधे होओ । परन्तु मनुष्यों से चौकस रहो १५ क्योंकि वे तुम्हें पंचायतों में सौंपेंगे और अपनी सभाओं में तुम्हें कोढ़े सारंगे । तुम मेरे लिये अध्यक्षां और राजाओं के आगे उन पर और अन्यदेशियों पर साक्षी १६ होने के लिये पहुंचाये जाओगे । परन्तु जय वे तुम्हें सौंपें तब किस रीति से १७ अथवा क्या कहोगे इस की चिन्ता मत करो क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा सो उसी घड़ी तुम्हें दिया जायगा । बोलनेद्वारे तो तुम नहीं हो परन्तु १८ तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है । भाई भाई को और पिता पुत्र को १९ यह किये जाने को सौंपेंगे और लड़के माता पिता के विरुद्ध उठके उन्हें घात करवाचेंगे । मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से वीर करेंगे पर जो अन्त सों २०

३९ और बागों पर भीने सूती कपड़े से छूटा काढ़ और मुकुट को भीने वस्त्र से बना और कटिवंध को चित्रकारी से बना ॥

४० और हाइन के बेटों के लिये बागें बना और उन के लिये कटिवंध बना और

४१ उन के लिये पगड़ी विभव और शोभा के लिये बना । और उन्हें अपने भाई हाइन पर और उस के संग उस के बेटों पर पहिना और उन्हें अभिषेक कर और उन्हें

४२ स्थापित और पवित्र कर जिसमें कि वे मेरे लिये याजक होवें । और उन के लिये सूती जाँघिया बना कि उन की नग्नता छिपी जाय और चाहिये कि यह कटि से

४३ जाँघ लों हो । और वे हाइन और उस के बेटों पर होवें जब वे मंडली के मंदिर में प्रवेश करें अथवा जब वे पवित्र स्थान में यज्ञवेदी के पास सेवा को

आवें कि वे पाप न उठावें और मर जायें यह विधि उस के और उस के पीछे उस के घंश के लिये सदा को है ॥

उत्तीसवां पृष्ठ ।

१ और जो तू उन के लिये करेगा जिसमें उन्हें पवित्र करे कि वे मेरे लिये याजक

२ होवें सो यह है कि तू एक बड़ड़ा और दो निष्कलंक मँडे ले । और अखमीरी

रोटी और फुलके और अखमीरी फुलके तेल से चुपड़े हुए और अखमीरी टिकरी तेल में

३ चुपड़ी हुई श्वेत गोहूँ के प्रिसान की बना । और उन्हें एक टोकरी में रख और

४ उन्हें टोकरी में बड़ड़े और दोनों मँडों समेत आगे ला । और हाइन और उस के

५ बेटों को मंडली के तंबू के द्वार पर ला और उन्हें जल से नहला । और वस्त्र ले

और हाइन को कुरते और रफोद का घागा और रफोद और चपरास पहिना और

६ रफोद का पटुका उस पर बांध । और मुकुट को उस के सिर पर रख और

७ पवित्र किरीट मुकुट पर धर । तब अभिषेक करने का तेल ले और उस के सिर

पर ढाल और उसे अभिषेक कर ॥

८ और उस के बेटों को आगे ला और उन्हें कुरते पहिना । और उन पर अर्थात्

हाइन और उस के बेटों पर कटिवंध लपेट और उन पर पगड़ी बांध जिसमें

याजक का पद सनातन की विधि के लिये उन्हीं का होवे और हाइन और उस

के बेटों को स्थापित कर ॥

१० और उस बैल को मंडली के तंबू के आगे ला और हाइन और उस के बेटे

११ अपने हाथ उस बैल के सिर पर रखें । और उस बैल को मंडली के तंबू के द्वार

१२ पर परमेश्वर के आगे बलिदान कर । और उस बैल के लोहू में से कुछ ले और

अपनी अंगुली से यज्ञवेदी के सींगों पर लगा और समस्त लोहू यज्ञवेदी के नीचे

१३ ढाल । और उस की समस्त चिकनाई जो उस के अंतर को छिपी है और जो

कलेजे के ऊपर है और दोनों गुर्दे और जो चिकनाई उन पर है ले और यज्ञवेदी

१४ पर जला । और उस बैल का मांस और उस की खाल और उस का गोबर

छावनी के बाहर आग से जला यह पापों का बलिदान है ॥

१५ और एक मँडे को ले और हाइन और उस के बेटे अपने हाथ उस मँडे के

१६ सिर पर रखें । और उस मँडे को बलिदान कर और तू उस का लोहू ले और

१७ यज्ञवेदी पर उस के चारों ओर छिड़क । और उस मँडे को टुकड़ा टुकड़ा कर

मुनने और देखते हो सो जाके योहन से कहो, कि अभी देखते हैं और लंगड़े ५  
चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं और यदि मुनने हैं मृतक जिन्नाये जाते हैं  
और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है, और जो कोई मेरे विषय में ठोकर ६  
न खावे सो धन्य है ॥

अब वे चले जाते थे तब यीशु योहन के विषय में लोगों से कहने लगा तुम ७  
जंगल में क्या देखने को निकले क्या पथन में टिलते हुए नरकट को। फिर तुम ८  
क्या देखने को निकले क्या मूढम व्यस्त्र पहिने हुए मनुष्य को, देखो जो मूढम  
वस्त्र पहिने हैं सो राजाओं के घरों में हैं। फिर तुम क्या देखने को निकले क्या ९  
भविष्यद्वक्ता को, हां मैं तुम से कहता हूं एक मनुष्य को जो भविष्यद्वक्ता से  
भी अधिक है। क्योंकि यह यही है जिस के विषय में लिखा है कि देख मैं १०  
अपने दून को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा। मैं तुम से ११  
सब कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से योहन व्यपत्तिमत्ता देनेद्वारे से  
बड़ा कोई प्रगट नहीं हुआ है परन्तु जो स्वर्ग के राज्य में अति छोटा है सो उस से  
बड़ा है। योहन व्यपत्तिमत्ता देनेद्वारे के दिनों से अब लो स्वर्ग के राज्य के लिये १२  
परिश्रम किंइ जाती है और दरियार लोग उसे ले लेते हैं। क्योंकि योहन लो १३  
मारे भविष्यद्वक्ताओं ने और व्यवस्था ने भविष्यद्वक्ता की कही। और जो तुम इस १४  
घात को ग्रहण करोगे तो जानो कि सलियाह जो आनेवाला था सो यही है।  
जिस को मुनने के ज्ञान हो सो मुने ॥ १५

मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से देखंगा, वे व्यापकों के समान हैं १६  
जो बाजारों में बैठके अपने संगियों को पुकारते, और कहते हैं हम ने तुम्हारे १७  
लिये बामली बजाई और तुम न नाचे हम ने तुम्हारे लिये विनाय किया और  
तुम ने छाती न पीटी। क्योंकि योहन न ग्याता न पीता आया और वे कहते हैं १८  
उसे भून लगा है। मनुष्य का पूत्र ग्याता और पीता आया है और वे कहते हैं १९  
देखो पैटू और मद्यक मनुष्य कर उगाधनेद्वारों और पापियों का मित्र, परन्तु  
ज्ञान अपने मन्तानों से निर्दोष ठहराया गया है ॥

तब वह उन नगरों को जिन्हें मैं उस के अधिक आश्चर्य कर्म किये गये २०  
उलटना देने लगा क्योंकि उन्हीं ने पश्चात्ताप नहीं किया। हाय तू कोराजीन, २१  
हाय तू बैतसेदा, जो आश्चर्य कर्म तुम्हें मैं किये गये हैं सो यदि सोर और  
सीदोन में किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिने और राख में  
बैठके पश्चात्ताप करते। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि विचार के दिन मैं तुम्हारी २२  
दशा से सोर और सीदोन की दशा सहने योग्य होगी। और हे कर्फर्नाधुम जो २३  
स्वर्ग लो जंचा किया गया है तू नरक लो नीचा किया जायगा, जो आश्चर्य  
कर्म तुम्हें मैं किये गये हैं सो यदि सदोम में किये जाते तो वह आज लो बना  
रहता। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि विचार के दिन मैं तेरी दशा से सदोम के २४  
देश की दशा सहने योग्य होगी ॥

इस पर उस समय में यीशु ने कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा २५  
धन्य मानता हूं कि तू ने इन व्यक्तियों को ज्ञानवानों और बुद्धिमानों से गुप्त रखा



२६ है और उन्हें वालकों पर प्रगट किया है । हाँ है पिता क्योंकि तेरी दृष्टि में यही  
 २७ अच्छा लगा । मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सोंपा है और पुत्र को कोई नहीं जानता  
 है केवल पिता और पिता को कोई नहीं जानता है केवल पुत्र और वही जिस  
 पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे ॥

२८ हे सब लोगो जो परिश्रम करते और योभ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें  
 २९ विश्राम देऊँगा । मेरा जूआ अपने ऊपर लेओ और मुझ से सीखो क्योंकि मैं नम्र  
 ३० और मन में दीन हूँ और तुम अपने मनो में विश्राम पाओगे । क्योंकि मेरा जूआ  
 सधज और मेरा योभ दलका है ॥

### चारहथां पठ्य ।

१ उस समय मैं यीशु विश्राम के दिन खेतों में होके गया और उस के शिष्य  
 २ भूखे हो थालें तोड़ने और खाने लगे । फरीशियों ने यह देखके उस से कहा  
 देखिये जो काम विश्राम के दिन में करना उचित नहीं है सो आप के शिष्य  
 ३ करते हैं । उस ने उन से कहा क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि दाऊद ने जब यह  
 ४ और उस के संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया . उस ने क्योंकि ईश्वर के  
 घर में जाके भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना न उस को न उस के संगियों  
 ५ को परन्तु केवल याजकों को उचित था । अथवा क्या तुम ने व्यवस्था में नहीं  
 पढ़ा है कि मन्दिर में याजक लोग विश्राम के दिनों में विश्रामवार की विधि को  
 ६ लंघन करते हैं और निर्दोष हैं । परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि यहां एक है जो  
 ७ मन्दिर से भी बड़ा है । जो तुम इस का अर्थ जानते कि मैं दया को चाहता  
 ८ हूँ खलिदान को नहीं तो तुम निर्दोषों को दोषी न ठहराते । मनुष्य का पुत्र  
 विश्रामवार का भी प्रभु है ।

९ वहां से जाके वह उन की सभा के घर में आया । और देखो एक मनुष्य  
 था जिस का हाथ सूख गया था और उन्होंने ने उस पर दोष लगाने के लिये उस  
 ११ से पूछा क्या विश्राम के दिनों में चंगा करना उचित है । उस ने उन से कहा तुम  
 में से कौन मनुष्य होगा कि उस का एक भेड़ हो और जो यह विश्राम के दिन  
 १२ गढ़े में गिरे तो उसे पकड़के न निकालेगा । फिर मनुष्य भेड़ से कितना बड़ा है .  
 १३ इस लिये विश्राम के दिनों में भलाई करना उचित है । तब उस ने उस मनुष्य  
 से कहा अपना हाथ बढा . उस ने उस को बढाया और वह फिर दूसरे हाथ  
 की नाईं भला चंगा हो गया ॥

१४ तब फरीशियों ने बाहर जाके यीशु के विरुद्ध आपस में विचार किया इस  
 १५ लिये कि उसे नाश करें । यह जानके यीशु वहां से चला गया और बड़ी भीड़  
 १६ उस के पीछे हो लिई और उस ने उन सभी को चंगा किया . और उन्हें दृढ़  
 १७ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो . कि जो खचन यिश्शैयाह भविष्यद्वक्ता से  
 १८ कहा गया था सो पूरा होवे . कि देखो मेरा सेवक जिसे मैं ने चुना है और मेरा  
 प्रिय जिस से मेरा मन अति प्रसन्न है . मैं अपना आत्मा उस पर रखूँगा और वह  
 १९ अन्यदेशियों को सत्य व्यवस्था बतावेगा । वह न झगड़ेगा न धूम मचावेगा न  
 २० सड़कों में कोई उस का शब्द सुनेगा । वह जब लो सत्य व्यवस्था को प्रबल न

करे तब लो लो कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा और धूआँ देनेवाली यत्ती को न  
बुझावेगा । और अन्यदेशी लोग उस के नाम पर आशा रखेंगे ॥ २१

तब लोग एक भूतग्रस्त ग्रंथे और गूंगे मनुष्य को उस पास लायें और उस ने उसे २२  
चंगा किया यहां लो कि वह जो ग्रंथे और गूंगा था देखने और बोलने लगा ।  
इस पर सब लोग विस्मित होके बोले यह क्या राजद का सन्तान है । परन्तु २३  
फरीशियों ने यह सुनके कहा यह तो बालजिवूत नाम भूतों के प्रधान की सहा-  
यता बिना भूतों को नहीं निकालता है । यीशु ने उन के मन की बातें जानके २४  
उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट पड़ी है वह राज्य उलड़ जाता है और  
कोई नगर अथवा घराना जिस में फूट पड़ी है नहीं ठहरेगा । और यदि जैतान २५  
जैतान को निकालता है तो उस में फूट पड़ी है फिर उस का राज्य क्योंकि  
ठहरेगा । और जो मैं बालजिवूत की सहायता से भूतों को निकालता हूं तो २६  
तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं । इस लिये वे तुम्हारे न्याय  
करनेवाले होंगे । परन्तु जो मैं ईश्वर के आत्मा की सहायता से भूतों को २७  
निकालता हूं तो निम्नदेष्ट ईश्वर का राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है । यदि २८  
बलवन्त को कोई घटिले न बांधे तो क्योंकि उस बलवन्त के घर में पैठके उस  
की मामूली लूट मके , परन्तु उसे बांधके उस के घर को नूटेगा । जो मेरे संग २९  
नहीं है सो मेरे विरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं घटोरता सो विघराता है । इस ३०  
लिये मैं तुम से कहता हूं कि सब प्रकार का पाप और निन्दा मनुष्यों के लिये  
क्षमा किया जायगा परन्तु पावित्र आत्मा की निन्दा मनुष्यों के लिये नहीं क्षमा  
किई जायगी । जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में बात कहे वह उस के लिये ३१  
क्षमा किई जायगी परन्तु जो कोई पावित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहे वह  
उस के लिये न इस लोक में न परलोक में क्षमा किया जायगा ॥

यदि पैड़ को अच्छा कहे तो उस के फल को भी अच्छा कहे अथवा पैड़ ३२  
को निकम्मा कहे तो उस के फल को भी निकम्मा कहे क्योंकि फलही से पैड़  
पहचाना जाता है । हे सांघों के वंश तुम दुरे होके अच्छी बातें क्योंकि कह ३३  
सकते हो क्योंकि जो मन में भरा है उसी को मुँह बोलता है । भला मनुष्य ३४  
मन के भले भंडार से भली बातें निकालता है और दुरा मनुष्य दुरे भंडार से  
दुरी बातें निकालता है । मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य जो जो अनर्थ बातें ३५  
कहे विचार के दिन में हर एक बात का नेखा देंगे । क्योंकि तू अपनी बातों ३६  
से निर्दोष अथवा अपनी बातों से दोषी ठहराया जायगा ॥

इस पर कितने अध्यापकों और फरीशियों ने कहा हे गुरु हम आप से एक ३७  
चिन्त देखने चाहते हैं । उस ने उन्हें उत्तर दिया कि इस समय के दुष्ट और ३८  
व्यभिचारी लोग चिन्त ठूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्त उन को नहीं दिया जायगा  
केवल यूनस भविष्यवक्ता का चिन्त । जिस रीति से यूनस तीन दिन और तीन ४०  
रात मछली के पेट में था उसी रीति से मनुष्य का पुत्र तीन दिन और तीन रात  
पृथिवी के भीतर रहेगा । निनर्थाय लोग विचार के दिन में इस समय के लोगों ४१  
के संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्होंने ने यूनस का उपदेश सुनके

४२ पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनस से भी बड़ा है । दक्षिण की राखी विचार के दिन में इस समय के लोगों के संग बैठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी के अन्त से आई और देखो यहां एक है जो सुलेमान से भी बड़ा है ॥

४३ जब अशुद्ध भूत मनुष्य से निकल जाता है तब मुखे स्थानों में विश्राम ठंडता ४४ फिरता पर नहीं पाता है । तब वह कहता है कि मैं अपने घर में जहां से ४५ निकला फिर जाऊंगा और आके उसे सूना भाड़ा युद्धा सुधरा पाता है । तब वह जाके अपने से अधिक दुष्ट सात और भूतों को अपने संग ले आता है और वे भीतर बैठके वहां वास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिली से दुरी होती है । इस समय के दुष्ट लोगों की दशा ऐसी होगी ।

४६ यीशु लोगों से बात करता ही था कि देखो उस की माता और उस के भाई ४७ बाहर खड़े हुए उस से बोलने चाहते थे । तब किसी ने उस से कहा देखिये आप की माता और आप के भाई बाहर खड़े हुए आप से बोलने चाहते हैं । ४८ उस ने कहनेवाले का उत्तर दिया कि मेरी माता कौन है और मेरे भाई कौन ४९ हैं । और अपने शिष्यों की ओर अपना हाथ बढ़ाके उस ने कहा देखो मेरी ५० माता और मेरे भाई । क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गवासी पिता की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है ॥

तिरहवां पृष्ठ ।

१ उस दिन यीशु घर से निकलके समुद्र के तीर पर बैठा । और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नाव पर बैठके बैठा और सब लोग तीर पर खड़े ३ रहे । तब उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं कि देखो एक बानेद्वारा ४ बीज बोने को निकला । बोने में कितने बीज मार्ग की ओर गिरे और पंखियों ने ५ आके उन्हें चुग लिया । कितने पत्थरैली भूमि पर गिरे जहां उन को बहुत मिट्टी ६ न मिली और बहुत मिट्टी न मिलने से वे वेग चगे । परन्तु सूर्य उदय होने पर ७ वे झुलस गये और जड़ न पकड़ने से सूख गये । कितने कांटों के बीच में गिरे ८ और कांटों ने बढ़के उन को दबा डाला । परन्तु कितने अच्छी भूमि पर गिरे और ९ फल फले कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस गुणे । जिस को सुनने के कान हैं सो सुने ॥

१० तब शिष्यों ने उस पास आ उस से कहा आप उन से दृष्टान्तों में क्यों बोलते ११ हैं । उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेद जानने का १२ अधिकार दिया गया है परन्तु उन को नहीं दिया गया है । क्योंकि जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा और उस को बहुत होगा परन्तु जो कोई नहीं १३ रखता है उस से जो कुछ उस के पास है सो भी ले लिया जायगा । इस लिये मैं उन से दृष्टान्तों में बोलता हूं क्योंकि वे देखते हुए नहीं देखते हैं और सुनते हुए १४ नहीं सुनते और न बूझते हैं । और यिश्शयाह की यह भविष्यवाणी उन में पूरी होती है कि तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते हुए देखोगे १५ पर तुम्हें न सूझेगा । क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है और वे कानों

मे ऊंचा सुनते हैं और अपने नेत्र मूंद लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी नेत्रों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिर जायें और मैं उन्हें चंगा करूं । परन्तु धन्य तुम्हारे नेत्र कि वे देखते हैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं । १६ क्योंकि मैं तुम से सब कहता हूँ कि जो तुम देखने हो उस को घटनेरे भविष्य- १७ वृत्ताओं और भस्मियों ने देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उस को सुनने चाहा पर न सुना ॥

तो तुम बौनेदारे के दृष्टान्त का अर्थ सुनो । जो कोई राज्य का वचन सुनके १८ नहीं धूमता है उस के मन में जो कुछ बोया गया था सो वह दुष्ट आके छीन लेता है , यह बड़ी है जिस में बीज मार्ग की और बोया गया । जिस में बीज २० पत्थरैली भूमि पर बोया गया सो बड़ी है जो वचन को सुनके तुरन्त आनन्द से ग्रहण करता है । परन्तु उस में जड़ न बंधने में वह थोड़ी देर टहरता है और २१ वचन के कारण क्लेश अथवा उपद्रव होने पर तुरन्त डोकर खाता है । जिस में २२ बीज कांटों के बीच में बोया गया सो बड़ी है जो वचन सुनता है पर उस संसार की चिन्ता और धन की माया वचन को बचाती है और वह निष्फल होता है । पर जिस में बीज अच्छी भूमि पर बोया गया सो बड़ी है जो वचन सुनके धूमता २३ है और वह तो फल देता है और कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस गुणे फलता है ॥

उस ने उन्हें दूसरा दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग के राज्य की उपमा एक मनुष्य से २४ दिई जाती है जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया । परन्तु जब लोग सोये २५ थे तब उस का बैरा आके गेहूं के बीच में जंगली बीज बोके चला गया । जब २६ अंकुर निकले और वाले लगीं तब जंगली दाने भी दिखाई दिये । इस पर गुप्त २७ के दासों ने आ उस से कहा हे स्वामी क्या आप ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया , फिर जंगली दाने उस में कहाँ से आये । उस ने उन से कहा किसी २८ बैरी ने यह किया है , दासों ने उस से कहा आप की अच्छा होय तो हम जाके उन को बटोर लेंगे । उस ने कहा सो नहीं न हो कि जंगली दाने बटोरने में उन २९ के संग गेहूं भी उखाड़ लेओ । कटनी लीं दोनों को एक संग बटूने देओ और ३० कटनी के समय मैं मैं काटनेदारों से कहूंगा पहिले जंगली दाने बटोरके जलाने के लिये उन के गट्टे याओ परन्तु गेहूं को मेरे खेत में एकट्ठा करो ॥

उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने की ३१ नाई है जिसे किसी मनुष्य ने लेके अपने खेत में बोया । वह तो सब बीजों से ३२ छोटा है परन्तु जब बढ़ जाता तब साग पात से बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के पंखी आके उस की डालियों पर बसेरा करते हैं । उस ने एक और दृष्टान्त उन से कहा कि स्वर्ग का राज्य खमीर की नाई है जिस ३३ को किसी स्त्री ने लेके तीन पसरी आटे में छिपा रखा यहां लीं कि मध खमीर हो गया ॥

यह सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं और बिना दृष्टान्त से उन को ३४ कुछ न कहा , कि जो वचन भविष्यवृत्ता से कहा गया था कि मैं दृष्टान्तों में ३५

अपना मुँह खोलूंगा जो बातें जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही उन्हें वर्णन कक्षा  
 से पूरा होवे ॥

३४ तब यीशु लोगों को बिदा कर घर में आया और उस के शिष्यों ने उस पास  
 ३७ आ कहा खेत के जंगली दाने के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझाइये । उस ने उन  
 ३८ को उत्तर दिया कि जो अच्छा बीज बोता है सो मनुष्य का पुत्र है । खेत तो  
 संसार है अच्छा बीज राज्य के सन्तान हैं और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं ।  
 ३९ जिस बैरी ने उन को बोया सो जेतान है कटनी जगत का अन्त है और काटने-  
 ४० हारे स्वर्गदूत हैं । सो जैसे जंगली दाने घटोरे जाते और आग से जलाये जाते  
 ४१ हैं वैसे ही इस जगत के अन्त में होगा । मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा  
 और वे उस के राज्य में से सब ठोकर के कारकों को और कुकर्म करनेहारों को  
 ४२ बटोर लेंगे . और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे जहां रोना और दांत पीसना  
 ४३ होगा । तब धर्मी लोग अपने पिता के राज्य में मूर्ख की नाई चमकेंगे . जिस  
 को सुनने के कान हों सो सुने ॥

४४ फिर स्वर्ग का राज्य खेत में बिपाये हुए धन के समान है जिसे किसी मनुष्य  
 ने पाके गुप्त रखा और वह उस के आनन्द के कारण जाके अपना सब कुछ बेचके  
 ४५ उस खेत को मोल लेता है । फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो  
 ४६ अच्छे मोतियों को ढूंढ़ता था । उस ने जब एक बड़े मोल का मोती पाया तब  
 जाके अपना सब कुछ बेचके उसे मोल लिया ॥

४७ फिर स्वर्ग का राज्य मछाल के समान है जो समुद्र में डाला गया और  
 ४८ हर प्रकार की मछलियों को घेर लिया । जब वह भर गया तब लोग उस को  
 तीर पर खींच लाये और बैठके अच्छी अच्छी को पात्रों में बटोरा और निकम्मी  
 ४९ निकम्मी को फेंक दिया । जगत के अन्त में वैसे ही होगा . स्वर्गदूत आके दुष्टों  
 ५० को धर्मीयों के बीच में से अलग करेंगे . और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे जहां  
 रोना और दांत पीसना होगा ॥

५१ यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने यह सब बातें समझीं . वे उस से बोले हां  
 ५२ प्रभु । उस ने उन से कहा इस लिये हर एक अध्यापक जिस ने स्वर्ग के राज्य  
 की शिक्षा पाई है गृहस्थ के समान है जो अपने भंडार से नई और पुरानी वस्तु  
 निकालता है ॥

५३ जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तब वहां से चला गया । और उस ने अपने  
 ५४ देश में आ उन की सभा के घर में उन्हें ऐसा उपदेश दिया कि वे अचंभित हो  
 ५५ बोले इस को यह ज्ञान और ये आश्चर्य कर्म कहां से हुए । यह क्या बड़ई का  
 पुत्र नहीं है . क्या उस की माता का नाम मरियम और उस के भाइयों के नाम  
 ५६ याकूब और योशी और शिमोन और यहूदा नहीं हैं । और क्या उस की सब बहिनें  
 ५७ हमारे यहां नहीं हैं . फिर उस को यह सब कहां से हुआ । सो उन्होंने ने उस के  
 विषय में ठोकर खाई परन्तु यीशु ने उन से कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और  
 ५८ अपना घर छोड़के और कहीं निरादर नहीं होता है । और उस ने वहां उन के  
 अविश्वास के कारण बहुत आश्चर्य कर्म नहीं किये ॥

## चौदहवां पर्व ।

उस समय में चौथाई के राजा हेरोद ने यीशु की कीर्ति सुनी . और अपने १  
 सेवकों में कहा यह तो येहन व्यतिममा देनेहार है वह मृतकों में से जी उठा २  
 है हम लिये आश्चर्य कर्म उस से प्रगट होते हैं । क्योंकि हेरोद ने अपने भाई फिलिप ३  
 की स्त्री हेरोदिया के कारण येहन को पकड़के उसे बांधा था और बन्दीगृह में ४  
 डाला था । क्योंकि येहन ने उस से कहा था कि इस स्त्री को रखना तुम को ५  
 उचित नहीं है । और वह उसे मार डालने चाहता था पर लोगों ने डर कर ६  
 उसे भाविष्यवक्ता जानते थे । परन्तु हेरोद के जन्मदिन की सभा में हेरोदिया ७  
 की पुत्री ने सभा में नाचकर हेरोद को प्रसन्न किया । इस लिये उस ने किरिया ८  
 याके अंगीकार किया कि जो कुछ न मांगें मैं तुम्हें दूँगा । वह अपनी माता की ९  
 उन्हाई हुई बेटी येहन व्यतिममा देनेहार को मिर यहाँ बाल में सुके दीजिये । १०  
 तब राजा उदास हुआ परन्तु उस किरिया के और अपने संग बैठनेहारों के कारण ११  
 उस ने देने की आज्ञा दी । और उस ने भेजकर बन्दीगृह में येहन को मिर १२  
 कटवाया । और उस को मिर बाल में कन्या को पहुँचा दिया गया और वह उस १३  
 को अपनी माँ के पास ले गई । तब उस के शिष्यों ने आके उस की लाश को १४  
 उठाके गाढ़ा और आके यीशु से इस का समाचार कहा ॥

जब यीशु ने यह सुना नव नाव पर चढ़के वहाँ से किसी जंगली स्थान में १५  
 एकान्त में गया और लोग यह सुनके नगरों में से पैदल उस के पीछे हो १६  
 लिये । यीशु ने निकलके बहुत लोगों को देखा और उन पर दया कर उन के १७  
 रोगियों को चंगा किया ॥

जब सांझ हुई तब उस के शिष्यों ने उन पास आ कहा यह तो जंगली १८  
 स्थान है और बेला अब होत गई है लोगों को विदा दीजिये कि वे घासियों १९  
 में जाके अपने लिये भोजन माल लें । यीशु ने उन से कहा उन्हें जाने का २०  
 प्रयोजन नहीं तुम उन्हें खाने को देना । उन्होंने ने उस से कहा यहाँ हमारे पास २१  
 केवल पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं । उस ने कहा उन को यहाँ मेरे पास २२  
 लाओ । तब उस ने लोगों को घास पर बैठने की आज्ञा दी और उन पाँच २३  
 रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके धन्यवाद किया और २४  
 रोटियाँ तोड़के शिष्यों को दी और शिष्यों ने लोगों को दी । सो सब खाके तृप्त २५  
 हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्होंने ने उन की पारव टोकरी भरी उठाई । जिनमें २६  
 ने खायी सो स्त्रियों और बालकों को छोड़ पाँच सठस पुत्रों के अटकल थे ॥

तब यीशु ने तुरन्त अपने शिष्यों को दृढ़ आज्ञा दी कि जब लौ में लोगों २७  
 को विदा कर तुम नाव पर चढ़के मेरे आगे उस पार जाओ । वह लोगों को २८  
 विदा कर प्रार्थना करने को एकान्त में पर्वत पर चढ़ गया और सांझ को वहाँ २९  
 अकेला था । उन समय नाव समुद्र के बीच में लहरों से चढ़ल रही थी क्योंकि ३०  
 धरार सन्मुख की थी । रात के चौथे घंटे में यीशु समुद्र पर चलते हुए उन के ३१  
 पास गया । शिष्य लोग उस को समुद्र पर चलते देखके घबरा गये और बोले ३२  
 यह प्रेत है और डर के मारे चित्ताये । यीशु तुरन्त उन से बात करने लगा और ३३



२८ कहा लाठियों बांधो मैं हूँ डरो मत । तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि हे  
 २९ प्रभु यदि आप ही हैं तो मुझे अपने पास चल पर आने की आज्ञा दीजिये । उस  
 ने कहा आ । तब पितर नाव पर से उतरके यीशु पास जाने को जल पर चलने  
 ३० लगा । परन्तु बयार को प्रचंड देखके वह डर गया और जव डूबने लगा तब  
 ३१ चिल्लाके बोला हे प्रभु मुझे बचाइये । यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाके उस को ग्राम  
 ३२ लिया और उससे कहा हे अल्पविश्वासी क्यों सन्देह किया । जब वे नाव पर  
 ३३ चढ़े तब बयार थम गई । इस पर जो लोग नाव पर थे सो आके यीशु को  
 प्रणाम करके बोले सचमुच आप ईश्वर के पुत्र हैं ॥  
 ३४ वे पार उतरके गिनेमरत देश में पहुंचे । और वहां के लोगों ने यीशु को  
 ३५ चीन्हके आसपास के सारे देश में कहला भेजा और सब रोगियों को उस पास  
 ३६ लाये . और उस से चिन्ती किई कि वे केवल उस के वस्त्र के आंचल को छूवें  
 और जितनों ने छूआ सब चंगे किये गये ॥

पन्द्रहवां पर्व ।

१ तब यिहूशलीम के कितने अध्यापकों और फरीशियों ने यीशु पास आ कहा .  
 २ आप के शिष्य लोग क्यों प्राचीनों के व्यवहार लंघन करते हैं क्योंकि जब वे  
 ३ रोटी खाते तब अपने हाथ नहीं धोते हैं । उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम  
 भी क्यों अपने व्यवहारों के कारण ईश्वर की आज्ञा को लंघन करते हो ।  
 ४ क्योंकि ईश्वर ने आज्ञा किई कि अपने माता पिता का आदर कर और जो  
 ५ कोई माता अथवा पिता की निन्दा करे सो मार डाला जाय । परन्तु तुम  
 कहते हो यदि कोई अपने माता अथवा पिता से कहे कि जो कुछ तुम को मुझ  
 ६ से लाभ होता सो संकल्प किया गया है तो उस को अपनी माता अथवा अपने  
 ७ पिता का आदर करने का और कुछ प्रयोजन नहीं । सो तुम ने अपने व्यवहारों  
 ८ के कारण ईश्वर की आज्ञा को उठा दिया है । हे कपटियो यिश्शैयाह ने तुम्हारे  
 ९ विषय में यह भविष्यद्वाणी अच्छी कही . कि ये लोग अपने मुंह से मेरे निकट  
 आते हैं और हांठों से मेरा आदर करते हैं परन्तु उन का मन मुझ से दूर  
 १० रहता है । पर वे वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को  
 धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं ॥

११ और उस ने लोगों को अपने पास बुलाके उन से कहा सुनो और बूझो । जो  
 १२ मुंह में समाता है सो मनुष्य को अपवित्र नहीं करता है परन्तु जो मुंह से निकलता  
 १३ है सोई मनुष्य को अपवित्र करता है । तब उस के शिष्यों ने आ उस से कहा  
 १४ क्या आप जानते हैं कि फरीशियों ने यह बचन सुनके ठोकर खाई । उस ने उत्तर  
 दिया कि हर एक गाछ जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया है उखाड़ा जायगा ।  
 १५ उन को रहने दो . वे अंधों के अंधे अगुवे हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग बतावे  
 १६ तो दोनों गढ़े में गिर पड़ेंगे । तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि इस दृष्टान्त  
 १७ का अर्थ हमें समझाइये । यीशु ने कहा तुम भी क्या अथ लो निर्वुद्धि हो ।  
 १८ क्या तुम अथ लो नहीं बूझते हो कि जो कुछ मुंह में समाता सो पेट में जाता है  
 १९ और सड़ास में फँका जाता है । परन्तु जो कुछ मुंह से निकलता है सो मन से

बाहर आता है और वही मनुष्य को अपवित्र करता है । क्योंकि मन से नागा १८  
भाँति की कुचिन्ता नरहिंसा परस्त्रीगमन व्यभिचार चोरी भूटी मार्का और ईश्वर  
की निन्दा निकलती हैं । यहाँ हैं जो मनुष्य को अपवित्र करते हैं परन्तु धिन २०  
धोये हाथों ने भोजन करना मनुष्य को अपवित्र नहीं करता है ॥

यीशु वहाँ से निकलके सार और सीद्दान के सिद्धान्तों में गया । और देखो २१  
उन सिद्धान्तों में की एक जनानी स्त्री ने निकलकर प्रकारके उस से कहा है प्रभु  
दाऊद के सन्तान मुझ पर क्या कीजिये मेरी बेटी भूत ने प्रति पाँड़ित है । परन्तु २३  
उस ने उस को कुछ उत्तर न दिया और उस के शिष्यों ने आ उस से विनती कर  
कहा हम को बिदा कीलिये क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे पृकारती है । उस ने २४  
उत्तर दिया कि इसायेन के घराने की खाई हुई भेड़ों को छाड़ मैं किसी के  
पास नहीं भेजा गया हूँ । तब स्त्री ने आ उस को प्रणाम कर कहा है प्रभु मेरा २५  
उपकार कीजिये । उस ने उत्तर दिया कि लड़कों की रोटी लेके कुत्तों के आगे २६  
फेंकना अच्छा नहीं है । स्त्री ने कहा मज है प्रभु नाभी कुत्ते जो चूरघार उन की २७  
स्त्रासियों का भेज से मारते हैं सो खाते हैं । तब यीशु ने उन को उत्तर दिया २८  
कि हे नारी तेरा विश्वास बड़ा है जैसा तू चाहती है वैसाही तुझे दाय । और  
उस की बेटी उसी वही से चंगी हुई ॥

यीशु वहाँ से जाके गालील के समुद्र के निकट आया और पछेंत पर चढ़के २९  
वहाँ बैठा । और बड़ी बड़ी भीड़ अपने नंग लंगड़े अंधों रूंगों टुंडों और बहुत ३०  
से औरों को लेकर यीशु पास आई और उन्हें उस के चरणों पर डालना और उस ने  
उन्हें चंगा किया । यहाँ लो कि जब लोगों ने देखा कि रूंगे बालते हैं टुंडे चंगे ३१  
होते हैं लंगड़े चलते हैं और अंधे देखते हैं तब अचंभा करके इसायेन के ईश्वर  
की स्तुति किए ॥

तब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके कहा मुझे इन लोगों पर क्या ३२  
आती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग रहे हैं और उन के पास कुछ खाने को  
नहीं है और मैं उन को भोजन बिना बिदा करने नहीं चाहता हूँ न हो कि मार्ग  
में उन का बल छट जाय । उस के शिष्यों ने उस से कहा हमें इस लंगन में कहाँ ३३  
से इतनी रोटी मिलेगी कि इस इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें । यीशु ने उन से ३४  
कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं । उन्होंने ने कहा सात और छोटी सी छोटी  
मकलियाँ । तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी । और उस ने ३५  
उन सात रोटियों को और मकलियों को लेकर धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्यों  
को दिया और शिष्यों ने लोगों को दिया । सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े ३६  
बच रहे उन्हें ने उन के सात टोकरे भरे उठाये । जिन्होंने ने खाया सो स्त्रियों ३७  
और बालकों को छोड़ चार सहस्र पुरुष थे । तब यीशु लोगों को बिदा कर नाव ३८  
पर चढ़के मगदला नगर के सिद्धान्तों में आया ॥

मालखों पृष्ठ ।

तब फरीशियों और सद्दूकियों ने यीशु पास आ उस की परीक्षा करने को उस १  
से चाहा कि हमें आकाश का एक चिन्ह दिखाइये । उस ने उन को उत्तर दिया २

सांभ को तुम कहते हो कि फरका होगा क्योंकि आकाश लाल है और भोर को कहते हो कि आज आंधी आवेगी क्योंकि आकाश लाल और धूमला है । हे कपटियो तुम आकाश का रूप धूमक सकते हो क्या तुम समयों के चिन्ह नहीं धूम सकते हो । इस समय के दुष्ट और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढते हैं परन्तु कोई चिन्ह उन को नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का चिन्ह । तब वह उन्हें छोड़के चला गया ।

उस के शिष्य लोग उस पार पहुँचके रोटी लेना भूल गये । और यीशु ने उन से कहा देखो फरीशियों और सद्दूकियों के खमीर से चौकस रहो । वे आपस में विचार करने लगे यह इस लिये है कि हम ने रोटी न ली है । यह जानके यीशु ने उन से कहा हे अल्पविश्वासियो तुम रोटी न लेने के कारण क्यों आपस में विचार करते हो । क्या तुम अब लो नहीं धूमते हो और उन पाँच सहस्र की पाँच रोटी नहीं स्मरण करते हो और कितनी टोकरीयां तुम ने उठाईं । और न उन चार सहस्र की सात रोटी और कितने टोकरे तुम ने उठाये । तुम क्यों नहीं धूमते हो कि मैं ने तुम को फरीशियों और सद्दूकियों के खमीर से चौकस रहने को जो कहा सो रोटी के विषय में नहीं कहा । तब उन्होंने ने धूमता कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं परन्तु फरीशियों और सद्दूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा ।

यीशु ने कैसरिया फिलिपी के सिधानों में आके अपने शिष्यों से पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं मनुष्य का पुत्र कौन हूँ । उन्होंने ने कहा कितने तो आप को योहन्न खपतिसमा देनेद्वारा कहते हैं कितने एलियाह कहते हैं और कितने यिरमियाह अथवा भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं । उस ने उन से कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूँ । शिमेन पितर ने उत्तर दिया कि आप जीवते ईश्वर के पुत्र खीष्ट हैं । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे यूनस के पुत्र शिमेन तू धन्य है क्योंकि मांस और लोह ने नहीं परन्तु मेरे स्वर्गवासी पिता ने यह बात तुझ पर प्रगट की है । और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पितर है और मैं इसी पत्थर पर अपनी मंडली बनाऊंगा और परलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे । मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य की कुंजियां देऊंगा और जो कुछ तू पृथिवी पर बांधेगा सो स्वर्ग में बंधा हुआ होगा और जो कुछ तू पृथिवी पर खोलेगा सो स्वर्ग में खुला हुआ होगा । तब उस ने अपने शिष्यों को चिताया कि किसी से मत कहो कि मैं यीशु जो हूँ सो खीष्ट हूँ ।

उस समय से यीशु अपने शिष्यों को खताने लगा कि मुझे अवश्य है कि यरूशलीम में जाऊँ और प्राचीनों और प्रधान यात्रकों और अध्यापकों से बहुत दुःख उठाऊँ और मार डाला जाऊँ और तीसरे दिन जी उठूँ । तब पितर उसे लेके उस को डाँटके कहने लगा कि हे प्रभु आप पर दया रहे यह तो आप को कभी न होगा । उस ने मुँह फेरके पितर से कहा हे शैतान मेरे साम्हने से दूर हो तू मेरे लिये ठोकर है क्योंकि तुम्हें ईश्वर की बातों का नहीं परन्तु मनुष्यों की बातों का सोच रहता है ॥

और उस के अंतर और उस के पांच को धो और उन्हें उस के टुकड़ों पर और उस के मिर पर रख । और उस समस्त मंडे को यज्ञवेदी पर जला वह बलिदान १८ की भेंट परमेश्वर के लिये अग्नीष सुगंध वास परमेश्वर के लिये है ॥

और दूसरा मंडा ले और हारन और उस के घेरे अपने हाथ उस मंडे के मिर १९ पर रखें । तब तू उस मंडे को बलिदान कर और उस के लोहू में से ले और हारन २० के और उस के घेरे के दाहिने कान की लहर पर और उन के दाहिने हाथ के अंगूठे पर और दाहिने पांच के अंगूठे पर लगा और लोहू को यज्ञवेदी पर चारों ओर छिड़क । और उस २१ लोहू में से जो यज्ञवेदी पर है और अभिषेक का तेल ले और हारन पर और उस के घन्नों पर और उस के घेरे पर और उस के घेरे के घन्नों पर उस के साथ छिड़क गव वह और उस के घस्व और उस के घेरे और उस के घेरे के घन्त्र उस के संग पवित्र होंगे । और मंडे की चिकनाई और पूंछ और वह चिकनाई जो आग को ढांपती है और २२ जो कलेजे को ढांपती है और दोनों गुदों को और वह चिकनाई जो उन पर है और दाहिना मंडा ले इस लिये कि वह स्थापने का मंडा है । और एक रोटी और तेल २३ में चुपड़ी हुई रोटी का एक फुलका और एक ठिकरी उस अग्रमीनी रोटी के टोकरे में से जो परमेश्वर के सन्मुख है । और वह सब हारन के और उस के २४ घेरे के हाथ पर रख और उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिला । और उन्हें उन के हाथ में ले और यज्ञवेदी पर बलिदान की भेंट के लिये २५ जला कि परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये हो वह आग का बलिदान परमेश्वर के लिये है । और तू हारन के स्थापित मंडे की छाती ले और उसे परमेश्वर के २६ आगे हिलाने के बलिदान के लिये हिला और वह तेरा भाग होगा । और तू २७ हिलाने की छाती को और उठाने के मंडे को जो हारन और उस के घेरे को स्थापित करने का मंडा हिलाया और उठाया गया है पवित्र कर । और हारन और २८ उस के घेरे के लिये इसराएल के संतानों में से वह विधि सदा होगी क्योंकि वह उठाई हुई भेंट है और सदा इसराएल के संतानों में उन के कुल के बलिदानों में से उठाई हुई भेंट होगी वह उन की उठाई हुई भेंट परमेश्वर के लिये है ॥

और हारन की पवित्र वस्त्र उस के पीछे उस के घेरे के लिये उन के अभिषेक २९ के लिये हों कि वे उन में स्थापित हों । जो घेरा उस की संती याज्ञक होवे जब ३० वह मंडली के तंत्र में पवित्र सेवा करने का आवे तब वह उन्हें सात दिन पहिने । और स्थापने का मंडा ले और उस का मांस पवित्र न्यान में उमिन । और ३१ हारन और उस के घेरे मंडे का मांस और वह रोटी जो टोकरी में मंडली के तंत्र के द्वार पर है खावें । और जिन वस्तुन से प्रायश्चित्त हुआ कि उन्हें स्थापित ३३ और पवित्र करें वे खावें परन्तु परदेशी न खावे क्योंकि वे पवित्र हैं । और यदि ३४ स्थापित के मांस में से और रोटी में से विष्टान लों कुछ रह जाय तो तू उस वचे हुए को आग में जला दे वह खाया न जाय क्योंकि वह पवित्र है ॥

और तू हारन और उस के घेरे को धो कर उस समस्त के समान जो मैं ने ३५ तुम्हें आज्ञा किई है सात दिन लों उन्हें स्थापित करेगा । और तू प्रतिदिन पाप ३६ के प्रायश्चित्त के कारण एक बैल को चढ़ाव्यो और यज्ञवेदी को पवित्र करने को

१९ हुआ । तब शिष्यों ने निराले में यीशु पास आ कहा हम उस भूत को क्यों नहीं  
 २० निकाल सके । यीशु ने उन से कहा तुम्हारे अविश्वास के कारण क्योंकि मैं तुम  
 से सत्य कहता हूँ यदि तुम को राई की एक दाने के तुल्य विश्वास होय तो तुम  
 इस पहाड़ से जो कहोगे कि यहां से वहां चला जा वह जायगा और कोई काम  
 २१ तुम से अमाध्य नहीं होगा । तौभी जो इस प्रकार के हैं सो प्रार्थना और उपवास  
 बिना और किसी उपाय से निकाले नहीं जाते हैं ॥

२२ जब वे गालील में फिरते थे तब यीशु ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के  
 २३ हाथ में पकड़वाया जायगा । वे उस को मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी  
 उठेगा । इस पर वे बहुत उदास हुए ॥

२४ जब वे कफर्नाहम में पहुंचे तब मन्दिर का कर लेनेद्वारे पितर के पास आके  
 २५ बोले क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता है . उस ने कहा हां देता है । जब  
 पितर घर में आया तब यीशु ने उस के बोलने के पहिले उस से कहा हे शिमान तू  
 क्या समझता है . पृथिवी के राजा लोग कर अथवा खिराज किन से लेते हैं  
 २६ अपने सन्तानों से अथवा परायों से । पितर ने उस से कहा परायों से . यीशु ने उस  
 २७ से कहा तब तो सन्तान वचे हुए हैं । तौभी जिस्ते हम उन को ठोकर न खिलावे  
 इस लिये तू समुद्र के तीर पर जाके वंसी डाल और जो मछली पहिले निकले  
 उस को ले . तू उस का मुँह खोलने से एक रुपैया पावेगा उसी को लेके मेरे  
 और अपने लिये चन्दे दे ॥

अठारहवां पृष्ठ ।

१ उसी घड़ी शिष्यों ने यीशु पास आ कहा स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है ।  
 २ यीशु ने एक बालक को अपने पास बुलाके उन के बीच में खड़ा किया . और कहा  
 ३ मैं तुम्हें सच कहता हूँ जो तुम मन न फिरावो और बालकों के समान न हो जावो  
 ४ तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे । जो कोई अपने को इस बालक  
 ५ के समान दीन करे सोई स्वर्ग के राज्य में बड़ा है । और जो कोई मेरे नाम  
 ६ से एक ऐसे बालक को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है । परन्तु जो कोई  
 इन छोटी में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के  
 लिये भला होता कि चक्री का पाट उस के गले में लटकाया जाता और वह  
 समुद्र के गहिराव में डुबाया जाता ॥

७ ठाकरों के कारण हाथ संसार . ठाकरें अवश्य लगींगीं परन्तु हाथ वह मनुष्य  
 ८ जिस के द्वारा से ठाकर लगती है । जो तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर  
 खिलावे तो उसे काटके फेंक दे . लंगड़ा अथवा टुंडा होके जीवन में प्रवेश  
 करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ अथवा दो पांव रहते हुए तू अनन्त  
 ९ आग में डाला जाय । और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके  
 फेंक दे . काना होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो  
 १० आंखें रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाय । देखो कि तुम इन छोटी में  
 से एक को तुच्छ न जानो क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि स्वर्ग में उन के दूत  
 मेरे स्वर्गवासी पिता का मुँह नित्य देखते हैं ॥

तब यीशु ने अपने शिष्यों में कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी २४  
इच्छा को मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे । क्योंकि जो कोई अपना २५  
प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवे  
सो उसे पावेगा । यदि मनुष्य मारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे २६  
तो उस को क्या लाभ होगा . अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा ।  
मनुष्य का पुत्र अपने दूतों के संग अपने पिता के सेवार्थ में आवेगा और तब २७  
वह हर एक मनुष्य को उस के कार्य के अनुसार फल देगा । मैं तुम से सच २८  
कहता हूँ कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई है कि जय लो मनुष्य के  
पुत्र को उस के राज्य में आते न देखें तब लो मनुष्य का स्याद न भीखेंगे ॥

सत्रहवां पर्व ।

छः दिन के पीछे यीशु पितर और याकूब और उन के भाई योहन को लेके १  
उन्हें किसी ऊंचे पर्वत पर एकान्त में ले गया । और उन के आगे उस का रूप २  
बदल गया और उस का मुंह सूर्य के तुल्य चमका और उस का वस्त्र ज्योति  
की भाँति चमका हुआ । और देखो मूसा और एलियाह उस के संग बात करते ३  
हुए उन को दिखाई दिये । इस पर पितर ने यीशु में कहा हे प्रभु हमारा यहां ४  
रचना अच्छा है . यदि आप की इच्छा होय तो हम तीन हरे यहां बनायें एक  
आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के लिये । वह बोलता ही ५  
था कि देखो एक ज्योतिमय मेघ ने उन्हें छा लिया और देखो उस मेघ से यह  
शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिन में मैं अति प्रसन्न हूँ उस को चुनो । शिष्य ६  
लोग यह सुनके आँधे मुँह गिरे और निपट टर गये । यीशु ने उन पास आके ७  
उन्हें कृपे कहा उठो डरो मत । तब उन्होंने अपनी आँखें उठाके यीशु को ८  
छोड़के और किसी को न देखा । जब ये उस पर्वत से उतरते थे तब यीशु ने ९  
उन को आज्ञा दी कि जय लो मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं जी उठे तब  
लो उस दर्शन का समाचार किसी में मत कहो ॥

और उस के शिष्यों ने उस से पूछा फिर अध्यापक लोग क्यों कहते हैं कि १०  
एलियाह को पहिले आना होगा । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि सच है ११  
एलियाह पहिले आके सब कुछ सुधारेगा । परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि १२  
एलियाह आ चुका है और उन्हें ने उस को नहीं जान्ता परन्तु उस में जो कुछ  
चाहा सो किया . इस रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन से दुःख पावेगा । तब १३  
शिष्यों ने पूछा कि वह योहन प्रपत्तिमसा देनेवाले के विषय में हम से कहता है ॥

जब ये लोगों के निकट पहुँचे तब किसी मनुष्य ने यीशु पास आ घुटने टेकके १४  
उस से कहा . हे प्रभु मेरे पुत्र पर दया कीजिये वह मिर्गी के रोग से अति १५  
पीड़ित है कि बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है । और १६  
मैं उस को आप के शिष्यों के पास लाया परन्तु वे उसे चंगा नहीं कर सके ।  
यीशु ने उत्तर दिया कि हे अधिष्ठासी और छटीले लोगों में कब लो तुम्हारे संग १७  
रहूंगा और कब लो तुम्हारी मर्हंगा . उस को यहां मेरे पास लाओ । तब यीशु १८  
ने भूत को डाँटा और वह उस में से निकला और लड़का उसी घड़ी से चंगा



३३ ब्रिन्ती किई तो मैं ने तुम्हे वह सब कृण क्षमा किया । सो जैसा मैं ने तुम्ह पर  
 ३४ दया किई वैसा क्या तुम्हे भी अपने संगी दास पर दया करना उचित न था । और  
 उस के स्वामी ने क्रोध कर उसे दंडकारकों के हाथ सोंप दिया कि जब लों  
 ३५ वह उस का सब कृण भर न देवे तब लों उन के हाथ में रहे । यूँही यदि तुम  
 में से हर एक अपने अपने मन से अपने भाई के अपराध क्षमा न करे तो मेरा  
 स्वर्गवासी पिता भी तुम से वैसा करेगा ॥

उनीसवां पर्व ।

१ जब यीशु यह बातें कह चुका तब गालील से जाके यर्दन के उस पार यिहू-  
 २ दया के सिवानों में आया । और बड़ी बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और  
 ३ उस ने उन्हें वहाँ चंगा किया । तब फरीशियों ने उस पास आ उस की परीक्षा  
 करने को उस से कहा क्या किसी कारण से अपनी स्त्री को त्यागना मनुष्य को  
 ४ उचित है । उस ने उन को उत्तर दिया क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि सृजनहार ने  
 ५ आरंभ से नर और नारी करके मनुष्यों को उत्पन्न किया . और कहा इस हेतु से  
 मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे दोनों  
 ६ एक तन होंगे । सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं इस लिये जो कुछ ईश्वर  
 ७ ने जोड़ा है उस को मनुष्य अलग न करे । उन्हें ने उस से कहा फिर मूसा ने  
 ८ क्यों त्यागपत्र देने और स्त्री को त्यागने की आज्ञा किई । उस ने उन से कहा  
 मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम को अपनी अपनी स्त्रियां त्यागने  
 ९ दिया परन्तु आरंभ से ऐसा नहीं था । और मैं तुम से कहता हूँ कि जो कोई  
 व्यभिचार को छोड़ और किसी हेतु से अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से विवाह  
 करे सो परस्त्रीगमन करता है और जो उस त्यागी हुई से विवाह करे सो परस्त्री-  
 १० गमन करता है । उस के शिष्यों ने उस से कहा यदि पुरुष को स्त्री के संग इस  
 ११ प्रकार का सम्बन्ध है तो विवाह करना अच्छा नहीं है । उस ने उन से कहा  
 सब लोग यह बचन ग्रहण नहीं कर सकते हैं केवल वे जिन को दिया गया है ।  
 १२ क्योंकि कोई कोई नपुंसक हैं जो माता के गर्भ से ऐसे ही जन्मे और कोई कोई  
 नपुंसक हैं जो मनुष्यों से नपुंसक किये गये हैं और कोई कोई नपुंसक हैं जिन्होंने  
 ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने को नपुंसक किये हैं . जो इस को ग्रहण कर  
 सके सो ग्रहण करे ॥

१३ तब लोग कितने बालकों को यीशु पास लाये कि वह उन पर हाथ रखके  
 १४ प्रार्थना करे परन्तु शिष्यों ने उन्हें डांटा । यीशु ने कहा बालकों को मेरे पास  
 १५ आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसे का है । और वह उन  
 पर हाथ रखके वहाँ से चला गया ॥

१६ और देखो एक मनुष्य ने उस पास आ उस से कहा हे उत्तम गुरु अनन्त  
 १७ जीवन पाने को मैं कौन सा उत्तम काम करूं । उस ने उस से कहा तू मुझे उत्तम  
 क्यों कहता है . कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात् ईश्वर . परन्तु जो तू  
 १८ जीवन में प्रवेश किया चाहता है तो आज्ञाओं को पालन कर । उस ने उस से  
 कहा कौन कौन आज्ञा . यीशु ने कहा यह कि नरहिंसा मत कर परस्त्रीगमन

मनुष्य का पुत्र खोये हुए को बचाने आया है । तुम क्या समझते हो . जो ११  
 किसी मनुष्य की सौ भेट्ट होवे और उन में से एक भटक जाय तो क्या वह १२  
 निज्जानवे का पहाड़ों पर छोड़के उस भटकी हुई को नहीं जाके ढूंढ़ता है । और १३  
 मैं तुम से सत्य कहता हूं यदि ऐसा हो कि वह उस को पावे तो जो निज्जानवे  
 नहीं भटक गई थीं उन में अधिक बड़ उस भेट्ट के लिये आनन्द करता है ।  
 ऐसा ही तुम्हारे स्वर्गवामी पिता की इच्छा नहीं है कि इन छोटी में से एक १४  
 भी नाश होवे ॥

यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जाके उस की संग यकान्त मैं उस को १५  
 समझा दे . जो वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पाया है । परन्तु जो वह १६  
 न सुने तो एक अथवा दो जन को अपने संग ले जा कि दो अथवा तीन  
 साधियों के मुँह से हर एक बात उधराई जाय । जो वह उन की न माने तो १७  
 मंडली में कह दे परन्तु जो वह मंडली की भी न माने तो तेरे नेमे देवपूजक  
 और कर उगाहनेद्वारा सा होय । मैं तुम से सच कहता हूं जो कुछ तुम पृथिवी १८  
 पर व्याधोगे सो स्वर्ग में वंधा हुआ होगा और जो कुछ तुम पृथिवी पर  
 खोलोगे सो स्वर्ग में खुला हुआ होगा । फिर मैं तुम से कहता हूं यदि पृथिवी १९  
 पर तुम में से दो मनुष्य जो कुछ सांगे उस बात के विषय में एक मन होवे तो  
 वह उन के लिये मेरे स्वर्गवामी पिता की ओर से हो जायगी । क्योंकि जहां २०  
 दो अथवा तीन मेरे नाम पर एकट्ठे होवे तहां मैं उन के बीच में हूं ॥

तत्र पितर ने उस पास आ कहा हे प्रभु मेरा भाई कै वर मेरा अपराध २१  
 करे और मैं उस को जमा करूं . क्या सात वर लों । यीशु ने उस से कहा मैं २२  
 तुम्ह से नहीं कहता हूं कि सात वर लों परन्तु सत्तर गुने सात वर लों । इस लिये २३  
 स्वर्ग के राज्य की उपमा एक राजा से दिई जाती है जिस ने अपने दासों से  
 लेखा लेने चाहा । जत्र वह लेखा लेने लगा तत्र एक जन जो उस सचय तोड़े २४  
 धारता था उस के पास पहुंचाया गया । जत्र कि भर देने को उस पास कुछ न २५  
 था उस के स्वामी ने आज्ञा किई कि वह और उस की स्त्री और लड़के बाले  
 और जो कुछ उस का था सब बेचा जाय और वह ऋण भर दिया जाय । इस २६  
 पर उस दास ने दंडवत कर उसे प्रणाम किया और कहा हे प्रभु मेरे विषय में  
 धीरज धरिये मैं आप को सब भर देऊंगा । तत्र उस दास के स्वामी ने दया २७  
 कर उसे छोड़ दिया और उस का ऋण जमा किया । परन्तु उसी दास ने बाहर २८  
 निकलके अपने संगी दासों में से एक को पाया जो उस की एक सौ सूक्री  
 धारता था और उस को पकड़के उस का गला दावके कटा जो कुछ तू धारता  
 है मुझे दे । इस पर उस के संगी दास ने उस के पांछों पड़के उस से यिन्ती २९  
 कर कहा मेरे विषय में धीरज धरिये मैं आप को सब भर देऊंगा । उस ने न ३०  
 माना परन्तु जाके उसे बन्दीगृह में डाला कि जत्र लों ऋण को भर न देवे तत्र  
 लों वहीं रहे । उस के संगी दास लोग जो हुआ था सो देखके बहुत उदास हुए ३१  
 और जाके सब कुछ जो हुआ था अपने स्वामी को बताया । तत्र उस दास के ३२  
 स्वामी ने उस को अपने पास बुलाके उस से कहा हे दुष्ट दास तू ने जो मुझ से

- १३ जिन्होंने ने दिन भर का भार और घाम सहा । उस ने उन में से एक को उत्तर दिया कि हे मित्र मैं तुझ से कुछ अनोति नहीं करता हूं . क्या तू ने मुझ से एक
- १४ सूकी लेने को न ठहराया । अपना ले और चला जा . मेरी इच्छा है कि जितना
- १५ तुझ को उतना इस पिछले को भी देऊँ । क्या मुझे उचित नहीं कि अपने धन से जो चाहूँ सो करूं . क्या तू मेरे भले होने के कारण घुरी दृष्टि से देखता है ।
- १६ इस रीति से जो पिछले हैं सो आगले होंगे और जो आगले हैं सो पिछले होंगे क्योंकि छुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं ॥
- १७ यीशु ने यिश्शलीम को जाते हुए मार्ग में बारह शिष्यों को एकान्त में से
- १८ जाके उन से कहा . देखो हम यिश्शलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकों के हाथ पकड़वाया जायगा और वे उस को बध
- १९ के योग्य ठहरावेंगे । और उस को अन्यदेशियों के हाथ सोंपेंगे कि वे उस से ठट्ठा करें और कोड़े मारें और क्रूश पर घात करें . परन्तु छठ तीसरे दिन जी उठेगा ॥
- २० तब जधदी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के संग यीशु पास आ प्रणाम
- २१ कर उस से कुछ मांगा । उस ने उस से कहा तू क्या चाहती है . वह उस से बोली आप यह कहिये कि आप के राज्य में मेरे इन दो पुत्रों में से एक आप
- २२ की दहिनी और और दूसरा बाईं ओर बैठे । यीशु ने उत्तर दिया तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो . जिस कटोरे से मैं पीने पर हूं क्या तुम उस से पी सकते हो और जो व्यतिसमा में लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो . उन्होंने ने
- २३ उस से कहा हम सकते हैं । उस ने उन से कहा तुम मेरे कटोरे से तो पीओगे और जो व्यतिसमा में लेता हूं उसे लेओगे परन्तु जिन्होंने के लिये मेरे पिता से तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसी को अपनी दहिनी और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है ॥
- २४ यह सुनके दसों शिष्य उन दोनों भाइयों पर रिसिआये । यीशु ने उन को अपने पास बुलाके कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशियों के अध्यक्ष लोग उन्हें
- २५ पर प्रभुता करते हैं और जो बड़े हैं सो उन्हें पर अधिकार रखते हैं । परन्तु तुम्हें मे ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्हें में बड़ा हुआ चाहे सो तुम्हारा
- २६ सेवक होवे । और जो कोई तुम्हें में प्रधान हुआ चाहे सो तुम्हारा दास होवे ।
- २७ इसी रीति से मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बहुतों के उद्धार के दाम में अपना प्राण देने को आया है ॥
- २८ जब वे पिरीहो नगर से निकलते थे तब बहुत लोग यीशु के पीछे हो लिये ।
- २९ और देखो दो अंधे जो मार्ग की ओर बैठे थे यह सुनके कि यीशु जाता है
- ३० पुकारके बोले हे प्रभु दाऊद के सन्तान हम पर दया कीजिये । लोगों ने उन्हें डांटा कि वे चुप रहें परन्तु उन्होंने ने अधिक पुकारा हे प्रभु दाऊद के सन्तान
- ३१ हम पर दया कीजिये । तब यीशु खड़ा रहा और उन को बुलाके कहा तुम
- ३२ क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं । उन्होंने ने उस से कहा हे प्रभु हमारी
- ३३ आंखें खुल जायें । यीशु ने दया कर उन की आंखें कूईं और वे तुरन्त आंखों से देखने लगे और उस के पीछे हो लिये ॥

मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे . अपने माता पिता का आदर कर १९ और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर । उस जवान ने उस से कहा इन २० सभों को मैं ने अपने लड़कपन से पालन किया है मुझे कुछ क्या छटी है । यीशु २१ ने उस से कहा जो तू मित्र दुष्टा चाहता है तो जा अपनी सम्पत्ति बेचके कंगालों को दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ मेरे पीछे हो ले । वह जवान यह २२ बात सुनके उदास चला गया क्योंकि उस को बहुत धन था ।

तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा मैं तुम से सब कहता हूँ कि धनवान को २३ स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन होगा । फिर भी मैं तुम से कहता हूँ कि २४ ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से जंट का मुँह के नाके में से जाना सरज है । यह सुनके उस के शिष्यों ने निपट अचोभन हो कहा तब तो किम २५ का आश हो सकता है । यीशु ने उन पर दृष्टि कर उन से कहा मनुष्यों से यह २६ आन्टाना है परन्तु ईश्वर से सब कुछ हो सकता है ॥

तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप २७ के पीछे हो लिये हैं सो हम क्या मिलेगा । यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सब २८ कहता हूँ कि नई सृष्टि में जय मनुष्य का पुत्र अपने गन्धर्व के सिंहासन पर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो धान्य सिंहासनों पर बैठके इग्याबेल के द्वारद्व कुलों का न्याय करोगे । और जिस किसी ने मेरे नाम के लिये घरों या भाइयों २९ या बहिनों या पिता या माता या स्त्री या लड़कों या भूमि का त्याग है सो' सो गुणा पावेगा और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा । परन्तु बहुतरे जो ३० अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे ॥

धीमधी पर्व ।

स्वर्ग का राज्य किमी गृहस्थ के समान है जो भार को निकला कि अपने १ दाख की धारी में धनिदारी का लगावे । और उस ने धनिदारी के साथ दिन २ भर की एक एक सूकी मजूरी टहराके उन्हे अपने दाख की धारी में भेजा । तब ३ पहर एक दिन चढ़ा तब उस ने बाहर जाके औरों को चौक में बेकार खड़े देखा . और उन से कहा तुम भी दाख की धारी में जाओ और जो कुछ उचित ४ होय मैं तुम्हें देऊंगा . सो वे भी गये । फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के ५ निकट बाहर जाके वैसा ही किया । छठी एक दिन रहते उस ने बाहर जाके ६ औरों को बेकार खड़े पाया और उन से कहा तुम क्यों यहाँ दिन भर बेकार खड़े हो । उन्हे ने उस से कहा किमी ने हम को काम में नहीं लगाया है . ७ उस ने उन्हे कहा तुम भी दाख की धारी में जाओ और जो कुछ उचित होय सो पाओगे । जय सांभ छुई तब दाख की धारी के स्वामी ने अपने भंडारी से ८ कहा धनिदारी को सुलाके पिछलों से शारंभ कर अगलों तक उन्हे मजूरी दे । सो जो लोग छठी एक दिन रहते काम पर आये थे उन्हे ने आके एक एक ९ सूकी पाई । तब अगले आये और समझा कि हम अधिक पावेंगे परन्तु उन्हे ने १० भी एक एक सूकी पाई । हम को लेके वे उस गृहस्थ पर कुछकुड़ाके पाले . इन ११ पिछलों ने एक ही छठी काम किया और आप ने उन को हमारे तुल्य किया है १२

२३ जब वह मन्दिर में गया और उपदेश करता था तब लोगों के प्रधान याजकों  
 और प्राचीनों ने उस पास आ कहा तुम्हें ये काम करने का कैसा अधिकार है  
 २४ और यह अधिकार किस ने तुम्हें को दिया । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि  
 मैं भी तुम से एक बात पूछूंगा जो तुम मुझे उस का उत्तर देओ तो मैं भी तुम्हें  
 २५ बताऊंगा कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है । योहन का खपतिसमा  
 देना कहाँ से हुआ स्वर्ग की अथवा मनुष्यों की ओर से , तब वे आपस में  
 विचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो यह हम से कहेगा  
 २६ फिर तुम ने उस का विश्वास क्यों नहीं किया । और जो हम कहें मनुष्यों की  
 ओर से तो हमें लोगों का डर है क्योंकि सब लोग योहन को भविष्यद्वक्ता जानते  
 २७ हैं । सो उन्होंने ने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं जानते , तब उस ने उन से  
 कहा तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूँ कि मुझे ये काम करने का कैसा  
 अधिकार है ॥

२८ तुम क्या समझते हो , किसी मनुष्य के दो पुत्र थे और उस ने पहिले के  
 २९ पास आ कहा हे पुत्र आज मेरी दाख की बारी मैं जाके काम कर । उस ने  
 ३० उत्तर दिया मैं नहीं जाऊंगा परन्तु पीछे पकृताके गया । फिर उस ने दूसरे के  
 पास आके वैसा ही कहा . उस ने उत्तर दिया हे प्रभु मैं जाता हूँ परन्तु गया  
 ३१ नहीं । इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी कीई . वे उस से बोले  
 पहिले ने . यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सब कहता हूँ कि कर उगाहनेहारे  
 ३२ और वेश्या तुम से आगे ईश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं । क्योंकि योहन धर्म  
 के मार्ग से तुम्हारे पास आया और तुम ने उस का विश्वास न किया परन्तु कर  
 उगाहनेहारे और वेश्याओं ने उस का विश्वास किया और तुम लोग यह देखके  
 पीछे से भी नहीं पकृताये कि उस का विश्वास करते ॥

३३ एक और दृष्टान्त सुनो . एक गृहस्थ था जिस ने दाख की बारी लगाई और  
 उस को चहुँ ओर বেড় दिया और उस में रस का कुँड खोदा और गरु बनाया  
 ३४ और मालियों को उस का ठीका दे परदेश को चला गया । जब फल का समय  
 निकट आया तब उस ने अपने दासों को उस का फल लेने को मालियों के पास  
 ३५ भेजा । परन्तु मालियों ने उस के दासों को लेके एक को मारा दूसरे को घात  
 ३६ किया और तीसरे को पत्थरबाद किया । फिर उस ने पहिले दासों से अधिक  
 ३७ दूसरे दासों को भेजा और उन्होंने ने उन से भी वैसा ही किया । सब के पीछे  
 उस ने यह कहके अपने पुत्र को उन के पास भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर  
 ३८ करेंगे । परन्तु मालियों ने उस के पुत्र को देखके आपस में कहा यह तो  
 ३९ अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें और उस का अधिकार ले लें । और  
 ४० उन्होंने ने उसे लेके दाख की बारी से बाहर निकालके मार डाला । इस लिये  
 ४१ जब दाख की बारी का स्वामी आवेगा तब उन मालियों से क्या करेगा । उन्होंने  
 ने उस से कहा वह उन खुरे लोगों को खुरी रीति से नाश करेगा और दाख की  
 बारी का ठीका दूसरे मालियों को देगा जो फलों को उन के समयों में उसे  
 ४२ दिया करेंगे । यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने कभी धर्मपुस्तक में यह बचन

## इकहंसवां पर्व ।

जब वे यिश्मलीस के निकट आये और जैतन पर्वत के समीप बैठफर्मा गांथ १  
 पास पहुंचे तब यीशु ने दो शिष्यों को यह कहके भेजा . कि जो गांथ तुम्हारे २  
 समुग्र है उस में जाओ और तुम तुरन्त एक गदहों को धंधी हुई और उस के ३  
 साथ बन्ने को पाओगे उन्हें खालके मेरे पास लाओ । जो तुम में कोई कुछ कहे ४  
 तो फटो कि प्रभु को इन का प्रयोजन है तब वह तुरन्त उन को भेजेगा । यह ५  
 सब इस लिये हुआ कि जो बचन भविष्यवृत्ता से कहा गया था सो पूरा होवे .  
 कि सियोन की पुत्री मे कहा देख तेरा राजा नम्र और गदहों पर छां नादू के बन्ने ६  
 पर बैठा हुआ तेरे पास आता है । सो शिष्यों ने जाके जैसा यीशु ने उन्हें आज्ञा ७  
 दीई वैसा किया । और वे उस गदहों को और बन्ने को लाये और उन पर अपने ८  
 कपड़े रखके यीशु को उन पर बैठाया । और बहुतरे लोगों ने अपने अपने कपड़े ९  
 मार्ग में बिछाये और औरों ने वृक्षों में डालियां काटके मार्ग में बिछाईं । और १०  
 जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्हें ने पुकारके कहा दाऊद के सन्तान की जय .  
 धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है . सब ने ऊंचे स्थान में जयजयकार ११  
 होवे । जब उन ने यिश्मलीस में प्रवेश किया तब मारे नगर के निवासों घरघरके १२  
 बोले यह जैन है । लोगों ने कहा यह गालील के नामरत नगर का भविष्यवृत्ता १३  
 यीशु है ॥

यीशु ने इष्टर के मन्दिर में जाके जो लोग मन्दिर में बेचने औ खोल लेते थे १४  
 उन मर्मां को निकाल दिया और मर्मां के पीटों को और कपोतों के बेचनेदारों १५  
 को चौकियों को उलट दिया . और उन से कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना १६  
 का घर कहावेगा . परन्तु तुम ने इसे डाकूओं का खोद बनाया है । तब आगे १७  
 और लंगड़े उस पास मन्दिर में आये और उस ने उन्हें चंगा किया । जब प्रधान १८  
 याजकों और अध्यापकों ने इन आश्चर्य कर्मों को जो उन ने किये और लड़कों १९  
 को जो मन्दिर में दाऊद के सन्तान की जय पुकारते थे देखा तब उन्होंने ने रिसि-  
 याके उस से कहा क्या तू सुनता कि ये क्या कहते हैं । यीशु ने उन से कहा २०  
 हां . क्या तुम ने कभी यह बचन नहीं पढ़ा कि वालकों और दूध पीनेदार लड़कों २१  
 के मुँह से तू ने स्तुति करवाई है । तब वह उन्हें छोड़के नगर के बाहर बैथानिया २२  
 को गया और वहां ठिका ॥

भार को जब वह नगर को फिर जाता था तब उस को भूख लगी । और २३  
 मार्ग में एक गूलर का वृक्ष देखके वह उस पास आया परन्तु उस में और कुछ न २४  
 पाया केवल पत्ते और उस को कहा तुम में फिर कभी फल न लगे . इस पर २५  
 गूलर का वृक्ष तुरन्त सूख गया । यह देखके शिष्यों ने अचंभा कर कहा गूलर २६  
 का वृक्ष क्याही जोध्र सूख गया । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं तुम से सब २७  
 कहता हूं जो तुम विश्वास करो और मन्देह न रखा तो जो इस गूलर के वृक्ष २८  
 से किया गया है केवल इतना न करोगे परन्तु यदि इस पलाइ से कहो कि उठ २९  
 समुद्र में गिर पड़ तो वैसाही होगा । और जो कुछ तुम विश्वास करके प्रार्थना ३०  
 में मांगोगे सो पाओगे ॥



२२ और जो ईश्वर का है सो ईश्वर को देखो । यह सुनके वे अचंभित हुए और उस को छोड़के चले गये ॥

२३ उसी दिन सड़की लोग जो कहते हैं कि मृतकों का जी उठना नहीं होगा

२४ उस पास आये और उस से पूछा . कि हे गुन मूसा ने कहा यदि कोई मनुष्य निःसन्तान मर जाय तो उस का भाई उस की स्त्री से विवाह करे और अपने

२५ भाई के लिये वंश खड़ा करे । सो हमारे यहां सात भाई थे . पहिले भाई ने विवाह किया और निःसन्तान मर जाने से अपनी स्त्री को अपने भाई के लिये

२६ छोड़ा । दूसरे और तीसरे भाई ने भी सातवें भाई तक वैसाही किया । सब के

२७ पीछे स्त्री भी मर गई । सो मृतकों के जी उठने पर यह इन सातों में से किस

२८ की स्त्री होगी क्योंकि सभी ने उस से विवाह किया । यीशु ने उन को उत्तर दिया

२९ कि तुम धर्मपुस्तक और ईश्वर की शक्ति न धूमके भूल में पड़े हो । क्योंकि मृतकों के जी उठने पर वे न विवाह करते न विवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्ग

३० में ईश्वर के दूतों के समान हैं । मृतकों के जी उठने के विषय में क्या तुम ने

३१ यह बचन जो ईश्वर ने तुम से कहा नहीं पढ़ा है . कि मैं इब्राहीम का ईश्वर

और इसराक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हूँ . ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु

३३ जीवतों का ईश्वर है । यह सुनकर लोग उस के उपदेश से अचंभित हुए ॥

३४ जब फरीशियों ने सुना कि यीशु ने सड़कियों को निरुत्तर किया तब वे एकट्ठे

३५ हुए । और उन में से एक ने जो व्यवस्थापक था उस को परीक्षा करने को उस

३६ से पूछा . हे गुन व्यवस्था में बड़ी आज्ञा कौन है । यीशु ने उस से कहा तू

परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी

३८ सारी बुद्धि से प्रेम कर । यही पहिली और बड़ी आज्ञा है । और दूसरी उस के

३९ समान है अर्थात् तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर । इन दो आज्ञाओं

से सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का पुस्तक सम्बन्ध रखते हैं ॥

४० फरीशियों को एकट्ठे होते हुए यीशु ने उन से पूछा . खीष्ट के विषय में तुम

४१ क्या समझते हो वह किस का पुत्र है . वे उस से बोले दाऊद का । उस ने उन से

४२ कहा तो दाऊद क्योंकि आत्मा की शिक्षा से उस को प्रभु कहता है . कि परमेश्वर

ने मेरे प्रभु से कहा जब लों में तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब

४४ लों तू मेरी दाहिनी ओर बैठ । यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उस का पुत्र

४५ क्योंकि है । इस के उत्तर में कोई उस से एक बात नहीं बोल सका और उस

दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ ॥

तेईसवां पृष्ठ ।

४६ तब यीशु ने लोगों से और अपने शिष्यों से कहा . अध्यापक और फरीशी

४७ लोग मूसा के आसन पर बैठे हैं । इस लिये जो कुछ वे तुम्हें मानने को कहें सो

मानो और पालन करो परन्तु उन के कर्मों के अनुसार मत करो क्योंकि वे कहते

४९ हैं और करते नहीं । वे भारी बोझें बांधते हैं जिन को उठाना कठिन है और

उन्हें मनुष्यों के कांधों पर धर देते हैं परन्तु उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाने

५० नहीं चाहते हैं । वे मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने सब कर्म करते हैं । वे

नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को शय्यियों ने निकम्मा जाना वही कोने का मिरा हुआ है . यह परमेश्वर का कार्य है और हमारी दृष्टि में अद्भुत है । इस लिये ४३ में तुम से कहता हूँ कि ईश्वर का राज्य तुम से ले लिया जायगा और और लोगों का दिया जायगा जो उस के जन दिया करेंगे । जो हम पत्थर पर गिरेगा ४४ सो चूर हो जायगा और जिस किसी पर यह गिरेगा उस को पीस डालेंगा । प्रधान राजकों और फरीशियों ने उस के दृष्टान्तों को सुनके जाना कि यह हमारे ४५ विषय में बोलता है । और उन्होंने ने उसे पकड़ने चाहा परन्तु लोगों से धरे ४६ क्योंकि वे उस को भविष्यद्वक्ता जानते थे ॥

घाईमवां पन्थ ।

इस पर यीशु ने फिर उन से दृष्टान्तों में कहा . स्वर्ग के राज्य की उपमा एक १ राजा से दिई जाती है जो अपने पुत्र का विवाह करता था । और उन ने अपने २ दासों को भेजा कि नेग्रतहरियों को विवाह के भोज में बुलावे परन्तु उन्होंने ने आने न चाहा । फिर उस ने हमारे दासों को यह कहके भेजा कि नेग्रतहरियों से ४ कटो देखो मैं ने अपना भोज तैयार किया है और मेरे घन और मोटे पशु मारे गये हैं और सब कुछ तैयार है विवाह के भोज में आओ । परन्तु नेग्रतहरियों ने ५ इस का कुछ सोच न किया पर कोई अपने खेत को और कोई अपने टोपाघार को चले गये । औरों ने उस के दासों को पकड़के दुर्दगा करके मार डाला । यह ६ सुनके राजा ने क्रोध किया और अपनी सेना भेजके उन हत्यारों को नाश किया और उन के नगर को फूँक दिया । तब उस ने अपने दासों से कहा विवाह का भोज ८ तो तैयार है परन्तु नेग्रतहरी योग्य नहीं ठहरे । इस लिये चौराहों में जाके जितने ९ लोग तुम्हें मिलें सभी को विवाह के भोज में बुलाओ । सो उन दासों ने मार्गों में १० जाके क्या धरे क्या भले जितने उन्हें मिले सभी को पकड़े किया और विवाह का स्थान नेग्रतहरियों से भर गया । तब राजा नेग्रतहरियों को देखने को भीतर ११ आया तब उस ने वहाँ एक मनुष्य को देखा जो विवाहीय धस्त्र नहीं पहिने हुए था । उस ने उस से कहा हे मित्र तू यहाँ बिना विवाहीय धस्त्र पहिने क्योंकर १२ भीतर आया . यह निस्तर हुआ । तब राजा ने सेवकों से कहा इस के हाथ पांय १३ धाँध्रा और उस को ले जाके बाहर के अंधकार में डाल दोओ जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा । क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं ॥ १४

तब फरीशियों ने जाके आपस में विचार किया इस लिये कि यीशु को यात १५ में फंसावे । सो उन्होंने ने अपने शिष्यों को हेरोदियों के संग उस पास यह कहने १६ को भेजा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और ईश्वर का मार्ग सत्यता से बताते हैं और किसी का खटका नहीं रगते हैं क्योंकि आप मनुष्यों का मुँह देखके बात नहीं करते हैं । सो इस से कहिये आप क्या समझते हैं . कैसर को १७ कर देना उचित है अथवा नहीं । यीशु ने उन की दुष्टता जानके कहा हे कपटियों १८ मेरी परीक्षा क्यों करते हो । कर का सुद्धा मुझे दिखाओ . तब वे उस पास एक १९ मूकी लाये । उस ने उन से कहा यह मूर्ति और काय किस की है । वे उस से २० बोले कैसर की . तब उस ने उन से कहा तो जो कैसर का है सो कैसर को देओ २१

३७ जब तू उस के लिये प्रायश्चित्त करे तो उसे पावन करने की अभियेक कर । तू वेदी के लिये सात दिन प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र कर और यह वेदी अत्यंत पवित्र हो जायगी जो कोई उस वेदी को छूये सो पवित्र हो ॥

३८ और यह तू यज्ञवेदी पर कीजियो पहिले घरस का दो मेम्रा प्रतिदिन नित्य ३९ चढ़ाइयो । एक मेम्रा विहान को और दूसरा मेम्रा सांझ को बलिदान कीजियो । ४० और गेहूं के पिसान का दसवां भाग जो जलपाई के कूटे हुए एक पाव हीन तेल से मिला हुआ हो और एक पाव हीन दाखरस एक मेम्रा के साथ तपावन के ४१ लिये होय । और दूसरा मेम्रा सांझ को चढ़ाइयो विहान की भेंट के समान और उस के तपावन के समान उससे कीजियो जिसमें परमेश्वर के लिये आग की सुगंध ४२ वासना की भेंट हो । बलिदान की भेंट तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी लों मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे नित्य होगी जहां में तुम से यार्त्ता करने के ४३ लिये भेंट कहेगा । और मैं इसराएल के संतान से वहां भेंट कहेगा और वह मेरे ४४ विभव में पवित्र होगा । और मैं मंडली के तंबू को और यज्ञवेदी को पवित्र कहेगा और हाइन और उस के वेदों को पवित्र कहेगा कि ये मेरे लिये याजक ४५ होंगे । और मैं इसराएल के संतानों में वान कहेगा और मैं उन का ईश्वर हूंगा । ४६ और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूँ जो उन्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया जिसमें मैं उन के मध्य में वास करूं मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूँ ॥

### तीसवां पर्व ।

१ और तू शमशाद की लकड़ी से धूप जलाने के लिये एक यज्ञवेदी बना । उस की लंबाई और चौड़ाई एक एक हाथ चौकोर होय और उस की ऊंचाई दो ३ हाथ उस के सींग उसी से हों । और उसे निर्मल सोने से मढ़ उस की कृत और उस के चारों ओर के मुकुट और उस के सींगों को और उस के चारों ओर सोने ४ का मुकुट बना । और सोने के दो कड़े उस के मुकुट के नीचे उस के दोनों कोनों के पास उस की दोनों अलंग पर बना और ये उठाने के वहंगर के स्थान ५ होंगे । और वहंगर को शमशाद की लकड़ी से बना और उन्हें सोने से मढ़ । ६ और उसे ओशा की आगे जो साक्षी की मंजूपा के ऊपर है रख उस ठकने के ७ सामने जो साक्षी के ऊपर है जहां में तुम से भेंट कहेगा । और हर विहान को हाइन उस पर सुगंध द्रव्य का धूप जलावे जब वह दीपकों को सुधारे वह ८ उस पर धूप जलावे । और जब हाइन संध्या के समय में दीपक को धारे तो ९ वह उस पर तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में परमेश्वर के आगे धूप जलावे । तुम उस पर उपरी धूप और भेंट का बलिदान और भोजन की भेंट न चढ़ाइयो और उस १० पर तपावन न तपाइयो । और हाइन घरस भर में एक बार उस के सींगों पर पाप की भेंट के प्रायश्चित्त के लोहू से प्रायश्चित्त करे तुम्हारी पीढ़ियों में घरस में एक बार उस पर प्रायश्चित्त करे यह परमेश्वर के लिये अति पवित्र है ॥

११ और परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला । कि जब तू इसराएल के संतानों को गिने तब उन में से हर मनुष्य अपने प्राण के कुड़ाने के लिये परमेश्वर को देवे

अपने यन्त्रों को चौड़े करते हैं और अपने यन्त्रों के आंचल बढ़ाते हैं । जेवनारों ७  
में ऊंचे स्थान और मभा के छरों में ऊंचे आमन और यात्रारों में नमस्कार और  
मनुष्यों से गुरु गुरु कहलाना उन को प्रिय लगते हैं । परन्तु तुम गुरु मत कहलाओ ८  
क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात् स्त्रीष्ट और तुम सब भाई हो । और पृथिवी ९  
पर किसी को अपना पिता मत कहो क्योंकि तुम्हारा एक पिता है अर्थात् वही  
जो स्वर्ग में है । और गुरु भी मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात् १०  
स्त्रीष्ट । जो तुम्हें में बढ़ा हो सो तुम्हारा भेद्यक होगा । जो कोई अपने को ११  
ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो कोई अपने को नीचा करे सो ऊंचा  
किया जायगा ॥

हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियों तुम मनुष्यों पर स्वर्ग के राज्य १३  
का द्वार मून्दते हो . न आपकी इस में प्रवेश करते हो और न प्रवेश करनेवालों  
को प्रवेश करने देते हो । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियों तुम १४  
विधवाओं के घर ग्रा जाते हो और यद्दाना के लिये श्रद्धा घर लों प्रार्थना  
करते हो इस लिये तुम अधिक दंड पाओगे । हाय तुम कपटी अध्यापको और १५  
फरीशियों तुम एक जन को अपने मत में लाने को सारे जल या थल में फिरा  
करते हो और जय यह मत में आया है तब उस को अपने से दुना नरक के  
योग्य बनाते हो । हाय तुम अन्धे अशुभो जो कहते हो यदि कोई सन्दिर को १६  
किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु यदि कोई सन्दिर के सोने की किरिया  
खाय तो कृणी है । हे सूर्यो और अन्धो कौन बड़ा है वह सोना अथवा वा १७  
सन्दिर जो सोने को प्रिय करता है । फिर कहते हो यदि कोई वेदी को १८  
किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु जो चढ़ाया वेदी पर है यदि कोई उस की  
किरिया खाय तो कृणी है । हे सूर्यो और अन्धो कौन बड़ा है वह चढ़ाया १९  
अथवा वह वेदी जो चढ़ाये को प्रिय करती है । इस लिये जो वेदी को २०  
किरिया खाता है सो उस की किरिया और जो कुछ उस पर है उस को भी  
किरिया खाता है । और जो सन्दिर की किरिया खाता है सो उस की किरिया २१  
और जो उस में काम करता है उस की भी किरिया खाता है । और जो स्वर्ग २२  
की किरिया खाता है सो ईश्वर के सिंहासन की किरिया और जो उस पर बैठा  
है उस की भी किरिया खाता है । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियों २३  
तुम पापीने और सोर और जीरे का दसवां अंश देते हो परन्तु तुम ने व्यवस्था  
की भारी बातों को अर्थात् न्याय और दया और विश्वास को छोड़ दिया है .  
बुन्द करना और बुन्द न छोड़ना उचित था । हे अन्धे अशुभो जो मक्कर को २४  
कान डालते हो और कंठ को निगलते हो । हाय तुम कपटी अध्यापको और २५  
फरीशियों तुम कटोरे और थाल को बाहर बाहर गुह्र करते हो परन्तु वे भीतर  
अन्धे और अन्याय से भरे हैं । हे अन्धे फरीशी पहिले कटोरे और थाल के २६  
भीतर गुह्र कर कि वे बाहर भी गुह्र होयें । हाय तुम कपटी अध्यापको और २७  
फरीशियों तुम चूना फेरी हुई कपड़ों के समान हो जो बाहर से सुन्दर दिखाई  
देती हैं परन्तु भीतर मृतकों की हड्डियों से और सब प्रकार की मलिनता से भरी

२८ हूँ । इसी रीति से तुम भी बाहर से मनुष्यों को धर्म्मी दिखाई देते हो परन्तु भीतर  
 २९ कपट और अधर्म्म से भरे हो । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियों तुम  
 ३० भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें खनाते हो और धर्म्मियों की कब्रें संवारते हो । और  
 कहते हो यदि हम अपने पितरों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं का लोहू  
 ३१ बहाने में उन के संगी न होते । इस से तुम अपने पर साक्षी देते हो कि तुम  
 ३२ भविष्यद्वक्ताओं के घातकों के सन्तान हो । सो तुम अपने पितरों का नपुष्पा  
 ३३ भरो । हे सांपो हे सर्पों के वंश तुम नरक के दंड से क्योंकर बचोगे ॥

३४ इस लिये देखो मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और अध्यापकों  
 को भेजता हूँ और तुम उन में से कितनों को मार डालोगे और क्रूश पर चढ़ाओगे  
 ३५ और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे और नगर नगर सताओगे । कि  
 धर्म्मी हाविल के लोहू से लेके बरखियाह के पुत्र जिखरियाह के लोहू तक जिसे  
 तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला जितने धर्म्मियों का लोहू पृथिवी  
 ३६ पर बहाया जाता है सब तुम पर पड़े । मैं तुम से सच कहता हूँ यह सब बातें  
 ३७ इसी समय के लोगों पर पड़ेंगी । हे यिखशलीम यिखशलीम जो भविष्यद्वक्ताओं  
 को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरबाह करती है जैसे  
 सुर्गी अपने बच्चों को पंखों के नीचे एकट्टे करती है वैसे ही मैं ने कितनी घेर तेरे  
 ३८ बालकों को एकट्टे करने की इच्छा किई परन्तु तुम ने न चाहा । देखो तुम्हारा  
 ३९ घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है । क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ जब लो  
 तुम न कहोगे धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है तब लो तुम मुझे अब  
 से फिर न देखोगे ॥

### चौबीसवां पर्व ।

१ जब यीशु मन्दिर से निकलके जाता था तब उस के शिष्य लोग उस को  
 २ मन्दिर की रचना दिखाने को उस पास आये । यीशु ने उन से कहा क्या तुम यह  
 सब नहीं देखते हो । मैं तुम से सच कहता हूँ यहां पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा  
 जायगा जो गिराया न जायगा ॥

३ जब वह जैतून पर्वत पर बैठा था तब शिष्यों ने निराले में उस पास आ  
 कहा हमों से कहिये यह कब होगा और आप के आने का और जगत के अन्त  
 ४ का क्या चिन्ह होगा । यीशु ने उन को उत्तर दिया चौकस रहो कि कोई तुम्हें  
 ५ न भरमावे । क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं खीष्ट हूँ और बहुतों  
 ६ को भरमावेंगे । तुम लड़ाइयाँ और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे । देखो मत  
 घबराओ क्योंकि इन सभों का होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समय में नहीं  
 ७ होगा । क्योंकि देश देशके और राज्य राज्यके विरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानों  
 ८ में अकाल और मरियाँ और भुईँडोल होंगे । यह सब दुःखों का आरंभ होगा ॥  
 ९ तब वे तुम्हें पकड़वायेंगे कि क्रेश पावो और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम  
 १० के कारण सब देशों के लोग तुम से घेर करेंगे । तब बहुतों टोकर खायेंगे और  
 ११ एक दूसरे को पकड़वायेंगे और एक दूसरे से घेर करेगा । और बहुत से भूटें  
 १२ भविष्यद्वक्ता प्रगट होके बहुतों को भरमावेंगे । और अधर्म्म के बढ़ने से बहुतों

का प्रेम ठंडा हो जायगा । पर जो अन्त लों स्थिर रहे मोई यात्रा पायेगा । और १३  
राज्य का यह सुसमाचार सब देशों के लोगों पर सौखी होने के लिये समस्त संसार १४  
में मुनाया जायगा . तब अन्त होगा ।

सो अब तुम उस उजाड़नेवाली त्रिनिटि बस्तु को जिस की बात दाविदेल १५  
भविष्यद्वाक्ता से कही गई पवित्र स्थान में खड़े होते देखो (जो पढ़े सो धूमके) .  
तब जो पिदूदिया में हो सो पहाड़ों पर भागे । जो कोठे पर हो सो अपने घर १६  
में से कुछ लेने को न उतरे । और जो खेत में हो सो अपना बस्तु लेने को पीछे न १७  
फिरे । उन दिनों में दाय दाय गर्भयनिर्वा और दूध पिलानेवालिवा । परन्तु प्रार्थना २०  
करो कि तुम को जाड़े में अथवा विद्यामयार में भागना न द्याये । क्योंकि उस समय २१  
में ऐसा महा क्रोध होगा जैसा जगत के आरंभ से अब तक न हुआ और कभी न  
होगा । जो ये दिन घटाये न आते तो कोई प्राणी न बचता परन्तु चुने हुए २२  
लोगों के कारण ये दिन घटाये जायेंगे ।

तब यदि कोई तुम से कहे देखो खीष्ट यहाँ है अथवा वहाँ है तो प्रतीति मत २३  
करो । क्योंकि बूडे खीष्ट और बूडे भविष्यद्वाक्ता प्रगट होके जेमे बड़े चिन्ह और २४  
अद्भुत काम दिखायेंगे कि जो हो सकता तो चुने हुए लोगों को भी भ्रमाते । देखो २५  
में ने आगे से तुम्हें कह दिया है । इस लिये जो ये तुम से कहे देखो जंगल २६  
में है तो बाहर मत जाओ अथवा देखो कोटरियों में है तो प्रतीति मत करो ।  
क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलती और पश्चिम लों चमकती है वैसा ही मनुष्य २७  
के पुत्र का आना भी होगा । जहाँ कहीं लोग होय तहाँ गिद्ध एकट्टे होंगे ॥ २८

उन दिनों के क्रोध के पीछे तुरन्त सूर्य अधियारा हो जायगा और चाँद अपनी २९  
ज्योति न देगा तारे आकाश में गिर पड़ेंगे और आकाश की सेना डिरा जायगी ।  
तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा और तब पृथिवी के सब ३०  
कुलों के लोग छाती पीटेंगे और मनुष्य के पुत्र को पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य से  
आकाश के सेवों पर आते देखेंगे । और वह अपने दूतों को तुरन्ती के सदा शब्द ३१  
सहित भेजेगा और ये आकाश के इस सिवाने से इस सिवाने तक चहुं दिशा से  
उस के चुने हुए लोगों को एकट्टे करेंगे ॥

गूलर के वृक्ष में दृष्टान्त सीखो . जब उस की डाली कोमल हो जाती और पत्ते ३२  
निकल आते तब तुम जानते हो कि धूपकाला निकट है । इस रीति से जब तुम इन ३३  
सब बातों को देखो तब जानो कि वह निकट है हाँ द्वार पर है । मैं तुम से सब ३४  
कहता हूँ कि जब लों यह सब बातें पूरी न हो जायें तब लों इस समय के लोग  
नहीं जाते रहेंगे । आकाश और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं ॥ ३५

उस दिन और उस घड़ी के विषय मैं न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्ग के दूत ३६  
परन्तु केवल मेरा पिता । जैसे नूट के दिन हुए वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना ३७  
भी होगा । जैसे जलप्रलय के आगे के दिनों में लोग जिस दिन लों नूट जहाज ३८  
पर न चढ़ा उसी दिन लों खाते और पीते विद्याह करते और विद्याह देते थे . और ३९  
जब लों जलप्रलय आके उन सबों को ले न गया तब लों उन्हें चेत न हुआ वैसा  
ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा । तब दो जन खेत में होंगे एक लिया ४०



४१ जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा । दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी एक लिई जायगी और दूसरी छोड़ी जायगी ॥

४२ इस लिये जागते रहे क्योंकि तुम नहीं जानते हो तुम्हारा प्रभु किस घड़ी

४३ आवेगा । पर यही जानते हो कि यदि घर का स्वामी जानता होर किस पहर

४४ में आवेगा तो वह आगता रहता और अपने घर में संध पड़ने न देता । इस

लिये तुम भी तैयार रहे क्योंकि जिस घड़ी का अनुमान तुम नहीं करते हो उसी

४५ घड़ी मनुष्य का पुत्र आवेगा । वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है

जिसे उस के स्वामी ने अपने परिवार पर प्रधान किया हो कि समय में उन्हें

४६ भोजन देवे । वह दास धन्य है जिसे उस का स्वामी आके ऐसा करते पावे ।

४७ मैं तुम से सत्य कहता हूं वह उसे अपनी सय सम्पत्ति पर प्रधान करेगा । परन्तु

४८ जो वह दुष्ट दास अपने मन में कहे मेरा स्वामी आने में विलम्ब करता है, और

४९ अपने संगी दासों को मारने और मतघाले लोगों के संग खाने पीने लगे तो

जिस दिन वह घाट जोड़ता न रहे और जिस घड़ी का वह अनुमान न करे उसी

५० में उस दास का स्वामी आवेगा, और उस को बड़ी ताड़ना देके कपाटियों के

संग उस का अंश देगा जहां रोना और दांत पीसना होगा ॥

पचीसवां पट्ट ॥

१ तब स्वर्ग के राज्य की उपमा दस कुंवारियों से दिई जायगी जो अपनी मशालें

२ लेके दूल्हे से मिलने को निकलीं । उन्हीं में से पांच सुबुद्धि और पांच निर्बुद्धि

३ थीं । जो निर्बुद्धि थीं उन्हीं ने अपनी मशालों को ले अपने संग तेल न लिया ।

४ परन्तु सुबुद्धियों ने अपनी मशालों के संग अपने पात्रों में तेल लिया । दूल्हे के

५ विलम्ब करने से वे सब लंघीं और सो गईं । आधी रात को धूम मची कि देखो

६ दूल्हा आता है उस से मिलने को निकलो । तब वे सब कुंवारियां उठके अपनी

७ मशालों को सजने लगीं । और निर्बुद्धियों ने सुबुद्धियों से कहा अपने तेल में से

८ कुछ दम को दीजिये क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं । परन्तु सुबुद्धियों ने

उत्तर दिया क्या जानें हमारे और तुम्हारे लिये बस न होय सो अच्छा है कि तुम

९ बेचनेहारों के पास जाके अपने लिये मोल लेओ । ज्यों वे मोल लेने को जाती

१० थीं त्योंही दूल्हा आ पहुंचा और जो तैयार थीं सो उस के संग बियाह के घर में

११ गईं और द्वार सुंदा गया । पीछे दूसरी कुंवारियां भी आके बोलीं हे प्रभु हे प्रभु

१२ हमारे लिये खोलिये । उस ने उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूं मैं तुम को

१३ नहीं जानता हूं । इस लिये जागते रहे क्योंकि तुम न वह दिन न घड़ी जानते

हो जिस में मनुष्य का पुत्र आवेगा ॥

१४ क्योंकि वह एक मनुष्य के समान है जिस ने परदेश को जाते हुए अपने

१५ दासों को बुलाके उन को अपना धन सौंपा । उस ने एक को पांच तोड़े दूस

को दो तीसरे को एक हर एक को उस के सामर्थ्य के अनुसार दिया और तुरन्

१६ परदेश को चला । तब जिस ने पांच तोड़े पाये उस ने जाके उन से छेपापार क

१७ पांच तोड़े और कमाये । इसी रीति से जिस ने दो पाये उस ने भी दो तो

१८ और कमाये । परन्तु जिस ने एक तोड़ा पाया उस ने जाके मिट्टी में खोद

अपने स्वामी को रुपये कृपा रखे । बहुत दिनों के पीछे इन दासों का स्वामी १९ आया और उन से लेखा लेने लगा । तब जिस ने पाँच तोड़े पाये थे उस ने २० पाँच तोड़े और लाके कहा है प्रभु आप ने मुझे पाँच तोड़े सोपे देविये में ने उन से पाँच तोड़े और कमाये हैं । उस के स्वामी ने उस से कहा धन्य है उत्तम २१ और विश्वामयोग्य दास तू थोड़े में विश्वामयोग्य हुआ मैं तुम्हें बहुत पर प्रधान कर्मा । अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर । जिस ने दो तोड़े पाये थे उस ने २२ भी आपके कहा है प्रभु आप ने मुझे दो तोड़े सोपे देविये में ने उन से दो तोड़े और कमाये हैं । उस के स्वामी ने उस से कहा धन्य है उत्तम और विश्वामयोग्य २३ दास तू थोड़े में विश्वामयोग्य हुआ मैं तुम्हें बहुत पर प्रधान कर्मा । अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर । तब जिस ने एक तोड़ा पाया था उस ने आपके २४ कहा है प्रभु मैं आप को जानता था कि आप कठोर मनुष्य हैं जहाँ आप ने नहीं बोया वहाँ लगने हैं और जहाँ आप ने नहीं छोट्टा वहाँ से एकट्टा करते हैं । सो मैं डरा और जाके आप का तोड़ा मिट्टी में कृपाया । देविये अपना २५ से लीजिये । उस के स्वामी ने उसे उत्तर दिया कि हे दुष्ट और आलसी दास २६ तू जानता था कि जहाँ मैं ने नहीं बोया वहाँ लगता हूँ और जहाँ मैं ने नहीं छोट्टा वहाँ से एकट्टा करता हूँ । तो तुम्हें उचित था कि मेरे रुपये महाजनों के २७ साथ सोपता तब मैं आपके अपना धन व्याज समेत पाता । उस लिये वह तोड़ा २८ उस ने लेखा और जिस पाम दस तोड़े हैं उसे देखा । क्योंकि जो कोई रम्यता २९ है उस को और दिया जायगा और उस को बहुत शारा परन्तु जो नहीं रम्यता है उस से जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया जायगा । और उस निक्कमे दास ३० को बाहर के अन्धकार में डाल देखा जहाँ रोना और दांत पीसना होगा ॥

जब मनुष्य का पुत्र अपने रेश्वर्य महिन आवेगा और सब पचिय दूत उस ३१ के साथ तब वह अपने रेश्वर्य के सिंहासन पर बैठेगा । और सब देशों के लोग ३२ उस के आगे एकट्टे किये लायंगे और जैसा गढ़ेरिया भेड़ों को दकरियों से अलग करता है तैसा वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा । और वह भेड़ों को अपनी ३३ दाहिनी और और दकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा । तब राजा उन से जो ३४ उस की दाहिनी ओर हैं कहेगा हे मेरे पिता के धन्य लोगो आओ जो राज्य अगत की उत्पत्ति से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है उस के अधिकारी छोओ । क्योंकि मैं भूया था और तुम ने मुझे खाने को दिया मैं प्यासा था और तुम ने ३५ मुझे पिलाया मैं परदेशी था और तुम मुझे अपने घर में लाये । मैं नंगा था ३६ और तुम ने मुझे पहिराया मैं रोगी था और तुम ने मेरी सुध लिये मैं बन्दीगृह में था और तुम मेरे पास आये । तब धर्मी लोग उस को उत्तर देंगे कि हे प्रभु ३७ हम ने कय आप को भूया देखा और खिलाया अथवा प्यासा और पिलाया । हम ने कय आप को परदेशी देखा और अपने घर में लाये अथवा नंगा और ३८ पहिराया । और हम ने कय आप को रोगी अथवा बन्दीगृह में देखा और आप ३९ के पास गये । तब राजा उन्हें उत्तर देगा मैं तुम से सब कहता हूँ कि तुम ने ४० मेरे इन अति छोटे भाइयों में से एक से जोई भर किया सो मुझ से किया । तब ४१

यह उन से जों याईं और हैं कहेगा हे सापित लोगो मेरे पास से उस अनन्त आग  
 ४२ में जाओ जो शैतान और उस के दूतों के लिये तैयार किई गई है । क्योंकि मैं  
 भूखा था और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया मैं प्यासा था और तुम ने मुझे  
 ४३ नहीं पिलाया । मैं परदेशी था और तुम मुझे अपने घर में नहीं लाये मैं नंगा था  
 और तुम ने मुझे नहीं पहिराया मैं रोगी और बन्दीगृह में था और तुम ने मेरी  
 ४४ सुध न लिई । तब वे भी उत्तर देंगे कि हे प्रभु हम ने कब आप को भूखा था  
 प्यासा था परदेशी था नंगा था रोगी था बन्दीगृह में देखा और आप की सेवा  
 ४५ न किई । तब वह उन्हें उत्तर देगा मैं तुम से सब कहता हूं कि तुम ने इन अति  
 ४६ छोटीं में से एक से जोई भर नहीं किया सो मुझ से नहीं किया । सो ये लोग  
 अनन्त दंड में परन्तु धर्मी लोग अनन्त जीवन में जा रहेंगे ।

कृष्णसर्ग पर्व ।

१ जब यीशु यह सब बातें कह चुका तब अपने शिष्यों से कहा । तुम जानते हो  
 कि दो दिन के पीछे निस्तारपर्व होगा और मनुष्य का पुत्र क्रूश पर चढ़ाये  
 ३ जाने को पकड़वाया जायगा । तब लोगों के प्रधान याजक और अध्यापक और  
 ४ प्राचीन लोग क्रियाका नाम मत्तायाजक के घर में एकट्ठे हुए । और आपस में  
 ५ विचार किया कि यीशु को कल से पकड़के मार डालें । परन्तु उन्होंने ने कहा पर्व  
 में नहीं न हो कि लोगों में दुल्लह होवे ॥

६ जब यीशु बैथनिया में शिमोन काढ़ी के घर में था । तब एक स्त्री उजले  
 पत्थर के पात्र में बहुत मोल का सुगन्ध तेल लेके उस पास आई और जब वह  
 ८ भोजन पर बैठा था तब उस के सिर पर ठाला । यह देखके उस के शिष्य रिसिपाके  
 ९ बोले यह सब क्यों हुआ । क्योंकि यह सुगन्ध तेल बहुत दाम में बिक सकता  
 १० और कंगालों को दिया जा सकता । यीशु ने यह जानके उन से कहा क्यों स्त्री  
 ११ को दुःख देते हो । उस ने अच्छा काम मुझ से किया है । कंगाल लोग तुम्हारे  
 १२ संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा । उस ने मेरे देह पर यह  
 १३ सुगन्ध तेल जो ठाला है सो मेरे गाढ़े जाने के लिये किया है । मैं तुम से सत्य  
 कहता हूं सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह भी  
 जो इस ने किया है उस के स्मरण के लिये कहा जायगा ।

१४ तब वारह शिष्यों में से यहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य प्रधान याजकों  
 १५ के पास गया । और कहा जो मैं यीशु को आप लोगों के हाथ पकड़वाऊं तो  
 १६ आप लोग मुझे क्या देंगे । उन्होंने ने उस को तीस रुपये देने को ठहराया । सो  
 वह उसी समय से उस को पकड़वाने का अवसर ठूंठने लगा ।

१७ अखमीरी रोटी के पर्व के पहिले दिन शिष्य लोग यीशु पास आ उस से बोले आप  
 १८ कहां चाहते हैं कि हम आप के लिये निस्तारपर्व का भोजन खाने की तैयारी करें । उस  
 ने कहा नगर में अमुक मनुष्य के पास जाके उस से कहो गुस कहता है कि मेरा समय  
 १९ निकट है मैं अपने शिष्यों के संग तेरे यहां निस्तारपर्व का भोजन करूंगा । सो शिष्यों  
 ने जैसा यीशु ने उन्हें आज्ञा दिई वैसा किया और निस्तारपर्व का भोजन बनाया ।

२० सोभ को यीशु वारह शिष्यों के संग भोजन पर बैठा । जब वे खाते थे तब

उस ने कहा मैं तुम से सब कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वायगा । उस २० पर वे बहुत उदास हुए और हर एक उस से कहने लगा हे प्रभु यह क्या मैं हूँ । उस ने उत्तर दिया कि जो मेरे संग याली में हाथ डालता है सोई मुझे पकड़वायगा । २३ मनुष्य का पुत्र जैसा उस के विषय में लिखा है वैसा ही जाता है परन्तु हाथ यह २४ मनुष्य जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है . जो उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला होता । तब उस के पकड़वानेद्वारे यहूदा ने उत्तर २५ दिया कि हे शुरु यह क्या मैं हूँ . यीशु उस से बोला तू तो कह चुका ।

अब वे खाते थे तब यीशु ने रोटी लेके धन्यवाद किया और उसे तोड़के २६ शिष्यों को दिया और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है । और उस ने कटोरा २७ लेके धन्य माना और उन को देके कहा तुम सब इस से पीओ । क्योंकि यह मेरा २८ लोहू अर्थात् नये नियम का लोहू है जो यहूनों के लिये पापमाचन के निमित्त ब्रह्माया जाता है । मैं तुम से कहता हूँ कि जिस दिन लो मैं तुम्हारे संग अपने २९ पिता के राज्य में उसे नया न पीऊँ उस दिन लो मैं अब से यह दाख रस कभी न पीऊँगा । और वे भजन गाके जैतून पर्वत पर गये ॥ ३०

तब यीशु ने उन से कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय में ठोकर खाओगे ३१ क्योंकि लिखा है कि मैं गहरेरे को मारूँगा और मुँह की भेड़ें तितर धितर हो जायेंगी । परन्तु मैं अपने लो उठने के पीछे तुम्हारे आगे गालील को जाऊँगा । ३२ पितर ने उस को उत्तर दिया यदि सब आप के विषय में ठोकर खाएँ तोभी मैं ३३ कभी ठोकर न खाऊँगा । यीशु ने उस से कहा मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ कि इसी ३४ रात मुर्ग के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा । पितर ने उस से ३५ कहा जो आप के संग मुझे सरना हो तोभी मैं आप से कभी न मुकरूँगा . सब शिष्यों ने भी वैसा ही कहा ॥

तब यीशु ने शिष्यों के संग गेतॉजमनी नाम स्थान में आके उन से कहा अब ३६ लो मैं यहाँ जाके प्रार्थना करूँ तब लो तुम यहाँ बैठो । और वह पितर को ३७ और गवदी के दोनों पुत्रों को अपने संग ले गया और जोफ करने और बहुत उदास होने लगा । तब उस ने उन से कहा मेरा मन यहाँ लो अति उदास है ३८ कि मैं सरने पर हूँ . तुम यहाँ ठहरके मेरे संग जागते रहो । और बोड़ा आगे ३९ बढके वह सुंद के बल गिरा और प्रार्थना किहे कि हे मेरे पिता जो हो सके तो यह कटोरा मेरे पास से टल जाय तोभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा न होय पर जैसा तू चाहता है । तब उस ने शिष्यों के पास आ उन्हे सोते पाया और पितर ४० से कहा सो तुम मेरे संग एक घड़ी नहीं जाग सके । जागते रहो और प्रार्थना ४१ करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो . मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है । फिर ४२ उस ने दूसरी घेर जाके प्रार्थना किहे कि हे मेरे पिता जो बिना पीने से यह कटोरा मेरे पास से नहीं टल सकता है तो तेरी इच्छा पूरी होय । तब उस ने ४३ आके उन्हे फिर सोते पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं । उन को ४४ कोढ़के उस ने फिर जाके तीसरी घेर बड़ी धात करके प्रार्थना किहे । तब उस ने ४५ अपने शिष्यों के पास आ उन से कहा सो तुम सोते रहते और विश्राम करते हो .

- देखो घड़ी आ पहुँची है और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया  
 8६ जाता है । उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है ।
- 8७ यह बोलता ही था कि देखो यहूदा जो बारह शिष्यों में से एक था आ  
 पहुँचा और लोगों के प्रधान याजकों और प्राचीनों की ओर से बहुत लोग खड़े  
 8८ और लाटियाँ लिये हुए उस के संग । यीशु के पकड़वानेहारे ने उन्हें यह पता  
 8९ दिया था कि जिस को मैं खूँ दूँगी है उस को पकड़ो । और यह तुरन्त यीशु  
 9० पास आके बोला है गुन प्रबाम और उस को घूसा । यीशु ने उस से कहा है  
 मिय तू किस लिये आया है . तब उन्होंने ने आके यीशु पर हाथ डालके उसे  
 9१ पकड़ा । इस पर देखो यीशु के शिष्यों में से एक ने हाथ बढ़ाके अपना खड्ग  
 9२ खींचके महायाजक के दास को मारा और उस का कान उड़ा दिया । तब यीशु  
 ने उस से कहा अपना खड्ग फिर काटी में रख क्योंकि जो लोग खड्ग खींचते हैं  
 9३ सो सब खड्ग से नाश किये जायेंगे । क्या तू समझता है कि मैं अभी अपने पिता  
 से बिस्ती नहीं कर सकता हूँ और यह मेरे पास न्यायदूतों की बारह सेनाओं से  
 9४ अधिक पहुँचा न देगा । परन्तु तब धर्मपुस्तक में जो लिखा है कि ऐसा होना  
 9५ अवश्य है सो छोड़कर पूरा होय । उसी घड़ी यीशु ने लोगों से कहा क्या तुम  
 मुझे पकड़ने को जैसे डाकू पर खड्ग और लाटियाँ लेके निकले हो . मैं मन्दिर में  
 उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग बैठता था और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा ।  
 9६ परन्तु यह सब इस लिये हुआ कि भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक की बातें पूरी होय .  
 तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे ।
- 9७ जिन्होंने ने यीशु को पकड़ा सो उस को कियाफा महायाजक के पास ले गये  
 9८ जहाँ अध्यापक और प्राचीन लोग एकट्ठे हुए । पितर दूर दूर उस के पीछे महा-  
 याजक के अंगने ली चला गया और भीतर जाके इस का अन्त देखने को प्यादों  
 9९ के संग बैठा । प्रधान याजकों और प्राचीनों ने और न्यायियों की सारी सभा ने यीशु  
 १०० को घात करवाने के लिये उस पर झूठी साक्षी ठूँढ़ी परन्तु न पाई । बहुतरे झूठे  
 १०१ साक्षी तो आये तौभी उन्होंने ने नहीं पाई । अन्त में दो झूठे साक्षी आके बोले  
 इस ने कहा कि मैं ईश्वर का मन्दिर ठा सकता और उसे तीन दिन मैं फिर बना  
 १०२ सकता हूँ । तब महायाजक ने खड़ा हो यीशु से कहा क्या तू कुछ उत्तर नहीं  
 १०३ देता है . ये लोग तेरे विरुद्ध क्या साक्षी देते हैं । परन्तु यीशु चुप रहा इस पर  
 महायाजक ने उस से कहा मैं तुम्हें जोयते ईश्वर की किरिया देता हूँ हमों से कह  
 १०४ तू ईश्वर का पुत्र खीष्ट है कि नहीं । यीशु उस से बोला तू तो कह चुका और  
 मैं यह भी तुम्हों से कहता हूँ कि इस के पीछे तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्ति-  
 १०५ मान की दहिनी ओर बैठे और आकाश के सेरों पर आते देखोगे । तब महा-  
 याजक ने अपने खस्त्र फाड़के कहा यह ईश्वर की निन्दा कर चुका है अब हमें  
 १०६ निन्दा सुनी है । तुम क्या विचार करते हो . उन्होंने ने उत्तर दिया यह बंधके योग्य  
 १०७ है । तब उन्होंने ने उस के मुँह पर शूका और उसे घूसे मारे । औरों ने अपेड़े मारके  
 कहा है खीष्ट हम से भविष्यदाखी बोल किस ने तुम्हें मारा ।

पितर बाहर आंगने में बैठा था और एक दासी उस पास आके बोली तू भी ईशु मालीली के संग था । उस ने सभों के साम्हने सुकरके कहा मैं नहीं जानता ७७ तू क्या कहती है । तब वह बाहर डेढ़ली में गया तब दूसरी दासी ने उसे ७९ देखके जो लोग वहां थे उन में कहा यह भी यीशु नामरी के संग था । उस ने ८० क्रिया खाके फिर सुकरा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं । थोड़ी देर ८२ छोड़े जो लोग वहां खड़े थे उन्हीं ने पितर के पास आके उस से कहा तू भी सबसुच उन में से एक है क्योंकि तेरी बोली भी तुके प्रगट करती है । तब वह ८४ धिक्कार देने और क्रिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं । और तुरन्त सुग बोला । तब पितर ने यीशु का वचन जिस ने उस से कहा था ८५ कि सुग के बोलने से आगे तू तीन बार सुक से सुकरगा स्मरण किया और बाहर निकलके बिलक बिलक रोया ॥

सनाईसदां पर्यट ।

जब भार हुआ तब लोगों के मय प्रधान यात्रकों और प्राचीनों ने आपस में १ यीशु के विरुद्ध विचार किया कि उसे घात जायदायें । और उन्हीं ने उसे बांधा २ और ले जाके पन्तिथ प्रिलात अध्यक्ष को सोंप दिया ॥

जब उस के पकड़वानेवाले विरुद्ध ने देखा कि वह रंड के घोष उठगया गया ३ तब वह पकड़ताके उन तीस रुपयों को प्रधान यात्रकों और प्राचीनों को पास फेर लाया , और कहा मैं ने निर्दोषी लोहू पकड़वाने में पाप किया है . वे बोले हमें ४ क्या तूही जान । तब वह उन रुपयों को मन्दिर में फेंकके चला गया और जाके ५ अपने को फांसी दिई । प्रधान यात्रकों ने रुपय लेके कहा उन्हीं मन्दिर के भंडार ६ में डालना उचित नहीं है क्योंकि यह लोहू का दास है । सो उन्हीं ने आपस में ७ विचार कर उन रुपयों में परदेजियों को गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत माल लिया । इस से वह खेत आज तक लोहू का खेत कहावता है । तब जो वचन ८ विरमियाह भविष्यवृत्ता में कहा गया था सो पूरा हुआ कि उन्हीं ने वे तीस रुपयें हां इस्रायेल के सन्तानों से उस मुनाये हुए का दास जिसे उन्हीं ने मुलाया ले लिया , और जैसे परमेश्वर ने सुक को आज्ञा दिई तैसे उन्हीं कुम्हार के खेत १० के दास में दिया ॥

यीशु अध्यक्ष के आगे खड़ा हुआ और अध्यक्ष ने उस से पूछा क्या तू विरुद्धियों ११ का राजा है . यीशु ने उस से कहा थाप ही तो कहते हैं । जब प्रधान यात्रक १२ और प्राचीन लोग उस पर दोष लगाते थे तब उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया । तब प्रिलात ने उस से कहा क्या तू नहीं सुनता कि ये लोग तेरे विरुद्ध कितनी १३ साक्षी देते हैं । परन्तु उस ने एक बात भी उस को उत्तर न दिया वहां लो कि १४ अध्यक्ष ने बहुत अर्चना किया । उस पर्यट में अध्यक्ष की यह रीति थी कि एक १५ वन्धुगे को जिसे लोग चाहते थे उन्हीं के लिये छोड़ देता था । उस समय में १६ उन्हीं का एक प्रसिद्ध वन्धुया था जिस का नाम यरूया था । सो जब वे एकट्ठे १७ हुए तब प्रिलात ने उन से कहा तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं यरूया को अथवा यीशु को जो खीष्ट कहावता है । क्योंकि यह जानता था १८



- १९ कि उन्होंने ने उस को हाथ से पकड़वाया था । अब वह बिचार आसन पर बैठा  
था तब उस की स्त्री ने उसे कहला भेजा कि आप उस धर्मी मनुष्य से कुछ काम  
२० न रखिये क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उस के कारण बहुत दुःख पाया है । प्रधान  
याजकों और प्राचीनों ने लोगों को समझाया कि वे बरब्बा को मांग लेवे और  
२१ यीशु को नाश करवावे । अध्यक्ष ने उन को उत्तर दिया कि इन दोनों में से तुम  
किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊँ . वे बोले बरब्बा को ।  
२२ पिलात ने उन से कहा तो मैं यीशु से जो खीष्ट कहावता है क्या कहूँ . सभी ने  
२३ उस से कहा वह क्रूश पर चढ़ाया जाय । अध्यक्ष ने कहा क्यों उस ने कौन  
सी लुगाई किई है . परन्तु उन्होंने ने अधिक पुकारके कहा वह क्रूश पर  
चढ़ाया जाय ॥
- २४ जब पिलात ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर और भी हल्ला होता है  
तब उस ने जल लेके लोगों के साम्हने हाथ धोके कहा मैं इस धर्मी मनुष्य के  
२५ लोहू से निर्दोष हूँ तुम ही जानो । सब लोगों ने उत्तर दिया कि उस का लोहू  
हम पर और हमारे सन्तानों पर होवे ॥
- २६ तब उस ने बरब्बा को उन्हीं के लिये छोड़ दिया और यीशु को कोड़े मारके क्रूश  
२७ पर चढ़ाये जाने को सौंप दिया । तब अध्यक्ष के योद्धाओं ने यीशु को अध्यक्षभवन  
२८ में ले जाके सारी पलटन उस पास एकट्ठी किई । और उन्हीं ने उस का वस्त्र  
२९ उतारके उसे लाल बागा पहिराया . और कांटों का मुकुट गून्थके उस के सिर  
पर रखा और उस के दहिने हाथ में नरकट दिया और उस के आगे घुटने टेकके  
३० यह कहके उस से ठट्ठा किया कि हे यहूदियों के राजा प्रणाम । और उन्हीं ने  
३१ उस पर शूका और उस नरकट को ले उस के सिर पर मारा । जब वे उस से ठट्ठा  
कर चुके तब उस से वह बागा उतारके और उसी का वस्त्र उस को पहिराके  
३२ उसे क्रूश पर चढ़ाने को ले गये । बाहर आते हुए उन्हीं ने शिमेन नाम कुरीनी  
देश के एक मनुष्य को पाया और उसे बेगार पकड़ा कि उस का क्रूश ले चले ।  
३३ जब वे एक स्थान पर जो गलगथा अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहावता है  
३४ पहुँचे . तब उन्हीं ने सिरके में पित्त मिलाके उसे पीने को दिया परन्तु उस ने  
३५ चीखके पीने न चाहा । तब उन्हीं ने उस को क्रूश पर चढ़ाया और चिट्ठियाँ  
डालके उस के वस्त्र बाँट लिये कि जो बचन भविष्यवक्ता ने कहा था सो पूरा  
होवे कि उन्हीं ने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियाँ  
३६ डालीं । तब उन्हीं ने वहाँ बैठके उस का पहरा दिया । और उन्हीं ने उस का  
दोपपत्र उस के सिर से ऊपर लगाया कि यह यहूदियों का राजा यीशु है ।  
३७ तब दो डाकू एक दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर उस के संग क्रूशों पर  
चढ़ाये गये ॥
- ३८ जो लोग उधर से आते जाते थे उन्हीं ने अपने सिर हिलाके और यह कहके  
४० उस की निन्दा किई . कि हे मन्दिर के ठानेहारे और तीन दिन में बनानेहारों  
४१ अपने को बचा . जो तू ईश्वर का पुत्र है तो क्रूश पर से उतर आ । इसी रीति  
४२ से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों और प्राचीनों के संग ठट्ठा कर कहा . उस

जब तू उन की गिनती करे जिसमें गिनती करने में उन पर सरी न आवे । जो १३  
कोई गिनती किये गये होवें सो पवित्र स्थान के शैकलों के समान आधा शैकल  
देवे एक शैकल बीस गिरह सो आधा शैकल परमेश्वर की भेंट है । जो कोई १४  
गिनती किये गये में होवें बीस घरम का और जो ऊपर होवे सो परमेश्वर के  
लिये भेंट देवे । अपने प्राण का प्रायश्चित्त करने को परमेश्वर की भेंट देने में १५  
धनी कंगाल से अधिक न देवे और कंगाल आधे शैकल में न घटावे । और तू १६  
इसराएल के संतानों के प्रायश्चित्त का दास ले और उसे मंडली के तंदू के कार्य  
की सेवा के लिये ठहरा और यह इसराएल के संतानों के लिये परमेश्वर के आगे  
स्मरण होगा जिसमें उन के प्राणों के लिये प्रायश्चित्त करे ॥

और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि पीनन का एक स्नानपात्र बना और १७  
उस का पाया स्नान करने के लिये पीतल का बना और उस को मंडली के तंदू  
और यज्ञवेदी के मध्य में रख और उस में जल डाल । और छान और उस के १८  
वेटे अपने हाथ पांव उम्मे धोवें । जब वे मंडली के तंदू में जायें तब वे जल में २०  
धोवें जिसमें न सरं अथवा जब वे सेवा के लिये यज्ञवेदी के पास जायें कि परमे-  
श्वर के लिये आग की भेंट जलायें । तब वे अपने हाथ पांव धोवें जिसमें वे न सरं २१  
और यह व्यवहार उन के लिये अर्थात् उस के और उस के वंश की समस्त पीढ़ी  
लों सदा के लिये होवे ॥

और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि तू अपने लिये प्रधान सुगंध द्रव्य २२  
अर्थात् पांच सौ शैकल के चारों गंधरस और उस की आधी अर्थात् अठ्ठाई सौ  
की मोटी दारचीनी और अठ्ठाई सौ का सुगंध द्रव्य अपने लिये ले । और पवित्र २३  
स्थान की शैकल के तैल पांच सौ शैकल भर तब ले और जलपाई का तैल एक  
हीन । और इन्हें पवित्र सलने का तैल बना गंधी की रोति के समान मिलाके २४  
लेपन बना यही पवित्र अभिषेक का तैल होगा । और उम्मे मंडली के तंदू का २६  
और सानी की संजूपा को अभिषेक कर । और मंच और उस के समस्त पात्र २७  
और दीअठ और उस के पात्र और धूप की वेदी । और अलिदान की भेंट की २८  
वेदी उस के समस्त पात्र सहित और स्नानपात्र और उस का पाया । और उन्हें २९  
पवित्र कर कि वे अति पवित्र हो जायें जो उन्हें लूवे सो पवित्र होवे । और छान ३०  
और उस के वेदों को अभिषेक करके उन्हें पवित्र कर कि मेरे लिये याजक  
होवें । और इसराएल के संतान को यह कहके बोला कि यह पवित्र अभिषेक का ३१  
तैल मेरे लिये तुम्हारी पीढ़ियों में होय । किसी मनुष्य के शरीर पर न डाला जाय ३२  
और तुम वैसा और उमी के सेल में न बनाइयो यह पवित्र है तुम्हारे लिये पवित्र  
होगा । जो कोई उस के समान बनावे अथवा जो कोई उसे किसी परदेशी पर ३३  
लगावे सो अपने लोगों से कट जायगा ॥

और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू अपने लिये सुगंध द्रव्य अर्थात् तैल ३४  
और नखी और शुद्ध कुंदुरु यह सुगंध द्रव्य और चोग्रा लोधान लीजियो हर एक  
समान समान होगा । और उन का सुगंध बनाइयो गंधी के कार्य के समान ३५  
मिलाया हुआ पवित्र और शुद्ध होवे । और उस में से कुछ चुकनी कर और उस ३६

अठारहवां पर्व ।

१ विश्वासवार के पीछे अठारहवें के पछिले दिन यह फटते मरियम मगदलीनी  
 २ और दूसरी मरियम कथर को देखने आईं । और देखो यड़ा भुईंड़ोल हुआ कि  
 परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से उतरा और आके कथर के द्वार पर से पत्थर  
 ३ लुढ़काके उस पर बैठा । उस का रूप धिजली सा और उस का वस्त्र पाले की  
 ४ नाईं उजला था । उस के डर के मारे पहरण कांप गये और मृतकों के समान  
 ५ हुए । दूत ने स्त्रियों को उत्तर दिया कि तुम मत डरो मैं जानता हूं कि तुम  
 ६ यीशु को जो क्रूश पर घात किया गया ढूंढ़ती हो । यह यहां नहीं है जैसे उस  
 ७ ने कहा वैसे ही उठा है । आओ यह स्थान देखो जहां प्रभु पड़ा था । और  
 शीघ्र जाके उस के शिष्यों से कहो कि यह मृतकों में से ही उठा है और देखो  
 यह तुम्हारे आगे गालील को जाता है यहां उसे देखोगे । देखो मैं ने तुम से  
 ८ कहा है । वे शीघ्र निकलके भय और बड़े आनन्द से उस के शिष्यों को सन्देश  
 देने को कथर से दौड़ीं ॥

९ जब वे उस के शिष्यों को सन्देश देने को जाती थीं देखो यीशु उन से आ  
 मिला और कहा कल्याण हो और उन्हीं ने निकट आ उस के पांव पकड़के उस  
 १० को प्रणाम किया । तब यीशु ने उन से कहा मत डरो जाके मेरे भाइयों से कह  
 दो कि वे गालील को जावें और वहां वे मुझे देखेंगे ॥

११ ज्यों स्त्रियां जाती थीं त्योंही देखो पहसियों में से कोई कोई नगर में आये  
 १२ और सब कुछ जो हुआ था प्रधान याजकों से कह दिया । तब उन्हीं ने प्राचीनों  
 के संग एकट्ठे हो आपस में विचार कर मोढ़ान्यों को बहुत रुपये देके कहा ।  
 १३ तुम यह कहो कि रात को जब हम सोये थे तब उस के शिष्य आके उसे चुरा ले  
 १४ गये । जो यह बात अध्यक्ष के सुनने में आवे तो हम उस को समझाके तुम को  
 १५ छत्ता लेंगे । सो उन्हीं ने रुपये लेके जैसे सिखाये गये थे वैसाही किया और यह  
 बात यहूदियों में आब लीं चलित है ॥

१६ अग्यारह शिष्य गालील में उस पर्वत पर गये जो यीशु ने उन को बताया  
 १७ था । और उन्हीं ने उसे देखके उस को प्रणाम किया पर कितनों को सन्देह हुआ ।  
 १८ यीशु ने उन पास आ उन से कहा स्वर्ग में और पृथिवी पर समस्त अधिकार मुझ  
 १९ को दिया गया है । इस लिये तुम जाके सब देशों के लोगों को शिष्य करो और  
 २० उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से वप्रतिसमा देखो । और उन्हें  
 सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई हैं पालन करने को सिखाओ और देखो मैं  
 जगत के अन्त लों सब दिन तुम्हारे संग हूं । आमीन ॥

ने औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता है, जो यह इसायेस का राजा है तो क्रूश पर से अव उतर आये और हम उस का विश्वास करेंगे। यह ईश्वर ४३ पर भरोसा रखता है, यदि ईश्वर उसे चाहता है तो उस को अव बचावे क्योंकि उस ने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूँ। जो डाकू उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये ४४ उन्हें ने भी इसी रीति से उस की निन्दा की है ॥

दो पहर से तीसरे पहर लों सारे देश में अधिकार हो गया। तीसरे पहर के ४५ निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा एली एली लासा अशक्तनी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे त्यागा है। जो लोग वहाँ खड़े थे ४७ उन में से कितनों ने यह सुनके कहा यह एलियास को बुलाता है। उन में से ४८ एक ने तुरन्त दौड़के छत्रपंज लेके सिरके में भिगाया और नल पर रखके उसे पीने को दिया। औरों ने कहा रहने दे हम देखें कि एलियास उसे बचाने को ४९ आता है कि नहीं ॥

तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से पुकारके प्राण त्यागा। और देखो मन्दिर का ५० परदा ऊपर से नीचे लों फटके दो भाग हो गया और धरती टोली और पर्वत तड़क गये। और जवरें खुलीं और सोये हुए पवित्र लोगों की बहुत लायें उठीं। ५२ और यीशु के जी उठने के पीछे वे कबरों में से निकलके पवित्र नगर में गये और ५३ बहुतों को दिखाई दिये। तब शतप्रति और वे लोग जो उस के संग यीशु का ५४ पहरा देते थे मुईडोल और जो कुछ हुआ था सो देखके निपट उर गये और बोले सबमुच यह ईश्वर का पुत्र था।

वहाँ बहुत सी स्त्रियां जो यीशु की सेवा करती हुईं गालील से उस के पीछे ५५ आई थीं दूर से देखती रहीं। उन्हें में मरियम मगदलीनी और याकूब की ५६ और योशी की माना मरियम और जवदी के पुत्रों की माता थीं ॥

तब सांझ हुई तब यूसफ नाम अरिमथिया नगर का एक धनवान मनुष्य जो ५७ आप भी यीशु का शिष्य था आया। उस ने पिलात के पास जाके यीशु की ५८ लाश मांगी। तब पिलात ने आज्ञा कीई कि लाश दिई जाय। यूसफ ने लाश ५९ को ले उसे उकली चट्टर में लपेटा, और उसे अपनी नई कबर में रखा जो ६० उस ने पत्थर में खुदवाई थी और कबर के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काके घला गया। और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहाँ कबर के सामने ६१ बैठी थीं ॥

तैयारी के दिन के पीछे प्रधान यासक और फरीशी लोग अगले दिन पिलात ६२ के पास एकट्टे हुए, और बोले हे प्रभु हमें चेत है कि उस भरमानेद्वारे ने अपने ६३ जीते जी कहा कि तीन दिन के पीछे मैं जी उठूंगा। सो आज्ञा कीलिये कि ६४ तीसरे दिन लों कबर की रखवाली कीई जाय न हो कि उस के शिष्य रात को आके उसे चुरा ले जायें और लोगों से कहें कि वह मृतकों में से जी उठा है। तब पिछली भूल पहिली से घुरी होगी। पिलात ने उन से कहा तुम्हारे पास ६५ पहर हैं जाओ अपने जामते भर रखवाली करो। सो उन्हें ने जाके पत्थर ६६ पर छाप देके पहर पैंठाके कबर की रखवाली कीई ॥

कहा हे यीशु नासरी रहने दीजिये आप को हम से क्या काम . क्या आप हमें नाश  
 २५ करने आये हैं . मैं आप को जानता हूं आप कौन हैं ईश्वर का पवित्र जन । यीशु  
 २६ ने उस को डांटके कहा चुप रह और उस में से निकल आ । तब अशुद्ध भूत उस  
 २७ मनुष्य को मरोड़के और बड़े शब्द से चिल्लाके उस में से निकल आया । इस पर  
 सब लोग ऐसे अचंभित हुए कि आपस में विचार करके बोले यह क्या है . यह  
 कौन सा नया उपदेश है कि वह अधिकारी की रीति से अशुद्ध भूतों को भी  
 २८ आज्ञा देता है और वे उस की आज्ञा मानते हैं । सो उस की कीर्ति तुरन्त  
 गालील के आसपास के सारे देश में फैल गई ॥

२९ सभा के घर से निकलके वे तुरन्त याकूब और योहान के संग शिमेन और  
 ३० अन्द्रिय के घर में आये । और शिमेन की सास उबर से पीड़ित पड़ी थी और  
 ३१ उन्हीं ने तुरन्त उस के विषय में उस से कहा । तब उस ने उस पास आ उस का  
 हाथ पकड़के उसे उठाया और उबर ने तुरन्त उस को छोड़ा और वह उन की  
 सेवा करने लगी ॥

३२ सांभ को जब सूर्य डूबा तब लोग सब रोगियों को और भूतग्रस्तों को उस  
 ३३ पास लाये । सारे नगर के लोग भी द्वार पर एकट्ठे हुए । और उस ने बहुतों को  
 जो नाना प्रकार के रोगों से दुःखी थे चंगा किया और बहुत भूतों को निकाला  
 परन्तु भूतों को बोलने न दिया क्योंकि वे उसे जानते थे ॥

३५ भोर को कुछ रात रहते वह उठके निकला और जंगली स्थान में जाके वहां  
 ३६ प्रार्थना किई । तब शिमेन और जो उस के संग थे सो उस के पीछे हो लिये .  
 ३७ और उसे पाके उस से बोले सब लोग आप को ढूंढते हैं । उस ने उन से कहा  
 आओ हम आसपास के नगरों में जायें कि मैं वहां भी उपदेश करूं क्योंकि मैं  
 ३८ इसी लिये बाहर आया हूं । सो उस ने सारे गालील में उन की सभाओं में  
 उपदेश किया और भूतों को निकाला ॥

४० एक कोठी ने उस पास आ उस से विन्ती किई और उस के आगे घुटने  
 ४१ टेकके उस से कहा जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं । यीशु को दया  
 आई और उस ने हाथ बढ़ा उसे कूके उस से कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो  
 ४२ जा । उस के कहने पर उस का कोठ तुरन्त जाता रहा और वह शुद्ध हुआ ।  
 ४३ तब उस ने उसे चिताके तुरन्त बिदा किया . और उस से कहा देख किसी से  
 कुछ मत कह परन्तु जा अपने तर्झ याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के  
 विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया उसे लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा ।  
 ४५ परन्तु वह बाहर जाके इस बात को बहुत सुनाने और प्रचार करने लगा यहाँ  
 लों कि यीशु फिर प्रगट होके नगर में नहीं जा सका परन्तु बाहर जंगली स्थानों  
 में रहा और लोग चहुं ओर से उस पास आये ॥

दूसरा पृष्ठ ।

१ कई एक दिन के पीछे यीशु ने फिर कफर्नाहुस में प्रवेश किया और सुना  
 २ गया कि वह घर में है । तुरन्त इतने बहुत लोग एकट्ठे हुए कि वे न घर में  
 ३ न द्वार के आसपास समा सके और उस ने उन्हें बचन सुनाया । और लोग एक

# मार्क रचित सुसमाचार ।

पहिला पर्वा ।

ईश्वर के पुत्र यीशु ख्रीष्ट के सुसमाचार का आरंभ । जैसे भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखा है कि देश में अपने वृक्ष को तरे आगे भेजता हूं जो तरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा । किसी का जव्व हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ बनाओ उस के राजमार्ग मोड़े करो । योहन ने जंगल में उपतिमसा दिया और पापमोचन के लिये पश्चात्ताप के उपतिमसा का उपदेश किया । और सारे यहूदिया देश के और यिन्थलीस नगर के रहनेवाले उस पास निकल आये और सभी ने अपने अपने पापों को मानके यरदन नदी में उस से उपतिमसा लिया । योहन कंट के रोम का वस्त्र और अपनी काटि में चमड़े का पट्टा पहिनता था और टिड्डियां और वन मधु ग्राण करता था । उस ने प्रचार कर कहा मेरे पीछे चल आना है जो मुझ से अधिक शक्तिमान हैं मैं उन के वृत्तों का वन्ध मुझ के खोलने के योग्य नहीं हूं । मैं ने तुम्हें जान से उपतिमसा दिया है परन्तु यह तुम्हें पवित्र आत्मा से उपतिमसा देगा ॥

उन दिनों में यीशु ने गालील देश के नासरत नगर से आके योहन से यरदन में उपतिमसा लिया । और तुरन्त जल में ऊपर आते हुए उस ने स्वर्ग का खुले और आत्मा को कपोन की नाई अपने ऊपर उतरते देखा । और यह आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं ।

तब आत्मा तुरन्त उस को जंगल में ले गया । वहां जंगल में चालीस दिन शैतान से उस को परीक्षा कई कई और बड़े वनपशुओं के संग था और स्वर्गदूतों ने उस की सेवा कई ॥

योहन के बन्दीगृह में डाले जाने के पीछे यीशु ने गालील में आके ईश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया । और कहा समय पूरा हुआ है और ईश्वर का राज्य निकट आया है पश्चात्ताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो । गालील के समुद्र के तीर पर फिरते हुए उस ने शिमेन को और उस के भाई अन्द्रिय को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे । यीशु ने उन से कहा मेरे पीछे आओ मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा । वे तुरन्त अपने जाल छोड़के उस के पीछे हो लिये । वहां से थोड़ा आगे बढ़के उस ने जवदी के पुत्र याकूब और उस के भाई योहन को देखा कि वे नाव पर जालों को सुधारते थे । उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता जवदी को मत्तूरों के संग नाव पर छोड़के उस के पीछे हो लिये ॥

वे कफर्नाहम नगर में आये और यीशु ने तुरन्त विश्राम के दिन सभा के घर में जाके उपदेश किया । लोग उस के उपदेश से आकर्षित हुए क्योंकि उस ने अध्यापकों की रीति से नहीं परन्तु अधिकारी की रीति से उन्हें उपदेश दिया । उन की सभा के घर में एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूत लगा था । उस ने चिल्लाके



२४ बालें तोड़ने लगे । तब फरीशियों ने उस से कहा देखिये विधाम के दिन में जो  
 २५ काम उचित नहीं है सो ये लोग क्यों करते हैं । उस ने उन से कहा क्या तुम ने  
 कभी नहीं पढ़ा कि जब दाऊद को प्रयाजन था और वह और उस के संगी लोग  
 २६ भूखे हुए तब उस ने क्या किया । उस ने क्योंकर अविधायक मन्नायाजक के समय  
 में ईश्वर के घर में जाके सेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना और किसी को  
 २७ नहीं केवल याजकों को उचित है और अपने संगियों को भी दिईं । और उस ने  
 उन से कहा विधामदार मनुष्य के लिये हुआ घर मनुष्य विधामदार के लिये नहीं ।  
 २८ इस लिये मनुष्य का पुत्र विधामदार का भी प्रभु है ॥

तीसरा पत्र ।

१ यीशु फिर सभा के घर में गया और वहां एक मनुष्य था जिस का दाय बूझ  
 २ गया था । और लोग उस पर दाय नमाने के लिये उसे लाकतों से कि वह विधाम  
 ३ के दिन में इस को चंगा करेगा कि नहीं । उस ने भूखे प्रायश्चाले मनुष्य से कहा  
 ४ दीव में गड़ा हो । तब उस ने उन्हीं से कहा क्या विधाम के दिनों में भला  
 करना अथवा दुरा करना प्राण को बचाना अथवा घात करना उचित है ।  
 ५ परन्तु वे चुप रहें । और उस ने उन के मन की कठोरता से बदाम हो उन्हीं पर  
 क्रोध से चारों ओर दृष्टि किई और उस मनुष्य ने कहा अपना दाय बड़ा . उस  
 ने उस को बड़ाया और उस का दाय फिर हमरे की नाईं भला चंगा हो गया ॥  
 ६ तब फरीशियों ने बाहर जाके तुरन्त हेरौदियों के संग यीशु के विरुद्ध आपस  
 ७ में विचार किया इस लिये कि उसे नाश करें । यीशु अपने शिष्यों के संग समुद्र  
 ८ के निकट गया और गालील और यिहूदिया और यिश्शलीन और इदोम से और  
 ९ यर्दन के उस पार से बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई । सोर और सीदोन के  
 आमवास के लोगों ने भी जय सुना वह कैसे बड़े काम करता है तब उन में  
 १० की एक बड़ी भीड़ उस पास आई । उस ने अपने शिष्यों से कहा भीड़ के कारण  
 एक नाव मेरे लिये लगी रहे न हो कि वे सुके ब्याचें । क्योंकि उस ने बहुतों को  
 चंगा किया यहां लो कि जितने रोगी थे उसे छूने को उस पर गिरे पड़ते थे ।  
 ११ अशुद्ध भूतों ने भी जय उसे देखा तब उस को टंडवत दिई और पुकारके बोले  
 १२ आप ईश्वर के पुत्र हैं । और उस ने उन को बहुत दृढ़ आज्ञा दिई कि सुके  
 प्रगट मत करो ॥  
 १३ फिर उस ने पर्वत पर चढ़के जिन्हें साहा उन्हें अपने पास बुलाया और वे  
 १४ उस पास गये । तब उस ने द्वारह जनों को ठहराया कि वे उस के संग रहें ।  
 १५ और कि वह उन्हें उपदेश करने को और रोगों को चंगा करने और भूतों को  
 १६ निकालने का अधिकार रखने को भेजे . अर्थात् शिमेन को जिस का नाम  
 १७ उस ने पितर रखा . और जबदी के पुत्र याकूब और याकूब के भाई योहन को  
 १८ जिन का नाम उस ने खनेरगश अर्थात् गर्जन के पुत्र रखा . और अन्द्रिय और  
 फिलिप और बर्थलमई और मत्ती और थोमा को और अलफर्ड के पुत्र याकूब  
 १९ को और थडूई को और शिमेन कानानी को . और यिहूदा इस्करियोती को  
 जिस ने उसे पकड़वाया . और वे घर में आये ॥

अर्द्धांगी को चार मनुष्यों से चट्याके उस घास ले आये । परन्तु जब वे भीड़ के कारण उस के निकट पहुंच न सके तब वहाँ यह था वहाँ, उन्होंने ने ऊत उधेड़के और कुछ खालके उस खाट को जिस पर अर्द्धांगी पड़ा था गटक दिया । यीशु ने उन्होंने का विश्वास देखके उस अर्द्धांगी से कहा हे पुत्र तेरे पाप क्षमा किये गये हैं । और कितने अध्यापक यहां बैठे थे और अपने अपने मन में विचार करते थे . कि यह मनुष्य क्यों इस रीति से ईश्वर की निन्दा करता है . ईश्वर को छोड़ कौन दापों को क्षमा कर सकता है । यीशु ने तुरन्त अपने आत्मा से जाना कि वे अपने अपने मन में ऐसा विचार करते हैं और उन से कहा तुम लोग अपने अपने मन में यह विचार क्यों करते हो । कौन दात महज है अर्द्धांगी से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं जबकि यह कहना कि उठ अपनी खाट उठाके चल । परन्तु जित्ना तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है . (उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) मैं तुझ से कहना हूँ उठ अपनी खाट उठाके अपने घर को जा । यह तुम्हा उठके खाट उठाके सबों के सामने चला गया यहां लो कि वे सब विस्मित हुए और ईश्वर की स्तुति करके बोले हम ने ऐसा कभी नहीं देखा ॥

यीशु फिर बाहर समुद्र के तीर पर गया और सब लोग उस घास आये और उस ने उन्हें उपदेश दिया । जाते हुए उस ने अलफर्ड के पुत्र नेधी को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे आ . तब यह उठके उस के पीछे हो लिया । जब यीशु उस के घर में भोजन पर बैठा तब बहुत कर उगाहने-द्वारे और पापी लोग उस के और उस के शिष्यों के संग बैठ गये क्योंकि बहुत थे और वे उस के पीछे हो लिये । अध्यापकों और फरीशियों ने उस को कर उगाहनेद्वारों और पापियों के संग खाते देखके उस के शिष्यों से कहा यह क्या है कि यह कर उगाहनेद्वारों और पापियों के संग खाता और पीता है । यीशु ने यह सुनके उन से कहा निरोगियों को वैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को . मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूँ ॥

योहन के और फरीशियों के शिष्य उपवास करते थे और उन्होंने ने आ उस से कहा योहन के और फरीशियों के शिष्य क्यों उपवास करते हैं परन्तु त्राप के शिष्य उपवास नहीं करने । यीशु ने उन से कहा जब दूल्हा सखायों के संग है तब क्या वे उपवास कर सकते हैं . जब नों दूल्हा उन के संग रहे तब लो वे उपवास नहीं कर सकते हैं । परन्तु वे दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे । कोई मनुष्य कोरे कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र से नहीं टांकता है नहीं तो यह नया टुकड़ा पुराने कपड़े से कुछ और भी फाड़ लेता है और उस का फटा बढ़ जाता है । और कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पों में नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पों को फाड़ता है और दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में भरा चाहिये ।

विश्राम के दिन यीशु खेतों में होके जाता था और उस के शिष्य आते हुए

के राज्य का भेद जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु जो बाहर हैं उन्हें से १२ सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं । इस लिये कि वे देखते हुए देखें और उन्हें न सुझे और सुनते हुए सुनें और न बूर्क़ ऐसा न हो कि वे कभी फिर जावें और उन के पाप क्षमा किये जायें ॥

१३ फिर उस ने उन से कहा क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते हो तो सब १४ दृष्टान्त क्योंकर समझोगे । बोनेहारो वह है जो वचन को बोता है । मार्ग की १५ ओर के जहां वचन बोया जाता है वे हैं कि जब वे सुनते हैं तब शैतान तुरन्त १६ आके जो वचन उन के मन में बोया गया था उसे छीन लेता है । वैसे ही जिन में बीज पत्थरैली भूमि पर बोया जाता है सो वे हैं कि जब वचन सुनते हैं १७ तब तुरन्त आनन्द से उस को ग्रहण करते हैं । परन्तु उन में जड़ न बंधने से वे थोड़ी देर ठहरते हैं तब वचन के कारण क्लेश अथवा उपद्रव होने पर तुरन्त १८ ठोकर खाते हैं । जिन में बीज कांटों के बीच में बोया जाता है सो वे हैं जो १९ वचन सुनते हैं । पर इस संसार की चिन्ता और धन की माया और और वस्तुओं २० का लाभ उन में समाके वचन को दबाते हैं और वह निष्फल होता है । पर जिन में बीज अच्छी भूमि पर बोया गया सो वे हैं जो वचन सुनके ग्रहण करते हैं और फल फलते हैं कोई तीस गुण कोई साठ गुण कोई सौ गुण ॥

२१ और उस ने उन से कहा क्या दीपक को लाते हैं कि बर्तन के नीचे अथवा २२ खाट के नीचे रखा जाय । क्या इस लिये नहीं कि दीपक पर रखा जाय । कुछ गुप्त नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ छिपा था परन्तु इस लिये २३ कि प्रसिद्ध हो जावे । यदि किसी को सुनने के कान हों तो सुने । फिर उस ने उन से कहा सचेत रहो तुम क्या सुनते हो । जिस नाप से तुम नापते हो उसी २४ से तुम्हारे लिये नापा जायगा और तुम को जो सुनते हो अधिक दिया जायगा । २५ क्योंकि जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उस से जो कुछ उस के पास है सो भी ले लिया जायगा ॥

२६ फिर उस ने कहा ईश्वर का राज्य ऐसा है जैसा कि मनुष्य भूमि में बीज २७ बोय । और रात दिन सोय और उठे और वह बीज जन्मे और बड़े पर किस २८ रीति से वह नहीं जानता है । क्योंकि पृथिवी आप से आप फल फलती है पहिले २९ अंकुर तब बाल तब बाल में पक्का दाना । परन्तु जब दाना पक चुका है तब वह तुरन्त हंसुआ लगाता है क्योंकि कटनी आ पहुंची है ॥

३० फिर उस ने कहा हम ईश्वर के राज्य की उपमा किस से दें और किस दृष्टान्त ३१ से उसे वर्णन करें । वह राई के एक दाने की नाई है कि जब भूमि में बोया ३२ जाता तब भूमि में के सब बीजों से कोटा है । परन्तु जब बोया जाता तब बढ़ता और सब साग पात से बड़ा हो जाता है और उस की ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि आकाश के पंखी उस की छाया में बसेरा कर सकते हैं ॥

३३ ऐसे ऐसे बहुत दृष्टान्तों में यीशु ने लोगों को जैसा वे सुन सकते थे वैसे वचन ३४ सुनाया । परन्तु बिना दृष्टान्त से उस ने उन को कुछ न कहा और एकान्त में उस ने अपने शिष्यों को सब बातों का अर्थ बताया ॥

तब बहुत लोग फिर एकट्ठे हुए यहाँ तो कि वे रोटी खाने भी न सके । २०  
 और उस के कुटुम्ब यह सुनके उसे पकड़ने की निकल आये क्योंकि उन्हीं ने कहा २१  
 उस का चित ठिकाने नहीं है । तब अध्यापक लोग जो पिदशलीम से आये थे २२  
 बोले कि उसे बालजिबल लगा है और कि यह भूतों के प्रधान की मदायना में  
 भूतों की निकालता है । उस ने उन्हें अपने पास बुलाके दृष्टान्तों में उन से कहा २३  
 जैतान क्योंकि जैतान को निकाल सकता है । यदि किसी राज्य में फूट पड़ी होय २४  
 तो वह राज्य नहीं ठहर सकता है । और यदि किसी घराने में फूट पड़ी २५  
 होय तो वह घराना नहीं ठहर सकता है । और यदि जैतान अपने विरोध में २६  
 उठके अलग बिलग हुआ है तो वह नहीं ठहर सकता है पर उस का अन्त होता  
 है । यदि बलवन्त को कोई पट्टिने न बांधे तो उस बलवन्त के घर में बैठके उस २७  
 की सामग्री लूट नहीं सकता है । परन्तु उसे बांधके उस के घर को लूटेगा । मैं २८  
 तुम से सत्य कहता हूँ कि मनुष्यों के भूतानों के मय पाप और मय निन्दा जिस  
 से वे निन्दा करें जमा किई जायगी । परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा की निन्दा २९  
 करे सो कभी नहीं जमा किया जायगा पर अनन्त दंड के योग्य है । वे जो बोले ३०  
 कि उसे अशुद्ध भूत लगा है इसी लिये यीशु ने यह बात कही ॥

सो उस के भाई और उस की माता आये और बाहर खड़े हो उस को बुलाया ३१  
 भेजा । बहुत लोग उस के आसपास बैठे थे और उन्हीं ने उन से कहा देखिये ३२  
 आप की माता और आप के भाई बाहर आप को ढूँढ़ने हैं । उस ने उन को ३३  
 उत्तर दिया कि मेरी माता अथवा मेरे भाई कौन हैं । और जो लोग उस को ३४  
 आसपास बैठे थे उन पर चारों ओर दृष्टि कर उस ने कहा देखो मेरी माता और  
 मेरे भाई । क्योंकि जो कोई ईश्वर की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और मेरी ३५  
 बहिन और माता है ॥

### चौथा पद्य ।

यीशु फिर समुद्र के तीर पर उपदेश करने लगा और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास १  
 एकट्ठे हुई कि वह नाव पर बैठके समुद्र पर बैठा और सब लोग समुद्र के निकट २  
 भूमि पर रहे । तब उस ने उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें सिखाईं और अपने ३  
 उपदेश में उन से कहा , सुनो देखो एक बोनेपारा बीज बोने को निकला । बीज ४  
 बोने में कुछ मार्ग की ओर गिरा और आकाश के पक्षियों ने आके उसे  
 चुग लिया । कुछ पत्थरैली भूमि पर गिरा जहाँ उस को बहुत मिट्टी न मिली ५  
 और बहुत मिट्टी न मिलने से वह वेग उगा । परन्तु मूर्ख उदय होने पर वह ६  
 कुलस गया और जड़ न पकड़ने से सूख गया । कुछ कांटों के बीच में गिरा और ७  
 कांटों ने बढ़के उस को दबा डाला और उस ने फल न दिया । परन्तु कुछ ८  
 अच्छी भूमि पर गिरा और फल दिया जो उत्पन्न होके बढ़ता गया और कोई  
 तीस गुणे कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे फल फला । और उस ने उन से कहा ९  
 जिस को सुनने के कान हैं सो सुने ॥

तब वह एकान्त में था तब जो लोग उस के समीप थे उन्हीं ने बारह शिष्यों १०  
 के साथ इस दृष्टान्त का अर्थ उस से पूछा । उस ने उन से कहा तुम को ईश्वर ११

देश में प्रचार करने लगा कि यीशु ने उस के लिये कैसे बड़े काम किये थे और सभी ने अचंभा किया ॥

२१ जब यीशु नाव पर फिर पार उतरा तब बहुत लोग उस पास एकट्ठे हुए और  
२२ वह समुद्र के तीर पर था । और देखो सभा के अध्यक्षों में से याईर नाम एक  
२३ अध्यक्ष आया और उसे देखके उस के पांवों पड़ा । और उस से बहुत चिन्ती कर  
कहा मेरी बेटी मरने पर है आप आके उस पर हाथ रखिये कि वह चंगी हो  
२४ जाय तो वह जीयेगी । तब यीशु उस के संग गया और थड़ी भीड़ उस के पीछे  
हो लिई और उसे दवाती थी ॥

२५ और एक स्त्री जिसे बारह बरस से लोहू बहने का रोग था , जो बहुत वैद्यों  
से बड़ा दुःख पाके अपना सब धन उठा चुकी थी और कुछ लाभ नहीं पाया  
२६ परन्तु अधिक रोगी हुई . तिस ने यीशु का चर्चा सुनके उस भीड़ में पीछे  
२७ से आ उस के वस्त्र को छूया । क्योंकि उस ने कहा यदि मैं केवल उस के वस्त्र  
२८ को छूओं तो चंगी हो जाऊंगी । और उस के लोहू का सोता तुरन्त सूख गया  
२९ और उस ने अपने देह में जान लिया कि मैं उस रोग से चंगी हुई हूं । यीशु ने  
३० तुरन्त अपने में जाना कि मुझ में से शक्ति निकली है और भीड़ में पीछे फिरके  
३१ कहा किस ने मेरे वस्त्र को छूया । उस के शिष्यों ने उस से कहा आप देखते हैं कि  
३२ भीड़ आप को दवा रही है और आप कहते हैं किस ने मुझे छूया । तब जिस ने  
३३ यह काम किया था उसे देखने को यीशु ने चारों ओर दृष्टि किई । तब वह स्त्री  
जो उस पर हुआ था सो जानके डरती और कांपती हुई आई और उसे दंडवत  
३४ कर उस से सब सब कुछ कह दिया । उस ने उस से कहा हे पुत्री तेरे विश्वास  
ने तुझे चंगा किया है कुशल से जा और अपने रोग से चंगी रह ॥

३५ वह बोलता ही था कि लोगों ने सभा के अध्यक्ष के घर से आ कहा आप  
३६ की बेटी मर गई है आप गुरु को और दुःख क्यों देते हैं । जो बचन कहा जाता  
था उस को सुनके यीशु ने तुरन्त सभा के अध्यक्ष से कहा मत डर केवल विश्वास  
३७ कर । और उस ने पितर और याकूब और याकूब के भाई योहन को छोड़ और  
३८ किसी को अपने संग जाने नहीं दिया । सभा के अध्यक्ष के घर पर पहुंचके  
३९ उस ने धूमधाम अर्थात् लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा । उस ने  
भीतर जाके उन से कहा क्यों धूम मचाते और रोते हो . कन्या मरी नहीं पर  
४० सोती है । वे उस का उपहास करने लगे परन्तु उस ने सभी को बाहर किया और  
कन्या के माता पिता को और अपने शिष्यों को लेके जहां कन्या पड़ी थी वहां  
४१ बैठा । और उस ने कन्या का हाथ पकड़के उस से कहा तालिथा कुमी अर्थात् हे  
४२ कन्या मैं तुझ से कहता हूं उठ । और कन्या तुरन्त उठी और फिरने लगी क्योंकि  
४३ वह बारह बरस की थी . और वे अत्यन्त विस्मित हुए । पर उस ने उन को दृढ़  
आज्ञा दिई कि यह बात कोई न जाने और कहा कि कन्या को कुछ खाने को  
दिया जाय ॥

कठवां पृष्ठ ।

१ यीशु वहां से जाके अपने देश में आया और उस के शिष्य उस के पीछे हो

उसी दिन सांभ को उस ने उन से कहा कि आओ हम उस पार चलें । २७  
 सो उन्होंने ने लोगों को बिदा कर उसे नाव पर बैसा था वैसा चढ़ा लिया और २८  
 कितनी और नावें भी उन के संग थीं । और बड़ी आंधी उठी और लहरें नाव ३०  
 पर ऐसी लगीं कि वह अब भर जाने लगी । परन्तु यीशु नाव की पिछली और ३१  
 तकिया दिये हुए सोता था और उन्होंने ने उसे जगाके उस से कहा हे गुरु क्या  
 आप को मोच नहीं कि हम नष्ट होते हैं । तब उस ने उठके व्यापार का हाँटा ३२  
 और समुद्र से कहा चुप रह और घुस जा और व्यापार घुस गई और बड़ा नौचा  
 हो गया । और उस ने उन से कहा तुम क्यों ऐसे डरते हो तुम्हें चिन्तास क्यों ३०  
 नहीं है । परन्तु वे बहुत ही डर गये और आपस में बोले यह कौन है कि व्यापार ३१  
 और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं ॥

पाँचवां पत्र ।

वे समुद्र के उस पार गदेरियों के देश में पहुँचे । जय यीशु नाव पर से उतरा १  
 तब एक मनुष्य जिसे अशुद्ध भूत लगा था कवरम्यान में से तुरन्त उस से आ ३  
 सिला । उस मनुष्य का वासा कवरम्यान में था और कोई उसे जंजीरों में भी ३  
 बांध नहीं सकता था । क्योंकि वह बहुत बार घेड़ियों और जंजीरों में बांधा ४  
 गया था और उस ने जंजीरें तोड़ डालीं और घेड़ियाँ टुकड़े टुकड़े कियें और कोई ४  
 उसे बंध में नहीं कर सकता था । वह मदा रात दिन पछाड़ों और कावरो में ५  
 रहता था और चिन्ताता और अपने को पत्थरों में काटता था । वह यीशु को ६  
 दूर से देखके दौड़ा और उस को प्रणाम किया । और बड़े शब्द से चिल्लाके कहा ७  
 हे यीशु सर्वप्रधान ईश्वर के पुत्र आप को मुक्त से क्या काम । मैं आप को ७  
 ईश्वर की किरिया देता हूँ कि मुझे पीड़ा न दीजिये । क्योंकि यीशु ने उस से कहा ८  
 हे अशुद्ध भूत इस मनुष्य से निकल आ । और उस ने उस से पूछा तेरा नाम क्या ८  
 है । उस ने उत्तर दिया कि मेरा नाम मेना है क्योंकि हम बहुत हैं । और उस ने यीशु १०  
 से बहुत विन्ती किई कि हमें इस देश से बाहर न भेजिये । वहाँ पछाड़ों के ११  
 निकट सूअरों का बड़ा झुंड चरता था । सो सब भूतों ने उस से विन्ती कर कहा १२  
 हमें सूअरों में भेजिये कि हम उन में रहें । यीशु ने तुरन्त उन्हें जाने दिया और १३  
 अशुद्ध भूत निकलके सूअरों में पड़े और झुंड जो दो सठम के अटकल थे कहाड़े १४  
 पर से समुद्र में दौड़ गये और समुद्र में डूब मरे । पर सूअरों के चरवाहे भागे १४  
 और नगर में और गाँवों में इस का समाचार कहा और लोग बाहर निकले कि १५  
 देखें क्या हुआ है । और यीशु पास आके वे उस भूतग्रस्त को जिसे भूतों की १५  
 मेना लगी थी बैठे और वस्त्र पहिने और सुबुद्धि देखके डर गये । जिन लोगों ने १६  
 देखा था उन्होंने ने उन से कहा दिया कि भूतग्रस्त मनुष्य को और सूअरों के विषय में १७  
 कैसा हुआ था । तब वे यीशु से विन्ती करने लगे कि हमारे सिधानों से निकल १७  
 जाइये । जय वह नाव पर चढ़ा तब जो मनुष्य आगे भूतग्रस्त था उस ने उस से १८  
 विन्ती किई कि मैं आप के संग रहूँ । पर यीशु ने उसे नहीं रहने दिया परन्तु १९  
 उस से कहा अपने घर को अपने कुटुम्बों के पास जाके उन्होंने से कह दे कि पर- २०  
 मेश्वर ने तुम्हें पर दया करके तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं । वह आके दिकाप्रति २०



में मे कुछ मंडली के तंबू की सात्ती के आगे रख जाऊँ मैं तुम्हें से भेंट करूँगा यह  
 ३७ तुम्हारे लिये अति पवित्र होगा । और वह धूप जो तू दनावेगा तुम उस की  
 मिलावट के समान अपने लिये मत दनाओ यह तुम्हारे पास परमेश्वर के लिये  
 ३८ पवित्र होगा । जो कोई सुंघने के लिये उस के समान दनावेगा सो अपने लोगों  
 में से कट जायगा ॥

ॐ

एकतीसवां पृष्ठ ।

१ और परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला । कि देख मैं ने ठीकी के पुत्र याजक-  
 ३ एल को जो हर का पोता यहूदाह के कुल में का है नाम लेके बुलाया । और मैं ने  
 उसे बुद्धि में और समझ में और ज्ञान में और समस्त प्रकार की हथौटी में ईश्वर  
 ४ के आत्मा से भर दिया । कि सोने और रथे और पीतल के कार्य करने में अपनी  
 ५ बुद्धि से हथौटी का कार्य निकाले । और मणि के खोदने में जड़ने के लिये और  
 ६ काष्ठ के खोदने में जिसमें समस्त प्रकार की हथौटी का कार्य करे । और देख  
 मैं ने उस के संग अर्जलियव को जो अर्जिसमक का पुत्र और दान के कुल में का  
 है दिया और मैं ने समस्त बुद्धिमानों के अंतःकरणों में बुद्धि दिई कि मध्य जो  
 ७ मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है दनावे । अर्थात् मंडली का तंबू और भागी की संजुपा और  
 ८ वह ठकना जो उस पर है और तंबू के समस्त पात्र । और मंच और उस के पात्र  
 ९ और पवित्र दीअट उस के पात्र साँझ और धूप की घंटी । और दाहिदान की भेंट  
 १० की वेदी उस के समस्त पात्र समेत और ज्ञानपात्र और उस का पाया । और  
 सेवा के वस्त्र और घामन याजक के लिये पवित्र वस्त्र और उस के घंटों के वस्त्र  
 ११ जिसमें याजक की सेवा में सेवा करें । और अभियेक का तेल और पवित्र स्थान  
 के लिये सुगंध धूप उस समस्त आज्ञा के समान जो मैं ने तुम्हें से किई है वे करें ॥  
 १२ और परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला । कि तू इसराएल के संतानों को यह  
 १३ कहके बोल कि निश्चय तुम मेरे विश्रामों का पालन करो क्योंकि वह मेरे और  
 तुम्हारे मध्य में तुम्हारी पीढ़ियों में एक चिन्ह है जिसमें तुम जानो कि मैं पर-  
 १४ मेश्वर तुम्हें पवित्र करता हूँ । सो विश्राम का पालन करो क्योंकि वह तुम्हारे  
 लिये पवित्र है हर एक जो उसे अशुद्ध करेगा निश्चय वह किया जायगा क्योंकि  
 जो कोई उस में कार्य करे वह प्राणी अपने लोगों में से काट डाला जायगा ।  
 १५ छः दिन कार्य किया जावे परन्तु सातवां चैन का विश्राम परमेश्वर के लिये  
 पवित्र है जो कोई विश्राम के दिन में कार्य करे वह निश्चय वह किया जायगा ।  
 १६ सो इसराएल के संतान विश्राम का पालन करें कि सनातन नियम के लिये उन  
 १७ की पीढ़ियों में विश्राम का पालन होवे । मेरे और इसराएल के संतानों के मध्य  
 में यह सदा के लिये चिन्ह है क्योंकि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी  
 उत्पन्न किये और सातवें दिन अवकाश पाया और तृप्त हुआ ॥

१८ और जब वह मूसा से सीना के पहाड़ पर वार्ता कर चुका तब सात्ती के  
 पत्थर की दो पटियाँ ईश्वर की अंगुलियों से लिखी हुईं उस ने उसे दिई ॥

बत्तीसवां पृष्ठ ।

१ जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में विलंब किया तब वे लोग

लिये । विद्यास के दिन यह सभा के घर में उपदेश करने लगा और बहुत लोग २  
 सुनके अचंभित हो गये । इस को यह बात कहां से हुई और यह कौन का ज्ञान  
 है जो उस को दिया गया है कि ऐसे आश्चर्य कर्म भी उस के हाथों में किये  
 जाते हैं । यह क्या बड़ई नहीं है मरिसस का पुत्र और याकूब और योशी और ३  
 यिहूदा और शिमेन का भाई और क्या उस की वहीन यहाँ हमारे पास नहीं  
 हैं । सो उन्हें ने उस के विषय में टोकर खाई । यीशु ने उन से कटा भविष्यवृत्ता ४  
 अपना देश और अपने कुटुम्ब और अपना घर छोड़के और कहीं निगदर नहीं  
 होता है । और वह वहाँ कोई आश्चर्य कर्म नहीं कर सका केवल छोड़े रोगियों ५  
 पर हाथ रखके उन्हें चंगा किया । और उस ने उन के अविश्वास से अचंभा ६  
 किया और चहुँ ओर के गाँवों से उपदेश करना फिरा ।

और वह चारह शिष्यों को अपने पास चुनाके उन्हें दो दो करके भेजने लगा ७  
 और उन को अशुद्ध भूतों पर अधिकार दिया । और उस ने उन्हें आज्ञा दिई कि ८  
 मार्ग के लिये लाठी छोड़के और कुछ मत लेना न झोली न रोटी न पटुके में पैस ।  
 परन्तु जूने पहिना और दो अंग्रे मत पहिना । और उस ने उन से कटा जहाँ कहीं ९  
 तुम किसी घर में प्रवेश करो जय लो वहाँ से न निकलो तब लो उसी घर में १०  
 रहा । जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी न सुने वहाँ से निकलते हुए उन ११  
 पर साक्षी होने के लिये अपने पाँवों के नीचे की धूल झाड़ डालो . न तुम में सब  
 कहता हूँ कि विचार के दिन में इस नगर की दशा से सदास अथवा अमोरा की १२  
 दशा सहने योग्य होगी । सो उन्हें ने निकलके पञ्चात्ताप करने का उपदेश १३  
 किया . और बहुतरे भूतों को निकाला और बहुत रोगियों पर तेल मलके उन्हें १४  
 चंगा किया ।

हेरोद राजा ने यीशु की कीर्ति सुनी क्योंकि उस का नाम प्रसिद्ध हुआ और १५  
 उस ने कहा योहन अप्रतिममा देनेवाला मृत्कों में से जो उठा है उस लिये आश्चर्य  
 कर्म उस से प्रगट होते हैं । औरों ने कहा यह बलियाह है औरों ने कहा १६  
 भविष्यवृत्ता है अथवा भविष्यवृत्ताओं में से एक के समान है । परन्तु हेरोद ने १७  
 सुनके कहा जिस योहन का मैं ने मिर कटवाया सोई है यह मृत्कों में से जो  
 उठा है । क्योंकि हेरोद ने आप अपने भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के कारण १८  
 जिस से उस ने विवाह किया था लोगों को भेजके योहन को पकड़ा था और  
 उसे बन्दीगृह में बांधा था । क्योंकि योहन ने हेरोद से कहा था कि अपने भाई १९  
 की स्त्री को रखना तुम्हें उचित नहीं है । हेरोदिया भी उस से बर रखती थी २०  
 और उसे मार डालने चाहती थी पर नहीं सकती थी । क्योंकि हेरोद योहन को २१  
 धर्म्सा और पवित्र पुरुष जानके उस से डरता था और उस की रक्षा करता था  
 और उस की सुनके बहुत बातों पर चलता था और प्रसन्नता से उस की सुनता  
 था । परन्तु जय अवकाश का दिन हुआ कि हेरोद ने अपने जन्म दिन में अपने २२  
 प्रधानों और सहस्रपतियों और गालील के बड़े लोगों के लिये विचारी बनाई .  
 और जय हेरोदिया की पुत्री ने भीतर आ नाच कर हेरोद को और उस के मंग २३  
 बैठनेवालों को प्रसन्न किया तब राजा ने कन्या से कहा जो कुछ तेरी इच्छा होय

तुम ने ठहराया है ईश्वर के ध्वजन को उठा देते हो और ऐसे ऐसे बहुत काम करते हो ॥

१४ और उस ने सब लोगों को अपने पास बुलाके उन से कहा तुम सब मेरी सुनो  
१५ और ब्रूमो । मनुष्य के बाहर से जो उस में समावे ऐसा कुछ नहीं है जो उस को  
अपवित्र कर सकता है परन्तु जो कुछ उस में से निकलता है सोई है जो मनुष्य  
१६ को अपवित्र करता है । यदि किसी को सुनने के कान हों तो सुने । जब वह लोगों  
के पास से घर में आया तब उस के शिष्यों ने इस दृष्टान्त के विषय में उस से  
१७ पूछा । उस ने उन से कहा तुम भी क्या ऐसे निर्बुद्धि हो । क्या तुम नहीं ब्रूमते  
हो कि जो कुछ बाहर से मनुष्य में समाता है सो उस को अपवित्र नहीं कर  
१८ सकता है । क्योंकि वह उस के मन में नहीं परन्तु पेट में समाता है और संडास  
२० में गिरता है जिस से सब भोजन शुद्ध होता है । फिर उस ने कहा जो मनुष्य में  
२१ से निकलता है सोई मनुष्य को अपवित्र करता है । क्योंकि भीतर से मनुष्यों के  
२२ मन से नाना भांति की घुरी चिन्ता परस्त्रीगमन व्यभिचार नरहिंसा . चोरी लोभ  
और दुष्टता और कल लुचपन कुदृष्टि ईश्वर की निन्दा अभिमान और अज्ञानता  
२३ निकलती हैं । यह सब घुरी बातें भीतर से निकलती हैं और मनुष्य को अपवित्र  
करती हैं ॥

२४ यीशु वहां से उठके सार और सीदोन के सिवानों में गया और किसी घर में  
२५ प्रवेश करके चाहा कि कोई न जाने परन्तु वह छिप न सका । क्योंकि सुरो-  
फैनीकिया देश की एक यूनानीय मत माननेवाली स्त्री जिस की बेटी को अशुद्ध  
२६ भूत लगा था उस का चर्चा सुनके आई और उस के पांवों पड़ी . और उस से  
२७ बिन्ती किई कि आप मेरी बेटी से भूत निकालिये । यीशु ने उस से कहा लड़कों  
को पहिले तृप्त होने दे क्योंकि लड़कों की रोटी लेके कुत्तों के आगे फेंकना  
२८ अच्छा नहीं है । स्त्री ने उस को उत्तर दिया कि सच है प्रभु तौभी कुत्ते मेज के  
२९ नीचे बालकों के चूरचूर खाते हैं । उस ने उस से कहा इस बात के कारण  
३० चली जा भूत तेरी बेटी से निकल गया है । सो उस ने अपने घर जाके भूत को  
निकले हुए और अपनी बेटी को खाट पर लेटी हुई पाई ॥

३१ फिर वह सार और सीदोन के सिवानों से निकलके टिकापल के सिवानों के  
३२ बीच में होके गालील के समुद्र के निकट आया । और लोगों ने एक बहिरे  
तोतले मनुष्य को उस पास लाके उस से बिन्ती किई कि आप इस पर हाथ  
३३ रखिये । उस ने उस को भीड़ में से एकान्त ले जाके अपनी उंगलियां उस के  
३४ कानों में डालीं और थूकके उस की जीभ छूई . और स्वर्ग को और देखके  
३५ लंबी सांस भरके उस से कहा इफातह अर्थात् खुल जा । और तुरन्त उस के  
कान खुल गये और उस की जीभ का बंधन भी खुल गया और वह शुद्ध रीति  
३६ से बोलने लगा । तब यीशु ने उन्हें चिताया कि किसी से मत कहो परन्तु  
३७ जितना उस ने उन्हें चिताया उतना उन्हें ने बहुत अधिक प्रचार किया । और  
वे अत्यन्त अचंभित हो बोले उस ने सब कुछ अच्छा किया है वह बहिरों को  
सुनने और गुंगों को बोलने की शक्ति देता है ॥

## आठवां पद्य ।

उन दिनों में जब यही भीड़ हुई और उन के पास कुछ खाने की नहीं थी १  
 तब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके उन से कहा . मुझे इन लोगों २  
 पर क्या आती है क्योंकि ये तीन दिन से मेरे संग रहे हैं और उन के पास कुछ ३  
 खाने की नहीं है । जो मैं उन्हें भोजन बिना अपने अपने घर आने को बिदा ४  
 करूं तो मार्ग में उन का बल घट जायगा क्योंकि उन में से कोई कोई दूर से ५  
 आये हैं । उस के शिष्यों ने उस को उत्तर दिया कि यहां जंगल में कहां से कोई ६  
 इन लोगों को रोटी से तृप्त कर सके । उस ने उन से पूछा तुम्हारे पास कितनी ७  
 रोटियां हैं . उन्होंने ने कहा सात । तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की ८  
 आज्ञा दी और उन सात रोटियों को लेकर धन्य मानके तोड़ा और अपने ९  
 शिष्यों को दिया कि उन के आगे रखें और शिष्यों ने लोगों के आगे रखा । उस १०  
 के पास थोड़ी सी छोटी मछलियां भी थीं और उस ने धन्यवाद कर उन्हें भी ११  
 लोगों के आगे रखने की आज्ञा की । सो ये खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े १२  
 बच रहे उन्होंने ने उन के सात टोकरे उठाये । जिन्होंने ने खाया सो चार सहस्र १३  
 पुरुषों के अटकल से और उस ने उन को बिदा किया ॥

तब वह तुरन्त अपने शिष्यों के संग नाथ पर चढ़के दनसन्तुषा नगर के मियानों १४  
 में आया । और फरीजी लोग निकल आये और उस से विवाद करने लगे और १५  
 उस की परीक्षा करने को उस से आकाश का एक चिन्ह मांगा । उस ने अपने १६  
 आत्मा में दाय मारके कहा इस समय के लोग क्यों चिन्ह ठूंढ़ते हैं . मैं तुम से १७  
 सब कहता हूं कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जायगा । और १८  
 वह उन्हें छोड़के नाथ पर फिर चढ़के उस पार चला गया ॥

शिष्य लोग रोटी लेना भूल गये और नाथ पर उन के साथ एक रोटी से १९  
 अधिक न थी । और उस ने उन्हें चिन्ताया कि देखो फरीजियों के खमीर से और २०  
 हेरेद के खमीर से वैक्रम रहे । ये आपस में विचार काने लगे यह हम लिये है २१  
 कि हमारे पास रोटी नहीं है । यह जानके यीशु ने उन से कहा तुम्हारे पास रोटी २२  
 न होने के कारण तुम क्यों आपस में विचार करते हो . क्या तुम अथ लो नहीं २३  
 भूकते और नहीं समझते हो . क्या तुम्हारा मन अथ लो फटार है । आंखें रहते २४  
 हुए क्या नहीं देखते हो और कान रहते हुए क्या नहीं सुनते हो और क्या स्मरण २५  
 नहीं करते हो । जब मैं ने पांच सहस्र के लिये पांच रोटी तोड़ीं तब तुम ने २६  
 टुकड़ों की कितनी टोकरियां भरी उठाईं . उन्होंने ने उस से कहा थारह । और २७  
 जब चार सहस्र के लिये सात रोटी तब तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरे उठाये . २८  
 ये बाले सात । उस ने उन से कहा तुम क्यों नहीं समझते हो ॥ २९

तब वह बैतसैदा में आया और लोगों ने एक अन्धे को उस पास ला उस से ३०  
 धिन्ती किई कि उस को छूवे । यह उस अन्धे का हाथ पकड़के उसे नगर के ३१  
 बाहर ले गया और उस के नेत्रों पर धूँकके उस पर हाथ रखके उस से पूछा क्या ३२  
 तू कुछ देखता है । उस ने नेत्र उठाके कहा मैं वृद्धों की नाईं मनुष्यों का फिरते ३३  
 देखता हूं । तब उस ने फिर उस के नेत्रों पर हाथ रखके उस से नेत्र उठवाये ३४

२६ और वह चंगा हो गया और सभीों को फरकाई से देखने लगा । और उस ने उसे यह कहके घर भेजा कि नगर में मत जा और नगर में किसी से मत कह ॥

२७ यीशु और उस के शिष्य कैसरिया फिलिपी के गांवों में निकल गये और मार्ग में उस ने अपने शिष्यों से पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूँ । उन्होंने ने उत्तर दिया कि वे आप को योहान अपतिसमा देनेद्वारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह २८ कहते हैं और कितने भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं । उस ने उन से कहा तुम ३० क्या कहते हो मैं कौन हूँ । पितर ने उस को उत्तर दिया कि आप खीष्ट हैं । तब उस ने उन्हें दृढ़ आज्ञा दी कि मेरे विषय में किसी से मत कहो ॥

३१ और वह उन्हें बताने लगा कि मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से तुच्छ किया जाय ३२ और मार डाला जाय और तीन दिन के पीछे जी उठे । उस ने यह बात खोलके ३३ कही और पितर उसे लेके उस को डांटने लगा । उस ने मुंह फेरके और अपने शिष्यों पर दृष्टि करके पितर को डांटा कि हे जैतान मेरे साम्हने से दूर हो क्योंकि तुम्हें ईश्वर की बातों का नहीं परन्तु मनुष्यों की बातों का सोच रहता है ।

३४ उस ने अपने शिष्यों के संग लोगों को अपने पास बुलाके उन से कहा जो ३५ कोई मेरे पीछे आने चाहे सो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे । क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा । ३६ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उस को क्या ३७ लाभ होगा । अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा । जो कोई इस समय के व्यभिचारी और पापी लोगों के बीच में मुझ से और मेरी बातों से लजावे मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के संग अपने पिता के ऐश्वर्य में आवेगा तब उस से लजावेगा ॥

नवां पर्व ।

१ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों ईश्वर का राज्य पराक्रम से आया हुआ न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे ॥

२ छः दिन के पीछे यीशु पितर और याकूब और योहान को लेके उन्हें किसी जंवे ३ पर्वत पर एकान्त में ले गया और उन के आगे उस का रूप बदल गया । और उस का वस्त्र चमकने लगा और पाले की नाईं अति उजला हुआ जैसा कोई ४ धोखी धरती पर उजला नहीं कर सकता है । और मूसा के संग एलियाह उन को ५ दिखाई दिया और वे यीशु के संग बात करते थे । इस पर पितर ने यीशु से कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है । हम तीन डेरे बनावे एक आप के ६ लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के लिये । वह नहीं जानता था कि क्या ७ कहे क्योंकि वे बहुत डरते थे । तब एक मेघ ने उन्हें ढा लिया और उस मेघ ८ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उस की सुनो । और उन्होंने ने अचानक ९ आरोहण और दृष्टि कर यीशु को ढाड़के अपने संग और किसी को न देखा । जब

वे उस पर्वत से उतरते थे तब उस ने उन को आज्ञा दी कि जय नों मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं ली उठे तब नों जो तुम ने देखा है सो किसी से मत कहो । उन्हीं ने यह बात अपने ही में रखके आपस में चिन्तार किया कि मृतकों १० में से ली उठने का अर्थ क्या है ।

और उन्हीं ने उस ने पूछा अध्यापक लोग क्यों कहते हैं कि सलियाह को ११ पहिले जाना होगा । उस ने उन को उत्तर दिया कि सब है सलियाह पहिले आपके १२ सब कुछ सुधारेगा । और मनुष्य के पुत्र के विषय में क्योंकर लिखा है कि यह बहुत दुःख उठावेगा और तुच्छ किया जायगा । परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि १३ सलियाह भी आ चुका है और जैसा उस के विषय में लिखा है तैसा उन्हीं ने उस से जो कुछ चाहा सो किया है ।

उस ने शिष्यों के पास आ बहुत लोगों को उन की चारों ओर और अध्यापकों १४ को उन से विवाद करते हुए देखा । सब लोग उसे देखते ही विस्मय हुए और १५ उस की ओर दौड़के उसे प्रणाम किया । उस ने अध्यापकों से पूछा तुम इन से १६ किस बात का विवाद करते हो । भीड़ में से एक ने उत्तर दिया कि हे गुन में १७ अपने पुत्र को जिसे गंगा भूत लगा है आप के पास लाया हूँ । भूत उसे जहाँ १८ प्रकटता है तहाँ पकड़ता है और वह मुँह से फेन बहाता और अपने दाँत पीसता है और मूख जाता है और मैं ने आप के शिष्यों ने कहा कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके । यीशु ने उत्तर दिया कि हे अविश्वासी लोगो मैं अब ली १९ तुम्हारे संग रहूँगा और जब नों तुम्हारी सटूँगा । उस को मेरे पास लाओ । वे २० उस को उस पास लाये और जब उस ने उसे देखा तब भूत ने तुम्हारा उस को मरोड़ा और वह भूमि पर गिरा और मुँह से फेन बहाते हुए लोटने लगा । यीशु २१ ने उस के पिता से पूछा यह उस को कितने दिनों से हुआ । उस ने कहा घानकपन से । भूत ने उसे नाश करने को बार बार आग में और पानी में भी गिराया है २२ परन्तु जो आप कुछ कर सकें तो हम पर दया करके हमारा उपकार कीजिये । यीशु ने उस से कहा जो तू विश्वास कर सके तो विश्वास करनेहारे के लिये २३ सब कुछ हो सकता है । तब बालक के पिता ने तुरन्त पुकारके रो रोके कहा २४ हे प्रभु मैं विश्वास करता हूँ मेरे अविश्वास का उपकार कीजिये । जब यीशु ने २५ देखा कि बहुत लोग एकट्ठे दौड़े आते हैं तब उस ने अगुह भूत को डाँटके उस से कहा हे गूंगे बाहरे भूत मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि उस में से निकल आ और उस में फिर कभी मत पैठ । तब भूत चिल्लाके और बालक को बहुत २६ मरोड़के निकल आया और बालक मृतक के समान हो गया यहाँ ली कि बहुतों ने कहा यह तो सर गया है । परन्तु यीशु ने उस का हाथ पकड़के उसे उठाया २७ और वह खड़ा हुआ । जब यीशु घर में आया तब उस के शिष्यों ने निगाने में २८ उस से पूछा हम उस भूत को क्यों नहीं निकाल सके । उस ने उन से कहा कि २९ जो इस प्रकार के हैं सो प्रार्थना और उपवास पिना और किसी उपाय से निकाले नहीं जा सकते हैं ।

वे वहाँ से निकलके गालील में जाके गये और यह नहीं चाहता था कि कोई ३०



- ३१ जाने । क्योंकि उस ने अपने शिष्यों को उपदेश दे उन से कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जायगा और वे उस को मार डालेंगे और यह ३२ सत्रह तीसरे दिन उठेगा । परन्तु धन्दों ने यह बात नहीं समझी और उस से पूछने को डरते थे ।
- ३३ यह कफर्नाहम में आया और घर में पहुँचके शिष्यों से पूछा मार्ग में तुम ३४ आपस में किस बात का विचार करते थे । वे चुप रहे क्योंकि मार्ग में उन्होंने ने ३५ आपस में इसी का विचार किया था कि हम में से क्या कौन है । तब उस ने बैठके बारह शिष्यों को बुलाके उन से कहा यदि कोई प्रधान हुआ चाहे तो ३६ सभी से लौटा और सभी का सेवक होगा । और उस ने एक बालक को लेके ३७ उन के पीछे में खड़ा किया और उसे गोदी में ले उन से कहा , जो कोई मेरे नाम से मेरे बालकों में से एक को गृहण करे यह मुझे गृहण करता है और जो ३८ कोई मुझे गृहण करे यह मुझे नहीं परन्तु मेरे भोजनेहारों का गृहण करता है ।
- ३९ तब येरुसलम ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु हम ने किसी मनुष्य को जो हमारे पीछे नहीं आता है आप के नाम से भूतों का निकालते देखा और हम ने उसे ४० खर्जा क्योंकि यह हमारे पीछे नहीं आता है । यीशु ने कहा उस को मत खर्जा ४१ क्योंकि कोई नहीं है जो मेरे नाम से आश्चर्य कर्म करेगा और शीघ्र मेरी निन्दा कर सकेगा । जो हमारे विरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है । जो कोई मेरे नाम ४२ से एक कटोरा पानी तुम को इस लिये पिलावे कि ख्रीष्ट के द्वा में तुम से सब कहता है यह किसी रीति में आपना फल न खायेगा । परन्तु जो कोई उन कीटों में से जो मुझ पर विषवास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये भला होता कि चक्री का पाट उस के गले में बाँधा जाता और यह समुद्र में डाला ४३ जाता । जो तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल . टुंडा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए तू नरक में अर्थात् ४४ न युक्तनेहारी आग में जाय . जहाँ उन का कीड़ा नहीं सरता और आग नहीं युक्तती । और जो तेरा पाँख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल . लंगड़ा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो पाँख रहते हुए तू ४५ नरक में अर्थात् न युक्तनेहारी आग में डाला जाय . जहाँ उन का कीड़ा नहीं ४६ सरता और आग नहीं युक्तती । और जो तेरी आँख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल डाल . काना होके ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस ४७ से भला है कि दो आँखें रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाय . जहाँ उन का कीड़ा नहीं सरता और आग नहीं युक्तती । क्योंकि हर एक जन आग से ४८ लोणा किया जायगा और हर एक बलि लोण से लोणा किया जायगा । लोण अच्छा है परन्तु यदि लोण अलोणा हो जाय तो किस से उस को स्वादित करोगे . अपने में लोण रखा और आपस में मिले रहो ॥

दसवां पृष्ठ ।

- १ यीशु वहाँ से उठके यर्दन के उस पार से देके यहूदिया के सिवानों में आया और बहुत लोण फिर उस पास एकट्ठे आये और उस ने अपनी रीति पर उन्होंने

को फिर उपदेश दिया । तब फरीशियों ने उस पास आ उस की परीक्षा करने २  
 को उस से पूछा क्या अपनी स्त्री को त्यागना मनुष्य को उचित है कि नहीं । उस ३  
 ने उन को उत्तर दिया कि मूसा ने तुम को क्या आज्ञा दी है । उन्होंने ने कहा ४  
 मूसा ने त्यागपत्र लिखने और स्त्री को त्यागने दिया । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया ५  
 कि तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उस ने यह आज्ञा तुम को लिख दी है ।  
 परन्तु मृष्टि के आरंभ से ईश्वर ने नर और नारी करके मनुष्यों को उत्पन्न ६  
 किया । इस हेतु से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला ७  
 रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे । सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं । इस ८  
 लिये जो कुछ ईश्वर ने जोड़ा है उस को मनुष्य अलग न करे । घर में उस के ९  
 शिष्यों ने फिर इस बात के विषय में उस से पूछा । उस ने उन से कहा जो १०  
 कोई अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से विवाह करे सो उस के बिना परस्त्री-  
 गमन करता है । और यदि स्त्री अपने स्वामी को त्यागके दूसरे से विवाह करे ११  
 तो वह व्यभिचार करती है ॥

तब लोग कितने बालकों को यीशु पास लाये कि वह उन्हें छूये परन्तु १३  
 शिष्यों ने लानेहारों को डांटा । यीशु ने यह देखके अप्रमन्न हो उन से कहा १४  
 बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत दर्जों क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसा  
 का है । मैं तुम से सब कहता हूँ कि जो कोई ईश्वर के राज्य को बालक की १५  
 भाँति ग्रहण न करे वह उस में प्रवेश करने न पावेगा । तब उस ने उन्हें गोदी में १६  
 लेके उन पर हाथ रखके उन्हें आशीर्वाद दिया ॥

जब वह मार्ग में जाता था तब एक मनुष्य उस की ओर दौड़ा और उस के आगे १७  
 घुटने टेकके उस से पूछा हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन का अधिकारी होने को मैं  
 क्या करूँ । यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है । कोई उत्तम नहीं १८  
 है केवल एक अर्थात् ईश्वर । तू आज्ञाओं को जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर १९  
 नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे उगाई मत कर अपने माता  
 पिता का आदर कर । उस ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु इन सबों को मैं ने २०  
 अपने लङ्कण से पालन किया है । यीशु ने उस पर दृष्टि कर उसे प्यार किया और २१  
 उस से कहा तू मेरे एक दास की घटी है । जा जो कुछ तेरा है सो वेंचके कंगालों  
 को दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ कृष्ण उठाके मेरे पीछे हो ले । वह २२  
 इस बात से अप्रमन्न हो उदास चला गया क्योंकि उस को बहुत धन था ॥

यीशु ने चारों ओर दृष्टि कर अपने शिष्यों से कहा धनवानों को ईश्वर के २३  
 राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन होगा । शिष्य लोग उस की बातों से अचंभित २४  
 हुए परन्तु यीशु ने फिर उन को उत्तर दिया कि हे बालक जो धन पर भरोसा  
 रखते हैं उन्होंने को ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है । ईश्वर के २५  
 राज्य में धनवान के प्रवेश करने से जंट का सूई के नाके में से जाना सघज  
 है । ये अत्यन्त अचंभित हो आपस में बोले तब तो किस का आश हो सकता २६  
 है । यीशु ने उन पर दृष्टि कर कहा मनुष्यों से यह अनहोना है परन्तु ईश्वर से २७  
 नहीं क्योंकि ईश्वर से सब कुछ हो सकता है ॥

२८ पितर उस से कहने लगा कि देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के पीछे  
 २९ हो लिये हैं । यीशु ने उत्तर दिया मैं तुम से सब कहता हूँ कि जिस ने मेरे और  
 ३० सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या स्त्री या  
 ३१ लड़कों या भूमि को त्यागा हो . ऐसा कोई नहीं है जो अब इस समय में उपद्रव  
 सहित सौ गुणों घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़कों और  
 ३२ भूमि को और परलोक में अनन्त जीवन न पावेगा । परन्तु बहुतरे जो आगे हैं  
 पिछले होंगे और जो पिछले हैं आगे होंगे ॥

३२ वे यिरूशलीम को जाते हुए मार्ग में थे और यीशु उन के आगे आगे चलता  
 था और वे अचम्भित हुए और उस के पीछे चलते हुए डरते थे और वह फिर  
 ३३ बारह शिष्यों को लेकर जो कुछ उस पर होन्हार था सो उन से कहने लगा कि  
 देखो हम यिरूशलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्या-  
 पकों के हाथ पकड़वाया जायगा और वे उस को बध के योग्य ठहराके अन्य-  
 ३४ देशियों के हाथ सौंपेंगे । और वे उस से ठट्ठा करेंगे और कोड़े मारेंगे और उस  
 पर धूकेंगे और उसे घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा ॥

३५ तब जज्जदी के पुत्र याकूब और योहन ने यीशु पास आ कहा हे गुरु हम  
 ३६ चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगें सो आप हमारे लिये करें । उस ने उन से कहा  
 ३७ तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं । वे उस से बोले हमें यह दीजिये कि  
 ३८ आप के ऐश्वर्य में हम में से एक आप की दाहिनी ओर और दूसरा आप की  
 ३९ बाईं ओर बैठे । यीशु ने उन से कहा तुम नहीं दूकते कि क्या मांगते हो . जिस  
 कटोरे से मैं पीता हूँ क्या तुम उस से पी सकते हो और जो व्यपतिसमा में लेता  
 ४० हूँ क्या तुम उसे ले सकते हो । उन्होंने उस से कहा हम सकते हैं . यीशु ने उन  
 से कहा जिस कटोरे से मैं पीता हूँ उस से तुम तो पीओगे और जो व्यपतिसमा  
 ४१ में लेता हूँ उसे लेओगे । परन्तु जिन्हों के लिये तैयार किया गया है उन्हें छोड़  
 और किसी को अपनी दाहिनी और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार  
 नहीं है ॥

४१ यह सुनके दसों शिष्य याकूब और योहन पर रिसियाने लगे । यीशु ने उन को  
 ४२ अपने पास बुलाके उन से कहा तुम जानते हो कि जो अन्यदेशियों के अध्यक्ष  
 समझे जाते सो उन्हें पर प्रभुता करते हैं और उन में के बड़े लोग उन्हें पर  
 ४३ अधिकार रखते हैं । परन्तु तुम्हों में ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्हों में बड़ा  
 ४४ हुआ चाहे सो तुम्हारा सेवक होगा । और जो कोई तुम्हारा प्रधान हुआ चाहे  
 ४५ सो सभी का दास होगा । क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी सेवा करवाने को नहीं परन्तु  
 सेवा करने को और बहुतों के उद्धार के दाम में अपना प्राण देने को आया है ॥

४६ वे यिरीहो नगर में आये और जब वह और उस के शिष्य और बहुत लोग  
 यिरीहो से निकलते थे तब तीमई का पुत्र तर्तीमई एक अंधा मनुष्य मार्ग की  
 ४७ ओर बैठा भीख मांगता था । वह यह सुनके कि यीशु नासरी है पुकारने और  
 ४८ कहने लगा कि हे दाऊद के सन्तान यीशु मुझ पर दया कीजिये । बहुत लोगों  
 ने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उस ने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊद के

सन्तान मुक्त पर दया कीजिये । तब यीशु खड़ा रहा और उसे बुलाने का कड़ा ४८  
और लोगों ने उस अंधे का बुलाके उस से कड़ा ठाढ़स कर उठ यह तुम्हें बुलाता  
है । यह अपना कपड़ा फेंकके उठा और यीशु पास आया । इस पर यीशु ने उस ५०  
से कड़ा तुम्हें क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं . अंधा उस से बोला हे गुरु मैं ५१  
अपनी दृष्टि पाऊं । यीशु ने उस से कड़ा चला जा तेरे विश्वास ने तुम्हें चंगा ५२  
किया है . और यह तुरन्त देखने लगा और मार्ग में यीशु के पीछे हो लिया ।

सयारहवां पर्व ।

जब वे यिरुशलैम के निकट अर्थात् जैतून पर्वत के समीप बैतफ्गी और १  
वैथनिया गांवों पास पहुंचे तब उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके  
भेजा . कि जो गांव तुम्हारे समुख है उन में जाओ और उन में प्रवेश करते २  
ही तुम एक गवदी के बच्चे को जिस पर कभी कोई मनुष्य नहीं चढ़ा वंधे हुए  
पाओगे उसे खोलके लाओ । जो तुम से कोई कहे तुम यह क्यों करते हो तो ३  
कहो कि प्रभु को इस का प्रयोजन है तब यह उसे तुरन्त यहां भेजेगा । उन्हीं ४  
ने जाके उस बच्चे का दो दाटों के सिरे पर द्वार के पास बाहर वंधे हुए पाया  
और उस को खोलने लगे । तब जो लोग वहां खड़े थे उन में से कितनों ने ५  
उन से कड़ा तुम क्या करते हो कि बच्चे को खोलते हो । उन्हीं ने जैसा यीशु ६  
ने आज्ञा किई वैसा उन से कड़ा तब उन्हीं ने उन्हें जाने दिया । और उन्हीं ने ७  
बच्चे को यीशु पास लाके उस पर अपने कपड़े ढाले और यह उस पर बैठा । और ८  
बहुत लोगों ने अपने अपने कपड़े मार्ग में बिछाये और औरों ने वृक्षों से डालियां  
काटके मार्ग में बिछाईं । और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्हीं ने पुकारके ९  
कहा जय जय धन्य यह जो परमेश्वर के नाम से आता है । धन्य हमारे पिता १०  
दाऊद का राज्य जो परमेश्वर के नाम से आता है . सब से ऊंचे स्थान में  
जयजयकार होवे । यीशु ने यिरुशलैम में आ मन्दिर में प्रवेश किया और जब ११  
उस ने चारों ओर सब वस्तुओं पर दृष्टि किई और संध्याकाल आ चुका तब  
यह बारह शिष्यों के संग वैथनिया को निकल गया ॥

दूसरे दिन जब वे वैथनिया से निकलते थे तब उस को भूख लगी । और १२  
यह पत्ते लगे हुए एक गूलर का वृक्ष दूर से देखके आया कि क्या जाने उस में १३  
कुछ पावे परन्तु उस पास आके और कुछ न पाया केवल पत्ते . गूलर के पकने  
का समय नहीं था । इस पर यीशु ने उस वृक्ष को कड़ा कोई मनुष्य फिर कभी १४  
तुम्हें फल न खावे . और उस के शिष्यों ने यह बात सुनी ।

वे यिरुशलैम में आये और यीशु मन्दिर में जाके जो लोग मन्दिर में बैठते १५  
और मोल लेते थे उन्हें निकालने लगा और सूरोंफों के पीढ़ों को और कपोतों  
के बेचनेदारों की चौकियों को उलट दिया . और किसी को मन्दिर के बीच १६  
से कोई पात्र ले जाने न दिया । और उस ने उपदेश कर उन से कड़ा क्या १७  
नहीं लिखा है कि मेरा घर सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर  
कहावेगा . परन्तु तुम ने उसे डाकूओं का खोह बनाया है । यह सुनके अध्यापकों १८  
और प्रधान याजकों ने खोज किया कि उसे किस रीति से नाश करें क्योंकि वे

१९ उस से डरते थे इस लिये कि सब लोग उस के उपदेश से अचंभित होते थे । जब  
सांभ हुई तब वह नगर से बाहर निकला ।

२० भोर को जब वे उधर से जाते थे तब उन्होंने ने वह गूलर का वृक्ष जड़ से  
२१ सूखा हुआ देखा । पितर ने स्मरण कर यीशु से कहा हे गुरु देखिये यह गूलर  
२२ का वृक्ष जिसे आप ने साप दिया सूख गया है । यीशु ने उन को उत्तर दिया  
२३ कि ईश्वर पर विश्वास रखो । क्योंकि मैं तुम से सब कहता हूँ जो कोई इस  
पहाड़ से कहे कि उठ समुद्र में गिर पड़ और अपने मन में सन्देह न रखे परन्तु  
२४ विश्वास करे कि जो मैं कहता हूँ सो हो जायगा उस के लिये जो कुछ वह  
२५ कहेगा सो हो जायगा । इस लिये मैं तुम से कहता हूँ जो कुछ तुम प्रार्थना  
करके मांगो विश्वास करो कि हम पावेंगे तो तुम्हें मिलेगा । और जब तुम  
प्रार्थना करने को खड़े हो तब यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर कुछ द्वेष तो  
क्षमा करो इस लिये कि तुम्हारा स्वर्गवासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा  
२६ करे । परन्तु जो तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा स्वर्गवासी पिता भी तुम्हारे  
अपराध क्षमा न करेगा ।

२७ वे फिर यिरुशलैम में आये और जब यीशु मन्दिर में फिरता था तब प्रधान  
२८ याजक और अध्यापक और प्राचीन लोग उस पास आये . और उस से बोले तुम्हें  
ये काम करने का कैसा अधिकार है और ये काम करने को किस ने तुम्हें  
२९ यह अधिकार दिया । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात  
पूछूंगा . तुम मुझे उत्तर देओ तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करने का  
३० कैसा अधिकार है । योहन्ना का खपतिसमा देना क्या स्वर्ग की अथवा मनुष्यों  
३१ की ओर से हुआ मुझे उत्तर देओ । तब वे आपस में विचार करने लगे कि जो  
हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने इस का विश्वास क्यों  
३२ नहीं किया । परन्तु जो हम कहें मनुष्यों की ओर से . तब उन्हें लोगों का  
डर लगा क्योंकि सब लोग योहन्ना को जानते थे कि निश्चय वह भविष्यद्वक्ता  
३३ था । सो उन्होंने ने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं जानते . यीशु ने उन्हें  
उत्तर दिया तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूँ कि मुझे ये काम करने का कैसा  
अधिकार है ।

बारहवां पृष्ठ ।

१ यीशु दृष्टान्तों में उन से कहने लगा कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई  
और चहुं ओर बेड़ दिया और उस का कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालियों  
२ को उस का ठीका दे परदेश को चला गया । समय में उस ने मालियों के पास  
३ एक दास को भेजा कि मालियों से दाख की बारी का कुछ फल लेवे । परन्तु  
४ उन्होंने ने उसे लेके मारा और ठूँके हाथ फेर दिया । फिर उस ने दूसरे दास को  
५ उन के पास भेजा और उन्होंने ने उसे पत्थरवाह कर उस का सिर फोड़ा और उसे  
६ डाला और बहुत औरों से उन्होंने ने वैसा ही किया कितनों को मारा और कितनों  
७ को घात किया । फिर उस को एक ही पुत्र था जो उस का प्रिय था सो सब के

हामन के पास एकट्ठे हुए और उसे कहा कि बठ हमारे लिये ईश्वर बना जो हमारे आगे चलेंगे क्योंकि यह सूसा बठ पुनप जो हमें मिस देश से निकाल लाया हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ । तब हामन ने उन्हें कहा कि सोने की उन २  
वालियों को जो तुम्हारी पत्थियों के तुम्हारे बेटों के और तुम्हारी बेटियों के कानों में हैं तोड़ तोड़के मुझ पास लाओ । मैं समस्त लोग सोने की वालियां ३  
तोड़ तोड़के जो उन के कानों में थीं हामन के पास लाये । और उस ने उन के हाथों से लिया और डाला हुआ एक बड़ड़ा बनाके टांकी से उस का डोल किया और उन्हें कहा कि हे हमरायल यह तेरा ईश्वर है जो तुम्हें मिस के देश से निकाल लाया । और जब हामन ने देखा तो उस के आगे बंदी बनाई और यह ५  
कहके प्रचार कराया कि कल परमेश्वर के लिये पर्व है । और वे विद्वान को तड़के उठे और बलिदान की भेंट चढ़ाई और कुशल की भेंट लाये और लोग खाने पीने को बैठे और लीला करने को उठे ।

तब परमेश्वर ने सूसा में कहा कि उत्तर जा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू ७  
मिस के देश से निकाल लाया आप को मृष्ट किया है । वे उस मार्ग से जिस की मैं ने उन्हें आज्ञा कीई थी शीघ्र फिर गये उन्होंने ने अपने लिये डाला हुआ बड़ड़ा बनाया और उसे पूजा और उस के लिये बलिदान चढ़ाके कहा कि हे हमरायल यह तेरा ईश्वर है जो तुम्हें मिस देश से निकाल लाये । और परमेश्वर ने सूसा में ८  
कहा कि मैं ने इन लोगों को देखा और देखा कि वह कठोर गरदन के लोग हैं । मैं अब तू मुझे छोड़ कि मेरा क्रोध उन पर भड़के और मैं उन्हें भस्म करूं और १०  
मैं तुम्हें से एक बड़ी जाति बनाऊंगा ।

तब सूसा ने परमेश्वर अपने ईश्वर की बिनती कीई और कहा कि हे परमेश्वर ११  
किस लिये तेरा क्रोध अपने लोगों पर भड़केगा जिन्हें तू मिस देश से महापराक्रम और सामर्थ्य हाथ से निकाल लाया । किस लिये सिमी कहके बोलें कि वह बुराई के १२  
लिये उन्हें निकाल ले गया जिसमें उन्हें पहाड़ों में नाश करे और उन्हें पृथिवी पर से भस्म करे अपने अत्यंत क्रोध से फिर जा और अपने लोगों पर बुराई पहुंचाने से फिर जा । अपने दासों अविरोधाम बजड़ाक और हमरायल को स्मरण कर जिन १३  
से तू ने अपनी ही किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हारे वंश को स्वर्ग के तारों के समान बड़ाऊंगा और यह समस्त देश जिस के विषय में मैं ने कहा है कि मैं तुम्हारे वंश को बड़ाऊंगा और वे उस के मनातन के अधिकारी होंगे । तब परमे- १४  
श्वर उस बुराई से जो चाही थी कि अपने लोगों पर करे फिरा ।

और सूसा फिरा और पहाड़ में उतरा और नाबो की दोनों पटियां उस के १५  
हाथ में थीं पटियां दोनों ओर लियी हुई थीं । और वे पटियां ईश्वर के कार्य १६  
थीं और जो लिखा हुआ सो ईश्वर का लिखा पटियों पर खादा हुआ । जब १७  
यहूशूय ने लोगों के कोलाहल का शब्द सुना तो सूसा से कहा कि छावनी में लड़ाई का शब्द है । और कहा कि यह आपुस में जो शब्द होता है सो न हार १८  
का शब्द है और न जीत का शब्द है परन्तु गीत का शब्द मैं सुनता हूं । और १९  
यों हुआ कि जब वह छावनी के पास आया तब उस ने उस बड़ड़े को और



यीशु ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया उस से पूछा मय से बड़ी आत्मा कौन है । यीशु ने उसे उत्तर दिया सब आत्माओं में से यही बड़ी है कि हे इसायेल सुनो परमेश्वर हमारा ईश्वर एक ही परमेश्वर है । और तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम कर , यही मय से बड़ी आत्मा है । और दूसरी उस के समान है सो यह है कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर , इन से और कोई आत्मा बड़ी नहीं । उस अध्यापक ने उस से कहा अच्छा हे गुरु आप ने सत्य कहा है कि एक ही ईश्वर है और उसे छोड़ कोई दूसरा नहीं है । और उस को सारे मन से और सारी बुद्धि से और सारे प्राण से और सारी शक्ति से प्रेम करना और पड़ोसी को अपने समान प्रेम करना सारे देशों से और थलदानी से अधिक है । जब यीशु ने देखा कि उस ने बुद्धि से उत्तर दिया था तब उस से कहा तू ईश्वर के राज्य से दूर नहीं है , और किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ ॥

इस पर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए कहा अध्यापक लोग क्योंकर कहते हैं कि ख्रीष्ट दाऊद का पुत्र है । दाऊद आप ही पवित्र आत्मा की जिज्ञासे बोला कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा जब लों में तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी और बैठ । दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है फिर वह उस का पुत्र कहाँ से है , भीड़ के अधिक लोग प्रसन्नता से उस की सुनते थे ॥

उस ने अपने उपदेश में उन से कहा अध्यापकों ने चौकस रहे जो लंबे वस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं , और बाजारों में नमस्कार और सभा के घरों में जंचे आसन और जेबनारों में जंचे स्थान भी चाहते हैं । वे विधवाओं के घर खा जाते हैं और बदनाम के लिये बड़ी धर लों प्रार्थना करते हैं , वे अधिक दंड पावेंगे ॥

यीशु भंडार के सामने बैठके देखता था कि लोग क्योंकर भंडार में रोकड़ डालते हैं और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला । और एक कंगाल विधवा ने आके दो छदाम अर्थात् आध पैसा डाला । तब उस ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूँ कि जिन्होंने ने भंडार में डाला है उन सभी से इस कंगाल विधवा ने अधिक डाला है । क्योंकि सभी ने अपनी बछती में से कुछ कुछ डाला है परन्तु इस ने अपनी घटती में से जो कुछ उस का था अर्थात् अपनी सारी जीविका डाली है ॥

तेरहवां पर्व ।

जब यीशु मन्दिर में से निकलता था तब उस के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे गुरु देखिये कैसे पत्थर और कैसी रचना है । यीशु ने उसे उत्तर दिया क्या तू यह बड़ी बड़ी रचना देखता है , पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जाय ॥

जब वह जैतून पर्वत पर मन्दिर के सामे बैठा था तब पितर और याकूब और

पीछे उस ने यह कहके उसे भी उन के पास भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे । परन्तु उन मालियों ने आपस में कहा, यह तो अधिकारी है आश्रा हम उसे मार डालें तब अधिकार हमारा होगा । और उन्होंने ने उसे लेके मार डाला और दाख की दारी के बाहर फेंक दिया । हम लिये दाख की दारी का म्यामी क्या करेगा . वह आपके उन मालियों को नाश करेगा और दाख की दारी दूसरों के हाथ देगा । क्या तुम ने धर्मपुस्तक का यह वचन नहीं पढ़ा है कि जिस पत्थर को शत्रुओं ने निकम्मा जाना वही काने का मित्र हुआ है . यह परमेश्वर का कार्य है और हमारी दृष्टि में अद्भुत है । तब उन्होंने ने उसे पकड़ने चाहा क्योंकि जानते थे कि उस ने हमारे विरुद्ध यह दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगों में डरे और उसे छोड़के चले गये ।

तब उन्होंने ने उसे घात में फंमाने को कई एक फरोशियों और चरोशियों को उस पास भेजा । वे आपके उस में जाने के गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और किसी का खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्यों का मुँह देखके घात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर का मार्ग सत्यता से बताते हैं . क्या कैसर को कर देना उचित है अथवा नहीं . हम देख अथवा न देख . उन ने उन का कपट जानके उन से कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो . एक सूची मेरे पास लाओ कि मैं देखूँ । वे लाये और उस ने उन से कहा यह मूर्ख और ठाण किस की है . वे उस से बोले कैसर की । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि जो कैसर का है सो कैसर को देओ और जो ईश्वर का है सो ईश्वर को देओ . तब वे उस से अचंभित हुए ॥

सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकों का जी उठना नहीं होगा उस पास आये और उस से पूछा . कि हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा कि यदि किसी का भाई मर जाय और स्त्री को छोड़े और उस को सन्तान न हो तो उस का भाई उस की स्त्री से विवाह करे और अपने भाई के लिये वंश रखे । सो सात भाई थे . पहिला भाई विवाह कर निःसन्तान मर गया । तब दूसरे भाई ने उस स्त्री से विवाह किया और मर गया और उस को भी सन्तान न हुआ . और ऐसेही तीसरे ने भी । सातों ने उस से विवाह किया पर किसी को सन्तान न हुआ . सब के पीछे स्त्री भी मर गई । सो मृतकों के जी उठने पर सब ये सब उठेंगे तब वह उन में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सातों ने उस से विवाह किया । यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम इसी कारण भूल में न पड़े हो कि धर्मपुस्तक और ईश्वर की शक्ति नहीं दूकते हो . क्योंकि जब वे मृतकों में से जी उठें तब न विवाह करते न विवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्ग में दूतों के समान हैं । मृतकों के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा के पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा है कि ईश्वर ने उस से कहा मैं अब्राहम का ईश्वर और इसाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हूँ । ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवितों का ईश्वर है सो तुम वही भूल में पड़े हो ॥

अध्यापकों में से एक ने आ उन्हें विवाद करते सुना और यह जानके कि

२८ गूलर के वृक्ष से दृष्टान्त सीखो . जब उस की डाली कोमल हो जाती और  
 २९ पत्ते निकल आते तब तुम जानते हो कि धूपकाला निकट है । इस रीति से  
 ३० जब तुम यह बातें होते देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वार पर है । मैं  
 तुम से सब कहता हूं कि जब लों यह सब बातें पूरी न हो जायें तब लों इस  
 ३१ समय के लोग नहीं जाते रहेंगे । आकाश और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी  
 बातें कभी न टलेंगीं ॥

३२ उस दिन और उस घड़ी के विषय में न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्गवासी  
 ३३ दूतगण और न पुत्र परन्तु केवल पिता । देखो जागते रहो और प्रार्थना करो  
 ३४ क्योंकि तुम नहीं जानते हो वह समय कब होगा । वह ऐसा है जैसे परदेश  
 जानेवाले एक मनुष्य ने अपना घर छोड़ा और अपने दासों को अधिकार और  
 हर एक को उस का काम दिया और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा  
 ३५ दीई । इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो घर का स्वामी कब  
 आवेगा सांभ को अथवा आधी रात को अथवा सुर्ग बोलने के समय में अथवा  
 ३६ भोर को । ऐसा न हो कि वह अचानक आके तुम्हें सोते पावे । और जो मैं  
 तुम से कहता हूं सो सभी से कहता हूं जागते रहो ॥

चौदहवां पर्व ।

१ निस्तार पर्व और अखमीरी रोटी का पर्व दो दिन के पीछे होनेवाला था  
 और प्रधान याजक और अध्यापक लोग खोज करते थे कि यीशु को क्योंकर  
 २ हल से पकड़के मार डालें । परन्तु उन्हें ने कहा पर्व में नहीं न हो कि लोगों  
 का हुल्लड़ होवे ॥

३ जब वह बैथनिया में शिमेन कोठी के घर में था और भोजन पर बैठा तब  
 एक स्त्री उजले पत्थर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके आई  
 ४ और पात्र तोड़के उस के सिर पर ढाला । कोई कोई अपने मन में रिसियाते थे  
 ५ और बोले सुगन्ध तेल का यह क्षय क्यों हुआ । क्योंकि वह तीन सौ सूकियों  
 से अधिक दाम में बिक सकता और कंगालों को दिया जा सकता . और वे  
 ६ उस स्त्री पर कुड़कुड़ाये । यीशु ने कहा उस को रहने दो क्यों उस को दुःख  
 ७ देते हो . उस ने अच्छा काम मुझ से किया है । कंगाल लोग तुम्हारे संग, सदा  
 रहते हैं और तुम जब चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो परन्तु मैं तुम्हारे  
 ८ संग सदा नहीं रहूंगा । जो कुछ वह कर सकी सो किया है . उस ने मेरे गाड़े  
 ९ जाने के लिये आगे से मेरे देह पर सुगन्ध तेल लगाया है । मैं तुम से सत्य  
 कहता हूं सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह भी  
 जो इस ने किया है उस के स्मरण के लिये कहा जायगा ॥

१० तब यहूदा इस्करियोती जो बारह शिष्यों में से एक था प्रधान याजकों के  
 ११ पास गया इस लिये कि यीशु को उन्हीं के हाथ पकड़वाय । वे यह सुनके  
 आनन्दित हुए और उस को रुपये देने की प्रतिज्ञा किई और वह खोज करने  
 लगा कि उसे क्योंकर अवसर पाके पकड़वाय ॥

१२ अखमीरी रोटी के पर्व के पहिले दिन जिस में वे निस्तार पर्व का मेला

योद्धन और अन्द्रिय ने निगले में उस से पृष्ठा . कि हमों से कहिये यह कथ होगा ४  
 और यह सब बातें जिस समय में पूरी होगीं उस समय का क्या चिन्त होगा ।  
 योग उन्हे उत्तर दे कहने लगा चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भ्रमावे । क्योंकि ५  
 बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं यही हूँ और बहुतों को भ्रमावेंगे । जब ६  
 तुम लड़ाइयाँ और लड़ाइयों की चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इन का  
 होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समय में नहीं होगा । क्योंकि देश देश के और ७  
 राज्य राज्य के बिरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानों में मुँहडोल होंगे और अकाल  
 और हुल्लड़ होंगे . यह तो दुःखों का आरंभ होगा ॥

तुम अपने विषय में चौकस रहो क्योंकि लोग तुम्हें पंचायती में सोंपेंगे और ८  
 तुम नभाओं में सारे जाओगे और मेरे लिये अध्वजों और राजाओं के आगे उन  
 पर साजो होने के लिये खड़े किए जाओगे । परन्तु अवश्य है कि पहिले सुसमा- १०  
 चार सब देशों के लोगों में सुनाया जाय । जब वे तुम्हें ले जाके सोंप दें तब ११  
 क्या कहोगे इस की चिन्ता आगे में मत करो और न मोच करो परन्तु जो कुछ  
 तुम्हें उमी छड़ी दिया जाय सोई कहो क्योंकि तुम नहीं परन्तु पटिय आत्मा  
 वालनेद्वारा होगा । भाई भाई को और पिता पुत्र को बंध किए जाने को सोंपेंगे १२  
 और लड़के माता पिता के बिरुद्ध उठके उन्हे घात करवावेंगे । और मेरे नाम के १३  
 कारण सब लोग तुम से वैर करेंगे पर जो अन्त लो न्यिर रहे सोई प्राण पावेगा ॥

जब तुम उस उजाड़नेधारी चिन्तित धनु को जिस की बात दानिषेल भविष्यद्वक्ता १४  
 ने कही जहां उचित नहीं तहां खड़े होते देखो (जो पढ़े सो समझे) तब जो विद्व-  
 दिया में हो सो पढ़ाड़ों पर भागें । जो कोठे पर हो सो न घर में उतरे और न १५  
 अपने घर में से कुछ लेने का उस में पैठे । और जो स्वत में हो सो अपना धन्य १६  
 लेने को पीछे न फिरे । उन दिनों में हाथ हाथ गर्भवतिषाँ और दूध पिनाने- १७  
 वालियाँ । परन्तु प्रार्थना करो कि तुम को जाड़े में भागना न दोवे । क्योंकि १८  
 उन दिनों में ऐसा लेश होगा जैसा उस सृष्टि के आरंभ में जो ईश्वर ने मृजी शय  
 तक न दुआ और कभी न होगा । यदि परमेश्वर उन दिनों को न घटाता तो २०  
 कोई प्राणी न बचता परन्तु उन चुने हुए लोगों के कारण जिन को उस ने चुना  
 है उस ने उन दिनों को घटाया है ॥

तब यदि कोई तुम में कहे देखो खीष्ट पछाँ है अथवा देखो वदाँ है तो २१  
 प्रतीति मत करो । क्योंकि झूठे खाष्ट और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके चिन्त २२  
 और अहुन कास दिखावेंगे उस लिये कि जो हो अके तो चुने हुए लोगों को भी  
 भ्रमावे । पर तुम चौकस रहो देखो मैं ने आगे में तुम्हें सब बातें कह दिई हैं ॥ २३

उन दिनों में उस लेश के पीछे सूर्य अधियारा हो जायगा और चांद अपनी २४  
 ज्योति न देगा । आकाश के तारे गिर पड़ेंगे और आकाश में की सेना दिस २५  
 जायगी । तब लोग मनुष्य के पुत्र को छोड़े पराक्रम और मेष्टवर्ष से भयों पर २६  
 आते देखेंगे । और तब यह अपने दूतों को भेजगा और पृथिवी के उस सिवाने २७  
 से आकाश के उस सिवाने तक चहुँ दिशा से अपने चुने हुए लोगों को एकट्ठे  
 करेगा ॥

पिता तुम से सब कुछ हो सकता है यह कटोरा मेरे पास से टाल दे तौभी  
 ३७ जो मैं चाहता हूँ सो न होय पर जो तू चाहता है । तब उस ने आ उन्हे  
 सोते पाया और पितर से कहा हे शिमेन सो तू सोता है क्या तू एक  
 ३८ घड़ी नहीं जाग सका । जागते रहे और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न  
 ३९ पड़े . मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है । उस ने फिर जाके वही बात  
 ४० कहके प्रार्थना किई । तब उस ने लौटके उन्हे फिर सोते पाया क्योंकि उन की  
 आंखें नींद से भरी थीं . और वे नहीं जानते थे कि उस को क्या उत्तर देवे ।  
 ४१ और उस ने तीसरी बेर आ उन से कहा सो तुम सोते रहते और विश्राम करते  
 हो . बहुत है घड़ी आ पहुंची है देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़-  
 ४२ वाया जाता है । उठो चल देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है ॥  
 ४३ वह बोलताही था कि पिहूदा जो बारह शिष्यों में से एक था तुरन्त आ  
 पहुंचा और प्रधान याजकों और अध्यापकों और प्राचीनों की ओर से बहुत लोग  
 ४४ खड्ग और लाठियां लिये हुए उस के संग । यीशु के पकड़वानेहारे ने उन्हे यह  
 पता दिया था कि जिस को मैं चूमूं वही है उस को पकड़के यत्र से ले जाओ ।  
 ४५ और वह आया और तुरन्त यीशु पास जाके कहा हे गुरु हे गुरु और उस को  
 ४६ चूमा । तब उन्हां ने उस पर अपने हाथ डालके उसे पकड़ा । जो लोग निकट  
 ४७ खड़े थे उन में से एक ने खड्ग खींचके महायाजक के दास को मारा और उस का  
 ४८ कान उड़ा दिया । इस पर यीशु ने लोगों से कहा क्या तुम मुझे पकड़ने को जैसे  
 ४९ डाकू पर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो । मैं मन्दिर में उपदेश करता हुआ  
 प्रतिदिन तुम्हारे संग था और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा . परन्तु यह इस लिये है  
 ५० कि धर्मपुस्तक की बातें पूरी होवें । तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे ॥  
 ५१ और एक जवान जो देह पर चढ़र ओढ़े हुए था उस के पीछे हो लिया और  
 ५२ प्यादों ने उसे पकड़ा । वह चढ़र छोड़के उन से नंगा भागा ।  
 ५३ वे यीशु को महायाजक के पास ले गये और सब प्रधान याजक और प्राची  
 ५४ और अध्यापक लोग उस पास एकट्ठे हुए । पितर दूर दूर उस के पीछे महायाजक  
 के अंगने के भीतर लों चला गया और प्यादों के संग बैठके आग तापने लगा  
 ५५ प्रधान याजकों ने और न्याइयों की सारी सभा ने यीशु को घात करवाने के लिये  
 ५६ उस पर साक्षी ठूंढी परन्तु न पाई । क्योंकि बहुतों ने उस पर झूठी साक्षी दी  
 ५७ परन्तु उन की साक्षी एक समान न थी । तब कितनों ने खड़े हो उस पर या  
 ५८ झूठी साक्षी दिई . कि हमों ने इस को कहते सुना कि मैं यह हाथ का बनाया  
 हुआ मन्दिर गिराऊंगा और तीन दिन में दूसरा बिन हाथ का बनाया हुआ मन्दि  
 ५९ उठाऊंगा । पर यूं भी उन की साक्षी एक समान न थी । तब महायाजक ने वी  
 ६० में खड़ा हो यीशु से पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है . ये लोग तेरे विरु  
 ६१ द्ध क्या साक्षी देते हैं । परन्तु वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया . महायाजक  
 ६२ उस से फिर पूछा और उस से कहा क्या तू उस परमधन्य का पुत्र खीष्ट है । यी  
 ने कहा मैं हूँ और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दहिनी और बैठे औ  
 ६३ आकाश के मेघों पर आते देखोगे । तब महायाजक ने अपने बस्त्र फाड़के कह

मारते थे यीशु के शिष्य लोग उस से बोले आप कहां चाहते हैं कि हम आपके तैयार करें कि आप निस्तार पर्व का भोजन खाएं । उस ने अपने शिष्यों में से १३ को यह कहके भेजा कि नगर में जाओ और एक मनुष्य जल का छड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा उस के पीछे हो लेंगे । जिस घर में वह पड़े उस घर १४ के स्वामी से कहो गुरु कहता है कि पाहुनशास्त्रा कहां है जिस में मैं अपने शिष्यों के संग निस्तार पर्व का भोजन खाऊँ । वह तुम्हें एक मज्जी हुई और १५ तैयार किई हुई छड़ी उपरोठी काठरी दिखावेगा वहां हमारे लिये तैयार करो । तब उस के शिष्य लोग चले और नगर में आपके जैसा उस ने उन्हीं से कहा जैसा १६ पाया और निस्तार पर्व का भोजन बनाया ॥

सांझ को यीशु बारह शिष्यों के संग आया । जब वे भोजन पर बैठके खाते १७ थे तब यीशु ने कहा मैं तुम से सब कहता हूँ कि तुम में से एक जो मेरे संग खाता है मुझे पकड़वाया । इस पर वे उदास होने और एक एक करके उस से १८ कहने लगे वह क्या मैं हूँ और दूसरे ने कहा क्या मैं हूँ । उस ने उन को उत्तर दिया २० कि बारहों में से एक जो मेरे संग घाली में दाख होना है सोहे है । मनुष्य का २१ पुत्र जैसा उस के विषय में लिखा है वैसा ही जाता है परन्तु दाख वह मनुष्य जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है . जो उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला होना ॥

जब वे खाते थे तब यीशु ने रोटी लेके धन्यवाद किया और उसे तोड़के उन २२ को दिया और कहा लेंगे खाओ यह मेरा देह है । और उस ने कटोरा में धन्य २३ मानके चन्द दिया और सभी ने उस से पीया । और उस ने उन से कहा यह २४ मेरा लोहू अर्थात् नये नियम का लोहू है जो बहुतों के लिये चलाया जाता है । मैं तुम से सब कहता हूँ कि जिस दिन लों में ईश्वर के राज्य में हमें नशा न २५ पीऊँ उस दिन लों में दाख रस फिर कभी न पीऊँगा । और वे भजन गाके लौटून २६ पर्वत पर गये ॥

तब यीशु ने उन से कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय में ढोकर खाओगे २७ क्योंकि लिखा है कि मैं गद्देगिये को माखंगा और भेड़ें तितर बितर हो जायेंगी । परन्तु मैं अपने जो उठने के पीछे तुम्हारे आगे मालील को जाऊँगा । पितर ने २८ उस से कहा यदि सब ढोकर खावें तौभी मैं नहीं ढोकर खाऊँगा । यीशु ने उस ३० से कहा मैं तुम्हें मृत्यु कहता हूँ कि आज इसी रात सुर्ग के दो द्वार खोलने में आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा । उस ने और भी दृढ़ता से कहा जो आप के संग ३१ मुझे मरना हो तौभी मैं आप से कभी न मुकरूँगा . सभी ने भी वैसा ही कहा ॥

वे गेतजिमनी नाम स्थान में आये और यीशु ने अपने शिष्यों से कहा जब लों ३२ में प्रार्थना करं तब लों तुम यहां बैठो । और वह पितर और याकूब और योहन ३३ को अपने संग ले गया और व्याकुल और बहुत उदास होने लगा । और उस ने ३४ उन से कहा मेरा मन यहां लों अति उदास है कि मैं मरने पर हूँ . तुम यहां ठहरो और जागते रहो । और थोड़ा आगे बढ़के वह भूमि पर गिरा और प्रार्थना ३५ किई कि जो हो सके तो वह घंटी उस से टल जाय । उस ने कहा हे अल्ला हे ३६



१६ तब योहानाओं ने उसे घर के अर्थात् अध्यक्षमघन के भीतर ले जाके सारी पलटन  
 १७ को एकट्ठे बुलाया । और उन्होंने ने उसे वैजनी वस्त्र पहिराया और कांटों का  
 १८ मुकुट गून्थके उस के सिर पर रखा . और उसे नमस्कार करने लगे कि हे यिहू-  
 १९ दियों के राजा प्रणाम । और उन्होंने ने नरकट से उस के सिर पर मारा और उस  
 २० पर घूका और छुटने टेकके उस को प्रणाम किया । जब वे उस से ठट्ठा कर चुके  
 तब उस से वह वैजनी वस्त्र उतारके और उस का निज वस्त्र उस को पहिराके  
 २१ उसे क्रूश पर चढ़ाने को बाहर ले गये । और उन्होंने ने कुरीनी देश के एक मनुष्य  
 को अर्थात् सिकन्दर और रूप के पिता शिमोन को जो गांव से आते हुए उधर  
 से जाता था वेगार पकड़ा कि उस का क्रूश ले चले ॥

२२ तब वे उसे गलगथा स्थान पर लाये जिस का अर्थ यह है खोपड़ी का स्थान ।  
 २३ और उन्होंने ने दाख रस में सिर मिलाके उसे पीने को दिया परन्तु उस ने न लिया ।  
 २४ तब उन्होंने ने उस को क्रूश पर चढ़ाया और उस के कपड़ों पर चिट्ठियाँ डालके  
 २५ कि कौन किस को लेगा उन्हें वांट लिया । एक पहर दिन चढ़ा था कि उन्हें  
 २६ ने उस को क्रूश पर चढ़ाया । और उस का यह दोपपत्र ऊपर लिखा गया कि  
 २७ यिहूदियों का राजा । उन्होंने ने उस के संग दो डाकूओं को एक को उस की  
 २८ दाहिनी ओर और दूसरे को बाईं ओर क्रूशों पर चढ़ाया । तब धर्मपुस्तक का  
 यह वचन पूरा हुआ कि वह कुकर्मियों के संग गिना गया ॥

२९ जो लोग उधर से आते जाते थे उन्होंने ने अपने सिर हिलाके और यह कहके  
 ३० उस की निन्दा किई . कि हा मन्दिर के ठानेहारे और तीन दिन में बनानेहारे  
 ३१ अपने को बचा और क्रूश पर से उतर आ । इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी  
 अध्यापकों के संग आपस में ठट्ठा कर कहा उस ने औरों को बचाया अपने को  
 ३२ बचा नहीं सकता है । इसायेल का राजा खीष्ट क्रूश पर से अब उतर आवे कि  
 हम देखके बिश्वास करें . जो उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये उन्होंने ने भी उस  
 की निन्दा किई ॥

३३ जब दो पहर हुआ तब सारे देश में तीसरे पहर लों अंधकार हो गया ।  
 ३४ तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात्  
 ३५ हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे त्यागा है । जो लोग निकट खड़े थे  
 ३६ उन में से कितनों ने यह सुनके कहा देखो वह एलियाह को बुलाता है । और  
 एक ने दौड़के इस्पंज को सिरके में भिगाया और नल पर रखके उसे पीने को  
 दिया और कहा रहने दो हम देखें कि एलियाह उसे उतारने को आता है कि  
 नहीं ॥

३७ तब यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके प्राण त्यागा । और मन्दिर का परदा ऊपर  
 ३८ से नीचे लों फटके दो भाग हो गया । जो शतप्रति उस के सन्मुख खड़ा था  
 उस ने जब उसे यूँ पुकारके प्राण त्यागते देखा तब कहा सचमुच यह मनुष्य ईश्वर  
 का पुत्र था ॥

४० कितनी स्त्रियाँ भी दूर से देखती रहीं जिन्हें में मरियम मगदलीनी और  
 ४१ छोटे याकूब की औ योशी की माता मरियम और शालोमी थीं । अब यीशु

अब हमें सान्निध्यों का और क्या प्रयोजन । ईश्वर की यह निन्दा तुम ने सुनी है ६४  
हुम्न क्या समझ पड़ता है । सभी ने उस को दध के घोंघ ठहराया । तब कोई ६५  
कोई उस पर श्रुतने लगे और उस का सुन ठांघके उसे घूम मारके उस से कहने  
लगे कि भविष्यद्वार्ता बोल । प्यादों ने भी उसे यवेड़े मारे ।

जब पितर नीचे आने में था तब सदायाजक की दासियों में से एक आई . ६६  
और पितर को आग तापते देखके उस पर दृष्टि बागके बोली तू भी यीशु नामरी ६७  
के संग था । उस ने सुकके कहा मैं नहीं जानता और नहीं बूझता तू क्या ६८  
कहती है . तब वह बाहर डेवड़ी में गया और सुग बोला । दासी उसे फिर ६९  
देखके जो लोग निकट गइये थे उन से कहने लगी कि यह उन में से एक है . वह  
फिर सुकर गया । फिर घोड़ी के पीछे जो लोग निकट गइये थे उन्होंने ने पितर ने ७०  
कहा तू सबसुख उन में से एक है क्योंकि तू मालीनी भी है और तेरी बोली वैसी  
ही है । तब वह श्रिकार देने और किरिया न्याने लगा कि मैं उस मनुष्य को जिस ७१  
के विषय में बोलते हो नहीं जानता हूँ । तब सुग दूसरी बार बोला और जो ७२  
बात यीशु ने उस से कही थी कि सुग के दो बार बोलने में आगे तू तीन बार  
सुक से सुकरेगा उस बात को पितर ने स्मरण किया और सोच करते हुए  
रोने लगा ॥

#### पन्द्रहवां पृष्ठ ।

भार को प्रधान याजकों ने प्रार्थना और अध्यापकों के संग धरन न्याहियों १  
की सारी सभा ने तुरन्त आपस में विचार कर यीशु को बांधा और उसे ले जाके  
पिलात को सौंप दिया । पिलात ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है . २  
उस ने उस को उत्तर दिया कि आप ही तो कहते हैं । और प्रधान याजकों ने ३  
उस पर बहुत से दोष लगाये । तब पिलात ने उस से फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर ४  
नहीं देता . देख वे तेरे विरुद्ध किननी साक्षी देते हैं । परन्तु यीशु ने और कुछ ५  
उत्तर नहीं दिया यहां लो कि पिलात ने अचंभा किया । उस पृष्ठ में वह एक ६  
बन्धुके को जिसे लोग सांगते थे उन्हें के लिये छोड़ देता था । बरबरा नाम एक ७  
मनुष्य अपने संगी राजद्रोहियों के साथ जिनमें ने बलवे में नगईसा किई थी बांधा  
हुआ था । और लोग पुकारके पिलात से सांगने लगे कि जैसा उन्हें के लिये ८  
सदा करता था तैसा करे । पिलात ने उन को उत्तर दिया क्या तुम चाहते हो ९  
कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ . क्योंकि वह जानता था कि १०  
प्रधान याजकों ने उस को डाह से एकड़वाया था । परन्तु प्रधान याजकों ने ११  
लोगों को उम्काया इस लिये कि वह बगवानी को उन के लिये छोड़ देवे ।  
पिलात ने उत्तर देके उन से फिर कहा तुम क्या चाहते हो जिसे तुम यहूदियों १२  
का राजा कहते हो उस से मैं क्या करूँ . उन्होंने ने फिर पुकारा कि उसे क्रूज पर १३  
चढ़ाइये । पिलात ने उन से कहा क्यों उस ने कौन सी सुराई किई है . परन्तु १४  
उन्होंने ने बहुत अधिक पुकारा कि उसे क्रूज पर चढ़ाइये ॥

तब पिलात ने लोगों को बन्तुष्ट करने की इच्छा कर बगवानी को उन्हें के १५  
लिये छोड़ दिया और यीशु को कोड़े मारके क्रूज पर चढ़ाये जाने को सौंप दिया ।

करनेहारों के संग प्रगट होंगे . वे मेरे नाम से भूतों को निकालेंगे वे नई नई भाषा  
 १८ बोलेंगे । वे साँपों को चठा लेंगे और जो वे कुछ बिष पीवें तो उस से उन की  
 कुछ हानि न होगी . वे रोगियों पर दाय रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे ।  
 १९ सो प्रभु उन्हें से बोलने के पीछे स्वर्ग पर उठा लिया गया और ईश्वर की  
 २० दहिनी ओर बैठा । और उन्हें ने निकलके सव्यत्र उपदेश किया और प्रभु ने उन  
 के संग कार्य किया और जो चिन्ह साथ में प्रगट होते थे उन्हें से वचन को  
 दृढ़ किया । आमीन ॥

## लूक रचित सुसमाचार ।

पहिला पर्व ।

१ हे महामहिमन थियोफिल जो बातें हम लोगों में अति प्रमाण हैं उन बातों  
 का वृत्तान्त जिस रीति से उन्हें ने जो आरंभ से साक्षी और वचन के सेवक थे  
 २ हम लोगों को सेंपा . उसी रीति से लिखने को बहुतों ने हाथ लगाया है .  
 ३ इस लिये मुझे भी जिस ने सब बातों को आदि से ठीक करके जाँचा है अच्छा  
 ४ लगा कि एक ओर से आप के पास लिखूं . इस लिये कि जिन बातों का उपदेश  
 आप को दिया गया है आप उन बातों की दृढ़ता जानें ॥  
 ५ यहूदिया देश के हेरोद राजा के दिनों में अश्वियाह की पारी में जिखरियाह  
 नाम एक याजक था और उस की स्त्री जिस का नाम इलीशिबा था हारोन के  
 ६ वंश की थी । वे दोनों ईश्वर के सन्मुख धर्मी थे और परमेश्वर की समस्त  
 ७ आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलते थे । उन को कोई लड़का न था क्योंकि  
 ८ इलीशिबा बांझ थी और वे दोनों बूढ़े थे । जत्र जिखरियाह अपनी पारी की रीति  
 ९ पर ईश्वर के आगे याजक का काम करता था . तब चिट्ठियां डालने से उस को  
 याजकीय व्यवहार के अनुसार परमेश्वर के मन्दिर में जाके धूप जलाना पड़ा ।  
 १० धूप जलाने के समय लोगों की सारी मंडलें बाहर प्रार्थना करती थी । तब परमे-  
 ११ श्वर का एक दूत धूप की वेदी की दहिनी ओर खड़ा हुआ उस को दिखाई  
 १२ दिया । जिखरियाह उसे देखके घबरा गया और उसे डर लगा । दूत ने उस से  
 कहा हे जिखरियाह मत डर क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरी स्त्री इली-  
 १४ शिबा पुत्र जनेगी और तू उस का नाम योहन रखना । तुझे आनन्द और आह्लाद  
 १५ होगा और बहुत लोग उस के जन्मने से आनन्दित होंगे । क्योंकि वह परमेश्वर  
 के सन्मुख बड़ा होगा और न दाख रस न मद्य पीयेगा और अपनी माता के गर्भ  
 १६ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा । और वह इसायेल के सन्तानों में से बहुतों  
 १७ को परमेश्वर उन के ईश्वर की ओर फिरावेगा । वह उस के आगे सलियाह के  
 आत्मा और सामर्थ्य से जायगा इस लिये कि पितरों का मन लड़कों की ओर फेर दे

गालील में था तब ये उस के पीछे हो लेती थीं और उस की सेवा करती थीं । बहुत सी और स्त्रियां भी जो उस के संग यिश्शलीम में आईं वहां थीं ।

यह दिन तैयारी का दिन था जो यिश्शमवार के एक दिन आगे है । इस लिये जब मार्क हुई तब अरिमथिया नगर का यूसफ एक आदरवन्त मन्त्री को आप भी ईश्वर के राज्य की दाढ़ जोड़ता था आया और माहम से पिलात के पास जाके यीशु को लोथ मांगी । पिलात ने अर्चमा किया कि वह क्या करेगा ४४ है और शतपति को अपने पास बुलाके उस से पूछा क्या उस को मरे कुछ देर हुई । शतपति से जानके उस ने यूसफ को लोथ दिई । यूसफ ने एक चट्टान मोल लेके यीशु को उतारके उस चट्टान में लपेटा और उसे एक कबर में जो पत्थर में खोदी हुई थी रखा और कबर के द्वार पर पत्थर लुढ़का दिया । मरियम मगदलीनी और योशी की माता मरियम ने वह स्थान देखा जहां वह रखा गया ।

सोलहवां पर्व ।

जब यिश्शमवार बीत गया तब मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और गालोमी ने सुगन्ध मोल लिया कि जाके यीशु को मर्ते । और अठारह के पहिले दिन बड़ी भोर सूर्य उदय होते हुए वे कबर पर आईं । और वे आपस में बोलीं कौन हमारे लिये कबर के द्वार पर से पत्थर लुढ़कावेगा । परन्तु उन्होंने ने दृष्टि कर देखा कि पत्थर लुढ़काया गया है । और वह दायन बढ़ा था । कबर के भीतर जाके उन्होंने ने उजले लंबे वस्त्र पहिने हुए एक जवान को दृष्टि और बैठे देखा और चकित हुईं । उस ने उन से कहा चकित मत होओ तुम यीशु नासरी को जो जूथ पर घात किया गया ठूंड़ती हो , वह जी उठा है वह यहां नहीं है , देखो यही स्थान है जहां उन्होंने ने उसे रखा । परन्तु जाके उस के शिष्यों से और पितर से कहा कि वह तुम्हारे आगे गालील को जाता है , जैसे उस ने तुम से कहा जैसे तुम उसे यहां देखाने । वे जीव निकलके कबर से भाग गईं और कम्पित और विस्मित हुईं और किसी से कुछ न बोलीं क्योंकि वे डरती थीं ।

यीशु ने अठारह के पहिले दिन भोर को जी उठके पहिले मरियम मगदलीनी को जिस में से उस ने सात भूत निकाले थे दर्शन दिया । उस ने जाके उस के संगियों को जो शोक करते और रोते थे कहा दिया । उन्होंने ने जब सुना कि वह जीता है और मरियम से देखा गया है तब प्रतीति न किई ॥

इस के पीछे उस ने उन में से दो को जो मार्ग में चलते और किसी गांव को जाते थे दूसरे रूप में दर्शन दिया । उन्होंने ने भी जाके औरों से कहा दिया परन्तु उन्होंने ने उन की भी प्रतीति न किई ॥

पीछे उस ने श्यारह शिष्यों को जब वे भोजन पर बैठे थे दर्शन दिया और उन को अधिश्वास और मन की कठोरता पर उलटना दिया इस लिये कि जिनमें ने उसे जी उठे हुए देखा था उन लोगों की उन्होंने ने प्रतीति न किई । और उस ने उन से कहा तुम सारे जगत में जाके हर एक मनुष्य को सुनमाचार सुनाओ । जो विश्वास करे और दण्डितमसा लेवे सो ब्राह्म पावेगा परन्तु जो विश्वास न करे सो दंड के योग्य ठहराया जायगा । और ये चिन्ह विश्वास

नाचना देखा तब मूसा का क्रोध भड़का और उस ने वह पटियां अपने हाथों से  
 २० फैंक दीं और उन्हें पहाड़ के नीचे तोड़ डाला । तब उस ने उस बकड़े को जिसे  
 उन्होंने ने बनाया था लिया और उसे आग में जलाया और उसे चुकनी किया और  
 पानी पर बिथराया और इसराएल के संतानों को पिलाया ॥

२१ और मूसा ने हारून को कहा कि इन लोगों ने तुझ से क्या किया कि तू उन  
 २२ पर ऐसा महापाप लाया । और हारून ने कहा कि मेरे प्रभु का क्रोध न भड़के  
 २३ तू लोगों को जानता है कि वे घुसई पर हैं । और उन्होंने ने मुझे कहा कि हमारे  
 २४ देश से निकाल लाया हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ । तब मैं ने उन्हें कहा  
 कि जिस किसी के पास सेना हो तोड़ डाले सो उन्होंने ने मुझे दिया तब मैं ने  
 उसे आग में डाला और यह बकड़ा निकला ॥

२५ और मूसा ने लोगों को देखा कि वह निरङ्कुश हैं क्योंकि हारून ने उन के  
 २६ शत्रुन के सन्मुख उन की लाज के लिये उन्हें निरङ्कुश किया था । तब मूसा  
 क्वावनी के निकास पर खड़ा हुआ और कहा कि जो परमेश्वर की ओर है सो  
 २७ मेरे पास आवे तब लावी के समस्त संतान उस पास एकट्ठे हुए । और उस ने  
 उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने यह कहा है कि हर मनुष्य अपना  
 खड्ग अपनी जांघ पर बांधे और क्वावनी में एक फाटक से दूसरे फाटक लों चलो  
 २८ फिरो और हर एक मनुष्य अपने भाई को और अपने मित्र को और अपने परोसी  
 २९ को घात करे । और लावी के संतान ने मूसा के बचन के समान किया और  
 ३० उस दिन लोगों में से तीन सहस्र मनुष्य के लगभग मारे पड़े । और मूसा ने कहा  
 कि आज परमेश्वर के लिये अपने हाथ भरो हर एक मनुष्य अपने पुत्र और अपने  
 भाई से जिसते आज अपने ऊपर आशीस लाओ ॥

३१ और दूसरे दिन सवेरे यों हुआ कि मूसा ने लोगों से कहा कि तुम ने महापाप  
 किया और अब मैं परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं क्या जाने मैं तुम्हारे पाप के  
 ३२ लिये प्रायश्चित्त करूं । और मूसा परमेश्वर की ओर फिर गया और कहा कि  
 हाय इन लोगों ने महापाप किया और अपने लिये सेने का देवता बनाया ।  
 ३३ और अब यदि तू उन के पाप क्षमा करे और यदि नहीं तो मैं तेरी बिनती करता  
 ३४ हूं कि मुझे अपनी उस पुस्तक से जो तू ने लिखी है मेट दे । तब परमेश्वर ने मूसा  
 से कहा कि जिस ने मेरा अपराध किया है मैं उसी को अपनी पुस्तक से मेट  
 ३५ देऊंगा । और अब तू लोगों को उस स्थान को जो मैं ने तुम्हें बताया है ले जा  
 देख मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा और मैं अपने विचार के दिन में उन से उन  
 ३६ के पाप का विचार करूंगा । और परमेश्वर ने लोगों पर मरी भेजी इस लिये कि  
 उन्होंने ने उस बकड़े को बनाया जिसे हारून ने बनाया ॥

तीसरी पृष्ठ ।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा कि यहां से जा तू और वह लोग जिन्हें तू  
 मिस्र देश से निकाल लाया उस देश को जिस के विषय में अबिरहाम और इज-  
 शक और यश्कूय से यह कहके मैं ने किरिया खाई है कि मैं उसे तेरे वंश को

और आज्ञा लंघन करनेवालों को धर्मियों के मत पर लाये और प्रभु के लिये एक सभ्य  
 हुए लोग को तैयार करे । तब लिखरियाह ने दूत से कहा यह मैं किस रीति से आऊँ १८  
 क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ और मेरी स्त्री भी बूढ़ी है । दूत ने उस को उत्तर दिया कि मैं १९  
 ज़ब्रायेल हूँ जो ईश्वर के सामने खड़ा रहता हूँ और मैं तुझ से घात करने और तुझे  
 यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूँ । और देख जिस दिन लो यह सब पूरा न हो २०  
 जाय उस दिन लो तू गंगा दे रहेगा और बोल न सकेगा क्योंकि तू ने मेरी बातों पर  
 जो अपने समय में पूरी किई जायेंगी विश्वास नहीं किया । लोग लिखरियाह की २१  
 बात देखते थे और अचंभा करते थे कि उस ने मन्दिर में विलंब किया । जब २२  
 वह बाहर आया तब उन्हीं से बोल न सका और उन्हीं ने जाना कि उस ने  
 मन्दिर में कोई दर्शन पाया था और वह उन्हीं से सैन करने लगा और गंगा रह  
 गया । जब उस की सेवा के दिन पूरे हुए तब वह अपने घर गया । इन दिनों २३  
 के पीछे उस की स्त्री इलीशिया गर्भवती हुई और अपने को पांच मास यह कहके २४  
 छिपाया . कि मनुष्यों में मेरा अपमान मिटाने को परमेश्वर ने इन दिनों में कृपा- २५  
 दृष्टि कर मुझ से ऐसा व्यवहार किया है ॥

छठवें मास में ईश्वर ने ज़ब्रायेल दूत को गालील देश के एक नगर में जो २६  
 नामरत कहावता है किसी कुंवारी के पास भेजा . जिस की संगती यून्फ मास २७  
 दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी . उस कुंवारी का नाम मरियम  
 था । दूत ने घर में प्रवेश कर उस से कहा हे अनुग्रहीत कल्याण परमेश्वर तेरे २८  
 संग है स्त्रियों में तू धन्य है । मरियम उसे देखके उस के वचन से घबरा गई २९  
 और सोचने लगी कि यह कैसा नमस्कार है । तब दूत ने उस से कहा हे मरियम ३०  
 मत डर क्योंकि ईश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है । देख तू गर्भवती होगी ३१  
 और पुत्र जनेगी और उस का नाम तू यीशु रखना । यह महान होगा और ३२  
 सर्वप्रधान का पुत्र कहावेगा और परमेश्वर ईश्वर उस के पिता दाऊद का  
 सिंहासन उस को देगा । और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा और ३३  
 उस के राज्य का अन्त न होगा । तब मरियम ने दूत से कहा यह किस रीति ३४  
 से होगा क्योंकि मैं पुरुष को नहीं जानती हूँ । दूत ने उस को उत्तर दिया कि ३५  
 पवित्र आत्मा तुझ पर आयेगा और सर्वप्रधान की शक्ति तुझ पर लाया करेगी  
 इस लिये वह पवित्र बालक ईश्वर का पुत्र कहावेगा । और देख तेरी कुटुम्बिनो ३६  
 इलीशिया को भी जुड़ापे में पुत्र का गर्भ रहा है और जो बांझ कहावती थी  
 उस का यह छठवां मास है । क्योंकि कोई घात ईश्वर से असाध्य नहीं है । ३७  
 मरियम ने कहा देखिये मैं परमेश्वर की दामी मुझे आप के वचन के अनुसार ३८  
 होय . तब दूत उस के पास से चला गया ॥

उन दिनों में मरियम उठके शीघ्र से पर्वतीय देश में यिहूदा के एक नगर ३९  
 को गई . और लिखरियाह के घर में प्रवेश कर इलीशिया को नमस्कार किया । ४०  
 क्योंकि इलीशिया ने मरियम का नमस्कार सुना त्योंही बालक उस के गर्भ में ४१  
 उकला और इलीशिया पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुई । और उस ने बड़े शब्द से ४२  
 बोलते हुए कहा तू स्त्रियों में धन्य है और तेरे गर्भ का फल धन्य है । और यह ४३



२० सोलती रही । तत्र गङ्गेरिगे जैमा उन्हेन से कहा गया था तैमा ही सब जाते  
मुनके और देखके उन दातों के लिये ईश्वर का गुह्यानुवाद और स्तुति करते हुए  
लौट गये ॥

२१ जय साठ दिन पूरे होने से बालक का श्रताना करना हुआ तब उस का नाम  
यीशु रखा गया कि यही नाम उस के गर्भ में पड़ने के आगे दूत से रखा गया  
२२ था । और जय सुमा की व्यवस्था के अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए  
२३ तब वे बालक को विश्वलीम में ले गये . कि जैमा परमेश्वर की व्यवस्था में  
लिया है कि हर एक पहिलेठा नर परमेश्वर के लिये पवित्र कहावेगा तैमा जे  
२४ परमेश्वर के आगे धरे . और परमेश्वर की व्यवस्था की बात के अनुसार पंडुकी  
की जोड़ी अथवा कपोत के दो पंखें अतिदान करें ॥

२५ तब देखो विश्वलीम में शिमियोन नाम एक मनुष्य था . वह मनुष्य धर्मी और  
भक्त था और इसायेन की जाति की बात जोहता था और पवित्र आत्मा उस पर था ।  
२६ पवित्र आत्मा से उस को प्रगिया दिई गई थी कि जय तो तू परमेश्वर के अभिषिक्त जन  
२७ को न देखे तब तो मृत्यु को न देखेगा । और यह आत्मा की शिदा से मन्दिर में  
आया और जय उस बालक अर्थात् यीशु के माता पिता उस के विषय में बय-  
२८ दरवा के व्यवहार के अनुसार करने को उसे भीतर लाये . तब शिमियोन ने उस  
२९ को अपनी गोदी में लेके ईश्वर का धन्यवाद कर कहा . हे प्रभु अभी तू अपने  
३० दासन के अनुसार अपने दास को कुशल से बिदा करता है . क्योंकि मेरी आँखों  
३१ ने तेरे आनकर्ता को देखा है . जिसे तू ने सब देशों के लोगों के सम्मुख तैयार  
३२ किया है . कि यह अन्यदेशियों को प्रकाश करने की ज्योति और तेरे इसायेली  
३३ लोग का तेज होवे । यूसफ और यीशु की माता इन दातों में जो उस के विषय  
३४ में कही गई अवेभा करते थे । तब शिमियोन ने उन को आशीस देके उस की  
माता मरियम से कहा देख यह तो इसायेन में बहुतों के गिरने और फिर उठने  
का कारण होगा और एक विन्द जिस के विरुद्ध में दातें किई जायेंगी . हाँ तेरा  
३५ निज प्राण भी खून से चारपार हिदेगा . इस से बहुत वृद्धों के बिचार प्रगट  
किये जायेंगे ॥

३६ और इजा नाम एक भविष्यद्वक्त्री थी जो आशेर के कुल के पूनएल की पुत्री  
थी . वह बहुत बूढ़ी थी और अपने कुंभारपन से सात बरस स्यामी के संग  
३७ रही थी । और यह बरस चौरासी एक की विधवा थी जो मन्दिर से बाहर न  
३८ जाती थी परन्तु उपवास और प्रार्थना से रात दिन सेवा करती थी । उस ने भी  
उसी घड़ी निकट आके परमेश्वर का धन्य माना और विश्वलीम में जो लोग  
उद्धार की बात देखते थे उन सभी से यीशु के विषय में बात किई ॥

३९ जय वे परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ कर चुके तब गालील को  
४० अपने नगर नासरत को लौटे । और बालक बड़ा और आत्मा में बलवन्त और  
बुद्धि से परिपूर्ण होता गया और ईश्वर का अनुग्रह उस पर था ॥

४१ उस के माता पिता बरस बरस निस्तार पछे में विश्वलीम को जाते थे । जय  
४२ वह बारह बरस का हुआ तब वे पछे की रोति पर विश्वलीम को गये । और  
४३ वह बारह बरस का हुआ तब वे पछे की रोति पर विश्वलीम को गये । और

जब वे पर्व के दिनों को पूरा करके लौटने लगे तब यह लड़का यीशु यिश्शलीम में रह गया परन्तु यूसुफ और उस की माता नहीं जानते थे । वे यह समझके कि ४४ यह संग्रहाले पथिकों के बीच में है एक दिन को घाट गये और अपने कुटुंबों और चिन्हारेणों के बीच में उस को ढूँढ़ने लगे । परन्तु जय उन्हें ने उन को न ४५ पाया तब उसे ढूँढ़ते हुए यिश्शलीम को फिर गये । तीन दिन के पीछे उन्हें ४६ ने उसे मन्दिर में पाया कि उपदेशकों के बीच में बैठा हुआ उन की सुनता और उन से प्रश्न करता था । और जो लोग उस की सुनते थे सो सब उस की बुद्धि ४७ और उस के उत्तरों से विस्मित हुए । और वे उसे देखके अचम्भित हुए और उन ४८ की माता ने उस से कहा हे पुत्र हम से क्यों ऐसा किया , देख तेरा पिता और मैं ढूँढ़ते हुए तुझे ढूँढ़ते थे । उस ने उन से कहा तुम क्यों मुझे ढूँढ़ते थे , क्या ४९ नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के विषयों में लगा रहना अवश्य है । परन्तु ५० उन्हें ने यह बात जो उस ने उन से कही न समझी । तब यह उन के संग जना ५१ और नासरत में आया और उन के वंश में रहा और उस की माता ने इन सब बातों को अपने मन में रखा । और यीशु की बुद्धि और डील और उस पर ईश्वर ५२ का और मनुष्यों का अनुग्रह बढ़ता गया ॥

### तीसरा पर्व ।

तिथरिय कैसर के राज्य के पन्द्रहवें घरस में जय पन्तिय पिलात पिट्रुदिया का १ अध्यक्ष था और टेरोद एक चौथाई अर्थात् गालील का राजा और उस का भाई फिलिप एक चौथाई अर्थात् जूतूरिया और त्राखानीतिया देशों का राजा और २ लुसानिय एक चौथाई अर्थात् अखिलीनी देश का राजा था , और जय हनुस और क्रियाफा मदायाजक थे तब ईश्वर का वचन जंगल में तिथरियाह के पुत्र योहन पास आया । और वह यर्डन नदी के आसपास के सारे देश में आके पाप- ३ मोचन के लिये प्रस्ताप्ताप के वपतिसमा का उपदेश करने लगा । जैसे विज्रियाह भविष्यद्वक्ता के कहे हुए पुस्तक में लिखा है कि किसी का शब्द हुआ जो जंगल ४ में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ बनाओ उस के राजमार्ग सीधे करो । हर एक नाला भरा जायगा और हर एक पर्वत और टीला नीचा किया जायगा और ५ टेढ़े पन्थ सीधे और ऊंचनीच मार्ग चौरस बन जायेंगे । और सब प्राणी ईश्वर के आश को देखेंगे ॥

तब बहुत लोग जो उस से वपतिसमा लेने को निकल आये उन्हें से योहन ने ७ कहा हे साँपों के वंश किस ने तुम्हें आनेवाले क्रोध से भागने को चिताया है । प्रस्ताप्ताप के योग्य फल लाओ और अपने अपने मन में मत कहने लगे कि ८ हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि ईश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है । और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ों की ९ छड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता है । तब लोगों ने उस से पूछा तो हम क्या १० करें । उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस पास दो अंगे हों सो जिस पास न हो ११ उस के साथ घांट लेंगे और जिस पास भोजन होय सो भी वैसा ही करे । कर १२

- उगाहनेहारे भी वपतिसमा लेने को आयि और उस से बोले हे गुरु हम क्या करें ।  
 १३ उस ने उन से कहा जो तुम्हें ठहराया गया है उस से अधिक मत ले तो ।  
 १४ योहानाओं ने भी उस से पूछा हम क्या करें . उस ने उन से कहा किसी पर उपदेश मत करो और न झूठे दोष लगाओ और अपने चेतन से सन्तुष्ट रहो ।  
 १५ जब लोग आस देवते थे और सब अपने अपने मन में योहन के विषय में विचार करते थे कि होय न होय यही खीष्ट है . तब योहन ने सभी को उत्तर दिया कि मैं तो तुम्हें जल से वपतिसमा देता हूं परन्तु वह आता है जो मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस के जूतों का छेद खोलने के योग्य नहीं हूं वह तुम्हें पवित्र  
 १७ आत्मा से और आग से वपतिसमा देगा । उस का सूय उस के हाथ में है और वह अपना सारा खलिदान शुद्ध करेगा और गेहूं को अपने खते में एकट्ठा करेगा  
 १८ परन्तु भूखी को उस आग में जो नहीं बुझती है जलावेगा । उस ने बहुत और बातों का भी उपदेश करके लोगों को सुसमाचार सुनाया ।  
 १९ पर उस ने चौथार्द्ध के राजा हेरोद को उस के भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के विषय में और मय कुकर्मों के विषय में जो उस ने किये थे चलटना दिया ।  
 २० इस लिये हेरोद ने उन सभी के उपरांत यह कुकर्म भी किया कि योहन को खन्दीगृह में मंद रखा ।  
 २१ सब लोगों के वपतिसमा लेने के पीछे जब यीशु ने भी वपतिसमा लिया था  
 २२ और प्रार्थना करता था तब स्वर्ग खुल गया । और पवित्र आत्मा देही रूप में कपोत की नाईं उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है मैं तुझ से अति प्रमत्न हूं ॥  
 २३ और यीशु साप तीस वरस के अटकल होने लगा और लोगों की समझ में  
 २४ यूसफ का पुत्र था । यूसफ रली का पुत्र था वह मत्तात का पुत्र वह लेवी का  
 २५ वह मलकि का वह याना का वह यूसफ का . वह मत्थियाह का वह आमोस  
 २६ का वह नहूम का वह इसल का वह नगार्ह का . वह माट का वह मत्थियाह  
 २७ का वह शिमिई का वह यूसफ का वह यिहूदा का . वह योहाना का वह  
 २८ रोसा का वह जिस्वाहुल का वह शलतिस्ल का वह नेरि का . वह मलकि  
 २९ का वह अदो का वह कोसम का वह इलमोदद का वह एर का . वह योशी  
 ३० का वह इलियेजर का वह योरीम का वह मत्तात का वह लेवी का . वह शिमियोन का वह यिहूदा का वह यूसफ का वह योनन का वह इलियाकीम  
 ३१ का . वह झिलेवा का वह सैनन का वह मत्थय का वह नाथन का वह दावद  
 ३२ का . वह यिशी का वह ओवेद का वह ओअस का वह सलमोन का वह नहशोन  
 ३३ का . वह अस्मीनादब का वह अराम का वह हिस्लोन का वह पेरस का वह  
 ३४ यिहूदा का . वह याकूब का वह इसहाक का वह इब्राहीम का वह तेराह का  
 ३५ वह नाहोर का . वह सिरग का वह रियू का वह पेलग का वह एबर का वह  
 ३६ शेलह का . वह कैनन का वह अर्फक्सद का वह शेम का वह नूह का वह लमक  
 ३७ का . वह मिथूशलह का वह हनोक का वह येरद का वह महललेल का वह  
 ३८ कैनन का . वह इनोश का वह शेत का वह आदम का वह ईश्वर का ॥

## चौथा पथ्य ।

यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो यर्दन से फिरा और आत्मा की शिखा में १  
जंगल में गया । और चालीस दिन जैतान से उस की परीक्षा किई गई और उन २  
दिनों में उस ने कुछ नहीं खाया पर पीछे उन के पूरे होने पर भूखा हुआ । तब ३  
जैतान ने उस से कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी ४  
बन जाय । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटी से नहीं ४  
परन्तु ईश्वर की हर शक्त बात से जीयेगा । तब जैतान ने उसे एक ऊँचे पथ्यत ५  
पर ले जाके उस को पल भर में जगत के सब राज्य दिखाये । और जैतान ने उस ६  
से कहा मैं यह सब अधिकार और इन्तों का विभव तुम्हें देऊंगा क्योंकि यह मुझे ७  
सौंपा गया है और मैं उसे जिस को चाहता हूँ उस को देता हूँ । इस लिये जो ८  
तू मुझे प्रणाम करे तो सब तेरा होगा । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे ८  
जैतान मेरे साह्वने से दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को ९  
प्रणाम कर और केवल उमी की सेवा कर । तब उस ने उस को गिरगलीस में ९  
ले जाके मन्दिर के कलश पर खड़ा किया और उस ने कहा जो तू ईश्वर १०  
का पुत्र है तो अपने को यहां से नीचे गिरा . क्योंकि लिखा है कि यह तेरे दिवस १०  
में अपने दूतों को आज्ञा देगा कि वे तेरी सेवा करें . और वे तुम्हें हाथों हाथ ११  
उठा लेंगे न हो कि तेरे पांव में पत्थर पर चाट लगे । यीशु ने उस को उत्तर १२  
दिया यह भी कहा गया है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कर । तब १३  
जैतान सब परीक्षा कर चुका तब कुछ समय के लिये उस को पास में चला गया ।

यीशु आत्मा की शक्ति से गालील को फिर गया और उस की कीर्ति आस- १४  
पास के सारे देश में फैल गई । और उस ने उन की सभाओं में उपदेश किया १५  
और सभों ने उस की बड़ाई किई ॥

तब वह नासरत को आया जहां पाला गया था और अपनी रीति पर विश्राम १६  
के दिन सभा के घर में जाके पढ़ने को खड़ा हुआ । विजैवाह भविष्यद्वक्ता का १७  
पुस्तक उस को दिया गया और उस ने पुस्तक खोलके वह स्थान पाया जिस में  
लिखा था . कि परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है इस लिये कि उस ने मुझे १८  
अभिषेक किया है कि कंगालों को सुसमाचार सुनाऊँ . उस ने मुझे भेजा है कि १९  
जिन के मन चूर हैं उन्हें चंगा करूं और बंधुओं को छूटने की और अंधों को  
दृष्टि पाने की वार्ता सुनाऊँ और पेरे दुष्टों का निस्तार करूं और परमेश्वर के ग्राह्य  
वरस का प्रचार करूं । तब वह पुस्तक लपेटके सेधक के हाथ में देके बैठ गया २०  
और सभा में सब लोगों की आंखें उसे तक रहीं । तब वह उन्हीं से कहने लगा २१  
कि आज ही धर्मपुस्तक का यह वचन तुम्हारे मुनने में पूरा हुआ है । और सभों २२  
ने उस को सराहा और जो अनुग्रह की वार्ता उस के मुख से निकलीं उन से अचंभा  
किया और कहा क्या यह यूसफ का पुत्र नहीं है । उस ने उन्हीं से कहा तुम २३  
अवश्य मुझ से यह दृष्टान्त कहोगे कि हे वैद्य अपने को चंगा कर . जो कुछ  
हमें ने सुना है कि कफर्नाहम में किया गया सो यहां अपने देश में भी कर ।  
और उस ने कहा मैं तुम से सब कहता हूँ कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश में ग्राह्य २४

२५ नहीं होता है । और मैं तुम से मन्य कहता हूँ कि शलियाह के दिनों में जब  
 २६ आकाश साढ़े तीन धरम दण्ड रहा यहाँ लो कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा  
 २७ तब जमायेल में बहुत विधवा थीं । परन्तु शलियाह उन्हें मैं से किसी के पास  
 नहीं भेजा गया केवल मोदीन देश के मारिफत नगर में एक विधवा के पास ।  
 २९ और इलीशा भविष्यवक्ता के समय में जमायेल में बहुत क्रांती थी परन्तु उन्हें मैं  
 ३० से कोई शुद्ध नहीं किया गया केवल सुनिया देश का नामान । यह बात सुनके  
 ३१ मय लोग सभा में क्रोध में भर गये . और उठके उस को नगर में बाहर निकालके  
 जिस पर्वत पर उन का नगर बना हुआ था उस की चोटी पर ले चले कि  
 ३२ उस को नीचे गिरा देंगे । परन्तु वह उन्हें के शीर्ष में से होके निकला और  
 चला गया ॥

३३ और उस ने गालील के कर्नार्तुम नगर में जाके त्रिशम के दिन लोगों को  
 ३४ उपदेश दिया । ये उस के उपदेश में आर्त्तभित हुए क्योंकि उस का वचन अधिकार  
 ३५ सहित था । सभा के घर में एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूत का आत्मा लगा  
 ३६ था । उस ने बड़े शब्द में चिल्लाके कहा हे यीशु नामगी रहने दोजिये आप को  
 ३७ इस में क्या काम . क्या आप हमें नाश करने आये हैं . मैं आप को जानता हूँ  
 ३८ आप कौन हैं ईश्वर के पवित्र जन । यीशु ने उस को डाँटके कहा चुप रह और  
 ३९ उस में से निकल जा . तब भूत उस मनुष्य को खींच में गिराके उस में से निकल  
 ४० आया और उस की कुछ शक्ति न किई । इस पर सभी को अतंभ हुआ और वे  
 ४१ आपस में बात करके बोले यह कौन सी बात है कि यह प्रभाव और पराक्रम से  
 ४२ अशुद्ध भूतों को आता जाता है और वे निकल आते हैं । सो उस की कीर्ति  
 आसपास के देश में सर्वत्र फैल गई ॥

४३ सभा के घर में से उठके उस ने शिमेन के घर में प्रवेश किया और शिमेन  
 ४४ की मास बड़े उमर से पीड़ित थी और उन्हें ने उस के लिये उस से चिन्ती  
 ४५ किई । उस ने उस के निकट खड़ा हो उमर को डाँटा और वह उसे ढोड़ गया  
 और वह तुरन्त उठके उन की सेवा करने लगी ॥

४६ सूर्य डूबते हुए जिन्हें के पास दुःखी लोग नाना प्रकार के रोगों में पड़े  
 थे वे सब उन्हें उस पास लाये और उस ने एक एक पर हाथ रखके उन्हें चंगा  
 ४७ किया । भूत भी चिल्लाते और वह कहते हुए कि आप ईश्वर के पुत्र खीष्ट हैं  
 ४८ बहुतों में से निकले परन्तु उस ने उन्हें डाँटा और बोलने न दिया क्योंकि वे  
 जानते थे कि यह खीष्ट है ॥

४९ विहान हुए वह निकलके जंगली स्थान में गया और लोगों ने उस को ढूँढ़ा  
 ५० और उस पास जाके उसे रोकने लगे कि वह उन के पास से न जाय । परन्तु  
 उस ने उन्हें से कहा मुझे और और नगरों में भी ईश्वर के राज्य का सुसमाचार  
 ५१ सुनाना होगा क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूँ । सो उस ने गालील की  
 सभाओं में उपदेश किया ॥

पाँचवां पर्व ।

१ एक दिन बहुत लोग ईश्वर का वचन सुनने को यीशु पर गिरे पड़ते थे और

यह जिनेसस की भील के पास खड़ा था । और उस ने दो नाव भील के तीर २  
 पर लगी देखीं और मनुष्ये उन पर से उतरके जालों को धोते थे । उन नावों में ३  
 में एक पर जो शिमोन की थी चढ़के उस ने उस में यिन्ती किई कि तीर से  
 थोड़ी दूर ले जाय और उस ने बैठके नाव पर से लोगों को उपदेश दिया । जब ४  
 यह बात कर चुका तब शिमोन ने कहा गद्दिरे में ले जा और मछलियां पकड़ने  
 को अपने जालों को डालो । शिमोन ने उस को उत्तर दिया कि ये गुन हम ने ५  
 सारी रात परिश्रम किया और कुछ नहीं पकड़ा तौभी आप की बात पर मैं  
 जाल डालूंगा । जब उन्होंने ने ऐसा किया तब बहुत मछलियां यहाँई और उन ६  
 का जाल फटने लगा । इस पर उन्होंने ने अपने सांझियों को जो दूसरी नाव पर ७  
 थे सैन किया कि वे आके उन की सहायता करें और उन्होंने ने आके दोनों नाव  
 समी भरीं कि वे डूबने लगीं । यह देखके शिमोन पितर यीशु के गोड़ों पर ८  
 गिरा और कहा हे प्रभु मेरे पास से जाइये मैं पापी मनुष्य हूँ । क्योंकि यह और ९  
 उस के सब संगी लोग इन मछलियों के एक जाने से जो उन्होंने ने पकड़ी थीं  
 विस्मित हुए । और ऐसे ही जवर्दी के पुत्र पाकूय और योहन भी जो शिमोन १०  
 के साथी थे विस्मित हुए , तब यीशु ने शिमोन से कहा मत डर अब से तू  
 मनुष्यों को पकड़ेगा । और वे नावों को तीर पर लाके सब कुछ छोड़के उस के ११  
 पीछे हो लिये ।

जब यह एक नगर में था तब देखो एक मनुष्य कौढ़ से भरा हुआ वहाँ था १२  
 और यह यीशु को देखके मुँह के छल गिरा और उस में यिन्ती किई कि हे  
 प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं । इस ने हाथ पड़ा उसे छूके कहा १३  
 मैं तो चाहता हूँ शुद्ध हो जा , और उस का कौढ़ तुरन्त जाता रहा । तब उस १४  
 ने उसे आज्ञा दिई कि किसी से मत कह परन्तु जाके अपने तर्ह याजक को दिखा  
 और अपने शुद्ध होने के विषय में का खड़ावा जैसा मूसा ने आज्ञा दिई तैसा  
 लोगों पर साक्षी होने के लिये खड़ा । परन्तु यीशु की कीर्ति अधिक फैल गई १५  
 और बहुतरे लोग सुनने को और उस से अपने रोगों से छंगे किये जाने को एकट्टे  
 हुए । और उस ने जंगली स्थानों में अलग जाके प्रार्थना किई । १६

एक दिन यह उपदेश करता था और फरीसी और दयवस्यापक लोग जो १७  
 गालील और यिहूदिया के हर एक गांव से और यिरुशलैम से आये थे वहाँ बैठे  
 थे और उन्हें जंगा करने को प्रभु का सामर्थ्य प्रगट हुआ । और देखो लोग एक १८  
 मनुष्य को जो अर्द्धांगी था खाट पर नाये और वे उस को भीतर ले जाने और  
 यीशु के आगे रखने चाहते थे । परन्तु जब भीड़ के कारण उसे भीतर ले जाने १९  
 का कोई उपाय उन्हें न मिला तब उन्होंने ने कोठे पर चढ़के उस को खाट समेत  
 छत में से पीछ में यीशु के आगे उतार दिया । उस ने उन्होंने का विश्वास देखके २०  
 उस से कहा हे मनुष्य तेरे पाप क्षमा किये गये हैं । तब अध्यापक और फरीसी २१  
 लोग विचार करने लगे कि यह कौन है जो ईश्वर की निन्दा करता है , ईश्वर  
 को छोड़ कौन पापों को क्षमा कर सकता है । यीशु ने उन के मन की बात जानके २२  
 उन को उत्तर दिया कि तुम लोग अपने अपने मन में क्या क्या विचार करते हो ।



२३ कौन यात सचक है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना  
 २४ कि उठ और चल । परन्तु जिसने तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर  
 पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने उस अर्हतांगी से कहा) मैं तुम से कहता  
 २५ हूँ उठ अपनी खाट उठाके अपने घर को जा । यह तुरन्त उन्हीं के सामने उठके  
 जिस पर यह पड़ा था उस को उठाके ईश्वर की स्तुति करता हुआ अपने घर  
 २६ को चला गया । तब सब लोग विस्मित हुए और ईश्वर की स्तुति करने लगे  
 और अति भयमान होके बोले हम ने आज अनेखी बातें देखी हैं ॥

२७ इस के पीछे यीशु ने बाहर जाके लैथी नाम एक कर उगादनेहारे को कर उगादने  
 २८ के स्थान में बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे आ । यह सब कुछ कहके उठा  
 २९ और उस के पीछे चला लिया । और लैथी ने अपने घर में उस के लिये खड़ा भोज  
 यनाया और बहुत कर उगादनेहारे और बहुत से और लोग थे जो उन के संग  
 ३० भोजन पर बैठे । तब उन्हीं के अध्यापक और फरीशी उस के शिष्यों पर कुछ-  
 कुछाके बोले तुम कर उगादनेहारे और पापियों के संग क्यों खाते और पीते  
 ३१ हो । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि निरोगियों को चैद्य का प्रयोजन नहीं है  
 ३२ परन्तु रोगियों को । मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये  
 बुलाने आया हूँ ॥

३३ और उन्हीं ने उस से कहा योहन के शिष्य क्यों बार बार उपवास और  
 प्रार्थना करते हैं और जैसे ही फरीशियों के शिष्य भी परन्तु आप के शिष्य खाते  
 ३४ और पीते हैं । उस ने उन से कहा जब दूल्हा सखाओं के संग है तब क्या तुम  
 ३५ उन से उपवास करवा सकते हो । परन्तु ये दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से  
 ३६ अलग किया जायगा तब ये उन दिनों में उपवास करेंगे । उस ने एक दृष्टान्त भी  
 उन से कहा कि कोई मनुष्य नये कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं लगाता है नहीं  
 तो नया कपड़ा उसे फाड़ता है और नये कपड़े का टुकड़ा पुराने में मिलता भी  
 ३७ नहीं । और कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्यों में नहीं भरता है नहीं तो  
 नया दाख रस कुप्यों को फाड़ेगा और वह आप यह जायगा और कुप्ये नष्ट  
 ३८ होंगे । परन्तु नया दाख रस नये कुप्यों में भरा चाहिये तब दोनों की रखा होती है ।  
 ३९ कोई मनुष्य पुराना दाख रस पीके तुरन्त नया नहीं चाहता है क्योंकि यह कहता  
 है पुराना ही अच्छा है ॥

कठमां पर्व ।

१ पर्व के दूसरे दिन के पीछे विश्राम के दिन यीशु खेतों में होके जाता था  
 २ और उस के शिष्य बाएँ तोड़के हाथों में मल मलके खाने लगे । तब कई एक  
 फरीशियों ने उन से कहा जो काम विश्राम के दिन में करना उचित नहीं है  
 ३ सो क्यों करते हो । यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा है  
 ४ कि दाऊद ने जब यह और उस के संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया । उस ने  
 क्योंकर ईश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियाँ लेके खाईं जिन्हें खाना और किसी  
 ५ को नहीं केवल याजकों को उचित है और अपने संगियों को भी दिई । और  
 उस ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र विश्रामवार का भी प्रभु है ॥

दूसरे विद्यामयार को भी वह सभा के घर में जाके उपदेश करने लगा और ४  
 वहाँ एक मनुष्य था जिस का दर्हिना हाथ सूख गया था । अध्यापक और फरीशी ५  
 लोग उस में दोष ठहराने के लिये उसे ताकने थे कि वह विद्या के दिन में  
 चंगा करेगा कि नहीं । पर वह उन के मन की बात जानता था और सूखे हाथ- ६  
 वाले मनुष्य से कहा उठ दीव में खड़ा हो . वह उठके खड़ा हुआ । तब यीशु ७  
 ने उन्हीं से कहा मैं तुम से एक बात पूछूंगा क्या विद्या के दिनों में भला करना  
 अथवा बुरा करना प्राण को बचाना अथवा नाश करना उचित है । और उस ने १०  
 उन-सभों पर चारों ओर दृष्टि कर उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढा . उस ने  
 ऐसा किया और उस का हाथ फिर दूसरे की नाईं भला चंगा हो गया । पर वे ११  
 बड़े क्रोध से भर गये और आपस में बोले इस यीशु को क्या करें ॥

उन दिनों में वह प्रार्थना करने को पर्यंत पर गया और ईश्वर से प्रार्थना १२  
 करने में सारी रात बिताई । जब बिहान हुआ तब उस ने अपने शिष्यों को अपने १३  
 पास बुलाके उन में से बारह जनों को चुना जिन का नाम उन ने प्रेषित भी रखा .  
 अर्थात् शिमोन को जिस का नाम उस ने पितर भी रखा और उसके भाई अन्ड्रिय १४  
 को और याकूब और योहन को और फिलिप और बर्यलमई को . और मती और थोमा १५  
 को और अलफई के पुत्र याकूब को और शिमोन को जो उद्योगी कहायता है . और १६  
 याकूब के भाई सिमूदा को और सिमूदा इस्कारियोती को जो विद्यासघातक हुआ ॥

तब वह उन के संग उतरके चौरस ग्यान में खड़ा हुआ और उस के बहुत १७  
 शिष्य भी थे और लोगों की बड़ी भीड़ सारे यहूदिया में और फिलिस्तीन में और  
 सैर और सीडोन के समुद्र के तीर में जो उस की सुनने को और अपने रोगों से  
 चंगे किये जाने को आये थे . और अशुद्ध भूतों के सताये हुए लोग भी . और १८  
 वे चंगे किये जाते थे । और सब लोग उसे झूने चाहते थे क्योंकि शक्ति उस से १९  
 निकलती थी और सभों को चंगा करती थी ।

तब उस ने अपने शिष्यों को और दृष्टि कर कहा धन्य तुम जो दीन हो २०  
 क्योंकि ईश्वर का राज्य तुम्हारा है । धन्य तुम जो अन्न भूखे हो क्योंकि तुम २१  
 तृप्त किये जाओगे . धन्य तुम जो अन्न चेतो हो क्योंकि तुम हंसोगे । धन्य तुम २२  
 हो जब मनुष्य तुम से बैर करे और जब वे मनुष्य के पुत्र के लिये तुम्हें अलग  
 करें और तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हारा नाम दुष्ट सा दूर करें । उस दिन २३  
 आनन्दित हो और कहलो क्योंकि देखो तुम स्वर्ग में बहुत फल पाओगे . उन के  
 पितरों ने भविष्यवृत्ताओं में वैसा ही किया । परन्तु हाय तुम जो धनवान हो २४  
 क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके हो । हाय तुम जो भरपूर हो क्योंकि तुम २५  
 भूखे होगे . हाय तुम जो अन्न हंसते हो क्योंकि तुम शोक करोगे और रोओगे ।  
 हाय तुम लोग जब सब मनुष्य तुम्हारे विषय में भला कहें . उन के पितरों ने २६  
 झूठे भविष्यवृत्ताओं में वैसा ही किया ॥

और भी मैं तुम्हों से जो सुनते हो कहता हूँ कि अपने शत्रुओं को प्यार करो . २७  
 जो तुम से बैर करे उन से भलाई करो । जो तुम्हें साप दें उन को आशीस २८  
 देंगे और जो तुम्हारा अपमान करें उन के लिये प्रार्थना करो । जो तुम्हें एक २९

गाल पर मारे उस की और दूसरा भी फेर दे और जो तेरा दोहर कीन लेवे उस  
 ३० को श्रगा भी लेने से मत बर्ज । जो कोई तुझ से मांगे उस को दे और जो तेरी  
 ३१ वस्तु कीन लेवे उस से फिर मत मांग । और जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम  
 ३२ से करे तुम भी उन से वैसा ही करो । जो तुम उन से प्रेम करो जो तुम से प्रेम  
 करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी अपने प्रेम करनेहारों से  
 ३३ प्रेम करते हैं । और जो तुम उन से भलाई करो जो तुम से भलाई करते हैं तो  
 ३४ तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं । और जो तुम उन्हें  
 ऋण देओ जिन से फिर पाने की आशा रखते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि  
 ३५ पापी लोग भी पापियों को ऋण देते हैं कि उतना फिर पावें । परन्तु अपने  
 शत्रुओं को प्यार करो और भलाई करो और फिर पाने की आशा न रखके ऋण  
 देओ और तुम बहुत फल पाओगे और सर्वप्रधान के सन्तान दोगे क्योंकि वह  
 ३६ उन्हें पर जो धन्य नहीं मानते हैं और दुष्टों पर कृपाल है । सो जैसा तुम्हारा  
 पिता दयावन्त है तैसे तुम भी दयावन्त होओ ॥

३७ दूसरों का विचार मत करो तो तुम्हारा विचार न किया जायगा . दोपी मत  
 ठहराओ तो तुम दोपी न ठहराये जाओगे . जमा करो तो तुम्हारी जमा किई  
 ३८ जायगी । देओ तो तुम को दिया जायगा . लोग पूरा नाप दबाया और हिलाया  
 हुआ और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में देंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो  
 ३९ उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जायगा । फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा  
 क्या अन्धा अन्धे को मार्ग बता सकता है . क्या दोनों गढे में नहीं गिरेंगे ।  
 ४० शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं है परन्तु जो कोई सिद्ध होवे सो अपने गुरु के  
 ४१ समान होगा । जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे तू क्यों देखता है और जो  
 ४२ लट्ठा तेरे ही नेत्र में है सो तुझे नहीं सूझता । अथवा तू जो आप अपने नेत्र में  
 का लट्ठा नहीं देखता है क्योंकि अपने भाई से कह सकता है कि हे भाई रहिये  
 मैं यह तिनका जो तेरे नेत्र में है निकालूं . हे कपटी पहिले अपने नेत्र से लट्ठा  
 निकाल दे तब जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे निकालने को तू अच्छी  
 रीति से देखेगा ॥

४३ कोई अच्छा पेड़ नहीं है जो निकम्मा फल फले और कोई निकम्मा पेड़ नहीं  
 ४४ है जो अच्छा फल फले । हर एक पेड़ अपने ही फल से पहचाना जाता है क्योंकि  
 लोग कांटों के पेड़ से गूलर नहीं तोड़ते और न कटौले भूड़ से दाख तोड़ते हैं ।  
 ४५ भला मनुष्य अपने मन के भले भंडार से भली बात निकालता है और बुरा मनुष्य  
 अपने मन के बुरे भंडार से बुरी बात निकालता है क्योंकि जो मन में भरा है  
 सोई उस का मुंह बोलता है ॥

४६ तुम सुके हे प्रभु हे प्रभु क्यों पुकारते हो और जो मैं कहता हूं सो नहीं करते ।  
 ४७ जो कोई मेरे पास आके मेरी बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं तुम्हें बताऊंगा वह  
 ४८ किस के समान है । वह एक मनुष्य के समान है जो घर बनाता था और उस  
 ने गहरे खोदके पत्थर पर नेत्र डाली और जब बाढ़ आई तब धारा उस घर पर  
 ४९ लगी पर उसे हिला न सकी क्योंकि उस की नेत्र पत्थर पर डाली गई थी । परन्तु

देऊंगा । और मैं तेरे सामने दूत भेजूंगा और कन्यालियों असुरियों और २  
हिस्सियों और फरिजियों छत्रियों और यक्षियों को हांक देऊंगा । एक देश ३  
में जहां दूध और मधु बहता है क्योंकि मैं तेरे मध्य में न जाऊंगा इस लिये कि  
तुम कठोर गरदन लेना हो कि मैं तुम्हें मार्ग में भस्म कर डालूं ॥

और जब लोगों ने यह घुम समाचार सुना तो विलाप किया और किसी ने ४  
अपना आभूषण न पहिना । क्योंकि परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के ५  
संतान से कह कि तुम एक कठोर लेना हो मैं तेरे मध्य एक पलमात्र में आऊँ  
तुम्हें भस्म करूँगा तो अब अपना आभूषण अपने ऊपर से उतारो और मैं जानूँगा  
कि तुम से क्या करूँगा । तब इसराएल के संतानों ने घोरेश के पहाड़ पर अपना ६  
आभूषण उतार डाला ॥

और मूसा ने तंबू लेके छावनी के बाहर अपने लिये छावनी से दूर खड़ा ७  
किया और उस का नाम मंडली का तंबू रक्खा और यों हुआ कि हर एक जो  
परमेश्वर का खोजी था सो मंडली के तंबू के पास जो छावनी के बाहर या ८  
जाना था । और यों हुआ कि जब मूसा बाहर तंबू के पास गया तो सब ९  
लोग खड़े हुए और हर एक पुरुष अपने तंबू के द्वार पर खड़ा होके मूसा के  
पीछे देखता था यहाँ लो कि वह तंबू में गया ॥

और जब मूसा ने तंबू में प्रवेश किया तो मेघ का खंभा उतरा और तंबू के १०  
द्वार पर ठहरा और उस ने मूसा से वार्ता किये । और समस्त लोगों ने मेघ का ११  
खंभा तंबू के द्वार पर ठहरा हुआ देखा और सब लोग अपने अपने तंबू के द्वार  
पर उठे और दंडवत किये । और परमेश्वर ने मूसा से आगे सामने वार्ता किये १२  
जैसे कोई अपने मित्र से वार्ता करता है और वह छावनी का फिरा परन्तु उस  
का सेवक नून का घेठा यहूशूय एक तरुण मनुष्य तंबू के मध्य में न निकला ॥

और मूसा ने परमेश्वर से कहा कि देख तू मुझ से कहता है कि उन लोगों १३  
को ले जा और तू ने मुझे नहीं बताया कि किने मेरे साथ भेजेगा तथापि तू ने  
कहा है कि मैं नाम मंडित तुम्हें जानता हूँ और तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया १४  
है । सो यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं तेरी विनती करता हूँ १५  
कि अपना मार्ग मुझे बता जिमते मुझे निश्चय होवे कि मैं ने तेरी दृष्टि में  
अनुग्रह पाया है और देख कि ये जानते तेरे लोग हैं । तब उस ने कहा कि मेरा १६  
रूप जायगा और मैं तुम्हें विश्वास देऊँगा । और उस ने उसे कहा कि यदि तेरा १७  
रूप न जाय तो हमें यहाँ से मत ले जाइये । और अब किन रीति से जाना १८  
जायगा कि मैं ने और तेरे लोगों ने तुम्हें अनुग्रह पाया है क्या हम में नहीं कि  
तू हमारे साथ जाना है सो मैं और तेरे लोग समस्त लोगों से जो पृथिवी पर हैं  
अलग किये जायेंगे ॥

और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जो बात तू ने कही है मैं ने उसे भी मान १९  
लिया क्योंकि तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और मैं तुम्हें नाम मंडित जानता  
हूँ । तब उस ने कहा कि मैं तेरी विनती करता हूँ कि मुझे अपना अभिन्न दिखा । २०  
तब उस ने कहा कि मैं अपनी सब भलाई को तेरे आगे चलाऊँगा और मैं परमे- २१

२१ की बाट जोहें । उसी घड़ी यीशु ने बहुतों को जो रोगों और पीड़ाओं और  
 २२ दुष्ट भूतों से दुःखी थे चंगा किया और बहुत से अन्धों को नेत्र दिये । और उस  
 ने उन्हें को उत्तर दिया कि जो कुछ तुम ने देखा और सुना है सो जाके योहन से  
 कहे कि अन्धे देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं बहिरे सुनते हैं  
 २३ मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है । और जो  
 कोई मेरे विषय में ठोकर न खावे सो धन्य है ॥

२४ जब योहन के दूत लोग चले गये तब यीशु योहन के विषय में लोगों से  
 कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने को निकले क्या पयन से हिलते हुए नरकट  
 २५ को । फिर तुम क्या देखने को निकले क्या सूदम वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को,  
 २६ देखो जो भड़कीला वस्त्र पहिनते और मुख से रहते हैं सो राजभवनों में हैं ।  
 २७ फिर तुम क्या देखने को निकले क्या भविष्यद्वक्ता को । हाँ मैं तुम से कहता हूँ  
 २८ एक मनुष्य को जो भविष्यद्वक्ता से भी अधिक है । यह यही है जिस के विषय  
 में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ जो तेरे आगे तेरा पन्थ  
 २९ बनावेगा । मैं तुम से कहता हूँ कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से योहन व्य-  
 ३० तिसमा देनेहारे से बड़ा भविष्यद्वक्ता कोई नहीं है परन्तु जो ईश्वर के राज्य में  
 ३१ अति छोटा है सो उस से बड़ा है । और सब लोगों ने जिन्हों ने सुना और कर  
 ३२ उगाहनेहारों ने योहन से व्यतिसमा लेके ईश्वर को निर्दोष ठहराया । परन्तु  
 फरीशियों और व्यवस्थापकों ने उस से व्यतिसमा न लेके ईश्वर के अभिप्राय  
 को अपने विषय में टाल दिया ॥

३३ तब प्रभु ने कहा मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से देऊंगा वे किस  
 ३४ के समान हैं । वे बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठके एक दूसरे को  
 पुकारके कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये खांसली बजाई और तुम न नाचे हम ने  
 ३५ तुम्हारे लिये बिलाप किया और तुम न रोये । क्योंकि योहन व्यतिसमा देनेहारा  
 न रोटी खाता न दाख रस पीता आया है और तुम कहते हो उसे भूत लगा  
 ३६ है । मनुष्य का पुत्र खाता और पीता आया है और तुम कहते हो देखो पेट  
 ३७ और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और पापियों का मित्र । परन्तु ज्ञान अपने  
 सब सन्तानों से निर्दोष ठहराया गया है ॥

३८ फरीशियों में से एक ने यीशु से विल्ली किई कि मेरे संग भोजन कीजिये और  
 ३९ वह फरीशी के घर में जाके भोजन पर बैठा । और देखो उस नगर की एक  
 स्त्री जो पापिनी थी जब उस ने जाना कि वह फरीशी के घर में भोजन पर बैठा  
 ४० है तब उजले पत्थर के पात्र में सुगन्ध तेल लाई । और पीछे से उस के पांखों पास  
 खड़ी हो रोते रोते उस के चरणों को आंसूओं से भिगाने लगी और अपने सिर  
 ४१ के बालों से पोछा और उस के पांव चूमके उन पर सुगन्ध तेल मला । यह देखके  
 फरीशी जिस ने यीशु को बुलाया था अपने मन में कहने लगा यह यदि भविष्य-  
 द्वक्ता होता तो जानता कि यह स्त्री जो उस को छूती है कौन और कैसी है  
 ४२ क्योंकि वह पापिनी है । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे शिमेन मैं तुझ से  
 ४३ कुछ कहा चाहता हूँ । वह बोला हे गुरु कहिये । किसी महाजन के दो कृष्ण

जो मुनके पालन न करे सो एक मनुष्य के समान है जिस ने मिट्टी पर बिना नेत्र का घर बनाया जिस पर धारा लगी और वह तुरन्त गिर पड़ा और उस घर का बड़ा विनाश हुआ ॥

सातवां पर्व ।

जब यीशु लोगों को अपनी सब बातें मुना चुका तब कफर्नाहूम में प्रवेश किया । और किसी जनपति का एक दास जो उस का प्रिय था रोगी हो मरने पर था । जनपति ने यीशु का चर्चा सुनके पिछड़ियों के कई एक प्राचीनों को उस से यह विन्ती करने को उस पास भेजा कि आपके मेरे दास का चंगा कीजिये । उन्होंने ने यीशु पास आपके उस से बड़े यत्न में विन्ती किई और कहा आप जिस के लिये यह काम करेंगे सो इस के योग्य है । क्योंकि यह हमारे लोग से प्रेम करता है और उसी ने मभा का घर हमारे लिये बनाया । तब यीशु उन के संग गया और वह घर में दूर न था कि जनपति ने उन पास मित्रों को भेजके उस से कहा है प्रभु दुःख न उठाइये क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर में आवे । इस लिये मैं ने अपने को आप के पास जाने के भी योग्य नहीं समझा परन्तु बचन कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा । क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और बोझा मेरे वश में है और मैं एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ नो वह आता है और अपने दास को यह कर तो वह करता है । यह सुनके यीशु ने उस मनुष्य पर अचंभा किया और मुंह फेरके जो बहुत लोग उस के पीछे से आते थे उन्होंने से कहा मैं तुम से कहता हूं कि मैं ने इसायेली लोगों में भी ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया है । और जो लोग भेजे गये उन्होंने ने जब घर को लौटे तब उस रोगी दास को चंगा पाया ।

दूसरे दिन यीशु नाइन नाम एक नगर को जाता था और उस के अनेक शिष्य और बहुतरे लोग उस के संग जाते थे । ज्योंही वह नगर के फाटक के पास पहुंचा त्योंही देखो लोग एक मृगक को बाहर ले जाते थे जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था और वह विधवा थी और नगर के बहुत लोग उस के संग थे । प्रभु ने उस को देखके उस पर दया किई और उन से कहा मत रो । तब उस ने निकट आके अर्थी को छूया और उठानेहारे खड़े हुए और उस ने कहा है जवान मैं तुम से कहता हूं उठ । तब मृगक उठ बैठा और बोलने लगा और यीशु ने उसे उस की मां को सौंप दिया । इस से सभी को भय हुआ और वे ईश्वर की स्तुति करके बोले कि हमारे बीच में बड़ा भविष्यहृक्ता प्रगट हुआ है और कि ईश्वर ने अपने लोगों पर दृष्टि किई है । और उस के विषय से यह बात सारे पिछड़ियां में और आमपास के मारे देश में फैल गई ।

योहान के शिष्यों ने इन सब बातों के विषय में योहान से कहा । तब उस ने अपने शिष्यों में से दो जनों को बुलाके यीशु पास यह कहने को भेजा कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे की बात जोहें । उन मनुष्यों ने उस पास आ कहा योहान अपतिसभा देनेहारे ने हमें आप के पास यह कहने को भेजा है कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे



जड़ ने बंधने से वे थोड़ी छेर ली विश्वास करते हैं और परीक्षा के समय में  
 १४ वहक जाते हैं । जो कांटों के बीच में गिरा सो वे हैं जो सुनते हैं पर अनेक  
 चिन्ता और धन और जीवन के सुख विलास से दबते दबते दबाये जाते और  
 १५ पक्के फल नहीं फलते हैं । परन्तु अच्छी भूमि में का बीज वे हैं जो वचन सुनके  
 भले और उत्तम मन में रखते हैं और धीरे-धीरे फल फलते हैं ॥

१६ कोई मनुष्य दीपक को चारके घर्तन से नहीं ठांपता और न खाट के नीचे  
 रखता है परन्तु दीपक पर रखता है कि जो भीतर आवे सो उजियाला देखे ।

१७ कुछ गुप्त नहीं है जो प्रगट न होगा और न कुछ छिपा है जो जाना न जायगा

१८ और प्रसिद्ध न होगा । इस लिये सचेत रहो तुम किस रीति से सुनते हो क्योंकि  
 जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है  
 उस से जो कुछ वह समझता कि मेरे पास है सो भी ले लिया जायगा ॥

१९ यीशु की माता और उस के भाई उस पास आये परन्तु भीड़ के कारण उस

२० से भेंट नहीं कर सके । और कितनों ने उस से कह दिया कि आप की माता और

२१ आप के भाई बाहर खड़े हुए आप को देखने चाहते हैं । उस ने उन को उत्तर  
 दिया कि मेरी माता और मेरे भाई येही लोग हैं जो ईश्वर का वचन सुनके  
 पालन करते हैं ॥

२२ एक दिन वह और उस के शिष्य नाव पर चढ़े और उस ने उन से कहा कि

२३ आओ हम भील के उस पार चलें . सो उन्होंने ने खोल दिई । ज्यों वे जाते थे

२४ त्यों वह सो गया और भील पर आंधी उठी और उन की नाव भर जाने लगी

२५ और वे जोखिम में थे । तब उन्होंने ने उस पास आके उसे जगाके कहा हे गुरु

हे गुरु हम नष्ट होते हैं . तब उस ने उठके बयार को और जल के हिलकोरे को

२६ डांटा और वे थम गये और नीचा हो गया । और उस ने उन से कहा तुम्हारा

विश्वास कहाँ है . परन्तु वे भयमान और अचंचित हो आपस में बोले यह कौन

२७ है जो बयार और जल को भी आज्ञा देता है और वे उस की आज्ञा मानते हैं ॥

२८ वे गदेरियों के देश में जो गालील के सामने उस पार है पहुँचे । जब यीशु

तीर पर उतरा तब नगर का एक मनुष्य उस से आ मिला जिस को बहुत दिनों

२९ से भूत लगे थे, और जो बस्त्र नहीं पहिनता न घर में रहता था परन्तु कबरस्थान

३० में रहता था । वह यीशु को देखके चिल्लाया और उस को दंडवत् कर बड़े शब्द

से कहा हे यीशु सर्वप्रधान ईश्वर के पुत्र आप को मुझ से क्या काम . मैं आप

३१ से बिन्ती करता हूँ कि मुझे पीड़ा न दीजिये । क्योंकि यीशु ने अशुद्ध भूत को

उस मनुष्य से निकलने की आज्ञा दिई थी . उस भूत ने बहुत बार उसे पकड़ा

था और वह जंजीरों और बंधियों से बंधा हुआ रखा जाता था परन्तु बंधनों को

३२ तोड़ देता था और भूत उसे जंगल में खदेड़ता था । यीशु ने उस से पूछा तेरा

३३ नाम क्या है . उस ने कहा सेना . क्योंकि बहुत भूत उस में पैठ गये थे । और

उन्होंने ने उस से बिन्ती किई कि हमें अथाह कुंड में जाने की आज्ञा न दीजिये ।

३४ वहां बहुत सूखों का जो पहाड़ पर चरते थे एक झुंड था सो उन्होंने ने उस से

३५ बिन्ती किई कि हमें उन्हीं में पैठने दीजिये और उस ने उन्हें जाने दिया । तब

ये एक पांच सौ सूकी धारता या और दूसरा पचास । जब कि भर देने को ६२  
 चन्नों के पास कुछ न था उस ने दोनों को क्षमा किया सो कहिये उन में से कौन  
 उस को अधिक प्यार करेगा । शिमोन ने उत्तर दिया मैं समझता हूँ कि यह जिस ६३  
 का उस ने अधिक क्षमा किया, यीशु ने उस से कहा तू ने ठीक विचार किया  
 है । और स्त्री की ओर फिरके उस ने शिमोन से कहा तू इस स्त्री को देखता ६४  
 है, मैं तेरे घर में आया तू ने मेरे पाँचों पर जल नहीं दिया परन्तु इस ने मेरे  
 चरणों को आँगूठों से भिंसाया और अपने सिर के बालों से पोछा है । तू ने ६५  
 मेरा चूमा नहीं लिया परन्तु यह जब से मैं आया तब से मेरे पाँचों को चूम रही  
 है । तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं लगाया परन्तु इस ने मेरे पाँचों पर सुगन्ध तेल ६६  
 मना है । इस लिये मैं तुझ से कहता हूँ कि उस के पाप जो बहुत हैं क्षमा किये ६७  
 गये हैं, कि उस ने तो बहुत प्रेम किया है परन्तु जिन का छोड़ा क्षमा किया  
 जाना है वह थोड़ा प्रेम करता है । और उस ने स्त्री से कहा तेरे पाप क्षमा ६८  
 किये गये हैं । तब जो लोग उस के संग भोजन पर बैठे थे सो अपने अपने मन ६९  
 से कहने लगे यह कौन है जो पापों का भी क्षमा करता है । परन्तु उस ने स्त्री ७०  
 से कहा तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है कुशल से चली जा ॥

आठवां पर्व ।

इस पीछे यीशु नगर नगर और गांव गांव उपदेश करता हुआ और ईश्वर के १  
 राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ फिरा किया । और धारहों शिष्य उस के संग २  
 थे और कितनी स्त्रियाँ भी जो दुष्ट भूतों से और रोगों से चंगी किहू राहें थीं  
 अर्थात् सरियस जो मगदलीनी कहायती है जिन में से मात भूत निकल गये थे,  
 और ईरोद के भंडारी कूजा की स्त्री योहाना और सोमना और बहुत सी और ३  
 स्त्रियाँ, ये तो अपनी सम्पत्ति से उस की सेवा करती थीं ॥

जब बड़ी भीड़ एकट्ठी होती थी और नगर नगर के लोग उस पास आते थे ४  
 तब उस ने दृष्टान्त में कहा, एक बानेधारा अपना बीज बाने को निकला, ५  
 बीज बाने में कुछ मार्ग की ओर गिरा और पाँचों से रेंदा गया और आकाश के  
 पंक्षियों ने उसे चुग लिया । कुछ पत्थर पर गिरा और उपजा परन्तु तरावट न पाने ६  
 से सूख गया । कुछ कांटों के बीच में गिरा और कांटों ने एक संग बढ़के उस ७  
 को दबा डाला । परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और उपजा और सौ गुणे ८  
 फल फला, यह बात कहके उस ने लंबे शब्द से कहा जिस को सुनने के कान  
 हैं सो सुने ॥

तब उस के शिष्यों ने उस से पूछा इस दृष्टान्त का अर्थ क्या है । उस ने ९  
 कहा तुम को ईश्वर के राज्य के भेद जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु १०  
 और लोगों ने दृष्टान्तों में बात छेती है इस लिये कि वे देखते हुए न देखें और  
 सुनते हुए न सुनैं । इस दृष्टान्त का अर्थ यह है, बीज तो ईश्वर का वचन ११  
 है । मार्ग की ओर के वे हैं जो सुनते हैं तब गैतान आके उन के मन से से १२  
 वचन छीन लेता है रेंसा न हो कि वे विश्वास करके आग पावें । पत्थर पर के १३  
 वे हैं कि जब सुनते हैं तब आनन्द से वचन को ग्रहण करते हैं परन्तु उन में

५६ खाने को दिया जाय । उस के माता पिता विस्मित हुए पर उस ने उन को आज्ञा दी कि यह जो हुआ है किसी से मत कहो ॥

नवां पृष्ठ ।

१ यीशु ने अपने बारह शिष्यों को एकट्ठे बुलाके उन्हें सब भूतों को निकालने  
२ का और रोगों को चंगा करने का सामर्थ्य और अधिकार दिया । और उन्हें  
३ ईश्वर के राज्य की कथा सुनाने और रोगियों को चंगा करने का भेजा । और  
उस ने उन से कहा मार्ग के लिये कुछ मत लेओ न लाठी न झोली न रोटी न  
४ रुपैयाँ और दो दो अंग्रे तुम्हारे पास न होवें । जिस किसी घर में तुम प्रवेश  
५ करो उसी में रहो और वहाँ से निकल जाओ । जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे  
उस नगर से निकलते हुए उन पर साक्षी होने के लिये अपने पाँचों की धून भी  
६ झाड़ डालो । सो वे निकलके सर्वत्र सुसमाचार सुनाते और लोगों को चंगा  
करते हुए गाँव गाँव फिर ॥

७ चौथाई का राजा हेरोद सब कुछ जो यीशु करता था सुनके दुःखधा में  
८ पड़ा क्योंकि कितने ने कहा योहन् मृतकों में से जी उठा है । और कितने ने  
कि एलियाह दिखाई दिया है और औरों ने कि अगले भविष्यद्वक्ताओं में से एक  
९ जी उठा है । और हेरोद ने कहा योहन् का तो मैं ने सिर कटवाया परन्तु यह  
कौन है जिस के विषय में मैं ऐसी बातें सुनता हूँ । और उस ने उसे देखने चाहा ॥

१० प्रेरितों ने फिर आके जो कुछ उन्होंने ने किया था सो यीशु को सुनाया और  
वह उन्हें संग लेके बैतसैदा नाम एक नगर के किसी जंगली स्थान में एकान्त में  
११ गया । लोग यह जानके उस के पीछे हो लिये और उस ने उन्हें ग्रहण कर  
ईश्वर के राज्य के विषय में उन से बातें किई और जिन्हें को चंगा किये जाने  
का प्रयोजन था उन्हें चंगा किया ॥

१२ जब दिन ठलने लगा तब बारह शिष्यों ने आ उस से कहा लोगों को बिदा  
कीजिये कि वे चारों ओर की प्रस्तियों और गाँवों में जाके ठिकी और भोजन  
१३ पावें क्योंकि हम यहां जंगली स्थान में हैं । उस ने उन से कहा तुम उन्हें खाने  
को देओ । वे बोले हमारे पास पाँच रोटियों और दो मछलियों से अधिक कुछ  
१४ नहीं है पर हाँ हम जाके इन सब लोगों के लिये भोजन सोल लेवें तो होय । वे  
लोग पाँच सहस्र पुरुषों के अटकल थे । उस ने अपने शिष्यों से कहा उन्हें  
१५ पचास पचास करके पाँति पाँति बैठाओ । उन्होंने ने ऐसा किया और सबों को  
१६ बैठाया । तब उस ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर  
देखके उन पर आशीस दीई और उन्हें तोड़के शिष्यों को दिया कि लोगों के  
१७ आगे रखें । सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े उन्होंने से बच रहे उन की  
बारह टोकरी उठाई गई ॥

१८ जब वह एकान्त में प्रार्थना करता था और शिष्य लोग उस के संग थे तब  
१९ उस ने उन से पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूँ । उन्होंने ने उत्तर दिया  
कि वे आप को योहन् अपतिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह  
कहते हैं और कितने कहते हैं कि अगले भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा

भूत उस सनुष से निकलके सूखों में बैठे और यह कुंड कड़ाड़े पर से नील में  
 डोढ़ गया और डूब सरा । यह जो हुआ था सो देखके चरखादे भागे और बाके ३४  
 नगर में और गांवों में उस का समाचार करा । और लोग यह जो हुआ था ३५  
 देखने को बाहर निकले और योगु पास आके जिन सनुष में भूत निकले थे उस  
 को योगु के घरों के पास बस्त्र पहिने और सूखों बैठे हुए पाके डर गये ।  
 जिन लोगों ने देखा था उन्हें ने उन ने कह दिया कि यह भूतग्रन्थ सनुष क्योंकर ३६  
 चंगा हो गया था । तब गदेश के आसपास के सारे लोगों ने योगु से चिन्ता किई ३७  
 कि हमारे यहां में चले जाइये क्योंकि उन्हें बड़ा डर लगा . सो यह बात पर  
 चढ़के लौट गया । जिस सनुष से भूत निकले थे उस ने उस से चिन्ता किई कि ३८  
 मैं आप के संग रहूँ पर योगु ने उसे बिदा किया . और कहा अपने घर को फिर ३९  
 जा और कह दें कि ईश्वर ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं . उस ने जाके  
 सारे नगर में प्रचार किया कि योगु ने उस के लिये कैसे बड़े काम किये थे ।

तब योगु लौट गया तब लोगों ने उसे गुदग किया क्योंकि वे सब उस को ४०  
 घाट जोहते थे । और देखो बाईर नाम एक सनुष जो सभा का अध्यक्ष भी था ४१  
 आया और योगु के पांचों पढ़के उस ने चिन्ता किई कि यह उस के घर जाय ।  
 क्योंकि उस को बाइर घर की रक्कनाती घटी थी और वह मरने पर थी . जब ४२  
 योगु जाना था तब भीड़ उसे दयान्वी थी ।

और एक स्त्री जिसे बाइर घर में लोहू घटने का रोग था जो अपनी सारी ४३  
 जीविका बैदों के पीछे उठाके किसी में चंगी न हो सकी . तिस ने पीछे से था ४४  
 उस के बस्त्र के आंचल को कूया और उस के लोहू का घटना तुरन्त घस गया ।  
 योगु ने कहा किस ने मुझे कूया . जब मय सुनार गये तब पितर ने और उस को ४५  
 संशयो ने कहा हे मुन लोग आप पर भीड़ लगाते और आप को दयाते हैं और  
 आप कहते हैं किस ने मुझे कूया । योगु ने कहा किसी ने मुझे कूया क्योंकि मैं ४६  
 जानता हूँ कि मुझ में से शक्ति निकली है । जब स्त्री ने देखा कि मैं क्लिप्त नहीं ४७  
 हूँ तब कांपती हुई आई और उसे दंडवत कर सब लोगों के सामने उस को  
 बताया कि उस ने किस कारण से उस को कूया था और क्योंकर तुरन्त चंगी हुई  
 थी । उस ने उस से कहा हे पुत्री ठाढ़स कर मेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है ४८  
 कुजल से चली जा ।

यह बोलता ही था कि किसी ने सभा के अध्यक्ष के घर ने था उस से कहा ४९  
 आप को घंटी मर गई है मुझ को दुःख न दीजिये । योगु ने यह सुनके उस को ५०  
 उत्तर दिया कि मत डर केवल विश्वास कर तो वह चंगी हो जायगी । घर में ५१  
 आके उस ने पितर और याकूब और गेहन और कन्या के माता पिता को छोड़ और  
 किसी को भीतर जाने न दिया । अब लोग कन्या के लिये रोते और काती पीटते ५२  
 थे परन्तु उस ने कहा मत रोओ वह मरी नहीं पर सोती है । वे यह जानके ५३  
 कि मर गई है उस का उपवास करने लगे । परन्तु उस ने सबों को बाहर निकाला ५४  
 और कन्या का हाथ पकड़के ऊंचे शब्द से कहा हे कन्या उठ । तब उस का ५५  
 प्राण फिर आया और वह तुरन्त उठी और उस ने आज्ञा किई कि उसे कुछ

- ही था कि मृत ने उसे घटके मरोड़ा परन्तु यीशु ने अशुद्ध मृत को डाँटके  
 ४३ लड़के को चंगा किया और उसे उस के पिता को सौंप दिया । तब सब लोग  
 ईश्वर की साक्षात्कार से आर्चमग हुए ।
- ४४ जब मरान्ता लोग सब कामों में जो यीशु ने किये आर्चमग करते थे तब उस  
 ने अपने शिष्यों में कहा तुम इन बातों को अपने कानों में रखा क्योंकि मनुष्य  
 ४५ का पुत्र मनुष्यों के हाथ में सज्जयाया जायगा । परन्तु उन्हीं ने यह बात न  
 समझी और यह उन में कुरीती थी कि उन्हें यह न पड़े और वे इस बात के  
 विषय में उस में पूछने को तरंगे थे ।
- ४६ उन्हीं में ता विचार होने लगा कि हम में से कौन है । यीशु ने उन  
 ४७ के मन का विचार जासके एक आनक को लेकर अपने पास खड़ा किया । और  
 उन में कहा जो कोई मेरे नाम में इस यातक को गृह्य करे यह मुझे गृह्य  
 करता है और जो कोई मुझे गृह्य करे यह मेरे भोजनदारे को गृह्य करता है ,  
 जो तुम मनों में आगि होता है वही सदा होगा ।
- ४८ तब बादन ने उत्तर दिया कि हे शुभ दस ने किसी मनुष्य को आप के नाम में भूतों  
 ४९ को निकालते देखा और इस ने हमें वही कर्तव्य यह हमारे मंग नहीं चलाता है । यीशु  
 ने उस से कहा महा वही कर्तव्य जो हमारे विरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है ।
- ५० जब उस को डटाये जाने के दिन पहुँचे तब उस ने विरुधलीम जाने को  
 ५१ अपना मन दृढ़ किया । और उस ने वृत्तों को अपने हाथों में लाया और उन्हीं ने  
 जाके उस के लिये तैयारी करने को सोमिरोलियों के एक गाँव में प्रवेश किया ।  
 ५२ परन्तु उन लोगों ने उसे गृह्य न किया क्योंकि यह विरुधलीम की ओर जाने  
 ५३ का मुँह किये था । यह देखके उस के शिष्य याकूब और बादन बोले हे प्रभु  
 आप की इच्छा होगी तो हम आग के आकाश में गिरने और उन्हें नाश करने  
 ५४ की आज्ञा देंगे जैसा सोनियास ने भी किया । परन्तु उस ने पीछे फिरके उन्हें  
 ५५ डाँटके कहा क्या तुम नहीं जानते हो तुम कैसे आत्मा के हो । मनुष्य का पुत्र  
 मनुष्यों के प्राण नाश करने को नहीं परन्तु बचाने को आया है , तब वे दूसरे  
 गाँव को चले गये ॥
- ५६ जब वे मार्ग में जाते थे तब किसी मनुष्य ने यीशु से कहा हे प्रभु जहाँ जहाँ  
 ५७ आप जायें तहाँ मैं आप के पीछे चलूँगा । यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों को  
 साँदों और आकाश के पक्षियों को घेरे हैं परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर रखने  
 ५८ का स्थान नहीं है । उस ने दूसरे से कहा मेरे पीछे आ , उस ने कहा हे प्रभु  
 ५९ मुझे पहिले जाके अपने पिता को गाहने दीजिये । यीशु ने उस से कहा मृतकों  
 को अपने मृतकों को गाहने दे परन्तु तू जाके ईश्वर के राज्य की कथा सुना ।  
 ६० दूसरे ने भी कहा हे प्रभु मैं आप के पीछे चलूँगा परन्तु पहिले मुझे अपने घर के  
 ६१ लोगों से बिदा होने दीजिये । यीशु ने उस से कहा अपना हाथ छल पर रखके  
 जो कोई पीछे देखे सो ईश्वर के राज्य के योग्य नहीं है ॥

दसवाँ पत्र ।

१ इस के पीछे प्रभु ने सत्तर और शिष्यों को भी ठहराके उन्हें दो दो करके

है । उस ने उन से कहा तुम क्या कहने लगे मैं कौन हूँ , पितर ने उत्तर दिया २० कि ईश्वर का अभिषिक्त जन । तब उस ने उन्हें दृढ़ता से आज्ञा दी कि यह २१ बात किसी से मत कहो । और उस ने कहा मनुष्य के पुत्र का अग्रज्य है कि २२ बहुत दुःख उठावे और प्रार्थनों और प्रधान राजकों और अध्यापकों से तुल्य किया जाय और सार ढाना जाय और तीसरे दिन जी उठे ।

उस ने सभी से कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी पत्थर की २३ सारे और प्रतिदिन अपना क्रून उठाके मेरे पीछे आवे । क्योंकि जो कोई अपना २४ प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे निचे अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा । जो मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने को राज २५ करे अथवा संघाये उस को क्या लाभ होगा । जो कोई सुक्त में और मंत्री बातों २६ से लजावे मनुष्य का पुत्र जब अपने और पिता के और पवित्र वृत्तों के सेव्यार्थ में आवेगा तब उस में लजावेगा । मैं तुम में सब कहता हूँ कि जो यहां खड़े २७ हैं उन में से कोई कोई है कि जब जो ईश्वर का राज्य न देखे तब लो मृत्यु का स्वाद न खोजेंगे ।

उन बातों से दिन आठ गुरु के पीछे यीशु पितर और योहन और याकूब को २८ संग ले प्रार्थना करने को पर्वत पर चढ़ गया । जब वह प्रार्थना करेगा था तब २९ उस के मुंह का श्व और चीं चीं गया और उस का चमर उजला हुआ और प्रसक्तने लगा । और देखा वे मनुष्य अर्थात् मूसा और एलियाह उस के संग बात करते ३० थे । वे तेजोमय दिग्राई दिये और उस को मृत्यु का जिसे वह शिश्नलीन में पूर्ण ३१ करने पर था बात करते थे । पितर और उस के संगियों की आंखें नोद से भरी ३२ थीं परन्तु वे जागते रहे और उस का सेव्यार्थ और उन दो मनुष्यों को जो उस के संग खड़े थे देखा । जब वे उस के पास से जाने लगे तब पितर ने यीशु से ३३ कहा है गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है , हम तीन डेरे बनावे गुरु आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के लिये , यह नहीं जानता था कि क्या कहता था । उस के यह कहते हुए गुरु सेव ने आ उन्हे ला लिया और जब ३४ उन दोनों ने उस सेव में प्रवेश किया तब वे डर गये । और उस सेव से यह ३५ शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उस को सुनो । यह शब्द होने के पीछे यीशु ३६ अकेला पाया गया और उन्हां ने इस को गुप्त रखा और जो देखा था उस को कोई बात उन दिनों में किसी से न कही ।

दूसरे दिन जब वे उस पर्वत से उतरे तब बहुत लोग उस से आ मिले । ३७ और देखा भीड़ में से एक मनुष्य ने पुकारके कहा है गुरु मैं आप से विन्नी ३८ करता हूँ कि मेरे पुत्र पर दृष्टि कीजिये क्योंकि यह मेरा एकलौता है । और ३९ देखिये गुरु भूत उसे पकड़ता है और यह अचांचक चिह्नाता है और भूत उसे वैसा मरोड़ता कि वह मुंह से फेंक दबाता है और उसे चूर कर कठिन से कोड़ता है । और मैं ने आप के शिष्यों से विन्नी किई कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं ४० सके । यीशु ने उत्तर दिया कि हे अविश्वासी और दलीले लोगो मैं कब लो ४१ तुम्हारे संग रहूंगा और तुम्हारी सहंगा , अपने पुत्र को यहां ले आ । यह आता ४२



ने देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उस को सुनने चाहा पर न सुना ॥

२५ देखो किसी व्यवस्थापक ने उठके उस की परीक्षा करने को कहा है शुरुकौन  
 २६ काम करने से मैं अनन्त जीवन का अधिकारी होंगा । उस ने उस से कहा  
 २७ व्यवस्था में क्या लिखा है . तू कैसे पढ़ता है । उस ने उत्तर दिया कि तू परमेश्वर  
 अपने ईश्वर को अपने मारे मन से और अपने मारे प्राण से और अपनी सारी  
 शक्ति से और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर और अपने पड़ोसी को अपने समान  
 २८ प्रेम कर । यीशु ने उस से कहा तू ने ठीक उत्तर दिया है . यह कर तो तू  
 २९ जीयेगा । परन्तु उस ने अपने तर्ह धर्म्मा ठहराने की इच्छा कर यीशु से कहा  
 ३० मेरा पड़ोसी कौन है । यीशु ने उत्तर दिया कि एक मनुष्य यिहूशलीस से यिरीहो  
 को जाते हुए डाकूओं के हाथ में पड़ा जिन्होंने उस के वस्त्र उतार लिये और  
 ३१ उसे घायल कर अधमूया छोड़के चले गये । संयोग से कोई यात्रक उस मार्ग से  
 ३२ जाता था परन्तु उसे देखके साम्दने से होके चला गया । इसी रीति से एक  
 लेवीय भी जब उस स्थान पर पहुँचा तब आके उसे देखा और साम्दने से होके  
 ३३ चला गया । परन्तु एक शोमिरोनी पण्डित उस स्थान पर आया और उसे देखके  
 ३४ दया किई . और उस पास जाके उस के घावों पर तेल और टाख रस ठालके  
 पट्टियां बांधीं और उसे अपने ही पशु पर बैठाके सराय में लाके उस की सेवा  
 ३५ किई । विद्वान हुए उस ने बाहर आ दो सूकी निकालके भाँठियारे को दिई और  
 उस से कहा उस मनुष्य की सेवा कर और जो कुछ तेरा और लगेगा सो मैं जब  
 ३६ फिर आऊंगा तब तुझे भर देऊंगा । सो तू क्या समझता है जो डाकूओं के हाथ  
 ३७ में पड़ा उस का पड़ोसी इन तीनों में से कौन था । व्यवस्थापक ने कहा वह  
 जिस ने उस पर दया किई . तब यीशु ने उस से कहा जा तू भी वैसा ही कर ॥  
 ३८ उन्हीं के जाते हुए उस ने किसी गांव में प्रवेश किया और मर्या नाम एक  
 ३९ स्त्री ने अपने घर में उस की पहुनई किई । उस को मरियम नाम एक बहिन  
 ४० थी जो यीशु के चरणों के पास बैठके उस का वचन सुनती थी । परन्तु मर्या  
 बहुत सेवकाई में बन्नी हुई थी और वह निकट आके बोली हे प्रभु क्या आप  
 को सोच नहीं है कि मेरी बहिन ने मुझे अकेली सेवा करने को छोड़ी है . इस  
 ४१ लिये उसे आज्ञा दीजिये कि मेरी सहायता करे । यीशु ने उस को उत्तर दिया हे  
 ४२ मर्या हे मर्या तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है । परन्तु एक  
 बात आवश्यक है . और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुना है जो उस से नहीं  
 लिया जायगा ॥

सग्यारहवां पर्व ।

१ जब यीशु एक स्थान में प्रार्थना करता था ज्यों उस ने समाप्ति किई त्यों उस  
 के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे प्रभु जैसे योहन ने अपने शिष्यों को सिखाया  
 २ तैसे आप हमें प्रार्थना करने को सिखाइये । उस ने उन से कहा जब तुम प्रार्थना  
 करो तब कहो हे हमारे स्वर्गवासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय तेरा राज्य  
 ३ आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे पृथिवी पर पूरी होय . हमारी दिन भर की

हर एक नगर और स्थान को जहाँ वह आप जाने पर या अपने आगे भेजा ।  
 और उस ने उन से कहा कटनी बहुत है परन्तु विचार चाहें हैं इस लिये कटनी  
 के स्वासी से चिन्ती करो कि वह अपनी कटनी में विचारों को भेजे । लाओ  
 देखा मैं तुम्हें मेरी की नाईं हुंवारों के बीच में भेजता हूँ । न चलो न कोली  
 न जूते ले लाओ और मार्ग में किसी को नमस्कार मत करो । जिस किसी घर  
 में तुम प्रवेश करो पहिले कहे इस घर का कल्याण होय । यदि वहाँ कोई  
 कल्याण के योग्य हो तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे पास  
 फिर आविशा । जो कुछ उन्हीं के पहाँ निले सोई खाते और पीते हुए वही घर  
 में रहे ओंकि विचार अपनी धन के योग्य है . घर घर मत फिरो । जिस  
 किसी नगर में तुम प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण करें वहाँ जो कुछ तुम्हारे  
 आगे रखा जाय सो ग्राहो । और उस में के रोगियों को चंगा करो और लोगों  
 से कहा कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुँचा है । परन्तु जिस किसी नगर  
 में प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण न करें उस की सड़कों पर जाके कहा .  
 तुम्हारे नगर को धूल भी जो हमों पर लगी है इस तुम्हारे आगे घाँट डालते हैं  
 ताँभी यह जानो कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुँचा है । मैं तुम से कहता  
 हूँ कि उस दिन में उस नगर की दशा में सदास की दशा सहने योग्य होगी ।

चाय तू कोराजोन . चाय तू दंतमैदा . जो आश्चर्य कर्म तुम्हो में किये  
 गये हैं सो यदि मोर और मीढान में किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि ये  
 टाट पट्टिने राख में बैठके पञ्चात्ताप करने । परन्तु विचार के दिन में तुम्हारी  
 दशा में मोर और मीढान की दशा सहने योग्य होगी । और हे कर्जनाहम जो स्वर्ग  
 लो कंचा किया गया है तू नरक लो नीचा किया जायगा । जो तुम्हारी सुनता  
 है सो मेरी सुनता है और जो तुम्हें तुच्छ जानता है सो मुझे तुच्छ जानता है और  
 जो मुझे तुच्छ जानता है सो मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है ।

तब वे सत्तर शिष्य आनन्द से फिर आके बोले हे प्रभु आप के नाम से भूत  
 भी हमारे वश में हैं । उस ने उन से कहा मैं ने जैतान को विजय की नाईं  
 स्वर्ग से गिरते देखा । देखा मैं तुम्हें माँषों और चिच्छूओं को मँदने का और  
 शत्रु को सारे पराक्रम पर सामर्थ्य देता हूँ और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ धान न  
 होगी । ताँभी इस में आनन्द मत करो कि भूत तुम्हारे वश में हैं परन्तु वही में  
 आनन्द करो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं । उन्ही छोटी यीशु आत्मा में  
 आनन्दित हुआ और कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्य मानता  
 हूँ कि तू ने इन बातों को जानवानों और बुद्धिमानों से गुप्त रखा है और उन्हीं  
 वालकों पर प्रगट किया है . हाँ हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टि में यही अच्छा लगा ।  
 मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और पुत्र कौन है सो कोई नहीं जानता  
 केवल पिता और पिता कौन है सो कोई नहीं जानता केवल पुत्र और वही  
 जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे । तब उस ने अपने शिष्यों को और फिरके  
 निराले में कहा जो तुम देखते हो उसे जो नेत्र देखें सो धन्य हैं । क्योंकि मैं तुम  
 से कहता हूँ कि जो तुम देखते हो उस को बहुतरे भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं

श्वर के नाम का प्रचार तेरे आगे कहेगा और जिस पर कृपाल हूँ उसी पर कृपा  
 २० कहेगा और जिस पर दयाल हूँ उसी पर दया कहेगा । और बोला कि तू मेरा  
 २१ रूप नहीं देख सकता क्योंकि मुझे देखके कोई मनुष्य न जीयेगा । और परमेश्वर  
 २२ ने कहा कि देख एक स्थान मेरे पास है और तू उस टीले पर खड़ा रह । और यों  
 होगा कि जब मेरा विभव चल निकलेगा तो मैं तुझे पछाड़ के दरार में रखवूँगा  
 २३ और जब लों जा निकलूँ तुझे अपने हाथ से ढांपूँगा । और अपना हाथ उठा लूँगा  
 और तू मेरा पीछा देखेगा परन्तु मेरा रूप दिखाई न देगा ॥

चौतीसवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये पहिली पटियों के समान पत्थर  
 की दो पटियां चीर और मैं उन पटियों पर वे बातें लिखूँगा जो पहिली पटियों  
 २ पर थीं जिन्हें तू ने तोड़ डाला । और तड़के मिट्ट हो और विद्वान को सीना के  
 ३ पछाड़ पर चढ़ आ और वहां पछाड़ की चोटी पर मेरे लिये खड़ा हो । और  
 कोई मनुष्य तेरे साथ न चढ़े और समस्त पछाड़ पर कोई देखा न जावे मुंड और  
 लंठा पछाड़ के आगे चराई भी न करें ॥

४ तब आगिले पत्थरों के समान उस ने दो पटियां चीरीं और जैसा कि परमेश्वर  
 ने उसे आज्ञा किई थी विद्वान को मूसा पत्थर की दोनों पटियां अपने हाथ में  
 ५ लिये हुए सीना के पछाड़ पर चढ़ गया । और परमेश्वर मेघ में उतरा और  
 ६ उस के साथ वहां खड़ा रहा और परमेश्वर के नाम का प्रचार किया । और  
 परमेश्वर उस के आगे से चला और प्रचार किया कि परमेश्वर परमेश्वर सर्वशक्ति-  
 ७ मान दयाल और कृपाल धीर और भलाई और सच्चाई में भरपूर है । सहस्रों के  
 लिये दया रखनेवाला है पाप और अपराध और चूक का क्षमा करनेवाला और  
 वह किसी भांति से अपराधी को निर्दोष न ठहरावेगा और पितरों के पाप का उन  
 ८ के पुत्रों और पौत्रों पर तीसरी और चौथी पीढ़ी लों प्रतिफलदायक है । तब मूसा  
 ९ ने शीघ्रता से भूमि की ओर सिर झुकाके दंडवत किई । और बोला कि हे प्रभु  
 यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं तेरी विनती करता हूँ कि प्रभु हमारे  
 मध्य में होके चले क्योंकि वह कठोर गरदन लोग हैं और हमारे अपराध और  
 पाप क्षमा कर और हमें अपना अधिकार ठहरा ॥

१० तब वह बोला कि देख मैं तेरे समस्त लोगों के आगे एक वाचा बांधता हूँ  
 कि मैं ऐसा आश्चर्य कहेगा जैसा कि समस्त पृथिवी पर और किसी जातिगण में  
 न उतना हुआ है और सब लोग जिन के मध्य मैं तू है परमेश्वर के कार्य देखेंगे  
 ११ क्योंकि वह भयंकर कार्य है जो मैं तुझ से करता हूँ । जो आज के दिन मैं तुझे  
 आज्ञा करता हूँ उसे मानियो देख मैं अमूरियों और कनअनियों और हितियों  
 १२ और फरिजियों और हवियों और यवूसियों को तेरे आगे से हांकता हूँ । आप से  
 चौकस रह ऐसा न हो कि तू उस भूमि के वासियों के साथ जिस में तू जाता है  
 १३ कुछ वाचा बांधे और तेरे मध्य में फंदा होवे । क्योंकि तुम उन की यज्ञवेदियों  
 को नाश करोगे और उन की मूर्तियों को तोड़ डालोगे और उन की पुतलियों को  
 १४ काट डालोगे । क्योंकि तू किसी उपरी देव की पूजा न करेगा क्योंकि परमेश्वर

रोटी प्रतिदिन हमें दे . और हमारे पापों को क्षमा कर क्योंकि हम भी अपने ४  
हर एक अंगी को क्षमा करते हैं और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से  
बचा ॥

और उस ने उन से कहा तुम में से कौन है कि उस का एक मित्र छोड़ और ५  
वह आधी रात को उस पास जाके उस से कहे कि हे मित्र मुझे तीन रोटी उधार  
दीजिये , क्योंकि एक पशिक मेरा मित्र मुझ पास आया है और उस के आगे ६  
रखने को मेरे पास कुछ नहीं है . और वह भीतर से उत्तर देवे कि मुझे दुःख न ७  
देना अब तो द्वार सुंटा गया है और मेरे बालक मेरे संग सोये हुए हैं मैं उठके  
तुम्हें नहीं दे सकता हूं । मैं तुम से कहता हूं जो वह इस लिये नहीं उसे उठके ८  
देगा कि उस का मित्र है तभी उस के लाज छोड़के मांगने के कारण उठके  
उस को जितना कुछ आवश्यक हो उतना देगा । और मैं तुम्हें से कहता हूं कि ९  
मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ठंडो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये  
खाला जायगा । क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है १०  
सो पाता है और जो खटखटाता है उस के लिये खाना जायगा । तुम में से ११  
कौन पिता होगा जिस में पुत्र रोटी मांगे क्या वह उस को पत्थर देगा , और  
जो वह सखली मांगे तो क्या वह सखली की मन्ती उस को सौंप देगा । आध्या १२  
जो वह अंडा मांगे तो क्या वह उस को बिच्छू देगा । सो यदि तुम दूरे छोके १३  
अपने लड़कों को अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके स्वर्गपति  
पिता उन्हें को जो उस से मांगते हैं पवित्र आत्मा देगा ॥

यीशु एक भूत को जो गूंगा था निकालता था . जब भूत निकल गया तब १४  
वह गूंगा बोलने लगा और लोगों ने अचंभा किया । परन्तु उन में से कोई कोई १५  
बोले यह तो बालजिबूल नाम भूतों के प्रधान की सहायता से भूतों को निकाल-  
लता है । औरों ने उस की परीक्षा करने को उस से आकाश का एक चिन्ह १६  
मांगा । पर उस ने उन के मन की बातें जानके उन से कहा जिस जिस राज्य में १७  
फूट पड़ी है वह राज्य उजड़ जाता है और घर से घर जो बिगड़ता है सो नाश  
होता है । और यदि जैतान में भी फूट पड़ी है तो उस का राज्य क्योंकि १८  
ठहरेगा . तुम लोग तो कहते हो कि मैं बालजिबूल की सहायता से भूतों को  
निकालता हूं । पर यदि मैं बालजिबूल की सहायता से भूतों को निकालता हूं १९  
तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं . इस लिये वे तुम्हारे न्याय  
करनेहारे होंगे । परन्तु जो मैं ईश्वर की उंगली से भूतों को निकालता हूं तो २०  
अवश्य ईश्वर का राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है । जब दण्डियार बांधे हुए २१  
बलवन्त अपने घर की रखवाली करता है तब उस की सम्पत्ति कुशल से रहती  
है । परन्तु जब वह जो उस से अधिक बलवन्त है उस पर आ पड़कर उसे २२  
जीतता है तब उस के सम्पूर्ण दण्डियार जिन पर वह भरोसा रखता था लीन लेता  
और उस का लूटा हुआ धन बांटता है । जो मेरे संग नहीं है सो मेरे विरुद्ध है २३  
और जो मेरे संग नहीं बढोरता सो विधराता है ॥

जब अशुद्ध भूत मनुष्य से निकल जाता है तब मुखे स्थानों में विश्राम ढूंढ़ता २४

- फिरता है परन्तु जब नहीं पाता तब कहता है कि मैं अपने घर में जहाँ से निकला  
 २५ फिर जाऊंगा । और वह आके उसे भाड़ा बुधारा सुधरा पाता है । तब वह  
 जाके अपने से अधिक दुष्ट सात और भूतों को ले आता है और वे भीतर बैठके  
 वहाँ बास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पछिली से खुरी होती है ॥
- २७ वह यह बातें कहता ही था कि भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊँचे शब्द से उस  
 से कहा धन्य वह गर्भ जिस ने तुम्हें धारण किया और वे स्तन जो तू ने पिये ।  
 २८ उस ने कहा हाँ पर वेही धन्य हैं जो ईश्वर का वचन सुनके पालन करते हैं ॥
- २९ जब बहुत लोगों की भीड़ एकट्ठी होने लगी तब वह कहने लगा कि इस  
 समय के लोग दुष्ट हैं . वे चिन्ह ढूँढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उन को नहीं दिया  
 ३० जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का चिन्ह । जैसा यूनस निनियोय लोगों के  
 लिये चिन्ह था वैसा ही मनुष्य का पुत्र इस समय के लोगों के लिये होगा ।  
 ३१ दक्षिण की राखी विचार के दिन में इस समय के मनुष्यों के संग उठके उन्हें  
 दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी के अन्त से  
 ३२ आई और देखो यहाँ एक है जो सुलेमान से भी बड़ा है । निनियो के लोग  
 विचार के दिन में इस समय के लोगों के संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेगी  
 क्योंकि उन्होंने ने यूनस का उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहाँ एक है  
 जो यूनस से भी बड़ा है ॥
- ३३ कोई मनुष्य दीपक को चारके गुप्त में अथवा घर्तन के नीचे नहीं रखता है  
 ३४ परन्तु दीवट पर कि जो भीतर आँवे से उजियाला देखे । शरीर का दीपक  
 आँख है इस लिये जब तेरी आँख निर्मल है तब तेरा सकल शरीर भी उजियाला  
 ३५ है परन्तु जब वह खुरी है तब तेरा शरीर भी अंधियारा है । सो देख लो कि  
 ३६ जो ज्योति तुझ में है सो अंधकार न होवे । यदि तेरा सकल शरीर उजियाला  
 हो और उस का कोई अंश अंधियारा न हो तो जैसा कि जब दीपक अपनी  
 चमक से तुम्हें ज्योति देवे तैसा ही वह सब प्रकाशमान होगा ॥
- ३७ जब यीशु बात करता था तब किसी फरीशी ने उस से विन्ती किई कि मेरे  
 ३८ यहाँ भोजन कीजिये और वह भीतर जाके भोजन पर बैठा । फरीशी ने जब  
 ३९ देखा कि उस ने भोजन के पहिले नहीं धोया तब अचंभा किया । प्रभु ने उस  
 से कहा अब तुम फरीशी लोग कटोरे और शाल को बाहर बाहर शुद्ध करते  
 ४० हो परन्तु तुम्हारा अन्तर अन्धेर और दुष्टता से भरा है । हे निर्बुद्धि लोगो जिस  
 ४१ ने बाहर को बनाया क्या उस ने भीतर को भी नहीं बनाया । परन्तु भीतरवाली  
 ४२ वस्तुओं को दान करो तो देखो तुम्हारे लिये सब कुछ शुद्ध है । परन्तु हाय तुम  
 फरीशियो तुम पोदीने और आरुदे का और सब भाँति के सागपात का दसवें  
 अंश देते हो परन्तु न्याय को और ईश्वर के प्रेम को उल्लंघन करते हो . इन्हें  
 ४३ करना और उन्हें न छोड़ना उचित था । हाय तुम फरीशियो तुम्हें सभा के घरे  
 ४४ में ऊँचे आसन और बाजारों में नमस्कार प्रिय लगते हैं । हाय तुम कपट  
 अध्यापको और फरीशियो तुम उन कब्रों के समान हो जो दिखाई नहीं देते  
 और मनुष्य जो उन के ऊपर से चलते हैं नहीं जानते हैं ॥

तब व्यवस्थापकों में से किसी ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु यह बातें ४५  
 कहने से आप हमें की भी निन्दा करते हैं । उस ने कहा हाय तुम व्यवस्थापकों ४६  
 भी तुम दोस्तों जिन को चढ़ाना कठिन है मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप  
 उन दोस्तों को अपनी एक दंगली में नहीं कूते हो । हाय तुम लोग तुम ४७  
 भविष्यद्वक्ताओं की कवरें बनाते हो जिन्हें तुम्हारे पित्रों ने मार डाला । सो तुम ४८  
 अपने पित्रों के कामों पर साक्षी देते हो और उन में सम्मति देते हो क्योंकि  
 उन्हें ने तो उन्हें मार डाला और तुम उन की कवरें बनाते हो । इस लिये ४९  
 ईश्वर के ज्ञान ने कहा है कि मैं उन्हें के पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को  
 भेजूंगा और वे उन में से कितनों को मार डालेंगे और सतावेंगे । कि दायित्व ५०  
 के लोहू से लगे जिखरियाह के लोहू तक जो घेदी और मन्दिर के बीच में घात  
 किया गया जितने भविष्यद्वक्ताओं का लोहू जगत की उत्पत्ति में चढ़ाया जाता  
 है सब का लेखा इस समय के लोगों से लिया जाय । हां मैं तुम से कहता हूं ५१  
 इस का लेखा इसी समय के लोगों से लिया जायगा । हाय तुम व्यवस्थापकों ५२  
 तुम ने ज्ञान की कुंजी ले लिये है । तुम ने आप ही प्रवेश नहीं किया है और  
 प्रवेश करनेवालों को दर्जा है ॥

जब वह उन्हें में यह बातें कहता था तब अध्यापक और फरीशी लोग ५३  
 निपट घेर करने और बहुत बातों के विषय में उसे कहवाने लगे । और दांय ५४  
 ताकते हुए उस के मुँह से कुछ प्रकटने चाहते थे कि उस पर दोष लगावें ॥

चारहवां पृष्ठ ।

उस समय में खट्खों लोग एकट्ठे हुए वहाँ लों कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे १  
 इस पर यीशु अपने शिष्यों से पहिले कहने लगा कि फरीशियों के समीर से अर्थात्  
 कपट से चौकम रहो । कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ २  
 गुप्त है जो जाना न जायगा । इस लिये जो कुछ तुम ने अधिपारे में कहा है ३  
 सो उजियाले में सुना जायगा और जो तुम ने कोठरियों में कामों में कहा है सो  
 कोठों पर से प्रचार किया जायगा । मैं तुम्हें से जो मेरे मित्र हो कहता हूं कि ४  
 जो शरीर को मार डालते हैं परन्तु उस के पीछे और कुछ नहीं कर सकते हैं उन  
 से मत डरो । मैं तुम्हें बताऊंगा तुम किस से डरो । घात करने के पीछे नरक में ५  
 डालने का जिस को अधिकार है उसी से डरो । हां मैं तुम से कहता हूं उसी से  
 डरो । क्या दो पैसे में पांच शौरियाँ नहीं विकतीं तौभी ईश्वर उन में मे एक को ६  
 भी नहीं भूलता है । परन्तु तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं इस लिये ७  
 मत डरो तुम बहुत शौरियाँ से अधिक माल के हो । मैं तुम से कहता हूं जो ८  
 कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेवे उसे मनुष्य का पुत्र भी ईश्वर के दूतों के  
 आगे मान लेगा । परन्तु जो मनुष्यों के आगे मुझे नकारे सो ईश्वर के दूतों के ९  
 आगे नकारा जायगा । जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में बात कहे वह उस १०  
 के लिये जमा किई जायगी परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करे वह उस के  
 लिये नहीं जमा किई जायगी । जब लोग तुम्हें सभाओं और अध्यापकों और ११  
 अधिकारियों के आगे ले जावें तब किस रीति से अथवा क्या उत्तर देओगे अथवा



१२ क्या कहोगे इस की चिन्ता मत करो । क्योंकि जो कुछ कहना उचित होगा सो पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखावेगा ।

१३ भीड़ में से किसी ने उस से कहा हे गुरु मेरे भाई से कहिये कि पिता का

१४ धन मेरे संग बांट लेवे । उस ने उस से कहा हे मनुष्य किस ने मुझे तुम्हों पर

१५ न्यायी अथवा बांटनेहारा ठहराया । और उस ने लोगों से कहा देखो लोभ से

वचे रहो क्योंकि किसी को धन बहुत होय तौभी उस का जीवन उस के धन से

१६ नहीं है । उस ने उन्हीं से एक दृष्टान्त भी कहा कि किसी धनवान मनुष्य की

१७ भूमि में बहुत कुछ उपजा । तब वह अपने मन में विचार करने लगा कि मैं क्या

१८ करूं क्योंकि मुझ को अपना अन्न रखने का स्थान नहीं है । और उस ने कहा मैं

यही करूंगा मैं अपनी अखारियां तोड़के बड़ी बड़ी बनाऊंगा और वहां अपना

१९ सब अन्न और अपनी सम्पत्ति रखूंगा । और मैं अपने मन से कहूंगा हे मन तेरे

पास बहुत घरों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी हुई है विश्राम कर खा पी सुख से

२० रह । परन्तु ईश्वर ने उस से कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया

२१ जायगा तब जो कुछ तू ने एकट्ठा किया है सो किस का होगा । जो अपने लिये

धन बटोरता है और ईश्वर की ओर धनी नहीं है सो ऐसा ही है ।

२२ फिर उस ने अपने शिष्यों से कहा इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण

के लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे न शरीर के लिये कि क्या पहिरेंगे ।

२३ भोजन से प्राण और वस्त्र से शरीर बड़ा है । कौनों को देख लो . वे न बोते

हैं न लवते हैं उन को न भंडार न खता है तौभी ईश्वर उन को पालता है .

२४ तुम पंक्तियों से कितने बड़े हो । तुम में से कौन मनुष्य चिन्ता करने से अपनी

२५ आयु की दौड़ को एक हाथ भी बड़ा सकता है । सो यदि तुम अति बड़ा काम

२६ भी नहीं कर सकते हो तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो । सोसो

फूलों को देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . वे न परिश्रम करते हैं न कातते हैं परन्तु मैं

तुम से कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे विभव में उन में से एक के तुल्य

२७ विभूषित न था । यदि ईश्वर घास को जो आज खेत में है और कल चूल्हे

में भोंकी जायगी ऐसी विभूषित करता है तो हे अल्पविश्वासियो कितना

२८ अधिक करके वह तुम्हें पहिरावेगा । तुम यह खोज मत करो कि हम क्या खायेंगे

२९ अथवा क्या पीयेंगे और न सन्देह करो । जगत के देवपूजक लोग इन सब

वस्तुओं का खोज करते हैं और तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन वस्तुओं

३० का प्रयोजन है । परन्तु ईश्वर के राज्य का खोज करो तब यह सब वस्तु भी

३१ तुम्हें दीई जायेंगी । हे छोटे भुंड मत डरो क्योंकि तुम्हारे पिता की तुम्हें राज्य

३२ देने में प्रसन्नता है । अपनी सम्पत्ति बेचके दान करो . अजर शैलियां और अक्षय

धन अपने लिये स्वर्ग में एकट्ठा करो जहां चोर नहीं पहुंचता है और न कीड़ा

३३ बिगाड़ता है । क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा ।

३४ तुम्हारी कमरे बंधी और दीपक जलते रहें । और तुम उन मनुष्यों के समान

होओ जो अपने स्वामी की बाट देखते हैं कि वह बिबाह से कब लौटेगा इस

३५ लिये कि जब वह आके द्वार खटखटावे तब वे उस के लिये तुरन्त खोलें । वे

दास धन्य हैं जिन्हें स्वामी आके जागते पावे । मैं तुम से सब कहता हूँ यह कमर बांधके उन्हें भोजन पर बैठेगा और आके उन की सेवा करेगा । जो यह ३८ दूसरे पहर आवे अथवा तीसरे पहर आवे और ऐसा ही पावे तो वे दास धन्य हैं । तुम यह जानते हो कि यदि घर का स्वामी जानता चोर किस घड़ी आवेगा ३९ तो वह जागता रहता और अपने घर में संध पड़ने न देता । इस लिये तुम भी ४० तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी का अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आवेगा । तब पितर ने उस से कहा हे प्रभु क्या आप हमों से अथवा सब ४१ लोगों से भी यह दृष्टान्त कहते हैं । प्रभु ने कहा वह विद्यामयोग्य और बुद्धिमान ४२ भंडारी कौन है जिसे स्वामी अपने परिवार पर प्रधान करेगा कि समय में उन्हें सीधा देवे । वह दास धन्य है जिसे उस का स्वामी आके ऐसा करते पावे । मैं तुम से ४३ सब कहता हूँ वह उसे अपनी सब सम्पत्ति पर प्रधान करेगा । परन्तु जो यह दास ४४ अपने मन में कहे कि मेरा स्वामी आने में विलंब करता है और दासों और दासियों को मारने लगे और खाने पीने और मतवाला होने लगे . तो जिस दिन ४५ वह बाट जोहता न रहे और जिस घड़ी का वह अनुमान न करे उसी में उस दास का स्वामी आवेगा और उस को बड़ी ताड़ना देके अविद्याधियों के संग इस का अंश देगा । वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था परन्तु तैयार न ४७ रहा और उस की इच्छा के समान न किया बहुत सी मार खाया परन्तु जो नहीं जानता था और मार खाने के योग्य काम किया सो छोड़ी सी मार खाया । और जिस किसी को बहुत दिया गया है उस से बहुत मांगा जायगा ४८ और जिस को लोगों ने बहुत सोपा है उस में वे अधिक मांगेंगे ॥

मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हूँ और मैं क्या चाहता हूँ केवल यह कि अभी ४९ सुलग जाती । मुझे एक उपतिममा लेना है और जब लों वह सम्पूर्ण न होय तब ५० लों में कैसे मकते मैं हूँ । क्या तुम समझते हो कि मैं पृथिवी पर मिलाप करवाने ५१ आया हूँ . मैं तुम से कहता हूँ सो नहीं परन्तु फूट । क्योंकि अब से एक घर में ५२ पांच जन अलग अलग छोगे तीन दो के विरुद्ध और दो तीन के विरुद्ध । पिता पुत्र ५३ के विरुद्ध और पुत्र पिता के विरुद्ध मां बेटी के विरुद्ध और बेटी मां के विरुद्ध सास अपनी पति के विरुद्ध और पति अपनी मास के विरुद्ध अलग अलग छोगे ॥

और भी उस ने लोगों से कहा जब तुम मेघ को पश्चिम से उठते देखते हो ५४ तब तुरन्त कहते हो कि झड़ी आती है और ऐसा होता है । और जब दक्षिण की ५५ व्याघ्र चलते देखते हो तब कहते हो कि घाम होगा और यह भी होता है । हे कण्टिया तुम धरती और आकाश का रूप चीन्ट सकते हो परन्तु इस समय ५६ को क्योंकर नहीं चीन्टते हो । और जो उचित है उस को तुम आप ही से क्यों ५७ नहीं विचार करते हो । जब तू अपने मुट्ठ के संग अध्यक्ष के पास जाता है ५८ मार्ग ही में उस से झूटने का यत्न कर ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायी के पास खींच ले जाय और न्यायी तुझे प्यादे को मांगे और प्यादा तुझे दन्तीगृह में डाले । मैं ५९ तुम्हें से कहता हूँ कि जब लों तू कौड़ी कौड़ी भर न देवे तब लों वहां से झूटने न पावेगा ॥

तेरहवां पत्र ।

- १ उस समय मैं कितने लोग आ पहुँचे और उन गालीलियों के विषय में जिन का लोहू पिलात ने उन के बलिदानों के संग मिलाया था यीशु से बात करने लगे ।
- २ उस ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम समझते हो कि ये गालीली लोग सब गालीलियों
- ३ से अधिक पापी थे कि उन्हें पर ऐसी विपत्ति पड़ी । मैं तुम से कहता हूँ सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीति से नष्ट होगे ।
- ४ अथवा क्या तुम समझते हो कि ये अठारह जन जिन्हें पर शीलोह में गुम्मत गिर पड़ा और उन्हें नाश किया सब मनुष्यों से जो यिरूशलीम में रहते थे अधिक
- ५ अपराधी थे । मैं तुम से कहता हूँ सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीति से नष्ट होगे ।
- ६ उस ने यह दृष्टान्त भी कहा कि किसी मनुष्य की टाख की वारी में एक गूलर
- ७ का वृक्ष लगाया गया था और उस ने आके उस में फल ढूँढ़ा पर न पाया । तब उस ने माली से कहा देख मैं तीन बरस से आके इस गूलर के वृक्ष में फल ढूँढ़ता हूँ पर नहीं पाता हूँ . उसे काट डाल यह भूमि को क्यों निरुन्मी करता है ।
- ८ माली ने उस को उत्तर दिया कि हे स्वामी उस को इस बरस भी रहने दीजिये
- ९ जब लों मैं उस का थाला खोदके खाद भरे । तब जो उस में फल लगे तो भला , नहीं तो पीछे उसे कटवा डालिये ॥
- १० विश्राम के दिन यीशु एक सभा के घर में उपदेश करता था । और देखो एक
- ११ स्त्री थी जिसे अठारह बरस से एक दुर्बल करनेवाला भूत लगा था और वह कुबड़ी
- १२ थी और किसी रीति से अपने को सीधी न कर सकती थी । यीशु ने उसे देखके अपने पास बुलाया और उस से कहा हे नारी तू अपनी दुर्बलता से ढुढ़ाई गई है ।
- १३ तब उस ने उस पर हाथ रखा और वह तुरन्त सीधी हुई और ईश्वर की स्तुति
- १४ करने लगी । परन्तु यीशु ने विश्राम के दिन में चंगा किया इस से सभा का अध्यक्ष
- १५ रिसियाने लगा और उत्तर दे लोगों से कहा छः दिन हैं जिन में काम करना उचित है सो उन दिनों में आके चंगे किये जाओ और विश्राम के दिन में नहीं । प्रभु ने
- १६ उस को उत्तर दिया कि हे कपटी क्या विश्राम के दिन तुम्हों में से हर एक अपने
- १७ बैल अथवा गधे को घान से खोलके जल पिलाने को नहीं ले जाता । और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो इब्राहीम की पुत्री है जिसे शैतान ने देखो अठारह
- १८ बरस से बांध रखा था विश्राम के दिन में इस बांधन से खोली जाय । जब उस ने यह बातें कहीं तब उस के सब विरोधी लज्जित हुए और समस्त लोग सब प्रताप
- १९ के कर्मों के लिये जो वह करता था आनन्दित हुए ॥
- २० फिर उस ने कहा ईश्वर का राज्य किस के समान है और मैं उस की उपमा
- २१ किस से देजंगा । वह राई के एक दाने की नाई है जिसे किसी मनुष्य ने लेके अपनी वारी में बोया और वह बढ़ा और बढ़ा पेड़ हो गया और आकाश के
- २२ पंक्षियों ने उस की डालियों पर बसेरा किया । उस ने फिर कहा मैं ईश्वर के
- २३ राज्य की उपमा किस से देजंगा । वह खमीर की नाई है जिस को किसी स्त्री ने लेके तीन पसेरी आटे में छिपा रखा यहां लों कि सब खमीर हो गया ॥

यह उपदेश करता हुआ नगर नगर और गाँव गाँव छोड़े यिश्शलीम की २०  
 और जाता था । तब किसी ने उस से कहा है प्रभु क्या बाग पानेहारे छोड़े हैं । २३  
 उस ने उन्हें से कहा सकेत फाटक से प्रवेश करने को साहस करो क्योंकि मैं तुम २४  
 से कहता हूँ कि बहुत लोग प्रवेश करने चाहेंगे और नहीं सकेंगे । अब घर का २५  
 स्त्रामी उठके द्वार मूंद चुकेगा और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाने लगोगे  
 और कहोगे हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये और यह तुम्हें उत्तर देगा मैं तुम्हें  
 नहीं जानता हूँ तुम कहाँ के हो , तब तुम कहने लगोगे कि हम लोग आप के २६  
 सामने खाने और पीने के और आप ने हमारी सड़कों में उपदेश किया । परन्तु यह २७  
 कहेगा मैं तुम से कहता हूँ मैं तुम्हें नहीं जानता हूँ तुम कहाँ के हो , हे कुसुम  
 करनेहारो तुम सब सुक से दूर होओ । वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा कि उस २८  
 समय तुम इज्राहीम और इसराक और याकूब और मय भविष्यद्वक्ताओं को  
 ईश्वर के राज्य में बैठे हुए और अपने को बाहर निकाले हुए देखोगे । और २९  
 लोग पूर्व और पश्चिम और उत्तर और दक्षिण से आके ईश्वर के राज्य में  
 बैठेंगे । और देखो कितने पिछले हैं जो आगे होंगे और कितने आगे हैं जो ३०  
 पिछले होंगे ॥

उसी दिन कितने फरीशियों ने आके उस से कहा यहाँ से निकलके चला जा ३१  
 क्योंकि हेरोद तुम्हें मार डालने चाहता है । उस ने उन से कहा जाके उस ३२  
 लोमड़ी से कहा कि देखो मैं आज और कल भूतों को निकालता और रोमियों  
 को चंगा करता हूँ और तीसरे दिन मिट्टी दोगा । तभी आज और कल और ३३  
 परसें फिरना मुझे अवश्य है क्योंकि जो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता  
 यिश्शलीम के बाहर नाश किया जाय । हे यिश्शलीम यिश्शलीम जो भविष्य- ३४  
 द्वक्ताओं को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरबाद  
 करती है जैसे सुर्ग अपने चबूतों को पंखों के नीचे गकट्टे करती है वैसे ही मैं  
 ने कितनी बार तेरे बालकों को गकट्टे करने की इच्छा किई परन्तु तुम ने न  
 चाहा । देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये बजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुम से ३५  
 सब कहता हूँ जिस समय मैं तुम कहोगे धन्य यह जो परमेश्वर के नाम से  
 आता है वह समय जब तों न आवे तब तों तुम मुझे फिर न देखोगे ॥

चादहवां पृष्ठ ।

जब यीशु विश्राम के दिन प्रधान फरीशियों में से किसी के घर में रोटी खाने १  
 को गया तब वे उस को ताकते थे । और देखो एक मनुष्य उस के सामने था २  
 जिसे जलंधर रोग था । इस पर यीशु ने वषधम्यापकों और फरीशियों से कहा ३  
 क्या विश्राम के दिन में चंगा करना उचित है , परन्तु वे चुप रहे । तब उस ने ४  
 उस मनुष्य को लेकर चंगा करके बिदा किया , और उन्हें उत्तर दिया कि तुम में ५  
 से किस का मदहा अथवा बैल कूर में गिरेगा और यह तुरन्त विश्राम के दिन में  
 उसे न निकालेगा । वे उस को इन बातों का उत्तर नहीं दे सके ॥ ६

जब उस ने देखा कि नेत्रतहरी लोग कोंकर ऊँचे ऊँचे स्थान चुन लेते हैं तब ७  
 एक दृष्टान्त दे उन्हें से कहा , जब कोई तुम्हें बियाह के भोज में बुलावे तब ८

जंचे स्थान में मत बैठ ऐसा न हो कि उस ने तुम्ह से अधिक आदर के योग्य किसी को बुलाया हो । और जिस ने तुम्हें और उसे नेवता दिया सो आगे तुम्ह से कहे कि इस मनुष्य को स्थान दीजिये और तब तू लज्जित हो सब से नीचा स्थान लेने लगे । परन्तु जब तू बुलाया जाय तब सब से नीचे स्थान में जाके बैठ इस लिये कि जब वह जिस ने तुम्हें नेवता दिया है आवे तब तुम्ह से कहे हें मित्र और ऊपर आइये । तब तेरे संग बैठनेहारों के साम्ने तेरा आदर होगा । क्योंकि जो कोई अपने को जंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपने को नीचा करे सो जंचा किया जायगा ॥

तब जिस ने उसे नेवता दिया था उस ने उस से भी कहा जब तू दिन का अथवा रात का भोजन बनावे तब अपने मित्रों वा अपने भाइयों वा अपने कुटुंबों वा धनवान पड़ोसियों को मत बुला ऐसा न हो कि वे भी इस के बदले तुम्हें नेवता दें और यही तेरा प्रतिफल होय । परन्तु जब तू भोज करे तब कंगालों टुंडों लंगड़ों और अन्धों को बुला । और तू धन्य होगा क्योंकि वे तुम्हें प्रतिफल नहीं दे सकते हैं परन्तु धर्मियों के जो उठने पर प्रतिफल तुम्हें को दिया जायगा ॥

उस के संग बैठनेहारों में से एक ने यह बातें सुनके उस से कहा धन्य वह जो ईश्वर के राज्य में रोटी खायगा । उस ने उस से कहा किसी मनुष्य ने बड़ी बियारी बनाई और बहुतों को बुलाया । बियारी के समय में उस ने अपने दास के हाथ नेवतहरियों को कहला भेजा कि आओ सब कुछ अब तैयार है । परन्तु वे सब एक मत होके क्षमा मांगने लगे । पहिले ने उस दास से कहा मैं ने कुछ भूमि मोल लिई है और उसे जाके देखना मुझे अवश्य है मैं तुम्ह से बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा । दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें परखने को जाता हूं मैं तुम्ह से बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा । तीसरे ने कहा मैं ने विवाह किया है इस लिये मैं नहीं आ सकता हूं । उस दास ने आगे अपने स्वामी को यह बातें सुनाईं तब घर के स्वामी ने क्रोध कर अपने दास से कहा नगर की सड़कों और गलियों में शीघ्र जाके कंगालों और टुंडों और लंगड़ों और अन्धों को यहां ले आ । दास ने फिर कहा हे स्वामी जैसे आप ने आज्ञा दी है तैसे किया गया है और अब भी जगह है । स्वामी ने दास से कहा राजपथों में और गाछों के नीचे जाके लोगों को बिन लाने से मत छोड़ कि मेरा घर भर जावे । क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि उन नेवते हुए मनुष्यों में से कोई मेरी बियारी न चीखेगा ॥

बड़ी भीड़ योशु के संग जाती थी और उस ने पीछे फिरके उन्हें से कहा । यदि कोई मेरे पास आवे और अपनी माता और पिता और स्त्री और लड़कों और भाइयों और बहिनों को हां और अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है । और जो कोई अपना क्रूश उठाये हुए मेरे पीछे न आवे वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है । तुम में से कौन है कि गढ़ बनाने चाहता हो और पहिले बैठके खर्च न जोड़े कि समाप्ति करने की बिसात मुझे है कि नहीं । ऐसा न हो कि जब वह नेव डालके समाप्ति न कर सके तब

सब देखनेहारे उसे ठट्टे में उढ़ाने लगे । और कई यह मनुष्य बोलने लगे परन्तु ३०  
समाप्ति नहीं कर सका । अथवा कौन राजा है कि दूसरे राजा से लड़ाई करने ३१  
को जाता हो और पहिले बैठके विचार न करे कि जो जोय सङ्घ लेके मेरे  
विरुद्ध जाता है मैं इस सङ्घ लेके उस की सम्पत्ति कर सकता हूँ कि नहीं ।  
और जो नहीं तो उस के दूर रहते ही वह दूतों को भेजके मिलाने आहता ३२  
है । इसी रीति से तुम्हों में से जो कोई अपना सर्वस्व त्यागन न करे वह मेरा ३३  
शिष्य नहीं हो सकता है । लोग अच्छा है परन्तु यदि लोग का स्वाद दिगड़ ३४  
आय तो वह किस से स्वादित किया जायगा । वह न भूमि की न खाद के लिये ३५  
काम आता है , लोग उसे बाहर फेंकते हैं , जिस की सुनने के काम ही सो सुने ।

पन्द्रहवां पट्य ।

कैर उगाहनेहारे और पापी लोग सब योगु पास आते थे कि उस की सुने । १  
और करीबी और अध्यापक कुड़कुड़ाके कहने लगे यह तो पापियों को ग्रहण २  
करता और उन के संग खाता है । तब उस ने उन्हीं से यह दृष्टान्त कहा , तुम ३  
में से कौन मनुष्य है कि उस की सौ भेड़ हो और उस ने उन में से एक को  
खोया हो और वह निजानवे की जंगल में न छोड़े और जब लो उस खोई हुई ४  
को न पावे तब लो उस के खोज में न जाय । और वह उसे पाके आनन्द से ५  
अपने कांधों पर रखता है , और घर में आके मित्रों औ पड़ोसियों को एकट्ठी ६  
बुलाके उन्हीं से कहता है मेरे संग आनन्द करो कि मैं ने अपनी खोई हुई भेड़ ७  
पाई है । मैं तुम से कहता हूँ कि इसी रीति से जिन्हें पश्चात्ताप करने का प्रया- ८  
सन न होय ऐसे निजानवे धर्मियों से अधिक एक पापी के लिये जो पश्चात्ताप  
करे स्वर्ग में आनन्द होगा ॥

अथवा कौन स्त्री है कि उस की दस सूक्री हो और वह जो एक सूक्री खोई ९  
तो दीपक चारके औ घर बुझाके उसे जब लो न पावे तब लो यव रो न हूँडे ।  
और वह उसे पाके सखियों औ पड़ोसियों को एकट्ठी बुलाके कहती है मेरे संग १०  
आनन्द करो कि मैं ने जो सूक्री खोई थी सो पाई है । मैं तुम से कहती हूँ कि ११  
इसी रीति से एक पापी के लिये जो पश्चात्ताप करता है स्वर्ग के दूतों में १२  
आनन्द होता है ॥

फिर उस ने कहा किसी मनुष्य के दो पुत्र थे । उन में से कुटुम्ब न पिता से १३  
कहा दे पिता सम्पत्ति में से जो मेरा अंश होय सो मुझे दीजिये , तब उस ने उन १४  
को अपनी सम्पत्ति बांट दिई । बहुत दिन नहीं बीते कि कुटुम्ब पुत्र सब कुछ १५  
एकट्ठा करके दूर देश चला गया और वहां लुचपन में दिन बिताते हुए अपनी १६  
सम्पत्ति उड़ा दिई । जब वह सब कुछ उठा चुका तब उस देश में बड़ा अकाल १७  
पड़ा और वह कंगाल हो गया । और वह जाके उस देश के निवासियों में से १८  
एक के यहां रहने लगा जिस ने उसे अपने ग्हेतों में सूअर चराने का भेजा । और १९  
वह उन क्रीमियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरने चाहता था और  
कोई नहीं उस को कुछ देता था । तब उसे चेत हुआ और उस ने कहा मेरे २०  
पिता के कितने मजूरों का भोजन से अधिक रोटी होता है और मैं भूख से



१८ मरता हूँ । मैं उठके अपने पिता पास जाऊंगा और उस से कहूंगा हे पिता मैं  
 १९ ने स्वर्ग के विरुद्ध और आप के सामे पाप किया है । मैं फिर आप का पुत्र  
 २० कहावने के योग्य नहीं हूँ मुझे अपने सज़ुरों में से एक के समान कीजिये । तब  
 वह उठके अपने पिता पास चला पर वह दूर ही था कि उस के पिता ने उसे  
 २१ देखके दया किई और दौड़के उस के गले में लिपटके उसे चूमा । पुत्र ने उस से  
 कहा हे पिता मैं ने स्वर्ग के विरुद्ध और आप के सामे पाप किया है और फिर  
 २२ आप का पुत्र कहावने के योग्य नहीं हूँ । परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा  
 सब से उत्तम खस्त निकालके उसे पहिनाओ और उस के हाथ में श्रंगूठी और  
 २३ पांवी में जूते पहिनाओ । और मोटा बकडू लाके मारो और हम खावें और  
 २४ आनन्द करें । क्योंकि यह मेरा पुत्र मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर  
 २५ मिला है । तब वे आनन्द करने लगे । उस का जेठा पुत्र खेत में था और जब वह  
 २६ आते हुए घर के निकट पहुंचा तब वाला और नाच का शब्द सुना । और उस  
 २७ ने अपने सेवकों में से एक को अपने पास बुलाके पूछा यह क्या है । उस ने उस  
 से कहा आप का भाई आया है और आप के पिता ने मोटा बकडू मारा है इस  
 २८ लिये कि उसे भला चंगा पाया है । परन्तु उस ने क्रोध किया और भीतर जाने न  
 २९ चाहा इस लिये उस का पिता बाहर आ उसे मनाने लगा । उस ने पिता को  
 उत्तर दिया कि देखिये मैं इतने घरों से आप की सेवा करता हूँ और कभी आप  
 की आज्ञा को उल्लंघन न किया और आप ने मुझे कभी एक सेरा भी न दिया  
 ३० कि मैं अपने मित्रों के संग आनन्द करता । परन्तु आप का यह पुत्र जो वेश्याओं  
 के संग आप की सम्पत्ति खा गया है ज्योंही आया त्योंही आप ने उस के लिये  
 ३१ मोटा बकडू मारा है । पिता ने उस से कहा हे पुत्र तू सदा मेरे संग है और जो  
 ३२ कुछ मेरा है सो सब तेरा है । परन्तु आनन्द करना और हर्षित होना उचित था  
 क्योंकि यह तेरा भाई मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है ॥

सोलहवां पर्व ।

१ यीशु ने अपने शिष्यों से भी कहा कोई धनवान मनुष्य था जिस का एक  
 भंडारी था और यह दीप उस के आगे भंडारी पर लगाया गया कि वह आप की  
 २ सम्पत्ति उड़ा देता है । उस ने उसे बुलाके उस से कहा यह क्या है जो मैं तेरे  
 विषय में सुनता हूँ . अपने भंडारपन का सेखा दे क्योंकि तू आगे को भंडारी  
 ३ नहीं रह सकेगा । तब भंडारी ने अपने मन में कहा मैं क्या करूं कि मेरा स्वामी  
 भंडारी का काम मुझ से कीन लेता है । मैं कोड़ नहीं सकता हूँ और भीख  
 ४ मांगने से मुझे लाज आती है । मैं जानता हूँ मैं क्या करूंगा इस लिये कि जब  
 ५ मैं भंडारपन से कुड़ाया जाऊं तब लोग मुझे अपने घरों में ग्रहण करें । और उस  
 ने अपने स्वामी के शिष्यों में से एक एक को अपने पास बुलाके पहिले से कहा  
 ६ तू मेरे स्वामी का कितना धारता है । उस ने कहा सौ मन तेल . वह उस से  
 ७ बोला अपना पत्र ले और बैठके शीघ्र पचास मन लिख । फिर दूसरे से कहा तू  
 कितना धारता है . उस ने कहा सौ मन गेहूं . वह उस से बोला अपना पत्र  
 ८ ले और अस्सी मन लिख । स्वामी ने उस अधर्मी भंडारी को सराहा कि इस ने

जिस का नाम ज्वलन है वह ज्वलित सूर्यशक्तिमान है । ऐसा न होवे कि तू उस-१५  
देश के वासियों से कुछ यात्रा बांधे और वे अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें  
और अपने देवों के लिये बलिदान करें और तुझे बुलावे और तू उस के बलिदान  
से खा लेवे । और तू उन की बेटियां अपने बेटों के लिये लावे और उन की १६  
बेटियां अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें और तेरे बेटों को भी अपने देवों के  
पीछे व्यभिचार करावे । तू अपने लिये ठाने हुए देव मत बनाइया ॥ १७

अश्वसीरी रोटी के पर्व का पालन कीजियो सात दिन लों जैसा मैं ने तुम्हें १८  
आज्ञा किई है आचीव के मास के समय में ठहराके अश्वसीरी रोटी खाइया -  
क्योंकि तू आचीव के मास में मिस में बाहर आया । मय जो गर्भ को खोलते हैं १९  
और तेरे पशुन के समस्त पहिलौठे नर ब्रैल अथवा भेड़ के हो मेरे हैं । परन्तु २०  
गदहे के पहिलौठे को मेम्मा देके कुड़ाइया और यदि न कुड़ावे तो उस का गला  
तोड़ डालियो अपने पुत्रों के समस्त पहिलौठों को कुड़ाइया और मेरे आगे कोई  
छूटे हाथ न आवे ॥

छः दिन लों कार्य करना परन्तु सातवें दिन विश्राम करना चल जातने और २१  
लवने का समय हो विश्राम करना ॥

और अठवारों का पर्व गोहृ के पहिले फल लवने के समय और संवत् के अंत २२  
में एकट्ठा करने का पर्व करना ॥

तुम्हारे समस्त पुत्र घर में तीन बार प्रभु परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के २३  
आगे आवें । इस लिये कि मैं जातिगणों को तेरे आगे से बाहर निकालूंगा और २४  
तेरे सिवाने को बढ़ाऊंगा और जब कि तू घर में तीन बार अपने परमेश्वर ईश्वर  
के आगे जायगा तब कोई तेरे देश को बांछा न करेगा ॥

तू मेरी यज्ञवेदी पर लोहू खमीर के साथ बलिदान मत चढ़ाना और फसल २५  
के पर्व का बलिदान कधी बिटान लों रहने न पावे । तू अपनी भूमि की पहिले २६  
फलों का पहिला अपने परमेश्वर ईश्वर के घर में लाना मेम्मा को उस की माता  
के दूध में मत सिक्काना ॥

और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू ये बातें लिख क्योंकि इन बातों के २७  
समान मैं ने तुम्हें से और इसराएल से यात्रा बांधी है । और मूसा चालीस दिन २८  
रात वहां परमेश्वर के पास था उस ने न रोटी खाई और न पानी पीया और  
उस ने उस नियम की बातें वे दस आज्ञा पटियों पर लिखीं ॥

और ऐसा हुआ कि जब मूसा सीना पहाड़ से उतरा और जब वह पहाड़ से २९  
उतरा तब साजों की दोनों पटियां मूसा के हाथ में थीं तो मूसा न जानता था  
कि जब वह उस के साथ बातें करता था तब उस के मुंह का चमड़ा चमकता  
था । और जब हादन और इसराएल के समस्त संतानों ने मूसा को देखा तो ३०  
देखो कि उस के मुंह का चमड़ा चमकता था और वे उस के पास आने से डरते  
थे । तब मूसा ने उन्हें बुलाया और हादन और मंडली के समस्त प्रधान उस ३१  
पास फिर आये और मूसा ने उन से बातें किई । और अंत को इसराएल के ३२  
समस्त संतान पास आये और उस ने उन सब बातों की जो परमेश्वर ने उसे

२९ में आये । इद्राहीम ने उस से कहा मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक उन के  
३० पास हैं वे उत की सुनें । यह बोला हे पिता इद्राहीम से नहीं परन्तु यदि  
३१ मृतकों में से कोई उत के पास जाय तो वे पश्चात्ताप करेंगे । उस ने उस से  
कहा जो वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते हैं तो यदि मृतकों में से  
कोई जी उठे तोभी नहीं मानेंगे ॥

सत्रहवां पर्व ।

१ यीशु ने शिष्यों से कहा ठोकरों का न लगाना अन्धेना है परन्तु हाथ यह  
२ मनुष्य जिस के द्वारा से वे लगती हैं । इन छोटों में से एक को ठोकर खिलावे  
३ से उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में बांधा जाता और  
४ यह समुद्र में डाला जाता ॥

५ अपने विषय में सचेत रहो , यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो उस को  
६ समझा दे और यदि पकतावे तो उसे क्षमा कर । जो वह दिन भर में सात बेर  
७ तेरा अपराध करे और सात बेर दिन भर में तेरी ओर फिरके कहे में पकताता  
८ हूँ तो उसे क्षमा कर । तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा हमारा विश्वास बढ़ाइये । प्रभु  
९ ने कहा यदि तुम को राई के एक दाने के तुल्य विश्वास होता तो तुम इस  
१० गूलर के वृक्ष से जो फलते कि उखड़ जा और समुद्र में लग जा वह तुम्हारी  
११ आज्ञा मानता ॥

१२ तुम में से कौन है कि उस का दास दल जीतता अथवा चरवाही करता हो  
१३ और ज्यों ही वह खेत से आवे त्यों ही उस से कहेगा तुरन्त आ भोजन पर  
१४ बैठ । क्या वह उस से न कहेगा मेरी बियारी बनाके जब लों में खाक और  
१५ पीक तब लों कमर बांधके मेरी सेवा कर और इस के पीछे तू खायगा और  
१६ पीयेगा । क्या उस दास का उस पर कुछ जिहोरा हुआ कि उस ने वह काम  
१७ किया जिस की आज्ञा उस को दिई गई , मैं ऐसा नहीं समझता हूँ । इस रीति  
१८ से तुम भी जब सब काम कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दिई गई है तब कहो  
१९ हम निकम्मे दास हैं कि जो इसे करना उचित था सोई भर किया है ॥

२० यीशु पिद्दशलीम को जाते हुए शोमिरोन और गालील के बीच में से होके  
२१ जाता था । जब वह किसी गांव में प्रवेश करता था तब दस कोढ़ी उस के  
२२ सन्मुख आ दूर खड़े हुए । और वे ऊँचे शब्द से बोले हे यीशु गुन हम पर  
२३ दया कीजिये । यह देखके उस ने उन्हीं से कहा जाके अपने तई पाजकों को  
२४ दिखाओ । जाते हुए वे शुद्ध किये गये । तब उन में से एक ने जब देखा कि मैं  
२५ चंगा हुआ हूँ बड़े शब्द से ईश्वर की स्तुति करता हुआ फिर आया , और यीशु  
२६ का धन्य मानते हुए उस के चरणों पर मुँह के बल गिरा , और वह शोमिरोनी  
२७ था । इस पर यीशु ने कहा क्या दसों शुद्ध न किये गये तो नौ कहां हैं । क्या इस  
२८ अन्त्यवेशी को छोड़ कोई नहीं ठहरे जो ईश्वर की स्तुति करने को फिर आवे । तब  
२९ उस ने उस से कहा उठ चला जा तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है ॥

३० अब फरीशियों ने उस से पूछा कि ईश्वर का राज्य कब आवेगा तब उस ने  
३१ उन्हीं को उत्तर दिया कि ईश्वर का राज्य प्रत्यक्ष रूप से नहीं आता है , और

बुद्धि का काम किया है . क्योंकि हम संसार के सन्तान अपने समय के लोगों के विषय में ज्योति के सन्तानों से अधिक बुद्धिमान हैं । और मैं तुम्हें से कहता हूँ कि अधर्म के धन के द्वारा अपने लिये भित्र कर लो कि जब तुम छूट जाओ तब वे तुम्हें अनन्त निशामों में गूँथ कर दें ॥

जो अति थोड़े में विश्वासयोग्य है सो बहुत में भी विश्वासयोग्य है और जो १० अति थोड़े में अधर्मी है सो बहुत में भी अधर्मी है । हम लिये जो तुम अधर्मी ११ के धन में विश्वासयोग्य न हुए हो तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा । और जो १२ तुम पराये धन में विश्वासयोग्य न हुए हो तो तुम्हारा धन तुम्हें कौन देगा । कोई सेवक दो स्त्रियों की सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एक में दैर १३ करेगा और दूसरे को प्यार करेगा अथवा एक से लगा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा . तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हो ॥

फरीशियों ने भी जो सो भी ये यह मद्य बातें सुनीं और उन का ठूँटा किया । १४ उन ने उन्हीं से कहा तुम तो मनुष्यों के आगे अपने को धर्मी ठहराते हो परन्तु १५ ईश्वर तुम्हारे मन को जानता है . जो मनुष्यों के लिये महान है सो ईश्वर के आगे धिनिता है । व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग योहन लो ये तब से ईश्वर के राज्य १६ का सुसमाचार सुनाया जाता है और सब कोई उस में दरियाई में प्रवेश करते हैं । व्यवस्था के एक बिन्दु के लोप होने से आकाश आ पृथिवी का टल जाना १७ सच है । जो कोई अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से विवाह करे सो परस्त्री- १८ गमन करता है और जो स्त्री अपने स्वामी से त्यागी गई है उस से जो कोई विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है ॥

एक धनवान मनुष्य था जो वैजनी वस्त्र और मलमल पहिनाता और प्रतिदिन १९ विभय और सुख से रहता था । और इलियाजर नाम एक कंगाल उस की २० डेवली पर डाला गया था जो घावों से भरा हुआ था . और उन चूरचुरों से २१ जो धनवान की सेवा से गिरते थे पेट भरने चाहता था और कुत्ते भी आके उस के घावों को चाटते थे । वह कंगाल मर गया और वृत्तों ने उस की इब्राहीम २२ की गोद में पहुँचाया और वह धनवान भी मरा और गाढ़ा गया । और २३ परलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं और दूर से इब्राहीम को और उस की गोद में इलियाजर को देखा । तब वह पुकारके बोला है २४ पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके इलियाजर को भेजिये कि अपनी चंगली का छोर पानी में डुबोकें मेरी जीभ को ठंडी करे क्योंकि मैं इस ज्वालामुखी में कलपता हूँ । परन्तु इब्राहीम ने कहा है पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीते जी अपनी २५ सम्पत्ति पा चुका है और वैसा ही इलियाजर विपत्ति परन्तु अब वह शान्ति पाता है और तू कलपता है । और भी हमारे और तुम्हारे बीच में बड़ा अन्तर २६ ठहराया गया है कि जो लोग इधर से उस पार तुम्हारे पास जाया चाहें सो नहीं जा सकें और न उधर के लोग इस पार हमारे पास आवें । उस ने कहा २७ तब हे पिता मैं आप से विन्ती करता हूँ उसे मेरे पिता के घर भेजिये . क्योंकि २८ मेरे प्राण भाई हैं वह उन्हें साक्षी देखे ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा के स्वाम

- ११ को गये एक फरीशी और दूसरा कर उगाहनेहारे । फरीशी ने अलग खड़ा हो यह प्रार्थना की कि हे ईश्वर मैं तेरा धन्य मानता हूँ कि मैं और मनुष्यों के समान नहीं हूँ जो उपद्रवी अन्यायी और परस्त्रीगामी हैं और न इस कर उगाहनेहारे
- १२ के समान । मैं अठवारे में दो बार उपवास करता हूँ मैं अपनी सब कमाई का
- १३ दसवाँ अंश देता हूँ । कर उगाहनेहारे ने दूर खड़ा हो स्वर्ग की ओर आँखें उठाने भी न चाहा परन्तु अपनी क्रांती पीटके कहा हे ईश्वर मुझे पापी पर
- १४ दया कर । मैं तुम से कहता हूँ कि यह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धर्मी ठहराया हुआ अपने घर को गया क्योंकि जो कोई अपने को ऊँचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपने को नीचा करे सो ऊँचा किया जायगा ॥
- १५ लोग कितने बालकों को भी यीशु पास लाये कि यह उन्हें छूवे परन्तु शिष्यों
- १६ ने यह देखके उन्हें डांटा । यीशु ने बालकों को अपने पास बुलाके कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसे का है ।
- १७ मैं तुम से सब कहता हूँ कि जो कोई ईश्वर के राज्य को बालक की भाँति ग्रहण न करे वह उस में प्रवेश करने न पावेगा ॥
- १८ किसी प्रधान ने उस से पूछा हे उत्तम गुरु कौन काम करने से मैं अनन्त
- १९ जीवन का अधिकारी होंगा । यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है ।
- २० कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात् ईश्वर । तू आज्ञाओं को जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरोहंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे अपनी
- २१ माता और अपने पिता का आदर कर । उस ने कहा इन सभी का मैं ने अपने
- २२ लड़कपन से पालन किया है । यीशु ने यह सुनके उस से कहा तुझे अब भी एक बात की घंटी है । जो कुछ तेरा है सो बेचके कंगालों को बाँट दे और तू स्वर्ग में
- २३ धन पावेगा और आ मेरे पीछे हो ले । यह यह सुनके अति उदास हुआ क्योंकि वह बड़ा धनी था ॥
- २४ यीशु ने उसे अति उदास देखके कहा धनवानों को ईश्वर के राज्य में प्रवेश
- २५ करना कैसा कठिन होगा । ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का
- २६ सूई के नाके में से जाना सहज है । सुननेहारों ने कहा तब तो किस का श्राव्य हो सकता है । उस ने कहा जो बातें मनुष्यों से अन्धानी हैं सो ईश्वर से हो सकती हैं ॥
- २८ पितर ने कहा देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के पीछे हो लिये हैं ।
- २९ उस ने उन से कहा मैं तुम से सब कहता हूँ कि जिस ने ईश्वर के राज्य को लिये घर वा माता पिता वा भाइयों वा स्त्री वा लड़कों को त्यागा हो, ऐसा कोई नहीं है जो इस समय में बहुत गुण अधिक और परलोक में अनन्त जीवन न पावेगा ॥
- ३१ यीशु ने बारह शिष्यों को लेके उन से कहा देखो हम यिरूशलीम को जाते हैं और जो कुछ मनुष्य के पुत्र के विषय में भविष्यद्वक्ताओं से लिखा गया है सो
- ३२ सब पूरा किया जायगा । वह अन्यदेशियों के हाथों सोपा जायगा और उस से
- ३३ ठट्ठा और अपमान किया जायगा और वे उस पर शूकेंगे और उसे छोड़े मारके

न लोग कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो यहां है क्योंकि देखो ईश्वर का राज्य  
तुम्हें में है ॥

उस ने शिष्यों से कहा छ दिन आरंभों जिन में तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से २२  
एक दिन देखने चाहोगे पर न देखोगे । लोग तुम्हें से कहेंगे देखो यहां है अथवा २३  
देखो यहां है पर तुम मत जाओ और न उन के पीछे हो लेओ । क्योंकि जैसे २४  
विजली जो आकाश की एक ओर से बसकती है आकाश की दूसरी ओर तक उपोति  
देती है वैसेही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में होगा । परन्तु पहिले उस को २५  
अथवा है कि बहुत दुःख उठाये और इस समय के लोगों से कुछ किया जाय ।  
जैसा नूत के दिनों में हुआ वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा । जिस २६  
दिन नौ नूत लड़ाई पर न खड़ा उस दिन नौ लोग खाते पीते विद्याज करते  
और विद्याज दिये जाते थे , तब उन दिन जलप्रलय ने आके उन सभी को नाश  
किया । और जिस रीति से नूत के दिनों में हुआ कि लोग खाते पीते सोल लेते २७  
खेतते बीते और घर बनाते थे , परन्तु जिस दिन नूत मंदोम ने निकलना उस दिन २८  
आग और गन्धक आकाश में बरसी और उन सभी को नाश किया , उसी रीति २९  
से मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन में होगा । उस दिन में जो कोठे पर हो ३०  
और उस को सामग्री घर में होय सो उसे लेने को न इतरे और वैसे ही जो गेन  
में हो सो पीछे न फिरे । नूत की स्त्री को स्मरण करो । जो कोई अथवा प्राय ३१  
बचाने चाहे सो उसे खीयेगा और जो कोई उसे खीये सो उन की रक्षा करेगा ।  
मैं तुम से कहता हूं उस रात में दो मनुष्य एक खाट पर होंगे एक लिया जायगा ३२  
और दूसरा छोड़ा जायगा । दो स्त्रियां एक संग चक्की पीसती रहेंगी एक लिए ३३  
जायगी और दूसरी छोड़ी जायगी । दो जन गेन में होंगे एक लिया जायगा और ३४  
दूसरा छोड़ा जायगा । उन्होंने ने उस को उत्तर दिया हे प्रभु कहाँ , उस ने उन से ३५  
कहा जहां साथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे ॥

अठारहवां पद्य ।

नित्य प्रार्थना करने और साधन न छोड़ने की आवश्यकता के विषय में यीशु १  
ने उन्हें से एक दृष्टान्त कहा , कि किसी नगर में एक विचारकर्ता था जो न ईश्वर २  
से डरता न मनुष्य को मानता था । और उसी नगर में एक विधवा थी जिस ने ३  
उस पास आ कहा मेरे सुदुर्घ मे मेरा पलटा लीजिये । उस ने कितनी घेर लों न ४  
माना परन्तु पीछे अपने मन में कहा यद्यपि मैं न ईश्वर से डरता न मनुष्य को ५  
मानता हूं , तौभी यह विधवा मुझे दुःख देती है इस कारण मैं उस का पलटा ६  
लेऊंगा रेमा न हो कि नित्य नित्य आने से वह मेरे सुंद में कालिय लगावे ।  
तब प्रभु ने कहा सुनो यह अधर्मी विचारकर्ता क्या कहता है । और ईश्वर यद्यपि ७  
अपने चुने हुए लोगों के विषय में जो रात दिन उस पास पुकारते हैं धीरज धरे ८  
तौभी क्या उन का पलटा न लेगा । मैं तुम से कहता हूं वह शीघ्र उन का पलटा ९  
लेगा तौभी मनुष्य का पुत्र जब आवेगा तब क्या पृथिवी पर विश्वास पायेगा ॥

और उस ने कितनों से जो अपने पर भरोसा रखते थे कि हम धर्मी हैं और ९  
औरों को कुछ जानते थे यह दृष्टान्त कहा । दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करते १०



१७ ने आके कहा हे प्रभु आप की मोहर से दस मोहर लाभ हुईं । उस ने उस से  
 कहा धन्य है उत्तम दास तू अति थोड़े में विश्वासयोग्य हुआ तू दस नगरों पर  
 १८ अधिकारी हो । दूसरे ने आके कहा हे प्रभु आप की मोहर से पांच मोहर लाभ  
 १९ हुईं । उस ने उस से भी कहा तू भी पांच नगरों का प्रधान हो । तीसरे ने आके  
 २० कहा हे प्रभु देखिये आप की मोहर जिसे मैं ने अंगोह में धर रखा । क्योंकि मैं  
 आप से डरता था इस लिये कि आप कठोर मनुष्य हैं जो आप ने नहीं धरा  
 २१ सो उठा लेते हैं और जो आप ने नहीं बोया सो लवते हैं । उस ने उस से कहा  
 हे दुष्ट दास मैं तेरे ही मुँह से तुझे दीपी ठहराऊँगा , तू जानता था कि मैं  
 कठोर मनुष्य हूँ जो मैं ने नहीं धरा सो उठा लेता हूँ और जो मैं ने नहीं बोया  
 २३ सो लवता हूँ । तो तू ने मेरी रोकड़ कांठी में क्यों नहीं दिई और मैं आके उसे  
 २४ ढाज समेत ले लेता । तब जो लोग निकट खड़े थे उस ने, उन्हीं से कहा वह  
 २५ मोहर उस से लेओ और जिस पास दस मोहर हैं उस को देओ । उन्हीं ने उस  
 २६ से कहा हे प्रभु उस पास दस मोहर हैं । मैं तुम से कहता हूँ जो कोई रखता है  
 उस को और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उस से जो कुछ उस पास है  
 २७ सो भी ले लिया जायगा । परन्तु तेरे उन वैरियों को जो नहीं चाहते थे कि मैं  
 उन्हीं पर राज्य करूँ यहाँ लाके मेरे सामें दण्ड करो ॥

२८ जब यीशु यह बातें कह चुका तब यरूशलीम को जाते हुए आगे बढ़ा ।  
 २९ और जब वह जैतून नाम पर्वत के निकट बैतफगी और बैथनिया गाँवों पास  
 ३० पहुँचा तब उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा , कि जो गाँव  
 सन्मुख है उस में जाओ और उस में प्रवेश करते हुए तुम एक गधे की बच्चे  
 को जिस घर कभी कोई मनुष्य नहीं बँधा वंछे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ ।  
 ३१ जो तुम से कोई पूछे तुम उसे क्यों खोलते हो तो उस से यूँ कहो प्रभु को इस  
 ३२ का प्रयोजन है । जो भेजे गये थे उन्हीं ने जाके जैसा उस ने उन से कहा वैसा  
 ३३ पाया । जब वे बच्चे को खोलते थे तब उस के स्वामियों ने उन से कहा तुम  
 ३४ बच्चे को क्यों खोलते हो । उन्हीं ने कहा प्रभु को इस का प्रयोजन है । सो वे  
 बच्चे को यीशु पास लाये और अपने कपड़े उस पर डालके यीशु को बैठाया ।  
 ३५ ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ा त्यों त्यों लोगों ने अपने अपने कपड़े मार्ग में बिछाये ।  
 ३६ जब वह निकट आया अर्थात् जैतून पर्वत के उतार लों पहुँचा तब शिष्यों की  
 ३७ सारी मंडली आनन्दित हो सब आश्चर्य कर्मों के लिये जो उन्हीं ने देखे थे  
 ३८ बड़े शब्द से ईश्वर की स्तुति करने लगी , कि धन्य वह राजा जो परमेश्वर  
 के नाम से आता है , स्वर्ग में शांति और सब से ऊँचे स्थान में गुणानुवाद  
 ३९ होय । तब भोड़ में से कितने फरीशी लोग उस से बोले हे गुरु अपने शिष्यों  
 ४० को डाँटिये । उस ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुम से कहता हूँ जो ये लोग चुप  
 रहें तो पत्थर पुकार उठेंगे ॥

४१ जब वह निकट आया तब नगर को देखके उस पर रोया , और कहा तू भी  
 ४२ अपने कुशल की बातें हाँ अपने इस दिन मैं भी जो जानता , परन्तु अब वे तेरे  
 ४३ नेत्रों से छिपी हैं । वे दिन तुझ पर आवेंगे कि तेरे शत्रु तुझ पर मोर्चा बाँधेंगे ।

घात करेंगे और यह तीसरे दिन जी उठेगा । उन्हें ने इन बातों में से कोई ३४  
घात न ससकी और यह घात उस से गुप्त रही और जो कहा जाता था मां वे  
नहीं वृक्षते थे ॥

जब यह यिरीहो नगर के निकट आता था तब एक अन्धा मनुष्य मार्ग की ३५  
और बैठा भोग्य सांगता था । जब उस ने सुना कि बहुत लोग मार्ग में जाते हैं ३६  
तब पूछा, यह क्या है । लोगों ने उस को बताया कि यीशु नासरी जाता है । ३७  
तब उस ने पुकारके कहा हे यीशु दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये । जो ३८  
लोग आगे जाते थे उन्हें ने उसे हांटा कि यह चुप रहे परन्तु उस ने बहुत अधिक  
पुकारा हे दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये । तब यीशु खड़ा रहा और ४०  
उसे अपने पास लाने का आज्ञा किई और जब यह निकट आया तब उस से पूछा,  
तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं, यह बोला हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि ४१  
प्राप्त । यीशु ने उस से कहा अपनी दृष्टि या तेरे जिग्यास ने तुझे चंगा किया ४२  
है । और यह तुरन्त देखने लगा और ईश्वर की स्तुति करता हुआ यीशु के पीछे ४३  
हो लिया और सब लोगों ने देखके ईश्वर का धन्यवाद किया ॥

उनीसवां पत्र ।

यीशु यरीहो में प्रवेश करके उस के बीच में होके जाता था । और देखो जकूई १  
नाम एक मनुष्य था जो कर उगाहनेदारों का प्रधान था और यह धनवान था ।  
यह यीशु को देखने चाहता था कि यह कैसा मनुष्य है परन्तु भीड़ के कारण ३  
नहीं सका क्योंकि नाटा था । तब जिस मार्ग से यीशु जाने पर था उस में यह ४  
आगे दौड़के उसे देखने को एक मूलर के वृक्ष पर चढ़ा । जब यीशु उस स्थान ५  
पर पहुंचा तब ऊपर दृष्टि कर उसे देखा और उस से कहा हे जकूई शीघ्र उतर  
आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना होगा । उस ने शीघ्र उतरके आनन्द से ६  
उस को पहचाने किई । यह देखके सब लोग कुड़कुड़ाके बोले यह तो पापी ७  
मनुष्य के यहां पहुंचने होने गया है । जकूई ने खड़ा हो प्रभु से कहा हे प्रभु देखिये ८  
मैं अपनी आधा धन कंगालों को देता हूं और यदि झूठे दोष लगाके किसी से  
कुछ ले लिया है तो चौगुणा फेर देता हूं । तब यीशु ने उस को कहा आज इस ९  
घराने का नाम हुआ है इस लिये कि यह भी इज्राहीम का सन्तान है । क्योंकि १०  
मनुष्य का पुत्र खोये हुए को ढूंढ़ने और बचाने आया है ॥

जब लोग यह सुनते थे तब यह एक दृष्टान्त भी कहने लगा इस लिये कि ११  
यह यिरीहो के निकट था और वे समझते थे कि ईश्वर का राज्य तुरन्त  
प्रगट होगा । उस ने कहा एक कुलीन मनुष्य दूर देश को जाता था कि १२  
राजपद पाके फिर आवे । और उस ने अपने दासों में से उस को बुलाके उन्हें १३  
इस मोहर देके उन से कहा जब लोगों में न आज्ञा तब लोगों को व्यापार करो । परन्तु १४  
उस के नगर के निवासी उस से दूर रखते थे और उस के पीछे यह सन्देश भेजा  
कि इस नहीं चाहते हैं कि यह हमों पर राज्य करे । जब यह राजपद पाके फिर १५  
आया तब उस ने उन दासों को जिन्हें रोका हुआ दिई था अपने पास बुलाने की  
आज्ञा किई किन्तु यह जाने कि किस ने कौन सा व्यापार किया है । तब पहिले १६

उस पत्थर पर गिरेगा सो चूर हो जायगा और जिस किसी पर वह गिरेगा उस  
 १९ को पीस डालेगा । प्रधान याजकों और अध्यापकों ने उसी घड़ी उस पर हाथ  
 बढ़ाने चाहा क्योंकि जानते थे कि उस ने हमारे विरुद्ध यह दृष्टान्त कहा परन्तु वे  
 लोगों से डरे ॥

२० तब उन्होंने ने दांव ताकते भेदियों को भेजा जो छल से अपने को धर्मी  
 दिखावे इस लिये कि उस का वचन पकड़ें और उसे देशाध्यक्ष के न्याय और  
 २१ अधिकार में सेप देवें । उन्होंने ने उस से पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप  
 यथार्थ कहते और सिखाते हैं और पक्षपात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर का मार्ग  
 २२ सत्यता से बताते हैं । क्या कैसर को कर देना हमें उचित है अथवा नहीं । उस  
 २३ ने उन की चतुराई बूझके उन से कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो । एक सूकी  
 मुझे दिखाओ . इस पर किस की मूर्ति और काप है . उन्होंने ने उत्तर दिया कैसर  
 २४ की । उस ने उन से कहा तो जो कैसर का है सो कैसर को देओ और जो ईश्वर  
 २५ का है सो ईश्वर को देओ । वे लोगों के साम्ने उस की बात पकड़ न सके और  
 उस के उत्तर से अचंभित हो चुप रहे ॥

२६ सड़की लोग भी जो कहते हैं कि मृतकों का जी उठना नहीं होगा उन्होंने में  
 २७ से कितने उस पास आये और उस से पूछा . कि हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा  
 कि यदि किसी का भाई अपनी स्त्री के रहते हुए निःसन्तान मर जाय तो उस का  
 २८ भाई उस स्त्री से विवाह करे और अपने भाई के लिये वंश खड़ा करे । सो सात  
 २९ भाई थे . पहिला भाई विवाह कर निःसन्तान मर गया । तब दूसरे भाई ने  
 ३० उस स्त्री से विवाह किया और वह भी निःसन्तान मर गया । तब तीसरे ने उस से  
 विवाह किया और वैसा ही सातों भाइयों ने . पर वे सब निःसन्तान मर गये ।  
 ३१ सब के पीछे स्त्री भी मर गई । सो मृतकों के जी उठने पर वह उन में से किस  
 ३२ की स्त्री होगी क्योंकि सातों ने उस से विवाह किया । यीशु ने उन को उत्तर  
 ३३ दिया कि इस लोक के सन्तान विवाह करते और विवाह दिये जाते हैं । परन्तु  
 जो लोग उस लोक में पहुंचने और मृतकों में से जी उठने के योग्य गिने जाते वे  
 ३४ न विवाह करते न विवाह दिये जाते हैं । और न वे फिर मर सकते हैं क्योंकि  
 वे स्वर्गदूतों के समान हैं और जी उठने के सन्तान होने से ईश्वर के सन्तान हैं ।  
 ३५ और मृतक लोग जो जी उठते हैं यह बात मूसा ने भी झाड़ी की कथा में प्रगट  
 किई है कि वह परमेश्वर को अब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और  
 ३६ याकूब का ईश्वर कहता है । ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का ईश्वर है  
 ३७ क्योंकि उस के लिये सब जीते हैं । अध्यापकों में से कितनों ने उत्तर दिया कि हे  
 ३८ गुरु आप ने अच्छा कहा है । और उन्हें फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ ॥  
 ३९ तब उस ने उन से कहा लोग क्योंकर कहते हैं कि खीष्ट दाऊद का पुत्र  
 ४० है । दाऊद आप ही गीतों के पुस्तक में कहता है कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से  
 ४१ कहा . जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीछी न खनाऊं तब लों तू मेरी  
 ४२ दहिनी ओर बैठ । दाऊद तो उसे प्रभु कहता है फिर वह उस का पुत्र क्योंकर है ॥  
 ४३ जब सब लोग सुनते थे तब उस ने अपने शिष्यों से कहा . अध्यापकों से चौकस

और तुम्हें घेरेंगे और चारों ओर रोक रखेंगे . और तुम्हें को और तुम्हें में तैरे ४४  
 बालकों को मिट्टी में मिलावेंगे और तुम्हें में पत्थर पर पत्थर न छोड़ेंगे क्योंकि  
 तू ने वह समय जिस में तुम्हें पर दृष्टि किई गई न जाना ॥

तब वह मन्दिर में जाके जो लोग उस में बैठते और सोल लेते थे उन्हें ४५  
 निकालने लगा . और उन से बोला लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर है . ४६  
 परन्तु तुम ने उसे डाकूओं का खोद बनाया है । वह मन्दिर में प्रतिदिन उपदेश ४७  
 करता था और प्रधान याजक और अध्यापक और लोगों के प्रधान उसे नाश  
 करने चाहते थे . परन्तु नहीं जानते थे कि क्या करें क्योंकि सब लोग उस की ४८  
 सुनने की लालीन थे ॥

### तीसवां पट्टा ।

उन दिनों में से एक दिन जब यीशु मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और १  
 सुसमाचार सुनाता था तब प्रधान याजक और अध्यापक लोग प्रार्थानों के २  
 संग निकट आये . और उस से बोले हम से कह तुम्हें ये काम करने का कैसा ३  
 अधिकार है अथवा कौन है जिस ने तुम्हें को यह अधिकार दिया । उस ने उन ४  
 को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात पूछूंगा मुझे उत्तर देओ । योहन का ४  
 व्यक्तिसमा देना क्या स्वर्ग की अथवा मनुष्यों की ओर से हुआ । तब उन्होंने ने ५  
 आपस में विचार किया कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर  
 तुम ने उस का विश्वास क्यों नहीं किया । और जो हम कहें मनुष्यों की ओर ६  
 से तो सब लोग हमें पत्थरबाद करेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं कि योहन  
 भविष्यवक्ता था । सो उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम नहीं जानते वह कहाँ से ७  
 हुआ । यीशु ने उन से कहा तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम ८  
 करने का कैसा अधिकार है ॥

तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा कि किसी मनुष्य ने दाख की धारी ९  
 लगाई और सालियों को उस का ठीका दे बहुत दिन लों परदेश को चला गया ।  
 समय में उस ने सालियों के पास एक दास को भेजा कि वे दाख की धारी १०  
 का कुछ फल उस को देवें परन्तु सालियों ने उसे मारके ठूँके छाय फेर दिया ।  
 फिर उस ने दूसरे दास को भेजा और उन्होंने ने उसे भी मारके और अपमान करके ११  
 ठूँके छाय फेर दिया । फिर उस ने तीसरे को भेजा और उन्होंने ने उसे भी घायल १२  
 करके निकाल दिया । तब दाख की धारी के स्वामी ने कहा मैं क्या करूं . मैं १३  
 अपने प्रिय पुत्र को भेजूंगा क्या जाने वे उसे देखके उस का आदर करेंगे । परन्तु १४  
 साली लोग उसे देखके आपस में विचार करने लगे कि यह तो अधिकारी है  
 आओ हम उसे मार डालें कि अधिकार हमारा हो जाय । और उन्होंने ने उसे १५  
 दाख की धारी से बाहर निकालके मार डाला . इस लिये दाख की धारी का  
 स्वामी उन्होंने से क्या करेगा । वह आके इन सालियों को नाश करेगा और दाख १६  
 की धारी दूसरों के छाय देगा . यह सुनके उन्होंने ने कहा ऐसा न होवे । उस ने १७  
 उन्होंने पर दृष्टि कर कहा तो धर्मपुस्तक के इस वचन का अर्थ क्या है कि जिस  
 पत्थर को थवइयों ने निकम्मा जाना वही कोने का सिरा हुआ है । जो कोई १८

२३ पूरी होवे । उन दिनों में हाथ हाथ गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां क्योंकि  
२४ देश में बड़ा क्रोध और इन लोगों पर क्रोध होगा । वे खड्ग की धार से मारे  
पड़ेंगे और सब देशों के लोगों में धंधुवे क्रिये जायेंगे और जब लों अन्यदेशियों  
का समय पूरा न होवे तब लों यिरूशलीम अन्यदेशियों से रोड़ा जायगा ॥

२५ सूर्य और चांद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे और पृथिवी पर देश देश  
के लोगों को संकट और घबराहट होगी और समुद्र और लहरों का गर्जना  
२६ होगा । और संसार पर आनेहारी बातों के भय से और घाट देखने से मनुष्य  
२७ मृतक के ऐसे हो जायेंगे क्योंकि आकाश की सेना ढिगा जायगी । तब वे मनुष्य  
२८ के पुत्र को पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य से मेघ पर आते देखेंगे । जब इन बातों  
का आरंभ होगा तब तुम सीधे होके अपने सिर उठाओ क्योंकि तुम्हारा उद्धार  
निकट आता है ॥

२९ उस ने उन्हीं से एक दृष्टान्त भी कहा कि गूलर का वृक्ष और सब वृक्षों को  
३० देखो । जब उन की कोपलें निकलती हैं तब तुम देखकर आप ही जानते हो कि  
३१ धूपकाला अब निकट है । इस रीति में जब तुम यह बातें होते देखो तब जानो  
३२ कि ईश्वर का राज्य निकट है । मैं तुम से सब कहता हूं कि जब लों सब बातें  
३३ पूरी न हो जायें तब लों इस समय के लोग नहीं जाते रहेंगे । आकाश और  
पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी ॥

३४ अपने विषय में सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे मन अफराई और मतवाल-  
पन और सांसारिक चिन्ताओं से भारी हो जावे और वह दिन तुम पर अचानक  
३५ आ पहुंचे । क्योंकि वह फंदे की नाईं सारी पृथिवी के सब रहनेहारों पर  
३६ आवेगा । इस लिये जागते रहो और नित्य प्रार्थना करो कि तुम इन सब आने-  
हारी बातों से बचने के और मनुष्य के पुत्र के सम्मुख खड़े होने के योग्य गिने  
जाओ ॥

३७ यीशु दिन को मन्दिर में उपदेश करता था और रात को बाहर जाके जैतून  
३८ नाम पर्वत पर टिकता था । और तड़के सब लोग उस की सुनने को मन्दिर में  
उस पास आते थे ॥

बाईसवां पर्व ।

१ अखमीरी रोटी का पर्व जो निस्तार पर्व कहावता है निकट आया । और  
प्रधान याजक और अध्यापक लोग खोज करते थे कि यीशु को क्योंकर मार  
डालें क्योंकि वे लोगों से डरते थे ॥

३ तब शैतान ने यहूदा में जो इस्करियोत्ती कहावता है और बारह शिष्यों में गिना  
४ जाता था प्रवेश किया । उस ने जाके प्रधान याजकों और पहरेदारों के अध्यक्षों  
५ के संग बातचीत किई कि यीशु को क्योंकर उन्हीं के हाथ पकड़वावे । वे  
६ आनन्दित हुए और रुपये देने को उस से नियम बांधा । वह अंगीकार करके उन्हें  
बिना हुलड़ के उन्हीं के हाथ पकड़वाने का अवसर ठूँठने लगा ॥

७ तब अखमीरी रोटी के पर्व का दिन जिस में निस्तार पर्व का मेला मारन  
८ उचित था आ पहुंचा । और यीशु ने पितर और योहन को यह कहके भेजा कि

रहो जो लंबे वस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं और जिन को यादगारी में नमस्कार और मभा के घरों में ऊंचे आसन और जेयनारों में ऊंचे स्थान प्रिय लगते हैं । वे विधवाओं के घर खा जाते हैं और बदनाम के लिये वही घर लों प्रार्थना करते ४७ हैं । वे अधिक दंड पार्वी ॥

एकईसवां पर्व ।

योग ने आंख उठाके धनवानों को अपने अपने दान भंडार में डालते देखा । १ और उस ने एक कंगाल विधवा को भी उस में दो कदम डालते देखा । तब ३ उस ने कहा मैं तुम से सब कहना हूँ कि इस कंगाल विधवा ने सभी से अधिक डाला है । क्योंकि इन सभी ने अपनी दृढ़ता में मेरे शरीर को चढ़ाए हुए ४ वस्तुओं से कुछ कुछ डाला है परन्तु इस ने अपनी दृढ़ता में मेरी अपनी सारी जीविका डाली है ॥

जब कितने लोग मन्दिर के विषय में बोलते थे कि यह सुन्दर पत्थरों से ५ और चढ़ाई हुई वस्तुओं से मंचारा गया है तब उस ने कहा . यह सब जो तुम ६ देखते हो वे दिन आचेंगे जिनमें पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा ॥

उन्हीं ने उस से पूछा है गुरु यह क्या होगा और यह बातें जिस समय में ७ हो जायेंगी उस समय का क्या चिन्त होगा । उस ने कहा तबकम रहे कि ८ भ्रमाये न जाओ क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं धरी हूँ और समय निकट आया है . सो तुम उन के पीछे मत जाओ । जब तुम लड़ाइयाँ ९ और दुल्लहों की चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इन का पहिले होना अवश्य है पर अन्त तुरन्त नहीं होगा । तब उस ने उन्हीं से कहा देश देश के १० और राज्य राज्य के विरुद्ध उठेंगे । और अनेक स्थानों में बड़े भुईंडाल और अकाल ११ और अरियाँ होंगी और भयंकर लज्ज और आकाश से बड़े बड़े चिन्त प्रगट होंगे ॥

परन्तु इन सभी के पहिले लोग तुम पर अपने हाथ बढ़ावेंगे और तुम्हें १२ सतावेंगे और मेरे नाम के कारण मभा के घरों और घन्टीगृहों में रखवायेंगे और राजाओं और अध्यक्षों के आगे ले जावेंगे । पर इस से तुम्हारे लिये साक्षी १३ हो जायगी । सो अपने अपने मन से डरना रखा कि इस उत्तर देने के लिये १४ आगे से चिन्ता न करेंगे । क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा वचन और ज्ञान देऊंगा कि १५ तुम्हारे सब विरोधी उस का खंडन अथवा साम्हना नहीं कर सकेंगे । तुम्हारे १६ माता पिता और भाई और कुटुंब और मित्र लोग तुम्हें प्रकड़वायेंगे और तुम से से कितनों को घात करवायेंगे । और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से दूर १७ करेंगे । परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी नष्ट न होगा । अपनी धीरता से १८ अपने प्राणों की रक्षा करो ॥

जब तुम यिरूशलीम की सेनाओं से घेरे हुए देखो तब जानो कि उस का २० उजड़ जाना निकट आया है । तब जो यिरूदिया में हों सो पहाड़ों पर भागें . २१ जो यिरूशलीम के बाँच में हों सो निकल जायें और जो गाँवों में हों सो उस में प्रवेश न करें । क्योंकि येही दंड देने के दिन होंगे कि धर्मपुस्तक की सब बातें २२



३३ सीना के पहाड़ पर कही थीं उन्हें आज्ञा किई । और जब मूसा उन से बातें  
 ३४ कर चुका तो उस ने अपने मुंह पर घूंघट डाला । पर जब मूसा परमेश्वर के  
 आगे उस्से वार्ता करने जाता था तो जब लों बाहर न आता था घूंघट को  
 उतार देता था और जो आज्ञा होती थी वह बाहर आके इसराएल के संतानों  
 ३५ को कहता था । और इसराएल के संतानों ने मूसा का मुंह देखा कि मूसा के  
 मुंह का चमड़ा चमकता था और मूसा ने अपने मुंह पर घूंघट डाला जब लों  
 कि ईश्वर से बातें करने गया ॥

### पैंतीसवां पर्व ।

- १ और मूसा ने इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को एकट्ठा करके उन से  
 कहा कि परमेश्वर ने इन बातों की आज्ञा किई है कि तुम उन्हें पालन करो ।
- २ छः दिन लों कार्य किया जावे परन्तु सातवां दिन तुम्हारे लिये पवित्र विश्राम  
 होवे परमेश्वर का विश्राम जो कोई उस में कार्य करेगा सो मार डाला जायगा ।
- ३ विश्राम के दिन अपने समस्त निवासों में आग मत बारियो ॥
- ४ और मूसा ने इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को कहा वह आज्ञा जो  
 ५ परमेश्वर ने किई यह है । तुम अपने में से परमेश्वर के लिये भेंट लाओ जो  
 कोई मन से चाहे सो परमेश्वर के लिये भेंट लावे सोना और रूपा और पीतल ।  
 ६ और नीला और बैजनी और लाल और भीने सूती वस्त्र और वकरियों के बाल ।  
 ७ और लाल रंगे हुए मेंढों के चमड़े और तुखसों के चमड़े और शमशान की लकड़ी ।  
 ८ और जलाने का तेल और अभिषेक के तेल के लिये और धूप के लिये सुगंध  
 ९ द्रव्य । और सूर्यकांतमणि और रफोद और चपरास पर जड़ने के लिये मणि ।  
 १० और तुम में से जो बुद्धिमान है आवे और जो कुछ परमेश्वर ने आज्ञा किई है  
 ११ बनावे । निवास उस का तंबू और उस का घटाटोप उस की घुण्डियां और  
 १२ उस के पाट उस के अड़ंगे उस के खंभे और उस के पाए । मंजूपा और उस के  
 १३ बहंगर ठकना और छांपने का घूंघट । मंच और उस के बहंगर और उस के  
 १४ समस्त पात्र और भेंट की रोटी । और ज्योति के लिये दीअट और उस की  
 १५ सामग्री और उस के दीपक और प्रकाश के लिये तेल । और धूप की वेदी और  
 उस के बहंगर और अभिषेक का तेल और सुगंध द्रव्य का धूप और तंबू में प्रवेश  
 १६ करने के द्वार की ओट । बलिदान के भेंट की यज्ञवेदी और उस के पीतल की  
 भरनी उस के बहंगर और उस के समस्त पात्र स्नानपात्र उस के पाए समेत ।  
 १७ आंगन की ओट उस के खंभे और उस के पाए और आंगन के द्वार की ओट ।  
 १८ तंबू के खूंटे और आंगन के खूंटे और उन की डोरियां । सेवा के वस्त्र जिसमें  
 पवित्र स्थान में सेवा करें हाखन याजक के लिये पवित्र वस्त्र और उस के बेटों  
 के पवित्र वस्त्र जिसमें याजक के पद में सेवा करें ॥
- २० तब इसराएल के संतानों की समस्त मंडली मूसा के आगे से चली गई ।
- २१ और हर एक जिस के मन ने उसे उभाड़ा और हर एक अपने मन के अभिलाष  
 से जिस ने जो चाहा मंडली के तंबू के कार्य के लिये और उस की समस्त सेवा
- २२ और पवित्र वस्त्र के लिये परमेश्वर की भेंट लाया । और वे आये क्या स्त्री क्या

जाके हमारे लिये निस्तार पर्व का भोजन बनाओ कि हम खाये । ये उस ने ९  
वाले आप कटा चाहते हैं कि हम बनाये । उस ने उन से कहा देखो जब तुम १०  
नगर में प्रवेश करो तब एक मनुष्य जल का बड़ा बरतण्डा लेकर तुम्हें मिलेगा ।  
जिस घर में वह बैठे तुम उस के पीछे उस घर में जाओ । और उस घर के ११  
स्वामी से कहो गुरु तुम्हें से कहता है कि पाहुनशाला कटा है जिस में मैं अपने  
शिष्यों के संग निस्तार पर्व का भोजन खाऊँ । वह तुम्हें एक सजी हुई बड़ी १२  
उपरोठी कोठरी दिखावेगा वहाँ तैयार करो । उन्होंने ने जाके जैसा उस ने उन्हें १३  
से कहा तैसा प्रायः और निस्तार पर्व का भोजन बनाया ।

जब वह बड़ी पहुँची तब यीशु और बारहों प्रेरित उस के संग भोजन पर १४  
बैठे । और उस ने उन से कहा मैं ने यह निस्तार पर्व का भोजन दुःख भोगने १५  
के पहिले तुम्हारे संग खाने की बड़ी लालसा किई । क्योंकि मैं तुम से कहता १६  
हूँ कि जब लो यह ईश्वर के राज्य में पूरा न होये तब लो मैं उसे फिर कभी न  
खाऊँगा । तब उस ने कटोरा ले धन्य मानके कहा इस को लेओ और आपस में १७  
बाँटो । क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि जब लो ईश्वर का राज्य न आवे तब १८  
लो मैं दाख रस कभी न पीऊँगा ।

फिर उस ने रोटी लेके धन्य माना और उसे तोड़के उन को दिया और कहा १९  
यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये दिया जाता है । मेरे स्मरण के लिये यह क्रिया  
करो । इसी रीति से उस ने चियारी के पाँके कटोरा भी देके कहा यह कटोरा २०  
मेरे लोह पर जो तुम्हारे लिये बनाया जाता है नया नियम है ।

परन्तु देखो मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे संग मेज पर है । मनुष्य का पुत्र २१  
जैसा ठहराया गया है वैसा ही जाता है परन्तु हाथ यह मनुष्य जिस से यह  
पकड़वाया जाता है । तब वे आपस में विचार करने लगे कि हम में से कौन है २२  
जो यह काम करेगा ।

उन्होंने में यह विचार भी हुआ कि उन में से कौन बड़ा समझा जाय । यीशु २३  
ने उन से कहा अन्यदेशियों के राजा उन्हें पर प्रभुता करते हैं और उन्हें के  
अधिकारी लोग परोपकारी कहावते हैं । परन्तु तुम ऐसे न होओ पर जो तुम्हें २४  
में बड़ा है सो छेटी की नाईं होये और जो प्रधान है सो सेवक की नाईं होये ।  
कौन बड़ा है भोजन पर बैठनेवाला अथवा सेवक . क्या भोजन पर बैठनेवाला २५  
बड़ा नहीं है . परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूँ । तुम ही जो जो मेरी २६  
परीक्षाओं में मेरे संग रहे हो । और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये राज्य ठहराया है २७  
तैसा मैं तुम्हारे लिये ठहराता हूँ . कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ और २८  
पीओ और सिंहासनों पर बैठके इस्रायेल के दारुण कुलों का न्याय करो ।

और प्रभु ने कहा हे शिमेन हे शिमेन देख जैतान ने तुम्हें मांग लिया है २९  
इस लिये कि गेहूँ की नाईं तुम्हें पटके । परन्तु मैं ने तेरे लिये प्रार्थना किई है ३०  
कि तेरा विश्वास घट न जाय और जब तू फिर तब अपने भाइयों को स्थिर कर ।  
उस ने उस से कहा हे प्रभु मैं आप के संग वंदीगृह में जाने को और मरने को ३१  
तैयार हूँ । उस ने कहा हे पितर मैं तुम्हें से कहता हूँ कि आज ही जब लो तू ३२

तीन बार मुझे नकारके न कहे कि मैं उसे नहीं जानता हूँ तब लों मुझे न बोलेगा ॥

३५ और उस ने उन से कहा जब मैं ने तुम्हें बिन थैली और बिन भोली और बिन जूते भेजा तब क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई . वे बोले किसू की नहीं ।

३६ उस ने उन से कहा परन्तु अब जिस पास थैली हो सो उसे ले ले और वैसे ही भोली भी और जिस पास खड्ग न होय सो अपना वस्त्र बेचके एक को मोल लेवे ।

३७ क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ अवश्य है कि धर्मपुस्तक का यह बचन भी कि वह कुकर्मियों के संग गिना गया मुझ पर पूरा किया जाय क्योंकि मेरे विषय में की

३८ बातें सम्पूर्ण होने पर हैं । तब वे बोले हे प्रभु देखिये यहां दो खड्ग हैं . उस ने उन से कहा बहुत है ॥

३९ तब यीशु बाहर निकलके अपनी रीति के अनुसार जैतून पर्वत पर गया और ४० उस के शिष्य भी उस के पीछे हो लिये । उस स्थान में पहुंचके उस ने उन से

४१ कहा प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो । और वह आप टेला फेंकने के ४२ टप्पे भर उन से अलग गया और घुटने टेकके प्रार्थना किई . कि हे पिता जो

तेरी इच्छा होय तो इस कटोरे को मेरे पास से टाल दे तौभी मेरी नहीं पर ४३ तेरी इच्छा पूरी हो जाय । तब एक दूत उसे सामर्थ्य देने को स्वर्ग से उस को

४४ दिखाई दिया । और उस ने बड़े संकट में होके अधिक दृढ़ता से प्रार्थना किई ४५ और उस का पसीना ऐसा हुआ जैसे लोहू के थूके जो भूमि पर गिरें । तब वह

प्रार्थना से उठा और अपने शिष्यों के पास आ उन्हें शोक के मारे सोते ४६ पाया . और उन से कहा क्यों सोते हो उठो प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो ॥

४७ वह बोलता ही था कि देखो बहुत लोग आये और बारह शिष्यों में से एक शिष्य जिस का नाम यिहूदा था उन के आगे आगे चलता था और यीशु का

४८ चूमा लेने को उस पास आया । यीशु ने उस से कहा हे यिहूदा क्या तू मनुष्य ४९ के पुत्र को चूमा लेके पकड़वाता है । यीशु के संगियों ने जब देखा कि क्या

५० होनेवाला है तब उस से कहा हे प्रभु क्या हम खड्ग से मारें । और उन में से एक ने महायाजक के दास को मारा और उस का दाहिना कान उड़ा दिया ।

५१ इस पर यीशु ने कहा यहां तक रहने दो . और उस दास का कान कूके उसे ५२ चंगा किया । तब यीशु ने प्रधान याजकों और मन्दिर के पहरुओं के अध्यक्षों

और प्राचीनों से जो उस पास आये थे कहा क्या तुम जैसे डाकू पर खड्ग और ५३ लाठियां लेके निकले हो । जब मैं मन्दिर में प्रतिदिन तुम्हारे संग था तब तुम्हों ने

मुझ पर हाथ न बढाये परन्तु यही तुम्हारी घड़ी और अधिकार का पराक्रम है ॥ ५४ वे उसे पकड़के ले चले और महायाजक के घर में लाये और पितर दूर दूर

५५ उस के पीछे हो लिया । जब वे अंगने में आगे सुलगाके एकट्टे बैठे तब पितर ५६ उन्हीं के बीच में बैठ गया । और एक दासी उसे आगे के पास बैठे देखके उस

५७ को और ताकके बोली यह भी उस के संग था । उस ने उसे नकारके कहा हे ५८ नारी मैं उसे नहीं जानता हूँ । थोड़ी देर पीछे दूसरे ने उसे देखके कहा तू भी

उन में से एक है . पितर ने कहा है मनुष्य में नहीं है । छड़ी एक बीने दूसरे ५८ ने दृढ़ता में कहा यह भी मनुष्य उम के संग था क्योंकि वह गालीली भी है । पितर ने कहा है मनुष्य में नहीं जानता तू क्या कहता है . और तुम्हें ज्यों पर ६० कह रहा त्यों सूर्य वाला । तब प्रभु ने मुँह फेरके पितर पर दृष्टि किए और ६१ पितर ने प्रभु का वचन स्मरण किया कि उम ने उम से कहा था सूर्य के चलने से आगे तू तीन बार मुझ से सुकरेगा । तब पितर बाहर निकलके बिलक ६२ बिलक रोया ॥

जो मनुष्य यीशु को धरे हुए थे वे उसे मारके ठट्टा करने लगे . और उम ६३ की आंखें ठांपके उम के मुँह पर थपेड़े मारके उम से पूछा कि भविष्यवाणी वाल किस ने तुम्हें मारा । और उन्होंने ने बहुत सी और निन्दा की बातें उस के ६४ विन्द में कहीं । ज्योंही विद्वान हुआ त्योंही लोगों के प्राचीन और प्रधान ६५ याज्ञक और अध्यापक लोग एकट्ठे हुए और उसे अपनी न्यायमभा में लाये और बोले जो तू खीष्ट है तो हम से कह । उस ने उन से कहा जो मैं तुम से कहूँ ६६ तो तुम प्रतीति नहीं करोगे । और जो मैं कुछ पूछूँ तो तुम न उत्तर देओगे न ६७ मुझे छोड़ोगे । अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान ईश्वर की दाहिनी ओर ६८ बैठेगा । सभी ने कहा तो क्या तू ईश्वर का पुत्र है . उस ने उन्हें से कहा तुम ७० तो कहते हो कि मैं हूँ । तब उन्होंने ने कहा अब हमें साक्षी का और क्या ७१ प्रयोजन क्योंकि हम ने आप ही उस के सुग्न से सुना है ।

तेईसवां प्रवृत्ति ।

तब सारा समाज उठके यीशु को पिलात के पास ले गया . और उस पर यह १ कहके दोष लगाने लगा कि हम ने यही प्राया है कि यह मनुष्य लोगों को बह- २ काता है और अपने को खीष्ट राजा कहके कैसर को कर देना बर्जता है । पिलात ३ ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है . उस ने उन को उत्तर दिया कि आप ही तो कहते हैं । तब पिलात ने प्रधान याज्ञकों और लोगों से कहा मैं इस ४ मनुष्य से कुछ दोष नहीं पाता हूँ . परन्तु उन्होंने ने अधिक दृढ़ताई से कहा यह ५ गालीली में लेके यहां लो मारे यहूदिया में उपदेश करके लोगों को उसकाता है ।

पिलात ने गालीली का नाम सुनके पूछा क्या यह मनुष्य गालीली है । तब ६ उस ने जाना कि वह हेरोद के राज्य में का है तब उसे हेरोद के पास भेजा कि वह भी उन दिनों में यहूशलीम में था । हेरोद यीशु को देखके अति आनन्दित ७ हुआ क्योंकि वह बहुत दिन से उस को देखने चाहता था इन लिये कि उस के विषय में बहुत बातें सुनी थीं और उस का कुछ आश्चर्य कर्म देखने की उस को आशा हुई । उस ने उस से बहुत बातें पूछीं परन्तु उस ने उस को कुछ उत्तर ८ न दिया । और प्रधान याज्ञकों और अध्यापकों ने खड़े हुए बड़ी धुन से उस पर ९ दोष लगाये । तब हेरोद ने अपनी सेना के संग उसे तुच्छ जानके ठट्टा किया १० और भड़कीला वस्त्र पहिराके उसे पिलात के पास फेर भेजा । उसी दिन पिलात ११ और हेरोद दिन्दों के बीच से आगे से शत्रुता थी आपस में मित्र हो गये ॥

पिलात ने प्रधान याज्ञकों और अध्यापकों और लोगों का एकट्ठे बुलाके उन्हीं से १२

१४ कहा . तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेहारा कहके मेरे पास लाये हो और देखो मैं ने तुम्हारे साम्हने बिचार किया है परन्तु जिन बातों में तुम इस मनुष्य पर दोष लगाते हो उन बातों के बिषय में मैं ने उस में कुछ दोष नहीं पाया है । न हेरोद ने पाया है क्योंकि मैं ने तुम्हें उस पास भेजा और देखो बध १५ के योग्य कोई काम उस से नहीं किया गया है । सो मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा । पिलात को अवश्य भी था कि उस पर्व में एक मनुष्य को लोगों के १६ लिये छोड़ देवे । तब लोग सब मिलके चिल्लाये कि इस को ले जाइये और हमारे १७ लिये बरब्बा को छोड़ दीजिये । यही बरब्बा किसी बलवे के कारण जो नगर में २० हुआ था और नरहिंसा के कारण बन्दोगृह में डाला गया था । पिलात यीशु को २१ छोड़ने की इच्छा कर लोगों से फिर बोला । परन्तु उन्होंने ने पुकारा कि उसे क्रूस २२ पर चढ़ाइये क्रूस पर चढ़ाइये । उस ने तीसरी बेर उन से कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई किई है . मैं ने उस में बध के योग्य कोई दोष नहीं पाया है इस २३ लिये मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा । परन्तु वे ऊंचे ऊंचे शब्द से बल करके मांगने लगे कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाय और उन्होंने के और प्रधान याजकों के २४ शब्द प्रबल ठहरे । सो पिलात ने आज्ञा दिई कि उन की धिन्ती के अनुसार किया जाय । और उस ने उस मनुष्य को जो बलवे और नरहिंसा के कारण बन्दोगृह २५ में डाला गया था जिसे वे मांगते थे उन के लिये छोड़ दिया और यीशु को उन २६ की इच्छा पर सोंप दिया । जब वे उसे ले जाते थे तब उन्होंने ने शिमोन नाम कुरीनी देश के एक मनुष्य को जो गांव से आता था पकड़के उस पर क्रूस धर दिया कि उसे यीशु के पीछे ले चले ॥

२७ लोगों की बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और बहुतेरी स्त्रियां भी जो उस २८ के लिये छाती पीटती और बिलाप करती थीं । यीशु ने उन्हें की ओर फिरके कहा हे यिहूशलीम की पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ परन्तु अपने लिये और अपने २९ बालकों के लिये रोओ । क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जिन्हें मैं लोग कहेंगे धन्य वे स्त्रियां जो बांझ हैं और वे गर्भ जिन्हें ने लड़के न जन्माये और वे स्तन जिन्हें ३० ने दूध न पिलाया है । तब वे पर्वतों से कहने लगेंगे कि हमों पर गिरो और ३१ टीलों से कि हमें ढांपो । क्योंकि जो वे हरे पेड़ से यह करते हैं तो सूखे से क्या ३२ किया जायगा । वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्मी थे यीशु के संग घात करने को ले चले ॥

३३ जब वे उस स्थान पर जो खोपड़ी कहावता है पहुंचे तब उन्होंने ने वहां उस को और उन कुकर्मीयों को एक को दाहिनी ओर और दूसरे को बाईं ओर क्रूशों ३४ पर चढ़ाया । तब यीशु ने कहा हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते क्या करते हैं . और उन्होंने ने चिट्ठियां डालके उस के कपड़े बांट लिये ॥

३५ लोग खड़े हुए देखते रहे और अध्वक्षों ने भी उन के संग ठट्ठा कर कहा उस ने औरों को बचाया जो वह ईश्वर का चुना हुआ जन खीष्ट है तो अपने को ३६ बचावे । येहूदाओं ने भी उस से ठट्ठा करने को निकट आके उसे सिरका दिया . ३७ और कहा जो तू यिहूदियों का राजा है तो अपने को बचा । और उस के ऊपर

में एक पत्र भी था जो यूनानीय और रोमीय और इत्रीय अक्षरों में लिखा हुआ था कि यह पिहृदियों का राजा है ॥

जो कुकर्मी लटकाये गये थे उन में से एक ने उस की निन्दा कर कहा जो २९ तू खीष्ट है तो अपने को और हमों को अन्ना । इस पर दूसरे ने उसे टांटके ४७ कहा क्या तू ईश्वर से कुछ डरता भी नहीं . तुम पर तो येना ही डँड दिया जाता है । और हमों पर न्याय की रीति से दिया जाना क्योंकि हम अपने २९ कर्मी के योग्य फल भोगते हैं परन्तु हम ने कोई अनुचित काम नहीं किया है । तब उस ने यीशु से कहा है प्रभु जब आप अपने राज्य में आँगे तब मेरी ४७ सुध लीजिये । यीशु ने उस से कहा मैं तुम से सब कहता हूँ कि आज ही तू ४७ मेरे संग स्वर्गलोक में होगा ॥

जब दो पहर के निकट हुआ तब सारे दैग में तीसरे पहर जो अंधकार ४७ हो गया । मुख्य अधियारा हो गया और मन्दिर का परदा बीच में फट गया । ४७ और यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा है पिता मैं अपना आत्मा तारे हाथ में ४६ सौंपता हूँ और यह कहके प्राण त्यागा । जो हुआ था सो देखके शतपति ने ४७ ईश्वर का गुणानुवाद कर कहा निश्चय यह मनुष्य धर्मी था । और सत्र लोग ४७ जो यह देखने को रकट्टे हुए थे जो कुछ हुआ था सो देखके अपनी अपनी छानी पीटते हुए फिर गये । और यीशु के सब चिन्तार और ये स्त्रियाँ जो गालील ४६ से उस के संग आई थीं दूर खड़े हो यह सब देखते रहे ॥

और देखा यूमफ नाम पिहृदियों के अग्निशिया नगर का एक मनुष्य था जो ५७ मन्त्री था और उत्तम और धर्मी पुरुष होके दूसरे मन्त्रियों के विचार और काम में नहीं मिला था । और वह आप भी ईश्वर के राज्य की बात जोड़ता था । ५७ उस ने पिलान के पास जाके यीशु की लाश मांग ली । तब उस ने उसे उतारके ५७ छद्म में लपेटा और एक कब्र में गन्ना जो पत्थर में ग्योड़ी हुई थी जिस में कोई कभी नहीं रखा गया था । वह दिन तैयारी का दिन था और विद्यालय सप्ती ५७ था । ये स्त्रियाँ भी जो गालील से उस के संग आई थीं पीछे हो लीं और ५७ कब्र को और उस की लाश क्योंकि रखी गई उस को देख लिया । और उन्हीं ५६ ने लौटके सुगन्ध द्रव्य और सुगन्ध तेल तैयार किया और आज्ञा के अनुसार विद्यालय के दिन में विद्यालय किया ॥

चौथीमई पृष्ठ ।

तब अठारह के पड़ले दिन बड़ी भोर ये स्त्रियाँ और उन के संग कई एक ९ और स्त्रियाँ वह सुगन्ध जो उन्हीं ने तैयार किया था लेके कब्र पर आई । परन्तु उन्हीं ने पत्थर को कब्र के सामने से लुढ़काया हुआ पाया . और भीतर ३ जाके प्रभु यीशु की लाश न पाई । जब वे इस बात के विषय में दुयधा कर ४ रहें तब देखा दो पुरुष धमकते वस्त्र पहिने हुए उन के निकट खड़े हो गये । जब वे डर गई और धरती की ओर मुँह झुकाये रहीं तब वे उन से बोले तुम ५ खीयते को मृतकों के बीच में क्यों कूढ़ती हो । यह यहाँ नहीं है परन्तु जो ६ उठा है . स्मरण करो कि उस ने गालील में रहते हुए तुम से कहा . अवश्य है ७



कि मनुष्य का पुत्र पापी लोगों के हाथ में पकड़वाया जाय और क्रूस पर घात  
 ८ किया जाय और तीसरे दिन जी उठे । तब उन्होंने ने उस की बातों को स्मरण  
 ९ किया । और कबर से लौटके उन्होंने ने ग्यारह शिष्यों को और और सभी को यह  
 १० सब बातें सुनाई । मरियम मगदलीनी और योहाना और याकूब की माता मरियम  
 ११ और उन के संग की और स्त्रियां थीं जिन्होंने ने प्रेरितों से यह बातें कहीं । परन्तु  
 उन की बातें उन्होंने के आगे कहानी सी समझ पड़ीं और उन्होंने ने उन की प्रतीति  
 १२ न कीई । तब पितर उठके कबर पर दौड़ गया और झुकके केवल चट्टर पड़ी  
 हुई देखी और जो हुआ था उस से अपने मन में अचंभा करता हुआ चला गया ।  
 १३ देखो उसी दिन उन में से दो जन इसमाऊ नाम एक गांव को जो यिरूशलीम से  
 १४ कोश चार एक पर था जाते थे । और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं आपस  
 १५ में बातचीत करते थे । ज्यों वे बातचीत और विचार कर रहे त्यों यीशु आपसी  
 १६ निकट आके उन के संग हो लिया । परन्तु उन की दृष्टि ऐसी रोकी गई कि  
 १७ उन्होंने ने उस को नहीं चीन्हा । उस ने उन से कहा यह क्या बातें हैं बिना पर  
 १८ तुम चलते हुए आपस में बातचीत करते और उदास होते हो । तब एक जन ने  
 जिस का नाम क्लियोपा था उत्तर देके उस से कहा क्या केवल तू ही यिरूशलीम में  
 १९ डेरा करके वे बातें जो उस में इन दिनों में हुई हैं नहीं जानता है । इस ने उन  
 से कहा कौन सी बातें . उन्होंने ने उस से कहा यीशु नासरी के विषय में जो  
 भविष्यवक्ता और ईश्वर के और सब लोगों के आगे काम में और बचन में शक्ति-  
 २० मान पुरुष था । क्योंकि हमारे प्रधान याजकों और अध्यातों ने उसे सेप दिया  
 कि उस पर बंध किये जाने की आज्ञा दिई जाय और उसे क्रूस पर घात किया  
 २१ है । परन्तु हमें आशा थी कि बची है जो इसायेल का उद्धार करेगा . और भी  
 २२ जब से यह हुआ तब से आज उस को तीसरा दिन है । और हमों में से कितनी  
 २३ स्त्रियों ने भी हमें विस्मित किया है कि वे भीर को कबर पर गईं . पर उस की  
 लोथ न पाके फिर आके वालीं कि हम ने स्वर्गदूतों का दर्शन भी पाया है जो  
 २४ कहते हैं कि वह जीता है । तब हमारे संगियों में से कितने जन कबर पर गये  
 २५ और जैसा स्त्रियों ने कहा तैसा ही पाया परन्तु उस को न देखा । तब यीशु ने  
 उन से कहा हे निर्बुद्धि और भविष्यवक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में  
 २६ मन्दमति लोगो . क्या अवश्य न था कि खीष्ट यह दुःख उठाके अपने रेश्वर्य में  
 २७ प्रवेश करे । तब उस ने मूसा से और सब भविष्यवक्ताओं से आरंभ कर सारे  
 २८ धर्मपुस्तक में अपने विषय में की बातों का अर्थ उन्होंने को बताया । इतने में वे  
 उस गांव के पास पहुंचे जहां वे जाते थे और उस ने ऐसा किया जैसा कि आगे  
 २९ जाता है । परन्तु उन्होंने ने यह कहके उस को रोका कि हमारे संग रहिये क्योंकि  
 सांझ हो चली और दिन ठल गया है . तब वह उन के संग रहने को भीतर  
 ३० गया । जब वह उन के संग भोजन पर बैठा तब उस ने रोटी लेके धन्यवाद  
 ३१ किया और उसे तोड़के उन को दिया । तब उन की दृष्टि खुल गई और उन्होंने ने  
 ३२ उस को चीन्हा और वह उन से अन्तर्धान हो गया । और उन्होंने ने आपस में  
 कहा जब वह मार्ग में हम से बात करता था और धर्मपुस्तक का अर्थ हमें

यताता था तब क्या हमारा मन हम में न तपता था । वे हमी उड़ी उठके पिक- ३३  
गलीस को लौट गये और ग्यारह शिष्यों को और उन के शिष्यों को एकट्ठे हुए  
और यह कहते हुए पाया . कि निश्चय प्रभु जी उठा है और शिमेन को दियाई ३४  
दिया है । तब उन दोनों ने कष्ट सुनाया कि मार्ग में क्या हुआ था और यीशु क्योंकर ३५  
रोटी तोड़ने में उन से पदचाना गया ।

वे यह कहते ही थे कि यीशु आपही उन के बीच में खड़ा हो उन से बोला ३६  
तुम्हारा कल्याण होय । परन्तु वे व्याकुल और भयमान हुए और समझा कि ३७  
हम प्रेत को देखते हैं । उस ने उन से कहा क्यों व्याकुल हो और तुम्हारे मन ३८  
में सन्देह क्यों उत्पन्न होता है । मेरे हाथ और मेरे पांथ देखो कि मैं आपही हूं . ३९  
मुझे टांघो और देख लो क्योंकि जैसे तुम मुक्त में देखते हो जैसे प्रेत को हाड़  
मांस नहीं होते हैं । यह कहके उस ने अपने हाथ पांथ उल्टे दिखाये । ज्यों वे ४०  
सारे आनन्द के प्रतीति न करते थे और अचंभित हो रहे त्यों उस ने उन से  
कहा क्या तुम्हारे पास यहाँ कुछ भोजन है । उन्होंने ने उस को कुछ भूनी मछली ४१  
और मधु का कता दिया । उस ने लेके उन के सामने रखाया । और उस ने ४२  
उन से कहा यही वे बातें हैं जो मैं ने तुम्हारे संग रहते हुए तुम से कहीं कि  
जो कुछ मेरे विषय में सूसा की व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं और गीतों के  
पुस्तकों में लिखा है सब का पूरा होना अवश्य है । तब उस ने धर्मपुस्तक ४३  
समझने को उन का ज्ञान खोला . और उन से कहा यूँ लिखा है और हमी ४४  
रीति से अवश्य था कि यीशु दुःख उठाये और तीसरे दिन मृतकों में से जी  
उठे . और पिकगलीस में आरंभ कर सब देशों के लोगों में उन के नाम से ४५  
परचात्ताप की और पापमोचन की कथा सुनाई जाये । तुम इन बातों के साक्षी ४६  
हो । देखो मेरे पिता ने जिस की प्रतिज्ञा किई उस को मैं तुम्हों पर भेजता हूं ४७  
और तुम सब लो ऊपर से शक्ति न पाये तब लो पिकगलीस नगर में रहे ॥

तब यह उल्टे बैयनिया लो बाहर ले गया और अपने हाथ उठाके उल्टे ५०  
आशीस दिई । उल्टे आशीस देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग ५१  
पर उठा लिया गया । और वे उस का प्रणाम कर थड़े आनन्द से पिकगलीस ५२  
को लौट गये . और नित्य मन्दिर में ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद किया ५३  
करते थे । आमीन ॥

# योहान रचित सुसमाचार ।

पहिला पट्य ।

- १ आदि में वचन था और वचन ईश्वर के संग था और वचन ईश्वर था । वह  
२ आदि में ईश्वर के संग था । सब कुछ उस के द्वारा सृजा गया और जो सृजा  
३ गया है कुछ भी उस बिना नहीं सृजा गया । उस में जीवन था और वह जीवन  
४ मनुष्यों का उजियाला था । और वह उजियाला अधकार में चमकता है और  
५ अधकार ने उस को ग्रहण न किया ॥
- ६ एक मनुष्य ईश्वर की ओर से भेजा गया जिस का नाम योहान था । वह  
साक्षी के लिये आया कि उस उजियाले के विषय में साक्षी देवे हम लिये कि  
७ सब लोग उस के द्वारा से विश्वास करें । वह आया तो वह उजियाला न था  
८ परन्तु उस उजियाले के विषय में साक्षी देने को आया । सच्चा उजियाला जो  
९ हर एक मनुष्य को उजियाला देता है जगत में आनेवाला था । वह जगत में  
१० था और जगत उस के द्वारा सृजा गया परन्तु जगत ने उस को नहीं जाना । वह  
११ अपने निज देश में आया और उस के निज लोगों ने उसे ग्रहण न किया । परन्तु  
१२ जितने ने उसे ग्रहण किया उन्हें को अर्थात् उस के नाम पर विश्वास करनेहारों  
१३ को उस ने ईश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया । उन्हें को जन्म न  
१४ लाहू से न शरीर की इच्छा से न मनुष्य की इच्छा से परन्तु ईश्वर से हुआ । और  
वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया और हम ने उस की महिमा  
पिता के एकलौते की सी महिमा देखी । वह अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण  
१५ था । योहान ने उस के विषय में साक्षी दिई और पुकारके कहा यही था जिस  
के विषय में मैं ने कहा कि जो मेरे पीछे आता है सो मेरे आगे हुआ है क्योंकि  
१६ वह मुझ से पहिले था । उस की भरपूरी से हम सभी ने पाया है हां अनुग्रह  
१७ पर अनुग्रह पाया है । क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा से दिई गई अनुग्रह और  
१८ सच्चाई यीशु खीष्ट के द्वारा से हुए । किसी ने ईश्वर को कभी नहीं देखा है ।  
एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है उसी ने उसे वर्णन किया ॥
- १९ योहान की साक्षी यह है कि जब यहूदियों ने यिरुशलीम से याजकों और  
२० लेवीयों को उस से यह पूछने को भेजा कि तू कौन है । तब उस ने मान लिया  
२१ और नहीं सुकर गया पर मान लिया कि मैं खीष्ट नहीं हूं । तब उन्होंने ने उस से  
२२ पूछा तो कौन . क्या तू एलियाह है . उस ने कहा मैं नहीं हूं . क्या तू वह  
२३ भविष्यद्वक्ता है . उस ने उत्तर दिया कि नहीं । फिर उन्होंने ने उस से कहा तू कौन है  
२४ कि हम अपने भेजनेहारों को उत्तर देवें . तू अपने विषय में क्या कहता है । उस  
ने कहा मैं किसी का शब्द हूं जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ  
२५ सीधा करो जैसा यिश्शैयाह भविष्यद्वक्ता ने कहा । जो भेजे गये थे सो फरीशियों  
२६ में से थे । उन्होंने ने उस से पूछ करके उस से कहा जो तू न खीष्ट और न एलियाह

और न वह भविष्यद्वक्ता है तो क्यों उपनिषदा देता है । योहन ने उन को उत्तर दे दिया कि मैं तो जल से उपनिषदा देता हूँ परन्तु तुम्हारे बीच में एक मड़ा है जिसे तुम नहीं जानते हो । यही है मेरे पीछे आनेवाला जो मेरे आगे हुआ है २० मैं उस की इत्ती का बन्ध खोलने के योग्य नहीं हूँ । यह आते यदन नदी के २२ उस पार बैधावरा गांव में हुईं जहाँ योहन उपनिषदा देता था ।

दूसरे दिन योहन ने यीशु को अपने पास आते देखा और कहा देखा ईश्वर २६ का मेरा जो जगत के पाप को उठा लेता है । यही है जिस के विषय में मैं ३० ने कहा कि एक पुत्र मेरे पीछे आना है जो मेरे आगे हुआ है क्योंकि यह मुझ से पहिले था । मैं उसे नहीं चीन्टता था परन्तु जिस यह दसायेली लोगों पर २९ प्रगट किया जाय इसी लिये मैं जल से उपनिषदा देता हुआ आया हूँ । और ३२ भी योहन ने साची दिई कि मैं ने आत्मा को कपोल की नाईं मर्या से उतरते देखा है और वह उस पर उतर गया । और मैं उसे नहीं चीन्टता था परन्तु जिस ३३ ने मुझे जल से उपनिषदा देने का भेजा उसी ने मुझ से कहा जिस पर तू आत्मा को उतरने और उस पर उतरने देखे यही तो पवित्र आत्मा से उपनिषदा देनेवाला है । और मैं ने देखके साची दिई है कि यही ईश्वर का पुत्र है ॥ ३४

दूसरे दिन फिर योहन और उस के शिष्यों में से दो जन खड़े थे । और जहाँ ३५ यीशु फिरता था ज्यों वह उस पर दृष्टि करके बोला देखा ईश्वर का मेरा । उन ३७ दो शिष्यों ने उस को बोलाते मुना और यीशु के पीछे हो लिये । यीशु ने मुँह ३८ फेरके उन को पीछे आते देखके उन से कहा तुम क्या खोजते हो . उन्हीं ने उस से कहा हे ख्याी अर्थात् हे गुरु आप कहाँ रहने हैं । उस ने उन से कहा ३९ आके देखो . उन्हीं ने जाके देखा वह कहाँ रहता था और उस दिन उस के संग रहे कि दो घड़ी के अठकल दिन रहा था । जो दो जन योहन की सुनके ४० यीशु के पीछे हो लिये उन में से एक तो शिमेन पितर का भाई अन्ड्रिय था । उस ने पहिले अपने निज भाई शिमेन को पाया और उस से कहा हम ने समीह ४१ का अर्थात् खीष्ट को पाया है । तब वह उसे यीशु पास लाया और यीशु ने उस ४२ पर दृष्टि कर कहा तू यूनास का पुत्र शिमेन है तू कैसा अर्थात् पितर कहावेगा ॥

दूसरे दिन यीशु ने गालील देश को जाने की इच्छा किई और फिलिप को ४३ पाके उस से कहा मेरे पीछे आ । फिलिप तो अन्ड्रिय और पितर के नगर बैतसैदा ४४ का था । फिलिप ने नथनेल को पाके उस से कहा जिस के विषय में मूसा ने ४५ व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है उस को हम ने पाया है अर्थात् यूसाफ के पुत्र नामरत नगर के यीशु को । नथनेल ने उस से कहा क्या कोई उत्तम ४६ धनु नामरत से उत्पन्न हो सकता है . फिलिप ने उस से कहा आके देखिये । यीशु ने नथनेल को अपने पास आते देखा और उस के विषय में कहा देखो यह ४७ सचमुच इस्रायेली है जिस में कपट नहीं है । नथनेल ने उस से कहा आप मुझे ४८ कहाँ से पहचानते हैं . यीशु ने उस को उत्तर दिया कि फिलिप के तुम्हें बुलाने के पहिले जय तू गृत्तर के वृक्ष तले था तब मैं ने तुम्हें देखा । नथनेल ने उस को ४९ उत्तर दिया कि हे गुरु आप ईश्वर के पुत्र हैं आप इस्रायेल के राजा हैं । यीशु ५०

ने उस को उत्तर दिया मैं ने जो तुम से कहा कि मैं ने तुम्हें गूलर के वृक्ष तले  
५१ देखा क्या तू इस लिये विश्वास करता है . तू इन से बड़े काम देखेगा । फिर  
उस से कहा मैं तुम से सब सब कहता हूँ इस के पीछे तुम स्वर्ग को खुला और  
ईश्वर के दूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर से चढ़ते उतरते देखोगे ।

दूसरा पर्व ।

१ तीसरे दिन गालील के काना नगर में एक विवाह का भोज था और यीशु  
२ की माता वहाँ थी । यीशु भी और उस के शिष्य लोग उस विवाह के भोज में  
३ बुलाये गये । जब दाख रस घट गया तब यीशु की माता ने उस से कहा उन के  
४ पास दाख रस नहीं है । यीशु ने उस से कहा ते नारी आप को मुझ से क्या  
५ काम . मेरा समय अब लों नहीं पहुँचा है । उस की माता ने सेवकों से कहा जो  
६ कुछ वह तुम से कहे सो करो । वहाँ पत्थर के छः मटके यिहूदियों के शुद्ध करने  
की रीति के अनुसार धरे थे जिन में डेढ़ डेढ़ अथवा दो दो मन समाते थे ।  
७ यीशु ने उन से कहा मटकों को जल से भर देओ . सो उन्होंने ने उन्हें मुँहामुँह  
८ भर दिया । तब उस ने उन से कहा अब उँडेलो और भोज के प्रधान के पास ले  
९ जाओ . वे ले गये । जब भोज के प्रधान ने वह जल जो दाख रस बन गया  
था चीखा और वह नहीं जानता था कि वह कहाँ से आया परन्तु जिन सेवकों  
१० ने जल उँडेलो था वे जानते थे तब भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाया . और  
उस से कहा हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाख रस देता और अब लोग पीके  
११ छक जाते तब मध्यम देता है . तू ने अच्छा दाख रस अब लों रखा है । यीशु  
ने गालील के काना नगर में आश्चर्य कर्मों का यह आरंभ किया और अपनी  
महिमा प्रगट किई और उस के शिष्यों ने उस पर विश्वास किया ॥

१२ इस के पीछे वह और उस की माता और उस के भाई और उस के शिष्य  
१३ लोग कर्नोहुस नगर को गये परन्तु वहाँ बहुत दिन न रहे । यिहूदियों का  
१४ निस्तार पर्व निकट था और यीशु यिहूशलीम को गया । और उस ने मन्दिर में  
गोबूओं और भेड़ों और कपोतों के बेचनेहारों को और सर्पों को बैठे हुए पाया ।  
१५ तब उस ने रस्सियों का कोड़ा बनाके उन सभी को भेड़ों और गोबूओं समेत  
मन्दिर से निकाल दिया और सर्पों के पैसे बिथराके पीठों को चलट दिया .  
१६ और कपोतों के बेचनेहारों से कहा इन को यहाँ से ले जाओ मेरे पिता का घर  
१७ कपोतार का घर मत बनाओ । तब उस के शिष्यों ने स्मरण किया कि लिखा है  
तेरे घर के विषय में की धुन मुझे खा जाती है ॥

१८ इस पर यिहूदियों ने उस से कहा तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह  
१९ दिखाता है । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि इस मन्दिर को ढा दो और मैं  
२० उसे तीन दिन में उठाऊँगा । यिहूदियों ने कहा यह मन्दिर कयालीस बरस में  
२१ बनाया गया और तू क्या तीन दिन में इसे उठावेगा । परन्तु वह अपने देह के  
२२ मन्दिर के विषय में बोला । सो जब वह मृतकों से जी उठा तब उस के शिष्यों  
ने स्मरण किया कि उस ने उन्होंने से यह बात कही थी और उन्होंने ने धर्मपुस्तक  
पर और उस बचन पर जो यीशु ने कहा था विश्वास किया ॥

पुरुष जितनों को बाँटा हुई और खड़वे और बालियाँ और कुंडल और अंगूठियाँ ये सब सोने के गहने थे और हर एक मनुष्य जिस ने परमेश्वर के लिये सोने की भेंट दी है । और हर एक मनुष्य जिस के पास नीला और बैजनी और लाल और २३ मूत के भीने वस्त्र और बकरियों के रोम और भैंसों के लाल चमड़े और तुंग्सों के चमड़े थे लाया । हर एक जिस ने कि परमेश्वर को रुपये की अथवा पीतल की २४ भेंट दी है अपनी भेंट परमेश्वर के लिये लाया और जिस किसी के पास शमशाद की लकड़ी थी सो उसे सेवा के समस्त कार्य के लिये लाया । और समस्त स्त्रियों २५ ने जो बुद्धिमान थीं अपने अपने हाथों से काना और अपना काना हुआ नीला और बैजनी और लाल और भीने मूत का वस्त्र लाई । और समस्त स्त्रियों ने २६ जिन के मनों ने उन्हें बुद्धि से उभाड़ा बकरियों के रोम काते । और प्रधान गणेश २७ और चपराम के लिये मृग्यकांन और जड़ने के मणि लाये । और सुगंध द्रव्य और २८ तेल दीअट के लिये और अभिषेक के तेल के लिये और जलाने के सुगंध द्रव्य के लिये । दया पुरुष और दया म्यो जिस कामन चाहा सो समस्त कार्य के लिये जो २९ परमेश्वर ने बनाने का मूमा के द्वारा कया या इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये बाँकित भेंट लाये ॥

तब मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा कि देखो परमेश्वर ने उरी के पुत्र ३० बजिज़िएल को जो हर का पोता और यहूदाह के कुल का है नाम नंके बुनाया । और उस ने उसे बुद्धि और समझ और ज्ञान में और समस्त प्रकार की दृष्टांटी में ३१ परमेश्वर के आत्मा से भर दिया । कि अपनी बुद्धि से दृष्टांटी का कार्य निकाले ३२ जिसमें सोने और रुपये और पीतल के कार्य करे । और मणि के खोदने में जड़ने ३३ के लिये और काष्ठ के खोदने में जिसमें समस्त प्रकार की दृष्टांटी के कार्य करे । और उस ने उस के और अखिसमक के बेटे अहलियव के जो दान के कुल से है मन ३४ में डाला कि सिग्यलाय । उस ने उन के अंतःकरणों में ऐसा ज्ञान दिया कि खोदक ३५ के और दृष्टांटक के और बूटाकाटक के समस्त कार्य करें नीला और बैजनी लाल और भीने वस्त्र में और जालाह के कार्य में और दृष्टांटी के कार्य में जो बुद्धि से निकालते हैं ॥

छत्तीसवां पर्व ।

तब बजिज़िएल और अहलियव और सब बुद्धिमानों ने जिन में परमेश्वर ने १ बुद्धि और समझ रखी थी कि पवित्र स्थान की सेवा के समस्त प्रकार के कार्य जैसा कि परमेश्वर ने समस्त आज्ञा दी है वैसा उन्होंने किया । सो मूसा २ ने बजिज़िएल और अहलियव और हर एक बुद्धिमान का जिस के हृदय में परमेश्वर ने बुद्धि और समझ डाली थी हर एक जिस के मन ने उसे उभाड़ा था कि कार्य करने के लिये पास था । और उन्होंने ने मूसा के साम्हने से समस्त ३ भेंट जिसे इसराएल के संतान पवित्र स्थान की सेवा के कार्य के लिये लाये थे पाई और वे हर विधान उस के पास सममनती भेंट लाते थे ॥

और सब विद्यावान जो पवित्र स्थान का समस्त कार्य करते थे हर एक ४ मनुष्य अपने अपने कार्य से जो बट करत थे आये । और मूसा को कहके बोले ५ कि कार्य की सेवा से जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है लोग अधिक लाते हैं । तब ६



आया है और मनुष्यों ने अंधियारे को उजियाले से अधिक प्यार किया क्योंकि  
 २० उन के काम बुरे थे । क्योंकि जो कोई बुराई करता है सो उजियाले से घिनु  
 करता है और उजियाले के पास नहीं आता है न हो कि उस के कामों पर  
 २१ उलहना दिया जाय । परन्तु जो सच्चाई पर चलता है सो उजियाले के पास आता  
 है इस लिये कि उस के काम प्रगट होवें कि ईश्वर की ओर से किये गये हैं ॥

२२ इस के पीछे यीशु और उस के शिष्य यिहूदिया देश में आये और उस ने वहां  
 २३ उन के संग रहके अपतिसमा दिलाया । योहान भी शालीम के निकट रेनन नाम  
 स्थान में अपतिसमा देता था क्योंकि वहां बहुत जल था और लोग आके  
 २४ अपतिसमा लेते थे । क्योंकि योहान अब लों बन्दीगृह में नहीं डाला गया था ।  
 २५ योहान के शिष्यों और यिहूदियों में शुद्ध करने के विषय में बिवाद हुआ ।  
 २६ और उन्होंने ने योहान के पास आके उस से कहा हे गुरु जो यर्दन के उस पार  
 आप के संग था जिस पर आप ने साक्षी दिई है देखिये वह अपतिसमा दिलाता  
 २७ है और सब लोग उस के पास जाते हैं । योहान ने उत्तर दिया यदि स्वर्ग से उस  
 २८ को न दिया जाय तो मनुष्य कुछ नहीं पा सकता है । तुम आप ही मेरे साक्षी  
 २९ हो कि मैं ने कहा मैं खोष्ट नहीं हूं पर उस के आगे भेजा गया हूं । दूल्हन  
 जिस की है सोई दूल्हा है परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा होके उस की सुनता है  
 ३० दूल्हे के शब्द से अति आनन्दित होता है । मेरा यह आनन्द पूरा हुआ है । अथवा  
 ३१ है कि वह बड़े और मैं घटूं । जो ऊपर से आता है सो सभी के ऊपर है । जो  
 पृथिवी से है सो पृथिवी का है और पृथिवी की बातें कहता है । जो स्वर्ग से  
 ३२ आता है सो सभी के ऊपर है । जो उस ने देखा और सुना है वह उस पर  
 ३३ साक्षी देता है और कोई उस की साक्षी ग्रहण नहीं करता । जिस ने उस की  
 ३४ साक्षी ग्रहण किई है सो इस बात पर काप दे चुका कि ईश्वर सत्य है । इस  
 लिये कि जिसे ईश्वर ने भेजा है सो ईश्वर की बातें कहता है क्योंकि ईश्वर  
 ३५ उस को आत्मा नाप से नहीं देता है । पिता पुत्र को प्यार करता है और उस  
 ३६ ने सब कुछ उस के हाथ में दिया है । जो पुत्र पर विश्वास करता है उस को  
 अनन्त जीवन है पर जो पुत्र को न माने सो जीवन को नहीं देखेगा परन्तु ईश्वर  
 का क्रोध उस पर रहता है ॥

चौथा पर्ख ।

१ जब प्रभु ने जाना कि फरीशियों ने सुना है कि यीशु योहान से अधिक शिष्य  
 लेते उन्हें अपतिसमा देता है । तौभी यीशु आप नहीं परन्तु उस के शिष्य  
 इसमा देते थे । तब वह यिहूदिया को छोड़के फिर गालील को गया । और  
 पता शोमिरोन देश में से जाना अथवा हुआ । सो वह शिकर नाम शोमिरोन  
 नगर पर उस भूमि के निकट पहुंचा जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसफ को  
 पाया । याकूब का कूआं वहां था सो यीशु मार्ग में चलने से थकित हो  
 पर पड़ी बैठ गया और दो पहर के निकट था । एक शोमिरोनी स्त्री  
 भरने को आई । यीशु ने उस से कहा मुझे पीने को दीजिये । उस के शिष्य  
 भीवन मोल लेने को नगर में गये थे । शोमिरोनी स्त्री ने उस से कहा

अब वह निम्नार पर्वत में विशालीम में था यद्यपि बहुत लोगों ने उस के २३  
आश्चर्य कर्मों को जो जो वह करता था देखके उस के नाम पर विश्वास किया ।  
परन्तु यीशु ने अपने को उन्हीं के हाथ नहीं मोपा क्योंकि वह मर्मा को जानता २४  
था , और उसे प्रणयन न था कि मनुष्य के विषय में मर्मा कोई देवे क्योंकि वह २५  
आप जानता था कि मनुष्य से क्या है ।

### तीसरा पर्व ।

फरीसियों में से निकोदाम नाम एक मनुष्य था जो विद्वदियों का एक प्रधान १  
था । वह रात को यीशु पास आया और उस से कहा है तुम हम जानते हैं कि २  
आप ईश्वर की ओर से उपदेशक आये हैं क्योंकि कोई हम आश्चर्य कर्मों को  
जो आप करते हैं जो ईश्वर उस के संग न हो तो नहीं कर सकता है । यीशु ३  
ने उस को उत्तर दिया कि मैं तुम्ह से कुछ मन्त्र कहना हूं कोई यदि फिरके न इनमें  
तो ईश्वर का राज्य नहीं देख सकता है । निकोदाम ने उस से कहा मनुष्य ब्रह्मा ४  
होके ज्योतिर जन्म ले सकता है , क्या वह अपने माता के गर्भ में दूसरी बार  
प्रवेश करके जन्म ले सकता है । यीशु ने उत्तर दिया कि मैं तुम्ह से कुछ मन्त्र ५  
कहना हूं कोई यदि जन और आत्मा से न जन्मे तो ईश्वर के राज्य में प्रवेश  
नहीं कर सकता है । जो शरीर से जन्मा है सो शरीर है और जो आत्मा से ६  
जन्मा है सो आत्मा है । अतः भा मन कर कि मैं ने तुम्ह से कहा तुम को फिरके  
जन्म लेना अवश्य है । पवन कहां आता है वहां आता है और तू उस का ७  
गन्तव्य सुनता है परन्तु नहीं जानता है वह कहां से आता और किधर को जाता  
है , जो कोई आत्मा से जन्मा है सो इन्हीं रीति से है ।

निकोदाम ने उस को उत्तर दिया कि यह बातें क्योंकर हो सकती हैं । यीशु ने ८  
उस को उत्तर दिया क्या तू इसायेला लोगों का उपदेशक है और यह बातें नहीं ९  
जानता । मैं तुम्ह से कुछ मन्त्र कहना हूं हम जो जानते हैं सो कहते हैं और जो १०  
देखा है उस पर मार्गी देते हैं और तुम हमारी मार्गी ग्रहण नहीं करते हो । जो मैं ११  
ने तुम से पृथिवी पर जो बातें कही और तुम प्रतीति नहीं करने हो तो यदि मैं तुम  
से स्वर्ग में जो बातें कहूं तुम ज्योतिर प्रतीति करोगे । और कोई स्वर्ग पर नहीं १२  
चढ़ गया है केवल वह जो स्वर्ग में उगता अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है ।  
जिस रीति से मूसा ने जंगल में मांस को खंजा किया उसी रीति से अवश्य है कि १३  
मनुष्य का पुत्र खंजा किया जाय , इस निये कि जो कोई हम पर विश्वास करे १४  
सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पाये । क्योंकि ईश्वर ने जगत को ऐसा १५  
प्यार किया कि उस ने अपना एकलिंग पुत्र दिया कि जो कोई उस पर विश्वास  
करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पाये । ईश्वर ने अपने पुत्र को जगत १६  
में इस निये नहीं भेजा कि जगत को बंट के दोस्र ठहरावे परन्तु इस निये कि  
जगत उस के द्वारा चला पाये । जो उस पर विश्वास करता है सो बंट के दोस्र १७  
नहीं ठहराया जाता है परन्तु जो विश्वास नहीं करता सो बंट के दोस्र ठहर  
चुका है क्योंकि उस ने ईश्वर के एकलिंग पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया  
है । और बंट के दोस्र ठहराने का कारण यह है कि उल्लिखित जगत में १८

३५ कहे । क्या तुम नहीं कहते हो कि अब भी चार मास हैं तब कटनी आवेगी ।  
 ३६ देखो मैं तुम से कहता हूँ अपनी आंखें उठाके खेतों को देखो कि वे कटनी के  
 ३७ लिये पक चुके हैं । और काटनेद्वारा खनि पाता और अनन्त जीवन के लिये फल  
 ३८ बटोरता है जिस्ते बोनेद्वारा और काटनेद्वारा दोनों एक संग आनन्द करें । इस  
 ३९ में वह बात सच्ची है कि एक बोता है और दूसरा काटता है । जिस में तुम ने  
 परिश्रम नहीं किया है उस को मैं ने तुम्हें काटने को भेजा । दूसरों ने परिश्रम  
 किया है और तुम ने उन को परिश्रम में प्रवेश किया है ॥

४० उस नगर के शोमिरोनियों में से बहुतों ने उस स्त्री के बचन के कारण जिस  
 ने साक्षी दिई कि उस ने सब कुछ जो मैं ने किया है सुझ से कहा है यीशु पर  
 ४१ विश्वास किया । इस लिये जब शोमिरोनी लोग उस पास आये तब उस से बिन्ती  
 ४२ किई कि हमारे यहां रहिये । और वह वहां दो दिन रहा । और उस के बचन  
 ४३ के कारण बहुत अधिक लोगों ने विश्वास किया । और उस स्त्री से कहा हम  
 ४४ अब तेरे बचन के कारण विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि हम ने आप ही सुना है  
 और जानते हैं कि यह सचमुच जगत का नायकर्ता खीष्ट है ।

४५ दो दिन के पीछे यीशु वहां से निकलके गालील को गया । उस ने तो आप  
 ४६ ही साक्षी दिई कि भविष्यद्वक्ता अपने निज देश में आदर नहीं पाता है । जब  
 वह गालील में आया तब गालीलियों ने उसे ग्रहण किया क्योंकि जो कुछ उस ने  
 यिरूशलीम में पर्व में किया था उन्हें ने सब देखा था कि वे भी पर्व में  
 ४७ गये थे । सो यीशु फिर गालील के काना नगर में आया जहां उस ने जल को  
 दाख रस बनाया था । और राजा के यहां का एक पुरुष था जिस का पुत्र  
 ४८ कफर्नाहुम में रोगी था । उस ने जब सुना कि यीशु यिहूदिया से गालील में आया  
 है तब उस पास जाके उस से बिन्ती किई कि आके मेरे पुत्र को चंगा कीजिये ।  
 ४९ क्योंकि वह लड़का मरने पर था । यीशु ने उस से कहा जो तुम बिन्हे और  
 ५० अद्भुत काम न देखो तो विश्वास नहीं करोगे । राजा के यहां के पुरुष ने उस से  
 ५१ कहा हे प्रभु मेरे बालक के मरने के आगे आइये । यीशु ने उस से कहा चला  
 जा तेरा पुत्र जीता है । उस मनुष्य ने उस बात पर जा यीशु ने उस से कही  
 ५२ विश्वास किया और चला गया । और वह जाता ही था कि उस के दास उस  
 ५३ से आ मिले और सन्देश दिया कि आप का लड़का जीता है । उस ने उन से  
 पूछा किस घड़ी उस का जी हलका हुआ । उन्हें ने उस से कहा कल एक घड़ी  
 ५४ दिन भुक्ते उबर ने उस को ढोड़ा । सो पिता ने जाना कि उसी घड़ी में हुआ  
 जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा तेरा पुत्र जीता है और उस ने औ उस के सारे  
 ५५ घराने ने विश्वास किया । यह दूसरा आश्चर्य कर्म यीशु ने यिहूदिया से गालील  
 में आके किया ॥

पांचवां पर्व ।

१ इस के पीछे यिहूदियों का पर्व हुआ और यीशु यिरूशलीम को गया ।  
 २ यिरूशलीम में भेड़ी फाटक के पास एक कुंड है जो इब्रीय भाषा में बैथेसदा  
 ३ कहायता है जिस के पांच ओसारे हैं । इन्हीं में रोगियों आंधों लंगड़ों और

आप पिछुदी होके मुझ से जो गोमिरोनी स्त्री हूँ क्योंकि पीने को मांगते हैं  
 क्योंकि पिछुदी लोग गोमिरोनियों के संग दण्ड्यहार नहीं करते । यीशु ने उस १०  
 को उत्तर दिया जो तू दण्ड्यार के दान को खानगी और यह क्यों है जो मुझ से  
 कहता है मुझे पीने को दीजिये तो तू उस से मांगती और यह मुझे अमृत जल  
 देता । स्त्री ने उस से कहा है प्रभु जल भरने को आप के पास कुछ नहीं है और ११  
 कूआँ गाँधिरा है तो यह अमृत जल आप को कहां से मिला है । क्या आप हमारे १२  
 पिता याकूब से बड़े हैं जिस ने यह कूआँ हमें दिया और आप ही अपने भस्मान  
 और अपने ठोकर समेत उस से से पिया । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो १३  
 कोई यह जल पीये सो फिर पियाना होगा . पर जो कोई यह जल पीये जो मैं १४  
 उस को देऊँगा सो फिर कभी पियाना न होगा परन्तु जो जल मैं उसे देऊँगा सो  
 उस में अनन्त जीवन जो उमंगनेहारे जल का सोता हो आयगा । स्त्री ने उस से १५  
 कहा है प्रभु यह जल मुझे दीजिये कि मैं पियामी न होऊँ और न जल भरने को  
 यही आऊँ । यीशु ने उस से कहा जो अपने स्वामी को दुनाके यहाँ था । स्त्री १६  
 ने उत्तर दिया कि मेरे तई स्वामी नहीं है . यीशु उस से बोला तू ने अच्छा कहा १७  
 कि मेरे तई स्वामी नहीं है . क्योंकि तरे पाँच स्वामी हो चुके और अब जो तेरे १८  
 संग रहता है सो तेरा स्वामी नहीं है . यह तू ने सच कहा है । स्त्री ने उस से १९  
 कहा है प्रभु मुझे मूक पड़ता है कि आप भविष्यद्वक्ता हैं । हमारे पिता ने हमें २०  
 पछाड़ पर भजन किया और आप लोग कहने हैं कि यह स्थान जहाँ भजन करना  
 उचित है विरजलीम में है । यीशु ने उस से कहा है नारी मेरी प्रतीति कर कि २१  
 यह समय आता है जिस में तुम न इस पछाड़ पर और न विरजलीम में पिता  
 का भजन करोगे । तुम लोग जिसे नहीं जानते हो इस का भजन करते हो इस २२  
 लोग जिसे जानते हैं इस का भजन करते हैं क्योंकि आग पिछुदियों में से है ।  
 परन्तु यह समय आता है और अब है जिस में सच्चे भक्त आत्मा और सच्चाई से २३  
 पिता का भजन करेंगे क्योंकि पिता ऐसे भजन करनेहारों को चाहता है । दण्ड्यार २४  
 आत्मा है और अवश्य है कि उस का भजन करनेहारे आत्मा और सच्चाई से भजन  
 करें । स्त्री ने उस से कहा मैं जानती हूँ कि समीह अर्थात् खीष्ट आता है . यह २५  
 अब आयेगा तब हमें सब कुछ बतावेगा । यीशु ने उस से कहा मैं जो तुम से २६  
 बोखता हूँ यही हूँ ॥

इतने में उस की शिष्य आये और अचंभा किया कि यह स्त्री ने जान करता २७  
 है तौभी किनी ने नहीं कहा कि आप क्या चाहते हैं अथवा किम लिये उस से  
 बात करते हैं । तब स्त्री ने अपना बड़ा छोड़ा और नगर में जाके लोगों से कहा . २८  
 आओ एक मनुष्य को देखो जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया है मुझ से कहा २९  
 है . यह क्या खीष्ट है । सो ये नगर में निकलके उस पास आये ॥ ३०

इस बीच में शिष्यों ने यीशु से विनी किई कि ये गुरु स्वाद्ये । उस ने उन ३१  
 से कहा खाने को मेरे पास भोजन है जो तुम नहीं जानते हो । शिष्यों ने आपस ३२  
 में कहा क्या कोई उस पास कुछ खाने को लाया है । यीशु ने उन से कहा मेरा ३३  
 भोजन यह है कि अपने भोजनेहारे की इच्छा पर चलूँ और उस का काम पूरा ३४

२५ पहुंचा है । मैं तुम से सब सब कहता हूँ वह समय आता है और अब है जिस  
 २६ में मृतक लोग ईश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे और जो सुनेंगे सो जीयेंगे । क्योंकि  
 २७ जैसा पिता आप ही से जीता है तैसा उस ने पुत्र को भी अधिकार दिया है  
 २८ कि आपही से जीवे . और उस को विचार करने का भी अधिकार दिया है  
 २९ क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है । इस से अचंभा मत करो क्योंकि वह समय  
 ३० आता है जिस में जो कब्रों में हैं सो सब उस का शब्द सुनके निकलेंगे . जिस  
 से भलाई करनेहारे जीवन के लिये जी उठेंगे और खुराई करनेहारे दंड के लिये  
 जी उठेंगे ॥

३० मैं आप से कुछ नहीं कर सकता हूँ जैसा मैं सुनता हूँ वैसा विचार करता हूँ  
 और मेरा विचार यथार्थ है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं चाहता हूँ परन्तु पिता  
 ३१ की इच्छा जिस ने मुझे भेजा । जो मैं अपने विषय में साक्षी देता हूँ तो मेरी साक्षी  
 ३२ ठीक नहीं है । दूसरा है जो मेरे विषय में साक्षी देता है और मैं जानता हूँ कि जो  
 ३३ साक्षी वह मेरे विषय में देता है सो साक्षी ठीक है । तुम ने योहान के पास भेजा और  
 ३४ उस ने सत्य पर साक्षी दिई । मैं मनुष्य से साक्षी नहीं लेता हूँ परन्तु मैं यह बात कहता  
 ३५ हूँ इस लिये कि तुम त्राण पावो । वह तो जलता और चमकता हुआ दीपक था  
 ३६ और तुम कितनी बेर लो उस के उलियाले में आनन्द करने को प्रसन्न थे । परन्तु  
 योहान की साक्षी से बड़ी साक्षी मेरे पास है क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरे करने  
 को दिये हैं अर्थात् येही काम जो मैं करता हूँ मेरे विषय में साक्षी देते हैं कि पिता  
 ३७ ने मुझे भेजा है । और पिता ने जिस ने मुझे भेजा आप ही मेरे विषय में साक्षी  
 ३८ दिई है . तुम ने कभी उस का शब्द न सुना है और उस का रूप न देखा है । और  
 तुम उस का खचन अपने में नहीं रखते हो कि जिसे उस ने भेजा उस का विश्वास  
 ३९ नहीं करते हो । धर्मपुस्तक में ठुंठो क्योंकि तुम समझते हो कि उस में अनन्त  
 ४० जीवन हमें मिलता है और वही है जो मेरे विषय में साक्षी देता है । परन्तु  
 ४१ तुम जीवन पाने को मेरे पास आने नहीं चाहते हो । मैं मनुष्यों से आदर नहीं  
 ४२ लेता हूँ । परन्तु मैं तुम्हें जानता हूँ कि ईश्वर का प्रेम तुम में नहीं है । मैं  
 अपने पिता के नाम से आया हूँ और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते हो . यदि  
 ४४ दूसरा अपने ही नाम से आवे तो उसे ग्रहण करोगे । तुम जो एक दूसरे से  
 आदर लेते हो और वह आदर जो अद्वैत ईश्वर से है नहीं चाहते हो क्योंकि  
 ४५ विश्वास कर सकते हो । मत समझो कि मैं पिता के आगे तुम पर दोष  
 लगाऊंगा , तुम पर दोष लगानेहारा तो है अर्थात् मूसा जिस पर तुम भरोसा  
 ४६ रखते हो । क्योंकि जो तुम मूसा का विश्वास करते तो मेरा विश्वास करते इस  
 ४७ लिये कि उस ने मेरे विषय में लिखा । परन्तु जो तुम उस के लिखे पर विश्वास  
 नहीं करते हो तो मेरे कहे पर क्योंकि विश्वास करोगे ॥

कठवां पर्व ।

१ इस के पीछे योशु गालील के समुद्र अर्थात् तिखरिया के समुद्र के उस पार  
 २ गया । और बहुत लोग उस के पीछे हो लिये इस कारण कि उन्होंने ने उस के  
 ३ आश्चर्य कर्मों को देखा जो वह रोगियों पर करता था । तब योशु पर्वत पर

सूखे आगवालों की बड़ी भीड़ पड़ी रहती थी जो जल के छिलने की याँट देखती थी । क्योंकि समय के अनुसार एक स्याहीदार उम कुँड में उतारके जल को छिलाना था । इस से जो कोई जल के छिलने के पीछे उस में पड़ने लगता था कोई भी रोग उस को लगा हो चंगा हो जाता था । एक मनुष्य यहाँ था जो अड़तीस वर्षों में रोगी था । यीशु ने उसे घड़े हुए देखके और यह जानके कि उसे अब बहुत दिन हो चुके उस में कहा क्या तू चंगा होने चाहता है । रोगी ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरा कोई मनुष्य नहीं है कि जब जल छिलाना जाय तब मुझे कुँड में उतारे और जल लों में जागा हूँ दूसरा मुझ में आगे उतरता है । यीशु ने उस में कहा उठ अपनी ग्याट उठाके चल । यह मनुष्य तुम्हें चंगा हो गया और अपनी ग्याट उठाके चलने लगा पर उसी दिन शिथिलता था । इस लिये विद्वदियों ने उस चंगा किये हुए मनुष्य से कहा यह शिथिलता का दिन है ग्याट उठाना तुम्हें उचित नहीं है । उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिन ने मुझे चंगा किया उसी ने मुझ में कहा अपनी ग्याट उठाके चल । उन्होंने ने उस में पूछा यह मनुष्य कौन है जिन ने तुझ में कहा अपनी ग्याट उठाके चल । परन्तु यह चंगा किया हुआ मनुष्य नहीं जानता था यह कौन है क्योंकि उस ग्यान में भीड़ होने से यीशु यहाँ से दूर गया ॥

इस के पीछे यीशु ने उस को मन्दिर में पाके उस में कहा देख तू चंगा हुआ है फिर पाप मत कर न हो कि इस में पुरी कोई छिपानि तुझ पर आवे । उस मनुष्य ने जाके विद्वदियों ने यह दिया कि जिन ने मुझे चंगा किया सो यीशु है । इस कारण विद्वदियों ने यीशु को मनाया और उसे मार डालने चाहा कि उस ने शिथिलता के दिन में यह काम किया था । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मेरा पिता अब लों काम करता है मैं भी काम करता हूँ । इस कारण विद्वदियों ने और भी उसे मार डालने चाहा कि उस ने न केवल शिथिलता का विश्व को संवन किया परन्तु ईश्वर का अपना निज पिता कहके अपने को ईश्वर के तुल्य भी किया ॥

इस पर यीशु ने उन्हें से कहा मैं तुम से सब सब कहता हूँ पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता है केवल जो कुछ वह पिता को करने देंगे क्योंकि जो कुछ वह करता है उसे पुत्र भी वैसेही करता है । क्योंकि पिता पुत्र को प्यार करता है और जो वह आप करता सो सब उस को बताता है और वह इन से यह काम उस को बतावेगा किन्तु तुम अचंभा करो । क्योंकि जैसा पिता मृतकों को उठाता और छिलता है वैसाही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है । और पिता किसी का विचार भी नहीं करता है परन्तु विचार करने का सब अधिकार पुत्र को दिया है इस लिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे पुत्र का आदर करें । जो पुत्र का आदर नहीं करता है सो पिता का जिस ने उसे भेजा आदर नहीं करता है । मैं तुम से सब सब कहता हूँ जो मेरा श्रवण सुनके मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है उस को अनन्त जीवन है और दंड की आशा उस पर नहीं होती परन्तु यह मृत्यु से पार होके जीवन में



२८ अर्थात् ईश्वर ने उसी पर क्राप दिई है । उन्हीं ने उस से कहा ईश्वर के कार्य  
 २९ करने को हम क्या करें । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया ईश्वर का कार्य यह है कि  
 ३० जिसे उस ने भेजा है उस पर तुम विश्वास करो । उन्हीं ने उस से कहा आप  
 कौन सा आश्चर्य कर्म करते हैं कि हम देखके आप का विश्वास करें . आप  
 ३१ क्या करते हैं । हमारे पितरों ने जंगल में मज्जा खाया जैसा लिखा है कि उस ने  
 ३२ उन्हें स्वर्ग की रोटी खाने को दिई । यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सब सब  
 कहता हूँ मनुष्य ने तुम्हें स्वर्ग की रोटी न दिई परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची स्वर्ग  
 ३३ की रोटी देता है । क्योंकि ईश्वर की रोटी वह है जो स्वर्ग से उतरती और  
 ३४ जगत को जीवन देती है । उन्हीं ने उस से कहा हे प्रभु यही रोटी हमें मित्य  
 ३५ दीजिये । यीशु ने उन से कहा जीवन की रोटी मैं हूँ . जो मेरे पास आवे सो  
 कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करे सो कभी प्यासा न होगा ।  
 ३६ परन्तु मैं ने तुम से कहा कि तुम मुझे देख भी चुके और विश्वास नहीं करते हो ।  
 ३७ सब जो पिता मुझ को देता है मेरे पास आवेगा और जो कोई मेरे पास आवे मैं  
 ३८ उसे किसी रीति से दूर न करूँगा । क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजे-  
 ३९ हारे की इच्छा पूरी करने को स्वर्ग से उतरा हूँ । और पिता की इच्छा जिस ने  
 मुझे भेजा यह है कि जिन्हें उस ने मुझ को दिया है उन में से मैं किसी को न  
 ४० खोजूँ परन्तु उन्हें पिछले दिन में उठाऊँ । मेरे भेजेहारे की इच्छा यह है कि जो  
 कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे सो अनन्त जीवन पावे और मैं उसे  
 पिछले दिन में उठाऊँगा ॥

४१ तब यहूदी लोग उस के विषय में कुड़कुड़ाने लगे इस लिये कि उस ने कहा  
 ४२ जो रोटी स्वर्ग से उतरी सो मैं हूँ । वे बोले क्या यह यूसफ का पुत्र यीशु नहीं  
 है जिस के माता और पिता को हम जानते हैं . तो वह क्योंकर कहता है कि  
 ४३ मैं स्वर्ग से उतरा हूँ । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि आपस में मत कुड़कुड़ाओ ।  
 ४४ यदि पिता जिस ने मुझे भेजा उसे न खींचे तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता  
 ४५ है और उस को मैं पिछले दिन में उठाऊँगा । भविष्यवक्ताओं के पुस्तक में लिखा  
 है कि वे सब ईश्वर के सिखाये हुए होंगे सो हर एक जिस ने पिता से सुना और  
 ४६ सीखा है मेरे पास आता है । यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है . केवल  
 ४७ जो ईश्वर की ओर से है उसी ने पिता को देखा है । मैं तुम से सब सब कहता  
 ४८ हूँ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है उस को अनन्त जीवन है । मैं जीवन की  
 ४९ रोटी हूँ । तुम्हारे पितरों ने जंगल में मज्जा खाया और मर गये । यह वह रोटी  
 ५० है जो स्वर्ग से उतरती है कि जो उस से खावे सो न मरे । मैं जीवती रोटी हूँ  
 जो स्वर्ग से उतरी . यदि कोई यह रोटी खाये तो सदा लों जीयेगा और जो  
 ५१ रोटी मैं देऊँगा सो मेरा मांस है जिसे मैं जगत के जीवन के लिये देऊँगा । इस  
 पर यहूदी लोग आपस में विवाद करने लगे कि यह हमें क्योंकर अपना मांस  
 ५२ खाने को दे सकता है । यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सब सब कहता हूँ जो  
 तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खावो और उस का लोहू न पीवो तो तुम में  
 ५३ जीवन नहीं है । जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है उस को अनन्त

चढ़के अपने शिष्यों के संग यहाँ बैठा । और शिष्यों का पर्व अर्थात् निस्तार ४  
 पर्व निकट था । यीशु ने अपनी आंखें उठाके बहुत लोगों को अपने पास ५  
 आते देखा और फिलिप से कहा इस कहां से रोटी मांग लेवें कि ये लोग ६  
 खावें । उस ने उसे परखने को यह बात कही क्योंकि जो यह करने पर था सो ७  
 आप जानता था । फिलिप ने उस को उत्तर दिया कि दो सौ मूर्कियों की रोटी ८  
 उन के लिये इतनी भी न होगी कि उन में से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिले । ९  
 उस के शिष्यों में से एक ने अर्थात् शिमेन पितर के भाई अन्द्रिय ने उस से १०  
 कहा . यहाँ एक कौकरा है जिस पास खर की पांच रोटी और दो मछली हैं ११  
 परन्तु इतने लोगों के लिये ये क्या हैं । यीशु ने कहा उन मनुष्यों को बैठायो . १२  
 उस स्थान में बहुत घास थी सो पुन्य जो शिन्ती में पांच मछल के चटकल से १३  
 बैठ गये । तब यीशु ने रोटियां ले धन्य मानके शिष्यों को बांट दिई और १४  
 शिष्यों ने बैठनेहारों को और वैसेही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे उतनी १५  
 दिई । जब वे तृप्त हुए तब उस ने अपने शिष्यों से कहा अब हुए दुकड़े बटोर १६  
 सो कि कुछ खेया न जाय । सो उन्होंने ने बटोरा और जब की पांच रोटीयों १७  
 के दो दुकड़े खानेहारों से खच रहे उन से बारह टोकरी भरीं । उन मनुष्यों ने १८  
 यह आश्चर्य कर्म जो यीशु ने किया था देखाके कहा यह मनुष्य यह १९  
 भविष्यद्वक्ता है जो जगत में आनेवाला था । तब यीशु ने जाना कि ये मुझे २०  
 राजा बनाने के लिये आके मुझे परकटंगे तब यह फिर अकला पर्यंत पर गया ।

जब सांझ हुई तब उस के शिष्य लोग समुद्र के तीर पर गये . और नाव २१  
 पर चढ़के समुद्र के उस पार कफर्नाहम को जाने लगे . और अधियारा हुआ २२  
 था और यीशु उन के पास नहीं आया था । बड़ी खपार के बटने से समुद्र में २३  
 लहरें भी उठती थीं । जब वे डेढ़ अथवा दो कोस खे गये थे तब उन्होंने ने यीशु २४  
 को समुद्र पर चलते और नाव के निकट आते देखा और हर गये । परन्तु उस २५  
 ने उन से कहा मैं हूं डरो मत । तब वे उसे नाव पर चढ़ा लेने को प्रसन्न थे २६  
 और तुरन्त नाव उस तीर पर लड़ां छे जाते थे लग गई ॥

दूसरे दिन जो लोग समुद्र के उस पार गये थे उन्होंने ने जाना कि जिस नाव २७  
 पर यीशु के शिष्य चढ़े उसे छोड़के और कोई नाव यहाँ नहीं थी और यीशु २८  
 अपने शिष्यों के संग उस नाव पर नहीं चढ़ा पर केवल उस के शिष्य चले गये । २९  
 तौभी पीछे और नार्वे तिवरिया नगर से उस स्थान के निकट आई थीं जहाँ उन्होंने ३०  
 ने जब प्रभु ने धन्य माना था रोटी खाई । सो जब लोगों ने देखा कि यीशु ३१  
 यहाँ नहीं है और न उस के शिष्य तब वे भी नावों पर चढ़के यीशु को ढूँढ़ते ३२  
 हुए कफर्नाहम को आये । और वे समुद्र के पार उसे पाके उस से बोले हे गुरु ३३  
 आप यहाँ कब आये । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुम से सब मछ कटता ३४  
 हूं तुम मुझे इस लिये नहीं ढूँढ़ते हो कि तुम ने आश्चर्य कर्मों को देखा परन्तु ३५  
 इस लिये कि उन रोटीयों में से आके तृप्त हुए ॥

नाशमान भोजन के लिये परिश्रम मत करो परन्तु उस भोजन के लिये जो ३६  
 अनन्त जीवन लें रहता है जिसे मनुष्य का पुत्र तुम को देगा क्योंकि पिता ने

१० खाते कहके गालील में रह गया । परन्तु जब उस के भाई लोग चले गये तब  
 ११ वह आप भी प्रगट होके नहीं पर जैसा गुप्त होके पथ्य में गया । यहूदी लोग  
 १२ पथ्य में उसे ढूँढ़ते थे और बोले वह कहां है । और लोग उस के विषय में बहुत  
 खाते आपस में फुसफुसाके कहते थे . कितनों ने कहा वह उत्तम मनुष्य है परन्तु  
 १३ औरों ने कहा सो नहीं पर वह लोगों को भ्रमाता है । तौभी यहूदियों के हर  
 के सारे कोई उस के विषय में खोलके नहीं बोला ॥

१४ पथ्य के बीचोबीच यीशु मन्दिर में जाके उपदेश करने लगा । यहूदियों ने  
 १५ अचंभा कर कहा यह छिन सीखे क्योंकर दिया जानता है । यीशु ने उन को  
 १६ उत्तर दिया कि मेरा उपदेश मेरा नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारे का है । यदि कोई  
 उस की इच्छा पर चला चाहे तो इस उपदेश के विषय में जानेगा कि वह  
 १७ ईश्वर की ओर से है अथवा मैं अपनी ओर से कहता हूं । जो अपनी ओर से  
 कहता है सो अपनी ही खड़ाई चाहता है परन्तु जो अपने भेजनेहारे की खड़ाई  
 १८ चाहता है सोई सत्य है और उस में अधर्म नहीं है । क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था  
 न दी है . तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता है . तुम क्यों मुझे मार  
 २० डालने चाहते हो । लोगों ने उत्तर दिया कि तुम्हें भूत लगा है . कौन तुम्हें मार  
 २१ डालने चाहता है । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं ने एक काम किया और  
 २२ तुम सब अचंभा करते हो । मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है . इस कारण  
 नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु पितरों की ओर से है . और तुम विश्राम  
 २३ के दिन में मनुष्य का खतना करते हो । जो विश्राम के दिन में मनुष्य का खतना  
 किया जाता है जित्नी मूसा की व्यवस्था लंघन न होय तो तुम मुझ से क्यों इस  
 लिये क्रोध करते हो कि मैं ने विश्राम के दिन में सम्पूर्ण एक मनुष्य को चंगा  
 २४ किया । मुंह देखके विचार मत करो परन्तु यथार्थ विचार करो ॥

२५ तब यहूशलीम के निवासियों में से कितने बोले क्या यह वह नहीं है जिसे  
 २६ वे मार डालने चाहते हैं । और देखो वह खोलके बात करता है और वे उस से  
 कुछ नहीं कहते . क्या प्रधानों ने निश्चय जान लिया है कि यह सचमुच खीष्ट  
 २७ है । परन्तु इस मनुष्य को हम जानते हैं कि वह कहां से है पर खीष्ट जब आवेगा  
 २८ तब कोई नहीं जानेगा कि वह कहां से है । यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए  
 पुकारके कहा तुम मुझे जानते और यह भी जानते हो कि मैं कहां से हूं . मैं तो  
 आप से नहीं आया हूं परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है जिसे तुम नहीं जानते हो ।  
 २९ मैं उसे जानता हूं क्योंकि मैं उस की ओर से हूं और उस ने मुझे भेजा है ।  
 ३० इस पर उन्होंने ने उस को पकड़ने चाहा तौभी किसी ने उस पर हाथ न बढ़ाया  
 ३१ क्योंकि उस का समय अब लो नहीं पहुंचा था । और लोगों में से बहुतों ने उस  
 पर विश्वास किया और कहा खीष्ट जब आवेगा तब क्या इन आश्चर्य कर्मों से  
 जो इस ने किये हैं अधिक करेगा ॥

३२ फरीशियों ने लोगों को उस के विषय में यह बातें फुसफुसाके कहते सुना और  
 ३३ फरीशियों और प्रधान याजकों ने प्यादों को उसे पकड़ने को भेजा । इस पर यीशु  
 ने कहा मैं अब थोड़ी देर तुम्हारे साथ रहता हूं तब अपने भेजनेहारे के पास

जीवन है और मैं उसे ठीकने दिन में चढाऊंगा । क्योंकि मेरा मांस मन्ना भोजन ५४ है और मेरा लोहू सच्ची पीने की वस्तु है । जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू ५५ पीता है सो मुक्त में रहता है और मैं उस में रहता हूँ । जैसा जीवन पिता ने ५६ मुझे भेजा और मैं पिता से जीता हूँ तैसा वह भी जो मुझे खाये मुक्त में जीयेगा । यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी । जैसा तुम्हारे पिता ने मन्ना खाया और ५७ मर गये ऐसा नहीं । जो यह रोटी खाये सो मरने लो जीयेगा । उस ने ऊफर्नाधुस ५८ में उपदेश करते हुए सभा के घर में यह बातें कहीं ।

उस के शिष्यों में से बहुतों ने यह सुनके कहा यह बात कठिन है इसे कौन ६० सुन सकता है । यीशु ने अपने मन में जाना कि उस के शिष्य इस बात के विषय ६१ में कूड़कुड़ाते हैं इस लिये उन से कहा क्या इस बात से तुम को ठाँकर लगती है । यदि मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह चाहे या उस स्थान पर खड़े देखा ६२ तो क्या कहेगा । आत्मा तो जीवनदायक है शरीर में कुछ लाभ नहीं । जो यहाँ ६३ में तुम से बोलता है सो आत्मा है और जीवन है । परन्तु तुम्हें मैं से कितने हैं ६४ जो विश्वास नहीं करते हैं । यीशु तो आरंभ से जानता था कि ये कौन हैं जो विश्वास करनेवाले नहीं हैं और यह कौन है जो मुझे पकड़वाएगा । और उस ने ६५ कहा इसी लिये मैं ने तुम से कहा है कि यदि मेरे पिता की ओर से इस को न दिया जाय तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता है । इस समय से उस के शिष्यों ६६ में से बहुतरे पीछे हटे और उस के संग और न चले । इस लिये यीशु ने उन ६७ चारों शिष्यों से कहा क्या तुम भी जाने चाहते हो । शिमेन पितर ने इस को ६८ उत्तर दिया कि हे प्रभु हम किस के पास जायें । आप के पास अनन्त जीवन की बातें हैं । और हम ने विश्वास किया और जान लिया है कि आप जीवते रहकर ६९ के पुत्र खीष्ट हैं । यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या मैं ने तुम चारों को नहीं ७० चुना और तुम में से एक तो जेतान है । वह शिमेन के पुत्र यिहूदा पत्करियाती ७१ के विषय से बोला क्योंकि वही उसे पकड़वाने पर था और वह चारों शिष्यों में से एक था ॥

### मातवां पर्व ।

इस के पीछे यीशु गालील में फिरने लगा क्योंकि यिहूदी लोग उसे मार १ डालने चाहते थे इस लिये वह यिहूदिया में फिरने नहीं चाहता था । और यिहू- २ दियों का पर्व अर्थात् तंबूवास पर्व निकल था । इस लिये उस के भाइयों ने ३ उस से कहा यहाँ से निकलके यिहूदिया में जा कि तेरे शिष्य लोग भी तेरे काम को तू करता है देखें । क्योंकि कोई नहीं गुप्त में कुछ करता और आप ही प्रगट ४ होने चाहता है । जो तू यह करता है तो अपने तबलें जगत को दिखा । क्योंकि ५ उस के भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे । यीशु ने उन से कहा मेरा समय अब लो नहीं पहुँचा है परन्तु तुम्हारा समय नित्य बना है । जगत तुम से घेर ६ नहीं कर सकता है परन्तु वह मुक्त से घेर करता है क्योंकि मैं उस के विषय में साक्षी देता हूँ कि उस के काम दूरे हैं । तुम इस पर्व में जाओ । मैं अभी इस पर्व ७ में नहीं जाता हूँ क्योंकि मेरा समय अब लो पूरा नहीं हुआ है । यह उन से यह ८

मूसा ने आज्ञा किई और समस्त क्वावनी में प्रचार कराया कि क्या पुरुष और क्या स्त्री अब कोई प्रवित्र स्थान की भेंट के कार्य के लिये और न बनावे सो लोग ७ लाने से रोके गये । और जो सामग्री उन के पास थी समस्त कार्य बनाने के लिये बहुत और अधिक थी ॥

८ और तंबू के कार्यकारियों में से हर एक ने जो घुट्टिमान था वटे हुए मूती वस्त्र और नीले और बैजनी और लाल छथौटी के कार्य से करोवीस के माथ ९ दस ओट बनाई । हर ओट की लंबाई अठार्वस हाथ और उस की चौड़ाई १० चार हाथ सब ओट एक नाप की । और पांच ओट को एक दूसरे में मिलाया ११ और पांच ओट एक दूसरे में मिलाया । और उस ने एक ओट के कोर पर अनवट से लेके जोड़ पर नीले तुकमे बनाये इसी रीति से दूसरी ओट के अत्यंत अलंग १२ में दूसरे के जोड़ पर बनाये । उस ने एक ओट के अंचल में पचास तुकमे बनाये और पचास तुकमे दूसरी ओट के मिलाने के खूंट में बनाये जिसमें तुकमे एक १३ दूसरे में जुट जायें । और उस ने सोने की पचास घुण्डियां बनाई और उन घुण्डियों से ओट को जोड़ा जिसमें एक तंबू हो जावे ॥

१४ और उस ने बकरी के रोम के ग्यारह ओट बनाये जिसमें तंबू के लिये ठपना १५ हो । एक ओट की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ ग्यारहों ओट १६ एकही परिमाण की बनाई । और उस ने पांच ओट को अलग जोड़ा और छः १७ ओट को अलग । और उस में पचास तुकमे एक ओट के खूंट में जो अंत के १८ खूंट के जोड़ में है और पचास तुकमे दूसरी ओट के खूंट में बनाये । और उस ने तंबू को जोड़ने के लिये जिसमें एक हो जावे पीतल की पचास घुण्डियां बनाई ॥

१९ और उस ने मेंटों के रंगे हुए लाल चमड़ों से और तुंग्रों के चमड़ों से तंबू के लिये ठांपन बनाया ॥

२० और उस ने तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से खड़े पाट बनाये । हर पाट २१ की लंबाई दस हाथ और उस की चौड़ाई डेढ़ हाथ । हर पाट में दो दो पाए जो एक दूसरे के समान अंतर में थे उस ने तंबू के समस्त पाटों के लिये योंही २३ बनाया । और उस ने तंबू के लिये पाट बनाये बीस पाट दक्षिण की ओर के २४ लिये । और उस ने उन बीस पाटों के नीचे के लिये रूपे के चालीस पाए बनाये २५ हर पाट के नीचे के लिये दो दो उस के चूलों के समान । और तंबू की दूसरी २६ अलंग के लिये जो उत्तर की ओर है बीस पाट बनाये । और उन के चालीस रूपे २७ के पाए हर एक पाट के नीचे दो पाए । और उस में तंबू की पश्चिम अलंग के २८ लिये छः पाट बनाये । और तंबू की दोनों अलंग में कोने के लिये दो पाट बनाये । २९ और वे नीचे जोड़े गये और एक कड़ी में ऊपर से जोड़े गये इसी रीति से उस ने ३० दोनों के दोनों कोनों में जोड़ा । और आठ पाट और उन के चांदी के सोलह पाए थे एक पाट के नीचे दो दो पाए ॥

३१ और शमशाद काष्ठ से अड़ंगे बनाये तंबू की एक अलंग के पाटों के लिये ३२ पांच । और तंबू की दूसरी अलंग के पाटों के लिये पांच अड़ंगे और तंबू की

जाना हूँ । तुम मुझे छूँदोगे और न पाओगे और जहाँ मैं रहूँगा तहाँ तुम नहीं आ सकोगे । विद्वदियों ने आपस में कहा यह कहा जायगा कि हम उसे नहीं देख पायेंगे, क्या यह यूनानियों में के तितर दितर लोगों के पास जायगा और यूनानियों को उपदेश देगा । यह क्या बात है जो हम ने कही कि तुम मुझे छूँदोगे और न पाओगे और जहाँ मैं रहूँगा तहाँ तुम नहीं आ सकोगे ।

पिछले दिन पर्व के छठे दिन में यीशु ने खड़ा हो पुकारके कहा यदि कोई ३७ प्रियमा होवे तो मेरे पास आके पीये । जो नुक्त पर विश्वास करे जीमा धर्म- ३८ पुस्तक ने कहा नैमा हम के अन्तर में अमृत जल की नदियाँ बहेगीं । उस ने ३९ यह वचन आत्मा के शिष्य में कहा जिसे उस पर विश्वास करनेहारे पाने पर भी क्योंकि शिष्य आत्मा अब लों नहीं दिया गया था हम लिये कि यीशु की मरिमा अब लों प्रगट न हुई थी । लोगों में से बहुतों ने यह वचन सुनके कहा ४० यह मन्त्रमुक्त वह भविष्यवक्ता है । औरों ने कहा यह खोष्ट है परन्तु औरों ने ४१ कहा क्या खोष्ट गालील में से आयेगा । क्या धर्मपुस्तक ने नहीं कहा कि खोष्ट ४२ दाऊद के वंश से और बैतलहम नगर से जहाँ दाऊद रहता था आयेगा । सो उस ४३ के कारण लोगों में विभेद हुआ । उन में से कितने उस को पकड़ने चाहते थे ४४ परन्तु किसी ने उस पर हाथ न बढ़ाये ॥

तब प्यादे लोग प्रधान याजकों और फरीशियों के पास आये और उन्हीं ने ४५ उन से कहा तुम उसे क्यों नहीं लाये हो । प्यादों ने उत्तर दिया कि किसी मनुष्य ४६ ने कभी हम मनुष्य की नाईं यात न किई । फरीशियों ने उन को उत्तर दिया ४७ क्या तुम भी भरमाये गये हो । क्या प्रधानों अथवा फरीशियों ने से किसी ने उस ४८ पर विश्वास किया है । परन्तु ये लोग जो दय्यस्या को नहीं जानते हैं श्रापित ४९ हैं । निकोदीम जो रात को यीशु पास आया और आप उन में से एक था उन ५० से बोला, हमारी दय्यस्या अब लों मनुष्य की न सुने और न जाने कि यह क्या ५१ करता है तब लों क्या हम को दोषी ठहराता है । उन्हीं ने उसे उत्तर दिया क्या ५२ आप भी गालील के हैं । छूँदके देखिये कि गालील में से भविष्यवक्ता प्रगट नहीं होता । तब सब कोई अपने अपने घर को गये ॥ ५३

आठवाँ पर्व ।

परन्तु यीशु जैतून पर्वत पर गया, और भोर को फिर मन्दिर में आया और १ सब लोग उस पास आये और वह बैठके उन्हें उपदेश देने लगा । तब अध्यापकों २ और फरीशियों ने एक स्त्री को जो दयभिचार में पकड़ी गई थी उस पास लाके बीच में खड़ी किई, और उस से कहा हे गुरु यह स्त्री दयभिचार कर्म करती ३ ने पकड़ी गई । दय्यस्या में सूसा ने हर्से आत्मा दिई कि सभी स्त्रियाँ पाप्यथा ४ केई जायें सो आप क्या कहते हैं । उन्हीं ने उस की पाँचा करने को यह बात ५ कही कि हम पर दोष लगाने का मैं मिले परन्तु यीशु नीचे झुकके डंगली से भूमि ६ पर लिखने लगा । जब वे उस से पूछते रहे तब उस ने बैठके उन से कहा ७ तुम्हों में से जो निर्दोषी होय सो पहिले-उस पर पत्थर फेंके । और यह फिर ८ तीसरे झुकके भूमि पर लिखने लगा । पर वे यह सुनके और अपने अपने मन से ९



दौपी ठहरके पड़ों से लेके छोटी तक एक एक करके निकल गये और केवल यीशु  
 १० रह गया और वह स्त्री बीच में खड़ी रही । यीशु ने उठके स्त्री को छोड़ और किसी  
 को न देखके उस से कहा हे नारी वे तेरे दोषदायक कहाँ हैं . क्या किसी ने तुम  
 ११ पर दंड की आज्ञा न दीई । उस ने कहा हे प्रभु किसी ने नहीं . यीशु ने उस से  
 कहा मैं भी तुम पर दंड की आज्ञा नहीं देता हूँ जा और फिर पाप मत कर ।  
 १२ तब यीशु ने फिर लोगों से कहा मैं जगत का प्रकाश हूँ . जो मेरे पीछे आवे  
 १३ सो अंधकार में नहीं चलेगा परन्तु जीवन का उजियाला पावेगा । फरीशियों  
 ने उस से कहा तू अपने ही विषय में साक्षी देता है तेरी साक्षी ठीक नहीं है ।  
 १४ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि जो मैं अपने विषय में साक्षी देता हूँ तो भी  
 मेरी साक्षी ठीक है क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ  
 जाता हूँ परन्तु तुम नहीं जानते हो कि मैं कहाँ से आता हूँ और कहाँ जाता  
 १५ हूँ । तुम शरीर को देखके विचार करते हो मैं किसी का विचार नहीं करता  
 १६ हूँ । और जो मैं विचार करता हूँ भी तो मेरा विचार ठीक है क्योंकि मैं अकेला  
 १७ नहीं हूँ परन्तु मैं हूँ और पिता है जिस ने मुझे भेजा । तुम्हारी व्यवस्था में  
 १८ लिखा है कि दो जनों की साक्षी ठीक होती है । एक मैं हूँ जो अपने विषय  
 में साक्षी देता हूँ और पिता जिस ने मुझे भेजा मेरे विषय में साक्षी देता है ।  
 १९ तब उन्होंने ने उस से कहा तेरा पिता कहाँ है . यीशु ने उत्तर दिया कि तुम न  
 मुझे न मेरे पिता को जानते हो . जो मुझे जानते तो मेरे पिता को भी  
 २० जानते । यह खाते यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए मंदारघर में कहीं और  
 किसी ने उस को न पकड़ा क्योंकि उस का समय अब लों नहीं पहुँचा था ।  
 २१ तब यीशु ने उन से फिर कहा मैं जाता हूँ और तुम मुझे ढूँढोगे और अपने  
 २२ पाप में मरोगे . जहाँ मैं जाता हूँ तहाँ तुम नहीं आ सकते हो । इस पर  
 यहूदियों ने कहा क्या वह अपने को मार डालेगा कि वह कहता है जहाँ मैं  
 २३ जाता हूँ तहाँ तुम नहीं आ सकते हो । उस ने उन से कहा तुम नीचे के हो मैं  
 २४ ऊपर का हूँ . तुम इस जगत के हो मैं इस जगत का नहीं हूँ । इस लिये मैं  
 ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे क्योंकि जो तुम विश्वास न करो  
 २५ कि मैं वही हूँ तो अपने पापों में मरोगे । उन्होंने ने उस से कहा तू कौन है .  
 २६ यीशु ने उन से कहा पहिले जो मैं तुम से कहता हूँ वह भी सुनो । तुम्हारे  
 विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और विचार करना है परन्तु मेरा भेजनेहारा  
 २७ सत्य है और जो मैं ने उस से सुना है सोई जगत से कहता हूँ । वे नहीं जानते  
 २८ थे कि वह उन से पिता के विषय में बोलता था । तब यीशु ने उन से कहा अब  
 तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचा करोगे तब जानोगे कि मैं वही हूँ और कि मैं आप  
 से कुछ नहीं करता हूँ परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया तैसे मैं यह खाते  
 २९ बोलता हूँ । और मेरा भेजनेहारा मेरे संग है . पिता ने मुझे अकेला नहीं  
 ३० छोड़ा है क्योंकि मैं सदा वही करता हूँ जिस से वह प्रसन्न होता है । उस के  
 ३१ यह खाते बोलते ही बहुत लोगों ने उस पर विश्वास किया । तब यीशु ने उन  
 यहूदियों से जिन्होंने ने उस पर विश्वास किया कहा जो तुम मेरे बचन में बने

रहे तो सबसुख मेरे शिष्य हो । और तुम सत्य को जानोगे और सत्य के द्वारा ३०  
मे तुम्हारा उद्धार होगा ।

उन्होंने ने उस को उत्तर दिया कि हम तो इब्राहीम के वंश हैं और कभी किसी ३१  
के दास नहीं हुए हैं . तू क्योंकि कहता है कि तुम्हारा उद्धार होगा । यीशु ने ३२  
उन को उत्तर दिया मैं तुम से सब सब कहता हूँ कि जो कोई पाप करता है सो  
पाप का दास है । दास सदा घर में नहीं रहता है . पुत्र सदा रहता है । ३३  
सो यदि पुत्र तुम्हारा उद्धार करे तो निश्चय तुम्हारा उद्धार होगा । मैं जानता ३४  
हूँ कि तुम इब्राहीम के वंश हो परन्तु मेरा यजन तुम में नहीं ममाता है इस  
लिये तुम मुझे मार डालने चाहते हो । मैं ने अपने पिता के पाम जो देखा है ३५  
सो कहता हूँ और तुम ने अपने पिता के पाम जो देखा है सो करते हो । उन्होंने ३६  
ने उस को उत्तर दिया कि हमारा पिता इब्राहीम है . यीशु ने उन से कहा जो  
तुम इब्राहीम के सन्तान होते तो इब्राहीम के कर्म करते । परन्तु अब तुम मुझे ३७  
अर्थात् एक मनुष्य को जिस ने यह सत्य यजन जो मैं ने ईश्वर से सुना तुम  
से कहा है मार डालने चाहते हो . यह तो इब्राहीम ने नहीं किया ।  
तुम अपने पिता के कर्म करते हो . उन्होंने ने उस से कहा हम व्यभिचार से नहीं ३८  
जन्मे हैं हमारा एक पिता है अर्थात् ईश्वर । यीशु ने उन से कहा यदि ईश्वर ३९  
तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं ईश्वर का और मे  
निकलके आया हूँ . मैं आप से नहीं आया हूँ परन्तु उस ने मुझे भेजा । तुम मेरी ४०  
बात क्यों नहीं धूमते हो . इसी लिये कि मेरा यजन नहीं सुन सकते हो । तुम ४१  
अपने पिता जैतान से हो और अपने पिता के अभिलाषों पर आना चाहते हो .  
यह आरंभ से मनुष्यघाती था और सच्चाई में स्थिर नहीं रहता क्योंकि न्याई  
उस में नहीं है . वह यह झूठ बोलता था अपने स्वभाव ही में बोलता है क्योंकि  
यह झूठा और झूठ का पिता है । परन्तु मैं सत्य कहता हूँ इसी लिये तुम मेरी ४२  
प्रतीति नहीं करते हो । तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है . और जो मैं ४३  
सत्य कहता हूँ तो तुम क्यों मेरी प्रतीति नहीं करते हो । जो ईश्वर से है सो ४४  
ईश्वर की बातें सुनता है . तुम ईश्वर से नहीं हो इस कारण नहीं सुनते हो ।

तब यहूदियों ने उस को उत्तर दिया क्या इस अच्छा नहीं कहते हैं कि तू ४५  
जोसिरोनी है और भूत तुम्हें लगा है । यीशु ने उत्तर दिया कि मुझे भूत नहीं लगा ४६  
है परन्तु मैं अपने पिता का सम्मान करता हूँ और तुम मेरा अपमान करते हो ।  
पर मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता हूँ . एक है जो चाहता और विचार करता है । ४७  
मैं तुम से सब सब कहता हूँ यदि कोई मेरी बात का पालन करे तो वह कभी ४८  
मृत्यु को न देखेगा । तब यहूदियों ने उस से कहा अब हम जानते हैं कि भूत ४९  
तुम्हें लगा है . इब्राहीम और भविष्यद्वक्ता लोग मर गये हैं और तू कहता है कि  
यदि कोई मेरी बात का पालन करे तो वह कभी मृत्यु का स्वाद न चखेगा ।  
क्या तू हमारे पिता इब्राहीम से जो मर गया है बड़ा है . भविष्यद्वक्ता लोग भी ५०  
मर गये हैं . तू अपने तर्क क्या बनाता है । यीशु ने उत्तर दिया कि जो मैं अपनी ५१  
बड़ाई कहं तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं है . मेरी बड़ाई करनेद्वारा मेरा पिता है जिसे

५५ तुम कहते हो कि यह हमारा ईश्वर है । तौभी तुम उसे नहीं जानते हो परन्तु मैं उसे जानता हूँ और जो मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता हूँ तो मैं तुम्हारे समान  
 ५६ झूठा होगा परन्तु मैं उसे जानता और उस के यवन को पालन करता हूँ । तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने को हर्षित होता था और उस ने देखा और  
 ५७ आनन्द किया । यहूदियों ने उस से कहा तू अब लो पचास बरस का नहीं है  
 ५८ और क्या तू ने इब्राहीम को देखा है । यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सब सब  
 ५९ कहता हूँ कि इब्राहीम के होने के पहिले से मैं हूँ । तब उन्होंने ने पत्थर उठाये कि उस पर फेंकें परन्तु यीशु छिप गया और उन्होंने के बीच में से होके मन्दिर से निकला और यूँही चला गया ॥

नवां पर्व ।

१ जाते हुए यीशु ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म का अंधा था । और उस के शिष्यों ने उस से पूछा हे शुभ किस ने पाप किया इस मनुष्य ने अथवा उस के माता पिता ने जो यह अंधा जन्मा । यीशु ने उत्तर दिया कि न तो इस ने न इस के माता पिता ने पाप किया परन्तु यह इस लिये हुआ कि ईश्वर के काम उस में प्रगट किये जायें । मुझे दिन रहते अपने भेजनेहारे के कामों को करना अवश्य है । रात आती है जिस में कोई नहीं काम कर सकता है । अब लो मैं इस जगत में हूँ तब लो जगत का प्रकाश हूँ । यह कहके उस ने भूमि पर झूका और उस झूक से मिट्टी गीली करके यह गीली मिट्टी अंधे की आंखों पर लगाई । और उस से कहा जाके शीलोह के कुंड में धो जिस का अर्थ यह है भेजा हुआ । सो उस ने जाके धोया और देखते हुए आया ।

८ तब पड़ोसियों ने और जिन्हें ने आगे उसे अंधा देखा था उन्होंने ने कहा क्या यह वह नहीं है जो बैठा भीख मांगता था । कितनों ने कहा यह वही है औरों ने कहा यह उस की नाई है वह आप बोला मैं वही हूँ । तब उन्होंने ने उस से कहा तेरी आंखें क्योंकर खुलीं । उस ने उत्तर दिया कि यीशु नाम एक मनुष्य ने मिट्टी गीली करके मेरी आंखों पर लगाई और मुझ से कहा शीलोह के कुंड को जा और धो सो मैं ने जाके धोया और दृष्टि पाई । उन्होंने ने उस से कहा यह मनुष्य कहाँ है । उस ने कहा मैं नहीं जानता हूँ ।

१३ वे उस को जो आगे अंधा था फरीशियों के पास लाये । अब यीशु ने मिट्टी गीली करके उस की आंखें खोली थीं तब विश्राम का दिन था । सो फरीशियों ने भी फिर उस से पूछा तू ने किस रीति से दृष्टि पाई । यह उन से बोला उस ने गीली मिट्टी मेरी आंखों पर लगाई और मैं ने धोया और देखता हूँ । फरीशियों में से कितनों ने कहा यह मनुष्य ईश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि यह विश्राम का दिन नहीं मानता है । औरों ने कहा पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे आश्चर्य कर्म कर सकता है । और उन्होंने में विभेद हुआ । वे उस अंधे से फिर बोले उस ने जो तेरी आंखें खोलीं तो तू उस के विषय में क्या कहता है । उस ने कहा यह भविष्यद्वक्ता है ॥

१८ परन्तु यहूदियों ने अब लो उस दृष्टि पाये हुए मनुष्य के माता पिता को नहीं

बुलाया तब लो उस के विषय में प्रतीति न किई कि यह अंधा था जो दृष्टि पाई । और उन्हीं ने उन से पूछा क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहते हो १८ कि यह अंधा जन्मा , तो यह अब क्योंकर देखता है । उस के माता पिता ने २० उन को उत्तर दिया हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और कि यह अंधा जन्मा । परन्तु यह अब क्योंकर देखता है सो हम नहीं जानते आश्रय किम ने २१ उस की आंखें खोलीं हम नहीं जानते हैं , यह मयाना है उसी से प्रकिये यह अपने विषय में आप कहोगा । यह घातें उस के माता पिता ने इस लिये कही कि २२ ये पिछूदियों से डरते थे क्योंकि पिछूदी लोग आपस में ठहरा चुके थे कि यदि कोई यीशु को स्वीकृ करके मान लेंगे तो मर्मा में से निकाला जायगा । इस २३ कारण उस के माता पिता ने कहा यह मयाना है उसी से प्रकिये ॥

तब उन्हीं ने उस मनुष्य को जो अंधा था दूसरी ओर बुलाके उस से कहा २४ ईश्वर का गुणानुवाद कर , हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है । हम ने उत्तर २५ दिया यह पापी है कि नहीं सो मैं नहीं जानता हूं एक दान में जानता हूं कि मैं जो अंधा था अब देखता हूं । उन्हीं ने उस से फिर कहा उस ने तुम से क्या २६ किया , तैरी आंखें किस रीति से खोलीं । हम ने उन को उत्तर दिया कि मैं आप २७ लोगों से कह चुका हूं और आप लोगों ने नहीं सुना , जिस लिये फिर सुना चाहते हैं , क्या आप लोग भी उस के शिष्य हुआ चाहते हैं । तब उन्हीं ने उस २८ को निन्दा कर कहा तू उस का शिष्य है पर हम मर्मा के शिष्य हैं । हम जानते २९ हैं कि ईश्वर ने मर्मा में घातें किई परन्तु हम को हम नहीं जानते कि कहां से है । उस मनुष्य ने उन को उत्तर दिया हम से अचंभा है कि आप लोग नहीं जानते ३० यह कहां से है और उस ने मेरी आंखें खोली हैं । हम जानते हैं कि ईश्वर पापियों ३१ की नहीं सुनता है परन्तु यदि कोई ईश्वर का उपामक होय और उस की एच्छा पर चले तो यह उस की सुनता है । यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने ३२ जन्म के अंधे की आंखें खोली हो । जो यह ईश्वर की ओर से न होता तो कुछ ३३ नहीं कर सकता । उन्हीं ने उस को उत्तर दिया कि तू तो सम्पूर्ण पापों में जन्मा ३४ और क्या तू हमें सिखाता है , और उन्हीं ने उसे बाहर निकाल दिया ॥

यीशु ने सुना कि उन्हीं ने उसे बाहर निकाल दिया था और उस को पा काके ३५ उस से कहा क्या तू ईश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है । उस ने उत्तर दिया ३६ कि हे प्रभु यह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं । यीशु ने उस से कहा तू ३७ ने उसे देखा भी है और जो तैरे संग बात करता है छपी है । उस ने कहा हे प्रभु मैं ३८ विश्वास करता हूं और उस को प्रणाम किया । तब यीशु ने कहा मैं हम जाग ३९ में विचार के लिये आया हूं कि जो नहीं देखते हैं सो देखें और जो देखते हैं सो अंधे हो जायें । फराशियों में से जो जन उस के संग थे सो यह सुनके उस से ४० बोले क्या हम भी अंधे हैं । यीशु ने उन से कहा जो तुम अंधे होते तो तुम्हें पाप ४१ न होता परन्तु अब तुम कहते हो कि हम देखते हैं इस लिये तुम्हारा पाप बना रहा ॥

दसवां पद्य ।

मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो द्वार से भेड़शाले में नहीं पैठता परन्तु ९

२ दूसरी ओर से चढ़ जाता है सो चोर औ डाकू है । जो द्वार से पैठता है सो  
 ३ भेड़ों का रखवाला है । उस के लिये द्वारपाल खोल देता है और भेड़ें उस का  
 शब्द सुनती हैं और वह अपनी भेड़ों को नाम से ले बुलाता है और उन्हें बाहर  
 ४ ले जाता है । और जब वह अपनी भेड़ें बाहर ले जाता है तब उन के आगे  
 चलता है और भेड़ें उस के पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे उस का शब्द जानती  
 ५ हैं । परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जायेंगीं पर उस से भागेंगीं क्योंकि वे पराये  
 ६ का शब्द नहीं जानती हैं । यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा परन्तु उन्होंने ने न  
 ७ सूझा कि यह क्या बातें हैं जो वह हम से बोलता है । तब यीशु ने फिर उन से  
 ८ कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं कि मैं भेड़ों का द्वार हूं । जितने मेरे आगे  
 ९ आये सो सब चोर औ डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी । द्वार मैं हूं ।  
 यदि मुझ में से कोई प्रवेश करे तो त्राण पावेगा और भीतर बाहर आया जाया  
 १० करेगा और चराई पावेगा । चोर किसी और काम को नहीं केवल चोरी औ  
 घात औ नाश करने को आता है । मैं आया हूं कि भेड़ें जीवन पावें और  
 ११ अधिकारी से पावें । मैं अच्छा गड़ेरिया हूं । अच्छा गड़ेरिया भेड़ों के लिये अपना  
 १२ प्राण देता है । परन्तु मजूर जो गड़ेरिया नहीं है और भेड़ें उस के निज की  
 नहीं हैं हुंड़ार को आते देखके भेड़ों को छोड़ देता और भाग जाता है और  
 १३ हुंड़ार भेड़ें पकड़के उन्हें तितर धितर करता है । मजूर भागता है क्योंकि वह  
 १४ मजूर है और भेड़ों की कुछ चिन्ता नहीं करता है । मैं अच्छा गड़ेरिया हूं और  
 जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं वैसा मैं अपनी भेड़ों को  
 १५ जानता हूं और अपनी भेड़ों से जाना जाता हूं । और मैं भेड़ों के लिये अपना  
 १६ प्राण देता हूं । मेरी और भेड़ें हैं जो इस भेड़शाले की नहीं हैं । मुझे उन को  
 भी लाना होगा और वे मेरा शब्द सुनेंगीं और एक भुंड और एक रखवाला  
 १७ होगा । पिता इस कारण से मुझे प्यार करता है कि मैं अपना प्राण देता हूं  
 १८ जिस्ते उसे फिर लेजं । कोई उस को मुझ से नहीं लेता है परन्तु मैं आप से उसे  
 देता हूं । उसे देने का मुझे अधिकार है और उसे फिर लेने का मुझे अधिकार  
 है । यह आज्ञा मैं ने अपने पिता से पाई ॥

१९ तब यहूदियों में इन बातों के कारण फिर विभेद हुआ । उन में से बहुतों  
 २० ने कहा उस को भूत लगा है वह बैरहा है तुम उस की क्यों सुनते हो । औरों  
 ने कहा यह बातें भूतग्रस्त की नहीं हैं । भूत क्या अंधों की आंखें खोल सकता है ॥

२१ यहूशलीम में स्थापनपर्व हुआ और जाड़े का समय था । और यीशु मन्दिर  
 २२ में सुलेमान के ओसारे में फिरता था । तब यहूदियों ने उसे घेरके उस से कहा  
 तू हमारे मन को कब लों दुखधा में रखेगा । जो तू खीष्ट है तो हम से खोलके  
 २३ कह । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं ने तुम से कहा और तुम विश्वास नहीं  
 करते हो । जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे विषय में  
 २४ साक्षी देते हैं । परन्तु तुम विश्वास नहीं करते हो क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से  
 २५ नहीं हो जैसा मैं ने तुम से कहा । मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें  
 २६ जानता हूं और वे मेरे पीछे हो लेती हैं । और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं

और वे कभी लाश न होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ में झीन न लेगा । मेरा २६  
 पिता जिस ने उन्हें मुझ को दिया है मर्मा में बड़ा है और कोई मेरे पिता के  
 हाथ में झीन नहीं सकता है । मैं और पिता एक हैं । तब यहूदियों ने फिर २७  
 उसे पत्थरबाद करने को पत्थर उठाये । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं ने २८  
 अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम तुम्हें दिखाये हैं उन में से किस काम  
 के लिये मुझे पत्थरबाद करते हो । यहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि भले २९  
 काम के लिये हम तुम्हें पत्थरबाद नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर की निन्दा के लिये  
 और इस लिये कि तू मनुष्य होके अपने को ईश्वर बनाता है । यीशु ने उन्हें ३०  
 उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा तुम ईश्वरगण  
 हो । यदि उन ने उन को ईश्वरगण कहा तब तब के पास ईश्वर का खूबन पड़ना ३१  
 और धर्मपुस्तक की बात लोप नहीं हो सकती है । तो जिसे पिता ने प्रिय करके ३२  
 जगत में भेजा है उस में क्या तुम कहते हो कि तू ईश्वर की निन्दा करता है इस  
 लिये कि मैं ने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूँ । जो मैं अपने पिता के कार्य नहीं करता ३३  
 हूँ तो मेरी प्रतीति मत करो । परन्तु जो मैं करता हूँ तो यदि मेरी प्रतीति न करो ३४  
 तो भी उन कार्यों की प्रतीति करो इस लिये कि तुम जानो और विश्वास करो  
 कि पिता मुझ में है और मैं उस में हूँ ॥

तब उन्हें ने फिर उसे पकड़ने खाद्य परन्तु वह उन के हाथ में निकल ३५  
 गया । और फिर यरदन के उस पार उस स्थान पर गया जहाँ योहन पहिले अप- ३६  
 तिसमा देता था और वहाँ रहा । और बहुत लोग उस पास आये और योने ३७  
 योहन ने तो कोई आश्चर्य कर्म नहीं किया परन्तु जो कुछ योहन ने हम के  
 विषय में कहा सो सब सच था । और वहाँ बहुतों ने उस पर विश्वास किया ॥ ३८  
 रण्यारब्धों पद्य ।

इलियाजर नाम वैशनिषा का कर्घात मरियम और उस की यहिन मर्घा के १  
 गांव का एक मनुष्य रोगी था । मरियम वही थी जिस ने प्रभु पर सुगन्ध तेल २  
 लगाया और उस के चरणों को अपने बालों से पोछा और उस का भाई इलि-  
 याजर था जो रोगी था । सो दोनों यहिनों ने यीशु को कहला भेजा कि हे प्रभु ३  
 देखिये जिसे आप प्यार करते हैं सो रोगी है । यह सुनके यीशु ने कहा यह रोग ४  
 मृत्यु के लिये नहीं परन्तु ईश्वर की महिमा के लिये है कि ईश्वर के पुत्र की  
 महिमा उस के द्वारा से प्रगट किई जाय । यीशु मर्घा को और उस की यहिन ५  
 को और इलियाजर को प्यार करता था ॥

जब उस ने सुना कि इलियाजर रोगी है तब जिस स्थान में वह था उस स्थान ६  
 में दो दिन और रहा । तब इस के पोछे उस ने शिष्यों से कहा कि आओ हम ७  
 फिर यहूदिया को चलें । शिष्यों ने उस से कहा हे गुरु यहूदी लोग अभी आप ८  
 को पत्थरबाद किंथा चाहते थे और आप क्या फिर वहाँ जाते हैं । यीशु ने उत्तर ९  
 दिया क्या दिन की वारद छोड़ी नहीं हैं । यदि कोई दिन को चले तो ठाकर नहीं  
 खाता है क्योंकि वह इस जगत का उजियाला देखता है । परन्तु यदि कोई रात १०  
 को चले तो ठाकर खाता है क्योंकि उजियाला उस में नहीं है । उस ने यह बातें ११



कहीं और इस के पीछे उन से बोला हमारा मित्र इलियाजर से गया है परन्तु  
 १२ मैं उसे जगाने को जाता हूँ । उस के शिष्यों ने कहा हे प्रभु जो वह से गया है  
 १३ सो चंगा हो जायगा । यीशु ने उस की मृत्यु के विषय में कहा परन्तु उन्हें ने  
 १४ समझा कि उस ने नींद में से जाने के विषय में कहा । तब यीशु ने उन से खोलके  
 १५ कहा इलियाजर मर गया है । और तुम्हारे लिये मैं आनन्द करता हूँ कि मैं वहाँ  
 १६ नहीं था जिस्तें तुम विश्वास करो . परन्तु आओ हम उस पास चलें । तब शोमा  
 ने जो दिदुम कहावता है अपने संगी शिष्यों से कहा कि आओ हम भी उस के  
 १७ संग मरने को जायें । सो जब यीशु आया तब उस ने यही पाया कि इलियाजर  
 को कबर में चार दिन हो चुके ॥

१८ बैथानिया यिहूदीम के निकट अर्थात् कोश एक दूर था । और बहुत से  
 यिहूदी लोग मर्या और मरियम के पास आये थे कि उन के भाई के विषय में  
 २० उन को शांति दें । सो मर्या ने जब सुना कि यीशु आता है तब जाके उस से  
 २१ भेंट किई परन्तु मरियम घर में बैठी रही । मर्या ने यीशु से कहा हे प्रभु जो  
 २२ आप यहाँ होते तो मेरा भाई नहीं मरता । परन्तु मैं जानती हूँ कि अब भी  
 २३ जो कुछ आप ईश्वर से मांगें ईश्वर आप को देगा । यीशु ने उस से कहा तेरा  
 २४ भाई जी उठेगा । मर्या ने उस से कहा मैं जानती हूँ कि पिछले दिन पुनरुत्थान  
 २५ में वह जी उठेगा । यीशु ने उस से कहा मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूँ , जो  
 २६ सुक्त पर विश्वास करे सो यदि मर जाय तोभी जीयेगा । और जो कोई जीवता  
 हो और सुक्त पर विश्वास करे सो कभी नहीं मरेगा . क्या तू इस बात का  
 २७ विश्वास करती है । वह उस से बोली हां प्रभु मैं ने विश्वास किया है कि ईश्वर  
 २८ का पुत्र खीष्ट जो जगत में आनेवाला था सो आप ही हैं । यह कहके वह  
 चली गई और अपनी बहिन मरियम को चुपके से बुलाके कहा गुरु आये हैं और  
 २९ तुम्हें बुलाते हैं । मरियम जब उस ने सुना तब शीघ्र उठके यीशु पास आई ।  
 ३० यीशु अब लो गांव में नहीं आया था परन्तु उसी स्थान में था जहाँ मर्या ने उस  
 ३१ से भेंट किई । जो यिहूदी लोग मरियम के संग घर में थे और उस को शांति  
 देते थे सो जब उसे देखा कि वह शीघ्र उठके बाहर गई तब यह कहके उस के  
 ३२ पीछे हो लिये कि वह कबर पर जाती है कि वहाँ रोवे । जब मरियम वहाँ  
 पहुँची जहाँ यीशु था तब उसे देखके उस के पाँवों पड़ी और उस से बोली  
 ३३ हे प्रभु जो आप यहाँ होते तो मेरा भाई नहीं मरता । जब यीशु ने उसे रोते  
 हुए और जो यिहूदी लोग उस के संग आये उन्हें भी रोते हुए देखा तब आत्मा  
 ३४ में विकल हुआ और धबकाया . और कहा तुम ने उसे कहाँ रखा है . वे उस  
 ३५ से बोले हे प्रभु आके देखिये । यीशु रोया । तब यिहूदियों ने कहा देखो वह  
 ३६ उसे कैसा प्यार करता था । परन्तु उन में से कितनों ने कहा क्या यह जिस ने  
 ३७ अंधे की आंखें खोलीं यह भी न कर सकता कि यह मनुष्य नहीं मरता । यीशु  
 अपने में फिर विकल होके कबर पर आया . वह गुफा थी और एक पत्थर उस  
 ३८ पर धरा था । यीशु ने कहा पत्थर को सरकाओ . उस मरे हुए की बहिन मर्या  
 उस से बोली हे प्रभु वह तो अब बसाता है क्योंकि उस को चार दिन हुए

हैं । यीशु ने उस से कहा क्या मैं ने तुम से न कहा कि जो तू विश्वास करे तो ४० ईश्वर की मददमा को देखेगी ।

तब जहाँ यह मृतक पड़ा था वहाँ से उन्हें ने पत्थर को मरकाया और यीशु ने ४१ ऊपर दृष्टि कर कहा हे पिता मैं तेरा धन्य मानता हूँ कि तू ने मेरी सुनी है । और ४२ मैं जानता था कि तू मेरा मेरी सुनता है परन्तु जो बहुत लोग आसपास खड़े हैं उन के कारण मैं ने यह कहा कि वे विश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा । यह बात ४३ कहके उस ने वड़े शब्द से पुकारा कि हे इलियाजर बाहर आ । तब यह मृतक ४४ खड़ा हो हाथ पाँच बाँधे हुए बाहर आया और उस का मुँह अंगोठे में लपेटा हुआ था । यीशु ने उन से कहा उसे गोली और जाने दो ।

तब बहुत से यहूदी लोगों ने जो मरियम के पास आये थे यह जो यीशु ने ४५ किया था देखते उस पर विश्वास किया । परन्तु उन में से जिनोंने ने फरीसियों के ४६ पान जाके जो यीशु ने किया था सो उन्हें से कह दिया । उन पर प्रधान याजकों ४७ और फरीसियों ने सभा एकट्ठी करके कहा हम क्या करते हैं . यह मनुष्य तो बहुत आश्चर्य कर्म करता है । जो हम उसे यूँ छोड़ दें तो सब लोग उस पर विश्वास ४८ करेंगे और रोमी लोग आके हमारे स्थान और लोग का भी उठा देंगे । तब उन ४९ में से क्रियाका नाम एक जन जो उस वरस का मदायाजक था उन में योना गुन लोग कुछ नहीं जानते हो . और यह विचार भी नहीं करते हो कि हमारे लिये ५० अच्छा है कि लोगों के लिये एक मनुष्य मरे और यह सम्पूर्ण लोग नाश न होय । यह बात यह आप से नहीं बोला परन्तु उस वरस का मदायाजक होके भविष्यवाच्य ५१ से कहा कि यीशु उन लोगों के लिये मरने पर था . और केवल उन लोगों के ५२ लिये नहीं परन्तु इस लिये भी कि ईश्वर के मत्तानों का जो तितर बितर हुए हैं एक में एकट्ठी करे । सो उसी दिन से उन्हें ने उसे बात करने को आपस में ५३ विचार किया । इस लिये यीशु प्रगट होके यहूदियों के बीच में और नहीं पिरा ५४ परन्तु वहाँ से जंगल के निकट के देश में इफ्रैम नाम एक नगर को गया और अपने शिष्यों के संग वहाँ रहा । यहूदियों का निस्तार पर्व जंगल था और बहुत ५५ लोग अपने तबड़े जुद्ध करने को निस्तार पर्व के आगे देश में से यहूशलीम को गये । उन्हें ने यीशु को ढूँढ़ा और मन्दिर में खड़े हुए आपस में कहा तुम ५६ क्या समझते हो क्या यह पर्व में नहीं आवेगा । और प्रधान याजकों और फरी- ५७ शियों ने भी आज्ञा दीई थी कि यदि कोई जाने कि यीशु कहाँ है तो बताये इस लिये कि वे उसे पकड़ें ॥

#### चारदश पर्व ।

निस्तार पर्व के छः दिन आगे यीशु बैथनिया में आया जहाँ इलियाजर था १ जो मर गया था जिसे उस ने मृतकों में से उठाया था । वहाँ उन्हें ने उस के लिये २ धियारी बनाई और मर्या ने सेवा कीई और इलियाजर यीशु के संग बैठनेहारों में से एक था । तब मरियम ने आध सेर जटामांसी का बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके ३ यीशु के चरणों पर लगाया और उस के चरणों को अपने धालों से पोका और तेल के सुगन्ध से घर भर गया । इस पर उस के शिष्यों ने से शिमेन का पुत्र ४

५ यहूदा इस्करियोत्ती नाम एक शिष्य जो उसे पकड़वाने पर था बोला . यह सुगन्ध तेल क्यों नहीं तीन सौ सूकियों पर बेचा गया और कंगालों को दिया ६ गया । वह यह बात इस लिये नहीं बोला कि वह कंगालों की चिन्ता करता था परन्तु इस लिये कि वह चोर था और धैली रखता था और जो उस में डाला ७ जाता सो उठा लेता था । यीशु ने कहा स्त्री को रहने दे . उस ने मेरे गाड़े ८ जाने के दिन के लिये यह रखा है । कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा ।

९ यहूदियों में से बहुत लोगों ने जाना कि यीशु वहां है और वे केवल यीशु के कारण नहीं परन्तु इलियाजर को देखने के लिये भी आये जिसे उस ने मृतकों में से १० उठाया था । तब प्रधान याजकों ने इलियाजर को भी मार डालने का विचार किया । ११ क्योंकि बहुत यहूदियों ने उस के कारण जाके यीशु पर विश्वास किया ।

१२ दूसरे दिन बहुत लोग जो पर्व में आये थे जब उन्होंने ने सुना कि यीशु यरू- १३ शलीम में आता है . तब खजूरों के पत्ते लेके उस से मिलने को निकले और पुकारने लगे कि जय जय धन्य इसायेल का राजा जो परमेश्वर के नाम से आता १४ है । यीशु एक गदही के बट्ठे को पाके उस पर बैठा . जैसा लिखा है कि हे सियोन की पुत्री मत डर देख तेरा राजा गदही के बट्ठे पर बैठा हुआ आता है ।

१५ यह बातें उस के शिष्यों ने पहिले नहीं समझीं परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तब उन्होंने ने स्मरण किया कि यह बातें उस के विषय में लिखी हुई थीं १६ और कि उन्होंने ने उस से यह किया था । जो लोग उस के संग थे उन्होंने ने साक्षी १७ दिये कि उस ने इलियाजर को कबर में से बुलाया और उस को मृतकों में से १८ उठाया । लोग इसी कारण उस से आ मिले भी कि उन्होंने ने सुना कि उस ने यह १९ आश्चर्य कर्म किया था । तब फरीशियों ने आपस में कहा क्या तुम देखते हो कि तुम से कुछ बन नहीं पड़ता . देखो संसार उस के पीछे गया है ।

२० जो लोग पर्व में भजन करने को आये उन्होंने में से कितने यूनानी लोग थे । २१ उन्होंने ने गालील के वैतसैदा नगर के रहनेवाले फिलिप के पास आके उस से २२ विन्ती किई कि हे प्रभु हम यीशु को देखने चाहते हैं । फिलिप ने आके अन्द्रिय २३ से कहा और फिर अन्द्रिय और फिलिप ने यीशु से कहा । यीशु ने उन को उत्तर २४ दिया कि मनुष्य के पुत्र की महिमा के प्रगट होने की घड़ी आ पहुंची है । मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि गोहूँ का दाना भूमि में पड़के मर न जाय तो २५ वह अकेला रहता है परन्तु जो मर जाय तो बहुत फल फलता है । जो अपने प्राण को प्यार करे सो उसे खोवेगा और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय २६ जाने सो अनन्त जीवन लें उस की रक्षा करेगा । यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे हो लेवे और जहां मैं रहूंगा तहां मेरा-सेवक भी रहेगा . यदि कोई २७ मेरी सेवा करे तो पिता उस का आदर करेगा । अब मेरा मन ठपाकुल हुआ है और मैं क्या कहूं . हे पिता मुझे इस घड़ी से बचा . परन्तु मैं इसी लिये इस घड़ी लें २८ आया हूं । हे पिता अपने नाम की महिमा प्रगट कर . तब यह आकाशवाणी २९ हुई कि मैं ने उस की महिमा प्रगट किई है और फिर प्रगट करेगा । तब जो

पश्चिम अलंगों के लिये पांच । और उस ने मध्य का अड़ंगा रसा बनाया कि ३३ एक सिरे से दूसरे सिरे के पाटों में प्रवेश होकर । और पाटों को सोने से मढ़ा ३४ और उन के कड़े सोने के बनाये अड़ंगा के लिये स्थान और अड़ंगा को सोने से मढ़ा ॥

और नीला और बैजनी और लाल रंग और बटे हुए भीने मूती वस्त्र से एक ३५ घंघट बनाया हथौटी के कार्य में उसे करोवीम के साथ बनाया । और उस के ३६ लिये शमशाद के चार खंभे बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा उन के आंकड़े सोने के और उन के लिये चार पाए चांदी के ठालकर बनाये ॥

और वह नीला और बैजनी और लाल और बटा हुआ भीने मूत में बूटा ३७ काढ़ी हुई तंत्र के द्वार के लिये एक ओट बनाई । और उस के पांच खंभे उन ३८ के आंकड़े मोहत बनाये और उन के सिरे उन की कंगनी समेत सोने से मढ़े और उन के पांच पाए पीतल के थे ॥

सैंतीसवां पृष्ठ ।

और वज्रिगिरि ने शमशाद काष्ठ से मंजूषा को बनाया उस की लंबाई आठ १ हाथ और उस की चौड़ाई डेढ़ हाथ और उस की ऊंचाई डेढ़ हाथ की । और २ उसे चांगे सोने में भीतर बाहर मढ़ा और उस की चारों ओर के लिये एक सोने की कंगनी बनाई । और उस ने उस के चार कोनों के लिये सोने के चार कड़े ३ ठाले और दो कड़े उस की एक अलंग और दो कड़े उस की दूसरी अलंग । और ४ शमशाद की लकड़ी के बहंगर बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा । और उस ने ५ बहंगरों को मंजूषा की अलंग के कड़ों में टाला कि मंजूषा को उठाये ॥

और उस ने ठकने को चांगे सोने से बनाया उस की लंबाई आठ ६ हाथ और उस की चौड़ाई डेढ़ हाथ । और सोने के दो करोवी बनाये एक ठुकड़े में पीटके ७ ठकने के दोनों खंभे में उन्हें बनाया । एक करोवी इस खंभे में और एक करोवी ८ उस खंभे में ठकने में से उस ने करोवियों को उस के दोनों खंभे में बनाया । और ९ करोवियों ने अपने पंख ऊपर फैलाये और अपने पंख से ठकने को टाँप लिया और उन के मुंह एक दूसरे की ओर थे करोवी के मुंह ठकने की ओर थे ॥

और उस ने मंच को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस की लंबाई दो हाथ १० और उस की चौड़ाई एक हाथ और उस की ऊंचाई डेढ़ हाथ । और उसे चांगे सोने ११ से मढ़ा और उस के लिये चारों ओर सोने का एक कलश बनाया । और उस ने १२ उस के लिये चार अंगुल की एक कंगनी बनाई और उस की कंगनी के लिये चारों ओर सोने के कलश बनाये । और उस ने उस के लिये सोने के चार कड़े ठाले १३ और उन कड़ों को उस के चारों पाशों के चारों कोनों में लगाया । कंगनी के १४ सन्मुख कड़े थे बहंगर के स्थान मंच उठाने के लिये । और उस ने बहंगरों को १५ शमशाद की लकड़ी का बनाया और उन्हें सोने से मढ़ा मंच उठाने के लिये । और मंच पर के पांच उस के थाल और उस के कटोरे और उस की थालियां १६ और उस की कटोरियां ठपने के लिये निर्मल सोने के बनाये ॥

और उस ने दीश्रट को निर्मल सोने से बनाया गड़के उस ने दीश्रट को बनाया १७

इस जगत में से पिता के पास जाऊँ और उस ने अपने निज लोगों को जो जगत  
 २ में थे प्यार करके उन्हें अन्त लों प्यार किया । और बिचारी के समय में जब  
 शैतान शिमेन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में उसे पकड़वाने का मत  
 ३ डाल चुका था . तब यीशु यह जानके कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथों में  
 दिया है और कि मैं ईश्वर की ओर से निकल आया और ईश्वर के पास जाता  
 ४ हूँ . बिचारी से उठा और अपने कपड़े रख दिये और अंगोछा लेके अपनी कमर  
 ५ बाँधी । तब पात्र में जल डालके वह शिष्यों के पाँव धोने लगा और जिस  
 ६ अंगोछे से उस की कमर बाँधी थी उस से पोंछने लगा । तब वह शिमेन पितर  
 ७ के पास आया . उस ने उस से कहा हे प्रभु क्या आप मेरे पाँव धोते हैं । यीशु  
 ने उस को उत्तर दिया कि जो मैं करता हूँ सो तू अब नहीं जानता है परन्तु  
 ८ इस के पीछे जानेगा । पितर ने उस से कहा आप मेरे पाँव कभी न धोइयेगा .  
 यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो मैं तुम्हें न धोऊँ तो मेरे संग तेरा कुछ अंश  
 ९ नहीं है । शिमेन पितर ने उस से कहा हे प्रभु केवल मेरे पाँव नहीं परन्तु मेरे  
 १० हाथ और सिर भी धोइये । यीशु ने उस से कहा जो नहाया है उस को पाँव  
 धोने बिना और कुछ आवश्यक नहीं है परन्तु वह सम्पूर्ण शुद्ध है और तुम  
 ११ लोग शुद्ध हो परन्तु सब नहीं । वह तो अपने पकड़वानेहारे को जानता था  
 इस लिये उस ने कहा तुम सब शुद्ध नहीं हो ॥

१२ जब उस ने उन के पाँव धोके अपने कपड़े ले लिये थे तब फिर बैठके उन्हें  
 १३ से कहा क्या तुम जानते हो कि मैं ने तुम से क्या किया है । तुम मुझे हे गुरु  
 १४ और हे प्रभु पुकारते हो और तुम अच्छा कहते हो क्योंकि मैं वही हूँ । सो  
 यदि मैं ने प्रभु और गुरु होके तुम्हारे पाँव धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे के  
 १५ पाँव धोना उचित है । क्योंकि मैं ने तुम को नमूना दिया है कि जैसा मैं ने  
 १६ तुम से किया है तुम भी वैसा करो । मैं तुम से सच सच कहता हूँ दास अपने  
 १७ स्वामी से बड़ा नहीं और न प्रेरित अपने भेजनेहारे से बड़ा है । जो तुम यह  
 १८ बातें जानते हो यदि उन पर चलो तो धन्य हो । मैं तुम सभी के विषय में  
 नहीं कहता हूँ . जिन्हें मैं ने चुना है उन्हें मैं जानता हूँ . परन्तु यह इस लिये  
 है कि धर्मपुस्तक का बचन पूरा होवे कि जो मेरे संग रोटी खाता है उस ने  
 १९ मेरे बिरुद्ध अपनी लात उठाई है । मैं अब से इस के होने के आगे तुम से  
 २० कहता हूँ कि जब वह हो जाय तब तुम बिश्वास करो कि मैं वही हूँ । मैं तुम  
 से सच सच कहता हूँ कि जिस किसी को मैं भेजूँ उस को जो ग्रहण करता है  
 सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारे को  
 ग्रहण करता है ॥

२१ यह बातें कहके यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और साक्षी देके बोला मैं  
 २२ तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वायगा । इस पर शिष्य  
 लोग यह सन्देह करते हुए कि वह किस के विषय में बोलता है एक दूसरे की  
 २३ ओर ताकने लगे । परन्तु यीशु के शिष्यों में से एक जिसे यीशु प्यार करता था  
 २४ उस की गोद में बैठा हुआ था । सो शिमेन पितर ने उस को सैन किया कि

लोग खड़े हुए सुनने थे उन्हें ने कहा कि मेरा राजा . औरों ने कहा कोई  
स्वर्गदूत उस में वाला । इस पर यीशु ने कहा यह जगत् मेरे लिये नहीं परन्तु ६०  
तुम्हारे लिये हुआ । अब हम जगत का विचार होता है . अब हम जगत का अध्ययन ६१  
बाहर निकाला जायगा । और मैं यदि पृथिवी पर से ऊँचा किया जाऊँ तो मैं ६२  
को अपनी ओर खींचूँगा । यह कहने में हम ने पता दिया कि यह कैसी मृत्यु से ६३  
सरने पर था । लोगों ने उस को उत्तर दिया कि हम ने व्यवस्था में से सुना है ६४  
कि खीष्ट सदा लों रहेगा . तू क्योंकर कहता है कि मनुष्य के पुत्र को ऊँचा  
किया जाना होगा . यह मनुष्य का पुत्र कौन है । यीशु ने उन से कहा उजियाला ६५  
अब छोड़ी देर तुम्हारे साथ है . जब लों उजियाला मिलता है तब लों ज्ञान न  
हो कि अंधकार तुम्हें घेरे . जो अंधकार में चलता है सो नहीं जानता मैं कहाँ  
जाता हूँ । जब लों उजियाला मिलता है उजियाले पर विश्वास करो कि तुम ६६  
ज्योति के सन्तान होओ . यह बातें कहके यीशु चला गया और उन से क्रिया रहा ॥

परन्तु यद्यपि हम ने उन के सामे इतने आश्चर्य कर्म किये थे तौभी उन्हें ६७  
ने उस पर विश्वास न किया . कि पित्र्याह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा होवे ६८  
जो उस ने कहा कि वे परमेश्वर किस ने हमारे समाचार का विश्वास किया है  
और परमेश्वर की भुजा किस पर प्रगट किई गई है । हम कारण थे विश्वास ६९  
न कर सके क्योंकि पित्र्याह ने फिर कहा . उस ने उन के नेत्र अंधे और उन ७०  
का मन कठोर किया है ऐसा न हो कि वे नेत्रों से देखें और मन से समझें और  
फिर जानें और मैं उन्हें बचाऊँ . जब पित्र्याह ने उस का नेत्र्यर्प देखा और ७१  
उस के विषय में बोला तब उस ने यह बातें कहीं । पर तौभी प्रधानों में से ७२  
भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया परन्तु फरीशियों के कारण नहीं मान लिया  
न हो कि वे सभा में से निकाले जायें . क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को ७३  
ईश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी ॥

यीशु ने पुकारके कहा जो मुझ पर विश्वास करता है सो मुझ पर नहीं परन्तु ७४  
मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है । और जो मुझे देखता है सो मेरे भेजनेवाले ७५  
को देखता है । मैं जगत में ज्योति सा आया हूँ कि जो कोई मुझ पर विश्वास ७६  
करे सो अंधकार में न रहे . और यदि कोई मेरी बातें सुनके विश्वास न करे तो ७७  
मैं उसे दंड के योग्य नहीं ठहराता हूँ क्योंकि मैं जगत को दंड के योग्य ठहराने  
को नहीं परन्तु जगत का नाश करने को आया हूँ . जो मुझे तुच्छ जानें और ७८  
मेरी बातें ग्रहण न करे वह उस को दंड के योग्य ठहरानेवाला है . जो वचन  
मैं ने कहा है वही पिछले दिन मैं उसे दंड के योग्य ठहरावेगा . क्योंकि मैं ने ७९  
अपनी ओर से बात नहीं किई है परन्तु पिता ने जिस ने मुझे भेजा था वही  
मुझे आता दिई है कि मैं क्या कहूँ और क्या बोलूँ . और मैं जानता हूँ कि ८०  
उस को आता अनन्त जीवन है इस लिये मैं जो बोलता हूँ सो जैसा पिता ने  
मुझ से कहा है वैसाही बोलता हूँ ॥

तीसरा पृष्ठ ।

निस्तार पृष्ठ के आगे यीशु ने जाना कि मेरी घड़ी आ पहुँची है कि मैं १



- ८ फिलिप ने उस से कहा है प्रभु पिता को हमें दियाइये तो हमारे लिये यही  
 ९ बहुत है । यीशु ने उस से कहा है फिलिप मैं जतने दिन से तुम्हारे संग हूँ और  
 क्या तू ने मुझे नहीं जाना है । जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है  
 १० और तू क्योंकर कहता है कि पिता को हमें दियाइये । क्या तू प्रतीति नहीं  
 करता है कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है । जो बातें मैं तुम से कहता हूँ  
 ११ सो अपनी ओर से नहीं कहता हूँ परन्तु पिता जो मुझ में रहता है यही इन कामों  
 १२ को करता है । मेरी ही प्रतीति करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है नहीं  
 १३ तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो । मैं तुम से सब सब कहता हूँ कि जो  
 मुझ पर विश्वास करे जो काम मैं करता हूँ उन्हीं सब भी करेगा और इन से बड़े  
 १४ काम करेगा क्योंकि मैं अपने पिता के पास जाता हूँ । और जो कुछ तुम मेरे नाम  
 से मांगोगे सोई मैं कहेगा हम लिये कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा प्रगट होय ।  
 १५ जो तुम मेरे नाम से कुछ मांगो तो मैं उसे कहेगा ॥  
 १६ जो तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाओं को पालन करो । और मैं  
 पिता से मांगूंगा और यह तुम्हें दूसरा शांतिदाता देगा कि यह सदा तुम्हारे  
 १७ संग रहे . अर्थात् मत्पना का आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता है  
 क्योंकि यह उसे नहीं देखता है और न उसे जानता है . परन्तु तुम उसे जानते  
 १८ हो क्योंकि यह तुम्हारे संग रहता है और तुम्हों में होगा । मैं तुम्हें अनाथ  
 १९ नहीं छोड़ूंगा मैं तुम्हारे पास आऊंगा । अब छोड़ी घेर मैं संसार मुझे फिर नहीं  
 २० देखेगा . परन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीता हूँ तुम भी जीओगे । उस दिन  
 तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ और तुम मुझ में हो और मैं तुम में हूँ ।  
 २१ जो मेरी आज्ञाओं को पाके उन्हीं पालन करता है वही है जो मुझे प्यार करता  
 है और जो मुझे प्यार करता है सो मेरे पिता का प्यारा होगा और मैं उसे  
 प्यार कहेगा और अपने तर्ज उस पर प्रगट कहेगा ॥  
 २२ तब हस्करियोती नहीं परन्तु दूसरे यिहूदा ने उस से कहा है प्रभु आप किस  
 २३ लिये अपने तर्ज हमों पर प्रगट करेंगे और संसार पर नहीं । यीशु ने उस को  
 उत्तर दिया यदि कोई मुझे प्यार करे तो मेरी बात को पालन करेगा और मेरा  
 पिता उसे प्यार करेगा और हम उस पास आवेंगे और उस के संग वास करेंगे ।  
 २४ जो मुझे प्यार नहीं करता है सो मेरी बातें पालन नहीं करता है और जो बातें  
 २५ तुम सुनते हो सो मेरी नहीं परन्तु पिता की है जिस ने मुझे भेजा । यह बातें  
 २६ मैं ने तुम्हारे संग रहते हुए तुम से कही हैं । परन्तु शांतिदाता अर्थात् पवित्र  
 आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा यह तुम्हें सब कुछ सिखावेगा और सब  
 २७ कुछ जो मैं ने तुम से कहा है तुम्हें स्मरण करावेगा । मैं तुम्हें शांति दे जाता  
 हूँ मैं अपनी शांति तुम्हें देता हूँ . जैसा जगत देता है तैसा मैं तुम्हें नहीं देता  
 २८ हूँ . तुम्हारा मन व्याकुल न होय और डर न जाय । तुम ने सुना कि मैं ने  
 तुम से कहा मैं जाता हूँ और तुम्हारे पास फिर आऊंगा . जो तुम मुझे प्यार  
 करते तो मैं ने जो कहा कि मैं पिता पास जाता हूँ इस से तुम आनन्द करते  
 २९ क्योंकि मेरा पिता मुझ से बड़ा है । और मैं ने अब इस को होने के आगे तुम

पूछिये कौन है जिस के विषय में आप सोचते हैं । तब उस ने यीशु की कामी २५ पर चढ़ाके उस से कहा है प्रभु कौन है । यीशु ने उत्तर दिया यही है जिस को २६ में यह रोटी का टुकड़ा हूँवाके देऊंगा . और उस ने टुकड़ा हूँवाके जिसेन के पुत्र विहूदा इस्करियोती को दिया । उसी समय में टुकड़ा लेने के पीछे मैदान २७ उस में बैठ गया . तब यीशु ने उस से कहा जो तू करता है सो बहुत शीघ्र कर । परन्तु बैठनेवालों में से किसी ने न जाना कि उस ने किस कारण यह बात २८ उस से कही । क्योंकि विहूदा ऐसी जो खरता था इस लिये किन्तों ने समझा २९ कि यीशु ने उस से कहा पत्थर के लिये जो हम आवश्यक हैं सो मैदान से खरवा कंगालों को कुछ दे । सो टुकड़ा लेने के पीछे यह तुरन्त बाहर गया . इस ३० समय रात थी ॥

जब यह बाहर गया था तब यीशु ने कहा अब मनुष्य के पुत्र की सदिमा ३१ प्रगट होती है और ईश्वर की सदिमा उस के द्वारा प्रगट होती है । जो ईश्वर ३२ की सदिमा उस के द्वारा प्रगट होती है तो ईश्वर भी अपनी ओर से उस की सदिमा प्रगट करेगा और तुरन्त उसे प्रगट करेगा । हे बालक मैं अब घोड़ी ३३ घेर तुम्हारे साथ हूँ . तुम मुझे छुँडोगे और तैसा मैं ने पिछड़ियों से कहा कि जहाँ मैं जाता हूँ तहाँ तुम नहीं आ सकते हो तैसा मैं अब तुम से भी कहता हूँ । मैं ३४ तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे को प्यार करो . तैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम भी एक दूसरे को प्यार करो । जो तुम आपस में प्यार ३५ करो तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो ॥

जिसेन पितर ने उस से कहा है प्रभु आप कहां जाते हैं . यीशु ने उस को ३६ उत्तर दिया कि जहाँ मैं जाता हूँ तहाँ तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता है परन्तु इस के उपरान्त तू मेरे पीछे आवेगा । पितर ने उस से कहा है प्रभु मैं क्यों नहीं ३७ अब आप के पीछे आ सकता हूँ . मैं आप के लिये अपना प्राण देऊंगा । यीशु ३८ ने उस को उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा . मैं तुम्हें से सब कुछ कहता हूँ कि जय लें तू तीन बार मुझ से न मुक्रे तब लें सुर्ग न दालेंगा ॥

चौदहवां पर्व ।

तुम्हारा मन व्याकुल न होये . ईश्वर पर विश्वास करो और मुझ पर विश्वास १ करो । मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं नहीं तो मैं तुम से कहता . २ मैं तुम्हारे लिये स्थान तैयार करने जाता हूँ . और जो मैं जाऊँ तुम्हारे लिये ३ स्थान तैयार करूँ तो फिर आके तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ तहाँ तुम भी रहो । और मैं कहां जाता हूँ सो तुम जानते हो और मार्ग को ४ जानते हो ॥

थोमा ने उस से कहा है प्रभु आप कहां जाते हैं सो हम नहीं जानते हैं और ५ मार्ग को हम कहींकर जान सकें । यीशु ने उस से कहा मैं ही मार्ग और सत्य और ६ जीवन हूँ . बिना मेरे द्वारा से कोई पिता पास नहीं पहुँचता है । जो तुम मुझे ७ जानते तो मेरे पिता को भी जानते और अब से तुम उस को जानते हो और उस को देखा है ॥

३ और अनन्त जीवन यह है कि वे तुम्हें जो अद्वैत सत्य ईश्वर है और यीशु  
४ ख्रीष्ट को जिसे तू ने भेजा है पहचानें । मैं ने पृथिवी पर तेरी महिमा प्रगट  
५ किई है , जो काम तू ने मुझे करने को दिया सो मैं ने पूरा किया है । और  
अभी हे पिता तेरे संग अगत के होने के आगे जो मेरी महिमा थी उस महिमा  
से तू अपने संग मेरी महिमा प्रगट कर ।

६ जिन मनुष्यों को तू ने जगत में से मुक्त को दिया है उन्हें पर मैं ने तेरे  
नाम प्रगट किया है , वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुक्त को दिया और उन्हें ।  
७ तेरे वचन को पालन किया है । अब उन्हें ने जान लिया है कि सब कुछ वे  
८ तू ने मुक्त को दिया है तेरी ओर से है । क्योंकि वह बातें जो तू ने मुक्त के  
दिई हैं मैं ने उन्हें को दिई हैं और उन्हें ने उन को ग्रहण किया है और  
निश्चय जान लिया है कि मैं तेरी ओर से निकल आया और विश्वास किया ।  
९ कि तू ने मुझे भेजा । मैं उन्हें के लिये प्रार्थना करता हूं , मैं संसार के लिये  
नहीं परन्तु जिन्हें तू ने मुक्त को दिया है उन्हें के लिये प्रार्थना करता हूं क्योंकि  
१० वे तेरे हैं । और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है और जो तेरा है सो मेरा ।  
११ और मेरी महिमा उस में प्रगट हुई है । मैं अब जगत में नहीं रहूंगा परन्तु  
जगत में रहूंगा और मैं तेरे पास आता हूं , हे पवित्र पिता जिन्हें तू ने मुक्त को  
दिया है उन की अपने नाम में रक्षा कर कि जैसे हम एक हैं तैसे वे एक होवें ।  
१२ जब मैं उन के संग जगत में था तब मैं ने तेरे नाम में उन की रक्षा किई  
जिन्हें तू ने मुक्त को दिया है उन की मैं ने रक्षा किई और उन में से कोई नाश  
१३ नहीं हुआ केवल विनाश का पुत्र जिस्ती धर्मपुस्तक का वचन पूरा होवे । और  
मैं तेरे पास आता हूं और मैं जगत में यह बातें कहता हूं कि वे मेरा आनन्द  
१४ अपने में सम्पूर्ण पावें । मैं ने तेरा वचन उन्हें को दिया है और संसार ने उन  
से वैर किया है क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं हूं तैसे वे संसार के नहीं हैं ।  
१५ मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं कि तू उन्हें जगत में से ले जा परन्तु यह कि  
१६ उन्हें उस दुष्ट से बचा रख । जैसा मैं संसार का नहीं हूं तैसे वे संसार के नहीं  
१७ हैं । अपनी सच्चाई से उन्हें पवित्र कर , तेरा वचन सच्चाई है । जैसे तू ने मुझे  
१८ जगत में भेजा तैसे मैं ने उन्हें भी जगत में भेजा है । और उन के लिये मैं  
अपने को पवित्र करता हूं कि वे भी सच्चाई से पवित्र किये जावें ।  
१९ और मैं केवल इन के लिये नहीं परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन  
के द्वारा से मुक्त पर विश्वास करेंगे प्रार्थना करता हूं कि वे सब एक होवें ।  
२० जैसा तू हे पिता मुक्त में है और मैं तुम्हें में हूं तैसे वे भी हम में एक होवें ।  
२१ लिये कि जगत विश्वास करे कि तू ने मुझे भेजा । और वह महिमा जो तू  
मुक्त को दिई है मैं ने उन को दिई है कि जैसे हम एक हैं तैसे वे एक होवें ।  
२२ मैं उन में और तू मुक्त में कि वे एक में सिद्ध होवें और कि जगत जाने कि  
२३ ने मुझे भेजा और जैसा मुझे प्यार किया तैसा उन्हें प्यार किया है । हे पिता  
चाहता हूं कि जहां मैं रहूं तहां वे भी जिन्हें तू ने मुक्त को दिया है मेरे संग रहें  
कि वे मेरी महिमा को देखें जो तू ने मुक्त को दिई क्योंकि तू ने जगत के

मे कहा है कि सब यह हो जाय तब तुम विश्वास करो । मैं तुम्हारे संग और ३०  
बहुत बातें न कहूँगा क्योंकि इस जगत का अध्ययन आता है और मुझ में उस  
का कुछ नहीं है । परन्तु यह इस लिये है कि जगत जाने कि मैं पिता का प्यार ३१  
करता हूँ और जैसा पिता ने मुझे आज्ञा दी है तैसा ही करता हूँ . उठो इस  
यहाँ से चलें ॥

पन्द्रहवां पृष्ठ ।

मैं सबी दाखलता हूँ और मेरा पिता किमान है । मुझ में जो जो हाल ३  
नहीं फलती है वह उसे दूर करता है और जो जो हाल फलती है वह उसे  
शुद्ध करता है कि यह अधिक फल देने । तुम तो इस यवन के गुण से जो मैं ३  
ने तुम से कहा है शुद्ध हो चुके । तुम मुझ में रहो और मैं तुम में . जैसे ज्ञान ४  
जो वह दाखलता में न रहे तो आप से फल नहीं फल सकती है तैसे तुम भी  
जो मुझ में न रहे तो नहीं फल सकते हो । मैं दाखलता हूँ तुम मेरा ५  
हो . जो मुझ में रहता है और मैं उन में जो बहुत फल फलता है क्योंकि मुझ  
में अलग तुम कुछ नहीं कर सकते हो । यदि कोई मुझ में न रहे तो वह मेरा ६  
फँका जाता जैसे हाल फँकी जाती और सूख जाती और लोग मेरी हाल  
घटोरके आग में डालते हैं और वे लल जाती हैं । जो तुम मुझ में रहो और ७  
मेरा बातें तुम में रहें तो जो कुछ तुम्हारी पच्छा होय सो माँगो और यह  
तुम्हारे लिये हो जायगा । तुम्हारे बहुत फल फलने में मेरे पिता की मर्हिमा ८  
प्रगट होती है और तुम मेरे गिण्य होओगे ॥

जैसा पिता ने मुझ से प्रेम किया है तैसा मैं ने तुम से प्रेम किया है . मेरे ९  
प्रेम में रहो । जैसे मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं का पालन किया है और १०  
उस के प्रेम में रहता हूँ तैसे तुम जो मेरी आज्ञाओं का पालन करो तो मेरे  
प्रेम में रहोगे । मैं ने यह बातें तुम से इस लिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम्हें ११  
में रहे और तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण हो जाय । यह मेरी आज्ञा है कि जैसा १२  
मैं ने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम एक दूसरे को प्यार करो । इस से बड़ा प्रेम १३  
किसी का नहीं है कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण देवे । तुम यदि १४  
सब काम करो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ तो मेरे मित्र हो । मैं आगे का तुम्हें १५  
दास नहीं कहता हूँ क्योंकि दास नहीं जानता कि उस का स्वामी क्या करता है  
परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैं ने जो अपने पिता से सुना है सो सब  
तुम्हें जनाया है । तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना और तुम्हें १६  
ठहराया कि तुम जाके फल फलो और तुम्हारा फल रहे और कि तुम मेरे नाम  
से जो कुछ पिता से माँगो वह तुम को देवे ॥

मैं तुम्हें इन बातों की आज्ञा देता हूँ इस लिये कि तुम एक दूसरे को प्यार १७  
करो । यदि संसार तुम से वैर करता है तुम जानते हो कि उन्होंने ने तुम से पहिले १८  
मुझ से वैर किया । जो तुम संसार के होते तो संसार अपने को प्यार करता १९  
परन्तु तुम संसार के नहीं हो पर मैं ने तुम्हें संसार में से चुना है इसी लिये संसार  
तुम से वैर करता है । जो यवन मैं ने तुम से कहा कि दास अपने स्वामी से २०

- २१ सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ नहीं कहा । तू मुझ से क्यों पूछता है ।  
जिन्होंने ने मुना उन्हें से पूछ ले कि मैं ने उन से क्या कहा . देख वे जानते हैं  
२२ कि मैं ने क्या कहा । जब यीशु ने यह कहा तब प्यादों में से एक जो निकट  
खड़ा था उस को थपेड़ा मारके बोला क्या तू महायाज्ञक को इस रीति से उत्तर  
२३ देता है । यीशु ने उसे उत्तर दिया यदि मैं ने दुरा कहा तो उस दुराई की सान्नी  
२४ वे परन्तु यदि भला कहा तो मुझे क्यों मारता है । जन्म ने यीशु को बंधे हुए  
कियाफा महायाज्ञक के पास भेजा ॥
- २५ शिमोन पितर खड़ा हुआ आग तापता था . तब उन्होंने ने उस से कहा क्या  
२६ तू भी उस के शिष्यों में से एक है . उस ने मुझके कहा मैं नहीं हूँ । महायाज्ञक  
के दासों में से एक दास जो उस मनुष्य का कुटुंब था जिस का कान पितर ने  
२७ काट डाला बोला क्या मैं ने तुम्हें दारी में उस के संग न देखा । पितर फिर मुझ  
गया और तुरन्त मुर्ग बोला ॥
- २८ तब भोर हुआ और वे यीशु को कियाफा के पास से अध्यक्षभवन पर ले गये  
परन्तु वे आप अध्यक्षभवन के भीतर नहीं गये इस लिये कि अशुद्ध न होवें परन्तु  
२९ निस्तार पर्व का भोजन खावें । सो पिलात उन पास निकल आया और कहा  
३० तुम इस मनुष्य पर क्या दोष लगाते हो । उन्होंने ने उस को उत्तर दिया कि जो  
३१ यह कुकर्मी न होता तो हम उसे आप के हाथ न सोंपते । पिलात ने उन से कहा  
तुम उस को लेओ और अपनी व्यवस्था के अनुसार उस का विचार करो . यहू-  
३२ दियों ने उस से कहा किसी को पक्ष करने का हमें अधिकार नहीं है । यह इसलिये  
हुआ कि यीशु का घघन जिसे कहने में उस ने पता दिया कि वह कैसी मृत्यु से  
मरने पर था पूरा होवे ॥
- ३३ तब पिलात फिर अध्यक्षभवन के भीतर गया और यीशु को बुलाके उस से कहा  
३४ क्या तू यहूदियों का राजा है । यीशु ने उस को उत्तर दिया क्या आप अपनी  
३५ ओर से यह बात कहते हैं अथवा औरों ने मेरे विषय में आप से कही । पिलात  
ने उत्तर दिया क्या मैं यहूदी हूँ . तेरे ही लोगों ने और प्रधान याज्ञकों ने तुम्हें  
३६ मेरे हाथ में सोंपा . तू ने क्या किया है । यीशु ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस  
जगत का नहीं है . जो मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक लड़ते  
जिस्ते में यहूदियों के हाथ में न सोंपा जाता . परन्तु अब मेरा राज्य यहां  
३७ का नहीं है । पिलात ने उस से कहा फिर भी तू राजा है . यीशु ने उत्तर  
दिया कि आप ठीक कहते हैं क्योंकि मैं राजा हूँ . मैं ने इस लिये जन्म लिया  
है और इस लिये जगत में आया हूँ कि सत्य पर सान्नी देऊँ . जो कोई सत्य की  
३८ ओर है सो मेरा शब्द सुनता है । पिलात ने उस से कहा सत्य क्या है और यह  
कहके फिर यहूदियों के पास निकल गया और उन से कहा मैं उस में कुछ दोष  
३९ नहीं पाता हूँ । परन्तु तुम्हारी यह रीति है कि मैं निस्तार पर्व में तुम्हारे लिये  
एक जन को छोड़ देऊँ सो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के  
४० राजा को छोड़ देऊँ । तब सभी ने फिर पुकारा कि इस को नहीं परन्तु बरब्बा  
को . और बरब्बा डाकू था ॥

उत्पत्ति के आगे मुझे प्यार किया । हे धर्मी पिता संसार तुम्हें नहीं जानता है २५ परन्तु मैं तुम्हें जानता हूँ और ये लोग जानने हैं कि तू ने मुझे भेजा । और मैं ने २६ तेरा नाम उन को जनाया है और जनाऊंगा कि यह प्यार जिस से तू ने मुझे प्यार किया उन में रहे और मैं उन में रहूँ ॥

अठारहवां पृष्ठ ।

यीशु यह बातें कहके अपने शिष्यों के संग क्रिद्दीन नाले के उस पार निकल १ गया जहाँ एक बारी थी जिस में वह और उस के शिष्य गये । उस का पकड़- २ खानेद्वारा पिछड़ा भी वह स्थान जानता था क्योंकि यीशु ठारंवार वहाँ अपने शिष्यों के संग एकट्ठा हुआ था । तब पिछड़ा पलटन को और प्रधान याजकों ३ और फरीशियों की ओर से प्यादों को लेकर दीपकों और मणालों और छपियारों को लिये हुए वहाँ आया । सो यीशु सब बातें जो उस पर आनेवाली थी जानके ४ निकला और उन से कहा तुम किम को ढूँढ़ते हो । उन्होंने ने उस को उत्तर दिया ५ कि यीशु नासरी को । यीशु ने उन से कहा मैं हूँ । और उस का पकड़खानेद्वारा पिछड़ा भी उन के संग खड़ा था । ज्योंही उस ने उन से कहा मैं हूँ त्योंही ये ६ पीछे दटके भूमि पर गिर पड़े । तब उस ने फिर उन से पूछा तुम किम को ढूँढ़ते हो । वे बोले यीशु नासरी को । यीशु ने उत्तर दिया मैं ने तुम से कहा कि मैं ७ हूँ सो जो तुम मुझे ढूँढ़ते हो सो उन्होंने को जाने देंओ । यह सब लिये हुआ कि ८ जो बचन उस ने कहा था कि विनो तू ने मुझ को दिया है उन में से मैं ने किसी को न खोया सो पूरा होवे । जिसेन पितर के पाम खड़ा था सो उस ने उसे खींचके ९ मद्यायाजक के दास को मारा और उस का दाहिना कान काट डाला । उस दास का नाम सलक था । तब यीशु ने पितर से कहा अपना गधड़ा काठी में रखा । सो १० कटोरा पिता ने मुझ को दिया है क्या मैं उसे न पीऊँ ॥

तब उस पलटन ने और सदसपति ने और पिछड़ियों के प्यादों ने यीशु को ११ पकड़के बांधा । और घटिले उसे दण्ड के पास ले गये क्योंकि क्रियाफा जो उस १२ धरम का मद्यायाजक था उस का वह नसुर था । क्रियाफा यह था जिस ने पिछड़ियों १३ को परामर्श दिया कि एक मनुष्य का हमारे लोग के लिये मरना शक्य है ॥

जिसेन पितर और दूसरा शिष्य यीशु के पीछे हो लिये । यह शिष्य मद्या- १४ याजक का जान पहचान था और यीशु के संग मद्यायाजक के खाने के भीतर गया । परन्तु पितर बाहर द्वार पर खड़ा रहा सो दूसरा शिष्य जो मद्यायाजक १५ का जान पहचान था बाहर गया और द्वारपालिन से कहके पितर को भीतर ले आया । यह दासी अर्थात् द्वारपालिन पितर से बोली क्या तू भी इस मनुष्य १६ के शिष्यों में से एक है । उस ने कहा मैं नहीं हूँ । दास और प्यादे लोग जाइ १७ के कारण कोयने की आग सुलगाने खड़े हुए तापते थे और पितर उन के संग खड़ा हो तापने लगा ॥

तब मद्यायाजक ने यीशु से उस के शिष्यों के विषय में और उस के उपदेश १८ के विषय में पूछा । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि मैं ने जगत से खालके बातें १९ किई मैं ने सभा के घर में और मन्दिर में जहाँ पिछड़ी लोग नियत एकट्ठे होते हैं



- २२ मत लिखिये परन्तु यह कि उस ने कहा मैं यहूदियों का राजा हूँ । पिलात ने उत्तर दिया कि मैं ने जो लिखा है सो लिखा है ।
- २३ जब योहानों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था तब उस के कपड़े लेके चार भाग किये हर एक योहान के लिये एक भाग . और अंग भी लिया परन्तु अंग
- २४ बिना सीअन ऊपर से नीचे लों बिना हुआ था । इस लिये उन्हें ने आपस में कहा हम इस को न फाड़ें परन्तु उस पर चिट्ठियां डालें कि वह किस का होगा . जिस्ते धर्मपुस्तक का वचन पूरा होवे कि उन्हें ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियां डालीं . सो योहानों ने यह किया ॥
- २५ परन्तु यीशु की माता और उस की माता की बहन मरियम जो क्रियोपा
- २६ की स्त्री थी और मरियम मगदलीनी उस के क्रूस के निकट खड़ी थीं । सो यीशु ने अपनी माता को और उस शिष्य को जिसे वह प्यार करता था उस के
- २७ निकट खड़े हुए देखके अपनी माता से कहा हे नारी देखिये आप का पुत्र । तब उस ने उस शिष्य से कहा देख तेरी माता . और उस समय से उस शिष्य ने उस को अपने घर में ले लिया ॥
- २८ इस के पीछे यीशु ने यह जानके कि अब सब कुछ हो चुका जिस्ते धर्मपुस्तक
- २९ का वचन पूरा हो जाय इस लिये कहा मैं प्यासा हूँ । सिरके से भरा हुआ एक बर्तन धरा था सो उन्हें ने इस्पंज को सिरके में भिंगाके एसोख के नल
- ३० पर रखके उस के मुंह में लगाया । जब यीशु ने सिरका लिया था तब कहा पूरा हुआ है और सिर झुकाके प्राण त्यागा ।
- ३१ वह दिन तैयारी का दिन था और वह यिसासवार बड़ा दिन था इस कारण जिस्ते लोथे यिसास के दिन क्रूस पर न रहें यहूदियों ने पिलात से बिन्ती किई
- ३२ कि उन की टांगें तोड़ी जायें और वे उतारे जायें । सो योहानों ने आके पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की भी जो यीशु के संग क्रूस पर चढ़ाये गये थे ।
- ३३ परन्तु यीशु पास आके जब उन्हें ने देखा कि वह मर चुका है तब उस की
- ३४ टांगें न तोड़ीं । परन्तु योहानों में से एक ने बर्छे से उस का पंजर वेधा और
- ३५ तुरन्त लोहू और पानी निकला । इस के देखनेहारे ने साक्षी दिई है और उस की साक्षी सत्य है और वह जानता है कि सत्य कहता है इस लिये कि तुम
- ३६ बिश्वास करो । क्योंकि यह आते इस लिये हुई कि धर्मपुस्तक का वचन पूरा
- ३७ होवे कि उस की कोई हड्डी नहीं तोड़ी जायगी । और फिर धर्मपुस्तक का दूसरा एक वचन है कि जिसे उन्हें ने वेधा उस पर वे दृष्टि करेंगे ।
- ३८ इस के पीछे अरिमथिया नगर के यूसफ ने जो यीशु का शिष्य था परन्तु यहूदियों के डर से इस को छिपाये रहता था पिलात से बिन्ती किई कि मैं
- ३९ यीशु की लाश को ले जाऊँ और पिलात ने आज्ञा दिई सो वह आके यीशु की
- ४० लाश ले गया । निकोदीम भी जो पहिले रात को यीशु पास आया था पचास सेर के अटकल मिलाये हुए गन्धरस और एलवा लेके आया । तब उन्हें ने यीशु की लाश को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे
- ४१ सुगन्ध के संग चहर में लपेटा । उस स्थान पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया

## उनीसवां पर्व ।

तब पिलात ने यीशु को लेके उसे कोड़े मारे । और बाइबियों ने कांटों का ३  
सुकुट गन्धके उस के निर पर रखा और उसे तैजनी वस्त्र पहिराया . और कहा ४  
हे यहूदियों के राजा प्रणाम और उसे थपेड़े मारे ॥

तब पिलात ने फिर बाहर निकलके लोगों से कहा देखो मैं उसे तुम्हारे ४  
पास बाहर लाता हूँ कि तुम जानो कि मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता हूँ । सो ५  
यीशु कांटों का सुकुट और तैजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और उस ने  
उन्हीं से कहा देखो यही मनुष्य है । तब प्रधान याजकों और प्यादों ने उसे ६  
देखा तब उन्हीं ने पुकारा कि उसे क्रूस पर चढ़ाये क्रूस पर चढ़ाये . पिलात  
ने उन से कहा तुम उसे लेके क्रूस पर चढ़ाओ क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता ७  
हूँ । यहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि हमारी भी व्यवस्था है और हमारी व्यवस्था ८  
के अनुसार यह बंध देने की योग्य है क्योंकि उस ने अपने को ईश्वर का पुत्र कहा ।  
अब पिलात ने यह बात सुनी तब और भी डर गया . और फिर अध्यात्मधन के ९  
भीतर गया और यीशु से बोला तू कहाँ से है . परन्तु यीशु ने उस को उत्तर न  
दिया । पिलात ने उस से कहा क्या तू मुझ से नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता १०  
है कि तुझे क्रूस पर चढ़ाने का मुझ का अधिकार है और तुझे कोड़े देने का मुझ  
का अधिकार है । यीशु ने उत्तर दिया जो आप को ऊपर से न दिया जाता सो ११  
आप को मुझ पर कुछ अधिकार न होता इन लिये जो मुझे आप के हाथ में  
पकड़वाता है उस का अधिकार पाप है । इस में पिलात ने उस को कोड़े देने चाहा १२  
परन्तु यहूदियों ने पुकारके कहा जो आप इस को कोड़े देंगे तो आप कैसर के  
मित्र नहीं हैं . जो कोई अपने को राजा कहता है सो कैसर के विरुद्ध बोलता  
है । यह बात सुनके पिलात यीशु को बाहर लाया और जो स्थान छवृत्तरा परन्तु १३  
इब्रीय भाषा में शवथा कहावता है उस स्थान में विचार आमन पर बैठा । निम्नार १४  
पर्व की तैयारी का दिन और दो पहर के निकट था . तब उस ने यहूदियों से  
कहा देखो तुम्हारा राजा । परन्तु उन्हीं ने पुकारा कि ले जाओ ले जाओ उसे १५  
क्रूस पर चढ़ाओ . पिलात ने उन से कहा क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर  
चढ़ाऊँगा . प्रधान याजकों ने उत्तर दिया कि कैसर को कोड़े हमारा कोई राजा  
नहीं है । तब उस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाये जाने को उन्हीं के हाथ सेवा . १६  
तब वे उसे पकड़के ले गये ॥

और यीशु अपना क्रूस उठाये हुए उस स्थान को जो खोपड़ी का स्थान कहावता १७  
और इब्रीय भाषा में शलमथा कहावता है निकल गया । यहाँ उन्हीं ने उस को १८  
और उस के संग दो और मनुष्यों को क्रूसों पर चढ़ाया एक को उधर और एक  
को उधर और बीच में यीशु को । और पिलात ने दोषपत्र लिखके क्रूस पर १९  
लगाया और लिखी हुई बात यह थी यीशु नासरी यहूदियों का राजा । यह दोष- २०  
पत्र बहुत यहूदियों ने पढ़ा क्योंकि यह स्थान जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया  
नगर के निकट था और अब इब्रीय और ग्रीक और रोमीय भाषा में लिखा हुआ  
था । तब यहूदियों के प्रधान याजकों ने पिलात से कहा यहूदियों का राजा २१

उस की डंडी और उस की डाली उस की कटोरियां उस की कलियां और उस के  
 १८ फूल उस ही में से थे । और उस के अलंगों से छः डालियां निकलती थीं दीअट  
 की एक अलंग से तीन डालियां और दीअट की दूसरी अलंग से तीन डालियां ।  
 १९ तीन कटोरियां बदाम की नाईं एक डाली में थीं कली और फूल और तीन  
 कटोरियां बदाम की नाईं एक एक डाली में थीं क्योरे डालियों में जो दीअट से  
 २० निकलती थीं । और दीअट में चार कटोरियां बदाम की नाईं वनी हुई थीं उस  
 २१ की कलियां और उस के फूल । और उस की दो दो डालियों के नीचे एक एक  
 २२ कली थी छः डालियों के समान जो उससे निकलती थीं । उन की कलियां और  
 २३ उन की डालियां उसी में से थीं वह सब के सब निर्मल सोने से गढ़े हुए थे । और  
 उस के सात दीपक और उस के फूल की कतारनियां और उस के पात्र निर्मल सोने  
 २४ से बनाये । उस ने उसे और उस के समस्त पात्रों को एक तोड़ा निर्मल सोने का  
 बनाया ॥

२५ और धूपवेदी को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस की लंबाई एक हाथ और  
 उस की चौड़ाई एक हाथ चौकोर बनाया और उस की ऊंचाई दो हाथ उस के  
 २६ सींग उसी से थे । और उस का ठपना और उस की चारों ओर की अलंग और  
 उस के सींग निर्मल सोने से मढ़े और उस के लिये सोने के चारों ओर कलश  
 २७ बनाये । और उस ने उस के कलश के नीचे के लिये उस के दोनों कोनों के  
 पास उस की दोनों अलंगों पर जिसमें उस के उठाने के बहंगर के स्थान होवें  
 २८ सोने के दो कड़े बनाये । और उस ने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी से बनाया  
 २९ और उन्हें सोने से मढ़ा । और अभिषेक का पवित्र तेल और गंधी के कार्य के  
 समान सुगंध द्रव्य से चौखी धूप बनाई ॥

अठतीसवां पृष्ठ ।

१ और उस ने बलिदान की भेंट की यज्ञवेदी को शमशाद की लकड़ी से  
 बनाया उस की लंबाई पांच हाथ और उस की चौड़ाई पांच हाथ चौखूँटी और  
 २ उस की ऊंचाई तीन हाथ । और उस के चारों कोनों पर सींग बनाये उस के  
 ३ सींग उस में से थे और उस ने उसे पीतल से मढ़ा । और उस ने यज्ञवेदी के  
 समस्त पात्र बटलोही और फावाड़ियां और कटोरे और मांस के कांटे और  
 ४ अङ्गुठियां उस के समस्त पात्र पीतल से बनाये । और उस ने यज्ञवेदी के लिये  
 पीतल की जाली से उस के कोर के नीचे उस की आधी दूर लों एक भंभरी  
 ५ बनाई । और उस ने पीतल की भंभरी के चारों कोनों के लिये बहंगर के स्थान  
 ६ पर चार कड़े बनाये । और उस ने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी से बनाया  
 ७ और उन्हें पीतल से मढ़ा । और उस ने बहंगरों को यज्ञवेदी के उठाने के लिये  
 अलंगों के कड़ों में डाला उस ने उसे पटियों से पोला बनाया ॥

८ और उस ने स्नानपात्र और उस की चौकी पीतल से बनाई उन स्त्रियों के  
 दर्पण से जो मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्टी होती थीं ॥

९ और उस ने आंगन बनाया दक्षिण दिशा के दक्षिण और आंगन के आठ  
 १० भीने बटे हुए सूती बस्त्र से एक सौ हाथ थे । उन के बीस खंभे और उन के

गया एक बारी थी और उस बारी में एक नई कबर जिस में कोई कभी नहीं रखा गया था । सो यिहूदियों की तैयारी के दिन के कारण उन्होंने ने यीशु को १० वहाँ रखा क्योंकि वह कबर निकट थी ॥

तीसरा पर्व ।

अठवारे के पहिले दिन सरियम मगदलीनी भार को ओंधियारा रहते ही कबर १ पर आई और पत्थर को कबर से सरकाया हुआ देखा । तब वह दौड़ी और २ शिमेन पितर और दूसरे शिष्य के पास जिसे यीशु प्यार करता था आके उन से बोली वे प्रभु को कबर में से ले गये हैं और हम नहीं जानतीं कि उसे कहाँ रखा है । तब पितर और वह दूसरा शिष्य निकलके कबर पर आये । वे दोनों ३ एक संग दौड़े और दूसरा शिष्य पितर से शीघ्र दौड़के आगे बढ़ा और कबर पर पहिले पहुँचा । और उस ने मुँहके चद्वर पड़ी हुई देखी तौभी वह भीतर ४ नहीं गया । तब शिमेन पितर उस के पीछे से आ पहुँचा और कबर के भीतर ५ गया और चद्वर पड़ी हुई देखी , और वह ओंगोळा जो उस के मिर पर था ६ चद्वर के संग पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक स्थान में लपेटा हुआ देखा । तब ७ दूसरा शिष्य भी जो कबर पर पहिले पहुँचा भीतर गया और देखके विश्वास किया । वे तो अब लों धर्मपुस्तक का वचन नहीं समझते थे कि उस को मृतकों ८ में से जी उठना होगा ॥

तब दोनों शिष्य फिर अपने घर चले गये । परन्तु सरियम रोती हुई कबर के १० पास बाहर खड़ी रही और रोते रोते कबर की ओर मुकी . और दो बूतों को १२ उलला दस्त्र पहिने हुए देखा कि जहाँ यीशु को लाय पड़ी थी तहाँ एक सिरदाने और दूसरा पैताने बिँटा था । उनों ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है . वह १४ उन से बोली वे मेरे प्रभु को ले गये हैं और मैं नहीं जानती कि उसे कहाँ रखा है । यह कहके उस ने पीछे फिरके यीशु को खड़े देखा और नहीं जानती थी कि १६ यीशु है । यीशु ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है किस को ढूँढती है . उस १८ ने यह समझके कि माली है उस से कहा हे प्रभु जो आप ने उस को उठा लिया है तो मुझ से कहिये कि उसे कहाँ रखा है और मैं उसे ले जाऊँगी । यीशु ने उस १६ से कहा हे सरियम . वह पीछे फिरके उस से बोली हे रब्बूनी अर्थात् हे गुरु । यीशु ने उस से कहा मुझे मत कू क्योंकि मैं अब लों अपने पिता के पास नहीं चढ़ १७ गया हूँ परन्तु मेरे भाइयों के पास जाके उन से कह दे कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता और अपने ईश्वर और तुम्हारे ईश्वर पास चढ़ जाता हूँ । सरियम १८ मगदलीनी ने जाके शिष्यों को सन्देश दिया कि मैं ने प्रभु को देखा है और उस ने मुझ से यह बात कही ॥

अठवारे के उस पहिले दिन को साँझ होते हुए और जहाँ शिष्य लोग एकट्ठे १९ हुए थे तहाँ द्वार यिहूदियों के डर के मारे बन्द होते हुए यीशु आया और बीच में खड़ा बोके उन से कहा तुम्हारा कल्याण होय । और यह कहके उस ने अपने २० हाथ और अपना घंजर उन को दिखाये . तब शिष्य लोग प्रभु को देखके आनन्दित हुए । यीशु ने फिर उन से कहा तुम्हारा कल्याण होय , जैसे पिता ने मुझे २१

२२ भेजा है तैसे में भी तुम्हें भेजता हूँ । यह कहके उस ने फूँक दिया और उन  
 २३ कहा पवित्र आत्मा लेओ । जिन्हों के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षम  
 किये जाते हैं । जिन्हों के तुम रखो वे रखे हुए हैं ॥

२४ परन्तु वारहों में से एक जन अर्थात् थोमा जो दिदुम कहावता है जब यीशु  
 २५ आया तब उन के संग नहीं था । सो दूसरे शिष्यों ने उस से कहा हम ने प्रभु  
 को देखा है . उस ने उन से कहा जो मैं उस के हाथों में कीलों का चिन्ह  
 देखूँ और कीलों के चिन्ह में अपनी उंगली न डालूँ और उस के पंजर में अपने  
 २६ हाथ न डालूँ तो मैं विश्वास न करूँगा । आठ दिन के पीछे उस के शिष्य  
 लोग फिर घर के भीतर थे और थोमा उन के संग था . तब द्वार बन्द होते  
 २७ हुए यीशु आया और बीच में खड़ा होके कहा तुम्हारा कल्याण होय । तब उस  
 ने थोमा से कहा अपनी उंगली यहां लाके मेरे हाथों को देख और अपना  
 २८ हाथ लाके मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो । थोमा  
 २९ ने उस को उत्तर दिया कि हे मेरे प्रभु और मेरे ईश्वर । यीशु ने उस से कहा  
 हे थोमा तू ने मुझे देखा है इस लिये विश्वास किया है . धन्य वे हैं जो बिना  
 देखे विश्वास करें ॥

३० यीशु ने अपने शिष्यों के आगे बहुत और आश्चर्य कर्म भी किये जो इस  
 ३१ पुस्तक में नहीं लिखे हैं । परन्तु ये लिखे गये हैं इस लिये कि तुम विश्वास  
 करो कि यीशु जो है सो ईश्वर का पुत्र खीष्ट है और कि विश्वास करने से तुम  
 को उस के नाम से जीवन होय ॥

### इकईसवां पर्व ।

१ इस के पीछे यीशु ने फिर अपने तई तिवरिया के समुद्र के तीर पर शिष्यों  
 २ को दिखाया और इस रीति से दिखाया । शिमेन पितर और थोमा जो दिदुम  
 कहावता है और गालील के काना नगर का नथनेल और जवदी के दोनों पुत्र  
 ३ और उस के शिष्यों में से दो और जन एक संग थे । शिमेन पितर ने उन से  
 कहा मैं मछली पकड़ने को जाता हूँ . वे उस से बोले हम भी तेरे संग जायेंगे .  
 ४ सो वे निकलके तुरन्त नाव पर चढ़े और उस रात कुछ नहीं पकड़ा । जब भोर  
 हुआ तब यीशु तीर पर खड़ा हुआ तौभी शिष्य लोग नहीं जानते थे कि यीशु  
 ५ है । तब यीशु ने उन से कहा हे लड़को क्या तुम्हारे पास कुछ खाने का है .  
 ६ उन्होंने ने उस को उत्तर दिया कि नहीं । उस ने उन से कहा नाव की दहिनी  
 ओर जाल डालो तो पाओगे . सो उन्होंने ने डाला और अब मछलियों के झुंड  
 ७ के कारण वे उसे खींच न सके । इस लिये वह शिष्य जिसे यीशु प्यार करता  
 था पितर से बोला यह तो प्रभु है . शिमेन पितर ने जब सुना कि प्रभु है तब  
 ८ कमर में अंगरखा कस लिया क्योंकि वह नंगा था और समुद्र में कूद पड़ा । परन्तु  
 दूसरे शिष्य लोग नाव पर मछलियों का जाल घसीटते हुए चले आये क्योंकि वे  
 ९ तीर से दूर नहीं प्राय दो सौ हाथ पर थे । जब वे तीर पर उतरे तब उन्होंने ने  
 १० कोयले की आग धरी हुई और मछली उस पर रखी हुई और रोटी देखी । यीशु  
 ११ ने उन से कहा जो मछलियां तुम ने अभी पकड़ी हैं उन में से ले आओ । शिमेन

पितर ने आपके जाल को जो एक सौ तिर्पन बड़ी मंछनियों से भरा था तीर पर खींच लिया और इतनी दाने से भी जाल नहीं फटा । यीशु ने उन से कहा कि १२  
आओ भोजन करो . परन्तु शिष्यों में से किसी को साहस न हुआ कि उस से  
पूछे आप कौन हैं क्योंकि वे जानते थे कि प्रभु है । तब यीशु ने आपके रोटी १३  
लेके उन को दिई और वैसे ही मंछनी भी । यह अब तीसरी बेर हुआ कि यीशु १४  
ने मृतकों में से उठके अपने शिष्यों को दर्शन दिया ॥

तब भोजन करने के पीछे यीशु ने शिमेन पितर से कहा हे यूनस के पुत्र १५  
शिमेन क्या तू मुझे इन्हीं से अधिक प्यार करता है . यह उस से बोला हां  
प्रभु आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूं . उस ने उस से कहा मेरे  
मेमों को चरा । उस ने फिर दूसरी बेर उस से कहा हे यूनस के पुत्र शिमेन १६  
क्या तू मुझे प्यार करता है . यह उस से बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं  
आप को प्यार करता हूं . उस ने उस से कहा मेरी भेड़ों की रखवाली कर ।  
उस ने तीसरी बेर उस से कहा हे यूनस के पुत्र शिमेन क्या तू मुझे प्यार करता १७  
है . पितर उदास हुआ कि यीशु ने उस से तीसरी बेर कहा क्या तू मुझे प्यार  
करता है और उस से बोला हे प्रभु आप सब कुछ जानते हैं आप जानते हैं कि  
मैं आप को प्यार करता हूं . यीशु ने उस से कहा मेरी भेड़ों को चरा । मैं १८  
तुम्हें से सब सब कहता हूं जद्य तू जवान था तब अपनी कमर बांधके जहां  
चाहता था वहां चलता था परन्तु अब तू बूढ़ा होगा तब अपने हाथ फैलावेगा  
और दूसरा तेरी कमर बांधके जहां तू न चाहे वहां तुम्हें ले जायगा । यह कहने १९  
में उस ने पता दिया कि पितर कैसी मृत्यु में ईश्वर की मददमा प्रगट करेगा और  
यह कहके उस से बोला मेरे पीछे हो ले ॥

पितर ने मुंह फेके उस शिष्य को जिसे यीशु प्यार करता था और जिस ने २०  
घिपारी में उस की छाती पर उटंगके कहा हे प्रभु आप का पकड़वानेद्वारा  
कौन है पीछे से आते देखा । उस को देखके पितर ने यीशु से कहा हे प्रभु २१  
इस का क्या होगा । यीशु ने उस से कहा जो मैं चाहूं कि वह मेरे आने लो २२  
रहे तो तुम्हें क्या . तू मेरे पीछे हो ले । इस लिये भाइयों में यह बात फैल गई २३  
कि यह शिष्य नहीं मरेगा . तौभी यीशु ने यह नहीं कहा कि यह नहीं मरेगा  
परन्तु यह कि जो मैं चाहूं कि वह मेरे आने लो रहे तो तुम्हें क्या ॥

यह तो यह शिष्य है जो इन बातों के विषय में साक्षी देता है और जिस ने २४  
यह बातें लिखीं और हम जानते हैं कि उस की साक्षी सत्य है । और बहुत और २५  
काम भी हैं जो यीशु ने किये . जो वे एक एक कामके लिखे जाते तो मुझे बूझ  
पड़ता है कि पुस्तक जो लिखे जाते जगत में भी न समाते । आमीन ॥



# प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त ।

पहिला पर्व ।

१ हे शियोफिल वह पहिला वृत्तान्त मैं ने सब बातों के विषय में रखा जो यीशु  
२ उस दिन लों करने और सिखाने का आरंभ किये था । जिस दिन वह पवित्र  
आत्मा के द्वारा से जिन प्रेरितों को उस ने चुना था उन्हें आज्ञा दे करके उठा  
३ लिया गया । और उस ने उन्हें बहुतरे अच्छे प्रमाणों से अपने तर्ह दुःख भोगने  
के पीछे जीवता दिखाया कि चालीस दिन लों वे उसे देखा करते थे और यह  
४ ईश्वर के राज्य के विषय में उन से बातें करता था । और जब वह उन के संग  
एकट्ठा हुआ तब उन्हें आज्ञा दिई कि यिरुशलैम को मत छोड़ जाओ परन्तु  
५ पिता की जो प्रतिज्ञा तुम ने सुनी है उस की बात जोड़ते रहे । क्योंकि  
योहान ने तो जल से बपतिस्मा दिया परन्तु थोड़े दिनों के पीछे तुम्हें पवित्र  
६ आत्मा से बपतिस्मा दिया जायगा । सो उन्होंने ने एकट्ठे होके उस से पूछा कि  
७ हे प्रभु क्या आप इसी समय में इसायेली लोगों को राज्य फेर देते हैं । उस ने  
उन से कहा जिन कालों अथवा समयों को पिता ने अपने ही वश में रखा है  
८ उन्हें जानने का अधिकार तुम्हें नहीं है । परन्तु तुम पर पवित्र आत्मा के आने  
से तुम सामर्थ्य पाओगे और यिरुशलैम में और सारे यहूदिया और शोमिरोन  
९ देशों में और पृथिवी के अन्त लों मेरे साक्षी होओगे । यह कहके वह उन के  
देखते हुए ऊपर उठाया गया और मेघ ने उसे उन की दृष्टि से छिपा लिया ।  
१० ज्योंही वे उस के जाते हुए स्वर्ग की ओर तकते रहे त्योंही देखो दो पुरुष  
११ उजला वस्त्र पहिने हुए उन के निकट खड़े हो गये । और कहा हे गालीली लोगों  
तुम क्यों स्वर्ग की ओर देखते हुए खड़े हो । यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग  
पर उठा लिया गया है जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी  
रीति से आवेगा ।

१२ तब वे जैतून नाम पर्वत से जो यिरुशलैम के निकट अर्थात् एक विश्रामघर  
१३ की बात भर दूर है यिरुशलैम को लौटे । और जब वे पहुंचे तब उपरौठी  
कोठरी में गये जहां वे अर्थात् पितर और याकूब और योहान और अन्डिय और  
फिलिप और थोमा और बर्थलमई और मत्ती और अलफई का पुत्र याकूब और  
१४ शिमेन उद्योगी और याकूब का भाई यहूदा रहते थे । ये सब एक चित्त होके  
स्त्रियों के और यीशु की माता मरियम के संग और उस के भाइयों के संग  
प्रार्थना और बिन्ती में लगे रहते थे ।

१५ उन दिनों में पितर शिष्यों के बीच में खड़ा हुआ । एक सौ बीस जन के  
१६ अटकल एकट्ठे थे । और कहा हे भाइयो अवश्य था कि धर्मपुस्तक का यह खसरा  
पूरा होय जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में जो यीशु  
१७ के पकड़नेवालों का अगुवा था आगे से कहा दिया । क्योंकि वह हमारे संग गिना

गवा था और इस सेवकाई का अधिकार पाया था । उस ने तो अधर्म की १८  
मजूरी से एक खेत मील लिया और औंधे मुँह गिरके बीच से फट गया और उस  
को सद्य अन्तर्द्विष्टा निकल पड़ी । यह बात यिहूदीयों के मध्य निधामियों को १९  
जान पड़ी इस लिये वह खेत उन की भाषा में दकलदामा अर्थात् लोह का खेत  
कहलाया । गाँवों के पुस्तक में लिखा है कि उस का घर उजाड़ होय और उस २०  
में कोई न रहे और कि उस का रखवाली का काम दूसरा लेंगे । इस लिये प्रभु २१  
यीशु योहन् के वपतिस्मा के समय से लेकर उस दिन लों कि वह हमारे पास में  
उठा लिया गया कितने दिन हमारे बीच में थाया जाया किया . जो मनुष्य सद्य २२  
दिन हमारे संग रहे हैं उन्हीं में से उचित है कि एक जन हमारे संग यीशु के ली  
उठने का साक्षी होय । तब उन्हीं ने दो को अर्थात् यूसफ को लो प्रार्थना करा- २३  
वता है जिस का उपनाम युन्त था और मत्थियाह को कहा किया . और प्रार्थना २४  
करके कहा है प्रभु सभी के अन्तर्यामी इन दोनों में से एक को जिसे तू ने चुना है  
ठहरा दे . कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का अधिकार पावे जिस में यिहूदा २५  
प्रतिष्ठ हुआ कि अपने निज स्थान को जाय । तब उन्हीं ने चिट्ठियां हाली और २६  
चिट्ठी मत्थियाह के नाम पर निकली और वह सगारह प्रेरितों के संग गिना गया ।

दूसरा पञ्च ।

जब पैंतिकोष्ट पञ्च का दिन था पहुँचा तब वे मध्य एक चित्त होकर एकट्ठे १  
हुए थे । और अचांचक प्रवल ज्वार के चलने का सा स्पर्श से एक शब्द हुआ २  
जिस से मारा घर जहाँ वे बैठे थे भर गया । और आग की सी जीभ अलग ३  
अलग होती हुई उन्हीं दिखाई दिई और वह हर एक जन पर ठहर गई । तब ४  
वे सद्य पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए और जैसे आत्मा ने उन्हीं धुनवाया तैसे  
आन आन बोलियां बोलने लगे ॥

यिहूदीयों में कितने भक्त यिहूदी लोग घास करते थे लो स्पर्श के नीचे के ५  
हर एक देश में आये थे । इस शब्द के लाने पर बहुत लोग एकट्ठे हुए और ६  
छहरा गये क्योंकि उन्हीं ने वन को हर एक अपनी ही भाषा में बोलते हुए  
सुना । और वे सब विस्मित और अचंचित हो आपस में कहने लगे देखो वे सद्य ७  
जो बोलते हैं क्या गालीली लोग नहीं हैं । फिर इस लोग क्योंकि हर एक अपने ८  
अपने जन्म देश की भाषा में सुनते हैं । इस जो पर्या और मादी और रनमी ९  
लोग और मिसपतामिया और यिहूदिया और कपदोक्रिया और पन्त और आशिया .  
और फूगिया और पंफुलिया और मिसर और कुरीनी के आसपास का लूधिया देश १०  
इन मध्य देशों के निवासी और रोम नगर में आये हुए लोग क्या यिहूदी क्या  
यिहूदीय मत्तावलंबी . क्रीतीय भी और अरब लोग हैं उन्हीं अपनी अपनी बोलियों ११  
में ईश्वर के मन्त्राकार्यों की बात बोलते हुए सुनते हैं । सो वे सद्य विस्मित १२  
हो दुवधा में पड़े और एक दूसरे से कहने लगा इस का अर्थ क्या है । परन्तु १३  
और लोग ठट्टे में कहने लगे वे नई मदिरा में लफ्फाक हुए हैं ॥

तब पितर ने सगारह शिष्यों के संग खड़ा होकर ऊँचे शब्द से उन्हीं कहा है १४  
यिहूदियो, और यिहूदीयों के मध्य निधामियों इस बात को धूँक लो और मेरी

- १५ खातों पर काम लगाओ । ये तो मतवाले नहीं हैं जैसा तुम समझते हो क्योंकि  
 १६ पहर ही दिन चढ़ा है । परन्तु यह वह बात है जो योएल भविष्यद्वक्ता से  
 १७ कही गई . कि ईश्वर कहता है पिछले दिनों में ऐसा होगा कि मैं सब मनुष्यों पर  
 अपना आत्मा उंडेलूंगा और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां भविष्यद्वक्ता कहेंगे और  
 १८ तुम्हारे जवान लोग दर्शन देखेंगे और तुम्हारे बृद्ध लोग स्वप्न देखेंगे । और भी  
 मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूंगा और  
 १९ वे भविष्यद्वक्ता कहेंगे । और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम और नीचे पृथिवी  
 २० पर चिन्ह अर्थात् लोहू और आग और धूस की भाँति दिखाऊंगा । परमेश्वर के  
 वड़े और प्रसिद्ध दिन के आने के पहिले सूर्य अधियारा और चाँद लोहू सा हो  
 २१ जायगा । और जो कोई परमेश्वर के नाम की प्रार्थना करेगा सो आश पावेगा ॥
- २२ हे इसायेली लोगो यह बातें सुनो , यीशु नासरी एक मनुष्य जिस का प्रमाण  
 ईश्वर से आश्चर्य कर्मों और अद्भुत कामों और चिन्हों से तुम्हें दिया गया है  
 जो ईश्वर ने तुम्हारे बीच में जैसा तुम आप भी जानते हो उस के द्वारा से किया .  
 २३ उसी को जब वह ईश्वर के स्थिर मत और भविष्यत ज्ञान के अनुसार सोंपा गया  
 तुम ने लिया और अधर्मियों के हाथों के द्वारा क्रूश पर ठोंकके मार डाला ।  
 २४ उसी को ईश्वर ने मृत्यु के बंधन खोलके जिला उठाया क्योंकि अन्धेना था कि  
 २५ वह मृत्यु के बंध में रहे । क्योंकि दाऊद ने उस के विषय में कहा मैं ने परमे-  
 श्वर को सदा अपने साम्हने देखा कि वह मेरी दाहिनी ओर है जिस्ते मैं डिग न  
 २६ जाऊँ । इस कारण मेरा मन आनन्दित हुआ और मेरी जीभ हर्षित हुई हाँ मेरा  
 २७ शरीर भी आशा में विश्राम करेगा । क्योंकि तू मेरे प्राण को परलोक में न  
 २८ छोड़ेगा और न अपने पवित्र ज्ञान को सड़ने देगा । तू ने मुझे जीवन का मार्ग  
 बताया है तू मुझे अपने सन्मुख आनन्द से परिपूर्ण करेगा ॥
- २९ हे भाईयो उस कुलपति दाऊद के विषय में मैं तुम से खोलके कहूँ . वह तो  
 ३० मरा और गाड़ा भी गया और उस की कबर आज लों हमारे बीच में है । सो  
 भविष्यद्वक्ता होके और यह जानके कि ईश्वर ने मुझ से किरिया खाई है कि मैं  
 शरीर के भाव से खीष्ट को तेरे वंश में से उत्पन्न करूँगा कि वह तेरे सिंहासन  
 ३१ पर बैठे . उस ने होन्हार को आगे से देखके खीष्ट के जी उठने के विषय में  
 कहा कि उस का प्राण परलोक में नहीं छोड़ा गया और न उस का देह सड़  
 ३२ गया । इसी यीशु को ईश्वर ने जिला उठाया और इस बात के हम सब साक्षी  
 ३३ हैं । सो ईश्वर के दाहिने हाथ जंच पद प्राप्त करके और पवित्र आत्मा के विषय  
 में जो कुछ प्रतिज्ञा किया गया सोई पिता से पाके उस ने यह जो तुम अब देखते  
 ३४ और सुनते हो उंडेल दिया है । क्योंकि दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़ गया परन्तु उस  
 ३५ ने कहा कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा . जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों  
 ३६ की पीढ़ी न बनाऊँ तब लों तू मेरी दाहिनी ओर बैठ । सो इसायेल का सारा  
 घराना निश्चय जाने कि यह यीशु जिसे तुम ने क्रूश पर घात किया इसी को  
 ईश्वर ने प्रभु और खीष्ट ठहराया है ॥
- ३७ तब सुननेवालों के मन छिद गये और वे पितर से और दूसरे प्रेरितों से बोले

हे भाइयो हम क्या करें । पितर ने उन से कहा पञ्चात्ताप करो और हर एक ३८  
 खेन यीशु ख्रीष्ट के नाम से व्यपत्तिममा लेओ कि तुम्हारा पापमोचन होय और  
 तुम पांथव आत्मा दान पाओगे । क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हें के लिये और ३९  
 तुम्हारे भक्तानों के लिये और दूर दूर के सब लोगों के लिये है जितनों के परमेश्वर  
 हमारा ईश्वर अपने पास बुलावे । बहुत और बातों में भी उस ने साक्षी और ४०  
 उपदेश दिया कि इस समय के ठेठे लोगों में यज्ञ जाओ ।

तब जिन्हों ने उस का यज्ञ आनन्द से गृहग किया उन्हीं ने व्यपत्तिममा लिया ४१  
 और उस दिन तीन महत्त जन के अटकल शिष्यों में मिल गये । और ये प्रेरितों ४२  
 के उपदेश में और संगति में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना में लगे रहते थे ।  
 और सब मनुष्यों को भय हुआ और बहुतेरे अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के ४३  
 द्वारा प्रगट होते थे । और सब विश्वास करनेवाले एकट्ठे थे और उन्हीं की सब ४४  
 सम्पत्ति सामे की थी । और ये धन सम्पत्ति को खेचके जैसा जिस को प्रयोजन ४५  
 होता था तैसा सभी में बांट लेते थे । और ये प्रतिदिन मन्दिर में एक चित्त ४६  
 हाके लगे रहते थे और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की मृधाई  
 से भोजन करते थे । और ईश्वर की स्तुति करते थे और सब लोगों का उन पर ४७  
 अनुग्रह था । और प्रभु आस्य पानेवालों को प्रतिदिन मंडली में मिलाता था ।

### तीसरा पट्ट ।

तीसरे पहर प्रार्थना के समय में पितर और योचन एक संग मन्दिर को जाते १  
 थे । और लोग किसी मनुष्य को जो अपनी माता के गर्भ ही से लंगड़ा था २  
 लिये जाते थे जिस को ये प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो मुन्दर कहायता  
 है रख देते थे कि वह मन्दिर में जानेवालों से भीख मांगे । उस ने पितर और ३  
 योचन को देखके कि मन्दिर में जाने पर हैं उन से भीख मांगी । पितर ने ४  
 योचन के संग उस की ओर दृष्टि कर कहा हमारी ओर देख । सो वह उन से ५  
 कुछ पाने की आशा करते हुए उन की ओर ताकने लगा । परन्तु पितर ने कहा ६  
 छांदी और सोना मेरे पास नहीं है परन्तु यह जो मेरे पाम है मैं तुम्हें देता हूँ  
 यीशु ख्रीष्ट नामरी के नाम से उठ और चल । तब उस ने उस का दाहिना हाथ ७  
 पकड़के उसे उठाया और तुरन्त उस के पांथों और छुट्टियों में यत्न हुआ । और ८  
 वह चलके खड़ा हुआ और फिरने लगा और फिरता और कूदता और ईश्वर  
 की स्तुति करता हुआ उन के संग मन्दिर में प्रवेश किया ॥

सब लोगों ने उसे फिरते और ईश्वर की स्तुति करते हुए देखा । और उस १०  
 को चीन्हा कि वही है जो मन्दिर के मुन्दर फाटक पर भीख के लिये बैठा  
 रहता था और जो उस को हुआ था उस से ये अति अचंभित और विस्मित  
 हुए । जिस समय वह लंगड़ा जो चंगा हुआ था पितर और योचन को पकड़े ११  
 रहा सब लोग बहुत अचंभा करते हुए उस आंसारे में जो सुलेमान का कहायता  
 है उन के पास दौड़े आये ।

यह देखके पितर ने लोगों से कहा हे इसायेली लोगो तुम इस मनुष्य से १२  
 क्यों अचंभा करते हो अथवा हमारी ओर क्यों ऐसा ताकते हो कि जैसा हम

ने अपनी ही शक्ति अथवा भक्ति से इस को चलने का सामर्थ्य दिया होता ।  
 १३ इब्राहीम और इसहाक और याकूब के ईश्वर ने हमारे पितरों के ईश्वर ने अपने  
 सेवक यीशु की महिमा प्रगट की है जिसे तुम ने पकड़वाया और उस को पिलात  
 १४ के सम्मुख नकारा जब कि उस ने उसे छोड़ देने को ठहराया था । परन्तु तुम  
 ने उस पवित्र और धर्मी को नकारा और मांगा कि एक हत्यारा तुम्हें दिया  
 १५ जाय । और तुम ने जीवन के कर्ता को घात किया परन्तु ईश्वर ने उसे मृतकों  
 १६ में से उठाया और इस बात के हम साक्षी हैं । और उस के नाम के विश्वास से  
 उस के नाम ही ने इस मनुष्य को जिसे तुम देखते और जानते हो सामर्थ्य दिया  
 है हां जो विश्वास उस के द्वारा से है उसी से यह संपूर्ण आरोग्य तुम सभी के  
 सामने इस को मिला है ॥

१७ और अब हे भाइयो मैं जानता हूँ कि तुम्होंने ने वह काम अज्ञानता से  
 १८ किया और वैसे तुम्हारे प्रधानों ने भी किया । परन्तु ईश्वर ने जो बात उस ने  
 अपने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से आगे बताई थी कि खीष्ट दुःख भोगेगा  
 १९ वह बात इस रीति से पूरी की है । इस लिये पश्चात्ताप करके फिर जाओ कि  
 तुम्हारे पाप मिटायें जायें जिस्ती जीव का ठंढा होने का समय परमेश्वर की  
 २० ओर से आवे । और वह यीशु खीष्ट को भेजे जिस का समाचार तुम्हें आगे से  
 २१ कहा गया है । जिसे अवश्य है कि स्वर्ग सब बातों के सुधारे जाने के उस  
 समय लों ग्रहण करे जिस की कथा ईश्वर ने आदि से अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं  
 के मुख से कही है ॥

२२ मूसा ने पितरों से कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयों में से मेरे  
 समान एक भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे लिये उठावेगा जो जो बातें वह तुम से  
 २३ कहे उन सब बातों में तुम उस की सुनो । परन्तु हर एक मनुष्य जो उस  
 २४ भविष्यद्वक्ता की न सुने लोगों में से नाश किया जायगा । और सब भविष्यद्वक्ताओं  
 ने भी शमुश्ल से और उस के पीछे के भविष्यद्वक्ताओं से लेके जितनों ने बातें  
 २५ किहीं इन दिनों का भी आगे से सन्देश दिया है । तुम भविष्यद्वक्ताओं के और  
 उस नियम के सन्तान हो जो ईश्वर ने हमारे पितरों के संग बांधा कि उस ने  
 इब्राहीम से कहा पृथिवी के सारे घराने तेरे वंश के द्वारा से आशीय पावेंगे ।  
 २६ तुम्हारे पास ईश्वर ने अपने सेवक यीशु को उठाके पहिले भेजा जो तुम में से  
 हर एक को तुम्हारे कुकर्मी से फिराने में तुम्हें आशीस देता था ॥

चौथा पर्व ।

१ जिस समय वे लोगों से कह रहे यासक लोग और मन्दिर के पहरेदारों का  
 २ अध्यक्ष और सड़की लोग उन पर चढ़ आये । कि वे अप्रसन्न होते थे इस लिये  
 कि वे लोगों को सिखाते थे और मृतकों में से जी उठने की बात यीशु के प्रमाण  
 ३ से प्रचार करते थे । और उन्होंने ने उन्हें पकड़के विहान लों खन्दीगृह में रखा  
 ४ क्योंकि सांझ हुई थी । परन्तु यचन के सुननेहारों में से बहुतों ने विश्वास किया  
 और उन मनुष्यों की गिन्ती पांच सहस्र के अटकल हुई ।  
 ५ विद्वान् इस लोगों के प्रधान और प्राचीन और अध्यापक लोग । और इन

महापालक और कियाफा और योहन और मिकन्दर और महायाज्ञक के घराने के जिनने लोग ये ये मय पिन्गलीम में एकट्ठे हुए । और उन्हीं ने पितर और योहन को बीच में खड़ा करके पूछा तुम ने यह काम किस सामर्थ्य से अथवा किस नाम से किया । तब पितर ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उन से कहा हे लोगों के प्रधानो और इसायेन के प्राचीनो . इस दुर्व्यक्त मनुष्य पर जो भलाई किई गई है यदि उस के विषय में आज हम से पूछा जाता है कि यह किस नाम से चंगा किया गया है . तो आप लोग मय जानिये और समस्त इसायेनी लोग जानें कि यीशु ख्रीष्ट नासरी के नाम से जिसे आप लोगों ने क्रूस पर घात किया जिसे ईश्वर ने मृतकों में से उठाया उसी से यह मनुष्य आप लोगों के आगे चंगा खड़ा है । यही वह पत्थर है जिसे आप घबड़ों ने तुच्छ जाना जो काने का सिगा हुआ है । और किसी दूसरे से आण नहीं है क्योंकि स्वर्ग के नीचे दूसरा नाम नहीं है जो मनुष्यों के बीच में दिया गया है जिस से हमें आण पाना होता ।

तब उन्हीं ने पितर और योहन का माधन देखके और यह जानके कि ये विद्याहीन और अज्ञान मनुष्य हैं अचंभा किया और उन को चीन्टा कि ये यीशु के संग थे । और उस चंगा किए हुए मनुष्य को उन के संग खड़े देखके ये कोई बात विरोध में न कह सके । परन्तु उन को रुभा के बाहर जाने की आज्ञा देके उन्हीं ने आपस में विचार किया . कि हम इन मनुष्यों से क्या करें क्योंकि एक प्रसिद्ध आश्चर्य कर्म उन्हीं से हुआ है यह बात पिन्गलीम के सब निवासियों पर प्रगट है और हम नहीं सुकर सकते हैं । परन्तु जित्नी लोगों में अधिक फैल न जाये आओ हम उन्हें बहुत धमकावें कि ये इन नाम से फिर किसी मनुष्य से बात न करें । और उन्हीं ने उन्हें बुलाके आज्ञा दिई कि यीशु के नाम से कुछ भी मत बोलो और मत सिखाओ । परन्तु पितर और योहन ने उन को उत्तर दिया कि ईश्वर से अधिक आप लोगों का साधना क्या ईश्वर के आगे उचित है सो आप लोग विचार कीजिये । क्योंकि जो हम ने देखा और सुना है उस को न कहना हम से नहीं हो सकता है । तब उन्हीं ने और धमकी देके उन्हें छोड़ दिया कि उन्हें दंड देने का लोगों के कारण कोई उपाय नहीं मिलता या क्योंकि जो हुआ था उस के लिये सब लोग ईश्वर का गुणानुवाद करते थे । क्योंकि यह मनुष्य जिस पर यह चंगा करने का आश्चर्य कर्म किया गया था चालीस वरस के ऊपर का था ।

ये छूटके अपने संगियों के पास आये और जो कुछ प्रधान याज्ञकों और प्राचीनों ने उन से कहा था सो सुना दिया । ये सुनके एक चित्त होकर संज्ञा शब्द करके ईश्वर से बोले हे प्रभु तू ईश्वर है जिस ने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो हम में है बनाया . जिस ने अपने सेवक दाऊद के मुख से कहा अन्यदेशियों ने क्यों कोप किया और लोगों ने क्यों व्यर्थ चिन्ता किई । परमेश्वर के और उस के अभिषिक्त जन के विरुद्ध पृथिवी के राजा लोग खड़े हुए और अध्याश लोग एक संग एकट्ठे हुए । क्योंकि सधसुत तरे पवित्र सेवक यीशु के विरुद्ध जिसे तू ने अभिषेक किया डेरौद और पत्ताय . पितात भी अन्यदेशियों और इसायेनी लोगों



तू कौन है . प्रभु ने कहा मैं यीशु हूँ जिसे तू सताता है पैनों पर लात मारना  
 ६ तेरे लिये कठिन है । उस ने कांपित और अचंचित हो कहा हे प्रभु तू क्या चाहता  
 है कि मैं करूँ . प्रभु ने उस से कहा उठके नगर में जा और तुझ से कहा जायगा  
 ७ तुझे क्या करना उचित है । और जो मनुष्य उस के संग जाते थे सो चुप खड़े थे  
 ८ कि वे शब्द तो सुनते थे पर किसी को नहीं देखते थे । तब शावल भूमि से  
 उठा परन्तु जब अपनी आंखें खोलीं तब किसी को न देख सका पर वे उस का  
 ९ हाथ पकड़के उसे दमेसक में लाये । और यह तीन दिन लो नही देख सकता था  
 और न खाता न पीता था ॥

१० दमेसक में अननियाह नाम एक शिष्य था और प्रभु ने दर्शन में उस से कहा  
 ११ हे अननियाह . उस ने कहा हे प्रभु देखिये मैं हूँ । तब प्रभु ने उस से कहा उठके  
 उस गली में जो सीधी कहावती है जा और यिहूदा के घर में शावल नाम तारस  
 १२ नगर के एक मनुष्य को ढूँढ़ क्योंकि देख वह प्रार्थना करता है . और उस ने  
 दर्शन में यह देखा है कि अननियाह नाम एक मनुष्य ने भीतर आके उस पर हाथ  
 १३ रखा कि यह दृष्टि पावे । अननियाह ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं ने बहुतों से  
 इस मनुष्य के विषय में सुना है कि उस ने यिरुशलीम में तेरे पवित्र लोगों से  
 १४ कितनी घुराई किई है । और यहां उस को तेरे नाम की सब प्रार्थना करनेहारों  
 १५ को बांधने का प्रधान याजकों की ओर से अधिकार है । प्रभु ने उस से कहा  
 खला जा क्योंकि वह अन्यदेशियों और राजाओं और इसायेल के सन्तानों के आगे  
 १६ मेरा नाम पहुंचाने का मेरा एक चुना हुआ पात्र है । क्योंकि मैं उसे अताङ्गा  
 कि मेरे नाम के लिये उस को कैसा बड़ा दुःख उठाना होगा ॥

१७ तब अननियाह ने जाके उस घर में प्रवेश किया और उस पर हाथ रखके  
 कहा हे भाई शावल प्रभु ने अर्थात् यीशु ने जिस ने उस मार्ग में जिस से तू आता  
 था तुझ को दर्शन दिया मुझे भेजा है इस लिये कि तू दृष्टि पावे और पवित्र  
 १८ आत्मा से परिपूर्ण होवे । और तुरन्त उस की आंखों से क्लिके से गिर पड़े और  
 वह तुरन्त देखने लगा और उठके वपतिसमा लिया और भोजन करके बल पाया ॥

१९ तब शावल कितने दिन दमेसक में के शिष्यों के संग था । और वह तुरन्त  
 २० सभाओं में यीशु की कथा सुनाने लगा कि वह ईश्वर का पुत्र है । और सब  
 सुननेहारे विस्मित हो कटने लगे क्या यह वह नहीं है जिस ने यिरुशलीम में इस  
 नाम की प्रार्थना करनेहारों को नाश किया और यहां इसी लिये आया था कि  
 २१ उन्हें बांधे हुए प्रधान याजकों के आगे पहुंचावे । परन्तु शावल और भी दृढ़  
 होता गया और यही खीष्ट है इस बात का प्रमाण देके दमेसक में रहनेहारे  
 २२ यिहूदियों को व्याकुल किया । जब बहुत दिन बीत गये तब यिहूदियों ने उसे  
 २३ मार डालने का आपस में विचार किया । परन्तु उन की कुमंत्रणा शावल को  
 जान पड़ी . वे उसे मार डालने को रात और दिन फाटकों पर पहरा भी देते थे ।  
 २४ परन्तु शिष्यों ने रात को उसे लेके टोकरे में लटकाके भीत पर से उतार दिया ॥  
 २५ जब शावल यिरुशलीम में पहुंचा तब वह शिष्यों से मिल जाने चाहता था  
 और वे सब उस से डरते थे क्योंकि वे उस के शिष्य होने की प्रतीति नहीं करते

पीतल के बीस पाए खंभों के आंकड़े और उन की सामी चांदी की । और उत्तर ११ दिशा के लिये सौ हाथ उन के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाए खंभों के आंकड़े और उन की सामी चांदी की । और पश्चिम की ओर पचास हाथ १२ की ओट उन के दस खंभे और उन के दस पाए खंभों के आंकड़े और सामी उन की चांदी की । और पूरव दिशा की पूरव ओर के लिये पचास हाथ । ओट १३ १४ पंद्रह हाथ की आंगन पर उन के खंभे तीन और उन के पाए तीन । और आंगन १५ के द्वार की दूसरी अलंका के लिये इधर उधर पंद्रह हाथ की ओट उन के तीन खंभे और उन के तीन पाए । आंगन की चारों ओर की समस्त ओट बटे हुए १६ भीने सूती वस्त्र की थी । और खंभों के पाए पीतल के खंभों के आंकड़े और १७ उन की सामी चांदी की और उन के साथे चांदी से मढ़े हुए और आंगन के सब खंभे चांदी से जोड़े हुए थे । और आंगन के द्वार की ओट बूटा कड़े हुए १८ नीले और बैजनी और लाल और बटे हुए भीने सूती वस्त्र की थी और उस की लंबाई बीस हाथ और चौड़ाई पांच हाथ आंगन की ओट से मिलती थी । और १९ उन के चार खंभे और उन के चार पाए पीतल के उन के आंकड़े चांदी के और उन के साथे और उन की सामी चांदी से मढ़े हुए थे । और तंबू की और आंगन २० की चारों ओर के सब खंभे पीतल के ॥

हार्दन राजा के पुत्र ईश्वर के हाथ से लायियां की सेवा के लिये मृसा २१ की आज्ञा के ममान सार्थी के तंबू का लेखा यह है । यहुदा के कुल से हर के २२ नागी ऊरी के बेटे योजिस्त्रियल ने सब कुछ जो परमेश्वर ने मृसा की आज्ञा किई थी बनाया । और उस के साथ दान के कुल का अग्निसमक का घंटा अचलित्यय २३ था जो खोदने के और चढ़ाई के कार्य में और नीला और बैजनी और लाल बूटा काढ़ने में और भीने वस्त्र में युद्धिमान था ॥

ममस्त सोना जो पवित्र कार्य में उठा था अर्थात् भेंट का सोना सो अंतीम २४ तोड़े और सात सौ तीस शैकल पवित्र स्थान के शैकल में था ॥

और मंडली की गिनती में की चांदी एक सौ तोड़े और एक सहस्र मात सौ २५ पन्द्रहतर शैकल पवित्र स्थान के शैकल के ममान था । हर मनुष्य के लिये एक २६ छोका अर्थात् आधा शैकल पवित्र स्थान के शैकल के समान हर एक के लिये बीस घरस में और ऊपर जिस की गिनती हुई छः लाख तीन सहस्र साठे पांच सौ थे । और चांदी के सौ तोड़े से पवित्र स्थान के पाए और घूंघट के पाए ठाले २७ गये सौ तोड़े के सौ पाए एक तोड़े का एक पाया । और एक सहस्र मात सौ पच- २८ दहतर शैकल से उस ने खंभों के आंकड़े बनाये और उन के साथे मढ़े और उन में सामी लगाई ॥

और भेंट का पीतल जो सत्तर तोड़े और दो सहस्र चार सौ शैकल थे । और २९ उस ने उससे मंडली के तंबू के द्वार के लिये पाए और पीतल की यज्ञवेदी और उस की पीतल की भंभरी और यज्ञवेदी के समस्त पात्र बनाये । और आंगन की ३० चारों ओर के पाए और आंगन के द्वार के पाए और तंबू के सब खंभे और आंगन की चारों ओर के सब खंभे ॥

६ याफो नगर भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला । वह शिमोन नाम किसी चमार के यहां जिस का घर समुद्र के तीर पर है पाहुन है । जो कुछ तुम्हें करना उचित है सो यही तुम्हें से कहेगा । जब वह दूत जो कर्णिलिय से आता करता था चला गया तब उस ने अपने सेवकों में से दो को और जो उस के यहां लगे रहते थे उन में से एक भक्त योहाना को बुलाया । और उन्हीं को सब बातें सुनाके उन्हें याफो को भेजा ॥

७ दूसरे दिन ज्योंही वे मार्ग में चलते थे और नगर के निकट पहुंचे त्योंही पितर दो पत्थर के निकट प्रार्थना करने को कोठे पर चढ़ा । तब वह बहुत भूखा हुआ और कुछ खाने चाहता था पर जिस समय वे तैयार करते थे वह विसुध हो गया । और उस ने स्वर्ग को खुले और बड़ी चट्टान की नाईं किसी पात्र को चार कोनों से बांधे हुए और पृथिवी की ओर लटकाये हुए अपनी ओर उतरते देखा । उस में पृथिवी के सब चौपाये और वनपशु और रंगनेहारे जन्तु और आकाश के पंखी थे । और एक शब्द उस पास पहुंचा कि हे पितर उठ मार और खा । पितर ने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध वस्तु नहीं खाई । और शब्द फिर दूसरी बेर उस पास पहुंचा कि जो कुछ ईश्वर ने शुद्ध किया है उस को तू अशुद्ध मत कह । यह तीन बार हुआ तब वह पात्र फिर स्वर्ग पर उठा लिया गया ॥

११ जिस समय पितर अपने मन में दुवधा करता था कि यह दर्शन जो मैं ने देखा है क्या है देखो वे मनुष्य जो कर्णिलिय की ओर से भेजे गये थे शिमोन के घर का ठिकाना पा करके डेवढी पर खड़े हुए । और पुकारके पूछते थे क्या शिमोन जो पितर कहावता है यहां पाहुन है । पितर उस दर्शन के विषय में सोचता ही था कि आत्मा ने उस से कहा देख तीन मनुष्य तुम्हें ढूंढते हैं । पर तू उठके उतर जा और उन के संग बैठके चला जा क्योंकि मैं ने उन्हें भेजा है । तब पितर ने उन मनुष्यों के पास जो कर्णिलिय की ओर से उस पास भेजे गये थे उतरके कहा देखो जिसे तुम ढूंढते हो सो मैं हूं तुम किस कारण से आये हो । वे बोले कर्णिलिय शतपति जो धर्मी मनुष्य और ईश्वर से डरनेहारा और सारे यहूदी लोगों में सुख्यात है उस को एक पवित्र दूत से आज्ञा दी गई कि आप को अपने घर में बुलाके आप से बातें सुने । तब पितर ने उन्हें भीतर बुलाके उन की पहुनई किई और दूसरे दिन वह उन के संग गया और याफो के भाइयों में से कितने उस के साथ हो लिये ॥

२४ दूसरे दिन उन्हीं ने कैसरिया में प्रवेश किया और कर्णिलिय अपने कुटुंबों और प्रिय मित्रों को एकट्ठे बुलाके उन की बात जोहता था । जब पितर भीतर आता था तब कर्णिलिय उस से आ मिलता और पांवों पड़के प्रणाम किया । परन्तु पितर ने उस को उठाके कहा खड़ा हो मैं आप भी मनुष्य हूं । और वह उस के संग बातचीत करता हुआ भीतर गया और बहुत लोगों को एकट्ठे पाया । और उन से कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशी की संगति करना अथवा उस के यहां जाना यहूदी मनुष्य को वर्जित है परन्तु ईश्वर ने मुझे बताया है कि तू

ये । परन्तु अर्थात् उसे ले करके प्रेरितों के पास लाया और उन से कह दिया २७ कि उस ने ज्योंकर सारा सें प्रभु को देखा था और प्रभु उस से बोला था और ज्योंकर उस ने हमेशा सें यीशु के नाम से खोलके खात किई थी । तब वह २८ यिहूशलीम में उन के संग आया जाया करने लगा और प्रभु यीशु के नाम से खोलके खात करने लगा । उस ने यूनानीय भाषा बोलनेदारों से भी कथा और २९ विद्या क्रिया पर ये उसे सार बोलने का प्रय करने लगे । यह जानके भाई लोग ३० उसे कैसरिया में लाये और तारस की ओर भेजा ॥

सा सारे यिहूदिया और गालील और जोरिसरेन में सड़लियों को चैन होता था ३१ और वे सुन्नर जाती थीं और प्रभु के भय में और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती थीं और बढ़ जाती थीं । तब पितर सब पवित्र लोगों में फिरते हुए उन्हीं के पास ३२ भी आया जो लुड्डा नगर में वास करने थे । वहां उस ने ऐनिय नाम एक मनुष्य को ३३ पाया जो अर्द्धांगी था और आठ बरस से खाट पर पड़ा हुआ था । पितर ने उस से ३४ कहा हे ऐनिय यीशु मर्याद तुझे चंगा करता है उठ और अपना बिछौना सुधार । तब वह तुरन्त उठा । और लुड्डा और शारेन के सब निवासियों ने उसे देखा और ३५ वे प्रभु की ओर फिरे ॥

याफो नगर में तर्षीया अर्थान दर्का नाम एक शिष्या थी । वह सुकर्मों और ३६ दानों से जो ब्रह्म करनी थी पूर्ण थी । उन दिनों में वह रोगी हुई और सर मर्द ३७ और उन्हीं ने उसे नहलाके उपरौठी काठरी में रखा । और इस लिये कि लुड्डा ३८ याफो के निकट था शिष्यों ने यह सुनके कि पितर वहां है दो मनुष्यों को उस पास भेजके बिल्ली किई कि हमारे पास आने में यिन्व न कीजिये । तब पितर ३९ उठके उन के संग गया और जब वह पहुंचा तब वे उसे उस उपरौठी काठरी में ले गये और सब विधवाएं रोगी हुईं और जो कुरते और वस्त्र दर्का उन के संग होता हुए बनाती थीं उन्हें दिखाती हुईं उस पास खड़ी हुईं । परन्तु पितर ने ४० सभी को बाहर निकाला और छुटने टेकके प्रार्थना किई और लोग की ओर फिरके कहा हे तर्षीया उठ । तब उस ने अपनी आर्ग्व खाली और पितर को देखके उठ बैठी । उस ने हाथ देके उस को उठाया और पवित्र लोगों और विधवाओं ४१ को झुलाके उसे जीवती दिखाई । यह बात सारे याफो में जान पड़ी और बहुत ४२ लोगों ने प्रभु पर विश्वास किया । और पितर याफो में शिमोन नाम किसी चमार ४३ के यहां बहुत दिन रहा ॥

दसवां पृष्ठ ।

कैसरिया में कर्गलिय नाम एक मनुष्य था जो इतलीय नाम पलटन का एक १ शतपति था । यह भक्त जन था और अपने सारे घराने समेत ईश्वर से डरता २ था और लोगों को बहुत दान देता था और नित्य ईश्वर से प्रार्थना करता था । उस ने दिन को तीसरे पहर के निकट दर्शन में प्रत्यक्ष देखा कि ईश्वर का एक ३ दूत उस पास भीतर आया और उस से बोला हे कर्गलिय । उस ने उस की ओर ४ ताकके और भयमान होके कहा हे प्रभु क्या है । उस ने उस से कहा तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये ईश्वर की आगे पहुंचे हैं । और अब मनुष्यों को ५

सग्यारहवां पृष्ठ ।

१ जो प्रेरित और भाई लोग यिहूदिया में थे उन्होंने ने सुना कि अन्यदेशियों ने  
 २ भी ईश्वर का वचन ग्रहण किया है । और जब पितर यिरुशलैम को गया तब  
 ३ खतना किये हुए लोग उस से विवाद करने लगे । और वोले तू ने खतनाहीन  
 ४ लोगों के यहां जाके उन के संग खाया । तब पितर ने आरंभ कर एक और  
 ५ से उन्हें कह सुनाया . कि मैं याफो नगर में प्रार्थना करता था और वेसुध होके  
 ६ एक दर्शन अर्थात् स्वर्ग पर से चार कोनों से लटकाई हुई बड़ी छद्दर की नाई  
 ७ किसी पात्र को उतरते देखा और वह मेरे पास लों आया । मैं ने उस की ओर  
 ८ ताकके देख लिया और पृथिवी के चौपायों और खनपशुओं और रंगनेहारे  
 ९ सन्तुओं को और आकाश के पंक्तियों को देखा . और एक शब्द सुना जो मुझ  
 १० से बोला हे पितर उठ मार और खा । मैं ने कदा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि  
 ११ कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध वस्तु मेरे मुँह में कभी नहीं गई । परन्तु शब्द ने  
 १२ दूसरी बेर स्वर्ग से मुझे उत्तर दिया कि जो कुछ ईश्वर ने शुद्ध किया है उस को  
 १३ तू अशुद्ध मत कह । यह तीन बार हुआ तब सब कुछ फिर स्वर्ग पर खींचा  
 १४ गया । और देखो तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गये थे जिस  
 १५ घर में मैं था उस घर पर आ पहुँचे । तब आत्मा ने मुझ से उन के संग देखटके  
 १६ चले जाने को कहा और ये छः भाई भी मेरे संग गये और हम ने उस मनुष्य के  
 १७ घर में प्रवेश किया । और उस ने हमें बताया कि उस ने क्योंकि अपने घर में  
 १८ एक दूत को खड़े हुए देखा था जो उस से बोला कि मनुष्यों को याफो नगर  
 १९ भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला । वह तुझ से बातें कहेगा जिन  
 २० के द्वारा तू और तेरा सारा घराना त्राण पावे । जब मैं बात करने लगा तब  
 २१ पवित्र आत्मा जिस रीति से आरंभ में हमों पर पड़ा उसी रीति से उन्होंने पर  
 २२ भी पड़ा । तब मैं ने प्रभु का वचन स्मरण किया कि उस ने कहा योहन ने जल  
 २३ से वपतिसमा दिया परन्तु तुम्हें पवित्र आत्मा से वपतिसमा दिया जायगा । सो  
 २४ जब कि ईश्वर ने प्रभु यीशु खीष्ट पर विश्वास करनेहारों को जैसे हमों को तैसे  
 २५ उन्होंने को भी एक सां दान दिया तो मैं कौन था कि मैं ईश्वर को रोक सकता ।  
 २६ वे यह सुनके चुप हुए और यह कहके ईश्वर की स्तुति करने लगे कि तब तो  
 २७ ईश्वर ने अन्यदेशियों को भी पश्चात्ताप दान किया है कि वे जीवें ॥  
 २८ स्तिफान के कारण जो क्लेश हुआ तिस के हेतु से जो लोग तितर बितर  
 २९ हुए थे उन्होंने ने फेनीकिया देश और कुप्रस टापू और अन्तैखिया नगर लों फिरते  
 ३० हुए किसी और को नहीं केवल यिहूदियों को वचन सुनाया । परन्तु उन में से  
 ३१ कितने कुप्री और कुरीनीय मनुष्य थे जो अन्तैखिया में आके यूनानियों से बात  
 ३२ करने और प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे । और प्रभु का हाथ उन के संग  
 ३३ था और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे । तब उन के विषय में  
 ३४ वह बात यिरुशलैम में की सड़ली के कानों में पहुँची और उन्होंने ने बर्खा को  
 ३५ भेजा कि वह अन्तैखिया लों जाय । वह जब पहुँचा और ईश्वर के अनुग्रह को  
 ३६ देखा तब आनन्दित हुआ और सभी को उपदेश दिया कि सब की अभिलाषा

किसी मनुष्य को अपवित्र अथवा अशुद्ध मत कट । इसलिये मैं जो बुलाया गया तो २९ इस के विरुद्ध कुछ न कहके चला आया सो मैं पूछता हूँ कि तुम्होंने किस बात के लिये मुझे बुलाया है । कर्णोलिय ने कहा चार दिन हुए कि मैं इस घड़ी लो ३० उपवास करता था और तीसरे पहर अपने घर में प्रार्थना करता था कि देगे एक पुत्र चमकता धन्य पढ़िने हुए मेरे आगे खड़ा हुआ . और बोला है कर्णो- ३१ लिय तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरे दान ईश्वर के आगे स्मरण किये गये हैं । इस लिये आपको नगर भेजके जिमोन को जो पितर कहायता है बुला . वह समुद्र ३२ के तीर पर जिमोन चमार के घर में पाहुन है . वह आपके तुम से बात करेगा । तब मैं ने तुरन्त आप के पास भेजा और आप ने अच्छा किया जो आये हैं सो अब ईश्वर ३३ ने जो कुछ आप को आज्ञा दिई है सोई सुनने को हम सब यहां ईश्वर के साम्हने हैं ॥

तब पितर ने मुँह खोलके कहा मुझे सचमुच बूझ पड़ता है कि ईश्वर मुँह ३४ देखा विचार करनेद्वारा नहीं है । परन्तु हर एक देश के लोगों में जो उस से ३५ डगता है और धर्म के कार्य करता है सो उस में ग्रहण किया जाता है । उस ३६ ने वह वचन तुम्हों के पास भेजा है जो उस ने इजायेल के सन्तानों के पास भेजा अर्थात् यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से जो सभी का प्रभु है शांति का सुसमाचार सुनाया । तुम वह बात जानते हो जो उस वपतिसमा के पीछे जिस का योहन ३७ ने उपदेश किया गालील से आरंभ कर सारे यिहूदिया में फैल गई . अर्थात् ३८ नासरत नगर के यीशु के विषय में क्योंकि ईश्वर ने उस को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया और वह भलाई करता और सभी को जो जैतान से घेरे जाते थे चंगा करता फिरा क्योंकि ईश्वर उस के संग था । और हम उन ३९ सब कामों के साक्षी हैं जो उस ने यिहूदियों के देश में और यिरुशलैम में भी किये जिसे लोगों ने काठ पर लटकाके मार डाला । उस को ईश्वर ने तीसरे ४० दिन जिला उठाया और उस को प्रगट होने दिया . सब लोगों के आगे नहीं ४१ परन्तु साक्षियों के आगे जिन्हें ईश्वर ने पहिले से ठहराया था अर्थात् हमों के आगे जिन्होंने उस के मृतकों में से जी उठने के पीछे उस के संग खाया और पीया । और उस ने हमों को आज्ञा दिई कि लोगों को उपदेश और साक्षी ४२ देखो कि वही है जिस को ईश्वर ने जीवितों और मृतकों का न्यायी ठहराया है । उस पर सारे भविष्यद्वक्ता साक्षी देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करे ४३ सो उस के नाम के द्वारा पापमोचन पावेगा ॥

पितर यह बात कहता ही था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेदारों पर ४४ पड़ा । और खतना किये हुए विश्वासी जितने पितर के संग आये थे विस्मित ४५ हुए कि अन्यदेशियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंटेला गया है । क्योंकि ४६ उन्हें ने उन्हें अनेक बोलियां बोलते और ईश्वर की महिमा करते सुना । इस ४७ पर पितर ने कहा क्या कोई जल को रोक सकता है कि इन लोगों को जिन्होंने ने हमारी नाई पवित्र आत्मा पाया है वपतिसमा न दिया जाये । और उस ने ४८ आज्ञा दिई कि उन्हें प्रभु के नाम से वपतिसमा दिया जाय . तब उन्होंने ने उस से कई एक दिन ठहर जाने की विन्ती किई ॥



- १४ आई । और पितर का शब्द पहचानके उस ने आनन्द के सारे द्वार न खोला  
 १५ परन्तु भीतर दौड़के यताया कि पितर द्वार पर खड़ा है । उन्होंने ने उस से कहा  
 तू बौराही है परन्तु वह दृढ़ता से बोली कि सभाही है । तब उन्होंने ने कहा उस  
 १६ का दूत है । परन्तु पितर खटखटाता रहा और वे द्वार खोलके उसे देखके विस्मित  
 १७ हुए । तब उस ने हाथ से उन्हें चुप रहने का सैन किया और उन से कहा कि  
 प्रभु क्योंकि उस को यन्दीगृह में से बाहर लाया था और बोला यह बातें याकूब  
 से और भाइयों से कह दीजिये तब निकलके दूसरे स्थान को गया ।  
 १८ विज्ञान हुए योद्धाओं में बड़ी घबराहट होने लगी कि पितर क्या हुआ ।  
 १९ तब हेरोद ने उसे ढूँढ़ा और नहीं पाया तब पहरेदारों को जांचके आज्ञा किई  
 कि वे धध किये जायें । तब यहूदिया से कैसरिया को गया और वहाँ रहा ।  
 २० हेरोद को सार और सीदोन के लोगों से लड़ने का मन था परन्तु वे एक चित्त  
 होके उस पास आये और बलास्त को जो राजा के शयनस्थान का अध्यक्ष था  
 मनाके मिलाप चाहा क्योंकि राजा के देश से उन के देश का पालन होता  
 २१ था । और ठहराये हुए दिन में हेरोद ने राजघर पर पहिने सिंहासन पर बैठके उन्हें  
 २२ को कथा सुनाई । और लोग पुकार उठे कि ईश्वर का शब्द है मनुष्य का नहीं ।  
 २३ तब परमेश्वर के एक दूत ने तुरन्त उस को मारा क्योंकि उस ने ईश्वर की स्तुति  
 २४ न किई और कीड़े उस को खा गये और उस ने प्राण छोड़ दिया । परन्तु ईश्वर  
 का बचन अधिक अधिक फैलता गया ।

- २५ जब बर्णवा और शावल ने वह सेवकाई पूरी किई थी तब वे योहान को भी  
 जो मार्क कहावता था संग लेके यरूशलीम से लौटे ।

तेरहवां पर्व ।

- १ अन्तैखिया में की मंडली में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे अर्थात्  
 बर्णवा और शिमियोन जो निगर कहावता है और कुरीनीय लूकिय और चौथाई  
 २ के राजा हेरोद का दूधभाई मनहेम और शावल । जिस समय वे उपवास सहित  
 प्रभु की सेवा करते थे पवित्र आत्मा ने कहा मैं ने बर्णवा और शावल को जिस  
 ३ काम के लिये बुलाया है उस काम के निमित्त उन्हें मेरे लिये अलग करो । तब  
 उन्होंने ने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखके उन्हें बिदा किया ।  
 ४ सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया नगर को गये और वहाँ से जहाज  
 ५ पर कुप्रस टापू को चले । और सालामी नगर में पहुँचके उन्होंने ने ईश्वर का  
 बचन यहूदियों की सभाओं में प्रचार किया और योहान भी सेवक होके उन के  
 ६ संग था । और उन्होंने ने उस टापू के बीच से पाफो नगर लीं पहुँचके एक टोन्हे  
 ७ को पाया जो झूठा भविष्यद्वक्ता और यहूदी था जिस का नाम बरयोशु था । वह  
 सर्जिय पावल प्रधान के संग था जो सुद्धिमान पुरुष था । उस ने बर्णवा और  
 ८ शावल को अपने पास बुलाके ईश्वर का बचन सुनने चाहा । परन्तु इलुमा टोन्हा  
 कि उस के नाम का यही अर्थ है उन का साम्रा करके प्रधान को विश्वास की  
 ९ और से बहकाने चाहता था । तब शावल अर्थात् पावल ने पवित्र आत्मा से  
 १० परिपूर्ण होके और उस को और ताकके कहा . हे सारे कपट और सब कुचाल

सहित प्रभु से मिले रहो । क्योंकि यह भला मनुष्य और पवित्र आत्मा और २४  
 विष्णुग्राम से परिपूर्ण था, और बहुत लोग प्रभु से मिल गये । तब वर्णवा शायल २५  
 को ठुंठुने के लिये तारुम को गया । और वह उस को पाके अन्तैखिया में लाया २६  
 और वे दोनों जन वरस भर मंडली में एकट्टे होते थे और बहुत लोगों को उपदेश  
 देते थे और शिष्य लोग पहिले अन्तैखिया में स्त्रीष्टियान कहलाये ॥

उन दिनों में कई एक भविष्यद्वक्ता विष्णुलीस से अन्तैखिया में आये । २७  
 उन में से आगाव नाम एक जन ने चढके आत्मा की शिवा से बताया कि मारे २८  
 संभार में बड़ा अकाल पड़ेगा और वह अकाल कौदिय कैमर के समय में पड़ा ।  
 तब शिष्यों ने हर एक अपनी अपनी सम्पत्ति के अनुसार पिहृदिया में रहनेहारे २९  
 भाइयों की सेवाकाई के लिये कुछ भेजने को टहगाया । और उन्हीं ने यही किया ३०  
 अर्थात् वर्णवा और शायल के साथ प्राचीनों के पास कुछ भेजा ॥

चारहथां पर्व ।

उस समय हेरोद राजा ने मंडली के कई एक जनों को दुःख देने को उन पर १  
 हाथ बढ़ाये । उस ने योहन के भाई पाकूच को खड्ग से मार डाला । और जब ३  
 उस ने देखा कि पिहृदी लोग उस से प्रसन्न होते हैं तब उस ने पितर को भी  
 पकड़ा और अखसीरी रोटी के पर्व के दिन थे । और उस ने उसे पकड़के बन्दी- ४  
 गृह में डाला और चार चार घोड़ाओं के चार पहरे में बाँध दिया कि वे उस  
 को रखें और उस को निस्तार पर्व के पीछे लोगों के आगे निकाल लाने को  
 इच्छा करता था ॥

सो पितर बन्दीगृह में पहरे में रहता था परन्तु मंडली लौ लगाके उस के लिये ५  
 ईश्वर से प्रार्थना करती थी । और जब हेरोद उसे निकाल लाने पर था उसी रात ६  
 पितर दो घोड़ाओं के बीच में दो जंजीरों से बाँधा हुआ सोता था और पहलक  
 द्वार के आगे बन्दीगृह की रक्षा करते थे । और देखो परमेश्वर का एक दूत था ७  
 खड़ा हुआ और कोठरी में ज्योति चमकी और उस ने पितर के पंजर पर हाथ  
 मारके उसे जगाके कहा शीघ्र चठ, तब उस की जंजीरें उस के हाथों से गिर  
 पड़ों । दूत ने उस से कहा कमर बांध और अपने जूते पहिन ले और उस ने वैसा ८  
 किया, तब उस से कहा अपना वस्त्र ओढ़के मेरे पीछे हो ले । और वह निकलके ९  
 उस के पीछे चलने लगा और नहीं जानता था कि जो दूत से किया जाता है  
 सो सत्य है परन्तु समझता था कि मैं दर्शन देखता हूँ । परन्तु वे पहिले और दूसरे १०  
 पहरे में से निकले और नगर में जाने के लोहे के फाटक पर पहुँचे जो आप से  
 आप उन के लिये खुल गया और वे निकलके एक गली के अन्त लो बड़े और  
 तुरन्त दूत पितर के पास से चला गया । तब पितर को चेत हुआ और उस ने ११  
 कहा अद्य मैं निश्चय जानता हूँ कि प्रभु ने अपना दूत भेजा है और मुझे हेरोद  
 के हाथ से और सब बातों से जिन का आस पिहृदी लोग देखते थे छुड़ाया है ॥

और यह जानके वह योहन जो मार्क कहावता है तिस की माता मरियम १२  
 के घर पर आया जहाँ बहुत लोग एकट्टे हुए प्रार्थना करते थे । जब पितर १३  
 डेवड़ी के द्वार पर खटखटाया तब रोदा नाम एक दासी चुप चाप नुनने को

- ३० परन्तु ईश्वर ने उसे मृतकों में से उठाया । और उस ने बहुत दिन उन्हीं का  
 जो उस के संग गालील से यरूशलीम में आये थे दर्शन दिया और वे लोगों के  
 ३२ पास उस के मात्ती हैं । हम उस प्रतिज्ञा का जो पितरों से किई गई तुम्हें सुसमाचार  
 ३३ सुनाते हैं . कि ईश्वर ने यीशु को उठाने में यह प्रतिज्ञा उन के सन्तानों के  
 अर्थात् हमों के लिये पूरी किई है जैसा दूसरे गीत में भी लिखा है कि तू मेरा पुत्र  
 ३४ है मैं ने आज ही तुम्हें जन्म दिया है । और उस ने जो उस को मृतकों में से उठाया  
 और वह कभी सड़ न जायगा इस लिये यूँ कहा है कि मैं ने दाऊद पर जो  
 ३५ अचल कृपा किई सो तुम पर करूँगा । इस लिये उस ने दूसरे एक गीत में भी  
 ३६ कहा है कि तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा । दाऊद तो ईश्वर की इच्छा  
 से अपने समय के लोगों की सेवा करके सो गया और अपने पितरों में मिला और  
 ३७ सड़ गया । परन्तु जिस को ईश्वर ने जिला उठाया वह नहीं सड़ गया । इस  
 लिये हे भाइयो जानो कि इसी के द्वारा पापमोचन की कथा तुम को सुनाई  
 ३८ जाती है । और इसी के हेतु से हर एक विश्वासी जन सब बातों से निर्दोष ठहराया  
 जाता है जिन से तुम मूसा की व्यग्रस्था के हेतु से निर्दोष नहीं ठहर सकते थे ।  
 ४० इस लिये चौकस रहो कि जो भविष्यवृत्ताओं के पुस्तक में कहा गया है सो तुम  
 ४१ पर न पड़े . कि हे निन्दको देखो और अचंभित हो और लोग हो जाओ क्योंकि  
 मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूँ ऐसा काम कि यदि कोई तुम से उस का  
 दर्शन करे तो तुम कभी प्रतीति न करोगे ॥
- ४२ जब यहूदी लोग सभा के घर में से निकलते थे तब अन्यदेशियों ने बिन्ती  
 ४३ किई कि यह बातें अगले विश्रामवार हम से कही जायें । और जब सभा उठ  
 गई तब यहूदियों में से और भक्तिमान यहूदीय मतावलंबियों में से बहुत लोग  
 पावल और बर्णबा के पीछे हो लिये और उन्हीं ने उन से बातें करके उन्हें  
 समझाया कि ईश्वर के अनुग्रह में बने रहो ॥
- ४४ अगले विश्रामवार नगर के प्राय सब लोग ईश्वर का बचन सुनने को एकट्ठे  
 ४५ आये . परन्तु यहूदी लोग भीड़ को देखके डहक से भंर गये और विवाद और  
 ४६ निन्दा करते हुए पावल की बातों के विरुद्ध बोलने लगे । तब पावल और  
 बर्णबा ने साहस करके कहा अवश्य था कि ईश्वर का बचन पहिले तुम्हों से  
 कहा जाय परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो और अपने तई अनन्त जीवन  
 ४७ के अयोग्य ठहराते हो देखो हम अन्यदेशियों की ओर फिरते हैं । क्योंकि परमेश्वर  
 ने हमें यूँ ही आज्ञा दिई है कि मैं ने तुम्हें अन्यदेशियों की ज्योति ठहराई है कि तू  
 ४८ पृथिवी के अन्त लों त्राणकर्ता होवे । तब अन्यदेशी लोग जो सुनते थे आनन्दित  
 हुए और प्रभु के बचन की खड़ाई करने लगे और जितने लोग अनन्त जीवन के  
 ४९ लिये ठहराये गये थे उन्हीं ने विश्वास किया । तब प्रभु का बचन उस सारे देश में  
 ५० फैलने लगा । परन्तु यहूदियों ने भक्तिमती और कुलवन्ती स्त्रियों को और नगर के  
 बड़े लोगों को उसकाया और पावल और बर्णबा पर उपद्रव करवाके उन्हें अपने  
 ५१ सिवानों में से निकाल दिया । तब वे उन के विरुद्ध अपने पाँवों की धूल झाड़के  
 ५२ इकोनिया नगर में आये । और शिष्य लोग आनन्द से और पवित्र आत्मा से पूर्ण हुए ॥

से भरे हुए जैतान के पुत्र सकल धर्म के वैरी क्या नू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा । अब देख प्रभु का हाथ तुम पर है और नू कितने ११ समय लों अंधा होगा और मृत्यु को न देखेगा . तुरन्त धुंधलाई और अंधकार उस पर पड़ा और वह इधर उधर टटोलने लगा कि लोग उन का हाथ पकड़ें । तब प्रधान ने जो हुआ था सो देखके प्रभु के उपदेश से अचंभित हो १२ विश्राम किया ।

पावल और उस के संगी पाफो से लद्दाज ग्यालके पंफुलिया देश के पगों १३ नगर में आये परन्तु योहन चन्द छोड़के यिन्जलीम का लौट गया । और पगों १४ से आगे बढ़के ये पिसिदिया देश के अन्तेगिया नगर में पहुँचे और विश्राम के दिन सभा के घर में प्रवेश करके बैठ गये । और व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं १५ के पुस्तक के पढ़े जाने के पीछे सभा के अध्यक्षों ने उन के पास कहना भेजा कि हे भाइयो यदि लोगों के लिये उपदेश की कोई बात आय लोगों के पास हो तो कहिये । तब पावल ने खड़ा होके और हाथ से सैन करके कहा हे इसायेली १६ लोगों और ईश्वर से हरनेहारो मुनो । इन इसायेली लोगों के ईश्वर ने हमारे १७ पितरों को चुन लिया और इन लोगों के मिसर देश में परदेशी होते हुए उन्हे जंज पद दिया और दलबन्त भुजा से उस देश में से निकाल लिया । और उस ने १८ चालीस एक दरम जंगल में उन का निव्यास किया . और कनान देश में सात राज्य १९ के लोगों को नाश करके उन का देश चिट्टियां डलवाके उन को बांट दिया । इस २० के पीछे उस ने साठे चार सौ दरम के अटकल जमुगल भविष्यद्वक्ता लों उन्हे न्याय करनेहारे दिये । उस समय से उन्हीं ने राजा चादा और ईश्वर ने चालीस दरम २१ लों यिन्यामीन के कुल के एक मनुष्य अर्थात् कीश के पुत्र शावल को उन्हे दिया । और उस का अलग करके उस ने उन्हीं के लिये दाऊद का राजा होने २२ को उठाया जिस के विषय में उस ने साक्षी देके कहा मैं ने यिशी का पुत्र दाऊद अपने मन के अनुसार एक मनुष्य पाया है जो मेरी सारी इच्छा को पूरी करेगा । इसी के वंश में से ईश्वर ने प्रतिज्ञा के अनुसार इसायेल के लिये एक बाणकर्ता २३ अर्थात् यीशु को उठाया । पर उस के आने के आगे योहन ने सब इसायेली २४ लोगों को पश्चात्ताप के वप्रतिसमा का उपदेश दिया । और योहन जब अपनी २५ दौड़ पूरी करता था तब बोला तुम क्या समझते हो मैं कीन हूँ . मैं वह नहीं हूँ परन्तु देखो मेरे पीछे एक आता है जिस के पाँवों की जूती मैं खोलने के योग्य नहीं हूँ ॥

हे भाइयो तुम जो इज्राहीम के वंश के सन्तान हो और तुम्हों में जो ईश्वर से २६ हरनेहारो हो तुम्हारे पास इस बाण की कथा भेजी गई है । क्योंकि यिन्जलीम २७ के निवासियों ने और उन के प्रधानों ने यीशु को न पहचानके उस का विचार करने में भविष्यद्वक्ताओं की बात भी जो हर एक विश्रामघर पड़ी जाती है पूरी किई । और उन्हीं ने यह के योग्य कोई दोष उस में न पाया तोभी पिलात से २८ विन्ती किई कि यह घात किया जाय । और जब उन्हीं ने उस के विषय में २९ लिखी हुई सब बातें पूरी किई थीं तब उसे काठ पर से उतारके कहर में रखा ।

२१ अब उन्होंने ने उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाया और बहुतों को शिष्य  
 २२ किया था तब वे लुस्त्रा और इकोनिया और अर्नोमिया को छोड़े, और यह  
 २३ उपदेश करते हुए कि विश्वास में आने रहो और कि हमें बड़े क्रेश से ईश्वर के  
 २४ राज्य में प्रवेश करना होगा शिष्यों के मन को स्थिर करते गये । और हर एक  
 २५ मंडली में प्राचीनों को उन पर ठहराके उन्हें ने उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें  
 २६ प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्हें ने विश्वास किया था । और पिसिदिया से  
 २७ छोड़े वे पंफुलिया में आये, और पर्गा में दखन सुनाके आतालिया नगर को गये ।  
 २८ और वहां से वे लहाज पर अर्नोमिया को चले जहां से वे इस काम के लिये जो  
 २९ उन्होंने ने पूरा किया था ईश्वर के अनुग्रह पर सौंपे गये थे । वहां पटुसके और  
 ३० मंडली को एकट्ठी करके उन्हें ने बताया कि ईश्वर ने उन्हें के साथ कैसे बड़े  
 ३१ काम किये थे और कि उस ने अन्यदेशियों के लिये विश्वास का द्वार खोला था ।  
 ३२ और उन्हें ने यहां शिष्यों के संग बहुत दिन दिये ।

पन्द्रहवां पृष्ठ ।

१ कितने लोग पिसिदिया से आके भाइयों को उपदेश देने लगे कि जो मूसा  
 २ की रीति के अनुसार तुम्हारा खतना न किया जाय तो तुम ब्राह्म नहीं पा सकते  
 ३ हो । अब पावल और बर्णबा से और उन्हें से बहुत विवाद और विचार हुआ  
 ४ था तब भाइयों ने यह ठहराया कि पावल और बर्णबा और हम में से कितने  
 ५ और उन हम प्रश्न के विषय में यिश्तलीम को प्रेरितों और प्राचीनों के पास  
 ६ जायेंगे । सो मंडली से कुछ दूर पहुंचाये जाके वे फनीकिया और शोमिरान से  
 ७ बहुत आनन्दित किया । अब वे यिश्तलीम में पहुंचे तब मंडली ने और प्रेरितों  
 ८ और प्राचीनों ने उन्हें ग्रहण किया और उन्हें ने बताया कि ईश्वर ने उन्हें के  
 ९ साथ कैसे बड़े काम किये थे । परन्तु फरीशियों के पंथ के लोगों में से कितने  
 १० जिन्होंने विश्वास किया था उठके बोले उन्हें खतना करना और मूसा की  
 ११ व्यवस्था को पालन करने की आज्ञा देना उचित है ।

१२ तब प्रेरित और प्राचीन लोग इस बात का विचार करने को एकट्ठे हुए ।  
 १३ अब बहुत विवाद हुआ तब पितर ने उठके उन से कहा हे भाइयो तुम जानते  
 १४ हो कि बहुत दिन हुए ईश्वर ने हम में से चुन लिया कि मेरे मुंह से अन्यदेशी  
 १५ लोग सुसमाचार का दखन सुनके विश्वास करें । और अन्तर्यामी ईश्वर ने जैसा  
 १६ हम को तैसा उन को भी पवित्र आत्मा देके उन के लिये साक्षी दिई, और  
 १७ विश्वास से उन्हें के मन को शुद्ध करके हमों के और उन्हें के बीच में कुछ  
 १८ भेद न रखा । सो अब तुम क्यों ईश्वर की परीक्षा करते हो कि शिष्यों के गले  
 १९ पर जूझा रखो जिसे न हमारे पितर लोग न हम लोग उठा सके । परन्तु जिस  
 २० रीति से वे उसी रीति से हम भी प्रभु यीशु खीष्ट के अनुग्रह से ब्राह्म पाने को  
 २१ विश्वास करते हैं ।

२२ तब सारी सभा चुप हुई और बर्णबा और पावल की जो यह बताते थे कि  
 २३ ईश्वर ने उन के द्वारा कैसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम अन्यदेशियों के बीच में

## चौदहवां पर्व ।

इकोनिया में उन्हें ने यिहूदियों के सभा के घर में एक संग प्रवेश किया और १  
 सेमी यातें किहें कि यिहूदियों और यूनानियों में से भी बहुत लोगों ने विश्वास  
 किया । परन्तु न माननेवाले यिहूदियों ने अन्यदेशियों के मन भाइयों के विरुद्ध २  
 उसकाये और दुरे कर दिये । सो उन्हें ने प्रभु के भरोसे जो अपने अनुग्रह के  
 यत्न पर साक्षी देता था और उन के छावों से चिन्त और अद्भुत काम करवाना  
 था साहस से वात करते हुए बहुत दिन बिताये । और नगर के लोग विभिन्न ४  
 हुए और कितने तो यिहूदियों के साथ और कितने प्रेरितों के साथ थे । परन्तु ५  
 जब अन्यदेशियों और यिहूदियों ने भी अपने प्रधानों के संग उन को दुर्दशा करने  
 और उन्हें पत्थरबाद करने का हज्जा किया . तब वे जान गये और लुकाओनिया ६  
 देश के लुस्त्रा और दर्वा नगरों में और आसपास के देश में भाग गये . और वहां ७  
 सुसमाचार प्रचार करने लगे ॥

लुस्त्रा में एक मनुष्य पांचों का निर्वल पैठा था जो अपनी साता के गर्भ ही ८  
 से लंगड़ा था और कभी नहीं चला था । यह पावल को वात करते सुनता था ९  
 और उस ने उस को और ताकके देखा कि इन को चंगा किये जाने का विश्वास  
 है . और बड़े शब्द से कहा अपने पांचों पर सीधा खड़ा हो . तब वह कूदने १०  
 और फिरने लगा ॥

पावल ने जो किया था उसे देखके लोगों ने लुकाओनीय भाषा में ऊंचे शब्द ११  
 से कहा देवगण मनुष्यों के समान होके हमारे पास उतर आये हैं । और उन्हें १२  
 ने वर्णवा को जूषितर और पावल को हमें कहा क्योंकि वह वात करने में मुख्य  
 था । और जूषितर जो उन के नगर के साम्दने था उस का याजक ब्रैलों का और १३  
 फूलों के द्वारों को फाटकों पर लाके लोगों के संग यत्निदान किया चाहता था ।  
 परन्तु प्रेरितों ने अर्थात् वर्णवा और पावल ने यह मुनके अपने कपड़े फाड़े और १४  
 लोगों को और लपक गये और पुकारके बोले . हे मनुष्यो यह क्यों करते हो . १५  
 हम भी तुम्हारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं  
 कि तुम इन व्यर्थ विषयों से जीवते ईश्वर को और फिरो जिस ने स्वर्ग और पृथिवी  
 और समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया । उस ने दोती हुई पीढ़ियों में सब १६  
 देशों के लोगों को अपने अपने मार्गों में चलने दिया । तौभी उस ने अपने को १७  
 बिना साक्षी नहीं रख छोड़ा है कि वह भलाई किया करता और आकाश में धर्या  
 और फलवन्त ऋतु देके हमें के मन को भोजन और आनन्द से तृप्त किया करता  
 है । यह कहने से उन्हें ने लोगों को कठिनता से रोका कि वे उन के आगे १८  
 यत्निदान न करें ॥

परन्तु कितने यिहूदियों ने अन्तैखिया और इकोनिया से आके लोगों को १९  
 मनाया और पावल को पत्थरबाद किया और यह समझके कि वह मर गया है  
 उसे नगर के बाहर घसीट ले गये । परन्तु जब शिष्य लोग उस पास घिर आये २०  
 तब उस ने उठके नगर में प्रवेश किया और दूसरे दिन वर्णवा के संग दर्वा २१  
 को गया ॥



## उन्तालीसवां पर्व ।

- १ और नीले और बैजनी और लाल से उन्हें ने पवित्र सेवा के लिये सेवा के कपड़े बनाये और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी हाथ के लिये पवित्र वस्त्र बनाये ॥
- २ और उस ने एफोद को सोने नीले और बैजनी और लाल और भीने बटे हुए सूत से बनाया । और उन्होंने ने सोने के पतील पतील पत्तर गड़े और तार खींचे जिसमें उन्हें नीले में और बैजनी में और लाल में और भीने सूती वस्त्र में चित्र-  
३ कारी की क्रिया से बनाये । उस के लिये कंधों के टुकड़े बनाये कि जोड़े वह  
४ दोनों खूंट से जोड़ा हुआ था । और उस के एफोद का पटुका जो उस के कार्य के समान सोने का और नीले और बैजनी और लाल और बटे हुए भीने सूत से जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उसी में से था ॥
- ५ और उन्होंने ने वैदूर्यमणि को सोने के ठिकानों में जड़े हुए बनाये और वह इसरा-  
६ एल के संतानों के नाम के समान खोदे गये जैसा कि अंगूठी खोदी जाती है ।  
७ और उस ने उन्हें एफोद के कांधों पर रखवा जिसमें इसराएल के संतानों के लिये स्मरण के मणि हों जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥
- ८ और चपरास को हथौटी के कार्य से एफोद की नाईं सोने नीले और बैजनी  
९ और लाल और बटे हुए भीने सूती वस्त्र से बनाया । वह चौकोर थी उन्होंने ने चपरास को दोहरा बनाया उस की लंबाई और उस की चौड़ाई बिता भर की  
१० दोहरी थी । और उन्होंने ने उस में मणि की चार पांती जड़ीं पहिली पांती में  
११ माणिक पद्मराग और पन्ना । और दूसरी पांती में लालड़ी नीलम और हीरा ।  
१२ और तीसरी पांती में लश्म सूर्यकांत और नीलमणि । और चौथी पांती में  
१३ फीरोजा वैदूर्य और चंद्रकांत सोने के घेरों में जड़े हुए थे । इन मणि में इसरा-  
१४ एल के संतानों के नाम के समान बारहों के नाम के समान बारह भेद के समान  
१५ हर एक का नाम खोदा हुआ था जैसी अंगूठी खोदी जाती है । और चपरास  
१६ की कोरों में निर्मल सोने की गुथी हुई सीकरें बनाईं । और उन्होंने ने सोने के दो  
१७ घर और सोने के दो कड़े बनाये और दोनों कड़ों को चपरास के दोनों कड़ों में  
१८ लगाया । और उन्होंने ने गुथी हुई सोने की दो सीकरें चपरास की कोरों के दोनों  
१९ कड़ों में लटकाईं । और गुथी हुई दो सीकरों के दोनों खूंट को उन्होंने ने दोनों  
२० घरों में दृढ़ किया और उन्हें एफोद के दोनों पुटों के टुकड़ों के आगे लगाया ।  
२१ और उन्होंने ने सोने के दो कड़े बनाये और उन्हें चपरास की दो कोरों में लगाया  
२२ उस खूंट पर जो एफोद के भीतर की ओर था । और उन्होंने ने सोने के दो कड़े  
२३ बनाये और उन्हें एफोद के नीचे की दो अलंग में उस के आगे की ओर उस के  
२४ जोड़ के सन्मुख एफोद के पटुके के ऊपर लगाये । और उन्होंने ने चपरास को उस  
के कड़ों से एफोद के कड़ों में नीले गोटे से बांधा ॥
- २५ जिसमें वह एफोद के पटुके के ऊपर होये और जिसमें एफोद से चपरास खुल  
न जाय जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी और उस ने एफोद के  
२६ वस्त्र को बिना बटे नीले कार्य से बनाया । और उसी वस्त्र के मध्य में एक द्वेद

किये थे सुनती रही । अथ वे चुप हुए तब याकूब ने उत्तर दिया कि वे भाइयों १३ मेरी सुन लीजिये । शिमोन ने बताया है कि ईश्वर ने क्योंकर अन्यदेशियों पर १४ पहिले दृष्टि किई कि उन में से अपने नाम के लिये एक लोग का ले लेंगे । और १५ इस से भविष्यद्वक्ताओं की बातें मिलती हैं जैसा लिखा है . कि परमेश्वर जो १६ यह सब करता है सो कहता है इस के पीछे मैं फिरके दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा और उस के खंडहर बनाऊंगा और उसे खड़ा करूंगा . इस लिये १७ कि वे मनुष्य जो रह गये हैं और सब अन्यदेशी लोग जो मेरे नाम से पुकारे आते हैं परमेश्वर को डूंढें । ईश्वर अपने सब कामों को आदि से जानता है । १८ इस लिये मेरा विचार यह है कि अन्यदेशियों में से जो लोग ईश्वर की और १९ फिरते हैं हम उन को दुःख न दें . परन्तु उन के पास लिखें कि वे मूरतों की २० आशुद्ध वस्तुओं से और व्यवहार से और गला छोटे हुंनों के मांस से और लोहू से परे रहें । क्योंकि पूर्ण के समय से सूसा के पुस्तक के नगर नगर में प्रचार २१ करनेवाले हैं और हर एक विद्यामंदिर यह सभा के घरे में पड़ा जाता है ।

तब सारी मंडली सहित प्रेरितों और प्राचीनों को अच्छा लगा कि अपने २२ में से मनुष्यों को चुनने अर्थात् विहूदा को जो वर्गवा फदायता है और सीला को जो भाइयों में बड़े मनुष्य थे और उन्ट पायल और वर्गवा के संग अन्तैग्रिया को भेजें . और उन के साथ यही लिख भेजें कि प्रेरित श्री प्राचीन श्री भाई २३ लोग अन्तैग्रिया और सुरिया और किलिकिया में के उन भाइयों को जो अन्य-देशियों में से हैं नमस्कार । हम ने सुना है कि कितने लोगों ने हम में से २४ निकलके तुम्हें बातों से व्याकुल किया है कि वे खतना करवाने को और व्यवस्था को पालन करने को कहते हुए तुम्हारे मन को चंचल करते हैं पर हम ने उन को आज्ञा न दीई । इस लिये हम ने एक चित्त ठाँके अच्छा जाना है . कि २५ मनुष्यों को चुनके अपने प्यारे वर्गवा और पायल के संग जो ऐसे मनुष्य हैं कि अपने प्राणों को हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम के लिये सौंप दिया है तुम्हारे पास भेजें । सो हम ने विहूदा और सीला को भेजा है जो आप भी यही बातें २६ सुन्यवन से कह दें . पवित्र आत्मा को और हम को अच्छा लगा है कि २७ तुम्हें पर इन आवश्यक बातों से अधिक कोई भार न रखें . अर्थात् कि मूरतों २८ के आगे बलि किये हुंनों से और लोहू से और गला छोटे हुंनों के मांस से और व्यवहार से परे रहे . इन्हीं से अपने को बचा रखने से तुम भला करोगे . आगे शुभ ॥

सो वे विदा होके अन्तैग्रिया में पहुँचे और लोगों को एकट्ठे करके यह पत्र ३० दिया । वे पढ़के उस शांति की बात से आनन्दित हुए । और विहूदा और ३१ सीला ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे बहुत बातों से भाइयों को समझाके स्थिर किया । और कुछ दिन रहके वे प्रेरितों के पास जाने को कुशल से भाइयों से ३३ विदा हुए । परन्तु सीला ने वहाँ रहना अच्छा जाना । और पायल और वर्गवा ३४ बहुत औरों के संग प्रभु के व्यवहार का उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते हुए अन्तैग्रिया में रहे ॥

वह उन के यहाँ रहके कमाता था क्योंकि तम्बू बनाना उन का उद्यम था ।  
 ४ परन्तु हर एक विश्रामघार वह सभा के घर में बार्त करके यहूदियों और  
 ५ यूनानियों को भी समझाता था । जब सीला और तिमोथिय माकिदोनिया से  
 ६ आये तब पावल आत्मा के बल से होके यहूदियों को साक्षी देता था कि यीशु  
 ७ तो खीष्ट है । परन्तु जब वे विरोध और निन्दा करने लगे तब उस ने कपड़े  
 ८ भाड़के उन से कहा तुम्हारा लोह तुम्हारे ही सिर पर होय . मैं निर्दोष हूँ . अब  
 ९ से मैं अन्यदेशियों के पास जाऊँगा । और वहाँ से जाके वह युस्त नाम ईश्वर  
 १० के एक उपासक के घर में आया जिस का घर सभा के घर से लगा हुआ था ।  
 ११ तब सभा के अध्यक्ष क्रीस्प ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया और  
 १२ करिन्थियों में से बहुत लोग सुनके विश्वास करते और अपतिसमा लेते थे । और प्रभु  
 १३ ने रात को दर्शन के द्वारा पावल से कहा मत डर परन्तु बात कर और चुप मत  
 १४ रह । क्योंकि मैं तेरे संग हूँ और कोई तुझ पर चढ़ाई न करेगा कि तुझे दुःख  
 १५ देवे क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं । सो वह उन्हीं में ईश्वर का वचन  
 १६ सिखाते हुए डेढ़ बरस रहा ॥

१७ जब गालियो आखाया देश का प्रधान था तब यहूदी लोग एक चित होकर  
 १८ पावल पर चढ़ाई करके उसे विचार आसन के आगे लाये . और बोले यह तो  
 १९ मनुष्यों को व्यवस्था के विपरीत रीति से ईश्वर की उपासना करने को समझाता  
 २० है । ज्योंही पावल मुँह खोलने पर था त्योंही गालियो ने यहूदियों से कहा हे  
 २१ यहूदियो जो यह कोई कुकर्म अथवा बुरी कुचाल होती तो उचित जानके मैं  
 २२ तुम्हारी सहायता । परन्तु जो यह विवाद उपदेश के और नामों के और तुम्हारे  
 २३ यहाँ की व्यवस्था के विषय में है तो तुम ही जानो क्योंकि मैं इन बातों का  
 २४ न्यायी होने नहीं चाहता हूँ । और उस ने उन्हें विचार आसन के आगे से खदेड़  
 २५ दिया । तब सारे यूनानियों ने सभा के अध्यक्ष सेस्थिनी को पकड़के विचार  
 २६ आसन के सामने मारा और गालियो ने इन बातों की कुछ चिन्ता न कीई ।

२७ पावल और भी बहुत दिन रहा तब भाइयों से बिटा होके जहाज पर सुरिया  
 २८ देश को गया और उस के संग प्रिस्कीला और अकूला . उस ने किंक्रिया नगर  
 २९ में अपना सिर सुँढ़ाया क्योंकि उस ने मज्जत मानी थी । और उस ने इफिस  
 ३० नगर में पहुँचके उन को वहाँ छोड़ा और आप ही सभा के घर में प्रवेश करके  
 ३१ यहूदियों से बार्त किई । जब उन्हीं ने उस से बिल्ली किई कि हमारे संग कुछ दिन  
 ३२ और रहिये तब उस ने न माना . परन्तु यह कहके उन से बिदा हुआ कि आनेवाला  
 ३३ पर्व यिरुशलीम में करना मुझे बहुत अवश्य है परन्तु ईश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे  
 ३४ पास फिर लौट जाऊँगा । तब उस ने इफिस से खाल दिया और कैसरीया में  
 ३५ आया तब (यिरुशलीम को) जाके मंडली को नमस्कार किया और अन्तैखिया को  
 ३६ गया । फिर कुछ दिन रहके वह निकला और एक ओर से गलातिया और फ्रुगिया  
 ३७ देशों में सब शिष्यों को स्थिर करता हुआ फिरा ॥

३८ अपलो नाम सिकन्दरिया नगर का एक यहूदी जो सुबक्ता पुरुष और धर्मपुस्तक  
 ३९ में सामर्थी था इफिस में आया । उस ने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी और

आत्मा में अनुरागी होके प्रभु के विषय में की बातें बड़े यत्न से सुनाता और सिखाता था परन्तु केवल योहन के वपतिसमा की बात जानता था । यह सभा के घर में २६ साहस से बात करने लगा पर अकूला और प्रिस्कीला ने उस की सुनके उसे लिया और ईश्वर का मार्ग उस को और ठीक करके बताया । और यह आश्चर्य को २० जाने चाहता था सो भाइयों ने उसे ठाकुर देके शिष्यों के पास लिया कि वे उसे ग्रहण करें और उस ने पहुँचके अनुग्रह से जिनमें ने विश्वास किया था उन्हें की बड़ी सहायता किई । क्योंकि यीशु जो खोजे हैं यह बात धर्मपुस्तक के २८ प्रमाणों से बतलाके उस ने बड़े यत्न से लोगों के आगे विद्वद्वियों को निकतर किया ।

उनीसवां पृष्ठ ।

अपलो के करिब से होते हुए पावल ऊपर की सारे देग में फिरके इफिस में १ आया । और कितने शिष्यों को पाके उन से कहा क्या तुम ने विश्वास करके पवित्र २ आत्मा पाया . उन्हें ने उस से कहा हम ने तो सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा दिया जाता है । तब उस ने उन से कहा तो तुम ने किस बात पर वपतिसमा ३ लिया . उन्हें ने कहा योहन के वपतिसमा पर । पावल ने कहा योहन ने पश्चा- ४ ताप का वपतिसमा देके अपने पीछे आनेवाले ही पर विश्वास करने को लोगों से कहा अर्थात् खोजे यीशु पर । यह सुनके उन्हें ने प्रभु यीशु के नाम से वप- ५ तिसमा लिया । और जब पावल ने उन पर छाप रखे तब पवित्र आत्मा उन पर ६ आया और वे अनेक बातें बोलने और भविष्यवाणी करने लगे । ये सब मनुष्य ७ बारह एक थे ।

तब पावल सभा के घर में प्रवेश करके साहस से बात करने लगा और तीन ८ मास ईश्वर के राज्य के विषय में की बातें सुनाता और समझाता रहा । परन्तु ९ जब कितने लोग कठोर हो गये और नहीं मानते थे और लोगों के आगे हम मार्ग की निन्दा करने लगे तब वह उन के पास से चला गया और शिष्यों को अलग करके तुरान नाम किसी मनुष्य के विद्यालय में प्रतिदिन बातें किई । यह १० दो बरस होता रहा यहां लो कि आशिया के निवासी यिहूदी और यूनानी भी ११ सभों ने प्रभु यीशु का वचन सुना । और ईश्वर ने पावल के छात्रों से अनाये १२ आश्चर्य कर्म किये . यहां लो कि उस के देह पर से अंगोके और कमाल रोगियों १३ के पास पहुँचाये जाते थे और रोग उन से जाते रहते थे और दुष्ट भूत उन में से निकल जाते थे ॥

तब यिहूदी लोगों में से जो इधर उधर फिरा करते और भूत निकालने को १४ क्रिया देते थे कितने जन उन्हें पर जिन को दुष्ट भूत लगे थे प्रभु यीशु का नाम यह कहके लेने लगे कि यीशु जिसे पावल प्रचार करता है हम उसी की १५ तुम्हें क्रिया देते हैं । स्केवा नाम एक यिहूदीय प्रधान याजक के सात पुत्र थे १६ जो यह करते थे । परन्तु दुष्ट भूत ने उत्तर दिया कि यीशु को मैं जानता हूँ और १७ पावल को पहचानता हूँ पर तुम कौन हो । और यह मनुष्य जिसे दुष्ट भूत लगा १८ था उन पर लपकके और उन्हें घण में लाके उन पर ऐसा प्रचल हुआ कि वे नंगे १९ और घायल उस घर में से भागे । और यह बात इफिस के निवासी यिहूदी और २०

यूनानी भी सब जान गये और उन सभी को डर लगा और प्रभु यीशु के नाम की  
 १८ महिमा किई जाती थी । और जिन्होंने ने विश्वास किया था उन्हें में से बहुतों  
 १९ ने आगे अपने काम मान लिये और बतलाये । टोना करनेहारों में से भी अनेकों  
 ने अपनी पोशियां एकट्ठी करके सभी के सामने जला दिईं और उन्हें का दाम  
 २० जोड़ा गया तो पचास सहस्र रुपये ठहरा । यूँ पराक्रम से प्रभु का बचन फैला  
 और प्रबल हुआ ॥

२१ जब यह बातें हो चुकीं तब पावल ने आत्मा में माकिदोनिया और आशिया  
 के बीच से यिरुशलैम जाने को ठहराया और कहा कि वहां जाने के पीछे मुझे  
 २२ रोम को भी देखना होगा । सो जो उस की सेवा करते थे उन में से दो को  
 अर्थात् तिमोथिय और इरास्त को माकिदोनिया में भेजके वह आप ही आशिया  
 २३ में कुछ दिन रह गया । उस समय इस मार्ग के विषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ ।  
 २४ क्योंकि दीमीत्रिय नाम एक सुनार अर्तिमी के मन्दिर की चांदी की मूर्तें बनाने  
 २५ से कारीगरों को बहुत काम दिलाता था । उस ने उन्हें को और ऐसी ऐसी  
 बस्तुओं के कारीगरों को एकट्ठी करके कहा हे मनुष्यो तुम जानते हो कि इस  
 २६ काम से हमों को सम्पत्ति प्राप्त होती है । और तुम देखते और सुनते हो कि  
 इस पावल ने यह कहके कि जो हाथों से बनाये जाते सो ईश्वर नहीं हैं केवल  
 इफिस के नहीं परन्तु प्रायः समस्त आशिया के बहुत लोगों को समझाके भरमाया  
 २७ है । और हमों को केवल यह डर नहीं है कि यह उद्यम निन्दित हो जाय परन्तु  
 यह भी कि बड़ी देवी अर्तिमी का मन्दिर तुच्छ समझा जाय और उस की महिमा  
 २८ जिसे समस्त आशिया और जगत पूजता है नष्ट हो जाय । वे यह सुनके और  
 २९ क्रोध से पूर्ण होके पुकारने लगे इफिसियों की अर्तिमी की जय । और सारे नगर  
 में बड़ी गड़बड़ाहट हुई और लोग गायस और अरिस्तार्ख दो माकिदोनियों को  
 जो पावल के संगी पथिक थे पकड़के एक चित्त होके रंगशाला में दौड़ गये ।  
 ३० जब पावल ने लोगों के पास भीतर जाने चाहा तब शिष्यों ने उस को जाने न  
 ३१ दिया । आशिया के प्रधानों में से भी कितनों ने जो उस के मित्र थे उस पास  
 भेजके उस से बिनती किई कि रंगशाला में जाने की जोखिम मत अपने पर  
 ३२ उठाइये । सो कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे क्योंकि सभा घबराई हुई  
 ३३ थी और अधिक लोग नहीं जानते थे हम किस कारण एकट्ठे हुए हैं । तब भीड़  
 में से कितनों ने सिकन्दर को जिसे यहूदियों ने खड़ा किया था आगे बढ़ाया और  
 ३४ सिकन्दर हाथ से सैन करके लोगों के आगे उत्तर दिया चाहता था । परन्तु जब  
 उन्हें ने जाना कि वह यहूदी है सब के सब एक शब्द से दो-छड़ी के अटकल  
 ३५ इफिसियों की अर्तिमी की जय पुकारते रहे । तब नगर के लेखक ने लोगों को  
 शांत करके कहा हे इफिसी लोगो कौन मनुष्य है जो नहीं जानता कि इफिसियों  
 का नगर बड़ी देवी अर्तिमी का और जूपितर की ओर से गिरी हुई मूर्ति का  
 ३६ ठहलुआ है । सो जब कि इन बातों का खंडन नहीं हो सकता है उचित है कि  
 ३७ तुम शांत होओ और कोई काम उतावली से न करो । क्योंकि तुम इन मनुष्यों  
 ३८ को लाये हो जो न पवित्र बस्तुओं के चोर न तुम्हारी देवी के निन्दक हैं । सो

जो बीसीग्रिय को और उस के संग के कारीगरों को किसी से विवाद है तो विचार के दिन होते हैं और प्रधान लोग हैं वे एक दूसरे पर नालिश करें । परन्तु २६ को तुम दूसरी बातों के विषय में कुछ पूछते हो तो व्यवहारिक सभा में निर्णय किया जायगा । क्योंकि जो आज हुई है उस के हेतु से हम पर ४० खलवे का बोझ लगाये जाने का डर है इस लिये कि कोई कारख नर्ही है जिस फरके हम इस भीड़ का उत्तर दे सकेंगे । और यह कहके उस ने सभा को ४१ विदा किया ॥

### दोसरा पृष्ठ ।

जब हुल्लड़ बम गया तब पायल गिण्टों को अपने पास घुलाके और गले १ लगाके माफिडेनिया जाने का चल निकला । उस सारे देश में फिरके और बहुत २ बातों से उन्हें उपदेश देके वह यूनान देश में आया । और तीन मास रहके जय ३ यह जहाज पर सुरिया को जाने पर था पिछड़ी लोग उस की घात में लगे इस लिये उस ने माफिडेनिया छोके लौट जाने को ठहराया । थियेन नगर का सेपातर ४ और थिमलोनियों में से अरिस्तार्ख और निकुन्द और दर्वा नगर का गायस और तिमोथिय और आशिया देश के तुग्रिक और त्रॉफिम आशिया लों उस के संग हो ५ लिये । इन्हीं ने आगे जाके त्रॉफा में हमों की वाट देखी । और इस लोग ६ अखमीरी रोटी के पृष्ठ के दिनों के पीछे जहाज पर फिलिपी से चले और पांच दिन में त्रॉफा में उन के पास पहुँचे जहाँ हम सात दिन रहे ॥

अठवारे के पहिले दिन जय गिण्ट लोग रोटी तोड़ने को एकट्टे हुए तब ७ पायल ने जो अगले दिन चले जाने पर था उन से बातें किहें और आधी रात लों घात करता रहा । जिस उपरोटी कोठरी में वे एकट्टे हुए थे उस में बहुत ८ दीपक बरतें थे । और उत्तुख नाम एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ भारी ९ नींद से झुक रहा था और पायल के पड़ी घेर लों घात करते करते वह नींद से झुकके तीसरी अटारी पर से नीचे गिर पड़ा और सूआ उठाया गया । परन्तु १० पायल उतरके उस पर औंधे पड़ गया और उसे गोदी में लेके घोला मत धूम मचाओ क्योंकि उस का प्राण उस में है । तब ऊपर जाके और रोटी तोड़के ११ और खाके और पड़ी घेर लों भार तक घातलीत करके वह चला गया । और १२ वे उस जवान का जीते ले आये और बहुत शांति पाई ॥

तब हम लोग आगे से जहाज पर चढ़के आसस नगर को गये जहाँ से हमें १३ पायल को चढ़ा लेना था क्योंकि उस ने यूँ ठहराया था इस लिये कि आप ही पैदल जानेवाला था । जब वह आसस में हम से आ मिला तब हम उसे चढ़ाके १४ मितुलीनी नगर में आये । और जहाँ से खोलके हम दूसरे दिन खीयो टापू के १५ साम्हने पहुँचे और अगले दिन सामो टापू में लगान किया फिर त्रॉगुलिया नगर में रहके दूसरे दिन मिलीत नगर में आये । क्योंकि पायल ने इफिस को एक १६ और छोड़के जाना ठहराया इस लिये कि उस को आशिया में अघेर न लगे क्योंकि वह शीघ्र जाता था कि जो उस से थन पड़े तो पंतिकोष्ट पृष्ठ के दिन लों यिरुशलीम में पहुँचे ॥



१० मिलीत से उस ने लोगों को इफिस नगर भेजके मंडली के प्राचीनों को  
 १८ बुलाया । तब वे उस पास आये तब उस ने उन से कहा तुम जानते हो कि  
 पहिले दिन से जो मैं आशिया में पहुंचा मैं हर समय क्योंकर तुम्हारे बीच में  
 १९ रहा . कि बड़ी दीनताई से और बहुत रो रोके और उन घरीबाओं में जो मुझ  
 २० पर पिछूदियों की कुसंन्या से पढ़ीं मैं प्रभु की सेवा करता रहा . और क्योंकर  
 मैं ने लाभ की बातों में से कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न घताई और  
 २१ लोगों के आगे और घर घर तुम्हें न मियाई . कि पिछूदियों और यूनानियों  
 को भी मैं साक्षी देखे ईश्वर के आगे पश्चात्ताप करने की और हमारे प्रभु यीशु  
 २२ खीष्ट पर विश्वास करने की बात कहता रहा । और अब देखो मैं आत्मा से  
 बंधा हुआ विश्वासी को जाता हूं और नहीं जानता हूं कि यदा मुझ पर क्या  
 २३ पड़ेगा . केवल यही जानता हूं कि पवित्र आत्मा नगर नगर साक्षी देता है कि  
 २४ बंधन और क्लेश मेरे लिये धरे हैं । परन्तु मैं किसी बात की चिन्ता नहीं करता  
 हूं और न अपना प्राण इतना बहुमूल्य जानता हूं जितना आनन्द से अपनी दौड़  
 को और ईश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर साक्षी देने की सेवाकाई को जो  
 २५ मैं ने प्रभु यीशु से पाई है पूरी करना बहुमूल्य है । और अब देखो मैं जानता हूं  
 कि तुम सब जित्नों में मैं ईश्वर के राज्य की कथा सुनाता फिरा हूं मेरा मुंह  
 २६ फिर नहीं देखोगे । हम लिये मैं आज के दिन ईश्वर को साक्षी रखके तुम से  
 २७ कहता हूं कि मैं सभी के लोह से निर्दोष हूं । क्योंकि मैं ने ईश्वर के सारे मत  
 २८ में से कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न घताई । सो अपने विषय में और  
 सारे भुंड के विषय में जिस के बीच मैं पवित्र आत्मा ने तुम्हें रखवाले ठहराये  
 हैं सचेत रहो कि तुम ईश्वर की मंडली की चरवाही करो जिसे उस ने अपने  
 २९ लोह से माल लिया है । क्योंकि मैं यह जानता हूं कि मेरे जाने के पीछे क्रूर  
 ३० हुंड़ार तुम्हों में प्रवेश करेंगे जो भुंड को न छोड़ेंगे । तुम्हारे ही बीच में से भी  
 ३१ मनुष्य उठेंगे जो शिष्टों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी बातें कहेंगे । इस  
 लिये मैं ने जो तीन दस रात और दिन रो रोके हर एक को चिताना न छोड़ा  
 ३२ यह स्मरण करते हुए जागते रहो । और अब हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वर को  
 और उस के अनुग्रह के बचन को सोंप देता हूं जो तुम्हें सुधारने और सब  
 ३३ पवित्र किये हुए लोगों के बीच में अधिकार देने सकता है । मैं ने किसी के रूपे  
 ३४ अथवा सोने अथवा वस्त्र का लालच नहीं किया । तुम आप ही जानते हो कि  
 ३५ इन हाथों ने मेरे प्रयोजन की और मेरे संगियों की टहल किई । मैं ने सब  
 बातें तुम्हें बताई कि इस रीति से परिश्रम करते हुए दुर्वलों का उपकार करना  
 और प्रभु यीशु की बातें स्मरण करना चाहिये कि उस ने कहा लेने से देना  
 अधिक धन्य है ॥

३६ यह बात कहके उस ने अपने छुटने टेकके उन सभी के संग प्रार्थना किई ।  
 ३७ तब वे सब बहुत रोये और पावल के गले में लिपटके उसे चूमने लगे । वे सब  
 से अधिक उस बात से शोक करते थे जो उस ने कही थी कि तुम मेरा मुंह  
 फिर नहीं देखोगे . तब उन्होंने ने उसे जहाज लों पहुंचाया ॥

## इकहमिया पृष्ठ ।

जब हम ने उन से अलग होके जहाज खोला तब सीधे सीधे कोस टापू १  
 को चले और दूसरे दिन रोड टापू को और वहां से पाताग नगर पर पहुंचे ।  
 और एक जहाज को जो कैनीक्रिया को जाता था पाके हम ने उस पर चढ़के २  
 खोल दिया । जब कुप्रस टापू देखने में आया तब हम ने उसे बाधे छात्र छोड़ा ३  
 और सुरिया को जाके सैर नगर में लगान किया क्योंकि जहाज की बोकार्ड  
 वहां उतरने पर थी । और वहां के शिप्यों को पाके हम वहां सात दिन रहे . ४  
 उन्हें ने आत्मा की शिक्षा से पावल से कहा यिस्सलीम को न जाइये । जब ५  
 हम उन दिनों को पूरे कर चुके तब निकलके चलने लगे और सभी ने स्त्रियों  
 और बालकों समेत हमें नगर के बाहर लों पहुंचाया और हमों ने तीर पर  
 घुटने टेकके प्रार्थना किई । तब एक दूसरे को मले लगाके हम तो जहाज पर ६  
 चढ़े और वे अपने अपने घर लौटे ।

तब हम सैर से जलयात्रा पूरी करके तलिसाई नगर में पहुंचे और भाइयों को ७  
 नमस्कार करके उन के संग एक दिन रहे । दूसरे दिन हम जो पावल के संग के थे ८  
 वहां से चलके कैसरिया में गये और फिलिप सुसमाचार प्रचारक के घर में जो  
 सातों में से एक था प्रवेश करके उस के वहां रहे । इस मनुष्य को चार कुंवारी ९  
 पुत्रियां थीं जो भविष्यवाणी कहा करती थीं ।

जब धन बहुत दिन रह चुके तब आगाथ नाम एक भविष्यद्वक्ता पिटूदिया में १०  
 आया । वह हमारे पास आके और पावल का पटुका लेकर और अपने छात्र और ११  
 पांच बांधके बोला पवित्र आत्मा यह कहना है कि जिस मनुष्य का यह पटुका  
 है उस को यिस्सलीम में पिटूदी लोग यूंहीं बांधेंगे और अन्यदेशियों के साथ १२  
 मीपेंगे । जब हम ने यह बात सुनी तब हम लोग और उस म्यान के रहनेवाले १३  
 भी पावल से धिन्ती करने लगे कि यिस्सलीम को न जाइये । परन्तु उन ने उत्तर १४  
 दिया कि तुम क्या करते हो कि रोते और सेरा मन चूर करते हो . मैं तो प्रभु  
 यीशु के नाम के लिये यिस्सलीम में केवल बांधे जाने को नहीं परन्तु मरने को १५  
 भी तैयार हूं । जब वह नहीं मानता था तब हम यह कहके चुप हुए कि प्रभु की १६  
 इच्छा पूरी होवे ।

इन दिनों के पीछे हम लोग बांधे हांदके यिस्सलीम को जाने लगे । कैसरिया १७  
 के शिप्यों में से भी कितने हमारे संग हो लिये और मनामेन नाम कुप्रस के एक १८  
 प्राचीन शिष्य के पास जिस के वहां हम पाहुन लोहें-हमें पहुंचाया । जब हम १९  
 यिस्सलीम में पहुंचे तब भाइयों ने हमें आनन्द से गृहण किया ।

दूसरे दिन पावल हमारे संग याकूब के वहां गया और सब प्राचीन लोग २०  
 आये । तब उस ने उन को नमस्कार कर जो जो कार्स ईश्वर ने उस की सेवाकाई २१  
 के द्वारा से अन्यदेशियों में किये थे उन्हें एक एक करके वर्णन किया । उन्हें ने २२  
 मुनके प्रभु की स्तुति किई और उस ने कहा हे भाई आप देखते हैं कितने सचमों  
 पिटूदियों ने विश्वास किया है और सब व्यवस्था के लिये धुन लगाये हैं । और २३  
 उन्हें ने आप के विषय में मुना है कि आप अन्यदेशियों के बीच में को सब पिटूदियों

- के तर्हें मूसा को त्याग करने को सिखाते हैं और कहते हैं कि अपने बालकों  
 २२ का खतना मत करो और न व्यवहारों पर चलो । सो क्या है कि बहुत लोग  
 २३ निश्चय एकट्ठे होंगे क्योंकि वे सुनेंगे कि आप आये हैं । इस लिये यह जो हम  
 आप से कहते हैं कीजिये । हमारे यहां चार मनुष्य हैं जिन्होंने मे मन्नत मानी है ।  
 २४ उन्हें लेके उन के संग अपने को शुद्ध कीजिये और उन के लिये खर्चा दीजिये कि  
 वे सिर मुंडावें तब सब लोग जानेंगे कि जो बातें हम ने इस के विषय में सुनी  
 थीं सो कुछ नहीं हैं परन्तु यह आप भी व्यवस्था को पालन करते हुए उस के  
 २५ अनुसार चलता है । परन्तु जिन अन्यदेशियों ने विश्वास किया है हम ने उन के  
 विषय में यही ठहराके लिख भेजा कि वे ऐसी कोई बात न मानें केवल मूर्तों  
 के आगे बलि किये हुए से और लोहू से और गला घांटे हुएों के मांस से और  
 २६ व्यवहार से बचे रहें । तब पावल ने उन मनुष्यों को लेके दूसरे दिन उन के संग  
 शुद्ध होके मन्दिर में प्रवेश किया और सन्देश दिया कि शुद्ध होने के दिन अर्थात् उन  
 से से हर एक के लिये चढ़ाया चढ़ाये जाने तक के दिन कब पूरे होंगे ।  
 २७ जब वे सात दिन पूरे होने पर थे तब याशिया के पिहूदियों ने पावल को  
 मन्दिर में देखके सब लोगों को उस्काया और उस पर दाय डालके पुकारा ,  
 २८ हे इस्रायेली लोगो सहायता करो यही वह मनुष्य है जो इन लोगों के और  
 व्यवस्था के और इस स्थान के विरुद्ध सर्वत्र सब लोगों को उपदेश देता है ।  
 २९ हां और उस ने यूनानियों को मन्दिर में लाके इस पवित्र स्थान को अपवित्र भी  
 ३० किया है । उन्होंने ने तो इस के पहिले ग्रीफिम इफिसी को पावल के संग नगर  
 में देखा था और समझते थे कि वह उस को मन्दिर में लाया था । तब सारे  
 नगर में घबराहट हुई और लोग एकट्ठे दौड़े और पावल को पकड़के उसे  
 मन्दिर के बाहर खींच लाये और तुरन्त द्वार मून्दे गये ।  
 ३१ जब वे उसे मार डालने चाहते थे तब पलटन के सहस्रपति को सन्देश पहुंचा  
 ३२ कि सारे यिरुशलैम में घबराहट हुई है । तब वह तुरन्त घोड़ाओं और शतपतियों  
 को लेके उन पास दौड़ा और उन्होंने ने सहस्रपति को और घोड़ाओं को देखके  
 ३३ पावल को मारना छोड़ दिया । तब सहस्रपति ने निकट आके उसे लेके आज्ञा किई  
 कि दो जंजीरों से बांधा जाय और पूछने लगा यह कौन है और क्या किया है ।  
 ३४ परन्तु भीड़ में कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे और जब सहस्रपति हुलड़ के  
 ३५ किई । जब वह सीढ़ी पर पहुंचा ऐसा हुआ कि भीड़ की बरियार्ई के कारण  
 ३६ घोड़ाओं ने उसे उठा लिया । क्योंकि लोगों की भीड़ उसे दूर कर पुकारती हुई  
 पीछे आती थी ।  
 ३७ जब पावल गढ़ के भीतर पहुंचाये जाने पर था तब उस ने सहस्रपति से कहा  
 जो आप से कुछ कहने की मुझे आज्ञा होय तो कहूं . उस ने कहा क्या तू यूनानीय  
 ३८ भाषा जानता है । तो क्या तू वह मिसरी नहीं है जो इन दिनों के आगे  
 बलवा करके कटारबन्ध लोगों में से चार सहस्र मनुष्यों को जंगल में ले गया ।  
 ३९ पावल ने कहा मैं तो तारस का एक यहूदी मनुष्य हूं . किलिकिया के एक प्रसिद्ध

नगर का निवासी हूँ . और मैं आप से मिलती करता हूँ कि मुझे लोगों से यात करने मिलिये । जब उस ने आज्ञा दिई तब पावल ने सीढ़ी पर खड़ा होके लोगों ४० को हाथ से सैन किया . जब वे बहुत चुप हुए तब उस ने इब्रीय भाषा में उन से बात किई ।

बाईसवां पृष्ठ ।

उस ने कहा हे भाइयो और पितरो मेरा उत्तर जो मैं आप लोगों के आगे १  
अब देता हूँ सुनिये । वे यह सुनके कि वह हम से इब्रीय भाषा में बात करता २  
है और भी चुप हुए । तब उस ने कहा मैं तो पिदूदी मनुष्य हूँ जो किलिकिया ३  
के तारस नगर में जन्मा पर इस नगर में पाला गया और गमलियेल के लोगों के  
पास पितरों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया और जैसे आज तुम सब  
हो ऐसा ही ईश्वर के लिये धुन लगाये था । और मैं ने इस पन्थ के लोगों को ४  
मृत्यु लो मताया कि पुरुषों और स्त्रियों को भी बांध बांधके बन्दीगृहों में डालता  
था । इस में महायाजक और सब प्राचीन लोग मेरे साथी हैं जिन से मैं भाइयों ५  
के नाम पर बिट्टियां पाके दसेसक को जाता था कि जो वहां थे उन्हें भी ताड़ना  
पाने को बांधे हुए पिदूशलीम में लाई । परन्तु जब मैं जाता था और दसेसक के ६  
समीप पहुंचा तब दो पहर के निकट अचांचक बड़ी ज्योति सूर्य से मेरी चारों ओर  
झमकी । और मैं भूमि पर गिरा और एक शब्द सुना जो मुझ से बोलता हे शायल ७  
हे शायल तू मुझे क्यों मताता है । मैं ने उत्तर दिया कि हे प्रभु तू कौन है . उस ने ८  
मुझ से कहा मैं यीशु नामही हूँ जिसे तू मताता है । जो लोग मेरे संग थे उन्हें ९  
ने यह ज्योति देखी और डर गये परन्तु जो मुझ से बोलता था उस की बात न  
सुनी । तब मैं ने कहा हे प्रभु मैं क्या कहूं . प्रभु ने मुझ से कहा उठके दसेसक १०  
को जा और जो जो काम करने को तुझे ठहराया गया है सब के विषय में वहां  
तुझ से कहा जायगा । जब उस ज्योति के तेज के सारे मुझे नहीं मृक्तता था तब ११  
मैं अपने संगियों के हाथ पकड़े हुए दसेसक में आया । और अननियास नाम १२  
व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य जो वहां के रहनेवारे सब पिदूदियों के वहां  
मुख्यात था मेरे पास आया . और निकट खड़ा होके मुझ से कहा हे भाई १३  
शायल अपनी दृष्टि पा. और उसी घड़ी मैं ने उस पर दृष्टि किई । तब उस ने कहा १४  
हमारे पितरों के ईश्वर ने तुझे ठहराया है कि तू उस की इच्छा को जाने और  
उस धर्म्म को देखे और उस के मुंह से बात सुने । क्योंकि जो बातें तू ने देखी १५  
और सुनी हैं उन के विषय में तू सब मनुष्यों के आगे उस का साक्षी दोगा ।  
और अब तू क्यों बिलंब करता है . उठके यपातिसमा ले और प्रभु के नाम की १६  
प्रार्थना करके अपने पापों को छोड़ डाल । जब मैं पिदूशलीम को फिर आया १७  
त्योदी मन्दिर में प्रार्थना करता था त्योदी वेसुध हुआ . और उस को देखा १८  
कि मुझ से बोलता था गोब्रता करके पिदूशलीम से भट निकल जा क्योंकि  
वे मेरे विषय में तेरी साक्षी ग्रहण न करेंगे । मैं ने कहा हे प्रभु वे जानते हैं कि १९  
तुझ पर विश्वास करनेवालों को मैं बन्दीगृह में डालता और हर एक सभा में  
मारता था । और जब तेरे साक्षी स्तिफान का लोट्ट बहाया जाता था तब मैं २०

भी आप निकट खड़ा था और उस के मारे जाने में सम्मति देता था और उस  
 २१ के घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था । तब उस ने मुझ से कहा चला  
 जा क्योंकि मैं तुम्हें अन्यदेशियों के पास दूर भेजूंगा ॥

२२ लोगों ने इस बात से उस की सुनी तब ऊँचे शब्द से पुकारा कि ऐसे मनुष्य

२३ को पृथिवी पर से दूर कर कि उस का जीता रहना उचित न था । जब वे

२४ चिल्लाते और कपड़े फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे । तब सहस्रपति ने

उस को गढ़ में ले जाने की आज्ञा किई और कहा उसे कोड़े मारके जाँचो

२५ कि मैं जानूँ लोग किस कारण से उस के विरुद्ध ऐसा पुकारते हैं । जब वे

पावल को चमड़े के बंधों से बांधते थे तब उस ने शतपति से जो खड़ा था कहा

व्या मनुष्य को जो रोमी है और दंड के योग्य नहीं ठहराया गया है कोड़े

२६ मारना तुम्हें उचित है । शतपति ने यह सुनके सहस्रपति के पास जाके कह दिया

२७ कि देखिये आप क्या किया चाहते हैं यह मनुष्य तो रोमी है । तब सहस्रपति ने

उस पास जाके उस से कहा मुझ से कहा क्या तू रोमी है । उस ने कहा हाँ ।

२८ सहस्रपति ने उत्तर दिया कि मैं ने यह रोम निवासी की पट्टी बहुत रूपियों पर

२९ मोल लिई । पावल ने कहा परन्तु मैं ऐसा ही जन्मा । तब जो लोग उसे जाँचने

पर थे सो तुरन्त उस के पास से हट गये और सहस्रपति भी यह जानके कि

रोमी है और मैं ने उसे बांधा है डर गया ॥

३० और दूसरे दिन वह निश्चय जानने चाहता था कि उस पर यहूदियों से क्यों

दोष लगाया जाता है इस लिये उस को बंधनों से खोल दिया और प्रधान

याजकों को और न्याइयों की सारी सभा को आने की आज्ञा दिई और पावल

को लाके उन के आगे खड़ा किया ॥

तेईसवां पृष्ठ ।

१ पावल ने न्याइयों की सभा की ओर ताकके कहा हे भाइयो मैं इस दिन

२ लों सर्वथा ईश्वर के आगे शुद्ध मन से चला हूँ । परन्तु अनन्याह महा-

याजक ने उन लोगों को जो उस के निकट खड़े थे उस के मुँह में मारने की

३ आज्ञा दिई । तब पावल ने उस से कहा हे चूना फेरी हुई भीति ईश्वर तुम्हें

मारेंगा । क्या तू मुझे व्यवस्था के अनुसार विचार करने को बैठा है और व्यवस्था

४ को लंघन करता हुआ मुझे मारने की आज्ञा देता । जो लोग निकट खड़े थे सो

५ बोले क्या तू ईश्वर के महायाजक की निन्दा करता है । पावल ने कहा हे

भाइयो मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक है । क्योंकि लिखा है अपने लोगों

६ के प्रधान को बुरा मत कह । तब पावल ने यह जानके कि एक भाग सद्दुकी

और एक भाग फरीशी हैं सभा में पुकारा हे भाइयो मैं फरीशी और फरीशी का

पुत्र हूँ मृतकों की आशा और जी उठने के विषय में मेरा विचार किया जाता

७ है । जब उस ने यह बात कही तब फरीशियों और सद्दुकियों में विवाद हुआ

८ और सभा विभिन्न हुई । क्योंकि सद्दुकी कहते हैं कि न मृतकों का जी उठना न

९ दूत न आत्मा है परन्तु फरीशी दोनों को मानते हैं । तब बड़ी धूम मची और

जो अध्यापक फरीशियों के भाग के थे सो उठके लड़ते हुए कहने लगे कि इस

हो जैसा कि भिल्लस का मुँह देता है और उस छेद की चारों ओर बिन हुए कार्य के गोटे जितने फटने न पावे । और उन्हीं ने उस वस्त्र के खूँट के घरे में २४ नीले और बैजनी और लाल रंग और बटे हुए सूत के अनार बनाये । और उन्हीं २५ ने चोखे मोने की घंटियाँ बनाई और घंटियों को उस वस्त्र के अनार के मध्य में लगाया अनार के मध्य में चारों ओर लगाया । घंटी और अनार घंटी और २६ अनार चारों के अंचल की चारों ओर मेवा के लिये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

और भीने सूत की कुरतियाँ हाथन और उस के घेठों के लिये बिन हुए कार्य २७ से बनाई । और भीने सूती पगड़ी और मुकुट और बटे हुए भीने सूती सुन्धार । २८ और बटे हुए भीने सूती वस्त्र का पटुका और नीला और बैजनी और लाल बूटा २९ काढ़ा हुआ जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी बनाया ॥

और पवित्र मुकुट के पत्र को निर्मल सोने से बनाया और उस में खोदी हुई ३० अंगूठी की नाई यह खोदा परमेश्वर के लिये पवित्रता । और उस में एक नीला ३१ गोटा बांधा जिसमें मुकुट के ऊपर हो जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

उस रीति से मंडली के तंबू का कार्य बन गया और इसराएल के संतानों ने ३२ जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही किया ॥

और वे तंबू मूसा पास लाये अर्थात् डेरा और उस की समस्त सामग्री उस ३३ की घुण्डियाँ उस की पाटियाँ उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस के पाय । और संठों के रंगे हुए लाल चमड़े का घटाटोप और तुखमों के चमड़े का ३४ घटाटोप और घटाटोप का घुँघट । साजी की मंजूपा और उस के वहंगार और ३५ ठकना । मंच और उस के समस्त पात्र और भेंट की रोटी । पवित्र दीपक उस ३६ के दीपक समेत और दीपक को विधि से रखवे जायें और उस के समस्त पात्र और जलाने का तेल । और सोने की घेदी और अभिषेक का तेल और मुगंध ३७ धूप और तंबू के द्वार की ओट । पीतल की यज्ञवेदी और उस की पीतल की ३८ भँभरी उस के वहंगार और उस के समस्त पात्र स्नानपात्र और उस के पाय । आंगन की ओट उस के खंभे और उस के पाय समेत और आंगन के द्वार की ३९ ओट उस की रस्सियाँ और उस के खूँटे और मंडली के तंबू के लिये तंबू की सेवा के समस्त पात्र । पवित्र स्थान में मेवा के लिये मेवा के वस्त्र और हाथन ४० याजक के लिये पवित्र वस्त्र और उस के घेठों के वस्त्र कि याजक के पद में सेवा करें । जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसे ही इसराएल के ४१ संतानों ने सब काम किये । और मूसा ने सब काम को देखा और देखो कि ४२ जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी वैसा ही उन्हीं ने किया तब मूसा ने उन्हें आशीस दिई ॥

चालीनवाँ पद्य ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि पहिले मास के पहिले दिन तंबू को १  
को मंडली का तंबू है खड़ा कर । और उस में साजी की मंजूपा रख और मंजूपा २



२८ जा पहुँचके कुड़ाया । और मैं जानने चाहता था कि वे उस पर किस कारण से  
 २९ दोष लगाते हैं इस लिये उसे उन की न्यायियों की सभा में लाया । तब मैं ने यह  
 पाया कि उन की व्यवस्था के बिबादों के विषय में उस पर दोष लगाया जाता  
 है परन्तु वध किये जाने अथवा बांधे जाने के योग्य कोई दोष उस में नहीं है ।  
 ३० जब मुझे बताया गया कि यहूदी लोग इस मनुष्य की घात में लगेंगे तब मैं ने  
 तुरन्त उस को आप के पास भेजा और दोषदायकों को भी आज्ञा दी कि उस  
 के विरुद्ध जो घात होय उसे आप के आगे कर्ते । आगे शुभ ॥  
 ३१ योहाना लोग जैसे उन्हें आज्ञा दी गई थी तैसे पावल को लेके रात ही को  
 ३२ अन्तिपात्री नगर में लाये । दूसरे दिन वे गठ को लौटे और घुड़चढ़ों को उस के  
 ३३ संग जाने दिया । उन्होंने ने कैसरिया में पहुँचके और अध्यक्ष को चिट्ठी देके पावल  
 ३४ को भी उस के आगे खड़ा किया । अध्यक्ष ने पढ़के पूछा यह कौन प्रदेश का है  
 ३५ और जब जाना कि किलिकिया का है . तब कड़ा जब तेरे दोषदायक भी आये  
 तब मैं तेरी सुनूंगा , और उस ने उसे हेरोद के राजभवन में पहरे में रखने की  
 आज्ञा कीई ॥

### चौथीसवां पृष्ठ ।

१ पाँच दिन के पीछे अननियाह महायाजक प्राचीनों के और तर्तूल नाम किसी  
 सुवक्ता के संग आया और उन्होंने ने अध्यक्ष के आगे पावल पर नालिश कीई ।  
 २ जब पावल बुलाया गया तब तर्तूल यह कहके उस पर दोष लगाने लगा कि  
 हे महामहिमन फीलिक्स आप के द्वारा हमारा बहुत कल्याण जो होता है और  
 आप की प्रवीणता से इस देश के लोगों के लिये कितने काम जो सुफल होते  
 ३ हैं . इस को हम लोग सर्वथा और सर्वत्र बहुत धन्य मानके ग्रहण करते  
 ४ हैं । परन्तु जिस्ती मेरी और से आप को अधिक खिलख न होय मैं विन्ती करता  
 ५ हूँ कि आप अपनी सुशीलता से हमारी संक्षेप कथा सुन लीजिये । क्योंकि हम ने  
 यही पाया है कि यह मनुष्य एक मरी के ऐसा है और जगत के सारे यहूदियों  
 ६ में खलवा करनेहारा और नासूरियों के कुपन्थ का प्रधान । उस ने मन्दिर को  
 भी अपवित्र करने की चेष्टा कीई और हम ने उसे पकड़के अपनी व्यवस्था के  
 ७ अनुसार विचार करने चाहा । परन्तु लुसिय सहस्रपति ने आके वही खरियाई  
 से उस को हमारे हाथों से क़ीन लिया और उस के दोषदायकों को आप के  
 ८ पास आने की आज्ञा दीई । उसी से आप पूछके इन सब बातों के विषय में  
 ९ जिन से हम उस पर दोष लगाते हैं आप ही जान सकेंगे । यहूदियों ने भी  
 उस के संग लगके कहा यह बातें यही हैं ।  
 १० तब पावल ने जब अध्यक्ष ने बोलने का सैन उस से किया तब उत्तर दिया  
 कि मैं यह जानके कि आप बहुत खरसों से इस देश के लोगों के न्यायी हैं  
 ११ और ही साहस से अपने विषय में की बातों का उत्तर देता हूँ । क्योंकि आप  
 जान सकते हैं कि जब से मैं यिरुशलैम में भजन करने को आया मुझे बारह  
 १२ दिन से अधिक नहीं हुए । और उन्होंने ने मुझे न मन्दिर में न सभा की घरे में  
 न नगर में किसी से बिबाद करते हुए अथवा लोगों की भीड़ लगाते हुए

लोग इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते हैं परन्तु यदि कोई आत्मा अथवा दून  
उस से बोला है तो इस ईश्वर से न लड़ें । जब बहुत विवाद हुआ तब मध्य- १०  
पति को शंका हुई कि पावल उन से फाड़ न डाला जाय इस लिये पलटन को  
आज्ञा दी कि जाके उस को उन के बीच में से छानके गढ़ में लाओ ॥

उस रात प्रभु ने उस के निकट खड़े हो कहा हे पावल ठाढ़स कर क्योंकि ११  
जैसा तू ने पिछलीस में मेरे विषय में की माची दिई है तेना हो तुम्हें रोस में  
भी माची देना होगा ॥

विद्वान् हुए कितने विद्वदियों ने सका करके प्रश्न थांधा कि जब लो इस पावल १२  
को मार न डालें तब लो जो स्वार्थ अथवा पीयें तो हमें अधिकार है । जिनको ने १३  
आपस में यह किरिया खाई थी सो चालीस जनों में अधिक थे । वे प्रधान १४  
याजकों और प्राचीनों के पास आके बोले इस ने यह प्रश्न थांधा है कि जब लो  
इस पावल को मार न डालें तब लो यदि कुछ चोग्य भी तो हमें अधिकार  
है । इस लिये अब आप लोग न्याइयों को सभा समेन मध्यपति को समझाइये १५  
कि इस पावल के विषय में की दान और ठीक करके निर्णय करेंगे सो आप उसे  
कल हमारे पास लाइये । परन्तु उस को पहुँचने के पहिले ही इस लोग उसे मार  
डालने को तैयार हैं ॥

परन्तु पावल के भाले ने उन का घात में लगना सुना और आके गढ़ में प्रवेश १६  
कर पावल को सन्देश दिया । पावल ने शतपातियों से से एक को अपने पास १७  
बुलाके कहा इस जयान को मध्यपति के पास ले जाइये क्योंकि उन को उस से  
कुछ कहना है । सो उस ने उसे ले मध्यपति के पास लाके कहा पावल मनुष्य १८  
ने मुझे अपने पास बुलाके बिन्ती किई कि इस जयान को मध्यपति से कुछ  
कहना है उसे उस पास ले जाइये । मध्यपति ने उस का हाथ पकड़के और १९  
एकांत में जाके पूछा तुम्हें काँ आ मुझ से कहना है सो क्या है । उस ने कहा २०  
विद्वदियों ने आप से यही बिन्ती करने को आपस में ठहराया है कि इस पावल  
के विषय में कुछ बात और ठीक करके पूर्णगे सो आप उसे कल न्याइयों की  
सभा में लाइये । परन्तु आप उन की न मानिये क्योंकि उन से से चालीस से २१  
अधिक मनुष्य उस को घात में लगे हैं जिनको ने यह प्रश्न थांधा है कि जब लो  
इस पावल को मार न डालें तब लो जो स्वार्थ अथवा पीयें तो हमें अधिकार है  
और अब वे तैयार हैं और आप को प्रतिज्ञा की आस देख रहे हैं ।

सो मध्यपति ने यह आज्ञा देके कि किसी से मत कह कि मैं ने यह घात २२  
मध्यपति को बताई है जयान को बिदा किया । और शतपातियों से से दो को २३  
अपने पास बुलाके उस ने कहा दो सो पाह्यायाँ और सत्तर घुड़चढ़ों और दो सो  
भालैतों को पहर रात बीते कैसरिया को जाने के लिये तैयार करो । और बाह्य २४  
तैयार करो कि वे पावल को बैठाके फीलिक्स अध्यक्ष के पास बचाके ले जायें ॥

उस ने इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी । क्लौडिय लुसिय महासटिमन अध्यक्ष २५  
फीलिक्स को नमस्कार । इस मनुष्य को जो विद्वदियों से पकड़ा गया था और २६  
उस से मार डाले जाने पर था मैं ने यह सुनके कि यह रोसी है पलटन के संग २७

हैं सो मेरे संग चलें और जो इस मनुष्य में कुछ दोष होय तो उस पर दोष लगावें ॥

६ और उन के बीच में दस एक दिन रहके वह कैसरिया को गया और दूसरे ७ दिन विचार आसन पर बैठके पावल को लाने की आज्ञा किई । जब पावल आया तब जो यहूदी लोग यिरुशलीम से आये थे उन्हें ने आसपास खड़े होके उस पर बहुत बहुत और भारी भारी दोष लगाये जिन का प्रमाण वे नहीं दे सकते थे । परन्तु उस ने उत्तर दिया कि मैं ने न यहूदियों की व्यवस्था के न ८ मन्दिर के न कैसर के बिरुद्ध कुछ अपराध किया है । तब फीष्ट ने यहूदियों का मन रखने की इच्छा कर पावल को उत्तर दिया क्या तू यिरुशलीम को जाके १० वहां मेरे आगे इन बातों के विषय में विचार किया जायगा । पावल ने कहा मैं कैसर के विचार आसन के आगे खड़ा हूं जहां उचित है कि मेरा विचार किया जाय । यहूदियों का जैसा आप भी अच्छी रीति से जानते हैं मैं ने कुछ ११ अपराध नहीं किया है । क्योंकि जो मैं अपराधी हूं और बध के योग्य कुछ किया है तो मैं मृत्यु से छुड़ाया जाना नहीं मांगता हूं परन्तु जिन बातों से ये मुझ पर दोष लगाते हैं यदि उन में से कोई बात नहीं ठहरती है तो कोई मुझे १२ उन्हें को हाथ नहीं सोंप सकता है । मैं कैसर की दोहाई देता हूं । तब फीष्ट ने मंत्रियों की सभा के संग बात करके उत्तर दिया क्या तू ने कैसर की दोहाई दिई है । तू कैसर के पास जायगा ॥

१३ जब कितने दिन बीत गये तब अग्रिपा राजा और बर्खाकी फीष्ट को १४ नमस्कार करने को कैसरिया में आये । और उन के बहुत दिन वहां रहते रहते फीष्ट ने पावल की कथा राजा को सुनाई कि एक मनुष्य है जिसे फीलिक्स बंध १५ में छोड़ गया है । उस पर जब मैं यिरुशलीम में था तब प्रधान याजकों ने और यहूदियों के प्राचीनों ने नालिश किई और चाहा कि दंड की आज्ञा उस पर १६ दिई जाय । परन्तु मैं ने उन को उत्तर दिया रोमियों की यह रीति नहीं है कि जब लो वही जिस पर दोष लगाया जाता है अपने दोषदायकों के आगे सामे न हो और दोष के विषय में उत्तर देने का अवकाश न पाय तब लो किसी मनुष्य १७ को नाश किये जाने के लिये सोंप देंगे । सो जब वे यहां एकट्ठे हुए तब मैं ने कुछ बिलंब न करके अगले दिन विचार आसन पर बैठके उस मनुष्य को लाने की १८ आज्ञा किई । दोषदायकों ने उस के आसपास खड़े होके जैसे दोष में समझता था वैसा कोई दोष नहीं लगाया । परन्तु अपनी पूजा के विषय में और किसी १९ मरे हुए यीशु के विषय में जिसे पावल कहता था कि जीता है वे उस से कितने २० बिबाद करते थे । मुझे इस विषय के बिबाद में सन्देह था इस लिये मैं ने कहा क्या तू यिरुशलीम को जाके वहां इन बातों के विषय में विचार किया जायगा । २१ परन्तु जब पावल ने दोहाई दे कहा मुझे अगस्त महाराजा से विचार किये जाने को रखिये तब मैं ने आज्ञा दिई कि जब लो मैं उसे कैसर के पास न भेजूं तब २२ लो उस की रक्षा किई जाय । तब अग्रिपा ने फीष्ट से कहा मैं आप भी उस मनुष्य की सुनने से प्रसन्न होता हूं । उस ने कहा आप कल उस की सुनेंगे ॥

पाया । और न वे उन बातों को जिन के विषय में वे अथ मुक्त पर दीप लगाते १३ हैं ठहरा सकते हैं । परन्तु यह मैं आप के आगे मान लेता हूँ कि जिस मार्ग १४ को वे कुपण्य कहते हैं उसी की रीति पर मैं अपने पितरों के ईश्वर की सेवा करता हूँ और जो बातें व्यवस्था में श्री मयिष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखी हैं उन सभी का विश्वास करता हूँ । और ईश्वर से आशा रखता हूँ जिसे ये भी १५ आप रखते हैं कि धर्म्मा और अधर्म्मा भी मय मृतकों का जो उठना होगा । इस से मैं आप भी साधना करता हूँ कि ईश्वर की और मनुष्यों की आरा में १६ मन सदा निर्दोष रहे । बहुत दरसों के पीछे मैं अपने लोगों को दान देने का १७ और चढ़ावा उठाने का पाया । इस में इन्हीं ने नहीं पर आगिया के कितने १८ पिहृदियों ने मुझे सन्दिर में शुद्ध किये हुए न भीड़ के संग और न धूमधाम के संग पाया । उन को उचित था कि जो मेरे विरुद्ध उन की कोई बात दीय तो १९ यहाँ आप के आगे दौते और मुक्त पर दीप लगाते । अथवा ये ही लोग आप २० ही कहें कि जब मैं न्यायों की सभा के आगे खड़ा था तब उन्हीं ने मुक्त में कौन सा कुकर्म पाया । केवल इसी एक बात के विषय में जो मैं ने उन के २१ बीच में गड़ा होके पुकारा कि मृतकों के जो उठने के विषय में मेरा विचार आज तुम से किया जाता है ॥

यह बातें मुझे फीलिक्स ने जो इस मार्ग की बातें बहुत ठीक करके दृढता २२ था उन्हीं यह कहके टाल दिया कि जब लुसिय महारपति आये तब मैं तुम्हारे विषय में जो बातें निर्णय करूँगा । और उस ने शतपति को आज्ञा दी कि २३ पावल की रक्षा कर पर उन को अवकाश दे और उन के सिद्धों में से किसी को उस की सेवा करने में अथवा हम पास आने से मन रोक ॥

कितने दिनों के पीछे फीलिक्स अपनी स्त्री हुमिल्ला के संग जो पिहृदिनी श्री २४ आया और पावल को छुलाके रीष्ट पर विश्वास करने के विषय में उस की सुनी । और जब वह धर्म और संयम के और आनेवाले विचार के विषय में २५ बातें करता था तब फीलिक्स ने भयमान होके उत्तर दिया कि अब तो जा और अवसर पाके मैं तुम्हें छुलाऊँगा । वह यह आशा भी रखता था कि पावल मुझे २६ कपड़े देगा कि मैं उसे छोड़ देऊँ इस लिये और भी बहुत बार उस को छुलाके उस से बातचीत करता था । परन्तु जब दो घण्टे पूरे हुए तब पार्किय फीष्ट ने २७ फीलिक्स का काम पाया और फीलिक्स पिहृदियों का मन रखने की इच्छा कर पावल को बंधा हुआ छोड़ गया ॥

पचोसवां पृष्ठ ।

फीष्ट उस प्रदेश में पहुँचके तीन दिन के पीछे कैसरिया से पिरुशलीस को १ गया । तब महायाजक ने और पिहृदियों के बड़े लोगों ने उस के आगे पावल २ पर'नालिश किई । और उस से विन्ती कर उस के विरुद्ध यह अनुग्रह चाहा ३ कि वह उसे पिरुशलीस में संगवाय क्योंकि वे उसे मार्ग से मार डालने का घात लगाये हुए थे । फीष्ट ने उत्तर दिया कि पावल कैसरिया में पहरों में रहता है ४ और मैं आप यहाँ शीघ्र आऊँगा । फिर दोला तुम से मैं जो सामर्थी लोग ५

से-बोला और इब्रीय भाषा में कहा है शायल है शायल तू मुझे क्यों सताता है ।  
 १५ पैनों पर लात मारना तेरे लिये कठिन है । तब मैं ने कहा है प्रभु तू कौन है ।  
 १६ उस ने कहा मैं यीशु हूँ जिसे तू सताता है । परन्तु उठके अपने पांवों पर खड़ा  
 हो क्योंकि मैं ने तुझे इसी लिये दर्शन दिया है कि उन बातों का जो तू ने देखी  
 १७ हैं और जिन में मैं तुझे दर्शन देऊंगा तुझे सेवक और साक्षी ठहराऊँ । और मैं तुझे  
 तेरे लोगों से और अन्यदेशियों से बचाऊंगा जिन के पास मैं अब तुझे भेजता हूँ ।  
 १८ कि तू उन की आंखें खोले इस लिये कि वे अंधियारे से उजियाले की ओर और  
 शैतान के अधिकार से ईश्वर की ओर फिरें जिस्तें पापमोचन और उन लोगों में  
 जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किये गये हैं अधिकार पावें ॥

१९ सो हे राजा अग्रिपा मैं ने उन स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली । परन्तु पहिले  
 २० दमेनक और यिहूशलीम के निवासियों को तब यिहूदिया के सारे देश में और  
 अन्यदेशियों को पश्चात्ताप करने का और ईश्वर की ओर फिरने का और  
 २१ पश्चात्ताप के योग्य काम करने का उपदेश दिया । इन बातों के कारण यिहूदी  
 २२ लोग मुझे मन्दिर में पकड़के मार डालने की चेष्टा करते थे । सो ईश्वर से सहा-  
 यता पाके मैं छोटे और बड़े को साक्षी देता हुआ आज लों ठहरा हूँ और उन  
 बातों का छोड़ कुछ नहीं कहता हूँ जो भविष्यद्वक्ताओं ने और मूसा ने भी कहा  
 २३ कि होनेवाली हैं । अर्थात् खोष्ट को दुःख भोगना होगा और वही मृतकों में से  
 पहिले उठके हमारे लोगों को और अन्यदेशियों को ज्योति की कथा सुनावेगा ॥

२४ अब वह यह उत्तर देता था तब फीष्ट ने बड़े शब्द से कहा है पावल तू  
 २५ बौद्ध है बहुत विद्या तुझे बौद्धता करती है । पर उस ने कहा है महामहिमन  
 २६ फीष्ट मैं बौद्ध नहीं हूँ परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूँ । इन बातों  
 को राजा श्रुता है जिस के आगे मैं खोलके बोलता हूँ क्योंकि मैं निश्चय  
 जानता हूँ कि इन बातों में से कोई बात उस से छिपी नहीं है कि यत्र तो कौन  
 २७ से नहीं किया गया है । हे राजा अग्रिपा क्या आप भविष्यद्वक्ताओं का विश्वास  
 २८ करते हैं । मैं जानता हूँ कि आप विश्वास करते हैं । तब अग्रिपा ने पावल से  
 २९ कहा तू थोड़े में मुझे खीष्टियान होने को मनाता है । पावल ने कहा ईश्वर से  
 मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में क्या बहुत में केवल आप नहीं परन्तु सब  
 लोग भी जो आज मेरी सुनते हैं इन बन्धनों को छोड़के ऐसे हो जायें जैसा  
 मैं हूँ ॥

३० जब उस ने यह कहा तब राजा और अध्यक्ष और खर्चीकी और उन के संग  
 ३१ बैठनेहारे उठे । और अलग जाके आपस में बोले यह मनुष्य बध किये जाने अथवा  
 ३२ बांधे जाने के योग्य कुछ नहीं करता है । तब अग्रिपा ने फीष्ट से कहा जो यह  
 मनुष्य कैसर की दोहाई न दिये होता तो छोड़ा जा सकता ॥

सताइसवां पृष्ठ ।

१ अब यह ठहराया गया कि हम जहाज पर इतलिया को जायें तब उन्हीं ने  
 पावल को और कितने और बन्धुओं को भी यूलिय नाम अगस्त की पलटन के  
 २ एक शतपति के हाथ सौंप दिया । और आद्रामुतिया नगर, के एक जहाज पर

सो दूसरे दिन जब अग्निषा और वर्णाकी ने बड़ी धूमधाम से आके मह्य- २३ पतियों और नगर के गेष्ट मनुष्यों के संग समाज स्थान में प्रवेश किया और फीष्ट ने आज्ञा किहं तब वे पावल को ले आये । और फीष्ट ने कहा हे राजा अग्निषा २४ और हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे संग हो आप लोग इस को देखते हैं जिस के विषय में सारे पिहूदियों ने पिहूशलीस में और यहां भी मुझ में चिन्ता करके पुकारा है कि इस को और जीता रहना उचित नहीं है । परन्तु यह जानके कि २५ उस ने बध के योग्य कुछ नहीं किया है जब कि उस ने आप अगस्त महाराजा की दोहाई दिई में ने उसे भेजने का ठहराया । परन्तु मैं ने उस के विषय में २६ कोई निश्चय की बात नहीं पाई है जो मैं महाराजा के पास लिये इस लिये मैं उसे आप लोगों के सामने और निज करके हे राजा अग्निषा आप के सामने लाया हूं कि विचार किये जाने के पीछे मुझे कुछ लिखने का मने । क्योंकि बन्धुये को २७ भेजने में दोष जो उस पर लगाये गये हैं नहीं बताना मुझे असंगत देख पड़ता है ॥

छव्यांमयां पर्व ।

अग्निषा ने पावल से कहा तुम्हें अपने विषय में बोलने की आज्ञा दिई जाती १ है । तब पावल छाय बड़ाके उत्तर देने लगा । कि हे राजा अग्निषा जिन बातों २ से पिहूदी लोग मुझ पर दोष लगाते हैं उन सब बातों के विषय में मैं अपने का धन्य समझता हूं कि आज आप के आगे उत्तर देऊंगा । निज करके इसी लिये ३ कि आप पिहूदियों के बीच के सब व्यवहारों और विवादों को दृष्टते हैं । जो मैं आप में चिन्ता करता हूं धोरज करके मेरी मुन लोजिये । लड़कपन से मेरी जैसी ४ चाल चलन आरंभ में पिहूशलीस में मेरे लोगों के बीच में थी सो सब पिहूदी लोग जानते हैं । वे जो साक्षी देने चाहते तो आदि से मुझे पदचानते हैं कि ५ हमारे धर्म के सब से खरे पन्थ के अनुसार मैं फरीशी की चाल चला । और ६ अब जो प्रतिज्ञा ईश्वर ने पितरों से किहं मैं उसी की आज्ञा के विषय में विचार किये जाने को खड़ा हूं । जिसे हमारे वारंटों कुल रात दिन यव से सेवा करते ७ हुये पाने की आज्ञा रखते हैं । इसी आज्ञा के विषय में हे राजा अग्निषा पिहूदी लोग मुझ पर दोष लगाते हैं ॥

आप लोगों के यहां यह क्यों विश्वास के अयोग्य जाना जाता है कि ईश्वर ८ मृतकों को जिलाता । मैं ने तो अपने में समझा कि यीशु नामरी के नाम के बिकट ९ बहुत कुछ करना उचित है । और मैं ने पिहूशलीस में दर्शी किया भी और प्रधान १० याजकों से अधिकार पाके पवित्र लोगों में से बहुतों को बन्दीगृहों में मंद रखा और जब वे घात किये जाते थे तब मैं ने अपना सरसति दिई । और ससन्त सभा ११ के घेरों में मैं बार बार उर्न्द ताड़ना देके यीशु की निन्दा करवाता था और उन पर अत्यन्त क्रोध से उन्मत्त होके बाहर के नगरों तक भी मताता था । इस बीच १२ मैं जब मैं प्रधान याजकों से अधिकार और आज्ञा लेके दसेमक को जाता था । तब हे राजा मार्ग से दो पहर दिन को मैं ने सूर्य से सूर्य के तेज से अधिक १३ एक ज्योति अपनी और अपने संग जानेदारों की चारों ओर चमकती हुई देखी । और जब इस सब भूमि पर गिर पड़े तब मैं ने एक शब्द सुना जो मुझ १४



- २४ मेरे निकट खड़ा हुआ . और कहा हे पावल मत डर तुम्हें कैसर के आगे खड़ा होना अवश्य है और देख ईश्वर ने सभीों को जो तेरे संग जलयात्रा करते हैं तुम्हें दिया है । इस लिये हे मनुष्यो ठाढ़स बांधो क्योंकि मैं ईश्वर का विश्वास करता हूँ कि जिस रीति से मुझे कहा गया है उसी रीति से होगा । परन्तु हमें किसी टापू पर पड़ना होगा ॥
- २७ जब चौदहवीं रात पहुंची ज्योंही हम आद्रिया समुद्र में इधर उधर उड़ाये जाते थे त्योंही आधी रात के निकट मल्लाहों ने जाना कि हम किसी देश के समीप पहुंचते हैं । और थाह लेके उन्हें ने बीस पुरसे पाये और थोड़ा आगे बढ़के फिर थाह लेके पन्द्रह पुरसे पाये । तब पत्थरैले स्थानों पर टिक जाने के डर से उन्हें ने जहाज की पिछाड़ी से चार लंगर डाले और भोर का होना मनाते रहे । परन्तु जब मल्लाह लोग जहाज पर से भागने चाहते थे और गलही से लंगर डालने के वहाना से डिंगी समुद्र में उतार दिई . तब पावल ने शतपति से और योद्धाओं से कहा जो ये लोग जहाज पर न रहें तो तुम नहीं बच सकते हो । तब योद्धाओं ने डिंगी को रस्से काटके उसे गिरा दिया ।
- ३३ जब भोर होने पर थी तब पावल ने यह कहके सभीों से भोजन करने की विन्ती किई कि आज चौदह दिन हुए कि तुम लोग आस देखते हुए उपवासी रहते हो और कुछ भोजन न किया है । इस लिये मैं तुम से विन्ती करता हूँ कि भोजन करो जिस से तुम्हारा बचाव होगा क्योंकि तुम नैं से किसी के सिर से एक बाल न गिरेगा । और यह बात कहके औ रोटी लेके उस ने सभीों के सामे ईश्वर का धन्य माना और तोड़के खाने लगा । तब उन सभीों ने भी ठाढ़स बांधके भोजन किया । हम सब जो जहाज पर थे दो सौ छिहत्तर जन थे । भोजन से तृप्त होके उन्हें ने गेहूँ को समुद्र में फेंकके जहाज को हलका किया ।
- ३९ जब बिहान हुआ तब वे उस देश को नहीं चीन्हते थे परन्तु किसी खाल को देखा जिस का चौरस तीर था और बिचार किया कि जो हो सके तो इसी पुर जहाज को टिकावें । तब उन्हें ने लंगरों को काटके समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बंधन खोल दिये और बयार के सन्मुख पाल चढ़ाके तीर की ओर चले । परन्तु दो समुद्रों के संगम के स्थान से पड़के उन्हें ने जहाज को टिकाया और गलही तो गड़ गई और हिल न सकी परन्तु पिछाड़ी लहरों की बरियाई से टूट गई । तब योद्धाओं का यह परामर्श था कि बन्धुओं को मार डालें ऐसा न हो कि कोई पैरके निकल भागे । परन्तु शतपति ने पावल को बचाने की इच्छा से उन्हें उस मत से रोका और जो पैर सकते थे उन्हें आज्ञा दिई कि पहिले कूदके तीर पर निकल चलें . और दूसरों को कि कोई पटरों पर और कोई जहाज में की बस्तुओं पर निकल जायें . इस रीति से सब कोई तीर पर बच निकले ॥

अठारहसवां पृष्ठ ।

- १ जब वे बच गये तब जाना कि यह टापू मलिता कहावता है । और उन जंगली लोगों ने हमों से अनोखा प्रेम किया क्योंकि मंद के कारण जो

से। आशिया के तीर पर के स्थानों को जाता था चढ़के हम ने खोल दिया और  
 अरिस्तार्ख नाम यिसलोनिका का एक साकिदानी हमारे संग था । हमारे दिन ३  
 हम ने मीटोन में लगान किया और युलिय ने पायल के साथ प्रेम में व्यवहार  
 करके उसे मित्रों के पास जाने और पाहून देने दिया । वहाँ से खोलके वयार ४  
 के मन्मुख देने के कारण हम कुप्रस के नाँचे से होके चले , और किलिकिया ५  
 और पंफुलिया के निकट के समुद्र में होके लुकिया देश के सुरा नगर पहुँचे । वहाँ ६  
 शतपति ने सिकन्दरिया के एक जहाज को जो इतलिया को जाता था पाके हमें  
 उस पर चढ़ाया । बहुत दिनों में हम धीरे धीरे चलके और वयार जो हमें खनने न ७  
 देती थी इस लिये कठिनता से कनीद के माझे पहुँचके मलमानी के आगे माझे  
 क्रीती के नाँचे चले , और कठिनता से उस के पास से होते हुए शुभलंगरवारी ८  
 नाम एक स्थान में पहुँचे जहाँ से लासेया नगर निकट था ।

अब बहुत दिन बीत गये थे और जलयात्रा में जोखिम होती थी क्योंकि ९  
 उपवास पर्व भी अब बीत चुका था तब पायल ने उन्हीं समझाके कहा . हे १०  
 मनुष्यो मुझे सूझ पड़ता है कि हम जलयात्रा में हानि और बहुत टूटों केवल  
 बोझाई और जहाज की नहीं परन्तु हमारे प्राणों की भी दुआ चाहती है । परन्तु ११  
 शतपति ने पायल की बातों से अधिक मांझा को और जहाज के स्थानी को  
 मान लिई । और अब लंगरवारी जाड़े का समय काटने को अच्छी न थी हम १२  
 लिये बहुतों ने परामर्श दिया कि वहाँ से भी खोलके जो किसी राति में हो सके  
 तो कैनाको नाम क्रीती की एक लंगरवारी में जो दक्षिण पश्चिम और उत्तर  
 पश्चिम की ओर खुलती है जा रहें और वहाँ जाड़े का समय काटें ॥

अब दक्षिण की वयार मन्द मन्द चलने लगी तब उन्हीं ने यह समझके कि १३  
 हमारा अभिप्राय मुफल हुआ है लंगर उठाया और तीर धरे धरे क्रीती के पास से  
 जाने लगे । परन्तु थोड़ी देर में क्रीती पर से अति प्रचण्ड एक वयार उठी जो १४  
 चरकलूदन कहावती है । यह जब जहाज पर लगी और वह वयार के माझे ठहर १५  
 न सका तब हम ने उसे जाने दिया और उड़ाये हुए चले गये । तब कौदा नाम १६  
 एक छोटे टापू के नाँचे में जाके हम कठिनता से हिंगी को धर सके । उसे उठाके १७  
 उन्हीं ने अनेक उपाय करके जहाज को नाँचे में बाँधा और सुर्ती नाम चढ़ पर  
 ठिक जाने के भय में मन्तूल गिराके वहाँ उड़ाये जाते थे । तब निपट पड़ी आंधी १८  
 हम पर चलती थी इस लिये उन्हीं ने दूसरे दिन कुछ बोझाई फेंक दिई । और १९  
 तीसरे दिन हम ने अपने हाथों से जहाज को सामग्री फेंक दिई । और अब बहुत २०  
 दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिये और वही आंधी चलती रही अन्त में  
 हमारे बचने की सारी आशा जाती रही ॥

अब वे बहुत उपवास कर चुके तब पायल ने उन के बीच में खड़ा होके कहा २१  
 हे मनुष्यो उचित था कि तुम संगी बात मानने और क्रीती से न खोलते न यह  
 हानि और टूटों उठाते । पर अब मैं तुम से यिन्ती करता हूँ कि ठाढ़म बांधो २२  
 क्योंकि तुम्हें से मैं किसी के प्राण का नाश न होगा केवल जहाज का । क्योंकि २३  
 ईश्वर जिस का मैं हूँ और जिस की सेवा करता हूँ उस का एक दूत इसी रात

- २२ आगे आप के विषय में दुरा कुछ बताया था कहा । परन्तु आप का मत क्या है सो हम आप से सुना चाहते हैं क्योंकि इस पन्थ के विषय में हम जानते हैं कि
- २३ सर्वत्र उस के विश्व में वार्ते किई जाती हैं । सो उन्होंने ने उस को एक दिन ठहराया और बहुत लोग उसे पर उस पास आये जिन से वह ईश्वर के राज्य की साक्षी देता हुआ और यीशु के विषय में की वार्ते उन्हें मूसा की व्यवस्था से और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक से भी समझाता हुआ और से मान लें चर्चा करता
- २४ रहा । तब कितनों ने उन वार्तों को मान लिया और कितनों ने प्रतीति न किई ।
- २५ सो वे आपस में एक मत न होके जब पावल ने उन से एक बात कही थी तब बिदा हुए कि पवित्र आत्मा ने हमारे पितरों से विशेषाद भविष्यद्वक्ता के द्वारा
- २६ से अच्छा कहा . कि इन लोगों के पास जाके कह तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु
- २७ नहीं सुनेगे और देखते हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा । क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है और वे कानों से जंघा सुनते हैं और अपने नेत्र मून्ध लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी नेत्रों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें
- २८ और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं । सो तुम जानो कि ईश्वर के वाच की
- २९ कथा अन्यदेशियों के पास भेजी गई है और वे सुनेंगे । अब यह यह वार्ते कह चुका तब यहूदी लोग आपस में बहुत बिबाद करते हुए चले गये ॥
- ३० और पावल ने दो बरस भर अपने भाड़े के घर में रहके सभी को जो उस
- ३१ पास आते थे ग्रहण किया . और बिना रोक टोक बड़े साहस से ईश्वर के राज्य की कथा सुनाता और प्रभु यीशु खीष्ट के विषय में की वार्ते सिखाता रहा ॥

## रोमियों के पावल प्रेरित की पत्री ।

### पहिला पर्व ।

- १ पावल जो यीशु खीष्ट का दास और बुलाया हुआ प्रेरित और ईश्वर के
- २ सुसमाचार के लिये अलग किया गया है . यह सुसमाचार जिस की प्रतिज्ञा उस
- ३ ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा धर्मपुस्तक में आगे से किई थी . अर्थात् उस के पुत्र हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के विषय में का सुसमाचार जो शरीर के भाव से
- ४ दाऊद के वंश में से उत्पन्न हुआ . और पवित्रता के आत्मा के भाव से मृतकों
- ५ के जी उठने से पराक्रम सहित ईश्वर का पुत्र ठहराया गया . जिस से हम ने अनुग्रह और प्रेरिताई पाई है कि उस के नाम के कारण सब देशों के लोग विश्वास
- ६ से आज्ञाकारी हो जायें . जिन्हें मैं तुम भी यीशु खीष्ट के बुलाये हुए हों . रोम के उन सब निवासियों को जो ईश्वर के प्यारे और बुलाये हुए पवित्र लोग हैं . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥
- ७ पहिले मैं यीशु खीष्ट के द्वारा से तुम सभी के लिये अपने ईश्वर का धन्य

पड़ता था और जाड़े के कारण उन्हें ने आग सुलगाके हम सभी को ग्रहण किया ।

जब पावल ने बहुत सी लकड़ी घटोरके आग पर रखी तब एक साँप ने ३ आँच से निकलके उस का हाथ धर लिया । और जब उन जंगलियों ने साँप को ४ उस के हाथ में लटकते हुए देखा तब आपस में कहा निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है जिसे यद्यपि समुद्र से बच गया तौभी दंडदायक ने जीते रहने नहीं दिया है । तब उस ने साँप को आग में झटक दिया और कुछ दुःख न पाया । ५ पर वे बात देखते थे कि वह मूज जायगा अथवा अचांचक मरके गिर पड़ेगा ६ परन्तु जब वे थड़ी धीरे से बात देखते रहे और देखा कि उस का कुछ नहीं बिगड़ता है तब और ही विचार कर कहा यह तो देवता है ॥

उस स्थान के आमपास पव्रलिय नाम उस टापू के प्रधान की भूमि थी . उस ७ ने हमें ग्रहण करके तीन दिन प्रीतिभाव से पटुनई किई । पव्रलिय का पिता उयर ८ से और आंचलोह से रोगी पड़ा था सो पावल ने उस पास घर में प्रवेश करके प्रार्थना किई और उस पर हाथ रखके वने चंगा किया । जब यह हुआ था तब ९ हमारे लोग भी जो उस टापू में रोगी थे आके चंगे किये गये । और उन्हें ने १० हम लोगों का बहुत आदर किया और जब हम खोलने पर थे तब जो कुछ आवश्यक था सो दे दिया ॥

तीन मास के पीछे हम लोग सिकन्दरिया के एक जहाज पर जिस ने उस टापू ११ में जाड़े का समय काटा था जिस का चिन्ह दिगम्बुरे था चल निकले । सुराकूम १२ नगर में लगान करके हम तीन दिन रहे । वहां से हम दूसरे रीगिया नगर पहुंचे १३ और एक दिन के पीछे दक्षिण की व्यापार जो रठी तो दूसरे दिन पुतियलो नगर में आये । वहां भाइयों को पाके हम उन के वहां सात दिन रहने को बुलाये १४ गये और हम रीति से रोम को चले । वहां से भाई लोग हमारा समाचार सुनके १५ अप्रियत्रैक और तीन सराय लों हम में मिलने को निकल आये जिनके देखके पावल ने ईश्वर का धन्य मानके ठाठस बांधा ॥

जब हम रोम में पहुंचे तब शतपति ने वन्धुओं को मेनापति के हाथ साँप १६ दिया परन्तु पावल को एक घोड़ा के संग जो उस की रक्षा करता था अकेला रहने को आज्ञा हुई । तीन दिन के पीछे पावल ने पिहूदियों के बड़े बड़े लोगों १७ को एकट्ठे बुलाया और जब वे एकट्ठे हुए तब उन से कहा हे भाइयो मैं ने हमारे लोगों के अथवा पितरों के उपग्रहों के विरुद्ध कुछ नहीं किया था तौभी वन्धुआ दोके विरुद्धलीस से रोमियों के हाथ में साँपा गया । उन्हें ने मुझे जाँचके कोढ़ १८ देने चाहा क्योंकि मुझ में बध के योग्य कोई दोष न था । परन्तु जब पिहूदी १९ लोग इस के विरुद्ध बोलने लगे तब मुझे कैसर की दोहाई देना अवश्य हुआ पर यह नहीं कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना है । इस कारण से मैं २० ने आप लोगों को बुलाया कि आप लोगों को देखके बात कहूं क्योंकि इसायेस की आशा के लिये मैं इस जंजीर से बन्धा हुआ हूँ । तब वे उस से बोले न २१ हमों ने आप के विषय में पिहूदिया से खिट्टियां पाईं न भाइयों में से किसी ने

- ४ पर घूंघट डाल । और मंच को भीतर ले जा और उस पर की वस्तु उस पर  
 ५ बिधि से रख और दीअट भीतर ले जा और उस के दीपक बारा । और धूप के  
 लिये सोने की वेदी को साक्षी की मंजूपा के आगे रख और तंबू के द्वार पर  
 ६ ओट रख । और यज्ञवेदी को तंबू के द्वार के आगे रख मंडली के तंबू के आगे ।  
 ७ और स्नानपात्र मंडली के तंबू और यज्ञवेदी के बीच में रख और उस में पानी  
 ८ डाल । और आंगन की चारों ओर खड़ा कर और ओट को आंगन के द्वार पर  
 ९ टांग । और अभिषेक का तेल ले और तंबू को और सब जो उस में है अभिषेक  
 कर और उसे और उस के समस्त पात्रों को पवित्र कर और वह पवित्र हो  
 १० जायगा । और बलिदान की यज्ञवेदी को और उस के समस्त पात्रों को अभिषेक  
 ११ कर और यज्ञवेदी को पवित्र कर तब यज्ञवेदी अति पवित्र होगी । और स्नानपात्र  
 १२ और उस के पाए को भी अभिषेक कर और उसे पवित्र कर । और हाखन और उस  
 के बेटों को मंडली के तंबू के द्वार के समीप ला और उन को पानी से नहला ।  
 १३ और हाखन को पवित्र बस्त्र पहिना और उसे अभिषेक कर और उसे पवित्र  
 १४ ठहरा जिसमें वह मेरे लिये याजक के पद में सेवा करे । और उस के बेटों को  
 १५ समीप ला और उन्हें कुरतियां पहिना । और उन्हें अभिषेक कर जैसे उन के  
 पिता को अभिषेक किया जिसमें वे मेरे लिये याजक हों और उन के अभिषेक  
 का होना निश्चय सनातन की याजकता उन की समस्त पीढ़ियों में होगी ॥
- १६ और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने वैसा ही किया ।  
 १७ और दूसरे बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में तंबू खड़ा हो गया ।  
 १८ और मूसा ने तंबू को खड़ा किया और उस के पाए दृढ़ किये और उस के पाट  
 १९ खड़े किये और उस के अङ्गों प्रवेश किये और उस के खंभे खड़े किये । और उस  
 ने तंबू को डेरे पर फैलाया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी  
 उस ने तंबू के घटाटोप को उस के ऊपर रक्खा ॥
- २० और उस ने साक्षी की मंजूपा में रक्खा और बहंगर को मंजूपा के ऊपर  
 २१ रक्खा और ठकने को मंजूपा के ऊपर रक्खा । और वह मंजूपा को तंबू के  
 भीतर लाया और घूंघट टांग दिये और साक्षी की मंजूपा को ठांप दिया जैसा  
 कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥
- २२ और घूंघट के बाहर तंबू की उत्तर अलंग उस ने मंडली के तंबू में मंच को  
 २३ रक्खा । और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही उस ने  
 रोटी की बिधि से उस पर परमेश्वर के आगे रक्खा ॥
- २४ और उस ने दीअट को मंडली के तंबू में मंच के सम्मुख तंबू की दक्षिण  
 २५ अलंग रक्खा । और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने पर-  
 मेश्वर के आगे दीपक को बारा ॥
- २६ और उस ने सोने की वेदी को मंडली के तंबू में घूंघट के आगे रक्खा । और  
 जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उस पर सुगंध धूप  
 जलाया ॥
- २७ और तंबू के द्वार पर ओट को टांगा । और बलिदान की यज्ञवेदी को तंबू

मानता हूँ कि तुम्हारे विश्वास का चर्चा सारे जगत में किया जाता है । क्योंकि ईश्वर जिस की सेवा में अपने मन से उस के पुत्र के सुसमाचार में करता हूँ मेरा साक्षी है कि मैं तुम्हें कैसे निरन्तर स्मरण करता हूँ । और निरर्थक अपनी प्रार्थनाओं में विनी करता हूँ कि किसी रीति से अथ भी तुम्हारे पास जाने को मेरी यात्रा ईश्वर की इच्छा से मुफल होय । क्योंकि मैं तुम्हें देखने की तालमा करता हूँ कि मैं कोई आत्मिक यत्न तुम्हारे संग दाँट लेऊँ किन्ती तुम स्थिर किये जाओ . अर्थात् कि मैं तुम्हों में अपने अपने परस्पर विश्वास के द्वारा से तुम्हारे संग शांति पाऊँ । परन्तु हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूँ कि तुम इस से अनजान रहो कि मैं ने बहुत बार तुम्हारे पास जाने का विचार किया किन्ती जैसा दूसरे अन्यदेशियों में तैसा तुम्हों में भी मेरा कुछ फल होवे परन्तु अब सों मैं रोका रहा ॥

मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का और दुष्टिमानों और निर्युष्टियों का श्रुती हूँ । मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो सुसमाचार सुनाने को तैयार हूँ । क्योंकि मैं ग्रीक के सुसमाचार से नहीं लजाता हूँ इस लिये कि हर एक विश्वास करनेवाले के लिये पहिले विहूटी फिर यूनानी के लिये यह आरा के निर्मित ईश्वर का सामर्थ्य है । क्योंकि उस में ईश्वर का धर्म विश्वास से विश्वास के लिये प्रगट किया जाता है जैसा लिखा है कि विश्वास से धर्मों जन लीयेगा ॥

जो मनुष्य सच्चाई को अधर्म से रोक्ते हैं उन की सारी अभक्ति और अधर्म पर ईश्वर का क्रोध स्वर्ग में प्रगट किया जाता है । इस कारण कि ईश्वर के विषय का ज्ञान उन में प्रगट है क्योंकि ईश्वर ने उन पर प्रगट किया । क्योंकि जगत की सृष्टि से उस के अदृश्य गुण अर्थान उस के सनातन सामर्थ्य और ईश्वरत्व देखे जाते हैं क्योंकि वे उस के कार्यों से पहचाने जाते हैं यहाँ लो कि वे मनुष्य निकतर हैं । इस कारण कि उन्हें ने ईश्वर को जानके न ईश्वर के योग्य गुणानुवाद किया न धन्य माना परन्तु अनर्थक याद विचार करने लगे और उन का निर्युष्टि मन अधियारा हो गया । वे अपने को जानी कटके मूर्ख बन गये . और अधिनाशी ईश्वर की महिमा को दाशमान मनुष्य और पंक्षियों और चौपायों और रंगनंदारे जन्तुओं की मूर्ति की समानता से बदल डाला ॥

इस कारण ईश्वर ने उन्हें उन के मन के अभिलाषों के अनुसार अशुद्धता के लिये त्याग दिया कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें . किन्ती ने ईश्वर की सच्चाई को झूठ से बदल डाला और सृष्टि की पूजा और सेवा सृजन-हार की पूजा और सेवा से अधिक किई जो सख्यदा धन्य है . आमीन । इस हेतु से ईश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के यश में त्याग दिया कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को उस से जो स्वभाव के विरुद्ध है बदल डाला । जैसे ही पुरुष भी स्त्री के संग स्वाभाविक व्यवहार छोड़के अपनी कामुकता से एक दूसरे की और चलने लगे और पुरुषों के साथ पुरुष निर्लज्ज कर्म करते गे और अपने श्रम का फल जो उचित था अपने में भोगते थे । और ईश्वर को चित्त में रखना जब कि उन्हें अच्छा न लगा इस लिये ईश्वर ने उन्हें निकृष्ट



२९ मन के व्यथ में त्याग दिया कि वे अनुचित कर्म करें . और सारे अधर्म और  
 ३० व्यवभिचार और दुष्टता और लोभ और घुराई से भरे हुए और डाढ़ और नराहिंसा और  
 और और और दुर्भाव से भरपूर हों . और फुसफुसिये अप्रवादी ईश्वरदेही  
 निन्दक अभिमानी दंभी खुरे खातों के बनानेहारे माता पिता की आज्ञा लंघन  
 ३१ करनेहारे . निर्घृष्टि झूठे मयारहित झमारहित और निर्दय होवें . जो ईश्वर की  
 ३२ विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे मृत्यु के योग्य हैं तौभी न केवल उन  
 कामों को करते हैं परन्तु करनेहारों से प्रसन्न भी होते हैं ॥

दूसरा पृष्ठ ।

१ सो हे मनुष्य तू कोई हो जो दूसरों का विचार करता हो तू निस्तर है .  
 जिस बात में तू दूसरे का विचार करता है उसी बात में अपने को दोषी ठहराता  
 २ है क्योंकि तू जो विचार करता है आप ही वे ही काम करता है । पर हम  
 जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारों पर ईश्वर की दंड की आज्ञा यथार्थ है ।  
 ३ और हे मनुष्य जो ऐसे ऐसे काम करनेहारों का विचार करता और आप ही वे  
 ही काम करता है क्या तू यही समझता कि मैं तो ईश्वर की दंड की आज्ञा से  
 ४ बचूंगा । अथवा क्या तू उस की कृपा और सदनशीलता और धीरज के धन को  
 ५ तुच्छ जानता है और यह नहीं बूझता है कि ईश्वर की कृपा तुझे पश्चात्ताप  
 ६ करने को सिखाती है . परन्तु अपनी कठोरता और निःपश्चात्तापी मन के हेतु  
 ७ से अपने लिये क्रोध के दिन लों हों ईश्वर के यथार्थ विचार के प्रगट होने के  
 ८ दिन लों क्रोध का संघय करता है । वह हर एक मनुष्य को उस के कर्मों के  
 ९ अनुसार फल देगा । जो सुकर्म में स्थिर रहने से महिमा और आदर और अमरता  
 १० लूँढ़ते हैं उन्हें वह अनन्त जीवन देगा । परन्तु जो विवादी हैं और सत्य को नहीं  
 ११ मानते पर अधर्म को मानते हैं उन पर कोप और क्रोध पड़ेगा । हर एक मनुष्य  
 के प्राण पर जो घुरा करता है क्रोध और संकट पड़ेगा पहिले यहूदी फिर यूनानी  
 १२ के । पर हर एक को जो भला करता है महिमा और आदर और बल्योख होगा  
 १३ पहिले यहूदी फिर यूनानी को । क्योंकि ईश्वर के यहां पक्षपात नहीं है ॥

१४ क्योंकि जितने लोगों ने बिना व्यवस्था पाप किया है सो बिना व्यवस्था नाश  
 भी होंगे और जितने लोगों ने व्यवस्था पाके पाप किया है सो व्यवस्था के द्वारा  
 १५ से दंड के योग्य ठहराये जायेंगे । क्योंकि व्यवस्था के सुननेहारे ईश्वर के यहां धर्मी  
 १६ नहीं हैं परन्तु व्यवस्था पर चलनेहारे धर्मी ठहराये जायेंगे । फिर जब अन्यदेशी  
 लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं  
 तब यद्यपि व्यवस्था उन के पास नहीं है तौभी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं ।  
 १७ वे व्यवस्था का कार्य अपने अपने हृदय में लिखा हुआ दिखाते हैं और उन का  
 १८ मन भी साक्षी देता है और उन को चिन्ताएं परस्पर दोष लगातीं अथवा दोष का  
 १९ उत्तर देती हैं । यह उस दिन होगा जिस दिन ईश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार  
 यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से मनुष्यों की गुप्त बातों का विचार करेगा ॥

२० देख तू यहूदी कहावता है और व्यवस्था पर भरोसा रखता है और ईश्वर  
 २१ के विषय में घमंड करता है . और उस की इच्छा को जानता है और व्यवस्था

की शिक्षा पाके विग्रेय्य आत्मा को परखता है . और अपने पर भरोसा रखता है १९  
 कि मैं अन्धों का अगुआ और अन्धकार में रहनेहारों का प्रकाश . और निरुद्धियों का २०  
 शिक्षक और आलकों का उपदेशक हूँ और ज्ञान और सच्चाई का रूप मुझे व्यवस्था  
 में मिला है । सो क्या तू जो दूसरे को सिखाता है अपने को नहीं सिखाता है . २१  
 क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है आप ही चोरी करता है । क्या तू २२  
 जो परस्त्रीगमन न करने का कहना है आप ही परस्त्रीगमन करता है . क्या तू  
 जो सूरतों से घिन करता है पवित्र वस्तु चुराता है । क्या तू जो व्यवस्था के २३  
 विषय में घमंड करता है व्यवस्था को लंघन करने से ईश्वर का अनादर करता  
 है । क्योंकि जैसा लिखा है तैसा ईश्वर का नाम तुम्हारे कारण अन्वदेशियों में २४  
 निन्दित होता है ॥

जो तू व्यवस्था पर चले तो खतने में लाभ है परन्तु जो तू व्यवस्था को लंघन २५  
 किया करे तो तेरा खतना अखतना हो गया है । सो यदि खतनाहीन मनुष्य २६  
 व्यवस्था की विधियों का पालन करे तो क्या इस का अखतना खतना न गिना  
 जायगा । और जो मनुष्य प्रकृति में खतनाहीन होके व्यवस्था को पूरी करे सो २७  
 क्या तुम्हें जो नेत्र और खतना पाके व्यवस्था को लंघन किया करता है दोषी न  
 ठहरावेगा । क्योंकि जो प्रगट में पिछड़ी है सो पिछड़ी नहीं और खतना जो २८  
 प्रगट में अर्थात् देह में है सो खतना नहीं । परन्तु पिछड़ी व्यष्टि है जो गुप्त में २९  
 पिछड़ी है और मन का खतना जो नेत्र में नहीं पर आत्मा में है सोई खतना  
 है . ऐसे पिछड़ी की प्रशंसा मनुष्यों की नहीं पर ईश्वर का घोर से है ॥

तीसरा पत्र ।

तो पिछड़ी की क्या चेष्टा हुई अथवा खतने का क्या लाभ हुआ । सब प्रकार ३  
 से बहुत कुछ . पहिले यह कि ईश्वर की वाणियों उन के प्राण सोपी गईं ।  
 जो कितने ने विश्वास न किया तो क्या हुआ . क्या उन का अविश्वास ईश्वर के ४  
 विश्वास को व्यर्थ ठहरावेगा । ऐसा न हो . ईश्वर मनुष्य पर हर एक मनुष्य ५  
 झूठा होय जैसा लिखा है कि जिस्त तू अपनी बातों से निर्दोष ठहराया जाय  
 और तेरा विचार किये जाने में तू जय पावे ॥

परन्तु यदि हमारा अधर्म ईश्वर के धर्म पर प्रमाण देता है तो इस क्या ५  
 कहें . क्या ईश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है . इस को मैं मनुष्य की रीति  
 पर कहता हूँ । ऐसा न हो . नहीं तो ईश्वर अंगिकर जगत का विचार करेगा । ६  
 परन्तु यदि ईश्वर की सच्चाई उस की सदिता के लिये मेरी झूठाई के हेतु से ७  
 अधिक करके प्रगट हुई तो मैं क्यों अब भी पापों की नाईं दंड के योग्य ठहराया  
 जाता हूँ । तो क्या यह भी न कहा जाय जैसा हमारी निन्दा किई जाती है और ८  
 जैसा कितने लोग बोलते कि हम कहते हैं कि आये हम चुराई करें जिस्त  
 भलाई निकले . ऐसा पर दंड की आज्ञा पचार्य है ॥

तो क्या . क्या हम उन से अच्छे हैं . कभी नहीं क्योंकि हम प्रमाण दे चुके ९  
 हैं कि पिछड़ी और यूनानी भी सब पाप के वश में हैं . जैसा लिखा है कि कोई १०  
 धर्मी जन नहीं है एक भी नहीं . कोई बूझनेद्वारा नहीं कोई ईश्वर का बूझनेद्वारा ११

१२ नहीं । सब लोग भटक गये हैं वे सब एक संग निकम्मे हुए हैं कोई भलाई करनेहारा  
 १३ नहीं एक भी नहीं है । उन का गला खुली हुई कत्तर है उन्होंने ने अपनी जीभों से कुल  
 १४ किया है सांपों का विष उन के घोंठों के नीचे है . और उन का मुँह साप और  
 १५ कड़वाहट से भरा है । उन के पाँव लोहू यद्दाने को फुर्तीले हैं । उन के मार्गों  
 १६ में नाश और क्लेश है . और उन्होंने ने कुशल का मार्ग नहीं जाना है । उन के  
 १८ नेत्रों के आगे ईश्वर का कुछ भय नहीं है ॥

१९ हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है सो उन के लिये कहती है जो  
 व्यवस्था के अधीन हैं इस लिये कि हर एक मुँह बन्द किया जाय और सारा  
 २० संसार ईश्वर के आगे दंड के योग्य ठहरे । इस कारण कि व्यवस्था के कर्मों  
 से कोई प्राणी उस के आगे धर्मी नहीं ठहराया जायगा क्योंकि व्यवस्था के  
 द्वारा पाप की पहचान होती है ॥

२१ पर अब व्यवस्था से न्यारे ईश्वर का धर्म प्रगट हुआ है जिस पर व्यवस्था  
 २२ और भविष्यद्वक्ता लोग साक्षी देते हैं । और यह ईश्वर का धर्म यीशु ख्रीष्ट  
 पर विश्वास करने से सभी के लिये और सभी पर है जो विश्वास करते हैं क्योंकि  
 २३ कुछ भेद नहीं है । क्योंकि सभी ने पाप किया है और ईश्वर की प्रशंसा योग्य  
 २४ नहीं होते हैं . पर उस के अनुग्रह से उस उद्धार के द्वारा जो ख्रीष्ट यीशु से है  
 २५ संतमेत धर्मी ठहराये जाते हैं । उस को ईश्वर ने प्रायश्चित्त स्थापन किया कि  
 विश्वास के द्वारा उस के लोहू से प्रायश्चित्त होवे जिस्ते आगे किये हुए पापों  
 से ईश्वर की सहनशीलता से आनाकानी जो किई गई तिस के कारण वह  
 २६ अपना धर्म प्रगट करे . हां इस वर्तमान समय में अपना धर्म प्रगट करे यहां  
 लों कि यीशु के विश्वास के अवलंबी को धर्मी ठहराने में भी धर्मी ठहरे ॥

२७ तो वह घमंड करना कहाँ रहा . वह वर्जित हुआ . कौन व्यवस्था के  
 २८ द्वारा से . क्या कर्मों की . नहीं परन्तु विश्वास की व्यवस्था के द्वारा से । इस  
 लिये हम यह सिद्धान्त करते हैं कि बिना व्यवस्था के कर्मों से मनुष्य विश्वास  
 २९ से धर्मी ठहराया जाता है । क्या ईश्वर केवल यहूदियों का ईश्वर है . क्या  
 ३० अन्यदेशियों का नहीं . हां अन्यदेशियों का भी है । क्योंकि एक ही ईश्वर है  
 जो खतना किये हुआओं को विश्वास से और खतनाहीनों को विश्वास के द्वारा  
 ३१ से धर्मी ठहरावेगा । तो क्या हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था को व्यर्थ ठहराते  
 हैं . ऐसा न हो परन्तु व्यवस्था को स्थापन करते हैं ॥

चौथा पृष्ठ ।

१ तो हम क्या कहें कि हमारे पिता इब्राहीम ने शरीर के अनुसार पाया है ।  
 २ यदि इब्राहीम कर्मों के हेतु से धर्मी ठहराया गया तो उसे बड़ाई करने की  
 ३ जगह है । परन्तु ईश्वर के आगे नहीं है क्योंकि धर्मपुस्तक क्या कहता है .  
 इब्राहीम ने ईश्वर का विश्वास किया और यह उस के लिये धर्म गिना गया ।  
 ४ अब कार्य करनेहारे को मजूरी देना अनुग्रह की बात नहीं परन्तु कृण की  
 ५ बात गिना जाता है । परन्तु जो कार्य नहीं करता पर भक्तिहीन के धर्मी  
 ठहरानेहारे पर विश्वास करता है उस के लिये उस का विश्वास धर्म गिना

जाता है । जैसा दाऊद भी उस मनुष्य की धन्यता जिस को ईश्वर बिना कर्मों ६  
से धर्म्मा ठहराये बताता है . कि धन्य वे जिन के कुकर्म क्षमा किये गये और ७  
जिन के पाप ठापे गये . धन्य वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न गिने । ८

तो यह धन्यता क्या खतना किये हुए लोगों की के लिये है अथवा खतनाहीन ९  
लोगों के लिये भी है . क्योंकि हम कहते हैं कि इब्राहीम के लिये विश्वास १०  
धर्म गिना गया । तो यह क्योंकि उस के लिये गिना गया . जब यह खतना १०  
किया हुआ था-अथवा जब खतनाहीन था . जब खतना किया हुआ था तो ११  
नहीं परन्तु जब खतनाहीन था । और उस ने खतने का धिन्ट पाया कि जो १२  
विश्वास उस ने खतनाहीन दशा में किया था उस विश्वास के धर्म की काप १३  
होये बिना जो लोग खतनाहीन दशा में विश्वास करने हैं वह उन सभी का १४  
पिता होय कि वे भी धर्म्मा ठहराये जायें . और जो लोग न केवल खतना किये १५  
हुए हैं परन्तु हमारे पिता इब्राहीम के उस विश्वास की लीक पर चलनेवाले भी १६  
हैं जो उस ने खतनाहीन दशा में किया था उन लोगों के लिये खतना किये १७  
हुए का पिता ठहरे ॥

क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि इब्राहीम जगत का अधिकारी होगा न उस को न १८  
उस के वंश को व्यवस्था के द्वारा से मिली परन्तु विश्वास के धर्म के द्वारा १९  
से । क्योंकि यदि व्यवस्था के अवलम्बी अधिकारी हैं तो विश्वास व्यर्थ और २०  
प्रतिज्ञा निष्फल ठहराई गई है । व्यवस्था तो क्रोध जन्माती है क्योंकि जहाँ २१  
व्यवस्था नहीं है तहाँ चर्चन भी नहीं । इस कारण प्रतिज्ञा विश्वास से हुई २२  
कि अनुग्रह की रीति पर होय हम लिये कि सारे वंश के लिये दृढ़ होय केवल २३  
उन के लिये नहीं जो व्यवस्था के अवलम्बी हैं परन्तु उन के लिये भी जो इब्राहीम २४  
के से विश्वास के अवलम्बी हैं । यह तो उस के आगे जिस का उस ने विश्वास २५  
किया अर्थात् ईश्वर के आगे जो मृतकों को जिलाता है और जो बातें नहीं हैं २६  
उन का नाम ऐसा लेता कि जैसा वे हैं हम सभी का पिता है जैसा लिखा है २७  
कि मैं ने तुम्हें बहुत देशों के लोगों का पिता ठहराया है ॥

उस ने जहाँ आशा न देख पड़ती थी तहाँ आशा रखके विश्वास किया इस २८  
लिये कि जो कहा गया था कि तेरा वंश इस रीति से होगा उस के अनुसार २९  
वह बहुत देशों के लोगों का पिता होय । और विश्वास में दुर्बल न होके उस ३०  
ने यद्यपि सौ एक बरस का था तभी न अपने शरीर को जो अब मृतक सा हुआ ३१  
था और न सार के गर्भ की मृतक की सी दशा को सोचा । उस ने ईश्वर की ३२  
प्रतिज्ञा पर अविश्वास से सन्देह किया सो नहीं परन्तु विश्वास में दृढ़ होके ३३  
ईश्वर की महिमा प्रगट कीई . और निश्चय जाना कि जिस बात को उस ने ३४  
प्रतिज्ञा कीई है उसे करने को भी सामर्थ्य है । इस हेतु से यह उस के लिये धर्म ३५  
गिना गया ॥

पर न केवल उस के कारण लिखा गया कि उस के लिये गिना गया . परन्तु ३६  
हमारे कारण भी जिन के लिये गिना जायगा अर्थात् हमारे कारण जो उस पर ३७  
विश्वास करते हैं जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मृतकों में से उठाया . जो हमारे ३८

अपराधों के लिये पकड़वाया गया और हमारे धर्मों ठहराये जाने के लिये उठाया गया ॥

पाँचवां पृष्ठ ।

- १ सो जब कि हम विश्वास से धर्मों ठहराये गये हैं तो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट
- २ के द्वारा हमें ईश्वर से मिलाप है । और भी उस के द्वारा हम ने इस अनुग्रह
- में जिस में स्थिर हैं विश्वास से पहुँचने का अधिकार पाया है और ईश्वर की
- ३ महिमा की आशा के विषय में बढ़ाई करते हैं । और केवल यह नहीं परन्तु हम
- ४ क्लेशों के विषय में भी बढ़ाई करते हैं क्योंकि जानते हैं कि क्लेश से धीरज .
- ५ और धीरज से खरा निकलना और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है । और
- आशा लज्जित नहीं करती है क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा से जो हमें दिया
- ६ गया ईश्वर का प्रेम हमारे मन में उँडेला गया है । क्योंकि जब हम निर्बल हो
- ७ रहे थे तब ही ख्रीष्ट समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा । धर्मों जन के लिये कोई
- मरे यह दुर्लभ है पर हाँ भले मनुष्य के लिये क्या जाने किसी को मरने का भी
- ८ साहस होय । परन्तु ईश्वर हमारी और अपने प्रेम का साहाय्य यूँ दिखाता है
- ९ कि जब हम पापी हो रहे थे तब ही ख्रीष्ट हमारे लिये मरा । सो जब कि हम
- अब उस के लोहू के गुण से धर्मों ठहराये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम
- १० उस के द्वारा क्लेश से बचेंगे । क्योंकि यदि हम जब शत्रु थे तब ईश्वर से उस के
- पुत्र की मृत्यु के द्वारा से मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम मिलाये
- ११ जाके उस के जीवन के द्वारा राज्य पावेंगे । और केवल यह नहीं परन्तु हम
- अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से जिस के द्वारा हम ने अब मिलाप पाया है ईश्वर
- के विषय में भी बढ़ाई करते हैं ॥
- १२ इस लिये यह ऐसा है जैसा एक मनुष्य के द्वारा से पाप जगत में आया और
- पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों पर बीती क्योंकि
- १३ सबों ने पाप किया । क्योंकि व्यवस्था लों पाप जगत में था पर जहाँ व्यवस्था
- १४ नहीं है तहाँ पाप नहीं मिना जाता । तैभी आदम से मूसा लों मृत्यु ने उन लोगों
- पर भी राज्य किया जिन्होंने ने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था .
- १५ यह आदम उस आनेवाले का चिन्ह है । परन्तु जैसा यह अपराध है तैसा वह
- खरदान भी है सो नहीं क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मूए
- तो बहुत अधिक करके ईश्वर का अनुग्रह और वह दान एक मनुष्य के अर्थात्
- १६ यीशु ख्रीष्ट के अनुग्रह से बहुत लोगों पर अधिकार से हुआ । और जैसा वह
- दंड जो एक के द्वारा से हुआ जिस ने पाप किया तैसा यह दान नहीं है क्योंकि
- निर्णय से एक अपराध के कारण दंड की आज्ञा हुई परन्तु खरदान से बहुत
- १७ अपराधों से निर्दोष ठहराये जाने का फल हुआ । क्योंकि यदि एक मनुष्य के
- अपराध से मृत्यु ने उस एक के द्वारा से राज्य किया तो बहुत अधिक करके जो
- लोग अनुग्रह की और धर्म के दान की अधिकार पाते हैं सो एक मनुष्य के अर्थात्
- १८ यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से जीवन में राज्य करेंगे । इस लिये जैसा एक अपराध सब
- मनुष्यों के लिये दंड की आज्ञा का कारण हुआ तैसा एक धर्म भी सब मनुष्यों

के लिये धर्मी ठहराये जाने का कारण हुआ जिस से जीवन होय । क्योंकि जैसा १८  
एक मनुष्य के आज्ञा लंघन करने से बहुत लोग पापी बनाये गये तैसा एक मनुष्य  
के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी बनाये जायेंगे । पर व्यवस्था का भी प्रवेश २०  
हुआ कि अपराध बहुत होय परन्तु जहां पाप बहुत हुआ तहां अनुग्रह बहुत अधिक  
हुआ । कि जैसा पाप ने मृत्यु में राज्य किया तैसा हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा २१  
अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्म के द्वारा से राज्य करे ॥

ठठठा पद्य ।

तो हम क्या करें . क्या हम पाप में रहें जिस्ते अनुग्रह बहुत होय । ऐसा न १  
हो . हम जो पाप के लिये मृग हैं क्योंकि अब उस में जीयेंगे ॥

क्या तुम नहीं जानते हो कि हम में से जितनों ने ख्रीष्ट यीशु का वपतिसमा ३  
लिया उस की मृत्यु का वपतिसमा लिया । सो उस की मृत्यु का वपतिसमा लेने ४  
से हम उस के संग गाड़े गये कि जैसे ख्रीष्ट पिता के ईश्वर्य से मृतकों में से  
उठाया गया तैसे हम भी जीवन की सी नई छाल चलें । क्योंकि यदि हम उस ५  
की मृत्यु की समानता से उस के संयुक्त हुए हैं तो निश्चय उस के ली उठने की  
समानता में भी संयुक्त होंगे । क्योंकि यही जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व ६  
उस के संग क्रूश पर चढ़ाया गया इस लिये कि पाप का शरीर क्षय किया जाय  
जिस्ते हम फिर पाप के दास न होयें । क्योंकि जो मृथा है सो पाप से बुझाया ७  
गया है । और यदि हम ख्रीष्ट के संग मृग हैं तो विश्वास करते हैं कि उस के ८  
संग जीयेंगे भी । क्योंकि जानते हैं कि ख्रीष्ट मृतकों में से उठके फिर नहीं मरता ९  
है . उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं है । क्योंकि वह जो मरा तो पाप के १०  
लिये एक ही बेर मरा पर वह जीता है तो ईश्वर के लिये जीता है । इस रीति ११  
से तुम भी अपने को समझो कि हम पाप के लिये तो मृतक हैं परन्तु हमारे प्रभु  
ख्रीष्ट यीशु में ईश्वर के लिये जीवते हैं ॥

सो पाप तुम्हारे मरनदार शरीर में राज्य न करे कि तुम उस के अभिलाषों १२  
से पाप के आज्ञाकारी होओ । और न अपने अंगों का अधर्म के हथियार करके १३  
पाप को सोंप देओ परन्तु जैसे मृतकों में से जी गये हो तैसे अपने को ईश्वर को  
सोंप देओ और अपने अंगों को ईश्वर के तहें धर्म के हथियार करके सोंपो ।  
क्योंकि तुम पर पाप की प्रभुता न होगी इस लिये कि तुम व्यवस्था के अधीन १४  
नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन हो ।

तो क्या . क्या हम पाप किया करें इस लिये कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं १५  
परन्तु अनुग्रह के अधीन हैं . ऐसा न हो । क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम १६  
आज्ञा मानने के लिये जिस के यहां अपने को दास करके सोंप देते हो उसी के  
दास हो जिस की आज्ञा मानते हो चाहे मृत्यु के लिये पाप के दास चाहे धर्म  
के लिये आज्ञापालन के दास । पर ईश्वर का धन्यवाद होय कि तुम पाप के १७  
दास तो थे परन्तु तुम जिस उपदेश के मांचे में डाले गये मन से उस के आज्ञा-  
कारी हुए । और मैं तुम्हारे शरीर की दुर्बलता के कारण मनुष्य की रीति पर १८  
कहता हूं कि तुम पाप से उठार पाके धर्म के दास बनो हो । जैसे तुम ने अपने १९



अंगों को अधर्म के लिये अशुद्धता और अधर्म के दास करके अर्पण किया तो  
 २० अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके अर्पण करो । जब तु  
 २१ पाप के दास थे तब धर्म से निर्वन्ध थे । सो उस समय में तुम क्या फल फल  
 २२ थे : वे कर्म जिन से तुम अब लजाते हो क्योंकि उन का अन्त मृत्यु है ।  
 अब पाप से उद्धार पाके और ईश्वर के दास बनके तुम पवित्रता के लिये फ  
 २३ फलते हो और उस का अन्त अनन्त जीवन है । क्योंकि पाप की मजूरी मृत्यु  
 परन्तु ईश्वर का बरदान हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु में अनन्त जीवन है ॥

सातवां पर्व ।

१ हे भाइयो क्या तुम नहीं जानते हो क्योंकि मैं व्यवस्था के जाननेहारों  
 बोलता हूँ कि जब लों मनुष्य जीता रहे तब लों व्यवस्था की उस पर प्रभुत  
 २ है । क्योंकि विवाहिता स्त्री अपने जीवते स्वामी के संग व्यवस्था से बंधी है परन्तु  
 ३ यदि स्वामी मर जाय तो वह स्वामी की व्यवस्था से छूट गई । इस लिये यदि  
 स्वामी के जीते जी वह दूसरे स्वामी की हो जाय तो व्यभिचारिणी कहावेगी परन्तु  
 यदि स्वामी मर जाय तो वह उस व्यवस्था से निर्वन्ध हुई यहा लों कि दूसरे स्वामी के  
 ४ हो जाने से भी वह व्यभिचारिणी नहीं । इस लिये हे मेरे भाइयो तुम भी ख्रीष्ट के  
 देह के द्वारा से व्यवस्था के लिये मर गये कि तुम दूसरे के हो जाओ अर्थात् उस  
 ५ के जो मृतकों में से जी उठा इस लिये कि हम ईश्वर के लिये फल फलें । क्योंकि  
 जब हम शारीरिक दशा में थे तब पापों के अभिलाष जो व्यवस्था के द्वारा से  
 ६ थे हमारे अंगों में कार्य करवाते थे जिस्ते मृत्यु के लिये फल फलें । परन्तु अभी  
 हम जिस में बंधे थे उस के लिये मृतक होके व्यवस्था से छूट गये हैं यहां लों  
 कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं परन्तु आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं ॥  
 ७ तो हम क्या कहें , क्या व्यवस्था पाप है . ऐसा न हो परन्तु बिना व्यवस्था  
 के द्वारा से मैं पाप को न पहचानता हूं व्यवस्था जो न कहती कि लालच  
 ८ मत कर तो मैं लालच को न जानता । परन्तु पाप ने अवसर पाके आज्ञा के  
 द्वारा सब प्रकार का लालच मुझे जन्माया क्योंकि बिना व्यवस्था पाप मृतक  
 ९ है । मैं तो व्यवस्था बिना आगे जीवता था परन्तु जब आज्ञा आई तब पाप जी  
 १० गया और मैं मूआ । और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी मेरे लिये मृत्यु का  
 ११ कारण ठहरी । क्योंकि पाप ने अवसर पाके आज्ञा के द्वारा मुझे ठगा और उस  
 १२ के द्वारा मुझे मार डाला । सो व्यवस्था पवित्र है और आज्ञा पवित्र और यथार्थ  
 और उत्तम है ॥  
 १३ तो क्या वह उत्तम वस्तु मेरे लिये मृत्यु हुई . ऐसा न हो परन्तु पाप जिस्ते  
 वह पाप सा दिखाई देवे उस उत्तम वस्तु के द्वारा से मेरे लिये मृत्यु का जन्मा  
 नेहारा हुआ इस लिये कि पाप आज्ञा के द्वारा से अत्यन्त पापमय हो जाय ।  
 १४ क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक है परन्तु मैं शारीरिक और पाप के  
 १५ हाथ बिका हूँ । क्योंकि जो मैं करता हूँ उस को नहीं समझता हूँ क्योंकि जो मैं  
 १६ चाहता हूँ सोई नहीं करता हूँ परन्तु जिस से घिनाता हूँ सोई करता हूँ । पर  
 यदि मैं जो नहीं चाहता हूँ सोई करता हूँ तो मैं व्यवस्था को मान लेता हूँ कि

अच्छी है । सो अब तो मैं नहीं उसे करता हूँ परन्तु पाप जो मुझ में बसता है । १७  
 क्योंकि मैं जानता हूँ कि कोई उत्तम वस्तु मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में नहीं बसती है १८  
 क्योंकि चाहना तो मेरे संग है परन्तु अच्छी करनी मुझे नहीं मिलती है । क्योंकि १९  
 वह अच्छा काम जो मैं चाहता हूँ मैं नहीं करता हूँ परन्तु जो बुरा काम नहीं  
 चाहता हूँ सोई करता हूँ । पर यदि मैं जो नहीं चाहता हूँ सोई करता हूँ तो २०  
 अब मैं नहीं उसे करता हूँ परन्तु पाप जो मुझ में बसता है । सो मैं वह व्यवस्था २१  
 पाता हूँ कि जब मैं अच्छा काम किया चाहता हूँ तब बुरा काम मेरे संग है ।  
 क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व के भाव से ईश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न हूँ । परन्तु मैं २२  
 अपने अंगों में दूसरी व्यवस्था देखता हूँ जो मेरा बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है  
 और मुझे पाप की व्यवस्था के जो मेरे अंगों में है बन्धन में डालती है । अर्थात् २३  
 मनुष्य जो मैं हूँ मुझे इस मृत्यु के देह से कान, बचावेगा । मैं ईश्वर का धन्य २४  
 मानता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से बड़ी बचानेवाला है । सो मैं  
 आप बुद्धि से तो ईश्वर की व्यवस्था की सेवा परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था  
 की सेवा करता हूँ ॥

आठवां पर्व ।

सो अब जो लोग ख्रीष्ट यीशु में हैं अर्थात् शरीर के अनुसार नहीं परन्तु १  
 आत्मा के अनुसार चलते हैं उन पर कोई दंड की आज्ञा नहीं है । क्योंकि २  
 जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने ख्रीष्ट यीशु में मुझे पाप की या मृत्यु का  
 व्यवस्था से निर्वन्ध किया है । क्योंकि जो व्यवस्था से अन्धाना या इस लिये ३  
 कि शरीर के द्वारा से वह दुर्व्यस्य या उस को ईश्वर ने किया अर्थात् अपने ही  
 पुत्र को पाप के शरीर की समानता में और पाप के कारण भेजके शरीर में  
 पाप पर दंड की आज्ञा दी है । इस लिये कि व्यवस्था की विधि हमों में जो ४  
 शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं पूरी किई जाय ॥

जो शरीर के अनुसारी हैं सो शरीर की बातों पर मन लगाते हैं पर जो ५  
 आत्मा के अनुसारी हैं सो आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं । शरीर पर मन ६  
 लगाना तो मृत्यु है परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और कल्याण है । इस ७  
 कारण कि शरीर पर मन लगाना ईश्वर से शत्रुता करना है क्योंकि वह मन  
 ईश्वर की व्यवस्था के वश में नहीं होता है क्योंकि हा नहीं सकता है । और ८  
 जो शारीरिक दशा में हैं सो ईश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते हैं । पर जब कि ९  
 ईश्वर का आत्मा तुम में बसता है तो तुम शारीरिक दशा से नहीं परन्तु  
 आत्मिक दशा में हो । यदि किसी में ख्रीष्ट का आत्मा नहीं है तो वह उस  
 का जन नहीं है । परन्तु यदि ख्रीष्ट तुम में है तो वह पाप के कारण मृतक है १०  
 पर आत्मा धर्म के कारण जीवन है । और जिस ने यीशु को मृतकों ने से ११  
 उठाया उस का आत्मा यदि तुम में बसता है तो जिस ने ख्रीष्ट को मृतकों में  
 से उठाया सो तुम्हारे सरनहार देहों को भी अपने आत्मा के कारण जो तुम में  
 बसता है जिलावेगा ॥

इस लिये हे भाइयो इस शरीर के शृणी नहीं हैं कि शरीर के अनुसार दिन १२

१३ काटें । क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटो तो मरेगो परन्तु यदि  
 १४ आत्मा से देह की क्रियाओं को मारो तो जीओगो । क्योंकि जितने लोग ईश्वर  
 १५ के आत्मा के चलाये चलते हैं वेही ईश्वर के पुत्र हैं । क्योंकि तुम ने दासत्व  
 का आत्मा नहीं पाया है कि फिर भयमान होओ परन्तु लेपालकपन का आत्मा  
 १६ पाया है जिस से हम हे अब्बा अर्थात् हे पिता पुकारते हैं । आत्मा आप ही  
 १७ हमारे आत्मा के संग साक्षी देता है कि हम ईश्वर के सन्तान हैं । और यदि  
 सन्तान हैं तो अधिकारी भी हैं हां ईश्वर के अधिकारी और खीष्ट के संगी  
 अधिकारी हैं कि हम तो उस के संग दुःख उठाते हैं जिस्तें उस के संग महिमा  
 भी पावें ॥

१८ क्योंकि मैं समझता हूं कि इस वर्तमान समय के दुःख उस महिमा के आगे  
 १९ जो हमों में प्रगट किई जायगी, कुछ गिनने के योग्य नहीं हैं । क्योंकि सृष्टि की  
 २० प्रत्याशा ईश्वर के सन्तानों के प्रगट होने की वाट जोहती है । क्योंकि सृष्टि  
 अपनी इच्छा से नहीं परन्तु अधीन करनेहार के ओर से व्यर्थता के अधीन इस  
 २१ आशा से किई गई . कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से उद्धार पाके  
 २२ ईश्वर के सन्तानों की महिमा की निर्वन्धता प्राप्त करेगी । क्योंकि हम जानते हैं  
 २३ कि सारी सृष्टि अब लों एक संग कहरती और पीड़ा पाती है । और केवल वह  
 नहीं पर हम लोग भी इस लिये कि हमारे पास आत्मा का पहिला फल है  
 आप ही अपने में कहरते हैं और लेपालकपन की अर्थात् अपने देह के उद्धार की  
 २४ खाट जोहते हैं । क्योंकि आशा से हमारा त्राण हुआ परन्तु जो आशा देखने में  
 आती है सो आशा नहीं है क्योंकि जो कुछ कोई देखता है वह उस की आशा  
 २५ भी क्यों रखता है । परन्तु यदि हम जो नहीं देखते हैं उस की आशा रखते हैं  
 तो धीरज से उस की वाट जोहते हैं ॥

२६ इस रीति से पवित्र आत्मा भी हमारी दुर्बलताओं में सहायता करता है  
 क्योंकि हम नहीं जानते हैं कौन सी प्रार्थना किस रीति से किया चाहिये परन्तु  
 २७ आत्मा आप ही अकथ्य हाथ मार मारके हमारे लिये बिन्ती करता है । और  
 हृदयों का छांचनेहारा जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है कि वह पवित्र  
 लोगों के लिये ईश्वर की इच्छा के समान बिन्ती करता है ॥

२८ और हम जानते हैं कि जो लोग ईश्वर को प्यार करते हैं उन के लिये सब  
 बातें मिलके भलाई ही का कार्य करती हैं अर्थात् उन के लिये जो उस की  
 २९ इच्छा के समान खुलाये हुए हैं । क्योंकि जिन्हें उस ने आगे से जाना उन्हें उस  
 ने अपने पुत्र के रूप के सदृश होने का आगे से ठहराया जिस्तें वह बहुत भाइयों  
 ३० में पहिलौठा होवे । फिर जिन्हें उस ने आगे से ठहराया उन्हें बुलाया भी और  
 जिन्हें बुलाया उन्हें धर्मी ठहराया भी और जिन्हें धर्मी ठहराया उन्हें महिमा  
 भी दिई ॥

३१ तो हम इन बातों पर क्या कहें . यदि ईश्वर हमारी ओर है तो हमारे  
 ३२ विरुद्ध कौन होगा । जिस ने अपने निज पुत्र को न रख छोड़ा परन्तु उसे हम सभी  
 ३३ के लिये सोंप दिया सो उस के संग हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा । ईश्वर

के द्वार पर मंडली के तंबू के पास खड़ा किया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उस पर बलिदान की भेंट और होम की भेंट चढ़ाई ॥

और उस ने स्नानपात्र को मंडली के तंबू के और यज्ञवेदी के मध्य में रक्खा ३० और नहाने के लिये उस में पानी डाला । तब उसने मूसा और हारून और उस ३१ के बेटों ने अपने हाथ पांव धोये । जब वे मंडली के तंबू में प्रवेश करते और ३२ यज्ञवेदी के पास आते तब नहाने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

और उस ने तंबू की और यज्ञवेदी की चारों ओर आंगन पर और आंगन के ३३ द्वार पर ओठ टांगी सो मूसा ने सब कार्य पूरा किया ॥

तब मेघ ने मंडली के तंबू को ढाँपा और तंबू में परमेश्वर का तेज भर गया । ३४ और मूसा मंडली के तंबू में प्रवेश न कर सका इस लिये कि मेघ उस पर ठहरा ३५ था और तंबू परमेश्वर के तेज से भरा था । और जब मेघ तंबू पर से ऊपर ३६ उठाया जाता था तब इसराएल के संतान अपनी समस्त यात्रों में घटे जाते थे । परन्तु जब मेघ ऊपर उठाया न जाता था तब वे उस के उठाये जाने लगे यात्रा ३७ न करते थे । क्योंकि दिन को परमेश्वर का मेघ और रात को आग तंबू पर ३८ इसराएल के सारे घरानों की दृष्टि में उन की समस्त यात्रों में ठहरता था ॥

## लैव्यव्यवस्था की पुस्तक ।

पहिला पृष्ठ ।

और परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मंडली के तंबू में से यह वचन उसे १ कहा । कि इसराएल के संतानों से बोल और उन्हें कह कि यदि कोई तुम्हें से २ परमेश्वर के लिये भेंट लावे तो तुम डोर में से अर्थात् गाय बैल और भेड़ बकरी में से अपनी भेंट लाओ ॥

यदि उस की भेंट गाय बैल में से बलिदान की भेंट होवे तो निम्नोक्त नर ३ लावे वह मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे अपनी प्रसन्नता के लिये लावे । और वह बलिदान की भेंट के मिर पर अपना हाथ रखे और वह उस ४ के प्रायश्चित्त के लिये गृह्य किया जायगा । और वह उस बैल को परमेश्वर के ५ आगे बलि करे और हारून के बेटे याजक लाहू को निकट लावे और उस लाहू को यज्ञवेदी के चारों ओर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है किड़के । तब वह ६ उस भेंट के बलिदान की ग्याल निकाले और उसे टुकड़ा टुकड़ा करे । और हारून ७ के बेटे याजक यज्ञवेदी पर आग रखें और उस पर लकड़ी चुनें । और हारून के ८ बेटे याजक उस के टुकड़ों को और सिर और चिकनाई को उन लकड़ियों पर जो

जिस पर दया किया चाहता है उस पर दया करता है परन्तु जिसे कठोर  
 १९ चाहता है उसे कठोर करता है । तो तू मुझ से कहेगा यह फिर त्राय क्यों  
 २० है क्योंकि कौन उस की इच्छा का साम्रा करता है । हाँ पर हे मनुष्य तू को  
 जो ईश्वर से विवाह करता है . क्या गड़ी हुई वस्तु गड़नेहारे से कहेगी  
 २१ मुझे इस रीति से क्यों बनाया । अथवा क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधि  
 नहीं है कि एक ही पिंड में से एक पात्र को आदर के लिये और दूसरे  
 २२ अनादर के लिये बनावे । और यदि ईश्वर ने अपना क्रोध दिखाने  
 और अपना सामर्थ्य प्रगट करने की इच्छा में क्रोध के पात्रों की जाति  
 २३ के योग्य किये गये थे वड़े धीरज में सही . और दया के पात्रों पर  
 उस ने सहिमा के लिये आगे से तैयार किया अपनी सहिमा के धन को  
 २४ करने की इच्छा किई तो तू कौन है जो विवाह करे । इन्हीं को उस ने सु  
 भी अर्थात् हमों को जो केवल विह्वलियों में से नहीं परन्तु अन्यदेशियों में  
 २५ हैं । जैसा वह दोगेया के पुस्तक में भी कहता है कि जो मेरे लोग न थे उन  
 २६ अपने लोग कहेंगे और जो प्यारी न थी उन प्यारी कहेंगे । और जिस स्या  
 लोगों से कहा गया कि तुम मेरे लोग नहीं हो यहां वे जीवते ईश्वर के स  
 २७ कहावेंगे । परन्तु यिज्याह इसायेल के विषय में प्रकृतता है यद्यपि इनाय  
 सन्तानों की गिन्ती समुद्र के बालू की नाईं हो . तोभी जो बच रहेंगे उन्हें  
 २८ रक्षा होगी । क्योंकि परमेश्वर यात को पूरी करनेवाला और धर्म से  
 २९ निप्राहनेवाला है कि वह देश में यात को शीघ्र समाप्त करेगा । जैसा यिज्या  
 ने आगे भी कहा था कि यदि सेनाओं का प्रभु हमारे लिये वंश न छोड़े  
 तो हम सदेम की नाईं हो जाते और अमोरा के समान किये जाते ।  
 ३० तो हम क्या करें . यह कि अन्यदेशियों ने जो धर्म का पीछा नहीं करे  
 ३१ धर्म को अर्थात् उस धर्म को जो विश्वास से है प्राप्त किया . परन्तु इस  
 लोग धर्म की व्यवस्था का पीछा करते हुए धर्म की व्यवस्था को नहीं पहुंच  
 ३२ किस लिये . इस लिये कि वे विश्वास से नहीं परन्तु जैसे व्यवस्था के कर्म  
 ३३ उस का पीछा करते थे कि उन्होंने ने उस ठेस के पत्थर पर ठोकर खाई .  
 लिखा है देखो मैं सियोन में एक ठेस का पत्थर और ठोकर की छटान रख  
 हूं और जो कोई उस पर विश्वास करे सो लज्जित न होगा ॥

दसवां पर्व ।

१. हे भाइयो इसायेल के लिये मेरे मन की इच्छा और मेरी प्रार्थना जो  
 २ ईश्वर से करता हूं उन के त्राय के लिये है । क्योंकि मैं उन पर साक्षी देता  
 ३ कि उन को ईश्वर के लिये धुन रहती है परन्तु ज्ञान की रीति से नहीं । जो  
 वे ईश्वर के धर्म को न चीन्हके पर अपना ही धर्म स्थापन करने का  
 करके ईश्वर के धर्म के अधीन नहीं हुए ।  
 ४. क्योंकि धर्म के निमित्त हर एक विश्वास करनेहारे के लिये खीष्ट व्यव  
 ५ का अन्त है । क्योंकि मुझ उस धर्म के विषय में जो व्यवस्था से है लिखत  
 ६ कि जो मनुष्य यह बातें पालन करे सो उन से जीयेगा । परन्तु जो

के चुने हुए लोगों पर दोग कौन लगावेगा . क्या ईश्वर जो धर्मी ठहराने द्वारा है । दंड की आज्ञा देने द्वारा कौन दोगा . क्या ख्रीष्ट जो मरा हाँ जो जी भी २४ उठा जो ईश्वर की दहिनी ओर भी है जो हमारे लिये जिन्नी भी करता है । कौन हमें ख्रीष्ट के प्रेम से अलग करेगा . क्या क्रेश वा संकट वा उपद्रव वा २५ अकाल वा नंगाई वा जोखिम वा खड्ग । जैसा लिखा है कि तारे लिये हम दिन २६ भर घात किये जाते हैं हम बध होनेवाली भेड़ों की नाईं गिने गये हैं । नहीं २७ पर इन सब बातों में हम उस के द्वारा ने जिस ने हमें प्यार किया है अपयन्त से भी अधिक हैं । क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु न जीवन न २८ दूतगण न प्रधानता न पराक्रम न वर्तमान न भविष्य . न ऊँचाई न गहिराई न २९ और कोई सृष्टि हमें ईश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु से है अलग कर सकेगी ॥

नयां पर्व १

मैं ख्रीष्ट में सत्य कहता हूँ मैं झूठ नहीं बोलता हूँ और मेरा मन भी पवित्र १ आत्मा में मेरा साक्षी है . कि मुझे बड़ा शोक और मेरे मन को निरन्तर खेद २ रहता है । क्योंकि मैं आप प्रार्थना कर सकता कि अपने भाइयों के लिये जो ३ शरीर के भाव मे मेरे कुटुंब हैं मैं ख्रीष्ट में स्थापित होता । वे इसायेली लोग हैं ४ और लेपालकपन और तेज और नियम और व्यवस्था का निरूपण और सेवकाई और प्रतिज्ञा उन की हैं । पितर लोग भी इन्हीं के हैं और उन में से शरीर के भाव ५ से ख्रीष्ट हुआ जो सर्वप्रधान ईश्वर सर्वदा धन्य है . आमीन ॥

पर ऐसा नहीं है कि ईश्वर का वचन टल गया है क्योंकि सब लोग इनायेंली ६ नहीं जो इसायेल से जन्मे हैं . और न हम लिये कि इस्राएली के वंश हैं वे सब ७ उस के सन्तान हैं परन्तु (लिखा है) इसहाक से जो हो सो तेरा वंश कहावेगा । अर्थात् शरीर के जो सन्तान सो ईश्वर के सन्तान नहीं हैं परन्तु प्रतिज्ञा के ८ सन्तान वंश गिने जाते हैं । क्योंकि यह वचन प्रतिज्ञा का था कि हम समय के ९ अनुसार मैं आऊंगा और सारः का पुत्र होगा । और कंचन यह नहीं परन्तु जय १० ख्रिश्चा भी एक से अर्थात् हमारे पिता इसहाक से गर्भवती हुई . और बालक ११ नहीं जन्मे थे और न कुछ भला अथवा बुरा किया था तब ही उस से कहा गया कि बड़का कुटुंब का दास होगा . हम लिये कि ईश्वर की मनसा जो हम के १२ चुन लेने के अनुसार है कस्मों के हेतु से नहीं परन्तु चुनानेवाले की ओर से चली रहते । जैसा लिखा है कि मैं ने याकूब को प्यार किया परन्तु इसी को अप्रिय १३ जाना ॥

तो हम क्या कहें . क्या ईश्वर के यहां अन्याय है . ऐसा न हो । क्योंकि यह १४ सूमा-मे कहता है मैं जिस किसी पर दया करूं उस पर दया करूंगा और जिस किसी पर कृपा करूं उस पर कृपा करूंगा । सो यह न तो चाहेनेवाले का न तो १५ दौड़नेवाले का परन्तु दया करनेवाले ईश्वर का काम है । क्योंकि धर्मपुस्तक १६ फिरजन से कहता है कि मैं ने तुम्हें इसी ध्यान के लिये बड़ाया कि तुम्हें मैं अपना पराक्रम दिखाऊँ और कि मेरा नाम सारी पृथिवी में प्रचार किया जाय । सो यह १७



६ वर्तमान समय में भी अनुग्रह में चुने हुए कितने लोग बच रहे हैं । जो यह अनुग्रह से हुआ है तो फिर कर्मों से नहीं है नहीं तो अनुग्रह अब अनुग्रह नहीं है । पर यदि कर्मों से हुआ है तो फिर अनुग्रह नहीं है नहीं तो कर्म अब कर्म नहीं है । तो क्या है । इसायेली लोग किस को ठुंठुते हैं उस को उन्होंने प्राप्त नहीं किया है परन्तु चुने हुएों ने प्राप्त किया है और दूसरे लोग कठोर किये गये हैं । जैसा लिखा है कि ईश्वर ने उन्हें आज के दिन लों जड़ता का आराम हाँ आँखें जो न देखें और कान जो न सुनें दिये हैं । और डाऊड कहता है उन की मेज उन के लिये फंदा और जाल और ठाँकर का कारण और प्रतिफल हो जाय । उन की आँखों पर अन्धेरा छा जाय कि ये न देखें और तू उन की पीठ को नित्य झुका दे ॥

११ तो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने ने इस लिये ठाँकर खाई कि गिर पड़ें । ऐसा न हो परन्तु उन के गिरने के हेतु से अन्यदेशियों को आग्रह हुआ है कि उन से डाह करवावे । परन्तु यदि उन के गिरने में जगत का धन और उन की हानि से अन्यदेशियों का धन हुआ तो उन की भरपूरी से वह धन कितना अधिक करके होगा । मैं तुम अन्यदेशियों से कहता हूँ . जय कि मैं अन्यदेशियों के लिये प्रेरित हूँ मैं अपनी सेवकाई की बढ़ाई करता हूँ . कि किसी रीति से मैं उन से जो मेरे शरीर के ऐसे हैं टाह करवाऊँ उन में से कई एक को भी बचाऊँ । क्योंकि यदि उन के त्याग दिये जाने से जगत का मिलाप हुआ तो उन के ग्रहण किये जाने से क्या होगा . क्या मृतकों में से जीवन नहीं । यदि पहिला फल पवित्र है तो पिंड भी पवित्र है और यदि जड़ पवित्र है तो डालियाँ भी पवित्र हैं । परन्तु यदि डालियाँ में से कितनी तोड़ डाली गईं और तू जंगली जलपाई होके इन्हों में साटा गया है और जलपाई के वृक्ष की जड़ और तेल का भागी हुआ है तो डालियों के विरुद्ध घमंड मत कर । परन्तु जो तू घमंड करे तौभी तू जड़ का आधार नहीं परन्तु जड़ तेरा आधार है । फिर तू कहेगा डालियाँ तोड़ डाली गईं कि मैं साटा जाऊँ । अच्छा वे अविश्वास के हेतु से तोड़ डाली गईं पर तू बिश्वास से खड़ा है . अभिमानी मत हो परन्तु भय कर । क्योंकि यदि ईश्वर ने स्वाभाविक डालियाँ न छोड़ीं तो ऐसा न हो कि तुम भी न छोड़े । सो ईश्वर की कृपा और कड़ाई को देख . जो गिर पड़े उन पर कड़ाई परन्तु तुम पर जो तू उस की कृपा में बना रहे तो कृपा . नहीं तो तू भी काट डाला जायगा । और वे भी जो अविश्वास में न रहें तो साटे जायेंगे क्योंकि ईश्वर उन्हें फिर साट सकता है । क्योंकि यदि तू उस जलपाई के वृक्ष से जो स्वभाव से जंगली है काटा गया और स्वभाव के विरुद्ध अच्छी जलपाई के वृक्ष में साटा गया तो कितना अधिक करके ये जो स्वाभाविक डालियाँ हैं अपने ही जलपाई के वृक्ष में साटे जायेंगे ॥

२५ और हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूँ कि तुम इस भेद से अनजान रहे ऐसा न हो कि अपने लेखे बुद्धिमान होओ अर्थात् कि जब लों अन्यदेशियों की सम्पूर्ण संख्या प्रवेश न करे तब लों कुछ कुछ इसायेलियों को कठोरता रहेगी . और तब

विश्वास से है सो यूँ कहता है कि अपने मन में मत कह कौन स्वर्ग पर चढ़ेगा . यह तो खोष्ट को उतार लाने के लिये होता . अथवा कौन पाताल में उतरेगा . यह तो खोष्ट को मृतकों में से ऊपर लाने के लिये होता । फिर क्या कहता है . परन्तु यद्यन तेरे निकट तेरे मुँह में और तेरे मन में है . यह तो विश्वास का यद्यन है जो हम प्रचार करते हैं . कि यदि तू अपने मुँह से प्रभु यीशु को मान लेवे और अपने मन से विश्वास करे कि ईश्वर ने उस को मृतकों में से उठाया तो तू त्राण पावेगा । क्योंकि मन से धर्म के लिये विश्वास किया जाता है और मुँह से त्राण के लिये मान लिया जाता है । क्योंकि धर्मपुस्तक कहता है कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो लज्जित न होगा । यिहूदी और यूनानी में कुछ भेद भी नहीं है क्योंकि सभी का एक ही प्रभु है जो सभी के लिये जो उस से प्रार्थना करते हैं धनी है । क्योंकि जो कोई परमेश्वर के नाम की प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा ॥

फिर जिस पर लोगों ने विश्वास नहीं किया उस से वे क्योंकर प्रार्थना करें और जिस की उन्हीं ने सुनी नहीं उस पर वे क्योंकर विश्वास करें और उपदेशक बिना वे क्योंकर सुनें । और वे जो भेजे न जायें तो क्योंकर उपदेश करें जैसा लिखा है कि जो कुशल का सुसमाचार सुनाते हैं अर्थात् भली बातों का सुसमाचार प्रचार करते हैं उन के पाँच जैसे सुन्दर हैं । परन्तु सब लोगों ने उस सुसमाचार को नहीं माना क्योंकि यिजैयाह कहता है हे परमेश्वर किस ने हमारे समाचार का विश्वास किया है । सो विश्वास समाचार ने और समाचार ईश्वर के यद्यन के द्वारा से आता है । पर मैं कहता हूँ क्या उन्हीं ने नहीं सुना . हाँ यद्यन (लिखा है) उन का शब्द मारी पृथिवी पर और उन की बातें जगत के भिवानों तक निकल गईं । पर मैं कहता हूँ क्या इसायेली लोग नहीं जानते थे . प्रहिले मूसा कहता है मैं उन्हीं पर जो एक लोग नहीं हैं तुम से बात करवाऊँगा मैं एक निर्बुद्धि लोग पर तुम से क्रोध करवाऊँगा । परन्तु यिजैयाह साहस करके कहता है कि जो मुझे नहीं डूँढ़ते थे उन से मैं पाया गया जो मुझे नहीं पूछते थे उन पर मैं प्रगट हुआ । परन्तु इसायेली लोगों को यह कहता है मैं ने मारे दिन अपने दाख एक आज्ञालंघन और विवाद करनेवाले लोग की और पसारे ॥

सम्पारदवां पर्व ।

तो मैं कहता हूँ क्या ईश्वर ने अपने लोगों को त्याग दिया है . ऐसा न हो क्योंकि मैं भी इसायेली जन इब्राहीम के वंश से और विन्यामीन के कुल का हूँ । ईश्वर ने अपने लोगों को जिन्हें उस ने आगे से जाना त्याग नहीं दिया है . क्या तुम नहीं जानते हो कि धर्मपुस्तक सल्लयाह की कथा में क्या कहता है कि यह इसायेल के विरुद्ध ईश्वर से विन्ती करता है . कि हे परमेश्वर उन्हीं ने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को घात किया है और तेरी वेदियों को खाद डाला है और मैं ही अकेला छूट गया हूँ और वे मेरा प्राण लेने चाहते हैं । परन्तु ईश्वर की वाणी उस से क्या कहती है . मैं ने अपने लिये सात सद्यस मनुष्यों को रख छोड़ा है जिन्होंने वे वाञ्छल के आगे छुटना नहीं देका है । सो इस रीति से इस

को जो आवश्यक हो उस में उन की सहायता करो . अतिथि सेवा की चेष्टा  
 १४ करो । अपने सतानेहारों को आशीस देओ . आशीस देओ . साप मत देओ ।  
 १५ आनन्द करनेहारों के संग आनन्द करो और रोनेहारों के संग रोओ । एक  
 १६ दूसरे की ओर एक सां मन रखो . ऊंचा मन मत रखो परन्तु दोनों से संगति  
 १७ रखो . अपने लेखे युद्धिमान मत होओ । किसी से घुराई के बदले घुराई मत  
 १८ करो . जो बातें सब मनुष्यों के आगे भली हैं उन की चिन्ता किया करो । यदि  
 १९ हो सके तुम तो अपनी ओर से सब मनुष्यों के संग मिले रहो । हे प्यारे अपना  
 पलटा मत लेओ परन्तु क्रोध को टांघ देओ क्योंकि लिखा है पलटा लेना मेरा  
 २० काम है . परमेश्वर कहता है मैं प्रतिफल देऊंगा । इस लिये यदि तेरा शत्रु भूखा  
 हो तो उसे खिला यदि प्यासा हो तो उसे पिला क्योंकि यह करने से तू उस के  
 २१ सिर पर आग के अंगारों की ठेरी लगावेगा । घुराई से मत हार जा परन्तु भलाई  
 से घुराई को जीत ले ॥

### तेरायां पर्व ।

- १ हर एक मनुष्य प्रधान अधिकारियों के अधीन होवे क्योंकि कोई अधिकार  
 नहीं है जो ईश्वर की ओर से न हो पर जो अधिकार हैं सो ईश्वर से उधारये
- २ हुए हैं । इस से जो अधिकार का विरोध करता है सो ईश्वर की विधि का
- ३ साम्रा करता है और साम्रा करनेहार अपने लिये दंड पावेंगे । क्योंकि अध्या  
 लोग भले कामों से नहीं परन्तु खुरे कामों से डरानेहार हैं . क्या तू अधिकारी  
 से निडर रहा चाहता है . भला काम कर तो उस से तेरी सराहना होगी क्योंकि
- ४ यह तेरी भलाई के लिये ईश्वर का सेवक है । परन्तु जो तू घुरा काम करे तो  
 भय कर क्योंकि यह खड्ग को वृथा नहीं बांधता है इस लिये कि यह ईश्वर का
- ५ सेवक अर्थात् कुकर्मों पर क्रोध पहुंचाने का दंडकारक है । इस लिये अधीन  
 होना केवल उस क्रोध के कारण नहीं परन्तु विवेक के कारण भी अग्रह है ।
- ६ इस हेतु से कर भी देओ क्योंकि वे ईश्वर के सेवक हैं जो इसी बात में लगे  
 ७ रहते हैं । सो सभी को जो जो कुछ देना उचित है सो सो देओ जिसे कर देना  
 हो उसे कर देओ जिसे महसूल देना हो उसे महसूल देओ जिस से भय करना  
 हो उस से भय करो जिस का आदर करना हो उस का आदर करो ॥
- ८ किसी का कुछ ऋण मत धारो केवल एक दूसरे को प्यार करने का ऋण
- ९ क्योंकि जो दूसरे को प्यार करता है उस ने व्यवस्था पूरी किई है । क्योंकि यह  
 कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे  
 लालच मत कर और कोई दूसरी आज्ञा यदि होय तो इस बात में अर्थात् तू
- १० अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर सब का संग्रह है । प्रेम पड़ोसी की कुछ  
 घुराई नहीं करता है इस लिये प्रेम करना व्यवस्था को पूरा करना है ॥
- ११ यह इस लिये भी किया चाहिये कि तुम समय को जानते हो कि नींद से  
 हमारे जागने का समय अब हुआ है क्योंकि जिस समय में हम ने विश्वास
- १२ किया उस समय से अब हमारा त्राण अधिक निकट है । रात बढ गई है और  
 दिन निकट आया है इस लिये हम अन्धकार के कामों को उतारके ज्योति की

सारा इसायेल आण पावेगा जैसा लिखा है कि बखानेद्वारा सियोन से आवेगा और अधर्मीयों को याकूब से अलग करेगा । अब मैं उन के पापों को दूर २७ करूँगा तब उन से यही मेरी ओर से नियम होगा । वे सुसमाचार के भाव से २८ तुम्हारे कारण वैरी हैं परन्तु चुन लिये जाने के भाव से पितरों के कारण प्यारे हैं । क्योंकि ईश्वर अपने वरदानों से और झुलाहट से कभी पकृतानेवाला नहीं । २९ क्योंकि जैसे तुम ने आगे ईश्वर की आज्ञा लंघन किई परन्तु अभी उन के आज्ञा ३० उलंघन के हेतु से तुम पर दया किई गई है । तैसे इन्होंने ने भी अब आज्ञा लंघन ३१ किई है कि तुम पर जो दया किई जाती है उस के हेतु से उन पर भी दया किई जाय । क्योंकि ईश्वर ने सभी को आज्ञा उलंघन में बन्द कर रखा इस लिये कि ३२ सभी पर दया करे ॥

आज्ञा ईश्वर के धन और बुद्धि और ज्ञान की गंभीरता . उस के विचार कैसे ३३ अथाह और उस के मार्ग कैसे अगम्य हैं । क्योंकि परमेश्वर का मन किस ने ३४ जाना अथवा उस का मंत्री कौन हुआ । अथवा किस ने उस को पहिले दिया ३५ और उस का प्रतिफल उस को दिया जायगा । क्योंकि उस से और उस के द्वारा ३६ और उस के लिये सब कुछ है . उस का गुणानुवाद सर्वदा होय . आमीन ॥

बारहवां पर्व ।

सो हे भाइयो मैं तुम से ईश्वर की दया के कारण विन्ती करता हूँ कि अपने १ शरीरों को नीचता और पवित्र और ईश्वर की प्रसन्नता योग्य बलिदान करके चढ़ाओ कि यह तुम्हारी मानसिक सेवा है । और इस संसार की रीति पर मत २ चला करो परन्तु तुम्हारे मन के नये होने से तुम्हारी चाल चलन बदली जाय जिस्तें तुम परखो कि ईश्वर की इच्छा अर्थात् उत्तम और प्रसन्नता योग्य और पूरा कार्य क्या है । क्योंकि जो अनुग्रह मुझे दिया गया है उस से मैं तुम में के ३ हर एक जन से कहता हूँ कि जो मन रखना उचित है उस से ऊँचा मन न रखे परन्तु सेवा मन रखे कि ईश्वर ने हर एक को विश्वास का जो परिमाण बाँट दिया है उस के अनुसार उस को सुबुद्धि मन होय । क्योंकि जैसा हमें एक देह में बहुत ४ अंग हैं परन्तु सब अंगों को एक ही काम नहीं है . तैसा हम जो बहुत हैं खोप ५ में एक देह हैं और पृथक् करके एक दूसरे के अंग हैं । और जो अनुग्रह हमें ६ दिया गया है जब कि उस के अनुसार भिन्न भिन्न वरदान हमें मिले हैं तो यदि भविष्यद्वाणी का दान हो तो हम विश्वास के परिमाण के अनुसार बोलें . अथवा ७ सेवकाई का दान हो तो सेवकाई में लगे रहें . अथवा जो सिखानेद्वारा हो सो शिक्षा में लगा रहे . अथवा जो उपदेशक हो सो उपदेश में लगा रहे . जो बाँट ८ देवे सो सीधाई से बाँटे . जो अध्यक्षाता करे सो यत्न से करे . जो दया करे सो दर्प से करे ॥

प्रेम निष्कपट होय . घुराई से घिन करो भलाई में लगे रहो । आन्वीय प्रेम ९० से एक दूसरे पर मया रखो . परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बड़ चलो । यत्न ९१ करने में आलसी मत हो . आत्मा में अनुरागी हो . प्रभु की सेवा किया करो । आशा से आनन्दित हो . क्लेश में स्थिर रहो . प्रार्थना में लगे रहो । पवित्र लोगों ९२ १३

- मंडली को भी नमस्कार . इपेनित मेरे प्यारे को जो खीष्ट के लिये आशिय  
 ६ का पहिला फल है नमस्कार । मरियम को जिस ने हमारे लिये बहुत परिश्रम  
 ७ किया नमस्कार । अन्द्रेनिक और यूनिय मेरे कुटुंबों और मेरे संगी बन्धुओं को  
 ८ जो प्रेरितों में प्रसिद्ध हैं और मुझ से पहिले खीष्ट में हुए थे नमस्कार । अम्पलिया  
 ९ प्रभु में मेरे प्यारे को नमस्कार । उर्वान खीष्ट में हमारे सहकर्मी को और  
 १० स्ताखु मेरे प्यारे को नमस्कार । अपिल्लि को जो खीष्ट में जांचा हुआ है  
 ११ नमस्कार . अरिस्तबूल के घराने के लोगों को नमस्कार । हेरोदियोन मेरे कुटुंब  
 को नमस्कार . नर्किस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं उन्हीं को नमस्कार ।  
 १२ जुफेना और जुफोसा को जिन्होंने ने प्रभु में परिश्रम किया नमस्कार . प्यारे  
 १३ परसी को जिस ने प्रभु में बहुत परिश्रम किया नमस्कार । रुफ को जो प्रभु में  
 १४ चुना हुआ है और उस की औ मेरी माता को नमस्कार । असुक्रित औ फिलेगोन  
 औ हर्मा औ पात्रोवा औ हर्मी को और उन के संग के भाइयों को नमस्कार ।  
 १५ फिल्लोग औ यूलिया को और नीरिय और उस की बहिन को और उलुम्पा को  
 १६ और उन के संग के सब पवित्र लोगों को नमस्कार । एक दूसरे को पवित्र घूमा  
 लेकर नमस्कार करो . तुम को खीष्ट की मंडलियों की ओर से नमस्कार ।  
 १७ हे भाइयो मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत  
 जो तुम ने पाई है नाना भांति के विरोध और ठोकर डालते हैं उन्हें देख रखा  
 १८ और उन से फिर जाओ । क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु खीष्ट की नहीं परन्तु  
 अपने पेट की सेवा करते हैं और चिकनी और मीठी बातों से सूधे लोगों के  
 १९ मन को धोखा देते हैं । तुम्हारे आज्ञापालन का चर्चा सब लोगों में फैल गया  
 है इस से मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम  
 २० भलाई के लिये, खुद्विमान पर सुराई के लिये सूधे होओ । शांति का ईश्वर  
 शैतान को शीघ्र तुम्हारे पाओं तले कुचलेगा . हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह  
 तुम्हारे संग होय ।  
 २१ तिमोथिय मेरे सहकर्मी का और लूकिय औ यासेन औ सेसिपातर मेरे  
 २२ कुटुंबों का तुम से नमस्कार । मुझ तर्तिय पत्री के लिखनेहारे का प्रभु में तुम से  
 २३ नमस्कार । गायस मेरे और सारी मंडली के आतिथ्यकारी का तुम से नमस्कार .  
 २४ इरास्त का जो नगर का मंडारी है और भाई क्वार्ट का तुम से नमस्कार । हमारे  
 प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम सभी के संग होय . आमीन ॥  
 २५ जो मेरे सुसमाचार के अनुसार और यीशु खीष्ट के विषय के उपदेश के अनुसार  
 २६ अर्थात् उस भेद के प्रकाश के अनुसार तुम्हें स्थिर कर सकता है . जो भेद  
 सनातन से गुप्त रखा गया था परन्तु अब प्रगट किया गया है और सनातन  
 ईश्वर की आज्ञा से भविष्यदाणी के पुस्तक के द्वारा सब देशों के लोगों को  
 २७ बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञाकारी हो जायें . उस को अर्थात् अद्वैत  
 खुद्विमान ईश्वर को यीशु खीष्ट के द्वारा से धन्य हो जिस का गुणानुवाद सर्वदा  
 होवे । आमीन ॥

मिलम पहिन लें । जैसा दिन को चाहिये तैसा हम शुभ रीति से चलें । लीला १३  
क्रीड़ा और मत्तवालपन में अथवा व्यभिचार और लुब्धपन में अथवा घोर और डाह में  
न चलें । परन्तु प्रभु यीशु ख्रीष्ट को पहिन ले और शरीर के लिये उस के अभि- १४  
लाषों को पूरा करने को चिन्ता मत करो ।

चौदहवां पर्व ।

जो विश्वास में दुर्बल है उसे अपनी संगति में ले लेशो पर उस के मत का १  
विचार करने को नहीं । एक जन विश्वास करता है कि सब कुछ खाना उचित २  
है परन्तु जो दुर्बल है सो सागपात खाता है । जो खाता है सो न खानेहारे को ३  
तुच्छ न जाने और जो नहीं खाता है सो खानेहारे को दोषी न ठहरावे क्योंकि  
ईश्वर ने उस को ग्रहण किया है । तू कौन है जो पराये सेवक को दोषी ठहराता ४  
है । वह अपने ही स्वामी के आगे खड़ा होता है अथवा गिरता है । परन्तु वह  
खड़ा रहेगा क्योंकि ईश्वर उसे खड़ा रख सकता है । एक जन एक दिन को ५  
दूसरे दिन से बड़ा जानता है दूसरा जन हर एक दिन को एक सौ जानता है ।  
हर एक जन अपने ही मन में निश्चय कर लेवे ।

जो दिन को मानता है सो प्रभु के लिये मानता है और जो दिन को नहीं ६  
मानता है सो प्रभु के लिये नहीं मानता है । जो खाता है सो प्रभु के लिये खाता  
है क्योंकि वह ईश्वर का धन्य मानता है और जो नहीं खाता है सो प्रभु के  
लिये नहीं खाता है और ईश्वर का धन्य मानता है । क्योंकि हम में से कोई ७  
अपने लिये नहीं जीता है और कोई अपने लिये नहीं मरता है । क्योंकि यदि हम ८  
जीवें तो प्रभु के लिये जीते हैं और यदि मरें तो प्रभु के लिये मरते हैं सो यदि  
हम जीवें अथवा यदि मरें तो प्रभु के हैं । क्योंकि इसी बात के लिये ख्रीष्ट मरा ९  
और उठा और फिरके जीया भी कि वह मृतकों और जीवतों का भी प्रभु होवे ।  
तू अपने भाई को क्यों दोषी ठहराता है अथवा तू भी अपने भाई को क्यों तुच्छ १०  
जानता है क्योंकि हम सब ख्रीष्ट के विचार आसन के आगे खड़े होंगे । क्योंकि ११  
लिखा है कि परमेश्वर कहना है जो मैं जीता हूँ तो मेरे आगे हर एक घुटना  
भुकेगा और हर एक जीव ईश्वर के आगे सान लेगी । सो हम में से हर एक १२  
ईश्वर को अपना अपना लेखा देगा ।

सो हम अब फिर एक दूसरे को दोषी न ठहरावे परन्तु तुम यही ठहराओ १३  
कि भाई के आगे हम ठेस अथवा ठाकर का कारण न रखेंगे । मैं जानता हूँ १४  
और प्रभु यीशु से सुके निश्चय हुआ है कि कोई वस्तु आप से अशुद्ध नहीं है कवल  
जो जिस वस्तु को अशुद्ध जानता है उस के लिये वह अशुद्ध है । यदि तरे भोजन १५  
के कारण तेरा भाई उदास होता है तो तू अब प्रेम की रीति से नहीं चलता है ।  
जिस के लिये ख्रीष्ट मूआ उस को तू अपने भोजन के द्वारा से नाश मत कर ।

सो तुम्हारी भलाई की निन्दा न किई जाय । क्योंकि ईश्वर का राज्य खाना १६  
पीना नहीं है परन्तु धर्म और मिलाप और आनन्द जो यथिय आत्मा से है । १७  
क्योंकि जो इन बातों में ख्रीष्ट की सेवा करता है सो ईश्वर को भावता और १८  
सनुषों के यदां भला ठहराया जाता है । इस लिये हम मिलाप की बातों और १९



जगत ने ज्ञान के द्वारा से ईश्वर को न जाना तो ईश्वर की इच्छा हुई कि  
 २२ उपदेश की मूर्खता के द्वारा से विश्वास करनेहारों को बचावे । यहूदी लोग  
 २३ तो चिन्ह मांगते हैं और यूनानी लोग भी ज्ञान ढूँढ़ते हैं . परन्तु हम लोग क्रूश  
 पर मारे गये खीष्ट का उपदेश करते हैं जो यहूदियों को ठोकर का कारण और  
 २४ यूनानियों को मूर्खता है . परन्तु उन्हीं को हां यहूदियों को और यूनानियों को  
 भी जो बुलाये हुए हैं ईश्वर का सामर्थ्य और ईश्वर का ज्ञानरूपी खीष्ट है ।  
 २५ क्योंकि ईश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक ज्ञानवान है और ईश्वर की  
 दुर्बलता मनुष्यों से अधिक शक्तिमान है ॥

२६ क्योंकि हे भाइयो तुम अपनी बुलाहट को देखते हो कि न तुम में शरीर के  
 २७ अनुसार बहुत ज्ञानवान न बहुत सामर्थी न बहुत कुलीन हैं । परन्तु ईश्वर ने  
 जगत के मूर्खों को चुना है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे और जगत के  
 २८ दुर्बलों को ईश्वर ने चुना है कि शक्तिमानों को लज्जित करे । और जगत के  
 अधमों और तुच्छों को हां उन्हें जो नहीं हैं ईश्वर ने चुना है कि उन्हें जो हैं  
 २९ लोप करे . जिस्ते कोई प्राणी ईश्वर के आगे घमंड न करे । उसी से तुम खीष्ट  
 यीशु में हुए हो जो ईश्वर की ओर से हमों को ज्ञान और धर्म और पवित्रता  
 ३१ और उद्धार हुआ है . जिस्ते जैसा लिखा है जो बड़ाई करे सो परमेश्वर के  
 विषय में बड़ाई करे ॥

### दूसरा पर्व ।

१ हे भाइयो मैं जब तुम्हारे पास आया तब बचन अथवा ज्ञान की उत्तमता से  
 २ तुम्हें ईश्वर की साक्षी सुनाता हुआ नहीं आया । क्योंकि मैं ने यही ठहराया कि  
 तुम्हों में और किसी बात को न जानूँ केवल यीशु खीष्ट को हां क्रूश पर मारे गये  
 ३ खीष्ट को । और मैं दुर्बलता और भय के साथ और बहुत कांपता हुआ तुम्हारे  
 ४ यहां रहा । और मेरा बचन और मेरा उपदेश मनुष्यों के ज्ञान की मनानेवाली  
 ५ बातों से नहीं परन्तु आत्मा और सामर्थ्य के प्रमाण से था . जिस्ते तुम्हारा  
 विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं परन्तु ईश्वर के सामर्थ्य पर होवे ।

६ तौभी हम सिद्ध लोगों में ज्ञान सुनाते हैं पर इस संसार का अथवा इस संसार  
 ७ के लोप होनेहारे प्रधानों का ज्ञान नहीं । परन्तु हम एक भेद में ईश्वर का गुप्त  
 ८ ज्ञान जिसे ईश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया सुनाते हैं . जिसे  
 इस संसार के प्रधानों में से किसी ने न जाना क्योंकि जो वे उसे जानते तो तेजो-  
 ९ मय प्रभु को क्रूश पर घात न करते । परन्तु जैसा लिखा है जो आंख ने नहीं  
 देखा और कान ने नहीं सुना है और जो मनुष्य के हृदय में नहीं समाया है वही  
 १० है जो ईश्वर ने उन के लिये जो उसे प्यार करते हैं तैयार किया है । परन्तु  
 ईश्वर ने उसे अपने आत्मा से हमों पर प्रगट किया है क्योंकि आत्मा सब बातें  
 ११ हां ईश्वर की गंभीर बातें भी जानता है । क्योंकि मनुष्यों में से कौन है जो  
 मनुष्य की बातें जानता है केवल मनुष्य का आत्मा जो उस में है . वैसे ही  
 १२ ईश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता है केवल ईश्वर का आत्मा । परन्तु हम  
 ने संसार का आत्मा नहीं पाया है परन्तु वह आत्मा जो ईश्वर की ओर से है

# करिन्थियों का पावल प्रेरित की पहिली पत्री ।

## पहिला पर्व ।

पावल जो ईश्वर की दृष्टि से यीशु ख्रीष्ट का युलाया हुआ प्रेरित है और १  
भाई सोस्थनी, ईश्वर की मंडली का जो करिन्थ में है जो ख्रीष्ट यीशु में २  
पवित्र किये हुए और युलाये हुए पवित्र लोग हैं उन सभी के संग जो हर न्याय  
में हमारे हां उन के और हमारे भी प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम की प्रार्थना करते ३  
हैं, तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥ ४

मैं सदा तुम्हारे विषय में अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं इस लिये कि ईश्वर ४  
का यह अनुग्रह तुम्हें ख्रीष्ट यीशु में दिया गया, कि उस में तुम हर बात में ५  
अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनवान किये गये, जैसा ख्रीष्ट के विषय ६  
की सारी तुम्हों में दृढ़ हुई, यहाँ नों कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं है ७  
और तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के प्रकाश की बात जोड़ते हो । वह तुम्हें अन्त ८  
तों भी दृढ़ करेगा ऐसा कि तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के दिन में निर्दोष होगे ।  
ईश्वर विश्वासयोग्य है जिस से तुम उस के पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट की संगति ९  
में युलाये गये ॥

हैं भाइयो मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम के कारण विन्ती करता १०  
हूँ कि तुम सब एक ही प्रकार की बात बोलो और तुम्हों में विभेद न होय परन्तु  
एक ही मन और एक ही विचार में सिद्ध होओ । क्योंकि मैं ने भाइयो कोई ११  
के घराने के लोगों से सुझ पर तुम्हारे विषय में प्रगट किया गया है कि तुम्हों  
में वैर विरोध हैं, और मैं यह कहता हूँ कि तुम सब यूँ बोलते हो कोई कि १२  
मैं पावल का हूँ कोई कि मैं अपोलो का कोई कि मैं क्लेफा का कोई कि मैं  
ख्रीष्ट का हूँ । क्या ख्रीष्ट विभाग किया गया है, क्या पावल तुम्हारे लिये क्रूश १३  
पर घात किया गया अथवा क्या तुम्हें पावल के नाम से वपतिसमा दिया गया ।  
मैं ईश्वर का धन्य मानता हूँ कि क्रोस्प और गायस को छोड़के मैं ने तुम में से १४  
किसी को वपतिसमा नहीं दिया, ऐसा न हो कि कोई कहे कि मैं ने अपने नाम १५  
से वपतिसमा दिया । और मैं ने स्तिफान के घराने को भी वपतिसमा दिया । १६  
आगे मैं नहीं जानता हूँ कि मैं ने और किसी को वपतिसमा दिया । क्योंकि १७  
ख्रीष्ट ने मुझे वपतिसमा देने को नहीं परन्तु सुसमाचार सुनाने को भेजा पर कथा  
के ज्ञान के अनुसार नहीं जिस्तै ऐसा न हो कि ख्रीष्ट का क्रूश व्यर्थ ठहरे ॥

क्योंकि क्रूश की कथा उन्हें जो नाश होता है मूर्खता है परन्तु हमें जो लाभ १८  
पाते हैं ईश्वर का सामर्थ्य है । क्योंकि लिखा है कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को १९  
नाश करूँगा और बुद्धिमानों की बुद्धि को तुच्छ कर देऊँगा । ज्ञानवान कहाँ है, २०  
अध्यापक कहाँ, इस संसार का विवादी कहाँ, क्या ईश्वर ने इस जगत के  
ज्ञान को मूर्खता न बनाई है । क्योंकि जब कि ईश्वर के ज्ञान से यूँ हुआ कि २१

- ९ यज्ञवेदी की आग पर हैं विधि से धरें । परन्तु उस का ओम् और उम के पगों को पानी से धोवे और याजक सभी को यज्ञवेदी पर जलावे निमित्त बलिदान की भेंट होवे जो आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट किया गया ॥
- १० और यदि उस की भेंट भुंड में से अर्थात् भेड़ चकरी के बट्टों में से बलिदान
- ११ की भेंट के लिये होवे तो वह निष्क्योष्ट नख लावे । और उसे परमेश्वर के आगे यज्ञवेदी की उत्तर दिशा में बलि करे और हारून के बेटे याजक उस के लोहू
- १२ को यज्ञवेदी पर चारों ओर छिड़के । और वह उस के टुकड़ों और उस के सिर और उस की चिकनाई को अलग अलग करे और याजक उन्हें उन लकड़ियों पर
- १३ जो यज्ञवेदी की आग पर हैं चुने । परन्तु ओम् और पगों को पानी में धोवे और याजक सभी को लेके यज्ञवेदी पर जलावे वह बलिदान की भेंट जो परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट आग से किया गया ॥
- १४ और यदि उम के बलिदान की भेंट परमेश्वर की भेंट के लिये पक्षियों में से
- १५ होवे तो वह पिण्डुकी अथवा कपोत के बट्टों में से अपनी भेंट लावे । और याजक उसे यज्ञवेदी पर लाके उस का सिर सरोड़ डाले और उसे यज्ञवेदी पर
- १६ जला दे और उस के लोहू को यज्ञवेदी की अलंग पर निछोड़े । और उस के ओम् को उस के सल सहित निकालके यज्ञवेदी की पूरव अलंग राख के स्थान में फेंक
- १७ दे । और वह उसे उस के डैनों सहित काटे परन्तु अलग न कर डाले तब याजक यज्ञवेदी की आग पर की लकड़ियों पर उसे जलावे वह बलिदान की भेंट है जो परमेश्वर के सुगंध के लिये आग से भेंट किया गया ॥

### दूसरा पर्व ।

- १ और जब कोई भोजन की भेंट परमेश्वर के लिये लावे तो उस की भेंट चोखा पिसान हो और वह उस पर तेल डालके उस के ऊपर गंधरस रखे ।
- २ और वह उसे हारून के बेटों के पास जो याजक हैं लावे और वह उस पिसान में से और तेल में से और समस्त गंधरस सहित सुट्टी भर लेवे और याजक उस के स्मरण को यज्ञवेदी पर जलावे यह आनंद का सुगंध परमेश्वर के आग की
- ३ भेंट के लिये है । और भोजन की भेंट का उबरा हुआ हारून और उस के बेटों का होगा यह होम की भेंट में से परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है ॥
- ४ और यदि तुम्हारी भेंट भोजन की भेंट तनूर में की पक्की हुई होवे तो अखमीरी पिसान अथवा अखमीरी चपातियां तेल से चुपड़ी हुई होवे ॥
- ५ और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट तबे की होवे अखमीरी तेल से मिली हुई
- ६ चोखे पिसान की होवे । उसे टुकड़ा टुकड़ा करना और उस पर तेल डालना वह भोजन की भेंट है ॥
- ७ और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट कराही में की होवे तो चोखा पिसान
- ८ तेल सहित बने । और तू भोजन की भेंट को जो परमेश्वर के लिये इन वस्तुन से बनी है ला और उसे याजक के आगे धर दे और वह उसे यज्ञवेदी के आगे
- ९ लावे । और याजक उस भोजन की भेंट में से उस के स्मरण के लिये कुछ लेवे और यज्ञवेदी पर जलावे यह परमेश्वर के लिये सुगंध की भेंट आग से बनी है ।

इस लिये कि हम वह धार्त जानें जो ईश्वर ने हमें दिव है . जो हम मनुष्यों के १३  
ज्ञान की मिय्याई हुई धार्तों में नहीं परन्तु पवित्र आत्मा की मिय्याई हुई धार्तों  
में आत्मिक धार्त आत्मिक धार्तों में मिला मिलाके सुनाने हैं । परन्तु प्राणिक १४  
मनुष्य ईश्वर के आत्मा की धार्त ग्रहण नहीं करना है क्योंकि ये उस के लगे  
सूखता हैं और वह उन्हें नहीं जान सकता है क्योंकि उन का विचार आत्मिक  
रीति में किया जाता है । आत्मिक जन मय कुछ विचार करता है परन्तु वह आप १५  
किसी से विचार नहीं किया जाता है । क्योंकि परमेश्वर का मन किम ने जाना १६  
है जो उसे मिय्याये . परन्तु हम को खीष्ट का मन है ॥

तीसरा पट्टे ।

हे भाइयो मैं तुम से जैसा आत्मिक लोगों में तैसा नहीं धार्त कर सका १  
परन्तु जैसा शारीरिक लोगों में हां जैसा उन्हां में जो खीष्ट में बालक हैं । मैं ने २  
तुम्हें दूध पिनाया अनु न मिलाया क्योंकि तुम तब लो नहीं था सकते थे वरन  
अब लो भी नहीं था सकते हो क्योंकि अब लो शारीरिक हो । क्योंकि जब कि ३  
तुम्हो में डाढ़ और वैर और विरोध हैं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो और  
मनुष्य की रीति पर नहीं चलने हो । क्योंकि जब एक कहना है मैं पायल का हूं ४  
और दूसरा मैं अपलो का हूं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो ॥

तो पायल कौन है और अपलो कौन है . केवल सेवक लोग जिन के द्वारा ५  
जैसा प्रभु ने हर एक को दिया तैसा तुम ने विश्राम किया । मैं ने लगाया अपलो ६  
ने सीखा परन्तु ईश्वर ने बड़ाया । सो न तो लगानेद्वारा कुछ है और न सीखने- ७  
द्वारा परन्तु ईश्वर जो बड़ानेद्वारा है । लगानेद्वारा और सीखनेद्वारा दोनों एक ८  
हैं परन्तु हर एक जन अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही धनि पावेगा ।  
क्योंकि हम ईश्वर के सहकर्मी हैं . तुम ईश्वर की खेती ईश्वर की रचना हो । ९

ईश्वर के अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया मैं ने ज्ञानदान यज्ञ की नाई १०  
नेत्र हाली है और दूसरा मनुष्य उस पर घर बनाता है . परन्तु हर एक मनुष्य मचेत  
रहे कि वह किस रीति से उस पर बनाता है । क्योंकि जो नेत्र पड़ी है अर्थात् ११  
योगी खीष्ट उसे छोड़के दूसरी नेत्र कोई नहीं डाल सकता है । परन्तु यदि कोई १२  
हम नेत्र पर सेना वा रूपा वा बहुमूल्य पत्थर वा काठ वा घास वा फूस बनावे .  
तो हर एक का काम प्रगट हो जायगा क्योंकि यही दिन उसे प्रगट करेगा हम १३  
लिये कि आग सहित प्रकाश होता है और हर एक का काम कैसा है सो वह  
आग परखेगी । यदि किसी का काम जो उस ने बनाया है ठहरे तो वह सज्जरी १४  
पावेगा । यदि किसी का काम जल जाय तो उसे टूटी लगेगी परन्तु वह आप १५  
धनेगा पर सेना जैसा आग के बीच से होके कोई बचे ॥

क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम ईश्वर के मन्दिर हो और ईश्वर का आत्मा १६  
तुम में बसता है । यदि कोई मनुष्य ईश्वर के मन्दिर को नाश करे तो ईश्वर १७  
उस को नाश करेगा क्योंकि ईश्वर का मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर तुम हो ॥

कोई अपने को छल न देवे . यदि कोई इस संसार में अपने को तुम्हो में १८  
ज्ञानी समझे तो मूर्ख बने बिस्ती ज्ञानी हो जाय । क्योंकि इस जगत का ज्ञान १९

ईश्वर के यहाँ मूर्खता है क्योंकि लिखा है यह ज्ञानियों को उन की चतुराई २० में पकड़नेद्वारा है । और फिर परमेश्वर ज्ञानियों की चिन्ताएं जानता है कि २१ वे कथ्य हैं । सो मनुष्यों के विषय में कोई घमंड न करे क्योंकि सब कुछ तुम्हारा २२ है । क्या पायल क्या अपनी क्या कैफा क्या जगत का जीवन क्या मरण क्या २३ वर्तमान क्या भविष्य सब कुछ तुम्हारा है । और तुम खोष्ट के हो और खोष्ट ईश्वर का है ।

### चौथा पठ्य ।

१ यूँही मनुष्य हमें खोष्ट के सेवक और ईश्वर के भेदों के भंडारी करके जाने ।  
 २ फिर भंडारियों में लोग यह चाहते हैं कि मनुष्य विश्वास योग्य पाया जाय ।  
 ३ परन्तु मेरे लेखे अति छोटी बात है कि मेरा विचार तुम्हों में अथवा मनुष्य के  
 ४ न्याय से किया जाय हाँ मैं अपना विचार भी नहीं करता हूँ । क्योंकि मेरे  
 ५ जानते मैं कुछ सुझ से नहीं हुआ परन्तु इस से मैं निर्दोष नहीं ठहरा हूँ पर मेरा  
 ६ विचार करनेद्वारा प्रभु है । सो जय लो प्रभु न आये समय के आगे किसी बात  
 का विचार मत करो . यही तो अन्धकार की गुप्त बातें ज्योति में दिखावेगा  
 और हृदयों के परामर्शों को प्रगट करेगा और तब ईश्वर की ओर से हर एक  
 की सहायना दोगी ।

६ इन बातों को हे भाइयो तुम्हारे कारण मैं ने अपने पर और अपनी पर  
 दृष्टान्त सा लगाया है इस लिये कि हमों में तुम यह सीखा कि जो लिखा हुआ  
 है उस से अधिक ऊँचा मन न रखो जिस्ते तुम एक दूसरे के पक्ष में और मनुष्य  
 ७ के विरुद्ध फूल न जावो । क्योंकि कौन तुम्हें भिन्न करता है . और तेरे पास  
 क्या है जो तू ने दूसरे से नहीं पाया है . और यदि तू ने दूसरे से पाया है तो  
 ८ क्यों ऐसा घमंड करता है कि मानो दूसरे से नहीं पाया । तुम तो तृप्त हो चुके  
 तुम धनी हो चुके तुम ने हमारे बिना राज्य किया है हाँ मैं चाहता हूँ कि तुम  
 ९ राज्य करते जिस्ते हम भी तुम्हारे संग राज्य करें । क्योंकि मैं समझता हूँ कि  
 ईश्वर ने सब के पीछे हम प्रेरितों का जैसे मृत्यु के लिये ठहराये हुआ को  
 प्रत्यक्ष दिखाया है क्योंकि हम जगत के हाँ दूतों और मनुष्यों के आगे लीला  
 १० को ऐसे खने हैं । हम खोष्ट के कारण मूर्ख हैं पर तुम खोष्ट में बुद्धिमान हो .  
 ११ हमें दुर्बल हैं पर तुम खलवन्त हो . तुम मर्यादिक हो पर हम निरादर हैं । इस  
 घड़ी लो हम भूखे और प्यासे और नंगे भी रहते हैं और घूसे मारे जाते और डाँटा-  
 १२ डोल रहते हैं और अपने ही हाथों से कमाने में परिश्रम करते हैं । हम अपमान किये  
 जाने पर आशीस देते हैं सताये जाने पर सह लेते हैं निन्दित होने पर खिन्नी करते  
 १३ हैं । हम अब लो जगत का कूड़ा हाँ सब वस्तुओं की खुरचन के ऐसे खने हैं ।  
 १४ मैं यह खाते तुम्हें लाज्जित करने को नहीं लिखता हूँ परन्तु अपने प्यारे  
 १५ बालकों को नाहें तुम्हें बिताता हूँ । क्योंकि तुम्हें खोष्ट में यदि इस सहस्र  
 शिक्षक हो तौभी बहुत पिता नहीं हैं क्योंकि खोष्ट यीशु में सुसमाचार के द्वारा  
 १६ तुम मेरे ही पुत्र हो । सो मैं तुम से बिन्ती करता हूँ तुम मेरी सी बाल बला ।  
 १७ इस हेतु से मैं ने तिमोथिय को जो प्रभु में मेरा प्यारा और विश्वासयोग्य पुत्र है

तुम्हारे पास भेजा है और खीष्ट में जो मेरे मार्ग हैं उन्हें यह जैसा मैं सर्वत्र  
हर एक मंडली में उपदेश करता हूँ तैसा तुम्हें चेत दिलावेगा । कितने लोग १८  
फूल गये हैं मानो कि मैं तुम्हारे पास नहीं आनेवाला हूँ । परन्तु जो प्रभु की १९  
इच्छा होय तो मैं शीघ्र तुम्हारे पास आऊंगा और उन फूलने हुए लोगों का ध्वज  
नहीं परन्तु सामर्थ्य बूझ लेऊंगा । क्योंकि ईश्वर का राज्य ध्वज में नहीं परन्तु २०  
सामर्थ्य में है । तुम व्या चाहते हो . मैं कहीं लेके अथवा प्रेम से और नयता के २१  
आत्मा से तुम्हारे पास आऊँ ।

### पाँचवां पद्य ।

यह सर्वत्र सुनने में आता है कि तुम्हों में व्यभिचार है और ऐसा व्यभिचार १  
कि उस का चर्चा देवपूजकों में भी नहीं होता है कि कोई मनुष्य अपने पिता २  
की स्त्री से विवाह करे । और तुम फूल गये हो यह नहीं कि जोक किया किसी ३  
यह काम करनेद्वारा तुम्हारे बीच में से निकाला जाता । मैं तो शरीर में दूर ३  
परन्तु आत्मा में साक्षात् होके जिस ने यह काम इस रीति में किया है उस का  
विचार जैसा साक्षात् में कर चुका हूँ . कि हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के नाम से जय ४  
तुम और मेरा आत्मा हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के सामर्थ्य मणित सफुट्टे हुए हैं .  
तब ऐसा जन शरीर के विनाश के लिये शैतान को सोया जाय किसी आत्मा प्रभु ५  
यीशु के दिन में चाय पाये ॥

तुम्हारा घमंड करना अच्छा नहीं है . क्या तुम नहीं जानते हो कि घोड़ा भा ६  
खमीर सारे पिंड को खमार कर डालता है । सो पुराना खमीर मद्य का मद्य ७  
निकालो कि जैसे तुम अखमीरी हो तैसा नया पिंड होओ क्योंकि हमारा निस्तार ८  
पद्य का मेरा अर्थात् खीष्ट हमारे लिये बलि दिया गया है । सो हम पद्य को ८  
न तो पुराने खमीर से और न दुराई औ दुष्टता के खमीर से परन्तु सीधेई श्री  
सच्चाई के अखमीरी भाव से रखें ।

मैं ने तुम्हारे पास पत्रों में लिखा कि व्यभिचारियों की संगति मत करो । ९  
यह नहीं कि तुम इस जगत के व्यभिचारियों या लोभियों या उपद्रवियों या १०  
मूर्तिपूजकों की सव्यंथा संगति न करो नहीं तो तुम्हें जगत में से निकल जाना  
अवश्य होता । सो मैं ने तुम्हारे पास यही लिखा कि यदि कोई जो भाई ११  
कहलाता है व्यभिचारी या लोभी या मूर्तिपूजक या निन्दक या मद्यप या उपद्रवी  
होय तो उस की संगति मत करो वरन ऐस मनुष्य के संग खाओ भी नहीं । क्योंकि १२  
सुके बाहरवालों का विचार करने से क्या काम . क्या तुम भीतरवालों का विचार  
नहीं करते हो । पर बाहरवालों का विचार ईश्वर करता है . फिर उस कुकर्मों १३  
का अपन में से निकाल देओ ।

### छठवां पद्य ।

तुम में से जो किसी जन को दूसरे से विवाद होय तो क्या उसे अधर्मियों १  
के आगे नालिथ करने का साहस होता है और पथिय लोगों के आगे नहीं ।  
क्या तुम नहीं जानते हो कि पथिय लोग जगत का विचार करेंगे और याद २  
जगत का विचार तुम से किया जाता है तो क्या तुम मद्य से कोटा वातों का



- ३ निर्णय करने के अयोग्य हो । क्या तुम नहीं जानते हो कि सांसारिक बातें पीछे  
 ४ रहे हम तो स्वर्गदूतों ही का विचार करेंगे । सो यदि तुम्हें सांसारिक बातों का  
 निर्णय करना होय तो जो मंडली में कुछ नहीं गिने जाते हैं उन्हीं को बैठाओ ।  
 ५ मैं तुम्हारी लज्जा निमित्त कहता हूँ . क्या ऐसा है कि तुम्हें में एक भी ज्ञानी नहीं  
 ६ है जो अपने भाइयों के बीच में विचार कर सकेगा । परन्तु भाई भाई पर नालिश  
 ७ करता है और सोई अविश्वासियों को आगे भी । सो तुम्हें में निश्चय दीप हुआ  
 है कि तुम्हें में आपस में विवाद होते हैं . क्यों नहीं धरन अन्याय सहते हो ।  
 ८ क्यों नहीं धरन ठगाई सहते हो । परन्तु तुम अन्याय करते और ठगते हो हां  
 ९ भाइयों से भी यह करते हो । क्या तुम नहीं जानते हो कि अन्याई लोग ईश्वर  
 के राज्य के अधिकारी न होंगे ॥
- १० धोखा मत खाओ . न व्यभिचारी न सूर्तिपूजक न परस्त्रीगामी न शुहदे न  
 पुरुषगामी न चोर न लोभी न मद्यप न निन्दक न उपद्रवी लोग ईश्वर के राज्य  
 ११ के अधिकारी होंगे । और तुम में से कितने लोग ऐसे थे परन्तु तुम ने अपने को  
 धोखा परन्तु तुम पवित्र किये गये परन्तु तुम प्रभु यीशु के नाम से और हमारे  
 ईश्वर के आत्मा से धर्मी ठहराये गये ॥
- १२ सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभ का नहीं है . सब कुछ मेरे  
 १३ लिये उचित है परन्तु मैं किसी बात के अधीन नहीं होंगा । भोजन पेट के लिये  
 और पेट भोजन के लिये है परन्तु ईश्वर इस का और उस का दोनों का क्षय  
 करेगा . पर देह व्यभिचार के लिये नहीं है परन्तु प्रभु के लिये और प्रभु देह  
 १४ के लिये है । और ईश्वर ने अपने सामर्थ्य से प्रभु को जिला उठाया और हमें  
 १५ भी जिला उठावेगा । क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम्हारे देह खीष्ट के अंग हैं .  
 सो क्या मैं खीष्ट के अंग ले करके उन्हें वेश्या के अंग बनाऊँ . ऐसा न हो ।  
 १६ क्या तुम नहीं जानते हो कि जो वेश्या से मिल जाता है सो एक देह होता है  
 १७ क्योंकि कहा है वे दोनों एक तन होंगे । परन्तु जो प्रभु से मिल जाता है सो एक  
 १८ आत्मा होता है । व्यभिचार से बचे रहो . हर एक पाप जो मनुष्य करता है  
 देह के बाहर है परन्तु व्यभिचार करनेहारा अपने ही देह के विरुद्ध पाप करता  
 १९ है । क्या तुम नहीं जानते हो कि पवित्र आत्मा जो तुम में है जो तुम्हें ईश्वर की  
 ओर से मिला है तुम्हारा देह उसी पवित्र आत्मा का मन्दिर है और तुम अपने  
 २० नहीं हो । क्योंकि तुम दाम देके मोल लिये गये हो सो अपने देह में और अपने  
 आत्मा में जो ईश्वर के हैं ईश्वर की महिमा प्रगट करो ॥

सातवां पृष्ठ ।

- १ जो बातें तुम ने मेरे पास लिखीं उन के विषय में मैं कहता हूँ मनुष्य के लिये  
 २ अच्छा है कि स्त्री को न कूवे । परन्तु व्यभिचार कर्मों के कारण हर एक मनुष्य  
 ३ को अपनी ही स्त्री होय और हर एक स्त्री को अपना ही स्वामी होय । पुरुष  
 अपनी स्त्री से जो स्नेह उचित है सो किया करे और वैसे ही स्त्री भी अपने स्वामी  
 ४ से । स्त्री को अपने देह पर अधिकार नहीं पर उस के स्वामी को अधिकार है और  
 वैसे ही पुरुष को भी अपने देह पर अधिकार नहीं पर उस की स्त्री को अधिकार

है । तुम एक दूसरे से मत अलग रहो केवल तुम्हें उपवास और प्रार्थना के लिये ५  
अथकाश मिलने के कारण जो दोनों की सम्मति से तुम कुछ दिन अलग रहो तो  
रहो और फिर एकट्ठे हो लिस्ती जैतान तुम्हारे असंयम के कारण तुम्हारी परीक्षा  
न करे । परन्तु मैं जो यह कहता हूँ तो अनुमति देता हूँ आज्ञा नहीं करता हूँ । ६  
मैं तो चाहता हूँ कि सब मनुष्य ऐसे होवें जैसा मैं आप ही हूँ परन्तु हर एक ने ७  
ईश्वर की ओर से अपना अपना दरदान पाया है किसी ने इस प्रकार का किसी  
ने उस प्रकार का । पर मैं अविद्यादितों से और विधवाओं से कहता हूँ कि यदि ८  
वे जैसा मैं हूँ तैम रहें तो उन के लिये अच्छा है । परन्तु जो वे असंयसी होवें ९  
तो विवाह करें क्योंकि विवाह करना जलने रहने से अच्छा है । विद्यादितों को १०  
मैं नहीं परन्तु प्रभु आज्ञा देता है कि स्त्री अपने स्वामी से अलग न होय । पर ११  
जो वह अलग भी होय तो अविद्यादिता रहे अथवा अपने स्वामी से मिल जाय .  
और पुरुष अपनी स्त्री को न त्यागे ॥

दूसरों में प्रभु नहीं परन्तु मैं कहता हूँ यदि किसी भाई को अविद्यामिनी १२  
स्त्री होय और वह स्त्री उस के संग रहने को प्रसन्न होय तो वह उसे न  
त्यागे । और जिस स्त्री को अविद्यामिनी स्वामी होय और वह स्वामी उस के १३  
संग रहने को प्रसन्न होय वह उसे न त्यागे । क्योंकि वह अविद्यामिनी पुरुष १४  
अपनी स्त्री के कारण पवित्र किया गया है और वह अविद्यामिनी स्त्री अपने  
स्वामी के कारण पवित्र किई गई है नहीं तो तुम्हारे लड़के अशुद्ध होते पर  
अब तो वे पवित्र हैं । परन्तु जो वह अविद्यामिनी जन अलग होता है तो अलग १५  
होय . ऐसी दशा में भाई अथवा बहिन धंधा हुआ नहीं है . परन्तु ईश्वर ने  
इमें मिलाप के लिये बुलाया है । क्योंकि हे स्त्री तू क्या जानती है कि तू अपने १६  
स्वामी को बचावेगी कि नहीं अथवा हे पुरुष तू क्या जानता है कि तू अपनी  
स्त्री को बचावेगा कि नहीं ॥

परन्तु जैसा ईश्वर ने हर एक को बाँट दिया है जैसा प्रभु ने हर एक को १७  
बुलाया है तैसा ही वह चले . और मैं सब मंडलियों में यूँही आज्ञा देता हूँ ।  
कोई खतना किया हुआ बुलाया गया हो तो खतनाहीन सा न बने . कोई १८  
खतनाहीन बुलाया गया हो तो खतना न किया जाय । खतना कुछ नहीं है और १९  
खतनाहीन होना कुछ नहीं है परन्तु ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना सार  
है । हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया उसी में रहे । क्या तू दास हो २०  
करके बुलाया गया . चिन्ता मत कर पर यदि तेरा उद्धार हो भी सकता है  
तो बरन उस को भोग कर । क्योंकि जो दास प्रभु में बुलाया गया है सो प्रभु २१  
का निर्वन्ध किया हुआ है और वैसे ही निर्वन्ध जो बुलाया गया है सो स्त्री  
का दास है । तुम दास देके मोल लिये गये हो . मनुष्यों के दास मत बने । २२  
हे भाइयो हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया ईश्वर के आगे उसी में २३  
बना रहे ॥

कुंवारियों के विषय में प्रभु की कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली है परन्तु जैसा २४  
प्रभु ने मुझ पर दिया किई है कि मैं विश्वासयोग्य होऊँ तैसा मैं परामर्श देता

हैं . परन्तु हम यह अधिकार काम में न लाये पर मय कुछ सहते हैं विलो रीष्ट  
 १३ के सुसमाचार को कुछ रोक न करें । क्या तुम नहीं जानते हो कि जो लोग  
 याज्ञकीय कर्म करते हैं सो मन्दिर में से खाते हैं और जो लोग घेदी की सेवा  
 १४ करते हैं सो घेदी के अंशधारी होते हैं । यूसी प्रभु ने भी जो लोग सुसमाचार  
 सुनाते हैं उन के लिये ठहराया है कि सुसमाचार से उन की जीविका होय ॥  
 १५ परन्तु मैं इन बातों में से कोई बात काम में नहीं लाया और मैं ने तो यह  
 बातें हम लिये नहीं लियीं कि मेरे विषय में यूसी किया जाय क्योंकि मरना मेरे  
 १६ लिये इस से भना है कि कोई मेरा बड़ाई करना अर्थ ठहरावे । क्योंकि जो मैं  
 सुसमाचार प्रचार करूं तो इस से कुछ मेरी बड़ाई नहीं है क्योंकि मुझे अवश्य  
 १७ पड़ता है और जो मैं सुसमाचार प्रचार न करूं तो मुझे मन्ताप है । क्योंकि जो  
 मैं अपनी इच्छा से यह करता हूं तो मज्जरी मुझे मिलती है पर जो अनिच्छा से तो  
 १८ भंडारीपन मुझे सोंपा गया है । सो मेरी कौन सी मज्जरी है . यह कि सुसमाचार  
 प्रचार करने में मैं रीष्ट का सुसमाचार संत का ठहराऊं यहां लीं कि सुसमाचार में  
 १९ जो मेरा अधिकार है उस का मैं अति भोग न करूं । क्योंकि सभी से निर्वन्ध होके  
 २० मैं ने अपने को सभी का दास बनाया कि मैं अधिक लोगों को प्राप्त करूं । और  
 गिहूदियों के लिये मैं गिहूदी सा बना कि गिहूदियों को प्राप्त करूं , जो लोग  
 व्यवस्था के अधीन हैं उन के लिये मैं व्यवस्था के अधीन के ऐसा बना कि उन्हें  
 २१ जो व्यवस्था के अधीन हैं प्राप्त करूं । व्यवस्थाहीनों के लिये मैं जो ईश्वर की  
 व्यवस्था से हीन नहीं परन्तु रीष्ट की व्यवस्था के अधीन हूं व्यवस्थाहीन सा बना  
 २२ कि व्यवस्थाहीनों को प्राप्त करूं । मैं दुर्वलों के लिये दुर्वल सा बना कि दुर्वलों  
 को प्राप्त करूं . मैं सभी के लिये सब कुछ बना हूं कि मैं अवश्य कई एक को  
 २३ बचाऊं । और वही मैं सुसमाचार के कारण करता हूं कि मैं उस का भागी हो  
 जाऊं ॥

२४ क्या तुम नहीं जानते हो कि अखाड़े में दौड़नेहारे सब ही दौड़ते हैं परन्तु  
 २५ जीतने का फल एक ही पाता है . तुम ऐसे ही दौड़ो कि तुम प्राप्त करो । और  
 हर एक लड़नेद्वारा सब बातों में संयमी रहता है . सो वे तो नाशमान मुकुट  
 २६ परन्तु हम लोग अखिनाशी मुकुट लेने को ऐसे रहते हैं । मैं भी तो ऐसा दौड़ता  
 हूं जैसा बिन दुखधा से दौड़ता मैं ऐसा नहीं मुष्टि लड़ता हूं जैसा बघार को पीटता  
 २७ हुआ लड़ता । परन्तु मैं अपने देह को ताड़ना करके ब्रह्म में लाता हूं ऐसा न हो  
 कि मैं औरों को उपदेश देके आप ही किसी रीति से निकृष्ट वूं ॥

दसवां पर्व ।

१ हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस से अनजान रहो कि हमारे पितर  
 २ लोग सब मेघ के नीचे थे और सब समुद्र के बीच में से गये । और सभी को  
 ३ मेघ में और समुद्र में मूसा के सबन्ध का अपतिसमा दिया गया । और सभी ने  
 ४ एक ही आत्मिक भोजन खाया । और सभी ने एक ही आत्मिक पानी पिया  
 ५ क्योंकि वे उस आत्मिक पर्वत से जो उन के पीछे पीछे चलता था पीते थे और  
 ५ वह पर्वत रीष्ट था । परन्तु ईश्वर उन में के अधिक लोगों से प्रसन्न नहीं था

क्योंकि ये जंगल में सारे पड़े । यह धार्मिक हमारे लिये दृष्टान्त कुछ इस लिये कि ६  
 जैसे उन्होंने ने लालच किया तैसे हम लोग धुरी यस्तुओं के लालची न होयें ।  
 और न तुम मूर्तिपूजक होओ जैसा उन्होंने में से कितने थे जैसा लिखा है लोग ७  
 खाने और पीने को बैठे और खेलने को चले । और न हम व्याभिचार करें ८  
 जैसा उन्होंने में से कितनों ने व्याभिचार किया और एक दिन में तेईस सहस्र गिरे ।  
 और न हम स्त्रीपु को प्रीति करें जैसा उन्होंने में से कितनों ने प्रीति की ९  
 और मांषों से नाश किये गये । और न कुड़कुड़ाओ जैसा उन्होंने में से कितने १०  
 कुड़कुड़ाये और नाशक से नाश किये गये । पर यह सब धार्मिक जो उन पर पड़ों ११  
 दृष्टान्त थीं और वे हमारी चिन्ताओं के कारण लिखी गईं जिन के आगे अगत  
 के अन्त समय पहुंचे हैं । इस लिये जो नमस्कृत है कि मैं खड़ा हूं सो सचेत रहे १२  
 कि गिर न पड़े । तुम पर कोई प्रीति नहीं पड़ी है केवल ऐसी जैसी मनुष्य को १३  
 दुष्टा करती है और ईश्वर विद्यामयोग्य है जो तुम्हें तुम्हारे सामर्थ्य के बाहर  
 प्रीति देने न देगा परन्तु प्रीति के साथ निराम भी करेगा कि तुम सब  
 सको । इस कारण हे मेरे प्यारे मूर्तिपूजा से दूरे रहो ॥ १४

मैं जैसा बुद्धिमानों से जानता हूं, जो मैं कहता हूं उसे तुम विचार करो । १५  
 यह धन्यवाद का कटोरा जिस के ऊपर हम धन्यवाद करते हैं क्या स्त्रीपु के १६  
 लोह की संगति नहीं है । यह रोटी जिसे हम खाते हैं क्या स्त्रीपु के दूध की  
 संगति नहीं है । एक रोटी है इस लिये हम जो पछता हैं एक दूध है क्योंकि हम १७  
 सब उस एक रोटी के भागी होते हैं । शारीरिक इगो के देखो, क्या बलि- १८  
 दानों के खानेवाले वेदी के भागी नहीं हैं । तो मैं क्या कहता हूं, क्या यह कि १९  
 मूर्ति कुछ है अथवा कि मूर्ति के आगे का बलिदान कुछ है । नहीं पर यह कि २०  
 देवपूजक लोग जो कुछ बलिदान करते हैं सो ईश्वर के आगे नहीं पर भूतों के  
 आगे बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता हूं कि तुम भूतों के भागी हो  
 जाओ । तुम प्रभु के कटोरे और भूतों के कटोरे दोनों में नहीं पी सकते हो, २१  
 तुम प्रभु की मेज और भूतों की मेज दोनों के भागी नहीं हो सकते हो । अथवा २२  
 क्या हम प्रभु को छेड़ते हैं, क्या हम उस से अधिक शक्तिमान हैं ॥

सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभ का नहीं है, सब २३  
 कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ नहीं सुधारता है । कोई अपना लाभ २४  
 न हूँ परन्तु हर एक जन दूसरे का लाभ हूँ । जो कुछ मांस की टाट में २५  
 विक्रता है सो खाओ और विवेक के कारण कुछ मत पूछो, क्योंकि पृथिवी २६  
 और उस की सारी सम्पत्ति परमेश्वर की है । और यदि अधिष्ठासियों में २७  
 से कोई तुम्हें नेयता देवे और तुम्हें जाने की इच्छा होय तो जो कुछ तुम्हारे  
 आगे रखा जाय सो खाओ और विवेक के कारण कुछ मत पूछो । परन्तु यदि २८  
 कोई तुम से कहे यह तो मूर्ति के आगे बलि किया हुआ है तो उसी बलिदान के  
 कारण और विवेक के कारण मत खाओ (क्योंकि पृथिवी और उस की सारी  
 सम्पत्ति परमेश्वर की है) । विवेक जो मैं कहता हूं सो अपना नहीं परन्तु उस २९  
 दूसरे का क्योंकि मेरी निर्धनता को दूसरे के विवेक से विचार किंवा आती है ।

३० जो मैं धन्यवाद करके भागी होता हूँ तो जिस के ऊपर मैं धन्य मानता हूँ उस  
 ३१ के लिये मेरी निन्दा क्यों होती है । सो तुम जो खावो अथवा पीवो अथवा कोई  
 ३२ काम करो तो सब कुछ ईश्वर की महिमा के लिये करो । न यिहूदियों न यूनानियों  
 ३३ को न ईश्वर की मंडली को छोड़कर खिलाओ । जैसा मैं भी सब बातों में सबों  
 को प्रसन्न करता हूँ और अपना लाभ नहीं परन्तु बहुतों का लाभ छूंटता हूँ कि  
 वे त्राण पावें ॥

सम्प्रादयां पर्व ।

१ तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं खीष्ट की सी चाल चलता हूँ ॥  
 २ हे भाइयो मैं तुम्हें सलाहता हूँ कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो  
 ३ और व्यवहारों को जैसा मैं ने तुम्हें ठहरा दिया तैसा ही धारण करते हो । पर  
 मैं चाहता हूँ कि तुम जान लेओ कि खीष्ट हर एक पुरुष का सिर है और  
 ४ पुरुष स्त्री का सिर है और खीष्ट का सिर ईश्वर है । हर एक पुरुष जो सिर  
 पर कुछ ओढ़े हुए प्रार्थना करता अथवा भविष्यद्वाक्य कहता है अपने सिर का  
 ५ अपमान करता है । परन्तु हर एक स्त्री जो उछाड़े सिर प्रार्थना करती अथवा  
 भविष्यद्वाक्य कहती है अपने सिर का अपमान करती है क्योंकि वह मूंडी हुई  
 ६ से कुछ भिन्न नहीं है । यदि स्त्री सिर न ढाँके तो बाल भी कटवावे परन्तु  
 ७ यदि बाल कटवाना अथवा मूँडवाना स्त्री को लज्जा है तो सिर ढाँके । क्योंकि  
 पुरुष को तो सिर ढाँकना उचित नहीं है क्योंकि वह ईश्वर का रूप और  
 ८ महिमा है परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा है । क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ  
 ९ परन्तु स्त्री पुरुष से हुई । और पुरुष स्त्री के लिये नहीं सृजा गया परन्तु स्त्री  
 १० पुरुष के लिये सृजी गई । इसी लिये दूतों के कारण स्त्री को उचित है कि  
 ११ अधिकार अपने सिर पर रखे । तौभी प्रभु मैं न तो पुरुष बिना स्त्री से और न  
 १२ स्त्री बिना पुरुष से है । क्योंकि जैसा स्त्री पुरुष से है तैसा पुरुष स्त्री के द्वारा  
 १३ से है परन्तु सब कुछ ईश्वर से है । तुम अपने अपने मन में विचार करो , क्या  
 १४ उछाड़े सिर ईश्वर से प्रार्थना करना स्त्री को सलाहता है । अथवा क्या प्रकृति  
 आप ही तुम्हें नहीं सिखाती है कि यदि पुरुष लंबा बाल रखे तो उस को  
 १५ अनादर है । परन्तु यदि स्त्री लंबा बाल रखे तो उस को आदर है क्योंकि बाल  
 १६ उस को ओढ़नी के लिये दिया गया है । परन्तु यदि कोई जन विवादी देख पड़े  
 तो न हमारी न ईश्वर की मंडलियों की ऐसी रीति है ॥

१७ परन्तु यह आज्ञा देने में मैं तुम्हें नहीं सलाहता हूँ कि तुम्हारे एकट्टे होने से  
 १८ भलाई नहीं परन्तु हानि होती है । क्योंकि पहिले मैं सुनता हूँ कि जब तुम  
 मंडली में एकट्टे होते हो तब तुम्हों में अनेक विभेद होते हैं और मैं कुछ कुछ  
 १९ प्रतीति करता हूँ । क्योंकि कुपन्थ भी तुम्हों में अवश्य होंगे इस लिये कि जो  
 २० लोग खरे हैं सो तुम्हों में प्रगट हो जावें । सो तुम जो एक स्थान में एकट्टे  
 २१ होते हो तो प्रभु भोज खाने के लिये नहीं है । क्योंकि खाने में हर एक पहिले  
 २२ अपना अपना भोज खा लेता है, और एक तो भूखा है दूसरा मतवाला है । क्या  
 खाने और पीने के लिये तुम्हें घर नहीं है अथवा क्या तुम ईश्वर की मंडली को

तुच्छ जानते हो और जिन्हें नहीं हैं उन्हें लज्जित करते हो . मैं तुम से क्या कहूँ . क्या इस घात मैं तुम्हें सराहूँ . मैं नहीं सराहता हूँ ॥

क्योंकि मैं ने प्रभु से यह पाया जो मैं ने तुम्हें भी सीप दिया कि प्रभु यीशु २४ ने जिस रात वह पकड़वाया गया उसी रात को रोटी लिई . और धन्य मानके २४ उसे तोड़ा और कहा जेयो खाओ यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये तोड़ा जाता है . मेरे स्मरण के लिये यह किया करो । इसी रीति से उस ने दियारी २५ के पीछे कटोरा भी लेके कहा यह कटोरा मेरे लोहू पर नया नियम है . जब जब तुम इसे पीवो तब मेरे स्मरण के लिये यह किया करो ॥

क्योंकि जब जब तुम यह रोटी खावो और यह कटोरा पीवो तब प्रभु की २६ मृत्यु को जब लो जह न आवे प्रचार करते हो । इस लिये जो कोई अनुचित रीति २७ से यह रोटी खावे अथवा प्रभु का कटोरा पीवे सो प्रभु के देह और लोहू के दंड के योग्य होगा । परन्तु मनुष्य अपने को पग्ये और इस रीति से यह रोटी खावे २८ और इस कटोरे से पीवे । क्योंकि जो अनुचित रीति से खाता और पीता है सो २९ जब कि प्रभु के देह का विशेष नहीं मानता है तो खाने और पीने से अपने पर दंड लाता है । इस हेतु से तुम्हें मैं बहुत जन दुर्जल और रोगी हैं और बहुत से ३० सोते हैं । क्योंकि जो हम अपना अपना विचार करने तो हमारा विचार नहीं किया ३१ जाता । परन्तु हमारा विचार जो किया जाता है तो प्रभु से हम ताड़ना किये ३२ जाते हैं इस लिये कि संसार के संग दंड के योग्य न ठहराये जायें । इस लिये हे ३३ मेरे भाइयो जब तुम खाने को एकट्टे होओ तब एक दूसरे के लिये ठहरो । परन्तु ३४ यदि कोई भूखा होय तो घर में खाय जिन्हीं एकट्टे होने से तुम्हारा दंड न होय . और जो कुछ रह गया है जब कभी मैं तुम्हारे पास आऊँ तब उस के विषय में आज्ञा देऊँगा ॥

### वारहवां पट्ट ।

हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूँ कि तुम आत्मिक विषयों में अनजान रहो । तुम १ जानते हो कि तुम दैत्यपूजक थे और जैसे जैसे दिखाये जाते थे तैसे तैसे गूंगी सूरतों की और भटक जाते थे । इस कारण मैं तुम्हें बताता हूँ कि कोई जो २ ईश्वर के आत्मा में बोलता है यीशु को स्थापित नहीं कहता है और कोई यीशु को प्रभु नहीं कह सकता है केवल प्रिय आत्मा से ॥

वरदान तो बंटे हुए हैं परन्तु आत्मा एक ही है । और सेवकाइयां बंटती हुई ३ हैं परन्तु प्रभु एक ही है । और कार्य बंटे हुए हैं परन्तु ईश्वर एक ही है जो ४ सभी से ये सब कार्य करवाता है ॥

परन्तु एक एक मनुष्य को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है जिस्तें लाभ होय । ५ क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा से मुक्ति की बात दिई जाती है और दूसरे को ६ उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बात . और दूसरे को उसी आत्मा से विश्वास ७ और दूसरे को उसी आत्मा से चंगा करने के वरदान . फिर दूसरे को आश्चर्य १० कर्म करने की शक्ति और दूसरे को भविष्यद्वाक्य बोलने की और दूसरे को आत्माओं को पहचानने की और दूसरे को अनक प्रकार की भाषा बोलने की



११ और दूसरे को भाषाओं का अर्थ लगाने की शक्ति दिई जाती है । परन्तु ये सब कार्य वही एक आत्मा करवाता है और अपनी इच्छा के अनुसार हर एक मनुष्य को पृथक पृथक करके बांट देता है ।

१२ क्योंकि जैसे देह तो एक है और उस के अंग बहुत से हैं परन्तु उस एक देह के सब अंग यद्यपि बहुत से हैं तैभी एक ही देह हैं तैसे ही खीष्ट भी है ।

१३ क्योंकि हम लोग क्या यहूदी क्या यूनानी क्या टास क्या निर्धन्ध सभी ने एक देह देने को एक आत्मा से उपतिसमा लिया और सब एक आत्मा पिलाये

१४ गये । क्योंकि देह एक ही अंग नहीं है परन्तु बहुत से अंग । यदि पाँच कहे में हाथ नहीं हूँ इस लिये मैं देह का अंग नहीं हूँ तो क्या वह हम कारण से देह

१५ का अंग नहीं है । और यदि कान कहे में आँख नहीं हूँ इस लिये मैं देह का अंग नहीं हूँ तो क्या वह इस कारण से देह का अंग नहीं है । जो सारा देह

आँख ही होता तो सुनना कहाँ . जो सारा देह कान ही होता तो सूँघना कहाँ । परन्तु अब तो ईश्वर ने अंगों को और उन में से एक एक को देह में

१६ अपनी इच्छा के अनुसार रखा है । परन्तु यदि सब अंग एक ही अंग होते तो देह कहाँ होता । पर अब बहुत से अंग हैं परन्तु एक ही देह । आँख हाथ से

१७ नहीं कह सकती है कि मुझे तेरा कुछ प्रयोजन नहीं और फिर सिर पाँचों से नहीं कह सकता है कि मुझे तुम्हारा कुछ प्रयोजन नहीं । परन्तु देह के जो

१८ अंग अति दुर्बल देख पड़ते हैं सो बहुत अधिक करके आवश्यक हैं । और देह के जिन अंगों को हम अति निरादर समझते हैं उन पर हम बहुत अधिक आदर रखते हैं और हमारे शोभाहीन अंग बहुत अधिक शोभायमान किये जाते हैं ।

१९ पर हमारे शोभायमान अंगों को इस का कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु ईश्वर ने देह को मिला लिया है और जिस अंग को घटी थी उस को बहुत अधिक

२० आदर दिया है . कि देह में विभेद न होय परन्तु अंग एक दूसरे के लिये एक समान चिन्ता करें । और यदि एक अंग दुःख पाता है तो सब अंग उस के साथ

दुःख पाते हैं अथवा यदि एक अंग की बड़ाई किई जाती है तो सब अंग उस के साथ आनन्द करते हैं । सो तुम लोग खीष्ट के देह हो और पृथक पृथक

२१ करके उस के अंग हो ॥

२२ और ईश्वर ने कितनों को मंडली में रखा है पहिले प्रेरितों को दूसरे भविष्यद्वक्ताओं को तीसरे उपदेशकों को तब आश्चर्य कर्मों को तब चंगा

करने के बरदानों को और उपकारों को और प्रधानताओं को और अनेक प्रकार की भाषाओं को । क्या सब प्रेरित हैं . क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं . क्या सब

२३ उपदेशक हैं . क्या सब आश्चर्य कर्म करनेहार हैं । क्या सभी को चंगा करने के बरदान मिले हैं . क्या सब अनेक भाषा बोलते हैं . क्या सब अर्थ लगाते

२४ हैं । परन्तु अच्छे अच्छे बरदानों की अभिलाषा करो और मैं तुम्हें और भी एक श्रेष्ठ मार्ग बताता हूँ ।

तिरहवां पट्य ।

१ जो मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ पर मुझ में प्रेम न हो ।

और जो कुछ भोजन की भेंट में से बच रहा है सो दान्न और उस के छेंटों का १० है यह भेंट अत्यंत पवित्र परमेश्वर के लिये आग से बनी है ॥

कोई भोजन की भेंट जो तुम परमेश्वर के लिये लाओ खमीर से न बने ११ क्योंकि खमीर और नई मधु परमेश्वर के लिये किसी भेंट में न जलाया जावे । पहिले फलों की भेंट जो है तुम उन्हें परमेश्वर के आगे लाओ परन्तु सुगंध १२ के लिये यज्ञवेदी पर जलाई न जावे । और तू अपने भोजन की हर एक भेंट १३ को नान में लेनी कीजिये और तेरे भोजन की भेंट अपने ईश्वर के नियम के नान में रक्षित न होने पावे अपनी समस्त भेंटों में नान की भेंट लाइयो ॥

और यदि तू पहिले फलों से परमेश्वर के लिये भोजन की भेंट लावे तो १४ अपने पहिले फलों के भोजन की भेंट अन्न की छरी वालें भुनी हुई अर्घान् भरी वालों में से अन्न पीटा हुआ । और उस पर तेल डालियो और गंधरस उस के १५ ऊपर रगियो यह भोजन की भेंट है । और उस के स्मरण की भेंट पीटे हुए अन्न १६ में से और उस के तेल में से उन के समस्त गंधरस रक्षित याज्ञक जलावे यह आग से परमेश्वर के लिये भेंट है ॥

तीसरा पर्व ।

और यदि उस की भेंट कुशल का बलिदान होवे और वह गाय बैल में से १ लावे चाहे नर अथवा स्त्रीवर्ग होवे परमेश्वर के आगे उसे निष्याद लावे । और २ वह अपना हाथ अपनी भेंट के गिर पर रखे और मंडली के तंदू के द्वार पर उसे बलि करे और दान्न के छेंटे जो याज्ञक हैं उस के नोटू का यज्ञवेदी पर चारों ओर छिड़के । और वह कुशल की भेंट के बलिदान में से परमेश्वर के लिये ३ आग की भेंट लावे चिकनाई जो ओम्फ की ठांपती है और सारी चिकनाई जो ओम्फ पर है । और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है ४ और कलेजे पर की भिल्ली गुर्दे समेत अलग करे । और दान्न के छेंटे उन्हें ५ यज्ञवेदी के ऊपर बलिदान की भेंट पर आग की लकड़ियों पर जलावे यह परमेश्वर के लिये सुगंध जो आग में भेंट किया गया ॥

और यदि उस की भेंट कुशल की भेंट का बलिदान परमेश्वर के लिये भेड़ ६ बकरी से नर अथवा स्त्रीवर्ग में होवे तो वह उसे निष्याद लावे । यदि वह ७ अपनी भेंट के लिये सेया लावे तो वह उसे परमेश्वर के आगे भेंट देवे । और ८ वह अपना हाथ अपनी भेंट के गिर पर रखे और उसे मंडली के तंदू के आगे बलि करे और दान्न के छेंटे उस के नोटू का यज्ञवेदी पर चारों ओर छिड़के । और वह कुशल के बलिदानों में से कुछ घास का बलिदान परमेश्वर के लिये ९ लावे उस की चिकनाई और समस्त पूंछ रीढ़ से अलग करके और चिकनाई जो ओम्फ की ठांपती है और सारी चिकनाई जो ओम्फ पर है । और दोनों गुर्दे १० और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के पास है और कलेजे पर की भिल्ली गुर्दे समेत अलग करे । और याज्ञक उसे वेदी पर जलावे यह भेंट का भोजन आग ११ से बना हुआ परमेश्वर के लिये है ॥

और यदि उस का बलिदान बकरी होय तो उसे परमेश्वर के आगे लावे । १२

- ८ अपने को लड़ाई के लिये तैयार करेगा । वैसे ही तुम भी यदि जीभ से स्पष्ट  
 ९ बात न करो तो जो बोला जाता है सो क्योंकर बूझा जायगा क्योंकि तुम व्यापार  
 १० से बात करनेहारे ठहरोगे । जगत में क्या जाने कितने प्रकार की बोलियां होंगीं  
 ११ और उन में से किसी प्रकार की बोली निरर्थक नहीं है । इस लिये जो मैं बोली  
 १२ का अर्थ न जानूं तो मैं बोलनेहारे के लेखे परदेशी होऊंगा और बोलनेहारा मेरे  
 १३ लेखे परदेशी होगा । सो तुम भी जब कि आत्मिक विषयों के अभिलाषी हो  
 १४ तो मंडली के सुधारने के निमित्त बड़ जाने का यत्न करो । इस कारण जो अन्य  
 भाषा बोले सो प्रार्थना करे कि अर्थ भी लगा सके ॥
- १४ क्योंकि जो मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं तो मेरा आत्मा प्रार्थना करता है  
 १५ परन्तु मेरी बुद्धि निष्फल है । तो क्या है . मैं आत्मा से प्रार्थना करूंगा और बुद्धि  
 से भी प्रार्थना करूंगा . मैं आत्मा से गान करूंगा और बुद्धि से भी गान करूंगा ।  
 १६ नहीं तो यदि तू आत्मा से धन्यवाद करे तो जो अनसिख की सी दशा में है सो  
 १७ तेरे धन्य मानने पर क्योंकर आमीन कहेगा वह तो नहीं जानता तू क्या कहता  
 १८ है । क्योंकि तू तो भली रीति से धन्य मानता है परन्तु वह दूसरा सुधारा नहीं  
 १९ जाता है । मैं अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं कि मैं तुम सभी से अधिक करके  
 २० अन्य अन्य भाषा बोलता हूं । परन्तु मंडली में दस सहस्र बातें अन्य भाषा में  
 कहने से मैं पांच बातें अपनी बुद्धि से कहना अधिक चाहता हूं जिस्ते औरों को  
 २१ भी सिखाऊं । हे भाइयो ज्ञान में बालक मत होओ तौभी बुराई में बालक  
 होओ परन्तु ज्ञान में सयाने होओ ॥
- २१ व्यवस्था में लिखा है कि परमेश्वर कहता है मैं अन्य भाषा बोलनेहारों के  
 २२ द्वारा और पराये सुख के द्वारा इन लोगों से बात करूंगा और वे इस रीति से  
 २३ भी मेरी न सुनेंगे । सो अन्य अन्य बोलियां बिश्वासियों के लिये नहीं पर  
 २४ बिश्वासियों के लिये चिन्ह हैं परन्तु भविष्यद्वाणी बिश्वासियों के लिये नहीं  
 २५ पर बिश्वासियों के लिये चिन्ह है । सो यदि सारी मंडली एक संग एकट्ठी होय  
 और सब अन्य अन्य भाषा बोलें और अनसिख अथवा बिश्वासी लोग भीतर  
 २६ आवें तो क्या वे न कहेंगे कि ये लोग बोरहे हैं । परन्तु यदि सब भविष्यद्वाक्य  
 कहें और कोई बिश्वासी अथवा अनसिख मनुष्य भीतर आवे तो वह सभी की  
 २७ ओर से दोषी ठहरता है और सभी से जांचा जाता है । और इस रीति से उस  
 के मन की गुप्त बातें प्रगट हो जाती हैं और यूं वह सुंह के बल गिरके ईश्वर  
 २८ को प्रणाम करेगा और बतावेगा कि ईश्वर निश्चय इन लोगों के बीच में है ॥
- २९ तो हे भाइयो क्या है . जब तुम एकट्ठे होते हो तब तुम में से हर एक के  
 पास गीत है उपदेश है अन्य भाषा है प्रकाश है भाषा का अर्थ है . सब कुछ  
 ३० सुधारने के लिये किया जाय । यदि कोई अन्य भाषा बोले तो दो दो अथवा  
 बहुत होय तो तीन तीन और पारी पारी बोलें और एक मनुष्य अर्थ लगावे  
 ३१ परन्तु यदि अर्थ लगानेहारा न हो तो मंडली में चुप रहे और अपने से औ  
 ३२ ईश्वर से बोले । भविष्यद्वाक्ता दो अथवा तीन बोलें और दूसरे बिचार करें  
 ३३ और यदि दूसरे पर जो बैठा है कुछ प्रगट किया जाय तो पहिला चुप रहे

में ठनठनाता पीतल अथवा भस्मनाती भाँझ हूँ । और जो मैं भविष्यद्वाणी बोल २  
सकूँ और सब भेदों को और सब ज्ञान को समझूँ और जो मुझे सम्पूर्ण विश्वास  
दायक यहाँ लों कि मैं पहाड़ों को टाल देऊँ पर मुझ में प्रेम न हो तो मैं कुछ ३  
नहीं हूँ । और जो मैं अपनी सारी सम्पत्ति कंठानों को खिलाऊँ और जो मैं  
खलाये जाने को अपना देह साँप देऊँ पर मुझ में प्रेम न हो तो मुझे कुछ लाभ ४  
नहीं है ॥

प्रेम धीरजवन्त और कृपाल है . प्रेम हाथ नहीं करता है . प्रेम अपनी बड़ाई ४  
नहीं करता है और फूँ न नहीं जाता है । वह अनर्गल नहीं चलता है वह आप- ५  
स्यार्थी नहीं है वह विश्वलाभा नहीं जाता है वह दुर्गाई की चिन्ता नहीं करता  
है । वह अधर्म से आनन्दित नहीं होता है परन्तु सच्चाई पर आनन्द करता है । ६  
वह सब बातें सहता है सब बातों का विश्वास करता है सब बातों की आज्ञा ७  
देखता है सब बातों में स्थिर रहता है ॥

प्रेम कभी नहीं टल जाता है परन्तु जो भविष्यद्वाणियाँ हों तो वे लोप होंगी ८  
अथवा बोलियाँ हों तो उन का अन्त लगेगा अथवा ज्ञान हो तो वह लोप ९  
होगा । क्योंकि हम अंग मात्र जानते हैं और अंग मात्र भविष्यद्वाणी कहते हैं । १  
परन्तु जब वह जो सम्पूर्ण है आवेगा तब वह जो अंग मात्र है लोप हो जायगा । १०  
जब मैं बालक था तब मैं बालक की नाईं बोलता था मैं बालक का सा मन ११  
रखता था मैं बालक का सा विचार करता था परन्तु मैं जो अब मनुष्य हुआ हूँ  
तो बालक की बातें छोड़ दिई हूँ । हम तो अभी दर्पण में गूढ़ अर्थ सा देखते १२  
हैं परन्तु तब साक्षात् देखेंगे . मैं अब अंग मात्र जानता हूँ परन्तु तब जैसा  
पहचाना गया हूँ तैसा ही पहचानूँगा ॥

सो अब विश्वास आज्ञा प्रेम ये तीनों रहते हैं परन्तु इन में से प्रेम श्रेष्ठ है ॥ १३  
चौदहवां पद्य ।

प्रेम की चेष्टा करो तौभी आत्मिक बदरानों की अभिलाषा करो परन्तु अधिक १  
करके कि तुम भविष्यद्वाक्य कहो । क्योंकि जो अन्य भाषा बोलता है सो मनुष्यों से २  
नहीं परन्तु ईश्वर से बोलता है क्योंकि कोई नहीं दूझता है पर आत्मा में वह गूढ़  
बातें बोलता है । परन्तु जो भविष्यद्वाक्य कहता है सो मनुष्यों से सुधारने की ३  
और उपदेश और शांति की बातें करता है । जो अन्य भाषा बोलता है सो अपने ४  
ही को सुधारता है परन्तु जो भविष्यद्वाक्य कहता है सो संहली को सुधारता है ।  
मैं चाहता हूँ कि तुम सब अनेक अनेक भाषा बोलते परन्तु अधिक करके कि तुम ५  
भविष्यद्वाक्य कहते क्योंकि अनेक भाषा बोलनेद्वारा यदि अर्थ न लगावे कि संहली  
सुधारी जाय तो भविष्यद्वाक्य कहनेद्वारा उस से बड़ा है ॥

अब हे भाइयो जो मैं तुम्हारे पास अनेक भाषा बोलता हुआ आऊँ तौभी जो ६  
मैं प्रकाश वा ज्ञान अथवा भविष्यद्वाणी वा उपदेश करके तुम से न बोलूँ तो मुझ  
से तुम्हारा क्या लाभ होगा । निर्जीवि वस्तु भी जो शब्द देती हैं चाहें वंशी चाहे ७  
घोष यदि स्वरों में भेद न कर दें तो जो वंशी अथवा घोष बजाया जाता है सो  
क्योंकर पहचाना जायगा । क्योंकि तुरन्त भी यदि अनिश्चय शब्द देवे तो कौन ८

- आड़े का समय भी काटूंगा कि तुम जिधर कहीं मेरा जाना होय उधर मुझे कुछ दूर लें पहुंचाओ । क्योंकि मैं तुम्हें अब मार्ग में चलते चलते देखने नहीं चाहता हूं पर आशा रखता हूं कि यदि प्रभु ऐसा होने देवे तो कुछ दिन तुम्हारे यहां ठहर जाऊं । परन्तु पेंतिकोष्ट लों में इफिस में रहूंगा । क्योंकि एक बड़ा और कार्य योग्य द्वार मेरे लिये खुला है और बहुत से विरोधी हैं ।
- १० यदि तिमोथिय आये तो देखो कि वह तुम्हारे यहां निर्भय रहे क्योंकि जैसा ११ मैं प्रभु का कार्य करता हूं तैसा वह भी करता है । सो कोई उसे तुच्छ न जाने परन्तु उस को कुशल से आगे पहुंचाओ कि वह मेरे पास आवे क्योंकि मैं भाइयों १२ के संग उस की याद देखता हूं । भाई अपलो के विषय में यह है कि मैं ने उस से बहुत दिन्ती किई कि भाइयों के संग तुम्हारे पास जाय पर उस को इस समय में जाने की कुछ भी इच्छा न थी परन्तु अब अवसर पावेगा तब जायगा ।
- १३ जागते रहो . विश्वास में दृढ़ रहो . पुरुषार्थ करो . चलवन्त होओ । १४ तुम्हारे सब कर्म प्रेम से किये जायें । और हे भाइयो मैं तुम से यह दिन्ती करता हूं . तुम स्तिफान के घराने को जानते हो कि आखाया का पहिला फल है और १५ उन्हीं ने अपने तई पवित्र लोगों की सेवाकाई के लिये ठहराया है । तुम ऐसों के और हर एक मनुष्य के अधीन हो जा सद्कर्मों औ परिश्रम करनेद्वारा है । १६ स्तिफान और फर्तुनात और आखायिक के आने से मैं आनन्दित हूं कि इन्हीं ने १७ तुम्हारी घटी को पूरी किई है । क्योंकि उन्हीं ने मेरे और तुम्हारे मन को सुख दिया है इस लिये ऐसों को मानो ।
- १८ आशिया की मंडलियों की ओर से तुम को नमस्कार . अकूला और प्रिस्कीला का और उन के घर में की मंडली का तुम से प्रभु में बहुत बहुत २० नमस्कार । सब भाई लोगों का तुम से नमस्कार . एक दूसरे को पवित्र चूमा २१ लेके नमस्कार करो । मुक्त पावल का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार । २२ यदि कोई प्रभु यीशु ख्रीष्ट को प्यार न करे तो सापित होय . मारानाथा (अर्थात् २३ प्रभु आता है) । प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे संग होय । ख्रीष्ट यीशु में मेरा प्रेम तुम सभी के संग होवे । आमीन ।

## करिन्थियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री ।

पहिला पत्र ।

पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु ख्रीष्ट का प्रेरित है और भाई तिमोथि ईश्वर की मंडली को जो करिन्थ में है उन सब पवित्र लोगों के संग जो सां आखाया देश में हैं . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाक्य कह सकते हो इस लिये कि सब ३१  
सीखें और सब जाति पावें । और भविष्यद्वाक्यों के आत्मा भविष्यद्वाक्यों के ३२  
वश में हैं । क्योंकि ईश्वर हुनह का नहीं परन्तु जाति का कर्ता है जैसे पवित्र ३३  
लोहों की सब संडलियों में है ॥

तुम्हारी स्त्रियां संडलियों में चुप रहें क्योंकि उन्हें बात करने की नहीं परन्तु ३४  
वश में रहने की आज्ञा दिई गई है जैसे व्यवस्था भी कहती है । और यदि वे ३५  
कुछ सीखने चाहती हैं तो घर में अपने ही स्थानियों से पूछें क्योंकि संडली में  
बात करना स्त्रियों की लज्जा है ॥

व्या ईश्वर का वचन तुम ही में से निजना अथवा केवल तुम्हारे ही पास ३६  
पहुंचा । यदि कोई मनुष्य भविष्यद्वाक्य अथवा आत्मिक जन देव्य पढ़े तो मैं ३७  
तुम्हारे पास जो आते लिखता हूं वह उन्हें साने कि वे प्रभु की आज्ञाएं हैं । परन्तु ३८  
यदि कोई नहीं समझता है तो न समझे । सो है भाइयो भविष्यद्वाक्य कहने की ३९  
अभिलाषा करो और अनेक शाखा बोलने की सत दर्जा । सब कुछ तुम रीति से ४०  
और ठिकाने सिर किया जाय ॥

पन्द्रहवां पटल ।

हे भाइयो मैं वह सुसमाचार तुम्हें बताता हूं जो मैं ने तुम्हें सुनाया जिसे तुम १  
ने ग्रहण भी किया जिस में तुम खड़े भी रहते हो . जिन के द्वारा जो तुम सब २  
वचन को जिस करके मैं ने तुम्हें सुसमाचार सुनाया धारण करते हो तो तुम्हारा ३  
आण भी होना है . नहीं तो तुम ने वृथा विश्वास किया है । क्योंकि सब से बड़ी ४  
बातों में मैं ने यही तुम्हें सोंप दिई जो मैं ने ग्रहण भी किए थे कि खीष्ट धर्म- ५  
पुस्तक के अनुसार हमारे पापों के लिये सरा . और कि वह गाढ़ा गया और ६  
कि धर्मपुस्तक के अनुसार वह तीसरे दिन जी उठा . और कि वह कैफा को ७  
तब बारहों शिष्यों को दिखाई दिया । तब वह एक ही घर में पांच मी से अधिक ८  
भाइयों को दिखाई दिया जिन में से अधिक भाई अब नों बने रहे परन्तु कितने ९  
सो भी गये हैं । तब वह याकूब को फिर सब प्रेरितों को दिखाई दिया । और सब १०  
के पीछे वह सुक को भी जैसे असमय के जन्मे हुए को दिखाई दिया । क्योंकि मैं ११  
प्रेरितों में सब से छोटा हूं और प्रेरित कहलाने के योग्य नहीं हूं इस कारण कि मैं १२  
ने ईश्वर की मंडली को सताया । परन्तु मैं जो कुछ हूं सो ईश्वर के अनुग्रह से १३  
हूं और उस का अनुग्रह जो सुक पर हुआ सो व्यर्थ नहीं . हुआ परन्तु मैं ने उन १४  
सबों से अधिक करके परिश्रम किया तोभी मैं ने नहीं परन्तु ईश्वर के अनुग्रह ने १५  
जो मेरे संग था परिश्रम किया । सो क्या मैं क्या वे हम यूँही उपदेश करते हैं और १६  
तुम ने यूँही विश्वास किया ॥

परन्तु जो खीष्ट को वह कथा सुनाई जाती है कि वह मृतकों में से जी उठा १७  
है तो तुम में से कई एक जन क्योंकि कहते हैं कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं १८  
है । यदि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है तो खीष्ट भी नहीं जी उठा है । और १९  
जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो हमारा उपदेश व्यर्थ है और तुम्हारा विश्वास २०  
भी व्यर्थ है । और हम ईश्वर के विषय में झूठे साक्षी भी ठहरते हैं क्योंकि २१





हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के पिता ईश्वर का जो दया का पिता और समस्त ३  
 शांति का ईश्वर है धन्यवाद होय । जो हमें हमारे मारे क्रेश में शांति देता है ४  
 हम लिये कि हम उन्हें जो किसी प्रकार के क्रेश में हैं उस शांति से शांति दे ५  
 सकें जिस करके हम आप ईश्वर से शांति पाते हैं । क्योंकि जैसा ख्रीष्ट के दुःख ५  
 हमों में बहुत होता है तैसा हमारी शांति भी ख्रीष्ट के द्वारा से बहुत होती ६  
 है । परन्तु हम यदि क्रेश पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति और निम्नार के लिये है ६  
 जो इन्हीं दुःखों में जिन्हें हम भी चढाते हैं स्थिर रहने में गुण करना है ।  
 अथवा यदि शांति पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति और निम्नार के लिये है । और ७  
 तुम्हारे विषय में हमारी आशा दृढ़ है क्योंकि जानते हैं कि तुम जैसे दुःखों के ८  
 तैसे शांति के भी भागी हो ॥

हे भाइयो हम नहीं चाहते हैं कि तुम हमारे उस क्रेश के विषय में अनजान ८  
 रहो जो आशिया में हम को हुआ कि सामर्थ्य से अधिक हम पर अत्यन्त भार ९  
 पड़ा यहाँ लों कि प्राण बचाने का भी हमें उपाय न रहा । दरन हम आप ९  
 मृत्यु की आज्ञा अपने में पा चुके थे कि हमारा भरोसा अपने घर न होय परन्तु १०  
 ईश्वर पर जो मृतकों को जिलाता है । उस ने हमें ऐसी यहाँ मृत्यु से बचाया १०  
 और बचाता है । उस पर हम ने आशा रखी है कि वह फिर भी बचावेगा । कि ११  
 तुम भी हमारे लिये प्रार्थना करके सहायता करोगे जिस्त जो दरदाम बहुतों के १२  
 द्वारा से हमें मिलेगा उस के कारण बहुत लोग हमारे लिये धन्यवाद करें ।

क्योंकि हमारी बड़ाई यह है अर्थात् हमारे मन की सच्ची कि जगत में पर १३  
 और भी तुम्हारे यहाँ हमारा व्यवहार ईश्वर के योग्य की सीधाई और सच्चाई १४  
 प्रतिष्ठित शारीरिक ज्ञान के अनुसार नहीं परन्तु ईश्वर के अनुग्रह के अनुसार था ।  
 क्योंकि हम तुम्हारे पास और कुछ नहीं लिखते हैं केवल वह जो तुम पढ़ने १५  
 अथवा मानते भी हो और मुझे भरोसा है कि अन्त लों भी मानोगे । जैसा तुम १६  
 ने कुछ कुछ हमों को भी माना है कि जिस रीति से प्रभु यीशु के दिन में तुम १७  
 हमारे लिये बड़ाई करने के हेतु हो उसी रीति से तुम्हारे लिये हम भी हैं । और १८  
 इस भरोसे से मैं चाहता था कि पढ़िने तुम्हारे पास आऊँ जिस्त तुम्हें दूसरी बेर १९  
 ज्ञान मिले । और तुम्हारे पास से होके माकिडेनिया को जाऊँ और फिर माकि- २०  
 डेनिया से तुम्हारे पास आऊँ और तुम्हें से विहूदिया की ओर कुछ दूर लों पहुँ- २१  
 चाया जाऊँ । सो इस का विचार करने में क्या मैं ने हलकाई किहू अथवा मैं २२  
 जो विचार करता हूँ क्या शरीर के अनुसार विचार करना हूँ कि मेरी यात में हाँ २३  
 हाँ और नहीं नहीं होवे । ईश्वर विषयामयोग्य सच्ची है कि हमारा बचन जो २४  
 तुम से कहा गया हाँ और नहीं न था । क्योंकि ईश्वर का पुत्र यीशु ख्रीष्ट जिस २५  
 का हमारे द्वारा अर्थात् मेरे और सीला के और तिमोथिय के द्वारा तुम्हारे बीच में २६  
 प्रचार हुआ हाँ और नहीं न था पर उस में हाँ ही था । क्योंकि ईश्वर की प्रति- २७  
 ज्ञाप जितनी हाँ उसी में हाँ और उसी में आमीन हैं जिस्त हमारे द्वारा ईश्वर २८  
 की सहिमा प्रगट होय । और जो हमें तुम्हारे संग ख्रीष्ट में दृढ़ करता है और २९  
 जिस ने हमें अभिप्रेक किया है सो ईश्वर है । जिस ने हम पर आप भी दिई है ३०

४ जो नाश होते हैं . जिन्हें मैं देख पड़ता है कि इस संसार के ईश्वर ने  
अविश्वासियों की बुद्धि अन्धी किई है कि खीष्ट जो ईश्वर की प्रतिमा है तिस  
५ के तेज के सुसमाचार की ज्योति उन पर प्रकाश न होय । क्योंकि हम अपने  
को नहीं परन्तु खीष्ट यीशु को प्रभु करके प्रचार करते हैं और अपने को यीशु के  
६ कारण तुम्हारे दास कहते हैं । क्योंकि ईश्वर जिस ने आज्ञा किई कि अन्धकार  
में से ज्योति चमके वही है जो हम लोगों के हृदय में चमका कि ईश्वर का  
जो तेज यीशु खीष्ट के मुंह पर है उस तेज के ज्ञान की ज्योति प्रकाश होय ॥

७ परन्तु यह सम्पत्ति हमें मिट्टी के वर्तनों में मिली है कि सामर्थ्य की अधिकार  
८ ईश्वर की ठहरे और हमारी ओर से नहीं । हम सर्वथा लेश-पाते हैं पर सकते  
९ में नहीं हैं . दुखधा में हैं पर निरुपाय नहीं . सताये जाते हैं पर त्यागे नहीं  
१० जाते . गिराये जाते हैं पर नाश नहीं होते । हम नित्य प्रभु यीशु का मरण-देह  
११ में लिये फिरते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे देह में प्रगट किया जाय । क्योंकि  
हम जो जीते हैं सदा यीशु के कारण मृत्यु भोगने को सोये जाते हैं कि यीशु  
१२ का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट किया जाय । सो मृत्यु हमों में  
परन्तु जीवन तुम्हों में कार्य करता है ॥

१३ परन्तु विश्वास का वही आत्मा जैसा लिखा है मैं ने विश्वास किया इस  
लिये बोला अब कि हमें मिला है हम भी विश्वास करते हैं इस लिये बोलते भी  
१४ हैं . क्योंकि जानते हैं कि जिस ने प्रभु यीशु को जिला चढाया सो हमें भी यीशु  
१५ के द्वारा जिलाके तुम्हारे संग अपने आगे खड़ा करेगा । क्योंकि सब कुछ तुम्हारे  
लिये है जिस्त अनुग्रह बहुत होके ईश्वर की महिमा के लिये बहुत लोगों के  
१६ धन्यवाद के हेतु से बढ़ता जाय । इस लिये हम कातर नहीं होते हैं परन्तु जो  
हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता है तौभी भीतरी मनुष्यत्व दिन पर दिन  
१७ नया होता जाता है । क्योंकि हमारे लेश का लख, भर का हलका बोझ हमारे  
१८ लिये महिमा का अनन्त भार अधिक से अधिक करके उत्पन्न करता है . कि  
हम तो दृश्य विषयों को नहीं परन्तु अदृश्य विषयों को देखा करते हैं क्योंकि  
दृश्य विषय अनित्य हैं परन्तु अदृश्य विषय नित्य हैं ॥

पाँचवां पर्व ।

१ हम जानते हैं कि जो हमारा पृथिवी पर का डेरा सा घर गिराया जाय तो  
ईश्वर से एक भवन हमें मिला है जो बिन हाथ का बनाया हुआ नित्यस्थायी घर  
२ स्वर्ग में है । क्योंकि इस डेरे में हम कहरते भी हैं और अपना वह खासा जो  
३ स्वर्गीय है ऊपर से पहिनने की लालसा करते हैं । जो ऐसा ही ठहरे कि पहिने  
४ हुए हम नंगे नहीं पाये जायेंगे । हां हम जो इस डेरे में हैं बोझ से दबे हुए  
कहरते हैं क्योंकि हम उतारने की नहीं परन्तु ऊपर से पहिनने की इच्छा करते हैं  
५ कि जीवन से यह मरनहार निगला जाय । और जिस ने हमें इसी बात के लिये  
तैयार किया है सो ईश्वर है जिस ने हमें पवित्र आत्मा का बयाना भी दिया है ।  
६ सो हम सदा ठाढ़स बांधते हैं और यह जानते हैं कि अब लों देह में रहते हैं  
७ सब लों प्रभु से अलग होते हैं । क्योंकि हम रूप-देखने से नहीं परन्तु विश्वास

### तीसरा पट्य ।

क्या हम फिर अपनी प्रशंसा करने लगे हैं अथवा जैसा कितनों को तैसा क्या हमें को भी प्रशंसा की पत्रियां तुम्हारे पास लाने का अथवा तुम्हारे पास से ले खाने का प्रयोजन है । तुम हमारी पत्री हो जो हमारे हृदय में लिखी गई है और सत्य मनुष्यों से पढ़खानी और पढ़ी जाती है । क्योंकि तुम प्रत्यक्ष देख पड़ते हो कि खीष्ट की पत्री हो जिस के विषय में हम ने सेवकारों किई और जो सियाही से नहीं परन्तु जीवते ईश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियाओं पर नहीं परन्तु हृदय की मांसरूपी पटियों पर लिखी गई है ॥

हमें ईश्वर की ओर खीष्ट के द्वारा से सेवा दी भरोसा है . यह नहीं कि हम जैसे अपनी ओर से किमी धात का विचार आप से करने के योग्य हैं परन्तु हमारी योग्यता ईश्वर से होती है . जिस ने हमें नये नियम के सेवक होने के योग्य भी किया लेख के सेवक नहीं परन्तु आत्मा के क्योंकि लेख सारता है परन्तु आत्मा जिलाता है ॥

और यदि मृत्यु की सेवकारों जो लेखों में थी और पत्थरों में खोदी हुई थी तेजोमय हुई यहाँ लों कि मूसा के मुँह के तेज के कारण जो लेप होनेद्वारा भी था इसायेल के सन्तान उस के मुँह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे . तो आत्मा की सेवकारों और भी तेजोमय क्यों न होगी । क्योंकि यदि दंड की आज्ञा की सेवकारों एक तेज थी तो बहुत अधिक करके धर्म की सेवकारों तेज में उस से ओष्ठ है । और जो तेजोमय कहा गया था सो भी इस करके अर्थात् हम अधिक तेज के कारण कुछ तेजोमय न ठहरा । क्योंकि यदि यह जो लेप होनेद्वारा था तेजवन्त था तो बहुत अधिक करके यह जो बना रहेगा तेजोमय है ॥

सो ऐसी आज्ञा रखने से हम बहुत खोलके धात करते हैं . और ऐसे नहीं जैसा मूसा अपने मुँह पर परदा डालता था कि इसायेल के सन्तान उस लेप होनेद्वारे विषय के अन्त पर दृष्टि न करें । धरन उन की दृष्टि मन्द हुई क्योंकि आज्ञा लों पुराने नियम के पढ़ने में यही परदा पड़ा रहता है और नहीं खुलता है कि यह खीष्ट में लेप किया जाता है । पर आज्ञा लों जब मूसा का पुस्तक पढ़ा जाता है उन के हृदय पर परदा पड़ा है । परन्तु जब यह प्रभु की ओर फिरेगा तब यह परदा उठाया जायगा । प्रभु तो आत्मा है और जहाँ प्रभु का आत्मा है तहाँ निर्वन्धता है । और हम सब उघाड़े मुँह प्रभु का तेज जैसे दर्पण में देखते हुए मानो प्रभु अर्थात् आत्मा के गुण से तेज पर तेज प्राप्त कर उसी रूप में बदलते जाते हैं ॥

### चौथा पट्य ।

इस कारण जब कि उस दया के अनुसार जो हम पर किई गई यह सेवकारों हमें मिली है हम कातर नहीं होते हैं . पर लज्जा के गुप्त कामों को त्यागके न अतुराई से चलते हैं न ईश्वर के अचन में मिलावट करते हैं परन्तु सत्य को प्रगट करने से हर एक मनुष्य के विवेक को ईश्वर के आगे अपने विषय में प्रमाण देते हैं । पर हमारा सुसमाचार यदि गुप्त भी है तो उन्हीं पर गुप्त है ॥

८ ऐसे हैं तौभी सचे हैं . अनजाने हुआं के ऐसे हैं तौभी जाने जाते हैं मरते हुआं  
के ऐसे हैं और देखो जीवते हैं साइना किये हुआं के ऐसे हैं और घात नहीं  
१० किये जाते हैं . उदासों के ऐसे हैं परन्तु सदा आनन्द करते हैं कंगालों के ऐसे हैं  
परन्तु बहुतों को धनधान करते हैं ऐसे हैं जैसा हमारे पास कुछ नहीं है तौभी  
सब कुछ रखते हैं ॥

११ हे करिन्धियो हमारा मुँह तुम्हारी ओर खुला है हमारा हृदय विस्तारित  
१२ हुआ है । तुम्हें हमों में सकेता नहीं है परन्तु तुम्हारे ही अन्तःकरण में तुम्हें  
१३ सकेता है । पर मैं तुम को जैसा अपने लड़कों को इस का वैसा ही बदला  
१४ बताता हूँ कि तुम भी विस्तारित होओ । मत अविश्वासियों के संग असमान जूस  
में जुत जाओ क्योंकि धर्म और अधर्म का कौन सा साभा है और अन्धकार  
१५ के साथ ज्योति की कौन संगति । और विलयाल के संग खीष्ट की कौन  
१६ सम्मति है अथवा अविश्वासी के साथ विश्वासी का कौन सा भाग । और  
मूर्तों के संग ईश्वर के मन्दिर का कौन सा सम्बन्ध है क्योंकि तुम तो जीवते  
ईश्वर के मन्दिर हो जैसा ईश्वर ने कथा में उन में यसंगा और उन में फिबंगा  
१७ और मैं उन का ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे । इस लिये परमेश्वर कहता  
है उन के बीच में से निकले और अलग दोओ और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ  
१८ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा . और मैं तुम्हारा पिता होंगा और तुम मेरे पुत्र और  
पुत्रियां होओ सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है ॥

सातवां पर्व ।

१ सो हे प्यारे जब कि यह प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं आओ हम अपने को शरीर  
और आत्मा की सब मलीनता से शुद्ध करें और ईश्वर का भय रखते हुए सन्पूर्ण  
पवित्रता को प्राप्त करें ॥

२ हमें ग्रहण करो हम ने न किसी से अन्याय किया न किसी को बिगाड़ा न किसी  
३ को ठगा । मैं दोषी ठहराने को नहीं कहता हूँ क्योंकि मैं ने आगे से कहा है  
कि तुम हमारे मन में हो ऐसा कि हम तुम्हारे संग मरने और तुम्हारे संग जीने  
४ को तैयार हैं । तुम्हारी ओर मेरा साइस बहुत है तुम्हारे विषय में मुझे बड़ाई  
करने की जगह बहुत है हमारे सब क्लेश के विषय में मैं शांति से भर गया हूँ  
और अधिक से अधिक आनन्द करता हूँ ॥

५ क्योंकि जब हम माकिदोनिया में आये तब भी हमारे शरीर को कुछ चैन  
नहीं मिला पर हम समस्त प्रकार से क्लेश पाते थे . बाहर से युद्ध भीतर से भय  
६ था । परन्तु दीनों की शांति देनेहारे ने अर्थात् ईश्वर ने तीतस के आने से हमों  
७ को शांति दीई . और केवल उस के आने से नहीं पर उस शांति से भी जिस  
करके उस ने तुम्हारी लालसा और तुम्हारे खिलाप और मेरे लिये तुम्हारे अनुराग  
का समाचार हम से कहते हुए तुम्हारे विषय में शांति पाई यहाँ लों कि मैं  
अधिक आनन्दित हुआ ॥

८ क्योंकि जो मैं ने इस पत्रो से तुम्हें शोक दिलाया तौभी मैं यद्यपि प्रकृताता  
था अब नहीं प्रकृताता हूँ . मैं देखता हूँ कि उस पत्रो ने यदि केवल थोड़ी

मे चलते हैं । इस लिये हम माहम करते हैं और यही अधिक चाहते हैं कि देह ८  
से अलग होके प्रभु के संग रहें ।

इस कारण हम चाहें संग रहते हुए चाहे अलग होते हुए उस की प्रसन्नता ९  
प्राप्त होने की चेष्टा करते हैं । क्योंकि हम सभी का खीष्ट के विचार आत्मन के १०  
आगे प्रगट किया जाना अग्रगण्य है लिम्बे हर एक उन क्या भला काम क्या दुःख  
जो कुछ किया हो उस के अनुसार देह के द्वारा किये हुए का फल पाये । सो ११  
प्रभु का भय मानके हम मनुष्यों को समझाते हैं पर ईश्वर के आगे हम प्रगट  
होते हैं और मुझे भरोसा है कि तुम्हों के मन में भी प्रगट हुए हैं । क्योंकि हम १२  
तुम्हारे पास फिर अपनी प्रशंसा करते हैं सो नहीं परन्तु तुम्हें हमारे विषय में बढ़ाई  
करने का कारण देते हैं कि जो लोभ हृदय पर नहीं परन्तु रूप पर धर्म करतो  
हैं उन के विरुद्ध बढ़ाई करने की जगह तुम्हें मिले । क्योंकि हम चाहें वेसुख हों १३  
तो ईश्वर के लिये वेसुख हैं चाहें सुखद्वि हों तो तुम्हारे लिये सुखद्वि हैं ।

खीष्ट का प्रेम हमें बंध कर लेता है क्योंकि हम ने यह विचार किया कि यदि १४  
सभी के लिये एक मरा तो वे सब मृत, और वह सभी के लिये हम कारण १५  
मरा कि जो जीवते हैं सो अब अपने लिये न जीवें परन्तु उस के लिये हो उन  
के निमित्त मरा और जी उठा । सो हम अब मे जिम्मा को शरीर के अनुसार १६  
करके नहीं समझते हैं और यदि हम खीष्ट को शरीर के अनुसार करके समझते  
भी थे तौभी अब उस को नहीं ऐसा समझते हैं । सो यदि कोई खीष्ट में होय १७  
तो नई सृष्टि है, पिछली यातें बीत गई हैं देखा सब धार्मिक नई हुई हैं ॥

और सब यातें ईश्वर की ओर से हैं जिस ने योऽनु खीष्ट के द्वारा हमें अपने १८  
साथ मिला लिया और मिलाप की सेवाकाई हमें दिई, अर्थात् कि ईश्वर जगत १९  
के लोगों के अपराध उन पर न लगाके खीष्ट में जगत को अपने साथ मिला  
लेता था और मिलाप का यजन हमों को सौंप दिया । सो हम खीष्ट की मन्ती २०  
हूँ हैं मानो ईश्वर हमारे द्वारा उपदेश करना है, हम खीष्ट की मन्ती मिली  
करते हैं ईश्वर से मिलाये जाओ । क्योंकि जो पाप से अनजान था उस को उस २१  
ने हमारे लिये पाप बनाया कि उस में हम ईश्वर के धर्म बर्न ।

छठवां पंथ ।

सो हम जो महकर्मों हैं उपदेश करते हैं कि ईश्वर के अनुग्रह को ग्रहण १  
न करो । क्योंकि वह कहता है मैं ने शुभ काल में तेरी सुनी और निस्तार २  
के दिन में तेरा उपकार किया, देखा अभी वह शुभ काल है देखा अभी वह  
निस्तार का दिन है । हम किसी बात से कुछ टोकर नहीं गिलाते हैं कि हम ३  
सेवाकाई पर दोष न लगाया जाय, परन्तु जैसे ईश्वर के सेवक तैसे हर बात से ४  
अपने लिये प्रमाण देते हैं अर्थात् बहुत धीरता से क्रोधा से दरिद्रता से संकटों  
में, मार खाने में अन्दीगृहों में दुल्लहों में परिश्रम में जागते रहने में उपवास ५  
करने में, शुद्धता से ज्ञान से धीरज से कृपालुता से पवित्र आत्मा से निष्कपट ६  
प्रेम में । मृत्यु के यजन से ईश्वर के सामर्थ्य से दहिने श्री धार्मिक धर्म के ७  
शिष्याओं से, आदर श्री निरादर से अपयश श्री सुयश से कि भस्मानेदारों के ८



१३ और वह अपना हाथ उस के सिर पर रखे और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हाथन के बेटे उस के लोहू को यज्ञवेदी पर चारों ओर छिड़के ।  
 १४ तब वह उस में से अपनी भेंट लावे परमेश्वर के लिये होम चिकनाई जो ओम्भ  
 १५ को ठांपती है और सारी चिकनाई जो ओम्भ पर है । और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की भिल्ली गुर्दे समेत अलग  
 १६ करे । और याजक उन्हें यज्ञवेदी पर जलावे वह भेंट का भोजन आग से परमे-  
 १७ श्वर के सुगंध के लिये बना है सारी चिकनाई परमेश्वर की है । यह तुम्हारी वस्तियों में तुम्हारी पीढ़ियों के लिये सनातन की विधि है जिसमें तुम कुछ चिक-  
 नाई और लोहू न खाओ ॥

### चौथा पर्व ।

१ फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला । कि इसराएल के संतानों से कह  
 कि यदि कोई प्राणी परमेश्वर की आज्ञाओं के विरोध में अज्ञानता से पाप करे  
 ३ जिस का होना अनुचित था । यदि वह अभियेक किया हुआ याजक लोगों के  
 पाप के समान पाप करे तो वह अपने पाप के कारण जो उस ने किया है अपने  
 ४ पाप की भेंट के लिये निष्कोट एक बकिया परमेश्वर के लिये लावे । और वह  
 उस बकिया को मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे लावे और बकिया  
 ५ के सिर पर अपना हाथ रखे और बकिया को परमेश्वर के आगे बलि करे । और  
 वह याजक जो अभियेक किया हुआ है उस बकिया के लोहू से कुछ लेवे और  
 ६ उसे मंडली के तंबू में लावे । और याजक अपनी अंगुली लोहू में डुबोके परमेश्वर  
 ७ के आगे पवित्र स्थान के धूँघट के सामने उस लोहू से सात बार छिड़के । और  
 याजक लोहू से सुगंधवेदी के सींगों पर जो मंडली के तंबू में है परमेश्वर के आगे  
 लगावे और उस बकिया के उबरे हुए लोहू को बलिदान की भेंट की यज्ञवेदी की  
 ८ जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है डाले । और सारी चिकनाई को पाप  
 की भेंट के बकड़े से अलग करे जो चिकनाई ओम्भ को ठांपती है और सब  
 ९ चिकनाई जो ओम्भ पर है । और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों  
 १० पास है और कलेजे पर की भिल्ली गुर्दे समेत अलग करे । जिस रीति से कुशल के  
 बलिदान की भेंट के बकड़े से अलग किया जाता है और याजक उन्हें बलिदान  
 ११ की भेंट की यज्ञवेदी पर जलावे । और उस बकड़े की खाल और उस का समस्त  
 १२ मांस उस के सिर पाँव समेत और उस के ओम्भ और उस का गोबर । और समस्त  
 बकड़ा तंबू के बाहर निर्मल स्थान में जहाँ राख डाली जाती है ले जावे और उसे  
 लकड़ियों पर आग से जलावे राख डालने के स्थान पर जलाया जावे ॥  
 १३ और यदि इसराएल की सारी मंडली अज्ञानता से ऐसा पाप करें जो मंडली  
 की दृष्टि से छिप जावे और वे परमेश्वर की आज्ञाओं में से ऐसा कुछ करें जो  
 १४ विपरीत है और अपराधी हो जायें । तो जब वह पाप जो उन्होंने ने किया  
 जाना जावे तब मंडली एक बकड़ा पाप के बलिदान के लिये लेवे और उसे  
 १५ मंडली के तंबू के सामने लावे । और मंडली के प्राचीन अपने हाथ परमेश्वर के  
 आगे उस बकड़े के सिर पर रखें और बकड़ा परमेश्वर के आगे बलि किया

धर लों तौभी तुम्हें शोक तो दिलाया । अभी मैं आनन्द करता हूँ इस लिये नहीं कि तुम ने शोक किया परन्तु इस लिये कि शोक करने से पश्चात्ताप किया क्योंकि तुम्हारा शोक ईश्वर की इच्छा के अनुसार था जिसे तुम्हें हमारा और से किसी बात में हानि न होय । क्योंकि जो शोक ईश्वर की इच्छा के अनुसार है उस से वह पश्चात्ताप उत्पन्न होता है जिस करके आग है और जिस से किसी को नहीं पकनाना है । परन्तु संसार के शोक से मृत्यु उत्पन्न होती है । क्योंकि अपना यही ईश्वर की इच्छा के अनुसार शोक दिलाया जाना देखो कि उस से कितना यत्न हां उत्तर देने की कितनी चिन्ता हां कितनी रिस हां कितना भय हां कितनी लालसा हां कितना अनुगम हां दंड देने का कितना विचार तुम में उत्पन्न हुआ । तुम ने समस्त प्रकार से अपने लिये इस बात में निर्दोष होने का प्रमाण दिया है । सो मैं ने जो तुम्हारे पास लिखा तौभी न तो उस के कारण निम्ना जिस ने अप- राध किया न उस के कारण जिस का अपराध किया गया परन्तु इस कारण कि हमारे लिये जो तुम्हारा यत्न है सो तुम्हें मैं ईश्वर के मन्तव्य प्रगट किया जाय ॥

इस कारण से हम ने तुम्हारी शांति से शांति पाई और बहुत अधिक करके तीतस के आनन्द से और भी आनन्दित हुए क्योंकि उस के मन को तुम सभी को और से सुख दिया गया है । क्योंकि यदि मैं ने उस के आगे तुम्हारे विषय में कुछ बढ़ाई किई है तो लज्जित नहीं किया गया है परन्तु जैसा हम ने तुम से सब बातें सच्चाई से कहीं तैसा हमारा तीतस के आगे बढ़ाई करना भी मत्त हुआ है । और वह जो तुम सभी के आत्मा पालन को स्मरण करता है कि तुम ने धोकर डरते और कांपते हुए हम को ग्रहण किया तो बहुत अधिक करके तुम पर स्नेह करता है । मैं आनन्द करता हूँ कि तुम्हारी और से मुझे समस्त प्रकार से ठाढ़स वन्धता है ॥

आठवां पर्व ।

हे भाइयो हम तुम्हें ईश्वर का यह अनुग्रह जनाते हैं जो साकिदोजिया की संडलियों में दिया गया है । कि क्लेश को बढ़ी परीक्षा में उन के आनन्द की अधिकाई और उन की महा दरिद्रता इन दोनों के बढ़ जाने से उन की उदारता का धन प्रगट हुआ । क्योंकि मैं साक्षी देता हूँ कि वे अपने सामर्थ्य भर और सामर्थ्य से अधिक आप ही से तैयार थे । और हम बहुत सनाके विन्ती करते थे कि हम उस दान को और पवित्र लोगों के लिये जो सेवकाई तिस की संगति को ग्रहण करें । और जैसा हम ने आज्ञा रखी थी तैसा नहीं परन्तु उन्हें ने अपने तई पहिले प्रभु को तब ईश्वर की इच्छा से हमें को दिया । यहाँ लों कि हम ने तीतस से विन्ती किई कि जैसा उस ने आगे आरंभ किया था तैसा तुम्हें मैं इस अनुग्रह के कर्म को समाप्त भी कर ले ॥

परन्तु जैसे घर एक बात में अर्थात् विश्वास में और यत्न में और ज्ञान में और सारे यत्न में और हमारी और तुम्हारे प्रेम में तुम्हारी बढ़ती होती है तैसे इस अनुग्रह के कर्म में भी तुम्हारी बढ़ती होय । मैं आज्ञा की रीति पर नहीं परन्तु औरों के यत्न करने के कारण और तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने के लिये

१ कहता हूँ । क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह जानते हो कि वह जो धनी था तुम्हारे कारण दरिद्र हुआ कि उस की दरिद्रता के द्वारा तुम धनी होओ । और इस बात में मैं परामर्श देता हूँ क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छा है जो बरस दिन से केवल करने का नहीं परन्तु चाहने का भी आरंभ आगे से ११ कर चुके । सो अब करने की भी समाप्ति करो कि जैसा चाहने को तुम्हारे मन की तैयारी थी वैसा तुम्हारी सम्पत्ति के समान तुम्हारा समाप्ति करना भी होवे । १२ क्योंकि यदि आगे से मन की तैयारी होती है तो जो जिस के पास नहीं है उस १३ के अनुसार नहीं परन्तु जो जिस के पास है उस के अनुसार वह ग्राह्य है । यह १४ इस लिये नहीं है कि औरों को चैन और तुम को क्रोध मिले , परन्तु समता से इस वर्तमान समय में तुम्हारी बढ़ती उन्हीं की घटती में काम आवे इस लिये १५ कि उन की बढ़ती भी तुम्हारी घटती में काम आवे जिस्ती समता होय , जैसा लिखा है जिस ने बहुत संचय किया उस का कुछ उभरा नहीं और जिस ने थोड़ा संचय किया उस का कुछ घटा नहीं ।

१६ और ईश्वर का धन्यवाद होय जो तुम्हारे लिये वही यत्न तीतस के हृदय में १७ देता है , कि उस ने वह बिन्ती ग्रहण किई बरन अति यत्नवान होके वह अपनी १८ इच्छा से तुम्हारे पास गया है । और हम ने उस के संग उस भाई को भेजा है १९ जिस की प्रशंसा सुसमाचार के विषय में सब मंडलियों में होती है । और केवल इतना नहीं परन्तु वह मंडलियों से ठहराया भी गया कि इस अनुग्रह के कर्म के लिये जिस की सेवकाई हम से किई जाती है हमारे संग चले जिस्ती प्रभु की २० महिमा और तुम्हारे मन की तैयारी प्रगट किई जाय । हम इस बात में चौकस रहते हैं कि इस अधिकारी के विषय में जिस की सेवकाई हम से किई जाती है २१ कोई हम पर दोष न लगावे । क्योंकि जो बातें केवल प्रभु के आगे नहीं परन्तु २२ मनुष्यों के आगे भी भली हैं हम उन की चिन्ता करते हैं । और हम ने उन के संग अपने भाई को भेजा है जिस को हम ने बारंबार बहुत बातों में परखके यत्नवान पाया है पर अब तुम पर जो बड़ा भरोसा है उस के कारण बहुत अधिक २३ यत्नवान पाया है । यदि तीतस की पूकी जाय तो वह मेरा साथी और तुम्हारे लिये सहकर्मी है अथवा हमारे भाई लोग हों तो वे मंडलियों के दूत और २४ ख्रीष्ट की महिमा हैं । सो उन्हें मंडलियों के सन्मुख अपने प्रेम का और तुम्हारे विषय में हमारे बड़ाई करने का प्रमाण दिखाओ ।

नवां पर्व ।

१ पवित्र लोगों के लिये जो सेवकाई तिस के विषय में तुम्हारे पास लिखना २ मुझे अवश्य नहीं है । क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी को जानता हूँ जिस के लिये मैं तुम्हारे विषय में माकिदोनियों के आगे बड़ाई करता हूँ कि आखाया के लोग बरस दिन से तैयार हुए हैं और तुम्हारे अनुराग ने बहुतें को हिसका ३ दिलाया है । परन्तु मैं ने भाइयों को इस लिये भेजा है कि तुम्हारे विषय में जो हम ने बड़ाई किई है सो इस बात में व्यर्थ न ठहरे अर्थात् कि जैसा मैं ने ४ कहा तैसे तुम तैयार हो रहो , ऐसा न हो कि यदि कोई माकिदानी लोग मेरे

संग आके तुम्हें तैयार न पायें तो क्या जानें इस निर्मल बड़ाई करने में हम न कहें तुम लज्जित होओ-पर हम ही लज्जित होयें । इस लिये मैं ने भाइयों से ५  
 चिन्ती करना अवश्य समझा कि वे आगे से तुम्हारे पास जायें और तुम्हारी उदारता का फल जिस का सुदेश आगे दिया गया था आगे से सिद्ध करें कि यह लाभ के नहीं परन्तु उदारता के फल के जैसा तैयार होयें ॥

परन्तु यह है कि जो लज्जता से बोता है सो लज्जता से लगेगा भी और जो उदारता से बोता है सो उदारता से लगेगा भी । हर एक जन जैसा मन में ठाने तैसा दान करे कुछ कुछके अथवा दयाव से न देवे क्योंकि ईश्वर दय से देनेहारे को प्यार करता है । और ईश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें अधिकार में दे सकता है जिससे हर बात में और हर समय में सब कुछ जो अवश्य होय तुम्हारे पास रहे और तुम्हें हर एक अच्छे काम के लिये बहुत सामर्थ्य होय । जैसा लिखा है उस ने बिखराया उस ने कंगालों को दिया उस का धर्म सदा लों रहता है । जो देनेहारे को बोज और भोजन के लिये रोटीं देनेहारा है सो तुम्हें देवे और तुम्हारा बोज फलवन्त करे और तुम्हारे धर्म के फलों को अधिक करे, कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा ईश्वर का धन्यवाद कावाती है धनदान किये जायें । क्योंकि इस उपकार की सेवाकाई न केवल पवित्र लोगों की चटियों को पूरी करती है परन्तु ईश्वर के बहुत धन्यवादों के द्वारा से उभरती भी है । क्योंकि वे इस सेवाकाई में प्रमाण लेके तुम जो खीष्ट के सुसमाचार के अधीन होने का अंगीकार करते हो उस अधीनता के लिये और उन की और सभी की सहायता करने में तुम्हारी उदारता के लिये ईश्वर का गुणानुवाद करते हैं । और ईश्वर का अत्यन्त अनुग्रह जो तुम पर है उस के कारण तुम्हारी लालसा करते हुए तुम्हारे लिये प्रार्थना करने में भी ईश्वर की सहिमा प्रगट करते हैं । ईश्वर का उस के अकल्प दान के लिये धन्यवाद होयें ॥ १३  
 हमारा पञ्च ।

मैं बड़ी पायल जो तुम्हारे साम्ने तुम्हों में दीन हूँ परन्तु तुम्हारे पीछे तुम्हारी और सादस करता हूँ तुम से खीष्ट की नम्रता और कोमलता के कारण चिन्ती करता हूँ । मैं यह चिन्ती करता हूँ कि तुम्हारे साम्ने तुम्हें उस दृढ़ता से सादस करना न पड़े जिस से मैं किनारों पर जो हमों को शरीर के अनुसार चलनेहारे समझते हैं सादस करने का विचार करता हूँ । क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते हैं । क्योंकि हमारे पुद्ग के दृष्टिधार शारीरिक नहीं परन्तु गढ़ों को तोड़ने के लिये ईश्वर के कारण सामर्थ्य हैं । हम तर्कों को और हर एक कंची बात को जो ईश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उठती है खंडन करते हैं और हर एक भावना को खीष्ट की आजाकारी करने के लिये बन्दी कर लेते हैं । और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आजापालन पूरा हो जाय तब हर एक आजाखंडन का बंद देवें ॥

क्या तुम जो कुछ मनुष्य है वही को देखते हो । यदि कोई अपने में भरोसा रखता है कि वह खीष्ट का है तो आप ही फिर यह समझे कि जैसा यह खीष्ट



लिई । और सब में तुम्हारे संग था और मुझे छटी हुई तब मैं ने किसी पर ९  
भार नहीं दिया क्योंकि भाइयों ने माकिदोनिया से आके मेरी छटी को पूरी  
क्रिई और मैं ने सर्वथा अपने को तुम पर भार होने से बचा रखा और बचा  
रखूंगा । जो खीष्ट की सच्चाई मुझ में है तो मेरे विषय में यह बड़ाई आग्राया १०  
देश में नहीं बन्द क्रिई जायगी । किस कारण . क्या इस लिये कि मैं तुम्हें प्यार ११  
नहीं करता हूं . ईश्वर जानता है । पर मैं जो करता हूं सोई कहूंगा कि जो १२  
लोग दांच छुटते हैं उन्हें मैं दांच पाने न देऊं कि जिस बात में वे घमंड करते हैं  
उस में वे हमारे ही समान ठहरें ॥

क्योंकि ऐसे लोग भूठे प्रेरित हैं छल का कार्य करनेवाले खीष्ट के प्रेरितों का १३  
रूप धरनेवाले । और यह कुछ अचभे की बात नहीं क्योंकि गैतान आप भी १४  
ज्योति के दूत का रूप धरता है । सो यदि उस के सेवक भी धर्म के सेवकों १५  
का सा रूप धरें तो कुछ बड़ी बात नहीं है . पर उन का अन्त उन के कर्मों के  
अनुसार होगा ॥

मैं फिर कहता हूं कोई मुझे मूर्ख न समझे और नहीं तो यदि मूर्ख जानके १६  
तोभी मुझे ग्रहण करो कि छोड़ा सा मैं भी बड़ाई करूं । मैं जो जानता हूं उस १७  
को प्रभु की आज्ञा के अनुसार नहीं परन्तु इस निर्भय बड़ाई करने में जैसे मूर्खता  
से बोलता हूं । जय कि बहुत लोग जरीर के अनुसार बड़ाई करते हैं मैं भी १८  
बड़ाई कहूंगा । तुम तो बुद्धिमान होके आनन्द से मूर्खों की सब लेते हो । १९  
क्योंकि यदि कोई तुम्हें दाम बनाता है यदि कोई खा जाता है यदि कोई ले २०  
लेता है यदि कोई अपना बड़ापन करता है यदि कोई तुम्हारे मुंह पर शपेठा  
मारता है तो तुम सब लेते हो । इस अनादर की रीति पर मैं कहता हूं मानो २१  
कि हम दुर्व्यल थे . परन्तु जिस बात में कोई साहस करता है मैं मूर्खता से  
कहता हूं मैं भी साहस करता हूं ॥

क्या वे इन्ही लोग हैं . मैं भी हूं . क्या वे बनायेली हैं . मैं भी हूं . क्या वे दूराणीम २२  
के वंश हैं . मैं भी हूं । क्या वे खीष्ट के सेवक हैं . मैं बुद्धिहीन सा बोलता हूं उन २३  
से बढकर मैं बहुत अधिक परिश्रम करने से और अत्यन्त भार ग्याने से और बन्दी-  
गृह में बहुत अधिक पढ़ने से और मृत्यु की धारदार पहुंचने में खीष्ट का सेवक  
ठहरा । पांच बार मैं ने विद्वदियों के हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाये । २४  
तीन बार मैं ने वेत खाई एक बार पत्थरबाज किया गया तीन बार जघाज जिन २५  
पर मैं चढ़ा था टूट गये एक रात दिन मैं ने समुद्र में काटा । नदियों की अनेक २६  
जोखिम डाकूओं की अनेक जोखिम अपने लोगों से अनेक जोखिम अन्यदेशियों  
से अनेक जोखिम नगर में अनेक जोखिम जंगल में अनेक जोखिम समुद्र में अनेक  
जोखिम भूठे भाइयों में अनेक जोखिम इन सब जोखिमों सहित बार बार यात्रा  
करने से . और परिश्रम और लेश से बार बार जागते रहने से भूख और प्यास से २७  
बार बार उपवास करने से जाड़े और नंगारी से मैं खीष्ट का सेवक ठहरा । और २८  
और बातों को छोड़के यह भीड़ जो प्रतिदिन मुझ पर पड़ती है अर्थात् सब मंड-  
लियों की चिन्ता । कौन दुर्व्यल है और मैं दुर्व्यल नहीं हूं . कौन ठोकर खाता २९



३० है और मैं नहीं जलता हूँ । यदि बड़ाई करना अवश्य है तो मैं अपनी दुर्बलता  
 ३१ की बातों पर बड़ाई करूँगा । हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का पिता ईश्वर जो सर्वदा  
 ३२ धन्य है जानता है कि मैं झूठ नहीं बोलता हूँ । दमेसक में अरिता राजा की  
 और से जो अध्यक्ष था सो मुझे पकड़ने की इच्छा से दमेसकियों के नगर पर  
 ३३ पहरा दिलाता था । और मैं खिड़की देके टोकरे में भीत पर से लटकाया गया  
 और उस के हाथ से बच निकला ।

बारहवां पर्व ।

१ बड़ाई करना मेरे लिये अच्छा तो नहीं है । मैं प्रभु के दर्शनों और प्रकाशों  
 २ का वर्णन करूँगा । मैं ख्रीष्ट में एक मनुष्य को जानता हूँ कि चौदह बरस हुए  
 क्या देह सहित मैं नहीं जानता हूँ क्या देह रहित मैं नहीं जानता हूँ ईश्वर  
 ३ जानता है ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग लों उठा लिया गया । मैं ऐसे मनुष्य को  
 जानता हूँ क्या देह सहित क्या देह रहित मैं नहीं जानता हूँ ईश्वर जानता  
 ४ है । कि स्वर्गलोक पर उठा लिया गया और अकल्प्य बातें सुनीं जिन के बोलने  
 ५ का सामर्थ्य मनुष्य को नहीं है । ऐसे मनुष्य के विषय में मैं बड़ाई करूँगा परन्तु  
 ६ अपने विषय में बड़ाई न करूँगा केवल अपनी दुर्बलताओं पर । क्योंकि यदि मैं  
 बड़ाई करने की इच्छा करूँगा तो मूर्ख न होगा क्योंकि सत्य बोलूँगा परन्तु मैं  
 ७ रुक जाता हूँ ऐसा न हो कि कोई जो कुछ वह देखता है कि मैं हूँ अथवा मुझ  
 ८ से सुनता है उस से मुझ को कुछ बड़ा समझे । और जिस्ती में प्रकाशों की  
 अधिकाई से अभिमानी न हो जाऊँ इस लिये शरीर में एक कांटा मानो मुझे  
 ९ घूसे मारने को शैतान का एक दूत मुझे दिया गया कि मैं अभिमानी न हो  
 जाऊँ । इस बात पर मैं ने प्रभु से तीन बार विन्ती किई कि मुझ से यह दूर  
 १० किया जाय । और उस ने मुझ से कहा मेरा अनुग्रह तेरे लिये वस है क्योंकि मेरा  
 सामर्थ्य दुर्बलता में सिद्ध होता है । सो मैं अति आनन्द से अपनी दुर्बलताओं  
 ही के विषय में बड़ाई करूँगा कि ख्रीष्ट का सामर्थ्य मुझ पर आ वसे ।  
 ११ इस कारण मैं ख्रीष्ट के लिये दुर्बलताओं से और निन्दाओं से और दरिद्रता  
 से और उपद्रवों से और संकटों से प्रसन्न हूँ क्योंकि जब मैं दुर्बल हूँ तब  
 बलवन्त हूँ ।

१२ मैं बड़ाई करने में मूर्ख बना हूँ तुम ने मुझ से ऐसा करवाया है । उचित था  
 कि मेरी प्रशंसा तुम्हों से किई जाती क्योंकि यद्यपि मैं कुछ नहीं हूँ तौभी उन  
 १३ अत्यन्त बड़े प्रेरितों से किसी बात में घट नहीं था । प्रेरित के लक्षण तुम्हारे  
 बीच में सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हां और अद्भुत कामों और आश्चर्य कर्मों  
 १४ से दिखाये गये । कौन सी बात थी जिस में तुम और और मंडलियों से घट थे  
 केवल यह कि मैं ने आप ही तुम पर भार नहीं दिया । मेरी यह अनीति क्षमा  
 १५ कीजियो । देखो मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आने को तैयार हूँ और मैं तुम पर  
 भार न दूँगा क्योंकि मैं तुम्हारी सम्पत्ति को नहीं पर तुम ही को चाहता हूँ  
 १६ लिये संचय करें । परन्तु यद्यपि मैं जितना तुम्हें अधिक प्यार करता हूँ उतना

थोड़ा प्यारा हूँ तौभी मैं अति आनन्द से तुम्हारे प्राणों के लिये खर्च करूँगा और खर्च किया जाऊँगा ॥

सो ऐसा होय मैं ने तुम पर जोर नहीं डाला . तौभी [कहते हैं कि] मैं ने १६ चतुर होके तुम्हें छल से पकड़ा । क्या जिनमें मैं ने तुम्हारे पास भेजा उन में से १७ किसी को कट सकते कि हम के द्वारा मे मैं ने लाभ कर कुछ तुम से लिया । मैं १८ ने तीतम से यिन्ती किई और भाई को उस के संग भेजा . क्या तीतम ने लाभ कर कुछ तुम से लिया . क्या हम एक ही आत्मा से न चले . क्या एक ही लोक पर न चले ॥

फिर क्या तुम समझते हो कि हम तुम्हारे सामे अपना उत्तर देते हैं . हम १९ तो ईश्वर के सामे खीष्ट में बोलते हैं पर हे प्यारे मय घातें तुम्हारे सुधारने के लिये बोलते हैं । क्योंकि मैं दरता हूँ ऐसा न हो कि क्या जानें मैं आके तुम्हें २० न ऐसे पाऊँ जैसे मैं चाहता हूँ और मैं तुम से ऐसा पाया जाऊँ जैसा तुम नहीं चाहते हो . कि क्या जानें नाना भाँति के घैर हाथ क्रोध विवाद दुर्वचन फुसफुसाहट अभिमान और दम्बे होय । और मेरा ईश्वर कहीं मुझे फिर आने २१ पर तुम्हारे यहां देठा करे और मैं उन्हीं में से बहुतों के लिये शोक करूँ जिनमें ने आगे पाप किया था और उस अमृद कर्म और दयविचार और लुचपन से जो उन्हीं ने किये थे पञ्चात्ताप नहीं किया है ॥

तेरहवां पय्य ।

यह तीसरी धार में तुम्हारे पास आता हूँ . दो और तीन मात्तियों के मुँह से १ हर एक घात टहराई जायगी । मैं पहिले कह चुका और जैसा तुम्हारे सामे २ दूसरी घैर आगे से कहता हूँ और तुम्हारी पीठ के पीछे उन लोगों के पास जिनमें ने आगे पाप किया था और और मय लोगों के पास अय लिखता हूँ कि ३ ता मैं फिर तुम्हारे पास आऊँ तो नहीं छोड़ूँगा । तुम तो खीष्ट के मुँह में बोलने का प्रमाण डूँडते हो जो तुम्हारी और दुर्वल नहीं है परन्तु तुम्हों में ४ आसर्ष्य है । क्योंकि यद्यपि यह दुर्वलता से क्रूर पर घात किया गया तौभी ईश्वर के आसर्ष्य से जीता है . हम भी उस से दुर्वल हैं परन्तु तुम्हारी और ईश्वर के आसर्ष्य से हम के संग जीयेंगे । अपने को परमो कि विप्रवास में हो ५ के नहीं अपने को जाँचो . अथवा क्या तुम अपने को नहीं पहचानते हो कि प्रीणु खीष्ट तुम्हों में है नहीं तो तुम निकृष्ट हो । पर मेरा भरोसा है कि तुम ६ जानागे कि हम निकृष्ट नहीं हैं । परन्तु मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम कोई कुकर्म न करो . हम लिये नहीं कि हम खरे देख पड़ें परन्तु हम लिये कि तुम सुकर्म करो . हम वरन निकृष्ट के ऐसे होयें तो होयें । क्योंकि हम सत्य के ७ विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु सत्य के निमित्त । जब हम दुर्वल हैं पर तुम ८ बलवन्त हो तब हम आनन्द करते हैं और हम हम बात की प्रार्थना भी करते हैं अर्थात् तुम्हारे सिद्ध होने की । इस कारण मैं तुम्हारे पीछे यह घात लिखता हूँ १० कि तुम्हारे सामे मुझे उस अधिकार के अनुसार लिसे प्रभु ने नाश करने के लिये नहीं परन्तु सुधारने के लिये मुझे दिया है कड़ाई से कुछ करना न पड़े ॥

- ११ अन्त में हे भाइयो यह कहता हूँ कि आनन्दित रहो सुधर जाओ शांति होओ  
 एक ही मन रखो मिले रहो और प्रेम और शांति का ईश्वर तुम्हारे संग होगा ।  
 १२ एक दूसरे को पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो । सब पवित्र लोगों का तुम से  
 १३ नमस्कार । प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह और ईश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा  
 की संगति तुम सभी के साथ रहे । आमीन ॥

## गलातियों का पावल प्रेरित की पत्री ।

प्रथमा पत्र ।

- १ पावल जो न मनुष्यों की ओर से और न मनुष्य के द्वारा से परन्तु यीशु ख्रीष्ट  
 के द्वारा से और ईश्वर पिता के द्वारा से जिस ने उस को मृतकों में से उठाया  
 २ प्रेरित है . और सब भाई लोग जो मेरे संग हैं गलातियों की मंडलियों को .  
 ३ तुम्हें अनुग्रह और शांति ईश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट से मिले . जिस  
 ने अपने को हमारे पापों के लिये दिया कि हमें इस वर्तमान घुरे संसार से बचावे  
 ४ हमारे पिता ईश्वर की इच्छा के अनुसार . जिस का गुणानुवाद सदा सर्वदा  
 होवे . आमीन ॥  
 ५ मैं अचंभा करता हूँ कि जिस ने तुम्हें ख्रीष्ट के अनुग्रह के द्वारा बुलाया उस  
 ६ से तुम ऐसे शीघ्र और ही सुसमाचार की ओर फिरे जाते हो । और वह तो  
 दूसरा सुसमाचार नहीं है पर केवल कितने लोग हैं जो तुम्हें व्याकुल करते हैं  
 ७ और ख्रीष्ट के सुसमाचार को बदल डालने चाहते हैं । परन्तु यदि हम भी अथवा  
 स्वर्ग से एक दूत भी उस सुसमाचार से भिन्न जो हम ने तुम को सुनाया दूसरा  
 ८ सुसमाचार तुम्हें सुनावे तो सापित होवे । जैसा हम ने पहिले कहा है तैसा मैं  
 अब भी फिर कहता हूँ कि जिस को तुम ने ग्रहण किया उस से भिन्न यदि कोई  
 १० तुम्हें दूसरा सुसमाचार सुनाता है तो सापित होवे । क्योंकि मैं अब क्या मनुष्यों  
 को अथवा ईश्वर को मनाता हूँ . अथवा क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने चाहता  
 हूँ . जो मैं अब भी मनुष्यों को प्रसन्न करता तो ख्रीष्ट का दास न होता ॥  
 ११ हे भाइयो मैं उस सुसमाचार के विषय में जो मैं ने प्रचार किया तुम्हें जनाता  
 १२ हूँ कि वह मनुष्य के मत के अनुसार नहीं है । क्योंकि मैं ने भी उस को मनुष्य  
 की ओर से नहीं पाया और न मैं सिखाया गया परन्तु यीशु ख्रीष्ट के प्रकाश  
 करने के द्वारा से पाया ॥  
 १३ क्योंकि यहूदीय मत में मेरी जैसी चाल चलन आगे थी सो तुम ने सुनी है  
 १४ कि मैं ईश्वर की मंडली को अत्यन्त सताता था और उसे नाश करता था : और  
 अपने देश के बहुत लोगों से जो मेरी बयस के थे यहूदीय मत में अधिक बढ़  
 गया कि मैं अपने पुर्खों के व्यवहारों के विषय में बहुत अधिक धुन लगाता

था । परन्तु ईश्वर की जिस ने मुझे मेरी माता के गर्भ ही में अलग किया और अपने १४  
 अनुग्रह से बुलाया जय बच्चा हुई . कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे जिसने १६  
 में अन्यदेशियों में उस का सुसमाचार प्रचार करे तब तुरन्त मैं ने मांस और लोह  
 के संग परामर्श न किया . और न विश्वलीम को उन के पास गया जो मेरे आगे १७  
 प्रेरित थे परन्तु अरब देश को चला गया और फिर दमस्क को लाटा । तब तीन १८  
 वरस के पीछे मैं पितर से भेंट करने को विश्वलीम गया और उस के यहाँ पन्द्रह  
 दिन रहा । परन्तु प्रेरितों में से मैं ने और किसी को नहीं देखा केवल प्रभु के १९  
 भाई याकूब को । मैं तुम्हारे पास जो बातें लिखता हूँ देखो ईश्वर के सामने मैं २०  
 कहता हूँ कि मैं झूठ नहीं बोलता हूँ । तिस के पीछे मैं सुरिया और किलिकिया २१  
 देशों में गया । पर विहूदिया की मंडलियों को जो ख्रीष्ट में यीं मेरे रूप का परि- २२  
 चय नहीं हुआ था । ये केवल सुनते थे कि जो हमें आगे सताता था सो जिस २३  
 विश्वास को आगे नाश करता था उसी का अब सुसमाचार प्रचार करता है ।  
 और मेरे विषय में उन्हीं ने ईश्वर का गुणानुवाद किया ॥ २४

दूसरा पृष्ठ ।

तब चौदह वरस के पीछे मैं वर्गवा के साथ फिर विश्वलीम को गया और १  
 तीतस को भी अपने संग ले गया । मैं प्रकाश के अनुसार गया और जो सुसमाचार २  
 में अन्यदेशियों में प्रचार करता हूँ उस को मैं ने उन्हीं सुनाया पर जो बड़े समझे  
 जाते थे उन्हीं एकान्त में सुनाया जिसने न हो कि मैं किसी गीति से व्यूया दौड़ता ३  
 हूँ अथवा दौड़ा था । परन्तु तीतस भी जो मेरे संग था यद्यपि यूनानी था तभी ४  
 उस के खतना किये जाने की आज्ञा न दिई गई । और यह उन झूठे भाइयों के ५  
 कारण हुआ जो घोरी से भीतर ले लिये गये थे और हमें बंध में डालने के लिये  
 हमारी निर्वन्धता को जो ख्रीष्ट यीशु में हमें मिली है देख लेने को क्लिपके ६  
 घुम आये थे । उन के ठग में हम एक चड़ी भी अधीन नहीं रहे इस लिये कि ७  
 सुसमाचार की सच्चाई तुम्हारे पास बनी रहे । फिर जो लोग कुछ बड़े समझे ८  
 जाते थे वे जैसे थे तैसे थे मुझे कुछ काम नहीं ईश्वर किसी मनुष्य का पक्षपात नहीं  
 करता है उन से मैं ने कुछ नहीं पाया क्योंकि जो लोग बड़े समझे जाते थे उन्हीं ९  
 ने मुझे कुछ नहीं बताया । परन्तु इस के विरुद्ध जब याकूब और कैफा और योहन १०  
 ने जो खंभे समझे जाते थे देखा कि जैसा खतना किये हुएों के लिये सुसमाचार  
 पितर को सोंपा गया तैसा खतनाहीनों के लिये मुझे सोंपा गया . क्योंकि जिस ने ११  
 पितर से खतना किये हुएों में जो प्रेरितार्थ का कार्य करवाया तिस ने मुझ से  
 भी अन्यदेशियों में कार्य करवाया . और अब उन्हीं ने उस अनुग्रह को जो मुझे १२  
 दिया गया था जान लिया तब उन्हीं ने मुझ को और वर्गवा को संगति के दौड़ने  
 दाय्य दिये इस कारण कि हम अन्यदेशियों के पास और वे आप खतना किये १३  
 हुएों के पास जायें । केवल यह चाहा कि हम कंगालों की सुध लें और यही १४  
 काम करने में मैं ने तो यत्न भी किया ॥

परन्तु अब पितर अन्तर्लिखित में आया तब मैं ने साक्षात् उस का साम्रा किया १५  
 इस लिये कि दीर्घी ठहराया गया था । क्योंकि कितने लोगों के याकूब के पास १६

से आने के पहिले वह अन्यदेशियों के साथ खाता था परन्तु जब वे आये तब  
 १३ खेतना किये हुए लोगों के डर के मारे हटके अपने को अलग रखता था । और  
 उस के संग दूसरे यहूदियों ने भी कपट किया यहां लों कि बर्णवा भी उन के  
 १४ कपट से बहकाया गया । परन्तु जब मैं ने देखा कि वे सुसमाचार की सच्चाई  
 पर सीधे नहीं चलते हैं तब मैं ने सभी के सामे पितर से कहा कि जो तू यहूदी  
 होके अन्यदेशियों की रीति पर चलता है और यहूदीय मत पर नहीं तो तू अन्य-  
 १५ देशियों को यहूदीय मत पर क्यों चलाता है । हम जो जन्म के यहूदी हैं और  
 १६ अन्यदेशियों में को पापी लोग नहीं . यह जानके कि मनुष्य व्यवस्था के कर्मों से  
 नहीं पर केवल यीशु ख्रीष्ट के विश्वास के द्वारा से धर्मी ठहराया जाता है हम  
 ने भी ख्रीष्ट यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कर्मों से नहीं पर ख्रीष्ट  
 के विश्वास से धर्मी ठहरे इस कारण कि व्यवस्था के कर्मों से कोई प्राणी  
 १७ धर्मी नहीं ठहराया जायगा । परन्तु यदि ख्रीष्ट में धर्मी ठहराये जाने का यत्न  
 करने से हम आप भी पापी ठहरे तो क्या ख्रीष्ट पाप का सेवक है . ऐसा न  
 १८ हो । क्योंकि जो वस्तु मैं ने गिराई थी यदि उसी को फिर बनाता हूं तो अपने  
 १९ पर प्रमाण देता हूं कि अपराधी हूं । मैं तो व्यवस्था के द्वारा से व्यवस्था के लिये  
 २० मरा कि ईश्वर के लिये जीऊं । मैं ख्रीष्ट के संग क्रूश पर चढ़ाया गया हूं तौभी  
 जीता हूं . अब तो मैं आप नहीं पर ख्रीष्ट मुझ में जीता है और मैं शरीर में  
 अब जो जीता हूं सो ईश्वर के पुत्र के विश्वास में जीता हूं जिस ने मुझे प्यार  
 २१ किया और मेरे लिये अपने को सोंप दिया । मैं ईश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं  
 करता हूं क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा से धर्म होता है तो ख्रीष्ट अकारण मूआ ।

### तीसरा पर्व ।

१ हे निर्वुद्धि गलातियो किस ने तुम्हें मोह लिया है कि तुम लोग सत्य को न  
 मानो जिन के आगे यीशु ख्रीष्ट क्रूश पर चढ़ाया हुआ साक्षात् तुम्हारे बीच में  
 २ प्रगट किया गया । मैं तुम से केवल यही सुनने चाहता हूं कि तुम ने आत्मा  
 को क्या व्यवस्था के कर्मों के हेतु से अथवा विश्वास के समाचार के हेतु से  
 ३ पाया । क्या तुम ऐसे निर्वुद्धि हो . क्या आत्मा से आरंभ करके तुम अब शरीर  
 ४ से सिद्ध किये जाते हो । क्या तुम ने इतना दुःख वृथा उठाया . जो ऐसा  
 ठहरे कि वृथा ही उठाया ॥  
 ५ जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम्हें मैं आश्चर्य कर्म कराता है सो  
 क्या व्यवस्था के कर्मों के हेतु से अथवा विश्वास के समाचार के हेतु से ऐसा  
 ६ करता है । जैसे इब्राहीम ने ईश्वर का विश्वास किया और यह उस के लिये  
 ७ धर्म गिना गया । सो यह जानो कि जो विश्वास के अवलम्बी हैं सोई इब्राहीम  
 ८ के सन्तान हैं । फिर ईश्वर जो विश्वास से अन्यदेशियों को धर्मी ठहराता है  
 यह बात आगे से देखके धर्मपुस्तक ने इब्राहीम को आगे से सुसमाचार सुनाया  
 ९ कि तुम में सब देशों के लोग आशीस पावेंगे । सो वे जो विश्वास के अवलम्बी  
 हैं विश्वासी इब्राहीम के संग आशीस पाते हैं ॥  
 १० क्योंकि जितने लोग व्यवस्था के कर्मों के अवलम्बी हैं वे सब सापबध हैं

जाये । और याजक जो अभिषेक किया हुआ है उस बछड़े के लोहू में से मंडली १६ के तंबू में लावे । और याजक अपनी अंगुली लोहू में डुबोके परमेश्वर के आगे १७ घूँघट के सामने सात बार छिड़के । और लोहू में यज्ञवेदी के सींगों पर जो पर- १८ मेश्वर के आगे मंडली के तंबू में है लगाये और उबरा हुआ लोहू भेंट के बलिदान की भेंट की यज्ञवेदी की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है डाल दे । और उस की सारी चिकनाई उस में से निश्चालके यज्ञवेदी पर जलावे । १९ और जैसे अपराध के बलिदान के बछड़े से किया था वैसा ही इस बछड़े से २० करे और याजक उन के लिये प्रायश्चित्त करे और वह उन के लिये क्षमा किया जायगा । और उस बछड़े को छावनी में बाहर ले जाय और वैसे उस ने पहिली २१ बछिया को जलाया था वैसा इसे भी जलावे यह मंडली के लिये पाप की भेंट है ॥

जब कोई अध्यक्ष पाप करे और अज्ञानता से परमेश्वर अपने ईश्वर की २२ किसी आज्ञा में से कोई गेमा कार्य करे जो उचित न था और अपराधी होवे । अथवा यदि उस का पाप जिसे उस ने किया जाना जावे तब वह चकरी का २३ निष्खाट नर मेसा अपनी भेंट के लिये लावे । और अपना हाथ उस चकरी के २४ मिर पर रखे और उसे उस स्थान में जाँ बलिदान की भेंट बलि देती है परमेश्वर के आगे बलि करे यह पाप की भेंट है । और याजक पाप की भेंट २५ के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेके बलिदान की भेंट की यज्ञवेदी के सींगों पर लगावे और उस का लोहू बलिदान की भेंट की यज्ञवेदी की जड़ पर डाले । और उस की सब चिकनाई कुशल की भेंट के बलिदान की चिकनाई की नाई २६ यज्ञवेदी पर जलावे और याजक उस के पाप के कारण उस के लिये प्रायश्चित्त करे और उस के लिये क्षमा किया जायगा ॥

और यदि उस देश के लोगों में से अज्ञानता से कोई पाप करे और २७ परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध अनुचित करे और दोषी होवे । अथवा यदि उस २८ का पाप जो उस ने किया है उसे जान पड़े तब वह अपने पाप के लिये जो उस ने किया है अपनी भेंट के लिये एक स्त्रीवर्ग निष्खाट चकरी का एक मेसा लावे । और अपना हाथ पाप की भेंट के मिर पर रखे और पाप की भेंट को २९ बलिदान की भेंट के स्थान से बलि करे । और याजक उस के लोहू में से अपनी ३० अंगुली पर लेवे और बलिदान की भेंट की यज्ञवेदी के सींगों पर लगावे और उस का समस्त लोहू यज्ञवेदी की जड़ पर डाले । और उस की सब चिकनाई जिम ३१ रीति से कुशल की भेंट के बलिदान की चिकनाई अलग किई जाती है अलग करे और याजक उसे परमेश्वर के सुगंध के लिये यज्ञवेदी पर जलावे और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह उस के लिये क्षमा किया जायगा ॥

और यदि वह अपने पाप की भेंट के लिये मेसा लावे तो वह एक स्त्रीवर्ग ३२ निष्खाट लावे । और वह अपना हाथ अपने पाप की भेंट के मिर पर रखे और ३३ उसे जहाँ बलिदान की भेंट बलि किई जाती है वहाँ पाप के लिये बलिदान करे । और याजक पाप की भेंट के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेके बलिदान ३४ की भेंट की यज्ञवेदी के सींगों पर लगावे और उस का समस्त लोहू यज्ञवेदी



२ का स्वामी है तौभी दास से कुछ भिन्न नहीं है . परन्तु पिता के ठहराये हुए  
 ३ समय लों रक्तकों और भंडारियों के वश में है । वैसे ही हम भी अब बालक थे  
 ४ तब संसार की आदिशिक्षा के वश में दास बने हुए थे । परन्तु अब समय की  
 पूर्णता पहुँची तब ईश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था  
 ५ के वश में उत्पन्न हुआ . इस लिये कि दास देके उन्हें जो व्यवस्था के वश में हैं  
 ६ लुढ़ावे जिस्ते लेपालकों का पद हमें मिले । और तुम जो पुत्र हो इस कारख  
 ईश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को जो दे अच्चा अर्थात् दे पिता पुकारता है  
 ७ तुम्हारे हृदय में भेजा है । सो तू अब दास नहीं परन्तु पुत्र है और यदि पुत्र है  
 तो खीष्ट के द्वारा से ईश्वर का अधिकारी भी है ।

८ भला तब तो तुम ईश्वर को न जानके उन्होंने के दास थे जो स्वभाव से  
 ९ ईश्वर नहीं हैं . परन्तु अब तुम ईश्वर को जानके पर और भी ईश्वर से जाने  
 जाके क्योंकि फिर उस दुर्व्यल और फलहीन आदिशिक्षा की ओर मुँह फेरते हो  
 १० जिस के तुम फिर नये सिर से दास हुआ चाहते हो । तुम दिनों और मासों और  
 ११ समयों और वरसों को मानते हो । मैं तुम्हारे विषय में डरता हूँ कि क्या जानें मैं  
 १२ ने वृथा तुम्हारे लिये परिश्रम किया है । हे भाइयो मैं तुम से विन्ती करता हूँ  
 तुम मेरे समान हो जाओ क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूँ . तुम से मेरी कुछ  
 १३ ज्ञानि नहीं हुई । पर तुम जानते हो कि पहिले मैं ने शरीर की दुर्व्यलता के कारख  
 १४ तुम्हें सुसमाचार सुनाया । और मेरी परीक्षा को जो मेरे शरीर में थी तुम ने तुच्छ  
 नहीं जाना न धिन्न किया परन्तु जैसे ईश्वर के दूत को जैसे खीष्ट यीशु को तैसे  
 १५ ही मुझ को ग्रहण किया । तो वह तुम्हारी धन्यता कैसी थी . क्योंकि मैं तुम्हारा  
 साक्षी हूँ कि जो हो सकता तो तुम अपनी अपनी आंखें निकालके मुझ को देते ।  
 १६ सो क्या तुम से सत्य बोलने से मैं तुम्हारा वैरी हुआ हूँ । वे भली रीति से तुम्हारे  
 १७ अभिलाषी नहीं होते हैं परन्तु तुम्हें निकलवाया चाहते हैं जिस्ते तुम उन के  
 १८ अभिलाषी होओ । पर अच्छा है कि भली बात में तुम्हारी अभिलाषा जिस समय  
 मैं तुम्हारे संग रहूँ केवल उसी समय किई जाय सो नहीं परन्तु सदा किई जाय ।  
 १९ हे मेरे बालको जिन के लिये जब लों तुम्हें मैं खीष्ट का रूप न बन जाय तब  
 २० लों मैं फिर प्रसन्न की सी पीढ़ उठाता हूँ . मैं चाहता कि अब तुम्हारे संग होता  
 और अपनी बोली बदलता क्योंकि तुम्हारे विषय में मुझे सन्देह होता है ॥

२१ तुम जो व्यवस्था के वश में हुआ चाहते हो मुझ से कहो क्या तुम व्यवस्था  
 २२ की नहीं सुनते हो । क्योंकि लिखा है कि इब्राहीम के दो पुत्र हुए एक तो दासी  
 २३ से और एक तो निर्वन्ध स्त्री से । परन्तु जो दासी से हुआ सो शरीर के अनुसार  
 २४ जन्मा पर जो निर्वन्ध स्त्री से हुआ सो प्रतिज्ञा के द्वारा से जन्मा । यह बातें  
 दृष्टान्त के लिये कही जाती हैं क्योंकि यह स्त्रियां दो नियम हैं एक तो सीनई  
 २५ पर्वत से जो दास होने के लिये लड़के जनता है सोई हाजिरा है । क्योंकि  
 हाजिरा का अर्थ अरब में सीनई पर्वत है और वह यिब्रशलीम के तुल्य जो अब  
 २६ है गिब्रल जाती है और अपने बालकों समेत दासी होती है । परन्तु ऊपर की  
 २७ यिब्रशलीम निर्वन्ध है और वह हम सभी की माता है । क्योंकि लिखा है हे बांभ

क्योंकि लिखा है हर एक जन को व्यवस्था के पुस्तक में लिखी हुई सय यात्रा पालन करने को उन में वसा नहीं रहता है सापित है । परन्तु व्यवस्था के द्वारा ११ से ईश्वर के पक्ष कोई नहीं धर्मी ठहरता है यह बात प्रगट है क्योंकि विश्वास से धर्मी जन जीयेगा । पर व्यवस्था विश्वास संबन्धी नहीं है परन्तु जो मनुष्य १२ यह बात पालन करे सो उन से जीयेगा । खीष्ट ने दास देके हमें व्यवस्था के १३ बाप से बुझाया कि वह हमारे लिये सापित बना क्योंकि लिखा है हर एक जन को काठ पर लटकाया जाता है सापित है । यह हम लिये हुआ कि इब्राहीम १४ की आशीम खीष्ट यीशु में अन्यदेशियों पर पहुंचे और कि जो कुछ आत्मा के विषय में प्रतिज्ञा किया गया सो विश्वास के द्वारा से हमें मिले ॥

हे भाइयो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं कि मनुष्य के नियम को भी जो १५ दृढ़ किया गया है कोई टाल नहीं देता है और न उस में मिला देता है । फिर १६ प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को और उस के वंश को दिई गईं . यह नहीं कहता है वंशों को जैसे बहुतों के विषय में परन्तु जैसे एक के विषय में और तारे वंश को . सोई खीष्ट है । पर मैं यह कहता हूं कि जो नियम ईश्वर ने खीष्ट के १७ लिये आगे से दृढ़ किया था उस को व्यवस्था जो चार सौ तीस घरम पीछे हुई नहीं उठा देती है ऐसा कि प्रतिज्ञा को व्यर्थ कर दे । क्योंकि यदि अधिकार १८ व्यवस्था से होता है तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं है . परन्तु ईश्वर ने उसे इब्राहीम को प्रतिज्ञा के द्वारा से दिया है ॥

तो व्यवस्था क्या करती है . जय लों वह वंश जिस को प्रतिज्ञा दिई गई थी १९ न आया तब लों अपराधों के कारण वह भी दिई गई और वह वृत्तों के द्वारा मध्यम्य के हाथ में निरूपण किई गई । मध्यम्य एक का नहीं होता है परन्तु २० ईश्वर एक है । तो क्या व्यवस्था ईश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरुद्ध है . ऐसा न २१ हो क्योंकि यदि मेरी व्यवस्था दिई जाती कि जिनाने सकती तो निश्चय करके धर्म व्यवस्था से होता । परन्तु धर्मपुस्तक ने सभी को बाप तले बन्द कर रखा २२ इस लिये कि यीशु खीष्ट के विश्वास का फल जिस की प्रतिज्ञा किई गई विश्वास करनेवालों को दिया जावे । परन्तु विश्वास के आने के पहिले हम २३ विश्वास के लिये जो प्रगट होने पर या व्यवस्था के पक्ष में व्यव किए हुए रहते थे । सो व्यवस्था हमारी शिक्षक हुई है कि खीष्ट लों पहुंचावे किन्तु इस २४ विश्वास से धर्मी ठहराये जायें ॥

परन्तु विश्वास जो आ चुका है तो अब हम शिक्षक के वंश में नहीं हैं । २५ क्योंकि खीष्ट यीशु पर विश्वास करने के द्वारा से तुम सय ईश्वर के सन्तान हो । २६ क्योंकि जितनों ने खीष्ट में उपतिममा लिया उन्हें ने खीष्ट को पहिन लिया । २७ उस में न पिछड़ी न मूनानी है उस में न दास न निर्धन है उस में नर और नारी २८ नहीं है क्योंकि तुम सय खीष्ट यीशु में एक हो । पर जो तुम खीष्ट के हो तो २९ इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार अधिकारी हो ॥

चाथा पृष्ठ ।

पर मैं कहता हूं कि अधिकारी जय लों वातक है तब लों यद्यपि सय वस्तुओं ९

और और कर्म . इन के विषय में मैं तुम को आगे से कहता हूँ जैसा मैं ने आगे भी कहा था कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे ईश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे ।  
 २२ परन्तु आत्मा का फल यह है प्रेम आनन्द मिलाप धीरज कृपा भलाई विश्वास  
 २३ नम्रता और संयम . कोई व्यवस्था ऐसे ऐसे कामों के विरुद्ध नहीं है । जो खीष्ट  
 २४ के लोग हैं उन्हें ने शरीर को उस के रोगों और अभिलाषों समेत क्रूश पर चढ़ाया  
 २५ है । जो हम आत्मा के अनुसार जीते हैं तो आत्मा के अनुसार चलें भी । हम  
 घमंडी न हो जायें जो एक दूसरे को कैंड़े और एक दूसरे से डाढ़ करें ॥

कठवां पर्व ।

१ हे भाइयो यदि मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जावे तौभी तुम जो  
 आत्मिक हो नम्रता संयुक्त आत्मा से ऐसे मनुष्य को सुधारो और तू अपने को  
 २ देख रख कि तू भी परीक्षा में न पड़े । एक दूसरे के भार उठाओ और इस  
 ३ रीति से खीष्ट की व्यवस्था को पूरी करो । क्योंकि यदि कोई जो कुछ नहीं है  
 ४ समझता है कि मैं कुछ हूँ तो अपने को धोखा देता है । परन्तु हर एक जन  
 अपने काम को जांचे और तब दूसरे के विषय में नहीं पर केवल अपने विषय  
 ५ में उस को बड़ाई करने की जगह होगी । क्योंकि हर एक जन अपना ही बोझ  
 ६ उठावेगा । जो बचन की शिक्षा पाता है सो समस्त अच्छी वस्तुओं में सिखाने-  
 ७ हारे की सहायता करे । धोखा मत खाओ ईश्वर से ठग्रा नहीं किया जाता है  
 ८ क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है उस को लवेगा भी । क्योंकि जो अपने शरीर के  
 लिये बोता है सो शरीर से बिनाश लवेगा परन्तु जो आत्मा के लिये बोता है सो  
 ९ आत्मा से अनन्त जीवन लवेगा । पर सुकर्म करने में हम कातर न होयें क्योंकि  
 १० जो हमारा बल न घटे तो ठीक समय में लवेंगे । इस लिये जैसा हमें अवसर  
 मिलता है हम सब लोगों से पर निज करके विश्वास के धराने से भलाई करें ॥  
 ११ देखो मैं ने कौसी बड़ी पत्नी तुम्हारे पास अपने हाथ से लिखी है । जितने  
 १२ लोग शरीर में अच्छा रूप दिखाने चाहते हैं वे ही तुम्हारे खतना किये जाने की  
 दृढ़ आज्ञा देते हैं केवल इसी लिये कि वे खीष्ट के क्रूश के कारण सताये न  
 १३ जायें । क्योंकि वे भी जिन का खतना किया जाता है आप व्यवस्था को पालन  
 नहीं करते हैं परन्तु तुम्हारे खतना किये जाने की इच्छा इस लिये करते हैं कि  
 १४ तुम्हारे शरीर के विषय में बड़ाई करें । पर मुझ से ऐसा न होवे कि किसी और  
 बात के विषय में बड़ाई करूं केवल हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के क्रूश के विषय में  
 जिस के द्वारा से जगत मेरे लेखे क्रूश पर चढ़ाया गया है और मैं जगत के  
 १५ लेखे । क्योंकि खीष्ट यीशु में न खतना न खतनाहीन होना कुछ है परन्तु नई  
 १६ सृष्टि । और जितने लोग इस विधि से चलेंगे उन्हें पर और ईश्वर के इसायेली  
 १७ लोग पर कल्याण और दया होवे । अब तो कोई मुझे दुःख न देवे क्योंकि मैं  
 १८ प्रभु यीशु के चिन्ह अपने देह में लिये फिरता हूँ । हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु  
 खीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे आत्मा के संग होवे । आमीन ॥

जो नहीं जनती है आनन्दित हो तू जो प्रमद की पीढ़ नहीं उठाती है ऊँचे शब्द से पुकार क्योंकि जिस स्त्री को स्वामी है उस के लङ्कों से अनाथ के लङ्के और भी बहुत हैं । पर हे भाइयो हम लोग हमदाक की रीति पर प्रतिज्ञा के सन्तान २८ हैं । परन्तु जैसा उस समय में जो शरीर के अनुसार जन्मा सो उस को जो आत्मा २९ के अनुसार जन्मा मताता था वैसा ही अब भी होता है । परन्तु धर्मपुस्तक क्या ३० कहता है . दासी को और उस के पुत्र को निकाल दे क्योंकि दासी का पुत्र निर्वन्ध स्त्री के पुत्र के संग अधिकारी न होगा । सो हे भाइयो हम दासी के नहीं परन्तु ३१ निर्वन्ध स्त्री के सन्तान हैं ॥

### पाँचवां पद्य ।

सो उस निर्वन्धता में जिस करके स्त्रीष्ट ने हमें निर्वन्ध किया है दृढ़ रहे और १ दासत्व के जूय में फिर मत जाते जाओ । देखा मैं पायल तुम से कहता हूँ कि २ जो तुम्हारा खतना किया जाय तो स्त्रीष्ट में तुम्हें कुछ लाभ न होगा । फिर भी ३ मैं साक्षी दे हर एक मनुष्य से जिस का खतना किया जाता है कहता हूँ कि सारी व्यवस्था को पूरी करना उस को अवश्य है । तुम में से जो जो व्यवस्था के ४ अनुसार धर्मी ठहराये जाते हो सो स्त्रीष्ट में भग्न हुए हो . तुम अनुग्रह से पतित हुए हो । क्योंकि पाँचव आत्मा में हम लोग विश्वास में धर्म की आशा की ५ बात जोहते हैं । क्योंकि स्त्रीष्ट योग में न खतना न खतनाहीन होना कुछ काम ६ आता है परन्तु विश्वास जो प्रेम के द्वारा से कार्यकारी होता है ।

तुम भली रीति से दौड़ते थे . किस ने तुम्हें रोका कि सत्य को न मानो । ७ यह मनायना तुम्हारे धुलानेधारे को और से नहीं है । थोड़ा सा खमीर सारे पिंड ८ को खमीर कर डालता है । मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूँ कि ९ तुम्हारी कोई दूसरी मति न होगी पर जो तुम्हें व्याकुल करता है कोई हो यह हम का दंड भोगेगा । पर हे भाइयो जो मैं अब भी खतने का उपदेश करता हूँ तो १० क्यों फिर मताया जाता हूँ . तब क्रूश की टोकर तो जाती रही । मैं चाहता हूँ ११ कि जो तुम्हें गढ़बढ़ाते हैं सो अपने ही को काट डालते ।

क्योंकि हे भाइयो तुम लोग निर्वन्ध होने को धुलाये गये केवल इस निर्वन्धता १२ से शरीर के लिये गाँ मत पकड़ो परन्तु प्रेम से एक दूसरे के दास बनो । क्योंकि १३ सारी व्यवस्था एक ही बात में पूरी होती है अर्थात् इस में कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर । परन्तु जो तुम एक दूसरे को दांत से काटो सो या १४ जावो तो चौकस रहे कि एक दूसरे से नाश न किये जावो । पर मैं कहता हूँ आत्मा १५ के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे । क्योंकि १६ शरीर की लालसा आत्मा के विरुद्ध और आत्मा की शरीर के विरुद्ध होती है और ये दोनों परस्पर विरोध करते हैं इस लिये कि तुम जो करने चाहो उसे करने न पावो । परन्तु जो तुम आत्मा के चलाये चलते हो तो व्यवस्था के वश १७ में नहीं हो । शरीर के कर्म प्रगट हैं सो ये हैं परस्त्रीगमन वधभिचार अशुद्धता १८ लुचपन . मूर्तिपूजा टोना औ नाना भाँति के शत्रुता वैर ईर्ष्या क्रोध विवाद २० विरोध कुपन्थ . डाह नरहिंसा मत्प्राप्तपन औ लोला क्रोड़ा और इन के ऐसे २१

- २ से तुम बुलाये गये उस के योग्य चाल चलो . अर्थात् सारी दीनता और नम्रता  
 ३ सहित और धीरज सहित प्रेम से एक दूसरे की सह लेओ . और मिलाप के बंध  
 में आत्मा की एकता की रक्षा करने का यत्न करो ॥
- ४ जैसे तुम अपनी खुलाहट की एक ही आशा में बुलाये गये तैसे ही एक देह  
 ५ है और एक आत्मा . एक प्रभु एक विश्वास एक वपत्तिसमा . एक ईश्वर और  
 सभी का पिता जो सभी पर और सभी के मध्य में और तुम सभी में है ॥
- ६ परन्तु अनुग्रह हम से से हर एक को खीष्ट के दान के परिमाण से दिया  
 ७ गया । इस लिये वह कहता है कि वह जंघे पर चढ़ा और बंधुओं को बांध ले  
 ८ गया और मनुष्यों को दान दिये । इस बात का कि चढ़ा क्या अभिप्राय है .  
 ९ यही कि वह पहिले पृथिवी के निचले स्थानों में उतरा भी था । जो उतर गया  
 १० सोई है जो सब स्वर्गों से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ पूर्ण करे । और उस  
 ने ये दान दिये अर्थात् जब लों हम सब लोग विश्वास की और ईश्वर के पुत्र  
 के ज्ञान की एकता लों न पहुंचें और एक पूरा मनुष्य न हो जावें और खीष्ट की  
 १२ पूर्णता की डील के परिमाण लों न बढ़ें . तब लों उस ने पवित्र लोगों की  
 पूर्णता के कारण खेवकाई के कर्म के लिये और खीष्ट के देह के सुधारने के  
 १३ लिये . कितनों को प्रेरित करके और कितनों को भविष्यद्वक्ता करके और कितनों  
 को सुसमाचार प्रचारक करके और कितनों को रखवाले और उपदेशक करके  
 १४ दिया . इस लिये कि हम अब बालक न रहें जो मनुष्यों की ठगबिद्या के और  
 भ्रम की जुगतें बांधने की चतुराई के द्वारा उपदेश की हर एक ब्यांर से लहराते  
 १५ और इधर उधर फिराये जाते हैं . परन्तु प्रेम में सत्यता से चलते हुए सब बातों  
 १६ में उस के ऐसे बनते जावें जो सिर है अर्थात् खीष्ट . जिस से सारा देह एक  
 संग जुटके और एक संग गठके हर एक परस्पर उपकारी गांठ के द्वारा से उस  
 कार्य के अनुसार जो हर एक अंश के परिमाण से उस में किया जाता है देह  
 को बढ़ाता है कि वह प्रेम में अपने को सुधारे ॥
- १७ सो मैं यह कहता हूं और प्रभु के साक्षात् उपदेश करता हूं कि तुम लोग  
 अब फिर ऐसे न चलो जैसे और और अन्यदेशी लोग अपने मन की अनर्थ रीति  
 १८ पर चलते हैं . कि उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उन के मन की  
 कठोरता के कारण उन की बुद्धि अधियारी हुई है और वे ईश्वर के जीवन से  
 १९ निषारे किये हुए हैं . और उन्होंने ने खेद रहित होके अपने तर्हें लुचपन को सोंप  
 २० दिया है कि सब प्रकार का अशुद्ध कर्म लालसा से किया करें । परन्तु तुम ने  
 २१ खीष्ट को इस रीति से नहीं सीख लिया है . जो ऐसा है कि तुम ने उसी की  
 २२ सुनी और उसी में सिखाये गये जैसा यीशु में सच्चाई है . कि अगली चाल चलन  
 के विषय में पुराने मनुष्यत्व को जो भ्रमानेहारी कामनाओं के अनुसार मृ  
 २३ होता जाता है उतार रखो . और अपने मन के आत्मिक स्वभाव से नये होते  
 २४ जावो . और नये मनुष्यत्व को पहिन लेओ जो ईश्वर के समान सत्यानुसारी  
 धर्म और पवित्रता में सृजा गया ॥
- २५ इस कारण झूठ को दूर करके हर एक अपने पड़ोसी के साथ सत्य बोला

# इफिसियों का पावल प्रेरित की पत्री ।

पठिना पर्व ।

पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु ख्रीष्ट का प्रेरित है उन पवित्र और ख्रीष्ट १  
यीशु में विश्वासी लोगों को जो इफिस में हैं . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और २  
प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के पिता ईश्वर का धन्यवाद होय जिस ने ख्रीष्ट में ३  
हमें को स्वीकार किया है सब प्रकार की आन्मिक आशंस से आशीर्वाद दिया ४  
है . जैसा उस ने उस में ज्ञान की उन्नति के आगे हमें चुन लिया कि हम ५  
प्रेम से उस के मनुष्य पवित्र और निर्दोष होयें . और अपनी इच्छा की मुसक्ति के ६  
अनुसार हमें आगे से उद्धारया कि यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से हम उस के नेपालक ७  
होयें . इस लिये कि उस के अनुग्रह की महिमा की स्तुति किई जाय जिस ८  
करके उस ने हमें उस प्यारे में अनुग्रह पाय किया . जिस में उस के लोह के ९  
द्वारा से हमें उद्धार अर्थात् अपराधों का मोचन ईश्वर के अनुग्रह के धन के १०  
अनुसार मिलता है . और उस ने समस्त ज्ञान और बुद्धि सहित हम पर यह अनुग्रह ११  
अधिकाई से किया . कि उस ने अपनी इच्छा का भेद अपनी इस मुसक्ति के १२  
अनुसार हमें बताया जो उस ने हमें को पूर्णता का कार्य निश्वाहने निमित्त १३  
अपने में ठानी थी . अर्थात् कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथिवी पर है १४  
सब कुछ यह ख्रीष्ट में संग्रह करेगा . हां उसी में जिस में हम उसी की मनसा १५  
से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कार्य करना है आगे से उद्धारये १६  
जाके अधिकार के लिये जुने गये भी . इस लिये कि उस की महिमा की स्तुति १७  
हमारे द्वारा से किई जाय जिनमें ने आगे ख्रीष्ट पर भरोसा रखा था . जिस पर १८  
तुम ने भी सत्यता का द्यन अर्थात् अपने ज्ञान का समसाचार सुनके भरोसा १९  
रखा और जिस में तुम ने विश्वास करके प्रतिज्ञा के आत्मा अर्थात् पवित्र २०  
आत्मा की द्वाप भी पाई . जो मोल लिये तुम्हें के उद्धार लीं हमारे अधिकार २१  
का दयाता है इस कारण कि ईश्वर की महिमा की स्तुति किई जाय ॥

इस कारण से मैं भी प्रभु यीशु पर जो विश्वास और सब पवित्र लोगों से जो २२  
प्रेम तुम्हें में हैं उन का समाचार सुनके . तुम्हारे लिये धन्य मानना नहीं छोड़ना २३  
हूँ और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करता हूँ . कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट २४  
का ईश्वर जो तेजस्वी पिता है तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश का २५  
आत्मा देवे . और तुम्हारे मन के नेत्र प्रकाशित होयें जिसे तुम जानो कि उस २६  
की बुलावट की आशा क्या है और पवित्र लोगों में उस के अधिकार की महिमा २७  
का धन क्या है . और हमारे और जो विश्वास करते हैं उस के सामर्थ्य की २८  
अत्यन्त अधिकाई क्या है . सोई उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनु- २९  
सार है जो उस ने ख्रीष्ट के विषय में किया कि उस को मृतकों में से उठाया .



२० करो । और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम से ईश्वर  
 २१ पिता का धन्य मानो । और ईश्वर के भय से एक दूसरे के अधीन होओ ॥  
 २२ हे स्त्रियो जैसे प्रभु के तैसे अपने अपने स्वामी के अधीन रहो । क्योंकि जैसा  
 २३ ख्रीष्ट मंडली का सिर है तैसा पुरुष भी स्त्री का सिर है । वह तो देह का वाण-  
 २४ कर्त्ता है तौभी जैसे मंडली ख्रीष्ट के अधीन रहती है वैसे स्त्रियां भी हर बात में  
 २५ अपने अपने स्वामी के अधीन रहें । हे पुरुषो अपनी अपनी स्त्री को ऐसा प्यार करो  
 २६ जैसा ख्रीष्ट ने भी मंडली को प्यार किया और अपने को उस के लिये सोंप दिया,  
 २७ कि उस को बचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर पवित्र करे, जिस्ते वह  
 २८ उसे अपने आगे मर्यादिक मंडली खड़ा करे जिस में कलंक अथवा भुरी अथवा  
 २९ ऐसी कोई वस्तु भी न होवे परन्तु जिस्ते पवित्र और निर्दोष होवे । यूँ ही उचित  
 ३० है कि पुरुष अपनी अपनी स्त्री को अपने अपने देह के समान प्यार करें, जो  
 ३१ अपनी स्त्री को प्यार करता है सो अपने को प्यार करता है । क्योंकि किसी ने  
 ३२ कभी अपने शरीर से वैर नहीं किया परन्तु उस को ऐसा पालता और पोसता है  
 ३३ जैसा प्रभु भी मंडली को पालता पोसता है । क्योंकि हम उस के देह के अंग हैं  
 ३४ अर्थात् उस के मांस में के और उस की हड्डियों में के हैं । इस हेतु से मनुष्य  
 ३५ अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन  
 ३६ होंगे । यह भेद बड़ा है परन्तु मैं तो ख्रीष्ट के और मंडली के विषय में कहता हूँ ।  
 ३७ पर तुम भी एक एक करके हर एक अपनी अपनी स्त्री को अपने समान प्यार करो  
 और स्त्री को उचित है कि स्वामी का भय माने ॥

#### छठवां पर्व ।

१ हे लड़को प्रभु में अपने अपने माता पिता की आज्ञा मानो क्योंकि यह उचित  
 २ है । अपनी माता और पिता का आदर कर कि यह प्रतिज्ञा सहित पहिली आज्ञा  
 ३ है । जिस्ते तेरा भला हो और तू भूमि पर बहुत दिन जीवे । और हे पिताओ  
 ४ अपने अपने लड़कों से क्रोध मत करवाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा और चितावनी  
 ५ सहित उन का प्रतिपालन करो ॥  
 ६ हे दासो जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं डरते और कांपते हुए  
 ७ अपने मन की सीधार्ई से जैसे ख्रीष्ट की तैसे उन की आज्ञा मानो । और मनुष्यों  
 ८ को प्रसन्न करनेहारों की नाईं मुंह देखी सेवा मत करो परन्तु ख्रीष्ट के दासों की  
 ९ नाईं अन्तःकरण से ईश्वर की इच्छा पर चलो । और सुमति से सेवा करो मानो  
 १० तुम मनुष्यों की नहीं परन्तु प्रभु की सेवा करते हो । क्योंकि जानते हो कि जो  
 ११ कुछ हर एक मनुष्य भला करेगा इसी का फल वह चाहे दास हो चाहे निर्वन्ध  
 १२ हो प्रभु से पावेगा । और हे स्वामियो तुम उन्हें से वैसा ही करो और धमकी  
 मत दिया करो क्योंकि जानते हो कि स्वर्ग में तुम्हारा भी स्वामी है और उस के  
 यहां पक्षपात नहीं है ॥  
 १३ अन्त में हे मेरे भाइयो यह कहता हूँ कि प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव  
 १४ में बलवन्त हो रहो । ईश्वर के सम्पूर्ण हथियार बांध लेओ जिस्ते तुम शैतान  
 १५ की जुगतों के साम्हने खड़े रह सको । क्योंकि हमारा यह युद्ध लोह और मांस

करो क्योंकि हम लोग एक दूसरे के शत्रु हैं । क्रोध करो पर पाप मत करो . २६  
 सूर्य तुम्हारे कोप पर अस्त न होवे . और न जेनाम को नांव देओ । चोरी २७  
 करनेद्वारा अब चोरी न करे वरन हाथों से भला कार्य करने में परिश्रम करो इस  
 लिये कि जिसे प्रयोजन हो उसे बांट देने का कुछ उस पास होवे । कोई अशुद्ध २८  
 वचन तुम्हारे मुँह से न निकले परन्तु जहाँ जैसा आवश्यक है तहाँ जो वचन  
 सुधारने के लिये अच्छा हो सोई मुँह में निकलने कि उस में सुननेदारों को अनुग्रह  
 मिले । और ईश्वर के पवित्र आत्मा को जिस से तुम पर उद्धार के दिन के लिये ३०  
 छाप दिई गई वदाम मत करो । सब प्रकार की कड़वाहट और कोप और क्रोध ३१  
 और कलह और निन्दा समस्त वैरभाव समेत तुम से दूर किई जाय । और आपस ३२  
 में कृपाल और करुणामय होओ और जैसे ईश्वर ने खीष्ट में तुम्हें जमा किया तैसे  
 तुम भी एक दूसरे को जमा करो ॥

### पाँचवां पद्य ।

मो प्यारे बालकों की नाईं ईश्वर को अनुगामी होओ . और प्रेम में चलो ३  
 जैसे खीष्ट ने भी हम से प्रेम किया और हमारे लिये अपने को ईश्वर के आगे ४  
 चढ़ाया और बलिदान करके सुगन्ध की वास के लिये सोप दिया ॥

और जैसा कि पवित्र लोगों के योग्य है तैसा दण्डिवाद का और सब प्रकार ५  
 के अशुद्ध कर्म का अवघा लाभ का नाम भी तुम्हें से न लिया जाय . और न ६  
 निर्लज्जता का न मूर्कता की दातचीत का अवघा दुष्ट का नाम कि यह बातें  
 सोचनी नहीं परन्तु धन्यवाद ही सुना जाय । क्योंकि तुम यह जानते हो कि ७  
 किसी व्यक्ति की अवघा अशुद्ध जन को अवघा लाभो मनुष्य को जो मूर्ति- ८  
 पूजक है खीष्ट और ईश्वर के राज्य में अधिकार नहीं है । कोई तुम्हें अनर्थक ९  
 बातों में धोखा न देवे क्योंकि इन जस्मों के कारण ईश्वर का क्रोध आत्मा १०  
 लंघन करनेदारों पर पड़ता है । सो तुम इन के संग भागी मत होओ ॥ ११

क्योंकि तुम आगे अन्धकार से पर अंध प्रभु से उजियाले हो . ज्योति के सन्तानों १२  
 की नाईं चलो । क्योंकि सब प्रकार की भलाई और धर्म और मन्यता से आत्मा १३  
 का फल होता है । और परखा कि प्रभु का क्या भावना है । और अंधकार के १४  
 निष्फल कार्यों से भागी मत होओ परन्तु और भी उन पर दोष देओ । क्योंकि १५  
 जो कर्म गुप्त में उन से किये जाते हैं उन्हें कटना भी लाज की बात है । परन्तु १६  
 सब कर्म जहाँ उन पर दोष दिया जाता है तब ज्योति से प्रगट किये जाते हैं १७  
 क्योंकि जो कुछ प्रगट किया जाता है सो उजियाला होता है । इस कारण वह १८  
 कहता है हे सोनेदार जाग और मृतकों से मे उठ और खीष्ट तुम्हें ज्योति देगा ॥

सो चौकस रहो कि तुम क्योंकि यह से चलते हो . निर्बुद्धियों की नाईं नहीं १९  
 परन्तु बुद्धिमानों की नाईं चलो । और अपने लिये समय का लाभ करो क्योंकि ये २०  
 दिन दुरे हैं । इस कारण से अज्ञान मत होओ परन्तु समझते रहो कि प्रभु की २१  
 प्रच्छा क्या है । और दाय्य रस से मतबाले मत होओ जिस में लुचपन होता है २२  
 परन्तु आत्मा से परिपूर्ण होओ । और गीतों और भक्तियों और आत्मिक गानों में २३  
 एक दूसरे से बातें करो और अपने अपने मन से प्रभु के आगे गान और कीर्तन

सभी के लिये यह सोचना मुझे उचित है इस कारण कि मेरे बंधनों में और  
सुसमाचार के लिये उत्तर और प्रमाण देने में मैं तुम्हें मन में रखता हूँ कि तुम  
८ सब मेरे संग अनुग्रह के भागी हो । क्योंकि ईश्वर मेरा साक्षी है कि यीशु ख्रीष्ट  
९ की सी कसूना से मैं धोकर तुम सभी की लालसा करता हूँ । और मैं यही  
प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित अब  
१० भी अधिक अधिक बढ़ता जाय . यहां लें कि तुम विशेष्य बातों को परखो  
११ जिस्तें तुम ख्रीष्ट के दिन लें निष्कपट रहो और ठोकर न खावो . और धर्म के  
फलों से परिपूर्ण होओ दिन से यीशु ख्रीष्ट के द्वारा ईश्वर की महिमा और स्तुति  
होती है ॥

१२ पर हे भाइयो मैं चाहता हूँ कि तुम यह जानो कि मेरी जो दशा हुई है उस  
१३ से सुसमाचार की बढ़ती ही निकली है . यहां लें कि सारे राजभवन में और  
१४ और सब लोगों पर मेरे बंधन प्रगट हुए हैं कि ख्रीष्ट के लिये हैं . और जो प्रभु  
में भाई लोग हैं उन में से बहुतरे मेरे बंधनों से भरोसा पाके बहुत अधिक  
१५ करके वचन को निर्भय बोलने का साहस करते हैं । कितने लोग डाह और वैर  
१६ के कारण भी और कितने सुमति के कारण भी ख्रीष्ट का प्रचार करते हैं । वे  
तो सरलता से नहीं पर विरोध से ख्रीष्ट की कथा सुनाते हैं और समझते हैं कि  
१७ हम पावल के बंधनों में उसे क्लेश भी देंगे । परन्तु वे तो यह जानके कि पावल  
१८ सुसमाचार के लिये उत्तर देने को ठहराया गया है प्रेम से सुनाते हैं । तो क्या  
हुआ . तौभी हर एक रीति से चाहे बहाना से चाहे सच्चाई से ख्रीष्ट की कथा  
सुनाई जाती है और मैं इस से आनन्द करता हूँ और आनन्द करूंगा भी ॥

१९ क्योंकि मैं जानता हूँ कि इसी से तुम्हारी प्रार्थना के द्वारा और यीशु ख्रीष्ट  
के आत्मा के दान के द्वारा मेरी प्रत्याशा और भरोसे के अनुसार मेरा निस्तार हो  
२० जायगा . अर्थात् यह भरोसा कि मैं किसी बात में लज्जित न होगा परन्तु ख्रीष्ट  
की महिमा सब प्रकार के साहस के साथ जैसा हर समय मैं तैसा अब भी मेरे  
२१ देह में चाहे जीवन के द्वारा चाहे मृत्यु के द्वारा प्रगट किई जायगी । क्योंकि  
२२ मेरे लिये जीना ख्रीष्ट है और मरना लाभ है । परन्तु यदि शरीर में जीना है यह  
२३ मेरे लिये कार्य का फल है और मैं नहीं जानता हूँ मैं क्या चुन लेऊंगा । क्योंकि  
मैं इन दो बातों के सकेते में हूँ कि मुझे उठ जाने और ख्रीष्ट के संग रहने का  
२४ अभिलाष है क्योंकि यह और ही बहुत अच्छा है । परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे  
२५ कारण अधिक आवश्यक है । और मुझे इस बात का निश्चय होने से मैं जानता  
हूँ कि मैं रहूंगा और विश्वास में तुम्हारी बढ़ती और आनन्द के लिये तुम सभी  
२६ के संग ठहर जाऊंगा . इस लिये कि मेरे फिर तुम्हारे पास आने के द्वारा से मेरे  
विषय में ख्रीष्ट यीशु में बढ़ाई करने का हेतु तुम्हें अधिक होवे ॥

२७ केवल तुम्हारा आचरण ख्रीष्ट के सुसमाचार के योग्य होवे कि मैं चाहे आके  
तुम्हें देखूँ चाहे तुम से दूर रहूँ तुम्हारे विषय में यह बात सुनूँ कि तुम एक ही  
आत्मा में दृढ़ रहते हो और एक मन से सुसमाचार के विश्वास के लिये मिलके  
२८ साहस करते हो . और विरोधियों से तुम्हें किसी बात में डर नहीं लगता है जो

से नहीं है परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से और हम संसार के  
अधिकार के सदाराजाओं से और आकाश में की दृष्टता की आत्मिक सेना से ।  
हम कारण से ईश्वर के सम्पूर्ण दृष्टियार ले लेओ कि तुम घुरे दिन में साहसा १३  
कर सको और सब कुछ पूरा करके रखे रह सको । सो अपनी कमर सज्जाई १४  
से कमके और धर्म की क्लिप्त पढ़िनेके . और पाँचों में मिलाप के सुसमाचार १५  
की तैयारी के लूने पढ़िनेके रखे रहे । और सभी के ऊपर विश्वास की डाल १६  
लेओ जिस से तुम उस दृष्ट के सब अग्नियों को बुझा सकोगे । और चाण १७  
का टोप लेओ और आत्मा का खड्ग जो ईश्वर का शस्त्र है । और सब प्रकार १८  
की प्रार्थना और विन्ती से हर समय आत्मा में प्रार्थना किया करो और इसी के  
निमित्त समस्त स्थिरता सहित और सब पवित्र लोगों के लिये विन्ती करते हुए  
जागते रहो । और मेरे लिये भी विन्ती करो कि मुझे अपना मुँह खोलने के १९  
समय खोलने का सामर्थ्य दिया जाय कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद बताऊँ  
जिस के लिये मैं जंजीर में बंधा हुआ हूँ . और कि मैं उस के विषय में साहस २०  
से बात करूँ जैसा मुझे खोलना उचित है ।

परन्तु हम लिये कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूँ तुम्हें जो २१  
प्यास भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है तुम्हें सब बातें बतावेगा . कि मैं २२  
ने उसे इसी के निमित्त तुम्हारे पास भेजा है कि तुम हमारे विषय में की बातें  
जानो और वह तुम्हारे मन को शान्ति देवे ॥

भाइयों को ईश्वर पिता से और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से शान्ति और प्रेम विश्वास २३  
सहित मिले । जो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अक्षय प्रेम रखते हैं उन सभी पर २४  
अनुग्रह होवे । आमीन ॥

## फिलिपीयां का पावल प्रेरित की पत्री ।

पहिला पत्र ।

पावल और तिमोथिय जो यीशु ख्रीष्ट के दाम हैं फिलिपी में जितने लोग ख्रीष्ट १  
यीशु में पवित्र लोग हैं उन सभी को मंडली के रखवालों और सेवकों सेत . तुम्हें २  
हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शान्ति मिले ॥

मैं जय जय तुम्हें स्मरण करता हूँ तब अपने ईश्वर का धन्य मानता हूँ . ३  
और तुम ने पहिले दिन से लेके अब ला सुसमाचार के लिये जो सहायता किई ४  
है . उस से आनन्द करता हुआ नित्य अपनी हर एक प्रार्थना में तुम सभी के लिये ५  
विन्ती करता हूँ । और इसी बात का मुझे भरोसा है कि जिस ने तुम्हें में अक्का ६  
काम आरंभ किया है सो यीशु ख्रीष्ट के दिन में उसे पूरा करेगा । जैसे तुम ७

३५ की जड़ पर ढाले । और उस की समस्त चिकनाई जिस रीति से कि कुशल की भेंट के बलिदानों के मेम्रा की चिकनाई अलग किई जाती है अलग करे और याजक उन्हें परमेश्वर की होम की भेंटों के साथ यज्ञवेदी पर जलावे और याजक उस के पाप के लिये जो उस ने किया है प्रायश्चित्त करे और वह उस के लिये क्षमा किया जायगा ॥

पाँचवां पृष्ठ ।

- १ और यदि कोई प्राणी पाप करे और किरिया का शब्द सुने और साक्षी होवे चाहे देखा अथवा जाना हो यदि वह न बतावे तो वह अपना पाप भोगेगा ।
- २ अथवा यदि कोई प्राणी कोई अपवित्र वस्तु छूवे चाहे अपवित्र पशु की लोथ अथवा अपवित्र ठोर की लोथ अथवा अपवित्र रंगवैया जंतु की लोथ छूवे और
- ३ उस्से अज्ञान होवे तो वह अपवित्र और दोषी होगा । अथवा यदि वह मनुष्य की अपवित्रता को छूवे हो जिस्से मनुष्य अशुद्ध होता है और वह उस्से गुप्त हो
- ४ जब उसे जान पड़े तब वह दोषी होगा । अथवा यदि कोई प्राणी किरिया खाके मुंह से बुरा अथवा भला करने को उच्चारे जो कुछ वह किरिया खाके उच्चारण करे और वह उस्से गुप्त हो जब उसे जान पड़े और वह इन में से एक के लिये
- ५ दोषी होगा । और यों होगा कि जब वह इन में से एक के लिये दोषी होवे तो
- ६ वह मान लेवे कि मैं ने यह पाप किया है । तब वह अपने अपराध की भेंट अपने पाप के लिये जो उस ने किया है भुंड में से स्त्रीवर्ग एक भेड़ अथवा बकरी में से एक मेम्रा अपने पाप की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे लावे और याजक उस के पाप की भेंट से उस के लिये प्रायश्चित्त करे ॥
- ७ और यदि उसे भेड़ लाने की पूंजी न हो तो वह अपने किये हुए अपराध के लिये दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे परमेश्वर के लिये लावे एक पाप
- ८ की भेंट के लिये और दूसरा बलिदान की भेंट के लिये । फिर वह उन्हें याजक पास लावे और वह पहिले पाप की भेंट चढ़ावे और उस का सिर उस के गले के
- ९ पास से मरोड़ डाले परन्तु अलग न करे । और पाप की भेंट के लोहू को यज्ञवेदी के अलंग पर छिड़के और उबरा हुआ लोहू यज्ञवेदी की जड़ पर निचोड़ा जाय
- १० वह पाप की भेंट है । और दूसरे को व्यवहार के समान बलिदान की भेंट के लिये चढ़ावे और याजक उस के किये हुए पाप का प्रायश्चित्त करे और उस के लिये क्षमा किया जायगा ॥
- ११ पर यदि उसे दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लाने की पूंजी न हो तो वह अपने पाप की भेंट के लिये सेर भर चोखा पिसान पाप की भेंट के लिये लावे उस पर तेल न डाले और न उस पर गंधरस रक्खे क्योंकि वह पाप की भेंट
- १२ है । तब वह उसे याजक पास लावे और याजक उस में से स्मरण के लिये अपनी सुट्टी भरके उस भेंट के समान जो परमेश्वर के लिये आग से होती है यज्ञवेदी
- १३ पर जलावे वह पाप की भेंट है । और याजक उस पाप के कारण जो उस ने किया इन बातों में से प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा किया जायगा और भोजन की भेंट के समान याजक का होगा ॥

उन के लिये तो विनाश का प्रमाण परन्तु तुम्हारे लिये निम्नार का प्रमाण है और यह ईश्वर की ओर से है । क्योंकि ख्रीष्ट के लिये यह प्रदान नुर्त दिया गया है कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उस के लिये दुःख भी उठाओ . कि तुम्हारी ३० वैसे ही लड़ाई है वैसे तुम ने मुझ से देखी और अब सुनते हो कि मुझ से है ॥

दूसरा पत्र ।

मो यदि ख्रीष्ट में कुछ शांति यदि प्रेम से कुछ समाधान यदि कुछ आत्मा की १ संशति यदि कुछ करुणा और दया होय . तो मेरे आनन्द को पूरा करो कि तुम २ एकसां मन रखो और तुम्हारा एक ही प्रेम एक ही चिन्त एक ही मत होय । तुम्हारा ३ कुछ विरोध का अथवा घमंड का मत न होय परन्तु दीनता से एक दूसरे को अपने से बड़ा समझो । हर एक अपने अपने विषयों को न देखा करे परन्तु हर एक ४ दूसरों के भी देख लेवे ॥

तुम्हें मैं यही मन होय को ख्रीष्ट यीशु में भी था . जिस ने ईश्वर के रूप में ५ होके ईश्वर के तुल्य होना इकती न समझा . परन्तु अपने तर्प हीन करके दास ७ का रूप धारण किया और मनुष्यों के समान बना . और मनुष्य के से होल पर ८ पाया जाके अपने को दीन किया और सृष्टि में ही मृत्यु की मृत्यु में आजाकारी रचा । इस कारण ईश्वर ने उन को बहुत उंचा भी किया और उस को यह नाम ९ दिया जो सब नामों से उर्द्ध है . इस लिये कि जो स्वर्ग में और जो पृथिवी पर १० और जो पृथिवी के नीचे हैं उन सभी का हर एक बुढ़ना यीशु के नाम से सुझाया जाय . और हर एक जीव में मान लिया जाय कि यीशु ख्रीष्ट ही प्रभु है जिसने ईश्वर ११ पिता का गुणानुवाद होय ॥

मो हे मेरे प्यारे जैसे तुम नडा आजाकारी हुए नये जब मैं तुम्हारे संग रहूँ १२ केवल उस समय मैं नहीं परन्तु मैं जो अभी तुम से दूर हूँ बहुत अधिक करके हम समय में डरने और कांपने हुए अपने बाप का कार्य निभाओ . क्योंकि १३ ईश्वर ही है जो अपनी सुदृढा निमित्त तुम्हों से उच्छा और कार्य भी करवाता है । मय काम बिना कुडकुड़ाने और बिना विवाद में किया करो . जितनी तुम १४ निर्दोष और मृधे बनाओ और टेढ़े और चढ़ाने लोश के दोर में ईश्वर के निष्कलक पुत्र होओ . जितनी के दोर में तुम दीपन का बदल लिये हुए जगत में १५ ज्योतिधारियों की नाई चमकने हो कि मुझे ख्रीष्ट के दिन में बड़ाई करने का हेतु होय कि मैं न बृथा बड़ा न बृथा परिश्रम किया । वरन जो मैं तुम्हारे १६ विश्वास के बलिदान और सेवकाई पर ढाला जाता हूँ नौमी में आनन्दित हूँ और तुम सभी के संग आनन्द करता हूँ । वैसे ही तुम भी आनन्दित होओ १७ और मेरे संग आनन्द करो ॥

परन्तु मुझे प्रभु यीशु में भरोसा है कि मैं तिसौथिय को शीघ्र तुम्हारे पास १८ भेजुंगा जितनी मैं भी तुम्हारी दशा जानके ढाढस पाऊँ । क्योंकि मेरे पास कोई २० नहीं है जिस का मेरे ऐसा मन है जो सच्चाई से तुम्हारे विषय में चिन्ता करेगा । क्योंकि सब अपने ही अपने ही लिये यत्न करते हैं ख्रीष्ट यीशु के लिये नहीं । २१ परन्तु उस को तुम परखके जान चुके हो कि वैसे पुत्र पिता के संग तैसे उस ने २२



२३ मेरे संग सुसमाचार के लिये सेवा किई । सो मुझे भरोसा है कि ज्यों ही मुझे  
 २४ देख पड़ेगा कि मेरी क्या दशा होगी त्यों ही मैं उसी को तुरन्त भेजूंगा । पर मैं  
 प्रभु में भरोसा रखता हूँ कि मैं भी आप ही शीघ्र आऊंगा ॥  
 २५ परन्तु मैं ने इपाफ्रदीत को जो मेरा भाई और सहकर्मी और संगी घोड़ा  
 पर तुम्हारा दूत और आवश्यक बातों में मेरी सेवा करनेद्वारा है तुम्हारे पास  
 २६ भेजना अवश्य समझा । क्योंकि वह तुम सभी की लालसा करता था और  
 २७ बहुत उदास हुआ इस लिये कि तुम ने सुना था कि वह रोगी हुआ था । और  
 वह रोगी तो हुआ यहां लों कि मरने के निकट था परन्तु ईश्वर ने उस पर दया  
 किई और केवल उस पर नहीं परन्तु मुझ पर भी कि मुझे शोक पर शोक न  
 २८ होवे । सो मैं ने उस को और भी यत्न से भेजा कि तुम उसे फिर देखके आन-  
 २९ न्दित होओ और मेरा शोक घटे । सो उसे प्रभु में सब प्रकार के आनन्द से  
 ३० ग्रहण करो और ऐसे जनों को आदरयोग्य समझो । क्योंकि खीष्ट के कार्य निमित्त  
 वह अपने प्राण पर जोखिम उठाके मरने के निकट पहुंचा इस लिये कि मेरी  
 सेवा करने में तुम्हारी घटी को पूरी करे ॥

तीसरा पर्व ।

१ अन्त में हे मेरे भाइयो यह कहता हूँ कि प्रभु में आनन्दित रहो . वही बातें  
 २ तुम्हारे पास फिर लिखने से मुझे कुछ दुःख नहीं है और तुम्हें बचाव है । कुतों  
 से चौकस रहो दुष्ट कर्मकारियों से चौकस रहो काटे हुआ से चौकस रहो ।  
 ३ क्योंकि खतना किये हुए हम हैं जो आत्मा से ईश्वर की सेवा करते हैं और  
 खीष्ट यीशु के विषय में बढ़ाई करते हैं और भरोसा शरीर पर नहीं रखते हैं ।  
 ४ पर मुझे तो शरीर पर भी भरोसा है . यदि और कोई शरीर पर भरोसा रखना  
 ५ उचित जानता है मैं और भी . कि आठवें दिन का खतना किया हुआ इसायेल  
 के वंश का बिन्यामीन के कुल का इज्रियों में से इज्री हूँ व्यवस्था की कहे तो  
 ६ फरीशी . उद्योग की कहे तो मंडली का सतानेद्वारा व्यवस्था में के धर्म की  
 ७ कहे तो निर्दोष हुआ । परन्तु जो जो बातें मेरे लेखे लाभ थीं उन्हें मैं ने खीष्ट  
 ८ के कारण हानि समझी है । हां सचमुच अपने प्रभु खीष्ट यीशु के ज्ञान की  
 श्रेष्ठता के कारण मैं सब बातें हानि समझता भी हूँ और उस के कारण मैं ने  
 सब वस्तुओं की हानि उठाई और उन्हें कूड़ा सा जानता हूँ कि मैं खीष्ट का  
 ९ प्राप्त करूँ . और उस में पाया जाऊँ ऐसा कि मेरा अपना धर्म जो व्यवस्था से है  
 सो नहीं परन्तु वह धर्म जो खीष्ट के विश्वास के द्वारा से है वही धर्म जो  
 १० विश्वास के कारण ईश्वर से है मुझे होय . जिस्तें मैं खीष्ट को और उस के जो  
 उठने की शक्ति को और उस के दुःखों की संगति को जानूँ और उस की मृत्यु  
 ११ के सदृश किया जाऊँ . जो मैं किसी रीति से मृतकों के जो उठने का भाग  
 १२ होऊँ । यह नहीं कि मैं पा चुका हूँ अथवा सिद्ध हो चुका हूँ परन्तु मैं प्रीति  
 करता हूँ कि कहीं उस को पकड़ लें जिस के निमित्त मैं भी खीष्ट यीशु से  
 पकड़ा गया ॥

१३ हे भाइयो मैं नहीं समझता हूँ कि मैं ने पकड़ लिया है परन्तु एक काम मैं

करता हूँ कि पीछे की बातें तो भूलता जाता पर आगे की बातों की ओर भपटता जाता हूँ . और ऊपर की युलाइट जो खीष्ट यीशु में ईश्वर की ओर से है भंडा १४ देखता हुआ उस युलाइट के अफल का पीछा करता हूँ । सो हम में से जितने सिद्ध १५ हैं वही मन रखें और यदि किसी घात में तुम्हें और ही मन दोग तो ईश्वर यह भी तुम पर प्रगट करेगा । तौभी जहाँ लों हम पहुंचें हैं एक ही विधि से चलना १६ और एक ही मन रखना चाहिये ॥

हे भाइयो तुम मिलके मेरी सी चाल चलो और उन्हें देखते रहो जो मेसे चलते १७ हैं जैसे हम तुम्हारे लिये दृष्टान्त हैं । क्योंकि बहुत लोग चलते हैं जिन के विषय १८ में मैं ने बार बार तुम से कहा है और अब रोता हुआ भी कहता हूँ कि ये खीष्ट के क्रूश के वंसी हैं . जिन का अन्त विनाश है जिन का ईश्वर घेठ है जो अपनी १९ लज्जा पर बढ़ाई करते हैं और पृथिवी पर की वस्तुओं पर मन लगाते हैं । क्योंकि २० हम तो स्वर्ग की प्रजा हैं जहाँ से हम आगकर्ता की अर्थात् प्रभु यीशु खीष्ट की बात भी जोहते हैं . जो उस कार्य के अनुसार जिस क्रमके यह सब वस्तुओं को २१ अपने वश में कर सकता है हमारी दीनताई के देह का रूप बदल डालेगा कि वह उस के गेष्ट्रर्ण के देह के सदृश हो जावे ॥

चौथा पर्व ।

सो हे मेरे प्यारे और अभिलषित भाइयो मेरे आनन्द और मुकुट यूँही हे प्यारे १ प्रभु में दृढ़ रहो ॥

मैं इवोदिया से विन्ती करता हूँ और मुत्तुखी से विन्ती करता हूँ कि ये प्रभु २ में एकसाँ मन रखें । और हे सच्चे संघाती मैं तुम से भी विन्ती करता हूँ इन ३ स्त्रियों की सहायता कर जिन्हें ने क्लोमी के साथ भी और मेरे और और सह-कर्मियों के साथ जिन के नाम जीवन के पुस्तक में हैं मेरे संग सुसमाचार के विषय में मिलके साहस किया ॥

प्रभु में सदा आनन्द करो . मैं फिर कहूँगा आनन्द करो । तुम्हारी मृदुता ४ सब मनुष्यों पर प्रगट होवे . प्रभु निकट है । किसी घात में चिन्ता मत करो ५ परन्तु हर एक घात में धन्यवाद के साथ प्रार्थना से और विन्ती से तुम्हारे निवेदन ईश्वर को जनाये जायें । और ईश्वर की शान्ति जो समस्त ज्ञान से बड़ है खीष्ट ६ यीशु में तुम लोगों के हृदय और तुम लोगों के मन की रक्षा करेगी । अन्त में ७ हे भाइयो यह कहता हूँ कि जो जो बातें सत्य हैं जो जो आदरयोग्य हैं जो जो यथार्थ हैं जो जो शुद्ध हैं जो जो सुहावनी हैं जो जो सुग्यात हैं कोई गुण जो होय और कोई यश जो होय उन्हें बातों की चिन्ता करो । जो तुम ने सीखी ८ भी और ग्रहण किछ और सुनीं और मुझ में देखीं वही बातें किया करो और शान्ति का ईश्वर तुम्हारे संग होगा ॥

मैं ने प्रभु में बड़ा आनन्द किया कि मेरे लिये सोच करने में तुम अब भी फिर १० धनपे और इस घात का तुम सोच करते भी थे पर तुम्हें अबसर न था । यह नहीं ११ कि मैं दरिद्रता के विषय में कहता हूँ क्योंकि मैं सीख चुका हूँ कि जिस वशा मैं हूँ उस में सन्तोष कब । मैं दीन होने जानता हूँ मैं उभरने भी जानता हूँ मैं १२

सर्वत्र और सब बातों में तुम होने को और भूखा रहने को भी चभरने को और  
 १३ दरिद्र होने को भी सिखाया गया हूँ । मैं खीष्ट में जो मुझे सामर्थ्य देता है सब  
 १४ कुछ कर सकता हूँ । तौभी तुम ने भला किया जो मेरे क्लेश में मेरी सहायता  
 १५ किई । और हे फिलिपीयो तुम यह भी जानो कि सुसमाचार के आरंभ में जब मैं  
 माकिदोनिया से निकला तब देने लेने के विषय में किसी मंडली ने मेरी सहायता  
 १६ न किई पर केवल तुम ही ने । क्योंकि थिसलोनिका में भी तुम ने एक खेर और  
 १७ दो खेर भी जो मुझे आवश्यक था सो भेजा । यह नहीं कि मैं दान चाहता हूँ  
 १८ पर मैं वह फल चाहता हूँ जिस से तुम्हारे निमित्त अधिक लाभ होवे । पर मैं  
 सब कुछ पा चुका हूँ और मुझे बहुत है । जो तुम्हारी ओर से आया मानो सुगन्ध  
 मानो ग्राह्य धलिदान जो ईश्वर को भायता है सोई इषाफदीत के हाथ पाके  
 १९ में भरपूर हूँ । और मेरा ईश्वर अपने धन के अनुसार महिमा सहित खीष्ट यीशु  
 २० में सब कुछ जो तुम्हें आवश्यक हो भरपूर करके देगा । हमारे पिता ईश्वर का  
 गुणानुवाद सदा सर्व्वदा होय । आमीन ।

२१ खीष्ट यीशु मैं हर एक पवित्र जन को नमस्कार . मेरे संग के भाई लोगों  
 २२ का तुम से नमस्कार । सब पवित्र लोगों का निज करके उन्हें का जो कैसर के  
 २३ घराने के हैं तुम से नमस्कार । हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम सभी के  
 संग होवे । आमीन ॥

## कलस्सीयों को पावल प्रेरित की पत्री ।

पहिला पृष्ठ ।

१ पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु खीष्ट का प्रेरित है और भाई तिमोथिय  
 २ कलस्सी में के पवित्र लोगों और खीष्ट में विश्वासी भाइयों को . तुम्हें हमारे  
 पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ।

३ हम मित्य तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हुए अपने प्रभु यीशु खीष्ट के पिता  
 ४ ईश्वर का धन्य मानते हैं . कि हम ने खीष्ट यीशु पर तुम्हारे विश्वास का और  
 उस प्रेम का समाचार पाया है जो सब पवित्र लोगों से उस आशा के कारण  
 ५ रखते हो . जो आशा तुम्हारे लिये स्वर्ग में धरी है जिस की कथा तुम ने आगे  
 ६ सुसमाचार की सत्यता के बचन में सुनी . वह सुसमाचार जो तुम्हारे पास भी  
 जैसा सारे जगत में पहुंचा है और फल लाता और बढ़ता है जैसा तुम में भी  
 उस दिन से फलता है जिस दिन से तुम ने सुना और सत्यता से ईश्वर का अनुग्रह  
 ७ जाना . जैसे तुम ने हमारे प्यारे संगी दास इषाफा से सीखा जो तुम्हारे लिये  
 ८ खीष्ट का विश्वासयोग्य सेवक है . और जिस ने तुम्हारा प्रेम जो आत्मा से है  
 हमें बताया ।

इस कारण से हम भी जिस दिन से हम ने सुना उस दिन से तुम्हारे लिये ९  
 प्रार्थना करना और यह सांगना नहीं छोड़ते हैं कि तुम सारे ज्ञान और आत्मिक  
 बुद्धि सहित ईश्वर की इच्छा की पहचान से परिपूर्ण होओ . जिससे तुम प्रभु १०  
 के योग्य बाल बालो ऐसा कि सब प्रकार से प्रसन्नता होय और हर एक अच्छे  
 काम में फलवान होओ और ईश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ . और समस्त ११  
 बल से उस की महिमा के प्रभाव के अनुसार बलवन्त किये जाओ यहां लों कि  
 आनन्द से सकल स्थिरता और धीरज दिखाओ . और कि तुम पिता का धन्य १२  
 मानो जिस ने हमें पवित्र लोगों का अधिकार जो ज्योति में है उस अधिकार  
 के अंश के योग्य किया . और हमें अधिकार के वज से छुड़ाके अपने प्रियतम १३  
 पुत्र के राज्य में लाया . जिस में उस के लोहू के द्वारा हमें उद्धार अर्थात् १४  
 पापमोक्षन मिलता है ॥

यह तो अदृश्य ईश्वर की प्रतिमा और सारी सृष्टि पर पहिलौठा है . क्योंकि १५  
 उस ने सब कुछ सृजा गया यह जो स्वर्ग में है और यह जो पृथिवी पर है दृश्य  
 और अदृश्य क्या मिहामन क्या प्रभुताएं क्या प्रधानताएं क्या अधिकार सब कुछ  
 उस के द्वारा से और उस के लिये सृजा गया है . और यही सब के आगे है और १६  
 सब कुछ उसी से बना रहता है . और यही देह का अर्थात् मंडली का मिर है १७  
 कि यह आदि है और मृतकों में से पहिलौठा जिससे सब बातों में यही प्रधान  
 होय . क्योंकि ईश्वर की इच्छा थी कि उस में समस्त पूर्णता प्राप्त करे . और १८  
 कि उस के क्रूश के लोहू के द्वारा से मिलाप करके उसी के द्वारा सब कुछ चाहे  
 यह जो पृथिवी पर है चाहे यह जो स्वर्ग में है अपने से मिलावे ॥

और तुम्हें जो आगे नियारे किये हुए थे और अपनी बुद्धि से दूरे फर्में में २१  
 लहके ठेरी थे उस ने अभी उस के मांस के देह में मृत्यु के द्वारा से मिला  
 लिया है . कि तुम्हें अपने सन्मुख पवित्र और निष्कलंक और निर्दोष खड़ा करे . २२  
 जो ऐसा ही है कि तुम विश्वास में नेत्र दिये हुए दृढ़ रहते हो और सुमना- २३  
 वार जो तुम ने सुना उस की आशा से हटाये नहीं जाते . यह सुमनावार जो  
 आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में प्रचार किया गया जिस का मैं पायल सेवक  
 बना ॥

और मैं अब उन दुःखों में जो मैं तुम्हारे लिये उठाता हूं आनन्द करता हूं २४  
 और खीष्ट के लोनों की जो घटी है सो उस के देह के लिये अर्थात् मंडली के  
 लिये अपने शरीर में पूरी करता हूं . उस मंडली का मैं ईश्वर के भंडारीपन के २५  
 अनुसार जो तुम्हारे लिये सुके दिया गया सेवक बना कि ईश्वर के वचन को सम्पूर्ण  
 प्रचार करूं . अर्थात् उस भेद को जो आदि से और पीढ़ी पीढ़ी गुप्त रहा परन्तु २६  
 अब उस के पवित्र लोगों पर प्रगट किया गया है . जिन्हें ईश्वर ने बताने चाहा २७  
 कि अन्यदेशियों में इस भेद की महिमा का धन क्या है अर्थात् तुम्हें में खीष्ट  
 जो महिमा की आशा है . जिसे हम प्रचार करते हैं और हर एक मनुष्य को २८  
 चिंताते हैं और समस्त ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं जिससे हर एक  
 मनुष्य को खीष्ट यीशु में सिद्ध करके आगे खड़ा करें . और इस के लिये मैं उस २९

के उस कार्य के अनुसार जो सुक में सामर्थ्य सहित गुण करता है उद्योग करके परिश्रम भी करता हूँ ॥

दूसरा पर्व ।

१ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि तुम्हारे और उन के जो लाओदिकेया में हैं और जितनों ने शरीर में मेरा मुँह नहीं देखा है सभी के विषय में मेरा २ कितना बड़ा उद्योग होता है . इस लिये कि उन के मन शांत होवें और वे प्रेम में गठ जावें जिस्तें वे ज्ञान के निश्चय का सारा धन प्राप्त करें और ईश्वर पित ३ का और खीष्ट का भेद पहचानें . जिस में बुद्धि और ज्ञान की गुप्त सम्पत्ति सब की सब धरो है ॥

४ मैं यह कहता हूँ न हो कि कोई तुम्हें फुसलाऊ खातों से धोखा देवे । क्योंकि जो मैं शरीर में तुम से दूर रहता हूँ तौभी आत्मा में तुम्हारे संग हूँ और आनन्द से तुम्हारी रीति विधि और खीष्ट पर तुम्हारे विश्वास की स्थिरता देखता हूँ । ५ सो तुम ने खीष्ट यीशु को प्रभु करके जैसे ग्रहण किया वैसे उसी में चलो । और उस में तुम्हारी अड़ धंधी हुई होय और तुम यत्नते जाओ और विश्वास में जैसे तुम सिखाये गये वैसे दृढ़ होतें जाओ और धन्यवाद करते हुए उस में बढ़ते जाओ ॥

६ चौकस रहो कि कोई ऐसा न हो जो तुम्हें उस तत्त्वज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा से धर ले जाय जो मनुष्यों के परम्परार्थ मत के अनुसार और संसार की ७ आदिशिक्षा के अनुसार है पर खीष्ट के अनुसार नहीं है । क्योंकि उस में ईश्वरत्व १० की सारी पूर्णता सदेह आस करती है । और उस में तुम परिपूर्ण हुए हो ११ समस्त प्रधानता और अधिकार का सिर है . जिस में तुम ने विन हाथ का किया हुआ खतना भी अर्थात् शारीरिक पापों के देह के उतारने में खीष्ट का खतना १२ पाया . और वपतिसमा लेने में उस के संग गाढ़े गये और उसी में ईश्वर के कार्य के विश्वास के द्वारा जिस ने उस को मृतकों में से उठाया संग ही उठाये १३ भी गये । और तुम्हें जो अपराधों में और अपने शरीर की खतनाहीनता में मृतक थे उस ने उस के संग जिलाया कि उस ने तुम्हारे सब अपराधों को क्षमा किया . १४ और विधियों का लेख जो हमारे विरुद्ध और हम से विपरीत था मिटा डाला १५ और उस को कीलों से क्रूश पर ठोंकके मध्य में से उठा दिया है . और प्रधानताओं और अधिकारों की सज्जा उतारके क्रूश पर उन पर अवयवकार करके उन्हें प्रगट में दिखाया ॥

१६ इस लिये खाने में अथवा पीने में अथवा पर्व या नये चान्द के दिन या १७ विश्राम के दिनों के विषय में कोई तुम्हारा विचार न करे . कि यह खातें १८ आनेहारी खातों की छाया हैं परन्तु देह खीष्ट का है । कोई जो अपनी इच्छा से दीनताई और दूतों की पूजा करनेहारा होय तुम्हारा प्रतिफल हरण न करे जो उन खातों में जिन्हें नहीं देखा है घुस जाता है और अपने शारीरिक ज्ञान में १९ वृथा फुलाया जाता है . और सिर को धारण नहीं करता है जिस से सारा देह गांठों और धंधों से उपकार पाके और एक संग गठके ईश्वर के बड़ाव से बढ़

जाता है । जो तुम स्त्रीष्ट के संग संसार की आदिशिक्षा की ओर मर गये तो २०  
 क्यों जैसे संसार में जीते हुए उन विधियों के दश में दो जो मनुष्यों की आत्माओं  
 और शिक्षाओं के अनुसार हैं , कि मत हू और न चीख और न हाथ लगा . २१  
 वस्तुओं जो काम में लाने से सब नाश देनेहारी हैं । सभी विधियां निज इच्छा २२  
 के अनुसार की भक्ति से और दीनता से और देह को कष्ट देने से ज्ञान का नाम  
 तो पाती हैं पर ये कुछ भी आदर के योग्य नहीं केवल शारीरिक स्वभाव को  
 नष्ट करने के लिये हैं ॥

### तीसरा पर्व ।

जो जो तुम स्त्रीष्ट के संग जी रहें तो ऊपर की वस्तुओं का स्वाद करो जहाँ १  
 स्त्रीष्ट ईश्वर के दहिने हाथ बैठा हुआ है । पृथिवी पर की वस्तुओं पर नहीं २  
 परन्तु ऊपर की वस्तुओं पर मन लगाओ । क्योंकि तुम तो मूख और तुम्हारा ३  
 जीवन स्त्रीष्ट के संग ईश्वर में छिपाया गया है । जय स्त्रीष्ट जो हमारा जीवन है ४  
 प्रगट होगा तब तुम भी उस के संग सज्जिमा सहित प्रगट किये जाओगे ।

इस लिये अपने अंगों को जो पृथिवी पर हैं व्यभिचार और असुद्धता और ५  
 कामना और क्रुद्धता को और लोभ को जो मूर्तिपूजा है मार डालो . कि इन ६  
 के कारण ईश्वर का क्रोध आत्मा में घन करनेहारों पर पड़ता है . जिन्हों के ७  
 बीच में आगे जय तुम इन में जीते थे तब तुम भी चलते थे । पर अब तुम ८  
 भी इन सब बातों को क्रोध और कोप और वैश्याय को और निन्दा और गानों को  
 अपने मुँह से दूर करो । एक दूसरे से झूठ मत बोलो कि तुम ने पुराने मनुष्यत्व ९  
 को उस की क्रियाओं समेत दत्तार डाला है , और नये को पहिन लिया है जो १०  
 अपने सृजनहार के रूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने को नया होता जाता है ।  
 उस में यूनानी और पिछूदी खतना किया हुआ और खतनाहीन अन्यभाषिया ११  
 स्कुयी दाम और निर्वन्ध नहीं है परन्तु स्त्रीष्ट सब कुछ और सभी में है ॥

जो ईश्वर के चुने हुए पवित्र और प्यारे लोगों की नार्दे बड़ी कसगा और १२  
 कृपालुता और दीनता और नम्रता और धीरज पहिन लेओ . और एक दूसरे की १३  
 सह लेओ और यदि किसी को किसी पर दोष देने का हेतु होय तो एक दूसरे  
 को क्षमा करो . जैसे स्त्रीष्ट ने तुम्हें क्षमा किया तैसे तुम भी करो । पर इन सभी १४  
 के ऊपर प्रेम को पहिन लेओ जो सिद्धता का बंध है । और ईश्वर की शान्ति १५  
 जिस के लिये तुम एक देह में जुलागे भी गये तुम्हारे हृदय में प्रयत्न होय और  
 धन्य माना करो । स्त्रीष्ट का वचन तुम्हों में अधिकार से दमे और गीतों और १६  
 भजनों और आत्मिक गानों में समस्त ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और  
 सिताओ और अनुग्रह सहित अपने अपने मन में प्रभु के आगे गान करो । और १७  
 वचन से अथवा कर्म से जो कुछ तुम करो सब काम प्रभु यीशु के नाम से  
 करो और उस के द्वारा से ईश्वर पिता का धन्य मानो ॥

हे स्त्रियो जैसा प्रभु में मोदता है तैसा अपने अपने स्वामी के अधीन रहो । हे १८  
 सुखी अपनी अपनी स्त्री को प्यार करो और उन की ओर कड़वे मत होओ ॥

हे लड़की सब बातों में अपने अपने माता पिता की आत्मा मानो क्योंकि २०



४ से और न छल के साथ है . परन्तु जैसा ईश्वर को अच्छा देख पड़ा है कि सुसमाचार हमें सोंपा जाय तैसा हम बोलते हैं अर्थात् जैसे मनुष्यों को प्रसन्न करते हुए से ५ नहीं परन्तु ईश्वर को जो हमों के मन को जांचता है । क्योंकि हम न तो कभी लल्लोपतो की बात किया करते थे जैसा तुम जानते हो और न लोभ के लिये ६ बहाना करते थे ईश्वर साक्षी है । और यद्यपि हम खीष्ट के प्रेरित होके मर्यादा ले सकते तैसी हम मनुष्यों से चाहे तुम्हों से चाहे दूसरों से आदर नहीं चाहते ७ थे । परन्तु तुम्हारे बीच मैं हम ऐसे कोमल बने जैसी माता अपने बालकों को ८ दूध पिला पोसती है । वैसे ही हम तुम्हों से खेद करते हुए तुम्हें केवल ईश्वर का सुसमाचार नहीं परन्तु अपना अपना प्राण भी छांट देने को प्रसन्न थे इस ९ लिये कि हमारे तुम प्यारे बने गये । क्योंकि हे भाइयो तुम हमारे परिश्रम और क्लेश को स्मरण करते हो कि तुम में से किसी पर भार न देने के लिये हम ने १० रात और दिन कमाते हुए तुम्हों में ईश्वर का सुसमाचार प्रसार किया । तुम लोग साक्षी हो और ईश्वर भी कि तुम्हों के आगे जो विश्वासी हो हम कैसी पवित्रता ११ और धर्म और निर्दोषता से चले । जैसे तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने लड़कों को तैसे हम तुम्हों में से एक एक को क्योंकि उपदेश और शांति और साक्षी १२ देते थे . जिस्ते तुम ईश्वर के योग्य चलो जो तुम्हें अपने राज्य और ऐश्वर्य में खुलाता है ॥

१३ इस कारण से हम निरन्तर ईश्वर का धन्य भी मानते हैं कि तुम ने जब ईश्वर के समाचार का बचन हम से पाया तब मनुष्यों का बचन नहीं पर जैसा सचमुच है ईश्वर का बचन ग्रहण किया जो तुम्हों में जो विश्वास करते हो गुह्य १४ भी करता है । क्योंकि हे भाइयो खीष्ट यीशु में ईश्वर की मंडलियां जो पिहूदिया में हैं उन को तुम अनुगामी बने कि तुम ने अपने स्थदेशियों से वैसा ही दुःख पाया १५ जैसा उन्हें ने भी पिहूदियों से . जिन्हों ने प्रभु यीशु को और भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला और हमों को सताया और ईश्वर को प्रसन्न नहीं करते हैं और १६ सब मनुष्यों के विरुद्ध हैं . कि वे अन्यदेशियों से उन के बचन के लिये बात करने से हमें वर्जित हैं जिस्ते नित्य अपने पापों को पूरा करें . परन्तु उन पर क्रोध अत्यन्त हो पड़चा है ॥

१७ पर हे भाइयो हमों ने हृदय में नहीं पर देह में थोड़ी बेर लें तुम से अलग किये जाके बहुत अधिक करके तुम्हारा मुंह देखने को बड़ी अभिलाषा से यह १८ किया । इस लिये हम ने अर्थात् मुक्त पावल ने एक बेर और दो बेर भी तुम्हारे १९ पास आने की इच्छा किई और शैतान ने हमें रोका । क्योंकि हमारी आशा अथवा आनन्द अथवा बड़ाई का मुकुट क्या है . क्या तुम भी हमारे प्रभु २० यीशु खीष्ट के आगे उस के आने पर नहीं हो । तुम तो हमारी बड़ाई और आनन्द हो ॥

### तीसरा पर्व ।

१ इस कारण जब हम और सह न सके तब हम ने आशीनी में अकेले छोड़े २ जाने को अच्छा जाना . और तिमोथिय को जो हमारा भाई और ईश्वर का

सेवक और श्रीगुरु के सुनसाचार से हमारा सङ्कर्मों में तुम्हें स्थिर करने को  
और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाने को भेजा । जिसमें कोई इन  
केशों में हमारा न जाय क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम हम के लिये  
ठहराये हुए हैं । क्योंकि कब हम तुम्हारे यहाँ थे तब भी तुम को आगे से  
कहते थे कि हम तो केश प्रायः जैसा हुआ भी है और तुम जानते हो । इस  
कारण से जब मैं और सब न सका तब तुम्हारा विश्वास धूमने को भेजा ऐसा  
न हो कि किसी रीति से परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा किई और हमारा  
परिचय दण्ड हो गया हो ।

पर अभी तिसोचिप जो तुम्हारे पास से हमारे यहाँ आया है और तुम्हारे  
विश्वास और प्रेम का सुसंसाचार हमारे पास लाया है और यह कि तुम नित्य  
भली रीति से हमें स्मरण करते हो और हमें देखने का लालसा करते हो जैसे  
हम भी तुम्हें देखने का लालसा करते हैं । तो हम हेतु में हो भाइयो तुम्हारे  
विश्वास के द्वारा से हम ने अपने सारे केश और दरिद्रता में तुम्हारे विषय में  
ज्ञाति पाई है । क्योंकि अब जो तुम प्रभु में दृढ़ रहे तो हम जीवते हैं ।  
क्योंकि हम धन्यवाद का कौन सा फल तुम्हारे विषय में ईश्वर को हम सारे  
आनन्द के लिये दे सकते हैं जिस करके हम तुम्हारे कारण अपने ईश्वर के  
आगे आनन्द करते हैं । कि रात और दिन हम अत्यन्त धिन्ती करते हैं कि  
तुम्हारा सुंदर देव्य और तुम्हारे विश्वास की जो घटी है उसे पूरी करें ॥

हमारा पिता ईश्वर आप ही और हमारा प्रभु यीशु श्रीगुरु तुम्हारी और  
हमारा मार्ग खोजा करे । पर तुम्हें प्रभु एक दूसरे का और और सभी का और  
प्रेम में अधिकारी देवे और हमारे जैसे हम भी तुम्हारी और उभरते हैं । जिसमें  
यह तुम्हारे मन को स्थिर करे और हमारे पिता ईश्वर के आगे हमारे प्रभु यीशु  
श्रीगुरु के अपने सब पदियों के संग आने पर पवित्रताई से निर्दोष भी करे ॥

चौथा पद्य ।

तो हे भाइयो अन्त में हम प्रभु यीशु में तुम्हें धिन्ती और उपदेश करते हैं  
कि जैसा तुम ने हम से पाया कि किस रीति में चलना और ईश्वर को प्रसन्न  
करना तुम्हें उचित है तुम अधिक चढ़ते जाओ । क्योंकि तुम जानते हो कि  
हम ने प्रभु यीशु का और से कौन कौन आज्ञा तुम्हें दी है । क्योंकि ईश्वर की  
इच्छा यह है अर्थात् तुम्हारी पवित्रता कि तुम व्यभिचार से परे रहे । कि तुम  
में से हर एक अपने अपने पात्र को उन अन्यदेशियों की नाई जो ईश्वर को  
नहीं जानते हैं कामाभिलाषा से रखे सो नहीं । परन्तु पवित्रता और आदर से  
रखने जानें । कि हम यात में कोई अपने भाई को न ठगें और न उस पर दाँव  
चलावे क्योंकि जैसा हम ने आगे तुम से कहा और साक्षात् भी दिखे तैसा प्रभु  
इन सब बातों के विषय में पलटा लेनेवाला है । क्योंकि ईश्वर ने हमों को  
अशुद्धता के लिये नहीं परन्तु पवित्रता में बुलाया । इस कारण जो तुच्छ जानता  
है सो मनुष्य को नहीं परन्तु ईश्वर को जिस ने अपना पवित्र आत्मा भी हमें  
दिखा तुच्छ जानता है ॥

- ८ भात्रीय प्रेम के विषय में तुम्हें प्रयोजन नहीं है कि मैं तुम्हारे पास लिखूं क्योंकि एक दूसरे को प्यार करने को तुम आपसी ईश्वर के सिखाये हुए हो ।
- १० क्योंकि तुम सारे माकिडोनिया के सब भाइयों का और सोई करते भी हो परन्तु
- ११ हे भाइयो हम तुम से बिन्ती करते हैं कि अधिक बढ़ते जाओ । और जैसे हम ने तुम्हें आज्ञा दी है तैसे चैन से रहने का और अपना अपना काम करने का
- १२ और अपने अपने हाथों से कमाने का पय करो . जिस्ते तुम बाहरवालों की और शुभ रीति से चलो और तुम्हें किसी वस्तु की घटती न होय ।
- १३ हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम उन के विषय में जो सोये हुए हैं अनजान रहो न हो कि तुम औरों के समान जिन्हे आज्ञा नहीं है शोक करो ।
- १४ क्योंकि जो इस विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी उठा तो वैसे ही
- १५ ईश्वर उन्हें भी जो यीशु में सोये हैं उस के संग लावेगा । क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवते और प्रभु के आने
- १६ लों वच जाते हैं उन के आगे जो सोये हैं नहीं छूट चलेंगे । क्योंकि प्रभु आप ही जंचे शब्द सहित प्रधान दूत के शब्द सहित और ईश्वर की तुरही सहित
- १७ स्वर्ग से उतरेगा और जो खीष्ट में मरे हैं सोई पहिले उठेंगे । तब हम जो जीवते और वच जाते हैं एक संग उन के साथ प्रभु से मिलने का सेंधों में आकाश
- १८ पर उठा लिये जायेंगे और इस रीति से हम रुदा प्रभु के संग रहेंगे । सो इन बातों से एक दूसरे को शांति देओ ॥

### पांचवां पर्व ।

- १ पर हे भाइयो कालों और समयों के विषय में तुम्हें प्रयोजन नहीं है कि तुम्हारे
- २ पास कुछ लिखा जाय । क्योंकि तुम आप ठीक करके जानते हो कि जैसा रात
- ३ को चौर सैसा ही प्रभु का दिन आता है । क्योंकि जब लोग कहेंगे कुशल है और कुछ भय नहीं तब जैसी गर्भवती पर प्रसव की पीड़ तैसा उन पर बिनाश
- ४ अचांचक आ पड़ेगा और वे किसी रीति से नहीं बचेंगे । पर हे भाइयो तुम तो
- ५ अधिकार में नहीं हो कि तुम पर वह दिन चौर की नाई आ पड़े । तुम सब ज्योति
- ६ के सन्तान और दिन के सन्तान हो . हम न रात के न अधिकार के हैं । इस लिये
- ७ हम औरों के समान सोवें सो नहीं परन्तु जागें और सचेत रहें । क्योंकि सोनेहारे
- ८ रात को सोते हैं और मतवाले लोग रात को मतवाने होते हैं । पर हम जो दिन के हैं तो विश्वास और प्रेम की झिलम और टोप अर्थात् त्राण की आज्ञा पहिनके
- ९ सचेत रहें । क्योंकि ईश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं पर इस लिये ठहराया कि
- १० हम अपने प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से त्राण प्राप्त करें . जो हमारे लिये मरा कि
- ११ हम चाहे जागें चाहे सोवें एक संग उस के साथ जीवें । इस कारण एक दूसरे को शांति देओ और एक दूसरे को सुधारो जैसे तुम करते भी हो ॥
- १२ हे भाइयो हम तुम से बिन्ती करते हैं कि जो तुम्हों में परिश्रम करते हैं और प्रभु में तुम पर अध्यक्षता करते हैं और तुम्हें चिताते हैं उन्हें पहचान रखो .
- १३ और उन के काम के कारण उन्हें अत्यन्त प्रेम के योग्य समझो . आपस में मिले रहो ॥

और परमेश्वर सूझा से कहके बोला । कि यदि कोई प्राणी अपराध करे और १४  
परमेश्वर की पवित्र यस्तुन में से अज्ञानता से पाप करे तो वह अपने अपराध के  
लिये भुंड में से एक निष्प्रेत सेंडा पवित्र स्थान के शैकल के समान चांदी के  
शैकल तेरे मोल के ठहराने के समान अपने अपराध की भेंट परमेश्वर के आगे लाये ।  
और वह उस पाप के कारण जो उस ने पवित्र यस्तुन में किया है पलटा देये १६  
और उस में से पांचवां भाग मिलाके याजक को देवे और याजक उस अपराध  
की भेंट के सेंडे से उस का प्रायश्चित्त करे और वह जमा किया जायगा ॥

और यदि कोई प्राणी पाप करे और बड़ी करे जो परमेश्वर की आज्ञाओं में १७  
खर्जित है और यद्यपि वह नहीं जानता या तथापि वह अपराधी है और अपने  
पाप को भोगेगा । और तेरे ठहराये हुए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये १८  
एक निष्प्रेत सेंडा भुंड में से याजक पास लावे और याजक उस की अज्ञानता के  
कारण जिस में उस ने अज्ञान की चूक किंहीं और न जाना उस के लिये  
प्रायश्चित्त करे और वह जमा किया जायगा । वह अपराध की भेंट है उस ने १९  
निश्चय परमेश्वर के विरुद्ध अपराध किया है ॥

ठठवां पथ्य ।

फिर परमेश्वर सूझा से कहके बोला । कि यदि कोई प्राणी पाप करे और २  
परमेश्वर के विरुद्ध से अपराध करे और अपने परेमी को घाती में जो उस पास  
रखेगी गई थी अथवा मांके में अथवा किसी यस्तुन में जो व्यवस निई जाय  
अथवा अपने परेमी को कुल दिया है । अथवा कोई यस्तुन जो खाई गई थी ३  
पावे और उस के विषय में झूठ बोलने और झूठी किमिया खाए इन मारी वानों  
में जो मनुष्य करके पापी होता है । सो इस कारण कि उस ने पाप किया है ४  
और दोषी है तब वह उसे जिसे उस ने व्यवस लिया है अथवा जो उस ने कुल  
से पाया है अथवा वह जो उस पास घाती थी अथवा खाई हुई जो उस ने  
पाई है फेर दे । अथवा मय जिस के कारण उस ने झूठी किमिया खाई है तो ५  
वह मूल को भर देवे और उस का पांचवां भाग उस में मिलावे और जिस का  
आता हो वह अपने अपराध की भेंट के दिन में उस को फेर देवे । और परमे- ६  
श्वर के लिये वह अपने अपराध की भेंट भुंड में से एक निष्प्रेत सेंडा तेरे  
ठहराये हुए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये याजक पास लावे । और ७  
याजक उस के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे और उस आता में उस ने  
जो कोई अपराध किया है उस के लिये जमा किया जायगा ॥

फिर परमेश्वर सूझा से कहके बोला । कि हावन और उस के घंटों को आजा ८  
कर कि यह बलिदान की भेंट की व्यवस्था है वह बलिदान की भेंट जलाने के  
स्थान पर घेदी पर रात भर बिहान लों रहे और घेदी की आग उसके मुलगाती  
रहे । और याजक अपने मृनी वस्त्र पहिने और मृती जाँघया से अपना शरीर ९  
ढाँपे और राख को ठठा लेवे जिसे आग घेदी पर बलिदान की भेंट में भस्म  
करेगी और उसे घेदी के पास रखे । और वह अपने वस्त्र उतारके दूसरे वस्त्र १०  
पहिने और उस राख को क्वावनी के बाहर एक पावन स्थान पर ले जावे । और ११

जो लोग ईश्वर को नहीं जानते हैं और जो लोग हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के सुसमाचार को नहीं मानते हैं उन्हें दंड देगा . कि वे तो प्रभु के सन्मुख से और उस की शक्ति के तेज की ओर से उस दिन अनन्त विनाश का दंड पावेंगे , जिस दिन वह अपने पवित्र लोगों में तेजोमय और सब विश्वास करनेदारों में आश्चर्य दिखाई देने को आवेगा . कि हम ने तुम को जो साक्षी दिई उस पर विश्वास तो किया गया ॥

११ इस निमित्त हम नित्य तुम्हारे विषय में प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा ईश्वर तुम्हें इस झुलाहट के योग्य समझे और भलाई की सारी मुक़्तका को और विश्वास के कार्य को सामर्थ्य सौदित पूरा करे . जिस्ते तुम्हों में हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम की महिमा और उस में तुम्हारी महिमा हमारे ईश्वर के और प्रभु यीशु ख्रीष्ट के अनुग्रह के समान प्रगट किई जाय ॥

दूसरा पर्व ।

१ पर हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के आने के और हमों के उस पास एकट्ठे होने के विषय में हम तुम से विन्ती करते हैं . कि अपना अपना मन शीघ्र ढिगाने न देओ और आत्मा के द्वारा अथवा ध्वन के द्वारा अथवा पत्नी के द्वारा जैसे हमारी ओर से होते घबरा न जाओ कि मानो ख्रीष्ट का दिन आ पहुंचा है ।  
२ कोई तुम्हें किसी रीति में न ठेले क्योंकि जब लों धर्मत्याग न हो लेवे और वह ४ पापपरुष अर्थात् विनाश का पुत्र . जो विरोध करनेद्वारा और सब पर जो ईश्वर अथवा पूज्य कहावता है अपने को जंचा करनेद्वारा है यहां लों कि वह ईश्वर के मन्दिर में ईश्वर की नाई बैठके अपने को ईश्वर करके दिखावे प्रगट न होय ५ तब लों वह दिन नहीं पहुंचेगा । क्या तुम्हें सुगत नहीं कि जब मैं तुम्हारे यहां ६ था तब भी मैं ने यह बातें तुम से कहीं । और अब तुम उस वस्तु को जानते ७ हो जो इस लिए रोकती है कि वह अपने ही समय में प्रगट होवे । क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता है पर केवल जब लों वह जो अभी रोकता है टल ८ न जावे । और तब वह अधर्म प्रगट होगा जिसे प्रभु अपने मुंह के पवन से ९ नाश करेगा और अपने आने के प्रकाश से लोप करेगा . अर्थात् वह अधर्म जिस का आना शैतान के कार्य के अनुसार झूठ के सब प्रकार के सामर्थ्य और १० चिन्हे और अदृष्ट कामों के साथ . और उन्हीं में जो नष्ट होते हैं अधर्म के सब प्रकार के हल के साथ है इस कारण कि उन्हीं ने सच्चाई के प्रेम को ११ नहीं ग्रहण किया कि उन का त्राण होता । और इस कारण से ईश्वर उन १२ पर भ्रांति की प्रबलता भेजेगा कि वे झूठ का विश्वास करें . जिस्ते सब लोग जिन्हां ने सच्चाई का विश्वास न किया परन्तु अधर्म से प्रसन्न हुए दंड के योग्य ठहरें ॥

१३ पर हे भाइयो प्रभु के प्यारे तुम्हारे विषय में नित्य ईश्वर का धन्य मानना हमें उचित है कि ईश्वर ने आदि से तुम्हें आत्मा की पवित्रता और सच्चाई के विश्वास के द्वारा वाचने को चुन लिया . और इस के लिये तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा से उल्लाया जिस्ते तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट की महिमा को

और हे भाइयो हम तुम से थिली करने हैं अनरीति से चन्नेहारों को चिताओ १४  
 कायों की शांति देओ दुष्टों को संभालो सभों की ओर धीरजयन्त होओ ।  
 देखो कि कोई किसी से घुराई के बदले घुराई न करे परन्तु सदा एक दूसरे की १५  
 ओर ओर सभों की ओर भी भलाई की चेष्टा करो । सदा आनन्दित रहो । १६  
 निरन्तर प्रार्थना करो । हर घान में धन्य मानो क्योंकि तुम्हारे विषय में यही १७  
 खीष्ट यीशु में ईश्वर की इच्छा है । आत्मा को निवृत्त मत करो । भविष्यद्वाक्यां १८  
 तुच्छ मत जानो । सब घातें जाँचो अच्छी को धर लेओ । सब प्रकार की घुराई २०  
 से परे रहो । शांति का ईश्वर आप ही तुम्हें सम्पूर्ण पवित्र करे और तुम्हारा २१  
 सम्पूर्ण आत्मा और प्राण और रेट हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के आने पर निर्दोष २२  
 रखा जाय । तुम्हारा धुलानेहारा विश्वासयोग्य है और यही यह करेगा । २४

हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो । सब भाइयों को पवित्र चूमा लेके नम- २५  
 स्कार करो । मैं तुम्हें प्रभु की किरिया देता हूँ कि यह पत्री सब पवित्र भाइयों २७  
 का पढ़के मुनाई जाय । हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे संग २८  
 होवे । आमीन ॥

## थिसलोनिकियों का पावल प्रेरित की दूसरी पत्री ।

पहिला पृष्ठ ।

पावल और मोना और तिमाथिय थिसलोनिकियों की मंडली का जो हमारे १  
 पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से है । तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु २  
 खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

हे भाइयो तुम्हारे विषय में नित्य ईश्वर का धन्य मानना हमें उचित है जैसा ३  
 योग्य है क्योंकि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता है और एक दूसरे की ओर तुम ४  
 सभों में से हर एक का प्रेम अधिक होता जाता है । यही लो कि सब उपद्रवों ४  
 में जो तुम पर पड़ते हैं और क्लेशों में जो तुम सहते हो तुम्हारा जो धीरज और ५  
 विश्वास है उस के लिये हम आप ही ईश्वर की मंडलियों में तुम्हारे विषय में ६  
 बढ़ाई करते हैं ॥

यह तो ईश्वर के यथार्थ विचार का प्रमाण है जिसमें तुम ईश्वर के राज्य के ५  
 योग्य मिले जाओ जिस के लिये तुम दुःख भी उठाते हो । क्योंकि यह तो ईश्वर ६  
 के न्याय के अनुसार है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं उन्हें प्रतिफल में क्लेश देवे , ७  
 और तुम्हें जो क्लेश पाते हो हमारे संग उस समय में जैन देवे जिस समय प्रभु ८  
 यीशु स्वर्ग से अपने सामर्थ्य के दूतों के संग धधकती आग में प्रगट होगा . और ९



# तिमोथिय का पावल प्रेरित की पहिली पत्री।

पहिला पत्र ।

- १ पावल जो हमारे आगकर्ता ईश्वर की और हमारी आशा प्रभु यीशु ख्रीष्ट की आज्ञा के अनुसार यीशु ख्रीष्ट का प्रेरित है विश्वास में अपने सन्ने पुत्र तिमोथिय को . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु से अनुग्रह और दया और शांति मिले ।
- ३ जैसे मैं ने माकिदोनिया को जाते हुए तुम्हें से विन्ती किई [तैसे फिर कहता हूँ] कि इफिस में रहियो जिस्में तू कितनों को आज्ञा देवे कि आन आन उपदेश मत किया करो . और कहानियों पर और अनन्त वंशावलिओं पर मन मत लगाओ जिन से ईश्वर के भंडारीपन का जो विश्वास के विषय में है निबाह ५ नहीं होता है परन्तु और भी विबाद उत्पन्न होते हैं । धर्माज्ञा का अन्त यह प्रेम है जो शुद्ध मन से और अच्छे विवेक से और निष्कपट विश्वास से होता है . जिन से कितने लोग भटकके बकवाद की ओर फिर गये हैं . जो व्यवस्थापक हुआ चाहते हैं परन्तु न यह बातें बूझते जो वे कहते हैं और न यह जानते हैं कि कौन सी बातों के विषय में दृढ़ता से बोलते हैं । पर हम जानते हैं कि व्यवस्था यदि कोई उस को विधि के अनुसार यह जानके काम में लावे तो अच्छी है . कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं ठहराई गई है परन्तु अधर्मी और निरंकुश लोगों के लिये भक्तिहीनों और पापियों के लिये अपवित्र और अशुद्ध १० लोगों के लिये पितृघातकों और मातृघातकों के लिये . मनुष्यघातकों ब्यभिचारियों पुरुषगामियों मनुष्यविक्रयों भूठों और भूठी फिरिया खानेदारों के लिये है और यदि दूसरा कोई कर्म हो जो खरे उपदेश के विरुद्ध है तो उस के लिये भी है .
- ११ परमधन्य ईश्वर की महिमा के सुसमाचार के अनुसार जो मुझे सौंपा गया ।
- १२ और मैं ख्रीष्ट यीशु हमारे प्रभु का जिस ने मुझे सामर्थ्य दिया धन्य मानता हूँ १३ कि उस ने मुझे विश्वासयोग्य समझा और सेवकाई के लिये ठहराया . जो आगे निन्दक और सतानेहारा और उपद्रवी था परन्तु मुझ पर दया किई गई क्योंकि १४ मैं ने अविश्वासता में अज्ञानता से ऐसा किया । और हमारे प्रभु का अनुग्रह विश्वास के साथ और प्रेम के साथ जो ख्रीष्ट यीशु में है बहुत अधिकारी से हुआ । १५ यह बचन विश्वासयोग्य और सर्वथा ग्रहणयोग्य है कि ख्रीष्ट यीशु पापियों को १६ बचाने के लिये जगत में आया जिन्हें मैं मैं सब से बड़ा हूँ । परन्तु मुझ पर इसी कारण से दया किई गई कि मुझ में सब से अधिक करके यीशु ख्रीष्ट समस्त धीरज दिखावे कि यह उन लोगों के लिये जो उस पर अनन्त जीवन के १७ लिये विश्वास करनेवाले थे एक नमूना होवे । सनातन काल के अविनाशी और अदृश्य राजा को अर्थात् अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर को सदा सर्वदा प्रतिष्ठा और गुणानुवाद होवे . आमीन ।

प्राप्त करो । हम लिये है भाइयो दृढ़ रहो और जो धार्मिक तुम ने हमारे चाहे १७  
 वचन के द्वारा चाहे पत्रों के द्वारा सीखीं उन्हें धारण करो । हमारा प्रभु यीशु १८  
 ख्रीष्ट आप ही और हमारा पिता ईश्वर जिस ने हमें प्यार किया और अनुग्रह  
 में अनन्त शांति और अच्छी आशा दी है । तुम्हारे मन की शांति देवे और १९  
 तुम्हें हर एक अच्छे वचन और कर्म में स्थिर करे ॥

### तीसरा पर्व ।

अन्त में है भाइयो यह कहता हूं कि हमारे लिये प्रार्थना करो कि प्रभु का १  
 वचन जैसा तुम्हारे यहाँ फैलता है तैसा ही शीघ्र फैले और तेजोमय ठहरे । और २  
 कि हम आविचारों और दुष्ट मनुष्यों से दूर जायें क्योंकि विश्वास सभी का नहीं  
 है । परन्तु प्रभु विश्वासयोग्य है जो तुम्हें स्थिर करेगा और दृढ़ में अटायें रहेगा । ३  
 और हम प्रभु में तुम्हारे विषय में भरोसा रखते हैं कि जो कुछ हम तुम्हें आज्ञा ४  
 देते हैं उसे तुम करते हो और करोगे भी । प्रभु तो ईश्वर के प्रेम की और और ५  
 ख्रीष्ट के धारण की और तुम्हारे मन की आशावाँदे करे ॥

है भाइयो हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर ६  
 एक भाई में जो अनरौति में चलता है और जो शिक्षा हम ने हम में पाई हम  
 के अनुसार नहीं चलता है अलग हो जायें । क्योंकि तुम आप जानते हो कि ७  
 किस रीति में हमारे अनुगामी होना उचित है क्योंकि हम तुम्हें में अनरौति में  
 नहीं चले, और संत की रोटी किसी के यहाँ में न पाई परन्तु परिश्रम और ८  
 क्लेश से रात और दिन कमाते थे कि तुम ने मे किमी पर भार न दें । यह नहीं ९  
 कि हमें अधिकार नहीं है परन्तु हम लिये कि अपने को तुम्हारे धारण दृष्टान्त  
 कर दें जिसमें तुम हमारे अनुगामी होओ । क्योंकि जब हम तुम्हारे यहाँ थे तब १०  
 भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई कमाने नहीं चाहता है तो ग्याना भी  
 न ग्याय । क्योंकि हम मूलते हैं कि कितने लोग तुम्हें में अनरौति में चलते हैं ११  
 और कुछ कमाते नहीं परन्तु औरों के काम में दाय्य डालते हैं । जैसा कि हम १२  
 आज्ञा देते हैं और अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट की ओर से उपदेश करते हैं कि वे जैन  
 से कमाके अपनी ही रोटी खाया करें । और तुम है भाइयो सुकर्म करने में १३  
 कातर मत होओ । यदि कोई इस पत्रों में का हमारा वचन नहीं मानता है १४  
 उसे खान्द रखो और उस की संगति मत करो जिसमें यह लज्जित होय । तौभी १५  
 उसे दूरी सा मत समझो परन्तु भाई जानके चितोओ ॥

शांति का प्रभु आप ही नित्य तुम्हें सर्वथा शांति देवे । प्रभु तुम सभी के १६  
 संग होवे । सुक पायल का अपने दाय्य का लिखा हुआ नमस्कार जो हर एक १७  
 पत्रों में चिन्ह है । मैं यहाँ लिखता हूं । हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह तुम १८  
 सभी के संग होवे । आमीन ।

७ ऐसा न हो कि अभिमान से फूलके शैतान के वंद में पड़े । और भी उस को उचित है कि बाहरवालों के यहां सुख्यात होवे ऐसा न हो कि निन्दित हो जाय और शैतान के फंदे में पड़े ॥

८ ऐसे ही मंडली के सेवकों को उचित है कि गंभीर होवें दोरंगी नहीं न बहुत सदा की रुचि करनेहारे न नीच कमाई करनेहारे . परन्तु विश्वास का भेद शुद्ध विवेक से रखनेहारे हों । पर ये लोग पहिले परखे भी जावें तब जो निर्दोष निकलें तो सेवक का काम करें . इसी रीति से स्त्रियों को उचित है कि गंभीर होवें और दोष लगानेवालियां नहीं परन्तु सचेत और सद्य बातों में विश्वास-योग्य । सेवक लोग एक एक स्त्री के स्वामी और लड़कों को और अपने अपने घर की अच्छी रीति से आध्यक्षता करनेहारे हों । क्योंकि जिन्होंने सेवक का काम अच्छी रीति से किया है वे अपने लिये अच्छा पद प्राप्त करते हैं और उस विश्वास में जो खीष्ट यीशु पर है बड़ा साहस पाते हैं ।

१४ मैं तेरे पास बहुत शीघ्र आने की आज्ञा रखके भी यह बातें तेरे पास लिखता हूँ । पर इस लिये लिखता हूँ कि जो मैं मिलस्य कदं तौ भी तू जाने कि ईश्वर के घर में जो जीवते ईश्वर की मंडली और सत्य का खंभा और नेव है किसी चाल चलना उचित है । और यह बात सब मानते हैं कि भक्ति का भेद बड़ा है कि ईश्वर शरीर में प्रगट हुआ आत्मा में निर्दोष ठहराया गया स्वर्गदूतों को दिखाई दिया आन आन देशियों में प्रचार किया गया जगत में उस पर विश्वास किया गया वह महिमा में उठा लिया गया ॥

### चौथा पर्व ।

१ पवित्र आत्मा स्पष्टता से कहता है कि इस के पीछे कितने लोग विश्वास से बढ़क जायेंगे और भरमानेहारे आत्माओं पर और भूतों की शिक्षाओं पर मन लगावेंगे . उन झूठ बोलनेहारे के कपट के अनुसार जिन का निर्ज मन दागा हुआ होगा . जो विवाह करने से वर्ज्य और खाने की वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे जिन्हें ईश्वर ने इस लिये सृजा कि विश्वासी लोग और सत्य के माननेहारे उन्हें धन्यवाद के संग भोग करें । क्योंकि ईश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है और कोई वस्तु जो धन्यवाद के संग ग्रहण किई जाय फँकने के योग्य नहीं है । क्योंकि यह ईश्वर के वचन के और प्रार्थना के द्वारा पवित्र किई जाती है ॥

६ भाइयों को इन बातों का स्मरण करवाने से तू यीशु खीष्ट का अच्छा सेवक ठहरेगा जिस का विश्वास की और उस अच्छी शिक्षा की बातों में जो तू ने प्राप्त किई हैं अभ्यास होता है । परन्तु अशुद्ध और खुटिया की सी कहानियों से अलग रह पर भक्ति के लिये अपनी साधना कर । क्योंकि देह की साधना कुछ थोड़े के लिये फलदाई है परन्तु भक्ति सब बातों के लिये फलदाई है कि उस को अब के जीवन की और आनेवाले की भी प्रतिज्ञा है । यह वचन विश्वासयोग्य और सर्वथा ग्रहणयोग्य है । क्योंकि हम इस के निमित्त परिश्रम करते हैं और निन्दित भी होते हैं कि हम ने जीवते ईश्वर पर भरोसा रखा है जो सब मनुष्यों

यह आज्ञा है पुत्र तिमोथिय में उन भविष्यद्वाकियों के अनुसार जो तेरे विषय १८ में आगे से किई गईं तुझे सौंप देता हूं कि तू इन्हीं की सहायता से अच्छी लड़ाई का घोड़ा होय, और विश्वास को और अच्छे विवेक को रखे जिसे १९ त्यागने से कितनों के विश्वास का जहाज मारा गया । इन्हीं से वे चुमिनई और २० सिकन्दर हैं जिन्हें मैं ने जैतान को सौंप दिया कि वे ताड़ना पाके सीखें कि निन्दा न करें ॥

### दूसरा पर्व ।

सो मैं सच से पहिले यह उपदेश करता हूं कि विन्ती और प्रार्थना और निवेदन १ और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किये जावें । राजाओं के लिये भी और सभी २ के लिये जिन का वंश पद है हम लिये कि हम विश्वास और चैन में सारी भक्ति और गंभीरता से अपना अपना जन्म देतावें । क्योंकि यह हमारे वाशकर्ता ईश्वर ३ को अच्छा लगता और भावता है । जिस की इच्छा यह है कि सब मनुष्य वाश ४ पावें और सत्य के ज्ञान लें पहुँचें । क्योंकि एक ही ईश्वर है और ईश्वर और ५ मनुष्यों का एक ही मध्यस्थ है अर्थात् ख्रीष्ट येशु जो मनुष्य है । जिस ने सभी ६ के उद्धार के काम में अपने को दिया । यही उपयुक्त समय मैं को साक्षात् है जिस ७ के लिये मैं प्रचारक और प्रेरित और विश्वास और सद्भाव से अन्यदेशियों का उपदेशक ठहराया गया । मैं ख्रीष्ट में सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं ॥

सो मैं चाहता हूं कि घर स्थान में पुनप लोग बिना क्रोध और बिना धिक्कार ८ पाश्चिमा दायों को उठाके प्रार्थना करें । इसी रीति से मैं चाहता हूं कि स्त्रियां ९ भी संकोच और संयम के साथ अपने तई उस पहिरावन से जो उन के योग्य है मंदारें गून्थे दुग् बाल या सोने या मोतियों से या बहुमूल्य वस्त्र से नहीं परन्तु १० अच्छे कस्मी से । कि यही उन स्त्रियों को जो ईश्वर की उपासना की प्रतिज्ञा ११ करती हैं मोहता है । स्त्री चुपचाप सकल अधीनता से सीख लेंगे । परन्तु मैं १२ स्त्री को उपदेश करने अथवा पुनप पर अधिकार रखने की नहीं परन्तु चुपचाप रहने की आज्ञा देता हूं । क्योंकि आदम पहिले बनाया गया तब दब्या । और १३ आदम नहीं छला गया परन्तु स्त्री छली गई और अपराधिनी हुई । तभी जो १४ वे संयम सहित विश्वास और प्रेम और पाश्चिमाता में रहें तो लड़के जनन में वाश पावेंगी ॥

### तीसरा पर्व ।

यह वचन विश्वासयोग्य है कि यदि कोई मंडली की रखवाले का काम लेने १ चाहता है तो अच्छे काम की लालना करता है । सो उचित है कि रखवाला २ निर्दोष और एक ही स्त्री का स्थाना सचेत और संयमी और सुशील और अतिथि-सेवक और सिलखाने में निपुण होय । मद्यपान में आसक्त नहीं और न मरकटा ३ न नीच कमाई करनेद्वारा परन्तु मृदुभाष मिलनसार और निर्लोभी । जो अपने ही ४ घर की अच्छी रीति से अध्यक्षता करता हो और लड़कों को सारी गंभीरता से अधीन रखता हो । पर यदि कोई अपने ही घर की अध्यक्षता करने न जानता ५ हो तो क्योंकि ईश्वर की मंडली की रखवाली करेगा । फिर नवांशिय न होय ६

१७ जिन प्राचीनों ने अच्छी रीति से अध्यक्षाता किई है सो दूने आदर के योग्य  
 १८ समझे जायें निज करके वे जो उपदेश और शिक्षा में परिश्रम करते हैं । क्योंकि  
 धर्मपुस्तक कहता है कि दाघनेदारे पैल का मुंह मत बांध और कि अनिहार  
 १९ अपनी अनि के योग्य है । प्राचीन के विरुद्ध दो अथवा तीन साक्षियों की साक्षी  
 २० बिना अपवाद को ग्रहण न करना । पाप करनेदारों को सबों के आगे समझा दे  
 २१ इस लिये कि और लोग भी डर जायें । मैं ईश्वर के और प्रभु यीशु ख्रीष्ट के  
 और चुने हुए दूतों के आगे दृढ़ आज्ञा देता हूँ कि तू मन की गांठ न बांधके  
 २२ इन बातों को पालन करे और कोई काम पक्षपात की रीति से न करे । किसी  
 पर हाथ शीघ्र न रखना और न दूसरों के पापों में भागी होना , अपने को  
 २३ पवित्र रख । अथ जल मत पिया कर परन्तु अपने उदर के और अपने वारम्बार  
 २४ के रोगों के कारण थोड़ा सा दाख रस लिया कर । कितने मनुष्यों के पाप  
 प्रत्यक्ष हैं और विचारित होने को आगे ही चलते हैं परन्तु कितनों के वे पीछे  
 २५ भी हो लेते हैं । वैसे ही कितनों के सुकर्म भी , प्रत्यक्ष हैं और जो और प्रकार  
 के हैं सो छिप नहीं सकते हैं ।

कृष्टयां पर्व ।

१ जितने दास जूए के नीचे हैं वे अपने अपने स्वामी को सारे आदर के योग्य  
 २ समझें जिस्तें ईश्वर के नाम की और धर्मोपदेश की निन्दा न किई जाय । और  
 जिन्हें के स्वामी विश्वासी जन हैं सो उन्हें इस लिये कि भाई हैं तुच्छ न  
 जानें परन्तु और भी उन की सेवा करें क्योंकि वे जो इस भलाई के भागी होते हैं  
 विश्वासी और प्यारे हैं , इन बातों की शिक्षा और उपदेश किया कर ॥  
 ३ यदि कोई जन आन उपदेश करता है और खरी बातों को अर्थात् हमारे  
 प्रभु यीशु ख्रीष्ट की बातों को और उस शिक्षा को जो भक्ति के अनुसार है नहीं  
 ४ मानता है , तो वह अभिमान से फूल गया है और कुछ नहीं जानता है परन्तु  
 उसे बिबादों का और शब्दों के भागड़ों का रोग है जिन से डाह वैर निन्दा की  
 ५ बातें और दूसरों की और बुरे सन्देह , और उन मनुष्यों के व्यर्थ रगड़े भागड़े  
 उत्पन्न होते हैं जिन के मन बिगड़े हैं और जिन से सच्चाई हरी गई है जो  
 समझते हैं कि कमाई ही भक्ति है , ऐसे लोगों से अलग रहना ॥  
 ६ पर सन्तोषयुक्त भक्ति बड़ी कमाई है । क्योंकि हम जगत में कुछ नहीं लाये  
 ७ और प्रगट है कि हम कुछ ले जाने भी नहीं सकते हैं । और भोजन और वस्त्र  
 ८ जो हमें मिला करें तो इन्हीं से सन्तुष्ट रहना चाहिये । परन्तु जो लोग धनी होने  
 चाहते हैं सो परीक्षा और फंदे में और बहुतेरे बुद्धिहीन और हानिकारी अभिलाषों  
 १० में फंसते हैं जो मनुष्यों को विनाश और विध्वंस में डुबा देते हैं । क्योंकि धन  
 का लाभ सब बुराईयों का मूल है उसे प्राप्त करने की चेष्टा करते हुए कितने लोग  
 विश्वास से भरमाये गये हैं और अपने को बहुत खेदों से वारवार वेदा है ॥  
 ११ परन्तु हे ईश्वर के जन तू इन बातों से बचा रह और धर्म और भक्ति और  
 १२ विश्वास और प्रेम और धीरज और नम्रता की चेष्टा कर । विश्वास की अच्छी लड़ाई  
 लड़ और अनन्त जीवन को धर ले जिस के लिये तू बुलाया भी गया और बहुत

का निज करके विश्वासियों का बचानेद्वारा है । इन बातों की आज्ञा और ११ शिक्षा किया कर ॥

कोई तेरी जवानी को तुच्छ न जाने परन्तु बचन में चलन में प्रेम में आत्मा १२ में विश्वास में और पवित्रता में तू विश्वासियों के लिये दृष्टान्त बन जा । जय १३ लों में न श्राव्य तय लों पढ़ने में उपदेश में और शिक्षा में मन लगा । उस १४ दरबान से जो तुझ में है जो भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीन लोगों के हाथ रखने के साथ तुझे दिया गया निश्चिन्त न रहना । इन बातों की चिन्ता कर १५ इन में लगा रह कि तेरी दृढ़ता सभों में प्रगट होवे । अपने विषय में और शिक्षा १६ के विषय में सचेत रह कि तू उन में बना रहे क्योंकि यह करने में तू अपने को और अपने सुननेदारों को भी बचावगा ॥

पांचवां पर्व ।

बूढ़े को मत दण्ड परन्तु उस को जैसे पिता जानके उपदेश दे और जवानों १ को जैसे भाइयों को । दुष्टियों को जैसे माताओं को और पुत्रियों को जैसे २ बहनों को सारी पवित्रता से उपदेश दे । विधवाओं का जो सचमुच विधवा ३ हैं आदर कर । परन्तु जो किसी विधवा के लड़के अथवा नाती पाते हों तो वे ४ लोग पहिले अपने ही घर का सम्मान करने और अपने पितरों को प्रतिफल देने को सीखें क्योंकि यह ईश्वर को अच्छा लगता और भावता है । जो सचमुच ५ विधवा और अकेली छोड़ी हुई है सो ईश्वर पर भरोसा रखती है और रात दिन धिन्ती और प्रार्थना में लगी रहती है । परन्तु जो भोग विलास में रहती है ६ सो जीते जी मर गई है । और इन बातों की आज्ञा दिया कर इस लिये कि वे निर्दोष हों । परन्तु यदि कोई लन अपने कुटुंब के और निज करके अपने ७ घराने के लिये चिन्ता न करे तो वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी घुरा है । विधवा वही गिनी जाय जिस की बयम साठ बरस के नीचे ८ न हो जो एक ही स्त्री की स्त्री हुई हो । जो सुकर्मों के विषय में सुख्यात १० हो यदि उस ने लड़कों को पाला हो यदि अतिविशेषा किई हो यदि पवित्र लोगों के पांशों को धोया हो यदि दुःखियों का उपकार किया हो यदि हर एक अच्छे काम की चेष्टा किई हो तो गिन्ती में आवे । परन्तु जवान विधवाओं ११ को अलग कर क्योंकि जब वे स्त्रीपु के विरुद्ध सुख विलास की इच्छा करती हैं तब विवाह करने चाहती हैं । और दंड के योग्य होती हैं क्योंकि उन्हीं ने अपने पहिले १२ विश्वास को तुच्छ जाना है । और इस के संग वे बेकार रहने और घर घर फिरने १३ को सीखती हैं और केवल बेकार रहने नहीं परन्तु बकबाजी होने और पराये काम में हाथ डालने और अनुचित बातें बोलने को सीखती हैं । इस लिये मैं चाहता १४ हूँ कि जवान विधवारं विवाह करें और लड़के जनें और घरधारी करें और किसी विरोधी को निन्दा के कारण कुछ अवसर न दें । क्योंकि अब भी कितनी तो १५ बहकके गैतान के पीछे हो लिई हैं । जो किसी विश्वासी अथवा विश्वासिनी १६ के यहां विधवारं हों तो वही उन का उपकार करे और मंडली पर भार न दिया जाय जिस्तें वह उन्हीं का जो सचमुच विधवा हैं उपकार करे ॥



- ११ प्रेम और स्थिरता . और मेरा अनेक बार सताया जाना और दुःख उठाना अच्छी रीति से जाना है कि मुझ पर अन्तैरिया में और इकोनिया में और तुस्ता में कैसी बातें घीतीं में ने कैसे बड़े उपद्रव सदे पर प्रभु ने मुझे मर्मां से उबारा ।
- १२ और सब लोग जो खीष्ट यीशु में भक्ताई से जन्म दिताने चाहते हैं सताये जायेंगे ।
- १३ परन्तु दुष्ट मनुष्य और बलकानेद्वारे धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए अधिक दुरी दशा लों बढ़ते जायेंगे ।
- १४ पर तू ने जिन बातों को सीखा और निश्चय जाना है उन में बना रह क्योंकि
- १५ तू जानता है कि किस से सीखा . और कि बालकपन से धर्मपुस्तक तेरा जाना हुआ है जो विश्वास के द्वारा जो खीष्ट यीशु में है तुझे त्राण निमित्त बुद्धिमान
- १६ कर सकता है । सारा धर्मपुस्तक ईश्वर की प्रेरणा से रचा गया और उपदेश के लिये और समझाने के लिये और सुधारने के लिये और धर्म की शिक्षा के लिये फल-
- १७ दाई है . जिस्ते ईश्वर का जन सिद्ध अर्थात् हर एक उत्तम कर्म के लिये सिद्ध किया हुआ होवे ॥

### चौथा पत्र ।

- १ सो मैं ईश्वर के आगे और प्रभु यीशु खीष्ट के आगे जो अपने प्रगट होने और अपने राज्य करने पर जीवितों और मृतकों का विचार करेगा दृढ़ आज्ञा
- २ देता हूँ . वचन को प्रचार कर समय और असमय तत्पर रह सब प्रकार के धीरे
- ३ और शिक्षा सहित समझा और डांट और उपदेश कर । क्योंकि समय आवेगा जिस में लोग खरे उपदेश को न मर्हेंगे परन्तु अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार
- ४ अपने लिये उपदेशकों का ठेर लगावेंगे क्योंकि उन के कान सुरसुरावेंगे . और वे
- ५ सच्चाई से कान फेरेंगे पर कहानियों की ओर फिर जावेंगे । परन्तु तू सब बातों में सचेत रह दुःख सह ले सुसमाचार प्रचारक का कार्य कर अपनी सेवकाई को
- ६ सम्पूर्ण कर । क्योंकि मैं अब भी ठाला जाता हूँ और मेरे घिदा होने का समय
- ७ आ पहुँचा है । मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूँ मैं ने अपनी दौड़ पूरी किई है मैं
- ८ ने विश्वास को पालन किया है । अब तो मेरे लिये वह धर्म का मुकुट धरा है जिसे प्रभु जो धर्मी विचारकर्ता है उस दिन मुझे देगा और केवल मुझे नहीं पर उन सभी को भी जिन्होंने ने उस का प्रगट होना प्रिय जाना है ॥
- १० मेरे पास शीघ्र आने का यत्न कर । क्योंकि दीमा ने इस संसार को प्रिय जानके मुझे छोड़ा है और थिसलोनिका को गया है क्रीस्की गलातिया को और तीतस
- ११ दलमातिया को गया है । केवल लूक मेरे साथ है . मार्क को लेके अपने संग ला
- १२ क्योंकि वह सेवकाई के लिये मेरे बहुत काम आता है । परन्तु तुम्हारे को मैं ने
- १३ इफिस को भेजा । उस लखादे को जो मैं त्रोआ में कार्य के यहां छोड़ आया
- १४ और पुस्तकों को निज करके चर्मपत्रों को जब तू आवे तब ले आ । सिकन्दर
- ठठरे ने मुझ से बहुत बुराईयां किई . प्रभु उस के कर्मों के अनुसार उस को फल
- १५ देवे । और तू भी उस से बचा रह क्योंकि उस ने हमारी बातों का बहुत ही
- १६ विरोध किया है । मेरे पहिली बेर उत्तर देने में कोई मेरे संग नहीं रहा परन्तु
- १७ सभी ने मुझे छोड़ा . इस का उन पर दोष न लगाया जाय । परन्तु प्रभु मेरे निकट

साक्षियों के आगे अच्छा श्रांतीकार किया । मैं तुम्हें ईश्वर के आगे जो सभी का १३  
जिलाता है और खीष्ट यीशु के आगे जिस ने पन्तिथ पिता के मास्ते अच्छे  
श्रांतीकार की साक्षी दिई आज्ञा देता हूँ . कि तू इस आज्ञा को निष्ठा और निर्दोष १४  
हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के प्रकाश को पालन कर . जिसे वह अपने ही समयों में १५  
दिखावेगा जो परमधन्य और अद्वैत पराक्रमी और राज्य करनेदारों का राजा और  
प्रभुता करनेदारों का प्रभु है . और अमरता केवल उसी की है और वह आगम्य १६  
ज्योति में ग्राम करता है और उस को मनुष्यों में से किसी ने नहीं देखा है और  
न कोई देख सकता है . उस को प्रतिष्ठा और अनन्त पराक्रम होय . आमीन ॥

जो लोग इस संसार में धनी हैं उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमानी न हों और १७  
धन की चंचलता पर भरोसा न रखें परन्तु जीवन ईश्वर पर जो सुख प्राप्ति के लिये  
हमें सब कुछ धन की रीति से देता है . और कि वे भलाई करें और अच्छे १८  
कामों के धनवान हों और उदार और परीषकारी हों . और भविष्यकाल के १९  
लिये अच्छी नेत्र अपने लिये जुगा रखें जिससे अनन्त जीवन का धर लें ॥

हे तिमोथिय इस घाँसी को रक्षा कर और अशुद्ध वक्तवादी में और जो २०  
मुठाई में ज्ञान कहावता है उस को विरुद्ध बातों में परे रह . कि इस ज्ञान २१  
की प्रतिज्ञा करने हुए कितने लोग विश्वास के विषय में भटक गये हैं . तेरे  
संग अनुग्रह होय । आमीन ॥

## तिमोथिय का पावल प्रेरित की दूसरी पत्री ।

### पहिला पत्र ।

पावल जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो खीष्ट यीशु में है ईश्वर की १  
इच्छा से यीशु खीष्ट का प्रेरित है . मेरे प्यारे पुत्र तिमोथिय को ईश्वर पिता से २  
और हमारे प्रभु खीष्ट यीशु से अनुग्रह और दया और शांति मिले ॥

मैं ईश्वर का धन्य मानता हूँ जिस की सेवा में अपने पितरों की रीति पर ३  
शुद्ध मन से करता हूँ कि रात दिन मुझे मेरी प्रार्थनाओं में तेरे विषय में ऐसे  
निरन्तर चेत रहता हूँ । और तेरे आँसूओं का स्मरण करके मैं तुम्हें देखने की ४  
लालमा करता हूँ जिससे आनन्द से परिपूर्ण होऊँ । क्योंकि उस निष्कण्ट विश्वास ५  
की मुझे सुरत पड़ती है जो तुम्हें मैं है जो पहिले तेरी नानी लोर्डस में और तेरी  
माता र्नीकी में वसता था और मुझे निश्चय हुआ है कि तुम्हें भी वसता है ॥

इस कारण से मैं तुम्हें चेत दिलाता हूँ कि ईश्वर के घरदान को जो मेरे हाथों ६  
के रखने के द्वारा मैं तुम्हें मैं है जगा दे । क्योंकि ईश्वर ने हमें कादराई का नहीं ७  
परन्तु सामर्थ्य और प्रेम और प्रबोध का आत्मा दिया है । इस लिये तू न हमारे प्रभु ८  
की साक्षी से और न मुझ से जो उस का अधुआ हूँ लज्जित हो परन्तु सुसमाचार

फाड़ा गया हो वह किसी कार्य में लाई जाय परन्तु उस में से किसी भांति से  
 २५ मत खाइये । क्योंकि जो मनुष्य ऐसे पशु की चिकनाई खावे जिससे आग के  
 बलिदान परमेश्वर के आगे चढ़ाये जाते हैं सोई प्राणी अपने लोगों में से काटा  
 २६ जायगा । और तुम किसी पक्षी का अथवा पशु का किसी भांति का लोहू अपने  
 २७ सब स्थानों में मत खाइये । जो प्राणी किसी भांति का लोहू खावे सोई प्राणी  
 अपने लोगों में से काटा जायगा ॥

२८ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों से कह कि जो  
 कोई अपने कुशल के बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो अपने कुशल के  
 ३० बलिदान में से परमेश्वर के आगे अपने नैवेद्य लावे । वह उस बलिदान को जो  
 परमेश्वर के लिये जलाया जाता है और छाती की चिकनाई को अपने छाथों में  
 लावे जिससे छाती के हिलाने के बलिदान के लिये परमेश्वर के आगे दिनाया  
 ३१ जावे । और याजक चिकनाई को यज्ञवेदी पर जलावे परन्तु छाती घामन की  
 ३२ और उस के वेटों की होगी । और तुम कुशल की भेंट के बलिदानों से दाहिना  
 ३३ कांधा याजक को हिलाने की भेंट के लिये दीजिये । हाइन के वेटों में से जो  
 कुशल के बलिदान का लोहू और चिकनाई चढ़ाता है सो दाहिना कांधा अपने  
 ३४ भाग के लिये लेवे । क्योंकि कुशल की भेंटों के बलिदानों में से हिलाने की  
 छाती और उठाने का कांधा मैं ने इसराएल के संतानों से लिया और हाइन  
 ३५ याजक और उस के वेटों को मनातन की विधि के लिये दिया । हाइन और  
 उस के वेटों के अभिषेक का जिस दिन मैं वह उन्हें आगे धरे कि याजक के पद  
 में परमेश्वर की सेवा करे परमेश्वर के लिये आग की भेंटों में का वह भाग  
 ३६ होगा । जिसे परमेश्वर ने इसराएल के संतान को जिस दिन मैं उस ने उन्हें अभि-  
 षेक किया उन्हें देने का आज्ञा किई कि उन की पीढ़ियों में मनातन के लिये  
 विधि होवे ॥

३७ बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की  
 भेंट और स्थापित करने की भेंट और कुशल की भेंट के बलिदान की यह व्यवस्था  
 ३८ है । जिसे परमेश्वर ने सीना के पहाड़ में मूसा को आज्ञा किई जिस दिन उस  
 ने सीना के वन में इसराएल के संतान को आज्ञा किई कि अपनी भेंट परमेश्वर  
 के आगे लावे ॥

#### आठवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि हाइन और उस के साथ उस के  
 २ वेटों को और बस्तों को और अभिषेक का तेल और पाप की भेंट का एक बैल  
 ३ और दो भैंसे और एक टोकरी अखमीरी रोटी ले । और तू सारी मंडली को  
 ४ मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठा कर । सो जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई  
 श्री मूसा ने वैसा ही किया और सारी मंडली मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी  
 हुई ॥

५ तब मूसा ने मंडली से कहा कि यह वह बात है जो परमेश्वर ने पालन करने  
 ६ की आज्ञा किई है । और मूसा हाइन को और उस के वेटों को आगे लाया

खड़ा हुआ और मुझे सामर्थ्य दिया जिस्ते मेरे द्वारा से उपदेश सम्पूर्ण सुनाया जाय और सब अन्यदेशी लोग मुने और मैं सिंघ के मुख से बचाया गया । और १८ प्रभु मुझे हर एक दुरे कर्म से बचावेगा और अपने स्वर्गिय राज्य के लिये मेरी रक्षा करेगा . उस का गुणानुवाद मदा सर्व्यदा होय . आमीन ॥

प्रिस्कीला और अकूला को और र्नीसिफर के घराने को नमस्कार । दुरास्त १९ क्रिश्च में रह गया और ओफिम रोगी था उसे मैं ने मिलीत में छोड़ा । साड़े के २१ पहिले आने का यत्न कर . उबूल और पूदी और लीनम और कौदिया और सब भाई लोगों का तुम्हे नमस्कार । प्रभु यीशु ख्रीष्ट तरे आत्मा के संग होय . अनुग्रह २२ तुम्हों के संग होवे । आमीन ॥

## तीतस को पावल प्रेरित की पत्री ।

पहिला पत्र ।

पावल जो ईश्वर का दास और ईश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास के १ विषय में और जो सत्य वचन भक्ति के समान है उस सत्य वचन के ज्ञान के विषय में अनन्त जीवन की आशा से यीशु ख्रीष्ट का प्रेरित है . कि उस जीवन २ की प्रतिज्ञा ईश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता है सनातन से की है . परन्तु ३ उपयुक्त समय में अपने वचन को उपदेश के द्वारा जो हमारे त्राणकर्ता ईश्वर की आज्ञा के अनुसार मुझे सौंपा गया प्रगट किया . तीतस को जो साधारण ४ विश्वास के अनुसार मेरा भ्राता पुत्र है ईश्वर पिता और हमारे त्राणकर्ता प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और दया और शान्ति मिले ।

मैं ने इसी कारण तुम्हे क्रीती में छोड़ा कि जो वाते रह गईं तू उन्हें सुधारता ५ जाय और नगर नगर प्रार्थीनों को नियुक्त करे जैसे मैं ने तुम्हे आज्ञा दी है . कि ६ यदि कोई निर्दोष और एक ही स्त्री का स्वामी होय और उस को विश्वासी लड़के हों जिन्हें लुचपन का दोष नहीं है और जो निरंकुश नहीं हैं तो वही नियुक्त किया जाय । क्योंकि उचित है कि मंडली का रखवाला जो ईश्वर का ७ भंडारी सा है निर्दोष होय और न दृष्टी न क्रोधी न मदपान में आसक्त न सरकड़ा न नीच कमाई करनेधारा हो . परन्तु अतिथिसेवक और भले का प्रेमी ८ और सुबुद्धि और धर्म्मा और पवित्र और संयमी होय . और विश्वासयोग्य वचन को ९ जो धर्म्मापदेश के अनुसार है धरे रहे जिस्ते वह खरी शिक्षा से उपदेश करने का और विद्यादियों को समझाने का भी सामर्थ्य रखे ॥

क्योंकि बहुतरे निरंकुश वक्रवादी और धोखा देनेधारे हैं निज करके खतना १० किये हुए लोग . जिन का मुंह धन्द करना अवश्य है जो नीच कमाई के कारण ११ अनुचित बातों का उपदेश करते हुए घराने का घराना बिगाड़ते हैं । उन में से १२

एक जन उन के निज का एक भविष्यवृत्ता वाला क्रीतीय लोग सदा झूठे और  
 १३ दुष्ट पशु और निकम्मे पेटपोसू हैं । यह साक्षी सत्य है इस हेतु से उन्हें कड़ाई से  
 १४ समझा दे जिस्ते वे विश्वास में निपटोटे रहें . और विद्वदीय कहानियों में और  
 १५ उन मनुष्यों की आज्ञाओं में जो सत्य से फिर जाते हैं मन न लगावें । शुद्ध  
 लोगों के लिये सब कुछ शुद्ध है परन्तु अशुद्ध और अविश्वासी लोगों के लिये  
 १६ कुछ नहीं शुद्ध है परन्तु उन्हीं का मन और विवेक भी अशुद्ध हुआ है । वे ईश्वर  
 को जानने का अंगीकार करते हैं परन्तु अपने कर्मों से उस से मुक्त जाते हैं  
 कि वे धिनौने और आज्ञा लंघन करनेवाले और हर एक अच्छे कर्म के लिये  
 निकृष्ट हैं ॥

### दूसरा पर्व ।

१ परन्तु तू वद घाते कहा कर जो खरे उपदेश के योग्य हैं । वृद्धों से कह कि  
 सचेत और गंभीर और संयमी होवें और विश्वास और प्रेम और धीरज में निपटोटे  
 ३ रहें । वैसे ही युद्धियाओं से कह कि उन का आचरण पवित्र लोगों के ऐसा होय  
 और न दोष लगानेवालिषां न बहुत मदपान के वश में होवें पर अच्छी बातों  
 ४ की शिक्षा देनेवालिषां . इस लिये कि वे जवान स्त्रियों को सचेत करें कि वे  
 ५ अपने अपने स्वामी और लड़कों से प्रेम करनेवालिषां . और संयमी और पतिव्रता  
 और घर में रहनेवाली और भली होवें और अपने अपने स्वामी के अधीन रहें  
 ६ जिस्ते ईश्वर के वचन की निन्दा न किई जावे । वैसे ही जवानों को संयमी  
 ७ रहने का उपदेश दे । और सब बातों में अपने तर्क . अच्छे कर्मों का दृष्टान्त  
 ८ दिखा और उपदेश में निर्विकारता और गंभीरता और शुद्धता सहित . खरा और  
 निर्दोष वचन प्रचार कर कि विरोधी हमों पर कोई बुराई लगाने का गों न  
 पाके लज्जित होय ॥

९ दासों को उपदेश दे कि अपने अपने स्वामी के अधीन रहें और सब बातों में  
 १० प्रसन्नता योग्य होवें और फिरके उत्तर न दें . और न चोरी करें परन्तु सब प्रकार  
 की अच्छी सचौटी दिखावें जिस्ते वे सब बातों में हमारे त्राणकर्ता ईश्वर के  
 ११ उपदेश को शोभा दें . क्योंकि ईश्वर का आणकारी अनुग्रह सब मनुष्यों पर  
 १२ प्रगट हुआ है . और हमें शिक्षा देता है इस लिये कि हम अभक्ति से और  
 सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरके इस जगत में संयम और न्याय और भक्ति से  
 १३ जन्म बितावें . और अपनी सुखदाई आशा की और महा ईश्वर और अपने त्राण-  
 १४ कर्ता यीशु ख्रीष्ट के सेश्वर्य के प्रकाश की घाट जोहते रहें . जिस ने अपने तर्क  
 हमारे लिये दिया कि सब अधर्म से हमारा उद्धार करे और अपने लिये एक निव  
 १५ लोग को शुद्ध करे जो अच्छे कर्मों के उद्योगी होवें । यह बातें कहा कर और  
 उपदेश कर और दृढ़ आज्ञा करके समझा दे . कोई तुम्हें तुच्छ न जाने ॥

### तीसरा पर्व ।

१ लोगों को स्मरण करवा कि वे अध्यक्षां और अधिकारियों के अधीन और आज्ञा  
 २ कारी होवें और हर एक अच्छे कर्म के लिये तैयार रहें . और किसी की निन्दा  
 न करें परन्तु मिलनसार और मृदुभाव हों और सब मनुष्यों की और समस्त प्रक

की नम्रता दिखायें । क्योंकि हम लोग भी आगों निर्धुद्धि और आत्मासंघन करने- ३  
 द्वारे थे और भरमाये जाते थे और नाना प्रकार के अभिलाष और सुख विलास  
 के दाम देने रहते थे और वैरभाव और डाढ़ में समय बिताते थे और धिनेने  
 और आपस के वैरी थे । परन्तु जब हमारे आगकर्त्ता ईश्वर की कृपा और ४  
 मनुष्यों पर उस की प्रीति प्रगट हुई , तब धर्म के कार्यों में जो हम ने किये ५  
 सो नहीं परन्तु अपनी दया के अनुसार नये जन्म के स्नान के द्वारा और पवित्र  
 आत्मा से नये किये जाने के द्वारा उस ने हमें बचाया , जिस आत्मा को उस ने ६  
 हमारे आगकर्त्ता यीशु ख्रीष्ट के द्वारा हमों पर अधिकार से डंडेला , हम लिये ७  
 कि हम उस के अनुग्रह से धर्मी ठहराये जाके अनन्त जीवन की आशा के  
 अनुसार अधिकारी बन जायें । यह बचन विश्वासयोग्य है और मैं चाहता हूं ८  
 कि इन बातों के विषय में तू दृढ़ता से बोलें हम लिये कि जिन लोगों ने ईश्वर ९  
 का विश्वास किया है सो अच्छे अच्छे कर्म किया करने के मोक्ष में रहें , यही १०  
 बातें उत्तम और मनुष्यों के लिये फलदाई हैं ॥

परन्तु मूढ़ता के विवादों से और बंशावलियों में और वैर विरोध से और व्यवस्था १  
 के विषय में के झगड़ों से बचा रह क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं । पापेंही १०  
 मनुष्य को एक घेर घेर दो घेर चिनाने के पीछे अलग कर । क्योंकि तू जानता ११  
 है कि ऐसा मनुष्य भटकाया गया है और पाप करता है और अपने को आप १२  
 दोषी ठहराता है । जब मैं अर्तिमा अथवा तुम्हिक को तारे पास भेजूं तब १३  
 निकोपलि में मेरे पास आने का यत्न कर क्योंकि मैं ने जाड़े का समय बर्हों काटने १४  
 को ठहराया है । तीनस व्यवस्थापक को और अपत्नी को बड़े यत्न से आगे १५  
 पहुंचा कि उन्हें किसी वस्तु को घटी न होय । और हमारे लोग भी जिन जिन १६  
 वस्तुओं का अथवा प्रयोजन हो उन के लिये अच्छे अच्छे कार्य किया करने को १७  
 सीखें कि वे निष्फल न होयें । सब लोगों का जो मेरे संग हैं तुम से नमस्कार , १८  
 जो लोग विश्वास के कारण हमें प्यार करते हैं उन का नमस्कार , अनुग्रह तुम १९  
 सभी के संग होय । आमीन ॥

## फिलीमोन को पावल प्रेरित की पत्री ।

पावल जो ख्रीष्ट यीशु के कारण बंधुआ है और भाई तिमोथिय प्यारे १  
 फिलीमोन को जो हमारा सहकर्मी भी है , और प्यारी अफिया को और हमारे २  
 संगी याह्या अर्गिय को और आप के घर में की मंडली को , आप लोगों को ३  
 हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

मैं आप के प्रेम और विश्वास का जो आप प्रभु यीशु पर और सब पवित्र ४  
 लोगों से रखते हैं समाधार सुनके , अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं और नित्य ५



६ अपनी प्रार्थनाओं में आप को स्मरण करता हूँ . कि हम लोगों में की समस्त भलाई खीष्ट यीशु के लिये होती है इस बात के ज्ञान से वह सहायता जो आप ७ विश्वास से किया करते हैं सुफल हो जाय । क्योंकि आप के प्रेम से हमें बहुत आनन्द और शांति मिलती है इस लिये कि हे भाई आप के द्वारा पवित्र लोगों के अन्तःकरण को सुख दिया गया है ।

८ इस कारण जो बात सोचती है उस की यद्यपि आप को आज्ञा देने का ९ मुझे खीष्ट से बहुत साहस है . तौभी मैं प्रेम के कारण धरन बिन्ती ही करता हूँ क्योंकि मैं ऐसा हूँ मानो बूढ़ा पायल और अथ यीशु खीष्ट के कारण बंधुआ भी १० हूँ । मैं अपने पुत्र के लिये जिसे मैं ने बंधन में रहते हुए अन्माया है आप ११ से बिन्ती करता हूँ सोई उनीसिम है . जो पहिले आप के कुछ काम का न था १२ परन्तु अब आप के और मेरे बड़े काम का है । उस को मैं ने लौटा दिया है १३ और आप उस को मेरा अन्तःकरण सा जानके ग्रहण कीजिये । उसे मैं अपने पास रखा चाहता था इस लिये कि सुसमाचार के बंधनों में वह आप के बदले मेरी १४ सेवा करे । परन्तु मैं ने आप की सम्मति बिना कुछ करने की इच्छा न किई जिस्ते आप की कृपा जैसे दवाव से न हो पर आप की इच्छा के अनुसार होय । १५ क्योंकि क्या जानें वह इसी के कारण कुछ दिन अलग हुआ कि सदा आप का १६ हो जाये . पर अब तो दास की नाईं नहीं परन्तु दास से बढके अर्थात् प्यारा भाई होय निज कर मेरा पर कितना अधिक करके क्या शरीर में क्या प्रभु में आप १७ ही का प्यारा । इस लिये जो आप मुझे सम्भागी समझते हैं तो जैसे मुझ को तैसे १८ उस को ग्रहण कीजिये । और जो उस से आप की कुछ हानि हुई अथवा वह १९ आप का कुछ धारता हो तो इस को मेरे नाम पर लिखिये । मुझ पायल ने अपने हाथ से लिखा है मैं भर देऊंगा जिस्ते मुझे आप से यह कहना न पड़े कि अपने २० तईं भी मुझे देना आप को उचित है । हां हे भाई आप से प्रभु में मुझे आनन्द २१ पहुँचे प्रभु में मेरे अन्तःकरण को सुख दीजिये । आप के आज्ञाकारी होने का भरोसा रखके मैं ने आप के पास लिखा है क्योंकि जानता हूँ कि जो मैं कहता २२ हूँ उस से भी आप अधिक करेंगे । और भी मेरे लिये खासा तैयार कीजिये क्योंकि मुझे आशा है कि आप लोगों की प्रार्थनाओं के द्वारा मैं आप लोगों को दे दिया जाऊंगा ॥

२३ इषाया जो खीष्ट यीशु के कारण मेरा संगी बंधुआ है . और मार्क और अरि-  
स्तार्ख और दीमा और लूक जो मेरे सहकर्मी हैं इन्हीं का आप को नमस्कार ।  
२४ हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह आप लोगों के आत्मा के संग होय । आमीन ॥

# इत्रियों के (पावल प्रेरित की) पत्री ।

## पहिला पत्र ।

ईश्वर ने पूर्वकाल में समय समय और नाना प्रकार से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा १  
पितरों से बातें कर . इन पिछले दिनों में हमों से पुत्र के द्वारा बातें किई जिसे २  
उस ने मद्य यस्तुओं का अधिकारी ठहराया जिस के द्वारा उस ने मारे जगत को  
मृता भी . जो उस की मर्दिमा का तेज और उस के तत्त्व की मुद्रा और अपनी ३  
शक्ति के वचन से मद्य यस्तुओं का संभालनेद्वारा टांके अपने ही द्वारा से हमारे  
पापों का परिशोधन कर जंचे स्यानों में की मर्दिमा के दहिने दाघ का ४  
थैठा . और जितने भर उस ने स्वर्गादूतों से श्रेष्ठ नाम पाया है उनने भर उन से ५  
बड़ा हुआ ।

क्योंकि दूतों में से ईश्वर ने किस से कभी कहा तू मेरा पुत्र है मैं ने आज ही ५  
तुझे जन्माया है और फिर कि मैं उस का पिता होंगा और वह मेरा पुत्र होगा ।  
और जय यह फिर पहिलौठे को संसार में लाये यह कहता है ईश्वर के मद्य दूतगण ६  
उस को प्रणाम करें । दूतों के विषय में यह कहता है जो अपने दूतों को पयन ७  
और अपने सेवकों को आग को उगाला बनाता है । परन्तु पुत्र से कि है ईश्वर ८  
मेरा मिंदासन सर्व्यदा नों है तेरे राज्य का राजवंद सीधार्इ का राजवंद है । तू ने धर्म ९  
को प्रिय जाना और कुकर्म से छिन्न किई हम कारण ईश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे तेरे  
संगियों से अधिक करके आनन्द के तेज से अभियेक किया । और यह कि है प्रभु १०  
आदि में तू ने पृथिवी की नेत्र डाली और स्वर्ग तेरे दायों के कार्य हैं । वे नाथ ११  
होंगे परन्तु तू बना रहता है और यस्तु की नाईं वे मद्य पुराने हो जायेंगे । और १२  
तू उन्टे चट्टर की नाईं लपेटेगा और वे बदल जायेंगे परन्तु तू सकमां रहता है  
और तेरे घरम नहीं घटेंगे । और दूतों में से उस ने किस से कभी कहा है जय १३  
लों में तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी और  
बैठ । क्या वे सब सेवा करनेद्वारे आत्मा नहीं हैं जो त्राण पानेवाले लोगों के १४  
निमित्त सेवाकाई के लिये भेजे जाते हैं ॥

## दूसरा पत्र ।

इस कारण अवश्य है कि हम लोग उन बातों पर जो हम ने सुनी हैं बहुत १  
अधिक करके मन लगावे ऐसा न हो कि भूल जायें । क्योंकि यदि यह वचन जो २  
दूतों के द्वारा से कहा गया दृढ़ हुआ और हर एक अपराध और आचालघन  
का यथार्थ प्रतिफल मिला . तो हम लोग ऐसे बड़े त्राण से निश्चिन्त रहके ३  
क्योंकर बर्चगे अर्थात् इस त्राण से जो प्रभु के द्वारा प्रचारित होने लगा और  
हमों के पास मुननेद्वारे से दृढ़ किया गया . जिन के संग ईश्वर भी चिन्हें ४  
और अद्भुत कामों से भी और नाना प्रकार के आश्चर्य कर्मों से और अपनी  
इच्छा के अनुसार पवित्र आत्मा के दानों के बाँटने से साक्षी देता था ।

५ क्योंकि उस ने इस होनेहार जगत को जिस के विषय में हम बताते हैं दूतों  
 ६ के अधीन नहीं किया । परन्तु किसी ने कहीं साक्षी दिई कि मनुष्य क्या है कि  
 ७ तू उस की सुध लेता है अथवा मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उस पर दृष्टि करता  
 ८ है । तू ने उस को कुछ थोड़ा सा दूतों से छोटा किया तू ने उसे महिमा और  
 ९ आदर का मुकुट पहिनाया और उस को अपने हाथों के कार्यों पर प्रधान किया  
 १० तू ने सब कुछ उस के चरणों के नीचे अधीन किया । सब कुछ उस के अधीन  
 ११ करने से उस ने कुछ भी रख न छोड़ा जो उस के अधीन नहीं हुआ । तौभी हम  
 १२ अब तो नहीं देखते हैं कि सब कुछ उस के अधीन किया गया है । परन्तु हम  
 १३ यह देखते हैं कि उस को जो कुछ थोड़ा सा दूतों से छोटा किया गया था अर्थात्  
 १४ यीशु को मृत्यु भोगने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिनाया गया है  
 १५ इस लिये कि वह ईश्वर के अनुग्रह से मद्य के लिये मृत्यु का स्वाद चीखे ॥

१६ क्योंकि जिस के कारण सब कुछ है और जिस के द्वारा सब कुछ है उस के  
 १७ यह योग्य था कि बहुत पुत्रों को महिमा लों पहुंचाने में उन के त्राण के कर्ता  
 १८ को दुःख भोगने के द्वारा सिद्ध करे । क्योंकि पवित्र करनेहारा और वे भी जो  
 १९ पवित्र किये जाते हैं सब एक ही से हैं और इस कारण से वह उन्हें भाई कहने  
 २० में नहीं लजाता है । वह कहता है मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा  
 २१ सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा । और फिर कि मैं उस पर भरोसा रखूंगा  
 २२ और फिर कि देख मैं और लड़के जो ईश्वर ने मुझे दिये । इस लिये अब कि लड़के  
 २३ मांस और लोहू के भागी हुए हैं वह आप भी वैसेही इन का भागी हुआ इस लिये  
 २४ कि मृत्यु के द्वारा उस को जिसे मृत्यु का सामर्थ्य था अर्थात् शैतान को हरा  
 २५ करे । और जितने लोग मृत्यु के भय से जीवन भर दासत्व में फंसे हुए थे उन्हें  
 २६ छुड़ावे । क्योंकि वह तो दूतों को नहीं शोभता है परन्तु इब्राहीम के वंश को  
 २७ शोभता है । इस कारण उस को अवश्य था कि सब बातों में भाइयों के समान  
 २८ हो जावे जिस्तें वह उन बातों में जो ईश्वर से सम्बन्ध रखती हैं दयाल और  
 २९ विश्वासयोग्य महायाजक बने कि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे । क्योंकि  
 ३० जिस जिस बात में उस ने परीक्षा में पड़के दुःख पाया है उस उस बात में वह  
 ३१ उन की जिन की परीक्षा किई जाती है सहायता कर सकता है ॥

तीसरा पर्व ।

१ इस कारण हे पवित्र भाइयो जो स्वर्गीय बुलावट में सम्भागी हो हमारे अंगी-  
 २ कार किये हुए मत के प्रेरित और महायाजक खीष्ट यीशु को देख लेओ । जो  
 ३ अपने ठहरानेहारे के विश्वासयोग्य है जैसा मूसा भी उस के सारे घर में विश्वास-  
 ४ योग्य था । क्योंकि यह तो उतने भर मूसा से अधिक बढ़ाई के योग्य सम्भा-  
 ५ गया है जितने भर घर के आदर से घर के बनानेहारे का आदर अधिक होता  
 ६ है । क्योंकि हर एक घर किसी का तो बनाया हुआ है परन्तु जिस ने सब कुछ  
 ७ बनाया सो ईश्वर है । और मूसा तो जो बातें कही जाने पर थीं उन की साक्षी  
 ८ के लिये सेवक की नाई उस के सारे घर में विश्वासयोग्य था । परन्तु खीष्ट पुत्र  
 ९ की नाई उस के घर का अध्यक्ष होकर विश्वासयोग्य है और हम लोग यदि

साहस को और आशा की बड़ाई को अन्त लों दृढ़ धामें रहें तो उस के घर हैं ॥

इस लिये जैसे पवित्र आत्मा कहता है कि आज जो तुम उस का शब्द सुनो . ७  
तो अपने मन कठोर मत करो जैसे चिढ़ाव में और परीक्षा के दिन जंगल में ८  
हुआ . जहां तुम्हारे पितरों ने मेरी परीक्षा लिये और मुझे जाँचा और चालीस ९  
वरस मेरे कामों को देखा . इस कारण मैं उस समय के लोगों से उदास हुआ १०  
और बोला उन के मन सदा भटकते हैं और उन्हें ने मेरे मार्गों को नहीं जाना  
है . सो मैं ने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे विश्वास में प्रवेश न करेंगे . ११  
तैसे हे भाइयो चौकम रहो कि जीवते ईश्वर को त्यागने में अविश्वास का घुरा १२  
मन तुम्हों में से किसी में न ठहरे । परन्तु जब लों आज कहावता है प्रतिदिन १३  
एक दूसरे को समझाओ ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन पाप के छल से कठोर  
हो जाय । क्योंकि हम जो भरोसे के आरंभ को अन्त लों दृढ़ धामें रहें तब तो १४  
स्त्रीष्ट में सम्भागी हुए हैं . जैसे उस वाक्य में है कि आज जो तुम उस का शब्द १५  
सुनो तो अपने मन कठोर मत करो जैसे चिढ़ाव में हुआ । क्योंकि किन लोगों १६  
ने मुझे चिढ़ाया . क्या उन सब लोगों ने नहीं जो सूसा के द्वारा मिमर से निकले ।  
और वह किन लोगों से चालीस वरस उदास हुआ . क्या उन लोगों से नहीं १७  
जिन्होंने ने पाप किया जिन की लोथें जंगल में गिरीं । और किन लोगों से उस ने १८  
किरिया खाई कि तुम मेरे विश्वास में प्रवेश न करोगे केवल आज्ञालंघन करनेदारों  
से । सो हम देखते हैं कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश नहीं कर सके ॥ १९

चौथा पर्व ।

इस लिये हमों को हरना चाहिये न हो कि यद्यपि ईश्वर के विश्वास में १  
प्रवेश करने की प्रतिज्ञा रह गई है तौभी तुम्हों में से कोई जन ऐसा देख पड़े  
कि उस में नहीं पहुँचा है । क्योंकि जैसे उन्हें को तैसे हमों को वह सुसमाचार २  
सुनाया गया है परन्तु उन्हें समाचार के यत्न में जो सुननेदारों से विश्वास से  
नहीं मिलाया गया कुछ लाभ न हुआ । क्योंकि हम लोग जिन्होंने ने विश्वास ३  
किया है विश्वास में प्रवेश करते हैं . इस के विषय में यद्यपि उस के कार्य जगत  
की उत्पत्ति से बन चुके थे तौभी उस ने कहा है सो मैं ने क्रोध कर किरिया  
खाई कि वे मेरे विश्वास में प्रवेश न करेंगे । क्योंकि सातवें दिन के विषय में ४  
उस ने कहीँ यूँ कहा है और ईश्वर ने सातवें दिन अपने सब कार्यों से विश्वास  
किया । तौभी इस ठौर फिर कहा है वे मेरे विश्वास में प्रवेश न करेंगे । सो ५  
जब कि कितनों का उस में प्रवेश करना रह गया है और जिन्होंने को उस का  
सुसमाचार पहिले सुनाया गया उन्हें ने आज्ञालंघन के कारण प्रवेश न किया .  
और फिर वह आज कह करके किसी दिन का ठिकाना दे इतने दिनों के पीछे ६  
दाऊद के द्वारा बोलता है जैसे कहा गया है आज जो तुम उस का शब्द सुनो  
तो अपने मन कठोर मत करो . परन्तु जो पिछोशुआ ने उन्हें विश्वास दिया ८  
होता तो ईश्वर पीछे दूसरे दिन की बात न करता . तो जानो कि ईश्वर के ९  
लोगों के लिये विश्वासवार सा एक विश्वास रह गया है । क्योंकि जिस ने उस १०

के विश्राम में प्रवेश किया है जैसे ईश्वर ने अपने ही कार्यों से तैयार उस ने भी  
 ११ अपने कार्यों से विश्राम किया है । सो हम लोग उस विश्राम में प्रवेश करने का  
 यत्न करें ऐसा न हो कि कोई जन आचलंचन के उसी दृष्टान्त के समान पतित  
 १२ होय । क्योंकि ईश्वर का ध्वनन जीयता और प्रवल और हर एक दोधारे स्वप्न  
 से भी चोखा है और बारबार छेदनेद्वारा है यहां से कि जीव और आत्मा को  
 और गांठ गांठ और गूदे गूदे को अलग अलग करे और हृदय की चिन्ताओं और  
 १३ भावनाओं का विचार करनेद्वारा है । और कोई मृच्छी हुई वस्तु उस के आगे  
 गुप्त नहीं है परन्तु जिस से हमें काम है उस के नेत्रों के आगे सब कुछ नंगा  
 और खुला हुआ है ।

१४ सो अब कि हमारा एक बड़ा महायाजक है जो स्वर्ग होके गया है  
 अर्थात् ईश्वर का पुत्र योगीश आशो हम अपने योगीकार किये हुए मत को धरे  
 १५ रहें । क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं है जो हमारी दुर्व्यलताओं के दुःख  
 को दूख न सके परन्तु बिना पाप यह हमारे समान सब बातों में परीक्षित हुआ  
 १६ है । इस लिये हम लोग अनुग्रह के सिंहासन के पास माइस से आर्च कि दया  
 हम पर किई आवे और हम समय योग्य सहायता के लिये अनुग्रह पावें ।

पाँचवां पृष्ठ ।

१ क्योंकि हर एक महायाजक मनुष्यों में से लिया आके मनुष्यों के लिये उन  
 बातों के विषय में जो ईश्वर से सम्बन्ध रखती हैं ठहराया जाता है कि चढ़ावों  
 २ को और पापों के निमित्त बलिदानों को चढ़ावे । और यह अज्ञानों और भूलने-  
 शरों की और दयाशील हो सकता है क्योंकि वह आप भी दुर्व्यलता से घेरा हुआ  
 ३ है । और इस के कारण उसे अवश्य है कि जैसे लोगों के लिये वैसे अपने लिये  
 ४ भी पापों के निमित्त चढ़ाया करे । और यह आदर कोई अपने लिये नहीं लेता  
 ५ है परन्तु जो द्वारेन की नाई ईश्वर से जुलाया जाता है सो लेता है । वैसे ही  
 खीष्ट ने भी महायाजक बनने का अपनी बड़ाई न किई परन्तु जो उस से बोला  
 तू मेरा पुत्र है मैं ने आज ही तुम्हें जन्माया है उसी ने उस की बड़ाई किई ।  
 ६ जैसे वह दूसरे ठौर में भी कहता है तू मलकीसिद्ध की पदवी पर सदा लों  
 ७ याजक है । उस ने अपने शरीर के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकार पुकारके और रो  
 रोके उस से जो उसे मृत्यु से बचा सकता था विन्ती और निवेदन किये और उस  
 ८ भय के निमित्त सुना गया । और यद्यपि पुत्र या तौभी जिन दुःखों को भोगा उन  
 ९ से आज्ञा मानना सीखा । और सिद्ध बनके उन सभी के लिये जो उस के आज्ञा-  
 १० कारी होते हैं अनन्त आण का कर्ता हुआ । और ईश्वर से मलकीसिद्ध की  
 पदवी पर का महायाजक कहा गया ।

११ इस पुरुष के विषय में हमें बहुत बचन कहना है जिस का अर्थ बताना भी  
 १२ कठिन है क्योंकि तुम सुनने में आलसी हुए हो । क्योंकि यद्यपि इतने समय के  
 बीतने से तुम्हें उचित था कि शिक्षक होते तौभी तुम्हें को फिर आवश्यक है कि  
 कोई तुम्हें सिखावे कि ईश्वर की बाणियों की आदिशिक्षा क्या है और सेसे हुए  
 १३ हो कि तुम्हें अनु का नहीं परन्तु दूध का प्रयोजन है । क्योंकि जो कोई दूध ही

पीता है उस को धर्म के बचन का परिचय नहीं है क्योंकि बालक है । परन्तु १४  
अनु उन के लिये है जो सयाने हुए हैं जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास के कारण भले १४  
और पुरे के विचार के लिये साधे हुए हैं ॥

कठयां पद्य ।

इस कारण खीष्ट के आदि बचन को छोड़के हम सिद्धता की ओर बढ़ते १  
जायें . और यह नहीं कि मृत्युत कर्मों से पश्चात्ताप करने की और ईश्वर पर २  
विश्वास करने की और अपतिसमों के उपदेश की और दाय रखने की और मृतकों ३  
के ली उठने की और अनन्त दंड की नेय फिरके डालें । हां जो ईश्वर पूं करने ४  
देवे तो हम यही करेंगे । क्योंकि जिनमें ने एक बेर ज्योति पाई और स्वर्गीय ५  
दान का स्वाद चीखा और पवित्र आत्मा के भागी हुए . और ईश्वर के भले ५  
बचन का और दोनेहार जगत की शक्ति का स्वाद चीखा . और पतित हुए हैं ६  
उन लोगों को पश्चात्ताप के निमित्त फिरके नये करना अन्तना है क्योंकि वे ७  
ईश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूर पर चढ़ाते और प्रगट में उस पर कलंक ८  
लगाते हैं । क्योंकि जिस भूमि ने यह वर्षा जो उस पर बारंबार पड़ती है पिई ९  
है और जिन लोगों के कारण यह जाती बोई जाती है उन लोगों के योग्य साग- १०  
पात उपजाती है सो ईश्वर से आशीस पाती है । परन्तु जो यह कांटे और छंटकटारे ८  
जन्माती है तो निकृष्ट है और सापित होने के निकट है जिस का अन्त यह है ९  
कि जलाई जाय । परन्तु हे प्यारे यद्यपि हम पूं बोलते हैं तौभी तुम्हारे विषय ९  
में हम अच्छी ही बातों और आण संयुक्त बातों का भरोसा है । क्योंकि ईश्वर १०  
अन्याई नहीं है कि तुम्हारे कार्य को और उस के नाम पर जो प्रेम तुम ने ११  
दिखाया उस प्रेम के परिश्रम को भूल जाये कि तुम ने पवित्र लोगों की सेवा १२  
किई और करते हो । परन्तु हम चाहते हैं कि तुम्हों में से हर एक जन अन्त लों ११  
आशा के निश्चय के लिये वही यह दिखाया करे . कि तुम आलसी नहीं परन्तु १२  
जो लोग विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के अधिकारी होते हैं इन्हीं के १३  
अनुगामी बने ॥

क्योंकि ईश्वर ने इज्राहीम को प्रतिज्ञा देके जय कि अपने से किसी बड़े की १३  
किरिया नहीं खा सकता था अपनी ही किरिया खाके कहा . निश्चय में तुम्हें १४  
बहुत आशीस देजंगा और तुम्हें बहुत बढ़ाऊंगा । और इस रीति से इज्राहीम ने १५  
धीरज धरके प्रतिज्ञा प्राप्त किई । क्योंकि मनुष्य तो अपने से बड़े की किरिया १६  
खाते हैं और किरिया दृढ़ता के लिये उन के समस्त विद्याद का अन्त है । इस १७  
लिये ईश्वर प्रतिज्ञा के अधिकारियों पर अपने मत की अचलता को बहुत ही १८  
प्रगट करने की इच्छा कर किरिया के द्वारा मध्यस्थ हुआ . कि दो अचल विषयों १८  
के द्वारा जिन में ईश्वर का भूट बोलना अन्तना है दृढ़ शांति हम लोगों को १९  
मिले जो साम्दने रखी हुई आशा धर लेने का भाग आये हैं । यह आशा हमारे २०  
लिये प्राण का लंगर सा होती है जो अटल और दृढ़ है और परदे के भीतर लों २०  
प्रवेश करता है . जहाँ हमारे लिये अगुवा होके यीशु ने प्रवेश किया है जो २०  
मलकीसिदक की पदवी पर सदा लों सहायाजक बना है ॥



## मानवां पदवी ।

- १ यह मलकीसिदक शलीम का राजा और सर्वप्रधान ईश्वर का याजक जो इब्राहीम से जब यह राजाओं को मारने से लौटता था आ मिला और उस को
- २ आशीस दिई . जिस को इब्राहीम ने सब वस्तुओं में से दसवां अंश भी दिया जो यहिले अपने नाम के अर्थ से धर्म का राजा है और फिर शलीम का राजा भी
- ३ अर्थात् जाति का राजा है . जिस का न पिता न माता न वंशावलि है जिस के न दिनों का आदि न जीवन का अन्त है परन्तु ईश्वर के पुत्र के समान किया गया है नित्य याजक बना रहता है ।
- ४ पर देखो यह कैसा बड़ा पुरुष था जिस को इब्राहीम कुलपति ने लूट में से दसवां
- ५ अंश भी दिया । लेवी के सन्तानों में से जो लोग याजकीय पद पाते हैं उन्हें तो व्यवस्था के अनुसार लोगों से अर्थात् अपने भाइयों से यद्यपि वे इब्राहीम के देह
- ६ से जन्मे हैं दसवां अंश लेने की आज्ञा होती है । परन्तु इस ने जो उन की वंशा-  
वलि में का नहीं है इब्राहीम से दसवां अंश लिया है और उस को जिसे प्रति-
- ७ ज्ञापन मिलीं आशीस दिई है । पर अग्यंढनीय बात है कि छोटे को बड़े से
- ८ आशीस दिई जाती है । और यहां मनुष्य जो मरते हैं दसवां अंश लेते हैं परन्तु
- ९ वहां यह लेता है जिस के विषय में सच्ची दिई जाती है कि यह जीता है । और यह भी कह सकते कि इब्राहीम के द्वारा लेयी से भी जो दसवां अंश लेनेद्वारा
- १० है दसवां अंश लिया गया है । क्योंकि जिस समय मलकीसिदक उस के पिता से आ मिला उस समय यह अपने पिता के देह में था ॥
- ११ सो यदि लेवीय याजकता के द्वारा जिस के संयोग में लोगों को व्यवस्था दिई गई थी सिद्धता हुई होती तो और क्या प्रयोजन था कि दूसरा याजक मलकीसिदक की पदवी पर खड़ा होय और दारान की पदवी का न कहावे ।
- १२ क्योंकि याजकता जो बदली जाती है तो अवश्य करके व्यवस्था की भी बदली
- १३ होती है । जिस के विषय में यह बातें कही जातीं सो दूसरे कुल में का है जिस
- १४ में से किसी मनुष्य ने वेदी की सेवा नहीं किई है । क्योंकि प्रत्यक्ष है कि हमारा प्रभु यिहूदा के कुल से उदय हुआ है जिस से मूसा ने याजकता के विषय में कुछ
- १५ नहीं कहा । और यह बात और भी बहुत प्रगट इस से होती है कि मलकीसिदक
- १६ के समान दूसरा याजक खड़ा है . जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार
- १७ नहीं परन्तु अविनाशी जीवन की शक्ति के अनुसार बन गया है । क्योंकि ईश्वर
- १८ सच्ची देता है कि तू मलकीसिदक की पदवी पर सदा लों याजक है । सो अगली आज्ञा की दुर्बलता और निष्फलता के कारण उस का तो लोप होता है इस
- १९ लिये कि व्यवस्था ने किसी बात को सिद्ध नहीं किया । परन्तु एक उत्तम आज्ञा का स्थापन होता है जिस के द्वारा हम ईश्वर के निकट पहुंचते हैं ॥
- २० और वे लोग बिना किरिया याजक बन गये हैं परन्तु यह तो किरिया के अनुसार उस से बना है जो उस से कहता है परमेश्वर ने किरिया खाई है और
- २१ नहीं पकतावेगा तू मलकीसिदक की पदवी पर सदा लों याजक है । सो अब कि
- २२ यीशु किरिया बिना याजक नहीं हुआ है . वह उतने भर उत्तम नियम का जामिन

और उन्हें पानी से नहलाया । और उसे कुन्ना पहिनाया और उसे पटुका बांधा ०  
और उसे वागा पहिनाया और उस पर एफोड रक्खा और एफोड के अनाखे  
पटुके से उसे बांधा और एफोड उस पर पहिनाया । और उस पर चपराम रक्खी ८  
और उमी चपराम पर उमी और तुम्मीस जड़े । और उस के मिर पर सुकुट ९  
रक्खा और सुकुट पर और ललाट की और सोने का पत्तर पवित्र सुकुट पर  
लगाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

और मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और नंदू को और उस के समस्त पात्रों १०  
को अभिषिक्त करके उन्हें पवित्र किया । और उस में से कुछ यज्ञवेदी पर मान ११  
धार छिड़का और यज्ञवेदी और उस के मारे पात्रों और स्नानपात्र और उस की  
चाँकी को अभिषेक करके उन्हें शुद्ध किया । और अभिषेक के तेल में से हासन १२  
के मिर पर ढाला और उस को अभिषेक करके पवित्र किया । और मूसा हासन १३  
के घंटों को आगें लाया और उन्हें कुरते पहिनाये और उन पर पटुके बांधे और  
उन के मिर पर पागड़ों रक्खी जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई ॥

और पाप की भेंट के लिये तेल लाया और हासन और उस के घंटों ने अपने १४  
हाथ पाप की भेंट के तेल के मिर पर रक्खे । और उसे दलि किया और मूसा १५  
ने उस के लोहू को लिया और अपनी अंगुली से यज्ञवेदी के सींगों पर चारों  
और लगाया और यज्ञवेदी को पवित्र किया और लोहू को यज्ञवेदी की जड़ पर  
ढाला और उसे पवित्र किया जिनमें उस के लिये प्रायश्चित्त करे । और उस ने १६  
सब चिकनाई जो आंक पर और कलेजे पर की भिल्ली और दोनों गुदों और उन  
की चिकनाई लिई और मूसा ने यज्ञवेदी पर जलाई । परन्तु तेल को और उस १७  
की खाल को और उस के मांस को और उस के गोबर को छावनी के बाहर  
आग से जलाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

और बलिदान की भेंट का सेंडा आगें लाया और हासन और उस के घंटों ने १८  
अपने हाथ उस सेंडे के मिर पर रक्खे । और उस ने उसे दलि किया और मूसा १९  
ने यज्ञवेदी के चारों और लोहू छिड़का । और उस ने सेंडे को टुकड़ा टुकड़ा २०  
किया और मूसा ने मिर को और टुकड़ों को और चिकनाई को जलाया । और २१  
उस ने आंक और पांच को पानी से धाया और मूसा ने मारे सेंडे को यज्ञवेदी पर  
जलाया वह बलिदान की भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये वह आग की भेंट  
परमेश्वर के लिये है जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

और वह दूसरा सेंडा अर्घान् स्थापित का सेंडा लाया और हासन और उस के २२  
घंटों ने अपने हाथ उस सेंडे के मिर पर रक्खे । और उसे दलि किया और मूसा २३  
ने उस के लोहू में से लिया और हासन के दहिने कान की लहर पर और उस के  
दहिने हाथ के अंगूठे और उस के दहिने पांच के अंगूठे पर लगाया । और वह २४  
हासन के घंटों को लाया और लोहू में से उन के दहिने कानों की लहर पर और  
उन के दहिने हाथों के अंगूठों पर और उन के दहिने पांच के अंगूठों पर मूसा ने  
लगाया और मूसा ने लोहू को यज्ञवेदी के चारों और छिड़का । और चिकनाई २५  
और पूंछ और सब चिकनाई जो आंक पर और कलेजे पर की भिल्ली और दोनों

व्यभिचारी वा एसौ की नाई अपवित्र होय जिस ने एक खेर के भोजन पर अपने  
 १७ पहिलौठेपन को बेच डाला । क्योंकि तुम जानते हो कि जब वह पीछे आशीस  
 पाने की इच्छा करता भी था तब अयोग्य गिना गया क्योंकि यद्यपि उस ने रो  
 रोके उसे ठुंका तौभी पश्चात्ताप की जगह न पाई ॥

१८ तुम तो उस पर्वत के पास नहीं आये हो जो कूआ जाता और आग से जल उठा  
 १९ और न घोर मेघ और अंधकार और आंधी के पास . और न तुरही के ध्वनि और  
 बातों के शब्द के पास जिस के सुननेहारों ने बिन्ती किई कि और कुछ भी बात हम  
 २० से न किई जाय । क्योंकि वे उस आज्ञा को नहीं सह सकते थे कि यदि पशु भी पर्वत  
 २१ को कूवे तो पत्थरवाह किया जायगा अथवा दूर्की से वेधा जायगा । और वह दर्शन  
 २२ ऐसा भयंकर था कि सूसा वाला मैं बहुत भयमान और कम्पित हूं । परन्तु तुम सियोन  
 पर्वत के पास और जीवते ईश्वर के नगर स्वर्गीय यिश्शलीम के पास आये हो ।  
 २३ और स्वर्गदूतों की सभा के पास जो सहस्रों हैं और पहिलौठों की मंडली के पास  
 जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं और ईश्वर के पास जो सभी का बिचारकर्ता है  
 २४ और सिद्ध किये हुए धर्मियों के आत्माओं के पास . और नये नियम के मध्यस्थ यीशु  
 के पास और ऋद्धकाय के लोहू के पास जो दाविल से अच्छी बातें बोलता है ।  
 २५ देखो बोलनेहारे से मुंह मत फेरो क्योंकि यदि वे लोग जब पृथिवी पर  
 आज्ञा देनेहारे से मुंह फेरा तब नहीं बचे तो बहुत अधिक करके हम लोग जो  
 २६ स्वर्ग से बोलनेहारे से फिर जावें तो नहीं बचेंगे । उस के शब्द ने तब पृथिवी  
 को डुलाया परन्तु अब उस ने प्रतिज्ञा किई है कि फिर एक खेर में केवल  
 २७ पृथिवी को नहीं परन्तु आकाश को भी डुलाऊंगा । यह बात कि फिर एक खेर  
 यही प्रगट करती है कि जो वस्तु डुलाई जाती हैं सो सृजी हुई वस्तुओं की  
 नाई बदली जायेंगी इस लिये कि जो वस्तु डुलाई नहीं जातीं सो बनी रहें ।  
 २८ इस कारण हम लोग जो न डोलनेवाला राज्य पाते हैं अनुग्रह धारण करें जिस  
 के द्वारा हम सन्मान और भक्ति सहित ईश्वर की सेवा उस की प्रसन्नता के योग्य  
 २९ करें । क्योंकि हमारा ईश्वर भस्म करनेहारी आग्नि है ॥

तेरहवां पर्व ।

१ आश्रीय प्रेम बना रहे । अतिश्रिसेवा को मत भूल जाओ क्योंकि इस के द्वारा  
 २ कितनों ने बिन जाने स्वर्गदूतों की पहुँच किई है । बन्धुओं को जैसे कि उन  
 के संग बंधे हुए होते और दुःखित लोगों को जैसे कि आप भी शरीर में रहते  
 ४ हो स्मरण करो । बिबाह सभी में आदरयोग्य और बिक्राना शुद्धि रहे परन्तु  
 ५ ईश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का बिचार करेगा । तुम्हारी रीति व्यवहार  
 लाभरहित होवे और जो तुम्हारे पास है उस से सन्तुष्ट रहे क्योंकि उसी ने कहा  
 ६ है मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा और न कभी तुम्हें त्यागूंगा . यहाँ लो कि हम  
 ठाढ़स बांधके कहते हैं कि परमेश्वर मेरा सहायक है और मैं नहीं डरूंगा . मनुष्य  
 ७ मेरा क्या करेगा । अपने प्रधानों को जिन्हें ने ईश्वर का वचन तुम से कहा है  
 स्मरण करो और ध्यान से उन की चाल चलन का अन्त देखके उन के विश्वास  
 ९ के अनुगामी होओ । यीशु खीष्ट कल और आज और सर्वदा एकसा है । नाना

हुआ है । और वे तो बहुत से याज्ञक बन गये हैं इस कारण कि मृत्यु उन्हें २३  
 रहने नहीं देती है । परन्तु यह सदा लों रहता है इस कारण उस की याज्ञकता २४  
 अटल है । इस लिये जो लोग उस के द्वारा ईश्वर के पास आते हैं वह उन २५  
 का प्राण अत्यन्त लों कर सकता है क्योंकि यह उन के लिये विन्ती करने का  
 सदा जीता है । क्योंकि ऐसा महायाज्ञक हमारे योग्य था जो पवित्र और मूढ़ा २६  
 और निर्मल और पापियों से अलग और स्वर्ग से भी ऊँचा किया हुआ है । जिसे २७  
 प्रतिदिन प्रयोजन नहीं है कि प्रधान याज्ञकों की नाईं पहिले अपने ही पापों के  
 लिये तब लोगों के पापों के लिये बलि चढ़ावे क्योंकि इस को वह एक ही घेर  
 कर चुका कि अपने तर्ह चढ़ाया । क्योंकि व्यवस्था मनुष्यों को जिन्हें दुर्बलता २८  
 है प्रधान याज्ञक ठहराती है परन्तु जो क्रिया व्यवस्था के पीछे खड़े गढ़े उस  
 की यात पुत्र को जो सर्वदा सिद्ध किया गया है ठहराती है ॥

आठवां पञ्च ।

जो बातें कही जाती हैं उन में सार यात यह है कि हमारा ऐसा महायाज्ञक १  
 है कि स्वर्ग में महिमा के निंदामन के दिने छात्र जा बैठा । और पवित्र २  
 स्थान का और उस सन्ने तंत्र का सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्य ने नहीं परन्तु  
 परमेश्वर ने खड़ा किया । क्योंकि हर एक प्रधान याज्ञक चढ़ावे और बलिदान ३  
 चढ़ाने के लिये ठहराया जाता है इस कारण अवश्य है कि इसी के पास भी  
 चढ़ाने के लिये कुछ छात्र । फिर याज्ञक तो हैं जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ावे ४  
 चढ़ाते हैं और स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिस्वप और परछाईं की सेवा करते हैं  
 जैसे मूसा को जब वह तंत्र बनाने पर था आज्ञा दिई गई अर्थात् ईश्वर ने  
 कहा देख जो आकार तुझे पहाड़ पर दिखाया गया उस के अनुसार सब कुछ ५  
 बना । इस लिये जो यह पृथिवी पर होता तो याज्ञक नहीं होता । परन्तु अब  
 जैसे वह और उत्तम नियम का मध्यस्थ है जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं पर स्थापन  
 किया गया है तैसी श्रेष्ठ सेवकाई भी उसे मिली है ॥

क्योंकि जो वह पहिला नियम निर्दिष्ट होता तो दूसरे के लिये जगह न ढूंढी ७  
 जाती । परन्तु यह उन पर दोष देके बोलता है कि परमेश्वर कहता है देखो वे ८  
 दिन आते हैं कि मैं इस्रायेल के घराने के संग और यहूदा के घराने के संग नया  
 नियम स्थापन करूँगा । जो नियम मैं ने उन के पित्रों के संग उस दिन बांधा ९  
 जिस दिन उन्हें मिस्र देश में से निकाल लाने का उन का छात्र थाभा उस नियम  
 के अनुसार नहीं क्योंकि वे मेरे नियम पर नहीं ठहरे और मैं ने उन की मुध न  
 लिई परमेश्वर कहता है । परन्तु यही नियम है जो मैं उन दिनों के पीछे इस्रायेल १०  
 के घराने के संग बांधूँगा परमेश्वर कहता है मैं अपनी व्यवस्था को उन के मन  
 में डालूँगा और उसे उन के हृदय में लिखूँगा और मैं उन का ईश्वर दोंगा और  
 वे मेरे लोग होंगे । और वे हर एक अपने पहोसी को और हर एक अपने भाई ११  
 को यह कहके न सिखावेंगे कि परमेश्वर को पहचान क्योंकि उन में के छोटे से  
 बड़े लों सब मुझे जानेंगे । क्योंकि मैं उन के अधर्म के विषय में दया करूँगा १२  
 और उन के पापों को और उन के कुकर्मों को फिर कभी स्मरण न करूँगा ॥

# याकूब प्रेरित की पत्नी ।

पहिला पर्व ।

- १ याकूब जो ईश्वर का और प्रभु यीशु ख्रीष्ट का दास है धारहों कुलों को जो तितर बितर रहते हैं . आनन्द रहे ।
- २ हे मेरे भाइयो जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़े उसे सर्व्व आनन्द
- ३ समझो . क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न
- ४ होता है । परन्तु धीरज का काम सिद्ध होवे जिस्ते तुम सिद्ध और पूरे होओ और
- ५ किसी बात में तुम्हारी घटी न होय । परन्तु यदि तुम में से किसी को खुष्टि की
- ६ घटी होय तो ईश्वर से मांगो जो सभी को उदारता से देता है और उलटना नहीं
- ७ देता और उस को दिई जायगी । परन्तु विश्वास से मांगो और कुछ सन्देह न
- ८ रखे क्योंकि जो सन्देह रखता है सो समुद्र की लहर के समान है जो ध्यार से
- ९ चलाई जाती और डुलाई जाती है । वृद्ध मनुष्य न समझे कि मैं प्रभु से कुछ
- १० पाऊंगा । दुचित्ता मनुष्य अपने सब मार्गों में चंचल है । दीन भाई अपने ऊंचे
- ११ पद पर खड़ाई करे । परन्तु धनवान अपने नीचे पद पर खड़ाई करता है क्योंकि
- १२ वह घास के फूल की नाई जाता रहेगा । क्योंकि सूर्य ज्योंही घास सहित उदय
- १३ होता त्यों घास को सुखाता है और उस का फूल झड़ जाता है और उस के रूप
- १४ की शोभा नष्ट होती है . वैसे ही धनवान भी अपने पथ ही में मुग्धायगा । जो
- १५ मनुष्य परीक्षा में स्थिर रहता है सो धन्य है क्योंकि वह खरा निकलके जीवन का
- १६ मुकुट पावेगा जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने उन्हें जो उस को प्यार करते हैं दिई है । कोई
- १७ जन परीक्षित होने पर यह न कहे कि ईश्वर से मेरी परीक्षा किई जाती है क्योंकि
- १८ ईश्वर खुरी बातों से परीक्षित होता नहीं और वह किसी की वैसे परीक्षा नहीं
- १९ करता है । परन्तु हर कोई जब अपनी ही अभिलाषा से खींचा और फुसलाया जाता
- २० है तब परीक्षा में पड़ता है । फिर अभिलाषा को जब गर्भ रहता है तब वह कुक्रिया
- २१ जनती है और कुक्रिया जब समाप्त होती तब मृत्यु को उत्पन्न करती है ।
- २२ हे मेरे प्यारे भाइयो धोखा मत खाओ । हर एक अच्छा दानकर्म और हर
- २३ एक सिद्ध दान ऊपर से उतरता है अर्थात् ज्योतियों के पिता से जिस में न
- २४ बदल बदल न फेर फार की काया है । अपनी ही इच्छा से उस ने हमें सत्यता
- २५ के बचन के द्वारा उत्पन्न किया इस लिये कि हम उस की सृजी हुई वस्तुओं के
- २६ पहिले फल के ऐसे होवें । सो हे मेरे प्यारे भाइयो हर एक मनुष्य सुनने के लिये
- २७ शीघ्रता करे पर बोलने में बिलम्ब करे और क्रोध में बिलम्ब करे । क्योंकि
- २८ मनुष्य का क्रोध ईश्वर के धर्म को नहीं निवाहता है । इस कारण सब
- २९ अशुद्धता को और वैरभाव की अधिकाई को दूर करके नम्रता से उस रोपे हुए
- ३० बचन को ग्रहण करो जो तुम्हारे प्राणों को बचा सकता है । परन्तु बचन पर
- ३१ चलनेहारे होओ और केवल सुननेहारे नहीं जो अपने को धोखा देओ । क्योंकि

प्रकार की और ऊपरी शिक्षाओं से मत भरमाये जाओ क्योंकि अच्छा है कि मन अनुग्रह से दृढ़ किया जाय खाने की वस्तुओं से नहीं जिन से उन लोगों को जो उन की विधि पर चले कुछ लाभ नहीं हुआ । हमारी एक वेदी है जिस से खाने १० का अधिकार उन लोगों को नहीं है जो तम्बू में की सेवा करते हैं । क्योंकि ११ जिन पशुओं का लोहू महायाज्ञक पाप के निमित्त पवित्र स्थान में ले जाता है उन के देह कायनी के वाहर जलाये जाते हैं । इस कारण यीशु ने भी इस लिये १२ कि लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करे फाटक के वाहर दुःख भोगा । सो हम लोग उस की निन्दा सहते हुए कायनी के वाहर उस पास निकल १३ जायें । क्योंकि यहाँ हमारा कोई ठहरनेवाला नगर नहीं है परन्तु हम उस होनेवाले १४ नगर को ढूँढते हैं । इस लिये यीशु के द्वारा हम सदा ईश्वर के आगे स्तुति का १५ बलिदान अर्थात् उस के नाम का धन्य माननेवाले हाँठों का फल बढ़ाया करें । परन्तु भलाई और सहायता करने का मत भूल जाओ क्योंकि ईश्वर ऐसे बलिदानों १६ से प्रसन्न होता है । अपने प्रधानों को मानो और उन के अधीन होओ क्योंकि १७ वे जैसे कि लेखा देंगे तैसे तुम्हारे प्राणों के लिये चौकी देंगे इस लिये कि वे इस को आनन्द से करें और कहर कहरके नहीं क्योंकि यह तुम्हारे लिये निष्फल है । हमारे लिये प्रार्थना करो क्योंकि हम भरोसा रखते हैं कि हमारा अच्छा १८ विवेक है और हम लोग सभों में अच्छी चाल चला चाहते हैं । और मैं बहुत १९ अधिक विन्ती करता हूँ कि यही करो इस लिये कि मैं और भी शीघ्र तुम्हें फेर दिया जाऊँ ॥

शांति का ईश्वर जिस ने हमारे प्रभु यीशु को जो सनातन नियम का लोहू २० लिये हुए भेड़ों का बड़ा गड़ेरिया है मृतकों में से उठाया , तुम्हें हर एक अच्छे २१ कर्म से सिद्ध करे कि उस की दृष्टि पर चलो और जो उस को भावता है उसे तुम्हों में यीशु खीष्ट के द्वारा उत्पन्न करे जिस का गुणानुवाद सदा सर्वदा होवे , आमीन । और हे भाइयो मैं तुम से विन्ती करता हूँ उपदेश का बचन सह लेओ २२ क्योंकि मैं ने संक्षेप से तुम्हारे पास लिखा है । यह जानो कि भाई तिमोथिय २३ दूढ़ गया है . जो वह शीघ्र आवे तो उस के संग मैं तुम्हें देखूँगा । अपने सब २४ प्रधानों को और सब पवित्र लोगों को नमस्कार करो , इतालिया के जो लोग हैं उन का तुम से नमस्कार । अनुग्रह तुम सभों के संग होवे । आमीन ॥ २५



१७ से कोई उन से कहे कुशल से जाओ तुम्हें जाड़ा न लगे तुम तृप्त रहो परन्तु तुम  
 १८ जो वस्तु देह के लिये अवश्य हैं सो उन को न देओ तो क्या लाभ है । वैसेही  
 १९ विश्वास भी जो कर्म सहित न होवे तो आप ही मृतक है । वरन कोई कहेगा  
 तुम्हें विश्वास है और मुझ से कर्म होते हैं तू अपने कर्म बिना अपना विश्वास  
 २० मुझे दिखा और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों से तुम्हें दिखाऊंगा । तू विश्वास  
 करता है कि एक ईश्वर है . तू अच्छा करता है . भूत भी विश्वास करते और  
 २१ शरशराते हैं । पर हे निर्बुद्धि मनुष्य क्या तू जानने चाहता है कि कर्म बिना  
 २२ विश्वास मृतक है । क्या हमारा पिता इब्राहीम जब उस ने अपने पुत्र इसहाक  
 २३ को बेदी पर चढ़ाया कर्मों से धर्मों न ठहरा । तू देखता है कि विश्वास उस के  
 २४ कर्मों के साथ कार्य करता था और कर्मों से विश्वास सिद्ध किया गया । और  
 धर्मपुस्तक का यह वचन कि इब्राहीम ने ईश्वर का विश्वास किया और यह  
 उस के लिये धर्म गिना गया पूरा हुआ और वह ईश्वर का मित्र कहलाया ।  
 २५ सो तुम देखते हो कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं परन्तु कर्मों से भी धर्मों  
 २६ ठहराया जाता है । वैसे ही राहब वेश्या भी जब उस ने दूतों की पहुनई किई  
 २७ और उन्हें दूसरे मार्ग से बिदा किया क्या कर्मों से धर्मों न ठहरी । क्योंकि जैसा  
 देह आत्मा बिना मृतक है वैसे विश्वास भी कर्म बिना मृतक है ॥

तीसरा पर्व ।

१ हे मेरे भाइयो बहुतरे उपदेशक मत बनो क्योंकि जानते हो कि हम अधिक  
 २ दंड पावेंगे । क्योंकि हम सब बहुत बार चूकते हैं . यदि कोई वचन में नहीं  
 चूकता है तो वही सिद्ध मनुष्य है जो सारे देह पर भी बाग लगाने का सामर्थ्य  
 ३ रखता है । देखो घोड़ों के मुंह में हम लगाम देते हैं इस लिये कि वे हमें मानें  
 ४ और हम उन का सारा देह फेरते हैं । देखो जहाज भी जो इतने बड़े हैं और  
 ५ प्रचंड बयारों से उड़ाये जाते हैं बहुत कौंटी पतवार से जिधर कहीं मांझी का  
 ६ मन चाहता हो उधर फेरे जाते हैं । वैसे ही जीभ भी कौंटा अंग है और बड़ी  
 ७ गलफटाकी करती है . देखो घोड़ी आग कितने बड़े बन को फूंकती है । और  
 यह अधर्म का लोक अर्थात् जीभ एक आग है . हमारे अंगों में जीभ है जो  
 ८ सारे देह को कलंकी करनेहारी और भवचक्र में आग लगानेहारी ठहरती है और  
 ९ उस में आग लगानेहारा नरक है । क्योंकि बनपशुओं और पंक्तियों और रेंगनेहारे  
 जन्तुओं और जलचरों की भी हर एक जाति मनुष्य जाति के वश में किई जाती  
 १० है और किई गई है । परन्तु जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता  
 ११ है . वह निरंकुश दुष्ट है वह मारु विष से भरी है । उस से हम ईश्वर पिता का  
 धन्यवाद करते हैं और उसी से मनुष्यों को जो ईश्वर के समान बनने हैं साप देते  
 १२ हैं । एक ही मुख से धन्यवाद और साप दोनों निकलते हैं . हे मेरे भाइयो इन  
 १३ बातों का ऐसा होना उचित नहीं है । क्या सोते के एक ही मुंह से मीठा और  
 १४ तोता दोनों बहते हैं । क्या गूलर के वृक्ष में मेरे भाइयो जलपाई के फल अथवा  
 १५ टाख की लता में गूलर के फल लग सकते हैं . वैसे ही किसी सोते से खारा  
 और मीठा दोनों प्रकार का जल नहीं निकल सकता है ॥

यदि कोई वचन का सुननेद्वारा है और उस पर चलनेद्वारा नहीं तो वह एक मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह दर्पण में देखता है । क्योंकि २४ वह अपने को ज्योंही देखता त्यों चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था । परन्तु जो जन शिष्ट व्यवस्था को जो निर्वन्धता की है मुक्त २५ मुक्त देखता है और ठहर जाता है वह जो ऐसा सुननेद्वारा नहीं कि भूल जाय परन्तु कार्य करनेद्वारा है तो वही अपनी करणी में धन्य होगा । यदि २६ तुम्हों में कोई जो अपनी जीभ पर दाम नहीं लगाता है परन्तु अपने मन को धोखा देता है अपने को धर्माचारी समझता है तो इस का धर्माचार व्यर्थ है । ईश्वर पिता के यहाँ शुद्ध और निर्मल धर्माचार यह है अर्थात् माता २७ पिताहीन लड़कों के और विधवाओं के क्लेश में उन की सुध लेना और अपने तर्ह संसार से निष्कलंक रखना ॥

### दूसरा पञ्च ।

हे मेरे भाइयो हमारे तेजोमय प्रभु यीशु ख्रीष्ट के विश्वास में पक्षपात मत १ किया करो । क्योंकि यदि एक पुरुष सोने के कल्ले और भड़कीला वस्त्र पहिने २ हुए तुम्हारी सभा में आवे और एक कंगाल मनुष्य भी मैला वस्त्र पहिने हुए आवे, और तुम उस भड़कीला वस्त्र पहिने हुए पर दृष्टि करके उस में कटो ३ आप यहाँ अच्छी रीति से बैठिये और उस कंगाल से कटो तू वहाँ खड़ा रह अथवा यहाँ मेरे पाँवों की पोंछी के नीचे बैठ, तो क्या तुम ने अपने मन में ४ भेद न माना और कुविचार से न्याय करनेद्वारे न हुए । हे मेरे प्यारे भाइयो ५ सुनो क्या ईश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना है कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी होवें जिस की प्रतिज्ञा उस ने उर्न्त जो उस को प्यार करते हैं दिई है । परन्तु तुम ने उस कंगाल का अपमान किया, क्या धनी ६ लोग तुम्हें नहीं घेरते हैं और क्या वेही तुम्हें विचार आसनों के आगे नहीं खींचते हैं । जिस नाम से तुम पुकारे जाते हो क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा ७ नहीं करते हैं । जो तुम धर्मपुस्तक के इस वचन के अनुसार कि तू अपने ८ पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर सद्यसुख राजव्यवस्था पूरी करते हो तो अच्छा करते हो । परन्तु जो तुम पक्षपात करते हो तो पापकर्म करते हो और व्यवस्था ९ से अपराधी ठहराये जाते हो । क्योंकि जो कोई मारी व्यवस्था को पालन करे १० पर एक बात में चुके वह सब बातों के दंड के योग्य हो चुका । क्योंकि जिस ११ ने कहा परस्त्रीगमन मत कर उस ने यह भी कहा कि नरहिंसा मत कर, सो जो तू परस्त्रीगमन न करे परन्तु नरहिंसा करे तो व्यवस्था का अपराधी हो चुका । तुम ऐसे दोलो और ऐसा काम करो जैसा तुम को चाहिए जिन का विचार १२ निर्वन्धता की व्यवस्था के द्वारा किया जायगा । क्योंकि जिस ने दया न किई उस १३ का विचार बिना दया के किया जायगा और दया न्याय पर जयजयकार करती है ॥

हे मेरे भाइयो यदि कोई कहे मुझे विश्वास है पर कर्म उस से नहीं होवें तो १४ क्या लाभ है, क्या उस विश्वास से उस का आण हो सकता है । यदि कोई १५ भाई यद्यपि नंगो हो और उर्न्त प्रतिदिन के भोजन की घटी दाय, और तुम में १६

तुम अपनी गलफटाकियों पर बड़ाई करते हो . ऐसी ऐसी बड़ाई सब खुरी है ।  
१७ सो जो भला करने जानता है और करता नहीं उस को पाप होता है ।

पांचवां पृष्ठ ।

१ अब आओ हे धनवान लोगो अपने घर आनेवाले क्लेशों के लिये चित्ता चित्ता  
२ रोओ । तुम्हारा धन सड़ गया है और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गये हैं ।  
३ तुम्हारे खाने और रुपये में काई लग गई है और उन की काई तुम्हों पर साक्षी  
४ होगी और आग की नाईं तुम्हारा मांस खायगी . तुम ने पिछले दिनों में धन बटोरा  
५ है । देखो जिन बनिहारों ने तुम्हारे खेतों की लयनी किई उन की खान जो तुम  
६ ने ठग लिई है पुकारती है और लयनेहारों की दोहाई सेनाओं के परमेश्वर के कानों  
७ में पहुंची है । तुम पृथिवी पर सुख में और विलास में रहे तुम ने जैसे बध के  
८ दिन ही में अपने मन को सन्तुष्ट किया है । तुम ने धर्मी को दोषी ठहराके मार  
९ डाला है . वह तुम्हारा साम्हना नहीं करता है ।

१० सो हे भाइयो प्रभु को आने लो धीरज धरो . देखो गृहस्थ पृथिवी के  
११ बहुमूल्य फल की याद जोहता है और जब लो वह पहिली और पिछली बर्षों  
१२ न पावे तब लो उस के लिये धीरज धरता है । तुम भी धीरज धरो अपने मन  
१३ को स्थिर करो क्योंकि प्रभु का आना निकट है । हे भाइयो एक दूसरे के विरुद्ध  
१४ मत कुड़कुड़ाओ इस लिये कि दोषी न ठहरो . देखो विचारकर्ता द्वार के आगे  
१५ खड़ा है । हे मेरे भाइयो भविष्यवृत्ताओं को जित्ते ने प्रभु के नाम से बातें किई  
१६ दुःखभोग और धीरज का नमूना समझ लेओ । देखो जो स्थिर रहते हैं उन्हें हम  
१७ धन्य कहते हैं . तुम ने ऐश्वर्य की स्थिरता की सुनी है और प्रभु का अन्त देखा  
१८ है कि प्रभु बहुत करुणामय और दयावन्त है । परन्तु सब से पहिले हे मेरे भाइयो  
१९ किरिया मत खाओ न स्वर्ग की न धरती की न और कोई किरिया परन्तु तुम्हारा  
२० हां हां होवे और नहीं नहीं होवे जिस्तें तुम दंड के योग्य न ठहरो ॥

२१ क्या तुम्हों में कोई दुःख पाता है . तो प्रार्थना करे . क्या कोई हर्षित है .  
२२ तो भजन गावे । क्या तुम्हों में कोई रोगी है . तो मंडली के प्राचीनों को अपने  
२३ पास बुलावे और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलके उस के लिये प्रार्थना करें ।  
२४ और विश्वास की प्रार्थना रोगी को बचावेगी और प्रभु उस को उठावेगा और  
२५ जो उस ने पाप भी किये हों तो उस की क्षमा किई जायगी । एक दूसरे के आगे  
२६ अपने अपने अपराधों को मान लेओ और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो जिस्तें  
२७ चंगे हो जाओ . धर्मी जन की प्रार्थना कार्यकारी होके बहुत सफल होती है ।  
२८ एलियाह हमारे समान दुःख मुख भोगी मनुष्य था और प्रार्थना से उस ने प्रार्थना  
२९ किई कि मैंह न बरसे और भूमि पर साठे तीन बरस मैंह न बरसा । और उस ने  
३० फिर प्रार्थना किई तो आकाश ने वर्षा दिई और भूमि ने अपना फल उपजाया ॥  
३१ हे भाइयो जो तुम्हों में कोई सच्चाई से भरमाया जाय और कोई उस को  
३२ फेर लेवे . तो जान जाय कि जो जन पापी को उस के मार्ग के भ्रमण से फेर  
लेवे सो एक प्राण को मृत्यु से बचावेगा और बहुत पापों को ढांकेगा ॥

तुम्हें मैं ज्ञानदान और धूमनेहार कौन है . सो अपनी अच्छी चाल चलन से १३  
ज्ञान की नम्रता सहित अपने कार्य दिखावे । परन्तु जो तुम अपने अपने मन में १४  
कड़वी डाढ़ और बैर रखते हो तो सच्चाई के विम्वह घमंड मत करो और झूठ मत  
बोला । यह ज्ञान ऊपर से उतरता नहीं परन्तु सांसारिक और शारीरिक और जैतानी १५  
है । क्योंकि जहां डाढ़ और बैर है तहां व्यवेहा और हर एक घुरा कर्म होता १६  
है । परन्तु जो ज्ञान ऊपर से है सो पहिले तो पवित्र है फिर मिलनसार मृदुभाष १७  
और कोमल और दया से और अच्छे फलों से परिपूर्ण पक्षपात रहित  
और निष्कपट है । और धर्म का फल मेल करवैयों से मिलाप में बोया १८  
जाता है ॥

### चौथा पर्व ।

तुम्हें मैं लड़ाई भगाड़े कहां से होते . क्या यहां से नहीं अर्थात् तुम्हारे १  
सुग्राभिलाषों से जो तुम्हारे अंगों में लड़ते हैं । तुम लालसा रखते हो और २  
तुम्हें मिलता नहीं तुम नरहिंसा और डाढ़ करते हो और प्राप्त नहीं कर सकते  
तुम भगाड़ा और लड़ाई करते हो परन्तु तुम्हें मिलता नहीं इस लिये कि तुम  
नहीं मांगते हो । तुम मांगते हो और पाते नहीं इस लिये कि घुरी रीति से ३  
मांगते हो जिस्त अपने सुखविलास में डूबा देओ । हे अभिचारियो और व्यभि- ४  
चारियो क्या तुम नहीं जानते हो कि संसार की मित्रता ईश्वर की शत्रुता  
है . सो जो कोई संसार का मित्र हुआ चाहता है वह ईश्वर का शत्रु ठहरता  
है । अथवा क्या तुम समझते हो कि धर्मपुस्तक पढ़ा करता है . क्या वह आत्मा ५  
जो हमें मैं बसा है यहां लो स्नेह करता है कि डाढ़ भी करे । वरन वह अधिक ६  
अनुग्रह देता है इस कारण कहता है ईश्वर असमानियों से विरोध करता है परन्तु  
दीनों पर अनुग्रह करता है । इस लिये ईश्वर के अधीन होओ , जैतान का साम्दना ७  
करो तो वह तुम में भागेगा । ईश्वर के निकट आओ तो वह तुम्हारे निकट आवेगा . ८  
हे पापियो अपने पाप शुद्ध करो और हे दुचित्त लोगो अपने मन पवित्र करो ।  
दुःखी होओ और शोक करो और रोओ . तुम्हारी हंसी शोक हो जाय और ९  
तुम्हारा आनन्द उदासी बने । प्रभु के मन्मुख दीन बने तो वह तुम्हें जंचे करेगा ॥ १०

हे भाइयो एक दूसरे पर अपवाद मत लगाओ . जो भाई पर अपवाद ११  
लगाता और अपने भाई का विचार करता है सो व्यवस्था पर अपवाद लगाता  
और व्यवस्था का विचार करता है . परन्तु जो तू व्यवस्था का विचार करता है  
तो तू व्यवस्था पर चलनेद्वारा नहीं परन्तु विचारकर्ता है । एक व्यवस्थाकारक १२  
और विचारकर्ता है अर्थात् घरी जिसे बचाने और नाश करने का सामर्थ्य है .  
तू कौन है जो दूसरे का विचार करता है ॥

अब आओ तुम जो कहते हो कि आज या कल हम उस नगर में जायेंगे १३  
और यहां एक घर बितायेंगे और लेन देन कर कमायेंगे । पर तुम तो कल १४  
की बात नहीं जानते हो क्योंकि तुम्हारा जीवन कैसा है . वह भाग है जो  
घोड़ी बैर दिखाई देती है फिर लोप हो जाती है । इस के बदले तुम्हें यह १५  
कहना था कि प्रभु चाहे तो हम जीयेंगे और यह अथवा वह करेंगे । पर अब १६

१७ पवित्र होओ क्योंकि मैं पवित्र हूँ । और जो तुम उसे जो बिना पक्षपात हर एक के कर्म के अनुसार विचार करनेद्वारा है पिता करके पुकारते हो तो अपने  
 १८ परदेशी होने का समय भय से बिताओ । क्योंकि जानते हो कि तुम ने पितरों की ठहराई हुई अपनी व्यर्थ चाल चलन से जो उद्धार पाया सो नाशमान  
 १९ वस्तुओं के अर्थात् रूपे अथवा सोने के द्वारा नहीं, परन्तु निष्कलंक और  
 २० निखोटा मेरे सरीखे खीष्ट के बहुमूल्य लोह के द्वारा से पाया, जो अगत की उत्पत्ति के आगे से ठहराया गया था परन्तु पिछले समय पर तुम्हारे कारण प्रगट  
 २१ किया गया, जो उस के द्वारा से ईश्वर पर विश्वास करते हो जिस ने उसे मृतकों में से उठाया और उस को मर्दिमा दिई यहां लों कि तुम्हारा विश्वास और भरोसा ईश्वर पर है ॥

२२ तुम ने निष्कपट आत्मीय प्रेम के निमित्त जो अपने अपने हृदय को सत्य के आत्माकारी होने में आत्मा के द्वारा पवित्र किया है तो शुद्ध मन से एक दूसरे से  
 २३ अतिशय प्रेम करो । क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं परन्तु अविनाशी चीज से ईश्वर  
 २४ के जीवते और सदा लों ठहरनेद्वारे वचन के द्वारा नया जन्म पाया है । क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं और मनुष्य का सारा विभय घास के फूल की नाईं  
 २५ है । घास सूख जाती है और उस का फूल झड़ जाता है परन्तु प्रभु का वचन सदा लों ठहरता है और यही वचन है जो सुसमाचार में तुम्हें सुनाया गया ॥

### दूसरा पट्टर ।

१ इस लिये सब वैरभाव और सब कल और समस्त प्रकार का कपट और डाह  
 २ और दुर्वचन दूर करके, नये जन्मे बालकों की नाईं वचन के निराले दूध की  
 ३ लालसा करो कि उस के द्वारा तुम बड़ जाओ, कि तुम ने तो चीख लिया है कि प्रभु कृपाल है ॥

४ उस के पास अर्थात् उस जीवते पत्थर के पास जो मनुष्यों से तो निकम्मा जाना  
 ५ गया है परन्तु ईश्वर के आगे चुना हुआ और बहुमूल्य है आके, तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर और याज्ञकों का पवित्र समाज बनते जाते हो जिस्त आत्मिक बलिदानों को जो यीशु खीष्ट के द्वारा ईश्वर को भावते हैं  
 ६ चढ़ावो । इस कारण धर्मपुस्तक में भी मिलता है कि देखो मैं सियोन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर रखता हूँ और जो उस पर विश्वास  
 ७ करे सो किसी रीति से लज्जित न होगा । सो यह बहुमूल्यता तुम्हारे ही लेखे है जो विश्वास करते हो परन्तु जो नहीं मानते हैं उन्हें वही पत्थर जिसे श्रवणों ने निकम्मा जाना कोने का सिरा और ठेस का पत्थर और ठोकर की चटान हुआ  
 ८ है, कि वे तो वचन को न मानके ठोकर खाते हैं और इस के लिये वे ठहराये  
 ९ भी गये । परन्तु तुम लोग चुना हुआ वंश और राजपदधारी याज्ञकों का समाज और पवित्र लोग और निज प्रजा हो इस लिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से  
 १० अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया उस के गुण तुम प्रचार करो, जो आगे प्रजा न थे परन्तु अभी ईश्वर की प्रजा हो जिन पर दया नहीं किई गई थी परन्तु अभी दया किई गई है ॥

# पितर प्रेरित की पहिली पत्री।

पहिला पर्व ।

पितर जो यीशु ख्रीष्ट का प्रेरित है पन्त और गलातिया और कपदोकिया और १  
थाशिया और त्रिफुनिया देशों में छितरे हुए परदेशियों को . जो ईश्वर पिता के २  
भविष्यत ज्ञान के अनुसार आत्मा की पवित्रता के द्वारा आज्ञापालन और यीशु  
ख्रीष्ट के लोहू के छिड़काव के लिये चुने हुए हैं . तुम्हें बहुत बहुत अनुग्रह और  
शांति मिले ॥

हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के पिता ईश्वर का धन्यवाद होय जिस ने अपनी बड़ी ३  
दया के अनुसार हमें को नया जन्म दिया कि हमें यीशु ख्रीष्ट के मृतकों में से  
जी उठने के द्वारा जीवती आशा मिले . और वह अधिकार मिले जो अधिनाशी ४  
और निर्मल और अजर है और स्वर्ग में तुम्हारे लिये रखा हुआ है . जिन की ५  
रक्षा ईश्वर की शक्ति से विश्वास के द्वारा किई जाती है जिन्हें तुम वह आरा  
जो पिछले समय में प्रगट किये जाने को तैयार है प्राप्त करो ॥

इस से तुम आह्लादिन होते हो पर अब थोड़ी धैर्य ना यदि आवश्यक है तो ६  
नाना प्रकार की परीक्षाओं से उदाम हुए हो . इस लिये कि तुम्हारे विश्वास की ७  
परीक्षा होने से जो नाशमान है पर आरा से परखा जाता है अति बहुमूल्य होके  
यीशु ख्रीष्ट के प्रगट होने पर प्रशंसा और आदर और महिमा का हेतु पाई जाय ।  
इस यीशु को तुम दिन दोगे प्यार करते हो और उन पर यद्यपि उसे अब नहीं ८  
देखते हो तौभी विश्वास करके अकण्य और महिमा संयुक्त आनन्द से आह्लादित  
होते हो . और अपने विश्वास का अन्त अर्थात् अपने अपने आत्मा का आरा ९  
पाते हो ॥

इस आरा के विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने जिनमें ने इस अनुग्रह के विषय में १०  
जो तुम पर किया जाता है भविष्यद्वक्ता कही बहुत बड़ा और खोज विचार  
किया । वे बूझते थे कि ख्रीष्ट का आत्मा जो हम में रहता है जब वह ख्रीष्ट के ११  
दुःखों पर और उन के पीछे की महिमा पर आगे से साक्षी देता है तब कौन  
और कैसा समय बताता है । और उन पर प्रगट किया गया कि वे अपने लिये १२  
नहीं परन्तु हमारे लिये उन बातों की सेवकाई करते थे जिन्हें जिन लोगों ने स्वर्ग  
में भेजे हुए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार सुनाया उन्हें ने अभी तुम  
से कह दिया है और इन बातों को स्वर्गादृत भुक्त भुक्तके देखने को बूझा रखते हैं ॥

इस कारण अपने अपने मन की मानो कमर बांधके सचेत रहो और जो १३  
अनुग्रह यीशु ख्रीष्ट के प्रगट होने पर तुम्हें मिलनेवाला है उस की पूरी आशा  
रखा । आज्ञाकारी लोगों की नाई अपनी अज्ञानता में की अगली अभिलाषाओं १४  
की रीति पर मत चला करो . परन्तु उस परमपवित्र के समान जिस ने तुम को १५  
बुलाया तुम भी आप सारी चाल चलन में पवित्र धनो । क्योंकि लिखा है १६



- २६ गुर्दे और उन की चिकनाई और दाहिना कांधा लिया । और उस अखमीरी रोटी की टोकरी में से जो परमेश्वर के सन्मुख थी एक अखमीरी फुलका और एक फुलका तेल में चुपड़ा हुआ और एक लिट्टी निकाली और उन्हें चिकनाई पर और २७ दाहिने कांधे पर रक्खा । और उस ने सब को हाइन और उस के बेटों के हाथों पर रक्खा और उन को परमेश्वर के सन्मुख हिलाने की भेंट के लिये हिलाया । २८ तब मूसा ने उन्हें उन के हाथों से लिया और यज्ञवेदी पर बलिदान की भेंट के लिये जलाया वह स्थापना की भेंट सुगंध के लिये हैं वह परमेश्वर के लिये आग की भेंट है । और मूसा ने क्रांती लिई और उसे हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलाया स्थापित करने के भेंट से मूसा का भाग था जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई ॥
- ३० तब मूसा ने अभिषेक का तेल और यज्ञवेदी पर के लोहू में से लिया और हाइन पर और उस के बस्त्रों पर और उस के साथ उस के बेटों पर और उस के बेटों के बस्त्रों पर छिड़का और हाइन को और उस के बस्त्रों को और उस के साथ उस के बेटों को और उस के बेटों के बस्त्रों को पवित्र किया ॥
- ३१ और मूसा ने हाइन से और उस के बेटों से कहा कि मांस को मंडली के तंबू के द्वार पर उसिन और उसे वहां उस रोटी के साथ जो स्थापित करने की टोकरी में है खाओ जैसे मैं ने यह कहके आज्ञा किई कि हाइन और उस के बेटे उसे ३२ खावें । और मांस और रोटी में से जो उबरे उसे आग से जलाओ । और तुम मंडली के तंबू के द्वार से सात दिन लों बाहर न जाओ जब लों तुम्हारे स्थापित ३४ करने के दिन पूरे न होवें क्योंकि वह तुम्हें सात दिन में स्थापित करेगा । जैसा उस ने आज के दिन किया है परमेश्वर ने ऐसा करने की आज्ञा किई है कि ३५ तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त होवे । इस कारण मंडली के तंबू के द्वार पर सात रात दिन ठहरो और परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करो जिसमें न मरो क्योंकि ३६ मुझे योंही आज्ञा है । सो सब कुछ जो परमेश्वर ने मूसा को हसते आज्ञा किई थी हाइन और उस के बेटों ने किया ॥

नवां पर्व ।

- १ और जब आठवां दिन हुआ तब मूसा ने हाइन को और उस के बेटों को २ और इसराएल के प्राचीनों को बुलाया । और हाइन से कहा कि तू एक निण्खोट बकड़ा पाप की भेंट के लिये और एक निण्खोट मंठा बलिदान की भेंट के लिये ३ ले और परमेश्वर के आगे ला । और इसराएल के संतान को यह कहके बोल कि एक बकरा पाप की भेंट के लिये और एक बकड़ा और पहिले बरस का एक ४ भेड़ा सब निण्खोट बलिदान की भेंट के लिये लेओ । और एक बैल और एक मंठा कुशल की भेंटों के लिये लाओ जिसमें परमेश्वर के आगे बलि किये जावें और तेल से मिली हुई भोजन की भेंट क्योंकि आज के दिन परमेश्वर तुम पर प्रगट होगा ॥

- ५ और जैसा कि मूसा ने आज्ञा किई थी वे मंडली के तंबू के आगे लाये और ६ सारा मंडली निकट आके परमेश्वर के आगे खड़ी हुई । और मूसा ने कहा कि

हे प्यारे मैं धिन्ती करता हूँ विदेशियों और ऊपरियों की नाईं शारीरिक अभिलाषों ११  
 से जो आत्मा के विरुद्ध लड़ते हैं परे रहो । अन्यदेशियों में तुम्हारी चाल चलन १२  
 भली होवे इस लिये कि जिस बात में वे तुम पर जैसे कुकर्मियों पर अपवाद लगाते  
 हैं उसी में वे तुम्हारे भले कर्मों को देखके जिस दिन ईश्वर दृष्टि करे उस दिन  
 उन कर्मों के कारण उस का गुणानुवाद करें । प्रभु के कारण मनुष्यों के ठहराये १३  
 हुए हर एक पद के अधीन होओ । चाहे राजा हो तो उसे प्रधान जानके चाहे १४  
 अध्वज लोग हों तो यह जानके कि वे उस के द्वारा कुकर्मियों के दंड के लिये  
 परन्तु सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये भेजे जाते हैं दोनों के अधीन होओ । क्योंकि १५  
 ईश्वर की इच्छा यही है कि तुम सुकर्म करने से निर्वृद्धि मनुष्यों की अज्ञानता  
 को निवृत्त करो । निर्वन्धों की नाईं चलो पर जैसे अपनी निर्वन्धता से घुराई १६  
 की आड़ करते हुए वैसे नहीं परन्तु ईश्वर के दासों की नाईं चलो । सभी का १७  
 आदर करो भाइयों को प्यार करो ईश्वर से डरो राजा का आदर करो ॥

हे सेवको समस्त भय सहित स्वामियों के अधीन रहो केवल भलों और १८  
 मृदुभावों के नहीं परन्तु कुटिलों के भी । क्योंकि यदि कोई अन्याय से दुःख १९  
 उठाता हुआ ईश्वर की इच्छा के विवेक के कारण गोक सह लेता है तो यह  
 प्रशंसा के योग्य है । क्योंकि यदि अपराध करने से तुम घृसे खाओ और धीरज २०  
 धरो तो कौन सा यश है परन्तु यदि सुकर्म करने से तुम दुःख उठाया और धीरज  
 धरो तो यह ईश्वर के आगे प्रशंसा के योग्य है । तुम इसी के लिये युताये भी २१  
 गये क्योंकि स्त्रीएँ ने भी हमारे लिये दुःख भोगा और हमारे लिये नमूना छोड़  
 गया कि तुम उस की लोक पर हो लेओ । उस ने पाप नहीं किया और न उस २२  
 के मुँह में छल पाया गया । वह निन्दित होके उस के बदले निन्दा न करता २३  
 था और दुःख उठाके धर्मकी न देता था परन्तु जो धर्म से विचार करनेद्वारा  
 है उसी के हाथ अपने को सौंपता था । उस ने आप हमारे पापों को अपने देह २४  
 में काठ पर उठा लिया जिससे हम लोग पापों के लिये मर करके धर्म के लिये  
 जीवें और उसी के सार खाने से तुम चंगे किये गये । क्योंकि तुम भटकी हुई २५  
 भेड़ों की नाईं वे पर अब अपने प्राणों के गहरिये और रखवाले के पास फिर  
 आये हो ॥

### तीसरा पर्व ।

वैसे ही हे स्त्रियो अपने अपने स्वामी के अधीन रहो इस लिये कि यदि कोई १  
 कोई वचन को न मानें तबो वचन बिना अपनी अपनी स्त्री की चाल चलन के  
 द्वारा . तुम्हारी भय सहित पवित्र चाल चलन देखके प्राप्त किये जावें । तुम्हारा २  
 सिंगार घाल गून्थने का और सेना पहनने का अथवा वस्त्र पहिनने का बाहरी ३  
 सिंगार न होवे । परन्तु हृदय का गुप्त मनुष्यत्व उस नम्र और शान्त आत्मा के ४  
 अधिनाशी आभूषण सहित जो ईश्वर के आगे बहुमूल्य है तुम्हारा सिंगार होवे ।  
 क्योंकि ऐसे ही पवित्र स्त्रियाँ भी जो ईश्वर पर भरोसा रखती थीं आगे अपना ५  
 सिंगार करती थीं कि वे अपने अपने स्वामी के अधीन रहती थीं । जैसे सारः ने ६  
 इब्राहीम की आज्ञा मानी और उसे प्रभु कहती थी जिस की तुम लोग जो सुकर्म

७ करो और किसी प्रकार की घबराहट से न डरो तो खेटियां हुई हो । वैसे ही हे पुरुषो ज्ञान की रीति से स्त्री के संग जैसे अपने से निर्वल पात्र के संग वास करो और जब कि वे भी जीवन के अनुग्रह की संगी अधिकारिणियां हैं तो उन का आदर करो जिस्ते तुम्हारी प्रार्थनाओं की रोक न होय ॥

८ अन्त में यह कि तुम सब एक मन और परदुःख के वृक्कनेहारे और भाइयों के प्रेमी और करुणामय और हितकारी होओ । और खुराई के बदले खुराई अथवा निन्दा के बदले निन्दा मत करो परन्तु इस के विपरीत आशीस देओ क्योंकि जानते हो कि तुम इसी के लिये बुलाये गये जिस्ते आशीस के अधिकारी होओ । क्योंकि जो जीवन की प्रीति रखने और अच्छे दिन देखने चाहे सो अपनी जीभ को खुराई से और अपने हाँठों को कुल की धातें करने से रोके । वह खुराई से फिर आवे और भलाई करे वह मिलाप को चाहे और उस की चेष्टा करे । क्योंकि परमेश्वर के नेत्र धर्मियों की ओर और उस के कान उन की प्रार्थना की ओर लगे हैं परन्तु परमेश्वर कुकर्म करनेहारों से विमुख है ॥

९ और जो तुम भले के अनुगामी होओ तो तुम्हारी खुराई करनेहारा कौन होगा । परन्तु जो तुम धर्म के कारण दुःख उठावो भी तो धन्य हो पर उन के भय से भयमान मत हो और न घबराओ । परन्तु परमेश्वर ईश्वर को अपने अपने मन में पवित्र मानो . और जो कोई तुम से उस आशा के विषय में जो तुम में है कुछ बात पूछे उस को नम्रता और भय सहित उत्तर देने को सदा तैयार रहो । और शुद्ध मन रखो इस लिये कि जो लोग तुम्हारी खीष्टानुसारी अच्छी चाल चलन की निन्दा करें सो जिस बात में तुम पर जैसे कुकर्मियों पर अपवाद लगावें उसी में लज्जित होवें । क्योंकि यदि ईश्वर की इच्छा यूँ होय तो सुकर्म करते हुए दुःख उठाना कुकर्म करते हुए दुःख उठाने से अच्छा है ॥

१० क्योंकि खीष्ट ने भी अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मों ने एक खेर पापों के कारण दुःख उठाया जिस्ते हमें ईश्वर के पास पहुंचावे कि वह शरीर में तो घात किया गया परन्तु आत्मा में लिलाया गया । उसी में उस ने बन्दीगृह में के आत्माओं को भी जाके उपदेश दिया . जिन्हीं ने अगले समय में न माना जिस समय ईश्वर का धीरज नूह के दिनों में जब लों जहाज बनता था जिस में थोड़े अर्थात् आठ प्राणी जल के द्वारा बच गये तब लों घाट जोहता रहा । इस दृष्टान्त का आशय अपतिसमा जो शरीर के मैल का दूर करना नहीं परन्तु ईश्वर के पास शुद्ध मन का अंगीकार है अभी हमों को भी यीशु खीष्ट के जी उठने के द्वारा बचाता है . जो स्वर्ग पर जाके ईश्वर के दहिने हाथ रहता है और दूत-गण और अधिकारी और पराक्रमी उस के अधीन किये गये हैं ॥

चौथा पर्व ।

१ सो जब कि खीष्ट ने हमारे लिये शरीर में दुःख उठाया और जब कि जिस ने शरीर में दुःख उठाया है वह पाप से रोका गया है तुम भी उसी मनसा का हथियार बांधो . जिस्ते शरीर में का जो समय रह गया है उसे तुम अब मनुष्यों के अभिलाषों के नहीं परन्तु ईश्वर की इच्छा के अनुसार बितावो । क्योंकि

हमारे जीवन का जो समय बीत गया है सो नाना भाँति के लुचपन और कामा-  
भिलाष और मतबालपन और लीला क्रीड़ा और मद्यपान और धर्मविमूढ मूर्तिपूजा  
में चलते चलते देवपूजकों की इच्छा पूरी करने को बहुत हुआ है । इस से वे ४  
लोग जब तुम उन के संग लुचपन के उसी अन्याचार में नहीं दौड़ते हो तब  
अचंभा मानते और निन्दा करते हैं । पर वे उस को जो जीवितों और मृतकों का ५  
विचार करने को तैयार है लेखा देंगे । क्योंकि हमी के लिये मृतकों को भी ६  
सुसमाचार सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उन का विचार किया  
जाय परन्तु आत्मा में वे ईश्वर के अनुसार जीवें ॥

परन्तु सब बातों का अंत निकट आया है इस लिये सुबुद्धि होके प्रार्थना के ७  
लिये मर्चेत रहो । और सब से अधिक करके एक दूसरे से अतिशय प्रेम रखो ८  
क्योंकि प्रेम बहुत पापों को छापेगा । बिना कुछकुछाये एक दूसरे की अतिविशेषा ९  
किया करो । जैसे जैसे हर एक ने घरदान पाया है वैसे ईश्वर के नाना प्रकार १०  
के अनुग्रह के भले भंडारियों की नाई एक दूसरे के लिये उसी घरदान की  
सेवकाई करो । यदि कोई बात करे तो ईश्वर की आज्ञियों की नाई बात करे ११  
यदि कोई सेवकाई करे तो जैसे उस शक्ति से जो ईश्वर देता है करे जिसमें सब  
बातों में ईश्वर की महिमा योग्य खीष्ट के द्वारा प्रगट किई जावे जिस की महिमा  
और पराक्रम सदा सर्वदा रहता है । आमीन ॥

हे प्यारे जो ज्वलन तुम्हारे बीच में तुम्हारी परीक्षा के लिये होता है उस से १२  
अचंभा मत करो जैसे कि कोई अचंभे की बात तुम पर बीतती हो । परन्तु जितने १३  
तुम खीष्ट के दुःखों के सम्भागी होते हो उतने आनन्द करो जिसमें उस की  
महिमा के प्रगट होने पर भी तुम आनन्दित और आह्लादित होओ । जो तुम १४  
खीष्ट के नाम के लिये निन्दित होते हो तो धन्य हो क्योंकि महिमा का और  
ईश्वर का आत्मा तुम पर उदरता है । उन की ओर से तो उस की निन्दा होती  
है परन्तु तुम्हारी ओर से उस की महिमा प्रगट होती है । तुम में से कोई जन १५  
कन्यारा अथवा चार अथवा कुकर्म होने से अथवा पराये काम में हाथ डालने  
से दुःख न पावे । परन्तु यदि खीष्टियान होने से कोई दुःख पावे तो लज्जित न १६  
होवे परन्तु इस बात में ईश्वर का गुणानुवाद करे । क्योंकि यही समय है कि १७  
दंड ईश्वर के घर से आरंभ होवे पर यदि पहिले हमों से आरंभ होता है तो जो  
लोग ईश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते हैं उन का अन्त क्या होगा । और १८  
यदि धर्मी कठिनता से बाण पाता है तो भक्तिहीन और पापी कहां दिखवाई  
देगा । इस कारण जो लोग ईश्वर की इच्छा के अनुसार दुःख उठाते हैं सो १९  
सुकर्म करते हुए अपने अपने प्राण को उस के हाथ जैसे विश्वासपात्र सृजनहार  
के हाथ सौंप दें ॥

पाँचवाँ पर्व ।

मैं जो संगी प्राचीन और खीष्ट के दुःखों का साक्षी और जो महिमा प्रगट १  
होने पर है उस का सम्भागी भी हूँ प्राचीनों से जो तुम्हारे बीच में हैं विन्ती  
करता हूँ । ईश्वर के भुंड की जो तुम में है खराबी करो और दयाव से नहीं २

- ३ पर अपनी सम्मति से और न नीच कमाई के लिये पर मन की इच्छा से . और न जैसे अपने अपने अधिकार पर प्रभुता करते हुए परन्तु मुँड के लिये दृष्टान्त होते हुए रखवाली करो । और प्रधान रखवाले के प्रगट होने पर तुम महिमा का अक्षय मुकुट पाओगे । वैसे ही हे जयानो प्राचीनों के अधीन होओ . हे तुम सब एक दूसरे के अधीन होके दीनता को पटिन लेओ क्योंकि ईश्वर अभिमानियों से विरोध करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है ।
- ४ इस लिये ईश्वर के पराक्रमी हाथ के नीचे दीन होओ जिस्ते वह समय पाओ तुम्हें जंचा करे । अपनी सारी चिन्ता उस पर डालो क्योंकि वह तुम्हारे लिये सोच करता है । सचेत रहे जागते रहे क्योंकि तुम्हारा वैरी शैतान गर्जते हुए सिंह की नाईं ठूँढ़ता फिरता है कि किस को निगल जाय । विश्वास में दृढ़ होओ उस का साम्हना करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे भाई लोगों पर जो संसार में हैं दुःखों की वैसे ही दशा पूरी होती जाती है ।
- ५० सारे अनुग्रह का ईश्वर जिस ने हमें खीष्ट यीशु में बुलाया कि हम थोड़ा सा दुःख उठाके उस की अनन्त महिमा में प्रवेश करें आप ही तुम्हें सुधारे और स्थिर करे और बल देवे और नेत्र पर दृढ़ करे । उसी की महिमा और पराक्रम सदा सच्चिदा रहे . आमीन ।
- ५२ सीला के हाथ जिसे मैं समझता हूँ कि तुम्हारा विश्वासयोग्य भाई है मैंने थोड़ी बातों में लिखा है और उपदेश और साक्षी देता हूँ कि ईश्वर का सच्चा अनुग्रह जिस में तुम स्थिर हो यही है । तुम्हारे संग की चुनी हुई जो बाबुल में है और मेरा पुत्र मार्क इन दोनों का तुम से नमस्कार । प्रेम का चूसा लेके एक दूसरे को नमस्कार करो . तुम सभी को जो खीष्ट यीशु में हो शांति होवे । आमीन ।

## पितर प्रेरित की दूसरी पत्री ।

पहिला पत्र ।

- १ शिमोन पितर जो यीशु खीष्ट का दास और प्रेरित है उन लोगों को जिन्होंने हमारे ईश्वर और त्राणकर्ता यीशु खीष्ट के धर्म में हमारे तुल्य बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है . तुम्हें ईश्वर के और हमारे प्रभु यीशु के ज्ञान के द्वारा बहुत बहुत अनुग्रह और शांति मिले ॥
- ३ जैसे कि उस के ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है हमें उसी के ज्ञान के द्वारा दिया है जिस ने हमें अपने ऐश्वर्य और शुभगुण के अनुसार बुलाया . जिन के अनुसार उस ने हमें अत्यन्त बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं दी हैं इस लिये कि इन के द्वारा तुम लोग जो नष्टता कामाभिलाष के द्वारा जगत में है उस से बचके ईश्वरीय स्वभाव के भागी हो

जाये । और इसी कारण भी तुम सब प्रकार का यत्न करके अपने विद्यार्थ में ५ शुभगुण और शुभगुण में ज्ञान , और ज्ञान में संयम और संयम में धीरज और धीरज में भक्ति , और भक्ति में भावोप प्रेम और भावोप प्रेम में प्यार संयुक्त ७ करो । क्योंकि यह बातें सब तुम में होतीं और बढ़ती जातीं तब तुम्हें ऐसे ८ बनाती हैं कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के ज्ञान के लिये तुम न निकम्मे न निष्फल हो । क्योंकि जिस पास यह बातें नहीं हैं वह अंधा है और धुंधला देखता है ९ और अपने अगले पापों से अपना जुद्ध किया जाना भूल गया है । इस कारण १० भाइयो और भी अपने दुलाये जाने और चुन लिये जाने को दृढ़ करने का यत्न करो क्योंकि जो तुम ये कर्म करो तो कभी किसी गति से ठोकर न खाओगे । ११ क्योंकि इस प्रकार से तुम्हें हमारे प्रभु और आराधकर्ता यीशु ख्रीष्ट के अनन्त राज्य १२ में प्रवेश करने का अधिकार अधिकार दे दिया जायगा ॥

इस लिये यद्यपि तुम यह बातें जानते हो और जो सत्य बचन तुम्हारे पास १३ है उस में स्थिर किये गये हो तभी में इन बातों के विषय में तुम्हें नित्य चेत दिलाने में निश्चित न रहेंगा । पर मैं समझता हूँ कि सब लो में इस डरे में हूँ १४ तब लो स्मरण करवाने से तुम्हें सचेत करना मुझे उचित है । क्योंकि जानता हूँ १५ कि जैसा हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने मुझे बताया तैसा मेरे डरे के गिराये जाने का समय निकट है । पर मैं यह करूँगा कि मेरी मृत्यु के पीछे भी तुम्हें इन बातों १६ का स्मरण करने का उपाय नित्य रहे ॥

क्योंकि हम ने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के सामर्थ्य का और आने का १७ समाचार विद्या से रची हुई कहानियों के अनुसार जो सुनाया सो नहीं परन्तु हम उस की महिमा के प्रत्यक्ष साक्षी हुए थे । क्योंकि उन ने ईश्वर पिता से १८ आदर और महिमा पाई कि प्रतापमय तेज से उस को ऐसा शब्द सुनाया गया कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस में मैं अति प्रसन्न हूँ । और यह शब्द स्वर्ग में १९ सुनाया हुआ हम ने पवित्र पर्वत में उस के संग होते हुए सुन लिया । और २० भविष्यद्वाणी का बचन हमारे निकट और भी दृढ़ है । तुम जो उस पर जैसे दीपक पर जो अधिपारे स्थान में चमकता है सब लो पछ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदय में न उगे तब लो मन लगाने हो तो अच्छा करते हो । पर २१ यही पछिने जानो कि धर्मपुस्तक की कोई भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही व्याख्यान से नहीं होती है । क्योंकि भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं २२ आई परन्तु ईश्वर के पवित्र जन पवित्र आत्मा के बुलाये हुए होते ॥

दूसरा पर्व ।

परन्तु भूटे भविष्यद्वाणी भी लोगों में हुए जैसे कि तुम में भी भूटे उपदेशक २३ होंगे जो विनाश के कुपन्थों को छिपके चलावेंगे और प्रभु से जिस ने उन्हें सोल लिया मुकरेंगे और अपने ऊपर शीघ्र विनाश लावेंगे । और अतः उन के २४ लुत्तपन का पीछा करेंगे जिन के कारण सत्य के मार्ग की निन्दा किई जायगी । और लाभ से वे तुम्हें बनाई हुई बातों से घेच स्यायेंगे पर पूर्वकाल से उन का २५ दंड आलस नहीं करता और उन का विनाश अंशता नहीं ॥



- ४ क्योंकि यदि ईश्वर ने दूतों को जिन्होंने पाप किया न छोड़ा परन्तु पाताल में डालके अंधकार की जंजीरों में सेप दिया अहां ये विचार के लिये रखे जाते हैं । और प्राचीन जगत को न छोड़ा बरन भक्तिहीनों के जगत पर जलप्रलय ई लाया परन्तु धर्म के प्रचारक नूत को लगाके आठ जनों की रक्षा किई । और सदोम और अमोरा के नगरों को भस्म करके विध्वंस का दंड दिया और उन्हें ७ पीछे आनेवाले भक्तिहीनों के लिये दृष्टान्त ठहराया है । और धर्मी लूत को जो ८ अधर्मीयों के लुचपन के चलन से अति दुःखी होता था बचाया । क्योंकि वह धर्मी जन उन के बीच में वास करता हुआ देखने और सुनने से प्रतिदिन अपने ९ धर्मी प्राण को उन के दुष्ट कर्म्मों से पीड़ित करता था । तो परमेश्वर भक्तों को परीक्षा में से बचाने और अधर्मीयों को दंड की दशा में विचारके दिम लों १० रखने जानता है । निज करके उन लोगों को जो शरीर के अनुसार अशुद्धता के अभिलाष से चलते हैं और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं । वे ठीठ और इठी हैं और ११ महत पदों की निन्दा करने से नहीं डरते हैं । तौभी दूतगण जो शक्ति और पराक्रम में बड़े हैं उन के विरुद्ध परमेश्वर के आगे निन्दासंयुक्त विचार नहीं १२ सुनाते हैं । परन्तु ये लोग स्वभावधन अचैतन्य पशुओं की नाईं जो पकड़े जाने और नाश होने को उत्पन्न हुए हैं जिन बातों में अज्ञान हैं उन्हीं में निन्दा करते १३ हैं और अपनी भ्रष्टता में सत्यानाश होंगे और अधर्म का फल पावेंगे । वे दिन भर के विषयभोग को सुख समझते हैं वे कलंक और खोट रुपी हैं वे तुम्हारे संग १४ भोज में जँवते हुए अपने क्लेशों से सुख भोग करते हैं । उन के नेत्र व्यभिचारिणी से भरे रहते हैं और पाप से रोके नहीं जा सकते हैं वे अस्थिर प्राणों को फुसलाते हैं उन का मन लोभ लालच में साधा हुआ है वे साप के सन्तान हैं । १५ वे सीधे मार्ग को छोड़के भटक गये हैं और विषय के पुत्र बलास के मार्ग पर १६ हो लिये हैं जिस ने अधर्म की मजूरी को प्रिय जाना । परन्तु उस के अपराध के लिये उसे उलहना दिया गया । अबोल गदहे ने मनुष्य की बोली से बोलके भविष्यद्वक्ता की सूर्यता को रोका ।
- १७ ये लोग निर्जल कूँए और आंधी के उड़ाये हुए मेघ हैं । उन के लिये सदा का १८ घोर अन्धकार रखा गया है । क्योंकि वे व्यर्थ गलफटाकी की बातें करते हुए शरीर के अभिलाषों से लुचपनों के द्वारा उन लोगों को फुसलाते हैं जो भांति की चाल १९ चलनेहारों से सचमुच बच निकले थे । वे उन्हें निर्वन्ध होने की प्रतिज्ञा देते हैं पर आप ही नष्टता के दास हैं क्योंकि जिस से कोई हार गया है उस का वह दास भी बन गया है ।
- २० यदि वे प्रभु और त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के ज्ञान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले परन्तु फिर उस में फंसके हार गये हैं तो उन २१ की पिछली दशा पहिली से खुरी हुई है । क्योंकि धर्म के मार्ग को जानके भी उस पवित्र आज्ञा से जो उन्हें सेपी गई फिर जाने से उस मार्ग को न जानना २२ ही उन के लिये भला होता । पर उस सच्चे दृष्टान्त की बात उन में पूरी हुई है कि कुत्ता अपनी ही छांट को और धोई हुई सूअरी कीचड़ में लोटने को फिर गई ॥

## तीसरा पर्व ।

यह दूसरी पत्री है प्यारे मैं अब तुम्हारे पास लिखता हूँ और दोनों में मैं १  
स्मरण कस्थाने से तुम्हारे निष्कण्ठ मन को सचेत करता हूँ . जिससे तुम उन २  
यातों को जो पवित्र भाव्यपट्टकाओं ने आगे से कटी थीं और हम प्रेरितों की  
आज्ञा को जो प्रभु और वाचकर्ता की आज्ञा है स्मरण करो । पर यही पाँहले ३  
जानो कि पिछले दिनों में निन्दक लोग आर्चों को जो अपने ही अभिनायों के अनुसार  
चलेंगे . और कहेंगे उस के आने की प्रतिज्ञा कहाँ है क्योंकि जब मैं पितर लोग ४  
से गये सब कुछ सृष्टि के आरंभ से यही बना रहता है । क्योंकि यह बात उन ५  
से उन की इच्छा ही में क्लिपी रहती है कि ईश्वर के वचन में आकाश पृथ्वीकाल  
में था और पृथिवी भी जो जल में से और जल के द्वारा से बनी . जिन के द्वारा ६  
जगत जो तब था जल में डूबके नष्ट हुआ । परन्तु आकाश और पृथिवी जो अब ७  
हैं वही वचन में धरे हुए हैं और भक्तिहीन मनुष्यों के विचार और विनाश के  
दिन लों आग के लिये रखे जाते हैं ॥

परन्तु हे प्यारे यह एक बात तुम में क्लिपी न रहे कि प्रभु के यहां एक दिन ८  
सहस्र वर्ष के तुल्य और सहस्र वर्ष एक दिन के तुल्य हैं । प्रभु प्रतिज्ञा के ९  
विषय में विलम्ब नहीं करना है जैसा कितने लोग विनम्र समझते हैं परन्तु  
हमारे कारण धीरज धरता है और नहीं चाहता है कि कोई नष्ट होवे परन्तु  
सब लोग पश्चात्ताप को पहुँचें । पर जैसा रात को चार आता है तैसा प्रभु का १०  
दिन आयेगा जिस में आकाश दड़दड़ाहट से जाता रहेगा और तत्त्व अर्थात् तम  
हो गल जायेंगे और पृथिवी और उस में के कार्य जल जायेंगे । सो जब कि यह ११  
सब वस्तु गल जानेवाली हैं तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना  
और किस रीति में ईश्वर के दिन की बात जोचना और उस के शीघ्र आने की  
चेष्टा करना उचित है . जिस दिन के कारण आकाश उल्लित हो गल जायगा १२  
और तत्त्व अर्थात् तम हो पिघल जायेंगे । परन्तु उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम १३  
नये आकाश और नई पृथिवी की आस देखते हैं जिन में धर्म व्यास करेगा ॥

इस लिये हे प्यारे तुम जो इन बातों की आस देखते हो तो यह करो कि १४  
तुम कुशल से उस के आगे निष्कलंक और निर्दोष ठहरो । और हमारे प्रभु के १५  
धीरज को आश समझो जैसे हमारे प्रिय भाई पावल ने भी उस ज्ञान के अनुसार  
जो उसे दिया गया तुम्हारे पास लिखा । वैसे ही उस ने सब पात्रियों में भी लिखा १६  
है और उन में इन बातों के विषय में कहा है जिन में से कितनी बातें गूढ़ हैं  
जिन का अनसिख और अस्थिर लोग जैसे धर्मपुस्तक की और और बातों का  
भी विपरीत अर्थ लगाके उन्हें अपने ही विनाश का कारण बनाते हैं । सो हे १७  
प्यारे तुम लोग हम को आगे से जानके अपने तर्ह बचाये रहो ऐसा न हो कि  
अधर्मियों के भ्रम से बहकाये जाके अपनी स्थिरता से पातित होओ । परन्तु १८  
हमारे प्रभु और वाचकर्ता यीशु ख्रीष्ट के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाओ . उस  
का गुणानुवाद अभी और सदा काल लों भी होवे । आमीन ॥

# योहान प्रेरित की पहिली पत्री ।

## पहिला पर्व ।

- १ जो आदि से था जो हम ने जीवन के बचन के विषय में सुना है जो अपने  
२ नेत्रों से देखा है जिस पर हम ने दृष्टि किई और हमारे हाथों ने छुआ , कि वह  
जीवन प्रगट हुआ और हम ने देखा है और साक्षी देते हैं और तुम्हें उस सनातन  
जीवन का समाचार सुनाते हैं जो पिता के संग था और हमें पर प्रगट हुआ .  
३ जो हम ने देखा और सुना है उस का समाचार तुम्हें सुनाते हैं इस लिये कि  
हमारे साथ तुम्हारी संगति होय और हमारी यह संगति पिता के साथ और उस  
४ के पुत्र यीशु ख्रीष्ट के साथ है । और यह बातें हम तुम्हारे पास इस लिये लिखते  
हैं कि तुम्हारा आनन्द पूरा होय ॥
- ५ जो समाचार हम ने उस से सुना है और तुम्हें सुनाते हैं सो यह है कि ईश्वर  
६ ज्योति है और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं है । जो हम कहें कि उस के साथ  
हमारी संगति है और हम अंधियारे में चलें तो भूठ बोलते हैं और सच्चाई पर  
७ नहीं चलते हैं । परन्तु जैसा वह ज्योति में है वैसे ही जो हम ज्योति में चलें तो  
एक दूसरे से संगति रखते हैं और उस के पुत्र यीशु ख्रीष्ट का लोहू हमें सब पाप  
८ से शुद्ध करता है । जो हम कहें कि हम में कुछ पाप नहीं है तो अपने को धोखा  
९ देते हैं और सच्चाई हम में नहीं है । जो हम अपने पापों को मान लें तो यह  
हमारे पापों को क्षमा करने को और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने को विश्वास-  
१० योग्य और धर्मी है । जो हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया है तो उस को  
भूठा बनाते हैं और उस का बचन हम में नहीं है ॥

## दूसरा पर्व ।

- १ हे मेरे बालको मैं यह बातें तुम्हारे पास लिखता हूँ जिस्तें तुम पाप न करो  
और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात् धार्मिक  
२ यीशु ख्रीष्ट । और वही हमारे पापों के लिये प्रायश्चित्त है और केवल हमारे नहीं  
परन्तु सारे जगत के पापों के लिये भी ॥
- ३ और हम लोग जो उस की आज्ञाओं को पालन करें तो इसी से जानते कि  
४ उस को पहचानते हैं । जो कहता है मैं उसे पहचानता हूँ और उस की आज्ञाओं  
५ को नहीं पालन करता है सो भूठा है और उस में सच्चाई नहीं है । परन्तु जो  
कोई उस के बचन को पालन करे उस में सचमुच ईश्वर का प्रेम सिद्ध किया  
६ गया है . इस से हम जानते हैं कि हम उस में हैं । जो कहता है मैं उस में  
रहता हूँ उसे उचित है कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चला ॥
- ७ हे भाइयो मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा नहीं लिखता हूँ परन्तु पुरानी आज्ञा  
जो आरंभ से तुम्हारे पास थी . पुरानी आज्ञा वह बचन है जिसे तुम ने आरंभ  
८ से सुना । फिर मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा लिखता हूँ और यह तो उस में और

तुम में सत्य है क्योंकि अंधकार बीता जाता है और सच्चा उजियाला अभी चमकता है । जो कहता है मैं उजियाले में हूँ और अपने भाई से दूर रखता है ९ सो अब लो अंधकार में है । जो अपने भाई को प्यार करता है सो उजियाले में १० रहता है और ठाँकर खाने का कारण उस में नहीं है । पर जो अपने भाई से ११ दूर रखता है सो अंधकार में है और अंधकार में चलता है और नहीं जानता मैं कहाँ जाता हूँ क्योंकि अंधकार ने उस की आंखें अंधी किई हैं ॥

हे बालको मैं तुम्हारे पास लिखता हूँ इस लिये कि तुम्हारे पाप उस के नाम १२ के कारण क्षमा किये गये हैं । हे पितरो मैं तुम्हारे पास लिखता हूँ इस लिये कि १३ तुम उसे जो आदि से है जानते हो . हे जधानो मैं तुम्हारे पास लिखता हूँ इस लिये कि तुम ने उस दुष्ट पर जय किया है . हे लड़को मैं तुम्हारे पास लिखता हूँ इस लिये कि तुम पिता को जानते हो । हे पितरो मैं ने तुम्हारे पास लिखा है १४ इस लिये कि तुम उसे जो आदि से है जानते हो . हे जधानो मैं ने तुम्हारे पास लिखा है इस लिये कि तुम बलवन्त हो और ईश्वर का वचन तुम में रहता है और तुम ने उस दुष्ट पर जय किया है ॥

न तो संसार से न संसार में की वस्तुओं से प्रीति रखो . यदि कोई संसार से १५ प्रीति रखता है तो पिता का प्रेम उस में नहीं है । क्योंकि जो कुछ संसार में है १६ अर्थात् शरीर का अभिलाष और नेत्रों का अभिलाष और जीविका का घमंड सो पिता की ओर से नहीं है परन्तु संसार की ओर से है । और संसार और उस का १७ अभिलाष बीता जाता है परन्तु जो ईश्वर की इच्छा पर चलता है सो सदा लो ठहरता है ॥

हे लड़को यह पिछला समय है और जैसा तुम ने सुना कि खीष्टिरोधी आता १८ है तैसे अब भी बहुत से खीष्टिरोधी हुए हैं जिस से हम जानते हैं कि पिछला समय है । वे हम में से निकल गये परन्तु हम में के नहीं थे क्योंकि जो वे हम में १९ के होते तो हमारे संग रहते परन्तु वे निकल गये जिस्तिं प्रगट होवे कि सब हम में के नहीं हैं । पर तुम्हारा तो उस परमपवित्र से अभियेक हुआ है और तुम सब २० कुछ जानते हो । मैं ने तुम्हारे पास इस लिये नहीं लिखा है कि तुम सत्य को २१ नहीं जानते हो परन्तु इस लिये कि उसे जानते हो और कि कोई झूठ सत्य में से नहीं है । झूठा कौन है केवल यह जो सुकरके कहता है कि यीशु जो है सो खीष्ट २२ नहीं है . यही खीष्टिरोधी है जो पिता से और पुत्र से सुकरता है । जो कोई पुत्र २३ से सुकरता है पिता भी उस का नहीं है . जो पुत्र को मान लेता है पिता भी उस का है ॥

सो जो कुछ तुम ने आरंभ से सुना यह तुम में रहे . जो तुम ने आरंभ से २४ सुना सो यदि तुम में रहे तो तुम भी पुत्र में और पिता में रहोगे । और प्रतिज्ञा २५ जो उस ने हम से किई है यह है अर्थात् अनन्त जीवन । यह घाति मैं ने तुम्हारे २६ पास तुम्हारे भरमानेहारों के विषय में लिखी हैं । और तुम ने जो अभियेक उस से २७ पाया है सो तुम में रहता है और तुम्हें प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखावे परन्तु जैसा यही अभियेक तुम्हें सब घातों के विषय में शिक्षा देता है और सत्य

है और भूट नहीं है और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है तैसे तुम उस में रहो ।  
 २८ और अब हे बालको उस में रहो कि जब वह प्रगट होय तब हमें साहस हो और  
 २९ हम उस के आने पर उस के आगे से लज्जित होके न भावें । जो तुम जानो कि  
 वह धर्मी है तो जानते हो कि जो कोई धर्म का कार्य करता है सो उस से  
 उत्पन्न हुआ है ।

### तीसरा पर्व ।

१ देखो पिता ने हमों पर कैसा प्रेम किया है कि हम ईश्वर के सन्तान कहावें ।  
 २ इस कारण संसार हमें नहीं पहचानता है क्योंकि उस को नहीं पहचाना । हे  
 प्यारे अभी हम ईश्वर के सन्तान हैं और अब लो यह नहीं प्रगट हुआ कि  
 हम क्या होंगे परन्तु जानते हैं कि जो प्रगट होय तो हम उस के समान होंगे  
 ३ क्योंकि उस को जैसा वह है तैसा देखेंगे । और जो कोई उस पर यह आशा  
 ४ रखता है सो जैसा वह पवित्र है तैसा ही अपने को पवित्र करता है । जो कोई  
 पाप करता है सो व्यवस्थालंघन भी करता है और पाप तो व्यवस्थालंघन है ।  
 ५ और तुम जानते हो कि वह तो इस लिये प्रगट हुआ कि हमारे पापों को उठा  
 ६ लेवे और उस में पाप नहीं है । जो कोई उस में रहता है सो पाप नहीं करता  
 है । जो कोई पाप करता है उस ने न उस को देखा है न उस को जाना है ।  
 ७ हे बालको कोई तुम्हें न भरमाये । जैसा वह धर्मी है तैसा वह जो धर्म  
 ८ का कार्य करता है धर्मी है । जो पाप करता है सो शैतान से है क्योंकि शैतान  
 आरंभ से पाप करता है । ईश्वर का पुत्र इसी लिये प्रगट हुआ कि शैतान को  
 ९ कामों को लोप करे । जो कोई ईश्वर से उत्पन्न हुआ है सो पाप नहीं करता है  
 क्योंकि उस का बीज उस में रहता है और वह पाप नहीं कर सकता है क्योंकि  
 १० ईश्वर से उत्पन्न हुआ है । इसी में ईश्वर के सन्तान और शैतान के सन्तान प्रगट  
 होते हैं । जो कोई धर्म का कार्य नहीं करता है सो ईश्वर से नहीं है और  
 ११ न वह जो अपने भाई को प्यार नहीं करता है । क्योंकि यही समाचार है जो  
 १२ तुम ने आरंभ से सुना कि हम एक दूसरे को प्यार करें । ऐसा नहीं जैसा काइन  
 उस दुष्ट से था और अपने भाई को बध किया । और उस को किस कारण बध  
 किया । इस कारण कि उस के अपने कार्य खुरे थे परन्तु उस के भाई के कार्य धर्म  
 १३ के थे । हे मेरे भाइयो यदि संसार तुम से खैर करता है तो अचंभा मत करो ।  
 १४ हम लोग जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होके जीवन में पहुँचे हैं क्योंकि  
 भाइयों को प्यार करते हैं । जो भाई को प्यार नहीं करता है सो मृत्यु में रहता  
 १५ है । जो कोई अपने भाई से खैर रखता है सो मनुष्यघाती है और तुम जानते  
 १६ हो कि किसी मनुष्यघाती में अनन्त जीवन नहीं रहता है । हम इसी में प्रेम  
 को समझते हैं कि उस ने हमारे लिये अपना प्राण दिया और हमें उचित है कि  
 १७ भाइयों के लिये प्राण दें । परन्तु जिस किसी के पास संसार की जीविका हो  
 जो वह अपने भाई को देखे कि उसे प्रयोजन है और उस से अपना अन्तःकरण  
 १८ कटार करे तो उस में क्योंकि ईश्वर का प्रेम रहता है । हे मेरे बालको हम  
 १९ बात से अथवा जीभ से नहीं परन्तु करणी से और सच्चाई से प्रेम करें । और

यह वह बात है जिस की आज्ञा परमेश्वर ने दिई तुम उसे पालन करो और परमेश्वर की महिमा तुम पर प्रगट होगी ॥

और मूसा ने हाथन से कहा कि वेदी पास जा और अपने पाप की भेंट और अपने बलिदान की भेंट चढ़ा और अपने और लोगों के लिये प्रायश्चित्त कर और लोगों की भेंट चढ़ा और उन के लिये प्रायश्चित्त कर जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई ॥

तब हाथन वेदी पास गया और पाप की भेंट का चढ़ा जा अपने लिये या बलि किया । और हाथन के घेरे उस पास लाहू नाये और उस ने अपनी अंगुली लाहू में डुबोई और वेदी के सींगों पर लगाया और लाहू को वेदी की लह पर डाला । और चिकनाई और गुर्दे और कलेजे पर की मिलादी अपराध की भेंट से लेके वेदी पर जलाये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई । और मांस और खाल को छावनी के बाहर आग से जलाया । और उस ने बलिदान की भेंट को बलि किया और हाथन के घेरे ने उसे लाहू दिया और उस ने वेदी के चारों ओर छिड़का । और उन्होंने ने बलिदान की भेंट को उस के डुकड़े और सिर समेत उसे दिये और उन ने वेदी पर जलाये । और उस ने श्रोम को और पांख को भोया और बलिदान की भेंट के मांस यज्ञवेदी के ऊपर जलाया ॥

और वह लोगों की भेंट को लाया और लोगों के पाप की भेंट के लिये वक्रे को लिया और उसे बलि किया और उसे पहिने के समान पाप के लिये चढ़ाया । और उस ने बलिदान की भेंट को लाके उनी रीति के समान चढ़ाया । और विधान के बलिदान की भेंट ने अधिक यह भोजन की भेंट लाया और उससे एक मुट्ठी भर लिया और यज्ञवेदी पर जलाया । और उस ने तेल और सेंडा लोगों के कुण्ड की भेंटों के लिये बलि किया और हाथन के घेरे उस को पास लाहू ले आये जिसे उस ने यज्ञवेदी की चारों ओर छिड़का । और तेल की और सेंडे की चिकनाई और पूंछ और जो श्रोम को छांपती है और गुर्दे को और कलेजे पर की मिलादी को । और उन्होंने ने चिकनाई को हातियों पर रक्खा और उस ने चिकनाई को यज्ञवेदी पर जलाया । और छानियों को और वहिने कांधे को जैसे परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई हाथन ने परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलाया ॥

और हाथन ने लोगों की और अपने पाप उठाये और उन्हें आशीस दिई और पाप की भेंट और बलिदान की भेंट और कुण्ड की भेंट चढ़ाके नीचे उतरा । तब मूसा और हाथन मंडली के तंत्र में गये और बाहर निकलके लोगों को आशीस दिई और सारे लोगों पर परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई ॥

और परमेश्वर के आगे से आग निकली और यज्ञवेदी पर बलिदान की भेंट और चिकनाई को भस्म किया जब सारे लोगों ने देखा तब वे चिल्लाके ओंधे मुंह गिरे ॥

तमयां पद्य ।

और नदय और अथिहू हाथन के घेरे ने अपना अपना धूपपात्र लिया और



१६ का पुत्र है ईश्वर उस में रहता है और वह ईश्वर में । और हमारी ओर जो  
 ईश्वर का प्रेम है उस को हम ने जान लिया है और उस की प्रतीति किई है ।  
 ईश्वर प्रेम है और जो प्रेम में रहता है सो ईश्वर में रहता है और ईश्वर उस  
 १७ में । इसी में प्रेम हमों में सिद्ध किया गया है जिस्तें हमें विचार के दिन में साइस  
 १८ होवे कि जैसा वह है हम भी इस संसार में ऐसे ही हैं । प्रेम में भय नहीं है  
 परन्तु पूरा प्रेम भय को बाहर निकालता है क्योंकि जहां भय तहां दंड है । जो  
 १९ भय करता है सो प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ है । हम उस को प्यार करते हैं क्योंकि  
 २० पहिले उस ने हमें प्यार किया । यदि कोई कहे में ईश्वर को प्यार करता हूं और  
 अपने भाई से दूर रखे तो झूठा है क्योंकि जो अपने भाई को जिसे देखा है प्यार  
 नहीं करता है सो ईश्वर को जिसे नहीं देखा है क्योंकि प्यार कर सकता है ।  
 २१ और उस से यह आज्ञा हमें मिली है कि जो ईश्वर को प्यार करता है सो अपने  
 भाई को भी प्यार करे ॥

### पांचवां पत्र ।

१ जो कोई विश्वास करता है कि यीशु जो है सो खीष्ट है वह ईश्वर से उत्पन्न  
 हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेहार को प्यार करता है सो उसे भी प्यार  
 २ करता है जो उस से उत्पन्न हुआ है । इस से हम जानते हैं कि जय हम ईश्वर  
 को प्यार करते हैं और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं तब ईश्वर के सन्तानों  
 ३ को प्यार करते हैं । क्योंकि ईश्वर का प्रेम यह है कि हम उस की आज्ञाओं को  
 ४ पालन करें और उस की आज्ञाएं भारी नहीं हैं । क्योंकि जो कुछ ईश्वर से उत्पन्न  
 हुआ है सो संसार पर जय करता है और वह जय जिस ने संसार पर जय पाया  
 ५ है यह है अर्थात् हमारा विश्वास । संसार पर जय करनेहारा कौन है केवल वह  
 जो विश्वास करता है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है ॥  
 ६ जो जल और लोहू के द्वारा से आया सो यह है अर्थात् यीशु खीष्ट । यह  
 केवल जल से नहीं परन्तु जल से और लोहू से आया । और आत्मा है जो  
 ७ साक्षी देता है क्योंकि आत्मा सत्य है । क्योंकि तीन हैं जो [स्वर्ग में साक्षी देते  
 ८ हैं पिता और बचन और पवित्र आत्मा और ये तीनों एक हैं । और तीन हैं जो  
 पृथिवी पर] साक्षी देते हैं आत्मा और जल और लोहू और तीनों एक में मिलते  
 ९ हैं । जो हम मनुष्यों की साक्षी को ग्रहण करते हैं तो ईश्वर की साक्षी उस से  
 बड़ी है क्योंकि यह ईश्वर की साक्षी है जो उस ने अपने पुत्र के विषय में दिई  
 १० है । जो ईश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है सो अपने ही में साक्षी रखता है ।  
 जो ईश्वर का विश्वास नहीं करता है उस को झूठा बनाया है क्योंकि उस  
 साक्षी पर विश्वास नहीं किया है जो ईश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दिई  
 ११ है । और साक्षी यह है कि ईश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन  
 १२ उस के पुत्र में है । पुत्र जिस का है उस को जीवन है । ईश्वर का पुत्र जिस  
 १३ का नहीं है उस को जीवन नहीं है । यह बातें मैं ने तुम्हारे पास जो ईश्वर के  
 पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो इस लिये लिखी हैं कि तुम जानो कि तुम  
 को अनन्त जीवन है और जिस्तें तुम ईश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास रखो ॥

इसी में हम जानते हैं कि हम सच्चाई के हैं और उस के आगे अपने अपने मन को समझावेंगे । क्योंकि जो हमारा मन हमें दोग देवे तो जानते हैं कि ईश्वर २० हमारे मन से बड़ा है और सब कुछ जानता है । हे प्यारे जो हमारा मन हमें २१ दोग न देवे तो हमें ईश्वर के सन्मुख साहस है । और हम जो कुछ मांगते हैं २२ उस से पाते हैं क्योंकि उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं और वे ही काम करते हैं जिन से यह प्रसन्न होता है । और उस की आज्ञा यह है कि हम उस २३ के पुत्र यीशु ख्रीष्ट के नाम पर विश्वास करें और जैसा उस ने हमें आज्ञा दी है वैसे एक दूसरे को प्यार करें । और जो उस की आज्ञाओं को पालन करता है २४ सो उस में रहता है और यह उस में और हमी से हम जानते हैं कि यह हमों में रहता है अर्थात् उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है ॥

चौथा पर्व ।

हे प्यारे हर एक आत्मा का विश्वास मत करो परन्तु आत्माओं को परखो १ कि वे ईश्वर की ओर से हैं कि नहीं क्योंकि बहुत भूटे भविष्यवक्ता जगत में निकल आये हैं । इसी से तुम ईश्वर का आत्मा पहचानते हो । हर एक २ आत्मा जो मान लेता है कि यीशु ख्रीष्ट शरीर में आया है ईश्वर की ओर से है । और जो आत्मा नहीं मान लेता है कि यीशु ख्रीष्ट शरीर में आया है ईश्वर ३ की ओर से नहीं है और यही तो ख्रीष्टविरोधी का आत्मा है जिसे तुम ने सुना है कि आता है और अब भी वह जगत में है । हे बालको तुम तो ईश्वर के हो ४ और तुम ने उन पर जय किया है क्योंकि जो तुम में है सो उस से जो संसार में है बड़ा है । वे तो संसार के हैं इस कारण वे संसार की बातें बोलते हैं और ५ संसार उन की सुनता है । हम तो ईश्वर के हैं । जो ईश्वर को जानता है सो हमारी सुनता है । जो ईश्वर का नहीं है सो हमारी नहीं सुनता । इस से हम सच्चाई का आत्मा और शांति का आत्मा पहचानते हैं ॥

हे प्यारे हम एक दूसरे को प्यार करें क्योंकि प्रेम ईश्वर से है और जो कोई ६ प्रेम करता है सो ईश्वर से उत्पन्न हुआ है और ईश्वर को जानता है । जो प्रेम ७ नहीं करता है उस ने ईश्वर को नहीं जाना क्योंकि ईश्वर प्रेम है । इसी में ८ ईश्वर का प्रेम हमारी ओर प्रगट हुआ कि ईश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है जिस्तें हम लोग उस के द्वारा से जीवें । इसी में प्रेम है यह ९ नहीं कि हम ने ईश्वर को प्यार किया परन्तु यह कि उस ने हमें प्यार किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के लिये प्रायश्चित्त होने को भेज दिया । हे प्यारे १० यदि ईश्वर ने इस रीति से हमें प्यार किया तो उचित है कि हम भी एक दूसरे को प्यार करें ॥

किसी ने ईश्वर को कभी नहीं देखा है । जो हम एक दूसरे को प्यार करें १२ तो ईश्वर हम में रहता है और उस का प्रेम हम में सिद्ध किया हुआ है । इसी १३ से हम जानते हैं कि हम उस में रहते हैं और यह हम में कि उस ने अपने आत्मा में से हमें दिया है । और हम ने देखा है और साक्षी देते हैं कि पिता ने पुत्र को १४ भेजा है कि जगत का आणकर्त्ता होवे । जो कोई मान लेता है कि यीशु ईश्वर १५

मृतक की नाई उस के पांखों पास गिर पड़ा और उस ने अपना दहिना हाथ मुझ  
 १८ पर रखके मुझ से कहा मत डर मैं ही पहिला और पिछला और जीवता हूँ । और  
 मैं मूआ था और देख मैं सदा सर्व्वदा जीवता हूँ . आमीन . और मृत्यु और  
 १९ परलोक की कुंजियां मेरे पास हैं । इस लिये जो कुछ तू ने देखा है और जो कुछ  
 २० होता है और जो कुछ इस के पीछे होनेवाला है सो लिख . अर्थात् सात तारों  
 का भेद जो तू ने मेरे दहिने हाथ में देखे और वे सात सोने की दीवटें . सात  
 तारे सातों मंडलियों के दूत हैं और सात दीवट जो तू ने देखीं सातों मंडली हैं ॥

दूसरा पृष्ठ ।

१ इफिस में की मंडली के दूत के पास लिख . जो सातों तारे अपने दहिने  
 हाथ में धरे रहता है जो सातों सोने की दीवटों के बीच में फिरता है सो यही  
 २ कहता है । मैं तेरे कार्यों को और तेरे परिश्रम को और तेरे धीरज को जानता  
 हूँ और यह कि तू घुरे लोगों की नहीं सह सकता है और जो लोग अपने तर्ह  
 ३ प्रेरित कहते हैं पर नहीं हैं उन्हें तू ने परखा और उन्हें झूठे पाया । और तू ने  
 सह लिया और धीरज रखता है और मेरे नाम के कारण परिश्रम किया है और  
 ४ नहीं थक गया है । परन्तु मेरे मन में तेरी ओर यह है कि तू ने अपना पहिला  
 ५ प्रेम छोड़ दिया है । सो चेत कर कि तू कहां से गिरा है और पश्चात्ताप कर  
 और पहिले कार्यों को कर नहीं तो मैं शीघ्र तेरे पास आता हूँ और जो तू  
 ६ पश्चात्ताप न करे तो मैं तेरी दीवट को उस के स्थान से हटा देजंगा । पर तुझे  
 इतना तो है कि तू निकोलावियों के कर्मों से घिन्न करता है जिन से मैं भी  
 ७ घिन्न करता हूँ । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता  
 है . जो जय करे उस को मैं जीवन के वृक्ष में से जो ईश्वर के स्वर्गलोक में है  
 खाने को देजंगा ॥

८ और स्मूर्णा में की मंडली के दूत के पास लिख . जो पहिला और पिछला  
 ९ है जो मूआ था और जी गया सो यही कहता है । मैं तेरे कार्यों को और क्रोध  
 को और दरिद्रता को जानता हूँ तौभी तू धनी है और जो लोग अपने तर्ह  
 यहूदी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु शैतान की सभा हैं उन की निन्दा को जानता  
 १० हूँ । जो दुःख तू भोगेगा उस से कुछ मत डर देख शैतान तुम में से कितनों को  
 बन्दीगृह में डालेगा कि तुम्हारी परीक्षा किई जाय और तुम्हें दस दिन का क्रोध  
 होगा . तू मृत्यु लों विश्वासयोग्य रह और मैं तुम्हें जीवन का मुकुट देजंगा ।  
 ११ जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है . जो जय करे  
 दूसरी मृत्यु से उस की कुछ हानि नहीं होगी ॥

१२ और पर्गाम में की मंडली के दूत के पास लिख . जिस पास खड्ग है जो  
 १३ दोधारा और चौखा है सो यही कहता है । मैं तेरे कार्यों को जानता हूँ और  
 तू कहां वास करता है अर्थात् जहां शैतान का सिंहासन है और तू मेरे नाम को  
 धरे रहता है और मेरे विश्वास से उन दिनों में भी नहीं मुकर गया जिन में  
 अन्तिपा मेरा विश्वासयोग्य साक्षी था जो तुम्हें मैं जहां शैतान वास करता है  
 १४ तहां घात किया गया । परन्तु मेरे मन में तेरी ओर कुछ छोड़ी सी बातें हैं कि

और जो साक्ष्य हम को उस के यहां होता है सो यह है कि जो हम लोग १४  
 उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगें तो वह हमारी सुनता है । और जो हम १५  
 जानते हैं कि जो कुछ हम मांगें वह हमारी सुनता है तो जानते हैं कि मांगी  
 हुई वस्तु जो हम ने उस से मांगी हैं हमें मिली हैं । यदि कोई अपने भाई को १६  
 ऐसा पाप करते देखे जो मृत्युजनक पाप नहीं है तो वह विनती करेगा और जो पाप  
 मृत्युजनक नहीं है ऐसा पाप करनेवालों के लिये वह उसे जीवित देगा । मृत्युजनक  
 पाप भी होता है उस के विषय में मैं नहीं कहता हूं कि वह मांगे । सब अधर्म १७  
 पाप है और ऐसा पाप भी है जो मृत्युजनक नहीं है ॥

हम जानते हैं कि जो कोई ईश्वर से उत्पन्न हुआ है सो पाप नहीं करता है १८  
 परन्तु जो ईश्वर से उत्पन्न हुआ सो अपने तर्जें बचा रखता है और वह दुष्ट उसे  
 नहीं छूता है । हम जानते हैं कि हम ईश्वर से हैं और सारा संसार उस दुष्ट के १९  
 वश में पड़ा है । और हम जानते हैं कि ईश्वर का पुत्र आया है और हमें खुष्टि २०  
 दिई है कि हम सब्बे को पहचानें और हम उस सब्बे में उस के पुत्र यीशु ख्रीष्ट में  
 रहते हैं । यह तो सब्बा ईश्वर और अनन्त जीवन है । हे बालको अपने तर्जें २१  
 मूरतों से बचाओ । आमीन ॥

## योहान प्रेरित की दूसरी पत्री ।

प्राचीन पुन्य चुनो हुई कुरिया को और उस के लड़कों को जिल्ले में सच्चाई १  
 में प्यार करता हूं । और केवल मैं नहीं परन्तु सब लोग भी जो सच्चाई को जानते २  
 हैं उस सच्चाई के कारण प्यार करते हैं जो हमों में रहती है और हमारे साथ  
 सदा लों रहेगी । अनुग्रह और दया और शांति ईश्वर पिता की ओर से और पिता ३  
 के पुत्र प्रभु यीशु ख्रीष्ट की ओर से सच्चाई और प्रेम के द्वारा आप लोगों के  
 संग लाय ॥

मैं ने बहुत आनन्द किया कि आप के लड़कों में से मैं ने कितनों को जैसे ४  
 हम ने पिता से आज्ञा पाई तैसे ही सच्चाई पर चलते हुए पाया है । और अब ये ५  
 कुरिया में जैसा नई आज्ञा लिखता हुआ तैसा नहीं परन्तु जो आज्ञा हमें आरंभ  
 से मिली उसी को आप के पास लिखता हुआ आप से विनती करता हूं कि हम  
 एक दूसरे को प्यार करें । और प्यार यही है कि हम उस की आज्ञाओं के अनुसार ६  
 चलें । यही आज्ञा है जैसी तुम ने आरंभ से सुनी जिल्ला तुम उस पर चलो ।  
 क्योंकि बहुत भरमानेवाले जगत में आये हैं जो नहीं मान लेते हैं कि यीशु ख्रीष्ट ७  
 शरीर में आया । यह भरमानेवाला और ख्रीष्टविरोधी है । अपने विषय में चौकस ८  
 रहिये कि जो कर्म हम ने किये उन्हें न खोयें परन्तु पूरा फल पायें । जो कोई ९

आ पडूंगा और तू कुछ नहीं जानेगा कि मैं कौन सी घड़ी तुझ पर आ पडूंगा ।  
 ४ परन्तु तेरे पास सार्दी में भी थोड़े से नाम हैं जिन्होंने अपना अपना वस्त्र अशुद्ध  
 ५ नहीं किया और वे उजला पहिने हुए मेरे संग फिरंगे क्योंकि वे योग्य हैं । जो  
 जय करे उसे उजला वस्त्र पहिनाया जायगा और मैं उस का नाम जीवन के  
 पुस्तक में से किसी रीति से न मिटाऊंगा पर उस का नाम अपने पिता के आगे  
 ६ और उस के दूतों के आगे मान लेऊंगा । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा  
 मंडलियों से क्या कहता है ॥

७ और फिलादेलफिया में की मंडली के दूत के पास लिख . जो पाँचवा है जो  
 सत्य है जिस पास दाऊद की कुंजी है जो खोलता है और कोई बन्द नहीं करता  
 ८ और बन्द करता है और कोई नहीं खोलता सो यही कहता है । मैं तेरे कार्यों को  
 जानता हूँ . देख मैं ने तेरे आगे खुला हुआ द्वार रख दिया है जिसे कोई नहीं  
 बन्द कर सकता है क्योंकि तेरा सामग्री थोड़ा सा है और तू ने मेरे बचन को  
 ९ पालन किया है और मेरे नाम से नहीं सुकर गया है । देख मैं जैतान की सभा  
 में से अर्थात् जो लोग अपने तर्हें पिट्टी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु झूठ  
 बोलते हैं उन में से कितनों को सोंप देता हूँ देख मैं उन से ऐसा कहूँगा कि वे  
 आके तेरे पाँचों के आगे प्रणाम करेंगे और जान लेंगे कि मैं ने तुझे प्यार किया है ।  
 १० तू ने मेरे धीरज के बचन को पालन किया इस लिये मैं भी तुझे उस परीक्षा के  
 समय से बचा रखूँगा जो सारे संसार पर आनेवाला है कि पृथिवी के निवासियों  
 ११ को परीक्षा करे । देख मैं शीघ्र आता हूँ . जो तेरे पास है उसे धरे रह कि कोई  
 १२ तेरा सुकुट न ले ले । जो जय करे उसे मैं अपने ईश्वर के मन्दिर में खंभा बना-  
 ऊँगा और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा और मैं अपने ईश्वर का नाम और  
 अपने ईश्वर के नगर का नाम अर्थात् नई यरूशलीम का जो स्वर्ग में से मेरे  
 १३ ईश्वर के पास से उतरती है और अपना नया नाम उस पर लिखूँगा । जिस का  
 कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है ॥

१४ और लाओदिकेया में की मंडली के दूत के पास लिख . जो आमीन है जो  
 विश्वासयोग्य और सच्चा साक्षी है जो ईश्वर की सृष्टि का आदि है सो यही  
 १५ कहता है । मैं तेरे कार्यों को जानता हूँ कि तू न ठंठा है न तप्त है . मैं चाहता  
 १६ हूँ कि तू ठंठा अथवा तप्त होता । सो इस लिये कि तू गुनगुना है और न ठंठा  
 १७ न तप्त है मैं तुझे अपने मुँह में से उगल डालूँगा । तू जो कहता है कि मैं धनी  
 हूँ और धनवान हुआ हूँ और मुझे किसी वस्तु का प्रयोजन नहीं है और नहीं जानता  
 १८ है कि तू ही दीनहीन और अभागा है और कंगाल और अन्धा और नंगा है . इसी  
 लिये मैं तुझे परामर्श देता हूँ कि आग से ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले  
 जिस्ते तू धनवान होय और उजला वस्त्र जिस्ते तू पहिन लेवे और तेरी नंगई  
 की लज्जा न प्रगट किई जाय और अपनी आँखों पर लगाने के लिये अंजन ले  
 १९ जिस्ते तू देखे । मैं जिन जिन लोगों को प्यार करता हूँ उन का उलहना और  
 २० ताड़ना करता हूँ इस लिये उद्योगी हो और पश्चात्ताप कर । देख मैं द्वार पर  
 खड़ा हुआ खटखटाता हूँ . यदि कोई मेरा शब्द सुनके द्वार खोले तो मैं उस

वहां तेरे पास कितने हैं जो बलाम की शिक्षा को धारण करते हैं जिस ने बालाक को शिक्षा दी है कि इस्रायेल के सन्तानों के आगे ठोकर का कारण डाले जिस्ते ये मूर्ति के आगे के बलिदान खायें और व्यभिचार करें । वैसे ही तेरे पास १५ भी कितने हैं जो निकोलावियों की शिक्षा को धारण करते हैं जिस बात से मैं विवृण्ण करता हूं । पश्चात्ताप कर नहीं तो मैं शीघ्र तेरे पास आता हूं और अपने १६ मुख के खड्ग से उन को साथ लड़ूंगा । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा १७ मंडलियों से क्या कहता है । जो जय करे उस को मैं गुप्त मन्ना में से खाने को देऊंगा और उस को एक श्वेत पत्थर देऊंगा और उस पत्थर पर एक नया नाम लिखा हुआ है जिसे कोई नहीं जानता है केवल वह जो उसे पाता है ।

और युआतीरा में की मंडली के दूत के पास लिख , ईश्वर का पुत्र जिस के १८ नेत्र आग्नि की ज्वाला की नाईं और उस के पांव उत्तम पीतल के समान हैं यही कहता है । मैं तेरे कार्यों को और प्रेम को और मेवकाई को और विश्वास को १९ और तेरे धीरज को जानता हूं और यह कि तेरे पिछले कार्य पहिलों से अधिक हैं । परन्तु मेरे मन में तेरी और यह है कि तू उस स्त्री इजिप्टल को जो अपने २० तईं भविष्यद्वक्त्री कहती है मेरे दासों को मिथाने और भरमाने देता है जिस्ते ये व्यभिचार करें और मूर्ति के आगे के बलिदान खायें । और मैं ने उस को समय २१ दिया कि यह पश्चात्ताप करे पर यह अपने व्यभिचार से पश्चात्ताप करने नहीं चाहती है । देख मैं उसे खाट पर डालता हूं और जो उस के संग व्यभिचार करते २२ हैं जो ये अपने कर्मों से पश्चात्ताप न करें तो बड़े क्रोध में डालूंगा । और मैं उस २३ के लड़कों को मार डालूंगा और सब मंडलियां जानेंगीं कि मैं ही हूं जो लंक को और दृष्टियों को जांचता हूं और मैं तुम में से हर एक को तुम्हारे कर्मों के अनुसार देऊंगा । पर मैं तुम्हों से अर्थात् युआतीरा में की और और लोगों से २४ जितने इस शिक्षा को नहीं रखते हैं और जिन्होंने ने गैतान की गंभीर बातों को जैसा वे कहते हैं नहीं जाना है कहता हूं कि मैं तुम पर और कुछ भार न डालूंगा । परन्तु जो तुम्हारे पास है उसे जय लो मैं न आऊँ तब लो धरे रहो । और जो जय २५ करे और मेरे कार्यों को अन्त लो पालन करे उस को मैं अन्यदेशियों पर अधिकार देऊंगा । और जैसा मैं ने अपने पिता से पाया है तैसा वह भी लोहो का दंड लेके २६ उन को धरयाही करेगा जैसे मिट्टी के वर्तन चूर किये जाते हैं । और मैं उसे २७ भार का तारा देऊंगा । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से २८ क्या कहता है ।

### तीसरा पथ्य ।

और सार्दा में की मंडली के दूत के पास लिख , जिस पास ईश्वर के सातों १ आत्मा हैं और सातों तारे सो यही कहता है । मैं तेरे कार्यों को जानता हूं कि तू जीने का नाम रखता है और मृतक है । जाग उठ और जो रह गया है और २ मरा चाहता है उसे स्थिर कर क्योंकि मैं ने तेरे कार्यों को ईश्वर के आगे पूर्ण नहीं पाया है । सो चेत कर कि तू ने कैसा ग्रहण किया और मुना है और उसे ३ पालन करके पश्चात्ताप कर , सो जो तू न जागो तो मैं चार की नाईं तुझ पर



- ५ अथवा उसे देखने के योग्य कोई नहीं मिला । और प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा मत रो देख वह सिंह जो यहूदा के कुल में से है जो दाऊद का मूल है पुस्तक खोलने और उस की सात क़ापें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है ।
- ६ और मैं ने दृष्टि किई और देखो सिंहासन के और चारों प्राणियों के बीच में और प्राचीनों के बीच में एक मेम्रा जैसा बध किया हुआ खड़ा है जिस के सात सींग और सात नेत्र हैं जो सारी पृथिवी में भेजे हुए ईश्वर के सातों आत्मा हैं ।
- ७ और उस ने आके वह पुस्तक सिंहासन पर बैठनेहारे के दहिने हाथ से ले लिया ।
- ८ और जब उस ने पुस्तक लिया तब चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन मेम्रे के आगे गिर पड़े और हर एक के पास बीण थी और धूप से भरे हुए सोने के पिपासे
- ९ जो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं । और वे नया गीत गाते हैं कि तू पुस्तक लेने और उस की क़ापें खोलने के योग्य है क्योंकि तू बध किया गया और तू ने अपने लोहू से हमें हर एक कुल और भाया और लोग और देश में से ईश्वर के लिये
- १० मेल लिया । और हमें हमारे ईश्वर के यहां राजा और याजक बनाया और हम
- ११ पृथिवी पर राज्य करेंगे । और मैं ने दृष्टि किई और सिंहासन की और प्राणियों की और प्राचीनों की चहुंओर बहुत दूतों का शब्द सुना और वे गिन्ती में लाखों
- १२ लाख और सहस्रों सहस्र थे । और वे बड़े शब्द से कहते थे मेम्रा जो बध किया गया सामर्थ्य और धन और बुद्धि और शक्ति और आदर और महिमा और धन्य-
- १३ वाद लेने के योग्य है । और हर एक सृजी हुई वस्तु को जो स्वर्ग में और पृथिवी पर और पृथिवी के नीचे और समुद्र पर है और सब कुछ जो उन में है मैं ने कहते सुना कि उस का जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्रे का धन्यवाद और आदर और
- १४ महिमा और पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे । और चारों प्राणी आमीन बोले और चौबीसों प्राचीनों ने गिरके उस को जो सदा सर्व्वदा जीवता है प्रणाम किया ।

कठवां पर्व्व ।

- १ और जब मेम्रे ने क़ापों में से एक को खोला तब मैं ने दृष्टि किई और चारों प्राणियों में से एक को जैसे मेघ गर्जने के शब्द को यह कहते सुना कि आ और
- २ देख । और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक श्वेत घोड़ा है और जो उस पर बैठा है उस पास धनुष है और उसे मुकुट दिया गया और वह जय करता हुआ और जय करने को निकला ।
- ३ और जब उस ने दूसरी क़ाप खोली तब मैं ने दूसरे प्राणी को यह कहते सुना
- ४ कि आ और देख । और दूसरा घोड़ा जो लाल था निकला और जो उस पर बैठा था उस को यह दिया गया कि पृथिवी पर से मेल उठा देवे और कि लोग एक दूसरे को बध करें और एक बड़ा खड्ग उस को दिया गया ।
- ५ और जब उस ने तीसरी क़ाप खोली तब मैं ने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना कि आ और देख । और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक काला घोड़ा है
- ६ और जो उस पर बैठा है सो अपने हाथ में तुला लिये हुए है । और मैं ने चारों प्राणियों के बीच में से एक शब्द यह कहते सुना कि सूकी का सेर भर गोहूँ और सूकी का तीन सेर जव और तेल और दाख रस की हानि न करना ।

पाम भीतर आऊंगा और उस के संग बियारी खाऊंगा और वह मेरे संग ग्यायगा ।  
जो जय करे उसे मैं अपने संग अपने सिंहासन पर बैठने देऊंगा जैसा मैं ने भी २१  
जय किया और अपने पिता के संग उस के सिंहासन पर बैठा । जिस का कान २२  
हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है ॥

### चौथा पर्व ।

हम के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखो स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है और १  
वह पहिला शब्द जो मैं ने सुना अर्थात् मेरे संग बात करनेवाली तुरही का सा  
शब्द यह कहता है कि इधर ऊपर आ और मैं यह बातें जिन का इस पीछे पूरा  
होना अवश्य है तुम्हे दिखाऊंगा । और तुरन्त मैं आत्मा में हुआ और देखो एक २  
सिंहासन स्वर्ग में धरा था और सिंहासन पर एक बैठा है । और जो बैठा है सो ३  
देखने में सूर्यकान्त मणि और माणिक्य की नाईं है और सिंहासन की चहुंओर  
मेघधनुष है जो देखने में सरजन की नाईं है । और उस सिंहासन की चहुंओर ४  
चाँदीस सिंहासन हैं और इन सिंहासनों पर मैं ने चाँदीस प्राचीनों को बैठे देखा  
जो उजला वस्त्र पहिने हुए और अपने अपने मिर पर सोने के मुकुट दिये हुए  
थे । और सिंहासन से से बिजलियां और गर्जन और शब्द निकलते हैं और सात ५  
अग्निदीपक सिंहासन के आगे जलते हैं जो ईश्वर के सातों आत्मा हैं । और ६  
सिंहासन के आगे कांच का समुद्र है जो स्फटिक की नाईं है और सिंहासन के  
धीच में और सिंहासन के आसपास चार प्राणी हैं जो आगे और पीछे नेत्रों से भरे  
हैं । और पहिला प्राणी सिंह के समान और दूसरा प्राणी बरुड के समान है ७  
और तीसरे प्राणी को मनुष्य का सा मुँह है और चौथा प्राणी बड़ते हुए शिष्ट  
के समान है । और चारों प्राणियों ने से एक एक को छः छः पंख हैं ८  
और चहुंओर और भीतर वे नेत्रों से भरे हैं और वे रात दिन बिग्राम न लेके  
कहते हैं पवित्र पवित्र पवित्र परमेश्वर ईश्वर मध्यशक्तिमान जो था और जो है  
और जो आनेवाला है । और जय जय वे प्राणी उस की जो सिंहासन पर बैठा ९  
है जो सदा सत्यंदा जीवता है सदिमा और आदर और धन्यवाद करते हैं . तब १०  
तब चाँदीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के आगे मिर पड़ते हैं और उस  
को जो सदा सत्यंदा जीवता है प्रणाम करते हैं और अपने अपने मुकुट सिंहासन  
के आगे डालके कहते हैं . हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तू सदिमा और आदर और ११  
सामर्थ्य लेने के योग्य है क्योंकि तू ने सब वस्तु सृजी और तेरी इच्छा के कारण  
वे हुई और सृजी गईं ॥

### पाँचवां पर्व ।

और मैं ने सिंहासन पर बैठनेवाले के दहिने हाथ में एक पुस्तक देखा जो १  
भीतर और पीठ पर लिखा हुआ था और सात छापो से उस पर छाप दिई हुई  
थी । और मैं ने एक पराक्रमी दूत को देखा कि बड़े शब्द से प्रचार करता है २  
यह पुस्तक खोलने और उस की छापें तोड़ने के योग्य कौन है । और न स्वर्ग ३  
में न पृथिवी पर न पृथिवी के नीचे कोई यह पुस्तक खोलने अथवा उसे देखने  
सकता था । और मैं बहुत रोने लगा इस लिये कि पुस्तक खोलने और पढ़ने ४

चारह सहस्र पर . लेवी के कुल में से चारह सहस्र पर . इस्साखर के कुल में से  
८ चारह सहस्र पर । जिखूलून के कुल में से चारह सहस्र पर . यूसफ के कुल में से  
चारह सहस्र पर . बिन्यामीन के कुल में से चारह सहस्र पर काप दिई गई ।

९ इस के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखो सब देशों और कुलों और लोगों और  
भाषाओं में से बहुत लोग जिन्हें कोई नहीं गिन सकता था सिंहासन के आगे  
और मेम्मे के आगे खड़े हैं जो उजले वस्त्र पहिने हुए और अपने अपने हाथ में  
१० खजूर के पत्ते लिये हुए हैं । और वे बड़े शब्द से पुकारके कहते हैं त्राण के लिये  
११ हमारे ईश्वर की जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्मे की जय जय होय । और  
सब दूतगण सिंहासन की और प्राचीनों की और चारों प्राणियों की सहजोर खड़े  
हुए और सिंहासन के आगे अपने अपने मुंह के बल गिरे और ईश्वर को प्रणाम  
१२ किया . और बोले आमीन . हमारे ईश्वर का धन्यवाद और महिमा और बुद्धि  
और प्रशंसा और आदर और सामर्थ्य और पराक्रम सदा सर्वदा रहे . आमीन ॥

१३ इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा ये जो उजले वस्त्र पहिने हुए हैं  
१४ कौन हैं और कहाँ से आये । मैं ने उस से कहा हे प्रभु आप ही जानते हैं . वह  
मुझ से बोला ये वे हैं जो बड़े क्लेश में से आते हैं और अपने अपने वस्त्र को  
१५ मेम्मे के लोहू में धोके उजला किया । इस कारण वे ईश्वर के सिंहासन के आगे  
हैं और उस के मन्दिर में रात और दिन उस की सेवा करते हैं और सिंहासन पर  
१६ बैठनेहारा उन के ऊपर डेरा देगा । वे फिर भूखे न होंगे और न फिर प्यासे होंगे  
१७ और न उन पर धूप न कोई तपन पड़ेगी । क्योंकि मेम्मा जो सिंहासन के बीच में  
है उन की चरवाही करेगा और उन्हें जल के जीवते सोतों पर लिया ले जायगा  
और ईश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा ॥

आठवां पर्व ।

१ और जब उस ने सातवीं काप खोली तब स्वर्ग में आध घड़ी के अटकल  
२ निःशब्दता हो गई । और मैं ने उन सात दूतों को जो ईश्वर के आगे खड़े  
३ रहते हैं देखा और उन्हें सात तुरही दिई गई । और दूसरा दूत आके वेदी के  
निकट खड़ा हुआ जिस पास सोने की धूपदानी थी और उस को बहुत धूप दिया  
गया जिस्तें वह उस को सोने की वेदी पर जो सिंहासन के आगे है सब पवित्र लोगों  
४ की प्रार्थनाओं के संग मिलावे । और धूप का धूआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं  
५ के संग दूत के हाथ में से ईश्वर के आगे चढ़ गया । और दूत ने वह धूपदानी  
लेके उस में वेदी की आग भरके उसे पृथिवी पर डाला और शब्द और गर्जन  
६ और बिजलियां और मुईंडोल हुए । और उन सात दूतों ने जिन पास सातों  
तुरहियां थीं फूंकने को अपने तईं तैयार किया ॥

७ पहिले दूत ने तुरही फूंकी और लोहू से मिले हुए आले और आग हुए और  
वे पृथिवी पर डाले गये और पृथिवी की एक तिहाई जल गई और पेड़ों की  
एक तिहाई जल गई और सब हरी घास जल गई ॥

८ और दूसरे दूत ने तुरही फूंकी और आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ सा  
९ कुछ समुद्र में डाला गया और समुद्र की एक तिहाई लोहू हो गई । और समुद्र

और जब उस ने चौथी छाप खोली तब मैं ने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते ७  
सुना कि आ और देख । और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक पीला सा घोड़ा ८  
है और जो उस पर बैठा है उस का नाम मृत्यु है और परलोक उस के संग हो  
लेता है और उन्हें पृथिवी की एक चौथाई पर अधिकार दिया गया कि खड्ग से  
और अकाल से और मरी से और पृथिवी के वनपशुओं के द्वारा से मार डालें ।

और जब उस ने पांचवीं छाप खोली तब जो लोग ईश्वर के वचन के कारण ९  
और उस मात्मी के कारण जो इन के पास थी बध किये गये थे उन के प्राणों  
को मैं ने वेदी के नीचे देखा । और वे बड़े शब्द से पुकारते थे कि हे स्वामी १०  
पवित्र और सत्य कब लों तू न्याय नहीं करता है और पृथिवी के नियामियों से  
हमारे लोहू का पलटा नहीं लेता है । और हर एक को उजला वस्त्र दिया गया ११  
और उन ने कहा गया कि जब लों तुम्हारे संगी दास भी और तुम्हारे भाई  
जो तुम्हारी नाईं बध किये जाने पर हैं पूरे न हों तब लों और थोड़ी बेर  
व्रियाम करो ।

और जब उस ने छठवीं छाप खोली तब मैं ने दृष्टि किई और देखो बड़ा भुईं- १२  
डाल हुआ और सूर्य कमल की नाईं काला हुआ और चांद लोहू की नाईं हुआ ।  
और जैसे बड़ी बयार से दिलाये जाने पर गूलर के वृक्ष से उस के कच्चे गूलर झड़ते १३  
हैं तैसे आकाश के तारे पृथिवी पर गिर पड़े । और आकाश पत्र की नाईं जो १४  
लपेटा जाता है अलग हो गया और सब पर्वत और टापू अपने अपने स्थान से  
हट गये । और पृथिवी के राजाओं और प्रधानों और धनवानों और सदसपतियों और १५  
सामर्थी लोगों ने और हर एक दास ने और हर एक निर्वन्ध ने अपने अपने को  
खोहों में और पर्वतों के पत्थरों के बीच में छिपाया . और पर्वतों और पत्थरों १६  
से बोले हम पर गिरो और हमें सिंहासन पर बैठनेहारे के सन्मुख से और मेम्मे के  
क्रोध से छिपाओ । क्योंकि उस के क्रोध का बड़ा दिन आ पहुँचा है और कौन १७  
ठहर सकता है ॥

### सातवां पृष्ठ ।

और इस के पीछे मैं ने चार दूतों को देखा कि पृथिवी के चारों कोनों पर १  
खड़े हो पृथिवी की चारों बयारों को शांति हैं जिस्तें बयार पृथिवी पर अथवा  
समुद्र पर अथवा किसी पेड़ पर न बहे । और मैं ने दूसरे दूत को सूर्योदय के स्थान २  
से चढ़ते देखा जिस पास जीवते ईश्वर की छाप थी और उस ने बड़े शब्द से  
उन चार दूतों से जिन्हें पृथिवी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया  
गया पुकारके कहा . जब लों हम अपने ईश्वर के दासों के साथ पर छाप न दें ३  
तब लों पृथिवी की अथवा समुद्र की अथवा पेड़ों की हानि मत करो । और जिन ४  
पर छाप दिई गई मैं ने उन को संख्या सुनी . इसायेल के सन्तानों के समस्त कुल  
में से एक लाख चवालीस सदस पर छाप दिई गई । यिहूदा के कुल में से बारह सदस ५  
पर छाप दिई गई . रुवेन के कुल में से बारह सदस पर . गाद के कुल में से बारह  
सदस पर । आशेर के कुल में से बारह सदस पर . नप्ताली के कुल में से बारह ६  
सदस पर . मनस्सी के कुल में से बारह सदस पर । शिमियोन के कुल में से ७

उस में आग, भरके उस पर धूप रखवा और परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाई  
 २ जिसे परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा नहीं दी थी । तब परमेश्वर की ओर से आग  
 ३ निकली और उन्हें भस्म किया और वे परमेश्वर के आगे मर गये । तब मूसा ने  
 हारून से कहा कि यह वह है जो परमेश्वर ने कहा था कि जो जो मेरे पास  
 आवें मैं उन से पवित्र किया जाऊंगा और मैं सारे लोगों के आगे महिमा पाऊंगा  
 ४ तब हारून चुप हो रहा । तब मूसा ने हारून के चाचा उज्जिएल के बेटों  
 मीसाएल और इलजाफान को बुलाया और उन से कहा कि पास आओ अपने  
 ५ भाइयों को पवित्र स्थान के सामने से छावनी के बाहर उठा ले जाओ । सो  
 वे पास आये और उन्हें उन के सूती कपड़ों में उठाके छावनी के बाहर ले गये  
 जैसा मूसा ने कहा था ॥

६ फिर मूसा ने हारून और उस के बेटों इलिअजर और ईतमर को कहा कि  
 अपने सिर को मत उधारे और अपने कपड़े मत फाड़ो न हो कि मर जाओ और  
 सारी मंडली पर कोप पड़े परन्तु तुम्हारे भाई इसराएल के घराने उस ज्वलन के  
 ७ लिये बिलाप करें जिसे परमेश्वर ने वारा है । और तुम मंडली के तंबू के द्वार से  
 बाहर न जाओ जिसमें न हो कि मर जाओ क्योंकि परमेश्वर के अभिप्रेत का  
 तेल तुम पर है सो उन्होंने ने मूसा के कहने के समान किया ॥

८ फिर परमेश्वर कहके हारून से बोला । कि जब तुम मंडली के तंबू में प्रवेश  
 करो तो न तू न तेरे संग तेरे बेटे दाखरस अथवा तीक्ष्ण मदिरा पीजियो जिस  
 १० में नाश न हो यह सनातन के लिये तुम्हारी पीढ़ियों में बिधि है । और जिसमें  
 ११ तुम पावन और अपावन और शुद्ध और अशुद्ध में व्यवहार करो । और जिसमें  
 तुम सारी बिधि जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा उन्हें आज्ञा की है इसराएल के  
 संतानों को सिखाओ ॥

१२ और मूसा ने हारून और उस के बेटों इलिअजर और ईतमर से जो बचे थे  
 कहा कि वह भोजन की भेंट जो परमेश्वर की आग की भेंटों में से बच रही है  
 लेओ और उसे यज्ञवेदी के पास बिना खमीर से खाओ क्योंकि वह अत्यंत पवित्र  
 १३ है । और उसे पवित्र स्थान में खाओ क्योंकि परमेश्वर की आग की भेंटों में से  
 १४ तेरा और तेरे बेटों का यह भाग है क्योंकि मुझे योंही आज्ञा हुई है । और  
 हिलाने की छाती और उठाने के कांधे को किसी पवित्र स्थान में तू और तेरे पुत्र  
 और तेरी पुत्रियां तेरे साथ खावें क्योंकि यह तेरा और तेरे पुत्रों का भाग है जो  
 १५ इसराएल के संतानों के कुशल के बलिदानों में से दिया जाता है । वे उठाने का  
 कांधा और हिलाने की छाती उन चिकनाई की भेंटों के साथ जो आग से चढ़ाई  
 जाती हैं लावें जिसमें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट हिलाई जावे और यह  
 तेरे और तेरे बेटों के लिये तेरे संग सनातन की बिधि होगी जैसा कि परमेश्वर  
 ने कहा है ॥

१६ और मूसा ने पाप की भेंट की बकरी को बहुत ठूँड़ा तो क्या देखता है कि  
 वह जल गई तब उस ने हारून के बचे हुए बेटों इलिअजर और ईतमर पर  
 १७ रिसियाके कहा । कि तुम ने पाप की भेंट को क्यों नहीं पवित्र स्थान में खाया

में की मृत्ती हुई वस्तुओं की एक तिहाई जिन्हें जीय या मर गई और बहालों की एक तिहाई नाश हुई ॥

और तीसरे दूत ने तुरही फूँकी और एक बड़ा तारा जो मशाल की नाई १० जलता था सूर्य से गिरा और नदियों की एक तिहाई पर और जल के स्रोतों पर पड़ा । और उस तारे का नाम नगदौना कहावता है और एक तिहाई जल ११ नगदौना भा हो गया और बहुतों के मनुष्य उस जल के कारण मर गये क्योंकि यह कहावता किया गया ।

और चौथे दूत ने तुरही फूँकी और सूर्य की एक तिहाई और चाँद की एक १२ तिहाई और तारों की एक तिहाई मारी गई कि उन की एक तिहाई अधियारी हो जाय और दिन की एक तिहाई सों दिन प्रकाश न होय और ऐसे ही रात ।

और मैं ने दृष्टि किए और एक दूत की मुनी जो आकाश के बीच में से उड़ता १३ हुआ बड़े शब्द से कहता था कि जो तीन दूत फूँकने पर हैं उन की तुरही के शब्दों के कारण जो रह गये हैं पृथिवी के नियामियों पर सन्ताप सन्ताप सन्ताप होगा ।  
नयां पद्य ।

और पाँचवें दूत ने तुरही फूँकी और मैं ने एक तारे को देखा जो सूर्य में १ से पृथिवी पर गिरा हुआ था और अथाह कुंड के कूप की कुंजी उस को दिई गई । और उस ने अथाह कुंड का कूप खोला और कूप में से बड़ी भट्टी के धूप २ की नाई धूँआं उठा और सूर्य और आकाश कूप के धूप से अधियारे हुए । और उस धूप में से टिट्टियां पृथिवी पर निकल गईं और जैसा पृथिवी के ३ चिच्छूओं को अधिकार होता है तैसा उन्हें अधिकार दिया गया । और उन से ४ कहा गया कि न पृथिवी की घास की न किसी हरियाली की न किसी पेड़ की हानि करो परन्तु केवल उन मनुष्यों की जिन के माथे पर ईश्वर की छाप नहीं है । और उन्हें यह दिया गया कि ये उन्हें मार न डालें परन्तु पाँच मास उन्हें पीड़ा ५ दिई जाय और चिच्छू जय मनुष्य का मारता है तब उस की पीड़ा जैसी होती है तैसी ही उन की पीड़ा थी । और उन दिनों में ये मनुष्य मृत्यु को हँडेंगे और ६ उसे न पावेंगे और मरने की अभिलाषा करेंगे और मृत्यु उन से भागेगी । और ७ उन टिट्टियों के आकार युद्ध के नियो तैयार किये हुए घोड़ों के समान थे और उन के सिरों पर जैसे मुकुट थे जो सेने की नाई थे और उन के मुँह मनुष्यों के मुँह के ऐसे थे । और उन्हें स्त्रियों के दान की नाई बाल था और उन के दांत ८ सिंघों के से थे । और उन्हें लोहे की किलम की नाई किलम थी और उन के ९ पंखों का शब्द बहुत घोड़ों के रथों के शब्द के ऐसा था जो युद्ध को दौड़ते हैं । और उन्हें पूँछें थीं जो चिच्छूओं के समान थीं और उन की पूँछों में डंक थे और १० पाँच मास मनुष्यों को दुःख देने का उन्हें अधिकार था । और उन पर एक राजा ११ है अर्थात् अथाह कुंड का दूत जिस का नाम इज्जीय भाषा में अथदोन है और यूनानीय में उस का नाम अपोलुओन है । पीड़ला सन्ताप दीत गया है देखा इस १२ पीके दो सन्ताप और आते हैं ।



१३ और कूठें दूत ने तुरही फूँकी और जो सोने की खेदी ईश्वर के आगे है उस  
 १४ के चारों सींगों में से मैं ने एक शब्द सुना . जो कूठें दूत से जिस पास तुरही  
 १५ थी वोला उन चार दूतों को जो खड़ी नदी फुरात पर खन्धे हैं खोल दे । और वे  
 चार दूत खोल दिये गये जो उस घड़ी और दिन और मास और बरस के लिये  
 १६ तैयार किये गये थे कि वे मनुष्यों की एक तिहाई को मार डालें । और घुड़घड़ों की  
 १७ सेनाओं की संख्या बीस करोड़ थी और मैं ने उन की संख्या सुनी । और मैं ने दर्शन  
 में उन घोड़ों को यूँ देखा और उन्हें जो उन पर चढ़े हुए थे कि उन्हें आग की सी  
 और धूम्रकान्त की सी और गन्धक की सी मिलम है और घोड़ों के सिर सिंघों के सिरों  
 १८ की नाई हैं और उन के मुँह में से आग और धूआँ और गन्धक निकलते हैं । इन  
 तीनों से अर्थात् आग से और धूँए से और गन्धक से जो उन के मुँह से निकलते हैं  
 १९ मनुष्यों की एक तिहाई मार डाली गई । क्योंकि घोड़ों का सामर्थ्य उन के मुँह में  
 और उन की पूँकों में है क्योंकि उन की पूँकें साँपों के समान हैं कि उन के सिर होते  
 २० हैं और इन से वे दुःख देते हैं । और जो मनुष्य रह गये जो इन विपत्तियों में नहीं मार  
 डाले गये उन्हें ने अपने हाथों के कार्यों से पश्चात्ताप भी नहीं किया जितने भूतों  
 की और सोने और चाँदी और पीतल और प्रत्थर और काठ की मूर्तों की पूजा न  
 २१ करें जो न देखने न सुनने न फिरने सकती हैं । और न उन्हें ने अपनी नरहिंसाओं से  
 न अपने टोनों से न अपने व्यवहार से न अपनी खोरियों से पश्चात्ताप किया ।

दसवां पृष्ठ ।

१ और मैं ने दूसरे पराक्रमी दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जो मेघ को मोढ़े था  
 और उस के सिर पर मेघधनुष था और उस का मुँह सूर्य की नाई और उस के पाँव  
 २ आग के खंभों के ऐसे थे । और वह एक छोटी पोथी खुली हुई अपने हाथ में लिये  
 ३ था और उस ने अपना दहिना पाँव समुद्र पर और बायाँ पृथिवी पर रखा . और जैसा  
 सिंह गर्जता है तैसा बड़े शब्द से पुकारा और जब उस ने पुकारा तब सात मेघ गर्जनों  
 ४ ने अपने अपने शब्द उच्चारण किये । और जब उन सात गर्जनों ने अपने अपने शब्द  
 उच्चारण किये तब मैं लिखने पर था और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो मुझ से  
 बोला जो आते उन सात गर्जनों ने कहीं उन पर काप दे और उन्हें मत लिख ।  
 ५ और उस दूत ने जिसे मैं ने समुद्र पर और पृथिवी पर खड़े देखा अपना हाथ  
 ६ स्वर्ग की ओर उठाया . और जो सदा सर्व्वदा जीवता है जिस ने स्वर्ग और जो  
 कुछ उस में है और पृथिवी और जो कुछ उस में है और समुद्र और जो कुछ उस  
 ७ में है सृजा उसी की किरिया खाई कि अब तो बिलम्ब न होगा . परन्तु सातवें  
 दूत के शब्द के दिनों में जब वह तुरही फूँकने पर होय तब ईश्वर का भेद पूरा  
 हो जायगा जैसा उस ने अपने दासों को अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं को इस का  
 सुसमाचार सुनाया ॥

८ और जो शब्द मैं ने स्वर्ग से सुना था वह फिर मेरे संग बात करने लगा  
 और बोला जो दूत समुद्र पर और पृथिवी पर खड़ा है उस के हाथ में की  
 ९ खुली हुई छोटी पोथी ले ले । और मैं ने दूत के पास जाके उस से कहा वह  
 छोटी पोथी मुझे दीजिये . और उस ने मुझे से कहा उसे लेके खा जा और वह

तेरे घेठ को कहवा करेगी यस्तु तेरे मुंह में मधु भी मीठी लगेगी । और मैं ने १०  
 छोटी पोछी दूत के हाथ से ले लिये और उसे खा गया और वह मेरे मुंह में  
 मधु भी मीठी लगी और अब मैं ने उसे खायो था तब मेरा घेठ कहवा हुआ ।  
 और वह मुझ से बोला तुम्हें फिर लोगो और देगो और भाषाओं और बहुत ११  
 राजाओं के विषय में भविष्यवाणी कहना होगा ॥

मगारहथां पृष्ठ ।

और लोगों के समान एक नरकट मुझे दिया गया और कहा गया कि उठ १  
 ईश्वर के मन्दिर को और वेदी को और उस में के भजन करनेहारों को नाप ।  
 और मन्दिर के बाहर के आगम को बाहर रख और उसे मत नाप क्योंकि २  
 यह अन्यदेशियों को दिया गया है और ये व्यालीस मास लों प्रविष्ट नगर को  
 रेंदेंगे । और मैं अपने दो साक्षियों को यह देखंगा कि टाट पकने हुए एक सप्स ३  
 दो सौ साठ दिन भविष्यवाणी कहा करें । पेही ये दो जलपाई के वृक्ष और दो ४  
 दीपक हैं जो पृथिवी के प्रभु के मनुष्य रहते हैं । और यदि कोई उन को ५  
 दुःख दिया चाहे तो आरा उन के मुंह में निकलती है और उन के शत्रुओं को  
 मरम करती है और यदि कोई उन को दुःख दिया चाहे तो अथर्व है कि यह ६  
 इस रीति से मार डाला जाय । इन्हे अधिकार है कि आकाश को घन्य करें ७  
 जितने उन की भविष्यवाणी के दिनों में संह न यरसे और उन्हे सत्र जल पर  
 अधिकार है कि उसे लोह बनाये और जय जय चाहे तब तब पृथिवी को हर ८  
 प्रकार की विपत्ति से मारे । और तब ये अपनी साक्षी के चुर्कें तब यह पशु ९  
 जो अष्टाष्ट कुंड में से उठगा है उन से युद्ध करेगा और उन्हे जीतेगा और उन्हे  
 मार डालेगा । और उन की लोचें उस बड़े नगर की सड़क पर पड़ी रहेंगी जो १०  
 आत्मिक रीति से मदेम और मिसर कहायता है जहां उन को प्रभु भी क्रुश पर  
 खड़ाया गया । और तब लोगो और कुलो और भाषाओं और देगो में से लोग ११  
 उन की लोचें साढ़े तीन दिन लों देखेंगे और उन की लोचें कयरीं में गयी जाने  
 न देंगे । और पृथिवी के नियामी उन पर आनन्द करेंगे और मगन होंगे और एक १२  
 दूसरे के पास बैठ बैठेंगे क्योंकि इन दो भविष्यवाणी के नियामियों  
 को पीड़ा दिखे थी । और साढ़े तीन दिन के पीछे ईश्वर की ओर से जीवन के १३  
 आत्मा ने उन में प्रवेश किया और ये अपने पांयों पर खड़े हुए और उन के देखने-  
 हारों को बड़ा हर लगा । और उन्हीं ने स्वर्ग से बड़ा शब्द सुना जो उन में १४  
 बोला ऊपर ऊपर आओ और वे मेघ में स्वर्ग पर चढ़ गये और उन के शत्रुओं  
 ने उन्हे देखा । और उसी घड़ी बड़ा भुँडोल हुआ और नगर का दमघों अंग १५  
 गिर पड़ा और उस भुँडोल में सात सप्स मनुष्य मारे गये और जो रह गये सो  
 भयमान हुए और स्वर्ग के ईश्वर का गुणानुवाद किया । दूसरा सन्ताप दीत गया १६  
 है देखो तीसरा सन्ताप शीघ्र आता है ॥

और सातवें दूत ने सुरही फूँकी और स्वर्ग में बड़े बड़े शब्द हुए कि जगत का १७  
 राज्य हमारे प्रभु का और उस के अभिषिक्त जन का हुआ है और यह सदा  
 मज्जदा राज्य करेगा । और चाओसां प्राचीन जो ईश्वर के मनुष्य अपने अपने १८

सिंहासन पर बैठते हैं अपने अपने मुँह के बल गिरे और ईश्वर को प्रणाम करके  
 १७ बोले, हे परमेश्वर ईश्वर सर्वशक्तिमान जो है और जो था और जो बानेवाला  
 है हम तेरा धन्य मानते हैं कि तू ने अपना बड़ा सामर्थ्य लेके राज्य किया है ।  
 १८ और अन्यदेशी लोग क्रुद्ध हुए और तेरा क्रोध आ पड़ा और मृतकों का समय  
 पहुँचा कि उन का विचार किया जाय और कि तू अपने दासों अर्थात् भविष्यद-  
 क्ताओं को और पवित्र लोगों को और कोटों और बड़ों को जो तेरे नाम से डरते  
 १९ हैं प्रतिफल देवे और पृथिवी के नाश करनेहारों को नाश करे । और स्वर्ग  
 में ईश्वर का मन्दिर खोला गया और उस के नियम का सन्दूक उस के मन्दिर में  
 दिखाई दिया और विजलियाँ और शब्द और गर्जन और भुँडोल हुए और बड़े  
 आले-पड़े ।

### चारहथां पठ्य ।

- १ और एक बड़ा आश्चर्य स्वर्ग में दिखाई दिया अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य  
 पहिने है और चाँद उस के पाँवों तले है और उस के सिर पर चारह तारों का
- २ मुकुट है । और वह गर्भवती होके चिल्लाती है क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी
- ३ है और वह जनने को पीड़ित है । और दूसरा आश्चर्य स्वर्ग में दिखाई दिया  
 और देखो एक बड़ा लाल अजगर है जिस के सात सिर और दस सींग हैं और
- ४ उस के सिरों पर सात राजमुकुट हैं । और उस की पूँछ ने आकाश के तारों की  
 एक तिहाई को खींचके उन्हे पृथिवी पर डाला और वह अजगर उस स्त्री के
- ५ साम्हने जो जना चाहती थी खड़ा हुआ इस लिये कि जब वह जने तब उस  
 के बालक को खा जाय । और वह एक घेटा जनी जो लोहे का दंड लेके सब
- ६ देशों के लोगों की चरवाही करने पर है और उस का बालक ईश्वर के पास
- ७ और उस के सिंहासन के पास उठा लिया गया । और वह स्त्री जंगल को भाग  
 गई जहाँ उस का एक स्थान है जो ईश्वर से तैयार किया गया है जिस्ते वे उसे
- ८ वहाँ एक सहस्र दो सौ साठ दिन लें पालें ।
- ९ और स्वर्ग में युद्ध हुआ मीखायेल और उस के दूत अजगर से लड़े और अज-  
 १० गर और उस के दूत लड़े । और प्रबल न हुए और स्वर्ग में उन्हें जगह और न
- ११ मिली । और वह बड़ा अजगर गिराया गया हाँ वह प्राचीन साँप जो दियाबल  
 और शैतान कहावता है जो सारे संसार का भरसानेहारा है पृथिवी पर गिराया
- १२ गया और उस के दूत उस के संग गिराये गये । और मैं ने एक बड़ा शब्द सुना  
 जो स्वर्ग में बोला अभी हमारे ईश्वर का आण औ पराक्रम औ राज्य और उस
- के अभिषिक्त जन का अधिकार हुआ है क्योंकि हमारे भाइयों का दोषदायक  
 जो शत दिन हमारे ईश्वर के आगे उन पर दोष लगाता था गिराया गया है ।
- १३ और उन्होंने ने मेमे के लोहू के कारण और अपनी सत्ती के बचन के कारण उस
- १४ पर अय किया और उन्होंने ने मृत्यु लें अपने प्राणों को प्रिय न जाना । इस कारण
- से हे स्वर्ग और उस में आस करनेहारो आनन्द करो । हाय पृथिवी और समुद्र  
 के निवासियो क्योंकि शैतान तुम पास उतरा है और यह जानके कि मेरा समय  
 थोड़ा है बड़ा क्रोध किये है ।

और जब अजगर ने देखा कि मैं पृथिवी पर गिराया गया हूँ तब उस ने उस १३  
स्त्री को जो वह पुरुष जनी थी सताया । और वह गिद्ध के दो पंख स्त्री को १४  
दिये गये इस लिये कि वह जंगल को अपने स्थान को चढ़ जाय जहाँ वह एक  
समय और दो समय और आधे समय लो साँप की दृष्टि में छिपी हुई पाली जाती  
है । और साँप ने अपने मुँह में से स्त्री के पीछे नदी की नाईं जल बहाया कि १५  
उसे नदी में बहा देवे । और पृथिवी ने स्त्री का उपकार किया और पृथिवी ने १६  
अपना मुँह खोलके उस नदी को जो अजगर ने अपने मुँह में से बहाई थी पी  
लिया । और अजगर स्त्री से क्रुद्ध हुआ और उस के वंश के जो लोग रह गये १७  
जो ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने और योग्य स्त्री की साक्षी रखते हैं उन  
से युद्ध करने को चला गया ।

तिरहयां पर्व ।

और मैं समुद्र के बालू पर खड़ा हुआ और एक पशु को समुद्र में से उठते १  
देखा जिस के सात सिर और दस भोंगे थे और उस के भोंगों पर दस राजमुकुट  
और उस के सिरों पर ईश्वर की निन्दा का नाम । और जो पशु मैं ने देखा ना २  
चीते की नाईं था और उस के पाँच भालू के से थे और उस का मुँह सिंह के  
मुँह के ऐसा था और अजगर ने अपना मामर्त्य और अपना मिहानन और बड़ा  
अधिकार उस को दिया । और मैं ने उस के सिरों में से एक को देखा मानो ऐसा ३  
घायल किया गया है कि मरने पर है फिर उस का प्राणहारक घाव चंगा किया  
गया और मारी पृथिवी के लोग उस पशु के पीछे अचंभा करते गये । और उन्हीं ४  
ने अजगर की पूजा की कि जिस ने पशु को अधिकार दिया और पशु की पूजा किन्हीं  
और कहा इस पशु के समान कौन है . कौन उस से लड़ सकता है । और उस ५  
को बड़ी बड़ी धार्त और निन्दा की धार्त बोलनेवाला मुँह दिया गया और  
बपालीस मास लों युद्ध करने का अधिकार उसे दिया गया । और उस ने ईश्वर ६  
के क्रुद्ध निन्दा करने को अपना मुँह खोला कि उस के नाम की और उस को  
तन्त्र की और स्वर्ग में धाम करनेवालों की निन्दा करे । और उस को यह दिया ७  
गया कि पवित्र लोगों से युद्ध करे और उन पर जय करे और हर एक कुल और  
भाषा और देश पर उस का अधिकार दिया गया । और पृथिवी के सब निवासियों ८  
लोग जिन के नाम जगत की उत्पत्ति से बंध किये हुए मेम्रे के जीवन के पुस्तक  
में नहीं लिखे गये हैं उस की पूजा करेंगे । यदि किसी का कान होय तो सुने । ९  
यदि कोई बन्धुओं को घेर लेता है तो वही बन्धुवाई में जाता है यदि कोई १०  
खड्ग से मार डाले तो अवश्य है कि वही खड्ग से मार डाला जाय . यही पवित्र  
लोगों का धीरज और विश्वास है ॥

और मैं ने दूसरे पशु को पृथिवी में से उठते देखा और उसे मेम्रे की नाईं देा ११  
भोंगे थे और वह अजगर की नाईं बोलता था । और वह उस पहिले पशु के १२  
सन्मुख उस का सारा अधिकार रखता है और पृथिवी से और उस के निवासियों  
से उस पहिले पशु की जिस का प्राणहारक घाव चंगा किया गया पूजा करवाता  
है । और वह बड़े बड़े आश्चर्य्य कर्म करता है यहाँ लों कि मनुष्यों के सामने स्वर्ग १३

१४ में से पृथिवी पर आग भी उतारता है । और उन आश्वर्य्य कर्मों के कारण जिन्हें पशु के सम्मुख करने का अधिकार उसे दिया गया वह पृथिवी के निवासियों को भरमाता है और पृथिवी के निवासियों से कहता है कि जिस पशु को १५ खट्वा का घाव लगा और वह जी गया उस के लिये मूर्ति बनाओ । और उस को यह दिया गया कि पशु की मूर्ति को प्राण देवे जिस्त पशु की मूर्ति बात भी १६ करे और जितने लोग पशु की मूर्ति की पूजा न करें उन्हें मार डलवावे । और कोटे और बड़े और धनी और कंगाल और निर्वन्ध और दास सब लोगों से वह ऐसा करता है कि उन के दहिने हाथ पर अथवा उन के माथे पर एक हाथ १७ दिया जाय । और कि कोई मोल लेने अथवा बेचने न सके केवल वह जो यह १८ हाथ अथवा पशु का नाम अथवा उस के नाम की संख्या रखता हो । यही ज्ञान है । जिसे छुट्टि होय सो पशु की संख्या की जोड़ती करे क्योंकि वह मनुष्य की सी संख्या है और उस की संख्या कः सो कियासठ है ।

चौदहवां पृष्ठ ।

१ और मैं ने दृष्टि किई और देखो मेमा सियोन पर्वत पर खड़ा है और उस के संग एक लाख चत्वारसीस सहस्र जन जिन के माथे पर उस का नाम और उस २ के पिता का नाम लिखा है । और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो बहुत जल के शब्द के ऐसा और बड़े गर्जन के शब्द के ऐसा था और वह शब्द जो मैं ने ३ सुना चीख बजानेहारों का सा था जो अपनी अपनी चीख बजाते हैं । और वे सिंहासन के आगे और चारों प्राणियों के और प्राचीनों के आगे जैसा एक नया गीत गाते हैं और वह गीत कोई नहीं सीख सकता था केवल वे एक लाख ४ चत्वारसीस सहस्र जन जो पृथिवी से मोल लिये गये थे । ये थे हैं जो स्त्रियों के संग अशुद्ध न हुए क्योंकि वे कुमार हैं । ये थे हैं कि जहां कहीं मेमा जाता है वे उस के पीछे हो लेते हैं । ये तो ईश्वर के और मेमे के लिये एक पहिला फल ५ मनुष्यों में से मोल लिये गये । और उन के मुंह में झूठ नहीं पाया गया क्योंकि वे ईश्वर के सिंहासन के आगे निर्दोष हैं ।

६ और मैं ने दूसरे दूत को आकाश के बीच में से उड़ते देखा जिस पास सनातन सुसमाचार था कि वह पृथिवी के निवासियों को और हर एक देश और ७ कुल और भाषा और लोग को सुसमाचार सुनावे । और वह बड़े शब्द से बोला था कि ईश्वर से डरो और उस का गुणानुवाद करो क्योंकि उस के विचार करने का समय पहुंचा है और जिस ने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और जल के सेते बनाये उस को प्रणाम करो ।

८ और दूसरा दूत यह कहता हुआ पीछे हो लिया कि गिर गई बाबुल वह बड़ी नगरी गिर गई है क्योंकि उस ने सब देशों के लोगों को अपने व्यवहार के कारण जो कोप होता है तिस की मदिरा पिलाई है ।

९ और तीसरा दूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ उन के पीछे हो लिया कि यदि कोई उस पशु की और उस की मूर्ति की पूजा करे और अपने माथे पर १० अथवा अपने हाथ पर हाथ लेवे . तो वह भी ईश्वर के कोप की मदिरा जो

उस के क्रोध के कटोरे में निराली ठाली गई है पीयूषा और पवित्र द्रुता के  
साम्ने और मेरे के साम्ने आग और गन्धक में पीड़ित किया जायगा । और ११  
उन की पीड़ा का धूआं सदा सर्वदा उठता है और न दिन न रात थियाम उन  
को है जो पशु की और उस की मूर्ति की पूजा करते हैं और जो कोई उस के  
नाम का ज्ञापन लेता है । यही पवित्र लोगों का धीरज है जो ईश्वर की १२  
आज्ञाओं को और योग के थियाम को पालन करते हैं ।

और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो मुझ से बोला यह लिय कि अब से १३  
जो प्रभु मैं करते हैं सो मृतक धन्य हैं । आत्मा कहता है हाँ कि वे अपने परिचय  
से थियाम करेंगे परन्तु उन के कार्य उन के संग हो लेते हैं ।

और मैं ने दृष्टि किई और देखा एक उज्जना मेघ है और उस मेघ पर मनुष्य १४  
के पुत्र के समान एक बैठा है जो अपने मिर पर सोने का मुकुट और अपने  
हाथ में चाँया हंभुआ लिये हुए है । और दूसरा दूत मन्दिर में से निकला और १५  
यह शब्द से पुकारके उस से जो मेघ पर बैठा था बोला अपना हंभुआ लगाके  
लयनी कर क्योंकि तेरे लिये लयने का समय पहुँचा है इस लिये कि पृथिवी की  
मैगी पक चुकी है । और जो मेघ पर बैठा था उस ने पृथिवी पर अपना हंभुआ १६  
लगाया और पृथिवी की लयनी किई गई ॥

और दूसरा दूत स्वर्ग में के मन्दिर में से निकला और उस पास भी चाँया १७  
हंभुआ था । और दूसरा दूत जिसे आग पर अधिकार था वेदी में से निकला और १८  
जिन पास चाँया हंभुआ था उस में बहुत पुकारकर बोला अपना चाँया हंभुआ  
लगा और पृथिवी की दाख लता के गुच्छे काट ले क्योंकि उस के दाख पक  
गये हैं । और दूत ने पृथिवी पर अपना हंभुआ लगाया और पृथिवी की दाख १९  
लता का फल काट लिया और उसे ईश्वर के कोष के यह रस के कुँड में डाला ।  
और रस के कुँड का रौदन नगर के बाहर किया गया और रस के कुँड में से २०  
घोड़ों की लगाम तक लाह एक सौ कोश तक यह निकला ॥

पन्द्रहवां पद्य ।

और मैं ने स्वर्ग में दूसरा एक चिन्ह देखा और अद्भुत देखा अर्थात् सात दूत १  
जिन के पास सात विपत्ति थीं जो पिछली थीं क्योंकि उन में ईश्वर का कोष  
पूरा किया गया ॥

और मैं ने जैसा एक आग से मिले हुए काँच के समुद्र को और पशु पर और २  
उस की मूर्ति पर और उस के छाये पर और उस के नाम की संख्या पर जय  
करनेवालों को उस काँच के समुद्र के निकट ईश्वर की योग्य लिये हुए यह देखा ।  
और वे ईश्वर के दास भूमा का गीत और मेरे का गीत गाते हैं कि हे सर्व- ३  
शक्तिमान ईश्वर परमेश्वर तेरे कार्य यह और अद्भुत हैं । हे पवित्र लोगों के  
राजा तेरे मार्ग यथार्थ और सच्चे हैं । हे परमेश्वर कौन तुझ से नहीं डरेगा और ४  
तेरे नाम की स्तुति नहीं करेगा । क्योंकि केवल तू ही पवित्र है और सब देशों  
के लोग आके तेरे आगे प्रणाम करेंगे क्योंकि तेरे विचार प्रगट किये गये हैं ॥

और इस के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखा स्वर्ग में साक्षी के तम्यू का ५



६ मन्दिर खोला गया । और सातों दूत जिन पास सातों छिपते थीं गुह्य और चमकता हुआ अस्त्र पहिने हुए और क्रांती पर सुनदले पटुके बांधे हुए मन्दिर में से निकले ।  
 ७ और चारों प्राणियों में से एक ने उन सात दूतों को ईश्वर के जो सदा सर्वदा  
 ८ जीवता है कोप से भरे हुए सात सेने के पियाले दिये । और ईश्वर की महिमा से और उस के सामर्थ्य से मन्दिर धूँए से भर गया और जब लों उन सात दूतों की सातों छिपते समाप्त न हुई तब लों कोई मन्दिर में प्रवेश न कर सका ।

सोलहवां पटल ।

- १ और मैं ने मन्दिर में से एक बड़ा शब्द सुना जो उन सात दूतों से बोला जाओ और ईश्वर के कोप के सात पियाले पृथिवी पर उंडेला ।  
 २ और पहिले ने जाके अपना पियाला पृथिवी पर उंडेला और उन मनुष्यों को जिन पर पशु का क्रापा था और जो उस की मूर्ति की पूजा करते थे बुरा और दुःखदाई घाव हुआ ।  
 ३ और दूसरे दूत ने अपना पियाला समुद्र पर उंडेला और वह मृतक का सा लोहू हो गया और समुद्र में हर एक जीवता प्राणी मर गया ।  
 ४ और तीसरे दूत ने अपना पियाला नदियों पर और जल के सातों पर उंडेला और वे लोहू हो गये । और मैं ने जल के दूत को यह कहते सुना कि हे परमेश्वर जो है और जो था और जो पवित्र है तू धर्मी है कि तू ने यह न्याय किया है ।  
 ५ क्योंकि उन्होंने ने पवित्र लोगों और भविष्यद्वक्ताओं का लोहू बहाया और तू ने उन्हें लोहू पीने को दिया है क्योंकि वे इस योग्य हैं । और मैं ने वेदी में से यह शब्द सुना कि हां हे सर्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर तेरे विचार सच्चे और यथार्थ हैं ।  
 ६ और चौथे दूत ने अपना पियाला सूर्य पर उंडेला और मनुष्यों को आग से झुलसाने का अधिकार उसे दिया गया । और मनुष्य बड़ी तपन से झुलसाये गये और ईश्वर के नाम की निन्दा किई जिसे इन छिपतों पर अधिकार है और उस का गुणानुवाद करने के लिये पश्चात्ताप न किया ।  
 ७ और पाँचवें दूत ने अपना पियाला पशु के सिंहासन पर उंडेला और उस का राज्य अधियारा हो गया और लोगों ने क्लेश के सारे अपनी अपनी जीभ चबाई ।  
 ८ और उन्होंने ने अपने क्लेशों के कारण और अपने घावों के कारण स्वर्ग के ईश्वर की निन्दा किई और अपने अपने कर्मों से पश्चात्ताप न किया ।  
 ९ और छठवें दूत ने अपना पियाला बड़ी नदी फुरात पर उंडेला और उस का जल सूख गया जिस्ती सूर्योदय की दिशा के राजाओं का मार्ग तैयार किया जाय ।  
 १० और मैं ने अजगर के मुँह में से और पशु के मुँह में से और झूठे भविष्यद्वक्ता के मुँह में से निकले हुए तीन अशुद्ध आत्माओं को देखा जो मेंडकों की नाईं थे ।  
 ११ क्योंकि वे भूतों के आत्मा हैं जो आश्चर्य कर्म करते हैं और जो सारे संसार के राजाओं के पास जाते हैं कि उन्हें सर्वशक्तिमान ईश्वर के उस बड़े दिन ।  
 १२ गुह्य के लिये एकट्ठे करें । देखो मैं चोर की नाईं आता हूँ । धन्य वह जो आगत रहे और अपने अस्त्र की रक्षा करे जिस्ती वह नंगा न फिरे और लोग उस के

लज्जा न देखें । और उन्हें ने उन्हें उस स्थान पर गकट्टे किया जो इन्दीय भाषा १६ में हर्मगिटो कहावता है ॥

और मातृव दृत ने अपना पिपाना आकाश में उड़ोला और सूर्य के मन्दिर में १७ से अर्थात् सिंहासन से एक बड़ा शब्द निकला कि हो तुका । और शब्द और १८ गर्जन और विज्रिन्तियां हुईं और बड़ा सुईडोल हुआ ऐसा कि जय से मनुष्य पृथिवी पर हुए तब से वैसा और बनना बड़ा सुईडोल न हुआ । और वह बड़ा नगर १९ तीन खंड हो गया और देश देश के नगर गिर पड़े और ईश्वर ने बड़ी वायुल को स्मरण किया कि अपने क्रोध को जलजलाइठ को मदिरा का कटोरा उसे देवे । और हर एक टापू भाग गया और कोई पर्यंत न मिले । और बड़े ओले जैसे २० मन मन भरके सूर्य में मनुष्यों पर पड़े और ओलों की विपत्ति के कारण मनुष्यों ने ईश्वर की निन्दा किई क्योंकि उस से निपट बड़ी विपत्ति हुई ॥

सचदयां पर्व ।

और जिन मातृवृत्तों के पाम ये मातृ पिपाने ये उन में से एक ने आके मेरे १ संग यात कर मुझ में कहा था मैं तुम्हें उस बड़ी वेण्या का दंड दिखालंगा जो बहुत जल पर बँधी है । जिस के संग पृथिवी के राजाओं ने व्यवहार किया है २ और पृथिवी के निवासी लोग उस के व्यवहार की मदिरा से मतवाले हुए हैं । और वह आत्मा मैं मुझे जंगल में ले गया और मैं ने एक स्त्री को देखा कि ३ लाल पशु पर बँधी थी जो ईश्वर की निन्दा के नामों से भरा था और जिस के मातृ मिर और दस सींग थे । और वह स्त्री बँझनी और लाल वस्त्र पहिने थी ४ और सोने और बहुमूल्य पत्थर और मोतियों से विभूषित थी और उस के हाथ में एक सोने का कटोरा था जो ध्वनिित वस्तुओं से और उस के व्यवहार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा था । और उस के साथे पर एक नाम लिखा था अर्थात् भेद । ५ बड़ी वायुल . पृथिवी का वेण्याओं और ध्वनिित वस्तुओं को माता । और मैं ने ६ उस स्त्री का पथिव लोहों के लोहू से और योशु के मात्तियों के लोहू से मतवाली देखी और उसे देखके मैं ने बड़ा आश्चर्य करके अचंभा किया ॥

और दृत ने मुझ से कहा तू ने क्यों अचंभा किया . मैं स्त्री का और उस पशु ७ का भेद जो उस का वाहन है जिस के मातृ मिर और दस सींग हैं तुम्हें से कहूंगा । जो पशु तू ने देखा सो था और नहीं है और अघाट कुंड में से उठने ८ और विनाश को पहुँचने पर है और पृथिवी के निवासी लोग जिन के नाम जगत की उत्पत्ति से जीवन के पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं पशु को देखके कि वह था और नहीं है और आवेशा अचंभा करेंगे । यही वह मन है जिसे युद्धि है . ९ वे मातृ मिर मातृ पर्यंत हैं जिन पर स्त्री बँधी है । और मातृ राजा हैं पांच १० गिर गये हैं और एक है और दूसरा अब लों नहीं आया है और जय आवेशा तब उसे घाटी घेर रहने होगा । और वह पशु जो था और नहीं है आप भी ११ आठवां है और सातों में से है और विनाश को पहुँचता है । और जो दस सींग १२ तू ने देखे सो दस राजा हैं जिन्होंने ने अथ लों राज्य नहीं पाया है परन्तु पशु के संग एक बड़ी राजाओं की नाई अधिकार पाते हैं । इन्हीं का एक ही परामर्श १३

१४ है और वे अपना अपना सामर्थ्य और अधिकार पशु को देंगे । ये तो मेरे से युद्ध करेंगे और मेरा उन पर जय करेगा क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है और जो उस के संग हैं सो खुलाये हुए और चुने हुए और विश्वास-  
 १५ योग्य हैं । फिर मुझ से बोला जो जल तू ने देखा जहां वेश्या बैठी है सो  
 १६ बहुत बहुत लोग और देश और भाषा हैं । और वे दस सौंग जो तू ने देखे और पशु पेटी वेश्या से वैर करेंगे और उसे उजाड़ेंगे और नंगी करेंगे  
 १७ और उस का मांस खायेंगे और उसे आग में जलायेंगे । क्योंकि ईश्वर ने उन के मन में यह दिया है कि वे उस का परामर्श पूरा करें और एक परामर्श रखें और जय लें ईश्वर के बचन पूरे न होयें तब लें अपना अपना राज्य  
 १८ पशु को देंगे । और जो स्त्री तू ने देखी सो वह यही नगरी है जो पृथिवी के राजाओं पर राज्य करती है ।

अठारहवां पर्व ।

१ और इस के पीछे मैं ने एक दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिस का बड़ा  
 २ अधिकार था और पृथिवी उस के तेज से प्रकाशमान हुई । और उस ने पराक्रम से बड़े शब्द से पुकारा कि गिर गई यही बाधुल गिर गई है और भूतों का निवास और हर एक अशुद्ध आत्मा का बन्दीगृह और हर एक अशुद्ध और घिनित  
 ३ पंखी का पिंजरा हुई है । क्योंकि सब देशों के लोगों ने उस के व्यवहार के कारण जो कोप होता है तिस की मदिरा पीई है और पृथिवी के राजाओं ने उस के संग व्यवहार किया है और पृथिवी के व्यापारी लोग उस के सुखिलास की बहुताई से धनधान हुए हैं ।  
 ४ और मैं ने स्वर्ग से दूसरा शब्द सुना कि हे मेरे लोगो उस में से निकल आओ कि तुम उस के पापों में भागी न होओ और कि उस की विपत्तों में से कुछ तुम पर  
 ५ पड़े । क्योंकि उस के पाप स्वर्ग लों पहुंचे हैं और ईश्वर ने उस के कुकर्मा के स्मरण किया है । जैसा उस ने तुम्हें दिया है तैसा उस को भर देओ और उस के कर्मों के अनुसार दूना उसे दे देओ । जिस कटोरे में उस ने भर दिया उस  
 ६ में उस के लिये दूना भर देओ । जितनी उस ने अपनी बड़ाई किई और सुखिलास किया उतनी उस को पीड़ा और शोक देओ क्योंकि वह अपने मन कहती है मैं राणी हो बैठी हूं और विधवा नहीं हूं और शोक किसी रीति  
 ७ से न देखूंगी । इस कारण एक ही दिन में उस की विपत्तें आ पड़ेंगी अर्थात् मृत्यु और शोक और अकाल और वह आग में जलाई जायगी क्योंकि  
 ८ परमेश्वर ईश्वर जो उस का विचारकर्ता है शक्तिमान है । और पृथिवी के राजा लोग जिन्होंने उस के संग व्यवहार और सुख खिलास किया जो उस के जलने का धूआं देखेंगे तब उस के लिये रोयेंगे और क्रांती पीटेंगे  
 ९ और उस की पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े हो कहेंगे हाय हाय हे बड़े नगरी बाधुल हे दृढ़ नगरी कि एक ही घड़ी में तेरा विचार आ पड़ा है । और पृथिवी के व्यापारी लोग उस पर रोयेंगे और कलपेंगे क्योंकि अब तो कोई उ  
 १० के जहाजों की बहाई नहीं मोल लेगा । अर्थात् सोने और रुपये और बहुमूल

है क्योंकि वह अत्यंत पवित्र है और तुम्हें दिया गया है जिसमें तुम संडलों का पाप उठा लेओ और उन के लिये परमेश्वर के आगे प्रार्थित करो । देखा उस १८ का लोह पवित्र स्थान के भीतर न पहुंचाया गया अथवा या तुम उसे पवित्र स्थान में खाते जैसा मैं ने आज्ञा किई है । तब दावून ने मूसा से कहा कि देख्य आज १९ ही उन्होंने ने अपने पाप की भेंट और अपने बलिदान की भेंट परमेश्वर के आगे चढ़ाई है और मुझ पर ऐसी बर्तन होती यदि मैं पाप की भेंट आज खाता तो क्या परमेश्वर की दृष्टि में ग्राह्य होता । और मूसा ने वह मुझको मान लिया ॥ २०

ग्यारहवां पद्य ।

और परमेश्वर मूसा और दावून से कहके आता । कि तुम इसराएल के १ संतानों से कहो कि ममल पशुन में से जो पृथिवी पर हैं इन पशुन को खाइयो । पशुन में से जिन का खुर विभाग हो और जिन का पांच चौरा हुआ हो और ३ जो पागुर करते हैं उन्हें खाइयो । तथापि उन में से उन्हें न खाइयो जो पागुर ४ करते हैं अथवा जिन का खुर विभाग हो दंत को क्योंकि यह पागुर करता है परन्तु उस का खुर विभाग नहीं है वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है । और साफन व्यो- ५ कि यह पागुर करता है परन्तु उस का खुर विभाग नहीं वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है । और खरहा इस कारण कि यह पागुर करता है परन्तु उस का खुर विभाग ६ नहीं है वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है । और मूथर यद्यपि उन का खुर विभाग है ७ और उस का पांच चौरा तथापि यह पागुर नहीं करता यह तुम्हारे लिये अशुद्ध है । तुम उन के सांस में से न खाइयो और उन की नाथों को न कूटो वे ८ तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

सभों में से जो पानियों में हैं वे खाइयो पानियों में जिन किसी के पंख और ९ छिलके हैं समुद्रों में और नदियों में तुम उन्हें खाइयो । और समुद्रों में और १० नदियों में के मय जिन के पंख और छिलके नहीं हैं उन सभों में से जो पानियों में चलते हैं और मय जीवधारियों में से जो पानियों में हैं वह तुम्हारे लिये धिनित ११ होंगे । और वे तुम्हारे लिये धिनित होंगे तुम उन के सांस में से न खाओ परन्तु १२ उन की नाथ को धिनित समुझो । पानियों में जिन के पंख और छिलके नहीं हैं १३ वे मय तुम्हारे लिये धिनित होंगे ॥

और पक्षियों में से तुम उन्हें धिनित समुझो वे खाये न जायें वे धिनित हैं १४ गरुल और हट्कोड़ और कुमल । और गिद्ध और भाँति भाँति की चीन्हा । भाँति १५ भाँति के काग । और शतुरमुग और तम्वमस और कोकिल और भाँति भाँति की १६ तुरमती । और हवामिन और दादुर्गाल और बड़ा उलू । और राजहंस और १७ पल्लुडुही और खयस । और सारस और भाँति भाँति के बगुला और टिटिहरी १८ और चमगुदही ॥

सारे कीट जो उड़ते और चार पाँव से रंगते हैं तुम्हारे लिये वे धिनित हैं । २० तथापि तुम मय पक्षियों में से जो चारों पाँव से रंगते हैं जिन की पिल्ली टांगें २१ अगले पाँव से लपटी हुई हैं जिन्हें वे फांद कर पृथिवी पर चलें तुम उन्हें खाइयो । तुम उन्हें में से उन्हें खाइयो जैसे भाँति भाँति की टिहुी और भाँति २२

- ५ प्रणाम करके बोले आमीन हलिलूयाह । और एक शब्द मिंदासन से निकला कि  
 ६ हे हमारे ईश्वर के सब नामों और उस में रहनेवाले का छोटे क्या बड़े सब उस  
 ७ की स्तुति करो । और मैं ने जैसे बहुत लोगों का शब्द और जैसे बहुत जल का  
 ८ शब्द और जैसे प्रचंड गर्जनों का शब्द वैसे शब्द सुना कि हलिलूयाह पर-  
 ९ मेश्वर ईश्वर सर्वशक्तिमान ने राज्य लिया है । आओ हम आनन्दित और  
 १० आह्लादित होवें और उस का गुणानुवाद करें क्योंकि हमें का दिया है आ पटुंवा  
 ११ है और उस की स्त्री ने अपने को तैयार किया है । और उस को यह दिया गया  
 कि शुद्ध और उजली मलमल पहिने क्योंकि यह मलमल पवित्र लोगों का धर्म  
 १२ है । और यह मुझ से बोला यह लिख कि धन्य वे जो हमें के दिया है के भोज  
 १३ में बुलाये गये हैं । फिर मुझ से बोला ये यत्न ईश्वर के सत्य यत्न हैं । और  
 मैं उस को प्रणाम करने के लिये उस के चरणों के आगे गिर पड़ा और उस ने  
 मुझ से कहा देख ऐसा मत कर मैं तेरा और तेरे भाइयों का जिन पास यीशु की  
 साक्षी है संगी दास हूँ । ईश्वर को प्रणाम कर क्योंकि यीशु की साक्षी भविष्यवाणी  
 का आत्मा है ॥
- ११ और मैं ने स्वर्ग को खुले देखा और देखो एक श्वेत घोड़ा है और जो उस  
 पर बैठा है सो विश्वासयोग्य और सच्चा कदायता है और यह धर्म से विचार  
 १२ और युद्ध करता है । उस के नेत्र आग की ज्वाला की नाई हैं और उस के सिर  
 पर बहुत से राजसूक्त हैं और उस का एक नाम लिखा है जिसे और कोई नहीं  
 १३ केवल वही आप जानता है । और यह लोह में चुयोया हुआ यस्त पहिने है  
 १४ और उस का नाम यूँ कदायता है कि ईश्वर का यत्न । और स्वर्ग में की सेना  
 श्वेत घोड़ों पर बड़े हुए उजली और शुद्ध मलमल पहिने हुए उस के पीछे हो लेती  
 १५ थी । और उस के मुँह से चाखा खड्ग निकलता है कि उस से यह देशों के  
 लोगों को मारे और वही लोहे का दंड लेके उन की चरवाही करेगा और वही  
 सर्वशक्तिमान ईश्वर के क्रोध की जलजलाहट की मदिरा के कुँड में रौंदन  
 १६ करता है । और उस के यस्त पर और जाँघ पर उस का यह नाम लिखा है कि  
 राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु ॥
- १७ और मैं ने एक दूत को सूर्य में खड़े हुए देखा और उस ने बड़े शब्द से  
 पुकारके सब पंक्तियों से जो आकाश के बीच में से उड़ते हैं कहा आओ ईश्वर  
 १८ की बड़ी विचारी के लिये एकट्टे होओ । जित्ने तुम राजाओं का मांस और  
 सदस्यपतियों का मांस और पराक्रमी पुरुषों का मांस और घोड़ों का और उन  
 पर चढ़नेवालों का मांस और क्या निर्वन्ध क्या दास क्या छोटे क्या बड़े सब लोगों  
 १९ का मांस खाओ । और मैं ने पशु को और पृथिवी के राजाओं को और उन की  
 सेनाओं को घोड़े पर चढ़नेवाले से और उस की सेना से युद्ध करने को एकट्टे  
 २० किये हुए देखा । और पशु पकड़ा गया और उस के संग यह भूठा भविष्यवाणी  
 जिस ने उस के सन्मुख आश्चर्य कर्म किये जिन के द्वारा उस ने उन लोगों को  
 भरमाया जिन्होंने पशु का कृपा लिया और जो उस की मूर्ति की पूजा करते  
 थे । ये दोनों जीते जी उस आग की भील में जो गन्धक से जलती है डाले गये ।

पत्थर और मोती और मनमल और बैजनी वस्त्र और पाटम्बर और लाल वस्त्र की  
 घोभाई और हर प्रकार का सुगन्ध काठ और हर प्रकार का चायीदांत का पात्र  
 और बहुमूल्य काठ के और पीतल और लोहे और सरसर के सब भाँति के पात्र .  
 और चारहीनी और हलायची और धूप और सुगन्ध तेल और लोद्यान और मडिरा और १३  
 तेल और चांग्रा पिसान और मोहूँ और ठार और भेड़ूँ और घोड़े और रथों और दासों  
 की घोभाई और मनुष्यों के प्राण । और तेरे प्राण के वांछित फल तेरे पास में १४  
 जाने रहे और सब विजनी और भड़कीली वस्तु तेरे पास में नष्ट हुई हैं और तू  
 उन्हें फिर कभी न पायेगा । इन वस्तुओं के द्योपारी लोग जो उस में धनवान १५  
 हो गये उस की पीड़ा के डर के मारे डर खड़े हो गये और रोते और कलपने हुए  
 कहेंगे . हाय हाय यह बड़ी नगरी जो मनमल और बैजनी और लाल वस्त्र पहिने १६  
 थी और मोने और बहुमूल्य पत्थर और मोतियों से विभूषित थी कि एक ही  
 घड़ी में इतना बड़ा धन चला गया है । और हर एक माँको और बटावों पर के १७  
 सब लोग और मज्जाह लोग और जितने लोग समुद्र पर क्रमाते हैं सब डर खड़े  
 हुए . और उस के चलने का धूआं देखते हुए पुकारके बोले कौन नगर इस बड़ी १८  
 नगरी के समान है । और उन्हीं ने अपने अपने मिर पर धूल डाली और रोते और १९  
 कलपते हुए पुकारके बोले हाय हाय यह बड़ी नगरी जिस के द्वारा सब लोग  
 जिन के समुद्र में लड़ाव थे उन के बहुमूल्य द्रव्य में धनवान हो गये कि एक ही  
 घड़ी में यह उजड़ गई है । हे स्वर्ग और हे पाँचव प्रेतिता और भविष्यदृक्ता लोगो २०  
 उस पर आनन्द करो क्योंकि ईश्वर ने तुम्हारे लिये उस में पलटा लिया है ॥

और एक पगाक्रमी दूत ने बड़े चक्को के पाट की नाई एक पत्थर को लेकर २१  
 समुद्र में डाला और कहा वृं वरियाह में बड़ी नगरी वायुन गिराई जायगी और  
 फिर कभी न मिलेगी । और चीन बजानेदारों और बजानियों और बंगी बजाने- २२  
 दारों और तुरणी कृन्तनेदारों का शब्द फिर कभी तुझ में सुना न जायगा और  
 किसी उद्यम का काँट कारीगर फिर कभी तुझ में न मिलेगा और चक्की के चलने  
 का शब्द फिर कभी तुझ में सुना न जायगा । और टोपक की ज्योति फिर कभी २३  
 तुझ में न चमकेगी और दृल्ले और दुल्लन का शब्द फिर कभी तुझ में सुना न  
 जायगा क्योंकि तेरे द्योपारी लोग पृथिवी के प्रधान थे इस लिये कि तेरे टोने से  
 सब देशों के लोग भरमाये गये . और भविष्यदृक्ताओं और पवित्र लोगों का लोटू २४  
 और जो जो लोग पृथिवी पर बध किये गये थे सबों का लोटू उसी में पाया गया ॥

उनीमवां पद्य ।

और इस के पीछे मैं ने स्वर्ग में बहुत लोगों का बड़ा शब्द सुना कि दलिलूयाह १  
 परमेश्वर हमारे ईश्वर को आग के लिये जय जय और मजिमा और आदर और  
 मामज्य होय । इस लिये कि उस के विचार सच्चे और यथार्थ हैं क्योंकि उस ने २  
 बड़ी वेश्या का जो अपने व्यभिचार से पृथिवी का भग्न करती थी विचार किया  
 है और अपने दासों के लोटू का पलटा उस से लिया है । और वे दूसरी बार ३  
 दलिलूयाह बोले और उस का धूआं सदा सर्वदा लों उठता है । और चौबीसों ४  
 प्राचीन और चारों प्राणी मिर पड़े और ईश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है



इकडेसवां पृष्ठ ।

- १ और मैं ने नये आकाश और नई पृथिवी को देखा क्योंकि पहिला आकाश
- २ और पहिली पृथिवी जाते रहे और मसुद्र और न था । और मुक्त बाइन ने पवित्र
- नगर नई यिश्शलीम को जैसी दूल्हन जो अपने स्वामी के लिये सिंगार किई
- ३ हुई है वैसी तैयार किई हुई स्वर्ग मे ईश्वर के पास से उतरने देखा । और मैं ने
- स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुना कि देखो ईश्वर का डेरा मनुष्यों के साथ है और वह
- उन के संग वास करेगा और वे उस के लागें होंगे और ईश्वर आप उन के साथ उन का
- ४ ईश्वर होगा । और ईश्वर उन की आंखों से मय आंसू पोंछ डालेगा और मृत्यु
- और न होगी और न जोक न खिलाय न क्रेश और होगा क्योंकि अगली जाते
- ५ जाती रही हैं । और सिंहासन पर बैठनेवाले ने कहा देखा मैं मय कुछ नया करता
- हूँ . फिर मुक्त मे वाला लिख ले क्योंकि ये बचन सत्य और विश्वासयोग्य हैं ।
- ६ और उस ने मुक्त से कहा हो चुका . मैं जलका और ओमिगा आदि और अन्त
- ७ हूँ . जो प्यासा है उस को मैं जीवन के जल के सोते में से सतमेत देऊंगा । जो
- जय करे सो मय वस्तुओं का अधिकारी होगा और मैं उस का ईश्वर होंगा और
- ८ वह मेरा पुत्र होगा । परन्तु भयमानों और अधिश्वासियों और घिनौनों और
- हत्यारों और व्यभिचारियों और टोन्टों और मूर्तिपूजकों और सब भूटे लोगों का
- भाग उन्हें वम भील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती है . यही दूसरी
- मृत्यु है ॥
- ९ और जिन सात दूतों के पास सात पहिली ग्रिपों से भरे हुए सातों पिपासे
- ये उन में से एक मेरे पास आया और मेरे संग वात करके बोला कि आ मैं
- १० दूल्हन को अर्थात् मेरे की स्त्री को तुम्हें दिखाऊंगा । और वह मुझे आत्मा में
- एक बड़े और लंबे पर्वत पर ले गया और वही नगर पवित्र यिश्शलीम को मुझे
- ११ दिखाया कि स्वर्ग मे ईश्वर के पास से उतरता है । और ईश्वर का तेज उस में
- है और उस की ज्योति अत्यन्त मोल के पत्थर की नाई अर्थात् रफटिक सरीखे
- १२ सूर्यकान्त मणि की नाई है । और वम की बड़ी और लंबी भीत है और उस के
- बारह फाटक हैं और उन फाटकों पर बारह दूत हैं और नाम उन पर लिखे हैं
- १३ अर्थात् इस्रायेल के सन्तानों के बारह कुलों के नाम । पूर्व की ओर तीन फाटक
- उत्तर की ओर तीन फाटक दक्षिण की ओर तीन फाटक और पश्चिम की ओर
- १४ तीन फाटक हैं । और नगर की भीत की बारह नेव हैं और उन पर मेरे के
- १५ बारह प्रेरितों के नाम । और जो मेरे संग वात करता था उस पास एक सोने
- का नल था जिस्ती वह नगर को और उस के फाटकों को और उस की भीत को
- १६ नापे । और नगर चौखुंटा बसा है और जितनी उस की चौड़ाई उतनी उस की
- लंबाई भी है और उस ने उस नल से नगर को नापा कि साठे सात सौ कोश का
- १७ है . उस की लंबाई और चौड़ाई और ऊंचाई एक समान हैं । और उस ने उस
- की भीत को मनुष्य के अर्थात् दूत के नाप से नापा कि एक सौ चवालीस हाथ
- १८ की है । और उस की भीत की चौड़ाई सूर्यकान्त की थी और नगर निर्मल
- १९ सोने का था जो निर्मल कांच के समान था । और नगर की भीत की नेवें हा

और जो लोग रह गये सो घोड़े पर चढ़नेद्वारे के खड्ग से जो उस के मुँह से २१  
निकलता है मार डाले गये और मद्य पंथी उन के मांस से तृप्त हुए ।

दीमदां पृष्ठ ।

और मैं ने एक दूत को स्वर्ग से उतारते देखा जिस पास अथाह कुंड की १  
कुंजी थी और उस के हाथ में बड़ी जंजीर थी । और उस ने अजगर को अर्थात् २  
प्राचीन सांप को जो दियावल और गैतान है पकड़के उसे सहस्र दरम लों बांध  
रखा . और उस को अथाह कुंड में टाना और बन्द करके उस के ऊपर छाप ३  
दिई जिससे वह जय लों सहस्र दरम पूरे न हो तब लों फिर देजों के लोगों को  
न भरमाये और इस पीछे उस को घोड़ी घेर लों कूट जाने होगा ॥

और मैं ने सिंहासनों को देखा और उन पर लोग बैठे थे और उन लोगों को ४  
विचार करने का अधिकार दिया गया और जिन लोगों के मिर यीशु की मात्मी  
के कारण और ईश्वर के वचन के कारण काटे गये थे और जिन्होंने ने न पशु की  
न उस की मूर्ति की पूजा किंत् और अपने अपने माथे पर और अपने अपने हाथ  
पर छाप न लिया मैं ने उन के प्राणों को देखा और वे जी गये और स्त्रीपु के  
संग सहस्र दरम राज्य किया । परन्तु और मद्य मृतक लोग जय लों सहस्र दरम ५  
पूरे न हुए तब लों नहीं जी गये . यह तो पटिला पुनरुत्थान है । जो पटिले ६  
पुनरुत्थान का भागी है सो धन्य और पावन है . इन्हीं पर दूसरी मृत्यु का कुछ  
अधिकार नहीं है परन्तु वे ईश्वर के और स्त्रीपु के याजक होंगे और सहस्र दरम  
उस के संग राज्य करेंगे ॥

और जब सहस्र दरम पूरे होंगे तब गैतान अपने बन्दीगृह से कूट जायगा . ७  
और चहुं गूँट पृथिवी के देजों के लोगों को अर्थात् जूज और माजूज को जिन ८  
की संख्या समुद्र के बालू की नाईं होगी भरमाने को निकलेगा कि उन्हें पुद्ग के  
लिये गकट्टे करे । और ये पृथिवी की चौड़ाई पर चढ़ आये और पावन लोगों ९  
की छावनी और प्रिय नगर को घेर लिया और ईश्वर की ओर से आग स्वर्ग से  
उतारी और उन्हें भस्म किया । और उन का भरमानेद्वारा गैतान आग और गन्धक १०  
की भील में जिस में पशु और भूटा भविष्यद्वक्ता हैं डाला गया और वे रात दिन  
सदा सर्वथा पीड़ित किये जायेंगे ॥

और मैं ने एक बड़े ज्वेत सिंहासन को और उस पर बैठनेद्वारे को देखा जिस ११  
के सन्मुख से पृथिवी और आकाश भाग गये और उन के लिये जगह न मिली ।  
और मैं ने क्या छोटे क्या बड़े मद्य मृतकों को ईश्वर के आगे खड़े देखा और १२  
पुस्तक खोले गये और दूसरा पुस्तक अर्थात् जीवन का पुस्तक खोला गया और  
पुस्तकों में लिखी हुई बातों से मृतकों का विचार उन के कर्मों के अनुसार  
किया गया । और समुद्र ने उन मृतकों को जो उस में थे दे दिया और मृत्यु १३  
और परलोक ने उन मृतकों को जो उन में थे दे दिया और उन में से हर एक  
का विचार उस के कर्मों के अनुसार किया गया । और मृत्यु और परलोक आग १४  
की भील में डाले गये . यह तो दूसरी मृत्यु है । और जिस किसी का नाम जीवन १५  
के पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह आग की भील में डाला गया ॥

- १२ पवित्र जन अब भी पवित्र रहे । देख मैं शीघ्र आता हूँ और मेरा प्रतिफल में  
 १३ साथ है । जिस्तें हर एक को जैसा उस का कार्य ठहरेगा वैसा फल देऊँ ।  
 १४ अलफा और ओमिगा आदि और अन्त पहिला और पिछला हूँ । धन्य वे जो  
 उस की आज्ञाओं पर चलते हैं कि उन्हें जीवन के वृक्ष का अधिकार मिले और वे  
 १५ फाटकों से होके नगर में प्रवेश करें । परन्तु बाहर कुत्ते और टोन्हे और व्यभि-  
 चारी और हत्यारे और मूर्तिपूजक हैं और हर एक जन जो झूठ को प्रिय जानता  
 १६ और उस पर चलता है । मुझ यीशु ने अपने दूत को भेजा है कि तुम्हें संहारियों  
 में इन बातों की सच्ची देवे । मैं दाऊद का मूल और यंश और भोर का उज्जल  
 १७ तारा हूँ । और आत्मा और दूल्हन कहते हैं आ और जो सुने सो कहे आ  
 और जो प्यासा हो सो आवे और जो चाहे सो जीवन का जल सतमेत लेवे ॥  
 १८ मैं हर एक को जो इस पुस्तक के भविष्यवाक्य की बातें सुनता है सच्ची देता  
 हूँ कि यदि कोई इन बातों पर कुछ बढ़ावे तो ईश्वर उन विपत्तियों को जो इस  
 १९ पुस्तक में लिखी हैं उस पर बढ़ावेगा । और यदि कोई इस भविष्यवाक्य के पुस्तक  
 की बातों में से कुछ उठा लेवे तो ईश्वर जीवन के पुस्तक में से और पवित्र नगर  
 में से और उन बातों में से जो इस पुस्तक में लिखी हैं उस का भाग उठा लेगा ॥  
 २० जो इन बातों की सच्ची देता है सो कहता है हाँ मैं शीघ्र आता हूँ ।  
 २१ आमीन हे प्रभु यीशु आ । हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम सभी के संग  
 होवे । आमीन ॥

एक बहुमूल्य पत्थर से संघारी हुई थीं पटिली नेत्र सूर्यकान्त की थी दूसरी नील-  
मणि की तीसरी लालही की चौथी मरकत की . पांचवीं गोसेदक की छठवीं २०  
सातवीं पीनमणि की आठवीं पेरौज की नववीं पुष्कराज की दसवीं  
लहमनिये की एगारहवीं भूमकान्त की बारहवीं मर्त्य की । और बारह फाटक २१  
बारह मोती ये एक एक मोती से एक एक फाटक बना था और नगर की सड़क  
स्वच्छ काँच के ऐसे निर्मल मोने की थी । और मैं ने उस में मन्दिर न देखा २२  
क्योंकि परमेश्वर ईश्वर सर्वशक्तिमान और मेसा उस का मन्दिर हैं । और नगर २३  
को सूर्य अथवा चन्द्रमा का प्रयोजन नहीं कि वे उस में चमकें क्योंकि ईश्वर के  
तेज ने उसे ज्योति दिई और मेसा उस का दीपक है । और देशों के लोग जो २४  
आए पानेदार हैं उस की ज्योति में फिरंगे और पृथिवी के राजा लोग अपना  
अपना विभव और मर्यादा उस में लावेंगे । और उस के फाटक दिन का कभी २५  
बन्द न किये जायेंगे क्योंकि यहां रात न होगी । और वे देशों के लोगों का २६  
विभव और मर्यादा उस में लावेंगे । और कोई अपवित्र धन्नु अथवा धिनित २७  
कर्म करनेद्वारा अथवा झूठ पर चलनेद्वारा उस में किसी रीति में प्रवेश न करेगा  
परन्तु केवल वे लोग जिन के नाम मेसे के जीवन के पुस्तक में लिखे हुए हैं ॥

चारमथां पट्ट ।

और उस ने मुझे जीवन के तल की निर्मल नदी स्फटिक की नाईं स्वच्छ १  
दिखाई कि ईश्वर के और मेसे के सिंहासन में निकलती है । नगर की सड़क और २  
उस नदी के बीच में इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष है जो एक एक मास  
के अनुसार अपना फल देकर बारह फल फलता है और वृक्ष के पत्ते देशों के लोगों  
को चंगा करने के लिये हैं । और अब कोई माप न होगा और ईश्वर का और ३  
मेसे का सिंहासन उस में होगा और उस के दास उस की सेवा करेंगे . और उस ४  
का मुँह देखेंगे और उस का नाम उन के माथे पर होगा । और यहां रात न ५  
होगी और उन्हीं दीपक का अथवा सूर्य की ज्योति का प्रयोजन नहीं क्योंकि  
परमेश्वर ईश्वर उन्हीं ज्योति देगा और वे सदा सर्वदा राज्य करेंगे ॥

और उस ने मुझ से कहा ये वचन धिष्ट्यामोक्ष और मृत्यु हैं और पवित्र ६  
भविष्यद्वक्ताओं के ईश्वर परमेश्वर ने अपने दूत का भेजा है जिसे यह बातें जिन  
का शीघ्र पूरा होना आवश्यक है अपने दासों को दिखावे । देख मैं शीघ्र आता ७  
हूँ . धन्य वह जो इस पुस्तक के भविष्यद्वक्ता की बातें पालन करता है ॥

और मैं यादन जो हूँ साईं यह बातें देखता और सुनता था और जब मैं ने ८  
सुना और देखा तब जो दूत मुझे यह बातें दिखाता था मैं उस के चरणों के  
आगे प्रणाम करने का मिर पड़ा । और उस ने मुझ से कहा देख ऐसा मत कर ९  
क्योंकि मैं तेरा और भविष्यद्वक्ताओं का जो तेरे भाई हैं और इस पुस्तक की  
बातें पालन करनेदारों का संगी दास हूँ . ईश्वर को प्रणाम कर ॥

और उस ने मुझ से कहा इस पुस्तक के भविष्यद्वक्ता की बातों पर हाथ मत १०  
दे क्योंकि समय निकट है । जो अन्याय करता है सो अब भी अन्याय करता रहे ११  
और जो अशुद्ध है सो अब भी अशुद्ध रहे और धर्मी जन अब भी धर्मी रहे और

भांति के फनगे और भांति भांति के खरगोल और भांति भांति के हागाय ।  
 २३ परन्तु सब रंगवैये पक्षियों में से जिन के चार पांव हैं वे तुम्हारे लिये धिनित हैं ।  
 २४ और इन से तुम अशुद्ध होगे जो कोई उन की लोथ को छूयेगा सो सांभ लो  
 २५ अपवित्र रहेगा । और जो कोई उन में से किसी की लोथ को उठावे सो अपने  
 कपड़े धोवे और सांभ लो अपवित्र रहेगा ॥

२६ हर एक पशु जिन के खुर विभाग हैं और पांव चीरा न हो और पागुर  
 करता न हो सो तुम्हारे लिये अशुद्ध है जो कोई उन्हें छूयेगा सो अशुद्ध होगा ।  
 २७ और समस्त प्रकार के पशु जो अपने हाथों पर और चार पांव पर चलते हैं  
 तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई उन की लोथ को छूयेगा सो सांभ लो अशुद्ध  
 २८ रहेगा । और जो कोई उन की लोथ को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और वह  
 सांभ लो अशुद्ध रहेगा वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

२९ और पृथिवी पर के रंगवैयों में से वे तुम्हारे लिये अपवित्र हैं कंकूर और  
 ३० चूहा और भांति भांति का गोह । और टिकटिकी और गिरगिटान और बम्बनी  
 ३१ और सांडा और गोहटा । सब रंगवैयों में से वे तुम्हारे लिये अपवित्र हैं जो  
 ३२ कोई उन की लोथ को छूये सो सांभ लो अशुद्ध होगा । और जिस किसी पर  
 इन्हीं में से मरके गिर पड़े सो अशुद्ध होगा चाहे लकड़ी का पात्र अथवा बस्त्र  
 अथवा खाल अथवा टाट जो पात्र होवे जिस्से काम होता हो सो अवश्य जल  
 में डाला जावे और सांभ लो अपवित्र रहेगा और इसी रीति से पवित्र होगा ।  
 ३३ और सब मिट्टी के पात्र जिन में उन में से गिरे जो उस में होवे सो अशुद्ध होगा  
 ३४ और तुम उसे तोड़ डालियो । समस्त भोजन जो खाया जाता है जो उस पर उन  
 से पानी पड़े सो अशुद्ध होगा और जो कुछ ऐसे पात्रों में पीया जाता है सो  
 ३५ अशुद्ध होगा । और जिस पर उन की लोथ पड़े सो अपवित्र होगा चाहे तनूर  
 चाहे चूल्हा होय तोड़ा जायगा वे अपवित्र हैं और तुम्हारे लिये अशुद्ध होंगे ।  
 ३६ तथापि सोता और कूआ जिस में बहुत जल होवे वह शुद्ध होगा परन्तु जो कोई  
 ३७ उन की लोथ को छूयेगा सो अशुद्ध होगा । और यदि उन की लोथ से कुछ  
 ३८ किसी खाने के बीज पर गिरे सो पवित्र रहेगा । परन्तु यदि उस बीज पर पानी  
 पड़ा हो और उन की लोथ से कुछ उस पर गिरे सो तुम्हारे लिये अशुद्ध होगा ॥  
 ३९ और यदि तुम्हारे खाने के पशुन में से कोई मरे जो कोई उस की लोथ को  
 ४० छूये सो सांभ लो अशुद्ध होगा । और जो कोई उस की लोथ में से खावे सो  
 अपने कपड़े धोवे और सांभ लो अशुद्ध होगा और जो उस की लोथ को उठाता  
 है सो भी अपने कपड़े धोवे और सांभ लो अशुद्ध होगा ॥

४१ और हर एक जो पृथिवी पर रंगता है सो धिनित है वह खाया न जायगा ।  
 ४२ जो पेट के बल चलता है और जो चार पांवों पर चलते हैं और रंगवैये में से जो  
 अधिक पांव रखते हैं और पृथिवी पर रंगते हैं तुम उन्हें न खाइयो क्योंकि वे  
 ४३ धिनित हैं । तुम किसी रंगवैये से जो पृथिवी पर रंगता है अपने को धिनित मत  
 करो और न आप को उन के कारण से अपवित्र करो यहां लो कि तुम उसे  
 ४४ अशुद्ध हो जाओ । क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं इस लिये तुम आप को





अथवा लाल सी हो अथवा चमड़े में अथवा ताने में अथवा बाने में हो अथवा किसी  
 ५० चमड़े की वस्तु में हो वह मरी का कोढ़ है और याजक को दिखाया जावे । और याजक  
 ५१ उस मरी को देखे और उस मरीवाले को सात दिन बंद करे । और सातवें दिन याजक  
 उस मरी को देखे यदि वह मरी कपड़े पर अथवा ताने बाने में अथवा चमड़े पर  
 अथवा किसी वस्तु पर जो चमड़े से बनी हुई है फैल जावे वह मरी कटाव का  
 ५२ कोढ़ है वह अपवित्र है । सो वह उस वस्त्र को जो ऊन का अथवा सूत का हो  
 जिस के ताने में है अथवा बाने में अथवा चमड़े की कोई वस्तु जिस में मरी है  
 उसे जला देवे क्योंकि वह कटाव का कोढ़ है वह आग में जनाया जावे ॥

५३ और यदि याजक देखे कि वह मरी जो वस्त्र में अथवा ताने में अथवा बाने  
 ५४ में अथवा चमड़े की किसी वस्तु में है फैली नहीं । तो याजक आज्ञा करे और  
 उस वस्तु को जिस में मरी होवे बंद करे और फिर उसे सात दिन लों धोवे ।  
 ५५ और याजक धोने के पीछे उस मरी को देखे और यदि उस मरी का रंग बदला  
 न देखे और मरी न फैली हो तो वह अपवित्र है उसे आग में जलावे कि वह  
 ५६ कटाव चाहे भीतर चाहे बाहर हो । और यदि याजक दृष्टि करे और देखे कि  
 मरी धोने के पीछे कुछ सुरभार्द्ध हो तो वह उस वस्त्र से और चमड़े से ताने से  
 ५७ अथवा बाने से फाड़ फेंके । और यदि वह मरी वस्त्र में ताने में अथवा बाने में  
 अथवा किसी चमड़े की वस्तु में प्रगट बनी रहे तो वह फैलती है तू उसे जिस में  
 ५८ मरी है आग में जला देना । और यदि मरी उस वस्त्र से ताने से अथवा बाने से  
 अथवा चमड़े की वस्तु से जिसे तू धोवेगा यदि मरी उन से जाती रहे तो वह  
 दूसरी बेर धोया जावे और पवित्र हो जायगा ॥

५९ यह कोढ़ की मरी की व्यवस्था है जो ऊन अथवा सूत के वस्त्र में अथवा  
 ताने अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की वस्तु में है जिसमें उसे पवित्र अथवा  
 अपवित्र ठहरावे ॥

### चौदहवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि कोढ़ी के लिये यह व्यवस्था होगी  
 २ जिस दिन वह पवित्र किया जावे कि वह याजक के पास लाया जावे । और  
 याजक छावनी से बाहर जाके देखे और यदि वह कोढ़ी कोढ़ की मरी से चंगा  
 ३ हो गया हो । तो याजक आज्ञा करे कि जो पवित्र किया जाता है सो अपने लिये  
 ४ दो पवित्र जीते पक्षी और शमशाद की लकड़ी और लाल और जूफा लेवे । और  
 याजक आज्ञा करे कि उन पक्षियों में से एक मिट्टी के पात्र में बहते पानी पर  
 ५ मारा जावे । और वह जीते पक्षी को और शमशाद की लकड़ी और लाल और  
 जूफा समेत लेके उस पक्षी के लोहू में जो बहते पानी पर मारा गया है चभोरे ।  
 ६ और जो कोढ़ से पवित्र किया जाता है उस पर सात बार छिड़के और उसे पवित्र  
 ठहरावे और उस जीते पक्षी को खुले चौगान की ओर उड़ा देवे ॥  
 ७ और जो पवित्र किया जाता है सो अपने कपड़े धोवे और अपने सारे बाल  
 ८ सुंड़ावे और पानी में स्नान करे जिसमें पवित्र होवे और उस के पीछे वह छावनी  
 ९ में आवे और सात दिन लों अपने तंबू के बाहर ठहरे । और ऐसा होगा कि

गुह्य करो और तुम पवित्र होगो क्योंकि मैं पवित्र हूँ और अपने को किसी रंगवैषे जन्तु से जो पृथिवी पर रंगता है अशुद्ध न करो । क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ जो सिम ४५ के देश से तुम्हें ले जाता हूँ जितने तुम्हारा ईश्वर हूँ सो तुम शुद्ध होओ क्योंकि मैं पवित्र हूँ ॥

चारपाये और पत्नी और सब जीवधारी जो पानी में चलते हैं और हर एक ४६ जन्तु जो पृथिवी पर रंगते हैं उन की यही व्यवस्था है । कि अशुद्ध और शुद्ध में और ४७ उन प्रश्न में जो खाये जायें और उन में जो न खाये जायें तुम विभेद करो ।

घारहवां पर्व ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के मंगानों से कह कि १ जय स्त्री गोर्भेणी होवे और बेटा जने नव वह सात दिन अशुद्ध होगी जैसे दुर्वलता के कारण अलग होने के दिनों में होती है । और आठवें दिन लड़के का ३ स्वतनः किया जावे । और वह रुधिर में पवित्र होने के लिये तीस दिन पड़ी ४ रहे वह किसी पवित्र वस्तु को न छूये और जय जो उस के पवित्र होने के दिन पूर्ण न होयें तब लो वह पवित्र स्थान में न लावे । और यदि लड़की जने तो वह ५ दो अठवारे अशुद्ध होगी जैसे अपने अलग किये जाने के दिनों में थी और वह अपने रुधिर की पवित्रता के लिये क्रियामठ दिन पड़ी रहेगी ॥

और जब उस के पवित्र होने के दिन पुत्र के अथवा पुत्री के पूर्ण होयें तब वह ६ पहिले घरस का एक मेम्रा बलिदान की भेंट के लिये लेवे और एक कपोत का चमड़ा अथवा पिण्डुकी पाप की भेंट के लिये मंडली के तंत्र के द्वार पर याजक पास लावे । और वह उसे परमेश्वर के आगे लावे और उस के लिये प्रायश्चित्त ७ करे और वह अपने रुधिर बहने से पवित्र होगी वह पुत्र और पुत्री जन्मे के लिये व्यवस्था है । और यदि उसे मेम्रा लाने की पूंजी न हो तो दो पिण्डुकियां अथवा ८ कपोत के दो चमड़े लावे एक बलिदान की भेंट के लिये और दूसरा पाप की भेंट के लिये और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे तब वह पवित्र हो जायगी ॥

तेरहवां पर्व ।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । जय किसी मनुष्य के शरीर १ में मूज अथवा मज्जुली अथवा चक्रचक्रिया विंदु हो और उस के शरीर के चमड़े में कौड़ की मरी भी हो तब उसे हारून याजक के पास अथवा उस के किसी पुत्र याजक पास लावे । और वह याजक उस के शरीर के चमड़े की मरी को ३ देखे यदि मरी के स्थान का बाल उजला हो गया हो और वह मरी देखने में चमड़े से गहिरा हो तो वह कौड़ की मरी है और याजक उसे देखके उस को अशुद्ध ठहरावे । और यदि उस के शरीर के चमड़े पर चक्रचक्रिया विंदु देखने में ४ चमड़े से गहिरा न हो और उस पर के बाल उजले न हुए हों तो याजक उस मरीवाले को सात दिन लो बंद करे । और सातवें दिन याजक उसे देखे और यदि ५ मरी उस के देखने में वैसी ही हो और मरी चमड़े पर फैली न हो तो याजक उसे और सात दिन लो बंद करे । और सातवें दिन याजक दूसरी बार उसे देखे ६ और यदि मरी कुछ सुखाई हो और चमड़े पर फैली न हो तो याजक उसे पवित्र

कान की लहर पर और उस के दाहिने हाथ के अंगूठे और उस के दाहिने पांव  
 २६ के अंगूठे पर लगावे । और उस तेल में से याजक कुछ अपनी दाईं हथेली पर  
 २७ डाले । और याजक उस तेल में से जो उस की दाईं हथेली पर है थोड़ा सा  
 २८ अपनी दाहिनी अंगुली से परमेश्वर के आगे सात बार छिड़के । और याजक उस  
 तेल में से जो उस की हथेली पर है उस के जो पवित्र किया जाता है दाहिने कान  
 की लहर पर और उस के दाहिने हाथ के अंगूठे और उस के दाहिने पांव के अंगूठे  
 २९ पर अपराध की भेंट के लोहू के स्थान पर लगावे । और याजक उबरे हुए तेल  
 को जो उस की हथेली पर है उस के सिर पर जो पवित्र किया जाता है डाले  
 ३० कि जिसमें उस के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे । और वह उन पिण्डुकि-  
 ३१ यों में से अथवा कपोत के बच्चों में से जो उस के हाथ लगे । एक तो पाप की भेंट के  
 लिये और दूसरा बलिदान की भेंट के लिये भोजन की भेंट के साथ चढ़ावे और  
 याजक उस के लिये जो पवित्र किया जाता है परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे ॥  
 ३२ यह उस कोढ़ी की मरी की व्यवस्था है जो अपने पवित्र करने की पूंजी न  
 रखता हो ॥

३३ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । कि जब तुम कनयान देश  
 में पहुंचो जो मैं तुम्हें अधिकार के लिये देता हूं और मैं तुम्हारे अधिकार के देश  
 ३५ के किसी घर में कोढ़ की मरी लाऊं । तब उस घर का स्वामी याजक पास  
 ३६ आके कहे कि मुझे ऐसा दिखाई देता है कि घर में कुछ मरी सी है । तब  
 याजक आजा करे कि वे उस घर को उम्मे आगे कि याजक मरी को देखने जावे  
 ३७ छूका करें जिसमें घर की समस्त सामग्री अपवित्र न हो जावे और उस के पीछे  
 ३८ याजक घर के भीतर देखने जावे । और वह उस मरी पर दृष्टि करे और यदि  
 वह मरी उस घर की भीतों पर हरी सी अथवा लाल सी लकीरें दिखाई देवे  
 ३९ और वह देखने में भीत से गहिरा दिखाई देवे । तो याजक उस घर के द्वार से  
 ४० बाहर निकलके घर को सात दिन लो बंद करे । और याजक सातवें दिन फिर  
 आके देखे और यदि वह मरी घर की भीतों पर फैली दिखाई देवे । तो याजक  
 आजा करे कि उन पत्थरों को जिन में मरी है निकाल डाले और उन्हें नगर के  
 ४१ बाहर अपवित्र स्थान पर फेंक देवे । और वह घर के भीतर चारों ओर खुरचवावे  
 ४२ और वे उस खुरची धूल को नगर के बाहर अपवित्र स्थान में फेंक देवे । और वे  
 और पत्थर लेके उन पत्थरों के स्थान पर जोड़ें और वह दूसरा खोआ लेकर घर  
 ४३ की गच्च करे । और यदि पत्थर निकालने के और घर खुरचाने के पीछे और गच्च  
 ४४ करने के पीछे मरी फिर आवे और उस घर में फूट निकले । तब याजक आके  
 देखे और यदि वह मरी घर में फैली देखे तो उस घर में कटाव का कोढ़ है  
 ४५ वह अशुद्ध है । तब वह उस घर को उस के पत्थरों को और उस की लकड़ियों  
 को और उस के सब खोये को गिरा देवे और वह उन्हें नगर के बाहर अपवित्र  
 ४६ स्थान में ले जावे । और जब लो वह घर बंद होवे जो कोई उस में जावे सो  
 ४७ संभ्र लो अशुद्ध होगा । और जो कोई उस घर में सोवे सो अपने कपड़े धोवे  
 और जो कोई उस घर में कुछ खावे सो अपने कपड़े धोवे ॥

सातवें दिन अपने मिर के मय्र बाल और अपनी डाढ़ी और अपनी भौंछें अर्थात् अपने मारे बाल मुंडावे और अपने कपड़े धोये और अपना गरीर पानी से धोये तब वह पवित्र होगा ॥

और आठवें दिन दो निम्बोड मेम्रा और पहिले दम की एक निम्बोड मेम्री १० और चौथा पिमान तीन दमवें भाग तेल से मिला हुआ और एक नपुआ तेल भोजन की भेंट के लिये लेवे । तब याजक जो पवित्र करता है उस मनुष्य को जो पवित्र किया जाता है उन दस्तुन सदित परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर ले आवे । और याजक एक मेम्रा अपराध के बलिदान के लिये उस नपुआ तेल १२ समेत पास लावे और उन्हें हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलावे । और उस मेम्रे को उस स्थान पर जहां पाप की भेंट और बलिदान की भेंट बलि १३ किई जाती है पवित्र स्थान से बलि करे क्योंकि जैसी पाप की भेंट याजक की है वैसी अपराध की भेंट है वह अत्यंत पवित्र है । और याजक अपराध की भेंट १४ का कुछ लोहू लेके उस के जो पवित्र किया जाता है दाहिने कान की लहर पर और उस के दाहिने हाथ के अंगूठे पर और उस के दाहिने पांव के अंगूठे पर लगावे । और याजक उस नपुआ का कुछ तेल लेके अपने दाएं हाथ की छपेली १५ पर डाले । और याजक अपनी दाहिनी अंगुली उस तेल में जो उस की दाहिनी छपेली पर है डुबोवे और परमेश्वर के आगे मान वार अपनी अंगुली से कुछ तेल छिड़के । और उस तेल में से जो उस की छपेली पर डबरा है उस मनुष्य के १६ दाहिने कान की लहर पर जो पवित्र किया जाता है और उस के दाहिने हाथ के अंगूठे पर और उस के दाहिने पांव के अंगूठे पर अपराध की भेंट के लोहू को लगावे । और याजक उस उबरे हुए तेल को जो उस की छपेली पर है उस १७ मनुष्य के सिर पर जो पवित्र किया जाता है शाल दे और याजक उन के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे । और याजक पाप की भेंट चढ़ावे और उस १८ के लिये जो अपनी अपवित्रता से पवित्र किया जाता है प्रायश्चित्त करे और उस के पीछे बलिदान की भेंट को बलि करे । और बलिदान की भेंट और भोजन की २० भेंट याजक वेदी पर चढ़ावे और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह पवित्र होगा ॥

और यदि वह कंगाल होवे और इतना ला न सके तो वह अपराध की भेंट २१ हिलाने के लिये एक मेम्रा लेवे त्रिभुज उस के लिये प्रायश्चित्त दिया जावे और एक दमवां भाग चौथा पिमान तेल से मिला हुआ भेंट के बलिदान के लिये और एक चांगी तेल । और दो पिण्डुक्रियां अथवा कपोत के दो बच्चे जैसा वह २२ पा सके लेवे और एक पाप की भेंट और दूसरा बलिदान की भेंट का होश । और वह उन्हें आठवें दिन अपने पवित्र होने के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर २३ परमेश्वर के आगे याजक पास लावे । और याजक अपराध की भेंट का मेम्रा २४ और एक चांगी तेल लेवे और वह उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलावे । और वह अपराध की भेंट के मेम्रे को बलि करे और याजक २५ अपराध की भेंट के लोहू में से कुछ लेके उस के जो पवित्र किया जाता है दाहिने

१५ और याजक उन्हें चढ़ावे एक पाप की भेंट के लिये और दूसरा बलिदान की भेंट के लिये और याजक उस प्रमेही के लिये परमेश्वर के आगे प्रार्थित करे ॥

१६ और यदि किसी मनुष्य से रात को वीर्य जावे तब वह अपना समस्त शरीर पानी से धोवे और सांभ लें अपवित्र रहेगा । और जिस कपड़े अथवा चमड़े पर रात का वीर्य पड़े सो पानी से धोया जावे और सांभ लें अपवित्र रहेगा । और स्त्री भी जिसे पुरुष रात करे दोनों पानी से स्नान करें और सांभ लें अपवित्र रहेंगे ॥

१७ और यदि स्त्री रजस्वला हो तो वह सात दिन अलग किई जावे जो कोई उसे छूयेगा सो सांभ लें अपवित्र रहेगा । और सब वस्ति जिस पर वह अपने अलग होने के दिन में लेटे अपवित्र होगी और हर एक वस्तु जिस पर वह बैठे सो अपवित्र होगी । और जो कोई उस के विछौने को छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांभ लें अपवित्र रहेगा । और जो कोई किसी वस्तु को छूवे जिस पर वह बैठी थी सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांभ लें अपवित्र रहेगा । और यदि कोई वस्तु उस के विछौने पर अथवा किस पर हो जिस पर वह बैठती है और उस समय कोई उस वस्तु को छूवे तो वह सांभ लें अपवित्र रहेगा । और यदि पुरुष उस के साथ लेटे और वह रजस्वला में होवे तो वह सात दिन लें अपवित्र रहेगा और हर एक विछौना जिस पर वह पुरुष लेटता है सो अपवित्र होगा ॥

२५ और यदि स्त्री का रजोधर्म उस के ठहराये हुए दिनों से अधिक होवे अथवा यदि उस के अलग होने के समय से अधिक बढ़े तो उस की अपवित्रता के बहने से सब दिन उस के अलग होने के दिनों के समान होवें वह अपवित्र है । २६ उस के बहने के सब दिनों में हर एक विछौना जिस पर वह लेटती है और जिस पर वह बैठती है सो उस के अलग होने की अपवित्रता के समान अपवित्र होगा । और जो कोई उन वस्तुन को छूवे सो अपवित्र होगा और अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांभ लें अपवित्र रहेगा । और जब वह अपने रज से पवित्र होवे तब सात दिन अपने लिये गिने और उस के पीछे वह पवित्र होगी । और आठवें दिन वह अपने लिये दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लेवे और उन्हें मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावे । और याजक एक को पाप की भेंट और दूसरे को बलिदान की भेंट के लिये चढ़ावे और याजक उस के रज की अपवित्रता के लिये परमेश्वर के आगे उस के लिये प्रार्थित करे ॥

३१ यों तुम इसराएल के संतानों को उन की अपवित्रता से अलग करो जिसमें वे अपनी अपवित्रता से मर न जावें जब वे मेरे तंबू को जो उन के मध्य में है अपवित्र करें ॥

३२ उस के लिये जिसे प्रमेह का रोग होवे और उस के लिये जो रति करने से अपवित्र होवे । और उस के लिये जो रजस्वला होवे और उस पुरुष और स्त्री

और यदि घर के गत्त होने के पीछे याजक आने आते उस घर में आवे और ४८ देखे कि वह मरी घर पर नहीं फैली तो याजक उस घर को पवित्र ठहरावे क्योंकि वह मरी से चंगा हो गया । तब उस घर को पवित्र करने के लिये दो चिड़ियां ४९ और गमगाद की लकड़ी और लाल और जूफा लेवे । और उन चिड़ियों में से एक ५० को सिट्टी के पात्र में बहते पानी पर बलि करे । फिर वह गमगाद की लकड़ी ५१ और जूफा और लाल और उस जीती चिड़िया को लेके उन्हे बलि किई हुई चिड़िया के लोह में और उस बहते पानी में चमारे और साग घेर उस घर पर छिड़के । और चिड़िया के लोह और बहते पानी और जीती चिड़िया और ५२ गमगाद की लकड़ी और जूफा और लाल से उस घर को पवित्र करे । परन्तु वह ५३ उस जीती चिड़िया को नगर के बाहर चांगान की ओर छोड़े और उस घर के लिये प्रायश्चित्त करे और वह पवित्र हो जायगा ॥

हर भाति के कोढ़ की मरी और मेहुआ के । और दमर और घर के कोढ़ ५४ के लिये । और उभरना और घाय और चक्रचक्रिया बिंदु के लिये यह द्रव्यम्मा ५५ है । कि अपवित्र और पवित्र होने के दिन मिश्रनात्रे कोढ़ के लिये यही द्रव्यम्मा ५६ है ॥

### पंदरहवां पर्व ।

फिर परमेश्वर सूमा और हासन में कहके बोला । कि हमराग्न के संतानों से १ कहके बोला कि यदि किसी मनुष्य के प्रमेह का रोग होवे तो वह प्रमेह के कारण से अशुद्ध है । और यदि उस का प्रमेह थम जावे अथवा घना हो वह अशुद्ध ३ है । हर एक विद्वाना जिस पर प्रमेही बैठता है सो अशुद्ध होगा हर एक वस्तु ४ जिस पर वह बैठता है अशुद्ध होगी । और जो कोई उस के विद्वाने को छूवे ५ सो अपने कपड़े धोवे और पानी में स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा । और जो कोई उस वस्तु पर जिस पर प्रमेही बैठता है बैठे सो अपने कपड़े धोवे ६ और पानी में नहावे और सांझ लों अशुद्ध रहेगा । और जो कोई उस के शरीर ७ को जिसे प्रमेह है छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी में स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहेगा । और यदि प्रमेही किसी पवित्र मनुष्य पर धूके तो वह मनुष्य ८ अपने कपड़े धोवे और पानी में स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा । और ९ जिस आसन पर वह बैठे सो अपवित्र होगा । और जो कोई उस वस्तु को जो १० उस प्रमेही के नीचे है छूवे सो सांझ लों अपवित्र रहेगा और जो कोई उन वस्तुन को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और पानी में स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा । और दिन रात धोवे जिस किसी को प्रमेही छूवे सो अपने कपड़े धोवे ११ और पानी में स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा । और जिस सिट्टी के पात्र १२ को प्रमेही छूवे सो तोड़ा जावे और यदि काष्ठ का पात्र होवे तो पानी में धोया जावे । और जब प्रमेही चंगा हो जावे तब वह अपने पवित्र होने के लिये सात दिन १३ गिने तब वह अपने कपड़े धोवे और अपना शरीर बहते पानी से धोवे तब वह पवित्र होगा । और आठवें दिन दो पिण्डुकी अथवा कपोत के दो बच्चे लेके १४ परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर आवे और उन्हें याजक को सोये ।



- मंडली के तंबू में न आवे और वह अपने लिये और अपने घराने के लिये  
 १८ और इसराएल की समस्त मंडली के लिये प्रायश्चित्त करेगा । फिर वह  
 निकलके उस यज्ञवेदी पर आवे जो परमेश्वर के आगे है और उस के लिये  
 प्रायश्चित्त करे और उस बकड़े और उस बकरे के लोहू में से लेके वेदी के मीलों  
 १९ की चारों ओर लगावे । और अपनी अंगुली से उस पर सात घेर लोहू छिड़के  
 और उसे इसराएल के संतानों की अपवित्रता से पावन और शुद्ध करे ॥
- २० और जब वह पवित्र स्थान के और मंडली के तंबू के और यज्ञवेदी के लिये  
 २१ प्रायश्चित्त कर चुका तब उस जीते बकरे को लावे । और हाथन अपने दोनों  
 हाथ उस जीते बकरे के सिर पर रखे और इसराएल के संतानों की दुराद्वियों  
 और उन के सारे पापों के समस्त अपराधों का मान लेके उन्हें इस बकरे के सिर  
 पर धरे और उसे किसी मनुष्य के हाथ जो उस के लिये ठहराया गया हो वन की  
 २२ भिजवा दे । और वह बकरा उन की सारी दुराद्वियां अपने ऊपर उठाके दूर देश  
 में ले जायगा और वह उस बकरे को वन में छोड़ देवे ॥
- २३ और हासन मंडली के तंबू में आवे और सूती वस्त्रों को जो उस ने पवित्र  
 २४ स्थान में जाने के समय पहिने थे उतारे और उन्हें यहां रख देवे । और वह पवित्र  
 स्थान में अपना शरीर पानी से धोवे और अपने वस्त्र पहिने के बाहर आवे और  
 अपने बलिदान की भेंट और लोगों के बलिदान की भेंट चढ़ावे और अपने लिये  
 २५ और लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे । और पाप की भेंट की चिकनाई यज्ञवेदी  
 पर जलावे ॥
- २६ और जिस ने छुड़ाया हुआ बकरा छोड़ दिया सो अपने कपड़े धोवे और पानी  
 २७ से नहावे और उस के पीछे छावनी में प्रवेश करे । और पाप की भेंट के बकड़े  
 को और पाप की भेंट के बकरे को जिन का लोहू पवित्र स्थान में प्रायश्चित्त के  
 लिये पहुंचाया गया छावनी से बाहर ले जावे और उन की खालें और उन का  
 २८ मांस और उन का गोबर आग में जला देवे । और जिस ने उन्हें जलाया सो अपने  
 कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और उस के पीछे छावनी में  
 आवे ॥
- २९ और यह तुम्हारे लिये सनातन की विधि होगी सातवें मास की दसवीं तिथि  
 को तुम अपने प्राण को कष्ट देओ और कुछ कार्य न करो चाहे देशी चाहे पर-  
 ३० देशी जो तुम्हें में वास करता है । क्योंकि उस दिन तुम्हारे कारण तुम्हें पवित्र  
 करने के लिये प्रायश्चित्त किया जायगा जिसमें तुम अपने समस्त पापों से परमेश्वर  
 ३१ के आगे पवित्र हो जाओ । वह तुम्हारे लिये स्मरण का विश्वास होगा और तुम  
 ३२ अपने प्राण को कष्ट दीजिओ यह तुम्हारे लिये सदा की विधि है । और वह याजक  
 जो अभियेक किया जायगा और जो याजक के पद में सेवा करने के लिये अपने  
 पिता की संती स्थापित होगा सोई प्रायश्चित्त करे और पवित्र सूती वस्त्र को  
 ३३ पहिने । और पवित्र स्थान के लिये और मंडली के तंबू के लिये और यज्ञवेदी के  
 लिये और याजकों के लिये और मंडली के सब लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे ।  
 ३४ और यह तुम्हारे लिये सनातन की विधि है जिसमें तुम इसराएल के संतानों के

के लिये जिसे प्रमेह का रोग छाये और उस पुरुष के लिये जो रक्तस्थला के साथ लेटता हो यही व्यग्रस्था है ।

सोमहृत्वां पठ्य ।

और हाइन के दो चेहों के मरने के पीछे जब वे परमेश्वर के निकट आये १  
और मर गये परमेश्वर ने मृत्वा से वार्त्ता किई । और परमेश्वर ने मृत्वा से कहा २  
कि अपने भाई हाइन को कह कि वह हर समय पवित्र स्थान के घंघट के ३  
भीतर उस ठकना के आगे जो मंजूषा पर है न आया करे न हो कि मर जाये ४  
क्योंकि मैं मेघ में उस ठकना के ऊपर दिखाई दूंगा । पवित्र स्थान में हाइन ५  
यों आये पाप की भेंट के लिये एक बछड़ा और बलिदान की भेंट के लिये ६  
एक सेंडा लाये । पवित्र मूर्ता कुरना पढ़ने और उस के शरीर पर मूर्ता मृचनी ७  
हो और मूर्ता पटुके से उस की कटि अंगी हो और अपने मिर पर मूर्ता पगड़ी ८  
शक्वे ये पवित्र वस्त्र हैं और वह अपना शरीर पानी में धोये और उन्ने पढ़ने ।  
और हमराएल के संतानों की संहनों से बकरी के दो सेमे पाप की भेंट के लिये ९  
और एक सेंडा बलिदान की भेंट के लिये लेवे ।

और हाइन पाप की भेंट के उस बछड़े को जो उन के लिये है आगे लाये ६  
और अपने लिये और अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करे । और उन दोनों बकरों ७  
को लेके संहनों के तंत्र के द्वार पर परमेश्वर के आगे ले आये । और हाइन ८  
उन दोनों बकरों पर चिट्ठी टाले एक चिट्ठी परमेश्वर के लिये और दूसरी चिट्ठी ९  
बकरा कुड़ाने के लिये । और हाइन उस बकरे को लाये जिस पर परमेश्वर के १०  
नाम की चिट्ठी पड़े और उसे पाप की भेंट के लिये बलि चढ़ाये । परन्तु कुड़ाने ११  
के लिये जिस बकरे पर चिट्ठी पड़े उसे परमेश्वर के आगे जाना लाये कि इससे १२  
प्रायश्चित्त किया जाये और उस को कुड़ाघन के लिये वन में छोड़ दे ।

तब हाइन अपने लिये पाप की भेंट के बछड़े को लाये और अपने और अपने १३  
घर के लिये प्रायश्चित्त करे और पाप की भेंट के बछड़े को जो अपने लिये है १४  
बलि करे । और वह परमेश्वर के आगे चेदी पर से एक धूपधारी अंगारों से भरी १५  
हुई और अपनी सुट्टी भर सुगंध लेवे और घंघट के भीतर लाये । और उस धूप १६  
को परमेश्वर के आगे आग में डाल देवे जिस में धूप का मेघ उन ठकने को जो १७  
साजी पर है छिपावे और आप न मरे । और वह बछड़े का लोह लेके अपनी १८  
अंगुली से ठकने की पूंछ और छिड़के और ठकने के आगे अपनी अंगुली से १९  
सात बेर लोह छिड़के । फिर वह लोगों के लिये पाप की भेंट की बकरी को २०  
बलि करे और उस के लोह को घंघट के भीतर लाके देना उस ने बछड़े के २१  
लोह से किया था वैसा ही उसने करे और उसे ठकने के ऊपर और ठकने के २२  
आगे छिड़के । और पवित्र स्थान के लिये हमराएल के संतानों की अपवित्रता २३  
के कारण से और उन के पापों और उन के समस्त अपराधों के कारण से २४  
प्रायश्चित्त करे और वह संहनों के तंत्र के लिये भी जो उन के साथ उन की २५  
अपवित्रता के मध्य में है ऐसा ही करे । और जब वह प्रायश्चित्त करने के लिये २६  
पवित्र स्थान में जाये तो जब लो वह बाहर न जाये तब लो कोई मनुष्य २७

## अठारहवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर सूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों से कहके बोला  
 २ कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ । तुम मिस्र के देश के कार्य के समान जिस  
 ३ में तुम रहते थे न करिगो और कनआन के देश के से काम न करो जहाँ मैं तुम्हें  
 ४ ले जाता हूँ और उन की विधि पर न चलियो । मेरे विचारों पर चलो और  
 ५ मेरी विधि का पालन करो जिनमें तुम उन पर चलो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर  
 ६ हूँ । सो मेरी विधि और मेरे विचारों को पालन करो जिन पर यदि मनुष्य चले  
 ७ तो वह उन से जीविगा में परमेश्वर हूँ ॥

८ उन का नंगापन उधारने के लिये तुम्हें से कोई अपने कुटुम्ब के पास न जावे  
 ९ मैं परमेश्वर हूँ । अपने पिता का नंगापन अथवा अपनी माता का नंगापन मत  
 १० उधार वह तेरी माता है तू उस का नंगापन मत उधार । अपने पिता की  
 ११ पत्नी का नंगापन मत उधार वह तेरे पिता का नंगापन है । अपनी बहिन का  
 १२ नंगापन अपने पिता की बेटी का अथवा अपनी माता की बेटी का जो घर में  
 १३ अथवा बाहर उत्पन्न हुई हो उन का नंगापन मत उधार । अपने पुत्र की बेटी  
 १४ का अथवा अपनी बेटी का नंगापन मत उधार क्योंकि उन का नंगापन तेरा ही  
 १५ है । तेरे पिता की पत्नी की बेटी जो तेरे पिता की जन्मी है वह तेरी बहिन है  
 १६ तू उस का नंगापन मत उधार । अपने पिता की बहिन का नंगापन मत उधार  
 १७ वह तेरे पिता की समीपी कुटुम्ब है । अपनी माता की बहिन का नंगापन मत  
 १८ उधार क्योंकि वह तेरी माता की समीपी कुटुम्ब है । अपने पिता के भाई का  
 १९ नंगापन मत उधार उस की पत्नी पास मत जा वह तेरी चाची है । अपनी बहू  
 २० का नंगापन मत उधार वह तेरे बेटे की पत्नी है उस का नंगापन मत उधार ।  
 २१ अपने भाई की पत्नी का नंगापन मत उधार वह तेरे भाई का नंगापन है ।  
 २२ किसी स्त्री का और उस की बेटी का नंगापन मत उधार उस के बेटे की बेटी  
 २३ को और उस की बेटी की बेटी को उस का नंगापन उधारने के लिये न ले वह  
 २४ उस की समीपी कुटुम्ब हैं यह बड़ी दुष्टता है । और तू किसी स्त्री को खिजाने  
 २५ के लिये उस के लिये जो उस की बहिन समेत मत ले जिसमें उस का नंगापन  
 उधारे ॥

२६ और जब खों स्त्री अपवित्रता के लिये अलग किई गई हो उस का नंगापन  
 २७ उधारने के लिये उस के पास मत जा । और अपने परोसी की पत्नी के संग  
 २८ कुकर्म मत कर जिसमें आप को उस्से अपवित्र करे । और अपने वंश में से  
 २९ मोलक को मत चढ़ा और अपने परमेश्वर के नाम को अनरीति से मत ले मैं  
 ३० परमेश्वर हूँ । और तू पुरुषगमन मत कर वह धिनित है । और पशुगामी होके  
 ३१ आप को अशुद्ध मत कर और कोई स्त्री पशुगामिनी न हो वह धिनैनी  
 बात है ॥

३२ इन बातों में आप को अशुद्ध मत कर क्योंकि जिन जातिगणों को मैं तुम्हारे  
 ३३ आगे निकालता हूँ वे इन बातों में अशुद्ध हैं । और देश अशुद्ध है इस कारण  
 मैं उस के अपराध का पलटा लेता हूँ और देश भी अपने वासियों को उगलता

लिये उन के सब पापों के कारण ब्रह्म में एक बार प्रायश्चित्त करो सो जैसा परमेश्वर ने सूसा की आज्ञा किई थी उस ने वैसा ही किया ॥

सत्तरहवां पर्व ।

फिर परमेश्वर सूसा से कहके बोला । कि हाइन और उस के बेटों और हमरा- ३  
एल के समस्त संतानों से कहके बोला कि यह बड़ बात है जिस परमेश्वर ने ४  
आज्ञा किई है । जो मनुष्य हमराएल के घरानों में से जैन अथवा मेम्रा अथवा ५  
बकरी छावनी में अथवा छावनी के बाहर बलि करे । और मंडली के तंत्र के द्वार ६  
पर परमेश्वर के तंत्र के आगे भेंट चढ़ाने के लिये उसे न नावे तो उस मनुष्य पर ७  
लोहू का दोष होगा उस ने लोहू बहाया और वह मनुष्य अपने लोगों में से कट ८  
जायगा । यह हम लिये है कि हमराएल के संतान अपने बलिदानों का जिनमें वे ९  
चौगान में बलि करने हैं परमेश्वर के आगे मंडली के तंत्र के द्वार पर याजक पाम १०  
लावे और उन्हें परमेश्वर के आगे कुशन की भेंट के लिये बलि करे । और याजक वह ११  
लोहू मंडली के तंत्र के द्वार पर परमेश्वर की यज्ञवेदी पर छिड़के और परमेश्वर १२  
के सुगंध के लिये चिकनाई का जनावे । और आगे का पिनाचा के लिये जिन १३  
के पीछे वे यश्यागामों वे न चढ़ावे उन की प्राणियों में यह मनानन की विधि १४  
होगी ॥

और तू उन्हें कह कि हमराएल के घराने में अथवा परदेशी में जो तुम्हों में १५  
वास करता है जो कोई चढ़ावे की भेंट अथवा बलि का भेंट चढ़ावे । और उसे १६  
मंडली के तंत्र के द्वार पर परमेश्वर को चढ़ाने के लिये उसे न नावे वही मनुष्य १७  
अपने लोगों में से कट डाला जायगा ॥

और हमराएल के संतानों में से अथवा परदेशियों में से जो उन में वास करता १८  
है जो कोई किसी गीति का लोहू ग्यावे तो लिख्य में उम्मी लोहू के भक्त का १९  
विरोधी होगा और उसे उस के लोगों में से काट डालेंगा । क्योंकि शरीर का २०  
जीवन लोहू में है सो मैं ने उसे यज्ञवेदी पर तुम्हें दिया है कि तुम्हारे प्राणों के २१  
लिये प्रायश्चित्त होवे क्योंकि लोहू से प्राण के लिये प्रायश्चित्त होता है । इस २२  
लिये मैं ने हमराएल के संतानों से कहा कि तुम्हें से कोई प्राणी लोहू न खावे २३  
और कोई परदेशी जिस का वास तुम्हें है लोहू न ग्यावे ॥

और हमराएल के संतानों में से अथवा परदेशियों में से जिन का वास उन में है २४  
जो कोई श्वान के योग्य पशु अथवा पक्षी अथवा बकरी पकड़ सो उस के लोहू का २५  
बहा देवे और उसे धूल में टाँप देवे । क्योंकि यह नमस्त्र शरीर का जीव उस २६  
का लोहू है वह उस के जीव के लिये है हम लिये मैं ने हमराएल के संतानों को २७  
आज्ञा किई कि किसी रीति के मांस का लोहू मत खाओ क्योंकि नमस्त्र मांस २८  
का जीव उस का लोहू है जो कोई उसे खायेगा सो अपने लोगों में से कट जायगा ॥

और जो कुछ मर जावे अथवा फाड़ा जावे चाहे देशी जावे चाहे परदेशी जो २९  
प्राणी उसे खावे सो अपने कपड़े धावे और पानी से स्नान करे और सांक लो ३०  
अपवित्र रहे नव वह पवित्र होगा । पर यदि वह न धावे और स्नान न करे तो ३१  
वह दोषी होगा ॥

- १७ विरोध में मत खड़ा हो मैं परमेश्वर हूँ । अपने मन में अपने भाई से वैर मत
- १८ रख तू अपने परोसी को किसी भांति से दपट दे और उस पर पाप मत छोड़ । तू अपने लोगों के संतानों से वैर मत रख और अपना पलटा मत ले परन्तु अपने परोसी को अपने समान प्यार कर मैं परमेश्वर हूँ ॥
- १९ तुम मेरी विधिन का पालन करो तू अपने ठेहरों को और जातों से मत मिलने दे तू अपने खेत में मिले हुए बीज मत छो और सूत का मिला हुआ वस्त्र मत पहिन ॥
- २० जो कोई किसी स्त्री से जो वचनदत्त दामी हो और कुड़ाई न गर्दे हो और निर्वंध न हुई हो व्यभिचार करता है सो ताड़ना पावेगा वे मार डाले न जायेंगे
- २१ इस लिये कि वह निर्वंध न थी । सो वह परमेश्वर के लिये मंडली के तंत्र के
- २२ द्वार पर अपने अपराध की भेंट लावे अपराध की भेंट एक सेंका होवे । और याजक उस के लिये अपराध की भेंट के सेंके को परमेश्वर के आगे उस के पाप के लिये प्रायश्चित्त करे तब वह अपराध जो उस ने किया है क्षमा किया जायगा ॥
- २३ और जब तुम उस देश में पहुँचो और खाने के लिये भांति भांति के पेड़ लगाओ तो तुम उस के फल को अखतनः समझो तीन वरम लो तुम्हारे लिये
- २४ अखतनः के तुल्य रहे वह खाया न जायगा । परन्तु चौथे वरम उस के सारे फल
- २५ परमेश्वर की स्तुति के लिये पवित्र होंगे । और पाँचवें वरम तुम उस का फल खाओ जिसमें तुम्हारे लिये अपनी बढ़ती देवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥
- २६ तुम लोहू सहित मत खाओ टोना मत करो और समयां को न मानो । तुम अपने सिरों के वालों को गोलार्ध से मत मुड़ाओ और अपनी डाढ़ी के कोनों को
- २७ मत बिगाड़ो । मृतकों के लिये अपने मांस को मत काटो और अपने ऊपर गोदने से चिन्ह मत करो मैं परमेश्वर हूँ ॥
- २८ वेश्या बनाने के लिये अपनी कन्या से व्यभिचार मत कराओ ऐसा न होवे कि देश वेश्यागामी में पड़े और देश दुष्टता से परिपूर्ण होवे ॥
- २९ मेरे विश्राम के दिनों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान की प्रतिष्ठा करो
- ३० मैं परमेश्वर हूँ । ओम्हा को मत मानो और टोन्हे का पीछा करके उन से आप को अशुद्ध मत करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥
- ३१ पक्के वालों के आगे उठ खड़ा हो और पुरनिया के रूप को प्रतिष्ठा दे और अपने ईश्वर से डर मैं परमेश्वर हूँ ॥
- ३२ और यदि तुम्हारे देश में परदेशी ठिके तो तुम उस को मत खिजाओ ।
- ३३ परदेशी को जो तुम्हें घास करता है ऐसा जानो जैसा कि वह तुम्हें जन्मा और उसे अपने तुल्य प्यार करो क्योंकि तुम मिस की भूमि में परदेशी थे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥
- ३४ विचार में परिमाण में तैल में और मापने में अधर्म मत करो । धर्म का तुला धर्म का बांट धर्म की दससेरियां और धर्म की पसेरी तुम्हें होवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ जो तुम्हें मिस की भूमि से निकाल लाया । सो तुम मेरी

है । सो तुम मेरी विधि न और मेरे विचारों का पालन करो और इन धिनितों में २६  
 से किसी को न करो न देशी और न परदेशी जो तुम्हें वास करता है । क्योंकि २७  
 उस देश के लोगों ने जो तुम से आगे थे वे समस्त धिनित कार्य किये और देश  
 अशुद्ध हुआ है । जिससे जब तुम देश को अशुद्ध करो वह तुम्हें भी उगल न देवे २८  
 जिस रीति से उन जानिगणों को जो तुम से आगे थे उगला । क्योंकि जो कोई २९  
 उन धिनितों कियों में से कुछ करेगा उसे कुकर्मों प्राणी अपने लोगों में से कट  
 जायेंगे । सो तुम मेरी व्यवस्थाओं का पालन करो जिससे उन धिनितों कियों में से ३०  
 जो तुम से आगे किई गईं कोई क्रिया न करो और अपने को उन से अशुद्ध न  
 करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

उन्नीसवां पृष्ठ ।

फिर परमेश्वर मूमा से कहके बोला । इसराएल के मंतानों की चारी मंडली १  
 से कहके बोला कि पवित्र होओ क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर पवित्र हूँ ॥

तुम अपने अपने माता पिता से डरते रहो और मेरे विश्वास के दिनों का ३  
 पालन करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

तुम मूर्तिन की और मत फिरो और न डालके अपने लिये देवता बनाओ में ४  
 परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

और यदि तुम कुशल की भेंटों का दान परमेश्वर के लिये चढ़ाओ तो ५  
 अपनी प्रसन्नता के लिये उसे चढ़ाओ । चाहिये कि जब उसे चढ़ाओ वह उमी ६  
 दिन और दूसरे दिन खाया जावे और यदि तीसरे दिन तों कुछ दान रहे तो  
 आग में जला दिया जावे । और यदि वह तनिक भी तीसरे दिन खाया जावे ७  
 तो धिनित है वह शास्त्र न होगा । सो जो कोई उसे खाया सो अपराधी होगा ८  
 क्योंकि उस ने परमेश्वर की पवित्र वस्तु को अशुद्ध किया और वह मनुष्य अपने  
 लोगों में से काटा जायगा ॥

और जब तू अपना खेत काटे नव खेत के काने को सर्वत्र मत काट ले और ९  
 न अपने खेत का विज्ञा कर । और तू अपने दाय को मत विन और न अपने १०  
 घर एक अंगूर को बटोर उन्हें कंगालों और परदेशों के लिये छोड़ मैं परमेश्वर  
 तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

तुम चोरी मत करो और झूठाई से व्यवहार न करो एक दूसरे से झूठ मत ११  
 बोलो । और मेरा नाम लेकर झूठी किरिया मत खाओ और तू अपने ईश्वर के १२  
 नाम को अपवित्र मत कर मैं परमेश्वर हूँ । अपने परोसी से कल मत कर और १३  
 उससे कुछ मत चुरा बनिहारों की बनी रात भर विद्यान लो तेरे पास न रह  
 जावे ॥

बहिरे को दुर्वचन मत कह और तू अंधे के आगे टोकर खाने की वस्तु मत १४  
 रख परन्तु अपने ईश्वर से डरता रह मैं परमेश्वर हूँ ॥

तुम न्याय में अधर्म मत करो तू कंगाल का पक्ष मत कर और बड़े का १५  
 बड़ाई के लिये प्रतिष्ठा मत दे धर्म से अपने परोसी का न्याय कर ॥

अपने लोगों में लुतड़ा दान के मत आया जाया कर अपने परोसी के लोहू के १६



कर्म है वे दोनों अपने लोगों के आगे मार डाले जायेंगे उम ने अपनी यधिन  
१८ का नंगापन प्रगट किया वह दोषी होगा । और यदि मनुष्य रजस्यता स्त्री के  
साथ सेवे और उस की नग्नता उधारे तो उम ने उम का सेता उधारा है और  
उस ने अपने लोहू का सेता खुलवाया और वे दोनों अपने लोगों से काटे  
जायेंगे ॥

१९ और तू अपनी मौसी और अपनी फूफू की नग्नता मत उधार क्योंकि उस ने  
२० अपने समीपी कुटुम्ब की नग्नता उधारी है वे दोषी होंगे । और यदि कोई  
अपनी चाची के साथ कुकर्म करे उस ने अपने चाचा की नग्नता को उधारा है  
२१ वे अपने पाप को भोगेंगे वे निर्धन मरेंगे । और यदि मनुष्य अपने भाई की पत्नी  
को लेवे वह अशुद्ध कर्म है उस ने अपने भाई की नग्नता उधारी है वे निर्धन  
होंगे ॥

२२ सो तुम मेरी समस्त विधिन का और मेरे न्यायों का पालन करो और उन पर  
चलो जिसतें जिस देश में मैं तुम्हें बसाने को ले जाता हूं सो तुम्हें उगल न  
२३ देवे । और तुम उस जातिगण की विधिन पर जिसे मैं तुम्हारे आगे से छांक्ता  
हूं मत चलो क्योंकि उन्होंने ने ऐसे ही सब काम किये इसी लिये मैं ने उन से  
२४ घिन किई । परन्तु मैं ने तुम्हें कहा कि तुम उन के देश के अधिकारी होओगे  
और मैं उस देश को अधिकार के लिये तुम्हें दूंगा जहां दूध और मधु बढि रहा  
है मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जिस ने तुम्हें लोगों में से अलग कर लिया है ॥

२५ सो तुम पवित्र और अपवित्र पशुन में और अपवित्र और पवित्र पक्षियों में  
ब्योरा करो और तुम पशुन और पक्षियों और किसी जीवधारी के कारण से जो  
भूमि पर रेंगता है जिन्हें मैं ने तुम्हारे लिये अपवित्र ठहराया है आप को अपवित्र  
२६ न करो । और मेरे लिये पवित्र हो जाओ क्योंकि मैं परमेश्वर पवित्र हूं और मैं  
ने तुम्हें लोगों में से अलग कर लिया है जिसतें तुम मेरे होओ ॥

२७ और जो मनुष्य अथवा स्त्री ओम्हा अथवा टोन्हा हो सो निश्चय मार डाला  
जावे वे पत्थरवाह किये जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर होवे ॥

इक्कीसवां पृष्ठ ।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि हारून के बेटे याजकों से कह और  
२ उन्हें बोल कि अपने लोगों की मृत्यु के कारण कोई अशुद्ध न होवे । परन्तु अपने  
समीपी कुटुम्ब के लिये अपनी माता और अपने पिता और अपने पुत्र और अपनी  
३ पुत्री और अपने भाई के लिये । और अपनी कुंवारी बहिन के लिये जो अनव्याही  
४ है उस के कारण वह अशुद्ध होवे । जो अपने लोगों में प्रधान है सो आप को  
५ अशुद्ध न करे जिसतें आप को हलुक करे । वे अपने सिरों के बाल न मुंडावे और  
६ अपनी डाढ़ी के कोनों को न मुंडावे और अपने मांस को न काटें । वे अपने  
ईश्वर के लिये पवित्र बनें और अपने ईश्वर के नाम को हलुक न करें क्योंकि वे  
परमेश्वर के लिये आग की भेंट ईश्वर को भोग लगाते हैं सो वे पवित्र होंगे ।  
७ वे वेश्या को अथवा तुच्छ को पत्नी न करें और न उस स्त्री को जो अपने पति  
८ से त्यागी गई है पत्नी करें क्योंकि वे अपने ईश्वर के लिये पवित्र हैं । इस लिये

समस्त विधिनि और मेरे विचारों को पालन करो और उन्हें मानो मैं परमेश्वर हूँ ॥

### बीसवां पर्व ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि तू इसराएल के संतानों को कह कि १  
जो कोई इसराएल के संतानों से से अथवा परदेशी जो इसराएल में ठिका है २  
अपने वंश में से मोलक को दे वह निश्चय घात किया जायगा देश के लोग उस ३  
पर पत्थरबाद करें । और मैं उस मनुष्य पर वैर की रखवाई करूँगा और उस के ४  
लोगों में से उसे काट दूँगा इस लिये कि उस ने अपने वंश में से मोलक को ५  
दिया जिससे मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र और मेरे पवित्र नाम का अपमान करे ।  
और यदि देश के लोग किसी भाँति से उस मनुष्य में आँख ठिपाये जब उस ने ६  
अपने वंश में से मोलक को दिया है कि उसे घात न करें । तो मैं उस मनुष्य ७  
पर और उस के घराने पर वैर की रखवाई करूँगा और उसे उन सब मनुष्यों जो उस ८  
के पीछे मोलक से व्यवहार करते हैं उन्हें अपने लोगों में से काट दूँगा ।  
और उस मनुष्य पर जो आत्माओं और दान्तों की और जाता है जिससे उन के ९  
पीछे व्यवहार करे मैं उस मनुष्य पर अपना क्रोध भड़काऊँगा और उसे उस के १०  
लोगों में से काट दूँगा । सो आप को पवित्र करो और पावन होओ क्योंकि ११  
मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ । और मेरी विधिनि को स्मरण करो और उन्हें १२  
मानो मैं वह परमेश्वर हूँ जो तुम्हें पवित्र करता है ॥

जो कोई अपनी माता अथवा पिता को धिक्कारे सो निश्चय मार डाला १  
जायगा उस ने अपने माता पिता को धिक्कारा है उस का लोहू उन्हीं पर है ॥

और जो मनुष्य किसी की पत्नी से अथवा अपने परोसी की पत्नी से कुकर्म १०  
करे कुकर्म और कुकर्मिणी दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे ॥

और जो मनुष्य अपने पिता की पत्नी से व्यवहार करे उस ने अपने पिता के ११  
नंगापन को उधारा है वे दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे उन का लोहू उन्हीं १२  
पर है ॥

और जो मनुष्य अपनी बहू से कुकर्म करे वे दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे १३  
उन्हीं ने छिन्नोनी बात किये हैं उन का लोहू उन्हीं पर है ॥

और यदि कोई मनुष्य पुरुषगामी होवे तो उन दोनों ने छिन्नित कार्य किया १४  
है वे अवश्य मार डाले जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर है ॥

और यदि कोई स्त्री को और उस की माता को भी रखे वह दुष्टता है १५  
वे तीनों के तीनों जलाये जायेंगे जिससे तुम्हों में दुष्टता न रहे ॥

और यदि कोई मनुष्य पशु से कुकर्म करे वह निश्चय मार डाला जायगा १६  
और उस पशु को घात करो । और यदि स्त्री पशु से कुकर्म करे कि उस के तले १७  
होवे तो उस स्त्री को और उस पशु को मार डालो वे निश्चय प्राण से मारे १८  
जायें उन का लोहू उन्हीं पर है ॥

और यदि कोई मनुष्य अपनी बहिन को अपने पिता की बेटी को अथवा १९  
अपनी माता की बेटी को लेकर आपस में एक दूसरे की नग्नता देखे वह दुष्ट

५ हो ले तब लों पवित्र वस्तुन में से कुछ न खावे । और जो कोई किसी रंगवैया जंतु को खूवे जिस्से वह अपवित्र होवे अथवा किसी मनुष्य को जिस्से वह अपवित्र हो सके जो अपवित्रता उस में होवे । वह प्राणी जिम ने ऐसा कुछ कृया से सांभ लों अपवित्र रहेगा और जब लों अपना शरीर पानी से धो न ले पवित्र वस्तु ७ में से कुछ न खावे । और जब मूर्ख अस्त होवे तब वह पवित्र होगा और उस के ८ पीछे वह पवित्र वस्तु खावे क्योंकि वह उस का आहार है । जो कुछ आप से मरे ९ अथवा फाड़ा जावे वह उसे खाके आप को अशुद्ध न करे मैं परमेश्वर हूँ । इस लिये वे मेरी व्यवस्था का पालन करें ऐसा न होवे कि उस के लिये पापों होवें और मरे यदि वे उसे तुच्छ करें मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हूँ ॥

१० और कोई परदेशी पवित्र वस्तु न खावे और न याजक का पाहुन और न ११ वनिहार पवित्र वस्तु को खावे । परन्तु जिमे याजक ने अपने दाम से मोल लिया हो सो उसे खावे और वह जो उस के घर में उत्पन्न हुआ है सो उस के भोजन १२ में से खावे । यदि याजक की कन्या किसी परदेशी से व्याही जावे तो वह भी १३ चढ़ाई हुई पवित्र वस्तुन में से न खावे । पर यदि याजक की कन्या विधवा हो जावे अथवा त्यक्त होवे और निर्बन्ध हो और युवावस्था के समान अपने पिता के घर में फिर आवे तो वह अपने पिता के भोजन में से खावे परन्तु परदेशी उसे १४ न खावे । और यदि पवित्र वस्तुन में से कोई अनजान खा जावे तो वह उस के १५ पांचवें भाग को मिलावे और उसे उस पवित्र वस्तु सहित याजक को देवे । और इसराएल के संतान की पवित्र वस्तुन की जो उन्हीं ने परमेश्वर के लिये चढ़ाया १६ है वे निंदा न करें । और आप पवित्र वस्तुन के खाने से पाप का बोझ उन से १७ न उठवावें क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हूँ । फिर परमेश्वर मूसा से १८ कहके बोला । कि हारून को और उस के बेटों को और इसराएल के समस्त संतान को कहके बोल कि इसराएल के घराने में से अथवा इसराएल के परदेशियों में से जो कोई अपनी समस्त मनौती के लिये भेंट और अपनी समस्त मनमंता की १९ भेंट जो वे परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट के लिये चढ़ावें । सो अपनी २० ग्राह्यता के लिये ठीरों में से अथवा भेड़ बकरी में से निखोटा नख्ख होवे । जिस २१ पर दोष है उसे मत चढ़ाइयो क्योंकि तुम्हारे लिये ग्राह्य न होगा । और जो कोई अपनी मनौती पूरी करने को अथवा बांझित भेंट ठीरों में से अथवा भेड़ में से कुशल की भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो ग्राह्य होने के लिये निर्दोष होवे २२ उस में कुछ खोट न होवे । अंधा अथवा टूटा अथवा लंगड़ा अथवा लूला अथवा जिस पर लसा अथवा दाद अथवा खजुली होवे परमेश्वर के लिये भेंट मत चढ़ाइयो उन में से आग की भेंटों को परमेश्वर की यज्ञवेदी पर मत चढ़ाइयो । २३ और वैल और मेम्रा जिस का कोई अंग अधिक अथवा घटा होवे उसे २४ बांझित भेंट के लिये चढ़ावे परन्तु मनौती के लिये ग्राह्य न होगा । और अंड कुचला हुआ अथवा दबा हुआ अथवा टुंडा अथवा काटा हुआ पर- २५ मेश्वर के लिये मत चढ़ाइयो और अपने देश में ऐसी कौ मत बनाइयो । और इन सब में से अपने ईश्वर को नैवेद्य किसी परदेशी की ओर से मत

तु उसे पवित्र कर क्योंकि वह तेरे ईश्वर का भोजन चढ़ाना है वह तेरे लिये पवित्र होवे क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा शुद्धकर्ता पवित्र हूँ । और यदि किसी याज्ञक की पुत्री वेश्या का कर्म करके आप को तुच्छ करे वह अपने पिता को तुच्छ करती है वह आरा से जलाई जायगी ॥

और वह जो अपने भाइयों में प्रधान याज्ञक है जिस के सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया और जो स्थापित किया गया कि यस्त्र पढ़ने में अपना सिर नंगा न करे और अपने कपड़े न फाड़े । और वह किसी लोच के पास न जाये न अपने पिता और न अपनी माता के लिये आप को अशुद्ध करे । और कहीं पवित्र स्थान से बाहर न जाये और अपने ईश्वर के पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि उस के ईश्वर के अभिषेक के तेल का मुकुट उस पर है मैं परमेश्वर हूँ । और वह कुंआरी को पत्नी करे । विधवा अथवा त्यागी गई अथवा तुच्छ वेश्या को इन्द्रे न लेवे परन्तु वह अपने ही लोगों के वंश में जो कुंआरी से विवाह करे । और अपने वंश को अपने लोगों में तुच्छ न करे क्योंकि मैं परमेश्वर उसे पवित्र करता हूँ ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि हासन से कह कि जो कोई तेरे वंश में से अपनी अपनी पीढ़ियों में ख्यात होवे सो अपने ईश्वर के नैवेद्य चढ़ाने को समीप न आवे । क्योंकि वह पुरुष जिस में कुछ ख्यात होवे सो समीप न आवे जैसे अंधा अथवा लंगड़ा अथवा वह जिस की नाक बिपटी हो अथवा जिस पर कुछ उभड़ा है । अथवा वह जिस का पांव अथवा जांघ टूटा हो । अथवा कुचड़ा अथवा दावना अथवा उस की आंख में कुछ ख्यात हो अथवा दाद अथवा खजुनी अथवा अंड पिच्छे हो । हासन याज्ञक के वंश में से कोई मनुष्य जिस में ख्यात है निकट न आवे कि परमेश्वर को आरा की भेंट चढ़ावे उस में ख्यात है वह अपने ईश्वर को नैवेद्य चढ़ाने को पास न आवे । वह अपने ईश्वर का नैवेद्य अग्नि पावन और पवित्र थावे । केवल वह घूँघट के भीतर न जाये और यज्ञवेदी के पास न आवे इस लिये कि उस में ख्यात है और मेरे पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हीं शुद्ध करता हूँ ॥

तब मूसा ने हासन और उस के बेटों और ममस्त इसराएल के संतानों को यह सब कहा ॥

बाइसवां पृष्ठ ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि हासन और उस के बेटों से कह कि वे इसराएल के संतान की पवित्र दस्तान में आप को अन्नग रख्ये और मेरे पवित्र नाम की उन दस्तान के कारण जिनमें वे मेरे लिये पवित्र करते हैं निंदा न करें मैं परमेश्वर हूँ । उन्हीं कह कि तुम्हारी पीढ़ियों में तुम्हारे ममस्त वंश में जो कोई उन पवित्र दस्तान के पास जो इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये पवित्र करते हैं अपनी अपवित्रता रखके जावे तो वह जन मेरे पास से काटा जावेगा मैं परमेश्वर हूँ । जो कोई हासन के वंश में से कोई अथवा प्रमेही हो और जो मृतक के कारण से अपवित्र है और उसे जिस को प्रमेह है जब लों वह पवित्र न

- १५ और विश्राम दिन के विहान से जब से हिलाने की भेंट के लिये तुम ने गट्टा
- १६ चढ़ाया है सात अठवारे गिनके पूरा करियो । सातवें विश्राम के दिन के पीछे
- विहान से पचास दिन गिन लो और परमेश्वर के लिये नये भोजन की भेंट चढ़ाओ ।
- १७ अपने निवासें में से दो दसवें भाग की दो रोटी लाइयो ये चोग्ये पिसान की
- १८ होवें वह खमीर के साथ पकाई जावें पहिले फल परमेश्वर के लिये हैं । और
- पहिले बरस के निखोट सात मेमे और एक बकड़ा और दो मँडे अन्न के साथ
- लाइयो वह परमेश्वर के बलिदान की भेंट होंगे और उन के भोजन की और उन
- १९ के तपावन की भेंट सहित परमेश्वर के सुगंध के लिये होम की भेंट है । और
- पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्रा और कुशल की भेंट के लिये पहिले
- २० बरस के दो मेमे बलि कीजियो । और याजक उन्हें पहिले फल की रोटी के संग
- परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये दो मेम्रा समेत हिलावे याजक के
- २१ लिये वे परमेश्वर के आगे पवित्र होंगे । और उसी दिन प्रचारियो वह तुम्हारे
- पवित्र खुलावा के लिये होवे कोई सांसारिक कार्य मत करियो यह तुम्हारे समस्त
- निवासें में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत लों विधि होगी ॥
- २२ और जब अपने खेत लवो तब तू अपने खेत के कोनों को भाड़क मत काटियो
- और लवने के पीछे मत बीनियो तू उन्हें कंगाल और परदेशी के लिये छोड़ियो
- में परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥
- २३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतान से कह कि
- २४ सातवें मास की पहिली तिथि तुम्हारे लिये एक विश्राम का दिन और नरसिंगे
- २५ के शब्द से स्मरण पवित्र खुलावा है । कोई सांसारिक कार्य मत कीजियो परन्तु
- परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट लाइयो ॥
- २६ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । सातवें मास की दसवीं तिथि प्रायश्चित्त
- २७ देने का दिन है तुम्हारे लिये पवित्र खुलावा होगा और तुम अपने प्राणों को
- २८ शोकित करोगे और परमेश्वर के लिये होम की भेंट लाओ । और उसी दिन
- कोई काम मत करियो क्योंकि वह प्रायश्चित्त का दिन है तुम परमेश्वर अपने
- २९ ईश्वर के आगे अपने लिये प्रायश्चित्त करो । क्योंकि जो प्राणी उस दिन में
- ३० शोकित न होगा वह अपने लोगों में से काटा जायगा । और जो प्राणी उस दिन
- ३१ में कोई काम करेगा मैं उसी प्राणी को उस के लोगों में से नाश करूँगा । किसी
- रीति का काम मत करना यह तुम्हारे समस्त निवासें में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत
- ३२ लों सनातन के लिये विधि होगी । वह तुम्हारे लिये एक विश्राम का दिन होगा
- और अपने प्राण को शोकित करियो तुम उस मास की नवीं तिथि को सांझ से
- सांझ लों अपने विश्राम के लिये पालियो ॥
- ३३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । इसराएल के संतानों से कह कि सातवें
- ३४ मास की पंदरहवीं तिथि से सात दिन लों परमेश्वर के तंबू का पर्व है । पहिले
- ३५ दिन पवित्र खुलावा होवे कोई सांसारिक कार्य न करना । सात दिन लों परमे-
- श्वर के लिये होम की भेंट लाओ आठवें दिन तुम्हारा पवित्र खुलावा होगा सो
- तुम परमेश्वर के लिये होम की भेंट लाइयो वह सभा का दिन है कुछ सांसा-

चढ़ाइयो क्योंकि उन की सड़ाहट उन में है वे खोटे हैं वे तुम्हारे लिये ग्राह्य न होंगे ॥

और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि जब तब अथवा भेड़ बकरी उत्पन्न २५ होवे तब सात दिन लों अपनी साता के साथ रहे और आठवें दिन से और उससे आगे परमेश्वर की आज्ञा की भेंट के लिये ग्राह्य होगा । और गाय अथवा भेड़ २६ को चब्रे समेत एक ही दिन मत मारियो ॥

और जब तुम परमेश्वर के लिये धन्यवाद के बलिदान भेंट चढ़ाओ तब २७ अपनी ग्राह्यता के लिये उसे चढ़ाओ । उसी दिन खाया जावे तुम उस में से ३० दूसरे दिन लों तनिक भी न छोड़ियो मैं परमेश्वर हूँ ॥

और मेरी आज्ञाओं को धारण करो और उन्हें पालन करो मैं परमेश्वर हूँ । ३१ और मेरे पवित्र नाम को हलुक न करो परन्तु मैं इसराएल के संतानों में पवित्र ३२ हूंगा मैं परमेश्वर तुम्हें पवित्र करता हूँ । जो तुम्हें सिन की भूमि से निकाल ३३ लाया कि तुम्हारा ईश्वर होऊँ मैं परमेश्वर हूँ ॥

तेईसवां पर्व ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों से कहके बोल १ कि परमेश्वर के पर्व जिन्हें तुम पवित्र बुलाया सभा के लिये प्रचारोगे वे मेरे पर्व हैं ॥

छः दिन काम काज किया जावे परन्तु सातवां दिन जो विश्राम का है उस २ में पवित्र सभा होगी कोई कार्य न करो वह तुम्हारे समस्त निवासों में परमेश्वर के विश्राम का दिन है ॥

ये परमेश्वर के पर्व और पवित्र सभा जिन्हें तुम उन के समय में प्रचारोगे । ४ पहिले मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को परमेश्वर का फसह है । और उसी ५ मास की पंद्रहवीं तिथि को परमेश्वर के अश्वमीरी रोटी का पर्व है सात दिन लों अवश्य अश्वमीरी रोटी खाइयो । पहिले दिन तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा ७ कोई सांसारिक कार्य मत कारियो । परन्तु सात दिन लों परमेश्वर के लिये काम ८ की भेंट चढ़ाइयो सातवें दिन पवित्र सभा होगी कोई सांसारिक कार्य मत कीजियो ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों से कहके बोल १० कि जब तुम उस देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें देता हूँ और उस का अन्न लवा तब तुम अपनी वालों में से एक गट्टा पहिले फल याजक पास लाओ । और वह ११ उस गट्टे को परमेश्वर के आगे हिलावे कि तुम्हारी और से ग्राह्य होवे विश्राम के दूसरे दिन विधान को याजक उसे हिलावे । और उस दिन जिस समय वह १२ गट्टा हिलाया जावे पहिले वरम का एक निष्कोट मेझा बलिदान की भेंट परमे- १३ श्वर के लिये चढ़ाओ । और उस के भोजन की भेंट दो दसवां भाग चांग्या पिसान तेल मिलाके काम की भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये होवे और उस के तपावन की भेंट सेर भर दाखरस होवे । और जिस दिन लों अपने ईश्वर के लिये १४ भेंट चढ़ाओ रोटी और भूना हुआ अन्न अथवा हरी वालें मत खाइयो तुम्हारे समस्त निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों में यह सनातन का विधि है ॥



में रक्खा गया जिससे उन पर प्रगट करे कि परमेश्वर क्या आज्ञा करता है ।  
 १३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । जिस ने अपनिंदा किई है उसे कायनी के  
 १४ बाहर निकाल ले जा और जितनों ने सुना वे अपने हाथ उस के मिर पर रखें  
 १५ और सारी मंडली उसे पत्थरवाह करे । और इसराएल के संतानों से कह कि  
 १६ जो कोई अपने ईश्वर को धिक्कारेगा सो अपना पाप भोगेगा । और जो परमेश्वर  
 के नाम की अपनिंदा करे सो निश्चय प्राण से मारा जायगा समस्त मंडली उसे  
 निश्चय पत्थरवाह करे चाहे वह परदेशी होवे चाहे देशी जब उस ने परमेश्वर  
 १७ के नाम की अपनिंदा किई वह प्राण से मारा जायगा । और जो दूसरे आदमी  
 १८ को मार डालेगा सो निश्चय घात किया जायगा । और जो कोई पशु को मार  
 १९ डाले सो उस की संती पशु देवे । और यदि कोई अपने परेमी को खोटा करे  
 २० जैसा करेगा वैसा ही उस पर किया जायगा । तोड़ने की संती तोड़ना आंग्र की  
 संती आंग्र दांत की संती दांत जैसा उस ने मनुष्य को खोटा किया है उससे वैसा  
 २१ ही किया जावे । और जो पशु को मार डाले वह उस का पलटा देवे और जो  
 २२ मनुष्य को मार डाले वह प्राण से मारा जावे । तुम्हारी एक ही रीति की व्यवस्था  
 होवे जैसी परदेशी की वैसी ही देशी के विषय में होवे क्योंकि मैं परमे-  
 २३ श्वर तुम्हारा ईश्वर हूं । तब मूसा ने इसराएल के संतान से कहा कि उस जन  
 को जिस ने धिक्कारा तबू के बाहर निकाल ले जावे और उस पर पत्थरवाह करे  
 सो इसराएल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा  
 ही किया ॥

### पच्चीसवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर सीना के पहाड़ पर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के  
 संतानों को कहके बोल कि जब तुम उस देश में जो मैं तुम्हें देता हूं पहुंचो तब  
 २ वह भूमि परमेश्वर के लिये विश्राम को विश्राम करे । छः बरस अपने खेतों को  
 ३ बोओ और छः बरस अपने दाखों को सवार और उस का फल बटोर । परन्तु  
 सातवां बरस देश के लिये चैन का विश्राम होगा परमेश्वर के लिये विश्राम न  
 ४ तो अपने खेत को बोना और न अपने दाखों को सवारना । जो कुछ आप से  
 आप उगे तू उसे मत लव और बिन सवारी हुई लता के दाखों को मत बटोर  
 ५ कि देश के लिये चैन का बरस है । सो भूमि का विश्राम तुम्हारे और तुम्हारे  
 दास और दासी और तुम्हारे बनिहार और तुम्हारे परदेशियों के जो तुम्हें टिकते  
 ६ हैं खाने के लिये होगा । और तुम्हारे छार और जो पशु तुम्हारे देश में है उस  
 का सब प्राण उन के खाने के लिये होगा ॥

७ और तू सात विश्राम के बरसों को अपने लिये गिन सात गुने सात बरस और  
 ८ सात बरसों के विश्राम के समय तुम्हारे लिये उंचास बरस होंगे । तब तू सातवें  
 मास की दसवीं तिथि में आनंद का नरसिंगा फुंकवा प्रायश्चित्त के दिन अपने  
 १० सारे देश में नरसिंगा फुंकवा । सो तुम पचासवें बरस को पवित्र जानो और देश  
 में उस के सारे बासियों में मुक्ति प्रचारो वह तुम्हारे लिये आनंद है और तुम्हें से  
 हर एक मनुष्य अपने अपने अधिकार को और अपने घराने को फिर जावे ।

के लिये तुम ने तु  
म के दिन के प  
की भेंट बढ़ाओ।  
दोनों पितृम  
के लिये हैं। है  
में छे के ह  
को जो स  
में है। है  
के लिये हैं  
में हैं के म  
में बढ़ें  
में बढ़ें  
में बढ़ें

के दि  
मिली  
पल  
का  
के  
का  
ने

रिक्त कार्य मत कीजियो । परमेश्वर के ये पर्व हैं जिन में तुम पवित्र युताया ३०  
प्रचारियो जिसमें परमेश्वर के लिये होम की भेंट बलिदान की भेंट और बलि की  
भेंट और तपायन की भेंट हर एक वस्तु अपने दिन में लाइयो । परमेश्वर के ३८  
विश्राम के दिनों के और अपनी भेंटों से अधिक और तुम्हारी समस्त मनोता से  
अधिक और तुम्हारे समस्त मनमंता भेंटों से अधिक जिन्हें तुम परमेश्वर के  
लिये चढ़ाते हो । सातवें मास की पंद्रहवीं तिथि जब खेतों का अनाज एकट्ठा ३९  
कर लो तब तुम सात दिन लों परमेश्वर के लिये पर्व मानियो पहिला दिन  
विश्राम का होगा और आठवां दिन विश्राम का होगा । सो तुम पहिले ४०  
दिन सुंदर वृक्षों का फल खजूर की डाली और बने वृक्षों की डालियां और नालियों  
को वेंट लीजियो और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे सात दिन लों आनंद  
कीजियो । और वृक्ष में परमेश्वर के लिये सात दिन भर पर्व के लिये पालन ४१  
करियो यह तुम्हारी पीढ़ियों में सनातन की विधि होगी सातवें मास में ही  
स्मरण कीजियो । सात दिन लों डालियों की छान में रहियो जितने इसराएली हैं ४२  
सब के सब डालियों की छान में रहें । जिसमें तुम्हारी पीढ़ी जाने कि जब में ४३  
इसराएल के संतानों को मिस्र के देश से निकाल लाया मैं ने उन्हें डालियों की  
छान में बसाया मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

सो मूसा ने इसराएल के संतानों से परमेश्वर के पर्वों का कह सुनाया ॥ ४४  
चाचीनयां पर्व ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों को आज्ञा १  
कर कि दीपक को नित्य जलाने के लिये फूटे हुए जलपाई का निर्मल तेल तुम्ह  
पास लावें । हासन उसे मंडली के तंबू में साची के आठ के बाहर सांक से ३  
विधान लों परमेश्वर के आगे रीति में नित्य रक्खा करे तुम्हारी पीढ़ियों के  
लिये यह विधि सनातन की होगी । वही दीपकों को पवित्र दीपक पर परमेश्वर ४  
के आगे रीति से सदा रक्खा करे ॥

और चोगे पिसान लेके उससे बारह फुलके पका एक एक फुलका दो दसवें ५  
अंश का होवे । और तू उन्हें परमेश्वर के आगे पवित्र संच पर हः हः करके ६  
दो पांती में रख । और हर एक पांती पर निराला गंधरस रखना जिसमें बार ७  
रोटी स्मरण के लिये होवे अर्थात् होम की भेंट परमेश्वर के लिये । यह सनातन ८  
की आज्ञा के लिये इसराएल के संतान से लेके हर विश्राम दिन को परमेश्वर के  
आगे रीति से नित्य रक्खा करे । और वह घाग्न की और उस के बेटों की होगी ९  
और वे उन्हें पवित्र स्थान में खावें क्योंकि यह उस के लिये परमेश्वर के होम  
की भेंटों में से अत्यंत पवित्र विधि नित्य के लिये है ॥

तब एक इसराएली स्त्री का बेटा जिस का पिता मिस्री था निकलके १०  
इसराएलियों में गया और उस इसराएली स्त्री का बेटा और इसराएल का एक  
जन कावनी में भागड़ रहे थे । और इसराएली स्त्री के बेटे ने परमेश्वर के नाम ११  
की अपनिंदा किई और धिक्कारा तब वे उसे मूसा पास लाये और उस की माता  
का नाम सलूमियत था जो दिवरी के पुत्र दान के कुल से थी । और वह बंधन १२

३४ हैं । परन्तु वे खेत जो उन के नगरों के सिवानों में हैं वेचे न जायें क्योंकि वह उन के सनातन का अधिकार है ॥

३५ और यदि तेरा भाई दुःखी और कंगाल हो जावे तो तुम उस की सहाय करो  
 ३६ चाहे वह परदेशी होवे चाहे पाहुन जिसमें वह तुम्हारे साथ जीवन काटे । तू  
 ३७ उसे ब्याज और बढ़ती मत ले परन्तु अपने ईश्वर से डर जिसमें तेरा भाई तेरे  
 ३८ साथ जीवन काटे । तू उसे ब्याज पर ऋण मत दे और बढ़ती के लिये अपने  
 ३९ भोजन का ऋण मत दे । मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ जो तुम्हें मिस्र के देश  
 से निकाल लाया जिसमें तुम्हें कनआन का देश देऊँ और तुम्हारा ईश्वर  
 होऊँ ॥

३९ और यदि तेरा भाई तुझ पास कंगाल हो जावे और तुझ पास बेचा जावे तो  
 ४० तू उसे दास की नाईं सेवा मत करवा । वह बनिहार और पाहुन की नाईं तेरे  
 ४१ साथ रहे आनंद के बरस लों तेरी सेवा करे । और उस के पीछे वह अपने लड़कों  
 समेत तुझ से अलग हो जायगा और अपने घराने और अपने पिता के अधिकार  
 ४२ को फिर जावे । क्योंकि वे मेरे सेवक हैं जिन्हें मैं मिस्र की भूमि से बाहर ले  
 ४३ आया वे दासों की नाईं वेचे न जायें । तू कठोरता से उन से सेवा मत ले परन्तु  
 ४४ अपने ईश्वर से डर । तेरा दास और तेरी दासियां जिन्हें तू अन्यदेशियों में से जो  
 ४५ तुम्हारे आसपास हैं रखेगा उन्हीं में से दास और दासियां मोल लेओ । और उन  
 परदेशियों के लड़कों में से भी जो तुम्हें दास करते हैं और उन के घराने में से  
 जो तुम्हारी भूमि में उत्पन्न हुए हैं मोल लीजियो और वे तुम्हारे अधिकार होंगे ।  
 ४६ और तुम उन्हें अपने पीछे अपने लड़कों के लिये अधिकार में लेओ वे सदा लों  
 तुम्हारे दास हैं परन्तु तू अपने भाइयों पर जो इसराएल के संतान हैं एक दूसरे  
 पर कठोरता से सेवा मत लेओ ॥

४७ और यदि कोई पाहुन अथवा परदेशी तेरे पास धनी होवे और तेरा  
 भाई जो उस के साथ है कंगाल हो जावे और उस परदेशी अथवा पाहुन के हाथ  
 जो तेरे साथ है अथवा उस के हाथ जो परदेशी के घरानों में से होवे  
 ४८ किसी के हाथ आप को बेच डाले । उस के बेचे जाने के पीछे वह फेर कुड़ाया  
 ४९ जा सके उस के भाइयों में से एक उसे कुड़ा सकेगा । चाहे उस का चाचा चाहे  
 उस के चाचा का पुत्र अथवा जो कोई उस के घराने में उस का गोती हो उस  
 ५० को कुड़ा सकेगा यदि उससे हो सके तो वह आप को कुड़ावे । और वह अपने  
 बेचे जाने के बरस से लेके आनंद के बरस लों गिने और उस के बेचे जाने का  
 मोल बरसोंकी गिनती के समान होवे वह बनिहार के समय के समान  
 ५१ उस के साथ रहेगा । यदि बहुत बरस रहे तो वह अपने कुड़ाने को उस मोल से  
 ५२ जिसे वह बेचा गया उन बरसों के समान फेर दे । और यदि आनंद के छोड़े  
 बरस रह जायें तो वह लेखा करे और अपने कुटकारे का मोल अपने बरसों  
 ५३ के समान उसे फेर दे । वह बरस बरस के बनिहार के समान उस के साथ रहे  
 ५४ उस पर कठोरता से सेवा न करवावे । और यदि वह इन में कुड़ाया न जावे तो  
 ५५ आनंद के बरस में वह अपने लड़कों समेत कूट जायगा । क्योंकि इसराएल के

पचासवां वरसं तुम्हारे लिये आनंद है तुम कुछ मत छोड़ो न उसे जो उस में १५  
 आप से उगे काटियो और बिन सवांगी हुई दाख की लता के दाखों को मत  
 बटोरें । क्योंकि वह आनंद है यह तुम्हारे लिये पवित्र होगा खेतों में जो बड़े १६  
 तुम उसे खाओ । इस आनंद के वरसं तुम्हें से हर एक अपने अपने अधिकार को १७  
 फिर जावे । और यदि तू अपने परोसी के हाथ वेचे अथवा अपने परोसी से मोल १८  
 ले तो एक दूसरे पर अधिकार मत कीजियो । आनंद के वरसों के पीछे के समान १९  
 गिनके अपने परोसी से मोल लेना और वरसों के प्राप्ति की गिनती के समान तेरे हाथ  
 वेचे । वरसों की बढ़ताई के समान उस का मोल बढ़ाव्यो और वरसों की घटी १६  
 के समान उस का मोल घटाव्यो क्योंकि प्राप्ति की गिनती के समान वह तेरे हाथ  
 वेचता है । इस लिये एक दूसरे पर अधिकार मत करो परन्तु अपने ईश्वर से उरियो १७  
 क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

सो तुम मेरी विधि का मानो और मेरे न्याय का धारण और धारण करियो १८  
 और देश में कुशल से वास करोगे । और भूमि तुम्हें अपने फल देगी और तुम १९  
 खाके तृप्त होओगे और उस पर कुशल से रज्य करोगे । और यदि तुम जानो कि २०  
 हम सातवें वरस क्या खावेंगे क्योंकि न बोटेंगे न बटोरेंगे । तब मैं छठवें वरस २१  
 अपनी आर्मीन तुम्हें देऊंगा और उन में तीन वरस का प्राप्ति होगा । और तुम २२  
 आठवें वरस छोड़ोगे और नवें वरस लो पुराना आनाज खाओगे जब लो उस में  
 अन्न फेर न दोगे तब लो पुराना अन्न खाओगे ॥

और भूमि नष्ट के लिये बेची न जावे क्योंकि भूमि मेरी है और तुम मेरे २३  
 संग परदेसी और निवासी हो । और तुम अपने अधिकार की नमस्कार भूमि २४  
 के लिये छुटकारा देना । यदि तेरा भाई कंसाल होवे और कुछ अपने अधिकार २५  
 में से वेचे और कोई उसे छुड़ाने आवे तब वह अपने भाई की बेची हुई छुड़ा  
 ले । और यदि उस मनुष्य के छुड़ाने को कोई न दोगे और आप से छुड़ा सकें । २६  
 तब उस के बेचने के वरस गिने जायें और जिस पास बेचा है उस को बढ़ती २७  
 फेर देवे जिसमें वह अपने अधिकार पर फिर जावे । परन्तु यदि वह फेर २८  
 देने पर खड़ा न हो तब जो बेचा हुआ है सो आनंद के वरस लो उसी के हाथ  
 में रहे जिस ने उसे मोल लिया और आनंद में वह छूट जायगी तब वह अपने  
 अधिकार पर फिर जावे ॥

और यदि कोई घर को जो भीतनगर में है बेचने के पीछे वरस भर में उसे २९  
 छुड़ावे पूरे वरस में वह उसे छुड़ावे । और यदि वरस भर में छुड़ाया न जावे तो ३०  
 वह घर जो भीतनगर में है सो उस के लिये जिस ने मोल लिया है उस की पीढ़ियों में  
 दृढ़ रहेगा वह आनंद के वरस में बाहर न जायगा । परन्तु गांव के घर जिन के ३१  
 आसपास भीत न होवे देश के खेतों के समान गिने जायें वे छुड़ा सकें और आनंद  
 में छूट जायेंगे । और लावियों के नगर और उन के अधिकार के नगरों के घर ३२  
 जब चाहें तब लायी छुड़ावें । और यदि कोई मनुष्य लावियों से मोल लेवे तब ३३  
 जो घर बेचा गया और उस के अधिकार का नगर फिर आनंद के वरस में छूट  
 जायगा क्योंकि लावियों के नगर के घर इमराएल के संतानों में उन के अधिकार

२१ और यदि तुम मेरे विपरीत चलोगे और मेरी न सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापों के  
 २२ समान तुम पर सातगुण मरी लाऊंगा । और मैं खनैले पशु भी तुम्हें भेजूंगा और  
 वे तुम्हारे वंश को भक्षण करेंगे और तुम्हारे पशुन को नाश करेंगे और तुम्हें  
 २३ गिनती में घटा देंगे और तुम्हारे मार्ग सूने पड़े रहेंगे । और यदि मेरी इन बातों  
 २४ से न सुधरेगो परन्तु मुझ से विपरीत चलोगे । तो मैं भी तुम्हारे विपरीत  
 २५ चलूंगा और तुम्हारे पापों के लिये तुम्हें सातगुण दंड देऊंगा । और मैं तुम पर  
 तलवार लाऊंगा जो मेरी वाचा के भगड़े का पलटा लेनेवाली है और जय तुम  
 अपने नगरों में एकट्टे होओगे तब मैं तुम्हों में मरी भेजूंगा और तुम वैरियों  
 २६ के हाथ में सौंपे जाओगे । जब मैं तुम्हारी रोटी की लाठी तोड़ डालूंगा तब दस  
 स्त्री तुम्हारी रोटियां एक तनूर में पकावेंगी और तुम्हारी रोटियां तैलके तुम्हें  
 देंगी और तुम खाओगे परन्तु तृप्त न होओगे ॥

२७ और यदि तुम इस पर भी न सुनोगे परन्तु मुझ से विपरीत चलोगे । तो मैं  
 भी कोप से तुम्हारे विपरीत चलूंगा और मैं तब मैं ही तुम्हारे पापों के कारण  
 २८ तुम्हें सातगुण ताड़ना करूंगा । और तुम अपने वेष्टों का और अपनी वेष्टियों का  
 २९ मांस खाओगे । और मैं तुम्हारे जंचे स्थानों को ढा दूंगा और तुम्हारी मूर्तियों को  
 काट देऊंगा और तुम्हारी लोथ तुम्हारी मूर्तियों की लोथों पर फेंकूंगा और मेरा  
 ३० प्राण तुम से छिन करेगा । और तुम्हारे नगरों को उजाड़ करूंगा और तुम्हारे  
 ३१ प्रवित्र स्थानों को सूना करूंगा और मैं तुम्हारे सुगंध को न सूंघूंगा । और मैं  
 तुम्हारी भूमि को उजाड़ूंगा और तुम्हारे शत्रु उस के कारण आश्चर्य मानेंगे ।  
 ३२ और मैं तुम्हें अन्यदेशियों में छिन्न भिन्न करूंगा और तुम्हारे पीछे से तलवार  
 निकालूंगा और तुम्हारी भूमि उजाड़ होगी और तुम्हारे नगर उजड़ जायेंगे ।  
 ३३ तब देश अपने विश्रामों को भोग करेगा अपने समस्त उजाड़ के दिनों में जब  
 तुम अपने शत्रुन के देश में रहोगे तब देश चैन करेगा और अपने विश्रामों को  
 ३४ भोग करेगा । जब लो वृद्ध उजाड़ रहेगा तब लो चैन करेगा इस कारण कि जब  
 ३५ तुम उस में वास करते थे तुम्हारे विश्रामों में चैन न किया । और तुम्हें जो  
 वच रहे हैं मैं उन के वैरियों के देश में उन के मन में दुर्बलता डालूंगा और पात  
 खड़कने का शब्द उन्हें खदेड़ेगा और वे ऐसे भागेंगे जैसे तलवार से भागते हैं और  
 ३६ बिना किसी के पीछा करने से वे गिर पड़ेंगे । और वे ऐसे एक पर एक गिरेंगे  
 जैसे तलवार के आगे और कोई उन का पीछा न करेगा और तुम अपने वैरी के  
 ३७ आगे ठहर न सकोगे । और तुम अन्यदेशियों में नष्ट होओगे और तुम्हारे वैरियों  
 ३८ का देश तुम्हें खा जायगा । और वे जो तुम्हें से बच जायेंगे सो तुम्हारे वैरियों  
 के देश में और अपने पाप में और अपने पितरों के पाप में क्षीण हो जायेंगे ।  
 ४० यदि वह अपने पापों को और अपने पितरों के पापों को अपने अपराधों के  
 संग जो उन्होंने मेरा अपराध किया और यह कि वे मेरे विपरीत चले हैं  
 ४१ मान लेंगे । मैं भी उन के विपरीत चलता था और उन के वैरियों के देश  
 में उन्हें लाया यदि उन के अखतनः मन दीन हो जायेंगे और अपने दंड को अपने  
 ४२ अपराध के योग्य समझेंगे । तब मैं यश्कूब के संग अपनी वाचा को स्मरण करूंगा

संतान मेरे सेवक हूँ वे मेरे सेवक जिन्हें मैं मिस्र के देश से निकाल लाया मैं पर-  
मेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

ऊर्ध्वमवां पर्व ।

अपने लिये मूर्ति अथवा खोदी हुई प्रतिमा जन बनाइयो और पूजित मूर्ति १  
तुम अपने लिये सत खड़ी कीलियो और दंडवन करने के लिये पत्थर की मूर्ति  
अपनी भूमि में स्थापित सत करियो क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ।  
तुम मेरे विश्राम के दिनों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान को प्रतिष्ठा देओ २  
मैं परमेश्वर हूँ ॥

यदि तुम मेरी विधिनु पर चलोगे और मेरी आज्ञाओं को धारण करके ३  
उन पर चलोगे । तो मैं तुम्हारे लिये समय पर मंड दस्माऊंगा और देश अपनी ४  
बढ़ती उगावेगा और खेत के दृत्त अपने फल देंगे । यहां नों कि अनु भाड़ने का ५  
समय दाग्य तोड़ने के समय लों पहुंचेगा और दाग्य तोड़ने के समय लों याने का  
समय पहुंचेगा और तुम ग्राके मंतुष्ट होओगे और अपने देश में चैन से रहोगे ।  
और मैं देश में कुशल देऊंगा और तुम लेट जाओगे और कोई तुम्हें न उगावेगा ६  
और मैं घरे पशुओं को देश में दूर कहेगा और तुम्हारे देश में तलवार न चलेगी ।  
और तुम अपने घेरियों को खदेड़ोगे और वे तुम्हारे आगे तलवार में गिर जायेंगे । ७  
और पांच तुम्हें से मो को खदेड़ेंगे और मो तुम्हें से दस रुदन को भगावेंगे और ८  
तुम्हारे घेरी तुम्हारे आगे तलवार में गिर जायेंगे । और मैं तुम्हारा पक्ष कहेगा ९  
और तुम्हें फलवत कहेगा और मैं तुम्हें बढ़ाऊंगा और अपनी वाचा जो तुम से  
पूरी कहेगा । और तुम पुराना अनु ग्राओगे और नये के कारण पुराना लाओगे । १०  
और मैं अपना तंत्र तुम्हें खड़ा कहेगा और मेरा प्राण तुम से दिन न करेगा । ११  
और मैं तुम्हें में फिरा कहेगा और तुम्हारा ईश्वर होऊंगा और तुम मेरे लोग १२  
होओगे । मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ जो तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया १३  
जिससे तुम उन के दाम न बनो और मैं ने तुम्हारे कंधों के लूओं की लकड़ियों  
को तोड़ा और तुम्हें खड़ा चलाया ॥

परन्तु यदि तुम मेरी न सुनोगे और इन सब आज्ञाओं को पालन न करोगे । १४  
और यदि मेरी विधिनु की निंदा करोगे अथवा तुम्हारे मन मेरे न्यायों को दिन १५  
करें ऐसा कि तुम मेरी आज्ञाओं को पालन न करो पर मेरी वाचा तोड़ दो ।  
तो मैं भी तुम से यह कहेगा कि भय और क्षयरोग और तमझ्वर जो तेरी आंखों १६  
को नाश करेगा और मन को उदाम और तुम अपने घील अकारण होओगे क्यों-  
कि तुम्हारे घेरी उसे खावेंगे । और मैं तेरा साम्रा कहेगा और तुम अपने घेरियों १७  
के साथे लूक जाओगे जो तुम्हारे घेरी हैं मो तुम पर राज्य करेंगे और कोई  
तुम्हारा पीछा न करते ही तुम भागे जाओगे । और इन नभों पर भी यदि तुम १८  
मेरी न सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापों के कारण सातगुण तुम्हें दंड देऊंगा । और १९  
तुम्हारे घमंड के बल को तोड़ूंगा और तुम्हारा आकाश लोटा के समान और  
तुम्हारी पृथिवी पीतल की नाई कर देऊंगा । और तुम्हारा बल संत से जाता रहेगा २०  
क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी बढ़ती न देगी और देश के पेड़ फल न पहुंचावेंगे ।



- १६ यदि कोई अपने अधिकार से कुछ खेत परमेश्वर के लिये पवित्र करे तो तेरा मोल उस के अन्न के समान हो एक होमर जव का मोल पचास शैकल चांदी होगा ।
- १७ यदि वह आनंद के घरस में अपना खेत पवित्र करे तो तेरे मोल के समान ठहरेगा ।
- १८ परन्तु यदि वह आनंद के पीछे अपने खेत को पवित्र करे तो याजक उन घरसों के समान जो आनंद के घरस लों वचे हैं मोल का लेखा करे और तेरे मोल से उतना घटाया जावे ।
- १९ और जिस ने खेत को पवित्र किया है यदि वह उसे किसी भांति से कुड़ाया चाहे तो
- २० वह तेरे मोल का पांचवां भाग उस में मिलावे तब वह उस का हो जायगा । और यदि वह उस खेत को न कुड़ावे अथवा यदि उस ने उस खेत को दूसरे के पास बेचा
- २१ हो तो वह फिर कभी कुड़ाया न जायगा । परन्तु जव वह खेत आनंद के घरस में छूटे तब जैसा सङ्कल्प किया गया खेत वैसा परमेश्वर के लिये पावन होगा और वह याजक का अधिकार होगा ॥
- २२ और कोई खेत जो उस ने मोल लिया है और उस के अधिकार के खेतों में
- २३ का नहीं है परमेश्वर के लिये पवित्र करे । तो याजक आनंद के घरसों के समान गिनके मोल ठहरावे और वह तेरे ठहराने के समान उस दिन उस का मोल पर-
- २४ मेश्वर के लिये पवित्र वस्तु के समान देवे । खेत आनंद के घरस में उस के पास
- २५ फिर जायगा जिस्से मोल लिया गया जिस का वह भूमि का अधिकार था । और तेरा मोल पवित्र स्थान के शैकल के समान होगा दोस गिरह का एक शैकल होगा ॥
- २६ केवल पशुन में का पहिलौठा जो परमेश्वर का पहिलौठा हुआ चाहे उसे कोई पवित्र न करे चाहे वह गाय बैल से होवे चाहे भेड़ से वह तो परमेश्वर का
- २७ है । और यदि वह अपावन पशु का होवे तो वह तेरे मोल के समान उसे कुड़ावे और उस में पांचवां भाग मिलावे अथवा यदि वह कुड़ाया न जावे तो वह तेरे मोल के समान बेचा जावे ॥
- २८ तिस पर भी कोई सङ्कल्प किई हुई वस्तु जिसे मनुष्य अपने समस्त वस्तुन में से परमेश्वर के लिये सङ्कल्प करता है मनुष्य का अथवा पशु का अथवा अपने अधिकार के खेत का वह बेचा न जावे और न कुड़ाया जावे हर एक सङ्कल्प
- २९ किई हुई वस्तु परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है । जो वस्तु मनुष्य सङ्कल्प करता है सो कुड़ाई न जायगी निश्चय मार डाली जायगी ॥
- ३० और देश का समस्त दसवां भाग चाहे खेत का बीज चाहे पेड़ का फल
- ३१ परमेश्वर का वह परमेश्वर के लिये पवित्र है । और यदि मनुष्य किसी भांति
- ३२ से अपने दसवें भाग को कुड़ाया चाहे तो पांचवां भाग उस में मिलावे । और लेहंडे का अथवा भुंड का दसवां भाग जो कुछ लाठी के नीचे जाता है सो पर-
- ३३ मेश्वर के लिये सब दसवां भाग पवित्र होगा । वह उस की खोज न करे चाहे भला अथवा बुरा और वह उसे न पलटे और यदि वह किसी भांति से उसे पलटे तो वह और उस का पलटा दोनों के दोनों पवित्र हो जायेंगे और वह कुड़ाया न जायगा ॥
- ३४ वे आज्ञा जो परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के लिये सीना के पहाड़ पर मूसा को किईं ये हैं ॥

और अपनी याचा इज्जत के साथ और अपनी याचा अविरहाम के साथ स्मरण करेगा और उस देश को स्मरण करेगा ॥

और वह देश उन से छोड़ा जायगा और जब लों वह उन दिनों में उजाड़ १३ पड़ा रहा अपने विग्रहों को भोग करेगा और वे अपने पाप के दंड को मान लेंगे इसी कारण कि उन्होंने ने मेरे न्यायों को तुच्छ जाना और उन के अंतःकरण ने मेरी विधि से धिन किया । और इन सभी में अधिक जब वे अपने धर्म के १४ देश में होंगे मैं उन्हें दूर न करेगा और मैं उन से धिन न करेगा कि उन्हें सर्वथा नाश कर देऊँ और उन से याचा तोड़ दालूँ क्योंकि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूँ । परन्तु उन के कारण मैं उन के पित्रों की याचा को जिनमें मैं ने भिन के देश से १५ अन्यदेशियों के आगे निकाल लाया स्मरण करेगा कि मैं उन का ईश्वर परमेश्वर हूँ ॥

ये विधि और न्याय और व्यवस्था जो परमेश्वर ने सीना पछाड़ पर आप में १६ और इमराएल के सेतानों में सूसा के द्वार में ठहराये ॥

मत्तार्हमयां पत्र ।

फिर परमेश्वर सूसा में कहके बोला । कि इमराएल के सेतानों को कहके बोला १ जब मनुष्य विशेष सनौनी माने तरे ठहराने के समान जन परमेश्वर के होंगे । और तेरा मोल बीस वरस में आठ वरस लों पुन्य के लिये तेरा मोल पवित्र स्थान ३ के शैकल के समान पचास शैकल रूपा होंगे । और यदि स्त्री होवे तो तेरा मोल ४ तीस शैकल होंगे । और यदि पांच में बीस वरस का वय होवे तो तेरा मोल पुन्य के लिये बीस शैकल और स्त्री के लिये दस शैकल । और यदि एक मास में पांच ६ वरस की वय होवे तो तेरा मोल पुन्य के लिये चाँदी के पांच शैकल और स्त्री के लिये तेरा मोल चाँदी के तीन शैकल । और यदि वह आठ वरस से ऊपर का ७ होवे तो पुन्य के लिये तेरा मोल पंद्रह शैकल और स्त्री के लिये दस शैकल । परन्तु ८ यदि तेरे मोल में वह कंगाल ठहरे तो वह याज्ञक के आगे आवे और याज्ञक उस का मोल उस की सामर्थ्य के समान ठहरावे जिस ने सनौती किई है याज्ञक उस का मोल ठहरावे ॥

और यदि पशु होवे जिसे मनुष्य परमेश्वर के लिये भेंट लावे तें तो वह मत्त ९ जो परमेश्वर के लिये चढ़ाया गया सो पवित्र होगा । वह उसे न फेंके और भल १० के लिये दूध और घुरे के लिये भला न पलटे और यदि वह किसी भाँति में पशु की संती पशु दे तो वह और उस का पलटा पवित्र होंगे । और यदि वह अपवित्र ११ पशु होवे जो परमेश्वर का बलिदान नहीं चढ़ावे तो वह पशु को याज्ञक के आगे लावे । और याज्ञक उस का मोल करे चाहे भला होवे चाहे दूरा जैसा याज्ञक १२ उस का मोल ठहरावे वैसा ही होवे । परन्तु यदि वह किसी भाँति में उसे लुड़ावे १३ तो वह उस मोल में पाँचवाँ भाग मिलावे ॥

और जब मनुष्य अपने घर को परमेश्वर के लिये पवित्र करे तो याज्ञक उस का १४ मोल ठहरावे चाहे भला होवे चाहे दूरा याज्ञक के ठहराने के समान उस का मोल होगा । और जिस ने उस घर को पवित्र किया है यदि वह उसे लुड़ाया १५ चाहे तो तेरे मोल का पाँचवाँ भाग उस में मिलाके देवे और घर उस का होगा ॥

२६ यहूदाह के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस वरस से ऊपर लों सब जो २७ लड़ाई के योग्य थे । जो यहूदाह के घराने में से गिने गये सो चौदत्तर सहस्र और छः सौ थे ॥

२८ इशकार के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस वरस से ऊपर लों सब जो २९ लड़ाई के योग्य थे । जो इशकार की गोष्टी में से गिने गये सो चौवन सहस्र और चार सौ थे ॥

३० जखूलन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में की गिनती के समान बीस वरस से ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य ३१ थे । जो जखूलन की गोष्टी में से गिने गये सत्तावन सहस्र और चार सौ थे ॥

३२ यूसुफ के संतान में से इफरायम के संतान में से अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस ३३ वरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे । जो इफरायम की गोष्टी में से गिने गये सो चालीस सहस्र और पांच सौ थे ॥

३४ सुनस्सी के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस वरस से लेके ऊपर लों सब जो ३५ लड़ाई के योग्य थे । जो सुनस्सी की गोष्टी में से गिने गये दत्तीस सहस्र और दो सौ थे ॥

३६ विनयमीन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस वरस से लेके ऊपर लों सब ३७ जो लड़ाई के योग्य थे । जो विनयमीन की गोष्टी में से गिने गये पैतीस सहस्र और चार सौ थे ॥

३८ दान के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस वरस से लेके ऊपर लों सब जो ३९ लड़ाई के योग्य थे । जो दान की गोष्टी में से गिने गये वासठ सहस्र और सात सौ थे ॥

४० यसर के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस वरस से लेके ऊपर लों सब जो ४१ लड़ाई के योग्य थे । जो यसर की गोष्टी में से गिने गये एकतालीस सहस्र और पांच सौ थे ॥

४२ नफताली के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस वरस से लेके ऊपर लों सब ४३ जो लड़ाई के योग्य थे । जो नफताली की गोष्टी में से गिने गये तिरपन सहस्र और चार सौ थे ॥

४४ सो सब जो गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून ने गिना ये हैं और इसराएल के संतानों के प्रधान हर एक अपने अपने पितरों के घरानों में प्रधान था वारह ४५ थे । सो वे सब जो इसराएल के संतानों में से अपने पितरों के घरानों में से

# गिनती की पुस्तक ।

पहिला प्रश्न ।

और मिस की भूमि से उन के निकलने के पीछे दूसरे घरस दूसरे मास की पहिली तिथि को सीना के पछाड़ के वन में मंडली के तंयू में परमेश्वर मूसा से कहके बोला । उन के पितरों के घराने के समान इसराएल के संतानों की समस्त मंडली के घराने के समान हर एक पुरुष के नामों का लेखा करे । बीस घरस से ऊपर सब जो इसराएल में लड़ाई के योग्य होवें तू और हासन उन की सेना सेना गिन । और हर एक गोष्टी में से एक एक मनुष्य जो अपने अपने पितरों के घराने का प्रधान है तुम्हारे साथ होवे ॥

और जो जन तुम्हारे साथ खड़े होंगे उन के ये नाम हैं रुदिन में ने शवेजर का वेटा इलिसूर । समजन में से सूरिगद्दी का वेटा मूलमिगल । यरूदाह में से अम्मिनदब का वेटा नहशून । दणकार में से मुर का वेटा नतानिएल । जवुलून में से हैलून का वेटा इलियय । यूसुफ के संतान इसरायल में ने अम्मिनदब का वेटा इलिससः मुनस्सी में से फिडाहमूर का वेटा जमनिगल । चिनयमीन में से जिदःऊनी का वेटा अविदान । दान में से अम्मिशगद्दी का वेटा अम्मिशजर । यसर में से अकसन का वेटा फजइयल । जद में से दइयल का वेटा इलयासफ । नफताली में से रेनान का वेटा अम्मिरयः । अपने अपने पितरों की गोष्टियों के अध्यक्ष मंडली में ये नामी थे इसराएल में सब्बों के प्रधान ये थे ॥

सो मूसा और हासन ने उन मनुष्यों को लिया जिन के नाम लिखे हैं । और उन्होंने ने दूसरे मास की पहिली तिथि में सारी मंडली एकट्ठी कीई और उन्होंने ने अपने अपने पितरों के घराने के समान बीस घरस से लेकर ऊपर लों अपनी अपनी पीछी उन के नामों की गिनती के समान लिखाया । जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा कीई थी उस ने उन को सीना के वन में गिना ॥

सो रुदिन के संतान में वह जो इसराएल का पहिलौठा वेटा था अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीछियों में और नामों की गिनती के समान हर एक पुरुष सब जो लड़ाई के योग्य थे । जो रुदिन की गोष्टी में से गिने गये छियालीस सहस्र और पांच सौ थे ॥

समजन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीछियों में और नामों की गिनती के समान हर एक पुरुष बीस घरस से ऊपर लों जो सब लड़ाई के योग्य थे । जो समजन की गोष्टी में से गिने गये सो उनहत्तर सहस्र और तीन सौ थे ॥

जद के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीछियों में और नामों के समान बीस घरस से ऊपर लों जो लड़ाई के योग्य थे । जो जद की गोष्टी में से गिने गये सो पैतालीस सहस्र और छः सौ पचास थे ॥

से सेवा करते हैं ओझल और उन की समस्त सेवा की सामग्री उन की रखवाली में रहे । और हारून याजक का बेटा हलिअजर लायी के प्रधानों का प्रधान में पवित्र स्थान की रखवाली करे ॥

३३ मिरारी से मुहलियों का घराना और मूसियों का घराना ये मिरारी के घराने हैं । और उन के पुरुषों की जो गिनती के समान एक मास में लेके ऊपर लें ३४ सब जो गिने गये थे छः सहस्र दो सौ थे । और अविश्वेल का पुत्र मूरिगल मिरारियों के घराने का प्रधान हो और ये तंबू की उत्तर दिशा में डेरा खड़ा करें । ये तंबू का पाठ और उस के अङ्गों और उस के खंभे और उस की चुरगदनी और मय जो उस की सेवा में लगते हैं मिरारी के बेटों की रखवाली में होंगे । और आंगन की चारों ओर के खंभे और उन की चुरगदनी और उन के खूँटे और उन की डोरियाँ ॥

३८ परन्तु वे जो तंबू की पूरव और मंडली के तंबू के आगे पूरव दिशा को मूसा और हारून और उस के बेटे वे पवित्र स्थान की और इसराएल के संतानों की रखवाली करें और जो परदेशी पास आवे सो मार डाला जावे । लावियों में से सब जो गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा से उन के घरानों में गिना सब पुरुष एक मास से लेके ऊपर लें बार्दस सहस्र थे ॥

४० फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौठे पुरुषों को एक मास से लेके ऊपर लें गिने और उन के नामों की गिनती ले । और मेरे लिये जो परमेश्वर हूँ लावियों को इसराएल के संतानों के सब पहिलौठे बेटों की संती और लावियों के पशुओं को इसराएल के संतानों के सब पशुओं की संती ४२ जो पहिले उत्पन्न हुए हों ले । और जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने इसराएल के संतानों के समस्त पहिलौठों को गिना । सो सारे पहिलौठे पुरुष वर्ग उन के नामों की गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लें जो गिने गये बार्दस सहस्र दो सौ तिहत्तर थे ॥

४४ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौठों की संती लावियों को और उन के पशुओं की संती लावियों के पशुओं ४६ को ले और लावी मेरे होंगे मैं परमेश्वर हूँ । और दो सौ तिहत्तर इसराएल के संतानों के पहिलौठे जो कुड़ाया जाना है लावियों से अधिक हैं । और पवित्र स्थान के शैकल के समान मनुष्य पीछे पांच शैकल ले एक शैकल बीस गिरह ४८ है । और तू उस का मोल जो गिनती से ऊपर कुड़ाया जाना है हारून और उस के बेटों को दे । सो मूसा ने उन के कुड़ाने की रोकड़ लिई जो लावियों से ५० कुड़ाये जाने से उबरी थी । इसराएल के संतानों के पहिलौठे में से एक सहस्र ५१ तीन सौ पैसठ पवित्र स्थान के शैकल से रोकड़ लिया । और मूसा ने उन की रोकड़ को जो कुड़ाये गये थे परमेश्वर की आज्ञा से हारून और उस के बेटों को दिया ॥

चौथा पृष्ठ ।

२ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । किहात के बेटों को लावी

थीस वरस से लेके ऊपर लीं गिने गये सब जो इसराएल में लड़ाई के योग्य थे । अर्थात् सब जो गिने गये थे सो छः लाख तीन सठस और पांच सौ ८६ पचास थे ॥

परन्तु लावी अपने पितरों की गोष्ठी के समान उन्हें में गिने नहीं गये । ४७ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । केवल लावी की गोष्ठी को मत गिन और ४८ उन्हें इसराएल के संतानों की गिनती में मत मिला । परन्तु लावियों की साजी के ५० तंबू और उस की समस्त वस्तु पर ठहरा वे तंबू को और उस के पात्रों को उठाया करें और उस की सेवा करें और तंबू के आसपास छावनी करें । और जब तंबू ५१ आगे बढ़े तब लावी उसे गिरावे और जब तंबू को खड़ा करना हो तब लावी उसे खड़ा करें और जो परदेशी उस के पास आये सो प्राण में मारा जावे । और ५२ इसराएल के संतानों में हर एक अपनी अपनी छावनी में हर एक मनुष्य अपनी समस्त सेना में अपने ही भंडे के पास अपना अपना तंबू खड़ा करे । परन्तु लावी ५३ साजी के तंबू के आसपास डेरा करें जिनमें इसराएल के संतानों की मंडली पर कोप न पड़े और लावी साजी के तंबू की रखवानी करें । सो जेमा परमेश्वर ने ५४ मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल के संतानों ने उन मभों के समान किया ॥

दूसरा पृष्ठ ।

फिर परमेश्वर मूसा और हारन से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों १ में से हर एक जन अपना भंडा अपने पितरों के घराने की ध्वजा के मरा मंडली के तंबू के आसपास दूर डेरा करे ॥

और पूरव दिशा में मूर्ध के उदय की ओर यहूदाह की छावनी अपनी समस्त ३ सेना में भंडा गाढ़े और अस्मिनदव का घेरा नष्टगून यहूदाह के संतान का प्रधान होवे । और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो चौदत्तर सठस ४ छः सौ थे । और उन के पास इशकार की गोष्ठी डेरा करे और सुग्र का घेरा ५ नतनिएल इशकार के संतान का प्रधान होवे । और उस की सेना और वे जो ६ उन में गिने गये सो चौवन सठस चार सौ थे । फिर जयलून की गोष्ठी और ७ हैलून का पुत्र अलीयाव जयलून के संतान का प्रधान होवे । और उस की ८ सेना और सब जो उन में गिने गये सो सत्तावन सठस चार सौ थे । सब जो ९ यहूदाह की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेना में एक लाख छियासी सठस चार सौ थे ये पहिले बड़े ॥

और दक्खिन दिशा की ओर रविन की छावनी के भंडे उन की सेना के १० समान होवे और शदेकर का पुत्र इलिसूर रविन के संतान का प्रधान होवे । और ११ उस की सेना और जो उन में गिने गये सो छियासी सठस पांच सौ थे । और १२ उस के पास समऊन के संतान की गोष्ठी डेरा करे और मूरिशद्वी का घेरा सलूमि-एल समऊन के संतान का प्रधान होवे । और उस की सेना और जो उन में गिने १३ गये सो उनसठ सठस तीन सौ थे । और जद की गोष्ठी और रऊएल का घेरा १४ इलियासफ जद के संतान का प्रधान होवे । और उस की सेना और जो उन में १५ गिने गये सो पैंतालीस सठस छः सौ पचास थे । सब जो रविन की छावनी में १६



- २४ करें उन की गिनती करो । जैरसुनियों के कुलों की सेवा और बोझ उठाने के  
 २५ लिये यही कार्य है । और वे तंबू के ओझल और उस का घटाटोप और तुर्रस  
 की खालों का घटाटोप जो उस पर है और मंडली के तंबू के द्वार का ओट  
 २६ उठावें । और आंगन के ओट और आंगन के द्वार का ओट जो तंबू और घेदी  
 के चारों ओर हैं और उन की रस्सियां और सब पात्र जो उन की सेवा के कारण  
 २७ हैं और सब कार्य जो उन से किया जाय अवश्य है कि वे करें । जैरसुन के  
 घेदों की सारी सेवा बोझ उठाने में और सब काम करने में हाइन और उस के  
 घेदों की आज्ञा के समान होवे और तुम उन में से हर एक का बोझ ठहरा  
 २८ दीजियो । जैरसुन के संतान के कुलों की सेवा मंडली के तंबू में यह है और  
 वे हाइन याजक के बेटे ईतमर की आज्ञा में हैं ॥
- २९ मिरारी के बेटे उन के पितरों के घरानों और उन के कुलों के समान उन की  
 ३० गिनती कर । तीस बरस से लेके पचास बरस लों उन सब को जो सेना में पहुंचते  
 ३१ हैं जिसमें मंडली के तंबू की सेवा करें गिन । और उस सेना के समान जो मंडली  
 के तंबू में उन के लिये है उन के बोझ ये ठहरें तंबू के पाट और उस के अड़ंगों  
 ३२ और उस के खंभे और उस की चुरगहनी । और आंगन के खंभे जो चारों ओर  
 हैं और उन की चुरगहनी और उन के खूंटे और उन की रस्सियां और उन की  
 समस्त सामग्री सेवा समेत और उन की सामग्री के बोझ का नाम ले लेके गिन ।  
 ३३ मिरारी के बेटे के कुलों की सेवा जो मंडली के तंबू की समस्त सेवा के समान  
 यह है वे हाइन याजक के बेटे ईतमर के अधीन रहें ॥
- ३४ सो मूसा और हाइन और मंडली के प्रधानों ने किदातियों के घेदों को उन  
 ३५ के पितरों के घरानों के और उन के कुलों के समान गिना । तीस बरस से  
 लेके पचास बरस लों उन सब को जो सेना के लिये पहुंचते हैं जिसमें मंडली  
 ३६ के तंबू की सेवा करें एक एक करके गिना । सो वे जो अपने घराने के समान  
 ३७ गिने गये दो सहस्र सात सौ पचास थे । वे सब ये हैं जो किदात के घरानों में  
 से मंडली के तंबू की सेवा के लिये गिने गये जिन्हें मूसा और हाइन ने परमेश्वर  
 की आज्ञा के समान जो मूसा के हस्ते कही थी गिना ॥
- ३८ और जैरसुन के बेटे जो अपने पितरों के घरानों के समस्त कुलों के समान  
 ३९ गिने गये । तीस बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेना के लिये पहुंचते  
 ४० हैं जिसमें मंडली के तंबू की सेवा करें । और वे सब जो उन के पितरों के घरानों  
 ४१ और उन के कुलों के समान गिने गये दो सहस्र छः सौ तीस हुए । वे सब ये  
 हैं जो जैरसुन के घेदों के घरानों में से मंडली के तंबू की सेवा के लिये गिने  
 गये जिन्हें मूसा और हाइन ने परमेश्वर की आज्ञा से गिना ॥
- ४२ और मिरारी के बेटे के पितरों के घराने और उन के समस्त कुल जो गिने गये  
 ४३ थे । तीस बरस से लेके पचास बरस लों हर एक जो सेना के लिये पहुंचते हैं जिसमें  
 ४४ मंडली के तंबू की सेवा करें । अर्थात् वे जो उन के कुल में गिने गये थे तीन सहस्र  
 ४५ दो सौ थे । वे सब ये हैं जो मिरारी के बेटे के कुल में से जो गिने गये जिन्हें मूसा  
 और हाइन ने परमेश्वर की आज्ञा के समान जो मूसा के हस्ते कही थी गिना ॥

के घंटों में उन के पितरों के घराने की और उन के कुल की गिनती ले । तीस ३  
बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेना में बैठते हैं कि मंडली के तंत्र में  
सेवा करें ॥

मंडली के तंत्र में और उन यम्तुन में जो अति पवित्र हैं किहात के घंटों ४  
की सेवा यह है । और जब छावनी आगे बढ़े तब दामन और उस के घंटे ५  
आर्च और ठांपने के घटाटोप उतारें और उससे साक्षी की मंजूपा को ठांपें ।  
और उस पर तुखस की खालों का घटाटोप डालें और उस के ऊपर नीला ६  
कपड़ा बिछावें और उस के बहंगार उस में डालें । और मंड की रोटी के मंच ७  
पर नीला कपड़ा बिछावें और उस पर पात्र और करकुल और फटेरा और  
ठांपने के लिये ठपने उस पर रखें और नित्य की रोटी उस पर होवे । और उन ८  
पर लाल कपड़ा बिछावें और उसे तुखस की खालों में ठांपें और उस में बहंगार  
डालें । फिर नीला कपड़ा लेके प्रकाश की दीपक और उस के दीपकों को और ९  
उस के फूल कतारनियों और उस के पात्र और उस के सब तेल के पात्रों पर जिस्से  
सेवा करते हैं ठांपें । और उसे और उस के सब पात्रों को तुखस की खालों के १०  
आड़ में रखें और उसे अड़ंगा पर रखें । और सेनदली यन्त्रवेदी पर ११  
नीला वस्त्र बिछावें और उसे तुखस की खालों के ठपने में ठांपें और उस में उस  
के बहंगार डालें । और समस्त पात्रों को जो पवित्र स्थान की सेवा में आने हैं १२  
लेके नीले कपड़ों में लपेटें और उन्हें तुखस की खालों में ठांपें और बहंगार  
पर रखें । और वेदी में से राख निकाल फेंकें और लाल कपड़ा उस पर १३  
बिछावें । और उस के सारे पात्र जिस्से वे उस की सेवा करते हैं अर्थात् धूपादरी १४  
मांस के कांटे और फावड़ियां और कटोरे वेदी के समस्त पात्र उस पर  
रखें और उन्हें तुखस की खालों में ठांपें और उस में उस के बहंगार डालें ।  
और जब दामन और उस के घंटे पवित्र स्थान को और उस की सामग्री को १५  
ठांप चुकें तब छावनी के आगे बढ़ने के समय में किहात के संतान उस के  
उठाने के लिये आर्च परन्तु वे पवित्र वस्तु को न छूवें न हों कि सरलार्थ मंडली  
के तंत्र की वस्ती किहात के संतानों को उठाने पड़ेगी ॥

और दीपकों के लिये तेल और सुगंध धूप और समस्त तंत्र और सब जो उस १६  
में हैं और उस के पात्र दामन यात्रक का घंटा दलियजर देखा करे ॥

फिर परमेश्वर मूसा और दामन से कहके बोला । कि लावियों में से किहात १७  
के घराने की गोष्ठी को काट न डालियो । परन्तु उन से ऐसा करो कि १८  
वे जीवें और अति पवित्र यम्तुन के समीप आने में न मरें दामन और उस  
के घंटे भीतर जावें और उन में से हर एक को उस की सेवा पर और दोस्त  
उठाने पर ठहरावें । परन्तु जब कि पवित्र वस्ती ठांपी जावें तो वे उन्हें २०  
देखने न आवें जिसमें मर न जावें ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि लैरसुन के घंटों को भी उन के पितरों २१  
के समस्त घराने उन के कुलों के समान गिनती करो । तीस बरस से लेके पचास २२  
बरस लों सब जो सेवा के लिये भीतर जाते हैं कि मंडली के तंत्र की सेवा २३

- १६ तब याजक उस स्त्री को निकट लावे और परमेश्वर के आगे उसे खड़ी  
 १७ करे । और याजक मट्टी के एक पात्र में शुद्ध जल लेवे और तंबू के आंगन की  
 १८ धूल लेके उस पानी में मिलावे । फिर याजक उस स्त्री को परमेश्वर के आगे  
 खड़ी करे और उस का सिर उधारे और स्मरण की भेंट जो भल की भेंट है  
 उस के हाथों पर रखे और याजक उस कड़ुवे पानी को जो धिक्कार के लिये है  
 १९ अपने हाथ में लेवे । और उस स्त्री को किरिया देके कहे कि यदि किसी ने तुम्ह  
 से कुकर्म नहीं किया और तू केवल अपने पति को छोड़ अशुद्ध मार्ग में नहीं गई  
 २० तो तू इस कड़ुवे पानी के गुण से जो धिक्कार के लिये है बची रहे । परन्तु  
 यदि तू अपने पति को छोड़के भटक गई हो और अशुद्ध हुई हो और अपने  
 २१ पति को छोड़ किसी दूसरे से कुकर्म किया हो । और याजक उस स्त्री को  
 खाप की किरिया देवे और याजक उस स्त्री से कहे कि परमेश्वर तेरे लोगों के  
 मध्य में तुम्हें खाप देवे कि परमेश्वर तेरी जांघ को सड़ावे और तेरे पेट को  
 २२ फुलावे । और यह पानी जो खाप का कारण होता है तेरी अंतर्द्वियों में जाके तेरा  
 पेट फुलावे और तेरी जांघ को सड़ावे और वह स्त्री कहे कि आमीन आमीन ।  
 २३ तब याजक इन धिक्कारों को एक पुस्तक में लिखे और कड़ुवे पानी से उसे मिटा  
 २४ दे । और याजक वह कड़ुवा पानी जो खाप का कारण होता है उस स्त्री को  
 पिलावे तब वह पानी जो खाप का कारण होता है उस में कड़ुवा पैटेगा ॥
- २५ तब याजक उस स्त्री के हाथ से भल की भेंट लेके परमेश्वर के आगे उसे  
 २६ हिलावे और यज्ञवेदी पर चढ़ावे । और उस भेंट के स्मरण के लिये एक मट्टी  
 लेके याजक वेदी पर जलावे और उस के पीछे वह पानी उस स्त्री को  
 पिलावे ॥
- २७ और जब वह पानी उसे पिलावेगा तब ऐसा होगा कि यदि वह अशुद्ध  
 होवे और वह अपने पति के विरुद्ध कुछ अपराध किया हो तो वह पानी जो खाप  
 का कारण होता है उस के शरीर में पहुंचके कड़ुवा हो जायगा और उस का  
 पेट फूलेगा और उस की जांघ सड़ जायगी और वह स्त्री अपने लोगों में  
 २८ धिक्कारित होगी । परन्तु यदि वह स्त्री अशुद्ध न हो परन्तु शुद्ध होवे तो वह  
 निर्दोष होगी और गर्भिणी होगी ॥
- २९ उस स्त्री के कारण जो अपने पति को छोड़के भटकती है और अशुद्ध है  
 ३० भल के लिये यह व्यवस्था है । अथवा जब पुरुष के मन में भल आवे और वह  
 अपनी पत्नी से संदेह रखे और स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ी करे और याजक  
 ३१ उस पर ये सब व्यवस्था पूरी करे । तो वह पुरुष पाप से पवित्र होगा और  
 वह स्त्री अपना पाप भोगेगी ॥

छठवां पर्व ।

- १ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों को कहके  
 २ बोल कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री आप को अलग करने के लिये नसरानी की  
 ३ मनौती ईश्वर के लिये माने । तो वह दाखरस से और तीक्ष्ण मदिरा से अलग  
 रहे दाखरस का सिरका अथवा तीक्ष्ण मदिरा का सिरका न पीवे और अंगूर का

सब जो लावियों में से गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून और इसराएल के ४६ प्रधानों ने उन के पितरों के घराने और उन के कुल के समान गिना । तोस ४० वरस से लेकर पचास वरस लों गिना जो सेवा के लिये पहुंचते हैं जिस में मंडली के तंबू की सेवा करें और बोझ उठावें । अर्थात् वे जो उन में गिने गये थे आठ ४८ सहस्र पांच सौ अस्सी थे । मूसा के हस्ते परमेश्वर की आज्ञा के समान वे गिने ४९ गये हर एक अपनी सेवा और बोझ उठाने के समान जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही वे मूसा से गिने गये ॥

पांचवां पर्व ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतान को आज्ञा कर ३ कि हर एक कोढ़ी और प्रमेही को और जो मृत्यु में अशुद्ध है उन को छावनी से बाहर कर देवें । क्या स्त्री और क्या पुरुष तुम उन्हें छावनी से बाहर करो ३ जिसमें अपनी छावनिषों को जिन के मध्य में मैं रहता हूं वे अशुद्ध न करें । सो इसराएल के संतानों ने ऐसा ही किया और उन्हें छावनी से बाहर कर ४ दिया जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही इसराएल के संतानों ने किया ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों को कह कि ५ जब कोई पुरुष अथवा स्त्री परमेश्वर से विरुद्ध होके ऐसा कोई पाप करे जो मनुष्य करते हैं और वह प्राणी दोषी ठहरे । तब अपने पाप को जो उन्होंने ७ ने किया है मान लें और वह मूल के संग पांचवां अंश मिलावे और अपने अपराध के पलटा के लिये उसे दें जिस का उस ने अपराध किया है । परन्तु ८ यदि अपराध के पलटा देने का उस मनुष्य का कोई कुटुम्ब न होवे तो प्रायश्चित्त के मंडे से अधिक लिम्मे उस के लिये प्रायश्चित्त होवे वह अपराध की भेंट परमेश्वर को अर्थात् कालिन को दिई जायगी ॥

और इसराएल के संतानों की सारी पवित्र वस्तुन की सब भेंटें जो वे ९ चढ़ाते हैं याजक की होंगी । और हर एक मनुष्य की पवित्र वस्तु उस की होंगी १० जो कुछ याजक को देगा उस की होंगी ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों को कहके ११ बोल कि यदि किसी की पत्नी अन्नग होके उस के विरुद्ध कोई अपराध करे । और कोई उससे व्यवहार करे और वह उस के पति से क्रिपा हो और ठंपा हो १३ और वह अशुद्ध हो जावे और उस पर सती न होवे और वह पकड़ी न जावे । और उस के पति के मन में भूल आवे और वह अपनी पत्नी से भूल रखवे और १४ वह अशुद्ध हो अथवा यदि उस के पति के मन में भूल आवे और वह अपनी पत्नी से भूल रखवे और वह स्त्री अशुद्ध न होवे । तब वह मनुष्य अपनी पत्नी १५ को याजक पास लावे और वह उस के लिये एक ईप्पा का दसवां भाग जव का प्रिसान उस की भेंट के लिये लावे वह उस पर तेल और नोवान न डाले क्योंकि वह भूल की भेंट पाप को चेत में लाने के लिये स्मरण की भेंट है ॥

- २२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि हासन को और उस के बेटों को  
 २३ कह कि इसराएल के संतानों को यां आशीस देके उन्हें कहियो ॥  
 २४ कि परमेश्वर तुम्हें आशीस देवे और तेरी रक्षा करे ॥  
 २५ परमेश्वर अपना रूप तुम्ह पर प्रकाश करे और तुम्ह पर अनुग्रह करे ॥  
 २६ परमेश्वर अपना रूप तुम्ह पर प्रकाश करे और तुम्हें कुशल देवे ॥  
 २७ और वे मेरा नाम इसराएल के संतानों पर रखें और मैं उन्हें आशीस देजंगा ॥  
 सातवां पर्व ।

- १ और ऐसा हुआ कि जिस दिन मूसा तंबू खड़ा कर चुका और उसे और उस  
 की समस्त सामग्री को अभिषेक करके पवित्र किया और यज्ञवेदी को उस के  
 २ समस्त पात्र सहित अभिषेक करके पवित्र किया । तब इसराएल के अध्यक्ष जो  
 अपने पितरों के घरानों में प्रधान और गोष्टियों के अध्यक्ष और उन में जो गिने  
 ३ गये उन के ऊपर थे भेंट लाये । और ठापी हुई छः गाड़ियां और बारह बैलियां  
 बैल अपनी भेंट परमेश्वर के आगे लाये दो दो अध्यक्षों के लिये एक एक गाड़ी  
 ४ और हर एक की ओर से एक एक बैल सो वे उन्हें तंबू के आगे लाये । तब  
 ५ परमेश्वर ने मूसा से कहा । कि यह उन से ले जिसमें वे मंडली के तंबू की सेवा  
 ६ में आवें और उन्हें लावियों को दे हर एक को उस की सेवा के समान । सो  
 ७ मूसा ने गाड़ियां और बैल लेके उन्हें लावियों को दिया । दो गाड़ियां और  
 ८ चार बैल उस ने जैरसुन के बेटों को उन की सेवा के समान दिये । और चार  
 गाड़ियां और आठ बैल मिरारी के संतान को जो हासन याजक के पुत्र ईतमर के  
 ९ अधीन थे उन की सेवा के समान दिये । परन्तु उस ने किहात के बेटों को कुछ  
 न दिया । क्योंकि पवित्र स्थान की सेवा जो उन के लिये ठहराई गई यह थी कि  
 वे अपने कांधों पर उठाके ले चलें ॥  
 १० और जिस दिन कि यज्ञवेदी अभिषेक किई गई अध्यक्षों ने उस के स्थापित  
 के लिये चढ़ाई अर्थात् अध्यक्षों ने यज्ञवेदी के आगे अपनी भेंट चढ़ाई ।  
 ११ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हर एक अध्यक्ष यज्ञवेदी को स्थापित करने  
 के लिये एक एक दिन अपनी अपनी भेंट चढ़ावे ॥  
 १२ सो पहिले दिन यहूदाह की गोष्टी में से अम्मिनदब के पुत्र नहशून ने अपनी  
 १३ भेंट चढ़ाई । और उस की भेंट एक सौ तीस शैकल एक चांदी का थाल जिस  
 की तैल सत्तर शैकल थी चांदी का एक कटोरा पवित्र स्थान के शैकल से ये दोनों  
 के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए ।  
 १४ एक करकुल दस शैकल सोने की धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये  
 १५ एक बकड़ा एक मेंढा पहिले बरस का एक भेड़ा । पाप की भेंट के लिये एक  
 १७ बकरी का भेड़ा । और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच सेंडे  
 पांच बकरे पहिले बरस के पांच भेड़े वह अम्मिनदब के बेटे नहशून की भेंट ॥  
 १८ दूसरे दिन सुग के बेटे नतनिएल ने जो इशकार का अध्यक्ष था अपनी  
 १९ भेंट चढ़ाई । और उस की भेंट एक सौ तीस शैकल भर चांदी का एक थाल  
 चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान की तैल से ये दोनों के

कोई रस न पीये और न हरे न भूखे और खावे । अपने अलग होने के सत्र दिनों ४  
में कोई वस्तु जो दाखों से उत्पन्न होती है बीज से लेकर उस के छिलके लों न  
खावे । अपने अलग होने की सनौती के सत्र दिनों में सिर पर कुरा न फिरावे ५  
जब लों उस के अलग किये गये दिन बीत न जायें वह ईश्वर के लिये पवित्र है  
अपने सिर के बालों को बढ़ने दें । वह परमेश्वर के लिये अपने सारे अलग होने के ६  
दिनों में लोथ के पास न जावे । वह अपने माता पिता अथवा अपने भाई बहिन ७  
के लिये जब वे मर जायें आप को अशुद्ध न करे क्योंकि उस के ईश्वर की स्थापना  
उस के सिर पर है । वह अपने अलग होने के सत्र दिनों में परमेश्वर के लिये ८  
पवित्र है । और यदि कोई मनुष्य अकस्मात् उस के पास मर जावे और उन के ९  
सिर के स्थापित को अपवित्र करे तो वह अपने पवित्र होने के दिन अपना सिर  
मुड़ावे सातवें दिन सिर मुड़ावे । और आठवें दिन दो पिण्डों की अथवा कपों के १०  
दो बड़े मंडली के तंबू के द्वार पर याज्ञक पास लावे । और याज्ञक एक को पाप ११  
की भेंट के लिये और दूसरे को बलिदान की भेंट के लिये चढ़ावे और उस अपराध  
का जो मृतक के कारण से हुआ प्रायश्चित्त दें और अपने सिर को उसी दिन  
पवित्र करे । और अपने अलग होने के दिनों को परमेश्वर के लिये स्थापित करे १२  
और पहिले वरस का एक मेघ्रा अपराध की भेंट के लिये लावे परन्तु उस के आगे  
के दिन गिने न जायेंगे क्योंकि उस की भेंट अपवित्र हो गई ॥

सो नसरानी होने के लिये यह व्यवस्था है जब उस के अलग होने के दिन पूरे १३  
हों तब वह मंडली के तंबू के द्वार पर लाया जावे । और वह परमेश्वर के लिये १४  
अपनी भेंट पहिले वरस का एक निर्दोष मेघ्रा बलिदान की भेंट के लिये और पाप  
की भेंट के लिये पहिले वरस की एक भेड़ी और कुशल की भेंट के लिये एक  
निर्दोष मंडा । और एक टोकरा अखमीरी रोटियां और चोगे पिसान की पूरी १५  
और अखमीरी लिट्टी तेल में चुपड़ी हुई उन के भोजन की भेंट और उन के  
तपावन । और याज्ञक उन्हें परमेश्वर के आगे लाके उस के पाप की भेंट को १६  
और उस के बलिदान की भेंट को चढ़ावे । और परमेश्वर के कारण एक टोकरा १७  
अखमीरी रोटी के साथ उस मंडे को चढ़ावे और याज्ञक उस के भोजन की भेंट  
और उस का तपावन चढ़ावे । तब वह नसरानी मंडली के तंबू के द्वार पर अपने १८  
अलग होने के लिये सिर मुड़ावे और उस के अलग होने के सिर के बालों को  
लेवे और उस आगे में जो कुशल की भेंट के बलिदान के तने हैं डाल दें । जब १९  
अलग होने के लिये मुड़ाया जावे तब याज्ञक उस मंडे का मिमाया हुआ कांधा  
और टोकरा में से एक अखमीरी फुलका और एक अखमीरी लिट्टी लेकर उस नस-  
रानी के हाथों पर रखे । फिर याज्ञक उन्हें छिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर २०  
के आगे छिलावे यह छिलाने की छाली और उठाने का कांधा याज्ञक के लिये  
पवित्र है उस के पीछे नसरानी दाखरस पी सके । नसरानी की सनौती की व्यवस्था २१  
यह है कि परमेश्वर के लिये उस के अलग होने की भेंट जो उस के हाथ पहुंचने  
से अधिक उस की सनौती के समान अपने अलग होने की व्यवस्था के पीछे  
अवश्य यों करे ॥



४७ एक मेम्रा । और कुशल की भेंट के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्रे दऊएल के बेटे इलियासफ की भेंट यह थी ॥

४८ सातवें दिन अम्मिहूद के बेटे इलिसमः ने जो इफरायम के वंश का अध्यक्ष

४९ था । उस की भेंट एक सौ तीस शैकल चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से यह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से

५० मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए । सोने की एक करकुल दस शैकल भर की

५१ धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढा पहिले

५२ बरस का एक मेम्रा । पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्रा । और कुशल

५३ की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्रे अम्मिहूद के बेटे इलिसमः की भेंट यह थी ॥

५४ आठवें दिन फिदाहसूर के बेटे जमलिल ने जो सुनस्सी के वंश का

५५ अध्यक्ष था । उस की भेंट चांदी का एक थाल एक सौ तीस शैकल का चांदी

का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से वह दोनों के दोनों

५६ भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए । सोने की

५७ एक करकुल दस शैकल भर की धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये

५८ एक बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस का एक मेम्रा । पाप की भेंट के लिये

५९ बकरी का एक मेम्रा । और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच

मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्रे फिदाहसूर के बेटे जमलिल की भेंट यह थी ॥

६० नवें दिन जिदःजनी के बेटे अबिदान ने जो बिनयमीन के वंश का अध्यक्ष था ।

६१ उस की भेंट चांदी का एक थाल एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक कटोरा

सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से यह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के

६२ लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए । सोने की एक करकुल दस शैकल

६३ भर की धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढा पहिले

६४ बरस का एक मेम्रा । पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्रा । और कुशल

६५ की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्रे जिदःजनी के बेटे अबिदान की भेंट यह थी ॥

६६ दसवें दिन अम्मिसद्दाय के बेटे अखिअजर ने जो दान के वंश का अध्यक्ष

६७ था । उस की भेंट चांदी का एक थाल एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक

कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से वह दोनों के दोनों भोजन की

६८ भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए । सोने की एक करकुल

६९ दस शैकल भर की धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढा

७० पहिले बरस का एक मेम्रा । पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्रा । और

कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्रे अम्मिसद्दाय के बेटे अखिअजर की भेंट यह थी ॥

७१ ग्यारहवें दिन अकरून के बेटे फजिइल ने जो यसर के वंश का अध्यक्ष था ।

७२ उस की भेंट चांदी का एक थाल एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक कटोरा

दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चाखे पिमान से भरे हुए । सोने की एक करहुल दस गैकल भर धूप से भरी हुई । एक बछड़ा एक सेंडा २० पहिले वरस का एक मेम्रा बलिदान की भेंट के लिये । पाप की भेंट के लिये २२ बकरी का एक मेम्रा । और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच २३ सेंडे पांच बकरे पहिले वरस के पांच मेमे सुग के बटे नतनियल की भेंट यह थी ॥

तीसरे दिन हैलून के पुत्र इलियथ ने चढ़ाई जो जयलून के वंश का अध्यन २४ था । उस की भेंट एक सौ तीस गैकल चांदी का एक घाल सत्तर गैकल का चांदी २५ का कटोरा पवित्र स्थान की गैकल से दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चाखे पिमान से भरे हुए । सोने की एक करहुल दस गैकल भर २६ धूप से भरी हुई । एक बछड़ा एक सेंडा पहिले वरस का एक मेम्रा बलिदान की २७ भेंट के लिये । बकरी का एक मेम्रा पाप की भेंट के लिये । और कुशल की २८ भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच सेंडे पांच बकरे पहिले वरस के पांच मेमे हैलून के पुत्र इलियथ की भेंट यह थी ॥

चौथे दिन शदेकर के बेटे इलियूर ने चढ़ाई जो इथिन के वंश का अध्यन २९ था । उस की भेंट यह थी चांदी का एक घाल एक सौ तीस गैकल का चांदी ३० का एक कटोरा सत्तर गैकल का पवित्र स्थान के गैकल से दस दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चाखे पिमान से भरे हुए । सोने की ३१ एक करहुल दस गैकल भर धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये एक ३२ बछड़ा एक सेंडा पहिले वरस का एक मेम्रा । पाप की भेंट के लिये बकरी का ३४ एक मेम्रा । और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच सेंडे पांच ३५ बकरे पहिले वरस के पांच मेमे शदेकर के बेटे इलियूर की भेंट यह थी ॥

पांचवें दिन सूरिगदुई के बेटे सलूमियल ने जो सलजून के वंश का अध्यन ३६ था अपनी भेंट चढ़ाई । उस की भेंट चांदी का एक घाल एक सौ तीस गैकल ३७ का चांदी का एक कटोरा सत्तर गैकल का पवित्र स्थान के गैकल से दस दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चाखे पिमान से भरे हुए । सोने ३८ की एक करहुल दस गैकल भर की धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट ३९ के लिये एक बछड़ा एक सेंडा पहिले वरस का एक मेम्रा । पाप की भेंट के ४० लिये बकरी का एक मेम्रा । और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल ४१ पांच सेंडे पांच बकरे पहिले वरस के पांच मेमे सूरिगदुई के बेटे सलूमियल की भेंट यह थी ॥

छठवें दिन वडरल के बेटे इलियासफ ने चढ़ाई जो लद के वंश का अध्यन ४२ था । उस की भेंट चांदी का एक घाल एक सौ तीस गैकल का चांदी का एक ४३ कटोरा सत्तर गैकल का पवित्र स्थान के गैकल से दस दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चाखे पिमान से भरे हुए । सोने की एक ४४ करहुल दस गैकल भर की धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये एक ४५ बछड़ा एक सेंडा पहिले वरस का एक मेम्रा । पाप की भेंट के लिये बकरी का ४६

५ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा । कि लावियों को इसराएल के संतानों में  
 ७ से अलग कर और उन्हें पवित्र कर । और उन्हें पवित्र करने के लिये तू उन से यों  
 कीजियो कि शुद्ध करने का जल उन पर छिड़क और वे अपने समस्त देह को  
 ८ मुड़ावें और अपने कपड़े धोवें और आप को पावन करें । तब वे एक वकड़ा  
 उस के भोजन की भेंट के साथ तेल से मिला हुआ चोखा पिसान लेंवें और तू  
 ९ पाप की भेंट के लिये दूसरा वकड़ा लीजियो । और लावियों को मंडली के  
 तंबू के आगे लाइयो और इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को एकट्ठी  
 १० करियो । और लावियों को परमेश्वर के आगे लाना और इसराएल के संतान  
 ११ अपने हाथ लावियों पर रखें । और हाथन लावियों को इसराएल के संतानों में  
 से हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे चढ़ावे जिसमें वे परमेश्वर की  
 १२ सेवा करें । और लावी अपने हाथ वेलों के सिरे पर रखें और तू एक को पाप  
 की भेंट और दूसरे को बलिदान की भेंट के लिये जिसमें लावियों के लिये प्राय-  
 श्चित्त होवे परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो ॥

१३ फिर तू लावियों को हाथन और उस के वेटों के आगे खड़ा कर दीजियो और  
 १४ उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये चढ़ाइयो । और तू लावियों को  
 १५ इसराएल के संतानों में से अलग करियो और लावी मेरे होंगे । और उस के पीछे  
 लावी मंडली के तंबू में सेवा के निमित्त पहुंचें और तू उन्हें पवित्र करियो और  
 १६ उन्हें हिलाने की भेंट के लिये चढ़ाइयो । क्योंकि वे सब के सब इसराएल के  
 संतानों में से मुझे दिये गये इसराएल के संतानों के सब पहिलौठों की संती हर एक की  
 १७ संती जो पहिले उत्पन्न होता है मैं ने उन्हें ले लिया है । क्योंकि इसराएल के संतानों  
 के सारे पहिलौठे क्या मनुष्य के क्या पशु के मेरे हैं जिस दिन मैं ने मिस्र देश के  
 १८ हर एक पहिलौठे को मारा मैं ने उन को अपने लिये पवित्र किया । और इसराएल  
 १९ के संतानों के सारे पहिलौठों की संती मैं ने लावियों को ले लिया है । और मैं ने  
 इसराएल के संतानों में से सब लावियों को हाथन और उस के वेटों को दिया जिसमें  
 मंडली के तंबू में इसराएल के संतानों की संती सेवा करें और इसराएल के संतानों  
 के लिये प्रायश्चित्त दें जिसमें इसराएल के संतानों पर जब वे पवित्र स्थान  
 के पास आवें मरी न पड़े ॥

२० सो जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के विषय में मूसा को आज्ञा किई थी मूसा  
 और हाथन और इसराएल के संतानों की सारी मंडली ने लावियों से वैसा ही  
 २१ किया इसराएल के संतानों ने उन से वैसा ही किया । और लावी पवित्र किये  
 गये और उन्होंने ने अपने कपड़े धोये और हाथन ने उन्हें हिलाने की भेंट के लिये  
 परमेश्वर के आगे चढ़ाया और हाथन ने उन के लिये प्रायश्चित्त दिया जिसमें  
 २२ उन्हें पवित्र करे । और उस के पीछे लावी अपनी सेवा करने को हाथन और उस  
 के संतानों के आगे मंडली के तंबू में गये जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के  
 विषय में मूसा को आज्ञा किई थी उन्होंने ने वैसा ही उन से किया ॥

२३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । लावियों का व्यवहार यह रहे कि वे  
 २४ पचीस वरस से लेकर ऊपर लें मंडली के तंबू में जाके सेवा में रहें । और जब

सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से वह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चाखे पिसान से भरे हुए । मोने की एक करहुल दस शैकल ७४ भर की धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक सेंटा पहिले ७५ वरस का एक भेड़ा । पाप की भेंट के लिये एक बकरी का भेड़ा । और कुशल की ७६ भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच सेंडे पांच बकरे पहिले वरस के पांच भेड़े अकरन के बेटे फलिङ्गल की भेंट यह थी ॥

बारहवें दिन सेनान के बेटे अग्निरथः ने जो नफतानों के संतान के वंश ७८ का अध्यक्ष था । उस की भेंट चांदी का एक घाल एक सौ तीस शैकल ७९ का और चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से वह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चाखे पिसान से भरे हुए । मोने की एक करहुल दस शैकल भर की धूप से भरी हुई । ८० बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक सेंटा पहिले वरस का एक भेड़ा । ८१ पाप की भेंट के लिये एक बकरी का भेड़ा । और कुशल की भेंटों के बलिदान ८२ के लिये दो बैल पांच सेंडे पांच बकरे पहिले वरस के पांच भेड़े सेनान के बेटे अग्निरथः की भेंट यह थी ॥

जिस दिन यज्ञवेदी दमरागल के अध्यक्षों से अभिषेक किये गये उस की स्थापित ८३ यह चांदी के बारह घाल और चांदी के बारह कटोरे और मोने की बारह करहुल थीं । चांदी का हर एक घाल तैल में एक सौ तीस शैकल का और हर एक ८४ कटोरा सत्तर शैकल भर का सब चांदी के पात्र पवित्र स्थान के तैल से दो हजार चार सौ शैकल थे । मोने की बारह करहुल धूप से भरी हुई एक करहुल दस ८५ शैकल भर की पवित्र स्थान के शैकल में करहुलों का सब सोना एक सौ बीस शैकल था । बलिदान की भेंट के लिये बारह बैल बारह सेंडे पहिले वरस के बारह भेड़े ८६ उन की भोजन की भेंट सहित और पाप की भेंट के लिये बकरी के बारह भेड़े । और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये चौबीस बैल साठ सेंडे साठ बकरियां ८७ पहिले वरस के साठ भेड़े वेदी के अभिषेक करने के पीछे उस के स्थापित के लिये यह था ॥

और जब मूसा ने उससे बात करने के लिये मंडली के तंत्र में प्रवेश किया तब ८८ उस ने उस ठकने के तपस् में जो साक्षात् की संज्ञा पर था दोनों करौत्रियों के मध्य में से वह शब्द सुना जो उससे कहता था ॥

आठवां पर्व ।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा । छानने में काह और उसे वाल जब तू १ दीपकों को दारे तो सातों दीपक का डलियाला दीशट के भाड़ के सन्मुख २ होवे । सो छानने ने ऐसा ही किया उस ने दीशट के भाड़ के सन्मुख उस के ३ दीपकों को दारा लैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किये थी । और ४ दीशट के भाड़ की बनावट पीछे हुए मोने से थी उस के खंभे से उस के फूल ५ लों पीछे हुए मोने का था उस नमूने के समान जो परमेश्वर ने मूसा को ६ दिखाया था उस ने वैसा ही उस भाड़ को बनाया ॥

जब बहुत दिन लों तंबू पर मेघ ठहरता था तब इसराएल के संतान परमेश्वर की आज्ञा मानते और कूच न करते थे । और ऐसे ही जब मेघ थोड़े दिन लों तंबू पर ठहरता था वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अपने डेरे में रहते थे और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे । और यों होता था कि जब सांझ से बिहान लों मेघ ठहरता था और बिहान को उठाया जाता था तब वे कूच करते थे । चाहे दिन चाहे रात जब मेघ उठाया जाता था वे कूच करते थे । अथवा दो दिन अथवा एक मास अथवा एक बरस मेघ तंबू पर रहता था तब इसराएल के संतान अपने डेरों में रहते थे और कूच न करते थे परन्तु जब वह ऊपर उठाया जाता था तब वे कूच करते थे । परमेश्वर की आज्ञा से वे तंबू में चैन करते थे और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे परमेश्वर की आज्ञा जो मूसा के हस्ते होती थी वे परमेश्वर की आज्ञा को पालन करते थे ॥

दसवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि अपने लिये चांदी के दो नरसिंगे एक ही टुकड़े से बना कि मंडली के बुलाने के और छावनी के कूच करने के कार्य के लिये होवें । और जब वे उन्हें फूँकें तब सारी मंडली तेरे पास मंडली के ४ तंबू के द्वार पर आप को एकट्ठी करे । और यदि एक ही फूँका जावे तब अर्धमास जो इसराएलियों के सहस्रों के प्रधान हैं तेरे पास एकट्ठे होवें । और जब तुम ६ छोटे बड़े शब्द से फूँको तो पूरव दिशा की छावनी आगे बढ़े । और जब तुम दूसरी ओर छोटे बड़े शब्द से फूँको तो दक्खिन दिशा की छावनी कूच करे । वे अपने कूच के लिये छोटे बड़े शब्द से फूँकें । और जब कि मंडली को एकट्ठी करना होवे तब फूँको परन्तु छोटे बड़े शब्द मत करो । और हासन याजक के बेटे नरसिंगे फूँका करें और तुम्हारे लिये तुम्हारे समस्त वंशों में यह विधि सनातन लों रहे । और यदि तुम बैरियों से जो तुम्हें सताते हैं अपने देश से लड़ने को निकलो तो तुम नरसिंगे से छोटे बड़े शब्द फूँको और अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे स्मरण किये जाओगे और तुम अपने शत्रुन से बच जाओगे । और अपने आनंद के दिन और अपने पर्वों में और अपने मासों के आरंभों में अपने बलिदान की भेंटों और अपने कुशल के बलिदानों पर नरसिंगे फूँको जिससे तुम्हारे कारण तुम्हारे ईश्वर के आगे तुम्हारे स्मरण के लिये होवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

११ फिर यों हुआ कि दूसरे बरस के दूसरे मास की बीसवीं तिथि को मेघ १२ साक्षी के तंबू से ऊपर उठाया गया । तब इसराएल के संतानों ने सीना के १३ अरण्य से कूच किया और फारान के अरण्य में मेघ ठहर गया । सो मूसा के द्वारा से परमेश्वर की आज्ञा के समान उन्होंने ने पहिले यात्रा किई ॥

१४ और पहिले यहूदाह के संतान की छावनी के भंडे उन के कटकों के समान १५ चले और उस के कटक पर अस्मिनदब का बेटा नहसून था । और इशकार के १६ संतान की गोष्टी की सेना पर सुग्र का बेटा नतनिएल था । और जखूलन के १७ संतान की गोष्टी की सेना पर हैलून का बेटा इलिअब था । और जब तंबू

पचास घरस के हों तो सेवकाई से रहि जायें और फिर सेवा न करें । परन्तु नई मंडली के तंत्र में अपने भाइयों के साथ रखवाली किया करें और सेवा न करें तू लावियों से रक्षा के विषय में योंही कीजिये ॥

नवां पर्व ।

और मिस के देश से निकलने के दूसरे घरस के पहिले मास में परमेश्वर १ ने सीना के अरण्य में मूसा से कहा । कि इसराएल के संतान उस के ठहराये २ हुए समय में फसह का पर्व करें । इस मास की चौदहवीं तिथि की सांझ के ३ ठहराये हुए समय में उसे करियो उस की समस्त विधि और उस के समस्त आचारों के समान उसे करियो । सो मूसा ने इसराएल के संतानों को कहा ४ कि ये फसह का पर्व करें । और उन्होंने ने पहिले मास की चौदहवीं तिथि की ५ सांझ को सीना के अरण्य में फसह का पर्व किया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया ॥

और वहां कितने जन थे जो किसी मनुष्य की लोथ के कारण से अपवित्र ६ हुए थे और वे उस दिन फसह का पर्व न कर सके और वे उस दिन मूसा और हाथन के पास आये । और उन मनुष्यों ने उल्ले कहा कि हम मनुष्य की लोथ ७ के कारण से अपवित्र हैं किस लिये हम रोके जायें कि इसराएल के संतानों में ठहराये हुए समय में परमेश्वर के लिये भेंट न लायें । तब मूसा ने उन्हें कहा कि ८ ठहर जाओ और मैं सुनूंगा कि परमेश्वर तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा करेगा । तब ९ परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों में कहके बोल कि यदि १० कोई तुम्हें से अथवा तुम्हारे दंग में से किसी लोथ के कारण से अशुद्ध होवे अथवा यात्रा में दूर होवे तथापि वह परमेश्वर के लिये फसह का पर्व करे । हमारे ११ मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को वे उसे करें अखमीरी रोटी और कड़वी तरकारी के साथ उसे खायें । वे विधान लें उस में से कुछ रख न छोड़ें और न १२ उस की कोई हड्डी तोड़ी जावे फसह की समस्त विधि के समान उसे करें । परन्तु १३ जो मनुष्य शुद्ध है और यात्रा में नहीं है और यदि फसह का पर्व न करे तो वही प्राणी अपने लोगों में से से काट डाला जायगा क्योंकि वह ठहराये हुए समय में परमेश्वर की भेंट न लाया वह जन अपना पाप भोगेगा । और यदि कोई १४ परदेशी तुम्हें टिके और फसह का पर्व परमेश्वर के लिये किया चाहे तो वह फसह के पर्व को उस विधि और रीति के समान करे तुम्हारे लिये क्या परदेशी और क्या देशी की एक ही विधि होगी ॥

और जिस दिन तंत्र खड़ा किया गया मेघ ने माघी के तंत्र को ढांप लिया १५ और सांझ से लेकर विधान लें तंत्र पर आग सी दिखाई देती थी । सो मदा ऐसा १६ ही था कि मेघ उसे ढांपता था और रात को आग सी दिखाई देती थी । और १७ जब तंत्र पर से मेघ उठायो जाता था तब उस के पीछे इसराएल के संतान कूच करते थे और जहां मेघ आके ठहरता था तहां इसराएल के संतान डेरा करते थे । इसराएल के संतान परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे और परमेश्वर की आज्ञा १८ से डेरा करते थे जब लें तंत्र पर मेघ रहता था वे डेरे में चैन करते थे । और १९



मेश्वर मेघ के खंभे में उतरा और तंबू के द्वार पर खड़ा हुआ और हाखन और  
 ६ मिरयम को बुलाया तब वे दोनों गये । तब उस ने कहा कि मेरी बातें सुनो यदि  
 तुम्हें कोई भविष्यवृत्ता होवे तो मैं परमेश्वर आप को दर्शन में उस पर प्रगट  
 ७ करूंगा और उससे स्वप्न में बातें करूंगा । मेरा दास मूसा ऐसा नहीं वह मेरे सारे  
 ८ घर में विश्वासी है । मैं उससे आगे सामे अर्थात् प्रत्यक्ष बातें करूंगा और गुप्त बातों  
 से नहीं और वह परमेश्वर के आकार को देखेगा सो तुम मेरे सेवक मूसा पर  
 ९ अपवाद करते हुए क्यों न डरे । और परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का और  
 १० चला गया । तब मेघ तंबू पर से जाता रहा और क्या देखता है कि मिरयम हिम  
 की नाईं कोढ़ी हो गई और हाखन ने मिरयम की ओर दृष्टि किई और देखी  
 ११ वह कोढ़ी थी । तब हाखन ने मूसा से कहा कि हे मेरे स्वामी मैं तेरी बिनती  
 करता हूं यह पाप हम पर मत लगा इस में हम ने मूर्खता किई और पापी  
 १२ हुए । वह उस मृतक के समान न हो जिस का आधा मांस अपनी माता के  
 १३ गर्भ से उत्पन्न होते ही गल जावे । तब मूसा ने परमेश्वर के आगे बिनती करके  
 १४ कहा कि हे सर्वशक्तिमान मैं तेरी बिनती करता हूं अब उसे चंगा कर । तब पर-  
 मेश्वर ने मूसा से कहा कि यदि उस का पिता उस के मुंह पर धूकता तो क्या  
 वह सात दिन लों लज्जित न रहती सो सात दिन लों उसे छावनी से बाहर बंद  
 १५ कर और उस के पीछे उसे मिला ले । सो मिरयम छावनी के बाहर सात दिन लों  
 बंद हुई और जब लों मिरयम बाहर रही लोगों ने यात्रा न किई ॥  
 १६ और उस के पीछे लोगों ने हसीरात से यात्रा किई और फारान के अरण्य में  
 डेरा किया ॥

तेरहवां पृष्ठ ।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा । कि लोगों को भेज जिसमें वे कनआन के  
 २ देश का भेद लेवें जो मैं इसराएल के संतानों को देता हूं एक एक मनुष्य उन  
 ३ के पितरों की हर एक गोष्टी में से भेजो उन में से हर एक प्रधान होवे । और  
 परमेश्वर की आज्ञा से मूसा ने फारान के अरण्य से उन्हें भेजा वे सारे मनुष्य  
 ४ इसराएल के संतानों के प्रधान थे । और उन के ये नाम रुखिन की गोष्टी में से  
 ५ जकूर का बेटा शमूअ । समजन की गोष्टी में से हूरी का बेटा सफत । यहूदाह  
 ६ की गोष्टी में से यफुन्नः का बेटा कालिब । इश्कार की गोष्टी में से यूसुफ का बेटा  
 ७ इजाल । इफरायम की गोष्टी में से नून का बेटा हूसीअ । बिनयमीन की गोष्टी  
 ८ में से रफू का बेटा फिलती । जखलून की गोष्टी में से सूदी का बेटा जदिएल ।  
 ९ यूसुफ की गोष्टी में से अर्थात् मुनस्सी की गोष्टी में से सूसी का बेटा जदी ।  
 १० दान की गोष्टी में से जमली का बेटा अमिएल । यसर की गोष्टी में से मीकाएल  
 ११ का बेटा शितूर । नफताली की गोष्टी में से बफसी का बेटा नखबी । जद की  
 १२ गोष्टी में से माकी का बेटा जियूएल । उन मनुष्यों के नाम जिन्हें मूसा ने देश  
 का भेद लेने के लिये भेजा ये हैं और मूसा ने नून के बेटे हूसीअ का नाम यहूशूअ  
 रक्खा ॥

१३ और मूसा ने उन्हें भेजा कि कनआन के देश का भेद लेवें और उन्हें कहा कि

उतारा गया तब जैरुन के बेटे और मिरानी के बेटों ने तंबू को उठाके यात्रा कीई । फिर इथिन का भंडा उन की सेना के समान आगे बढ़ा और शदेकर १८ का बेटा इलिसूर उस के कटक का प्रधान था । और शमरुन के वंश की १९ गोष्टी की सेना पर मूरिशुही का बेटा नलूमिएल था । और जद के वंश की २० गोष्टी की सेना पर दकएल का बेटा इलियासफ था । फिर किछातिधों ने २१ प्रवित्र स्थान उठाके यात्रा कीई और उन के पहुंचने लों तंबू खड़ा किया जाता था । और इफरायम की छावनी का भंडा उन की सेना के समान आगे बढ़ा २२ और अम्मिहूद का बेटा इलिसमः उस के कटक का प्रधान था । और मुनस्सी २३ के वंश की गोष्टी की सेना पर फिडाहसूर का बेटा जमलिएल था । और २४ यिनयमीन के वंश की गोष्टी की सेना पर जिदःजनी का बेटा अयिदान था । और सब छावनी के पीछे दान के संतान की छावनी का भंडा उन की सेना के २५ समान आगे बढ़ा और उन की सेना पर अम्मिसड्वाय का बेटा अयिजल था । और यमर के वंश की गोष्टी की सेना पर अकरन का बेटा फजिहएल था । २६ और नफताली के वंश की गोष्टी की सेना पर सेनान का बेटा अगिररः था । २७ इसराएल के संतान की यात्रा जब वे आगे बढ़ते थे अपनी सेनाओं के समान २८ ऐसी ही थी ॥

तब मूसा ने सिदयानी रजएल के बेटे हूयाव को जो मूसा का समुर था २९ कहा कि हम उस स्थान को जाते हैं जिस के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि मैं तुम्हें जाऊंगा सो तू हमारे साथ आ और हम तुझ से भलाई करेंगे क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के विषय में अच्छा कहा है । और उस ने उसे कहा कि मैं ३० न जाऊंगा परन्तु मैं अपने देश को और अपने कुटुम्बों में जाऊंगा । तब ३१ उस ने कहा कि हमें न छोड़िये क्योंकि आप जानते हैं कि अरण्य में हमें कबोकर डेरा किया चाहिये सो आप हमारी आंखों की संतो देंगे । और यों होगा ३२ कि यदि आप हमारे साथ चलें तो जो भलाई परमेश्वर हम से करेगा सो हम आप से करेंगे ॥

फिर उन्होंने ने परमेश्वर के पहाड़ में तीन दिन की यात्रा कीई और परमेश्वर ३३ की यात्रा की संज्ञा उन तीन दिन के मार्ग से आगे गई जिसमें उन के लिये ब्रिथाम का स्थान ठूंठे । और जब वे छावनी में बाहर जाते थे तब परमेश्वर ३४ का मेघ दिन को उन के ऊपर ठहरता था ॥

और जब संज्ञा आगे बढ़ती थी तब यों होता था कि मूसा कहता था ३५ कि उठ है परमेश्वर और तारे शत्रु हिन्नु भिन्नु होयें और जो तुझ से दूर रखते हैं सो तारे आगे से भागें और जब वह ठहरती थी तब वह कहता था कि है परमेश्वर सदनों इसराएलियों में फिर आ ॥

अपारुधों पृष्ठ ।

और जब लोग कुड़कुड़ाने लगे तो परमेश्वर के मुने में घुरा लगा और जब १ परमेश्वर ने सुना तो उस का क्रोध भड़का और परमेश्वर की आग उन में फूट निकली और छावनी के एक अंत को भस्म किया । तब लोग मूसा के पास २

- स्त्रियां और हमारे बालक पकड़े जायें या हमारे लिये कष्ट न हों कि मिस ४ को फिर जायें । तब उन्होंने ने आपुन में कहा कि आओ एक को अपना प्रधान बनायें और मिस को फिर चले ।
- ५ तब मूसा और हामन इसराएल के संतानों की सारी मंडली के सामें खड़े ६ मुंह गिरे । और नून के बेटे यहुशूय और यफुजः के बेटे कानिय ने जो उन में से ७ जो देश का भेद लेने गये थे अपने कपड़े फाड़े । और उन्होंने ने इसराएल के संतानों की सारी मंडली से कहा कि जिस देश का भेद लेने को हम आरंभ कर गये हैं ८ अच्छी भूमि है । यदि ईश्वर हम में प्रभु होवे तो हमें उस देश में से आवा ९ और वह भूमि जिस पर दूध और मधु बह रहा है हमें देगा । अब तुम केशव परमेश्वर ने कल न करो और उस देश के लोगों से सब हरा क्योंकि ये तो हमारे लिये भोजन हैं उन के प्रादु उन से आ चुके हैं और परमेश्वर हमारे साथ है उन की भय मत करो ।
- १० परन्तु सारी मंडली ने कहा कि उन पर पत्थरपाट करो तब मंडली के मुख में सारे इसराएल के संतानों के सामें परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई ।
- ११ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं लोग कथ लो मुझे निम्नार्थों और उन आश्चर्यों के कारण जो मैं ने उन में दिखाये हैं वे कथ लो मुझ पर १२ विश्वास न करेंगे । मैं उन्हें सरी ने मारंगा और उन्हें शोषकार रहित करेगा १३ और तुम्हें इन से एक बड़ी और दानवंत जाति बनाऊंगा । तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि मिस के लोग मुझे क्योंकि तू अपनी सामर्थ्य से इन लोगों को १४ उन के मध्य से निकाल लाया । और ये इस देश के आसों से कहेंगे क्योंकि उन्होंने ने तो मुना है कि तू परमेश्वर इन लोगों के बीच है कि तू हे परमेश्वर आसों सामें देखा जाता है और कि तेरा मेघ उन पर रहता है और कि तू दिन को मेघ के खंभे में और रात को आग के खंभे में उन के आगे आगे चलता है ।
- १५ सो यदि तू इन लोगों को एक समुप्य के समान मार डाले तब आतिमान १६ जिन्होंने ने तेरी कीर्ति मुनी हैं कहेंगे । इस कारण कि परमेश्वर इन लोगों को उस देश में पहुंचा न सका जिस के विषय में उन में किरिया खाई थी इस १७ लिये उस ने उन्हें अरण्य में घात किया । सो मैं तेरी विनती करता हूं हे मेरे प्रभु १८ अपनी सामर्थ्य को प्रगट कर जैसा तू ने कहा है । कि परमेश्वर बड़ा धीर और महा दयाल है पाप और अपराध को क्षमा करता है और किसी भी भाति से न छोड़ेगा पितरों के पापों को उन के लड़कों से जो उन की तीसरी और चौथी १९ पीढ़ी है प्रतिफल देता है । अब तू अपनी दया की अधिकार्ड से इन लोगों का पाप क्षमा कर जैसा तू मिस से लेकर यहां लो क्षमा करता आया है ॥
- २० तब परमेश्वर ने कहा कि मैं ने तेरे कहे के समान क्षमा किया है । परन्तु २१ अपने जीवन से समस्त पृथिवी परमेश्वर की महिमा से भर जायगी । क्योंकि इन सब लोगों ने जिन्होंने ने मेरा विभव और मेरे अचंभे जो मैं ने मिस में और उस अरण्य में प्रगट किया देखा अब लो मुझे दस बार परखा और मेरा शब्द न २३ माना । सो वे उस देश को जिस के कारण मैं ने उन के पितरों से किरिया

तुम दक्षिण दिशा में चढ़ जाओ और पहाड़ के ऊपर चने जाओ । और देश १८ को और उन लोगों को जो उस में बस्ते हैं दक्षिण को कि वे कैसे हैं प्रचल अथवा निर्बल घोड़े हैं अथवा बहुत । और वह देश जिस में वे रहने हैं कैसा है भला १९ अथवा बुरा और कैसे कैसे नगर जिन में वे बस्ते हैं तंबुओं में हैं अथवा गढ़ों में । और देश कैसा है फलदायक है अथवा निष्फल उस में पेड़ हैं अथवा नहीं और २० तुम दियाव करो और उस देश का कुछ फल ले आओ और वह ममय दान्य के पहिले फलों का था । सो वे चढ़ गये और भूमि के भेद को सीन के अरण्य में २१ से रूख लो जो हमान के मार्ग में है लिया । और वे दक्षिण की ओर से चढ़े २२ और दृष्टन को आये जहां अनाक के वंश अग्निमान और सीसी और तनसी थे और सिन का जुवन दृष्टन से सात यम आगे बना था ॥

सो वे इसकाल की नाली में आये और वहां से उन्हीं ने दान्य का एक गुच्छा २३ काटा और उसे एक लट्टु पर रखकर दो मनुष्यों ने उठाया और कुछ अनाक और गूलर भी लिये । उस स्थान का नाम उस गुच्छे के लिये जिने इसराएल के २४ संतान वहां से काट लाये थे नदलइसकाल रखवा । सो वे चालीस दिन के २५ पीछे देश का भेद लेके फिर आये ॥

और फिरके मूसा और हाश्न और इसराएल के संगानों की मारी मंडली के २६ पास फारान के अरण्य में कादिम में आये और उन्हीं और मारी मंडली के आगे मंदेश दिया और उस भूमि का फल उन्हीं दियाया । और उससे यह कहके वर्तन २७ किया कि हम उस देश में जिधर तु ने हमें भेजा था गये और उस में सबनुष दूध और मधु बहता है और यह वहां का फल है । तथापि उस देश के घासी २८ बलवन्त हैं और उन के नगरों की भीतें अति ऊंची हैं और हम ने अनाक के संतान को भी वहां देखा । उन भूमि में दक्षिण की ओर अमालीक बस्ते हैं और २९ हित्ती और ययूमी और अमूरी पहाड़ों पर रहते हैं और समुद्र के तीर और घरदन के तीर पर कनयानी रहते हैं । तब कालिय ने मूसा के आगे लोगों का धोसा ३० करके कहा कि आओ एक साथ चढ़ जायें और उसे वन में करें क्योंकि हम पर प्रचल होने की हम में शक्ति है । परन्तु उस के संगियों ने कहा कि हम ३१ उन लोगों का साम्रा करने में दुर्बल हैं क्योंकि वे हम से अधिक बलवन्त हैं । और वे इसराएल के संतानों के पास उस भूमि का जिस का भेद लेने का गये थे ३२ बुरा मंदेश लाये और बोले कि वह भूमि जिस का भेद लेने हम गये थे ऐसी भूमि है जो अपने घासियों को ग्या जाती है और सब लोग जिन्हें हम ने उस में देखा है बड़े डील के हैं । और हम ने वहां दान्य अनाक के बड़े दान्यों को देखा ३३ और हम अपनी और उन की दृष्टि में फनगो की नाईं थे ॥

चौदहवां पर्व ।

तब मारी मंडली चिह्नाके रोई और लोग उस रात भर रोया किये । फिर १ सारे इसराएल के संतान मूसा और हाश्न पर कुड़कुड़ाये और ममस्त मंडली ने उन्हीं कहा हाय कि हम सिन में मर जाते और हाय कि हम इसी अरण्य में नष्ट होते । हमें किस लिये परमेश्वर इस देश में लाया कि खड्ग से मारे जायें हमारी ३

४५ तब असालीकी और कन्यानी जो उस पहाड़ पर रहते थे उतरे और उन्हें  
हुरमः लों मारते गये ॥

पंदरहवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों को कहके  
३ बोल कि जब तुम अपने निवास के देश में जो मैं तुम्हें देता हूँ पहुँचो । और  
आग से परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाओ अथवा मनोती पुरी करने  
का बलिदान अथवा वांछित भेंट अथवा ठहराये हुए पर्व की भेंट परमेश्वर के  
४ लिये आनन्द का सुगंध लेहें अथवा भुंड से चढ़ाओ । तब वह जो अपनी  
भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ाता है भोजन की भेंट पिमान का दसवां भाग हीन  
५ के चौथे भाग तेल से मिला हुआ भेंट का बलिदान लावे । एक मेम्रा के लिये  
बलिदान की भेंट अथवा बलिदान तपावन के लिये हीन का दाखरस सिद्ध  
६ कीजियो । अथवा मेंढे के लिये भोजन की भेंट को दो दसवां भाग पिमान हीन  
७ के तीसरे भाग तेल से मिला हुआ सिद्ध कीजियो । और तपावन के लिये हीन  
८ के तीसरे भाग दाखरस परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ावो । और जब तू  
बलिदान की भेंट के लिये अथवा मनोती पुरी करने का बलिदान के लिये अथवा  
९ कुशल की भेंट परमेश्वर के लिये वेल सिद्ध करे । तब वह वेल के साथ भोजन  
की भेंट तीन दसवां भाग पिमान हीन के आधे भाग तेल से मिला हुआ लावे ।  
१० और तपावन के लिये दाखरस हीन का आधा भाग आग से परमेश्वर के आनन्द  
११ के सुगंध के लिये लावो । एक एक वेल अथवा एक एक मेंढा अथवा एक एक  
१२ मेम्रा अथवा एक एक बकरी का मेम्रा योंही किया जावे । गिनती के समान सिद्ध  
१३ कीजियो हर एक उन की गिनती के समान ऐसा ही कीजियो । सब जिन का  
जन्म देश में हुआ आग से परमेश्वर के आनन्द के सुगंध के लिये भेंट चढ़ावे  
१४ तो उसी रीति से इन बातों को मानें । और यदि परदेशी तुम्हें वास करे अथवा  
वह जो तुम्हारी पीढ़ियों में होवे परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये आग से  
१५ भेंट चढ़ावे तो जिस रीति से तुम करते हो वैसा वह भी करे । मेंढली के लिये  
और उस परदेशी के लिये जो तुम्हें वास करता है तुम्हारी पीढ़ियों में सदा एक  
१६ ही विधि होवे परमेश्वर के आगे जैसे तुम जैसे परदेशी भी हैं । तुम्हारे और  
परदेशियों के लिये जो तुम्हें रहते हैं एक ही व्यवस्था और एक ही रीति होवे ॥

१७ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों से कहके बोल  
१८ कि जब तुम उस देश में पहुँचो जहाँ मैं तुम्हें ले जाता हूँ । तब ऐसा होगा कि  
जब तुम उस भूमि पर की रोटी खाओ तो परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट  
२० चढ़ावो । तुम अपने पहिले गूंदे हुए आटे से एक फुलका उठाने की भेंट के  
२१ लिये लेओ जैसी खलिदान की भेंट को उठाते हो वैसा ही उसे उठावो । तुम  
अपने गूंदे हुए पिसान से पहिले अपनी पीढ़ियों में परमेश्वर के लिये उठाने की  
भेंट चढ़ावो ॥

२२ और यदि तुम ने चूक किया हो और इन सब आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने  
२३ मूसा से कहीं पालन न करो । जिस दिन से परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है और

खाई थी न देखेंगे और जितनों ने मुझे खिन्नाया उन में से कोई उसे न देखेगा ।  
परन्तु मेरा दास कालिय क्योंकि और ही आत्मा उस के साथ था और उस ने मेरी २४  
वात पूरी मानी है सो मैं उसे उस देश में जहां वह गया था ले जाऊंगा और वे  
जो उस के वंश से होंगे उस के अधिकारी बनेंगे । अब अमालीकी और कन्यानी २५  
तराई में दास करते थे सो कल फिरो और लाल समुद्र के मार्ग से अरण्य में जाओ ॥

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । कि मैं कय लों इस दुष्ट २६  
मंडली की कुड़कुड़ाहट सट्टें इसराएल के संतान जो मुझ पर कुड़कुड़ाते हैं मैं ने  
उन का कुड़कुड़ाना सुना । उन से कह कि परमेश्वर कहता है मुझे अपने जीवन २७  
सों जैसा तुम ने मेरे मुँह में कहा है मैं तुम से वैसा ही करूंगा । तुम्हारी और २८  
उन सभी की लोथ तुम्हारी समस्त गिनतियों के समान बीस वरस से लेके ऊपर  
लों जो मुझ पर कुड़कुड़ाये इस अरण्य में गिरेंगी । यफुन्नः के बेटे कालिय और २९  
नून के बेटे यहूशूअ का छोड़ तुम निःसंदेह उस देश में न पहुँचोगे जिस में मैं ने  
तुम्हें बसाने की किरिया खाई है कि तुम्हें वहाँ बनाऊँगा । परन्तु तुम्हारे दासकों ३०  
को जिन के विषय मैं तुम ने कहा है कि वे लुट जायेंगे मैं उन्हें पहुँचाऊँगा और  
वे उस देश को जानेंगे जिसे तुम ने तुच्छ जाना है । पर तुम्हारी लोथ इस ही ३१  
वन में गिरेंगी । और तुम्हारे लड़के उस अरण्य में चालीस वरस लों भ्रमते फिरेंगे ३२  
और तुम्हारे व्यभिचारों को उठाया करेंगे जब लों कि तुम्हारी लोथ इस वन में  
क्षीण न होवें । उन दिनों की गिनती के समान जिन में तुम उस भूमि का भेद लेते ३३  
थे जो चालीस दिन हैं दिन पीछे एक वरस सो तुम चालीस वरस लों अपने पाप  
को भोगा करोगे तब तुम मेरे विरोध को जानोगे । मैं परमेश्वर ने कहा है और ३४  
इस दुष्ट मंडली के लिये जो मेरे विरुद्ध मैं एकट्ठी हैं निश्चय पूरा करूँगा इसी वन  
में नष्ट किई जायगी और यहीं मरेगी ॥

और जिन मनुष्यों को मूसा ने देश के भेद लेने को भेजा था जिनमें ने उस ३५  
देश पर वात बना बनाके कहा है और सारी मंडलियों को उस पर कुड़कुड़ाया  
है । हां वे मनुष्य जो उस देश का दुरा संदेश लाये हैं परमेश्वर के आगे मरी से ३६  
मरेंगे । पर नून का बेटा यहूशूअ और यफुन्नः का बेटा कालिय उन में से जो ३७  
देश का भेद लेने गये थे जीते रहेंगे ॥

सो मूसा ने इन बातों को इसराएल के समस्त संतानों को सुनाया और लोग ३८  
बहुत विलाप करने लगे । और विद्वान को तहकें वे उठे और यह कहते हुए ३९  
पहाड़ पर चढ़ गये देख हम उस स्थान पर चढ़ जायेंगे जिस की परमेश्वर ने  
वाचा दिई है क्योंकि हम ने पाप किया है । तब मूसा ने कहा अब तुम लोग ४०  
क्यों परमेश्वर की आज्ञा को भंग करते हो यह शुभ न होगा । ऊपर मत जाओ ४१  
क्योंकि परमेश्वर तुम्हें में नहीं जिसतें तुम अपने वरियों के आगे सारे न  
पड़ो । क्योंकि अमालीकी और कन्यानी वहाँ तुम्हारे आगे हैं और तुम तलवार ४२  
से बिछ जाओगे क्योंकि तुम परमेश्वर से फिर गये हो सो परमेश्वर तुम्हारे  
साथ न होगा । परन्तु वे छिटाई से पहाड़ की चाटी पर चढ़ गये तथापि ४३  
परमेश्वर की वाचा की मंजूपा और मूसा कायनों के बाहर न गये ॥



## सोलहवां पर्व ।

१ और लावी के बेटे किहात के बेटे इजहार के बेटे कुरह और इलिअब के  
 २ बेटे दातन और अबिराम और रुबिन के बेटे फलत के बेटे ओन ने लोगों को  
 ३ में नामी और लोगों में कीर्तिमान थे उन्हें लेके मूसा के सम्मुख खड़े हुए । तब  
 मूसा और हारून के विरोध में एकट्ठे होके उन्हें बोले कि तुम आप को बहुत  
 बढ़ाते हो क्योंकि समस्त मंडली में तो हर एक मनुष्य पवित्र है और परमेश्वर  
 उन में है सो किस लिये परमेश्वर की मंडली से आप को बढ़ाते हो ॥

४ तब मूसा यह सुनके आँधे मुंह गिरा । और उस ने कुरह और उस की सारी  
 जथा को कहा कि कलही परमेश्वर दिखावेगा कि कौन उस का है और  
 कौन पवित्र है और अपने पास पहुंचावेगा अर्थात् उसी को जिसे उस ने चुन लिया  
 ६ है अपने पास पहुंचावेगा । सो हे कुरह और उस की सारी जथा तुम यह  
 ७ करो अपनी अपनी धूपावरी लेओ । और उन में आग रक्खो और कल  
 परमेश्वर के आगे उन में धूप जलाओ और यों होगा कि जिस मनुष्य को  
 परमेश्वर चुनता है वही पवित्र होगा हे लावी के बेटो तुम आप को बढ़ाते हो ।

८ फिर मूसा ने कुरह से कहा कि हे लावी के बेटो सुन रक्खो । तुम बड़ा उसे छोटा  
 जानते हो कि इसराएल के ईश्वर ने तुम्हें इसराएल की मंडली में से अलग किया  
 कि अपने पास लाके परमेश्वर के तंबू की सेवा करावे और मंडली की सेवा के  
 १० लिये खड़े रहे । और उस ने तुम्हें और तेरे समस्त भाई लावी के बेटे तेरे संग  
 ११ अपने पास किया अब तुम याजकता भी ठूँढ़ते हो । इस कारण तू और तेरी  
 सारी जथा परमेश्वर के विरोध पर एकट्ठी हुई है और हारून वह कौन है जो  
 तुम उस के विरोध में कुड़कुड़ाते हो ॥

१२ तब मूसा ने इलिअब के बेटे दातन और अबिराम को बुलवाया और वे बोले  
 १३ कि हम न आवेँगे । क्या यह छोटी बात है कि तू हमें उस भूमि में से जिस  
 में दूध और मधु बहता है चढ़ा लाया कि हमें अरण्य में नाश करे और अब  
 १४ आप को हमारे ऊपर सर्वथा अध्यक्ष बनाता है । और तू हमें ऐसी भूमि में  
 न लाया जहां दूध और मधु बहे तू ने हमें खेत और दाख की बारी का  
 अधिकारी नहीं कर दिया क्या तू इन लोगों की आंखें निकाल डालेगा हम  
 १५ तो न आवेँगे । तब मूसा का क्रोध अत्यंत भड़का और परमेश्वर से यों  
 बोला कि तू उन की मेट की ओर मत ताक मैं ने उन से एक गदहा भी नहीं  
 १६ लिया न उन में से किसी को दुःख दिया । फिर मूसा ने कुरह से कहा कि  
 तू और तेरी सारी जथा और हारून सहित परमेश्वर के आगे कल के दिन  
 १७ आओ । और हर एक मनुष्य अपनी अपनी धूपावरी लेवे और उन में धूप  
 डाले और तुम्हें से हर एक अपनी अपनी धूपावरी परमेश्वर के आगे लावे सब  
 अढ़ाई सौ धूपावरी होवें और तू और हारून अपनी धूपावरी लावे ॥

१८ सो हर एक ने अपनी अपनी धूपावरी लिई और उन में आग रक्खी और उन  
 पर धूप डाला और मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा और हारून सहित आ

अब से आगे लों अपनी पीढ़ियों में समस्त आज्ञा जिन्हें परमेश्वर ने मूसा के दस्तों से तुम्हें दिई है । तब यां होगा कि यदि कुछ अज्ञानता हो जावे और मंडली न २४ जाने तब समस्त मंडली बलिदान की भेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा चढ़ावे उस के भोजन की और उस के तपायन की भेंट के साथ रीति के समान और अपराध की भेंट के लिये बकरी का एक मेघ्रा । और याज्ञक इसराएल २५ के संतानों की सारी मंडली के लिये प्रायश्चित्त देवे और वह उन्हें क्षमा किया जायगा क्योंकि वह अज्ञानता है और वे परमेश्वर के लिये अपनी भेंट आगे के बलिदान से लावें और अपनी अज्ञानता के लिये अपने पाप की भेंट परमेश्वर के आगे लावें । और इसराएल के संतानों का सारी मंडली और परदेशी जो उन में २६ रहते हैं क्षमा किये जावेंगे इस लिये कि सारे लोग अज्ञानता में थे ॥

और यदि कोई प्राणी अज्ञानता में पाप करे तो वह पाप की भेंट के लिये पहिले २७ खरम की एक बकरी लावे । और उस प्राणी के लिये जो अज्ञानता में परमेश्वर २८ के आगे पाप करे उस के लिये याज्ञक प्रायश्चित्त करे और वह उसे क्षमा किया जायगा । तुम अज्ञानता के अपराध के कारण उस के लिये जो इसराएल के २९ संतानों में उत्पन्न हुआ हो और परदेशी के लिये जो उन में रहता हो एक ही व्यवस्था रख्यो ॥

परन्तु जो प्राणी छिटाई करे चाहे देशी चाहे परदेशी होवे वही परमेश्वर की ३० निन्दा करता है और वही प्राणी अपने लोगों में से कट जायगा । क्योंकि उस ने ३१ परमेश्वर के वचन की निन्दा किई और उस की आज्ञा का भंग किया वही प्राणी सर्वथा कट जायगा उस का पाप उसी पर होगा ॥

और जब इसराएल के संतान उन में थे तब उन्हीं ने एक मनुष्य को विश्राम ३२ के दिन लकड़ियां बटोरते पाया । और जिन्हीं ने उसे लकड़ियां गकट्टी करते पाया ३३ वे उसे मूसा और हाश्मन और सारी मंडली के पास लाये । तब उन्हीं ने उसे धंद ३४ रक्खा इस कारण कि प्रगट न हुआ था कि उसने क्या किया जावे । तब परमेश्वर ३५ ने मूसा से कहा कि वह मनुष्य निरचय मारा जायगा सारी मंडली छावनी के बाहर उस पर पत्थरबाद करे । सो जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ३६ सारी मंडली उसे तंबू के बाहर ले गई और उन्हीं ने उस पर पत्थरबाद करके मार डाला ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों से कह और ३७ उन्हें आज्ञा कर कि वे अपनी पीढ़ियों में अपने दम्पतों के झूंड की भालर पर नीली चबली लगावें । यह तुम्हारे लिये भालर होगी जिसमें तुम उसे देखके पर- ३८ मेश्वर की सारी आज्ञाओं को स्मरण करो और उन्हें पालन करो और जिसमें तुम अपने मन का और अपनी आंखों का पीका न करो जैसे तुम आगे व्यभिचार करते थे । जिसमें तुम मेरी सब आज्ञाओं को स्मरण करो और उन का पालन ४० करो और अपने ईश्वर के लिये धन्य होओ । मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ जो ४१ तुम्हें मित्र की भूमि से बाहर लाया कि तुम्हारा ईश्वर होजं मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

४० लिये बनाये । कि इसराएल के संतानों के लिये चेत होवे कि कोई परदेशी जो हाइन के वंश से नहीं परमेश्वर के आगे धूप जलाने को पास न आवे जिसमें कुरह और उस की जथा के समान न होवे जैसा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा से उसे कहा था ॥

४१ परन्तु विहान को इसराएल के संतानों की सारी मंडली मूसा और हाइन के  
 ४२ विरोध में कुड़कुड़ाके बोली कि तुम ने परमेश्वर के लोगों को मार डाला । और  
 यों हुआ कि जब मूसा और हाइन के विरोध में मंडली एकट्ठी हुई तब उन्होंने  
 मंडली के तंबू की ओर ताका और क्या देखते हैं कि मेघ ने उसे ढांप लिया  
 ४३ और परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई । तब मूसा और हाइन मंडली के तंबू के  
 ४४ आगे आये । और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि तुम इस मंडली में से  
 ४५ अलग होओ जिसमें मैं उन्हें एक पल में नाश कर डालूं तब वे आंधे मुंह गिर  
 ४६ पड़े । और मूसा ने हाइन से कहा कि धूपावरी ले और उस में खेदी पर की आग  
 रख और धूप डाल और मंडली में शीघ्र जाके उन के लिये प्रायश्चित्त दे क्योंकि  
 ४७ परमेश्वर के आगे से कोप निकला और मरी आरंभ हुई । तब जैसी मूसा ने आज्ञा  
 किई थी हाइन मंडली के मध्य में दौड़ गया और क्या देखता है कि मरी लोगों  
 ४८ में आरंभ हुई सो उस ने धूप रखके उन लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया । और  
 ४९ वह जीवतों और मृतकों के बीच में खड़ा हुआ तब मरी थम गई । सो जितने  
 उस मरी से मरे उन्हें छोड़के जो कुरह के बिषय में नष्ट हुए चौदह सहस्र सात  
 ५० सौ थे । फिर हाइन मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा पास फिर आया और मरी  
 थम गई ॥

### सत्रहवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों से कह और  
 उन में से उन के पितरों के घराने के समान हर घराने पीछे उन के सब प्रधानों  
 से एक एक कड़ी ले और उन के पितरों के समान बारह कड़ी और हर एक का  
 ३ नाम उस की कड़ी पर लिख । और लावी की कड़ी पर हाइन का नाम लिख  
 क्योंकि हर एक प्रधान के कारण उन के पितरों के घरानों के लिये एक एक कड़ी  
 ४ होगा । और उन्हें मंडली के तंबू में साक्षी के आगे रख दे जहां मैं तुम से भेंट  
 ५ करूंगा । और यों होगा कि जिसे मैं चुनूंगा उस की कड़ी में फूल लगोगा और  
 मैं इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना जो वे विरोध से कुड़कुड़ाते हैं दूर  
 करूंगा ॥

६ सो मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा और हर एक ने उन के प्रधानों में  
 से एक एक प्रधान के लिये उन के पितरों के घरानों के समान एक एक कड़ी  
 ७ अर्थात् बारह कड़ी दिई और हाइन की कड़ी उन की कड़ियों में थी । और मूसा  
 ने उन कड़ियों को साक्षी के तंबू में परमेश्वर के आगे रक्खा ॥

८ और ऐसा हुआ कि विहान को मूसा साक्षी के तंबू में गया तो क्या देखता  
 है कि लावी के घराने के लिये हाइन की कड़ी में कली लगीं और कली निकलीं  
 ९ और फूल फूले और यादाम लगे । तब मूसा सब कड़ियों को परमेश्वर के आगे

खड़े हुए । और कुरु ने सारी मंडली को मंडली के तंत्र के द्वार पर उन के १९ विरोध पर एकट्ठी किया तब परमेश्वर की महिमा सारी मंडली के सामने प्रगट हुई ॥

और परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । कि इस मंडली में से २०  
आप को अलग करो कि मैं उन्हें पल भर में नाश करूं । तब वे श्रांघे मुंह २१  
गिरे और बोले कि हे सर्वशक्तिमान सारे शरीरों के आत्मा का ईश्वर पाप  
एक करे और क्या तू सारी मंडली पर क्रुद्ध होवे । तब परमेश्वर मूसा से कहके २३  
बोला । कि तू मंडली से कह कि कुरु और दातन और अविराम के तंत्रों में २४  
से निकल आओ ॥

सो मूसा उठा और दातन और अविराम के यहां गया और इसराएल के २५  
प्राचीन उस के पीछे हो लिये । और उस ने मंडली से कहा कि इन दुष्ट जनों २६  
के तंत्रों से निकल जाओ और उन को किसी वस्तु को मत छुओ न दोगे  
कि तुम भी उन के सब पापों में नाश हो जाओ । सो वे कुरु और दातन २७  
और अविराम के तंत्रों में से निकल गये और दातन और अविराम और उन  
की पत्नियां और उन के बेटे और उन के बालक निकलके अपने तंत्रों के  
द्वार पर खड़े हुए । तब मूसा ने कहा कि तुम इस में जानोगे कि परमेश्वर २८  
ने यह कार्य करने को मुझे भेजा है और मैं ने कुछ अपनी इच्छा से नहीं  
किया । यदि ये मनुष्य उस मृत्यु से मरें जिस मृत्यु से सब मरते हैं अथवा उन २९  
पर कोई विपत्ति ऐसी होवे जो सब पर होती है तो मैं ईश्वर का भेजा हुआ  
नहीं । पर यदि परमेश्वर कोई नई बात करे और पृथिवी अपना मुंह फैलावे ३०  
और उन्हें सब समेत निगल जावे और वे जीने जी पाताल में जा पड़ें तो तुम  
जानिये कि इन लोगों ने परमेश्वर को खिन्नाया है ॥

और यों हुआ कि ज्योंही वह ये सब बातें कह चुका तो उन के नीचे की ३१  
भूमि फट गई । और पृथिवी ने अपना मुंह खोला और उन्हें और उन के घर ३२  
और उन सब मनुष्यों को जो कुरु के थे और उन की सब संपत्ति को निगल  
गई । सो वे और सब जो उन के थे जीते जी पाताल में गये और भूमि ने ३३  
उन्हें छिपा लिया और मंडली के मध्य से नष्ट हो गये । और सारे इसराएल जो ३४  
उन के आसपास थे उन का चिल्लाना सुनके भागे क्योंकि उन्होंने ने कहा न हो  
कि भूमि हमें भी निगल जावे । फिर परमेश्वर के आगे से एक आग निकली ३५  
और उन अढ़ाई सौ को जिन्होंने ने धूप जलाया था खा गई ॥

और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि हारून याजक के बेटे इलियजर से ३६  
कह कि धूपावरी को आग में से उठा और आग वही देखे दे क्योंकि वे तो  
पवित्र हैं । जिन्होंने ने अपने प्राण के विरोध पाप किया उन की धूपावरियों ३७  
से चौड़े चौड़े पत्र वेदी के ढांपने के लिये बना क्योंकि उन्होंने ने उन्हें परमेश्वर  
के आगे चढ़ाया इस लिये वे पवित्र हैं और वे इसराएल के संतानों के लिये  
एक चिन्ह होंगे । तब इलियजर याजक ने उन पीतल की धूपावरियों को जिन्हें ३८  
उन्होंने ने जलाया था जो जल गये थे लिया और वेदी के लिये चौड़े पत्र ढांपने के

१३ की भेंट के लिये लावेंगे मैं ने तुम्हें दिया । उन के देश में जो पहिले पकता है जिन्हें वे परमेश्वर के आगे लावें तेरे दोगे तेरे घर में जो कोई पवित्र होवे १४ सो उसे खावे । इसराएल के संतानों के हर एक नैवेद्य की वस्तु तेरी होगी । १५ समस्त प्राणी में से हर एक जो गर्भ खोलता है चाहे मनुष्य होवे चाहे पशु जिसे वे परमेश्वर के लिये लाते हैं तेरा होगा तथापि तू मनुष्यों के और अपवित्र १६ पशुन के पहिलौठों को निश्चय कुड़ाड़्यो । और जो एक मास के वय से कुड़ाये जाने का होय पांच शैकल दाम जो पवित्र स्थान के शैकल के समान १७ होवे जो बीस गिरह है अपने ठहराने के समान उसे कुड़ाड़्यो । परन्तु गाय के पहिलौठे अथवा भेड़ के पहिलौठे अथवा बकरी के पहिलौठे को मत कुड़ाना वे पवित्र हैं तू उन का लोहू वेदी पर छिड़कियो और उन की चिकनाई आग से १८ परमेश्वर के सुगंध की भेंट के लिये जलाड़्यो । जैसे हिलाई हुई छाती और १९ दहिना कांधा तेरे हैं वैसा उन का मांस तेरा होगा । पवित्र वस्तुन के हिलाने के बलिदान जिन्हें इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये चढ़ाते हैं मैं ने तुम्हें और तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों को सदा की विधि के लिये दिया परमेश्वर के आगे तेरे और तेरे संग तेरे वंश के लिये लान की वाचा सदा के लिये है ॥

२० फिर परमेश्वर ने हासन से कहा कि तू उन के देश में कुछ अधिकार न रखना और उन में कुछ भाग न रखना इसराएल के संतानों में तेरा भाग और २१ तेरा अधिकार मैं हूँ । देख मैं ने लावी के संतान को उन की सेवा के लिये जो वे सेवा करते हैं अर्थात् मंडली के तंबू की सेवा के लिये इसराएल में सारा २२ दसवां भाग दिया । और आगे को इसराएल के संतान मंडली के तंबू के पास २३ न आवें न हो कि वे पापी होवें और मर जावें । परन्तु लावी मंडली के तंबू की सेवा करें और वे अपने पाप भोगेंगे तुम्हारी पीढ़ियों में यह सदा की विधि २४ होगी कि वे इसराएल के संतानों में अधिकार नहीं रखते हैं । परन्तु इसराएल के संतान का दसवां भाग जिन्हें वे परमेश्वर के लिये हिलाने की भेंट के लिये चढ़ावें मैं ने लावियों के अधिकार में दिया इस कारण मैं ने उन्हें कहा कि इसराएल के संतानों में वे अधिकार न पावेंगे ॥

२५ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि लावियों को यों कह और उन्हें बोल कि जब तुम इसराएल के संतानों से दसवां भाग लेओ जो मैं ने उन से तुम्हारे अधिकार के लिये तुम्हें दिया है तब तुम दसवें का दसवां भाग उठाने के बलिदान २७ के कारण परमेश्वर के आगे चढ़ाड़्यो । जैसा कि खलिहान का अन्न और कोल्हू २८ की भरपूरी तुम्हारे उठाने की भेंट गिनी जायेंगी । इस भांति से तुम भी उठाने की भेंट परमेश्वर के लिये अपने सारे दसवें भागों से चढ़ाओ जिन्हें तुम इसराएल के संतानों से पाओगे और तुम उस में से परमेश्वर की उठाने की भेंट हासन २९ याजक को दीजियो । अपनी समस्त भेंटों में से उस अच्छे से अच्छे अर्थात् उस में ३० का पवित्र किया हुआ भाग परमेश्वर के हिलाने की भेंट चढ़ाड़्यो । इस लिये उन्हें कह कि जब तुम उन में से अच्छे से अच्छे को उठाओ तब लावियों के

से सब इसराएल के संतानों के पास निकाल लाया और उन्हें ने देखा और हर एक ने अपनी अपनी छड़ी फेंक ली ॥

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हाथन की छड़ी मात्सी के आगे रख कि १०  
दंगडत के विरोध के लिये एक चिन्ह रहे और तू उन का कुड़कुड़ाना मुझ से दूर  
करे जिसमें वे मर न जायें । और मूसा ने ऐसा ही किया जैसी परमेश्वर ने उसे ११  
आज्ञा की ॥

तब इसराएल के संतानों ने मूसा से कहा कि हम मरे हम नाश हुए हम सब १२  
के सब विनाश हुए । जो कोई परमेश्वर के तंत्रू पास आवेगा सो मरेगा क्या हम १३  
सब मर मरके सिट जावेंगे ॥

### अष्टावचां पर्व ।

फिर परमेश्वर ने हाथन से कहा कि पवित्र स्थान का पाप तुझ पर और तेरे १  
बेटों और तेरे संग तेरे पिता के घराने पर होगा और तेरे संग तेरे बेटे तुम्हारी  
याजकता का पाप भोगेंगे । और तेरे भाई की गोष्टी भी जो तेरे पिता लावी २  
की गोष्टी है अपने साथ ला जिसमें वे तेरे साथ मिलाये जायें और तेरी सेवा  
करें पर तू अपने बेटों समेत सात्सी के तंत्रू के आगे रह । और वे तेरी और ३  
सारे तंत्रू की रक्षा करें केवल वे पवित्र पात्रों और वेदी के पास न जायें न  
होयें कि वे भी और तुम भी नाश हो जाओ । और तंत्रू की सारी सेवा के ४  
लिये तेरे संग होके मंडली के तंत्रू की रक्षा करें और कोई परदेशी तुम्हारे पास  
आने न पावे । और तुम पवित्र स्थान को और वेदी को आगे रखो जिसमें ५  
आगे को फिर इसराएल के संतानों पर कांप न पड़े । और देखो मैं ने तुम्हारे ६  
भाई लावियों को इसराएल के संतानों में से लेकर परमेश्वर की भेंट के लिये  
तुम्हें दिया जिसमें मंडली के तंत्रू की सेवा करें । सो तू और तेरे संग तेरे ७  
बेटे वेदी की हर एक वात के और घुंघट के भीतर की सेवा के लिये अपने  
याजक के पद को पालन करो और सेवा करो मैं ने याजक के पद में तुम्हें  
भेंट की सेवा दी है और जो परदेशी पास आवे सो मारा जायगा ॥

फिर परमेश्वर ने हाथन से कहा कि देख मैं ने इसराएल के संतानों की सतस्त ८  
पवित्र किई हुई उठाने की भेंटों की रक्षा करना तुम्हें दिया मैं ने उन्हें तेरे  
अभिषिक्त होने के कारण तुम्हें और तेरे बेटों को सदा की विधि के निमित्त दिया ।  
उन पवित्र यस्तुन में मे जो आग से बच रही हैं ये तेरे लिये होंगी उन के सब ९  
वलिदान उन के हर एक भोजन की भेंट और उन के हर एक पाप की भेंट और  
उन के हर एक अपराध की भेंट जो वे मेरे लिये चढ़ावेंगे तेरे और तेरे पुत्रों के  
लिये अत्यंत पवित्र होंगी । तू उसे अत्यंत पवित्र स्थान में रखावो हर एक पुरुष १०  
उसे खाए वह तेरे लिये पवित्र है । और यह तेरी है इसराएल के संतानों की भेंट ११  
के उठाने के वलिदान उन के सब हिलाये हुए वलिदान सहित मैं ने तुम्हें और  
तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों को सदा के व्यवहार के लिये दिया जो  
कोई तेरे घर में पवित्र होयें सो उसे खावे । सब अच्छे से अच्छा तेल और अच्छे १२  
से अच्छा दाखरस और मोहू का और इन सबों का पहिला फल जिन्हें वे परमेश्वर



जूफा लेवे और पानी में डुबोके तंघू पर और सारे पात्रों पर और उन मनुष्यों पर जो वहां थे और उस पर जिस ने छाड़ को अथवा लूके हुए को अथवा १९ मृतक को अथवा समाधि को कूआ हो छिड़के । और पवित्र जन तीसरे दिन और सातवें दिन अपवित्र पर छिड़के और फिर सातवें दिन अपने को पवित्र करे और अपने कपड़े धोवे और पानी में नहावे तब सांझ को पवित्र होगा । २० परन्तु वह मनुष्य जो अपवित्र होवे और आप को पवित्र न करे वही मनुष्य मंडली में से कट जायगा क्योंकि उस ने परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध किया इस लिये कि अलग करने का पानी उस पर छिड़का न गया वह २१ अशुद्ध है । और यह उन के लिये नित्य की विधि होगी जो कोई अलग करने के पानी को छिड़के से अपने कपड़े धोवे और जो कोई अलग करने के २२ पानी को कूवे से सांझ लें अशुद्ध रहेगा । और जो कुछ अपवित्र मनुष्य कूवे से अपवित्र होगा और जो प्राणी उसे कूवेगा से सांझ लें अशुद्ध होगा ॥

बीसवां पर्व ।

१ तब इसराएल के संतानों की सारी मंडली पहिले मास सीना के अरण्य में आई और कादिस में उतर पड़ी और मिरयम वहां मर गई और वहां गाड़ी गई ॥ २ और वहां मंडली के लिये पानी न था तब वे मूसा और हारून के विरोध ३ पर एकट्ठा हुए । और लोगों ने मूसा से झगड़के कहा हाय कि जब हमारे भाई ४ परमेश्वर के आगे मर गये हम भी मर जाते । तुम परमेश्वर की मंडली को इस ५ अरण्य में क्यों लाये कि हम और हमारे ठेकर यहां मर जावें । और तुम हमें मिस से इस बुरे स्थान में क्यों चढ़ा लाये यहां तो खेत और गूलर और दाख और अनार नहीं हैं और पीने को पानी नहीं ॥

६ तब मूसा और हारून सभा के आगे से मंडली के तंघू के द्वार पर गये और ७ झांघे मुंह गिरे तब परमेश्वर की महिमा उन पर प्रगट हुई । और परमेश्वर ८ मूसा से कहके बोला । कि कड़ी ले और तू और तेरा भाई हारून मंडली को एकट्ठी करो और उन की आंखों के आगे चटान को कढ़ो और वह अपना पानी देगा और तू उन के लिये चटान से पानी निकाल और उससे तू मंडली को और उन के पशुन को पिला ॥

९ सो मूसा ने कड़ी को परमेश्वर के आगे से लिया जैसी उस ने उसे आज्ञा किई १० थी । और मूसा और हारून ने मंडली को उस चटान के आगे एकट्ठी किया और उस ने उन्हें कहा कि सुनो हे दंगड़तो क्या हम तुम्हारे लिये इस चटान से पानी ११ निकालें । तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और उस चटान को दो बार अपनी कड़ी से मारा तब बहुताई से पानी निकला और मंडली और उन के पशुन ने पीया ॥

१२ तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को इस कारण कहा कि तुम ने मेरी प्रतीति न किई कि इसराएल के संतानों की दृष्टि में मुझे पवित्र करो इस लिये १३ तुम इस मंडली को उस देश में जो मैं ने उन्हें दिया है न लाओगे । यह झगड़ का पानी है क्योंकि इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से झगड़ा किया और उस ने उन के मध्य आप को पवित्र किया ॥

लिये खलिहान की बढ़ती और कोल्हू की बढ़ती की नाईं गिना जायगा । और ३१  
तुम और तुम्हारा घराना हर एक स्थान में उसे खावे क्योंकि यह तुम्हारी उस  
सेवा का प्रतिफल है जो तुम मंडली के तंत्र में करने हो । और जब तुम उस में ३२  
से अच्छे से अच्छा उठाओगे तब तुम उस के कारण पापी न ठहरोगे और इस-  
राएल के संतानों की पवित्र वस्तुन को अशुद्ध न करोगे और नाश न होओगे ॥

उन्नीसवां पर्व ।

फिर परमेश्वर मृसा और हारन से कहके बोला । यह व्यवस्था की रीति है १  
जो परमेश्वर ने आज्ञा करके कहा कि इसराएल के संतानों में कह कि एक निष्प्राय २  
और निर्दोष लाल कनार जिस पर कभी जूआ न रखवा गया हो तुम्हें पास लावे ।  
और तुम उसे इलियजर याजक को देओ कि उसे छावनी में बाहर ले जावे और ३  
वह उस के आगे बलि जिई जावे । और इलियजर याजक अपनी आंगुली पर उस ४  
का लोहू लेके मंडली के तंत्र के आगे सात बार छिड़के । फिर उस के आगे कलार ५  
जलाई जावे उस की खाल और उस का मांस और उस का लोहू उस के गोबर  
सहित सब जलावे जावे । तब याजक संत की लकड़ी और जूआ और लाल लेके ६  
उस जलती हुई कलार के ऊपर डाल देवे । तब याजक अपने कपड़े धावे और ७  
पानी में स्नान करे और उस के पीछे छावनी में प्रवेश करे और याजक मांस लें  
अशुद्ध रहेगा । और वह जो उसे जलाता है अपने कपड़े पानी से धावे और अपना ८  
आंग धावे और मांस लें अपवित्र रहेगा । और कोई पावन मनुष्य उस कलार की ९  
राख को एकट्ठी करे और छावनी के बाहर पवित्र स्थान पर उठा रखे और वह  
इसराएल के संतानों की मंडली के लिये अलग करने के पानी के लिये होवे वह १०  
पाप की पवित्रता के लिये है । और जो उस कलार की राख को समेटता है सो ११  
अपने कपड़े धावे और मांस लें अपवित्र रहेगा और यह इसराएल के संतानों के  
और उन परदेशियों के लिये जो उन में बसने हैं एक विधि सदा के लिये होवे ॥

जो कोई मनुष्य की लोथ को कूड़े से सात दिन लें अपवित्र रहेगा । वह १२  
आप को तीसरे दिन उससे पवित्र करे और मातृवं दिन पवित्र होगा पर यदि १३  
वह आप को तीसरे दिन पवित्र न करे तो सातवें दिन पवित्र न होगा । जो १४  
कोई किसी मनुष्य की लोथ को कूड़े और आप को पवित्र न करे उस ने  
परमेश्वर के तंत्र को अशुद्ध किया वह प्राणी इसराएल के संतानों में से कट  
जायगा क्योंकि अलग करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया वह अपवित्र १५  
है उस की अपवित्रता अब लें उस पर है । जब मनुष्य तंत्र में मरे तब उस १६  
की यही व्यवस्था है सब जो तंत्र में आवे और सब जो तंत्र में हैं सात दिन १७  
लें अशुद्ध होंगे । और हर एक खुला पात्र जिस पर ढंपना बंधा न होवे १८  
अशुद्ध है । और जो कोई तलवार से अरण्य में मारे हुए को अथवा लोथ १९  
को अथवा मनुष्य के दाढ़ को अथवा समाधि को कूड़े से सात दिन लें  
अशुद्ध होवेगा ॥

और अशुद्ध को पाप से पवित्र करने के लिये जली हुई कलार की राख लेवे १०  
और एक वासन में बरता हुआ पानी उस पर डाले । और एक पवित्र मनुष्य १८

- ४ फिर उन्होंने ने हर पहाड़ से लाल समुद्र की ओर कूच किया जिसमें अरब  
के देश को घेर लेवे परन्तु मार्ग के कारण लोगों का प्राण बहुत उदास  
५ हुआ । और लोग ईश्वर के और मूसा के विरोध में बोले कि तुम क्यों हमें  
मिस्र से चढ़ा लाये कि हम अरण्य में मरे क्योंकि अन्न जल कुछ नहीं है और  
६ हमें तो इस हलकी रोटी से घिन आती है । तब परमेश्वर ने उन लोगों में  
अग्नि सर्प भेजे और उन्होंने ने लोगों को काटा और इसराएल के बहुत लोग मर  
७ गये । तब लोग मूसा पास आये और बोले कि हम ने पाप किया है क्योंकि हम  
ने परमेश्वर के और तेरे विरोध में कहा है सो तू परमेश्वर से प्रार्थना कर कि हमें  
८ से उन सांपों को उठा लेवे सो मूसा ने लोगों के लिये प्रार्थना किई । तब परमे-  
श्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये एक अग्नि सर्प बना और उसे एक लट्ठ पर  
लटका और यों होगा कि हर एक उसा हुआ जब उस पर दृष्टि करेगा तो जीवेगा ।  
९ सो मूसा ने पीतल का एक सर्प बनाके उसे लट्ठ पर रखवा और यों हुआ कि  
यदि सर्प ने किसी को डसा तो जब उस ने उस पीतल के सर्प पर दृष्टि किई तब  
वह जीया ॥
- १० तब इसराएल के संतान आगे बढ़े और रेवात में डेरा किया ॥
- ११ फिर रेवात से कूच किया और अजीअबरीम के वन में जो मोअब के आगे  
पूरब ओर है डेरा किया ॥
- १२ वहां से कूच करके जरद की तराई में डेरा किया । वहां से जो चले तो  
अरनून के पार उस वन में जो अमूरियों के सिवाने का अंत है आके डेरा किया  
१३ क्योंकि अरनून मोअब का सिवाना है मोअब और अमूरियों के मध्य । इसी लिये  
परमेश्वर के संग्राम की पुस्तक में लिखा है कि
- १४ उस ने लाल समुद्र में और अरनून के नालों में क्या क्या कुछ किया । और नालों  
के धारे के पास जो आर की वस्तियों के नीचे जाता है और मोअबियों के  
सिवानों पर है ॥
- १५ और वहां से बीअरः को जो कूआ है जिस के कारण परमेश्वर ने मूसा से  
१६ कहा कि लोगों को एकट्ठे कर कि मैं उन्हें पानी देऊंगा । उस समय इसराएल  
ने यह भजन गाया कि
- १७ हे कुए उबल उस के लिये गाओ । अध्यक्षों ने उसे खोदा लोगों के सहानों  
ने उसे खोदा व्यवस्थादायक के समान अपनी लाठियों से
- १८ और वन से मत्तनः को गये । और मत्तनः से नहलियल को और नहलियल  
२० से बामात को । और बामात की तराई से जो मोअब के देश में है पिसगः की  
छोटी लों जहां से जसमन का ओर दिखाता था ॥
- २१ और इसराएल ने अमूरियों के राजा सैहून के पास यह कहके दूत भेजे ।  
२२ कि हमें अपने देश से निकल जाने दे हम खेतों और दाखों की बारियों में न  
पैठेंगे न हम कूए का पानी पीवेंगे परन्तु राजमार्ग से चले जायेंगे यहां लों  
२३ कि तेरे सिवानों से बाहर हो जावें । पर सैहून ने इसराएल को अपने सिवानों  
से जाने न दिया परन्तु सैहून अपने लोगों को एकट्ठे करके इसराएल का

और कादिस से मूसा ने अहम के राजा के पास दूतों को भेजा कि तेरा १४ भाई इसराएल कहता है कि जो जो दुःख हम पर होता है तू जानता है । कि किस भाँति से हमारे पितर मिस में उतर गये और हम मिस में बहुत दिन रहे १५ और मिनिषों ने हमें और हमारे पितरों को दुःख दिया । और जब हम परमेश्वर १६ के आगे चिल्लाये तब उस ने हमारा शब्द सुना और एक दूत को भेजके हमें मिस में से निकाल लाया और देख हम तेरे अत्यंत सिवाने के नगर कादिस में हैं । सो हमें अपने देश में छोके जाने दीजिये कि हम खेतों और दायों की बाटिकां १७ में न जायेंगे और न कृशों का पानी पीयेंगे हम राजमार्ग से छोके निकले चले जायेंगे हम कहिने अथवा बायें दाय न मुड़ेंगे जब लों कि तेरे सिवाने से बाहर न निकल जायें । तब अहम ने उसे कहा कि तू मेरे सिवाने में छोके न जाना १८ नहीं तो मैं तलवार से तुक पर निकलूंगा । तब इसराएल के संतानों ने उसे १९ कहा कि हम राजमार्ग से छोके चले जायेंगे और यदि मैं अथवा मेरे छोरे तेरा पानी पीवें तो मैं उस का दाम देऊंगा कुछ न करूंगा केवल मैं अपने पाँवों से चला जाऊंगा । तब उस ने कहा कि तू कहीं जाने न पायेंगा तब अहम बहुत २० लोगों के साथ और बड़े दल ने उस पर चढ़ आया । सो अहम ने इसराएल को २१ अपने सिवाने में से जाने न दिया इस कारण इसराएल उन्में फिर गये ॥

और इसराएल के संतानों की सारी मंडली कादिस से कुछ करके दूर पहाड़ पर आई ॥ २२

और परमेश्वर ने अहम देश के सिवाने के लग दूर पहाड़ पर मूसा और हारून २३ से कहा । कि हारून अपने लोगों में एकट्ठा किया जायगा क्योंकि वह उस २४ देश में लिये में ने इसराएल के संतानों को दिया है न पहुँचेगा हम लिये कि तुम भागड़े के पानी पर मेरे वचन से फिर गये । हारून और उस के बेटे इलि- २५ अजर को ले और उन्हें दूर पहाड़ पर ला । और हारून के वस्त्र उतार और २६ उन्हें उस के बेटे इलिअजर को पहिना कि हारून समेटा जायगा और वहाँ सर जायगा । सो जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा ने वैसा ही किया और २७ वे मंडली के आगे दूर पहाड़ पर चढ़ गये । और मूसा ने हारून के वस्त्र उतारे २८ और उन्हें उस के बेटे इलिअजर को पहिनाया और हारून वहाँ पहाड़ की चोटी पर सर गया और मूसा और इलिअजर पहाड़ से उतर आये । और जब २९ सारी मंडली ने देखा कि हारून सर गया तब इसराएल के सारे घराने ने हारून के कारण तीस दिन लों बिनाप किया ॥

इक्रीमवां पर्व ।

और जब राजा अराब कनय्यानी ने जो दक्षिण में बाम करता था सुना कि १ इसराएल भेदियों के मार्ग से आये तो इसराएल से लड़ा और उन में से बहुतों को मार दिया । तब इसराएल ने परमेश्वर की मनौती मानी और बोला कि यदि तू २ मचसुच इन लोगों को मेरे वश में कर देगा तो मैं उन के नगरों को सर्वथा नाश कर देऊंगा । सो परमेश्वर ने इसराएल का शब्द सुना और कनय्यानीयों ३ को उन के हाथ में सौंप दिया और उन्होंने उन और उन के नगरों को सर्वथा नष्ट कर दिया और उस ने उस स्थान का नाम हुरम: रखवा ॥

साप दीजिये क्योंकि वे मुझ से बली हैं क्या जाने मैं उन्हें मार सकूँ और उन्हें इस देश में से खदेड़ देऊँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिसे तू आशीस देता है सो आशीस प्राप्त करता है और जिसे तू साप देता है वह सापित है । तब मोअब के प्राचीन और सिदयान के प्राचीन टोने का प्रतिफल हाथ में लेकर चले और बलआम पास आये और बलक का वचन उसे कहा । और उस ने उन्हें कहा कि आज रात यहाँ रहो और जैसा परमेश्वर मुझे कहेगा मैं तुम्हें कहूँगा सो मोअब के प्रधान बलआम के संग रहे ॥

९ तब ईश्वर बलआम पास आया और कहा कि तेरे संग ये कौन मनुष्य हैं ।  
 १० और बलआम ने ईश्वर से कहा कि मोअब के राजा सफूर के बेटे बलक ने उन्हें  
 ११ मुझ पास भेजा और कहा । कि देख लोग मिस्र से निकल आये हैं और वह  
 पृथिवी को ठांप रहे हैं अब आ मेरे कारण उन्हें साप दे क्या जाने मैं उन से अब  
 १२ पाऊँ और उन्हें खदेड़ देऊँ । तब ईश्वर ने बलआम से कहा कि तू उन के साथ  
 मत जा उन लोगों को साप मत दे क्योंकि वे आशीस प्राप्त किये हैं ॥

१३ और बलआम ने बिहान को उठके बलक के अध्यक्षों से कहा कि अपने देश  
 १४ को जाओ क्योंकि परमेश्वर मुझे तुम्हारे साथ जाने नहीं देता । सो मोअब के  
 अध्यक्ष उठे और बलक पास आये और बोले कि बलआम ने हमारे साथ आने  
 को नाह किया है ॥

१५ तब बलक ने इन से अधिक और प्रतिष्ठित अध्यक्षों को फिर भेजा । और  
 १६ उन्होंने ने आके बलआम से कहा कि सफूर के बेटे बलक ने यों कहा है कि मुझे  
 १७ पास आने में आप को कोई रोकने न पावे । क्योंकि मैं आप की अति बड़ी  
 प्रतिष्ठा कहूँगा और जो कुछ आप मुझे कहेंगे मैं कहूँगा मैं आप की बिनती करता  
 १८ हूँ कि आइये इन लोगों को मेरे निमित्त साप दीजिये । तब बलआम ने बलक  
 के सेवकों से उत्तर देके कहा कि यदि बलक अपना घर भरके चांदी सोना देवे  
 तो मैं परमेश्वर अपने ईश्वर के वचन को उल्लंघन करके घट बट नहीं कर सकता ।  
 १९ सो अब तुम लोग भी यहाँ रात भर रहो जिसमें मैं देखूँ कि परमेश्वर मुझे अधिक  
 क्या कहेगा ॥

२० फिर ईश्वर रात को बलआम के पास आया और उसे कहा कि यदि ये  
 मनुष्य तुझे बुलाने आवें तो उठके उन के साथ जा पर जो वचन मैं तुम्हें  
 सोई कहियो ॥

२१ सो बलआम बिहान को उठा और अपनी गदही पर काठी रखी और  
 २२ मोअब के प्रधानों के साथ गया । और उस के जाने के कारण ईश्वर का क्रोध  
 भड़का और परमेश्वर का दूत बैर लेने को उस के सम्मुख मार्ग में खड़ा हुआ  
 सो वह अपनी गदही पर चढ़ा हुआ जाता था और उस के दो सेवक उस के  
 २३ साथ थे । सो गदही ने परमेश्वर के दूत को अपने हाथ में तलवार खींचे  
 हुए मार्ग में खड़ा देखा तब गदही मार्ग से अलग खेत में फिर गई तब  
 २४ उसे मार्ग में फिरने के लिये बलआम ने गदही को मारा । तब परमेश्वर का  
 दूत दाख की धारियों के पथ में खड़ा हुआ था जिस के इधर उधर भीत थी ।

साम्रा करने को अरण्य में निकला और जहाज में पहुँचके हमरागल से संग्राह किया । और हमरागल ने उन्हें खड्ग की धार से मार लिया और उन के देग पर २४ अरनून से लेके यवूक लों अर्थात् अम्मून के संतान लों वश में किया क्योंकि अम्मून के संतानों का सिवाना दृढ़ था । सो हमरागल ने ये सब नगर ले लिये २५ और अमूरियों के सब नगरों में और हमरून में और उस के सारे गांवों में ब्यास किया । क्योंकि हमरून अमूरियों के राजा मैहून का नगर था जो मोअब २६ के अगले राजा से लड़ा और उस का समस्त देश अरनून लों उस के हाथ से ले लिया । इसी लिये द्रष्टांतवन्ते कहते हैं कि २७

हमरून में आओ मैहून का नगर वम जाये और सिह्र जाये । क्योंकि आरा २८ हमरून से निकली लवर मैहून के नगर में जिस ने मोअब के आर को और अरनून के ऊँचे भ्यान के प्रधानों को भस्म किया । हे मोअब तुझ पर संताप २९ हे कमूस के लोगो तुम नाग हुए उस ने अपने बच्चे हुए बेटों को दे दिया और अपनी बेटियाँ अमूरियों के राजा मैहून की वंधुआई में कर दिई । और उन ३० का दिया हमरून से लेके मैहून लों बुझ गया और नफर लों जो मैहिया के पास है उजाड़ दिया ॥

यों हमरागलियों ने अमूरियों के देश में ब्यास किया । तब सूमा ने यथलीर ३१ का भेद लेने का भेजा और उन्होंने ने उस के गांवों को लिया और अमूरियों को जो वहाँ थे हांक दिया ॥

तब ये फिर और वसन की और चढ़े और वसन के राजा ऊज ने अपने ३२ सब लोग लेके युद्ध के लिये अट्रिअई में संग्राम के लिये उन का साम्रा किया । तब परमेश्वर ने सूमा से कहा कि उससे मत डर क्योंकि मैं ने उसे और उस के ३४ समस्त लोगों को और उस के देश को तेरे हाथ में सौंप दिया सो तू उससे वैसा कर जैसा तू ने अमूरियों के राजा मैहून से किया जो हमरून में रहता था । सो ३५ उन्होंने ने उसे और उस के बेटों और उस के सारे लोगों को वहाँ लों मारा कि कोई जीता न बूटा और उस के देश में ब्यास किया ॥

बाईसवां पृष्ठ ।

फिर हमरागल के संतान आगे चढ़े और परीहू के लग यरदन के इसी पार १ मोअब के चौगानों में डेरा किया ॥

और जब सफूर के बेटे बलक ने सब देखा जो हमरागल ने अमूरियों से किया । २ तो मोअब उन लोगों से निपट हरा इस कारण कि ये बहुत थे और मोअब ३ हमरागल के संतानों के कारण से दुःखित हुआ । तब मोअब ने मिदयान के प्राचीनों ४ से कहा कि अब ये जथा उन सब को जो हमारे आसपास हैं यों चाट जायेंगी जैसे कि बैल चौगान की घास को चट कर लेता है और उस समय सफूर का बेटा बलक मोअबियों का राजा था । सो उस ने बजर के बेटे बलआस पास फतूरः ५ को जो उस के लोगों के संतान के देश की नदी पास थे दूत भेजे जिसमें उस वहाँ कहके बुला लायें कि देख लोग मिस से बाहर आये हैं देख उन से पृथिवी किय गई है और वह मेरे सामे ठहरे हैं । सो अब आइये इन लोगों को मेरे लिये ६



वलक ने वैसा किया और बलक और बलग्राम ने हर वेदी पर एक बैल और  
 ३ एक मेंढा चढ़ाया । फिर बलग्राम ने बलक से कहा कि अपने बलिदान की मेंढ के  
 पास खड़ा रह और मैं जाऊंगा कदाचित् परमेश्वर मुझ से भेंट करे और जो  
 ४ कुछ वह मुझे दिखावेगा मैं तुम्हें कहूंगा सो वह जैसा स्थान को चला । और ईश्वर  
 बलग्राम को मिला और उस ने उसे कहा कि मैं ने सात वेदी निहू किया और  
 ५ एक एक बैल और एक एक मेंढा हर एक पर चढ़ाया । तब परमेश्वर ने बलग्राम  
 के मुंह में वचन डाला और उसे कहा कि बलक पास फिर जा और यों  
 ६ कह । सो वह उस पास फिर आया और क्या देखता है कि वह अपने बलिदान  
 ७ की मेंढ के पास मोश्रव के सब प्रधानों समेत खड़ा है । तब उस ने अपने दृष्टान्त  
 में कहा कि

पूरव के पहाड़ों से अग्राम से मोश्रव के राजा बलक ने मुझे बुलाया कि मेरे  
 ८ निमित्त यशकूब को साप दीजिये और इसराएल को धिक्कारिये । मैं उसे क्योंकर  
 खापूं जिसे सर्वशक्तिमान ने नहीं खापा अथवा उसे धिक्कारूं जिसे परमेश्वर ने  
 ९ नहीं धिक्कारा । क्योंकि पहाड़ों की चोटी पर से मैं उसे देखता हूं और पहाड़ियों  
 पर से उसे ताकता हूं देखो ये लोग अकेले रहेंगे और जातिगणों के मध्य गिने न  
 १० जावेंगे । यशकूब की धूल को कौन गिन सकता है और इसराएल की चौथाई का  
 लेखा कौन ले सकता है हाय कि मैं धर्मी की मृत्यु मरूं और मेरा अंत उस का  
 सा हो ॥

११ तब बलक ने बलग्राम से कहा कि तू ने मुझ से क्या किया मैं ने तुम्हें अपने  
 १२ शत्रुन को साप देने को लिया और देख तू ने उन्हें सर्वथा आशीस दिया । और  
 उस ने उत्तर दिया और कहा कि क्या मुझे उचित नहीं कि वही बात कहूं जो  
 परमेश्वर ने मेरे मुंह में डाली है ॥

१३ और बलक ने उसे कहा कि अब मेरे साथ और ही स्थान पर चलिये वहां से  
 आप उन्हें देखिये आप केवल उन को बाहर बाहर देखियेगा और उन्हें सब के  
 १४ सब न देखियेगा और मेरे लिये वहां से उन पर साप दीजिये । और वह उसे  
 वहां से सोफीम के खेत में पिसगः की चोटी पर ले गया और सात वेदी बनाई  
 १५ और हर वेदी पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया । तब उस ने बलक से  
 कहा कि जब लों मैं वहां जाऊं और ईश्वर से मिल जाऊं तू यहां अपने बलि-  
 १६ दान की मेंढ पास खड़ा रह । सो परमेश्वर बलग्राम को मिला और उस के  
 १७ मुंह में वचन डाला और कहा कि बलक पास फिर जा और यों कह । और जब  
 वह उस पास पहुंचा तो क्या देखता है कि वह अपने बलिदान की मेंढ के पास  
 मोश्रव के प्रधानों समेत खड़ा है तब बलक ने उससे कहा कि परमेश्वर ने क्या  
 १८ कहा है । तब उस ने अपने दृष्टान्त उठाके कहा कि

१९ उठ हे बलक और सुन हे सफूर के बेटे मेरी ओर कान धर । सर्वशक्तिमान  
 मनुष्य नहीं कि झूठ बोले न मनुष्य का पुत्र कि वह पहचाने क्या वह कहे और  
 २० न करे अथवा बोले और उसे पूरा न करे । देख मैं ने आशीस के निमित्त  
 २१ पाया है और उस ने आशीस दिया है और मैं उसे पलट नहीं सकता । उस ने

और जब परमेश्वर के दूत को गदही ने देखा तब उस ने भीत में जा रगड़ा और बलश्राम २५  
का पांख भीत से दवाया और उस ने उसे फिर मारा । तब परमेश्वर का दूत आगे बढ़के २६  
एक सकेत स्थान में खड़ा हुआ जहां दाहिने बायें फिरने का मार्ग न था । और गदही २७  
परमेश्वर के दूत को देखके बलश्राम के नीचे बैठ गई तब बलश्राम का क्रोध  
भड़का और उस ने गदही को लाटो में मारा । तब परमेश्वर ने गदही का मुंह २८  
खोला और उस ने बलश्राम से कहा कि मैं ने तेरा क्या किया है कि तू ने मुझे अब  
तीन बार मारा । और बलश्राम ने गदही से कहा कि तू ने मुझे घाड़ना बनाया २९  
मैं चाहता कि मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं अब तुझे मार डालता । पर गदही ३०  
ने बलश्राम से कहा कि क्या मैं आप की गदही नहीं हूँ जिस पर आप आज के  
दिन लों चढ़ते हैं क्या मैं और रेमा कधी करती आई हूँ वह बोला कि नहीं ।  
तब परमेश्वर ने बलश्राम की आंखें खोलीं और उस ने परमेश्वर के दूत को ३१  
मार्ग में खड़े हुए देखा और उस के हाथ में खींची हुई तलवार है तब उस  
ने अपना सिर झुकाया और आंधा गिरा । तब परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि ३२  
तू ने अपनी गदही को यह तीन बार क्यों मारा देख मैं तेरे विरुद्ध में निकला  
हूँ इस लिये कि तेरी चाल मेरे आगे हठीली है । और गदही मुझे देखके यह ३३  
तीन बार मुझ से फिर गई यदि वह मुझ से न फिरती तो निश्चय अब मैं  
तुझे मार ही डालता और उसे जीती छोड़ता । तब बलश्राम ने परमेश्वर के ३४  
दूत से कहा कि मुझ से पाप हुआ क्योंकि मैं ने न जाना कि तू मेरे विरुद्ध  
मार्ग में खड़ा है सो अब यदि तू अप्रसन्न है तो मैं फिर जाऊंगा । पर परमेश्वर ३५  
के दूत ने बलश्राम से कहा कि इन मनुष्यों के साथ जा परन्तु केवल जो  
वचन मैं तुझे कहूँ सोई कदियो सो बलश्राम बलक के प्रधानों के साथ  
गया ॥

जब बलक ने सुना कि बलश्राम पहुंचा तो उस ने अत्यंत तीर की अरनून के ३६  
सिवाने में मोअब के एक नगर लों उस की अगुआई को निकला । तब बलक ने ३७  
बलश्राम से कहा कि क्या मैं ने वही विनती करके तुझे नहीं बुलाया तू मुझ पास  
क्यों चला न आया क्या निश्चय मैं तेरा माहात्म्य नहीं बढ़ा सकता । तब बलश्राम ३८  
ने बलक से कहा देख मैं तेरे पास आया क्या मुझ में कुछ शक्ति है कि मैं कहूँ जो  
बात ईश्वर मेरे मुंह में डालेगा सोई कहूंगा ॥

और बलश्राम और बलक साथ साथ गये और करियासदमूस में पहुंचे । ३९  
तब बलक ने दैल और भेड़ चढ़ाये और बलश्राम के और उन अध्यक्षा के पास जो ४०  
उस के साथ थे भेजा ॥

और विद्वान को ये हुआ कि बलक ने बलश्राम को साथ लिया और उसे ४१  
बशाल के जंघे स्थानों में लाया जिसमें वह वहां से लोगों को बाहर बाहर  
देखे ॥

तैर्हसवा पृष्ठ ।

तब बलश्राम ने बलक से कहा कि मेरे लिये यहां सात वेदी बना और मेरे १  
लिये यहां सात दैल और सात मंडे सिद्ध कर । और जैसा बलश्राम ने कहा था २

- १० तब बलक का क्रोध बलराम पर भड़का और उस ने अपने दोनों हाथों से  
 थपोली पीठी और बलक ने बलराम से कहा कि मैं ने तो तुम्हें अपने बैरियों को  
 खाप देने को बुलाया और देख तू ने तीन बार उन्हें सर्वथा आशीर्वाद दिया है ।  
 ११ चल अपने स्थान को भाग मैं ने तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करने चाहा था पर देख पर-  
 १२ मेश्वर ने तुम्हें प्रतिष्ठा से रोक रक्खा । तब बलराम ने बलक से कहा कि मैं ने  
 १३ तेरे दूतों को जिन्हें तू ने मेरे पास भेजा था नहीं कहा । कि यदि बलक अपना  
 घर भर चांदी सोना मुझे देवे मैं भला अथवा बुरा करने में परमेश्वर की आज्ञा  
 १४ को उल्लंघन नहीं कर सकता परन्तु जो कुछ परमेश्वर कहे मैं वही कहूंगा । और  
 अब देख मैं अपने लोगों में जाता हूँ आ मैं तुम्हें संदेश देऊंगा कि ये लोग तेरे  
 १५ लोगों से पिछले दिनों में क्या करेंगे । तब उस ने अपने दृष्टान्त उठाके कहा  
 और बोला कि

बजर का पुत्र बलराम कहता है और वह मनुष्य जिस की आंखें खुली हैं  
 १६ कहता है । वही जिस ने सर्वशक्तिमान के वचन को सुना है और अत्यंत महान  
 के ज्ञान को जाना है जिस ने सर्वशक्तिमान का दर्शन पाया है जो पढ़ा है परन्तु  
 १७ उस की आंखें खुली हैं । मैं उसे देखूंगा पर अभी नहीं मेरी दृष्टि उस पर पड़ेगी पर  
 निकट से नहीं यश्मकूब से एक तारा निकलेगा और इसराएल से एक राजदंड  
 उठेगा और मोअब के कोनों को मार लेगा और सेत के सारे संतान को नाश  
 १८ करेगा । और अदूम अधिकार लेगा और शरैर भी अपने शत्रुन के लिये अधिकार  
 १९ लेगा और इसराएल वीरता करेगा । और वह जो राज्य पावेगा सो यश्मकूब से  
 निकलेगा और जो नगर में बच रहेगा उसे नाश करेगा ॥

- २० तब उस ने अमालीक को देखा और अपना दृष्टान्त उठाया और कहा कि  
 अमालीक लोगों में पहिला था परन्तु अंत में वह नाश होगा ॥  
 २१ फिर उस ने कैनियों पर दृष्टि कीई और अपना दृष्टान्त उठाया और कहा कि  
 २२ तेरा निवास दृढ़ है और तू पहाड़ पर अपना खोता बनाता है । तथापि  
 कैनी उजाड़ किये जावेंगे यहां लों कि असूर तुम्हें बंधुआई में ले जावेगा ॥  
 २३ तब उस ने अपना दृष्टान्त उठाया और कहा कि  
 २४ हाय कौन जीता रहेगा जब सर्वशक्तिमान योंहीं करेगा । और किती के  
 तीर से जहाज आवेंगे और असूर को और इत्र को सतावेंगे और वह भी सर्वथा  
 नाश होवेगा ॥  
 २५ तब बलराम उठा और चला और अपने स्थान को फिर गया और बलक ने  
 भी अपना मार्ग लिया ॥

पचीसवां पर्व ।

- १ सो इसराएल सितीम में रहा और लोगों ने मोअबियों की बेटियों से कथ-  
 २ भिचार करना आरंभ किया । और उन्होंने ने अपने देवतों के बलिदानों में उन  
 लोगों को नेवता दिया और लोगों ने खाया और उन के देवतों को दण्डवत  
 ३ कीई । और इसराएल बअलफगूर से मिले तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल  
 ४ पर भड़का । और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के सारे प्रधानों को

यशस्कृष्य में घुराई नहीं देखी और न उस ने इसराएल में छट देखा परमेश्वर उस का ईश्वर उस के साथ है और एक राजा का ललकार उन के मध्य में है । सर्व- २२ शक्तिमान उन्हें सिख से निकाल लाया वह अपने का सा बल रखता है । निश्चय २३ यशस्कृष्य के विरोध होना नहीं और इसराएल के विरुद्ध कोई प्रश्न नहीं इस समय के समान यशस्कृष्य के और इसराएल के विषय में कहा जायगा कि सर्वशक्तिमान ने क्या किया । देखो ये लोग मद्यामिंद की नाईं उठेंगे और आप २४ को युवा सिंद के समान उठावेंगे वह न मीचगा जब लों अछेर न खा ले और जब लों झुके का लोट्ट न पी ले ॥

तब बलक ने बलश्राम से कहा कि न तो उन्हें साथ न आशीस दीजिये । २५ परन्तु बलश्राम ने उत्तर दिया और बलक से कहा क्या मैं ने तुम्हें नहीं कहा कि २६ जो कुछ परमेश्वर करेगा मैं उसे अवश्य करूंगा ॥

तब बलक ने बलश्राम से कहा कि आइये मैं आप को हमरे स्थान पर ले २७ जाऊं कदाचित् ईश्वर की इच्छा होवे कि वहां से आप मेरे लिये उन्हें साथ दीजिये । तब बलक बलश्राम को जंगल की चाटी पर जो जसमें के मन्सुख २८ है लाया । और बलश्राम ने बलक से कहा कि मेरे लिये यहां मान चेदी बना २९ और यहां मेरे लिये सात बैल और मान सेंडे मिठ कर । और जैसा बलश्राम ने ३० कहा था बलक ने वैसा किया और हर एक चेदी पर एक बैल और एक सेंडा चढ़ाया ॥

### चौथीसवां पृष्ठ ।

जब बलश्राम ने देखा कि इसराएल को आशीस देना ईश्वर की अच्छा लगा १ तब वह अक्की आगे की नाईं नहीं गया कि होना करे परन्तु उस ने अपने मुंह को धन की ओर किया । और बलश्राम ने अपनी आंग्वां उठाई और इसरा- २ एल को देखा कि अपनी अपनी गोष्टियों के समान वसे हैं तब ईश्वर का आत्मा उस पर उतरा । और उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा कि ३

बजर के बेटे बलश्राम ने कहा है और वह मनुष्य जिस की आंग्वां खुली है ४ वाला है । जिस ने ईश्वर के वचन को सुना है और सर्वशक्तिमान ईश्वर का ५ दर्शन पाया है सो पड़ा है परन्तु आंग्वां खुली है उस ने कहा है । घाटी सुन्दर ६ है तेरे तंत्र है यशस्कृष्य और तेरे निवासस्थान है इसराएल । वे तगर की नाईं ७ और नदी के निकट की धारियों की नाईं और जैसे अगर के वृक्ष जिसे परमेश्वर ने लगाया है और जैसे पानी के निकट के खरल वृक्ष होवें फैले हुए हैं । वह ८ अपनी मोट से पानी बहावेगा और उस का बीज बहुत से पानियों में होगा उस का राजा अगाध से बढ़ा होगा और उस का राज्य बढ़ जावेगा । सर्वशक्तिमान ९ उसे सिख से बाहर निकाल लाया उस में अपने का सा बल है वह अपने शत्रु के देशियों को भक्षण करेगा और उन की हड्डियों को चूर करेगा और अपने वागों से उन्हें छेदेगा । वह भुक्ता है और मिंद की नाईं हां मद्यामिंद की नाईं लेटा ९ है उसे कौन छेड़ सक्ता है धन्य है वह जो तुम्हें आशीस देवे और स्थापित है वह जो तुम्हें साथ देवे ॥

६२ आगे लाये मर गये । और वे जो उन में गिने गये एक मास से लेके ऊपर लों  
तेईस सहस्र पुरुष थे ये इसराएल के संतानों में गिने नहीं गये क्योंकि उन्हें इस-  
राएल के संतान के मध्य में अधिकार नहीं दिया गया ॥

६३ ये वे इसराएल के संतान हैं जिन्हें मूसा और इलिअजर याजक ने मोअब के  
६४ चौगानों में यरदन नदी यरीहू के सामने गिना । परन्तु मूसा और हासन याजक के  
गिने हुआओं में से जिस समय कि इसराएल के संतान को सीना के धन में गिना था  
६५ एक मनुष्य भी उन में न था । क्योंकि परमेश्वर ने उन के विषय में कहा था कि  
वे निश्चय अरण्य में मर जावेंगे सो उन में से केवल यफुन्न के बेटे कालिब और  
नून के बेटे यहूशूअ को छोड़ एक भी न बचा ॥

सत्ताईसवां पृष्ठ ।

१ तब यूसुफ के बेटे सुनस्सी के घराने से सुनस्सी के बेटे मकीर के बेटे जिलि-  
अद के बेटे हिफ्र के बेटे सिलाफिहाद की बेटियां निकट आईं और उस की  
२ बेटियों के नाम ये हैं महलः नूअः और हजलः और मिलकः और तिरजः । और  
मूसा और इलिअजर याजक और अध्यक्षा और सब मंडली के आगे मंडली के तंबू  
३ के द्वार के निकट खड़ी हुईं और बोलीं । कि हमारा पिता धन में मर गया और  
वह उन की जथा में न था जो परमेश्वर के बिरुद्ध होके एकट्ठे हुए थे  
अर्थात् कुरह की जथा में परन्तु अपने पाप के कारण मर गया और उस के  
४ बेटे न थे । सो हमारे पिता का नाम उस के घराने से क्यों निकाला जावे क्या इस  
लिये कि उस के कोई बेटा न था हमें हमारे पिता के भाइयों में मिलके भाग देओ ॥

५ तब मूसा उन का पद परमेश्वर के निकट ले गया । और परमेश्वर मूसा से  
६ कहके बोला । कि सिलाफिहाद की बेटियां सच कहती हैं तू उन्हें उन के पिता के  
भाइयों में भागी करके अवश्य अधिकार दे और ऐसा कर कि उन के पिता का  
७ अधिकार उन्हीं को पहुंचे । और इसराएल के संतानों से कह यदि कोई पुरुष मर  
जावे और उस के कोई बेटा न हो तो उस का अधिकार उस की बेटी को  
८ पहुंचे । और यदि उस की बेटी भी न हो तो उस के भाइयों को उस का  
९ अधिकार दीजियो । और यदि उस के भाई न हों तो तुम उस का अधिकार  
१० उस के पिता के भाइयों को देओ । और यदि उस के पिता के भाई भी न हों  
तो तुम उस का अधिकार उस के घराने के समीपी कुटुम्ब को देओ और वह  
उस का अधिकारी होगा और यह आज्ञा इसराएल के संतानों के लिये जैसा  
परमेश्वर ने मूसा से कहा यह सदा के लिये विधि होगी ॥

११ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि अब तू अखरीस के इस पहाड़ पर  
चढ़ जा और उस देश को जो मैं ने इसराएल के संतानों को दिया है देख ।  
१२ और जब तू उसे देख लेगा तू भी अपने लोगों में मिल जावेगा जिस रीति से  
१३ तेरा भाई हासन मिल गया । क्योंकि मंडली के झगड़े में जीन के अरण्य में  
तुम मेरी आज्ञा के विरोध में फिर गये और उन की आंखों के आगे पानी पास  
जो मरीयः के पानी कादिस में जीन के अरण्य में मुझे पवित्र न किया ॥

१४ तब मूसा परमेश्वर के आगे कहके बोला । कि हे परमेश्वर सब शरीरों

पकड़ और उन्हें परमेश्वर के आगे मूर्ख के मनुष्य टांग दे जिसमें परमेश्वर के क्रोध का भड़कना इसराएल पर से ठल जावे । सो मूसा ने इसराएल के न्या- ५ यियों से कहा कि तुम्हें से हर एक अपने लोगों को जो बअलफंगूर में मिल गये थे मार डालो ॥

और देखो एक इसराएली आया और अपने भाइयों के पास एक मिदयानी ६ स्त्री को मूसा और इसराएल के संतानों की सारी मंडली के साथे लाया और वे मंडली के तंद्र के द्वार पर विलाप करते थे । और जब हादन याजक के बेटे ७ इलियजर के बेटे फीनिहान ने यह देखा तब वह मंडली में से उठा और वरछी अपने हाथ में लिई । और उस मनुष्य के पीछे तंद्र में घुसा और उन दोनों को ८ इसराएली पुरुष और स्त्री के पेट को गोदा तब इसराएल के संतानों में से मरी थस गई । और वे जो उस मरी से मरे सो चौबीस सठस थे ॥ ९

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि हादन याजक के बेटे इलियजर के १० बेटे फीनिहान ने मेरे कोप को इसराएल के संतानों पर से फेरा जब वह उन में ११ मेरे निमित्त उजलित था जिसमें मैं ने इसराएल के संतानों को अपने भल से भस्म न किया । सो कह कि देख मैं उसे अपने दुश्मन की याचा देता हूं । सो १२ वह उस को और उस के पीछे उस के बंग के लिये दंगा अर्थात् सनातन की याजकता की याचा इस कारण कि वह अपने ईश्वर के लिये उजलित था और १३ उस ने इसराएल के संतानों के निये प्रायश्चित्त दिया । और उस इसराएली १४ मनुष्य का नाम जो उस मिदयानी स्त्री के साथ मारा गया जिसरी था सलू का बेटा जो समझनियों के एक श्रेष्ठ घर का अध्यक्ष था । और उस मिदयानी १५ स्त्री का नाम जो मारी गई कजरी था मूर की बेटो जो लोगों का प्रधान और सिदयान के संतानों में श्रेष्ठ घर का था ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि मिदयानियों को खिन्नाओ और उन्हें १६ मारो । क्योंकि उन्होंने ने अपने हल से जिस्से उन्होंने ने फगूर को विषय में तुम्हें १७ हल दिया और कजरी के विषय में जो मिदयानी के प्रधान की बेटो और उन की बहिन थी जो उस मरी के दिन जो फगूर के कारण से हुई मारी गई इन्होंने ने तुम्हें खिन्नाया ॥

### छथीसवां पर्व ।

और ऐसा हुआ कि उस मरी के पीछे परमेश्वर ने मूसा से और हादन याजक १ के बेटे इलियजर से कहा । कि इसराएल के संतानों की समस्त मंडली की बीस घरस २ से लेके ऊपर लो उन के पितरों के समस्त घरानों की सब जो इसराएल में संग्राम के योग्य हैं गिनती लेओ । सो मूसा और इलियजर याजक ने मोअब के चौगानों ३ में यरदन नदी और यरीहू के लग उन से कहा । कि बीस घरस से लेके ऊपर लो ४ गिनो जैसे परमेश्वर ने मूसा और इसराएल के संतानों को जो मिश की भूमि से निकले थे आचा किई थी ॥

खुदिन इसराएल का पहिलौठा बेटा खुदिन का संतान धनूक जिस्से धनूकियों ५ का घराना है और फलू जिस्से फलूदियों का घराना है । घमदन जिस्से घमदनियों ६



लिये और एक सेंटे के लिये तेल से मिला हुआ दो दसवां भाग पिमान भोजन की  
 १३ भेंट के लिये । और एक मेम्रे के भोजन की भेंट के लिये तेल से मिला हुआ दसवां  
 भाग पिमान सुगंध के बलिदान की भेंट के लिये आग से बनाया हुआ परमेश्वर के  
 १४ लिये भेंट । और उन के तपावन एक बछड़े पीछे आधा हीन दाखरस और सेंटे पीछे  
 तिहाई हीन है और मेम्रा पीछे चौथाई हीन वरस के हर मास के बलिदान की  
 १५ भेंट यह है । और नित्य के बलिदान की भेंट और उस के तपावन के बलिदान  
 को छोड़ पाप की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे बकरी का एक मेम्रा चढ़ाया  
 जावे ॥

१६ और पहिले मास की चौदहवीं तिथि परमेश्वर की फसट का पर्व है । और इस  
 १७ मास की पंदरहवीं तिथि को पर्व होगा सात दिन लों अखसीरी रोटी खाई जावे ।  
 १८ पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा उस दिन तुम कोई सांसारिक कार्य न करना ।  
 १९ और बलिदान की भेंट आग से परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो दो बछड़े और एक सेंटा  
 २० और पहिले वरस के सात निष्खोट मेम्रे । और उन के साथ भोजन की भेंट तीन  
 दसवां भाग पिमान तेल से मिला हुआ हर बछड़े पीछे और हर सेंटे पीछे दो दसवां  
 २१ भाग चढ़ाइयो । सातों मेम्रों में से हर मेम्रे पीछे दसवां भाग चढ़ाइयो । और अपने  
 २२ प्रायश्चित्त के निमित्त पाप की भेंट के लिये एक बकरी । तुम विहान के बलि-  
 २३ दान की भेंट से अधिक जो सदा जलाया जाता है चढ़ाया करो । परमेश्वर के  
 सुगंध के लिये होम के बलिदान के मांस को सात दिन भर प्रतिदिन इस रीति से  
 चढ़ाइयो नित्य के बलिदान की भेंट और उस के तपावन की छोड़के इसे  
 २५ चढ़ाइयो । और सातवें दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा उस में तुम कोई  
 सांसारिक कार्य न करना ॥

२६ और पहिले फल के दिन में भी जब तुम भोजन की भेंट अपने अठवारे के  
 पीछे परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो तो तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा कोई  
 २७ सांसारिक कार्य न कीजियो । और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये बलिदान की  
 भेंट चढ़ाइयो दो बछड़े एक सेंटा पहिले वरस के सात निष्खोट मेम्रे चढ़ाइयो ।  
 २८ और उन के भोजन की भेंट तीन दसवां भाग पिमान तेल से मिला हुआ हर बछड़े  
 २९ पीछे और दो दसवां भाग हर सेंटे पीछे । दसवां भाग सातों मेम्रों में से हर एक  
 ३० मेम्रा पीछे । एक बकरी का मेम्रा जिसमें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त में दिया जावे ।  
 ३१ नित्य के बलिदान की भेंट और उस के भोजन की भेंट जो तुम्हारे लिये निष्खोट  
 होवे और उन के तपावन छोड़के उसे जो निष्खोट होवे चढ़ाइयो ॥

उन्तीसवां पर्व ।

१ और सातवें मास की पहिली तिथि में तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा तुम  
 कोई सेवा का कार्य न कीजियो यह तुम्हारे नरसिंगे फूंकने का दिन है ।  
 २ और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा एक सेंटा और पहिले वरस के  
 ३ सात निष्खोट मेम्रे बलिदान की भेंट चढ़ाइयो । और उन के भोजन की भेंट  
 हर बछड़े पीछे तीन दसवां भाग पिमान तेल से मिला हुआ और हर सेंटे पीछे दो  
 ४ दसवां भाग । और सातों मेम्रों के लिये हर मेम्रे पीछे एक दसवां भाग । और

के प्रारंभों का ईश्वर जिनी को संहती का प्रधान बना । जो बाहर भीतर उन १७ के आगे आगे आया जाया करे और जो बाहर भीतर उन को आगुआई करे जिसमें परमेश्वर की संहती उन संहतों को नहीं न हो जावे जिन का कोई सम्बन्ध न हो ॥

तब परमेश्वर ने सृष्टा में कहा कि तू न के छोटे बृहस्पति को मे जिस पर १८ आत्मा है और उन पर अपना हाथ रख । और उसे इन्द्रियर याज्ञक और सारी १९ संहतों के आगे खड़ा कर और उन के आगे उसे आजा कर । और अपनी २० प्रणिष्टा में मे उस पर कुछ रख जिन्में इन्द्रायन के संतानों की सारी संहती ब्रह्म में होवे । और वह इन्द्रियर याज्ञक के आगे खड़ा होवे जो उस के २१ लिये उरिस के न्याय के समान परमेश्वर के आगे पड़े वह और सारे इन्द्रायन के संतानों की सारी संहती उस के कहने में बाहर जावे और उन के कहने में भीतर आवे ॥

तो जैसा परमेश्वर ने उसे आजा किई यों सृष्टा ने बृहस्पति को लेके उसे इन्द्र- २२ यज्ञर याज्ञक और सारी संहतों के साथे खड़ा किया । और उन ने अपने हाथ उस २३ पर रखे और जैसा कि परमेश्वर ने सृष्टा की आज्ञा में कहा था उसे आजा दिई ॥

### अष्टादश्यां पठ्यं ।

जि परमेश्वर सृष्टा में कहके बोला । कि इन्द्रायन के संतानों की आज्ञा १ काके उन्में होल कि सारा भेंट और होल के बलिदानों की रोटी मेरे सुगंध के लिये उस के मनस में पालन करके चढ़ाओ ॥

और तू उन्में कह कि होल की भेंट जो तू परमेश्वर के लिये चढ़ाहयो सो २ यह है कि पहिले ब्रह्म के दो निष्पोट मेमे प्रणिष्टिन लिये के बलिदान की भेंट के लिये । एक मेमा विद्यान को और एक मेमा मांस को । और येना ३ का दसवां भाग पिदान और तीन का चौथा भाग कृता हुयन तेल भोजन की भेंट के लिये । यह बलिदान की भेंट लिये के लिये है जो मांस के पहाड़ ४ पर होल का बलिदान परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाया गया है । और ५ उन का तपावन तीन का चौथा भाग एक मेमा के लिये तीसरा दायरस को परमेश्वर के आगे तपावन के लिये पवित्र स्थान में नपावे । और तू दूसरा मेमा ६ मांस को चढ़ाना तू विद्यान के भोजन की भेंट की नाई और उस के तपावन की नाई परमेश्वर के सुगंध के लिये होल की भेंट चढ़ा ॥

और विद्यान के दिन पहिले ब्रह्म के दो निष्पोट मेमे दो दसवां भाग पिदान १ भोजन की भेंट के लिये तेल में मिला हुआ और उस का तपावन । हर एक २० विद्यान के बलिदान की भेंट लिये के बलिदान की भेंट को छोड़के और उस का तपावन यही है ॥

और तुम्हारे मांस के आरंभ में बलिदान की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे ११ दो बड़हे एक सेंडा पहिले ब्रह्म के निष्पोट मांस मेमे चढ़ाओ । और एक १२ बड़हे के लिये तेल में मिला हुआ तीन दसवां भाग पिदान भोजन की भेंट के

मेंट के और उस के भोजन की मेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की मेंट के लिये एक बकरी का एक मेम्रा होवे ॥

२६ और पांचवें दिन नव बछड़े दो मेंटे पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्रे ।

२७ और उन के भोजन की मेंट और उन के तपावन बछड़ों मेंटों और मेम्रों के

२८ लिये उन की गिनती के और रीति के समान होवें । और नित्य के बलिदान की मेंट और उस के भोजन की मेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की मेंट के लिये एक बकरी होवे ॥

२९ और छठवें दिन आठ बछड़े दो मेंटे पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्रे ।

३० और उन के भोजन की मेंट और उन के तपावन बछड़ों मेंटों और मेम्रों के लिये

३१ उन की गिनती के और रीति के समान होवें । और नित्य के बलिदान की मेंट के और उस के भोजन की मेंट के और उस के तपावनों के अधिक पाप की मेंट के लिये एक बकरी होवे ॥

३२ और सातवें दिन सात बछड़े दो मेंटे पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्रे ।

३३ और उन के भोजन की मेंट और उन के तपावन बछड़ों मेंटों और मेम्रों के लिये

३४ उन की गिनती के और उस की रीति के समान होवें । और नित्य के बलिदान की मेंट के उस के भोजन की मेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की मेंट के लिये एक बकरी होवे ॥

३५ आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा होगी तुम उस दिन सेवा का कोई

३६ कार्य न कीजियो । और तुम एक बछड़ा एक मेंटा पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्रे बलिदान की मेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये आग से बनाई हुई मेंट

३७ चढ़ाइयो । उन के भोजन की मेंट और उन के तपावन बछड़े और मेंटे और मेम्रों

३८ के लिये उन की गिनती के और रीति के समान होवें । और नित्य के बलिदान की मेंट के और उस के भोजन की मेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की मेंट के लिये एक बकरी होवे ॥

३९ अपनी मनौतियों के और अपनी वांछित मेंटों के अपने बलिदान की मेंटों के

और अपने भोजन की मेंटों के और अपने तपावनों के और अपने कुशल की मेंटों के अधिक तुम इन्हें अपने ठहराये हुए पर्वों में कीजियो । और मूसा ने परमेश्वर की समस्त आज्ञा के समान इसराएल के संतानों से कहा ॥

तीसवां पृष्ठ ।

१ और मूसा ने इसराएल के संतान की गोष्टियों के प्रधानों से कहा कि यह वह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा की है । यदि कोई पुरुष परमेश्वर की मनौती माने अथवा किरिया खाके अपने प्राण को बंधन में करे तो वह अपनी वाचा को न तोड़े जो कुछ उस ने अपने मुंह से कहा है संपूर्ण करे ॥

२ और यदि कोई स्त्री परमेश्वर की मनौती माने और अपनी लड़कई में

३ अपने पिता के घर में होते हुए आप को वाचा में बांधे । और उस का पिता उस की मनौती और उस की वाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा है सुनके चुप हो रहे तो उस की सब मनौतियां और हर एक वाचा जिस्से

वकरी का एक सेम्रा पाप की भेंट के लिये जिसमें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त किया जावे । मांस के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के अधिक ६ और प्रतिदिन के बलिदान की भेंट के और उन के भोजन की भेंट के और उन के तपावनों के उन की रीति के समान आग से किये हुए भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाइयो ॥

और इस सातवें मास की दसवीं तिथि में तुम्हारे लिये पवित्र जुलावा ७ होगा और तुम अपने प्राण को हलिया कोई कार्य न करोगे । परन्तु ८ परमेश्वर के सुगंध के बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक भैंसा पहिले वरस के सात सेम्रे चढ़ाइयो तुम्हारे लिये निष्क्रेष्ट होवें । और उन के भोजन की ९ भेंट तीन दसवां भाग पिमान तेल से मिना हुआ बछड़ा पीछे और हर भैंसा पीछे दो दसवां भाग । सातों सेम्रों के लिये हर सेम्रा पीछे एक दसवां भाग । १० पाप के प्रायश्चित्त की भेंट के और नित्य के बलिदान की भेंट के और उस ११ के भोजन की भेंट के और उन के तपावनों के अधिक पाप की भेंट के लिये वकरी का एक सेम्रा ॥

और सातवें मास की पन्द्रहवीं तिथि में तुम्हारा पवित्र जुलावा होगा उस १२ दिन तुम सेवा का कोई कार्य न करो और सात दिन तक परमेश्वर के लिये पर्व करो । और तुम बलिदान की भेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये १३ तेरह बछड़े दो भैंसे और पहिले वरस के चौदह सेम्रे आग से किये हुए बलिदान चढ़ाइयो वे निष्क्रेष्ट होवें । और उन के भोजन की भेंट तेल से मिना हुआ १४ तीन दसवां भाग पिमान तेरह बछड़ों में से हर बछड़े के लिये दो भैंसों में से हर भैंसे पीछे । और चौदह सेम्रों में से हर सेम्रे पीछे एक दसवां भाग । और १५ नित्य के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये वकरी का एक सेम्रा चढ़ाइयो ॥

और दूसरे दिन बारह बछड़े दो भैंसे पहिले वरस के चौदह निष्क्रेष्ट सेम्रे १७ चढ़ाइयो । और उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़ों और भैंसों १८ और सेम्रों के लिये उन की गिनती के और रीति के समान होवें । और नित्य १९ के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उन के तपावनों के अधिक पाप की भेंट के लिये वकरी का एक सेम्रा ॥

और तीसरे दिन ग्यारह बछड़े दो भैंसे पहिले वरस के चौदह निष्क्रेष्ट २० सेम्रे । और उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़ों और भैंसों २१ और सेम्रों उन की गिनती के और रीति के समान होवें । और नित्य के बलिदान २२ की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये वकरी का एक सेम्रा चढ़ाइयो ॥

और चौथे दिन दस बछड़े दो भैंसे पहिले वरस के चौदह निष्क्रेष्ट सेम्रे । २३ उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़ों और भैंसों और सेम्रों के २४ लिये उन की गिनती के और रीति के समान होवें । और नित्य के बलिदान की २५

७ फूंकने के नरसिंगे उस के हाथ में थे । और जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उन्होंने ने मिदयान से युद्ध किया और सारे पुरुषों को मार डाला ।  
 ८ और उन्होंने ने उन जूके हुएों से अधिक मिदयान के राजाओं अबी और रकम और सूर और हूर और खब्र को जो मिदयान के पांच राजा थे प्राण से मारा ।  
 ९ और बजर के बेटे बलआम को भी खड्ग से मार डाला । और इसराएल के संतानों ने मिदयान की स्त्रियों को और उन के लड़कों को बंधुआई में लिया और उन के समस्त पशु और उन के समस्त चौपाये और उन की संपत्ति समस्त लूट लिया ।  
 १० और उन की सारी वस्तियों जिन में वे रहते थे और उन के सुन्दर गढ़ों को  
 ११ फूंक दिया । और उन्होंने ने सारी लूट और समस्त मनुष्य और पशु को अहेर  
 १२ किया । और मूसा और इलिअजर याजक और इसराएल के समस्त संतानों की मंडली कावनी में मोअब के चौगानों में जो यरदन के लग परीहू है बंधुए और लूट और अहेर को लाये ॥

१३ तब मूसा और इलिअजर याजक और मंडली के समस्त प्रधान उन्हें आगे से  
 १४ मिलने के लिये कावनी में से बाहर गये । और मूसा सेना के प्रधानों से और सहस्रों  
 १५ के पतिन से और सैकड़ों के पतिन से जो लड़ाई से आये क्रुद्ध हुआ । और  
 १६ मूसा ने उन्हें कहा कि तुम ने सब स्त्रियों को जीती रक्खा । देखो इन्होंने  
 १७ ने बलआम के मंत्र से इसराएल के वंश को फगूर के विषय में परमेश्वर के  
 १८ विरोध में अपराध करवाया सो परमेश्वर की मंडली में मरी पड़ी । सो अब  
 १९ लड़कों में से हर एक बेटे को और हर एक स्त्री को जो पुरुष से संयुक्त हुई  
 २० हो प्राण से मारो । परन्तु वे बेटियां जो पुरुष से संयुक्त न हुई हैं उन्हें अपने  
 २१ लिये जीती रक्खो । और तुम सारे दिन लों कावनी से बाहर रहो जिस किसी  
 २२ ने मनुष्य को मारा हो और जिस किसी ने लोथ को कुआ हो वह आप को और  
 २३ अपने बंधुओं को तीसरे दिन और सातवें दिन पवित्र करे । और तुम अपने समस्त  
 २४ वस्त्र और सब जो चमड़े के बने हुए हैं और सब बकरी के रोम के कार्य और काष्ठ के पात्र शुद्ध करो ॥

२५ तब इलिअजर याजक ने उन योद्धाओं को जो लड़ाई में गये थे कहा कि यह  
 २६ व्यवस्था की विधि है जो परमेश्वर ने मूसा से आज्ञा किई । केवल सेना और  
 २७ रूपा पीतल लोहा रांगा और सीसा । समस्त वस्त्र जो आग में ठहरें तुम उन्हें  
 २८ आग में डालो और वह पवित्र होगा केवल वह अलग किये हुए जल से पवित्र  
 २९ किया जावेगा और सब वस्त्र जो आग में नहीं ठहरतीं तुम उन्हें जल में डालो ।  
 ३० और सातवें दिन अपने कपड़े धोके पवित्र होओगे और उस के पीछे कावनी में  
 ३१ आओ ॥

३२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि तू और इलिअजर याजक और मंडली  
 ३३ के सब प्रधान मिलके मनुष्य की और पशुन की जो लूट में आये हैं गिनती  
 ३४ करो । और लूट को दो भाग करो एक उन को जो संग्राम में लड़े और एक  
 ३५ समस्त मंडली को देओ । और योद्धा से जो लड़ाई में चढ़ गये थे परमेश्वर के  
 ३६ लिये कर लेओ पांच सौ में एक प्राणी चाहे मनुष्य हो चाहे गाय बैल चाहे

उस ने अपने प्राण को बांधा है स्थिर रहेगी । परन्तु यदि उस का पिता ५ सुनते हुए उसे मान्ने न देवे तो उस की कोई मनैती और कोई वाचा जो उस ने अपने प्राण को उसके बांधा न ठहरेगी और परमेश्वर उसे क्षमा करेगा क्योंकि उस के पिता ने उसे मान्ने न दिया ॥

और जब उस ने मनैती मानी अथवा अपने मुँह से अपने प्राण को किसी ६ वाचा से बांधा और यदि उस का पति देवे । और उस का पति सुनके उस ७ दिन चुपका हो रहा तो उस की मनैतियाँ ठहरेगी और उस की वाचा जिन से उस ने अपने प्राण को बांधा ठहरेगी । परन्तु यदि उस का पति सुनके उसी ८ दिन उस ने उसे मान्ने न दिया हो तो उस ने उस की मनैती को जो उस ने मानी और उस की वाचा को जो उस ने अपने मुँह से अपने प्राण को उसके बांधा ९ वृथा किया तो परमेश्वर उसे क्षमा करेगा ॥

परन्तु विधवा और त्यक्त स्त्री अपनी हर एक मनैती जिस्से उन्हें ने अपने ६ प्राण को बांधा उन पर बनी रहेगी ॥

और यदि उस ने अपने पति के घर जाने हुए कुछ मनैती मानी हो और १० किरिया करके किसी वाचा में आप को बांधे हो । और उस का पति सुनके चुप ११ हो रहे और उसे न रोके तो उस की मनैतियाँ ठहरेगी और उस की हर एक वाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा ठहरेगी । परन्तु यदि सुनके उसी दिन १२ उस का पति उसे वृथा करे तो जो कुछ मनैतियों और अपने प्राण के बंधन के विषय में उस के मुँह से निकला सो न ठहरेगी उस के पति ने उन्हें वृथा किया और परमेश्वर उसे क्षमा करेगा । सब मनैतियाँ और सब किरिया जिस्से उस १३ ने अपने प्राण को दुःख देने के लिये बांधा उस का पति चाहे तो उसे ठहरावे और चाहे उसे मिटावे । परन्तु यदि उस का पति प्रतिदिन चुप रहे तो उस ने १४ उस की समस्त मनैतियों और वाचों को जो उस पर हैं स्थिर किया क्योंकि सुनके उस ने अपने चुप रहने से उन्हें स्थिर किया । परन्तु यदि उस ने मुन लिया १५ और उस के पीछे उन्हें वृथा किया तो वह उस का पाप भोगेगा ॥

पति और उस की पत्नी के मध्य में पिता उस की पुत्री के मध्य में जब पुत्री १६ लड़काई के समय में अपने पिता के घर देवे ये विधि हैं जो परमेश्वर ने मूसा को आजा किई ॥

एकतीसवां पृष्ठ ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों का पलटा १ २ सिदयानियों से ले इस के पीछे तू अपने लोगों में मिल जावेगा ॥

तब मूसा ने लोगों से कहा कि आपस में कितनों को संग्राम के लिये लैस करो ३ और सिदयान का साम्रा करो जिसमें परमेश्वर का पलटा सिदयान से लेओ । इसराएल की समस्त गोष्टियों में से हर एक गोष्टी से एक एक सहस्र संग्राम ४ करने को भेजो । सो इसराएल के सहस्रों में से हर गोष्टी पीछे एक सहस्र दारद ५ सहस्र हथियारबंद युद्ध के लिये सँपे गये । तब मूसा ने उन्हें इलिअजर ६ याजक के बेटे फीनिहास के साथ करके लड़ाई पर भेजा और पवित्र पात्र और



२ यश्जीर और जिलिअद के देश को देखा कि ठोर के लिये बहुत अच्छा है । तब  
जद के संतान और रुयिन के संतान ने आके मूसा और इलियजर पात्रक और  
३ मंडली के अध्यक्षों से कहा । कि अतरात और दैबून और यश्जीर और  
निमरः और हसबून और इलआली और शवाम और नबू और यजन का देश ।  
४ जिसे परमेश्वर ने इसराएल की मंडली के आगे मारा वह ठोर का देश और  
५ तेरे दासों के ठोर हैं । इस कारण उन्हें ने कहा यदि आप की दृष्टि में हम  
लोगों ने अनुग्रह पाया है तो यह देश तेरे सेवकों के अधिकार में दिया जाये  
हमें यरदन पार न ले जाइये ॥

६ तब मूसा ने जद के संतान और रुयिन के संतान से कहा कि क्या तुम्हारे  
७ भाई लड़ाई करने जावें और तुम यहीं बैठे रहोगे । और जिस देश को परमेश्वर  
ने उन्हें दिया है उस में जाने से इसराएल के संतानों के मन को क्यों घटाते  
८ हो । जब मैं ने तुम्हारे पितरों को कादिसबरनीअ से उस देश को देखने  
९ भेजा उन्होंने ने भी ऐसा ही किया । और जब वे इसकाल की तराई को पहुंचे  
और उस देश को देखा तो उन्होंने ने इसराएल के संतानों के मन को घटा  
१० दिया जिसमें वे उस देश को जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था न जावें । और  
११ उसी दिन परमेश्वर का क्रोध भड़का और उस ने किरिया खाके कहा । कि  
निश्चय लोगों में से जो मिस्र से निकले बीस वरस से लेके ऊपर लों कोई उस  
देश को जिस के विषय में मैं ने अविरहाम इजहाक और यश्कूय से किरिया खाई  
१२ है न देखेगा इस कारण कि वे निरधार मेरी बात पर न चले । केवल कनीजी  
यफुन्नः का बेटा कालिब और नून का बेटा यहूशूअ क्योंकि वे परमेश्वर की  
१३ और निरधार चले । तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने  
उन्हें वन में चालीस वरस लों भरमाया यहां लों कि वह समस्त पीढ़ी जो  
१४ परमेश्वर के आगे खुराई करती थी नष्ट हुई । और देखो तुम लोग अपने पितरों  
की संती पापमय जन बढ गये है । जिसमें परमेश्वर के क्रोध को इसराएलियों  
१५ की ओर बढ़ाओ । यदि तुम उससे फिर जाओगे तो वह उन्हें फिर वन में छोड़  
देगा और तुम इन सब लोगों को नाश करोगे ॥

१६ तब वे उस के पास आये और बोले कि हम अपने ठोर के लिये यहां भेड़नाले  
१७ और अपने बालकों के कारण नगर बनावेंगे । पर हम हथियार बांधे हुए  
लैस होके इसराएल के संतानों के आगे आगे जावेंगे यहां लों कि उन्हें उन के  
स्थान लों पहुंचावें और देश के वासियों के कारण हमारे बालक घेरित नगरों  
१८ में रहेंगे । हम अपने घरों को न फिरेंगे जब लों इसराएल के संतानों में से हर  
१९ एक अपना अपना अधिकार न पा लेंगे । क्योंकि हम उन के संग यरदन के उस  
पार अथवा आगे अधिकार न लेंगे क्योंकि हमारा अधिकार पूरब को यरदन के  
इस पार मिला है ॥

२० तब मूसा ने उन्हें कहा कि यदि तुम यह करो और परमेश्वर के आगे  
२१ हथियार बांधे हुए जाओगे । और हथियार बांधके परमेश्वर के आगे यरदन के  
२२ उस पार जाओ यहां लों कि वह अपने बैरियों को अपने आगे से दूर करे । और

गदहे हों चाहे भेड़ बकरी । और उन के आधे भाग में से नौके इलिअजर २९  
याजक को दे जिसमें परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट होवे । और इसराएल ३०  
के संतानों के भाग में से क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या गदहे क्या भेड़ बकरी  
पचास पचास पीछे एक एक ले और उन्हें लावियों को जो परमेश्वर की छावनी  
की रक्षा करते हैं दे । सो मूसा और इलिअजर याजक ने वैसाही किया जैसी ३१  
परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई ॥

और लूट का बचा हुआ जो षोढा लोगों के पास था यह था छः लाख ३२  
पचहत्तर सहस्र भेड़ बकरी । और बहत्तर सहस्र गाय बैल । और एकसठ सहस्र ३३  
गदहे । और वे लड़कियां जो पुरुष से संयुक्त न थीं वतीस सहस्र थीं । ३४

सो आधा जो षोढा लोगों का भाग ठहरा यह था तीन लाख मैतीस सहस्र ३५  
पांच सौ भेड़ बकरी । और परमेश्वर का कर भेड़ बकरी में से छः सौ पचहत्तर ३६  
थीं । और गाय बैल छतीस सहस्र थे जिन में से परमेश्वर का कर बहत्तर थे । ३७  
और गदहों में से जो तीस सहस्र पांच सौ थे परमेश्वर का भाग एकसठ थे । ३८  
और मनुष्य में से जो सोलह सहस्र थे परमेश्वर का कर बतीस जन हुए । सो ३९  
मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उस कर को जो परमेश्वर की उठाने की  
भेंट थी इलिअजर याजक को दिया ॥

और इसराएल के संतानों का भाग जो मूसा ने षोढा लोगों में लिया । सो ४०  
बड़ा आधा जो मंडली का भाग हुआ यह था तीन लाख मैतीस सहस्र पांच ४१  
सौ भेड़ बकरी । और छतीस सहस्र ठौर । और तीस सहस्र पांच सौ ४२  
गदहे । और सोलह सहस्र जन । और जैसी परमेश्वर ने आज्ञा किई थी ४३  
मूसा ने इसराएल के संतानों के भाग में से हर पचास जीवधारी पीछे मनुष्य और ४४  
पशु से एक एक लिया और उन्हें और लावियों को जो परमेश्वर के तंबू की ४५  
रक्षा करते थे दिया ॥

तब सेना के सहस्रपति और शतपति मूसा के पास आये । और उन्होंने ने मूसा ४६  
से कहा कि तैरे सेवकों ने समस्त षोढाओं का जो हमारी आज्ञा में हैं ४७  
गिना और उन में से एक पुरुष भी न घटा । सो हम हर एक वस्तु में से जो ५०  
हर एक ने पाई परमेश्वर के लिये भेंट लाये हैं सोने के गहने और भीकरें और  
कड़े और अंगूठियां और बालियां और जंघ लिसर्तें हमारे प्राणों के लिये परमेश्वर  
के आगे प्रायश्चित्त होवे । सो मूसा और इलिअजर याजक ने सोने के बनाये ५१  
हुए समस्त गहने उन से लिये । और भेंट का सब सोना जो सहस्रपति और ५२  
शतपतिन ने परमेश्वर के लिये चढ़ाया सो सात सौ पचास गैकल था । षोढों ५३  
में से हर एक जन अपने अपने लिये लूट लाया था । सो मूसा और इलिअजर ५४  
याजक उस सोने को जो उन्होंने ने सहस्रों और सैकड़ों के प्रधानों से लिया मंडली  
के तंबू में लाये जिसमें परमेश्वर के आगे इसराएल के संतानों का स्मरण  
हो ॥

बतीसवां पर्व ।

अब रुबिन और जद के संतानों के ठौर आति बहुत थे सो जब उन्होंने ने ९

### तैंतीसवां पर्व ।

- १ मूसा और हाश्मन के वंश में होके मिस्र देश से अपनी अपनी सेना समेत इसराएल
- २ के संतान बाहर निकल आये उन की यात्रा ये हैं । और मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उन की यात्रा के अनुसार उन का कूच लिख रक्खा और उन की यात्रा के अनुसार उन का कूच यह है ॥
- ३ और इसराएल के संतान पहिले मास की पंद्रहवीं तिथि से फसह के पर्व के दूसरे दिन रामसीस से बड़े बल के साथ यात्रा करके समस्त मिस्रियों की दृष्टि में
- ४ सिधारे । क्योंकि मिस्रियों ने अपने समस्त पहिलौठों को जिन्हें परमेश्वर ने उन में नाश किया था गाड़ा और परमेश्वर ने उन के देवतों को भी न्याय का दण्ड
- ५ दिया । सो इसराएल के संतानों ने रामसीस से उठके सुक्कात में डेरे किये । और
- ६ सुक्कात से चलके ऐताम में जो वन के सिवाने में है डेरा किया । फिर ऐताम से कूच करके फीउलहीरात को जो बयलमफून के सन्मुख है फिर गये और मिज्जाल
- ७ के आगे डेरा किया । और फीउलहीरात से चले और समुद्र के मध्य में से निकलके वन में आये और ऐताम के वन में तीन दिन के टप्पे पर गये और मरः में डेरा
- ८ किया । और मरः से चलके ऐलीम में आये जहां पानी के बारह सोते और होदारे
- ९ के सत्तर पेड़ थे और वहां डेरा किया । और ऐलीम से यात्रा करके लाल समुद्र
- १० के लग डेरा किया । और लाल समुद्र से चलके सीन के वन में डेरा किया । और
- ११ सीन के वन से यात्रा करके दफकः में डेरा किया । और दफकः से चलके अलूस
- १२ में डेरा किया । और अलूस से चलके रफीदीम में डेरा किया और वहां लोगों
- १३ के पीने के लिये पानी न था । और रफीदीम से चलके सीना के अरण्य में आये ।
- १४ और सीना के अरण्य से चलके किवरातुलतावः में डेरा किया । और किवरातुलतावः
- १५ से यात्रा करके हसीरात में डेरा किया । और हसीरात से चलके रितमः में डेरा
- १६ किया । और रितमः से चलके रुस्मानफरस में डेरा किया । और रुस्मानफरस से
- १७ चलके लिबनः में डेरा किया । और लिबनः से चलके रिस्सह में डेरा किया । और
- १८ रिस्सह से चलके कहीलाथा में डेरा किया । और कहीलाथा से चलके सफर पहाड़
- १९ में डेरा किया । और सफर पहाड़ से चलके हरादः में डेरा किया । और हरादः
- २० से चलके मकहीलात में डेरा किया । और मकहीलात से चलके तहत में डेरा
- २१ किया । और तहत से चलके तारह में डेरा किया । और तारह से यात्रा करके
- २२ मितकः में डेरा किया । और मितकः से चलके हशूना में डेरा किया । और
- २३ हशूना से चलके मूसीरुस में डेरा किया । और मूसीरुस से चलके यअकान में डेरा
- २४ किया । और यअकान से चलके जिदजाद में डेरा किया । और जिदजाद से चलके
- २५ युतबता में डेरा किया । और युतबता से चलके अन्नूनः में डेरा किया । और
- २६ अन्नूनः से चलके असयूनजत्र में डेरा किया । और असयूनजत्र से चलके सीन के
- २७ अरण्य में जो कादिस है डेरा किया । और कादिस से चलके हूर पर्वत के वन
- में जो अदूम के देश का सिवाना है डेरा किया ॥
- २८ और हाश्मन याजक परमेश्वर की आज्ञा से हूर पर्वत पर चढ़ गया और वहां मर गया यह इसराएल के संतानों के मिस्र से बाहर निकलने के चालीसवें वरस

वह देश परमेश्वर के आगे वश में होवे तो उस के पीछे तुम फिर आओगे और परमेश्वर के और इसराएल के आगे निर्दोष ठहरोगे तब परमेश्वर के आगे तुम्हारा अधिकार होगा । परन्तु यदि तुम यों न करोगे तो देखो कि तुम परमेश्वर के आगे पापी हुए और निश्चय जानो कि तुम्हारा पाप तुम्हें पकड़ेगा । तुम अपने बालकों के लिये नगर बनाओ और अपनी भेड़ों के लिये भेड़शाले और जो तुम्हारे मुँह से निकला है सो करो ॥

तब जद के संतान और रुविन के संतान मूसा से कहके बोले कि जैसी मेरा स्वामी आज्ञा करता है वैसा ही तेरे सेवक करेंगे । हमारे बालक हमारी पत्नियाँ हमारे भुँड और हमारे ममला डार यद्यपि जिलिअद के नगरों में रहेंगे । परन्तु जैसा मेरा प्रभु कहता है तेरे सेवक हर एक दृष्टिपार बांधे हुए संग्राम के लिये परमेश्वर के आगे पार जायेंगे । तब मूसा ने उन के विषय में दलियज्जर याजक को और नून के बेटे यहूशूअ को और इसराएल के संतानों की गोष्टों के प्रधान के पितरों को कहा । और मूसा ने उन्हें कहा कि यदि जद के संतान और रुविन के संतान परमेश्वर के आगे तुम्हारे साथ परदन के पार दृष्टिपार बांधके जायें और लड़ें और देश तुम्हारे वश में आवे तो तुम जिलिअद का देश उन का अधिकार कर दीजियो । परन्तु यदि वे दृष्टिपार बांधके तुम्हारे साथ पार न जायें तो वे तुम्हारे मध्य में कनयान के देश में अधिकार पायें । तब जद के संतान और रुविन के संतान उत्तर में बोले कि जैसा परमेश्वर ने तेरे सेवकों को कहा हम वैसा ही करेंगे । हम दृष्टिपार बांधके परमेश्वर के आगे उस पार कनयान के देश को जायेंगे जिसमें परदन के इधर का देश हमारा अधिकार होवे ॥

तब मूसा ने अमूरियों के राजा सैहून का राज्य और दमन के राजा कज का राज्य वह देश उन के नगर समेत जो उस सिवाने में है और देश के चारों ओर के नगरों को जद के संतान और रुविन के संतान और यूसुफ के पुत्र मुनस्सी की आधी गोष्टी को दिया ॥

तब जद के संतान ने दैयून और अतरात और अरआयर । और अतरात शूफान और यअज़ीर और युगविछाट । और बैतनिमरः और बैतहारान घरे हुए नगर और भेड़ों के लिये भेड़शाले बनाये ॥

और रुविन के संतान ने हसयून और डलआली और करयतैन बनाये । और नवू और दअलमज्जन उन के नाम केंरे गये और शिवमः और उन नगरों के जो उन्हें ने बनाये और दी नाम रखे ॥

तब मकीर के संतान मुनस्सी के बेटे जिलिअद को गये और उसे ले लिया और उस में के अमूरियों को उठा दिया । और मूसा ने जिलिअद को मकीर मुनस्सी के बेटे को दिया और वह उस में बसा । और मुनस्सी का बेटा याद्वर निकला और उस के छोटे छोटे नगरों को ले लिया और उन का नाम याद्वर गांव रखवा । और नूवह गया और किनात और उस के गांवों को ले लिया और उस का नाम अपने नाम के समान नूवह रखवा ॥

६ और तुम्हारा पश्चिम का सिवाना महासमुद्र होगा यही तुम्हारा पश्चिम सिवाना होगा ॥

७ और यह तुम्हारा उत्तर सिवाना होगा महासमुद्र से दूर पर्वत लें । और दूर पहाड़ से हमात के पैठ लें और वह सिवाना सीदाद लें जावेगा । और वह सिवाना जिफखन को और उस का निकास हसररेनान से हो जावेगा यही तुम्हारी उत्तर दिशा है ॥

१० और तुम अपने लिये पूरब दिशा हसररेनान से लेके सफाम लें ठहरादयो ।

११ और उस का सिवाना सफाम से लेके रिखलः लें आईन के पूरब ओर होगा और सिवाना वहां से उतरके किन्नारात के समुद्र की पूरब दिशा में मिलेगा ।

१२ और उस का सिवाना यरदन को उतरेगा और उस का निकास खारी समुद्र लें होगा यही तुम्हारे देश उस के तीर समेत चौदिशा में होंगे ॥

१३ फिर मूसा ने इसराएल के संतानों को आज्ञा किई कि यह वह देश है जिस के अधिकारी तुम चिट्टी से होओगे जिस के विषय में परमेश्वर ने कहा कि

१४ तू सांठे नव गोष्टियों को बांट दीजियो । क्योंकि दाबिन की गोष्टी ने अपने घराने के घराने के समान और जद के संतान ने अपनी गोष्टी के घराने के समान और

१५ मुनस्सी की आधी गोष्टी ने अपने घराने के समान पाया । उन अठ्ठाई गोष्टियों ने यरदन के इस पार अरीहू के लग पूरब दिशा को अपना अधिकार पाया ॥

१६ फिर परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा करके कहा । वे लोग जो तुम्हारे देश को बांटेंगे उन के ये नाम हैं इलिअजर याजक और नून का बेटा यहूशूअ । और

तुम अपने लिये हर गोष्टी का एक प्रधान लेओ जिसमें उस देश को भाग करे ।

१९ और उन प्रधानों के नाम ये हैं यफुन्नः का बेटा कालिव यहूदाह की गोष्टी का ।

२० और अम्मिहूद का बेटा समूएल समजोन की गोष्टी के घराने का । किसलून का

२२ बेटा इलिदाद बिनयमीन के घराने का । और दान के संतान की गोष्टी का अध्यक्ष

२३ युगली का बेटा बूकी । यूसुफ के संतान के प्रधान मुनस्सी के संतानों की गोष्टी

२४ के लिये अप्रूद का बेटा हजिएल । और इफरायम के संतान की गोष्टी का अध्यक्ष

२५ सिफतान का बेटा कम्मूएल । और जेबुलून के संतान की गोष्टी का अध्यक्ष

२६ फरनाक का बेटा इलीसफन । और इशकार के संतान की गोष्टी का अध्यक्ष

२७ अजान का बेटा फलतिएल । और यसर के संतान की गोष्टी का अध्यक्ष सलूमी

२८ का बेटा अखिहूद । और नफताली के संतान की गोष्टी का अध्यक्ष अम्मिहूद का बेटा फिदाहिएल ॥

पैंतीसवां पृष्ठ ।

१ फिर परमेश्वर मोअब के चौगान में यरदन के तीर पर अरीहू के लग

२ मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर कि लावियों को अपने अधिकार में से अधिकार के लिये नगर बसने को देवें और नगरों के

३ चारों ओर के उपनगर उन्हें देओ । और नगरों को उन के रहने के कारण और

के पांचवें मास की पहली तिथि थी । और हाइन एक सौ तेईस वरस का था ३८  
जब वह हूर पर्वत पर सर गया ॥

और अराद राजा कनय्यानी ने जो कनय्यान देश की दक्षिण ओर रहता था ४०  
सुना कि इसराएल के संतान आ पहुंचे ॥

और हूर पर्वत से यात्रा करके जलमून: में डेरा किया । और जलमून: से चलके ४१  
फूनोन में डेरा किया । और फूनोन से चलके रेयात में डेरा किया । और रेयात ४२  
से चलके रेयैडलअधारीस में जो मोअव का सिवाना है डेरा किया । और रेयीस ४३  
से चलके दैयूनजदू में डेरा किया । और दैयूनजदू से चलके अलमूनदियलतैस: ४४  
में डेरा किया । और अलमूनदियलतैस: से यात्रा करके अबरीस पर्वतों पर नद्य के ४५  
आगे डेरा किया । और अबरीस पर्वतों से चलके मोअव के चौगानों में यरदन ४६  
के तीर पर जो अरीहू के लग है डेरा किया । और यरदन के तीर दैतुलमसीमात ४७  
से यात्रा करके अबीलमन्तीन से होके मोअव के चौगानों में डेरा किया ॥

और परमेश्वर मोअव के चौगानों में अबीलमन्तीन के तीर अरीहू के लग ५०  
मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों का यात्रा कर और कह कि ५१  
जब तुम यरदन से पार होके कनय्यान के देश में पहुंचो । तब तुम उन मय ५२  
को जो उस देश के वासी हैं अपने सन्मुख से दूर करो और उन की सारी प्रतिमा  
को नाश करो और उन की ढाली हुई मूर्तियों को नष्ट करो और उन के सब  
ऊँचे स्थानों को ढा दोओ । और उन्हें देश से विदेश करके उस में वास करो ५३  
क्योंकि मैं ने वह देश तुम्हें तुम्हारे अधिकार के लिये दिया है । और तुम चिट्टी ५४  
डालके उस देश को आपुन में अपने घराने के समान बांट लेओ बहुतों को  
बहुत अधिकार देओ और थोड़ों को थोड़ा हर एक का उसी में स्थान होगा  
जहाँ उस की चिट्टी पड़े अपने पितरों की गोष्ठियों के समान तुम अधिकार  
लेओ । परन्तु यदि तुम उस देश के वाशियों को अपने आगे से दूर न करोगे ५५  
तो वे ही होगा कि जिन्हें तुम रहने देओगे वे तुम्हारी आँखों में काँटे और तुम्हारे  
पाँजरो में कील होंगे और उस देश में जहाँ तुम बसोगे तुम्हें सतावेंगे । परन्तु ५६  
अंत को यह होगा कि जो कुछ मैं उन से किया चाहता हूँ सो तुम से करेगा ॥

चौतीसवां पृष्ठ ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों का यात्रा १  
कर और उन से कह कि जब तुम कनय्यान के देश में पहुंचो वह देश जो तुम्हारे २  
अधिकार में पड़ेगा अर्थात् कनय्यान का देश उस के सिवाने सहित ॥

तब सीन के वन से अरूम के सिवाने लें तुम्हारी दक्षिण दिशा होगी और ३  
तुम्हारा दक्षिण सिवाना खारी समुद्र के अंत तीर पूरब दिशा होगी । और ४  
तुम्हारा दक्षिण सिवाना अकरावीस के चढ़ाव के मार्ग लें घरेगा और सीन लें  
पहुंचेगा और उस का निकास कादिसबरनीअ की दक्षिण की ओर होगा और  
इसरअद्वार लें जावेगा और अजमून लें चला जावेगा । और यह सिवाना ५  
अजमून से घूमके मिस की नदी लें पहुंचेगा और उस का निकास समुद्र की  
ओर होगा ॥



के पलटादायक के हाथ से कुड़ाके उस शरणनगर में जहाँ वह भागके गया था फिर भेज देवे और वह प्रधान याजक के जो पवित्र तेल से अभिषिक्त हुआ था मरने लों वहीं रहे ॥

- २६ परन्तु यदि घातक उस शरणनगर के सिवाने से जहाँ वह भागके गया था  
 २७ बाहर आवे । और लोहू का पलटादायक उसे शरणनगर के सिवाने से बाहर पावे  
 २८ और घातक को मार डाले तो उस पर घात का अपराध नहीं । क्योंकि उस  
 घातक को उचित था कि प्रधान याजक की मृत्यु लों शरणनगर में रहता और  
 २९ उस के मरने के पीछे अपने अधिकार के देश में आता । सो तुम्हारी पीढ़ियों में  
 तुम्हारी समस्त वस्तियों में न्याय के लिये यह व्यवस्था होगी ॥
- ३० जो किसी को मार डाले तो घातक साक्षियों की साखी के समान घात  
 ३१ किया जावे परन्तु एक साक्षी की साखी से किसी को घात न करना । और तुम  
 घातक के प्राण की संती जो घात के योग्य है मोल मत लेओ परन्तु वह अवश्य  
 ३२ मारा जावे । और तुम उससे भी जो अपने शरण के नगर को भाग गया हो घात  
 का मोल मत लेओ जिसमें वह याजक की मृत्यु लों अपने देश में आ खसे ॥
- ३३ सो जहाँ हो उस देश को अशुद्ध मत कीजियो क्योंकि घात ही से देश अशुद्ध  
 होता है और देश उस लोहू से जो उस में वहाया गया है शुद्ध नहीं होता परन्तु  
 ३४ केवल उसी के लोहू से जिस ने उसे वहाया है । सो तुम अपने निवास के देश को  
 जिस के मध्य में मैं रहता हूँ अशुद्ध न करो क्योंकि मैं परमेश्वर इसराएल के  
 संतानों के मध्य में रहता हूँ ॥

#### कृत्तीसवां पर्व ।

- १ तब यूसुफ के संतान के घराने में से मुनस्सी के बेटे माखीर के बेटे जलआद  
 के संतान के घराने के पितरों के प्रधान आके मूसा के आगे और इसराएल के  
 २ संतानों के पितरों के आगे बोले और कहा । कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु को आज्ञा  
 किई कि चिट्ठी डालके देश को इसराएल के संतानों को अधिकार के लिये देवे  
 और हमारे प्रभु ने परमेश्वर की आज्ञा से कहा कि हमारे भाई सिलाफिहाद  
 ३ का अधिकार उस की बेटियों को दिया जावे । सो यदि वे इसराएल के संतानों  
 की और गोष्टियों के बेटों में से किसी के साथ ब्याही जावें तो उन का अधि-  
 कार हमारे पितरों के अधिकार से निकल जावेगा और उस गोष्टी के अधिकार  
 में जहाँ वे ब्याही गईं मिल जावेगा सो हमारा चिट्ठी का अधिकार घट  
 ४ जावेगा । और जब इसराएल के संतानों के आनन्द का बरस आवे तब उन का  
 अधिकार उस घराने के अधिकार में जहाँ वे ब्याही गईं मिल जावेगा और उन  
 का अधिकार हमारे पितरों की गोष्टी के अधिकार में से निकल जावेगा ॥
- ५ तब मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा से इसराएल के संतानों से कहा कि यूसुफ  
 ६ के संतान की गोष्टी अच्छा कहती है । सो परमेश्वर सिलाफिहाद की बेटियों  
 के विषय में यों आज्ञा करता है कि वे जिसे चाहें उसे ब्याह करें केवल अपने  
 ७ पिता की गोष्टी में ब्याह करें । जिसमें इसराएल के संतानों का अधिकार एक  
 गोष्टी से दूसरी गोष्टी में न जावे और इसराएल के संतान में से हर जन आप

आसपास उन के साथ बैल के कारण और उन की संपत्ति और उन समस्त  
पशुन के लिये हों । और नगरों के आसपास जो तुम लावियों को देशों में चाहिये ४  
कि नगर की भीत से सहस्र हाथ बाहर होवे । और तुम नगर से लेकर बाहर ५  
पूरव की ओर दो सहस्र हाथ नापो और दक्षिण की ओर दो सहस्र हाथ और  
पश्चिम की ओर दो सहस्र हाथ और उत्तर की ओर दो सहस्र हाथ और उन  
के मध्य में उन के लिये नगरों के उपनगर होंगे । और उन नगरों के मध्य में ६  
जो तुम लावियों को देशों में छः नगर शरण के लिये दोगे जिसे तुम घातक  
के लिये ठहराओ और उन में व्यापारी नगर और भी मिला दो । सारे नगर ७  
जो तुम लावियों को देशों में अठतालीस नगर उन के उपनगर सहित । और जो ८  
नगर तुम देशों में से इसराएल के संतानों के अधिकार में से बहुत में से बहुत  
दीजियो और थोड़े में से थोड़ा सब कोई अपने अधिकार के समान अपने नगरों  
में से जो उस के अधिकार में है लावियों को दीजियो ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर १०  
और उन्हें कह कि जब तुम यरदन पार कनयान के देश में पहुँचो । तब तुम ११  
अपने लिये नगरों को शरणनगर के कारण ठहराओ जिसमें वह घातक  
जिसे अनजाने घात हो जाय भागके चला जा रहे । और वह तुम्हारे लिये १२  
पलटादायक से शरणनगर होगा और घातक जब लो विचार के लिये मंडली  
को आगे खड़ा न होवे मारा न जाये । सो जो जो नगर तुम देशों में उन में छः १३  
नगर शरण के लिये होंगे । यरदन के इस पार तीन नगर दीजियो और कनयान १४  
के देश में तीन नगर दीजियो ये शरणनगर होंगे । ये छः नगर इसराएल के संतानों १५  
और परदेशी और उन के कारण जो तुम्हें रहते हैं शरण के लिये होंगे कि जो  
कोई अनजाने किसी को मारे उधर भाग जाये ॥

और यदि कोई किसी को लोहे के हथियार से मारे ऐसा कि वह मर जावे १६  
तो वह घातक है घातक अवश्य घात किया जायगा । और यदि कोई किसी १७  
को ऐसा पत्थर फेंके मारे कि वह मर जावे तो वह घातक है घातक अवश्य  
मार डाला जावे । अथवा कोई किसी को ऐसा लठ मारे कि वह मर जावे तो १८  
वह घातक है घातक अवश्य घात किया जावे । लोह का पलटादायक वही १९  
घातक को आप ही उसे घात करे जब वही उसे पावे उसे मार डाले । और २०  
यदि कोई किसी को हाथ से ठकेल देवे अथवा दाँवघात से उसे पटक देवे कि  
वह मर जावे । अथवा धैर से उसे हाथ से मारे कि वह मर जावे तो जिस ने २१  
उसे मारा वह निश्चय मारा जायगा मारे हुए का कुटुम्ब जब उस घातक को  
पावे उसे घात करे ॥

और यदि कोई किसी को बिना धैर के अकस्मात् उसे ठकेल देवे अथवा २२  
बिना दाँवघात उस पर कोई वस्तु डाल देवे । अथवा उसे बिन देखे ऐसा पत्थर २३  
फेंके कि उस पर गिरे और वह मर जावे और वह उस का धैर न था और न  
उस की घुराई चाहता था । तब मंडली उस घातक और लोह के पलटादायक २४  
के मध्य इन न्यायों के समान विचार करे । कि मंडली उस घातक को लोह २५

९ और उसी समय मैं ने तुम्हें कहा कि मैं अकेला तुम्हारा बोझ नहीं उठा  
 १० सकता । परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बड़ाया और देखा तुम आज के दिन  
 ११ आकाश के तारों की नाईं मंडली हो । परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें  
 १२ इससे भी सहस्र गुण अधिक बड़ावे और जैसा उस ने तुम से कहा है तुम्हें  
 १३ आशीस देवे । मैं तुम्हारे परिश्रम और तुम्हारे बोझ और तुम्हारे भागड़ों को  
 १४ अकेला ब्योंकर उठा सकूँ । तुम बुद्धिमान और ज्ञानी और अपनी गोष्ठियों में  
 १५ से प्रसिद्ध लोगों को लाओ और मैं उन्हें तुम पर आजाकारी करूँगा । और तुम  
 ने मुझे उत्तर देके कहा कि जो कुछ तू ने कहा है सो पालन करने को भला  
 १६ है । सो मैं ने तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधानों को बुद्धिमान और प्रसिद्धों को लिया  
 और उन्हें तुम्हारा प्रधान सहस्रों का प्रधान और सैकड़ों का प्रधान और  
 पचास पचास का प्रधान और दस दस का प्रधान तुम्हारी गोष्ठियों में करोड़ा  
 १७ किया । और उस समय मैं ने तुम्हारे न्यायियों को आज्ञा करके कहा कि अपने  
 भाइयों का विवाद सुनो मनुष्य मैं और उस के भाइयों में और उस के साथ के  
 १८ परदेशियों में धर्म से न्याय करो । तुम मुंह देखा न्याय न करो तुम न्याय में  
 किसी के रूप को मत मानो बड़े के समान छोटे की भी सुनियो तुम मनुष्य  
 के रूप से न डरो क्योंकि न्याय ईश्वर का है और जो विषय तुम्हारे लिये कठिन  
 १९ होवे मेरे पास लाओ और मैं उसे सुनूँगा । सब जो तुम्हें करना था मैं ने उसी  
 समय मैं तुम्हें आज्ञा किई ॥

२० और हम ने हेरिव से यात्रा किई तो जैसी परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें  
 आज्ञा किई थी उस समस्त महा भयंकर वन में गये जिसे तुम ने अमूरियों के  
 २१ पहाड़ को जाते हुए देखा और कादिस वरनीश में आये । और मैं ने तुम्हें कहा  
 कि तुम अमूरियों के पहाड़ को पहुँचे हो जो परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें देता  
 २२ है । देख परमेश्वर तेरे ईश्वर ने यह देश तेरे आगे धरा है चढ़ उसे वश में  
 कर जैसा परमेश्वर तेरे पितरों के ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है मत डर और दियाव  
 २३ न छोड़ । तब हर एक तुम्हें से मुझ पास आया और बोला कि हम अपने  
 आगे-लोग भेजेंगे और वे हमारे लिये उस देश का भेद लेंगे और आके हम से  
 २४ कहें कि हम किस मार्ग से वहां जावें और कौन कौन नगरों में प्रवेश करें । और  
 वह कहना मुझे भाया और मैं ने तुम्हें से गोष्टी पीके एक एक मनुष्य करके  
 २५ बारह मनुष्य लिये । और वे चल निकले और पहाड़ पर गये और इसकाल की  
 २६ तराई में आये और उस का भेद लिया । और वे उस देश का फल अपने हाथों में  
 लेके हमारे पास उतर आये और संदेश ले आये और बोले कि परमेश्वर हमारा  
 ईश्वर हमें उत्तम देश देता है ॥

२७ तथापि तुम चढ़ न गये परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा से फिर  
 २८ गये । और तुम अपने तंखुओं में कुड़कुड़ाके बोले इस कारण कि परमेश्वर हम  
 से डाह रखता था हमें मिस के देश से निकाल लाया कि हमें अमूरियों के हाथ  
 २९ में करके नाश करे । हम कहां चढ़ें हमारे भाइयों ने तो यों कहके हमारे  
 मन को घटा दिया कि वे लोग तो हम से बड़े और लम्बे हैं और उन के नगर

को अपने ही पितरों की गोष्टी के अधिकार में रखे । और हर एक घेटी इस- ८  
राएल के संतानों की किसी गोष्टी में अधिकार रखे अपने बाप ही के घराने की  
गोष्टी में से एक की पत्नी होवे जिसमें इसराएल के संतान में हर जन अपने  
पिता के अधिकार पर स्थिर रहे । और अधिकार एक गोष्टी में से दूसरी गोष्टी ९  
में न जावे परन्तु इसराएल के संतान के घरानों में हर एक जन अपने अधिकार  
में आप को रखे ॥

सो सिलाफिदाद की घेटियों ने वैसा ही किया जैसी परमेश्वर ने मूसा को १०  
आज्ञा किई थी । क्योंकि सत्तलः तिरजः और हत्तलः और मिलकः और नूअः ११  
सिलाफिदाद की घेटियां अपने चत्तरे भाइयों के साथ व्याही गईं । यूसुफ के घेटे १२  
मुनस्सी के घरानों में व्याही गईं और उन का अधिकार उन के पिता की गोष्टी  
में बना रहा ॥

ये वे आज्ञा और विचार हैं जो परमेश्वर ने मूसा के हस्ते मोअय्य के चौगानों १३  
में यरदन के तीर पर यरीहू के सन्मुख इसराएल के संतानों को आज्ञा किई ॥

## विवाद की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

ये वे बातें हैं जिन्हें मूसा ने यरदन के इस पार अरग्य में लाल नमुद्र के १  
सन्मुख चौगान में फारान और तोफल और लायन और घनीरात और दीजाह्य  
के मध्य में इसराएल के संतानों से कहा । होरिव से कादिसबरनीअ लों शईर २  
पर्वत के पथ से ग्यारह दिन का मार्ग है । और ऐसा हुआ कि चालीमर्च वरस ३  
के ग्यारहवें मास की पहिली तिथि में उन समस्त आज्ञाओं के समान जिन्हें  
परमेश्वर ने उसे दिई थीं जिसमें इसराएल के संतानों से कही जाई मूसा ने उन्हें ४  
कहा । उस के पीछे कि उस ने अमूरियों के राजा सैहून को जो इसदून में रहता  
था और वासान के राजा ऊज को जो इसतारात और अद्रिअई में रहता था ५  
बधन किया ॥

यरदन के इस पार मोअय्य के चौगान में इस व्यवस्था को वर्णन करना आरंभ ५  
किया और कहा । कि परमेश्वर हमारा ईश्वर होरिव में हमें यह कहके बोला ६  
कि तुम इस पहाड़ पर बहुत रहे । फिरो और यात्रा करो और अमूरियों के ७  
पहाड़ को और उस के समस्त परोसियों में जाओ चौगान में पहाड़ों में और  
तराई में और दक्षिण में और समुद्र के तीर कनयानियों के देश को और लुयनान ८  
को मदानदी फुरात लों जाओ । देगो मैं ने आगे का देश तुम्हें दिया प्रवेश ९  
करो और उस देश पर जिस के विषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों अबिरहाम  
इजहाक और ययकूब ने किरिया खाई कि तुम्हें और तुम्हारे पीछे तुम्हारे वंश  
को देजंगा अधिकार में लेओ ॥

- ४ फिरो उत्तर की ओर जाओ । और लोगों को आज्ञा कर कि तुम अपने भाई एसौ के संतान के सिवाने से चलते हो वे शईर में रहते हैं और वे तुम से डरेंगे
- ५ सो तुम आप से चौकस रहो । उन्हें मत छेड़ो क्योंकि मैं उन की भूमि से एक पैर भर भी तुम्हें न देऊंगा इस कारण कि मैं ने शईर पर्वत एसौ के अधिकार में
- ६ दिया है । तुम खाने के लिये उन से भोजन मोल लीजियो और पीने के लिये
- ७ दाम देके जल भी मोल लीजियो । क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरे हाथ के सब कार्यों में तुम्हे आशीस दिया है वह इस महा वन में तेरा जाना जानता है इन चालीस बरस भर परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे साथ है तुम्हे किसी घात की घटी न हुई ॥
- ८ और जब हम अपने भाई एसौ के संतान से जो शईर में रहते थे चौगान के मार्ग में से रलत से और असयूनजत्र से होके चले गये तो हम फिरे और
- ९ मोअब के वन के मार्ग में से आये । तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि मोअबियों का मत छेड़ और उन से मत झगड़ क्योंकि उन के देश का अधिकारी तुम्हे न कहेगा इस कारण कि मैं ने आर को लूत के संतान के अधिकार में दिया है ।
- १० वहां आगे ऐसीम रहते थे वे बड़े बड़े और बहुत और लम्बे लम्बे अनाकियों
- ११ के समान थे । वे भी अनाक के संतान के समान दानव में गिने जाते थे परन्तु
- १२ मोअबी उन को ऐसीम कहते हैं । परन्तु आगे शईर में दूरीम रहते थे और एसौ के संतान उन के अधिकारी हुए और उन्हें अपने आगे मिटा डाला और उन के स्थान पर बसे जैसा इसराएल के संतान ने अपने अधिकार के देश में किया जो
- १३ परमेश्वर ने उन्हें दिया था । अब उठो और जरद की नाली पार होओ सो हम जरद की नाली के पार उतर गये ॥
- १४ और जब से हम ने कादिसबरनीअ को छोड़ा और जरद की नाली के पार उतरे अठतीस बरस हुए जब लों कि लड़ांके की समस्त पीढ़ी सेना में से घट
- १५ गई जैसी परमेश्वर ने उन से किरिया खाई थी । क्योंकि निश्चय परमेश्वर का हाथ उन की विरुद्धता में था कि सेना में से उन्हें नाश करे यहां लों कि वे भस्म हो गये ॥
- १६ सो ऐसा हुआ कि जब समस्त लड़ांके मिटके लोगों में से मर गये । तब पर-
- १७ मेश्वर मुझे कहके बोला । कि तू आज आर में होके जो मोअब का सिवाना है
- १८ चला जावेगा । और जब तू अम्मून के संतान के आगे सामे आ पहुंचे तो उन्हें दुःख न दे और न उन्हें छेड़ क्योंकि मैं अम्मून के संतान के देश में तुम्हे अधि-
- १९ कार नहीं देने का इस कारण कि मैं ने उस लूत के संतान के अधिकार में दिया
- २० है । वह भी दानव का देश कहाता था आगे वहां दानव रहते थे और अम्मूनी
- २१ उन्हें जमजुम्मीम कहते थे । वे बहुत और लम्बे लम्बे अनाकियों के समान थे और परमेश्वर ने उन्हें उन के आगे नाश किया सो उन्होंने ने उन्हें निकाल दिया
- २२ और उन के स्थान पर बसे । जैसा उस ने एसौ के संतानों से किया जो शईर में रहते थे जब उस ने हूरियों को उन के आगे से नाश किया सो उन्होंने ने उन्हें
- २३ निकाल दिया और उन के स्थान पर आज लों बसे हैं । और अबियों को भी

बड़े हैं जिस की भीतें स्वर्ग लों हैं और इस्से अधिक हम ने अनाक्तियों के बेटों को वहाँ देखा । तब मैं ने तुम्हें कहा कि मन डरो और उन से भय मत करो । २९ परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर जो तुम्हारे आगे आगे जाता है वही तुम्हारे लिये नड़ेगा ३० जैसा कि हम ने तुम्हारी कृष्टि में तुम्हारे लिये मिस में किया । और अरण्य में ३१ जहाँ तू ने देखा कि जैसा मनुष्य अपने बेटे को उठाता है वैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उस सारे मार्ग में जहाँ जहाँ तुम गये तुम्हें उठाया है जब लों तुम इस स्थान से आये । तथापि इस बात में तुम ने परमेश्वर अपने ईश्वर की ३२ प्रतीति न कीई । वह रात को आग में और दिन को मेघ में जिसमें तुम्हें जाने ३३ का मार्ग बतावे मार्ग में तुम से आगे आगे गया जिसमें तुम्हारे लिये स्थान ठहरावे जहाँ अपने तंत्र खड़े करो ॥

तब परमेश्वर ने तुम्हारी बातें सुनीं और क्रुद्ध हुआ और किरिया खाके धोला । ३४ कि निश्चय इस दुष्ट पीढ़ी के मनुष्यों में से एक भी उस अच्छे देश को जिस ३५ के देने को मैं ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है न देखेगा । केवल यफुन्नः का ३६ घेठा कालिय वह उसे देखेगा और मैं वह देश जिस पर हम का पाँच पहा उस और उस के वंश को देखेगा इस कारण कि वह पूर्णता से परमेश्वर के मार्ग पर चला । और तुम्हारे कारण से परमेश्वर ने तुम पर भी क्रुद्ध होके कहा ३७ कि तू भी उस में प्रवेश न करेगा । तू का घेठा यदुश्वर जो तेरे आगे खड़ा ३८ रहता है वह उस में प्रवेश करेगा तू उसे उभाड़ देगा कि वह इसराएल को उस का अधिकारी करेगा । और तुम्हारे बालक जिनमें तुम ने कहा था कि अक्षर ३९ हो जावेंगे और तुम्हारे लड़के जिनमें भले बुरे का ज्ञान तब न था वहाँ प्रवेश करेंगे और मैं उसे उन्हें देखेगा और वे उस के अधिकारी होंगे । परन्तु तुम फिरो ४० और लाल समुद्र के मार्ग से वन में यात्रा करो ॥

तब तुम ने मुझे उत्तर देके कहा कि हम ने परमेश्वर का अपराध किया है ४१ सो हम चढ़ जावेंगे और जैसी कि परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें आज्ञा कीई है हम लड़ेंगे और तुम सब के सब सचियाय बांधके मिट्ट हुन कि पहाड़ पर चढ़ जाओ । तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि तू उन्हें कह कि मत चढ़ो और युद्ध ४२ न करो क्योंकि मैं तुम्हें नहीं हूँ न हो कि तुम अपने घरियों के आगे सारे जाओ । सो मैं ने तुम्हें कहा दिया और तुम ने न सुना परन्तु परमेश्वर की ४३ आज्ञा से फिर गये और मगराई से पहाड़ पर चढ़ गये । तब अमूरियों ने जो उस ४४ पहाड़ पर रहते थे तुम्हारा साम्रा किया और सधुतायियों को नाचें तुम्हें गोदा और शईर में दुर्यः लों तुम्हें मारा । तब तुम फिरो और परमेश्वर के आगे रोये ४५ परन्तु परमेश्वर ने तुम्हारा शब्द न सुना और न तुम्हारी और कान धरा । तब ४६ तुम कादिस में बहुत दिन लों रहे उन दिनों के समान जो तुम रहे ॥

दूसरा पर्व ।

तब जैसी परमेश्वर ने मुझे आज्ञा कीई थी हम फिरो और लाल समुद्र के १ मार्ग से वन में यात्रा कीई और बहुत दिन लों शईर पर्वत को घेरा । तब २ परमेश्वर मुझे कहके बोला । कि तुम ने इस पर्वत को बहुत दिन लों घेरा ३



का राज्य बसन का एक नगर भी न रहा जो हम ने उन से न लिया साठ  
 ५ नगर ले लिये । ये सब नगर ऊंची ऊंची भीतों और फाटकों और अड़ंगों से  
 ६ दृढ़ थे और बहुत दिन भीत से घेरे हुए नगर भी ले लिये । और हम ने उन्हें  
 उन के पुरुषों और स्त्रियों और बालकों को हर एक नगर से नाश किया जैसा  
 ७ कि हम ने हसखून के राजा सैदून से किया । परन्तु नगरों के समस्त ठार और लूट  
 ८ हम ने अपने ही लिये लिया । और हम ने उस समय अमूरियों के दोनों राजाओं  
 से परदन के उस ही पार का देश अरनून की नदी से हरमून पर्वत लों ले लिये ।  
 १० हरमून को सैदूनी सरियून कहते हैं और अमूरी उसे सनीर कहते हैं । चौगान  
 के समस्त नगर और सारा जिलिअद और सारा बसन सलकः और अद्रिअई लों  
 ११ जो बसन में ऊज के राज्य के नगर हैं । क्योंकि केवल बसन का राजा ऊज रह  
 गया जो दानव में का था देखा उस की खाट लोहे की थी क्या वह अम्मून के  
 संतान राबाश में नहीं है मनुष्य के हाथों से नौ हाथ लम्बी चार हाथ की  
 चौड़ी ॥

१२ और यह देश हम ने उसी समय बस में किया अर्द्धर से जो अरनून की नदी  
 के पास और आधा पहाड़ जिलिअद और उस के नगर में ने खिनिनों और  
 १३ जद्वियों को दिये । और जिलिअद का उबरा हुआ और समस्त बसन जो ऊज  
 का राज्य था मैं ने मुनस्सी की आधी गोष्टी को दिया अरजूब का सारा देश  
 १४ बसन सहित जो दानव का देश कहाता था । मुनस्सी के बेटे याईर ने अरजूब  
 का समस्त देश जमूरियों और माकासियों के सिवाने लों ले लिये और उस ने बसन  
 १५ हबसयाईर अपने नाम के समान उस का नाम आज लों रक्खा । और मैं ने जिलि-  
 १६ अद माकीर को दिया । और जिलिअद से अरनून की नदी लों और आधी तराई  
 और सिवाना यवूक की नदी लों जो अम्मून के संतान का सिवाना है मैं ने  
 १७ खिनिनों को और जद्वियों को दिया । और चौगान भी और परदन और उस के  
 सिवाने किन्नारात से लेके चौगान के समुद्र लों अर्थात् खारी समुद्र जो पिसगः  
 १८ के नालों के नीचे है पूरब की ओर भी । और मैं ने उसी समय तुम्हें आज्ञा करके  
 कहा कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने इस भूमि का तुम्हें अधिकारी किया तुम  
 अपने भाई इसराएल के संतानों के आगे हथियार बांधके सब जितने लड़ाई  
 १९ के योग्य हो पार उतरो । केवल तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे बालक और तुम्हारे  
 ठार तुम्हारे उन नगरों में रहें जो मैं ने तुम्हें दिये हैं क्योंकि मैं जानता हूँ कि  
 २० तुम्हारे ठार बहुत हैं । जब लों कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयों को चैन देवे  
 जैसा तुम्हें दिया जिस में वे भी उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने परदन  
 के पार उन्हें दिया है अधिकारी होवें तब हर एक पुरुष अपने अपने अधिकार में  
 फिर जाय जो मैं ने तुम्हें दिया है ॥

२१ और उसी समय मैं ने यहूशूअ को आज्ञा किई और कहा कि तेरी आंखें  
 सब कुछ देखती हैं जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने इन दोनों राजाओं से किया  
 २२ परमेश्वर उन सब राजों से जहां जहां तू जायगा वैसा करेगा । तुम उन से मत  
 डरियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही तुम्हारे लिये लड़ेगा ॥

जो हमरैस में अज्जः लो रहते थे और कफतूरी लो कफतूर से आये उन्हे नाश  
 किया और उन के स्थान में बसे । तुम उठो चलो और अरनून के पार जाओ २४  
 देखा मैं ने हमयून के राजा अमूरी सैहून को उस की भूमि सहित तुम्हारे हाथ में  
 दिया है सो अधिकार लेने का आरंभ करो और लड़ाई में उन का साम्रा करो ।  
 आज के दिन से मैं तेरा डर और भय उन जातिगणों पर डालूंगा जो तारे आकाश २५  
 के नीचे हैं वे तेरी सुधि पावेंगे और ध्वरावेंगे और तेरे आगे घबरा जावेंगे ॥

तब मैं ने कदीमात के राज से हमयून के राजा सैहून पास दूतों से मिलाप २६  
 का यह वचन कटला भेजा । कि तू अपने देश में से मुझे जाने दे मैं राजमार्ग से २७  
 होके जाऊंगा और मैं दोहने वाये हाथ न सुडूंगा । खान के लिये दाम लेके २८  
 मुझे अन्न जल दीजिया केवल में पांच पांच चला जाऊंगा । जिस रीति से कि २९  
 समौ के संतान ने जो गर्हर में रहते हैं और मोअयियों ने जो आर में बसते हैं  
 मुझ से किया जिसतें हम परदन के पार उस भूमि में पहुंचें जो परमेश्वर हमारा  
 ईश्वर हमें देता है । परन्तु हमयून के राजा सैहून ने हमें अपने पास से जाने ३०  
 न दिया क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उस के आत्मा को कटार और उस के  
 मन को ढीठ कर दिया जिसतें उसे आज के समान तेरे हाथ में देवे ॥

तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि देख मैं ने सैहून को उस के देश सहित तुझे ३१  
 देना आरंभ किया तू अधिकार लेना आरंभ कर जिसतें तू उस के देश का  
 अधिकारी होव । तब सैहून अपने मारे लोग लेके यहम में लड़ने का निकल ३२  
 आया । सो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने उसे हमें सौंप दिया और हम ने उसे ३३  
 और उस के बेटे और उस के सब लोगों को मारा । और हम ने उनी समय उस ३४  
 के समस्त नगरों को ले लिया और हर एक नगर के पुनप और स्त्री और लड़कों  
 को नाश किया किसी को न छोड़ा । केवल ठार हम ने अपने लिये आदर में ३५  
 लिया और नगरों की लूट जिसे हम ने लिया । अरहर से लेके जो अरनून की ३६  
 नदी के तीर पर है और उस नगर से लेके जो नदी के तीर पर है अर्थात्  
 जिलियद लो ऐसा कोई नगर हमारे लिये दृढ़ न था जिसे परमेश्वर हमारे  
 ईश्वर ने हमें न सौंप दिया । केवल अस्मूक के संतान के देश जिस के निकट ३७  
 तू न गया और नदी यहूक के किसी स्थान में न पहाड़ के नगरों में और जहां  
 जहां परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें बरजा ॥

तीसरा पर्व ।

तब हम फिर और वसन की ओर चढ़ गये और वसन का राजा ऊज १  
 अद्रिअई में अपने मारे लोग लेके हमारे सन्मुख लड़ने को निकला । और परमे- २  
 श्वर ने मुझे कहा कि उससे मत डर क्योंकि मैं ने उसे और उस के मारे लोगों  
 को उस के देश सहित तेरे हाथ में सौंपा है और तू उससे वैसा कर जैसा तू ने  
 अमूरियों के राजा सैहून से जो हमयून में रहता था किया । सो परमेश्वर ३  
 हमारे ईश्वर ने वसन के राजा ऊज को भी और उस के समस्त लोग को हमारे  
 बश में कर दिया और हम ने उन्हे यहां लो मारा कि उन में से कोई न बचा ।  
 और हम ने उस समय उस के समस्त नगर ले लिये अरनून का सारा देश ऊज ४

११ अपने लड़कों को सिखावें । सो तुम पास आये और पहाड़ के नीचे खड़े रहे और पहाड़ स्वर्ग के मध्य लों अंधकार और मेघ और गाढ़ा अंधकार आग से  
 १२ जल रहा था । और परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उस आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें किई तुम ने बातों का शब्द सुना परन्तु मूर्ति न देखी केवल शब्द ।  
 १३ और उस ने अपनी बाचा तुम्हारे आगे वर्णन किई जिसे उस ने तुम्हें पालन करने को आज्ञा किई उस आज्ञा और उस ने उन्हें पत्थर की दो पट्टियों पर लिखी ।  
 १४ और परमेश्वर ने उस समय मुझे आज्ञा किई कि तुम्हें विधि और विचार सिखाऊँ जिसमें तुम उस देश में जाओ जिस के तुम अधिकारी होओगे उन पर चलो ॥

१५ सो तुम आप से बहुत चौकस रहो क्योंकि जिस दिन परमेश्वर ने होरिख में आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें कहीं तुम ने किसी प्रकार का रूप न  
 १६ देखा । ऐसा न हो कि तुम बिगड़ जाओ और अपने लिये खोदी हुई मूर्ति  
 १७ किसी पुरुष अथवा स्त्री की प्रतिमा बनाओ । किसी पशु की प्रतिमा जो  
 १८ पृथिवी पर है अथवा किसी पंछी का रूप जो आकाश में उड़ते हैं । अथवा किसी जंतु का रूप जो भूमि पर रेंगते हैं अथवा किसी मछली का रूप जो पृथिवी  
 १९ के नीचे पानियों में हैं । ऐसा न हो कि तू स्वर्ग की ओर आंखें उठावे और सूर्य और चन्द्रमा और तारों को आकाश की समस्त सेनाओं को देखे तब उन्हें पूजने को बगदाया जावे और उन की सेवा करे जिन्हें परमेश्वर तेरे ईश्वर ने  
 २० स्वर्ग के तले समस्त जातिगणों के लिये विभाग किया है । परन्तु परमेश्वर ने तुम्हें लिया और वह तुम्हें लोहे के भट्टे से अर्थात् मिस्र में से निकाल लाया जिसमें तुम उस की ओर से अधिकार के लोग होओगे जैसा कि आज के दिन ॥  
 २१ और परमेश्वर ने तुम्हारे कारण से मुझ पर रिसियाके किरिया खाई कि तू यरदन पार न जावेगा और उस अच्छे देश में जिस का परमेश्वर तेरा ईश्वर तुम्हें  
 २२ अधिकारी करता है न पहुंचेगा । परन्तु मैं अवश्य इसी देश में मरूंगा निश्चय मैं यरदन पार उतरने न पाऊंगा परन्तु तुम पार उतरोगे और इस अच्छी भूमि  
 २३ के अधिकारी होओगे । आप से चौकस रहो ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की बाचा को जो उस ने तुम से किई भूल जाओ और अपने लिये खोदी हुई मूर्ति अथवा किसी वस्तु का रूप बनाओ जिस के बनाने से परमेश्वर  
 २४ तेरे ईश्वर ने तुम्हें बर्जा है । क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर एक भस्मक अग्नि ज्वलित सर्वशक्तिमान है ॥

२५ जब तुम से लड़के और लड़कों के लड़के उत्पन्न होंगे और तुम अनेक दिन लें उस देश में रहोगे और बिगड़ जाओगे और खोदी हुई मूर्ति और किसी का रूप बनाओगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बुराई करके उस के कोप को भड़का  
 २६ ओगे । तो मैं आज के दिन तुम पर स्वर्ग और पृथिवी को साक्षी धरता हूँ कि तुम उस देश पर से जहां तुम यरदन पार जाते हो कि अधिकारी बनो शीघ्र नाश हो जाओगे तुम वहां अपने दिन को न बढाओगे परन्तु सर्वथा नष्ट हो  
 २७ जाओगे । और परमेश्वर तुम्हें जातिगणों में किन्न भिन्न करेगा और अन्यदेशियों

और उस समय मैं परमेश्वर के आगे गिड़गिड़ाया और बोला । कि हे प्रभु २३  
परमेश्वर तू ने अपनी बड़ाई और अपना सामर्थ्य हाथ अपने दास को दिखाने  
को आरंभ किया है क्योंकि स्वर्ग में अथवा पृथिवी में कौन सा सर्वशक्तिमान  
है जो तेरे कार्य और तेरी सामर्थ्य के समान कर सके । मैं तेरी बिनती करता २५  
हूँ कि मुझे पार जाके उस अच्छे देश को देखने दे जो परदन के पार है वह  
सुन्दर पर्वत और लुधनान । परन्तु परमेश्वर तुम्हारे कारण मुझ से क्रुद्ध हुआ २६  
और उस ने मेरी न सुनी और परमेश्वर ने मुझे कहा कि यही वस है इस विषय  
में फेर मुझ से मत कह । पिमगः की चौटी पर चढ़ जा और अपनी आंखें २७  
पश्चिम और उत्तर और दक्षिण और पूरव की ओर उठा और अपनी आंखों  
में देख क्योंकि तू इस परदन के पार न जायगा । पर यदृश्वर को आज्ञा कर २८  
और उसे जियाव दे और उसे दृढ़ कर क्योंकि यह इन लोगों के आगे पार  
जायगा और वही उन्हें उस देश का जो तू देखता है अधिकारी करेगा । सो २९  
हम तराई में फागूर के मनुसुख रहे ॥

चौथा पृष्ठ ।

सो अब हे हमराएल जो विधि और विचार मैं तुम्हें सिखाता हूँ सुनो और १  
उन पर ध्यान करो जिसमें तुम जीयो और उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे  
पितरों का ईश्वर तुम्हें देता है पहुंचके उस के अधिकारी होओ । तुम उस बात २  
में जो मैं तुम्हें कहता हूँ कुछ मत मिलाइयो और न उससे घटाइयो जिसमें तुम  
परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ पालन करो ।  
जो कुछ कि परमेश्वर ने अब्रलफगूर से किया तुम्हारी आंखें देखती हैं क्योंकि ३  
उन सब पुरुषों को जिन्होंने ने अब्रलफगूर का पीछा किया परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर  
ने तुम में से नष्ट किया । परन्तु तुम जो परमेश्वर अपने ईश्वर से सघलीन हो ४  
रहे हो सो तुम में से हर एक आज लो जीता है । देखो मैं ने विधि और विचार ५  
जिस रीति से परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे आज्ञा किई तुम्हें सिखलाये जिसमें तुम  
उस देश में जाके जिस के अधिकारी होओगे उन का पालन करो । सो उन्हें ६  
धारण करो और मानो क्योंकि जातिगणों के आगे यही तुम्हारी बुद्धि और समुझ  
है कि वे इन समस्त विधिन को सुनके कहेंगे कि निश्चय यह जाति बुद्धिमान  
और ज्ञानवान है । क्योंकि कौन जातिगण ऐसा बड़ा है जिस के पास ईश्वर ऐसा ७  
समीप होवे जैसा परमेश्वर हमारा ईश्वर सब में जो हम उससे मांगते हैं हमारे  
समीप है । और कौन ऐसी बड़ी जाति है जिस की विधि और विचार ऐसा धर्म ८  
का हो जैसी यह समस्त व्यवस्था जो मैं आज तुम्हारे आगे धरता हूँ । केवल ९  
आप से चौकस रह और अपने प्राण को यव से रख ऐसा न हो कि तू उन वस्तुन  
को जिन्हें तेरी आंखों ने देखा भूल जाय और ऐसा न हो कि वे वात जीवन भर  
में कभी तेरे अंतःकरणों से जाती रहें परन्तु तू उन्हें अपने घेदों और पोतों को  
मिखा । जिस दिन तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे हाथि में खड़ा हुआ और १०  
परमेश्वर ने मुझे कहा कि लोगों को मेरे आगे एकट्ठा कर और मैं उन्हें अपने  
बचन सुनाऊंगा जिसमें वे मेरा डर सीखें जब लो वे भूमि पर जीते रहें और वे

४५ धरी । ये हैं वे साक्षियां और विधि न और विचार जिन्हें मूसा ने इसराएल के  
 ४६ संतानों के लिये जब वे मिस्र से निकल आये उन से कहा । यरदन के इसी  
 पार बैतफगूर के सन्मुख की तराई में अमूरियों के राजा सैहून के देश में जो  
 हमखून में रहता था जिसे मूसा और इसराएल के संतानों ने मिस्र से निकलके  
 ४७ मारा । और वे उस के और बसन के राजा ऊज के राज्य के अधिकारी हुए  
 ये अमूरियों के दो राजा थे जो यरदन के इस पार सूर्य के उदय की ओर रहते  
 ४८ थे । अरआयर से लेके जो अरनून की नदी के तीरे पर है सिओन के पहाड़ लों  
 ४९ जो हरमून है । और समस्त चौगान इसी पार यरदन की पूरव ओर चौगान के  
 समुद्र लों जो पिसगा के नालों के नीचे है ॥

### पांचवां पर्व ।

- १ फिर मूसा ने समस्त इसराएल को बुलाके उन से कहा कि हे इसराएल  
 यह विधि न और विचार सुन रखो जिन्हें मैं आज तुम्हारे कानों में कहता  
 २ हूँ जिसमें तुम उन्हें सीखो और धारण करके मानो । परमेश्वर हमारे ईश्वर ने  
 ३ हेरिब में हम से एक वाचा वांधी । परमेश्वर ने यह वाचा हमारे पितरों से  
 ४ नहीं वांधी परन्तु हम से हम ही से जो सब आज के दिन जीते हैं । पर्वत पर  
 ५ आग के मध्य में से परमेश्वर ने तुम्हारे साथ आग्ने साम्ने वाचा किई । मैं ने  
 उस समय तुम्हारे और परमेश्वर के मध्य में खड़े होके परमेश्वर का वचन तुम्हें  
 सुनाया क्योंकि तुम आग के कारण से डर गये और पहाड़ पर न चढ़े ॥
- ६ मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र के देश से सेवकाई के घर से बाहर  
 ७ लाया । मेरे आगे तेरा कोई दूसरा ईश्वर न होवे ॥
- ८ अपने लिये खोदी हुई मूर्ति किसी का रूप जो ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे  
 ९ पृथिवी पर अथवा पृथिवी के नीचे पानियों में है मत बना । तू उन्हें दण्डवत  
 न करना और न उन की सेवा करना क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर उजलित  
 सर्वशक्तिमान हूँ जो पितरों के अपराध का प्रतिफल बालकों पर तीसरी चौथी  
 १० पीढ़ी लों जो मुझ से वैर रखते हैं देता हूँ । और सबखों पर जो मुझ से प्रेम  
 रखते हैं और मेरी आज्ञाओं का पालन करते हैं दया करता हूँ ॥
- ११ तू परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारण मत लेना क्योंकि जो उस का  
 नाम अकारण लेता है परमेश्वर उसे निर्दोष न ठहरावेगा ॥
- १२ विश्राम दिन को उसे पवित्र करने के लिये धारण कर जैसी परमेश्वर तेरे  
 १३ ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है । छः दिन लों परिश्रम करना और अपने समस्त  
 १४ कार्य करना । परन्तु सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का विश्राम है कोई कार्य  
 न करना न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरा बैल  
 न तेरा गदहा न तेरे ठोर न तेरा प्राहुन जो तेरे फाटकों के भीतर हैं जिसमें तेरा  
 १५ दास और तेरी दासी तेरी नाईं चैन करें । और चेत कर कि तू मिस्र के देश में  
 सेवक था और परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने सामर्थ्य हाथ और बढ़ाई हुई भुजा  
 से तुझे वहां से निकाल लाया इस लिये परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई  
 कि तू विश्राम दिन का पालन करे ॥

के मध्य में जिधर तुम्हें परमेश्वर ले जावेगा थोड़े से रह जाओगे । और वहाँ उन २२ देवतों की सेवा करोगे जो मनुष्यों के छाथों से बने हैं लकड़ी के और पत्थर के जो न देखते न सुनते न खाते न सूँघते हैं । पर वहाँ भी जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर २९ की खोज करेगा यदि तू अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूँढ़ेगा तो उसे पावेगा । जब तू कष्ट में होगा और ये सब अंत्य के दिनों में तुझ पर आ ३० पड़े यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उस का शब्द मानेगा । क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर दयालु सर्वशक्तिमान है वह तुझे न छोड़ेगा न तुझे ३१ नष्ट करेगा और तेरे पितरों की वाचा को जो उस ने उन से किरिया खाई है न भूलेगा ॥

क्योंकि अगले दिनों में जो तुझ में आगे हो गये उस दिन में जब आदम ३२ को ईश्वर ने पृथिवी पर उत्पन्न किया और स्वर्ग की एक अलंका से लेके हमरी लों, पूछो यदि ऐसी बड़ी घात कभी हुई अथवा उन के समान सुनी गई । कि कभी लोगों ने परमेश्वर का शब्द सुना था कि आग में से बाने जैसा तू ३३ ने सुना और जीता है । अथवा कभी ईश्वर ने इच्छा किई कि जाके एक ३४ जातिगण को जातिगण के मध्य में से परीक्षा से लक्षण से और आश्चर्य से और लड़ाई से और सामर्थ्य छाथ से और बढ़ाई हुई भुजों से और बड़े बड़े भय से अपने लिये लये जिस रीति से परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारी आंखों के सामने सिख में तुम्हारे लिये किया । यह सब तुझे दिखाया गया जिसमें तू ३५ जाने कि परमेश्वर वही ईश्वर है उसे कोई कोई नहीं है । उस ने अपना शब्द ३६ स्वर्ग में से तुझे सुनाया जिसमें तुझे सिखावे और पृथिवी पर उस ने तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई और तू ने उस के वचन आग में से सुने । और इस ३७ कारण कि उस ने तेरे पितरों से प्रेम किया उस ने उन के पीछे उन के वंश को इस कारण चुन लिया और अपनी बड़ी सामर्थ्य से तुझे सिख से अपनी दृष्टि के आगे निकाल लाया । जिसमें तेरे आगे से जातिगणों को जो तुझ में ३८ बड़े और अत्यंत हैं दूर करे और तुझे लावे और उन के देश का अधिकारी करे जैसा आज के दिन है ॥

सो आज के दिन जान और अपने मन में सोच कि परमेश्वर ऊपर स्वर्ग में ३९ और नीचे पृथिवी में वही ईश्वर है और कोई नहीं है । सो तू उस की विधि ४० और उस की आज्ञाओं को जो आज में तुझे आज्ञा करता हूँ पालन कर जिसमें तेरे और तेरे पीछे तेरे वंश के लिये भला होवे और तेरी वय उस देश पर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है बटु जावे ॥

तब मूसा ने सूर्य के उदय की ओर परदन के दसौ पार तीन वास्तियां अलग ४१ किई । जिसमें घातक जो अचानक अपने परीसी को घात करे और आगे ४२ से उससे चैर न रखता था और जब उन नगरों में से एक में भागके प्रवेश करे तो जीता रहे । अर्थात् उस वन में रविनियों के चौगान के देश में और जट्टियों ४३ में रामात जिलिअद में और मुनस्सी के जौलान वसन में ॥

और यह वह व्यवस्था है जिसे मूसा ने वहाँ इसराएल के संतानों के आगे ४४



कठवां पृष्ठ ।

- १ और ये वह आज्ञा थे विधि न और वे विचार हैं जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें सिखाने को मुझे आज्ञा किई जिसमें तुम उस देश में जिस के अधिकारी
- २ होने पार जाते हो उन पर चलो । जिसमें तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरके उस की सब विधि न और आज्ञाओं को जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ चेत में रखे
- ३ तू और तेरा पुत्र और तेरा पौत्र जीवन भर जिसमें तेरा जीवन बढ जावे । सो हे इसराएल सुन ले और उसे सोचके मान जिसमें तेरा भला होवे और तुम उस देश में अत्यंत बढ जाओ जिस में दूध और मधु बढता है जैसा परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने तुम्हें से प्रण किया है ॥
- ४ सुन ले हे इसराएल परमेश्वर हमारा ईश्वर एक परमेश्वर है । और अपने सारे मन से और अपने सारे जीव से और अपने सारे पराक्रम से परमेश्वर अपने ईश्वर
- ५ से हित रख । और ये बातें जो आज के दिन मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ तेरे अंतः-
- ६ कारण में रहें । और ये बातें अपने लहकों को यज्ञ से सिखा और अपने घर में
- ७ बैठते हुए और मार्ग में चलते हुए और लेटते और उठते उन की चर्चा कर । और उन्हें चिन्ह के लिये अपने हाथ पर बांध और वे तेरी आंखों के मध्य में टीकों
- ८ की नाईं होंगे । और उन्हें अपने घर के खंभों पर और अपने द्वारों पर लिख ।
- ९ और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुम्हें उस देश में ले जावेगा जिस के विषय में उस ने तेरे पितरों अविरोधाम बजहाक और यज्ञकृष से किरिया खाई
- १० है कि बड़ी और उत्तम वस्तियां जो तू ने नहीं बनाईं तुम्हें देवे । और घर समस्त उत्तमों से भरे हुए जिन्हें तू ने नहीं भरा और खादे खादाये कुष जो तू ने नहीं खादे दाख की वारी और जलपाई के पेड़ जो तू ने नहीं लगाये तुम्हें देगा और
- ११ तू खावेगा और संतुष्ट होगा । चौकस रह न हो कि तू परमेश्वर को भूल जावे
- १२ जो तुम्हें मिस्र के देश से दासों के घर से निकाल लाया । तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और उस की सेवा कीजियो और उस के नाम की किरिया
- १३ खाइयो । तुम आन आन देवतों के पीछे लोगों के देवतों के जो तुम्हारे आस-
- १४ पास हैं मत जाइयो । क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुम्हारे मध्य में है उजलित सर्वशक्तिमान है न हो कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के कोप की आग तुम्हें
- १५ पर भड़के और तुम्हें पृथिवी पर से मिटा डाले ॥
- १६ तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कीजियो जैसी तुम ने मस्सः में उस
- १७ की परीक्षा किई । तुम यज्ञ से परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को और उस की साक्षियों को और उस की विधि न को जो उस ने तुम्हें आज्ञा किई है स्मरण
- १८ करियो । और वही कीजियो जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक और भला है जिसमें तेरा भला होवे और तू उस सुधरी भूमि में जिस के विषय में परमेश्वर ने
- १९ तेरे पितरों से किरिया खाई है प्रवेश करके अधिकारी होवे । कि तुम्हारे आगे से तुम्हारे सारे बैरियों को दूर करे जैसा परमेश्वर ने कहा है ॥
- २० जब कल को तेरा बेटा तुम्हें से यह कहके पूछे कि ये कैसी साक्षियां और विधि न और विचार हैं जो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है ।

अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जैसी परमेश्वर तूरे ईश्वर ने आज्ञा किई १६ है जिसमें तेरा जीवन बढ जावे और उस देश में जिसे तेरा ईश्वर तुम्हें देता है तेरा भला होवे ॥

हत्या मत कर ॥

१७

और परस्त्रीगमन मत कर ॥

१८

और चोरी मत कर ॥

१९

और अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे ॥

२०

और अपने परोसी की पत्नी की इच्छा मत कर और अपने परोसी के घर की २१ उस के खेत की अथवा उस के दाम और उस की दासी की उस के टैल और उस के गंदहे का और अपने परोसी की किसी वस्तु की लालच मत कर ॥

परमेश्वर ने पहाड़ पर मेघ और गाढ़े अंधकार की आग में से तुम्हारी समस्त २२ मंडली से महा शब्द में बातें किई और उसमें अधिक कुछ न कहा और उस ने उन्हें पत्थर की दो पट्टियों पर लिखा और उन्हें सुम्हें सीपा । और यों हुआ २३ कि जब तुम ने अंधकार में से यह शब्द सुना क्योंकि पहाड़ आग से जल रहा था तब तुम और तुम्हारी गोष्टियों के प्रधान और तुम्हारे प्राचीन मेरे पास आये । और तुम ने कहा कि देख परमेश्वर हमारे ईश्वर ने अपना ऐश्वर्य २४ और अपनी महिमा दिखाई और हम ने आग के मध्य में से उस का शब्द सुना हम ने आज के दिन देखा कि ईश्वर मनुष्य में बाना करगा है और मनुष्य जीता है । सो अब हम किस लिये मरें कि यह ऐसी बड़ी आग हमें भस्म २५ करेगी यदि हम परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द अब के फिर सुनेंगे तो हम मर ही जावेंगे । क्योंकि समस्त शरीरों में से ऐसा कौन है जिस ने हमारे समान २६ आग के बीच में से जीवत ईश्वर का शब्द सुना और जीता रहा । तू आप २७ ही समीप जा और सब जा कुछ कि परमेश्वर हमारा ईश्वर कहे सुन और जा कुछ परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें कहे तू हम से कह और हम सुनके मानेंगे ॥

और जब तुम ने सुम्ह से कहा तब परमेश्वर ने तुम्हारी बातों का शब्द २८ सुना और परमेश्वर ने सुम्हें कहा कि मैं ने इन लोगों की बातों का शब्द जा उन्हें ने तुम्ह से कहीं सुना जो कुछ उन्हें ने कहा अच्छा कहा । हाय कि उन के २९ ऐसे मन होते कि वे सुम्ह से डरते और सदा मेरी समस्त आज्ञाओं का पालन करते जिसमें उन के लिये और उन के वंश के लिये सनातन लों भला होवे । जा ३० उन्हें कह कि अपने अपने तंत्र को फिर जाओ । परन्तु तू जा है यहां सुम्ह ३१ पास खड़ा रह और मैं समस्त आज्ञा और विधि और विचार तुम्हें बताऊंगा तू उन्हें सिखाना जिसमें वे उस देश में जिस का अधिकारी मैं ने उन्हें किया है उन पर चलें । सो तुम चौकस होके जैसी परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने आज्ञा ३२ किई है पालन करो दहिने बायें न मुड़ो । तुम उस सब मार्ग पर चलो जो ३३ परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई जिसमें तुम जीते रहो और तुम्हारा भला होवे और उस देश में जिस के तुम अधिकारी होओगे तुम्हारे जीवन बढे ॥

- १२ के दिन पालन करने को आज्ञा करता हूँ धारण करियो । सो यदि तुम इन विचारों को सुनोगे और धारण करके उन्हें मानोगे तो यों होगा कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस प्रण और दया को जिस के विषय में उस ने तेरे पितरों से किरिया खाई है तेरे लिये धारण करेगा । और वह तुझे प्यार करेगा और तुझे आशीस देगा और तुझे बढ़ावेगा और वह तेरे गर्भ के फल और तेरी भूमि के फल में तेरा अन्न और तेरी मदिरा और तेरे तेल और तेरे ढेर की बढ़ती और तेरे भुंड की भेड़ उस देश में जिस के विषय में उस ने देने को तेरे पितरों से किरिया
- १३ खाई है तेरे लिये धारण करेगा । और वह तुझे प्यार करेगा और तुझे आशीस देगा और तुझे बढ़ावेगा और वह तेरे गर्भ के फल और तेरी भूमि के फल में तेरा अन्न और तेरी मदिरा और तेरे तेल और तेरे ढेर की बढ़ती और तेरे भुंड की भेड़ उस देश में जिस के विषय में उस ने देने को तेरे पितरों से किरिया
- १४ खाई आशीस देगा । तू समस्त लोगों से अधिक आशीस पावेगा तुझ में और
- १५ तेरे ढेर में नर अथवा स्त्रीवर्ग बांझ न होंगे । और परमेश्वर तुझ में से समस्त रोग दूर करेगा और मिस्र के सब घुरे रोगों में से जिन्हें तू जानता है तुझ पर न लावेगा परन्तु उन घर डालेगा जो तुझ से बर रखते हैं ॥
- १६ और सब लोगों को जिन्हें परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे सौंप देता है तू खा जावेगा तेरी आंख उन पर दया न करेगी और तू उन के देवों की पूजा न करना
- १७ क्योंकि वह तेरे लिये फंदा है । यदि तू अपने मन में कहे कि ये जातिगण मुझ
- १८ से अधिक हैं मैं उन्हें क्योंकर निकाल सकूंगा । तू उन से मत डरना जो कुछ परमेश्वर तेरे ईश्वर ने फिरजन और समस्त मिस्र से किया अच्छी रीति से
- १९ स्मरण करना । वह बड़ी बड़ी परीक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा और वह चिन्ह और आश्चर्य और सामर्थ्य हाथ और फैलाई हुई भुजा जिन से परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे निकाल लाया जिन लोगों से तू डरता है परमेश्वर तेरा ईश्वर
- २० उन से वैसा ही करेगा । और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन पर बर्रों को भी भेजेगा
- २१ जब लों वे जो बचे हुए और तुम से क्षिपते हैं नाश हो जावें । तू उन से मत डरना क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ में है बड़ा और भयानक सर्वशक्ति-
- २२ मान । और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को तेरे आगे थोड़ा थोड़ा करके उखाड़ेगा तू एक बार उन्हें नाश न करना न होवे कि वनैले पशु तुझ पर
- २३ बढ़ जावें । परन्तु परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे आगे सौंप देगा और महानाश
- २४ से उन्हें नाश करेगा यहां लों कि वे नाश हो जावें । और वह उन के राजाओं को तेरे हाथ में सौंपेगा और तू उन के नाम को स्वर्ग के तले से मिटा देगा
- २५ कोई मनुष्य तेरे आगे ठहर न सकेगा जब लों तू उन्हें नाश न कर ले । तुम उन की खोदी हुई देवतों की मूर्तिन को आग से जला देना तू उन पर के रूपे सोने का लोभ न करना और उसे अपने लिये मत लेना न हो कि तू उन में ब्रह्म
- २६ जावे क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे वह घिनित है । और तू कोई घिनित अपने घर में मत लाइयो न हो कि तू उस की नाईं स्थापित हो जावे तू उन से सर्वथा घिन कीजियो और उसे सर्वथा तुच्छ जानियो क्योंकि वह स्थापित वस्तु है ।

आठवां पृष्ठ ।

- १ समस्त आज्ञा को जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूँ मानियो और उन्हें पालन कीजियो जिसमें तुम जीओ और बढ़ जाओ और उस देश में जाओ जिस के विषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है अधिकारी

तब अपने घेरे से कहियो कि हम मिस में फिरऊन के बंधुए थे तब परमेश्वर २१  
 सामर्थी हाथ से हमें मिस से निकाल लाया । और परमेश्वर ने चिन्त और २२  
 बड़े बड़े दुःख और पीड़ा के आश्चर्य मिस में फिरऊन पर और उस के सारे  
 घराने पर हमारी आंखों के आगे दिखाये । और वह हमें वहां से निकाल २३  
 लाया जिसमें हमें उस देश में पहुंचावे जिस के विषय में उस ने हमारे पितरों  
 से किरिया खाई हमें देवे । सो परमेश्वर ने हमें आज्ञा किई कि हम इन सब २४  
 विधिनु पर चलें और परमेश्वर अपने ईश्वर से अपने भले के लिये सर्वदा डरें  
 जिसमें वह हमें जीता रखे जैसा आज के दिन है । और यही हमारा धर्म २५  
 होगा यदि हम इस सब आज्ञा को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे जैसी उस ने  
 आज्ञा किई पालन करें ॥

### सातवां पर्व ।

जब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का अधिकारी होने जाता १  
 है तुझे पहुंचावे और तेरे आगे से बहुत जानिगणों को दूर करे अर्थात् हितियों २  
 को और जिरजाणियों को और असूरियों को और कनआनियों को और फरिजियों ३  
 और हवियों को और यूदसियों सात जातिगणों को जो तुझ से बड़े और सामर्थी ४  
 हैं । और जब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तुझे मोंप देवे तो तू उन्हें मारके ५  
 सर्वथा नाश करियो उन से कोई वाचा न बांधियो न उन पर दया कीजियो ।  
 न उन से विवाह करियो न उस के बेटे को अपनी बेटी दीजियो न अपने बेटे ६  
 के लिये उस की बेटी लीजियो । क्योंकि वे तेरे बेटे को मुझ से फिरावंगी ७  
 जिसमें वे आन देवतों की सेवा करें सो परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़केगा  
 और वह तुझे अचानक नाश कर देगा । परन्तु तुम उन से यह व्यवहार करियो ८  
 उन की बंदियों को छाड़ियो और उन की मूर्तियों को तोड़ियो और उन के ९  
 कुंजों को काट डालियो और उन की मोदी हुई मूर्तियों को आग से जला-  
 दियो । क्योंकि तू तो परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग है परमेश्वर १०  
 तेरे ईश्वर ने तुझे चुना कि तू सब लोगों में से जो पृथिवी पर हैं उस के निज  
 लोग होओ । परमेश्वर ने तुम से इस लिये प्रीति करके तुम्हें नहीं चुना कि ११  
 तुम सारे लोगों से गिनती में अधिक थे क्योंकि तुम समस्त लोगों से छोड़े थे ।  
 परन्तु इस कारण कि परमेश्वर तुम से प्रीति रखता था और इस कारण कि १२  
 उसे उस किरिया को पालन करना था जो उस ने तुम्हारे पितरों से खाई थी  
 परमेश्वर तुम्हें अपनी फैलाई हुई भुजा से निकाल लाया और दासों के घर से १३  
 मिस के राजा फिरऊन के हाथ से तुझे छुड़ाया । सो जान रखना कि परमेश्वर १४  
 तेरा ईश्वर वही ईश्वर वह विश्वस्त सर्वशक्तिमान है जो उन से जो उन्हें प्रेम १५  
 रखते हैं और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं सब पीढ़ी लों वाचा  
 और दया रखता है । और जो उसे घेर रखते हैं उन के मुंह पर पलटा देता है १६  
 कि उन्हें नाश करे जो उसे घेर रखता है वह उस के लिये विलंब न करेगा वह  
 उस के मुंह पर पलटा देगा ॥

सो तू उस आज्ञा और उन विधिनु और उन विचारों को जो मैं तुझे आज १७

२० उन जातिगणों के समान जिन्हें परमेश्वर तुम्हारे सन्मुख नष्ट करता है तुम भी वैसे ही नष्ट हो जाओगे इस कारण कि तुम ने अपने ईश्वर परमेश्वर के शब्द को न माना ॥

नवां पर्व ।

१ हे इसराएल सुन ले तुझे आज के दिन परदन पार जाना है जिसमें तू उन जातिगणों का जो तुझ से बड़े और पराक्रमी हैं और उन नगरों का जो बड़े और स्वर्ग लों घरे हैं अधिकारी होवे । वहाँ के लोग बड़े और लम्बे हैं जो अनाकियों के संतान हैं जिन्हें तू जानता है और कहते हुए सुना है कि कौन है जो अनाक के संतान के आगे ठहर सक्ता है । सो तू आज के दिन समझ ले कि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तेरे आगे आगे पार जाता है भस्मक अग्नि के तुल्य वह उन्हें नाश करेगा और वह उन्हें तेरे आगे ध्वस्त करेगा और तू उन्हें हाँक देगा और उन्हें शीघ्र नष्ट करेगा जैसा परमेश्वर ने तुझे कहा है । जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे आगे से दूर कर देवे तब अपने मन में मत कहना कि परमेश्वर ने मेरे धर्म के कारण मुझे इस देश का अधिकारी किया परन्तु परमेश्वर उन जातिगणों की दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे से हाँक देता है । तू अपने धर्म से और अपने मन की खराई से उन के देश का अधिकारी होने नहीं जाता परन्तु परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों की दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे से हाँक देता है जिसमें उस वचन को जो परमेश्वर ने किरिया खाके तेरे पितरों अबिरहाम इजहाक और यश्शकूब से कहा पूरा करे ॥

६ सो समझ ले कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे धर्म के कारण तुझे इस अच्छे देश का अधिकारी नहीं करता क्योंकि तू तो कठोर लोग है । चेत कर भूल न जा कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के कोप को वन में क्योंकर भड़काया जिस दिन से कि तू मिस्र के देश से बाहर निकला जब लों तुम इस स्थान में आये तू परमेश्वर से फिर गये हो । और तुम ने होरिव में परमेश्वर के क्रोध को भड़काया सो परमेश्वर तुम्हें नाश करने के लिये क्रुद्ध हुआ ॥

९ जब मैं दो पत्थर की पटियां लेने को पहाड़ पर चढ़ा अर्थात् नियम की पटियां जो परमेश्वर ने तुम से किया तब मैं चालीस रात दिन उस पहाड़ पर रहा मैं ने रोटी न खाई और न पानी पीया । तब परमेश्वर ने पत्थर की दो पटियां मुझे सौंपीं जिन पर परमेश्वर ने अपनी अंगुली से लिखा था उन सब बातों के समान जो परमेश्वर ने पहाड़ पर आग में से तुम्हारे एकट्टे होने के दिन तुम से कही थीं । और ऐसा हुआ कि चालीस दिन रात के पीछे परमेश्वर ने पत्थर की वे दोनों पटियां अर्थात् नियम की पटियां मुझे दिईं । और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उठ चल यहाँ से शीघ्र नीचे जा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू मिस्र से निकाल लाया आप को बिगाड़ दिया वे झटपट उस मार्ग से जो मैं ने उन्हें बताया फिर गये उन्होंने ने अपने लिये एक ठाली हुई मूर्ति बनाई ॥

१३ और परमेश्वर मुझे कहके बोला कि मैं ने इन लोगों को देखा है और देख १४ वे कठोर लोग हैं । मुझे छोड़ कि मैं उन्हें नाश करूं और उन का नाम स्वर्ग

होगा । और उस समस्त मार्ग को स्मरण करियो जिस में परमेश्वर तेरा ईश्वर २  
 बन में इन चालीस वरस से तुझे लिये फिरा जिसमें तुझे दीन करे और तुझे  
 परखे और तेरे मन की बात जांचे कि तू उस की आज्ञाओं को पालन करेगा ३  
 कि नहीं । और उस ने तुझे दीन किया और तुझे भूखा रक्खा और वह मनु ३  
 जिसे तू जानता न था और न तेरे पितर जानते थे तुझे खिलाया जिसमें तुझे  
 सिखावे कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीता रहता परन्तु हर एक बात ४  
 से जो परमेश्वर के मुंह से निकलती है जीता रहता है । इन चालीस वरस लों ४  
 तेरे कपड़े तुझ पर पुराने न हुए और तेरे पाँव न सूजे । और तू अपने मन में ५  
 सोचियो कि जिस रीति से मनुष्य अपने घेरे को ताड़ना करता है परमेश्वर तेरा  
 ईश्वर तुझे ताड़ता है । सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन ६  
 कर कि उस के मार्गों पर चल और उसे डर ॥

क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे एक उत्तम भूमि में पहुँचाता है जहाँ ७  
 पानी के नाले और सोते और भील तराई और पहाड़ों से बहती है । गेहूँ ८  
 और जव और दाख और गूलर और अनार का और जलपाई के पेड़ का  
 और मधु का देश । वह देश जहाँ तू दिन मछली से रोटी खाया जहाँ तेरे ९  
 लिये किसी बात की छटती न होगी जिस के पत्थर लोटे हैं और उस के पहाड़ों  
 से तू ताँवा खावे ॥

और जब तू खावे और तृप्त होवे तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर को उस १०  
 अच्छे देश के लिये जो उस ने तुझे दिया है धन्य मानियो । चौकस रह कि तू ११  
 परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल न जाय कि उस की आज्ञाओं और उस के विचार  
 और उस की विधि पर जो आज मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ न चले । ऐसा न १२  
 हो कि जब तू खाके तृप्त होवे और सुथरे सुथरे घर बनावे और उन में रहे ।  
 और तेरे लेहंडे और तेरे भुँड बड़ जावे और तेरी चाँदी और तेरा सोना बड़ १३  
 जावे और तेरा सब कुछ अधिक होवे । तब तेरा मन उभड़ जावे और तू परमेश्वर १४  
 अपने ईश्वर को जो तुझे मिस्र देश से और बंधुआई के घर से निकाल लाया  
 भूल जावे । जो उस बड़े भयानक बन में तुझे लिये फिरा जहाँ आश के सर्प १५  
 और बिच्छू थे और सूखा जहाँ पानी न था जिस ने तेरे लिये पथरी के चटान  
 से पानी निकाला । जिस ने बन में तुझे मनु खिलाया जिसे तेरे पितर न १६  
 जानते थे जिसमें तुम्हें दीन करे और तुम्हें परखे जिसमें अंत्य समय में तेरा भला  
 करे । और तू अपने मन में कह कि मैं ने अपने पराक्रम और भुजा के बल से १७  
 यह संपत्ति प्राप्त किई । परन्तु तू परमेश्वर अपने ईश्वर को स्मरण करियो १८  
 क्योंकि वही तुम्हें संपत्ति प्राप्त करने को बल देता है जिसमें वह अपनी दावा  
 को जो उस ने किरिया खाके तेरे पितरों से किया दृढ़ करे जैसा आज के  
 दिन है ॥

और यों होगा कि यदि तू कभी परमेश्वर अपने ईश्वर को भूलेगा और १९  
 और ही देवों का पीछा करेगा और उन की सेवा और दण्डवत करेगा तो  
 मैं आज के दिन तुम पर साक्षी देता हूँ कि तुम निश्चय नष्ट हो जाओगे ।



२ की एक मंजूषा बना । और मैं उन पाटियों पर वे बातें लिखूंगा जो अगली  
 ३ पाटियों पर थीं जिन्हें तू ने तोड़ डाला और तू उन्हें मंजूषा में रखियो । तब  
 मैं ने शमशाद लकड़ी की मंजूषा बनाई और पत्थर की दो पाटियां अगली  
 के समान चीरीं और उन दोनों पाटियों को अपने हाथ में लिये हुए पहाड़ पर  
 ४ चढ़ गया । और उस ने पाटियों पर अगले लिखे हुए के समान वे दस वचन लिखे  
 जो परमेश्वर ने पहाड़ पर आग के मध्य से सभा के दिन तुम्हें कहा था और पर-  
 ५ मेश्वर ने उन्हें मुझे दिया । तब मैं फिरा और पहाड़ पर से उतरा और उन पाटियों  
 को उस मंजूषा में जिसे मैं ने बनाया था रक्खा सो वे परमेश्वर की आज्ञा के  
 समान अब लों वहां हैं ॥

६ तब इसराएल के संतान ने यश्मकान के संतान विश्रात से मौसीरः को यात्रा  
 किई वहां हाइन मर गया और वही गाड़ा गया और उस के बेटे इलिअजर  
 ७ ने याजक के पद पर उस के स्थान में सेवा किई । वहां से उन्होंने ने जिदजाद  
 को यात्रा किई और जिदजाद से युतबतः को जो पानियों के नदियों का  
 देश है ॥

८ उस समय परमेश्वर ने लावी की गोष्ठी को इस लिये अलग किया कि परमेश्वर  
 के नियम की मंजूषा को उठावे और परमेश्वर के आगे खड़े होके उस की  
 सेवा करे और उस के नाम से आशीस देवे सो आज के दिन लों यों ही है ।  
 ९ इस लिये लावी का अंश और अधिकार उस के भाइयों के साथ नहीं परमेश्वर  
 उस का अधिकार है जैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उसे वचन दिया ॥

१० और मैं अगले दिनों के समान फिर चालीस रात दिन पहाड़ पर रहा और  
 उस समय भी परमेश्वर ने मेरी सुनी और परमेश्वर ने न चाहा कि तुझे विनाश  
 ११ करे । फिर परमेश्वर ने मुझे कहा कि उठ लोगों के आगे आगे चल और वे जावें  
 जिसते वे उस देश में बसे जो मैं ने उन के पितरों से किरिया खाके कहा था कि  
 उन्हें देऊंगा ॥

१२ और अब हे इसराएल परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ से क्या चाहता है केवल  
 यही कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरे और उस के सारे मार्गों पर चले और  
 उस्से प्रेम रखे और अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से परमेश्वर अपने  
 १३ ईश्वर की सेवा करे । परमेश्वर की आज्ञाओं को और उस की विधिन को  
 जो आज के दिन तेरी भलाई के लिये तुझे आज्ञा करता हूं पालन करे जिसते  
 १४ तेरी भलाई होवे । देख कि स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग और पृथिवी उस सब  
 १५ समेत जो उस में है परमेश्वर तेरे ईश्वर का है । केवल परमेश्वर ने चाहा कि  
 तेरे पितरों से प्रेम रखे इस लिये उन के पीछे उन के वंश को अर्थात् तुम्हें  
 १६ समस्त लोगों से अधिक चुन लिया जैसा कि आज है । सो अपने मन का खतनः  
 १७ करो और आगे को कटोर मत होओ । क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही  
 ईश्वरों का ईश्वर और प्रभुओं का प्रभु महाशक्तिमान ईश्वर और भयंकर है जो  
 १८ मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करता और अकार नहीं लेता । वह अनाथों और  
 विधवाओं का न्याय करता है और परदेशियों से प्रेम रखके उन्हें भोजन वस्त्र देता

के तले से मिठा डालूँ और मैं तुम्ह से संक जाति जा उससे दली और बहुत है  
 बनाजंगा । सो मैं फिरा और पहाड़ पर से उतरा और पर्वत आग से जल रहा १५  
 था और नियम की दोनों पटियां मेरे दोनों हाथ में थीं । तब मैं ने दृष्टि १६  
 किई और क्या देखता हूँ कि तुम ने परमेश्वर अपने ईश्वर का पाप किया था  
 तुम ने अपने लिये छाला हुआ बड़का बनाया तुम शीघ्र उस मार्ग से जो पर-  
 मेश्वर ने तुम्हें बताया फिर गये । तब मैं ने दोनों पटियां लेके अपने दोनों हाथों १७  
 से पटक दिईं और उन्हें तुम्हारी आंखों के आगे तोड़ डाला । और तुम्हारे १८  
 उन मय पापों के कारण जो तुम ने किये जब तुम ने परमेश्वर की दृष्टि में घुराई  
 करके उसे रिस दिलाई मैं आगे की नाईं चालीस रात दिन परमेश्वर के आगे  
 गिरा पड़ा रहा मैं ने रोटी न खाई न पानी पीया । क्योंकि मैं परमेश्वर के १९  
 कोप और क्रोध से डरा कि वह तुम्हें नाश करने के लिये कोपित था परन्तु  
 परमेश्वर ने उस समय में भी मेरी सुनी । तब हारन को नाश करने के लिये पर- २०  
 मेश्वर का क्रोध भड़का और मैं ने उस समय में हारन के लिये भी प्रार्थना  
 किई । और मैं ने तुम्हारे पाप का अर्थात् उस बड़के को जो तुम ने बनाया २१  
 था लिया और उसे आग में जलाया फिर उसे कूटा और धुक्नी किया ऐसा कि  
 वह धूल सा हो गया और मैं ने उस धूल को नाली में जो पर्यंत से बहती थी  
 डाल दिया ॥

और तबअरः मैं और सस्मः मैं और कयरातुतायः मैं तुम ने परमेश्वर को २२  
 कोपित किया । और उमी छत्र से उस समय में जब परमेश्वर ने तुम्हें कादिसवरनीय २३  
 से यह कहके भेजा कि चढ़ जाओ और उस देश के जो मैं ने तुम्हें दिया है अधि-  
 कारी होओ तब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा से फिर गये और तुम उस  
 पर विश्वास न लाये और उस के शब्द का न सुना । जिस दिन से मैं ने तुम्हें २४  
 जाना तुम परमेश्वर से फिर गये हो ॥

सो मैं परमेश्वर के आगे चालीस रात दिन पड़ा रहा क्योंकि परमेश्वर २५  
 ने कहा था कि मैं इन्तें नाश करूँगा । सो मैं ने परमेश्वर की धिनती किई २६  
 और कहा कि हे प्रभु परमेश्वर अपने लोग को और अपने अधिकार को जिन्हें  
 तू अपने महत्त्व से बड़ा लाया तू अपनी भुजा के पराक्रम से जिस से निकाल  
 लाया नाश न कर । अपने सेवकों अविरहाम इजडाक और यश्नकूत्र को स्मरण २७  
 कर इस लोग की ठिठई और उस की दुष्टता और पापों पर दृष्टि न कर । न २८  
 होवे कि वह देश जहां से तू हमें निकाल लाया कहे कि परमेश्वर सामर्थ्य न था  
 कि उन्हें उस देश में जिस के विषय में उन से वाचा किई पहुंचावे और इस  
 लिये कि वह उन से डाह रखता था वह उन्हें निकाल ले गया कि उन्हें वन  
 में नाश करे । तथापि ये तेरे लोग और तेरे अधिकार हैं जिन्हें तू अपने बड़े २९  
 पराक्रम और अपनी बड़ाई हुई भुजा से निकाल लाया है ॥

दसवां पर्व ।

उस समय परमेश्वर ने मुझे कहा कि अपने लिये पत्थर की दो पटियां १  
 अगली के समान चौर और पहाड़ पर मुझ पास आ और अपने लिये लकड़ी

- १४ अपने समस्त मन से और अपने सारे प्राण से उस की सेवा करो । तो मैं तुम्हारी भूमि में समय पर मेह बरसाऊंगा आरंभ के मेह और अंत के मेह मैं तुम्हें देऊंगा जिसमें तू अपना अन्न और अपना दाखरत और अपना तेल एकट्ठा करे ।
- १५ और तेरे खेत में तेरे पशु के लिये घास उगाऊंगा जिसमें तू खाय और तृप्त होवे ।
- १६ तुम आप से चौकस रहो जिसमें तुम्हारे मन कल न खावे और तुम फिर
- १७ जाओ अरु और देवतों की सेवा करो और उन की दण्डवत करो । और परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़के और वह स्वर्ग को बंद करे जिसमें मेह न बरसे और भूमि अपना फल न देवे और तुम उस अच्छी भूमि से जो परमेश्वर तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ ॥
- १८ सो मेरी इन बातों को अपने अंतःकरण में और अपने मन में रख छोड़ो और उन्हें चिन्ह के लिये अपनी बांह भुजा पर बांधो जिसमें वे तुम्हारी दोनों
- १९ आंखों के मध्य में टीके की नाई रहें । और तुम उन्हें अपने घर में बैठे हुए और मार्ग चलते हुए और लेटते हुए और उठने के समय अपने लड़कों को सिखाओ ।
- २० और तू उन्हें अपने घर के फाटकों पर और अपने द्वारों पर लिख । जिसमें तुम्हारे और तुम्हारे वंश के दिन जैसा कि स्वर्ग के दिन पृथिवी पर बढ़ते हैं वैसे ही तुम्हारे दिन उस देश में जिस के कारण परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हें देऊंगा बढ़ जाय ॥
- २१ क्योंकि यदि तुम इस सब आज्ञा को जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ पालन करोगे और उसे मानोगे कि परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रखे कि उस के
- २२ समस्त मार्गों पर चलो और उसे लवलीन रहो । तब परमेश्वर इन सब जाति-गणों को तुम्हारे आगे से हांक देगा और तुम जातिगणों के जो बड़े बली और
- २३ तुम से अधिक सामर्थी हैं अधिकारी होओगे । जिस जिस स्थान पर तुम्हारे प्रांवां का तलवा पड़ेगा सो सो तुम्हारा हो जावेगा वन और लुखनान से नदी
- २४ से फुरात नदी से लेके अत्यंत समुद्र लों तुम्हारा सिधाना होगा । किसी की सामर्थ्य न होगी कि तुम्हारे आगे ठहर सके परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा भय और तुम्हारा डर समस्त देश में जिस पर तुम्हारा पैर पड़ेगा डालेगा जैसा उस ने तुम से कहा है ॥
- २५ देखो मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीस और साप धर देता हूँ । आशीस यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें देता हूँ
- २६ पालन करोगे । और साप यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन न करोगे परन्तु उस मार्ग से फिरके जो आज मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ अरु और देवतों का पीछा करोगे जिन्हें तुम ने नहीं जाना ॥
- २७ और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुम्हें उस देश में जहां तू अधिकारी होने को जाता है पहुंचावे तो तू आशीस को जरिजीम के पहाड़
- २८ पर रखियो और साप को रेबाल के पहाड़ पर । क्या वे यरदन पार नहीं उसी मार्ग में जिधर सूर्य अस्त होता है कनआनी के देश में जो जिलजाल के
- २९ समुद्र चोमान में रहते हैं और चोमानों के लग है । क्योंकि तुम यरदन पार जाते

है । सो तुम भी परदेशी को प्यार करो क्योंकि तुम मिस्र के देश में परदेशी १९  
थे । परमेश्वर अपने ईश्वर से डरता रह उस की सेवा कर और उसी से लवलीन २०  
रह और उसी के नाम की किरिया खा । वही तेरी स्तुति और वही तेरा ईश्वर २१  
है जिस ने तेरे लिये ऐसे ऐसे बड़े और भयंकर कार्य किये जिन्हें तू ने अपनी  
आंखों से देखा । तेरे पितर सतर जन लेके मिस्र में उतरे और अब परमेश्वर तेरे २२  
ईश्वर ने आकाश के तारों के समान तुझे बढ़ाया ॥

ग्यारहवां पर्व ।

सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रख और उस की व्यवस्था और उस की १  
विधि और उस के न्याय और उस की आज्ञा सदा पालन कर ।

और तुम आज के दिन जान लेओ क्योंकि मैं तुम्हारे वंश से नहीं बोलता २  
जिन्होंने ने तुम्हारे ईश्वर की ताड़ना और उस की महिमा और उस के हाथ का  
बल और उस की बढ़ाई हुई भुजा न जाना है न देखा है । और उस के ३  
आश्चर्य और उस के कार्य जो उस ने मिस्र के मध्य में मिस्र के राजा फिरजन  
से और उस के समस्त देश से किया । और जो कुछ उस ने मिस्र की सेना के ४  
साथ उन के घोड़ों और उन की गाड़ियों के साथ किस रीति से उस ने लाल  
समुद्र का पानी उन पर उभाड़ा जय उन्हें ने तुम्हारा पीछा किया सो परमेश्वर  
ने उन्हें नष्ट किया आज के दिन लो । और जो कुछ उस ने अरण्य में जय लो ५  
कि तुम इस स्थान लो पहुंचे तुम्हारे साथ किया । और जो उस ने दातन और ६  
अविराम के साथ किया जो खनि के बेटे इलियज के बेटे थे किस रीति से  
पृथिवी ने अपना मुँह खोला और उन्हें और उन के घरानों और उन के तंबुओं  
को और समस्त जीवधारियों को जो उन के वंश में थे समस्त इसराएल के मध्य  
में निगल गई । क्योंकि तुम्हारी आंखों ने परमेश्वर के समस्त महान कार्य जो ७  
उस ने किये देखे । सो तुम उस समस्त आज्ञा को जो आज मैं तुम्हें कहता हूँ ८  
पालन करो जिससे तुम बली होओ और जाके उस देश के जिस के अधिकारी  
होने के लिये पार जाते हो अधिकारी होओ । और जिससे तुम उस देश पर ९  
अपना जीवन बढ़ाओ जिस के कारण परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से किरिया गवाके  
कहा कि मैं उन्हें और उन के वंश को देखता वह देश जिस में दूध और मधु  
बढ़ता है ॥

क्योंकि वह देश जिस का तू अधिकारी होने जाता है मिस्र के समान १०  
नहीं जहां से तुम निकल आये जहां तू अपना विहन बोता था और उसे अपनी  
तरकारी की धारी की नाईं पांव से पानी सींचता था । परन्तु वह भूमि जिस के ११  
अधिकारी होने को जाते हो पहाड़ों और तराइयों का देश है जो आकाश के  
मेघ से सींचा जाता है । यह वह देश है जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चाहता है १२  
और वरस के आरंभ से लेके वरस के अंत लो सदा परमेश्वर तेरे ईश्वर की  
आंखें उस पर लगी हैं ॥

और यों होगा कि यदि तुम ध्यान से मेरी आज्ञाओं को सुनोगे जो मैं तुम्हें १३  
आज के दिन आज्ञा करता हूँ कि परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम करो कि

- १५ और जिस वस्तु को तेरा मन चाहे मार खाइयो परमेश्वर अपने ईश्वर की आशीस के समान जो उस ने तेरे समस्त फाटकों में तुझे दिया है चाहे पावन हो चाहे अपावन हर एक उसे खावे जैसे हरिण और वारहसिंगा । केवल लोहू मत खाइयो परन्तु उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो ॥
- १७ अपना अनाज और दाखरस और तेल का दसवां अंश और अपने ठोर अथवा अपने भुंड के पहिलौठे और अपनी समस्त मानी हुई मनौती और अपनी बांछा की भेंट और अपने हाथ के हिलाने की भेंट अपने फाटकों में मत खाइयो ।
- १८ परन्तु तुझ पर और तेरे बेटा बेटी और तेरे दास और तेरी दासी पर और लावी पर जो तेरे फाटकों में हैं उचित है कि उन वस्तुन को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा खाइयो और तू पर-
- १९ मेश्वर अपने ईश्वर के आगे अपने सब कामों में आनन्द करियो । आप से चौकस रहियो जब लें तू जीता रहे लावी को मत त्यागियो ॥
- २० जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे सिवानों को बढ़ावे जैसी उस ने तुझ से प्रतिज्ञा किई है और तू कहे कि मैं मांस खाऊंगा इस कारण कि तेरा जीव मांस खाने का अभिलाषी है तो तू मांस और हर एक वस्तु जिसे तेरा जीव चाहे खाइयो ।
- २१ यदि वह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपना नाम वहां रखने को चुन लिया तुझ से बहुत दूर होवे तो तू अपने ठोर और अपने भुंड में से जो परमेश्वर ने तुझे दिये हैं जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है मारियो और अपने फाटकों में जो
- २२ कुछ तेरा जीव चाहे सो खाइयो । जैसा कि हरिण और वारहसिंगे खाये जाते हैं
- २३ तू उन्हें खाइयो पवित्र और अपवित्र उन्हें समान खावे । केवल चौकस होके लोहू मत खाइयो क्योंकि लोहू जीव है और तुझे उचित नहीं कि मांस के साथ
- २४ जीव खावे । तू उसे मत खाइयो उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो ।
- २५ तू उसे मत खाइयो जिस में तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भला होवे जब कि तू वह जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक है करे ॥
- २६ परन्तु तू अपने पवित्र वस्तुन को और अपनी मनौतियों को उस स्थान में
- २७ जिसे ईश्वर चुनेगा ले जाइयो । और तू अपने बलिदान की भेंट मांस और लोहू परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी पर चढ़ाइयो और तेरे बलिदानों का लोहू परमेश्वर तेरे ईश्वर की बेदी पर ढाला जावेगा और तू मांस को खाइयो ॥
- २८ चौकस हो और इन सब बातों को सोचो जो मैं तुझे आज्ञा करता हूं सुनो जिस में तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का सनातन लें भला होवे जब कि तुम वह जो भला और ठीक है परमेश्वर अपने ईश्वर की दृष्टि में करो ॥
- २९ जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को तेरे आगे से काट डाले जहां तू जाता है कि अधिकारी बने और तू उन का अधिकारी होवे और उन के
- ३० देश में बास करे । अपने से चौकस रहियो न हो कि जब वे तेरे आगे से बिनाश होवें तू उन के पीछे बग्न जावे और न हो कि तू उन के देवतों को खोज करके कहे कि इन जातिगणों ने अपने देवतों की सेवा किस रीति में
- ३१ किई थी मैं भी वैसी करूंगा । तू परमेश्वर अपने ईश्वर से ऐसा मत कीजियो

हो जिसमें उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अधिकारी होओ और तुम उस के अधिकारी होगे और उस में बसोगे । सो तुम उन समस्त ३० विधि और विचारों को जो आज मैं तुम्हारे आगे धरता हूँ सोच रखियो ॥

चारहवां पर्व ।

ये वे विधि और विचार हैं जिन्हें तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे १ पितरों का ईश्वर तुम्हें अधिकार में देता है जब लो तुम पृथिवी पर जीते रहो उन्हें सोचके मानियो ॥

तुम उन स्थानों को सर्वथा नाश कीजियो जहां उन जातिगणों ने जिन २ के तुम अधिकारी होओगे अपने देवताओं की सेवा की है कंचे पहाड़ों पर और टीलों पर और हर एक घरे पेड़ तने । और उन की यत्नयंत्रियों को ढा दीजियो ३ और उन के खंभों को तोड़ियो और उन के कुंजों को आग से जलाइयो और उन के देवताओं की खोदी हुई मूर्तियों को ढा दीजियो और उन के नाम को उस स्थान से मिटा दीजियो ॥

तुम ऐसा कुछ परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मत कीजियो । परन्तु वह स्थान ४ जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारी समस्त गोष्ठियों में से चुनेगा कि वहां अपना नाम रखे और उसी के निदान को ढूंढे और तुम वहीं आओ । और ६ वहीं अपने बलिदान की भेंट और अपने बलि और अपने अंग और अपने हाथ की दिलाई हुई भेंट और अपनी मनौतियां और अपनी बांछा की भेंट और अपने डार और अपने भुंड के पटिलौठे लाइयो । और वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे ७ खाओगे और अपने मारे घराने समेत अपने हाथ के सब कामों में जिन में परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें आशीर्वाद दिया आनन्द करोगे ॥

तुम ऐसे कार्य जैसे हम यहां करते हैं हर एक जो अपनी अपनी दृष्टि में ठीक है ८ वहां मत कीजियो । क्योंकि तुम उन विश्वास और अधिकार को जो परमेश्वर तुम्हारा ९ ईश्वर तुम्हें देता है अब लो नहीं पहुंचे । परन्तु जब तुम यरदन पार जाओ और उस १० देश में बसो जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा अधिकार कर देता है और तुम्हें तुम्हारे सब शत्रुन से जो चारों ओर हैं चैन देगा ऐसा कि तुम चैन से बसो । तब वहां ११ एक स्थान होगा जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर चुनके अपना नाम वहां रखे तुम सब कुछ जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ वहीं ले जाइयो अर्थात् अपनी बलि-दान की भेंट और अपने बलि अपने अंग और अपने हाथ की दिलाई हुई भेंट और अपनी बांछा की मनौती जो तुम परमेश्वर के लिये मानते हो । और १२ अपने बेटों और अपनी बेटियों और अपने दासों और अपनी दामियों और उस लावी सहित जो तुम्हारे फाटकों में हो क्योंकि उस का अंग और अधिकार तुम्हारे साथ नहीं परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनन्द कीजियो ॥

अपने से सुचेत रहो और अपने बलिदान की भेंट हर एक स्थान पर जहां १३ संयोग मिले मत चढ़ाइयो । परन्तु उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरी गोष्ठियों में १४ से चुन लेगा वहां तू अपने बलिदान की भेंट चढ़ाइयो और वहां सब कुछ जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ वही कीजियो ॥



और जो कुछ उस में है और वहां के ठोर को खड्ग की धार से सर्वथा नाश कीजियो । और तू वहां की सारी लूट को वहां की सड़क के मध्य में एकट्ठी कीजियो और उस नगर को और वहां की सारी लूट को परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये आग से जला दीजियो और वह सनातन लों एक ठोर रहेगा फिर बनाया न जावेगा । और उस स्थापित वस्तु में से कुछ तेरे हाथ में सटी न रहे जिसते परमेश्वर अपने क्रोध की जलजलाहट से फिर जावे और तुझ पर अनुग्रह करे और तुझ पर दयाल होवे और तुझे बढावे जैसा कि उस ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है । जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुने कि उस की सारी आज्ञाओं को जो आज मैं तुझे आज्ञा करता हूं जो परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे ठीक है उसे पालन करे ॥

### चौदहवां पृष्ठ ।

- १ तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के पुत्र हो तुम मृतक के लिये अपने को काट-कूट न करियो न अपने माथे को सुड़ाइयो ॥
- २ क्योंकि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग हो और परमेश्वर ने समस्त जातिगणों में से जो पृथिवी पर हैं तुम्हें चुन लिया कि अपने निज लोग बनावे । तू किसी धिनित वस्तु को मत खाइयो । इन पशुन को खाइयो ३ बैल भेड़ बकरी । और हरिण और हरिणी कंदली और बनैली बकरी और ६ गवय और बनैला बैल और अरना । और हर एक चौपाया जिस के खुर चिरे हुए हों और उस के खुर में बिभाग हो और पागुर करता हो तुम उसे खाइयो । ७ तथापि उन में से जो पागुर करते हैं अथवा उन के खुर चिरे हुए हैं जैसे जंट और खरहा और शफन तुम इन्हें मत खाइयो इस लिये कि ये पागुर नहीं करते ८ परन्तु उन के खुर चिरे हुए हैं सो ये तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं । और सूअर इस कारण कि उस के खुर चिरे हुए हैं तथापि पागुर नहीं करता वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है तुम उन का मांस न खाइयो न उन की लोथों को कुड़ियो ॥
- ९ सब में से जो पानियों में रहते हैं इन्हें खाइयो जिन के पंख और क्लिके हों । और १० जिस किसी के पंख और क्लिके न हों तुम इन्हें न खाइयो वह तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥
- ११ समस्त पावन पक्षी को खाइयो । परन्तु उन में इन्हें न खाइयो गिद्ध और १२ हाड़गिल और कुरर । और शंकरचील्ह और चील्ह और भांति भांति के गिद्ध । १३ और भांति भांति के कब्बे । और पेंचा और लक्ष्मीपेंचा और कोइल और भांति १४ भांति के सिकरा । और कोटा पेंचा और उल्लू और राजहंस । और गरुड़ १५ और बासा और मकरंग । और सारस और भांति भांति के बगुले और टिटिहरी १६ और चमगूदर । और हर एक रेंगवैया जो उड़ता है तुम्हारे लिये अशुद्ध है वे २० खाये न जावें । समस्त पवित्र पक्षी खाइयो ॥
- २१ जो कुछ आप से मर जावे उसे मत खाइयो तू उसे किसी परदेशी को जो तेरे फाटकों में है खाने को दीजियो अथवा किसी विदेशी के हाथ बेच डालियो क्योंकि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का पवित्र लोग है तू मेम्न को उस की माता के दूध में मत डसिना ॥

क्योंकि उन्होंने ने हर एक कार्य जिसे परमेश्वर को धिन है जिसे वह वैर रखता है अपने देवताओं के लिये किया यहां लों कि अपने वेटी और वेटीयों को भी अपने देवताओं के लिये आग में जला दिया । तुम हर एक बात को जो ३२ में तुम्हें कहता हूं सोचके मानियो उस में न बढ़ाइयो न उस में घटाइयो ॥

तेरहवां पर्व ।

यदि तेरे मध्य में कोई आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी खड़ा होवे और तुम्हें १  
कोई लक्षण अथवा आश्चर्य दिखावे । और वह लक्षण अथवा आश्चर्य जो उस २  
ने तुम्हें से कहा था पूरा होवे और वह तुम्हें कहे कि आओ हम आन देवताओं  
का पीछा करें जिन्हें तू ने नहीं जाना और उन की सेवा करें । तो कधी उस ३  
आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी के वचन मत सुनियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा  
ईश्वर तुम्हें परम्बता है जिसमें देखे कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने ४  
सारे जीव से और अपने सारे प्राण से मिय रखत हो कि नहीं । तुम पर-  
मेश्वर अपने ईश्वर का पीछा करो और उसे डरो और उस की आज्ञाओं को  
धारण करो और उस का शब्द मानो और तुम उन की सेवा करो और उसी  
से लवलीन रहो । और वह आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी घात किया ५  
जावेगा क्योंकि उस ने तुम्हें परमेश्वर अपने ईश्वर से फिरावने की घात  
कही जो तुम्हें-मिस्र देश से बाहर निकाल लाया और तुम्हें बंधुआई के  
घर से छुड़ाया जिसमें तुम्हें उस मार्ग में से जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें आछा  
किई है बगदा देवे सो तुम्हें उचिता है कि तू उस बुराई को अपने मध्य में  
निकाल डाले ॥

यदि तेरा सगा भाई अथवा तेरा बेटा अथवा तेरी बेटा अथवा तेरी गोद ६  
की पत्नी अथवा तेरा मित्र जो तेरे प्राण के समान होवे तुम्हें चुपके से फुसलावे  
और कहे कि चल दूसरे देवताओं की सेवा करें जिन्हें तू और तेरे पितर नहीं  
जानते हैं । उन लोगों के देवताओं में से जो तुम्हारे आमपान तेरे चारों ओर हैं ७  
अथवा तुम्हें से दूर भूमि के इस सृष्ट से उन सृष्ट लों । तू उस की बात न ८  
मानियो न उस की सुनियो न उस पर दया की दृष्टि कीजियो और तू उसे मत  
छोड़ न उस को छिपा । परन्तु उसे अवश्य मार डालियो उस के वधन में पहिले ९  
तेरा हाथ उस पर पड़े और पीछे सब लोगों के हाथ । और तू उस पर पत्थरवाह १०  
कीजियो जिसमें वह मर जावे क्योंकि उस ने चाहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर से  
तुम्हें भटकावे जो तुम्हें मिस्र के देश बंधुआई के घर से निकाल लाया । और सारे ११  
इसराएल सुनके डरेगे और तेरे मध्य में फिर ऐसी दुष्टता न करेगे ॥

यदि तू उन नगरों में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें बसने के लिये दिये हैं १२  
यह कहते सुने । कि कितने दुष्ट लोग तुम्हें से निकल गये और अपने नगर के १३  
वासियों को यों कहके भटकाया कि आओ चलें और आन देवताओं की सेवा करें  
जिन्हें तुम ने नहीं जाना है । सो खोजियो और यज्ञ से पूछियो और देख यदि १४  
वह वचन सत्य होवे और निःसंदेह कि ऐसा घिनित कार्य तेरे मध्य में किया  
गया । तो उस नगर के वासियों को खड्ग की धार से निश्चय मार डालियो उसे १५

तेरी आंख तेरे कंगाल भाई की ओर बुरी होवे और तू उसे कुछ न देवे और  
 १० वह तुझ पर परमेश्वर के आगे विलाप करे और तेरे लिये पाप होवे । अवश्य  
 उसे दीजियो और जब तू उसे देवे तो तेरा मन उदास न होवे क्योंकि इस  
 कारण परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे समस्त कार्यों में जिन में तू हाथ लगावे बढ़ती  
 ११ देगा । क्योंकि देश में से कंगाल न मिलेंगे इस लिये मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ  
 कि अपने भाई के लिये जो तेरे सम्मुख और अपने कंगाल और अपने दरिद्र के  
 लिये जो तेरे देश में है अपना हाथ खोलियो ॥

१२ यदि तेरा इबरानी भाई पुरुष हो अथवा स्त्री तेरे हाथ बेचा जावे और  
 १३ छः बरस लों तेरी सेवा करे तब सातवें बरस संत से उसे जाने दीजियो । और  
 १४ जब तू उसे अपने पास से जाने देवे तो उसे छोड़े हाथ मत जाने दीजियो । अपने  
 भुंड और अपने खत्ते और अपने कोल्हू में से उस बढ़ती में से जो परमेश्वर तेरे  
 १५ ईश्वर ने तुम्हें दीई है उसे मन खोलके दीजियो । और स्मरण कीजियो कि मिस्र  
 देश में तू बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें छुड़ाया इस लिये आज  
 मैं तुम्हें यह आज्ञा करता हूँ ॥

१६ और यदि वह तुम्हें कहे कि मैं तुझ पास से न जाऊंगा इस कारण कि वह  
 १७ तुझ से और तेरे घर से प्रीति रखता है क्योंकि वह तेरे संग कुशल से है । तो  
 तू एक सुतारी लेके अपने द्वार पर उस का कान छेदियो जिसमें वह सदा को  
 १८ तेरा सेवक हो और अपनी दासी से भी तू ऐसा ही करियो । जब तू उसे छोड़  
 देवे तो तुम्हें कठिन न समझ पड़े क्योंकि उस ने दो बनिहारों के तुल्य छः  
 बरस लों तेरी सेवा किई सो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे घर एक कार्य में तुम्हें  
 आशीस देगा ॥

१९ अपने ठोर के और अपने भुंड के सारे पहिलौठे नर परमेश्वर अपने ईश्वर  
 के लिये पवित्र करियो तू अपने बैलों के पहिलौठों से कुछ कार्य मत लीजियो  
 २० और अपनी भेड़ के पहिलौठों को मत कतरता । परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे  
 बरस बरस उस स्थान में जो परमेश्वर चुनेगा अपने घराने सहित खाइयो ॥

२१ परन्तु यदि उस में कोई खोट होवे लंगड़ा अथवा अंधा अथवा कोई भारी  
 खोट होवे तो उसे परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान मत करियो ।  
 २२ तुम उसे अपने द्वारों पर खाइयो पवित्र हो अथवा अपवित्र दोनों समान जैसे  
 २३ हरिण और बारहसिंगा । केवल उस का लोहू मत खाइयो तू उसे पानी की  
 नाईं भूमि पर ढाल दीजियो ॥

सोलहवां पर्व ।

१ आबीब मास का पालन करियो और परमेश्वर अपने ईश्वर के फसह का  
 पर्व मानियो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर आबीब के मास में रात को तुम्हें मिस्र  
 २ से निकाल लाया । और उस स्थान में जिसे परमेश्वर अपना नाम वहां स्थापन  
 करने के लिये चुनेगा अपने परमेश्वर ईश्वर के लिये तू अपने ठोर में से फसह  
 ३ के पर्व के लिये बलि करियो । तू उस के साथ खमीरी रोटी मत खाना सात  
 दिन उस के साथ अखमीरी रोटी अर्थात् कष्ट की रोटी खाइयो क्योंकि तू मिस्र

वरस वरस जो बीज तेरे खेतों में उगे तू निश्चय उस का अंश दिया कर । २२  
तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे वह अपने नाम के लिये २३  
चुनेगा अपने अन्न का अपनी मदिरा का और अपने तेल का और अपने ठार और  
अपने भुंड के पहिलौठों के अंश को खाइये जिसमें तू सर्वदा परमेश्वर अपने  
ईश्वर से हरना सीखे ॥

और यदि मार्ग तेरे लिये अति दूर होवे यहाँ लो कि तू उसे न ले जा सके २४  
यदि वह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना जिसमें अपना नाम वहाँ  
स्थिर करे बहुत दूर होवे तो जय परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे आशीस देवे ।  
तब तू उन्हें बैचके उन की रोकड़ अपने हाथ में लेके उस स्थान को जा जो २५  
परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना है । और उस रोकड़ से जिस वस्तु को तेरा मन २६  
चाहे मोल ले गाय बैल अथवा भेड़ अथवा दाखरस अथवा मद्य अथवा जो  
वस्तु तेरा जीव चाहे तू और तेरा घराना परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खावे  
और आनन्द करे । और जो लायी तेरे फाटकों में है उसे त्याग मत करिये २७  
क्योंकि उस का भाग और अधिकार तेरे साथ नहीं है ॥

तीन वरस के पीछे अपनी बड़ती का समस्त दसवां भाग उमी वरस २८  
लाइये और अपने फाटकों के भीतर धरियो । और इस कारण कि लायी २९  
तेरे संग भाग और अंश नहीं रखता है और परदेशी और अनाथ और विधवा  
जो तेरे फाटकों में हैं आवे और ग्रावे और नृप होवे जिसमें परमेश्वर तेरा  
ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्यों में जो तू करता है आशीस देवे ।

पंदरहवां पृष्ठ ।

सात वरसों के पीछे तू कुटकारा ठहराइये । और कुटकारे की रीति ३  
यह है कि हर एक धनिक जो अपने परामी को अग्न देता है सो उसे छोड़  
देवे और अपने परामी से अथवा अपने भाई से न लेवे इस कारण कि यह  
परमेश्वर का कुटकारा कहाता है । परदेशी में तू ले सके परन्तु यदि तेरा ५  
कुछ तेरे भाई पर है तो उसे छोड़ दे । जिसमें तुम्हें कोई कंगाल न होवे ४  
क्योंकि परमेश्वर उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में  
देता है तुम्हें आशीस देगा । यदि तू केवल परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द ५  
को सुने और ध्यान से इस समस्त आज्ञा पर चले जो आज्ञा में तुम्हें आज्ञा करता  
हूँ । क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जैसा उस ने तुम्हें से प्रण किया है तुम्हें आशीस ६  
देगा और तू बहुत जातिगणों को उधार देगा परन्तु तू उधार न लेगा और तू  
बहुत से जातिगणों पर राज्य करेगा परन्तु वे तुम्हें पर राज्य न करेंगे ॥

यदि तुम्हारे बीच तुम्हारे भाइयों में से तेरे किसी नगर में उस देश का जिसे ७  
परमेश्वर तेरा ईश्वर तुम्हें देता है कोई कंगाल होवे तो उससे अपने मन को  
कठोर मत करियो और अपने कंगाल भाई की ओर से अपना हाथ न खींचियो ।  
परन्तु अवश्य उस की सहाय के लिये अपना हाथ खोलियो और निश्चय उस ८  
के आवश्यक के समान उसे उधार देना । सावधान हो कि तेरे दुष्ट मन में कोई ९  
बुरी चिन्ता न हो कि सातवां वरस तेरे कुटकारे का वरस समीप है और

- १४ क्योंकि ये जातिगण जिन का तू अधिकारी होगा मुहूर्त के मनवैये को और दैवज्ञ को सुनते थे परन्तु तू जो है परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे रोक रक्खा है ॥
- १५ परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे कारण तेरे ही मध्य में से तेरे ही भाइयों में से
- १६ एक आगमज्ञानी मेरे तुल्य उदय करेगा तुम उस की सुनियो । इन सभी की नाईं जो तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर से होखि में सभा के दिन मांगा और कहा ऐसा न हो कि मैं परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुनूं और ऐसी बड़ी आग में
- १७ फेर देखूं जिसमें कि मैं मर न जाऊं । और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उन्हीं
- १८ ने जो कुछ कहा सो अच्छा कहा । मैं उन के लिये उन के भाइयों में से तेरे तुल्य एक आगमज्ञानी उदय करूंगा और अपने बचन उस के मुंह में डालूंगा
- १९ और जो कुछ मैं उसे कहूंगा वह उन से कहेगा । और ऐसा होगा कि जो कोई मेरी बातों को जिन्हें वह मेरे नाम से कहेगा न सुनेगा मैं उसे लेखा लेऊंगा ।
- २० परन्तु जो आगमज्ञानी ऐसी ठिठाई करे कि कोई बात जो मैं ने उसे आज्ञा नहीं किई मेरे नाम से कहे अथवा जो और देवों के नाम से कहे तो वह
- २१ आगमज्ञानी मार डाला जावे । और यदि तू अपने मन में कहे कि हम उस बचन
- २२ को क्योंकि जानें जिसे परमेश्वर ने न कहा । जब आगमज्ञानी परमेश्वर के नाम से कुछ कहे और वह जो उस ने कही है न होवे अथवा पूरी न हो तो वह बात परमेश्वर ने नहीं कही परन्तु उस आगमज्ञानी ने ठिठाई से कही है तू उसे मत डर ॥

### उन्नीसवां पर्व ।

- १ जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को जिन का देश परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है काट डाले और तू उन का अधिकारी होवे और उन के
- २ नगरों में और उन के घरों में बसे । तो तू अपने उस देश के मध्य में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे बश में करता है अपने लिये तीन नगर अलग करना ।
- ३ तू अपने लिये एक मार्ग सिद्ध करना और अपने देश के सिवानों को जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में देता है तीन भाग करना जिसमें हर एक घाती
- ४ उधर भागे । और घाती की व्यवस्था जो वहां भागे जिसमें वह जीता रहे यह है जो कोई अपने परोसी को जो उसे आगे बैर न रखता था अजान में मार
- ५ डाले । अथवा कोई मनुष्य अपने परोसी के साथ लकड़ी काटने को बन में जावे और कुल्हाड़ा हाथ में उठावे कि लकड़ी काटे और कुल्हाड़ा बंट से निकल जावे और उस के परोसी को ऐसा लगे कि वह मर जावे तो वह इन में से एक
- ६ नगर में भागके बचे । न हो कि मार्ग के दूर होने के कारण लोहू का प्रतिफल-दायक अपने मन के कोप से घातों का पीछा करे और उसे पकड़ लेवे और उसे मार डाले यद्यपि वह मार डालने के योग्य नहीं क्योंकि वह आगे से उस की
- ७ डाह न रखता था । इस लिये मैं तुम्हें आज्ञा करके कहता हूं कि तू अपने कारण तीन नगर अलग करना ॥
- ८ और यदि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा सिवाना बढ़ावे जैसा उस ने तेरे पितरों

देश से उतावली से निकला जिसमें तू उस दिन को जिस में तू मिस से निकला  
अपने जीवन भर स्मरण करे । और तेरे सारे मित्रों में सात दिन लों खमीरी ४  
रोटी दिखाई न देवे और न उस मांस में से जिसे तू ने पहिले दिन मांस को  
बलि किया रात भर विज्ञान लों बच रहे । तू अपने किसी फाटकों के भीतर ५  
जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है फसद बलि मत करियो । परन्तु उमी ६  
स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर अपना नाम स्थापन करने के लिये चुनेगा  
मांस को सूर्य अस्त होते उमी समय में जब तू मिस से निकला फसद बलि  
करियो । और उस स्थान में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा तू उसे भूँके ७  
खाइयो और विज्ञान को फिरके अपने तंतुओं को चने लाइयो । छः दिन लों ८  
अखमीरी रोटी खाइयो और सातवें दिन जो तेरे ईश्वर के रोक का दिन है कुछ  
काम काज न करना ॥

अपने लिये सात अठवारे गिन और खेती में हंसुआ लगाने से गिने को आरंभ ९  
करियो । और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये अठवारों का पर्व रखियो उस में तू १०  
अपने ईश्वर की आशीस के समान अपने हाथ के समस्ता दान दीजियो । और ११  
परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे तू और तेरा बेटा और तेरी बेटी और तेरा दास  
और तेरी दासी और बहू लावी जो तेरे फाटकों के भीतर हैं और परदेशी और  
अनाथ और विधवा जो तेरे मध्य में हैं उस स्थान में आनन्द करियो जिसे परमे-  
श्वर तेरा ईश्वर चुन लेगा कि अपना नाम वहाँ स्थापन करे । और सुधि रखियो १२  
कि तू मिस में दाम या सो चौकस रह कि इन विधिन को पालन कर और मान ॥

जब तू अपने खरिदान और अपने कोल्हू को एकट्ठा कर चुके तो सात दिन १३  
लों तंतुओं का पर्व मानियो । और अपने बेटा और अपनी बेटी और अपने दास १४  
और अपनी दासी और लावी और परदेशी और अनाथ और विधवा समेत जो  
तेरे फाटकों के भीतर हैं आनन्द करियो । सात दिन लों अपने ईश्वर परमेश्वर के १५  
लिये उसी स्थान में जिसे परमेश्वर चुनेगा पर्व मानियो क्योंकि परमेश्वर तेरा  
ईश्वर तेरी सारी वस्तुतियों में और तेरे हाथों के समस्त कार्यों में तुझे धर देगा  
सो तू निश्चय आनन्द करियो ॥

वरस में तेरे समस्त पुरुष तीन बार अर्घात् अखमीरी रोटी के पर्व में और १६  
अठवारों के पर्व में और तंतुओं के पर्व में परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस  
स्थान में जिसे वह चुनेगा एकट्ठे हाथ और वे परमेश्वर के आगे कुछ न आर्वें ।  
हर एक पुरुष अपनी पूँजी के समान परमेश्वर तेरे ईश्वर की आशीस के समान १७  
जो उस ने तुझे दिया है देवे ॥

अपने समस्त फाटकों में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे तेरी सौष्ठियों के लिये १८  
देता है अपने लिये न्यायो और प्रधान ठहराइयो और वे यथार्थ से लोगों का  
न्याय करें । तू अन्याय विचार मत करियो तू घन न करियो और घूस मत १९  
लीजियो क्योंकि घूस बुद्धिमानों को अंधा कर देता है और धर्मियों की बातों  
को फिर देता है । जो हर प्रकार से यथार्थ है तू उस का पीछा करियो जिसमें २०  
तू जीवे और उस देश का जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है अधिकारी होवे ॥



ई न हो कि वह लड़ाई में मारा जावे और दूसरा मनुष्य उसे खावे । और कौन मनुष्य है जिस ने दाख की यागी लगाई हो और उस का फल न खाया हो वह अपने घर को फिर जावे ऐसा न हो कि वह लड़ाई में मारा जावे और दूसरा उसे खावे । और कौन मनुष्य है जो किसी स्त्री से वचनदत्त हुआ है और वह उसे घर न लाया हो वह अपने घर को फिर जावे ऐसा न हो कि वह लड़ाई में मारा जावे और दूसरा उसे लेवे । और प्रधान लोगों से यह भी कहें कि कौन मनुष्य है जो डरपोकना और असाहसी है अपने घर को फिर जावे न हो कि उस के भाइयों के मन उस के मन की नाईं बाँटे हो जावे । और यों हो कि जब प्रधान लोगों से कह चुकें तो वे मेना के प्रधानों को उहगावें कि लोगों की अगुआई करें ॥

- १० जब तू लड़ाई के लिये किसी नगर के निकट पहुँचे तो पहिले उससे मिलाप का प्रचार कर और यदि वह तुम्हें मिलाप का उत्तर देवे और तेरे लिये द्वार खोले ।  
 ११ तब यों होगा कि सब लोग जो उस नगर में हैं तेरे करदायक होंगे और तेरी सेवा करेंगे । और यदि वह तुम्हें मिलाप न करे परन्तु तुम्हें से लड़ाई करे तो तू उसे घेर ले । और जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उसे तेरे हाथ में कर देवे तो तू वहाँ के हर एक पुण्य की तलवार की धार में मार डालियो । केवल स्त्रियों और लड़कों और पशुन को उन सब समेत जो उस नगर में हों लूट ले और तू अपने बैरियों की लूट को जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें दिई है खा ।  
 १२ तू उन सब नगरों से जो तुम्हें से बहुत दूर हैं और इन जातिगणों के नगरों में से नहीं हैं ऐसा करना । परन्तु इन लोगों के नगरों को लिये परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार कर देता है किसी को जो मांस लेता हो जीता न छोड़ना ।  
 १३ परन्तु उन्हें सर्वथा नाश कर डालना छिती और अमूरी कनय्यानी और फरिजी १४ हवी और यदूसी को वैसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें आजा किई है । जिसमें वे समस्त धनैने कार्य जो उन्हें ने अपने देवों से किये तुम्हें न सिखावें कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के अपराधी हो जायो ॥  
 १५ जब तू किसी नगर के लेने के लिये लड़ाई में बहुत दिन ताईं घेरे रहे तो तू कुल्हाड़ी चलायके उन के धृन् नाश मत करियो परन्तु तू उन के फल खाइयो सो तू उन्हें काट न डालियो कि तेरे लिये घेरने के काम में आवें क्योंकि खेत २० के पेड़ मनुष्य के लिये हैं । केवल वे धृन् जो खाने के काम के न हों उन्हें काटके नाश करियो और उस नगर के आगे जो तुम्हें से लड़ता है गढ़ बना जब ताईं वह तेरे वश में होवे ॥

### इक्कीसवां पर्व ।

- १ यदि उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे वश में करता है किसी की २ लोथ खेत में पड़ी मिले और जाना न जावे कि किस ने उसे मारा । तब तेरे प्राचीन और तेरे न्यायी बाहर निकलें और उन नगरों को जो घातित के चारों ३ ओर हैं नापें । और यों होगा कि जो नगर घातित के समीप है उसी नगर के प्राचीन एक कलोर लेवें जिसे कार्य न किया गया हो और जूये तले न आई हो ।

से क्रिया खाके कहा है और वह समस्त देश जो तेरे पितरों को देने का वाचा  
 किई तुम्हें देवे । यदि तू इस समस्त आज्ञा को पालन करे और उसे माने जो ८  
 आज्ञा के दिन में तुम्हें आज्ञा करता हूँ कि परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रखके  
 सर्वदा उस के मार्ग पर चले तो तू इन तीन नगरों से अधिक अपने लिये तीन  
 नगर बढ़ाना । जिसमें तेरे देश के मध्य में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा १०  
 अधिकार कर देता है निर्दोष लोहू बढ़ाया न जावे कि द्रव्या तुम्हें पर देवे ॥

परन्तु यदि कोई जन जो अपने परोसी से घैर रखता हो और उस की यात ११  
 में लगा हो और उस के विरोध में उठके उसे ऐसा सारे कि वह मर जावे और  
 इन में से एक नगर में भाग जावे । तो उस के नगर के प्राचीन भेजके उसे वहाँ १२  
 से संगारें और लोहू के प्रतिफलदाता के हाथ में सौंप दें कि वह यात किया  
 जावे । तेरी आज्ञा उस पर दया न करे परन्तु तू निर्दोष लोहू के पाप को इस- १३  
 राख से यों दूर करना कि तेरा भला हो ॥

तू अपने अधिकार में उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार १४  
 में कर देता है अपने परोसी के निवाने को मत हटा जिसे आगिल लोगों ने  
 ठहराया है ॥

किसी मनुष्य के अपराध और पाप पर कोई पाप क्यों न हो एक साक्षी १५  
 ठीक नहीं है परन्तु दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक यात ठहराई  
 जावेगी । यदि कोई झूठा साक्षी उठके किसी मनुष्य पर साक्षी देवे । तो वे १६  
 दोनों जिन में विवाद है परमेश्वर के आगे याजकों और न्यायियों के सम्मुख  
 जो उन दिनों में हों खड़े किये जावें । और न्यायी यद्य से विचार करें सो यदि १८  
 वह साक्षी झूठा ठहरे और उस ने अपने भाई पर झूठी साक्षी द्रिई हो । तब १९  
 तुम उससे ऐसा करना जो उन ने चाहा था कि अपने भाई से करे इस रीति से  
 घुराई को अपने में से दूर करना । अरु और जो हैं सुनके डरेंगे और आगे को २०  
 तुम्हें ऐसी घुराई फिर न करेंगे । और तेरी आज्ञा दया न करे कि प्राण की संती २१  
 प्राण आज्ञा की संती आज्ञा दांत की संती दांत हाथ की संती हाथ पांव की संती  
 पांव होगा ॥

### बीसवां पृष्ठ ।

जब तू लड़ाई के लिये अपने वैरियों पर चढ़ जावे और देखे कि उन के १  
 घोड़े और गाड़ियां और लोग तुम्हें से बहुत हैं तो तू उन से मत डर क्योंकि  
 परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुम्हें सिन्धु देश से निकाल लाया तेरे साथ है । और घों २  
 होगा कि जब तुम संग्राम के निकट पहुंचे तो याजक आगे होके लोगों को  
 कहें । और उन से बोले कि हे इसराएलिया सुनो तुम आज के दिन अपने ३  
 वैरियों से लड़ाई करने को जाते हो सो तुम्हारा मन न घटे डरो मत और मत  
 घबराओ और उन से मत शर्चराओ । क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे ४  
 साथ जाता है कि तुम्हारे लिये तुम्हारे वैरियों से लड़के तुम्हें दचावे ॥

और प्रधान लोगों से कहें और बोलें कि तुम्हें कौन मनुष्य है जिस ने नया ५  
 घर बनाया हो और उसे नहीं स्थापित है वह अपने घर को फिर जावे ऐसा

धिकारित है इस कारण चाहिये कि तेरी भूमि जिस का अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है अशुद्ध न हो जावे ॥

बाईसवां पर्व ।

१ तू अपने भाई के वैल अथवा उस की भेड़ को भटकी हुई देखके अपनी आंख उन से मत छिपा परन्तु किसी न किसी भांति से उन्हें अपने भाई पास फेर ला । और यदि तेरा भाई तेरे परोस में न हो अथवा तू उसे पहिचानता न हो तब उसे अपने ही घर के मध्य में ला और वह तेरे पास रहे जब तों  
३ तेरा भाई उस की खोज करे और तू उसे फेर देना । और इसी रीति तू उस के गदहे और उस के वस्त्र और सब कुछ से जो तेरे भाई की खोई हुई हो  
४ और तू ने पाई है ऐसा ही कर तू आप को उन से मत छिपाना । अपने भाई का गदहा अथवा उस के वैल को मार्ग में गिरा हुआ देखके आप को उन से मत छिपा निश्चय उस का सहाय करके उठा देना ॥

५ पुरुष का वस्त्र स्त्री न पहिने और न पुरुष स्त्री का पहिने क्योंकि सब जो ऐसा करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे घिनित हैं ॥

६ यदि पथ में चलते किसी पत्नी का खोता पेड़ पर अथवा भूमि पर तुझे दिखाई देवे चाहे उस में गोदे अथवा अंडे हों और मां गोदों पर अथवा अंडों  
७ पर बैठी हुई हो तो तू गोदों को मां समेत मत पकड़ना । माता को निश्चय छोड़ देना और गोदों को अपने लिये लेना जिसमें तेरा भला होवे और तेरा जीवन बढ़ जावे ॥

८ जब तू नया घर बनावे तब अपनी कृत पर आड़ के लिये मुंडेरा घना ऐसा न हो कि कोई ऊपर से गिरे और तू अपने घर में हत्या का कारण हो ॥

९ अपने दाख की बारी में नाना प्रकार के बीज मत बोना ऐसा न हो कि बीज की भरपूरी जिसे तू ने बोया है और तेरी दाख की बारी का फल अशुद्ध हो  
१० जावे । तू गदहे को वैल के साथ मत जोतना । नाना भांति का वस्त्र जैसा  
११ कि उन और सूत का मत पहिनियो ॥

१२ अपने ओढ़ने की चारों ओर झालर लगाना ॥

१३ यदि कोई पत्नी करे और उसे ग्रहण करे और उससे घिन करे । और उस पर कलंक लगावे और कहे कि मैं ने इस स्त्री से ब्याह किया और जब मैं उस

१४ पास गया तब मैं ने उसे कुमारी न पाया । तब उस कन्या के माता पिता उस के कुमारीपन का चिन्ह लेके उस नगर के फाटक पर प्राचीनों के आगे

१५ लावें । और उस लड़की का पिता प्राचीनों से कहे कि मैं ने अपनी पुत्री इस पुरुष को ब्याह दिई है अब यह उसे घिन करता है । और देखो वह उस पर

१६ कलंक की बात लगाता है कि मैं ने तेरी पुत्री को, कुमारी न पाया तथापि ये मेरी पुत्री के कुमारीपन के चिन्ह हैं और वह कपड़ा नगर के प्राचीनों के

१७ आगे फैलावे । तब उस नगर के प्राचीन उस पुरुष को पकड़के उसे दंड देवें । और वे उसे सौ टुकड़ा चांदी डांड लेवें और लड़की के पिता को देवें

इस लिये कि उस ने इसराएल की एक कुमारी पर कलंक लगाया और वह उस

और उस नगर के प्राचीन उस कलेर को गड़बड़ तराई में जो न जाती गई हो ४  
 न उस में कुछ बोया गया हो ले जावे और वहां उस तराई में उस कलेर के  
 सिर को उतारें । तब याजक जो लावी के संतान हैं पास आवें क्योंकि परमेश्वर ५  
 तेरे ईश्वर ने अपनी सेवा के लिये और परमेश्वर के नाम से आशीस देने के लिये  
 उन्हीं को चुना है और उन्हीं के वचन से हर एक भगड़ा और हर एक विपत्ति  
 का निर्णय किया जावेगा । और उस नगर के समस्त प्राचीन जो घातिल के ६  
 पास हैं उस कलेर के ऊपर जो तराई में बलि किई गई अपने हाथ धावे ।  
 और उत्तर देके कहें कि हमारे हाथों ने यह लोहू नहीं बहाया है न हमारी ७  
 आंखों ने देखा है । हे परमेश्वर अब अपने इसराएली लोगों पर दया कर जिन्हें ८  
 तू ने लुड़ाया है और वृथा दत्ता अपने इसराएली लोगों पर मत रख तब वह  
 दत्ता क्षमा किई जावेगी । सो जब तू इसी रीति से यह करे जो परमेश्वर के ९  
 आगे ठीक है तब तू दत्ता को अपने में से दूर करेगा ॥

जब तू युद्ध के लिये अपने बैरियों पर चढ़े और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें १०  
 तेरे हाथ में कर देवे और तू उन्हें बंधुआ करे । और उन बंधुओं में सुन्दर स्त्री ११  
 देखे और तेरा मन उस पर चले कि उसे अपनी पत्नी करे । तब तू उसे अपने घर १२  
 में ला और उस का सिर मुड़वा और उस के नंग कटवा । तब वह अपनी १३  
 बंधुआई का वस्त्र उतारे और तेरे घर में गहे और पूरा एक मास भर अपने मा  
 वाप के लिये शोक करे उस के पीछे तू उसे ग्रहण करना और उस का पति होना  
 और वह तेरी पत्नी हो । और यदि तू उसे प्रसन्न न हो तो जिधर यह चाहे १४  
 उसे जाने दे पर तू उसे रोकड़ पर मत बचना तू उसे कुछ दायित्व न करना  
 क्योंकि तू ने उस की पत लिई ॥

यदि किसी की दो पत्नियां हैं एक प्रिया और दूसरी अप्रिया और प्रिया और १५  
 अप्रिया दोनों से लड़के हों और पहिलेठा अप्रिया में हो । तो यों होगा कि जब १६  
 वह अपने पुत्रों को अधिकारी करे तब वह प्रिया के बेटे को अप्रिया के बेटे पर  
 पहिलेठा न करे । परन्तु वह अप्रिया के बेटे को अपनी समस्त संपत्ति से दूना १७  
 भाग देके पहिलेठा ठहरावे क्योंकि वह उस के बल का आरंभ है पहिलेठे होने  
 का भाग उसी का है ॥

यदि किसी का पुत्र लीठ और मगरा होवे जो अपने माता पिता की आज्ञा १८  
 न माने और जब वे उसे ताड़ना करें और वह उन्हें न माने । तब उस के माता १९  
 पिता उसे पकड़के उस नगर के प्राचीनों पास उस स्थान के फाटक पर लावे ।  
 और उस नगर के प्राचीनों से कहें कि हमारा यह बेटा लीठ और मगरा है २०  
 हमारी बात नहीं मानता बड़ा ही खाल और पिथकूड़ है । और उस नगर के २१  
 सब लोग उस पर पत्थरबाद करें कि वह मर जावे और तू दुष्ट को अपने सध्य  
 में से दूर करना जिसने समस्त इसराएल सुनके डरें ॥

और यदि किसी ने मार डालने के योग्य पाप किया हो और वह मारा जावे २२  
 तो तू उसे पेड़ पर लटका दे । उस की लेश रात भर पेड़ पर लटकी न रहे २३  
 परन्तु तू उसी दिन उसे गाड़ियो क्योंकि जो लटकाया गया है सो ईश्वर का

८ धिन न करना क्योंकि तू उस के देश में परदेशी था । उन की तीसरी पीढ़ी के जो लड़के उत्पन्न हों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश करें ॥

९ जब तू सेना में अपने बैरियों पर चढ़े तब हर एक पाप से आप को बचा  
१० रखना । यदि तुझ में कोई पुरुष रात्रि की अशुद्धता के कारण अशुद्ध होवे तो  
११ वह छावनी से बाहर निकल जावे वह छावनी के भीतर न आवे । परन्तु  
संध्या के समय में जल से स्नान करे और जब सूर्य अस्त हो चुके तब छावनी  
१२ में आवे । और छावनी के बाहर तेरे लिये एक स्थान होगा और वहां बाहर  
१३ निकलके जाया करना । और तेरे पास तेरे हथियार पर एक खंती होवे और  
१४ जब तू बाहर जाके बैठे तो उससे खोदना और मल को ढांप देना । इस लिये कि  
परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी छावनी के मध्य में फिरता है कि तुझे बचावे और  
तेरे बैरियों को तेरे बश में करे सो तेरी छावनी पवित्र रहे न होवे कि वह  
तेरे मध्य में किसी वस्तु की अशुद्धता देखे और तुझ से फिर जावे ॥

१५ यदि किसी का सेवक अपने स्वामी से भागके तुझ पास आवे तू उसे उस के  
१६ स्वामी को मत सौंप । वह तेरे स्थानों में से जहां चाहे तहां तेरे मध्य में रहे  
तेरे फाटकों में से किसी एक में जो उसे अच्छा लगे तू उसे क्लेश मत देना ॥

१७ इसराएल की बेटियों में वेश्या न हों और न इसराएल के बेटों में पुरुषगामी  
१८ हों । तू किसी हिनाल की कमाई अथवा कुत्ते का मोल किसी मनौती में परमेश्वर  
अपने ईश्वर के मन्दिर में मत लाइयो क्योंकि ये दोनों परमेश्वर तेरे ईश्वर से  
धिनित हैं ॥

१९ तू अपने भाई को बियाज पर ऋण मत देना रोकड़ अनाज अथवा और  
२० कोई वस्तु जो बियाज पर दिई जाती है बियाज पर मत देना । परदेशी को  
बियाज पर उधार दे सके परन्तु अपने भाई को बियाज पर उधार मत देना  
जिसमें परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का तू अधिकारी होने जाता है  
जिस जिस काम में तू हाथ लगावे तुझे आशीस देवे ॥

२१ जब तू ने कोई मनौती परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी उसे पूरी  
करने में बिलम्ब मत कर क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर निश्चय तुझ से उस का  
२२ लेखा लेगा और तुझ पर पाप लगेगा । परन्तु यदि तू कुछ मनौती न माने तो  
२३ तुझ पर पाप न लगेगा । जो कुछ तेरे मुंह से निकला अर्थात् चांछा की भेंट  
जैसा तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी है जिसे तू ने अपने मुंह से प्रण  
किया है उसे मान और पूरी कर ॥

२४ जब तू अपने परोसी के दाख की बारी में जावे तब जितने दाख चाहे  
२५ अपनी इच्छा भर खा परन्तु अपने पात्र में मत रख । जब तू अपने परोसी के  
अन्न को खेत में जावे तब अपने हाथ से बालें तोड़ सके परन्तु अपने भाई का  
खेत हंसुआ से मत काट ॥

चौबीसवां पर्व ।

१ जब कोई पुरुष पत्नी से व्याह करे और उस के पीछे ऐसा हो कि वह उस  
की दृष्टि में अनुग्रह न पावे इस कारण कि उस ने उस में कुछ अशुद्ध बात पाई

की पत्नी बनी रहेगी वह जीवन भर उसे त्याग न करे । परन्तु यदि वह यात २०  
ठीक ठहरे और लड़की के कुमारीपन का चिन्ह न पाया जावे । तब वह उस २१  
लड़की को उस के पिता के घर के द्वार पर निकाल लावे और उस नगर के  
लोहा उस पर पत्थरपाह करके मार डाले क्योंकि उस ने अपने पिता के घर में  
हिनाला करके इसराएल में सुखता किई इस रीति से तू घुराई को अपने में से  
दूर करना ॥

यदि कोई पुरुष विवाहिता स्त्री से पकड़ा जावे तब वे दोनों अभिचारी २२  
पुरुष और स्त्री मार डाले जावें इस रीति से तू इसराएल में से घुराई को दूर  
करना । यदि कुमारी लड़की किसी से वचनदत्त होवे और कोई दूसरा पुरुष २३  
उसे नगर में पावे और उसे कुकर्म करे । तब तुम उन दोनों को उस नगर के २४  
फाटक पर निकाल लाओ और उन पर पत्थरपाह करके उन दोनों को मार  
डालो कन्या को इस लिये कि वह नगर में दोते हुए न चित्ताई और पुरुष को इस  
कारण कि उस ने अपने परोसी की पत्नी की पत लिई इस रीति से तू घुराई को  
अपने में से दूर करना ॥

और यदि कोई पुरुष किसी वचनदत्त कन्या को खेत में पावे और पुरुष २५  
वचनदत्त उसे कुकर्म करे तो केवल वह पुरुष जिस ने उसे कुकर्म किया है  
मार डाला जावे । परन्तु उस लड़की को कुछ न कर लड़की को घात का पाप २६  
नहीं है क्योंकि यह ऐसा है जैसे कोई अपने परोसी पर दुल्लह करे और उसे मार  
डाले । क्योंकि उस ने उसे खेत में पाया और वह वचनदत्त लड़की चित्ताई और २७  
कुड़ाने को कोई न था ॥

यदि कोई कुमारी कन्या को जो किसी से वचनदत्त न हो पकड़े उसे २८  
कुकर्म करे और वे पकड़े जावें । तब वह पुरुष जिस ने उसे कुकर्म किया २९  
लड़की के पिता को पचास टुकड़ा चांदी देवे और वह उस की पत्नी होगी  
इस कारण कि उस ने उसे अपत किया वह उसे जीवन भर त्याग न करे ॥

कोई अपने पिता की पत्नी को न ले और अपने पिता की नयता को न ३०  
उधारे ॥

तेईसवां पृष्ठ ।

जिस के अंडकोश पिचकाये गये हों अथवा लिंग कट गया हो वह परमेश्वर १  
की मंडली में प्रवेश न करे । जारज अपनी दसवीं पीढ़ी लों परमेश्वर की मंडली २  
में प्रवेश न करे । अम्मूनी और मोअवी परमेश्वर की मंडली में दसवीं पीढ़ी लों ३  
प्रवेश न करे कोई उन में से मनातन लों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करेगा ।  
इस कारण कि जब तुम मिस्र से निकले उन्हीं ने पंथ में अन्न जल लेंके तुम से ४  
भेंट न किई और इस कारण कि उन्हीं ने दजर के पुत्र बलशाम को अरम नहरन  
के फतूर से बुलाया जिसने तुम्हें साप देवे । तथापि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरे ५  
लिये आप को आशीस की संती फलट दिया क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें  
पर प्रेम किया । जीवन भर सदा लों तू उन का कुशल और उन की भलाई न ६  
चाहना । किसी अदूमी से घिन न करना क्योंकि वह तेरा भाई है किसी मिस्री से ७



उस के लेने को फिर मत जा वह परदेशी और अनाथ और विधवा के लिये रहे जिसमें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्यों में तुझे आशीस देवे ।  
 २० जब तू अपने जलपाई के वृत्त को भोरे तो फिरके उस की डालियों को मत भाड़  
 २१ वह परदेशी अनाथ और विधवा के लिये रहे । जब तू अपनी धारी के दाख एकट्ठा करे तो अपने पीछे मत बीजा वह परदेशी अनाथ और विधवा के लिये रहे ।  
 २२ और चेत कर कि तू मिस्र के देश में बंधुआ था इस लिये मैं तुझे यह कार्य करने को आज्ञा देता हूँ ॥

### पचीसवां पर्व ।

- १ यदि लोगों में भगाड़ा होवे और धर्मसभा में आवें कि न्यायी उन का
- २ न्याय करे तो वे धर्मी को निष्पापी और दुष्ट को पापी ठहरावें । और यदि वह दुष्ट पीटे जाने के योग्य होवे तो न्यायी उसे लेटवावे और जैसा उस का अपराध होवे न्यायी अपने आगे ठहरावे हुए के समान उसे पिंटावे । चालीस कोड़े उसे मारें उससे बढ़ती नहीं न होवे कि यदि वह उससे बढ़ जावे और इन्हीं से बहुत अधिक मारे तब तेरा भाई तेरे आगे तुच्छ समझा जावे ॥
- ३ दांवने के समय में बैल का मुंह मत बांध ॥
- ४ यदि कोई भाई एकट्ठे रहें और उन में से एक निर्वंश मर जावे तो उस मृतक की पत्नी का विवाह किसी परदेशी से न किया जावे परन्तु उस का दूसरा कुटुम्ब उसे ग्रहण करे और उसे अपनी पत्नी करे और पति के भाई का व्यवहार उसे करे । और यों होगा कि जो पहिलौठा वह जने वह उस के मृतक
- ५ भाई के नाम पर स्थापित होवे जिसमें उस का नाम इसराएल में से न मिटे । और यदि वह पुरुष अपने कुटुम्ब की पत्नी को लेने न चाहे तो उस के भाई की पत्नी प्राचीनों पास फाटक पर जावे और कहे कि मेरे पति का भाई इसराएल में अपने भाई के नाम को स्थापने से नाह करता है मेरे पति का भाई मुझे अपनी पत्नी नहीं किया चाहता है । तब उस के नगर के प्राचीन उस पुरुष को बुलाके उसे समझावें यदि वह उसी पर खड़ा होवे और कहे कि मैं उसे लेने नहीं चाहता । तो उस के भाई की पत्नी प्राचीनों के सम्मुख उस के पास आवे और उस के पांवां से जूती खेले और उस के मुंह पर थूक देवे और उत्तर देके कहे कि उस मनुष्य की यही दशा होगी जो अपने भाई के घर को न बनावे ।
- ६ और इसराएल में उस का यह नाम रक्खा जावेगा कि यह उस जन का घर है जिस का जूता खोला गया ॥
- ७ जब मनुष्य आपुस में लड़ते हों और एक की पत्नी आवे कि अपने पति को उस के हाथ से जो उसे मार रहा है कुड़ावे और अपना हाथ बढाके उस के गुप्ते को पकड़े । तो तू उस का हाथ काट डालना तेरी आंख उस पर दया न करे ॥
- ८ तू अपने थैले में बड़े छोटे बटखरे न रखना । अपने घर में छोटा बड़ा
- ९ नपुआ मत रखना । पूरे और ठीक बटखरे रखना और पूरे और ठीक नपुआ रखना जिसमें उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तेरा जीवन

तो वह त्यागपत्र लिखके उस के हाथ में देवे और उसे अपने घर में बाहर करे । और जब वह उस के घर से निकल गई तब वह दूसरे पुरुष की हो सके । और दूसरा पति भी उसे देख न सके और उस के लिये त्यागपत्र लिखके उस के हाथ में देवे और उसे अपने घर में से निकाल देवे अथवा दूसरा उसे पत्नी करके मर जावे । तो उचित नहीं कि उस का पहिला पति जिस ने उसे निकाल दिया था जब वह अशुद्ध हो चुकी उसे फिर लेके पत्नी करे क्योंकि वह परमेश्वर के आगे धिनित है सो उस देश को अशुद्ध मत कर जिस का अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुम्हें करता है ॥

जब किसी का नया विवाह होवे तब वह लड़ाई को न जावे और उससे कुछ कार्य न लिया जावे परन्तु वह एक बरस अपने घर में व्यवसाय में रहे और अपनी पत्नी को जिसे उस ने व्याहृत करवाया ॥

कोई मनुष्य किसी की चूकी के ऊपर का अथवा नीचे का पाट बंधक न रखे क्योंकि वह जीवन को बंधक रखता है ॥

यदि कोई मनुष्य इसराएल के संतानों में से अपने किसी भाई को चुगतो हुए पकड़ा जावे और उस का व्यापार करे अथवा उसे बेचे तो वह चार मारा जावे और तू घुराई को अपने में से दूर कर ॥

चौकस रह कि कोढ़ की मरी में तू चौकसी से देख और मद्य को लायी पावक तुम्हें मिखावे उस की रीति पर चल जैसी मैं ने तुम्हें आज्ञा की है वैसा ही करना । चेत कर कि जब तुम मिस से निकले परमेश्वर तेरे ईश्वर ने मार्ग में मिरयस में क्या किया ॥

जब तू अपने भाई को कोई वस्तु मंगानी अथवा उधार देवे तब उस का बंधक लेने की उस के घर में मत बैठ । तू बाहर गढ़ा रह और उधारनेक आष अपना बंधक तेरे पास बाहर लावेगा । और यदि वह कंगान जाये तो तू उस के बंधक को रखके मत लेट रह । किसी भाँति से जब सूर्य अस्त होने लगे उस का बंधक उसे फिर देना जिसमें वह अपने वस्त्र में सोये और तुम्हें आजीम देवे सो तुम्हें परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे धर्म होगा ॥

ऐसा न हो कि तू कंगाल और दीन धनिदार को मतावे चाहे वह तेरे भाइयों में से हो अथवा तेरे परदेशियों में से जो तेरे देश में तेरे फाटकों में रहते हैं । तू उस दिन सूर्य अस्त होने से पहिले उस की धनी दे दानना क्योंकि वह दरिद्र है और उस का मन उसी में है न हो कि परमेश्वर के आगे तुम्हें पर दोष देवे और तुम्हें पर पाप ठहरे ॥

संतान की संती पितर मारे न जायें न पितरों की संती संतान मारे जायें हर एक अपने ही पाप के कारण मारा जावेगा ॥

तू परदेशी और अनाथ के विचार को मत विगाड़ और विधवा का कपड़ा बंधक मत रख । परन्तु चेत कर कि तू मिस में बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें वहाँ से छुड़ाया इस लिये मैं तुम्हें यह कार्य करने की आज्ञा करता हूँ ॥

जब तू अपने खेत में कटनी करे और एक गट्टी खेत में भूलके छूट जावे तो

परदेशी अनाथ और विधवा को तेरी समस्त आज्ञा के समान जो तू ने मुझे  
 १४ किया और मैं ने तेरी आज्ञाओं से विरुद्ध न किया और न उन्हे भूला । मैं ने उस  
 में से अपनी विपत्ति में न खाया और मैं ने उस में से किसी अशुद्ध बात में न  
 उठाया और न उस में से कुछ मृतकों के लिये दे डाला मैं ने परमेश्वर अपने  
 ईश्वर के शब्द को माना जो कुछ तू ने मुझे आज्ञा किई है मैं ने उन सभी के  
 १५ समान किया । अपने पवित्र निवास स्वर्ग पर से नीचे दृष्टि कर और अपने  
 इसराएल लोगों को और इस भूमि को जिसे तू ने हमें दिया है आशीस दे जैसी  
 तू ने हमारे पितरों से किरिया खाई एक देश जिस में दूध और मधु बहता  
 है ॥

१६ आज के दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे इन विधिन और विचारों को  
 पालन करने की आज्ञा दीई इस लिये उन्हे पालन कर और अपने सारे मन  
 १७ और अपने सारे प्राण से उन्हे मान । तू ने आज के दिन मान लिया है कि  
 परमेश्वर मेरा ईश्वर है और मैं उस के मार्गों पर चलूंगा और उस की विधिन  
 को और उस की आज्ञाओं को और उस के विचारों को पालन करूंगा और उस  
 १८ के शब्द को सुनूंगा । और परमेश्वर ने भी आज के दिन मान लिया है कि तू  
 उस का निज लोग होवे जैसा उस ने तुझ से कहा है और तू उस की समस्त  
 १९ आज्ञाओं को पालन करे । और तुझे समस्त जातिगणों से जित्ने उस ने उत्पन्न  
 किया बढ़ाई और नाम और प्रतिष्ठा में अधिक बढ़ावे और कि तू परमेश्वर  
 अपने ईश्वर का पवित्र लोग होवे जैसा उस ने कहा ॥

सत्ताईसवां पर्व ।

१ फिर मूसा ने इसराएल के प्राचीनों के साथ होके लोगों को आज्ञा करके  
 कहा कि उस समस्त आज्ञा को जो आज के दिन मैं तुम्हें कहता हूं पालन करो ।  
 २ और यों होगा कि जिस दिन तुम यरदन पार होके उस देश में पहुंचो जो परमे-  
 श्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तब तू अपने लिये बड़े बड़े पत्थर खड़े करना और  
 ३ उन पर गच करना । और जब तू पार उतरे तब इस व्यवस्था के समस्त बचनों  
 को उन पर लिखना जिसमें तू उस देश में प्रवेश करे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर  
 तुझे देता है वह एक देश है जिस में दूध और मधु बहता है जैसी परमेश्वर तेरे  
 ४ पितरों के ईश्वर ने तुझे देने को वाचा बांधी है । सो जब तुम यरदन के पार  
 उतर जाओ तब तुम इन पत्थरों को जिन के विषय में मैं तुम्हें आज के दिन  
 ५ आज्ञा करता हूं रेबाल के पहाड़ पर खड़ा करना और उन पर गच फेरना । और  
 वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये वेदी पत्थरों की एक वेदी बनाना उन पर  
 ६ लोहा न उठाना । तू परमेश्वर अपने ईश्वर की वेदी ठोंकों से बनाना और उस  
 ७ पर परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाना । और कुशल की  
 भेंट चढ़ाना और वहीं खाना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनन्द करना ।  
 ८ और उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के समस्त बचन खोलके लिखना ॥  
 ९ फिर मूसा और लावी याजकों ने समस्त इसराएलियों से कहा कि हे इसराएल  
 चौकस हो और सुन तू आज के दिन परमेश्वर अपने ईश्वर की मंडली हुआ

बढ़ जावे । क्योंकि सब जो ऐसा अधर्म करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर से १६  
घिनित हैं ॥

चेत कर कि जब तू मिस्र से निकला तब मार्ग में अमालीक ने तुझ से क्या १७  
किया । मार्ग में तुझ पर क्योंकर बढ़ आया जब तू मूर्छित और थका था तब १८  
उस ने तेरे पीछे के सब लोगों को जो दुर्बल पिछरे हुए थे मारा और वह ईश्वर  
से न डरा । इस लिये ऐसा होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में १९  
जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार के लिये तुझे देता है तुझे तेरे चारों ओर  
के घेरियों से चैन देवे तब तू स्वर्ग के तले से अमालीक के नाम को मिटा  
हालना इसे मत भूलना ॥

### छव्तीसवां पर्व ।

और जब तू उस देश में प्रवेश करे जिस का अधिकारी परमेश्वर तेरा १  
ईश्वर तुझे करता है और उसे वण में करे और उन में वसे । तब तू उस देश २  
का जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है समस्त फलों का पविना जिसे तू  
भूमि से लेके पहुंचावेगा एक टोकरे में रखके उस स्थान में ले जा जिसे परमेश्वर  
तेरा ईश्वर अपने नाम को स्थापन करने के लिये चुनेगा । और उन दिनों में जो ३  
याज्ञक होगा उस के पास जा और उम्मे कह कि आज परमेश्वर तेरे ईश्वर के  
आगे प्रण करता हूं कि मैं ने उस देश में जिस के विषय में परमेश्वर ने हमारे  
पितरों से किरिया खाके हमें देने का कहा था प्रवेश किया । और याज्ञक वह ४  
टोकरा तेरे हाथ से लेके उसे परमेश्वर तेरे ईश्वर की घेदी के आगे रख देवे ।  
तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बिनती करके यों कहना कि मेरा पिता ५  
अरामो जो मरने पर था और वह मिस्र में उतरा और उस ने घोड़े लोगों के  
साथ वहां वास किया और वहां एक अति बलवंत और बड़ी जाति बना ।  
और मिखियों ने हम से दुरा व्यवहार किया और हमें सताया और हम से ६  
काठिन सेवा कराई । और जब हम ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर के  
आगे दौड़ाई दिई तब परमेश्वर ने हमारा शब्द सुना और हमारी विपत्ति और ७  
हमारे परिश्रम और हमारे अंधेर को देखा । और परमेश्वर नामर्वा हाथ और ८  
बढ़ाई हुई भुजा और सदा आश्चर्यित और अद्भुत नदनों के हाथ से निकाल  
लाया । और हमें इस स्थान में लाया और उस ने हमें यह देश दिया जिस में ९  
दूध और मधु बहता है । और अब देश में इस देश के पटिले फल जिसे ते १०  
परमेश्वर तू ने मुझे दिया लाया हूं सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उसे रख  
देना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे दण्डवत् करना । और तू और लावी ११  
और परदेशी जो तेरे मध्य में होय मिलके घर एक भलाएँ पर जो परमेश्वर तेरे  
ईश्वर ने तुझे और तेरे घराने पर किई है आनन्द करना ॥

जब तू तीसरे वरस जो दशांश का वरस है अपनी समस्त बड़ती के दसवें १२  
अंश को पूरा करेगा तब तू उसे लावी परदेशी अनाथ और विधवा को देना  
जिसमें वे तेरे फाटकों के भीतर खावें और तृप्त होवें । तब तू परमेश्वर अपने १३  
ईश्वर के आगे यों कहना कि मैं अपने घर से पवित्र वस्तु लाया हूं लावी और

- ९ उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तुझे आशीस देगा । यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करे और उस के मार्गों पर चले तो परमेश्वर तुझे अपना पवित्र लोग बनावेगा जैसी उस ने तुझ से
- १० किरिया खाई है । और पृथिवी के समस्त लोग देखेंगे कि तू परमेश्वर के
- ११ नाम से प्रसिद्ध है सो वे तुझ से डरते रहेंगे । और परमेश्वर तेरी संपत्ति में तेरे शरीर के फल में और तेरे ठोकर के फल में और तेरी भूमि के फल में उस भूमि पर जिस के विषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया ग्याके कथा कि
- १२ तुझे देजंगा तुझे बढ़ती देगा । परमेश्वर अपना सुधरा भंडार तेरे आगे खोलेंगा कि आकाश तेरे देश पर ऋतु में जल बरसावेगा और तेरे हाथ के समस्त कार्यों में आशीस देगा और तू बहुत से जातिगणों को ऋण देगा परन्तु तू कुछ
- १३ न लेगा । और परमेश्वर तुझे सिर बनावेगा और पूंछ नटी और तू केवल ऊंचा होगा और नीचा न होगा आज के दिन जो आज्ञा मैं तुझे करता हूँ
- १४ यदि तू उन आज्ञाओं को सुने और पालन करके माने । और तू उन सब बातों में जो आज के दिन मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ वहिने धार्य न मुड़े अरु और देवतों का पीछा करके उन की सेवा न करे ॥
- १५ परन्तु यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द न सुनेगा और ध्यान करके उस की समस्त आज्ञाओं को और उस की विधि न को जो आज के दिन मैं तुम्हें आज्ञा करता हूँ न मानेगा तो ये समस्त साप तुझ पर आवेंगे और तुम्हें जा ही
- १६ लेंगे । तू नगर में स्थापित और तू खेत में स्थापित । तेरा टोकरा और तेरी शाल
- १७ स्थापित । तेरे शरीर का फल और तेरी भूमि का फल तेरी गाय बैल की बढ़ती
- १८ और तेरी भेड़ बकरी के झुंड स्थापित । तू अपने बाहर भीतर आने जाने में
- २० स्थापित । परमेश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्यों में तुझ पर साप भंभट और दपट भेजेगा यहां लों कि तू नाश हो जावे और शीघ्र मिट जावे तेरी करनी की
- २१ दुष्टता के कारण जिसे तू ने मुझे त्याग किया । परमेश्वर तुझ पर मरी संयुक्त करेगा यहां लों कि तुम्हें उस भूमि से मिटा डालेगा जिस का तू अधिकारी
- २२ होने जाता है । परमेश्वर तुम्हें क्षी और ज्वर और उधाला और अत्यंत ज्वलन और पियास और भुलुस से और लंछा से मारेगा और वे तुम्हें रगद रगद के नाश करेंगे ।
- २३ और तेरे सिर पर का स्वर्ग पीतल और तेरे तले की पृथिवी लोहे की होगी ।
- २४ परमेश्वर तेरे देश का बरसना बुरानी और धूल बना डालेगा यह स्वर्ग से तुम्हें
- २५ पर उतरेगा जब लों तू नाश न हो जावे । परमेश्वर तुम्हें तेरे वैरियों के आगे मारेगा तू एक मार्ग से उन पर चढ़ जावेगा और उन के आगे सात मार्गों से भागेगा और
- २६ पृथिवी के समस्त राज्यों में निकाला जावेगा । और तेरी लोथ आकाश के समस्त पक्षियों का और वन के पशुन का भोजन हो जावेगी और कोई उन्हें
- २७ न हांकेगा । परमेश्वर तुम्हें मित के फोड़े और बरसी और दिनाय और खजुली
- २८ से मारेगा उन से तू कधी चंगा न होगा । परमेश्वर तुम्हें बौड़हापन और अंधापन
- २९ और मन की छवराहट से मारेगा । और जिस रीति से कि अंधा अंधेरे में टटोलता है तू दोपहर दिन को टटोलता फिरेगा और तू अपने मार्गों में भाग्य-

सो परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को मान और उस की आज्ञाओं को और उस १०  
की विधि का पालन कर जो आज के दिन में तुझे आज्ञा करता हूँ ।

और मूसा ने उस दिन मंडली को आज्ञा करके कहा । कि जब तुम परदन ११  
पार जाओ तब समझन और लावी और यहुदाह और इशकार और युसुफ और १२  
धिनयमीन जरिजीम के पहाड़ पर खड़े होके लोगों को आशीम देंगे । और १३  
रुबिन और जद और यसर और जवूनन और दान और नफताली खेवाल के पहाड़  
पर साप देने के लिये खड़े होंगे । और लावी इसराएल के समस्त पुरुषों को बड़े १४  
शब्द से कहें ॥

कि वह जन सापित है जो खेदके अथवा डालके मूर्ति बनावे जो परमेश्वर १५  
के आगे धिनित है और कार्यकारी के हाथ की बनाई हुई है और गुप्त स्थान १६  
में रखे तब समस्त मंडली उत्तर देके कहें आमीन । जो कोई अपने माता पिता १७  
की निन्दा करे वह सापित और समस्त लोग कहें आमीन । जो अपने परेमी १८  
के सिवाने के चिन्ह को हटावे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन । जो १९  
अंधे की मार्ग से बचकावे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन । जो परदेगी २०  
अनाथ और विधवा के विचार को बिगाड़ देवे सो सापित और समस्त लोग कहें  
आमीन । जो अपने पिता की पत्नी के साथ कुकर्म करे सो सापित क्योंकि उस २०  
ने अपने पिता की नग्नता उधारी और समस्त लोग कहें आमीन । जो किसी २१  
प्रकार के पशु से कुकर्म करे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन । जो कोई २२  
अपनी बहिन अपनी माता अथवा अपने पिता की पुरी के साथ कुकर्म करे सो  
सापित और समस्त लोग कहें आमीन । जो कोई अपनी सान के संग कुकर्म २३  
करे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन । जो कोई अपने परेमी को २४  
छिपके मारे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन । जो कोई धूम लेके किसी २५  
निर्दोषी को घात करे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन । जो कोई इस २६  
व्यवस्था के बचनों को पालन करने को स्थिर न रहे सो सापित और समस्त  
लोग कहें आमीन ॥

- अट्टाईसवां पृष्ठ ।

और ऐसा होगा कि यदि तू ध्यान से परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुनेगा १  
और चेत में रखके उस की समस्त आज्ञाओं को मानेगा जो आज के दिन में  
तुझे आज्ञा करता हूँ तो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे पृथिवी के समस्त जातिगणों २  
में श्रेष्ठ करेगा । और यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा तो ये ३  
समस्त आशीस तुझ पर आवेंगी और तुझे जाही लंगी । तू नगर में धन्य ४  
और खेत में धन्य होगा । तेरे शरीर का और तेरी भूमि का फल और तेरे ५  
ढेर का फल तेरी गाय बैल की बढ़ती और तेरे भेड़ के झुंड धन्य । तेरा ६  
टोकरा और तेरा कठरा धन्य । तू अपने बाहर भीतर आने जाने में धन्य । पर- ७  
मेश्वर तेरे वैरियों को जो तेरे विरुद्ध उठेंगे तेरे सन्मुख मारेगा वे एक मार्ग से तुझ ८  
पर चढ़ आवेंगे और सात मार्गों से तेरे आगे से भाग निकलेंगे । परमेश्वर तेरे भंडार ९  
पर और तेरे हाथ के समस्त कार्यों पर तेरे लिये आशीस की आज्ञा करेगा और



- ५१ बूढ़ों को समझेगी न तरुण पर दया करेगी । और वह तेरे ठोर का फल और तेरी भूमि का फल खा जावेगी जब लों तू नाश न हो जावे जो तेरे लिये अन्न और दाखरस अथवा तेल अथवा तेरी गाय बैल की बढती अथवा तेरी भेड़
- ५२ बकरी का भुंड न छोड़ेगी जब लों तुम्हें नाश न करे । और वे तुम्हें तेरे हर एक फाटकों में आ घेरेंगे यहां लों कि तेरी कंची और दृढ़ भीतें जिन पर तू ने अपने समस्त देश में भरोसा किया था गिर जावेगी और वे तुम्हें तेरे उस समस्त देश में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें दिया है तेरे हर एक फाटकों में आ
- ५३ घेरेंगे । और सकेती और कष्ट में जो तेरे बैरियों के कारण से तुम्हें पर पड़ेगी तू अपनी देह का फल और अपने बेटे बेटियों का मांस खावेगा जिन्हें पर-
- ५४ मेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें दिया है । उस जन की आंखें जो तुम में कोमल और अति सुकुआर होगा अपने भाई और अपनी गोद की पत्नी और अपने वच्चे
- ५५ हुए लड़कों से दुरी हो जावेगी । यहां लों कि वह अपने बालक के मांस में से जिसे वह खावेगा उन में से किसी को कुछ न देगा इस कारण कि उस सकेती और क्रोध में जो तेरे बैरियों के कारण से तेरे समस्त फाटकों में तुम्हें पर होंगे
- ५६ उस के लिये कुछ न बचेगा । तुम्हें में कोमल और सुकुआर स्त्री जो कोमलता और सुकुआरी के सारे अपने घावों को भूमि पर न धरती थी अपनी गोद के
- ५७ पति और अपने बेटा बेटों की ओर से उस की आंखें दुरी हो जावेगी । और अपने नन्हे बालक से जो उससे उत्पन्न होगा और अपने लड़कों से जिन्हें वह जनेगी क्योंकि वह सकेती के कारण से जो तेरे बैरी तेरे फाटकों में तुम्हें पर लावेगी छिपके उन्हें खावेगी ॥
- ५८ यदि तू पालन करके इस व्यवस्था के समस्त वचनों पर जो इस पुस्तक में लिखे हैं न चलेगा जिसमें तू उस के तेजमय और भयंकर नाम से जो परमेश्वर
- ५९ तेरा ईश्वर है न डरे । तब परमेश्वर तेरी मरियों को और तेरे वंश की मरियों को अर्थात् बड़ी बड़ी मरियों को जो बहुत दिन ताई रहेगी और बड़े बड़े
- ६० रोगों को जो बहुत दिन लों रहेंगे आश्चर्यित बनावेगा । और मिस्र के सारे रोग
- ६१ जिन से तू डरता था तुम्हें पर लावेगा और वे सब तुम्हें पर चिपकेंगे । हर एक रोग भी और हर एक मरी जो इस व्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखी है परमेश्वर तुम्हें
- ६२ पर पहुंचावेगा जब लों तू नाश न होवे । और जैसा कि तुम लोग स्वर्ग के तारों की नाईं थे गिनती में थोड़े से रह जाओगे क्योंकि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के
- ६३ शब्द को न माना । और ऐसा होगा कि जिस रीति से परमेश्वर ने तुम पर आनन्द होके तुम्हारे साथ भलाई करके तुम्हें बढाया उसी रीति से परमेश्वर तुम्हें नाश करके मिटा देने में आनन्दित होगा और तुम उस भूमि पर से उखाड़े
- ६४ जाओगे जिस का अधिकारी तू होने जाता है । और परमेश्वर तुम्हें समस्त जातियों में पृथिवी के इस खंड से उस खंड लों छिन्न भिन्न करेगा और वहां तू और देवतों की जो काष्ठ और पत्थर हैं जिन्हें तू और तेरे पितर नहीं जानते
- ६५ थे पूजा करेगा । और उन जातिगणों में तुम्हें को चैन न मिलेगा और न तेरे पांवों के तलवों का विश्राम मिलेगा परन्तु परमेश्वर वहां तुम्हें कंपित मन और

धान न होगा और केवल तुझ पर अंधेर हुआ करेगा और कोई न बचावेगा । तू ३०  
 पत्नी से मंगनी करेगा और दूसरा उसे ग्रहण करेगा तू घर बनावेगा परन्तु उस  
 में वास न करेगा तू दाख की धारी लगावेगा परन्तु उस का फल न खावेगा ।  
 तेरा बैल तेरी आंखों के सामने मारा जावेगा और तू उससे न खावेगा तेरा ३१  
 गदहा तेरे आगे से बरबस लिया जावेगा और तुझे फेरा न जावेगा तेरी भेड़ बक-  
 रियां तेरे बैरियों की दिई जावेंगी और कोई तेरे लिये न हुड़ावेगा । तेरे बेटे ३२  
 और तेरी बेटियां और लोगों को दिई जावेंगी और तेरी आंखें देखेंगी और दिन  
 भर उन के लिये कुड़ते कुड़ते घट जावेंगी और तेरे हाथ में कुछ दृता न  
 रहेंगे । तेरी भूमि का और तेरे सारे परिश्रम का फल एक जाति जिसे तू ३३  
 नहीं जानता खा जावेगी और तुझ पर नित्य केवल अंधेर होगा और पिसा  
 जावेगा । यहां लो कि तू आंखों से देखते देखते चौंका दे जावेगा । पर- ३४  
 मेश्वर तुझे छुटनों में और टांगों में ऐसे घुरे फाड़ों से मारेगा कि तू अपने पांय  
 के तलबे से अपनी चांदी ताई चंगा न हो सकेगा । परमेश्वर तुझे और तेरे ३५  
 राजा को जिसे तू अपने ऊपर स्थापित करेगा उस जाति के पान ले जावेगा  
 जिसे तू और तेरे पितरों ने न जाना और वहां तू नकदी पत्थर के देवता की  
 पूजा करेगा । और तू उन सब जातियों में जहां जहां परमेश्वर तुझे पहुंचावेगा एक ३६  
 आश्चर्य और कटावत और आलाचना होगा । तू खेत में बहुत से बीज बोवेगा ३७  
 और थोड़ा बटोरेगा क्योंकि उन्हें टिढ़ी चाट लेंगी । तू दान्य को घाने लगा- ३८  
 वेगा और उस की सेवा करेगा और मदिग पीने और दान्य गकट्टा करने न  
 पावेगा क्योंकि उन्हें कीड़े खा जावेंगे । तेरे समस्त सिंघानों में जनपाई के पेड़ ३९  
 होंगे परन्तु तू चिकनाई लगाने न पावेगा क्योंकि तेरी जनपाई बहुत आवेंगी । तू ४०  
 बेटे बेटियां जन्मावेगा और वे तेरे न होंगे क्योंकि वे बंधुआई में जावेंगे ।  
 तेरे समस्त पेड़ की और तेरी भूमि के फल को टिढ़ी चाट जावेंगी । परदेशी ४१  
 जो तेरे मध्य में होगा तुझ से प्रयत्न और ऊंचा होगा और तू नीचा हो जावेगा । ४२  
 वह तुझे उधार देगा परन्तु तुझ से उधार न लेगा वह सिर होगा और तू पूँछ ४३  
 होगा ॥

और ये समस्त साप तुझ पर आवेंगे और तेरे पीछे पड़ेंगे और तुझे जा ही ४४  
 लेंगे जब लो तू नाश न होवे क्योंकि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को न  
 सुना कि उस की आज्ञाओं को और उस की विधि को पालन करता इसी उस  
 ने तुझे आज्ञा किई है । और वे तुझ पर और तेरे वंश पर सदा के लिये चिन्ह ४५  
 और आश्चर्य होंगे । इस कारण कि तू ने समस्त बहुताई के लिये मन को ४६  
 आनन्दता और मगनता से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा न किई । इस लिये तू ४७  
 भूख में और पिपास में और नम्रता में और दरिद्रता में अपने बैरियों की सेवा  
 करेगा जिन्हें परमेश्वर तुझ पर भेजेगा और वह तेरे कंधे पर लोहे का जुआ  
 डालेगा जब लो तुझे नाश न कर लेवे । परमेश्वर दूर से एक जाति को पृथिवी ४८  
 के अंत सिंघाने से एक सेसी जाति जैसा गिह उड़ता है तुझ पर चढ़ा लावेगा  
 एक जाति जिस की भाषा तू न समझेगा । भयंकर रूप की जाति जो न ४९

- १६ और तुम ने उन की लकड़ी और पत्थर और चांदी और सोने की धिन्ति  
 १७ मूर्तों को जो तुम्हारे साथ थीं देखा है । ऐसा न हो कि तुम्हों में कोई पुरुष  
 अथवा स्त्री अथवा घराना अथवा गोष्टी ऐसी हो कि जिस का मन आज के  
 दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर से फिर जावे और उन जातिगणों के देवतों की सेवा  
 करे ऐसा न हो कि तुम्हारे बीच ऐसी जड़ हो जो कहूँ और नागादीना  
 १८ उपजावे । और यों होवे कि जब यह इस साप की बातें सुने तो यह आप  
 को अपने मन में आशीस देके कहे कि मैं चैन कम्हा क्योंकि अपने मन की  
 १९ भावना में चलूँगा कि प्रियास में मतवालपन मिलाऊँ । परमेश्वर उसे न छोड़ेगा  
 क्योंकि उसी समय उस जन पर परमेश्वर का क्रोध और उस का कोप भड़केगा  
 और समस्त साप जो इस पुस्तक में लिखे हैं उस पर पड़ेंगे और परमेश्वर  
 २० उस के नाम को स्वर्ग के तले से मिटा देगा । और परमेश्वर याचा के समस्त  
 सापों के समान जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हैं इसराएल की सारी  
 २१ गोष्टियों में से बुराई के लिये उस को अलग करेगा । यहाँ लों कि अवैया  
 पीछी अर्थात् तुम्हारे वालक जो तुम्हारे पीछे उठेंगे और परदेशी जो दूर देश से  
 आवेंगे उस देश की मरी और रोगों को जो परमेश्वर ने उस पर धरे हैं देखके  
 २२ कहेंगे । कि यह सारा देश गंधक और लोह से जल गया कि न बोया जाता  
 न उपजता और न कुछ घास उगती है जैसे कि सदूम और अमूरः अदमः और  
 जिवीआन उलट गये जिन्हें परमेश्वर ने अपनी रिस से और अपने कोप से उलट  
 २३ दिया । और समस्त जातिगण कहेंगे कि परमेश्वर ने इस देश पर ऐसा क्यों किया  
 २४ इस महा कोप के तपन का क्या कारण है । तब लोग कहेंगे इस लिये कि  
 उन्होंने ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर की उस याचा को त्याग किया जो मिस्र  
 २५ देश से निकालने के समय उन से वांछी थी । और उन्होंने ने जाके आन आन  
 देवतों की सेवा और उन्हें दण्डवत् किई उन देवतों को जिन्हें वे न जानते थे  
 २६ और जिन्हें उस ने उन्हें न दिया था । सो परमेश्वर का क्रोध इस देश पर  
 भड़का कि उस ने समस्त साप जो इस पुस्तक में लिखे हैं इस पर प्रगट किये ।  
 २७ और परमेश्वर ने रिस और कोप और बड़ी जलजलाहट से उन के देश से  
 उन्हें उखाड़ा है और दूसरे देश पर आज के दिन की नाईं उन्हें डाल दिया ।  
 २८ गुप्त बातें परमेश्वर हमारे ईश्वर की हैं परन्तु प्रकाशित हमारे और हमारे वंश  
 के लिये सदा लों हैं जिसते हम इस व्यवस्था के समस्त वचनों को पालन  
 करें ॥

तीसवां पृष्ठ ।

- १ और यों होगा कि जब यह सब बातें अर्थात् आशीस और साप जिन्हें मैं ने  
 तेरे आगे रक्खा तुझ पर पड़ेगा और तू उन सब जातिगणों में जहाँ जहाँ पर-  
 २ मेश्वर तेरा ईश्वर तुझे हाँकेगा उन्हें चेत करेगा । और तू परमेश्वर अपने ईश्वर  
 की ओर फिरेगा और उस की समस्त आज्ञा के समान जो आज मैं तुझे कहता  
 हूँ अपने लइकों समेत अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से उस के शब्द  
 ३ को मानेगा । तब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी बंधुआई में तेरे पास आवेगा और

धुंधली आंखें और मन की उदासी देगा । और तेरा जीवन तेरे आगे दुविधा में ईदें  
 टंगा रहेगा और तू रात दिन डरता रहेगा और तेरे जीवन का भरोसा न  
 रहेगा । अपने मन के डर से जिस्मे तू डरेगा और उन वस्तुन-से जिन्हें तेरी ई०  
 आंखें देखेंगी विद्वान को तू कहेगा कि हाय कब सांभ होगी और सांभ को कि  
 हाय कब विद्वान होगा । और परमेश्वर तुम्हें उस मार्ग से जिस के विषय में मैं ई०  
 ने तुम्हें कहा कि तू उसे फिर न देखेगा तुम्हें जहाजों में मिस को फेर लावेगा  
 और तुम वहां दासों और दासियों की नाईं अपने चैरियों के हाथ बेचे जाओगे  
 और कोई मोल न लेगा । ये उस नियम की बातें हैं जो परमेश्वर ने मूसा को ई०  
 आज्ञा किई कि मोअब की भूमि में इसराएल के संतानों से करे उस नियम को  
 छोड़ जो उस ने उन से तोरिख में किया था ॥

उन्तीसवां पृष्ठ ।

और मूसा ने समस्त इसराएल को बुलाके उन्हें कहा जो कुछ कि परमेश्वर १  
 ने तुम्हारी आंखों के आगे मिस के देश में फिरकन और उस के समस्त सेवकों  
 और उस के समस्त देश से किया तुम ने देखा है ॥

वे बड़ी बड़ी परीक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा है वे लक्षण और वे बड़े २  
 बड़े आश्चर्य । तथापि परमेश्वर ने तुम्हें समझने का मन और देखने की आंखें ३  
 और सुने के कान आज लों न दिये । और मैं तुम्हें चालीस वरस वन में लिये ४  
 फिरा तुम पर तुम्हारे कपड़े पुराने न हुए न तेरे जूते तेरे पांयों में पुराने हुए ।  
 तुम ने रोटी न खाई और तुम ने मदिरा अथवा मद्य न पिया जिसमें तुम जानो ५  
 कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं । और जब तुम इस स्थान में आये तब इस्राएल ६  
 का राजा सैहून और वसन का राजा कज संग्राम के लिये हम पर चढ़ आये और हम  
 ने उन्हें मारा । और हम ने उन का देश ले लिया और उसे रुदिनियों और झद्वियों ७  
 और मुनस्सी की आधी गोष्टी को अधिकार में दिया । सो तुम इस नियम की बातों ८  
 को पालन करो और उन्हें मानो जिसमें अपने सब कामों में भाग्यवान होओ । आज ९  
 के दिन तुम तुम्हारे प्रधान तुम्हारी गोष्टियां तुम्हारे प्राचीन और तुम्हारे करोड़ों अर्थात्  
 समस्त इसराएल के लोग परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर के आगे खड़े होते हैं ॥

तुम्हारे बालक तुम्हारी पत्नियां और तेरे परदेशी जो तेरी छावनी में रहते हैं १०  
 तेरे लकड़हारे से लेकर तेरे पनभरे लों । जिसमें तू परमेश्वर अपने ईश्वर के उस ११  
 नियम और किरिया में प्रवेश करे जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुम्हें से आज के  
 दिन करता है । जिसमें वह आज के दिन तुम्हें अपने लिये एक लोग स्थिर १२  
 करे कि वह तेरा ईश्वर होवे जैसा उस ने तुम्हें कहा और जैसा उस ने तेरे पितरों  
 अविरहाम इजहाक और यशकूब से किरिया खाई है । सो मैं तुम्हारे ही १३  
 साथ केवल यह नियम और किरिया नहीं करता । परन्तु उस के साथ भी १४  
 जो आज के दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर के आगे हमारे संग खड़ा है और उस  
 के साथ भी जो आज के दिन हमारे साथ नहीं है । क्योंकि तुम जानते हो १५  
 कि हम मिस में क्योंकर वास करते थे और क्योंकर उन जातिगणों के मध्य में  
 से जिन में तुम रहते थे निकल गये ॥

३० सो मूसा ने इस गीत के बचनों को इसराएल की समस्त संजली को कह सुनाके पूरा किया ।

वत्तीसवां पद्य ।

१ हे स्वर्गी कान धरो और मैं कहूंगा और हे पृथिवी मेरे मुंह की बातें सुन ।  
 २ मेरी शिक्षा मुंह की नाईं टपकेगी मेरी बातें आस के समान चूवेंगी जैसे सागपात  
 ३ पर फूटो पड़ें और घास पर झड़ियां । क्योंकि मैं परमेश्वर के नाम का प्रगट  
 ४ करता हूं तुम हमारे ईश्वर के नाम की महिमा करो । वह चटान है उस का  
 ५ कार्य सिद्ध है क्योंकि उस के सब मार्ग न्याय के हैं वह सच्चा सर्वशक्तिमान है  
 ६ और दुराई से रहित वह आप्त और सच्चा है । उन्होंने ने आप को नष्ट किया व  
 ७ उस के बालक नहीं वे अपने चिन्ह हैं वे हठीली और टेढ़ी पीढ़ी हैं । हे  
 ८ मूर्ख और निर्बुद्ध लोगो क्या तुम परमेश्वर को यों पलटा देते हो क्या वह तेरा  
 ९ पिता नहीं है जिस ने तुम्हें मोल लिया क्या उस ने तुम्हें नहीं सिरजा और तुम्हें  
 १० स्थिर न किया । अगले दिनों को चेत करो पीढ़ी पर पीढ़ी के बरसों का सोचा  
 ११ अपने पिता से पूछ और वह तुम्हें बतावेगा अपने प्राचीनों से और वे तुम्हें  
 १२ से कहेंगे । जय अति महान ने जातिगणों के लिये अधिकार बांटा जय उस  
 १३ ने आदम के संतान को अलग किया इसराएल के संतानों की गिनती के समान  
 १४ उस ने लोगों का सिवाना ठहराया । क्योंकि परमेश्वर का भाग उस के लोग हैं  
 १५ यशस्कृत्य उस के अधिकार की रस्ती है । वह उसे उजाड़ देश और भयानक अरण्य  
 १६ में पाता वह उसे घेर लेता उसे शिक्षा देता है अपनी आंख की पुतली की नाईं  
 १७ उस की रक्षा करता है । जैसा गिट्ट अपने खोले को हिलाता है अपने बच्चों पर  
 १८ फरफराता है अपने पंखों को फैलाके उन्हें लेता है अपने पंखों पर उन्हें उठाता  
 १९ है । वैसा ही केवल परमेश्वर ने उस की अगुआई किई और उस के साथ कोई  
 २० ऊपरी देव न था । वह उसे पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चढ़ाता है जिसमें वह  
 २१ खेतों की बढ़ती खावे और उसे चटान में से मधु और चक्मक के चटान में से  
 २२ तेल चुसाता है । गाय के मखन और भेड़ के दूध मेंनों की चिकनाई समेत और  
 २३ बसन देश के पाले हुए मेंठों वकरों गोहूँ के गुदों की चिकनाई सहित तू ने दाख  
 २४ का निराला रस पीया । परन्तु यशूरून मोटा हुआ और लतिआने लगा तू मोटा  
 २५ हुआ है और फैल गया है तू ठंघ गया है तब उस ने ईश्वर अपने बनानेहारे को  
 २६ छोड़ दिया और अपनी मुक्ति के चटान को तुच्छ जाना । उन्होंने ने ऊपरी  
 २७ देवतों के कारण उसे भूल दिया उन्होंने ने उसे घिनितों से रिस दिलाया । उन्होंने  
 २८ ने पिशाचों के लिये बलिदान चढ़ाये जो ईश्वर न थे उन देवतों के लिये जिन  
 २९ को वे न पहिचानते थे वे देवता जो थोड़े दिनों से प्रगट हुए जिन से तुम्हारे  
 ३० पितर न डरते थे । तू उस चटान से अचेत है जिस ने तुम्हें उत्पन्न किया और  
 ३१ उस सर्वशक्तिमान को भूल गया जिस ने तेरा डौल किया । जब परमेश्वर ने देखा  
 तब उस ने घिन किया इस कारण कि उस के बेटा बेटी ने उसे रिस दिलाया ।  
 ३२ और उस ने कहा कि मैं उन से अपना मुंह छिपाऊंगा जिसमें मैं उन का अंत देखूं  
 ३३ क्योंकि वे टेढ़ी पीढ़ी हैं ऐसे लड़के जिन में विश्वास नहीं । उन्होंने ने अनीश्वर

तुम्हें उन सब जातिगणों में से जिन में परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें छिन्न भिन्न ४  
 किया है दयाल होके फेरगा और एकट्ठे करेगा । यदि कोई तुम्हें मेरा आकाश के ४  
 अंत में हांका गया होगा तो परमेश्वर तेरा ईश्वर वहां से एकट्ठा करके तुम्हें ५  
 फेर लावेगा । और परमेश्वर तेरा ईश्वर तुम्हें उस देश में जिस के तेरे पितर ५  
 अधिकारी थे और तू उस का अधिकारी होगा और वह तुम्हें से भलाई करेगा ६  
 और तेरे पितरों से अधिक तुम्हें बढ़ावेगा । और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे और ६  
 तेरे वंश के मन का खतन करेगा कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन ७  
 और अपने सारे प्राण से प्यार करे जिसमें तू जीता रहे । और परमेश्वर तेरा ७  
 ईश्वर ये समस्त साप तेरे दैरियों पर और उन पर डालेगा जो तेरा डाल रखते ८  
 हैं जिन्होंने ने तुम्हें सताया । और तू फिर आवेगा और परमेश्वर के शब्द को ८  
 मानेगा और उस की उन समस्त आज्ञाओं को जो आज के दिन में तुम्हें करता ९  
 हूं पालन करेगा । और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के हर एक काम में तेरे ९  
 शरीर के फल में और तेरे ढार के फल में और तेरी भूमि के फल में भलाई के १०  
 लिये तुम्हें अधिक करेगा क्योंकि परमेश्वर आनन्दित होके तुम्हें से फिर भलाई १०  
 करेगा जैसा वह तेरे पितरों से आनन्दित था । जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के १०  
 शब्द को सुनेगा जिसमें उस की आज्ञाओं और उस की विधि को जो व्यवस्था की ११  
 इस पुस्तक में लिखी हुई हैं स्मरण करे जब तू अपने सारे मन से और अपने ११  
 सारे प्राण से परमेश्वर अपने ईश्वर को और फिर ॥

क्योंकि यह आज्ञा जो आज में तुम्हें करता हूं वह तुम्हें से न छिपी है और ११  
 वह न दूर है । वह स्वर्ग पर नहीं जो तू कहे कि हमारे लिये कौन स्वर्ग पर १२  
 जावेगा और हमारे पास उसे लावे जिसमें हम उसे सुनें और पालन करें । और १३  
 न वह समुद्र पार है जो तू कहे कौन हमारे लिये समुद्र पार जावेगा और उसे १३  
 हम पास लावे कि हम उसे सुनें और पालन करें । क्योंकि वचन तेरे पास १४  
 ही तेरे मुँह में और तेरे अंतःकरण में है जिसमें तू उसे पालन करे ॥

देख मैं ने आज जीवन और भलाई को और मृत्यु और दुःख को तेरे आगे १५  
 रक्खा है । सो मैं तुम्हें परमेश्वर अपने ईश्वर पर प्रेम करने को और उस के मार्गों १६  
 पर चलने को और उस की आज्ञाओं और उस की विधि और उस के विचारों १६  
 को पालन करने को आज तुम्हें आज्ञा करता हूं जिसमें तू जीये और बढ़े और १७  
 परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का तू अधिकारी होने जाता है तुम्हें १७  
 आशीस देवे । परन्तु यदि तेरा मन फिर जावे और तू न सुने और फुसलाया १८  
 जावे अथ और देवताओं को दंडवत करे और उन की सेवा करे । तो आज मैं १८  
 तुम्हें सुना रखता हूं कि तुम निश्चय नाश हो जाओगे उस भूमि पर जिस के १९  
 अधिकारी होने परदन पार जाते हो तुम्हारी वय अधिक न होगी । मैं आज १९  
 स्वर्ग और पृथिवी को तुम्हारे ऊपर साक्षी लाता हूं कि मैं ने जीवन और मृत्यु २०  
 और आशीस और साप तेरे सामने रक्खे सो तू जीवन को चुन जिसमें तू और २०  
 तेरा वंश दोनों जीवें । कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम करे और उस के २०  
 शब्द को माने और उसे लवलीन रहे क्योंकि वही तेरा जीवन और तेरे दाय की



४४ तब मूसा और नून के बेटे यष्टूश ने आके इस गीत की सारी बातें लोगों  
 ४५ को कह सुनाई । और जब मूसा ये सारी बातें इसराएल के संतानों को कह  
 ४६ चुका । तब उस ने उन्हें कहा कि उन सारी बातों से जिन की मैं आज के दिन  
 तुम्हें मैं साक्षी देता हूँ अपने मन लगाओ जिसमें उन्हें अपने बालकों को आज्ञा  
 ४७ करो कि पालन करके इस व्यवस्था की सारी बातों को मानें । क्योंकि यह  
 तुम्हारे लिये वृथा नहीं इस कारण कि वह तुम्हारा जीवन है और इसी बात  
 के लिये इस देश में जिस के अधिकारी देने तुम यरदन पार जाते हो अपनी  
 आयुर्दाय बढ़ाओगे ॥

४८ और परमेश्वर ने उसी दिन मूसा से यह वचन कहा । अरारीम के इस पर्वत  
 ४९ पर नूब पहाड़ी पर मोअब के देश में जो यरीहो के नाम से है चढ़ जा और कनआन  
 ५० देश को देख जिसे मैं इसराएल के सन्तान को अधिकार में देता हूँ । और उसी  
 पहाड़ी पर जिस पर तू जाता है मर जा और अपने लोगों में बहुर जा जैसे  
 ५१ तेरा भाई हारन दूर पहाड़ पर मर गया और अपने लोगों में बहुर गया । इस  
 कारण कि तुम्हें ने इसराएल के सन्तान के मध्य कादिस के भगड़े के पानी पर  
 सीन के अरण्य में मेरा अपराध किया क्योंकि तुम ने इसराएल के सन्तान के मध्य  
 ५२ में मुझे पवित्र न किया । क्योंकि तू साम्दान से उन देश को देख लेगा वहां न  
 आवेगा अर्थात् उस देश में जो मैं इसराएल के सन्तानों को देता हूँ ॥

तृतीयवां पर्व ।

१ और यह वह आशीस है जिसे ईश्वर के जन मूसा ने अपने मरने से आगे  
 २ इसराएल के सन्तानों को आशीस दिया । और कहा कि

परमेश्वर सीना से आया और शईर से प्रगट हुआ फारान पहाड़ से उन पर  
 चमक उठा और वह दस सहस्र सिद्धों के साथ आया उस के दाहिने हाथ से  
 ३ एक आग की व्यवस्था उन के लिये निकली । हां उस ने लोगों से प्रेम किया  
 उस के समस्त सिद्ध तेरे हाथ में और वे तेरे चरणों के पास बैठ गये और तेरी  
 ४ बातों से पावेंगे । मूसा ने हम से अर्थात् यष्टूश की मंडली के अधिकार के लिये  
 ५ एक व्यवस्था कही । और वह यष्टूश में राजा था जब लोगों के प्रधान इस-  
 ६ राएल की गोष्ठी एकट्ठे थे । खनिन जीवे और न मरे और उस के जन थोड़े  
 न हों ॥

७ और यहूदाह के लिये उस ने यह कहा कि

हे परमेश्वर यहूदाह का शब्द सुन और उसे उस के लोगों में पहुंचा उस के  
 हाथ उस के लिये बहुत होवें और तू उस के वैरियों से सहायक हो ॥

८ और उस ने लावी के बिषय में कहा कि

तेरा तुम्सीम और तेरा उरीम तेरे धर्ममय के साथ होवे जिसे तू ने मस्सः  
 ९ में परखा और जिस के साथ तू मरीबः के पानियों पर भगड़ा । जिस ने अपनी  
 माता पिता से कहा कि मैं ने उसे न देखा और उस ने अपने भाइयों को न  
 माना न अपने बालकों को पहिचाना क्योंकि उन्होंने ने तेरे वचन को माना  
 १० और तेरी बाचा को धारण किया । वे तेरे बिचार यष्टूश को और तेरी व्यवस्था

से मुझे ज्वलन दिलाया उन्हें ने व्यर्थों से मुझे रिस दिलाया सो मैं भी उन्हें  
 अलोग से झल दिलाऊंगा और एक मुख जाति से उन्हें रिस दिलाऊंगा । क्योंकि २२  
 मेरी रिस में आग भड़की है और अत्यंत नरक लों जली है और पृथिवी को उस  
 की वढ़ती समेत भस्म कर गई और पहाड़ों की नेत्रों को जला दिया है । मैं उन २३  
 पर विपत्ति का डेर कदंगा उन पर अपने बाणों को घटाऊंगा । वे भूख से जल २४  
 जावेंगे और भस्मक तपन और कड़वे विनाश से भक्षण किये जावेंगे और मैं  
 पशुओं के दांतों को और पृथिवी के विषधर सर्पों को छोड़ूंगा । दाढ़र तलवार २५  
 और कोठरियों से भय तरुण मनुष्य को कुयारी को भी दूध पीवक को पुरनियां  
 सहित नाश करेंगे । मैं ने कहा कि मैं उन्हें कोने कोने छिन्न भिन्न करता मैं मनुष्यों २६  
 में से उन का नाम मिटा देता । यदि मैं शत्रु के क्रोध पर दृष्टि न करता न हो २७  
 कि उन के वैरी घमंड करें और न हो कि वे कहें कि हमारा ही हाथ प्रचल  
 हुआ और परमेश्वर ने ये सब नहीं किये । क्योंकि वे मन्त्र गीत जानि हैं और २८  
 उन में युद्धि नहीं । हाथ कि वे युद्धिमान होके इसे समझते अपने अन्नकाल की २९  
 विन्ता करते । तो कैसे एक सद्य को खेदता और दो दस सद्य को भगाते यदि ३०  
 उन का चटान उन्हें न घेंच डाले होता और परमेश्वर उन्हें धंद किये न होता ।  
 क्योंकि उन का चटान हमारे चटान के समान नहीं हां हमारे वैरी आप ३१  
 न्यायी हैं । क्योंकि उन का दाख मद्रूम के दाख में के और अमूर के खेतों का ३२  
 है उन के अंगूर पित्त के अंगूर हैं उन के गुच्छे उन के लिये कड़वे हैं । उन ३३  
 की सदिरा नागों का विष है और सपोलों का कठिन विष । क्या यह सुभ पास ३४  
 धरा नहीं मेरे भंडारों में धंड नहीं । प्रणिफल और दण्ड देना मेरा है उन का पांच ३५  
 समय पर फिसलेगा क्योंकि उन की विपत्ति का दिन आ पहुंचा और उन  
 पर जो वस्तु आती है सो गीघ्र करती है । क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों का ३६  
 न्याय करेगा और अपने सेवकों के लिये पकतावेगा जब वह देखेगा कि सामर्थ्य  
 जाती रही और कोई धंद अथवा छूटा नहीं है । और कहेगा कि उन के देव- ३७  
 गण पहाड़ जिन का उन्हें भरोसा था क्या हुए । जिन्होंने ने उन के बलिदानों ३८  
 की चिकनाई खाई और पीने की भेंट की सदिरा पिई वं उठें और तुम्हारा वचाव  
 करें और तुम्हारे सहायक होवें । अब देखो कि मैं मैं बली हूं और कोई ईश्वर मेरा ३९  
 साथी नहीं मैं ही मारता हूं और लिलाता हूं मैं घायल करता हूं और मैं ही चंगा  
 करता हूं और कोई नहीं जो मेरे हाथ में छुड़ावे । क्योंकि मैं अपना हाथ ४०  
 स्वर्ग की ओर उठाता हूं और कहता हूं कि मैं ही मनातन जीवता हूं । यदि ४१  
 मैं अपना चमकता हुआ खड्ग चाखा करूं और मेरा हाथ न्याय धारण करे तो  
 मैं अपने शत्रुन से प्रतिफल लूंगा और जो सुभ से वैर रखते हैं उन्हें पलटा दूंगा ।  
 मारे हुएों और वंधुओं के लोहू से शत्रु पर पलटा लेने के आरंभ से मैं अपने ४२  
 बाणों को रुधिर से उन्मत्त कदंगा और मेरी तलवार मांस खावेगी । हे जाति- ४३  
 गणो उस के लोगों के साथ आनन्द से गाओ क्योंकि वह अपने सेवकों के लोहू  
 का पलटा और अपने शत्रुन से घदला लेगा और अपने देश और अपने लोगों  
 पर दयाल होगा ॥

२६ यशूखन के सर्वशक्तिमान के समान कोई नहीं जो स्वर्ग पर तेरी सहाय के  
 २७ लिये चढ़ता है और उस की प्रतिष्ठा में आकाश पर । सनातन का ईश्वर तेरा  
 शरण है और नीचे सनातन की भुजा और दैगे को तेरे आगे से यह हाँकेगा  
 २८ और कहेगा कि उसे नाश कर । तब इसराएल अकेला खेन से रहेगा यशूखन का  
 २९ सोता अनु और मदिरा की भूमि पर होगा उस के आकाश से ओस पड़ेगी । हे  
 इसराएल तू धन्य है लोग तुझे सा कौन है कि परमेश्वर ने तुझे बचाया है वह  
 तेरी सहाय के लिये ढाल और तेरी बढ़ाई की तलवार है और तेरे शत्रु तेरे वश  
 में होंगे और तू उन के ऊँचे स्थानों को लताड़ेगा ॥

चौतीसवां पृष्ठ ।

१ और मूसा मोअब के चौगानों से नूब के पहाड़ पर पिसगः की चोटी पर जो  
 यरीहो के सामे है चढ़ गया और परमेश्वर ने जिलियद के समस्त देश दान लों  
 २ उसे दिखाया । और समस्त नफ्ताली और इफरायम और सुनस्सी के देश और  
 ३ यहूदाह के समस्त देश अत्यंत समुद्र लों । और दक्षिण और यरीहो के चौगान की  
 ४ नीचाई जो खजूर के पेड़ का नगर है सुग लों उस को दिखाया । और परमेश्वर  
 ५ ने उसे कहा कि यह वह देश है जिस की मैं ने अविरहाम इजटाक और यशूखन  
 से किरिया खाके कहा कि मैं उसे तेरे वंश को दूंगा मैं ने तुझे आँखों से दिखा  
 दिया परन्तु तू उधर पार न जावेगा ॥

६ सो परमेश्वर का सेवक मूसा परमेश्वर के वचन के समान वहाँ मोअब के देश  
 ७ में मर गया । और उस ने उसे मोअब के देश की तराई में दैतफाजर के सामे  
 ८ गाढ़ा पर आज के दिन लों कोई उस की समाधि को नहीं जानता । और मूसा  
 अपने मरने के समय में एक सौ बीस वरस का था उस की आँखें धुंधली न हुईं  
 ९ और उस का स्वाभाविक बल न घटा । और इसराएल के संतानों ने मूसा के  
 लिये मोअब के चौगानों में तीस दिन लों विलाप किया तब मूसा के लिये उन  
 के रोने पीटने के दिन समाप्त हुए ॥

१० और नून का वेटा यहूशुअ बुद्धि के आत्मा से भर गया क्योंकि मूसा ने अपने  
 हाथ उस पर रखे थे और इसराएल के संतान ने उसे माना और जैसा परमेश्वर  
 ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने वैसा ही किया ॥

११ और इसराएल में मूसा के समान कोई आगमज्ञानी फेर न हुआ जिसे  
 १२ परमेश्वर आम्ने सामे जानता था । उन सब अवंभित और आश्चर्यित जिन्हें मिस्र  
 देश में प्रगट करने के लिये परमेश्वर ने उसे फिरजन के पास और उस के समस्त  
 १३ सेवकों के पास और उस के समस्त देश में भेजा । और समस्त सामर्थी हाथ  
 और समस्त बड़े बड़े भय में जो मूसा ने समस्त इसराएल के आगे दिखाये ॥

इसराएल को सिखावे वे तेरी नासिका के आगे धूप रखें और होम के पूरे बलिदान तेरी वेदी पर धरें । हे परमेश्वर उस की संपत्ति पर आशीस दे और ११ उस के हाथों के कामों को ग्राह्य कर जो उस के विरोध में उठे और जो उसे बर रखे उन की कटि वेध डाल जिसमें वे फिर न उठें ॥

उस ने विनयमीन के विषय में कहा कि १२

परमेश्वर का प्रिय उस के पास चैन से रहेगा उसे दिन भर आहू करेगा और वह उस के दोनों कांधों के बीच रहेगा ॥

और उस ने यूसुफ के विषय में कहा कि १३

उस की भूमि पर ईश्वर की आशीस होगी स्वर्ग की बहुमूल्य वस्तुन के लिये और ओस के कारण और गहिराव के कारण जो नीचे भुका है । और मूर्ख के १४ निकाले हुए अच्छे फलों में से और चन्द्रमा की निकाली हुई अच्छी वस्तुन के कारण । और प्राचीन पहाड़ों की श्रेष्ठ वस्तुन के लिये और दृढ़ पहाड़ियों की १५ बहुमूल्य वस्तुन के कारण । और पृथिवी की बहुमूल्य वस्तुन और उस की भरपूरी १६ के कारण और उस की भलाई के लिये जो झाड़ी में रहता था यूसुफ के सिर पर उतरे और उस के मस्तक पर जो अपने भाइयों से अलग किया गया था । उस १७ का विभव उस के बैल के पहिलौठे की नाईं और उस के सींग गँड़े के सींग वह उन्हीं से लोगों को पृथिवी के सिवाने लों रेलेगा और वे इफरायम के दस सहस्र और वे मुनस्सी के सहस्र ॥

और उस ने जवुलून के विषय में कहा कि १८

हे जवुलून अपने बाहर जाने में आनन्द हो और इशकार तू अपने तंदुओं में । वे लोगों का पहाड़ पर बुलावेगा वहाँ धर्म के बलिदान चढ़ावेगा क्योंकि वे १९ समुद्रों की अधिकाई को और भंडारों को जो बालू में छिपे हैं चूसेंगे ॥

और उस ने जद के विषय में कहा कि २०

धन्य है वह जो जद को फैलाता है वह सिंह के समान पड़ा रहता है और भुजा को सिर की चांदी सहित फाड़ता है । और उस ने पहिला भाग अपने लिये २१ ठहराया क्योंकि उस ने वहाँ दयवस्थादायक के भाग का चुना और वह लोगों के प्रधानों के साथ आया वह परमेश्वर के न्याय को और उस के विचारों को इसराएल से बजा लाया ॥

और दान के विषय में कहा कि २२

दान एक सिंह का वज्रा है जो दमन से उकलेगा ॥

और उस ने नफ्ताली के विषय में कहा कि २३

हे नफ्ताली तू अनुग्रह से तृप्त और परमेश्वर की आशीस से पूर्ण तू पश्चिम और दक्षिण का अधिकारी हो ॥

और उस ने यशर के विषय में कहा कि २४

यशर बालकों की आशीस पावे वह अपने भाइयों का ग्राह्य होवे और अपना पांव तेल में डुवोवे । तेरे जूते के तले लोहा और पीतल होगा और तेरे समय २५ के समान तेरा बल होगा ॥

१७ हम मानेंगे और जहां जहां हमें भेजेगा हम जावेंगे । जिस रीति से हम ने मूसा की सब बातें मानीं उसी रीति से तेरी सब मानेंगे केवल परमेश्वर तेरा ईश्वर १८ जिस रीति से मूसा के साथ था तेरे साथ भी रहे । जो कोई तेरी आज्ञा को न माने और तेरी सारी बातों को जो तू आज्ञा करे न सुनेगा सो मार डाला जावेगा केवल बलवन्त हो और सुसाहस कर ॥

दूसरा पर्व ।

- १ और नून के बेटे यहूशूअ ने सितीम से दो मनुष्य भेजे कि चुपके से भेद लेवें और उन्हें कहा कि जाओ उस देश को और यरीहो को देखो सो वे गये और एक गणिका के घर में जिस का नाम राहव था आके वहां उतरे ॥
- २ तब यरीहो के राजा को संदेश पहुंचा कि देख आज रात इसराएल के संतान ३ में से लोग यहां आये हैं जिसतें देश का भेद लेवें । तब यरीहो के राजा ने राहव को यह कहके कहला भेजा कि उन मनुष्यों को जो तुझ पास आये हैं और तेरे घर में उतरे हैं निकाल दे क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने को आये हैं ॥
- ४ तब उस स्त्री ने उन दोनों मनुष्यों को लेके छिपा रक्खा और यों कहा कि ५ वे मनुष्य मेरे पास आये तो थे पर मैं नहीं जानती कि वे कहां के थे । और यों हुआ कि फाटक बंद करते वे मनुष्य अंधेरे में निकल गये और मैं नहीं जानती कि वे कहां गये सो शीघ्र उन का पीछा करो क्योंकि तुम उन्हें जा ही लेओगे । ६ परन्तु वह उन्हें अपनी छत पर चढ़ा ले गई और सनई के नीचे जो छत पर सजी ७ रक्खी थी उन्हें छिपा दिया । और लोग उन के पीछे घरदन की ओर हलाव लों गये और ज्यों उन के खोजी बाहर निकल गये त्योंही उन्होंने ने फाटक बंद कर लिया ॥
- ८ और वह स्त्री उन के लेटने से आगे छत पर उन पास गई । और उन मनुष्यों से कहा कि मैं जानती हूं कि परमेश्वर ने यह देश तुम्हें दिया है और कि तुम्हारा १० भय हम पर पड़ा है और इस देश के समस्त वासी तुम्हारे आगे गल गये हैं । क्योंकि हम ने सुना है जब कि तुम मिस्र से बाहर निकले तो परमेश्वर ने तुम्हारे साम्हने लाल समुद्र के पानी को किस रीति से सुखा दिया और तुम ने अमूरियों के दो राजाओं सैहून और ऊज- से जो घरदन के उस पार थे क्या किया जिन्हें तुम ने ११ सर्वथा नाश किया । और ज्योंही हम ने सुना त्योंही हमारे मन गल गये और किसी में तुम्हारा साम्ना करने का तनिक भी हियाव न रहा क्योंकि परमेश्वर १२ तुम्हारा ईश्वर ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथिवी में वही ईश्वर है । सो अब मुझ से परमेश्वर की किरिया खाओ कि जैसा मैं ने तुम पर अनुग्रह किया वैसा ही तुम भी मेरे पिता के घराने पर अनुग्रह करियो और मुझे एक सच्चा चिन्ह दीजिये । १३ कि मेरे पिता और मेरी माता को और मेरे भाइयों और मेरी बहिनों को और सब जो उन का है बचाओ और हमारे प्राणों को मृत्यु से कुड़ाओ ॥
- १४ तब उन मनुष्यों ने उसे उत्तर दिया कि मृत्यु के विषय में हमारे प्राण तुम्हारे प्राण के संती यदि तू हमारा यह कार्य न उच्चारै और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर इस देश को हमें देगा तब हम तेरे साथ अनुग्रह और सच्चाई से व्यवहार

# यहूशूअ की पुस्तक ।

## पहिला पर्व ।

जब परमेश्वर का सेवक मूसा मर गया तब यों हुआ कि परमेश्वर ने मूसा १  
के सेवक नून के बेटे यहूशूअ को कहा । कि मेरा सेवक मूसा मर गया है सो अब २  
तू उठ और इन समस्त लोगों समेत उस देश को जो मैं उन्हें देता हूँ अर्थात् ३  
इसराएल के संतानों को लेके यरदन के पार उतर जा । जैसा मैं ने मूसा से ४  
कहा कि हर एक स्थान जिस पर तेरे पांव का तलवा पड़ेगा मैं ने तुम्हें दिया ५  
है । अरग्य से और इस लुयनान से लेके मद्या नदी अर्थात् फुरात नदी लों चित्तियों ६  
का सारा देश मद्या समुद्र लों मूर्ण्य के अस्त होने की और तुम्हारा सिवाना ७  
होगा । तेरे जीवन भर कोई तेरे आगे ठहर न सकेगा जैसा मैं ने मूसा के साथ ८  
था तेरे साथ रहूंगा मैं तुम्हें न हटूंगा और न तुम्हें त्यागूंगा । बलवंत हो और ९  
मुसाहस कर क्योंकि यह भूमि जो मैं ने किरिया आके उन के पितरों को देने कही १०  
है तू इन लोगों को उसे अधिकार में दिलावेगा । केवल तू बलवंत और अति ११  
साहसी हो जिसमें तू इस व्यवस्था के समान जिस की मेरे सेवक मूसा ने तुम्हें १२  
आज्ञा किई है सोचके मान उसमें टोहने वायें मत मुड़ जिसमें जहां कहीं तू जावे १३  
भाग्यवान होवे । इस व्यवस्था की पुस्तक की चर्चा तेरे मुँह से जाने न पावे परन्तु १४  
रात दिन उस में ध्यान कर जिसमें तू सोचके जो कुछ उस में लिखा है माने १५  
क्योंकि तब तू अपने मार्ग में भाग्यवान होगा और नव तू बुद्धि से कार्य करेगा । १६  
क्या मैं ने तुम्हें आज्ञा न किई कि बलवंत हो और मुसाहस कर मत डर और मत १७  
घबरा क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जहां जहां तू जाता है तेरे साथ है ॥

तब यहूशूअ ने लोगों के अध्यक्षों को आज्ञा करके कहा । कि तुम सेना में से १८  
होंके जाओ और लोगों को आज्ञा करके करो कि अपने लिये भोजन सिद्ध करें १९  
क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम इस यरदन पार उतरोगे जिसमें उस भूमि के जो २०  
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अधिकारी होओ ॥

और रुविनियों और जद्वियों को और सुनस्सी की आधी गोष्ठी को यहूशूअ २१  
कहके बोला । कि जो बात परमेश्वर के सेवक मूसा ने तुम्हें आज्ञा किई चेत २२  
करो कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें विश्वास दिया है और यह देश तुम्हें २३  
दिया है । तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे बालक और तुम्हारे छोर इस देश में रहेंगे जो २४  
मूसा ने यरदन के इस पार तुम्हें दिया है परन्तु तुम लोग अर्थात् समस्त घोर २५  
अपने भाइयों की आगे आगे दृष्टियार बांधके चलो और उन की सहायता करो । २६  
जब लों परमेश्वर तुम्हारी नाईं तुम्हारे भाइयों को चैन देवे और वे भी उस भूमि २७  
के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर उन्हें देता है अधिकारी होवें तब तुम उस देश में २८  
जो तुम्हारा अधिकार है और परमेश्वर के सेवक मूसा ने यरदन के इसी पार पूरव २९  
दिशा में तुम्हें दिया है फिर आइयो और उसे अधिकार कीजियो ॥

तब उन्होंने ने यहूशूअ को उत्तर दिया कि जो जो तू ने हमें आज्ञा किई सो ३०



मंजूपा को उठाते हैं आजा करके कहियो कि जब तुम यरदन के जल के तीर पर पहुंचा तब यरदन में खड़े रहियो ॥

९ सो यहूशूअ ने इसराएल के संतानों से कहा कि अधर आओ और परमेश्वर  
 १० अपने ईश्वर की बातें सुनो । और यहूशूअ ने कहा कि इससे तुम जानोगे कि  
 जीवता सर्वशक्तिमान तुम्हारे मध्य में है और वह कन्याणियों और दलितियों और  
 दृष्टियों और फरिजियों और जिगजाणियों और अमूरियों और यवूनियों को तुम्हारे  
 ११ आगे से हांक देगा । देखो समस्त पृथिवी के परमेश्वर की माघी की मंजूपा  
 १२ तुम्हारे आगे आगे यरदन के पार जाती है । सो अब तुम अपने लिये दारह जन  
 १३ इसराएल की गोष्टियों में से हर एक गोष्टी पीछे एक मनुष्य लेओ । और ऐसा  
 होना कि ज्योंही याजक के पांव के तलबे जो परमेश्वर समस्त पृथिवी के प्रभु  
 की साक्षी की मंजूपा उठाते हैं यरदन के जल में ठहरें त्योंही यरदन के पानी जो  
 ऊपर से बहते हैं घस जायेंगे और एक ढेर हो रहेंगे ॥

१४ और ऐसा हुआ कि जब लोग अपने डेरे से चल निकले कि यरदन पार जायें  
 १५ और याजकों ने लोगों के आगे साक्षी की मंजूपा को उठाया । और ज्यों वे जो  
 मंजूपा को उठाये हुए थे यरदन लें पहुंचे और उन याजकों के पांव जो मंजूपा  
 को उठाये हुए थे तीर के पानी में डूबे क्योंकि लयनी के समय में यरदन अपने  
 १६ समस्त कड़रों के ऊपर बहती है । तो जल जो ऊपर से आये ठहर गये और एक  
 ढेर होके आदम नगर से बहुत दूर उभड़े जो जरतान के पास है और जो मसुद्र के  
 चौगान की ओर बहि आये अर्थात् खारी समुद्र के घट गये और अलग किये गये  
 १७ और लोग यरीछो के सन्मुख पार उतर गये । और याजक जो परमेश्वर की वाचा  
 की मंजूपा को लिये हुए थे दृढ़ता से सूखी भूमि पर यरदन नदी के मध्य में खड़े  
 रहे और समस्त इसराएली सूखी भूमि पर पार उतर गये यहां लें कि समस्त लोग  
 निर्धार पार उतर चुके ॥

चौथा पत्र ।

१ और यों हुआ कि जब सारे लोग यरदन पार उतर चुके तब परमेश्वर यहूशूअ  
 २ से कहके बोला । कि लोगों में से अपने लिये दारह मनुष्य लेओ हर एक गोष्टी  
 ३ में से एक मनुष्य । और उन्हें आज्ञा करके कह कि अपने लिये यहां से यरदन के  
 बीचोंबीच में से उस स्थान से जहां याजकों के पांव दृढ़ खड़े रहे दारह पत्थर  
 लेओ और उन्हें अपने साथ पार ले जाओ और उन्हें निवास स्थान में जहां तुम  
 ४ आज रात निवास करोगे धरो । तब यहूशूअ ने दारह मनुष्यों को जिन्हें उस ने  
 इसराएल के संतानों में से सिद्ध किया था बुलाया हर एक गोष्टी पीछे एक एक  
 ५ मनुष्य । और यहूशूअ ने उन्हें कहा कि अपने ईश्वर परमेश्वर की मंजूपा के आगे  
 पार उतरके यरदन के बीचोंबीच जाओ और हर एक तुम्हें से अपने लिये इसरा-  
 ६ एल के संतानों की गोष्टी की गिनती के समान एक पत्थर अपने कांधे पर लेवे ।  
 ७ जिसमें यह तुम्हारे मध्य एक चिन्ह होवे जब आगामी काल में तुम्हारे वंश पूर्ण  
 ८ और कहें कि ये पत्थर तुम्हारे लिये कैसे हैं । तो तुम उन्हें कहियो कि जब  
 यरदन के पानी परमेश्वर की वाचा की मंजूपा के आगे दो भाग हुए जब वह

करेंगे । तब उस ने उन्हें डोरी से खिड़की में से उतार दिया क्योंकि उस का घर १५  
नगर की भीत पर था और वह भीत ही पर रहती थी । और उस ने उन्हें कहा १६  
कि पहाड़ पर चढ़ जाओ न हो कि खोजी तुम्हें मिले सो तुम वहीं तीन दिन लों  
छिपे रहो जब लों कि खोजी फिर आवें और उस के पीछे तुम अपने मार्ग पर चलो ॥

तब उन मनुष्यों ने उसे कहा कि इस किरिया से जो तू ने हम से लिई है हम १७  
निर्दोषी होंगे । देख जब हम इस देश में आवेंगे तब यह लाल सूत की डोरी इस १८  
खिड़की से बांधियो जिसे तू ने हमें नीचे उतार दिया और अपने पिता और अपनी  
माता और अपने भाइयों को और अपने पिता के सारे घराने को अपने यहां घर  
में बठोरियो । और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे घर के द्वारों से बाहर जावेगा १९  
उस का लोहू उस के सिर पर होगा और हम निर्दोष होंगे और जो कोई तेरे  
साथ घर में होगा यदि किसी का हाथ उस पर पड़े तो उस का लोहू हमारे सिर  
पर होगा । और यदि तू हमारा यह कार्य उद्धारे तो हम उस किरिया से जो तू २०  
ने हम से लिई अलग होंगे । और वह वैसी जैसा तुम ने कहा वैसा ही हो सो २१  
उन्हें विदा किया और वे चले गये तब उस ने यह लाल सूत की डोरी खिड़की  
पर बांधी ॥

और वे वहां से चलके तीन दिन लों पहाड़ पर रहे जब लों कि खोजी लौट २२  
आये और उन खोजियों ने उन्हें समस्त मार्ग में ढूंढ़ा और न पाया । तब वे दोनों २३  
पुरुष फिर और पहाड़ से उतरे और पार हुए और नून के बेटे यहूशूय पास आये  
और जो जो कुछ उन पर बीता था सब उस्से कहा । और उन्होंने ने यहूशूय से २४  
कहा कि निश्चय परमेश्वर ने यह समस्त देश हमारे दश में कर दिया और देश  
के समस्त वासी भी हमारे कारण मल गये ॥

तीसरा पर्व ।

तब यहूशूय चढ़े तड़के उठा और सितीम से यात्रा किई और वह और समस्त १  
इसराएल के संतान यरदन पार पहुंचे और पार उतरने से आगे वहां रात भर रहे ।  
और वे हुआ कि तीन दिन के पीछे अध्यक्ष मेना में होके गये । और लोगों को आज्ञा २  
करके कहा कि जब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की साक्षी की मंजूपा को और  
लावी याजक को उसे उठाते हुए देखो तब तुम अपने स्थान से यात्रा करो और  
उस के पीछे पीछे चलो । केवल तुम्हारे और उस के मध्य में दो सहस्र हाथ का ४  
अंतर रहे उस के पास मत आओ जिसमें जिस मार्ग से तुम्हें जाना है तुम प्रहि-  
चानो क्योंकि तुम इस मार्ग से आज कल नहीं गये ॥

और यहूशूय ने लोगों से कहा कि अपने को शुद्ध करो क्योंकि कल परमेश्वर ५  
तुम्हारे मध्य में आश्चर्य दिखावेगा । और यहूशूय याजकों को कहके बोला कि ६  
साक्षी की मंजूपा को उठाओ और लोगों के आगे आगे पार उतरो सो उन्होंने ने  
साक्षी की मंजूपा को उठाया और लोगों के आगे आगे चले ॥

तब परमेश्वर ने यहूशूय से कहा कि आज के दिन मैं समस्त इसराएल ७  
की दृष्टि में तुम्हें महान बनाना आरंभ करूंगा जिसमें वे जानें कि जिस रीति  
से मैं मूसा के साथ था तेरे साथ हूंगा । और तू उन याजकों से जो साक्षी की ८

## पांचवां पर्व ।

- १ और ऐसा हुआ कि जब अमूरियों के सारे राजाओं ने जो यरदन के इस पार पश्चिम दिशा में थे और कनआनियों के समस्त राजाओं ने जो समुद्र के तीर पर थे सुना कि परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के आगे यरदन के पानियों को सुखा दिया यहां लों कि वे पार उतर गये तो उन के मन घट गये और इसराएल के संतान के कारण उन के जी में जी न रहा ॥
- २ उस समय परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि अपने लिये चौखी कुरी बना और इसराएल के संतानों का खतनः फेर कर । और यहूशूअ ने अपने लिये चौखी कुरियां बनाईं और खलड़ियों के टीले पर इसराएल के संतानों का खतनः किया ।
- ३ और यहूशूअ ने जो खतनः किया उस का कारण यह है कि सारे लोग जो मिश्र से निकल आये थे अर्थात् समस्त योद्धा पुरुष अरण्य के मार्ग में मर गये । क्योंकि सब लोग जो बाहर आये खतनः किये गये पर वे सब लोग जो मिश्र से निकलने के पीछे अरण्य के मार्ग में उत्पन्न हुए थे उन का खतनः न हुआ था । क्योंकि इसराएल के संतान चालीस बरस अरण्य में फिरते रहे यहाँ लों कि सारे योद्धा जो मिश्र से बाहर आये नष्ट हुए क्योंकि उन्होंने ने परमेश्वर के शब्द को न माना जिन से परमेश्वर ने किरिया खाई थी कि मैं तुम्हें वह देश न दिखलाऊंगा जिस के कारण मैं ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हें वह देश देऊंगा जिस में दूध और मधु बहता है । और उन के संतानों ने जिन्हें उस ने उन की संती उठाया यहूशूअ ने उन का खतनः किया क्योंकि वे अखतनः थे इस कारण
- ४ कि उन्होंने ने मार्ग में खतनः न करवाया । और ऐसा हुआ कि जब वे सब लोग खतनः करवा चुके तब वे क्वावनी में अपने अपने स्थान में रहे जब लों वे चंगे हुए ।
- ५ तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि आज के दिन मैं ने मिश्र के अपमान को तुम पर से उठा दिया इस लिये वह स्थान आज के दिन लों जिलजाल कहावता है ॥
- ६ सो इसराएल के संतानों ने जिलजाल में डेरा किया और उन्होंने ने यरीहो के चौगान में मास की चौदहवीं तिथि में सांभ को पार जाने का पर्व रक्खा ।
- ७ और उन्होंने ने विहान को उसी दिन पार जाने के पर्व के पीछे उस देश के पुराने अन्न के अखमीरी फुलके और भुना खाया । और जब उन्होंने ने उस देश के पुराने अन्न खाये उसी दिन से मन्न बरसना थम गया और इसराएल के संतानों के लिये मन्न न था और उन्होंने ने उसी बरस कनआन के देश की बढ़ती खाई ॥
- ८ और ऐसा हुआ कि जब यहूशूअ यरीहो के पास था तो उस ने अपनी आंख ऊपर किई और देखा कि उस के सामे एक मनुष्य तलवार हाथ में खैंचे हुए खड़ा है तब यहूशूअ उस पास गया और उसे कहा कि तू हमारी ओर अथवा
- ९ हमारे शत्रुन की ओर है । और वह बोला नहीं परन्तु मैं अभी परमेश्वर की सेना का अध्यक्ष होके आया हूं तब यहूशूअ भूमि पर औंधा गिरा और दंडवत किई
- १० और उसे कहा कि मेरे प्रभु अपने सेवक को क्या आज्ञा करता है । तब परमेश्वर की सेना के अध्यक्ष ने यहूशूअ से कहा कि अपने पांव से अपना जूता उतार क्योंकि यह स्थान जहां तू खड़ा है पवित्र है और यहूशूअ ने ऐसा ही किया ॥

यरदन पार गया तो यरदन के पानी दो भाग हुए सो ये पत्थर स्मरण के लिये इसराएल के संतानों के कारण अन्त लों होंगे ॥

और इसराएल के संतानों ने जैसी यहूशूय ने उन्हें आज्ञा किई वैसा ही किया और इसराएल के संतानों की गोष्टियों की गिनती के समान यरदन के मध्य में से बारह पत्थर उठाये जैसा परमेश्वर ने यहूशूय से कहा था और उन्हें अपने संग उस स्थान लों जहां वे ठिके ले गये । तब यहूशूय ने यरदन के बीचोंबीच उस स्थान पर जहां याजकों के पांव पड़े जो सात्ती की मंजूपा को उठाये थे बारह पत्थर खड़े किये सो वे आज के दिन लों वहां हैं ॥

और याजक जो मंजूपा को उठाये हुए थे यरदन के बीचोंबीच खड़े रहे जब लों हर एक बात जो परमेश्वर ने यहूशूय को आज्ञा किई कि मंडली को कहो उस सब के समान जो मूसा ने यहूशूय को आज्ञा किई संपूर्ण हो चुकी तब लोग शीघ्रता करके पार उतर गये । और यों हुआ कि जब समस्त लोग पार हो चुके तब लोगों के आगे याजक परमेश्वर की मंजूपा लिये हुए पार गये । तब द्यिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्टी जैसा मूसा ने कहा था इसराएल के संतानों के आगे द्यियार बांधे हुए पार उतर गये । चालीस सहस्र एक द्यियार बांधे हुए लैस संग्राम के निमित्त परमेश्वर के आगे परीहो के चौगानों में पार उतरे ॥

उस दिन परमेश्वर ने समस्त इसराएल की दृष्टि में यहूशूय को महिमा दिई और वे उस के जीवन भर उस्से ऐसा डरे जैसा वे मूसा से डरते थे ॥

तब परमेश्वर यहूशूय से यों कहके बोला । कि उन याजकों से जो सात्ती की मंजूपा को उठाते हैं आज्ञा कर कि यरदन से बाहर निकल आयो । सो यहूशूय ने याजकों को आज्ञा किई कि यरदन से निकल आयो । और ऐसा हुआ कि जब वे याजक जो परमेश्वर की सात्ती की मंजूपा उठाये हुए थे यरदन के बीच में से बाहर आये और याजकों के पांव के तलवे सूखी भूमि पर निकल आये त्योंही यरदन के पानी अपने स्थानों में फिर आये और आगे के समान अपने सब कड़ारों पर बहने लगे ॥

और मंडली पहिले मास की दसवीं तिथि को यरदन से निकली और परीहो के पूरव सिवाने में जिलजाल में कावनी किई । और यहूशूय ने उन बारह पत्थरों को जो यरदन से उठाये गये थे जिलजाल में खड़ा किया । और इसराएल के संतानों से कहा कि जब तुम्हारे लड़के आगामी काल में अपने पितरों से पूछें कि ये पत्थर कैसे हैं । तो तुम अपने लड़कों को बतलाके कहियो कि इसराएल इस यरदन से सूखी भूमि से पार आये । क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने यरदन के पानियों को तुम्हारे आगे सुखा दिया जब लों तुम पार हो गये जैसा परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने लाल समुद्र को किया था जिसे उस ने हमारे आगे सुखा दिया जब लों हम पार उतर गये । जिसतें समस्त पृथिवी के लोग जानें कि परमेश्वर का हाथ सामर्थ्य है जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर से सदा डरा करो ॥

१८ बचेगी क्योंकि उस ने उन अगुओं को जो हम ने भेजे थे छिपाया । परन्तु तुम जो हो अपने को सापित वस्तुओं से अलग रखियो ऐसा न होवे कि तुम सापित वस्तु लेके सापित हो जाओ और इसराएल की छावनी को सापित करके उसे दुःख देओ । परन्तु सब चांदी और सोना और लोहे पीतल के पात्र परमेश्वर के लिये प्रवित्र हैं वे परमेश्वर के भंडार में पहुंचाये जावेंगे ॥

२० सो लोगों ने ललकारा और उन्हें ने नरसिंगे फूँके और ऐसा हुआ कि जब लोगों ने नरसिंगे का शब्द सुना और लोगों ने सदा शब्द से ललकारा तब भीत नीचे से गिर पड़ी और लोग नगर पर चढ़ गये हर एक मनुष्य अपने अपने आगे और नगर को ले लिया । और उन्हें ने उन सब को जो नगर में थे क्या पुरुष क्या स्त्री क्या युवा क्या बृद्ध क्या बाल क्या भेड़ क्या गदहा एक बार तलवार की धार से मार डाला ॥

२२ परन्तु यहूशूअ ने उन दो मनुष्यों को जो उस देश के भेद के लिये गये थे कहा कि गणिका के घर जाओ और वहां से उस स्त्री को और सब जो उस का हो २३ जैसे तुम ने उससे किरिया खाई थी निकाल लाओ । तब वे दोनों तरुण भेदिये चले गये और राहब को उस के पिता और उस की माता और उस के भाइयों और सब जो उस का था और उस के समस्त घराने समेत निकाल लाये और उन्हें इसराएल की छावनी के बाहर रख छोड़ा ॥

२४ और उन्हें ने उस नगर को और सब जो उस में थे आग से फूँक दिया केवल चांदी और सोना और पीतल और लोहे के पात्र परमेश्वर के घर के भंडार में पहुंचाये ॥

२५ और यहूशूअ ने राहब गणिका को और उस के पिता के घराने को और सब जो उस का था बचाया और उस का निवास आज लोँ इसराएल के संतानों में है क्योंकि उस ने उन भेदियों को जिन्हें यहूशूअ ने यरीहो के भेद के लिये भेजा था छिपाया ॥

२६ और यहूशूअ ने उस समय किरिया खाई और कहा कि जो मनुष्य उठे और इस नगर यरीहो को फिर बनावे वह परमेश्वर के आगे सापित होगा वह अपने पहिलौठे पर उस की नेव डालेगा और अपने छोटे पर उस के फाटक को खड़ा करेगा ॥

२७ सो परमेश्वर यहूशूअ के साथ था और समस्त देश में उस की कीर्ति फैली ॥ सातवां पर्व ।

१ परन्तु इसराएल के संतानों ने सापित वस्तु के बिषय में अपराध किया क्योंकि शारिक का पुत्र जबदी का पुत्र करमी के पुत्र अकन ने जो यहूदाह की गोष्ठी का था कुछ सापित वस्तु में से लिया और परमेश्वर का कोप इसराएल के संतानों पर भड़का ॥

२ तब यहूशूअ ने यरीहो से अर्ई में जो बैतअवन के लग बैतएल की पूरब और है लोगों को भेजा और उन्हें कहके बोला कि जाओ और देश को देख आओ ३ सो वे लोग चढ़ गये और अर्ई को देख आये । और वे यहूशूअ पास फिर

कठवां पर्व ।

अब इसराएल के संतानों के कारण यरीहो बंद हुआ और बंद किया गया १  
कोई बाहर न जाता था और न कोई भीतर आता था । और परमेश्वर ने २  
यहूशूय से कहा कि देख मैं ने यरीहो को और उस के राजा और वहां के महा-  
वीरों को तेरे वश में कर दिया । सो ससस्त योहाना नगर को घेर लेओ और ३  
एक बार उस के चारों ओर फिरो इस रीति से छः दिन लों कीजियो । और सात ४  
याजक मंजूपा के आगे सात नरसिंगे उठावें और तुम सातवें दिन सात बार नगर  
के चारों ओर फिरो और याजक नरसिंगे फूंकें । और यों होगा कि जब वे देर ५  
लों नरसिंगे फूंकेंगे और जब तुम नरसिंगे का शब्द सुनो तो ससस्त लोग सदा  
शब्द से ललकारें और नगर की भीत नीचे से गिर जायेगी और लोग ऊपर चढ़  
जावें हर एक जन अपने अपने आगे ॥

तब नून के बेटे यहूशूय ने याजकों को बुलाया और उन्हें कहा कि साजी ६  
की मंजूपा उठाओ और सात याजक सात नरसिंगे परमेश्वर की मंजूपा के आगे  
लिये हुए चलो ॥

तब उस ने लोगों से कहा कि जाओ और नगर को घेरो और जो दृषियारबंध ७  
हैं सो परमेश्वर की मंजूपा के आगे आगे चलें । और ऐसा हुआ कि जब यहूशूय ने ८  
लोगों से यह कहा तो सात याजक सात नरसिंगे लेकर परमेश्वर के आगे आगे  
चले और उन्होंने ने नरसिंगे फूंके और परमेश्वर की साजी की मंजूपा उन के पीछे  
पीछे गई । और दृषियारबंध लोग उन याजकों के जो नरसिंगे फूंकते थे आगे ९  
आगे चले और जो अन्त की सेना में थे मंजूपा के पीछे पीछे चले और नरसिंगे  
फूंकते जाते थे । और यहूशूय ने लोगों को आज्ञा करके कहा कि तुम सब लल- १०  
कारियो और न अपना शब्द सुनाइयो और तुम्हारे सुंघ से कुछ बात न निकले  
जब लों में तुम्हें ललकारने का कहूं तब ललकारियो । सो परमेश्वर की मंजूपा नगर ११  
के चारों ओर एक बार फिर आई और वे छावनी में आये और छावनी में रात  
भर रहे ॥

और विहान को यहूशूय उठा और याजकों ने परमेश्वर की मंजूपा को उठा १२  
लिया । और सात याजक सात नरसिंगे लेकर परमेश्वर की मंजूपा के आगे आगे १३  
नरसिंगे फूंकते चले जाते थे और वे जो दृषियारबंध थे उन के आगे आगे हो  
लिये और वे जो पीछे थे परमेश्वर की मंजूपा के पीछे हुए और नरसिंगे फूंकते  
जाते थे । सो दूसरे दिन भी वे एक बार नगर की चारों ओर फिरके छावनी में १४  
फिर आये ऐसा ही उन्होंने ने छः दिन लों किया ॥

और सातवें दिन यों हुआ कि वे विहान पौ फटते भोर को उठे और उसी १५  
भांति से नगर की चारों ओर सात बार फिरे केवल उसी दिन वे सात बार नगर  
की चारों ओर फिरे । सो सातवीं फेरी में ऐसा हुआ कि जब याजकों ने नरसिंगे १६  
फूंके तब यहूशूय ने लोगों से कहा कि ललकारो क्योंकि परमेश्वर ने नगर तुम  
को दिया है । और नगर और सब जो उस में हैं परमेश्वर के लिये स्थापित होंगे १७  
केवल राक्षस गणिका उन सब समेत जो उस के साथ उस के घर में हैं जीती



१९ तब यहूशूअ ने अकन से कहा कि हे मेरे बेटे अब परमेश्वर इसराएल के  
 ईश्वर की महिमा कर और उस को मान ले और मुझ से कहियो कि तू ने क्या  
 २० किया है मुझ से मत छिपा । तब अकन ने यहूशूअ को उत्तर दिया और कहा कि  
 निश्चय मैं ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का प्राप किया है और मैं ने ऐसा ऐसा  
 २१ किया है । जब मैं ने बाबुलूनी सुन्दर वस्त्र और दो सौ शैकल चांदी और पचास  
 शैकल के तौल की सोने की गुल्ली लूट के धन से से देखा तो मैं ने उन का  
 लालच किया और उन्हें ले लिया और देख वे मेरे तंबू के बीच भूमि में गड़े हैं  
 २२ और चांदी उस के तले । तब यहूशूअ ने दूत भेजे और वे तंबू को दौड़े और  
 २३ देखो कि उस के तंबू में गड़ा था और चांदी उस के तले । और वे उन्हें तंबू में  
 से निकालके यहूशूअ और समस्त इसराएल के संतान के आगे लाये और उन्हें  
 परमेश्वर के आगे डाल दिया ॥

२४ तब यहूशूअ और उस के संग सारे इसराएल ने शारिक के बेटे अकन को  
 और चांदी और वस्त्र और सोने की गुल्ली और उस के बेटे बेटियां और उस के  
 गोख और उस के गदहे और उस के भेड़ें चकरी और उस के तंबू और सब जो उस  
 २५ का था लिया और उन्हें अकूर की तराई में लाये । और यहूशूअ ने कहा कि तू  
 ने हमें क्यों दुःख दिया परमेश्वर आज तुझे दुःख देगा तब समस्त इसराएल ने  
 उस पर पत्थरबाह किया और उन्हें आग से जला दिया और उन्हें पत्थरों से  
 २६ छिपा दिया । और उन्होंने ने उस पर पत्थरों का ढेर किया जो आज लों है तब  
 परमेश्वर अपने क्रोध की जलजलाहट से फिर गया इस लिये उस स्थान का नाम  
 आज लों अकूर की तराई है ॥

### आठवां पर्व ।

१ तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि मत डर और भय मत कर सारे योद्धाओं  
 को अपने साथ ले और उठ अर्ई पर चढ़ जा देख मैं ने अर्ई के राजा और उस  
 २ के लोग और उस के नगर और उस के देश को तेरे हाथ में कर दिया है । और  
 तू अर्ई से और उस के राजा से वही कीजियो जो तू ने यरीहो से और उस के राजा  
 से किया केवल वहां का धन और उस का ढेर तुम अपने लिये लूट लीजियो  
 नगर के पीछे से घात में बैठियो ॥

३ सो यहूशूअ और सारे योद्धा उठे जिसते अर्ई पर चढ़ें और यहूशूअ ने तीस  
 ४ सहस्र महाबोर चुन लिये और रात को उन्हें भेज दिया । और उन्हें आज्ञा करके  
 कहा कि देखो तुम नगर के पिछवाड़े घात में बैठियो नगर से बहुत दूर सत  
 ५ जाइयो परन्तु तुम सब लैस हो रहो । और मैं अपने संगी लोगों को लेके नगर  
 की ओर बढ़ूंगा और ऐसा होगा कि जब वे आगे की नाईं हमारा साम्रा करेंगे  
 ६ तब हम उन के आगे से भागेंगे । और वे हमारा पीछा करेंगे यहां लों कि हम  
 उन्हें नगर से खैच ले जावें क्योंकि वे कहेंगे कि वे आगे की नाईं हमारे आगे  
 ७ से भागते हैं सो हम उन के आगे से भागेंगे । तब तुम घात से उठियो और  
 नगर को ले लीजियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर उसे तुम्हारे हाथ में सौंप  
 ८ देगा । और यों होगा कि जब तुम नगर को लेओगे तब नगर में आग लगाइयो

आये और उससे कहा कि समस्त लोग न चढ़ें केवल दो अथवा तीन सहस्र जन के लगभग चढ़ जायें और अर्ध को सारें सब लोगों को परिश्रम न दीजिये क्योंकि वे थोड़े हैं । सो लोगों में से तीन सहस्र के लगभग वहाँ चढ़ गये और अर्ध के लोगों के आगे से भागे । और अर्ध के लोगों ने उन में से छत्तीस मनुष्य सार लिये और वे फाटक के आगे से लेकर शहरों में लौं उन्हें रखे आये और उन्हीं ने उतार में उन्हें सारा इस कारण लोगों के मनु घट गये और पानी की नाई हो गये ॥

तब यहूशूअ और इसराएल के प्राचीनों ने अपने अपने ऊण्डे फाड़े और परमेश्वर की सान्नी की मंजूपा के आगे सांझ लौं भूमि पर आँधे पड़े रहे और अपने सिरों पर धूल उड़ाई । और यहूशूअ बोला कि हाय हे प्रभु परमेश्वर तू इन लोगों को किस कारण परदन पर लाया कि हमें नाश करने के लिये अमूरियों के हाथ में सौंप देवे हाय कि हम मन्तोष करते और परदन के उसी पार रहते । हे मेरे स्वामी जब इसराएल अपने शत्रुन के आगे पीठ फेरते हैं तब मैं क्या कहूँ । क्योंकि कनआनी और देश के समस्त वासी सुनेंगे और हमें घेर लेंगे और हमारा नाम पृथिवी पर से मिटा डालेंगे और तू अपने महत नाम के लिये क्या करेगा ॥

तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि उठ तू किस लिये आँधा पड़ा है । १० इसराएल ने पाप किया है और उन्हीं ने उस वाचा से जो मैं ने उन से वाँधी अपराध किया क्योंकि उन्हीं ने सापित वस्तु में से भी कुछ लिया और चोरी भी कीई और हल भी किया और अपनी सासगी में भी स्त्र लिया । सो इसराएल के संतान अपने शत्रुन के आगे ठहर न सके उन्हीं ने अपने घरियों के आगे पीठ फेरी क्योंकि वे सापित हुए सो अब मैं आगे का तुम्हारे साथ न होऊँगा जब लौं तू सापित को अपने में से नाश न करे । उठ लोगों को गुह्र कर और कह कि अपने को कल के लिये गुह्र करो क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि हे इसराएल तेरे सध्य सापित वस्तु है तू अपने शत्रुन के सामे ठहर नहीं सक्ता जब लौं सापित वस्तु को अपने में से दूर न करेगा । सो तुम विद्वान को अपनी अपनी गोष्टियों के समान पहुँचाये जाओगे और ऐसा होगा कि जिस गोष्टी को परमेश्वर पकड़ेगा सो अपने घराने समेत आवे और जिस घराने को परमेश्वर पकड़ेगा वह अपने परिवार समेत आवे और जिस घराने को परमेश्वर पकड़ेगा सो एक एक जन आवे । और ऐसा होगा कि जो किसी सापित वस्तु के साथ पकड़ा जायगा सो अपनी सासगी समेत आग में जला दिया जायगा इस लिये कि उस ने परमेश्वर की वाचा का अपराध किया और इस कारण कि उस ने इसराएल के संतानों में सूरखता कीई ॥

तब यहूशूअ विद्वान को तड़के उठा और इसराएल को उन की गोष्टियों के समान लाया और यहूदाह की गोष्टी पकड़ी गई । और यहूदाह के घराने को समीप लाया और शारिक का घराना पकड़ा गया और शारिक के घराने के एक एक मनुष्य को आगे लाया और जवदी पकड़ा गया । और वह उस के घराने का एक एक जन लाया और शारिक का वेटा जवदी का वेटा करमी का वेटा यहूदाह की गोष्टी का अकन पकड़ा गया ॥

को न खैचा जब लों अई के सारे निवासियों को सर्वथा नाश न किया था ।  
 २७ परमेश्वर के वचन के समान जो उस ने यहूशूअ को आज्ञा किई थी इसराएल ने  
 २८ उस नगर के केवल ढेर और लूट को आप ही लिया । और यहूशूअ ने अई को  
 २९ जलाके उसे सदा के लिये ढेर कर दिया सो वह आज लों उजाड़ है । और उन  
 ने अई के राजा को फांसी देके सांभ लों पेड़ पर लटका रखवा और ज्योंही सूर्य  
 आस्त हुआ यहूशूअ ने आज्ञा किई कि उस की लाश को पेड़ से उतारें और नगर  
 के फाटक के पैठ में फेंक दें और उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर करें सो आज  
 लों है ॥

३० तब यहूशूअ ने रेवाल के पहाड़ पर परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये  
 ३१ एक वेदी बनाई । जैसा परमेश्वर के सेवक मूसा ने इसराएल के संतानों से आज्ञा  
 किई थी जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा हुआ है कि ठाकों की  
 एक वेदी जिस में टांकी न लगाई गई हो और उन्होंने ने परमेश्वर के लिये उस  
 ३२ पर बलिदान की भेंटें और कुशल के बलि चढ़ाये । और उस ने वहां उन पत्थरों  
 पर उस व्यवस्था को खोदा जो मूसा ने इसराएल के संतानों के आगे लिखी थी ।  
 ३३ और समस्त इसराएली और उन के प्राचीन और अध्वन और उन के न्यायी लावी  
 याजकों के आगे जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूपा को उठाया करते थे मंजूपा  
 को इधर उधर खड़े हुए उसी रीति से परदेशी और जो उन में उत्पन्न हुए थे  
 आधे जरिजीम के पहाड़ पर और आधे रेवाल के पहाड़ पर जैसा कि परमेश्वर  
 के सेवक मूसा ने पहिले कहा था कि वे इसराएल के संतानों को आशीस दें ।  
 ३४ और उस ने उस के पीछे व्यवस्था की पुस्तक के समस्त लिखे हुए के समान  
 ३५ आशीस और साप को व्यवस्था के समस्त वचन को पढ़ा । मूसा की समस्त आज्ञा  
 के समान एक बात भी न रही जिसे यहूशूअ ने इसराएल की सारी मंडली और  
 स्त्रियों और बालकों और उन परदेशियों के आगे जो उन के मध्य में चलते थे  
 न पढ़ी ॥

नवां पर्व ।

१ और यों हुआ कि जब सारे राजाओं ने जो यरदन के इसी पार पहाड़ में और  
 तराई में और महासागर के समस्त तीरों में जो लुबनान के आगे हैं हिती और  
 २ अमूरी कनआनी फरिज्जी हवी और यवूसी ने सुना । तो वे एक मत्ता होके  
 यहूशूअ और इसराएल के संतान से संग्राम करने के लिये एकट्ठे हुए ॥  
 ३ और जो कुछ यहूशूअ ने यरीहो और अई से किया था जब जिवजन के  
 ४ बासियों ने सुना । तब उन्होंने कपट से दूत का भेष बनाके पुराने पुराने वारे और  
 ५ पुराने और टूटे और जोड़े हुए सदिरा के पखाल अपने गदहों पर लादे । और  
 पुरानी और जोड़ी हुई जूती अपने पांवों में और अपनी देह पर पुराने वस्त्र और  
 ६ उन के भोजन की रोटी सूखी और फफूंदी लगी हुई । और वे यहूशूअ पास  
 जिलजाल की छावनी में गये और उससे और इसराएल के लोगों से कहा कि  
 ७ हम दूर देश से आये हैं सो अब तुम हम से वाचा बांधो । तब इसराएल के  
 लोगों ने हवियों से कहा कि कदाचित् तू हम में वास करता है तो हम तुझ से

और परमेश्वर की आज्ञा के समान कीजियो देखो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है ।  
 सो यहूशूअ ने उन्हें भेज दिया और वे घात में बैठने गये और त्रैतयल और अई ९  
 के मध्य में अई की पश्चिम ओर रहे परन्तु यहूशूअ उसी रात लोगों में रहा ॥

और यहूशूअ ने विज्ञान को उठके लोगों को गिना और वह इसराएल के १०  
 प्राचीन लोगों को आगे छोके अई पर चढ़ गया । और समस्त योद्धा जो उस के ११  
 साथ थे चढ़े और पास आये और नगर के आगे पहुंचे और अई की उत्तर अलंग  
 डेरे किये और उन में और अई में एक नीचाई थी । तब उस ने पांच सत्तन मनुष्य १२  
 के लगभग लिये और उन्हें त्रैतयल और अई के मध्य में नगर की पश्चिम अलंग  
 घात में बैठाया । और जब उन्होंने ने सारे लोगों को अर्थात् समस्त सेना को जो १३  
 नगर के उत्तर थी और अपने घात के लोगों को नगर की पश्चिम ओर घात में  
 बैठाया तब यहूशूअ उसी रात उस नीचाई के मध्य में गया । और ऐसा हुआ कि १४  
 जब अई के राजा ने देखा तब उन्होंने ने उतावली किई और तड़के उठे और  
 नगर के मनुष्य राजा और उस के सारे लोग ठहराये हुए समय में चौगान के  
 आगे इसराएल से लड़ाई करने के लिये निकले परन्तु उस ने न मसक्ता कि नगर  
 के पीछे उस के विरोध में लोग घात में लगे हैं । तब यहूशूअ और सारे इसराएल १५  
 ने ऐसा किया जैसा कि उन के आगे मारे गये और अरण्य की ओर भागे । और १६  
 अई के समस्त लोग उन का पीछा करने के लिये एकट्ठे जुलाये गये सो उन्होंने ने  
 यहूशूअ का पीछा किया और नगर से खिंचे गये । और अई में अघया त्रैतयल में १७  
 कोई पुरुष न कूटा जिस ने इसराएल का पीछा न किया और उन्होंने ने नगर को  
 खुला छोड़ा और इसराएल का पीछा किया ॥

तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि अपने हाथ के भाले को अई की ओर १८  
 बढ़ा क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में कर दूंगा सो यहूशूअ ने अपने हाथ के भाले को  
 उस नगर की ओर बढ़ाया । और उस के हाथ फैलाते ही घातिये अपने स्थान से १९  
 तत्काल उठे और नगर में पैठ गये और उसे ले लिया और चटक से नगर में आग  
 लगाई । और जब अई के लोगों ने अपने पीछे देखा तो क्या देखते हैं कि नगर २०  
 का धूँआं स्वर्ग लों उठ रहा है और उन्हें इधर उधर भागने की सामर्थ्य न रही  
 और जो अरण्य की ओर भाग गये थे खेदवर्षों पर उलटे फिरे । और जब यहूशूअ २१  
 और सारे इसराएल ने देखा कि घातियों ने नगर ले लिया और नगर से धूँआं उठ  
 रहा है तब वे उलटे फिरे और अई के लोगों को घात किया । और वे नगर में से २२  
 उन पर निकल आये और इसराएल के मध्य में पड़ गये कुछ इधर कुछ उधर  
 और उन्होंने ने उन्हें ऐसा मारा कि उन में से एक को न छोड़ा न भागने दिया ।  
 और उन्होंने ने अई के राजा को जीता पकड़ लिया और उसे यहूशूअ पास लाये ॥ २३

और यों हुआ कि जब इसराएल खेत में उस अरण्य में जहां उन का पीछा २४  
 किया अई के सारे निवासियों को मार चुके और जब वे सब खड्ग की धार पर  
 पड़ गये और खप गये तब सारे इसराएली अई को फिरे और उसे खड्ग की धार  
 से मारा । और यों हुआ कि जो उस दिन मारे गये पुरुष और स्त्री वारह-सहस्र २५  
 थे अर्थात् अई के सब लोग । क्योंकि यहूशूअ ने भाले के बढ़ाने से अपने हाथ २६

२० उन्हें बताया कि उन्हें मार न डालें । और यहूशूअ ने उन्हें उसी दिन मंडली के लिये और परमेश्वर की वेदी के लिये उस स्थान में जिसे वह चुनेगा नकद्वारे और पलिवारे ठहराये ॥

दसवां पत्र ।

१ और जब यरुसलम के राजा अदनीमिदक ने सुना कि यहूशूअ ने अई को ले लिया और उसे सर्वथा नाश किया जैसा उस ने यरीहो और उस के राजा से किया था वैसा ही उस ने अई और उस के राजा से किया और कि जिवऊन के २ दासियों ने इसराएल में मिलाप किया और उन में रहे । तब वे निपट डर गये क्योंकि जिवऊन एक बड़ा नगर था और राजनगरों के समान था और इस कारण ३ कि वह अई से भी बड़ा था और वहां के लोग बली थे । तब यरुसलम के राजा अदनीमिदक ने हवरन के राजा हदाम और यरमूत के राजा पिराम और ४ लकीस के राजा यफीश और इजलून के राजा दवीर के पास कहला भेजा । कि मुझ पास चढ़ आओ और मेरी सहायता करो जिससे हम जिवऊन को मारें क्योंकि ५ उस ने यहूशूअ और इसराएल के संतानों से मिलाप किया । सो अमूरियों के पांच राजा अर्थात् यरुसलम का राजा हवरन का राजा यरमूत का राजा लकीस का राजा इजलून का राजा वे एकट्ठे होके और उन की समस्त सेना जिवऊन के आगे डरे खड़े किये और उससे लड़ाई किई ॥

६ तब जिवऊन के लोगों ने यहूशूअ के पास जो जिलजाल में डेरा किये था कहला भेजा कि अपने सेवकों से अपना हाथ मत खींच हम पास शीघ्र आइये और हमें बचाइये और हमारी सहायता कीजिये क्योंकि अमूरियों के सारे राजा ७ जो पछाड़ में रहते हैं हमारे विरोध में एकट्ठे हुए हैं । तब यहूशूअ सारे घोड़ाओं ८ को और समस्त महावीरों को साथ लेके जिलजाल से चढ़ गया । और परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि उन से मत डर क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे वश में कर दिया ९ उन में से एक जन भी तेरे साम्ने ठहर न सकेगा । तब यहूशूअ जिलजाल से १० उठके रात भर चला गया और अचानक उन पर आ पहुंचा । और परमेश्वर ने इसराएल के आगे उन्हें ध्वस्त किया और जिवऊन में बड़ी मार से उन्हें मारा और वैतहैरान को जाते हुए मार्ग में उन्हें रगोदा और अजीकः और सुकैदः ११ लों उन्हें मारा । और ऐसा हुआ कि जब वे इसराएल के साम्ने से भाग निकले और वैतहैरान के उतार की ओर गये तब परमेश्वर ने अजीकः लों स्वर्ग से उन पर बड़े बड़े पत्थर बरसाये और वे मूये वे जो ओले से मारे गये थे उन से अधिक थे जिन्हें इसराएल के संतानों ने तलवार से मारा ॥

१२ जब परमेश्वर ने अमूरियों को इसराएल के संतान के वश में कर दिया तब यहूशूअ ने उसी दिन परमेश्वर के लिये इसराएल के आगे यों कहा कि हे सूर्य १३ जिवऊन पर और हे चंद्रमा तू रेयलून की तराई में ठहर जा । तब सूर्य ठहर गया और चंद्रमा स्थिर हुआ जब लों उन लोगों ने अपने शत्रुन से पलटा लिया क्या यसर की पुस्तक में नहीं लिखा है सो सूर्य स्वर्ग के मध्य में ठहर रहा और १४ दिन भर अस्त होने में शीघ्र न किया । और उससे आगे पीछे ऐसा दिन कभी न

क्योंकर वाचा वांधें । तब उन्होंने ने यहूशूअ से कहा कि हम तेरे सेवक हैं और यहूशूअ ने उन से कहा कि तुम कौन और कहाँ से आये हो । और उन्होंने ने उसे कहा कि तेरे सेवक परमेश्वर तेरे ईश्वर के नाम के लिये अति दूर देश से आये हैं क्योंकि हम ने उस की कीर्ति सुनी है और सब जो उस ने मिस्र में किये । और १० सब जो उस ने अमूरियों के दो राजाओं से जो यरदन के उस पार अर्थात् हमबून के राजा सैहून और वसन के राजा ऊज से जो अस्तश्त में था किये । इस ११ लिये हमारे प्राचीन और हमारे देश के समस्त वासी हम से कहके बोले कि तुम यात्रा का भोजन अपने साथ लेओ और उन से भेंट करो और उन्हें कहा कि हम तुम्हारे सेवक हैं तो अब तुम हम से वाचा वांधो । हम ने जिस दिन तेरे १२ पास आने को अपने घर छोड़े हमारे भोजन के लिये गेटी टटकी थी परन्तु अब देख सूख गई और फूँदी लग गई । पर जब हम ने उन्हें भरा था तब ये मदिरा १३ के पखाल नये थे और हमारे ये वस्त्र और जूते दूर की यात्रा के कारण से पुराने हो गये । तब उन लोगों ने उन के भोजन के कारण उन्हें ग्रहण किया और पर- १४ मेश्वर से न वृक्षा । और यहूशूअ ने उन से मिलाप किया और उन्हें जीते छोड़ने १५ के लिये उन से वाचा वांधी और मंडली के अध्यक्षों ने उन से किरिया खाई ।

और उन से वाचा वांधने के तीन दिन पीछे यों हुआ कि उन्होंने ने सुना कि १६ वे हमारे परेमी हैं और हमें रहते हैं । और इसराएल के संतान यात्रा करके १७ तीसरे दिन उन के नगरों में पहुँचे और उन के नगर जियजन और कफीर और विअगत और करयतअरीम थे । तब इसराएल के संतानों ने उन्हें न सारा क्योंकि १८ मंडली के अध्यक्षों ने उन से परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की किरिया खाई थी सो सारी मंडली अध्यक्षों से कुड़कुड़ाई ॥

परन्तु सारे अध्यक्षों ने समस्त मंडली से कहा कि हम ने उन से परमेश्वर १९ इसराएल के ईश्वर की किरिया खाई है सो इस लिये हम उन्हें कृ नहीं रखते । हम उन से यह करके उन्हें जीता छोड़ेंगे ऐसा न हो कि उस किरिया के कारण २० जो हम ने उन से खाई है हम पर कोष पड़े । और अध्यक्षों ने उन्हें कहा कि २१ उन्हें जीता छोड़ो परन्तु वे सारी मंडली के लिये लकड़हारे और पानिहारे छात्रों जैसा कि अध्यक्षों ने उन से प्रण किया था ॥

तब यहूशूअ ने उन्हें बुलाया और उन से कहा कि तुम ने हम से यह कहके २२ क्यों छल किया कि हम तुम से अति दूर हैं जब कि तुम हमें रहते हो । सो २३ इस लिये तुम सापित हुए और तुम्हें से कोई बंधुआई से छुट्टी न पावेगा जो मेरे ईश्वर के घर के लिये लकड़हारा और पानिहारा न हो । और उन्होंने ने यहूशूअ २४ को उत्तर दिया और कहा कि तेरे सेवकों से निश्चय कहा गया था कि किस रीति से परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपने दास मूसा को आज्ञा किई कि मैं सारा देश तुम्हें देऊंगा और उस देश के सारे वासियों को तुम्हारे आगे नाश करूंगा इस लिये हम ने तुम्हारे कारण अपने प्राणों के डर के लिये यह काम किया । और २५ अब देख हम तेरे वश में हैं जो कुछ तुम्हें हमारे लिये भला और ठीक जान पड़े सो कर । और उस ने उन से वैसा ही किया और इसराएल के संतान के हाथ से २६



३१ और लिथन: से यहूशूअ सारे इसराएल समेत लकीम को गया और उस के  
 ३२ खागे कावनी किई और उससे लड़ा । और परमेश्वर ने लकीम को इसराएल के  
 हाथ में कर दिया और उस ने दूसरे दिन उसे ले लिया और उसे और उस में के  
 सारे प्राणियों को तलवार की धार से मारा किया उस सब के समान जो उस ने  
 लिथन: से किया था ॥

३३ तब जलर का राजा हेराम लकीम की सहायता को बहुत आया पर यहूशूअ  
 ने उसे और उस के लोगों को यहां लों मारा कि एक भी न बचा ॥

३४ और यहूशूअ लकीम से सारे इसराएल समेत इजलून को गया और उस के सामे  
 ३५ कावनी किई और उससे लड़ा । और उनी दिन उसे ले लिया और उसे तलवार  
 की धार से मारा और उस में के समस्त प्राणियों को सर्वथा नाश किया उस सब के  
 समान जो उस ने लकीम से किया था ॥

३६ फिर इजलून से यहूशूअ सारे इसराएल समेत द्यन्न को गया और उससे लड़ा ।

३७ और उसे लिया और उसे और उस के राजा को और उस के समस्त नगरों को  
 और उस में के समस्त प्राणियों को तलवार की धार से मार डाला उस सब  
 के समान जो उस ने इजलून से किया था उस में एक को भी न छोड़ा परन्तु उसे  
 और उस में के सारे प्राणियों को सर्वथा नाश किया ॥

३८ तब यहूशूअ सारे इसराएल सहित यहां से द्यौर को फिरा और उससे लड़ा ।

३९ और उसे और उस के राजा और उस के सारे नगरों को ले लिया और उन्हें तल-  
 वार की धार से मार डाला और उस में के समस्त प्राणियों को सर्वथा नाश  
 किया उस ने एक को भी न छोड़ा जैसा उस ने द्यन्न से किया था वैसा द्यौर  
 से और उस के राजा से किया और जैसा लिथन: से और उस के राजा से किया था ॥

४० सो यहूशूअ ने पहाड़ों के और दक्षिण की और तराई के और नालों के देशों  
 को और उन के समस्त राजाओं को मारा उस ने एक को न छोड़ा परन्तु समस्त  
 श्वासियों को सर्वथा नाश किया जैसी कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने आज्ञा

४१ किई थी । और यहूशूअ ने कादिसयरीनीअ से लेके आज्ञ: लों और जश्न के सारे

४२ देश को जिवजन लों उन्हें मार डाला । और यहूशूअ ने उन सब राजाओं को  
 और उन के देश को एक ही समय में ले लिया क्योंकि परमेश्वर इसराएल का

४३ ईश्वर इसराएल के लिये लड़ा । तब यहूशूअ सारे इसराएल सहित जिलजाल  
 की कावनी को फिर आया ॥

ग्यारहवां पर्व ।

१ और यों हुआ कि जय हासूर के राजा यवीन ने सुना तो उस ने मदन के राजा

२ यूवाव और शमरून के राजा और इकशाफ के राजा को । और उन राजाओं को  
 जो पहाड़ में उत्तर दिशा को और किन्नारात की दक्षिण दिशा के चौगान को और

३ तराई में और दोर की जंचाइयों में पश्चिम में । और पूरव पश्चिम में कन-  
 आनियों को और अमूरियों और दित्तियों और फरिजियों और यूसियों को पर्वत

४ में और हवियों को जो हरमून के नीचे मिसफ: में थे कहला भेजा । तब वे अपनी सब  
 सेना समेत बहुत लोग समुद्र के तीर की बालू के समान मंडली में छोड़े और

हुआ कि परमेश्वर ने एक पुरुष के शब्द को माना क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के लिये युद्ध किया । तब यहूशूय समस्त इसराएल के संग जिलजाल की छावनी को १५ फिर गया ॥

परन्तु ये पांचों राजा भागे और मुकैदः की कंदला में जा छिपे । और यहूशूय १६ को संदेश पहुंचा कि पांचों राजा मुकैदः की कंदला में छिपे हुए पाये गये । तब १८ यहूशूय ने कहा कि बड़े बड़े पत्थर उस कंदला के मुंह पर टुलकाये और उस पर चौकी बैठाओ । और तुम मन ठहरो परन्तु अपने शत्रु का पीछा करो और १९ उन के पछरे हुओं को मार डालो उन के नगरों में उन्हें पैठने मत देओ क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दिया है । और ऐसा हुआ २० कि जब यहूशूय और इसराएल के संतान उन्हें नाश कर चुके और बड़ी मार से उन्हें घात किया यहां लों कि वे नष्ट हुए और उन में के उठे हुए बाड़े के नगरों में पैठ गये । और मारे लोग मुकैदः की छावनी में यहूशूय पास कुणल से फिर २१ आये और इसराएल के संतानों के विरोध में किसी ने मुंह न खोला ॥

तब यहूशूय ने कहा कि कंदला के मुंह को खोलो और उन पांचों राजाओं २२ को कंदला से मुक्त पास बाहर लाओ । और उन्हीं ने ऐसा ही किया और उन २३ पांचों राजाओं को अर्थात् यरमलम के राजा को हवदन के राजा को यरमूत के राजा को लर्काम के राजा को इजलून के राजा को कंदला में उन पास निकाल लाये । और यों हुआ कि जब वे उन राजाओं को यहूशूय के आगे लाये २४ तब यहूशूय ने इसराएल के सारे मनुष्यों को बुलाया और अपने साथ के घोड़ा के प्रधानों से कहा कि आगे आओ इन राजाओं के गलों पर अपने पांच रखो तब वे पास आये और उन के गलों पर अपने पांच रखे । तब यहूशूय ने उन्हें २५ कहा कि डरो मत और विस्मित मत होओ प्रवल होके दियाव करो क्योंकि पर-  
मेश्वर तुम्हारे समस्त शत्रु से जिन से तुम लड़ते हो ऐसा ही करेगा । और उस २६ के पीछे यहूशूय ने उन्हें मारा और उन्हें घात किया और उन्हें पांच पेड़ों पर लटका दिया और वे सांक लों उन पेड़ों पर लटके रहे । और सूर्य अस्त होने २७ पर यों हुआ कि उन्हीं ने यहूशूय की आज्ञा से उन्हें पेड़ों पर से उतारा और उसी कंदला में जिस में वे जा छिपे थे डाल दिया और उस कंदला के मुंह पर बड़े बड़े पत्थर टुलकाये सो आज के दिन लों है ॥

और उसी दिन यहूशूय ने मुकैदः को ले लिया और उसे और उस के राजा को २८ और उस में के सारे प्राणियों को तलवार की धार से नाश किया किसी को न छोड़ा और उस ने मुकैदः के राजा से बर्ही किया जो उस ने यरीहो के राजा से किया था ॥

तब यहूशूय सारे इसराएल सहित मुकैदः से लिवनः को गया और लिवनः से २९ लड़ा । और परमेश्वर ने उसे भी उस के राजा समेत इसराएल के हाथ में कर ३० दिया और उस ने उसे और उस में के समस्त प्राणियों को तलवार की धार से नाश किया उस ने उस में एक भी न छोड़ा परन्तु वहां के राजा से उस ने बर्ही किया जो यरीहो के राजा से किया था ॥

२१ और उसी समय यहूशूअ ने अनाकियों को पहाड़ों से नाश किया हब्रून से  
 दबीर से अनाव से और यहूदाह के सारे पहाड़ों से और इसराएल के सारे पहाड़ों  
 २२ से यहूशूअ ने उन्हें उन के नगरों सहित सर्वथा नाश किया । अनाकियों में से इस-  
 राएल के संतानों के देश में कोई न बचा परन्तु केवल अज्जः जअत और अशदूद  
 में कुछ बचे थे ॥

२३ सो यहूशूअ ने उस समस्त देश को लिया उस सब के समान जो कि परमेश्वर  
 ने मूसा को कहा था और यहूशूअ ने उसे इसराएल को उन के भागों के और  
 उन की गोष्टियों के समान अधिकार में दिया और देश ने युद्ध से चैन पाया ॥

चारहवां पद्य ।

१ और उस देश के राजा जिन्हें इसराएल के संतानों ने मार डाला और उन का  
 देश यरदन के उस पार उदय की ओर अरनून की नदी से लेकर हरमून पहाड़ लें  
 २ और पूरव दिशा के सारे चौगान अधिकार में लिया ये हैं । सैहून अमूरियों का राजा जो  
 हसबून में रहता था अरआयर से लेकर जो अरनून की नदी के तीरे पर है और  
 नदी के मध्य से और आधे जिलिअद से यूबक की नदी लें जो अम्मून के संतान  
 ३ का सिवाना है । और चौगान से पूरव और कनेरुस के सागर लें और चौगान  
 के सागर लें अर्थात् पूरव के खारी सागर लें उस मार्ग से जो वैतजशीमूत का  
 ४ जाता है और दक्षिण से जो पिसगः के नालों के तले है प्रभुता करता था । और  
 बसन के राजा जज के सिवाने जो दानव के उवरे हुए में थे जो इसतारात और  
 ५ अद्रिअई में रहता था । और हरमून पहाड़ में और सलकः में और सारे बसन में  
 जशूरियों और मअकातियों के सिवाने लें और आधा जिलिअद जो हसबून के  
 ६ राजा सैहून का सिवाना था राज्य किया । उन को परमेश्वर के सेवक मूसा और  
 इसराएल के संतानों ने मारा और परमेश्वर के सेवक मूसा ने रुबिनियों और  
 जदियों और मुनस्सी की आधी गोष्टी को उसे अधिकार में दिया ॥

७ और उस देश के राजा ये हैं जिन्हें यहूशूअ और इसराएल के संतानों ने यरदन  
 के इस पार पश्चिम दिशा में मारा बअलजद से लेकर लुवनान की तराई में और  
 चिकने पहाड़ लें जो शईर का जाता है और यहूशूअ ने उसे इसराएल की  
 ८ गोष्टियों को उन के भागों के समान बांटा । हिती अमूरी और कनआनी फरिज्जी  
 हवी और यूबसी जो पहाड़ में और तराई में और चौगान में और नालों में और  
 ९ अरण्य में और देश में रहते थे । यरीहो का राजा एक अई का राजा जो वैतएल  
 १० के लग है एक । यदसलम का राजा एक हब्रून का राजा एक । यरमूत का  
 ११ राजा एक लकीस का राजा एक । इजलून का राजा एक जजर का राजा एक ।  
 १२ दबीर का राजा एक जद्र का राजा एक । हुरमः का राजा एक अराद का राजा  
 १३ एक । लिबनः का राजा एक अदूलाम का राजा एक । सुकैदः का राजा एक  
 १४ वैतएल का राजा एक । तफफुह का राजा एक हिफ्न का राजा एक । अफीक  
 १५ का राजा एक लशारून का राजा एक । मदून का राजा एक हासूर का राजा  
 १६ एक । शमरूनमीरून का राजा एक अर्कशाफ का राजा एक । तअनाक का राजा  
 १७ एक मजिदो का राजा एक । कादिस का राजा एक यकनियम करमिल का राजा

बहुत से रथों के साथ बाहर निकले । और जब ये समस्त राजा ठहराके एकट्ठे ५  
निकले तब उन्हें ने मेरोम के पानियों पर एकट्ठे छावनी किई जिसमें इसराएल  
से लड़ें ॥

तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि उन से मत डर क्योंकि कल इसी समय ६  
उन सभीों को इसराएल के आगे मारके डाल देता हूँ तू उन के घोड़ों के पट्टों  
की नस काटना और उन के रथों को आग से जला देना । सो यहूशूअ और सारे ७  
लड़कों लोग उस के संग मेरोम के पानियों पास अचानक उन पर आ गिरे । और ८  
परमेश्वर ने उन्हें इसराएल के हाथ से सौंप दिया और उन्हें मारा और  
बड़े सैदा और मिसरेफोटमाईम और पूरव में मिसफः की तराई लों उन्हें रगोदा  
और उन्हें यहां लों मारा कि एक भी न बचा । और यहूशूअ ने परमेश्वर की ९  
आज्ञा के समान उन के घोड़ों के पट्टों की नस काटी और उन के रथ आग से  
जला दिये ॥

फिर यहूशूअ उसी समय फिरा और हामूर को ले लिया और उस के राजा को १०  
तलवार से मारा क्योंकि अगले समय में हामूर समस्त राज्यों से श्रेष्ठ था । और ११  
उन्होंने ने समस्त प्राणियों को जो वहां थे तलवार की धार से मारके सर्वथा नाश  
किया वहां एक भी श्वासधारी न बचा और उस ने हामूर को आग से जला दिया ।  
और यहूशूअ ने उन राजाओं के सारे नगरों को और उन नगरों के मारे राजाओं को १२  
लिया और उन्हें तलवार की धार से मारके सर्वथा नाश किया जैसी कि परमेश्वर  
के सेवक मूसा ने आज्ञा किई थी । परन्तु हामूर को छोड़ जिसे यहूशूअ ने जलाया १३  
उन समस्त नगरों को जो अपने टीलों पर थे इसराएल ने उन्हें न जलाया ।  
और इन नगरों की सारी लूट और डोर को इसराएल के संतान ने अपने लिये १४  
लूट लिया परन्तु हर एक जन को तलवार की धार से मार डाला यहां लों कि  
उन्हें नाश कर दिया कि एक को भी श्वास लेने को न छोड़ा । जैसी कि परमेश्वर १५  
ने अपने दास मूसा को आज्ञा किई थी वैसी ही मूसा ने यहूशूअ को आज्ञा किई  
और यहूशूअ ने वैसा ही किया उस ने उन समस्त वस्तुन में जो परमेश्वर ने मूसा  
को आज्ञा किई थी एक को भी बिन करे अधूड़ा न छोड़ा ॥

सो यहूशूअ ने उस सारे देश और पर्वत को और दक्षिण के समस्त देश और १६  
जश्न की समस्त भूमि और तराई और चौगान और इसराएल के पहाड़ और उस  
की तराई को लिया । चिकने पहाड़ से जो शईर की ओर चढ़ता है और बअाल- १७  
गाद लों जो लुबनान की तराई में हरमून पहाड़ के नीचे है ले लिया और उस ने  
उन के सारे राजाओं को लिया और उन्हें मारा और नाश किया । यहूशूअ इन १८  
समस्त राजाओं से बहुत दिन लों लड़ा किया ॥

हवियों को छोड़ जो जियऊन के वासी थे कोई नगर न था जिस ने इसरा- १९  
एल के संतान से मिलाप किया हो सब को उन्होंने ने लड़ाई में लिया । क्योंकि २०  
यह परमेश्वर की ओर से था कि उन के मन को कठोर करे जिसमें वे इसराएल  
के संतान से लड़ें जिसमें वह उन्हें सर्वथा नाश करे और जिसमें उन पर दया न होवे  
परन्तु जिसमें वह उन्हें नाश करे जैसी कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

कें प्रधानों अवी और रकम और सूर और दूर और खय जो सैहून के अध्यक्ष उस  
 २२ देश में बसते थे मार डाला । और बजर का बेटा बलआम जो गणक था जिसे  
 २३ इसराएल के संतान ने उन के जूमे हुआ के साथ अपनी तलवार से मारा । और  
 रुबिन के संतान का सिवाना यरदन और उस का सिवाना हुआ ये नगर और उन  
 के गांव रुबिन के संतान के घरानों के समान अधिकार में पड़े ॥

२४ और मूसा ने जद की गोष्ठी को उन के घरानों के समान भाग दिया । और  
 २५ उन का सिवाना यअजीर और जिलिअद के सारे नगर और अस्मून के संतान का  
 २६ आधा देश अरआयर लों जो खः के आगे है । और इसबून से रामातमिसपः  
 २७ और बतूनीम लों और महनैन से लेके दबीर के सिवाने लों । और वैतुलराम की  
 तराई में और वैतनिमरः और सकूत और साफून जो इसबून के राजा सैहून के  
 राज्य में से बच रहा था यरदन और उस के सिवाने किनारत के समुद्र के तीर  
 २८ लों यरदन के उस पार पूरब और । ये नगर और उन के गांव जद के संतान के  
 अधिकार उन के घरानों के समान हुए ॥

२९ और मूसा ने मुनस्सी के संतान की आधी गोष्ठी को भी भाग दिया सो मुनस्सी  
 ३० के संतान की आधी गोष्ठी का भाग उन के घरानों के समान यह था । और उन  
 के सिवाने महानाईम से सारा वाशान बसन के राजा उज का सारा राज्य और  
 ३१ यायर के सारे नगर बसन में हैं साठ नगर । और आधा जिलिअद और अशतस्त  
 और अद्री बसन के राजा उज के नगर मुनस्सी के बेटे माकीर के संतान को  
 ३२ अर्थात् माकीर के आधे संतान उन के घरानों के समान । इन्हें मूसा ने मोअब  
 के चौगान में यरदन के उस पार यरीहो के लग पूरब की ओर अधिकार के लिये  
 ३३ दिया । परन्तु मूसा ने लावी के संतान को अधिकार न दिया परमेश्वर इसराएल  
 का ईश्वर वही उन का अधिकार था जैसा उस ने उन्हें कहा ॥

चौदहवां पर्व ।

१ और इन्हें कनआन के देश में इसराएल के संतानों ने अपने अधिकार में लिया  
 जिन्हें इलिअजर राजक और नून के बेटे यहूशूअ और इसराएल के संतानों की  
 २ गोष्ठियों के पितरों के प्रधानों ने उन्हें अधिकार में बांट दिया । जैसा परमेश्वर  
 ने साढ़े नव गोष्ठी के बिषय में मूसा के हस्ते आज्ञा किई उन का अधिकार चिट्ठी  
 ३ से हुआ । क्योंकि मूसा ने यरदन के उस पार अढ़ाई गोष्ठी को अधिकार दिया  
 ४ था पर लावियों को उन में कुछ अधिकार न दिया । क्योंकि यूसुफ के संतान दो  
 गोष्ठी थे मुनस्सी और इफरायम सो उन्होंने ने लावियों को देश में कुछ भाग न  
 दिया केवल कई एक नगर उन के रहने के लिये और उन के आसपास की  
 ५ वस्तियां उन के ठेक और संपत्ति के लिये । जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा  
 किई इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया और उन्होंने ने देश का भाग किया ॥

६ तब यहूदाह के संतान जिलजाल में यहूशूअ पास आये और कनजी यफुने के  
 बेटे कालिब ने उसे कहा कि उस बात को जो ईश्वर ने अपने जन मूसा को मेरे  
 ७ और तेरे बिषय में कादिसबरनीअ में कही तू जानता है । जिस समय ईश्वर के  
 दास मूसा ने कादिसबरनीअ से मुझे भेजा कि देश का भेद लेओ उस समय में

एक । दोर का राजा दोर की जंचाई में एक जातिगणों का राजा जिलजाल में २३  
का एक । तिरजः का राजा एक ये सब एकतीस राजा थे ॥ २४

तैरद्व्यां पर्व ।

अथ बृहद्गुह्य बृहद् होके पुरनिया हुआ और परमेश्वर ने उसे कहा कि तू बृहद् और १  
पुरनिया हुआ और अथ लों बहुत सी भूमि अधिकार के लिये धरी है । यह देश २  
अथ लों धरा है फिलिस्तिनों का समस्त विभाग और समस्त जंगली । मैदूर में जो ३  
मिस्र के आगे है अकहन के सिवाने लों उत्तर दिशा को कनयानियों में गिना जाता ४  
है जो फिलिस्तिनों के पांच अध्वज हैं गज्जायी और अगडूदी अगहनूनी गिती ५  
और अकहन की और ऐयीस । दक्षिण दिशा से कनयानियों के सारे देश और कंदना ६  
जो मैदियों के लग है अमूरियों के सिवाने अफीक लों । और जियनी का देश ७  
और सारा लुवनान उदय की और द्यवलजद में जो हरमून के पछाड़ के नीचे है ८  
हमात की पैठ लों । पछाड़ी देश के समस्त दासी लुवनान से लेके मिस्रकोटमा- ९  
ईम लों और सारे मैदी में उर्न्त इसराएल के संतान के माथे में दूर कदंगा केवल १०  
तू चिट्टी डालके उसे इसराएलियों का अधिकार के लिये बांट दे जैसी में ने तुम्हें ११  
आज्ञा किई है ॥

सो अथ हम देश को नव गोष्टियों को और सुनस्नी की आधी गोष्टी को १  
अधिकार के लिये बांट दे । उस के साथ रुविनी और जह्नी अपना अधिकार पाये २  
हैं जो सूसा ने परदन के पार उर्न्त दिया पूर्य दिशा को जैसा कि परमेश्वर के ३  
सेवक सूसा ने उर्न्त दिया । अरआयर से जो अरनून के तीर पर है और उस नगर ४  
से जो नदी के दोहोंदोच है और मैदिया के चौगान से लेके दैयून लों । और ५  
अमूरियों के राजा मैदून के सारे नगर जो हमयून में राज्य करता था अरनून के ६  
संतान के सिवाने लों । और जिलियद और जगूरी का सिवाना और मयकाती ७  
और हरमून का सारा पर्वत और सारा वसन गलकः लों । वसन में जज का साग ८  
राज्य जो इसतारात और अद्रिअई में राज्य करता था जो दानव के उदरे हुए से ९  
वच रहा था सो सूसा ने उर्न्त सारा और उर्न्त बाहर किया । तथापि इसरा- १०  
एल के संतानों ने जगूरी और मयकातियों को दूर न किया परन्तु जगूरी और ११  
मयकाती आज लों इसराएलियों में वसते हैं । केवल लावी की गोष्टी को अधि- १२  
कार न दिया इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के होस के बलिदान उस के कटने के १३  
समान उन का अधिकार है ॥

और सूसा ने रुविन के संतान की गोष्टी को उन के घरानों के समान अधि- १४  
कार दिया । और अरआयर से जो अरनून की नदी के तीर पर है उन का सिवाना १५  
था और वह नगर जो नदी के मध्य में है और सारा चौगान जो मैदिवः के लग १६  
है । हमयून और उस के सारे नगर जो चौगान में हैं दैयून और दामोतवअल १७  
और वैतवअलमऊन । और यहसा और कडीमान और मेफायत । और करिय- १८  
तैम और सिवमा और जिरतसहर जो तराई के पछाड़ में हैं । और वैतफगूर और १९  
पिसगः के नाले और वैतुलयसीमात । और चौगान के सारे नगर और अमूरियों के २०  
राजा मैदून का सारा राज्य जो हमयून में राज्य करता था जिसे सूसा ने सिदयान २१



- के पास सिवाना चढ़ गया और उस पहाड़ की चोटी लों जो पश्चिम दिशा हिनुम की तराई के आगे है जो उत्तर दिशा में दानय की तराई के अंत में है ।
- ८ और सिवाना पहाड़ की चोटी से नफतुह के मोते के पास और हफरन पहाड़ के नगरे के पास जा निकला और वहां से सिवाना दक्षलः को जो करयतशरीम है
- १० खिंच गया । और दक्षलः की पश्चिम दिशा में घूमके सिवाना शरर पहाड़ को और वहां से जियारीम पहाड़ की अलंग गया जो कमलून है उत्तर अलंग की और
- ११ चैतशम्स को उतर गया और तिमनः को निकल गया । और सिवाना अकम्न की उत्तर दिशा के पास में जा निकला और सिवाना शिकम्न को खिंच गया और दक्षलः पहाड़ को गया और यदनिएल को निकला और सिवाने के निकास समुद्र को ये ॥
- १२ और उस का पश्चिम सिवाना महा मागर और उस के तीर लों था यहूदाह के संतान के घराने का सिवाना उन के घरानों के समान यह है ॥
- १३ और उस ने यहूजे के बेटे कालिय को यहूदाह के संतानों में जैसी कि परमे-श्वर ने यहूशूअ को आज्ञा किई थी करयतशरयश अनाक का पिता जो हवरन है भाग दिया । और कालिय ने अनाक के तीन बेटे गेशाई और अहीमान और
- १४ तलमी को जो अनाक के संतान हैं वहां से दूर किया । और वह वहां से दबीर के वासियों पर चढ़ा और दबीर का नाम आगे करयतमिफर था । सो कालिय ने कहा कि जो कोई करयतमिफर को मारे और उसे लेवे मैं उसे अपनी बेटो अकसः
- १५ को व्याह देऊंगा । तब कालिय के छोटे भाई कनज के बेटे गुतनिएल ने उसे लिया तब उस ने अपनी बेटो अकसः को उससे व्याह दिई । और रेमा हुआ कि जब वह उस पास गई तो उसे उभारा कि वह उस के पिता से एक खेत मांगे सो वह अपने गदहे पर से उतरी तब कालिय ने उसे कहा कि तू क्या चाहती
- १६ है । और उस ने उत्तर दिया कि मुझे आशीस दीजिये क्योंकि आप ने मुझे दक्षिण की भूमि दिई सो मुझे पानी के सोते भी दीजिये तब उस ने उसे ऊपर के सोते और नीचे के सोते दिये ॥
- २० यहूदाह के संतान की गोष्टी का अधिकार उन के घरानों के समान यह है ॥
- २१ और अदूम के सिवाने की ओर दक्षिण दिशा यहूदाह के संतान की गोष्टी के नगर के अंत में हैं कविजएल और अद्र और यजूर । और कैनः और दमूना और
- २२ अदअदः । और कादिस और हामूर और इतनान । जीफ और तलम और दक्ष-लात । और हामूर हदता और करयतहसरन जो हामूर है । असाम और समअ और मोलदः । और हसरजदः और हशसून और चैतफलत । और हामूर शुआल और बिअरसबः और बिजयूतियाह । दक्षलः और रेयोम और अजस् । और इलतवलुद और कसील और हुरमः । और सिकलज और मदमन्नः और सनसन्नः । और लिवावत और शिलहीम और रेन और रुस्मान ये सब उंतीस नगर और उन के गांव ॥
- २३ वे तराई में इसताल और सुरअः और अशनः । और जनूह और अनजनीम तुफाह और रेनाम । यरसूत और अदूलाम सेकः और अजीकः । और सगरीन और
- २४ अदीतैन और जदीरः और अदीरतैन चौदह नगर उन के गांव समेत । जिनान और

चालीस बरस का था और मैं ने उसे अपने मन के समान संदेश पहुंचाया । तथापि ८  
मेरे भाइयों ने जो मेरे साथ चढ़ गये थे मंडली के मन को पिघला दिया परन्तु  
मैं ने परमेश्वर अपने ईश्वर का परिपूर्णता से प्रीष्ट किया । और मूसा ने उसी ९  
दिन 'किरिया खाके कहा कि निश्चय वह देश जिस पर तेरे चरण पड़े थे तेरा  
और तेरे बेटों का सदा का अधिकार होगा क्योंकि तू ने परमेश्वर मेरे  
ईश्वर का परिपूर्णता से प्रीष्ट किया । और अब देख परमेश्वर ने मुझे अपने १०  
कहने के समान आज के दिन लों जीता रक्खा और उस समय से लेकर जो पर-  
मेश्वर ने यह बात मूसा से कही जब कि इसराएल अरण्य में फिरा किये इस  
समय लों पैतालीस बरस बीत गये और अब आज के दिन मैं पचासी बरस का  
बृद्ध हूँ । अब लों मैं ऐसा बली हूँ जैसा उस दिन था जब मूसा ने मुझे भेजा ११  
जैसा लड़ाई के लिये और बाहर भीतर आने जाने के लिये मेरा बल तब था वैसा  
ही अब भी है । सो अब यह पढ़ाह जिस के विषय मैं परमेश्वर ने उस दिन कहा १२  
मुझे दीजिये क्योंकि तू ने उस दिन सुना था कि अनाकीम बड़ा हैं और नगर  
बड़े और वाढ़ित हैं सो यदि ऐसा हो कि परमेश्वर मेरे साथ होवे तब मैं परमे-  
श्वर के कहे के समान चन्टे निकाल देऊंगा ॥

तब यहूशूअ ने उसे आशीस दीई और यफुन्ने के बेटे कालिब को हबर्न १३  
अधिकार में दिया । सो हबर्न कनजी यफुन्ने के बेटे कालिब का आज लों १४  
अधिकार हुआ इस लिये कि उस ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का प्रीष्टा परि-  
पूर्णता से किया । और अगले समय में हबर्न का नाम करयतअरबअ और जो १५  
अरबअ अनाकियों में महाजन था और देश ने लड़ाई से चैन पाया ॥

पंदरहवां पर्व ।

और यहूदाह के संतान की गोष्टी की चिट्टी उन के घरानों के समान यह थी १  
सीन के वन से दक्षिण दिशा दक्षिण के अत्यंत तीर अद्रूस के सिवाने लों दक्षिण ॥

और उन का दक्षिणी सिवाना खारी सागर से अर्थात् उस कोल से जो दक्षिण २  
की ओर जाता है । और वह दक्षिण की अलंग अक्रबिम की जंघाई से निकलके ३  
सीन लों गया और दक्षिण की ओर से कादिसवरनीअ लों चढ़ गया और हसर्न  
को पहुंचा और अद्वार लों चढ़ गया और करकअ को फिरा । और अजमून को ४  
पहुंचा और निकलके मिख की नदी लों गया और उस के तीर के निकास समुद्र  
को गये वही तुम्हारा दक्षिण सिवाना होगा ॥

और उस का पूरव सिवाना खारी समुद्र से यरदन के अंत लों ॥ ५

और उस का उत्तर का सिवाना समुद्र के कोल से जो यरदन का अंत है ।  
और यह सिवाना बैतहजलः को चढ़ गया और बैतुलअरबः के उत्तर की अलंग ६  
चला गया और ख्विन के बेटे खुदन के पत्थर लों सिवाना चढ़ गया । फिर ७  
अबूर की तराई से दबीर की ओर चढ़ गया और यों उत्तर को जिलजाल की  
ओर गया जो अद्रूसीम की चढ़ाई के साम्ने है जो नदी के दक्षिण अलंग है और  
यह सिवाना रेनशम्स के प्राणियों की ओर गया और उस के निकास रेनराजिल  
में थे । और यवूसी जो यरुसलम है उस की उत्तर अलंग हिनूम के बेटे की तराई ८

८ की गोष्टी का अधिकार उन के घरानों के समान यह है । और इफरायम के संतान के लिये अलग अलग नगर मुनस्सी के संतान के अधिकार में थे मारे नगर उन १० के गांवों सहित । और उन्होंने ने उन कनयानियों को जो जजर में रहते थे दूर न किया परन्तु कनयानी इफरायमियों में आज के दिन लीं वस्ते हैं और संया करते हैं ॥

सत्रहवां पृष्ठ ।

१ मुनस्सी की गोष्टी ने भी अधिकार पाया क्योंकि यह यूमुफ का पहिलौठा था सो जिलिअद के पिता मुनस्सी के पहिलौठे मकीर ने जो लड़ाका था २ जिलिअद और वशन अधिकार पाया । और मुनस्सी के संतान के उवरे हुशों को उन के घरानों के समान अधिकार मिला अत्रिअजर के संतान के लिये और खलक के संतान के लिये और यसरगन के संतान के लिये और सिकम के संतान के लिये और हिम के संतान के लिये और सिमोदाय के संतान के लिये यूमुफ के बेटे मुनस्सी के घरानों के समान पुरुष बालक थे थे ॥

३ परन्तु मुनस्सी का बेटा मकीर का बेटा जिलिअद का बेटा हिम का बेटा सिलाफिदाद के बेटे न थे परन्तु बेटियां थीं जिन के नाम ये हैं महलः और नूयः

४ दजलः मिलकः और तिरजः । सो वे जिलिअद याजक और नून के बेटे यहूशूय के और प्रधानों के आगे आके बोलीं कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई कि वह हमारे भाइयों के मध्य में हमें अधिकार देवे सो परमेश्वर की आज्ञा के

५ समान उस ने उन के पिता के भाइयों में उन्हें अधिकार दिया । सो जिलिअद और वशन के देश को छोड़के जो यरदन के उस पार है मुनस्सी को दस भाग

६ पड़े । क्योंकि मुनस्सी की बेटियों ने अपने भाइयों के साथ अधिकार पाया था और मुनस्सी के उवरे हुए बेटों ने जिलिअद का देश पाया ॥

७ और यसर से लेके सिकमतात लों जो सिकम के सामे है मुनस्सी का सिवाना ८ था और सिवाना दहिने से निकलके रेनतुफ्फाह के वासियों लों गया । तुफ्फाह का

देश मुनस्सी का था परन्तु तुफ्फाह जो मुनस्सी के सिवाने में था इफरायम के

९ संतान का भाग था । सो उस का सिवाना नल की नाली की दक्षिण और था और इफरायम के ये नगर मुनस्सी के नगरों में मिले हैं और मुनस्सी का सिवाना

१० उत्तर की नदी से था और उस के निकास समुद्र में थे । दक्षिण दिशा इफरायम की हुई और उत्तर दिशा मुनस्सी की और उस का सिवाना समुद्र था सो वे दोनों

११ उत्तर दिशा यसर और पूरव दिशा इशकार से जा मिलीं । और मुनस्सी इशकार में और यसर में बैतशन और उस के नगर और इवलिआम और उस के नगर और

दार के निवासी और उस के नगर और रेनदार के निवासी और उस के नगर और तअनाक के वासी और उस के नगर और मजिडो के निवासी और उस के नगर

१२ अर्थात् तीन देश रखते थे । तथापि मुनस्सी के संतान उन नगरों को न ले १३ सके परन्तु कनयानी उस देश में बसा चाहते थे । तथापि यों हुआ कि जब इसराएल के संतान प्रवल हुए तो कनयानियों से कर लिया परन्तु उन्हें सर्वश दूर न किया ॥

हदाशः और मिजडलजहू । और दिलआन और मिसपः और युक्तिएल । लकीस ३६  
 और दुसकत और इजलून । और कयून और लहमास और कितलीस । और ३७  
 जदीरात वैतदजून और नयसः और सुकैदः सोलह नगर उन के गांवों समेत । लिवनः ३८  
 और अतर और अशन । और इफताह और अशनः और नसीव । और कर्दलः ३९  
 और अकजीव और मरीशः नव नगर उन के गांवों समेत । अकहन उस के नगर ४०  
 और गांवों समेत । अकहन से समुद्र लों सब जो अशदूद के आसपास थे उन के ४१  
 गांव समेत । अशदूद अपने नगरों और गांवों सहित अज्जः अपने नगरों और गांवों ४२  
 समेत मिस की नदी लों और महा सागर और उस का सिवाना ॥

और पहाड़ में समार और दतीर और शोकः । और दन्नः और करयतमन्नः ४३  
 जो दबीर है । और अनाव और इस्तिमाथ और आनीम । और जग्न और ४४  
 होलन और जैलः ग्यारह नगर उन के गांवों समेत । अराव और दूमः और ४५  
 इशयन । और यनूम और वैतुलतफाह और अफीकः । और हुमतः और कर- ४६  
 यतअरवथ जो हवरून है और सैगूर नव नगर उन के गांवों समेत । मजन कर- ४७  
 मिल और जेफ और जता । और यजरअएल और यकदीआम और जनुह । काइन ४८  
 जिवथः और तिमनः दस नगर उन के गांवों समेत । इललूल वैतमूर और जदूर । ४९  
 और मगारात और वैतअनात और इलतकून छः नगर उन के गांवों समेत । ५०  
 करयतवअल जो करयतअरीम और रव्वः है दो नगर उन के गांवों सहित ॥ ५१

अरण्य में वैतुलअरवथ मदीन और सकाकः । और निवशान और लोन का ५२  
 नगर और रेनजदी छः नगर उन के गांवों समेत ॥

परन्तु यहूसी जो थे यहसलम में रहते थे सो उन्हें यहूदाह के संतान दूर न ५३  
 कर सके परन्तु यहूसी यहूदाह के संतान के साथ आज के दिन लों यहसलम में ५४  
 रहते हैं ॥

सोलहवां पृष्ठ ।

और यूसुफ के संतान की त्रिटी यरदन से यरीहो के पास निकलके यरीहो १  
 के पानी के पूरव जो है और उस वन लों जो यरीहो से वैतएल पहाड़ की ओर २  
 धार को जाता है । और वैतएल से निकलके लौज को जाके अरकी के सिवाने ३  
 को अतरात के पास चला । और पश्चिम दिशा से यफलती के तीर को जाता ४  
 है नीचे की ओर वैतहौरान के तीर को और जजर लों पहुंचता है और उस के ५  
 निकास समुद्र में हैं ॥

सो यूसुफ के संतान मुनस्सी और इफरायम ने अपना अधिकार लिया । और ६  
 इफरायम के संतान का सिवाना उन के घरानों के समान यह था अर्थात् उन के ७  
 अधिकार का सिवाना पूरव की ओर अतरात अदार से ऊपर के वैतहौरान को ८  
 गया । और सिवाना निकलके समुद्र की ओर उत्तर दिशा में मिकमतात को ९  
 निकला और सिवाना पूरव की ओर तानतशीलोह को गया और उस के पूरव १०  
 को छोके यनूहा को गया । और यनूहा से अतरात को और नारात को नीचे ११  
 गया और यरीहो को आया और यरदन पास जा निकला । पश्चिम का सिवाना १२  
 तुफाह से कनकी नदी को और उस के निकास समुद्र को हैं इफरायम के संतान

- निकली और उन के भाग का सिवाना यहूदाह के संतान और यूसुफ के संतान के मध्य में निकला ॥
- १२ और उन का सिवाना उत्तर दिशा यरदन नदी से था और उस का सिवाना यरीहो के पास से उत्तर दिशा को चढ़ा और पर्वत में से पश्चिम चढ़ गया और
- १३ उस के निकास वैतअवन के वन में थे । और सिवाना वहां से लौज की ओर गया लौज की अलंग जो वैतएल है दक्षिण दिशा को और सिवाना अतरातअद्वार को उतरा उस पहाड़ के पास जो नीचे के वैतहौरान की दक्षिण की ओर है ॥
- १४ और खैंचा जाके सिवाना वहां से होके उस पहाड़ पास जो वैतहौरान के दक्षिण को है दक्षिण की ओर समुद्र के कोने को और उस के निकास करयतयअल को थे जो करयतयअरीम है यहूदाह के संतान का एक नगर जो पश्चिम की ओर ॥
- १५ और दक्षिण की अलंग करयतयअरीम के अंत से और सिवाना पश्चिम को
- १६ गया और निकलके नफतूह के पानियों के कुए को गया । और सिवाना उस पहाड़ पास जो हिनम के बेटे की तराई के आगे है उतरा जो दानव की तराई के उत्तर को है और दक्षिण हिनम की तराई को दक्षिण की यवूसी की अलंग
- १७ में ऐनराजिल को उतर गया । और उत्तर से खैंचा जाके ऐनशम्स को निकल गया और वहां से गलीलूत की ओर जो अदूमोम की घाटी के सामे है और वहां से
- १८ खविन के बेटे खुहन के पत्थर लों उतरा । और उत्तर दिशा की ओर चौगान के
- १९ सामे होके उध की अलंग की ओर निकल गया और अरबः को उतरा । फिर उत्तर दिशा की ओर निकलके वैतहजलः की एक ओर को गया और सिवाने के निकास उत्तर को खारी समुद्र के कोल पर और यरदन के दक्षिण अंत को थे यही दक्षिण तीर था ॥
- २० और उस का पूरब सिवाना यरदन या बिनयमीन के संतान के सिवाने का अधिकार उस के सब सिवानों के समान उन के घरानों के समान चारों ओर यह था ॥
- २१ अब वे वस्तियां जो बिनयमीन के संतान की गोष्टी की थीं उन के घरानों
- २२ के समान यरीहो और वैतहजलः और कोसिस की तराई थीं । और बैतुलअरबः
- २३ और सरैन और वैतएल । और रेयीम और फारह और ऊफरः । और काम-
- २४ अम्मनी और ऊफनी और जिबअ बारह नगर उन के गांव सहित । जिबऊन और
- २५ रामः और बीअरात । और मिसपः और कफोरः और मोजः । और रेकम और
- २६ इरफाएल और तरलः । और जिलअ अलिफ और यवूसी जो यरूसलम है गबियातकरियास चौदह नगर उन के गांव सहित बिनयमीन के संतान का अधिकार उन के घरानों के समान यह है ॥
- उन्नीसवां पर्व ।
- १ और दूसरी चिट्ठी समऊन के संतान की गोष्टी की उन के घरानों के समान निकली
- २ और उन का अधिकार यहूदाह के संतान के अधिकार के मध्य में था । और उन के
- ३ अधिकार में बिअरसबअ और सबअ और मोलदः था । और हसरसूआल और बलह
- ४ और अजम् । और इलतवलूद और बतूल और हुरमः । और सिकलज और वैतमरक-
- ५ वात और हसारसूसः । और बैतलखाओत और सरुहन तेरह नगर उन के गांव समेत ।

सो यूसुफ के संतान ने यहूशूय से कहा कि तू ने किस लिये चिट्ठी से हमें १४  
 एक ही अधिकार और केवल एक ही भाग दिया यह जानके कि हम बहुत  
 हैं जैसा कि परमेश्वर ने हमें अब लों आशीस' दिई है । तब यहूशूय ने उन्हें १५  
 उत्तर दिया कि यदि तू बड़ा जातिगण है तो अपने लिये वन की और चढ़ जा  
 और वहां अपने लिये फरिज्जी और दानव के देश में काट क्योंकि इफरायम का  
 पर्वत तेरे लिये सकेत है । तब यूसुफ के संतान ने कहा कि यह पहाड़ हमारे १६  
 लिये थोड़ा है और समस्त कन्यानी जो वैतगान के और उस के गांधी के और  
 यजरअएल की नीचाई के और जो नीचाई के देश में रहते हैं लोहे की गांधियां  
 रखते हैं । तब यहूशूय ने यूसुफ के संतान इफरायम और मुनस्सी से कहा १७  
 कि तू तो बड़ा जातिगण है और बड़ी सामर्थ्य रखता है तेरे लिये केवल एक  
 ही भाग न होगा । क्योंकि पहाड़ तेरा होगा क्योंकि वह अरण्या है और तू उसे १८  
 काट डालियो और उस के निकास तेरे होंगे क्योंकि तू कन्यानी को खदेड़ेगा  
 यद्यपि वह लोहे का रथ रखके बली है ॥

### अठारहवां पर्व ।

तब सारे इसराएल के संतान की मंडली सैला में एकट्ठी हुई और वहां १  
 मंडली के तंबू को खड़ा किया और देश उन के वश में आया ॥

और इसराएल के संतानों में सात गोष्ठी रह गई थीं जिनमें ने अपना २  
 अधिकार न पाया था । सो यहूशूय ने इसराएल के संतानों से कहा कि कब ३  
 लों उस देश को वस करने में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने तुम्हें  
 दिया है आलस्य करोगे । अपने लिये हर एक गोष्ठी में से तीन तीन जन देखो ४  
 और मैं उन्हें भेजूंगा कि वे उठके उस देश के आरंभपर फिर और उसे अपने  
 अधिकार के समान लिखें और फिर मुझ पास आवें । और वे उस के सात भाग ५  
 करें यहूदाह अपने सिवाने पर दक्षिण की ओर रहे और यूसुफ के घराने उत्तर  
 दिशा में अपने सिवाने पर ठहरें । सो उस देश के सात भाग लिखके मुझ पास ६  
 यहां लाओ जिसमें मैं परमेश्वर के आगे जो हमारा ईश्वर है तुम्हारे लिये चिट्ठी  
 डालूं । परन्तु तुम्हों में लावी का भाग नहीं क्योंकि परमेश्वर की याजकता उन ७  
 का अधिकार है और जद और खविन और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने तो यरदन  
 के पार पूरव दिशा में अपने अधिकार पाये हैं जो परमेश्वर के सेवक मूसा ने  
 उन्हें दिया था ॥

तब लोग उठे कि चलें सो जो देश के लिखने को गये थे यहूशूय ने उन्हें ८  
 आज्ञा करके कहा कि उस देश में जाओ और आरंभपर फिर और लिखके मुझ  
 पास फिर आओ जिसमें मैं यहां सैला में परमेश्वर के आगे तुम्हारे लिये चिट्ठी  
 डालूं । सो वे लोग गये और उस देश में आरंभपर फिर और उसे नगर नगर ९  
 सात भाग करके एक पुस्तक में वर्णन किया और यहूशूय पास सैला में तंबूस्थान  
 को फिर आये । तब यहूशूय ने सैला में परमेश्वर के आगे उन के लिये चिट्ठी डाली १०  
 और देश इसराएल के संतान को उन के भागों के समान वहां बांट दिया ॥

और खिनयमीन के संतान की गोष्ठी की चिट्ठी उन के घरानों के समान ११



३३ के समान निकली । और उन का सिधाना दिल्फ से अलून से जअनवीम को और  
 ३४ अदासीनकव और यवनिअल लकूम लों और उस के निकास यरदन में थे । और  
 सिधाना पश्चिम दिशा को फिरके उजनातुलतदूर को जाता है और वहां से जाके  
 दकूक को दक्षिण दिशा जलून को पहुंचता है और पश्चिम दिशा में यसर को  
 पहुंचता है और पूरव को और यरदन पर यहूदाह से जा मिलता है ॥

३५ और सिद्धीम और मूर और दमात और रकत और किन्नारात ये घाड़ित नगर  
 ३६ हैं । और अदासः और रामा और दामूर । और कादिस और अदिअई और  
 ३७ एनडमूर । और इरयून और मजदिएल घरीम और दैतअनात और दैतशम्म उनीम  
 ३८ नगर उन के गांवों मद्धि । ये नगर और उन के गांव नफताली के संतान की  
 गोष्टी का अधिकार उन के घरानों के समान था ॥

३९ सातवीं चिट्टी दान के संतान की गोष्टी के घरानों के समान निकली ।  
 ४० और उन के अधिकार का सिधाना सुरअः और इणताल और ईरिणम्म थे । और  
 ४१ सअलवीन और सेयलून और इनालद । और गेलून और तमनात और अकन्न ।  
 ४२ और इलतकी और जियतून और वअलात । और पिहूड और वनीयरक और  
 ४३ जअतहस्मान । और मेयरकून और रकून उस सिधाने समेत जो थाफा के सन्मुख  
 ४४ है । और दान के संतान का सिधाना निकला वह उन के लिये थोड़ा था इस  
 लिये दान के संतान लसिम से लड़ने को चढ़ गये और उसे ले लिया और उसे  
 तलवार की धार से मार डाला और उसे वण में कर लिया और उस में उसे और  
 ४५ लसिम का नाम दान रक्खा जो उन के पिता का नाम था । ये सब नगर उन के  
 गांवों समेत दान के संतान की गोष्टी का भाग था ॥

४६ जब उन्होंने ने अधिकार के लिये अपने सिधानों के समान देश का बांटना  
 समाप्त किया तब इसराएल के संतान ने नून के बेटे यहूशूअ को अपने मध्य में  
 ४७ अधिकार दिया । उस ने तिमनत मिरह का नगर जो इफरायम के पहाड़ में है  
 मांगा सो उन्होंने ने परमेश्वर के अवन के समान उसे दिया और उस ने उस नगर  
 को बनाया और उस में जा बसा ॥

४८ ये वे अधिकार हैं जिन्हें इलिअजर याजक ने और नून के बेटे यहूशूअ ने और  
 इसराएल के संतान की गोष्टियों के पित्रों के प्रधानों ने चिट्टी डालके सैला में  
 परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर अधिकार के लिये बांट दिया सो  
 उन्होंने ने देश का बांटना समाप्त किया ॥

बीसवां पर्व ।

१ और परमेश्वर यहूशूअ से कहके बोला । कि इसराएल के संतान को यह  
 कहके बोल कि अपने लिये शरण के नगर ठहराओ जिन के विषय मैं मैं ने तुम्हें  
 २ मूसा के द्वारा से कहा । जिसमें वह घातक जो अज्ञान से अथवा अकस्मात् किसी  
 को मार डालके वहां भागे तो लोहू के पलटा लेवैये से वे तुम्हारे शरण होवें ।  
 ३ और जब कोई उन में से किसी एक नगर में भाग जावे तो नगर के फाटक की  
 पैठ में खड़ा रहे और उस नगर के प्रधानों के सुने में अपना समाचार वर्णन करे  
 ४ तब वे उसे नगर में अपने पास लेवें और उसे स्थान देवें कि वह उन के साथ रहे ।

रेन हस्मान और अतर और असन चार नगर उन के गांव समेत । और सारे गांव २  
 जो उन नगरों के आसपास थे वयलतवियर दक्षिण का रामात समजन के संतान  
 की गोप्ती का अधिकार उन के घरानों के समान यह है । यहूदाह के संतान के ९  
 भाग में से समजन के संतान का भाग था क्योंकि यहूदाह के संतान के भाग का  
 देश उन के लिये अधिक था इस कारण समजन के संतान ने उन के अधिकार के  
 मध्य में अपना भाग पाया ॥

और तीसरी चिट्ठी जवुलून के संतान की उन के घरानों के समान निकली से १०  
 उन के अधिकार का सिवाना सारीद लों हुआ । और उन का सिवाना समुद्र ११  
 की और सरअलः की और गया और दयासत लों पहुंचा और युक्मिश्राम के  
 आगे की नदी लों गया । और पूरव और मलीद से फिरके मूर्य के उदय की १२  
 और किसलाततवूर के सिवाने की और निकल जाता है और वहां से दावरत  
 और यफीअ पर चढ़ा । और वहां से जाते जाते पूरव की और जयतद्विफर और १३  
 सेतकाजीन लों गया और रिस्मुनसयूआरनीअः पास जा निकला । और उस का १४  
 सिवाना उत्तर अलंग दनातोन को घूम जाता है और उस के निकास इफनाहिएल  
 की तराई हैं ॥

और कतत और नहलाल और समदन और इदअलः और वैतलहम वारह नगर १५  
 उन के गांव सहित । ये नगर और उन के गांव जवुलून के संतान के घरानों के १६  
 अधिकार थे ॥

इशकार के संतान के घरानों के समान इशकार के लिये चौथी चिट्ठी १७  
 निकली । और उन का सिवाना यजरअएल और कमूलात और शूनेम की और १८  
 था । और हफरैन और शैयून और अनादरत । और रब्बियत और किसयून और इव- १९  
 तस् । और रमत और रेनजनीम और रेनहट्टः और वैतफसीन । और उन का सिवाना २०  
 तवूर और शखसीम और वैतशम्स से जा मिला और उन के सिवाने के निकास  
 यरदन को हुए सोलह नगर उन के गांव समेत । ये नगर और उन के गांव इश- २१  
 कार के संतान का अधिकार उन के घरानों के समान है ॥

और पांचवीं चिट्ठी यसर के संतान की गोप्ती के लिये उन के घरानों के समान २४  
 निकली । और उन का सिवाना हलकात और हली और यतन और इकशाफ २५  
 हुआ । और अलज्मिलिक और अमिआद और मिशाल और उन का सिवाना पश्चिम २६  
 दिशा करमिल और मैहूर लिवनात लों पहुंचता है । और उदय की और वैतदजून २७  
 को फिरा और जवुलून और इफताहिएल की तराई को वैतुलउमुक की उत्तर और  
 जा मिला और नअईएल और कबूल के बाईं ओर निकलता है । और अवदन २८  
 और रहूव और हम्मून और काना बड़े सिवून लों । और उस का सिवाना रामा २९  
 को और हूठ नगर मूर को फिर जाता है और वहां से मुड़के हूसः लों गया और  
 उस के निकास समुद्र के तीर से अकजीय को । और अम्सः और अफीक और ३०  
 रहूव बाईंस नगर उन के गांव सहित । यसर के संतान की गोप्ती का अधिकार ३१  
 उन के घरानों के समान ये नगर उन के गांवों सहित ॥

छठवीं चिट्ठी नफताली के संतान के अर्थात् नफताली के संतान के घरानों ३२

- ११ श्री । सो उन्होंने ने अनाक के पिता अरवअ का नगर जो हवदन है यहूदाह के  
 १२ पहाड़ पर उस के चारों ओर के आसपास समेत उन्हें दिये । परन्तु नगर के खेत  
 उस के गांव सहित उन्हें ने मफुने के बेटे कालिय को उस के अधिकार के लिये  
 १३ दिया । सो, उन्होंने ने हादन याजक के संतान को घातक के शरण के नगर के  
 लिये, हवदन का नगर उस के आसपास सहित और लियनः उस के आसपास  
 १४ समेत दिये । और वतीर उस के आसपास समेत और उगतिमाअ उस के आसपास  
 १५ समेत । और होलून उस के आसपास, समेत और दबीर उस के आसपास समेत ।  
 १६ और रेन उस के आसपास समेत और युता उस के आसपास समेत और शम्स उस  
 १७ के आसपास समेत नव नगर उन दोनों गोष्टियों में से । और विनयमीन की गोष्टी  
 १८ में से जिवऊन उस के आसपास समेत और जिवअ उस के आसपास समेत । अन-  
 तात उस के आसपास समेत और अलमून उस के आसपास समेत चार नगर ।  
 १९ सारे नगर हादन याजक के संतान के तेरह नगर उन के आसपास समेत थे ॥  
 २० और किहात के संतान के घरानों को लावियों से जो किहात के संतान में से  
 २१ उबरे हुए थे इफरायम की गोष्टी में से ये नगर अधिकार मिले । और घातक  
 के शरण का नगर इफरायम के पहाड़ में सिकन को उस के आसपास सहित  
 २२ दिया और जजर उस के आसपास सहित । और कवजेन उस के आसपास सहित  
 २३ और बैतहैरान उस के आसपास सहित चार नगर । और दान की गोष्टी में से  
 २४ इलतकी उस के आसपास सहित जिवतून उस के आसपास समेत । रेलून उस के  
 २५ आसपास समेत जअतहम्मान उस के आसपास समेत चार नगर । और सुनस्सी की  
 आधी गोष्टी में से तअनाक उस के आसपास सहित और जअतहम्मान उस के  
 २६ आसपास समेत दो नगर । ये सब दस नगर अपने अपने आसपास समेत किहात  
 के बचे हुए वंश के घरानों को मिले ॥  
 २७ और जैरसुन के संतान को जो लावियों के घरानों में से हैं सुनस्सी की आधी  
 गोष्टी में से घातक के शरण के लिये उन्हें ने वसन में जैलाम उस के आसपास  
 २८ समेत और बइस्तारः उस के आसपास समेत दो नगर दिये । और इशकार की  
 २९ गोष्टी में से कसून उस के आसपास सहित दावरत उस के आसपास सहित । यर-  
 ३० मूत उस के आसपास सहित रेनजनीम उस के आसपास समेत चार नगर । और यसर  
 की गोष्टी में से मिशाल उस के आसपास समेत अयदून उस के आसपास समेत ।  
 ३१ हलकाथ उस के आसपास समेत और रहुव उस के आसपास समेत चार नगर ।  
 ३२ और नफताली की गोष्टी में से गलील में कादिस उस के आसपास समेत घातक  
 के शरण के नगर के लिये और हमूतडूर उस के आसपास सहित और करतान  
 ३३ उस के आसपास सहित तीन नगर । जैरसुनियों के सारे नगर उन के घरानों के  
 समान तेरह नगर उन के आसपास सहित ॥  
 ३४ और मिरारी के संतान के घरानों को जो लावियों में से उबरे थे जवुलून  
 की गोष्टी में से ये नगर मिले युक्निआम उस के आसपास सहित करताह उस के  
 ३५ आसपास सहित । दिमनः उस के आसपास समेत नाहलाल उस के आसपास  
 ३६ सहित चार नगर । और खबिन की गोष्टी में से सुस उस के आसपास सहित और

और यदि घात का पलटा लेवैया उसे खेदे तो वे घातक को उसे न मारें क्योंकि ५  
उस ने अपने परोसी को अज्ञान से मारा और उसे आगे बैर न रखता था । और ६  
वह उसी नगर में रहे जब लों न्याय के लिये मंडली के आगे न खड़ा होवे जब  
लों प्रधान याजक न मरे जो उन दिनों में होवे उस के पीछे वह घातक फिरे और  
अपने नगर में और अपने घर में जावे उस नगर में जहां से वह भागा था ॥

सो उन्हें ने वचाव के लिये जलील में कादिस को नफताली पर्वत पर और ७  
इफरायम पर्वत पर शकीम को और करयतअरवय को जो हवून है यहूदाह के  
पहाड़ में पवित्र किया ॥

और यरदन के पार यरीहो के पास और पूरव दिशा को दुख के अरग्य में ८  
रुबिन के संतान की गोष्टी के चौगान में और रामात जिलियद में जो जद की  
गोष्टी का है और जौलान सुनस्सी की गोष्टी के वसन में ठहराया ॥

सारे इसराएल के संतान के लिये और उस परदेशी के लिये जो उन के मध्य ९  
में बसता है इन वस्तियों को ठहराया जिसमें जो कोई कि अज्ञान से किसी को  
मार डाले सो उधर भागे और जब लों कि मंडली के आगे न आवे तब लों  
लोहू के पलटा लेवैये के हाथ से मारा न जावे ॥

इक्कीमवां पर्व ।

तब लावियों के पितरों के प्रधान इलिअजर याजक और नून के बेटे यहूशूय १  
और इसराएल के संतान की गोष्टियों के पितरों के प्रधान पास आये । और वे २  
कनआन के देश सैला में उन्हें कहके बोले कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा  
किई कि हमारे निवास के लिये वस्तियां उन के उपनगर सहित हमारे छोरों के  
लिये हमें दिई जायें । तब इसराएल के संतान ने अपने अधिकार में से परमेश्वर की ३  
आज्ञा के समान ये नगर और उन के आसपास लावियों को दिया ॥

सो चिट्टी किहातियों के घरानों के लिये और हारून याजक के वंश के जो ४  
लावियों में से थे उन्हें ने चिट्टी डालके यहूदाह की गोष्टी और समऊन की गोष्टी  
और बिनयमीन की गोष्टी में से तेरह नगर पाये ॥

और किहात के चवरे हुए वंश ने इफरायम की गोष्टी के घरानों में से और ५  
दान की गोष्टी में से और सुनस्सी की आधी गोष्टी में से दस नगर पाये ॥

और जैरसुन के संतान ने चिट्टी के समान इशकार की गोष्टी के घरानों में से ६  
और यसर की गोष्टी में से और नफताली की गोष्टी में से और सुनस्सी की आधी  
गोष्टी में से वसन में तेरह नगर पाये ॥

सिरारी के संतान ने अपने घरानों से रुबिन की गोष्टी में से और जद की गोष्टी ७  
में से और जदुलून की गोष्टी में से चारह नगर पाये ॥

और इसराएल के संतान ने चिट्टी डालके ये नगर और उन के आसपास जैसी ८  
परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा किई थी लावियों को दिया ॥

सो उन्हें ने यहूदाह के संतान की गोष्टी में से और समऊन के संतान की ९  
गोष्टी में से ये नगर दिये जिन के नाम लिये जाते हैं । और हारून के संतान १०  
को जो किहातियों के घरानों में से थे क्योंकि पहिली चिट्टी उन के नाम की

- ११ श्री । सो उन्हीं ने अनाक के पिता अरवअ का नगर जो हबखन है यहूदाह के  
 १२ पहाड़ पर उस के चारों ओर के आसपास समेत उन्हें दिये । परन्तु नगर के खेत  
 उस के गांव सहित उन्हीं ने यैफुने के वेटे कालिव को उस के अधिकार के लिये  
 १३ दिया । सो उन्हीं ने हाखन याजक के संतान को घातक के शरण के नगर के  
 लिये हबखन का नगर उस के आसपास सहित और लिबनः उस के आसपास  
 १४ समेत दिये । और वतीर उस के आसपास समेत और इसतिमाअ उस के आसपास  
 १५ समेत । और होलून उस के आसपास समेत और दवीर उस के आसपास समेत ।  
 १६ और रेन उस के आसपास समेत और युता उस के आसपास समेत और शम्स उस  
 १७ के आसपास समेत नव नगर उन दोनों गोष्टियों में से । और विनयमीन की गोष्टी  
 १८ में से जिबऊन उस के आसपास समेत और जिबअ उस के आसपास समेत । अन-  
 तात उस के आसपास समेत और अलमून उस के आसपास समेत चार नगर ।  
 १९ सारे नगर हाखन याजक के संतान के तेरह नगर उन के आसपास समेत थे ॥
- २० और किहात के संतान के घरानों को लावियों से जो किहात के संतान में से  
 २१ उबरे हुए थे इफरायम की गोष्टी में से ये नगर अधिकार मिले । और घातक  
 के शरण का नगर इफरायम के पहाड़ में सिकन को उस के आसपास सहित  
 २२ दिया और जजर उस के आसपास सहित । और कयजेन उस के आसपास सहित  
 २३ और वैतहैरान उस के आसपास सहित चार नगर । और दान की गोष्टी में से  
 २४ इलतकी उस के आसपास सहित जिबतून उस के आसपास समेत । रेलून उस के  
 २५ आसपास समेत जअतरुम्मान उस के आसपास समेत चार नगर । और सुनस्सी की  
 आधी गोष्टी में से तअनाक उस के आसपास सहित और जअतरुम्मान उस के  
 २६ आसपास समेत दो नगर । ये सब दस नगर अपने अपने आसपास समेत किहात  
 के बचे हुए वंश के घरानों को मिले ॥
- २७ और जैरसुन के संतान को जो लावियों के घरानों में से हैं सुनस्सी की आधी  
 गोष्टी में से घातक के शरण के लिये उन्हीं ने दसन में जैलाम उस के आसपास  
 २८ समेत और बइस्तारः उस के आसपास समेत दो नगर दिये । और इशकार की  
 २९ गोष्टी में से कसून उस के आसपास सहित दावरत उस के आसपास सहित । यर-  
 ३० मूत उस के आसपास सहित रेनजनीम उस के आसपास समेत चार नगर । और यसर  
 की गोष्टी में से मिशाल उस के आसपास समेत अबदून उस के आसपास समेत ।  
 ३१ हलकाथ उस के आसपास समेत और रहुव उस के आसपास समेत चार नगर ।  
 ३२ और नफताली की गोष्टी में से गलील में कादिस उस के आसपास समेत घातक  
 के शरण के नगर के लिये और हमूतडूर उस के आसपास सहित और करतान  
 ३३ उस के आसपास सहित तीन नगर । जैरसुनियों के सारे नगर उन के घरानों के  
 समान तेरह नगर उन के आसपास सहित ॥
- ३४ और मिरारी के संतान के घरानों को जो लावियों में से उबरे थे अबलून  
 की गोष्टी में से ये नगर मिले युक्निशाम उस के आसपास सहित करताह उस के  
 ३५ आसपास सहित । दिमनः उस के आसपास समेत नाहलाल उस के आसपास  
 ३६ सहित चार नगर । और खबिन की गोष्टी में से युस उस के आसपास सहित और

यहजा उस के आसपास समेत । कदमत उस के आसपास सहित और मीकात ३७  
उस के आसपास समेत चार नगर । और जद की गोष्टी में से घातक के शरण का ३८  
नगर जिलिअद में से रामात उस के आसपास सहित और मदनैन उस के आसपास  
समेत । हसबून उस के आसपास समेत यासर यअजीर उस के आसपास समेत ३९  
सब में चार नगर । वे सारे नगर मिरारी के संतान के घरानों के लिये जो उबरे ४०  
थे चारह नगर छिट्टी से मिले ॥

इसराएल के संतान के अधिकार के मध्य में लावियों के सब नगर अठतालीस ४१  
थे उन के आसपास सहित । उन नगरों में से हर एक नगर अपने आसपास समेत ४२  
चारों ओर यों ही समस्त नगर थे ॥

सो परमेश्वर ने सब देश जिस के विषय में उस ने उन के पितरों को देने को ४३  
किरिया खाई थी इसराएल को दिया सो उन्होंने ने उसे वश में किया और उस में  
वसे । और परमेश्वर ने अपनी किरिया के समान जो उन के पितरों से खाई थी ४४  
चारों ओर में उन्हें चैन दिया और उन के सब शत्रुन तें से एक भी उन के साम्ने  
न ठहरा परमेश्वर ने उन के सारे शत्रुन को उन के हाथ में कर दिया । उन सारी ४५  
अच्छी बातों में से जो परमेश्वर ने इसराएल के घराने को कही थीं एक बात न  
घटी सब की सब पूरी हुई ॥

#### बाईसवां पर्व ।

तब यहूशूय ने शविनियों और जदियों और मुनस्सी की आधी गोष्टी को १  
बुलाया । और उन्हें कहा कि उन सब को जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें २  
आज्ञा किई तुम ने पालन किया और उन सब बातों को जो मैं ने तुम्हें कहीं  
तुम ने माना । तुम ने अपने भाइयों को बहुत दिनों से आज लों नहीं छोड़ा ३  
परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को पालन किया । और अब परमेश्वर ४  
तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे भाइयों को चैन दिया जैसी उस ने उन से वाचा वांधी थी  
सो तुम अब फिर जाओ और अपने तंबुओं के अधिकार की भूमि में जाओ  
जो परमेश्वर के दास मूसा ने यरदन के उस पार तुम्हें दिई है । परन्तु चौकसी ५  
के साथ उस आज्ञा की और उस व्यवस्था की जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें  
आज्ञा दिई है पालन करो जिमते परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रखो और  
उस के सारे मार्गों पर चलो और उस की आज्ञाओं को पालन करो और उस्से  
लवलीन रहे और अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उस की सेवा करो ।  
और यहूशूय ने उन्हें आशीस दिई और उन्हें बिदा किया सो वे अपने अपने ६  
तंबुओं को गये । और मुनस्सी की आधी गोष्टी को मूसा ने वसन में अधिकार ७  
दिया था और उस की आधी को यहूशूय ने उन के भाइयों के संग यरदन के  
इसी पार पश्चिम दिशा में अधिकार दिया और जब यहूशूय ने उन्हें अपने अपने  
तंबुओं को बिदा किया तब उन्हें भी आशीस दिई । और उन्हें कहा कि बड़े ८  
धन के साथ बहुत से ढेर और चांदी और सोना और तांबा और लोहा और  
बहुत से वस्त्र लेके अपने डेरों को जाओ अपने शत्रुन की लूट को अपने भाइयों  
के साथ बांट लेंगे ॥



९ तब रुबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्टी फिर और सैला में से जो कनयान की भूमि है इसराएल के संतान में चने गये जिसमें जिलियद के देश को जो उन के अधिकार का देश था जावे जिसे उन्होंने ने मृमा के द्वारा से परमेश्वर के दान के समान पाया था ।

१० और जब कि ये यरदन की सीमा कनयान के देश में पहुँचे तो रुबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्टी ने वहाँ यरदन पास एक वेदी बनाई एक बड़ी घेरी कि उसे देखा करें ।

११ और इसराएल के संतान ने यह मुनके कहा कि देखो रुबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्टी ने कनयान देश के समे यरदन

१२ के तीर पर इसराएल के संतान के मार्ग में घेरी बनाई । और जब इसराएल के संतान ने मुना तो इसराएल की सारी मंडली सैला में एकट्ठी हुई जिसमें उन

१३ के ऊपर लड़ाई के लिये चढ़ जावे । और इसराएल के संतान ने रुबिन के संतान के और जद के संतान के और मुनस्सी की आधी गोष्टी के पास इलियजर

१४ याजक के बेटे फीनिहास को भेजा । और उन के संग दस अध्वरु इसराएल की समस्त गोष्टियों में हर एक घर में से गेष्ट अध्वरु भेजा जो उन में से हर एक

१५ अपने पित्रों के घरानों में सहस्रों इसराएलियों का प्रधान था । जो ये रुबिन के संतान और जद के संतान के और मुनस्सी की आधी गोष्टी पास जिलियद के

१६ देश में आये और उन से कहके बोले । कि परमेश्वर की सारी मंडलियों ने कहा है कि तुम ने इसराएल के ईश्वर के विरोध यह क्या अपराध किया है जो तुम

आज के दिन परमेश्वर का पीछा करने से उस बात में फिर गये कि अपने लिये

१७ एक वेदी बनाई जिसमें तुम आज के दिन परमेश्वर के विरोधी होओ । क्या हमारे लिये फगूर की बुराई कुछ छोड़ी थी जिसे हम आज के दिन लो घोषित

१८ नहीं हुए यद्यपि परमेश्वर की मंडली में मरी थी । परन्तु क्या तुम्हें उचित था कि आज के दिन परमेश्वर की सेवा करने से फिर आओ आज तो तुम परमेश्वर

से फिरे हुए हो और कल इसराएल की सारी मंडली पर उस का कोप भड़केगा ।

१९ तथापि यदि तुम्हारे अधिकार की भूमि अशुद्ध होवे तो अपने लिये पार आओ इस देश में जो परमेश्वर का अधिकार है जहाँ परमेश्वर का तंयू है और हमारे बीच अधिकार लेओ परन्तु हमारे ईश्वर परमेश्वर की वेदी को छोड़ अपने

२० लिये वेदी बनाके परमेश्वर से और हम से मत फिर जाओ । क्या शारिक के बेटे अकन ने स्थापित वस्तु में चूक न किया और इसराएल की सारी मंडली पर कोप न

पड़ा और वह जन अकेला ही अपनी बुराई से नाश न हुआ ।

२१ तब रुबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्टी ने

२२ इसराएलियों के सहस्रों के प्रधानों को उत्तर देके कहा । कि सर्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर सर्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर वही जानता है और इसराएल वही

जानेगा कि यदि फिर जाने में अथवा परमेश्वर के विरोध करने में यह किया तो

२३ हमें आज के दिन मत छोड़ । अथवा हम ने वेदी बनाई जिसमें परमेश्वर की सेवा से फिरें अथवा उस पर बलिदान की भेंटें अथवा भोजन की भेंट अथवा

यहजा उस के आसपास समेत । कदमत उस के आसपास सहित और मीकात ३७  
उस के आसपास समेत चार नगर । और जद की गोष्ठी में से घातक के शरण का ३८  
नगर जिलियद में से समात उस के आसपास सहित और महनैन उस के आसपास  
समेत । इसबून उस के आसपास समेत यामर यग्रजीर उस के आसपास समेत ३९  
सब में चार नगर । वे सारे नगर मिरारी के संतान के घरानों के लिये जो उवरे ४०  
थे वारह नगर चिट्टी से मिले ॥

इसराएल के संतान के अधिकार के मध्य में लावियों के सब नगर अठतालीस ४१  
थे उन के आसपास सहित । उन नगरों में से हर एक नगर अपने आसपास समेत ४२  
चारों और पों ही समस्त नगर थे ॥

सो परमेश्वर ने सब देश जिस के विषय में उस ने उन के पित्रों को देने का ४३  
किरिया खाई थी इसराएल को दिया सो उन्होंने ने उसे वश में किया और उस में  
वसे । और परमेश्वर ने अपनी किरिया के समान जो उन के पित्रों से खाई थी ४४  
चारों और में उन्हें चैन दिया और उन के सब शत्रुन में से एक भी उन के साम्ने  
न ठहरा परमेश्वर ने उन के सारे शत्रुन को उन के हाथ में कर दिया । उन सारी ४५  
अच्छी बातों में से जो परमेश्वर ने इसराएल के घराने को कही थीं एक बात न  
घटी सब की सब पूरी हुई ॥

#### बाईसवां पृष्ठ ।

तब यहूशूअ ने रुविनियों और जदियों और सुनस्सी की आधी गोष्ठी को १  
बुलाया । और उन्हें कहा कि उन सब को जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें २  
आज्ञा किई तुम ने पालन किया और उन सब बातों को जो मैं ने तुम्हें कहीं  
तुम ने माना । तुम ने अपने भाइयों को बहुत दिनों से आज लों नहीं छोड़ा ३  
परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को पालन किया । और अब परमेश्वर ४  
तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे भाइयों को चैन दिया जैसी उस ने उन से वाचा वांधी थी  
सो तुम अब फिर जाओ और अपने तंबुओं के अधिकार की भूमि में जाओ  
जो परमेश्वर के दास मूसा ने यरदन के उस पार तुम्हें दिई है । परन्तु चौकसी ५  
के साथ उम आज्ञा को और उस व्यवस्था की जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें  
आज्ञा दिई है पालन करो जिमर्त परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रखे और  
उस के सारे मार्गों पर चलो और उम की आज्ञाओं को पालन करो और उस्से  
लवलीन रहो और अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उस की सेवा करो ।  
और यहूशूअ ने उन्हें आशीस दिई और उन्हें बिदा किया सो वे अपने अपने ६  
तंबुओं को गये । और सुनस्सी की आधी गोष्ठी को मूसा ने वसन में अधिकार ७  
दिया था और उस की आधी को यहूशूअ ने उन के भाइयों के संग यरदन के  
इसी पार पश्चिम दिशा में अधिकार दिया और जब यहूशूअ ने उन्हें अपने अपने  
तंबुओं को बिदा किया तब उन्हें भी आशीस दिई । और उन्हें कहा कि बड़े ८  
धन के साथ बहुत से ठेकर और चांदी और सोना और तांबा और लोहा और  
बहुत से वस्तु लोके अपने डेरों को जाओ अपने शत्रुन की लूट को अपने भाइयों  
के साथ बांट लेओ ॥

३ उन के करोड़ों को बुलाया और उन्हें कहा कि मैं बृह और दिनी हूँ । और सब कुछ जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उन सय जातिगणों के साथ तुम्हारे सामने किया  
 ४ तुम देख चुके हो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर आप तुम्हारे लिये लड़ा । देखो मैं ने चिट्ठी डालके इन सब जातिगणों को जो वचे हैं तुम्हारी गोष्ठियों के लिये यरदन से लेके समस्त जातिगणों के साथ जिन्हें मैं ने काट डाला है अर्थात् अस्त की और महा समुद्र लों अधिकार दिया ॥

५ और परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही उन्हें तुम्हारे आगे निकाल देगा और तुम्हारी दृष्टि से दूर करेगा और तुम उन की भूमि को वश में करोगे जैसी कि  
 ६ परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम से वाचा बांधी है । इस लिये सब जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उन्हें पालन करने को और धारण करने को  
 ७ हियाव करो जिसमें दहिने अथवा बायें हाथ न सुड़े । जिसमें तुम इन जातिगणों में जो तुम्हारे संग वचे हैं मत जाओ और उन के देवों के नाम मत लेओ और उन की किरिया मत खाओ और उन की सेवा मत करो और न उन को दंडवत  
 ८ करो । परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर से लवलीन रहे जैसा आज के दिन लों रहे  
 ९ हो । क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे आगे बड़े बड़े और बलवत जातिगणों को नष्ट किया  
 १० परन्तु कोई आज के दिन लों तुम्हारे सामने ठहर न सका । तुम्हें से एक पुरुष सहस्र को खेदेगा क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही तुम्हारे लिये लड़ता है जैसी उस ने तुम से वाचा बांधी है ॥

११ इस लिये अपने प्राणों को अत्यंत चौकसी से रखो कि परमेश्वर अपने ईश्वर  
 १२ को प्यार करो । यदि तुम किसी रीति से फिर जाओ और इन्हीं जातिगणों के वचे हुआं में मिल जाओ जो तुम्हारे संग वचे हैं और उन के साथ ब्रिवाह करो  
 १३ और उन में आया जाया करो । तो निश्चय जानो कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर फिर उन लोगों को तुम्हारे आगे से दूर न करेगा परन्तु वे तुम्हारे लिये फंदे और जाल और तुम्हारे पंजरों में ढड़ियां और तुम्हारी आंखों में कांटे होंगे यहां लों कि इस अच्छे देश में से जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें दिया है तुम नाश  
 १४ हो जाओ । और देखो आज के दिन मैं समस्त पृथिवी के मार्ग जाता हूँ और तुम अपने सारे मन में और अपने सारे प्राण में जानते हो कि उन सब भली बातों से जो जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे बिषय में कही हैं एक भी न घटी सब की सब तुम्हारे बिषय में पूरी हुईं उन में से एक भी न घटी ।  
 १५ सो ऐसा होगा कि जिस रीति से वह सारी भली बातें जिन के कारण परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने वाचा बांधी थी तुम्हारे आगे आईं उसी रीति से परमेश्वर सारी बुरी बातें तुम पर लावेगा यहां लों कि उस अच्छे देश में से जो परमेश्वर तुम्हारे  
 १६ ईश्वर ने तुम्हें दिया है तुम्हें नाश करे । जब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की उस वाचा को जो उस ने तुम से बांधी भंग करोगे और जाके और देवतों की सेवा करोगे और उन्हें दण्डवत करोगे तब परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़केगा और तुम उस अच्छे देश में से जो उस ने तुम्हें दिया है शीघ्र नाश हो जाओगे ॥

कुशल की भेंट चढ़ावें तो परमेश्वर वही विचार करे । और यदि हम ने उस भय २४ से यह कहके किया है कि आगे को तुम्हारा वंश हमारे वंश को कहके बोले कि तुम्हें परमेश्वर इसराएल के ईश्वर से क्या काम । क्योंकि परमेश्वर ने हमारे और २५ तुम्हारे मध्य में परदन की मेड़ बांधी सो हे रुविन के संतान और जद के संतान परमेश्वर में तुम्हारा भाग नहीं सो तुम्हारा वंश हमारे वंश को परमेश्वर के भय से फेर देंगे । इस लिये हम ने कहा कि आओ हम अपने लिये एक वेदी बनावें २६ कुछ बलिदान की भेंट के और बलि के लिये नहीं । परन्तु इस लिये कि यह हमारे २७ तुम्हारे मध्य में और हमारे पीछे हमारी पीढ़ियों के मध्य में एक साक्षी होवे जिससे हम परमेश्वर के आगे अपने बलिदान की भेंटों से और अपने बलि की भेंटों से और अपने कुशल की भेंटों से परमेश्वर की सेवा करें और आगे को तुम्हारे वंश हमारे वंश को न कहें कि परमेश्वर में तुम्हारा भाग नहीं । सो हम ने २८ कहा कि ऐसा होगा कि जब वे हमें अथवा हमारे वंश को आगामी काल में कहें तब हम उन्हें उत्तर देंगे कि देखो परमेश्वर की वेदी का डील जिसे हमारे पिता ने बनाया कुछ बलिदान की भेंट और बलि की भेंट के लिये नहीं परन्तु हम लिये कि हमारे तुम्हारे मध्य में साक्षी रहे । ईश्वर न करे कि हम परमेश्वर २९ से फिर जावें और आज परमेश्वर से फिरके परमेश्वर अपने ईश्वर की वेदी को छोड़ें जो उस के तबू के सामे है और बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट और बलि की भेंट के लिये एक वेदी बनावें ॥

जब फीनिहाम याजक और मंडली के अध्यक्ष और इसराएल के सदस्यों के ३० प्रधानों ने जो उन के साथ थे वे दार्त मुनों जो रुविन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी के संतान ने कहीं तब उन की दृष्टि में अच्छा लगा । तब ३१ इलिअजर के बेटे फीनिहाम याजक ने रुविन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी के संतान से कहा कि आज के दिन हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारे मध्य में है इस कारण कि तुम ने परमेश्वर का अपराध न किया क्योंकि तुम ने इसराएल के संतान को परमेश्वर के दाय से छुड़ाया ॥

तब इलिअजर का बेटा फीनिहाम याजक और रुविन के संतान और जद ३२ के संतान के अध्यक्ष जिलिअद की भूमि से कनयान के देश में इसराएल के संतान पास फिर आये और उन पास संदेश पहुंचाये । और उसी बात से इसराएल के ३३ संतान प्रसन्न हुए और इसराएल के संतान ने ईश्वर की स्तुति किई और न चाहा कि युद्ध के लिये उन पर चढ़ जावें कि उस देश को जिस में रुविन के संतान और जद के संतान बसते थे उजाड़ दें ॥

तब रुविन के संतान और जद के संतान ने उस वेदी का नाम साक्षी रखवा ३४ क्योंकि वह हमारे मध्य में एक साक्षी ठहरी कि परमेश्वर ईश्वर है ॥

तेईसवां पृष्ठ ।

जब परमेश्वर ने इसराएल को उन के सारे शत्रुन से चैन दिया तो बहुत १ दिन पीछे वे आये कि यहूशूअ बृद्ध और दिनी हुआ । तब यहूशूअ ने सारे २ इसराएल और उन के प्राचीनों और उन के प्रधानों और उन के न्यायियों और

- १६ तब लोगों ने उत्तर देके कहा कि ईश्वर न करे कि हम परमेश्वर को त्यागके  
 १७ आन देवतों की सेवा करें । क्योंकि परमेश्वर हमारा ईश्वर वही है जो हमें और  
 हमारे पितरों को मिस्र देश से बंधुआर्द्ध के घर से निकाल लाया और जिस ने ये  
 बड़े बड़े आश्चर्य हमारी आंखों के सामने दिखाये और सारे मार्ग में जहां जहां  
 १८ हम चलते थे और उन सब लोगों के मध्य जिन में से होके आये हमारी रक्षा  
 किई । और परमेश्वर ने सारे लोगों को अर्थात् अमूरियों को जो उस देश में  
 बसते थे हमारे आगे से निकाल दिया इस लिये हम भी परमेश्वर की सेवा करेंगे  
 क्योंकि वही हमारा ईश्वर है ॥
- १९ फिर यहूशूअ ने लोगों से कहा कि तुम परमेश्वर की सेवा न कर सकोगे  
 क्योंकि वह पवित्र ईश्वर वही उन्नतित सर्वशक्तिमान है वही तुम्हारे अपराधों  
 २० और तुम्हारे पापों को क्षमा न करेगा । यदि तुम परमेश्वर को त्यागोगे और  
 ऊपरी देवतों की सेवा करोगे तो वह भला करने के पीछे फिरके तुम्हें दुःख देगा  
 और तुम्हें नाश कर डालेगा ॥
- २१ तब लोगों ने यहूशूअ से कहा कि कभी नहीं परन्तु हम परमेश्वर ही की  
 सेवा करेंगे ॥
- २२ फिर यहूशूअ ने लोगों से कहा कि तुम आप ही अपने पर साक्षी हो कि सेवा  
 के लिये तुम ने परमेश्वर को चुन लिया है ॥  
 तब वे बोले कि हम साक्षी हैं ॥
- २३ सो अब तुम ऊपरी देवतों को जो तुम्हारे मध्य में हैं निकाल फेंको और अपने  
 अपने मन को परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की ओर झुकाओ ॥
- २४ तब लोगों ने यहूशूअ से कहा कि हम परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करेंगे  
 और उस का शब्द मानेंगे ॥
- २५ तब यहूशूअ ने उस दिन लोगों से बाचा खांधी और उन के लिये विधि और  
 २६ व्यवहार सिकम में ठहराये । और यहूशूअ ने ईश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में  
 उन बातों को लिख रक्खा और एक बड़ा पत्थर लेके बलूत के वृक्ष तले जो पर-  
 २७ मेश्वर के पवित्र स्थान में था खड़ा किया । और यहूशूअ ने सारे लोगों से कहा  
 कि देखो यह पत्थर हमारा साक्षी होगा क्योंकि उस ने वे सब बातें जो परमेश्वर  
 ने हमें कहीं सुनी हैं इस लिये यही तुम पर साक्षी होगा न हो कि तुम अपने  
 २८ ईश्वर से मुकर जाओ । फिर यहूशूअ ने हर एक जन को अपने अपने अधिकार  
 की ओर बिदा किया ॥
- २९ और ऐसा हुआ कि इन बातों के पीछे परमेश्वर का दास नून का बेटा यहूशूअ  
 ३० एक सौ दस बरस का होके मर गया । और उन्होंने ने उस के अधिकार अर्थात्  
 तिमनतसिरह के सिवाने में जो जअस की पहाड़ी की उत्तर दिशा इफरायम पहाड़  
 में है उसे गाड़ा ॥
- ३१ और इसराएल यहूशूअ के जीवन भर और प्राचीनों के जीवन भर जो यहूशूअ  
 के पीछे जीये और परमेश्वर के समस्त कार्य को जो उस ने इसराएल के लिये  
 किया जानते थे परमेश्वर की सेवा करते रहे ॥

## चौथीसवां पर्व ।

तब यष्टूश्रुत ने इसराएल की सारी गोष्ठियों को सिकम में एकट्ठा किया और १  
इसराएल के प्राचीनों को और उन के प्रधानों को और उन के न्यायियों को और  
उन के करोड़ों को बुलाया और वे ईश्वर के सामने खड़े हुए ॥

तब यष्टूश्रुत ने सब लोगों को कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यां २  
कहता है कि तुम्हारे पिता अबिरहाम का पिता तारह और नहूर के पिता प्राचीन  
समय से नदी के उस पार रहते थे और और देवताओं की सेवा करते थे । और ३  
मैं तुम्हारे पिता अबिरहाम को नदी के उस पार से लेकर उम-कनयान की समस्त देश  
में लिये फिरा और उस के वंश को बढ़ाया और उसे दजदाक दिया । और दजदाक ४  
को यश्कूब और सौ दिये और सौ को रहने के लिये गहर पड़ाइ दिया परन्तु यश्कूब  
और उस के वंश सिन को उत्तर गये । तब मैं ने मूसा और हारून को भेजा और ५  
उन सब कामों में जो मैं ने वहाँ किये सिन को सारा और उस के पीछे तुम्हें  
निकाल लाया । और मैं तुम्हारे पिताओं को सिन से निकाल लाया और तुम समुद्र ६  
पर आये तब सिनियों ने रथ और घोड़चढ़े लेकर लान समुद्र लों तुम्हारे पिताओं  
का पीछा किया । और जब उन्हीं ने परमेश्वर की प्रार्थना की तब उन ने ७  
तुम्हारे और सिनियों के मध्य अंधियारा कर दिया और समुद्र को उन पर फेर  
दिया और उन्हें डूँप लिया और जो कुछ मैं ने सिनियों पर किया तुम ने अपनी  
आँखों से देखा और तुम बहुत दिन लों अरण्य में रहा किये । फिर मैं तुम्हें उन ८  
असूरियों के देश में जो यरदन के उस पार रहते थे ले आया और वे तुम से लड़े  
और मैं ने उन्हें तुम्हारे हाथ से मार दिया जिससे तुम उन के देश को वश में  
करो और मैं ने उन्हें तुम्हारे आगे नाश किया । तब मोअब का राजा सफूर का ९  
बेटा बलक उठा और इसराएल से लड़ा और बजर के बेटे बलशाम को बुला  
भेजा कि तुम्हें साथ देवे । पर मैं बलशाम की न सुनता था इस लिये वह तुम्हें १०  
आगीस देता गया सो मैं ने तुम्हें उस के हाथ से ढुड़ाया । फिर तुम यरदन पार ११  
उतरे और यरीहो को आये और यरीहो के लोग असूरी और फरिज्जी और कनयानी  
और छिती और जिरजाशी हवी और यूसी तुम से लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे  
वश में किया । तब मैं ने तुम्हारे आगे वर्रा को भेजा और उन्हीं ने उन्हें अर्थात् १२  
असूरियों के दो राजाओं को तुम्हारे आगे से हाँक दिया तेरी तलवार और तेरे  
धनुष से नहीं । और मैं ने तुम्हें वह देश दिया जिस के लिये तुम ने परिश्रम न १३  
किया और वे नगर जिन्हें तुम ने न बनाया और तुम उन में बसे हो तुम दाख की  
वारी और जलपाई की वारी से जो तुम ने नहीं लगाई खाते हो ॥

सो अब तुम परमेश्वर से डरो और संधाई से और सच्चाई से उस की सेवा करो १४  
और उन देवताओं को जिन की तुम्हारे पिता नदी के उस पार और सिन में सेवा करते  
थे निकाल फेंको और परमेश्वर की सेवा करो । और यदि परमेश्वर की सेवा करना १५  
तुम्हें दुरा जान पड़े तो आज के दिन चुनो कि किस की सेवा करोगे उन देवताओं  
की जिन की सेवा तुम्हारे पिता नदी के उस पार करते थे अथवा असूरियों के देवताओं  
को जिन के देश में तुम बसते हो परन्तु मैं और मेरा घराना परमेश्वर की सेवा करेंगे ॥



- आशीस दीजिये क्योंकि तू ने मुझे दक्षिण दिशा की भूमि दीई मुझे पानी के सोते भी दीजिये तब कालिय ने ऊपर के और नीचे के सोते उसे दिये ॥
- १६ तब मूसा के समुर कैनी के वंश यहूदाह के संतान के साथ खजूरों के नगर में से यहूदाह के अरख्य को जो अराब की दक्षिण की ओर है चढ़ गये और उन लोगों में जा बसे ॥
- १७ और यहूदाह अपने भाई समकन के साथ गया और उन्होंने ने उन कनयानियों को जो सफात में रहते थे जा मारा और उसे सर्वथा नाश किया और उस नगर का नाम हुरमः रक्खा । और यहूदाह ने अज्जः को उस के सिवाने सहित और असकलून को उस के सिवाने सहित और अकरन को उस के सिवाने सहित ले लिया । और परमेश्वर यहूदाह के साथ था और उस ने पर्वत को अधिकार में किया क्योंकि तराई के वासियों को निकाल न सका क्योंकि उन के रथ लाहे के थे । तब उन्होंने ने मूसा के कहने के समान कालिय को दबान दिया और उस ने वहां से अनाक के तीन चेष्टों को दूर किया ॥
- २१ और बिनयमीन के संतान यूसुफियों को जो यरुसलम में रहते थे दूर न किया परन्तु यूसुफी बिनयमीन के संतान के साथ आज के दिन लों यरुसलम में बसते हैं ॥
- २२ और यूसुफ का घराना भी बैतएल पर चढ़ गया और परमेश्वर उन के साथ था । और यूसुफ के घराने ने बैतएल का भेद लेने को भेजा और उस नगर का नाम आगे लौज था । और भेदियों ने नगर से एक मनुष्य को बाहर आते देखके उसे कहा कि नगर का पैठ हमें बता और हम तुझ पर दया करेंगे । जब उस ने उन्हें नगर का पैठ बताया तब उन्होंने ने नगर को तलवार की धार से मारा परन्तु उस मनुष्य को उस के सारे घराने समेत छोड़ दिया । और वह मनुष्य हित्तियों की भूमि में गया और वहां एक नगर बनाया और उस का नाम लौज रक्खा जो आज लों उस का नाम है ॥
- २७ और सुनस्सी ने भी बैतशान को और उस के गांवों को और तअनाक को और उस के गांवों को और दोर के वासियों को और उस के गांवों को और इबलियाम के वासियों को और उस के गांवों को और मजिदो के वासियों को और उस के गांवों को न निकाल दिया परन्तु कनयानी उसी देश में बसा किये ।
- २८ और यों हुआ कि जब इसराएल प्रयत्न हुए तब उन्होंने ने कनयानियों से कर लिया परन्तु उन्हें सर्वथा निकाल न दिया । और इफरायम ने भी उन कनयानियों को जो जजर में बसते थे न निकाला परन्तु कनयानी उन के मध्य में जजर में बसते थे । जबलून ने कितरून के वासियों को और नहलाल के वासियों को न निकाला परन्तु कनयानी उन के मध्य में रहे और करदायक हुए । यसर ने अक्की के वासियों को और सैदा के वासियों को और अबलाब और अकजीब और हिलबः और अफीक और रूब के वासियों को दूर न किया । परन्तु यसरी उन कनयानियों के मध्य में जो उस देश के वासी थे बसे क्योंकि उन्होंने ने उन्हें दूर न किया । नफताली ने बैतशम्स के वासियों को और बैतअनात के वासियों को दूर न किया परन्तु वह उस देश के वासी कनयानियों के मध्य में रहा तथापि

और यूसुफ की हड्डियों को जिन्हें इसराएल के संतान मिस्र से उठा लाये थे उन्हें ३२ ने सिकम की उस भूमि में गाड़ा जिसे यश्मूथ ने सिकम के पिता हमूर के बेटों से सौ टुकड़े चांदी पर मोल लिया था सो वह भूमि यूसुफ के संतान की अधिकार हुई ॥

और हारन का बेटा इलिअजर मर गया और उन्हें ने उसे उस पहाड़ी में जो ३३ उस के बेटे फ्रीनिहास की थी जो इफरायम के पहाड़ में उसे दिई गई थी गाड़ा ॥

## न्यायियों की पुस्तक ।

प्रथिला पर्व ।

अब यहूदा के मरने के पीछे यों हुआ कि इसराएल के संतानों ने परमेश्वर १ से यह कहके पूछा कि कनआनियों से युद्ध करने का हमारे कारण पहिले कौन चढ़ जावे । तब परमेश्वर ने कहा कि यहूदा चढ़ जावे देखो मैं ने देश को २ उस के हाथ में कर दिया है । तब यहूदा ने अपने भाई समऊन से कहा कि मेरे भाग में मेरे साथ चढ़िये जिसमें हम कनआनियों से लड़ें और इसी रीति से ३ मैं भी तेरे भाग में तेरे साथ चलूंगा सो समऊन उस के साथ गया । तब यहूदा ४ चढ़ गया और परमेश्वर ने कनआनियों और फरिजियों को उन के हाथ में कर दिया और उन्हें ने उन में से यजक में दस सहस्र पुत्र को घात किया । और ५ उन्हें ने अदूनिवजक को यजक में पाया और उसे लड़े और कनआनियों और फरिजियों को मारा । परन्तु अदूनिवजक भाग निकला और उन्हें ने उस का ६ पीछा किया और जा पकड़ा और उस के हाथ पांव के अंगूठे काटे । तब ७ अदूनिवजक ने कहा कि हाथ पांव के अंगूठे काटे हुए सत्तर राजा मेरे मंच तले के चूरचूर चुन चुन खाते थे जैसा मैं ने किया था वैसा ही ईश्वर ने मुझे पलटा दिया फिर वे उसे यहसलम में लाये और वह वहां मर गया ॥

अब यहूदा के संतान यहसलम से लड़े थे और उसे ले लिया था और उसे ८ तलवार की धार से मारा और उस नगर को आग से फूंक दिया । और उस के ९ पीछे यहूदा के संतान उत्तरके उन कनआनियों से जो पहाड़ में और दक्षिण में और तराई में बसते थे लड़े । और यहूदा ने उन कनआनियों का जो हवदन में १० रहते थे साम्रा किया और उन्हें ने सोसी और अखिमान और तलमी को मारा और हवदन का नाम आगे करयतअरयथा था । और वह वहां से दबीर के वासियों ११ पर चढ़ गया और दबीर का नाम आगे करयतसिफर था । तब कालिय ने कहा १२ कि जो कोई करयतसिफर को मार लेगा मैं उसे अपनी कन्या अकसः को विवाह देजंगा । तब कालिय के लहुरे भाई कनऊ के बेटे गुतनिएल ने उसे ले लिया और १३ उस ने अपनी कन्या अकसः उसे विवाह दिई । और ऐसा हुआ कि जाते ही उस १४ ने उसे उभाड़ा कि अपने पिता से एक खेत मांगो तब वह अपने गदधे पर से उतरी और कालिय ने उसे कहा कि तू क्या चाहती है । और उस ने उसे कहा कि मुझे १५

परमेश्वर ने कहा था और जैसी कि परमेश्वर ने उन से किरिया खाई थी और वे अत्यंत दुःखी हुए ॥

१६ तथापि परमेश्वर ने न्यायियों को खड़ा किया जिन्होंने उन के नष्टकारियों  
१७ के हाथ से कुड़ाया । तब भी वे अपने न्यायियों की भी न सुनते थे परन्तु ऊपरी  
देवों के पश्चाद्गामी हुए और उन के आगे दंडवत किई वे उस मार्ग से जिस  
पर उन के पितर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके चलते थे बहुत शीघ्र  
१८ उलटे फिरे और उन्हें पालन न किया । और जब परमेश्वर उन के लिये न्यायियों  
को खड़ा करता था तब परमेश्वर न्यायी के साथ रहता था और उन्हें उन के  
शत्रुन के हाथ से न्यायी के जीवन भर कुड़ाता रहा क्योंकि परमेश्वर उन के  
१९ अहरने से जो उन के सताने और दुःख देनेदारों के कारण से था पकृताया । और  
ऐसा हुआ कि जब न्यायी मर जाता था तब वे फेर फिर जाते थे और आप को  
अपने पितरों से अधिक विगाड़ते थे कि और ऊपरी देवताओं का पीछा पकड़ते  
थे कि उन की सेवा और दंडवत करें वे अपनी अपनी चाल से और अपने अपने  
हठीले मार्ग से न फिरते थे ॥

२० तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने कहा इस कारण कि  
जैसा इन लोगों ने मेरी उस वाचा को जो मैं ने उन के पितरों से बांधी थी भंग  
२१ किया है और मेरे शब्द को न माना है । मैं भी अब से उन जातिगणों में से  
२२ जिन्हें यहूशूअ छोड़के मरा किसी को भी उन के आगे से दूर न कदंगा । जिसमें  
मैं उन के द्वारा से इसराएल को परखूँ कि वे अपने पितरों की नाईं परमेश्वर के  
२३ मार्ग पर चलने का पालन करेंगे कि नहीं । सो परमेश्वर ने उन जातिगणों को  
छोड़ा कि उन्हें शीघ्र दूर न किया और उस ने उन्हें यहूशूअ के हाथ में  
न सौंपा ॥

### तीसरा पर्व ।

१ और ये वे जातिगण हैं जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल की परीक्षा के लिये  
उन में छोड़ा अर्थात् उन में जो कनआन के सारे संग्राम न जानते थे ।  
२ केवल जिसमें इसराएल के संतान की पीढ़ी निज करके जो आगे लड़ाई का भेद  
३ न जानते थे उन से सीखें । फिलिस्तिनों के पांच अध्यक्ष और सारे कनआनी  
और सैदानी और हवी थे जो लुबनान पर्वत में बअल हरमून पर्वत से लेके  
४ हमात के पैठ लों बसते थे । और वे इसराएल की परीक्षा के लिये थे जिसमें  
जानें कि वे परमेश्वर की उन आज्ञाओं को जो उस ने मूसा की ओर से उन के  
पितरों को दिई थीं मानेंगे कि नहीं ॥

५ सो इसराएल के संतान कनआनियों हितियों और अमूरियों और फरिजियों  
६ और हवियों और यबूसियों के मध्य में बसते थे । और उन्होंने ने उन की बेटियों  
को अपनी पत्नियां किया और उन की बेटियां अपने बेटों को दिईं और उन के  
७ देवताओं की सेवा किई । और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई  
किई और परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल गये और बअलीम और कुंजों की सेवा  
८ किई । इस लिये इसराएल पर परमेश्वर का कोप भड़का और उस ने उन्हें

वैतण्मस और वैतयनात के वासी उन के करदायक हुए । और अमूरियों ने दान के ३४ संतान को पहाड़ में खेदा क्योंकि वे उन्हें तराई में उतरने न देते थे । परन्तु ३५ अमूरी हरिस पहाड़ में रेगलून में और गालवीम में बसा किये तथापि यूमुफ के धराने का हाथ प्रबल हुआ यहां लों कि उन्हें करदायक किया । और अमूरियों ३६ का सिवाना अक्रविस की चढ़ाई में पहाड़ के ऊपर लों था ॥

दूसरा पर्व ।

तब परमेश्वर के दूत ने जिलजाल से वोकीम को आके कहा कि मैं तुम्हें १ मिन में उठाऊँ इस देश में जिस के कारण तुम्हारे पितरों से किरिया खाई थी ले आया और मैं ने कहा कि मैं तुम से कभी अपनी वाचा न तोड़ूंगा । और २ तुम इस देश के वासियों के साथ वाचा न बांधियो तुम उन की बेडियों को छाड़यो परन्तु तुम ने मेरे शब्द को न माना तुम ने ऐसा क्यों किया । इसी ३ कारण मैं ने भी कहा कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे में दूर न कलंगा परन्तु वे तुम्हारे पांजरो में कांटे और उन के देवते तुम्हारे लिये फंदे होंगे ॥

और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर के दूत ने सारे इसराएल के संतान ४ को ये वार्ता कही तो उन्होंने ने बड़े शब्द से बिलाप किया । और उन्होंने ने उस ५ स्थान का नाम वोकीम रक्खा और उन्होंने ने वहां परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाया ॥

और जब कि यहूशूअ ने लोगों को विदा किया था तब इसराएल के संतान ६ में से हर एक अपने अपने अधिकार पर गया जिसमें उस देश को धन में करे । और वे लोग परमेश्वर की सेवा करते थे यहूशूअ के जीवन भर और उन प्राचीनों ७ के जीवन भर जो यहूशूअ के पीछे रहते थे जिन्होंने ने परमेश्वर का ममस्त बड़ा कार्य देखा जिसे उस ने इसराएल के लिये किया परमेश्वर की सेवा करते रहे । और परमेश्वर का दास नून का बेटा यहूशूअ एक सौ दस बरस का बृद्ध होके ८ मर गया । और उन्होंने ने उस के अधिकार के सिवाने तिसनतहरिस में इफरायम ९ के पहाड़ में जो जयश के पहाड़ की उत्तर अलंग है उसे गाड़ा । और वही १० समस्त पीढ़ी भी अपने पितरों में जा मिली

और उन के पीछे दूसरी पीढ़ी उठी जिस ने परमेश्वर को और उस कार्य को जो उस ने इसराएल के लिये किया था महीं पहिचाना । तब इसराएल के संतान ११ ने परमेश्वर की दृष्टि में घुराई किई और बअलीम की सेवा किई । और परमेश्वर १२ अपने पितरों के ईश्वर को जो उन्हें मिन के देश से निकाल लाया था छोड़ दिया और ऊपरी देवों का पीछा किया अर्थात् अपने चारों ओर के लोगों के देवों के आगे दंडवत किई और परमेश्वर को रिस दिलाई । सो उन्होंने ने परमेश्वर को १३ छोड़ दिया और बअल और इस्तारात की सेवा किई । तब परमेश्वर का क्रोध १४ इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें नष्टकारियों के बश में कर दिया और उन्होंने ने उन्हें नष्ट किया और उस ने उन्हें उन के आसपास के वैरियों के हाथ में देवा यहां लों कि वे फिर अपने वैरियों के आगे न ठहर सक्ते थे । जहां कहीं वे १५ निकलते थे परमेश्वर का हाथ घुराई के लिये उन के विरोध में था जैसा कि

२६ और उन के ठहरते ठहरते अहूद भाग निकला और मूर्तिस्थान से पार हुआ  
 २७ और सीरात में जाके वचा । और आते ही यों हुआ कि उस ने पहाड़ इफरायम  
 पर नरसिंगा फूँका तब इसराएल के संतान उस के साथ पहाड़ पर से उतरे और  
 २८ वह उन के आगे आगे हुआ । और उस ने उन्हें कहा कि मेरे पीछे पीछे हो लेओ  
 क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु मोअवियों को तुम्हारे हाथ में कर दिया सो वे  
 उस के पीछे पीछे उतर आये और यरदन के घाटों को जो मोअव की ओर थे ले  
 २९ लिया और एक जो भी पार उतरने न दिया । और उसी समय उन्होंने ने मोअव  
 के दस सहस्र मनुष्य के अटकल जो सब पुष्ट और माहसी थे घात किये उन में  
 ३० से एक भी न बचा । सो उस दिन मोअव इसराएल के वश में हुआ और देश ने  
 अस्सी बरस लों चैन पाया ॥

३१ और उस के पीछे अनात का बेटा शमजर हुआ जिस ने कः सौ फिलिस्तिनों  
 को बैल की आर से मारा और उस ने भी इसराएल को कुड़ाया ॥

चौथा पृष्ठ ।

१ और जब अहूद मर गया तब इसराएल के संतान ने फिर परमेश्वर की दृष्टि में  
 २ बुराई किई । और परमेश्वर ने उन्हें कनयान के राजा यवीन के हाथ में देचा  
 जो हासूर में राज्य करता था और उस की सेना के अध्यक्ष का नाम सीसरा था  
 ३ और वह अन्यदेशियों के दरसत में रहता था । तब इसराएल के संतान परमेश्वर  
 के आगे चिल्लाये क्योंकि उस पास लोहे के नख सौ रथ थे और उस ने बीस बरस  
 लों इसराएल के संतान को कठोरता से सताया ॥

४ और लफीदात की पत्नी दबूरः आगमचानिनी उस समय में इसराएल का न्याय  
 ५ करती थी । और पहाड़ इफरायम में रामः और बैतएल के मध्य दबूरः के खजूर  
 तले रहती थी और इसराएल के संतान उस पास न्याय के लिये चढ़ आते थे ।  
 ६ तब उस ने कादिस नफताली से अबिनुअम के बेटे बरक को बुला भेजा और उसे  
 कहा कि क्या परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने आज्ञा नहीं किई कि जा और तबूर  
 पहाड़ की ओर लोगों को बटोर और नफताली के संतान और जवुलून के संतान  
 ७ में से दस सहस्र जन अपने साथ ले । और मैं कसून की नदी पर यवीन की सेना  
 का प्रधान सीसरा को उस के रथ और उस की मंडली समेत तेरी ओर बटोहंगा  
 ८ और उसे तेरे हाथ में कर देजंगा । और बरक ने उसे कहा कि यदि तू मेरे साथ  
 ९ जावेगी तो मैं जाजंगा परन्तु यदि तू मेरे साथ न जावेगी तो मैं न जाजंगा । तब  
 वह बोली कि निश्चय मैं तेरे साथ चलूंगी तथापि जो यात्रा तू करता है सो तेरी  
 प्रतिष्ठा के लिये न होगी क्योंकि परमेश्वर सीसरा को एक स्त्री के हाथ में सौंपेगा  
 १० तब दबूरः उठी और बरक के साथ कादिस को गई । और बरक ने जवुलून और  
 नफताली को कादिस में बुलाया और वह दस सहस्र जन अपने साथ लेके चढ़ा  
 और दबूरः भी उस के साथ साथ चढ़ गई ॥

११ अब हिन्न कौनी ने जो मूसा के ससुर होबाब के वंश में का था कैनियों से आप  
 को अलग किया और अपना डेरा जअननीम में कादिस के लग बलूत के वृक्ष के  
 पास जो है खड़ा किया ॥

कूशनरिसग्रतैन अरमनहराईम के राजा के हाथ देखा और इसराएल के संतान ने कूशनरिसग्रतैन की सेवा आठ वरम लों किई ॥

और जब इसराएल के संतान ने परमेश्वर से दोहाई दिई तब परमेश्वर ने ९ इसराएल के संतान के लिये एक निस्तारक जिस ने उन्हें छुड़ाया अर्थात् कालिव के लहुरे भाई कनज के पुत्र अविगल को खड़ा किया । और परमेश्वर का १० आत्मा उस पर था और उस ने इसराएल का न्याय किया और संग्राम को निकला तब परमेश्वर ने अराम के राजा कूशनरिसग्रतैन को उस के हाथ में सौंप दिया और उस का हाथ कूशनरिसग्रतैन पर प्रवल हुआ । और देश को चालीस वरस ११ लों चैन हुआ और कनज का घेठा अविगल मर गया ॥

फिर इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में घुराई किई तब परमेश्वर १२ ने मोअव के राजा इजलून को इसराएल पर प्रवल किया इस कारण कि उन्होंने ने परमेश्वर की दृष्टि में घुराई किई । और उस ने अम्मन के और असालीक के १३ संतान को अपने पास एकट्ठा किया और जाके इसराएल को सारा और खजूर पेड़ों के नगर को वश में किया । सो इसराएल के संतान मोअव के राजा इजलून १४ की सेवा अठारह वरम लों करते रहे ॥

परन्तु जब इसराएल के संतान परमेश्वर के आगे चिन्ताये तब परमेश्वर ने एक १५ विनयमोनी जैरा के बेटे अहूद को जो बैट्या था उन के छुड़ाने के लिये उभाड़ा और इसराएल के संतान ने उस के द्वारा से मोअव के राजा इजलून के लिये भेंट भेजी । परन्तु अहूद ने हाथ भर का दो धारा खंजर बनाया और उसे अपनी दहिनी १६ जांघ में बस्त्र के तले बांधा । और वह मोअव के राजा इजलून के पास भेंट १७ लाया और इजलून बड़ा मोटा जन था ॥

और जब वह भेंट दे चुका तब उस ने उन लोगों को जो भेंट लाये थे बिदा १८ किया । परन्तु वह आप उन मूर्तिस्थान के पास से जो जिलजाल में हैं लौटा और १९ कहा कि हे राजा मेरे पास तेरे लिये एक गुप्त संदेश है और उस ने कहा कि चुपके रह तब जितने लोग पास खड़े थे बाहर निकल गये । तब अहूद उस पास आया २० और वह एक ठंढे स्थान में जो उस ने अपने लिये बनाया था अकेला बैठा था और अहूद ने कहा कि ईश्वर का संदेश आप के लिये सुन्न पास है तब वह आसन पर से उठ खड़ा हुआ । तब अहूद ने अपना बायां हाथ बढ़ाया और दहिनी २१ जांघ पर से खंजर को लिया और उस की तोंद में गोद दिया । और मूठ भी फल २२ के पीछे पैठ गई और चिकनाई से फल छंप गया क्योंकि उस ने खंजर को उस की तोंद से नहीं निकाला और मल निकल पड़ा । तब अहूद आसारे में बाहर २३ निकला और अपने पीछे जंचे स्थान के द्वारों को खंच लिया और उन्हें बंद किया ॥

जब वह बाहर निकल गया तब उस के सेवक आये और उन्होंने ने जंचे स्थान २४ के द्वार को बंद देखके कहा कि निश्चय वह अपने ठंढे स्थान में चैन करता है । और वे ठहरते ठहरते लज्जित हुए और देखो कि उस ने बैठक के द्वार को नहीं २५ खोला तब उन्होंने ने कुर्जी लेके खोला और क्या देखते हैं कि उन का प्रभु भूमि पर मरा पड़ा है ॥



६ अनात के बेटे शमजर के दिनों में याइल के समय में राजमार्ग मूने थे और  
७ पथिक टेढ़े मार्गों से जाते थे । गांव रह गये थे इसराएल में से उठ गये जब लों  
८ कि मैं दबूरः न उठी कि मैं इसराएल में एक माता उठी । जब उन्हीं ने नये देवों  
को चुन लिया तब फाटकों पर युद्ध हुआ क्या इसराएल के चालीस सहस्रों में एक  
ठाल अथवा एक भाला था ॥

९ मेरा मन इसराएल के अध्यक्षों की ओर है जिन्होंने लोगों में मनमंता आप  
१० को सौंप दिया तुम परमेश्वर का धन्य मानो । तुम जो श्वेत गददों पर चढ़ते  
११ हो जो न्याय पर बैठते हो और मार्ग चलते हो सोचो । कि पनघटों में धनुष-  
धारियों के शब्द से लोग परमेश्वर के धर्मों की चर्चा करेंगे अर्थात् धर्म कार्यों  
को जो गांवों में इसराएल पर हुए तब परमेश्वर के लोग फाटकों पर उतर  
१२ जावेंगे । जाग जाग हे दबूरः जाग जाग गीत गा उठ हे वरक और अविनुग्रम  
के बेटे अपने वंधुअन को वंधुआई में ले जा ॥

१३ तब उस ने उसे जो वचन रचा है लोगों के प्रधानों पर प्रभुता दी है परमेश्वर  
१४ ने मुझे सामर्थियों पर प्रभुता दी है । इसरायल में से एक जड़ असालीक के सन्मुख  
हुई तेरे लोगों में से हे विनयमीन तेरे पीछे मकीर में से अध्यक्ष उतर आये और  
१५ जवुलून में से जो लेखनी से खिंचते हैं । और इशकार के अध्यक्ष दबूरः के साथ  
थे अर्थात् इशकार वरक के साथ वह पांच पांच तराई को भेजा गया खिन के  
१६ विभागों में मन में बड़ी बड़ी चिन्ता हुई । तू क्यों भुंडों का मिमियाना मुझे को  
१७ भेड़शालों में रहा खिन के विभागों से मन में बड़ी बड़ी चिन्ता हुई । जिलिअद  
यरदन पार रहा और दान जहाजों पर क्यों रह गया यसर समुद्र के घाट में और  
१८ कोलों में ठहर रहा । जवुलून और नफताली ने चौगान में जंचे जंचे स्थानों पर  
अपने प्राण को तुच्छ जाना ॥

१९ राजा आके लड़े तब कनअन के राजाओं ने तअनाक में मजिदो के पानियों  
२० पर युद्ध किया उन्होंने ने कुछ रोकड़ न लिया । वे स्वर्ग पर से लड़े तारागण अपने  
२१ अपने चक्र में सीसरा से लड़े । कसून की नदी वह प्राचीन नदी कसून नदी उन्हें  
२२ बहा ले गई हे मेरे प्राण तू ने बलवन्तों को रौंद डाला । तब उन के घोड़ों के  
खुर टार्ये मारते थे उस के बीरों के दौड़ाने से ॥

२३ परमेश्वर के दूत ने कहा कि मीरोज को साप देओ वहां के वासियों को  
अति साप देओ क्योंकि वे परमेश्वर की सहाय के लिये अर्थात् परमेश्वर की सहाय  
के लिये बलवन्तों के सन्मुख न आये ॥

२४ कौनी हिन्न की पत्नी याइल सब स्त्रियों से अधिक धन्य होगी वह उन स्त्रियों  
२५ से जो डेरों में हैं अधिक धन्य होगी । उस ने पानी मांगा उस ने उसे दूध दिया  
२६ वह प्रतिष्ठित पात्र में माखन लाई । उस ने अपना हाथ खूंटी पर रक्खा और अपना  
दाहिना हाथ कार्यकारी की मोगरी पर मोगरी से सीसरा को मारा उस ने उस के  
२७ सिर को कुचला और गोदा और उस की कनपटी को आरंभार छेदा । वह उस के  
चरणों के तले झुका गिर पड़ा पड़ा रहा उस के चरणों के नीचे झुका गिर पड़ा  
जहां वह झुका तहां गिरके नाश हुआ ॥

तब सीसरा को संदेश पहुंचा कि अविनुग्रम का वेटा दरक पहाड़ तबूर पर १२  
चढ़ गया । तब सीसरा ने अपने समस्त रथ अर्थात् लोहे के नव सौ रथ और १३  
अपने साथ के सारे लोगों को अन्यदेशियों के हरमत से बुलाके कसून की नदी  
पर एकट्ठे किया ॥

तब दबूरः ने दरक से कहा कि उठ क्योंकि यह वह दिन है जिस में परमेश्वर १४  
ने सीसरा को तेरे हाथ में कर दिया है क्या परमेश्वर तेरे आगे नहीं गया तब  
दरक तबूर पहाड़ से नीचे उतरा और दस सहस्र जन उस के पीछे पीछे । और पर- १५  
मेश्वर ने सीसरा को और समस्त रथों को और सारी सेना को दरक के आगे  
तलवार की धार से हरा दिया यहां लों कि सीसरा रथ पर से उतरके पांच पांच  
भागों । परन्तु दरक रथों और सेनाओं के पीछे अन्यदेशियों के हरमत काइस लों १६  
रगोदे गया और सीसरा की सारी सेना तलवार की धार से सारी गई और एक भी न  
बचा । तथापि सीसरा पांच पांच भागों के छिन्न कैनी की पक्षी याइल के तंबू में घुसा १७  
क्योंकि हामूर के राजा यवीन और छिन्न कैनी के घर में मिलाप था । तब याइल १८  
सीसरा से मिलने को निकली और उसे कहा कि तेरे प्रमुख धर फिरिये मेरे यहां फिर  
आइये मत डरिये और जब वह उस के तंबू में आया तब उस ने उसे एक ओढ़ने  
में ढांप दिया । तब उस ने उसे कहा कि मैं तेरी विनती करता हूं कि मुझे तनिक १९  
जल दीजिये क्योंकि मैं प्यासा हूं सो उस ने दूध का एक कुप्पा खोलके उसे  
पिलाया और उसे ढांप दिया । तब उस ने उसे कहा कि तंबू के द्वार पर खड़ी २०  
रह और यों होगा कि जब कोई आके तुझ से पूछे और कहे कि कोई पुरुष यहां  
है तो कहियो कि नहीं । तब छिन्न की पक्षी याइल ने तंबू की एक खूंटी और २१  
मोहारी हाथ में लिई और टाले टाले उस पास जाके उस खूंटी को उस की  
कनपटी में ठोंका और भूसि में गड़ा दिया क्योंकि वह थका होके बड़ी नींद में  
था सो वह मर गया । और देखा कि जब दरक सीसरा को रगोदता आया तो २२  
याइल उस की भेंट को निकली और उसे कहा कि आ मैं तुझे उस जन को जिसे  
तू छूंटता है दिखाऊं और जब वह भीतर आया तो देखता है कि सीसरा मरा  
पड़ा है और खूंटी उस की कनपटी में है ॥

सो ईश्वर ने उस दिन कनयान के राजा यवीन को इसराएल के संतान के वश में २३  
किया । और इसराएल के संतान का हाथ भाग्यवान हुआ और कनयान के राजा २४  
यवीन पर प्रबल हुआ यहां लों कि उन्होंने कनयान के राजा यवीन को नाश किया ॥

पांचवां पर्व ।

तब दबूरः और अविनुग्रम के बेटे दरक ने उसी दिन में गाके कहा १  
जब इसराएल में संपूर्ण निरंकुश थे जब लोगों ने मनमंता आप को सौंप दिया २  
परमेश्वर की स्तुति करो । हे राजाओ सुनो हे अध्यक्षो कान धरो मैं ही परमेश्वर ३  
के लिये गाऊंगा मैं परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये बजाऊंगा । हे परमेश्वर ४  
जब तू गर्दर से निकला जब तू ने अबूस के चौगान से यात्रा किई तब भूमि थरथरा  
उठी स्वर्ग भी टपके और सेधों से भी बूंदियां पड़ीं । पहाड़ परमेश्वर के आगे ५  
बहि गये अर्थात् यह सीना परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के आगे ॥

१४ हमें त्याग किया और हमें मिदयानियों के हाथ में सौंप दिया । तब परमेश्वर ने उस पर दृष्टि किई और कहा कि अपनी दूमी सामर्थ्य से जा और तू इसराएल १५ को मिदयानियों के हाथ से छुड़ावंगा क्या मैं ने तुम्हें नहीं भेजा । और उस ने उसे कहा कि हे प्रभु मैं किस करके इसराएल को छुड़ाऊं देख मेरा घराना सुनस्सी १६ मैं सब से तुच्छ और मैं अपने पितरों के घराने में सब से छोटा । तब परमेश्वर ने उसे कहा कि मैं तेरे साथ होऊंगा और तू एक ही मनुष्य के समान मिदयान १७ को मारेगा । तब उस ने उसे कहा कि यदि अब मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया १८ है तो मुझे कोई लक्षण दिखा कि तू मुझ से बोलता है । मैं तेरी चिन्ता करता हूँ जब लो मैं तुम्हें पास फिर आऊँ और अपने मांस की भेंट लाऊँ और तेरे आगे धरूँ तब लो तू यहां से मत जाइयो सो उस ने कहा कि जब लो तू फिर न आवे मैं ठहरेगा ॥

१९ तब जिदऊन गया और उस ने वकरी का एक मेझा और एक ईफा पिसान के फुलके सिद्ध किये और मांस को उस ने टोकरों में रक्खा और जूस एक कटोरे २० में डालके उस के लिये बलूत वृक्ष तले लाके भेंट चढ़ाई । तब ईश्वर के दूत ने उसे कहा कि मांस और फुलकों को लेके इस चटान पर रख और जूस उंडेल सो २१ उस ने वैसे ही किया । तब परमेश्वर के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बड़ाया और उस की टोंक से मांस और फुलकों को छुआ और उस चटान से आरा निकली और मांस और फुलके को भस्म किया तब परमेश्वर का दूत उस की दृष्टि से जाता रहा ॥

२२ जब जिदऊन ने देखा कि वह परमेश्वर का दूत था तब जिदऊन ने कहा कि २३ हाय हे प्रभु परमेश्वर क्योंकि मैं ने ईश्वर का दूत आगे सामने देखा । तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तुम्हें पर कुशल हो मत डर तू न मरेगा ॥

२४ तब जिदऊन ने वहां परमेश्वर के लिये वेदी बनाई और उस का नाम यह रक्खा कि परमेश्वर कुशल भेजे सो वह अबीअजरी उफरः में आज के दिन लो २५ बनी है । और ऐसा हुआ कि उसी रात परमेश्वर ने उसे कहा कि अपने पिता का बखड़ा और एक दूसरा बैल जो सात बरस का है ले और उस वेदी को जो तेरे पिता ने बअल के लिये बनाई है ठा दे और वह कुंज जो उस के निकट है २६ काट डाल । और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये इस चटान पर जिस रीति से आज्ञा किई गई थी एक वेदी बना और उस दूसरे बखड़े को लेके उस कुंज की २७ लकड़ियों से जिसे तू काटेगा होम की भेंट चढ़ा । तब जिदऊन ने अपने सेवकों से दस जन लिये और जैसा कि परमेश्वर ने उसे कहा था वैसा किया और इस कारण कि वह अपने पिता के घराने से और उस नगर के लोगों से डरता था वह दिन को न कर सका उस ने यह काम रात को किया ॥

२८ और जब उस नगर के लोग बिहान को उठे तो क्या देखते हैं कि बअल की वेदी लाई हुई पड़ी है और उस के पास का कुंज कटा पड़ा है और उस वेदी २९ पर जो बनाई गई थी दूसरा बखड़ा चढ़ाया हुआ है । तब उन्होंने ने आपस में कहा कि वह कौन है जिस ने यह काम किया और जब उन्होंने ने यह करके पूछा

सीसरा की माता ने खिड़की से भांका और भरोखे से पुकारा कि उस का २८  
 रथ क्यों विलम्ब करता है उस के रथों के पहिये क्यों विलम्ब करते हैं । उस की २९  
 दुष्टिमती स्त्रियों ने उत्तर दिया हां उस ने आप ही उत्तर दिया । क्या वह न पावेंगे ३०  
 लूट न वांटेंगे एक एक पुरुष पीछे दो एक सहेलियां सीसरा को भांति भांति के  
 रंगीले वस्त्र की लूट अर्थात् छूटे काटे हुए नाना रंग के वस्त्र की लूट दोनों अलंग  
 छूटे काटे हुए नाना रंग के वस्त्र की लूट उठानेदारों के गलों के लिये । इसी ३१  
 रीति से हे परमेश्वर तेरे सारे शत्रु नाश होवें परन्तु जो उससे प्रेम रखते हैं सो  
 सूर्य के तुल्य होवें जब वह अपने पराक्रम से निकलता है । और देश ने चालीस  
 वरस चैन पाया ॥

छठवां पर्व ।

फिर इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में दुराई किई तब परमेश्वर ने १  
 उन्हें सात वरम लों सिदयानियों के हाथ में सौंप दिया । और सिदयानियों का २  
 हाथ इसराएल पर प्रबल हुआ सिदयानियों के कारण इसराएल के मंतानों ने  
 अपने लिये पहाड़ों में मांद और कंदला और दृढ़स्थान बनाये । और ऐसा होता ३  
 था कि जब इसराएल कुछ खाते थे तब सिदयानी और अमालीकी और पूरबी वंश  
 उन पर चढ़ आते थे । और उन के सामे डेरा खड़ा करके अज्जः लों भूमि की ४  
 चढ़ती को नष्ट करते थे और इसराएल के लिये न जीविका न भेड़ बकरी न गाय  
 बैल न गदहा छोड़ते थे । क्योंकि वे अपने छार और अपने तंबुओं सहित टिड्डी ५  
 दल की नाईं मंडली होके आते थे वे और उन के ऊंट अगणित थे और वे पैठके  
 उन के देश को नष्ट करते थे । सो इसराएल सिदयानियों के कारण दुर्बल हो गये ६  
 और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दोहाई दिई ॥

और ऐसा हुआ कि जब इसराएल के संतान ने सिदयानियों के कारण परमे- ७  
 श्वर की दोहाई दिई । तब परमेश्वर ने इसराएल के संतान पास एक जन अर्थात् ८  
 आशमज्जानी भेजा जिस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों  
 कहता है कि मैं तुम्हें मिस्र से ले आया और मैं तुम्हें सेवकाई के घर से निकाल  
 लाया । और मैं ने तुम्हें मिन्शियों के हाथ से और उन सब के हाथ से जो ९  
 तुम्हें सताते थे छुड़ाया और तुम्हारे आगे से उन्हें दूर किया और उन का  
 देश तुम्हें दिया । और मैं ने तुम्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर मैं हूँ उन १०  
 अमूरियों के देवतों से जिन के देश में तुम बसते हो मत डरो पर तुम ने मेरा  
 शब्द न माना ॥

फिर परमेश्वर का एक दूत आया और वलून वृक्ष तले उफरः में बैठा जो ११  
 अविअजरी यूआस का था और उस का बैठा जिदजन कॉल्दू के पास गोहूँ भाड़  
 रता था जिसने सिदयानियों के हाथ से छिपाये । तब परमेश्वर का दूत उसे १२  
 दिखाई दिया और उसे कहा कि हे महावीर परमेश्वर तेरे साथ । तब जिदजन १३  
 ने उसे कहा कि हे मेरे प्रभु यदि परमेश्वर हमारे साथ है तो हम पर ये सब क्यों  
 बीतते हैं और हम के समस्त आश्चर्य कहां हैं जो हमारे पितरों ने हम से वर्णन  
 किया था क्या परमेश्वर हमें मिस्र से नहीं निकाल लाया परन्तु अब परमेश्वर ने

५ विषय में मैं कहूँ कि यह तेरे साथ न जावे सो न जायगा । सो वह उन लोगों को पानी पर उतार लाया और परमेश्वर ने जिदऊन से कहा कि जो कोई पानी को कूकर की नाईं चपड़ चपड़ पीये तू उन में से हर एक को अलग रख और हर एक जो अपने घुठनों पर झुकके पीये उन्हें भी । सो जिन्होंने अपने हाथ अपने मुँह पास लाके चपड़ चपड़ पीया सो तीन सौ जन थे परन्तु बचे हुए लोग पानी पीने को घुठनों पर झुक गये । तब परमेश्वर ने जिदऊन से कहा कि मैं उन तीन सौ मनुष्यों से जिन्होंने चपड़ चपड़ पीया तुम्हें वचाऊंगा और मिदयानियों को तेरे हाथ में कर देऊंगा और समस्त लोग अपने स्थान को फिर जायें । तब उन लोगों ने अपने भोजन और अपने नरसिंगे हाथों में लिये और उस ने सब इसराएल को डेरों में भेजा और उन तीन सौ को रख छोड़ा और मिदयानियों की सेना उस के नीचे तराई में थी ॥

६ और ऐसा हुआ कि उसी रात परमेश्वर ने उसे कहा कि उठ सेना में उतर जा क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे वश में कर दिया । परन्तु यदि तू अकेला उतरने को डरता है तो अपने सेवक फूराह के साथ सेना में उतर । और सुन वे क्या कहते हैं और पीछे से तेरे हाथ बली होंगे और तू सेना में उतर जाना सो वह अपने सेवक फूराह को साथ लेकर सेना के हथियारबंद की प्रांतियों में उतर गया । और मिदयानी और अमालीकी और पूरबी वंश बहुतार्ई से टिड्डी की नाईं तराई में पड़े थे और उन के ऊँट समुद्र के तीर की बालू के समान अगणित थे । और जब जिदऊन आया तो क्या देखता है कि एक जन अपने परोसी से अपना स्वप्न कहि रहा है कि देख मैं ने एक स्वप्न देखा कि जब की रोटी का एक फुलका मिदयानी की सेना में लुढ़का और एक तंबू में आया और उस तंबू को ऐसा मारा कि वह गिर गया और उसे उलट दिया ऐसा कि वह डेरा पड़ा रहा । तब उस के परोसी ने उत्तर देके कहा कि यह इसराएल के पुरुष यूआस के बेटे जिदऊन की तलवार को छोड़ और नहीं है ईश्वर ने मिदयान और सारी सेना उस के वश में कर दिया है ॥

७ और ऐसा हुआ कि जब जिदऊन ने यह स्वप्न और उस का अर्थ सुना तो दंडवत किई और इसराएल की सेना को फिर आके कहा कि उठो क्योंकि परमेश्वर ने मिदयानी सेना को तुम्हारे हाथ में सौंप दिया । तब उस ने उन तीन सौ मनुष्यों को तीन जथा किया और उन सभों के हाथ में नरसिंगा और कूँका घड़ा दिया और एक एक दीपक घड़े के भीतर रक्खा । और उन्हें कहा कि सुभे देखो और वैसा ही करो और संचेत रहियो जब मैं कावनी के बाहर जाऊँ तब जो कुछ मैं कहूँ सो तुम भी कीजियो । और जब मैं और मेरे संगी नरसिंगे फूँके तब तुम लोग भी सेना की हर एक ओर से नरसिंगा फूँकियो और बोलियो कि परमेश्वर के लिये और जिदऊन के लिये ॥

८ फिर जिदऊन और वे सौ जन जो उस के साथ थे दो पहर को कावनी के बाहर आये और वहीं पहरे बैठाये थे और उन्होंने ने नरसिंगे फूँके और उन घड़ों को जो उन के हाथों में थे तोड़ा । और उन तीनों जथा ने नरसिंगे फूँके और

तो लोगों ने कहा कि यूथाम के बेटे जिदजन का यह काम है । तब उस नगर ३०  
 के लोगों ने यूथाम को कहा कि अपने बेटे को निकाल ला जिससे मारा जावे  
 क्योंकि उस ने दशरथ की बेटी छद्दे और उस के पास के कुंज को काट डाला ।  
 तब यूथाम ने उन सभी को जो उस के सामने खड़े हुए थे कहा क्या तुम दशरथ ३१  
 के कारण विवाद करोगे क्या तुम उसे दवाओगे जो कोई उस के लिये विवाद  
 करे सो विहान होते ही मारा जावे यदि वह देव है तो आप ही अपने लिये  
 विवाद करे क्योंकि उस ने उस की बेटी छद्दे दी । इस लिये उस ने उस दिन से ३२  
 उस का नाम यक्षदशरथ रखा और कहा कि दशरथ अपना विवाद उससे करे  
 क्योंकि उस ने उस की बेटी छद्दे दी ॥

तब सारे मिदयानी और अमालीकी और पूरबी वंश एकट्ठे हुए और पार ३३  
 उत्तरके यक्षदशरथ की तराई में डेरे खड़े किये । परन्तु परमेश्वर का आत्मा जिद- ३४  
 जन पर उतरा सो उस ने नरसिंहा फुंका और अविश्वजर के लोग उस के पीछे  
 एकट्ठे हुए । फिर उस ने सारे मुनस्सी में दूत भेजे सो वे भी उस के पीछे एकट्ठे हुए ३५  
 और उस ने यसर के और जवूनन के और नफताली के पास दूत भेजे सो वे भी  
 उन की भेंट करने को आये ॥

तब जिदजन ने ईश्वर से कहा कि यदि अपने कहने के समान तू इसराएल ३६  
 को मेरे हाथ में निस्तार देगा । तो देख मैं जन का एक गुच्छा खलिहान में रखता ३७  
 हूँ यदि ओस केवल गुच्छे ही पर पड़े और समस्त पृथिवी सूखी रहे तो मैं निश्चय  
 जानूँगा कि तू अपने कहे के समान इसराएल को मेरे हाथों से निस्तार देगा ।  
 और यों हुआ कि वह प्रातःकाल उठा और उस ने उस गुच्छे को बटोरा और ३८  
 उस में की ओस एक कटोरा भरके निकली । तब जिदजन ने ईश्वर से कहा कि ३९  
 तेरा क्रोध मुझ पर न भड़के मैं एक ही बार और कटूँगा मैं तेरी विनती करता हूँ  
 कि इसी गुच्छे पर केवल एक बार और तेरी परीक्षा कहे सो अबकी केवल गुच्छा  
 सूखा रहे और समस्त भूमि पर ओस पड़े । सो ईश्वर ने उसी रात ऐसा किया ४०  
 कि गुच्छा तो सूखा था और केवल सारी भूमि पर ओस थी ॥

सातवां पर्व ।

तब यक्षदशरथ जो जिदजन है सारे लोग सहित जो उस के साथ थे तड़के उठा १  
 और दशरथ के मोते पर डेरा खड़ा किया यहां लों कि मिदयानियों की सेना उस  
 के उत्तर अलंग मोरि की पहाड़ी पास तराई में थी । तब परमेश्वर ने जिदजन २  
 को कहा कि मिदयानियों को तेरे वंश में कर देने को लोग अति बहुत हैं रेमा  
 न हो कि इसराएल मेरे सामने अहंकार करके कहे कि मेरे ही हाथ ने मुझे बचाया ।  
 सो तू अब जाके लोगों के कानों में प्रचार करके कह कि जो कोई डरपोकना ३  
 हो और भय रखता हो सो जिलिअद पहाड़ में तड़के फिर जाय सो उन लोगों में  
 से बाईस सहस्र फिर गये और दस सहस्र रहि गये । तब परमेश्वर ने जिदजन से ४  
 कहा कि तथापि अभी लोग बहुत हैं तू उन्हें पानी पर उतार ला और वहां में  
 उन्हें तेरे लिये उन की परीक्षा कहेगा और ऐसा होगा कि जिस के विषय में मैं  
 तुझे कहूँगा कि यह तेरे साथ जावे वही तेरे साथ जायेगा और हर एक जिस के



वृद्धों से कहा कि यदि सचमुच मुझे अपने ऊपर राज्याभिषेक करते हो तो आओ मेरी छाया में शरण लेओ और यदि नहीं तो भटकटैया से एक आग निकलेगी और लुवनान के आरज वृद्ध को जलावेगी ॥

१६ सो अब यदि सच्चाई और निष्कपट से तुम ने अबिमलिक को अपना राजा किया और यदि यरुब्बअल और उस के घर से अच्छा व्यवहार किया और यदि १७ उसे उस उपकार के समान जो उस के हाथों ने किया है पलटा दिया । क्योंकि मेरा पिता तुम्हारे कारण लड़ा और अपने प्राण को धर दिया और तुम्हें मिदयान १८ के हाथ से कुड़ाया । और तुम आज मेरे पिता के घर पर उठे हो और उस के सत्तर बेटों को एक पत्थर पर मार डाला और उस की दासी के पुत्र अबिमलिक १९ को सिकम के लोगों पर राजा किया क्योंकि वह तुम्हारा भाई है । सो यदि तुम ने सच्चाई और निष्कपट से यरुब्बअल और उस के घर के साथ आज यह व्यवहार किया है तो तुम अबिमलिक से आनन्द रहे और वह भी तुम से आनन्द रहे । २० परन्तु यदि नहीं तो अबिमलिक से आग निकले और सिकम के लोगों को और मिल्लो के घर को भस्म करे और सिकम के लोग और मिल्लो के घर में से भी २१ एक आग निकले और अबिमलिक को भस्म करे । तब यूताम भागके चला गया और अपने भाई अबिमलिक के डर के मारे बर्बर में जाके रहा ॥

२२ जब अबिमलिक ने इसराएल पर तीन बरस राज्य किया । तब ईश्वर ने २३ अबिमलिक और सिकमियों के मध्य दुष्टात्मा भेजा और सिकम के लोगों ने अबिमलिक से झल किया । जिससे वह कठोरता जो यरुब्बअल के सत्तर बेटों के साथ किया था आवे और उन का लोहू उन के भाई अबिमलिक के सिर पर जिस ने उन्हें मार डाला और सिकमियों के सिर पर पड़े जो उस के भाइयों के मारने में २४ साक्षी हुए । तब सिकम के लोगों ने उस के लिये पहाड़ों की चोटियों पर घात में लोगों को बैठाया और जो उस मार्ग से आ निकलते थे वे उन्हें लूटते थे और २५ अबिमलिक को संदेश पहुंचा । तब अबद का बेटा जअल अपने भाइयों समेत आया और सिकम को गया और सिकम के लोगों ने उस पर भरोसा रक्खा । २६ और वे खेतों में निकले और अपने दाख के खेतों को लताड़ा और रौंदा और आनन्द किया और अपने देवतों के मन्दिर में घुसे और खाया पीया और अबिमलिक को धिक्कारा । तब अबद के बेटे जअल ने कहा कि अबिमलिक कौन २७ और सिकम क्या है कि हम उस की सेवा करें क्या यरुब्बअल का बेटा नहीं और क्या जबूल उस का अध्यक्ष नहीं तुम सिकम के पिता हसूर के लोगों की सेवा २८ करो और हम उस की सेवा क्यों करें । और हाथ कि ये लोग मेरे वश में होते तो मैं अबिमलिक को अलग कर देता तब उस ने अबिमलिक से कहा कि तू अपने कटक बड़ा और निकल आ ॥

३० जब नगर के अध्यक्ष जबूल ने अबद के बेटे जअल की ये बातें सुनीं तो उस ३१ का क्रोध भड़का । और उस ने चतुराई से अबिमलिक के पास दूत भेजके कहा कि देख अबद का बेटा जअल अपने भाइयों समेत सिकम में आया और देख ३२ वे तेरे विरोध में नगर को दृढ़ करते हैं । सो अब तू अपने लोगों सहित रात

घड़े ताड़े और दीपकों को अपने दायें हाथ में लिया और नरसिंहीं को फूँकने के लिये अपने दहिने हाथों में और चिल्ला उठे कि परमेश्वर की और जितजन की तलवार । और उन में से हर एक जन अपने स्थान पर सेना की चारों ओर खड़ा था २१ तब सारी सेना दौड़ी और चिल्लाई और भाग निकली । और उन तीनों सौथों ने २२ नरसिंहीं फूँके और परमेश्वर ने सारी सेना में हर एक की तलवार उस के संगी पर चलवाई और वे वैतसितः लों सरीरः की ओर और अधिलमदूलः के तीर लों जो तव्यात के लग हैं भाग गये ॥

तब इमरायली लोग नफताली और यसर और समस्त मुनस्सी से एकट्टे होके २३ निकले और मिदयानियों का पीछा किया । और जितजन ने सारे इफरायम पहाड़ २४ में दूत भेजे और कहा कि मिदयानियों के विरोध में उतरो और उन के आगे पानियों को वैतवरः और यरदन लों रोको तब सारे इफरायमी ने एकट्टे होके पानियों को वैतवरः और यरदन लों रोका । और उन्हीं ने मिदयान के दो अध्यक्षों २५ को गुराय और जिअय को पकड़ा और गुराय को गुराय पहाड़ पर और जिअय को जिअय के काल्दू पास मार डाला और मिदयान का पीछा किया और गुराय और जिअय का सिर यरदन के सम पार जितजन पास लाये ॥

आठवां पर्व ।

और इफरायम के लोगों ने उसे कहा कि तू ने हम से यह क्यों किया कि जब १ तू मिदयानियों से लड़ने गया तब हमें न बुलाया और उन्हीं ने उस्से बहुत विवाद किया । तब उस ने उन्हें कहा कि मैं ने तुम्हारे तुल्य अब क्या किया क्या इफ- २ रायम के दाव्य का योना अविअजर की लयनी से अति अच्छा है । ईश्वर ने ३ मिदयान के अध्यक्ष गुराय और जिअय को तुम्हारे हाथों में सौंप दिया सो तुम्हारे तुल्य काम करने का मुझे क्या सामर्थ्य था जब उस ने यह कहा तब उन की रिस धीमी हुई ॥

और जितजन यरदन पास आया वध और उस के तीन सौ संगी सहित पार ४ उतरे थके हुए और रगदते गये । तब उस ने मुक्कात के लोगों से कहा कि मेरे ५ संगियों को रोटियां दीजिये क्योंकि वे थके हैं और मैं मिदयान के राजाओं का जिवह और जलमूनः का पीछा किये जाता हूँ । तब मुक्कात के अध्यक्षों ने कहा ६ कि क्या जिवह और जलमूनः अब तेरे हाथ में हो गये कि हम तेरे कटक को रोटियां दें । तब जितजन बोला कि जब परमेश्वर जिवह और जलमूनः को ७ मेरे हाथ में कर देगा तब मैं तुम्हारी देह को वन के कांटों से और जंठकटारों से दाजंगा । और वहां से फनुगल को गया और उन से सैमा ही कहा और फनुगल ८ के मनुष्यों ने भी मुक्कात के मनुष्यों के समान उसे उत्तर दिया । और उस ने ९ फनुगल के मनुष्यों से भी कहा कि जब मैं कुशल से फिहंगा तब इस युर्ज को ठा देजंगा ॥

अब जिवह और जलमूनः अपनी सेना सहित जो पंदरह सहस्र पुरुष के संतान १० की सेना में से वचे थे करकूर में था क्योंकि एक लाख बीस सहस्र मनुष्य खड्गधारी तलवार से जूझ गये थे । तब जितजन उन की ओर जो नूवाह और युगविहाह ११

५० तब अविमलिक तैबीज में आया और तैबीज के सामने डेरा किया और उसे  
 ५१ ले लिया । परन्तु नगर के भीतर एक दृढ़ गढ़ था और उस में समस्त पुरुष और  
 स्त्रियां और नगर के सारे बासी भागके जा घुसे और उसे बंद किया और गढ़  
 ५२ की छत पर चढ़ गये । तब अविमलिक गढ़ पर आया और उससे लड़ा और चाहा  
 ५३ कि गढ़ के द्वार जला देवे । तब किसी स्त्री ने चक्की के पाट का एक टुकड़ा  
 ५४ अविमलिक के सिर पर दे मारा जिससे उस की खोपरी चूर हो जाय । तब उस  
 ने अपने अस्त्रधारी तरुण को शीघ्र बुलाया और उसे कहा कि अपनी तलवार खींच  
 और मुझे मार डाल जिससे मेरे विषय में कहा न जाय कि एक स्त्री ने उसे घात  
 ५५ किया तब उस तरुण ने उसे गोदा और वह मर गया । जब इसराएलियों ने देखा  
 कि अविमलिक मर गया तब हर एक अपने अपने स्थान की चला गया ॥  
 ५६ इसी रीति से ईश्वर ने अविमलिक की दुष्टता को जो उस ने अपने सत्तर  
 ५७ भाइयों को मारके अपने पिता से किई थी पलटा दिया । और सिकम के लोगों  
 की सारी वुराई ईश्वर ने उन के सिरों पर डाली और वह साप जो यरूबबल  
 के बेटे यूताम ने उन पर किया था उन पर पड़ा ॥

दसवां पर्व ।

१ और अविमलिक के पीछे इश्कार का एक जन दूदू का पोता फूअः का पुत्र  
 तोलअ इसराएल के संतान के वचाव के लिये उठा और वह इफरायम पहाड़  
 २ समीर में रहता था । और उस ने तेईस बरस इसराएल का न्याय किया और मर  
 गया और समीर में गाड़ा गया ॥

३ और उस के पीछे जिलिअदी याइर उठा और उस ने इसराएल का बाईस  
 ४ बरस न्याय किया । और उस के तीस बेटे थे जो तीस गदहों पर चढ़ा करते थे  
 और उन के तीस नगर थे जिन के नाम आज के दिन लो याइर के गांव हैं जो  
 ५ जिलिअद के देश में हैं । और याइर मर गया और कम्मून में गाड़ा गया ॥

६ तब इसराएल के संतानों ने परमेश्वर की दृष्टि में फिर वुराई किई और  
 उन्होंने ने बअलीम और इस्तारात और अराम के देवों की और सैदा के देवों की  
 और मोअब के देवों की और अम्मून के संतान के देवों की और फिलिस्तिनों के  
 देवों की सेवा किई और परमेश्वर को छोड़ दिया और उस की सेवा न किई ।

७ तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें फिलिस्तिनों और  
 ८ अम्मून के संतानों के हाथों में कर दिया । और उन्होंने ने उस बरस से सारे इस-  
 राएल के संतान को जो यरदन के उस पार अमूरियों के देश में जो जिलिअद में  
 ९ थे अठारह बरस लो उन्हें अति खिजाके चूर किया । और अम्मून के संतान ने  
 यरदन पार होके यहूदाह से भी और बिनयमीन और इफरायम के घर से युद्ध  
 किया यहां लो कि इसराएल अति दुःखी हुए ॥

१० तब इसराएल के संतान ने परमेश्वर को पुकारके कहा कि हम ने तेरे बिरुद्ध  
 में पाप किया इस कारण कि अपने ईश्वर को छोड़ा और बअलीम की सेवा भी  
 ११ किई । तब परमेश्वर ने इसराएल के संतान से कहा कि क्या मैं ने तुम्हें मिथियों  
 १२ से और अमूरियों से अम्मून के संतान से और फिलिस्तिनों से नहीं कुड़ाया । और

को उठ और खेत में घात में बैठ । और विद्वान को ज्यों ही सूर्य उदय हो त्यों ३३ ही नगर पर चढ़ जा और नगर से लड़ और देखो जब वह और उस के लोग तेरे पास निकल आये तब जो हाथ से हो सके सो करियो ॥

तब अविमलिक अपने सारे लोग सहित रात ही को उठा और चार जथा ३४ करके सिकम के सामने घात में बैठा । और अबद का बेटा जखल बाहर निकला ३५ और नगर के फाटक के पैठ पर खड़ा हुआ और अविमलिक अपने लोगों सहित ठूके से उठा । और जब जखल ने लोगों को देखा तो उस ने जखल से कहा कि ३६ देख पढ़ाड़ों की चाटियों पर से लोग उतरते हैं तब जखल ने उसे कहा कि तू पढ़ाड़ों की ह्याया को मनुष्यों की नाईं देखना है । तब जखल फिर कहके बोला ३७ कि देखो लोग खेत के मध्य से निकले आते हैं और एक जथा ओकों के बलूत के मार्ग से आती है । तब जखल ने उससे कहा कि अब तेरा वह मुंह कहाँ है ३८ जिसे तू ने कहा कि अविमलिक कौन जो हम उस की सेवा करें क्या ये वे लोग नहीं जिन की तू ने निन्दा किई सो अब बाहर जाइये और उन से युद्ध कीजिये । तब जखल सिकमियों के सामने बाहर निकला और अविमलिक से युद्ध किया । ३९ और अविमलिक ने उसे खदेड़ा और वह उस के सामने से भाग निकला और फाटक ४० के पैठ लों आते बहुतरे ठूके हुए गिर पड़े । और अविमलिक ने अस्मः में वास ४१ किया और जखल ने जखल को और उस के भाइयों को खदेड़ दिया कि वे सिकम में न रहें ॥

और विद्वान को ऐसा हुआ कि लोग निकलके खेत में गये और अविमलिक ४२ को संदेश पहुंचा । और उस ने लोगों को लेके उन की तीन जथा विभाग किया ४३ और चौगान में ठूके में बैठा और क्या देखता है कि लोग नगर से निकले तब उस ने उन का साम्रा किया और उन्हें मार लिया । और अविमलिक अपने साथ ४४ की जथा समेत आगे बढ़ा और नगर के फाटकों के पैठ में जाके खड़ा हुआ और दो जथा उन लोगों पर आ पड़ी जो खेत में थी और उन्हें काट डाला । और अविमलिक उस दिन भर नगर में लड़ता रहा और नगर को ले लिया और ४५ नगर के लोगों को मार डाला और नगर को ध्वस्त किया और वहां नान बिथराया ॥

जब सिकम के गढ़ के मय लोगों ने यह सुना तो वे अपने देव विरीत के ४६ मन्दिर के गढ़ में शरण के लिये जा चुके । और अविमलिक को यह संदेश पहुंचा ४७ कि सिकम के गढ़ के सब लोग एकट्ठे हुए हैं । तब अविमलिक अपने सारे लोग ४८ समेत जलमून पढ़ाड़ पर चढ़ा और अविमलिक ने कुल्हाड़ा अपने हाथ में लिया और वृत्तों में से एक डाली काटी और उसे उठाके अपने कांधे पर धरा और अपने साथियों से कहा कि जो कुछ तुम ने मुझे करते देखा है तुम भी शीघ्र वैसा करो । तब सब लोगों में से हर एक ने एक एक डाली काट लिई और अवि- ४९ मलिक के पीछे हो लिये और उन्हें गढ़ पर डालके उन में आग लगा दिई यहां लों कि सिकम के गढ़ के समस्त जल मरे और वे सब पुरुष और स्त्री एक सहस्र के लगभग थे ॥

१२ और इफताह ने अम्मून के संतान के राजा पास यह कहके दूत भेजे कि तुम्हें  
 १३ सुझ से क्या काम जो तू सुझ पर मेरे देश में युद्ध करने को चढ़ आया है । पर  
 अम्मून के संतान के राजा ने इफताह के दूतों को कहा इस लिये कि जब इसरा-  
 १४ एल मिस से निकल आये तब उन्हीं ने मेरे देश को अरनून से लेके यवूक और  
 यरदन लों ले लिया सो अब कुशल से उन्हें फेर देओ ॥

१५ तब इफताह ने दूतों को फेर अम्मून के संतान के राजा पास भेजा । और  
 उसे कहा कि इफताह यह कहता है इसराएल ने मोअब का देश और अम्मून के

१६ संतान का देश नहीं लिया । परन्तु जब इसराएल मिस से चढ़ आये और अरण्य  
 १७ से होके लाल समुद्र और कादिस में चले आये । तब इसराएल ने अदूम के  
 राजा को दूतों से यह कहला भेजा कि मुझे अपने देश में से जाने दीजिये परन्तु  
 अदूम के राजा ने उस को न सुनी और उमी रीति से उस ने मोअब के राजा को  
 भी कहला भेजा परन्तु उस ने न माना और इसराएल कादिस में ठहरा रहा ।

१८ तब वह अरण्य में होके चला गया और अदूम के देश और मोअब देश में चक्कर  
 खाके मोअब की पूरव ओर से आया और अरनून की पर्ली ओर डेरा खड़ा किया  
 १९ पर मोअब के सिवानों में प्रवेग न किया क्योंकि अरनून मोअब का सिवाना था ।

२० तब इसराएल ने अमूरियों के राजा सैहून को एमनून के राजा को दूत भेजे और  
 इसराएल उसे बोला कि मुझे अपने स्थान को अपने देश में से जाने दीजिये । पर  
 सैहून ने इसराएल को अपने सिवाने से जाने न दिया परन्तु सैहून ने अपने समस्त

२१ लोग एकट्ठे किये और यदास में डेरा खड़ा किया और इसराएल से लड़ा । और  
 परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने सैहून को उस के सारे लोगों समेत इसराएल के  
 हाथ में सौंप दिया और उन्हीं ने उन्हें मारा सो इसराएल ने अमूरियों के सारे

२२ देश और उस देश के वासियों का अधिकार पाया । और उन्हीं ने अरनून से  
 लेके यवूक लों और अरण्य से यरदन लों अमूरियों के सारे सिवानों को वश में  
 २३ किया । सो अब परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने अमूरियों को अपने इसराएल

२४ लोग के आगे से दूर किया तो क्या तू उसे वश में करेगा । जो तेरे देव कमूस ने  
 तेरे वश में किया है उसे नहीं चाहता है सो परमेश्वर हमारा ईश्वर जिन्हें हमारे

२५ आगे से दूर करेगा हम उन्हें वश में करेंगे । और क्या तू मोअब के राजा सफूर  
 के बेटे बलक से भला है उस ने कभी इसराएल से झगड़ा किया अथवा उस ने

२६ कभी उन से युद्ध किया । जब लों इसराएल हसबून में और उस के नगरों में और  
 अरआयर और उस के नगरों में और उन सब नगरों में जो अरनून के सिवानों में  
 २७ है तीन सौ बरस रहा किये तो उस समय लों तुम ने उन्हें क्यों न कुड़ाया । सो  
 मैं ने तेरा अपराध नहीं किया परन्तु सुझ से युद्ध करने में तू अनुचित करता है सो  
 परमेश्वर न्यायी इसराएल के संतान के और अम्मून के संतान के मध्य में आज  
 के दिन न्याय करे ॥

२८ तिस पर भी अम्मून के संतान के राजा ने उन बातों को जो इफताह ने उसे  
 कहला भेजीं न सुना ॥

२९ तब परमेश्वर का आत्मा इफताह पर आया और वह जिलिअद और मुनस्सी

सैदानियों और अमालीकियों और मजनीयों ने भी तुम्हें दुःख दिया और तुम ने मेरी दोहाई दिई सो मैं ने तुम्हें उन के हाथों से छुड़ाया । तथापि तुम ने मुझे १३ त्याग किया और उपरी देवतों की सेवा किई इस लिये मैं तुम्हें फिर न छुड़ाऊंगा । तुम जाओ और जिन देवों को तुम ने चुना है उन की दोहाई देओ कि वे १४ तुम्हारे कष्ट के समय में तुम्हें छुड़ावें । और इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से कहा १५ कि हम ने तो पाप किया सो जो तेरी दृष्टि में अच्छा जान पड़े सो हम से कर हम तेरी चिनती करते हैं केवल अयकी हमें छुड़ा । और उन्हीं ने परदेशियों के १६ देवतों को अपने से से दूर किया और परमेश्वर की सेवा करने लगे तब उस का जीव इसराएल की विपत्ति के लिये सकेती में पड़ा ॥

तब अम्मून के संतान बुलाये गये और जिलियद में छावनी किई और इसरा- १७ एल के संतान एकट्टे हुए और मिसफः में छावनी किई । तब जिलियद के अध्यक्षों १८ और लोगों ने आपुस में कहा कि वह कौन जन है जो अम्मून के संतान से युद्ध आरंभ करेगा वही जिलियद के वासियों का प्रधान होगा ॥

ग्यारहवां पद्य ।

अब जिलियदी इफताह एक महावीर था जो गणिका स्त्री का बेटा था १ और जिलियद से इफताह उत्पन्न हुआ । और जिलियद की पत्नी उससे बेटे जनी २ और उस की पत्नी के बेटे जब सयाने हुए तब उन्हीं ने इफताह को निकाल दिया और उसे कहा कि हमारे पिता के घर में तेरा अधिकार नहीं इस लिये कि तू उपरी स्त्री का लड़का है । तब इफताह अपने भाई को आगे से भागा और ३ तब के देश में जा रहा और इफताह के पास बहुत से तुच्छ लोग एकट्टे हुए और वे उस के साथ आया जाया करने थे ॥

और कितने दिनों के पीछे अम्मून के संतान ने इसराएल से लड़ाई किई । और ४ ऐसा हुआ कि जब अम्मून के संतान ने इसराएल से लड़ाई किई तब जिलियद के प्राचीन निकले कि इफताह को तब के देश से ले आवें । और उन्हीं ने इफ- ५ ताह को कहा कि आ और हमारा प्रधान हो जिससे हम अम्मून के संतानों से संग्राम करें । तब इफताह ने जिलियद के संतानों से कहा कि क्या तुम ने मुझ ६ से दूर करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल नहीं दिया सो अब जो तुम विपत्ति में पड़े तो मुझ पास क्यों आये हो । और जिलियद के प्राचीनों ने इफताह को ७ कहा कि अब हम हम लिये तेरे पास फिर आये कि तू हमारे साथ चलके अम्मून के संतान से संग्राम करे और हमारा और जिलियद के सारे वासियों का प्रधान ८ होव । और इफताह ने जिलियद के प्राचीनों से कहा कि यदि अम्मून के संतान ९ से लड़ाई करने के लिये तुम मुझे घर फेर लिये चलते हो और परमेश्वर उन्हें मेरे आगे सौंप देवे तो क्या मैं तुम्हारा प्रधान होऊंगा । तब जिलियद के प्राचीनों ने १० इफताह को उत्तर दिया कि परमेश्वर हमारे मध्य में सुनवैया होगा यदि हम तेरे कहने के समान न करें । तब इफताह जिलियद के प्राचीनों के साथ चला गया ११ और लोगों ने उसे अपना प्रधान और अध्यक्ष किया और इफताह ने मिसफः में परमेश्वर के आगे अपनी सारी बातें उच्चारण किई ॥



किई और जिलिअदियों ने इफरायमियों को मार लिया क्योंकि वे कहते थे कि जिलिअदी इफरायमियों में और मुनस्सियों में इफरायमियों के भगोड़े हैं । और जिलिअद ने इफरायमियों के आगे यरदन के घाटों को ले लिया और ऐसा हुआ कि जब इफरायमी भागे हुए आये और बोले कि मुझे पार जाने दे तब जिलिअदी ६ उसे कहते थे कि तू इफरायमी है यदि उस ने नाह किया । तब उन्होंने ने उसे कहा कि शूलीस कहो और उस ने शूलीस कहा इस लिये कि वह ठीक उच्चारण कर न सकता था तब वे उसे पकड़के यरदन के घाटों पर मार डालते थे सो उस समय वहां दयालीस सहस्र इफरायमी मारे गये ॥

७ और इफताह ने छः वरस लों इसराएल का न्याय किया उस के पीछे जिलिअदी इफताह मर गया और जिलिअद की दस्तियों में गाड़ा गया ॥

८ और उस के पीछे वैतलहम का द्यमान इसराएल का न्यायी हुआ । और उस के तीस तो बेटे थे और तीस बेटियां और उस ने बेटों को बाहर भेजके उन के लिये तीस बेटियां मंगवाईं और उस ने सात वरस इसराएल का न्याय किया ।

१० तब इवसान मर गया और वैतलहम में गाड़ा गया ॥

११ और उस के पीछे जयुलूनी रेलून इसराएल का न्यायी हुआ और उस ने दस १२ वरस इसराएल का न्याय किया । और जयुलूनी रेलून मर गया और रेलून में जयुलून के देश में गाड़ा गया ॥

१३ और उस के पीछे हलील का बेटा अबदून एक परअतूनी इसराएल का न्यायी १४ हुआ । और उस के चालीस बेटे और तीस पोते थे जो सत्तर गददों के बड़ेड़ों १५ पर चढ़ा करते थे और आठ वरस उस ने इसराएल का न्याय किया । और हलील का बेटा परअतूनी अबदून मर गया और अमालीकियों के पहाड़ इफरायम के देश में परअतून में गाड़ा गया ॥

तेरहवां पर्व ।

१ और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में फिर दुराई किई और परमेश्वर ने उन्हें चालीस वरस लों फिलिस्तिनों के हाथ में सौंप दिया ॥

२ और दान के घराने में सूरअः का एक जन था जिस का नाम मनुहा था और ३ उस की स्त्री बांभ होके न जनती थी । तब परमेश्वर का दूत उस स्त्री को दिखाई दिया और उसे कहा कि देख तू बांभ होके नहीं जनती है पर तू गर्भिणी ४ होगी और बेटा जनेगी । सो सौंचेत हो और मदिरा अथवा अमल की कोई ५ वस्तु न पीजियो और कोई अशुद्ध वस्तु न खाइयो । क्योंकि देख तू गर्भिणी होगी और बेटा जनेगी और उस के सिर पर कुरा न फिरेगा क्योंकि वह बालक गर्भ से परमेश्वर के लिये नासरी होगा और वह इसराएलियों को फिलिस्तिनों के हाथ से कुड़ाने का आरंभ करेगा ॥

६ तब उस स्त्री ने आके अपने पति से कहा कि ईश्वर का एक जन मुझ पास आया और उस का स्वरूप ईश्वर के दूत की नाईं अति डरावना था परन्तु मैं ने ७ उसे न पूछा कि तू कहां का और उस ने भी अपना नाम मुझे न बताया । पर उस ने मुझे कहा कि देख तू गर्भिणी होके बेटा जनेगी और अब तू मदिरा और

के पार गया और जिलिग्रद के मिसफः से पार गया और जिलिग्रद के मिसफः से अम्मून के संतान की ओर उतरा । और इफताह ने परमेश्वर की मनौती ३० मानी और कहा कि यदि तू सचमुच अम्मून के संतान को मेरे हाथ में सौंप देगा । तो ऐसा होगा कि जब मैं अम्मून के संतान से कुशल से फिर आऊंगा तो जो कुछ ३१ मेरे घर के द्वारों से पहिले मेरी भेंट को निकलेगा वह निश्चय परमेश्वर का होगा और मैं उसे बलिदान की भेंट के लिये चढ़ाऊंगा ॥

तब इफताह अम्मून के संतान की ओर पार उतरा कि उन से लड़े और परमे- ३२ श्वर ने उन्हें उस के हाथ में सौंप दिया । और अरआयर से लेके मिनियत के ३३ पहुंचने लों बीस नगर और दाख की दारी के चौगान लों अति बड़ी मार से उन्हें मारा इसी रीति से अम्मून के संतान इसराएल के संतानों के वश में हुए ॥

और जब इफताह मिसफः को अपने घर आया तब वया देखता है कि उस की ३४ बेटी तबले बजाती और नाचती हुई उसे आगे लेने को निकली और वह उस की एकलौती थी उसे छोड़ उस का कोई बेटा बेटी न था । और यों हुआ कि जब ३५ उस ने उसे देखा तब अपने कपड़े फाड़े और बोला हाय हाय मेरी बेटी तू ने मुझे अति उदास किया और तू उन में से एक है जो मुझे सताते हैं क्योंकि मैं ने तो परमेश्वर को बचन दिया है और हट नहीं सकता । तब उस ने उसे कहा कि हे ३६ मेरे पिता यदि तू ने ईश्वर को बचन दिया है तो जो कुछ तेरे मुँह से निकला सो मुझ से कीजिये क्योंकि परमेश्वर ने तेरे शत्रु अम्मून के संतान से तेरा पलटा लिया है । फिर उस ने अपने पिता से कहा कि मेरे लिये इतना कीजिये कि दो ३७ मास मुझे छोड़िये जिसमें मैं पहचानों में फिरूं और अपनी संगियों को लेके अपने कुआरपन पर विलाप करूं । और वह बोला कि जा और उस ने उसे दो मास ३८ की छुट्टी दीई और वह अपनी संगियों सहित गई और पहचानों पर अपने कुआरपन पर विलाप किया । और दो मास के पीछे अपने पिता पास फिर आई और उस ३९ ने जैसी मनौती मानी थी वैसी ही उससे कीई और वह पुरुष से अज्ञान रही और यह इसराएल में बिधि हुई । सो इसराएल की कन्या बरस बरस जिलिग्रदी इफ- ४० ताह की बेटी के सुमरने के लिये बरस में चार दिन जाती थी ॥

बारहवां पर्व ।

और इफरायस को लोग एकट्ठे होके उत्तर दिशा को गये और इफताह से १ कहा कि जब तू अम्मून के संतान से युद्ध करने को पार उतरा तब हमें क्यों न बुलाया सो अब हम तेरे घर को तुझ समेत जला देंगे । तब इफताह ने उन्हें २ उत्तर दिया कि मैं और मेरे लोग अम्मून के संतान से बड़ा झगड़ा रखते थे और जब मैं ने तुम्हें बुलाया तब तुम ने उन के हाथ से मुझे न छुड़ाया । और जब मैं ने देखा कि तू ने मुझे न छुड़ाया तब मैं ने अपना प्राण हाथ पर ३ रखवा और पार उतरके अम्मून के संतान का साम्रा किया और परमेश्वर ने उन्हें मेरे हाथ में सौंप दिया सो तुम आज के दिन किस लिये मुझ पर लड़ने को बढ आये हो ॥

तब इफताह ने सारे जिलिग्रदियों को एकट्ठा करके इफरायमियों से लड़ाई ४

## चौदहवां पृष्ठ ।

- १ और शम्सून तिमनः में उतरा और तिमनः में उस ने फिलिस्तियों की बेटियों
- २ में से एक स्त्री को देखा । और उस ने ऊपर आके अपने माता पिता से कहा
- कि मैं ने फिलिस्तियों की बेटियों में से तिमनः में एक को देखा सो उससे मेरा
- ३ विवाह करा देओ । तब उस के माता पिता ने उसे कहा कि क्या तेरे भाइयों
- की बेटियों में और मेरे सारे लोगों में कोई स्त्री नहीं जो तू अखतनः फिलि-
- स्तियों में से पत्नी लिया चाहता है और शम्सून ने अपने पिता से कहा कि उसे
- ४ मुझे दिलाइये क्योंकि वह मेरे मन में भाई है । परन्तु उस के माता पिता न
- जानते थे कि यह परमेश्वर की ओर से है कि वह फिलिस्तियों से वैर ठूँढ़ता
- ५ है क्योंकि उस समय में फिलिस्ती इसराएलियों पर प्रभुता करते थे । तब शम्सून
- अपने माता पिता के संग तिमनः को उतरा और तिमनः के दाख की वारियों
- में आये और क्या देखता है कि एक युवा सिंह उस के सन्मुख गर्जता हुआ उस
- ६ पर आ पहुँचा । तब परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ शम्सून पर पड़ा और
- उस ने उसे ऐसा फाड़ा जैसे कोई मेढ़ा को फाड़ता है और उस के हाथ में कुछ
- न था परन्तु जो कुछ उस ने किया था सो अपने माता पिता से भी न कहा ।
- ७ तब उस ने जाके उस स्त्री से बात किई और वह शम्सून के मन में भाई ॥
- ८ और कितने दिनों के पीछे वह उसे लेने फिरा और वह अलग होके उस सिंह
- की लोथ देखने गया और क्या देखता है कि सिंह की लोथ में मधुमक्खी का
- ९ भुँड और कृत्ता है । तब उस ने उस में से हाथ में लिया और खाता हुआ चला
- गया और अपनी माता पिता के पास आया और उन्हें भी कुछ दिया और उन्हें
- ने खाया परन्तु उस ने उन्हें न कहा कि यह मधु सिंह की लोथ में से निकला ॥
- १० फिर उस का पिता उस स्त्री के पास गया और वहाँ शम्सून ने जेवनार किया
- ११ क्योंकि तरुणों का यह व्यवहार था । और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने ने उसे देखा
- १२ तो वे तीस संगी को लाये कि उस के साथ रहें । और शम्सून ने उन्हें कहा कि
- मैं तुम से एक पहेली कहता हूँ यदि तुम जेवनार के सात दिन के भीतर निश्चय
- उस का अर्थ मुझे बतलाओगे और उस का भेद पाओगे तो मैं तीस ओढ़ना और
- १३ तीस जोड़े बस्त्र तुम्हें देजंगा । परन्तु यदि तुम मुझे न बता सकोगे तो तुम तीस
- ओढ़ना और तीस जोड़े बस्त्र मुझे देओगे सो वे बोले कि अपनी पहेली कह कि
- १४ हम सुन । तब उस ने उन्हें कहा कि भक्षक में से भक्ष्य निकला और बली में से
- १५ मिठास और वे तीन दिन लों उस पहेली का अर्थ न बता सके । और यों हुआ
- कि सातवें दिन उन्होंने ने शम्सून की स्त्री से कहा कि अपने प्रति को फुसला कि
- वह इस पहेली का अर्थ हमें बतावे नहीं तो हम तेरा और तेरे पिता का घर आग
- से जला देंगे क्या तुम ने हमें धुलाया है कि नहीं कि हमारा अधिकार लेओ ।
- १६ तब शम्सून की पत्नी उस के आगे बिलाप करके बोली कि तू मुझ से केवल वैर
- रखता है और मुझे प्यार नहीं करता तू ने मेरे लोगों के संतानों से एक पहेली कही
- और मुझे न बतलाई और उस ने उसे कहा कि देख मैं ने अपने माता पिता को
- १७ नहीं बताया सो क्या तुम्हें बताऊँ । और वह उस के आगे उन के जेवनार के सात

कोई अमल की वस्तु न पीजियो और अपवित्र वस्तु मत खाइयो क्योंकि वह बालक गर्भ में से जीवन भर ईश्वर के लिये नासरी होगा ॥

तब मनुष्य ने परमेश्वर से चिनती करके कहा कि हे मेरे प्रभु ऐसा कर कि ईश्वर का वह जन जिसे तू ने भेजा था हम पास फिर आवे और हमें सिखावे कि हम उस लड़के के विषय में जो उत्पन्न होगा क्या करें । और ईश्वर ने मनुष्य का शब्द सुना और ईश्वर का दूत उस स्त्री पास जब वह खेत में थी फिर आया परन्तु उस का प्रति मनुष्य उस पास न था । तब वह स्त्री फुरती से दौड़ी गई और अपने प्रति को जताया और उसे कहा कि देख वही मनुष्य जो अगिले दिन मुझे दिखाई दिया था फिर दिखाई दिया है । तब मनुष्य उठके अपनी पत्नी के पीछे चला और उस मनुष्य पास आके उसे कहा कि तू वही पुरुष है जिस ने इस स्त्री से बातें किई और उस ने कहा कि मैं हूँ । तब मनुष्य ने कहा कि जैसे तू ने कहा जैसे ही होवे लड़के की कौन सी रीति अथवा वह क्या करेगा । तब परमेश्वर के दूत ने मनुष्य से कहा कि सब जो मैं ने स्त्री से कहा है वह चौकस रहे । वह दाख में का कुछ न खाए और मदिरा और कोई अमल न पीये और अपवित्र वस्तु न खाए सब जो मैं ने उसे आज्ञा किई पालन करे ॥

और मनुष्य ने परमेश्वर के दूत को कहा कि तनिक आप ठहर जाइये कि हम आप के आगे एक मेझा सिद्ध करें । परन्तु परमेश्वर के दूत ने मनुष्य से कहा कि यद्यपि तू मुझे रोके तथापि मैं तेरी रोटी न खाऊंगा और यदि तू बलिदान की भेंट चढ़ावे तो तुझे उचित है कि परमेश्वर के लिये उसे चढ़ावे क्योंकि मनुष्य न जानता था कि वह परमेश्वर का दूत है । फिर मनुष्य ने परमेश्वर के दूत से कहा कि आप का नाम क्या जिसने जब आप का कहा पूरा होवे हम आप की प्रतिष्ठा करें । और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तू मेरा नाम ध्यों पूछता है कि वह आश्चर्यित । तब मनुष्य ने एक मेझा भोजन की भेंट के कारण परमेश्वर के लिये एक चटान पर चढ़ाया और उस ने आश्चर्यित रीति किई और मनुष्य और उस की स्त्री देख रहे थे । क्योंकि ऐसा हुआ कि जब वेदी पर से स्त्रियों की और लौ उठी तब परमेश्वर का दूत लौ में होके वेदी पर से स्त्रियों को चला गया और मनुष्य और उस की स्त्री ने देखा और मुंह के बल भूमि पर गिरे । परन्तु परमेश्वर का दूत मनुष्य को और उस की स्त्री को फिर दिखाई न दिया तब मनुष्य ने जाना कि वह परमेश्वर का दूत था । और मनुष्य ने अपनी पत्नी से कहा कि हम अब निश्चय मर जायेंगे क्योंकि हम ने ईश्वर को देखा । परन्तु उस की पत्नी ने उसे कहा कि यदि परमेश्वर की इच्छा हमें सारने को होती तो वह बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट हमारे हाथों से ग्राह्य न करता और हमें यह सब न दिखाता और इस समय के समान हमें ये बातें न कहता ॥

और वह स्त्री बेटा जनी और उस का नाम शम्सून रखवा और वह लड़का बढ़ा और परमेश्वर ने उसे आशीस दिई । और परमेश्वर का आत्मा दान की छावनी सुराग्रः और इसताल के बीच उसे उभाड़ने लगा ॥

१३ मुझ से किरिया खाओ कि हम आप तुम्हें न मारेंगे । पर उन्होंने ने उसे कहा कि नहीं परन्तु हम तुम्हें दृढ़ता से बांधेंगे और तुम्हें उन के हाथ में सौंपेंगे पर निश्चय हम तुम्हें मार न डालेंगे और उन्होंने ने उसे दो नई डोरियों से बांधा और उसे पहाड़ी पर से उतार लाये ॥

१४ जब वह लही में पहुंचा तब फिलिस्ती उस के मिलने पर ललकारे और परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ उस पर पड़ा और उस की बांह पर की डोरी

१५ जले सन की नाईं हो गई और उस के हाथों के बंधन खुल गये । तब उस ने गदहे के एक नये जवड़े की हड्डी पाई और अपना हाथ बढाके उसे लिया और

१६ उस ने उससे एक सहस्र मनुष्य मार डाले । और शम्सून बोला कि एक गदहे के जवड़े की हड्डी से ठेर पर ठेर मैं ने एक गदहे के जवड़े की हड्डी से एक सहस्र

१७ पुरुष मारे । और ऐसा हुआ कि इतना कहके जवड़े की हड्डी को अपने हाथ से फेंक दिया और उस स्थान का नाम रामतलही रक्खा ॥

१८ और वह निपट पियासा हुआ तब वह परमेश्वर की खिन्ती करके बोला कि तू ने अपने दास के हाथ से ऐसा बड़ा वचाव दिया और अब क्या मैं पियासा

१९ मरके अखतनों के हाथ में पड़ूं । तब परमेश्वर ने एक गड़हा लही में खोदा और वहां से पानी निकला और उस ने उसे पीया तब उस के जी में जी आया और वह फिर जीया इस लिये उस ने उस का नाम खुलानेवाले का कुआ रक्खा जो आज लों लही में है ॥

२० और उस ने फिलिस्तियों के समय में बीस बरस लों इसराएल का न्याय किया ॥

सोलहवां पर्व ।

१ तब शम्सून अज्जः को गया और वहां एक गणिका स्त्री देखी और उस पास

२ गया । अज्जियों से कहा गया कि शम्सून यहां आया है सो उन्होंने ने उसे घेर लिया और सारी रात नगर के फाटक पर उस की छात में लगे रहे पर रात भर

३ यह कहके चुपचाप रहे कि जब बिहान होगा तब हम उसे मार लेंगे । और शम्सून आधी रात लों पड़ा रहा और आधी रात को उठा और उस ने उस नगर के फाटक के द्वारों को और दो खंभों को पकड़के उन्हें अड़ंगे समेत उखाड़के अपने कांधे पर धरा और उन्हें उस पहाड़ी की चोटी पर जो हब्रून के आगे है ले गया ॥

४ और उस के पीछे ऐसा हुआ कि उस ने सूरेक की तराई में एक स्त्री से प्रीति

५ किई जिस का नाम दलीलः था । और फिलिस्तियों के प्रधान उस पास चढ़ गये और उसे कहा कि उसे फुसला और देख कि उस का महाबल कहाँ है और किस रीति से हम उसे बश में करें जिसमें हम उसे बांधके बश में करें और हर एक हम में से ग्यारह ग्यारह सौ टुकड़े चांदी तुम्हें देगा ॥

६ और दलीलः ने शम्सून से कहा कि मुझे बता कि तेरा महाबल किस में है

७ और किस्से तू बांधा जावे कि तुम्हें बश में करें । और शम्सून ने उसे कहा कि यदि वे मुझे सात ओढ़ी डोरियों से जो कभी भूरी न हुई हों बांधें तब मैं निर्बल

दिन लों रोया किई और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उस ने उसे बतला दिया क्योंकि उस ने उसे निपट सताया और उस ने उस पहिली का अर्थ अपने लोगों के संतानों से कहा । और उस नगर के मनुष्यों ने सातवें दिन सूर्य के अस्त होने से पहिले १८ उससे कहा कि मधु से मीठा क्या है और सिंह से बलवान कौन तब उस ने उन्हें कहा कि यदि तुम मेरी कलार से न जोते तो मेरी पहिली का भेद न पावते । तब परमेश्वर का आत्मा उस पर पड़ा और वह अशकलून को गया और उन में १९ से तीस मनुष्यों को मार डाला और उन के वस्त्र लिये और उन्हें जोड़ा जोड़ा वस्त्र दिये जिन्हें ने पहिली का अर्थ कहा था सो उस का क्रोध भड़का और अपने पिता के घर चढ़ गया ॥

परन्तु शम्सून की पत्नी उस के संगी को जिसे वह मित्र जानता था दिई गई ॥ २० पंदरहवां पर्व ।

और कितने दिन पीछे गोहूँ की कटनी के समय में ऐसा हुआ कि शम्सून एक १ मेम्रा लेके अपनी पत्नी की भेंट को गया और कहा कि मैं अपनी पत्नी पास कोठरी में जाऊंगा परन्तु उस के पिता ने उसे जाने न दिया । और उस के पिता ने कहा २ कि तुझे निश्चय हुआ कि तू उससे वैर रखता था इस लिये मैं ने उसे तेरे संगी को दिया क्या उस की लहुरी वहिन उसे अति सुंदरी नहीं सो उस की संती इसे ले ॥

तब शम्सून ने उन के विषय में कहा कि अब मैं फिलिस्तिनों से निर्दोष होऊंगा ३ क्योंकि मैं उन की हानि करूंगा । तब शम्सून ने जाके तीन मो मियार पकड़े और ४ दो दो की पूंछ एक साथ बांधी और पलीतां लिया और पूंछ बांधके एक एक पलीता बीच में बांधा । और पलीतां को बांधके उन्हें फिलिस्तिनों के खड़े खेतों ५ में छोड़ दिया और फलों से लेके गड़े खेत लों और दाख के बाटिकों को और जलपाई को जला किया । तब फिलिस्तिनों ने कहा कि यह किस ने किया है ६ और वे बोले कि तिमनी के जवाइ शम्सून ने क्योंकि उस ने उस की पत्नी को लेके उस के संगी को दिया तब फिलिस्ती चढ़ आये और उसे और उस के पिता को आग से जला दिया ॥

तब शम्सून ने उन्हें कहा कि यद्यपि तुम ने ऐसा किया है तथापि मैं तुम से ७ प्रतिफल लेऊंगा तब पीछे चैन करूंगा । और उस ने उन्हें जांघ और कूला से ८ मार मारके बड़ा नाश किया और फिर जाके रेताम पर्वत पर बैठ गया ॥

तब फिलिस्ती चढ़ गये और यहूदाह में डेरा किया और लही में फैल गये । ९ और यहूदाह के मनुष्यों ने कहा कि तुम हम पर क्यों चढ़ आये हो और वे बोले १० कि शम्सून के बांधने को हम चढ़ आये हैं कि जैसा उस ने हम से किया हम उससे करें । तब यहूदाह के तीन सहस्र मनुष्य रेताम पर्वत की चोटी पर गये और ११ शम्सून को कहा कि क्या तू नहीं जानता है कि फिलिस्ती हम पर प्रभुता करते हैं सो तू ने हम से यह क्या किया है और उस ने उन्हें कहा कि जैसा उन्होंने ने मुझ से किया वैसा मैं ने उन से किया । तब उन्होंने ने उसे कहा कि हम आये हैं १२ कि तुझे बांधके फिलिस्तिनों के हाथ में सौंप दें और शम्सून ने उन्हें कहा कि



आनन्द करे क्योंकि उन्होंने ने कहा कि हमारे देव ने हमारे घेरी शम्सून को हमारे  
 २४ वश में कर दिया । और जब लोगों ने उसे देखा तब उन्होंने ने अपने देव की स्तुति  
 किई क्योंकि उन्होंने ने कहा कि हमारे देव ने हमारे घेरी को जिस ने हमारा देश उजाड़ा  
 २५ और हमारे बहुत से लोगों को नाश किया हमारे हाथ में सौंप दिया । और ऐसा हुआ  
 कि जब वे सगन हो रहे थे तब उन्होंने ने कहा कि शम्सून को बुलाओ कि हमारे  
 आगे लीला करे तब उन्होंने ने शम्सून को बंदीगृह से बुलवाया और वह उन के  
 २६ आगे लीला करने लगा और उन्होंने ने उसे खंभों के मध्य में रक्खा । तब  
 शम्सून ने उस कोकड़े को जो उस का हाथ पकड़े हुए था कहा कि मुझे खंभे  
 २७ टटोलने दे जिन पर घर खड़ा है जिसमें उन पर आठगूं । और घर पुर्णों और  
 स्त्रियों से भरपूर था और फिलिस्तिनों के समस्त प्रधान वहीं थे और तीन सहस्र  
 २८ के लगभग स्त्री पुरुष कृत पर थे जो शम्सून की लीला देख रहे थे । तब शम्सून  
 ने परमेश्वर को पुकारा और कहा कि हे प्रभु परमेश्वर दया करके मुझे स्मरण  
 कीजिये केवल इसी बार मुझे बल दीजिये जिसमें मैं एकट्टे फिलिस्तिनों से अपनी  
 २९ दोनों आंखों का पलटा लेऊं । तब शम्सून ने दोनों मध्य के खंभों को जिन पर  
 ३० घर खड़ा था एक को दहिने हाथ से और दूसरे को बायें से पकड़ा । और  
 शम्सून बोला कि मेरा प्राण भी फिलिस्तिनों के साथ जाय सो उस ने बल करके  
 उसे झुकाया और घर उन प्रधानों और उन सब लोगों पर जो उस में थे गिर पड़ा  
 और वे लोग जिन्हें उस ने अपने साथ मारा उन से अधिक थे जिन्हें उस ने अपने  
 जीते जी मारा था ॥

३१ तब उस के भाई और उस के पिता के सारे घराने आये और उसे उठाया  
 और उसे सुरअः और इसताल के मध्य में उस के पिता मनुहा की समाधिस्थान  
 में गाड़ा और उस ने बीस बरस लों इसराएल का न्याय किया ॥

सत्रहवां पृष्ठ ।

१ और इफरायम पहाड़ का एक जन था जिस का नाम मीका था । और उस  
 ने अपनी माता से कहा कि वे ग्यारह सौ रुपये जो तुम्ह से लिये गये थे जिस के  
 कारण तू ने साप दिया और जिस के विषय में मैं ने भी सुना देखो चांदी मेरे  
 पास है मैं ने उसे लिया और उस की माता बोली कि हे मेरे बेटे ईश्वर का  
 ३ धन्यवाद । और जब उस ने ग्यारह सौ चांदी अपनी माता को फेर दिई तब उस  
 की माता ने कहा कि मैं ने यह चांदी अपने बेटे के लिये अपने हाथ से सर्वथा  
 परमेश्वरार्पण किया था कि एक खोदी हुई और एक ठाली हुई मूर्ति बनाऊं सो  
 ४ अब मैं तुम्हें फेर देती हूं । तथापि उस ने वह रोकड़ अपनी माता को दिया और  
 उस का माता ने दो सौ चांदी लेके सोनार को दिया और उस ने एक खोदी हुई  
 ५ और एक ठाली हुई मूर्ति बनाई और वे दोनों मीका के घर में थीं । और मीका  
 के देवतों का एक मंदिर था और एक अफूद और तराफाम बनाया और अपने बेटों  
 ६ में से एक को पवित्र किया था जो उस के लिये पुरोहित हुआ । उन दिनों में इसरा-  
 एल में कोई राजा न था जिस को जो ठीक सूझ पड़ता था सो करता था ॥

७ और यहूदाह के घराने का बैतलहम यहूदाह में का एक तरुण लावी था जो

हो जाऊंगा और दूसरे मनुष्य की नाई हो जाऊंगा । तब फिलिस्तीनों के प्रधान ८  
उस पास सात ओढ़ी डोगी लाये जो कभी न सूखी थीं और उस ने उन से उसे  
बांधा । और घातवाले उस के संग कोठरी के भीतर ठूके में थे और वह उसे ९  
बोली हे शम्सून फिलिस्ती तुझ पर पड़े नव उस ने उन डोरियों को सन के सूत  
की नाई जो आग में लग जावे तोड़ा सो उस का बल जाना न गया ॥

तब दलीलः ने शम्सून से कहा कि देख तू ने मुझे चिढ़ाया और मुझ से झूठ १०  
बोला अब मुझे बता कि तू किस्से बांधा जावे । और उस ने उसे कहा कि यदि ११  
ये मुझे नई रस्सियों से जो कभी काम में न आई हों कसकें बांधें तब मैं निर्वल  
होके दूसरे मनुष्य की नाई हो जाऊंगा । तब दलीलः ने नई रस्सियां लेके उसे १२  
उन से बांधा और उससे बोली कि हे शम्सून फिलिस्ती तुझ पर आये और घात-  
वाले कोठरी में बैठे थे सो उस ने अपनी भुजाओं से उन्हें तामे की नाई तोड़ डाला ॥

तब दलीलः ने शम्सून से कहा कि अब तू ने मुझे चिढ़ाया और मुझ से १३  
झूठ बोला मुझे बता कि तू किस्से बांधा जावे तब उस ने उसे कहा कि यदि तू  
मेरी सात जटा ताने में बिने । तब उस ने सूँटे से उन्हें कसा और उससे बोली कि १४  
हे शम्सून फिलिस्ती तुझ पर आ पड़े और वह नींद से जागा और युद्ध के सूँटे  
को ताने के साथ लेके चला गया ॥

तब उस ने उसे कहा कि क्योंकि तू कहता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ १५  
और तेरा मन मुझ से नहीं लगा तू ने यह तीन बार मुझे चिढ़ाया और मुझे नहीं  
बताया कि तेरा महाबल किस में है । और ऐसा हुआ कि जब उस ने उसे प्रति- १६  
दिन अपनी बातों से दबाया और उसे उसकाया यहां तू कि वह जीवन से उदास  
हुआ । तब उस ने उसे अपने मन का सारा भेद बोलके कहा कि मेरे सिर पर १७  
हुआ नहीं फिरा क्योंकि मैं अपनी सातों के गर्भ में से ईश्वर के लिये नामरी हूँ  
यदि मेरा सिर मुड़ाया जावे तब मेरा बल मुझ से जाता रहेगा और मैं निर्वल  
होके और मनुष्य की नाई हो जाऊंगा ॥

और जब दलीलः ने देखा कि उस ने अब उसे अपने सारे मन का भेद कह १८  
दिया तब उस ने फिलिस्तीनों के प्रधानों को यह कहके बुलवाया कि एक बार  
फेर आओ क्योंकि उस ने अपने मन का सारा भेद मुझ पर प्रगट किया तब फिलि-  
स्तीनों के प्रधान उस पर चढ़ आये और रोकड़ अपने हाथ में लाये । और उस ने १९  
उसे अपने धुठनों पर सुला रक्खा और एक जन को बुलवाके सात जटा जो उस  
के सिर पर थीं मुड़वाईं और उसे सताने लगी और उस का बल जाता रहा । तब २०  
वह बोली कि हे शम्सून फिलिस्ती तुझ पर आये और वह नींद से जागा और कहा  
कि मैं आगे की नाई बाहर जाऊंगा और आप को बल से हिलाऊंगा परन्तु वह  
न जानता था कि परमेश्वर उसे छोड़ गया । तब फिलिस्तीनों ने उसे पकड़ा और २१  
उस की आंखें निकाल डालीं और उसे अज्जः में उतार लाये और पीतल की  
सांकरों से उसे जकड़ा और वह बंदीगृह में पड़ा चक्री पीसता था ॥

तथापि सिर मुड़ाने के पीछे उस के बाल फेर बढ़ने लगे । और फिलिस्तीनों २३  
के प्रधान एकट्ठे हुए कि अपने देव दूजून के लिये बड़ा बलिदान चढ़ावे और

डेरा किया इस लिये आज के दिन लों उस स्थान का नाम उन्होंने ने महानेह दान  
 १३ रक्खा देखो यह करणतयरीम के पीछे है । और यहां से चलके इसरायल पहाड़  
 १४ को पहुंचे और मीका के घर में आये । तब उन पांच पुत्रों ने जो लैस के देश  
 का भेद लेने को गये थे अपने भाइयों से उत्तर देके कहा कि तुम जानते हो कि  
 इन घरों में अफूद और तराफीम और एक खोदी हुई और एक ठाली हुई मूर्ति  
 १५ है सो अब सोचो कि क्या करोगे । तब वे उधर फिरे और मीका के घर में उस  
 १६ लाठी तरुण के स्थान में प्रवेश किया और उसमें कुशल पूछा । और वे कः सो  
 १७ जो दान के संतान के दृष्टिपारबंध थे फाटक के पैठ में खड़े रहे । और वे पांच  
 जो देश के भेद को निकले थे घर के भीतर घुसे और खोदी हुई मूर्ति और अफूद  
 और तराफीम और ठाली हुई मूर्ति लिये और वह पुरोहित उन कः सो दृष्टि-  
 १८ पारबंध मनुष्यों के साथ फाटक के पैठ में खड़ा था । और उन्होंने ने मीका के  
 घर में घुसके खोदी हुई मूर्ति अफूद और तराफीम और ठाली हुई मूर्ति उठा  
 १९ लिये तब पुरोहित उन से बोला कि तुम क्या करते हो । तब उन्होंने ने उसे कहा कि  
 चुप रह अपने मुंह पर हाथ रखके हमारे साथ चल और हमारे लिये पिता और  
 पुरोहित हो कौन सी बात भली है कि एक मनुष्य के घर का पुरोहित हो अथवा  
 २० यह कि तू इसरायल के घराने की एक गोष्टी का पुरोहित हो । और पुरोहित  
 का मन मगन हुआ और उस ने अफूद और तराफीम और खोदी हुई मूर्ति को  
 २१ उठा लिया और लोगों के मध्य में प्रवेश किया । सो वे फिरे और चले और  
 बालकों और ठोर और गाड़ी को अपने आगे किया ।  
 २२ वे मीका के घर से बहुत दूर निकल गये थे कि मीका के घर के आसपास  
 २३ के बासी एकट्टे हुए और दान के संतान को जा ही लिया । और उन्होंने ने दान  
 के संतान को ललकारा तब उन्होंने ने मुंह फेरा और मीका से कहा कि तुम्हें क्या  
 २४ हुआ जो तू एकट्ठा हुआ है । और वह बोला कि तुम मेरे देवों को जिन्हें मैं ने  
 बनाया और मेरे पुरोहित को लेके चले गये हो अब मेरा और क्या रहा और तुम  
 २५ मुझ से कहते हो कि तेरा क्या हुआ । तब दान के संतान ने उसे कहा कि तू  
 अपना शब्द हमें न सुना न हो कि क्रूर लोग तुझ पर लपके और तू और तेरा  
 २६ घराना मारा जावे । और दान के संतान ने अपना मार्ग लिया और जब मीका  
 ने देखा कि वे मुझ से बली हैं तब मुंह फेरके अपने घर को लौट आया ॥  
 २७ और वे मीका की बनाई हुई वस्ति उस के पुरोहित समेत लिये हुए लैस को  
 उन लोगों पर आये जो चैन में और निश्चिंत थे और उन्हें तलवार की धार से  
 २८ मारा और नगर को आग से जला दिया । और कोई छोड़वैया न था क्योंकि  
 सैदा से वह दूर था और वे किसी से व्यवहार न करते थे और वह उस तराई  
 में था जो बैतरहुब के लग है और उन्होंने ने एक नगर बनाया और उस में बसे ।  
 २९ और उस नगर का नाम दान रक्खा जो उन के पिता इसरायल के बेटे का नाम  
 ३० था परन्तु पहिले उस नगर का नाम लैस था । और दान के संतान ने उस खोदी  
 हुई मूर्ति की स्थापना किई और मुनस्सी के बेटे गैरसुम का बेटा यहूनतन और  
 उस के बेटे उस देश की बंधुआई के दिन लों दान की गोष्टी के पुरोहित बने

वहाँ आ रहा था । और वह मनुष्य नगर में से यहूदाह के चैतलहम से निकला कि अन्तेवास करे और वह चलते चलते इफरायम पहाड़ को मीका के घर पहुँचा । तब मीका ने उसे कहा कि तू कहाँ से आता है और उस ने उसे कहा कि मैं चैतलहम यहूदाह में का एक लावी हूँ और मैं जाता हूँ कि जहाँ कहीं ठिकाना होवे तहाँ रहूँ । और मीका ने उसे कहा कि मेरे साथ रह और मेरे लिये पिता और पुरोहित हो और मैं तुम्हें बरस बरस दस टुकड़े चाँदी और एक जोड़ा वस्त्र और भोजन देऊँगा सो लावी भीतर गया । और वह लावी उस मनुष्य के साथ रहने पर प्रसन्न हुआ और वह तरुण उस के एक बेटों के समान हुआ । और मीका ने उस लावी को ठहराया और वह तरुण उस का पुरोहित बना और मीका के घर में रहने लगा । तब मीका ने कहा कि अब मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मेरा भला करेगा क्योंकि एक लावी मेरा पुरोहित हुआ ॥

अठारहवाँ पर्व ।

उन दिनों में इसराएल में कोई राजा न था और उन्हीं दिनों में दान की गोष्टी अपने अधिकार के निवास डूँढ़ती थी क्योंकि उस दिन लें इसराएल का गोष्टियों में उन्हें कुछ अधिकार न मिला था । सो दान के संतान ने अपने में से पाँच जन अपने सिवाने सुरअः और इसताल से भेजे कि उन के देश को देखके भेद लेवें तब उन्हीं ने उन से कहा कि जाओ देश को देखो जब वे इफरायम पहाड़ को मीका के घर आये तो वहाँ रात भर ठिके । जब वे मीका के घर के पास आये तब उन्हीं ने उस लावी तरुण का शब्द पढ़िचाना और सुड़के उसे कहा कि तुम्हें यहाँ कौन लाया और तू यहाँ क्या करता है और यहाँ क्या काम । तब उस ने उन्हें कहा कि मीका ने मुझ से यों यों किया है और मुझे वनी में रक्खा है और मैं उस का पुरोहित हूँ । तब उन्हीं उसे कहा कि ईश्वर से मंत्र लीजिये जिससे हम जानें कि हमारा मार्ग जिस हम चलते हैं सिद्ध होगा अथवा नहीं । और पुरोहित ने उन्हें कहा कि तुम मार्ग परमेश्वर के आगे है सो उस पर कुशल से जाओ ॥

तब वे पाँचों जन चल निकले और लैस को आये और वहाँ के लोगों ने देखा कि सैदानियों के समान निश्चित रहते हैं और देश में कोई स्वामी न जो उन्हें किसी बात में लज्जित करता और वे सैदानियों से दूर थे और वे कुछ कार्य न रखते थे । तब वे अपने भाई कने सुरअः और इसताल को और उन के भाइयों ने पूछा कि तुम क्या करते हो । तब वे बोले कि उठो हम उन पर चढ़ जावें क्योंकि हम ने उस भूमि को देखा है और देखो वह अच्छी है और तुम चुपके हो उस भूमि में पैठके अधिकार लेने में आलस न जब चलोगे तब निश्चित लोगों पर और बड़े देश में पहुँचोगे क्योंकि ईश्वर उसे तुम्हारे हाथ में कर दिया है यह एक देश है जिस में पृथिवी में की वस्तु घटी नहीं है ॥

तब दान के घराने में से सुरअः और इसताल के छः सौ पुरुष युद्ध के साथ बाँधे हुए वहाँ से चले । और वे चढ़ गये और आके यहूदाह के करपतः की

इफरायम पहाड़ का था जो जियअः में आके बसा था परन्तु उस स्थान के दासी  
 १७ विनयमीनी थे । जब उस ने आंखें उठाईं तब देखा कि एक पथिक नगर के  
 मार्ग पर है तब उस वृद्ध ने उसे कहा कि तू किधर जाता है और कहाँ से  
 १८ आता है । तब उस ने उसे कहा कि हम यहुदाह वैतलहम से इफरायम के पहाड़  
 की अलंग लों जाते हैं जहाँ के हैं और मैं यहुदाह वैतलहम को गया था परन्तु  
 अब परमेश्वर के मंदिर को जाता हूँ और कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो मुझे अपने  
 १९ घर उतारे । तथापि मेरे साथ गदहों के लिये अन्न भूसा है और मेरे और तेरी  
 दासी के लिये और इस तरुण के लिये जो मेरा सेवक है रोटी और मदिरा है  
 २० किसी वस्तु की घटी नहीं है । और उस वृद्ध ने कहा कि तेरा कल्याण होवे  
 तब पर भी तेरा आवश्यक मुझ पर होवे केवल मार्ग में रात को मत टिको ।  
 २१ सो वह उसे अपने घर ले गया और उस के गदहों को चारा दिया तब उन्होंने ने  
 अपने पांव धोये और खाया पीया ॥

२२ वे मगन हो रहे थे तब देखो कि उस नगर के लोगों ने जो बलियाल के लड़के  
 थे उस घर को घेर लिया और द्वार ठोकके उस घर के स्वामी अर्थात् उस वृद्ध  
 से कहा कि उस जन को जो तेरे घर में आया है बाहर ला जिसमें हम उसे  
 २३ कुकर्म करें । तब उस घर का स्वामी बाहर निकला और उन्हें कहा कि नहीं  
 भाइयो मैं तुम्हारी बिनती करता हूँ ऐसी दुष्टता न कीजिये देखो यह जन मेरे घर  
 २४ में आया है सो ऐसी सूढ़ता न कीजिये । देख मैं अपनी कुंवारी बेटी और उस  
 की दासी को बाहर ले आता हूँ आप उन्हें आलिंगन कीजिये और इच्छा भर  
 २५ मनमंता जो चाहिये सो करिये परन्तु इस मनुष्य से ऐसी दुर्गति न कीजिये । पर  
 वे उस की बात न मानते थे सो वह जन उस की दासी को उन पास बाहर ले  
 आया और उन्होंने ने उसे कुकर्म किया और रात भर बिहान लों उस की दुर्दशा  
 किई और जब दिन निकलने लगा तब उसे ढोड़ गये ॥

२६ और वह स्त्री पै फटते ही उस पुरुष के घर के द्वार पर जहाँ उस का स्वामी  
 २७ था आके गिर पड़ी यहाँ लों कि उंजियाला हुआ । और उस का स्वामी बिहान को  
 उठा और उस ने घर के द्वारों को खोला और बाहर निकला कि यात्रा करे और  
 क्या देखता है कि उस की दासी घर के द्वार पर पड़ी है और उस के हाथ  
 २८ डेवड़ी पर थे । तब उस ने उसे कहा कि उठ आ चल पर कोई उत्तर न दिया  
 तब उस मनुष्य ने उसे गदहे पर धर लिया और अपने स्थान को चल निकला ॥

२९ और उस ने घर पहुँचके कुरी लिई और अपनी दासी को पकड़के हड्डियों समेत  
 उस के बारह भाग करके टुकड़े टुकड़े काटे और इसराएल के समस्त सिवानों  
 ३० में भेज दिये । और ऐसा हुआ कि जिस किसी ने वह देखा सो बोला कि जिस  
 दिन से इसराएल के संतान मिस से चढ़ आये आज लों ऐसा कर्म न हुआ न  
 देखा गया सोचो और बिचार करो और बोलो ॥

बीसवां पर्व ।

१ तब इसराएल के सारे संतान निकले और दान से लेके बिअरसबल लों और  
 जिलिअद के देश लों मंडली एक मन होके परमेश्वर के आगे मिसफः में एकट्ठी

रहे । और जब लों ईश्वर का मंदिर मैला में था उन्होंने ने मीकों की खोदी हुई ३ मूर्ति अपने लिये स्थापित किई ॥

उन्नीसवां पर्व ।

और उन दिनों में ऐसा हुआ कि इसराएल में कोई राजा न था और एक लावी मनुष्य इफरायम पहाड़ की अलंग में रहता था और उस ने अपने लिये यहूदाह के वैतलहम से एक दासी पत्नी के लिये लिई । और उस की दासी कुकर्म करके उस पास से यहूदाह वैतलहम में अपने पिता के घर जा रही और चार मास लों वहां रही ॥

और उस का प्रति उठा और उस के पीछे चला कि उसे मनावे और फेर लावे और उस के साथ एक सेवक और दो गददे थे सो वह उसे अपने पिता के घर में ले गई और उस दासी के पिता ने ज्यों उसे देखा त्यों उस की भेंट से मगन हुआ । और उस के ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने उसे रोका और वह उस के साथ तीन दिन लों रहा और उन्होंने ने खाया पीया और वहां टिके । और चौथे दिन यों हुआ कि जब वे तड़के उठे तब उस ने चाहा कि यात्रा करे तब दासी के पिता ने अपने जंवाई से कहा कि रोटी के एक टुकड़े से अपने मन को मंतुष्ट कर तब मार्ग लीजियो । सो वे दोनों बैठ गये और मिलके खाया पीया क्योंकि दासी के पिता ने उस जन से कहा कि मैं तेरी विनती करता हूं मान जा और रात भर रह जा और मन को आह्लादित कर । फिर जब वह मनुष्य विदा देने को उठा तब उस के ससुर ने उसे रोका इस लिये वह फेर वहां रहा । और पांचवें दिन भोर को उठा कि विदा होवे फिर दासी के पिता ने उसे कहा कि मैं तेरी विनती करता हूं कि अपने मन को मगन कर सो वे दिन ठले लों ठहरे रहे और उन दोनों ने खाया पीया । फिर वह मनुष्य और उस की दासी और उस का सेवक विदा देने को उठे फिर कन्या के पिता ने उसे कहा कि देख दिन ठल चला है और सांझ पहुंची है अब रात भर ठहर जा देख दिन समाप्त हो चला है अब रह जा जिसमें तेरा मन मगन हो जावे और कल तड़के अपने डेरे जाने को सिधार । परन्तु वह जन उस रात को न रहा पर उठके विदा हुआ और यूस के सन्मुख आया जिस का दूसरा नाम यरसलम है और उस के संग काटी बांधे हुए दो गददे और उस की दासी भी उस के साथ थी ॥

जब वे यूस पास पहुंचे तब दिन बहुत ठल गया तब सेवक ने अपने स्वामी से कहा कि मैं आप की विनती करता हूं आइये यूसियों के इस नगर में मुड़ें और उसी में टिकें । तब उस के स्वामी ने उसे कहा कि हम उपरी नगरों में जो इसराएल के संतानों का नहीं है न टिकेंगे परन्तु जिवत्रः को पार जायेंगे । और अपने सेवक से कहा कि चल इन स्थानों में से एक में जिवत्रः अथवा रामः में रात भर टिकें । और उन के जाते जाते विनयमीन के जिवत्रः के पास सूर्य अस्त हुआ । और वे उधर फिरे कि जिवत्रः में टिकें और नगर के एक मार्ग में उतरके बैठ गये क्योंकि कोई ऐसा न था जो उन्हें अपने घर ले जाके ठिकावे ॥

और देखो कि एक बृद्ध खेत पर से काम करके सांझ को वहां आया वह भी



- २२ और इसराएल के लोगों ने दियाव किया और उसी स्थान पर जहाँ ये पाँचले  
 २३ दिन लैस थे संग्राम किया । और इसराएल के संतानों ने ऊपर जाके सांभ लें  
 परमेश्वर के आगे बिलाप किया और यह कहके परमेश्वर से मंत्र चाहा कि हम  
 अपने भाई बिनयमीन के संतानों से संग्राम करें तब परमेश्वर ने कहा कि उन पर  
 २४ चढ़ जाओ । सो इसराएल के संतान दूसरे दिन बिनयमीन के संतान के विरोध  
 २५ में समीप आये । और उस दूसरे दिन बिनयमीन ने जिवअः से निकलके इसराएल  
 के संतान के अठारह सहस्र मनुष्य मारके भूमि पर डाल दिये ये सब खड्गधारी थे ॥  
 २६ तब सारे इसराएल के संतान और सारे लोग ईश्वर के मंदिर को चढ़ गये और  
 रोये और वहाँ परमेश्वर के आगे बैठे और उस दिन सांभ लें व्रत किया और  
 २७ बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें परमेश्वर के आगे चढ़ाईं । और इसराएल  
 के संतानों ने परमेश्वर से दूआ क्योंकि परमेश्वर की साक्षी की मंजूपा उन दिनों  
 २८ में वही थी । और हासन के बेटे इलियजर का बेटा फीनिहास उन दिनों में उस  
 के आगे खड़ा रहता था तब उन्होंने ने पूछा कि मैं अपने भाई बिनयमीन के  
 संतान से फिर संग्राम के लिये जाऊँ अथवा रहि जाऊँ तब परमेश्वर ने कहा कि  
 चढ़ जा क्योंकि कल मैं उन्हें तेरे हाथ में कर देऊँगा ॥  
 २९ सो इसराएल ने जिवअः के चारों ओर घातियों को बैठाया । और इसराएल  
 ३० के संतान तीसरे दिन बिनयमीन के संतान के सामें चढ़ गये और जिवअः के  
 ३१ सन्मुख आगे के समान फिर पांती बांधी । और बिनयमीन के संतान ने उन का  
 साम्रा किया और नगर से खींचे गये और आगे की नाईं राजमार्गों में जो बैतएल  
 ३२ को जाता है और दूसरा जिवअः को तीस मनुष्य के अटकल मारते गये । और  
 बिनयमीन के संतान ने कहा कि वे आगे की नाईं हमारे आगे मारे पड़े परन्तु  
 इसराएल के संतान ने कहा कि आओ भाग और उन्हें नगर से राजमार्गों में खींच  
 ३३ लावें । तब सारे इसराएल के लोग अपने स्थान से निकले और उस स्थान पर  
 पांती बांधी जिस का नाम बयलतमर है और इसराएल के घातिये अपने स्थानों  
 ३४ से जिवअः के खेतों में से निकले । और समस्त इसराएल में से दस सहस्र चुने  
 हुए जन जिवअः के सन्मुख आये और बड़ा संग्राम हुआ पर उन्होंने ने न जाना  
 ३५ कि विपत्ति उन पर आ पहुँची । तब परमेश्वर ने बिनयमीन को इसराएल के  
 आगे मारा और इसराएल के संतान ने उस दिन पचीस सहस्र एक सौ जन  
 बिनयमीनी मारे ये सब खड्गधारी थे ॥  
 ३६ और बिनयमीन के संतान ने देखा कि हम मारे पड़े क्योंकि इसराएल के  
 मनुष्य बिनयमीनी को निकाल लाये क्योंकि वे उन घातियों के भरोसे पर थे जिन्हें  
 ३७ उन्होंने ने जिवअः के अलंग बैठाया था । तब घातियों ने फुरती किई और जिवअः  
 पर लपके और बढ़ गये और सारे नगर को तलवार की धार से घात किया ।  
 ३८ अब इसराएल के मनुष्यों में और उन घातियों में एक पता ठहराया हुआ था कि  
 ३९ नगर में से धूआँ के साथ बड़ी लौ निकाले । जब इसराएल के मनुष्य संग्राम में  
 हट गये तब बिनयमीनी उन में के तीस मनुष्य के अटकल मारने लगे क्योंकि उन्होंने  
 ४० ने कहा कि निश्चय आगे के संग्राम के समान वे हमारे आगे मारे पड़े । परन्तु

हुई । और समस्त लोगों के अर्थात् इसराएल की समस्त गोष्ठियों के प्रधान जो २  
ईश्वर के लोगों की सभा में आये चार लाख पण्डित खड्गधारी थे ।

अब विनयमीन के संतानों ने सुना कि इसराएल के संतान मिस्रफः में एकट्ठे ३  
हुए तब इसराएल के संतानों ने कहा कि कह यह दुष्टता क्योंकर हुई । तब उस ४  
लावी पुरुष ने जो सारी गई स्त्री का पति था उत्तर देकर कहा कि मैं अपनी दाम्नी  
समेत विनयमीन के जिविश्रत में टिकने को आया । और जिविश्रत के लोग मुझ ५  
पर चढ़ आये और घर रात को घर लिया और चाहा कि मुझे मार लें और  
उन्होंने मेरी दाम्नी पर व्यवस किया कि वह मर गई । सो मैं ने अपनी दाम्नी ६  
को पकड़के उसे टुकड़े टुकड़े किये और उन्हें इसराएल के अधिकार के समस्त  
देश में भेजा क्योंकि इसराएल में उन्होंने ने कुकर्म और मूर्खता कीई । देखो हे ७  
इसराएल के समस्त संतानो अब तुम ही अपना मंत्र और परामर्श देखो ॥

तब सब के सब यह कहके एक जन की नाईं उठे और बोले कि हम में से ८  
कोई अपने डेरे में न जावेगा और हम में से कोई अपने घर की ओर न फिरेगा ।  
परन्तु अब हम जिवश्रः से यह करेंगे कि चिट्ठी डालके उस पर चढ़ेंगे । और हम १०  
इसराएल के संतान की हर एक गोष्ठी में से सौ पीछे दस और सहस्र पीछे सौ  
और दस सहस्र पीछे एक सहस्र पुरुष लेंगे जिसमें लोगों के लिये भोजन लावें और  
जिस समय कि विनयमीन के जिवश्रः में आवें तब उस समस्त मूर्खता के कारण  
उन से करें जो उन्होंने ने इसराएल में कीई ॥

सो सारे इसराएल के लोग एक मता होके उस नगर पर एकट्ठे हुए । और ११  
इसराएल की गोष्ठियों ने विनयमीन की समस्त गोष्ठी में यह कहके लोग भेजे कि  
यह क्या दुष्टता है जो तुम्हीं हुई । सो अब बलियाल के संतानों को जो जिवश्रः १३  
में हैं हमें सौंप देखो कि हम उन्हें मार डालें और इसराएल में से बुराई को  
मिटा डालें परन्तु विनयमीन के संतान ने अपने भाई इसराएल के संतान का कहा  
न माना । परन्तु विनयमीन के संतान नगरों में से जिवश्रः में एकट्ठे हुए जिसमें १४  
इसराएल के संतान से संग्राम करें । और विनयमीन के संतान जो नगरों में से १५  
उस समय गिने गये जिवश्रः के सात सौ चुने हुए जन को छोड़के छब्बीस सहस्र  
खड्गधारी थे । इन सब लोगों में सात सौ चुने हुए वैश्य थे जिन में हर एक १६  
ठिलवांस के पत्थर से बाल भर मारने में न चूकता था । और विनयमीन को १७  
छोड़ इसराएल के संतान चार लाख योद्धा खड्गधारी थे ॥

और इसराएल के संतान उठके ईश्वर के मंदिर को गये और ईश्वर से मंत्र १८  
चाहा और कहा कि हमसे कौन पहिले विनयमीन के संतानों पर युद्ध के लिये  
चढ़ जावे तब परमेश्वर ने कहा कि पहिले यहूदाह ॥

सो इसराएल के संतान दिवान को उठे और जिवश्रः के सन्मुख छावनी १९  
कीई । और इसराएल के लोग विनयमीन से लड़ाई करने को निकले और इस- २०  
राएल के लोग जिवश्रः में उन के आगे पांती बांध संग्राम के लिये खड़े हुए ।  
तब विनयमीन के संतान ने जिवश्रः से निकलके उस दिन बाईस सहस्र इसराएलियों २१  
को मारके धूल में मिला दिया ॥

- १२ ज्ञाता हो सर्वथा नष्ट कर देना । सो उन्होंने ने यवीस जिलियद के वासियों में  
चार सौ कुंआरी पाईं जो पुरुष से अज्ञान थीं और उन्हें सैला की छावनी में जो  
कनआन के देश में है ले आये ॥
- १३ तब सारी मंडली ने विनयमीन के संतान को जो रुम्मान की पहाड़ी में थे  
१४ कहला भेजा और उन से कुशल का प्रचार किया । और उस समय विनयमीन फिर  
आये और उन्होंने ने उन स्त्रियों को जो यवीस जिलियद में से जीती वचा रक्खी  
१५ था उन्हें दिया तथापि उन के लिये न अटीं । और लोग विनयमीन के लिये पढ़-  
ताये क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल की गोष्टियों में फूट डाली ॥
- १६ तब मंडली के प्राचीन वाले कि उवरे दुर्यो के लिये पत्नियों के विषय में क्या  
१७ करें क्योंकि विनयमीन में से सारी स्त्री नष्ट हुईं । तब उन्होंने ने कहा कि विन-  
यमीन में से जो वच रहे हैं अवश्य है कि उन के लिये अधिकार होवे जिसमें  
१८ इसराएल की एक गोष्टी नष्ट न हो जावे । तथापि हम तो अपनी बेटियां उन्हें  
पत्नियों के लिये दे नहीं सक्ते क्योंकि इसराएल के संतानों ने यह कहके किरिया  
खाई है कि वह जो विनयमीन को पत्नी देवे सो सापित है ॥
- १९ तब उन्होंने ने कहा कि देखो सैला में परमेश्वर के लिये वस्स का पर्व है जो  
वैतएल की उत्तर अलंग को और उस राजमार्ग की पूरव अलंग जो वैतएल से  
२० सिकम को जाता है और लवोना के दक्षिण । इस लिये उन्होंने ने विनयमीन के  
संतानों को आज्ञा करके कहा कि जाओ और दाख की वारियों में घात में रहो ।  
२१ और देखते रहो और यदि सैला में की कन्या नाचने को बाहर आवें तो दाख  
की वारियों में से निकलो और हर एक पुरुष सैला की बेटियों में से अपनी पत्नी  
२२ के लिये पकड़े और विनयमीन के देश को जावे । और यों होगा कि जब उन के  
पिता अथवा भाई हमारे पास आके दोहाई देंगे तब हम उन्हें कहेंगे कि हमारे  
कारण उन पर कृपा कीजिये क्योंकि संग्राम में हम ने हर एक पुरुष के लिये पत्नी  
२३ न वचा रक्खी क्योंकि तुम ने उन्हें न दिया जिसमें दोषी होते । सो विनयमीन  
के संतानों ने ऐसा ही किया और अपनी गिनती के समान उन में से जो नाचती  
थीं एक एक पत्नी ले लिई और उन्हें लिये हुए अपने अधिकार को फिरे और  
२४ अपने नगरों को सुधारा और उन में वसे । और इसराएल के संतान उस समय  
घरों से चले और हर एक अपनी अपनी गोष्टी और अपने अपने घराने में और  
२५ अपने अपने अधिकार को गया । उन्हीं दिनों में इसराएल में कोई राजा न था  
जिस को जो अच्छा लगता था सो करता था ॥

अथ लैर और धूआं एक साथ नगर से उठे तो विनयमीनियों ने अपने पीछे दृष्टि  
 किई और व्या देखते हैं कि नगर से स्मर्या लें लैर उठ रही है । और जब इस- ४१  
 राएल के संतान फिरे तब विनयमीन के मनुष्य घबराये क्योंकि उन्हीं ने देखा कि  
 हम पर विपत्ति आ पहुंची । इस लिये उन्हीं ने इसराएलियों से भागके अरण्य का ४२  
 मार्ग लिया परन्तु संग्राम ने उन्हें जाही लिया और जो नगरों से निकल आये थे  
 उन्हीं ने अपने बीच में नाश किया । उन्हीं ने यों विनयमीनी को घेरा और खेडा ४३  
 और सृज से जियअः के सामने पूरव दिशा में लताड़ा । और अटारह सहस्र विन- ४४  
 यमीनी जूझ गये ये सब वीर थे । सो वे फिरे और रुस्मान की पहाड़ी की ओर ४५  
 अरण्य से भाग गये और उन्हीं ने राजमार्गों में चुन चुनके पांच सहस्र पुरुष मारे  
 और जिदऊन लें उन का पीछा किया और उन में से दो सहस्र और मारे । सो ४६  
 सब विनयमीनी जो उस दिन जूझे पचीस सहस्र खड्गधारी वीर थे । परन्तु छः सो ४७  
 मनुष्य वन की ओर फिरके रुस्मान पहाड़ी को भाग गये और चार मास रुस्मान  
 पहाड़ी में रहे ॥

तब इसराएल के मनुष्य विनयमीन के संतान पर फिरे और घसती के पुरुष ४८  
 और पशु और सब को जो उन के हाथ लगा तलवार की धार से मारा और जिस  
 जिस नगर में आये उसे फूंक दिया ॥

### इक्कीसवां पटल ।

अथ इसराएल के लोगों ने मिसफः में यह कष्टके किरिया खाई थी कि हम में १  
 से कोई अपनी बेटी पत्नी के लिये विनयमीन का न देगा । और लोग ईश्वर के २  
 मंदिर को आये और ईश्वर के आगे सांझ लें चिल्लाये और विलम्ब विलम्ब रोये ।  
 और बोले कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर इसराएल पर यह क्यों हुआ कि ३  
 इसराएल से आज के दिन एक गोष्टी घट गई । और यों हुआ कि विहान को ४  
 उठके उन लोगों ने वहां एक वेदी बनाई और बलिदान की भेंटें और कुशल की  
 भेंटें चढ़ाई ॥

और इसराएल के संतानों ने कहा कि मंडली में इसराएल की सारी गोष्टियों ५  
 में से परमेश्वर की मंडली के संग कौन कौन नहीं चढ़ा क्योंकि उन्हीं ने उस के  
 विषय में बड़ी किरिया खाई थी कि जो मिसफः में परमेश्वर के आगे न आवेगा ६  
 सो निश्चय मारा जावेगा । सो इसराएल के संतान अपने भाई विनयमीन के ६  
 कारण पड़ताये और बोले कि आज इसराएल में से एक गोष्टी कट गई । हम उन ७  
 के लिये पवित्रां कहां से लावें क्योंकि हम ने तो परमेश्वर की किरिया खाई है  
 कि हम अपनी बेटियों उन्हीं पवित्रों के लिये न देंगे । तब उन्हीं ने कहा कि ८  
 इसराएल का गोष्टियों में से वह कौन है जो मिसफः में परमेश्वर के आगे नहीं ९  
 चढ़ा और देखा कि यवीस जिलियद में से कोई सभा में नहीं आया था । क्योंकि ९  
 लोग गिन गये और यवीस जिलियद के वासियों में से कोई न था । तब मंडली १०  
 ने वारह सहस्र जन को जो बड़े वीर थे आज्ञा करके उधर भेजा कि यवीस  
 जिलियद के वासियों को जाके स्त्री और बालक सहित खड्ग की धार से मार ११  
 डालो । पर इतना कीजियो कि हर एक पुरुष और हर एक स्त्री को जो पुरुष से ११

१९ सो वे दोनों जाते जाते वैतलहम में आईं और यों हुआ कि जब वैतलहम में पहुंचीं तो उन के विषय में मारे नगर में घूम मची और लोग बोले कि क्या यह  
२० नशमी है । तब उस ने उन्हें कहा कि मुझे नशमी मत कहो मुझे मारः कहो  
२१ क्योंकि सर्वशक्तिमान ने अति कड़वाहट से मुझ से व्यवहार किया है । मैं भरी पूरी निकल गई और परमेश्वर मुझे झूठी फेर लाया मुझे नशमी क्यों कहते हो देखते हो कि परमेश्वर ने मेरे विरोध साक्षी दिई है और सर्वसामर्थी ने मुझे दुःख दिया है ॥

२२ सो नशमी अपनी बहू मोअवी रुत समेत मोअब के देश से फिर आई और जब की कटनी के आरंभ में वैतलहम में पहुंची ॥

दूसरा पर्व ।

१ और नशमी के पति का एक कुटुम्ब था जो इलीमलिक के घराने में बड़ा  
२ धनी था जिस का नाम बोआज था । और मोअवी रुत ने नशमी से कहा कि मुझे उस के खेत में जो मुझ पर कृपा करे अन्न बीजों को जाने दीजिये तब वह  
३ उम्मे बोली कि मेरी बेटी जा । सो वह गई और लवैयों के पीछे पीछे खेत में बीजों लगी और मंथान से वह इलीमलिक के कुटुम्ब बोआज के खेत में गई ॥

४ और देखो कि बोआज वैतलहम में से आ गया और लवैयों से बोला कि परमेश्वर तुम्हारे साथ और वे उत्तर देके उम्मे बोले कि परमेश्वर आप को बढ़ती  
५ देवे । फिर बोआज ने अपने सेवक से जो लवैयों पर था पूछा कि यह किस की कन्या है । तब जो सेवक लवैयों पर था सो उत्तर देके बोला कि वह मोअवी  
६ कन्या है जो मोअब के देश से निकलके नशमी के साथ फिर आई । और वह बोली मुझे लवैयों के पीछे पीछे गड्डों के बीच बीच में बीजों दीजिये सो वह आई  
७ और विहान से अब लों चनी रही और तनिक घर में ठहरी । तब बोआज ने रुत को कहा कि हे मेरी बेटी क्या तू नहीं सुनती है तू दूसरे खेत में अन्न बीजों  
८ न जा और यहां से मत जा परन्तु मेरी कन्यों से मिलची रह । तेरी आंखें उसी खेत पर होवें जो वे लवते हैं और उन के पीछे पीछे चली जा क्या मैं ने तरुणों को नहीं चिताया कि तुझे न बूँवें और जब तू पियासी होय तो पानों में से जाके  
९ प्री जो तरुणों ने खींचा है । तब उस ने अपने मुँह के बल भूमि पर मुकके दगड़वत किई और उम्मे बोली कि आप की दृष्टि में किस कारण मैं ने अनुग्रह  
१० पाया कि आप मेरी सुधि लेते हैं यद्यपि मैं परदेशिन हूँ । तब बोआज ने उत्तर देके उसे कहा कि जो तू ने अपने पति के मरने के पीछे अपनी सास से किया है रती रती मुझ पर प्रगट हुआ है कि तू ने अपने माता पिता को और अपनी जन्मभूमि को छोड़ा और इन लोगों में आई जिन्हें तू आगे न जानती थी ।  
११ परमेश्वर तेरे कार्य का प्रतिफल देवे और परमेश्वर इसराएल का ईश्वर जिस के  
१२ डैने के नीचे भरोसा रखने आई है तुझे परिपूर्ण पलटा देवे । तब वह बोली कि हे मेरे प्रभु आप की कृपा मुझ पर होवे क्योंकि आप ने मुझे शान्ति दिई है और इस लिये कि तू ने स्नेह से अपनी दासी से बातें किई यद्यपि मैं तेरी दासियों में  
१३ से एक के समान नहीं । फिर बोआज ने उसे कहा कि भोजन के समय मैं तू

# रुत की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

अथ न्यायियों की प्रभुता के दिनों में देश में अकाल पड़ा और यहूदाह वैतलहम १  
 में एक जन अपनी पत्नी और दो बेटे समेत निकला कि मोअव के देश में जा २  
 रहे । और उस पुरुष का नाम इलीमलिक और उस की पत्नी का नाम नअमी था ३  
 और उस के दो बेटों के नाम महलून और किलयून थे ये यहूदाह वैतलहम के ४  
 इफराती थे सो वे मोअव के देश में आये और बहाँ रहे ॥

तब नअमी का पति इलीमलिक मर गया और वह और उस के दोनों बेटे ५  
 रह गये । और उन दोनों ने मोअवी स्त्रियों से विवाह किया एक का नाम उरफः ६  
 और दूसरी का रुत था और वे उरम दम एक बहाँ रहे । और महलून और ७  
 किलयून भी दोनों मर गये सो वह स्त्री अपने दो बेटों से और पति से अकेली ८  
 छोड़ी गई ॥

तब वह अपनी बहूयों समेत उठी कि मोअव के देश से फिर जावे क्योंकि ९  
 उस ने मोअव के देश में सुना था कि परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा करके १०  
 उन्हें अन्न दिया । इस लिये वह उस स्थान से जहाँ थी अपनी दोनों बहूयों समेत ११  
 चल निकली और अपना मार्ग लिया कि यहूदाह के देश को फिर जावे । तब १२  
 नअमी ने अपनी दोनों बहूयों से कहा कि अपने अपने मैके को जाओ और जैसे १३  
 तुम ने मृतक से और सुक से व्यवहार किया वैसे ही परमेश्वर तुम पर अनुग्रह १४  
 करे । परमेश्वर ऐसा करे कि अपने अपने पति के घर में चियाम पाओ तब उस १५  
 ने उन्हें चूमा और उन्हीं ने चिल्लाके विलाप किया । फिर उन्हीं ने उसे कहा कि १६  
 हम तो निश्चय तेरे साथ तेरे लोगों में फिर जावेंगी ॥

और नअमी वाली मेरी बेटियो फिर जाओ मेरे साथ किस लिये जाओगी क्या १७  
 मेरी कोख में और बेटे हैं कि तुम्हारे पति होवें । मेरी बेटियो फिर जाओ क्यों- १८  
 कि पति करने को मैं अति बृद्ध हूँ यदि मैं कहूँ कि मेरी आशा है और आज रात १९  
 पति करूँ और बेटे जूँ । तो क्या तुम उन के सपाने होने लो आशा रखतीं और २०  
 पति करने से उन के लिये ठहरतीं नहीं मेरी बेटियो मैं तुम्हारे लिये निपट दुःखी २१  
 हूँ क्योंकि परमेश्वर का हाथ मेरे विरोध पर निकला । तब वे फिर चिल्लाके रोई २२  
 और उरफः ने अपनी सास का चूमा लिया परन्तु रुत उससे लपटी रही ॥

तब वह वाली कि देख तेरे भाई की पत्नी अपने लोगों और अपने देवतों २३  
 कने फिर गई तू भी अपने भाई की पत्नी के पीछे फिर जा । पर रुत वाली मुझे २४  
 आप से छोड़के फिर जाने को मत मना क्योंकि जिधर तू जावेंगी मैं भी जाऊँगी २५  
 और जहाँ तू रहेगी रहूँगी तेरे लोग मेरे लोग और तेरा ईश्वर मेरा ईश्वर । २६  
 जहाँ तू मरेगी मैं मरूँगी और वहाँ गाड़ी जाऊँगी ईश्वर मुझ से ऐसा ही करे २७  
 और उससे अधिक यदि केवल मृत्यु मुझे तुझ से अलग करे । जब उस ने देखा २८  
 कि उस का मन उस के साथ जाने पर दृढ़ है तब वह चुप हो रही ॥



और तू अपनी दासी पर अपने अंचल फैला क्योंकि तू कुड़ानेवाला कुटुम्ब है ।  
 १० और उस ने कहा कि हे मेरी बेटी तू ईश्वर की धन्य तू ने आरंभ से अंत को  
 सुभ्र पर अधिक कृपा किई है इस कारण कि तू ने तरुणों का पीछा न किया चाहे  
 ११ कंगाल चाहे धनवान हो । और अब हे मेरी बेटी मत डर जो कुछ तू चाहती है मैं  
 १२ सब तुझ से करूंगा क्योंकि लोगों का सारा नगर जानता है कि तू धर्मी स्त्री है । और  
 अब यह सच है कि मैं कुड़ानेवाला कुटुम्ब हूँ तथापि एक कुड़ानेवाला कुटुम्ब  
 १३ सुभ्र से अधिक समीपी है । आज रात ठहर जा और विद्वान को ऐसा होगा कि  
 यदि नाते का व्यवहार पूरा करे तो भला नाते का व्यवहार करे और यदि  
 वह नाते का व्यवहार तुझ से न करे तो परमेश्वर के जीवन में मैं नाते का  
 व्यवहार तुझ से करूंगा सो विद्वान लों लेटी रह ॥

१४ सो वह विद्वान लों उस के पांच पास पड़ी रही और उससे पहिले उठी कि  
 एक दूसरे को चीन्ह सके तब उस ने कहा कि कोई जान्ने न पावे कि कोई स्त्री  
 १५ खलिहान में आई थी । फिर उस ने यह भी कहा कि अपनी आंखों को धम और  
 जब उस ने धरा तो उस ने हः नपुआ जब उस पर डाल दिये और वह नगर  
 को गई ॥

१६ और जब वह अपनी सास पास आई तब वह बोली हे बेटी तू कौन और  
 १७ जो कुछ कि उस पुरुष ने उससे किया था उस ने सब वर्णन किया । और कहा कि  
 मुझे उस ने यह हः नपुआ जब दिया क्योंकि उस ने मुझे कहा कि तू अपनी सास  
 १८ पास झूँकी मत जा । तब उस ने कहा कि हे मेरी बेटी जब लों इस बात का  
 अंत न देख ले तब लों चुपकी रह क्योंकि जब लों आज इस बात को समाप्त न  
 कर ले वह पुरुष चैन न करेगा ॥

चौथा पर्व ।

१ तब वोआज फाटक पर चढ़ गया और वहां जा बैठा और क्या देखता है कि  
 जिस कुड़ानेवाले कुटुम्ब के विषय में वोआज ने कहा था वह आया जिसे उस ने  
 कहा कि अहो अमुक आइये एक अलंग हो बैठिये सो वह एक अलंग जा बैठा ।  
 २ तब उस ने नगर के दस प्राचीन बुलाये और कहा कि यहां बैठिये सो वे बैठ  
 ३ गये । और उस ने उस कुड़ानेवाले कुटुम्ब को कहा कि नअमी जो मोअब के  
 देश से फिर आई है भूमि का एक टुकड़ा बेचती है जो हमारे भाई इलीमलिक  
 ४ का था । सो यह कहके मैं ने तुम्हें चिताने चाहा कि निवासियों के आगे और  
 मेरे लोगों के प्राचीनों के आगे उसे मोल ले यदि तू कुड़ावे तो कुड़ा और यदि  
 न कुड़ावे तो मुझे कह जिसमें मैं जानूँ क्योंकि तुम्हें छोड़ कोई कुड़वैया नहीं और  
 ५ तेरे पीछे मैं हूँ तब वह बोला कि मैं कुड़ाऊंगा । तब वोआज ने कहा कि जिस  
 दिन तू वह खेत नअमी से मोल लेवे तब रुत मोअबी से भी जो मृतक की पत्नी  
 है मोल लेना तुम्हें अवश्य है और मृतक का नाम उस के अधिकार पर ठहरावे ।  
 ६ तब उस कुड़ानेवाले कुटुम्ब ने कहा कि मैं अपने लिये कुड़ा नहीं सक्ता न हो कि  
 मैं अपना अधिकार बिगाड़ूँ सो तू अपने लिये मेरा पद कुड़ा क्योंकि मैं कुड़ा नहीं  
 ७ सक्ता । और सब बात को दृढ़ करने के लिये आगले समय में पलटने और कुड़ाने

झुंघर आ और रोटी खा और और को मिरके मैं चमेर तब वह लवैयां के पीछे  
वैठ गई और उस ने उसे चबेना दिया और वह खाके तृप्त हुई और कुछ छोड़  
दिया । और जब वह बीने को उठी तब वोआज ने अपने तरुणों को आज्ञा १५  
करके कहा उसे गह्रों की के बीच में बीने देखो और उसे लज्जित न करो । और १६  
जान वृक्षके उस के लिये सुट्टी भर भर गिरा भी देखो और छोड़ देखो जिसमें वह  
बीने और उसे कोई न झिड़के । सो वह सांभ लीं खेत में बीनती रही और जो १७  
कुछ उस ने बीना था सो भाड़ा और वह जब चार पसेरी से ऊपर हुआ ॥

सो वह उसे उठाके नगर में गई और जो कुछ उस ने बीना था सो उस की १८  
मास ने देखा और तृप्त होने के पीछे जो कुछ उस ने रख छोड़ा था सो निकालके  
अपनी मास को दिया । तब उस की मास ने पूछा कि तू ने आज कहाँ बीना है और १९  
कहाँ परिश्रम किया धन्य है वह जिस ने तेरी मुधि लिई तब उस ने जिस के  
यहाँ परिश्रम किया था अपनी मास को बताके कहा कि जिस के यहाँ मैं ने आज  
परिश्रम किया है उस का नाम वोआज है । तब नयमी ने अपनी बहू से कहा २०  
कि वह परमेश्वर से धन्य होवे जिस ने जीवतों और मृतकों से अपना अनुग्रह  
न उठाया और नयमी ने उसे कहा कि वह जन हमारा कुटुम्ब है वह हमारा  
एक समीपी कुटुम्ब । और सोअबो रत बोली कि उस ने मुझे यह भी कहा कि २१  
जब लों मेरी समस्त लवनी न हो जावे तू मेरे तरुणों के पास पास रहियो ।  
तब नयमी ने अपनी बहू से कहा कि मेरी बेटो भला है कि तू उस की कन्यों २२  
के साथ साथ जाया करे जिसमें वे किसी दूसरे खेत में तुम्हें न पावें । सो वह २३  
जब और गोहूँ की लवनी के अंत्य लों वोआज की कन्यों के साथ पिलवरी रही  
और अपनी मास के साथ रहती थी ॥

### तीसरा पद्य ।

तब उस की मास नयमी ने उसे कहा कि हे मेरी बेटो क्या मैं तेरा चैन न १  
घाहूँ जिस में तेरा भला होवे । सो अब क्या वोआज हमारा कुटुम्ब नहीं जिस २  
की कन्यों के साथ तू थी देख वह आज रात खलिहान में जब ओसावता है ।  
सो तू स्नान कर और चिकनाई लगा और अपना वस्त्र पहिन और खलिहान को ३  
उतर जा जब लों वह खा पी न चुके तब लों आप को उस पुरुष पर प्रगट मत  
कर । और ऐसा हो कि जब वह लेट जावे तब तू उस के शयनस्थान को देख ४  
रख और भीतर जाके उस के पाँव को उधार और वहाँ लेट जा और जो कुछ  
तुम्हें करना है वह सब बतावेगा । और उस ने उसे कहा कि जो तू मुझे कहती है ५  
मैं सब करूंगी ॥

सो वह खलिहान को उतर गई और जो कुछ कि उस की मास ने आज्ञा ६  
किई थी उस ने किया । और जब वोआज खा पी चुका और उस का मन मगन ७  
हुआ तब अब्र के ढेर की एक अलंग जाके लेट गया तब उस ने हौले हौले आके  
उस के पाँव को उधारा और लेट गई । और ऐसा हुआ कि आधी रात को उस ८  
पुरुष ने डरके करघट लिई और क्या देखता है कि एक स्त्री उस के पाँव पास  
पड़ी है । तब उस ने पूछा कि तू कौन है और वह बोली कि मैं तेरी दासी रत ९

# समूएल की पहिली पुस्तक ।

पहिला पद्य ।

- १ और इफरायम पछाड़ के सामातयम मूफीम का एक जन था वह मूफ इफराती के बेटे तुहु का बेटा बलिहू का बेटा यरुहम का बेटा था और उस का नाम
- २ एलकाना था । और उस की दो पत्नियां थीं एक का नाम हन्ना और दूसरी का फनीनः और फनीनः के बालक थे परन्तु हन्ना के बालक न थे ॥
- ३ और वह जन बरस बरस अपने नगर से जाके सैला में सेनाओं के परमेश्वर के आगे सेवा करके बलि चढ़ाता था और एली के दो बेटे हफनी और फीनिहास
- ४ वहां परमेश्वर के याजक थे । और ऐसा हुआ कि जब एलकाना भेंट चढ़ाता था तब वह अपनी पत्नी फनीनः को और उस के सब बेटों और बेटियों को
- ५ भाग देता था । परन्तु हन्ना को दुहरा भाग दिया करता था क्योंकि वह हन्ना से
- ६ प्रीति रखता था परन्तु परमेश्वर ने उस की कोख बंद कर रखी थी । और उस की सौत उसे कुढ़ाने के लिये अत्यंत विभाती थी इस कारण कि परमेश्वर
- ७ ने उस की कोख बंद कर रखी थी । और बरस बरस वह परमेश्वर के मंदिर में जाता था उसी रीति से वह उसे विभाती थी सो वह रोया करती और कुह
- ८ न खाती थी । तब उस के पति एलकाना ने उसे कहा कि हे हन्ना तू क्यों विलाप करती है और क्यों नहीं खाती है और तेरा मन क्यों शोकित है क्या तेरे लिये मैं दस बेटों से अच्छा नहीं ॥
- ९ और जब वे सैला में ग्या पी चुके तो हन्ना उठी और उस समय एली याजक
- १० परमेश्वर के मंदिर के खंभे पास बैठक पर बैठा हुआ था । और उस ने मन के
- ११ शोक से परमेश्वर की प्रार्थना किई और बिलख बिलख रोई । और उस ने मनोती मानके कहा कि हे सेनाओं के परमेश्वर यदि तू अपनी दासी के कष्ट पर दृष्टि करे और मेरी मुधि लेवे और अपनी दासी को भूल न जावे परन्तु अपनी दासी को पुत्र देवे तो मैं उसे जीवन भर परमेश्वर के लिये समर्पण करूंगी और उस के सिर पर कुरा न फिरेगा ॥
- १२ और यों हुआ कि जब वह परमेश्वर के आगे प्रार्थना कर रही थी तब एली
- १३ उस के सुंह को देख रहा था । अब हन्ना मन ही मन कह रही थी केवल उस के होंठ हिलते थे परन्तु उस का शब्द सुना न जाता था इस लिये एली समझा
- १४ कि वह अमल में है । और एली ने उसे कहा कि कब लों तू मतवाली रहेगी
- १५ अपनी मदिरा अपने से दूर कर । तब हन्ना ने उत्तर देके कहा कि नहीं मेरे प्रभु मेरा मन दुःखी है मैं ने मदिरा अथवा अमल नहीं पीया परन्तु अपने मन को
- १६ परमेश्वर के आगे बहा दिया है । आप अपनी दासी को बलीबाल की पुत्री मत जानिये क्योंकि मैं अपने ध्यान और शोक की अधिकाई से अब लों वाली हूं ।
- १७ तब एली ने उत्तर देके कहा कि कुशल से जा और इसराएल का ईश्वर तेरी
- १८ प्रार्थना जो तू ने उससे किई पूरी करे । तब उस ने कहा कि तेरी दासी तेरी दृष्टि

के विषय में इसराएल में यह व्यवहार था कि मनुष्य अपना जूता उतारके अपने परोसी को देता था और इसराएल में यही सान्नी थी । सो उस कुड़ानेवाले ८ कुटुम्ब ने वोआज को कहा कि तू अपने लिये मोल ले तब उस ने अपना जूता उतारा ॥

और वोआज ने प्राचीनों को और सारे लोगों को कहा कि तुम आज सान्नी ९ हो कि मैं ने इलीमलिक और किलयून और महेलून का सब कुछ नअमी के हाथ से मोल लिया । और उस्से अधिक मैं ने महेलून की पत्नी मोअवी रुत को अपनी १० पत्नी के लिये मोल लिया जिसमें मृतक के नाम को उस के अधिकार में स्थिर कहें कि मृतक का नाम अपने भाइयों से और अपने स्थान के फाटक में से मिट न जावे तुम आज के दिन सान्नी हो । तब सारे लोगों ने जो फाटक पर थे और ११ प्राचीनों ने कहा कि हम सान्नी हैं परमेश्वर इस स्त्री को जो तेरे घर में आई है राखिल और लिषाह के समान करे जिन दोनों ने इसराएल के घरानों को घनाया सो तू इफराता में भाग्यवान हो और अपना नाम बैतलहम में प्रचार कर । और तेरा घर जिसे परमेश्वर इस कन्या के वंश से तुझे देगा फाड़स के १२ घर के समान होवे जिसे तामर यहदाह के लिये जनी ॥

तब वोआज ने रुत को लिया और वह उस की पत्नी हुई और जब उस ने १३ उसे ग्रहण किया तब वह परमेश्वर के अनुग्रह से गर्भिणी हुई और बेटा जनी । और स्त्रियों ने नअमी से कहा कि परमेश्वर धन्य है जिस ने तुझे आज के दिन १४ बिना कुड़ानेवाला कुटुम्ब न छोड़ा जिसमें उस का नाम इसराएल में प्रसिद्ध होवे । और वह तेरे जीवन के बढ़ाने का कारण और तेरे दुड़ापे के पालने का १५ कारण होगा क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से प्रीति रखती है जो सात बेटों से तेरे लिये भली है उस के लिये जनी है । और नअमी ने उस बालक को लिया और १६ उसे अपनी गोद में रक्खा और उस की दूदा हुई । तब उस की परोसिन उस १७ का नाम लेकर बोलीं कि नअमी का बेटा उत्पन्न हुआ और उन्होंने ने उस का नाम आविद रक्खा वह यस्सी का पिता दाऊद का पिता ॥

सो फाड़स की वंशावली यह है कि फाड़स से इसरून उत्पन्न हुआ । और १८ इसरून से राम उत्पन्न हुआ और राम से अम्मिनदब उत्पन्न हुआ । और अम्मिनदब २० से नहमून उत्पन्न हुआ और नहमून से सलमून उत्पन्न हुआ । और सलमून से वोआज २१ उत्पन्न हुआ और वोआज से आविद उत्पन्न हुआ । और आविद से यस्सी उत्पन्न २२ हुआ और यस्सी से दाऊद उत्पन्न हुआ ॥

और विभव के सिंहासन का अधिकारी करता है क्योंकि भूमि के खंभे परमेश्वर के हैं और उस ने जगत को उन पर धरा है । वह अपने सिद्धों के चरणों की रक्षा करेगा और दुष्ट अधियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे क्योंकि बल से कोई न जीतेगा ।  
 १० परमेश्वर के वैरी चूर होंगे स्वर्ग से वह उन पर गर्जेंगा परमेश्वर पृथिवी के अंत का न्याय करेगा और वह अपने राजा को बल देगा और अपने अभिप्रेत के सींग को उभारेगा ॥

११ तब एलकाना अपने घर रामात को गया और वह लड़का एली याजक के आगे परमेश्वर की सेवा करता रहा ॥

१२ अब एली के बेटे जो दुष्ट जन थे परमेश्वर को पहिचानते न थे । और लोगों से याजकों की यह रीति थी कि जब कोई बलि चढ़ाता था और जब लों मांस उसना जाता था याजक का सेवक त्रिशूली मांस की कंटिया हाथ में लेके आता था । और उसे कड़ाही अथवा बटलोही अथवा दण्डा अथवा हांडी में लगाता था जितना उस कांटे में निकलता था याजक आप लेता था सो वे सारे इसरा-  
 १३ एलियों से जो वहां सैला में जाते थे योंही करते थे । चिकनाई जलाने से आगे भी याजक का सेवक आता था और बलि के चढ़वैये से कहता था कि भूने के लिये याजक को मांस देओ क्योंकि वह तुम्ह से सिंभाया हुआ मांस न लेगा परन्तु  
 १४ कच्चा । और यदि कोई उसे कहता कि हम अभी चिकनाई जला लेवें तब जितना तेरा जी चाहे उतना लेना तब वह उत्तर देता था कि नहीं तू मुझे अभी दे  
 १५ नहीं तो मैं छीन लेजंगा । इस लिये परमेश्वर के आगे उन तरुणों का महा पाप था क्योंकि लोग परमेश्वर की भेंट से धिन करते थे ॥

१६ परन्तु वह बालक समूहल सूती अफूद पहिने हुए परमेश्वर के आगे सेवा करता था । और उसे अधिक उस की माता एक छोटा कुरता बनाके बरस बरस जब अपने पति के साथ भेंट चढ़ाने आती थी उस के लिये लाया करती थी । सो एली ने एलकाना और उस की पत्नी को आशीस देके कहा कि परमेश्वर इस उधार की संती जो परमेश्वर को उधार दिया गया तुम्हें इस स्त्री से वंश देवे और वे अपने स्थान को गये । क्योंकि हन्ना पर परमेश्वर की कृपा हुई यहां लों कि वह गर्भिणी हुई और तीन बेटे और दो बेटियां जनी और वह बालक समूहल परमेश्वर के आगे बढ़ा हुआ ॥

२२ अब एली अति बृद्ध हुआ और उस ने सब कुछ सुना जो उस के बेटे समस्त इसराएलियों से करते थे और किस रीति से वे उन स्त्रियों से कुकर्म करते थे जो  
 २३ जथा की जथा मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी होती थीं । और उस ने उन्हें कहा कि तुम यह क्या करते हो क्योंकि मैं तुम्हारी बुराइयां इन सब लोगों से सुनता हूं । यह अच्छा नहीं है मेरे बेटो जो मैं सुनता हूं सो भला नहीं तुम पर-  
 २४ मेश्वर के लोगों से पाप कराते हो । यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के विरोध में पाप करे तो न्यायी विचार करेगा परन्तु यदि कोई परमेश्वर के विरोध में पाप करे तो उस के लिये कौन बिनती करेगा तिस पर भी उन्होंने ने अपने पिता का कदा न माना क्योंकि परमेश्वर उन्हें घात किया चाहता था ॥

में अनुग्रह पावे तब वह स्त्री चली गई और खाया और फिर उस का सुंदर उदाम न हुआ ॥

और वे विद्यान को तड़के उठे और परमेश्वर के आगे दण्डवत किई और १९  
फिरे और रामात में अपने घर आये और एलकाना ने अपनी पत्नी चन्ना को ग्रहण  
किया तब परमेश्वर ने उसे स्मरण किया । और कितने दिन बीते ऐसा हुआ कि चन्ना २०  
गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस का नाम इस कारण समूहल रक्खा कि  
मैं ने उसे परमेश्वर से मांगा है ॥

और एलकाना अपने समस्त घर समेत चढ़ गया कि व्रम का वनिदान और २१  
मैनाती परमेश्वर के आगे चढ़ावे । परन्तु चन्ना ऊपर न गई क्योंकि उस ने अपने २२  
पति से कहा कि जब लों बालक का दूध बढ़ाया न जावे मैं यहीं रहूंगी और तब  
उसे ले जाऊंगी जिसमें वह परमेश्वर के आगे दिग्बाध देवे और सदा उर्ध्व रहे ।  
तब उस के पति एलकाना ने उसे कहा कि जो तुम्हें भला लगे सो कर तू उस २३  
का दूध बढ़ाने लों ठहरी रह केवल परमेश्वर अपने वचन को स्थिर करे सो वह  
स्त्री ठहरी गयी और जब लों उस का दूध न बढ़ाया गया तब लों अपने बेटे को  
दूध पिलाया किई ॥

और जब उस का दूध बढ़ाया गया तो उसे अपने माथ ले चनी और तीन २४  
घैल और आधे मन से ऊपर पिमान और एक कुप्पा मंदिरा अपने माथ लिया और  
उसे मैला में परमेश्वर के मंदिर में लाई और बालक छोटा था । तब उन्हीं ने २५  
एक घैल को बलि किया और बालक को गली पाम लाये । और वाली कि हे २६  
मेरे प्रभु तेरे जीवन में मैं वही स्त्री हूं जिस ने तेरे पास परमेश्वर के आगे यहां  
खड़ी टाके प्रार्थना किई थी । मैं ने इस बालक के लिये प्रार्थना किई थी सो २७  
परमेश्वर ने मेरी दिनती जो मैं ने उससे किई थी ग्रहण किई । सो इस लिये मैं २८  
ने इसे दिनती से पाके परमेश्वर को फेर दिया जब लों वह जीता है परमेश्वर  
का दिया रहे और उस ने यहां परमेश्वर को दण्डवत किई ॥

दूसरा पृष्ठ ।

तब चन्ना ने प्रार्थना करके कहा कि मेरा मन परमेश्वर से आनन्द है परमेश्वर १  
से मेरा सींग बढ़ाया गया अनुन के साम्ने बोलने को मेरा सुंदर बड़ गया क्योंकि मैं  
तेरी मुक्ति में आनन्दित हूं । परमेश्वर के तुल्य कोई पवित्र नहीं क्योंकि तुम्हें छोड़ २  
कोई नहीं और कोई चटान हमारे ईश्वर के समान नहीं । अति घमंड की बातें ३  
मत कहो अहंकार तुम्हारे सुंद से न निकले क्योंकि परमेश्वर ज्ञान का सर्वशक्ति-  
मान है और करणी उससे जांची जाती हैं । बलवर्तों के धनुष टूट गये और ४  
टोकर खाये हुआ की कटि दृढ़ता से बंध गई । वे जो नृप थे उन्हीं ने अपने ५  
को यनी में लगाया है और जो भूमे थे उन्हीं ने उससे छाथ उठाया यहां लों कि  
वांछ सात जनी और जिस के बहुत बालक हैं सो दुर्बल हुई । परमेश्वर मारता ६  
है और जिलाता है समाधि में उतारता है और उठाता है । परमेश्वर कंगाल ७  
करता है और धनी बनाता है घटाता है और बढ़ाता है । वह कंगाल को धूल ८  
से उठाता है कुश्रों में बैठाने के लिये भिखारी को कूड़े की ढेर से उठाता है ९



क्योंकि तू ने मुझे बुलाया और उस ने उत्तर दिया कि हे पुत्र मैं ने नहीं बुलाया  
 ७ फिर जा लेट रह । और समूएल अब लों परमेश्वर को न जानता था और न  
 ८ परमेश्वर का वचन उस पर प्रगट हुआ था । तब परमेश्वर ने तीसरे बार समूएल  
 को फिर पुकारा और वह उठके एली पास गया और कहा कि मैं यहीं हूँ क्योंकि तू  
 ९ ने मुझे बुलाया सो एली ने ब्रूभा कि इस बालक को परमेश्वर ने पुकारा है । तब  
 एली ने समूएल को कहा कि जा पड़ रह और यों होगा कि यदि तुझे पुकारे तो  
 कहियो कि हे परमेश्वर कह क्योंकि तेरा दास सुनता है सो समूएल अपने स्थान  
 १० पर जाके लेट रहा । और परमेश्वर आके खड़ा हुआ और आगे की नाईं पुकारा  
 समूएल समूएल तब समूएल ने उत्तर दिया कि कहिये क्योंकि तेरा दास सुनता है ॥  
 ११ तब परमेश्वर ने समूएल से कहा कि देख मैं इसराएल में ऐसा कार्य करूंगा  
 १२ जिससे सब सुनवैयों के कान भंभना उठेंगे । मैं उस दिन सब कुछ जो मैं ने एली  
 के घराने के विषय में कहा है पूरा करूंगा जब मैं आरंभ करूंगा तब समाप्त भी  
 १३ करूंगा । क्योंकि मैं ने उसे कहा है कि मैं उस घुराई की संती जो वह जानता  
 है उस के घर का न्याय करूंगा इस कारण कि उस के बेटों ने आप को सापित  
 १४ किया है और उस ने उन्हें न घुरका । सो इस लिये एली के घर के विषय में मैं  
 ने किरिया खाई है कि एली के घर का पाप बलिदानों और भेंटों से कधी पावन  
 न किया जावेगा ॥  
 १५ तब समूएल विहान लों पड़ा रहा और उस ने ईश्वर के मंदिर के द्वारों को  
 १६ खोला और समूएल उस दर्शन को एली पर प्रगट करने से डरा । तब एली ने  
 समूएल को बुलाया और कहा कि हे मेरे बेटे समूएल तब वह बोला कि मैं यहीं  
 १७ हूँ । तब उस ने कहा कि वह क्या वचन है जो उस ने तुझे कहा है मुझ से मत  
 छिपा यदि तू इस में से कुछ छिपावे जो उस ने तुझे कहा है तो ईश्वर तुझ से  
 १८ ऐसा ही करे और अधिक । तब समूएल ने उससे सारी बातें कहीं और कुछ न  
 छिपाया तब वह बोला कि वह परमेश्वर है जो भला जाने सो करे ॥  
 १९ और समूएल बड़ा और परमेश्वर उस के साथ था और उस ने उस की कोई  
 २० बात भूमि पर अकारण गिरने न दीई । और दान से लेके विअरसवअ लों समस्त  
 २१ इसराएल जान गये कि समूएल परमेश्वर का आगमज्ञानी स्थिर हुआ । और परमे-  
 श्वर मैला में फेर प्रगट हुआ क्योंकि परमेश्वर ने अपने को मैला में समूएल पर  
 अपने वचन के द्वारा से प्रगट किया ॥

#### चौथा पर्व ।

- १ और समूएल की बात सारे इसराएल को पहुंची और इसराएल फिलिस्तिनों  
 से संग्राम करने को निकले और अबनअजर के पास डेरा खड़ा किया और फिलि-  
 २ स्तिनों ने आफ्रीक में डेरा खड़ा किया । और फिलिस्तिनों ने इसराएल के आगे  
 पांती बांधी और जब संग्राम फैल गया तब इसराएल फिलिस्तिनों के आगे मारे  
 गये और उन्होंने ने सेना में से चार सहस्र मनुष्य चौगान में मारे ॥
- ३ और जब लोग छावनी में आये तब इसराएल के प्राचीनों ने कहा कि परमे-  
 श्वर ने आज हमें फिलिस्तिनों के आगे क्यों ध्वस्त किया आओ परमेश्वर की

और वह लड़का समूहल बढ़ता गया और परमेश्वर के और लोगों के आगे २६ अनुग्रह पाया ॥

तब ईश्वर का एक जन सली पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों २७ कहता है कि क्या मैं तेरे पिता के घराने पर जब वह मिस्र में फिरजन के देश में था प्रगट न हुआ । और क्या मैं ने उसे इसराएल की समस्त गोष्टियों से चुन न लिया २८ कि मेरा याजक होवे और मेरी वेदी पर बलिदान चढ़ावे और सुगंध जलावे और मेरे आगे अफूद पहिने और घास की मारी भेंट जो इसराएल के संतान चढ़ाते हैं मैं ने तेरे पिता के घराने को नहीं दिया । तुम काहे को मेरे बलिदानों को २९ और मेरी भेंटों को जो मैं ने अपने निधाम में आजा किई हैं लताड़ते हो और तू अपने वेदों को मुझ से अधिक प्रतिष्ठा देता है कि मेरे लोग इसराएल के संतान की भेंटों से मोटे बने । सो परमेश्वर इसराएल का ईश्वर कहता है कि मैं ने ३० निश्चय कहा था कि तेरा घर और तेरे पिता का घर सदा मेरे आगे चले परन्तु अब परमेश्वर कहता है कि यह मुझ से दूर होवे क्योंकि जो मुझे प्रतिष्ठा देते हैं मैं उन्हें प्रतिष्ठा देऊंगा और जो मेरी निन्दा करते हैं सो निन्दित होंगे । देखो वे ३१ दिन आते हैं कि मैं तेरी भुजा और तेरे पिता के घराने की भुजा काट डालूंगा कि तेरे घर में कोई बूढ़ा न होगा । और समस्त समय में कि परमेश्वर इसराएल ३२ पर भलाई करेगा तू मंदिर में अपना चर देवेगा और तेरे वंश में कभी कोई बृद्ध न होगा । और तेरा वह जन जिसे मैं अपनी वेदी में से काट न डालूंगा ३३ तेरी आंखें फोड़ेगा और तेरे मन को शोकित करेगा और तेरे घर की बढ़ती तन-याई में मर जावेगी । कि तेरे दोनों वेदों हफनी और फीनिहाम पर यह पड़ेगा ३४ तेरे लिये यह प्रता है कि एक ही दिन में दोनों के दोनों मर जावेंगे । और मैं ३५ अपने लिये एक विश्वासमय याजक उठाऊंगा जो मेरे मन के और मेरे अंतःकरण के समान करेगा और उस के लिये मैं एक घर स्थिर करूंगा और वह सदा मेरे अभिषिक्त के आगे चलेगा । और ऐसा होगा कि हर एक जन जो तेरे घर में ३६ बच रहेगा एक टुकड़ा चांदी और एक एक कौर रोटी के लिये उस के पीछे फिरेगा और कहेगा कि उन याजकों में से मुझे एक की सेवा दोजिये कि मैं एक टुकड़ा रोटी खाया करूं ॥

### तीसरा पृष्ठ ।

और वह बालक समूहल सली के आगे परमेश्वर की सेवा करता था और १ उन दिनों में ईश्वर का वचन बहुमूल्य था कोई प्रगट दर्शन न होता था । और २ ऐसा हुआ कि जब सली अपने स्थान में लेटा था और उस की आंखें धुंधली होने लगीं ऐसा कि वह देख न सक्ता था । जहां ईश्वर की मंजूषा थी तहां परमेश्वर ३ के मंदिर का दीपक अब लो न हुआ था और समूहल लेट गया था । कि परमे- ४ श्वर ने समूहल को पुकारा और उस ने कहा कि मैं यहीं हूं । और सली पास ५ दौड़के कहा कि मैं यहीं हूं क्योंकि तू ने मुझे पुकारा है तब वह बोला कि मैं ने नहीं पुकारा फिर जा लेट रह सो वह जाके लेट गया । और परमेश्वर ने समूहल ६ को फेर पुकारा और समूहल उठके सली पास गया और बोला कि मैं यहीं हूं

२० पीड़ा आन पहुंची । और उस के मरते मरते उन स्त्रियों ने जो उस पास खड़ी थीं उसे कहा कि मत डर क्योंकि तू घेटा जनी है परन्तु उस ने उत्तर न दिया न मुरत  
 २१ लगाई । और उस ने यह कहेके उस बालक का नाम इकायोद रक्खा और बोली कि विभव इसराएल में से जाता रहा इस लिये कि परमेश्वर की मंजूपा लिई गई और उस के ससुर और उस के पति चल वसे । और यह बोली कि विभव इसराएल से जाता रहा क्योंकि ईश्वर की मंजूपा लिई गई ॥

पांचवां पर्व ।

१ और फिलिस्ती परमेश्वर की मंजूपा को अथनअजर से लेके अशदूद को आये ।  
 २ और जब फिलिस्ती परमेश्वर की मंजूपा को ले गये तब उन्होंने उसे दागून के मंदिर में पहुंचाया और उसे दागून के पास रक्खा । और जब अशदूदो विहान को तड़के उठे तो क्या देखते हैं कि दागून परमेश्वर की मंजूपा के आगे मुंह के बल भूमि पर गिरा है सो उन्होंने दागून को उठाके उस के स्थान पर फिर रक्खा ।  
 ४ फिर जब वे तड़के विहान को उठे तब क्या देखते हैं कि दागून परमेश्वर की मंजूपा के आगे मुंह के बल भूमि पर पड़ा है और दागून का सिर और दोनों  
 ५ हथेलियां कटी हुईं डेवड़ी पर पड़ी हैं केवल दागून का धड़ रह गया था । इस लिये दागून के याजक और वे जो उस के मंदिर में जाते हैं दागून की डेवड़ी पर आज लों पांव नहीं धरते ॥  
 ६ परन्तु परमेश्वर का हाथ अशदूदियों पर भारी पड़ा था और उस ने उन्हें नाश  
 ७ किया और अशदूद को और उस के सिवानों को बबेसी से मारा । और जब अशदूदियों ने यह देखा तब बोले कि इसराएल के ईश्वर की मंजूपा हमारे साथ न रहेगी क्योंकि उस का हाथ हम पर और हमारे देव दागून पर  
 ८ पड़ा है । सो उन्होंने फिलिस्तियों के सारे प्रधानों को बुला भेजा और कहा कि हम इसराएल के ईश्वर की मंजूपा को क्या करें तब वे बोले कि आओ इसराएल के ईश्वर की मंजूपा को जात को ले जावें सो वे इसराएल के ईश्वर की  
 ९ मंजूपा को वहां ले गये । और उस के ले जाने के पीछे ऐसा हुआ कि परमेश्वर का हाथ अत्यंत नाश करने को उस नगर के विरोध में पड़ा और उस ने उस नगर के लोगों को कोटे से लेके बड़े लों मारा और उन के गुप्ते में बबेसी का लोहू बहने लगा ॥  
 १० तब उन्होंने ईश्वर की मंजूपा अकरून में पहुंचाई और अकरूनी चिल्लाके बोले कि वे इसराएल के ईश्वर की मंजूपा को इस लिये हमें लाये हैं कि हमें  
 ११ और हमारे लोगों को घात करें । सो उन्होंने भेजके फिलिस्तियों के प्रधानों को एकट्ठे किया और कहा कि इसराएल के ईश्वर की मंजूपा को जहां से वह आई वहीं फेर भेजो जिसमें वह हमें और हमारे लोगों को घात न करे क्योंकि सारे  
 १२ नगर में मारू हुलुड़ हुआ और परमेश्वर का हाथ उन पर भारी था । और जो मर न गये सो बबेसी से रोगी थे और नगर का बिलाप स्वर्ग लों पहुंचा था ॥

छठवां पर्व ।

१ सो परमेश्वर की मंजूपा सात मास लों फिलिस्तियों के देश में थी । तब

मात्मी की मंजूपा मैला से अपने पास ले आये कि जब वह हमें आये वह हमें  
 घोरियों के हाथ से बचावे । मेा उन्होंने ने मैला में लगा भेजे जिनमें वहाँ से सेनाओं ४  
 के परमेश्वर की जो करोवियों के ऊपर बैठा है मात्मी की मंजूपा को ले आये  
 और गली के दोनों ओर दफनी और फीनिहाम ईश्वर की मात्मी की मंजूपा के  
 पास वहाँ थे । और जब परमेश्वर की मात्मी की मंजूपा छावनी में पहुँची तब ५  
 सारे इसराएलियों ने बड़े शब्द से ललकारा वहाँ लो कि भूमि कांप उठी ।  
 और जब फिलिस्तीने ललकारने का शब्द सुना तो बोले कि इसराएलियों की ६  
 छावनी में यह क्या सदा शब्द है फिर उन्होंने ने समझा कि परमेश्वर की मंजूपा  
 छावनी में पहुँची । तब फिलिस्तीने हरें क्योंकि उन्होंने ने कहा कि ईश्वर छावनी ७  
 में आया है और बोले कि हाय हम पर क्योंकि आज कल ऐसी बात नहीं हुई ।  
 हाय कौन ऐसे अनन्त देवों के हाथों से हमें बचावेगा यह बात देव हैं जिनमें ने ८  
 मिनियों का अरण्य में समस्त मरियों से मारा । हे फिलिस्तीने अनन्त होओ और ९  
 पुनर्प्राप्त करो जिनमें तुम इसराएलियों के सेवक न बनो वैसे वे तुम्हारे दुश्मन हैं  
 परन्तु पुनर्प्राप्त करो और लड़ो ॥

मेा फिलिस्तीने ने लड़ाई किई और इसराएल सारे गये और हर एक पुरुष १०  
 अपने अपने तंत्र की भागा और वहाँ बड़ा झुंक हुआ क्योंकि तीस महान इसराएल  
 के पैदल सारे गये । और ईश्वर की मंजूपा लिई गई और गली के दोनों ओर ११  
 दफनी और फीनिहाम झुंक गये ॥

और अिनयमीन का एक जन मेना से दौड़ा और कपड़े फाड़े हुए और मिर १२  
 पर धूल डाले हुए उसी दिन मैला में आया । और जब वह पहुँचा तब देखा गली १३  
 एक आसन पर मार्ग के लग बैठके बाट जात रहा था क्योंकि ईश्वर की मंजूपा  
 के लिये उस का मन धर्यरा रहा था और जब उस जन ने नगर में पहुँचके संदेश  
 दिया तब सारे नगर में रोना पोटना हुआ । और जब गली ने रोने का शब्द १४  
 सुना तब उस ने कहा कि इस दारे के शब्द का कारण क्या और वह जन रूप  
 था पहुँचा और गली को कहा । अब गली अट्टानये घर का बृद्ध था और उस १५  
 की आँखें धुंधली थीं और वह देख न सक्ता था । मेा उस जन ने गली से कहा १६  
 कि मैं सेना से आज भाग आया हूँ और वही हूँ जो मेना से निकला हूँ तब वह  
 बोला हे बेटे क्या समाचार है । तब उस दूत ने उत्तर देके कहा कि इसराएल १७  
 फिलिस्तीने के आगे भाग गये और लोगों में बड़ा झुंक हुआ और तेरे दोनों  
 ओर भी दफनी और फीनिहाम सर गये हैं और ईश्वर की मंजूपा लिई गई । और १८  
 यों हुआ कि जब उस ने गली से ईश्वर की मंजूपा का नाम लिखा तब वह  
 आसन पर से फाटके के लग पड़ेले चल गिरा और उस का गला टूट गया और  
 सर गया क्योंकि वह बृद्ध और भारी था और उस ने चालीस घरस इसराएल का  
 न्याय किया ॥

और उस की बृद्ध फीनिहाम की पत्नी गर्भिणी थी और उस के जन्मे का समय १९  
 समीप था जब उस ने यह संदेश सुना कि ईश्वर की मंजूपा लिई गई और उस  
 का ससुर और पति सर गये तब वह झुंक गई और जन बड़ी क्योंकि उस की

- १८ के लिये एक और अकहन के लिये एक । और सोने के मूस फिलिस्तिनों के सारे नगरों की गिनती के समान थे जो पांच प्रधानों के थे बाड़े के नगर और बाहर बाहर के गांवों अघील के बड़े पत्थर लों जिस पर उन्होंने ने परमेश्वर की मंजूपा को रक्खा जो आज के दिन लों बैतशम्सी यहूशूअ के चौगान में हैं ॥
- १९ और परमेश्वर ने बैतशम्स के लोगों को मारा क्योंकि उन्होंने ने परमेश्वर की मंजूपा के भीतर देखा अर्थात् पचास सहस्र और सत्तर मनुष्य लोगों में से मारे गये और लोगों ने विलाप किया क्योंकि परमेश्वर ने लोगों में से बहुतों को बधन किया था । सो बैतशम्स के लोग बोले कि किस की सामर्थ्य है कि इस पवित्र परमेश्वर ईश्वर के आगे खड़ा होवे और हमसे से वह किस के पास चढ़ जावेगा ।
- २० तब उन्होंने ने करयतअरीम के निवासियों के पास यह कहके दूत भेजे कि फिलिस्ती परमेश्वर की मंजूपा को फेर लाये हैं तुम उसे उतारके अपने पास ले जाओ ॥

सातवां पर्व ।

- १ तब करयतअरीम के लोग आये और परमेश्वर की मंजूपा को ले जाके अबिनदब के घर में पहाड़ी पर रक्खा और उस के बेटे इलिअजर को पवित्र किया कि परमेश्वर की मंजूपा को रक्षा करे ॥
- २ और यों हुआ कि मंजूपा करयतअरीम में बहुत दिन लों रही क्योंकि बीस बरस बीत गये थे तब इसराएल के सारे घरानों ने परमेश्वर के लिये विलाप किया । और समूएल इसराएल के सारे घराने को कहके बोला कि यदि तुम अपने सारे मन से परमेश्वर की ओर फिरोगे तो उन उपरी देवतों को और इसतारात को अपने में से निकाल फेंको और परमेश्वर के लिये मन को सिद्ध करो और केवल उस की सेवा करो
- ३ और वह तुम्हें फिलिस्तिनों के हाथ से छुड़ावेगा । तब इसराएल के संतान ने बअलीम और इसतारात को दूर किया और केवल परमेश्वर की सेवा करने लगे ।
- ४ तब समूएल ने कहा कि सारे इसराएल मिसफः में एकट्ठे होवें और मैं तुम्हारे
- ५ लिये परमेश्वर से प्रार्थना करूंगा । सो वे मिसफः में एकट्ठे हुए और पानी खींचा और परमेश्वर के आगे उड़ेला और उस दिन व्रत रक्खा और वहां बोले कि हम परमेश्वर के अपराधी हैं और समूएल मिसफः में इसराएल के संतान का न्यायी हुआ ॥
- ६ और जब फिलिस्तिनों ने सुना कि इसराएल के संतान मिसफः में एकट्ठे हुए तब उन के प्रधान इसराएल के सामे चढ़ आये सो इसराएल के संतान यह सुनके
- ७ फिलिस्तिनों से डर गये । और इसराएल के संतान ने समूएल को कहा कि हमारे लिये परमेश्वर हमारे ईश्वर से प्रार्थना करने में धम मत जा जिससे वह
- ८ हमें फिलिस्तिनों के हाथ से बचावे । तब समूएल ने एक दूध पीउआ मेन्ना लिया और उसे परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाया और समूएल ने इसराएल के लिये परमेश्वर की प्रार्थना किई और परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया ।
- ९ और समूएल बलिदान की भेंट चढ़ा रहा था कि फिलिस्ती संग्राम के लिये इसराएल के सन्मुख आये परन्तु परमेश्वर उस दिन फिलिस्तिनों पर महा गर्जन

फिलिस्तिनों ने याजकों और दैवज्ञों को बुलाके पूछा कि परमेश्वर की मंजूपा से क्या करें हमें बताओ कि हम किस रीति से उसे उस के स्थान को भेजें । तब वे ३  
 बोले कि यदि तुम इसराएल के ईश्वर की मंजूपा को भेजते हो तो उसे बूझी मत भेजो परन्तु किसी भांति से पाप की भेंट के साथ उसे फेर भेजो तब तुम चंगे होओगे और तुम्हें जान पड़ेगा कि हम का हाथ तुम से किम लिये नहीं उठता है । तब उन्होंने ने पूछा कि यह कौन सा पाप का बलिदान है जो हम ४  
 उसे फेर देंगे तब वे बोले कि फिलिस्ती प्रधानों की गिनती के समान पांच सेनौली बवेसी और सेने के पांच मूस क्योंकि तुम सबों पर और तुम्हारे प्रधानों पर एक ही मरी है । सो तुम अपनी बवेसी की और मूसों की मूर्ति बनाओ जो देश को नष्ट ५  
 करते हैं और इसराएल के परमेश्वर की महिमा करो क्या जाने यह तुम से और तुम्हारे देवते से और तुम्हारे देश से हाथ उठा लेवे । तुम क्यों अपने मन को ६  
 कटोर करते हो जैसा कि मित्रियों ने और फिक्शन ने अपने मन को कटोर किया था जब कि ईश्वर ने आश्चर्यित कार्य उन में किये सो क्या उन्होंने ने उन्हें जाने न दिया और वे बिदा न हुए । सो अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ और दो ७  
 दुधार गायें जो जुआ तले न आई हों लेओ और उन गायों को गाड़ी में जोतो और उन के बछड़ों को घर में उन के पीछे रखने देओ । और परमेश्वर की मंजूपा ८  
 लेके उस गाड़ी पर रख्यो और सेने के पात्र जो पाप की भेंट के कारण दत्ते हो एक मंजूपा में धरके उस की अलंग में रख देओ और उसे छोड़ देओ कि चली जावे । और देखो यदि वह अपने ही सिवाने में छोके वैतशम्स को चढ़े तब उसी ९  
 ने हम पर यह बड़ी विपत्ति भेजी परन्तु यदि नहीं तो हम जानेंगे कि उस का हाथ हम पर नहीं पड़ा परन्तु यह विपत्ति अकस्मात् हुई ॥

सो लोगों ने वैसा ही किया और दो दुधार गायें लिई और उन्हें गाड़ी में १०  
 जोता और उन के बछड़ों को घर में बंद किया । और परमेश्वर की मंजूपा और ११  
 सेने के मूसों को और बवेसियों को मंजूपा में रखके गाड़ी पर धरा । सो उन १२  
 गायों ने वैतशम्स का सीधा मार्ग लिया और राजमार्ग में बंवाती चली और दाहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ी और फिलिस्तिनों के प्रधान उन के पीछे पीछे वैतशम्स के सिवाने लें गये । और तराई में वैतशम्सी गोहं लयते थे और जब १३  
 उन्हें ने अपनी आंखें ऊपर किई तब मंजूपा को देखा और देखते ही आनन्द हुए । और गाड़ी वैतशम्सी घटूण्य के खेत में और जहां बड़ा पत्थर था आके १४  
 खड़ी हुई सो उन्होंने ने गाड़ी की लकड़ियों को चीरा और गायों को परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाई । और लावियों ने परमेश्वर की मंजूपा को १५  
 उस मंजूपा सहित जो उस के साथ थी जिस में सेने के गहने थे नीचे उतारा और उसे बड़े पत्थर पर रखवा और वैतशम्स के लोगों ने उसी दिन परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट और बलि चढ़ाये । और जब फिलिस्तिनों के पांच प्रधानों १६  
 ने यह देखा तो वे उसी दिन अकस्मत् मरे ॥

और सेनौली बवेसी जिन्हें फिलिस्तिनों ने पाप की भेंट के लिये परमेश्वर को १७  
 चढ़ाया थे हैं अशदूद के लिये एक अज्जः के लिये एक अस्कलून के लिये एक जात



१२ अपने घोड़-चढ़ों के लिये ठहरावेगा और वे उस के रथों के आगे दौड़ेंगे । और अपने लिये सहस्र सहस्र के प्रधान और पचास पचास के प्रधान ठहरावेगा और अपनी भूमि उन से जोताके बोआवेगा और लवावेगा और अपने संग्राम के और  
 १३ अपने रथों के हथियार बनवावेगा । और तुम्हारी खेठियों से अपने लिये मिठाई  
 १४ बनवावेगा और भोजन बनवावेगा और रोटी पोवावेगा । और वह तुम्हारे खेतों को और तुम्हारे दाख के और तुम्हारी जलपाई की धारियों को जो अच्छी से  
 १५ अच्छी होंगी लेके अपने सेवकों को देगा । और तुम्हारे अन्न और तुम्हारे दाख की धारियों का दसवां अंश लेके अपने नपुंसकों को और अपने सेवकों को देगा ।  
 १६ और वह तुम्हारे दासों और तुम्हारी दासियों को और तुम्हारे सुंदर से सुंदर युवों  
 १७ मनुष्यों को और तुम्हारे गदहों को लेके अपने काम में लगावेगा । तुम्हारी भेड़ों  
 १८ का दसवां अंश लेगा और तुम उस के सेवक होओगे । और तब तुम अपने राजा के कारण जिसे तुम ने चुना है दोहाई-देओगे और उस दिन परमेश्वर तुम्हारी न सुनेगा ॥

१९ तब पर भी उन लोगों ने समूएल की बात न मानी पर बोले कि नहीं परन्तु  
 २० हम एक राजा लेंगे । जिसते हम भी समस्त जातिगणों के समान होवें और जिसते हमारा राजा हमारे लिये न्याय करे और हमारे आगे आगे चले और हमारे  
 २१ लिये संग्राम करे । तब समूएल ने मंडली की सारी बातें सुनीं और परमेश्वर के  
 २२ अवलोकन लों पहुंचाई । और परमेश्वर ने समूएल को कहा कि तू उन का शब्द सुन और उन के लिये एक राजा ठहरा तब समूएल ने इसराएल के मनुष्यों से कहा कि हर एक अपनी अपनी बस्ती को जावे ॥

नवां पृष्ठ ।

१ अब खिनयमीन का एक जन था जो अफीह के बेटे बकूरत के बेटे संबर के बेटे अबिएल का बेटा जिस का नाम कीस था वह खिनयमीनी और महाबली  
 २ था । और उस के एक बेटा था जिस का नाम साजल जो सुंदर और चुना हुआ तरुण था और इसराएल के संतानों में उससे कोई अधिक सुंदर न था सारे लोगों में कांधे से लेके ऊपर लों ऊंचा था ॥

३ और साजल के पिता के गदहे खो गये थे सो कीस ने अपने बेटे साजल को  
 ४ कहा कि सेवकों में से एक को अपने साथ ले और उठ जा गदहों को ढूँढ़ । सो वह इफरायम पहाड़ में से और सलीस के देश में होके निकला परन्तु न पाया तब वे सअलीम के देश में से निकले परन्तु वहां भी न पाया और वह खिनयमीन  
 ५ के देश में होके गया परन्तु न पाया । जब वे सूफ के देश में आये तब साजल ने अपने साथ के सेवक को कहा कि आ फिर चल ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहों  
 ६ को ढूँढ़ हमारे लिये चिंता करे । तब उस ने उसे कहा कि देख इस नगर में ईश्वर का एक जन है जो प्रतिष्ठित है जो कुछ वह कहता है सो निश्चय होता है आ उधर जावे क्या जाने कि जो मार्ग हमें जाना उचित है वह हमें बता  
 ७ सके । तब साजल ने अपने सेवक से कहा कि देख यदि हम जावे तो हम उस जन के लिये क्या ले जावे क्योंकि हमारे पात्रों में रोटी चुक गई और ईश्वर के जन

से गर्जना और उन्हें दरा दिया और वे इसराएल के आगे मारे गये । और इसरा- ११  
एली लोगों ने मिसफः से निकलके फिलिस्तिनों को खदेड़ा और उन्हें बैतकर के  
नीचे लों उन्हें मारते चले गये । तब समूएल ने एक पत्थर लेके मिसफः और शेन के १२  
मध्य में खड़ा किया और उस का नाम यह कहके अवनअजर रखवा कि परमे-  
श्वर ने यहां लों इसारी सहाय किई । सो फिलिस्ती वश में हुए और वे इसराएल १३  
के सिवानों में फिर न आये और परमेश्वर का हाथ समूएल के जीवन भर फिलि-  
स्तिनों के विरुद्ध था । और वे वास्तिवां जो फिलिस्तिनों ने इसराएल से ले लिई १४  
थीं इसराएल को फेरी गईं अकरन से लेके जात लों और उन के सिवाने को इस-  
राएल ने फिलिस्तिनों के हाथ से छुड़ाया और इसराएलियों में और अमूरियों में  
मेल हुआ ॥

और समूएल अपने जीवन भर इसराएल का न्यायी रहा । और बरस बरस १५  
यह बैतएल का और जिलजाल का और मिसफः का फेरा करता था और उन  
समस्त स्थानों में इसराएल का न्याय करता था । और रामात को फिर आता १७  
था क्योंकि वहां उस का घर था और इसराएल का न्याय वहां करता था और  
वहां उस ने परमेश्वर के लिये घेदी बनाई ॥

आठवां पर्व ।

और जब समूएल बृद्ध हुआ तब ऐसा हुआ कि उस ने अपने घेदों को इस- १  
राएल पर न्यायी किया । अब उस के पहिलौठे का नाम एलल था और उस के २  
दूसरे का नाम अविषाह थे विश्वरसवश में न्यायी थे । पर उस के घेदे उस की ३  
चाल पर न चलते थे परन्तु लोभ करके घूस लेने लगे और न्याय विरुद्ध  
करने लगे ॥

तब इसराएल के सारे प्राचीनों ने आप को एकट्ठे किया और रामात में मसू- ४  
एल पास आये । और उसे कहा कि देख तू बृद्ध है और तेरे घेदे तेरी चाल ५  
पर नहीं चलते अब समस्त जातिगणों की नाई हमारा न्याय करने के लिये एक  
राजा उठेरा ॥

परन्तु जब उन्होंने ने उसे कहा कि हमारे न्याय करने के लिये हमें एक राजा ६  
दे इस बात से समूएल उदास हुआ और समूएल ने परमेश्वर से प्रार्थना किई ।  
और परमेश्वर ने समूएल को कहा कि लोगों के शब्द पर जो वे तुम्हें कहें कान ७  
धर क्योंकि उन्होंने ने कुछ तुम्हें त्याग नहीं किया परन्तु तुम्हें त्याग किया जिसमें  
में उन पर राज्य न करे । जब से कि मैं उन्हें मिस से निकाल लाया था लों ८  
उन सब कार्यों के समान उन्होंने ने किया जिन से तुम्हें छोड़ दिया और आन  
आन देवों की सेवा किई वैसे ही वे तुम्ह से भी करते हैं । सो अब उन के शब्द ९  
पर कान धर तथापि अति दृढ़ता से उन के विरुद्ध उन्हें कह दे और उन्हें उस  
राजा का व्यवहार बता जो उन पर राज्य करेगा ॥

और समूएल ने उन लोगों को जो उससे राजा के खोजी थे परमेश्वर की १०  
सारी बातें कहीं । और उस ने कहा कि उस राजा के जो तुम पर राज्य करेगा ११  
वे व्यवहार होंगे कि वह तुम्हारे घेदों को लेके अपने लिये अपने रथों के और

- धरा है अपने आगे रखके खा क्योंकि मैं ने जब से कि लोगों का नेउता किया अब  
 लों तेरे लिये रख छोड़ा था सो साऊल ने उस दिन समूहल के साथ भोजन किया ॥  
 २५ और जब वे ऊँचे स्थान से नगर में उतर आये तब उस ने साऊल से कृत पर  
 २६ बातचीत कीई । और वे तड़के उठे और विद्वान देते ही समूहल ने साऊल को  
 फिर कृत पर बुलाके कहा कि उठ मैं तुम्हें विदा करूं सो साऊल उठा और वे  
 दोनों वह और समूहल बाहर चले गये ॥  
 २७ जब वे नगर के निकाल पर जाते थे तब समूहल ने साऊल को कहा कि अपने  
 सेवक को कह कि हम से आगे बढ़े और वह बढ़ गया पर तू तनिक खड़ा रह  
 जिसमें ईश्वर का वचन तुम्हें बताऊं ॥

दसवां पर्व ।

- १ तब समूहल ने एक कुप्पी तेल लिया और उस के सिर पर ढाला और उसे  
 चूमा और कहा कि यह इस कारण नहीं कि परमेश्वर ने तुम्हें अपने अधिकार के  
 २ ऊपर प्रधान करके अभिषेक किया । जब तू मेरे पास से आज चला जायगा तब  
 दो जन को राखिल की समाधि के पास बिनयमीन के सियाने के जिल्लजह में  
 पाओगे और वे तुम्हें कहेंगे कि जिन गदहों को तू ठूँढ़ने गया था सो मिले और  
 अब तेरा पिता गदहों की चिंता छोड़कर तेरे लिये कुढ़ता है और कहता है कि  
 ३ मैं अपने बेटे के लिये क्या करूं । तब तू वहां से आगे बढ़ेगा और तबूर के  
 चौगान को पहुंचेगा और वहां तुम्हें तीन जन मिलेंगे जो वैतएल के ईश्वर कने  
 चले जाते होंगे एक तो बकरी के तीन मेम्रां लिये हुए और दूसरा तीन रोटी  
 ४ और तीसरा एक कुप्पा दाखरस । और वे तेरा कुशल पूछेंगे और दो रोटी तुम्हें  
 ५ देंगे और तू उन के हाथ से ले लीजियो । उस के पीछे तू ईश्वर के पहाड़ पास  
 जहां फिलिस्तिनों की चौकी है पहुंचेगा और जब नगर में प्रवेश करेगा ऐसा  
 होगा कि तू आगमज्ञानियों की एक जथा पावेगा जो ऊँचे स्थान से उतरी होगी  
 जिन के आगे आगे मुरचंग और डोलक और बांसुरी और बीणा होंगे और वे  
 ६ भविष्य कहेंगे । तब परमेश्वर का आत्मा तुम्हें पर उतरेगा और तू भी उन के  
 ७ साथ भविष्य कहेगा और और ही एक मनुष्य हो जावेगा । और यों होगा कि  
 जब तू ये चिन्ह पावे फिर जैसा संयोग होवे वैसा कीजियो क्योंकि ईश्वर तेरे  
 ८ साथ है । और मेरे आगे तू जिलजाल को उतरियो और देख मैं तुम्हें पास उतरूंगा  
 जिसमें बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट बलि करूं सो तू सात दिन लों वहीं  
 ठहरियो जब लों में तुम्हें पास आऊं और तुम्हें बताऊं कि तू क्या क्या करेगा ॥  
 ९ और ऐसा हुआ कि ज्योंही उस ने समूहल से जाने को पीठ फेरी त्योंही  
 १० ईश्वर ने उसे दूसरा मन दिया और वे सब लक्षण उस ने उसी दिन पाये । और  
 जब वे उधर पहाड़ को आये तो क्या देखते हैं कि आगमज्ञानियों की एक जथा  
 उन्हें मिली और ईश्वर का आत्मा उस पर उतरा और वह उन में भविष्य कहने  
 ११ लगा । और यों हुआ कि जब उस के आगे जान पहिचानों ने यह देखा कि वह  
 आगमज्ञानियों के मध्य भविष्य कहता है तब लोगों ने आपस में कहा कि किस  
 १२ के बेटे को क्या हुआ क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है । तब एक ने उन में

के लिये भेंट नहीं हमारे पास क्या है । पर सेवक ने साकल को उत्तर देके कहा ८  
कि देख पांच गैकल चांदी मुझ पास है सो मैं ईश्वर के जन को देऊंगा कि  
हमें मार्ग बतावे । अगले समय में जब मनुष्य परमेश्वर से प्रश्न करने जाना ९  
था तब यह कहता था कि आश्रो दर्शी पास जावे क्योंकि आगमजानी आगे  
दर्शी कहाता था । तब साकल ने अपने सेवक से कहा कि तू ने अच्छा कहा था १०  
चले सो वे नगर में आये जहां ईश्वर का यह जन था ॥

जब वे उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते थे तब उन्हें कई कन्या मिलां जो पानी ११  
भरने जाती थीं और उन्होंने ने उन से पूछा कि दर्शी यहां है । तब उन्होंने ने उन्हें १२  
उत्तर दिया और कहा कि हां देख वह तुम्हारे आगे है अब शीघ्र करो क्योंकि  
वह आज नगर में आया है क्योंकि आज ऊंचे स्थानों में लोगों का बलिदान है ।  
जब तुम नगर में पहुंचो तब तुम उससे आगे कि वह ऊंचे स्थान में स्थाने जावे १३  
उसे पाओगे क्योंकि जब लो वहां न जावे तब लो लोरा न ग्यावेगे क्योंकि वह  
यनि को आशीम देता है उस के पीछे नेडतहरी ग्याते हैं सो अब तुम चढ़ो क्योंकि  
आज तुम उसे पाओगे । सो वे नगर को चढ़े और नगर में जाते ही क्या देखते १४  
हैं कि समूहल उन के आगे आया कि ऊंचे स्थान पर चढ़ जावे ॥

और परमेश्वर ने साकल के आने से एक दिन आगे समूहल के कान में प्रगट १५  
कहा दिया था । कि कल इसी समय में एक जन को विनयमान के देश से तुम १६  
पास भेजूंगा और तू मेरे इसराएल लोगों पर उसे प्रधान अभियेक करिया जिससे  
वह मेरे लोगों को फिलिस्तिनों के हाथ से छुड़ावे क्योंकि मैं ने अपने लोगों पर  
दृष्टि किई क्योंकि उन का चिल्लाना मेरे पास पहुंचा । सो जब समूहल ने साकल १७  
को देखा तब परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया कि देख वही जन जिस के कारण मैं  
ने तुम्हें कहा था यही मेरे लोगों पर राज्य करेगा ॥

तब साकल समूहल के पास फाटक पर आके बोला कि कृपा करके हमें १८  
बताइये कि दर्शी का घर कहाँ है । तब समूहल ने साकल को उत्तर देके कहा १९  
कि दर्शी मैं ही हूं मेरे आगे आगे ऊंचे स्थान पर चढ़ क्योंकि तुम आज मेरे साथ  
भोजन करोगे और कल मैं तुम्हें विदा करूंगा और जो कुछ तेरे मन में है तुम्हें  
बताऊंगा । और तेरे गदहे जो आज तीन दिन से ग्या गये हैं उन को आर से २०  
निश्चित रह क्योंकि वे मिल गये और इसराएल की सारी इच्छा जिस पर है क्या  
तेरे और तेरे पिता के समस्त घराने पर नहीं । सो साकल ने उत्तर देके कहा कि २१  
मैं विनयमीनी इसराएल की गोष्टियों में से सब से छोटा नहीं और क्या मेरा घराना  
विनयमीन की गोष्टी के सारे घरानों में छोटे से छोटा नहीं सो इस वचन के  
समान तू मुझ से क्यों बोलता है ॥

और समूहल साकल को और उस के सेवक को लेकर उन्हें कोठरी में लाया २२  
और उन्हें नेडतहरियों में जो बुलाये गये थे जो जन तीस एक थे सब से श्रेष्ठ  
स्थान में बैठाया । तब समूहल ने रसोईकारक को कहा कि वह भाग जो मैं ने २३  
तुम्हें रख छोड़ने को कहा था ले आ । और रसोईकारक ने एक कांधे को और २४  
जो उस पर था उठा लिया और साकल के आगे रखके कहा कि देख यह जो

७ कुछ बड़ी बात नहीं चाहे बहुतों से जय दे चाहे तो थोड़े से । और उस के अस्त्रधारी ने उसे कहा कि सब जो आप के मन में है करिये फिरिये देखिये आप के मन के समान मैं भी साथी हूँ । तब यूनतन बोला कि देख हम इन ८ लोगों पास पार जाते हैं आ हम अपने तैय्य उन पर प्रगट करें । यदि वे हमें कहें कि ठहरो जब लों हम तुम्हारे पास आवें तब हम ठहरे रहेंगे और उन पास चढ़ १० न जावेंगे । परन्तु यदि वे यों कहें कि हम पर चढ़ आओ तो हम चढ़ जावेंगे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें हमारे हाथ में कर दिया और यह हमारे लिये एक पता होगा ।

११ तब उन दोनों ने आप को फिलिस्तीनों के घाने पर प्रगट किया और फिलिस्ती बोले कि देखो इबरानी उन छेदों में से जहां वे छिप रहे थे बाहर आते हैं ।

१२ और उस घाने के लोगों ने यूनतन और उस के अस्त्रधारी को कहा कि हम पर चढ़ आओ और हम तुम्हें कुछ दिखावेंगे सो यूनतन ने अपने अस्त्रधारी से कहा कि अब मेरे पीछे चढ़ आ क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें इसराएल के हाथ में कर १३ दिया । और यूनतन वकैयां चढ़ गया और उस के पीछे उस का अस्त्रधारी और वे यूनतन के आगे मारे गये और उस के पीछे पीछे उस के अस्त्रधारी ने मारा ।

१४ सो यह पहिला काटकूट जो यूनतन और उस के अस्त्रधारी ने किया सारे मनुष्य बीस एक थे उतनी भूमि में जितनी मैं एक हल आधे दिन लों फिरे ।

१५ तब सेना में खेत में और सारे लोगों में शर्यराहट हुई और घाने के लोग और लुटेरे भी शर्यराने लगे और भूमि कंपित हुई यह शर्यराहट ईश्वर की ओर से थी ।

१६ और विनयमीन के जिविग्रत में के साऊल के पहरियों ने देखा तो क्या देखते १७ हैं कि मंडली घट गई और वे मारते चले जाते थे । तब साऊल ने अपने साथी

लोगों से कहा कि गिना और देखो हम में से कौन निकल गया है जब उन्होंने ने १८ गिना तो क्या देखते हैं कि यूनतन और उस का अस्त्रधारी नहीं है । तब साऊल ने अखी को कहा कि ईश्वर की मंजूपा यहां ला क्योंकि ईश्वर की मंजूपा उस

१९ समय में इसराएल के पास थी । और ऐसा हुआ कि जब याजक से साऊल बात करता था तब फिलिस्तीनों की सेना में धूम होती चली जाती थी और साऊल ने

२० याजक से कहा कि अपना हाथ खींच ले । और साऊल और उस के सारे लोग एकट्ठे खुलाये गये और संग्राम को आये और देखो कि हर एक पुरुष का खड्ग उस के

२१ संगी पर पड़ा और बड़ी गड़बड़ाहट हुई । और वे इबरानी भी जो आगे फिलिस्तीनों के साथ थे और जो चारों ओर से उन के पास छावनी में गये थे वे भी

२२ फिरके उन इसराएलियों में जो साऊल और यूनतन के साथ थे मिल गये । और इसराएल के सारे लोग भी जिन्होंने ने इफरायम पहाड़ में आप को छिपाया था

२३ यह सुना कि फिलिस्ती भागे तब वे भी संग्राम में उन्हें खदेड़ते गये । और परमेश्वर ने उस दिन इसराएलियों को बचाया और लड़ाई बैतअवन के उस पार लों पहुंची ।

२४ और इसराएली लोग उस दिन दुःखी हुए क्योंकि साऊल ने लोगों को किरिया

से उत्तर दिया और कहा कि उन का पिता कौन है तब ही से यह कहावत चली कि क्या साकल भी आगमज्ञानियों में है । और जब वह आगम कह चुका तब १३ जंचे स्थान में आया ॥

और साकल के चचा ने उसे और उस के मेयक को कहा कि तुम कहाँ गये थे १४ और वह बोला कि गदहे ढूँढ़ने और जब उन्हें कहीं न पाया तो समूहल पास गये । तब साकल का चचा बोला कि मुझे बता कि समूहल ने तुम्हें क्या कहा । १५ और साकल ने अपने चचा से कहा कि उस ने हमें ब्यालके बताया कि गदहे मिल १६ गये पर राज्य का समाचार जो समूहल ने उसे कहा था उसे न बताया ॥

और समूहल ने मिसफः में परमेश्वर के आगे लोगों को एकट्ठे बुलाया । १७ और इसराएल के संतान को कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर था कहना १८ है कि मैं इसराएल को मिस में निकाल लाया और तुम्हें मिमियों के और सारे राजाओं के हाथ से और जो तुम्हें मताते थे उन से छुड़ाया । और तुम ने आज १९ के दिन अपने ईश्वर को त्याग किया जिस ने तुम्हें तुम्हारे सारे दीर्घियों और तुम्हारी विपत्तियों से बचाया और तुम ने उसे कहा कि हम पर एक राजा ठहरा सो अब अपनी अपनी गोष्टी के और महत्त सत्त के समान परमेश्वर के आगे आओ ॥

और जब समूहल ने इसराएल की सारी गोष्टियों को एकट्ठी किया तब दिन- २० मीन की गोष्टी लिई गई । और जब वह दिन-मीन की गोष्टी को उन के घरानों २१ के समान पास लाया तब मन्त्री का घराना चुना गया और कीस का बेटा साकल चुना गया और जब उन्होंने उसे ढूँढ़ा तो न पाया ॥

इस लिये उन्होंने ने परमेश्वर से पूछा कि वह जन फिर वहाँ आवेगा कि नहीं २२ और परमेश्वर ने उत्तर दिया कि देखो वह मामूरी के बाँध छिप रहा है । तब २३ वे दौड़े और उसे वहाँ से लाये और जब वह लोगों में खड़ा हुआ तब अपने बाँधे से लेके ऊपर लों सभों से अधिक ऊँचा था ॥

और समूहल ने समस्त लोगों को कहा कि जिसे परमेश्वर ने चुना है तुम उसे २४ देखते हो क्योंकि उस के समान सारे लोगों में कोई नहीं तब समस्त लोग ललकारके बोले कि राजा जीता रहे । तब समूहल ने लोगों को राज्य की रीति २५ बताई और पुस्तक में लिखे परमेश्वर के आगे रक्खा और समूहल ने हर एक मनुष्य को अपने अपने घर भेजा ॥

और साकल भी अपने घर निविशत को गया और उस के साथ लोगों की २६ एक जथा जिन के मन को ईश्वर ने फेर दिया था हो लिई । परन्तु दुष्ट जन २७ बोले कि यह जन हमें क्योंकि बचावेगा और उस की निन्दा किई और उस के पास भेंट न लाये पर वह अनसुने के समान हो रहा ॥

ग्यारहवां प्रश्न ।

तब अम्मूनी नाहस चढ़ा और यदीसजिलशद के सामे कावमी किई तब यदीस १ के सब लोगों ने नाहस से कहा कि हम से बाँधा बाँध और हम तेरी सेवा करेंगे । और अम्मूनी नाहस ने उन्हें उत्तर दिया कि इस बात पर मैं तुम्ह से बाँधा २



से कहा कि मुझे दता कि तू ने क्या किया है और यूनतन ने उसे बताया और कहा मैं ने तो केवल तनिक मधु अपनी छड़ी की नाक से चखा था सो अब देख ४४ मुझे मरना है । तब साऊल ने कहा कि ईश्वर ऐसा ही और उससे अधिक करे ४५ कि यूनतन तू निश्चय मर जायगा । तब लोगों ने साऊल को कहा कि क्या यूनतन मर जाय जिस ने इसराएल के लिये ऐसा बड़ा वचाव किया ईश्वर न करे परमेश्वर की सो उस के सिर का एक बाल लों भूमि पर न गिराया जायगा क्योंकि उस ने आज ईश्वर के साथ कार्य किया सो लोगों ने यूनतन को छुड़ा ४६ लिया जिसमें वह मर न जाय । तब साऊल फिलिस्तीयों का पीछा करने से घम गया और फिलिस्ती अपने स्थान को गये ॥

४७ और साऊल ने इसराएल का राज्य लिया और अपने समस्त घेरियों से हर एक और मोअब के और अम्मून के संतान के और अदूम भी और मूवा के राजाओं के और फिलिस्तीयों के साथ लड़ा और वह जहां कहीं जाता था उन्हें डेड़ता ४८ था । तब उस ने बल के साथ कार्य किया और अमालीक को मारा और इसराएलियों को लुटेरों के हाथ से छुड़ाया ॥

४९ अब साऊल के बेटों के नाम ये हैं यूनतन और यशुई और मलिकिसूअ और ५० उस की दोनों बेटियों के नाम ये हैं पहिलौठी मैरब और लहुरी मीकल । और साऊल की पत्नी का नाम अखिनुअम जो अखिमअज की बेटी थी और उस के ५१ सेनापति का नाम अविनैयिर था जो साऊल के चचा नैयिर का बेटा था । और कीस साऊल का पिता और नैयिर अविनैयिर का पिता अविएल का बेटा था ॥

५२ और साऊल के जीवन भर फिलिस्ती से कठिन संग्राम रहा और जब कभी साऊल किसी बलवंत को अथवा जोधा को देखता था तब वह उसे अपने पास रखता था ॥

### पंदरहवां पृष्ठ ।

१ और समूहल ने साऊल से कहा कि परमेश्वर ने मुझे भेजा कि तुझे अपने २ इसराएली लोगों पर राज्याभिषेक करूं सो अब परमेश्वर की बातें सुन । सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मुझे चेत है जो कुछ कि अमालीक ने इसराएल से किया वे मार्ग में उन के लिये ठूके में क्योंकर लगे जब वे मिश्र से चढ़ आये । ३ अब तू जा और अमालीक को मार और सब कुछ जो उन का है सर्वथा नाश कर और उसे मत छोड़ परन्तु क्या पुरुष क्या स्त्री और क्या बालक क्या दूध पीयक क्या बैल और क्या भेड़ क्या ऊंट और क्या गदहे सब को मार डाल ॥

४ और साऊल ने लोगों को एकट्ठा किया और तलाइम में दो लाख पैदल गिना ५ और यहूदाह के दस सहस्र जन थे । और साऊल अमालीक के एक नगर को ६ आया और तराई में लड़ा । और साऊल ने कैनियों को कहा कि निकल जाओ अमालीकियों में से उतरो न हो कि मैं उन के साथ तुम्हें नाश करूं क्योंकि तुम ने इसराएल के समस्त संतान पर जब वे मिश्र से चढ़ आये कृपा किई सो कौनी ७ अमालीकियों में से निकल गये । और साऊल ने अमालीकियों को हवीलः से लेके ८ सूर लों जो मिश्र के सामने है मारा । और अमालीकियों के राजा अगाग को जीता

देके कहा कि जो कोई सांक लों खाना खावे उस पर अधिकार जिसमें मैं अपने  
 बैरियों से पलटा लेऊँ यहाँ लों कि किसी ने कुछ न चखा । और समस्त देश यम २५  
 में पहुँचे और वहाँ भूमि पर मधु था । और ज्योंही लोग यम में पहुँचे तो क्या २६  
 देखते हैं कि मधु टपकता है पर किसी ने अपने मुँह लों हाथ न उठाया क्योंकि  
 लोग क्रिया से डरे । परन्तु यूनतन ने न सुना था कि उस के पिता ने लोगों को २७  
 क्रिया दिई सो उस ने अपने हाथ की छड़ी की नाक से मधु के कूते में धोरा  
 और हाथ में लेके मुँह में डाला और उस की आँखों में ज्योति आई । तब उन लोगों २८  
 में से एक ने उसे कहा कि तेरे पिता ने दृढ़ क्रिया देके कहा था कि जो जन  
 आज कुछ खाए उस पर अधिकार और उस समय लोग चके हुए थे । तब यूनतन २९  
 बोला कि मेरे पिता ने देश को दुःख दिया देखो मैं ने तनिक सा मधु चखा और  
 मेरी आँखों में ज्योति आई । क्या न होता यदि सारे लोग बैरियों की लूट से ३०  
 जो वन्दों ने पाई मनमंता खाते क्या फिलिस्ती अधिक सारे न जाते ।

और उन्होंने ने उस दिन सिकमाम से लेके गेयलून लों फिलिस्तीयों को मारा ३१  
 और लोग निपट चक गये । और लोग लूट पर गिरे और भेड़ और बैल और ३२  
 बछड़े पकड़े और उन्हें मार मार लोह समेत ग्रा गये । तब वे साऊल से कहके ३३  
 बोले कि देख लोह समेत खाके लोग परमेश्वर के अपराधी होते हैं और वह  
 बोला कि तुम ने पाप किया सो एक बड़ा पत्थर आज मेरे नामे ठुलकाओ ।  
 तब साऊल ने कहा कि लोगों में फैल जाओ और उन से कहा कि हर एक जन ३४  
 अपना अपना बैल और अपनी अपनी भेड़ लावे और यहाँ मारके खावे और लोह समेत  
 खाके परमेश्वर के अपराधी न बनें सो उस रात हर एक जन अपना अपना बैल  
 लाया और वहाँ मारा । और साऊल ने परमेश्वर के लिये एक बैदी बनाई यद ३५  
 पहिली बैदी है जो उस ने परमेश्वर के लिये बनाई ।

तब साऊल ने कहा कि आओ रात को फिलिस्तीयों के पीछे उतरें और भिन- ३६  
 सार लों उन्हें लूटें और उन में से एक जन को न छोड़ें और वे बोले कि जो कुछ  
 आप को अच्छा जान पड़े सो करिये तब याजक बोला कि आओ यहाँ ईश्वर से  
 मंत्र लेवें । तब साऊल ने ईश्वर से मंत्र पूछा कि मैं फिलिस्तीयों का पीछा करने ३७  
 को उतरूँ तू उन्हें इसरायल के हाथ में साँप देगा परन्तु उस ने उस दिन उसे कुछ  
 उत्तर न दिया ॥

तब साऊल ने कहा कि लोगों के समस्त प्रधान यहाँ आवें और जानें और ३८  
 देखें कि आज कौन सा पाप हुआ है । क्योंकि परमेश्वर के जीवन से जिस ने ३९  
 इसरायल को बचाया यद्यपि मेरा बेटा यूनतन भी होवे तो वह निश्चय मारा  
 जायगा परन्तु समस्त लोगों में से किसी ने उत्तर न दिया । तब उस ने सारे ब्रस- ४०  
 रायल से कहा कि तुम लोग एक ओर होओ और मैं और मेरा बेटा यूनतन दूसरी  
 ओर तब लोग साऊल से बोले कि जो आप भला जानें सो कीजिये । और साऊल ४१  
 ने परमेश्वर इसरायल के ईश्वर से कहा कि ठीक चिन्ता दे और साऊल और  
 यूनतन पकड़े गये परन्तु लोग निकल गये । तब साऊल ने कहा कि मेरे और मेरे ४२  
 बेटे यूनतन के नाम चिट्ठी डालो तब यूनतन पकड़ा गया । तब साऊल ने यूनतन ४३

- २५ सो मैं तेरी विनती करता हूँ कि मेरे पाप क्षमा कीजिये और मेरे साथ उलटा  
 २६ फिरिये जिसमें मैं परमेश्वर की सेवा करूँ । और समूएल ने साऊल से कहा कि  
 मैं तेरे साथ न फिरूंगा क्योंकि तू ने परमेश्वर के अर्चन को त्याग किया है और  
 २७ परमेश्वर ने इसराएल पर राजा होने से तुझे त्याग किया है । और जब समूएल  
 फिरा कि चला जायें तो उस ने उस के वस्त्र का खूंट पकड़ा और वह फट गया ।  
 २८ तब समूएल ने उसे कहा कि परमेश्वर ने आज इसराएल के राज्य को तुझ से  
 २९ फाड़ा है और तेरे एक परोसी को दिया है जो तुझ से अच्छा है । और जो इस-  
 राएल का बल है सो झूठ न बोलेगा और न पकृतावेगा क्योंकि वह मनुष्य नहीं  
 ३० कि वह पकृतावे । तब उस ने कहा कि मैं ने तो पाप किया है अब लोगों के  
 प्राचीनों के और इसराएल के आगे मेरी प्रतिष्ठा कीजिये और मेरे साथ लौटिये  
 ३१ जिसमें मैं परमेश्वर तेरे ईश्वर की सेवा करूँ । तब समूएल साऊल के पीछे फिरा  
 और साऊल ने परमेश्वर की सेवा कीई ।  
 ३२ तब समूएल ने कहा कि अमालीक के राजा अगाग को इधर मुझ पास लाओ  
 और अगाग निधड़क से उस पास आया और अगाग ने कहा कि निश्चय मृत्यु की  
 ३३ कड़ुवाहट जाती रही । और समूएल ने कहा कि जैसा तेरी तलवार ने स्त्रियों  
 को निर्धन किया वैसा ही तेरी माता स्त्रियों में निर्धन होगी और समूएल ने  
 अगाग को जिलजाल में परमेश्वर के आगे टुकड़ा टुकड़ा किया ।  
 ३४ और समूएल रामात को गया और साऊल अपने घर जिविअत को चढ़ गया ।  
 ३५ और समूएल अपने जीवन भर साऊल को देखने न गया तिस पर भी समूएल  
 साऊल के कारण बिलाप करता रहा और परमेश्वर भी पकृताया कि उस ने साऊल  
 को इसराएल पर राजा किया ।

सोलहवां पृष्ठ ।

- १ और परमेश्वर ने समूएल से कहा कि तू कब लों साऊल के कारण बिलाप  
 करता रहेगा मैं ने तो उसे इसराएल पर राज्य करने से त्याग किया अपने सींग  
 में तेल भर और तुझे बैतलहमी यस्सी पास भेजता हूँ क्योंकि मैं ने उस के बेटों  
 २ में से अपने लिये एक को राजा ठहराया है । तब समूएल बोला मैं क्योंकर जाऊँ  
 यदि साऊल सुने तो मुझे मार ही डालेगा और परमेश्वर ने कहा कि एक बकिया  
 अपने हाथ में ले जा और कह कि मैं परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ाने आया  
 ३ हूँ । और बलिदान चढ़ाने में यस्सी को बुला और मैं तुझे बताऊंगा कि तू क्या  
 करेगा और जिस का नाम मैं तेरे आगे लेऊँ तू उसे मेरे लिये अभिषेक कर ।  
 ४ और जो परमेश्वर ने उसे कहा समूएल ने किया और बैतलहम को आया  
 तब नगर के प्राचीन उस के आने से कांप गये और बोले कि तू कुशल से आता  
 ५ है । और वह बोला कि कुशल से मैं परमेश्वर के लिये बलि करने आया हूँ तुम  
 आप को पवित्र करो और मेरे साथ बलि करने के लिये आओ और उस ने यस्सी  
 ६ को उस के बेटों सहित पवित्र किया और उन्हें बलि करने को बुलाया । और  
 ऐसा हुआ कि जब वे आये तो उस ने इलिअब पर दृष्टि कीई और बोला कि  
 ७ निश्चय परमेश्वर का अभिषिक्त उस के आगे है । परन्तु परमेश्वर ने समूएल से

पकड़ा और सब लोगों को खड़ की धार से सर्वथा नाश किया । परन्तु साजल ९ और लोगों ने अगाग को और अच्छी से अच्छी भेड़ों को और बैलों को और मोटे मोटे जीवधारियों को और मेंढों को और सब अच्छी वस्त्रों को जीता रक्खा और उन्हें सर्वथा नाश न किया परन्तु उन्हें ने हर एक वस्तु को जो तुच्छ और घुरी थी सर्वथा नाश किया ।

तब परमेश्वर का यह वचन समूह को पहुंचा । मैं पकताता हूं कि साजल १० को राजा किया क्योंकि वह मेरे पीछे से फिर गया और मेरी आज्ञाओं को पूर्ण न किया और समूह उदाम हुआ और रात भर परमेश्वर के आगे चिल्लाना रहा । और विद्वान को यह तड़के समूह उठा कि साजल में भेंट करे और ११ समूह में कहा गया कि साजल करमिल को आया और देखा कि उस ने अपने लिये एक स्मरण का चिन्त खड़ा किया और फिरा और जिलजाल को उतार गया ।

फिर समूह साजल पास गया और साजल ने उसे कहा कि तू परमेश्वर का १३ आशीर्षित है मैं ने परमेश्वर को आज्ञा को पूर्ण किया । तब समूह ने कहा १४ परन्तु यह भेड़ों का मिलियाना और बैलों का बसाना जो मैं सुनता हूं सो क्या है । और साजल ने कहा कि ये असमालीकियों में ने आये हैं क्योंकि लोगों ने १५ अच्छी से अच्छी भेड़ और बैल को बचा रक्खा है कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के लिये बलि चढ़ाये और यज्ञ हुआं को तो हम ने सर्वथा नाश किया है । तब १६ समूह ने साजल को कहा कि ठहर जा और जो कुछ परमेश्वर ने आज रात मुझ से कहा है मैं तुझ से कहूंगा तब यह उसे बोला कि कहिये ॥

और समूह ने कहा कि जब तू अपनी दृष्टि में तुच्छ था तब क्या हमरायल १७ की गोष्टियों का प्रधान न हुआ और परमेश्वर ने तुझ हमरायल पर राज्याभिषेक न किया । और परमेश्वर ने तुझ यह कहे यात्रा को भेजा कि जा उन पापी १८ असमालीकियों को सर्वथा नाश कर और उन में यहां लों लड़ाई कर कि छ-मिट जावे । सो तू ने किस लिये परमेश्वर का शब्द न माना परन्तु लूट पर दौड़ा और १९ परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई । तब साजल ने समूह को कहा कि हां मैं ने २० तो परमेश्वर के शब्द को माना है और जिस मार्ग में परमेश्वर ने मुझ भेजा चला हूं और असमालीकियों को राजा अगाग को ले आया हूं और असमालीकियों को सर्वथा नाश किया है । पर लोगों ने लूट में भेड़ और बैल और जो अच्छे से २१ अच्छे चाहिये था कि सर्वथा नाश किये जावे सो रख लिये जिसमें जिलजाल में परमेश्वर तेरे ईश्वर के लिये भेंट चढ़ावे ॥

और समूह बोला कि क्या परमेश्वर बलिदान की भेंटों और बलि में ऐसा २२ आनन्द है जैसे परमेश्वर के शब्द को मानने से देखा माना बलिदान से और सुन्ना सेंढे को चिकनाई से उत्तम है । क्योंकि फिर जाना टोना के पाप के तुल्य है और २३ बुराई और छिठाई मूर्तिपूजा के समान इस लिये कि तू ने परमेश्वर के वचन को त्याग किया है उस ने तुझ भी राज्य से त्याग किया है । तब साजल ने समूह २४ से कहा कि मैं ने पाप किया है क्योंकि मैं ने परमेश्वर की आज्ञा को और तेरी २५ बातों को पालन किया क्योंकि मैं ने लोगों से लूटे उन के शब्द को माना ।

- २ एकट्ठी किया और शोक: और अजीक: के मध्य एकसदमिम में डेरा किया । और साऊल और इसराएल के मनुष्यों ने एकट्ठे टोके रत्ना की तराई में डेरा किया
- ३ और युद्ध के लिये फिलिस्तीयों के मनुष्य पांती बांधी । और फिलिस्ती एक और पटाड़ पर खड़े हुए और दूसरी और एक पटाड़ पर इसराएल और उन दोनों के
- ४ मध्य में तराई थी । और फिलिस्ती की सेना से एक महावीर जो जात का जुलि-
- ५ अत कहाता था जिस के डील की ऊंचाई छः हाथ थी । और उस के मिर पर पीतल का एक टोप था और वह भिलम पहिने हुए था जो तौल में मन दो एक
- ६ पीतल का था । और उस की दो पिंडुलियों पर पीतल के अस्त्र थे और उस के
- ७ दोनों कांधों के मध्य पीतल की एक फरी थी । और उस के भाले की कड़ ऐसी थी जैसे जालाटे का लट्ठा और उस के भाले का फल सेर नव एक का था
- ८ और एक जन ठाल लिये हुए उस के आगे आगे चलता था । और उस ने खड़े होके इसराएल की सेनाओं को ललकारके कहा कि तुम क्यों संग्राम के लिये निकले हो क्या मैं फिलिस्ती नहीं हूं और तुम साऊल के सेवक से अपने में से
- ९ एक जन को चुनो और वह मेरा साम्रा करे । यदि-यद्य मुझ से लड़ सके और मुझे मार डाले तो हम तुम्हारे सेवक होंगे पर यदि मैं उस पर प्रबल होके उसे
- १० मार डालूं तो तुम हमारे सेवक होगे और हमारी सेवा करोगे । और फिलिस्ती बोला कि मैं आज के दिन इसराएल की सेनाओं को तुच्छ जानता हूं कोई जन
- ११ मुझे दो कि हम एक संग युद्ध करें । जय साऊल और समस्त इसराएल ने उस फिलिस्ती को ये बातें सुनीं तब वे विस्मित होके डर गये ॥
- १२ अब दाऊद वैतलहम यहूदाह के इफराती का पुत्र था जिस का नाम यस्सी था और उस के आठ बेटे थे और वह जन साऊल के दिनों में लोगों में पुर-
- १३ निया गिना जाता था । और यस्सी के तीन बड़े बेटे थे जो लड़ाई में साऊल के पीछे हुए और जो संग्राम में गये थे और उन तीनों के ये नाम थे पहिलौठा
- १४ इलिअब और मंभिला अखिनडाब और लहुरा सम्मः । और दाऊद सब से छोटा
- १५ था और उस के तीनों बड़े बेटे साऊल के साथ साथ गये । परन्तु दाऊद साऊल
- १६ से फिरके अपने पिता की भेड़ें वैतलहम में चराने गया था । और वह फिलिस्ती चालीस दिन लों सांभ बिहान आया करता था ॥
- १७ और यस्सी ने अपने बेटे दाऊद से कहा कि अब एक ईफा भर भूना और ये
- १८ दस रोटी लेके छावनी को अपने भाइयों पास दौड़ जा । और पनीर की इन दस चक्कियों को सहसों के प्रधानों पास ले जा और देख तरे भाई कैसे हैं और
- १९ उन का कुछ चिन्ह ला । और साऊल और वे और सारे इसराएल के लोग रत्ना की तराई में फिलिस्तीयों से लड़ रहे थे । और दाऊद भोर को तड़के उठा और
- २० भुंड को एक रखवाल को सौंपके जैसा यस्सी ने उसे कहा था लेके चला और
- २१ मुरचे पर पहुंचा और उसी समय सेना लड़ाई के लिये ललकारती थी । क्योंकि इसराएलियों और फिलिस्तीयों ने अपनी अपनी सेना के आग्रे साम्रे परे बांधे थे ।
- २२ और दाऊद अपने पात्रों को रखवाल को सौंपके सेना को दौड़ गया और अपने
- २३ भाइयों से कुशल पूछा । और वह उन से बातें करता ही था कि देखो वह महावीर

कहा कि उस के स्वरूप पर और उस के डील की ऊंचाई पर दृष्टि न कर क्योंकि  
 मैं ने उसे नाह किया कि परमेश्वर मनुष्य के समान नहीं देखता क्योंकि मनुष्य  
 बाहरी रूप देखता है परन्तु परमेश्वर अंतःकरण पर दृष्टि करता है । तब यस्सी  
 ने अविनदाय को बुलाया और उसे समूह के आगे चलाया और वह बोला कि  
 परमेश्वर ने इसे भी नहीं चुना । तब यस्सी ने समः को आगे चलाया और वह  
 बोला कि परमेश्वर ने इसे भी नहीं चुना । तब यस्सी ने अपने सातों बेटों को  
 समूह के सामने किया सो समूह ने यस्सी को कहा कि परमेश्वर ने इन्हीं भी  
 नहीं चुना । और समूह ने यस्सी से कहा कि तरे सब बेटे यही हैं तब वह  
 बोला कि सब से छोटा रह गया है और देव्य वह भेड़ चराता है सो समूह ने  
 यस्सी को कहा कि उसे भेड़के संगवा क्योंकि जय लो वह यहाँ न आवे हम न  
 बैठेंगे । और वह भेड़के उसे भीतर लाया और वह लाल रङ्ग और सुंदर नेत्र  
 देखने में अच्छा था तब परमेश्वर ने कहा कि उठके उसे अभिषेक कर क्योंकि यह  
 बड़ी है । तब समूह ने तेल का साँग लिया और उसे उस के भाइयों के मध्य  
 में अभिषेक किया और परमेश्वर का आत्मा उस दिन में आगे लो दाऊद पर  
 उतरा और समूह उठके रामात को चला गया ।

परन्तु परमेश्वर का आत्मा साऊल से जाता रहा और परमेश्वर की ओर से  
 एक दुष्ट आत्मा उसे सताने लगा । तब साऊल के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये  
 अब एक दुष्ट आत्मा ईश्वर की ओर से आप को सताना है । सो अब हमारे प्रभु  
 अपने सेवकों को जो आप के आगे हैं आज्ञा कीजिये कि एक जन ऐसा ग्वाले  
 जो सारंगी बजाने में निपुण हो और यों दोगा कि जय दुष्ट आत्मा ईश्वर से  
 आप पर चढ़े तब वह अपने हाथ से बजावेगा और आप अच्छे होंगे । और  
 साऊल ने अपने सेवकों से कहा कि अब मेरे लिये अच्छा बजनिवा ठहरायो और  
 उसे मुझ पास लाओ । तब उस के दासों में से एक ने उत्तर देके कहा कि देख मैं  
 ने वैतलहमी यस्सी का एक बेटा देखा जो बजाने में निपुण है और वह जन सामर्थ्य  
 धीर है और वह लड़ाक और वदन में चतुर और देखने में सुंदर है और परमेश्वर  
 उस के साथ है । तब साऊल ने यस्सी पास दूत भेजके कहा कि अपने बेटे दाऊद  
 को जो भेड़ों के संग है मुझ पास भेज । सो यस्सी ने एक गदघा रोटी लिई और  
 एक कुप्पा मदिरा और बकरी का मेस्रा लिया और अपने बेटे दाऊद को दिया  
 कि साऊल के लिये ले जाय । सो दाऊद साऊल पास आया और उस के आगे  
 खड़ा हुआ और उस ने उसे बहुत प्यार किया और वह उस का अस्त्रधारी हुआ ।  
 और साऊल ने यस्सी को कहला भेजा कि कृपा करके दाऊद को मेरे आगे रहने  
 दीजिये क्योंकि वह मेरे मन में भाया है । और ऐसा हुआ कि जय ईश्वर से आत्मा  
 साऊल पर चढ़ता था तब दाऊद सारंगी लेके अपने हाथ से बजाता था  
 और साऊल संतुष्ट होके अच्छा होता था और दुष्ट आत्मा उस पर से उतर  
 जाता था ॥

सत्रहवां पत्र ।

अब फिलिस्तिनों ने युद्ध के लिये अपनी सेनाओं को यहूदाह के शोकः में १



पान्न में अर्थात् भोले में रक्खा और अपनी गोफन अपने हाथ में लिई और उस  
 ४१ फिलिस्ती की ओर बढ़ा । और फिलिस्ती चला और दाऊद के निकट आने लगा  
 और जो जन उस की ढाल उठाता था सो उस के आगे आगे गया ॥

४२ जब उस फिलिस्ती ने इधर उधर ताका तब दाऊद को देखा और उसे तुच्छ

४३ जाना क्योंकि वह तरुण लाल और सुंदर रूप था । और फिलिस्ती ने दाऊद से  
 कहा कि क्या मैं कूकर हूं जो तू लट्टु लेके मुझ पास आता है और फिलिस्ती ने

४४ अपने देवताओं के नाम से उसे धिक्कारा । और फिलिस्ती ने दाऊद से कहा कि मुझ  
 पास आ और मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों को और वनके पशुओं को देऊंगा ।

४५ तब दाऊद ने उस फिलिस्ती को कहा कि तू तलवार और बरछा और ढाल लेके  
 मुझ पर आता है परन्तु मैं सेनाओं के परमेश्वर के नाम से जो इसराएल की

४६ सेनाओं का ईश्वर है जिस की तू ने निन्दा किई है तुझ पास आता हूं । आज  
 ही परमेश्वर तुझे मेरे हाथ में सौंप देगा और मैं तुझे मार लूंगा और तेरा सिर

तुझ से अलग करूंगा और मैं आज फिलिस्तियों की सेना की लोथों को आकाश  
 के पक्षियों को और वनके पशुओं को देऊंगा जिसमें समस्त पृथिवी जाने कि ईश्वर

४७ इसराएल में है । और यह समस्त मंडली जानेगी कि परमेश्वर तलवार और भाले  
 से नहीं बचाता क्योंकि संग्राम परमेश्वर का है और वही तुम्हें हमारे हाथों में  
 सौंप देगा ॥

४८ और ऐसा हुआ कि जब फिलिस्ती उठा और दाऊद पास पहुंचने को आगे  
 बढ़ा तब दाऊद ने फुर्ती किई और सेना की ओर फिलिस्ती पर पहुंचने दौड़ा ।

४९ और दाऊद ने अपने थैले में हाथ डाला और उस में से एक पत्थर लिया और  
 गोफन से उस फिलिस्ती के माथे पर मारा और वह पत्थर उस के माथे में गड़

५० गया और वह भूमि पर मुंह के बल गिरा । सो दाऊद ने गोफन और पत्थर से  
 उस फिलिस्ती को जीता और उस फिलिस्ती को मारा और उसे घात किया परन्तु

५१ दाऊद के हाथ में तलवार न थी । तब दाऊद लपकके फिलिस्ती के निकट आया  
 और उस की तलवार लेके काठी से खींची और उसे नाश किया और उसी से उस

का सिर उतारा और जब फिलिस्तियों ने देखा कि हमारा सूरमा मारा गया तब  
 वे भाग निकले ॥

५२ और इसराएल के और यहूदाह के लोग उठे और ललकारे और अकरून के  
 फाटक लों और तराई लों फिलिस्तियों को रगोदा और मारा और फिलिस्तियों के

५३ घायल सगरीम अर्थात् जात और अकरून लों जूझ गये । तब इसराएल के संतान  
 ५४ फिलिस्तियों के खेदने से फिर आये और उन के तंबूओं को लूट लिया । और दाऊद

उस फिलिस्ती का सिर लेके उसे यरूसलम में लाया परन्तु अपने हथियारों को  
 तंबू में रक्खा ॥

५५ और जब साऊल ने दाऊद को फिलिस्ती के सामने होते देखा तब उस ने सेना  
 के प्रधान अखिनैयिर से पूछा कि हे अखिनैयिर यह गबरू किस का बेटा है तब

५६ अखिनैयिर बोला कि हे राजा आप के जीवन से मैं नहीं जानता । तब राजा ने  
 ५७ कहा कि वृक्ष यह गबरू किस का लड़का है । और जब दाऊद उस फिलिस्ती को

जात का फिलिस्ती जिम का नाम जुलियत था फिलिस्तीयों की सेनाओं में से निकल आया और उन्हीं बातों के समान बोला और दाऊद ने सुना । और २४ इसराएल के मारे लोग उसे देखके उस के सम्मुख से भागे और निपट डर गये । तब इसराएल के लोगों ने कहा कि तुम इस जन को देखते हो जो निकला है २५ कि यह निश्चय इसराएल को तुच्छ करने को निकल आया है और यों होगा कि जो जन उसे मारेगा राजा उसे बहुत धन से धनवान करेगा और अपनी बेटी उसे देगा और उस के पिता के घराने को इसराएल में निबंध करेगा ॥

तब दाऊद ने अपने आसपास के लोगों से पूछा कि जो जन इस फिलिस्ती २६ को मारेगा और इसराएल में कलंक को दूर करेगा उसे क्या मिलेगा क्योंकि यह अखतनः फिलिस्ती कौन है जो जीवते ईश्वर की सेना को तुच्छ समझे । सो २७ लोगों ने इस रीति से उत्तर देके उसे कहा जो इसे मारेगा उसे यह मिलेगा ॥

तब उस के बड़े भाई इलियथ ने उस की बातें सुनीं जो वह लोगों से करता २८ था और इलियथ का क्रोध दाऊद पर भड़का और वह बोला कि तू इधर क्यों आया है और वन में उन घोड़ी सी भेड़ों को किम पास छोड़ा मैं तेरे घमंड और तेरे मन की नटखटी को जानता हूँ क्योंकि तू संग्राम देखने को उतर आया है । तब दाऊद बोला कि मैं ने क्या क्या कारण नहीं । और वह वहाँ से दूसरी २९ ओर गया और वही बात कही तब लोगों ने उसे आगे के समान फेर उत्तर दिया । और जब उन बातों की जो दाऊद ने कही थीं चर्चा हुई तब साऊल लों संदेश ३१ पहुंचा और उस ने उसे लिया ॥

और दाऊद ने साऊल से कहा कि उस को कारण किसी का मन न घटे तोरा ३२ दास जाके इस फिलिस्ती से लड़ेगा । तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तुम में ३३ यह सायर्थ नहीं कि इस फिलिस्ती से लड़े क्योंकि तू लड़का है और वह लड़कपन से घोड़ा है । तब दाऊद ने साऊल से कहा कि तेरा सेवक अपने पिता की भेड़ों ३४ की रखवाली करता था और एक सिंह और एक भालू निकला और मुंड में से एक मेम्रा ले गया । और मैं ने उस के पीछे निकलके उसे मारा और उसे उस ३५ के मुंड से छुड़ाया और जब वह मुझ पर झपटा तब मैं ने उस की दाढ़ पकड़के उसे मारा और नाश किया । तेरे सेवक ने उन सिंह और भालू दोनों को मार ३६ डाला फेर यह अखतनः फिलिस्ती उन में से एक के समान होगा कि उस ने जीवते ईश्वर की सेनाओं को तुच्छ जाना । और दाऊद ने यह भी कहा कि जिस परमेश्वर ने मुझे सिंह के और भालू के पंजे से बचाया वही मुझे इस फिलिस्ती के दाघ से बचावेगा तब साऊल ने दाऊद से कहा कि जा और परमेश्वर तेरे साथ रहे ॥

और साऊल ने अपना वस्त्र दाऊद को पहिनाया और पीतल का एक टोप उस ३७ के सिर पर रखवा और उसे झिलम भी पहिनाया । और दाऊद ने अपनी तलवार ३८ झिलम पर लटकाई और जाने का मन किया क्योंकि उस ने उसे न जांचा था तब दाऊद ने साऊल से कहा कि इन से मैं नहीं जा सक्ता क्योंकि मैं ने इन्हें नहीं परखा तब दाऊद ने उन्हें अपने पर से उतार दिया । और उस ने अपना लटु-चाप ४० में लिया और नाले में से पाँच चिकने पत्थर चुन लिये और उन्हें अपने गड़रिया के

व्या और इसराएल में मेरे पिता का घराना क्या जो मैं राजा का जंवाई हूँ ।  
 १९ परन्तु यों हुआ कि जब साऊल की बेटी मैर्य को दाऊद के देने का समय आया  
 तब वह महुलती अदरिएल से बियाही गई ।  
 २० और साऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखती थी और उन्हें ने साऊल  
 २१ से कहा और वह बात उस की दृष्टि में अच्छी लगी । तब साऊल ने कहा कि मैं  
 उसे उस को देऊंगा जिसमें वह उस के लिये फंदा होवे और जिसमें फिलिस्तिनों  
 का हाथ उस पर पड़े तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तू आज इन दोनों में से  
 २२ मेरा जंवाई होगा । और साऊल ने अपने सेवकों को आज्ञा किई कि दाऊद से  
 गुप्त में बातचीत करो और कहो कि देख राजा तुम्हें से प्रसन्न है और उस के सारे  
 २३ सेवक तुम्हें चाहते हैं और अब तू राजा का जंवाई हो । सो साऊल के सेवकों  
 ने ये बातें दाऊद से कह सुनाईं और दाऊद बोला कि तुम राजा का जंवाई होना  
 २४ छोटा समझते हो मैं तो कंगाल होके तुच्छ गिना जाता हूँ । और साऊल के  
 २५ सेवकों ने इन बातों के समान उसे कहा । तब साऊल ने कहा कि तुम दाऊद से  
 यों कहियो कि राजा कुछ दाएजा नहीं चाहता परन्तु केवल एक सौ फिलिस्तिनों  
 की खलड़ियां जिसमें राजा के बैरियों से पलटा लिया जाय परन्तु साऊल ने चाहा  
 २६ कि दाऊद को फिलिस्तिनों से मर्या डाले । और जब उस के सेवकों ने इन बातों  
 को दाऊद से कहा तब राजा का जंवाई होना दाऊद को अच्छा लगा और दिन  
 २७ बीत न गये थे । और दाऊद उठा और अपने लोगों को लेकर गया और दो सौ  
 फिलिस्ती को मारा और दाऊद उन की खलड़ियों को लाया और उन्हें ने उन्हें  
 राजा के आगे पूरा गिनके धर दिया जिसमें वह राजा का जंवाई होवे और  
 २८ साऊल ने अपनी बेटी मीकल उसे बियाह दिई । और जब साऊल ने देखा और  
 जाना कि परमेश्वर दाऊद के साथ है और साऊल की बेटी मीकल उससे प्रीति  
 २९ रखती है । तब साऊल दाऊद से अधिक डर गया और साऊल सदा दाऊद का  
 ३० बैरी रहा । तब फिलिस्तिनों के प्रधान निकले और उन के निकलने के पीछे यों  
 हुआ कि दाऊद साऊल के सारे सेवकों से अधिक चौकसी करता था यहां लों कि  
 उस का बड़ा नाम हुआ ॥

उन्नीसवां पर्व ।

१ तब साऊल ने अपने बेटे यूनतन से और अपने समस्त सेवकों से कहा कि  
 दाऊद को मार लेओ परन्तु साऊल का बेटा यूनतन दाऊद से अति प्रसन्न था ।  
 २ और यूनतन दाऊद से कहके बोला कि मेरा पिता तुम्हें बधन करने चाहता है  
 ३ सो अब बिहान लों अपनी चौकसी करियो और गुप्तस्थान में छिप रहियो । और  
 मैं जाके चौगान में जहां तू होगा अपने पिता के पास खड़ा हूंगा और अपने  
 पिता से तेरी चर्चा करूंगा और जो मैं देखूंगा सो तुम्हें कह देऊंगा ॥  
 ४ और यूनतन ने दाऊद के विषय में अपने पिता साऊल से अच्छी कही कि  
 राजा अपने दास दाऊद से बुराई न कीजिये क्योंकि उस ने आप का कुछ अप-  
 राध नहीं किया और इस कारण कि उस के कर्म आप के लिये अति उत्तम हैं ।  
 ५ और उस ने अपना प्राण हथेली पर रक्खा और उस फिलिस्ती को घात किया

मारके फिर तब अविर्नेयर उसे राजा पास ले गया और फिलिस्ती को सिर उस के हाथ में था । तब साऊल ने उसे पूछा कि तू किस का लड़का और दाऊद ५८ ने उत्तर दिया कि मैं तेरे सेवक बैतलहमी यस्सी का लड़का हूँ ॥

अठारहवां पञ्च ।

और ऐसा हुआ कि जब वह साऊल से बात कह चुका तब यूनतन का मन १ दाऊद के मन से बंध गया और यूनतन ने उसे अपने ही प्राण के तुल्य प्रेम किया । और साऊल ने तब से उसे अपने साथ रक्खवा और फिर उस के पिता के घर जाने २ न दिया । तब यूनतन और दाऊद ने आपुस में वाचा बांधी क्योंकि वह उसे अपने प्राण के तुल्य प्रेम करता था । तब यूनतन ने अपना वागा और अपने वस्त्र ४ उतारे और अपनी तलवार और धनुष और अपने पटुका लें दाऊद को दिया ॥

और जहां कहीं साऊल उसे भेजता था दाऊद जाया करता था और भाषयान ५ होता था और साऊल ने उसे लोधाओं का प्रधान किया और वह सारे लोगों को दृष्टि में और साऊल के समस्त सेवकों की दृष्टि में भी ग्राह्य हुआ ॥

और उन के आते हुए ऐसा हुआ कि जब दाऊद उस फिलिस्ती को मारके ६ फिर आया तब सारी इसराएली स्त्रियां नगरों से गाती नाचती आनंद से तबले और त्रितारे लेके साऊल राजा से भेंट करने को निकलीं । और उन के वजाने ७ से स्त्रियां उत्तर देके कहती थीं कि साऊल ने अपने सधनों को मारा और दाऊद ने अपने दस सधनों को । और साऊल अति क्रोधित हुआ और यह कहावत उस की ८ दृष्टि में बुरी लगी और वह बोला कि उन्हीं ने दाऊद के लिये दस सधनों को छहाराया और मेरे लिये सधनों को अब केवल राज्य भर उसे पाना है । और ९ साऊल ने उसी दिन से दाऊद को तक रक्खवा ॥

और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि ईश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा साऊल पर उतरा १० और वह अपने घर में भविष्य कहने लगा और दाऊद आगे की नाईं हाथ से वजाने लगा और साऊल के हाथ में एक सांभ थी । तब साऊल ने सांभ फेंकी ११ क्योंकि उस ने कहा कि मैं दाऊद को भीत ही में गोदूंगा पर दाऊद दो बार उस के आगे से बच निकला ॥

और साऊल दाऊद से डरा करता था क्योंकि परमेश्वर उस के साथ था और १२ साऊल से जाता रहा । इस लिये साऊल ने उसे अपने पाम से अलग किया और १३ सधस का प्रधान किया और वह लोगों के आगे आया जाया करता था । और १४ दाऊद अपने सारे मार्ग में बुद्धिमान था और परमेश्वर उस के साथ था । इस १५ लिये जब साऊल ने देखा कि वह अति बुद्धिमान है तब वह उससे डरता था । पर सारे इसराएल और यहूदाह दाऊद को चाहते थे क्योंकि वह उन के आगे १६ आया जाया करता था ॥

तब साऊल ने दाऊद को कहा कि मेरी बड़ी बेटी मेरव को देख मैं उसे १७ तुझे दियाह देऊंगा केवल तू मेरे लिये बली पुत्र हो और परमेश्वर का संग्राम किया कर क्योंकि साऊल ने कहा कि मेरा हाथ उस पर न पड़े परन्तु फिलिस्तिनों का हाथ उस पर पड़े । तब दाऊद ने साऊल से कहा कि मैं कौन और मेरा प्राण १८

२४ लों भविष्य कहता गया । और उस ने भी अपने कपड़े उतार फेंके और समूह के आगे उस के समान भविष्य कहा और उस रात दिन भर नंगा पड़ा रहा इसी लिये यह कहावत हुई कि क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है ॥

दोमवां पर्व ।

१ तब दाऊद नायत रामात से भागके यूनतन पास आया और उसे कहा कि मैं ने क्या किया मेरा क्या अपराध है मैं ने तेरे पिता का कौन सा पाप किया है जो वह मेरे प्राण का माँदक है । और वह बोला कि ऐसा न होवे तू मारा न जावेगा देख मेरा पिता बिना मुझ पर प्रगट क्रिये कोई छोटी बड़ी बात न करेगा और यह बात किस कारण से मेरा पिता मुझ में छिपावे यह नहीं । तब दाऊद ने फिर किरिया खाके कहा कि तेरा पिता निश्चय जानता है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और वह कहता है कि यूनतन यह न जाने न हो कि वह शोकित हो परन्तु परमेश्वर में और तेरे जीवन में मुझ में और मृत्यु में केवल डग भर का अन्तर है । तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि जो कुछ तेरा जो चाहे मैं तेरे लिये करूँगा ॥

५ और दाऊद ने यूनतन से कहा कि देख कल अमावास्या है और मुझे उचित है कि राजा के साथ भोजन करने से मुझे जाने दीजिये कि मैं तीसरी सांझ लों खेत में जा छिपूँ । यदि तेरा पिता मेरी खोज करे तो कहियो कि दाऊद यद्य से मुझे छूटके अपने नगर बैतलहम को दौड़ गया क्योंकि वहाँ समस्त घराने के लिये वरसयन का बलिदान है । यदि वह यों बोले कि अच्छा तो तेरे सेवक के लिये कुशल है परन्तु यदि वह अति क्रोध करे तो निश्चय जानियो कि उस के मन में बुराई है । सो अपने सेवक पर दया से व्यवहार कीजियो क्योंकि तू अपने दास को अपने साथ परमेश्वर की वाचा में लाया है तथापि यदि मुझ में अपराध होवे तो तू मुझे बधन कर किस कारण मुझे अपने पिता पास ले जावेगा ॥

९ तब यूनतन ने कहा कि तुझ से दूर होवे क्योंकि यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे पिता ने ठाना है कि तेरी बुराई करे तो क्या मैं तुझे न बतताता ॥

१० फिर दाऊद ने यूनतन से कहा कि कौन मुझे कहेगा अथवा क्या जाने तेरा पिता तुझे घुरकके कहे । तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि आ खेत में चल से ११ वे दोनों खेत को गये । और यूनतन ने दाऊद से कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर जब मैं कल अथवा परसों अपने पिता को बूझ लेऊँ और देखूँ कि दाऊद के विषय में भला है और भेजके तुझे न बताऊँ । तो परमेश्वर ऐसा ही और इससे अधिक यूनतन से करे और यदि तेरी बुराई करने को मेरे पिता की इच्छा होवे तो मैं तुझे बताऊँगा और तुझे बिदा करूँगा कि तू कुशल से चला जावे १४ और जैसा परमेश्वर मेरे पिता के साथ हुआ है वैसा तेरे साथ होवे । और तू केवल मेरे जीवन लों परमेश्वर की कृपा मुझे न दिखाइयो जिसमें मैं न मरूँ । १५ परन्तु जब परमेश्वर दाऊद के हर एक शत्रु को पृथिवी पर से नाश करे तो मेरे १६ घराने पर से भी अनुग्रह उठा न लीजियो । सो यूनतन ने दाऊद के घराने से वाचा १७ वांछी और कहा कि परमेश्वर दाऊद के शत्रुन के हाथ से पलटा लेवे । और

और परमेश्वर ने सारे इमराएल के लिये बड़ी मुक्ति दिई आप ने देखा और आनन्द हुए सो आप किस लिये निर्दोष से दुराई किया चाहते हैं और अकारण दाऊद को मारा चाहते हैं । और साऊल ने यूनतन की बात सुनी और साऊल ने ६ क्रिया खाई कि ईश्वर के जीवन से दाऊद मारा न जावेगा । और यूनतन ने ७ दाऊद को बुलाया और ये मारी वानें उसे बतवाई और यूनतन दाऊद को साऊल पास लाया और कल परसें के समान फेर उस के पास रखने लगा ॥

और फिर लड़ाई हुई और दाऊद निकला और फिलिस्तीनों से लड़ा और ८ बड़ी मार से उन्हें मारा और वे उस के आगे से भागे ॥

और ज्यों साऊल अपने घर में एक सांग हाथ में लिये हुए बैठा था परमेश्वर ९ की ओर से दुष्ट आत्मा उस पर उतरा और दाऊद हाथ से बचा रहा था । और १० साऊल ने चाहा कि दाऊद को भीत में सांग से गोद देवे परन्तु दाऊद साऊल के आगे से अलग हो गया और सांग भीत में जा लगी और दाऊद भागके उस रात बच गया । तब साऊल ने दाऊद के घर पर दूतों को भेजा कि उसे अगोर और ११ विद्यान को उसे मार डालें तब दाऊद की पत्नी मीकल यह कहके उसे बोली कि यदि आज रात तू अपना प्राण न बचावे तो विद्यान को मारा जावेगा । तब १२ मीकल ने बिड़की में से दाऊद को उतार दिया और वह भागके बच गया । और १३ मीकल ने एक पुतला लेके विद्याने पर रख्या और बकरियों के रोस की तकिया उस के सिर तले रखी और कपड़ा से ढांप दिया । और जब साऊल ने दाऊद १४ को पकड़ने को दूत भेजे तब वह बोली कि वह रोमी है । और साऊल ने यह १५ कहके दूतों को दाऊद को देखने भेजा कि उसे खाट सहित मुक्त पास लाओ जिमर्त में उसे मार डालूं । और जब दूत भीतर आये तब क्या देखते हैं कि १६ विद्याने पर एक पुतला पड़ा है और उस के सिर तले बकरियों के रोस की तकिया है । तब साऊल ने मीकल से कहा कि तू ने मुझे से क्यों ऐसा कल किया और १७ मेरे बैरी को निकाल दिया और वह बच गया सो मीकल ने साऊल को उत्तर दिया कि उस ने मुझे कहा कि मुझे जाने दे नहीं तो मैं मुझे मार डालूंगा ॥

और दाऊद भागा और बच रहा और रामात में समूहल पास गया और जो १८ कुछ कि साऊल ने उससे किया था सब उसे कहा तब वह और समूहल दोनों नायूत में जा रहे । और साऊल को यह कहा गया कि देख दाऊद रामात में १९ नायूत में है । और साऊल ने दूतों को भेजा कि दाऊद को पकड़ें और जब उन्हें २० ने देखा कि आगमज्ञानियों की जथा भविष्य कहती है और समूहल ठहराये हुए के समान उन में खड़ा है तब ईश्वर का आत्मा साऊल के दूतों पर उतरा और वे भी भविष्य कहने लगे । जब साऊल को कहा गया तब उस ने और दूत भेजे २१ और वे भी भविष्य कहने लगे तब साऊल ने तीसरे दार और दूत भेजे और वे भी भविष्य कहने लगे । तब वह आप रामात को गया और उस बड़े कुए पर जो २२ मैकू में है पहुंचा और उस ने पूछा कि समूहल और दाऊद कहाँ हैं तब एक ने कहा कि देख वे नायूत में हैं । तब वह रामात नायूत की ओर चला और २३ ईश्वर का आत्मा उस पर भी पड़ा और वह बड़ा गया और रामात के नायूत



दौड़ और जो बाण मैं चलाता हूँ उन्हें छूँ और ज्योंही वह दौड़ा त्योंही एक  
 ३७ बाण उस के परे मारा । और जब वह होकरा उस स्थान में पहुँचा जहाँ यूनतन  
 ने बाण मारा था तब यूनतन ने होकरे को पुकारके कहा कि क्या वह बाण तुझ  
 ३८ से परे नहीं । और यूनतन ने होकरे को पुकारा कि चटक कर ठहर मत सो यूनतन  
 ३९ के होकरे ने बाणों को एकट्ठा किया और अपने स्वामी पास आया । परन्तु उस  
 ४० होकरे ने कुछ न जाना केवल दाऊद और यूनतन उस का भेद जानते थे । तब  
 यूनतन ने अपने हथियार उस होकरे को दिये और उसे कहा कि नगर में ले जा ॥  
 ४१ होकरे के जाने के पीछे दाऊद दक्खिन की ओर से निकला और भूमि पर  
 आँधे मुँह गिरा और तीन बार दण्डवत किई और उन्हीं ने आपुस में एक दूसरे  
 ४२ को चूमा और परस्पर यहाँ लों विलाप किये कि दाऊद ने जीता । और यूनतन ने  
 दाऊद को कहा कि कुशल से चला जा उस बाचा पर जो हम ने परमेश्वर के  
 नाम की किरिया खाके आपुस में किई है मेरे तेरे मध्य में और हमारे वंश के  
 मध्य में सदा लों परमेश्वर साक्षी होवे सो वह उठके चला गया और यूनतन नगर  
 में आया ॥

### इक्कीसवां पर्व ।

१ तब दाऊद नूब को अखिमलिक याजक पास आया और अखिमलिक दाऊद  
 की भेंट करने से डरा और बोला कि तू क्यों अकेला है और तेरे साथ कोई  
 २ नहीं । और दाऊद ने अखिमलिक याजक से कहा कि राजा ने मुझे एक काम  
 को भेजा है और मुझ से कहा कि यह काम जो मैं ने तुझे कहा है किसी को  
 ३ मत जनाइयो और मैं ने सेवकों को अमुक स्थान को भेज दिया है । सो अब तेरे  
 हाथ तले क्या है मुझे पाँच रोटी अथवा जो कुछ धरा हो सो मेरे हाथ में दीजिये ।  
 ४ और याजक ने दाऊद को कहा कि मेरे हाथ तले सामान्य रोटी नहीं परन्तु पवित्र  
 ५ रोटी है यदि तरुण लोग स्त्रियों से अलग रहे हों । तब दाऊद ने उत्तर देके याजक  
 को कहा कि निश्चय तीन दिन हुए होंगे जब से मैं निकला हूँ स्त्री हम से अलग है  
 और तरुणों के पात्र पवित्र हैं और यद्यपि रोटी आज पात्र में पवित्र किई गई  
 ६ हो तथापि सामान्य के तुल्य है । सो याजक ने पवित्र किई गई रोटी उसे दिई  
 क्योंकि भेंट की रोटी को छोड़ वहाँ कोई रोटी न थी जो परमेश्वर के आगे से  
 ७ उठाई गई थी जिसमें उस की संती वहाँ ताती रोटी रक्खी जावे । अब उस  
 दिन साऊल के सेवकों में से एक जन अदूमी परमेश्वर के आगे रोका गया था  
 ८ जिस का नाम दोगेग था वह साऊल के अहीरो का प्रधान था । तब दाऊद ने  
 अखिमलिक से पूछा कि यहाँ तेरे हाथ तले कोई भाला अथवा खड्ग तो नहीं  
 क्योंकि मैं अपनी तलवार अथवा हथियार साथ नहीं लाया हूँ क्योंकि राजा के काम  
 ९ की शीघ्रता थी । तब याजक ने कहा कि फिलिस्ती जुलिअत का खड्ग जिसे तू ने  
 एला की तराई में मारा एक कपड़े में लपेटा हुआ अफूद के पीछे धरा है यदि  
 तू उसे लिया चाहे तो ले क्योंकि उसे छोड़ यहाँ दूसरा नहीं तब दाऊद बोला  
 कि उस के तुल्य दूसरा नहीं वही मुझे दे ॥

१० और दाऊद उठा और साऊल के सन्मुख से उसी दिन भागा चला गया और

यूनतन ने दाऊद से फिर किरिया खिलाई इस लिये कि वह उससे अपने प्रान्त की के तुल्य प्रेम रखता था ॥

तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि कल अमावास्या और तेरी खोज होगी १८ इस कारण कि तेरा आसन सूना रहेगा । और जब तू तीन दिन अलग रहे तब १९ तू शीघ्र उतरके उसी स्थान में जाइयो जहां तू ने आप को कार्य के दिन ठिपाया था और तू अजल के चटान पास रहियो । और मैं उस अलग तीन वाग मांग्गा २० जैसा कि चिन्ह मारता हूं । और देख मैं यह कहके एक छोकरे को भेजूंगा कि २१ जा वागों को खोज यदि मैं निश्चय छोकरे को कहूं कि देख वाग तेरे इस अलग हैं उन्हें ले तब निकल आइयो क्योंकि परमेश्वर के जीवन में तेरे लिये कुशल है और कुछ नहीं । पर यदि मैं उस तरुण से यों कहूं कि देख वाग तेरे आगे हैं तब २२ तू मार्ग लीजियो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें विदा किया है । रही वह बात जो २३ आपुस में ठहराई है सो देख परमेश्वर सदा मेरे और तेरे मध्य में है ॥

सो दाऊद खेत में जा ठिपा और जब अमावास्या हुई तब राजा भोजन पर २४ बैठा । और राजा अपने व्यवहार के समान भीत के लग अपने आसन पर बैठा २५ और यूनतन उठा और अविनायर साजल की एक अलग में बैठा था और दाऊद का स्थान सूना था । तथापि उस दिन साजल ने कुछ न कहा क्योंकि उस ने समझा २६ था कि उस पर कुछ बीता है वह अपवित्र होगा निश्चय वह अपावन होगा । और २७ विद्वान को मास की दूसरी तिथि को ऐसा हुआ कि दाऊद का स्थान सूना रहा तब साजल ने अपने बेटे यूनतन से कहा कि किस कारण यस्मी का बेटा कल और आज भोजन को नहीं आया है । तब यूनतन ने साजल को उत्तर दिया कि २८ दाऊद मुझ से पूछके बैतलहम को गया । और उस ने कहा कि मुझे जाने दे कि २९ नगर में हमारे घराने में बलि है और मेरे भाई ने मुझे बुलाया है और अब यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मुझे जाने दे कि अपने भाइयों को देखूं इस लिये वह राजा के भोजन पर नहीं आता ॥

तब साजल का कोष यूनतन पर भड़का और उस ने उसे कहा कि हे ठीठ ३० और दंगहत के पुत्र क्या मैं नहीं जानता कि तू ने अपनी लज्जा के लिये और अपनी माता के नंगापन की लज्जा के लिये यस्मी के बेटे को चुना है । क्योंकि ३१ जब लों यस्मी का बेटा भूमि पर जीता है तब लों तू और तेरा राज्य स्थिर न होगा सो अब भेजके उसे मुझ पास ला क्योंकि वह निश्चय मारा जायेगा । तब ३२ यूनतन ने अपने पिता को उत्तर देके कहा कि वह किस कारण मारा जायेगा उस ने क्या किया है । तब साजल ने मारने को उस की ओर सांग फेंकी तब यूनतन ३३ को निश्चय हुआ कि उस के पिता ने दाऊद के मारने को ठाना है । सो यूनतन ३४ बहुत रिसियाके मंच से उठ गया और मास की दूसरी तिथि में भोजन न किया क्योंकि वह दाऊद के लिये निपट उदास हुआ क्योंकि उस के पिता ने उसे लज्जित किया ॥

और विद्वान को यूनतन उसी समय जो दाऊद से ठहराया था खेत को गया ३५ और एक छोकरा उस के साथ था । और उस ने उस छोकरे को आज्ञा किई कि ३६

१३ वोला मेरे प्रभु मैं यहीं हूँ । और साऊल ने उसे कहा कि तू ने मेरे विरुद्ध पर यस्सी के घेरे के साथ क्यों एक मत्ता किई कि तू ने उसे रोटी और खज्ज दिया और उस के लिये परमेश्वर से ब्रूभा जिसमें वह मेरे विरोध में उठे और घात में १४ लगे जैसा कि आज के दिन है । तब अखिमलिक ने राजा को उत्तर देके कहा कि आप के सारे सेवकों में दाऊद सा विश्वस्त कौन है जो राजा का जवाई १५ और आज्ञापालक है और आप के घर में प्रतिष्ठित है । क्या मैं ने उस के लिये परमेश्वर से ब्रूभा यह सुभ से परे होवे राजा अपने सेवक पर और उस के पिता के सारे घराने पर यह दोष न लगावे क्योंकि आप का सेवक इन बातों में से घट बड़ नहीं जानता ॥

१६ तब राजा बोला अखिमलिक तू और तेरे पिता का मारा घराना निश्चय मर १७ जावेगा । तब राजा ने उन पादातों को जो पास खड़े थे आज्ञा किई कि फिरो और परमेश्वर के याजकों को मार डालो क्योंकि इन के हाथ भी दाऊद से मिले हुए हैं और उन्हे ने जाना कि वह भागा है और मुझे संदेश न दिया परन्तु राजा १८ के सेवकों ने परमेश्वर के याजकों को मारने के लिये हाथ न बढ़ाया । तब राजा ने दोषेग को कहा कि तू फिर और उन याजकों को घात कर सो अदूमी दोषेग फिरा और याजकों पर लपका उस दिन उस ने पचासी मनुष्यों को जो सूती अफूद १९ पहिनते थे घात किया । और उस ने याजकों के नगर नूब के पुरुषों और स्त्रियों और लड़कों और दूध पीवकों को और बैलों और गददों और भेड़ों को तलवार की धार से घात किया ॥

२० और अखितूब के बेटे अखिमलिक के बेटों में से एक जन जिस का नाम २१ अविघतर था वच निकला और दाऊद के पीछे भागा । और अविघतर ने दाऊद २२ को संदेश दिया कि साऊल ने परमेश्वर के याजकों को मार डाला । और दाऊद ने अविघतर को कहा कि जिस दिन अदूमी दोषेग वहां था मैं ने उसी दिन जाना था कि वह निश्चय साऊल को कहेगा मैं तेरे पिता के सारे घराने के मारे जाने २३ का कारण हुआ । सो तू मेरे साथ रह मत डर क्योंकि जो तेरे प्राण का गांढक है सो मेरे प्राण का गांढक है परन्तु मेरे पास बचा रह ॥

तेईसवां पर्व ।

१ तब उन्हे ने यह कहके दाऊद को संदेश दिया कि देख फिलिस्ती कईलः से २ लड़ते हैं और खलिहानों को लूटते हैं । तब दाऊद ने परमेश्वर से यह कहके ब्रूभा कि मैं जाऊँ और उन फिलिस्तियों को मारूँ और परमेश्वर ने दाऊद से कहा ३ कि जा और फिलिस्तियों को मार और कईलः को बचा । और दाऊद के मनुष्यों ने उसे कहा कि देख हम तो यहूदाह में होते हुए डरते हैं तो कितना अधिक ४ कईलः मैं जाके फिलिस्तियों की सेनाओं का साम्रा करे । तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर ब्रूभा और परमेश्वर ने उत्तर देके उसे कहा कि उठ कईलः को उतर जा ५ क्योंकि मैं फिलिस्तियों को तेरे हाथ में सौंपूँगा । सो दाऊद और उस के लोग कईलः को गये और फिलिस्तियों से लड़े और उन के ठोर ले आये और उन्हे बड़ी मार से मारा यों दाऊद ने कईलः के बासियों को बचाया ॥

जात के राजा अक्रोस पास आया । तब अक्रोस के सेवकों ने उसे कहा कि क्या ११  
 यह दाऊद उस देश का राजा नहीं क्या यह वही नहीं जिस के विषय में वे  
 आपुस में गा गाके और नाच नाचके कहती थीं कि साऊल ने अपने सट्ठों को मारा  
 और दाऊद ने अपने दस सट्ठों को । और दाऊद ने ये बातें अपने मन में जुता रखीं १२  
 और जान के राजा अक्रोस से अति डरा । तब उस ने उन के आगे अपनी चाल १३  
 पलट डाली और उन में आप को घाड़ता बनाया और फाटक के द्वारों पर लकड़ी  
 रखी और अपनी लार को दाढ़ी में बटने दिया । तब अक्रोस ने अपने सेवकों १४  
 से कहा कि लेशो यह जन नो मिटो है तुम उसे मुक्त पास क्यों लाये । क्या मुझे १५  
 मिटो का प्रयोजन है कि तुम उसे मुक्त पास लाये कि मिटोपन करे क्या यह मेरे  
 घर में आधिगा ॥

वार्त्तनयां पृष्ठ ।

तब दाऊद वहाँ से निकलके भागा और अहूनाम की कंदला में गया और १  
 उस के भाई और दस के पिता का सारा घराना यह सुनके उस पास वहाँ गये ।  
 और हर एक दुःखी और शृंगी और उदासी उस पास एकट्ठे हुं और वह उन २  
 का प्रधान हुआ और उस के साथ चार सौ मनुष्य के लगभग हो गये ॥

और वहाँ से दाऊद मोशव के सिनफः को गया और मोशव के राजा ने कहा ३  
 कि मैं तेरी विनती करना हूँ कि मेरे माता पिता निकलके आप के पास रहें जय  
 लों में जानूँ कि ईश्वर मेरे लिये क्या करना है । और वह उन्हें मोशव के राजा ४  
 के आगे लाया और जय लों दाऊद ने अपने तर्से दृढ़ म्यानों में छिपाया था  
 वे उसी के साथ रहे । तब जब आगमजानो ने दाऊद को कहा कि दृढ़ म्यानों ५  
 में मत रह गद्गदाह के देश को जा तब दाऊद चला और हारित के वन में पहुँचा ॥

जब साऊल ने सुना कि दाऊद डिग्राई दिया और लोग उस के साथ हैं अथ ६  
 साऊल उस समय रासात के जिवथः में एक झुंज के नीचे अपने हाथ में भाला  
 लिये था और उस के सारे दाम उस के आसपास खड़े थे । तब साऊल ने अपने ७  
 आसपास के सेवकों से कहा कि सुनो हे विनयमीना क्या यस्सी का बेटा तुम्हें मे  
 हर एक को खेत और दाय्य की बारी देगा और तुम मय को सट्ठों और नैकड़ों  
 का प्रधान करेगा । क्योंकि तुम मय ने मेरे विरुद्ध परामर्ज किया है और किसी ८  
 ने मुझे नहीं सुनाया कि मेरे बेटे ने यस्सी के बेटे से वाचा बांधी है और तुम्हें  
 कोई नहीं जो मेरे लिये जाकर करे अथवा मुझे संदेश देवे कि मेरे बेटे ने मेरे  
 सेवक को उभारा है कि ठूँकें में रहे जैसा आज के दिन है ॥

तब अहूमी दोगेग ने जो साऊल के सेवकों का प्रधान था उत्तर दिया और ९  
 यों कहा कि मैं ने यस्सी के बेटे को नूत्र में अखितूय के बेटे अखिमलिक पास  
 देखा है । और उस ने उन के लिये परमेश्वर से दूआ और उसे भोजन दिया और १०  
 फिलिस्ती जुलियत का खड्ग उसे दिया ॥

तब राजा ने अखितूय के बेटे अखिमलिक याजक को और उस के पिता के ११  
 सारे घराने अर्थात् उन याजकों को जो नूत्र में थे युला भेजा और वे सब के सब  
 राजा पास आये । और साऊल ने कहा कि हे अखितूय के बेटे सुन तब वह १२

२४ लेजंगा । तब वे उठे और साऊल से आगे जैफ को गये परन्तु दाऊद अपने लोगों सहित मऊन के बन में यसीसून के दक्षिण दिशा को एक चौगान में था ॥

२५ तब साऊल और उस के लोग उस की खोज को निकले और दाऊद को समाचार पहुंचा तब वह पहाड़ी से उतरके मऊन के बन में जा रहा और साऊल

२६ ने यह सुनके मऊन के बन में दाऊद का पीछा किया । और साऊल पर्वत की इस अलंग चला गया और दाऊद और उस के लोग पर्वत की उस अलंग और दाऊद ने साऊल के डर से हाली किया कि निकल जावे क्योंकि साऊल और उस के लोगों ने दाऊद को और उस के लोगों को पकड़ने को चारों ओर से घेर २७ लिया । तब एक दूत ने साऊल पास आके कहा कि हाली आ कि फिलिस्ती २८ देश में फैल गये । सो साऊल दाऊद के खेदने से फिरा और फिलिस्तियों के सन्मुख हुआ इस कारण उन्हें ने उस स्थान का नाम बिभाग का चटान धरा ॥

चौबीसवां पर्व ।

१ और दाऊद वहां से चलके रेनजदी के दृढ़ स्थानों में जा रहा । और यों हुआ

कि जब साऊल फिलिस्तियों के पीछे से फिरा तब उसे कहा गया कि देख

३ दाऊद रेनजदी के अरण्य में है । तब साऊल समस्त इसराएली में से तीन सहस्र चुने हुए पुरुष लेके दाऊद की और उस के लोगों की खोज को बनैली बकरियों

४ के पहाड़ों पर गया । तब वह मार्ग के भेड़शाला में आया जहां एक खोह थी

और साऊल उस खोह में अपने पांव दाबने और लेटने के लिये गया और दाऊद

५ और उस के लोग खोह की अलंगों में रहे । और दाऊद के लोगों ने उसे कहा

कि देखिये यह वह दिन है जिस के विषय में परमेश्वर ने आप को कहा था कि

देख मैं तेरे शत्रुन को तेरे हाथ में सौंपंगा जिसते तू अपनी बांछा के समान उस्से

६ करे तब दाऊद उठा और चुपके से साऊल के बस्त्र का खूंट काट लिया । और

उस के पीछे यों हुआ कि दाऊद के मन में खटका हुआ इस कारण कि उस ने

७ साऊल का खूंट काटा । और उस ने अपने लोगों से कहा कि परमेश्वर न

करे कि मैं अपने स्वामी पर जो परमेश्वर का अभिषिक्त है ऐसा करूं कि अपना

हाथ उस पर बढाऊं क्योंकि वह परमेश्वर का अभिषिक्त है ॥

८ सो दाऊद ने इन बातों से अपने लोगों को रोक रक्खा और उन्हें साऊल

पर हाथ चलाने न दिया परन्तु साऊल ने खोह से निकलके अपना मार्ग लिया ।

९ और उस के पीछे दाऊद उठा और उस खोह से बाहर आया और साऊल से

यह कहके पुकारा कि हे मेरे स्वामी राजा और जब साऊल ने अपने पीछे फिरके

१० देखा तब दाऊद ने भूमि पर झुकके दण्डवत किई । और दाऊद ने साऊल से कहा

कि लोगों की ये बातें आप क्यों सुनते हैं कि देखिये दाऊद आप की बुराई

११ चाहता है । देखिये आज ही के दिन आप की आंखों ने देखा है कि परमेश्वर ने

आज आप को खोह में मेरे हाथ में सौंप दिया और कितनों ने आप को मारने

कहा परन्तु मैं ने आप को छोड़ा और अपने मन में विचारा कि अपने स्वामी

१२ पर अपना हाथ न बढाऊंगा क्योंकि वह परमेश्वर का अभिषिक्त है । इस्से अधिक

हे मेरे पिता देखिये हां अपने बस्त्र के खूंट को मेरे हाथ में देखिये क्योंकि मैं ने

और ऐसा हुआ कि जब अग्निमलिक का बेटा अविग्रतर भागके कईल: में ६ दाऊद पास गया तब उस के हाथ में एक अफूद था ॥

और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद कईल: में आया और साऊल बोला ७ कि ईश्वर ने उसे मेरे हाथ में सौंप दिया क्योंकि वह मेरे नगर में जिस में फाटक और अड़ंगे हैं पहुंचके बंद हो गया । और साऊल ने समस्त लोगों को युद्ध के ८ लिये एकट्ठा किया कि कईल: में उतरके दाऊद को और उस के लोगों को घेर लें । और दाऊद ने जाना कि साऊल चाहता है कि चुपके से मेरी घुराई करे ९ तब उस ने अविग्रतर याजक से कहा कि अफूद मुझ पास ला । तब दाऊद ने १० कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तूरे सेवक ने निश्चय सुना है कि साऊल का विचार है कि कईल: में आके मेरे कारण नगर को नष्ट करे । क्या कईल: के ११ लोग मुझे उस के हाथ में सौंप देंगे क्या जैसा तूरे दाम ने सुना है साऊल उतर आवेगा हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर मैं तेरी विनती करता हूं कि अपने सेवक को बचा तब परमेश्वर ने कहा कि वह उतर आवेगा । तब दाऊद ने कहा क्या १२ कईल: के लोग मुझे और मेरे लोगों का साऊल की बंधुआई में सौंप देंगे और परमेश्वर ने कहा कि वे सौंप देंगे । तब दाऊद अपने लोग सहित जो मनुष्य १३ छः सौ एक थे उठा और कईल: से निकल गया और जिधर जा सका गया और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद कईल: से वन निकला तब वह जाने से रूक गया । और दाऊद ने अरण्य में दृढ़ स्थानों में वास किया और जैफ के वन में एक १४ पहाड़ के बीच रहा और साऊल प्रतिदिन उस की खोज में लगा हुआ था परन्तु ईश्वर ने उसे उस के हाथ में सौंप न दिया । और दाऊद ने देखा कि साऊल १५ उस के मारने के कारण निकला और दाऊद जैफ के अरण्य के बीच एक वन में था ॥

और साऊल का बेटा यूनतन उठा और वन में दाऊद पास गया और ईश्वर १६ पर उसे दृढ़ किया । और उसे कहा कि मत डर क्योंकि तू मेरे पिता साऊल के १७ हाथ में न पड़ेगा और तू इसराएल का राजा होगा और तेरे पीछे में हूंगा और मेरा पिता साऊल भी यह जानता है । और उन दोनों ने परमेश्वर के आगे वाचा १८ बांधी और दाऊद वन में ठहर रहा और यूनतन अपने घर गया ॥

तब जैफ के लोग जिविअ: में साऊल पास चढ़ आके बोले कि क्या दाऊद १९ दृढ़ स्थानों में हमारे मध्य एक वन में हकील: पहाड़ पर जो यमीमून की दक्षिण दिशा में है नहीं रहता । सो हे राजा अब तू चल और अपने मन के समान उतर २० आ और हमें उचित है कि उसे राजा के हाथ में सौंप दें । तब साऊल बोला २१ कि परमेश्वर तुम्हें आशीस देवे क्योंकि तुम ने मुझ पर दया की है । अब जाओ २२ और और भी जुगत करो और देखो कि उस के लुकने का स्थान कहाँ है और किस ने उसे वहां देखा है क्योंकि मुझे कहा गया कि वह बड़ी चौकसी करता है । सो देखो और उन लुकने के सारे स्थानों का जहां वह छिपता है जानो और २३ ठीक संदेश लेकर मुझ पास फिर आओ और मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा और यों होगा कि यदि वह देश में होवे तो मैं उसे यहूदाह के सारे सदस्यों में से दूँ



८ का कुछ जाता न रहा । तू अपने तरुणों से पूछ और वे तुझे कहेंगे इस लिये तरुण लोग तेरी दृष्टि में अनुग्रह पावें क्योंकि हम अच्छे दिन में आये हैं सो मैं तेरी विनती करता हूँ कि जो तेरे हाथ आवे सो तेरे सेवकों और अपने बेटे दाऊद को दीजिये ॥

९ और दाऊद के तरुणों ने आके नवाल को दाऊद का नाम लेके उन सारी  
१० बातों के समान कहा और चुप हो रहे । तब नवाल ने दाऊद के सेवकों को उत्तर देके कहा कि दाऊद कौन और यस्सी का बेटा कौन आजकल बहुत सेवक हैं  
११ जो अपने स्वामियों से भाग निकले हैं । क्या अपनी रोटी और पानी और मांस जो मैं ने अपने कतरवैयों के लिये मारा है लेके उन मनुष्यों को देऊँ जिन्हें मैं  
१२ नहीं जानता कि कहाँ से हैं । सो दाऊद के तरुणों ने अपना मार्ग लिया और  
१३ आके उन सब बातों को उससे कहा । तब दाऊद ने अपने लोगों से कहा कि हर एक तुम में से अपना अपना खड्ग बांधे सो उन्हीं ने अपना अपना खड्ग बांधा  
और दाऊद ने भी अपना खड्ग बांधा और दाऊद के पीछे पीछे चार सौ जन गये और दो सौ सामग्री के साथ रहे ॥

१४ परन्तु तरुणों में से एक ने नवाल की पत्नी अबिजैल से कहा कि देख दाऊद ने अरण्य में से हमारे स्वामी पास दूतों को भेजा कि नमस्कार करें पर वह उन  
१५ पर झपटा । परन्तु उन मनुष्यों ने हम से भलाई किई कि हमें कुछ दुःख न हुआ और जब लों हम चौगान में थे और उन से परिचय रखते थे तब लों हम ने कुछ  
१६ न खोया । जब लों हम उन के साथ भेड़ की रखवाली करते रहे रात दिन वे  
१७ हमारे लिये एक आड़ थे । सो अब जान रख और सोच कि तू क्या करेगी क्योंकि हमारे स्वामी पर और उस के सब घराने पर बुराई ठहराई गई क्योंकि वह ऐसा बुरा जन है कि कोई उसे बात नहीं कर सक्ता ॥

१८ तब अबिजैल हाली से दो सौ रोटियाँ और दो कुप्पे दाखरस और पांच भेड़ें  
वनी बनाई और मन सत्ताईस एक भूना और एक सौ गुच्छा अंगूर और दो सौ  
१९ गूलर की लिट्टी लिई और उन्हें गदहों पर लादा । और अपने सेवकों को कहा कि मेरे आगे आगे बढो देखो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूँ परन्तु उस ने अपने  
२० पति नवाल से न कहा । और ज्योंही वह गदहे पर चढ़के पहाड़ के आड़ से उतरी तो क्या देखती है कि दाऊद अपने लोगों समेत उतरके उस के सन्मुख  
२१ आया और उससे भेंट हुई । अब दाऊद ने कहा था कि निश्चय मैं ने इस जन की समस्त वस्तुन की जो अरण्य में थीं बुरा रखवाली किई यहां लों कि उस  
२२ के सब में से कुछ नष्ट न हुआ और भलाई की संती मुझ से बुराई किई । सो यदि बिहान लों उस के समस्त पुरुषों में से मैं एक को जो भीत पर मूत्ता है छोड़ूं तो ईश्वर उससे और उससे भी अधिक दाऊद के शत्रुन से करे ॥

२३ और ज्योंही अबिजैल ने दाऊद को देखा त्योंही वह गदहे से उतरी और  
२४ दाऊद के आगे औंधी गिरी और भूमि पर दंडवत किई । और उस के चरणों पर गिरके कहा कि हे मेरे प्रभु मुझ ही पर अपराध रखिये मैं तेरी विनती करती हूँ कि अपनी दासी को कान में बात करने दीजिये और अपनी दासी की बातें सुनिये ।

जो आप के वस्त्र का खूंट काट लिया और आप को न भाग दस्ते जानिये और देखिये कि मेरे मन से बुराई और किसी प्रकार का अपराध नहीं है और मैं ने आप के बिन्दु पाप न किया तथापि आप मेरे प्राण का अंतर करने को निकले हैं । परमेश्वर मेरे और आप के मध्य में न्याय करे और परमेश्वर आप से मेरा पलटा लेवे परन्तु मेरा हाथ आप पर न पड़ेगा । जैसा प्राचीनों की कदाव्यय में कहा गया है कि दुष्ट से दुष्टता निकलती है परन्तु मेरा हाथ आप पर न चड़ेगा । इसराएल का राजा किस के पीछे निकला है आप किस के पीछे पड़े हैं क्या मेरे दुष्ट कूकर के अथवा एक पित्र के ॥

सो परमेश्वर विचार करे और मेरे और आप के मध्य में न्याय करे और देखे और मेरे पद का पक्ष करे और आप के हाथ से मुझे बचावे । और जब दाऊद ये बातें साजल से कह चुका तब साजल ने कहा कि मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरा शब्द है और साजल ने बड़े शब्द ने विनाश किया । और दाऊद ने कहा कि तू मुझ से अधिक धर्मी है क्योंकि तू ने बुराई की संगी मेरी भनाई की है । और तू ने आज के दिन दिखाया है कि तू ने मुझ से भनाई की है यद्यपि परमेश्वर ने मुझे तेरे हाथ में सौंप दिया और तू ने मुझे मार न जाना । क्योंकि यदि कोई अपने बैरी को पावे तो क्या वह उसे कुशल से छोड़ देगा सो जो तू ने आज मुझ से किया है परमेश्वर इस का प्रतिफल देवे । और अब उम्ब में जानता हूँ कि तू निश्चय राजा होगा और इसराएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा । सो अब तू मुझ से परमेश्वर की किरिया ग्या कि तेरे पीछे मैं तेरे धंश को काट न दानूंगा और तेरे पिता के घगने में से तेरे नाम को मिटा न दानूंगा । तब दाऊद ने साजल से किरिया खाई और साजल अपने घर को चला गया परन्तु दाऊद और उस को लोग दृढ़ स्थान में गये ॥

पचीसवां पृथ्वी ।

और ममूगल सर गया और ससन्त इसराएलियों ने गऊट्टे छोड़े उन पर विनाश किया और रामात में उस को घर में उसे गाढ़ा और दाऊद वटके फारान को अरण्य में उतर गया ॥

और वहाँ मजन में एक पुरुष था जिस की संपत्ति करमिल में थी वह महा-जन था और उस के तीन सद्यन भेड़ और एक महम बकरी थीं और वह अपनी भेड़ों का रोम करमिल में कातरना था । और उस जन का नाम नद्याल और उस की स्त्री का नाम अविजेल था और वह स्त्री दुष्टिसती और सुंदरी थी परन्तु वह पुरुष कठोर और कुकर्मा था और कालिय के धंश के घगने में से था । और दाऊद ने अरण्य में सुना कि नद्याल भेड़ों के रोम कातरना है । तब दाऊद ने इस तरफ भेजे और उन तरफों से कहा कि नद्याल पास करमिल को चढ़ जाओ और मेरे नाम से उस का कुशल पूछो । और उस भरे पूरे जन से कहियो कि तुझ पर कुशल और मेरे घर पर कुशल और तेरी ससन्त वस्तु पर कुशल होवे । और मैं ने अब सुना है कि तुझ पास रोम कातरवैयें हैं सो तेरे गड़गिये हमारे संग थे और हम ने उन्हें दुःख न दिया और जब तों वे करमिल में हमारे साथ थे उन

अपने दास को दुराई से अलग रख्या है क्योंकि परमेश्वर ने नवाल की दुष्टता को उसी के सिर पर डाला और दाऊद ने भेजा और अविजैल से घातचीत करवाई कि अपनी पत्नी करे ॥

- ४० और जब दाऊद के सेवक करामिल को अविजैल पास आये तब वे यह कहके  
 ४१ उठे बोले कि दाऊद ने हमें तुम्ह पास भेजा है कि तुम्हें अपनी पत्नी करे । तब  
 वह उठी और भूमि पर झुकके बोली कि देख तेरी दासी अपने स्वामी के सेवकों  
 ४२ के चरण धोने के लिये दासी टोचे । और अविजैल शीघ्रता करके उठी और गदहे  
 पर चढ़ी और अपनी पांच दासियां साथ लिईं और दाऊद के दूतों के साथ चली  
 ४३ और उस की पत्नी हुई । और दाऊद ने यजरअएल में से अखिनुअम को लिया  
 ४४ और वे दोनों उस की पत्नियां हुईं । परन्तु साऊल ने अपनी बेटी मीकल को जो  
 दाऊद की पत्नी थी लैश के बेटे फलती को दिया जो जल्मीम का था ॥

छव्वीसवां पर्व ।

- १ तब जैफ़ी जिवियः में साऊल पास आ बोले क्या दाऊद हकीलः पहाड़ में  
 २ यसीमून के आगे छिपा हुआ नहीं । तब साऊल उठके तीन सटस चुने हुए इस-  
 ३ राएली लेके जैफ़ के अरण्य में उतरा कि दाऊद को जैफ़ के अरण्य में ढूंढे । और  
 हकीलः के पहाड़ में जो यसीमून के आगे है मार्ग की ओर डेरा किया परन्तु  
 दाऊद अरण्य में रहा और उस ने देखा कि साऊल उस का पीछा किये हुए अरण्य  
 ४ में आया । तब दाऊद ने भेटिये भेजे और दूक लिया कि साऊल सचमुच आया है ॥  
 ५ तब दाऊद उठके साऊल के डेरे को चला और दाऊद ने उस म्यान को देख  
 रख्या जहां साऊल पड़ा था और नैयिर का बेटा अविनैयिर उस की सेना का  
 प्रधान था और साऊल खाई में सोता था और लोग उस के चारों ओर डेरा किये  
 ६ थे । तब दाऊद ने हित्ती अखिमलिक और जरूपाह के बेटे अविगै को जो युअब  
 का भाई था कहा कि कौन मेरे साथ छावनी में साऊल पास चलेगा और अविगै  
 ७ बोला कि मैं आप के साथ उत्तुंगा । सो दाऊद और अविगै रात को सेना में  
 छुसे और क्या देखते हैं कि साऊल खाई के भीतर सोता है और उस का भाला  
 उस के सिरहाने भूमि में गड़ा था परन्तु अविनैयिर और उस के लोग चारों ओर  
 ८ सोते थे । तब अविगै ने दाऊद से कहा कि ईश्वर ने आज आप के शत्रु को  
 आप के हाथ में कर दिया सो अब मुझे भाले से एक ही बार सारके भूमि में उसे  
 ९ गोदने दीजिये और दूसरी बार उसे न मारुंगा । तब दाऊद ने अविगै से कहा  
 कि उसे नाश न कर क्योंकि कौन परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ बढ़ाके निर्दोष  
 १० ठहर सके । और दाऊद ने कहा कि परमेश्वर के जीवन से परमेश्वर उसे मारेगा  
 अथवा उस का दिन आवेगा और वह मर जावेगा अथवा युद्ध पर उतरेगा और मारा  
 ११ जावेगा । ईश्वर न करे कि मैं परमेश्वर के अभिषिक्त पर अपना हाथ बढ़ाऊं पर अब  
 तू उस के सिरहाने के भाले को और पानी की भारी को ले लेना और हम चल निकलें ।  
 १२ सो दाऊद ने भाला और पानी की भारी साऊल के सिरहाने से ले लिईं और चल  
 निकले और किसी ने न देखा और न जाना और कोई न जागा क्योंकि सब के  
 सब सोते थे क्योंकि परमेश्वर की ओर से भारी निद्रा उन पर पड़ी थी ॥

मैं आप से विनती करती हूँ कि मेरे प्रभु इस घरे पुरुष की अर्थात् नयाल की २५  
 चिंता न करिये क्योंकि जैसा उस का नाम वैसा वही है नयाल उस का नाम और  
 मूर्खता उस के साथ परन्तु मैं जो तेरी दासी हूँ अपने प्रभु के तरुणों को जिन्हें  
 आप ने भेजा था न देखा । सो अब हे मेरे प्रभु परमेश्वर के जीवन में और २६  
 आप के प्राण के जीवन में जैसा कि परमेश्वर ने आप को लाहू वढ़ाने से और  
 अपने ही हाथ से प्रतिफल लेने से रोका है वैसा ही अब आप के शत्रु और वे जो  
 मेरे प्रभु की दुराई चाहते हैं नयाल के समान होंगे । सो अब यह भेंट आप की २७  
 दासी अपने प्रभु के आगे लाई है सो उन तरुणों को दिया जाय जो मेरे प्रभु के  
 पश्चाद्गामी हैं । अब मैं आप की विनती करती हूँ कि अपनी दासी का पाप २८  
 क्षमा कीजिये क्योंकि निश्चय परमेश्वर मेरे प्रभु के लिये दृढ़ घर बनावेगा क्योंकि  
 मेरा प्रभु परमेश्वर की लड़ाइयाँ लड़ता है और आप के दिनों में आप में दुराई न  
 पाई गई । तथापि एक जन उठा है कि आप का पीछा करे और आप के प्राण २९  
 का ग्राहक होवे परन्तु मेरे प्रभु का प्राण आप के ईश्वर परमेश्वर के संग जीवन  
 की छेर में बांधा जावेगा और तेरे शत्रुन के प्राण शोफन में फँके जावेंगे । और ३०  
 ऐसा होगा कि जब परमेश्वर अपने वचन के समान सब भलाई मेरे प्रभु से कर  
 चुके और आप को इसराएल पर आत्ताकारी करे । तब आप के लिये यह कुछ ३१  
 डगमगाने का अथवा मेरे प्रभु के मन की ठाकर का कारण न होगा कि आप ने  
 अकारण लाहू वढ़ाया अथवा कि मेरे प्रभु ने अपना पलटा लिया परन्तु जब  
 परमेश्वर मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण कीजिये ॥

और दाऊद ने अविजैल से कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य है ३२  
 जिन ने तुम्हें मेरी भेंट के लिये आज के दिन भेजा है । और तेरा मंत्र धन्य और ३३  
 तू धन्य है जिस ने मुझे आज के दिन लाहू से और अपने हाथ से पलटा लेने से  
 रोक रक्खा है । क्योंकि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के जीवन में जिस ने तुम्हें ३४  
 दुःख देने से मुक्त से अलग रक्खा यदि तू शीघ्र न करती और मुक्त पाम चली न  
 आती तो निःसंदेह विद्वान लों नयाल का एक भी पुरुष जो भीत पर सूता है न  
 छूटता । और जो कुछ कि वह उस के निमित्त लाई थी दाऊद ने उस के हाथ से ३५  
 लिया और उसे कहा कि अपने घर कुशल से जा देख मैं ने तेरा वचन माना है  
 और तुम्हें ग्रहण किया है ॥

तब अविजैल नयाल पास आई और देखा कि उस ने अपने घर में राजा का ३६  
 सा एक जेवनार किया और नयाल का मन मगन हो रहा था क्योंकि वह बड़ा  
 मतवाला था सो इस कारण उस ने उसे विद्वान लों कुछ घट वड़ न कहा ।  
 परन्तु ऐसा हुआ कि विद्वान को जब नयाल का मद उतरा और उस की स्त्री ने ३७  
 यह समाचार उसे कहा तब उस का मन मृतक सा हो गया और वह पत्थर हो  
 गया ॥

और ऐसा हुआ कि दस दिन के पीछे परमेश्वर ने नयाल को मारा और वह ३८  
 मर गया । और जब दाऊद ने सुना कि नयाल मर गया तब उस ने कहा कि ३९  
 परमेश्वर धन्य है जिस ने नयाल के हाथ से मेरे कलंक का पलटा लिया और

४ तरुणों को लेके जात के राजा मऊक के घेरे अकीस की ओर गया । और दाऊद अपने लोगों के साथ जिन में से हर एक अपने घराने समेत था अपनी दोनों स्त्री अखिनुअम को जो यजरअएली थी और करमेली अविजेल को जो नवाल की ४ पत्नी थी लेके जात में अकीस के साथ रहा । और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद जात को भाग गया तब उस ने फिर उस का पीछा न किया ॥

५ और दाऊद ने अकीस से कहा कि यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो वे इस देश में मुझे किसी वस्ती में स्थान दें जहां मैं वसूं क्योंकि आप ६ का दास किस लिये आप के राज्य नगर में रहे । तब अकीस ने उस दिन सिकलाज उसे दिया इस लिये सिकलाज आज के दिन लों यहूदाह के राजाओं के वंश ७ में है । और दाऊद फिलिस्तिनों के देश में एक बरस चार मास लों रहा ॥

८ और दाऊद ने अपने लोगों को लेके जसूर और जरिजी और अमालीकियों को घेर लिया क्योंकि वे जसूर के सिवाने से लेके मिस्र के सिवाने लों आगे से ९ वस्ते थे । और दाऊद ने देश को नष्ट किया और न पुरुष को न स्त्री को जीता छोड़ा और उन के भेड़ और ठोर और गदहे और जंत और कपड़े लिये और १० अकीस पास फिर आये । और अकीस ने पूछा कि आज तुम ने मार्ग किधर खोला और दाऊद ने कहा कि यहूदाह के दक्षिण और यरहमिएली के दक्षिण और कैनी ११ के दक्षिण दिशा पर । और दाऊद ने उन में से कोई स्त्री पुरुष को जीता न छोड़ा जो जात को संदेश ले जावे यह कहके कि न होवे कि हमारे विरुद्ध संदेश पहुंचावे कि दाऊद ने ऐसा वैसा किया और जब से वह फिलिस्तिनों के राज्य में १२ आ रहा तब से उस का व्यवहार ऐसा ही था । और यह कहके अकीस ने दाऊद को सच्चा जाना कि उस ने आप को अपने इसराएली लोगों से अत्यंत निन्दा करवाई इस लिये वह मेरा दास सदा होगा ॥

अट्ठाईसवां पर्व ।

१ और उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि फिलिस्तिनों ने इसराएल से लड़ने को अपनी सेनाओं को एकट्ठी किया तब अकीस ने दाऊद से कहा कि तू निश्चय २ जान कि तुझे और तेरे लोगों को मेरे साथ लड़ाई पर चढ़ने होगा । तब दाऊद ने अकीस से कहा निश्चय आप जानियेगा जो कुछ आप के दास से वन पड़ेगा और अकीस ने दाऊद से कहा कि मैं अपने सिर का रक्त सदा तुम्हें कहेगा ॥

३ और समूहल मर गया और समस्त इसराएल उस पर रोते थे और उसे उसी के नगर रामात में गाड़ा था और साऊल ने उन्हें जो भुतहे और टोन्हे थे देश से निकाल दिया था ॥

४ और फिलिस्ती एकट्ठे होके आये और सूनेम में डेरा किया और साऊल ने भी ५ सारे इसराएल को एकट्ठा किया और जिलबूअः में डेरा किया । और जब साऊल ने फिलिस्तिनों की सेना को देखा तब डरा और उस का मन अत्यंत कंपित ६ हुआ । और जब साऊल ने परमेश्वर से ब्रह्मा परमेश्वर ने उसे कुछ उत्तर न दिया ७ न तो दर्शन से न उरीम से न आगमज्ञानियों के द्वारा से । तब साऊल ने अपने सेवकों से कहा कि मेरे लिये किसी स्त्री को खोजो जो भुतही होवे जिसमें मैं

तब दाऊद दूसरी ओर गया और एक पहाड़ की चोटी पर दूर जा खड़ा हुआ १३ और उन में बड़ा बीच था । और दाऊद ने लोगों को और नैयिर के बेटे अविनैयिर १४ को पुकारके कहा कि हे अविनैयिर तू उत्तर नहीं देता तब अविनैयिर ने उत्तर देके कहा कि तू कौन है जो राजा को पुकारता है । तब दाऊद ने अविनैयिर से कहा १५ कि क्या तू बलवन्त नहीं और इसराएल में तेरे समान कौन सो किस लिये तू ने अपने प्रभु राजा की रक्षा न किई क्योंकि लोगों में से एक जन तेरे प्रभु राजा के मारने को निकला था । तू ने यह काम कुछ अच्छा न किया परमेश्वर के जीवन १६ से। तुम मार डालने के योग्य हो इस कारण कि तुम ने अपने स्वामी की जो परमेश्वर का अभिषिक्त है रक्षा न किई और अब देख कि राजा का भाला और पानी की भारी जो उस के मिरहाने थी कहाँ है ॥

तब साऊल ने दाऊद का शब्द पहिचाना और कहा कि हे मेरे बेटे दाऊद १७ क्या यह तेरा शब्द है तब दाऊद बोला कि हे मेरे प्रभु हे राजा मेरा शब्द है । और उस ने कहा कि मेरे प्रभु क्यों इस रीति से अपने दास के पीछे पड़े हैं क्योंकि १८ मैं ने क्या किया और मेरे हाथ से क्या पाप हुआ । सो अब मैं चिन्ती करता हूँ १९ कि मेरा प्रभु राजा अपने सेवक की बातों पर कान धरे यदि परमेश्वर ने मुझ पर आप को उभाड़ा है तो वह भेंट ग्रहण करे परन्तु यदि यह मनुष्य के चंग से है तो परमेश्वर का नाप उन पर पड़े क्योंकि उन्होंने ने आज मुझे परमेश्वर के अधिकार से यह कहके हाँक दिया है कि जा अपनी देवताओं की सेवा कर । सो अब २० परमेश्वर के आगे मेरा लोहू भूमि पर न बहे क्योंकि इसराएल का राजा एक पिशू की खोज को निकला है जैसा कोई तीतर के अंडे को पहाड़ों पर निकलना है ॥

तब साऊल ने कहा कि मैं ने प्राप किया हे मेरे बेटे दाऊद फिर आ क्योंकि २१ फेर तुझे न सताऊंगा इस लिये कि मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में बहुमूल्य हुआ देख मैं ने मूढ़ता किई और अति चूक किई । तब दाऊद ने उत्तर देके कहा २२ कि देख यह राजा का भाला है सो तरुणों में से एक आके इसे ले जावे । और २३ परमेश्वर हर जन को उस के धर्म का और उस की सच्चाई का प्रतिफल देवे क्योंकि परमेश्वर ने आज आप को मेरे हाथ में सौंप दिया पर मैं ने न चाहा कि परमेश्वर के अभिषिक्त पर अपना हाथ बड़ाऊँ । और देख जिस रीति से आप २४ का प्राण मेरी आंखों में आज के दिन प्रिय हुआ वैसा ही मेरा प्राण ईश्वर की दृष्टि में प्रिय होवे और वह मुझे सब कष्टों से बचावे । तब साऊल ने दाऊद से २५ कहा कि तू धन्य है हे मेरे बेटे दाऊद तू महाकार्य करेगा और तब भी तू भाग्यवान होगा सो दाऊद ने अपना मार्ग लिया और साऊल अपने स्थान को फिरा ॥

सत्ताईसवां पद्य ।

और दाऊद ने अपने मन में कहा कि अब मैं किसी दिन साऊल के हाथ से मारा १ जाऊंगा सो मेरे लिये इससे अच्छा कुछ नहीं कि मैं शीघ्रता से भागके फिलिस्तिनियों के देश में जा रहूँ और साऊल इसराएल के सिवानों में मुझे खोजने से निरास हो जावेगा यों मैं उस के हाथ से बच जाऊंगा । तब दाऊद अपने साथ के छः सौ २



२३ अपने मार्ग जाइये । पर उस ने न माना और कहा कि मैं न खाऊंगा परन्तु उस  
के दासों ने उस स्त्री सहित उसे बरबस खिलाया और उस ने उन का कहा माना  
२४ और भूमि पर से उठा और खाट पर बैठा । और उस स्त्री के घर में एक मोटा  
बकड़ा था सो उस ने चटक किया और उसे मारा और पिसान लेके गंधा और  
२५ उससे अखमीरी रोटियां पकाईं । और साजल और उस के सेवकों के आगे-लाई  
और उन्होंने ने खाया और उठे और उसी रात वहां से चले गये ॥

उनतीसवां पर्व ।

१ सो फिलिस्ती की सब सेना अफीक में एकट्ठी हुई और इसराएली यजरअएल  
२ के सोते के पास डेरा किये हुए थे । और फिलिस्तियों के अध्यक्ष सैकड़ों सैकड़ों  
और सहस्र सहस्र आगे बढ़ते गये परन्तु दाऊद और उस के लोग अकीस के पीछे  
३ पीछे गये । तब फिलिस्तियों के अध्यक्षों ने कहा कि इन इसरानियों का क्या काम  
और अकीस ने फिलिस्ती अध्यक्षों को कहा कि क्या यह इसराएल के राजा साजल  
का सेवक दाऊद नहीं जो इतने दिनों और इतने बरसों से मेरे साथ है और जब  
४ से वह मुझ पास आया है आज लों उस में कुछ दोष नहीं पाया । तब फिलि-  
स्तियों के अध्यक्ष उससे कुछ हुए और उन्होंने ने उसे कहा कि इस जन को यहां से  
फेर दे जिसमें वह अपने स्थान को जो तू ने उसे दिया है फिर जाय और हमारे  
साथ युद्ध में न उतरे क्या जाने युद्ध में वह हमारा वैरी होवे क्योंकि वह अपने  
५ स्वामी से किस बात से मेल करेगा क्या इन लोगों के सिरों से नहीं । क्या यह  
वही दाऊद नहीं जिस के विषय में वे नाचती हुई गाती थीं कि साजल ने तो  
अपने सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को ॥

६ तब अकीस ने दाऊद को बुलाया और उसे कहा कि निश्चय परमेश्वर के  
जीवन से तू खरा है तेरा आना जाना सेना में मेरे साथ मेरी दृष्टि में अच्छा है  
क्योंकि जिस दिन से तू मुझ पास आया मैं ने आज लों तुझ में कुछ बुराई नहीं  
७ पाई तथापि अध्यक्षों की दृष्टि में तू अच्छा नहीं । सो अब फिर और कुशल से  
८ चला जा और फिलिस्तियों के अध्यक्षों की दृष्टि में बुराई न कर । परन्तु दाऊद  
ने अकीस से कहा कि मैं ने क्या किया है और जब से मैं आप के साथ रहा  
और आज लों आप ने अपने सेवक में क्या पाया कि मैं अपने प्रभु राजा के वैरियों  
९ से लड़ाई न करूं । तब अकीस ने दाऊद को उत्तर दिया और कहा कि मैं जानता  
हूं और तू मेरी दृष्टि में ईश्वर के दूत के समान है परन्तु फिलिस्तियों के अध्यक्षों  
१० ने कहा है कि वह हमारे साथ युद्ध में न जावे । सो अब विहान को तड़के अपने  
स्वामी के दासों समेत जो तेरे साथ यहां आये हैं उठके शीघ्र तड़के चले जाइये ॥

११ तब दाऊद अपने लोगों सहित तड़के उठा कि प्रातःकाल को वहां से चलके  
फिलिस्तियों के देश को फिर जावे और फिलिस्ती यजरअएल को चढ़ गये ॥

तीसवां पर्व ।

१ और ऐसा हुआ कि जब दाऊद और उस के लोग तीसरे दिन सिकलाज में  
पहुंचे क्योंकि अमालीकी दक्षिण दिशा से सिकलाज पर चढ़ आये थे और उन्होंने  
२ ने सिकलाज को मारा और उसे आग से फूंक दिया । और उस में की स्त्रियों को

उस पास जाऊँ और उससे दूँ तब उस के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये गेनदोर में एक भुतही स्त्री है ।

तब साऊल ने अपना भेष बदलके दूसरा यन्त्र पहिना और गया वह और दो ८  
जन उस के साथ और रात को उस स्त्री पास पहुँचा और उसे कहा कि कृपा  
करके मेरे लिये अपने भूत से विचार पूछ और जिसे मैं कहूँ उसे मेरे लिये उठा ।  
और उस स्त्री ने उसे कहा कि देख तू जानता है कि साऊल ने क्या किया कि ९  
उस ने उन्हें जो भुतहे थे और टोनहों को किस रीति से देश से काट डाला सो  
मुझे मरवा डालने के लिये तू क्यों मेरे प्राण के लिये जान डालता है । तब साऊल १०  
ने परमेश्वर की किरिया खाके कहा कि परमेश्वर के जीवन से इस बात के लिये  
तुझ पर कोई दण्ड न पड़ेगा । तब वह स्त्री बोली मैं किसे तरे लिये उठाऊँ तब ११  
वह बोला कि समूहल को मेरे लिये उठा ।

जब उस स्त्री ने समूहल को देखा तब वह बड़े शब्द से चिल्लाई और उस १२  
स्त्री ने साऊल से कहा कि आप ने मुझ से क्यों कल किया आप तो साऊल हैं ।  
तब राजा ने उसे कहा कि मत डर तू ने क्या देखा और उस स्त्री ने साऊल से १३  
कहा कि मैं ने देवों को पृथिवी से उठते देखा । तब उस ने उसे कहा कि उस १४  
का डौल क्या तब वह बोली कि एक बृद्ध पुरुष ऊपर आता है और दोहर ओढ़े  
हैं तब साऊल ने जाना कि वह समूहल है और वह मुझ के चल निहड़के भूमि  
पर झुका । तब समूहल ने साऊल से कहा कि तू ने क्यों मुझे उठाके बेचैन किया १५  
और साऊल ने कहा कि मैं अति दुःखी हूँ क्योंकि फिलिस्ती मुझ से लड़ते हैं  
और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है और कुछ उत्तर नहीं देता न तो आगमज्ञानियों  
के द्वारा मैं न दर्शन से सो मैं ने तुझे बुलाया जिससे तू मुझे बतावे कि मैं क्या  
करूँ । और समूहल ने कहा कि जब परमेश्वर ने तुझे छोड़ दिया और तेरा बैरी १६  
बना तब मुझ से किस लिये पूछता है । और जैसा परमेश्वर ने मेरे द्वारा से कहा १७  
उस ने उस के लिये वैसा ही किया है क्योंकि परमेश्वर ने तेरे राज्य को फाड़ा  
है और तेरे परोमी टाऊड को दिया है । इस लिये कि तू ने परमेश्वर के शब्द १८  
को नहीं माना और असालीकियों पर उस के अति कोष को पूरा न किया इसी  
कारण से परमेश्वर ने आज के दिन तुझ से यह व्यवहार किया है । और परमे- १९  
श्वर इसगएल को तेरे संग फिलिस्तियों के हाथ में सौंपेगा और तू और तेरे बेटे  
कल मेरे साथ होंगे परमेश्वर इसराएली सेना को भी फिलिस्तियों के हाथ में  
सौंपेगा ॥

तब साऊल तुरंत भूमि पर गिरा और समूहल की बातों से बहुत डर गया और २०  
उस में कुछ सामर्थ्य न रही क्योंकि उस ने दिन भर और रात भर रोटी न खाई  
थी । तब वह स्त्री साऊल पास आई और देखा कि वह अति व्याकुल है तब २१  
उस ने उसे कहा कि देख आप की दासी ने आप का शब्द सुना और मैं ने अपना  
प्राण अपनी छथेली पर रक्खा और जो कुछ आप ने मुझे कहा मैं ने उसे माना ।  
सो अब आप भी कृपा करके अपनी दासी की बात सुनिये और मुझे अपने आगे २२  
एक ग्राम रोटी धरने दीजिये और खाइये जिससे आप को इतनी सामर्थ्य हो कि

और दोर से लिये जिन्हें उन्होंने ने देखा कि आगे जाकर लिया और बोले कि यह दाऊद की मृत ।

- २१ और दो सो मरुत नेमें दूजे से जो दाऊद के साथ न जा सके से और उन्होंने ने उन्हें इसर के नामे पर बोद्ध दिया और ये दाऊद को और उस के लोगों को आगे से लेने को निकले और जय दाऊद उन लोगों के पास पहुंचा तब उस ने उन का कुमान प्रता । तब तब हुए। और कुतुम्बियों ने जो दाऊद के साथ गये थे यह कहा हम लिये कि ये हमारे साथ न गये हम उन्हें हम मृत में से जो हम ने पारे है भाग न देंगे क्युन हर एक अपनी धर्मा पंथा पंथा देती को निके दिया
- २२ हाथ । तब दाऊद बोला कि हे मेरे भाइया जो कुछ कि परमेश्वर ने हमें दिया है और उस ने हमें दत्ताया हैत उसका को जो हम पर सब आये थे हमारे हाथ
- २३ में कर दिया सो मुन उस में से लेना न करो । क्योंकि हम प्रिय में जान तुम्हारी सुनना परन्तु जेना जिन का भाग है जो मुन में पट्ट दाना है येना हम का भाग
- २४ हागा जो सेपति पाग रहता है दोनों एक समान भाग पायेंगे । और ऐसा हुआ कि उस दिन से आगे यहाँ विधि और व्यवस्था इसराएल के लिये आगे के दिन लो हुये ।
- २५ जय दाऊद मिकलाज में आया तब उस में मृत में से मरुत के जार्सन और बायने लिये के लिये भाग भेजा और कहा कि येना परमेश्वर के जयन की मृत में से यह तुम्हारी भेंट है । जो सेनान में और जो सेनान सानात में और जो
- २६ जनीर में । और जो परमेश्वर में और जो निकमोन में और जो इम्मासाय में ।
- २७ और जो रकन में और जो मरिगाली के नगरी में और जो यैनी के नगरी में ।
- २८ और जो हुरन में और जो कोरमाग में और जो अताक में । और जो ह्यरन में
- और उन सब स्थानों में जहाँ जहाँ दाऊद और उस के लोग फिरा करते थे भेजा ।

मकलीमयां पद्य ।

- १ अब फिलिस्ती इसराएल में गये और इसराएल फिलिस्ती के आगे से भागे और
- २ जिलयूष पछाड़ पर जूक गये । और फिलिस्ती साऊल की और उस के बेटों के पीछे पीछे पिलसे गये और फिलिस्ती ने उस के बेटे गूनतन को और अत्रि-
- ३ नदाय और सलकीमूथ को मार लिया । और साऊल से बड़ी लड़ाई हुई और धनुषधारियों ने उसे ऐसा बंधा कि वह धनुषधारियों के हाथ से अत्यन्त घायल
- ४ हुआ । तब साऊल ने अपने अस्त्रधारी से कहा कि अपनी तलवार खोल और मुझे गोद दे जिससे ये अरातनः आपके मुझे गोद न लेंगे और मेरी दुर्दशा न करें पर उस के अस्त्रधारी ने न माना क्योंकि वह अत्यंत बुरा तब साऊल ने तलवार
- ५ लिई और उस पर गिरा । और जय उस के अस्त्रधारी ने देखा कि साऊल मर
- ६ गया तब वह भी अपनी तलवार पर गिरा और उस के साथ मर गया । सो साऊल और उस के तीनों बेटे और उस का अस्त्रधारी और उस के सारे लोग उसी दिन एक साथ मर गये ।

- ७ जय इसराएल के लोगों ने जो तराई के उस अलां थे और जो यरदन के पार थे देखा कि इसराएल के लोग भागे और साऊल और उस के बेटे मारे गये तब अस्त्रियां छोड़ छोड़ भाग निकले और फिलिस्ती आये और उन में बसे ।

पकड़ लिया पर उन्होंने ने छोटी बही को न मारा परन्तु उन्हें लेके अपने मार्ग चले गये । जब दाऊद और उस के लोग नगर में पहुँचे तो क्या देखते हैं कि नगर जला पड़ा है और उन की पत्नियाँ और उन के बेटे और उन की बेटियाँ बंधुआई में पकड़ी गई हैं । तब दाऊद और उस के साथ के लोग चिल्लाये और बिलाप किया यहाँ लो कि उन में रोने की सामर्थ्य न रही । और दाऊद की दोनों पत्नियाँ यज़रअगली अग्निनुअम और करमिली नगाल की पत्नी अत्रिजेल बंधुआई में पकड़ी गई । और दाऊद अति दुःखी हुआ क्योंकि लोग उस पर पत्थरबाद करने की बातचीत करते थे इस लिये कि उन में से हर एक अपने बेटों और बेटियों के लिये निपट उदाम था पर दाऊद ने परमेश्वर अपने ईश्वर से लियाव पाया ।

और दाऊद ने अग्निमलिक के बेटे अत्रिबतर याजक से कहा कि कृपा करके अफूद सुन्न पास ला सो अत्रिबतर अफूद दाऊद पास ले आया । और दाऊद ने यह कहके परमेश्वर से पूछा कि मैं इस जथा का पीछा करूँ क्या मैं उन्हें जा छोड़ूँगा तब उस ने उसे उत्तर दिया कि पीछा कर क्योंकि तू निश्चय उन्हें जा छोड़ेगा और निःसंदेह उन्हें छुड़ावेगा । सो दाऊद अपने साथ के छः सौ तमरों को लेके चला और बमूर के नाले लो आया और जो पीछे छोड़े गये वहाँ पर रह गये । पर दाऊद आप चार सौ तमरों में उन का पीछा किये चला गया क्योंकि दो सौ पीछे रह गये थे जो रोते थक गये थे कि बमूर के नाले पार जा न सकें ।

और उन्होंने ने खेत में एक सिन्नी को पाया और उसे दाऊद पास ले आये और उसे रोटी खाने को दिई और उस ने खाई और उन्होंने ने उसे पानी भी पिलाया । और उन्होंने ने गूलर की लिट्टी और दो गुच्छे अंगूर उसे दिये और जब वह म्या चुका तब उस के जी में जो आया क्योंकि उस ने तीन रात दिन न रोटी खाई न पानी पीया था । तब दाऊद ने उसे पूछा कि तू कौन और कहाँ का है और वह बोला कि मैं एक सिन्नी तमर और एक अमानीकी का सेवक हूँ और मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया क्योंकि तीन दिन हुए कि मैं रोमी हुआ । इस कगीती के दक्षिण और चढ़ गये और यहूदा के मियाने पर और कालिय की दक्षिण और चढ़ गये थे और हम ने मिकलाज को आग से फूँक दिया । और दाऊद ने उसे कहा कि तू मुझे इस जथा लो ले जा सक्ता है और वह बोला कि मुझ से ईश्वर की किरिया खाइये कि मैं मुझे प्राण से न माँगा और तुम्हें तेरे स्वामी के साथ न सौंपूँगा तो मैं आप को इस जथा लो ले जाऊँगा ॥

जब वह उसे वहाँ ले गया तो क्या देखते हैं कि ये समस्त पृथिवी पर फैले हुए खाते पीते और नाचते थे क्योंकि फिलिस्तिनों के और यहूदा के देश से बहुत लूट लाये थे । और दाऊद ने उन्हें सोझूली से दूसरे दिन की सांझ लो सारा और उन में से एक भी न बचा केवल चार सौ तमर जंठों पर चढ़के भाग निकले । और जो कुछ कि अमालीकी ले गये थे दाऊद ने फेर पाया और अपनी दोनों पत्नियों को भी दाऊद ने छुड़ाया । और उन के छोटे बड़े और बेटा बेटी और धन संपत्ति जो लूटी गई थी दाऊद ने सब फेर पाई । और दाऊद ने सारे मुँह

११ तब दाऊद ने अपने कपड़े को पकड़ा और उन्हें फाड़ डाला और उस के  
१२ साथ के समस्त मनुष्यों ने भी ऐसा ही किया । और वे साजल और उस के बेटे  
यूनतन और परमेश्वर के लोगों और इसराएल के घराने के लिये जो तलवार से  
मारे पड़े थे रोये पीटे और सांभ लो ब्रत किया ॥

१३ तब दाऊद ने उस तरुण से जिस ने उसे संदेश पहुंचाया था पूछा कि तू कहाँ  
का है और उस ने उत्तर दिया कि मैं परदेशी का लड़का एक अमालीकी हूँ ।

१४ तब दाऊद ने उसे कहा कि क्योंकि तू परमेश्वर के अभिषिक्त पर नाश करने का

१५ हाथ उठाते हुए न डरा । तब दाऊद ने तरुणों में से एक को बुलाया और कहा  
कि उस पास जाके उस पर लपक सो उस ने उसे ऐसा मारा कि वह मर  
१६ गया । और दाऊद ने उसे कहा कि तेरा लोहू तेरे ही मिर पर क्योंकि तेरे  
ही मुंह ने तुझ पर यह कहके साक्षी दिई कि मैं ने परमेश्वर के अभिषिक्त  
को घात किया ॥

१७ और दाऊद ने साजल और उस के बेटे यूनतन पर इस विलाप से विलाप  
१८ किया । और उस ने आज्ञा किई कि यहूदाह के मंतान का धनुष का गीत सिखावे  
देख यशर की पुस्तक में लिखा है ॥

१९ कि इसराएल की सुंदरता तेरे ऊँचे स्थानों पर झूझ गई वलवंत कैसे मारे पड़े  
२० हैं । जात में मत कहो अस्कूलन की सदृकों में मत प्रचारो न हो कि फिलिस्तिनियों

२१ की बेटियाँ आनन्द करें न हो कि अखतनों की लड़कियाँ जय जय करें । हे  
जिलदूअ के प्राण्डो ओस और मेघ तुम पर न पड़ें और न भेड़ों का खेत होवे  
क्योंकि वहाँ वलवंत की ढाल तुच्छता से फेंकी गई साजल की ढाल जैसे कि वह

२२ अभिषिक्त न हुआ । झूके हुए के लोहू वलवंत की चिकनाई से यूनतन का धनुष  
२३ उलटा न फिरा और साजल की तलवार लूकी न फिरी । साजल और यूनतन

अपने जीवन में प्रिय और शोभित थे और अपनी मृत्यु में वे अलग न किये  
२४ गये वे गिट्ट से अधिक फुरतीले थे मिट्टों से वलवंत थे । हे इसराएल की बेटियों

साजल पर रोओ जिस ने तुम्हें दैजनी वस्त्र पहिनाया जिस ने सोने के आभूषण  
२५ तुम्हारे वस्त्र पर संवारा । संग्राम के मध्य वलवंत कैसे गिर गये हे यूनतन तू

२६ अपने ऊँचे स्थानों में मारा गया । हे मेरे भाई यूनतन तेरे लिये मैं दुःखित हूँ तू  
मेरे लिये अति शोभित था तेरी प्रीति मुझ पर अचंभित थी स्त्रियों की प्रीति से

२७ अधिक । वलवंत कैसे गिर गये और संग्राम के हथियार नष्ट हुए ॥

दूसरा पर्व ।

१ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने यह कहके परमेश्वर से पूछा कि  
मैं यहूदाह के किसी नगरों में चढ़ जाऊँ और परमेश्वर ने उसे कहा कि चढ़ जा

२ तब दाऊद ने कहा कि किधर चढ़ जाऊँ और उस ने कहा कि हबस्न को । सो  
दाऊद उधर चढ़ गया और उस की दोनों पत्नी भी यजरअएली अखिनूअम और

३ नवाल की पत्नी करमिली अविजैल । और उस के लोग जो उस के साथ थे  
दाऊद हर एक जन को उस के घराने समेत ऊपर लाया और वे हबस्न के नगरों

४ में आ वसे । तब यहूदाह के लोग आये और उन्होंने ने वहाँ दाऊद को यहूदाह

और विद्वान को ऐसा हुआ कि जब फिलिस्ती आये कि लूके हुओं को लूटे ८  
तब उन्होंने ने साजल को और उस के तीन बेटों को जिलदूय पहाड़ पर पड़ा ९  
पाया । तब उन्होंने ने उस का सिर काट लिया और उस के हाथपार लेके फिलि- ९  
स्तीयों के देग में चारों ओर भेज दिये कि उन की मूर्तों के मंदिर में और लोगों ९  
में प्रचार होये । और उन्होंने ने उस के हाथपार को इस्लामात के मंदिर में रक्खा १०  
और उस की लोथ को वैतगान की भीत पर लटकाया ॥

और जब यदीसजिलिग्रद के वासियों ने सुना कि फिलिस्तीयों ने साजल से यों ११  
किया । तब उन से के सारे महावीर उठे और रात भर चले गये और वैतगान १२  
की भीत पर से साजल की और उस के बेटों की लोथों को लेके यदीस में फिर १३  
आये और वहां उन्हें जला दिया । और उन की हड्डियों को लेके यदीस के पेड़ १३  
तले गाड़ दिया और सात दिन लों व्रत किया ॥

## समूह की दूसरी पुस्तक ।

पहिला पद्य ।

और साजल के मरने के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद अमालीकियों को मारके १  
फिर आया और दो दिन सिकलाज में रहा । और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि २  
देखा गक जन साजल की छावनी से अपने बन्धु फाड़े हुए और अपने सिर पर ३  
धूल डाले हुए आया और ऐसा हुआ कि जब दाऊद के पास पहुंचा तब भूमि ४  
पर गिरा और दण्डवत किई । तब दाऊद ने उसे कहा कि तू कहां से आता है ५  
और वह उसे बोला कि इसराएल की छावनी से मैं अब निकला हूँ । तब दाऊद ६  
ने उसे पूछा कि क्या हुआ मुझे कहिये और उस ने उत्तर दिया कि लोग संग्राम ७  
से भागे हैं और बहुत लोग लूक गये हैं और साजल और उस का बेटा यूनतन ८  
भी मर गये हैं । तब उस तरुण से जिस ने उसे कहा था दाऊद ने पूछा कि तू ९  
क्योंकर जानता है कि साजल और उस का बेटा यूनतन मर गये हैं । तब उस १०  
तरुण ने उसे कहा कि मैं संयोग से जिलदूय पहाड़ पर था तो क्या देखता हूँ ११  
कि साजल अपने भाले पर टेक रहा था और देखा कि रथ और घोड़चढ़े उस के १२  
पीछे धाये गये । और जब उस ने पीछे फिरके मुझे देखा तब उस ने मुझे बुलाया १३  
और मैं ने उत्तर दिया कि यहीं हूँ । तब उस ने मुझे कहा कि तू कौन और मैं ने १४  
उसे कहा कि मैं एक अमालीकी हूँ । फिर उस ने मुझे कहा कि मैं तेरी विनती १५  
करता हूँ निकट खड़ा होके मुझे बधन कर क्योंकि क्याकुलता ने मुझे पकड़ा है कि १६  
मेरा प्राण अब लों मुझ से पूर्ण है । सो मैं उस के निकट खड़ा हुआ और उसे १७  
मार डाला क्योंकि मुझे निश्चय हुआ कि गिरने के पीछे वह जी न सक्ता था और १८  
मैं ने उस के सिर का मुकुट और विजायट जो उस की भुजा पर था लिया और १९  
उन्हें अपने स्त्रामी पास बंधर लाया हूँ ॥



२४ खड़े रहते थे । तब यूथव और अधिशै भी अविनैयिर के पीछे पड़े और जब वे अम्मः के टीले को जो जिवजन के वन के मार्ग में जीहा के आगे है पहुंचे तब सूर्य अस्त हुआ ।

२५ और विनयमीन के संतानों ने एकट्ठे होके अविनैयिर की सहाय किई और

२६ सब के सब मिलके एक जथा वनके एक पहाड़ की चोटी पर खड़े हुए । तब अविनैयिर ने यूथव को पुकारके कहा कि क्या तलवार सदा लों नाश करेगी क्या

तू नहीं जानता है कि अंत में कड़ुवाहट होगी सो कब लों तू लोगों को अपने

२७ भाइयों का पीछा करने से न रोकेगा । तब यूथव ने कहा कि जीवते ईश्वर की

किरिया यदि तू न कहता तो निश्चय लोगों में से हर एक अपने भाई का पीछा

२८ छोड़के भार ही को फिर जाता । फिर यूथव ने नरसिंगा फूँका और सब लोग

ठहर गये और इसराएल का पीछा न किया और लड़ाई भी थम गई ।

२९ और अविनैयिर अपने लोगों समेत चौगान से होके रात भर चला गया और

३० यरदन पार उत्तरा और समस्त वितरुन से चलके सहनैन में पहुंचा । और यूथव

अविनैयिर का पीछा करने से उलटा फिरा और उस ने सारे लोगों को एकट्ठा

३१ किया तब दाऊद के सेवकों में से असहेल को छोड़ उन्नीस जन घटे थे । परन्तु

दाऊद के सेवकों ने विनयमीनियों में से और अविनैयिर के लोगों में से तीन सौ

३२ साठ जन मारे । और उन्होंने ने असहेल को उठाया और उसे उस के पिता की

समाधि में जो बैतलहम में है गाड़ा और यूथव अपने लोगों समेत रात भर चला

गया और पौ फटते हुए हवरून में पहुंचा ।

### तीसरा पर्व ।

१ सो साऊल के और दाऊद के घरानों में बहुत दिन लों लड़ाई होती रही

परन्तु दाऊद बलवन्त होता गया और साऊल का घराना निर्बल होता गया ।

२ और हवरून में दाऊद के बेटे उत्पन्न हुए और उस का पहिलौठा अमनून जो

३ यजरअली अखिनूअम से था । और उस का दूसरा किलिअव जो करमिली नबाल

की पत्नी अबिजैल से हुआ और तीसरा अबिसलुम जो जशूर के राजा तलमी की

४ बेटा मअकः से था । और चौथा हगीस का बेटा अदूनियाह और पांचवां अवि-

५ तल का बेटा शफतियाह । और छठवां यतरिअम जो दाऊद की पत्नी एगलः से

था ये सब दाऊद के लिये हवरून में उत्पन्न हुए ।

६ और जब लों साऊल और दाऊद के घरानों में युद्ध होता रहा ऐसा हुआ कि

७ अविनैयिर ने आप को साऊल के घराने के लिये बली किया । और साऊल की

एक दासी थी जिस का नाम रिसफः था अयाह की बेटा और इसबुसत ने अवि-

८ नैयिर से कहा कि तू क्यों मेरे पिता की दासी के पास गया है । तब अविनैयिर ने

इसबुसत की बातों से अति कोपित होके कहा कि क्या मैं कूकर का सिर हूँ कि

मैं यहूदाह का साम्रा करके आज के दिन लों तेरे पिता साऊल के घराने पर उस

के भाइयों और उस के मित्र पर दया करता हूँ और तुझे दाऊद के हाथ में नहीं

९ सौंपा है कि तू मुझे इस स्त्री के विषय में दोष लगाता है । सो अब जैसी परमे-

श्वर ने दाऊद से बाँधा बाँधी है वैसा ही यदि मैं न करूँ तो परमेश्वर अविनैयिर

के घराने पर राज्याभिषेक किया और लोगों ने दाऊद से कहा कि ययीमजिलिअद के मनुष्यों ने साइल को गाढ़ा ॥

तब दाऊद ने ययीमजिलिअद के लोगों को दूत से कहला भेजा कि परमेश्वर ५ का धन्य क्योंकि तुम ने अपने प्रभु साइल पर यह अनुग्रह किया और उसे गाढ़ा । मेरा अब परमेश्वर तुम पर अनुग्रह और मज्दाई करे और मैं भी इस अनुग्रह का ६ पलटा तुम्हें देऊंगा इस कारण कि तुम ने यह काम किया है । मेरा अब तुम्हारी ७ भुजा बनी होवे और शूरता के घेरे होओ क्योंकि तुम्हारा प्रभु साइल सर गया और यहूदाह के घराने ने भी मुझे अपने पर राज्याभिषेक किया ॥

परन्तु नैयिर के छेदे अविनैयिर ने जा साइल का सेनापति या साइल के छेदे ८ अगवागीश को लिया और उसे सहनैन में पहुँचाया । और उसे जिलिअद और ९ अशूरी और यज्जरअएल और इफरायम और यिनयमीन और समस्त इसराएल पर राजा किया । साइल के छेदे अगवागीश को अब चालीस वरस की थी जब यह १० इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने दस वरस राज्य किया परन्तु यहूदाह के घराने ने दाऊद का पीछा किया । और जिन दिनों में दाऊद यहूदाह के घराने ११ पर दबकन में राजा था मेरा साइल मारत वरस था ॥

तब नैयिर के छेदे अविनैयिर और साइल के छेदे अगवागीश के सेवक सहनैन १२ से निकलके जियऊन का गये । और जम्पाह का छेदा यूअय दाऊद के सेवकों को १३ लेके निकला और जियऊन के कुँड पर दोनों मिल गये और बैठ गये एक कुँड की इस अलंग और दूसरा कुँड की उस अलंग । तब अविनैयिर ने यूअय से कहा १४ कि तरुणों को उठने और हमारे आगे नीला करने दीजिये तब यूअय बोला कि चढ़ें । तब गिनती में यिनयमीन के दारद जन ला साइल के छेदे अगवागीश को १५ और ये ये उठे और दाऊद के सेवकों में से दारद जन निकले । मेरा उन में से हर १६ एक जन ने अपने अपने संगी का सिर पकड़ा और अपने संगी के पंजर में तलवार मोट दिई मेरा ये एकट्टे गिर पड़े इस लिये उस म्यान का नाम जलकातहमुगीम हुआ जो जियऊन में है । और उस दिन बड़ा संग्राम हुआ और अविनैयिर और हम- १७ राएल के लोग दाऊद के सेवकों के आगे हार गये ॥

और जम्पाह के तीन छेदे यूअय और अविनैयिर और अमहेल वहाँ थे और अमहेल १८ वनैली हरिणी की नाईं दौड़ता था । और अमहेल ने अविनैयिर का पीछा किया १९ और वह अविनैयिर के पीछे से दहिने धार्य न सुड़ा । तब अविनैयिर ने अपने पीछे २० देखके कहा कि तू अमहेल है और वह बोला हाँ । और अविनैयिर ने उसे कहा २१ कि दहिनी अथवा बाईं ओर फिर और तरुणों में से एक को पकड़ और उसे लूट ले परन्तु उस का पीछा करने से अमहेल न फिरा । और अविनैयिर ने अमहेल को २२ फिर कहा कि मेरा पीछा करने से मुड़ किम कारण मैं तुझे भूमि पर मारके डाल देऊँ मेरा दयाकर मैं तेरे भाई यूअय को अपना सुँह दिखाऊँ । तथापि उस ने सुड़ने २३ का न माना तब अविनैयिर ने उनटे भाले से पाँचवीं पसुली के नीचे मारा और भाला उस के पीछे में निकल पड़ा और वहाँ गिरके उसी स्थान में वह सर गया और ऐसा हुआ कि जितने उस स्थान में आते थे जहाँ अमहेल गिरके सर गया था

२७ हाथीरः के कुए से फेर लाये परन्तु दाऊद ने न जाना । और जब अविनैयिर हबस्न को फिर आया तब यूअब उसे फाटक की एक अलंग निराले में उसे घात करने को ले गया और वहां उस की पांचवीं पसुली के तले यहां लों गोदा कि वह मर गया क्योंकि उस ने उस के भाई असहेल को मारा था ॥

२८ और उस के पीछे जब दाऊद ने सुना तब वह बोला कि मैं और मेरा राज्य २९ परमेश्वर के आगे नैयिर के बेटे अविनैयिर के लोहू से सदा निर्दोष है । वह यूअब के सिर पर और उस के पिता के समस्त घराने पर होवे और यूअब के घराने में एक भी ऐसा न हो जो प्रमेही अथवा कोढ़ी और जो लाठी टेकके न चले और ३० तलवार से मारा न जाय और रोटी का अधीन न हो । सो यूअब और उस के भाई अबिशै ने अविनैयिर को घात किया क्योंकि उस ने उन के भाई असहेल को जिवरून के बीच रण में मारा था ॥

३१ और दाऊद ने यूअब को और उस के सारे साथियों को कहा कि अपने कपड़े फाड़ो और टाट ओढ़ो और अविनैयिर के आगे आगे विलाप करो और दाऊद ३२ राजा आप अर्थी के पीछे पीछे गया । और उन्होंने ने अविनैयिर को हबस्न में गाड़ा और राजा अपना शब्द उठाके अविनैयिर की समाधि पर रोया और सब लोग रोये ॥

३३ और राजा ने अविनैयिर पर यों विलाप करके कहा कि अविनैयिर मूढ़ की ३४ नाईं मूआ । तेरे हाथ बंधे न थे और तेरे पांवों में पैकड़ियां पड़ी न थीं तू यों गिरा जैसा कोई दुष्टों के संतान के हाथ में पड़के गिरता है तब उस पर सब के ३५ सब दोहराके रोये । और जब सब लोग आये और चाहा कि दाऊद को दिन रहते कुछ खिलावे तब दाऊद ने किरिया खाके कहा कि यदि मैं सूर्य अस्त होने से आगे रोटी खाऊं अथवा कुछ चीखूं तो ईश्वर मुझ से ऐसा और इस्से अधिक ३६ करे । और सब लोगों ने सोचा और उन की दृष्टि में अच्छा लगा क्योंकि जो कुछ राजा करता था सो सब को अच्छा लगता था ॥

३७ क्योंकि सब लोगों ने और सारे इसराएलियों ने उस दिन वूभा कि नैयिर के ३८ बेटे अविनैयिर को मारना राजा की ओर से न था । और राजा ने अपने सेवकों से कहा कि क्या तुम नहीं जानते हो कि आज के दिन एक कुंआर और एक सहा- ३९ जन इसराएल में से गिर गया । और मैं आज के दिन दुर्बल हूं यद्यपि राज्याभिषिक्त हूं और ये लोग अर्थात् जरूयाह के बेटे मुझ से अति बली हैं परमेश्वर दुष्ट को उस की दुष्टता के समान फल देगा ॥

चौथा पर्व ।

१ और जब साऊल के बेटे ने सुना कि अविनैयिर हबस्न में मर गया तो उस २ की बांह टूट गई और सारे इसराएल व्याकुल हुए । और साऊल के बेटे के दो जन थे जो जथा के प्रधान थे एक का नाम वअना और दूसरे का रैकाव दोनों विनयमीन के संतान में बिअराती रुस्मान के बेटे थे क्योंकि वरुस भी विनयमीन ३ में गिना जाता था । तब बिअराती जअतैन को भाग गये और आज के दिन लों वे वहीं रहते हैं ॥

से ऐसा ही और उससे अधिक करे । कि साऊल के घराने में राज्य पलट डालें १० और दाऊद के मिहामन को इसराएल पर और यहूदाह पर दान से लेके विश्वर-सब्रथ लों स्थिर करें । तब वह अविनैयिर को एक यात का उत्तर न दे सका ११ क्योंकि वह उसे डरता था ।

और अविनैयिर ने अपने विषय में दाऊद पास दूत से कहला भेजा कि देग १२ किस का है मुझ से याचा वांध और देख कि मेरा हाथ तेरे साथ होगा कि सारे इसराएल को तेरी और फेंके । तब वह बोला अच्छा मैं तुझ से याचा वांधूंगा १३ परन्तु तुझ से एक यात चाहता हूँ और वह यह है कि तू मेरा मुंह न देखेगा जब लों पहिले साऊल की बेटी मीकल को अपने साथ लावे तब तू मेरा मुंह देखेगा । और दाऊद ने साऊल के बेटे इस्युमन के पास यह कहके दूता को भेजा कि १४ मेरी पत्नी मीकल को जिसे मैं ने फिलिस्तिथों की सौ खलहियां देके दियाथा है मांग दे । तब इस्युमन ने भेजके उस के पति नार्थन के बेटे फलतिएल ने उसे १५ मंगवाया । और उस का पति उन के पीछे पीछे यहूरीस लों रोता चला गया तब १६ अविनैयिर ने उसे कहा कि चल फिर जा तब वह फिर गया ।

और अविनैयिर ने इसराएल के प्राचीनों से संवाद करके कहा कि तुम तो १७ पहिले ही चाहते थे कि दाऊद को अपना राजा करो । और अब ऐसा ही करो १८ क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद के विषय में कहा है कि मैं अपने दाम दाऊद के हाथ से अपने इसराएली लोगों को फिलिस्तिथों के और उन के सब वारियों के हाथ से बचाऊंगा । और अविनैयिर ने विनयमीनियों के कानों में भी कहा और फिर १९ अविनैयिर दबदन को चला कि दाऊद के कानों में भी कहें कि इसराएलियों को और विनयमीनियों के सारे घराने को अच्छा लगा । सो अविनैयिर दबदन में २० दाऊद पास आया और बीस जन उस के साथ थे और दाऊद ने अविनैयिर का और उन लोगों का जो उस के साथ थे नेडता किया । और अविनैयिर ने दाऊद २१ से कहा कि अब मैं उठके जाऊंगा और सारे इसराएल को अपने प्रभु राजा के लिये एकट्ठा करूंगा जिसमें वे तुझ से याचा वांधें और तू अपनी इच्छा के समान उन पर राज्य करे तब दाऊद ने अविनैयिर को बिदा किया और वह कुशल से चला गया ।

और देखा कि दाऊद के सेवक और यूशय एक जथा से बहुत सी लूट २२ अपने साथ लेके आये परन्तु अविनैयिर दबदन में दाऊद पास न था क्योंकि उस ने उसे बिदा किया था और वह कुशल से चला गया था । जब यूशय और ससस्त २३ सेना के लोग जो उस के साथ थे पहुंचे तब उन्होंने ने यह कहके यूशय से कहा कि नैयिर का बेटा अविनैयिर राजा पास आया था और उस ने उसे फेर दिया और वह कुशल से चला गया । तब यूशय राजा पास गया और बोला कि आप २४ ने क्या किया देखिये अविनैयिर आप के पास आया और आप ने उसे क्यों छोड़ दिया कि वह चल निकला । आप नैयिर के बेटे अविनैयिर को जानते हैं कि वह २५ आप को छल देने और आप के बाहर भोंतर आने जाने से और सब जो आप करते हैं जानने को आया था ।

तब यूशय ने दाऊद पास से निकलके अविनैयिर के पीछे दूत भेजे जो उसे २६

ने दाऊद को कहा कि जब लो लो अंधों और लंगड़ों को दूर न करे यहां आने  
 ७ न पावेगा यह समझके कि दाऊद यहां न आ सकेगा । तिस पर भी दाऊद ने सैहून  
 ८ का गढ़ ले लिया वही दाऊद का नगर हुआ । और दाऊद ने उस दिन कहा कि  
 जो कोई पनाले लो पहुंचे और यूसुफियों और लंगड़ों और अंधों को जिस्से दाऊद  
 ९ को घिन है मारे सोई सेना का प्रधान होगा इस लिये यह कहावत कहते हैं कि  
 १० अंधे और लंगड़े घर में पैठने न पावेंगे । और दाऊद गढ़ में रहा और उस ने  
 उस का नाम दाऊद का नगर रक्खा और दाऊद ने मिलो की चारों ओर और  
 ११ उस के भीतर बनाये । और दाऊद बढ़ता गया और परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर  
 उस के साथ था ॥

१२ तब सूर के राजा हीराम ने देवदारु और बड़ई और पत्थर के गढ़वैये दूतों के  
 साथ दाऊद पास भेजे और उन्होंने ने दाऊद के लिये भवन बनाया । और दाऊद  
 को सूझ पड़ा कि परमेश्वर ने मुझे इसराएल पर राजा स्थिर किया और मेरे राज्य  
 को अपने लोग इसराएल के लिये स्थिर किया ॥

१३ और दाऊद ने हब्रन से आके यरूसलम में और सहेलियां और पत्नियां किई  
 १४ और दाऊद के और भी बेटा बेटा उत्पन्न हुए । और उस के उन बेटों के नाम  
 जो यरूसलम में उत्पन्न हुए ये थे शमूअ और शेबाब और नातन और सुलेमान ।  
 १५ और इबहार और इलीसूअः और नफग और यफीअ । और इलिसमः और इल-  
 १६ वदः और इलिफलत ॥

१७ परन्तु जब फिलिस्तियों ने सुना कि उन्होंने ने दाऊद को अभिषेक करके इस-  
 १८ राएल का राजा किया तब सारे फिलिस्ती दाऊद की खोज को चढ़ आये और  
 १९ दाऊद सुनके गढ़ में उतरा । और फिलिस्ती आये और रिफाइम की तराई में  
 २० फैल गये । तब दाऊद ने परमेश्वर से यह कहके ब्रूभा कि मैं फिलिस्तियों पर  
 चढ़ जाऊं क्या तू उन्हें मेरे बश में कर देगा तब परमेश्वर ने दाऊद से कहा कि  
 २१ चढ़ जा क्योंकि मैं निःसंदेह फिलिस्तियों को तेरे हाथ में सौंपूंगा । तब दाऊद  
 बअलफरासीन में आया और वहां उन्हें मारके कहा कि परमेश्वर मेरे आगे मेरे  
 २२ वैरियों पर ऐसा टूट पड़ा जैसा पानियों का दरार इस लिये उस ने उस स्थान का  
 नाम बअलफरासीन रक्खा । और उन्होंने ने अपनी मूर्तिन को वहीं छोड़ा और  
 दाऊद और उस के लोग उन्हें उठा ले गये ॥

२३ और फिलिस्ती फिर चढ़ आये और रिफाइम की तराई में फैल गये । और  
 जब दाऊद ने परमेश्वर से ब्रूभा तब उस ने कहा कि तू मत चढ़ जा परन्तु उन  
 २४ के पीछे से घूम और तूत के पेड़ों के सामे होके उन पर जा पड़ । और यों होवे  
 कि जब तू तूत के पेड़ों के ऊपर जाने का शब्द सुने तो आप को चौकस कर  
 २५ क्योंकि तब परमेश्वर तेरे आगे आगे चलेगा कि फिलिस्तियों की सेना को मारे ।  
 और जैसी कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी दाऊद ने वैसा ही किया और  
 फिलिस्तियों को जिवअ से लेके जजर लो मारा ॥

छठवां पर्व ।

१ फिर दाऊद ने इसराएल में से तीस सहस चुने हुआ को एकट्ठा किया । और

और साऊल के बेटे यूनतन का एक बेटा था जो पाँच का लंगड़ा था जब ४  
साऊल और यूनतन को यज्ञशाला का संदेश आया तब वह पाँच घर का था  
और उस की दाईं उम्र लेके भाग गई और उस ने भागने में शीघ्रता कीई तब  
येमा हुआ कि वह गिर पड़ा और लंगड़ा हो गया और उस का नाम मिफिबूषन था ॥

और दम्मान के बेटे विशराती रैकाय और यजना आये और दिन के घाम के ५  
समय में इस्युसत के घर में पहुँचे और वह दो पहर को छिछोने पर लेटा था ।  
और वे घर के मध्य में येमा आये जैसा कि गोहूँ लेने जाती हैं और उन्होंने उस ६  
की पाँचवीं पसुली के नीचे मारा और रैकाय और उस के भाई यजना वच  
निकले । और जब वे घर में पहुँचे तब वह अपने शयनगृह में छिछोने पर पड़ा ७  
था सो उन्होंने ने उसे मारा और उसे घात किया और उस का मिर काटा और  
उस का मिर लिया और रात भर चौगान के मार्ग भागे चले गये । और इस्युसत ८  
का मिर हथकन में दाऊद पास लाये और राजा को कहा कि देख यह साऊल  
के बेटे आप के वैरी इस्युसत का मिर है जो आप के प्राण का शत्रु था सो  
परमेश्वर ने आज के दिन मेरे प्रभु राजा का पण्डा साऊल और उन के वंश से लिया ॥

तब दाऊद ने रैकाय और उस के भाई यजना को जो विशरात दम्मान के ९  
बेटे थे उत्तर दिया और उन से कहा कि परमेश्वर के जीवन में जिस ने मेरे  
आत्मा को समस्त विपत्ति से छुड़ाया । जब किमी ने मुझे कहा कि देख साऊल १०  
मर गया और वह समझा कि मुझे संदेश पहुँचाता है तब मैं ने उसे पकड़ा और  
उसे सिकलाम में घात किया वह मैं ने उसे उस के संदेश लाने का पलटा दिया ।  
कितना अधिक जब दुष्टों ने एक धर्मी जन को उस के घर में घुसके उस के ११  
छिछोने पर मारा तो क्या मैं अब उस का पलटा तुम से न लूँगा और तुम्हें  
पृथिवी पर से उठा न डालूँगा । तब दाऊद ने अपने तरुणों को आज्ञा कीई १२  
कि उन्हें मार डालें और उन के हाथ और पाँव काट डालें और उन्हें हथकन  
के कुंड पर लटका दें परन्तु इस्युसत के मिर को उन्होंने ने लेंके हथकन के बीच  
आथिनेयिर की समाधि में गाड़ दिया ॥

#### पाँचवां पर्व ।

तब इसराएल की समस्त गोष्टियां हथकन में दाऊद पास आईं और कहा कि १  
देख हम तेरी दूही और तेरा सांस हैं । अगले समय में भी जब साऊल हमारा २  
राजा था तब तू इसराएल को बाहर भीतर ले जाया करता था और परमेश्वर  
ने तुझे कहा है कि तू मेरे इसराएली लोगों को चरावेगा और तू इसराएल का  
प्रधान होगा । सो इसराएल के सारे प्राचीन हथकन में राजा पास आये और ३  
दाऊद राजा ने हथकन में उन के साथ परमेश्वर के आगे वाचा थांधी और उन्होंने  
ने दाऊद को इसराएल पर राज्याभिषेक किया । जब दाऊद राज्य करने लगा तब ४  
तीस वरस का था और उस ने चालीस वरस राज्य किया । उस ने हथकन में सात वरस ५  
छः मास यहूदाह पर राज्य किया और यजसलम में सारे इसराएल और  
यहूदाह पर तीस वरस ॥

तब राजा और उस के लोग उस देश के वासी यूरसियों को मारे और उन्होंने ६



की सारी मंडली को क्या स्त्री क्या पुरुष हर एक को एक एक रोटी और एक एक बोटी और एक एक दाख की टिकिया दिई और समस्त लोग अपने अपने घर को चले गये ॥

- २० जब दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने को फिरा तब साऊल की बेटी मीकल दाऊद की भेंट को निकली और बोली कि इसराएल का राजा आज क्या ही ऐश्वर्यवान था जिस ने आज अपने सेवकों की दासियों की आंखों में आप को ऐसा उधारा जैसा कि तुच्छ जन आप को निर्लज्जा से उधारता है ।
- २१ तब दाऊद ने मीकल से कहा कि यह परमेश्वर के आगे था जिस ने मुझे तेरे पिता के और उस के सारे घराने के आगे चुना और अपने इसराएल लोग पर
- २२ मुझे आज्ञाकारी किया इस लिये मैं परमेश्वर के आगे लीला करूंगा । और मैं इससे भी अधिक तुच्छ हूंगा और अपनी दृष्टि में नीचा हूंगा और जिन दासियों
- २३ के विषय में तू ने कहा है मैं उन से प्रतिष्ठा पाऊंगा । इस लिये साऊल की बेटी मीकल अपने जीवन भर निर्वंश रही ॥

सातवां पृष्ठ ।

- १ और ऐसा हुआ कि जब राजा घर में बैठा था और परमेश्वर ने उसे इस के
- २ सारे बैरियों से चारों ओर चैन दिया । तब राजा ने नातन भविष्यद्वक्ता को कहा कि देख मैं देवदारु के घर में रहता हूँ परन्तु ईश्वर की मंजूपा ओम्हलों में रहती
- ३ है । तब नातन ने राजा से कहा कि जा जो कुछ तेरे मन में है उसे कर क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है ॥
- ४ और उसी रात ऐसा हुआ कि परमेश्वर का वचन यह कहके नातन को पहुँचा ।
- ५ कि जा और मेरे सेवक दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या मेरे
- ६ निवास के लिये तू एक घर बनावेगा । क्योंकि जब मे इसराएल के संतान को मिस्र से निकाल लाया मैं ने तो आज के दिन लों घर में वास न किया परन्तु
- ७ तंबू में और डेरे में फिरा किया । जहाँ जहाँ मैं सारे इसराएल के संतान के साथ फिरता रहा क्या मैं ने इसराएल की किसी गोष्टियों से कहा जिसे मैं ने आज्ञा
- ८ किई कि मेरे इसराएल लोगों को चराये कि तुम मेरे लिये देवदारु का घर क्यों नहीं बनाते । सो अब तू मेरे सेवक दाऊद से कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों
- ९ कहता है कि मैं ने तुम्हें भेड़शाले में से भेड़ का पीछा करने से लेके अपने इसरा-
- १० एली लोगों पर अध्यक्ष किया । और जहाँ जहाँ तू गया मैं तेरे साथ साथ रहा और तेरे सारे बैरियों को तेरे सामने से मार गिराया है और मैं ने जगत के महान
- ११ लोगों के नाम के समान तेरा नाम बढ़ाया है । और मैं अपने इसराएली लोगों के लिये एक स्थान ठहराऊंगा और उन्हें लगाऊंगा जिसमें वे अपने ही स्थान में
- १२ बसें और फिर अस्थिर न होवें और दुष्टता के वंश आगे की नाईं उन्हें न सतावें ।
- १३ और उस समय की नाईं जब से मैं ने न्यायियों को अपने इसराएली लोगों पर ठहराया और तुम्हें तेरे सारे बैरियों से चैन दिया परमेश्वर तुम्हें यह भी कहता है
- १४ कि मैं तेरे लिये घर बनाऊंगा । जब तेरे दिन पूरे होंगे और तू अपने पितरों के साथ शयन करेगा तब मैं तेरे पीछे तेरे वंश को उभाऊंगा जो तेरे ही उदर से

दाऊद सारे लोगों को लेकर यहूदाह के बथली से चला कि वहां से ईश्वर की मंजूपा को लाये जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर कहा जाता है जो करोवियों में रहता है ॥

और उन्होंने ने ईश्वर की मंजूपा को नई गाड़ी पर धराया और उसे अविनदाय के घर से जो जियथ में था निकाल लाये और उस नई गाड़ी को अविनदाय के बेटों ने जो उज्जः और अग्रयू ये हांका । और वे अविनदाय के घर से जो जियथ में था उसे निकाल लाये और ईश्वर की मंजूपा के साथ साथ गये और अग्रयू मंजूपा के आगे आगे चला । और दाऊद और इसराएल के सारे घराने सरो को लकड़ी के सब भांति के बाले जैसे कि बीणा और मारंगियां और तबले और तंयूरे और भांभ लेकर परमेश्वर के आगे आगे बजाते चले ॥

और जब वे नकून के खलिजान पर पहुंचे तब उज्जः ने हाथ बढ़ाकर ईश्वर की मंजूपा को घाम लिया क्योंकि वैंलों ने उसे हिलाया था । तब परमेश्वर का क्रोध उज्जः पर भड़का और ईश्वर ने उसे उस की ठिठार्ड के कारण मारा और वह ईश्वर की मंजूपा के लग मर गया । और इस कारण कि परमेश्वर ने उज्जः पर दार किया दाऊद उदाम हुआ और उस ने उस स्थान का नाम आज लों परजउज्जः रक्खा । और दाऊद उस दिन परमेश्वर से डरा और बोला कि परमेश्वर की मंजूपा मुझ पास क्योंकर आवेगी । और दाऊद ने न चाहा कि परमेश्वर की मंजूपा को अपने नगर में ले जाये अपने पास रखे परन्तु दाऊद उसे एक अलंग आविदअदूम जाती के घर ले गया । और परमेश्वर की मंजूपा आविदअदूम जाती के घर में तीन मास लों रही और परमेश्वर ने आविदअदूम को और उस के सारे घराने को आशीस दिया ॥

और यह दाऊद राजा से कहा गया कि परमेश्वर ने आविदअदूम को और उस की हर एक वस्तु को अपनी मंजूपा के लिये आशीस दिया तब दाऊद गया और ईश्वर की मंजूपा को आविदअदूम के घर से अपने नगर में आनन्द में चढ़ा लाया । और यों हुआ कि जब परमेश्वर की मंजूपा को उठवैये कः दगा चले तब दाऊद ने बैल और पले हुएों को बलि किया । और दाऊद परमेश्वर के आगे सूती अफूड कटि में बांधे हुए अपनी शक्ति भर नाचते नाचते चला । और दाऊद और इसराएल के सारे घराने परमेश्वर की मंजूपा को ललकारते और नरसिंगे के शब्द के साथ ले आये ॥

और ज्यों परमेश्वर की मंजूपा दाऊद के नगर में पहुंची तब साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से दृष्टि किई और दाऊद राजा को परमेश्वर के आगे उठलते और नाचते देखा और उस ने अपने मन में उस की निन्दा किई ॥

और वे परमेश्वर की मंजूपा को भीतर लाये और उसे उस के स्थान पर उस तंयू के मध्य जो दाऊद ने उस के लिये खड़ा किया था रख दिया और दाऊद ने बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें परमेश्वर के आगे चढ़ाईं । और जब दाऊद बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ा चुका तब उस ने लोगों को सेनाओं के परमेश्वर के नाम से आशीस दिया । और उस ने सारे लोगों को अर्थात् इसराएल

अर्थात् दो रस्सियों से बंधन करने को और एक पूरी रस्सी से जीता रखने को और मोशवी दाऊद को सेवक हुए और भेंट लाये ॥

३ और दाऊद ने सूयः के राजा रिहोव के बेटे हददअजर को भी जय कि यह  
४ अपना सिवाना कुड़ाने को फुरात नदी को गया मार लिया । और दाऊद ने उस  
के एक सहस्र रथ और सात सौ घोड़घड़े और बीस सहस्र पैदल लिये और दाऊद  
ने समस्त रथों के घोड़ों को घोड़नर्स काट डालीं परन्तु उन में से सौ रथों के  
५ लिये रख छोड़ा । और जय कि दमिश्क के सुरियानी हददअजर सूयः के राजा  
की सहाय को आये तब दाऊद ने सुरियानियों में से बाईस सहस्र लोग मार  
६ डाले । तब दाऊद ने दमिश्क के सुरिया में चौकियां बैठाई और सुरियानी  
दाऊद को सेवक हुए और भेंट लाये और जहां कहीं दाऊद गया परमेश्वर ने उस  
७ की रक्षा किई । और दाऊद ने हददअजर के सेवकों की सेने को ठालें लेके  
८ यरुसलम में पहुंचाई । और वतह से और यिअराती से जो हददअजर के नगर  
हैं दाऊद राजा बहुत सा तांबा लाया ॥

९ और जय कि दमात के राजा तुगी ने सुना कि दाऊद ने हददअजर की  
१० सारी सेना मारी । तब तुगी ने अपने बेटे यूराम को दाऊद राजा पास भेजा और  
इस का कुशल पूछा और बधाई दिई इस कारण कि उस ने संग्राम करके हदद-  
अजर को मार डाला क्योंकि हददअजर तुगी से लड़ा करता था और अपने हाथ  
११ में चांदी के और सोने के और तांबे के पात्र लाये । दाऊद राजा ने उन्हें उस  
चांदी और सोने सहित जो उस ने सब जातिगणों से जिन्हें उस ने वश में किया ।  
१२ अर्थात् सुरिया से और मोशव से और अम्मून के संतान से और फिलिस्तिनों से और  
अमालीक से और सूयः के राजा रिहोव के बेटे हददअजर से लूट में ले लिया  
था परमेश्वर को समर्पण किया ॥

१३ और जय दाऊद अठारह सहस्र सुरियानियों को नोन की तराई में मारके  
१४ फिर आया तब उस की कीर्ति फैली । और उस ने अहूम में चौकियां बैठाई और  
सारे अहूम में चौकियां और सारे अहूमी भी दाऊद को सेवक हुए और जहां कहीं  
दाऊद गया परमेश्वर ने उस की रक्षा किई ॥

१५ और दाऊद सारे इसराएल पर राज्य करता रहा और दाऊद अपनी समस्त  
१६ प्रजा के लिये विचार और न्याय करता था । और जसयाह का बेटा यूशव सेना  
१७ पर था और अखिलूद का बेटा यहूसफत स्मारक था । अखिलूद का बेटा सदूक  
१८ और अजिवतर का बेटा अखिमलिक याजक थे और शिरयाह लेखक था । और  
यहूयदः का बेटा विनायाह करीती और पलीती पर था और दाऊद के बेटे  
प्रधान आज्ञाकारी थे ॥

नवां पृष्ठ ।

१ तब दाऊद ने कहा कि अब भी साजल के घराने में से कोई बच्चा है कि मैं  
२ उस पर यूनतन के लिये कृपा करूं । और साजल के घराने का एक सेवक सीबा  
नाम था और जब उन्होंने ने उसे दाऊद पास बुलाया तब राजा ने उसे कहा  
३ कि तू सीबा है और यह बेला मैं आप का सेवक । तब राजा ने पूछा कि

होगा और उस के राज्य को स्थिर करेगा । मेरे नाम के लिये वही घर बनायेगा १३  
 और मैं उस के राज्य के सिंहासन को सदा लों स्थिर करेगा । मैं उस का पिता १४  
 हूँगा और वह मेरा बेटा होगा यदि वह अपराध करे तो मैं उसे मनुष्यों की कड़ी  
 से और मनुष्यों के संतान की मार से ताड़ना करेगा । परन्तु मेरी दया उम्मे १५  
 अलग न होगी जिस रीति से कि मैं ने माऊल से उठा लिई जिसे मैं ने तेरे आगे  
 से अलग किया । परन्तु तेरा घर और तेरा राज्य तेरे आगे सनातन लों स्थिर १६  
 रहेगा तेरा सिंहासन नित्य स्थिर रहेगा । नातन ने इन ममस्त वचनों के समान १७  
 और इस ममस्त दर्शन के समान वैसा ही दाऊद ने कहा ।

तब दाऊद राजा भीतर गया और परमेश्वर के आगे बैठके कहा कि हे प्रभु १८  
 परमेश्वर मैं कौन और मेरा घर दया कि तू ने मुझे यहाँ लों पहुँचाया । और तेरी १९  
 दृष्टि में हे प्रभु परमेश्वर यह भी छोटी बात थी परन्तु तू ने अपने सेवक के घर  
 के विषय में आगे को बहुत दिन के लिये कहा और हे प्रभु परमेश्वर क्या मनुष्य  
 का यह व्यवहार है । और दाऊद तुझे क्या कह सक्ता है क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर २०  
 तू अपने सेवक को जानता है । अपने वचन के कारण और अपने मन के समान २१  
 तू ने ये सारे सहाकार्य किये कि अपने सेवक को जनाये । इन कारण हे परमे- २२  
 श्वर ईश्वर तू महान है क्योंकि तेरे समान कोई नहीं और तुझे कोई कोई ईश्वर  
 नहीं उन सभी के समान जो इस ने अपने जानों से सुना है । और तेरे दमरायन २३  
 लोग के समान पृथ्वी में कौन सी जाति है जिसे अपना ही लोग बनाने के लिये  
 ईश्वर बुझाने गया कि अपना नाम करे और जिसने तुम्हारे लिये धरु धरु और  
 भयंकर कार्य अपने देश के लिये अपने लोगों के आगे करे जिन्हें तू ने मिस्र में  
 जातिगणों से और उन के देवतों में बुझाया । क्योंकि तू ने अपने लिये अपने इस- २४  
 रायल लोग को दृढ़ किया कि अपने लिये सनातन के लोग धार्य और हे परमेश्वर  
 तू उन का ईश्वर हुआ । और अब हे परमेश्वर ईश्वर उस वचन का जो तू २५  
 ने अपने सेवक के विषय में और उस के घराने के विषय में कहा है सदा लों स्थिर  
 रख और अपने कहने के समान कर । और यह कहके तेरा नाम सनातन लों धरु २६  
 जाय कि सेनाओं का परमेश्वर दमरायन का ईश्वर और तेरे सेवक दाऊद का  
 घर तेरे आगे स्थिर होवे । क्योंकि हे सेनाओं के परमेश्वर दमरायन के ईश्वर तू २७  
 ने अपने सेवक के कान यह कहके खोले हैं कि मैं तेरे लिये घर बनाऊँगा सो  
 तेरे सेवक ने अपने मन में पाया कि तेरे आगे यह प्रार्थना करे । और अब हे प्रभु २८  
 परमेश्वर तू वही ईश्वर है और तेरे वचन सच्चे हैं और तू ने अपने सेवक में इस  
 भलाई की वाचा दिई है । सो अब अनुग्रह करके अपने सेवक के घराने पर २९  
 आशीस दे जिसमें वह सनातन लों तेरे आगे बना रहे क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर तू  
 ने कहा है सो तेरे आशीस से तेरे सेवक का घर सनातन लों आशीस पावे ॥

आठवां पर्व ।

और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने फिलिस्तिनों को मारा और उन्हें १  
 वश में किया और दाऊद ने मिशेराग्रसः फिलिस्तिनों के हाथ से लिया ॥

और उस ने मोअब को मारा और उन्हें भूमि पर गिराके रस्सी से नापा २

६ और अम्मून के संतान ने ज्यों देखा कि हम दाऊद के आगे दुर्गंध हैं तो अम्मून के संतान ने भेजके वैतरहुय के सुरियानियों के और मूयः के सुरियानियों के बीस सहस्र पैदल और मशकः के राजा से सहस्र जन और तूय के दारह सहस्र जन भाड़े पर लिये ॥

७ और दाऊद ने यह सुनके यूअव और सूरों की सारी सेना को भेजा । तब अम्मून के संतान निकले और नगर के फाटक की पैठ में युद्ध के लिये पांती बांधी और मूयः के और रूव के सुरियानी और तूय और मशकः आप ही आप चौगान में थे । जब यूअव ने अपने आगे पीछे लड़ाई का साम्रा देखा तब उस ने इसराएल के चुने हुए में से चुन लिये और सुरियानियों के सामने पांती बांधी । १० और उबरे हुए लोगों को अपने भाई अविशै को सांपा कि अम्मून के संतान के ११ आगे पांती बांधे । और कहा कि यदि सुरियानी मुझ पर प्रधल द्योवें तो तू मेरी सहाय कीजिये परन्तु यदि अम्मून के संतान तुझ पर प्रधल द्योवें तो मैं आके तेरी १२ सहाय करूंगा । ठाढ़स कर और अपने लोगों के लिये और अपने ईश्वर के नगरों के लिये पुरुषार्थ कर और परमेश्वर जो भला जाने सो करे ॥

१३ तब यूअव और उस के साथ के लोग सुरियानियों के सम्मुख बढ़े और वे उस १४ के आगे से भागे । और अम्मून के संतान भी यह देखके कि सुरियानी भागे वे भी अविशै के आगे से भागे और नगर में छुसे सो यूअव अम्मून के संतान के पीछे से फिरके यरूसलम को आया ॥

१५ और जब सुरियानियों ने देखा कि हम इसराएल के आगे मारे गये तब वे १६ एकट्ठे बटुर गये । और हददअजर लोग भेजके नदी पार से सुरियानियों को ले आया और वे हीलम में आये और साविक जो हददअजर की सेना का प्रधान १७ था उन के आगे आगे चला । और जब दाऊद को कहा गया तब वह सारे इसराएलियों को एकट्ठा करके यरदन पार उतरा और हीलम को आया और १८ सुरियानी ने दाऊद के सम्मुख पांती बांधी और उससे लड़े । और सुरियानी इसराएल के सामने से भागे और दाऊद ने सात सौ रथों के सुरियानी और चालीस सहस्र घोड़बढ़े मारे और उन की सेना के प्रधान साविक को मार लिया और १९ वह वहीं मर गया । और जब उन राजाओं ने जो हददअजर के सेवक थे देखा कि वे इसराएल के आगे मारे गये तब उन्होंने ने इसराएलियों से मिलाप किया और उन की सेवा किई सो सुरियानी फेर अम्मून के संतान की सहाय करने को डरे ॥

ग्यारहवां पर्व ।

१ और जब धरस बीत गया कि राजा लड़ाई पर चढ़ते हैं यों हुआ कि दाऊद ने अपने सेवकों को और समस्त इसराएल को यूअव के साथ भेजा और उन्होंने ने अम्मून के संतान को नाश किया और रब्बः को घेर लिया परन्तु दाऊद यरू-सलम में रह गया ॥

२ और एक संध्याकाल को यों हुआ कि दाऊद अपने विछौने पर से उठा और राजभवन की छत पर टहलने लगा और वहां से उस ने एक स्त्री को स्नान करते ३ देखा और वह स्त्री देखने में अत्यंत सुंदरी थी । और दाऊद ने भेजके उस स्त्री

साऊल के घराने में से और कोई भी है जिसमें मैं उस पर वैश्वरीय कृपा दिखाऊँ और सीधा ने राजा से कहा कि अब लो यूनतन का एक लंगड़ा घेटा है । तब ४  
राजा ने उसे पृच्छा यह कहा है और सीधा ने राजा से कहा कि देखिये यह ५  
अमिषल के घेटे मकीर के घर लोदीवार में है । तब दाऊद राजा ने भेजके अमि- ५  
षल के घेटे मकीर के घर से जो लोदीवार में है उसे संग्रह किया ॥

और जब साऊल के घेटे यूनतन का घेटा मिफिबूषत दाऊद पास पहुँचा तब ६  
उस ने आँधे गिरके दण्डवत् किर्त तब दाऊद ने कहा कि मिफिबूषत और उस ने ७  
उत्तर दिया देखिये तेरा सेवक है । और दाऊद ने उसे कहा कि नग दर क्योंकि ७  
निश्चय तेरे पिता यूनतन के लिये तुझ पर अनुग्रह करेगा और तेरे पिता साऊल ८  
की सारी भूमि तुझे फेर देऊँगा और तू मेरे मंच पर निग भोजन किया कर । तब ८  
उस ने दण्डवत् किर्त और कहा कि तेरा सेवक क्या कि आप मुझ से मरे हुए ९  
कुत्ते पर दृष्टि करें ॥

तब राजा ने साऊल के सेवक सीधा को बुलाया और उसने कहा कि मैं ने तब ९  
जो कुछ कि साऊल का और उस के घराने का था तेरे स्थानी के घेटे को दे १०  
दिया है । सो तू अपने घेटे और सेवकों समेत उस के लिये भूमि जात और ने १०  
आ जिसमें तेरे स्थानी के स्थाने को रहें परन्तु मिफिबूषत जो तेरे स्थानी का घेटा ११  
है नित मेरे मंच पर भोजन किया करेगा और सीधा के पंद्रह घेटे और दस सेवक १२  
थे । तब सीधा ने राजा से कहा कि मय जो मेरे प्रभु राजा ने अपने सेवक को १२  
कहा सो तेरा सेवक करेगा परन्तु मिफिबूषत जो है सो मेरे मंच पर राजपुत्रों में १३  
से एक के समान गायगा । और मिफिबूषत का एक छोटा घेटा था जिसका १४  
नाम सीका था और मय जितने कि सीधा के घर में रहते थे मिफिबूषत के सेवक १५  
थे । सो मिफिबूषत यममलम में रहा क्योंकि यह राजा के मंच पर मद्य भोजन १६  
करता था और वह अपने दोनों पाँवों से लंगड़ा था ॥

दसवां पद्य ।

और उस के पीछे ऐसा हुआ कि अम्मून के संतान का राजा मर गया और १  
उस का घेटा हनून उस के राज्य पर बैठा । तब दाऊद ने कहा कि मैं नाथम के २  
घेटे हनून पर अनुग्रह करेगा जैसा उस के पिता ने मुझ पर अनुग्रह किया सो दाऊद ३  
ने अपने सेवकों को भेजा कि उस के पिता के लिये उसे शान्त देव और दाऊद ४  
के सेवक अम्मून के संतान के देश में पहुँचें । और अम्मून के संतान के गायकों ५  
ने अपने प्रभु हनून को कहा कि तेरी दृष्टि में क्या दाऊद तेरे पिता की प्रतिष्ठा ६  
करता है कि उस ने शान्तिदायकों को तेरे पास भेजा है क्या दाऊद ने अपने ७  
सेवकों को तेरे पास उस लिये नहीं भेजा है कि नगर को देग लेवें और उस का ८  
भेद लेवें और उसे नाश करें । तब हनून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और घर ८  
एक की आधी दाढ़ी सुँहवाई और उन के वस्त्रों को दोष से अर्थात् पट्टे लो ९  
काटा और उन्हें फेर भेजा । सो दाऊद को संदेश पहुँचा और उस ने उन्हें आगे १०  
से लेने के लिये लोग भेजे इस कारण कि ये अत्यंत लज्जित थे सो राजा ने कहा ११  
कि जब लो तुम्हारी दाढ़ियाँ बढ़ें गरीबी में रहे उस के पीछे छले आगे ॥



२२ सो दूत बिदा हुआ और आया और जो कुछ कि यूशव ने कहला भेजा था सो  
 २३ दाऊद को सुनाया । और दूत ने दाऊद से कहा कि लोग हम पर प्रयत्न हुए और वे  
 चौगान में हम पर निकले और हम उन्हें रगोदे हुए फाटक की पैठ लों चले गये ।  
 २४ तब धनुषधारियों ने भीत पर से तेरे सेवकों को घाण से मारा और राजा के कितने  
 २५ ही सेवक मारे गये और आप का सेवक हित्ती जरियाह भी मारा गया । तब  
 दाऊद ने दूत से कहा कि यूशव को जाके उभाड़ और कह कि यह बात तेरी  
 दृष्टि में खुरी न लगे क्योंकि खड्ग जैसा एक को वैसा दूसरे को काटता है तू नगर  
 के सामने संग्राम को दृढ़ कर और उसे ठा दे ॥

२६ और जरियाह की स्त्री अपने पति जरियाह का मरना सुनके विलाप करने  
 २७ लगी । और जब शोक के दिन बीत गये तब दाऊद ने उसे अपने घर बुलवा  
 लिया और वह उस की पत्नी हुई और वह उस के लिये बेटा जनी परन्तु जो  
 दाऊद ने किया सो परमेश्वर की दृष्टि में खुरा था ॥

बारहवां पर्व ।

१ और परमेश्वर ने नातन को दाऊद पास भेजा और उस ने उस पास आके  
 २ उससे कहा कि एक नगर में दो जन थे एक तो धनी और दूसरा कंगाल । उस  
 ३ धनी के पास बहुत से भुंड और ठोर थे । परन्तु उस कंगाल के पास भेड़ की  
 एक पठिया को छोड़ कुछ न था उसे उस ने मोल लिया और पाला था और वह  
 उस के और उस के बालवत्त्रों के साथ बड़ी उसी ही का कौर खाती और उसी  
 ही के कटोरे से पीती थी और उस की गोद में सोती थी और उस के लिये  
 ४ कन्या के समान थी । और उस धनवान के पास एक पशिक आया तब उस ने  
 उस के लिये सिद्ध करने को अपने ही भुंड और अपने ही ठोर को बचा रक्खा  
 परन्तु उस कंगाल की पठिया लिई और उस पुरुष के लिये जो उस पास आया  
 था पकवाई ॥

५ तब दाऊद का क्रोध उस पुरुष पर बहुत भड़का और उस ने नातन से कहा  
 कि परमेश्वर के जीवन से जिस पुरुष ने यह काल किया सो निश्चय मार डालने  
 ६ के योग्य है । और वह पठिया चौगुनी उसे फेर दे इस कारण कि उस ने ऐसा  
 काम किया और कुछ मया न किई ॥

७ तब नातन ने दाऊद से कहा कि वह पुरुष तू ही है परमेश्वर इसराएल का  
 ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराएल पर राज्याभिषेक किया है और मैं ने  
 ८ तुझे साऊल के हाथ से कुड़ाया । और मैं ने तेरे स्वामी का घर तुझे दिया और  
 तेरे स्वामी की स्त्री को तेरी गोद में दिया और इसराएल और यहूदाह का  
 घराना तुझे दिया और यदि यह थोड़ा था तो मैं तुझे ऐसी वैसी वस्तु भी देता ।  
 ९ तू ने क्यों परमेश्वर की आज्ञा की निन्दा किई कि उस की दृष्टि से खुराई करे  
 तू ने हित्ती जरियाह को खड्ग से मरवाया और उस की पत्नी को लेके अपनी पत्नी  
 १० किया और उसे अम्मून के संतान के खड्ग से मरवा डाला । इस लिये अब तेरे  
 घर से खड्ग कांधी जाता न रहेगा इस कारण कि तू ने मुझे तुच्छ किया और  
 ११ हित्ती जरियाह की पत्नी को लेके अपनी पत्नी किया । परमेश्वर यों कहता है कि

का खोज किया और किन्नी ने कहा कि क्या यह इलियाम की बेटी यिन्नामय्य  
जरियाह द्विती की पत्नी नहीं है । और दाऊद ने दूत भेजके उसे बुला लिया और ४  
यह दाऊद पास आई तो उस ने उसे रति किया क्योंकि यह अपनी अपवित्रता  
से पवित्र हुई थी फिर यह अपने घर को चली गई । और यह स्त्री गर्भिणी हुई ५  
और दाऊद को कहला भेजा कि मैं गर्भिणी हूँ । और दाऊद ने यूय्य को कहला ६  
भेजा कि द्विती जरियाह को मुझ पास भेज दे तो यूय्य ने जरियाह को दाऊद  
पास भेज दिया ॥

और जब जरियाह उस पास आया तब दाऊद ने यूय्य का श्रम और नंगों ७  
का कुशल होम और लड़ाई का समाचार पूछा । तब दाऊद ने जरियाह को कहा ८  
कि अपने घर जा और अपने पाँच धन तब जरियाह राजा के घर से निकला और  
उस के पीछे पीछे राजा के घर से भोजन गया । पर जरियाह राजा के घर की ९  
ढोवड़ी पर अपने प्रभु के सेवकों के साथ सो रहा और अपने घर को न गया ।  
और जब दाऊद को कहा गया कि जरियाह अपने घर नहीं गया तब दाऊद ने १०  
जरियाह से कहा कि क्या तू यात्रा में नहीं आया फिर तू अपने घर क्यों न गया ।  
और जरियाह ने दाऊद से कहा कि संजड़ा और दूसरागल और पृथ्वी संजुषी ११  
में रहते हैं और मेरा प्रभु यूय्य और मेरे प्रभु के सेवक खुले खेतों में पड़े हुए  
हैं और मैं क्योंकि अपने घर जाऊँ और खाऊँ पाँच और अपनी स्त्री के साथ सो  
रहूँ तो तेरे जीवन से और तेरे प्राण के जीवन से मैं नेमा न करूँगा । तब दाऊद १२  
ने जरियाह को कहा कि आज के दिन भी यहाँ रह जा और कल मैं तुझे भेजूँगा  
तो जरियाह उस दिन भी प्रातःकाल लौट आया तब दाऊद ने १३  
उसे बुलाके अपने सामने खिलाया पिनाया और उसे उन्मत्त किया और साँझ को  
यह बाहर जाके अपने प्रभु के सेवकों के साथ अपने बिल्काने पर सो रहा परन्तु  
अपने घर न गया ॥

और प्रातःकाल यों हुआ कि दाऊद ने यूय्य को चिट्ठी लिखके जरियाह के १४  
हाथ भेजी । और उस ने चिट्ठी में यह लिखा कि जरियाह को भारी लड़ाई के १५  
आगे करो और उस के पीछे से दूत जाओ जिससे यह सारा कार्य ॥

और ऐसा हुआ कि जब यूय्य ने उन नगर का भेद ले लिया तो उस ने जरियाह १६  
को ऐसे स्थान में डराया जहाँ यह जानता था कि सुरता है । और उन नगर १७  
के लोग निकले और यूय्य से लड़े और दाऊद के सेवकों में से जारे और द्विती  
जरियाह भी मारा गया ॥

तब यूय्य ने युद्ध का समस्त समाचार दाऊद को कहला भेजा । और दूत १८  
को आज्ञा किई कि जब तू राजा से युद्ध का समाचार कह चुके । तो यदि ऐसा २०  
हो कि राजा का क्रोध भड़के और यह तुझे कहे कि जब तुम लड़ाई पर चढ़े  
तो नगर के निकट क्यों आये क्या तुम न जानते थे कि ये भीत पर से मारेंगे ।  
यह्युसत के बेटे अविमलिक को किस ने मारा एक स्त्री ने चक्री का पाट भीत २१  
पर से उस पर नहीं दे मारा कि वह तैयोज में मरा तुम भीत के नीचे क्यों गये  
थे तब कहियो कि तेरा सेवक द्विती जरियाह भी मारा गया ॥

२९ को लेजं और मेरा नाम उस पर होवे । तब दाऊद ने सारे लोग एकट्ठे किये और  
 ३० रत्न पर चढ़ा और लड़के उसे ले लिया । और उस ने वहाँ के राजा का मुकुट  
 उस के सिर पर से लिया और उस का तैल रत्न सहित एक तोड़ा सोने का था  
 और वह दाऊद के सिर पर था और उस ने उस नगर से बहुत सी लूट निकाली ।  
 ३१ और उस ने उस में के लोगों को बाहर निकालके आरों और लोहे के दायने की  
 गाड़ी से और कुल्हाड़ों के नीचे किया और उन्हें ईंटों के पैजावे में से चलाया और  
 उस ने अम्मून के संतान के सारे नगरों से ऐसा ही किया और दाऊद सेना समेत  
 यरूसलम को फिरा ॥

तेरहवां पर्व ।

१ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद के बेटे अविमलूम की एक सुंदर बहिन  
 थी जिस का नाम तमर और दाऊद के बेटे अमनून ने उस पर मन लगाया था ।  
 २ और अमनून ऐसा बिकल हुआ कि अपनी बहिन तमर के लिये रोगी हुआ क्योंकि  
 ३ वह कुंआरी थी पर कुछ धन न पड़ता था । परन्तु अमनून का एक मित्र था  
 जिस का नाम यूनदव जो दाऊद के भाई सिमश्राह का बेटा था और यूनदव  
 ४ एक अति चतुर जन था । सो उस ने उसे कहा कि राजा का बेटा होके तू क्यों  
 प्रतिदिन दुर्बल होता जाता है क्या तू मुझ से न कहेगा तब अमनून ने उसे कहा  
 ५ कि मेरा जीव अपने भाई अविमलूम की बहिन तमर पर लगा है । तब यूनदव ने  
 उसे कहा कि तू अपने बिकौने पर पड़ा रह और आप को रोगी ठहरा और जब  
 तेरा पिता तुझे देखने आवे तो उसे कहियो कि मैं आप की बिनती करता हूँ  
 कि मेरी बहिन तमर को आने दीजिये कि मुझे कुछ खिलावे और मेरे आगे भोजन  
 ६ बनावे जिसमें मैं देखूँ और उस के हाथ से खाऊँ । सो अमनून पड़ा रहा और  
 आप को रोगी ठहराया और जब राजा उसे देखने को आया तो अमनून ने राजा  
 से कहा कि मैं आप की बिनती करता हूँ कि मेरी बहिन तमर को आने दीजिये  
 कि मेरे आगे दो फूलके पकावे जिसमें मैं उस के हाथ से खाऊँ ॥

७ तब दाऊद ने तमर के घर कहला भेजा कि अभी अपने भाई अमनून के घर  
 ८ जा और उस के लिये भोजन बना । सो तमर अपने भाई अमनून के घर गई  
 और वह पड़ा हुआ था और उस ने पिसान लेके गंधा और उस के आगे फूलके  
 ९ बनाये और पकाये । और उस ने एक पात्र लिया और उन्हें उस के आगे उंडेला  
 पर उस ने खाने को नाह किया तब अमनून ने कहा कि सध जन मुझ पास से  
 १० बाहर निकल जाओ सो हर एक उस पास से बाहर गया । और अमनून ने तमर  
 को कहा कि भोजन कोठरी के भीतर ला कि मैं तेरे हाथ से खाऊँ सो तमर  
 फूलके जो उस ने बनाये थे उठाके कोठरी में अपने भाई अमनून पास लाई ।  
 ११ और जब वह खिलाने के लिये उस के आगे लाई तब उस ने उसे पकड़ा और  
 १२ उसे कहा कि आ मेरी बहिन मेरे संग लेट जा । पर वह बोली नहीं भाई  
 मुझे निन्दित मत कर क्योंकि इसराएलियों में यह बात उचित नहीं सो ऐसी मूर्खता  
 १३ मत कर । और मैं किधर अपना कलंक कुड़ाऊँ और तू जो है सो इसराएलियों में  
 एक मूढ़ की नाई होगा सो मैं तेरी बिनती करता हूँ कि राजा से कहिये कि

देख मैं तेरे ही घर से तुझ पर दुराई उभाऊंगा और मैं तेरी आंगियों के आगे तेरी पत्नियों को लेके तेरे परोसी को देखूंगा और वह इस सूर्य के सामने तेरी पत्नियों के साथ अकर्म करेगा । क्योंकि तू ने छिपके किया पर मैं वह सारे इकराएल के १२ सामने और सूर्य के सामने कहूंगा ॥

तब दाऊद ने नातन से कहा कि मैं ने परमेश्वर का अपराध किया और नातन १३ ने दाऊद से कहा कि परमेश्वर ने भी तेरे अपराध को दूर किया तू न मरेगा । तथापि इस कास के कारण से तू ने परमेश्वर के घरियों को उस की अपमानिता १४ करने का कारण दिया लड़का भी जो तेरे लिये उत्पन्न है निश्चय मर जायेगा ।

सो नातन अपने घर को गया और परमेश्वर ने उस लड़के को जो उरियाह १५ की पत्नी दाऊद के लिये जनी थी मारा कि वह बड़ा रोती हुया । इस लिये १६ दाऊद ने उस लड़के के लिये ईश्वर से वितती किहे और व्रत रक्खा और भीतर जाके सारी रात भूमि पर पड़ा रहा । और उस के घर के प्राचीन उस भूमि पर १७ से उठाने को आये परन्तु उस ने न चाहा और न उन के साथ भाजन किया । और १८ सातवें दिन वह लड़का मर गया और दाऊद के सेवक उसे कानन में डरे कि लड़का मर गया क्योंकि उन्होंने ने कहा कि देखो जब लड़का जीता ही था तब हम ने उसे कहा और उस ने हमारी बात न मानी और यदि हम उसे कहें कि लड़का मर गया फेर वह आप को कैसा कह देगा । पर जब दाऊद ने देखा कि उस के १९ सेवक फुसफुसा रहे हैं तब उस ने पूछा कि लड़का मर गया इस लिये दाऊद ने अपने सेवकों को कहा कि क्या लड़का मर गया और ये घालें कि मर गया । तब २० दाऊद भूमि पर से उठा और नचाया और नुगांध लगाया और अपना वस्त्र बदला और परमेश्वर के घर में आया और दण्डवत किहे तब वह अपने घर गया और जब उस ने चाहा तब उस के आगे रोटी धरी गई और उस ने खाई । तब उस २१ के सेवकों ने उसे कहा कि आप ने यह कैसा किया है जब तो लड़का जीता था आप ने व्रत करके विलाप किया परन्तु जब लड़का मर गया तब उठके रोटी खाई । और उस ने कहा कि जब तो लड़का जीता ही था तब तो मैं ने व्रत २२ करके विलाप किया क्योंकि मैं ने कहा कि कौन जानता है कि ईश्वर सुक पर अनुग्रह करेगा जितने लड़का जीवे । पर अब तो वह मर गया सो मैं किस लिये २३ व्रत करूं क्या मैं उसे फेर ल सक्ता हूं मैं उस पास जाऊंगा पर वह सुक घास फिर न आवेगा ॥

और दाऊद ने अपनी पत्नी वितामयश की शांति दिई और उस पास गया और २४ बैठा जनी और उस ने उस का नाम सुलेमान रक्खा और परमेश्वर उसमें प्रीति रखता था । और उस ने नातन आगमज्ञानी के द्वारा से कहला भेजके उस का नाम २५ परमेश्वर के कारण परमेश्वर का प्रिय रक्खा ॥

और यूशव अम्मून के संतान के रव्यः से लड़ा और राजनगर ले लिया । तब २६ यूशव ने दूतों को भेजके दाऊद को कहला भेजा कि मैं रव्यः से लड़ा और मैं ने पानियों के नगर को ले लिया । अब आप उठे हुए लोगों को एकट्ठा करिये २७ और इस नगर के आगे छावनी करके उसे लीजिये न हो कि मैं उस नगर

३१ तब राजा उठा और अपने कपड़े फाड़े और भूमि पर लोट गया और उस के  
 ३२ सारे सेवक भी कपड़े फाड़के उस के आगे खड़े हुए । तब दाऊद के भाई सिम-  
 आह का बेटा यूनदब उत्तर देके बोला कि मेरे प्रभु ऐसा न समझ कि समस्त  
 तरुण अर्थात् राजपुत्र मारे गये क्योंकि अमनून अकेला मारा गया क्योंकि जिस  
 दिन से अमनून ने अबिसलुम की वहिन तमर की पत खोई उस ने यह बात ठान  
 ३३ रखी थी । सो अब मेरा प्रभु राजा इस बात को न समझ कि समस्त राजपुत्र  
 मारे गये क्योंकि केवल अमनून मारा गया ॥

३४ परन्तु अबिसलुम भागा और उस तरुण ने जो पहरे पर था आंखें उठाई  
 और दृष्टि किई और क्या देखता है कि बहुत से लोग मार्ग में पहाड़ की ओर  
 ३५ से उस को पीछे आते हैं । तब यूनदब ने राजा से कहा कि देखिये तेरे दास के  
 ३६ कहे के समान राजपुत्र आये । और ऐसा हुआ कि जब वह कह चुका तब राज-  
 पुत्र आ पहुँचे और चिल्ला चिल्ला बिलाप किये और राजा भी और उस के समस्त  
 सेवकों ने बहुत बिलाप किया ॥

३७ पर अबिसलुम जसूर के राजा अम्मिहूर के बेटे तलमी पास गया और दाऊद  
 प्रतिदिन अपने पुत्र के लिये बिलाप करता रहा ॥

३८ और अबिसलुम भागके जसूर में गया और तीन वरस लों वहाँ रहा । और  
 दाऊद राजा का मन अबिसलुम पास जाने को बहुत था क्योंकि अमनून के मरने  
 के विषय में उस का मन शांत हुआ ॥

चौदहवां पर्व ।

१ जब जरूयाह के बेटे यूअब ने देखा कि राजा का मन अबिसलुम की ओर  
 २ है । तब यूअब ने तकूअ में भेजके वहाँ से एक दुष्टिमती स्त्री बुलवाई और उसे  
 कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूँ कि उदासी का भेष बना और उदासी बस्त  
 पहिन और अपने पर तेल मत लगा परन्तु ऐसा हो जैसे कोई स्त्री जिस ने बहुत  
 ३ दिन से मृतक के लिये बिलाप किया है । और राजा पास आ और इस रीति से  
 उससे कह सो यूअब ने उस के मुँह में बातें डालीं ॥

४ और जब तकूअ की स्त्री राजा से बोली तब वह भूमि पर आँधे मुँह गिरी  
 ५ और दण्डवत करके बोली कि हे राजा कुड़ाइये । तब राजा ने उसे कहा कि तुम्हें  
 क्या हुआ और वह बोली मैं निश्चय बिधवा स्त्री हूँ और मेरा पति मर गया है ।

६ और आप की दासी के दो बेटे थे और उन दोनों ने खेत में झगड़ा किया और  
 उन में कोई न था कि कुड़ावे और एक ने दूसरे को मारा और उसे बध किया ।

७ और देखिये कि सारे घराने आप की दासी पर उठे हैं और वे कहते हैं कि जिस  
 ने अपने भाई को मार डाला उसे हमें सौंप दे जिसमें हम उस के भाई के प्राण  
 की संती जिसे उस ने घात किया उसे मार डालें और हम अधिकारी को भी  
 नाश करेंगे और यों वे मेरी बची हुई चिनगारी को भी बुझा डालेंगे और मेरे  
 ८ पति के नाम और बचे हुए को भूमि पर न छोड़ेंगे । तब राजा ने उस स्त्री से  
 ९ कहा कि अपने घर जा और मैं तेरे विषय में आज्ञा करूँगा । तब तकूअ की उस  
 स्त्री ने राजा से कहा कि मेरे प्रभु राजा सारी सुराई सुन्न पर और मेरे पिता के

वह मुझे तुम से न रोकेगा । तथापि उस ने उस की बात न मानी परन्तु उससे १४  
प्रयत्न होके दरबस किया और उससे अकर्म किया ॥

तब अमनून ने उससे अति घिन किया यहां ली कि जिस घिन से घिन किया १५  
उस प्रीति से जो वह उससे रखता था अधिक हुआ और अमनून ने उसे कहा कि  
उठ दूर हो । और उस ने उसे कहा कि यह धुराई कि तू ने मुझे निकाल दिया १६  
उससे जो तू ने मुझ से किई अधिक है पर उस ने न माना । तब अमनून ने अपने १७  
सेवा करवैये एक दास को बुलाके कहा कि अब इस मुझ पास में निकाल दे  
और उस के पीछे द्वार में अगरी लगा । और उस पर बहुरंग बन्ध था क्योंकि १८  
राजा की कुंवारी बेटियां ऐसा ही बस्त्र पहिनती थीं तब उस के सेवक ने उसे  
बाहर कर दिया और उन के पीछे द्वार पर अगरी लगाई ॥

और तमर ने मिर पर धूल डाली और अपना बहुरंगी बस्त्र फाड़ा और मिर १९  
पर हाथ धरके रोती चली गई । और उन के भाई अधिसलुस ने उसे कहा कि २०  
क्या तेरा भाई अमनून तेरे संग हुआ परन्तु हे अतिन अध सुषकी हो २१ वह तेरा  
भाई है उस बात पर अपना मन मत लगा तब तमर अपने भाई अधिसलुस के  
घर में अति उदासीन पड़ी रही ॥

परन्तु दाऊद राजा उन सब बातों को सुनके अति क्रुद्ध हुआ । और अधिसलुस २२  
ने अपने भाई अमनून को फुक भला चुग न कहा क्योंकि अधिसलुस अमनून से  
घिन करता था क्योंकि उस ने उस की बेटिन तमर से प्रथम किया था । और २३  
पूरे दो बरस के पीछे ऐसा हुआ कि बअलहमर में जो बकरायम के लग हैं अधि-  
सलुस की भेटों के रोस कतरवैये थे तब अधिसलुस ने राजा के सब बेटों को  
नेहता दिया । और अधिसलुस राजा पास आया और कहा कि हेमिये अब तेरे २४  
सेवक की भेटों के उन कतरवैये हैं सो अब मैं तेरी बिनगी करता हूं कि राजा  
और उस के सेवक भी तेरे दास के साथ चलें । तब राजा ने अधिसलुस से कहा २५  
कि नहीं बेटे हम सब के सब न जायें जिनमें न हो कि तुम पर भार होय और  
उस ने उसे बहुत मनाया परन्तु तब भी वह न गया पर उसे आशीस दिया । तब २६  
अधिसलुस ने कहा कि यदि नहीं तो मैं आप को घिनती करता हूं कि मेरे भाई  
अमनून को हमारे साथ जाने दीजिये तब राजा ने उसे कहा कि यह किस लिये  
तेरे साथ जायें । परन्तु अधिसलुस ने उसे बहुत मनाया तब उस ने अमनून को और २७  
सारे राजपुत्रों को उस के साथ जाने दिया ॥

और अधिसलुस ने अपने सेवकों को कह रखवा था कि सीन्त रखो कि जब २८  
अमनून का मन मदिरा से मगन होय और मैं तुम्हें कहूं कि अमनून को मारे  
तब उसे घात कीजियो हरियो मत जायें मैं ने तुम्हें आजा नहीं किई सो काहम  
और गूरता कीजियो । और जैसी कि अधिसलुस ने उन्हें आजा किई थी वैसा ही २९  
उस के सेवकों ने अमनून से किया तब समस्त राजपुत्र उठे और हर एक जन  
अपने अपने खजूर पर चढ़ भागा ॥

और ऐसा हुआ कि उन के मार्ग में होते ही दाऊद पास यह समाचार पहुंचा ३०  
कि अधिसलुस ने सारे राजपुत्रों को मार डाला और उन में से एक भी न बचा ।



अपने सिर के बाल मुंडाता था क्योंकि हर वरस के अंत में उस का यह बंधेज था क्योंकि उस के बाल बहुत घने थे और तैल में दो सौ मिसकाल राजा के २७ बटखरे से होते थे । और अबिसलुम के तीन बेटे उत्पन्न हुए और एक बेटा जिस का नाम तमर था वह बहुत सुंदर थी ॥

२८ सो अबिसलुम पूरे दो वरस यरुसलम में रहा और राजा का मुंह न देखा ।  
 २९ तब अबिसलुम ने यूअब को बुलवाया कि उसे राजा पास भेजे परन्तु वह न चाहता था कि उस पास आवे तब उस ने दुहराके बुलवाया तब भी वह न ३० आया । तब उस ने अपने सेवकों से कहा कि देखो यूअब का खेत मेरे खेत से लगा है और वहां उस का जव है जाओ और उस में आग लगाओ तब अबिसलुम ३१ के सेवकों ने खेत में आग लगाई । तब यूअब उठा और अबिसलुम के घर आया ३२ और उससे कहा कि तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाई । तब अबिसलुम ने यूअब को उत्तर दिया कि देख मैं ने तुम्हे कहला भेजा कि यहां आ कि मैं तुम्हे राजा पास भेजके कहूं कि मैं जसूर से क्यों यहां आया मेरे लिये तो वहीं रहना अच्छा था सो अब मैं राजा का मुंह देखूं और यदि मुझ में अपराध होवे तो वह ३३ मुझे मार डाले । तब यूअब ने राजा पास जाके यह कहा और उस ने अबिसलुम को बुलाया सो वह राजा पास आया और राजा के आगे औंधा गिरा और राजा ने अबिसलुम को चूमा ॥

पंदरहवां पर्व ।

१ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अबिसलुम ने अपने लिये रथ और २ घोड़े और पचास मनुष्य अपने आगे दौड़ने को सिद्ध किये । और अबिसलुम तड़के उठा और फाटक की अलंग खड़ा हुआ और यों होता था कि जब कोई भगाड़ा रखके राजा के न्याय के लिये आता था तब अबिसलुम उसे बुलाके पूछता था कि तू किस नगर का है और उस ने कहा कि तेरा सेवक इसराएल की एक ३ गोष्टी में का है । और अबिसलुम ने उसे कहा कि देख तेरा पद भला और ठीक ४ है परन्तु राजा की ओर से कोई ओता नहीं है । और अबिसलुम ने कहा हाय कि मैं देश में न्यायी होता कि जिस किसी का पद अथवा कारण होता मुझ ५ पास आता और मैं उस का न्याय करता । और जब कोई उस पास आता था कि उसे नमस्कार करे तो वह हाथ बढ़ाके उसे पकड़ लेता था और उस का चूमा ६ लेता था । और इस रीति से अबिसलुम सारे इसराएल से करता था जो राजा पास विचार के लिये आते थे सो अबिसलुम ने इसराएल के मनुष्यों के मन चुराये ॥

७ और चालीस वरस के पीछे ऐसा हुआ कि अबिसलुम ने राजा से कहा कि मैं आप की विनती करता हूं कि मुझे जाने दीजिये कि अपनी मनौती को जो मैं ने ८ परमेश्वर के लिये मानी है हबखन में पूरी करूं । क्योंकि आप के दास ने जब अराम जसूर में था यह मनौती मानी थी कि यदि परमेश्वर मुझे यरुसलम में ९ निश्चय फेर ले जावेगा तो मैं परमेश्वर की सेवा करूंगा । तब राजा ने उसे कहा कि कुशल से जा सो वह उठके हबखन को गया ॥

घराने पर होये और राजा और उस का मिंशमन निर्दोष रहे । तब राजा ने १० कहा कि जो कोई तुम्हें कुछ कहे उसे मुझ पास ला और वह फिर तुम्हें न कहेगा । तब वह बोली मैं विनती करती हूँ कि राजा अपने ईश्वर परमेश्वर का स्मरण ११ करे कि अधिर का पलटावायक मेरे बेटे को घात करने का न पड़े तब वह बोली परमेश्वर के जीवन में तेरे बेटे का एक बाल भी भूमि पर न गिरेगा ।

तब उस स्त्री ने कहा कि मैं तेरी विनती करती हूँ कि अपनी दासी को एक १२ घात अपने प्रभु राजा से करने दीजिये और वह बोली कहे जा । तब उस स्त्री १३ ने कहा कि आप ने किस नियम ईश्वर के लोगों के विरुद्ध ऐसी चिंता किई क्योंकि राजा ऐसी घात कहते हैं जैसा कोई इस घात में बोली है कि राजा भेजके अपने निकाले हुए को घर में फेंक नहीं लाते । क्योंकि हमें मरने पड़ेगा और पानी १४ के समान हैं जो भूमि पर गिराया जाके बहता नहीं जा सक्ता और ईश्वर भी मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करता तथापि वह युक्ति करना है कि उस का निकाला हुआ उल्लेख अलग न रहे । सो अब जो मैं अपने प्रभु राजा पास इस घात के १५ विषय में कहने आई हूँ इस कारण कि लोगों ने मुझे डराया और आप की दासी ने कहा कि मैं आप राजा से कहूँगी कदाचिन् राजा अपनी दासी की विनती सुनें । क्योंकि राजा अपनी दासी को उस पुन्य के छाये में कुढ़ाने का सुनते जो मुझे और मेरे १६ बेटे को ईश्वर के अधिकार में निकालके मार डाला चाहता है । तब तैरी दासी १७ बोली कि मेरे प्रभु राजा की बात कुशल की जाती क्योंकि मेरे प्रभु राजा भना धुरा सुनें मैं ईश्वर के दूत के समान हूँ इस कारण परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे साथ होगा ।

तब राजा ने उस स्त्री को कहा कि जो कुछ मैं तुम्हें से पूछूँ तु मुझ से मत १८ छिपा और स्त्री बोली कि मेरे प्रभु राजा कहिये । तब राजा ने कहा कि क्या उन १९ सब बातों में यूश्व भी तेरे साथ नहीं तब उस स्त्री ने उत्तर दिया कि तेरे प्राण की किरिया है मेरे प्रभु राजा कोई उन बातों में मैं जो प्रभु राजा ने कहा है दबाने अथवा बाधे जा नहीं सकती क्योंकि तेरे सेवक यूश्व ही ने मुझे यह कहा है और उसी ने यह सब बातें तेरी दासी के मुँह से डाली हैं । मेरे सेवक यूश्व ने यह बात २० इस लिये किई जिससे हम करने का डाल बनाये और पूर्णार्थों के समस्त ज्ञान में मेरा प्रभु ईश्वर के दूत के समान दृष्टिमान है ।

तब राजा ने यूश्व को कहा कि देख मैं ने यह बात किई है सो जा और २१ उस तरुण अविमनुस को फेर ला । सो यूश्व भूमि पर आधा गिरा और दगडगता २२ किई और राजा का धन्य माना और यूश्व बोला कि आज तेरे सेवक का निश्चय हुआ कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया कि ते मेरे प्रभु राजा आप ने अपने सेवक की विनती मानी । तब यूश्व उठके जमूर को गंगा और अविमनुस को २३ यश्मलस में लाया । तब राजा ने कहा कि उसे कह कि अपने घर जाये और २४ मेरा मुँह न देखे सो अविमनुस अपने घर गया और राजा का मुँह न देखा ।

परन्तु संमस्त इसमसल में कोई जन अविमनुस के तुल्य सुंदर और प्रशंसा के २५ योग्य न था तलवे से लेकर चांदी लो उस में कोई पथ न थी । और जब वह २६

- २८ यूनतन अविचतर का बेटा । देख मैं उस वन के चौगान में ठहरंगा जब लों कि
- २९ तुम्हारे पास से कुछ संदेश आवे । सो सद्रुक और अविचतर ईश्वर की मंजूपा को यरुसलम में फेर लाये और वहीं रहे ॥
- ३० और दाऊद जलपाई के पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़ता गया और चढ़ते चढ़ते विलाप करता गया और उस का सिर ठंपा हुआ और नंगे पांय था और उस के साथ के सारे लोग अपने सिर ठांये हुए विलाप करते चढ़ते चले जाते थे ।
- ३१ तब एक ने दाऊद से कहा कि अखितुफल अविचलुम के गुप्तकारियों में है तब दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर तेरी विनती करता हूं कि अखितुफल के मंत्र को मूढ़ता की संती पलट दे ॥
- ३२ और ऐसा हुआ कि जब दाऊद चोटी पर पहुंचा जहां उस ने ईश्वर की पूजा किई तो दूसी अरकी अपना वस्त्र फाड़े हुए और अपने सिर पर धूल डाले हुए
- ३३ उस्से भेंट करने को आया । तब दाऊद ने उसे कहा कि यदि तू मेरे साथ पार
- ३४ उतरेगा तो मुझ पर भार होगा । परन्तु यदि तू नगर में फिर जावे और अविचलुम से कहे कि हे राजा मैं तेरा सेवक हुंगा मैं अब लों तेरे पिता का सेवक था उसी रीति तेरा भी सेवक हुंगा तब तू मेरे कारण से अखितुफल के मंत्र को
- ३५ भंग कर सक्ता है । और क्या तेरे साथ सद्रुक और अविचतर याजक नहीं हैं सो ऐसा होवे कि जो कुछ तू राजा के घर में सुने सो सद्रुक और अविचतर याजकों
- ३६ से कह दे । देख यहां उन के साथ उन के दो बेटे अखिमश्रज सद्रुक के और यूनतन अविचतर के बेटे हैं और जो कुछ तुम सुन सको सो उन के द्वारा से मुझे
- ३७ कहला भेजो । सो दाऊद का मित्र दूसी नगर को आया और अविचलुम भी यरुसलम में पहुंचा ॥

### सालहियां पत्र्य ।

- १ और जब दाऊद चोटी पर से तनिक पार गया तब देखो कि मिफिबूसत का सेवक सीबा दो गदहे काठी कसे हुए जिन पर दो सौ रोटी और दाख के एक सौ गुच्छे और अंजीर के फल के सौ गुच्छे और एक कुप्पा मदिरा का लदा हुआ
- २ था उसे मिला । और राजा ने सीबा को कहा कि इन वस्तुन से तुम्हारा क्या अभिप्राय है तब सीबा बोला कि ये गदहे राजा के घराने के चढ़ने के लिये और रोटियां और अंजीर फल तरुणों के भोजन के लिये और यह मदिरा उन के लिये
- ३ जो अरण्य में थके हुए हों । तब राजा ने कहा कि तेरे स्वामी का बेटा कहां है और सीबा ने राजा से कहा कि देखिये वह यरुसलम में ठहरा है क्योंकि उस
- ४ ने कहा है कि आज इसराएल के घराने मेरे पिता का राज्य मुझे फेर देंगे । तब राजा ने सीबा से कहा कि देख मिफिबूसत का सब कुछ तेरा है तब सीबा ने कहा कि मैं आप को दण्डवत करता हूं कि मैं अपने प्रभु राजा की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं ॥
- ५ और जब दाऊद राजा बहूरीम में पहुंचा तो देखो वहां से साऊल के घराने में
- ६ से एक जन निकला जिस का नाम शमीय जैरा का पुत्र धिक्कारते हुए चला आता था । और वह दाऊद पर और दाऊद राजा के सारे सेवकों पर पत्थर फेंकने लगा

परन्तु अश्विमल्ल ने इसरागल के मंतान की सारी गोष्ठियों में भेड़ियों के द्वारा १० से कहला भेजा कि जब तुम नर्मिंगे का जव्व मुने तब योन उठो कि अश्विमल्ल द्यस्न में राज्य करता है । और अश्विमल्ल के साथ यस्मन्म में दो सौ मनुष्य ११ निकल आये और वे अपनी भालाई में गये थे और कुछ न जानते थे । और १२ अश्विमल्ल ने जैलो अश्वितुफल दाऊद के मंत्री को उस के नगर जेना में बुलाया जब वह थल चढ़ाता था और गुष्ट दृढ़ हो रहा था क्योंकि अश्विमल्ल पास लोग बढ़ते जाते थे ।

तब एक दूत ने आके दाऊद को कहा कि इसरागल के लोगों के मन अश्वि- १३ मल्ल के पीछे लगें हैं । तब दाऊद ने अपने ममन्म नेयकों को जो यस्मन्म में १४ उस के साथ थे कहा कि उठो और हम भागे क्योंकि अश्विमल्ल में हम न दर्वसों शीघ्र खलो न हो कि वह अचानक हम पर आ पड़े और हम पर घुराई नाये और तलवार की धार से नगर को नाश करे । तब राजा के सेवकों ने राजा से १५ कहा कि देखिये आप के सेवक जो कुछ कि प्रभु राजा की इच्छा होये ।

तब राजा निकला और उस का सारा घराना उस के पीछे हुआ और राजा ने १६ उस स्त्रियों जो उस की दासियां थीं घर देखने को छोड़ीं । और राजा अपने मय १७ लोगों समेत बाहर निकलके दर स्थान में जा टहरा । और उस के सारे सेवक १८ उस के साथ साथ निकल गये और सारे फरौती और सारे फरौती और सारे जाती छः सौ जन जो जल से उस के पीछे आये थे राजा के आगे आगे गये । तब राजा ने जाती इत्ती से कहा कि तू भी हमारे साथ छोड़ आता है अपने १९ स्थान को फिर जा और राजा के साथ रह क्योंकि तू परदेशी और अपने स्थान से भी निकाला हुआ है । कल ही तू आया है और आज मैं तुम्हें हमारे चनाक २० और मेरे जाने का कहीं ठिकाना नहीं सो तू फिर जा और अपने भाइयों को ले जा दया और मत्त तरे साथ होये । तब इत्ती ने राजा को उत्तर देकर कहा कि पर- २१ मेग्वर के और मेरे प्रभु राजा के जीवन में निश्चय जिस स्थान में संग प्रभु राजा होवेगा चाहे मृत्यु में चाहे जीवन में वही आप का मेवक भी होगा । और दाऊद २२ ने इत्ती को कहा कि पार उतर जा तब इत्ती जाती पार उतर गया और उस के सारे मनुष्य और उस के साथ सब बढ़के याने चले । और सारे देश ने रो रो के २३ विलाप किया और सारे लोग उतर गये और राजा भी क्रिदस्न के नाने पार उतर गया और समस्त लोगों ने पार उतरके धन का भारा लिया ॥

और देखा कि सदूक भी और समस्त लार्थ ईश्वर की माफी की मंजूपा लिये २४ हुए उस के साथ थे सो उन्होंने ने ईश्वर की मंजूपा को गव दिया और आदिपतर घड़ गया जब लों कि सारे लोग नगर में निकल आये । तब राजा ने सदूक से २५ कहा कि ईश्वर की मंजूपा नगर को फेर ले जा यदि परमेग्वर के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर होगी तो यह मुझे फेर लावेगा और उसे और अपने निवास को मुझे दिगावेगा । पर यदि यह पों कहे कि अब मैं तुम्हें से प्रमन्न नहीं देख मैं जो यह २६ भला जाने सो मुझ से करे । और राजा ने सदूक याजक को फिर कहा क्या तू २७ दर्शी नहीं नगर को फुगल से फिर और तरे संग तरे हो येठे अश्विमल्ल और

५ और राजा ने यूअब और अविशै और इत्ती को कहा कि मेरे कारण उस युवा जन अर्थात् अविस्लुम से कोमलता कीजियो और जो कुछ राजा ने समस्त प्रधानों से अविस्लुम के विषय में कहा सो सब लोगों ने सुना ॥

६ तब लोग निकलके चौगान में इसराएल के सामने हुए और संग्राम इफरायम के वन में हुआ । और वहां इसराएल के लोग दाऊद के सेवकों के आगे मारे गये

८ और उस दिन वहां बड़ा जूझ अर्थात् बीस सहस्र का हुआ । क्योंकि संग्राम समस्त देश में फैल गया था और उस दिन वन ने खड्ग से अधिक लोगों को नाश किया ।

९ और अविस्लुम दाऊद के सेवकों से मिला और अविस्लुम खच्चर पर चढ़ा था और खच्चर उसे लेके बलूत वृक्ष की घनी डारों के तले घुसा और उस का सिर बलूत में फंसा और वह अधर में टंगा गया और खच्चर उस के नीचे से चला गया ॥

१० और कोई देखके यूअब से कहके बोला कि मैं ने अविस्लुम को एक बलूत

११ वृक्ष पर टंगा देखा । तब यूअब उस कहवैये से बोला कि जब तू ने देखा तो उसे मारके भूसि पर क्यों न डाल दिया कि मैं तुम्हें दस टुकड़े चांदी और एक

१२ पटुका देता । और उस जन ने यूअब को उत्तर दिया कि यदि तू सहस्र टुकड़े चांदी मुझे तौल देता तौभी मैं राजा के बेटे पर हाथ न उठाता क्योंकि राजा ने हमें सुनाके तुम्हें और अविशै और इत्ती को आज्ञा करके चिताया कि चौकस

१३ हो कोई उस तरुण अविस्लुम को न छूवे । नहीं तो मैं अपने प्राण ही के विरोध में झूठा होता क्योंकि कोई वस्तु राजा से छिपी नहीं और तू भी मेरे विरोध पर

१४ खड़ा होता । तब यूअब ने कहा कि मैं तेरे आगे इस रीति से न ठहरेगा और अब लो अविस्लुम जीता हुआ बलूत वृक्ष के मध्य में लटका था तब यूअब ने

१५ तीन बाण हाथ में लेके अविस्लुम के अंतःकरण में उन्हें गोदा । और दस तरुणों ने जो यूअब के अस्त्रधारी थे आ घेरा और अविस्लुम को मारके उसे बधन किया ॥

१६ तब यूअब ने नरसिंगा फूँका और लोग इसराएल का पीछा करने से फिरे क्योंकि

१७ यूअब ने लोगों को रोक रक्खा । और उन्होंने ने अविस्लुम को लेके उस को वन के एक बड़े गड़हे में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर किया

१८ और सारे इसराएल भागके अपने अपने तंबू को गये । अब अविस्लुम ने जीते जी अपने लिये राजा की तराई में एक खंभा बनाया था क्योंकि उस ने कहा कि मेरे कोई बेटा नहीं जिस्से मेरा नाम चले और उस ने अपना ही नाम खंभे पर रक्खा और आज के दिन लो वह अविस्लुम का स्थान कहाता है ॥

१९ तब सद्दूक के बेटे अखिमअज ने कहा कि मैं दौड़के राजा को संदेश पहुंचाऊँ कि परमेश्वर ने किस रीति से उस के बैरियों के हाथ से उस का प्रतिफल लिया ।

२० तब यूअब ने-उसे कहा कि आज तू संदेशी मत होना परन्तु दूसरे दिन संदेश पहुंचाइयो परन्तु आज तू संदेश मत ले जा क्योंकि राजा का पुत्र मर गया है ।

२१ तब यूअब ने कूशी को कहा कि जा और जो कुछ तू ने देखा है सो राजा से

२२ कह तब कूशी यूअब को प्रणाम करके दौड़ा । तब सद्दूक के बेटे अखिमअज ने दूसरी बार यूअब से कहा कि जो कुछ हो परन्तु मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ने दीजिये तब यूअब बोला कि हे पुत्र तू किस लिये दौड़ेगा तू देखता है कि कोई

और समस्त लोग और समस्त वीर उस के दौटने आएँ थे । और अधिकारों हुए ०  
शमीय यों कहता था कि निकल आ निकल आ है हत्यारे मनुष्य है दुष्ट जन ।  
परमेश्वर ने साजल के घर की सारी हत्या को तुझ पर होगा जिस की मंती तू ने ८  
राज्य किया है और परमेश्वर ने राज्य को तेरे बेटे अविमलुस के हाथ में सौंप  
दिया और देखो आप को अपनी छुगई में इस कारण कि तू हत्यारा है ।

तब जम्पाह के बेटे अविमल ने राजा से कहा कि यह मरा हुआ कुत्ता मेरे ९  
प्रभु राजा को किस लिये अधिकारों में आप की विनती करता है कि मुझे पार  
जाने दीजिये कि उस का मिर दगार टातुं । तब राजा ने कहा कि है जम्पाह १०  
के बेटे मुझे तुम से क्या काम उसे अधिकारों देओ इस कारण कि परमेश्वर ने  
उसे कहा है कि दाऊद को अधिकार और उसे कान दोगेगा कि तू ने ऐसा क्यों  
किया है । और दाऊद ने अविमल और अपने मारे मंत्रकों से कहा कि देख मेरा ११  
बेटा जो मेरी कटि से निकला मेरे प्राण का गारुध ? तो जिनका अधिकार यह  
विनयमानी उसे छोड़ देओ अधिकारों देओ क्योंकि परमेश्वर ने उसे कहा है । १२  
जाने परमेश्वर मेरे दुःख पर दृष्टि करे और परमेश्वर आज उस के अधिकार को मेरी  
मेरी भलाई करे । और क्यों दाऊद अपने लोग लेकर मार्ग में चल आता था १३  
तब शमीय पलाड़ के अलेश उस के मन्सुख अधिकारों हुआ जना जना था और  
उसे पत्थर मारता था और धून फेंकता था । और राजा और उस के मारे लोग १४  
थके हुए आये और बर्छा उन्हीं ने अपने को संसृष्ट किया ।

तब अविमलुस और हमरायल के मारे लोग परमलुस में आये और तामिगुफल १५  
उस के साथ । और यों हुआ कि जब दाऊद का मित्र हुनी परकी अविमलुस १६  
पास पहुंचा तो हुनी ने अविमलुस से कहा कि राजा जीता रहे राजा जीता रहे ।  
और अविमलुस ने हुनी से कहा कि क्या अपने मित्र पर यही अनुग्रह किया तू १७  
अपने मित्र के साथ क्यों न गया । तब हुनी ने अविमलुस से कहा कि नहीं परन्तु १८  
जिसे परमेश्वर और ये लोग और मारे हमरायल तुम में हमी का है और हम  
के साथ रहेगा । और फिर किस को सेवा कर यदि उस के बेटे की नहीं तो मेरे १९  
में ने आप के पिता के मन्सुख सेवा किई है ऐसा ही आप के मन्सुख होगा ।

तब अविमलुस ने अखितुफल से कहा कि मंत्र देगा कि हम क्या करें । तब २०  
अखितुफल ने अविमलुस से कहा कि अपने पिता की दासियों के पास जाओ  
जिन्हें वह घर की रक्षा का छोड़ गया है और मारे हमरायल सुनते कि आप  
अपने पिता से छिनित हैं तब आप के मारे साधियों के हाथ दृढ़ पोंगे । सो उन्हीं २१  
ने कोठे की छत पर अविमलुस के लिये नंद खड़ा करवाया और अविमलुस मारे  
हमरायल की दृष्टि में अपने पिता की दासियों के पास गया । और अखितुफल २२  
का मंत्र जो उन दिनों में वह देता था ऐसा था जैसा कि कोई ईश्वर के वचन  
से धूमता था अखितुफल का समस्त मंत्र दाऊद और अविमलुस के विषय में गया  
ही था ।

मंत्रद्वारा पट्ट्य ।

और अखितुफल ने अविमलुस से यह भी कहा कि मुझे बारह सयस पुरुष चुन २



दिखाया है कि तुम्हें न प्रधानों की न सेवकों की चिंता है क्योंकि आज मैं जानता हूँ कि यदि अबिसलुम जीता होता और हम सब आज मर जाते तो तू अति प्रसन्न होता । सो अब उठ बाहर निकल और अपने सेवकों का बोध कर क्योंकि मैं परमेश्वर की किरिया खाता हूँ कि यदि तू बाहर न जावेगा तो रात लों एक भी तेरे साथ न रहेगा और यह तेरे लिये उन सब विपत्तों से जो युवावस्था से अब लों हुई अधिक होगी । तब राजा उठा और फाटक में बैठा और सब लोगों को कहा गया कि देखो राजा फाटक में बैठा है तब सब लोग राजा के आगे आये क्योंकि सारे इसराएल अपने अपने तंबुओं को भाग गये थे ॥

९ और इसराएल की सारी गोष्टियों में सारे लोग भगाड़के कहने लगे कि राजा ने हमें हमारे शत्रुन के हाथ से और फिलिस्तीयों के हाथ से बचाया और अब वह अबिसलुम के कारण देश से भाग निकला है । और अबिसलुम जिसे हम ने अपने ऊपर अभिपिक्त किया था रण में मारा गया सो अब राजा के फेर लाने में चुपके क्यों हो ॥

११ तब दाऊद राजा ने सद्क और अविवतर पाजक को कहला भेजा कि यहूदाह के प्राचीनों को कहो कि राजा को उस के घर में फेर लाने में क्यों सब से पीछे हो देखते हो कि समस्त इसराएल की बोली राजा के हाँ उस के घर के पास पहुँची । तुम मेरे भाई मेरी हड्डी और मेरे मांस हाँ सो राजा को फेर लाने में क्यों सब से पीछे हो । और अमासा से कहो क्या तू मेरी हड्डी और मेरा मांस नहीं सो यदि मैं तुम्हें यूअव की संती सदा के लिये सेना का प्रधान न कहूँ तो ईश्वर मुझ से ऐसा और उस्से अधिक करे । और उस ने सारे यहूदाह के समस्त लोगों का मन ऐसा फेरा जैसा कि एक का मन होता है और उन्होंने ने राजा को भेजा कि आप अपने सारे सेवकों समेत फिर आइये । तब राजा फिरा और यरदन को आया और यहूदाह जिलजाल में राजा की भेंट को आये कि राजा को यरदन पार लावें ॥

१६ और जैरा के बेटे शमीय विनयमीनी वहूरीम से शीघ्र चले और यहूदाह के मनुष्यों के साथ मिलके दाऊद राजा से भेंट करने आये । और उस के साथ विनयमीनी एक सहस्र जन थे और साऊल के घराने का सेवक अपने पंदरह बेटे और बीस टहलुओं समेत आया और वे राजा के आगे यरदन के पार उतर गये । और राजा के घराने को पार उतारने और उस की इच्छा के समान करने के लिये घटवाही की एक नाव पार गई और जैरा का बेटा शमीय यरदन पार आते ही राजा के आगे झेंधे मुँह मिरा । और राजा से कहा कि मेरे प्रभु मुझ पर पाप मत धरिये उस बात को स्मरण करके मन में मत लाइये जो आप के सेवक ने जिस दिन कि मेरा प्रभु राजा यरुसलम से निकल आया था वही मैं कहती थी । क्योंकि आप का सेवक जानता है कि मैं ने पाप किया सो देखिये आज के दिन मैं यूसुफ के समस्त घराने में से पहिले आया हूँ कि उतरके अपने प्रभु राजा से भेंट करूँ । परन्तु जरूयाह के बेटे अबिशै ने उत्तर में कहा क्या शमीय इस कारण मारा न जावेगा कि उस ने परमेश्वर के अभिपिक्त को धिक्कारा । तब दाऊद ने

संदेश धरा नहीं । परन्तु जो होय में दौड़ता है तब उस ने कहा कि दौड़ तब २०  
अविमल ने चौगान का मार्ग लिया और कुर्मी से आगे बढ़ गया ।

और टाऊट दो फाटकों के बीच चँटा था और पक्क नगर की सीढ़ी की छत २१  
पर फाटक के ऊपर चढ़ गया था और अपनी आँखें उठाकर देखा और कहा देखा  
है कि एक जन अकेला दौड़ता आता है । और पक्क ने पुकारके राजा को कहा २२  
सो राजा ने कहा यदि अकेला है तो उस के मुँह से संदेश है और वह छत  
वहते पास आया । तब पक्क ने दूसरे जन को दौड़ते देखा और पक्क ने द्वार- २३  
पालक को पुकारके कहा कि देख पुनः अकेला दौड़ा आता है और राजा  
बोला कि वह संदेश लाता है । तब पक्क ने कहा कि मैं देखा है कि अकेले २४  
की दौड़ सदृश के छेदे अविमल की दौड़ की नाई है तब राजा बोला कि  
वह भला मनुष्य है और संदेश लाता है ।

और अविमल ने पुकारा और राजा से कहा कि मय दूसर है फिर राजा २५  
के आगे आँधे मुँह मिरा और बोला कि परमेश्वर आप का भेजकर भला है जिस  
ने उन लोगों को जिनमें ने मेरे प्रभु राजा के विरोध में हाथ उठाये मीठ किया ।  
तब राजा बोला कि क्या नगर अविमल नुमल से है और अविमल ने कहा २६  
कि जब राजा के मेयक पूअर ने दहन को भेजा तो उन नगर में ने एक छोटी  
भीड़ देखी पर मैं ने न जाना वह क्या है । तब राजा ने कहा कि क्या दोऊ २७  
यहाँ खड़ा हो और वह अलग जाके रहता हो रहा । और देखा कुर्मी बोला और २८  
कुर्मी ने कहा कि मेरे प्रभु राजा संदेश है क्योंकि परमेश्वर ने आज के दिन काय  
को उन सभों से जो आप के घर में बैठे थे पलटा दिया । तब राजा ने कुर्मी से २९  
पूछा कि क्या अविमल तब कुशन में है और कुर्मी ने उत्तर दिया कि मेरे प्रभु  
राजा के धरौ और मय जो आप को दुःख देने से दहन में आप उस तबल को  
नाई हो जायें । तब राजा अति दयाकुन हुआ और उन कोठरी पर चढ़ गया जो ३०  
फाटक के ऊपर थी और चिलाप किया और जाने आते में कहा कि हाथ मेरे  
छेदे अविमल हाथ मेरे छेदे मेरे छेदे अविमल भला होता जो तेरी गंती में ही  
सस्ता हाथ अविमल हाथ मेरे छेदे मेरे छेदे ।

उद्दीमयां पठ्यं ।

और पूअर से कहा गया कि देख राजा अविमल के लिपे रोता और चिलाप ३१  
करता है । और उस दिन का वचाय मय लोगों के लिपे चिलाप का दिन हुआ ३२  
क्योंकि लोगों ने उस दिन सुना कि राजा अपने छेदे के लिपे रोने में है । और ३३  
लोग उस दिन लज्जितों के समान जो लड़ाई में भाग निमतते हैं शायी से नगर  
में चले गये । परन्तु राजा ने अपना मुँह टाँपा और चिला चिला रोया कि हाथ ३४  
मेरे छेदे अविमल हाथ मेरे छेदे मेरे छेदे अविमल मेरे छेदे मेरे छेदे ।

तब पूअर घर में राजा पास आया और कहा कि तू ने आज के दिन अपने ३५  
मय मेयकों के मुँह को लज्जित किया जिनमें ने आज मेरे प्राण और मेरे छेदे  
छेदियों के प्राण और मेरी पत्नियों के प्राण और मेरी दासियों के प्राण खदाये । क्योंकि ३६  
तू अपने शत्रुन को प्यार करके अपने मित्रों से दूर करता है क्योंकि तू ने आज

## इक्कीसवां पर्व ।

- १ फिर दाऊद के दिनों में तीन बरस लगातार अकाल पड़ा और दाऊद ने पर-  
मेश्वर से पूछा सो परमेश्वर ने कहा कि यह साजल के और उस के हत्यारे घराने
- २ के कारण है क्योंकि उस ने जिवजिनियों को बधन किया । तब राजा ने जिवजिनियों  
को बुलाके उन्हें कहा अब जिवजनी इसराएल के संतानों में के न थे परन्तु  
अमूरियों के उवरे हुए थे और इसराएल के संतान ने उन से किरिया खाई थी  
और साजल ने चाहा कि इसराएल के संतान और यहूदाह के ज्वलन के लिये
- ३ उन्हें नाश करे । सो दाऊद ने जिवजिनियों से कहा कि मैं तुम्हारे लिये क्या करूं  
और किस्से मैं संतुष्ट करूं जिसमें तुम परमेश्वर के अधिकार को आशीस देओ ।
- ४ तब जिवजिनियों ने उसे कहा कि हम साजल से और उस के घराने से सोना चांदी  
नहीं चाहते हैं और न हमारे लिये इसराएल में किसी जन को बधन कीजिये तब
- ५ वह बोला जो तुम कहोगे सो मैं तुम्हारे लिये करूंगा । तब उन्होंने ने राजा को  
उत्तर दिया कि जिस जन ने हमें नाश किया और इसराएल के सिवानों में से हमें
- ६ नाश करने की युक्ति किई थी । उस के सात वेटे हमें सौंपे जावें और हम उन्हें  
परमेश्वर के लिये साजल के जिवजिनियों में जो परमेश्वर का चुना हुआ है फांसी  
देगें तब राजा बोला मैं देखूंगा ॥
- ७ परन्तु राजा ने साजल के वेटे यूनतन के वेटे मिफिबूषत को उस किरिया के  
कारण जो साजल के वेटे यूनतन के और दाऊद के मध्य में थी बचा रक्खा ।
- ८ परन्तु राजा ने रेयाह की बेटी रिसफः के दो बेटों को जिन्हें वह साजल के लिये  
जनी थी अर्थात् अरमूनी और मिफिबूषत को और साजल की बेटी मीकल के  
पांच बेटों को जिन्हें वह महलाती वरजिल्ली के वेटे अदरिएल के लिये जनी थी ।
- ९ और उस ने उन्हें जिवजिनियों के हाथ सौंप दिया और उन्होंने ने उन्हें पहाड़ पर  
परमेश्वर के आगे फांसी दिई और वे सातों कटनी के दिनों में एक साथ मारे
- १० गये यह जब कटने के आरंभ में था । तब रेयाह की बेटी रिसफः ने टाट वस्त्र  
लिया और कटनी के आरंभ से लेके आकाश में से उन पर पानी टपकने लों अपने  
लिये पहाड़ पर चिक्का दिया और दिन को आकाश के पंखी और रात को वनैले  
पशु को उन पर ठहरने न देती थी ॥
- ११ और दाऊद को कहा गया कि साजल की दासी रेयाह की बेटी रिसफः ने यों
- १२ किया । सो दाऊद ने जाके साजल की हड्डियों और उस के वेटे यूनतन की हड्डियों  
को यवीस जिलिअद के मनुष्यों से फेर लिया जिन्हें ने उन्हें बैतशान की सड़क  
से जहां फिलिस्तिनों ने उन्हें टांगा था तब फिलिस्तिनों ने साजल को जिलबूअ
- १३ में मारा था चुरा लिया । और वह वहां से साजल की हड्डियों को और उस के  
वेटे यूनतन की हड्डियों को ले आया और जो टांगे गये थे उन की हड्डियों को
- १४ एकट्ठा करवाया । और उन्होंने ने साजल और उस के वेटे यूनतन की हड्डियों को  
जिलअ के विनयमीनी के देश में उस के पिता कीस की समाधि में गाड़ा और  
सब जो राजा ने उन्हें आज्ञा किई थी उन्होंने ने किया और उस के पीछे देश के  
कारण ईश्वर ने विनय को मान लिया ॥

कहा कि 'हे जह्याह के बेटे मुझे तुम से क्या कि तुम आज के दिन मेरे बैरी  
हुआ चाहते हो क्या इसराएल में आज कोई मारा जावेगा क्या मैं नहीं जानता  
कि आज मैं इसराएल का राजा हूँ । तब राजा ने शमीय में कहा कि तू मारा न  
न जावेगा और राजा ने उस के लिये किरिया खाई ॥

तब साकल का बेटा मिफिबूषत राजा को आगे से मिलने को उतरा और २४  
जब से राजा निकला था उस दिन लौं कि वह कुशल से फिर न आया अपने पांख  
न धाये थे न अपनी दाढ़ी सुधारी थी और न अपने कपड़े धोलाईये थे । और २५  
ऐसा हुआ कि जब वह यमसलम में राजा से मिलने आया तो राजा ने उसे कहा  
कि हे मिफिबूषत किम लिये तू हमारे साथ न गया । और उस ने उत्तर दिया कि २६  
हे मेरे प्रभु राजा मेरे सेवक ने मुझे हला क्योंकि आप के सेवक ने कहा था कि  
मैं अपने लिये गददे पर काटी बांधूंगा जिसमें उस पर चढ़के राजा के पास जाऊँ  
क्योंकि आप का सेवक लंगड़ा है । और उस ने तब सेवक को मेरे मर्यामी राजा के २७  
आगे अपवाट लगाया परन्तु मेरा प्रभु राजा दृष्ट्य के दृत्त के समान है नो आप  
को दृष्टि में जो अच्छा लगे सो कीजिये । क्योंकि मेरे पिता के घराने मेरे प्रभु २८  
राजा के आगे मृतक थे तथापि आप ने अपने सेवक को उन में रेंटाया जो आपकी  
के संघ पर भोजन करने थे इन लिये मेरा क्या पन है कि अब भी मैं राजा के  
आगे पुकारूँ । तब राजा ने उम्मे कहा कि तू अपना समाचार क्यों अधिक बर्तन २९  
करता है मैं कह चुका कि तू और माया भूमि को छोड़ नो । तब मिफिबूषत ने ३०  
राजा से कहा कि हाँ मय वही लेवे जैसा कि मेरा प्रभु राजा अपने ही घर में  
फिर कुशल से पहुँचा ॥

और राजजिलीम ने जिलियदी घरजिली उगारके राजा के साथ यरदन पार राया ३१  
कि उसे यरदन पार पहुँचावे । और यह घरजिली अस्सी वरम का अग्नि बृह था ३२  
और जब कि राजा मरनैन में पड़ा था वह जीविका पहुँचाता था क्योंकि धन अग्नि  
महत जन था । सो राजा ने घरजिली से कहा कि तू मेरे साथ पार उतर और मैं ३३  
यमसलम में अपने साथ तेरा पालन करूँगा । और घरजिली ने राजा को उत्तर ३४  
दिया कि अब मेरे जीवन के वरम कितने दिन के हैं कि राजा के साथ साथ यम-  
सलम को चढ़ जाऊँ । आज मैं अस्सी वरम का हुआ और क्या मैं भन्दाँ युगाँ ३५  
का अंतर जान सकता हूँ और क्या आप का सेवक जो कुछ खाता पीता है उस  
का स्वाद जान सकता है और क्या मैं गायकों और गायिकाओं का शब्द सुन सकता  
हूँ सो आप का सेवक अपने प्रभु राजा पर क्या बोझ होवे । आप का सेवक राजा ३६  
के संग थोड़ी दूर यरदन के पार चलेगा और किम कारण राजा सेमे जल में मुझे  
प्रतिफल देवे । अपने सेवक को बिदा कीजिये कि फिर जावे जिसमें मैं अपने ही ३७  
नगर में अपने माता पिता की मसाधि पास सहं परन्तु देखिये आप का सेवक  
किमहाम मेरे प्रभु राजा के साथ पार जावे और जो कुछ आप भला जानें सो  
उम्मे कीजिये । तब राजा ने उत्तर दिया कि किमहाम मेरे साथ पार चले और ३८  
जो कुछ मुझे अच्छा लगे सोई उस के लिये करूँगा और जो कुछ तेरी इच्छा होय  
सोई तेरे लिये करूँगा । और समस्त लोग यरदन पार गये और जब राजा पार आया ३९

१७ ग्राह दिखाई दिई जगत की मेरें उधर गईं । उस ने ऊपर से भेजा मुझे उठा लिया  
 १८ उस ने मुझे बहुत पानियों में से खींच लिया । उस ने मुझे मेरे बलवन्त बैरी से  
 १९ उन से जो मुझ से घिन करते थे कुड़ाया क्योंकि वे मुझ से प्रबल थे । उन्हें ने  
 २० मुझे मेरे बिषय के दिन में रोका परन्तु परमेश्वर मेरा आसा था । और वह मुझे  
 बड़े स्थान में भी निकाल लाया उस ने मुझे कुड़ाया क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न  
 २१ था । परमेश्वर ने मेरे धर्म के समान मुझे प्रतिफल दिया और मेरे हाथ की  
 २२ पवित्रताई के समान मुझे पलटा दिया । क्योंकि मैं ने परमेश्वर के मार्गों का  
 २३ पालन किया और अपने ईश्वर से दुष्टता न किई । क्योंकि उस के सारे विचार  
 २४ मेरे आगे हैं और उस की विधि न से मैं फिर न गया । और मैं उस के लिये खरा  
 २५ था और मैं ने आप को अपनी बुराई से बचा रक्खा है । इस लिये परमेश्वर ने  
 मेरे धर्म के समान और उस की दृष्टि में मेरी पवित्रता के समान मुझे प्रतिफल दिया ।  
 २६ दयाल पर तू आप को दयाल दिखावेगा खरे को खरा दिखावेगा । निर्मल  
 के लिये आप को निर्मल दिखावेगा और क्रूर को तू आप को विपरीत दिखावेगा ।  
 २७ और तू कष्टित लोगों को बचावेगा परन्तु ध्वस्त करने के लिये तेरी आंखें घमंडियों  
 २८ पर हैं । क्योंकि हे परमेश्वर तू मेरा दीपक और परमेश्वर मेरे अधियारे को उज्जि-  
 २९ याला करेगा । क्योंकि तुम्हीं से मैं ने एक जथा को तोड़ दिया मैं अपने ईश्वर  
 ३० से भीत फांद गया । सर्वशक्तिमान का मार्ग सिद्ध परमेश्वर का बचन जांचा हुआ  
 ३१ जिन सभों का भरोसा उस पर है वह उन के लिये ढाल है । क्योंकि परमेश्वर  
 ३२ को छोड़ सर्वशक्तिमान कौन और हमारे ईश्वर को छोड़ चटान कौन । सर्वशक्ति-  
 ३३ मान मेरा बूता और पराक्रम वही मेरी चाल सिद्ध करता है । वह हरिणी के से  
 ३४ मेरे पांव बनाता है और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर बैठाता है । वह मेरे हाथों को  
 युद्ध के लिये सिखाता है ऐसा कि पोलाद का धनुष मेरी भुजाओं से टूटता है ।  
 ३५ तू ही ने अपने बचाव की ढाल भी मुझे दिई है और तेरी कामलता ने मुझे  
 ३६ बड़ाया है । तू मेरे डग को मेरे तले बढ़ावेगा और मेरी छुट्टियां फिसल न गईं ।  
 ३७ मैं अपने बैरियों का पीछा करूंगा और उन्हें नाश करूंगा और उलटा न फिरेगा  
 ३८ जब लो जव संघार न किया जावे । और मैं उन्हें नाश करूंगा और उन्हें घायल  
 ३९ करूंगा ऐसा कि वे उठ न सकें और वे मेरे पांव तले गिरेंगे । क्योंकि तू ने संग्राम  
 के लिये बल से मेरी कटि बांधी जो मुझ पर चढ़ आवेंगे तू उन्हें मेरे नीचे झुका-  
 ४० वेगा । और तू ने मेरे बैरियों के गले भी मुझे दिये हैं और मैं अपने बैरियों को  
 ४१ नाश करूंगा । वह तार्किक पर कोई बचवैया न होगा परमेश्वर की और और  
 ४२ वह उन की नहीं सुनता । और मैं उन्हें पृथिवी की धूल की नाईं बूकनी करूंगा  
 ४३ मैं उन्हें मार्ग के चहले की नाईं रौंदूंगा और उन्हें बिछा दूंगा । और तू मुझे मेरे  
 लोगों के भगड़ों से कुड़ावेगा तू मुझे अन्यदेशियों का प्रधान करेगा एक लोग  
 ४४ जिसे मैं ने नहीं जाना मेरी सेवा करेंगे । परदेशियों के पुत्र कपट से मुझे मानेंगे  
 ४५ सुनते ही वे मेरे अधीन हो जावेंगे । परदेशी कुम्हला जावेंगे और वे अपने सकेत  
 स्थानों में से डर निकलेंगे ॥

४६ परमेश्वर जीता है और मेरी चटान धन्य और मेरी मुक्ति की चटान का ईश्वर

और फिलिस्ती इसराएल से फिर लड़े और दाऊद अपने सेयकों के साथ उतरके १७  
 फिलिस्तियों से लड़ा और दाऊद दुर्वल हुआ । अब यशूयूयूयू ने जो रफा के १८  
 घेदों में से था जिम की वस्ती के फल का पीतल मवा दस सेर एक का और  
 नया खड्ग यांधे था चाहा कि दाऊद को मार डाले । पर जग्याह के घेदें आधियों १९  
 ने उस की सहाय किई और उस फिलिस्ती को मारके यधन किया तब दाऊद के  
 लोग उस्से किग्या याके बोले कि आप फिर कभी हमारे साथ लड़ाई पर मत  
 जाइये जिससे आप इसराएल का दोश्ता न बुलायें ।

और उस के पीछे ऐसा हुआ कि जुय में फिलिस्तीनों में फेर संग्राम हुआ तब २०  
 दृष्टान्ती सिविकाई ने माफ को जो दानय के घेदों में था जो मार डाला । और २१  
 जुय में फिर फिलिस्तियों में संग्राम हुआ तब यशरीशागिरीस के घेदें दानदन  
 दैतलहमी ने ज्ञाती जुलियात को जिम के भाने की लड़ डालाई के लड़े में जो  
 मारा । फिर ज्ञात में एक और संग्राम हुआ जहां घेदें हीन का मरु जम था २२  
 और उस के एक एक दाय में छः छः अंगुलियां और एक एक पांथ में छः छः  
 अंगुलियां यां गिनती में चौबीस और यह भी दानय में उत्पन्न हुआ । और जय २३  
 उस ने इसराएल को तुच्छ जाना तब दाऊद के भाई निग्याह के घेदें मूनहन में  
 उसे घात किया । ये चार ज्ञात में दानय में उत्पन्न हुए और दाऊद और उस के २४  
 सेयकों के हाथ में मारे गये ।

यादमयां पृष्ठ ।

और दाऊद ने उस दिन परमेश्वर में इस भजन की प्रार्थना की कि परमेश्वर १  
 ने उसे उस के सारे वैरियों के और मादल के हाथ में डूबाया ।

और बोला कि परमेश्वर मेरा पहाड़ और मेरा गढ़ और मेरा यन्त्रैषा । मेरी २  
 चटान का ईश्वर उस पर मैं भरोसा रखूंगा मेरी दाल और मेरी मुक्ति का सींग ३  
 मेरा डंका गढ़ और मेरा गरग और मेरा आगकर्ता है । तू मुझे अंधेरे में यन्त्राता ४  
 है । मैं परमेश्वर की दुहाई देऊंगा जो स्तुति के योग्य है और अपने वैरियों में यन्त्राता ५  
 जाऊंगा । क्योंकि मृत्यु की लहरों ने मुझे घेरा और अधर्मियों के घाटों ने मुझे ६  
 डराया । नरक की पीड़ा ने मुझे घेरा मृत्यु के फंदों ने मुझे रोका । अपने दुःख ७  
 में मैं ने परमेश्वर को पुकारा और अपने ईश्वर के आगे चित्ताया तब उस ने अपने ८  
 मंदिर में से मेरा शब्द सुना और मेरा चित्ताना उस के कानों में पहुंचा । तब उस ९  
 के क्रोध के कारण पृथिवी हिल गई और परबरा उठी स्वर्ग की नेदें तिल गईं । १०  
 उस के क्रोध में एक धृंथा उठा और उस के मुँह में की आग खा गई उस्से कोढ़ने ११  
 धधक उठे । उस ने स्वर्गों को भी झुकाया और उतर आया और उस के पांथ १२  
 तले अंधियारा था । और वह एक करोत्री पर चढ़ा था और उड़ा और यधन के १३  
 डैनों पर दिखाई दिया । और उस ने जनों के अधन में और आकाश के घनघोर १४  
 मेघों में अपनी धारों और अंधकार का तंत्र किया । उस के आगे की चमक से १५  
 कोइले सुलग गये । परमेश्वर स्वर्ग से गजों और अति महान ने अपना शब्द १६  
 उच्चारा । और उस ने वाग चलाने और उन्हें बिधरा दिया जिजुली और उन्हें धरा १७  
 दिया । परमेश्वर के दण्ड से और उस के नथुनों के स्वास के भोंके से समुद्र की १८



- निकाल लाके दाऊद को दिया तथापि उस ने उससे पीने न चाहा परन्तु परमेश्वर  
 १० के आगे उसे उंडेल दिया । और उस ने कहा कि हे परमेश्वर मुझ से परे होवे  
 कि मैं ऐसा करूं क्या यह उन लोगों का लोहू नहीं जो अपने प्राण को जोखिम  
 में लाये हैं इस लिये उस ने पीने न चाहा इन तीन शूरों ने ऐसे ऐसे काम किये ।  
 १८ और जह्याह के बेटे यूअब का भाई अविशै भी तीन में प्रधान था और उस  
 ने तीन सौ पर भाला चलाया और उन्हें मार डाला और तीन में नामी हुआ ।  
 १९ क्या वह तीनों में सब से प्रतिष्ठित न था इस लिये वह उन का प्रधान हुआ  
 तथापि वह पहिले तीन लों न पहुंचा ।  
 २० और कवजिएल में एक बलवन्त पुरुष था उस ने बड़े बड़े कार्य किये उस का  
 बेटा यहूयदः जिस के बेटे विनायाह ने मोअब के दो जन को जो सिंह के तुल्य  
 २१ थे मारा और जाके माला के समय में गड़हे के बीच एक सिंह को मारा । और  
 उस ने एक सुंदर मिसी को मार डाला और उस मिसी के छाथ में एक भाला था  
 परन्तु वह लट्टु लेके उस पर उतरा और मिसी के छाथ से भाला छीन लिया और  
 २२ उसी के भाले से उसे मार डाला । यहूयदः के बेटे विनायाह ने यह यह किये और  
 २३ तीन शूरों में नामी था । वह उन तीनों से अधिक प्रतिष्ठित था पर वह उन  
 तीन लों न पहुंचा और दाऊद ने उसे अपने मंत्रियों का प्रधान किया ।  
 २४ यूअब का भाई असहेल उन तीनों में एक इलहनान वैतलहमी दूदू का  
 २५ बेटा । शम्मः हहदी इलिका हहदी । पलीती खालिस तकई अकीस का बेटा  
 २६ ईरा । अनाताती अबिशजर हूशाती मवनई । अटोही सलमून नीतोफाती महररी ।  
 २७ नीतोफाती वअना का बेटा हलिव विनयमीन के संतान के जिवअ में से रैवी का  
 २८ बेटा इती । पिराथूनी बनाया गाथ के नालों का हिदई । अरवाती अबिशलवान  
 २९ बरहूमी अस्मावत । अलपखवा शआलवूनी वनियासन यूनतन । हरारी शम्मः और  
 ३० हरारी शरार का बेटा अहयाम । महाकाती का बेटा अहशवई का बेटा इली-  
 ३१ फलत गलूनी अखितुफल का बेटा इलिपम । कर्मली हसरई अरवी पारई ।  
 ३२ सूबा से नातन का बेटा रेगाल जाती यानी । अमूनी सिलक वीरुती नहराई  
 ३३ जह्याह के बेटे यूअब का अस्त्रधारी था । इथरी रेरा इथरी गारीव । इती  
 ३४ ऊरियाह सब समेत सैंतीस ।

### चौबीसवां पर्व ।

- १ और फेर परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने दाऊद को उन  
 २ पर उभारा कि इसराएल को और यहूदाह को गिनावे । क्योंकि राजा ने सेना  
 के प्रधान यूअब को जो उस के साथ था आज्ञा किई कि इसराएल की सारी  
 गोष्ठियों में से दान से बिअरसबअ लों जा और लोगों को गिन जिसमें मैं लोगों  
 ३ की गिनती को जानूं । तब यूअब ने राजा से कहा कि परमेश्वर आप का ईश्वर  
 उन लोगों को जितने वे होवें सौ गुना अधिक करे जिसमें मेरे प्रभु राजा की  
 आंख देखें परन्तु किस कारण मेरे प्रभु राजा यह काम किया चाहते हैं ।  
 ४ तथापि राजा की बात यूअब के और सेना के प्रधानों की बात पर प्रबल हुई  
 और यूअब और सेना के प्रधान राजा के पास से इसराएल के लोगों को गिने को

सदान होवे । सर्वशक्तिमान जो मेरे लिये प्रणिफल देता है और लोगों को मेरे ४८  
नीचे उतारता है । और मुझे मेरे शेरियों में से निकाल लाता है और तू मुझे उन ४९  
से ऊपर उभार लावेगा जो मुझ पर खड़े आयेगे तू मुझे कंधे की मनुष्य में लुहा-  
वेगा । इस लिये ते परमेश्वर में अन्यदेशियों में तेरा धन्य मानूँगा और तेरे नाम ५०  
को स्तुति गाऊँगा । जो अपने राजा को मुक्ति का मार्ग है और अपने अभिषिक्त ५१  
दाऊद पर और उस के खंज पर सदा नौ दया करता है ॥

तेरहवाँ पृष्ठ ।

और ये दाऊद के शत की धानें हैं यन्मी के बेटे दाऊद ने कर्ण और उस १  
पुत्र ने जो उभारा गया यशकूब के श्वशुर के अभिषिक्त ने जो हमरागल में २  
सधुगगायक है कहा । श्वशुर का आत्मा तेरी और में चाना और उस का यत्न ३  
मेरी जीभ पर था । हमरागल के श्वशुर ने कहा हमरागल के सदान में मुझे कहा ४  
जो मनुष्यों पर राज्य करता है छद्म धर्मों का और श्वशुर के दर में राज्य करे ।  
और प्रातःकाल को उषाँन को नाईं पिना मेरी के पिदान सुख उदय होता है ५  
और मंद के पीले पृथिवी में से कामल घास उगने को नाईं । यद्यपि मेरा घर ६  
सर्वशक्तिमान के आगे रमा न हो तथापि उस ने मेरे गाछ समस्त छिद्र में मना-  
तान को एक मत्त वाचा बांधी मेरी सारी मुक्ति और सारी शक्ति के लिये पथीय ७  
वह उसे न उगावे । परन्तु दुष्ट मय के मय कर्णों के समान दूर जिसे जावेगे ८  
क्योंकि ये हाथों से पकड़े नहीं जा सकें । परन्तु जो उन वनों में हैं वहाँ ९  
हैं कि लोहे और दाँवों के लह से पूरे होवे और ये उमी ग्यान में सर्वथा जलावे १०  
जावेगे ॥

दाऊद के वीरों के नाम ये हैं राजकुमारों का प्रधानों में चेट्ट चामन पर प्रेता १  
था वही अजनी अद्विष्ट था उसी ने श्राव मा के मन्सूर राजे उन्हें एक साथ २  
घात किया । और उस के पीले आँखों बूझ या थोटा इतिहास जो इन तीन ३  
वीरों में से जो दाऊद के संग थे उन्हें ने उन किर्निस्वियों का गुप्त मन्सूर ४  
हमरागली लोगों से लड़ने के लिये एकट्टे थे । उस ने उठके फिलिस्तिनियों का सारा ५  
यहाँ जो कि उस का हाथ धक गया और मूठ हाथ में छिपक गई और परमेश्वर ६  
ने उस दिन बड़ा जय दिया और लोहा के धन लूट के लिये उस के पीले फिर गये ७

और उस के पीले चरारी अर्जों का थोटा मन्सूर फिलिस्तिनियों मन्सूर के रोग में ११  
कहीं लेने को एकट्टे हुए और लोग फिलिस्तिनियों के आगे में भाग गये । परन्तु १२  
वह मृत के मध्य में गिरा रहा और उसे बचाया और फिलिस्तिनियों को सार हाका १३  
और परमेश्वर ने बड़ा जय दिया ॥

और तीस में से तीन प्रधान निकले और कठनों के समय में दाऊद अबुदूम १४  
को कंदला में गये और फिलिस्तिनियों को जवा ने रिफाहस को तराई में लेा किया १५  
था । और दाऊद उस समय शत्रु में था और फिलिस्तिनियों को शिको दैतलहस में । १६  
और दाऊद ने लालसा करके कहा हाय कि कौन मुझे उस कुल का एक छूट १७  
पानी पिनावे जो दैतलहस के फाटक पास है । सो उन तीन शूरों ने फिलिस्तिनियों १८  
को सेना का आरंभार ताड़के दैतलहस के कुल से जो फाटक के पास था पानी १९

जो अच्छा जाले सो भेंट करें देखिये कि खलिदान की भेंट के लिये तैल  
 २३ और पीटने की सामग्री तैलों की सामग्री समेत ईंधन के लिये हैं । सो जैसा राजा  
 राजा को देता है अराना ने सब कुछ किया और अराना ने राजा से कहा कि  
 २४ परमेश्वर आप का ईश्वर आप को ग्रहण करे । तब राजा ने अराना से कहा कि  
 यों नहीं परन्तु मैं निश्चय दाम देके उसे मोल लेऊंगा और मैं अपने ईश्वर परमे-  
 श्वर के लिये ऐसी खलिदान की भेंट न चढ़ाऊंगा जो संत की टा सो दाऊद ने  
 २५ वह खलिदान और तैल पचास शैकल चांदी देके मोल लिये । और दाऊद ने  
 वहां परमेश्वर के लिये वेदी बनाई और खलिदान की भेंट और कुशल की भेंट  
 चढ़ाई और परमेश्वर देश के लिये मनाया गया और मरी इसराएल में से  
 श्रम गई ॥

## राजाओं की पहिली पुस्तक ।

### पहिला पर्व ।

- १ अब दाऊद राजा पुरनिया और दिनी हुआ और उन्होंने ने उसे कपड़े उढ़ाये
- २ परन्तु वह न गरमाता था । सो उस के सेवकों ने उसे कहा कि मेरे प्रभु राजा  
 के लिये एक कन्या ढूंढ़ी जावे जिसमें वह राजा के आगे खड़ी रहे और उस के  
 लिये सेविका होवे और वह आप की गोद में पड़ी रहे जिसमें मेरा प्रभु राजा
- ३ गरमा जावे । सो उन्होंने ने इसराएल के समस्त सिवानों में एक सुंदरी कन्या ढूंढ़ी
- ४ और शुनामी अविशाग को पाया और उसे राजा पास लाये । और वह कन्या  
 अति रूपवती थी और राजा की सेवा और उस की टहल करती थी परन्तु राजा  
 उससे अज्ञान रहा ॥
- ५ तब हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने यह कहके आप को बढ़ाया कि मैं राज्य  
 कहेगा और अपने लिये रथ और घोड़चढ़े और पचास गनुष अपने आगे आगे
- ६ दौड़ने को सिद्ध किये । और उस के बाप ने उसे यह कहके कधी उदास न किया  
 कि तू ने ऐसा क्यों किया और वह भी बहुत सुंदर था और उस की मा उसे अवि-
- ७ सलुम के पीछे जनी थी । और वह जब्याह के बेटे यूअव और अविवतर याजक
- ८ से बातचीत करता था और यह दोनों अदूनियाह के पीछे सहायता करते थे । परन्तु  
 सद्दूक याजक और यहूयदः का बेटा बिनायाह और नातन आगमज्ञानी और
- ९ शमीय और रेई और दाऊद के महावीर अदूनियाह के साथ न थे । और अदू-  
 नियाह ने भेड़ और बैल और पले हुए ठोर जुहलत के पत्थर पर जो स्थल के  
 कुर के लग है बधन किये और अपने सारे भाई अर्थात् राजा के बेटों का और
- १० यहूदाह के सारे लोगों का राजा के सेवकों का नेउंता किया । परन्तु नातन  
 आगमज्ञानी और बिनायाह और महावीरों को और अपने भाई सुलेमान को न  
 बुलाया ॥

निकल गये । और यमदन पार उतरे और अगर्दर में नगर की दक्षिणी और जो ५  
जल की तराई के मध्य में यागजर की ओर है देखा किया । और जितिश्वर और ६  
नये वसे हुए नीचे के देश में आये और दान को और धूमके मैदान को आये ।  
और सूर के गढ़ को आये और द्रविणों के सारे नगरों को और कन्यानिनों के और ७  
वे यहुदाह के दक्षिण को विश्रमयश ली निकल गये । सो जय वे सारे देश में ८  
से होके गये तब नय मास यौम दिन के पीछे यमनम को आये । और यहुद ९  
ने लोगों की गिनती का पत्र राजा को दिया सो इसरायल में बाठ लाग्य यहु-  
धारी थीर थे और यहुदाह के लोग पाँच लाग्य ।

और लोगों के गिनाने के पीछे दाऊद के मन में खटका हुआ और दाऊद ने १०  
परमेश्वर से कहा कि मैं ने वन काम में बड़ा पाप किया है और अब है परमेश्वर  
मैं तेरी धिन्ती करता हूँ कि अपनी कृपा से अपने दान या पाप जमा कर क्योंकि  
मैं ने अति मूढ़ता किई है । और जय दाऊद विद्वान को कहा तो परमेश्वर को ११  
यवन दाऊद के दर्जी जाद भविष्यद्वक्ता पर यह कहते पहुँचा । कि जा और १२  
दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं तेरे आगे तीन दान भग्या हूँ तु  
उन में से एक को चुन कि मैं तेरे लिये करूँ । सो जाद दाऊद पास गया और १३  
उसे कहके बोला कि तेरे देश में तुम्ह पर मात धर्म का अकाल पड़े अथवा तु  
तीन मास लों अपने शत्रुन के आगे भागा फिर और वे तुम्हें गोदें अथवा तेरे  
देश में तीन दिन की मरी घने अथ माघ और देण कि मैं उसे जिन् ने तुम्हें भेजा  
गया उत्तर देऊँ । तब दाऊद ने जाद से कहा कि मैं बड़े मकेल में है उस परम- १४  
श्वर के हाथ में पड़े क्योंकि उस को दिया बहुत है और मनुष्यों के हाथ में मैं  
न पड़े ।

सो परमेश्वर ने इसरायल पर विद्वान से उठाये हुए मत्स्य लों मरी भेजी और १५  
दान से लेके विश्रमयश ली लोगों ने में गतर महस जन मर गये । और जय १६  
दूत ने नाश करने के लिये यमनम पर अपना हाथ बढ़ाया तब परमेश्वर धुरार  
से फिर गया और उस दूत से कहा जिस ने लोगों को नाश किया कि वग भी  
अथ अपना हाथ रोक ले और परमेश्वर का दूत यहुदी अराना के खलिहान के  
लाग था । और जय दाऊद ने उस दूत को देखा जिस ने लोगों को मारा तो १७  
परमेश्वर से कहा कि देण पाप तो मैं ने किया है और दृष्टता मैं ने किई है परन्तु  
इन् भेड़ों ने क्या किया है सो मुझ पर और तेरे पाप के धरान पर तोरा हाथ पड़े ।

और उस दिन जाद ने दाऊद पास आके उसे कहा कि चहुँ जा और यहुदी १८  
अराना के खलिहान में परमेश्वर के लिये एक वेदी बना । और जाद के कहने १९  
पर दाऊद परमेश्वर की आज्ञा के समान चहुँ गया । और अराना ने ताका और २०  
राजा को और उस के सेवकों को अपनी और आते देखा सो अराना निकला  
और राजा के आगे भुक्के भूति पर प्रणाम किया । और अराना ने कहा कि २१  
मेरे प्रभु राजा अपने सेवक के पास किम लिये आये हैं तब दाऊद ने कहा कि  
तुम्ह से खलिहान माल लेके परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाऊँ जिसमें लोगों में  
से मरी थमजावे । और अराना ने दाऊद से कहा कि मेरे प्रभु राजा लेवें और २२

कहा था कि निश्चय तेरा बेटा सुलेमान मेरे पीछे राज्य करेगा और मेरी संती मेरे सिंहासन पर वही बैठेगा वैसा ही मैं आज निश्चय करूंगा । तब बिनतसयत्र ने भूमि लों भुकके प्रणाम किया और बोली कि मेरा प्रभु राजा दाऊद सर्वदा जीता रहे ॥

३२ तब दाऊद राजा ने आज्ञा किई कि सदूक याजक और नातन आगमज्ञानी और यहूयदः के बेटे बिनायाह को पास बुलाओ और वे राजा के आगे आये ।

३३ तब राजा ने उन्हें भी कहा कि अपने प्रभु के सेवकों को अपने साथ लेओ और मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ही खजूर पर चढ़ाओ और उसे जैहून को ले जाओ ।

३४ और सदूक याजक और नातन आगमज्ञानी उसे वहां इसराएल पर राज्याभिषेक

३५ करें और तुरही फूंकके बोलें कि सुलेमान राजा जीता रहे । तब उस के पीछे पीछे चले, आओ जिससे वह आवे और मेरे सिंहासन पर बैठे क्योंकि मेरी संती वही राजा होगा और मैं ने ठहराया है कि इसराएल पर और यहूदाह पर वही प्रभुता

३६ करे । तब यहूयदः के बेटे बिनायाह ने राजा को उत्तर देके कहा कि आमीन मेरे

३७ प्रभु राजा का ईश्वर परमेश्वर भी ऐसा ही कहे । जिस रीति से परमेश्वर मेरे प्रभु राजा के संग था उसी रीति से सुलेमान के संग होवे और उस के सिंहासन को मेरे प्रभु दाऊद राजा के सिंहासन से ओष्ठ करे ॥

३८ सो सदूक याजक और नातन आगमज्ञानी और यहूयदः का बेटा बिनायाह और करीती और पलीती आये और सुलेमान को दाऊद राजा के खजूर पर

३९ चढ़ाया और उसे जैहून को लाये । और वहां सदूक याजक ने तंबू से एक सींग में तेल लिया और सुलेमान को अभिषेक किया तब उन्होंने ने तुरही फूंकी और

४० सब के सब बोले कि सुलेमान राजा जीता रहे । और समस्त लोग उस के पीछे पीछे चढ़ आये और लोग बांसली बजाते बजाते बड़ा आनन्द करने लगे ऐसा कि भूमि उन के शब्द से फट गई ॥

४१ और अदूनियाह ने और उस के साथ के समस्त नेउतहरी ने सुना और ज्यों वे खा चुके और यूअब ने तुरही का शब्द सुना तो बोला कि नगर में यह क्या

४२ कोलाहल और हौरा है । वह यह कह रहा था कि देखो अबिवतर याजक का बेटा यूनतन आया और अदूनियाह ने उसे कहा कि आ क्योंकि तू धीर है और

४३ सुसंदेश लाता है । तब यूनतन ने उत्तर दिया और अदूनियाह से कहा कि निश्चय

४४ हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुलेमान को राजा किया है । और राजा ने सदूक याजक को और नातन आगमज्ञानी को और यहूयदः के बेटे बिनायाह को और करीती और पलीती को उस के साथ भेजा और उन्होंने ने राजा के खजूर पर उसे

४५ चढ़ाया । और सदूक याजक और नातन आगमज्ञानी ने जैहून में उसे राज्याभिषेक किया और वे वहां से ऐसा आनन्द करते हुए फिरे हैं कि नगर गूंज गया तुम ने

४६ वही शब्द सुना है । और सुलेमान राज्यसिंहासन पर भी बैठा है । और इससे अधिक राजा के सेवक हमारे प्रभु राजा दाऊद को यह कहके बंधाई दे रहे हैं कि ईश्वर सुलेमान को तेरे नाम से अधिक बढ़ावे और उस के सिंहासन को तेरे

४८ सिंहासन से अधिक ओष्ठ करे और राजा ने बिक्राने पर दण्डवत किई । और राजा

इस लिये नातन मुनेमान की माता चिन्तमय्य को यह कहके बोला कि क्या ११  
तू ने नहीं सुना कि वज्जीत का बेटा अद्विषाह राज्य करता है और हमारा  
प्रभु दाऊद नहीं जानता । सो अब आइये मैं आप को मंत्र देऊँ जिससे आप ही १२  
का प्राण और आप के बेटे मुनेमान का प्राण बचे । आप दाऊद राजा पास १३  
जाइये और उसे कहिये कि मेरे प्रभु राजा क्या आप ने अपनी दासी में किरिया  
खाके नहीं कहा कि निश्चय मेरा बेटा मुनेमान मेरे पीछे राज्य करेगा और यही  
मेरे सिंहासन पर बैठेगा फिर अद्विषाह आया राज्य करता है । देख आप के राजा १४  
मे आते करते ही मैं भी आप के पीछे आ पहुँचूँगा और आप की बातों को दृढ़  
करूँगा ॥

सो चिन्तमय्य भीतर कोठरी में राजा पास गई और राजा तो बहुत बड़ १५  
था और गुतासी आदिशारा राजा को सेवा करने लगे । और चिन्तमय्य सुकी १६  
और राजा के आगे दण्डवत् किरीं तब राजा ने कहा कि तुम्हें क्या है । और १७  
उस ने उसे कहा कि मैं मेरे प्रभु आप ने परमेश्वर अपने देव्यर की किरिया खाके  
अपनी दासी में कहा कि निश्चय मेरे पीछे मेरा बेटा मुनेमान राज्य करेगा और  
यह मेरे सिंहासन पर बैठेगा । सो अब देखिये अद्विषाह राज्य करता है और १८  
अब लो मेरा प्रभु राजा नहीं जानता । और उस ने बहुत से दौल और पत्ते हुए १९  
ठार और भंडे प्रथम किये और राजा के सब बेटों और अधिकतर पाजक और  
सेना के प्रधान मूअय्य का नेतृता किया है परन्तु उस ने आप के दाम मुनेमान  
को नहीं बुलाया । और अब मैं मेरे प्रभु राजा समस्त दमराणन की दृष्टि तुम्हें २०  
पर है जिससे तू उन्हें कहे कि मेरे प्रभु राजा के सिंहासन पर उस के पीछे जान  
बैठेगा । नहीं तो यह होगा कि तब मेरा प्रभु राजा अपने पियरे की साथ जयन २१  
करेगा तब मैं और मेरा बेटा मुनेमान दोनों दौरे गिने जायेंगे ।

और देखो कि यह राजा में आते कर नहीं आँ कि नातन आगमजानी भी आ २२  
पहुँचा । और उन्होंने ने यह कहके राजा को बुलाया कि नातन आगमजानी आया २३  
है और तब यह राजा के आगे आया तो उस ने राजा के आगे भूमि लो भुक्त  
प्रणाम किया । और बोला है मेरे प्रभु राजा क्या तू ने कहा है कि मेरे पीछे अद्वि- २४  
षाह राज्य करके मेरे सिंहासन पर बैठेगा । क्योंकि यह आज उनरा और बहुत २५  
से दौल और पत्ते हुए ठार और भंडे सारे और समस्त राजकुमारों का और सेना  
के प्रधानों का और अधिकतर पाजक का नेतृता किया और देखिये वे उस की साथ  
आते पीते हैं और कहते हैं कि अद्विषाह राजा जाये । परन्तु आप के दाम मुने २६  
और सदृक पाजक और बहूषद के बेटे चिनायाह का और मेरे दाम मुनेमान को  
न बुलाया । क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से है और तू ने अपने दाम को न २७  
बुलाया कि मेरे प्रभु राजा के पीछे उस के सिंहासन पर जान बैठेगा ॥

तब दाऊद राजा ने उत्तर देके कहा कि चिन्तमय्य को मेरे पास बुलायो २८  
और यह राजा के आगे आई और राजा के सममुख खड़ी हुई । तब राजा ने २९  
किरिया खाके कहा कि उस परमेश्वर के जीवन में जिस ने मेरे प्राण को समस्त  
दुःख से छुड़ाया । जैसा मैं ने परमेश्वर इसराएल के देव्यर की किरिया खाके तुम्हें ३०



१२ तब सुलेमान अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठा और उस का राज्य  
 १३ बहुत स्थिर हुआ । तब हज्जीत का बेटा अदूनियाह सुलेमान की माता ब्रिन्त-  
 सबअ पास आया और उस ने पूछा कि तू कुशल से आता है और वह बोला  
 १४ कि कुशल से । तब उस ने कहा कि मैं तुझ से कुछ कहा चाहता हूँ और वह  
 १५ बोली कह । तब उस ने कहा कि तू जानती है कि राज्य मेरा था और समस्त  
 इसराएल ने मुझ पर रुख किया था कि मैं राज्य करूँ परन्तु राज्य पलट गया और  
 १६ मेरे भाई का हुआ क्योंकि परमेश्वर की ओर से उसी का था । सो अब मेरी  
 १७ तुझ से एक बिनती है उससे मुंह न फेरिये और वह उससे बोली कह । तब उस  
 ने कहा कि अनुग्रह करके सुलेमान राजा से कहिये क्योंकि वह आप को नाह न  
 १८ करेगा कि शुनामी अविशाग को मुझे ब्याह देवे । सो ब्रिन्तसबअ बोली कि  
 अच्छा मैं तेरे लिये राजा से कहूंगी ॥

१९ सो ब्रिन्तसबअ सुलेमान राजा पास अदूनियाह के लिये कहने गई और राजा  
 उसे मिलने को उठा और उसे प्रणाम किया तब अपने सिंहासन पर बैठ गया  
 और राजा ने अपनी माता के लिये एक आसन मंगवाया और वह उस की दहिनी  
 २० ओर बैठी । तब वह बोली कि मैं एक छोटी बात चाहती हूँ मुझ से नाह न  
 काजियो और राजा ने उसे कहा कि हे मेरी माता मांगिये क्योंकि मैं तुझ को  
 २१ नाह न कहूंगा । और वह बोली कि शुनामी अविशाग तेरे भाई अदूनियाह से  
 २२ ब्याही जावे । तब सुलेमान राजा ने अपनी माता को उत्तर देके कहा कि तू  
 केवल शुनामी अविशाग को अदूनियाह के लिये क्यों मांगती है उस के लिये  
 राज्य भी मांग क्योंकि वह मेरा बड़ा भाई है हाँ उस के लिये और अविवतर  
 २३ याजक के और जरूयाह के बेटे यूअब के लिये भी । तब सुलेमान राजा ने परमे-  
 श्वर की किरिया खाके कहा कि यदि अदूनियाह ने यह बात अपने प्राण पर  
 २४ खेलने की नहीं कही तो ईश्वर मुझ से ऐसा ही और उससे अधिक करे । सो  
 अब परमेश्वर के जीवन से जिस ने मुझे मेरे पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठाया  
 और स्थिर किया और जिस ने अपनी बाचा के समान मेरे लिये घर बनाया आज  
 २५ ही अदूनियाह मारा जावेगा । और सुलेमान राजा ने यहूयद के बेटे बिनायाह  
 को भेजा और उस ने उस पर लपकके उसे मार डाला ॥

२६ तब राजा ने अविवतर याजक को कहा कि अनातूत को अपने खेतों में जा  
 क्योंकि तू मृत्यु के योग्य है परन्तु इस जून मैं तुझे मार न डालूंगा क्योंकि तू मेरे  
 पिता दाऊद के आगे परमेश्वर ईश्वर की मंजूपा उठाता था और इस लिये कि  
 २७ तू उन सब दुःखों में जो मेरे पिता पर पड़े संगी था । सो सुलेमान ने अविवतर को  
 परमेश्वर का याजक होने से दूर किया जिससे वह परमेश्वर के वचन को संपूर्ण  
 करे जो उस ने सैला में एली के घराने के विषय में कहा था ॥

२८ तब यूअब को संदेश पहुंचा क्योंकि यूअब अदूनियाह के पीछे हुआ था यद्यपि  
 वह अविश्लुस की ओर न फिरा था सो उस ने परमेश्वर के तंबू में भागके वेदी  
 २९ के सींगों का धरा । और सुलेमान को संदेश पहुंचा कि यूअब भागके परमेश्वर  
 के तंबू में गया और देखो कि वह वेदी के लग है तब सुलेमान ने यहूयद के

ने भी कहा है कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य है जिस ने आज के दिन मेरे सिंहासन का बैठवैया दिया और मेरी आंखों ने देखा ॥

तब सारे नेडंतहरी जो अदूनियाह के साथ थे डरके उठे और घर तक अपने ४८ अपने मार्ग चला गया । और अदूनियाह सुलेमान के डर के नारे उठा और जाके ५० बेदी के सींगों को पकड़ा । और सुलेमान को संदेश पहुंचा कि देखिये अदूनियाह ५१ सुलेमान राजा से डरता है क्योंकि यह बेदी के सींगों को पकड़े हुए कहता है कि सुलेमान राजा आज मुझ से किरिया खाके कहे कि मैं अपने सेवक को गद्द से घात न करूंगा । तब सुलेमान बोला यदि यह आप को योग्य पुरुष दिखावेगा तो उस का एक ५२ घाल भूमि पर न गिरेगा परन्तु यदि उस में दुष्टता पाई जाये तो यह मारा जावेगा । सो सुलेमान राजा लोग भेजके उसे बेदी पर से उतार लाया और उस ने आपके सुलेमान ५३ राजा के आगे दगडवत किई और सुलेमान ने उसे कहा कि अपने घर जा ॥

दूसरा पर्व ।

जब दाऊद के मरने के दिन आ पहुँचे तब उस ने अपने बेटे सुलेमान को यह १ कहके उपदेश किया । कि मैं ममूना पृथिवी की रीति पर जाता हूँ सो तू हट २ हो और अपना पुरुषार्थ दिखा । और परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को पालन ३ करके उस के मार्गों में चल और उस की व्यवस्थाओं उस की आज्ञाओं और उस की विधिंन और उस की मानियों की रक्षा कर जैसा मृमा की व्यवस्था में लिखा है जिसमें तू अपने ममूना कार्यों में और जिधर तू फिर भागवान होये । जिसमें ४ परमेश्वर अपने वचन पर धना रहे जो उस ने मेरे विषय में कहा कि यदि तेरे थंग अपने मार्ग में चौकस रहके अपने मारे मन में और अपने सारे प्राण में मेरे आगे सच्चाई से चलेंगे तो इसराएल के संतान का सिंहासन तुझ से अलग न होगा । और जो कुछ कि जग्याह के बेटे यूअव ने मुझ से और इसराएली सेना के दो ५ प्रधानों अर्थात् नैपिर के बेटे अविर्नैपिर और यतर के बेटे अमामा से किया तू जानता है कि उस ने उन्हें मार डाला और मिलाप में संग्राम का लोहू बहाया और संग्राम के लोहू को अपनी काटि के पटुके पर और अपने पाँचों की जूतियों पर छिड़का । सो तू अपनी बुद्धि के समान कर और उस का पक्का बान कुशल ६ से समाधि में उतरने न दे । परन्तु जिलिग्रदी अरजिल्ली के बेटों पर दया कर और ७ वे उन में होयें जो तेरे मंत्र पर भोजन करने हैं हम लिये कि जब मैं तेरे भाई अविमलुस से भागा था वे मुझ पास आये । और डेग्व बहुरीमी यिनप्रसीनी जैरा ८ का बेटा शमीय तेरे साथ है जिस ने मुझे भारी साप से सापा जिस दिन मैं सहनैन में गया परन्तु वह यगदन पर मुझ से भेंट करने को आया और मैं ने यह कहके उससे परमेश्वर की किरिया खाई कि मैं तुझे तलवार से घात न करूंगा । पर अब उसे निर्दोष मत जानिया क्योंकि तू बुद्धिमान है और जानता है जो कुछ ९ उससे किया चाहे परन्तु उस का पक्का बान लोहू के साथ समाधि में उतारियो । और दाऊद ने अपने पितरों से शयन किया और दाऊद के नगर में गाड़ा गया । १० और दाऊद ने इसराएल पर चालीस वरस राज्य किया सात वरस हवदन में और ११ तंतीस वरस यदसलम में उस ने राज्य किया ॥

४६ के आगे सर्वथा स्थिर रहेगा । सो राजा ने यहूयदः के घेरे घिनायाह को आज्ञा किई और उस ने बाहर जाके उस पर लपकके उसे मार डाला तब राज्य सुलेमान के हाथ में स्थिर हुआ ॥

तीसरा पद्य ।

- १ और सुलेमान ने मिस के राजा फिरऊन से नाता किया और फिरऊन की कन्या को ब्याहा और अपने भवन और परमेश्वर के मंदिर और यरूसलम की भीत
- २ चारों ओर बनाके समाप्त करने लें उसे दाऊद के नगर में लाया । केवल लोग ऊंचे स्थानों में बलिदान चढ़ाते थे क्योंकि उन दिनों लें कोई मंदिर परमेश्वर के नाम
- ३ के लिये बनाया न गया था । और सुलेमान परमेश्वर में प्रेम करके अपने पिता की विधि पर चलता था केवल वह ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाता और धूप चलाता था ॥
- ४ और बलिदान चढ़ाने को राजा जियऊन को गया क्योंकि महा ऊंचा स्थान वही
- ५ था और उस वेदी पर सुलेमान ने मध्य बलिदान की भेंट चढ़ाई । जियऊन में परमेश्वर ने रात को सुलेमान को स्वप्न में दर्शन दिया और ईश्वर ने कहा कि
- ६ मांग में तुझे क्या देजं । तब सुलेमान ने कहा कि तू ने मेरे पिता अपने सेवक दाऊद को बड़ा दान दिया इस कारण कि वह तेरे आगे सच्चाई और धर्म और
- ७ मन की खराई से चला था और तू ने उस पर यह बड़ा अनुग्रह किया कि तू ने उस के सिंहासन पर बैठने के लिये एक घंटा दिया जैसा आज के दिन है । सो अब
- ८ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू ने मेरे पिता दाऊद की संती अपने सेवक को राजा किया
- ९ और मैं बालक हूं बाहर भीतर आने जाने नहीं जानता । और तेरा सेवक तेरे लोगों के मध्य में है जिन्हें तू ने चुना है बड़े लोग जो अग्रणी और बहुत हैं ऐसा
- १० कि गिने नहीं जा सक्ते हैं । सो अपने लोगों के न्याय करने के लिये अपने सेवक को सुने का मन दे जिसमें मैं भले और दूरे में विवेक करूं क्योंकि तेरे ऐसे बड़े
- ११ लोगों का न्याय कौन कर सकता है ॥
- १२ और यह बात परमेश्वर को अच्छी लगी कि सुलेमान ने ऐसी वस्तु मांगी ।
- १३ और ईश्वर ने उसे कहा इस कारण कि तू ने यह वस्तु मांगी है और अपनी बड़ी आयुर्दा न चाही और न अपने लिये धन मांगा है और न अपने वैरियों का प्राण
- १४ चाहा है परन्तु अपने लिये न्याय करने को बुद्धि चाही । देख मैं ने तेरी बात के समान किया है देख मैं ने एक बुद्धिमान और ज्ञानवान मन तुझे दिया है ऐसा
- १५ कि तेरे आगे तेरे तुल्य कोई न था और तेरे पीछे तेरे तुल्य कोई न होगा ।
- १६ और मैं ने तुझे वह भी जो तू ने नहीं मांगा अर्थात् धन और प्रतिष्ठा यहां लें
- १७ दिया है कि राजाओं के बीच तेरे जीवन भर तेरे तुल्य नहीं हुआ है । और यदि
- १८ तू मेरे मार्गों पर चलके मेरी विधि और मेरी आज्ञाओं को पालन करेगा जिस
- १९ रीति से तेरा पिता दाऊद चलता था तो मैं तेरी वय बढ़ाऊंगा । तब सुलेमान जागा और देखा कि स्वप्न है और वह यरूसलम को आया और परमेश्वर के नियम की मंजूपा के आगे खड़ा हुआ और बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट चढ़ाई और अपने समस्त सेवकों के लिये जेवनार किया ॥

चेटे विनायाह को कहला भेजा कि उसे मार डाले । सो विनायाह परमेश्वर के ३० तंद्र में गया और उसे कहा कि राजा की आज्ञा है कि तू बाहर निकल और यह बोला कि नहीं मैं यहीं मरूँगा तब विनायाह फिर गया और राजा से कहा कि यूँय यों कहता है और उस ने मुझे यों उतर दिया । तब राजा ने उसे आज्ञा ३१ किई कि जैसा उस ने कहा है वैसा ही कर और उस पर लपक और उसे गाड़ जिसने तू उस निष्पाप लोहू को जो यूँय ने बताया मुझ से और मेरे पिता के घराने से सिटा देवे । और परमेश्वर उस का लोहू उसी के सिर पर धरेगा जिन ३२ ने दो मनुष्यों पर जो उससे अधिक धर्म्म और भले जो लपकके उर्द्ध तालवार से घात किया और मेरा पिता दाऊद न जानता था अर्थात् हमराण्ही सेना के प्रधान नैयिर के चेटे अविनेयिर को और यहूदाह की सेना के प्रधान यतर के चेटे अमामा को । सो उन का लोहू यूँय के सिर पर और उस के वंश के सिर पर ३३ सनातन लों पलटे परन्तु दाऊद पर और उस के वंश पर और उस के घराने पर और उस के सिंहासन पर परमेश्वर की और मे गदा कुशल होगा । सो यहूयदः के ३४ चेटे विनायाह ने जाके उस पर लपकके उसे मार डाला और यह अरण्य में अपने ही घर में गाड़ा गया । तब राजा ने यहूयदः के चेटे विनायाह को उस की संती ३५ सेना का प्रधान किया और सटूक याजक को राजा ने अविधतर के न्याय पर रखा ॥

तब राजा ने शमीय को बुना भेजा और उसे कहा कि यरुसलम में अपने ३६ लिये घर बना और वहीं रह और वहाँ मे कर्मा बाहर मत निकल । क्योंकि जिस ३७ दिन तू बाहर निकलेगा और जिदमन की नाली के पार जायेगा निश्चय जानिये कि अवश्य मारा जायेगा तेरा लोहू तेरे ही सिर पर होगा । और शमीय ने राजा ३८ से कहा कि आज्ञा उत्तम है जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है वैसा ही तेरा सेवक करेगा सो शमीय बहुत दिन लों यरुसलम में रहा ॥

और तीसरे वरन के अंत लें ऐसा हुआ कि शमीय के दो सेवक जात के ३९ राजा मथकः के चेटे अकीस कने भारा गये और शमीय से कहा गया कि देख तेरे सेवक जात में हैं । तब शमीय ने उठके अपने गदहे पर काटी बांधी और ४० अपने सेवकों के कुंडने को जात में अकीस पास गया और शमीय जाके जात से अपने सेवकों को ले आया । और यह संदेश सुनेमान को पहुँचा कि शमीय यह- ४१ सलम से जात को गया था और फिर आया । तब राजा ने शमीय को बुला ४२ भेजा और उसे कहा कि क्या मैं ने तुझे परमेश्वर की किरिया न दिलाई थी और तुझ से वाचा लेकर न कहा था कि तू निश्चय जानिये कि जिस दिन तू बाहर जायेगा या कहीं फिरेगा तू अवश्य मारा जायेगा और तू ने मुझे कहा था कि यह वचन जो मैं ने सुना उत्तम है । सो तू ने परमेश्वर की किरिया को ४३ और उस आज्ञा को जो मैं ने तुझे किई क्यों नहीं माना । तब राजा ने शमीय से ४४ कहा कि तू उस सब दुष्टता को जानता है जो तू ने मेरे पिता दाऊद से किई जिन से तेरा मन जानकार है सो परमेश्वर तेरी दुष्टता को तेरे ही सिर पर पलटेगा । और सुलेमान राजा भाग्यवान होगा और दाऊद का सिंहासन परमेश्वर ४५

११ बश में था । अखिनदाव का बेटा दार के समस्त देश में सुलेमान की बेटी ताफत  
 १२ उस की पत्नी थी । अखिलूद का बेटा वअना तअनाक और जिहो और समस्त  
 बैतशान जो जरंतान के लग यजरअएल के नीचे बैतशान से लेके अबील महुलः  
 १३ लों युक्रमिआम के पार लों उस के बश में था । जत्र का बेटा रामात जिलिअद  
 में मनस्सी के बेटे याइर के नगर जो जिलिअद में हैं अरजूव के देश समेत जो  
 वशन में है अर्थात् जो भीत से घेरे और जिन में पीतल के अडंगे थे साठ नगर  
 १४ उस्से प्रयोजन रखते थे । ईदू का बेटा अखिनदव महनैन रखता था । अखिमअज  
 १५ नफताली में वह भी सुलेमान की बेटी वासमत को पत्नी किये था । हूशी का  
 १६ बेटा वअनः यसर और अलूत में । फरुड का बेटा यहूशफत इशकार में । आला  
 १७ का बेटा शमयी बिनयमीन में । जरी का बेटा जत्र जिलिअद के देश में था जो  
 अमूरी के राजा सैहून का राज्य और वशन के राजा जग का राज्य था और उस  
 देश का केवल वही प्रधान था ॥

२० यहूदाह और इसराएल बहुताई में समुद्र की बालू की नाईं थे वे खाते पीते  
 २१ और आनन्द करते थे । और सुलेमान समस्त राज्यों पर राज्य करता था नदी से  
 फिलिस्तिनों के देश लों और मिस्र के सिवाने लों वे उस पास भेंट लाते थे और  
 उस के जीवन भर उस की सेवा करते थे ॥

२२ और सुलेमान के दिन भर का भोजन यह था तीस पैमानः चोखा पिसान और  
 २३ साठ पैमानः आटा । दस मोटे वेल और चराई के बीस वेल एक सौ भेड़ और  
 उस्से अधिक चिकारे और हरिण और काले हरिण और मोटे मोटे पंखी के  
 २४ छोड़के । क्योंकि वह नदी के इस पार तिफसह से लेके मअज्ज लों उन सारे  
 राजाओं पर जो समुद्र की इसी ओर थे राज्य करता था और चौदिशा से मेल  
 २५ रखता था । और यहूदाह और इसराएल हर एक पुरुष अपने अपने दाख और  
 अपने गूलर के पेड़ तले दान से लेके बिअरसबअ लों सुलेमान के जीवन भर कुशल  
 से रहता था ॥

२६ और सुलेमान के रथों के लिये चालीस सहस्र घोड़शाला थीं और बारह सहस्र  
 २७ घोड़चढ़े । और उन बारह प्रधानों में से हर एक जन अपने अपने मास में सुलेमान  
 राजा के लिये और उन सब के लिये जो सुलेमान राजा के भोजन में आते थे  
 २८ भोजन सिद्ध करता था उन की किसी बात की घटती न थी । और घोड़ों और  
 चालाक पशुन के लिये जत्र और पुआल भी हर एक जन आज्ञा के समान उसी  
 स्थान में लाता था ॥

२९ और ईश्वर ने सुलेमान को अत्यन्त बुद्धि और ज्ञान और मन का फैलावा  
 ३० समुद्र के तीर की बालू की नाईं दिया था । और सुलेमान की बुद्धि सारे पूर्वियों  
 ३१ की बुद्धि से और मिस्रियों की सारी बुद्धि से श्रेष्ठ थी । क्योंकि वह इशराकी  
 रेतान से और हैमान से और खलकल से और दरदअ से जो महुल के बेटे थे  
 और समस्त मनुष्य से अधिक बुद्धिमान था और उस की कीर्ति चारों ओर के  
 ३२ समस्त जातिगणों में फैल गई थी । और उस ने तीन सहस्र दृष्टांत कहे और उस  
 ३३ के गीत एक सहस्र और पांच थे । और उस देवदार से लेके जो लुबनान में है

उस समय मैं दो बेइया राजा पास आईं और उस के आगे खड़ी हुईं । और १६  
 एक बोली कि हे मेरे प्रभु मैं और यह स्त्री एक घर में रहनी हैं और मैं उस के  
 साथ घर में रहते हुए एक बालक जनी । और मेरे जन्मे के तीसरे दिन पीछे मैं १८  
 हुआ कि यह स्त्री भी जनी और हम एक साथ यों घर में हम दोनों का छोड़  
 कोई उपरी हमारे संग न था । और इस स्त्री का बालक रात को मर गया हम लिये १९  
 कि वह हम के नीचे दब गया । तब वह आधी रात को उठी और जब कि तेरी २०  
 लौंड़ी सोती थी मेरे पास से मेरे पुत्र को ले गई और अपनी गोद में रखवा और  
 अपने मरे हुए बालक को मेरी गोद में धर दिया । और विद्वान को जब मैं उठी २१  
 कि अपने बालक को दूध पिलाऊं तो क्या देखनी है कि वह मेरा पड़ा है पर  
 विद्वान को जब मैं ने सोचा तो देखा कि यह मेरा जना हुआ लड़का नहीं । तब २२  
 वह दूसरी स्त्री बोली नहीं परन्तु जीता मेरा पुत्र है और मेरा तेरा पुत्र है और  
 यह बोली कि नहीं मेरा हुआ तेरा पुत्र और जीता मेरा पुत्र यों उन्हीं ने राजा  
 के आगे दातें किईं । तब राजा बोला कि एक कहती है जीता पुत्र मेरा है और २३  
 मृतक तेरा पुत्र और दूसरी कहती है कि नहीं परन्तु मृतक तेरा पुत्र और जीता  
 मेरा पुत्र । तब राजा ने कहा कि मुक्त पास एक खट्वा लाओ तब ये राजा के २४  
 आगे खट्वा लाये । तब राजा ने कहा कि हम जीने बालक को दो भाग करो २५  
 और आधा एक को देओ और आधा दूसरी को । तब जिस स्त्री का जीता २६  
 बालक था उस ने राजा से कहा क्योंकि उस की मरण अपने पुत्र के लिये तापित  
 हुई है मेरे प्रभु जीता बालक उसी को दीजिये और किसी भांति मैं न मारिये  
 परन्तु दूसरी बोली कि यह न मेरा तो न तेरा परन्तु भाग किया जाय । तब राजा २७  
 ने कहके आज्ञा किई कि जीता बालक इसी को देओ और उसे किसी भांति से  
 मत मारो उस की माता यही है । और समस्त इकरागल ने यह न्याय सुना तो २८  
 राजा ने किया और राजा से डरे क्योंकि उन्हीं ने देखा कि ईश्वर की बुद्धि न्याय  
 करने के लिये उस के मन में है ॥

### चौथा पृष्ठ ।

सो सुलेमान राजा सारे इकरागल का राजा हुआ । और उस के अध्यक्ष ये थे १  
 मद्रक याजक का घेठा अजरियाह । उलीहुरिफ और अखियाह शीशा लंगरक के २  
 घेठे थे और अखिलूद का घेठा महशफत ममारक । और महशदः का घेठा दिना- ३  
 याह सेना का प्रधान और मद्रक और अखियतर याजक । और नातन का घेठा ४  
 अजरियाह प्रधानों पर और नातन का घेठा जयूद ग्रेणु प्रधान और राजा का ५  
 मित्र । और अखिशार घर का प्रधान और अबदा का घेठा अहुनीराम कर का ६  
 प्रधान ॥

और सारे इकरागल पर सुलेमान के चारह प्रधान थे तो राजा के और उस ७  
 के घराने के भोजन सिद्ध करते थे उन में से हर एक जन घरस भर में एक मास ८  
 भोजन सिद्ध करता था । और उन के नाम ये हैं हर का घेठा इफरायस पटाह ९  
 में । दिक्क का घेठा मकस में और शखलवीम में और बैतजगण और गेलून बैत- १०  
 हनान में । इसद का घेठा अरबूत में शोकः और हिक्क का समस्त देश उस के



१७ पर थे तीन सदस्य तीन सौ थे जो कार्य करवैयों से काम लेते थे । और राजा ने आज्ञा किई और वे बड़े बड़े पत्थर और बहुमूल्य पत्थर और गड़े हुए पत्थर लाये जिसतें घर की नैव डालें । और सुलेमान के शयई और हीराम के शयई और पत्थर के सुधरवैये उन्हें काटते थे सो घर बनाने के लिये उन्होंने लट्टे और पत्थर सुधारे ॥

कथयां पद्य ।

- १ और मिस के देश से इसराएल के संतान के निकलने से चार सौ अस्सी घरम पीछे इसराएल पर सुलेमान के राज्य के चौथे घरम जीफ के मास में जो दूसरा मास है ऐसा हुआ कि उस ने परमेश्वर का घर बनाना आरंभ किया ॥
- २ और वह घर जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के लिये बनाया उस की लम्बाई
- ३ साठ हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और जंचाई तीस हाथ थी । और उस घर के मंदिर के ओसारे की लम्बाई बीस हाथ घर की चौड़ाई के समान थी और
- ४ उस की चौड़ाई घर के आगे दस हाथ थी । और घर के लिये उस ने भरोखे
- ५ बनाये बाहर की ओर से सकेत और भीतर चौड़े । और घर की भीत से मिली हुई कोठरियां चारों ओर बनाईं अर्थात् घर की भीतों के चारों ओर क्या मंदिर
- ६ का क्या ईश्वरीय घागी का और उस ने चारों ओर कोठरियां बनाईं । और नीचे का कोठरी पांच हाथ चौड़ी और बीच की छः हाथ चौड़ी और तीसरी सात हाथ चौड़ी थी क्योंकि घर के बाहर बाहर उस ने चारों ओर सकेत सकेत स्थान
- ७ बनाये जिसतें लट्टे घर की भीतों में जमाये न जायें । और जब घर बन रहा था वहां लाने से आगे पत्थर सुधारा हुआ था यहां लों कि न दधौड़ा और न
- ८ कुल्हाड़ी और न लोहे का कोई दणियार घर बनाने में मुना गया । बीच की कोठरी का द्वार घर की दहिनी अलंग रखवा और वे घूमती सीढ़ी से बीच में
- ९ और उससे तीसरी अटारी में चढ़ते थे । सो उस ने उस घर को बनाया और उसे
- १० समाप्त किया और उस की कृत देवदार के लट्टे की पटरियों से पाटी । और उस ने समस्त घर के आसपास पांच पांच हाथ की जंची कोठरियां बनाईं और वे देवदार के लट्टों से घर पर थंभी हुई थीं ।
- ११ तब परमेश्वर का वचन यह कहते हुए सुलेमान पर उतरा । कि यदि तू मेरी
- १२ विधि पर चलेगा और मेरे विचारों को पूर्ण करेगा और मेरी समस्त आज्ञाओं को पालन करके उन पर चलेगा तो इस घर के विषय में जो तू बनाता है मैं
- १३ अपने वचन को जो तेरे पिता दाऊद से कहा था तेरे साथ पूरा करूंगा । और मैं इसराएल के संतानों में वास करूंगा और अपने इसराएली लोगों को त्याग न
- १४ करूंगा । सो सुलेमान ने उस घर को बनाया और उसे समाप्त किया ॥
- १५ और उस ने घर की गच से लेके भीत से कृत लों देवदार काष्ठ के पट्टे लगाये
- १६ और उस ने भीतर की अलंग काष्ठ से ढांप दिया और घर की गच को सरो की
- १७ पटरियों से ढांपा । और उस ने घर की गच और भीतें देवदार के पट्टों से घर की
- अलंगों में बीस बीस हाथ की बनाईं और उस ने उस के भीतर के लिये अर्थात्
- १९ ईश्वरीय घागी के लिये अर्थात् अत्यन्त पवित्र स्थान के लिये बनाये । और घर

उस जूफा लों जो भीतों पर उगती है उस ने सब युद्धों का, वर्णन किया और पशुन और पक्षियों और रेंगवैयों और मकलियों के विषय में कहा । और सारे ३४ लोगों में से और पृथिवी के समस्त राजाओं से जिन्होंने उस की बुद्धि का संदेश पाया था मुलेमान की बुद्धि मुझे का आते थे ॥

पांचवां पर्व ।

और सूर के राजा हीराम ने मुलेमान के पास अपने सेवकों को भेजा क्योंकि १  
उस ने सुना था कि उन्होंने ने उस के पिता की मंती उसे राज्याभिषेक किया क्योंकि २  
हीराम दाऊद से सदा प्रीति रखता था । और मुलेमान ने हीराम को कहला ३  
भेजा । कि तू जानता है कि उन लड़ाइयों के कारण जो उस के आसपास ४  
चादिना र्थों सेरा पिता दाऊद परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम के लिये एक मंदिर ५  
न बना सका जय लों कि परमेश्वर ने उन ममें को उस के पांवों तले न कर ६  
दिया । मेा अब परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे धारों और मे चैन दिया यहां लों कि ७  
अब न ठेरी न उपद्रवों है । मेा देख मैं ने ठाना है कि परमेश्वर अपने ईश्वर के ८  
नाम से एक मंदिर बनाऊं जैसा कि परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा कि तेरा ९  
घेठा जिसे मैं तेरे मिंदासन पर बंटाऊंगा वही मेरे नाम का मंदिर बनाऊंगा । मेा १०  
तू आज्ञा कर कि मेरे लिये लुवनान में देवदार काटें और मेरे सेवक तेरे सेवकों ११  
के साथ होंगे और तेरे कहने के समान तेरे सेवकों की धनी देऊंगा क्योंकि तू जानता १२  
है कि हमें यह गुण नहीं कि सैदानियों के समान लट्टा काटें ।

और ऐसा हुआ कि जब हीराम ने मुलेमान की बातों को सुना तब उस ने १  
अत्यन्त सगन होके कहा कि आज परमेश्वर का धन्यवाद होवे जिस ने अपने २  
महत लोग पर दाऊद को एक बुद्धिमान घेठा दिया । तब हीराम ने मुलेमान को ३  
कहला भेजा कि जो जो बात के लिये तू ने मुझे कहलाया है मैं ने, समझा में ४  
देवदार के लट्टे और सरो के लट्टे के विषय में तेरी समझ इच्छा करूंगा । मेरे ५  
सेवक उन्हें लुवनान से समुद्र पर लावेंगे और उन्हें वेड़ों में समुद्र पर से उस स्थान ६  
लों जहां तू कहे पहुंचाऊंगा और वहां उलटवा देऊंगा और तू पावेगा और तू ७  
मेरी इच्छा के समान मेरे घराने के लिये भोजन दे ॥

सा हीराम ने मुलेमान को देवदार और सरो अपनी समस्त बांछा के समान १०  
दिये । और मुलेमान ने हीराम को उस के घराने के भोजन के लिये दरस दरस ११  
बीस सदस पैमानः गेहूं और बीन पैमानः निराला तेल यों मुलेमान हीराम को १२  
दरस दरस देता रहा । और परमेश्वर ने मुलेमान को अपनी बाछा के समान १३  
बुद्धि दिई और हीराम और मुलेमान में मिलाप था और उन दोनों ने आपस में १४  
बाचा बांधी ॥

और मुलेमान राजा ने सब इमरायल के मंतान से मनुष्यों का कर लिया और १५  
तीस सदस मनुष्य हुए । और अब उन्हें लुवनान को पर मान पारी पारी उस सदस १६  
भेजा किया मास भर लुवनान में रहते थे और दो मास अपने घर में और अब- १७  
नीराम उन का प्रधान था । और मुलेमान के मंतर सदस योगिये थे और आसु १८  
सदस पेड़ कटवैयें पर्वतों में थे । मुलेमान के श्रेष्ठ प्रधानों से अधिक जो कार्य १९

- २ अपना सारा घर बना चुका । तो उस ने लुखनान के बन का भी देवदार काष्ठ के खंभों की चार पांती पर बनाया और खंभों पर देवदार काष्ठ के लट्टे थे और उस घर की लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ ।
- ३ और उस की कृत देवदार काष्ठ से बनाई और कड़ियों को उस काष्ठ पर रक्खा
- ४ जो पैंतालीस खंभों के ऊपर था हर एक पांती में पंदरह पंदरह खंभे थे । और खिड़-
- ५ क्रियों की तीन पांती थीं तीनों पांती आग्ने साम्ने थीं । और समस्त द्वार और चौखट देखने में चौकोर थे और तीन पांतियों में खिड़की के सन्मुख खिड़की
- ६ थी । और उस ने खंभों का एक ओसारा बनाया जिस की लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ और ओसारा उस के सन्मुख था और खंभे और मोटा
- ७ लट्टा उन के सन्मुख । तब उस ने सिंहासन के लिये एक ओसारा बनाया अर्थात् न्याय का ओसारा और उस की एक अलंग दूसरी लों देवदार काष्ठ से पाटा ॥
- ८ और उस के रहने के घर के ओसारे में वैसा ही कार्य का एक दूसरा आंगन था और सुलेमान ने फिरजन की बेटी के लिये जिसे उस ने ब्याहा था इस ओसारे की नाई एक घर बनाया ॥
- ९ उस की नेत्र सारे बहुमूल्य पत्थर से थी जो गढ़े और आरे से चीरे गये थे और उसी रीति से घर के भीतर और बाहर नेत्र से लेके कृत लों और उसी भांति
- १० घर के बाहर आंगन लों बनाया । और नेत्र बहुमूल्य बड़े बड़े पत्थरों की थी
- ११ दस दस और आठ आठ हाथ के पत्थर । और गढ़े हुए पत्थरों के समान ऊपर
- १२ भी बहुमूल्य पत्थरों का और देवदार काष्ठ का था । और चारों ओर के बड़े आंगन तीन पांती गढ़े हुए पत्थर की और एक पांती देवदार लट्टे की परमेश्वर के घर के भीतर के आंगन के लिये और घर के ओसारे के लिये ॥
- १३ और सुलेमान राजा ने सूर से हीराम को बुला भेजा । वह नफ्ताली की गोष्ठी
- १४ की एक बिधवा स्त्री का बेटा था और उस का बाप सूर का एक ठठेरा और पीतल के समस्त कार्य में विद्या और ज्ञान से निपुण और परिपूर्ण था और वह
- १५ सुलेमान पास आया और उस का समस्त कार्य किया । और उस ने पीतल के दो खंभे अठारह अठारह हाथ के ठाले और बारह हाथ की डोरी उन की चारों
- १६ ओर का नाप था । और उस ने खंभों के ऊपर धरने के लिये ठाले हुए पीतल
- १७ के दो भाड़ बनाये हर एक की ऊंचाई पांच हाथ की । भाड़ों के लिये जो खंभों के ऊपर थे चौघरे कार्य के और गुथी हुई सीकरें हर एक भाड़ के लिये
- १८ सात सात बनाये । और उस ने खंभे और उन के मथाल के भाड़ों को अनारों से ठांपने के लिये जालकार्य के चारों ओर दो पांतियां बनाईं वैसा ही दूसरे भाड़
- १९ के लिये बनाया । और खंभे के भाड़ों के ऊपर ओसारे में चार हाथ के सौसन
- २० फूल के कार्य । और वैसा ही दोनों खंभों के भाड़ों के ऊपर जो जालकार्य के लग थे बीच के आग्ने साम्ने और दूसरे भाड़ पर चारों ओर पांती पांती दो
- २१ सौ अनार थे । और उस ने मंदिर के ओसारे में खंभे खड़े किये और उस ने दहिना खंभा खड़ा किया और उस का नाम याकीन रक्खा और दूसरा खंभा

अर्थात् आगे का मंदिर चालीस हाथ था । और घर के भीतर देवदार की खादी १८  
हुई कली और खिले हुए फूल थे सब के सब देवदार के थे कोई पत्थर  
दिखाई न देता था । और घर के भीतर परमेश्वर के नियम की मंजूपा रखने के १९  
लिये ईश्वरीय दाणी का स्थान मिट्ट किया । और ईश्वरीय दाणी के आगे की २०  
और लम्बाई में बीस हाथ और चौड़ाई में बीस हाथ और उस की ऊंचाई बीस  
हाथ और उसे निर्मल सोने से मढ़ा और देवदार की वेदी को भी मढ़ा । और २१  
सुलेमान ने घर के भीतर भीतर निर्मल सोने से मढ़ा और उस में ईश्वरीय दाणी  
के आगे सोने की सीकरों के लग एक आड़ बनाया और उस पर सोना मढ़ा ।  
और मारे घर को सोने से मढ़ा यहां लों कि ममस्त घर बन गया और ममस्त २२  
वेदी को जो ईश्वरीय दाणी के लग थी सोने से मढ़ा ॥

और ईश्वरीय दाणी के भीतर जलपाई धृज के दस दम हाथ ऊंचे दो करीबी २३  
बनाये । और करीबी का एक पंख पांच हाथ का और दूसरा पंख पांच हाथ का २४  
एक के पंख के एक खूंट से लेके दूसरे पंख के खूंट लों दस हाथ थे । और दूसरा २५  
करीबी दस हाथ का दोनों करीबियों को एक ही नाप और एक ही ढाल का  
बनाया । एक करीबी की ऊंचाई दस हाथ और वैसी ही दूसरी करीबी की भी । २६  
और उस ने दोनों करीबियों का भीतर के घर में रखवा और करीबी अपने ऊँचे २७  
फैलाये हुए थे यहां लों कि एक का डैना एक भीत को कूता था और दूसरे करीबी  
का डैना दूसरी भीत को कूता था और उन के ऊँचे एक दूसरे को घर के बीच  
में छूते थे । और उस ने करीबियों को सोने से मढ़ा ॥ २८

और घर की मानी भीतों को चारों ओर खादे हुए करीबियों की मूर्तों से २९  
और खजूर पेड़ों से और खिले हुए फूलों से बाहर भीतर खादा । और घर की ३०  
गच्च को बाहर भीतर सोने से मढ़ा ॥

और ईश्वरीय दाणी में बैठने के लिये उस ने जलपाई पेड़ के केवाड़े बनाये ३१  
और सट्टाट और साह भीत के पांचवें भाग थे । और केवाड़े के पाठ जलपाई ३२  
काष्ठ के थे और उस ने उन पर करीबियों का और खजूर पेड़ों को और खिले  
हुए फूलों को खादा और करीबियों और खजूर पेड़ों पर सोना मढ़ा । और वैसा ३३  
उस ने मंदिर के द्वार के लिये जिस की चौखट जलपाई काष्ठ की थी भीत को  
चौथा भाग बनाया । और उस के दो केवाड़े मरे काष्ठ से बनाये उन दोनों ३४  
केवाड़ों के दो दो पाठ दोहराए जाते थे । और उन पर करीबियों और खजूर ३५  
पेड़ और खिले हुए फूल खादे और उन खादे हुए काष्ठों को सोने से मढ़ा । और ३६  
उस ने भीतर के आंगन की तीन पांती खादे हुए पत्थर की बनाई और एक पांती  
देवदार के काष्ठ की ॥

चौथे बरस जीफ के मास में परमेश्वर के मंदिर की नेत्र डाली गई । और ३७  
अष्टादश बरस जुल के मास में जो आठवां मास है घर उस की समस्त सामग्री समेत ३८  
और उस के सारे डैल के समान बन गया और उस के बनाने में सात बरस लगे ॥

सातवां पृष्ठ ।

परन्तु सुलेमान को अपना ही घर बनाने में तेरह बरस लगा और जब वह १

४१ के घर के लिये सुलेमान के लिये समस्त कार्य समाप्त किया । दो खंभे और  
 ४२ भाड़ के कटोरे जो दोनों खंभों के मथाले पर थे और दोनों जालकार्य भाड़ों  
 के कटोरों के ढांपने के लिये दोनों खंभों के मथाले पर थे । और दोनों जाल-  
 कार्य के लिये चार सौ अनार अनारों की दो पांतियां एक एक जालकार्य के  
 ४३ लिये जिसमें खंभों के ऊपर के भाड़ों के दोनों टोंक ढांपे जावें । और दस  
 ४४ आधार और आधारों पर दस स्नानपात्र । और एक समुद्र और वारह तैल समुद्र  
 ४५ के नीचे । और हांडियां और फावड़ियां और वासन और यह समस्त पात्र जो  
 हीराम ने सुलेमान राजा के लिये परमेश्वर के मंदिर के निमित्त बनाये ओपे हुए  
 ४६ पीतल के थे । राजा ने उन्हें यरदन के चौगान में और सुकूत और जरतान के  
 ४७ मध्य भूमि की गहिराई में ढाला । और सुलेमान ने उन सब पात्रों को  
 उन की बहुताई के मारे बेतैल छोड़ा और उस पीतल की तैल कधी जांची  
 न गई ॥

४८ और सुलेमान ने परमेश्वर के घर के लिये सब पात्र बनाये अर्थात् सोने की  
 ४९ वेदी और सोने का मंच जिस पर भेंट की रोटी रखी जाती थी । और चोखे  
 सोने की दीअर्टें पांच दाहिनी और पांच बाईं अलंग और उस के फूल और दीये  
 ५० और चिमटे सोने के ईश्वरीय वाणी के आगे । और कटोरे और कतरनियां और  
 वासन और चमचे और धूपदान निर्मल सोने के और भीतर के अत्यन्त पवित्र  
 स्थान के द्वारों के लिये और घर के अर्थात् मंदिर के द्वारों के लिये सोने की  
 चूलें बनाई ॥

५१ सो सब कार्य जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के घर के लिये किये बन गये  
 तब सुलेमान अपने पिता दाऊद की समर्पण किई हुई वस्ती भीतर लाया अर्थात्  
 चांदी सोना और पात्र परमेश्वर के घर के भंडारों में रक्खा ॥

आठवां पर्व ।

१ तब सुलेमान ने इसराएल के प्राचीनों को और गोष्टियों के सारे प्रधानों को  
 इसराएल के संतान के अध्यक्षों को अपने पास यरूसलम में एकट्ठा किया जिसमें  
 वे परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को दाऊद के नगर सैहून से लावें ॥

२ तब इसराएल के सारे लोग सुलेमान राजा के पास जेवनार में इथानिम

३ मास में जो सातवां मास है एकट्ठे हुए । और इसराएल के सारे प्राचीन आये

४ और याजकों ने मंजूषा उठाई । और परमेश्वर की मंजूषा को और मंडली के  
 तंबू को और तंबू में के समस्त पवित्र पात्रों को याजक और लावी उठा लाये ।

५ और सुलेमान राजा ने और इसराएल की सारी मंडली ने जो उस पास एकट्ठी  
 हुई और उस के साथ मंजूषा के आगे थे भेड़ और तैल इतने बलि किये जिन का

६ लेखा और गिनती बहुताई के मारे न किई गई । और याजकों ने परमेश्वर  
 की बाचा की मंजूषा को लाके उस के स्थान में ईश्वर की बाचा के मंदिर के

७ मध्य अत्यंत पवित्र में करीबियों के डैनों के नीचे रक्खा । क्योंकि करीबी अपने  
 डैने मंजूषा पर फैलाये थे और करीबियों ने मंजूषा को और उस के बहंगरों को

८ ढांप लिया । और बहंगरों के सारे पवित्र स्थान ईश्वरीय वाणी के आगे

वाई और और उस का नाम दोयज रखवा । और खंभों के ऊपर मौसन फूल २२ का कार्य सो खंभों का कार्य बन गया ।

तब उस ने ठला हुआ एक समुद्र बनाया जिस का एक कोर दूमे कोर से २३ उस हाथ का था वह चारों और गोल था और उस की ऊंचाई पांच हाथ और तीस हाथ की डोरी उस के चारों और जाती थी । और उस के कोर की चारों २४ और के नीचे हाथ भर में दस कलियां घेरों जो समुद्र की चारों और घेरती थीं दो दो पांती में कलियां डाली गईं । वह धारह तैलों पर धरा गया था तीन के २५ मुंह उत्तर की और और तीन के पश्चिम की और और तीन के दक्षिण की और और तीन के पूरव की और और समुद्र उन सभी के ऊपर और उन के पुट्टे भीतर की अलंग थे । और उस की मोटाई चार अंगुल की और उस का कोर कटोरे के २६ कोर की नाईं मौसन के फूलों से बना हुआ था उस में दो सत्तन मन की समाई थी ।

और उस ने पीतल के दस आधार बनाये एक एक आधार चार हाथ का २७ लम्बा चार हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊंचा । और उन आधारों का कार्य २८ ऐसा था उन के छोर थे और छोर कोरों के मध्य में थे । और कोरों के मध्य में २९ छोर के ऊपर सिंह तीन और करीबी थे और कोरों के ऊपर एक आधार था और सिंहों और बैलों के नीचे कई एक अच्छे स्तंभ कार्य बनाये । और हर एक ३० आधार के लिये पीतल की चार चार पटिया और पीतल के पत्र थे और उन के चार कोनों के लिये नीचे के आधार थे और स्नानपात्र के नीचे हर एक माज की अलंग ठले हुए नीचे के आधार थे । और उस का मुंह गाढ़ के भीतर और ऊपर ३१ हाथ भर का परन्तु उस का मुंह गोल उस के आधार के कार्य की नाईं डेढ़ हाथ का था और उन के मुंह पर चित्रकारी और चौकोर गोठ थी गोल नहीं । और गोठ के नीचे चार पटिया थीं और पटियों की धुरी आधार में थी और ३२ हर एक पटिये की ऊंचाई डेढ़ हाथ की थी । और पटियों का काम रथ के ३३ पटियों के कार्य के समान उन की धुरी और माका और पुट्टी और आरा मय ठले हुए थे । और हर एक आधार के चारों कोनों के नीचे के चार आधार थे ३४ और नीचे के आधार उसी आधार ही में थे । और आधार के सिरे पर चारों ३५ और आधा हाथ ऊंचा और आधार के सिरे पर उस के कोर और उन के गोठ एक ही थे । क्योंकि उस के कोरों का पत्तर और उन के गोठों पर करीबी सिंह ३६ और खजूर पेड़ हर एक के डौल और चारों और के माज के समान उस में खेदा । इस डौल से उस ने दस आधार को बनाया और उन सब का नाप ३७ जोख और ठाल एक ही था । तब उस ने पीतल के दस स्नानपात्र बनाये हर ३८ एक स्नानपात्र में मन चालीस एक की समाई थी और हर एक स्नानपात्र चार हाथ का था उन दसों आधारों में हर एक पर एक स्नानपात्र था । और उस ने ३९ पांच आधार दहिनी अलंग और पांच बाईं अलंग रखे और उस ने समुद्र की पूरव और घर की दहिनी अलंग दक्षिण के मनुख रखवा ।

और हीराम ने पात्र और फावड़ियां और दासन बनाये और हीराम ने परमेश्वर ४०



- २६ कट न जावेगा । और अथ ते इसराएल के ईश्वर में तेरी विनती करता हूँ अपने उस ध्वज को जो तू ने मेरे पिता अपने सेवक दाऊद से कहा पूरा कर ॥
- २७ परन्तु क्या सचमुच ईश्वर पृथिवी पर वास करेगा देख स्वर्ग और स्वर्गों के
- २८ स्वर्ग तेरी समाई नहीं रखते तो फिर क्या यह घर जो मैं ने बनाया है । ते परमेश्वर मेरे ईश्वर अपने सेवक की प्रार्थना और उस की विनती पर सुरत लगा और अपने वास का गिड़गिड़ाना और प्रार्थना सुन जो तेरे सेवक ने आज
- २९ के दिन तेरे आगे किई है । जिसमें रात दिन तेरी आँखें इस स्थान की और खुली रहें उस स्थान की और जिस के विषय में तू ने कहा है कि मेरा नाम यहाँ
- ३० होगा जिसमें तू उस प्रार्थना को सुने जो तेरा सेवक इस स्थान में करेगा । अपने सेवक की विनती सुन और जब तेरे इसराएल लोग इस स्थान में प्रार्थना करें तो अपने निवासस्थान स्वर्ग में से सुन और सुनके जमा कर ॥
- ३१ यदि कोई पुरुष अपने परोसी का अपराध करे और वह उसे किरिया लेने
- ३२ चाहे और इस घर में तेरी वेदी के आगे किरिया लाई जावे । तो तू स्वर्ग पर से सुन और कर और अपने सेवकों का विचार कर और दुष्ट को दोषी ठहराके उस का पाप उसी के सिर पर ला और धर्मियों को निर्दोष ठहराके उस धर्म के समान उसे प्रतिफल दे ॥
- ३३ और जब तेरे इसराएल लोग तेरे विरोध पाप करने के कारण अपने वैरियों के आगे मारे जावें और फिर तेरी और फिरें और तेरे नाम को मान लेवें और
- ३४ प्रार्थना करें और इस घर की ओर तेरी विनती करें । तो तू स्वर्ग में सुन और अपने इसराएल लोगों के पाप को जमा कर और उन्हें उस देश में जो तू ने उन के पित्रों को दिया था फेर ला ॥
- ३५ जब तेरे विरोध पाप करने के कारण से स्वर्ग छंद हो जावे और मंह न बरसे यदि ते इस स्थान की ओर प्रार्थना करें और तेरे नाम को मान लेवें और
- ३६ अपने पाप से फिरें इस लिये कि तू ने उन्हें दुःख दिया । तो तू स्वर्ग में सुन और अपने सेवकों और अपने इसराएल लोग के पाप को जमा कर जिसमें उन्हें मझे मार्ग में जिन में उन्हें चलना उचित है सिखावे और अपने देश पर जो तू ने अपने लोगों को अधिकार के लिये दिया है मंह बरसा ॥
- ३७ यदि देश में अकाल पड़े और यदि मरी होवे और खेती भुलस जावे और लंका लगे अथवा टिड्डी अथवा यदि कीड़े लगें यदि उन के वैरी उन के देश में उन के
- ३८ किसी नगरों में उन्हें घेरे और जो कुछ मरी अथवा रोग होवे । कोई मनुष्य से अथवा तेरे समस्त इसराएल लोग से जो जन अपने ही मन की बुराई को जाने
- ३९ और प्रार्थना और विनती करे और अपने हाथ इस घर की ओर फैलावे । तब तू स्वर्ग पर से अपने निवासस्थान से सुन और जमा कर और संपूर्ण कर और हर एक जन को जिस के मन को तू जानता है उस की चालों के तुल्य प्रतिफल दे क्योंकि
- ४० केवल तू ही समस्त मनुष्य के समस्त संतान के अंतःकरण को जानता है । जिसमें वे जीवन भर उस देश में जो तू ने उन के पित्रों को दिया है तुझ से डरते रहें ॥
- ४१ और उस परदेशी के विषय में जो तेरे इसराएल लोग में से नहीं है परन्तु

दिखाये जाने के लिये उन्होंने ने बहंगरों को निकाला इस लिये वे बाहर देखे न जाते थे और वे आज लों बहा हैं । पत्थर की उन दो पोटियों को छोड़ बिना ९ मूसा ने उस में होखि में रक्खा था जहां परमेश्वर ने इसराएल के संतान से जय वे मिस्र के देश से निकल आये थे बाबा बांधी थी मंजूषा में कुल न था ॥

और यों हुआ कि जय याजक पवित्र स्थान में बाहर आये तब परमेश्वर का १० मंदिर मेघ में भर गया । यहां लों कि मेघ के कारण याजक सेवा के लिये ठहर ११ न मके क्योंकि परमेश्वर के विभव में परमेश्वर का मंदिर भर गया था ॥

तब सुलेमान ने कहा कि परमेश्वर ने कहा था कि मैं अधिकार मेघ में दाम १२ कंगा । मैं ने निश्चय तेरे निवास के लिये घर बनाया है तेरे मनातन के रहने १३ के लिये एक स्थिर स्थान । तब राजा ने अपना मुंह फेरके इसराएल की मारी १४ मंडली को आशीर्वाद दिया और इसराएल की मारी मंडली खड़ी हुई । तब उस १५ ने कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य जिस ने मेरे पिता दाऊद ने अपने मुंह में कहा और यह कहके अपने हाथ में पूरा किया है । जय में मैं अपने इस- १६ राएल लोगों को मिस्र में निकाल लाया मैं ने मारे इसराएल की गोष्टियों में से किसी नगर को नहीं चुना कि घर बनावे जिसमें मेरा नाम उस में होवे परन्तु मैं ने दाऊद को चुना कि मेरे इसराएल लोगों पर प्रधान होवे । और मेरे पिता १७ दाऊद के मन में था कि इसराएल को ईश्वर परमेश्वर के नाम के लिये एक घर बनावे । और परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा कि मेरे नाम के लिये एक १८ घर बनाना तेरे मन में था सो तू ने अच्छा किया कि तेरे मन में था । तिस पर १९ भी तू मेरे लिये घर न बनाना परन्तु तेरा घेरा जो तेरी कटि से निकलेगा सो मेरे नाम के लिये घर बनावेगा । और परमेश्वर ने अपने कहे हुए वचन को पूरा २० किया और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान में उठा हूं और परमेश्वर की वाचा के समान इसराएल के सिंहासन पर बैठा हूं और इसराएल को ईश्वर परमेश्वर के नाम का एक घर बनाया है । और मैं ने उस में मंजूषा के लिये एक स्थान बनाया २१ जिस में परमेश्वर की वाचा है जो उस ने हमारे पिताओं से किई जय यह उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाया ॥

और सुलेमान ने परमेश्वर की घेदी के आगे इसराएल की मारी मंडली को २२ आगे खड़े होके अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाये ॥

और कहा कि हे परमेश्वर इसराएल को ईश्वर तेरे समान कोई ईश्वर ऊपर २३ स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी में नहीं जो अपने सेवकों के साथ जो तेरे आगे अपने सारे मन से चलते हैं वाचा और दया को रखता है । जिस ने अपने सेवक २४ मेरे पिता दाऊद से अपने कहे के समान रक्खी तू ने अपने मुंह से भी कहा है और अपने हाथ से आज के दिन पूरा किया है । सो अब हे परमेश्वर इसराएल २५ को ईश्वर अपने सेवक मेरे पिता दाऊद के साथ पालन कर जो तू ने यह कहके प्रण किया कि केवल यदि तेरे संतान अपनी चाल में चौकस होके तेरे समान मेरे आगे चलें तो तेरे लिये इसराएल के सिंहासन पर बैठने को मेरी दृष्टि में पुरुष

५८ न करे । जिसमें वह अपने समस्त सार्गी में चलाने-को और अपनी आज्ञाओं को और विधि न को और उस के विचारों को जो उस ने हमारे पितरों से आज्ञा  
 ५९ किई थी पालन करने को हमारे मन अपनी और झुकावे । और मेरे ये वचन जिस के लिये मैं ने परमेश्वर के आगे धिनती किई है सो रात दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर के पास होवे कि जैसा प्रयोजन होवे वैसा वह अपने सेवक के पद को  
 ६० और अपने इसराएल लोगों के पद को प्रतिदिन स्थिर करे । जिसमें पृथिवी के  
 ६१ समस्त लोग जानें कि परमेश्वर को छोड़ और कोई ईश्वर नहीं है । इस लिये हमारे ईश्वर परमेश्वर की विधि पर चलने को और आज के दिन की नाई उस की आज्ञा पालन करने को हमारा अंतःकरण उस के आगे सिद्ध होवे ॥

६२ और राजा और उस के साथ सारे इसराएल ने परमेश्वर के आगे बलिदान  
 ६३ चढ़ाये । और सुलेमान ने परमेश्वर के लिये बार्हस सहस बैल और एक लाख बीस सहस भेड़ बकरी से कुशल का बलि किया और राजा ने और सारे इसराएल के समस्त संतानों ने इस रीति से परमेश्वर के मंदिर की स्थापना किई ।  
 ६४ उस दिन राजा ने परमेश्वर के मंदिर के आगे मध्य के आंगन को पवित्र किया क्योंकि वहां उस ने बलिदान की भेंटें और भोजन की भेंटें और कुशल की भेंटों की चिकनाई चढ़ाई क्योंकि परमेश्वर के सन्मुख जो पीतल की वेदी है सो बलिदान की भेंटों के और भोजन की भेंटों के और कुशल की भेंटों की चिकनाई के लिये छोटी हुई ॥

६५ तब सुलेमान ने और उस के साथ इसराएल के समस्त लोगों ने दमात के पैठ से मिस्र की नदी लें बड़ी मंडली ने सात दिन और सात दिन अर्थात् चौदह  
 ६६ दिन पर्व किया । आठवें दिन उस ने उन लोगों को बिदा किया और उन्हें ने राजा का धन्य माना और परमेश्वर ने जो अपने दास दाऊद के कारण और अपने इसराएल लोगों के कारण समस्त भलाई किई थी उसे आनंदित और मगन होके अपने अपने डरे गये ॥

#### नवां पर्व ।

१ और यों हुआ कि जब सुलेमान ने परमेश्वर के मंदिर और राजा के भवन  
 २ और सुलेमान ने जो समस्त इच्छा किई सो बनाके समाप्त किया । तब परमेश्वर ने जैसा जिवजन में सुलेमान को दर्शन दिया था वैसा दोहराके उसे दर्शन दिया ॥  
 ३ और परमेश्वर ने उसे कहा कि जो तू ने मेरे आगे प्रार्थना और धिनती किई है सो मैं ने सुनी है और जिस घर को तू ने मेरे नाम को वहां नित्य स्थापन करने के लिये बनाया है मैं ने उसे पवित्र किया है और मेरी आंखें और मेरा  
 ४ अंतःकरण उस में नित्य रहेंगे । और यदि तू अपने पिता दाऊद के समान मेरे आगे मन की खराई से और सच्चाई से चलेगा जिसमें मेरी समस्त आज्ञा के समान  
 ५ करे और मेरी विधि और विचार को पालन करेगा । तब मैं तेरे राज्य के सिंहासन को इसराएल पर सदा के लिये स्थिर करूंगा जैसा मैं ने तेरे पिता दाऊद से  
 ६ यह कहके बाचा बांधी और कहा कि तेरे वंश से राज्य कधी न जावेगा । परन्तु यदि तुम मेरा पीछा करने से किसी रीति से हटोगे अथवा तुम अथवा तुम्हारे

तेरे नाम के कारण परदेश से आवे । क्योंकि वे तेरा बड़ा नाम और तेरी बलवंत ४२ भुजा और तेरी फैली हुई बांह को सुनेंगे और जब यह आवे और इस घर की ओर प्रार्थना करे । तो स्वर्ग पर से अपने निवासस्थान से सुन और परदेशी की ४३ समस्त याचना के समान उसे पूरा कर जिसमें पृथिवी के समस्त लोग तेरे नाम को जानें और तेरे इसराएल लोग की नाईं तुम्हें हरे और जिसमें वे जानें कि तेरा नाम इस घर पर जिसे मैं ने बनाया है पुकारा जाता है ॥

यदि तेरे लोग अपने बैरी पर संग्राम के लिये निकलें जहां कहीं तू उन्में भेजे ४४ और परमेश्वर की प्रार्थना इस नगर की ओर करें जिसे तू ने चुना है और इस घर की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया है । तब तू स्वर्ग पर से उन ४५ की प्रार्थना और उन की विनती सुन और उन का प्रद नियर कर ॥

यदि वे तेरे विरुद्ध पाप करें क्योंकि कोई निष्पापी नहीं और तू उन से क्रुद्ध ४६ होके बैरी को सौंप देवे यहां लें कि वे उन्में अपने देश में दूर अथवा नियर ले जावें । जिस देश में वे बंधुआई में पहुंचाये गये यदि वे फिर से सोचें और पश्चा- ४७ ताप करें और उन के देश में जा उन्में बंधुआई में ले गये यह कहके विनती करें कि हम ने पाप किया है और हम ने छुट किया है हम ने दुश्मना किए हैं । और अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से अपने बैरियों के देश में जा उन्में ४८ बंधुआई में ले गये वे तेरी ओर फिर और अपने देश की ओर जा तू ने उन के पितरों को दिया और उस नगर की ओर जो मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया तेरी प्रार्थना करें । तो तू अपने निवासस्थान स्वर्ग में से उन की प्रार्थना और उन ४९ की विनती सुन और उन का प्रद नियर कर । और अपने लोगों को जिन्होंने ने ५० तेरे विरुद्ध पाप किया है क्षमा कर और उन के सारे अपराधों को जो उन्में ने तेरे विरुद्ध अपराध किया है क्षमा कर और जो उन्में बंधुआई में ले गये हैं वे उन पर दया करें और उन पर दयाल होवें । इस लिये कि जिन्हें तू मिस्र में ५१ अर्थात् लोटे की भट्टी के मध्य में से निकाल लाया वे तेरे लोग और अधिकार हैं । जिसमें तेरे सेवक की प्रार्थना पर तेरी आर्य्य खुली रहें और तेरे इसराएल ५२ लोगों की विनती पर हर बात के लिये जो वे तुम्हें पुकारते हैं तू सुने । क्योंकि ५३ हे परमेश्वर ईश्वर जब तू हमारे पितरों को मिस्र में निकाल लाया जैसा तू ने अपने सेवक मूसा के द्वारा से कहा था जैसा तू ने उन्में समस्त पृथिवी के लोगों से अपने अधिकार के लिये अलग किया ॥

और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान परमेश्वर के आगे समस्त प्रार्थना और यह ५४ विनती कर चुका तो वह परमेश्वर की वेदी के आगे से अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाने के साथ घुटना टेकने में उठा ॥

और खड़ा होके यह कहके बड़े शब्द से इसराएल की सारी संहली को ५५ आशीस दिई । कि परमेश्वर धन्य जिस ने अपने वचन के समान अपने इसराएल ५६ लोगों को विश्वास दिया और उस ने जो अपने सेवक मूसा के द्वारा से प्रतिज्ञा किई थी उन में से एक बात भी न घटी । परमेश्वर हमारा ईश्वर जिस रीति ५७ से हमारे पितरों के साथ था हमारे साथ होवे यह हमें न छोड़े और हमें त्याग

२५ और जो यज्ञवेदी सुलेमान ने परमेश्वर के कारण बनाई थी उस पर धरस में तीन बार बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाई थीं और उस ने उस पर परमेश्वर के आगे सुगंध जलाया सो वह उस घर को बना चुका ॥

२६ और सुलेमान राजा ने अरब के देश में लाल समुद्र के तीर पर असयूनजत्र में जो ईलूत के पास है जहाजों की बहीर बनाईं । और हीराम ने सुलेमान के सेवकों के साथ उसी बहीर में अपने सेवक मल्लाहों को जो समुद्र के जानकार थे भेजे । और वे ओफीर को गये और वहां से चार सौ बीस तोड़े सोना लेके राजा सुलेमान पास आये ॥

दसवां पृष्ठ ।

१ और जब सिबा की रानी ने परमेश्वर के नाम के विषय में सुलेमान का यश सुना तो वह गूढ़ प्रश्नों से उस की परीक्षा लेने आई । और वह बहुत से लोगों के और सुगंध द्रव्य लदे हुए जंठ और बहुत सोना और मणि के साथ बड़ी भीड़ से यरुसलम में आई और उस ने सुलेमान पास आके सब जो उस के मन में था उस्से पूछा । और सुलेमान ने उस के समस्त प्रश्नों का उत्तर दिया राजा से कोई वस्तु छिपी न थी जो उस ने उसे न बताया । और जब सिबा की रानी ने सुलेमान की समस्त वृद्धि को और उस घर को जो उस ने बनाया था । और उस के मंच के भोजन को और उस के सेवकों का बैठना और उस के दासों का खड़ा होना और उन का पहिरावा और उस के कटोरे के देवियों और उस का चढ़ावा जो वह लेके परमेश्वर के मंदिर को जाता था देखा तब वह मूर्छित हो गई । ६ और उस ने राजा से कहा कि आप की कहावत और वृद्धि जो मैं ने अपने ही देश में सुनी थी सो सत्य समाचार था । तिस पर भी जब लो मैं ने अपनी आंखों से न देखा तब लो उन बातों की प्रतीति न किई और देखिये कि आधा मुझे न कहा गया था तू ने वृद्धि और भलाई उस यश से जो मैं ने सुनी अधिक बढ़ाई । ८ धन्य तेरे जन धन्य ये तेरे सेवक जो नित तेरे आगे खड़े होके तेरा ज्ञान सुनते हैं । परमेश्वर तेरा ईश्वर धन्य जिस ने तुझ से प्रसन्न होके इसराएल के सिंहासन पर तुझे बैठाया इस कारण कि परमेश्वर ने इसराएल से प्रीति रखी इस लिये १० उस ने तुझे न्याय और धर्म के लिये राजा किया । और उस ने एक सौ बीस तोड़े सोना और अति बहुत सुगंध द्रव्य और मणि राजा को दिये और इन के समान जो सिबा की रानी ने सुगंध द्रव्य सुलेमान-राजा को बहुताई से दिया ऐसा कभी न आया ॥

११ और हीराम की बहीर भी जो ओफीर से सोना लाये थे और ओफीर से चंदन के बहुत वृक्ष और मणि लाये । और राजा ने परमेश्वर के मंदिर के लिये और अपने भवन के लिये चंदन वृक्ष के खंभे बनवाये और गायकों के लिये बीणा और खंजड़ी बनवाई और चंदन के ऐसे वृक्ष न कभी आये न आज लो देखे गये । १३ और सुलेमान राजा ने सिबा की रानी को उस की समस्त बांछा जो उस ने मांगी उसे दिई उस के उपरांत जो सुलेमान राजा ने राजकीय दान से उसे दिया था और वह अपने सेवकों समेत अपने ही देश को फिर गई ॥

वंश मेरी आजाओं और विधिन को जो मैं ने तुम्हारे आगे रखीं पालन न करोगे  
परन्तु जाके उपरी देवों की सेवा और दण्डवत् करोगे । तब मैं इसराएल को इस ७  
देश से जो मैं ने उन्हें दिया है उखाड़ डालूंगा और इस घर को जिसे मैं ने अपने  
नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से दूर करूंगा और इसराएल एक कष्टा-  
वन और कष्टानी सारे लोगों में होगा । और हर एक पवित्र इस मष्टन मंदिर से ८  
विस्मित होके फुफकारी नाचके कहेगा कि परमेश्वर ने किस कारण इस देश से  
और इस घर से ऐसा किया है । तब वे उत्तर देंगे इस कारण कि उन्होंने ने परमे- ९  
श्वर अपने ईश्वर को छोड़ दिया जो उन के पिताओं की सिर में निकाल लाया  
और उपरी देवों को ग्रहण किया और उन की दण्डवत् और सेवा किई है इस  
लिये परमेश्वर उन पर ये सब दुराई लाया ॥

और यों हुआ कि बीस घरम के अंत में जय सुलेमान दोनों घरों को अर्थात् १०  
परमेश्वर का घर और राजा का भवन बना चुका । तब के राजा हीराम ने सुले- ११  
मान की समस्त इच्छा को उसान उसे देखदार और सरी के वृक्ष और सोना पट्टे-  
चाया था तब सुलेमान राजा ने हीराम को जलीन के देश में बांस नगर दिये ।  
और हीराम तूर से उन नगरों को जो सुलेमान ने उसे दिये वे देखने को आया १२  
और वे नगर उस की दृष्टि में ठीक न थे । और उस ने उसे कहा कि हे भाई १३  
कैसे नगर हैं जो आप ने मुझे दिये हैं और उस ने उन का नाम कायुल देश  
रखवा । और हीराम ने कः काही ताड़े सोना राजा को भेजे ॥ १४

और सुलेमान राजा के कर ठहराने का यह कारण था कि परमेश्वर के घर १५  
और अपने भवन और मिल्हा और यममलम का भीग और छतर और मजिदो और  
जजर बनाये । मिस का राजा फिरकन चढ़ गया था और जजर को नेके उसे १६  
आग में फेंक दिया और उस नगर के वामी कलशानियों को घात किया और  
अपनी वंटी को सुलेमान को पत्नी देने के लिये उसे दिया । इस लिये सुलेमान १७  
ने जजर और नीचे के बैतलूयन को बनाया । और देश के वन में बालात और १८  
तदमूर को । और सुलेमान के समस्त भंडार के नगर और उस के रथों के नगर १९  
और घोड़चढ़ों के नगर के लिये और सुलेमान की बांका जो उस ने बांका किई  
थी यममलम और लुवनान में और अपने राज्य के सारे देश में बनाये ॥

सारे लोग जो असूरियों हितियों फरिजियों हथियों और यूरमियों में घब २०  
रहे थे जो इसराएल के संतान न थे । उन के संतान जो देश में उन के पीछे २१  
वचे रहे जिन्हें इसराएल के संतान सर्वथा मिटा न सके उन्होंने से सुलेमान ने  
आज के दिन लों दासत्व की सेवा का कर लिया । परन्तु इसराएल के संतानों २२  
में से किसी को सुलेमान ने दास न बनाया परन्तु वे योद्धा और उस के सेवक  
और उस के अध्यक्ष और उस के सेनापति और उस के सारथी और उस के घोड़-  
चढ़े थे । सुलेमान के कार्यों पर पांच सौ पचास श्रेष्ठ प्रधान थे जो यनिदारी २३  
पर आजाकारी थे ॥

परन्तु फिरकन की कन्या दाऊद के नगर से निकलके अपने घर में आई जो २४  
सुलेमान ने उस के लिये बनाया वहां उस ने मिल्हा को बनाया ॥



४ थीं और उस की पत्नियों ने उस को मन को फेर दिया । और ऐसा हुआ कि तब सुलेमान बृद्ध हुआ तब उस की पत्नियों ने उस को मन को भिन्न देवों की ओर फेर दिया और उस का मन अपने ईश्वर परमेश्वर की ओर अपने पिता दाऊद के मन के समान सिद्ध न था । क्योंकि सुलेमान ने मैदानियों के देवता इसतारात का और अम्मूनी के धिनित मिलकूम का पीछा पकड़ा । और सुलेमान ने परमेश्वर की दृष्टि से घुराई किई और उस ने परिपूर्णता से अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर का पीछा न पकड़ा । तब सुलेमान ने यरूसलम के सन्मुख की पहाड़ी पर मोशवियों की धिनित कूमस के लिये और अम्मून के संतानों की धिनित मालक के लिये जंघा स्थान बनाया । और इसी रीति से अपनी सारी उपरी पत्नियों के लिये जो अपने देवतों के लिये धूप जलाती और धलि करती थीं उस में बनाया ॥

५ और परमेश्वर सुलेमान पर इस कारण क्रुद्ध हुआ कि इमरारल के ईश्वर परमेश्वर से जिस ने उसे दो बार दर्शन दिया था उस का मन फिर गया । और उसे इस विषय में आज्ञा किई थी कि वह आन देवों का पीछा न पकड़े परन्तु उस ने परमेश्वर की आज्ञा को पालन न किया । सो परमेश्वर ने सुलेमान से कहा इस कारण कि तुझ से यह हुआ है और तू ने मेरे नियम और मेरी विधि को जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई पालन नहीं किया है निश्चय मैं राज्य तुझ से फाड़ूंगा और तेरे सेवक को देजंगा । तथापि तेरे जीते जी तेरे पिता दाऊद के कारण से ऐसा न कदंगा परन्तु तेरे बेटे के हाथ से उसे फाड़ूंगा । तथापि मैं सारा राज्य न फाड़ लेंजंगा परन्तु अपने सेवक दाऊद के कारण और अपने चुने हुए यरूसलम के लिये तेरे बेटे को एक गोष्टी देजंगा ॥

६ तब परमेश्वर ने सुलेमान के एक वीरी को उभारा अर्थात् अदूमी हदद को वह अदूम में राजाओं के वंश से था । क्योंकि जब दाऊद अदूम में था और सेनापति यूअब अदूम के समस्त पुरुष को घात करके उन्हें गाड़ने गया । क्योंकि यूअब छः मास लो समस्त इनराएलियों के संग वहाँ रहा यहां लो कि उस ने अदूम में एक पुरुष को जीता न छोड़ा । तब हदद अपने पिता के कई एक अदूमी सेवकों के साथ मिख को भाग गया और तब वह छोटा बालक था ॥

७ तब वे मिदयान से निकलके फारान में आये और फारान से लोगों को साथ लेके मिख में मिख के राजा फिरजन पास पहुंचे जिस ने उसे घर दिया और उस के लिये भोजन ठहराया और उसे भूमि दिई । और हदद ने फिरजन की दृष्टि में बड़ा अनुग्रह पाया यहां लो कि उस ने अपनी पत्नी तिहफनिहीस रानी की वहिन उसी को विवाह दिई । और तिहफनिहीस की वहिन उस के लिये जनूवत जनी जिस का दूध तिहफनिहीस ने फिरजन के घर में हुड़ाया और जनूवत फिरजन के बेटों के साथ फिरजन के घराने में रहता था ॥

८ और जब हदद ने मिख में सुना कि दाऊद ने अपने पितरों में शयन किया और सेनापति यूअब मर गया तब उस ने फिरजन से कहा कि मुझे विदा कीजिये कि मैं अपने ही देश को जाऊं । तब फिरजन ने उसे कहा किं तुम्हें मेरे पास कौन सी

और सोने की तौल जो सुलेमान के पास एक घर में आती थी सो रु: सो १४  
 क्रियामठ तोड़े थी । उस से अधिक जो व्यापारियों और सुगंध द्रव्य के व्यापा- १५  
 रियों और श्रव्य के ममस्त राजाओं और पृथिवी के अध्यक्षों से पहुंचाया जाता था ॥

और सुलेमान राजा ने सोना गढ़वाके दो सौ ठालें बनवाई हर एक ठाल में १६  
 सवा पांच सौ मोहर के लगभग लगा । और सोना गढ़वाके तीन सौ ठालें बन- १७  
 वाई एक एक ठाल डेढ़ डेढ़ सेर सोने की थी सो राजा ने उन्हें लुवनान के घर  
 के घर में रक्खा ॥

और राजा ने हाथीदांत का एक बड़ा मिंदासन बनवाके उसे अत्युत्तम सोने १८  
 से मढ़वाया । उस मिंदासन की रु: सीढ़ी और मिंदासन के ऊपर पीछे की और १९  
 मोल या और आसन की दोनों और टेक या और दोनों छाया की अलग दो मिंदा  
 रखे थे । और उन रु: सीढ़ियों के ऊपर दोनों अलग मिंदा रखे थे किसी राज्य २०  
 में ऐसा न बना था । और सुलेमान के ममस्त पीने के पात्र सोने के थे लुवनान २१  
 के घर के घर के ममस्त पात्र चांसोने के थे एक भी रुपे का न था सुलेमान के समय  
 में उस की कुछ गिनती न थी । क्योंकि होराम के बगीरों के साथ राजा के तर- २२  
 सीमी बहीर मसुड़ में थे और तरसीस के बहीर तीन तीन घर में एक घर सोना  
 और रुपा और हाथीदांत और बंदर और नार लाते थे ॥

सो सुलेमान राजा धन और खुश में पृथिवी के सारे राजाओं से अधिक था । २३  
 और ईश्वर ने सुलेमान के अंतःकरण में जो ज्ञान दिया था उसे सुने के लिये सारी २४  
 पृथिवी उस के दर्शन की आँखा करनी थी । और हर एक जन घर घर अपनी २५  
 अपनी भेंट लाया अर्थात् रुपे और सोने के पात्र और पहिरावा और छियार और  
 सुगंध द्रव्य और छोटे और बड़े ॥

और सुलेमान ने रथ और घोड़चढ़े एकट्टे किये और उस के पास चौदह सौ २६  
 रथ और बारह सठस घोड़चढ़े थे जिन्हें उस ने रथों के नगरों में और राजा के संग  
 यत्सलम में रक्खा ॥

और राजा ने यत्सलम में चांदी के पत्थरों के तुल्य और देवदार बहुतार्थ में २७  
 चांगान के गुलर पेड़ों के समान किया । और सुलेमान के पास छोटे मिन से २८  
 लाये गये थे और राजा के वैपारी भाव से लाते थे । और एक रथ रु: सौ टुकड़े २९  
 चांदी का मिन से निकलता और ऊपर आता था और एक घोड़ा डेढ़ सौ को  
 और हिली के सारे राजाओं के लिये और अराम के राजाओं के लिये उन के  
 द्वारा से ऐसा ही लाते थे ॥

अपारुखां पृष्ठ ।

परन्तु सुलेमान राजा ने फिरजन की घंटी को छोड़ बहुत उपरी स्त्रियों से १  
 प्रीति किई अर्थात् मोअवी अम्सूनी अदूसी मंदूनी और हिली की स्त्रियों से । उन २  
 जातिगणों में जिन के विषय में परमेश्वर ने इसराएल के संतान को आज्ञा किई  
 थी कि तुम उन के पास मत जाओ और न वे तुम्हारे पास आये निश्चय वे  
 तुम्हारे मन की अपने देवों की और फिरावेंगी पर सुलेमान प्रीति में उन्हें से  
 पिलचा रहा । और उस की सात सौ राजकुमारी पत्नियां और तीन सौ सहेलियां ३

४० और इस लिये मैं दाऊद के वंश को दुःख देऊंगा परन्तु सदा लो नहीं । इस लिये सुलेमान ने यरुबिआम को बधन करने चाहा तब यरुबिआम उठा और भागके मिस्र के राजा शिशाक के पास मिस्र में गया और सुलेमान के मरने लो वहीं रहा ॥

४१ और सुलेमान का रहा हुआ कार्य और सब जो उस ने किया और उस की ४२ खुद्वि क्या सुलेमान की क्रिया की पुस्तक में नहीं लिखा है । और यरुसलम में ४३ सारे इसराएलियों पर सुलेमान के राज्य के दिन चालीस बरस थे । और सुलेमान ने अपने पितरों के संग शयन किया और अपने पिता दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस के बेटे रहबिआम ने उस की संती राज्य किया ॥

बारहवां पृष्ठ ।

१ और रहबिआम सिकम को गया क्योंकि समस्त इसराएल सिकम में आये कि उसे राजा बनावे ॥

२ और ऐसा हुआ कि जब नवात के बेटे यरुबिआम ने जो अब लो मिस्र में था यह सुना क्योंकि वह सुलेमान राजा के आगे से भागा था और मिस्र में जा रहा

३ था । तब उन्होने ने भेजके उसे बुलवाया और यरुबिआम और इसराएल की सारी ४ मंडली आये और यह कहके रहबिआम से बोले । कि तेरे पिता ने हमारे जूए

को कठिन किया इस लिये अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस के भारी जूए को जो उस ने हम पर रक्खा हलका कर और हम तेरी सेवा करेंगे ।

५ तब उस ने उन्हें कहा तीन दिन लो चले जाओ तब सुभ पास फिर आओ और लोग चले गये ॥

६ तब रहबिआम राजा ने पुरनियों से जो उस के पिता सुलेमान के जीते जी उस के आगे होते थे परामर्श किया और कहा कि तुम्हारा क्या मंत्र है मैं इन

७ लोगों को क्या उत्तर देऊं । और वे उसे कहके बोले कि यदि आज के दिन तू इन लोगों का सेवक होके उन की सेवा करेगा और उत्तर देके उन्हें अच्छी बात कहेगा तो वे सर्वदा तेरे सेवक हो रहेंगे ॥

८ परन्तु उस ने प्राचीनों के मंत्र को त्यागके उन युवा पुरुषों के संग जो उस के साथ साथ बड़े थे और उस के आगे खड़े होते थे परामर्श किया और उन से

९ कहा । कि ये लोग सुभ से यह कहके बोले और उस ने उन्हें कहा कि तेरे पिता ने जो जूआ हम पर रक्खा है उसे कुछ हलका कीजिये तुम क्या मंत्र देते हो मैं

१० उन्हें क्या उत्तर देऊं । तब उन युवा पुरुषों ने जो उस के साथ साथ बड़े थे उस्से कहके बोले कि जिन लोगों ने तुभ से यह कहा है कि तेरे पिता ने हमारे जूए

को भारी किया है परन्तु तू हमारे लिये उसे हलका कर तू उन्हें यों कहियो कि ११ मेरी किंगुली मेरे पिता की काटि से अधिक मोटी होगी । और जैसा कि मेरे

पिता ने तुम पर भारी जूआ रक्खा था मैं तुम्हारे जूए को बड़ाऊंगा मेरे पिता ने कोड़े से तुम्हें ताड़ना किई परन्तु मैं तुम्हें बिच्छुओं से ताड़ना कसंगा ॥

१२ सो जैसा राजा ने ठहराके कहा था कि तीसरे दिन फेर मेरे पास आना वैसे

१३ श्री यरुबिआम और सारे लोग तीसरे दिन रहबिआम के पास आये । तब राजा

घटती है कि तू अपने ही देश को जाने छाड़ता है और उस ने उत्तर दिया कुछ नहीं तथापि मुझे किसी रीति से जाने दीजिये ।

द्वि ईश्वर ने उस के लिये वैसी स्रष्टा क्रिया अर्थात् इलिवदः के घटे रटन को जो २३ सूत्र के राजा अपने स्वामी हृदयअजर पास में भागा था । और तब दाऊद ने २४ उन्हे घात किया तब उस ने अपने पास लोगों को एकट्ठा किया और एक जगह पर प्रधान हुआ और दमिस्क में जाके वास किया और दमिस्क में राज्य किया । और हृदय की सुराई से अधिक मुलेमान के जीवन भर वह इसराएल का वैसी २५ था और वह इसराएल से छिन रखता था और अराम पर राज्य करता था ।

और मरीदः के एक दफराती नवान के घटे यन्त्रियाम ने जो मुलेमान का २६ सेवक जिस की माता का नाम मन्त्रः जो विधवा थी उसी ने राजा के विरोध हाथ उठाया । और राजा के विरोध हाथ उठाने का यह कारण था कि मुलेमान २७ ने सिल्लो को बनाया और अपने बाप दाऊद के नगर के दरारों को घंटा किया । और यन्त्रियाम अति बलवान था और उस तबल को फुरतीला देखके मुले- २८ मान ने उसे यूसुफ के घराने पर प्रधान किया ।

और उस समय में मेरा हुआ कि तब यन्त्रियाम यरुसलम से बाहर गया तब २९ जैलूनी अग्निपाट भविष्यवृत्ता ने उसे मार्ग में पाया और वह एक नया वस्त्र पहिने था और केवल ये दोनों चौगान में थे । तब अग्निपाट ने उन पर के नये वस्त्र ३० को एकड़ा और फाड़के बाहर टुकड़े किये । और उस ने यन्त्रियाम को कहा ३१ कि इस टुकड़े तू ले क्योंकि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहना है कि देव में मुलेमान के हाथ में राज्य फाड़ंगा और उन गोष्टियों तुम्हें देजंगा । परन्तु मेरे ३२ सेवक दाऊद के कारण और यरुसलम नगर के कारण जिसे मैं ने इसराएल को समस्त गोष्टियों में से चुन लिया वह एक गोष्टी पावेगा । इस कारण कि उन्हीं ३३ ने मुझे त्यागके मैदानियों के देवगा इसतारात की और मोश्त्रियों के देव कसस की और अम्मून के मंत्रान के देव सिलकूम की पूजा किंहे है और अपने पिता दाऊद की नाईं मेरी दृष्टि में जो भना है मेरे मार्गों में नहीं चला और मेरी विधि और मेरे विचारों को पालन नहीं किया । तथापि मैं समस्त राज्य को उस के ३४ हाथ से निकाल न लेजंगा परन्तु मैं अपने सेवक दाऊद के कारण जिसे मैं ने इस कारण चुना कि उस ने मेरी आज्ञा और विधि को पालन किया उस के जीवन भर मैं उस को राजा कर रखूंगा । परन्तु उस के घटे के हाथ में मैं राज्य ३५ लेजंगा और इस गोष्टी तुम्हें देजंगा । और मैं उस के घटे को एक गोष्टी देजंगा ३६ जिससे यरुसलम नगर में जिसे मैं ने अपने नाम के लिये चुना है मेरा दास दाऊद एक दीपक रखवा करे । और मैं तुम्हें लेजंगा और तू अपने मन की समस्त इच्छा ३७ के समान राज्य करेगा और इसराएल का राजा होगा । और ऐसा होगा कि ३८ यदि तू मेरी समस्त आज्ञाओं को सुनेगा और मेरे मार्गों पर चलेगा और जिस रीति से मेरा दास दाऊद करता था वैसा मेरी विधि और आज्ञा पालने के लिये मेरी दृष्टि में भलाई करेगा तो मैं तेरे साथ होजंगा और तेरे लिये एक दृढ़ घर बनाजंगा जैसा मैं ने दाऊद के लिये बनाया और इसराएल को तुम्हें देजंगा ।

है कि तुम यरूसेलम को जाओ हे इसराएल अपने देवों को देख जो तुम्हें मिस्र  
 २९ की भूमि से निकाल लाये । और उस ने एक को बैतएल में और दूसरे को दान  
 ३० में स्थापित किया । और यह बात एक पाप हुई क्योंकि लोग दान में जाके एक  
 ३१ की पूजा करते थे । और उस ने जंचे स्थानों में एक घर बनाया और नीचे लोगों  
 ३२ में से याजक बनाये जो लावी के बेटों में से न थे । और यरुबिआम ने यहूदाह  
 के एक पर्व की नाईं आठवें मास की पंद्रहवीं तिथि में पर्व ठहराया और वेदी  
 पर बलिदान चढ़ाया ऐसा ही उस ने उन बच्चियों के आगे जो उस ने बनाई थीं  
 बैतएल में किया और उस ने उन जंचे स्थानों के याजकों को जिन्हें उस ने बनाया  
 ३३ था रक्खा । सो आठवें मास की पंद्रहवीं तिथि को अर्थात् उस मास में जो  
 उस ने अपने मन में रोपा था बैतएल में अपनी बनाई हुई वेदी पर बलिदान  
 चढ़ाया और इसराएल के संतानों के लिये एक पर्व ठहराया और उस ने उस  
 वेदी पर चढ़ाया और धूप जलाया ॥

तेरहवां पर्व ।

१ और देखो कि परमेश्वर के वचन से ईश्वर का एक जन यहूदाह से बैतएल  
 २ में आया और यरुबिआम वेदी के पास धूप जलाने के लिये खड़ा था । और उस  
 ने परमेश्वर के वचन से वेदी के विरुद्ध में पुकारके कहा कि हे वेदी हे वेदी  
 परमेश्वर यों कहता है कि देख यूसियाह नाम एक बालक दाऊद के घराने में  
 उत्पन्न होगा और वह जंचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं  
 ३ तुम्हीं पर चढ़ावेगा और मनुष्यों के हाड़ तुझ पर जलाये जावेंगे । और उस ने  
 उसी दिन यह कहके एक पता दिया कि परमेश्वर ने यह कहके यह पता दिया  
 है कि देख वेदी फट जावेगी और उस पर की राख उंडेली जावेगी ॥

४ और ऐसा हुआ कि जब यरुबिआम राजा ने ईश्वर के जन का कहना सुना  
 जिस ने बैतएल की वेदी के विरुद्ध पुकारा था तो उस ने वेदी पर से अपना हाथ  
 बढ़ाके कहा कि उसे पकड़ लेओ सो उस का हाथ जो उस ने उस पर बढ़ाया  
 ५ था भुरा गया ऐसा कि वह उसे फिर सकोड़ न सका । और उस लक्षण के समान  
 जो ईश्वर के उस जन ने परमेश्वर के वचन से दिया था वेदी फट गई और राख  
 ६ वेदी पर से उंडेली गई । तब राजा ने ईश्वर के उस जन को कहा कि अब अपने  
 ईश्वर परमेश्वर से बिनती करिये और मेरे लिये प्रार्थना करिये कि मेरा हाथ चंगा  
 किया जावे तब ईश्वर के जन ने परमेश्वर के मुख बिनती किई और राजा का  
 ७ हाथ चंगा किया गया और आगे की नाईं हो गया । तब राजा ने ईश्वर के  
 उस जन से कहा कि मेरे साथ घर में चलके सुस्ताइये और मैं तुम्हें प्रतिफल  
 ८ देऊंगा । परन्तु ईश्वर के जन ने राजा से कहा कि यदि तू अपना आधा घर  
 मुझे देवे तथापि मैं तेरे साथ भीतर न जाऊंगा और इस स्थान में न रोटी खाऊंगा  
 ९ न जलपान करूंगा । क्योंकि परमेश्वर के वचन से मुझे यों कहा गया कि न रोटी  
 खाइयो न जलपान करियो और जिस मार्ग से होके तू जाता है उसी से फेर मत  
 १० आना । सो वह जिस मार्ग में होके बैतएल में आया था उस मार्ग से न गया वह  
 दूसरे मार्ग से चला गया ॥

ने उन लोगों को कठोरता से उत्तर दिया और जो मंत्र प्राचीनों ने दिया था उसे त्याग किया । और युवा पुरुषों के मंत्र के समान उन्हें कहा कि मेरे पिता ने १४ तुम पर भारी जूआ रखी थी परन्तु मैं उस जूए को और भारी करूँगा मेरे पिता ने तुम्हें कोढ़ों से दंड दिया था परन्तु मैं तुम्हें विच्छुरों से ताड़ना करूँगा ॥

सो राजा ने उन लोगों की बात न सुनी क्योंकि यह ईश्वर की और से था १५ जिसने यह अपने वचन को जो परमेश्वर ने जूलूनी अग्निपाट की और से नयात के बेटे यरुविशाम से कहा पूरा करे । सो जब सारे इसराएलियों ने देखा कि १६ राजा ने उन लोगों की न सुनी तब लोगों ने यह कहके राजा को उत्तर दिया कि दाऊद में हमारा क्या भाग है और यस्सी के बेटे के साथ हमारा कुछ अधिकार नहीं है हे इसराएल अब अपने अपने संघों को जाओ हे दाऊद अपने घर को देख सो इसराएल अपने अपने संघों को चले गये । परन्तु इसराएल के संतान १७ जो यहूदाह के नगरों में बस्ते थे ररुविशाम ने उन पर राज्य किया ॥

तब ररुविशाम राजा ने अदूराम को जो कर का न्यासी था भेजा और समस्त १८ इसराएलियों ने यहाँ लो उसे पत्थरों से पत्थरपाट किया कि यह मर गया इस लिये ररुविशाम राजा आप को हट करके यरुसलम को भागने के लिये रघ पर चढ़ा । सो इसराएल आज के दिन लो दाऊद के घराने से फिर गये ॥ १९

और ऐसा हुआ कि जब सारे इसराएलियों ने सुना कि यरुविशाम फिर आया २० तो उन्होंने ने भेजके उसे मंडली में बुलवाया और उन्होंने ने उसे सारे इसराएलियों पर राजा किया केवल यहूदाह की गोष्टी को छोड़ कोइ दाऊद के घराने को और न हुआ ॥

और जब ररुविशाम यरुसलम में पहुँचा तो उस ने यहूदाह के सारे घराने को २१ विनयमीन की गोष्टी समेत जो सब एक साथ यस्सी मांस चुने हुए जन लड़ाक थे एकट्ठा किया कि इसराएल के घराने से लड़के राज्य को सुनमान के बेटे ररुविशाम की और लावें । परन्तु ईश्वर के जन जमाया के पास ईश्वर का वचन २२ यह कहके पहुँचा । कि यहूदाह के राजा सुलेमान के बेटे ररुविशाम को और सारे २३ यहूदाह और विनयमीन के घराने को और सबेरे हुए लोगों को कहके बोले । कि परमेश्वर यों कहता है कि चढ़ाई न करो और अपने भाइयों इसराएल के २४ संतान से लड़ाई न करो परन्तु हर एक तुम्हें में अपने अपने घर को फिरे क्योंकि यह बात मेरी और से है सो उन्होंने ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और परमेश्वर के वचन के समान उलटे फिरे ॥

तब यरुविशाम इफरायम पहाड़ में सिकम को बनाके उस में बसा उस को २५ पीछे वहाँ से निकलके फनुएल को बनाया । तब यरुविशाम ने अपने मन में कहा २६ कि अब राज्य दाऊद के घराने को फिर जावेगा । यदि ये लोग बलि चढ़ाने के २७ लिये परमेश्वर के मंदिर में यरुसलम को चढ़ेंगे तब इन लोगों का मन अपने प्रभु यहूदाह के राजा ररुविशाम की और फिरेगा और वे सुके सार लेंगे और यहूदाह के राजा ररुविशाम की और फिर जावेंगे । इस लिये राजा ने परामर्श २८ करके सोने की दो बहिया बनवाई और उन्हें कहा कि तुम्हारे लिये अति क्लेश



- २८ लिये गदहे पर काठी बांधो और उन्होंने ने बांधो । तब उस ने जाके उस की  
लोथ मार्ग में पड़ी पाई और गदहा और सिंह लोथ पास खड़े थे सिंह ने लोथ  
२९ को न खाया था और न गदहे को फाड़ा था । तब उस भविष्यद्वक्ता ने ईश्वर  
के जन की लोथ को उठाके उस गदहे पर लादा और उसे फेर लाया और उस  
३० के लिये शोक करते हुए वृद्ध भविष्यद्वक्ता नगर में पहुंचा कि उसे गाड़े । तब  
उस ने उस की लोथ को अपनी ही समाधि में रखवा और यह कहके उस के  
३१ लिये उन्होंने ने विलाप किया कि हाय मेरे भाई । और उस के गाड़ने के पीछे यों  
हुआ कि वह यह कहके अपने बेटों से बोला कि जब मैं मरूं तो मुझे ईश्वर के  
इस जन की समाधि में गाड़ियो और मेरी हड्डियां उस की हड्डियों के पास रखियो ।  
३२ क्योंकि वह वचन जो परमेश्वर ने वैतरण की वेदी और समरन के नगरों के ऊंचे  
स्थानों के समस्त घरों के विरोध में कहा सो अवश्य पूरा होगा ॥
- ३३ इस के पीछे यरुबिआम अपने घुरे मार्ग से न फिरा परन्तु फिर नीच  
लोगों को ऊंचे स्थानों का याजक बनाया जिस ने चाहा उसे उस ने स्थापित किया  
३४ और वह ऊंचे स्थानों का एक याजक हुआ । और यही वस्तु यरुबिआम के घराने  
के लिये यहां लों पाप हुई कि उसे उखाड़े और पृथिवी पर से नष्ट करे ॥

चौदहवां पृष्ठ ।

- १ उस समय में यरुबिआम का बेटा अखियाह रोगी हुआ । और यरुबिआम ने  
अपनी पत्नी से कहा कि उठके अपना भेप बदल जिसमें न जाना जाय कि तू  
यरुबिआम की पत्नी है और शीलो को जा देख वहां अखियाह भविष्यद्वक्ता है  
३ जिस ने मुझे कहा था कि तू इन लोगों का राजा होगा । और अपने हाथ में  
दस रोटियां और लड्डू और एक पात्र मधु लेके उस पास जा और वह तुझे बता-  
४ वेगा कि इस लड़के को क्या होगा । तब यरुबिआम की पत्नी ने वैसा ही किया  
और उठके शीलो को गई और अखियाह के घर में पहुंची परन्तु अखियाह देख  
५ न सक्ता था क्योंकि बूढ़ापे के कारण उस की आंखें बैठ गई थीं । तब परमेश्वर  
ने अखियाह से कहा कि देख यरुबिआम की पत्नी अपने बेटे के विषय में तुझ से  
कुछ पूछने को आती है क्योंकि वह रोगी है तू उसे यों यों कहियो क्योंकि यों  
होगा कि जब वह भीतर आवेगी वह अपना भेप बदल डालेगी ॥
- ६ और यों हुआ कि जब वह द्वार पर पहुंची और अखियाह ने उस के पांवां का  
शब्द सुना तो उस ने उसे कहा कि हे यरुबिआम की पत्नी भीतर आ तू अपना  
भेप क्यों बदलती है क्योंकि मैं कठिन समाचार के लिये तुझ पास भेजा गया हूं ।  
७ सो जा यरुबिआम से कह कि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि  
जैसा मैं ने लोगों में से तुझे बढाया और तुझे अपने इसराएल लोग पर अध्यक्ष  
८ किया । और दाऊद के घराने से राज्य फाड़के तुझे दिया तथापि तू मेरे सेवक  
दाऊद के समान न हुआ जिस ने मेरी आज्ञाओं को पालन किया और जो अपने  
सारे मन से मेरे पीछे चला जिसमें केवल वही करे जो मेरी दृष्टि में अच्छा  
९ था । परन्तु सभों से जो तेरे आगे थे तू ने अधिक घुराई किई है क्योंकि मुझे  
क्रुद्ध करने को तू ने जाके अपने लिये और देवों को और ढाली हुई मूर्तिन को

और वैतगल में एक बृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था और उस के बेटे उस पास ११ आये और उन कार्यों को जो ईश्वर के जन ने उस दिन वैतगल में किये उसे कह सुनाया और उस को उन बातों को जो उस ने राजा में कही थीं अपने पिता के आगे वर्णन किया । और उन के पिता ने उन से पूछा कि वह किस मार्ग से गया १२ क्योंकि उस के बेटों ने देखा था कि ईश्वर का वह जन जो बृहदाह से आया किस मार्ग से फिर गया । तब उस ने अपने बेटों से कहा कि मेरे लिये गदहे पर १३ काठी बांधो सो उन्हीं ने उस के लिये गदहे पर काठी बांधी और वह उस पर चढ़ा । और ईश्वर के उस जन के पीछे चला और उसे यूनत बृद्ध तले बैठे पाया तब १४ उस ने उसे कहा कि तू ईश्वर का वह जन है जो बृहदाह से आया और वह बोला हां । तब उस ने उसे कहा कि मेरे संग घर पर चल और रोटी खा । १५ और वह बोला मैं तेरे साथ नहीं फिर सकता और न तेरे साथ जा सकता और न १६ मैं तेरे साथ इस स्थान में रोटी खाऊंगा न जल पीऊंगा । क्योंकि परमेश्वर के १७ वचन में मुझे यों कहा गया कि तू वहां न रोटी खाना न जल पीना और जिस मार्ग से तू जाता है उस मार्ग से होके न फिरना । तब उस ने उसे कहा कि मैं १८ भी तेरी नाईं एक भविष्यद्वक्ता हूं और परमेश्वर के वचन के द्वारा मैं एक दूत ने मुझे कहा कि उसे अपने साथ अपने घर में फिरा ला जिसमें वह रोटी खावे और पानी पीवे उस ने उससे झूठ कहा । सो वह उस के साथ फिर गया और उस के १९ घर में रोटी खाई और जल पीया ॥

और यों हुआ कि ज्यों वे मंत्र पर बैठे थे तब परमेश्वर का वचन उस २० भविष्यद्वक्ता पर जो उसे फिरा लाया था उतरा । और उस ने ईश्वर के उस जन २१ से जो बृहदाह से आया था चिल्लाके कहा कि परमेश्वर यह कहता है कि इस कारण तू ने परमेश्वर के वचन को उल्लंघन किया है और जो तेरे ईश्वर परमेश्वर ने तुझे आज्ञा किई है तू ने उसे पालन न किया । परन्तु फिर आया और उस ने २२ जिस स्थान के विषय में तुझे कहा कि कुछ रोटी न खाना न जल पीना उसी स्थान में तू ने रोटी खाई और जल पीया सो तेरी साथ तेरे पितरों की समाधि में न पहुँचोगी ॥

और ऐसा हुआ कि जब वह खा पी चुका तब उस ने उस के लिये अर्थात् २३ उस भविष्यद्वक्ता के लिये जिसे वह फेर लाया था गदहे पर काठी बांधी । और २४ जब वह वहां से गया तो मार्ग में उसे एक सिंह मिला जिस ने उसे मार डाला और उस की लाश मार्ग में पड़ी थी और गदहा उस पास खड़ा रहा और सिंह भी उस लाश के पास खड़ा था । और देखो कि लोगों ने उधर से जाते जाते २५ लाश को मार्ग में पड़ी देखा और कि सिंह भी लाश पास खड़ा है तब उन्हीं ने नगर में आके जहां वह बृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था कहा । और जब उस भवि- २६ ष्यद्वक्ता ने जो उसे मार्ग में से फिरा लाया था सुना तो कहा कि यह ईश्वर का वह जन है जिस ने परमेश्वर का वचन न माना इस लिये परमेश्वर ने उसे सिंह को सौंप दिया जिस ने उसे परमेश्वर के वचन के समान जो उस ने कहा था फाड़ा और मार डाला है । फिर वह अपने बेटों से यह कहके बोला कि मेरे २७

राजा के घर का धन लेके चला गया और वह सब कुछ ले गया जो सोने की  
 २७ ठालें सुलेमान ने बनाई थीं वह सब ले गया । और रहबिआम राजा ने उन की  
 सन्ती पीतल की ठालें बनाई और प्रधान दौड़हों को जो राजा के भवन के द्वार  
 २८ की रक्षा करते थे दिया । और ऐसा हुआ कि जब राजा परमेश्वर के मंदिर में  
 जाता था तब पहरे उन्हें उठा लेते थे फिर उन्हें लाके पहरे की कोठरी में रख  
 छोड़ते थे ॥

२९ अब रहबिआम की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया था क्या  
 ३० यहूदाह के राजावली के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा । और रहबिआम  
 ३१ में और यरुबिआम में जीवन भर सर्वदा युद्ध रहा । और रहबिआम ने अपने  
 पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में अपने पितरों के साथ गाड़ा गया  
 और उस की माता का नाम नअमः जो अम्मूनी थी और उस के बेटे अबियाम  
 ने उस की सन्ती राज्य किया ॥

#### पंदरहवां पर्व ।

१ और नवात के बेटे यरुबिआम के राज्य के अठारहवें वरस अबियाम ने यहूदाह  
 २ पर राज्य किया । उस ने यरुसलम में तीन वरस राज्य किया और उस की माता  
 ३ का नाम मअकः था जो अबिसलुम की बेटा थी । और जैसा उस के पिता ने  
 उस्से पहिले पाप किया वैसे उस ने भी किये और उस का मन परमेश्वर अपने  
 ४ ईश्वर की ओर सिद्ध न था जैसा कि उस के पिता दाऊद का था । तथापि  
 दाऊद के कारण उस के ईश्वर परमेश्वर ने उसे यरुसलम में एक दीपक दिया  
 कि उस के बेटे को उस के पीछे बैठावे और जिरुतें यरुसलम को स्थिर करे ।  
 ५ इस कारण कि दाऊद ने वही कार्य किया जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक था और  
 अपने जीवन भर केवल ऊरियाह हित्ती की वार्त को छोड़ और किसी आज्ञा से  
 ६ न सुड़ा । और रहबिआम और यरुबिआम के मध्य में जीवन भर युद्ध रहा ॥

७ अब अबियाम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया था सो क्या यहू-  
 ८ दाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है । और  
 अबियाम और यरुबिआम में लड़ाई थी तब अबियाम ने अपने पितरों में शयन  
 किया और उन्होंने ने उसे दाऊद के नगर में गाड़ा और उस का बेटा असा उस  
 की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

९ और इसराएल के राजा यरुबिआम के राज्य के बीसवें वरस असा यहूदाह  
 १० पर राज्य करने लगा । और उस ने यरुसलम में एकतालीस वरस राज्य किया  
 ११ और उस की माता का नाम मअकः था जो अबिसलुम की बेटा थी । और असा  
 १२ ने अपने पिता दाऊद की नाईं परमेश्वर की दृष्टि में ठीक किया । और उस ने  
 गांधुओं को देश से दूर किया और उन मूर्तिन को जिन्हें उस के पितरों ने बनाया  
 १३ था निकाल फेंका । और उस ने अपनी माता मअकः को भी रानी होने के पद  
 से अलग किया क्योंकि उस ने कुंज में एक मूर्ति बनाई थी और असा ने उस की  
 १४ मूर्ति को ठा दिया और कंदरून के नाले के तीर जला दिया । परन्तु ऊंचे स्थान  
 अलग न किये गये तथापि उस का मन जीवन भर परमेश्वर के आगे सिद्ध था ।

बनाया और मुझे अपने पीछे टाल दिया है । इस लिये देख मैं यरुविशाम के १० घराने पर खुराई लाऊंगा और यरुविशाम के हर एक को जो भीत पर मूत्ता है और इसराएल में बन्द हैं और बचा है नष्ट कदंगा और उन को जो यरुविशाम के घर में बच रहेंगे या मिटा डालेंगा जैसा कोई जन कूड़े को पटां लों ने जाता है कि सब जाता रहे । यरुविशाम का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खावेंगे और जो चौगान ११ में मरेगा उसे आकाश के पक्षी खावेंगे क्योंकि परमेश्वर ने यां कहा है । सो तू १२ उठके अपने ही घर जा और नगर में तेरे पांव पहुंचते ही बट लड़का मर जावेगा । और उस के लिये सारे इसराएल विलाप करेंगे और उसे गाहेंगे क्योंकि १३ यरुविशाम की ममाधि में केवल वही पहुंचेगा इस कारण कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर को और यरुविशाम के घराने में से उसमें भलाई पाई गई । और परमेश्वर १४ इसराएल पर एक राजा खड़ा करेगा जो उसी दिन यरुविशाम के घराने को नष्ट करेगा और क्या हां अभी नहीं । और परमेश्वर इसराएलियों को मारेगा जिस १५ रीति से जल में मंठा हिलता है और इसराएल को हम अच्छी भूमि से जो उस ने उन के पितरों को दिई है उखाड़ फेंकेगा और उन्हें नदी के पार लों विधरावेगा इस कारण कि उन्होंने अपना अपना कुंज बनाके परमेश्वर को विजाके रिसियाया । और वह यरुविशाम के पाप के कारण इसराएल को दूर करेगा १६ क्योंकि उस ने पाप किया और इसराएल से पाप करवाया ।

तब यरुविशाम की पत्नी उठ चली और तिरजः में आई और ज्योंही वह १७ देहली पर पहुंची त्योंही लड़का मर गया । और जैसा परमेश्वर ने अपने सेवक १८ अखियाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था उन्हें ने उसे गाढ़ा और सारे इसराएलियों ने उस के लिये विलाप किया ।

और यरुविशाम की रही हुई क्रिया जिस रीति से उस ने युद्ध किया और कि १९ जिस रीति से उस ने राज्य किया सो देखो इसराएल के राजाओं के समाचार की पुस्तक में लिखा है । और यरुविशाम ने दार्दम वरम राज्य किया तब अपने २० पितरों में से गया और उस का बेटा नदब उस की सन्ती राज्य पर बैठा ।

और सुलेमान के बेटे रहविशाम ने यहूदाह पर राज्य किया उस ने एकता- २१ लीम वरम की अवस्था में राज्य करना आरंभ किया और यहसलम में अर्थात् उस नगर में जिसे परमेश्वर ने अपना नाम रखने के लिये इसराएल की समस्त गाण्डियों में से चुन लिया था मन्वह वरम राज्य किया और उस की माता का नाम नथमः जो अम्मूनी थी । और यहूदाह ने परमेश्वर की दृष्टि में खुराई किई और २२ उन्हें ने अपने पितरों के पाप से अधिक पाप करके परमेश्वर को विजाके क्रोध दिलाया । क्योंकि उन्होंने ने भी अपने लिये हर एक ऊंचे पहाड़ पर और एक एक २३ हरे पेड़ तले ऊंचा स्थान और मूर्ति और कुंज बनाया । और देश में मटूमी भी २४ थे और उन्होंने ने अन्यदेशियों के समस्त धिनित कार्यों के समान किया जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के आगे से दूर किया ।

और रहविशाम राजा के पांचवें वरम ऐसा हुआ कि मिस्र का राजा शोशाक २५ यहसलम के विरोध में चढ़ आया । और वह परमेश्वर के मंदिर का धन और २६

यरुविश्राम ने आप बहुत पाप किये थे और इसराएल से भी पाप करवाये थे और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को निपट क्रोधित किया था रिसियाके खिजाया ३१ था । और नदब की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया था क्या वह ३२ इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है । और असा और इसराएल के राजा वअशश में उन के जीवन भर लड़ाई रही ॥

३३ यहूदाह के राजा असा के राज्य के तीसरे वरस अखियाह का बेटा वअशश तिरजः में समस्त इसराएल पर राज्य करने लगा उस ने चौबीस वरस राज्य किया । ३४ और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और यरुविश्राम के मार्ग में और उस के पाप में जिस्से उस ने इसराएल से पाप करवाया चलता था ॥

सोलहवां पृष्ठ ।

१ तब वअशश के विरोध में हनानी के बेटे याहू पर परमेश्वर का वचन उतरा ।

२ जैसा कि मैं ने तुम्हें धूल में से उठाया और तुम्हें अपने लोग इसराएलियों पर अध्यक्ष किया परन्तु तू यरुविश्राम के पथ पर चला और तू ने मेरे इसराएली

३ लोगों से पाप करवाया । देख मैं वअशश के वंश को और उस के घराने के वंश को दूर करूंगा और मैं तेरे घराने को नवात के बेटे यरुविश्राम के घराने के

४ समान करूंगा । वअशश के घर का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खावेंगे और जो चौगान में मर जावेगा उसे आकाश के पक्षी खावेंगे ॥

५ और वअशश की रही हुई क्रिया और जो कुछ उस ने किया और उस की सामर्थ्य क्या वह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में ६ लिखा नहीं । सो वअशश अपने पितरों में सो गया और तिरजः में गाड़ा गया और उस के बेटे सला ने उस की सन्ती राज्य किया ॥

७ और हनानी के बेटे याहू भविष्यद्वक्ता के द्वारा से परमेश्वर का वचन वअशश के विरोध में और उस के घराने के विरोध में आया अर्थात् उस समस्त बुराई के कारण जो उस ने परमेश्वर की दृष्टि में करके अपने हाथ के कार्यों से जो यरुविश्राम के घराने की नाईं था और इस कारण कि उसे मार डाला था उसे रिस दिलाया ॥

८ यहूदाह के राजा असा के राज्य के छत्तीसवें वरस वअशश के बेटे सला ने ९ तिरजः में इसराएल पर दो वरस राज्य किया । और जब वह तिरजः में अपने

घर के प्रधान अरजा के घर में पीके मतवाला रहा था तब उस के आधे रथों १० के प्रधान उस के सेवक जिमरी ने उस के विरोध में गुप्त किई । तब जिमरी ने भीतर पैठके उसे मारा और यहूदाह के राजा असा के सत्ताईसवें वरस उसे मार डाला और उस की सन्ती राज्य किया ॥

११ और यों हुआ कि जब वह राज्य करने लगा तो सिंहासन पर बैठते ही उस ने वअशश के सारे घराने को घात किया तब उस ने उस के लिये न तो एक पुरुष १२ को जो भीत पर मूत्ता है न उस के कुटुम्ब को न मित्र को छोड़ा । यों जिमरी ने परमेश्वर की बाचा के समान जो उस ने वअशश के विषय में याहू भविष्यद्वक्ता १३ के द्वारा से कहा और वअशश के समस्त घराने को नष्ट किया । वअशश के सारे

और जो जो वस्तु उस के पिता ने समर्पण किई थी और जो जो वस्तु उस ने १५  
आप समर्पण किई थी अर्थात् रुपा और सोना और पात्र उस ने उन्हें परमेश्वर के  
मंदिर में पहुंचाया ॥

और असा में और इसराएल के राजा दशशा में उन के जीवन भर युद्ध रहा । १६  
और इसराएल का राजा दशशा यहूदाह के विरोध में चढ़ गया और रामः को १७  
बनाया जिसने यहूदाह के राजा असा पास किसी को जाने न देवे ॥

तब असा ने परमेश्वर के मंदिर के मंदार का वृक्ष हुआ रुपा और सोना और १८  
राजा के घर का धन लेकर उन्हें अपने सेवकों के हाथ में सौंपा और असा राजा  
ने उन्हें अराम हजयून के बेटे तवरिम्मून के बेटे यिनहदद पास जो दमिष्क में  
रहता था यह कहके भेजा । कि मेरे और तेरे मध्य में और मेरे व्याप के और तेरे १९  
व्याप के बीच मेल है देख मैं ने तेरे लिये रुपा और सोना भेंट भेजी सो आइये  
और इसराएल के राजा दशशा से मेल तोड़िये जिसने यह मेरी और से चढ़  
जावे ॥

तब यिनहदद ने असा राजा की बात मानके अपने सेनापतिन को इसराएल २०  
के नगरों के विरोध में भेजा और सैयून और दान को और अखिल दंतमयकः को  
और समस्त किन्नारात को नफंताली के समस्त देश सहित मारा । और ऐसा हुआ २१  
कि जब दशशा ने सुना तब रामः का बनाना छोड़के तिरजः में जा रहा ॥

तब असा राजा ने सारे यहूदाह में प्रचार और कोई न रहा सो वे रामः के २२  
प्रत्यरों को और उस के लट्टों को जिन से दशशा ने बनाया था उठा ले गये और  
असा राजा ने यिनपमीन के जिवय को और मिसफा को उन से बनाया ॥

और असा की ममस्त उबरी हुई क्रिया और उस के ममस्त पराक्रम और सब २३  
जो उस ने किया था और उस ने जो जो नगर बनाये सो वही यहूदाह के राजाओं  
के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है तथापि उस के युद्धों में उस  
के पांच में रोग था । तब असा ने अपने पितरों में गयन किया और अपने पितरों २४  
में दाऊद के नगर में गाढ़ा गया और उस का बेटा यहूशफत उस की सन्ती  
राजा हुआ ॥

और यहूदाह के राजा असा के राज्य के दूसरे दरस यरुशियाम का बेटा नदव २५  
इसराएल के संतान का राजा हुआ और उस ने इसराएल पर दो दरस राज्य  
किया । और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में दुराई किई और अपने पिता के मार्ग २६  
में और उस के पाप में जिस्से उस ने इसराएल से पाप करवाया चला ॥

तब दशकार के घराने में से अखियाह के बेटे दशशा ने उस के विरोध में २७  
गुप्त बांधी और फिलिस्तिनों के जिवतून में उसे घात किया क्योंकि नदव और  
सारे इसराएल ने जिवतून को घेरा था । अर्थात् यहूदाह के राजा असा के तीसरे २८  
दरस दशशा ने उसे घात करके उस की सन्ती राज्य किया । और ऐसा हुआ कि २९  
उस ने राज्य पर स्थिर होके यरुशियाम के सारे घराने को बध किया और उस  
ने यरुशियाम के लिये एक स्थासधारी को न छोड़ा जब लो उसे नाश न कर डाला  
जैसा कि परमेश्वर ने अपने सेवक अखियाह शैलूनी के द्वारा से कहा था । क्योंकि ३०



३१ से जो उसे आगे थे परमेश्वर की दृष्टि में अधिक बुराई किई । और यों हुआ कि उस ने इतने पर वस न किया कि नवात के बेटे यरुवियाम के से पाप करता था परन्तु वह सैदानियों के राजा इतवअल की बेटी ईजविल को व्याह लाया ३२ और जाके वअल को पूजा और उस के आगे दण्डवत किई । और वअल के ३३ मंदिर में जो उस ने समरुन में बनाया था वअल के लिये एक बेदी बनाई । और अखिवअव ने कुंज बनाया और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का उन सब इसराएली राजाओं से जो उसे आगे थे अधिक रिम उभाड़ा ॥

३४ उस के दिनों में हैरल वैतएली ने यरीहो को बनाया उस ने उस की नैव अपने पहिलौठे अविराम पर डाली और उस के फाटक अपने लहुरे मगूव पर खड़े किये जैसा कि परमेश्वर ने नून के बेटे यहूशूअ के द्वारा से वचन दिया था ॥

सत्रहवां पर्व ।

१ तब जिलियाह के दासियों में से इलियाह तिसवी ने अखिवअव से कहा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के जीवन में जिस के आगे मैं खड़ा हूँ कई एक वरस लों न ओस पड़ेगी न मेह बरसेगा परन्तु जब मैं कटूंगा ॥

२ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन उस पर उतरा । कि यहाँ से चलके पूरव की ओर जा और करीथ की नाली के पास जो यरदन के आगे है आप को ३ छिपा । और ऐसा होगा कि तू उस नाली से पीजियो और मैं ने जंगली कौव्यों ४ को आज्ञा किई है कि वे तुझे वहाँ ग्विलावें । सो उस ने जाके परमेश्वर के ५ वचन के समान किया और यरदन के आगे करीथ नाली के पास जा रहा । और सांभ बिहान कौव्ये उस पास रोटी और मांस लाया करते थे और वह उस नाली ६ से पीता था । और कुछ दिन के पीछे ऐसा हुआ कि देश में मंह न बरसने के कारण से नाली का जल सूख गया ॥

७ तब परमेश्वर का वचन यह कहके उस पर उतरा । कि उठके सैदानियों के सरफत को चला जा और वहाँ रह देख मैं ने तेरे प्रतिपाल के लिये एक रांड को ८ आज्ञा किई है । सो वह उठके सरफत को गया और जब वह नगर के फाटक पर पहुँचा तो क्या देखता है कि एक बिधवा वहाँ लकड़ियां बटोर रही थी और उस ने उसे पुकारके कहा कि कृपा करके मुझे एक घूंट पानी किसी पात्र में ९ लाइये कि पीऊँ । और जब वह लाने चली तो इतने में वह उसे पुकारके बोला कि मैं बिनती करता हूँ कि अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी मेरे लिये लेती १० आइयो । तब उस ने उसे कहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के जीवन में मेरे पास एक भी फुलका नहीं परन्तु केवल मुट्ठी भर पिसान एक मटके में है और पात्र में थोड़ा तेल और देखिये कि मैं दो लकड़ियां बटोर रही हूँ जिसमें घर जाके अपने और अपने बेटे के लिये पोऊँ और सिद्ध करूँ कि हम खावें और मर जावें । ११ तब इलियाह ने उसे कहा कि मत डर जा अपने कहने के समान कर परन्तु पहिले मेरे लिये उसे एक लिट्टी बना और मुझ पास ला और पीछे अपने और १२ अपने बेटे के लिये पोइयो । क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि परमेश्वर पृथिवी पर जब लों मंह न बरसावे मटके में का पिसान न घटेगा

पापों के कारण और उस के बेटे एला के पापों के कारण जो उन्होंने ने किये और जिन से उन्होंने ने इसराएल से पाप करवाये यों अपनी मूर्खता से परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को रिस दिलाया ॥

अब एला की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया था सो क्या १४ वह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा ॥

यहूदाह के राजा असा के सत्ताईसवें वरस जिमरी ने तिरजः में सात दिन १५ राज्य किया और लोगों ने फिलिस्तियों के जियतून के विरोध में छावनी किई । और जब छावनी के लोगों ने मुना कि जिमरी ने गुप्त करके राजा को भी वधन १६ किया है इस लिये समस्त इसराएल ने सेनापति उमरी को छावनी में उम्मी दिन इसराएल पर राजा किया । और उमरी ने सारे इसराएल समेत जियतून से चढ़के १७ तिरजः को घेरा । और यों हुआ कि जब जिमरी ने देखा कि नगर लिया गया १८ तो वह राजा के भवन में गया और अपने ऊपर राजा के भवन में आग लगाके जल मरा । उस के पापों के कारण जो उस ने यरुशियाम के मार्ग पर चलने में १९ और अपने पाप में जो उस ने इसराएल से पाप करवाके किया था परमेश्वर की दृष्टि में घुराई किई ॥

और जिमरी की रही हुई क्रिया और उस का छल जो उस ने किया था वह २० इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा ॥

उस के पीछे इसराएल लोग दो भाग हुए आधे लोग गिनान के बेटे तिबनी २१ को राजा करने को उस की और और आधे लोग उमरी के पीछे हुए । परन्तु जो २२ लोग उमरी के पीछे हुए थे उन लोगों ने गिनान के बेटे तिबनी की और के लोगों को जीता और तिबनी मारा गया और उमरी ने राज्य किया ॥

यहूदाह के राजा असा के राज्य के एकतीसवें वरस उमरी इसराएल पर २३ राज्य करने लगा उस ने वारह वरस राज्य किया तिरजः में कः वरस राज्य किया । तब उस ने दो तोड़ा चांदी पर समरन का पहाड़ समर से नाल लेंके उस पहाड़ २४ पर एक नगर बसाया और उस नगर का नाम जो उस ने बनाया था समरन रक्खा जो समर के पहाड़ का स्त्रामी था । परन्तु उमरी ने परमेश्वर की दृष्टि २५ में घुराई किई और उन सब से जो उम्मे आगे थे अधिक घुराई किई । क्योंकि वह २६ नवात के बेटे यरुशियाम के सारे मार्ग में और उस के पापों में चलता था जिन से उस ने इसराएल से पाप करवाके परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को अपनी मूर्खता से रिस दिलाया ॥

अब उमरी की रही हुई क्रिया और उस का पराक्रम जो उस ने दिखाया सो २७ क्या वह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा । और उमरी अपने पितरों में सो गया और समरन में गाड़ा गया और उस के बेटे २८ अखियव ने उस की सन्ती राज्य किया ॥

और यहूदाह के राजा असा के राज्य के अठतीसवें वरस उमरी का बेटा अखि- २९ अब इसराएल पर राज्य करने लगा और उमरी के बेटे अखियव ने चाईस वरस समरन में इसराएल पर राज्य किया । और उमरी के बेटे अखियव ने उन सब ३०

१ और वह बोला कि मैं ने क्या अपराध किया है जो तू अपने दाम को बध करने  
 १० के लिये अखिअव को दाय मौपा खाता है । परमेश्वर तेरे ईश्वर के जीवन से  
 ११ कोई जाति अथवा राज्य नहीं है जहाँ मेरे प्रभु ने तेरी खाज के लिये न भेजा  
 हो और जब उन्होंने ने कहा कि वह नहीं है तब उस ने राज्य को और जाति  
 १२ की किरिया लिई कि हम ने उसे नहीं पाया । और अब तू कहता है कि जाके  
 १३ अपने प्रभु से कह कि देख इलियाह है । और जब मैं तेरे पास से चला जाऊंगा  
 तब ऐसा होगा कि परमेश्वर का आत्मा तुम्हें क्या जाने कहाँ ले जावेगा और  
 १४ जब मैं जाके अखिअव से कहूंगा और वह तुम्हें न पा सके तब मुझे बधन करे  
 १५ परन्तु मैं तेरा सेवक अपनी लड़कई से परमेश्वर से डरता हूँ । दया मेरे प्रभु से  
 १६ नहीं कहा गया कि जब ईजयिल ने परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता को मार डाला  
 तब मैं ने दया किया कि परमेश्वर के सौ भविष्यद्वक्ता को लेके पचास पचास करके  
 १७ एक खोद में छिपाया और उन्हें अन्न जल से पाला । और अब तू कहता है कि  
 १८ जाके अपने प्रभु को जनाय कि देख इलियाह है और वह मुझे बधन करेगा ।  
 १९ तब इलियाह ने कहा कि सेनाओं के परमेश्वर के जीवन से जिस के आगे मैं  
 २० खड़ा रहता हूँ मैं अवश्य आज उस पर अपने को दिखाऊंगा ॥

२१ सो अखदियाह अखिअव से भेंट करने को गया और उसे कहा और अखिअव  
 २२ इलियाह की भेंट को गया । और ऐसा हुआ कि जब अखिअव ने इलियाह को  
 २३ देखा तो अखिअव ने उसे कहा कि क्या तू वही है जो इसराएलियों को सताता  
 २४ है । और उस ने उत्तर दिया कि मैं ने नहीं परन्तु तू ने और तेरे पिता के घराने  
 ने इस बात में इसराएलियों को सताया है कि तुम ने परमेश्वर की आज्ञाओं को  
 २५ छोड़के बअलीम का पीछा पकड़ा है । इस लिये अब भेज और सारे इसरा-  
 २६ एल को करमिल पहाड़ पर मेरे लिये एकट्ठा कर और बअल के साठे चार सौ  
 भविष्यद्वक्ता को और कुंजों के चार सौ भविष्यद्वक्ता को जो ईजयिल के मंच पर  
 २७ भोजन करते हैं । सो अखिअव ने इसराएल के समस्त संतान के पास भेजा और  
 भविष्यद्वक्ता को करमिल पहाड़ पर एकट्ठा किया ॥

२८ तब इलियाह ने सारे लोगों के पास जाके कहा कि कब लों अधर में पड़े  
 २९ रहोगे यदि परमेश्वर ईश्वर है तो उसे गहो परन्तु यदि बअल तो उसे गहो पर  
 ३० लोगों ने उसे तनिक उत्तर न दिया । तब इलियाह ने लोगों से कहा कि परमेश्वर  
 के भविष्यद्वक्ता में से मैं ही अकेला बचा हूँ परन्तु बअल के भविष्यद्वक्ता साठे  
 ३१ चार सौ जन हैं । सो वे अब हमें दो बैल देवें और अपने लिये एक बैल चुनें  
 और उसे टुकड़ा टुकड़ा करें और लकड़ी पर धरें परन्तु आग न लगावें और दूसरा  
 ३२ बैल मैं सिद्ध करूंगा और उसे लकड़ी पर धरूंगा परन्तु आग न लगाऊंगा । और  
 तुम अपने देवों के नाम से प्रार्थना करो और मैं परमेश्वर के नाम से प्रार्थना  
 करूंगा और जो ईश्वर आग के द्वारा से उत्तर देगा वही ईश्वर होवे तब सब  
 लोगों ने उत्तर देके कहा कि यह अच्छी बात है ॥

३३ और इलियाह ने बअल के भविष्यद्वक्ता से कहा कि तुम अपने लिये एक बैल  
 चुनके पहिले उसे सिद्ध करो क्योंकि तुम बहुत हो और अपने देवों के नाम से

और पात्र में का तेल न चुकेगा । और उन ने जाके इलियाह के कहने के समान १५  
किया और आप और वह और उस का घगना बहुत दिन लो खाते रहे ।  
परमेश्वर के वचन के समान जो उस ने इलियाह के द्वारा से कहा था मटके का १६  
पिमान और पात्र का तेल न छटा ॥

और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि घर की स्वामिनी का घेठा रोगी १७  
हुआ और उस का रोग ऐसा बढ़ा कि उस में प्राण न रहा । तब उस स्त्री ने १८  
इलियाह से कहा कि हे ईश्वर के जन तुझ से मुझ से क्या प्रयोजन तू मेरे पाप  
स्मरण कराने को और मेरे घेठे को नाश करने को आया है । और उस ने उसने १९  
कहा कि अपना घेठा मुझे दे और वह उस की गोद में लगे उसे कोठे पर जहाँ  
वह रहता था चढ़ा ले गया और उसे अपने बिछाने पर लेटाया । और उस ने २०  
परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि हे परमेश्वर मेरे ईश्वर क्या तू ने उस राड़  
पर भी त्रिपति भेजी जिस के यहाँ से उतरा हूँ कि उस के घेठे को नाश करे ।  
तब उस ने आप को तीन बार उस घालक पर फैलाया और परमेश्वर से प्रार्थना २१  
करके कहा कि हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं घिनती करता हूँ कि इस घालक का  
प्राण इस में फिर आवे । तब परमेश्वर ने इलियाह की प्रार्थना सुनी और घालक २२  
का प्राण उस में फिर आया और वह जी उठा । तब इलियाह उस घालक को २३  
उठाके कोठरी में से घर के भीतर ले गया और उसे उस की माता को सौंप  
दिया और इलियाह ने कहा कि देख तेरा घेठा जीता है । तब उस स्त्री ने एलि- २४  
याह से कहा कि अब इसमें मैं जानती हूँ कि तू ईश्वर का जन है और तेरे मुंह  
से परमेश्वर का वचन सत्य है ॥

अठारहवां पर्व ।

और बहुत दिन के पीछे ऐसा हुआ कि तीसरे घर परमेश्वर का वचन एलि- १  
याह पर उतरा कि आप को अग्निश्रव पर प्रसन्न कर और मैं देश में सेंट वरमा-  
जंगा । और जब इलियाह अपने तट अग्निश्रव को दिखाने गया तब समस्त में २  
बड़ा अकाल था ॥

तब अग्निश्रव ने अपने घर के अध्यक्ष अवदियाह को बुलाया अब अवदियाह ३  
ईश्वर से बहुत डरता था । क्योंकि यों हुआ कि जब ईजिप्तिन ने ईश्वर के ४  
भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला तो अवदियाह ने भी भविष्यद्वक्ताओं को लगे प्रचार  
पचास करके एक खोह में बिपाया और उन्हें अन्न जल से घाला । और अग्निश्रव ५  
ने अवदियाह से कहा कि देश में फिर और समस्त जन के साताशों और नालों  
में जा क्या जाने कि छोटे और बड़े के जाते रखने के लिये घास मिल जाये  
न हो कि पशु चरम से नष्ट होयें । सो उन्होंने ने आपुन में देश का विभाग किया ६  
कि आरंभार जायें अग्निश्रव आप एक और गया और अवदियाह आप दूसरी  
और ॥

और ज्यों अवदियाह मार्ग में था तो देखो इलियाह उसे मिला और उस ने ७  
उसे पहिचाना और आँधा मारा और बोला कि आप मेरे प्रभु इलियाह हैं । और ८  
उस ने उसे उत्तर दिया कि मैं ही हूँ जा अपने प्रभु से कह कि इलियाह है ।

४३ के बीच में किया । और उस ने अपने सेवक को कहा कि अथ चढ़ जा समुद्र की  
 और देख और उस ने जाके देखा और कहा कि कुछ नहीं तब उस ने कहा कि  
 ४४ फेर सात घेर जा । और सातवें घेर ऐसा हुआ कि वह बोला कि देख मनुष्य के  
 हाथ की नाईं मेघ का एक छोटा सा टुकड़ा समुद्र में से उठता है तब उस ने  
 कहा कि चढ़ जा अश्विअव को कह कि सिद्ध हो और उतर जा न हो कि मैं  
 ४५ तुझे रोके । और इतने में ऐसा हुआ कि आकाश मेंधों से और पवन से अंधेरा  
 हो गया और अति धृष्टि देने लगी और अश्विअव चढ़के यज्ञरअल को गया ।  
 ४६ और परमेश्वर का हाथ इलियाह पर था और वह अपनी काटि कसके अश्विअव  
 के आगे आगे यज्ञरअल लो दौड़ गया ।

उन्नीसवां पर्व ।

१ तब जो कुछ कि इलियाह ने किया था अश्विअव ने ईजविल से कहा और  
 कि किस रीति से उस ने समस्त भविष्यद्वक्तों को तलवार से वध किया था ।  
 २ तब ईजविल ने दूत की ओर से इलियाह को कहा भेजा कि यदि मैं तेरे प्राण को  
 उन में से एक की नाईं कल इस जून लों न कहूं तो देवगण मुझ से वैसा ही और  
 ३ उस्से अधिक भं करे । और जब उस ने देखा तो वह उठा और अपने प्राण  
 के लिये गया और यहूदाह के विश्रसवथ में आया और वहां अपने सेवक को  
 छोड़ा ।

४ परन्तु आप एक दिन के मार्ग वन में पैठ गया और एक रतम वृज तले बैठा  
 और अपने प्राण के लिये मृत्यु मांगी और कहा अब हे परमेश्वर हो चुका है अब  
 ५ मेरा प्राण उठा ले क्योंकि मैं अपने पितरों से भला नहीं । और ज्यों वह रतम  
 वृज के तले लेटा और सो गया तो देखो कि एक दूत ने आके उसे छूआ और  
 ६ उस्से कहा कि उठ ख । और उस ने दृष्टि किई तो देखो कि उस के सिरहाने  
 एक फुलका कोइलों पर का पक्षा हुआ है और एक पान्न जल धरा है तब वह  
 ७ खा पीके फेर लेट गया । फिर परमेश्वर का दूत दोहराके आया और उसे छूके  
 ८ कहा कि उठ ख क्योंकि तेरी यात्रा तेरे बल से आधिक है । सो उस ने उठके  
 खाया और पीया और उसी भोजन के बल से चालीस दिन रात चलके ईश्वर के  
 पहाड़ हारिव को गया ।

९ और वहां एक खोह में टिका और देखो कि परमेश्वर का वचन उस पास  
 १० आया और उस ने उसे कहा कि हे इलियाह तू यहां क्या करता है । और वह  
 बोला कि मैं सेनाओं के ईश्वर परमेश्वर के लिये अति उवलित हुआ हूं क्योंकि  
 इसराएल के संतानों ने तेरी वाचा को त्यागा तेरी वेदियों को टा दिया और तेरे  
 भविष्यद्वक्तों को तलवार से घात किया है और मैं ही केवल मैं ही धरा और  
 ११ वे मेरे प्राण को भी लेने चाहते हैं । और उस ने कहा कि बाहर निकल और  
 , पहाड़ पर परमेश्वर के आगे खड़ा हो और देख वहां परमेश्वर जा निकलता  
 है और परमेश्वर के आगे एक बड़ी और प्रचंड पवन पर्वतों को तड़काती है और  
 चटानों को टुकड़ा टुकड़ा करती है परन्तु परमेश्वर पवन में नहीं और पवन के  
 १२ पीछे भुइंडोल आया और परमेश्वर भुइंडोल में नहीं । और भुइंडोल के पीछे

प्रार्थना करो परन्तु उस में आग मत लगाओ । तब उन्हीं ने एक बैल को जो २६  
उन्हीं दिया गया लिया और उसे मिट्ट किया और विधान से दो पहर लीं यह  
कहके ब्रह्मल के नाम से प्रार्थना किई कि हे ब्रह्मल तमें उत्तर दे परन्तु न कुछ  
शब्द हुआ न किसी ने सुना और वे उप धनाई हुई घेदी पर कूद पड़े । और २७  
ऐसा हुआ कि दो पहर को इलियाह ने उन्हीं चिड़ाके कहा और बोला कि चिड़ाके  
पुकारो क्योंकि यह देव है क्योंकि यह किसी से बातें कर रहा है अथवा कहीं  
गया है अथवा किसी यात्रा में है क्या जाने यह मेना है और उसे जगाना अवश्य  
है । तब वे बड़े शब्द से चिल्लाये और अपने छव्यहार के समान आप को कुरियों २८  
और गौदियों से यहां लीं गोदा कि वे लंगूर लुटान दें गये । और ऐसा हुआ २९  
कि दो पहर ठल गया और अलिदान चढ़ाने के समय लीं भविष्य कहते रहे परन्तु  
न कुछ शब्द हुआ न कोई उत्तर देवैया न धुम्कैया टहरा ।

तब इलियाह ने सारे लोगों से कहा कि मेरे पास आओ और सारे लोग उस ३०  
के पास गये तब उस ने परमेश्वर की ढाई हुई घेदी को सुधारा । और यज्जय ३१  
के संतान की गोष्ठियों के समान जिन के पास यह कहके परमेश्वर का वचन  
आया था कि तेरा नाम इसराएल होगा इलियाह ने बारह पत्थर लिये । और ३२  
उन पत्थरों से उस ने परमेश्वर के नाम के लिये एक घेदी धनाई और घेदी के  
आसपास उस ने ऐसी बड़ी ग्राहें गोदी जिस में दो नपुण दील आमात्र । और ३३  
लकड़ियों को चुना और बैल को काटके टुकड़ा टुकड़ा किया और लकड़ियों पर  
धरा । और कहा कि चार पीपा पानी से भर देओ और उस बलिदान की भेंट ३४  
पर और लकड़ियों पर उंढेला और उस ने कहा कि दूसरी धर उंढेला तब उन्हीं  
ने दूसरी धर उंढेला फिर उस ने कहा कि तीसरी धर उंढेला और उन्हीं ने तीसरी  
धर उंढेला । और पानी घेदी को चारों ओर यथा और ग्राहें को भी पानी से ३५  
भर दिया । और भेंट चढ़ाने के समय ऐसा हुआ कि इलियाह भविष्यद्वक्ता ने पास ३६  
आके कहा कि हे परमेश्वर अधिरास हलटाक और इसराएल के ईश्वर बाल  
जाना जावे कि इसराएल में तू ही ईश्वर है और कि मैं तेरा मेवक हूं और मैं  
ने तेरे वचन से यह सब बातें किई हूं । हे परमेश्वर मेरी मुन मेरी मुन बिलतें ये ३७  
लोग जानें कि तू ही परमेश्वर ईश्वर है और उन के श्रंतःकरण को फेर दिया  
है । तब परमेश्वर की आग उतरा और अलिदान की भेंट को और लकड़ों को ३८  
और पत्थरों को और धूल को भस्म किया और ग्राहें के जल को चाट लिया ।

और जब सारे लोगों ने यह देखा तब वे श्रीधरे मुंह सिरे और बोले कि पर- ३९  
मेश्वर यही ईश्वर है परमेश्वर यही ईश्वर है । तब इलियाह ने उन्हीं कहा कि ४०  
ब्रह्मल के भविष्यद्वक्ता को पकड़ो उन में से एक भी न बचे सो उन्हीं ने उन्हीं  
पकड़ा और इलियाह उन्हीं कीमून की नाली पर उतार लाया और यहां उन्हीं  
वधन किया ।

तब इलियाह ने अखिश्रव को कहा कि चढ़ जा ग्या और पी क्योंकि मेह का ४१  
बड़ा शब्द है । सो अखिश्रव खाने पीने को उठ गया और इलियाह करमिल की ४२  
घोटी पर चढ़ गया और आप को भूमि पर भुकाया और अपना मुंह दोनों घुटनों



इसराएल के राजा ने देश के समस्त प्राचीनों को बुलाके कहा कि चीन्ह रखो और देखो कि वह कौन विरोध ठूंकता है क्योंकि उस ने मेरी पवित्रां और मेरे बालकों के और मेरे रूपा और मेरे सोना के लिये लोगों को भेजा और मैं ने उसे न रोका । तब सारे प्राचीन और सारे लोगों ने उसे कहा कि मर सुनियो और मत मानियो । इस लिये उस ने विनहदद को दूतों से कहा कि मेरे प्रभु राजा से कहो कि जो तू ने पहिले अपने सेवक को कहला भेजा सो मर मैं फटंगा परन्तु यह कार्य मैं न कर सकूंगा तब दूतों ने चाकें मंदेश दिया ।

१० तब विनहदद ने उस पास यह कहला भेजा कि देखगण सुन से ऐसा ही कर और उस्से अधिक यदि समरन की धूल सारे लोगों के लिये जो मेरे तरफ पर हैं मुट्टी भर भर दोवे । फिर इसराएल के राजा ने उत्तर देके कहा कि तुम कहो कि जो जन काटि कसता है सो उस के समान जो काटि खोलता है गर्व न करे । और यों हुआ कि जब वह राजाओं के साथ तंघुओं में पी रहा था उस ने यह खबर सुना तो अपने सेवकों को कहा कि लैस दो रदो और वे नगर के विरुद्ध लैस हो रहे ।

१३ और देखो कि इसराएल के राजा अखिअव पास एक भविष्यद्वक्ता ने आके कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या तू ने इस बड़ी मंडली को देखा है सो देख मैं आज सभी को तेरे हाथ में मीपूंगा और तू जानेगा कि मैं ही परमेश्वर हूँ । तब अखिअव ने पूछा कि किन के द्वारा से और वह बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि देश देश के अध्यक्षों के तरुणों के द्वारा से फिर उस ने पूछा कि संग्राम में कौन पांती बंधावे और उस ने उत्तर दिया कि तू ।

१५ तब उस ने देशों के अध्यक्षों के तरुणों को गिना और वे दो सौ बत्तीस जन हुए फिर उस ने इसराएल के समस्त नंतान को भी गिना और वे सात सहस्र जन हुए । और वे सब दो पहर को निकले परन्तु विनहदद और बत्तीस राजा जो उस के सहायक थे तंघुओं में पी पीके मतवाले होते थे । तब देशों के अध्यक्षों के तरुण पहिले निकले और विनहदद ने भेजा और वे कहके उसे बोले कि समरन से लोग निकल आये हैं । तब वह बोला कि यदि वे मिलाप के लिये निकले हैं तो उन्हें जीता पकड़ो अथवा यदि युद्ध के लिये निकले हैं तो उन्हें जीता पकड़ो । तब देशों के अध्यक्षों के तरुण लोग नगर से निकले और सेना उन के पीछे पीछे । और उन में से हर एक ने एक एक को घात किया और अरामी भागे और इसराएलियों ने उन्हें खेदा और अराम का राजा विनहदद घोड़े पर घोड़चढ़ों के साथ भागके बचा । और इसराएल के राजा ने निकलके घोड़ों और रथों को मार लिया और अरामियों को घनाके मारा । तब उस भविष्यद्वक्ता ने इसराएल के राजा के पास आके उसे कहा कि तू फिर जा आप को दृढ़ कर और चीन्ह रख जो किया चाहता है सो देख क्योंकि अराम का राजा पीछे तेरे विरोध में चढ़ आवेगा ॥

२३ तब अराम के राजा के सेवकों ने उसे कहा कि उन को देख पहाड़ों के देव हैं इस लिये वे हम से बलवान हुए परन्तु आओ हम चौगान में उन से युद्ध करें

एक आग परन्तु परमेश्वर आग से नहीं और आग के पीछे एक किंचित शब्द ।  
 और ऐसा हुआ कि जब इलियाह ने सुना तो उस ने अपना मुँह अपने ओठों से १३  
 टाँप लिया और बाहर निकलके दान्दला की पैंठ पर खड़ा हुआ और देखो कि  
 यह कहके उस पास एक शब्द आया कि इलियाह तू यहाँ क्या करता है । और १४  
 यह बोला कि मुझे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के लिये बड़ा उद्योग हुआ है  
 क्योंकि इसराएल के नेताओं ने तेरी आज्ञा को त्यागा तेरी आज्ञाओं काटें और तेरे  
 भविष्यद्वक्ताओं को तलवार से घात किया और एक में दो ओकेना जाता यज्ञा से  
 वे तेरे भी प्राण को लेने चाहते हैं । तब परमेश्वर ने उसे कहा कि दानिअल के १५  
 अरण्य की ओर फिर जा और पहुँचते ही आगम पर राज्याभिषेक  
 कर । और निमगी के बेटे याहू को इसराएल पर राज्याभिषेक कर और अबील- १६  
 मद्दल; सफन के बेटे इलीशय को अभिषेक कर कि तेरी सन्ती भविष्यद्वक्ता होवे ।  
 और ऐसा होगा कि जो राजाएल की तलवार से बच निकलेगा उसे याहू मार १७  
 डालेगा और जो याहू की तलवार से बच रहेगा उसे इलीशय घात करेगा ।  
 तथापि इसराएल में मैं ने मात्र मद्दल जन बचा रख्ये हैं जिन के छुटने बचन के १८  
 आगे नहीं मुझे और हर एक मुँह जिन् ने उसे नहीं धूमा ।

तो उस ने वहाँ से चलके सफन के बेटे इलीशय को पाया जो अपने आगे १९  
 चारह जोड़े बैल के चल में जाता था और चारघरें घोड़ों के संग साथ जा और  
 इलियाह ने उस के पास से जाते जाते अपना ओठना उन पर टान दिया । तब २०  
 उस ने बैलों को छोड़के इलियाह के पीछे दौड़के कहा कि तू तेरी चित्तों करता  
 हूँ मुझे छुट्टी दीजिये कि अपने माना पिता को घूम और तेरे पीछे हो लेजंगा  
 और उस ने उसे कहा कि फिर जा क्योंकि मैं ने तुम्हें आ किया है । तब वह २१  
 उस पास से फिर गया और उस ने एक जोड़ी बैल लेकर उन्हें चयन किया और  
 हल की लकड़ियों से उन के मांस को उमिना और लोहों को दिया और उन्होंने  
 ने खाया तब वह उठा और इलियाह के पीछे हो लिया और उस की सेवा किई २  
 बागवां पर्व ।

तब अराम के राजा बिनहदद ने अपनी समस्त सेना को एकट्ठी किया और १  
 उस के साथ घतीस राजा और घाटे और ग्य घे और उस ने जाके समदन को  
 घेर लिया और उसे लड़ाई किई । और उस ने इसराएल के राजा अन्धिय के २  
 पास नगर से दूतों को भेजके कहा कि बिनहदद यों कहता है । कि तेरा बन्दा ३  
 और तेरा सेना मेरा है और तेरा सुंदर सुंदर पक्षियाँ और तेरे दानक भी तेरे हैं ।  
 तब इसराएल के राजा ने उत्तर देके कहा कि मेरे प्रभु राजा तेरे यजन के समान ४  
 मैं और मेरा सब कुछ तेरा है ।

और दूतों ने फिर आके कहा कि बिनहदद यों कहता है कि तथापि मैं ने तेरे ५  
 पास यह कहला भेजा है कि अपना रुपा और मोना और अपनी पक्षियाँ और अपने  
 दान बड़े मुझे सौंपना । तथापि मैं कल इस जून अपने सेवकों को तुम्हें पास ६  
 भेजूंगा और वे तेरे घर और तेरे सेवकों की घरों को खोजंगे और ऐसा होगा कि  
 जो कुछ तेरी दृष्टि में मनभावना होगा वे अपने हाथ में करके ले आवेंगे । तब ७

तुम्हें नार नेशा और ज्योंहीं द्युत उम के पास में घिटा हुआ ल्योंहीं उम एक मिट्ट  
 ३७ ने पाया और उम ने नार डाला । तब उम ने एक दूसरे को बुलाके कहा कि मैं  
 तेरी विनती करता हूँ मुझे नार तब उस मनुष्य ने उसे नारा और नारके घोवन  
 ३८ दिया । तब वह भविष्यद्वक्ता चला गया और मार्ग में राजा की दाट सोहने  
 ३९ लगा और अपने मुँह पर राख मलके अपना भेष बदला । और राजा के उधर  
 जाते जाते उम ने राजा को पुकारा और कहा कि तेरा सचक संग्राम के मध्य  
 में गया था और देखिये एक जन फिर और तुम्हें पास एक जन यह कहके लाया  
 कि इस की चाकरी कर यदि किसी रीति में यह पाया न जायेगा तो हम के  
 ४० प्राण की मंती तेरा प्राण जायेगा और नहीं तो तू एक तोड़ा लाई देगा । और  
 जिस समय तेरा सचक उधर उधर और काम में निगू था तब वह जाना रहा  
 तब इसराएल के राजा ने उसे कहा कि तेरा यही विचार है तू ही ने चुनाया  
 ४१ है । और उम ने फुरती करके अपने मुँह की राख पोंछी तब इसराएल के राजा  
 ४२ ने उसे पहिचाना कि वह भविष्यद्वक्ता में से है । तब उम ने उसे कहा कि परमेश्वर  
 यों कहता है हम निषे कि तू ने उस जन की अपने हाथ से जाने दिया  
 जिसे मैं ने सर्वथा नाश के लिये डहाया था इस कारण उस के प्राण की मंती  
 ४३ तेरा प्राण और उस के लोगों की मंती तेरे नेगा । तब इसराएल का राजा  
 उदाम और भारी मन होके अपने घर को गया और समस्त में आया ।

दूसरी मंत्रा पर्व ।

१ और उन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि नवात यजरअएली की एक दाख की  
 २ वारी समस्त के राजा अखिशय के भयन में लगी हुई यजरअएल में थी । और  
 अखिशय ने नवात से कहा कि अपनी दाख की वारी मुझे दे कि उसे तरकारी  
 की वारी बनाऊँ क्योंकि वह मेरे भयन के लग है और मैं उस की मंती तुम्हें  
 ३ तुम्हें उस का दाम देऊँगा । और नवात ने अखिशय से कहा कि परमेश्वर  
 ऐसा न करे कि मैं अपने पितरों का अधिकार तुम्हें देऊँ ।

४ तब यजरअएली नवात की दात से अखिशय उदाम और भारी मन होके  
 अपने घर में आया क्योंकि उस ने कहा था कि मैं अपने पितरों का अधिकार  
 तुम्हें न देऊँगा और अपने बिल्लैने पर पड़ा रहा और अपना मुँह फेर लिया और  
 ५ रोटी न खाई । परन्तु उस की पत्नी ईजविल ने उस पास आके कहा कि तू ऐसा  
 ६ उदास क्यों है कि रोटी नहीं खाता । तब उम ने उसे कहा इस कारण कि मैं  
 ने यजरअएली नवात से कहा था कि अपनी दाख की वारी मेरे हाथ दें और  
 नहीं तो यदि तेरा मन होवे तो मैं तुम्हें उस की मंती दाख की वारी देऊँगा  
 और उस ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हें अपनी दाख की वारी न देऊँगा ॥

७ तब उस की पत्नी ईजविल ने उसे कहा कि क्या तू इसराएलियों पर राज्य  
 काता है उठिये रोटी खाइये और मन को मगन करिये मैं तुम्हें यजरअएली नवात  
 ८ की दाख की वारी देऊँगी । तब उस ने अखिशय के नाम से पत्रियां लिखीं और  
 उस की छाप से छाप करके नवात के नगर के वासियों के अध्यक्षों और प्राचीनों

तो निश्चय हम उन पर प्रयत्न करेंगे । और तू यह काम कर कि हर एक राजा २४ को उस के स्थान से अलग कर और उन की मन्त्री सेनापतिन को खड़ा कर । और अपनी जूझी हुई सेना की नाईं एक सेना गिन ले छोड़े की मन्त्री छोड़ा २५ और रथ की मन्त्री रथ और हम चौगान में उन से संग्राम करेंगे और निश्चय उन पर प्रयत्न करेंगे तो हम ने उन का कटा माना और ऐसा ही किया ।

और ज्योंही धर्म रीति त्योंही विनदद ने अगमियों को गिना और २६ हमरायियों से युद्ध करने को अफीकः को छड़ा । और हमरायन के संतान गिने २७ हुए और मय एकट्टे थे तो उन का नामा किया और हमरायन के संतान ने उन के आगे ऐसा डेरा किया जैसा मेरा का दो कुंड दो परन्तु अगमियों से देश भर गया ।

और ईश्वर का एक जन हमरायन के राजा पास आया और उसे कहा कि २८ परमेश्वर यों कहता है हम कारण कि अगमियों ने कहा है कि परमेश्वर पहाड़ी का ईश्वर परन्तु तगाई का ईश्वर नहीं इस लिये मैं हम छड़ी संदली को तेरे हाथ में सौंपता और तुम जानाओ कि मैं परमेश्वर हूँ । तो उन्होंने ने एक दूसरे २९ के सम्मुख सात दिन लों कायनी किई और सातवें दिन गंगा हुआ कि संग्राम हुआ और हमरायन के संतान ने दिन भर में अगमियों के एक लाख पगड़त मारे । परन्तु उधरे हुए अफीकः के नगर में पड़े और यहाँ एक भौत सत्तार्थन ३० सहस्र चचे हुएों पर गिर पड़ी और विनदद भागके नगर में आया और भीतर की कोठरी में घुसा ।

और हम के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये हम ने सुना है कि हमरायन के ३१ घरानों के राजा बड़े दयान राजा हैं तो हम आजा दीजिये कि अपने कांट पर टाट लपेटें और अपने सिरों पर रस्मियां धरें और हमरायन के राजा पास जावें कदाचित्त यह तेरा प्राण बचावे । तो उन्होंने ने अपनी कांट पर टाट और अपने ३२ सिर पर रस्मियां बांधीं और हमरायन के राजा पास आके बोले कि तेरा सेवक विनदद यों कहता है कि मैं तेरी विनती करता हूँ कि मुझे जीता लेहिऐ और यह बोला कि क्या यह अथ लों जीता है यह मेरा भाई है । और ये मनुष्य ३३ जैकसी से सोच रहे थे कि यह क्या कहता है और भट उस बात को प्रकटके कहा कि हाँ तेरा भाई विनदद नय उस ने कहा कि जाओ उसे ले आओ तब विनदद उस पास निकल आया और हम ने उसे रथ पर उठा लिया । और हम ३४ ने उसे कहा कि जा जा नगर मेरे पिता ने तेरे पिता से सं लिया मैं फेर देऊंगा और जिस रीति से मेरे पिता ने समरन में सटर्क बनाई तू दमिश्क में बना तब अविश्रय बोला कि मैं तुम्हें पक्षी बाघा से बिदा करूंगा तो उस ने उससे बाघा बांधी और बिदा किया ।

और भविष्यद्वक्ता के संतानों में से एक जन ने परमेश्वर के ध्यान से अपने ३५ परेसी को कहा कि मैं तेरी विनती करता हूँ कि मुझे मार परन्तु उस जन ने उसे मारने से नाह किया । तब उस ने उसे कहा इस कारण कि तू ने परमेश्वर ३६ की आज्ञा न मानी देख ज्योंही तू मुझ पास से बिदा होगा त्योंही एक सिंह

ने असूरियों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इमराणियों के आगे से दूर किया था अति घिनित वस्तुन में मूर्तों का पीछा पकड़ा ॥

- २७ और ऐसा हुआ कि जब अग्निशत्रु ने ये बातें सुनीं तो अपने कपड़े फाड़े और अपने शरीर पर टाट रखवा और व्रत किया और टाट पहने हुए घासे घासे चलने लगा । तब परमेश्वर का वचन तिमथी जलियाट पर घट कटके उतरा ।
- २९ क्या तू देखता है कि अग्निशत्रु मेरे आगे आप को कैसा डीन करता है इस कारण कि वह आप को मेरे आगे डीन करता है मैं यह पुराण उस के दिनों में न लाजंगा परन्तु उस के घेटों के समय में उस के घराने पर घुराएँ लाजंगा ॥

घाईमथां पत्र ।

- १ और तीन वरस लों विश्राम किया कि अरामियों इमराणियों में कोई लड़ाई न हुई । और तीसरे वरस ऐसा हुआ कि यहूदाह का राजा यहूसफत इसराएल के राजा पास गया । तब इसराएल के राजा ने अपने मंत्रियों में कहा कि तुम जानते हो कि रामात जिलियद हमारे हैं और हम उसे नैन में चुपके हो रहे हैं और
- ४ इसराएल के राजा के हाथ से उसे नहीं लेने हैं । तब उस ने यहूसफत से कहा कि क्या तू मेरे साथ लड़ने को रामात जिलियद पर संग्राम के लिये चढ़ेगा और यहूसफत ने इसराएल के राजा को उत्तर दिया कि तेरी नाई में हूँ तेरे लोग मेरे लोगों की नाई तेरे घाड़े मेरे घाड़े की नाई ॥

- ५ और यहूसफत ने इसराएल के राजा से कहा कि मैं तेरी विनती करता हूँ कि आज परमेश्वर के वचन से वृत्ति । तब इसराएल के राजा ने भविष्यद्वक्ता को एकट्ठा किया जो चार सौ जन के लगभग थे और वृत्त कहा कि क्या मैं रामात जिलियद पर लड़ने चढ़ूँ अथवा अलग रहूँ और वे बोले कि चढ़ जाइये क्योंकि परमेश्वर उसे राजा के हाथ में सौपेगा ॥

- ७ तब यहूसफत ने कहा कि यहां कोई परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता नहीं है कि हम उससे पूछें । तब इसराएल के राजा ने यहूसफत से कहा कि अथ भी एक जन है यिमलः का बेटा मीकायाह जिस के द्वारा से हम परमेश्वर से पूछ सकते हैं परन्तु मैं उससे दूर रखता हूँ क्योंकि वह मेरे विषय में अच्छी बात नहीं कहता परन्तु घुरी तब यहूसफत बोला कि राजा ऐसा न करे ॥

- ९ तब इसराएल के राजा ने एक प्रधान को बुलाके कहा कि यिमलः के बेटे मीकायाह को शीघ्र ले आ । तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफत राजवस्त्र पहिने हुए समस्त के फाटक की पैठ में अपने अपने सिंहासन पर जा बैठे और समस्त भविष्यद्वक्ता उन के आगे भविष्य करते थे । और कन-आनः के बेटे सदकयाह ने अपने लिये लोहे के सींग बनाये और बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि तू इन से अरामियों को मोदेगा यहां लों कि उन्हें नाश करेगा । तब सारे भविष्यद्वक्ता ने यह कहके भविष्य कहा कि रामात जिलियद पर चढ़ जाइये और भाग्यवान हूजिये क्योंकि उसे परमेश्वर राजा के हाथ में सौपेगा ॥

- १३ और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उस ने उससे यह कहा कि देख

के पास भेजीं । और उस ने पत्रियों में यह ध्यान लिखी कि व्रत को प्रचारी कर १ लोगों पर नयात को बैठाओ । और दुष्टों के पुत्रों में से दो जन ठहराओ कि १० यह कहके उस पर साक्षी दें कि तू ने ईश्वर की और राजा की अपमानिता किई तब उसे बाहर ले जाके पत्थरबाद करो कि मर जाये ॥

और उस के नगर के लोगों ने अर्थात् प्राचीन और अध्वर्यों ने जो उन के ११ नगर के वासी थे ईजविल के कहने के समान जैसा पत्रियों में जो उस ने उन पास भेजी थीं लिखा था किया । उन्होंने ने व्रत को प्रचारा और लोगों पर नयात को १२ बैठाया । तब दुष्टों के पुत्रों में से दो जन भीतर आये और उस के मार्ग में १३ और दुष्ट जनों ने नयात के विरोध में यह कहके लोगों के मोर्छों साक्षी दिये कि नयात ने ईश्वर की और राजा की अपमानिता किई है तब ये उसे नगर में बाहर ले गये और उस पर ऐसा पत्थरबाद किया कि यह मर गया । तब उन्होंने १४ ने ईजविल को कहला भेजा कि नयात पत्थरबाद किया गया और मर गया ॥

और ऐसा हुआ कि जब ईजविल ने सुना कि नयात पत्थरबाद किया गया १५ और मर गया तो ईजविल ने अग्निश्रव को कहा कि उठिये यजरअण्णी नयात की दारी को वन में करिये जिसे उस ने रोक्कड़ की मर्ती तुम्हें देने को नाह किया क्योंकि नयात जीता नहीं है परन्तु मर गया । और यों हुआ कि जब अग्निश्रव १६ ने सुना कि नयात मर गया तो अग्निश्रव उठा कि यजरअण्णी नयात की दार की दारी में उतरे जिनमें उसे वन में करे ॥

तब परमेश्वर का यन्नन तिमर्या इन्धियाह धान यह कहके आया । कि एत १७ जाके इसराएल के राजा अग्निश्रव से जो मसदन में है गेट कर देग कि यह नयात की दार की दारी में है जिधर वह उसे वन में करने को उतारा है । और तू १८ उसे यह कहना कि परमेश्वर यों कहता है कि तू ने धान किया है और वन में भी किया है और तू उसे कह कि परमेश्वर आज्ञा करता है कि जिन स्थान में तुम्होंने ने नयात का लोहू चाटा उसी स्थान में तेरा भी लोहू कुत्ते खादेंगे । और अग्निश्रव २० ने इलियाह को कहा कि हे मेरे लंगी क्या तू ने मुझे पाया है और उन ने उनर दिया कि मैं ने पाया है क्योंकि तू ने परमेश्वर की दृष्टि में दुराई करने के लिये आप को बंध डाला । देख मैं तुम्ह पर दुराई लाऊंगा और तेरे वन को दूर २१ करूंगा और अग्निश्रव में से हर एक पुन्य को जो भोग पर मूला है और जो जन इसराएल में से बंधुआ और बच्चा हुआ है उसे भी मैं मिटा दालूंगा । और उन २२ खिजाय के कारण जिसे तू ने मुझे खिजाया है और इसराएल से पाप करवाया है मैं तेरे घराने को नयात के बेटे यशवियाम के घराने की नाई और पत्थरबाद के बेटे यशशा के घराने की नाई करूंगा । और परमेश्वर ईजविल के विषय में २३ भी यह कहके बोला कि यजरअण्णी की खाई के पास ईजविल को कुत्ते खावेंगे । अग्निश्रव का जो जन नगर में मरेगा उसे कुत्ते खावेंगे और जो बागान में मरेगा २४ उसे आकाश के पक्षी खावेंगे ॥

परन्तु अग्निश्रव के समान कोई न था जिस ने परमेश्वर की दृष्टि में दुष्टता २५ के लिये आप को बंधा जिसे उस की पत्नी ईजविल ने उसे उभाड़ा । और उस २६



३२ मत लड़ियो परन्तु केवल इसराएल के राजा के संग । और ऐसा हुआ कि रथों के  
 ३३ प्रधानों ने यहूसफत को देखके यों कहा कि निश्चय इसराएल का राजा वही है और  
 ३४ उन्होंने ने एक और होके चाहा कि उससे युद्ध करें तब यहूसफत चिल्लाया । और  
 ३५ जब रथ के प्रधानों ने जाना कि यह इसराएल का राजा नहीं तो वे उस के  
 ३६ खेदने से हट आये । और अकस्मात् एक जन ने बाण चलाया और वह संयोग  
 ३७ से इसराएल के राजा को मिलम के जोड़ में लगा तब उस ने अपने सारथी से  
 ३८ कहा कि बाग फेर और सेना में से मुझे निकाल ले जा क्योंकि मैं घायल हुआ ।  
 ३९ परन्तु उस दिन संग्राम बढ़ गया और राजा अरामियों के सन्मुख रथ पर ठहरा  
 ४० रहा और सांभ होते होते मर गया और लोहू उस के घाव से रथ में बहि निकला ।  
 ४१ और सूर्य अस्त होते हुए समस्त सेना में प्रचार हुआ कि हर एक जन अपने  
 ४२ अपने नगर और अपने अपने देश को जावे । सो राजा मर गया और उसे समरन  
 ४३ में ले गये और समरन में राजा को गाड़ दिया । और रथ को समरन के कुंड  
 ४४ में धोया और कुत्तों ने उस का लोहू चाटा और वेश्यायें धोती थीं उस वचन के  
 ४५ समान जैसा परमेश्वर ने कहा था ॥

४६ और अखिअब की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया था और हाथी-  
 ४७ दांत का भवन जो उस ने बनाया और जो जो नगर उस ने बनाये सो क्या वे  
 ४८ इसराएल के राजाओं के समयों के समाचारों की पुस्तक में नहीं लिखे हैं । और  
 ४९ अखिअब ने अपने पितरों में शयन किया और उस का वेटा अखजयाह उस की  
 ५० सन्ती राज्य पर बैठा ॥

५१ और इसराएल के राजा अखिअब के चौथे वरस असा का वेटा यहूसफत  
 ५२ यहूदाह पर राज्य करने लगा । यहूसफत पैंतीस वरस का होके राज्य करने लगा  
 ५३ और उस ने यरुसलम में पचीस वरस राज्य किया और उस की माता का नाम  
 ५४ अजूबः था वह सीलही की बेटी थी । और वह अपने बाप असा के सारे मार्गों  
 ५५ में चलता था वह उससे परमेश्वर की दृष्टि में भलाई करने से न मुड़ा तथापि  
 ५६ ऊंचे स्थान अलग न किये गये अब लों उन ऊंचे स्थानों पर लोग भेंट चढ़ाते  
 ५७ और धूप जलाते रहे । और यहूसफत ने इसराएल के राजा से मिलाप किया ॥  
 ५८ अब यहूसफत की रही हुई क्रिया और उस के पराक्रम जो उस ने दिखाया  
 ५९ और किस रीति से युद्ध किया सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समा-  
 ६० चार की पुस्तक में नहीं लिखे हैं । और उस ने गांडुओं को जो उस के बाप  
 ६१ असा के समय में रह गये थे देश में से दूर किया । उस समय अदूम में कोई  
 ६२ राजा न था परन्तु एक उपराजा राज्य करता था ॥

६३ यहूसफत ने तरसीस के जहाज बनवाये जिसमें ओफीर से सोना संगवावे परन्तु  
 ६४ वे वहां लों न गये क्योंकि असयूनजत्र में जहाज मारे गये । तब अखिअब के बेटे  
 ६५ अखजयाह ने यहूसफत से कहा कि जहाजों पर अपने सेवकों के साथ मेरे सेवकों  
 ६६ को भी जाने दीजिये परन्तु यहूसफत ने न माना । तब यहूसफत ने अपने पितरों  
 ६७ के साथ शयन किया और अपने पितर दाऊद के नगर में अपने पितरों के मध्य  
 ६८ में गाड़ा गया और उस का वेटा यहूराम उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

भविष्यद्दत्तों का वचन एक मां राजा के लिये भला है हम लिये मैं विनयी करता हूँ  
तेरा वचन उन में से एक के वचन की नाईं टाढ़े और भला कहिये । और सीकायाह १४  
बोला कि परमेश्वर के जीवन से परमेश्वर तो मुझे काँगा घड़ी में कहेगा ।

सो वह राजा पास आया और राजा ने उसे कहा कि तू सीकायाह क्या हम १५  
लड़ने को रामात जिलियद पर चढ़े अथवा रह जायें नथ उस ने उसे उत्तर दिया  
कि चढ़ जा और भागवान तो क्योंकि परमेश्वर ने उसे राजा के हाथ में कर  
दिया है । तब राजा ने उसे कहा कि मैं कैसे तुम्हें किसिया गिनाया करूँ कि १६  
तू परमेश्वर के नाम से मन्त्री बात से अधिक कुछ न कर । तब उन ने कहा कि १७  
मैं ने सारे इसराएल को बिन दरवाजे की भेड़ों के समान पहाड़ों पर बिखरे हुए  
देखा और परमेश्वर ने कहा कि कोई उन का न्यायी नहीं सो उन से मैं दर  
एक जन अपने अपने घर कुशल से चला जायें । तब इसराएल के राजा ने यहू- १८  
मफत से कहा क्या मैं ने तुम्हें से नहीं कहा कि वह मेरे विषय में भला भविष्य  
न कहेगा परन्तु दुरा । तब उन ने कहा कि परमेश्वर के वचन को सुनो मैं ने १९  
परमेश्वर को अपने मित्रासन पर बैठे और स्वर्ग की मार्ग मेला को हम के दाँपने  
बायें गड़ी देखा । तब परमेश्वर ने कहा कि अग्निप्रद को जेस कहेगा जितने २०  
वह रामात जिलियद पर चढ़के जायें तब उन में से एक ने कहा क्या दूसरे  
ने कुछ । और एक आत्मा निकलके परमेश्वर के आगे जा गिरा हुआ और बोला २१  
कि मैं उस का बोध करूँगा फिर परमेश्वर ने कहा कि जिसने । और वह बोला २२  
मैं जाऊँगा और उस के सारे भविष्यद्दत्तों के मुँह में मित्रा आत्मा होगा तब उस  
ने कहा कि तू उस का बोध करेगा और प्रचन भी होगा जा और मेला कर ।  
सो अब देख परमेश्वर ने तेरे उन सब भविष्यद्दत्तों के मुँह में मित्रा आत्मा को २३  
हाला है और परमेश्वर ही ने तेरे विषय में दुरा कहा है ।

परन्तु कनआनः का बेटा मदकयाह पास आया और सीकायाह के हाथ पर २४  
अपेड़ा मारके बोला कि परमेश्वर का आत्मा मुझ से निकलके कियर में तुम्हें  
कहने गया । तब सीकायाह बोला कि देख तू उस दिन जब तू आप का दिवाने २५  
को एक कोठरी में दूसरी कोठरी में खूबता फिरेगा तब देखेगा ।

तब इसराएल के राजा ने कहा कि सीकायाह को खेला और नगर के अध्या २६  
अम्सून और राजपुत्र यूआस के पास फिर ले जायें । और बोला कि राजा की २७  
आज्ञा है कि इसे बंधन से रखें और जब तीनों में कुशल से न जायें तब लो  
उसे कष्ट की रोटी और कष्ट का जल दिया करो । तब सीकायाह बोला यदि तू २८  
किमी रीति से कुशल से फिर आवे तो परमेश्वर ने मेरे द्वारा से नहीं कहा और  
वह बोला है लोगो तुम से मैं दर एक जन सुन रखे ।

तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूमफत रामात जिलियद २९  
पर चढ़ गये । और इसराएल के राजा ने यहूमफत से कहा कि मैं संयाम से ३०  
अपना भेष पलटके प्रवेश करूँगा परन्तु तू अपना राजदस्त्र पहिनिषो सो इसरा-  
एल के राजा ने अपना भेष पलटके युद्ध में प्रवेश किया । परन्तु अरामी के राजा ३१  
ने अपने रथों के बलीम प्रधानों को कहके आज्ञा की कि छोटे छोटे किमी से

- दूसरी घेर और एक पचास के प्रधान को उस के पचास समेत भेजा उस ने भी
- १२ जाके कहा कि हे ईश्वर के जन राजा ने कहा है कि शीघ्र उतर आ । तब इलियाह ने उन्हें उत्तर देके कहा कि यदि मैं ईश्वर का जन हूँ तो स्वर्ग से आग उतरे और तुम्हें और तेरे पचास को भस्म करे और ईश्वर की आग स्वर्ग से उतरी और
- १३ उसे और उस के पचास को भस्म किया । फिर उस ने तीसरी घेर और एक पचास के प्रधान को उस के पचास समेत भेजा और तीसरा पचास का प्रधान चढ़ गया और आगे इलियाह के आगे घुटने टेके और विनती करके बोला कि हे ईश्वर के जन मैं तेरी विनती करता हूँ कि मेरा प्राण और तेरे इन पचास दासों के प्राण
- १४ तेरी दृष्टि में बहुमूल्य होवें । देखिये कि स्वर्गीय आग्नि ने दो पचास के प्रधानों को उन के पचास पचास समेत भस्म किया सो अब मेरा प्राण तेरी दृष्टि में बहु-
- १५ मूल्य होवे । तब परमेश्वर के दूत ने इलियाह को कहा कि उस के साथ उतर जा उसे मत डर तब वह उठा और उतरके उस के साथ राजा पास गया । और उस ने उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है जैसा कि तू ने दूतों को भेजा है कि अकरून के देव बअलजबूब से जाके पूछें यह इस कारण नहीं कि इसराएल में कोई ईश्वर नहीं कि उस के वचन से ब्रह्मता इस लिये जिस बिक्रीने पर तू चढ़ा है उसे न उतरेगा परन्तु निश्चय मर जावेगा ॥
- १६ सो परमेश्वर के वचन के समान जो इलियाह ने कहा था वह मर गया और यहूदाह के राजा यहूशफत के बेटे यहूराम के दूसरे वरस में यहूराम उस की सन्ती
- १७ राज्य पर बैठा क्योंकि उस का कोई बेटा न था । और अखजयाह की रही हुई क्रिया जो उस ने किई क्या इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं ॥

### दूसरा पर्व ।

- १ और यों हुआ कि जब परमेश्वर ने चाहा कि इलियाह को वींढर में स्वर्ग
- २ पर ले जावे तब इलियाह इलीशअ के साथ जिलजाल से चला । और इलियाह ने इलीशअ को कहा कि यहां ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे वैतएल को भेजा है तब इलीशअ ने कहा कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन
- ३ सों मैं तुम्हें न छोड़ूंगा सो वे वैतएल को उतर गये । और वैतएल के भविष्यद्वक्ताओं के पुत्रों ने निकल आके इलीशअ से कहा कि तुम्हें कुछ चेत है कि परमेश्वर आज तेरे सिर पर से तेरे स्वामी को उठा लेगा और वह बोला कि हां मैं जानता हूँ तुम चुप रहो । तब इलियाह ने इलीशअ को कहा कि यहीं ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यरीहो को भेजा है और उस ने कहा कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन सों मैं तुम्हें न छोड़ूंगा सो वे यरीहो को आये ॥
- ४ और भविष्यद्वक्ताओं के संतान जो यरीहो में थे इलीशअ पास आये और उसे कहा कि तुम्हें कुछ चेत है कि परमेश्वर आज तेरे स्वामी को तेरे सिर पर से उठा
- ५ लेगा और उस ने उत्तर दिया कि हां मैं जानता हूँ तुम चुप रहो । और इलियाह ने उसे कहा कि यहां ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यरदन को भेजा है और वह बोला कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन सों मैं तुम्हें न छोड़ूंगा

अग्निशत्रु का घेठा अश्वजपाह यदूदाह के राजा यहूमकत के राज्य के ७१  
सत्रहवें वरस समस्तन में इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने दो वरस  
इसराएल पर राज्य किया । और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में दुगाई किई और ७२  
अपने पिता और अपनी माता के और नयान के घेठे यम्विश्राम के मार्ग पर  
जिस ने इसराएल से पाप करवाया चलता था । क्योंकि अपने पिता के मारे ७३  
कार्य के समान उस ने यश्रल की सेवा किई और उस को दण्डयन किई और  
परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को रिम दिलाई ॥

## राजाओं की दूसरी पुस्तक ।

पहिला पत्र्य ।

और अग्निशत्रु के मरने के पीछे मोश्वर एमरागन ने फिर गया । और यम्वज- १  
पाह अपने ऊपर की कोठरी के ऊपर से जो समस्तन में था गिर पड़ा और रोगी  
हुआ और उस ने दूतों को भेजा और उन्हें कहा कि जाओ अकमन के देव  
यश्रलजबूब से पूछो कि मैं इस रोग में चंगा हुंगा कि नहीं । परन्तु परमेश्वर के ३  
दूत ने तिसवी दलियाह को कहा कि उठ समस्तन के राजा के दूतों में भेंट कर  
और उन्हें कह कि क्या इसराएल में कोई ईश्वर नहीं जो तुम अकमन के देव  
यश्रलजबूब से पूछने जाते हो । सो इस कामन परमेश्वर को कहता है कि जिस ४  
विक्राने पर तू पड़ा है उसने न उतरेगा परन्तु निश्चय सर जायेगा नष्ट दलियाह  
चला गया ॥

और जब दूत उस पास फिर आये तब उस ने उन से पूछा कि तुम किस ५  
लिये फिर आये हो । और उन्होंने ने उसे कहा कि एक जन हमें मिला और हमें ६  
कहा कि राजा पास जिस ने तुम्हें भेजा है फिर जाओ और उसे कहा कि पर-  
मेश्वर को कहता है इस लिये नहीं कि इसराएल में कोई ईश्वर नहीं जो तुम अक-  
मन के देव यश्रलजबूब से पूछने भेजता इस लिये तू उस विक्राने पर से जिस पर  
तू चढ़ा है उतरने न पायेगा परन्तु निश्चय सर जायेगा । और उस ने उन से ७  
कहा कि उस जन की शीति जो तुम्हें मिला और जिस ने तुम्हें ये बातें कही कही  
थीं । और उन्होंने ने उसे कहा कि वह रोगी जन था और चमड़े की पहचों से ८  
उस की करिहांव कसी हुई थी तब उस ने कहा कि वह तिसवी दलियाह है ॥

तब राजा ने पचास के प्रधान को उस के पचास जन मसेत उस पास भेजा ९  
और वह उस पास चढ़ गया और देखो कि वह एक पहाड़ की चोटी पर घेठा  
था और उस ने उसे कहा कि हे ईश्वर के जन राजा ने कहा है कि उतर आ ।  
तब दलियाह ने उस पचास के प्रधान को उत्तर देके कहा कि यदि मैं ईश्वर का १०  
जन हूं तो स्वर्ग से आग उतरे और तुझे और तेरे पचास जन को भस्म करे तब  
आग स्वर्ग से उतरी और उसे और उस के पचास को भस्म किया । फिर उस ने ११

त्यों देखो कि नगर के लड़के निकले और उसे चिढ़ा चिढ़ा कहने लगे कि चढ़ जा सिर मुँडे चढ़ जा सिर मुँडे । तब उस ने पीछे फिरके उन्हें देखा और परमेश्वर का नाम लेके उन्हें खाप दिया तब वन में से दो भालू निकले और उन में से बयालीस लड़कों को मार डाला । फिर वह वहाँ से करमिल पहाड़ को गया और वहाँ से समरुन को फिर आया ॥

### तीसरा पर्व ।

- १ अब यहूदाह के राजा यहूसफत के अठारहवें बरस अखिअव का बेटा यहूराम समरुन में इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने बारह बरस राज्य किया ।
- २ और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में घुमाई किई परन्तु अपने माता पिता के तुल्य नहीं इस लिये कि उस ने वअल की मूर्ति को जो उस के पिता ने बनाई थी दूर किया । तथापि वह नवात के बेटे यरुविआम के समान पापों में जिस ने इसराएल से पाप करवाया पिलचा रचा उन से अलग न हुआ ॥
- ३ और मोअव का राजा मैसा जो भेड़ों का स्वामी था और इसराएल के राजा को एक लाख भेड़ों और एक लाख भैंसें जन समेत भेंट भेजता था । परन्तु यों हुआ कि जब अखिअव मर गया तब मोअव का राजा इसराएल के राजा से फिर गया ॥
- ४ और यहूराम राजा उसी समय समरुन से निकला और सारे इसराएलियों को गिना । और उस ने जाके यहूदाह के राजा यहूसफत को कहला भेजा कि मोअव का राजा मुझ से फिर गया क्या तू मोअव से लड़ने को मेरे साथ जावेगा और उस ने कहा कि मैं चढ़ जाऊंगा जैसा मैं वैसा तू जैसे मेरे लोग वैसे तेरे लोग जैसे मेरे घोड़े वैसे तेरे घोड़े । तब उस ने पूछा कि हम किस मार्ग से चढ़ जावें और उस ने उत्तर दिया कि अरूम के वन के मार्ग में से । सो इसराएल के राजा और यहूदाह के राजा और अरूम के राजा निकले और उन्होंने ने सात दिन के मार्ग का चक्कर खाया और सेना के लिये और उन के ठहरों के लिये जल न था ॥
- ५ तब इसराएल का राजा वोला हाय परमेश्वर ने इन तीन राजाओं को एकट्ठा किया कि उन्हें मोअव के हाथ में सौंपे । परन्तु यहूसफत बोला कि परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं में से कोई यहाँ नहीं जिसने हम उस के द्वारा से परमेश्वर से पूछे तब इसराएल के राजा के सेवकों में से एक बोल उठा कि सफत का बेटा इलीशअ यहाँ है जो इलियाह के हाथों पर जल डालता था । तब यहूसफत बोला कि परमेश्वर का वचन उस पास है इस लिये इसराएल का राजा और यहूसफत और अरूम का राजा उस पास गये । तब इलीशअ ने इसराएल के राजा से कहा कि मुझे तुझ से क्या काम तू अपने पिता के भविष्यद्वक्ताओं और अपनी माता के भविष्यद्वक्ताओं पास जा और इसराएल का राजा उससे बोला नहीं क्योंकि परमेश्वर ने इन तीन राजाओं को एकट्ठा किया कि उन्हें मोअव के हाथ में सौंपे । तब इलीशअ ने कहा कि सेनाओं के परमेश्वर की सेा जिस के आगे मैं खड़ा हूँ यदि यहूदाह के राजा यहूसफत के साक्षात् होने को न मानता तो निश्चय मैं तेरी ओर न ताकता और न तुझे देखता । परन्तु अब मुझ पास एक बीणा बजवैया

से वे दोनों बड़ गये । और पचास मनुष्य भविष्यद्वक्ताओं के पुत्रों में से चले और ७ दूर खड़े होके देखने लगे और वे दोनों यरदन के तीर खड़े हुए । और इलियाह ८ ने अपना ओढ़ना लिया और लपेटके पानियों को मारा और वे बंधर बंधर विभाग हो गये यहाँ लों कि वे दोनों सूखे सूखे उतर गये ॥

और जब पार हुए तो इलियाह ने इलीशम से कहा कि तुम से अलग किये ९ जाने से आगे मांग कि मैं तेरे लिये क्या करूँ तब इलीशम बोला कि मैं तेरी विनती करता हूँ कि तेरे आत्मा से दूना भाग मुझ पर पड़े । और उस ने १० कहा कि तू ने मांगने में कठिन किया यदि तू मुझे आप से अलग छोते हुए देखेगा तो ऐसा ही तुम पर होगा और यदि नहीं तो न होगा ॥

और ऐसा हुआ कि ज्योंही वे दोनों टहलते हुए धातें करते चले जाते थे तो ११ देखो कि एक आग का रथ और आग के घोड़े आये और उन दोनों को अलग किया और इलियाह बाँडर में होके मरग पर जाता रहा । और इलीशम देखके चिल्लाया १२ कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता इसराएल के रथ और उस के घोड़चढ़े और उस ने उसे फिर न देखा और उस ने अपने ही कपड़ों को लेकर उन्हे दो टुकड़ा किया । और उस ने इलियाह के ओढ़ने को भी जो उस पर से गिर पड़ा या उठा लिया १३ और उलटा फिरा और यरदन के तीर पर खड़ा हुआ । और उस ने इलियाह के १४ ओढ़ने को जो उसके गिर पड़ा था लेकर पानियों को मारा और कहा कि परमेश्वर इलियाह का ईश्वर कहाँ और जब उस ने भी पानियों को मारा तो पानी बंधर बंधर हो गया और इलीशम पार गया ॥

और जब यरीहो के भविष्यद्वक्ताओं के संतानों ने जो देखने को निकले थे उसे १५ देखा तो बोले कि इलियाह का आत्मा इलीशम पर टहरना है और वे उस की भेंट के लिये आये और उस के आगे मूसि पर भुके । और उसे कहा कि देखिये १६ अब तेरे संघकों के साथ पचास और पुत्र हैं हम तेरी विनती करते हैं कि उन्हें जाने बोलिये कि तेरे स्वामी का हूँदूँ या जाने परमेश्वर के आत्मा ने उसे उठाके किसी पर्वत पर अथवा तगर में फेंक दिया हो और वह बोला कि मत भेजो । और जब उन्होंने ने यहाँ लों उसे उभारा कि वह लज्जित हुआ तब उस ने कहा १७ कि भेजो और उन्होंने ने पचास जन भेजे और उन्होंने ने तीन दिन लों उसे ढूँढ़ा परन्तु उसे न पाया । और जब वे उस पास फिर आये क्योंकि वह यरीहो में ठहरा १८ था तब उस ने उन्हें कहा कि क्या मैं ने तुम्हें न कहा था कि मत जाओ ॥

तब उस नगर के लोगों ने इलीशम से कहा कि देखिये इस नगर का स्थान १९ मनभावना है जैसा मेरे प्रभु देखते हैं परन्तु पानी निकम्मा और भूगि फलहीन है । तब उस ने कहा कि नया पात्र लाओ और उस में नोन डालो और वे उस पास २० लाये । तब वह पानियों के सोतों पर गया और नोन वहाँ डालके बोला कि पर- २१ मेश्वर यां कहता है कि मैं ने इन पानियों को अच्छा किया है फिर वहाँ से मृत्यु अथवा ऊपर न होगा । और इलीशम के कटे हुए वचन के समान आज लों जल २२ अच्छे हुए ॥

फिर वह वहाँ से वैतरन को चढ़ा और ज्यों वह मार्ग में ऊपर जाता था २३



अपने घेटीं पर द्वार मूंद लिया वे उस के घाम लाते जाते थे और वह चंदेलती  
 ६ थी । और ऐसा हुआ कि जब वे पात्र भर गये तो उस ने अपने घेटी से कहा कि  
 एक और पात्र ला और वह उसे बोला और पात्र तो नहीं तब तेल थम गया ।  
 ७ और उस ने आगे ईश्वर के जन से कहा तब वह बोला जा तेल घेंच और  
 धनिक को दे और वचे हुए से तू और तेरे संतान जीवे ॥

८ और एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि इलीशम मूनेम का गया और वहां एक  
 धन्यवती स्त्री थी और उस ने उसे पकड़ा कि रोटी खाए सो ऐसा हुआ कि जब  
 ९ उस का जाना उधर होता था तब वह वहां जाके रोटी खाता था । फिर उस  
 ने अपने पति से कहा कि देख मैं जानती हूं कि यह ईश्वर का पवित्र जन है जो  
 १० नित्य हमारे पास से जाता है । सो हम उस के लिये एक छोटी सी काठरी भीत  
 पर बनाएँ और वहां उस के लिये बिछौना बिछाएँ और एक मंच लगाएँ और एक  
 पीछी रखें और एक दीकट और जब वह हम पास आया करे तब वहीं टिके ।  
 ११ सो एक दिन ऐसा हुआ कि वह वहां गया और उस काठरी में टिका और  
 १२ सोया । तब उस ने अपने सेवक जैहाजी को कहा कि इस मूनेमी को बुला और  
 १३ उस ने उसे बुलाया तो वह उस के आगे आ खड़ी हुई । फिर उस ने अपने सेवक  
 से कहा कि तू उसे कह कि तू ने जो हमारे लिये यह सब चिन्ता किई तो तेरे  
 लिये क्या किया जावे तू चाहती है कि राजा अथवा सेना के प्रधान से तेरे  
 १४ विषय में कहा जावे और वह बोली कि मैं अपने ही लोगों में रहती हूं । फिर  
 उस ने कहा कि इस के लिये क्या किया जावे तब जैहाजी बोला कि निश्चय यह  
 १५ निर्वंश है और उस का पति वृद्ध । तब वह बोला कि उसे बुला और उस ने  
 १६ उसे बुलाया तब वह द्वार पर खड़ी हुई । और वह बोला हमी समय से पूरे दिन  
 पर तू एक घेटी गोद में लेगी और वह बोली कि नहीं हे मेरे प्रभु ईश्वर  
 १७ के जन अपनी दासी से झूठ न कहिये । और वह स्त्री गर्भिणी हुई और उसी  
 समय जो इलीशम ने उसे कहा था जीवन के समान एक घेटी जनी ॥

१८ और वह बालक बड़ा हुआ और एक दिन घों हुआ कि वह अपने पिता  
 १९ पास लवैयां कने गया । और अपने पिता से कहा कि मेरा सिर मेरा सिर और  
 २० उस ने एक तरुण से कहा कि उसे उस की माता पास ले जा । तब उस ने उसे  
 लेके उस की माता के पास पहुंचाया और वह उस के छुठनों पर पड़े पड़े सध्यान्ह  
 २१ को मर गया । तब उस ने उसे ले जाके उस ईश्वर के जन के बिछौने पर डाल  
 २२ दिया और द्वार मूंदके निकल गई । और अपने पति पास गई और कहा कि  
 शीघ्र एक तरुण और एक गदहा मेरे लिये भेजिये जिसमें मैं ईश्वर के जन पास  
 २३ दौड़ जाऊँ और फिर आऊँ । और उस ने पूछा कि आज तू उस पास क्यों जाया  
 चाहती है आज न अमावास्या है न विश्राम और वह बोली कि कुशल होगा ।  
 २४ तब उस ने एक गदहे पर काठी बांधी और तरुण से कहा कि हांक और बड़  
 मेरे चढ़ने के लिये मत रोक जब लों मैं तुम्हें न कहूं ॥

२५ सो वह चल निकली और करमिल पहाड़ पर ईश्वर के जन पास आई और  
 ऐसा हुआ कि जब ईश्वर के जन ने दूर से उसे देखा तो अपने सेवक जैहाजी से

लाओ और जब उस ने बीछा बजाई तो ऐसा हुआ कि परमेश्वर का हाथ उस पर आया । और वह बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि इस तराई को गड़हों १६ से भर देओ । क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि तुम न बपार न संह देखोगे १७ तथापि यह तराई पानी से भर जायेगी जिसमें तुम और तुम्हारे ठार और तुम्हारे पशु पीवें । और यह परमेश्वर की दृष्टि में कौटो बात है यह मोशवियों को भी १८ तुम्हारे हाथों में सौंपेगा । और तुम हर एक बाहुित नगर और हर एक कुनी हुई १९ वस्ती मारोगे और हर एक अच्छे पेड़ को गिराओगे और पानी के सारे कुओं को भाँटोगे और हर एक अच्छी भूमि को पत्थरों में बिगाड़ोगे ॥

और बिधान को यों हुआ कि जब भेंट चढ़ाई गई तो देखा कि अद्रूम के २० मार्ग से पानी आया और देश पानी से भर गया । और मोशवियों ने यह सुनके २१ कि राजा इस से लड़ने चढ़ आये हैं उन्होंने ने ललकारके सभी को जो करिदांय बांध मक्ते एकट्ठा किया और अपने सिवाने पर खड़े हुए । और वड़े तड़के उठे २२ और मूर्ख पानी पर चमकने लगा और मोशवियों ने उन पार से पानी को लोट्टा सा लाल देखा । तब वे बोल उठे कि यह लोट्टा है निश्चय राजा नष्ट हुए २३ और एक ने दूसरे को बधन किया है वे मोशवियों अब नुंटा । और जब वे इस- २४ राएल की छावनी में आये तो इसराएली उठे और मोशवियों को यहाँ लों मारा कि वे उन के आगे में भाग निकले परन्तु वे मोशवियों को मारते हुए बढ़ते गये अर्थात् देश में । और उन्होंने ने उन के नगरों को टा दिया और हर एक जन २५ ने हर एक अच्छे म्यान पर अपना पत्थर डाला और उसे भर दिया और पानी के सारे कुए भाँट दिये और सब अच्छे पेड़ गिरा दिये यहाँ लों कि कीरहरसत के पत्थरों में अधिक कुछ बचा न रहा तथापि डेलवासियों ने उसे जा घेरा और मार लिया ॥

और जब मोशव को राजा ने देखा कि मंग्राम मेरे लिये आति भारी हुआ तो उस २६ ने अपने संग सात सौ जन खड्गधारी लिये जिसमें अद्रूम के राजा लों पड़े परन्तु न सके । तब उस ने अपने जेठे बेटे को लिया जिसे उस की मन्ती राज्य पर बैठना २७ था और उसे भीत पर होम के बलिदान के लिये चढ़ाया और इसराएलियों के बिरुद्ध बड़ी जलजलाहट हुई और वे उम्मे उठ गये और देश में फिर आये ॥

चौथा पर्व ।

अब भविष्यद्वक्ता के पुत्रों की पदियों में से एक स्त्री इलीशब के आगे चिल्लाके १ बोली कि तेरा सेवक मेरा पति मर गया है और तू जानता है कि तेरा सेवक परमेश्वर से डरता था और अब धनिक आया है कि मेरे दोनों बेटों को लंके दास बनावे । तब इलीशब ने उम्मे कहा कि मैं तेरे लिये यश करूं मुझे बतला २ तुम पास घर में क्या है और वह बोली कि तेरी दाम्नी के घर में एक हांडी तेल से अधिक कुछ नहीं । तब उस ने कहा कि बाहर जाके अपने सब परीसियों से ३ कूँके पात्र मंगानी ला और वे बाँड़े न होवें । और अपने घर में जाके अपने और ४ अपने बेटों पर द्वार बन्द कर और उन सब पात्रों में उँडेल और जो जो भर जावे उसे अलग रख । सो वह उस के पास से गई और अपने पर और ५

के आगे रखूँ उस ने फिर कहा कि लोगों को खाने को दे क्योंकि परमेश्वर में  
४४ कहता है कि वे खावेंगे और वच रहेगा । तब उस ने उन के आगे रखा और  
उन्होंने खाया और परमेश्वर के वचन के समान वच रहा ॥

### पाँचवां पर्व ।

- १ अब नअमान जो अरामी के राजा की सेना का प्रधान था अपने प्रभु के  
आगे महान पुरुष और प्रतिष्ठित था क्योंकि परमेश्वर ने उस के द्वारा से अरामियों
- २ को जय दिया था और वह महावीर और बली था परन्तु कोढ़ी । और अरामी  
जथा जथा होके निकल गये थे और इसराएल के देश में से एक छोटी कन्या को
- ३ बंधुआई में लाये थे और वह नअमान की पत्नी के पास रहती थी । और उस ने  
अपनी स्वामिनी से कहा हाय कि मेरा स्वामी उस भविष्यद्वक्ता के आगे जाता
- ४ जो समरुन में है क्योंकि वह उसे उस के कोढ़ से चंगा करता । और वह जाके
- ५ अपने प्रभु से कहके बोली इसराएल के देश की कन्या यों कहती है । सो अरामी  
के राजा ने कहा कि चल निकल और मैं इसराएल के राजा को पत्नी लिख भेजूंगा  
सो वह चला और दस तोड़े चांदी और छः सटस टुकड़े सोना और दस जोड़े
- ६ वस्त्र अपने साथ ले चला । और वह उस पत्नी को यह कहके इसराएल के राजा  
पास लाया कि यह पत्नी जब तेरे पास पहुँचे तब देख मैं ने अपने सेवक नअमान
- ७ को तुझ पास भेजा है जिससे तू उसे कोढ़ से चंगा करे । और यों हुआ कि जब  
इसराएल के राजा ने उस पत्नी को पढ़ा तो अपने कपड़े फाड़े और बोला कि  
क्या मैं ईश्वर हूँ जो मारूँ और जिलाऊँ कि यह जन मुझ पास भेजता है कि एक  
जन को उस के कोढ़ से चंगा करे सो तुम्हीं विचारे और देखो कि वह मुझ से  
भागड़ा ठूँढ़ता है ॥
- ८ और जब ईश्वर के जन इलीशअ ने सुना कि इसराएल के राजा ने अपने  
कपड़े फाड़े तो राजा को कहला भेजा कि तू ने अपने कपड़े क्यों फाड़े अब वह
- ९ मुझ पास आवे और उसे जान पड़ेगा कि इसराएल में एक भविष्यद्वक्ता है । सो  
नअमान अपने घोड़े और अपने रथ समेत आया और इलीशअ के घर के द्वार
- १० पर खड़ा हुआ । तब इलीशअ ने उस पास दूत भेजके कहा कि जा और यरदन
- ११ में सात घेर नहा और तेरा शरीर फिर पवित्र हो जावेगा । परन्तु नअमान यह  
कहके क्रुद्ध होके चला गया देख मैं ने कहा था कि वह निश्चय मुझ पास निकल  
आवेगा और खड़ा होके अपने ईश्वर परमेश्वर का नाम लेगा और उस स्थान पर
- १२ हाथ फरेगा और कोढ़ को चंगा करेगा । क्या अमानः और फरफर दमिश्क की  
नदियाँ इसराएल के सारे पानियों से कितनी अच्छी नहीं क्या मैं उन से नहाके
- १३ शुद्ध नहीं हो सक्ता और वह फिरा और कोपित चला गया । तब उस के सेवक  
उस पास आये और यह कहके बोले कि हे पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कुछ भारी  
बात बताता तो तू उसे न मानता फेर कितना अधिक जब वह तुझे कहता है
- १४ कि नहा और शुद्ध हो । तब वह उतरा और जैसा कि ईश्वर के जन ने कहा था  
यरदन में सात घेर डुबकी मारी और उस का शरीर बालक के शरीर के समान  
फिर हो गया और वह पवित्र हुआ ॥

कहा देव यह सुनेगी है । अब उसे आगे से मिलने की दौड़ और उसे पूछ कि २६  
तू कुशल से है तेरा पति कुशल से है मेरा बालक कुशल से है और उस ने उत्तर  
दिया कि कुशल से । और उस ने उस पटाड़ पर आके ईश्वर के जन के घर २७  
को पकड़ा परन्तु जैहाजी ने पास आके चाहा कि उसे अलग करे परन्तु ईश्वर  
के जन ने कहा कि उसे छोड़ दे क्योंकि इस का प्राण दुःखी है और परमेश्वर ने  
सुक से छिपाया और मुझे नहीं कहा । तब वह बोली कि कब मैं ने अपने प्रभु २८  
से पुत्र मांगा था मैं ने नहीं कहा कि मुझे मत भुला । तब उस ने जैहाजी को २९  
कहा कि अपनी करिदाय कस और मेरी लड़ी अपने हाथ में ले और चला जा  
यदि कोई तुझे मार्ग में मिले तो उसे नमस्कार मत कर और यदि कोई तुझे नमस्कार  
करे तो उसे उत्तर मत दे और मेरी लड़ी बालक के मुँह पर रख । तब उस ३०  
की माता बोली परमेश्वर के जीवन से और तेरे प्राण के जीवन से मैं तुझे न छोड़ूंगी  
तब वह उठा और उस के पीछे पीछे चला । तब जैहाजी उन से आगे आगे गया ३१  
और लड़ी लड़के के मुँह पर धरी परन्तु कुछ गजब प्रघटा सुन न हुई इस लिये वह  
उम्मे भेंट करने को फिरा और उसे कहा कि लड़का नहीं जागा । और जब ३२  
हलीशय घर में पहुँचा तो देखे यह बालक उस के बिलाने पर मग पड़ा था ।  
तब वह भीतर गया और दोनों पर द्वार मुँहके परमेश्वर से प्रार्थना की । और ३३  
जाके बालक से निपटा और उस के मुँह पर अपना मुँह रखवा और उस की आँखों  
पर अपनी आँखें और उस के हाथों पर अपने हाथ और बालक पर फैल गया तब  
उस बालक की देह गरमाई । फिर वह उठा और उस घर में रुधिर उभार टहनने ३४  
लगा और फिर जाके उस पर फैला और बालक ने मात योग लीका और अपनी  
आँखें मारी । तब उस ने जैहाजी को बुलाके कहा कि उस नूनेरी को खाना से ३५  
उस ने उसे बुलाया और जब वह भीतर उस पास आने तो उस ने उम्मे कहा कि  
अपना बेटा उठा ले । तब वह भीतर गई और उस के पाँचों पर गिरी और भूमि ३६  
सें झुकके दगडवत किई और अपने बेटे को उठाके बाहर गई ॥

और हलीशय बिलजाल को फिर आया और उस देश में अकाल पड़ा था ३७  
और वहाँ भविष्यद्वक्ता के पुत्र उस के नामे बेटे हुए थे और उस ने अपने सेवक  
से कहा कि बड़ा हंडा चढ़ा और भविष्यद्वक्ता के पुत्रों के लिये लपसी पका ।  
और एक जन लोगान में गया कि कुछ तरकारों चुन लावे और उस ने बनेले दाख ३८  
पाये और उम्मे गोद भरके जंगली तुंयियां बटोरी और आके लपसी को हाँडी में  
डाल दिई क्योंकि वे न जानते थे । सो उन्होंने लोगों के खाने के लिये उँडेला ३९  
और यों हुआ कि जब ये वह लपसी खाने लगे तो चित्ता उठे कि ईश्वर के  
जन खाने में मृत्यु है और खा न मरे । तब उस ने प्रमाण संगवाया और उस ४०  
हाँडे में डाल दिया और कहा कि लोगों के खाने के लिये उँडेला तब हाँडे में  
कुछ अवगुण न हुआ ॥

तब बालमलीशः से एक पुरुष ईश्वर के जन पास पहिले अन्न की रोटी जब ४१  
के बीस फुलके और अन्न में भरी हुई बाल अपने अंचल में लाया और बोला कि  
लोगों को खाने को दे । तब उस का सेवक बोला कि क्या मैं इसे सौ मनुष्यों ४२

- ४ और अपने सेवकों के साथ चलिये तब उस ने उत्तर दिया कि मैं जाऊंगा । सो वह उन के साथ साथ गया और उन्होंने ने यरदन पर आके लकड़ियां काटीं ।
- ५ परन्तु ज्यों एक जन वल्ला काटता था तब कुल्हाड़ा पानी में गिर पड़ा और उस
- ६ ने चिल्लाके कहा कि हे मेरे स्वामी यह तो मंगनी का था । और ईश्वर का जन बोला कि कहाँ गिरा और उस ने उसे वह स्थान बताया तब उस ने टहनी काटके
- ७ उधर डाल दिई और कुल्हाड़ा उतरा उठा । तब उस ने कहा कि उठा ले और उस ने हाथ बढ़ाके उसे उठा लिया ॥
- ८ तब अराम का राजा इसराएल से लड़ा और उस ने अपने सेवकों से परा-
- ९ मर्श करके कहा कि मैं उस स्थान में डेरा करूंगा । तब ईश्वर के जन ने इसराएल के राजा को कहला भेजा कि चौकस हो और अमुक स्थान से मत जाइयो क्योंकि
- १० वहां अरामी उतर आये हैं । और इसराएल के राजा ने उस स्थान में भेजा जिस के विषय में ईश्वर के जन ने उसे कहके चौकस किया था और आप को बारंबार बचा रक्खा ॥
- ११ इस लिये इस बात के कारण अराम के राजा का मन अति व्याकुल हुआ और उस ने अपने सेवकों को बुलाके कहा क्या सुभे न बताओगे कि हमसे
- १२ इसराएल के राजा की ओर कौन है । तब उस के एक सेवक ने कहा कि हे मेरे प्रभु राजा नहीं परन्तु इलीशअ भविष्यवृत्ता जो इसराएल में है तेरी हर एक
- १३ बात जो तू अपने शयनस्थान में करता है इसराएल के राजा को कहता है । सो उस ने कहा कि जा और भेद ले कि वह कहाँ है जिसमें मैं भेजके उसे बुलाऊँ और उसे यह कहके संदेश पहुंचाया कि देखिये वह दूतान में है ॥
- १४ इस लिये उस ने उधर घोड़े और रथ और भारी सेना भेजी और उन्होंने ने
- १५ रात को आकर उस नगर को घेर लिया । और जब ईश्वर के जन का सेवक तड़के उठा और बाहर निकला तो क्या देखता है कि सेना और घोड़चढ़े और रथ नगर को घेरे हुए हैं तब उस के सेवक ने उसे कहा कि हाय हे मेरे स्वामी
- १६ हम क्या करें । तब उस ने उत्तर दिया कि मत डर क्योंकि जो हमारे साथ हैं
- १७ सो उन के साथियों से अधिक हैं । तब इलीशअ ने प्रार्थना किई और कहा कि हे परमेश्वर कृपा करके इस की आंखें खोल जिसमें देखे सो परमेश्वर ने उस तरुण की आंखें खोलीं और उस ने जो दृष्टि किई तो देखा कि इलीशअ की
- १८ चारों ओर पहाड़ आग के घोड़ों और गाड़ियों से भरा हुआ है । और जब वे उस पर उतर आये तो इलीशअ ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि इन लोगों को अन्धा कर डाल और इलीशअ के वचन के समान उस ने उन्हें अन्धा कर
- १९ डाला । फिर इलीशअ ने उन्हें कहा कि यह मार्ग नहीं और यह नगर नहीं तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ और मैं तुम्हें उस जन पास पहुंचाऊंगा जिसे तुम ढूंढते
- २० हो और वह उन्हें समरून में ले गया । और जब वे समरून में पहुंचे तो यों हुआ कि इलीशअ ने कहा कि हे परमेश्वर उन की आंखें खोल जिसमें वे देखें तब परमेश्वर ने उन की आंखें खोलीं और वे देखने लगे और क्या देखते हैं कि समरून के मध्य में हैं ॥

तब वह अपनी सारी जया समेत ईश्वर के जन के पास फिर आया और उस १५  
 के आगे खड़ा हुआ और बोला कि देखिये अब मैं जानता हूँ कि मत्स्य पुरुषों  
 में हमराएल में छोड़ कोई ईश्वर नहीं है इस लिये अब अनुग्रह करके अपने सेवक  
 की भेंट लीजिये । परन्तु उस ने कहा कि परमेश्वर के जीवन में जिस के आगे १६  
 मैं खड़ा हूँ मैं कुछ न लेजंगा और उस ने उसे बहुत मकेती में डाला कि नये  
 परन्तु उस ने न माना । और नश्मान ने कहा कि मैं तेरी चिन्ता करता हूँ तेरे १७  
 सेवक को दो खट्टर भरके मिट्टी न मिलेगी क्योंकि मेरा सेवक आगे को परमेश्वर  
 को छोड़ दूसरे देवों के लिये न बलिदान न दास की भेंट चढ़ावेगा । उस आगे १८  
 में परमेश्वर तेरे सेवक को जमा करे कि जब जब मेरा स्वामी पूजा के लिये  
 रिम्न के मंदिर में जाय और वह तेरे हाथ पर आठों और मैं रिम्न के मंदिर  
 में झुकूँ सो जब मैं रिम्न के मंदिर में झुकूँ तब परमेश्वर इस बात में तेरे सेवक  
 को जमा करे । और उस ने उसे कहा कि कुशल में जा सो वह उम्मी खादी १९  
 दूर गया ॥

परन्तु ईश्वर के जन इलीश्वर के सेवक जैहार्ज ने कहा कि देख मेरे स्वामी २०  
 ने इस अगामी नश्मान को छोड़ दिया और जो कुछ वह लाया था उस के हाथ  
 से ग्रहण न किया परमेश्वर के जीवन में मैं निश्चय उस को पीछे छोड़ जाजंगा  
 और उससे कुछ लेजंगा । सो जैहार्ज नश्मान के पीछे गया और नश्मान ने जो २१  
 देखा कि वह पीछे छोड़ा आता है तो वह उस की भेंट के लिये रख पर ने डगरा  
 और बोला कि क्या मय कुशल । और उस ने कहा कि मय कुशल मेरे स्वामी ने २२  
 यह कहके मुझे भेजा है कि देख भविष्यद्वक्ता के मतान में मैं से दो तबल पुन्य  
 इफरायम पहाड़ से आये हैं सो अनुग्रह करके उन्हें एक तोड़ा चादी और दो  
 जोड़े धम्म दीजिये । तब नश्मान ने कहा कि प्रसन्न हो और दो तोड़े ले और २३  
 उस ने उसे मकेत करके दो तोड़े चादी दो बलियों में दो जोड़े धम्म मंदिर बांधे  
 और अपने दो सेवकों पर धरा और वे उठाके उस के आगे आगे गये । और उस २४  
 ने एकान्त में आके उन के हाथ में उन्हें ले लिया और घर में रखके उन पुनर्ण  
 को विदा किया सो वे चले गये । परन्तु वह जाके अपने स्वामी के सामने खड़ा २५  
 हुआ तब इलीश्वर ने उसे कहा कि जैहार्ज कहाँ से और वह बोला कि तेरा सेवक  
 तो धर धर नहीं गया था । फिर उस ने उसे कहा कि क्या मेरा मन न गया २६  
 था जब वह जन अपने रख पर मे उतरके तेरी भेंट को फिरा था वह रोकड़ और  
 धम्म और जलपाई और दास की चारी और भेड़ और बैल और दास और दा-  
 सियाँ लेने का समय है । इस लिये नश्मान का कोढ़ तुम्हें और तेरे यश को सदा २७  
 लगा रहेगा तब वह उस के आगे से पाला की नाई कोड़ी चला गया ॥

छठवां पृष्ठ ।

और भविष्यद्वक्ता के पुत्रों ने इलीश्वर से कहा कि अब देखिये यह स्थान १  
 जहाँ हम तेरे संग बसते हैं हमारे लिये अति मकेत है । अब अनुग्रह करके २  
 यरदन को चलिये और वहाँ से हर एक जन एक एक थला लावे और वहाँ एक  
 बसगित बनायें और वह बोला कि जाओ । तब एक ने कहा कि मान लीजिये ३



- यदि परमेश्वर स्वर्ग में खिड़कियां बनाता तो क्या यह बात होगी तब उस ने कहा कि देख तू उसे अपनी आंखों से देखेगा पर उससे न खायगा ॥
- ३ और नगर के फ़ाटक की पैठ में चार कोठी थे और उन्हें ने आपुस में कहा
- ४ कि मरने लों हम यहां क्यों बैठें । यदि हम कहें कि नगर में जावेंगे तो नगर में अकाल है और हम वहां मर जावेंगे और यदि यहीं बैठे रहें तौभी मरेंगे सो अब चलो हम अरामी सेना में जावें यदि वे हमें जीवते छोड़ेंगे तो हम बचेंगे
- ५ और यदि वे हमें बधन करें तो मरही जावेंगे । सो वे गोधूली में उठके अरामियों की सेना को चल निकले और जब वे अरामियों की छावनी के बाहर ही बाहर
- ६ पहुंचे तो देखो वहां कोई न था । क्योंकि प्रभु ने रथों का और घोड़ों का और एक बड़ी सेना का शब्द अरामियों की सेना को सुनाया तब उन्होंने ने आपुस में कहा कि देखो इसराएल का राजा हितियों के राजाओं को और मिस्रियों के
- ७ राजाओं को हमारे बिरुद्ध भाड़े में चढ़ा लाया । इस लिये वे उठके गोधूली में भाग निकले और अपने डेरे और अपने घोड़े और अपने गदहे अर्थात् अपनी छावनी को जैसी की तैसी छोड़ छोड़ अपने अपने प्राण ले भागे ॥
- ८ और जब यह कोठी छावनी में पहुंचे तो वे एक तंबू में घुसे और वहां खाया और पीया और वहां से रुपा और सोना और वस्त्र लिया और एक स्थान पर जाके छिपा रखवा और फिर आके दूसरे तंबू में घुसे और वहां से भी ले गये
- ९ और छिपा रखवा । तब उन्होंने ने आपस में कहा कि हम अच्छा नहीं करते आज मंगलसमाचार का दिन है और हम चुप हो रहे हैं यदि हम बिहान की ज्योति लों ठहरें तो दण्ड पावेंगे सो आओ हम जाके राजा के घराने को संदेश पहुंचावें ॥
- १० तब उन्होंने ने आके नगर के द्वारपाल को पुकारा और उन को संदेश पहुंचाया कि हम अरामियों की छावनी में गये और देखो कि वहां न मनुष्य न मनुष्य
- ११ का शब्द परन्तु घोड़े और गदहे बंधे हुए और तंबू जैसे के तैसे हैं । और द्वारपालक बुलाये गये और उन्होंने ने राजा के भवन में भीतर संदेश पहुंचाया ॥
- १२ और राजा रात ही को उठा और अपने सेवकों से कहा कि मैं तुम्हें बताता हूं कि अरामियों ने हम से क्या किया वे जानते हैं कि हम भूखे हैं इस लिये वे छावनी से निकलके चौगान में यह कहके छिपे हैं कि जब वे नगर से निकलेंगे
- १३ तब हम उन्हें जीता पकड़ लेंगे और नगर में घुसेंगे । और उस के सेवकों में से एक ने उत्तर देके कहा कि हम उन घोड़ों में से जो बचे हैं पांच घोड़े लेवें देख वे इसराएल की बची हुई मंडली के समान जो नष्ट हुए हैं आओ उन्हें भेजें और
- १४ बूझें । सो उन्होंने ने रथों के दो घोड़े लिये और राजा ने अरामियों की सेना के
- १५ पीछे लोगों को यह कहके भेजा कि जाओ और बूझो । सो वे उन के पीछे पीछे घरदन लों चले गये और क्या देखते हैं कि सारे मार्ग में वस्त्र और पात्र जो अरामी अपनी उतावली में फेंक गये थे भरपूर थे तब दूत फिर आके राजा से बोले ॥
- १६ तब लोगों ने निकलके अरामियों के तंबूओं को लूटा सो परमेश्वर के वचन

और इसराएल के राजा ने उन्हें देखके इलीशय से कहा कि ते पिना में वधन २१  
करने में वधन करे । और उस ने कहा कि वधन मत कर क्योंकि जिनके तू ने अपने २२  
तलवार और धनुष से बन्धुआ किया तू उन्हें वधन करता उन के आगे खाना  
पीना धर दे जिसमें वे खा पीके अपने स्वामी पास जायें । सो उस ने उन के लिये २३  
बहुत सा भोजन मिष्ट करवाया और जय वे खा पी चुके तो उस ने उन्हें बिदा  
किया और वे अपने स्वामी पास चले गये और फिर जमी अराम का जया इसरा-  
एल के देश में न आई ।

और इस के पीछे ऐसा हुआ कि अराम के राजा यिनहदद ने अपनी समस्त २४  
सेना एकट्ठी कीई और चढ़के समरन को घेरा । तब समरन में बड़ा अकाल पड़ा २५  
और वे उसे घेरे रहे यहां तों कि गददे का एक सिर नव्वे रुपये के ऊपर बिकता  
था और कपोत की दाँट पाय भर से कुछ ऊपर पाँच रुपये के अधिक का  
बिकती थी ।

और यों हुआ कि जब इसराएल का राजा भीन पर जाता था तब एक स्त्री २६  
उस के आगे बिल्लाके बोलों कि हे मेरे प्रभु राजा सहाय कीजिये । तब वह बोला २७  
कि यदि परमेश्वर ही तेरा सहाय न करे तो मैं तेरा सहाय क्योंकर करूँगा मरने  
से अथवा अंगूर के कोल्हू से । तब राजा ने उसे कहा कि तुझे क्या हुआ और २८  
उस ने उत्तर दिया कि इस स्त्री ने मुझे कहा कि आगे तेरे घंटे का बाल ग्राह्य  
और अपने घंटे का कल खावेंगे । सो इस ने अपने घंटे का डमिनके ग्राह्य और २९  
मैं ने दूसरे दिन उसे कहा कि अपना घंटा ला जिसमें इस उसे खावें पान्नु उस  
ने अपना घंटा छिपा रक्खा है । तब राजा ने उस स्त्री की बातें सुनके अपने ३०  
कपड़े फाड़े और भीत पर चला जाता था और लोगों ने जो दृष्टि कीई तो देखो  
अपने शरीर पर भीतर उटारसी वस्त्र पहिने था । तब उस ने कहा कि ईश्वर मुझ ३१  
से वैसा और उससे भी अधिक करे यदि आज सकल के घंटे इलीशय का सिर  
उस पर ठहरे ।

और इलीशय अपने घर में बैठा था और प्राचीन भी उस के साथ बैठे थे ३२  
और राजा ने अपने साथ का एक जन अपने आगे भेजा प्रभु हुन न पहुँचा था  
कि उस ने प्राचीनों से कहा कि देखो इस अधिक के घंटे ने कैसा भेजा है कि  
मेरा सिर काटे सा देखो जब दूत आवे तो द्वार बन्द करो और उसे दृढ़ता से  
द्वार पर पकड़े रखा गया उस के पीछे पीछे उस के स्वामी के पाँच का शब्द नहीं ।  
बल उन से यह कहि रहा था तो क्या देखता है कि हुन उस पास आ पहुँचा ३३  
और उस ने कहा कि देखो यह विपत्ति परमेश्वर की और से है अब आगे मैं  
परमेश्वर की बात क्यों जाऊँ ।

सातवां पद्य ।

तब इलीशय ने कहा कि परमेश्वर का वचन सुनो परमेश्वर यों कहता है कि १  
कल इसी जून समरन के फाटक पर छाया पिसान पाँच सूकी का एक पैमानः  
बिकेगा और जब दो पैमानः पाँच सूकी का । तब राजा के एक प्रतिष्ठित ने जिस २  
के हाथों पर राजा उठेगा था ईश्वर के जन की उत्तर दिया और कहा कि देख

११ है कि वह निश्चय मर जावेगा । और उस ने रूप स्थिर करके यहाँ लों रक्खा  
 १२ कि वह लज्जित हुआ और ईश्वर के जन ने विलाप किया । तब हजाएल ने  
 कहा कि मेरा प्रभु क्यों रोता है और उस ने उत्तर दिया इस लिये कि मैं जानता  
 हूँ कि तू इसराएल के संतान से कैसी घुराई करेगा उन के दृढ़ गठों को फूँक  
 देगा और उन के तरुणों को तलवार से घात करेगा और उन के बालकों को दे  
 १३ दे पटकेंगा और उन की गर्भिणियों को फाड़ेगा । तब हजाएल बोला क्या तेरा  
 सेवक कुत्ता है कि वह ऐसी घुरी बात करे तब इलीशअ बोला परमेश्वर ने मुझे  
 १४ बताया है कि तू अराम का राजा होगा । तब वह इलीशअ पास से अपने  
 स्वामी के पास गया जिस ने उसे पूछा कि इलीशअ ने तुझे क्या कहा और उस  
 १५ ने कहा कि उस ने मुझे बताया कि तू अवश्य चंगा होगा । और विहान को  
 ऐसा हुआ कि उस ने एक मोटा कपड़ा लिया और उसे पानी में चमोड़के उस  
 के मुँह पर यहाँ लों फैलाया कि वह मर गया और हजाएल ने उस की सन्ती  
 राज्य किया ॥

१६ और अखिअब के बेटे इसराएल के राजा यूराम के राज्य के पाँचवें बरस जब  
 यहूसफत यहूदाह का राजा था तब यहूसफत का बेटा यहूराम यहूदाह के राज्य  
 १७ पर बैठने लगा । जब कि वह राज्य करने लगा उस की वय बत्तीस बरस की थी  
 १८ और उस ने यहूसलम में आठ बरस राज्य किया । और वह अखिअब के घराने  
 के समान इसराएली राजाओं की चाल पर चलता था क्योंकि अखिअब की बेटी  
 १९ उस की पत्नी थी और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में घुराई किई । तथापि परमेश्वर  
 ने न चाहा कि यहूदाह को नाश करे क्योंकि उसे अपने सेवक दाऊद का पक्ष था  
 कि उस ने उसे बाचा दिई थी कि मैं तुझे और तेरे वंश को सर्वदा के लिये एक  
 दीपक दूंगा ॥

२० उस के समय में अदूम यहूदाह के वंश से फिर गये और उन्होंने ने अपने लिये एक  
 २१ राजा बनाया । तब यूराम सगीर में आया और सारे रथ उस के साथ थे और  
 उस ने रात को उठके अदूमियों को जो उसे घेरे हुए थे और रथों के प्रधानों को  
 २२ मारा और लोग अपने अपने तंबुओं को भाग गये । परन्तु अदूम आज के दिन  
 लों यहूदाह के वंश से फिरा है उसी समय में लिबनः भी फिर गये ॥

२३ और यूराम की उबरी हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया था सो क्या  
 २४ यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं है । तब  
 यूराम ने अपने पितरों में श्रयन किया और दाऊद के नगर में अपने पितरों में  
 गाड़ा गया और उस का बेटा अखजयाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

२५ इसराएल के राजा अखिअब के बेटे यूराम के बारहवें बरस यहूदाह का राजा  
 २६ यहूराम का बेटा अखजयाह राज्य पर बैठा । जब अखजयाह राज्य पर बैठा तब  
 वह बाईस बरस का था और यहूसलम में एक बरस राज्य किया और उस की  
 २७ माता का नाम अतलीयाह था जो इसराएल के राजा उमरी की बेटी थी । और वह  
 अखिअब के घराने की चाल पर चलता था और उस ने अखिअब के घराने के समान  
 २८ परमेश्वर की दृष्टि में घुराई किई क्योंकि वह अखिअब के घराने का जन्म था । और

के समान घोखा पिसान पाँच सूकी का एक पैमानः बिका और जय पाँच सूकी का दो पैमानः । और राजा ने उस प्रतिष्ठित को जिस के हाथ पर वह थोढ़ा गया १७ था फाटक की चौकसी दिई और लोगों ने फाटक में उसे लताड़ा और जैसा कि परमेश्वर के जन ने कहा था वह मर गया जय राजा उस पाम आया था वह मर गया । और जैसा कि ईश्वर का जन यह कहके राजा को बोला कि दो पैमानः १८ जय पाँच सूकी को और एक पैमानः घोखा पिसान पाँच सूकी को कल इसी जून समरुन के द्वार पर होगा मेरा पूरा दुश्मन । और उस प्रतिष्ठित ने ईश्वर के जन १९ को उत्तर देके कहा था अब देख यदि परमेश्वर स्वर्ग में स्थितियों बनावे वगैरे इस बात के समान होगा तब उस ने कहा कि तू उसे अपनी आँखों से देखेगा पर उसे न खावेगा । और उस पर ऐसा ही कुछ होता क्योंकि लोगों ने फाटक २० पर उसे लताड़ा डाला और वह मर गया ॥

आठवां पृष्ठ ।

तब इलीश ने उस स्त्री को कहा जिस के बेटे को उस ने जिलाया था कि १ उठ और अपने घर में समेत जा और जहाँ कहीं घाम कर नके घाम कर क्योंकि परमेश्वर एक अकाल लाता है मेरा देश में सात घरों में अकाल रहेगा । तब २ वह स्त्री उठी और उस ने ईश्वर के जन के कहने के समान किया और अपने घराने समेत फिलिस्तीनों के देश में सात घरों में घाम किया ॥

और सातवें घर के अन्त में ऐसा हुआ कि वह स्त्री फिलिस्तीनों के देश से ३ फिर आई और राजा पाम चली गई जिनमें अपने घर और अपनी भूमि के लिये चिन्ताये । तब राजा ईश्वर के जन के सेवक डौदाजी से यह कहके बोला कि ४ सारे बड़े बड़े कार्य जो इलीश ने दिखलाये हैं उन्हें मेरे आगे वर्णन कर । और ज्यों वह राजा से कहि रहा था कि उस ने एक नृपक को किस रीति से ५ जिलाया तो देखो कि वह स्त्री जिस के बेटे को उस ने जिलाया था उसके राजा के आगे अपने घर और अपनी भूमि के लिये चिन्ताये तब डौदाजी खान उठा कि हे मेरे प्रभु राजा वह स्त्री और उस का बेटा जिसे इलीश ने जिलाया पाये हैं । और जय राजा ने उन स्त्री से पूछा तो उस ने बताया तब राजा ने एक प्रधान ६ को उस के संग करके कहा कि उस का मय कुछ और उस के अन्न जिस दिन से उस ने यह भूमि छोड़ी है आज के दिन लो फेर दिलाओ ॥

तब इलीश दमिश्क में आया और अगम का राजा यिनददद रोगी था ७ और उसे संदेश पहुँचा कि ईश्वर का जन यहाँ आया है । और राजा ने हजागल ८ को कहा कि कुछ अपने दान हाथ में ले और ईश्वर के जन से भेंट करके और उस के द्वारा से परमेश्वर से घूँस और कह वगैरे में हम रोग से चंगा होऊँगा । मेरा हजागल उम्मे भेंट करने चला और उस ने दमिश्क की समस्त अच्छी वस्तु ९ भेंट के लिये हाथ में लिई अर्थात् चालीस कंट लदे हुए और उस के आगे खड़े होकर कहा कि तेरे बेटे यिनददद अराम के राजा ने मुझे यह कहके तेरे पाम भेजा है और पूछा है कि क्या मैं हम रोग से चंगा हूँगा । तब इलीश ने उसे कहा १० कि जाके उसी कह कि तू निश्चय चंगा होगा तथापि परमेश्वर ने मुझे दिखाया

- राजा यहूरास ने उन घावों से जो अरामियों ने उसे मारा था जब वह अराम के राजा हज्ज्जल से लड़ा था चंगा होने फिर आया तब याहू ने कहा कि यदि तुम्हारे मन होवे तो नगर से किसी को न निकलने न बचने दो और न होवे कि यजर-  
 १६ अरल में हमारा समाचार पहुंचावे । सो याहू रथ पर चढ़के यजरअरल को गया क्योंकि यूराम वहीं था और यहूदाह का राजा अखजयाह यूराम को देखने को उतर  
 १७ आया था । और यजरअरल की पुर्ज पर एक पट्ट था और उस ने ल्यों याहू की जथा को आते देखा ल्यों कहा कि मैं एक जथा को देखता हूं और यूराम ने कहा कि  
 १८ एक घोड़चढ़े को लेके उन की भेंट के लिये भेज और पूछ कि कुशल है । सो उस की भेंट के लिये एक जन घोड़े पर चढ़के आगे बढ़ा और जाके उस ने कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है और याहू ने कहा कि तुम्हें कुशल से क्या मेरे पीछे हो ले फिर पट्ट यह कहके बोला कि दूत उन पास पहुंचा परन्तु  
 १९ फिर नहीं आता । तब उस ने दूसरे को घोड़े पर भेजा और उस ने भी उन पास पहुंचके कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है और याहू ने उत्तर दिया कि तुम्हें कुशल से क्या मेरे पीछे हो ले । फिर पट्ट यह कहके बोला कि अब भी उन पास पहुंचा और फिर नहीं आता और हांकना निमसी के बेटे याहू के हांकने  
 २० कुशल से क्या मेरे पीछे हो ले । फिर पट्ट यह कहके बोला कि अब भी उन पास पहुंचा और फिर नहीं आता और हांकना निमसी के बेटे याहू के हांकने  
 २१ के समान है क्योंकि वह चौड़हापन से हांकता है । तब यूराम ने कहा कि जोता सो उस का रथ जोता गया तब इसराएल का राजा यूराम और यहूदाह का राजा अखजयाह अपने अपने रथ पर बाहर गये और वे याहू के विरोध में बाहर गये और उसे यजरअरली नवात के भाग में पाया ।
- २२ तब यूराम ने याहू को देखके कहा कि याहू कुशल है और याहू बोला कैसा कुशल कि जब तेरी माता ईजबिल का किनाला और उस के टोने बतने हैं ।
- २३ तब यूराम अपने हाथ फेरके भागा और अखजयाह से कहा कि हे अखजयाह  
 २४ छल है । तब याहू ने अपना हाथ धनुष से भरा और यहूरास की भुजाओं के मध्य में मारा और बाण उस के हृदय में पैठ गया और वह अपने रथ में झुक  
 २५ गया । तब उस ने अपने प्रधान विद्वर से कहा कि उसे उठाके यजरअरली नवात के खेत के भाग में डाल दे क्योंकि चेत कर कि जब मैं और तू उस के बाप अखिअव के पीछे चढ़े जाते थे परमेश्वर ने यह बोझ उस पर धरा था ।
- २६ परमेश्वर कहता है कि निश्चय मैं ने नवात के लोहू और उस के बेटों के लोहू को कल देखा है और परमेश्वर कहता है कि मैं तुझ से इसी भाग में पलटा लेऊंगा सो परमेश्वर के वचन के समान उसे लेके उसी स्थान में डाल दे ।
- २७ परन्तु जब यहूदाह के राजा अखजयाह ने यह देखा तो वह घर की बारी के मार्ग से निकल भागा और याहू ने उस का पीछा किया और कहा कि उसे भी रथ में मार लेयो सो उन्होंने ने जूर के मार्ग में जो इजबिलियाम के लग है उसे  
 २८ मारा और वह भागके मजिदो में आया और वहां मर गया । और उस के सेवक उसे रथ में डालके यहसलम को ले गये और उसे उस की समाधि में दाऊद के  
 २९ नगर में उस के पितरों के साथ गाड़ा । और अखिअव के बेटे यूराम के ग्यारहवें बरस अखजयाह यहूदाह पर राज्य करने लगा ॥

वह अग्निशय के घेरे यूराम के साथ अराम के राजा हज्जाल से लड़ने को रामात जिलिशद पर चढ़ा और अरामियों ने यूराम को घायल किया । सो राजा यूराम यजरशगल को फिर गया जिसने उन घावों से चंगा होवे सो अरामियों से जय वह अराम के राजा हज्जाल से लड़ा था उसे लगा था और यहूराम का घेरा यहूदाह का राजा अबजवाह यजरशगल को गया जिसने अग्निशय के घेरे यूराम को देखे क्योंकि वह घायल था ॥

नयां पद्य ।

तब इलीशय भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वक्ताओं के मतानों में से एक को बुलाया और उसे कहा कि अपनी कटि बांध और तेन की यह कुप्पी अपने हाथ में ले और रामात जिलिशद को जा । और जब तू वहां पहुंचे तो निमसी के घेरे यहू- सफत के घेरे याहू को हूँह ले और भीतर जाके उसे अपने भाइयों में से उठाके भीतर की कोठरी में ले जा । और कुप्पी का तेल लेके उस की मिर पर डाल और कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुम्हें इसराएल पर राज्याभिषेक किया तब तू द्वार खोलके भाग और ठहर मत । सो वह तनग अर्थात् वह तनग भविष्यद्वक्ता रामात जिलिशद को गया ॥

और जब वह आया तो क्या देखता है कि सेनापति बैठे हैं तब उस ने कहा कि हे सेनापति तेरे लिये मुझ पास संदेश है और याहू ने कहा कि इस सभों में से किम के लिये और उस ने कहा कि तेरे लिये हे सेनापति । और वह उनके घर में गया और उस ने उस की मिर पर वह तेल डालके उसे कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तुम्हें परमेश्वर के लोगों पर अर्थात् इसराएल पर राज्याभिषेक किया । और तू अपने स्वामी अग्निशय के घराने को मारेगा जिसने मैं अपने मेधक भविष्यद्वक्ताओं के लोहू का और परमेश्वर के मारे मेधकों के लोहू का ईजविल के हाथ से पलटा लेई । क्योंकि अग्निशय का मारा घर नष्ट होगा और मैं अग्निशय से हर एक पुरुष को जो भात पर सूता है क्या निबंध क्या दास इसराएल में काट डालूंगा । और मैं अग्निशय के घर की नयात के घेरे यकवियाम के घर के समान और अगियाह के घेरे यशगा के घर के समान करूंगा । और ईजविल को यजरशगल के भाग में कुत्ते खादेंगे और कोई गड़वैया न होगा और वह द्वार खोलके भागा ॥

तब याहू निकलके अपने प्रभु के सेवकों के पास आया और एक ने उसे कहा कि सब कुशल है यह वीजुदा तेरे पास किम लिये आया तब उस ने उन्हीं कहा कि तुम उस पुरुष को और उस के संदेश को जानते हो । और वे बोले कि भूँह हमें अब बता तब उस ने कहा कि यह मुझे यों कहके बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुम्हें इसराएल पर राज्याभिषेक किया । तब उन्होंने ने फुरती किई और हर एक ने अपना अपना वस्त्र लिया और अपने नीचे सीढ़ी पर खड़ा और यह कहके नरसिंगा फूँका कि याहू राज्य करता है । सो निमसी के घेरे यहू- सफत के घेरे याहू ने यूराम की विरोध में गुप्त बांधी अब अराम के राजा हज्जाल के कारण यूराम और सारे इसराएल रामात जिलिशद की रक्षा करते थे । परन्तु



- वसन में से जो परमेश्वर ने अखिअव के घर के विषय में कहा था कोई यात भूमि पर न गिरेगी क्योंकि परमेश्वर ने जो कुछ कि अपने सेवक इलियाह के द्वारा  
 ११ से कहा था उसे पूरा किया । सो याहू ने उन सब को जो अखिअव के घराने से यजरअएल में बच रहे थे और उस के समस्त महत जनों को और उस के कुटुम्बों को और उस के याजकों को मार डाला यहां लों कि एक को भी न छोड़ा ।  
 १२ तब वह उठा और चलके समरून को आया और ज्यों वह वैतएकद गढ़ेरियों  
 १३ के मार्ग के निकट पहुंचा । तब याहू ने यहूदाह के राजा अखजपाह के भाइयों को पाया और कहा कि तुम कौन और वे बोले कि हम अखजपाह के भाई राजा  
 १४ और रानी के पुत्रों के कुशल के लिये जाते हैं । तब उस ने आज्ञा किई कि उन्हें जीते पकड़ लें सो उन्होंने ने उन्हें जीते पकड़ लिया और उन्हें अर्थात् ब्यालीस को वैतएकद के गढ़े पर मार डाला और उन में से एक को न छोड़ा ।  
 १५ फिर यहां से चला और रैकाव के बेटे यहूनदव को पाया जो उस के भेंट करने को आता था तब उस ने उसे आशीस देके पूछा कि जैसा मेरा मन तेरे मन के साथ है क्या वैसा तेरा मन ठीक है तब यहूनदव ने उत्तर दिया कि है यदि होवे तो अपना हाथ मुझे दे सो उस ने अपना हाथ दिया और उस ने उसे रथ  
 १६ पर अपने साथ बैठा लिया । और कहा कि मेरे साथ चल और परमेश्वर के लिये मेरा उद्यतन देख सो वह उस के साथ रथ पर बैठ लिया ।  
 १७ और जब वह समरून में पहुंचा तो उस ने उन सभी को जो अखिअव के बचे हुए थे मार डाला यहां लों कि जैसा परमेश्वर ने इलियाह के द्वारा से कहा था उस  
 १८ ने उसे नष्ट कर दिया । फिर याहू ने सब लोगों को एकट्ठा किया और उन्हें कहा कि अखिअव ने बअल की थोड़ी पूजा किई याहू उस की बहुत सी पूजा करेगा ।  
 १९ सो अब बअल के सारे भविष्यद्वक्ताओं को और उस के सारे सेवकों और उस के सारे याजकों को मुझ पास बुलाओ उन में से एक भी न छोटे क्योंकि मैं बअल के लिये बड़ा बलि चढ़ाऊंगा जो कोई छटेगा सो जीवता न बचेगा परन्तु याहू ने  
 २० चतुराई से किया जिससे बअल के सेवकों को नाश करे । और याहू ने कहा कि  
 २१ बअल के लिये पर्व शुद्ध करो और उन्हें ने प्रचारा । और याहू ने समस्त इसरा-  
 एलियों में भेजा और बअल के सारे सेवक आये ऐसा कोई न था जो न आया हो और वे बअल के मन्दिर में गये और बअल का मन्दिर इस सिरे से उस सिरे लों  
 २२ भर गया । तब उस ने बस्त्र के घर के प्रधान को कहा कि सारे बअल के  
 २३ सेवकों के लिये बस्त्र निकाल ला सो वह उन के लिये बस्त्र निकाल लाया । तब याहू और रैकाव का बेटा यहूनदव बअल के मन्दिर में गये और बअल के सेवकों से कहा कि खोजो और देखो कि यहां तुम्हारे मध्य में परमेश्वर के सेवकों में से  
 २४ कोई न हो परन्तु केवल बअल के सेवक । और जब वे भेंट और बलिदान चढ़ाने को भीतर गये तब याहू ने बाहर बाहर अस्सी जन को ठहरा रक्खा और उन्हें कहा कि यदि कोई इन लोगों में से जिन्हें मैं ने तुम्हारे हाथ में कर दिया है बच निकले तो उस का प्राण उस के प्राण की सन्ती होगा ।  
 २५ और ऐसा हुआ कि ज्यों वह बलिदान की भेंट चढ़ा चुका तो याहू ने पहरेदारों

और जब यादू यजरअगल को आया तो ईजिप्तिन ने सुना और अपनी आंखों २०  
में अंजन लगाया और अपना मस्तक संधारा और एक भरोम्मे से झांकने लगी ।  
क्योंहीं यादू ने फाटक में से प्रवेग किया त्योहीं बह वाली कि क्या जिमरी को २१  
कुशल मिना जिम ने अपने प्रभु को वधन किया । तब उस ने भरोम्मे की और २२  
मस्तक उठाया और कहा कि मेरी और कौन कौन है और उस की और दो तीन  
शयनस्थान के प्रधानों ने देखा । तब उस ने कहा कि उसे गिरा दो मैं उन्हीं ने २३  
उसे नीचे गिरा दिया और उस का लोटू भीत पर और घोड़ा पर पड़ा और उस ने  
उसे लताड़ा । और भीतर आके था पीके कहा कि जाओ और उस ग्रापित को २४  
देखो और उसे गाढ़ो क्योंकि वह राजपुत्री है । और वे उसे गाढ़ने गये परन्तु २५  
उन्हीं ने उस को ग्रापही और उस के प्रांथों और गर्दनियों से अधिक कुछ न पाया ।  
तब वे फिर आये और उसे संदेश दिया वह जाना कि यह वह दान है जो पर- २६  
मेश्वर ने अपने सेवक इलियाह तिसरी में कही थी कि यजरअगल के भाग में  
कुत्ते ईजिप्तिन का मांस खावेंगे । और ईजिप्तिन को नाथ यजरअगल के भाग में २७  
खेत पर खाद की नाई पड़ी रहेंगी और न कहेंगे कि यह ईजिप्तिन है ॥

दसवां पृष्ठ ।

और समस्त में अग्नियज्ञ के सत्तर छेदे थे मा यादू ने पत्र लिखे और यजर- १  
अगल के आजाकारियों के और प्राचीनों के और अग्नियज्ञ के संतानों के पालकों  
के पास समस्त का यह कहके भेजा । कि अब जेमा कि तुम्हारे प्रभु के छेदे २  
और रथ और घोड़े और वाहित नगर और नगर भी और अमर हैं मा हम पत्र  
के तुम्हारे पास पहुंचते हैं । जो तुम्हारे म्यासी के छेदों में मे मय ने अज्जा और ३  
योग्य छोये देखके उस के पिता के मिशमन पर उसे छेदाओ और अपने म्यासी  
के घर के लिये लड़ाई करेंगे । परन्तु वे अत्यन्त डर गये और बोले कि देखा दो ४  
राजा तो उस का माम्रा न कर सकें फेर हम क्योंकि डरेंगे । तब जो घर का ५  
प्रधान था और जो नगर का प्रधान था और प्राचीन और पालकों ने यादू को  
कहला भेजा कि हम तरे सेवक हैं तू जो कुछ कहेंगा मा सब हम मानेंगे हम  
राजा न बनायेंगे जो तुम्हें अच्छा लगे मा कर ॥

तब उस ने उन के पास यह कहके दूगरी पत्री लिखी कि यदि तुम मेरी और ६  
हो और मेरा शब्द मानोगे तो अपने म्यासी के छेदों के मस्तकों को लेके फल  
इसी समय सुभ पास यजरअगल में चले आओ अब राजा के छेदे सत्तर जन ७  
होके नगर के सदन लोगों के साथ थे जो उन के पालक थे । और जब यह पत्री ८  
उन के पास पहुंची तो उन्हीं ने सत्तर जन राजपुत्रों को मार डाला और उन के  
मस्तकों को टोकरों में रखके और उस पास यजरअगल में भेजा । तब एक दून ९  
आया और यह कहके उसे बोला कि वे राजपुत्रों के मस्तक लायें हैं और वह १०  
बोला कि नगर के फाटक की पैंठ में विद्यान लो उन को दो ठेर कर रखो ।  
और यों हुआ कि प्रातःकाल को वह बाहर जाके खड़ा हुआ और सब लोगों से १  
कहा कि तुम धर्मी हो देखा मैं ने तो अपने म्यासी के विरुद्ध गुप्त बांधके उसे  
वधन किया पर इन सभों को किस ने घात किया । अब जानो कि परमेश्वर के १०

७ पहरुओं के पीछे इस रीति से भवन की रक्षा करो और रोको । और तुम सभी में से दो जथा जो विश्राम में निकलती हैं राजा के आसपास होके परमेश्वर के मन्दिर की रखवाली करें । और राजा की चारों ओर रहो और हर एक जन शस्त्र हाथ में लिये रहे और जो बाड़ों के भीतर आवे सो मारा जावे और बाहर भीतर आते जाते राजा के साथ रहो ॥

८ तब जैसा यहूयदः याजक ने समस्त आज्ञा किई थी शतपतियों ने वैसा ही किया और उन में से हर एक ने अपने अपने जनों को जो विश्राम में बाहर भीतर आने जाने पर थे लिया और यहूयदः याजक पास आये । तब याजक ने राजा दाजद की वरकियां और ठालें जो परमेश्वर के मन्दिर में थीं शतपतियों को दिई । और पहरू अपने अपने शस्त्र हाथ में लेके हर एक जन मन्दिर के दहिने कोने से लेके बायें कोने लां और वेदी की और मन्दिर की और राजा की चारों ओर खड़े हुए । तब वह राजपुत्र को निकाल लाया और उस पर मुकुट रखके उसे साक्षी दिई और उसे राजा बनाया और उसे अभिषेक किया और उन्हें ने तालियां बजाईं और बोले कि राजा जीव । और जब अतलीयाह ने पहरुओं और लोगों का शब्द सुना तो वह लोगों में परमेश्वर के मन्दिर में पहुंची । और क्या देखती है कि व्यवहार के समान राजा खंभे से लगा हुआ खड़ा है और अध्यक्ष और नरसिंगे के बजवैये राजा के लग खड़े हैं और देश के सारे लोग आनन्द में हैं और नरसिंगे फूंकते हैं तब अतलीयाह ने अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाके बोली कि कल कल । परन्तु यहूयदः याजक ने शतपतियों को और सेना के अध्यक्षों को आज्ञा किई और उन से कहा कि उसे बाड़ों से बाहर करो और जो उस का पीछा करे उसे तलवार से मार डालो क्योंकि याजक ने कहा था कि वह परमेश्वर के मन्दिर में मारी न जावे । तब उन्होंने ने उस पर हाथ चलाये और वह उस मार्ग में जिस मार्ग से छोड़े राजा के भवन में आते थे जाती थी और वहां मारी गई ॥

१० और यहूयदः ने परमेश्वर के और राजा के और लोगों के मध्य में एक खाचा बांधी कि वे परमेश्वर के लोग होवें और राजा और लोगों के मध्य में खाचा बांधी । तब देश के सारे लोग बअल के मन्दिर में आये और उसे ठाया और उन्होंने ने उस की मूर्ती और उस की वेदियों को चकनाचूर किया और बअल के याजक मत्तान को वेदियों के सन्मुख घात किया और याजक ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये पदों को ठहराया । तब उस ने शतपतियों को और प्रधानों को और पहरुओं को और देश के सारे लोगों को लिया और वे राजा को परमेश्वर के मन्दिर से उतारके पहरुओं के फाटक के मार्ग से राजभवन में लाये और वह राजाओं के सिंहासन पर बैठा । और देश के सारे लोग आनन्दित हुए और नगर में चैन हुआ और उन्होंने ने अतलीयाह को राजभवन के लग खड्ड से घात किया । २१ जब यूआस राजा सिंहासन पर बैठा तब वह सात बरस का था ॥

बारहवां पृष्ठ ।

१ और याहू के सातवें बरस यूआस राज्य करने लगा और उस ने यरुसलम में

को और प्रधानों को आज्ञा किई कि घुमे। उन्हें मार डालो। एक भी बाहर निकलने न पावे। सो उन्होंने ने उन को तलवार की धार से मार डाला और पटक और प्रधान उन की लोथों को बाहर फेंकके बज्र के मन्दिर को नगर में गये । और उन्होंने ने बज्र के मन्दिर की मूर्तियों को निकाला और उसे जला दिया । २६ और बज्र की मूर्ति को चकनाचूर किया और बज्र का मन्दिर टा दिया और २७ आज के दिन लों उसे दिशा फिरने का घर बनाया । यों यादू ने बज्र को इस- २८ राएल में से नष्ट किया । परन्तु यादू ने उन पापों को जो नद्यास के घेरे यक्षप्रभाम २९ ने इसराएलियों से करवाया था छोड़ न दिया अर्थात् सोने के बरतों को जो बैतएल और दान में थे रहने दिया ।

तब परमेश्वर ने यादू से कहा इस कारण कि जो मेरी दृष्टि में अच्छा था तु ३० ने उसे किया है और जो कुछ कि मेरे मन में था तु ने अशुभकर्म के घराने पर किया है सो तेरे संतान चाँची पीढ़ी लों इसराएल के विंशमन पर चढ़ेंगे । पर ३१ यादू इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की अप्रमत्ता पर अपने मन में न सला उस ने यक्षप्रभाम के पापों को न छोड़ा जिस ने इसराएल में पाप करवाया । उन ३२ दिनों में परमेश्वर ने इसराएल को फाट काटके घटाना आरंभ किया और इसराएल ने उन्हें इसराएल के सारे मिथानों में मारा । परदन में लेके उदय की ओर ३३ सारे जिलियद के देश जद और स्थीनी और सुनम्मा। परयावर से लेके जो परनून की नदी के लग है अर्थात् जिलियद और यमन लों ।

अब यादू की रही हुई क्रिया और सब जो हम ने किया और उस के सारे ३४ पराक्रम क्या वे इसराएल के राजाओं के समर्थों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखे । और यादू अपने पितरों में सो रहा और उन्होंने ने उसे समन में गाहा ३५ और उस के घेरे यहूअखज ने उस की मर्ती राज्य किया । और जिन दिनों में ३६ यादू ने समन में इसराएल पर राज्य किया सो अट्ठाईस वरस थे ।

ग्यारहवां पृष्ठ ।

तब अखजयाह की माता अतलीयाह ने ज्यों देखा कि मेरा बेटा मूका तो १ उठी और राजा के सारे वंश को मार डाला । परन्तु अखजयाह की बहिन गुराम २ राजा की बेटी यहूअख ने अखजयाह के घेरे यूसुस को लिया और उसे उन राजपुत्रों में से जो मारे गये थे चुराके उसे और उस की दाई को जगनस्थान में अतलीयाह से छिपाया जहाँ लों कि वह मारा न गया । और जब उस के साथ ३ परमेश्वर के मन्दिर में छः वरस लों छिपा रहा और अतलीयाह देश पर राज्य करती रही ॥

और सातवें वरस यहूअख ने सो सो के अधियों को और प्रधानों को पटनियों ४ समेत बुला भेजा और उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में अपने पाम बुलाके उन में बाचा बांधा और परमेश्वर के मन्दिर में उन में क्रिया लिखे और राजा के घेरे को उन्हें दिखाया । और उस ने यह कहके उन्हें आज्ञा किई कि तुम यह काम ५ करो कि तुम्हारा तीसरा भाग जो यिथाम में भीतर आता है राजा के भयन का रक्षक होवे । और तीसरा भाग सूर के फाटक पर रहे और तीसरे फाटक पर ६

और अखजयाह यहूदाह के राजाओं ने भेंटें चढ़ाई थीं और उस की अपनी पवित्र किई हुई वस्तु उस सब सेने समेत जो परमेश्वर के मन्दिर के भंदारों और राजा के भवन में पाया गया लेके अराम के राजा हजाएल पास भेजी तब वह यहूदसलम से चला गया ॥

- १९ और यूआस की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया मो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं है ।  
 २० तब उस के सेवकों ने उठके युक्ति बांधी और यूआस को मिल्ता के घर में जो  
 २१ सिल्ता को उतरता है छांत किया । और सिमथात के बेटे यूजकर और सामिर के बेटे यहूजबद उस के सेवकों ने उसे मारा और बह मर गया और उन्होंने उस के पितरों के संग दाऊद के नगर में उसे गाड़ा और उस का बेटा अमसियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

तेरघवां पर्व ।

- १ यहूदाह के राजा अखजयाह के बेटे यूआस के तेईसवें वरस याहू के बेटे यहूअखज ने समरून में इसराएल पर राज्य करना आरंभ किया और सत्रह वरस  
 २ राज्य किया । और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नवात के बेटे यहूविआम के पापों का पीछा किया जिस ने इसराएल से पाप करवाया वह उन  
 ३ से अलग न हुआ । तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें अराम के राजा हजाएल को और हजाएल के बेटे विनहदद को उन के  
 ४ जीवन भर सौंप दिया । और यहूअखज ने परमेश्वर की विनती किई और परमेश्वर ने उस की सुनी क्योंकि उस ने इसराएल का सताया जाना देखा क्योंकि  
 ५ अराम का राजा उन्हें सताता था । और परमेश्वर ने इसराएल को एक उद्धारक दिया यहां लों कि वे अरामियों के वश से निकल गये और इसराएल के संतान  
 ६ आगे की नाईं अपने अपने डेरों में रहने लगे । तथापि उन्होंने ने यहूविआम के घर के पापों को न छोड़ा जिस ने इसराएल से पाप करवाया परन्तु उसी चाल  
 ७ पर चलता रहा और समरून में भी कुंज बना रहा । और उस ने लोगों में से किसी को यहूअखज के साथ न छोड़ा परन्तु पचास घोड़चढ़े और दस रथ और दस सहस्र पगइत क्योंकि अराम के राजा ने उन्हें नाश किया और उन्हें पीट पीटके धूल की नाईं बनाया ॥

- ८ अब यहूअखज की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया और उस का पराक्रम क्या इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं  
 ९ लिखा है । और यहूअखज ने अपने पितरों में शयन किया और उन्होंने ने उसे समरून में गाड़ा तब उस का बेटा यहूआश उस की सन्ती राजा हुआ ॥

- १० यहूदाह के राजा यूआस के सैंतीसवें वरस यहूअखज का बेटा यहूआश समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा सोलह वरस उस ने राज्य किया । और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई वह नवात के बेटे यहूविआम के सारे पापों से अलग न हुआ जिस ने इसराएल से पाप करवाया वह उस में चलता  
 १२ था । और यूआस की उबरी हुई क्रिया और सब जो उस ने किया और उस का

वालीम वरम राज्य किया और उस की माता का नाम विश्वमय्य की विश्वः  
था । जब लो यदूषदः याज्ञक यूशाम को उपदेश करता रहा उस के जीवन भर  
उस ने परमेश्वर की दृष्टि में मलाई किई । परन्तु ऊँचे स्थान वर न किये राखे थे  
लेगा अब लो जंने स्थानों पर बलिदान चढ़ाते थे और सुगंध लाने थे ॥

और यूशाम ने याज्ञकों से कहा कि पवित्रता की मार्ग रोक्कड़ जो परमेश्वर ४  
के मन्दिर में पहुँचाई जाती हैं अर्थात् वह विशेष रोक्कड़ जो प्राण का मान  
ठहरती है समस्त रोक्कड़ जो घर तक अपनी दुकान में परमेश्वर के मन्दिर में गाना  
है । जो याज्ञक घर तक अपने अपने ज्ञान पहिचान ने लेवे और घर के दरारों को ५  
जहाँ कहीं दरार पाये जायें सुधारें ॥

परन्तु ऐसा हुआ कि यूशाम के राज्य के तेरहवें वरम लो याज्ञकों ने मन्दिर ६  
के दरारों को न सुधारा । तब यूशाम राजा ने यदूषदः याज्ञक को यह और ७  
याज्ञकों को बुलाके उन्हे कहा कि घर के दरारों को जहाँ नहीं सुधारते तो मैं  
अब अपने अपने ज्ञान पहिचानों में रोक्कड़ मत लेना परन्तु उसे घर के दरारों के  
लिये सौंपो ॥

और याज्ञकों ने लोगों में रोक्कड़ न लेने का मान लिया कि घर के दरारों को ८  
न सुधारें । परन्तु यदूषदः याज्ञक ने एक मंजूषा लिखी और उस के टुकड़े पर एक  
छेद किया और उसे यज्ञों के लगे परमेश्वर के मन्दिर में डालने की इतिहास  
रक्खा और याज्ञक जो छेदनी को रखा करता था सब रोक्कड़ को जो परमेश्वर  
के मन्दिर में जाई जाती थीं उस में रखता था ॥

और ऐसा हुआ कि जब मंजूषा में बहुत रोक्कड़ टानी थी तो राजा का लेखक १०  
और प्रधान याज्ञक आके रोक्कड़ को अलिखी में बाँधते थे और उन रोक्कड़ को  
जो परमेश्वर के मन्दिर में पाते थे गिनते थे । और वे उस गिनती हुई रोक्कड़ को ११  
उन के हाथ में देते थे जो काम करते थे जो ईश्वर के मन्दिर पर जगेहों के और  
वे उसे यदूषदों को और यज्ञद्वयों को जो परमेश्वर के मन्दिर का काम बनाते  
थे उसे पहुँचाते थे । और पत्थरियों को और पत्थर के गड्ढों को और मट्टे १२  
और टाँप हुए पत्थर के लिये उठान करते थे जिससे परमेश्वर के मन्दिर के दरारों  
को सुधारें और सब के लिये जो घर के सुधारने के लिये थे । मणार्थ उस रोक्कड़ १३  
में जो परमेश्वर के मन्दिर में आनी थी परमेश्वर के मन्दिर के लिये चाँदी के  
कटोरे और कतरनियाँ और थालियाँ और तुलसीयाँ काई सोने का पात्र लज्जया  
चाँदी का पात्र नहीं बनाया गया । परन्तु उसे धनिधारी को देने थे और उसने १४  
परमेश्वर के मन्दिर को सुधारते थे । और जिन के हाथ रोक्कड़ को धनिधारी के १५  
लिये सौंपते थे वे उन से लेखा न लेते थे क्योंकि वे मज्जाई में उठाते थे । अपराध १६  
की रोक्कड़ और पाप की रोक्कड़ परमेश्वर के मन्दिर में न लाते थे परन्तु वे याज्ञक  
को थीं ॥

उसी समय अराम का राजा दजाएल चढ़ गया और जात से लड़के उसे ले १७  
लिया और फिर यरुसलम को और फिर कि उसे भी लेवे । तब यदूषद के राजा १८  
यूशाम ने समस्त पवित्र किई गई वस्तु जो उस के पितर यदूषक और यूशाम



८ यहूदाह के राजा अजरियाह के अठतीसवें वरस यरुविश्राम के बेटे जकरियाह ने इसराएल पर समरून में छः मास राज्य किया । और उस ने अपने पितरों के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई नवात के बेटे यरुविश्राम के पापों से जिस ने इसराएल से पाप करवाया अलग न हुआ । और यवीस के बेटे सलूम ने उस के विरोध में युक्ति बांधके लोगों के आगे मारा और उसे घात किया और उस की सन्ती राज्य किया ॥

११ और जकरियाह की चवरी हुई क्रिया देखो वे इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी हैं । परमेश्वर का यह यत्न है जो यह याहू से कहके बोला कि तेरे बेटे चौथी पीढ़ी लो इसराएल के सिंहासन पर बैठेंगे वैसा ही संपूर्ण हुआ ॥

१३ यहूदाह के राजा उज्जियाह के राज्य के उनतालीसवें वरस यवीस के बेटे सलूम ने राज्य करना आरंभ किया और उस ने समरून में एक मास भर राज्य किया ।

१४ क्योंकि जह्दी का बेटा मुनहिम तिरजः से समरून पर चढ़ आया और यवीस के बेटे सलूम को समरून में मारा और उसे घात करके उस की सन्ती राज्य किया ॥

१५ और सलूम की रही हुई क्रिया और उस की युक्ति जो उस ने बांधी सो देखो १६ वे इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी हैं । तब मुनहिम ने तिफसह को उन सब समेत जो उस में थे तिरजः से लेके उस के सिवाने लो मारा क्योंकि उन्होंने ने उस के लिये न खोला इस लिये उस ने मारा और उस में की सारी गर्भिणी स्त्रियों का पेट फाड़ा ॥

१७ यहूदाह के राजा अजरियाह के उनतालीसवें वरस जह्दी के बेटे मुनहिम ने इसराएल पर राज्य करना आरंभ किया उस ने समरून में दस वरस राज्य किया ।

१८ और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नवात के बेटे यरुविश्राम के पापों को

१९ जिस ने इसराएल से पाप करवाया अपने जीवन भर न छोड़ा । तब असूरियों का राजा फूल देश के विरोध में चढ़ आया और मुनहिम ने चालीस लाख रुपये के लगभग फूल को दिया जिससे उस का साथी होके उस का राज्य स्थिर करे ।

२० और मुनहिम ने यह रोकड़ इसराएल से काढ़ी अर्थात् हर एक धनी से पचास शैकल चांदी लिई और असूरियों के राजा को दिया सो असूरियों का राजा फिर गया और देश में न ठहरा ॥

२१ और मुनहिम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या वे इस-

२२ राएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखी हैं । और मुनहिम ने अपने पितरों में श्रयन किया और उस के बेटे फिकाहियाह ने उस की सन्ती राज्य किया ॥

२३ यहूदाह के राजा अजरियाह के पचासवें वरस मुनहिम का बेटा फिकाहियाह

२४ समरून से इसराएलियों पर राज्य करने लगा उस ने दो वरस राज्य किया । और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई उस ने नवात के बेटे यरुविश्राम के पापों को

२५ जिस ने इसराएल से पाप करवाया छोड़ न दिया । परन्तु उस के सेनापति रम-लिषाह के बेटे फिकः ने उस के विरुद्ध युक्ति बांधी और उसे समरून में अरजूब

पराक्रम जिससे यदूदाह के राजा अमसियाह के विरोध में लड़ता था सो क्या ये दूसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखे हैं । और १३ यूशाम ने अपने पिताओं में श्रयन किया और यरुविशाम उस के सिंहासन पर बैठा और यूशाम समस्त में दूसराएल के राजाओं में गाढ़ा गया ।

अब इलीशम एक रोग से रोगी पड़ा जिससे वह मर गया और दूसराएल १४ का राजा यूशाम उस पास उत्तर आया और उस के मुँह पर रोक के कटा कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता दूसराएल के रथ और उस के घोड़बट्टे । और इलीशम ने १५ उसे कहा कि धनुष आग अपने हाथ में ले और उस ने धनुष आग लिये । फिर १६ उस ने दूसराएल के राजा को कहा कि धनुष पर अपना हाथ धर और उस ने अपना हाथ धरा और इलीशम ने राजा के हाथों पर अपने हाथ रखे । और १७ उसे कहा कि पृथ्वी की ओर की खिड़की खोल सो उस ने खोली तब इलीशम ने कहा कि सार और उस ने सारा तब उस ने कहा कि यह परमेश्वर के वचाव का आग और आराम से वचाव का आरा है क्योंकि तू आराम को अपनी ओर से मेरा मारेगा कि उन्हें मिटा डालेगा । फिर उस ने उसे कहा कि खानी को ले और १८ उस ने लिया तब उस ने दूसराएल के राजा से कहा कि भूमि पर आग सार और यह तीन घर सारके रहि गया । तब ईश्वर के जन ने उसे क्रुद्ध होके कहा १९ उचित था कि पांच अथवा छः घर मारता तब तू आराम को यहां ली मारता कि उन्हें मिटा डालना परन्तु अब तो तू आराम को तीन घर मारेगा ।

तब इलीशम मर गया और उन्हें ने उसे गाढ़ा और घरम के आरंभ में २० मांशप्रियों की जयाओं ने देश को घेर लिया । और रेमा हुआ कि वय ये एक २१ जन को गाढ़ते थे तो क्या देखते हैं कि एक जया तब उन्हें ने उस नृपति को इलीशम की समाधि में फेंका और वह मिरा और इलीशम की लाश पर पड़ा और वह जी उठा और अपने पांच से गढ़ा हो गया ।

परन्तु आराम का राजा इजाएल यदूशम्वज के जीयन भर दूसराएलियों को २२ सताता रहा । और परमेश्वर ने उन पर अनुग्रह किया और उन पर दयाल हुआ २३ और उस ने अघिरशाम और इजहाफ और यशफूव से अपनी दाचा के कारण सुधि लिई और उन्हें नाश करने न चाहा और अपने आगे में अब ली दूर न किया । सो आराम का राजा इजाएल मर गया और उस के बेटे विनाहद ने उस की २४ सती राज्य किया । और यदूशम्वज के बेटे यूशाम ने इजाएल के बेटे विनाहद २५ के हाथ से उन नगरों को फेर लिया जो उस ने उस के पिता यदूशम्वज से लड़ाई में लिये थे और यूशाम ने उसे तीन घर मारा और दूसराएलियों के नगर फेर लिये ॥

चौदहवां पृष्ठ ।

दूसराएल के राजा यदूशम्वज के बेटे यूशाम के राज्य के दूसरे वरस यदूदाह १ के राजा यदूशाम का बेटा अमसियाह राजा हुआ । जब वह राज्य करने लगा २ तो पचीस वरस का था और उस ने यरुसलम में उनतीस घरम राज्य किया और उस की माता का नाम यदूशम्वज यरुसलमी था । और उस ने परमेश्वर की दृष्टि ३ में भलाई किई तथापि अपने पिता दाऊद के समान नहीं परन्तु उस ने सब कुछ

- ४ दूर किया था अपने बेटे को आग में से चलाया । और ऊँचे ऊँचे स्थानों और पहाड़ों पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे खलि चढ़ाये और धूप जलाये ॥
- ५ तब अराम के राजा रसीन और इसराएल के राजा रसलियाह का बेटा फिकः यरूशलम पर लड़ने चढ़े और उन्होंने ने आखज को घेर लिया परन्तु जीत न सके । उसी समय अराम के राजा रसीन ने समरन के लिये ऐलात फेर लिया और यहूदियों को ऐलात से खेद दिया और अरामी ऐलात को आये और आज ७ लों उस में बस्ते हैं । और आखज ने असूर के राजा तिगलतपिलासर पास दूत के द्वारा से कहला भेजा कि मैं तेरा सेवक और तेरा बेटा सो आ और मुझे अराम के राजा के हाथ से और इसराएल के राजा के हाथ से जो मुक्त पर चढ़ ८ आये हैं कुड़ा । और आखज ने सोना चांदी जो परमेश्वर के मंदिर में और राजा ९ के घर के भंडारों में था लेके असूर के राजा के लिये भेंट भेजी । और असूर के राजा ने उस का बचन माना क्योंकि असूर का राजा दमिश्क के विरोध में चढ़ गया और उसे ले लिया और वहां के लोगों को बंधुआ करके कीर में लाया और रसीन को मार डाला ॥
- १० तब राजा आखज असूर के राजा तिगलतपिलासर से भेंट करने दमिश्क को गया और दमिश्क में एक वेदी देखी और आखज राजा ने उस वेदी का डौल और ११ रूप उस के समस्त कार्यकारी के समान जरियाह याजक के पास भेजा । जो जरियाह याजक ने उन सभी के समान जो आखज ने दमिश्क से भेजा था एक वेदी बनाई और आखज राजा के दमिश्क से आते आते जरियाह याजक ने वेदी १२ को सिद्ध किया । और जब राजा दमिश्क से आया तो राजा ने वेदी को देखा १३ और राजा वेदी पास गया और उस पर चढ़ाया । और उस ने अपने बलिदान की भेंट और अपने होम की भेंट चढ़ाई और अपने पीने की भेंट उस पर डाली १४ और अपने कुशल की भेंट का लोहू वेदी पर छिड़का । और उस ने पीतल की उस वेदी को जो परमेश्वर के आगे थी घर के सामने से अर्थात् वेदी के और १५ परमेश्वर के घर के मध्य से लाके वेदी के उत्तर अलग रखवा । और राजा आखज ने जरियाह याजक को आज्ञा करके कहा कि बिहान के बलिदान की भेंट और सांझ के होम की भेंट और राजा के बलिदान की भेंट और उस के होम की भेंट और देश के सारे लोगों के बलिदान की भेंट और उन के होम की भेंट और उन के पीने की भेंट जला और बलिदान की भेंट के सारे लोहू और बलि के सारे लोहू उस पर छिड़क और पीतल की वेदी मेरे खूंकने के लिये होगी । १६ यों जरियाह याजक ने आखज राजा की आज्ञा के समान सब कुछ किया । १७ और राजा आखज ने आधार के कोरों का काट डाला और उन पर के स्तानपात्र को अलग किया और समुद्र को पीतल के बेलों पर से उतारके बिके हुए १८ पत्थरों पर रखवा । और ब्रिग्राम की छत को जो उन्होंने ने घर में बनाई थी और राजा के पैठ के बाहर बाहर असूर के राजा के लिये उस ने परमेश्वर के मंदिर से बाहर किया ॥
- १९ अब आखज की रही हुई क्रिया जो उस ने किई सो क्या वे यहूदाह के राजाओं

और अरिया और जिलिअदी पचास मनुष्यों समेत राजा की भयन में मारा और उसे घात करके उस की मन्ती राज्य किया ।

और फिक्रियाह की रही हुई किया और सब जो उस ने किया देखो वे इस- २१  
रागल के राजाओं के समर्थों के समाचार की पुस्तक में लिखी हैं ।

यहूदाह के राजा अशरियाह के वायनर्थ थमस रसलियाह का बेटा फिर २२  
समयन में इसरागल पर राज्य करने लगा और उस ने चौस थमस राज्य किया ।  
और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किए नयान के बेटे परमेश्वर के साथ २३  
में जिस ने इसरागल में पाप करवाया उनका न हुआ । इसरागल के राजा फिर २४  
के दिनों में अमर के राजा निगलतपिलास ने आगे केमन को और उलीनथन-  
मयक को और युनहा को और फादिस को और दमर को और प्रोमियर को  
और जलीन को और नफतानी के मारे देम को लेके उनके अमर को अमुदाई में  
ले गया । और गला के बेटे हमीय ने रसलियाह के बेटे फिर के विनह में २५  
युक्ति बांधके उसे मारा और घात करके रसलियाह के बेटे युगल के साथ २६  
उस की मन्ती राज्य किया ।

और फिर की रही हुई किया और सब जो उस ने किया देखो वे इसरागल २७  
के राजाओं के समर्थों के समाचार की पुस्तक में लिखी हैं ।

इसरागल के राजा रसलियाह के बेटे फिर के दूसरे थमस यहूदाह के राजा २८  
रजियारि का बेटा युताम राज्य करने लगा । जब उस ने राज्य करना शुरू २९  
किया तो वह पचास थमस का था और उस ने सोलह थमस परमलम में राज्य  
किया और उस की माता का नाम परमा था जो मयक की बेटा थी । और ३०  
उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किए जो कुछ किया तो अपने घात रसलियाह  
के समान किया । तथापि जैसे नयान उनका न किए सब अथ में तथा जैसे माता ३१  
पर यलि चढ़ाते और धूप जलाते थे उस ने परमेश्वर के सेवक का सेवा काटक  
बनाया ।

अथ युताम की रही हुई किया और सब जो उस ने किया तो इस ३२  
के राजाओं के समर्थों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखी हैं । हमारी दिनों में ३३  
परमेश्वर ने अराम के राजा रसीन को और रसलियाह के बेटे फिर के यहूदाह  
पर भेजा । और युताम ने अपने पिता में शयन किया और अपने पिता दादर के ३४  
नगर में अपने पिता में साहा गया और उस का बेटा कायल उस की मन्ती  
राज्य करने लगा ।

### सोलहवां पृष्ठ ।

रसलियाह के बेटे फिर के राज्य के सवर्धन थमस यहूदाह के राजा युताम का ३५  
बेटा आखज राज्य करने लगा । जब आखज राज्य करने लगा तब वह चौस ३६  
थमस का था और उस ने सोलह थमस परमलम में राज्य किया और उस ने पर-  
मेश्वर अपने देव्य की दृष्टि में अपने पिता दादर के समान भलाई न किए ।  
परन्तु वह इसरागल के राजाओं की चान पर चलता था और उस ने भी अन्त- ३७  
देशियों के धिनिता के समान शिन्द परमेश्वर ने इसरागल के समान के आगे से

किया और व्यर्थ होके अपने चारों ओर के अन्यदेशियों का पीछा किया जिन्हें  
 १६ परमेश्वर ने उन्हें चिता रखवा था कि तुम उन के समान मत कीजियो । और  
 उन्होंने ने परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को छोड़ दिया और अपने लिये  
 ठाली हुई मूर्तों और दो बकियाँ बनाई और एक कुंज लगाया और आकाश की  
 १७ सारी सेना की पूजा किई और बअल की सेवा करते थे । और उन्होंने ने अपने  
 बेटों को और अपनी बेटियों को आग में से चलाया और आगम कहने और  
 टोना करने लगे और परमेश्वर की दृष्टि में उसे रिसियाने के लिये और बुराई  
 १८ करने के लिये आप को बेचा । इस लिये परमेश्वर इसराएल पर निपट रिसाया  
 और उन्हें अपनी दृष्टि से अलग किया और केवल यहूदाह की गोष्टी को छोड़  
 १९ कोई न छूटा । यहूदाह के संतान ने भी परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को  
 पालन न किया परन्तु इसराएल की विधि पर चलते थे ॥

२० तब परमेश्वर ने इसराएल के सारे वंश को त्याग किया और उन्हें कष्ट दिया  
 और उन्हें लुटेरों के हाथ में सौंप दिया यहां लों कि उस ने उन्हें अपनी दृष्टि  
 २१ से दूर किया । क्योंकि उस ने इसराएल को डाऊद के घराने से निकाल दिया और  
 उन्होंने ने नबात के बेटे यरुबिआम को राजा किया और यरुबिआम ने इसराएल  
 को परमेश्वर का पीछा करने से दूर किया और उन से बड़ा पाप करवाया ।  
 २२ क्योंकि इसराएल के संतान यरुबिआम के किये हुए सारे पापों पर चलते थे वे  
 २३ उन से अलग न हुए । यहां लों कि परमेश्वर ने इसराएल को अपनी दृष्टि से  
 दूर किया जैसा उस ने अपने सारे दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा से कहा था सो  
 इसराएल अपने देश से निकाले जाके आज लों असूर में पहुंचाये गये ॥

२४ और असूर के राजा ने बाबुल से और कूत से और अब्बा से और हमात से  
 और सिप्रवाइम से लोगों को लाके समरून की वस्तियों में इसराएल के संतान की  
 सन्ती बसाया और वे समरून के अधिकारी हुए और उस के नगरों में बसे ।  
 २५ और जब वे आरंभ में वहां जा बसे तो परमेश्वर से न डरते थे इस लिये पर-  
 २६ मेश्वर ने उन में सिंहों को भेजा और वे उन्हें फाड़ने लगे । इस लिये यह कहके  
 वे असूर के राजा से बोले कि जिन जातिगणों को तू ने उठा लिया है और  
 समरून की वस्तियों में बसाया है इस देश के ईश्वर का व्यवहार नहीं जानते  
 इस लिये उस ने उन में सिंह भेजे और देखो वे इस कारण उन्हें बधन करते हैं  
 २७ कि वे इस देश के ईश्वर का व्यवहार नहीं जानते हैं । तब असूर के राजा ने  
 यह आज्ञा किई कि उन याजकों में से जिन्हें तुम वहां से यहां ले आये हो एक  
 को वहां ले जाओ कि वह जाके वहां रहा करे और उस देश के ईश्वर का  
 २८ व्यवहार उन्हें सिखावे । तब उन याजकों में से जिन्हें वे समरून से ले गये थे  
 २९ एक आया और वैतल में रहा और उन्हें परमेश्वर का डर सिखाया । परन्तु हर  
 एक जाति ने अपने अपने देव बनाये और उन्हें जंचे स्थानों के घरों में जो सम-  
 ३० रुनियां ने बनाये थे रखवा हर एक जाति अपने अपने रहने के नगरों में । और  
 बाबुल के मनुष्यों ने सुक्कातबिनात बनाया और कूत के मनुष्यों ने नेरगल बनाया  
 ३१ और हमात के मनुष्यों ने असीमा बनाया । और अवियों ने निबहज और तरताक

के समर्थों के समाचार की पुस्तक में लिखी नहीं हैं । और आग्यज ने अपने पित्रों २०  
में शयन किया और अपने पित्रों के संग दाहद के नगर में गाढ़ा गया और उस  
का वेटा हिजाक्रयाह उस की मनी राज्य पर बैठे ।

मन्त्रदा पृष्ठ ।

यहूदाह के राजा आग्यज के दारुण्य धर्म गला का वेटा हूमीय समरुन में १  
हमरागल पर राज्य करने लगा उस ने नष्ट धर्म राज्य किया । और उस ने परमेश्वर २  
की दृष्टि में दुराई किई परन्तु हमरागल के राजाओं के समान नहीं जो उन्हे  
आगे थे । अमूर का राजा गलसनाजर उस के विरोध में चढ़ आया और हूमीय ३  
उस का सेवक होके उसे मेट देने लगा ।

और अमूर के राजा ने हूमीय में रंग की सुक्ति पाई क्योंकि उस ने मित्र के ४  
राजा से के पास दुर्तों का भेजा था और इसा यह धर्म धर्म करना था अमूर  
के राजा के पास भेट न भेजी उस लिये अमूर के राजा ने उसे शोधन में किया  
और उसे बन्दीगृह में डाला । नष्ट अमूर का राजा मारे दंग पर चढ़ गया और ५  
समरुन पर आके तीन धर्म उसे धरे रहा । हूमीय के नष्ट धर्म में अमूर के  
राजा ने समरुन को ले लिया और हमरागल को अमूर में ले गया और उन्हे  
गलह और ग्वूर में जाजान नदी के पास और साउथों को उन्हीं में ठगया ।

क्योंकि हमरागल के संतान ने परमेश्वर अपने ईश्वर के विरोध में जिस ने ७  
उन्हे मित्र की भूमि में से निकालके मित्र के राजा फिरदन के राज्य से सुक्ति दिई  
पाप किया अब और देवों से दूरने थे । और अन्यायों की विधि पर जिन ८  
परमेश्वर ने हमरागल के संतान के आश में दूर किया था और हमरागली राजाओं  
के जो उन्हीं ने किई रों चलता था । और हमरागल के संतानों ने परमेश्वर ९  
अपने ईश्वर के विरुद्ध छिप छिपके ठोंक न किया और उन्हीं ने अपनी सारी  
वस्तियों में पटम के गर्गज में लेके बाहु के नगर लो उन्हे उन्हे न्याय बनाये ।  
और हर एक पहाड़ पर और हर एक चरे पेट के नीचे मूर्ती स्थापित किई और १०  
कुंज लगाये । और अन्यायों के समान जिन परमेश्वर ने उन के आश में दूर ११  
किया मारे उन्हे न्याय में धूप जलाये और दुष्टता करके परमेश्वर को मित्र दिलाया ।  
क्योंकि उन्हीं ने मूर्ति पूजा जिन के विषय में परमेश्वर ने उन्हे कहा था कि तुम १२  
यह काम मत कीजिये ।

तब भी परमेश्वर ने मारे भविष्यद्वक्ता और मारे दर्शियों के द्वारा से हमरागल १३  
के संतान पर और यहूदाह के संतान पर यह कहके मारो दिई कि अपने दुरे  
मार्गों से फिरो और मेरी आज्ञाओं और मेरी विधि का मारी व्यवस्था के  
समान जो मैं ने तुम्हारे पित्रों को आज्ञा किई और जिन में ने अपने सेवक  
भविष्यद्वक्ता के द्वारा में तुम पास भेजा पालन करो । तथापि उन्हीं ने न माना १४  
परन्तु अपने पित्रों के गले के समान जो परमेश्वर अपने ईश्वर पर विश्वास न  
लाये थे अपने गले को कटार किया । और उन्हीं ने उस की विधि का और १५  
उस की आज्ञा को जो उस ने उन के पित्रों से किई और उस की साक्षियों को  
जो उस ने उन के विरोध में साक्षी दिई थी त्याग किया और दृष्ट का पीछा



७ और परमेश्वर उस के साथ था वह जहां कहीं जाता था भाग्यवान होता था  
 ८ और असूर के राजा के विरोध में फिर गया और उस की सेवा न किई । उस ने  
 फिलिस्तियों को अज्जः लों और उस के सिवानों के अन्त लों रखवालों के गर्गज  
 से लेके घेरित नगर लों मारा ॥

९ और हिजकियाह राजा के चौथे वरस जो इसराएल के राजा एला के बेटे  
 हूसीअ के सातवें वरस था यों हुआ कि असूर के राजा शलमनाजर के विरोध  
 १० पर चढ़ आया और उसे घेर लिया । और तीसरे वरस के अन्त में उन्होंने ने उसे  
 ले लिया और हिजकियाह के छठवें वरस जो इसराएल के राजा हूसीअ का नवां  
 ११ वरस है समरून लिया गया । और असूर का राजा इसराएलियों को असूर को ले  
 गया और उन्हें खलह में और खबूर में जो जौजान की नदी के लग है और  
 १२ मादियों के नगरों में रक्खा । यह इस लिये हुआ कि उन्होंने ने परमेश्वर अपने  
 ईश्वर की बात न मानी परन्तु उस की वाचा को और उन सभी को जो  
 परमेश्वर के दास मूसा ने कहा था टाल दिया और न सुनते थे और न  
 करते थे ॥

१३ और हिजकियाह राजा के राज्य के चौदहवें वरस असूर के राजा सनहेरीव  
 १४ ने यहूदाह के सारे बाड़ित नगरों पर चढ़ आके उन्हें ले लिया । तब यहूदाह  
 के राजा हिजकियाह ने असूर के राजा को जो लकीस में था कहला भेजा कि  
 मुझ से अपराध हुआ मुझ से फिर जाइये जो कुछ तू मुझ पर धरेगा मैं उठाऊंगा  
 और उस ने यहूदाह के राजा हिजकियाह पर तीन सौ तोड़े चांदी और तीस  
 १५ तोड़े सोना ठहराये । और हिजकियाह ने सारी चांदी जो परमेश्वर के मन्दिर में  
 १६ और राजा के घर के भंडारों में पाई गई उसे दिई । उस समय हिजकियाह ने  
 परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों का और खंभों पर का सोना जो यहूदाह के राजा  
 हिजकियाह ने उन पर मड़ा था काट काटके असूर के राजा को दिया ॥

१७ तब असूर के राजा ने तरतान को और खसारीस को और ख्वसाकी को  
 लकीस से भारी सेना सहित यरूसलम के विरोध में भेजा और वे चढ़े और यरू-  
 सलम को आये और आके ऊपर कुंड के पनाले के लग जो धोवी के खेत के मार्ग  
 १८ में है खड़े हुए । और जब उन्होंने ने राजा को बुलाया तब खिलकियाह का  
 बेटा इलयकीम जो घराने पर था और शबना लेखक और आसफ का बेटा यूअख  
 स्मारक उन पास आये ॥

१९ तब ख्वसाकी ने उन्हें कहा कि तुम हिजकियाह से कहो कि महाराज असूर  
 २० का राजा यों कहता है कि वह क्या आसरा है जो तू रखता है । तू केवल  
 हांठों की बात कहता है कि मुझ में परामर्श और युद्ध का पराक्रम है सो अब  
 २१ तू किस पर भरोसा रखता है कि मुझ से फिर जाता है । अब देख तू उस मसले  
 हुए सेंठे के दंड पर अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है यदि कोई उस पर आठंगी  
 तो वह उस के हाथ में गड़ जावेगा और उसे वेधेगा सो मिस्र का राजा फिर-  
 २२ उन उन सब के लिये जो उस पर भरोसा रखते हैं ऐसा ही है । परन्तु यदि तू  
 मुझे कहे कि हमारा भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है क्या वही नहीं जिस के

बनाये और सिफारिशियों ने अपने बालकों को अवरस्मनिक और अवनस्मनिक सिफारिशियों के देवों के लिये आग में जला दिया । जो वे परमेश्वर से रहे और २२ उन्हें ने अपने लिये मद्य में से लेकर ऊँचे स्थानों का याज्ञिक बनाया जो उन के लिये ऊँचे स्थानों के घरों में बलिदान चढ़ाते थे । वे परमेश्वर से दूरमें थे और उन २३ जातिगणों के समान जिन्हें वे वहाँ से ले गये थे अपने ही देवों की सेवा करते थे ॥

आज के दिन लो वे अगिली विधि और व्यवहार पर चलते हैं क्योंकि वे २४ परमेश्वर से नहीं दूरते और उन की विधि पर और व्यवस्था और आज्ञा पर जो परमेश्वर ने यशकृष्ण के सन्तान के लिये आया किई जिस का नाम उग ने हमरायन रक्खा नहीं चलते । जिसने परमेश्वर ने एक आया बाँधी और यह २५ कहके उन्हें बिनाया कि तुम और देवों से मत दूरो और उन के समान प्रमाण मत करो और उन की सेवा मत करो और उन के लिये दाम मत चढ़ाओ । परन्तु तुम परमेश्वर से जिस ने अपनी बड़ी मानस्य से पान अपनी यदाई हुई २६ भुजा से तुम्हें मिन के देश से निकाल लाया हरियो और तुम उसी की सेवा कीजियो और उस के लिये बलि चढ़ाओ । और उन व्यवहारों और विधि पर २७ व्यवस्था और आज्ञा जो जो उस ने तुम्हारे लिये नियमाये तुम मद्य लो मानियो और और देवों से मत दूरियो । और उन आया जो जो में ने तुम से किई २८ मत भूलियो और और देवों से मत दूरियो । परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर से २९ दूरियो और वही तुम्हारे मारे हरियों के हाथ से तुम्हें चुड़ायेगा । तबहि उन्को ३० ने न मुना परन्तु अपने अगिले व्यवहारों पर चलते थे ।

सो इन जातिगणों ने परमेश्वर का भय न रक्खा और अपनी गिरी हुई मूर्तों ३१ की सेवा किई उन के लड़के और उन के लड़कों के लड़के भी अपने पिारों के समान आज के दिन लो करते हैं ॥

### अठारहवां पृष्ठ ।

और एला के बेटे हमीश्र हमरायन के राजा के तीसरे वरम यहूदाह के राजा १ आग्रज का बेटा जिक्रियाह राजा हुआ । जब यह राजा हुआ तब पचीस वरम २ का था और उस ने उन्तीस वरम यन्मनस में राज्य किया और उस की माता का नाम अबी था जो जिक्रियाह की बेटो थी । और उस ने अपने पिता दाऊद के ३ समान परमेश्वर की दृष्टि में मद्य दात में भलाई किई । उस ने ऊँचे स्थानों का ४ ढा दिया और मूर्तों को तोड़ा और कुंजों को काट टाना और उस पीतल के साँप को जो सूसा ने बनाया था तोड़के टुकड़ा टुकड़ा किया क्योंकि हमरायन के सन्तान उस समय लो उस के आगे धूप जलाते थे और उस ने उस का नाम पीतल का साँप रक्खा । और परमेश्वर हमरायन के ईश्वर पर भरोसा रखता था ५ यहाँ लो कि उस के पीके यहूदाह के मद्य राजाओं में ऐसा कभी न हुआ और न उस्से आगे कोई हुआ था । क्योंकि वह परमेश्वर से लयलीन रहा और उस के ६ पीके से अलग न हुआ परन्तु उस ने उन आत्माओं को जो परमेश्वर ने सूसा से किई थीं पालन किया ॥

## उन्नीसवां पर्व ।

- १ और ऐसा हुआ कि जब हिजकियाह राजा ने यह सुना तब अपने कपड़े  
 २ फाड़े और टाटवस्त्र ओढ़के परमेश्वर के मन्दिर में गया । तब उस ने इल्यकीम  
 ३ को जो घराने पर था और शबना लेखक और याजकों के प्राचीनों को टाट-  
 ४ वस्त्र ओढ़े हुए असूस के बेटे यसश्शियाह भविष्यद्वक्ता पास भेजा । और उन्होंने  
 ५ उसे कहा कि हिजकियाह यों कहता है कि आज दुःख और द्रष्ट और खिभाव  
 ६ का दिन है क्योंकि बालक उत्पन्न होने पर हैं और जन्मे की सामर्थ्य नहीं ।  
 ७ क्या जाने परमेश्वर तेरा ईश्वर रब्बसाकी की सब बातें सुनेगा जिसे उस के स्वामी  
 ८ असूर के राजा ने जीवते ईश्वर की निन्दा करने को भेजा है और जिन बातों  
 ९ को परमेश्वर तेरे ईश्वर ने सुना है उन पर दोष देवे इस लिये तू बचे हुआ के  
 १० कारण प्रार्थना करेगा ॥
- ११ सो हिजकियाह के सेवक यसश्शियाह पास आये । तब यसश्शियाह ने उन्हें  
 १२ कहा कि तुम अपने स्वामी से यों कहो कि परमेश्वर यह कहता है कि उन बातों  
 १३ से जिन्हें असूर के राजा के सेवकों ने मेरे विषय में पापंड कहा है मत डर ।  
 १४ देख मैं उस पर एक भोंका भेजूंगा और वह एक कोलाहल सुनके अपने ही देश  
 १५ को फिर जावेगा और मैं उसे उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा ॥
- १६ सो रब्बसाकी फिर गया और उस ने असूर के राजा को लिबनः से लड़ते पाया  
 १७ क्योंकि उस ने सुना था कि वह लकीस से चला गया । जब उस ने यह कहते  
 १८ सुना कि देखिये कूश के राजा तिरहाकः ने तुम्ह पर चढ़ाई किई तब उस ने  
 १९ दूतों के द्वारा से हिजकियाह को फेर कहला भेजा । यहूदाह के राजा हिज-  
 २० कियाह से यों कहियो कि तेरा ईश्वर जिस पर तू भरोसा रखता है यह कहके  
 २१ तुम्हें कल न देवे कि यरूसलम असूर के राजा के हाथ में सौंपा न जावेगा । देख  
 २२ तू ने सुना है कि असूर के राजाओं ने सारे देशों को सर्वथा नाश करके क्या  
 २३ किया और क्या तू बच जावेगा । क्या उन जातिगणों के देव जिन्हें मेरे पितरों  
 २४ ने नाश किया है उन्हें कुछा सके अर्थात् जौजान और हररान और रसफ और  
 २५ अदन के संतान जो तिल्लासर में थे । हमत के राजा और अरफाद के राजा और  
 २६ सिप्रवाइम के नगर का राजा हेना और रेवा के कहां हैं ॥
- २७ सो हिजकियाह ने दूतों के हाथों से पत्रियां पाईं और उन्हें पढ़के परमेश्वर के  
 २८ मन्दिर में चढ़ गया और परमेश्वर के आगे फैलाया । और हिजकियाह ने परमे-  
 २९ श्वर के आगे प्रार्थना करके कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर जिस का  
 ३० सिंहासन करोबीम पर है केवल तू ही सारी पृथिवी के राज्यों का ईश्वर है तू  
 ३१ ही ने स्वर्ग और पृथिवी को सिर्जा है । हे परमेश्वर अब अपना कान धरके  
 ३२ सुन हे परमेश्वर अपनी आंखें खोल और देख और सनहेरीब की बातों को जो  
 ३३ उस ने जीवते ईश्वर की निन्दा के लिये कहला भेजी हैं सुन । सच है हे परमे-  
 ३४ श्वर कि असूर के राजाओं ने जातिगणों को और उन के देशों को नाश  
 ३५ किया । और उन के देवों को आग में डाला क्योंकि वे देव न थे परन्तु मनुष्यों  
 ३६ के हाथों के कार्य लकड़ी और प्रत्थर इसी लिये उन्होंने ने उन्हें नाश किया ।

कुंजे स्थानों को और जिस की घंटियों को हिजकियाह ने खाना किया और यहूदाह और यरुसलम को कहा है कि तुम यरुसलम में इस घेदी के आगे सेवा करो । मेरे अब २३  
अमूर के राजा मेरे प्रभु को आन दीजिये और मैं तुम्हें दो सठस घोड़े देऊंगा यदि  
तुम्हें यह शक्ति हो कि तु चढ़ाईयों को उन पर बैठावे । मेरे जिस गीति में तु २४  
मेरे प्रभु के सेवकों में से सब से छोटे प्रधान का सुंघ फेरेंगा और सिन पर  
रथों के और घोड़चढ़ों के लिये भरोसा रख्ये । अब क्या मैं इस स्थान को नाश २५  
करने को बिना परमेश्वर के आया हूं परमेश्वर ने मुझे कहा कि उस देश पर  
चढ़ जा और उसे नाश कर ॥

तब गिलकियाह का बेटा दलयाकीम और शबना और गृध्रग ने रव्यमाकी ने २६  
कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने दानों से अरानी भाषा में कहिये  
क्योंकि हम सबभरते हैं और घंटियों की भाषा में हम से भीत पर के लोगों  
के कान में न कहिये । परन्तु रव्यमाकी ने उन्हें कहा कि क्या मेरे प्रभु ने मुझे २७  
तेरे प्रभु के अथवा तुम्हें पास ये बातें कहने को भेजा है क्या हम ने मुझे उन  
लोगों पास जा भीत पर बैठे हैं नहीं भेजा जिसने ये तुम्हारे साथ अपना ही  
मल मूत्र खावे पीवे ॥

तब रव्यमाकी खड़ा होके घंटियों की भाषा में दलयाकी के आला और कहा २८  
कि अमूर के राजा सत्ताराह का उचन सुनो । राजा यह कहता है कि हिज- २९  
कियाह तुम्हें हल न देवे क्योंकि यह मेरे हाथ से तुम्हें हुंदा नहीं मक्ता । और ३०  
हिजकियाह तुम्हें यह कहके परमेश्वर का भरोसा न दिनाये कि परमेश्वर निश्चय  
हमें हुंदावेगा और यह नगर अमूर के राजा के हाथ में भोपा न जावेगा । हिज- ३१  
कियाह की मत सुनो क्योंकि अमूर का राजा यह कहता है कि मुझे भेंट देके  
मुझ पास निकल आओ और तुम्हें में हर एक अपने अपने दार में से और अपने  
अपने गूलर पेड़ में से खावे और अपने अपने कुंदा का पानी पीवे । जब तों मैं ३२  
आऊं और तुम्हें यहां से एक देश में जा तुम्हारे देश की सारी हैं ले जाऊं वह  
अन्न और दायरम का देश रोटी और दायर की बारी का देश दानपाई के तेल  
और मधु का देश है जिसने तुम दीया और न मरो और हिजकियाह की मत  
सुनो जब यह यह कहके तुम्हारा बांध करता है कि परमेश्वर हमें बचावेगा ।  
भला जानिगणों के देवों में से किसी ने भी अपने देश को अमूर के राजा के ३३  
हाथ से हुंदाया है । हमत और अरफाद के देव कहा हैं और सिप्रयाहम देना ३४  
और सेवा के देव कहा गया उन्होंने ने समरन को मेरे हाथ से हुंदाया है । देशों ३५  
के सारे देवों में वे कौन जिनमें ने अपने देश मेरे हाथ से हुंदाये जो परमेश्वर  
यरुसलम को मेरे हाथ से हुंदावे ॥

परन्तु लोग चुपके रहे और उस को उत्तर में एक बात न कही क्योंकि राजा ३६  
की आज्ञा यह थी कि हमें उत्तर मत दीजिये ॥

तब गिलकियाह का बेटा दलयाकीम जो घराने पर था और शबना लेखक ३७  
और आसफ स्मारक का बेटा गृध्रग अपने कपड़े फाड़े हुए हिजकियाह के पास  
आये और रव्यमाकी की बातें उन्हें कहीं ॥

के मन्दिर में पूजा करता था तब उस के बेटे अदरम्मलिक और शरेजर ने उसे तलवार से मार डाला और वे वचके अरारात के देश की गये और उस का बेटा असरहदून उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

### बीसवां पर्व ।

- १ उन्हीं दिनों में हिजकियाह को मृत्यु का रोग हुआ तब अमूस का बेटा यसत्रियाह भविष्यद्वक्ता उस पास आया और उससे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तू अपने घर का ठिकाना कर क्योंकि तू मर जावेगा और न जीवेगा ।
- २ तब उस ने अपना मुंह भीत की ओर फेरके परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा ।
- ३ कि हे परमेश्वर मैं तेरी विनती करता हूँ कि दया करके अब स्मरण करिये कि मैं क्योंकि सचाई और सिद्ध मन से तेरे आगे चला किया और तेरी दृष्टि में मैं ने भलाई किई और हिजकियाह बिलख बिलखके रोया ॥
- ४ और यों हुआ कि यसत्रियाह के आंगन के मध्य पहुंचने से आगे यह कहके
- ५ परमेश्वर का वचन उस पर पहुंचा । कि फिर जा और मेरे लोगों के प्रधान हिजकियाह को कह कि परमेश्वर तेरे पिता दाऊद का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी है तेरे आंसुओं को देखा है देख मैं तुम्हें तीसरे दिन चंगा
- ६ कहेगा तू परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ जावेगा । और मैं तेरी वय पन्दरह बरस बढ़ाऊंगा और तुम्हें और इस नगर को असूर के राजा के हाथ से कुड़ाऊंगा और
- ७ अपने लिये और अपने दास दाऊद के लिये इस नगर का आड़ कहेगा । तब यसत्रियाह ने कहा कि गूलर की एक टिकिया ले सो उन्हीं ने लिई और फोड़े
- ८ पर रक्खी और वह चंगा हो गया । तब हिजकियाह ने यसत्रियाह से कहा कि उस का लक्षण क्या कि परमेश्वर मुझे चंगा करेगा और मैं तीसरे दिन परमेश्वर
- ९ के मन्दिर में चढ़ जाऊंगा । तब यसत्रियाह बोला कि परमेश्वर से तू यह लक्षण पावेगा कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है सो करेगा कि दया दस क्रम आगे बढ़े
- १० अथवा दस क्रम पीछे हटे । और हिजकियाह ने उत्तर दिया कि दया का दस
- ११ क्रम ठलना सहज है नहीं परन्तु दया दस क्रम पीछे हटे । तब यसत्रियाह भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर से प्रार्थना किई और उस ने दया को आखज की धूप-घड़ी में से जो ठल गई थी दस क्रम पीछे हटाया ॥
- १२ उस समय बलदान के बेटे बाबुल के राजा बरेदाक बलदान ने भेंट और पत्री हिजकियाह को भेजी क्योंकि उस ने सुना था कि हिजकियाह रोगी था ।
- १३ सो हिजकियाह ने उन की बातें सुनीं और अपने घर की सारी बहुमूल्य वस्तु चांदी और सोना और सुगन्ध और सुगन्ध तेल और शस्त्र अपने सारे स्थान और सब जो उस के भंडारों में पाये गये उन्हें दिखाये उस के घर में और उस के सारे राज्य में ऐसी कोई वस्तु न थी जो हिजकियाह ने उन्हें न दिखलाई ॥
- १४ तब यसत्रियाह भविष्यद्वक्ता हिजकियाह राजा पास आया और उसे कहा कि इन लोगों ने क्या कहा और ये कहाँ से तुम्हें पास आये और हिजकियाह ने कहा
- १५ कि ये बाबुल के दूर देश से आये हैं । तब उस ने पूछा कि उन्हीं ने तेरे घर में क्या देखा है और हिजकियाह बोला कि मेरे घर का सब कुछ उन्हीं ने देखा है

और अब हे परमेश्वर हमारे ईश्वर में तेरी चिन्ता करता हूँ तू हमें उस के साथ १९  
मे वचा ले जिसमें पृथिवी के सारे राज्य जानें कि परमेश्वर ईश्वर केवल तू ही है ॥

तब अमूर के बेटे यसाय्याह ने विजयियाह को कहना भेजा कि परमेश्वर २०  
हमरायल को ईश्वर यों कहता है कि जो कुछ तू ने अमूर के राजा मनहेरीय के  
विरोध में प्रार्थना की है मैं ने सुनी है । यह वह वचन है जो परमेश्वर ने उस २१  
के विषय में कहा है कि मैदान की कुंआरी बेटा ने तेरी निन्दा की है और तुक पर  
हंसी और यमसलम की बेटा ने तुक पर फिर धुना । तू ने किस की निन्दा की है २२  
और पापंड कहा है और तू ने किस पर शब्द उठाया और आर्य चढ़ाके ऊपर  
कि है अर्थात् हमरायल के पवित्रमय के विरोध में । तू ने अपने दूतों के हाथ से २३  
ग्रसु की निन्दा करके कहा है कि मैं अपने राजों की बगुनाह से पहाड़ों की चोटी  
पर और लुवनान की अलंगों पर चढ़ा और वहाँ के ऊँचे ऊँचे देवनार पेड़ को  
और चुने हुए सरो पेड़ को काट डालेंगा और मैं उस के सिवानों के निशानों में  
और उस के वन की चारों में पैडंगा । मैं ने खाटा है और अपनी पानी पीया है २४  
और मैं ने अपने पाँव के तलवों से मिम की सारी नदियों को सूखा दिया है ।  
क्या तू ने नहीं सुना कि मैं ने अगिले समय में क्या किया है और अगिले समय में २५  
क्या क्या बनाया अब मैं ने उसे पूरा किया है कि तू चरित नगरों को उखाड़े और  
छे छे करे । सो वहाँ के निशानों दुर्जन से और विन्मिष होके मथरा गये वे २६  
तो रेत की घास और छरियाली सागवान वनों पर जो घास है जो घटने से  
आगों भौंस जाती है । परन्तु मैं तेरा निशान और तेरा वाटर भीतर आना जाना २७  
और मुँह पर तेरा मुँकलाना जानता हूँ । इस कारण कि तेरा मुँकलाना और तेरा २८  
हुत्तर सेरे क्रान लों पाहुँचा है सो मैं अपना काँटा तेरी नाक में मारंगा और अपनी  
ठाठी तेरे मुँह में डेडंगा और जिस मार्ग से तू आया है मैं तुम्हें उस ही से फेंकंगा ।  
अब तेरे लिये यही पता है कि तुम अथका वरम वही वरम खाओगे जो आप २९  
से आप उगाती हैं और दूसरे वरम जो वहाँ से उगाती हैं और तीसरे वरम दोओ  
और लओ और दाम्य की चारी लमाओ और उन के फल खाओ । और यहूदाह ३०  
के घराने से जो वच निकला है फिक्के जड़ पकड़ेगा और ऊपर फल लावेगा ।  
क्योंकि वचा हुआ यमसलम से और वच निकले मैदान के पहाड़ से निकलेंगे ३१  
परमेश्वर का उवलन यह करेगा । हम लिये परमेश्वर अमूर के राजा के विषय में ३२  
यों कहना है कि वह हम नगर में न आवेगा न यहाँ बाग चलावेगा और न  
काल पकड़के हम के आगे आवेगा न हम के विरोध में मुरचा बांधेगा । परमेश्वर ३३  
कहता है कि जिस मार्ग से वह आया उमी से फिर जावेगा और हम नगर में न  
आवेगा । क्योंकि मैं अपने ही लिये और अपने सयक दगड़ के लिये इस नगर ३४  
का आड़ करके उसे बचावंगा ॥

और ऐसा हुआ कि परमेश्वर के दूत ने जाके अमूर की कावनी में उसी ३५  
रात एक लाख पचासी सहस्र मनुष्य को घात किया और तड़के उठते ही क्या  
देखते हैं कि सब लोथ पड़ी हैं । सो अमूर का राजा मनहेरीय चला और फिर ३६  
गया और नीनवः में जा रहा । और यों हुआ कि ज्यों यह अपने देव निसरक ३७



कि यहूदाह के राजा मुनस्सी ने ये सारे धिनित काम किये और अमूरियों से जो  
 १२ उससे आगे थे अधिक बुराई किई और यहूदाह से अपनी मूर्तों के कारण पाप  
 १३ करवाये । इस लिये परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं  
 यहूसलम पर और यहूदाह पर ऐसी विपत्ति लाता हूँ कि उस का समाचार जिस  
 १४ के कान लों पहुंचेगा उस के दोनों कान भंभना उठेंगे । और मैं यहूसलम पर  
 समरुन की डोरी और अखिवव के घराने का साहुल डालूंगा और मैं यहूसलम  
 १५ को ऐसा पोंछूंगा जैसे कोई वासन को पोंछता है और औंधा देता है । और उन  
 के अधिकार के वचे हुआं को अलग करूंगा और उन्हें उन के बैरियों के हाथ में  
 १६ सौंपूंगा और वे अपने सारे बैरियों के लिये अहेर और लूट होंगे । क्योंकि उन्होंने  
 ने मेरी दृष्टि में बुराई किई और जिस दिन से उन के पिता मिस्र से निकले उन्होंने  
 १७ ने आज लों मुझे रिस दिलाई । और इससे अधिक मुनस्सी ने बहुत निर्दोष लोह  
 बहाया यहां लों कि उस ने यहूसलम को एक सिरे से दूसरे सिरे लों भर दिया  
 यह उस पाप से अधिक है जो परमेश्वर की दृष्टि में यहूदाह से बुराई  
 करवाई ॥

१८ और मुनस्सी की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया और यह कि  
 उस ने कैसे पाप किये सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों की पुस्तक में  
 १९ लिखी नहीं हैं । और मुनस्सी ने अपने पितरों में शयन किया और अपने घर की  
 बाटिका में उज्जा की बाटिका में गाड़ा गया और उस का बेटा अमून उस की  
 सन्ती राज्य पर बैठा ॥

२० जब अमून राज्य करने लगा तब बाईस बरस का था उस ने यहूसलम में दो  
 बरस राज्य किया और उस की माता का नाम मुसल्लिमत था जो युतवः के हब्स  
 २१ की बेटी थी । और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में अपने पिता मुनस्सी के समान  
 २२ बुराई किई । और वह अपने पिता की सारी चाल पर चला किया और अपने  
 २३ पिता की मूर्तों की प्रार्थना करके उन की पूजा किई । और उस ने परमेश्वर  
 २४ अपने पितरों के ईश्वर को त्यागा और परमेश्वर के मार्ग पर न चला । और  
 अमून के सेवकों ने उस के विरोध में युक्ति बांधके राजा को उसी के घर में  
 २५ घात किया । और देश के लोगों ने उन सब को घात किया जिन्होंने ने अमून  
 राजा के विरुद्ध युक्ति बांधी और देश के लोगों ने उस के बेटे यूसियाह को उस  
 के स्थान पर राजा किया ॥

२६ और अमून की रही हुई क्रिया जो उस ने किई सो क्या वे यहूदाह के राजाओं  
 २७ के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी नहीं हैं । और वह अपनी समाधि में  
 उज्जा की बाटिका में गाड़ा गया और उस का बेटा यूसियाह उस की सन्ती  
 राज्य पर बैठा ॥

बाईसवां पर्व ।

१ जब यूसियाह राज्य करने लगा तो आठ बरस का था और उस ने एकतीस  
 बरस यहूसलम में राज्य किया और उस की माता का नाम वदीदा था जो  
 २ इसकत के अदायाह की बेटी थी । और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई

मेरे भंडारों में सेनी कोई वस्तु न रही जो मैं ने उन्हें न दिखवाई । तब यम- १६  
 श्रियाह ने हिजकियाह से कहा कि परमेश्वर का वचन सुन । देख वे दिन आते १७  
 हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है और जो कुछ कि तेरे पितरों ने आज लो वेटार  
 रक्खा है बाबुल को पहुंचाये जायेगे परमेश्वर कहता है कि कुछ न छोड़ा  
 जावेगा । और तेरे वेटों में से जो तुझ से वापस होंगे और तुझ से जन्मोंगे उन्हें १८  
 वे ले जायेंगे और बाबुल के राजा के भवन में नष्ट कर देंगे । तब हिजकियाह १९  
 ने यमश्रियाह से कहा कि परमेश्वर का वचन जो तू ने कहा है अच्छा है फिर  
 उस ने कहा कि कुशल और सहाई मेरे दिनों में होगी ।

और हिजकियाह की रही हुई क्रिया और उस का सारा पराक्रम और किस २०  
 रीति में उस ने एक कुंज और एक पनाला बनाया और नगर में पानी लाया सो  
 क्या वे घट्टाह के राजाओं के समर्थों के समाचार की पुष्पाङ्क में नहीं लिखी हैं ।  
 तब हिजकियाह ने अपने पितरों से प्रार्थन किया और उस का घंटा सुनन्ती उस २१  
 की संती राज्य पर घंटा ।

### इकौमियां पृष्ठ ।

जब सुनन्ती राज्य करने लगा तब वह बाग्य घर का था और उस ने पचपन १  
 घरस घरसलम से राज्य किया और उस की खाना का नाम शिजलिया था । और २  
 उस ने अन्तर्देशियों के घिनितों के समान जितने परमेश्वर ने इसराएल को मन्तान  
 के आगे से दूर किया था परमेश्वर की दृष्टि में दुर्गह किई । क्योंकि उस ने उन ३  
 स्थानों को जितने उस के पिता हिजकियाह ने छाया था फिर बनाया और उस  
 ने ब्रजल के लिये वेदियां स्थापित किई और एक कुंज लगाया जेगा कि इसराएल  
 के राजा आग्यश्रव ने किया था और मर्या की मार्ग सेना की पूजा करके उन ४  
 की सेवा किई । और उस ने परमेश्वर के उस मन्दिर में जिस के विषय में पर-  
 मेश्वर ने कहा था कि मैं यरुसलम में अपना नाम रक्खूंगा वेदियां बनाईं । और ५  
 उस ने परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों में मर्या की मार्ग सेनाओं के लिये वेदियां  
 बनाईं । और उस ने अपने घंटे का आग में से चलाया और सुदुर्नों को मानता ६  
 था और डोना करता था और भुनहों और ओकों से टपटपार रखता था और  
 परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही दुष्टता करके उसे रिग दिलाया । और उस ने ७  
 कुंज की एक ग्यादी हुई मूर्ति बनाके परमेश्वर के मन्दिर में स्थापित किई जिस  
 के विषय में परमेश्वर ने दाऊद और उन के घंटे सुनसान से कहा था कि इस  
 मन्दिर में और यरुसलम में जिन में ने इसराएल की मार्गी गोष्टियों में से चुन ८  
 लिया है मैं अपना नाम सदा लो रक्खूंगा । और मैं इसराएल के पांथ को इस  
 भूमि से जो मैं ने उन के पितरों को दिई है दधी न डोलाऊंगा केवल यदि वे ९  
 मेरी सारी आज्ञाओं के समान चलें और मार्गी व्यवस्था के समान जो मेरे सेवक  
 मूसा ने उन्हें दिई मार्ग । पर उन्होंने ने न माना और सुनन्ती ने उन्हें फुसलाके १०  
 उन जातिगणों से जितने परमेश्वर ने इसराएल के मन्तान के आगे से नष्ट किया  
 अधिक दुर्गह करवाई ।

सो परमेश्वर अपने सेवक भविष्यद्वक्ता की द्वारा से कहके बोला । इस कारण ११

१९ ईश्वर यों कहता है कि जो बचन तू ने सुने हैं । इस कारण कि तेरा मन कोमल था और परमेश्वर के आगे तू ने आप को नम्र किया है जब तू ने सुना जो मैं ने इस स्थान के और उस के निवासियों के विरोध में कहा कि वे उजाड़ित और सापित होंगे और अपने कपड़े फाड़े हैं और मेरे आगे विलाप किया परमेश्वर २० कहता है कि मैं ने भी सुना है । इस लिये देख मैं तुझे तेरे पितरों के साथ वटो-खंगा और तू अपनी समाधि में कुशल से समेटा जावेगा और सारी चुराई को जो मैं इस स्थान पर लाऊंगा तेरी आंखें न देखेंगी तब वे राजा पास फेर संदेश लाये ।

### तेईसवां पृष्ठ ।

- १ तब राजा ने भेजके यहूदाह और यरूसलम के सारे प्राचीनों को अपने पास
- २ एकट्ठा किया । और राजा और यहूदाह के सारे लोग और यरूसलम के सारे निवासी और याजकों और भविष्यद्वक्ता और सारे लोग छोटे से बड़े लों परमेश्वर के मन्दिर को उस के संग चढ़ गये और बाचा की पुस्तक के बचन को जो पर- ३ मेश्वर के मन्दिर में पाया गया था उस ने उन्हें पढ़ सुनाया । और परमेश्वर का पीछा करने को और उस की आज्ञाओं को और उस की साक्षियों को और उस की विधि को अपने सारे मन और सारे जीव से पालन करने को इस बाचा के बचन को जो इस पुस्तक में लिखा है राजा ने खंभे के लग खड़ा होके परमेश्वर के आगे बाचा वांछी और सारे लोग इस बाचा पर खड़े हुए ॥
- ४ तब राजा ने प्रधान याजक खिलकियाह को और दूसरी पांती के याजकों को और द्वारपालों को आज्ञा किई कि परमेश्वर के मन्दिर में से सारे घात्र जो बअल के लिये और अश्वत्थ के और सारी स्वर्गीय सेनाओं के लिये बनाये गये थे बाहर निकलवाये और उस ने यरूसलम के बाहर किदरून के खेतों में उन्हें जला ५ दिया और उस की राख को वैतल में पहुंचा दिया । और उन देवपूजक याजकों को जिन्हें यहूदाह के राजाओं ने यहूदाह के नगरों के ऊंचे स्थानों में और यरूसलम के चारों ओर के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था उन सब समेत जो बअल के और सूर्य के और चन्द्रमा के और नक्षत्रों के और स्वर्गीय सारी सेनाओं के लिये धूप जलाते थे ६ रोक लिया । और वह उस अश्वत्थ को परमेश्वर के मन्दिर से निकालके यरूसलम के बाहर किदरून के नाले पर लाया और उसे किदरून के नाले पर जला दिया और उसे लताड़के चुकनी किया और उस चुकनी को लोगों के संतान की समाधि पर फेंक ७ दिया । और उस ने गांधुओं के घेरों को जो परमेश्वर के घर से मिले हुए थे ८ जिन में स्त्रियां कुंज के लिये घूंघट बुनतियां थीं ठा दिया । और उस ने यहूदाह के सारे नगरों के याजकों को एकट्ठा किया और उन ऊंचे स्थानों को जहां याजकों ने सुगन्ध जलाया था जिवअ से बिअरसबअ लों अशुद्ध किया और फाटकों के ऊंचे स्थानों को जो नगर के अर्धवत्त यहूशूअ के फाटक की पैठ में थे जो नगर के ९ फाटक की बाईं ओर है ठा दिया । तथापि ऊंचे स्थानों के याजक यरूसलम में परमेश्वर की वेदी के पास चढ़ न आये परन्तु उन्होंने ने अखमीरी रोटी अपने १० भाइयों के साथ खाई थी । और उस ने तुफत को जो हिनूम के संतान की तराई

और अपने पिता डाकड़ की सारी खालों पर चलना था और दलिनो व्यवसाय था और न मुड़ा ।

और गुलियाह के अठारहवें वरम था हुआ कि राजा ने मुसलमन के बेटे अम- ३  
लियाह के बेटे माफन लेखक को परमेश्वर के मन्दिर में कहला भेजा । कि तु ४  
प्रधान याज्ञक गिलकियाह पास जा कि वह परमेश्वर के मन्दिर की चान्दी का ५  
लेखा करे जो द्वारपालों ने नौगों में गकट्टा किया । और ये उन्हीं कार्यकारियों ५  
के हाथ में मौप जो परमेश्वर के मन्दिर के करोड़ हैं और ये उन्हीं परमेश्वर के ६  
मन्दिर के कार्यकारियों का देव कि ये मन्दिर के दरारों का सुधारें । अर्थात् ६  
घड़ियों का और खैरों का और पथरियों का और लट्टों के और गढ़े हुए पत्थर ७  
मोल लेने के लिये जिसमें घर सुधारें । तिस पर भी रोकाट का लेखा जो उन के ७  
हाथ में दिया गया था उन से न लिखा जाना था क्योंकि ये धर्म से व्यवहार ८  
करते थे ।

और प्रधान याज्ञक गिलकियाह ने माफन लेखक को कहा कि मैं ने परमेश्वर ८  
के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है और गिलकियाह ने वह पुस्तक माफन ९  
को दीई और उस ने उसे पढ़ा । और माफन लेखक राजा पास आया और राजा ९  
को संदेश पहुंचाया कि मेरे सेवकों ने वह रोकाट जो ईश्वर के मन्दिर में पाई १०  
गई पिछलाई है और उसे कार्यकारियों के हाथ मौप है जो परमेश्वर के घर के १०  
करोड़ हैं । अब माफन लेखक ने राजा से कहा कि गिलकियाह याज्ञक ने मुझे १०  
एक पुस्तक दीई है और माफन ने उसे राजा को आगे पढ़ा । और राजा ने ज्यों ११  
उस पुस्तक के अभिप्राय को सुना त्यों अपने कपड़े फाड़े । और राजा ने १२  
गिलकियाह याज्ञक और माफन के बेटे अररीशाम और मौका के बेटे अमयूर १३  
और माफन लेखक और राजा के सेवक अमायाह को आज्ञा देके कहा । कि तुम १३  
जाओ मेरे और नौगों के और सारे यदूदाह के लिये परमेश्वर ने उस पुस्तक के १४  
वचन के विषय में जो पाया गया है पूछो क्योंकि परमेश्वर का कोप हम पर १५  
निपट भड़का है हम कारण कि उन सभी के समान जो हमारे विषय में लिखा १६  
है हमारे पित्रों ने इस पुस्तक के वचन को पानन करने को नहीं सुना है ।

और गिलकियाह याज्ञक और अररीशाम और अमयूर और माफन और अमा- १८  
याह दूल्हा आगमयन्तानों पास गये जो हरदास के बेटे तिकयः के बेटे सलम १८  
यत्नों के गवर्धन को पत्नी थी अब वह यरुशलम में एक दूसरे स्थान में रहती थी १९  
और उन्हीं ने उसे बातचीत कीई । और उस ने उन्हीं को कि परमेश्वर हमारा १५  
का ईश्वर था कहता है कि तुम उस पुरुष से जिस ने तुम्हें मुक्त पास भेजा है १६  
कहो । कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इन ग्यान पर और हम के नियामियों १६  
पर उस पुस्तक की सारी बातें जो यदूदाह के राजा ने पढ़ी हैं अर्थात् बुराई १७  
लाजंगा । क्योंकि उन्हीं ने मुझे त्यागा है अब और देवों के लिये भूष जलाया है १७  
जिसमें अपने हाथों के सारे कामों में मुझे रिस दिनाये हम लिये मेरा कोप हम स्थान १८  
के विरोध भड़कंगा और बुझाया न जावेगा । परन्तु यदूदाह के राजा को जिस १८  
ने तुम्हें परमेश्वर से बूझने को भेजा उसे था कहियो कि परमेश्वर हमारा १९

घिनितों को जो यहूदाह के देश में और यरूसलम में देखे गये थे यूसियाह ने दूर किया जिसमें व्यवस्था की वे बातें जो उस पुस्तक में जिसे खिलकियाह याजक ने परमेश्वर के मन्दिर में पाया था लिखी थीं पूरी करे । और उस के समान अगिले दिनों में ऐसा कोई राजा न हुआ जो अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी सामर्थ्य से मूसा की सारी व्यवस्था के समान परमेश्वर की ओर फिरा और उस के पीछे कोई उस के समान न उठा । तिस पर भी परमेश्वर अपने महा क्रोध से जो यहूदाह के संतान पर भड़काया था न फिरा उन सारे रिशों के कारण जिन से मुनस्सी ने उसे रिश दिलाया था । और परमेश्वर ने कहा कि जैसा मैं ने इसराएल को अलग किया वैसा यहूदाह को भी अपनी दृष्टि में से अलग करूँगा और मैं इस यरूसलम नगर को जिसे मैं ने चुना है और जिस घर के विषय में मैं ने कहा कि मेरा नाम वहां होगा दूर करूँगा ॥

२८ अब यूसियाह की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखी हैं ॥

२९ उस के दिनों में मिस्र का राजा फिरउन निकोह असूर के राजा के विरोध में फुरात की नदी को चढ़ गया और यूसियाह राजा ने उस का साम्रा किया और उस ने उसे देखके मजिदो में घात किया । और उस के सेवक उसे रथ में डालके मजिदो से यरूसलम में ले गये और उसे उसी की समाधि में गाड़ा और देश के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूअखज को लेके उसे अभिषेक किया और उस के पिता की सन्ती उसे राजा किया ॥

३१ जब यहूअखज राज्य करने लगा तब वह तेईस बरस का था और उस ने यरूसलम में तीन मास राज्य किया और उस की माता का नाम हमूतल था जो लिबन के यरमियाह की बेटी थी । और उस ने उन सब के समान जो उस के पितरों ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई । सो फिरउन निकोह ने उसे हमात देश के रिवल में बंधन में डाला जिसमें वह यरूसलम में राज्य न करे और देश पर सौ तोड़े चांदी और एक तोड़ा सोना कर ठहराया । और फिरउन निकोह ने यूसियाह के बेटे इलयाकीम को उस के पिता यूसियाह की सन्ती राजा किया और उस का नाम यहूयकीन रखवा और यहूअखज को ले गया और वह मिस्र में जाके मर गया । और यहूयकीन ने चांदी और सोना फिरउन को दिया और फिरउन की आज्ञा के समान रोकड़ देने को उस ने देश पर कर लगाया और देश के लोगों के हर एक जन से उस के कर के समान चांदी सोना निवाड़ा जिसमें फिरउन निकोह को देवे ॥

३६ यहूयकीन जब राज्य पर बैठा तब पचीस बरस का था और उस ने यरूसलम में ग्यारह बरस राज्य किया और उस की माता का नाम जवूदः था जो रुमः फिदायाह की बेटी थी । और उस ने उन सब के समान जो उस के पितरों ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई ॥

चौबीसवां पृष्ठ ।

१ उस के दिनों में बाबुल का राजा नबूखुदनजर चढ़ आया और यहूयकीन तीन





१९ परमियाह की बेटी थी । और उस ने यहूयकीन के समस्त कार्य के समान किया  
 २० और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई कीई । क्योंकि परमेश्वर के कोप के कारण यहू-  
 सलम और यहूदाह पर यों बीत गया यहां लों कि उस ने उन्हें अपने आगे से दूर  
 किया और सिदकियाह बाबुल के राजा के विरोध में फिर गया ।

पच्चीसवां पर्व ।

- १ और उस के राज्य के नवें बरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में यों हुआ  
 कि बाबुल का राजा नबूखुदनजर बल और उस की सारी सेना यहूसलम के विरोध  
 चढ़ आये और उस के सन्मुख डेरा किया और उन्होंने उस के विरोध में उस
- २ की चारों ओर गढ़ बनाये । और सिदकियाह राजा के ग्यारहवें बरस लों नगर
- ३ घेरा हुआ था । मास की नवीं तिथि में नगर में अकाल पड़ा और देश के लोगों
- ४ को रोटी न मिलती थी । और नगर टूट निकला और सारे घोड़ा उस फाटक  
 के मार्ग से जो भीतों के मध्य राजा की दारी के लग है रात को भाग गये अब
- ५ कसदी नगर को घेरे हुए थे और चौगान की ओर चले गये । पर कसदियों की  
 सेना ने राजा का पीछा किया और उसे परीघे के चौगानों में जाही लिया और
- ६ उस का सारा कटक उससे किन्नू भिन्न हुआ । सो वे राजा को पकड़के उसे बाबुल
- ७ के राजा पास रिबल: में लाये और उन्होंने उस का न्याय किया । और उन्होंने ने  
 सिदकियाह के बेटों को उस की आंखों के आगे घात किया और सिदकियाह  
 की आंखें बंधी कीई और पीतल की बेलियों से उसे जकड़ा और उसे बाबुल  
 को ले गया ॥
- ८ और बाबुल के राजा नबूखुदनजर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवें मास  
 सातवीं तिथि में बाबुल के राजा का एक सेवक नबूसरअद्दान जो निज सेना का
- ९ प्रधान अध्यक्ष था यहूसलम में आया । और उस ने परमेश्वर का मन्दिर और  
 राजा का भवन और यहूसलम के सारे घर और हर एक बड़े घर को जला
- १० दिया । और कसदियों की सारी सेना ने जो उस निज सेना के अध्यक्ष के साथ
- ११ थीं यहूसलम की भीतों को चारों ओर से छा दिया । और रहे हुए लोगों को  
 जो नगर में बचे थे और उन को जो भागके बाबुल के राजा पास गये थे मंडली
- १२ के उबरे हुएों के साथ नबूसरअद्दान निज सेना का अध्यक्ष ले गया । परन्तु निज  
 सेना के अध्यक्ष ने दाख के सुधरवैये और किसानों को अर्थात् देश के कंगालों  
 को छोड़ दिया ॥
- १३ और परमेश्वर के मन्दिर के पीतल के खंभों को और आधारों को और पीतल  
 के समुद्र को जो परमेश्वर के मन्दिर में था कसदियों ने तोड़के टुकड़ा टुकड़ा
- १४ किया और पीतल को बाबुल में ले गये । और बटलोहियां और फावड़ियां और  
 कतरनियां और चमचे और पीतल के सारे पात्र जिस्से वे सेवा करते थे ले गये ।
- १५ और अंगोठियां और कटोरे और सब कुछ जो सोने चांदी का था निज सेना का
- १६ अध्यक्ष ले गया । दो खंभों को और समुद्र को और आधारों को जिन्हें सुलेमान  
 ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाया था इन सारे पात्रों का पीतल बेलौल
- १७ था । एक खंभे की उंचाई अठारह हाथ और उस पर का भाड़ तांबे का और भाड़

वरस ने उस का सेवक रखा तब वह उस के विरोध में फिरा । और परमेश्वर ने २  
कमदियों की और अराम की और मोशय की और यम्मून के मैदान की जगहों  
को अपने यत्न के समान जैसा उस ने अपने सेवक भविष्यद्वक्ता के हाथ ने कहा  
था यहूदाह के विरोध में उसे नाश करने का भेजा । निम्न परमेश्वर की आज्ञा ३  
के समान यह सब कुछ सुनस्मी के पापों के कारण जो उस ने किये यहूदाह पर  
पड़ा कि उन्हें अपनी दृष्टि में दूर करे । और निर्दोष नोह के कारण भी जो उस ने ४  
बचाया क्योंकि उस ने यम्मलम को निर्दोष नोह से भर दिया जिस की वसा पर-  
मेश्वर ने न चाही ॥

अब यहूयकीन की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया था जो क्या थे ५  
यहूदाह के राजाओं के समयों के समान्तर की पुस्तक में लिखा नहीं है ॥

तो यहूयकीन ने अपने पितरों में शपथ किया और उस का बेटा यहूयकीन उस ६  
की मन्त्री राज्य पर बैठा । और मित्त का राजा अपने देश में फेर बाजार न गया ७  
क्योंकि बाबुल के राजा ने मित्त की नदी से निकले पुराने की नदी में मित्त के  
राजा का सब कुछ ले लिया ॥

यहूयकीन जब राज्य करने लगा तब अठारह वरस का था और यम्मलम में ८  
उस ने तीन मास राज्य किया और उस की माता का नाम नहूनता था जो यम्म-  
लम डलनतन की बेटा थी । और उन सब के समान जो उस के पिता ने किया ९  
था परमेश्वर की दृष्टि में उस ने खराब किये ॥

उस समय में बाबुल के राजा नबूखुदनजर के सेवक यम्मलम पर चढ़ गये १०  
और नगर घेरा गया । और बाबुल का राजा नबूखुदनजर के विरोध में आया ११  
और उस के सेवकों ने उसे घेर लिया । तब यहूदाह का राजा यहूयकीन और उस १२  
की माता और उस के सेवक और उस के प्रधान और उस के नपुंसक बाबुल के  
राजा के पास बाहर गये और बाबुल के राजा ने अपने राज्य के आर्य  
वास उसे लिया । और परमेश्वर के मन्दिर का मारा भंडार और वह भंडार जो १३  
राजा के घर में था ले गया और माने के मारे पात्रों को जो एमराणल के राजा  
मुलेमान ने परमेश्वर की आज्ञा के नमान परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाये थे  
कटवाया । और सारे यम्मलम की और मारे प्रधानों को और मारे मशायरों १४  
को अर्थात् उस सदन बंधुओं को और मारे कार्यकारियों को और लोहारों को  
और देश के लोगों के छोटों से छोटों को छोड़ कोई न छूटा । और वह यहू- १५  
यकीन को और उस की माता और राजा की पत्नियों को और उस के नपुंसकों  
को और देश के पराक्रमियों को यम्मलम से बंधुआई में बाबुल को ले गया ।  
और सारे वीरों को अर्थात् मात सदन को और एक सदन कार्यकारियों को १६  
और लोहारों को सब बलवन्त जो संग्राम के योग्य थे बाबुल का राजा उन्हें  
बंधुआई में बाबुल को ले गया । और बाबुल के राजा ने उस के चचा मत्तनियाह १७  
को उस की मन्त्री राज्य दिया और उस का नाम पलटके सिदाकियाह रखा ॥

सिदाकियाह जब राज्य पर बैठा तो शब्दीस वरस का था और उस ने ग्यारह १८  
वरस यम्मलम में राज्य किया और उस की माता का नाम हूमतल था जो लिबन:

# काल के समाचार की पहिली पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

१ २ ३ आदम सेत अनूस । कीनान मरुललिएस यारद । हनूक मतूसिलह समक ।

४ तूह शाम हाम और याफत ॥

५ याफत के बेटे जुम्र और माजूज और मादी और यूनान और तूखल और मसक  
६ और तीरास । और जुम्र के बेटे असकनाज और रीफत और तजरमः । और यूनान  
के बेटे इलिसः और तरसीस और कित्ती और दानी ॥

७ हाम के बेटे कूश और मिस्र फूत और कनआन । और कूश के बेटे सिखा  
और हविलः और सवता और शमा और सर्वातका और शमा के बेटे शिवा

१० और ददान । और कूश से निमरुद उत्पन्न हुआ वह पृथिवी पर चलवन्त होने

११ लगा । और मिस्र से लूदीम और अनामीम और लहावीम और नफतूहीम उत्पन्न

१२ हुए । और फतहसीम और कसलूहीम जिन से फिलिस्ती निकले और कफतूरीम ।

१३ और कनआन से उस के पहिलौठे सैदा और हिती उत्पन्न हुए । और यबूसी और

१४ अमूरी और जिरजाशी । और हवी और अरकी और सीनी । और अरथादी और

१५ समरी और हमती ॥

१७ सिम के बेटे ऐलाम और असूर और अरफकसद और लूद और अराम और

१८ ऊज और हूल और जतर और मसक । और अरफकसद से सिलह उत्पन्न हुआ

१९ और सिलह से इब्र उत्पन्न हुआ । और इब्र से दो बेटे उत्पन्न हुए एक का नाम

फलज इस कारण कि उस के समय में पृथिवी विभाग किई गई और उस के

२० भाई का नाम युक्तान । और युक्तान से अलमूदाद और सलफ और हसरिमात

२१ और इरख उत्पन्न हुए । और हदराम और उजाल और दिकलः । और रेखात

२२ और अबिमायल और सिखा । और आफिर और हविलः और जोआव ये सब

युक्तान के बेटे थे ॥

२४ २५ २६ सिम अरफकसद सिलह । इब्र फलज रऊ । सरुज नहूर तारइ ।

२७ अबिराम जो अबिरहाम है ॥

२८ अबिरहाम के बेटे इजहाक और इसमअएल ॥

२९ यह उन की वंशावलियां इसमअएल का पहिलौठा नखीत और कीदार और

३० अदविएल और मिक्साम । मिसमाअ और दूमा मस्सा हदद और तैमा । इतूर

नफीस और किदमः ये इसमअएल के बेटे थे ॥

३१ और अबिरहाम की सहेली कतूरः के बेटे उस्से जिमरान और युक्सान और

मिदान और मिदयान और इसखाक और सूख उत्पन्न हुए और युक्सान के बेटे

३२ सिखा और ददान । और मिदयान के बेटे रेफः और गिफ्र और हनूक और अबीदः

और इलदाआ ये सब कतूरः के बेटे थे ॥

३३ और अबिरहाम से इजहाक उत्पन्न हुआ और इजहाक के बेटे रसौ और

इसराएल ॥

की उंचाई तीन हाथ भाड़ की चारों ओर जाल के कार्य और अनार सब पीतल के और इन्हीं के समान दूसरे खंभे में जालियों का काम था ।

और प्रधान याजक गिरायाह को और दूसरे याजक भफनियाह को और तीनों १८ द्वारपालों को निज सेना का अध्यक्ष ले गया । और उस ने नगर में से एक नरुपमक १९ को लिया जो योद्धा पर था उन में से पांच जन राजा के सन्मुख रहने थे और नगर में पाये गये थे और सेना के अध्यक्ष लेखक को जो देश के लोगों की गिनती करता था और देश के साठ जन को जो नगर में पाये गये लिया । और निज २० सेना का अध्यक्ष नयूरग्रद्वान उन्हें पकड़के वायुल के राजा पास रियल: में ले गया । और वायुल के राजा ने हमारा देश रियल: में उन्हें घात किया सो यहू- २१ दाह अपने देश से निकाला गया ।

और जो लोग यहूदाह के देश में रह गये थे जिन्हें वायुल के राजा नयूरग्रद- २२ नजर ने छोड़ा था उन पर उस ने आज्ञाकारी माफन के बड़े अभिक्रम के बड़े जिदलियाह को उन का प्रधान किया । और जय सेनाओं के प्रधानों ने और उन २३ के लोगों ने सुना कि वायुल के राजा ने जिदलियाह को अध्यक्ष किया तो नत-नियाह का बेटा इसमअरल और करीह का बेटा गूदानान नतूफाती तनहमत का बेटा गिरायाह और सकाती का बेटा याजानिया अपने लोगों समेत भिसफा में जिदलियाह पास आये । और जिदलियाह ने उन से और उन के लोगों से किरिया २४ खाके उन से कहा कि कसदियों के संयक होने में सब ठेरा देश में वसो और वायुल के राजा की सेवा करो और उस में तुम्हारी भलाई होगी । परन्तु २५ सातवें मास में ऐसा हुआ कि इलीमस: के बेटे नतलियाह का बेटा इसमअरल जो राजा के वंश में था आया और उस के साथ दस जन और जिदलियाह को और उन यहूदियों को और कसदियों को जो उस के साथ भिसफा में थे प्राण से मारा । तब सब लोग क्या क्रांते क्या बड़े और सेनाओं के प्रधान उठे और मिर में २६ आ रहे क्योंकि वे कसदियों से डरते थे ।

और यहूदाह के राजा यहूयकीन की बंधुआई के सैंतीसवें वरस के वारहवें २७ मास की सत्ताईसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि वायुल का राजा अबीलमरुदक जिस वरस राज्य करने लगा उस ने यहूदाह के राजा यहूयकीन को बंधुआई से उभारा । और उससे अच्छी अच्छी बातें कहीं और उस के सिंहासन को उन सब राजाओं २८ से जो उस के साथ वायुल में थे बढ़ाया । और उस की बंधुआई के वस्त्र को पलट २९ डाला और वह अपने जीवन भर उस मंच पर उस के संग भोजन करता रहा । और उस के जीवन भर उस के प्रतिदिन की वृत्ति नित राजा की और से दिई ३० जाती थी ।

११ का अध्वज नहसून उत्पन्न हुआ । और नहसून से सलमः और सलमः से युअज  
 १२ उत्पन्न हुआ । और युअज से आविद और आविद से यस्सी उत्पन्न हुआ । और  
 १३ यस्सी का पहिलौठा इलिअव और दूसरा अविनदाव और तीसरा सिमअ । चौथा  
 १४ नतनिएल पांचवां रट्टी । छठवां जजम सातवां दाऊद । और उन की वधिन  
 १५ जरूयाह और अविजैल और जरूयाह के तीन बेटे अविशै और यूअव और  
 १६ असहेल । और अविजैल से अमासा उत्पन्न हुआ और अमासा का पिता इसमअ-  
 १७ रली धित्र था ॥

१८ और इसरून के बेटे कालिब की पत्नी अजूवः से और यरीआत से ये बेटे उत्पन्न  
 १९ हुए यव और सोबाव और अरदन । और जब अजूवः मर गई तब कालिब ने  
 २० इफरात को ग्रहण किया और वह उस के लिये दूर जनी । और दूर से ऊरी और  
 २१ ऊरी से बजिलिएल उत्पन्न हुआ । और उस के पीछे जब इसरून साठ बरस का हुआ  
 २२ तब जिलिअद के पिता मकीर की लड़की को ग्रहण किया और वह उस के लिये  
 २३ शजूव जनी । और शजूव से यादर उत्पन्न हुआ जो जिलिअद देश में तेईस नगर रखता  
 २४ था । और उस ने जसूर को और अराम को और यादर के नगरों को और  
 २५ किनात सहित और उस के नगरों को अर्थात् साठ नगर लिये ये सब जिलिअद के  
 २६ पिता मकीर के बेटे के थे । और जब कालिब इफरातः में इसरून मर गया तब  
 २७ इसरून की पत्नी अविघाह उस के लिये तकूम के पिता अशहूर को जनी ॥

२८ और इसरून के पहिलौठे यरहमिएल के बेटे ये हैं राम उस का पहिलौठा और  
 २९ खुनाह और उरन और उजम अखियाह । और यरहमिएल की दूसरी पत्नी भी थी  
 ३० जिस का नाम अत्तारा जो औनाम की माता थी । और यरहमिएल के पहिलौठे  
 ३१ राम के बेटे मअज और यमीन और अक्र । और औनाम के बेटे सम्मी और  
 ३२ वदअ और सम्मी के बेटे नदव और अबीशूर । और अबीशूर की पत्नी का नाम  
 ३३ अविखैल और वह उस के लिये अखवान और मोलीद को जनी । और नदव के  
 ३४ बेटे सिलद और अप्यईम परन्तु सिलद निर्वंश मर गया । और अप्यईम के बेटे  
 ३५ यसअई और यसअई के बेटे सैसान और सैसान के संतान अखली । और सम्मी  
 ३६ के भाई वदअ के बेटे धित्र और यूनतन और धित्र निर्वंश मर गया । और यूनतन  
 ३७ के बेटे फलत और जाजा ये यरहमिएल के बेटे थे ॥

३८ अब सैसान के बेटे न थे परन्तु बेटियां थीं और सैसान के एक मित्री सेवक था  
 ३९ जिस का नाम यरखाअ था । और सैसान ने अपनी बेटी को अपने सेवक यरखाअ से  
 ४० बियाह दिया और वह उस के लिये अत्ती को जनी । और अत्ती से नातन और  
 ४१ नातन से जवद उत्पन्न हुआ । और जवद से इफलाल और इफलाल से आविद  
 ४२ उत्पन्न हुआ । और आविद से याहू और याहू से अजरियाह उत्पन्न हुआ । और  
 ४३ अजरियाह से खालिस और खालिस से इलिअसः उत्पन्न हुआ । और इलिअसः से  
 ४४ सिसमी और सिसमी से सलूम उत्पन्न हुआ । और सलूम से यकमियाह और यक-  
 ४५ मियाह से इलिसमः उत्पन्न हुआ ॥

४६ और यरहमिएल के भाई कालिब के बेटे ये हैं उस का पहिलौठा मीसअ  
 ४७ जो जैफ का पिता और इखरून का पिता मरीसः के बेटे । और इखरून के

इसी के बेटे इलीफज रजयल और यजस और यजलाम और कुरद । इलीफज ३५  
 के बेटे तैमन और ऊसर सफी और जयतान कनज और तिमनाश और असालीक । ३६  
 रजयल के बेटे नहन शारिक सम्मः और मिज्जः । और शईर के बेटे लैतान ३७  
 और सोवल और मयजन और अनाह और दैमून और असर और दैसान । और ३८  
 लैतान के बेटे हरी और हूमास और लैतान की घटिन तिमनाश । सोवल के ४०  
 बेटे अलवान और मनहन और रेवाल सिफी और ओनास और मयजन के बेटे  
 रेवाह और अनाह । अनाह के बेटे दैमून और दैमून के बेटे हमरान और हमयान ४१  
 और हयरान और किरान । असर के बेटे विलवान और जयवान और यजकान ४२  
 दैसान के बेटे ऊज और अगन । अब इसरायेलियों के संतान पर किमी राजा के ४३  
 राज्य करने से पहिले अदूम के देश में इन राजाओं ने राज्य किया घजर का बेटा  
 घालिग और उस के नगर का नाम दिनदयः था । और जय घालिग मर गया तब ४४  
 घूमरः के बेटे घूयाघ ने उस की सन्ती राज्य किया । और जय घूयाघ मर गया ४५  
 तब नैमानी के देश के हूमान ने उस की सन्ती राज्य किया । और जय हूमास मर ४६  
 गया तब विदद के बेटे हदद ने उस की सन्ती राज्य किया उस ने सोयत्र के घोमान  
 में मिदयान को मारा और उस के नगर का नाम गघीत था । और जय हदद मर ४७  
 गया तब समरीक के बेटे समलः ने उस की सन्ती राज्य किया । और जय समलः ४८  
 मर गया तब नदी के तीर रिछावात के सादल ने उस की सन्ती राज्य किया । और ४९  
 जय साकल मर गया तब अकबोर के बेटे वअलहनान ने उस की सन्ती राज्य  
 किया । और जय वअलहनान मर गया तब हदद ने उस की सन्ती राज्य किया ५०  
 और उस के नगर का नाम पाई और उस की पवी का नाम सुईतविल लो मत-  
 रिद की बेटा जो मेजदय की बेटा थी । और हदद भी मर गया और अदूम के ५१  
 ये अध्यन्न ये अध्यन्न तिमनाश अध्यन्न अलियाह अध्यन्न परीत । अध्यन्न अहलि- ५२  
 घामः अध्यन्न गलाह अध्यन्न फैनुन । अध्यन्न कनज अध्यन्न तैमन अध्यन्न मिघसार । ५३  
 अध्यन्न मजदिएल अध्यन्न ईराम ये अदूम के अध्यन्न ॥ ५४

दूसरा पृष्ठ ।

हमरायल के बेटे ये हैं शीमन समजन लावी और यहूदाह इणकार और क्यू- ५  
 लून । दान यूसुफ और विनयमोन नफताली जद और यसर ॥ २

यहूदाह के बेटे सर और ओनान और सेलः ये तीनों कनयानी सूआ की ३  
 लड़की से उस के लिये उत्पन्न हुए और यहूदाह का पहिलेठा रा परमेश्वर की  
 दृष्टि में दुरा था और परमेश्वर ने उसे मारा । और उस की चार तमर उस के ४  
 लिये फाड़स और शारिक को जनी यहूदाह के मय बेटे पांच थे ॥

फाड़स के बेटे हमरन और हमूल । और शारिक के बेटे जिमरी और रेतान ५  
 और हैमान और कैलकूल और दरअ सत्र समेत पांच ॥ ६

और करमी के बेटे अकार हमरायल का क्लेशदायक जिस ने नापिता वस्तु में ७  
 अपराध किया । और रेतान के बेटे अजरियाह । और हमरन के बेटे भी जो ८  
 उससे उत्पन्न हुए यरहमिगल और राम और कलूवी ॥

और राम से अस्मिनदय उत्पन्न हुआ और अस्मिनदय से यहूदाह के संतान १०



१९ और फिदायाह के बेटे जख्यावेल और शमीय और जख्यावेल के बेटे मुसल्लम  
२० और हननियाह और उन की बहिन सलूमियत । और इसुवः और अहल और  
वरकियाह और हसदियाह यसूवहसद पांच ॥

२१ और हननियाह के बेटे फलतियाह और यसत्रियाह रिफायाह के बेटे अरनान  
के बेटे अबदियाह के बेटे सकनियाह के बेटे ॥

२२ और सकनियाह के बेटे समरेयाह और समरेयाह के बेटे हतूश और इजाल  
और बरीह और नशारियाह और सफत कः ॥

२३ और नशारियाह के बेटे इलियूरेनी और हिजकियाह और अजरिकाम तीन ॥

२४ और इलियूरेनी के बेटे हूदायाह और इलयमीव और फिलायाह और अकूव  
और यूहन्नान और दिलायाह और अनानी सात ॥

चौथा पर्व ।

१ यहूदाह के बेटे फाड़स इसरून और करमी और हूर और सोयल । और सोयल  
के बेटे रियादाह से यहत उत्पन्न हुआ और यहत से अहूमाई और लहद उत्पन्न हुए ये  
२ सुरशती के घराने हैं । और सेतान के पिता ये हैं यजरअएल और इसमा और  
३ इदवास और उन की बहिन का नाम इसालीलपुनी । और जदूर का पिता फनु-  
एल और हूसः का पिता अज्व वैतलहम के पिता इफरात के पहिलौठे हूर के  
बेटे ये हैं ॥

४ और तकूअ के पिता अशहूर की दो पत्नियां थीं हिलयाह और नअरः । और नअरः  
उस के लिये अखजाम और हिफ्न और तमिनी और अखसतारी को जनी ये नअरः  
५ के बेटे हैं । और हिलयाह के बेटे जिदरत और इसहार और इतनान । और  
कूज से अनूव और सोविषह उत्पन्न हुए और हरूम के बेटे अखिरखैल के घराने ॥

६ और यअवीज अपने भाइयों से प्रतिष्ठित था और उस की माता ने कहा कि  
७ मैं इसे कष्ट से जनी इस लिये उस ने उस का नाम यअवीज रक्खा । और  
८ यअवीज ने यह कहिके इसराएल के ईश्वर की प्रार्थना किई कि यदि तू मिश्रप  
मुझे आशीस देवे और मेरे सिवाने बढ़ावे जिसमें तेरे हाथ मेरे साथ हों और  
९ कि तुराई से मेरी रक्षा करे जिसमें मुझे उदासी न होवे तब ईश्वर ने उस की  
१० वांछा पूर्ण किई ॥

११ और सूखः के भाई कलूब से महीर उत्पन्न हुआ जो इसतून का पिता था ।  
१२ और इसतून से वैतराफा और फसीख और इरनहस के पिता तहिन्नः उत्पन्न हुए  
१३ ये सब रैकः के जन हैं । और कनज के बेटे गतनिएल और सिराया और गत-  
१४ निएल के बेटे हतत । और मजनाती से उफरः उत्पन्न हुआ और सिराया से  
यूअव उत्पन्न हुआ जो तराई के वासी का पिता था क्योंकि वे कार्यकारी थे ।  
१५ और यफुन्नः के बेटे कालिख के बेटे ईरू और ईला और नअस और ईला के बेटे  
१६ कनज । और यहलियल के बेटे जीफ और जीफाह तैरिया और असएल । और  
अजरः के बेटे विन्न और मरद और गिफ्न और यलून और वह मिरयम को और  
१७ समी को और इसतिमाअ के पिता इसबाह को जनी । और उस की पत्नी  
यहूदिया जदूर के पिता विरद को और सोको के पिता हिन्न को और जनुह के

वेटे कुरह और तुफफाह और रकम और समाग्र । और समाग्र से रकम उत्पन्न ४४  
हुआ जो यरकाम का पिता था और रकम से सम्मी उत्पन्न हुआ । और सम्मी ४५  
का वेटा मजन और मजन वैतमूर का पिता था । और कालिय की सहेली ४६  
रेफः से हररान और मौजग्र और जजीज और हररान से जजीज उत्पन्न हुआ ।  
और यहदी के वेटे रजम और यूताम और गोगान और फलत और रेफः और ४७  
शग्रफ । कालिय की सहेली मग्रकः से शावर और तिरदनः उत्पन्न हुए । और ४८  
उस्से मदमन्नः का पिता शग्रफ और मकधीनः का पिता और जिवग्र का पिता  
गिवा उत्पन्न हुए और कालिय की वेटी अकमः ॥

इफरातः का पहिलौठा दूर का वेटा कालिय के ये वेटे ये करयतशरीम का ५०  
पिता सोयल । वैतलहम का पिता मलमा और वैतजदीर का पिता हरीफ । ५१  
और करयतशरीम के पिता सोयल के वेटे ये हैं हारोय और दटमे हसनुवोथ । ५२  
और करयतशरीम के घराने वित्री और फूती और मिमाती और मिशराई इन से ५३  
सरथाती और हसताली निकले । मलमा के वेटे वैतलहम और नयुफती यूग्र के ५४  
घराने के मुकुट और मनहती की अतरात सचें । और यग्रवीज के वासी ५५  
लेग्रका के घराने तिरथाती मिमथाती गोकाती ये सब रेकाव के घराने के पिता  
दमात से कौनी निकले ॥

### तीसरा पद्य ।

अग्र जो वेटे दाऊद से हयदन में उत्पन्न हुए सो ये हैं पहिलौठा यजरग्रली १  
अग्रनुग्रम से अमनून दूसरा दानिगल करामिली अविजेल में । तीसरा जमूर के २  
राजा तलमी की वेटी मग्रकः का वेटा अग्रिसलुम चौथा हज्जिन का वेटा अदू-  
नियाह । पांचवां अग्रितल से सफतियाह छठवां उस की पत्नी हनल से दितरिग्राम । ३  
छे छः हयदन में उस के लिये उत्पन्न हुए और उस ने दटां साठे सात घरस और ४  
यरसलम में तैंतीस घरस राज्य किया । और यरसलम में उस के लिये ये उत्पन्न ५  
हुए मिमग्र और मोयाव नातन और मुलेमान ये चार अग्रिगल की वेटी दित्तमूग्र  
से उत्पन्न हुए । इवहार भी और इलिममः और अलिफलत । और नूजः और नफज ६  
और यफीग्र । और इलिममः और इलिग्रदः और इलिफलत नव । सहेलियों के ७  
वेटों को छोड़ दाऊद के ये सब वेटे और उन की दाहिन तमर ॥

और मुलेमान का वेटा रहयिग्राम उस का वेटा अग्रियाह उस का वेटा असा १०  
उस का वेटा यदूमफत । उस का वेटा यूरास उस का वेटा अग्रजयाह उस का ११  
वेटा यूग्रास । उस का वेटा अमसियाह उस का वेटा अजरियाह उस का वेटा १२  
यूताम । उस का वेटा आग्रज उस का वेटा हिवकियाह उस का वेटा मुनस्मी । १३  
उस का वेटा अमून उस का वेटा यूसियाह ॥ १४

और यूसियाह के वेटे पहिलौठा यूदनान दूसरा यूदूपकीम तीसरा सिदकयाह १५  
चौथा शालूस ॥

और यूदूपकीम के वेटे यूकूनियाह उस का वेटा सिदकयाह ॥ १६

और यूकूनियाह का वेटा अमीर उस का वेटा सियालतिगल । और मलकी- १७  
रस भी और फिदायाह और सिनज्जर यकमियाह हसमग्र और नदग्रियाह ॥ १८

## पाँचवां पर्व ।

- १ और इसराएल के पहिलौठे रुबिन के बेटे क्योंकि वह पहिलौठा था परन्तु इस लिये कि उस ने अपने पिता का बिकौना अशुद्ध किया उस का जन्मपद इसराएल के बेटे यूसुफ के बेटों को दिया गया और वंशावली जन्मपद पर नहीं गिनी
- २ जाती है । क्योंकि यहूदाह अपने भाइयों से बढ गया और उससे श्रेष्ठ अध्यक्ष हुआ
- ३ परन्तु जन्मपद यूसुफ का था । इसराएल के पहिलौठे रुबिन के बेटे हनूक और
- ४ पलू इसरून और करमी । यूएल के बेटे समरियाह उस का बेटा जूज उस का बेटा
- ५ शमीय उस का बेटा । मीकः उस का बेटा रियाहाह उस का बेटा बअल उस
- ६ का बेटा । बिअरः उस का बेटा जिस को यसर का राजा तिलगतपिलनेसर ले गया वह रुबिनियों का अध्यक्ष था ॥
- ७ और जब उन की पीढ़ियों की वंशावली लिखी गई तब अपने अपने घराने की
- ८ रीति पर उस के भाई प्रधान थे यईएल और जकरियाह । और यूएल का बेटा
- समअ उस का बेटा अजज उस का बेटा बालिग जो अरआयर में अर्थात् नलू और
- ९ बअलमऊन लों बसा किया । और पूरब दिशा में उस ने फुरात नदी से बन की
- १० पैठ लों बास किया क्योंकि जिलिअद देश में उन के ठोर बढ गये । और साऊल के दिनों में उन्होंने ने हगारियों से युद्ध किया जो उन के हाथ से मारे पड़े और वे जिलिअद देश की पूरब और सर्वत्र उन के तंखुओं में बसे ॥
- ११ और जद के सन्तान उन के सन्मुख बसन देश में सलकः लों बसे । यूएल
- १२ प्रधान और दूसरा साफम और यअनी और बसन में सफत । और उन के पितरों के घराने के भाई मीकाएल और मुसलूम और सबअ और यूरी और यअकान और
- १३ जीअ और इत्र सात जन । बूज का बेटा वहदू उस का बेटा यसीसी उस का बेटा मीकाएल उस का बेटा जिलिअद उस का बेटा यहूदा उस का बेटा हूरी
- १४ उस के बेटे अबिखैल के ये सन्तान हैं । जूनी का बेटा अबदिएल का बेटा अबी
- १५ उन के पितरों के घराने का प्रधान । और वे बसन के जिलिअद में और उस के नगरों में और सरून की चारों ओर के गांवों में और उन के निवासों में जा
- १६ बसे । यहूदाह के राजा यूताम के दिनों में और इसराएल के राजा यस्विआम के दिनों में ये सब वंशावलियों में गिने गये थे ॥
- १७ रुबिन के और जदियों के और मुनस्सी की आधी गोष्ठियों के बेटे बीर पुत्र थे जो ठाल तलवार और धनुष से मारने में संग्राम में निपुण थे जो चौआलीस
- १८ सहस्र सात सौ साठ जन जो संग्राम को निकल गये थे । और उन्होंने ने हगारियों
- १९ से और यतूर से और नफीस से और नादब से युद्ध किई । और वे उन के बिरुद्ध जयमान हुए और हगारी और सब जो उन के साथ थे उन के हाथ में सौंपे गये
- २० क्योंकि उन्होंने ने संग्राम में ईश्वर की प्रार्थना किई और उसी पर भरोसा रक्खा
- २१ इस कारण उस ने उन की प्रार्थना ग्रहण किई । और वे उन के ठोर को अर्थात् उन के पचास सहस्र ऊंट और अठारई लाख भेड़ और दो सहस्र गदहे और एक
- २२ लाख मनुष्य बंधुआई में ले गये । क्योंकि बहुत जूझ गये इस कारण कि संग्राम ईश्वर का था और वे उन के स्थानों में बंधुआई लों बसे ॥

पिता यकूतियल का जनी और फिरउन की बेटी यिन्तिगाह के बेटे जिसे मग्द ने लिया ये हैं । और उम की पत्नी हृदियाह नरम की बेटिन के बेटे जरमी १९ कईलः का पिता और माकाती इननिमाथ । और जिमोन के बेटे अमनून और २० रिनुः और विनेइनान और तैलून और यमग्रइ के बेटे जाहित और विन-जाहित ॥

यहूदाह के बेटे सेलः के बेटे लैकः का पिता एर और मारेगाह का पिता २१ लगदः और अशयोश उन के घर के घराने जो भीना मृती वस्त्र बनाते थे । और २२ यूकीम और कजीवः के लोग और यूशाम और जग्राफ जो मेशय में प्रभुता रखते थे और यमूरीलहम ये प्राचीन बातें हैं । ये कुम्हार थे जो सागपात में और २३ बाढ़ों में रहते थे और राजा के संग उम के कार्य के लिये वहां रहते थे ॥

मसऊन के बेटे नमूयल और यमीन परीय शारिक माऊल । उम का बेटा २४ मलूम उम का बेटा मियमाम उम का बेटा मिनमाथ । और मिनमाथ के बेटे २५ हम्मूल उम का बेटा जकूर उम का बेटा शमई उम का बेटा । और शमई २७ के मालह बेटे और छः बेटियां थीं परन्तु उम के भाई के बहुत बालक न थे और उन के सारे घराने यहूदाह के मन्तान के समान न बड़े । और ये दोशरमयश में २८ और मालदः और हसरमूथाल । और विलहः में और अजम में और तोलद में । २९ और बतूरल में और हुरमः में और निकलज में । और धतसरकदात में और ३० हसरमूमीम में और बैनविरी में और मगरीम में रहते थे दाऊद के राज्य लों ये उन के नगर थे । और उन के गांव एताम और रेन और कम्मान और तकन और ३१ अमनन पांच नगर । और यकूल लों मारे गांव जो उन नगरों की चारों ओर ३३ थे ये उन के नियाम और उन की वंशवली । और मिमेयाथ और यमलीक और ३४ अममियाह का बेटा योगाह । और यूणल और यूमियियाह का बेटा पाहू जो ३५ शिरायाह का बेटा जो असिणल का बेटा । और इलयूसनी और यमकूयः और ३६ यमूद्यायाह और अमायाह और अदिएल और इसमिणल और बनाया । और समगे- ३७ याह का बेटा सिमरी का बेटा धादायाह का बेटा अलोन का बेटा शिफई का बेटा जीजा । ये जिन का नाम लिया गया सो अपने अपने घराने के अध्यक्ष और ३८ उन के पित्रों के घराने बहुत बड़े गये थे ॥

और ये जदूर के पूरव की तराई के अन्तर्ग की पहुंच लों अपने भुंडों की ३९ चराई के लिये गये थे । और उन्हीं ने पुष्ट और उत्तम चराई पाई और वध ४० कैलाव और चैन का और कुशल का देश या क्योंकि दाम के लोग आगे उस में रहते थे । और यहूदाह के राजा जिबकियाह के दिनों में जिन के नाम लिखे ४१ हुए हैं वे आये और उन के तंबुओं को और निवासों को जो वहां पाये गये थे मार लिया और आज लों उन्हें सर्वथा नष्ट किया और उन के स्थान में दास किया क्योंकि उन के भुंडों के लिये वहां चराई थी । और उन में से अर्थात् मसऊन के ४२ बेटों में से पांच सौ जन शईर के पहाड़ पर गये फलतियाह और नअरियाह और रिफायाह और उज्जिएल जो यमग्रइ के बेटे थे उन के प्रधान थे । और ये उवरे ४३ हुए अमालीकियों का जो वध निकले थे मारके वहां वसे ॥

२४ यरूहम उस का बेटा इलकनः उस का बेटा । और समुएल के बेटे पहिलौठा  
 २५ उसनी और अखियाह । मिरारी के बेटे मुहली लिबनी उस का बेटा शिमई उस  
 ३० का बेटा उज्जः उस का बेटा । शिमथाह उस का बेटा दगिया उस का बेटा  
 असायाह उस का बेटा ॥

३१ और जब कि मंजूपा ने ईश्वर के मन्दिर में बिश्राम पाया था ये वे हैं जिन्हें  
 ३२ दाऊद ने गाने की सेवा पर ठहराया । जब लो सुलेमान ने यरूसलम में परमेश्वर  
 का मन्दिर न बनाया और वे मंडली के तंबू के स्थान के आगे गाने की सेवा  
 करते थे और वे अपने पद की पारी के समान सेवा में रहते थे ॥

३३ और ये वे हैं जो अपने बालक सहित रहते थे किदाती के बेटों में से समुएल  
 ३४ का बेटा यूएल उस का बेटा हैमान गायक । इलकनः का बेटा यरूहम का बेटा  
 ३५ इलिएल का बेटा तूख का बेटा । सूफ का बेटा इलकनः का बेटा महत का  
 ३६ बेटा अमासी का बेटा । इलकनः का बेटा यूएल का बेटा अजरियाह का बेटा  
 ३७ सफनियाह का बेटा । तहत का बेटा असीर का बेटा अबियासफ का बेटा कुरह  
 ३८ का बेटा । इजहार का बेटा किहात का बेटा लावी का बेटा इसराएल का  
 ३९ बेटा । और उस का भाई आसफ जो उस की दहिनी ओर खड़ा होता था  
 ४० अरकियाह का बेटा आसफ शिमथ का बेटा । मीकाएल का बेटा अमसियाह का  
 ४१ बेटा मलकियाह का बेटा । एतनी का बेटा शारिक का बेटा अदायाह का बेटा ।  
 ४२ ऐतान का बेटा जिम्मः का बेटा शिमई का बेटा । यहत का बेटा जैरसुम का  
 ४३ बेटा लावी का बेटा । और उन के भाई जो मिरारी के सन्तान थे जो बाएं  
 हाथ खड़ा होता था ऐतान का बेटा कीसी का बेटा अबदी का बेटा मलूक का  
 ४४ बेटा । इसबियाह का बेटा अमसियाह का बेटा खिलकियाह का बेटा । अमसी  
 ४५ का बेटा बानी का बेटा समर का बेटा । मुहली का बेटा मूसी का बेटा मिरारी  
 ४६ का बेटा लावी का बेटा । और उन के भाई लावी परमेश्वर के मन्दिर के तंबू  
 की हर प्रकार की सेवा के लिये ठहराये गये ॥

४७ परन्तु हाबन और उस के बेटे यलिदान की बेदी और धूप की बेदी के लिये  
 और सकल महा पवित्र कर्म के लिये और ईश्वर के सेवक मूसा ने जो जो आज्ञा  
 किई थी उन के समान इसराएल के कारण प्रायश्चित्त करने के निमित्त ठहराये  
 ५० गये थे । और हाबन के बेटे ये हैं इलिअजर उस का बेटा फिनिहास उस का  
 ५१ बेटा अबिसूअ उस का बेटा । धूकी उस का बेटा उज्जी उस का बेटा शरकियाह  
 ५२ उस का बेटा । मिरयास उस का बेटा अमरियाह उस का बेटा अखितूख उस का  
 ५३ बेटा । सदूक उस का बेटा अखिमअज उस का बेटा ॥

५४ अब किहात के घराने हाबन के बेटे की बस्ती उन के सिवानों में जो उन्हें  
 ५५ चिट्टी से मिली यह है । और उन्होंने ने यहूदाह की भूमि में हबन और उस की  
 ५६ चारों ओर के आसपास समेत उन्हें दिया । परन्तु नगर के खेत और उन के गांव  
 ५७ उन्होंने ने यफुन्नः के बेटे कालिष को दिये । और हाबन के बेटों को यहूदाह के  
 नगर दिये अर्थात् शरण के लिये हबन और लिबनः उस के आसपास समेत और  
 ५८ यतीर और इसतिमाअ उन के आसपास समेत । और हैलान उस के आसपास

और मुनस्सी की आधी गोष्ठी के सन्तान देश में वसे वसन से दशरथहरमून २३ और सिर और हरमून पर्वत से वढ़ गये । और उन के पितरों के घराने के २४ प्रधान ये थे शिश्र और यमश्रद्ध और डलिरल और अजरिरल और यरमियाह और हूदायाह और वडदिरल जो यल में थीर प्रसिद्ध जन थे अपने अपने पितरों के घरानों में थे ॥

और उन्हीं ने अपने पितरों के ईश्वर के विरुद्ध अपराध किया और उस देश २५ के लोगों के देवों के पीछे व्यभिचार में चले गये जिन्हें ईश्वर ने उन के आगे नष्ट किया । और हमराएल के ईश्वर ने अमूर के राजा पूल के मन को और २६ अमूर के राजा तिलगतपिलनेमर के मन को उभाड़ा और वे उन्हें अर्थात् स्थितियों को और जड़ी को और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को ले गये और उन्हें खलद में और खवूर में और घारा में और जौजान नदी में जहां वे पाए लों हैं ले गये ॥

कठयां पर्व ।

लावी के बेटे जैरुस किदात और मिरारी । और किदात के बेटे अमराम १  
इजहार और द्यहन और उज्जिएल । और अमराम के सन्तान दारन और सूमा २  
और मिरयम दारन के बेटे भी नदय और अविट्ट डलिअजर और इतमर । डलि- ३  
अजर से फिनिहाम फिनिहाम से अविमूय उत्पन्न हुआ । और अविमूय से यूकी ४  
और यूकी से उज्जी उत्पन्न हुआ । और उज्जी से शरकियाह और शरकियाह से ५  
मिरयात उत्पन्न हुआ । मिरयात से असरियाह और असरियाह से अग्वितूय उत्पन्न ६  
हुआ । और अग्वितूय से मदूक और मदूक से अयिमअज उत्पन्न हुआ । और ७  
अयिमअज से अजरियाह और अजरियाह से यूहनान उत्पन्न हुआ । और यूहनान ८  
से अजरियाह उत्पन्न हुआ वह उस मन्दिर में जो सुलेमान ने यरुसलम में बनाया ९  
राजक के पद का कार्य करता था । और अजरियाह से असरियाह और अस- १०  
रियाह से अग्वितूय उत्पन्न हुआ । और अग्वितूय से मदूक और मदूक से मलूम ११  
उत्पन्न हुआ । और मलूम से खिलकियाह और गिलकियाह से अजरियाह उत्पन्न १२  
हुआ । और अजरियाह से मिरयाह और मिरयाह से यहमदक उत्पन्न हुआ । १३  
जिस समय कि परमेश्वर नवगुदनगर के द्वारा से यहूदाह और यरुसलम को ले १४  
गया उस समय यहमदक गया ॥

लावी के बेटे जैरुस किदात और मिरारी । और ये जैरुस के बेटों के नाम १५  
लियनी और शमई । और किदात के बेटे अमराम और इजहार और द्यहन १६  
और उज्जिएल । मिरारी के बेटे मुदली और सूमी और उन के पितरों के समान १७  
ये लावी के घराने हैं । जैरुस से लियनी उस का बेटा यहत उस का बेटा जिम्मः २०  
उस का बेटा । यूअय उस का बेटा इंदू उस का बेटा शारिक उस का बेटा यतरी २१  
उस का बेटा । किदात के बेटे अस्मिनदय उस का बेटा कुरह उस का बेटा २२  
असीर उस का बेटा । इलकनः उस का बेटा अवीयसफ उस का बेटा और असीर २३  
उस का बेटा । तहत उस का बेटा ऊरीएल उस का बेटा उज्जियाह उस का बेटा २४  
और साऊल उस का बेटा । और इलकनः के बेटे अमासी और अयिमात । २५  
इलकनः के ये बेटे हैं सूफी और उस का बेटा नहत । इलिअय उस का बेटा २६  
२७



- के बेटे उज्जी और रिफायर और यरिसल और यदमी और हयसाम और समुल अपने पिता सोलज के घराने के श्रेष्ठ जो अपने वंश में बड़े पराक्रमी और ताकत के समय में गिनती में दार्दस सहस्र छः सौ थे । और उज्जी के बेटे इशराफियाह और इशराफियाह के बेटे मोकारल और अयदियाह और यूएल और यस्सीयाह पांच सब श्रेष्ठ थे ॥
- ४ और उन के संग उन की वंशावलिओं के समान उन के पितरों के घराने की रीति पर संग्राम के लिये घोड़ा की जथा में कत्तीस सहस्र क्योंकि उन की बहुत सी पत्नियां और बेटे थे । और उन के भाईयन्द इशकार के सारे घरानों में बड़े पराक्रमी और थे जो अपनी सारी जीढ़ियों में सत्तासी सहस्र जन गिने गये थे ॥
- ५ विनयमीन के बेटे बालिग और बकर और बदीअएल तीन । और बालिग के बेटे इसखून और उज्जी और उज्जिएल और यरीमात और ईरी पांच अपने पिता के घराने के श्रेष्ठ बड़े पराक्रमी लोग और अपनी वंशावलिओं में दार्दस सहस्र चौतीस गिनती में थे । और बकर के बेटे समीर और यूमास और इलिअजर और इलियुनार्ई और समरी और यरीमात और अयिदाह और अनतात और अला-
- ६ मत ये सब बकर के बेटे । और उन की वंशावली के समान उन की पीढ़ी की रीति अपने पितरों के घराने के श्रेष्ठ उन की गिनती बीस सहस्र दो सौ जन जो
- १० बड़े पराक्रमी और थे । और बदीअएल के बेटे बिलदान और बिलदान के बेटे यईस और विनयमीन और अहूद और कनअनन और जैतान और तरसीस और
- ११ अखिसहर । ये सब बदीअएल के बेटे अपने पितरों में श्रेष्ठ बलवन्त और सब
- १२ सहस्र दो सौ संग्राम करने के योग्य । और सुफफीम और हुफफीम ईर के सन्तान अखीर के बेटे हुशिम ॥
- १३ मफतासी के बेटे यहसिएल और जुनी और यिब और सलूम बिलहः के बेटे ॥
- १४ मुनस्सी के बेटे यसरएल जिसे यह जनी परन्तु उस की दासी अरामी जिलि-
- १५ अद के पिता मकीर को जनी । और मकीर ने हुफफीम और सुफफीम की बहिन से जिस का नाम मअकः था व्याह किया और दूसरी का नाम सिलाफिहाद और
- १६ सिलाफिहाद की बेटियां थीं । और मकीर की पत्नी मअकः एक बेटा जनी और उस का नाम फारिस रक्खा और उस के भाई का नाम शारस और उस के बेटे
- १७ औलाम और रकम । और औलाम के बेटे विदान ये मुनस्सी के बेटे मकीर के
- १८ बेटे जिलिअद के बेटे थे । और उस की बहिन हमोलिकत इसहोद को और
- १९ अखिअजर को और महलः को जनी । और सिमीदाअ के बेटे अहीअन और सिकम और लिक्ही और अनिआम थे ॥
- २० और इफरायम के बेटे शुसीलाह और उस का बेटा खरिद और उस का बेटा
- २१ तहत और उस का बेटा इलिअदः और उस का बेटा तहत । और उस का बेटा जखद और उस का बेटा शुसीला और अज्ज और इलिअद जिन्हें जात के लोगों ने जो उस देश में उत्पन्न हुए थे मार डाला इस कारण कि वे उन के ठोर लेने
- २२ को उत्तर आये थे । और उन के पिता इफरायम ने बहुत दिन लों शोक किया
- २३ और उस के भाई उसे शान्ति देने को आये । और यह अपनी पत्नी के पास गया

समेत और दधीर उस के आसपास समेत । और असन उस के आसपास समेत ५८ और दैतशम्भ उस के आसपास समेत । और दिनपमीन की गोष्टी में से शिवश ६० उस के आसपास समेत और आलामत उस के आसपास समेत और अनतात उस के आसपास समेत उन के सारे नगर उन के घरानों में से रह नगर । और उस ६१ गोष्टी के घराने से यसे हुए किदात के घेठों की आधी गोष्टी में से मुनस्सी की आधी गोष्टी में से चिट्टी हालके दस नगर । और जैरसुम के घेठों को उन के ६२ सारे घरानों में इशकार की गोष्टी में से और यसर की गोष्टी में से और नफताली की गोष्टी में से और यसन में मुनस्सी की गोष्टी में से से रह नगर । मिरारी के ६३ घेठों को उन के सारे घरानों में रुधिन की गोष्टी में से और छद की गोष्टी में से और जयलून की गोष्टी में से चिट्टी हालके थारद नगर । और इसरसन के मन्तानों ६४ ने लाधियाँ को ये ये नगर उन के आसपास समेत दिये । और यदुदाह के मन्तान ६५ की गोष्टी में से और ससऊन के मन्तान की गोष्टी में से और दिनपमीन के मन्तान की गोष्टी में से चिट्टी हालके ये ये नगर जिन के नाम लिये जाते हैं दिये गये ।

और किदात के घेठों के घरानों ने अपने सिद्यानों में इकरायम की गोष्टी ६६ में से नगर पाये थे । और उन्हीं ने इकरायम पद्याद में सिफम उस के आसपास ६७ समेत और जजर भी उस के आसपास समेत उन्हीं शरण नगर के लिये दिये । और युक्रमिश्राम उस के आसपास समेत और दैतदौरान उस के आसपास समेत । ६८ और गेलून उस के आसपास समेत और जातमन्तान उस के आसपास समेत । ६९ और मुनस्सी की आधी गोष्टी में से अनेर उस के आसपास समेत और धलप्रास ७० उस के आसपास समेत ये किदात के घेठों के उधरे हुए घरानों को दिये गये ।

जैरसुम के घेठों को मुनस्सी की आधी गोष्टी में से यसन में जौलान उस ७१ के आसपास समेत और इमतारात उस के आसपास समेत । और इशकार की ७२ गोष्टी में से कादिस उस के आसपास समेत दायरत उस के आसपास समेत । और रामात उस के आसपास समेत और आनेम उस के आसपास समेत । और ७३ यसर की गोष्टी में से मसल उस के आसपास समेत और अयलून उस के आसपास समेत । और इकूक उस के आसपास समेत और रादय उस के आसपास समेत । ७४ और नफताली की गोष्टी में से जलील में कादिस उस के आसपास समेत और ७५ हम्मून उस के आसपास समेत और फरयतैन उस के आसपास समेत ।

और मिरारी के उधरे हुए मन्तान जयलून की गोष्टी में से मन्तान उस के ७७ आसपास समेत तथूर उस के आसपास समेत । और यरिह के एग परदन के उस ७८ पार अर्थात् परदन की पूरय और रुधिन की गोष्टी में से शरण में हुए उस के आसपास समेत और यादजा उस के आसपास समेत । कदीमात भी उस के ७९ आसपास समेत और मेकशत उस के आसपास समेत । और छद की गोष्टी में से ८० जिलिशद में रामात उस के आसपास समेत और मन्नेन उस के आसपास समेत । और दसलून उस के आसपास समेत और याजीर उस के आसपास समेत । ८१

सातवाँ पृष्ठ ।

अथ इशकार के घेठे तोलथ और फूथः यलूथ और मिसशन चार । और तोलथ १

१० इसफाह और यूखा ये धरीशः के बेटे । और जयदियाह और मुसल्लम और हिज्जकी और  
 १५ हिज्ज । यसमरी भी और यजलियाह और यूवाह इलपाएल के बेटे । और यकीम और  
 २० जिकरी और जवदी । और इलियेनी और जिल्लती और इलियल । और अदायाह और  
 २२ विरायाह और सिमरात ये सिमरे के बेटे । और इसपान और हिज्ज और इलियल ।  
 २३ और अब्दून और जिकरी और हन्नान । और हननियाह और सेलाम और अनतातियाह ।  
 २४ और यफदियाह और फिनुएल ये शाशक के बेटे । और शम्सरी और सहरियाह और  
 २९ अतलीयाह । और यअरसियाह और इलियाह और जिकरी ये यरूहम के बेटे ।  
 ३८ इन्होंने ने अपनी अपनी वंशावली के समान अपने पितरों में येष्ट यरूसलम में वास  
 ३९ किया । और जिवउन में जिवउन का पिता वसा उस की और पत्नी का नाम  
 ४० मअकः । और उस का पहिलौठा बेटा अब्दून और सूर और कोस और वअल  
 ४१ और नदब । और जदूर और अखयू और जकर । और मिफळात से सिमयाह उत्पन्न  
 ४२ हुआ और ये भी अपने भाइयों के आगे यरूसलम में अपने भाइयों समेत वसे । और  
 नैथिर से कोस उत्पन्न हुआ और कोस से साजल और साजल से यूनतन और मलिकिसूअ  
 ४४ और अविनदाव और इशवाल । और यूनतन के बेटे मुरीव्यअल और मुरीव्यअल से  
 ४५ मीकः उत्पन्न हुआ । और मीकः के बेटे फैतून और मलिक और तरीअ और  
 ४६ आखज । और आखज से यहूअदुः उत्पन्न हुआ और यहूअदुः से अलामत और अजिमौत  
 ४७ और जिमरी उत्पन्न हुए और जिमरी से मौजा उत्पन्न हुआ । और मौजा से वनअः  
 ४८ उत्पन्न हुआ उस का बेटा रफः उस का बेटा इलियसः उस का बेटा असील । और  
 असील के कः बेटे थे जिन के ये नाम हैं अजरिकाम याकिर और इसमअएल और  
 ४९ सगरियाह और अबदियाह और हन्नान ये सब असील के बेटे । और उस के भाई  
 इशक के बेटे औलाम उस का पहिलौठा और दूसरा यऊम और तीसरा इलिफलत ।  
 ४० और ये औलाम के बेटे बड़े पराक्रमी धनुषधारी थे और बहुत से बेटे और पोते  
 रखता था ये सब डेढ़ सौ बिनयमीन के बेटे ॥

नवां पृष्ठ ।

१ यों सारे इसराएल वंशावली गिने गये और देखो ये इसराएल के और यहूदाह  
 के राजाओं की पुस्तक में लिखे हुए थे जो अपने अपराध के कारण बाबुल में  
 उठाये गये ॥

२ अब अशिले वासी जो उन के नगरों और अधिकारों में बसते थे सो इसराएली  
 ३ और याजक और लावी और नथीनी थे । और यरूसलम में यहूदाह के  
 सन्तान और बिनयमीन के सन्तान और इफरायम और मुनस्सी के सन्तान  
 रहते थे ॥

४ यहूदाह के बेटे फाडस के सन्तान के बनी के बेटे इसरी के बेटे उमरी के बेटे  
 ५ अम्मोहूद के बेटे उत्ती । और शीलूनि का पहिलौठा असायाह और उस के बेटे ।  
 ६ और शारिक के बेटे यअएल और उस के भाईबन्द कः सौ नब्बे ॥

७ और बिनयमीन के बेटे हसीनूआह के बेटे हूदायाह के बेटे मुसल्लम के बेटे सलू ।  
 ८ और यरूहम के बेटे इबनियाह और मिकरी के बेटे उज्जी के बेटे ईलाह और  
 ९ इबनियाह के बेटे रजएल के बेटे सफतियाह के बेटे मुसल्लम । और उन की वंशावली

और वह गर्भिणी होके बेटा जनो और उस का नाम यरीशः रख्या हम लिये कि  
उस के घर पर विपत्ति पड़ी थी । और उस की बेटो मैरः जिस ने ऊपर नीचे का २४  
वैतहारान और उज्जिमैरः बनाये । और उस का बेटा रिफ्ट और रमफ भी और २५  
उस का बेटा तिलह और उस का बेटा तहन । उस का बेटा लगदान उस का २६  
बेटा अम्मिहूद उस का बेटा इलिसमः । उस का बेटा नून उस का बेटा यूहूमर २७

और उन के अधिकार और उन के नियाम यैनगल और उस के गांव और पुरय २८  
और नगरान और पण्डिस और जजर और उस के गांव मिक्स भी और उस के  
गांव जजर लो और उस के गांव । और मुनस्सी के सन्तान के मियाने के लग २९  
वैतशान और उस के गांव तयनाफ और उस के गांव सजिहो और उस के गांव  
दोर और उस के गांव इन में इसरागल के बेटे यूसुफ के सन्तान वसे ॥

यसर के बेटे यिसनः और इसद्याह और यिगुआह और यरीशः और उन की ३०  
वधिन मिरह । और यरीशः के बेटे दिह्र और मलफिगल जो त्रिलैत का पिता ३१  
था । और दिह्र से यफलीत और सासिर और म्यातिस और उन की वधिन मृया ३२  
उत्पन्न हुए । और यफलीत के बेटे फामक और विमघान और अगवाम ये यफलीत ३३  
के सन्तान । और यसर के बेटे अम्बी और गहजः और यहुज्या और अराम । और ३४  
उस के भाई दिल्म के बेटे मुफह और यिमनाफ और मिलस और अमल । मुफह ३५  
के बेटे सूह और हरनफर और सुअल और विअरी और इसराह । युम और हूद ३६  
और सम्मा और मलीसः और इनरान और विअरा । और विअ के बेटे यफुन्नः ३७  
और फिसफः और अरा । और गुल्ला के बेटे अरग्य और उन्निगन और रिजिया ३८

ये सब यसर के सन्तान अपने पिता के घराने के श्रेष्ठ चुने हुए और बड़े पराक्रमी ३९  
और अध्वर्यों में श्रेष्ठ और सारी वंशावली में जो संग्राम में निपुण ये मिनती में  
छव्योस सदस जन थे ॥

### आठवां पृष्ठ ।

और विनयमीन से उस का पठिगौटा वालिग उत्पन्न हुआ दूसरा अमवील ती- १  
सरा अखिरग । चौथा नूहः और पांचवां रफा । और वालिग के बेटे अन्नार और २  
जैरा और अविहूद । और अविमूय और नयमान और अयूह । और जैरा और ३  
मफूफान और हूराम । और ये नूह के बेटे और जियश के दासी के पितरों के श्रेष्ठ ४  
और उन्हे ने उन्हे मनहत में उठा दिया । और उस ने नयमान को और अखियाह ५  
को और जैरा को वहां से उठा दिया और उस्मे उज्जा और अखिहूद उत्पन्न हुए ।  
और उन्हे भेज देने के पीछे सहरेन में मोशय के देश में वालक उत्पन्न हुए दुसरीम ८  
और वयरा उस की पदियां थीं । और उस की पत्नी हुडस से यूययय और जियिया ९  
और मैसा और मलकाम । और यज्ज और शावियाह और निरसः उत्पन्न हुए ये १०  
उस के बेटे अपने पितरों में श्रेष्ठ । और दूसरीम से अविमूय और इलपासल उत्पन्न ११  
हुए । और इलपासल के बेटे इय और मिशयाम और मासिर जिन्होंने ने औनू और १२  
लूद उन के आसपास के गांव वसाये । और यरीशः और शमश जो रेयलून के १३  
वासियों के पितरों में श्रेष्ठ जिन्होंने ने जात के वासियों को खेद दिया । और अययू १४  
शाशक और यरीमात । और जयदियाह और अराव और अद्र । और मीकारल और १५

पितरों के प्रधान गायक थे कोठारियों की सेवा से रहित थे क्योंकि कार्य दिन ३४ रात उन्हीं पर था । लावियों के पितरों के ये प्रधान अपनी अपनी पीढ़ियों में प्रधान यरुसलम में रहते थे ।

३५ और जिवजन का पिता यऊल जिवजन में रहता था और उस की पत्नी का ३६ नाम मअकः । और उस का पहिलौठा बेटा अखदून तब सूर और कीस और ३७ वअल और नैयिर और नदब । और जदूर और अखयू और जकरियाह और ३८ मिकलात । और मिकलात से सिसयाम उत्पन्न हुआ और वे भी अपने भाइयों के ३९ साथ यरुसलम में अपने भाइयों के सन्मुख रहते थे । और नैयिर से कीस उत्पन्न हुआ और कीस से साऊल उत्पन्न हुआ और साऊल से यूनतन और मलिकिसूअ ४० और अविनदाब और इशवाअल उत्पन्न हुए । और यूनतन के बेटे मुरीव्वअल और ४१ मुरीव्वअल से मीकः उत्पन्न हुआ । और मीकः के बेटे फैतून और मलिक और ४२ तहरीअ । और आखज से जारा उत्पन्न हुआ और जारा से अलामत और अजिमात ४३ और जिमरी उत्पन्न हुए और जिमरी से मौजा । और मौजा से यनअः उत्पन्न हुआ ४४ और उस का बेटा रिफायाह उस का बेटा इलियसः उस का बेटा असील । और असील के छः बेटे थे जिन के ये नाम अजरिकाम वोकर और इसमअरल और शिआरियाह और अदियाह और हजान ये असील के बेटे थे ।

#### दसवां पर्व ।

१ अब फिलिस्ती इसराएल से लड़े और इसराएल फिलिस्तियों के आगे से भागे २ और जिलबूअ पर्वत में जूझ गये । और फिलिस्ती साऊल के और उस के बेटों के पीछे पीछे धाये गये और फिलिस्तियों ने साऊल के बेटों यूनतन को और अविनदाब को ३ और मलिकिसूअ को मार डाला । और संग्राम साऊल के विरुद्ध हुआ और धनुषधारियों ४ ने उसे मारा और धनुषधारियों से घायल किया गया । तब साऊल ने अपने शस्त्र-धारी से कहा कि अपनी तलवार खींचके मुझे गोद दे ऐसा न हो कि ये अखतने आके मेरा अपमान करें परन्तु उस के शस्त्रधारी ने न माना क्योंकि वह निपट डर ५ गया तब साऊल एक तलवार लेके उस पर गिरा । और साऊल को मृतक देखके ६ उस का शस्त्रधारी भी उसी रीति से अपनी तलवार पर गिरके मर गया । ७ साऊल और उस के तीन बेटे और उस के सारे घराने एक साथ मर गये । और जब इसराएल के सारे मनुष्यों ने जो तराई में थे देखा कि वे भाग गये और साऊल और उस के बेटे मर गये तब वे अपने अपने नगरों को छोड़ छोड़ भाग गये और फिलिस्ती आके उन में बसे ॥

८ और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि जब फिलिस्ती जूझे हुआओं को नंगा करने आये ९ तब उन्होंने ने जिलबूअ पर्वत पर साऊल को और उस के बेटों को ढूँढ पाया । और उसे नंगा करके उस के सिर को और उस के अस्त्र को लेके फिलिस्तियों के देश में चारों ओर भेजा जिससे उन की मूर्तिन के और लोगों के पास संदेश पहुंचावे । १० और उन्होंने ने अपने देवों के मन्दिर में उस के शस्त्र को रक्खा और दूजन के मन्दिर में उस के सिर को लटका दिया ॥

११ और जब जिलिअद में यवीस के सारे लोगों ने सब कुछ सुना जो फिलिस्तियों

के समान उन के भाईयन्द नव सौ छप्पन थे सब अपने अपने पितरों के घराने में पितरों के प्रधान थे ।

और याजकों में से यदैश्रयाह और यदूपरीय और यकीन । और ईश्वर के मन्दिर १० के आजाकारी अखितूय का घेठा मिरयाह का घेठा सडूक का घेठा सुसल्लम का ११ घेठा गिलकियाह का घेठा अजरियाह । और सलकियाह का घेठा फसिहूर का १२ घेठा यन्दम का घेठा अदायाह और अमीर के घेठे सुमलमियत का घेठा सुसल्लम का घेठा यदजीरः का घेठा अदिगल का घेठा मअमी । और उन के भाईयन्द १३ अपने अपने पितरों के घराने के प्रधान एक सदन सात सौ साठ थे ईश्वर के मन्दिर के कार्य के लिये सदाथीर थे ।

और लावियों में से मिरारियों के घेठों में से दमययाह का घेठा अजरिकाम १४ का घेठा दमूय का घेठा समरेयाह । और बकबकूर और हरम और जलाल और १५ आसफ का घेठा जिकरी का घेठा मौका का घेठा सलनियाह । और यदूतून का १६ घेठा जलाल का घेठा समरेयाह का घेठा अयदियाह और ननूफातियों के गांधों के घामी डलकनः का घेठा असा का घेठा यरकिपाह । और ननूम और अकूय १७ और तलमान और अयिमान और उन के भाईयन्द द्वारपाल थे और सनूम थे १८ था । और वह अथ लों पूरय और राजा के फाटक में रहता था वे लावियों के १९ सन्तान की जथाओं में द्वारपाल थे । और कुरह का घेठा अयियासफ का घेठा २० कारी का घेठा मलूम और उम के पिता के घराने के भाईयन्द जो कोराधी थे सेवा के कार्य पर और तंयू के देवड़ीदार थे और उन के पितर परमेश्वर की सेवा के प्रवेश के रत्नक थे । और इलिअजर का घेठा फीनिहाम पिछले दिनों में उन २१ पर आजाकारी था और परमेश्वर उम के साथ था । सुमलमियाह का घेठा २२ जकरियाह मंडली के तंयू का द्वारपाल था । ये सब फाटकों के लिये दो सौ २३ धारह चुने गये थे अपनी अपनी वंशावली में और गांधों में गिने गये जिन्हें दाऊद और समूगल दर्शा ने उन के कार्यों में ठहराया था । सो वे और उन के सन्तान २४ परमेश्वर के मन्दिर के फाटकों पर थे अर्थात् तंयू के घर की चौकी के लिये । द्वारपाल चौदिशा थे अर्थात् पूरय पश्चिम उत्तर दक्षिण की ओर । और उन के २५ गांधों में उन के भाईयन्द जब तब सात दिन पीछे उन के साथ आते थे । क्योंकि २६ वे लावी चार प्रधान द्वारपाल अपने अपने कार्य में रहते थे और ईश्वर के मन्दिर की कोठरियों और मंडारों पर थे । और वे ईश्वर के मन्दिर की चारों ओर रात २७ को रहते थे क्योंकि उन्हें चौकी देना था और हर विधान उस का खालना उन्हीं से था । और उन में से सेवा के पात्रों के रत्नक थे जिसमें वे उन्हें बाहर भीतर गिन २८ गिनके ले आवें ले जावें । और उन में से भी पवित्र स्थान के पात्र और समस्त द्रव्य २९ और चौखा पिसान और दाखरम और तेल और लोधान और नुगंध द्रव्य के देखने के लिये ठहराये गये थे । और याजक के घेठों में से कितने सुगंध द्रव्य का तेल ३० पेरते थे । और लावियों में से सलितियाह का सलूम कुरही पहिलौठा था वे यस्ती ३१ उसी के वंश में थीं जो थालों में वनती थीं । और किदाती के घेठों में से उन के ३२ भाईयन्द हर विग्राम को भेंट की रोटी सिद्ध करने पर थे । और वे लावियों के ३३



१७ तब दाऊद ने बड़ी लालसा से कहा हाथ कि कोई मुझे घेतलहम के फाटक के  
 १८ कुए का जल पिलाता । तब वह तीनों फिलिस्तियों की सेना को तोड़के घेतलहम  
 के फाटक के कुए का जल खींचके दाऊद पास लाये परन्तु दाऊद ने उसे न पिया  
 १९ पर उसे परमेश्वर के निमित्त उठेला । और कहा कि मेरा ईश्वर न करे कि मैं  
 ऐसा करूं यथा मैं इन मनुष्यों के लोहू को पीऊं जो अपना अपना प्राण जोखिम  
 में लाये क्योंकि वे अपने अपने प्राण के जोखिम से उसे लाये इस लिये उस ने उसे  
 न पिया यह कार्य इन तीन चलवन्तों ने किया ॥

२० और यूअव का भाई अविगै उन तीनों का प्रधान था क्योंकि उस ने तीन  
 २१ सौ पर भाला चलाके उन्हें घात किया और वह तीनों में नामी था । उन तीनों  
 में वह दो से प्रतिष्ठित था क्योंकि वह उन का प्रधान था तथापि वह अगिले  
 तीन लों न पहुंचा ॥

२२ कजिएल के शूर का बेटा यूहूयदः का बेटा विनायाह जो कार्य में महान  
 था उस ने सिंध तुल्य मोअव दो जन को घात किया उस ने पाले के दिन में भी  
 २३ उतरके एक गड़दे में सिंध को मार डाला । और उस ने नये हुए पांच हाथ के  
 एक मिस्री को मार डाला और उस मिस्री के हाथ में जुलाहे के तूर के समान  
 भाला था परन्तु वह एक लट्टु लेके उस पर उतरा और भाले को उस के हाथ से  
 २४ छीन लिया और उमी के भाले से उसे मार डाला । यूहूयदः के बेटे विनायाह  
 २५ ने ये ये कार्य किये और तीन शूरों में नामी था । देखो वह तीनों में  
 प्रतिष्ठित था परन्तु अगिले तीन लों न पहुंचा और दाऊद ने उसे अपना निज  
 मंत्री किया ॥

२६ सेनाओं के भी शूर यूअव का भाई असहेल घेतलहमी दूद का बेटा इलह-  
 २७ नान । छेरोरी सम्मात फलूनी खालिस । तक्रूई अकीस का बेटा ईरा अनताती  
 २८ अविअजर । हूशासी सिधकी अखूदी इलई । नतूफाती मदरी नतूफाती यअना का  
 २९ बेटा इलद । विनयमीनी सन्तानों के जिविअत के पैथी का बेटा इती अखतूनी  
 ३० विनायाह । जअश की नालियों का हूरी अरदाती अविएल । यहूमी अजिमात  
 ३१ शअलबूनी ईलियहवा । जिजूनी हशीम के बेटे हरारी शजी का बेटा यूनातन ।  
 ३२ हरारी शक का बेटा अलीआम ऊर का बेटा इलिफाल । मिकेरासी हिफ फलूनी  
 ३३ अखियाह । करमिली हसर अजवी का बेटा नअरी । नातन का भाई यूएल  
 ३४ हजरी मिबखार । अमूनी जिलक वेरोसी नहाराई सख्या के बेटे यूआव का शस्त्र-  
 ३५ धारी । इथरी ऐरा इथरी गारेव । इती औरिया अहलाई का बेटा साबाद ।  
 ३६ राओबीनी शोजा का बेटा अदीना राओबीनियों का एक प्रधान और उस के  
 ३७ संग तीस जन । मअका का बेटा हनान और मितनी यूशाफात । अशतिराती  
 ३८ ऊजिया अरुईरी होसान के बेटे शामा और जहीयल । शिमरी जदियाएल उस  
 ३९ का भाई जोहा तीसीती । महावी इलईल और इलनआम के बेटे यरीवाई और  
 ४० यूशाबिया और मोआवी इसमाह । एलीयेल और ओवेद और मिसोवाती यमिएल ॥

बारहवां पर्व ।

१ और ये वे हैं जो जिकलाग में दाऊद पास आये जब वह कोश के बेटे साऊल

ने साकल से किया था । तब सारे खीर डठे और माकल की साथ और उस के घेटी १२ की साथ लिई और उन्हें ययीम में लाये और ययीम में खलन पेड़ तले उन की छाड़ियां गाड़ीं और सात दिन लेां व्रत किया । सो माकल अपने पाप के लिये मर १३ गया जो उस ने ईश्वर के विरुद्ध अर्थात् ईश्वर के वचन के विरुद्ध किया जो उस ने न माना और इस लिये भी कि उस ने सुतनी से पृक़ा था । और उस ने परसे- १४ श्वर से न दूखा इस लिये उस ने उसे मारा और यस्सी के घटे दाऊद की और राज्य को फेर दिया ॥

### शाराइयां पर्व ।

तब सारे इसराएल ने दबदन में दाऊद पाम एकट्टे छोके कहा कि देखिये १ इस तेरे दाढ़ सांस हैं । और कल परसों भी अर्थात् जब माकल राजा था तब २ इसराएल को तू बाहर भीतर ले आया जाया काता था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे कहा कि तू मेरे इसराएल लोगों को चरायगा और तू मेरे इसराएल लोगों का अध्यक्ष होगा । इस लिये इसराएल के सारे प्राचीन दबदन में राजा ३ पाम आये और दबदन में दाऊद ने परमेश्वर के आगे उन से नियम किया और मूसल के द्वारा से परमेश्वर के वचन के समान उन्हें ने दाऊद को इसराएल पर राज्याभिषेक किया ॥

और दाऊद और सारे इसराएल यमसलम को जो यूस है गये जहां देश ४ के वासी यूसनी थे । और यूस के वासियों ने दाऊद से कहा कि तू यहां आने ५ न पावगा तथापि दाऊद ने मैहन के गढ़ को लिया यही दाऊद का नगर हुआ । और दाऊद ने कहा कि जो कोई पहिले यूसियों को मारेगा सो श्रेष्ठ और सेना- ६ प्रति होगा तब जसयाह का बेटा यूशव पहिले खड़ गया और श्रेष्ठ हुआ । और ७ दाऊद ने गढ़ में वास किया इस लिये उन्हें ने उस का नाम दाऊद का नगर रक्खा । और उस ने नगर को चारों ओर अर्थात् मिल्लो से चारों ओर बनाया ८ और यूशव ने नगर के रहे हुए को सुधारा । और दाऊद बढ़ता गया क्योंकि ९ सेनाओं का परमेश्वर उस के साथ था ॥

और दाऊद के शूरों के श्रेष्ठ भी ये हैं जो इसराएल के विषय में परमेश्वर १० के वचन के समान इसे राजा बनाने के लिये दृढ़ता से सारे इसराएल के संग उससे मिलते रहे । और दाऊद के शूर की गिनती यह है यूमुविगाम एक दक्कूनी ११ प्रधानों में श्रेष्ठ उस ने तीन सदस पर अपना भाला उठाके एकही समय में उन्हें मारा । और उस के पीछे अछोछोदेदो का बेटा इलिअजर जो तीन शूरों में एक १२ था । वह दाऊद के साथ अफसदस्मीम में था जहां फिलिस्ती संग्राम के लिये १३ एकट्टे हुए थे उस स्थान में जब भरा हुआ था और लोग फिलिस्तियों के आगे से भागे । और उन्हें ने उस खेत में खड़े छोके उसे कुड़ाया और फिलिस्तियों १४ को मारा और परमेश्वर ने उन्हें बढ़ा जयमान किया ॥

सो तीनों के प्रधान तीन जन अदूलाम की कन्दला से दाऊद पाम चढ़ान १५ को गये और फिलिस्तियों की सेना रिफाईम की तराई में कावनी किये हुई थी । और उस समय दाऊद गढ़ में था और फिलिस्तियों का घाना बैतलहम में । १६

२३ और ओष्टों की यह गिनती संग्राम के लिये हथियारबन्द लैस दाऊद पास हव-  
 २४ खन को आये जिसमें परमेश्वर के बचन के समान साऊल का राज्य दाऊद की  
 २५ और फेर देंगे । यहूदाह के सन्तान जो ढाल और धरकी लिये थे कः सहस्र आठ  
 २६ सौ जन संग्राम के लिये लैस । समऊन के सन्तान संग्राम के लिये महावीर सात  
 २७ सहस्र एक सौ । लावी के सन्तान चार सहस्र कः सौ । और हाबूनियों के अगुआ  
 २८ यहूयदः और उस के संग तीन सहस्र सात सौ । और सदूक एक तरुण महावीर  
 २९ और उस के पिता के घराने से बार्डस प्रधान । और खिनयमीन के सन्तान साऊल  
 ३० के भार्दबन्द में से तीन सहस्र क्योंकि अब लों उन में से एक मंडली साऊल के  
 ३१ अपने अपने पितरों के घराने में नामी । और मुनस्सी की आधी गोष्टी में से  
 अठारह सहस्र जो नाम नाम से बुलाये गये जिसमें आके दाऊद को राजा करें ।  
 ३२ और इशकार के सन्तानों में से जो समयों के ज्ञाता और जानते थे कि इसराएल  
 क्या करेगा उन में से ओष्ट दो सौ और उन के सारे भार्दबन्द उन की आज्ञा में  
 ३३ थे । जवुलून में से जो संग्राम को निकलते थे युद्ध के सारे हथियार सहित युद्ध में  
 ३४ निपुण पचास सहस्र जो पांती में स्थिर रहि सक्ते थे और दुचित न थे । और नफ-  
 ताली में से एक सहस्र सेनापति और उन के संग सैंतीस सहस्र ढाल और भाला  
 ३५ सहित । और दानियों में से संग्राम में निपुण अट्ठार्वस सहस्र कः सौ । और यसर  
 ३६ में से जो संग्राम को निकलते थे चालीस सहस्र संग्राम में निपुण । और यरदन  
 के पार से खिनियों में से और जद्वियों में से और मुनस्सी की आधी गोष्टी में से  
 युद्ध के सारे प्रकार के हथियार सहित संग्राम के लिये एक लाख बीस सहस्र जन ।  
 ३७ ये सब योद्धा पांती में स्थिर खरे मन से हबून में आये जिसमें दाऊद को सारे  
 इसराएल पर राजा करें और इसराएल के सारे उबरे हुए लोग एक मन से दाऊद  
 ३८ को राजा बनाने आये । और वे दाऊद के संग खाते पीते वहां तीन दिन रहे  
 ३९ क्योंकि उन के भार्दबन्दों ने उन के लिये सिद्ध किया था । और इशकार के और  
 जवुलून के और नफताली के आसपास के लोग भी गदहों पर और जंटों पर और  
 खच्चरों पर और बैलों पर भोजन रोटी और गूलर और अंगूर के गुच्छे और दाख-  
 रस और तेल और तैल और भेड़ें छहुताई से लाये क्योंकि इसराएल में बड़ा  
 आनन्द हुआ ॥

तेरहवां पृष्ठ ।

१ और उस के पीछे दाऊद ने सहस्रपति से और शतपति से और हर एक अगुआ  
 २ से परामर्श किया । और दाऊद ने इसराएल की सारी मंडली को कहा कि जो  
 तुम्हें और हमारे ईश्वर परमेश्वर को भला लगे तो आओ अपने भार्दबन्द पास जो  
 इसराएल के सारे देश में बच रहे हैं हर एक स्थान में और उन के संग याजकों के  
 और लावियों के पास जो उन के नगरों में और सिवानों में हैं संदेश भेजें जिसमें  
 ३ वे हमारे पास एकट्टे होवें । और चलो अपने ईश्वर की मंजूषा को अपने यहां फेर  
 ४ लावें क्योंकि साऊल के दिनों में हम ने उससे नहीं बूझा । और सारी मंडली ने कहा  
 कि हम यह बात करेंगे क्योंकि वह बात सारे लोगों की दृष्टि में अच्छी लगी ॥

के कारण आप को बंद करता था और वे शूरी में संग्राम में सहायक थे । वे धनुष २  
से लैस थे और पत्थरों को दहिने बायें हाथ से और बाणों को धनुष से सार सकते  
थे जो विनयमीनी साजल के भाईचन्द में से थे । अटर्देजर प्रधान और गिवियासी ३  
गिमाह के बेटे यूआश और अजमावेत के बेटे अजाईल और पलत और अनतोमी  
वराका और याहू । और गवियूनी इसमाया तीसों में शूर और तीसों का प्रधान ४  
और इरमिया और इटाजिगल और गोहानान और गदगसी यूमवाद । इलूजाई और ५  
इरोमूम और विश्रलिया और गिमरीया और हरुफी गिफतिया । इलकाना और ६  
इमिया और अजरईल और यूजेर और कोरहाती यशाविश्राम । और गिदोरी इरो- ७  
हाम के बेटे जोइला और जब्बीया ॥

और जद्वियों के घोर और सेना में के संग्राम के योग्य जो ठान और करी उठा ८  
सकते थे जिन के मुंह सिंह के मुंह के समान और जो पहाड़ी में हरियों की नाईं  
चालाक थे और उन के दृढ़ स्थान में दाऊद पास आता हुन । पहिले एजेर दूसरा ९  
उद्यदिया तीसरा इलिआव । चौथा मिशमन्ना पांचवां इरमिया । छठवां अत्तई सात- १०  
वां एलीयेल । आठवां यूहानान नयां पलकावाद । दसवां इरमिया श्याहवां गक- ११  
वनई । सेना के प्रधान जद के बेटों में के थे जो एक छंटे में छेड़ा था सो मो १२  
पर था और बड़े में बड़ा सहस्र पर । ये वे हैं जिनमें ने पहिले मान में जय परदन १३  
के कराड़े डूबे थे पार उतरके तराहियों के सारे लोगों को पूरव और पश्चिम और १४  
से भगा दिया ॥

और विनयमीन के और यहूदाह के सन्तान कितने लोग दाऊद पास गढ़ में १५  
आये । और दाऊद उन की भेंट को गया और उन से कहने लगा कि यदि तुम १६  
लोग निर्विरोध होके मेरे उपकार के निमित्त मुझ पास आये हो तो मेरा मन तुम  
से एक होगा परन्तु जो मुझे मेरे घरियों के हाथ पकड़वाने आये हो यद्यपि मेरे  
हाथ में कुछ अंधेर नहीं है तो हमारे पित्रों का ईश्वर देखे और न्याय करे ।  
तब सेनापतियों के श्रेष्ठ अमामी पर आत्मा उतरा और कहा कि दाऊद हम तेरे १७  
और है यस्सा के बेटे हम तेरे हैं कुगल मुझ पर और कुगल तेरे उपकारियों पर  
क्योंकि तेरा ईश्वर तेरा उपकार करता है तब दाऊद ने उन्हें ग्रहण किया और  
उन्हें जया का प्रधान बनाया ॥

और मुनस्सी में से कई जन दाऊद पास गये तब वह फिलिस्तीयों के संग १८  
साजल के विरुद्ध संग्राम को गया परन्तु उन्होंने उन का उपकार न किया क्योंकि  
फिलिस्तीयों के अध्यक्षों ने जानते ही यह कहके उसे बिना किया कि वह  
हमारे सिर पर से अपने स्वामी साजल से जा मिलेगा । तब वह सिकलम में २०  
गया तब मुनस्सी में से अदनः और यूजयद और वडीअरल और मीकारल और  
यूजवद और इलितू और जिल्लती मुनस्सी में के सहस्रों के पति उस पास आये ।  
और उन्होंने ने जया के विरुद्ध दाऊद का उपकार किया क्योंकि वे मय के सह २१  
सहाय्यीर और सेना में प्रधान थे । क्योंकि उस समय प्रतिदिन दाऊद के २२  
उपकार के लिये लोग चले आते थे यहां लो कि बड़ी सेना जैसी ईश्वर की  
सेना हुई ॥

उन्होंने अपने देवों को वहाँ छोड़ा तो दाऊद ने आज्ञा किई और वे आग से जलाये गये ॥

१३ और फिलिस्ती फेर तराई में फैल गये । इस लिये फेर दाऊद ने ईश्वर से  
१४ ब्रूका और ईश्वर ने उसे कहा कि उन को पीछे मत चढ़ जा उन से अलग हो  
१५ जा और तूत पेड़ों के सामने से उन पर जा पड़ । और ऐसा होगा कि जब तू  
तूत पेड़ों के ऊपर चलने का सज़ाटा सुने तब तू संग्राम को निकल क्योंकि फिलि-  
१६ स्तियों की सेना के मारने को ईश्वर तेरे आगे आगे निकल गया । और जैसा  
ईश्वर ने दाऊद को आज्ञा किई तैसा उस ने किया और उन्होंने ने फिलिस्तीयों  
१७ की सेना को जिवजुन से जजर लों मारा । और दाऊद की कीर्ति सारे देशों में  
फैली और परमेश्वर ने सारे जातिगणों पर उस का भय डाला ॥

पंदरहवां पर्व ।

१ और दाऊद ने अपने नगर में अपने लिये घर बनाये और ईश्वर की मंजूपा के  
२ लिये एक स्थान सिद्ध किया और उस के लिये डेरा खड़ा किया । तब दाऊद ने  
कहा कि लावियों को छोड़ ईश्वर की मंजूपा उठाने को किसी को उचित नहीं  
क्योंकि ईश्वर की मंजूपा उठाने को और नित्य की सेवा करने को परमेश्वर ने  
उन्हें चुन लिया है ॥

३ और दाऊद ने परमेश्वर की मंजूपा को उस स्थान में लाने के लिये जो उस  
ने उस के लिये सिद्ध किया था यरूसलम में सारे इसराएल को एकट्ठे किया ।  
४ और दाऊद ने हाखन के सन्तान को और लावियों को बटोरा । किहात के बेटों  
५ में से ऊरिएल प्रधान और उस के भाईबन्द एक सौ बीस । मिरारी के बेटों में  
६ से असायाह प्रधान और उस के भाईबन्द दो सौ बीस । जैरुम के बेटों में से  
७ यूएल प्रधान और उस के भाईबन्द एक सौ तीस । इलिसफन के बेटों में से सम-  
८ रेयाह प्रधान और उस के भाईबन्द दो सौ । हबखन के बेटों में से इलिएल  
१० प्रधान और उस के भाईबन्द अस्सी । ऊजिएल के बेटों में से अम्मिनदब प्रधान  
और उस के भाईबन्द एक सौ बारह ॥

११ और दाऊद ने सदूक और अबिवतर याजक को और लावियों को ऊरिएल  
को असायाह को और यूएल को समरेयाह को और इलिएल को और अम्मिनदब  
१२ को बुलाया । और उन्हें कहा कि हे लावियों के पितरों के प्रधानो तुम लोग  
और तुम्हारे भाईबन्द आप आप को पवित्र करें जिसतैं इसराएल के ईश्वर पर-  
१३ मेश्वर की मंजूपा को उस स्थान में जो मैं ने सिद्ध किया है उठा लावें । क्योंकि  
तुम लोगों ने पहिले नहीं किया हमारे ईश्वर परमेश्वर ने हम पर चिथाड़ डाली  
क्योंकि हम ने उसे विधि से न खोजा ॥

१४ सो याजकों ने और लावियों ने इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की मंजूपा लाने  
१५ को आप आप को पवित्र किया । और जैसा मूसा ने परमेश्वर के वचन के समान  
आज्ञा किई थी तैसा ही लावियों के सन्तानों ने बहंगरों सहित अपने अपने  
कांधों पर ईश्वर की मंजूपा उठाई ॥

१६ और दाऊद ने लावियों के प्रधान को कहा कि अपने भाईबन्दों को गायक

तब दाऊद ने मिस्र के सैहर से दमात की पैठ लीं सारे इसराएल को एकट्ठे ५  
 किया जिसमें ईश्वर की मंजूपा को करयतअरीम से लाये । तब सारे इसराएल ६  
 दाऊद के संग बअलत को अर्थात् यहूदाह के करयतअरीम को चढ़ गये जिसमें  
 उस ईश्वर परमेश्वर की मंजूपा को जो करीबियों के मध्य बाम करता है जिस  
 के नाम से पुकारी जाती है वहां से ऊपर लाये । और उन्होंने ने अविनदाव के ७  
 घर से ईश्वर की मंजूपा को नई गाड़ी पर भरा और उज्जा और अग्रयू ने उस  
 गाड़ी को ढांका । और दाऊद और सारे इसराएल अपनी अपनी सारी सामर्थ्य ८  
 और चीन और तबले और खंजड़ी और कस्ताल और तुरही से ईश्वर के आगे गाते  
 बजाते गये । और जब वे कैदून के खलिहान को पहुंचे तब उज्जा ने मंजूपा को ९  
 घरने के लिये अपना हाथ बढ़ाया क्योंकि वैनो ने ठोकर मारी । तब परमेश्वर १०  
 का क्रोध उज्जा पर भड़का और उस ने उसे हम कारण घात किया कि उस ने  
 अपना हाथ मंजूपा पर रक्खा और यह वहां परमेश्वर के आगे सर गया । और ११  
 दाऊद उदास हुआ इस कारण कि परमेश्वर ने उज्जा पर चिन्हाह डाली हम लिये  
 आज लो वट स्थान उज्जा का दरार कटावता है । और उस दिन दाऊद यह १२  
 फहके ईश्वर से बुरा कि ईश्वर की मंजूपा को अपने पास फोँकर लाई । सो १३  
 दाऊद मंजूपा को अपने यहां दाऊद के नगर में न लाया परन्तु जितनी आविद-  
 अदूम के घर में उसे एक अलंग ले गया ।

और ईश्वर की मंजूपा आविदअदूम के घर में तीन मास रही और परमेश्वर १४  
 ने आविदअदूम के घराने पर और उस की सारी संपत्ति पर आशीस दिई ॥

चादहवां पृष्ठ ।

तब सूर के राजा हीराम ने दाऊद पास उस के घर बनाने के लिये दूतों को १  
 और देवदार लट्टों को बबइयों और बट्टियों के साथ भेजा । और दाऊद को २  
 निश्चय हुआ कि परमेश्वर ने इसराएल पर मेरे राज्य को स्थिर किया और अपने  
 इसराएल लोग के लिये मेरा राज्य बढ़ाया ॥

तब दाऊद ने यरुसलम में और पवित्रां किई और दाऊद से और बेटे बेटियों ३  
 उत्पन्न हुए । और उस के मनान के नाम जो यरुसलम में उत्पन्न हुए ये हैं समूअ ४  
 और सोदाव नातन और मुलेमान । और इयहार और इलिसूअः और इनिफलत । ५  
 और नूगः और नफग और यफीअ और इलिसमः । और बअलतयदअ और इलि ६  
 फलत ॥

जब फिलिस्तीयों ने सुना कि दाऊद सारे इसराएल पर राज्याभिषिक्त हुआ तब ८  
 सारे फिलिस्ती दाऊद को खोज को निकले और दाऊद मुनके उन के विरुद्ध ९  
 निकला । और फिलिस्ती आये और रिफाईम को तराई में फँस गये । और दाऊद १०  
 ने यह कहके परमेश्वर से पूछा कि मैं फिलिस्तीयों पर चढ़ जाऊँ और तू उन्हें ११  
 मेरे हाथ में सौंप देगा तब परमेश्वर ने उसे कहा कि चढ़ जा क्योंकि मैं उन्हें १२  
 तेरे हाथ में सौंपूँगा । सो वे बअलफरसीन को चढ़ गये और दाऊद ने वहां उन्हें १३  
 मारा तब दाऊद ने कहा कि ईश्वर ने पानियों के तोड़ा की नाईं मेरे बैरियों को १४  
 तोड़ा इस लिये उन्हें ने उस स्थान का नाम बअलफरसीन रक्खा । और जब १५



- ४ और उस ने कितने लावियों को परमेश्वर की संजूषा के आगे सेवा करने के लिये और स्मरण करने के लिये और इसराएल के ईश्वर परमेश्वर का धन्य
- ५ माने और स्तुति करने के लिये स्थापित किया । अर्थात् प्रधान आसफ को और उस के पीछे जकरियाह यईएल और सिमिरामात को और यहिएल और मत्ति-  
तियाह और इलिअब और बिनायाह और आविदअदूम को और यूएल को वीणा
- ६ और वरबत लिये हुए ठहराया परन्तु आसफ करताल बजाता था । और बिना-  
याह और यहजिएल याजक को भी तुरही लिये हुए नित्य ईश्वर के नियम की संजूषा के आगे ठहराया ॥
- ७ तब उसी दिन दाऊद ने आसफ को और उस के माइयों के हाथ में परमेश्वर का धन्य माने को यह गीत सौंपा ॥
- ८ परमेश्वर का धन्य मानो उस का नाम लेओ लोगों में उस की क्रिया प्रगट
- ९ करो । उस के लिये गाओ उस के लिये बजाओ उस के सारे आश्चर्य कार्य की
- १० चर्चा करो । उस के पवित्र नाम की महिमा करो जिसमें परमेश्वर के खोजियों
- ११ के मन आनन्दित होवें । परमेश्वर को और उस के बल को ठूँढो उस का रूप
- १२ सदा ठूँढो । उस के आश्चर्य कार्यों उस के अचंभों और उस के मुँह के विचारों
- १३ को स्मरण करो । हे उस के सेवक इसराएल के वंशो हे उस के चुने हुओ यअ-  
१४ कूब के सन्तानो । वही परमेश्वर हमारा ईश्वर उस के विचार सारी पृथिवी में
- १५ हैं । उस के नियम को जो बचन उस ने सहस्र पीढ़ियों के लिये आजा किई है
- १६ नित मनन करो । जो उस ने अबिरहाम के साथ किया और इजहाक से जो उस
- १७ ने किरिया खाई । और उसे यअकूब को व्यवस्था के लिये इसराएल को सनातन
- १८ के नियम के लिये स्थिर किया । कि मैं कनआन का देश तुम्हें देजंगा जो तुम्हारे
- १९ अधिकार का भाग है । जब तुम लोग गिने हुए जन थे अर्थात् थोड़े थे और उस
- २० में परदेशी । और वे एक जाति से दूसरी जाति को गये और एक राज्य से दूसरे
- २१ लोग को । तब उस ने किसी को उन्हें सताने न दिया हां उस ने उन के कारण
- २२ राजाओं को डपटा । और कहा कि मेरे अभिषिक्तों को मत क्रूओ और मेरे भवि-  
ष्यदुक्तों को दुःख मत देओ ॥
- २३ हे सारी पृथिवी परमेश्वर के लिये गाओ प्रतिदिन उस की मुक्ति को प्रगट
- २४ करो । उस की महिमा अन्यदेशियों में उस के आश्चर्य कर्म सारे जातिगणों
- २५ में वर्णन करो । क्योंकि परमेश्वर महान और अति स्तुति के योग्य है और वही
- २६ सब देवों से अधिक डरने के योग्य है । क्योंकि जातिगणों के सारे देव तुच्छ हैं
- २७ परन्तु परमेश्वर ने स्वर्गों को सिरजा । उस का बिभव और प्रतिष्ठा उस के आगे
- २८ है पराक्रम और आनन्दता उस के स्थान में हैं । परमेश्वर को मानो हे जातिगणों
- २९ के कुटुम्बो बिभव और पराक्रम परमेश्वर के लिये मानो । परमेश्वर के नाम की
- महिमा उसे देओ भेंट लेके उस के आगे आओ पवित्रता की सुन्दरता में परमे-  
३० श्वर की सेवा करो । हे सारी पृथिवी उस के आगे डरो जगत भी स्थिर होगा
- ३१ जिसमें टल न जावे । स्वर्गागण आनन्दित होवें और पृथिवी आनन्द करे और
- ३२ जातिगणों में कहें कि परमेश्वर राज्य करता है । समुद्र और उस की भरपूरी

उठराओ कि वे राजा अर्थात् खंजड़ी और बीना और करताल को यज्ञाके  
 आनन्द से अपना शब्द उठाके गावें । सो लावियों में से ये उठगये गये यूगल १०  
 के घेरे हमान को और उस के भाइयों में से यक्रियाह के घेरे आसफ को और  
 उन के भाईयन्द मिगरी के घेरे में से कौमायाह के घेरे सेतान को । और उन १८  
 के साथ उन के भाईयन्द दूसरी पांती के जक्रियाह दिन और यज्रजिएल और  
 सिमिरामात और यहिगल और अज्जी इलिअब और विनायाह और मय्रमियाह और  
 सत्तितियाह और इलिफिलेहू और मिक्नेयाहू और आविदअद्रूम और यईगल द्वार-  
 पालक । सो हमान और आसफ और सेतान गायक पीतल के करताल यज्ञाते १९  
 थे । और अलामूस पर खंजड़ियों के साथ जक्रियाह और यज्रजिएल और सिमि- २०  
 रामात और यहिगल और अज्जी और इलिअब और मय्रमियाह और विनायाह ।  
 और शिमीनिस पर जय करने के लिये बीनों से सत्तितियाह और इलिफिलेहू और २१  
 मिक्नेयाहू और आविदअद्रूम और यईगल और यज्रजियाह को उठराया ।

और गाने के लिये लावियों में से प्रधान कननियाह को उस ने गाने के २२  
 विषय में सिखाया क्योंकि वह निपुण था । और मंजूषा के लिये द्वारपाल वरकि- २३  
 याह और इलकनः ॥

और शवनियाह और यहूशफत और नामानगल और असामार्ह और जिक्रिया २४  
 और विनाया और इलीयजर यात्रक ईश्वर की मंजूषा के आगे तुरही यज्ञाते थे  
 और मंजूषा के लिये आविदअद्रूम और जहिया द्वारपाल थे ॥

सो दाऊद और इसराएल के प्राचीन और महसपति आनन्द से आविदअद्रूम २५  
 के घर से परमेश्वर के नियम की मंजूषा लाने का गये । और गया हुआ कि जब २६  
 ईश्वर ने उन लावियों को सहाय किई जो परमेश्वर के नियम की मंजूषा को  
 उठाते थे तब उन्हीं ने सात बैल और सात मेंढे चढ़ाये । और दाऊद और सारे २७  
 लायी जो मंजूषा को उठाते थे और गायक और गायकों के संग गान का गुरु  
 किनानिया मूती बस्य पढ़िने था और दाऊद पर भी मूती अफूट था । यों सारे २८  
 इसराएल ललकारते हुए नरसिंगा और तुरही और करताल के शब्द से और खंजड़ी  
 और बीणा के बड़े शब्द से इसराएल के परमेश्वर के नियम की मंजूषा को  
 ऊपर लाये ॥

और यों हुआ कि ज्यों परमेश्वर के नियम की मंजूषा दाऊद के नगर में पहुंची २९  
 त्यों माकल की पुत्री मीकल ने दाऊद को गाते और नाचते एक खिड़की से से  
 देखा तो उस ने अपने मन में उसे तुच्छ समझा ॥

सोलहवां पृष्ठ ।

सो वे ईश्वर की मंजूषा ले आये और जो तंत्र दाऊद ने उस के लिये खड़ा १  
 किया था उसे उस के मध्य रख्या और उन्हीं ने परमेश्वर के आगे बलिदान की  
 भेंट और कुशल की भेंट चढ़ाई । और जब दाऊद बलिदान की भेंट और कुशल २  
 की भेंट चढ़ा चुका तब उस ने परमेश्वर के नाम से लोगों को आशीस दिया ।  
 और उस ने हर एक इसराएल को क्या पुरुष क्या स्त्री एक एक रोटी और अच्छा ३  
 दुकड़ा मांस और एक एक दाख की टिकिया दिई ॥

और तेरे आगे से तेरे सारे बैरियों को काट डाला है और पृथिवी के महत जनों के नाम के समान तेरा नाम किया है । और मैं ने अपने इसराएली लोगों के लिये एक स्थान ठहराया और उन्हें बसाया और वे उस स्थान में रहेंगे और फिर न घबरावेंगे और दुष्ट जन उन को न सतावेंगे जैसा कि आरंभ में और उन दिनों में कि मैं ने न्यायियों को अपने इसराएली लोगों पर ठहराया । और अब से मैं ने न्यायियों को अपने इसराएल लोगों पर ठहराया दुष्टता के सन्तान उन्हें फेर न उजाड़ेंगे उससे अधिक तेरे सारे बैरियों को नीचा करूंगा और भी मैं तुझे ११ कहता हूँ कि परमेश्वर तेरा घर बनावेगा । और ऐसा होगा कि जब तेरे दिन पूरे होंगे जिसर्तें तू अपने पितरों में जावे तब तेरे पीछे तेरे वंश को जो तेरे वेठों में होगा उठाऊंगा और उस के राज्य को स्थिर करूंगा । वही मेरे लिये एक घर १२ बनावेगा और मैं उस का सिंहासन सदा लों स्थिर करूंगा । मैं उस का पिता होऊंगा और वह मेरा पुत्र होगा और अपनी दया उससे उठा न लूंगा जैसा तेरे १३ अगिलों में से उठाई । परन्तु मैं उसे अपने घर में और अपने राज्य में सदा स्थिर करूंगा और उस का सिंहासन सदा लों स्थिर होगा ॥

१४ इन सारी बातों के समान और इस सारे दर्शन के समान नातन ने दाऊद से कहा ॥

१५ और दाऊद राजा आया और परमेश्वर के आगे बैठके कहा कि हे परमेश्वर १६ ईश्वर मैं कौन और मेरा घर क्या जो तू ने मुझे यहां लों पहुंचाया । और हे ईश्वर तेरी दृष्टि में यह छोटी बात थी क्योंकि तू ने अपने सेवक के घर के विषय में बहुत दिन के लिये कहा है और हे परमेश्वर ईश्वर तू ने मुझे बड़े पद के मनुष्य १७ के समान समझा है । तेरे दास की प्रतिष्ठा के लिये दाऊद तुझे और क्या कह १८ सक्ता है क्योंकि तू अपने दास को पहिचानता है । हे परमेश्वर अपने सेवक के लिये और अपने ही मन के समान यह सारी महिमा जनाने के लिये तू ने यह सारी २० बढ़ाई प्रगट किई है । हे परमेश्वर तेरे समान कोई नहीं और तुझे छोड़ कोई २१ ईश्वर नहीं जैसा कि हम ने अपने कानों सुना । और तेरे इसराएल लोगों के तुल्य कौन ऐसी जाति है जिन्हें अपने लोग बनाने को ईश्वर मिस्र में कुड़ाने को गया और मिस्र से अपने कुड़ाये हुए लोगों के आगे जातिगणों को खेद खेदके २२ अपने लिये एक महिमा और भयानक नाम बनाया । क्योंकि अपने इसराएल लोग को तू ने सदा के लिये अपना लोग बनाया और हे परमेश्वर तू उन का ईश्वर २३ हुआ है । सो अब हे परमेश्वर जो बात तू ने अपने दास के विषय में और उस के घर के विषय में कही है सो सदा के लिये स्थिर होवे और जैसा तू ने कहा है २४ तैसा कर । सो ही स्थिर होवे जिसर्तें यह कहके तेरे नाम की महिमा सदा होवे सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर अर्थात् इसराएल के लिये ईश्वर और २५ तेरे दास दाऊद का घर तेरे आगे स्थिर होवे । क्योंकि हे मेरे ईश्वर तू ने अपने दास पर प्रकाश किया है कि तू उस के लिये घर बनावेगा इस लिये तेरे सेवक ने २६ तेरे आगे प्रार्थना करने को मन पाया है । और अब हे परमेश्वर तू वही ईश्वर २७ है और अपने सेवक से यह भलाई की बाचा बांधी है । सो अब अपने सेवक के

हलरावे चांगान और सब जो उन में हैं आनन्द करें । तब वन के पेड़ परमेश्वर ३३ के साक्षात् के लिये पुकार पुकारके गावे क्योंकि वह पृथिवी का विचार करने को आता है । परमेश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला और उस की दया नित्य ३४ है । और कहे दे हमारे मुक्तिदायक ईश्वर हमें बचा और हमें एकट्ठा कर और ३५ अन्यदेशियों से हमें जुड़ा जिसमें हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें तेरी स्तुति में बढ़ाई करें । इसराएल के ईश्वर परमेश्वर का धन्यवाद सदा लो होये और ३६ सारे लोगों ने कहा आमीन और परमेश्वर की स्तुति किई ॥

और परमेश्वर के नियम की मंजूपा के आगे उस ने आसफ को और उस के ३७ भाईयन्दों के प्रतिदिन के कार्य के समान मंजूपा के आगे नित्य सेवा करने के लिये वहां रक्खा । और आविदश्रदूस और उन के भाईयन्द अरमठ और द्वार- ३८ पालों के लिये यदूतून का वेठा आविदश्रदूस भी और होमाह को । और परमे- ३९ श्वर के तंबू के आगे सबूक याजक और उस के भाईयन्द याजकों का उस ऊंचे स्थान में जो जियजन में है रक्खा । जिसमें परमेश्वर के लिये मांस विधान ४० बलिदान की भेंट की वेदी पर नित्य बलिदान की भेंट चढ़ाने के लिये और पर- मेश्वर की दृष्टि में के सारे नियम हुए के समान जो उस ने इसराएल को आज्ञा किई थी चढ़ाये । और उन के संग दमान और यदूतून और रहे हुए जो ४१ नाम नाम से कहे गये चुने हुएों को ठहराया जिसमें परमेश्वर का धन्यवाद करें इस कारण कि उस की दया सदा लो है । और शब्द करने के लिये तुरही और ४२ करताल और ईश्वर के वाजा को लिये हुए हमान और यदूतून को ठहराया और फाटक के लिये यदूतून के वेठों को । तब सारे लोग हर एक जन अपने अपने ४३ घर गये और दाऊद अपने घराने को आशीस देने को फिरा ॥

सत्रहवां पृष्ठ ।

अब यों हुआ कि जब दाऊद अपने घर में बैठा था तब दाऊद ने नातन १ भविष्यद्वक्ता से कहा कि देख मैं देवदारों के घर में रहता हूं परन्तु परमेश्वर के नियम की मंजूपा आकली में ॥

तब नातन ने दाऊद से कहा कि जो तेरे मन में है सो कर क्योंकि परमेश्वर २ तेरे साथ है ॥

और उस रात को ऐसा हुआ कि ईश्वर का वचन नातन के पास यह कहते ३ हुए पहुंचा कि । जा और मेरे सेवक दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता है ४ कि मेरे निवास के लिये तू घर मत बना । क्योंकि जिस दिन मैं इसराएल को ५ ऊपर लाया आज लो मैं ने घर में वास नहीं किया है परन्तु तंबू तंबू में और डेरे डेरे में रहा किया । जहां कहीं मैं सारे इसराएल के साथ साथ फिरा किया ६ हूं मैं इसराएल के न्यायियों को जिन्हें मैं ने अपने लोगों को चराने की आज्ञा किई यह कहके कोई वचन बोला कि तुम ने मेरे लिये देवदारों का घर क्यों नहीं बनाया । सो अब तू मेरे दास दाऊद से कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता ७ है कि मेरे इसराएल लोगों के ऊपर राज्य करने को मैं ने तुम्हें भेड़शाला से अर्थात् भेड़ के पीछे से लिया । और जहां जहां तू गया है मैं तेरे साथ साथ रहा हूं ८

## उन्नीसवां पर्व ।

- १ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अम्मून के सन्तान का राजा नाहस  
 २ मर गया और उस का बेटा उस की सन्ती राज्य पर बैठा । और दाऊद ने कहा  
 कि मैं नाहस के बेटे हनून पर अनुग्रह करूंगा क्योंकि उस का पिता मुझ पर  
 अनुग्रह करता था और उस के पिता के विषय में दाऊद ने उसे शान्ति देने के  
 ३ लिये दूतों को भेजा सो दाऊद के सेवक अम्मून के सन्तान के देश में हनून के  
 पास उसे शान्ति देने को आये । परन्तु अम्मून के सन्तान के अध्यक्षों ने हनून को  
 कहा कि तेरी दृष्टि में दाऊद क्या तेरे पिता की प्रतिष्ठा करता है जो उस ने तेरे  
 पास शान्तिदायकों को भेजा है क्या उस के सेवक तेरे पास इस लिये नहीं आये हैं  
 ४ कि देश का भेद लेवें और उसे देखें और उसे उलट देवें । इस लिये हनून ने  
 दाऊद के सेवकों को पकड़ा और उन्हें सुड़ाया और उन के पुट्टे लों उन के बस्त्रों  
 ५ को बीच से काट डाला और उन्हें फेर भेजा । तब किसी ने जाके उन मनुष्यों  
 की दशा दाऊद से कही तब उस ने उन की भेंट को लोग भेजे क्योंकि वे जन  
 अति लज्जित हो रहे थे और राजा ने कहा कि जब लों तुम्हारी दाढ़ी बढ़ न  
 जावे तब लों यरीहो में ठहरो तब फिर आओ ॥
- ६ और जब अम्मून के सन्तान ने देखा कि हम दाऊद के आगे घिनित हुए  
 तब हनून और अम्मून के सन्तान ने एक सहस्र तोड़े चांदी भेजी जिसमें अराम  
 ७ में से और मअकः में से और सूवः में से रथ और घोड़चढ़े को भाड़ा करें । सो  
 उन्होंने ने बत्तीस सहस्र रथ और मअकः के राजा को और उस के लोगों को  
 भाड़ा किया और उन्होंने ने आके मेदिबा के आगे छावनी किई और अम्मून के  
 सन्तान अपने अपने नगरों से एकट्ठे हुए और संग्राम में आये ॥
- ८ और दाऊद ने सुनके यूअव को और वीरों की सारी सेना को भेजा । और  
 अम्मून के सन्तानों ने आके नगर के फाटक के आगे लड़ाई की पांती बांधी  
 १० और राजा जो आये थे सो चौगान में अलग थे । जब यूअव ने संग्राम के रुख  
 अपने बिरुद्ध आगे पीछे देखा तब उस ने इसराएल के तरुणों को चुन लिया और  
 ११ उन से अरामियों के सन्मुख पांती बांधी । और रहे हुए लोगों को अपने भाई  
 अबिशै के हाथ सौंपा और उन्होंने ने अम्मून के सन्तान के सन्मुख पांती बांधी ।  
 १२ और कहा कि यदि अरामी मुझे अति बलवन्त होवें तो तू मेरी सहायता करना  
 परन्तु यदि अम्मून के सन्तान तेरे लिये अति बलवन्त होवें तो मैं तेरी सहाय  
 १३ करूंगा । हियाव करो और आओ हम अपने लोगों के और अपने ईश्वर के नगरों  
 के लिये सूरता करें और जो परमेश्वर की दृष्टि में भला हो सो करें ॥
- १४ सो यूअव और उस के लोग संग्राम के लिये अरामियों के आगे बढ़े और वे  
 १५ उस के आगे से भाग गये । और जब अम्मून के सन्तानों ने अरामियों को भागते  
 देखा तो वे भी उस के भाई अबिशै के आगे से भागे और नगर में घुसे तब  
 यूअव यरुसलम को आया ॥
- १६ और जब अरामियों ने देखा कि हम इसराएल से हार गये तब वे दूतों को  
 भेजके नदी पार के अरामियों को खींच लाये और हदरअजर की सेना का प्रधान

घर पर आशीम दे जितने तरे आगे सदा बना रहे क्योंकि हे परमेश्वर जिस को तू आशीम देता है वह सदा आशीर्वाद होता है ॥

अठारहवां पृष्ठ ।

और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने फिलिस्तिनियों को मारा और १  
उन्हें वश में किया और जात को और उस के नगरों को फिलिस्तिनियों के हाथ  
से ले लिया ॥

और मोअव्व को मारा और मोअव्वी दाऊद के सेवक हुए और भेंट लाये ॥ २

और दाऊद ने सूयः के राजा हदरअजर को जय घट फुरात नदी के लग ३  
अपने देश को स्थिर करने गया था हमात लों मारा । और दाऊद ने उसमें एक ४  
सदस रथ और भात सदन घोड़चढ़ों को और बीस सदन पराइतों को लिया और  
दाऊद ने रथ के सारे घोड़ों की नस काटी परन्तु उन में से सौ रथों के लिये  
रख छोड़ा ॥

और जय दमिश्क के अरामी सूयः के राजा हदरअजर को सहाय को आये ५  
तब दाऊद ने अरामियों में से बाईस सदन को मारा । तब दाऊद ने अरामी ६  
के दमिश्क में शाना बैठाया और अरामी दाऊद के सेवक होके भेंट लाये इस  
रीति से जहां कहीं दाऊद जाता था तहां परमेश्वर उस की रक्षा करता था ।  
और दाऊद ने हदरअजर के सेवकों की सोने की कालें लिये और उन्हें यरसलम ७  
में लाया । इसी रीति से हदरअजर के नगर तिग्रयत से और कुन से दाऊद अति ८  
बहुत पीतल लाया जिसे सुलेमान ने पितली समुद्र और खंभे और पीतल के  
पात्र बनाये ॥

और जय हमात के राजा तुगू ने सुना कि दाऊद ने किस रीति से सूयः के ९  
राजा हदरअजर की सारी सेना को मारा । तो उस ने अपने बेटे हदूराम को १०  
सोने चांदी और पीतल के सारे प्रकार के पात्रों के साथ दाऊद राजा का कुशल  
पूछने को और उसे आशीर्वाद देने को भेजा इस कारण कि उस ने हदरअजर से  
संग्राम करके उसे मारा क्योंकि हदरअजर तुगू से लड़ता था । दाऊद राजा ने ११  
भी सोना चांदी जो उस ने सारे जातिगणों से अर्घ्यात् अदूम से और मोअव्व से  
और अम्मून के सन्तान में और फिलिस्तिनियों में और अमालीक में लाया था परमे-  
श्वर के लिये उन्हें समर्पण किया ॥

और जरूयाह के बेटे अविशै ने नोन की तराई में अठारह सदन अदूमियों १२  
को घात किया । और उस ने अदूम में घाने बैठाये और सारे अदूमी दाऊद के १३  
सेवक हुए और जहां कहीं दाऊद जाता था तहां परमेश्वर उस की रक्षा करता था ॥

सो दाऊद सारे इसराएल पर राज्य करता था और अपने सारे लोगों में १४  
विचार और नीति करता था । और जरूयाह का बेटा यूअव्व सेना पर था और १५  
अय्विलूद का बेटा यदूसफत लेखक था । और अय्वितूय का बेटा सदूक और १६  
अविघतर का बेटा अविमलिक याजक और जोशा लेखक था । और यदूयदः का १७  
बेटा विनायाह करोती और पलीती पर था और दाऊद के बेटे राजा के पास  
प्रधान थे ॥



वे सब मेरे प्रभु के दास नहीं फिर मेरा प्रभु यह बात क्यों चाहता है तू क्यों इस-  
 ४ राएल के पाप का कारण होगा । तथापि राजा का यत्न यूथय पर प्रयत्न हुआ  
 इस लिये यूथय बिदा हुआ और सारे इसराएल में से होके यरुसलम में आया ।  
 ५ और यूथय ने लोगों की गिनती दाऊद की दिई और सारे इसराएल ग्यारह  
 ६ लाख खड्गधारी और यहूदाह चार लाख सत्तर सत्तर खड्गधारी थे । परन्तु उस ने  
 उन में लावी को और यिनयमीन को न गिना क्योंकि राजा का यत्न यूथय को  
 धिनिता था ॥

७ और ईश्वर इस बात से उदास हुआ इस लिये उस ने इसराएल को मारा ।  
 ८ तब दाऊद ने ईश्वर से कहा कि यह कार्य करके मैं ने बड़ा पाप किया है  
 परन्तु अब तेरी विनती करता हूँ कि अपने दास का पाप मिटा डाल क्योंकि मैं  
 ९ ने बड़ी मूर्खता किई है । और परमेश्वर ने दाऊद को दर्शा जद से कहा ।  
 १० कि जा दाऊद को कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं तेरे आगे तीन बात  
 ११ धरता हूँ उन में से एक चुन ले जिसमें तूही मैं तेरे लिये करूँ । सो जद दाऊद  
 पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तू इन में से एक ले ।  
 १२ अर्थात् तीन वरस का अकाल अथवा अपने वैरी के आगे तीन मास नष्ट हो जय  
 लों तेरे वैरी के खड्ग आ पड़ें अथवा तीन दिन परमेश्वर की तलवार अर्थात् मरी  
 देश में पड़े और परमेश्वर का दूत इसराएल के सारे सिवानों में नाश किया करे  
 १३ अब इस लिये बता कि मैं अपने प्रेरक के पास बग कटूँ । तब दाऊद ने जद से  
 कहा कि मैं बड़े सकेत में हूँ मैं परमेश्वर के हाथ में पड़ूँ क्योंकि उस की दया  
 बड़ी है परन्तु मनुष्यों के हाथ में न पड़ूँ ॥

१४ सो परमेश्वर ने इसराएल पर मरी भेजी और इसराएल में से सत्तर सत्तर  
 १५ पुरुष गिर गये । और ईश्वर ने यरुसलम को नष्ट करने के लिये दूत को भेजा  
 और उसे विनाश करते ही परमेश्वर देखके उस बुराई के लिये प्रकृताया और  
 उस नाशक दूत से कहा कि बहुत है हाथ मिकाइ और परमेश्वर का दूत यूथसी  
 १६ अरनान के खलिहान के लग खड़ा हुआ । और दाऊद ने अपनी आंखें उठाके  
 अधर में परमेश्वर के दूत को हाथ में नंगा खड्ग यरुसलम पर बड़ाये हुए देखा  
 १७ तब दाऊद और प्राचीन टाट ओढ़े हुए मुँह के चल गिरे । तब दाऊद ने ईश्वर  
 से कहा कि क्या मैं ने लोगों को नहीं गिनवाया अर्थात् मैं हीं ने तो पाप किया  
 और निश्चय बुराई किई परन्तु इन भेड़ों ने क्या किया है कि मरी इन पर पड़े  
 हे मेरे ईश्वर परमेश्वर मैं तेरी विनती करता हूँ तेरा हाथ मुझ पर और मेरे पिता  
 के घराने पर पड़े परन्तु अपने इन लोगों पर नहीं ॥

१८ तब परमेश्वर के दूत ने जद को आज्ञा किई कि दाऊद से कह कि तू चढ़  
 जा और अरनान यूथसी के खलिहान में परमेश्वर के लिये एक वेदी स्थापन कर ।  
 १९ और जद के कहने पर जो उस ने परमेश्वर के नाम से कहा था दाऊद गया ।  
 २० और अरनान ने फिरके दूत को देखा और उस के चार बेटों ने उस के संग आप  
 २१ आप को क्षिपाया अब अरनान गोहूँ पीठता था । और ज्यों दाऊद अरनान  
 पास आया त्यों अरनान ने ताका और दाऊद को देखके खलिहान से बाहर गया

शोफाक उन के आगे आगे गया । और दाऊद से कहा गया तब उस ने सारे १० इसराएल को एकट्ठा किया और यरदन पार होके उन पर चढ़ आया और उन के सन्मुख पांती बांधी सो जब दाऊद ने अरामियों के विरुद्ध में संग्राम की पांती बांधी तो वे उससे लड़े । परन्तु अरामी इसराएल के आगे से भागे और दाऊद १८ ने अरामियों के रथों में के मात महसुस जन को और चालीस महसुस पगड़तों को मारा और सेनापति शोफाक को घात किया । और जब हदरअजर के सेवकों १९ ने देखा कि हम इसराएल के आगे हार गये तब उन्हे ने दाऊद से मिलाप किया और उस के सेवक हुए फिर अरामियों ने अस्मून के सन्तान की सहायता करनी न चाही ॥

### तीसवां पर्व ।

और जब वरस बीत गया तो यों हुआ कि जब राजा संग्राम को निकलते हैं १ तब यूयव सेना के चीरों को लेके निकला और अस्मून के सन्तान के देश को उजाड़ दिया और आके रव्यः को घेर लिया परन्तु दाऊद यरुसलम में ठहर गया और यूयव ने रव्यः को मारा और उसे नष्ट किया । और दाऊद ने उन के राजा २ के मुकुट को उस के सिर में उतार लिया और उसे तैल में तीन महसुस मात मौ मोहर के लगभग पाया और उस पर मणि भी थे और वह दाऊद के सिर पर धरा गया और वह नगर में से बहुत सी लूट भी लाया । और हम ने उन लोगों ३ को जो उस में थे बाहर लाके उन्हें आरों से और लोहे के हथों से और कुल्हाड़ों से काट डाला इसी रीति से दाऊद ने अस्मून के सन्तान के सारे नगरों में किया और दाऊद के सारे लोग यरुसलम को फिर आये ॥

और उस के पीछे ऐसा हुआ कि जजर में फिलिस्तिनों से संग्राम हुआ उस ४ समय दूधती सिवाकी ने दानव के सन्तान मिर्षे को मारा और वे यज्ञ में किये गये ॥

और फिलिस्तिनों से फिर संग्राम हुआ और यईर के बेटे हलहानन ने जश्न- ५ तैना जुलियत के भाई लहमी को मारा जिस के भाले का छड़ बोलाले के तूर के समान था ॥

और फिर जात में संग्राम हुआ जहां एक नपा हुआ जन था जिस की चौ- ६ द्वास अंगुलियां हाथ पांव में छः छः और वह भी दानव उत्पन्न हुआ । परन्तु जब ७ उस ने इसराएल को तुच्छ समझा तब दाऊद के भाई सिमश के बेटे यूनतन ने उसे घात किया । ये जात में दानव से उत्पन्न हुए और वे दाऊद के और उस के ८ सेवकों के हाथ से नष्ट गये ॥

### चौथवां पर्व ।

और गैतान इसराएल के विरुद्ध उठा और इसराएल को गिनाने के लिये १ दाऊद को उभारा । और दाऊद ने यूयव को और लोगों के आजाकारियों को २ कहा कि जाओ विश्रसवश्र से दान लो इसराएल को गिना और उन की गिनती मुझ पास लाओ जितने में जानूँ । तब यूयव ने उत्तर दिया कि परमेश्वर अपने ३ लोगों को जितने हैं इतने से सौ गुना अधिक बढ़ावे परन्तु वे मेरे प्रभु राजा का

८ देख तुझ से एक बेटा उत्पन्न होगा वह कुशल का जन होगा और मैं उसे उस की चारों ओर के ठेरियों से चैन देऊंगा क्योंकि उस का नाम सुलेमान होगा और  
 १० उस के दिनों में मैं इसराएल को कुशल और चैन देऊंगा । वह मेरे नाम के लिये मन्दिर बनावेगा और वह मेरा बेटा और मैं उस का पिता हूंगा और मैं इसराएल  
 ११ पर उस के राज्य का सिंहासन सदा स्थिर करूंगा । अब हे मेरे बेटे परमेश्वर तेरे साथ होवे और तू भाग्यवान हो और अपने ईश्वर परमेश्वर का मन्दिर बना जैसा  
 १२ उस ने तेरे विषय में कहा है । केवल परमेश्वर तुझे बुद्धि और समझ देवे और इसराएल के विषय में आज्ञा करे जिससे तू अपने ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था  
 १३ पालन करे । यदि तू चौकस होके परमेश्वर की विधि और विचार को जो उस ने इसराएल के विषय में मूसा को आज्ञा किई पालन करे तब तू भाग्यवान होगा  
 बलवान हो और साहस कर मत डर और विस्मित मत हो ॥

१४ और देख मैं ने अपने दुःख में परमेश्वर के मन्दिर के लिये एक लाख तोड़ा सोना और दस लाख तोड़ा चांदी और पीतल और लोहा बेतौल बहुताई से  
 सिद्ध किया है और मैं ने लट्टे और पत्थर भी सिद्ध किये हैं और तू उन में और  
 १५ भी मिला सके । और इससे अधिक तेरे पास कार्यकारी अर्थात् पत्थरतोड़ और पत्थर और लट्टे के कार्यकारी और हर प्रकार के कार्य के लिये और सारे प्रकार  
 १६ के गुणी लोग बहुताई से हैं । सोना चांदी और पीतल और लोहा अनगिनत हैं उठ और कार्य कर और परमेश्वर तेरे साथ होवे ॥

१७ और दाऊद ने इसराएल के सारे अध्यक्षों को भी अपने बेटे सुलेमान की सहायता करने को आज्ञा किई । क्या तुम्हारा परमेश्वर ईश्वर तुम्हारे संग नहीं और उस ने चारों ओर से तुम्हें चैन नहीं दिया है क्योंकि उस ने देश के निवासियों को मेरे हाथ में दिया है और परमेश्वर के आगे और उस के लोगों के आगे देश  
 १८ बश में हुआ है । अब अपने अन्तःकरण और मन को अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज में लगाओ इस लिये उठो और ईश्वर परमेश्वर का पवित्र स्थान बनाओ जिससे परमेश्वर की बाचा की मंजूपा को और ईश्वर के पवित्र पात्रों को उस मन्दिर में जो परमेश्वर के नाम के लिये बनेगा लाओ ॥

तेईसवां पर्व ।

१ जब दाऊद बृद्ध और दिनी हुआ तब उस ने अपने बेटे सुलेमान को इसराएल पर राजा किया ॥

२ और उस ने इसराएल के सारे अध्यक्षों को और याजकों को और लावियों को  
 ३ एकट्ठा किया । और लावी तीस बरस और उससे अधिक वय में गिने गये थे और  
 ४ एक एक जन की गिनती अठतीस सहस थी । उन से परमेश्वर के मन्दिर के कार्य  
 ५ को बढ़ाने के लिये चौबीस सहस थे और प्रधान और न्यायी छः सहस । उससे अधिक चार सहस द्वारपालक और उन बाजों से जो मैं ने स्तुति के लिये बनाये थे परमेश्वर की स्तुति के लिये चार सहस ॥

६ और दाऊद ने लावियों के अर्थात् गैरसम किहात मिरारी के बेटों को विभाग विभाग किया ॥

और भूमि लीं मुझके दाऊद को दंडयत किई । तब दाऊद ने अरनान से कहा २२ कि इस खलिदान का स्थान मुझे दे जिसमें मैं उस में परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाऊं तू उस का पूरा दाम लेके मुझे दे जिसमें मरी लोगों में से घस जावे । और अरनान ने दाऊद से कहा कि अपने लिये लीजिये और मेरे प्रभु राजा जो २३ अपनी दृष्टि में भला जानें सो करें देखिये मैं खलिदान की भेंट के लिये वेलों को और ईंधन के लिये पीठने की मासगी और भोजन की भेंट के लिये गोएँ सब देता हूँ । तब दाऊद राजा ने अरनान से कहा कि नहीं परन्तु निश्चय मैं पूरा २४ दाम देके सोल लेऊंगा क्योंकि परमेश्वर के लिये मैं तेरा न लेऊंगा और बिना सोल के खलिदान की भेंट न चढ़ाऊंगा । सो उस स्थान के लिये दाऊद ने छः सौ २५ शैकल सोना तैलके अरनान को दिया । तब दाऊद ने परमेश्वर के लिये वहाँ एक २६ वेदी बनाई और खलिदान की भेंट और कुशल की भेंट चढ़ाई और परमेश्वर का नाम लिखा और उस ने खलिदान के भेंट की वेदी पर आग के द्वारा से स्पर्श से उसे उत्तर दिया । और परमेश्वर ने उस दूत को आज्ञा किई और उस ने अपनी २७ तलवार काठी में डाली ॥

उस समय में जब दाऊद ने देखा कि परमेश्वर ने यूसुफी अरनान के खलिदान २८ में उसे उत्तर दिया तब उस ने वहाँ बलि चढ़ाया । क्योंकि परमेश्वर का तू २९ जो मूसा ने अरण्य में बनाया और खलिदान के भेंट की वेदी उस समय जिवजन के ऊँचे स्थान में थी । परन्तु दाऊद ईश्वर से दूकने को उस के आगे न जा सका ३० क्योंकि परमेश्वर के दूत की तलवार के कारण वह डरता था ॥

बाईसवां पर्व ।

तब दाऊद ने कहा कि यह परमेश्वर ईश्वर का मन्दिर है और यही इसराएल १ के लिये खलिदान के भेंट की वेदी है ॥

और दाऊद ने इसराएल के देश के परदेशियों को एकट्ठा करने की आज्ञा २ किई और उस ने ईश्वर के मन्दिर को बनाने के लिये पत्थर के गड़बैयों को पत्थर गड़ने के लिये ठहराया । और दाऊद ने फाटकों के किचाड़े के जोड़ों के लिये और ३ कीलों के लिये बहुत से लोहे पीतल वेनाल मिट्ट किये । और देवदार काष्ठ भी ४ बहुतसे के क्योंकि सैदानी और मूर के लोग दाऊद पास बहुत देवदार काष्ठ लाये थे । और दाऊद ने कहा कि मेरा बेटा सुलेमान तरुण और कामल है और ५ चाहिये कि परमेश्वर का मन्दिर बन जाये और अति सुंदर होवे जिम की कीर्ति और ऐश्वर्य सारे देशों में फैल जावे मैं अब उस के लिये लैम कसंगा सो दाऊद ने अपनी मृत्यु में आगे बहुत कुछ लैस किया ॥

तब उस ने अपने बेटे सुलेमान को बुलाया और इसराएल के ईश्वर परमेश्वर ६ का मन्दिर बनाने को उसे आज्ञा किई । और दाऊद ने सुलेमान से कहा कि हे ७ मेरे बेटे मैं जो हूँ सो मेरे ईश्वर परमेश्वर के नाम के लिये मन्दिर बनाने को मेरे मन में था । परन्तु यह कहिके परमेश्वर का वचन मेरे पास आया कि तू ने ८ बहुत सा लोह चढ़ाया है और बड़ी बड़ी लड़ाई किई है तू मेरे नाम के लिये मन्दिर मत बनाना क्योंकि मेरी दृष्टि में तू ने पृथिवी पर बहुत लोह चढ़ाया है ।

## चौबीसवां पर्व ।

- १ अब हाखन के बेटों के बिभाग हाखन के बेटे नदव और अबिहू इलिअजर  
 २ और ईतमर । परन्तु नदव और अबिहू अपने पिता से आगे मर गये और उन  
 ३ के सन्तान न थे इस कारण इलिअजर और ईतमर याजक के पद का कार्य करते  
 ४ थे । और दाऊद ने उन्हें अर्थात् इलिअजर के बेटों में से सद्क और ईतमर के  
 ५ बेटों में से अखिमलिक को उन के पद के समान उन की सेवा में वांट दिया ।  
 ६ और ईतमर के बेटों में से और इलिअजर के बेटों में से अधिक श्रेष्ठ जन  
 ७ पाये गये और भाग किये गये और इलिअजर के बेटों में से और पितरों के  
 ८ घरानों में से सोलह श्रेष्ठ जन और ईतमर के बेटों में उन के पितरों के घराने के  
 ९ समान आठ जन पाये गये । और एक दूसरे के साथ चिट्ठी के द्वारा से प्रविष्ट  
 १० स्थान के और ईश्वर के मन्दिर के अध्यक्षों के लिये इलिअजर के बेटों में से और  
 ११ ईतमर के बेटों में से अलग किये गये ॥
- १२ और लावियों में से नतनएल लेखक का बेटा समरेयाह राजा के और अध्यक्षों  
 १३ के और सद्क याजक के और अबिवतर के बेटे अखिमलिक के और याजकों के  
 १४ श्रेष्ठ पितरों के और लावियों के लोगों के आगे लिखा इलिअजर के लिये एक  
 १५ विशेष घराना और एक ईतमर के लिये लिया गया ॥
- १६ अब पहिली चिट्ठी यहूयरीव की और दूसरी बदैअयाह की । तीसरी हारिम  
 १७ की चौथी सगरीन की । पांचवीं मलकियाह की छठवीं मिनयमीन की । सातवीं  
 १८ हकूज की आठवीं अयिबाह की । नवीं युगूअ की दसवीं सकनियाह की । ग्यारहवीं  
 १९ इलयसीव की बारहवीं यकीम की । तेरहवीं हूफः की चौदहवीं बसबिअब  
 २० की । पंद्रहवीं बिलजः की सोलहवीं अमीर की । सत्रहवीं हजीर की अठारहवीं  
 २१ अफसीस की । उन्नीसवीं फतहियाह की बीसवीं हिजकिएल की । एकूीसवीं  
 २२ यकीन की बाईसवीं जमूल की । तेईसवीं दिलायाह की चौबीसवीं मअ-  
 २३ जियाह की ॥
- २४ इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की आज्ञा के समान हाखन के नीचे उन की  
 २५ रीति के समान परमेश्वर के मन्दिर की सेवा में आने की यह विधि थी ॥
- २६ और लावियों के उबरे हुए बेटे अमराम के बेटों में से सुवाएल सुवाएल के  
 २७ बेटों में से वहदियाह । रहबियाह के बिषय में रहबियाह के बेटों में से पहिला  
 २८ इशिया । सलूमियत इजहारी के बिषय में सलूमियत के बेटों में से यहत । और  
 २९ हवखन का पहिला बेटा यरीयाह दूसरा अमरियाह तीसरा यहजिएल चौथा युक्-  
 ३० मिआम । उज्जिएल के बेटे मीकः माकः के बेटे समीर । मीकः का भाई यस्सी-  
 ३१ याह यस्सीयाह के बेटे जकरियाह । मिरारी के बेटे मुहली और मूसी यअजियाह  
 ३२ का बेटा वेनू । यअजियाह से मिरारी के बेटे वेनू और सूहाम और जकूर और  
 ३३ इबरी । मुहली से इलिअजर जिस का कोई बेटा न था । यह कीस के बिषय में  
 ३४ कीस का बेटा यरहमिएल । और मूसी के बेटे भी मुहली और अद्र और यरीमात थे  
 ३५ लावियों के बेटे अपने अपने पितरों के घराने के समान । और उन्होंने ने भी दाऊद  
 ३६ राजा के और सद्क के और अखिमलिक के और याजकों के और लावियों के

गैरमुमियों में से लगदान और गिमई । लगदान के बेटों में से जेठु पहिल १  
और जैतास और यूएल तीन । गिमई के बेटे मलूमियत और जल्लिगल और हारान २  
तीन ये लगदान के पितरों के जेठु । और गिमई के बेटे बहुत जीना और यजस १०  
और बरीअः ये चार गिमई के बेटे । और बहुत जेठु था और जंजः दूसरा परन्तु ११  
यजस और बरीअः के बेटे बहुत न थे इस लिये वे अपने अपने पितरों के घराने  
के समान एक ही गिनती में थे ॥

किहात के बेटे अमराम इमहार हयन्न और उज्जिगल चार । अमराम के बेटे १३  
हादन और मूसा और हादन अलग क्रिया गया था जिसमें अति पवित्र यस्तुन  
को पवित्र करे वह और उस के बेटे परमेश्वर के आगे सदा के लिये धूप जलायें  
और उस की सेवा करें और उस के नाम की सदा स्तुति करें । अथ ईश्वर के १४  
जन मूसा के बेटों के नाम लायी की गोष्टियों में थे । मूसा के बेटे गैरमुम और १५  
इलियजर । गैरमुम के बेटों में से मयूएल जेठु । और इलियजर के बेटे रिहयियाह १६  
इलियजर के और बेटे न थे परन्तु रिहयियाह के बहुत बेटे थे । इमहार के बेटों १८  
में से प्रधान मलूमियत । हयन्न के बेटों में से पहिला बरीयाह दूसरा अमरियाह १९  
तीसरा यज्जिगल और चौथा युसुमिआस । उज्जिगल के बेटों में से पहिला मोरः २०  
और दूसरा यम्सीयाह ॥

मिरारी के बेटे मुहली और सूसी मुहली के बेटे इलियजर और कीम । २१  
और इलियजर मर गया और उस के बेटे न थे परन्तु बेटियां और उन के भाई २२  
कीम के बेटों ने उन्तें लिया । सूसी के बेटे मुहली और अद्द और बरी- २३  
मात तीन ॥

ये लायी के बेटे अपने अपने पितरों के घराने के समान अर्थात् पितरों में जेठु २४  
जीना वे नाम नाम गिने गये थे और बीन बरस और ऊपर के बरस में परमेश्वर के  
मन्दिर की सेवा करते थे । क्योंकि दाऊद ने कहा कि इमरानल के ईश्वर परमे- २५  
श्वर ने अपने लोगों को चैन दिया है जिसमें वह मर्यादा यद्वसलस में जान करेगा ।  
और लावियों को आगे का तेंदू और उस की सेवा के किसी पात्र को उठाना न २६  
पड़ेगा । क्योंकि दाऊद के अन्त के वचन से लायी ग्राम बरस और ऊपर में गिने २७  
गये थे । क्योंकि ये परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये आंगारे और कांटारियां २८  
में और सारी पवित्र यस्तु पवित्र करने में और ईश्वर के मन्दिर की सेवा के कार्य  
में हादन के बेटों के पास बने रहें । और भेंट की रोटी के लिये और चाय २९  
पिसान और भोजन की भेंट के लिये और अग्न्याग्नी फूलकों के लिये और तावा  
में की रोटी के लिये और पूरी के लिये और सारे रीति के ताल और नाप के  
लिये । और हर सांभ विधान को खड़ा होके परमेश्वर की स्तुति और धन्य माने ३०  
के लिये । और चित्राओं में और अमावास्या में और ठहराये हुए पर्वों में गिनती ३१  
से आज्ञा के समान परमेश्वर के आगे परमेश्वर के लिये नित्य सारे बलिदान की  
भेंट चढ़ाने के लिये । और जिसमें वे मंडली के तेंदू की रक्षा करें और और पवित्र इर  
स्थान की और अपने भाई हादन के बेटों का परमेश्वर के मन्दिर की सेवा  
में रक्षा करें ॥



३० और भाई दारह । तेईसवीं महजियात के लिये उस के बेटे और भाई दारह ।

३१ चौबीसवीं रुम्मतीअजर के लिये उस के बेटे और भाई दारह ।

कुन्वीसिया पृथ्वी ।

१ द्वारपालकों के विभाग के विषय में कारियों से आसफ के बेटों में का कारी  
२ का बेटा मुसलिमियाह । और मुसलिमियाह के बेटे पहिलौठा जकरियाह दूसरा  
३ बदीअरल तीसरा अबदियाह चौथा यतनिएल । पांचवां गेलास छठवां यहूजबद  
४ सातवां इलियाहूरेनी । उन से अधिक आविदअदूम के बेटे समरेयाह पहिलौठा  
५ दूसरा यहूजबद तीसरा यूअख चौथा शक्र पांचवां नतनिएल । छठवां अमिएल  
६ सातवां इशकार आठवां फअलती क्योंकि ईश्वर ने उसे दार दिया । और सम-  
रेयाह के बेटे उत्पन्न हुए जो अपने पिता के घराने पर प्रभुता करते थे क्योंकि वे  
७ सामर्थी थीर थे । समरेयाह के बेटे उत्तनी और रफएन और आविद और इल-  
८ जयद जिस के भाई इलिट्ट और समकियाह बनयन्त थे । ये सब आविदअदूम के  
बेटों में से थे और उन के बेटे और उन के भाई मंत्रा के लिये बल में सामर्थी  
९ आविदअदूम के बामठ । और मुसलिमियाह के बेटे और भाई अठारह जन बल-  
१० वन्त थे । और मिरारी के रुन्तानों में से दूमः के भी बेटे थे मिसरी श्रेष्ठ क्योंकि  
११ वह पहिलौठा न था तथापि उस के पिता ने उसे श्रेष्ठ किया । दूसरा खिलकियाह  
तीसरा तबलियाह चौथा जकरियाह दूमः के सारे बेटे और भाई तेरह ।

१२ इन्हीं में से द्वारपाल विभाग किये गये अर्थात् श्रेष्ठ जनों में से परमेश्वर के  
१३ मन्दिर की सेवा के लिये आये साम्ने पढ़े थे । और दया होते दया बड़े अपने  
अपने पितरों के घराने के समान हर एक फाटक के लिये इन्हीं ने चिट्ठी डाली ।  
१४ और पूरब ओर की चिट्ठी शलमियाह के लिये पड़ी तब उस के बेटे जकरियाह  
जो बुद्धिमान मंत्री था इन्हीं ने चिट्ठी डाली और उत्तर की ओर उस की चिट्ठी  
१५ निकली । और दक्षिण की ओर आविदअदूम के और उस के बेटों के घराने  
१६ एकट्ठे किये गये के लिये । सुफ्रीम के और दूमः के पश्चिम की सलकत के फाटक  
१७ सहित जो ऊपर जाने के मार्ग के पहरेदारों के सन्मुख पहरे । पूरब की ओर दूः  
लावी थे उत्तर की ओर प्रतिदिन चार दक्षिण की ओर प्रतिदिन चार सुफ्रीम की  
१८ ओर दो दो । पश्चिम की ओर पार दार के पथ में चार और पार दार में दो ।  
१९ कोर के और मिरारी के बेटों में द्वारपालकों के ये विभाग हैं ।

२० और लावियों में से अशियाह ईश्वर के मन्दिर के भंडार और पवित्र भंडारों  
२१ पर । लगदान के बेटों के विषय में जेरूसनी लगदानियों के बेटों में से श्रेष्ठ पितरों  
२२ का अर्थात् जेरूसनी लगदान का यहिएल । यहिएल के बेटे जैतास और उस का भाई  
२३ यूएल ये परमेश्वर के मन्दिर के भंडार पर थे । अमरामी के इजहारी के हयहानियों  
२४ के उज्जिएलियों के । और मूसा के बेटे और जेरूसम का बेटा सखूरल भंडार पर  
२५ था । और इलियजर से उस के भाई उस का बेटा रहवियाह और उस का बेटा  
यसशियाह और उस का बेटा यूराम और उस का बेटा जिकरी और उस का बेटा  
२६ सलूमियत । वही सलूमियत और उस के भाई सारे पवित्र भंडारों पर थे जो दाऊद  
राजा ने और श्रेष्ठ पितरों ने और सहस्रपति और शतपति और सेनापति ने समर्पण

श्रेष्ठ पितरों के आगे अर्थात् विजेष पितर जो अपने सारे भाइयों पर थे अपने भाई दारुन के बेटों के सम्मुख चिट्ठी डाली ॥

पचीसवां पृष्ठ ।

उसने अधिक दाऊद और सेना के प्रधान आमफ के बेटे और हीमान के और १  
यदूतून के बेटों की सेवा के लिये उन्हीं को अलग किया तो योगा और नवल और  
करताल से भविष्य कहते थे और बह कार्यों की गिनती उन की सेना के समान २  
थी । आमफ के बेटों में से जकूर और यूसुफ और नतनियाह और यसरएल आमफ ३  
के बेटे आसफ के दाय के वंश में जो राजा की आज्ञा के समान भविष्य कहते  
थे । यदूतून से यदूतून के बेटे से जिदलयाह और सूरों और यसरियाह हमरियाह और ४  
मत्तितियाह छः जन अपने पिता यदूतून के दाय के वंश में जो परमेश्वर की स्तुति  
और धन्यवाद करने का योगा से भविष्य कहते थे । हीमान से हीमान के बेटे ५  
दूकियाह सतनियाह उज्जिएल मयूगन और यरीमात हमनियाह हमानी इनियातः  
जिदलती और हमनीअजर दुसविकमः मत्तुनी होमीर सहजियात । ये मय ६  
हीमान के बेटे ईश्वर के वंश राजा के दर्जा नरामंगा उठाने के लिये और ईश्वर  
ने हीमान को चौदह बेटे और तीन बेटियाँ दीं । राजा की आज्ञा के समान ७  
जो आमफ को और यदूतून को और हीमान को दीं गई थी ये मय परमेश्वर  
के मन्दिर में भजन के लिये करताल नवल और योगा से अपने पिता के वंश में  
परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये सौंपे गये । सो उन की गिनती उन के ८  
भाइयों के संग जो परमेश्वर के भजन में मिश्राय गये थे अर्थात् सब जो निपुण  
थे सो दो सौ अट्ठासी थे ॥

और क्या छोटें क्या बड़े क्या गुन क्या निपुण पदरे के मन्मुख उन्हीं ने चिट्ठी ९  
डाली । और पहिली चिट्ठी यूसुफ की आमफ के लिये निकली दूसरी जिदलयाह १०  
के लिये जो अपने भाई और बेटे मसेन दारुह थे । तीसरी जकूर के लिये उस के ११  
बेटे और भाई दारुह । चौथी हमरी के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । १२  
पांचवीं नतनियाह के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । छठवीं दूकियाह के १३  
लिये उस के बेटे और भाई दारुह । सातवीं यसरियाह के लिये उस के बेटे और १४  
भाई दारुह । आठवीं यसरियाह के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । नव्वीं सत- १५  
नियाह के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । दसवीं शिमर्य के लिये उस के बेटे १६  
और भाई दारुह । ग्यारहवीं अजरिएल के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । १७  
बारहवीं हमरियाह के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । तेरहवीं सुआएल १८  
के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । चौदहवीं मत्तितियाह के लिये उस के १९  
बेटे और भाई दारुह । पंद्रहवीं यरीमात के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । २०  
सोलहवीं हमनियाह के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । सत्रहवीं दुसविकमः २१  
के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । अठारहवीं हमानी के लिये उस के बेटे २२  
और भाई दारुह । उन्नीसवीं मत्तुनी के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । २३  
दोसवीं गलियातः के लिये उस के बेटे और भाई दारुह । दूक्यासवीं होमीर के २४  
लिये उस के बेटे और भाई दारुह । बारहसवीं जिदलती के लिये उस के बेटे २५

१६ और भी इसराएल की गोष्टियों पर स्थितियों का आजाकारी जिकरी का  
 १७ वेटा इलिअजर समझनियों के मशकः का वेटा सफतियाह । लावियों में का  
 १८ कमूएल का वेटा हसविषाह हासन में का सदूक । यहूदाह में का दाऊद के  
 १९ भाइयों में का इलिहू इशकार में का मोकाएल का वेटा उमरी । जयुलून में का  
 अबदियाह का वेटा इसमाशियाह नफताली में का अजरिएल का वेटा यरीमात ।  
 २० इफरायम के सन्तानों में का अजजियाह का वेटा हूसीअ मुनस्सी की आधी गोष्टी  
 २१ में का फिदायाह का वेटा यूएल । जिलिअद में आधे मुनस्सी में का अजरियाह  
 २२ का वेटा इहडूविनयमीन में का अविनैर का वेटा यअसिएल । दान में का इह-  
 हस का वेटा अजरिएल ये इसराएल की गोष्टियों के अध्यक्ष ॥

२३ परन्तु बीस बरस से और घटती की वय के दाऊद ने गिनती न लिई इस  
 कारण कि परमेश्वर ने कहा था कि मैं स्वर्ग के तारों के समान इसराएल को  
 २४ बढ़ाऊंगा । जरूयाह के बेटे यूअव ने गिना आरंभ किया परन्तु इस कारण उस ने  
 समाप्त न किया कि उस के लिये इसराएल के विरोध में कोप पड़ा और  
 न वह गिनती दाऊद राजा के समयों के समाचार में लिखी गई ॥

२५ और राजा के भंडारों पर अदिएल का वेटा अजिसैत और नगर में और गांवों  
 २६ में और गढ़ में के भंडारों के खेतों पर उज्जियाह का वेटा यहूनतन था । और  
 भूमि के जोतने वाने के लिये जो खेतों में कार्य करते थे उन पर कलूव का  
 २७ वेटा अजरी । और दाख वारियों पर रामाती समई और दाख की वारियों की  
 २८ बढ़ती पर और दाखरस की शाला पर शिफमी जव्दी । और जलपाई के पेड़ों  
 पर और गूलर पेड़ों पर जो नीचे की भूमि में थे जदरी वअलहनाम और तेल की  
 २९ शाला पर यूआस । और ठोर जो सहन में चरते थे सहनी शिटरी और तराई में  
 ३० के ठोरों पर अदली का वेटा सफत । और ऊंटों पर इसमअएली उखील और  
 ३१ गदहों पर मेरुनाती वहदिएल । और भुंडों पर हजरियजीज ये सारे दाऊद राजा  
 की संपत्ति के आजाकारी थे ॥

३२ और दाऊद का चचा यहूनतन एक मंत्री और बुद्धिमान और लेखक था और  
 ३३ हकमनी का वेटा यहिएल राजपुत्रों के संग रहता था । और अखितुफल राजमंत्री  
 ३४ था और अरकी हूसी राजा का संगी था । और अखितुफल के पीछे विनायाह का  
 वेटा यहूयदः और अबिवतर था और राजा की सेना का सेनापति यूअव था ॥

अट्टाईसवां पर्व ।

१ और दाऊद ने इसराएल के सारे अध्यक्षों को अर्थात् गोष्टियों के अध्यक्षों को  
 और जथाश्रों के श्रेष्ठों को जो राजा की सेवा पारी पारी करते थे और सहस-  
 पतियों को और शतपतियों को और राजा के और उस के बेटों के ठोर और सारी  
 संपत्ति के भंडारियों को और श्रेष्ठों और बलघन्तों और सारे वीर समेत घरसलम  
 में एकट्ठे किया ॥

२ तब दाऊद राजा अपने पांवों पर उठ खड़ा हुआ और बोला कि हे मेरे  
 भाइयो और हे मेरे लोगो मेरी सुनो मेरे मन में था कि परमेश्वर के नियम की  
 मंजूपा के लिये और हमारे ईश्वर के चरणों की पीढ़ी के लिये विश्राम का मन्दिर

किया था । संग्रामों की लूट में से परमेश्वर के मन्दिर के कारण उन्हीं ने समर्पण २७  
किया था । और सब जो समृद्ध दर्जी ने और कीम के बेटे साङ्गल ने और नैयिर २८  
के बेटे अविनैयिर ने और जख्याह के बेटे यूअय ने समर्पण किया और जिम किमी  
ने समर्पण किया था सो मलूमियत की और उस के भाई के हाथों में था ।

हमहारियों में से कननियाह और उस के बेटे जो हमराएल के ऊपर बाहर बाहर २९  
के कार्य के प्रधान और न्यायियों के निये । हवरनियों में हमविषाह और उस के ३०  
भाई एक सहस्र मात सो और परमेश्वर के सारे कार्य और राजा की सारी सेना के  
लिये वे यरेदन के इस पार पश्चिम की और हमराएलियों में से प्रधान थे । हवरनियों ३१  
में से यरीयाह श्रेष्ठ अर्थात् हवरनी अपने पितरों की पीढ़ियों के समान दाऊद राजा  
के चालीसवें वरस में वे ठुंठे गये थे और जिलिअह के यशजीर में उस के महावीर  
लगा पाये गये । और उस के भाईवन्द दो सहस्र मात सो श्रेष्ठ पितर और थे ३२  
जिनके दाऊद राजा ने ईश्वर के विषय के हर एक कार्य और राजा के कार्य पर  
रखिनियों के और जड़ियों के और सुनस्सी की आधी गोष्टी पर ठहराया ।

सत्ताईसवां पृष्ठ ।

अब हमराएल के सन्तान अपनी गिनती के समान अर्थात् जो पितरों के १  
श्रेष्ठ और सहस्रों के और नैकहों के श्रेष्ठ जो अपनी अपनी पारी की रीति पर  
राजा की सेवा करते थे जो वरस के सारे सामों में माम माम आया जाया करते  
थे हर एक पारी के लिये चौबीस सहस्र थे ।

पहिली पारी पर पहिले मास के लिये जवदिगल का बेटा युमुविशाम और २  
उस की पारी में चौबीस सहस्र थे । फाहम सन्तानों में से पहिले मास के लिये ३  
सेना के सारे पतियों का श्रेष्ठ था । और हमरे मास की पारी पर एक अरूरी ४  
ढोलाई था उस की पारी में मिकलात भी श्रेष्ठ उस की पारी में चौबीस सहस्र ।  
तीसरे मास के तीसरा सेनापति श्रेष्ठ याजक यहुयदः का बेटा विनायाह और उस ५  
की पारी में चौबीस सहस्र । यही विनायाह तीसों में बनवन्त और तीसों से श्रेष्ठ ६  
और उस की पारी में उस का बेटा अस्मिजयद । चौथे मास के लिये चौथा यूअय ७  
का भाई अमहेल और उस के पीछे उस का बेटा जवदियाह और उस की पारी ८  
में चौबीस सहस्र । पांचवें मास के लिये पांचवां सेनापति दशराकी शमस और ९  
उस की पारी में चौबीस सहस्र । छठवें मास के लिये छठवां तकूई अफीस का १०  
बेटा ईरा और उस की पारी में चौबीस सहस्र । सातवें मास के लिये सातवां ११  
इफरायम के सन्तान में से फलूनी खालिस और उस की पारी में चौबीस सहस्र ।  
आठवें मास के लिये आठवां जारिका में का तूशाती सियाकी और उस की पारी १२  
में चौबीस सहस्र । नवें मास के लिये नवां विनयसानियों में से अनताती अविअजर १३  
और उस की पारी में चौबीस सहस्र । दसवें मास के लिये दसवां जारही में का १४  
नतूफाती महरी और उस की पारी में चौबीस सहस्र । ग्यारहवें मास के लिये १५  
ग्यारहवां इफरायम के सन्तान में का फरशतूनी विनायाह और उस की पारी में  
चौबीस सहस्र । बारहवें मास के लिये बारहवां गुतानेहल में का नतूफाती खुलदी १६  
और उस की पारी में चौबीस सहस्र ॥

कटोरे कटोरियों के लिये निर्मल सोना और सोनहुले वासनों के लिये हर एक वासन के लिये तैल के साथ और हर एक रुपहुले वासन के लिये तैल दिया ।  
 १८ और धूप की वेदी के लिये चोखा सोना तैल दिया और परमेश्वर के निषम की मंजूपा को ठांपने के लिये पंख फैलाये हुए करोवियों के रथ के डौल के लिये  
 १९ सोना दिया । यह सब कार्य के डौल के समान परमेश्वर ने लिखके मुझे अपने हाथ के द्वारा से समझा दिया ।

२० तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा कि बलवन्त और सुहिषाय होके कार्य कर मत डर और विस्मित मत हो क्योंकि परमेश्वर ईश्वर मेरा ईश्वर तेरे साथ है वह तुझ से न घटेगा और न तुझे त्याग करेगा जब लों तू परमेश्वर के  
 २१ मन्दिर की सेवा के लिये सारे कार्य पूरे न करे । और ईश्वर के मन्दिर की सारी सेवा के लिये याज्ञकों की और लावियों की पारियों को देख और तेरे संग सारे कार्यकारियों के लिये हर एक भांति की सेवा के लिये हर एक वांछित गुणी पुरुष और अध्यक्ष और सारे लोग भी तेरी आज्ञा में होंगे ॥

उन्तीसवां पञ्च ।

१ और दाऊद राजा ने सारी मंडली से कहा कि मेरा बेटा सुलेमान जिसे केवल ईश्वर ने चुना है युवा और कोमल है और कार्य बड़ा क्योंकि वह भवन मनुष्य  
 २ के लिये नहीं परन्तु परमेश्वर ईश्वर के लिये है । अब मैं ने अपनी सारी सामर्थ्य भर अपने ईश्वर के मन्दिर के कारण सिद्ध किया है सोने के लिये सोना और चांदी के लिये चांदी और पीतल के लिये पीतल लोहे के लिये लोहा और लकड़ी के लिये लकड़ी और जड़ने के लिये वैदूर्य मणि तेजस्वी पत्थर और नाना रंग  
 ३ के और सारे प्रकार के बहुमूल्य मणि और मर्मर के पत्थर बहुताई से । और भी इस कारण कि मैं ने अपने ईश्वर के मन्दिर पर अपना मन लगाया है मैं ने अपनी निज संपत्ति में से उस पवित्र मन्दिर के लिये सोना और चांदी उन सभी से अधिक  
 ४ जो मैं ने पवित्र मन्दिर के लिये सोना और रूपा दिया है । अर्थात् मन्दिर की भीत पर मढ़ने के लिये तीन सहस्र तोड़े सोने अर्थात् ओफीर के सोने और निर्मल  
 ५ चांदी का सात सहस्र तोड़ा । सुनहुले के लिये और रूपा रुपहुले के लिये और सारे प्रकार के कार्य के लिये कार्यकारियों के हाथों से और परमेश्वर को अपनी सेवा देने को आज कौन इच्छा रखता है ॥

६ तब पितरों के प्रधानों ने और इसराएली गोष्ठियों के अध्यक्षों ने और सहस्र और शतपतियों ने और राजा के कार्य के आज्ञाकारियों ने मनमंता चढ़ाया ।  
 ७ और ईश्वर के मन्दिर के कार्य के लिये पांच सहस्र तोड़े और दस सहस्र द्राकम सोना और दस सहस्र तोड़ा चांदी और अठारह सहस्र तोड़ा पीतल और एक लाख  
 ८ तोड़ा लोहा दिया । और जिन में मणि पाये गये उन्हें ने गैरखूनी यहिएल के हाथों से परमेश्वर के मन्दिर के भंडार में दिये । तब लोगों ने आनन्द किया क्योंकि उन्हें ने मनमंता चढ़ाया इस कारण कि सिद्ध मन से उन्हें ने परमेश्वर के लिये मनमंता चढ़ाया और दाऊद राजा भी बड़े आनन्द से आनन्दित हुआ ॥

१० इस कारण दाऊद ने सारी मंडली के आगे परमेश्वर का धन्य माना और

यनांक और मैं ने यनाने के लिये मिट्ट कर रखवा था । परन्तु ईश्वर ने मुझे कहा ३  
 कि तू मेरे नाम के लिये मन्दिर बनाना क्योंकि तू मंग्रासी जान है और बहुत ४  
 लोहू बहाया है । तथापि हमरागल के ईश्वर परमेश्वर ने मुझे अपने पिता के ४  
 सारे घराने से आगे हमरागल पर मदा राज्य करने का चुन लिया क्योंकि उस ने ४  
 आजाकारी के लिये गृहदाह का चुना है और गृहदाह के घराने में मैं मेरे पिता ४  
 के घराने का चुन लिया और मेरे पिता के बेटों में मैं सारे हमरागल पर राज्य ४  
 करने के लिये मुझे प्रसन्न किया । और मेरे सारे बेटों में मैं क्योंकि परमेश्वर ने ५  
 मुझे बहुत बेटे दिये हैं उस ने मेरे बेटे सुलेमान का चुन लिया है कि हमरागल ५  
 पर परमेश्वर के राज्य के सिंहासन पर बैठे । और उस ने मुझे कहा कि तूंगा बेटा ६  
 सुलेमान बड़ी मेरा मन्दिर और मेरे आंगन बनावेगा क्योंकि मैं ने उसे चुन लिया ६  
 कि वह मेरा बेटा हो और मैं उस का पिता हुंगा । और भी यदि वह आज की ७  
 नाईं मेरी आज्ञा और विचार पालने में दृढ़ होगा तो मैं उस के राज्य का मदा ७  
 लां स्थिर करूंगा । अब इस लिये परमेश्वर की मंजूरि सारे हमरागल की दृष्टि में ८  
 और हमारे ईश्वर के मुने में अपने ईश्वर परमेश्वर की सारी आज्ञा का हुंका ८  
 और पालन करे जोतों तुम इस अच्छे देश के अधिकारी होओ और अपने पीछे ८  
 अपने सन्तान के लिये मदा के कारण अधिकार छोड़ जाओ ८

और तू हे मेरे बेटे सुलेमान तू अपने पिता के ईश्वर का ज्ञान और मिट्ट ९  
 अन्तःकरण से और मन की चाँछा से उग की सेवा कर क्योंकि परमेश्वर सारे ९  
 अन्तःकरणां का और चिंताओं की सारी भावनाओं का विचारता है जो तू उसे ९  
 हुंकेगा तो वह तुझे पाया जावेगा परन्तु जो तू उसे धिमरावेगा तो वह तुझे मदा ९  
 के लिये त्याग करेगा । अब जाक्रम हो क्योंकि परमेश्वर ने पवित्र स्थान के लिये १०  
 मन्दिर बनाने के निमित्त तुझे चुना है बनवाने का और उसे बना ॥

तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को उस आसारे का और उस के घरों का ११  
 और उस के भंडारों का और उन के ऊपर की कोठरियों का और उन के भीतर ११  
 की कोठरियों का और दया के आसन के स्थान का डैल दिया । और उन सभों १२  
 का जो वह आत्मा के द्वारा से रखता था परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों का १२  
 और सारी कोठरियों और ईश्वर के मन्दिर के भंडारों का और समर्पण किछे हुई १२  
 वस्तुन के भंडारों का डैल दिया । और पाजकों की और लाघियों की पागियों के १३  
 लिये और परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के सारे कार्य के लिये और परमेश्वर के १३  
 मन्दिर में सेवा करने के सारे पात्रों के लिये । भांति भांति की सारी सेवा के १४  
 सारे सोने के पात्रों के लिये सोना तैल दिया और चांदी के सारे पात्रों के लिये १४  
 हर प्रकार की सेवा के सारे पात्रों के लिये तैल के साथ । और सोनहुली दीश्टों १५  
 के लिये और उन के सोनहुले दीपकों के लिये और हर एक दीश्ट के लिये और १५  
 उस के दीपकों के लिये तैल के साथ और चांदी की दीश्टों के लिये तैल के १५  
 साथ दीश्ट के लिये और उन के दीपकों के लिये हर एक दीश्ट के कार्य के १५  
 समान । मंड की रोटी के मंचों के लिये अर्थात् हर एक मंच के लिये सोना तैल १६  
 दिया और चांदी के मंचों के लिये चांदी । और मांस के त्रिशूल के लिये और १७



इसराएल पर चालीस बरस राज्य किया सात बरस उस ने हब्रून में और यरूशलम २८ में तैंतीस बरस राज्य किया । तब वह प्रतिष्ठा में और धन में और दिनों में परिपूर्ण अच्छा पुरनिया होके मरा और उस के बेटे सुलेमान ने उस की सन्ती राज्य २९ । ३० किया । अब दाऊद राजा की अगिली और पिछली क्रिया उस के सारे राज्य सहित और उस का पराक्रम और जो जो समय उस पर और इसराएल पर और देशों के सारे राज्यों पर बीता था सो क्या समूएल दर्शी की पुस्तक में और नातन भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में और दर्शी जद की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥

## काल के समाचार की दूसरी पुस्तक ।

पहिला पृष्ठ ।

- १ अब दाऊद का बेटा सुलेमान अपने राज्य में दृढ़ हुआ और परमेश्वर उस का
- २ ईश्वर उस के साथ था और उसे अत्यंत महान किया । तब सुलेमान ने सारे इसराएल और सहस्रपतिन और शतपतिन और न्यायियों और सारे इसराएल के हर
- ३ एक अध्यक्ष और पितरों के प्रधानों से वार्ता किई । तब सुलेमान और उस के साथ इसराएल की सारी मंडली जिवजन के ऊंचे स्थान में गई क्योंकि मंडली
- ४ का तंबू जिसे परमेश्वर के सेवक मूसा ने धन में बनाया सो वहीं था । परन्तु दाऊद ईश्वर की मंजूपा को करयतअरीस से उस स्थान में उठा लाया था जो उस ने उस के लिये सिद्ध किया था क्योंकि उस ने उस के लिये यरूशलम में एक
- ५ तंबू खड़ा किया था । और भी अधिक पीतल की बेदी जिसे हर के बेटे उरी के बेटे बजिलिएल ने बनाया था वहां परमेश्वर के तंबू के आगे थी और सुलेमान
- ६ और मंडली उस के पास ठूठने के लिये आते थे । और सुलेमान उधर परमेश्वर के आगे पीतल की बेदी को जो मंडली के तंबू में थी चढ़ गया और उस पर एक सहस्र बलिदान की भेंट चढ़ाई ॥
- ७ उसी रात ईश्वर ने सुलेमान को दर्शन देके कहा कि मांग मैं तुझे क्या देऊं ।
- ८ तब सुलेमान ने ईश्वर से कहा कि तू ने मेरे पिता दाऊद पर बड़ी दया किई है
- ९ और उस को सन्ती मुझ से राज्य करवाया है । अब हे परमेश्वर ईश्वर मेरे पिता दाऊद से अपनी वाचा स्थिर कर क्योंकि तू ने एक लोग पर जो पृथिवी की धूल
- १० की नाई बहुत हैं मुझे राजा किया है । अब मुझे बुद्धि और ज्ञान दे जिससे मैं इन लोगों के आगे बाहर भीतर आया जाया करूं क्योंकि तेरे इन बड़े लोगों का न्याय कौन कर सकता है ॥
- ११ तब ईश्वर ने सुलेमान से कहा इस कारण कि तेरे मन में था और तू ने संपत्ति और धन अथवा प्रतिष्ठा और अपने बैरियों का प्राण न चाहा और न जीवन की बढ़ती मांगी है परन्तु अपने लिये बुद्धि और ज्ञान मांगा है जिससे मेरे

दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर हमारे पिता इसराएल के ईश्वर तू सनातन काल के लिये धन्य है । हे परमेश्वर बड़ाई और पराक्रम और ऐश्वर्य और जय और ११ महिमा तेरी क्योंकि स्वर्ग और पृथिवी में के सब तेरे हैं हे परमेश्वर राज्य तेरा और तू सभी पर श्रेष्ठ उभारा हुआ है । और धन और प्रतिष्ठा तुझी से और तू १२ सभी पर राज्य करता है तेरे हाथ में पराक्रम और सामर्थ्य बड़ा और सब को पराक्रम देना तेरे हाथ में है । सो अब हे हमारे ईश्वर हम तेरा धन्यवाद करते १३ हैं और तेरे ऐश्वर्यवान नाम की स्तुति करते हैं । परन्तु मैं कौन और मेरे लोग १४ कौन कि इस रीति से हम मनमंता चढ़ा सकें क्योंकि तुझ से सब कुछ है और तेरी ही वं से हम ने तुझे दिया है । क्योंकि हम अपने सारे पितरों के समान तेरे आगे १५ परदेगी और प्रयासी हमारे दिन पृथिवी पर छाया के समान आँखों हैं । हे १६ परमेश्वर हमारे ईश्वर यह सारी ठेर जो तेरे पवित्र नाम के लिये सन्धि बनाने के लिये सिद्ध किई हैं सो तेरे ही हाथ में और सब तेरे ही हैं । हे मेरे ईश्वर १७ मैं यह भी जानता हूँ कि मन को तू जानता है और खराई से प्रसन्न है मैं जो हूँ सो अपने मन की खराई से ये सारी वस्ती मनमंती चढ़ाई हैं और आनन्द में मैं ने तेरे लोगों को जो यहाँ साक्षात् हैं मनमंता तुझे भेंट चढ़ाते देखा है । हे पर- १८ मेश्वर हमारे पितर आबिरहाम इज्जराक और इसराएल के ईश्वर तू हमें अपने लोगों के अन्तःकरण की चिन्ता की भावना में सदा लो रख और अपने लिये उन के मन को सिद्ध रख । और मेरे बेटे मुलेमान को सिद्ध अन्तःकरण दे जिसमें १९ तेरी आज्ञाओं सन्धियों और विधियों को पालन करे और यह सब माने और उस भयन को बनावे जिस के लिये मैं ने सिद्ध किया है ॥

तब दाऊद ने सारी मंडली से कहा कि अब परमेश्वर अपने ईश्वर का धन्य- २० वाद करो और सारी मंडली ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर का धन्यवाद किया और अपना अपना सिर झुकाकर परमेश्वर की और राजा की दृग्दृष्ट किई । और उस के दूसरे दिन उन्होंने ने परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाये और परमेश्वर के २१ लिये बलिदान की भेंट चढ़ाई एक सहस्र बैल और एक सहस्र भैंसा और एक सहस्र भेड़ें उन के पीने की भेंटों सहित और सारे इसराएल के कारण बहुतों से बलि चढ़ाया । और उसी दिन बड़ी आनन्दता से परमेश्वर के आगे उन्होंने ने २२ खाया पीया और उन्होंने ने दूसरी बार दाऊद के बेटे मुलेमान को राजा किया और परमेश्वर के लिये श्रेष्ठ अध्ययन देने को उसे अभियेक और सङ्क को याजक किया ॥

तब मुलेमान परमेश्वर के सिंहासन पर राजा होके अपने पिता दाऊद की २३ सन्ती राज्य पर बैठा और भाग्यवान हुआ और सारे इसराएल उस के वंश में हुए । और सारे अध्यक्षों और सामर्थी लोगों और दाऊद राजा के सारे बेटे भी २४ मुलेमान राजा के वंश में हुए । और परमेश्वर ने सारे इसराएल की दृष्टि में २५ मुलेमान को अत्यन्त महान किया और उसे ऐसा राज्य विभक्त दिया कि उसने आगे इसराएल में किसी राजा का न था ॥

यां यस्सी के बेटे दाऊद ने सारे इसराएल पर राज्य किया । और उस ने २६

- १० बनाने पर हूँ सो महान और आश्चर्यित होगा । और देख मैं तेरे लकड़हार सेवकों को जो लट्टे काटते हैं बीस सहस्र नपुये गोहूँ के पिसान और बीस सहस्र नपुये जव और बीस सहस्र कुप्पे दाखरस और बीस सहस्र कुप्पे तेल देऊंगा ।
- ११ तब सूर के राजा हूराम ने उत्तर लिखके सुलेमान पास भेजा इस कारण कि परमेश्वर ने अपने लोगों से प्रेम किया उस ने तुझ को उन पर राजा बनाया ।
- १२ हूराम ने और भी कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य है जिस ने सूर्य और पृथिवी को सिरजा जिस ने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान पुत्र दिया जो चतुराई और ज्ञान में निपुण है जिसने परमेश्वर के लिये मन्दिर और अपने राज्य के लिये एक भवन बनावे । और अब मैं ने अपने पिता हूराम के एक गुणवान
- १३ जन को जो ज्ञानी है भेजा है । जो दान की लड़कियों में की स्त्री का बेटा और उस का पिता सूर का एक जन वह सोना और चांदी पीतल लोहा पत्थर और लट्टे बैजनी नीले और भीने वस्त्र और लाल कार्य का गुणी है और हर प्रकार के खोदने में प्रवीण जो तेरे गुणवानों के संग और मेरे प्रभु तेरे पिता दाऊद के गुणवानों के साथ जो कार्य उसे दिया जावेगा वह हर एक जुगत से निकालेगा ।
- १४ सो अब मेरे प्रभु ने जो गोहूँ और जव और तेल और दाखरस के विषय में कहा है सो अपने सेवकों के लिये भेजिये । और तेरे सारे प्रयोजन के समान हम लुवनान में लकड़ी काटेंगे और बड़ा बांधके समुद्र से तेरे पास याफा में पहुंचावेंगे और तू उन्हें यरूसलम में चढ़ाव्यो ।
- १५ और उस के पिता दाऊद के गिने के समान सुलेमान ने इसराएल के देश में
- १६ के सारे परदेशियों को गिना और वे एक लाख तिरपन सहस्र छः सौ ठहरे । और उस ने उन में से सत्तर सहस्र जन वाकिये और अस्सी सहस्र जन पहाड़ में तोड़-वैये और लोगों पर तीन सहस्र छः सौ करोड़ ठहराये ।

तीसरा पृष्ठ ।

- १ तब सुलेमान परमेश्वर के मन्दिर को यरूसलम में मोरियः पर्वत पर जहां उस के पिता दाऊद ने दर्शन पाया था उस स्थान में जो दाऊद ने यबूसी अरनान के खलिहान में सिद्ध किया था बनाने लगा । और उस ने अपने राज्य के चौथे बरस और दूसरे मास की दूसरी तिथि में बनाना आरंभ किया ।
- २ अब ईश्वर का मन्दिर बनाने को सुलेमान ने यह पाया पहिले नाप के समान
- ३ हाथों से लम्बाई साठ हाथ की और चौड़ाई बीस हाथ की । और आगे के आसारे की लम्बाई घर की चौड़ाई के समान बीस हाथ और लम्बाई एक सौ बीस हाथ और उस ने उसे भीतर निर्मल सोने से मड़ा ।
- ४ और उसने बड़े घर को उस ने सरो के काठ से पटवाया जिसे उस ने चौखे
- ५ सोने से मड़ा और उस के ऊपर खजूर पेड़ और सीकरें रखीं । और उस ने घर को शोभित करने के लिये मणि से जड़ा और सोना परवाइम का सोना था ।
- ६ और उस ने घर को और लट्टों को और खंभों को और उस की भीतों को और उस के कोवाड़ों को भी सोने से मड़ा और भीत पर करोबियों को खोदा ।
- ७ और उस ने अत्यंत पवित्र घर बनाया जिस की लम्बाई घर की चौड़ाई के

लोगों पर जिन पर मैं ने तुम्हें राजा किया है न्याय करे । बुद्धि और ज्ञान तुम्हें १२  
दिये गये और मैं धन और संपत्ति और प्रतिष्ठा तुम्हें ऐसी देऊंगा जैसी तरे आगे के  
राजाओं को न दिई और न तरे पिछले को ऐसी होगी । तब मुलेमान जियऊन १३  
के ऊँचे स्थान से मंडली के तट्टे के आगे परमलस के आया और इसराएल पर  
राज्य किया ॥

और मुलेमान ने रथों और घोड़चढ़ों को घटोरा और उस के चौदह सौ रथ १४  
और बारह सय घोड़चढ़े थे जिन्हें उस ने रथ के नगरी में और परमलस में  
राजा के पास रक्खा ॥

और राजा ने परमलस में सोने चांदी को पत्थर की नाईं किया और देवदार १५  
पेड़ों को बहुताई से खनिल गूलर पेड़ों की नाईं किया । और मुलेमान के लिये १६  
घोड़े मिन से आते थे और राजा के वैपारियों के झुंड रोकड़ देके लाते थे ।  
और मिन से छः सौ टुकड़े चांदी पर एक एक रथ और उठ सौ पर एक एक १७  
घोड़ा लाते थे और इसी रीति से जित्तियों के मारे राजाओं के लिये और आराम  
के राजाओं के लिये उन के द्वारा से लाते थे ॥

दूसरा पर्व ।

और मुलेमान ने परमेश्वर के नाम के लिये एक मन्दिर और अपने राज्य के १  
लिये एक घर बनाने को ठाना । और मुलेमान ने सतर सय व्यक्तियों और पचाह २  
में अस्सी सय पत्थर तोड़वैयों को और उन पर तीन सय छः सौ करोड़ों को  
ठहराया ॥

और मुलेमान ने मूर के राजा हगम पास कहला भेजा कि जैसा तू ने मेरे ३  
पिता दाऊद से व्यवहार करके एक निवासस्थान बनाने के लिये उस पास देवदार  
काष्ठ भेजा था वैसा मुझ से भी कर । देख मैं अपने ईश्वर परमेश्वर के नाम के ४  
और उस की स्थापना के लिये और उस के आगे सुगंधों का धूप जलाने के लिये  
और नित्य की भेंट की रोटी के लिये और सांक विद्या के और विद्याओं और  
अमावास्या में और परमेश्वर हमारे ईश्वर के भारी पर्वों में बलिदान की भेंटों  
के लिये एक मन्दिर बनाता हूँ यह इसराएल के लिये नित्य की विधि है । और ५  
मैं जो मन्दिर बनाता हूँ सो महान होगा क्योंकि हमारा ईश्वर नारे देवों से  
महान है । परन्तु किन ने नामर्ष्य पाई है कि उस के लिये एक मन्दिर बनावे ६  
क्योंकि स्वर्ग और स्वर्गों का स्वर्ग उसे समा नहीं सक्ता फिर मैं कौन हूँ जो उस  
के लिये मन्दिर बनाऊँ यह केवल इस कारण है कि उस के आगे सुगंध चढ़ाऊँ ।  
सो अब मेरे पास एक जन भेज जो सोने और रथ और पीतल और लोहे और ७  
वैजनी और किरसी और नीले वर्ण के सूत का कार्य जानता है और चित्रकारी  
में निपुण है कि उन कार्यकारियों के संग जो यहूदाह और परमलस में मेरे साथ  
हैं जिन्हें मेरे पिता दाऊद ने ठहराया है काम करे । और देवदार पेड़ मेरे ८  
पेड़ और अलगुम पेड़ लुयनान में से मेरे पास भेज क्योंकि मैं जानता हूँ कि तरे  
सेवक लुयनान के लट्टों को काटने में निपुण हैं और देख मेरे सेवक तरे सेवकों  
के साथ होंगे । अर्थात् लट्टे बहुताई से सिद्ध करने को क्योंकि जो मन्दिर मैं ९

- १२ तब वह इसराएल की सारी मंडली के सामे परमेश्वर की वेदी के आगे खड़ा
- १३ हुआ और अपने हाथ फैलाये । क्योंकि सुलेमान ने पांच हाथ लम्बा और पांच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊंचा पीतल का एक मंच बनाया था और आंगन के मध्य में उसे रक्खा और उसी पर खड़ा होके इसराएल की सारी मंडली के आगे घुटना टेका और स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाये ॥
- १४ और कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तेरे तुल्य स्वर्ग में अथवा पृथिवी में कोई ईश्वर नहीं जो अपने दासों के लिये जो अपने सारे मन से तेरे
- १५ आगे चलते हैं नियम और दया रखता है । क्योंकि तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद से जो प्रतिज्ञा किई है सो संपूर्ण किया है और अपने मुंह से कहा और
- १६ उसे अपने हाथ से पूरा किया जैसा आज है । सो अब हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर उसे पालन कर जो तू ने अपने दास मेरे पिता से यह कहके प्रतिज्ञा किई कि तेरे लिये पुरुष मेरी दृष्टि में न घटेगा कि इसराएल के सिंहासन पर बैठे यदि तेरे वंश चौकस होके मेरी दयवस्था पर चलें जैसा तू मेरे आगे चला
- १७ है । सो अब हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर जो वचन तू ने अपने दास दाऊद से कहा है उसे पूरा कर ॥
- १८ परन्तु क्या निश्चय ईश्वर पृथिवी के मनुष्यों के साथ वास करेगा देख स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग तुझे समा नहीं सक्ते कितना अधिक यह मन्दिर जो मैं ने
- १९ बनाया है । इस लिये हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू अपने दास की प्रार्थना पर और उस की बिनती पर सुरत लगा और अपने दास की बिनती और प्रार्थना को सुन
- २० जो वह तेरे आगे प्रार्थना करता है । जिसमें तेरी आंखें रात दिन इस मन्दिर पर अर्थात् इस स्थान पर जिस के विषय में तू ने कहा है कि मैं अपना नाम उस में स्थापन करूंगा कि अपने दास की प्रार्थना को जो इस स्थान की
- २१ और करता है सुने । इस लिये अपने दास की और अपने इसराएल लोगों की बिनतियां सुन जो वे इस स्थान की और करें और तू अपने निवासस्थान स्वर्ग से सुन और सुनके क्षमा कर ॥
- २२ यदि कोई अपने परोसी का पाप करे और उससे किरिया लेने को उस पर किरिया रखी जावे और वह किरिया इस मन्दिर में तेरी वेदी के आगे आवे ।
- २३ तब स्वर्ग में से सुन और अपने दास का न्याय कर जिसमें दुष्ट के सिर पर उस की चाल का पलटा पड़े जिसमें धर्मी अपने धर्म के समान पाने को निर्दोष ठहरे ॥
- २४ और यदि तेरे इसराएल लोग तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण वैरी के आगे हारे जावें और फिरके तेरे नाम को मान लें और प्रार्थना करके इस मन्दिर में
- २५ तेरे आगे बिनती करें । तब तू स्वर्गों में से सुन और अपने इसराएल लोगों का पाप क्षमा कर और उन्हें इस देश में फिर ला जो तू ने उन्हें और उन के पितरों को दिया है ॥
- २६ जब स्वर्ग बंद हो जावे और उन के पाप के कारण जल न बरसे जब तू उन्हें कष्ट देता है यदि वे इस स्थान की और प्रार्थना करें और तेरे नाम को

समान बीस हाथ और उस की चौड़ाई बीस हाथ और उस ने उसे ऊः से तोड़े  
चोखे सोने से मढ़ा । और कीलों की ताल पन्नास गैकल मोना या और उस ने  
ऊपर की कोठरियां सोने से मढ़ीं ॥

और उस अत्यंत पवित्र घर में उस ने दो करोवी खोदके बनवाये और उन्हें १०  
सोने से मढ़ा । और करोवियों के डैनों की लम्बाई बीस हाथ एक डैना पांच हाथ ११  
का घर की भीत लों पहुंचा और दूसरा डैना पांच हाथ का दूसरे करोवी के डैने  
लों पहुंचा । और दूसरे करोवी का डैना पांच हाथ का घर की भीत लों पहुंचा १२  
और दूसरा डैना पांच हाथ का दूसरे करोवी के डैने लों मिला या । इन करो- १३  
वियों के डैने बीस हाथ लों फैले और वे अपने अपने पांच पर खड़े थे और उन  
के मुँह भीतर की ओर थे । और उस ने छूँछट को नीला और बैजनी और लाल १४  
और भीने सूती कपड़े से बनाया और उस पर करोवियों को उभारा ॥

और उस ने घर के आगे पैंतीस हाथ लम्बे दो खंभे भी बनाये और उस के १५  
ऊपर के कलश भी पांच हाथ के । और उस ने दृश्यरीय ब्राह्म में मोहरें बनाईं १६  
और खंभों के मिरों पर लगाईं और एक से आनार बनाये और मोहरों पर रख्ये ।  
और उस ने मन्दिर के आगे उन खंभों को खड़ा किया एक दहिनी और और १७  
दूसरा बाईं और और दहिने का नाम उस ने याकीन और बायें का नाम  
युशज रक्खा ॥

### चौथा पृष्ठ ।

और उस ने पीतल की वेदी भी बनाईं जिन की लम्बाई बीस हाथ और १  
चौड़ाई बीस हाथ की और उस की ऊंचाई दस हाथ की ॥

और उस ने कोर से कोर लों दस हाथ गोल एक ठना हुआ कुंड बनाया २  
और उस की ऊंचाई पांच हाथ और तीस हाथ की रस्सी उस की चारों ओर  
जाती थी । और उस के नीचे बैल की मो मूरत जो उस की चारों ओर थे ३  
हाथ भर में दस कुंड को घेरे हुए थे और ठाले जाने के समय दो पांती बेल  
ठाले गये । वह बारह बैलों पर धरा गया था तीन उत्तर की ओर देखते थे और ४  
तीन पश्चिम की ओर देखते थे तीन दक्षिण की ओर देखते थे और तीन पूरुब  
की ओर देखते थे और कुंड उन्हीं के ऊपर और उन सभी के पुट्टे भीतर थे ।  
और उस की मोटाई चार अंगुल की और उस के कोर जैसा कटोरे के कार्य का ५  
होता है मौसन के फूल के समान उस में एक सटस मात से मन के लगभग की  
समाई थी ॥

उस ने दस स्नानपात्र भी बनाये और उन में धोने के लिये पांच को दहिनी ६  
और पांच को बाईं अलंग रक्खा और जो यस्तु बलिदान की भेंट के लिये चढ़ाते  
थे उन्हीं में धोते थे परन्तु कुंड याजकों के स्नान के लिये था ॥

और उन के डौल के समान उस ने सोने की दस दीघट बनाईं और उन्हें ७  
मन्दिर में पांच दहिनी और पांच बाईं ओर रक्खा ॥

उस ने दस मंत्र भी बनाये और मन्दिर में पांच दहिनी और पांच बाईं ओर ८  
रक्खे और उस ने सोने के सौ कटोरे बनाये ॥



- ४१ आंखें खुली और तेरे कान भुके रहें । इस लिये अब हे परमेश्वर ईश्वर अपने विश्रामस्थान पर उठ जा तू और तेरी मंजूषा का धल हे परमेश्वर ईश्वर तेरे
- ४२ याज्ञक मुक्ति से पहिराये जावें और तेरे संत भलाई से आनन्द करें । हे परमेश्वर ईश्वर तू अपने अभिषिक्त का मुंह मत फेर अपने दास दाऊद की दया को स्मरण कर ॥

सातवां पर्व ।

- १ जब सुलेमान प्रार्थना कर चुका था तब स्वर्ग से आग उतरी और बलिदान की भेंट और बलिदानों को भस्म किया और परमेश्वर के विभव से मन्दिर भर गया । और याज्ञक परमेश्वर के मन्दिर में प्रवेश न कर सके क्योंकि परमेश्वर के विभव से परमेश्वर का मन्दिर भर गया था । और जब इसराएल के सारे सन्तानों ने देखा कि किस रीति से आग और परमेश्वर का विभव मन्दिर पर उतरा तब उन्होंने ने गच्च पर भूमि लों मुंह के धल भुके दंडवत और परमेश्वर की स्तुति किई कि यह भला है और उस की दया सर्वदा लों है ॥
- २ तब राजा और सारे लोगों ने परमेश्वर के आगे बलि चढ़ाये । और सुलेमान राजा ने चाईस सहस्र बैल और एक लाख बीस सहस्र भेड़ बलि चढ़ाये
- ३ यों राजा और सारे लोगों ने ईश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा किई । और याज्ञक और लायी भी परमेश्वर के वाजे की सामग्री लिये हुए जिन्हें दाऊद राजा ने परमेश्वर की स्तुति के लिये बनाया था अपने अपने पदों पर खड़े हुए और दाऊद ने उन के द्वारा से स्तुति किई क्योंकि उस की दया सर्वदा लों है और याज्ञकों
- ४ ने उन के आगे तुरही बजाई और सारे इसराएल खड़े हुए । और सुलेमान ने परमेश्वर के मन्दिर के आगे के आंगन के मध्य को पवित्र क्रिया क्योंकि वहां उस ने बलिदान की भेंट और कुशल की भेंटों की चिकनाई चढ़ाई क्योंकि सुलेमान ने जो पीतल की वेदी बनाई थी उस में बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट और चिकनाई समा न सकी ॥
- ५ और उस समय में सुलेमान और उस के साथ सारे इसराएल की एक अति बड़ी मंडली ने हमात की पैठ से मिस्र की नदी लों सात दिन लों पर्व रक्खा ।
- ६ और आठवें दिन उन्होंने ने बड़ा पर्व माना क्योंकि उन्होंने ने सात दिन वेदी की प्रतिष्ठा के लिये और सात दिन पर्व के लिये रक्खा । और दाऊद पर और सुलेमान पर और अपने इसराएल लोगों पर परमेश्वर के अनुग्रह के लिये उस ने सातवें मास की तेईसवीं तिथि में आनन्दित और मगनता से लोगों को अपने अपने डेरे को बिदा किया ॥
- ७ यों सुलेमान परमेश्वर का मन्दिर और राजा का भवन बना चुका और परमेश्वर के मन्दिर में और अपने भवन में जो जो कुछ सुलेमान के मन में आया उस ने उसे सिद्ध किया ॥
- ८ और परमेश्वर ने रात को सुलेमान को दर्शन दिया और उसे कहा कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी है और बलि के घर के लिये यह स्थान चुन लिया है ।
- ९ जो मैं स्वर्ग को बन्द करूं जिसमें न बरसे अथवा जो देश नष्ट करने को टिड्डियों

मान लें और अपने पाप से फिरें । तब तू स्वर्ग में सुन और अपने दासों का २७ और अपने इसराएल लोगों का पाप क्षमा कर और उन्हें अच्छा मार्ग बता जिन में उन्हें चलना उचित है और अपने देश में जिसे तू ने अपने लोगों का अधिकार के लिये दिया है जल बरसा ॥

यदि देश में अकाल अथवा मरी अथवा कुलम अथवा लेंढा होवे अथवा २८ टिड्डी अथवा कीड़े हों अथवा उन के बैरी उन के देश के नगरों में उन्हें घेर लेंगे जो कुछ घाय अथवा रोग होवे । तब जो जो प्रार्थना अथवा यिनती किसी २९ जन से अथवा अपने सारे इसराएल लोगों से किई जाय जय हर एक जन अपने ही घाय और अपने ही शोक को पहिचाने और अपने दाय इस मन्दिर की और फैलावे । तब तू अपने रहने के नियाम स्वर्ग में सुन और क्षमा कर और हर एक ३० जन को उस की सारी चाल के समान जिस का मन तू जानता है प्रतिकूल दे क्योंकि केवल तू मनुष्यों के मन्तान के अन्तःकरणों को जानता है । जिसने वे ३१ तुझे डरके तेरे मार्गों पर अपने जीवन भर उस देश में जिसे तू ने हमारे पितरों को दिया है चले ॥

और जो विदेशी तेरे इसराएल लोगों में का नहीं है परन्तु जो तेरे महत नाम ३२ और तेरे बलवन्त दाय और फैलाई हुई भुजा के लिये दूर देश में आये हैं यदि वे आएं और इस मन्दिर में प्रार्थना करें । तो तू अपने निवासस्थान स्वर्गों में से ३३ सुन और परदेशी की सारी प्रार्थना के समान कर जिसने पृथिवी के सारे लोग तेरे नाम को जानें और तेरे इसराएल लोगों के समान तुझे डरें और जानें कि इस मन्दिर पर तेरा नाम कहा जाता है ॥

यदि तेरे लोग उस मार्ग से अपने बैरियों से संग्राम करने का निकलें जिसमें ३४ तू उन्हें भेजेगा और वे इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस मन्दिर की ओर जो मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया है प्रार्थना करें । तो स्वर्ग में से ३५ उन की प्रार्थना और उन की यिनती सुन और उन के पद का पक्ष कर ॥

जब वे तेरे विरोध पाप करें क्योंकि कोई जन नहीं जो पाप नहीं करता ३६ और तू उन से रिसियाके उन्हें बैरी के दाय सौंप देवे और वे उन्हें बंधुआई में दूर देश में अथवा समीप ले जायें । तबोंपे जिस देश में वे बंधुआई में उठाये ३७ जायें यदि वे अपने मन में चेत करें और अपनी बंधुआई के देश में फिरें और यह कहके तेरी प्रार्थना करें कि हम ने पाप किया है हम ने चूक किई है और दुष्टता में व्यवहार किया है । वे अपनी बंधुआई के देश में जहां वे उन्हें बंधु- ३८ आई में ले गये हैं यदि वे अपने सारे अन्तःकरण से और अपने सारे प्राण से तेरी ओर फिरें और अपने देश की जो तू ने उन के पितरों को दिया है और उस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस मन्दिर की ओर जो मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया है प्रार्थना करें । तब तू अपने निवासस्थान स्वर्गों में से उन की प्रार्थना ३९ और उन की यिनतियां सुन और उन के पद का पक्ष कर और जो पाप तेरे लोगों ने किया है क्षमा कर ॥

अब हे मेरे ईश्वर मैं यिनती करता हूं कि इस स्थान की प्रार्थना पर तेरी ४०

१० और वे सुलेमान राजा के श्रेष्ठ प्रधान थे अर्थात् अढ़ाई सौ जो लोगों पर प्रभुता करते थे ॥

११ और सुलेमान फिरजन की पुत्री को दाऊद के नगर से उस भवन में लाया जो उस ने उस के लिये बनाया था क्योंकि उस ने कहा था कि मेरी पत्नी इसराएल के राजा दाऊद के भवन में न रहेगी इस कारण कि पवित्रता में परमेश्वर की मंजूपा आई है ॥

१२ तब सुलेमान ने परमेश्वर की वेदी पर जो उस ने जोसारे के आगे बनाई थी

१३ परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाई । अर्थात् मूसा की आज्ञा के समान प्रतिदिन के लिये विश्रामों में और अमावास्या में और वरस वरस तीन बार भारी पर्वों में अश्वमीरी रोटी के पर्व में और अठवारों के पर्व में और तंतुओं के पर्व में

१४ ठहराये हुए नियम के समान भेंट चढ़ाई । और उस ने अपने पिता दाऊद के ठहराने के समान याजकों की पारी सेवा के लिये ठहराई और प्रतिदिन के आवश्यक कार्य के समान याजकों के आगे स्तुति और सेवा करने के लिये लावियों को और उन की पारी के समान हर एक फाटक में द्वारपालक भी ठहराया क्योंकि

१५ ईश्वर के जन दाऊद की आज्ञा पोंछी थी । और वे राजा की आज्ञा से जो उस ने याजकों और लावियों को किसी विषय में और भंडार के विषय में दिई थी

१६ अलग न हुए । अब सुलेमान के सारे कार्य परमेश्वर के मन्दिर की नैव डाली जाने के दिन से उस के पूरा होने लगे सिद्ध हुए सो परमेश्वर का मन्दिर बन गया ॥

१७ अब सुलेमान समुद्र के तीर अरूम देश में अशयूनजत्र को और अलूत को

१८ गया । और हूराम ने अपने दासों के हाथ से जहाजों को और समुद्र के आनकार दासों को उस पास भेजा और वे सुलेमान के दासों के संग ओफीर को गये और वहां से साढ़े चार सौ तोड़े सोना सुलेमान राजा पास लाये ॥

नवां पर्व ।

१ और जब सखअ की रानी ने सुलेमान की कीर्ति सुनी तो वह अति बड़ी जया और कंटों पर सुगंध द्रव्य लदे हुए और बहुताई से सोना और मखि लेके गूढ़ प्रश्नों से यरुसलम में सुलेमान को परखने के लिये आई और सुलेमान पास २ पहुंचके अपने मन की सारी बातों से उससे वातचीत किई । और सुलेमान ने उस के सारे प्रश्नों का उत्तर दिया और सुलेमान से कोई वात छिपी न रही जो उस ने उससे न कही हो ॥

३ और सखअ की रानी ने सुलेमान का ज्ञान और घर जो उस ने बनाया था ।

४ और उस के मंच का भोजन और उस के सेवकों का बैठना और उस के मंत्रियों का खड़ा होना और उन का पहिरावा और उस के पानदायक को भी और उन का पहिरावा और उस चढ़ावा को जिसे वह परमेश्वर के मन्दिर में जाता था

५ देखते ही मूर्छित हो गई । तब उस ने राजा से कहा कि वह सत्य चर्चा थी जो मैं ने तेरी क्रिया और बुद्धि के विषय में अपने ही देश में सुना था ।

६ तथापि जब लो आके मैं ने अपनी आंखों से नहीं देखा तब लो मैं ने उन की बातें प्रतीति न किई और देखिये तेरी बुद्धि की बड़ाई की आधी भी मुझ से नहीं

को आज्ञा करूँ अथवा जो मैं अपने लोगों में मरी भेंट । यदि मेरे लोग जो १४  
मेरे नाम से कहाये जाने हैं आप को दीन करके प्रार्थना करें और मेरा मुँह ठुँके  
और अपने दुष्ट मार्गों से फिरें तो मैं स्वर्ग में सुनूँगा और उन का पाप क्षमा  
करूँगा और उन के देश को चंगा करूँगा । अथ इस स्थान की प्रार्थना पर मेरी १५  
आंग्रे खुली रहेंगी और मेरे कान भुके रहेंगे । और अथ मैं ने इस मन्दिर को १६  
चुनके इसे पवित्र किया है जिसमें मेरा नाम सर्वदा इस में रहे और मेरी आंग्रे  
और मेरा मन सदा यहाँ रहेंगे ॥

और तू जो है जैसा तेरा पिता दाऊद मेरे आगे चलता था वैसा यदि मेरे १७  
आगे चलेगा और मेरी मारी आज्ञा के समान करेगा और मेरी विधि न और विचार  
मानेगा । जैसा मैं ने यह कहके तेरे पिता दाऊद से वाचा पाँधी है कि इसराएल में १८  
से तेरे लिये आज्ञाकारी न घटेगा तब मैं तेरे राज्य के सिंहासन को स्थिर करूँगा ॥

परन्तु मेरी विधि न और आज्ञाओं को जो मैं ने तुम्हारे आगे रख्या हैं यदि १९  
तुम फिरके छोड़ देओगे और जाके दूसरे देवों की सेवा और पूजा करोगे । तो २०  
मैं उन्हें अपने देश में जो मैं ने उन्हें दिया है उग्राड़ डालूँगा और यह मन्दिर  
जिसे मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से दूर करूँगा और  
उस एक कहानी और एक कहायत मारे जातिगणों में वनाडूँगा । और यह सदा २१  
मन्दिर इधर के घर एक जानेंवाने पर आश्चर्यित होगा यहाँ लों कि यह करेगा  
कि परमेश्वर ने इस देश को और इस मन्दिर को क्यों ऐसा किया है । तब उत्तर २२  
दिया जावेगा इस कारण कि उन्होंने ने परमेश्वर अपने पितरों के श्वर को जो  
उन्हें मिस के देश से निकाल लाया था त्याग करके और देवों को गहा है और  
उन की पूजा और सेवा किई इस लिये वह ये मारी घुराई उन पर लाया है ॥

आठवां पृष्ठ ।

और दोस दरम के अन्त में जब कि सुलेमान ने परमेश्वर का मन्दिर और १  
अपने ही भवन को बनाया था हुआ । कि जो जो नगर हूराम ने सुलेमान को २  
फेर दिया था सुलेमान ने उन्हें बनाके इसराएल के सन्तानों को उन में बसाया ॥

फिर सुलेमान हमारा सूत्रः में जाके उस पर प्रवल हुआ । और उस में ३  
उन में तदमूर बनाया और हमारा में सारे भंडारनगर बनाये । उस ने ऊपर का ४  
और नीचे का वैतदौरान भी बनाये जो अड़ंगे और फाटक और भीत से घाड़ित  
नगर थे । और बखलात और सारे भंडारनगर जो सुलेमान के थे और सारे रथ- ५  
नगर और घोड़चढ़ों के नगर बनाये और जो कुछ सुलेमान का चाँछा थी सो  
यहसलम में और लुवनान में और अपने राज्य के सारे देश में बनाये ॥

हिलियों के और अमूरियों के और फरिजियों के और दवियों के और यदूमियों ७  
के वच हुए सारे लोग जो इसराएल के न थे । परन्तु उन के देश जो उन के ८  
पीछे उस देश में छोड़े गये जिन्हें इसराएल के सन्तानों ने नष्ट न किया उन्हें  
सुलेमान ने आज लों करदायक ठहराया । परन्तु इसराएल के सन्तानों में से सुले- ९  
मान ने अपने कार्य के लिये किसी का दास न बनाया क्योंकि वे योद्धा और सेना-  
पति और रथपति और घोड़चढ़े थे ॥

बारह सहस्र घोड़वट्टे थे जिन्हें उस ने शयनगरो में और यरुसलम में राजा के पास रक्खा ॥

२६ और उस ने नदी से लेके फिलिस्तिनियों के देश लों और मिस्र के सिवाने लों  
२७ सारे राजाओं पर राज्य किया । और राजा ने यरुसलम में चांदी को पत्थरों के  
समान और देवदारु पेड़ को धनैले गूलर की नाईं जो चौगान में बहुतार्थ से हैं  
२८ किया । और वे मिस्र से और सारे देशों से सुलेमान पास छोड़े लाये ॥

२९ अब सुलेमान की रही हुई क्रिया आदि और अंत सो क्या नातन भविष्यवक्ता  
के वचन में और अखियाह शिलोनी की भविष्यवाणी में और नयात के घटे  
३० यरुविश्राम के विरोध के दर्शाई ईदू के दर्शनों में नहीं लिखा है । और सुलेमान ने  
३१ यरुसलम में सारे इसराएल पर चालीस वरस राज्य किया । उस के पीछे सुलेमान  
ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पिता दाऊद के नगर में गाड़ा गया  
और उस के घटे यरुविश्राम ने उस की संती राज्य किया ॥

दसवां पत्र ।

१ और यरुविश्राम सिकम को गया क्योंकि सारे इसराएल उसे राजा करने को  
सिकम में आये थे ॥

२ और रेमा हुआ कि जब नवात के घटे यरुविश्राम ने जो मिस्र में था और  
सुलेमान राजा के आगे से जहां भाग निकला था मुना तब यरुविश्राम मिस्र  
३ से फिर आया । और लोगों ने भेजके उसे बुलाया सो यरुविश्राम और सारे इस-  
४ राएल आये और यह कहके यरुविश्राम से बोले । कि तेरे पिता ने हमारे जूआ को  
जोगवार किया सो अब अपने पिता की जोगवार सेवा और उस के भारी जूआ  
को जो उस ने हम पर रक्खा था कुछ हलका कीजिये और हम तेरी सेवा करेंगे ।  
५ और उस ने उन्हें कहा कि तीन दिन पीछे मेरे पास फिर आओ और लोग  
बिदा हुए ॥

६ और राजा यरुविश्राम ने प्राचीनों से जो उस के पिता के जीते श्री उस के  
आगे खड़े होते थे यह कहके परामर्श किया कि इन लोगों को क्या उत्तर देने  
७ को मंत्र देते हो । और वे यह कहके उसे बोले कि यदि तू उन लोगों की भलाई  
के लिये उन की इच्छा रखे और उन से अच्छी अच्छी बातें कहे तो वे सदा तेरे सेवक  
८ बने रहेंगे । परन्तु उस ने प्राचीनों के मंत्र को त्याग किया और उन तरुणों से  
९ जो उस के साथ बड़े थे परामर्श किया । और उस ने उन्हें कहा कि जिन्होंने ने मुझ  
से यह कहके पूछा कि जो जूआ तेरे पिता ने हम पर रक्खा था उसे कुछ हलका  
१० कर तुम लोग क्या मंत्र देते हो हम उन्हें क्या उत्तर दें । और जो उस के साथ  
बड़े थे यह कहके बोले कि जिन लोगों ने तुझ से यह कहा कि तेरे पिता ने  
हमारा जूआ भारी किया परन्तु तू हमारे लिये उसे कुछ हलका कर तू उन्हें यह  
११ उत्तर दे कि मेरी कनगरिया मेरे पिता की कटि से अधिक मोटी होगी । क्योंकि  
जैसा कि मेरे पिता ने भारी जूआ तुम पर रक्खा था मैं तुम्हारे जूआ में अधिक  
मिलाऊंगा मेरे पिता ने तुम्हें कोड़े से ताड़ना किई परन्तु मैं बिच्छुओं से ताड़ना  
करूंगा ॥

कही गई मेरे मुने से आप की कीर्ति अधिक है । धन्य तेरे जन और धन्य तेरे ७  
 ये सेवक जो तेरे आगे नित्य खड़े रहते हैं और तेरी बुद्धि सुनते हैं । धन्य परमे- ८  
 श्वर तेरा ईश्वर जिस ने तुझ से प्रसन्न होकर तुझे अपने सिंहासन पर बैठाया जिसने  
 तू परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये राजा छोड़े इस कारण कि तेरा ईश्वर हमरायल  
 को बड़ा स्थिर रखने के लिये उन से प्रेम रखता था इस लिये विचार और न्याय  
 करने के लिये उस ने तुझे उन पर राजा किया । और उस ने राजा को एक सौ ९  
 बीस नोड़े सोने और बहुतार्ह से सुगंध द्रव्य और मणि दिये और ऐसा सुगंध द्रव्य  
 जैसा कि मलय की रानी ने सुलेमान को दिया था वैसा न था ॥

और हूराम के सेवक भी और सुलेमान के सेवक जो बाफीर से सोना लाये १०  
 अलगुम पेड़ और मणि ले आये । तब राजा ने उन अलगुम पेड़ों से परमेश्वर के ११  
 मन्दिर की और राजा के भवन की छत और गायकों के लिये बीरा और नवल  
 बनाये और ऐसा यहूदाह के देश में आगे देखने में नहीं आया । और राजा सुले- १२  
 मान ने मलय की रानी को उस की मारी बाँटा जो कुछ उस ने सांगा उन्हें छोड़  
 जो वह राजा पास लाई थी दिया और वह अपने सेवकों समेत अपने देश को  
 फिर गई ॥

अब सोने की तौल जो दरम भर में सुलेमान पान आया था सो छः सौ १३  
 छियामठ तोड़े थे । उस ने सोने को छोड़ जो बनिये और चंपारी लाये और १४  
 अरब के सारे राजा और देश के अध्यक्ष सुलेमान पास सोना चाँदी लाये ॥

और सुलेमान-राजा ने सोना गड़वाके दो सौ फरी बनाई फरी पीछे छः सौ १५  
 शैकल सोना लगता था । और पीछे हुए सोने की तीन सौ ढाल बनाई दस पीछे १६  
 तीन सौ शैकल सोना लगता था और राजा ने लुवनान के वन के भवन में  
 उन्हें रक्खा ॥

और भी राजा ने हाथीदांत का एक सटा सिंहासन बनाया और उसे चोगे १७  
 सोने से सड़ा । और उस सिंहासन की छः सीढ़ी और सोने की एक पीढ़ी सिंहा- १८  
 मन से जड़ी थी और आसन की दोनों ओर हाथ और हाथों के पास दो सिंह  
 खड़े थे । और बारह सिंह छः सीढ़ियों के इधर उधर खड़े थे वैसा किसी राज्य १९  
 में नहीं बनाया गया । और सुलेमान राजा के सारे पानपात्र सोने के थे और २०  
 लुवनान के भवन के सारे पात्र चोगे सोने के थे चाँदी का कुछ भी न था सुले-  
 मान के दिनों में उस की कुछ गिनती न थी । क्योंकि हूराम के सेवकों के साथ २१  
 राजा के जहाज तरसीस को जाते थे और तीन तीन दरम पीछे तरसीस के जहाज  
 सोना चाँदी और हाथीदांत और बाँदरों को और मोरों को लाते थे ॥

और सुलेमान राजा धन में और ज्ञान में पृथिवी के सारे राजाओं से बड़ २२  
 गया । और जो बुद्धि ईश्वर ने सुलेमान के अन्तःकरण में डाली थी उसे मुने को २३  
 पृथिवी के सारे राजा उससे भेंट करने की लालसा रखते थे । और उन में से २४  
 हर एक जन चाँदी के पात्र और सोने के पात्र और वस्त्र और शस्त्र और सुगंध  
 द्रव्य और छोड़े और खजूर नियम के साथ दरस वरस लाता था ॥

और घोड़ों के और रथों के लिये सुलेमान के चार सदस थान थे और उस के २५



अधिकार छोड़ छोड़ यहूदाह में और यरूसलम में आये क्योंकि यहूदाह  
और उस के बेटों ने उन्हें परमेश्वर के आगे बालक के पद की सेवा से अलग  
१५ किया । और उस ने जंघे स्थानों के और उनके पशुओं के और बछड़ों के लिये  
१६ जो उस ने बनाये थे बालकों को ठहराया । और इसराएल की सारी गोष्टी में से  
जितने ने इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये अपना मन लगाया  
सब यहूदाह में अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को उन  
१७ के पीछे आये । सो उन्होंने ने यहूदाह का राज्य पोट किया और तीन घरस लों  
सुलेमान के बेटे यहूदाह को हट किया क्योंकि वे तीन घरस दाऊद के और  
सुलेमान के मार्ग पर चलते थे ॥

१८ और यहूदाह ने दाऊद के बेटे यरीमात की बेटी महलत को और यस्सी  
१९ के बेटे इलियाव की बेटी अविखैल को पत्नी किया । और यह उस के लिये  
२० बालक जनी अर्थात् यरूय और समरियाह और जहम । और उस के पीछे उस ने  
अविसलुम की बेटी मअकः को लिया जो उस के लिये अविद्याह को और अत्ती  
२१ को और जीजा को और मलूमियत को जनी । और यहूदाह अपनी सारी  
पत्नियों से और सहेलियों से अविसलुम की बेटी मअकः को अधिक प्यार करता  
था क्योंकि उस ने अठारह पत्नी और साठ सहेलियां किई थीं और उससे अठारह  
२२ बेटे और साठ बेटियां उत्पन्न हुईं । और यहूदाह ने मअकः के बेटे अविद्याह  
२३ को राजा करने को प्रेरित और अपने भाइयों पर आज्ञाकारी किया । और उस ने  
चतुराई से कार्य किया और यहूदाह और दिनयमीन के सारे देशों और हर एक  
बाहित नगरों में से अपने बेटों को घांट दिया और उन्हें बहुत से भोजन दिया  
और उस ने बहुत पत्नियां चाहीं ॥

बारहवां पृष्ठ ।

१ और यों हुआ कि जब यहूदाह ने राज्य को स्थिर किया और अपने को  
हट किया था तब उस ने और उस के साथ सारे इसराएल ने परमेश्वर की  
व्यवस्था को छोड़ दिया ॥

२ और यहूदाह राजा के पांचवें घरस में यों हुआ कि मिस्र का राजा सीसक  
यरूसलम पर चढ़ आया क्योंकि उन्होंने ने परमेश्वर के विरुद्ध अपराध किया ।  
३ यह बारह सौ रथ और साठ सहस घोड़चढ़े लेके आया और लूची और सुक्की  
४ और हवशी लोग जो उस के साथ मिस्र से निकल आये अनगणित थे । और उस  
५ ने यहूदाह के बाहित नगरों को ले लिया और यरूसलम में आया । तब समे-  
याह भविष्यद्वक्ता ने यहूदाह पास और यहूदाह के अध्यक्षों के पास जो सीसक  
के कारण यरूसलम में एकट्टे थे आके उन्हें कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि  
तुम ने मुझे त्यागा है इस लिये मैं ने तुम्हें भी सीसक के हाथ में छोड़ दिया है ।  
६ और इसराएल के अध्यक्षों ने और राजा ने आप आप को नम्र किया और कहा कि  
७ परमेश्वर धर्मी है । और जब परमेश्वर ने देखा कि उन्होंने ने अपने को नम्र किया  
तब परमेश्वर का वचन यह कहके समेयाह पास आया कि उन्होंने ने अपने को  
नम्र किया है मैं उन्हें नाश न करूंगा परन्तु उन का कुछ बचाव करूंगा और मेरा

सो राजा के कहने के समान कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आओ वैसे ही १२  
यहविश्राम और सारे लोग तीसरे दिन यहविश्राम पास आये । और राजा ने १३  
कठोरता से उन्हें उत्तर दिया और यहविश्राम राजा ने प्राचीनों के मंत्र को  
त्यागा । और यह कहके गरुओं के मंत्र के समान उन्हें उत्तर दिया कि मेरे पिता १४  
ने तुम्हारा जूआ भारी किया था परन्तु मैं उसे बड़ाजंगम मेरे पिता ने कोढ़े से तुम्हें  
ताड़ना किई थी परन्तु मैं तुम्हें विच्छुओं से ताड़ना करूंगा ॥

सो राजा ने लोगों की न सुनी क्योंकि यह ईश्वर की और से था कि उस १५  
यात को जो उस ने जैलूनी अखियाह के द्वारा मे नयात के बेटे यहविश्राम से  
कहा था उसे पूरा करे । और जब मारे इसराएल ने देखा कि राजा ने उन की १६  
न सुनी तो यह कहके राजा को उत्तर दिया कि दाऊद मैं हमारा क्या भाग और  
यम्मी के बेटे मैं हमारा अधिकार नहीं दे इसराएल हर एक जन अपने अपने डेरे  
को चले अब हे दाऊद अपने ही घर को देख तब सारे इसराएल अपने अपने  
डेरे को गये । परन्तु इसराएल के सन्तान पर जो यहूदाह के नगरों में रहते थे १७  
यहविश्राम ने राज्य किया ॥

तब यहविश्राम राजा ने हूराम को लो कर का अध्यक्ष था भेजा परन्तु १८  
इसराएल के संतानों ने उसे पत्थरबाद करके मार डाला तब राजा यहविश्राम  
आप को हूठ कर रथ पर चढ़के यरुसलम को भागा । और इसराएल दाऊद १९  
के घराने से आज लो फिरे रहे ॥

### ग्यारहवां पृष्ठ ।

और जब यहविश्राम यरुसलम में आया तब उस ने यहूदाह के और विनय- १  
मीन के घरानों में से एक लाख अस्सी सहस चुने हुए बाह्याओं को इसराएल  
से लड़ने के लिये एकट्ठे किया जिसमें राज्य का यहविश्राम की और फेर लायें ।  
परन्तु परमेश्वर का वचन ईश्वर के जन ममरेयाह पास यह कहके पहुंचा । कि ३  
यहूदाह के राजा सुलेमान के बेटे यहविश्राम से और यहूदाह और विनयमीन  
में के सारे इसराएल से कह । कि परमेश्वर यों कहता है कि सड़ मत जाओ ४  
और अपने भाइयों से मत लड़ियो हर एक जन अपने अपने घर जाय क्योंकि  
यह यात मुझ से हुई है और उन्हें ने परमेश्वर के वचन को माना और यहवि-  
श्राम के विरुद्ध चढ़ जाने से फिर आये ॥

और यहविश्राम ने यरुसलम में वास किया और वचाय के लिये यहूदाह में ५  
नगर बनाये । और उस ने बैतलहम और गेताम और तक्रूय । और बैतमूर और ६  
शोको और अदूलास । और जाल और मरीसः और जैफ । और अदूरस और ७  
लकीस और अजीकः । और मुरयः और रेयलून और हयरून बनाये ये यहूदाह १०  
और विनयमीन में बाहित नगर हैं । और उस ने गहों को हूठ किया और उन ११  
में प्रधानों को और भोजन और तेल और दाखरस एकट्ठे किये । और उस ने हर १२  
एक नगर में ढाल और वरखी रखके उन्हें अति हूठ किया और यहूदाह और  
विनयमीन उस की और थे । और याजक और लावी जो सारे इसराएल में थे १३  
अपने सारे सिवानों में से उस पास आये । क्योंकि लावी अपना अपना गांव और १४

- ८ रहविआम के बिरुद्ध दृढ़ किया है । सो अब तुम लोग चाहते हो कि परमेश्वर के राज्य का जो दाऊद के बेटों के हाथ में है साम्रा करो और तुम लोग बड़ी मंडली हो और तुम्हारे संग सोने के बकुड़े हैं जिन्हें यहविआम ने तुम्हारे लिये देव बना रक्खा है । क्या तुम लोगों ने परमेश्वर के याजकों को अर्थात् छारन के बेटों को और लावियों को दूर नहीं किया और देश के जातिगणों की नाई अपने लिये याजक नहीं बनाये यहाँ लों कि जो कोई आप को पवित्र करने के लिये एक बैल और सात भैंसे ले आया सो अदेवों का याजक हुआ । परन्तु हम लोग जो हैं सो परमेश्वर हमारा ईश्वर है और हम ने उसे त्याग नहीं किया है और याजक जो परमेश्वर की सेवा करते हैं सो छारन के बेटे हैं और लावी अपने अपने कार्य पर हैं । और ये परमेश्वर के लिये हर सांभ विधान को बलिदान की भेंट और सुगंध जलाते हैं और पवित्र मंच पर भेंट की रोटी रखते हैं और हर सांभ के लिये सोने की दीश्ट और उन के दीआ समेत क्योंकि हम लोग परमेश्वर अपने ईश्वर के धारने के लिये ठहराये हुए कार्य को पालन करते रहते हैं परन्तु तुम लोगों ने उसे त्याग किया है । और देख परमेश्वर आप सेनाप्रति होने के लिये हमारे संग है और तुम्हारे बिरुद्ध उस के याजक तुरही के शब्दों के साथ चिताने को हैं हे इसराएल के सन्तानो अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के बिरुद्ध संग्राम मत करो क्योंकि तुम लोग भाग्यवान न होओगे ॥
- १३ परन्तु यहविआम ने उन के पीछे घूमके ठूके को बैठवाया यहाँ लों कि १४ वे यहूदाह के आगे और ठूके उन के पीछे हुए । और जब यहूदाह ने पीछे दृष्टि किई तो क्या देखता है कि संग्राम आगे पीछे है और उन्होंने ने परमेश्वर की प्रार्थना किई और याजकों ने तुरहियों से शब्द किया । तब यहूदाह के लोगों ने ललकारा और यहूदाह के ललकारने से यों हुआ कि ईश्वर ने अबियाह के और यहूदाह के आगे से यहविआम को और सारे इसराएल को मारा । और इसराएल के सन्तान यहूदाह के आगे से भाग गये और ईश्वर ने उन्हें उन के हाथ में सौंप दिया । तब अबियाह और उस के लोगों ने बड़ी जूझ से उन्हें १८ जूझाया सो इसराएल में के पांच लाख चुने हुए जन जूझ गये । यों इसराएल के सन्तान उस समय वश में किये गये और यहूदाह के सन्तानों ने इस कारण १९ जय पाया कि उन्होंने ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर पर भरोसा रक्खा । और अबियाह ने यहविआम को खेदा और उससे नगर ले लिये अर्थात् बैतरल और उस के गांव और यासनः और उस के गांव और झफराथम और उस के गांव । २० और अबियाह के दिनों में यहविआम ने फेर खल न पकड़ा और परमेश्वर ने उसे मारा और वह मर गया ॥
- २१ परन्तु अबियाह सामर्थी हुआ और चौदह पत्नियां किई और उससे बार्दिस बेटे और सोलह बेटियां उत्पन्न हुई ॥
- २२ और अबियाह की रही हुई किया और उस की चाल और कहावत क्या ईदू भविष्यवक्ता के टीका में नहीं लिखा है ॥

कोप मीसक के साथ से यरुसलम पर उठेला न जायगा । तथापि वे उस के सेवक ८  
होंगे जिसने वे मेरी सेवा और देशों के राज्यों की सेवा जानें । सो मिस्र का ९  
राजा मीसक यरुसलम के विरुद्ध चढ़ आया और परमेश्वर के मन्दिर का भंडार  
और राजभवन का भंडार ले लिया उस ने सब कुछ ले लिये वस्तु सोने की छानों  
को भी जो सुलेमान ने बनवाई थीं ले गया । और उन की मन्ती रदवियाम १०  
राजा ने पीतल की छालें बनवाई और राजभवन के प्रवेश के पट्टियों के प्रधान  
को सोप दिई । और जब राजा परमेश्वर के मन्दिर में आया करता था तब पहर ११  
आते थे और उन्तें लेके जाते थे और पहर की कोठरी में फेर लाते थे । और जब १२  
उस ने अपने को नम्र किया तब परमेश्वर का कोप उम्मे यहाँ लौ फिरा कि उस  
ने उसे सर्वथा नाश न किया और यहूदाह में भी कुछ भलाई रही ।

सो रदवियाम राजा ने आप को यरुसलम में दृढ़ करके राज्य किया क्योंकि १३  
रदवियाम ने एकतालीस वरस के वय में राज्य करना आरंभ किया और उस ने  
उस नगर में अर्थात् यरुसलम में सब वरस राज्य किया जो परमेश्वर ने हमरागल  
की सारी गोष्टियों में से अपने नाम के लिये चुना था और उस की माता का नाम  
नयमः था जो एक अम्मूनी थी । और उस ने परमेश्वर के खोज में अपना मन १४  
न लगाने से दुराई किई ।

अब रदवियाम की क्रिया की आदि और अंत जहाँ समवेपात्र भविष्यद्वक्ता १५  
के और वंशावली के विषय में बहुत दर्ज के वचन में नहीं लिखा है और रदवियाम  
और यरुदियाम में संग्राम नित्य रहा किया । और रदवियाम ने अपने पितरों में १६  
श्रयन किया और दाऊद के नगर में गाढ़ा गया और उस का बेटा अविषाह उस  
की मन्ती राज्य पर बैठा ।

तेरहवां पृष्ठ ।

यरुदियाम राजा के अठारहवें वरस में अविषाह ने यहूदाह पर राज्य करना १  
आरंभ किया । उस ने यरुसलम में तीन वरस राज्य किया और उस की माता २  
का नाम मीकायाह था जो जियश्रः के ऊरिगल की बेटा थी और अविषाह में  
और यरुदियाम में संग्राम रहा ।

और अविषाह ने चार लाख सदावीर चुने हुए बाढ़ा की गठी हुई सेना से ३  
संग्राम में पांती बांधी और यरुदियाम ने भी उस के विरोध में आठ लाख  
चुने हुए दलबन्त वीरों में संग्राम में पांती बांधी ।

और अविषाह ने समरायम पहाड़ पर जो इफरायम पहाड़ में है खड़ा होके ४  
कहा कि हे यरुदियाम और सारे हमरागल मेरी सुनो । क्या तुम्हें जानने को उचित ५  
नहीं कि परमेश्वर हमरागल के ईश्वर ने हमरागल का राज्य दाऊद को सदा के  
लिये दिया उस को और उस के बेटों को सोन के वाचा के साथ दिया । तथापि ६  
नवात का बेटा यरुदियाम जो दाऊद के बेटे सुलेमान का एक सेवक था उठा  
है और अपने प्रभु के विरोध में फिर गया । और उस की और तुच्छ लोग और ७  
दुष्ट जन के मन्तान एकट्ठे हुए हैं और जब रदवियाम तरुण और कोमल मन था  
और उन का साम्रा न कर सक्ता था तब उन्तों ने आप को सुलेमान के बेटे

सुनो जब लो तुम लोग परमेश्वर के संग हो तब लो यह तुम्हारे संग है और यदि उसे ढूँढ़ोगे तो यह तुम्हें मिलेगा परन्तु यदि उसे त्यागोगे तो यह तुम्हें त्यागोगा । अब बहुत दिन से इसराएल सब्से ईश्वर बिना और बिना शिकार या जक ३ और बिना व्यवस्था थे । परन्तु जब वे अपने दुःख में परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की ओर फिरे और उसे खोजा तो उन से पाया गया । और उन दिनों में जो बाहर अथवा भीतर आया जाता करता था उसे कुछ कुशल न मिलता था परन्तु ६ देशों के सारे निवासियों पर बड़ी बड़ी विपत्ति थी । और जानि जाति से और नगर नगर से चूर्ण किया जाता था क्योंकि ईश्वर ने उन्हें सारे क्षेत्रों से व्याकुल ७ किया । इस लिये तुम पौढ़ देशों और अपने दायों को दुर्बल होने न देखो क्योंकि तुम्हारे कार्य का प्रतिफल मिलेगा ॥

८ और जब असा ने इन बातों को और आदिद भविष्यद्वक्ता की भविष्यवाणी को सुना तो उस ने दियाव पकड़ा और यहूदाह और बिनयमीन के सारे देश में से और उन नगरों में से जो उस ने इसरायम पहाड़ से लिया था घिनित मूर्तियों को दूर किया और परमेश्वर के ओसारे के आगे परमेश्वर की घड़ी दुहराके बनाई । ९ और उस ने सारे यहूदाह और बिनयमीन को और इसरायम में से और मुनस्सी में से और समजन में से परदेशियों को एकट्ठे किया क्योंकि जब उन्होंने ने देखा कि परमेश्वर उस का ईश्वर उस के साथ है तो इसराएल में से बहुतों से उस की १० ओर आये । सो असा के राज्य के पंद्रहवें बरस के तीसरे मास में उन्होंने ने यहूदाह ११ लम में आप को एकट्ठा किया । और जो लूट की वस्तु वे लाये थे उस में से उसी १२ दिन उन्होंने ने परमेश्वर को सात सौ तैल और सात सहस्र भेड़ भेंट चढ़ाई । और उन्होंने ने अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से अपने पिता के ईश्वर परमेश्वर १३ के खोजने के लिये बाचा बांधी । कि जो कोई इसराएल के ईश्वर परमेश्वर को ढूँढ़ने न चाहे सो बधन किया जाय चाहे छोटा चाहे बड़ा चाहे पुरुष चाहे १४ स्त्री होवे । और उन्होंने ने पुकारते हुए और तुराहियों से और सींगों के बड़े शब्द १५ से परमेश्वर के लिये किरिया खाई । और सारे यहूदाह उस किरिया से आनन्दित हुए क्योंकि उन्होंने ने अपने सारे अंतःकरण से किरिया खाई थी और अपनी सारी बाँका से उसे ढूँढ़ा और वह उन से पाया गया और परमेश्वर ने उन्हें चारों ओर से चैन दिया ॥

१६ और असा ने अपनी माता मयकः को रानी के पद से भी अलग किया इस कारण कि उस ने कुंज के तले एक मूर्ति बनाई थी और असा ने उस की मूर्ति १७ को काट डाला और रौंदा और कैदहन नाले के तीर उसे जला दिया । परन्तु कंचे स्थान इसराएल में से दूर न किये गये तथापि असा का मन उस के जीवन १८ भर शुद्ध रहा । और अपने पिता की समर्पण किई हुई वस्तुन को और जो उस ने आप चांदी सेना और पात्र समर्पण किया था वह ईश्वर के मन्दिर में लाया । १९ और असा के राज्य के पैंतीसवें बरस लो संग्राम न हुआ ॥

सोलहवां पृष्ठ ।

२० असा के राज्य के छत्तीसवें बरस इसराएल का राजा बअशा यहूदाह के बिरुद्ध

## चौदहवां पृष्ठ ।

सो अविषाह ने अपने पिताओं में शयन किया और उन्होंने ने दाऊद के नगर १  
में उसे गाढ़ा और उस के घेरे असा ने उस की संतो राज्य किया उस के दिनों  
में देश में उस दरम चैन रहा ॥

और असा ने अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में भला और ठीक किया । क्यों- ३  
कि उस ने ऊपरी वेदियों को और ऊंचे स्थानों को दूर किया और मूर्तिन को  
तोड़ा और कुंजों को काटके गिरा दिया । और यहूदाह को आज्ञा किई कि ४  
परमेश्वर अपने पिताओं के ईश्वर को खोजो और व्यवस्था और आज्ञा को पालन  
करो । और उस ने यहूदाह के सारे नगरों में से ऊंचे स्थान और मूर्त्य की मूर्तिन ५  
को दूर किया और उस के आगे राज्य को चैन मिला ॥

और उस ने यहूदाह में बाहित नगर बनवाये क्योंकि देश में चैन था और ६  
उन दरसों में संग्राम न हुआ क्योंकि परमेश्वर ने उसे चैन दिया था । इस लिये ७  
उस ने यहूदाह को कहा कि जब लो देश हमारे आगे है चलो हम ये नगर  
बनावें और चारों ओर भीत और गुम्मत और फाटक और अड़ंगे बनावें इस  
कारण कि हम ने परमेश्वर अपने ईश्वर का खोजा है हम ने खोजा है और उस  
ने हमें चारों ओर से चैन दिया है सो उन्होंने ने बनाया और सुफल हुए । और ८  
यहूदाह में असा की एक सेना तीन लाख की थी जो फरी और भाला उठाती  
थी और दिनपसीन में से जो ढाल उठाते और धनुष चलाते ये दो लाख अस्सी  
सहस्र थे ये सब के सब दानवन्त थीर थे ॥

और उन के विरुद्ध कूसी शारिक दस लाख की एक सेना जो और तीन सौ ९  
रथों को लेकर मरीसः को आये । तब असा उस के विरुद्ध से निकला और उन्होंने १०  
ने मरीसः के सफात की तराई में संग्राम की पांती बांधी । और असा ने परमे- ११  
श्वर अपने ईश्वर की प्रार्थना किई और कहा है परमेश्वर तेरे लिये कुछ नहीं  
चाहे बहुत से चाहे निर्बलों से सहायता करे सो है परमेश्वर हमारे ईश्वर सहा-  
यता कर क्योंकि हम लोग तुझ पर आशा रखते हैं और तेरे नाम से हम  
मंडली के विरुद्ध जाते हैं सो है परमेश्वर हमारे ईश्वर मनुष्य तेरे विरुद्ध जय न  
पावें । सो परमेश्वर ने असा के और यहूदाह के आगे से कूसियों को मारा और १२  
कूसी भागे । फिर असा और उस के साथी लोगों ने उन्हें ज़िगर लो खेदा १३  
और कूसी ऐसा ध्वस्त हुए कि फेर आप को संभाल न सके क्योंकि वे परमेश्वर  
के आगे और उस की सेना के आगे नष्ट किये गये और ये बहुत सी लूट  
ले गये । और उन्होंने ने ज़िगर की चारों ओर के सारे नगरों को मारा क्योंकि १४  
परमेश्वर का डर उन पर पड़ा और उन्होंने ने सारे नगरों को लूट लिया क्योंकि  
उन में बड़ी लूट थी । और उन्होंने ने छोरों के डेरों को भी मारा और भेड़ों को १५  
और ऊंटों को बहुतार्ई से लेकर यरुसलम को फिरे ॥

## पंद्रहवां पृष्ठ ।

अब ईश्वर का आत्मा आदि के घेरे अजरियाह पर आया । और वह असा ३  
के आगे गया और उसे कहा कि है असा और सारे यहूदाह और दिनपसीन हमारी



लिये परमेश्वर का वचन सुनो मैंने परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे देखा और  
 १९ स्वर्ग की सारी सेना उस के दहिने बायें खड़ी है । तब परमेश्वर ने कहा कि  
 इसराएल के राजा अखिअब को कौन फुसलावेगा जिससे वह चढ़ जावे और  
 रामतजिलिअद में मारा जावे तब एक ने इस रीति का वचन कहा और दूसरे  
 २० ने उस रीति का । तब एक आत्मा बाहर आके परमेश्वर के सन्मुख खड़ा होके  
 २१ बोला कि मैं उसे फुसलाऊंगा तब परमेश्वर ने उससे पूछा कि किस बात से । तब  
 उस ने कहा कि मैं निकलूंगा और उस के सारे भविष्यद्वक्ताओं के मुंह में मिथ्यावादी  
 आत्मा हाऊंगा तब उस ने कहा कि तू फुसलावेगा और उस पर प्रवल भी होगा  
 २२ जा और वैसा कर । सो अब देख परमेश्वर ने तेरे इन भविष्यद्वक्ताओं के मुंह में  
 मिथ्यावादी आत्मा डाला है और परमेश्वर ने तेरे विरुद्ध जुग कहा है ॥

२३ तब कननियाह का बेटा सिदकयाह पास आया और मीकायाह के गाल पर  
 थपेड़ा मारा और कहा कि परमेश्वर का आत्मा तुम्हें कहने को मेरे पास से  
 २४ किधर से गया । और मीकायाह ने कहा कि देख तू उस दिन देखेगा जब तू  
 आप को छिपाने को भीतर की कोठरी में छुसेगा ॥

२५ तब इसराएल के राजा ने कहा कि मीकायाह को लेओ और उसे नगर के  
 २६ अध्यक्ष अमून पास और राजकुमार यूआश पास फेर ले जाओ । और कहा कि  
 राजा यों कहता है कि इसे बन्धन में रखो और जब लों में कुशल से फिर न  
 २७ आऊं इसे कष्ट की रोटी और कष्ट का जल दिया करो । और मीकायाह ने कहा  
 कि यदि तू निश्चय कुशल से फिर आवे तो परमेश्वर ने मेरे द्वारा से नहीं कहा  
 और उस ने कहा कि हे सारे लोगो सुन रखो ॥

२८ तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफत रामतजिलिअद को  
 २९ चढ़ गये । और इसराएल के राजा ने यहूसफत को कहा कि मैं भेप बदलके  
 संग्राम में जाऊंगा परन्तु तू राजबस्त्र पहिन सो इसराएल के राजा ने भेप पलटा  
 ३० और वे संग्राम को गये । अब अराम के राजा ने अपने साथ के रथपतिन को  
 यह कहके आज्ञा किई थी कि केवल इसराएल के राजा को छोड़ तुम छोटे  
 ३१ बड़े से मत युद्ध करना । और यों हुआ कि जब रथपतिन ने यहूसफत को देखा  
 तो बोले कि यह इसराएल का राजा है इस लिये उन्होंने ने लड़ने के लिये उसे  
 घेरा परन्तु यहूसफत चिल्ला उठा और परमेश्वर ने उस का उपकार किया और  
 ३२ ईश्वर ने उन्हें उल्टे फेर दिया । क्योंकि ऐसा हुआ कि जब रथपतिन ने देखा कि  
 ३३ यह इसराएल का राजा नहीं है तब वे उस के पीछे से हट गये । फिर एक जन  
 ने धनुष पर बाण साजके इसराएल के राजा को बिना जाने मिलम के और जोड़  
 के मध्य में मारा इस लिये उस ने अपने सारथी को कहा कि बाग फेर दे जिससे  
 ३४ मुझे सेना में से बाहर ले जावे क्योंकि मुझे घाव लगा है । और उस दिन संग्राम  
 बढ़ा तथापि सांझ लों इसराएल का राजा अरामियों के विरुद्ध अपने रथ पर  
 थमा रहा और सूर्य के अस्त होते होते मर गया ॥

उन्नीसवां पृष्ठ ।

१ और यहूदाह का राजा यहूसफत कुशल से यहूसलम में अपने घर गया ।

चढ़ आया और रामः को बनाया जिसमें यहूदाह के राजा अमा कने कोई जाने न पाये ॥

तब अमा ने परमेश्वर के मन्दिर के और राजा के भयन के भंडारों में से चांदी २ और सोना बाहर किया और अराम के राजा यिनहदद पास जो दमिश्क में रहता था कहला भेजा । कि मेरे और तेरे मध्य ऐसा मेल हो जैसा मेरे और तेरे पिता ३ में था देखिये मैं ने तेरे पास सोना और चांदी भेजी है सो आके इसराएल के राजा दशशा से बाबा को तोड़ जिसमें यहू-मुक्त से फिर जाये । तब यिनहदद ने अमा ४ राजा की बात सुनी और इसराएल के नगरों के विरुद्ध अपने सेनापतिन को भेजा और उन्होंने ने सेयून और दान और अवीलमायम और नफताली के सारे भंडार-नगरों को ले लिया ॥

और ऐसा हुआ कि जब दशशा ने सुना तब रामः का बनाना छोड़ दिया ५ और अपने कार्य से बस गया । फिर अमा राजा ने सारे यहूदाह को लिया और ६ वे रामः के पत्थरों को और लट्टों को ले गये जिन्हों से दशशा रामः बनाता था और उस ने उन से जियत्र और मिसफा बनाये ॥

और उस समय दन्नानी दर्शा ने यहूदाह के राजा अमा पास आके उससे कहा ७ तू ने जो अराम के राजा पर आशा रखी है और अपने ईश्वर परमेश्वर पर आशा नहीं रखी है इस लिये अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से बच निकली है । क्या कूशी और लूवीनों बहुतार्ह से सेना और अति बहुत रथ और घोड़चढ़े को ८ लिये हुए न थे तथापि तू ने जो परमेश्वर पर आशा रखी थी उस ने उन्हें तेरे हाथ में सौंप दिया । क्योंकि परमेश्वर की आंग्रं सारी पृथिवी में आरंभार ९ उधर दौड़ती हैं जिसमें उन के लिये आप को बनवन्त दिग्वात्रे जिन का मन उस की ओर मिट्ट है इस में तू ने मूर्खता किई है हम लिये अब मे तेरे साथ लड़ाई होगी । तब अमा उस दर्शा पर कोपित हुआ और उसे वंदीगृह में डाला क्योंकि १० वह इस बात के लिये उससे कोपित हुआ और उसी समय अमा ने लोगों में से कितनों को सताया ॥

अब देखो अमा की क्रिया आदि से अंत लो यहूदाह के और इसराएल के ११ राजावली की पुस्तक में लिखी है ॥

और अमा के राज्य के उतालीमर्वे वरम में उस के पांय में रोग हुआ यहाँ १२ लो कि उस का रोग अति हुआ तथापि अपने रोग में उस ने परमेश्वर को न खोजा परन्तु वैद्यों को । और अमा ने अपने पितरों में शयन किया और अपने १३ राज्य के एकतालीमर्वे वरम मर गया । और उन्होंने ने उसे उसी के समाधि में १४ जो उस ने अपने लिये दाऊद के नगर में खोदी थी गाढ़ा और उसे विलीने पर रक्खा जो नाना प्रकार के सुगंध द्रव्य से भरा हुआ था जिसे वैद्यों ने सिद्ध किया था और उन्होंने ने उस के लिये बड़ी आग बारी ॥

सत्रहवां पद्य ।

और उस के बेटे यहूमफत ने उस की संती राज्य किया और इसराएल के विरुद्ध १ अपने को दृढ़ किया । और यहूदाह के सारे बाह्य नगरों में उस ने योद्धा रक्खे २

- प्रभुता नहीं करता और तेरे हाथ में क्या पराक्रम और सेवा थल नहीं कि कोई  
 ७ तेरा साम्रा नहीं कर सक्ता । क्या तू हमारा ईश्वर नहीं जिस ने अपने हमराएल  
 लोगों के आगों से हम देश के निवासियों को खेद दिया और हम अपने मित्र  
 ८ अद्विष्टात्म के घंश को सदा के लिये नहीं दिया । और वे हम में हमें और यह  
 ९ कहके तेरे नाम के लिये हम में एक पवित्रस्थान बनाया । कि यदि युवाएँ जैसा  
 कि तलवार अथवा विचार का दंड अथवा मरी अथवा अकाल आदिक हम पर  
 आ पड़े और हम इस मन्दिर के आगे और तेरे माशात रहें तो क्योंकि तेरा  
 नाम इस मन्दिर में है और हम अपने दुःख में तेरे आगे प्रार्थना करें तब तू  
 १० मुनके सहाय करेगा । और अध अम्मून के सन्तान का और मोअथ का और शई  
 पर्यत को देख जिसने तू ने हमराएल का साथ वे भिन के देश से निकल आये  
 ११ घेरने न दिया परन्तु वे उन में फिर गये और उन्हें नष्ट न किया । मो देख वे  
 हमें यह प्रतिफल देते हैं कि हमें उस अधिकार में जो तू ने हमें भोग करने का  
 १२ दिया है निकाल देने का छड़ आये हैं । हे हमारे ईश्वर क्या तू उन का विचार  
 न करेगा क्योंकि इस वही जगह के विरुद्ध जो हम पर छड़ आते हैं हम कुछ  
 थल नहीं रखते और क्या करें मो भी नहीं जानते परन्तु हमारी आँखें तुझ पर हैं ॥  
 १३ और सारे यहूदाह अपने बालकों और अपनी स्त्रियों और सन्तान समेत परमेश्वर  
 १४ के आगे खड़े हुए । तब आमफ के घंटों में का एक लायी अर्थात् नतनिपाह के  
 घंटे यईगल के घंटे विनायाह के घंटे जकरियाह के घंटे यहाजिगल पर परमेश्वर  
 १५ का आत्मा मंडली के मध्य में उतरा । और उन ने कहा कि हे सारे यहूदाह और  
 यहसलम के वासियों और यहसलम राजा तुम मेरी सुना परमेश्वर तुम्हें यह कहता  
 है कि तुम इस बड़ी मंडली से मत डरो अथवा विस्मित मत होओ क्योंकि संग्राम  
 १६ तुम्हारा नहीं परन्तु ईश्वर का । उन के विरुद्ध कल उतरो देखो वे सीस के  
 चढ़ाव से आते हैं और तुम जटायल धन के आगे नाली के तीर उन्हें पाओगे ।  
 १७ इस में तुम्हें लड़ने न पड़ेगा तब होके खड़े होओ और हे यहूदाह और यहसलम  
 परमेश्वर की सुक्ति को अपने संग देखो मत डरो और विस्मित मत होओ कल  
 १८ उन के विरुद्ध निकलो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे संग है । और यहूदफत ने भूमि  
 पर झुकके प्रणाम किया और सारे यहूदाह और यहसलम के वासियों ने परमेश्वर  
 १९ के आगे गिरके परमेश्वर की सेवा की । और किहानों के सन्तान कुरही के सन्तान  
 लावी इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की स्तुति कंच स्वर से करने को खड़े हुए ॥  
 २० और वे भीर को उठके तकुथ के धन को गये और उन के जाते जाते यहूदफत  
 ने खड़ा होके कहा कि हे यहूदाह और यहसलम के वासियों मेरी सुना परमेश्वर  
 अपने ईश्वर पर विश्वास रखो और तुम स्थिर किये जाओगे उस के भविष्य-  
 २१ वृत्तों की प्रतीति करो जिसने तुम भाग्यवान् होओ । और जब उस ने लोगों के  
 साथ परामर्श किया तब उस ने परमेश्वर के लिये गायकों और पवित्रता की  
 सुन्दरता की स्तुति करवैयों को ठहराया कि सेना के आगे आगे यह कहते  
 हुए चलें परमेश्वर की स्तुति करो क्योंकि उस की दया सदा लों है ॥  
 २२ और गाने और स्तुति करने के समय परमेश्वर ने अम्मून के सन्तानों के और

और हनानी का बेटा याहू दर्जी उस की भेंट को निकला और यहूसफत राजा २  
से कहा कि क्या उचित था कि तू अधर्मी की सहाय करे और परमेश्वर के धैरी  
से प्रेम करे सो इस लिये परमेश्वर के आगे मे तुझ पर कोप है । तथापि तुझ में ३  
कुछ भला कार्य पाया गया है क्योंकि तू ने देश में से कुंजों को दूर किया और  
ईश्वर की खोज के लिये अपना मन सिद्ध किया है ॥

और यहूसफत ने यहूसलम में वास किया और फिरके विश्वरमय्य में इफरायम ४  
पर्वत लों लोगों में से गया और उन्हें परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर की ओर  
फेर लाया । और उस ने देश में यहूदाह के सारे बाढ़ित नगरों में नगर नगर ५  
न्यायियों को बैठाया । और न्यायियों को कहा कि अपने अपने काम में चौकस  
रहो क्योंकि तुम मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु परमेश्वर के लिये जो न्याय की बात ६  
में तुम्हारे साथ है न्याय करते हो । सो अब परमेश्वर का भय तुम पर होवे कि ७  
जो कुछ करो सो चौकस होके करो क्योंकि परमेश्वर हमारे ईश्वर के संग कोई  
दुष्टता अथवा अधर अथवा पक्ष अथवा प्रकार लेना नहीं है । और अब वे यहू- ८  
सलम को फिर तब यहूसफत ने परमेश्वर के विचार के लिये और विवाद के लिये  
यहूसलम में लावियों को और याजकों को और इसराएल के पितरों के प्रधानों  
को ठहराया । और उन्हें यह कहके आज्ञा किई कि यों परमेश्वर के भय में ९  
विश्वास से और अन्तःकरण की सिद्धता से करो । और जो कुछ लोहू और लोहू १०  
के मध्य व्यवस्था और आज्ञा और विधि के और विचार के मध्य तुम्हारे भाइयों  
के विषय में जो उन के नगरों में बसते हैं जो बात तुम पास आये तुम उन्हें  
चित्ता देना कि वे परमेश्वर के विरुद्ध अपराध न करें और कोप तुम पर और  
तुम्हारे भाइयों पर न पड़े यही करो और तुम अपराध न करोगे । और देखो ११  
परमेश्वर की सारी बातों में तुम पर अनरियाह प्रधान याजक है और राजा की  
सारी बातों में इसमअएल का बेटा यहूदाह के घराने का प्रधान जयदियाह और  
तुम्हारे आगे लावी प्रधान होंगे दियाव से कार्य करो और परमेश्वर भले के  
साथ होगा ॥

### धीमघां पर्व ।

और इस के पीछे ऐसा हुआ कि मोअब के मन्तान और अम्मून के मन्तान १  
और उन के साथ बहुत से लोग अम्मूनीयों को छोड़ यहूसफत के विरुद्ध संग्राम  
करने को आये । तब कितनों ने आके यहूसफत से यह कहके सन्देश दिया कि २  
अराम के इस अलंग के समुद्र पार से एक बड़ी मंडली तुम्हारे विरुद्ध में आती  
है और देख वे इसमूनतमर में हैं जो सेनजदी है । और यहूसफत डर गया और ३  
परमेश्वर की खोज को अपना रुख किया और यहूदाह के सर्वत्र व्रत प्रचारा ।  
और परमेश्वर से सहाय मांगने के लिये सारे यहूदाह एकट्ठे हुए अर्थात् यहूदाह ४  
के सारे नगरों में से परमेश्वर की खोज को आये ॥

और यहूसफत परमेश्वर के मन्दिर में नवे आंगन के आगे यहूदाह और यहू- ५  
सलम की मंडली के मध्य खड़ा हुआ । और कहा कि हे परमेश्वर हमारे पितरों ६  
के ईश्वर क्या स्वर्ग में तू ईश्वर नहीं और अन्यदेशियों के सारे राज्यों पर

- २ और उस के भाई यहूसफत के बेटे अजरियाह और यहिएल और जकरियाह और अजरियाह और मीकाएल और सफतियाह थे ये सब इसराएल के राजा
- ३ यहूसफत के बेटे थे । और उन के पिता ने बहुत चांदी और सोना और बहुमूल्य वस्त्र और यहूदाह में बाढ़ित नगर उन्हें दिये परन्तु उस ने राज्य यहूराम को
- ४ दिया क्योंकि वह पहिलौठा था । और जब यहूराम ने अपने पिता के राज्य को पाया तब उस ने आप को दृढ़ करके अपने सारे भाइयों को और इसराएल के बहुत से अध्यक्षों को तलवार से घात किया ॥
- ५ यहूराम ने बत्तीस बरस का होके राज्य करना आरंभ किया और यरुसलम में ६ आठ बरस राज्य किया । और अखिअव के घराने के समान वह इसराएल के राजाओं की चाल पर चलता था क्योंकि अखिअव की बेटी उस की पत्नी थी
- ७ और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में दुराई कीई । तथापि उस वाचा के जो उस ने दाऊद से बांधी थी और उसे और उस के बेटों को सदा के लिये एक ज्योति देने की प्रतिज्ञा के कारण से परमेश्वर ने दाऊद के घराने को नाश करने न चाहा ॥
- ८ उस के दिनों में अदूमी यहूदाह के वंश से फिर गये और अपने लिये एक राजा बनाया । तब यहूराम अपने अध्यक्षों को और अपने सारे रथ साध लेके बाहर निकला और रात ही को उठके अदूमियों को और घपतिन को जो उसे
- ९ घरे हुए थे मारा । सो अदूमी आज लों यहूदाह के वंश से फिर हैं उसी समय लिबना भी उस के हाथ से फिर गया क्योंकि उस ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को त्याग किया ॥
- १० उस ने भी यहूदाह के पर्वतों पर ऊंचे जंचे स्थान बनाये और यरुसलम के
- ११ बासियों से और यहूदाह से व्यभिचार करवाया । और इलियाह भविष्यद्वक्ता के पास से यह कहके लिखा हुआ उस पास आया कि तेरे पिता दाऊद का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू अपने पिता यहूसफत की चालों पर
- १२ और यहूदाह के राजा असा की चालों पर न चला । परन्तु इसराएल के राजाओं की चाल पर चला है और अखिअव के घराने के छिनालों के समान यहूदाह से और यरुसलम के बासियों से छिनाला करवाया है और अपने पिता के घराने के
- १३ अपने भाइयों को जो तुझ से भले थे तू ने घात किया । देख परमेश्वर तेरे लोगों को और तेरे बालकों और तेरी पत्नियों को और तेरी सारी संपत्ति को बड़ी मार
- १४ से मारेगा । और तू अपनी अंतड़ियों के रोग से ऐसा रोगी होगा कि रोग के मारे तेरी अंतड़ियां प्रतिदिन निकलती रहेंगी ॥
- १५ और परमेश्वर ने यहूराम के बिरुद्ध फिलिस्तियों को और अरबियों को और
- १६ आसपास के कूसियों को उभारा । और वे यहूदाह पर सड़ आये और उसे तोड़के राजभवन में सारी संपत्ति जो पाई गई और उस के बेटों को भी और उस की पत्नियों को ले गये यहां लों कि उस के बेटों में लहुरे यहूअखज को छोड़ उस के
- १७ किसी बेटे को न छोड़ा । और इस सब के पीछे परमेश्वर ने उस की अंतड़ियों
- १८ के असाध्य रोग से उसे मारा । और दो बरस बीतने के समय में यों हुआ कि उस के रोग के मारे उस की अंतड़ियां निकल पड़ीं और वह बड़े बड़े रोगों से मरा

मोअय के और गर्दर पर्वत के जो यहूदाह के विरुद्ध आये थे ठुकिये वैठाये और वे सारे गये । क्योंकि अम्मन के सन्तान और मोअय मर्घया मार डालने और नष्ट २३ करने को गर्दर पर्वत के दामियों के विरुद्ध उठे और जब उन्होंने ने गर्दर के दामियों को समाप्त किया तो आपुस के नाश में सहायक हुए ॥

और जब यहूदाह धन में चौकी के गुम्मत लो आये तब उन्हे ने मंडली २४ की और ताका और व्या देखते हैं कि लोथ भूमि पर पड़ी हैं और कोई न वस्त्रा । और जब यहूमफत और उस के लोग उन्हे लूटने को आये तब उन्हे ने २५ उन में धन और बहुसुल्य सणि बहुताई से पाये जो उन्हे ने अपने लिये यहाँ लो लोथों में से उतारा कि ले जा न सके थे और इतने थे कि उन्हे तीन दिन लो लूट बटोरते लगा । और चौथे दिन वे दरकः की तराई में एकट्ठे हुए क्योंकि २६ उन्हे ने यहाँ परमेश्वर को धन्य माना इस लिये आज लो यह स्थान दरकः की तराई कहाना है ॥

तब यहूदाह के और यरुसलम के सारे लोग फिरे और उन के आगे आगे २७ यहूमफत जिमते आनन्द के साथ यरुसलम को लौटे क्योंकि परमेश्वर ने उन के वैरियों पर उन्हे आनन्द करवाया । और वे नयल और वीणा और तुरतियों को २८ लिये हुए यरुसलम के परमेश्वर के मन्दिर में आये । और जब उन देशों के सारे २९ राजाओं ने सुना कि परमेश्वर इसराएल के वैरियों के विरुद्ध लड़ा तब ईश्वर का डर उन पर पड़ा । सो यहूमफत के राज्य पर धन हुआ क्योंकि उस के ईश्वर ने ३० धारों और से उसे चैन दिया ॥

और यहूमफत ने यहूदाह पर राज्य किया जब यह राज्य करने लगा तब पैंतीस ३१ वरम का था और उस ने यरुसलम में पचीस वरम राज्य किया और उस की माता का नाम अजूयः जो शिलहो की बेटी थी । और वह अपने पिता असा की चाल ३२ पर चलता था और जो परमेश्वर की दृष्टि में भला था उन्हे पालन में न फिरा । तथापि जेबे स्थान दूर न किये गये थे क्योंकि अब लो लोगों ने अपने पितरों के ३३ ईश्वर की और अपने मन को मिट्ट न किया था ॥

और यहूमफत की रही हुई क्रिया आदि और अंत देखो वे छनानी के बेटे ३४ याहू के वचन में जो इसराएल की राजाओं की पुस्तक में उठाया गया है लिखी हैं ॥

और उस के पीछे यहूदाह का राजा यहूमफत इसराएल के राजा अखजयाह ३५ से मिल गया जिस ने बड़ी दुष्टता किई । और तस्मीस को लाने के लिये जहाज ३६ बनाने को उससे मिल गया और उन्हे ने अमयूनजन्न में जहाज बनाये । तब ३७ सरीमाई दोदाया के बेटे दालअजर ने यहूमफत के विरुद्ध यह भविष्य कहा इस कारण कि तू अखजयाह से मिल गया परमेश्वर ने तेरे कार्यों को तोड़ दिया है और जहाज तोड़े गये कि वे तस्मीस को न जा सकें ।

एकौसवां पर्व ।

अब यहूमफत ने अपने प्रियरों में शपथ किया और अपने पितरों में दाऊद के ९ नगर में गाढ़ा गया और उस के बेटे यहूराम ने उस की सन्ती राज्य किया ॥



१२ छिपाया यहाँ लों कि उस ने उसे घात न किया । और वह उन के साथ ईश्वर के मन्दिर में लः वरम लों छिपा रहा और अतलीयाह ने देश पर राज्य किया ॥  
तेईमवां पद्य ।

१ और सातवें वरम में यहूयदः ने आप को दृढ़ किया और शतपतियों को अर्थात्  
यरुहाम के बेटे अजरियाह को और यहूहनान के बेटे इसमशरल को और  
आविद के बेटे अजरियाह को और अदायाह के बेटे मशमियाह को और जिकरी  
२ के बेटे इलिसफत को याचा में अपने साथ लिया । और वे यहूदाह में फिर गये  
और यहूदाह के सारे नगरों में से लावियों को और इसरायल के पितरों के प्रधानों  
३ को एकट्ठे किया और वे यम्मलम में आये । और सारी मंडली ने परमेश्वर के  
मन्दिर में राजा के साथ वाचा बांधी और उस ने उन्हें कहा कि देखो जैसा  
कि परमेश्वर ने दाऊद के बेटों के विषय में कहा था कि राजा का बेटा राज्य  
४ करेगा । तुम यह काम करो विश्राम में भीतर जाने में लावी के और याजकों के  
५ तीसरे भाग डेवदियों के द्वारपालक दार्वे । और तीसरे भाग राजा के भवन में  
और तीसरे भाग नैत्र के फाटक में और सारे लोग परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों  
६ में । परन्तु याजक और लावी मंत्रकों का कोई कोई परमेश्वर के मन्दिर में आने  
न पावे वे भीतर जावे क्योंकि वे पवित्र हैं परन्तु सारे लोग परमेश्वर के चौकी  
७ की रक्षा करें । और लावियों का हर एक जन दशियार हाथ में लेके राजा को  
चारों ओर से घेरे और जो कोई मन्दिर में आवेगा सो मारा जावेगा परन्तु राजा  
के बाहर भीतर आने जाने में तुम लोग उस के साथ रहे ॥

८ सो लावी और सारे यहूदाह ने यहूयदः याजक की सारी आज्ञा के समान  
किया और हर एक ने अपने अपने जन को लिया जिन्हें विश्राम में भीतर जाना  
था उन के साथ जिन्हें विश्राम में बाहर जाना था क्योंकि यहूयदः याजक ने  
९ पारीवालों को विदा न किया था । इससे अधिक यहूयदः याजक ने दाऊद  
राजा की बरखी और फरी और ठाल जो ईश्वर के मन्दिर में थीं शतपतियों को  
१० सौंप दिवें । और उस ने हर एक जन को हाथ में दशियार लिये हुए मन्दिर  
की दाहिनी बाईं ओर यज्ञवेदी और मन्दिर के पास राजा की चारों ओर सारे  
११ लोगों को खड़ा किया । फिर वे राजपुत्र को बाहर ले आये और उस पर मुकुट  
रक्खा और साक्षी देके उसे राजा किया और यहूयदः और उस के बेटों ने उसे  
अभिषेक किया और कहा कि राजा जीता रहे ॥

१२ जब अतलीयाह ने लोगों के दौड़ने का और राजा की स्तुति का शब्द सुना  
१३ तब वह परमेश्वर के मन्दिर में लोगों के पास आई । और ताकके क्या देखती  
है कि राजा पैठ में खंभे के लग खड़ा है और अध्वर्य और तुरही राजा के लग  
और देश के सारे लोगों ने आनन्द किया और तुरहियों से और गायक भी बाजों  
को लेके और जो स्तुति गाने को सिखाते थे शब्द किया तब अतलीयाह ने अपने  
१४ वस्त्र फाड़के कहा कि कल है कल है । तब यहूयदः याजक सेना के शतपतियों  
को निकाल लाया और उन्हें कहा कि उसे सिवाने से बाहर करो और जो कोई  
उस के पीछे जावे सो तलवार से मारा जावे क्योंकि याजक ने कहा था कि

और उस के लोगों ने उस के पित्रों के जलाने के समान उस के लिये नहीं जलाया । जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तब वह बर्तीस वरम का था २० और उस ने यरुसलम में आठ वरम राज्य किया और बिना आदर सर गया तथापि उन्हीं ने दाऊद के नगर में उसे गाढ़ा परन्तु राजाओं की समाधि में नहीं ।

बाईसवां पृष्ठ ।

और यरुसलम बाईसियों ने उस की सन्ती उस के लहुरे बेटे अखजयाह को १ राजा किया क्योंकि अरबियों के साथ जो जया कावनी में आई थी उन्हीं ने सारे जेष्टों का घात किया था सो यहूदाह के राजा यहूराम के बेटे अखजयाह ने राज्य किया । अखजयाह ने दयानीस वरम का छोटे राज्य करना आरंभ किया २ और उस ने यरुसलम में एक वरम राज्य किया और उस की माता का नाम अतलीयाह उसरी की बेटा था । वह भी अखियव के घराने की चानों पर चलता ३ था क्योंकि कुकर्म करने के लिये उस की माता उस की मंत्री थी । इस लिये उस ने अखियव के घराने के समान परमेश्वर की दृष्टि में दुराई कीई क्योंकि उस के पिता के मरने के पीछे उस के नाश के लिये ये उस के मंत्री थे । वह उन के मंत्र के ५ समान भी चलता था और इसराएल के राजा अखियव के बेटे यहूराम के साथ अराम के राजा हजाएल के विरुद्ध युद्ध करने को रासताजिलियह में गया और अरबियों ने यहूराम को मारा । और वह घावों के कारण जिस्ने उन्हीं ने ६ रामः में उसे घायल किया जब वह अराम के राजा हजाएल के साथ लड़ा था वह चंगा होने को यजरअएल को फिर आया और यहूदाह के राजा यहूराम का बेटा अजरियाह अखियव के बेटे यहूराम को देखने के लिये यजरअएल को उतरा क्योंकि वह रोगी था । और अखजयाह का लताड़ा जाना यहूराम करने आने के ७ लिये ईश्वर की ओर से था क्योंकि वह आके यहूराम के साथ निमसी के बेटे याहू के विरुद्ध उतरा जिसे परमेश्वर ने अखियव के घराने का काट डालने के लिये अभिप्रेक किया था । और ऐसा हुआ कि जब याहू अखियव के घराने पर ८ दंड देता था तो यहूदाह के अधीशों की और अखजयाह के भाइयों के बेटों की जो अखजयाह की सेवा करते थे पाया और उस ने उन्हें घात किया । और उस ने अखजयाह को हूँडा और उन्हीं ने उसे पकड़ा क्योंकि वह समझन में लिपा था ९ और उसे याहू पास लाये और उन्हीं ने उसे घात करके गाढ़ा क्योंकि उन्हीं ने कहा कि वह यहूमफत का बेटा है जिस ने अपने सारे मन से परमेश्वर की खोज कीई सो अखजयाह के घराने का राज्य रखने का मासर्ग न था ।

परन्तु जब अखजयाह की माता अतलीयाह ने देखा कि सारा बेटा सर गया १० तो उस ने उठके यहूदाह के घराने के सारे राजवंशों का नाश किया । परन्तु ११ राजकन्या यहूमवअत ने अखजयाह के बेटे यहूआश को लिया और राजा के बेटों में से जो घात किये जाते थे चुगाया और उसे और उस की दाई को एक शयन-स्थान की कोठरी में रखवा इस गीति से यहूयदः याजक की पत्नी यहूराम राजा की बेटा यहूमवअत ने क्योंकि वह अखजयाह की अर्चन थी उसे अतलीयाह से

१० श्री सेा परमेश्वर के लिये भीतर लावे । और सारे अध्यक्ष और सारे लोग आनन्द  
 ११ से लाये और मंजूषा में डालते रहे जब लों वे पूरा न कर चुके । अब ऐसा हुआ  
 कि जब लावियों के हाथ से मंजूषा राजा के भंडार में पहुंचाई गई और जब  
 उन्होंने ने बहुत रोकड़ देखा तब राजा की लेखक और सहायाजक का एक प्रधान  
 आके मंजूषा को कुंकी करते थे और फेर ले जाके उसी स्थान में रखते थे वे  
 १२ प्रतिदिन ऐसा ही करते थे और बहुतार्ह से रोकड़ बढेरा । फिर राजा ने और  
 यहुयदः ने उसे परमेश्वर के मन्दिर के कार्यकारियों को दिया और परमेश्वर का  
 मन्दिर सुधारने के लिये उन्हीं ने गवहियों को और बड़हियों को दिया और पर-  
 मेश्वर का मन्दिर बनाने के लिये लोहारों को और ठठेरों को लोहा और तांबा  
 १३ दिया । तब कार्यकारियों ने कार्य किया और उन से कार्य बन गया और उन्हीं  
 १४ ने ईश्वर के मन्दिर को ठिकाने में लाके ठिक किया । और वे बनाके चढी हुई  
 रोकड़ राजा के और यहुयदः के आगे लाये और वस्से परमेश्वर के मन्दिर के  
 लिये पात्र बनवाये गये अर्थात् सेवा के पात्र और बलिदान के पात्र और करहुल  
 और सोने चांदी के पात्र और यहुयदः के जीवन भर वे नित्य परमेश्वर के मन्दिर  
 में बलिदान की भेंट चढ़ाते थे ॥

१५ परन्तु यहुयदः बृद्ध हुआ और दिन का पूरा होके मर गया और मरने के समय  
 १६ वह एक सौ तीस वरस का था । और उन्हीं ने उसे दाऊद के नगर में राजाओं  
 में गाड़ा क्योंकि उस ने परमेश्वर की और उस के मन्दिर की और इसराएल में  
 भला किया था ॥

१७ अब यहुयदः के मरने के पीछे यहूदाह के अध्यक्षों ने आके राजा को प्रणाम  
 १८ किया तब राजा ने उन की बात मानी । और वे अपने पितरों के ईश्वर परमे-  
 श्वर के मन्दिर को त्याग करके कुंजों की और मूर्तियों की पूजा करने लगे और  
 १९ उन के इस अपराध के लिये यहूदाह पर और यरुसलम पर कोप पड़ा । तथापि  
 उस ने भविष्यद्वक्ताओं को उन पास भेजा कि उन्हें परमेश्वर की और फेरें और उन्हीं ने  
 २० उन्हें जताया परन्तु उन्हीं ने उन की न मानी । फिर ईश्वर का आत्मा यहुयदः  
 याजक के बेटे जकरियाह पर आया और उस ने ऊपर खड़ा होके लोगों से कहा  
 कि ईश्वर यों कहता है कि तुम लोग परमेश्वर की आज्ञाओं को क्यों उल्लंघन  
 करते हो तुम लोग भाग्यवान नहीं हो सक्ते हो तुम ने जो परमेश्वर को त्यागा  
 २१ है इस कारण उस ने तुम्हें भी त्याग किया है । तब उन्हीं ने उस के विरुद्ध  
 युक्ति बांधके राजा की आज्ञा से परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में पत्थरखाह  
 २२ करके उसे मार डाला । यों यूआश राजा ने उस के पिता यहुयदः की कृपा की  
 जो उस ने उस पर किई थी स्मरण न किया परन्तु उस के बेटे को घात  
 किया और मरने के समय में उस ने कहा कि परमेश्वर इस पर दृष्टि करके  
 पलटा लेवे ॥

२३ और जब एक वरस बीत गया तो ऐसा हुआ कि अराम की सेना उस के  
 विरुद्ध में चढ़ आई और वे यहूदाह में और यरुसलम में आये और लोगों में से  
 सारे अध्यक्षों को नष्ट किया और उन की सारी लूट, दमिश्क के राजा, पास

परमेश्वर के मन्दिर में उसे घात मल करो । सो उन्होंने ने उस पर दाय डाले १५ और सब यह घोड़फाटक के पैठ लों जो राजा के भवन के लग था पहुँची तो उन्होंने ने उसे वहाँ घात किया ॥

फिर यहूयदः ने अपने मध्य में और सारे लोगों के मध्य में और राजा के १६ मध्य में दावा दाँधी लिखते वे परमेश्वर के लोग दार्वे । तब सारे लोग यशल १७ के मन्दिर में गये और उसे तोड़ डाना और उस की वेदियों को और उस की मूर्तियों को टुकड़े टुकड़े किये और यशल के याजक मत्तान को वेदियों के आगे घात किया । और मूसा की दण्डस्या के लिखने के समान जैमा दाऊद ने परमेश्वर १८ के मन्दिर में अलग अलग ठहराया था जैमा यहूयदः ने लावी याजकों के दायों से परमेश्वर के बलिदान की भेंटें चढ़ाने के लिये गाने और आनन्द करने हुए दाऊद के ठहराने के समान ठहराया । और उन ने परमेश्वर के मन्दिर के १९ फाटकों पर द्वारपालों को बैठाया जिसमें जो कोई किमी घात में अपवित्र होवे सो भीतर जाने न पावे । और उन ने जतपतिणों को और कुर्नानों को और लोगों २० के अध्यतों को और देज के सारे लोगों को लिया और राजा को परमेश्वर के मन्दिर में ले आये और बड़े फाटक से होके राजभवन में आये और राजा को राज्य के सिंहासन पर बैठाया । और अतर्नीयाह को तलवार से घात करने के २१ पीछे देज के सारे लोगों ने आनन्द किया और नगर में चैन हुआ ॥

चौथीसवां पर्व ।

यूआश ने मात वरम की वय में राज्य करना आरंभ किया और उन ने यहू- १ सलम में चालीस वरम राज्य किया और उस की माता का नाम जियिया था जो विश्रसबय की थी । और यहूयदः याजक के जीवन भर यूआश ने परमेश्वर की २ दृष्टि में भलाई की । और यहूयदः ने उस के लिये दो पवित्रां कर दिये और ३ उससे बेटे और बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

और वस के पीछे ये हुआ कि यूआश ने परमेश्वर के मन्दिर को नवीन करने ४ चाहा । और उन ने याजकों को और लावियों को एकट्ठा करके उन्हें कहा कि यहूदाह के नगरों में जाओ और सारे इमगर्लियों से वरम वरम परमेश्वर का मन्दिर सुधारने के लिये रोकड़ एकट्ठा करो और देगो कि यह घात शीघ्र होवे तथापि लावियों ने शीघ्र न कीई ॥

और राजा ने प्रधान यहूयदः को बुलाके उसे कहा कि परमेश्वर के दास मूसा के ५ और इसराएल की मंडली के कहे के समान सादी के तंबू के लिये तू ने लावियों से क्यों नहीं चाहा कि यहूदाह में से और यहूसलम में से बेहरी लावे । क्योंकि ७ उस दुष्ट स्त्री अतलीयाह के बेटों ने परमेश्वर के मन्दिर को ढा दिया था और परमेश्वर के मन्दिर की अर्पण कीई हुई सारी वस्तुन को भी उन्होंने ने यशलीम पर चढ़ाया ॥

सो राजा की आज्ञा से उन्होंने ने एक मंजूपा बनाई और उसे परमेश्वर के ८ मन्दिर के फाटक पर बाहर रक्खी । और उन्होंने ने सारे यहूदाह और यहूसलम ९ में प्रचार किया कि जो बेहरी ईश्वर के सेवक मूसा ने वन में इसराएल पर ठहराई

आई थी कि अपने स्थान को फिर जावे इस कारण उन का क्रोध यहूदाह के  
 ११ विरुद्ध अत्यन्त भड़का और वे क्रोध के तपन से अपने घर गये । तब अमसियाह  
 ने आप को दृढ़ किया और अपने लोगों को बाहर नून की तराई में ले गया  
 १२ और शर्दर के सन्तानों के दस सहस्र जन को जुभा दिया । और यहूदाह के  
 सन्तान ने दस सहस्र को जीते जी बंधुआई में ले जाके और एक पर्वत की चोटी  
 पर पहुंचाके पर्वत की चोटी पर से उन्हें गिरा दिया कि सब के सब चकनाचूर  
 १३ हो गये । परन्तु जथा के पुत्र जिन्हें अमसियाह ने फेर दिया था जिसमें उस  
 के साथ संग्राम पर न जावे समरून से लेके बैतहैरान लें यहूदाह के नगरों पर  
 पड़े और उन में से तीन सहस्र को जुभा दिया और बहुत लूट लिया ।

१४ और जब अमसियाह अदूमियों को जुभाके फिर आया उस के पीछे यों हुआ  
 कि वह शर्दर के सन्तान के देवों को लाया और उन्हें अपने लिये देव स्थापित  
 १५ किये और उन के आगे दण्डवत किर्ई और उन के लिये धूप जलाया । इससे  
 परमेश्वर का क्रोध अमसियाह पर भड़का और उस ने उस पास एक भविष्यद्वक्ता  
 को भेजा जिस ने उसे कहा कि जो देव अपने ही लोगों को तेरे हाथ से कुड़ा  
 १६ न सके तू ने उन का पीछा क्यों किया । जब वह उससे कह रहा था तो यों  
 हुआ कि उस ने उसे कहा कि तू राज्य के मंत्रियों में का है रह जा तू क्यों मारा  
 जावे तब भविष्यद्वक्ता रह गया और कहा कि जो तू ने यह किया है और मेरे मंत्र को  
 नहीं माना है मैं जानता हूं कि परमेश्वर ने तुझे नाश करने को मंत्र दिया है ।

१७ तब यहूदाह के राजा अमसियाह ने मंत्र लेके इसराएल के राजा याहू के  
 बेटे यहूअखज के बेटे यूआश कने कहला भेजा कि आ हम एक दूसरे को  
 १८ आग्रे साम्रे देखें । सो इसराएल के राजा यूआश ने यहूदाह के राजा अमसियाह  
 को कहला भेजा कि लुबनान के भटकटैया ने लुबनान के देवदारु पेड़ को कहला  
 भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को बियाह दे फिर लुबनान का एक बनेला पशु  
 १९ उस मार्ग से निकला और भटकटैये को रौंद डाला । तू कहता है कि देख मैं ने  
 अदूमियों को मारा है और तेरे मन ने अहंकार के लिये तुझे उभारा है सो अब  
 अपने घर में रह जा तू अपने कष्ट के लिये क्यों छेड़ता है कि आप और यहूदाह  
 २० तेरे साथ मारे जावे । परन्तु अमसियाह ने न माना क्योंकि यह ईश्वर से था  
 जिसमें वह उन्हें उन के हाथ में सौंप देवे क्योंकि उन्होंने ने अदूम के देवों का  
 २१ पीछा किया था । सो इसराएल का राजा यूआश चढ़ गया और उन्होंने ने अर्थात्  
 उस ने और यहूदाह के राजा अमसियाह ने यहूदाह के बैतशम्स में आग्रे साम्रे  
 २२ देखा । और यहूदाह इसराएल के आगे मारे गये और हर एक जन अपने अपने  
 २३ तंबू को भागा । और इसराएल के राजा यूआश यहूअखज के बेटे यूआश के बेटे  
 यहूदाह के राजा अमसियाह को बैतशम्स में पकड़के यरूसलम में लाया और  
 इफरायम के फाटक से देखवैये फाटक लों चार सौ हाथ यरूसलम की भीत ठा  
 २४ दिई । और सारे सेना चांदी और सारे पात्र जो परमेश्वर के मन्दिर में पाये गये  
 और आविदअदूम के संग और राजा के भवन के भंडार और ओलों को लेके  
 समरून को फिर आया ।

भेजी । क्योंकि अरामियों की सेना तो एक छोटी जथा को लेके आई और परमे- २४  
श्वर ने एक अति बड़ी सेना को उन के हाथ में सौंप दिया क्योंकि उन्होंने ने पर-  
मेश्वर अपने पिता के ईश्वर को त्यागा था सो उन्होंने ने यूश्राश पर न्याय का  
दण्ड किया ॥

और जब वे उससे फिर गये क्योंकि उन्होंने ने उसे बड़े बड़े रोग में छोड़ दिया २५  
तब उसी के दासों ने यहूदः याजक के बेटों के लोह के निये युक्ति बांधी और  
उस के बिल्लाने पर उसे मारके घात किया और उन्होंने ने उसे दाऊद के नगर में  
गाढ़ा परन्तु उसे राजाओं की समाधि में न गाढ़ा । और जिन्होंने ने उस के बिन्दु २६  
में गुप्त बांधी सो एक अस्मनी सिमश्रात का बेटा जयद था और एक मोअर्या  
सिमियत का बेटा यहूजयद था । अब उस के बेटे और बान्कों का भार जो उस २७  
पर धरा गया और परमेश्वर के मन्दिर की नैत्र हालना देखो वे राजाओं के  
वर्णन की पुस्तक में लिखे हैं और उस के बेटे अमसियाह ने उस की मंती  
राज्य किया ॥

### पच्चीसवां पृष्ठ ।

अमसियाह ने पच्चीस वरस की वय में राज्य करना आरंभ किया और उस १  
ने यहूदसस में अंतीम वरस राज्य किया और उस की माता का नाम यहूशव्दान  
था जो यहूदलीमी थी । और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई की परन्तु २  
सिद्ध मन से नहीं । और ऐसा हुआ कि जब राज्य उस पर स्थिर हुआ तब उस ३  
ने अपने पिता के घातक सेवकों को घात किया । परन्तु उस ने उन के मन्तानों ४  
को घात न किया पर जैसा कि मृसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है जहां  
परमेश्वर ने आज्ञा करके कहा था कि बालकों की मंती पिता मारे न जावेगी  
और पिता के लिये बालक मारे न जावेगे परन्तु हर एक जन अपने अपने पाप के  
लिये मारा जावेगा ॥

और अमसियाह ने यहूदाह को एकट्ठा किया और उन के घराने के समान ५  
उस ने उन्हें सदनपति और शतपति मारे यहूदाह और चिनयमीन में किये उस ने  
उन्हें बीस वरस के और उससे ऊपर गिना और उन्हें तीन लाख चुने हुए पाया जो  
संग्राम में जाने के और बरही और डाल बांधने के योग्य थे । और उस ने एक ६  
लाख सहायों इशराएलियों में से सौ तोड़े चांदी पर भाड़े किये ॥

परन्तु ईश्वर का एक जन यह कहते हुए उस पास आया कि हे राजा इसरा- ७  
एल की सेना तेरे साथ जाने न पावे क्योंकि परमेश्वर इसराएल के साथ अर्थात्  
सारे इफरायम के मन्तानों के साथ नहीं है । परन्तु यदि तू जावेगा तो जा ८  
संग्राम के लिये दृढ़ हो ईश्वर तुझे तेरे वरियों के आगे ध्वस्त करेगा क्योंकि  
सहाय करने का और ध्वस्त करने का ईश्वर में शक्ति है । और अमसियाह ने ९  
ईश्वर के जन से कहा पर सौ तोड़े के लिये जो मैं ने इसराएल की सेना को दिये  
हैं हम क्या करें और ईश्वर के जन ने उत्तर दिया कि परमेश्वर इसे अधिक तुझे  
देने का सामर्थ्य रखता है ॥

तब अमसियाह ने उस सेना को अलग किया जो इफरायम में से उस पास १०



- १५ मिट्टु किये । और उस ने गुम्मतों पर और कोटों पर धरने के लिये जिसमें बाण और बड़े बड़े पत्थर मारे यरुसलम में गुणी लोगों से निकाले हुए कल बनाये और उस का नाम दूर लें फैल गया क्योंकि बलवन्त होने लें आश्चर्यित से उस की सहाय हुई ॥
- १६ परन्तु जब वह बलवन्त हुआ तब विनाश के लिये उस का मन फूला क्योंकि उस ने परमेश्वर अपने ईश्वर के विरुद्ध अपराध किया और धूप की वेदी पर धूप
- १७ जलाने के लिये परमेश्वर के मन्दिर में गया । और अजरियाह याजक और उस
- १८ के साथ परमेश्वर के अस्सी बलवन्त याजक उस के पीछे गये । और उन्होंने ने उज्जियाह राजा को रोक्के उसे कहा कि हे उज्जियाह परमेश्वर के लिये धूप जलाने का तेरा काम नहीं परन्तु दारुन के बेटे याजकों के जो धूप जलाने के लिये ठहराये गये हैं सो पवित्रस्थान से बाहर जा क्योंकि तू ने अपराध किया है और परमेश्वर ईश्वर तेरी प्रतिष्ठा के लिये न छोड़ा ॥
- १९ तब उज्जियाह कोपित हुआ और धूप जलाने को उस के हाथ में एक धूपावरी थी और याजकों पर कोपित होते हुए धूप की वेदी के लग से ईश्वर के
- २० मन्दिर में याजकों के आगे उस के कपाल पर कोढ़ फूट निकला । और अजरियाह प्रधान याजक और मारे याजकों ने उस पर दृष्टि किई और क्या देखते हैं कि उस के सिर पर कोढ़ निकला और उन्होंने ने उसे वहां से दूर करने को शीघ्रता
- २१ किई क्योंकि परमेश्वर ने उसे मारा था । और उज्जियाह राजा अपने मरने लें कोढ़ी रहा और अलग घर में कोढ़ी होके रहा क्योंकि वह परमेश्वर के मन्दिर से अलग किया गया था और उस का बेटा यूताम राजा के भवन पर होके देश के लोगों का न्याय करता था ॥
- २२ अब उज्जियाह की रही हुई क्रिया आदि और अंत अमूस के बेटे यसाशियाह
- २३ भविष्यद्वक्ता ने लिखा है । सो उज्जियाह ने अपने पितरों में शयन किया और उन्होंने ने उसे उस के पितरों में राजाओं के समाधिस्थान में गाड़ा क्योंकि उन्होंने ने कहा कि वह कोढ़ी है और उस के बेटे यूताम ने उस की संती राज्य किया ॥

### सत्ताईसवां पर्व ।

- १ यूताम ने पच्चीस वरस की वय में राज्य करना आरंभ किया और उस ने यरुसलम में सोलह वरस राज्य किया और उस की माता का नाम यरुसः था जो
- २ सद्दक की बेटा थी । और उस ने अपने पिता उज्जियाह के सारे कार्य के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई तथापि वह परमेश्वर के मन्दिर में नहीं पैठा
- ३ और अब भी लोग अशुद्ध कर्म करते रहे । उस ने परमेश्वर के मन्दिर का ऊंचा फाटक बनाया और उफल की भीत पर उस ने बहुत बनाया ॥
- ४ और इससे अधिक उस ने यहूदाह के पर्वतों में नगर बनवाये और वन में उस
- ५ ने गढ़ियां और गुम्मत बनवाये । उस ने अम्मूनियों के राजा के साथ लड़के भी उसे जीता और उस वरस में अम्मन के सन्तानों ने उसे एक सौ तोड़े चांदी और दस सहस्र नपुण गोहूँ और दस सहस्र नपुण जव दिये और दूसरे और तीसरे वरस

और यूथ्राश का बेटा यहूदाह का राजा अमसियाह इसराएल के राजा यहू- २५  
अखज के बेटे यूथ्राश के मरने के पीछे पंद्रह वरस जीया । अब अमसियाह की २६  
रही हुई क्रिया आदि और अन्त देखा गया वे इसराएल और यहूदाह के राजाओं  
की पुस्तक में नहीं लिखी । और जब अमसियाह परमेश्वर का पीछा करने से २७  
फिर गया तब उन्होंने ने उस के विरुद्ध यहसलम में एक गुप्त बांधी और वह  
लकीस को भाग गया परन्तु उन्होंने ने लकीस में उस के पीछे भेजा और उसे वहां  
घात किया । और वे उसे घाटों पर लाये और यहूदाह के नगर में उस के पितरों २८  
में उन्होंने ने उसे गाढ़ा ॥

छत्तीसवां पृष्ठ ।

तब यहूदाह के सारे लोगों ने उज्जियाह को लिया जो सैलह वरस का था १  
और उस के पिता अमसियाह के स्थान पर उसे राजा किया । उन ने सैलह को २  
बनाया और जब राजा ने अपने पितरों में गयन किया तब उसे यहूदाह के राज्य  
में फेर मिला दिया ॥

उज्जियाह ने सैलह वरस की वय में राज्य करना आरंभ किया और बाघन ३  
वरस यहसलम में राज्य किया उस की माता का नाम यम्मलीसी यकुलियाह  
था । और अपने पिता अमसियाह की सारी क्रिया के समान उन ने परमेश्वर की ४  
दृष्टि में भलाई की । और उस ने जकरियाह के दिनों में जो ईश्वर के ५  
दर्शन में ससक्त रखता था ईश्वर को खोजा और जब लो वह परमेश्वर का खोज-  
जता रहा तब लो ईश्वर ने उसे भाग्यवान किया ॥

और उस ने जाके फिलिस्तिनों के विरुद्ध संग्राम किया और जात की और ६  
यधनिः की और अशदूद की भीत को तोड़ डाला और अशदूद के आसपास और  
फिलिस्तिनों के मध्य नगर बनवाये । और ईश्वर ने फिलिस्तिनों के विरुद्ध और ७  
अरबियों के विरुद्ध जो गुरवजल में रहते थे मजूनियों के विरुद्ध उन की सहाय  
की । और अम्मूनियों ने उज्जियाह के पास भेंट भेजी और मिस्र के पैठ लो उस ८  
की कीर्ति फैली क्योंकि वह अत्यंत दृढ़ हुआ ॥

और भी उज्जियाह ने यहसलम में कोने के फाटक पर और तराई के फाटक ९  
पर और घूम में गुम्मत बनाके उन्हें दृढ़ किया । और उस ने अरग्य में गुम्मत १०  
बनवाये और बहुत कूस खोदवाये क्योंकि नीचे देश में और चौगानों में उस के  
बहुत डेर थे और पर्वतों में और करमिल में किसान और दार्य के सुधरवैये थे  
क्योंकि किसानों उसे अच्छी लगती थी ॥

और भी उज्जियाह बाढ़ाओं की एक सेना रखता था जो जथा जथा यहसलम ११  
लेखक के और अमसियाह आज्ञाकारी के और राजा के एक सेनापति दननियाह  
के वश में होके संग्राम को निकलती थी । सहायों के पितरों के प्रधानों की १२  
समस्त गिनती दो सहाय छः सौ । और उन के वश में दैरी के विरुद्ध राजा की १३  
सहाय के लिये एक सेना का पराक्रम तीन लाख सात सहाय पांच सौ जो बड़े  
पराक्रम से युद्ध करते थे । और उज्जियाह ने उन के लिये सारी सेना में सर्वत्र १४  
ढाल और बरखी और टोप और किलम और धनुष और पत्थर के लिये दैलवांस

कहा कि तुम बंधुओं को बंधन न लाओगे क्योंकि हम ने तो परमेश्वर के विरोध में अपराध किया है हमारे पापों को और अपराधों को बढ़ाने चाहते हो क्योंकि हमारा अपराध बड़ा है और इसराएल के विरुद्ध महा कोप है । तब हथियार-बंदों ने बंधुओं को और लूट को अध्यक्षों के और सारी मंडली के आगे छोड़ दिया । फिर जिन मनुष्यों का नाम लिखा था सो उठ खड़े हुए और बंधुओं को और लूट को लेकर उन में के सारे नगों को पहिराया और विभूषित किया और जूते पहिनाये और उन्हें खिला पिलाके उन पर तेल लगावाया और उन में के सारे दुर्बलों को गडहों पर बैठाके खजूर पेड़ के नगर अर्थात् यरीहो में अपने भाइयों के पास पहुंचाया तब वे समरुन को फिर आये ॥

१६ उस समय आखज राजा ने अपनी सहाय के लिये असूर के राजा पास भेजा । क्योंकि अदूमी ने फेर आके यहूदाह को मारा और बंधुये ले गये । १८ फिलिस्तियों ने भी तराई के देश के नगरों को और यहूदाह के दक्षिण को घेरा था और बैतशमस को और रेयलून को और जदीरात को और शोको को उस के गांवों समेत और तिमनः उस के गांवों समेत और जिमसू को भी और उस के गांवों को ले लिया और वे उन में बसे । २० क्योंकि इसराएल के राजा आखज के कारण से परमेश्वर ने यहूदाह को घटाया इस लिये कि उस ने यहूदाह को नग्न किया और परमेश्वर के विरुद्ध महा अपराध किया । तब असूर के राजा तिग-लतपिलासर ने उस पास आके उसे सताया परन्तु उसे दृढ़ न किया । २२ क्योंकि आखज ने परमेश्वर के मन्दिर से और राजभवन से और अध्यक्षों से भाग लेके असूर के राजा को दिया परन्तु उस ने उस की सहाय न कीई । और अपने दुःख के समय में इसी आखज राजा ने परमेश्वर के विरुद्ध अधिक अपराध किया ॥

२३ क्योंकि उस ने दमिश्क के देवों के लिये जिन्होंने उसे मारा था बलि चढ़ाया और उस ने कहा कि आराम के राजाओं के देवों ने उन की सहायता कीई इस लिये मैं उन के लिये बलि चढ़ाऊंगा जिसमें वे मेरी सहायता करें परन्तु वे उस की और सारे इसराएल की नग्नता के कारण हुए । और आखज ने ईश्वर के मन्दिर के पात्रों को एकट्टे किया और ईश्वर के मन्दिर के पात्रों को काटके टुकड़े टुकड़े किये और परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों को बंद किया और उस ने अपने लिये यरूसलम के हर एक कोने में वेदियां बनवाईं । और यहूदाह के हर एक नगर में उस ने उपरी देवों के नाम से धूप जलाने को ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये और अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को गिस दिलाया ॥

२६ अब उस की रही हुई क्रिया और उस की सारी चाल आदि और अंत देखो २७ वे यहूदाह के और इसराएल के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं । और आखज ने अपने पितरों में शयन किया और उन्होंने ने उसे यरूसलम नगर में गाड़ा परन्तु उसे इसराएल के राजाओं की समाधि में न पहुंचाया और उस का वेटा हिज-कियाह उस की संती राज्य पर बैठा ॥

उत्तीसवां पृष्ठ ।

१ हिजकियाह ने पचीस बरस की वय में राज्य करना आरंभ किया और उत्तीस

भी अम्मून के सन्तानों ने उसे उतना ही दिये । मो यूताम बलवन्त हुआ क्योंकि ६  
उस ने अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे अपनी चाल सुधारी ॥

अब यूताम की रही हुई क्रिया और उस की सारी लड़ाइयाँ और उस की ७  
चाल देखो ये यहूदाह और इसराएल के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं । जब ८  
उस ने राज्य करना आरंभ किया तब पच्चीस वरस का था और यरुसलम में सोलह ९  
वरस राज्य किया । और यूताम ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हीं ने उसे १०  
दाऊद के नगर में गाढ़ा और उस के बेटे आयज ने उस की सन्ती राज्य किया ॥

अट्ठाईसवां पृष्ठ ।

आखज ने बीस वरस की वय में राज्य करना आरंभ किया और उस ने यरुस- १  
लम में सोलह वरस राज्य किया परन्तु अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर की २  
दृष्टि में भलाई न किई । क्योंकि यह इसराएल के राजाओं की चालों पर चमत्ता था ३  
और बअलीस के लिये ठाली हुई मूर्तें भी बनाईं । और उन्में अधिक उस ने दिनुम ४  
के बेटे की तराई में बलि चढ़ाया और अन्यदेशियों के धिनियों के समान ५  
जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तानों के आगे से दूर किया था अपने सन्तान ६  
को आग में से चलाया । और उस ने कंचे स्यानों और पर्यतों पर और हर एक ७  
घरे पेड़ तले बलि चढ़ाया और धूप जलाया ॥

इस लिये उस के ईश्वर परमेश्वर ने उसे आराम के राजा के हाथ में सौंप दिया ८  
और उन्हीं ने उसे मारा और उन में से एक बड़ी मंडली को बंधुआई में ले गये ९  
और दमिश्क में पहुंचाया और वह भी इसराएल के राजा के हाथ में सौंपा गया १०  
जिस ने उसे बड़ी मार से मारा । क्योंकि समलियाह के बेटे फिकः ने दिन भर में ११  
यहूदाह में से एक लाख बीस सहस्र का घात किया ये जब और पुत्र ये इस १२  
कारण से कि उन्हीं ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को न्याय किया था । १३  
और इसरायस के एक बलवन्त जन जिकरी ने राजा के बेटे समलियाह को और १४  
घर के अध्यक्ष अजरिकाम को और राजा के समीपी हलकनः को घात किया । १५  
और इसराएल के सन्तान अपने भाईवंद में से दो लाख स्त्री बेटे और बेट्टी १६  
बंधुआई में ले गये और उन में बहुत सी लूट लेके लूट को समरन में लाये ॥

परन्तु आदिद नाम एक जन परमेश्वर का भविष्यवृत्ता बघां था और वह १  
समरन की सेना के आगे गया और उन्हें कहा कि देखो तुम्हारे पितरों का २  
ईश्वर परमेश्वर यहूदाह में कोपित था इस लिये उस ने उन्हे तुम्हारे हाथ में ३  
सौंप दिया है और तुम ने उन्हें ऐसे कोप में घात किया कि मर्ग लों पहुंच ४  
गया । और अब तुम यहूदाह और यरुसलम के सन्तानों को दास और दाम्नी में ५  
रक्खा चाहते हो क्या तुम्में अर्थात् तुम्हों में अपने ईश्वर परमेश्वर के विरुद्ध पाप ६  
नहीं है । इस लिये अब मेरी सुना और अपने भाईवंदों में के बंधुओं को जिन्हें तुम ७  
लाये हो उन बंधुओं को सौंप देओ क्योंकि परमेश्वर का कोप तुम पर भड़का है । ८  
तब इसरायस के सन्तान के कितने प्रधानों ने अर्थात् यहूदानान का बेटा अजरि- ९  
याह और सुमलमियत का बेटा बरकियाह और मूलम का बेटा हिजकियाह और १०  
हदलो का बेटा अमासा उन के विरुद्ध खड़े हुए जो संग्राम में आये । और उन्हें ११

१९ की रोटी का मंत्र उस के सारे पाप समेत छुड़ किया है । और उन्हें अधिक सारे पापों का जो आखिरी राजा ने अपने राज्य में अपनाध करके दूर किया हम ने मिष्ट करके पवित्र किया है और देगा ये परमेश्वर की धेरी के पास है ।

२० तब हिजकियाह राजा तब के बड़ा और नगर के अधिकारी को एकट्टे किया

२१ और परमेश्वर के मन्दिर को बंद गवा । और राज्य के पाप को भेंट के लिये और पवित्रगान के लिये और गृहदाह के लिये ये मान चल और मान मंडे और मान मंगे और मान बकरे लाये और उस ने दावन के छंदे याजकों को उन्हें

२२ परमेश्वर की धेरी पर चढ़ाने का आज्ञा किए । सो उन्होंने ने धेरी को सारा और याजकों ने लाह लेके धेरी पर लिहका सभी मंति में उन्होंने ने मंटी को सारके लाह को धेरी पर लिहका उन्होंने ने लोगों को भी सारा और लाह को

२३ धेरी पर लिहका । और ये पाप को भेंट के बकरों को राजा के और मंडली

२४ के आगे लाये और उन्होंने ने अपने हाथ उन पर धरे । फिर याजकों ने उन्हें सारा और सारे समारमल के लिये प्रापणित करने का उन के लाह में धेरी पर लिहका क्योंकि राजा ने सारे समारमल के लिये अलिदान को भेंट और पाप को

२५ भेंट चढ़ाने का आज्ञा किए । और दाऊद की और राजा के दर्शक जद की और नातन भद्रिष्यदका की आज्ञा के समान उन ने करमान और नयल और चीला लिये हुए लावियों को परमेश्वर के मन्दिर में उतराया क्योंकि परमेश्वर ने अपने

२६ भद्रिष्यदकों के द्वारा से ये आज्ञा किए थी । और लाये दाऊद के दावों को

२७ और याजक तुरधियों को लेके खड़े हुए । और हिजकियाह ने धेरी पर अलिदान को भेंट चढ़ाने का आज्ञा किए और अलिदान करने के समय में परमेश्वर का मान तुरधियों में और समारमल के राजा दाऊद के दावों में प्रारंभ हुआ । और सारा मंडली ने दण्डवत किए और गायकों ने गाया और तुरधों के बज्रियों ने

२८ शब्द किया और ये सब अलिदान की भेंट के नक़्क़ाये जाने लगे रहते रहे । और जब ये अलिदान की भेंट चढ़ा चुके तब राजा ने और सभी ने जो उस के पास

२९ ये भुक्त प्रणाम किया । और भी हिजकियाह राजा ने और अधिकारी ने लावियों को आज्ञा किए कि दाऊद की और आमक दर्शों के बचन से परमेश्वर की स्तुति गावे और उन्होंने ने आनन्द से स्तुति गाये और मिर भुक्त के सेवा किए ।

३० तब हिजकियाह ने उत्तर देके कहा कि अब तुम परमेश्वर के लिये हाथ भरके आये हो सो अब पाम आओ और बलि और धन्यवाद की भेंट परमेश्वर के मन्दिर में लाओ फिर मंडली बलि के लिये और धन्यवाद के लिये भेंट लाई

३१ और बहुतरे अपनी दांका के समान अलिदान के लिये भेंट लाये । और अलिदान की भेंट की गिनती जो मंडली लाई सो सत्तर बैल और सो मंडे और दो सो

३२ मंगे ये सब परमेश्वर की अलिदान की भेंट के लिये थे । और पवित्रत वस्तु कः ३३ सो बैल और तीन सहस्र भेड़ । परन्तु याजक समे घोड़े थे कि ये अलिदान की सारी भेंटों की खाल उतार न सके इसी लिये उन के भाई लावियों ने कार्य के अंत लीं और याजकों के आप को पवित्र करने लीं उन की सहाय किए क्योंकि लावियों ने अपने को पवित्र करने के लिये याजकों से अधिक खरे मन के थे ।

वरम यन्मलम में राज्य किया और उस की माता का नाम अविषाह था वह जजरियाह की बेटा थी । और उस ने अपने पिता दाऊद के सारे कार्य के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई की है ॥

उस ने अपने राज्य के पहिले वरम के पहिले साम में परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों को खोला और उन्हें सुधारा । और उस ने याजकों को और लावियों को भीतर लाके पूरव की सड़क में एकट्ठे किया । और उन्हें कहा कि हे लावियो मेरी सुनो अब अपने को पवित्र करो और अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र करो और पवित्रस्थान से सारा कूड़ा बाहर ले जाओ । क्योंकि हमारे पितरों ने अपराध किया है और हमारे ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में दुराई की है और उसे त्याग किया है और अपने अपने सुंद को परमेश्वर के नियाम से फेर दिया है और अपनी अपनी पीठ उस की ओर की है । और आसारे के द्वारों को बंद किया है और दीपकों को बुझाया है और इसराएल के ईश्वर के लिये धूप नहीं जलाया और पवित्रस्थान में बलिदान नहीं चढ़ाया । इस लिये परमेश्वर का कोप यहूदाह और यन्मलम पर पड़ा और जैसे तुम लोग अपनी आंखों में देखते हो उस ने वैसा ही उन्हें विपत में पड़ने विस्मित होने और ठट्ठे में उड़ाये जाने के लिये छोड़ दिया । क्योंकि देख हमारे पितर तलवार में सारे गये हैं और हमारे बेटे बेटियां और हमारी पवित्रां इस के लिये बंधुआई में हैं । अब मेरे मन में है कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के साथ एक यात्रा जाऊं जिसमें उस का महा कोष हम से फिर जावे । हे मेरे बेटा तुम अब आलस्य न करो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें अपने आगे खड़ा होकर सेवा करने को चुन लिया है जिसमें तुम लोग उस की सेवा करके धूप जलाओ ।

तब विद्यार्थियों के सन्तानों में से असाई का बेटा महत और अजरियाह का बेटा यूएल और मिरारी के बेटों में से अबदी का बेटा क्रांग और यदलिल का बेटा अजरियाह और जैरुनियों में से जिम्सः का बेटा यूअग्र और यूअग्र का बेटा अदन । और इलिसफन के बेटों में से जिमरी और यईगल और शमफ के बेटों में ने जिजरियाह और मत्तनियाह । और हैमान के बेटों में से यहिलल और शमई और यहूतून के बेटों में से ममरियाह और उज्जिल लावी उठे । और अपने भाईबन्धों को एकट्ठा किया और अपने को पवित्र किया और परमेश्वर के कार्य के विषय में राजा की आज्ञा के समान परमेश्वर के मन्दिर को भाड़ने आये । और याजक भाड़ने के लिये ईश्वर के मन्दिर के भीतर गये और जो जो अपवित्रता उन्हें ने परमेश्वर के मन्दिर में और परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में पाई सो सो बाहर किया और लावियों ने उठके बाहर कैदरन नाली में डाला । अब पहिले साम की पहिली तिथि में उन्होंने ने पवित्र करना आरंभ किया और साम के आठवें दिन वे परमेश्वर के आसारे लगे आये सो उन्होंने ने आठ दिन में परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र किया और पहिले साम की सोलहवीं तिथि में वे पूरा कर चुके ॥

तब उन्होंने ने विजक्रियाह राजा के आगे जाके कहा कि हम परमेश्वर के सारे मन्दिर को और बलिदान की वेदी को उस के सारे पात्र समेत और भेंट



किया और धूप जलाने की सारी घेदियों को दूर किया और कंदहन नाली में  
 १५ फेंक दिया । तब उन्होंने ने दूसरे मास की चौदहवीं तिथि में फसह का मेला  
 मारा और याजकों ने और लावियों ने सज्जित होके आप को पवित्र किया और  
 १६ परमेश्वर के मन्दिर में यलिदान की मंटे लाये । और वे ईश्वर के उन मूसा की  
 व्यवस्था के समान अपनी रीति की नाई अपने अपने स्थान में खड़े हुए और याजकों  
 ने लावियों के हाथ से लोहू लेके छिड़का ।

१७ क्योंकि मंडली में बहुत थे जो पवित्र न किये गये थे इस लिये हर एक की  
 संती जो पवित्र न किया गया परमेश्वर के लिये पवित्र करने को लावियों ने फसह  
 १८ का मेला मारा । क्योंकि लोगों की एक मंडली अर्थात् इफरायम और मुनस्सी के  
 इशकार और जयूलन के बहुतों ने आप को पवित्र न किया तथापि लिखे हुए से  
 भिन्न फसह खाया परन्तु हिजकियाह ने यह कहके उन के लिये प्रार्थना कि ई कि  
 १९ परमेश्वर हर एक को क्षमा करे । जिस ने अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज के  
 लिये अपने मन को स्थिर न किया यद्यपि पवित्रस्थान के पवित्र किये जाने के  
 २० समान न हुआ हो । और परमेश्वर ने हिजकियाह की सुनी और लोगों को  
 क्षमा किया ।

२१ और इसराएल के सन्तान जो यरुसलम में पाये गये थे आनन्द से सात दिन  
 लो अखमीरी रोटी का पर्व रक्खा और लावी और याजक प्रतिदिन परमेश्वर के  
 २२ बड़े शब्द के याजों से परमेश्वर की स्तुति करते रहे । और हिजकियाह ने सारे  
 लावियों से जो परमेश्वर का ज्ञान अच्छी रीति से जानते थे शान्ति की बात  
 कही और वे सात दिन भर सारे पर्व लो खाते और कुशल की मंटे चढ़ाते धन्य  
 मानते रहे ।

२३ और सारी मंडली ने परामर्श करके सात दिन और रक्खे और वे सात दिन  
 २४ आनन्द से मानते रहे । क्योंकि यहूदाह के राजा हिजकियाह ने मंडली को एक  
 सदस्य बैल और सात सदस्य भेड़ दिये और अध्वर्यों ने मंडली को एक सदस्य बैल  
 २५ और दस सदस्य भेड़ दिये और याजकों में से बहुतों ने अपने को पवित्र किया । और  
 यहूदाह की सारी मंडलियों ने याजकों और लावियों सहित और इसराएल में की  
 सारी मंडली और परदेशी जो इसराएल के देश से आये थे और जो यहूदाह  
 २६ देश में रहते थे उन्होंने ने आनन्द किया । सो यरुसलम में बड़ा आनन्द हुआ  
 क्योंकि इसराएल के राजा दाऊद के छोटे सुलेमान के समय से यहसलम में ऐसा  
 २७ न हुआ था । तब याजक और लावी उठे और लोगों को आशीर्वाद दिया और  
 उन का शब्द सुना गया और उन की प्रार्थना उस की पवित्रता के निवास  
 स्वर्ग लो पहुंची ।

एकतीसवां पर्व ।

१ और जब यह सब हो चुका तब सारे इसराएल वहां से यहूदाह के नगरों  
 को गये और सारी मूरतों को तोड़ डाला और कुंजों को काट डाला और जंघे  
 स्थानों को और वेदियों को सारे यहूदाह और बिनयमीन और इफरायम और  
 मुनस्सी में से ठा दिया यहां लो कि उन्होंने ने सभी को सर्वथा नाश किया

और कुशल की मंटी की चिकनाई के साथ और बलिदान की पीने की मंटी के ३५ साथ बलिदान भी बहुतों से ये इसी रीति से परमेश्वर के मन्दिर की सेवा विधि से ठहराई गई । और द्विजकिषाह और सारे लोगों ने आनन्द किया कि ३६ परमेश्वर ने लोगों को मिट्ट किया था क्योंकि वह कार्य अचानक हुआ ॥

तीसरा पर्व ।

और द्विजकिषाह ने सारे इमराएल और यहूदाह और इफरायम और सुनस्सी १ के पास पत्रियां लिख भेजीं जिसमें वे यरुसलम को परमेश्वर के मन्दिर में आके परमेश्वर इमराएल के ईश्वर के लिये फसह का पर्व रखें । क्योंकि राजा और २ उस के अध्यक्ष और यरुसलम में की सारी मंडली ने दूसरे मास में फसह के पर्व रखने को परामर्श किया । क्योंकि उस समय वे इस कारण रख न सके कि याजकों ३ ने आप को निधार पवित्र न किया था और लोग भी यरुसलम में एकट्ठे न हुए थे । और वह बात राजा की और सारी मंडली की दृष्टि में अच्छी लगी । सो ४ उन्हें ने विश्रमत्रय से लेकर दान लो मारे इमराएलियों में प्रचारने को वह बात ठहराई कि वे यरुसलम में आके परमेश्वर इमराएल के ईश्वर के लिये फसह का पर्व रखें क्योंकि लिखे हुए के समान उन्हें ने बहुत दिन से न किया था ॥

सो राजा के हाथ की और उस के अध्यक्षों की पत्रों लेकर हांकिपे सारे इस- ६ राएलियों में और यहूदाह में ले गये और राजा की आज्ञा के समान कहा कि हे इमराएल के सन्तानो परमेश्वर अविरहाम इजहाक और इमराएल के ईश्वर की और फिरो और वह तुम्हारे रहे हुए की और जो अमूर के राजाओं के हाथ में बन्धे हैं फिरेगा । और अपने पितरों के समान और अपने भाईबंधों के समान ७ जिन्हें ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर का अपराध किया मत दोआइ इस लिये उस ने उन्हें नाश को सौंप दिया जैसा तुम देखते हो । इस कारण अब ८ अपने पितरों की नाई अपने गले को कठोर मत करो परन्तु आप आप को परमेश्वर का सौंपो और उस के पवित्रस्थान में जाओ जिसे उस ने सदा के लिये पवित्र किया है और परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो जिसने उस का महा कोष तुम पर से जाता रहे । क्योंकि यदि तुम लोग फिर परमेश्वर की ओर ९ चलटा फिरोगे तब तुम्हारे भाई और तुम्हारे बाल बच्चे उन के आगे जो उन्हें बंधुआई में ले गये हैं दया पावंगे यहां लो कि वे हम देश में फिर आवंगे क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर कृपालु और दयालु है और जो तुम उस की ओर फिरोगे तो वह तुम से अपना सुंह न मोड़ेगा ॥

सो हांकिपे इफरायम और सुनस्सी के देश में से नगर नगर जलूलन लो गये १० परन्तु उन्हें ने ठट्टा करके उन्हें चिढ़ाया । तथापि यसर के और सुनस्सी और ११ जलूलन के बहुतों ने अपने को नम्र किया और यरुसलम को आये । यहूदाह में १२ भी उन्हें एक मन देने को परमेश्वर का हाथ उन पर पड़ा कि परमेश्वर के बचन से राजा की और अध्यक्षों की आज्ञा को पालन करें ॥

और दूसरे मास में अखसीरी रोटी का पर्व रखने को अति बड़ी मंडली १३ यरुसलम में एकट्ठी हुई । और उन्हें ने उठके यरुसलम में की बेटियों को दूर १४

के समान अपनी सेवा के कार्य करने के लिये प्रतिदिन परमेश्वर के मन्दिर में  
 १७ आते थे । और उन याजकों को जिन के नाम उन के पितरों की वंशावली के  
 समान लिखे गये और उन लिखे हुए लावियों को जो तीस वरम के और ऊपर  
 १८ थे और अपनी पारियों में सेवा करते थे । और उन के सब लिखे हुए नन्दे वृद्धों  
 और उन की पत्नियों और उन के बेटों बेटियों को अर्थात् उस सारी मंडली को  
 बांट देवे क्योंकि उन्होंने ने अपनी अपनी पारियों में विश्वस्तता से आप को पवित्र  
 १९ किया था । और हाइन के बेटों उन याजकों के लिये जो अपने नगरों के आसपास  
 के खेतों में थे हर एक नगर में कई एक पुरुष जिन के नाम लिखे गये थे ठहराये गये  
 कि सब याजकों के सब पुरुषों को और सब लिखे हुए लावियों को भाग देवे ।  
 २० ऐसा हिजकियाह ने यहूदाह में सर्वत्र किया और अपने ईश्वर परमेश्वर की  
 २१ दृष्टि में भला और ठीक और सत्य किया । और हर एक कार्य में जो उस ने  
 ईश्वर के मन्दिर की सेवा में आरंभ किया और व्यवस्था और आज्ञा में और  
 अपने ईश्वर के खोजने की आज्ञा में उस ने अपने सारे मन से किया और भाग्य-  
 वान हुआ ॥

### वत्तीसवां पृष्ठ ।

- १ इन बातों के और अच्छे कार्यों के स्थिर होने के पीछे असूर का राजा सन-  
 हेरीय आके यहूदाह में पैठा और बाह्य नगरों के विरुद्ध कावनी किई और  
 चाहा कि उन्हें अपने वश में करे ॥
- २ और जब हिजकियाह ने देखा कि सनहेरीय आया है और कि यहसलम से  
 ३ लड़ने को रुख किया । तब उस ने अपने अध्वर्यों से और सहायियों से उन सोतों  
 के जल को जो नगर से बाहर थे बंद करने का परामर्श किया और उन्होंने ने उस  
 ४ की सहाय किई । सो बहुत लोग एकट्ठे हुए जिनमें ने यह कहके सारे सोतों  
 को और उस नाली को जो देश के मध्य में से बहती थी बंद किया कि असूर  
 ५ का राजा आके क्यों मुक्ता जल पावे । और उस ने आप को दृढ़ किया और  
 सारीं टूटी हुई भीतों को गुम्मत लों बनाया और बाहर बाहर एक दूसरी भीत  
 और दाऊद के नगर में मिल्लो को सुधारा और सांग और ठाल बहुताई से  
 ६ बनवाई । और उस ने लोगों पर सेनापति ठहराये और नगर के फाटक को सड़क  
 ७ में उन्हें अपने पास एकट्ठा किया और यह कहके उन्हें शान्ति दिई । कि दृढ़  
 होके हियाव करो असूर के राजा से और उस के साथ की सारी मंडली से मत डरो  
 ८ और बिस्मित मत होओ क्योंकि हमारे साथी उन के साथियों से अधिक हैं । उस  
 के साथ शारीरिक की भुजा परन्तु हमारे साथ सहाय करने को और हमारे लिये  
 संग्राम करने को हमारा ईश्वर परमेश्वर है और लोग यहूदाह के राजा हिज-  
 कियाह के बचन पर स्थिर हुए ॥
- ९ इन बातों के पीछे असूर के राजा सनहेरीय ने अपने सेवकों को यहसलम में  
 यहूदाह के राजा हिजकियाह राजा को और सारे यहूदाह को जो यहसलम में  
 थे कहला भेजा परन्तु उस ने और उस के सारे पराक्रम ने लकीश को घेरा ।  
 १० कि असूर का राजा सनहेरीय यह कहता है कि तुम लोग किस पर भरोसा रखते

तब इसरायल के सारे सन्तान अपने अपने नगर और अधिकार को फिर गये ।

और हिजकियाह ने याजकों की पारियों को ठहराया और लावियों को उन की पारियों के समान हर एक जन को उस की सेवा के समान बलिदान की भेंट के लिये और कुशल की भेंटों के लिये और परमेश्वर के तंत्रियों के फाटकों में स्तुति करने के कारण याजकों को और लावियों को ठहराया । और बलिदान की भेंटों के लिये अर्थात् सांक विद्वान के बलिदान की भेंटों के लिये और विश्रामों और अमावास्या और ठहराये हुए पर्वों के बलिदान की भेंटों के लिये जैसा परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है राजा का भाग उस की संपत्ति में से ठहराया ।

और उस ने यरुसलमवासियों को आज्ञा किई कि याजकों और लावियों को भाग देओ जिनमें वे परमेश्वर की व्यवस्था में लगे रहें । और आज्ञा निकलते ही इसरायल के सन्तान बहुतों में अन्न और दाम्यरम और तेल और मधु और भूमि की सारी वस्तुओं के पहिले फल लाये और सारी वस्तु का दसवां भाग बहुतों से लाये । और इसरायल और यहूदाह के सन्तान जो यहूदाह की वास्तियों में वास करते थे वे भी वंशों और भेदों का दसवां अंश और पवित्र वस्तुन का दसवां अंश जो परमेश्वर उन के ईश्वर के लिये पवित्र किये गये थे लाये और ठेर ठेर रक्खवा । उन्होंने ने तीसरे मास में ठेरों की नैव्र हालना आरंभ किया और सातवें मास में पूरा किया । और तब हिजकियाह और अध्वर्यों ने आठे ठेरों का देखा तो उन्होंने ने परमेश्वर का और उस के इसरायल लोगों का धन्य सामा । तब हिजकियाह ने ठेरों के विषय में याजकों में और लावियों में प्रश्न किया । और सद्रूक के घराने के प्रधान याजक अजरियाह ने उसे उत्तर देके कहा कि जब से लोगों ने परमेश्वर के मन्दिर में भेंट लाना आरंभ किया तब से इस ग्राम के बहुत रक्खते हैं और बहुत बच रहता है क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को बर दिया है और जो बचा सो यही बड़ा ठेर है ।

तब हिजकियाह ने आज्ञा किई कि परमेश्वर के मन्दिर में भंडार की कीठरियां मिट्ट करे और उन्होंने ने मिट्ट किया । और भेंट और दसवां अंश और पवित्र किई हुई वस्तु विश्र्वस्तता से भीतर लाये और जिन पर कननियाह लावी प्रभुता करता था और उस का भाई मिसई दूसरा । और यहिएल और अजजियाह और नहत और असहेल और यरसूत और यूजयद और इलिंगल और इसमाकियाह और महत और विनाया हिजकियाह राजा की और परमेश्वर के मन्दिर के अध्वर्य अजरियाह की आज्ञा से कननियाह और उस के भाई मिसई के वश में करोहे थे । और मिसई लावी का बेटा कोर पूरव की और हारपाल था वह ईश्वर की मनमनता भेंटों पर था कि परमेश्वर के नैवेर्यों को और महा पवित्र वस्तुन को बांटे । और उस के पीछे अदन और विनयमीन और युणूथ और समसेयाह और अमरियाह और सकनियाह थे कि याजकों के नगरों में अपने भाईवंशों को बधा बहे क्या छोटे उन के पदों के समान विश्र्वस्तता से बांटे । उन के लिखे हुए पुस्तकों को जो तीन घरों में और ऊपर थे अर्थात् उन सब को जो अपनी पारियों

२६ उस पर और यहूदाह पर और यरूसलम पर कोप पड़ा । तथापि हिजकियाह ने अपने उभरने से आप को यहां लें दीन किया उस ने और यरूसलम वासियों ने  
 २७ कि हिजकियाह के दिनों में परमेश्वर का कोप उन पर न पड़ा । और हिजकियाह के धन और प्रतिष्ठा बहुत थी और चांदी सेने के और मणि और सुगन्ध-द्रव्य के और ढाल के लिये और ममस्त प्रकार के वांछित के लिये उस ने भंडार  
 २८ बनाये । और अन्न और दाखरस और तेल की बड़ती के लिये भंडार और हर  
 २९ प्रकार के पशुओं के लिये स्थान और झुंडों के लिये ज्ञाना रखते थे । और भी उस ने अपने लिये नगर और झुंड और ढेर बहुतार्ह से सिद्ध किये क्योंकि ईश्वर ने उसे बहुत संपत्ति दिई थी ॥

३० और इसी हिजकियाह ने जेरूज के ऊपर के जन की धारा को बंद करके दाऊद के नगर की पश्चिम और उतारा और हिजकियाह अपने सारे कार्यों में भाग-  
 ३१ खान हुआ । तथापि बाबुल के अध्यक्ष दो भाषिया के विषय में जिन्होंने ने भेजके देश में के आश्चर्यित होने का वृक्षा था उसे परखने के लिये ईश्वर ने उसे डोढ़ा जिसने अपने मन का सब कुछ उसे सूझ पड़े ॥

३२ और हिजकियाह की रानी हुई किया और उस की भलाई देखो वे अमूस के घेरे यसाशियाह भाविष्यद्वक्ता के दर्शन में और यहूदाह के और इसराएल के राजाओं  
 ३३ की पुस्तक में लिखी हैं । तब हिजकियाह ने अपने पितरों में शयन किया और उन्होंने ने उसे दाऊद के श्रेष्ठ समाधि में गाड़ा और सारे यहूदाह और यरू-सलम वासियों ने उस के मरने में उसे प्रतिष्ठा दिई और उस का घेरा मुनस्सी उस की सन्ती राजा हुआ ॥

तीसरी सदा पृष्ठ ।

१ मुनस्सी ने बारह बरस की वय में राज्य करना आरंभ किया और उस ने  
 २ यरूसलम में पचपन बरस राज्य किया । परन्तु उस ने अन्यदेशियों के धिनितों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान के आगे से दूर किया था परमे-  
 ३ श्वर की दृष्टि में खुराई किई । क्योंकि उस ने फेरके उन ऊंचे स्थानों को बनाया जिन्हें उस के पिता हिजकियाह ने ठा दिया था और बअलीम के लिये वेदियां खड़ी किई और कुंज लगाये और स्वर्ग की सारी सेना की पूजा और  
 ४ सेवा किई । और जिस मन्दिर के विषय में परमेश्वर ने कहा था कि मेरा नाम  
 ५ यरूसलम में सदा रहेगा उस ने उस में भी वेदियां बनाईं । और उस ने स्वर्ग की सारी सेनाओं के लिये परमेश्वर के मन्दिर के दोनों आंगनों में वेदियां बनाईं ।  
 ६ और उस ने हिजूम की तराई में अपने सन्तानों को आग में से चलाया और सुहूर्त माना और मोहनी मंत्र और टोना और भुतनों से व्यवहार करते थे और  
 ७ परमेश्वर को रिस दिलाने को उस ने उस की दृष्टि में बहुत खुराई किई । और जिस खोदी हुई मूर्ति को उस ने बनाया था उस ने उसे ईश्वर के मन्दिर में स्थापित किया जिस के विषय में ईश्वर ने दाऊद से और उस के घेरे सुलेमान से कहा था कि इस मन्दिर में और यरूसलम में जिसे मैं ने इसराएल की सारी  
 ८ गोष्ठियों में से चुन लिया है उस में अपना नाम सदा रखूंगा । और फेर में

हो जो तुम लोग यरुसलम के दृढ़ स्थान में रहते हो । जिसने अकाल से और १७  
 पियास में मेरी व्यापक कदके हिजकियाह तुम्हारा बोध नहीं करता कि परमेश्वर  
 हमारा ईश्वर हमें अमूर के राजा के हाथ से छुड़ावेगा । क्या उसी हिजकियाह १८  
 ने उस के ऊँचे स्थानों को और उस की वेदियों को दूर करके और यह कदके  
 यहूदाह और यरुसलम को आजा न किई कि एक वेदी के आगे पूजा करो और  
 उस पर धूप जलाओ । जो मैं ने और मेरे पित्रों ने देशों के सारे लोगों से किया १९  
 है तुम नहीं जानते हो क्या उन देशों के जातिगणों के देव अपने देशों को किसी  
 भाँति से उन के देश को मेरे हाथ से छुड़ा सके । उन जातिगणों के सारे देवों १८  
 में मैं जितने मेरे पित्रों ने सर्वथा नाश किया कौन अपने लोगों को मेरे हाथ से  
 बचा सका कि तुम्हारा ईश्वर तुम्हें मेरे हाथ से बचा सके । इस लिये अब हिज- १९  
 कियाह तुम्हें न भगसावे और इस रीति से तुम्हारा बोध करने न पावे और उस  
 की प्रतीति न करो क्योंकि किसी जातिगण का अथवा राज्य का देव अपने लोगों  
 को मेरे हाथ से और मेरे पित्रों के हाथ से छुड़ा न सका तो कितना बड़ा  
 तुम्हारा ईश्वर हमारे हाथ से तुम्हें छुड़ावेगा । और उस के सेवकों ने ईश्वर १६  
 परमेश्वर के विरुद्ध और उस के नाम हिजकियाह के विरुद्ध और बहुत सी  
 बातें कही ।

उस ने बहुरागल के ईश्वर परमेश्वर की निन्दा की पत्री भी लिखी और उस १७  
 के विरुद्ध यह कहा जैसा आन आन देशों के जातिगणों के देव ने अपने लोगों  
 को मेरे हाथ से न छुड़ाया है वैसा हिजकियाह का ईश्वर उस के लोगों को मेरे  
 हाथ से न छुड़ावेगा । तब वे चर्नें हराने को और दुःख देने को जिसने नगर १८  
 को ले लेवे यहूदियों की भाषा में ललकारके यरुसलम के लोगों को जो भीत  
 पर थे बोले । और जैसा उन्होंने ने पृथिवी के लोगों के देवों के विषय में १९  
 जो मनुष्य के हाथों से बने थे विरुद्ध कहा तैसा उन्होंने ने यरुसलम के ईश्वर के  
 विरोध में ॥

इस कारण हिजकियाह राजा और अमूर का बेटा यरुशियाह भविष्यद्वक्ता २०  
 स्वर्ग की ओर प्रार्थना करके चिल्लाये । तब परमेश्वर ने एक दूत को भेजा जिस २१  
 ने अमूर के राजा की कावनी में सारे सहायियों को और अगुयों को और  
 सेनापतियों को सार डाला तब लज्जित होके अपने ही देश को बच फिर  
 गया और जब वह अपने देव के मन्दिर में गया उसी के कोख के लोगों ने वहाँ  
 उसे तलवार से घात किया । यों परमेश्वर ने हिजकियाह को और यरुसलम २२  
 वासियों को अमूर के राजा मनहेरीव के हाथ से और सभी के हाथ से छुड़ाया  
 और चारों ओर से उन की रक्षा किई । और परमेश्वर के लिये बहुतेरे यरुसलम २३  
 में बैठ और यहूदाह के राजा हिजकियाह के पास बहुमूल्य वस्तु वहाँ लाये  
 कि तब से सारे जातिगणों की दृष्टि में उस का साक्षात्कार हुआ ॥

उन दिनों में हिजकियाह ऐसा रोगी हुआ कि मरने पर था और परमेश्वर की २४  
 प्रार्थना किई और उस ने यह कदके उसे एक पता दिया । परन्तु हिजकियाह ने २५  
 उस के अनुग्रह के समान गुण न माना क्योंकि उस का मन बड़ गया इस लिये



२५ के विरुद्ध गुप्त बांधके उसी के घर में उसे घात किया । परन्तु जिन्होंने ने अमून राजा के विरुद्ध में गुप्त बांधी थी देश के लोगों ने उन सभी को घात किया और देश के लोगों ने उस के बेटे यूसियाह को उस की संतो राजा किया ॥  
चौंतीसवां पर्व ।

- १ यूसियाह ने आठ बरस की वय में राज्य करना आरंभ किया और यरूसलम
- २ में एकतीस बरस राज्य किया । और परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और
- ३ अपने पिता दाऊद की चालों पर चलता था और वह दहिने बायें न मुड़ा । क्यों-  
कि उस के राज्य के आठवें बरस में जब लो वह बालक था उस ने अपने पिता दाऊद के ईश्वर का खोज करना आरंभ किया और बारहवें बरस में यहूदाह और यरूसलम को जंचे स्थानों से और कुंजों से और खोदी हुई मूर्तों से और
- ४ ठाली हुई मूर्तों से प्रवित्र किया । और उस के आगे बअलीम की वेदियों को तोड़ दिया और मूर्तें जो उन के ऊपर थीं काट डालीं और कुंजों को और खोदी हुई और ठाली हुई मूर्तों को टुकड़ा टुकड़ा किया और धूल बनाके उन की
- ५ समाधिन पर जिन्होंने ने उन पर भेंट चढ़ाई थीं विशराईं । और उस ने याजकों की हड्डियां उन की वेदियों पर जलाईं और यहूदाह और यरूसलम को शुद्ध
- ६ किया । ऐसा उन्होंने ने मुनस्सी के और इफरायम के और समऊन के नगरों में
- ७ नफताली लो चारों ओर कुल्हाड़ी से किया । और जब उस ने वेदियों को और कुंजों को तोड़ डाला और खोदी हुई मूर्तों की चुकनी किई और इसराएल के सारे देश में से सारी प्रतिमाओं को काट डाला तब यरूसलम में फिर आया ॥
- ८ अब उस के राज्य के अठारहवें बरस जब उस ने देश को और मन्दिर को शुद्ध किया तब उस ने असलियाह के बेटे साफन को और नगर के अध्यक्ष मअ-  
सियाह को और यूअखज के बेटे यूअख स्मारक को अपने ईश्वर परमेश्वर के
- ९ मन्दिर सुधारने को भेजा । और वे खिलकियाह प्रधान याजक पास पहुंचके रोकड़ को जो ईश्वर के मन्दिर में पहुंचाई गई थी जिसे द्वारपाल लावियों ने मुनस्सी के और इफरायम के और इसराएल के सारे बचे हुए के और सारे यहू-  
दाह और बिनयमीन के हाथों से एकट्ठी किई थी सौंपके यरूसलम को फिर
- १० आये । और उन्होंने ने उसे कार्यकारियों के हाथ में जो परमेश्वर के मन्दिर के करोड़े थे रक्खा और उन्होंने ने मन्दिर को सुधारने और बनाने के लिये कार्य-
- ११ कारियों को दिया । अर्थात् कार्यकारियों को और थवइयों को दिया जिसमें वे ठाये हुए पत्थर को और जोड़ाव के लिये लट्टे और घरे के बरगों के लिये जिसे
- १२ यहूदाह के राजाओं ने मृत् किया था मोल लेवें । और लोगों ने धर्म से कार्य किया और मिरारी के बेटे यहत और अबदियाह लावी और किहातियों के बेटों में से जकरियाह और सुसलूम और सारे लावी जो निपुण बजवैये काम बढ़ाने
- १३ के लिये उन पर करोड़े थे । और वे वोक्तियों के और हर प्रकार की सेवा के कार्यों पर करोड़े थे और लावियों में से लेखक और प्रधान और द्वारपाल थे ॥
- १४ और जब वे परमेश्वर के मन्दिर में से उस रोकड़ को निकाल लाये जो उस में पहुंचाई गई थी तो खिलकियाह याजक ने मूसा के हाथों की परमेश्वर की

इसरायल के क्षरण को इस देश में से दूर न करेगा जिसे मैं ने तुम्हारे पितरों के  
 लिये ठहराया है केवल यह कि वे चौकस होके मेरी सारी आज्ञाओं को जैसा मैं  
 ने मूसा के द्वारा से दिई थी सारी व्यवस्था और विधि और विचार को पालन  
 करें । सो मुनस्सी ने यहूदाह को और यरूशलमवासियों को भस्माके अन्यदेशियों  
 से लिन्हें परमेश्वर ने इसरायल के सन्तानों के आगे से नष्ट किया था अधिक  
 बुराई करवाई । और परमेश्वर ने मुनस्सी से और उस के लोगों से कहा परन्तु  
 उन्हें ने न माना । इस कारण परमेश्वर उन पर असुर के राजा के सेनापतिन  
 को लाया जिन्होंने सीकरों कांटों में मुनस्सी को धरा और उसे वेदियों से  
 जकड़के बाहुल को ले गये । और जब यह विपत्ति में था तब अपने ईश्वर पर-  
 मेश्वर की खोज किई और अपने पितरों के ईश्वर के आगे आप को अति नम्र  
 किया । और उस की प्रार्थना किई और उस ने उस की यिनती मुनके मान लिया  
 और उसे उस के राज्य यरूशलम में फेर लाया तब मुनस्सी ने जाना कि परमेश्वर  
 ईश्वर वही है ।

और इस के पीछे उस ने दाऊद के नगर के बाहर जैहून की पश्चिम ओर  
 तराई में अर्थात् मछली फाटक के पैठ लों एक भीत बनाई और उफल को  
 घेरा और उसे अति ऊँचा किया और पुट्टपतिन को यहूदाह के सारे यादित  
 नगरों में रक्खा । और उस ने उपरी देवों को और प्रतिमा को परमेश्वर के  
 मन्दिर से और सारी वेदियों को जो उस ने परमेश्वर के मन्दिर के पर्यंत पर और  
 यरूशलम में बनवाई थी दूर किया और नगर के बाहर फेंक दिया । और उस ने  
 परमेश्वर की वेदी सुधारी और उस पर बलिदान और कुशल की भेंटें और धन्य-  
 वाद की भेंटें चढ़ाई और यहूदाह को इसरायल के ईश्वर परमेश्वर की सेवा  
 करने को आज्ञा किई । तथापि लोग अथ लों ऊँचे स्थानों पर बलि चढ़ाते रहे  
 परन्तु केवल अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये ।

अब मुनस्सी की रही हुई क्रिया और अपने ईश्वर के लिये उस की प्रार्थना  
 और इसरायल के ईश्वर परमेश्वर के नाम से जिन दर्शियों ने उससे कहा उन  
 के वचन इसरायल के राजाओं की पुस्तक में देखो । और उस की प्रार्थना भी  
 और ईश्वर का मनाया जाना और उस के सारे पाप और अपराध और स्थान  
 जहाँ जहाँ उस ने ऊँचे स्थान बनाये और अपने नम्र होने से आगे कुंजों को और  
 खादी हुई मूरतों को स्थापित किया देखो वे दर्शियों की कहावतों में लिखे हुए  
 हैं । सो मुनस्सी ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हें ने उसी के घर में  
 उसे गाढ़ा और उस का घेटा अमून उस की संती राज्य पर बैठा ।

अमून ने बाईस वरस की वय में राज्य करना आरंभ किया और यरूशलम  
 में दो वरस राज्य किया । परन्तु उस ने अपने पिता मुनस्सी के समान परमेश्वर  
 की दृष्टि में बुराई किई क्योंकि अमून ने अपने पिता मुनस्सी की समस्त खादी  
 हुई मूरतों के लिये बलि चढ़ाया और उन की सेवा किई । और जैसा उस के  
 पिता मुनस्सी ने आप को नम्र किया था तैसा उस ने आप को परमेश्वर के आगे  
 नम्र न किया परन्तु अमून ने अपराध को बढ़ाया । और उस के सेवकों ने उस

याजक और लावी और सारे लोग बड़े से लेके छोटे लों परमेश्वर के मन्दिर में गये और उस ने परमेश्वर के नियम की पुस्तक के सारे वचन जो परमेश्वर के मन्दिर में पाई गई पढ़ सुनाये । और राजा अपने स्थान में खड़ा हुआ और परमेश्वर के मार्ग पर चलने को और उस की आज्ञा और व्यवस्था और विधि को अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से पालन करने को और उस वाचा के वचन को जो इस पुस्तक में लिखा है पूरा करने को परमेश्वर के आगे वाचा ३१ बांधी । और सब जो यरूसलम में और खिनयमीन में पाये गये उन्हें इस बात पर खड़ा किया और यरूसलम के निवासियों ने ईश्वर की अपने पितरों के ईश्वर ३२ की वाचा के समान किया । और यूसियाह ने इसराएल के सन्तानों में के सारे देश में से सारी धिनितों को दूर किया और इसराएल में के सभी से सेवा अर्थात् उन के ईश्वर परमेश्वर की सेवा करवाई उस के जीवन भर वे अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर का पीछा करने से अलग न हुए ॥

पैंतीसवां पर्व ।

- १ और यूसियाह ने यरूसलम में परमेश्वर के निमित्त फसह का पर्व रक्खा और
- २ उन्हें ने पहिले मास की चौदहवीं तिथि में फसह बलि किया । और उस ने याजकों को उन के ठहराये हुए पद पर स्थापित किया और परमेश्वर के मन्दिर
- ३ की सेवा के लिये उन्हें उभारा । और उस ने लावियों से जो सारे इसराएल को उपदेश करते थे और परमेश्वर के लिये पवित्र थे कहा कि पवित्र मंजूपा को उस मन्दिर में रक्खो जो इसराएल के राजा दाऊद के बेटे सुलेमान ने बनाया था तुम्हारे कंधे पर बोझ न रहे अब तुम ईश्वर परमेश्वर की और उस के इसराएल
- ४ लोगों की सेवा करो । और अपने अपने पितरों की गोष्ठी की रीति पर अपनी अपनी पारियों में इसराएल के राजा दाऊद के लिखने के और उस के बेटे सुले-
- ५ मान के लिखने के समान तुम लोग सिद्ध करो । और लोगों के पुत्रों के पितरों के घराने के भाग के समान और लावियों के घरानों के भाग के समान पवित्रता
- ६ में खड़े होओ । सो फसह बलि करो और आप आप को पवित्र करो और अपने भाइयों को सिद्ध करो जिसर्त मूसा के द्वारा से परमेश्वर के वचन के समान
- ७ करें । और यूसियाह ने झुंड में से गिनती में तीस सहस्र भेमें और बकरी के बच्चों और तीन सहस्र बैल लोगों को सब फसह की भेंट के लिये दिये ये राजा की
- ८ संपत्ति से थे । और उस के अध्यक्षों ने लोगों को और याजकों को और लावियों को मनमंता दिया और ईश्वर के मन्दिर के प्रधान खिलकियाह और जकरियाह और यहिएल ने फसह बलि के लिये याजकों को दो सहस्र ब्रूः सौ छोटे घशु और
- ९ तीन सौ बैल दिये । और कननियाह और समर्याह और नतनिएल उस के भाई और लावियों के प्रधान हसबियाह और यईएल और यूजवद ने फसह भेंट के लिये लावियों को पांच सहस्र भेड़ बकरी और पांच सौ बैल दिये ॥
- १० सो अब सेवा सिद्ध हुई और याजक अपने अपने स्थान पर और लावी अपनी
- ११ अपनी पारी में राजा की आज्ञा के समान खड़े हुए । और उन्हें ने फसह बलि किया और याजकों ने अपने अपने हाथ से लोहू छिड़का और लावियों ने उन की

व्यवस्था की एक पुस्तक पाई । फेर खिलकियाह ने उत्तर देके साफन लेखक से १५ कहा कि मैं ने परमेश्वर के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है फिर खिलकियाह ने साफन को पुस्तक सौंपी । और साफन उस पुस्तक को राजा के पास १६ ले गया और राजा के आगे यह कहके बोला कि सब जो आप ने अपने दासों को सौंपा है सो वे करते हैं । और परमेश्वर के मन्दिर में जो रोकड़ पाई गई १७ सो उंडेली गई है और करोड़ों के हाथों में और कार्यकारियों के हाथों में सौंपी गई है । तब साफन लेखक राजा से यह कहके बोला कि खिलकियाह याजक १८ ने मुझे एक पुस्तक दी है और साफन ने उसे राजा के आगे पढ़ा । और १९ ऐसा हुआ कि जब राजा ने व्यवस्था के वचन को सुना तो उस ने अपने कपड़े फाड़े । और राजा ने खिलकियाह को और साफन के बेटे अश्विकाम को और २० भीक के बेटे अग्रदूत को और साफन लेखक को और राजा के सेवक असायाह को कहा । कि मेरे लिये और उन के लिये जो इसराएल में और यहूदाह में बचे २१ हैं इस पुस्तक के वचन के विषय में जो पाई गई है परमेश्वर से दूझो क्योंकि परमेश्वर का बड़ा कोप हम पर पड़ा है इस कारण कि हमारे पितरों ने परमेश्वर के वचन को पालन करने को सभी के समान जो इस पुस्तक में लिखा है नहीं माना ॥

तब खिलकियाह और वे जो राजा से भेजे गये थे वस्त्र के रक्त रश्मि के २२ बेटे तिक्राम के बेटे जलून को पत्नी भविष्यदाचिनी खुलदः पास गये अथ यह यहसलम के पाठशाले में रहती थी और उन्होंने ने उस के समान उसे कहा । और २३ उस ने उन्हें उत्तर दिया कि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जिस जन ने तुम्हें सुझ पास भेजा है उसने कहा । कि परमेश्वर यों कहता है कि देख २४ मैं इस स्थान पर और उस के वासियों पर सारे त्राप जो उस पुस्तक में लिखे हैं जो उन्होंने ने यहूदाह के राजा के आगे पढ़ा है लाजंगा । इस कारण कि उन्होंने २५ ने मुझे छोड़के आन आन देवों के लिये धूप जलाया है जिससे वे मुझे अपने हाथ के सारे कार्यों से रिस दिलावे इस लिये मेरा कोप इस स्थान पर उंडेला जायगा और बुताया न जायगा । और यहूदाह के राजा के विषय में जिस ने तुम्हें परमे- २६ श्वर से दूझने को भेजा उसने यों कहिया कि तेरे सुने हुए वचन पर परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है । इस कारण कि तेरा मन कामल था और जब २७ तू ने इस स्थान के विरुद्ध में और यहां के वासियों के विरुद्ध में परमेश्वर के वचन को सुना था तू ने उस के आगे आप को नम्र किया और मेरे आगे आप को दीन करके अपने वस्त्र को फाड़ा और मेरे आगे विलाप किया इस लिये परमेश्वर कहता है कि मैं ने सुना है । देखो मैं तुम्हें तेरे पितरों में बटोलांगा २८ और तू कुशल से अपनी समाधि में बटोरा जायगा और सारी विपत्ति जो मैं इस स्थान पर और उस के वासियों पर लाजंगा तेरी आंखें न देखेंगी सो उन्होंने ने फिरके राजा को वचन कहा ॥

तब राजा ने भेजके यहूदाह के और यहसलम के सारे प्राचीनों को एकट्ठे २९ किया । और राजा और यहूदाह के सारे लोग और यहसलम के निवासी और ३०

२६ अब यूसियाह की रही हुई क्रिया और उस का अनुग्रह जैसा कि परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है और उस की क्रिया आदि और अंत देखो वे इसराएल के और यहूदाह के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं ।

छत्तीसवां पर्व ।

- १ तब देश के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूअखज को लेकर उस के पिता की
- २ संती उसे यहूसलम में राजा किया । जब यहूअखज ने राज्य करना आरंभ किया
- ३ तो उस की वय तेईस बरस की थी और उस ने तीन मास यहूसलम में राज्य
- ४ किया । तब मिस्र के राजा ने यहूसलम से उसे अलग किया और देश से सौ तोड़े
- ५ चांदी और एक तोड़ा सोना डांड लिया । और मिस्र के राजा ने उस के भाई
- ६ इलयकीम को यहूदाह और यहूसलम पर राजा किया और उस का नाम यहूयकीम
- ७ रक्खा और निकोह उस के भाई यहूअखज को पकड़के उसे मिस्र को ले गया ।
- ८ जब कि यहूयकीम ने राज्य करना आरंभ किया तब वह पचीस बरस का था
- ९ और ग्यारह बरस उस ने यहूसलम में राज्य किया और अपने ईश्वर परमेश्वर की
- १० दृष्टि में उस ने बुराई कीई । बाबुल का राजा नबूखुदनजर उस के बिरुद्ध चढ़
- ११ आया और बाबुल में ले जाने को उसे सीकरों से बांधा । और नबूखुद-
- १२ नजर परमेश्वर के मन्दिर के पात्र बाबुल को ले गया और बाबुल में अपने
- १३ मन्दिर में रक्खा ।
- १४ अब यहूयकीम की रही हुई क्रिया और जो जो धिन उस ने किया और जो
- १५ उस में पाया गया देखो वे इसराएल और यहूदाह के राजाओं की पुस्तक में
- १६ लिखी हैं और उस का बेटा यहूयकीन उस की संती राज्य पर बैठा ।
- १७ जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तब यहूयकीन आठ बरस का था और
- १८ उस ने यहूसलम में तीन मास दस दिन राज्य किया और उस ने परमेश्वर की
- १९ दृष्टि में बुराई कीई । और जब बरस बीत गया तो नबूखुदनजर ने भेजके उसे
- २० परमेश्वर के मन्दिर के बांझित पात्र सहित बाबुल में मंगवाया और उस के भाई
- २१ सिदकयाह को यहूदाह और यहूसलम पर राजा किया ।
- २२ जब सिदकयाह ने राज्य करना आरंभ किया तो वह एकतीस बरस का था
- २३ और उस ने यहूसलम में ग्यारह बरस राज्य किया । और उस ने अपने ईश्वर
- २४ परमेश्वर की दृष्टि में बुराई कीई और परमियाह भविष्यद्वक्ता के आगे परमेश्वर
- २५ के मुंह से कहते हुए आप को नम्र न किया । और वह नबूखुदनजर राजा के
- २६ बिरुद्ध फिर गया जिस ने उसे ईश्वर की किरिया दिलाई थी परन्तु उस ने इसरा-
- २७ एल के ईश्वर की ओर से फिरके अपने गले को और अपने मन को कठोर किया ।
- २८ उस्से अधिक सारे प्रधान याजक और लोगों ने अन्यदेशियों के सारे धिनितों
- २९ के समान बहुत अपराध किया और परमेश्वर के मन्दिर को जिसे उस ने
- ३० यहूसलम में पवित्र किया था अशुद्ध किया । और उन के पितरों के ईश्वर परमे-
- ३१ श्वर ने अपने दूतों के द्वारा से यज्ञ से उन के पास बारंबार भेजा किया कि अपने
- ३२ लोगों पर और अपने निवासस्थान पर उस की दया थी । परन्तु उन्होंने ने परमे-
- ३३ श्वर के दूतों को चिढ़ाया और उस के बचन को तुच्छ जाना और उस के

खाल खींची । और मूषा की पुस्तक के लिखे हुए के समान उन्हीं ने बलिदान १२ की भेंट अलग कीई जिसमें वे लोगों के घराने के विभागों के समान परमेश्वर की भेंट के लिये देव वैसा उन्हीं ने पैलों से भी किया । फिर उन्हीं ने ठहराये १३ हुए के समान फसट आग से भूना और पवित्र भेंटों को उन्हीं ने हांडियों में और दंडों में और कड़ाहियों में उमिना और सारे लोगों को शीघ्र बांट दिया ॥

और उन्हीं ने पीछे अपने और याजकों के लिये मिठ किया क्योंकि दाम्न के १४ सन्तान याजक रात लों बलिदान की भेंट और चिकनाई चढ़ाते थे इस लिये लावियों ने अपने लिये और दाम्न के बेटे याजकों के लिये मिठ किया । और १५ दाऊद की और आसफ की और हेमान की और राजा के दर्जा यदून की आज्ञा के समान आसफ को गायक बेटे अपने अपने ठिकाने पर और द्वारपालक हर एक फाटक पर थे उन्हें अवश्य न था कि वे अपनी अपनी सेवा में अलग होवें क्योंकि उन के भाई लावियों ने उन के लिये मिठ किया था । सो यूसियाह राजा १६ की आज्ञा के समान फसट पालन करने को और परमेश्वर की वेदी पर बलिदान की भेंट चढ़ाने को परमेश्वर की सारी सेवा उसी दिन मिठ हुई । और जो इस- १७ रायल के सन्तान पाये गये उन्हीं ने फसट और अखमीरी रोटी का पर्व रखने को सात दिन लों पालन किया ॥

और समूगल भविष्यद्वक्ता के दिनों से इसरायल में ऐसा फसट न हुआ था १८ और इसरायल के सारे राजाओं ने भी ऐसा फसट न रक्खा था जैसा कि यूसियाह और याजकों और लावियों और सारे यदूदाह और इसरायल जो वहाँ थे और यरुसलम के निवासियों ने रक्खा था । यूसियाह के राज्य के अठारहवें बरस १९ में यह फसट रक्खा गया ॥

इन सभी के पीछे जब यूसियाह ने मन्दिर मिठ किया तो निम का राजा २० निकोद फुरात नदी की ओर से करकिमोस में संग्राम के लिये आया तब यूसियाह उस के विरुद्ध निकला । परन्तु उस ने दूतों के द्वारा उसे कहला भेजा कि हे २१ यदूदाह के राजा तुझ से मेरा क्या काम आज तेरे विरुद्ध नहीं परन्तु जिस के घराने से मेरा संग्राम है उस के विरुद्ध आता हूँ क्योंकि परमेश्वर ने मुझे शीघ्र करने को आज्ञा कीई सो तू ईश्वर से रहि जा जो मेरे साथ है जिससे वह तुझे नाश न करे । तथापि यूसियाह ने उससे मुंह न मोड़ा परन्तु उससे लड़ने के लिये २२ अपना भेष बदला और ईश्वर के वचन को निकोद के द्वारा से न माना और लड़ने के लिये मजिदो की तराई में आया । और धनुषधारियों ने यूसियाह राजा २३ को और सारा तब राजा ने अपने सेवकों से कहा कि मुझे ले जाओ क्योंकि मुझे बड़ा घाव लगा है । इस लिये इस के सेवकों ने उसे उस रथ से उतारा और २४ उस के दूसरे रथ पर उसे चढ़ाया और यरुसलम को ले गये और वह मर गया और अपने पितरों की समाधि में गाड़ा गया और सारे यदूदाह और यरुसलम ने यूसियाह के लिये विलाप किया । और यरमियाह ने यूसियाह के लिये विलाप २५ किया और सारे गायक और गायिका अपने अपने विलाप में आज लों यूसियाह की यात कहते हैं और इसरायल में अपने लिये ठहराया और देखो वे विलापों में लिखे हैं ॥



- ६९ उन्हें ने अपनी सामर्थ्य के समान कार्य के भंडार में एकसठ सहस्र दिरम सोना और पांच सहस्र मानः चांदी और याजकों के सौ वस्त्र दिये ॥
- ७० सो याजक और लावी और लोगों में से और गायक और द्वारपालक और मन्दिर के सेवक अपने अपने नगरों में और सारे इसराएल अपने अपने नगरों में बसे ॥

### तीसरा पर्व ।

- १ और जब सातवां मास पहुंचा और इसराएल के सन्तान अपने नगरों में थे
- २ तब लोग यरूशलम में एक जन की नाई एक संग एकट्ठे हुए । तब यूसदक के बेटे युशूअ ने और उस के भाई याजकों ने और सियालतिएल के बेटे जरूबाबुल और उस के भाई उठे और इसराएल के ईश्वर की वेदी को बनाया कि जैसा ईश्वर के जन मूसा की व्यवस्था में लिखा है उस पर बलिदान की भेंट चढ़ाई ॥
- ३ और उन्होंने ने उस वेदी को उस के स्थान पर रक्खा क्योंकि उन देशों के लोगों के लिये उन पर भय था और उन्होंने ने परमेश्वर के लिये उस पर बलिदान
- ४ की भेंट चढ़ाई अर्थात् सांभ बिहान के बलिदान की भेंट । और लिखे हुए के समान उन्होंने ने तंबुओं का पर्व रक्खा जैसा कि प्रतिदिन का व्यवहार था उस
- ५ के समान प्रतिदिन गिन गिनके बलिदान की भेंट चढ़ाई । और उस के पीछे नित्य के लिये और अमावस्यों के लिये और परमेश्वर के पवित्र किये हुए सारे पर्वों के लिये और उन सभी के लिये जो परमेश्वर के लिये मन खोलके चढ़ावा
- ६ लाते थे बलिदान की भेंट चढ़ाई । सातवें मास की पहिली तिथि से उन्होंने ने परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाना आरंभ किया परन्तु परमेश्वर के
- ७ मन्दिर की नेव अब लों डाली न गई थी । और उन्होंने ने थवइयों को और बड़इयों को रोकड़ और सैदानियों को और सूर के लोगों को अन्नजल और तेल दिया कि फारस के राजा खोरस की आज्ञा के समान देवदारु पेड़ लुवनान से याफा के समुद्र लों लाये ॥
- ८ और यरूशलम में परमेश्वर के मन्दिर में फिर आने के दूसरे बरस और दूसरे मास में सियालतिएल के बेटे जरूबाबुल और यूसदक के बेटे युशूअ और उन के बच्चे हुए भाई याजक और लावी और सब जो बंधुआई में से यरूशलम में आये थे आरंभ किया और परमेश्वर के मन्दिर के कार्य के देखने के लिये बीस बरस
- ९ के और ऊपर लावियों को ठहराया । तब युशूअ अपने बेटे और भाई और कदमिएल और उस के बेटे जो यहूदाह के बेटे थे एक संग उठे कि ईश्वर के मन्दिर के कार्यकारियों को देखें और हज्जादाद के बेटे और उन के भाई लावी ऐसा ही करते थे ॥
- १० और जब थवई परमेश्वर के मन्दिर की नेव डालते थे तब याजक वस्त्र पहिने हुए और तुरहियां लेके और आसफ के बेटे लावी करताल लेके उठ खड़े
- ११ हुए कि इसराएल के राजा दाजद के समान परमेश्वर की स्तुति करें । और वे पारी पारी स्तुति करते और परमेश्वर का धन्य मानते हुए गाते थे इस कारण कि यह भला है और उस की दया सदा इसराएल पर है और जब वे परमेश्वर

भयिष्णुत्वों की दुर्दशा किई यहाँ ली कि परमेश्वर का कोप उस के लोगों के विरुद्ध उभरा और उपाय न रहा ।

इस लिये वह कमरियों के राजा को उन पर लाया जिस ने उन के पवित्र १७ स्थान में उन के तरुणों को तलवार से घात किया और उन के तरुणों पर अथवा कुंआरियों पर अथवा वृद्धों पर अथवा कुबड़े पुरानियों पर दया न किई उस ने सभी को उस के हाथ में कर दिया । और ईश्वर के मन्दिर के छोटे बड़े मारे १८ पात्रों को और परमेश्वर के मन्दिर के धन और राजा के और उस के अधिकारों के धन सब को वह बाबुल में लाया । और उन्होंने ने ईश्वर के मन्दिर को जला १९ दिया और यरुसलम की भीत को गिरा दिया और उस के सारे भयनों को आग से जला दिया और सारे उत्तम पात्रों को नाश किया । और खड्ग से बचे हुए २० को बाबुल में पहुँचाया जहाँ वे उस के और उस के पुत्रों के सेवक फारस के राज्य लों बने रहे । जिसने परमेश्वर का वचन जो यरमियाह के द्वारा कहा गया २१ पूरा होवे कि जब लों भूमि ने अपना विग्राम पूरा न किया क्योंकि जितने दिनों वह उजाड़ पड़ी रही वह विग्राम करती थी जब लों सत्तर वर्ष पूरे न हुए ।

अब फारस के राजा खारस के पहिले वरस जिसने यरमियाह के द्वारा परमे- २२ श्वर का वचन पूरा होवे परमेश्वर ने फारस के राजा खारस के मन को उभारा कि उस ने अपने सारे राज्य में सर्वत्र प्रचार करवाया और यह कहके लिखवाया भी । कि फारस का राजा खारस कहता है कि स्वर्ग के ईश्वर परमेश्वर ने पृथिवी २३ के सारे राज्य मुझे दिये हैं और उन ने अपने लिये यहूदाह के देश के यरुसलम के घर बनवाने को मुझे आज्ञा दिई है सो जो उस के सारे लोगों में तुम्में है उस का ईश्वर परमेश्वर उस के साथ हो और वह चढ़ जाये ॥

## एजरा की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

और जिसने परमेश्वर का वचन यरमियाह के द्वारा से पूरा होवे परमेश्वर ने १ फारस के राजा खारस के मन को उभाड़ा कि फारस के राजा खारस के राज्य के पहिले वरस में उस ने अपने सारे राज्य में प्रचार करवाया और यह कहके लिखवाया भी ॥

कि फारस का राजा खारस यों कहता है कि परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर ने २ पृथिवी का सारा राज्य मुझे दिया है और यहूदाह के यरुसलम में अपने लिये एक मन्दिर बनाने को मुझे आज्ञा किई है । उस के सारे लोगों में से तुम्हों में कौन ३ है उस का ईश्वर उस के संग होवे और वह यहूदाह के यरुसलम को चढ़ जाये और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का मन्दिर बनावे वही ईश्वर है जो यरुसलम में है । और जो कोई किसी स्थान में रहता है जहाँ कहीं वह वास करता हो ४

- १४ अब इस कारण कि हम भवन का लोह खाते हैं उचित नहीं है कि हम राजा  
 १५ का अनादर देखें इस लिये हम ने भेजके राजा को जनाया है । जिससे आप  
 अपने पितरों के वर्णन की पुस्तक में छूट लीजिये सो आप वर्णन की पुस्तक में  
 पावेंगे और जानेंगे कि यह नगर दंगहत नगर और राजाओं का और प्रदेशों का  
 दुःखदायक और कि वन्तों ने उसी के मध्य पुरातन समय में दंगा किया है उसी  
 १६ कारण से यह नगर नाश किया गया था । इस लिये हम राजा को जताते हैं कि  
 यदि यह नगर बनाया जाय और उस की भीत खड़ी किई जाय तो इसी कारण  
 से नदी के इस अलग आप का कुछ भाग न रद्दगा ॥
- १७ तब राजा ने रहुम प्रधान मंत्री को और शम्सी लेखक को और उन के रहे  
 हुए साधियों को जो समरैन में रहते हैं और नदी पार के उयरे हुओं को उत्तर  
 १८ दिया कि अमुक समय में कुशल । जिस पत्री को तुम ने हमारे पास भेजा खोल  
 १९ खोल मेरे आगे पढ़ी गई । और मैं ने आज्ञा किई है और छूड़ा गया है और  
 पाया गया है कि पुरातन समय में इस नगर ने राजाओं के विरुद्ध में आप को  
 २० उभाड़ा है और उस में दंगा और दुल्लड़ हुआ है । यरुसलम पर बलवंत राजा भी  
 हुए हैं जिन्होंने ने नदी पार के सभों पर राज्य किया है और उन्हें शूलक और कर  
 २१ और पोत दिये जाते थे । सो अब आज्ञा करो कि वे थम जायें और कि यह  
 २२ नगर बनाया न जाये जब लों मुझ से आज्ञा न पायें । सो अब चौकस होओ  
 जिससे इस बात में कुछ न घटे राजाओं के लिये क्यों घटती छावे ॥
- २३ सो जब अरदशेर राजा की पत्री का उतारा रहुम के और शम्सी लेखक के  
 और उन के संगियों के आगे पढ़ा गया तब वे शीघ्र करके यरुसलम को यहूदियों  
 २४ के पास चढ़ गये और भुजा के बल से उन का कार्य बंद करवाया । तब यह-  
 सलम में परमेश्वर के मन्दिर का कार्य थम गया सो फारस के राजा दारा के  
 राज्य के दूसरे बरस लों बंद रहा ॥

पांचवां पर्व ।

- १ और हज्जी भविष्यद्वक्ता ने और ईहू के बेटे जकरियाह भविष्यद्वक्ता ने यहू-  
 दाह और यरुसलम के यहूदियों को इसराएल के ईश्वर के नाम से भविष्य कहा ।  
 २ तब सियालतिएल का बेटा जर्ब्याबुल और यूसदक का बेटा युशूअ उठे और  
 यरुसलम में ईश्वर के मन्दिर का बनाना आरंभ किया और उन के साथ सहायता  
 के लिये ईश्वर के भविष्यद्वक्ते थे ॥
- ३ . उस समय नदी के इस पार के अध्यक्ष ततनी और सितारबाजनार्ई और उन के  
 संगी उन पास आके बोले कि तुम्हें यह मन्दिर बनाने को और यह भीत उठाने  
 ४ को किस ने आज्ञा दिई है । तब हम ने उन्हें इस रीति से कहा कि जो बनता  
 ५ है इन के बनवैयों के नाम क्या हैं । परन्तु परमेश्वर की दृष्टि यहूदियों के प्राचीनों  
 पर थी कि वे उन्हें रोक न सक्ते थे जब लों यह बात दारा पास न पहुंची और  
 तब उन्होंने ने उस के विषय में उत्तर दिया ॥
- ६ पत्री का उतारा जो नदी के इस पार के अध्यक्ष ततनी और सितारबाजनार्ई और  
 उस के संगियों ने अफरसकी जो नदी के इस पार रहते थे दारा राजा पास भेजा ॥

की स्तुति करते थे तब मारे लोग परमेश्वर के मन्दिर की नेत्र डालने में बड़े शब्द से ललकारते थे । परन्तु बहुत से याजकों और लावियों और पितरों के प्रधानों १२ में प्राचीन जिनमें ने पटिले मन्दिर को देखा था तब इस मन्दिर की नेत्र उन के देखने में डाली गई तो बड़े शब्द से विलाप किया और बहुतरे आनन्द के मारे ललकार उठे । यहाँ लों कि लोग आनन्द के शब्द में और लोगों के विलाप के १३ शब्द में बेधरा न कर सके क्योंकि लोगों ने बड़े शब्द से ललकारा और शब्द दूर लों सुना गया ॥

चौथा पर्व ।

और जब यहूदाह और विनयमीन के वारिषों ने सुना कि देश में निकाले हुए १ के बड़े इसरायल के ईश्वर परमेश्वर के निये मन्दिर बनाते हैं । तब उन्होंने ने २ जेरुबाबुल के और पितरों के प्रधान के पास आके उन से कहा कि हमें भी अपने साथ बनाने देखा क्योंकि हम तुम्हारी नाई तुम्हारे ईश्वर को खोजते हैं और हम अमूर के राजा अमरहदून के दिनों से जो हमें उठा लाया है उस के लिये बलि चढ़ाते हैं । परन्तु जेरुबाबुल और दुग्गल और इसरायल के पितरों के रहे ३ हुए प्रधानों ने उन्हें कहा कि तुम्हारा काम नहीं कि हमारे साथ हमारे ईश्वर के निये मन्दिर बनाओ परन्तु हम एकट्टे होके आप इसरायल के ईश्वर परमेश्वर के निये बनावेंगे जैसी फारस के राजा खारस ने हमें आज्ञा की है । तब देश ४ के लोगों ने यहूदाह के लोगों के हाथों का ढीला किया और बनाने में उन्हें सहाया । और फारस के राजा खारस के समय में लेके फारस के राजा द्वारा के ५ राज्य लों उन्होंने ने उन के कार्य भंग करने को उन के विरुद्ध में रोकड़ देकर मंत्रियों को उदराया ॥

और उन्होंने ने शेरशाह राजा के आरंभ में यहूदाह के और यरुसलम निवासियों ६ के विरुद्ध दोषपत्र लिखा । और अरदशेर के दिनों में विसलाम ने और मित्रदाह ७ ने और तावियल ने और उन के रहे हुए मंत्रियों ने फारस के राजा अरदशेर पास पत्री लिखी और वह पत्री अरामी भाषा में थी और उस का अर्थ भी अरामी भाषा में किया गया । यहूद प्रधान मंत्री ने और शम्सी लेखक ने राजा अरदशेर ८ के पास यरुसलम के विरुद्ध इस भांति की पत्री लिखी । तब यहूद प्रधान मंत्री ९ ने और शम्सी लेखक ने और उन के बचे हुए साधियों ने दीनाई और अफरसतजः और तरकीलः और अफारमी और अर्कियो और बबूलनी और सूसानकी और दिद्यायी और गलामी । और जानिगणों के रहे हुए जिनके सटान और कुलीन उसनफ़र १० ने लार्के समरैन के नगरों में और नदी इस पार के रहे हुएों को धमाया इत्यादि ॥

उन्होंने ने राजा अरदशेर पास यही पत्री भेजी कि आप के सेवक जो नदी ११ के इस अलंग रहते हैं इत्यादि समय में । राजा पर प्रगट होय कि यहूदी जो १२ आप की ओर से हमारे पास आये हैं सो यरुसलम में आपके उस दंगइत और दुष्ट नगर को बनाते हैं और भीतों को खड़ी किये हैं और नेवां को जोड़ा है । सो १३ अथ राजा पर प्रगट होये कि यदि यह नगर बन जाय और भीत उठ जाय तो ये शुल्क और कर और पोत न देंगे और राजाओं के भंडार की टूटी होगी ।

- ७ अफरसकी जो नदी के पार हैं तुम वहां से दूर होओ । ईश्वर के इस मन्दिर के कार्य को बने देओ यहूदियों के अध्यक्ष को और उन के प्राचीनों को ईश्वर के इस मन्दिर को उस स्थान में बनाने देओ । और इससे अधिक मैं ने ईश्वर के इस मन्दिर के बनाने के लिये एक आज्ञा किई है कि तुम यहूदियों के प्राचीनों से यों करियो कि राजा की संपत्ति से अर्थात् नदी के पार के कर से उन लोगों को तुरन्त उठा दिया जावे जिसमें वे रोके न जावें । और जो कुछ उन्हें स्वर्ग के ईश्वर के बलिदान की भेंट के लिये वैल और मेढे और मेमे और गोहूँ और लोन और दाखरस और तेल यरुसलम में याजकों के ठहराने के समान अवश्य होवे १० सो उन्हें प्रतिदिन निरंतर दिया जावे । जिसमें वे स्वर्ग के ईश्वर के लिये बलि के सुगंध चढ़ावें और राजा के और उस के बेटों के जीवन के लिये प्रार्थना करें । ११ और मैं आज्ञा भी दे चुका कि जो कोई इस बचन को पलटेगा उस के घर से लट्ठा खींचा जाये और खड़ा किया जाके वही उस पर टांगा जावे और इस बात के लिये उस का घर कूड़ा का ढेर किया जावे । और जिस ईश्वर ने अपने नाम को उस में बसाया है सारे राजाओं को और लोगों को जो यरुसलम में ईश्वर के इस मन्दिर को पलटने को और नाश करने को हाथ बढ़ावें नाश करे मुझ दारा ने यह आज्ञा ठहराई है सो शीघ्र किई जावे ॥
- १३ तब नदी के इस पार के देश के अध्यक्ष ततनी और सितारबाजनाई और १४ उन के साथियों ने दारा राजा के भेजने के समान शीघ्रता से किया । और यहूदियों के प्राचीनों ने बनाया और हज्जी भविष्यद्वक्ता और ईदू के बेटे जकरियाह भविष्यद्वक्ता के भविष्य कहने से भाग्यवान हुए और बनाके इसराएल के ईश्वर की आज्ञा के समान और फारस के राजा खेरस का और दारा की और अरद- १५ शेर की आज्ञा के समान पूरा किया । और यह मन्दिर अदार मास की तीसरी तिथि में बन गया जो दारा राजा के कूठवें बरस में था ॥
- १६ और इसराएल के सन्तान याजक और लावी और देश से निकाले गये के १७ सन्तानों ने आनन्द से ईश्वर के इस मन्दिर की प्रतिष्ठा किई । और ईश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा में सौ वैल और दो सौ रेंडे और चार सौ मेमे और सारे इसराएल के पाप की भेंट के लिये इसराएल की बारह गोष्टी की गिनती के १८ समान बारह बकरे चढ़ाये । और मूसा की पुस्तक के लिखे हुए के समान उन्होंने ने याजकों को उन के विभाग में और लावियों को उन की पारियों पर यरुसलम में ईश्वर की सेवा के लिये रक्खा ॥
- १९ और पहिले मास की चौदहवीं तिथि में बंधुआई के सन्तानों ने फसह का २० पर्व रक्खा । क्योंकि याजकों और लावियों ने आप को पवित्र किया था वे सब के सब शुद्ध हुए और बंधुआई के सारे सन्तानों के लिये और अपने याजक भाइयों के लिये और अपने लिये उन्होंने ने फसह बलि किया । और इसराएल के सन्तान जो बंधुआई से फिर आये और सभी ने जो कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये देश के अन्यदेशियों की मलीनता से उन में आप को अलग किया २१ था खाया । और आनन्द से सात दिन अखमीरी रोटी का पर्व रक्खा क्योंकि

उन्होंने ने उस पास पत्री लिखी जिस में यों था दारा राजा को सारा कुशल । ७  
 राजा पर प्रगट होवे कि हम यहदाह के प्रदेश परमेश्वर के मन्दिर में गये जो ८  
 बड़े बड़े पत्थरों से बनता है और भीतों पर लट्टे धरे हैं और यह कार्य शीघ्र  
 बनता जाता है और उन के हाथों में बड़ जाता है । तब हम ने उन प्राचीनों ९  
 से यों कहके पूछा कि यह मन्दिर बनाने को और ये भीतें उठाने को किस ने  
 तुम्हें आज्ञा दीई । आप को जनाने के लिये हम ने उन का नाम भी पूछा जिसने १०  
 हम उस के प्रधान जनों के नाम लिखे । और उन्होंने ने हमें यों उत्तर दिया ११  
 कि हम स्वर्ग और पृथिवी के ईश्वर के सेवक हैं और यही मन्दिर बनाते हैं जो  
 बहुत घरों में बना था जिसे इसरायल के एक महाराज ने बनवाया और उठाया  
 था । परन्तु जब हमारे पित्रों ने स्वर्ग के ईश्वर का कोप भड़काया तब उस ने १२  
 उन्हें बाबुल के राजा कमडी नबूयुदनजर के हाथ में सौंपा जिस ने इस मन्दिर  
 को नष्ट किया और लोगों को बाबुल में ले गया । परन्तु बाबुल के राजा खारस १३  
 के पहिले घरम खारस राजा ने ईश्वर के इस मन्दिर बनाने के लिये आज्ञा  
 कीई । और ईश्वर के मन्दिर के सोने चांदी के पात्रों को भी जिन्हें नबूयुदनजर १४  
 यरुसलम के मन्दिर में निकाल लाया और बाबुल के मन्दिर में पहुंचाया उन्होंने  
 को खारस राजा ने बाबुल के मन्दिर से निकाल लिया और चसपानआजर नाम  
 एक जन को सौंपा जिसे उस ने अध्यक्ष किया था । और उसे कहा कि इन पात्रों १५  
 को लेके जा और यरुसलम के मन्दिर में पहुंचा और ईश्वर का मन्दिर अपने  
 स्थान में बनाया जावे । तब यही चसपानआजर आया और यरुसलम में ईश्वर १६  
 के मन्दिर की नैय डाली और उस समय से अब लों बन रहा है और अब लों  
 बन नहीं चुका । अब यदि राजा को अच्छा जान पड़े तो राजा के भंडारघर १७  
 में जो बाबुल में है ढूंढा जावे कि खारस राजा ने यरुसलम में ईश्वर का  
 मन्दिर बनाने का आज्ञा कीई थी कि नहीं और इस बात के विषय में राजा  
 हम पर अपनी इच्छा जनावे ॥

### छठवां पर्व ।

तब दारा राजा की आज्ञा से पुस्तकों का घर जहां बाबुल में धन धरा १  
 जाता था ढूंढा गया । और अखमताभवन में जो सारी के प्रदेश में है एक पत्र २  
 पाया गया और उस में यों लिखा था ॥

कि खारस राजा के पहिले घरम में खारस राजा ने आज्ञा कीई कि यरुसलम ३  
 में ईश्वर के लिये मन्दिर उस स्थान में जहां बलि चढ़ाते थे बनाया जावे और  
 उस की नैय दृढ़ता से डाली जाये उस की ऊंचाई साठ हाथ और चौड़ाई साठ  
 हाथ की । तान पांती बड़े बड़े पत्थर की और एक पांती नये लट्टे की और उस ४  
 की लागत राजभवन से दीई जावे । और ईश्वर के मन्दिर के जो जो सोना ५  
 चांदी के पात्र नबूयुदनजर यरुसलम के मन्दिर से निकाल लाया और बाबुल में  
 पहुंचाया था सो भी फेर दिया जावे और यरुसलम के मन्दिर में अपने अपने  
 स्थान में लाया जावे और ईश्वर के मन्दिर में रक्खा जावे ॥

अब नदी के पार का अध्यक्ष सतनी और सितारवाजनाई और उन के संगी ६



२१ तेरे ईश्वर के मन्दिर के लिये जो कुछ अधिक आवश्यक होय जो तुम्हें देने पर  
 २२ से राजा के भंडारस्थान से देना । और मैं अर्थात् मैं ही अरदशेर राजा मारे  
 २३ भंडारियों के लिये जो नदी पार हैं आज्ञा करता हूँ कि स्वर्ग के ईश्वर की व्यवस्था  
 २४ का लेखक रजरा याजक को जो कुछ तुम से चाहे । सो एक सौ तोड़े चांदी  
 २५ और सौ परिमाण गोहूँ और सौ वत्त दाखरस और सौ वत्त तेल लों और बिना  
 २६ परिमाण नोन दिया जावे । जो कुछ स्वर्ग के ईश्वर की आज्ञा है सो स्वर्ग के  
 २७ ईश्वर के मन्दिर के लिये यत्र मे किया जावे क्योंकि राजा के राज्य के और उस  
 २८ के बेटों के विरुद्ध क्यों कोप होवे । और हम तुम्हें जता देते हैं कि याजकों के  
 २९ और लावियों के और गायकों और द्वारपालकों और मन्दिर के सेवकों के अथवा  
 ३० ईश्वर के इस मन्दिर के सेवकों के विषय में कर अथवा शुल्क अथवा पौत उन  
 ३१ से लेना तुम्हें उचित नहीं है । और हे रजरा तू अपने ईश्वर की युद्धि के समान  
 ३२ जो तुझ में है न्यायक और विचारक को ठहरा जिसने नदी पार के सारे लोगों  
 ३३ का सब जो तेरे ईश्वर की व्यवस्था जानते हैं न्याय करें और जो नहीं जानते हैं  
 ३४ तू उन्हें सिखला । और जो कोई तेरे ईश्वर की व्यवस्था को और राजा की  
 ३५ व्यवस्था को पालन न करे उन पर दण्ड की आज्ञा शीघ्र किई जावे चाहे मृत्यु  
 ३६ लों अथवा देश से निकाले जाने लों अथवा संपत्ति के लेने लों अथवा बंधन में  
 ३७ डालने लों ॥

३८ परमेश्वर हमारे पितरों के ईश्वर का धन्यवाद होवे जिस ने यहसलम में  
 ३९ अपने मन्दिर को शोभित करने के लिये ऐसी दात सजा के मन में डाली । और  
 ४० राजा के और उस के मंत्रियों के आगे और राजा के सारे पराक्रमी अध्यक्षों के  
 ४१ आगे सुझ पर दया किई और परमेश्वर की सहायता के समान मैं ने दृढ़ता  
 ४२ पाई और मैं ने अपने संग चलने के लिये इसराएल में से श्रेष्ठ मनुष्यों को एकट्ठा  
 ४३ किया ॥

### आठवां पर्व ।

१ अब उन के पितरों का प्रधान और उन की वंशावली जो अरदशेर राजा  
 २ के राज्य में मेरे संग बाबुल से चढ़ गये थे ये हैं । फोनिहाम के बेटों में से  
 ३ गैरसुम ईतमर के बेटों में से दानिएल दाऊद के बेटों में से हतूश । सकनियाह  
 ४ के बेटों में से बुरगुस के बेटों में से जकरियाह और उस के संग डेढ़ सौ पुरुष  
 ५ गिने गये । पखतमोअव के बेटों में से जरहियाह का बेटा इलियाहूरेनी और उस  
 ६ के संग दो सौ पुरुष । सकनियाह के बेटों में से यहजिएल का बेटा और उस  
 ७ के संग तीन सौ पुरुष । अडीन के बेटों में से भी यूनतन के बेटे अबद और उस  
 ८ के संग पचास पुरुष । और ऐलाम के बेटों में से अतलियाह का बेटा यसग्रियाह  
 ९ और उस के संग सत्तर पुरुष । और सफतियाह के बेटों में से मीकाएल का बेटा  
 १० जबदियाह और उस के संग अस्सी पुरुष । यूअव के बेटों में से यहिएल का बेटा  
 ११ अबदियाह और उस के संग दो सौ अठारह पुरुष । और सलूमियत के बेटों में  
 १२ से यूसिफियाह का बेटा और उस के संग एक सौ साठ पुरुष । और बबी के बेटों  
 १३ में से बबी का बेटा जकरियाह और उस के संग अठ्ठाईस पुरुष । अजगाद के

परमेश्वर ने उन्हें आनन्दित किया था और असुर के राजा के मन को उन की ओर फेरा कि ईश्वर इसराएल के ईश्वर के मन्दिर के कार्य में उन के हाथ को दृढ़ करे ।  
सातवां पर्व ।

अब इन बातों के पीछे फारस के राजा अरदशेर के राज्य में रत्नरा जो १  
शिरायाह का बेटा अजरियाह का बेटा खिलकियाह का बेटा । सलूम का बेटा २  
सदूक का बेटा अखितूब का बेटा । अमरियाह का बेटा अजरियाह का बेटा ३  
मिरयात का बेटा । जराहियाह का बेटा उज्जी का बेटा यूकी का बेटा । अयिसूअ ४  
का बेटा मीनिदास का बेटा इलिअजर का बेटा हारुन प्रधान याजक का बेटा । ५  
यही रत्नरा बाबुल से उठ चला और मूसा की व्यवस्था में जिसे इसराएल के ६  
ईश्वर परमेश्वर ने दिया था निपुण अध्यापक था और राजा ने उस की मारी ७  
वांछा उसे दिई इस लिये कि परमेश्वर उस का ईश्वर उस का सहायक था । और ८  
अरदशेर राजा के सातवें बरस इसराएल के सन्तानों में से और याजकों में से ९  
और लावी और गावक और द्वारपाल और मन्दिर के सेवक यरुसलम को गये । १०  
और राजा के सातवें बरस के पांचवें मास में वह यरुसलम में पहुंचा । क्योंकि ११  
उस ने बाबुल से चढ़ जाने का आरंभ पटिले मास की पटिली तिथि में किया १२  
और ईश्वर की सहायता के समान जो उस पर थी पांचवें मास की पटिली तिथि १३  
में यरुसलम में पहुंचा । क्योंकि रत्नरा ने परमेश्वर की व्यवस्था के स्वागत के लिये १४  
और उसे पालने के लिये और इसराएल में विधि और विचार सिखाने के लिये १५  
अपने मन को सिद्ध किया था ।

अब उस पत्री का उत्तारा जो अरदशेर राजा ने रत्नरा याजक और लेखक १६  
को जो दिया था वह है परमेश्वर की आज्ञाओं के बचन और इसराएल के १७  
विधि में निपुण था ।

राजाओं का राजा अरदशेर स्वर्ग के ईश्वर की व्यवस्था के सिद्ध लेखक १८  
रत्नरा याजक को इत्यादि । मैं आज्ञा करता हूं कि मेरे राज्य में इसराएल के १९  
सारे लोग और उस के याजक और लावी जो अपनी अपनी इच्छा से यरुसलम २०  
को चढ़ जाने चाहते हैं तेरे साथ जायें । जैसा कि तू राजा के आगे से और उस २१  
के सात मंत्रियों से भेजा जाता है कि तू अपने ईश्वर की व्यवस्था के समान जो २२  
तेरे हाथ में है यहूदाह और यरुसलम के विषय में बूझे । और सोना चांदी जो २३  
राजा और उस के मंत्रियों ने इसराएल के ईश्वर के लिये जिस का निवास यरु- २४  
सलम में है मनमंता भेंट चढ़ाई है पहुंचाये । और सारे सोना चांदी जो तू बाबुल २५  
के सारे प्रदेश में लोगों के और याजकों के मनमंता की भेंट के संग जो अपने २६  
ईश्वर के मन्दिर के लिये जो यरुसलम में है पा सकता है । जिसमें तू इस रोकड़ २७  
से जाग्र वैल और मंके और मेमे इन के मांस की और पीने की भेंट सहित माल २८  
लेवे और यरुसलम में अपने ईश्वर के मन्दिर की वेदी पर चढ़ावे । और उबरे २९  
हुए सोना चांदी से जो कुछ तुझे और तेरे भाइयों को करने को अच्छा लगे सो ३०  
अपने ईश्वर की इच्छा के समान करें । और जो जो पात्र तेरे ईश्वर के मन्दिर ३१  
की सेवा के लिये तुझे दिये गये हैं सो यरुसलम के ईश्वर के आगे सौंप दे । और ३२

के और लावियों के और इसराएल के पितरों के प्रधानों के आगे तैल न देओ ।  
 ३० सो याजकों और लावियों ने सेना चांदी और पात्र को तैल लिया जिसमें यह-  
 सलम में हमारे ईश्वर के मन्दिर में पहुँचावे ॥

३१ तब हम यरुसलम को जाने के लिये पहिले मास की वारहवीं तिथि में अरव्या  
 नदी से चल निकले और हमारे ईश्वर की सहायता हम पर थी और उस ने हमें  
 ३२ बैरियों के और जो मार्ग में घात में लगे थे उन के हाथों से बचाया । फिर हम  
 ३३ यरुसलम में पहुँचके तीन दिन वहाँ रहे । अब चौथे दिन में वह सेना चांदी  
 और पात्र हमारे ईश्वर के मन्दिर में जरियाह याजक के बेटे मरीमात के हाथ  
 में तैला गया और उस के संग फीनिहाम के बेटे इलियाजर और उन के संग  
 ३४ युशूय का बेटा यूजवद और चिनवी का बेटा नोअदियाह लायी थे । हर एक को  
 गिनके और तैलके और उसी समय में सारी तैल लिखी गई ॥

३५ निकाले हुआ के मन्तान जो बंधुआई से फिर आये थे इसराएल के ईश्वर  
 के बलिदान की भेंटों के लिये सारे इसराएल के कारण वारह बैल और पाप  
 की भेंट के लिये कानवे भेंटे और मतहततर मेमू और वारह बकरे भेंट दिये सब  
 ३६ परमेश्वर के बलिदान की भेंट के लिये । और उन्होंने ने राजा की पत्नियों को  
 राज्य के प्रधानों को और नदी के इस पार के अध्यक्षों को दिया और उन्होंने ने  
 लोगों की और ईश्वर के मन्दिर की सहायता कीई ॥

नवों पृष्ठ ।

१ सो जब ये बातें हुईं तब अध्यक्ष मुझ पास आके बोले कि इसराएल के  
 लोग और याजक और लावी ने देश के लोगों में से आप को अलग न किया  
 पर कनअनियों और हितियों और फरिजियों और यूसुवियों और अम्मूनियों और  
 २ मोअवियों और मिसियों और असूरियों के धनितों के समान करते हैं । क्योंकि  
 उन्होंने ने उन की लड़कियों में से अपने लिये और अपने बेटों के लिये लिया यहां  
 लों कि पवित्र वंश देश के लोगों में मिल गये हैं हां इस अपराध में अध्यक्ष  
 ३ और आज्ञाकारियों के हाथ अगुआ हुए हैं । सो मैं ने यह बात सुनके अपना  
 वस्त्र और अपना ओढ़ना फाड़ा और अपने सिर के बाल और दाढ़ी नाच डाली  
 ४ और बिस्मित बैठ गया । तब उन के पापों के कारण जो उठाये गये थे इसरा-  
 एल के ईश्वर के वचन से हर एक जो डरता था मेरे आगे बटुर गया और सांभ  
 की भेंट लों में बिस्मित बैठा रहा ॥

५ और सांभ की भेंट के समय में मैं अपने शोक से उठा और अपने वस्त्र  
 और ओढ़ने फाड़े हुए छुटना टेका और अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे हाथ  
 ६ फैलाये । और कहा कि हे मेरे ईश्वर मैं लज्जित हूं और हे मेरे ईश्वर मैं तेरी  
 और सिर उठाने को लजाता हूं क्योंकि हमारे सिर पर हमारी दुष्टता बढ़ गई  
 ७ है और हमारा अपराध स्वर्ग लों उठ गया है । अपने पितरों के समय से आज  
 लों हम ने बड़ा अपराध किया है और हमारी दुष्टता के लिये हम और हमारे  
 राजा और हमारे याजक देशियों के राजाओं के हाथ में तलवार और बंधुआई  
 ८ में लूट और सुंह की घबराहट में सौंपे गये जैसा आज हैं । और अब क्षण भर

घंटों में से एकूतान का घंटा घुटनान और उस के संग एक सौ दस पुरुष । और १३ अदूनिकाम के पिछले घंटों में से लिन के नाम पे हैं इलीफलत यईंगल और समरियाह और उन के संग साठ पुरुष । विगायै के भी घंटों में से इती और १४ जयूद और उन के संग सत्तर पुरुष ॥

फिर मैं ने उन्हे उस नदी के पान जो अरवा की और बढती है एकट्टे किया १५ और वहां हम ने तंबुओं में तीन दिन डेरा किया और मैं ने लोगों को और यात्रकों को देखा और लावी के घंटों में से वहां किसी को न पाया । तब मैं ने १६ इलियजर को और अरिगल को और समरियाह को और इल्नातन को और यारीय को और इल्नातन को और नातन को और जकरियाह को और मुसल्लम जेगु जनों को और बुद्धिमान यूयरीय को और इन्नातन को भी बुलाया । और आज्ञा १७ करके मैं ने उन्हे ईदू प्रधान के पास कसिफिया में भेजा और जो कुछ उन्हे ईदू को और उस के भाई मन्दिर के सेवकों को कसिफिया के स्थान में कहना था धताया जिसते हमारे ईश्वर के मन्दिर के लिये सेवकों को हमारे पास लावे । और हम पर ईश्वर की सहायता से वे इसराएल के घंटे लावी के घंटे मुहली १८ के घंटों में से एक बुद्धिमान जन अर्थान् सरिवियाह को उस के घंटे और उस के भाइयों मरित अठारह को लाये । और हमरियाह को और उस के साथ मिगरी १९ के घंटों में से यसरियाह को उस के भाईवंड और उस के घंटे बीस जन । और २० मन्दिर के सेवकों में से भी जिन्हे दाऊद ने और अध्वकों ने लावियों की सेवा के लिये उठराया था दो सौ बीस सेवक उन सभों के नाम लिखे हुए थे ॥

और मैं ने वहां अरवा की नदी पर द्रत प्रचारा जिसते हम ईश्वर के आगे २१ अपने को कष्ट देवे और अपने लिये और अपने बालकों के लिये और अपनी सारी संपत्ति के लिये उससे ठीक मार्ग कूंढें । क्योंकि मार्ग में वारियों के विरुद्ध सहायता २२ के लिये मैं ने याह्वा और घोड़चढ़ों को राजा से मांगने में लाज किया क्योंकि हम यह कहके राजा से बोले कि हमारे ईश्वर का हाथ उन सभों पर भलाई के लिये है जो उसे कूंढते हैं परन्तु उस का पराक्रम और कोप उन सभों के विरुद्ध है जो उसे त्यागते हैं । सो हम ने इस बात के लिये द्रत करके अपने २३ ईश्वर की विनती किई और उस ने हमारी विनती मानी ॥

तब यात्रकों में से मैं ने वारह प्रधान को अलग किया अर्थान् सरिवियाह और २४ हमरियाह और उन के संग उन के दस भाईवंडों को । और उन्हे सोना चांदी २५ और पात्र अर्थात् हमारे ईश्वर के मन्दिर की भेंट जिन्हे राजा और उस के मंत्री और उस के अध्वक और सारे इसराएल ने भेंट के लिये चढ़ाया था तैल दिया । अर्थात् मैं ने साठे कः सौ तोड़े चांदी और सौ तोड़े चांदी के पात्र और सौ तोड़ा २६ सोना । और एक सदस दिरम के सोनहुले बीस कटोरे जगमगाते हुए पीतल के २७ दो पात्र जिन का सोल सोने की नाईं बहुमूल्य था तैल दिये । और मैं ने उन्हे २८ कहा कि तुम परमेश्वर के लिये पवित्र हो और पात्र भी पवित्र और सोना चांदी तुम्हारे पितरों के ईश्वर परमेश्वर के लिये मनमंता भेंट है । चौकस होके रक्षा २९ करो जब लो तुम यरुसलम में परमेश्वर के मन्दिर की कोठरियों में प्रधान यात्रकों

- ७ बंधुआई में पहुंचाये गये थे उन के पाप के कारण यह विलाप करता था । और उन्होंने ने बंधुआई के बालकों में सारे यहूदाह और यहसलम में प्रचार करवाया ।
- ८ कि वे यहसलम में एकट्टे होवें । और कि जो कोई अध्यक्षों और प्राचीन लोगों के परामर्श के समान तीन दिन के भीतर न आवे उस की सारी संपत्ति डांड में लिई जायगी और वह आप मंडली से जो बंधुआई में पहुंचाये गये थे अलग किया जायगा ॥
- ९ तब यहूदाह के और बिनयमीन के सारे लोगों ने नवें मास की बीसवीं तिथि में तीन दिन के भीतर आप को यहसलम में एकट्टा किया और सारे लोग ईश्वर के मन्दिर के पथ में इस बात के लिये और झुड़ी के सारे बैठे कांप रहे थे ।
- १० और एजरा याजक ने खड़ा होके उन्हें कहा कि तुम लोगों ने अपराध किया है
- ११ और उपरी स्त्रियों को लेके इसराएल के अपराध को बढ़ाया है । इस लिये अब परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर के आगे मान लेओ और उस की इच्छा पालो और देश के लोगों से और उपरी स्त्रियों से आप आप को अलग करो ॥
- १२ तब सारी मंडलियों ने उत्तर देके बड़े शब्द से कहा कि जैसा आप ने कहा
- १३ है तैसा हमें करना अवश्य है । परन्तु लोग बहुत हैं और बड़ी वृष्टि का समय है और हम बाहर ठहर नहीं सक्ते और यह कार्य दो एक दिन का नहीं है
- १४ क्योंकि इस बात में हम बहुतों ने अपराध किया है । सो अब मंडली के सारे आज्ञाकारी उठें और जिन्होंने ने हमारे नगरों में उपरी स्त्रियों को लिया है सब आवें और उन के संग हर एक नगर के प्राचीन और उस के न्यायी ठहराये हुए समयों में आवें जब लों इस बात के लिये हमारे ईश्वर का महा कोप हम से
- १५ फिर न जावे । इस कार्य पर केवल असहेल के बेटे यूनतन और तिकवः के बेटे यहजियाह खड़े हुए और लावी मुसल्लम और सवती ने उन की सहाय किई ॥
- १६ और बंधुआई के सन्तानों ने वैसा किया और एजरा याजक और पितरों के कई प्रधान अपने अपने पितरों के घराने के समान और सब के सब अपने नाम के समान अलग किये गये और दसवें मास की पहिली तिथि में इस बात के पूरने
- १७ को बैठ गये । और पहिले मास की पहिली तिथि में उन्होंने ने सारे मनुष्यों से
- १८ जिन्होंने ने उपरी स्त्री किई थीं समाप्त किया । और याजकों के बेटों में भी पाये गये जिन्होंने ने उपरी स्त्रियां ग्रहण किईं अर्थात् यूसदक का बेटा युशूअ के बेटों में से और उस के भाई मअसियाह और इलिअजर और यरीव और जिदलयाह ।
- १९ और उन्होंने ने अपनी अपनी पत्नी को त्याग करने को हाथ मारा और अपराधी
- २० होके झुंड में का एक मेंठा अपने अपराध के लिये चढ़ाया । और अमीर के
- २१ बेटों में से हनानी और जवदियाह । और हारिम के बेटों में से मअसियाह और
- २२ इलियाह और समरेयाह और यहिएल और उज्जियाह । और फसिहूर के बेटों में से इलियूरेनी और मअसियाह और इसमअएल और नतनिएल और यूजवद और
- २३ इलिअसः । लावियों में का भी यूजवद और शिमई और केलायाह जो कलीता
- २४ है और फतहियाह और यहूदाह और इलिअजर । और गायकों में से इलियसीब
- २५ और द्वारपालकों में से शलूम और तूलम और जरी । और इसराएल में से खुरगुस

के लिये हमारे ईश्वर परमेश्वर से अनुग्रह हुआ है कि हमारी बचती कुछ रहने  
 दे और अपने पवित्रस्थान में हमें एक कील मारने दे जिससे ईश्वर हमारी आंखों  
 को ज्योतिमान करे और हमारी बंधुआई में तनिक फेर जिलावे । क्योंकि हम  
 बंधुए थे तथापि हमारी बंधुआई में ईश्वर ने हमें त्याग नहीं किया है परन्तु  
 फारस के राजाओं की दृष्टि में हम पर दया किई है कि हमें फेरके जिलावे जिससे  
 हम अपने ईश्वर के मन्दिर को खड़ा करें और उस के उजाड़ों को बना डालें  
 जिससे यहूदाह और यहूदमलम में हमें एक बाढ़ा देवे । और अब हे हमारे ईश्वर १०  
 इस के पीछे हम क्या कहें क्योंकि हम ने तेरी आज्ञाओं को त्यागा है । जो तू ११  
 ने अपने सेवक भविष्यद्वक्ता के द्वारा से यह कहके आज्ञा किई है कि जिस देश  
 में अधिकार करने के लिये तुम जाते हो सो देश लोगों की मलीनता में और  
 छिनितों से लिनटों ने अपनी अशुद्धता से उसे मुंढामुंढ भर दिया है अशुद्ध है ।  
 इस लिये अब अपनी छोटियों को उन के छोटों को मत देखो और उन की छोटियों १२  
 को अपने छोटों के लिये मत लेओ और उन के कुशल और उन के धन कभी मत  
 चाहो जिससे तुम बलवन्त होके देश की उत्तम वस्तु भोग करो और अधिकार  
 के लिये अपने सन्तानों को सदा के लिये उसे छोड़ जाओ । और हे हमारे ईश्वर १३  
 जैसा तू ने हमें हमारे पापों से छोड़ा दण्ड दिया है और हमें ऐसा बचाव दिया  
 है और हमारे कुकर्मों के लिये और हमारे सदा अपराधों के लिये यह सब हम  
 पर पड़ा है । यदि हम इन छिनितों के लोगों से नाता करके तेरी आज्ञाओं को १४  
 फेर उल्लंघन करें तो तू क्रोध करके हमें यहां लों न मिटा डालेगा कि कोई  
 चवरा हुआ और बचाव न होवे । हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तू धर्मी १५  
 है क्योंकि आज की नाई अब लों हम बच निकले हैं सो देख हम अपने अपराधों  
 में तेरे आगे हैं क्योंकि इसी लिये हम तेरे आगे ठहर नहीं सक्ते ॥

दसवां पर्व ।

सो जब रजरा प्रार्थना कर चुका और विलाप करने हुए ईश्वर के मन्दिर १  
 के आगे लोटता था और पाप मानता था तब इसराएल में से स्त्री पुरुष और  
 बालक की एक अति बड़ी मंडली उस पान एकट्ठी हुई क्योंकि लोगों ने बहुत  
 ही विलाप किया । तब ऐलाम के छोटों में से यहिएल के छोटे सकनियाह ने रजरा २  
 को उत्तर देके कहा कि हम ने अपने ईश्वर का अपराध किया है और देश के  
 लोगों में से उपरी स्त्रियों को लिया है जइ भी इसराएल में इस बात के विषय  
 में आशा है । सो अब आज्ञा हम अपने ईश्वर के लिये वाचा बांधें कि अपने ३  
 प्रभु के और उन के मंत्र के समान जा परमेश्वर की आज्ञा से डरते हैं सारी पवित्रियों  
 को और उन्हें जा उन से उत्पन्न हुए हैं दूर करें और यह व्यवस्था के समान  
 होवे । उठ क्योंकि यह तेरा कार्य और हम भी तेरे साथी मो दृढ़ हो और कर ॥ ४

तब रजरा उठा और याजकों और लावियों को और सारे इसराएल को यह ५  
 किरिया खिलाई कि हम इस वचन के समान करेंगे और उन्हीं ने किरिया खाई ।  
 तब रजरा ईश्वर के मन्दिर के आगे से उठा और इलयसीव के छोटे यहूदनान ६  
 की कोठरी में गया और यहां जाके न रोटी खाई न जल पीया क्योंकि जो



सुने जो मैं तेरे आगे अब रात दिन तेरे सेवक इमरायल के सन्तानों के लिये करता हूँ जो हम ने तेरे विरुद्ध किया है मान लेता हूँ मैं ने और मेरे पिता के घराने ने ७ पाप किया है । हम ने तेरे आगे अति दुराई किई है और उन आज्ञाओं को और विधि को और विचारों को जो तू ने अपने सेवक मूसा को आज्ञा किई थी ८ पालन नहीं किया है । मैं तेरी विनती करता हूँ कि उस वचन को स्मरण कर जो तू ने अपने दास मूसा को यह कहके आज्ञा किई थी कि यदि अपराध करोगे ९ तो मैं तुम्हें जातिगणों में बिथराऊंगा । परन्तु जो तुम मेरी ओर फिरेगो और मेरी आज्ञाओं को पालन करोगे और उन्हें मानोगे तो यद्यपि तुम्हें से स्वर्ग के अत्यंत सिवाने लों दूर किया जावे तौभी मैं उन्हें वहां से बेटारंगा और उस १० स्थान में पहुंचाऊंगा जिसे मैं ने चुना है कि मेरा नाम वहां रहे । अब ये तेरे सेवक और तेरे लोग हैं जिन्हें तू ने अपने महापराक्रम और बलवन्त भुजा से ११ छुड़ाया है । हे प्रभु मैं तेरी विनती करता हूँ कि अपने सेवक की प्रार्थना की और अब तेरा कान भुके और तेरे उन दासों की प्रार्थना की और जो तेरे नाम से डरा चाहते हैं और मैं तेरी विनती करता हूँ कि आज अपने सेवक को भाग्यवान कर और इस जन की दृष्टि में उसे दया दे क्योंकि मैं राजा के घर का कटोरादायक था ॥

### दूसरा पर्व ।

१ और अरदनेर राजा के बीसवें वरस नीसान मास में दाखरस उस के आगे था और मैं ने दाखरस उठाके राजा को दिया और आगे मैं उस के समीप उदासीन २ न था । तब राजा ने मुझे कहा कि तेरा रूप क्यों उदास है तू तो रोगी नहीं ३ मन के शोक को छोड़ यह कुछ नहीं तब मैं बहुत डर गया । और राजा से कहा कि राजा सदा जीवे जब वह नगर जो कि मेरे पितरों का समाधिस्थान है उजाड़ ४ पड़ा होय और उस के फाटक भस्म किये गये हों तो मेरा रूप क्यों न उदास ५ होवे । तब राजा ने मुझे कहा कि फेरतू क्या चाहता है तब मैं ने स्वर्गीय ईश्वर की प्रार्थना किई । और मैं ने राजा से कहा कि यदि राजा की इच्छा होय और ६ जो आप के दास ने आप की दृष्टि में कृपा पाई है तो मुझे यहूदाह में अपने पितरों के समाधि के नगर में भेजिये जिसमें मैं उसे बनाऊँ । तब राजा और रानी ने जो उस के पास बैठी थी मुझे कहा कि तेरी यात्रा कब लों होगी और तू कब ७ फिरेगा सो मुझे भेजने में राजा की इच्छा हुई और मैं ने उस के लिये समय ठह- ८ राया । फिर मैं ने राजा से कहा कि जो राजा की इच्छा होय तो नदी पार के अध्यक्षों के लिये मुझे पत्रियां दिई जायें जिसमें वे मुझे यहूदाह लों पहुंचावें । ९ और राजा के वनरक्षक आसफ के लिये एक पत्री जिसमें वह मन्दिर के भवन के फाटकों के और नगर की भीत के और अपने रहने के घर के निमित्त लट्टे के लिये लकड़ी देवे और जैसा कि ईश्वर की कृपा का हाथ मुझ पर था वैसा राजा ने मुझे दिया ॥

१० तब मैं नदी पार के अध्यक्षों कने पहुंचा और राजा की पत्रियां उन्हें दिई ११ अब राजा ने मेरे साथ सेनापतिन को और घोड़चढ़ों को भेजा । जब हूस्नी

के बेटों में से रमियाह और यज्जियाह और सिलक्रियाह और सिनयमीन और  
 इलियजर और सलक्रियाह और विनायाह । और सेलाम के बेटों में से सत्तनियाह २६  
 और जकरियाह और यज्जिल और अबदी और यरीमात और इलियाह । और २७  
 जतू के बेटों में से इलियूमेनी और इलयसीय और सत्तनियाह और यरीमात और  
 जवद और अलीजा । और पद्दी के बेटों में से यहूदनान और हननियाह और २८  
 जदी और अतली । और दानी के बेटों में से मुसल्लम और सलूक और अबदायाह २९  
 और यसूव और सियाल और रामान । और पखतमोशव के बेटों में से अबना ३०  
 और किलाल और विनायाह और मयमियाह और सत्तनियाह और यज्जिल्लिल और  
 विनू और सुनस्सी । और हारिस के बेटों में से इलियजर और यस्सायाह और सल- ३१  
 क्रियाह और समरियाह और समऊन । और सिनयमीन और सलूक और सम- ३२  
 रियाह । हशुम के बेटों में से सत्तानी और सत्तना और जवद और इलियलत ३३  
 और यरीमी और सुनस्सी और शिमई । दानी के बेटों में से मशदी और अमराम ३४  
 और ऊगल । विनायाह और वैदयाह और कलूदी । और वनयाह और मरीमात ३५  
 और इलयसीय । सत्तनियाह और सत्तनी और यशमी । और दानी और चिनयी ३६  
 और शिमई । और सलमियाह और नातन और अबदायाह । मकनदयी और मामी ३७  
 और मारी । अजरियल और सलमियाह और समरियाह । मलूम और अमरियाह ३८  
 और यूसुफ । नवू के बेटों में से यईगल और सत्तितियाह और जवद और जयीना ३९  
 और यद्वी और यूगल और विनायाह । इन ममें ने उषरी पविषों को लिया था ४०  
 और उन में से कितनी पविषों थीं जिन से उन के बालक हुए थे ॥ ४१  
 ४२  
 ४३  
 ४४

## नहमियाह की पुस्तक ।

### प्रथमा पर्व ।

इलियाह के बेटे नहमियाह के वचन और बीसवें वरस के क्रिसमिउ मास १  
 में जब मैं मूमन के भवन में था तब ऐसा हुआ । कि हमारे भाइयों में से दनानी २  
 और यहूदाह मैं से कई जन आये और मैं ने उन से उन यहूदियों के विषय में जो  
 वच निकले थे और वंधुआई से रह गये थे और यन्सलम के विषय में पूछा ।  
 और उन्होंने ने मुझे कहा कि प्रदेश में जो वंधुआई से वच रहे हैं सो अति कष्टित ३  
 और निन्दित हैं यन्सलम की भीत भी टूटी पड़ी है और उस के फाटक आग से  
 जले हुए हैं ॥

और यों हुआ कि जब मैं ने ये बातें सुनीं तो बैठके रोया और कई दिन लों ४  
 विलाप किया और व्रत रखके स्वर्ग के ईश्वर के आगे प्रार्थना किई । और कहा ५  
 हे परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर सर्वशक्तिमान महान और भयंकर जो अपने प्रेमियों  
 से और अपने आज्ञापालकों से नियम और दया रखता है । मैं तेरी विनती करता ६  
 हूँ कि अपने कान लगा और अपनी आंखें खोल जिसमें तू अपने सेवक की प्रार्थना

७ के अङ्गों सहित खड़ा किया । और उन के लग जिवजनी मलतियाह ने और मेरुनाती यदून ने और जिवजनी के और मिसफः के लोगों ने नदी के इस अलंग ८ अध्यक्ष के सिंहासन लों सुधारा । उस के लग सेनारों में से हरहया के बेटे उज्जिएल ने सुधारा और उस के लग गंधियों के बेटे हननियाह ने भी सुधारा ९ और उन्होंने ने यरुसलम को चौड़ी भीत लों सुधारा । और उन के लग यरुसलम १० के आधे का अध्यक्ष हूर के बेटे रिफायाह ने सुधारा । और उन के लग हसमाफ के बेटे यादायाह ने अपने घर के सन्मुख सुधारा और उस के लग हसबनियाह ११ के बेटे हतूश ने सुधारा । हारिम के बेटे मलकियाह ने और पखतमोअब के बेटे १२ हसूब ने दूसरा भाग और भट्टों का गुम्मत बनाया । और उस के लग यरुसलम के एक भाग के अध्यक्ष हलोहेश के बेटे सलूम ने और उस की बेटियों ने सुधारा ॥

१३ हनून और जनूह के वासियों ने तराईफाटक सुधारा उन्होंने ने उसे बनाया और उस के केवाड़ों को उस के ताले और उस के अङ्गों सहित खड़ा किया और कूड़ाफाटक लों भीत पर सहस्र हाथ सुधारे ॥

१४ परन्तु कूड़ाफाटक को बैतुलकरम के भाग के अध्यक्ष रेकाव के बेटे मलकियाह ने सुधारा उस ने उसे बनाया और उस के केवाड़ों को उस के ताले और अङ्गों सहित खड़ा किया ॥

१५ परन्तु सेताफाटक को मिसफः के भाग का अध्यक्ष कुलहोसी के बेटे सलून ने सुधारा उस ने उसे बनाया और पाटा और उस के केवाड़ों को उस के ताले और अङ्गों सहित खड़ा किया और राजा की बारी के लग सिलह के कुंड की

१६ भीत और सीढ़ी लों जो दाऊद के नगर से उतरती है बनाई । उस के पीछे बैतसूर के आधे भाग के अध्यक्ष अजबूक के बेटे नहमियाह ने दाऊद के समाधि १७ धन के सन्मुख और बनाये हुए कुंड लों और पराक्रमियों के घर लों सुधारा ।

१८ उस के पीछे लावियों में से वानी के बेटे रहूम ने सुधारा उस के लग कईलः के १९ आधे भाग के अध्यक्ष हसबियाह ने अपने भाग में सुधारा । उस के पीछे उन के भाई अर्थात् कईलः के आधे भाग के अध्यक्ष हन्नादाद के बेटे बबी ने सुधारा ।

२० और उस के लग मिसफः के अध्यक्ष युशूअ के बेटे इजर ने दूसरा टुकड़ा घूम से २१ शस्त्रस्थान की चढ़ाई के सन्मुख सुधारा । उस के पीछे जवी के बेटे बरूक ने २२ यत्न से घूम से दूसरे टुकड़े के प्रधान याजक इलयसीव के घर के द्वार लों सुधारा ।

२३ उस के पीछे कुज के बेटे जरियाह के बेटे मरीमात ने दूसरे टुकड़े इलयसीव के २४ घर के द्वार से इलयसीव के घर के अन्त लों सुधारा । और उस के पीछे चौगान २५ के सनुष्य याजकों ने सुधारा । उस के पीछे बिनयमीन और हसूब ने अपने घर

के सन्मुख सुधारा उस के पीछे अननियाह के बेटे मअरियाह के बेटे अजरियाह २६ ने अपने घर के पास सुधारा । उस के पीछे हन्नादाद के बेटे बिनबी ने दूसरा २७ टुकड़ा अजरियाह के घर से घूम लों, अर्थात् कोने लों सुधारा । ऊज्जी के बेटे

फलाल ने उस घूम और गुम्मत के सन्मुख जो राजा के ऊँचे भवन के ऊपर से जाता है जो बन्दीगृह के आंगन के निकट है सुधारा उस के पीछे खुरगुस के

सनघल्लत और अम्मूनी दास तूवियाह ने सुना तब उन्हें बड़ा शोक हुआ कि इस-  
राएल के सन्तानों का कुशलचाहक एक जन आया है ॥

सो मैं यरुसलम में पहुँचा और वहाँ तीन दिन रहा । फिर मैं रात को उठा ११  
१२ में और थोड़े जन मेरे संग और जो कुछ मेरे ईश्वर ने मेरे मन में यरुसलम में  
करने को डाला था सो मैं ने किसी से न कहा और मेरे वाहन को कोढ़ कोई  
पशु मेरे संग न था । और मैं तराई के फाटक से अर्थात् नाग कूआ के आगे से १३  
और कूड़ाखिड़की से रात को बाहर निकला और यरुसलम की टूटी हुई भीतों  
को और उस के जले हुए फाटकों को देखा । तब मैं सोता के फाटक को और १४  
राजा के कुँड को चढ़ गया परन्तु वहाँ मेरे वाहन का निकास न था । फिर मैं १५  
रात को नाली के पास होके चढ़ गया और भीत को देखा और घूमके तराई के  
फाटक से भीतर फिर आया ॥

और अध्वजों ने न जाना कि मैं कहाँ गया अथवा क्या किया और अब तो १६  
मैं ने न तो गृहदियों से न याजकों से न कुलीनों से न अध्वजों से न रहे हुए  
कार्यकारियों से कहा । तब मैं ने उन्हें कहा कि हमारे दुःख को देखते हो कि १७  
यरुसलम उजाड़ है और उस के फाटक जले हुए हैं सो आओ यरुसलम को भीत  
को बनावे जिसमें आगे निन्दित न होवे । तब मैं ने ईश्वर की सहाय के विषय १८  
में जो मुझ पर थी और राजा के वचन भी जो उस ने मुझे कहे थे उन्हें कहा  
तब उन्होंने ने कहा कि चलो उठके बनावे सो इस सुकार्य के लिये उन्होंने ने अपने  
हाथ को दृढ़ किया ॥

परन्तु जब दूसरी सनघल्लत ने और अम्मूनी दास तूवियाह ने और अरवी १९  
जिसम ने सुना तब उन्होंने ने हमें ठट्टे में उड़ाके हमारी निन्दा किई और कहा  
कि तुम यह क्या करते हो क्या राजा से फिर जाओगे । तब मैं ने उत्तर देके उन्हें २०  
कहा कि स्वर्ग का ईश्वर हमें भाग्यवान करेगा इस लिये हम उस के दास उठके  
बनावेंगे परन्तु यरुसलम में तुम्हारा भाग अथवा पद अथवा स्मरण नहीं है ॥

तीसरा पर्व ।

तब प्रधान याजक इलयमीय ने अपने याजक भाइयों के संग उठके भेड़ १  
फाटक बनाये उन्होंने ने उसे पवित्र करके उस के केयाड़ों को खड़ा किया अर्थात्  
मियाह के गुम्मट लों और दननिएल के गुम्मट लों पवित्र किया । और उस के २  
लग यरीहो के लोगों ने बनाया और उन के लग हमरी के वेटे जकूर ने बनाया ॥

परन्तु मछली फाटक को हस्मिनाह के वेटों ने बनाया उन्होंने ने उस के लट्टे ३  
धरे और उस के केयाड़ों को उस के ताले और उस के अड़ंगे सजित खड़ा किया ।  
और उन के लग कुज के वेटे जरियाह के वेटे मरीमात ने सुधारा और उन के ४  
लग मुसीजयीएल के वेटे अरकियाह के वेटे मुसल्लम ने सुधारा और उन के लग  
अशना के वेटे सद्रूक ने सुधारा । और उन के लग तकूअइयों ने सुधारा परन्तु ५  
उन के कुलीनों ने अपने प्रभु के कार्य में हाथ न लगाये ॥

फिर फसीख के वेटे यूयदअ और वसूदियाह के वेटे मुसल्लम ने पुराना फाटक ६  
सुधारा उन्होंने ने उस के लट्टे धरे और उस के केयाड़ों को उस के ताले और उस

१३ हमें हम द्वार कहा कि अवश्य है कि हर स्थान से हमारे पास आओ । इसी लिये मैं ने वहाँ के नीचे के स्थानों की भीत के पीछे और ऊँचे स्थानों में मैंनी ने लोगों को उन के घराने के समान तलवार और भाला और धनुषों को लिये हुए १४ बैठाया । और मैं ने देखा और उठा और कुलीनों को और प्रधानों को और वचे हुए लोगों को कहा कि तुम उन से मत डरो मर्याद परमेश्वर का स्मरण करो और अपने भाइयों और बेटों और बेटियों और पत्नियों और घरों के लिये लड़ो ॥

१५ और ऐसा हुआ कि जब हमारे बैरियों ने सुना कि यह बात हम पर प्रगट हुई और कि ईश्वर ने उन का परामर्श व्यर्थ किया तब हम सब भीत के हर १६ एक जन अपने अपने कार्य में फिर लगे । और ऐसा हुआ कि उस समय से मेरे आधे सेवक तो काम में लगे और आधे ने भाले और ढाल और धनुष और १७ भिलम पकड़ा और अध्यक्ष यहूदाह के सारे घराने के पीछे । जो जो भीत के ऊपर जोड़ाई करते थे और जो बोझा डोते थे वोभवैया सहित एक एक हाथ १८ से कार्य करता था और दूसरे से छथियार पकड़ता था । क्योंकि हर एक थवई अपनी कटि पर तलवार बांधे था और जोड़ाई करता था और तुरही के बजवैये १९ मेरे लग थे । फिर मैं ने कुलीनों को और अध्यक्षों को और रचे हुए लोगों को कहा कि कार्य महान और बड़ा है और भीत पर हम एक दूसरे से अलग हैं । २० सो जहाँ तुम लोग तुरही का शब्द सुना तहाँ हमारे पास चले आओ हमारा ईश्वर हमारे लिये लड़ेगा ॥

२१ सो हम ने कार्य में परिश्रम किया और भोर से तारा दिखाई देने लो आधे २२ जन भाला लिये रचे । मैं ने भी उस समय में लोगों से कहा कि हर एक जन अपने अपने सेवक को ले ले यहसलम में टिके जिसते रात को हमारे लिये पहरा २३ होवे और दिन को कार्य करें । सो न मैं ने न मेरे भाईबंदों ने न मेरे सेवकों ने न पहरे के मनुष्यों ने जो मेरे पीछे थे स्नान की जून को छोड़ हमसे किसी ने अपने वस्त्रों को न उतारा ॥

#### पाँचवां पर्व ।

१ और लोगों ने और उन की पत्नियों ने अपने भाईबंद यहूदियों पर दोष २ लगाया । क्योंकि कितने कहते थे कि हम और हमारे बेटे बेटियाँ बहुत हैं इस ३ लिये हम अन्न लेवे जिसते खायें और जीयें । कितनों ने यह भी कहा कि हम ने महंगी में अन्न मोल लेने के लिये अपनी भूमि और दाख की बारी और घरों को ४ बंधक रक्खा है । और कितनों ने यह भी कहा कि राजा का कर देने के लिये ५ हम ने अपनी भूमि और दाख की बारी पर रोकड़ उधार लिया है । तथापि हमारा मांस हमारे भाइयों के मांस के समान और हमारे बालक उन के बालकों के समान और अब देख हम अपने बेटे बेटियों को बंधुआई में दास होने के लिये लाते हैं और हमारी बेटियों में से कितनी बंधुआई में जा चुकी हैं और हम अशक्त हैं क्योंकि और लोग हमारी भूमि और दाख की बारी रखते हैं ॥

६ जब मैं ने यह वचन और उन का चिल्लाना सुना तो मैं अति रिसिआया ।

छेदे फिटायाम ने । और मन्दिर के सेवक उफल पर पृथ्वी की और जलफाटक के २६ सन्मुख और गुम्मत जो बाहर है रहते थे ॥

उन के पीछे तकड़ियों ने बड़े गुम्मत के सन्मुख जो बाहर है अर्थात् उफल २७ की भीत लों दूसरा टुकड़ा सुधारा ॥

याजकों ने हर एक अपने अपने घर के सन्मुख छाड़फाटक के आगे से २८ सुधारा । उन के पीछे असीर के छेदे सदृक ने अपने घर के सन्मुख सुधारा और २९ उस के पीछे पृथ्वीफाटक के रक्तक सकनियाह के छेदे समरेपाह ने भी सुधारा । उस के पीछे सलमियाह के छेदे हननियाह ने और सलफ के छठवें छेदे हनून ने ३० दूसरा टुकड़ा सुधारा उस के पीछे चरकियाह के छेदे सुमलूम ने अपनी काठरी के सन्मुख सुधारा । उस के पीछे सोनार के छेदे मलकियाह ने मन्दिर के सेवकों के ३१ और वैपारियों के स्थान लों सिककादफाटक के सन्मुख घूम के कोने लों सुधारा । और कोने की चढ़ाई के मध्य में भेड़फाटक सोनारों ने और वैपारियों ३२ ने सुधारा ॥

### चौथा पट्टा ।

और ऐसा हुआ कि जब मनब्रह्म ने सुना कि हम भीत बनाते हैं तब वह १ बहुत कोपित और क्रोधित हुआ और यहूदियों को चिढ़ाया । और अपने भाइयों २ के और समरः की सेना के आगे यह कहके बोला कि ये निर्बल यहूदी क्या करते हैं क्या उन्हें रहने देंगे क्या वे बलि चढ़ावेंगे वे दिन भर में बना डालेंगे और क्या वे जलाये हुए कूड़ों के ढेरों से पत्थर जमावेंगे । तब अस्मूनी तूधियाह ने ३ जो उस पास खड़ा था उसे कहा कि जो वे भी बनाते हैं यदि गोंदड़ चढ़ जाय वह उन की पत्थर की भीत को तोड़ देगा ॥

ले हमारे ईश्वर सुन क्योंकि हम निन्दित हैं और उन की निन्दा उन्हीं के सिर ४ पर फेर और बंधुआई के देश में उन्हें अन्दर के लिये दे । और उन की घुराई ५ सत छाप और तेरे आगे उन का पाप मिटाया न जाय क्योंकि शत्रुओं के आगे उन्हां ने रिम दिलाया है ॥

तो हम ने भीत बनाई और आधी लों सारी भीत जुट गई क्योंकि लोगों का ६ मन क्राम पर था ॥

परन्तु ऐसा हुआ कि जब मनब्रह्म और तूधियाह और अरवियों और अस्मू- ७ नियों और अशूदियों ने सुना कि यरुसलम की भीत बन गई और दरारें बंद होने लगीं तब वे अति कोपित हुए । और सभी ने मिलके युक्ति बांधी कि आके ८ यरुसलम के विरुद्ध लड़ें और घानि पहुंचावें । तथापि हम ने अपने ईश्वर की ९ प्रार्थना कीई और उन के कारण उन के विरुद्ध दिन रात पहरा बैठा रखवा । और यहूदाह ने कहा कि योक्तियों का बल घट गया और कूड़ा बहुत है यहां १० लों कि हम भीत नहीं बना सकते हैं । और हमारे वैरियों ने कहा कि जब लों ११ हम उन के मध्य में न आ लें और उन्हें घात न करें और कार्य को रोक न लें वे न जानेंगे न देखेंगे ॥

और ऐसा हुआ कि जब उन के लग के निवासी यहूदी आये तब उन्हीं ने १२



- ३ करें परन्तु उन के मन में मेरा उपद्रव करना था । और मैं ने दूतों से कहला भेजा कि मैं वही कार्य में लगा हूँ यहाँ नों कि मैं उतर आ नहीं मक्का जब लों उसे
- ४ कहूँके तुम पास आऊँ वही कार्य बन जाय । तथापि उन्होंने ने इस रीति से चार आर मुझ पास भेजा और उसी रीति से मैं ने उन्हें उतर दिया ।
- ५ फिर मनबल्लत ने पाँचवीं बार उसी रीति से अपने दाम के दास में एक खुली
- ६ हुई पत्री मेरे पास भेजी । उस में लिखा था कि अन्यदेशियों में चर्चा है और जिमसू कहता है कि तू और यहूदी फिर जाने की चिन्ता करते हो इस बात के लिये
- ७ तू भीत बनाता है जिसमें इन बातों के समान तू उन का राजा होवे । तू ने अपने लिये यह कहके यरुसलम में उपदेश करने का आचार्यों को भी ठहराया है कि यहूदाह में एक राजा है और अब इन बातों के समान राजा को समाचार
- ८ दिया जायगा इस लिये अब आओ एकट्ठे परामर्श करें । तब मैं ने उस पास कहला भेजा कि तेरे कहने के समान कोई बात नहीं हुई परन्तु तू अपने ही मन
- ९ से बनाता है । क्योंकि यह कहके सभी ने हमें डराया कि इन काम से उन के दास दुर्बल होंगे जिसमें इन न पड़े इस लिये अब मेरे दासों को दृढ़ कर ।
- १० उस के पीछे तब मैं मुरैतविएल के बेटे दिलापाह के बेटे समरियाह के घर गया जो बंधन में था और उस ने कहा कि ओ ईश्वर के घर में मन्दिर के भीतर भेंट करें और मन्दिर के केंद्राड़े बन्द करें क्योंकि वे तुम्हें घात करने को
- ११ आँवंगे हाँ रात को तुम्हें घात करने को आँवंगे । और मैं ने कहा कि क्या मुझ ऐसा जन भागे और मुझ ऐसा होके अपने प्राण बचाने के कारण मन्दिर में पैठे
- १२ मैं न जाऊँगा । और लो मैं ने देख लिया कि ईश्वर ने उसे न भेजा था परन्तु कि उस ने यह आचार्यवचन मेरे विरुद्ध कहा था क्योंकि तूवियाह और सनबल्लत
- १३ ने उसे ठीके में किया था । इस लिये उसे ठीके में किया जिसमें मैं डर जाऊँ और ऐसा करके दोषी होऊँ और जिसमें वे अपवाद का कारण पावें और मेरी निन्दा करें ॥
- १४ हे मेरे ईश्वर उन के इन कार्यों के समान तूवियाह को और सनबल्लत को और नोअदियाह आचार्यानी को और रहे हुए आचार्यों को जो मुझे डराने चाहते हैं स्मरण कर ।
- १५ सो बावन दिन में एलुल मास की पचीसवीं तिथि में भीत इन चुकी ।
- १६ और ऐसा हुआ कि जब हमारे सारे वरियों ने सुना और चारों ओर के अन्य-देशियों ने देखा तो वे अपनी दृष्टि में अति शोकित हुए क्योंकि उन्हें सूझ पड़ा कि यह कार्य हमारे ईश्वर की ओर से हुआ ॥
- १७ उस्से अधिक उन दिनों में यहूदाह के कुलीन पत्री पर पत्री तूवियाह पास
- १८ भेजते गये और तूवियाह की उन पास पहुँचती थी । क्योंकि यहूदाह में बहुत उस की किरिया में थे इस कारण कि वह अरख के बेटे सकनियाह का जवाई था और उस का बेटा यहूहनान वरकियाह के बेटे सुसल्लम की बेटी को ब्याह
- १९ लाया था । उन्होंने ने मेरे आगे उस के सुकाव्यों की भी चर्चा किई और मेरी बातें उस्से कहीं और तूवियाह ने मुझे डराने के लिये पत्रियां भेजीं ।

तब मैं ने अपने मन में विचारा और कुलीनों को और अध्यों को दण्डके कष्ट ७  
 कि तुम हर एक जन अपने अपने भाई से व्याज लेते हो और मैं ने उन के विरुद्ध  
 बड़ी मंडली एकट्ठी कीई । और उन्हे कहा कि हम ने अपनी मासर्ग के समान ८  
 अपने यहूदी भाइयों को जो अन्यदेशियों में बचे गये थे छुड़ा लिया और तुम क्या  
 अपने भाइयों को बचोगे अथवा वे हमारे पास बचे जायेंगे तब वे चुप रहे और  
 कुछ उत्तर न पाया । फिर मैं ने कहा कि तुम जो करते हो सो अच्छा नहीं हमारे ९  
 वैसी अन्यदेशियों के कारण ईश्वर के भय में चलने को क्या तुम्हें उचित नहीं ।  
 और मैं भी मेरे भाई और मेरे सेवकों ने उन्हे अन्न और रोकड़ दिये हैं सो मैं १०  
 तुम्हारी विनती करता हूं कि आओ यह व्याज लेना छोड़ दें । मैं विनती करता ११  
 हूं कि उन की भूमि और उन की दाग्य की और जलपाई की दारी और उन के  
 घर और मैदा भाग रोकड़ और अन्न और दाग्यरस और तेल जो उन से लिया  
 है उन्हे आज फेर देंगे । तब उन्हां ने कहा कि आप के कहने के समान हम १२  
 करेंगे हम फेर देंगे और उन से कुछ न लिया करेंगे तब मैं ने याजकों को बुलाया  
 और उन से किरिया लिई कि इस याचा के समान हम करेंगे । मैं ने भी अपना १३  
 वस्त्र भाड़के कहा कि इसी रीति से ईश्वर हर एक जन को जो इस याचा को  
 पूर्ण न करे अपने मन्दिर से और अपनी याचा से भाड़ देंगे यां वह भाड़ा जाय  
 और शून्य होवे और मागी मंडली ने कहा कि आमीन और परमेश्वर की स्तुति  
 किई और इस याचा के समान लोगों ने किया ॥

और भी जब से मैं यहूदाय के देश में उन पर अध्यक्ष टहराया गया अर्थात् १४  
 अरदणेर राजा के बीसवें वरम से बत्तीसवें वरम लो जो बारह हैं मैं ने और मेरे  
 भाई ने अध्यक्ष की रोटी न खाई । परन्तु मेरे आगे के अध्यक्ष लोगों पर भार थे १५  
 और उन से रोटी और दाग्यरस और चालीस गैकल चांदी लेते थे हां उन के  
 सेवक भी लोगों पर प्रभुता करते थे परन्तु ईश्वर के डर के सारे मैं ने ऐसा न  
 किया । और इस भीत के कार्य में भी मैं लगा रहा और हम ने भूमि न माल १६  
 लिई और मेरे सेवक वहां काम की ओर बहुर गये । और भी उन्हे छोड़ जो १७  
 हमारे आसपान के अन्यदेशियों में से आते थे मेरे भोजन में डेढ़ सौ यहूदी और  
 अध्यक्ष थे । और मेरे लिये प्रतिदिन एक बैल और छः चुने हुए भेड़ और पत्नी १८  
 भी मिष्ट क्रिये जाते थे और दस दिन में एक बार हर प्रकार का दाग्यरस था  
 तथापि इन यातों के लिये मैं ने अध्यक्ष का भोजन न खाया क्योंकि इन लोगों  
 पर बंधुआई का बोझ था ॥

हे मेरे ईश्वर इन लोगों के लिये सब जो मैं ने किया है भलाई के लिये मुझे १९  
 स्मरण कर ॥

कठवां पद्य ।

अब यों हुआ कि जब सनयलुत और तूवियाह और अरवी जिसम और हमारे १  
 रहे हुए वैरियों ने सुना कि मैं भीत बना चुका और हम में कोई दरार न रहा  
 तथापि उमी समय मैं ने फाटकों पर कोथाड़े न चढ़ाये थे । तब सनयलुत और २  
 जिसम ने मुझे यह कटला भेजा कि आ हम आना के चांगान के गांवों में भेंट

- ४१ सन्तान एक सहस्र दायन । फसिहूर के सन्तान एक सहस्र दो सौ सैंतालीस ।  
 ४२ हारिम के सन्तान एक सहस्र सत्रह ॥  
 ४३ लायी कदमिएल से युशूअ के सन्तान और हूदियाह के सन्तान से चौहत्तर ॥  
 ४४ गायक असफ के सन्तान एक सौ अठतालीस ॥  
 ४५ द्वारपाल सलूम के सन्तान अतीर के सन्तान तल्मान के सन्तान अकूय के सन्तान  
 खतीता के सन्तान साबी के सन्तान एक सौ अठतीस ॥  
 ४६ मन्दिर के सेवक जिहा के सन्तान हसूफा के सन्तान तबश्वात के सन्तान । कैरस  
 ४७ के सन्तान सीगा के सन्तान फदून के सन्तान । लियाना के सन्तान दजावः के सन्तान  
 ४८ शलमई के सन्तान । हनान के सन्तान जदील के सन्तान गहर के सन्तान । रियाहाह  
 ४९ के सन्तान रसीन के सन्तान नकूदा के सन्तान । गज्जाम के सन्तान जज्जा के सन्तान  
 ५० फसीख के सन्तान । बैजी के सन्तान मिजनिम के सन्तान निफीशिसम के सन्तान ।  
 ५१ वक्रबूक के सन्तान हकूफा के सन्तान हरहूर के सन्तान । वसलीस के सन्तान  
 ५२ महीदा के सन्तान हरसा के सन्तान । वरकूस के सन्तान सीसरा के सन्तान तिमह  
 ५३ के सन्तान । नसिया के सन्तान खतीफा के सन्तान । सुलेमान के दासों के सन्तान  
 ५४ सूती के सन्तान भाफिरत के सन्तान फरीदा के सन्तान । यश्रला के सन्तान दरकून  
 ५५ के सन्तान जदील के सन्तान । सफतियाह के सन्तान खतील के सन्तान फाकिर-  
 ५६ तुजवीआन के सन्तान अमून के सन्तान । मन्दिर के सारे सेवक और सुलेमान के  
 सेवकों के सन्तान तीन सौ दानवे ॥  
 ६१ और तल्लमिल्लह तल्लहरसा करुव अदून और अमीर में से गये थे परन्तु वे न तो  
 अपने पितरों के घराने न अपने गोती दिखा सके कि इसराएल के थे अथवा न  
 ६२ थे । दिलायाह के सन्तान तूवियाह के सन्तान नकूदा के सन्तान छः सौ दयालीस ॥  
 ६३ और याजकों में से हवायाह के सन्तान कोस के सन्तान वरजिल्ली के सन्तान  
 जिस ने वरजिल्ली जिलिअदी की छोटियों में से ठपाहा और उन के नाम से कहा  
 ६४ जाता था । जो वंशावली में गिने गये इन्हीं ने उन में अपना नामपत्र ठूँढ़ा  
 परन्तु न पाया इस लिये वे अपवित्र के समान याजकता से अलग किये गये ।  
 ६५ और अध्यक्ष ने उन्हें कहा कि जब लों उरीम और तमांमधारी एक याजक न उठे  
 तब लों वे पवित्र वस्तुन में से न खाने पावेंगे ॥  
 ६६ सारी मंडली मिलके बयालीस सहस्र तीन सौ साठ । उन के दास दासी को  
 ६७ छोड़के जो सात सहस्र तीन सौ सैंतीस थे और उन के गायक और गायिका दो  
 ६८ सौ पैतालीस । उन के छोड़े सात सौ छत्तीस उन के खजूर दो सौ पैतालीस ।  
 ६९ उन के कुंठ चार सौ पैतीस उन के गदहे छः सहस्र सात सौ बीस ॥  
 ७० और पितरों के कई प्रधान ने उस कार्य के लिये दिया अध्यक्ष ने भंडार में  
 एक सहस्र दिरहम सोना और पचास पात्र और पांच सौ तीस याजकों के वस्त्र  
 ७१ दिये । और पितरों के प्रधानों में से उस काम के भंडार में बीस सहस्र दिरहम  
 ७२ सोना और दो सहस्र मना चांदी दिई । और रहे हुए लोगों ने बीस सहस्र दिरहम  
 सोना और दो सहस्र मना चांदी और याजकों के सत्तसठ वस्त्र दिये ॥  
 ७३ इस लिये याजक और लायी और द्वारपाल और गायक और कितने लोग

सातवां पर्व ।

और जय भीत घन गई और मैं ने केयाड़ों को खड़ा किया और द्वारपानों १  
को और गायकों को और लावियों को ठहराया तब यों हुआ । कि मैं ने अपने २  
भाई छनानी को और भयन के अध्यक्ष छननियाह को यरुसलम भेजा क्योंकि यह  
विश्वस्त मनुष्य और बहुतों से अधिक ईश्वर को डरता था । और मैं ने उन्हें ३  
कहा कि जब लों धूप न चढ़े तब लों यरुसलम के फाटक खोले न जायें और  
उन के आगे अड़ंगों से द्वार बंद किये जायें और यरुसलम के दानी हर एक  
अपनी अपनी चौकी में और हर एक अपने अपने घर के सन्मुख चौकी के लिये ४  
ठहराया जाय ।

अब नगर बड़ा और चौड़ा था परन्तु उस में थोड़े लोग थे और घर बनाये न ४  
गये थे । और कुलीनों को और अध्यक्षों को और लोगों को एकट्ठा करने के लिये ५  
मेरे ईश्वर ने मेरे मन में डाला जिसमें वे वंशावली में गिने जायें और जो पहिले  
चढ़ आये थे मैं ने उन की वंशावली की एक पत्री पाई और उस में लिखा  
थाया ।

वे प्रदेशी के वंश जो यंधुआई से चढ़ गये थे जिनमें यायुल का राजा नयू- ६  
गुदनजर ले गया था और यरुसलम में और यहूदाह में हर एक जन अपने अपने  
नगर में फिर आया । जो जय्यायुल युशुअ नहमियाह अजरियाह रगमियाह नह- ७  
मानी सरदकी विलशान मिशफरत विगयै नहम और यशना के साथ आये हमरा-  
एल के लोगों की गिनती यह है । युशुअ के सन्तान दो सहाय एक सौ बत्तर । ८  
मफनियाह के सन्तान तीन सौ बत्तर । शरय के सन्तान छः सौ यावन । ९  
युशुअ के और यूअय के सन्तान पयतमोअय के सन्तान दो सहाय आठ सौ आठारह । १०  
ऐलाम के सन्तान एक सहाय दो सौ चौवन । जतू के सन्तान आठ सौ पैंतालीस । ११  
जक्री के सन्तान सात सौ साठ । विनयी के सन्तान छः सौ अठतालीस । १२  
घयो के सन्तान छः सौ अट्ठाईस । अजगाद के सन्तान दो सहाय तीन सौ बाईस । १३  
अइनिकाम के सन्तान छः सौ सत्तमठ । विगयै के सन्तान दो सहाय सत्तमठ । १४  
अदीन के सन्तान छः सौ पचपन । हिजकियाह के अतीर के सन्तान अट्ठानवे । १५  
हशूम के सन्तान तीन सौ अट्ठाईस । वैडी के सन्तान तीन सौ चौबीस । १६  
हरोफ के सन्तान एक सौ बारह । जियऊन के सन्तान पंचानवे । वैतलहम २४ २५ २६  
के और नतूफः के एक सौ अट्ठामाँ जन । अनतात के एक सौ अट्ठाईस जन । २७  
वैतशमैत के बपालीस जन । करयनशरीस कफीरः और यीरुस के सात सौ २८  
तैंतालीस जन । रामः और जियश के छः सौ एकूीस जन । मिकमाम के एक २९  
सौ बाईस जन । वैतएल और ए के एक सौ तैंईस जन । दूसरे नयू के यावन ३०  
जन । दूसरे ऐलाम के सन्तान एक सहाय दो सौ चौवन । हारिम के सन्तान तीन ३१  
सौ बीस । यरीहो के सन्तान तीन सौ पैंतालीस । लूद के और हदीद के और ३२  
औनू के सन्तान सात सौ एकूीस । मनाह के सन्तान तीन सहाय नयू सौ ३३  
तीस ।

वदैशयाह के सन्तान युशुअ के घराने के याजक नौ सौ तिहत्तर । अमोर के ३४  
४०

- १५ सातवें मास के पर्व में इसराएल के सन्तान पर्गशानों में रहें । और कि वे अपने सारे नगरों में और यरुसलम में यह कष्टके प्रचारें कि पर्यंत को जाओ और जल-पाई की और अनानाम की और हदस की और खडूर की और कण्पर बनाने के
- १६ लिये घने पेड़ों की डालियां लिये के समान लाओ । और लोग बाहर जा जाके लाये और हर एक उन ने अपने अपने घर की छत पर और अपने आंगनों में और ईश्वर के मन्दिर के आंगनों में और जलफाटक के चौगान में और बफरायम-फाटक के चौगान में अपने लिये कण्पर बनाया । और सारी मंडली जो बंधुआई से फिर आई थी पर्गशाला बना बना उन के तले बैठ गये क्योंकि नून के बड़े युशूअ के दिनों से उस दिन लों इसराएल के सन्तानों ने ऐसा न किया था और अत्यंत आनन्द था ॥
- १८ और पहिले दिन से अंत के दिन लों उस ने प्रतिदिन ईश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को पढ़ा और उन्हें ने सात दिन पर्व रक्खा और रीति के समान आठवें दिन भारी सभा हुई ॥

### नवां पर्व ।

- १ सो इस मास के चौथीमवें दिन इसराएल के सन्तान व्रत करते और टाट
- २ ओढ़े और धूल अपने ऊपर डालते हुए एकट्टे हुए । और इसराएल के सन्तानों ने अपनी सन्तानों से आप को अलग किया और खड़े होके अपने अपने पाप और
- ३ अपने पितरों के पाप मान लिये । और वे अपने स्थान पर खड़े हुए और एक पहर दिन लों अपने ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को पढ़ा और एक
- ४ पहर में पाप को मान मानके परमेश्वर अपने ईश्वर को प्रणाम किया । तब लावियों में से युशूअ और वानी और कदमिएल और शवनिपाह और युनी और सरिवियाह और वानी और कनानी ने मचान पर खड़े होके बड़े शब्द से अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे दोहाई दिई ॥
- ५ फिर युशूअ और कदमिएल और वानी और शवनिपाह और सरिवियाह और हूदियाह और शवनिपाह और फतदियाह लावियों ने कहा कि उठो और अपने ईश्वर परमेश्वर का सदा धन्य मानो और तरे ऐश्वर्यवान नाम का धन्य होवे
- ६ जो सारे धन्यवाद और स्तुति से बढ़कर है । तू केवल तू ही परमेश्वर है तू ने स्वर्ग अर्थात् स्वर्गों का स्वर्ग उन की सारी सेना सहित और पृथिवी और उस में के सब कुछ और समुद्र और उस में के सब कुछ उत्पन्न किया है और तू सब की रक्षा करता है और स्वर्ग की सेना तुम्हें भजती हैं ॥
- ७ तू वह परमेश्वर ईश्वर है जिस ने अयराम को चुनके उसे कसदियों के ऊर से निकाल लाया और उस का नाम अबिरहाम रक्खा । और अपने आगे उस का मन विश्वासमय पाया और कनआनियों के और हितियों के और अमूरियों के और फरिजियों के और यवूसियों के और जिरजाशियों के देश को उस के सन्तान को देने के लिये तू ने उसे नियम किया और अपने ध्वज को पूरा किया क्योंकि तू धार्मिक है ॥
- ८ और मिस्र में हमारे पितरों के कष्ट को देखा और लाल समुद्र के तीर पर

और मन्दिर के सेवक और सारे इसराएल अपने अपने नगर में वैसे और जय मातयां  
साम आया तब इसराएल के मन्तान अपने अपने नगर में थे ॥

आठवां पट्टा ।

और सारे लोग एक सन में जलफाटक के आगे चौगान में एकट्ठे हुए और उन्हीं १  
ने राजरा अध्यापक से सूसा की व्यवस्था की पुस्तक को जो परमेश्वर ने इसराएल  
को आज्ञा किई थी संग्रहाया । और संग्रह साम की पहिली निधि में गजरा याजक २  
स्त्री पुन्य की मंडली के और सब के आगे जो मुनके समस्त सत्ते थे व्यवस्था  
को लाया । और जलफाटक के चौगान के आगे भार में डो पहर लों स्त्री पुन्य ३  
के और समुझैयों के आगे उस ने पड़ा और सारे लोगों ने व्यवस्था की पुस्तक  
की और कान लगाये । और राजरा अध्यापक काण्ट के एक सचान पर खड़ा ४  
हुआ जो उन्हीं ने उसी पान के लिये बनाया था और उन के लग्न मन्तियाह और  
समय और अनायाह और जरियाह और खिलकियाह और मन्त्रियाह उस की  
दहिनी और और दाईं ओर फिदायाह और सीसाएल और मन्त्रियाह और दृष्टम  
और हसयदान और लकगियाह और सुमज्जस खड़े हुए । और गजरा ने सारे लोगों ५  
को आंगियों के आगे पुस्तक खोली क्योंकि यह सारे लोगों में ऊपर था और उस  
के खोलते ही सारे लोग खड़े हुए । और गजरा ने परमेश्वर महेश्वर का धन्य ६  
साना और सारे लोगों ने घाय उठाये हुए उत्तर में आसीन आमीन कटा और  
सुंए के बल मिर भुकाके भूमि लों परमेश्वर को प्रणाम किया । और गुनूथ और ७  
धानी और सरिवियाह और यमीन और अकूथ और मयनी और दृष्टियाह और  
मन्त्रियाह और कलीता और अजरियाह और वृजयट और हनान और फिलायाह ८  
और लावियों ने लोगों को व्यवस्था समझाई और लोग अपने अपने ठिकाने पर  
खड़े हुए । इसी रीति से उन्हीं ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को खोलके ९  
पढ़ा और अर्थ किया और उन्हीं पढ़ समझाया ॥

और नहमियाह ने जो अध्यक्ष है और अध्यापक गजरा याजक ने और लावियों ९  
ने जिन्होंने लोगों को सिखाया सारे लोगों से कहा कि यह दिन तुम्हारे ईश्वर  
परमेश्वर के लिये पवित्र है बिनाप और शोक मत करो क्योंकि व्यवस्था के बचन  
मुनके सारे लोगों ने बिलाप किया । तब उम ने उन्हीं कहा कि अब जाओ १०  
चिकना खाओ और सीटा पीओ और जिन के यहां फुल नहीं पड़ो उन के पास  
घैना भेजो क्योंकि आज हमारे प्रभु के लिये पवित्र है और उदास मत होओ क्यो-  
कि परमेश्वर का बल तुम्हारा आनन्द है । सो लावियों ने लोगों को यह कहके ११  
धीरज दिया और कहा कि चुपके रहो क्योंकि दिन पवित्र है और शोकित मत  
होओ । तब सारे लोगों ने खाने पीने और घैना भेजने और आनन्द करने को १२  
अपना अपना मार्ग लिया क्योंकि उन्हीं ने उन बातों को जो उन के आगे कही  
गई थीं समझा ॥

और दूसरे दिन सारे लोगों के पित्रों के प्रधान याजक और लावी व्यवस्था १३  
का बचन नीखने को राजरा अध्यापक पास एकट्ठे हुए । और जो परमेश्वर ने १४  
सूसा के द्वारा से व्यवस्था में आज्ञा किई थी उन्हीं ने लिखा हुआ पाया कि



उन्होंने ने दृढ़ नगर और फलवंत देश को लिया और संपत्ति से भरे हुए घर और खोदे हुए कुएँ और दाख और जलपाई की धारी और फलवंत पेड़ बहुतों से अपना अधिकार किया सो वे खाके तृप्त हुए और मोटाने और तेरी बड़ी भलाई से आनन्दित हुए ॥

- २६ तिस पर भी वे दंगलत हुए और तुझ से फिर गये और तेरी व्यवस्था को अपनी पीठ के पीछे डाल दिया और तेरे भविष्यद्वक्तों को घात किया जिन्होंने ने तेरी ओर फिराने को उन से विरुद्ध साक्षी दिई और उन्होंने ने बड़ी बड़ी निन्दा का कर्म किया । सो तू ने उन्हें उन के वैरियों के हाथ सौंप दिया जिन्होंने ने उन्हें दुःख दिया और दुःख के समय में जब उन्होंने ने तेरे आगे दुहाई दिई तब तू ने स्वर्ग से उन की सुनी और अपनी दया की बहुतों के समान उन्हें निस्तारक दिये जिन्होंने ने उन्हें उन के वैरियों के हाथ से बचाया । परन्तु विश्राम पाने के पीछे उन्होंने ने तेरे आगे फेर दुराई किई इस लिये तू ने उन के वैरियों के हाथ में उन्हें छोड़ दिया यहाँ लों कि वे उन पर प्रभुता करने लगे तिस पर भी जब वे फिरे और तेरे आगे दुहाई दिई तब तू ने स्वर्ग में से सुन सुनके अपनी दया के समान उन्हें बारंबार बुढ़ाया । और अपनी व्यवस्था को और उन्हें फेर लाने के लिये उन के विरुद्ध साक्षी दिई तिस पर भी उन्होंने ने अहंकार किया और तेरी आज्ञाओं को न सुना परन्तु तेरे विचारों के विरुद्ध पाप किया यदि मनुष्य उन्हें पालन करे तो उन में जियेगा और अपने कांधे को खींचके अपने गले को कठोर किया और न सुना । तथापि तू बहुत बरस लों उन की सहता रहा और अपने भविष्यद्वक्तों के द्वारा अपने आत्मा से उन के विरुद्ध साक्षी दिई परन्तु उन्होंने ने कान न धरा इस लिये तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में सौंप दिया । तथापि अपनी बड़ी बड़ी दया के कारण तू ने उन्हें सर्वथा नाश न किया और उन्हें न त्यागा क्योंकि तू दयाल और कृपाल ईश्वर है ॥
- ३२ सो अब हे हमारे ईश्वर महान और शक्तिमान और भयंकर ईश्वर जो नियम और कृपा को पालता है हम पर और हमारे राजाओं पर और हमारे अध्यक्षों पर और हमारे याजकों पर और हमारे भविष्यद्वक्तों पर और हमारे पितरों पर और तेरे सारे लोगों पर असूर के राजाओं के समय से आज लों जो दुःख कि हम पर पड़ा है सो तेरे आगे थोड़ा न जाना जाय । तथापि जो जो हम पर पड़ा है उन सभी में तू धर्मी है क्योंकि तू ने ठीक किया है और हम ने दुराई किई है । और हमारे राजा और हमारे अध्यक्ष और हमारे याजक और हमारे पितरों ने तेरी व्यवस्था को पालन नहीं किया है और तेरी आज्ञा और साक्षियों को नहीं सुना है जिन से तू ने हम पर साक्षी दिई है । क्योंकि उन्होंने ने अपने राज्य में और तेरी भलाई की अधिकाई में जो तू ने उन्हें दिई है और इस बड़े और फलवंत देश में जो तू ने उन्हें दिया है तेरी सेवा न किई और अपने घुरे कार्यों से न फिरे । देख हम आज सेवक हैं और जो देश तू ने हमारे पितरों को उस के फल और अच्छी वस्तु खाने को दिया है देख हम उस में सेवक हैं । और हमारे पापों के कारण उन राजाओं के लिये जिन्हें तू ने हम पर किया है बहुत बड़ती

उन की दुहाई सुनी । और फिरउन पर और उस के सारे सेवकों पर और उस के १०  
 देश के सारे लोगों पर आश्चर्य और नृत्न दिखाया क्योंकि तू जानता था कि  
 उन्हीं ने उन से अहंकार से व्यवहार किया सो तू ने अपना नाम किया जैसा कि  
 आज है । और तू ने उन के आगे समुद्र को दो भाग किया यहाँ नों कि वे ११  
 समुद्र के मध्य में से मुख्य भूमि पर चले गये और उन के दुःखदायकों को गहि-  
 रायों में प्रत्यक्ष की नाईं बड़े पानियों में फेंक दिया । और दिन को मेघ के खंभे १२  
 से और रात को आग के खंभे से उन्हीं ने गया कि जिस मार्ग में उन्हीं चलना  
 था उस में उन्हीं उँझियाला देवे । और तू सीना पर्यंत पर भी उत्तर आया और १३  
 स्वर्ग से उन के साथ बातचीत की और उन्हीं ठीक विचारों को और गहरी  
 व्यवस्थाओं को और अच्छी विधि और आज्ञाओं को दिया । और अपने पाँच १४  
 विश्वास को उन पर प्रगट किया और अपने सेवक सूमा के हाथ से आज्ञा और  
 विधि और व्यवस्था उन्हीं दिई । और उन की भय के निमित्त उन्हीं स्वर्ग से रोटी १५  
 दिई और उन की प्यास के निमित्त पहाड़ में से पानी निकाला और उस देश को  
 उन के वश में करने को जो तू ने उन्हीं देने को हाथ बढ़ाया था याचा  
 दिई ।

पर उन्हीं ने और हमारे पितरों ने अहंकार और अपने शक्तियों को कटार १६  
 किया और तेरी आज्ञाओं को न माना । और उन्हीं पानने को नहीं किया और १७  
 जो आश्चर्य तू ने उन के मध्य में किये थे उन्हीं स्मरण न किया परन्तु अपने  
 शक्तियों को कटार किया और अपनी वंधुआई में फिर जाने को अपनी दंगलों में  
 एक प्रधान को ठहराया परन्तु तू ईश्वर जमा करने को सिद्ध और कृपाल और  
 दयाल और रिसियाने में धीर और अनुग्रह में बड़ा और उन्हीं न त्यागा । हाँ १८  
 जब उन्हीं ने अपने लिये कालक एक बड़ड़ा बनाया और कहा कि यह तेरा देव  
 है जो तुझे मिस से निकाल लाया और बड़े बड़े निन्दित कार्य किये । तब तू १९  
 ने अपनी बड़ी बड़ी दया से उन्हीं अरण्य में त्याग न किया और मार्ग में ले जाने  
 के लिये दिन को मेघ का खंभा और रात को आग का खंभा उन्हीं उँझियाला करने  
 के लिये जिस मार्ग में उन्हीं जाना था उन से अलग न हुआ । उन्हीं सिंघाने के २०  
 लिये अपना उत्तम आत्मा भी उन्हीं दिया और उन के मुँह से अपने मन्त्र को न  
 रोका और प्यास में उन्हीं पानी दिया । हाँ चालीस वरस तू ने वन में उन्हीं पाला २१  
 और उन के लिये कोई वस्तु न घटी और उन के वस्त्र पुराने न हुए और उन के  
 पाँच न फूले । और तू ने उन्हीं राज्यों को और जातिगणों को दिया और उन्हीं २२  
 कोना कोना बाँट दिया सो उन्हीं ने सैहून के देश को और हमबून के राजा के  
 देश को और वसन के राजा ऊल के देश को अधिकार में लिया था । और तू २३  
 ने उन के सन्तानों को भी स्वर्ग के तारों की नाईं बढ़ाया और इस देश में उन्हीं  
 लाया जिस के विषय में तू ने उन के पितरों को अधिकार में देने को प्रण किया  
 था । सो उन के सन्तान ने उस में जाके देश को वश में किया और तू ने उन के २४  
 आगे उस देश के वासी जनानियों को वश में किया और उन के राजा और  
 देश को प्रजा समेत उन के वश में किया कि जैसा चाहें वैसा उन से करें । और २५

उसे हर धाम दरारी हुए मगधों में अपने पिता के घराने के समान अपने  
 ईश्वर के मन्दिर में लाये कि घरमेश्वर हमारे ईश्वर की वशवर्ती पर अलार्ह जाये  
 ४७ सेवा व्यवस्था में लिये है । और कि हम भूमि का नजान जोर सारे पेटों का  
 ४८ पोटिया फल धाम धाम घरमेश्वर के मन्दिर में लाये । और व्यवस्था के लिये  
 के समान अपने पेटों के और अपने पेटों के और अपने भान्जों के और अपने  
 पोटियों के ईश्वर के मन्दिर में याजकों के पास जो अपने ईश्वर के मन्दिर में सेवा  
 ४९ करते हैं लाये । और कि हम अपने भूमे हुए का पोटिया भाग और अपने सारे पेटों और  
 हर प्रकार के पेटों का और चारों का और दोन का फल अपने ईश्वर के मन्दिर की  
 कोठारियों में याजकों के पास लाये और अपने पेटों के समस्त भाग लाधियों  
 फल लाये क्योंकि लाधियों का जो सब नगरी में जहाँ हम किमनर्ह करते हैं  
 ५० लाधियों कि हमारा पेट देखें । और जब लाये हमारा भाग लेते तब हमारे  
 के पेटे याजक लाधियों के साथ होये और लाये हमारे ईश्वर के मन्दिर की  
 ५१ कोठरी में अर्थात् भंडार के घर में हमारे पेट का हमारा भाग लाये । कि हम  
 कोठरियों में जहाँ पवित्र पाय और याजक जो सेवा करते हैं और द्वापान और  
 याजक रहते हैं हमारा फल के मन्तान और लाधियों के मन्तान एवं की और नये दामरम  
 की और तेल की भेंट लाये और हम अपने ईश्वर के मन्दिर को न कोहें ।

ग्यारहवां पृष्ठ ।

- १ यद्य लोनों के अध्यक्ष यमसलम में उसे और पवित्र नगर यमसलम में धाम  
 करने के लिये उभरे हुए मनुष्यों ने भी चिट्ठी डाली शिवतें हम में एक उस में
- २ उसे और नय भाग नगरों में धर्म । और जिनों ने यमसलम में धर्म के लिये  
 मनमंता प्राप्त की सोपा था लोनों ने उन ममें का धन्य माना ।
- ३ और प्रदेश के वे ये मुखिया यमसलम में उसे परन्तु यहूदाह के नगरों में हर एक  
 अर्थात् याजक और लाधों और मन्दिर के नेयक और सुनेमान के सेयकों के मन्तान
- ४ अपने अपने नगर के अधिकार में । और यमसलम में यहूदाह के मन्तान और विनयमीन  
 के मन्तान में से खास किया यहूदाह के मन्तानों में से अतायाह जो वेटा जलियाह  
 का वेटा जकारियाह का वेटा अमरियाह का वेटा सकतियाह का वेटा सहललिलल
- ५ फाहम के मन्तान में से । और मशमियाह जो वेटा यरक का वेटा कलहूजी का वेटा  
 हजायाह का वेटा अदायाह का वेटा यूपरीय का वेटा जकारियाह का वेटा जलूनी
- ६ का । फाहम के सारे वेटे जो यमसलम में उसे थे चार सौ अठसठ थीर ।
- ७ और विनयमीन के वेटों में से सलू जो वेटा सुसलम का वेटा वाहद का वेटा फिदा-  
 याह का वेटा कौलायाह का वेटा मशमियाह का वेटा इतिलल का वेटा यमशियाह
- ८ का । और उस के पीछे जवरी और सलू नय सौ अट्ठाईस । और जिकरी का वेटा  
 यलल उन का करोड़ा था और सुनूयाह का वेटा यहूदाह नगर पर दूसरा था ।
- ९० याजकों में से यूपरीय का वेटा वदैशयाह यकीन । शिरयाह जो वेटा खिल-
- ९१ कियाह का वेटा सुसलम का वेटा सडूक का वेटा मिरयात का वेटा अखितूय
- ९२ का ईश्वर के मन्दिर का अध्यक्ष था । और घर के कार्यकारी उन के भाईवंद आठ  
 सौ याईस थे और अदायाह जो इरुहाम का वेटा फिललियाह का वेटा अमसी का

लाता है और वे हमारे देहों पर और हमारे डोहों पर भी मनमंता प्रभुता करते हैं और हम बड़े दुःख में हैं ॥

और इन बातों के कारण हम दृढ़ करके लिखते हैं और हमारे अध्यक्ष और ३८ लायी और याजक छाप लगाते हैं ॥

दसवां पृष्ठ ।

और छाप करने में ये छे दकलियाह का चेठा नहमियाह अध्यक्ष और सिद्ध- १  
क्रियाह । गिरायाह और अजरियाह और परमियाह । फसिह और अमरियाह और २  
मलकियाह । हतूण और सवनियाह और मलूक । हारिम और मरीमात और अद्य- ३  
दियाह । दानिएल और जन्नूतून और वरूक । मुसल्लम और अयियाह और मियमीन । ४  
मअनियाह और विलजी और मसयेयाह ये याजक छे ॥ ५

और लायी ये हैं अवनियाह का चेठा युगुश और दन्नादाद के सन्तानों में से ६  
विनयी और कदमिएल । और उन के भाई शवनियाह और हूदियाह और फलोता १०  
और फिलायाह और दन्नान । मोका और रूय और हमवियाह । जकूर और ११  
सरिवियाह और शवनियाह । हूदियाह और वानी और वनीनू ॥ १२

लोगों के प्रधान युगुस और परममोशव और सेलास और जतू और वानी । १४  
युनी और अजगाद और वयो । अदूमियाह और विगवे और अर्दान । अतीर १७ १६ १७  
और दिक्रियाह और अतूर । हूदियाह और हूम और वैजी । हरीफ और अन- १८  
तात और निवार्द । मगफीआस और मुसल्लम और हजीर । मुसीजयीएल और २०  
सदूक और वदूश । फलतियाह और दन्नान और अतानियाह । हूसीश और २२  
इननियाह और हसूय । हलोदेश और पिलिहा और जोवेक । रूम और हसवनः और २४  
मअसियाह । अखियाह और दन्नान और अनान । मलूक और हारीम और वअना ॥ २५

और चररे हुए लोग याजक लायी द्वारपाल गायक मन्दिर के सेवक और २८  
सब बिन्दों ने देशों के लोगों में से ईश्वर की व्यवस्था की और अपने को  
अलग किया था वे और उन की पवित्रियाँ और उन के बेटे बेटियाँ हर एक लो  
समझ बूझ रखता था । अपने कुलीन भाइयों से पिलचे रहे और थाप और किरिया २९  
में मिले कि हम ईश्वर की व्यवस्था पर लो उस ने ईश्वर के सेवक मूसा के द्वारा दिव  
चलेंगे और परमेश्वर अपने प्रभु की सब आज्ञा और विचार और विधि को मानेंगे  
और उस के समान करेंगे । और कि हम अपनी बेटियों को देश के लोगों को न देंगे ३०  
और अपने बेटों के लिये उन की बेटियाँ न लेंगे । और यदि देश के लोग विश्राम ३१  
दिन में माल अथवा भोजन देवने को लावें तो हम विश्राम में अथवा पवित्र दिन  
में उन से भोजन न लेंगे और सातवें बरस बढ़ती और अरुण को छोड़ देंगे ॥

और हम ने अपने लिये एक विधि ठहराई कि हमें उचित है कि अपने ईश्वर के ३२  
मन्दिर की सेवा के लिये । भेंट की रोटियों के लिये और नित्य के दलितदान के लिये और ३३  
विश्रामों के लिये और अमावस्यों के लिये और ठहराये हुए पर्वों और पवित्र वस्तुन के  
लिये और पाप के बलों के लिये इसराएल के कारण प्रायश्चित्त करने को और अपने  
ईश्वर के मन्दिर की सारी सेवा के लिये शैकल का तीसरा अंश हर बरस देंगे ॥

और हम याजक और लावियों और लोगों ने चिट्ठी डाली कष्ट की भेंट पर कि ३४

- २ साथ चठ आये थे ये हैं गिरायाह और यरमियाह और एजरा । अमरियाह और  
 ३ मलूक और हतूज । सकनियाह और रहूम और मरीमात । ईदू और जनुतू  
 ४ और अधियाह । मिनयमीन और मयदियाह और विलजः । समरेयाह और  
 ५ यूपरीय और यदैश्याह । मलू और अलूक और खिलकियाह और यदैश्याह ये  
 ६ युशूअ के दिनों में याजकों के मुखिया और उन के भार्द्वंद थे ।  
 ७ उन से अधिक लायी और युशूअ और यिनयी और कदमिएल और सरिवियाह  
 ८ और यहूदाह और मत्तनियाह धन्यवाद करने पर यह और उस के भार्द्वंद । और  
 ९ उन के भार्द्व यक्यूकियाह और ऊनी चौकी में उन के सन्मुख थे ।  
 १० और युशूअ से यूपकीम उत्पन्न हुआ और यूपकीम से भी इलयसीय उत्पन्न  
 ११ हुआ और इलयसीय से यूसदक उत्पन्न हुआ । और यूसदक से यूनतन उत्पन्न हुआ  
 १२ और यूनतन से यहूअ उत्पन्न हुआ ।  
 १३ और यूपकीम के दिनों में पितरों के मुखिये याजक थे गिरायाह से मिरायाह  
 १४ यरमियाह और हननियाह । एजरा से मुसल्लम और अमरियाह से यहूहनान ।  
 १५ मलूक से यूनतन और शयनियाह से युसुफ । हरीम से अदना और मिरयात से  
 १६ खिलकी । ईदू से जकरियाह और जनुतू से मुसल्लम । अधियाह से जिकरी और  
 १७ मिनयमीन से मोअदियाह और फिलती । विलजः से समूअ और समरेयाह से  
 १८ यहूनतन । यूपरीय से मत्तानी और यदैश्याह से ऊज्जी । मल्ला से कली और  
 १९ अलूक से इद्र । खिलकियाह से हसवियाह और यदैश्याह से नतनिएल ।  
 २० यहूअ के दिनों में लायी  
 २१ और याजक फारसी दारा के राज्य लों पितरों के मुखिये लिखे गये । लायी के  
 २२ छेटे पितरों के मुखिये कालविवरण की पुस्तक में इलयसीय के छेटे यहूहनान के  
 २३ समय लों लिखे गये । और लावियों के मुखिये हसवियाह और सरिवियाह और  
 २४ कदमिएल का छेटा युशूअ और उन के भार्द्वंद उन के सन्मुख होते हुए ईश्वर  
 २५ के जन दाऊद की आज्ञा के समान स्तुति करने और धन्य माने के लिये चौकी  
 २६ के आगे चौकी । मत्तनियाह और यक्यूकियाह और अयदियाह और मुसल्लम  
 २७ और तल्मान और अकूव द्वारपाल फाटकों की डेवढी पर रखवाली करते थे ।  
 २८ ये यूसदक के छेटे युशूअ के छेटे यूपकीम के दिनों में और नरमियाह अध्यक्ष के  
 २९ और एजरा याजक अध्यापक के दिनों में थे ।  
 ३० और यहूसलम की भीत के स्थापने में उन्हीं ने लावियों को उन के सारे  
 ३१ स्थानों से खोजा जिसमें नवल और करताल और वीण लिये हुए धन्यवाद करते  
 ३२ और गाते हुए आनन्द से स्थापना करने के लिये यहूसलम में उन्हें लाये । और  
 ३३ गायकों के छेटे यहूसलम की चारों ओर के चौगान से और नतूफः के गांवों से ।  
 ३४ और जिलजाल के घर से और जिबअ और अजिमैत के चौगानों से आप को  
 ३५ एकट्ठा किया क्योंकि गायक यहूसलम की चारों ओर अपने लिये गांव बनाये  
 ३६ थे । और याजकों ने और लावियों ने अपने को पवित्र किया और लोगों को  
 ३७ और फाटकों को और भीत को पवित्र किया ।  
 ३८ इस के पीछे में यहूदाह के अध्यक्षों को भीत पर लाया और धन्यवाद के

घेठा जकरियाह का घेठा कमिहूर का घेठा मन्त्रियाह का घेठा । और पितरों के १३ मुखिया उस के भाईवंद दो मो बगालीस और अमस्सः जो घेठा अजरियन का घेठा आम्बजी का घेठा मुसलमान का घेठा अमीर का । और उन के भाईवंद सदावीर १४ मनुष्य एक मो अट्टाईस और उन का करोड़ा एक सदन उन का घेठा जयदिसल ।

और लावियों में से भी मसगेषाह जो घेठा इमूय का घेठा अजगिफास का घेठा १५ हमरियाह का घेठा खुनी का । और लावियों में का मुखिया मयती और यजयत १६ ईश्वर के मन्दिर के बाहर के कार्य पर थे । और आम्फ के घेठे जयदी के घेठे १७ मीका का घेठा मन्त्रियाह प्रार्थना में धन्यवाद आरंभ करने का प्रधान था और अपने भाइयों में से यजयकियाह दूसरा था और अयटा जो घेठा ममूय का घेठा जलाल का घेठा यदुन का । पवित्र नगर में नारे लायों दो मो चारामा थे ॥ १८

और द्वारपाल अकूय और तन्मान और उन के भाईवंद जो फाटकों के रयाक १९ थे एक मो चत्तर ॥

और हमरागल के और याजकों के और लावियों के द्यरे हुए लोग यदूदाह २० के नारे नगरों में हर एक जन अपने अपने अधिकार में रहा ॥

परन्तु मन्दिर के सेवक उफन में धम और सोदा और जिसका मन्दिर के २१ सेवकों पर थे ॥

और यमसलम के लावियों का करोड़ा भी उज्जी घेठा यानी का घेठा हम- २२ वियाह का घेठा मन्त्रियाह का घेठा मीका का आम्फ के घेठों में से गायक ईश्वर के मन्दिर के कामकाज पर थे । क्योंकि उन के विषय में राजा की आज्ञा थी २३ कि गायकों के लिये प्रतिदिन ठहराया हुआ भाग दिया जाय ॥

और यदूदाह के घेठे जयह के मन्तानों में से मुसीजियन का घेठा फताहियाह २४ लोगों के नारे कार्यों के विषय में राजा के लग था ॥

और गांधों के और उन के ग्येतों के कारण यदूदाह के मन्तान के किनारे २५ लोग कथनश्रवण में और उन के गांधों में और देवून और उस के गांध में और विक्रजिगल और उस के गांध में धम । और युशूय में और मूलादा में २६ और वैतफलन में । और हमरमुआल में और विशरसयथ और उस के गांधों २७ में । और सिफलाज में और मकूनः और उन के गांधों में । और रेनिरुम्मान २८ में और मुरअः में और यरमूत में । जनुह अदुलाम और उन के गांधों में लकीम ३० और उस के ग्येतों में अजाकः में और उस के गांधों में और छे विशरसयथ से लेके हिनुम की तराई लीं रखा करते थे ॥

और यिनयमीन के मन्तान भी जिद्यथ से सिफलाज और रेया और वैतयल और ३१ उन के गांधों । और अनगान और नूय और अननियाह में । और हसूर और रासा ३२ और जिर्नेन । और हदीद और जिदियान और नबलून । और लूद और औनू ३३ कार्यकारी की तराई में ॥ ३४

और लावियों के भाग यदूदाह में और यिनयमीन में रहे ॥

चारहवां पृष्ठ ।

अथ याजक और लावी जो सियालतियल के घेठे जययायुल और युशूय के १



- यह लिया पाया गया कि अम्मर्नी और मोक्षयी ईश्वर की मूर्तों में कधी न  
 २ आने पाये । क्योंकि उन्हीं ने अनु उन से दम्भायन के सन्तानों में भेंट न किई  
 परन्तु उन्हें माप देने को धनयाग को उन के विश्व भाग्य किया तथापि हमारे  
 ३ ईश्वर ने उस माप को आर्जोम से धनन दिया । मेरे यों हुआ कि जय उन्हीं ने  
 दपधन्या सुनी तो सारे परदेशियों को दम्भायन से धनन किया ।
- ४ और हम के आगे हमारे ईश्वर के मन्दिर की कोठरी के करोड़ा इलयसीय  
 ५ याजक ने तृदियाह में नाता किया था । और उस ने हम के लिये एक यही  
 कोठरी मिट्ट किई थी जहाँ आगे को ये मांस की भेंट और गन्धरस और  
 वर्तन और अनु का और नयीन दाग्यरस का और तेल का दमयां भाग आर  
 मगान लाधियों और गायकों और द्वारवालों और याजकों की भेंट धरी जाती  
 ६ थी । परन्तु जय यह नय होता था तब मैं यत्सलम में न था क्योंकि दायुल के  
 ७ राजा अरदमेर के यत्नीमये वरन में मैं राजा पाया गया जोर कितने दिनों के  
 ८ पीले में ने राजा को खोति धिनी किई । और मैं यत्सलम में आया और जो  
 ९ दुरार्ह इलयसीय ने तृदियाह के लिये ईश्वर के मन्दिर के आंगनों में कोठरी मिट्ट  
 १० करने में किई थी उसे मैं ने दूखा । और उन्ने मुझे छड़ा जोक हुआ हम लिये  
 ११ मैं ने तृदियाह की मागी सामग्री को उस कोठरी से निकाल लैका । तब मैं ने  
 आजा किई और उन्हीं ने कोठरियों को पधिय किया और मैं ईश्वर के मन्दिर  
 के वर्तन मांस की भेंट गन्धरस सहित उस में कर लाया ।
- १० और मैं ने देख लिया कि लाधियों के भाग उन्हें न दिये गये थे क्योंकि  
 लायी और गायक जो कार्य करते थे हर एक अपने अपने रंग को भागा था ।
- ११ तब मैं ने अध्वीयों से विवाद करके कहा कि ईश्वर का मन्दिर क्यों त्यागा  
 १२ गया है और मैं ने उन्हें एकट्टे करके उन्हीं के पद पर स्थिर किया । तब सारे  
 १३ यहूदाह अनु और नये दाग्यरस और तेल का दमयां भाग भंडार में लाये । और मैं  
 ने भंडारों पर यत्सलियाह याजक को और सटूक लेयक को और लाधियों में से  
 फिदायाह को भंडारी किया और उन के लग मत्तनियाह का घेठा जकूर के घेठे  
 हनान को क्योंकि वे विश्वस्त मिते जाते थे और उन के भाइयों को धांट देना  
 उन पर था ।
- १४ हे मेरे ईश्वर इस विषय में मुझे स्मरण कर और मेरे सुकार्यों को जो मैं ने  
 अपने ईश्वर के मन्दिर के और उस की सेवा के लिये किया है मिटा न डाल ।
- १५ उन दिनों मैं मैं ने यहूदाह में कितनों को विश्राम के दिन में दाख का कोल्हू  
 रींदते और गठरियां लाते और गदहे लादते और विश्राम में दाखरस और दाख  
 और गूलर और सारे वोक्त यत्सलम में लाते भी देखा और जय उन्हीं ने भोजन  
 १६ वेत्ता उसी दिन मैं ने उन्हें जताया । उस में मूर के लोग भी बसते थे जो  
 सकली और सारे प्रकार का माल लाके यहूदाह के सन्तानों के हाथ यत्सलम में  
 १७ विश्राम के दिन से वेवते थे । तब मैं ने यहूदाह के कुलीनों से विवाद करके  
 उन्हें कहा कि यह क्या घुरा काम है जो तुम करते हो और विश्राम के दिन  
 १८ को अशुद्ध करते हो । क्या तुम्हारे पितरों ने ऐसा नहीं किया और हमारा ईश्वर

लिये दो जथा को ठहराया उन में से एक जो भीत पर दहिने अलंग कूड़ा फाटक की ओर गई । और उन के पीछे दूसरा फाटक और यहूदाह के आधे आध्यक्ष ३२ गये । और अजरियाह और सजरा और सुसलम । यहूदाह और यिनयमीन और ३३ समरियाह और यरमियाह । और याजक के घंटों में से तुरही लिये हुए अर्थात् ३५ अजरियाह जो युनतन का घंटा समरियाह का घंटा सतनियाह का घंटा मीकायाह का घंटा जकूर का घंटा ग्रामफ का घंटा । और उस के भाई ३६ समरियाह और अजरियाह और मिलाली और जिलली और मार्व और नतनिएल और यहूदाह और दनानी ईश्वर के जन दाऊद के दाते की सामग्री हाथ में लेकर गये और सजरा आध्यापक उन के आगे आगे । और मोताफाटक से जो ३७ उन के मन्मुख या भीत पर जाने के स्थान में दाऊद के घर के आगे अर्थात् जलफाटक लों पूरय की ओर दाऊद के नगर की मोड़ी पर चढ़ गये ।

और धन्यवाद की दूसरी जथा उन के मन्मुख और में और आधे लोग भीत ३८ पर भट्टों के गुम्मत के परे से चौड़ी भीत लों उन के पीछे पीछे गये । और इफ- ३९ रायम के फाटक के आगे से और पुराने फाटक के आगे से और महुलीफाटक और दननिएल के गुम्मत और मियाह के गुम्मत के आगे से भेड़फाटक लों और वे यन्दीगह के फाटक पर खड़े रह गये ।

सो दोनों ने ठहरके और में ने और आध्यक्ष के आधों ने ईश्वर के मन्दिर में ४० धन्यवाद किया । और इलयकीम और मअसियाह और यिनयमीन और मीका- ४१ याह और इलपूरेनी और जकरियाह और दननियाह याजक तुरही लिये हुए । और मअसियाह और समरियाह और इलियजर और जज्जी और यहूदनान और ४२ मलकियाह और सेलाम और अब्द और गायकों ने इसराकियाह करौड़ा सहित अपना शब्द सुनाया । और उस दिन उन्होंने ने बड़े बड़े बलि भी चढ़ाके आनन्द ४३ किया क्योंकि ईश्वर ने बड़े आनन्द से उन्हें आनन्दित किया और उन की पत्नियां और बालकों ने भी आनन्द किया यहां लों कि यरुसलम का आनन्द बहुत दूर लों सुना गया ।

और उस समय में भंडारों के और भंडों के और नवान्न के और दसवें अंश ४४ के लिये कितने लोग कोठरियों पर ठहराये गये जिसमें उन में नगरों के खेतों से दण्डस्था के भाग याजकों और लावियों के लिये एकट्टे करं क्योंकि याजकों और लावियों के लिये जो खड़े थे यहूदाह ने आनन्द किया । और गायकों ने और ४५ द्वारपालों ने दाऊद की और उस के घंटे सुलेमान की आज्ञा के समान अपने ईश्वर की और पवित्रता की चौकी दिई । क्योंकि दाऊद के और आसफ के पुरातन ४६ दिनों में गायकों के प्रधान ईश्वर के निमित्त स्तुति और धन्यवाद गाते थे । और जम्बाबुल के दिनों में और नहमियाह के दिनों में मारे इसराएल ने प्रतिदिन ४७ अपना अपना भाग गायकों और द्वारपालों को दिया और उन्होंने ने लावियों के लिये पवित्र किया और लावियों ने दारुन के सन्तानों के लिये उसे पवित्र किया ।

तेरहवां पर्व ।

उसी दिन उन्होंने ने लोगों के कान में मूसा की दण्डस्था सुनाई और उस में १

# आसतर की पुस्तक ।

पाँचवा पदार्थ ।

- १ और जेरशाह के समय में ऐसा हुआ यह यही जेरशाह है जिस ने हिंद में  
२ क्रोध ली एक भी मत्तार्थम प्रदेशों पर राज्य किया । कि उन दिनों में जब  
३ जेरशाह सुसन के भयन में अपने राज्य के सिंहासन पर बैठा था । तब अपने  
राज्य के तीसरे दरस में उस ने अपने सारे अधिकारों और अपने सेवकों के लिये  
कारस और मादी के पराक्रमियों के लिये और प्रदेशों के कुलीन और अधिकारियों के  
४ लिये अपने आगे लेखनार बनाया । तब उस ने अपने राज्य के विभय के धन  
को और अपनी उत्तम मोहिमा की प्रतिष्ठा को बहुत दिन ली अर्थात् एक भी  
अस्सी दिन ली दिखाया ।
- ५ और जब ये दिन बीत गये तब राजा ने सारे लोगों के लिये जो सुसन के  
भयन में पाये गये क्या बड़े क्या छोटे के लिये राजा के भयन की यादिका के  
६ आंगन में सात दिन ली लेखनार बनाया । जहाँ बैजनी और भीने कपड़े की  
छोखियाँ से चांदी की कड़ियाँ से मर्मर के खंभों पर ज्योत और हरे और नीले  
आमल टंगे थे और नीले और ज्योत और काले मर्मर के पटाय पर सोने चांदी  
७ के पलंग बिछे थे । और चन्दों ने सोने के पात्र में चन्द पिलाया और पात्र भी  
भिन्न भिन्न डोल के थे और राष्ट्रीय दायरस राजा के महात्म के समान बहुताई  
८ से था । और पीना व्यवस्था के समान दायरस न था क्योंकि राजा ने अपने घर  
के सारे प्रधानों के लिये ठहराया था कि हर एक अन अपनी अपनी इच्छा के  
९ समान करे । यशती रानी ने भी स्त्रियों के लिये जेरशाह राजा के राजमन्दिर में  
लेखनार किया ।
- १० सातवें दिन में जब राजा का मन दायरस से मगन हुआ तब उस ने सात  
शयनस्थान के प्रधानों को जो जेरशाह राजा के आगे सेवा करते थे अर्थात्  
महूमान और वसतः और खरधूना और विगता और अवगता और सित्र और  
११ करगस को आज्ञा किई । कि यशती रानी को राजमुकुट पहिने हुए राजा के  
आगे लाओ जिसमें लोगों को और अधिकारों को उस की सुन्दरता दिखावे  
१२ क्योंकि वह सुन्दर रूप थी । परन्तु शयनस्थान के प्रधान के द्वारा से राजा की  
आज्ञा पालन करने को यशती रानी ने नाह किया इस लिये राजा महा कोपित  
हुआ और वह क्रोध से तपने लगा ।
- १३ तब राजा ने उन युद्धिमानों से जो सुधूर्तों को जानते थे कहा क्योंकि नीति  
१४ और विचार के सारे जानकारों के लिये राजा की यही रीति थी । और उस के  
समीपी कारशिना और सितार और अदमाता और तरसीस और मरस और मर-  
सिना और ममूकान फारस और मादी के सातों अधिकार जो राजा के रूपदर्शी और  
१५ राज्य में श्रेष्ठ स्थान में बैठते थे । कि नीति के समान यशती रानी से क्या करें क्योंकि  
उस ने जेरशाह राजा की आज्ञा शयनस्थान के प्रधानों के द्वारा सुनके न मानी ।

हम पर और हम नगर पर यह सारी घुराई नहीं लाया तब भी तुम विश्राम दिन को अशुद्ध करके इसराएल पर अधिक कोप भड़काते हो ॥

फेर यों हुआ कि विश्राम से आगे जब यरुसलम के फाटक अधियारे होने लगे तब १९ में ने फाटकों को बंद करने की दृढ़ आज्ञा दी कि जब लों विश्राम न होते तब लों वे न खोले जायें और मैं ने अपने सेवकों को फाटकों पर रक्खा जिससे विश्राम के दिन में कोई चोरी भीतर आने न पावे । इस लिये वैपारी और सब प्रकार के माल २० के बेलबैले एक दो बार यरुसलम के बाहर गत हो टिक रहे । तब मैं ने उन्हें २१ जताया और उन्हें कहा कि तुम लोग किस लिये भीत के आगे टिके हो यदि फेर ऐसा करोगे तो मैं तुम पर घाघ डालूंगा तब से वे विश्राम में फेर न आये । और २२ लावियों से जो अपने को पवित्र करने और आगे फाटकों की रखवाली करते थे मैं ने कहा कि विश्राम दिन को पवित्र मानो हे मेरे ईश्वर हम से भी सुभे स्मरण कर और अपनी दया की बहुताई से सुभ पर अनुग्रह कर ॥

उन दिनों मैं मैं ने उन यहुदियों को भी देखा जिन्होंने ने अशुद्धी और अममूनी २३ और मोशवी स्त्रियों से विवाह किया था । और उन के मन्तान आधी अशुद्धी २४ भाषा बोलते थे और यहुदी भाषा न बोल सके थे परन्तु लोग लोग की भाषा के समान । तब मैं ने उन से विवाह किया और उन्हें पाप दिया और उन २५ में से कितनों को चपड़ाया और उन के बाल उग्राड़े और उन में यों ईश्वर की किरिया लिई कि हम अपनी बेटियों को उन के बेटों को न देंगे और उन की बेटियों को अपने बेटों के और अपने लिये न लेंगे । क्या इसराएल के राजा २६ सुलेमान ने इन इन बातों से पाप नहीं किया तथापि बहुत से जातिगणों में हम के समान कोई राजा न था जो अपने ईश्वर का प्रिय था और ईश्वर ने उसे मारे इसराएल पर राजा किया तथापि परदेशी स्त्रियों ने उसे भी पाप करवाया । यों सारे महा पाप करके तुम जिससे हमारे ईश्वर के विरुद्ध उपरी स्त्रियों से २७ विवाह कर करके अपराध करो क्या हम तुम्हारी सुनेंगे ॥

और इलयसीव प्रधान याजक के बेटों में से मूषदश का एक बेटा हस्ती सन- २८ चलत का जंघाई था इस लिये मैं ने अपने पास से उसे निकाल दिया । हे मेरे २९ ईश्वर उन्हें स्मरण कर हम कारण कि उन्हें ने याजकता को और याजकता के और लावियों के नियम को अशुद्ध किया है ॥

यों मैं ने सारे परदेशियों से उन्हें पवित्र किया और याजक और लावी की ३० सेवा दृढ़ किई हर एक को अपने अपने कार्य में ठहराया । और काष्ट की और ३१ नवान्न की भेंटें ठहराई कि समय समय पर चढ़ाई जायें हे मेरे ईश्वर मेरी भलाई के लिये सुभे स्मरण कर ॥

तब आसतर भी स्त्रियों के रक्षक हिजई की हाथ में राजा के भयन में पहुंचाई गई । और वह कन्या उसे अच्छी लगी और उस ने उम्मे अनुग्रह पाया और उस ने उसे पथिव्र करने की वस्तु और उस के भाग दिये और राजा के भयन से योग्यता के समान सात दाम्नी उसे दिई गईं और उस ने उसे और उस की दामियों को स्त्रियों के मन्दिर के अच्छे से अच्छा स्थान दिया । आसतर ने अपने लोग और कुटुम्ब न धताये क्योंकि मरदकी ने उसे जता दिया था कि न धताये ॥

और प्रतिदिन मरदकी स्त्रियों के मन्दिर के भयन के आगे फिरता था जिसमें आसतर का कुशल पूछे और कि उस का पया होगा । और जब स्त्रियों की रीति के समान बारह मास उस के लिये धीतते थे और हर एक कन्या की पारी शेरशाह राजा कने जाने को आती थी क्योंकि उन्हे पथिव्र करने के दिन यों थे मर के तेल से छः मास और सुगन्धों से और स्त्रियों की पथिव्र करने की वस्तु से छः मास । तब यों कन्या राजा कने आती थी और जो जो वस्तु वह चाहती थी सो स्त्रियों के मन्दिर में से राजा के घर में जाने को उसे दिई जाती थी । सांभ को वह जाती थी और विद्यान को स्त्रियों के दूसरे मन्दिर में सासगाज राजा के शयनस्थान के प्रधान जो महेलियों का रक्षक था उस के दश में फिर जाती थी और जब लों राजा उम्मे मगन न होता था और कि वह नाम लेके पुकारी न जाती थी तब लों राजा कने फेर न जाती थी ॥

और जब मरदकी के चचा अविखैल की लड़की आसतर की जिसे मरदकी ने अपनी लड़की कर रखा था राजा कने जाने को पारी आई जो कुछ राजा के शयनस्थान के प्रधान स्त्रियों के रक्षक हिजई ने ठहराया था अधिक न चाहा और सभी की दृष्टि में जो उसे देखता था आसतर ने अनुग्रह पाया । सो दसवें मास में जो तवीस मास है आसतर राजभयन में राजा शेरशाह कने पहुंचाई गई जो उस के राज्य का सातवां वरस था । और राजा ने सारी स्त्रियों से आसतर को अधिक प्यार किया और उस ने सारी कुंआरियों से उस की दृष्टि में अधिक अनुग्रह और कृपा पाई यहां लों कि उस ने राजमुकुट उस के सिर पर रख दिया और यणती की सन्ती उसे रानी किया । तब राजा ने अपने सारे अध्यक्षों और सेवकों के लिये एक बड़ा जेवनार किया अर्थात् आसतर का जेवनार और उस ने प्रदेशों को विग्राम दिया और राजा के महात्म के समान दान किया ॥

और जब कुमारी दूसरी धार एकट्ठी हुईं तब मरदकी राजा की डेवड़ी पर बैठा था । और मरदकी के चिताने के समान आसतर ने अपने कुटुम्ब और अपने यत को अब लों न धताया क्योंकि आसतर मरदकी की आज्ञा को अब भी ऐसा मानती थी जैसा जब उम्मे पाली जाती थी ॥

उन दिनों में जब मरदकी राजा के फाटक पर बैठता था तब राजा के शयनस्थान के दो प्रधान अर्थात् डेवड़ी के रक्षकों में से विगतान और तुर्ष कुछ होके चाहते थे कि राजा शेरशाह पर हाथ डालें । और यह बात मरदकी को

तब समूकान ने राजा के और अध्यों के आगे कहा कि यशती रानी ने १६  
केवल राजा का ही नहीं परन्तु मारे अध्यों का भी और मारे लोगों का जो  
शेरशाह राजा के प्रदेशों में हैं अपराध किया । क्योंकि रानी का यह कार्य समस्त १७  
स्त्रियों पर प्रगट होगा जब कि चर्चा होगी कि शेरशाह राजा ने यशती रानी  
को अपने आगे लाने की आज्ञा किई परन्तु वह न आई वे अपने अपने पति १८  
को मुक्त जानगी । और आज के दिन फारस और मर्दी की स्त्रियों जिन्होंने १९  
रानी की यह बात सुनी हैं सो भी राजा के मारे अध्यों से कहेंगी सो यों निन्दा  
और भगड़ा होगा । जो राजा की अच्छा लगे तो उस के आगे से राजीव २०  
आज्ञा निकले और वही फारस और मर्दी की नौतों में निम्ना जाय जिसमें न टले  
कि यशती रानी राजा शेरशाह के आगे फेर न आये और राजा उस के राजीव  
पद उस की संगी को जो उसने भली है देवे । और जब राजा की किई हुई २१  
आज्ञा उस के मारे राज्य में प्रचारी जाय क्योंकि वह बड़ा है तब मारी पत्नियां  
अपने अपने पति वड़े से छोटे लों को प्रोत्साह देंगी ।

और वह बचन राजा की और उस के अध्यों की दृष्टि में अच्छा लगा और २१  
राजा ने समूकान के बचन के समान किया । क्योंकि उस ने राजा के मारे प्रदेशों २२  
में पत्नियां भेजीं हर एक प्रदेश में उस के लिखने के समान और हर एक लोग  
को उस की भाषा के समान जिसमें हर एक जन अपने अपने घर में प्रभुता करे  
और कि वह हर एक लोगों की भाषा के समान प्रचारी जाय ।

### दूसरा पत्र ।

इन बातों के पीछे जब शेरशाह राजा का क्रोध धीमा हुआ तब उस ने १  
यशती की और जो कि उस ने किया था और जो कि उस के विषय में आज्ञा  
हुई थी स्मरण किया । तब राजा के सेवक दासों ने उसे कहा कि राजा के लिये २  
युवती सुन्दरी कुमारियां ढूंढी जायें । और राजा अपने राज्य के मारे प्रदेशों में ३  
प्रधानों को ठहरावे जिसमें वे मारी युवती सुन्दरी कुमारियों को मूसन के भयन  
में राजा के शयनस्थान के प्रधान स्त्रियों के रक्षक टिजई के हाथ स्त्रियों के घर  
में एकट्टे करें और पवित्र करने की यस्तु उन्में दिई जाय । और जो कन्या राजा ४  
को अच्छी लगे सो यशती की मन्ती रानी होय और राजा उस बात ने प्रसन्न  
हुआ और उस ने वैसा ही किया ॥

अब मूसन के भयन में सरदर्की नाम एक यहूदी था जो चिनयमीनी यादर ५  
का बेटा था जो शमई का बेटा जो कीस का बेटा था । जो उस बंधुआई में ६  
यहमलम से उठाये गये थे जो यहूदाह के राजा यकुनियाह के संग उठाये गये  
जिन्हें बाबुल का राजा नबूमुदनजर ले गया था । और उस ने अपने चचा की ७  
बेटी हदशः अर्थात् आसतर को पाला था क्योंकि उस के माता पिता न थे और  
वह कन्या सुहैल और सुन्दर रूप थी जिसे सरदर्की ने जब उस के माता पिता  
मर गये अपनी ही लहकी कर लिया था ।

और यों हुआ कि जब राजा की आज्ञा और उस का ठहराया हुआ सुना ८  
गया और जब बहुत कन्या मूसन भयन में टिजई के यश में एकट्टी किई गईं



क्या स्त्री सारे यहूदियों को एक ही दिन में अर्थात् आरह्ये मास की तेरहवीं तिथि में जो आदर मास है नाश करो धधन करो और नष्ट कराओ और उन १४ की संघर्ष लूट लो । हर एक प्रदेश के सारे लोगों के लिये लिखे हुए का उतारा १५ आज्ञा के लिये प्रचारा गया जिसमें उस दिन के लिये लेस हो रहे । राजा की आज्ञा की शीघ्रता के कारण डाकिये निकल चले और आज्ञा, सूसन के भवन में दिई गई और राजा और दामन पीने के लिये बैठ गये परन्तु सूसन नगर व्याकुल हुआ ।

चौथा पृष्ठ ।

१ जो कि किया गया था जय मरदकी ने देखा तो उस ने अपने कपड़े फाड़े और राख सहित टाट पहिने के बाहर नगर के मध्य में जाके चिल्ला चिल्ला बिलख २ बिलख रोया । और राजा की डेयड़ी के भी आगे आया क्योंकि टाट पहिने ३ कोई राजा की डेयड़ी से न जाता था । और हर एक प्रदेश में जहां कहीं राजा की आज्ञा और ठहराया हुआ पहुंचता था तहां यहूदियों में बड़ा विलाप और द्रत और रोना और पीटना होता था और राख और टाट घर बैठ गये ॥

४ तब आमतर की दासियों ने और उस के नपुंसकों ने आके उसे संदेश दिया तब रानी अत्यन्त उदासिन हुई और मरदकी का टाट ले लेने को और उसे ५ पहिने के वस्त्र भेजा परन्तु उस ने न लिया । तब आमतर ने राजा के शयन-स्थान के प्रधान हताक को जिसे उस ने उस के आगे रखवा था बुलवाया और ६ आज्ञा करके मरदकी को पुछा भेजा कि क्या है और किस लिये । सो हताक निकलके नगर के चौक में जो राजा की डेयड़ी के आगे था मरदकी ७ कने गया । और सब जो उस पर होता था और यहूदियों को नष्ट करने के कारण और जो रोकड़ दामन ने राजा के भंडारों में देने को प्रण किया था सो ८ मरदकी ने उसे कहा । और आज्ञा के लिये हुए का उतारा भी जो उन्हें नष्ट करने को सूसन में दिया गया था उस ने उसे दिया कि आमतर को दिखावे और सुना देवे और उसे जता देवे कि अपने लोगों के कारण बिनती और प्रार्थना करने के लिये राजा के पास जाय ॥

९ और हताक ने आके आमतर को मरदकी की बातें सुनाईं । फिर आमतर १० ने हताक से कहा और मरदकी के लिये उसे आज्ञा दिई । कि राजा के सारे दास और राजा के प्रदेश के लोग जानते हैं कि क्या स्त्री क्या पुरुष जो कोई ११ बिना बुलाये राजा के पास जाय उस को धधन करने की एक ही व्यवस्था है केवल वह जिस के लिये राजा सेने का राजदंड उठावे जिसमें वह जीये परन्तु १२ तीस दिन हुए कि मैं राजा कने बुलाई न गई । और उन्होंने ने मरदकी को आमतर की बातें कहीं ॥

१३ तब मरदकी ने आज्ञा दिई कि आमतर को उत्तर देओ कि अपने मन में न १४ समझे कि सारे यहूदियों से अधिक राजा के भवन में मैं बचूंगी । क्योंकि यदि तू इस समय में सर्वथा चुपकी हो रहेगी तो जीवन और बचाव यहूदियों के लिये अन्त से उदय होगा परन्तु तू अपने पितरों के घराने सहित नष्ट हो जायेगी और

जान पड़ी और उस ने आमतर रानी को कहा और आमतर ने सरदकी के नाम से राजा को जनाया । फेर जब इस बात की पूछपाछ हुई तो खुल गई इस २३  
लिये दोनों एक पेड़ पर टांगे गये और वह राजा के काल के समाचार की पुस्तक में लिखा गया ।

### तीसरा पर्व ।

इन बातों के पीछे जेरगाह राजा ने अगामी हमिदामा के बेटे हामन को १  
बढ़ाया और उसे महान किया और उस के संग के सारे अधिकारों से उस के  
आसन को उंचा किया । और राजा के सारे सेवक जो राजा की डेवड़ी पर रहते २  
ये हामन के आगे झुकने थे और उसे प्रतिष्ठा देते थे क्योंकि राजा ने उस के विषय  
में वैसा ही आज्ञा किई थी परन्तु सरदकी न झुकता था न प्रतिष्ठा देता था ।  
तब राजा के सेवकों ने जो राजा की डेवड़ी पर रहते थे सरदकी को कहा कि ३  
तू क्यों राजा की आज्ञा उल्लंघन करता है ।

सो यों हुआ कि जब ये प्रतिदिन उसे कहते रहे और उस ने उन की न मानी ४  
तब सरदकी को बात उन्हों ने हामन से बूझने का कर्तौ कि सरदकी को बात  
ठहरेगी कि नहीं क्योंकि उस ने उन्हें कहा था कि मैं यहुदी हूँ । और जब हामन ५  
ने देखा कि सरदकी न झुकता है न मुझे प्रतिष्ठा देता है तब हामन कोप से भर  
गया । और उस ने केवल सरदकी पर हाथ डालना तुच्छ समझा क्योंकि उन्हों ६  
ने उसे सरदकी के लोगों का बताया था उस लिये हामन ने जेरगाह के सारे  
राज्य के सारे यहुदियों का अर्थात् सरदकी के लोगों को नष्ट करने के लिये  
चिन्ता किई ।

जेरगाह राजा के बारहवें बरस के पहिले मास में जो नीसान मास है दिन ७  
दिन और मास नाम बारहवें लों जो अदार मास है ये हामन के आगे पारा  
अर्थात् चिट्ठी डाला किये । तब हामन ने जेरगाह राजा से कहा कि आप के ८  
राज्य के सारे प्रदेशों के लोगों में एक छितरे हुए और फैले हुए लोग हैं और  
उन की व्यवस्था सारे लोगों से भिन्न है और ये राजा की व्यवस्था भी नहीं  
मानते हैं इस लिये उन के रद्दने में राजा को लाभ न होगा । जो राजा की ९  
इच्छा होय तो उन्हें नाश करने के लिये लिखा जाय और जो इस काम पर है  
मैं उन के हाथ में दस सहस्र तोड़े चांदी राजा के भंडारों में डालने का देखंगा ।  
तब राजा ने अपने हाथ से अंगूठी निकालके यहुदियों के वैरी अगामी हमिदामा १०  
के बेटे हामन को दिई । और राजा ने हामन से कहा कि चांदी और लोग भी ११  
तुम्हें दिये गये हैं जो चाहे सो उन से करे ।

तब राजा के लेखक पहिले मास की तेरहवीं तिथि में चुनाये गये और हामन १२  
की सारी आज्ञा के समान हर एक प्रदेश पर के राजाध्यक्षों और अधिकारियों के  
और हर एक प्रदेश के हर एक लोगों के प्रधानों के हर एक लोगों को उन की  
भाषा के समान उस लिखने के तुल्य लिखा गया और वह जेरगाह राजा के  
नाम से लिखा गया और राजा की अंगूठी से छाप किई गई । और पत्रियां १३  
हाकियों के हाथों से राजा के सारे प्रदेशों में भेजी गईं कि क्या तमन क्या घृह

५ बकाया तब आसतर राजा के आगे उठ खड़ी हुई । और बोली कि यदि राजा की इच्छा होय और यदि मैं ने उस की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और यह बात राजा के आगे ठीक होय और मैं उस की दृष्टि में अच्छी लगूं तो आगामी हस्मि-  
६ दासा के बेटे हामन की जगत के मंत्र जो उस ने राजा के सारे प्रदेशों के यहू-  
६ दियों को नष्ट करने को लिखा था उन्हें पलटने को लिखा जाय । क्योंकि जो धुराई मेरे लोगों पर पड़ेगी मैं उसे क्योंकि देख सकूंगी अथवा अपने कुटुम्बों का नष्ट होना मैं क्योंकि देख सकूंगी ।

७ तब शेरशाह राजा ने आसतर रानी से और यहूदी मरदकी से कहा कि देख मैं ने हामन का घर आसतर को दिया है और उन्हें ने उसे फांसी की लकड़ी  
८ पर इस कारण टांगा कि उस ने यहूदियों पर हाथ डाला । जैसा तुम्हें अच्छा लगे राजा के नाम से तुम भी यहूदियों के लिये लिखो और राजा की अंगूठी से काप करो क्योंकि जो लिखा हुआ राजा के नाम से लिखा गया है और राजा की अंगूठी से कापा गया है उसे कोई पलट नहीं सक्ता ।

९ तब उसी समय तीसरे मास में अर्थात् सियान मास की तेरहवीं तिथि में राजा के लेखक बुलाये गये और मरदकी की सारी आज्ञा के समान प्रदेशों के यहूदियों को और राजाध्यक्षों को और नायकों को और प्रधानों को जो हिन्द  
से हथश लें हैं एक सौ सत्ताईस प्रदेश उस लिखने के समान हर एक प्रदेश को और उन की भाषा के समान हर एक लोग को और यहूदियों को उन के लिखने और उन की भाषा के समान लिखा गया ।

१० और उस ने शेरशाह राजा के नाम से लिखा और राजा की अंगूठी से काप किया और डाकियों के हाथ से जो घोड़ों और खच्चरों घोड़ियों के बच्चों पर  
११ चढ़ाये थे पत्नियां दौड़ाई । कि राजा ने यहूदियों को कुट्टी दिई कि सब नगरों में एकट्टे होवें और अपने प्राण के बचाव के लिये खड़े होवें जिसमें लोगों और प्रदेशों के सारे पराक्रम जो उन पर हला करें क्या बालक क्या स्त्री घात करके  
१२ नाश करें और नष्ट करवावें और उन की संपत्ति लूट लें । एक ही दिन में राजा शेरशाह के सब प्रदेशों में बारहवें मास अर्थात् अदार मास की तेरहवीं तिथि में ।

१३ लिखे हुए का उतारा हर एक प्रदेशों में देने को सारे लोगों के लिये प्रगट किया गया जिसमें यहूदी अपने बैरियों से पलटा लेने को उस दिन में लैस हो  
१४ रहें । सो डाकिये जो सांडनियों और खच्चरों पर चढ़ाये थे राजा की आज्ञा से वेग से जाके निकल गये और सूसन के भवन में आज्ञा दिई गई थी ।

१५ और मरदकी नीला और श्वेत राजवस्त्र और सोने का एक महा मुकुट बैजनी और भीना वस्त्र पहिने हुए राजा के आगे से निकल गया और सूसन  
१६ नगर आनन्दित और आह्लादित हुआ । यहूदियों को ज्योति और आनन्द और  
१७ आह्लाद और प्रतिष्ठा हुई । और हर एक प्रदेश में और हर एक नगर में जहां कहीं राजा की आज्ञा और ठहराया हुआ पहुंचता था वहां पर यहूदियों को आनन्द और आह्लाद और जेवनार और मंगल दिन होता था और देश के बहुत लोग यहूदी हो गये क्योंकि यहूदियों का डर उन पर पड़ा था ।

कौन जानता है कि ऐसे समय के लिये तू ने राज्य पाया है । तब आमतर ने १५ सरदकी कने फेर कहला भेजा । कि जो सुमन में जितने घट्टी पाये जायें उन्हें १६ एकट्टे कर और मेरे लिये द्रत कर और रात दिन तीन दिन लों न खा न पी मैं और मेरी दामियां भी द्रत रखवंगी और यों में राजा कने जाऊंगी यह व्यवस्था की रीति नहीं है यदि मैं नष्ट होऊं तो होऊं । सो सरदकी ने जाके आमतर की १७ आज्ञा के समान सब कुछ किया ।

पाँचवां पृष्ठ ।

और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि आमतर राजीव पहिराया पहिन राजा के १ भयन के आंगन के भीतर राजमन्दिर के सामने खड़ी हुई और राजा राजमन्दिर में अपने राजीव विद्यासन पर भयन के फाटक के मन्सुर बैठा था । फिर ऐसा २ हुआ कि जब राजा ने आमतर रानी को आंगन में खड़ी देखा तब उस ने उस की दृष्टि में अनुग्रह पाया और राजा ने आमतर के लिये अपने हाथ का सोनीला राजदंड बड़ाया सो आमतर ने बड़के राजदंड के टोंक को कृपा । तब राजा ने ३ उसे कहा कि हे आमतर रानी तू क्या चाहती है और तेरी क्या यिनती है आधे राज्य लों तुझे दिया जायगा । तब आमतर ने उत्तर दिया कि यदि राजा की ४ इच्छा होय तो राजा और दामन आज मेरे सिद्ध किये हुए नेवने में आवें । तब ५ राजा ने कहा कि दामन को शीघ्र बुलाओ कि आमतर के कहे के समान करे सो राजा और दामन आमतर के सिद्ध किये हुए लेवनार में आवें ।

और राजा ने दाग्यरम के पीने के समय में आमतर से कहा कि तेरी यिनती ६ क्या और यह तुझे दिया जायगा और तेरी इच्छा क्या सो आधे राज्य लों किया जायगा । तब आमतर ने उत्तर देके कहा कि मेरी यिनती और याचना यह है । ७ जो राजा की दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है और यदि मेरी यिनती सुने को और ८ मेरी याचना पूरी करने को राजा की इच्छा होय तो राजा और दामन उस लेवनार में आवें जो मैं उन के लिये सिद्ध कइंगी और राजा के कहे के समान में कल कइंगी ॥

सो उस दिन दामन आह्लादित और मगन होके बाहर गया परन्तु जब दामन ९ ने राजा के फाटक पर सरदकी को देखा कि वह खड़ा न हुआ और न उस के लिये टला तब वह सरदकी पर जलजलाहट में भर गया । तथापि दामन ने १० आप को रोक रक्खा और घर में आ अपने मित्रों को और अपनी पत्नी जारिण को बुलाया भेजा । और दामन ने उन में अपने धन की महिमा और अपने बालकों ११ की बहुताई और सब जगह लों राजा ने उसे बड़ाया था और किस रीति से उस ने उसे अध्वर्यों से और राजा के सेवकों से सद्दान किया था सुनाया । और १२ दामन ने यह भी कहा हां आमतर रानी ने राजा के साथ अपने लेवनार में जो उस ने सिद्ध किया था मुझे छोड़ किमी जन को आने नहीं दिया और कल भी राजा के साथ उस के यहां मेरा नेवता है । परन्तु जब लों में राजा के फाटक १३ पर घट्टी सरदकी को देखता हूं यह सब मेरे लिये कुछ नहीं । तब उस की पत्नी १४ जारिण और उस के सारे मित्रों ने उसे कहा कि पचास हाथ ऊंची फांसी की लकड़ी खड़ी किई जाय और कल राजा से कह कि सरदकी उस पर टांगा जाय

२० और मरदकी ने शेरशाह राजा के पास के और दूर के सारे प्रदेशों में सारे  
 २१ यहूदियों के पास इन बातों की पत्रियां लिख भेजीं । कि उन में यह बात ठहर  
 जाय कि वे अदार मास की चौदहवीं और पंद्रहवीं तिथि को बरस बरस माना  
 २२ करें । कि उन दिनों में यहूदियों ने अपने शत्रुन से चैन पाया और वह मास उन  
 के लिये शोक से आनन्द और विलाप से संगल दिन हुआ जिसमें वे उन्हें खाने  
 पीने और आनन्द करने और आपस में घैना भेजने और दरिद्रों को दान देने के  
 २३ दिन करें । और जैसा उन्होंने ने आरंभ किया मरदकी के लिखने के समान यहूदियों  
 २४ ने वैसा ही करने को मान लिया । क्योंकि अगागी हम्मिदासा के बेटे यहूदियों  
 के वैसी हामन ने उन्हें नष्ट करने को युक्ति किई थी और उन्हें चूर और नष्ट करने  
 २५ के लिये पूर अर्थात् चिट्टी डाली थी । परन्तु जब वह राजा के आगे आई तब  
 उस ने पत्रियों के द्वारा से आज्ञा किई कि उस की दुष्ट युक्ति जो उस ने यहूदियों  
 के विरुद्ध युक्ति किई थी उसी के सिर पर पलटे और कि वह और उस के बेटे  
 २६ फांसी दिये जायें । इस लिये पूर के नाम से उन्होंने ने उन दिनों को पूरीम कहा  
 सो इस पत्री के सारे वचन के लिये और जो कुछ उन्होंने ने इस बात के विषय में  
 २७ देखा था और जो उन पास पहुंचा था । उन के लिखने के समान और उन के  
 समय के समान यहूदियों ने अपने ऊपर और अपने वंश पर और उन सभी पर जो  
 उन में मिल गये थे अपने लिये ठाना और ठहराया कि हम बरस बरस इन दो  
 २८ दिनों को मानेंगे जिसमें जाने न पावें । और कि ये दिन हर एक पीढ़ी में और  
 हर एक घराने में और हर एक प्रदेश में और हर एक नगर में स्मरण और पालन  
 किये जायें और कि पूरीम के ये दिन यहूदियों में से जाने न पावें न उन का  
 स्मरण उन के वंश से जाता रहे ॥

२९ तब अविखैल की पुत्री आसतर रानी ने और मरदकी यहूदी ने पूरीम की  
 ३० दूसरी पत्री दृढ़ करने को सारे पराक्रम से लिखा । और शेरशाह के राज्य के  
 एक सौ सत्ताईस प्रदेशों में उस ने पत्रियों को सारे यहूदियों के पास कुशल और  
 ३१ सत्य के वचन से भेजा । कि पूरीम के इन दिनों को ठहराये समय में जैसा  
 मरदकी यहूदी और आसतर रानी ने आज्ञा किई थी और जैसा उन्होंने ने अपने  
 लिये और अपने वंश के लिये व्रत और प्रार्थना करने को दृढ़ किया था स्थापन  
 ३२ करे । और आसतर की आज्ञा ने पूरीम की इन बातों को दृढ़ किया और  
 पुस्तक में लिखा गया ॥

दसवां पृष्ठ ।

१ और शेरशाह राजा ने देश पर और समुद्र के टापुओं पर कर ठहराया । और उस  
 के पराक्रम और सामर्थ्य की सारी क्रिया और मरदकी के माहात्म्य का वर्णन जहां  
 २ लों राजा ने उसे बढ़ाया था क्या वे मादी और फारस के राजाओं के काल की  
 ३ पुस्तकों में नहीं लिखी हैं । क्योंकि यहूदी मरदकी शेरशाह राजा का समीपी और  
 यहूदियों में महान और अपने भाइयों की मंडली में ग्राह्य था और अपने लोगों  
 की बढ़ती का खोजी और अपने सारे वंश से कुशल की बात कहता था ॥

नयां पर्व ।

अब आरंभ मैं मास जो आदार मास है उस की तेरहवीं तिथि मैं जय राजा १  
की आज्ञा और उस का ठहराया हुआ यजमानों को घास या पटुंवा जिस में  
यहूदियों के बैरी उन पर प्रचल होने की आज्ञा रखते थे यद्यपि वह पलटा गया २  
था कि यहूदियों ने अपने बैरियों पर प्रभुता पाई थी । तब जेरशाह राजा के  
सारे प्रदेशों के सारे नगरों में जो उन की बुराई चाहते थे उन पर छाव डालने  
को यहूदी एकट्टे हुए और कोई उन का साम्रा न कर सका था क्योंकि उन का  
भय सारे लोगों पर पड़ा । और प्रदेश के सारे अधिकांश ने और राजाधिकांश ने और ३  
न्यायियों ने और राजा के कार्यकारियों ने यहूदियों का उपकार किया उस कारण  
कि मरदकी का भय उन पर पड़ा । क्योंकि मरदकी राजभवन में मगान हुआ और ४  
उस की कीर्ति सारे प्रदेशों में फैल गई क्योंकि यह मरदकी बढ़ता गया ॥

यों यहूदियों ने अपने सारे बैरियों को तलवार की धार में जुझाया और मार ५  
डाला और नष्ट किया और अपनी इच्छा के समान अपने बैरियों से किया । और ६  
सूमन के भवन में यहूदियों ने पांच सौ मनुष्यों को मारके नष्ट किया । और पर- ७  
शनदामा और दलफून और अमपामा । और पूरता और अदलगाह और अरी- ८  
दाना । और फरमशता और अरिसाई और अरीदीं और यजोजामा । अर्थात् ९  
यहूदियों के बैरी हम्मिदामा के बेटे हामन के दस बेटों को उन्हीं ने घात किया  
परन्तु लूट पर उन्हीं ने छाव न डाला ॥

उस दिन सूमन के भवन में जितने सारे गये उन की गिनती राजा के आगे ११  
पहुंची । फिर राजा ने आमतर रानों से कहा कि यहूदियों ने सूमन के भवन में १२  
पांच सौ मनुष्यों को और हामन के दस बेटों को घात करके नष्ट किया और  
राजा के रहे हुए प्रदेशों में उन्हीं ने क्या किया होगा अब तेरी गिनती क्या मेरे  
तुम्हें दिया जायगा अथवा तू और क्या मांगती है मेरे किया जायगा ॥

तब आमतर ने कहा कि यदि राजा की इच्छा होय तो सूमन के यहूदियों १३  
को आज के ठहराने के समान कल भी दिया जाय और लोग हामन के दस  
बेटों को फांसी की लकड़ी पर टांगें । फिर राजा ने ऐसा ही होने की आज्ञा १४  
दिए और सूमन में अब आज्ञा दिए गई और उन्हीं ने हामन के दस बेटों को फांसी  
दिए । क्योंकि सूमन के यहूदी आदार मास के चौदहवें दिन में भी एकट्टे हुए और १५  
सूमन में तीन सौ जनों को घात किया परन्तु लूट पर उन्हीं ने छाव न डाला ॥

परन्तु राजा के प्रदेशों के यहूदी अपने प्राण के लिये एकट्टे हुए और अपने १६  
बैरियों से चैन पाया और अपने शत्रुन के पछहत्तर सय जनों को घात किया  
परन्तु लूट पर छाव न डाले । आदार मास के तेरहवें और चौदहवें दिन उन्हीं १७  
ने चैन पाया और उसे खाने पीने और आनन्द करने का दिन किया । परन्तु उस १८  
के तेरहवें और चौदहवें दिन सूमन के यहूदी एकट्टे हुए और उस के पंद्रहवें  
विश्राम किया और उसे खाने पीने और आनन्द का दिन किया । इस लिये गांवों १९  
के यहूदियों ने जो अभीत नगरों में रहते थे आदार मास की चौदहवीं तिथि को  
खाने पीने और आनन्द करने और मंगल दिन और आपुस में बैना भोजने का किया ॥



१८ बच निकला । यह कहता ही था कि एक और ही ने आके कहा कि आप के  
१९ बेटे बेटियां अपने जेठे भाई के घर खाते और मदपान कर रहे थे । और  
देखो बन की ओर से एक बड़ी आंधी आके उस घर के चारों कोनों में लगी  
और वह तरुणों पर गिर पड़ा और वे मर गये और आप को संदेश देने को  
केवल मैं ही बच निकला ॥

२० तब ऐयूब ने उठके अपना कपड़ा फाड़ा और सिर मुड़ाया और भूमि पर  
२१ गिरके सेवा किई । और कहा मैं अपनी माता की कोख से नंगा निकला और  
नंगा फेर जाऊंगा परमेश्वर ने दिया और परमेश्वर ने लिया परमेश्वर का नाम  
२२ धन्य हो । इस सब में ऐयूब ने पाप न किया और ईश्वर के बिरुद्ध दुर्वचन  
न कहा ॥

### दूसरा पर्व ।

१ और एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के आगे ईश्वर के पुत्र आ खड़े  
२ हुए और शैतान भी उन के मध्य में परमेश्वर के आगे आ खड़ा हुआ । और  
परमेश्वर ने शैतान से कहा कि तू कहां से आता है तब शैतान ने उत्तर देके  
परमेश्वर से कहा कि पृथिवी पर घूमते और इधर उधर से फिरते चला आता  
३ हूं । तब परमेश्वर ने शैतान से पूछा कि तू ने मेरे दास ऐयूब को जांचा है  
कि उस के समान पृथिवी में कोई नहीं है वह सिद्ध और खरा जन ईश्वर से  
डरता और पाप से अलग रहता है और अब लों अपनी सच्चाई को धर रक्खा है  
४ और तू ने मुझे उसे अकारण नाश करने को उभारा है । तब शैतान ने  
उत्तर देके परमेश्वर से कहा कि चाम के लिये चाम हां जो मनुष्य का है सो  
५ अपने प्राण के लिये देगा । परन्तु अब अपना हाथ बड़ा और उस के हाड़ मांस  
६ को कूँ तब वह निःसन्देह तुझे तेरे सामने त्यागोगा । तब परमेश्वर ने शैतान से  
कहा कि देख वह तेरे हाथ में है केवल उस के प्राण को बचा ॥

७ तब शैतान परमेश्वर के आगे से चला गया और ऐयूब को सिर से तलवे  
८ लों घुरे फोड़ों से मारा । और वह एक ठीकरा लेके अपने को खुजलाने लगा  
और राख पर बैठ गया ॥

९ तब उस की पत्नी ने उसे कहा कि क्या तू अब लों अपने धर्म में स्थिर है  
१० ईश्वर को त्याग कर और मर जा । परन्तु उस ने उसे कहा कि तू मूर्ख स्त्री  
की नाईं बोलती है क्या हम ईश्वर के हाथ से भलाई लेंगे और बुराई न लेंगे  
इस सब में ऐयूब ने अपने हाँठों से पाप न किया ॥

११ सो जब ऐयूब के तीन मित्रों ने अर्थात् तोमानी इलीफाज ने और शुहीती  
विलदाद ने और नामाती जोफार ने उस की सारी बिपत्ति को जो उस पर पड़ी  
थी सुना तो वे अपने अपने स्थान से आये क्योंकि उन्होंने ने आके उस के साथ  
१२ विलाप करने और उसे शान्ति देने को एकट्ठे ठान रक्खा था । और जब दूर  
ही से उन्होंने ने अपनी आंखें उठाके उसे न चीन्हा तब चिल्लाके रोये और हर  
एक ने अपना अपना कपड़ा फाड़ा और स्वर्ग की ओर अपने अपने सिरों पर  
१३ धूल डाली । और सात दिन और सात रात वे उस के साथ भूमि पर बैठे रहे

# ऐयूब की पुस्तक ।

पाँचला पर्व ।

उज देश में ऐयूब नाम एक जन था जो मिह्र और खरा पुरुष था और ईश्वर १  
से डरता और दुराई से अलग रहता था । और उम्मे सात बेटे और तीन बेटियाँ २  
उत्पन्न हुईं । उस की संपत्ति भी सात सय्य भेड़ और तीन सय्य जंत और पाँच ३  
सौ जोड़े बैल और पाँच सौ गदाहियाँ और अनेकन टटनू थे यहाँ लो कि पूरय  
के लोगों में मय से बढ़ा था ॥

और उस के बेटे हर एक अपने अपने दिन में अपने घरों में जेधनार करते थे ४  
और अपने संग खाने पीने के लिये भेजके अपनी तीनों बहिनों को नेडता देते ५  
थे । और उन के जेधनार के दिनों के पीछे यों होता था कि ऐयूब उन्हें धुनवाके  
पवित्र करता था और विद्यान को तड़के उठके उन की गिनती के समान दलि-  
दान की भेंट चढ़ाता था क्योंकि ऐयूब ने कहा कि क्या जाने मेरे बेटों ने अपने  
मन में ईश्वर को त्याग करके पाप किया हो ऐयूब यों नित्य करता रहा ॥

अब एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के आगे ईश्वर के पुत्र आये और ६  
जैतान भी उन के मध्य में आया । तब परमेश्वर ने जैतान से पूछा कि तू कहाँ से ७  
आता है और जैतान ने परमेश्वर को उत्तर में कहा पृथिवी पर घूमते और इधर  
उधर से फिरते आया हूँ । फिर परमेश्वर ने जैतान से कहा क्या तू ने मेरे सेवक ८  
ऐयूब को जाना है कि उस के समान पृथिवी में कोई नहीं बच मिह्र और खरा  
जन है जो ईश्वर से डरता और पाप में अलग रहता है । तब जैतान ने उत्तर ९  
में परमेश्वर से कहा क्या ऐयूब सत से ईश्वर से डरता है । क्या तू ने उस का १०  
और उस के घर की और उस के मय कुछ का चारों ओर से घाड़ा नहीं बाँधा  
तू ने उस के हाथ के कार्यों पर आशीर्वाद दिया है और उस की संपत्ति देश में  
बढ़ गई है । परन्तु अब अपने हाथ चढ़ाके उस का मय कुछ हूँ तो क्या बच ११  
तेरे सामने तुझे न त्यागेगा । तब परमेश्वर ने जैतान से कहा देख उस का मय १२  
कुछ तेरे वग में है केवल उस पर अपना हाथ मत बड़ा तब जैतान परमेश्वर के  
आगे से चल निकला ॥

और एक दिन ऐसा हुआ कि जब उस के बेटे बेटियाँ अपने जेठे भाई के घर १३  
में खाते और मद्यपान करते थे । तब एक दूत ने ऐयूब पास आके कहा बैल १४  
जाते थे और गदाहियाँ उन के लग चरती थीं । तब सबिबूनी भपकके उन्टें ले १५  
गये हाँ सेवकों को तलवार की धार से घात किया पर आप को संदेश देने को  
केवल मैं ही बच निकला । यह कहता ही था और दूसरे ने भी आके कहा कि १६  
ईश्वर की आग स्वर्ग से पड़ी और भेड़ और तरुणों को भस्म किया और आप  
को संदेश देने को केवल मैं ही बच निकला । यह कहता ही था कि एक और १७  
ही आ वाला कि कसदी तीन जथा होके जंतों पर भपकके उन्टें ले गये हाँ तरुणों  
को तलवार की धार से घात किया और आप को संदेश देने को केवल मैं ही

५ किया है । पर अब मुझ पर क्या है और तू मुझमें होता है तुझे कृता है और  
 ६ तू प्रथमता है । क्या ईश्वरीय भाव नहीं आया नहीं और मेरी जान की मर्यादा  
 ७ तीरा भरोसा नहीं । नेत्र कर में मेरी चिनगी करता है कि कौन निर्दोष होके  
 ८ नाश हुआ है पशुधा धर्मी कर्मा कर गये । प्रेमा में न देखा है जो युग  
 ९ ज्ञान और दुष्टता घाम में मारे गये हैं । ईश्वर के भौक में ये नष्ट होगे और  
 १० उस के ननुनों के स्थान से प्रियाज होगी । मित्र का शत्रुता और भगवान् मित्र  
 ११ का शत्रु एक जाता है और युवा मित्र के दाँत टूट जाते हैं । महा यज्ञी मित्र  
 शत्रु प्रिया मरता है और निन्दनी के शत्रु मित्र मित्र होते हैं ।

१२ एक यात्रा युगमें से मुझ पास पहुँचाई गई और मेरे कानों में उस की कुक  
 १३ भजन पाई । गान के मधुरों की निन्ताली में अब मनुष्यों पर भारी नोट पड़ती  
 १४ है । तब उस और शत्रुताइत मुझपा में पड़ी कि मेरी सारी दृष्टियों को कंधाया ।  
 १५ तब एक आत्मा मेरे आगे खना उस ने मेरे शरीर की रीताटे गले कर दिये । वह  
 लुपचाप गहा रहा और मैं उस का शैल न धाँदलान मजा एक रस मेरी आँखों  
 १६ के आगे जा निःशब्दता थी मध में न एक शब्द मना । क्या मनुष्य ईश्वर से  
 १७ अधिक धर्मी ठहरेगा क्या मनुष्य शपथ कर्ता के आगे पावन ठहरेगा । देव्य यह  
 १८ अपने सेवकों पर भरोसा नहीं रखता और अपने पुत्रों को मूर्ख जानता है । तो  
 कितना मोड़ा उन पर जो मिट्टी के घर में रहते हैं जिन की नय धूल में है जो  
 २० कौलु के आगे विम जाते हैं । जो विद्यान से मांक लो चूर हो जाते हैं ये मदा  
 २१ के लिये नष्ट हो जाते हैं और कोई दुःखद्वेषा नहीं । क्या उन की उत्तमता जो  
 उन में है आती नहीं रहती हाँ वे निरुद्धि मरते हैं ।

पाँचवाँ पद्य ।

१ अब पुकार क्या यह तुझे उत्तर देगा और माधुन में मैं तू किस की और  
 २ फिरेगा । क्योंकि कोप मूर्ख को नाश करता है और डाढ़ जनारी को लीज  
 ३ काता है । मैं ने मूर्ख को जड़ पकड़ते देखा परन्तु तत्काल मैं ने उस के घर  
 ४ को धिक्कारा । उस के यानक चैन से परे हैं ये फाटक में कुत्ते हुए हैं और  
 ५ उन का बचानेदार कोई नहीं । उस की खेती भया खा लेता है और उसे कोंटों  
 ६ में से चीथ लेता है और घटमार उन की संपत्ति लीन जाता है । क्योंकि कष्ट  
 ७ धूल से नहीं उपजता और दुःख भूमि से नहीं निकलता । कि मनुष्य दुःख के लिये  
 उत्पन्न हुआ है जैसा कि चिनगारियाँ ऊपर ऊपर उठती हैं ।

८ तौभी मैं सर्वशक्तिमान को खोजूंगा और अपना घट ईश्वर ही को सौंपूंगा ।  
 ९ यह बड़े बड़े कार्य जो खोज से बाहर हैं और अगमित आश्चर्य करता है ।  
 १० जो पृथिवी के ऊपर मंद घरमाता है और लोगानों पर पानी पहुंचाता है ।  
 ११ जिसने दीनों को उभाड़े और विलापी चैन में बड़ाये लाये । वह चतुरों की  
 जुगतों को निरास करता है यहां लो कि उन की टाणों से कुछ उदरस बन नहीं  
 १२ पड़ता । वह बुद्धिमानों की उन्हीं की चतुराई में यभाता है और दहीलों के  
 १३ परामर्श को उलट देता है । वे दिन को अधियारे में जा पड़ते हैं और मध्याह्न  
 १४ में रात की नाई टटोलते फिरते हैं । परन्तु वह कंगाल को तलवार से और उन

और किसी ने उसे एक बात न कही क्योंकि उन्होंने न देखा कि उस का गोक  
बहुत बड़ा है ॥

तीसरा पर्व ।

अन्त में गैयत्र ने अपना मुंह खोला और अपने दिन को धिक्कारा ॥

और गैयत्र ने उत्तर देके कहा । वह दिन नाश हो जिस में मैं उत्पन्न हुआ  
और वह रात जिस में कहा गया कि एक बेटे का गर्भ हुआ । वह दिन अंधि-  
यारा होय ईश्वर ऊपर से उस को योजन न करे और न उल्लियाला उस पर चमके ।  
अंधियारा और मृत्यु की छाया फिर उसे अपने घेरे में लावे मर उस पर बने रहे ५  
दिन की अंधियारा करनेहारी बर्से उसे डगावे । अंधियारा उस रात को पकड़े  
वह बरस के दिनों में आनन्द न करे मासों की गिनती में न आवे । देख कि ६  
वह रात चाँक होवे उस में आनन्दिता शब्द न होवे । दिन के कामनेधाने उन  
को धिक्कारें अर्थान् वे जो लिवीयातन के उठाने को मित्र हैं । उन को गोधूनी ८  
के तारे अंधियारे हों वह ज्योति की बात जोष्टे पर न पावे और विद्यान के  
फलकों को न देखे । क्योंकि उन ने मेरे लिये काम्य के द्वारों को बन्द न किया १०  
और मेरी आँखों में गोक न छिपाया ॥

मैं काम्य में सर ग्यों न गया पेट से निकलते ही मैं ने प्राण क्यों न न्यागा । ११  
क्यों छुटने मुझे मिले और स्नान कि मैं चूमूं । क्योंकि अथ तो मैं चुपका होके १२  
बड़ा रहता और चैन में होता मैं सो रहता और विग्राम करता । राजाओं १३  
और पृथिवी के मंत्रियों के संग जो उजाड़ स्थानों को अपने लिये बना लेते हैं ।  
अथवा उन अध्वर्यों के संग जो सोने की संपत्ति रखते थे और चाँदी से अपने १४  
घरों को भरते थे । अथवा मैं हुआ न होता उस गर्भ की नाई जो द्विपके १५  
गिरा है उन बालकों की नाई जिन्होंने ज्योति को न देखा । बेटों हुए मताने १६  
से रोते जाते हैं और थके हुए चैन से हैं । यंभुग एक साथ चैन करते हैं वे अंधेरी १७  
का शब्द नहीं सुनते । छोटे बड़े वहाँ हैं और दास अपने स्वामी से लूटा है ॥ १८

कष्टित को ज्योति और कहवै प्राण को जीवन क्यों दिया जाता है । जो २०  
मृत्यु के लालमित्र हैं पर नहीं है और छिपे हुए धन से अधिक उस के लिये २१  
खादते हैं । जय समाधि या मुक्ति हैं तो अन्यन्त मगन और आह्लादित होते हैं । २२  
उस मनुष्य को क्यों ज्योति दिष्ट गई जिस का मार्ग गुप्त है और जिसे ईश्वर २३  
ने घेर रक्खा है । क्योंकि भोजन के आगे मेरी ठंठी सांस आती है और मेरा २४  
धिलाप जल की नाई बहता है । क्योंकि जिस दुःख से मैं डरता था सोई मुझे २५  
पर आ पड़ा और जिससे मैं घटता गया उसी ने मुझे आ ही लिया । मुझे कुशल २६  
न था मैं चैन न रखता था और मुझे शांति न थी और दुःख पहुँचा ॥

चौथा पर्व ।

तब तीमानी इलीफाज ने उत्तर देके कहा । यदि कोई तुझ से एक बात १  
परीक्षारोति पूछे तो क्या तू जांकित दागा परन्तु बातें बोलने से कौन अपने को २  
रोक सकता है । देख तू ने बहूतों को मिखाया है और निर्यल दाशों को दृढ़ ३  
किया है । गिरते हुए को तरे यत्न ने उभारा है और तू ने भुके छुटनों को दृढ़ ४

२१ पहुंचके घबरा जाते हैं । क्योंकि अब तुम कुछ नहीं हो तुम दुःख को देखके  
 २२ डरते हो । क्या मैं ने कहा कि मुझे कुछ देखा अथवा अपनी संपत्ति में से मुझे कुछ  
 २३ दान देखा । अथवा घरी के शाय में मुझे बचाओ अथवा बलवंतों के शाय  
 में मुझे लुड़ाओ ।

२४ मुझे निग्राओ और मैं चुप रहूंगा किम बात में मैं ने नृक किई है सो मुझे  
 २५ समझाओ । मत्स्य यवन कैसे दृढ़ हैं परन्तु तुम्हारे दण्ड में क्या विचार । क्या  
 तुम दण्ड के लिये यवन निकाला चाहते हो निरामों की बातें तो यवन के लिये  
 २६ हैं । हां तुम अनाथों पर फंडा डालते हो और अपने मित्र के लिये गड़बड़े खादते  
 २७ हो । सो अब मान जाओ और मुझे देखो और यदि मैं झूठा हूं तो तुम्हारे आगे  
 २८ हूं । मैं विनती करता हूं कि फिर जाओ दुराई न होवे हां फिर जाओ इस  
 २९ बात में मेरा धर्म है । क्या मेरी जीभ पर घुराई है और मेरा तालू दठोली  
 बस्तु नहीं घूमता ॥

सातवां पद्य ।

१ क्या पृथिवी पर मनुष्य के लिये कठिन सेवा नहीं और उस के दिन बनिहार  
 २ के दिनों के समान नहीं । जैसे सेवक हाथा के लिये टांफता है और बनिहार  
 ३ अपनी बनी की लालसा करता है । तैसा मुझे वृथा मासों का अधिकारी बने पड़ा  
 ४ और रातों का कष्ट मेरे लिये ठहराया गया है । जब मैं लेटता हूं तब कहता हूं  
 कि मैं कब उठूंगा और रात कब बीतेगी और पै फटने लों बधर उधर कूटपटाने  
 ५ से थक जाता हूं । कीड़े और धूल की बहुताई से मेरा शरीर ठंका हुआ है मेरा  
 ६ चाम फिर आता और फिर फट जाता है । मेरे दिन जोलाटे की ठरकी से भी  
 ७ अधिक वेगवान हैं और निगम से बीते जाते हैं । स्मरण कर कि मेरा जीवन  
 ८ पयन है और मेरी आंखें भलाई देखने को फिर न आवेंगी । जिस की आंख ने  
 ९ मुझे देखा है मुझे फिर न देखेगी तेरी आंखें मुझ पर हैं और मैं नहीं हूं । जैसा  
 मेघ छूट गया और जाता रहा तैसा जो समाधि में उतरता है सो ऊपर न  
 १० आवेगा । वह अपने घर में फिर न आवेगा और उस का स्थान उसे फिर न  
 ११ जानेगा । मैं भी अपना मुँह न रोक्कूंगा मैं अपने मन के कष्ट में कटूंगा मैं अपने  
 प्राण की कहुआहट में बोलूंगा ॥

१२ क्या मैं समुद्र अथवा महा मच्छ हूं जो तू मुझ पर चौकी बैठाता है ।  
 १३ जब मैं कहता हूं कि मेरा बिलौना मुझे विश्राम देगा मेरी खाट मेरे बिलाप को  
 १४ शांति करेगी । तब तू स्वप्नों से मुझे डराता है और दर्शनों से मुझे भय दिलाता  
 १५ है । यहां लों कि मेरा प्राण फांसी को हां मृत्यु को भी अपनी हड्डियों से अधिक  
 १६ चाहता है । मैं घुला जाता हूं मैं सदा जीने नहीं चाहता मुझे छोड़ दे क्योंकि  
 १७ मेरे दिन वृथा हैं । मनुष्य क्या है जो तू उसे महिमा देवे और जो तू अपना मन  
 १८ उस पर लगावे । और जो तू हर बिहान उस की सुधि लेवे और पल पल उसे  
 १९ परखे । तू कब लों मुझ से आंख न फरेगा और मुझे रहने न देगा जब लों मैं  
 २० अपना शूक लीलूं । मैं ने पाप किया है हे मनुष्य के रक्षक मैं तेरे लिये दया कब  
 तू ने मुझे अपने विरोध का चिन्ह क्यों बना रक्खा है यहां लों कि मैं अपने लिये

के मुंह से और यलवान के हाथ से दबाता है । सो निर्वल की आशा है और १६  
दुराई अपना मुंह मंदती है ॥

देख क्या ही धन्य वह सनुष्य जिसे ईश्वर ताड़ना करता है इस लिये सर्व- १०  
शक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ न जान । क्योंकि बड़ी चाटालता है और बांधता १८  
है घायल करता है और उर्मी के हाथ चंगा करते हैं । वह छः दुःखां से तुम्हें १८  
छुड़ावेगा दां सात में तुम्हें दुगाई न छुयेगी । वह अकाल में तुम्हें मृत्यु से छुड़ा- २०  
वेगा और लड़ाई में तलवार की धार से । जीभ के काँड़े से तू दबा रहेगा २१  
और जब नाश आवेगा तब तू चस्मे न डरेगा । नाग और अकाल से तू हंसगा २२  
और तू अनपशुन से न डरेगा । क्योंकि तू खेत के पत्थरों से बाचा बांधेगा और २३  
यनैले पशुन से तुम्हें मेल होगा । और तू जानेगा कि तेरा तंबू कुशल में है और २४  
तू अपने निवास का ठिकाना करेगा और न चूकेगा । और तू जानेगा कि तेरा २५  
वंश बहुत होगा और तेरे सन्तान पृथिवी की घास की नाईं लोंगे । तू घूरी २६  
आयुर्दाय में समाधि में पहुँचेगा जैसे अन्न का पूना अपने समय में चटता है । देख २७  
हम ने इसे बूझा है और यां ही है हमने सुन और अपने लिये जान ले ॥

छठवां पट्ट ।

तब रेयूय ने उत्तर देके कहा । हाथ कि मेरा शोक मर्दया तौला जाता और १  
मेरी विपत्ति पलड़े में एक माथ उठाई जाती । क्योंकि अब वह समुद्र के बालू ३  
से भी अति भारी है इस लिये मेरी बातें व्यर्थ हैं । क्योंकि सर्वशक्तिमान के हाथ ४  
मुझ में लगे हैं जिन का विष मेरे प्राण का पीता है ईश्वर के भय मेरे सन्मुख  
पांती बांधते हैं । क्या जंगली गदगदा घास पर रेंकता है अथवा वेल अपने पुश्ताल ७  
पर डकरता है । जो वस्तु फीकी है क्या वह बिना लोन खाई जाती है अथवा ६  
क्या अंडे के लोसे में स्याद है । जिन वस्तुन के कूने से मेरा प्राण छिन करता है ८  
वेही मेरे शोक के भोजन हैं ॥

हाथ कि मेरी बिनती पूरी होती और ईश्वर मेरी दृच्छा पूरी करता । जो ५  
मुझे विनाश करने को ईश्वर की दृच्छा होती जो वह अपने हाथ म्यालके मुझे  
विनाश करता । तो मैं थोड़ी बहुत शांति पाता दां कठोर दुःख में आनन्द से १०  
ललकारता क्योंकि मैं ने धर्ममय की बातों को नहीं छिपा रक्खा । मेरा क्या ११  
धल जो आशा रक्खूँ और मेरा अन्त कय होगा कि धैर्यवान होऊँ । क्या मेरा १२  
वल पत्थरों का वल है अथवा मेरा शरीर क्या पीतल का है । क्या मेरे लिये १३  
कुछ सहाय नहीं और क्या कुटकारा मुझे दूर किया गया ॥

कष्टित पर उस के मित्र से दया चाहिये परन्तु वह सर्वसामर्थी के डर को १४  
त्यागता है । मेरे भाइयों ने नाली की नाईं मेरे संग छल में व्यवहार किया है १५  
तराई की नाली की नाईं वे चले जाते हैं । जो हिम के मारे गदली हो रही १६  
हैं और जिन में पाला छिपा है । थोड़े ही समय में वे घट जाते और जाते रहते १७  
हैं और घास में अपने स्थान से मिट जाते हैं । पथिक अपने पथ से फिर जाते १८  
हैं वे शून्यस्थान में जाते हैं और मिट जाते हैं । तीमा के पथिक देखते और शीघ्रा १९  
के यात्री उन के लिये बाट जाहते हैं । आशा रखने के मारे वे लज्जित हैं वे वहां २०





बोझ हूँ । और मेरे अपराध को तू क्यों नहीं जमा करता और मेरी धुराई को मैं क्यों नहीं दूर करता क्योंकि अब मैं धूल पर सोऊँगा और तू विद्वान को मुझे ठुँड़ेगा परन्तु मैं न हूँगा ॥

आठवां पर्व ।

तब गृहीतो विलदाद ने उत्तर देके कहा । तू कब लों ये बातें कहेंगा और तेरे मुँह की बातें बढ़ी आंधी हैं । क्या सर्वशक्तिमान विचार को उलटेंगा अथवा क्या सर्वशक्तिमान सच्चाई को लयावेगा । यदि तेरे बालकों ने उस के विरुद्ध पाप किया है और उस ने उन के अपराधों में उन्हें दूर किया है । यदि तू समय में सर्वशक्तिमान को ठुँड़ेगा और सर्वशक्तिमान के आगे प्रार्थना करेगा । यदि तू पवित्र और श्रद्धा होता तो निश्चय अब तेरे फारस बंद उठेंगा और तेरे धर्म के निवास को भाग्यवान करेगा । यद्यपि तेरा आरंभ छोटा था तथापि तेरा अन्त बहुत बड़ा जायेगा ॥

क्योंकि मैं विनती करता हूँ कि पिछले समय से तुम्हें और सिद्ध होके उन के पितरों में खोजो । क्योंकि कल के होके हम कुछ नहीं जानते क्योंकि हमारे दिन पृथिवी में छाया के तुल्य हैं । क्या वे तुम्हें न सिखायेंगे और तुम्हें न कहेंगे और अपने मन से बातें न उच्चारेंगे । क्या नल चढ़ला बिना दग सकता है और हुगला पानी बिना बढ़ सकता है । वह अब लों अपनी हरियानी ही में है और काँटा नहीं गया तौभी सब सागपानों में आगे मृग्य जाता है । जो रज्ज्वर को बिमगाते हैं उन सभी की चाल ऐसी ही है और अधर्मी को आशा नष्ट हो जायगी । उन की आशा काटी जायगी और मकड़ों का जाला मा उन का भरोसा है । वह अपने घर पर आठेंगेगा परन्तु वह न उठरेगा वह उसे पकड़ेगा परन्तु न चमकेगा । वह सूर्य के आगे दग होता और उस का डालियां उस की घाटिका पर बढ़ती हैं । उस की जड़ें ढेर की चारों ओर लिपटी हैं और वह पथरने स्थान को तकता है । जो वह अपने स्थान में उखड़ जाय तो वह उससे मुकरेगा कि मैं ने तुम्हें नहीं देखा । देख उस की चाल का आनन्द यह है और पृथिवी से हमारे उगेंगे ॥

देख सर्वशक्तिमान सिद्ध को न त्यागेंगा और अधर्मी का पाप न पकड़ेगा । जब लों तेरे मुँह को चंभी से न भरे और तेरे दाँठों को आनन्द के शब्द से । जो तुम्हें से दूर करते हैं वे लाल में पीटराय जायेंगे और दुष्टों का निवास न रहेगा ॥

नवां पर्व ।

तब रघूय ने उत्तर देके कहा । मचमुच मैं जानता हूँ कि योही है और मनुष्य सर्वशक्तिमान के आगे क्योंकर धर्मी उठरेगा । यदि वह उससे विवाद करने चाहे तो वह मध्य में एक का उस को उत्तर न दे सकेगा । वह मन में दुष्टिमान और बल में दूर है कौन उस के विरुद्ध कठोर होके भाग्यवान हुआ है । वह पर्वतों को टालता है और वे नहीं जानते वह अपने क्रोध से उन्हें उलट देता है । वह पृथिवी को उस के स्थान से हिलाता है और उस के शंभे शरशराते हैं । वह सूर्य को आजा करता है और वह उदय नहीं होता और वह तारों पर रूप

११ उसे रोक सकता है । क्योंकि वह सुरे मनुष्यों को जानता है वह दुष्टता भी  
१२ देखता है पर ये न बूझेंगे । और वृथा मनुष्य निर्युद्धि है और मनुष्य जंगली गड़बड़े  
के वस्त्रों के समान जन्मता है ।

१३ जो तू अपने मन को मिट्ट करे और अपने हाथ उस की ओर फैलावे ।  
१४ जो तेरे हाथ में घुसाई हो तो उसे दूर कर और दुष्टता को अपने डेरे में रहने  
१५ मत दे । तब तू अपना मुंह निष्कलंक उठावेगा हां तू दृढ़ होगा और न डरेगा ।  
१६ क्योंकि तू अपने कष्ट को भूल जायेगा और उसे ऐसा जानेगा जैसे पानी जो वह  
१७ जाता है । तेरी व्यय ठीक दोपहर दिन से भी अधिक ज्योतिमान होगी और  
१८ यद्यपि तू अथ अंधेरे में है तथापि शीघ्र विज्ञान के समान हो जायेगा । और तू  
वृत्ता रहेगा क्योंकि आशा है अभी तू भरमता है आगे को चैन में विश्राम  
१९ करेगा । और तू लेट जायेगा और कोई न डरावेगा हां बहुत से तेरी विनती  
२० करेंगे । परन्तु दुष्टों की आंखें धुंधली हो जायेंगी और उन का शरणागमन उन  
से जाता रहा और उन की आशा प्राण के निकलने के श्वास के समान होगी ।

धारहवां पद्य ।

२ तब सेयूच ने उत्तर देके कहा । निःसंदेह तुम्हीं लोग हो और बुद्धि तुम्हारे  
३ साथ मरेगी । परन्तु तुम सरीखा मैं भी ज्ञान रखता हूं कुछ तुम से घाट नहीं  
४ हूं ऐसी बातें कौन नहीं जानता । मैं परोसी से चिढ़ाया जाता हूं जो ईश्वर की  
पुकारता है और वह उसे उत्तर देगा सज्जन और खरा पुरुष ठहरे में उड़ाया  
५ जाता है । जिस के पांव फिसलने के लिये सिद्ध हैं वह उस दीपक के समान है  
जो सुचित्तों की समझ में निन्दित है ।

६ चटमारों के डेरे भाग्यवान होते हैं और सर्वशक्तिमान के खिजखैये निर्भय हैं  
७ उन के हाथ में ईश्वर पहुंचाता है । परन्तु अब तू पशुन से पूछ और वे तुम्हें  
८ सिखावेंगे और आकाश के पक्षियों से और वे तुम्हें बतावेंगे । अथवा पृथिवी  
९ से कह और वह तुम्हें सिखावेगी और समुद्र की मकलियां तुम्हें बतावेंगी । इन  
१० सभों में कौन नहीं जानता कि परमेश्वर के हाथ ने यह सब किया है । जिस  
के हाथ में सब जीवधारियों का प्राण और मनुष्यों के सारे शरीर का श्वास है ।

११ क्या कान बातों को नहीं जांचता और तालू भोजन नहीं चीखता । बूढ़ों  
१२ में बुद्धि है और पुरनियों में समझ । बुद्धि और बल उस के साथ हैं वह मंत्र और  
१३ समझ रखता है । देख वह घर ढा देता है और फिर बनाया न जायेगा वह  
१४ मनुष्य को बन्द करता है और वह खाला न जायेगा । देख वह पानियों को रोक  
लेता है और वे सूख जाते हैं वह फिर उन्हें भेजता है और वे धरती को उलट-  
१५ पुलट कर देते हैं । बल और बुद्धि उस के साथ हैं कल खाया हुआ और कली  
१६ उस के हाथ में है । वह मंत्रियों को बंधुआई में ले जाता है और न्यायियों को  
१७ बौद्धि करता है । वह राजाओं की आज्ञा को भंग कर देता है और रस्सी  
१८ से उन की कटि बांधता है । वह याजकों को बंधुआई में ले जाता है और  
१९ बलियों को उलट देता है । वह बिश्वस्ती के हांठों को बंद कर देता है और  
२० प्राचीनों की समझ को ले लेता है । वह अध्वर्यों पर निन्दा डालता है

पर चमके । क्या तेरी आंखें शारीरिक हैं अथवा तू मनुष्य के समान देखता है । ४  
 क्या तेरे दिन मनुष्य के दिन की नाईं हैं और क्या तेरे धरम मनुष्य के दिन के ५  
 समान हैं । जो तू मेरी घुराई का ठंडता है और मेरे पाप को खोजता है । यद्यपि ६  
 तू जानता कि मैं दुष्ट नहीं हूँ और कोई तेरे हाथ से छुड़ा नहीं सकता ॥

तेरे हाथों ने मुझे बनाया और चारों ओर मेरा डोल किया तथापि तू मुझे ७  
 विनाश करता है । मैं तेरी विनती करता हूँ कि स्मरण कर तू ने मुझे मिट्टी ८  
 के समान बनाया और फिर क्या तू मुझे धूल में मिलायेगा । क्या तू मुझे दूध ९  
 के समान नहीं चढ़ेलेगा और दही की नाईं मुझे नहीं बनायेगा । तू ने मुझे १०  
 खास और सांस से पहिनाया है और तू ने हाड़ और नस से मुझे घिना है । तू ११  
 ने जीवन और कृपा मुझे दिई है और तेरी सुधि ने मेरे प्राण की रक्षा की है ॥  
 और इन बातों को तू ने अपने मन में लिखा रखना है मैं जानता हूँ कि यही १२  
 तेरे मन में था ॥

यदि मैं पाप कहे तो तू मुझे खिन्ट रखता है और मेरी घुराई से तू मुझे न १३  
 छोड़ेगा । यदि मैं दुष्ट हूँ तो मुझ पर मन्ताप और यदि धर्मी तो अपना मिर १४  
 न उठाऊंगा मैं घबराहट से भरा हूँ सो तू मेरे दुःख को देख । यदि वह चले १५  
 तो सिंह की नाईं तू मुझे अहिर करता है और मुझ पर फिर अपने को शास्त्र-  
 र्वित दिखाता है । मेरे विरोध तू अपनी मात्मी दुहराता है और अपनी जल- १६  
 जलाहट मुझ पर चढ़ाता है अदल बदल और मंगान मेरे विरुद्ध हैं ॥

मैं तू ने मुझे कोयल से क्यों यादर निकाला है हाथ कि मैं ने अपना प्राण १७  
 त्यागा होता और कोई आंख मुझे न देखती । तो न होने के समान मैं दुष्टा १८  
 होता और कोयल में से समाधि में पहुँचाया जाता । मेरे दिन क्या छोड़े नहीं १९  
 थम जा और मुझे रहने दे जिसमें तनिक नाति पाऊँ । उम्मे पहिले कि मैं जाऊँ २०  
 और फिर न आऊँ अंधकार और मृत्यु की छाया के देश में । अंधकार के देश २१  
 में मृत्यु की छाया के अंधकार के समान जो बँडाल और जहाँ की ज्योति अंध-  
 कार के तुल्य है ॥

### स्वारह्यां पद्य ।

तब नामाती जोफार ने उत्तर देके कहा । क्या बखन की यहुताई का उत्तर २२  
 दिया न जायगा क्या अति कथक निर्दोषी ठहराया जायगा । क्या तेरी बकबाध २३  
 मनुष्यों को चुप करेगी ऐसा कि तू चिढ़ाये और कोई तुम्हें न लजवाये । और तू २४  
 ने कहा कि मेरा उपदेश शुद्ध है और तेरी दृष्टि में मैं प्रविष्ट हूँ । परन्तु हाथ कि २५  
 ईश्वर बोलता और अपने हाँडों को तेरे विरुद्ध खोलता । और वह तुम्हें गुप्त ज्ञान २६  
 दिखाता क्योंकि उस को बुद्धि जानने से परे है सो जान रख कि ईश्वर तेरी बहुत २७  
 घुराइयों को भुना देता है ॥

क्या खोजके तू ईश्वर को पा सकता है क्या तू मर्त्यसामर्थी की पूर्णता को २८  
 पहुँच सकता है । वह स्वर्ग से भी ऊँचा है तू क्या कर सकता है पाताल से गहिरा २९  
 है तू क्या जान सकता है । उस का नाप पृथिवी से लंबा और समुद्र से चौड़ा ३०  
 है । यदि वह चढ़ आवे और पकड़ ले और न्याय के लिये एकट्ठा करे तो कौन ३१

३ यातों से मुझे टुकड़े टुकड़े करोगे । तुम लोग अभी दस बार मेरी निन्दा कर  
 ४ चुके और लजाते नहीं कि मुझे धक्काधक्का करते हो । और मानो कि मैं ने चूक  
 ५ किई हो तो मेरी चूक मेरे ही पास है । यदि निश्चय तुम मेरे विरुद्ध आप को  
 ६ बड़ाओगे और मेरी निन्दा मेरे विरुद्ध करोगे । तो जान रखो कि ईश्वर ने  
 ७ मुझे दवा दिया है और अपने जाल से मुझे घेरा है । देखो मैं घरबस्ती से  
 चिल्लाता हूँ परन्तु सुना नहीं जाता मैं शब्द उठाता हूँ पर कोई नहीं विचारता ।  
 ८ उस ने मेरे मार्ग को घेरा है कि मैं बाहर नहीं जा सकूँ और उस ने मेरे पथों  
 ९ को अधियारा किया है । मेरे विभव को उस ने उतार दिया है और मेरे सिर से  
 १० सुझुट ले लिया । चारों ओर से उस ने मुझे नाश किया है और मैं जाता रहा  
 ११ और घेड़ के समान उस ने मेरे भरोसे को उखाड़ा है । और उस ने अपना कोप  
 १२ मुझ पर भड़काया है और अपने वैरियों में मुझे गिनता है । उस की जघों ने  
 एकट्टी आके मेरे विरुद्ध अपने मार्ग सिद्ध किये हैं और मेरे डरे की चारों ओर  
 १३ छावनी करती हैं । उस ने मेरे भाईबन्धों को मुझ से दूर किया है और मेरे जान  
 १४ पहिचान निश्चय मुझ से अलग हुए हैं । मेरे कुटुम्ब घट गये हैं और मेरे समीपी  
 १५ मित्र मुझे भूल गये हैं । मेरे घर के दास और मेरी दासियां मुझे उपरी गिनती हैं  
 १६ उन की दृष्टि से मैं उपरी हूँ । मैं ने अपने दास को बुलाया और उस ने उत्तर न  
 १७ दिया मैं ने अपने मुंह से उस की विनती किई । मेरा प्राण मेरी पत्नी के आगे  
 १८ घिनौना हो गया और मेरी विनितियां मेरे भाइयों के आगे । हाँ बालकों ने भी  
 १९ मेरी निन्दा किई मैं उठा और उन्हीं ने मेरे विरुद्ध कहा । मेरे सारे परमद्विहो ने  
 २० मुझ से घिन किया और जिन्हें मैं प्यार करता था मेरे विरुद्ध फिर गये । मेरी  
 हड्डी मेरे चाम और मेरे मांस से लगी है और मैं अपने दांतों के चाम से बच  
 २१ निकला हूँ । हे मेरे मित्रो मुझ पर दया करो मुझ पर दया करो क्योंकि ईश्वर  
 २२ का हाथ मुझ पर पड़ा है । सर्वशक्तिमान के समान क्यों तुम मुझे सताते हो और  
 मेरे मांस से क्यों नहीं संतुष्ट होते हो ॥

२३ हाथ कि मेरे वचन अब लिखे जाते हाथ कि वे पुस्तक में कापे जाते ।  
 २४ कि वे लोहे की लेखनी और रांगे से सदा के लिये चटान पर खोदे जाते ।  
 २५ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरा मुक्तिदायक जीता है और अंत में यह पृथिवी पर  
 २६ खड़ा होगा । यदि मेरे चाम के पीछे यह नाश हो जाय तथापि मैं अपने शरीर  
 २७ से ईश्वर को देखूंगा । जिसे मैं अपने लिये देखूंगा और मेरी आंखें देखेंगी और  
 उपरी नहीं ये मेरे लंक मुझ में नाश हो गये ॥

२८ क्योंकि तुम तो कहते हो कि हम क्योंकर उसे सतावें और बात का तत्त्व उस  
 २९ में पायें । अपने लिये तलवार से डरो क्योंकि कोप तलवार से दण्ड पाता है  
 जिसमें तुम जानो कि न्याय है ॥

बीसवां पृष्ठ ।

३ तब नामाती जोफार ने उत्तर देके कहा । कि इस लिये मेरी विनितियां मुझ  
 ४ से उत्तर दिलाती हैं और इस लिये कि शीघ्रता मुझ में है । मैं ने अपनी निन्दा  
 का रोक सुना है और मेरी समझ का आत्मा मुझ से उत्तर दिलाता है ॥

और बलवर्ती का पटुका खानता है । अधियारे में से वह गहरी बातें प्राप्त २२ करता है और मृत्यु की काया को उजियाले में लाता है । वह जातिगणों को २३ बढ़ाता है और उन्हें नाश करता है वह जातिगणों को पैलाता है और उन्हें फेर लाता है । वह पृथिवी के जातिगणों के ग्रेट लोगों का मन ले लेता है और २४ बिना मार्ग जंगल में उन्हें भ्रमाता है । वे यिन उजियाले अधियारे में टटोलते हैं २५ और वह उन्हें सतयाने के समान भ्रमाता है ।

तैरुय्यां पृष्ठ ।

देख मेरी आंखों ने यह सब देखा है और मेरे कानों ने सुना और उसे बूझा १ है । जो कुछ तुम जानने हो सो मैं भी जानता हूँ मैं तुम से घाट नहीं हूँ । २

हाय कि मैं सर्वशामर्था से बोल सकता और ईश्वर से बिबाद किया चाहता ३ हूँ । परन्तु तुम झूठ के बनानेवाले और झूठमूठ के वैद्य हो । हाय कि तुम सर्वथा ४ चुप हो रहते तो बड़ी तुम्हारी बुद्धि होती ।

अब मेरा बिचार मुनो और मेरे हाँठों के प्रत्युत्तर पर कान धरो । क्या तुम ५ ईश्वर के लिये सिखा कहोगे और क्या उस के लिये कल से बोलोगे । क्या तुम ६ उस का पक्ष करोगे क्या ईश्वर के लिये आवाहोगे । क्या यह भना है कि वह ७ तुम्हें जांचे अथवा जैसा कि एक मनुष्य हमारे को धोखा देता है तुम उसे धोखा दोगे । यदि तुम गुप्त में पक्ष करो तो निश्चय वह तुम्हें दपड़ेगा । क्या उस की ८ महिमा तुम्हें न डरावेगी और उस का भय तुम पर न पड़ेगा । तुम्हारे स्मरण ९ की बातें राख के समान हैं और तुम्हारे गढ़ सिट्टी के गढ़ हैं ।

चुप हो रहो मुझे अकेला छोड़ो कि मैं बोलूँ और मुझ पर जो हो सो हो । १३ किम लिये मैं अपने मांस को अपने दाँतों से काटूँ और अपना प्राण अपने हाथ १४ में लेऊँ । देख वह मुझे घान करे तोभी मैं उस पर भरोसा रखूँगा परन्तु उस १५ के आगे मैं अपनी चाल को स्थिर करूँगा । मेरी मुक्ति भी बड़ी है क्योंकि कपटी १६ उस के आगे न पहुँचेगा । मेरा बचन ध्यान से सुनो और मेरे वर्णन पर कान १७ धरो । अब देखा मैं ने अपना पद निह्न किया है मैं जानता हूँ कि मैं निर्दोष १८ रहूँगा । कौन है जो मुझ से बिबाद कर सकेगा क्योंकि मैं अब चुप रहूँगा और १९ सर ही जाऊँगा ।

केवल दो बातें तू मुझ से मत कर तब मैं आप को मुझ से न लिपाऊँगा । २० अपना हाथ मुझ से परे खींच ले और अपने भय से मुझे मत डरा । तब प्रकार २१ और मैं उत्तर देऊँगा अथवा मैं कहूँगा और तू उत्तर दे । मेरी जुगई और पाप २२ कितने हैं मेरा अपराध और पाप मुझ वता । किम लिये तू अपना मुँह लिपावेगा २३ और मुझे अपना वैरी समझेगा । क्या तू उड़ाये हुए पत्ते को तोड़ेगा और तू २४ सूखी सूखी को खेदेगा । क्योंकि तू मेरे विरुद्ध कड़ुई कड़ुई बातें लिखता है २५ और मुझे तरुणाई की जुगाई का पलटा देता है । और मेरे पाँव को तू काठ में २६ डालता है और मेरी सारी चालों को ताकता रहता है और मेरे पाँव के तलवे पर तू चिन्त रखता है । और वह सड़ी हुई वस्तु के समान कीड़े खाये वस्तु २७ की नाईं नष्ट हो जायेगा ।



६ और यदि मैं स्मरण करता हूँ तो डरता हूँ और धर्षराष्ट मेरे शरीर को  
 ७ पकड़ती है । किस लिये दुष्ट जीते हैं और पुनर्निर्माण होते हैं हाँ बल में सामर्थ्य  
 ८ हो जाते हैं । उन के सन्तान उन की दृष्टि के आगे उन के साथ और उन के  
 ९ सन्तान उन की आंखों के आगे स्थिर हैं । भय से उन के घर निर्भय और कुशल  
 १० में हैं और ईश्वर का दण्ड उन पर नहीं है । उन के सांड छटते हैं और नहीं  
 ११ छटते उन की गाय विपाती है और गाम नहीं गिराती । वे भुंड की नाई अपने  
 १२ बालकों को बाहर ले जाते हैं और उन के बालक नाचते हैं । वे तबला और  
 १३ बीणा बजाते हैं और बांसुरी के शब्द से आनन्दित होते हैं । वे सुख विलास  
 १४ से अपने दिन काटते हैं और पलमात्र में पाताल में पड़ते हैं । इस लिये वे सर्व-  
 शक्तिमान से कहते हैं कि हम से दूर हो क्योंकि हम तेरे मार्गों का ज्ञान नहीं  
 १५ चाहते हैं । सर्वशक्तिमान क्या कि हम उस की सेवा करें और जो हम उस की  
 प्रार्थना करें तो हमें क्या लाभ होगा ॥

१६ देखो उन की भलाई उन के हाथ में नहीं है दुष्टों का परामर्श मुझ से दूर है ।  
 १७ दुष्टों का दीपक बहुधा बुत जाता है और उन का नाश उन पर आता है ईश्वर  
 १८ अपने कोप से दुःख बांटता है । वे उस पुञ्जाल के समान हैं जो पवन के आगे  
 १९ हो और भूसे की नाई जिसे आंधी उड़ा ले जाती है । ईश्वर उस की घुराई  
 उस के सन्तानों के लिये रख छोड़ता है वह उसे पलटा दे जिम्मे उसे उस का  
 २० निश्चय हो । उस की आंखें उस का नाश देखें और वह सर्वशक्तिमान के कोप  
 २१ को पीये । क्योंकि उस के पीछे उस को अपने घर से क्या आनन्द होगा जब कि  
 उस के मांस की गिनती कट जाय ॥

२२ क्या कोई ईश्वर को ज्ञान सिखावेगा जो मर्त्यों का न्याय करता है । एक  
 २३ अपने बल की भरपूरी में स्वस्था चैन और सुख में मरता है । उस की कांखें  
 २४ चिकनाई से भरपूर हैं और गूदा से उस की हड्डियां चिकनी हैं । दूसरा अपने  
 २५ प्राण की कड़ुआहट में मरता है और सुख से कधी नहीं खाता । वे एक ही  
 समान धूल में पड़े रहेंगे और कीड़े उन्हें ढांपेंगे ॥

२७ देखो मैं तुम्हारी चिन्तों को जानता हूँ और उन जुगतों को जिन से तुम मुझ  
 २८ पर अंधेर करते हो । क्योंकि तुम कहते हो अध्यक्ष का घर कहां है और दुष्टों के  
 २९ तंत्र के निवास कहां हैं । तुम ने क्या पशियों से नहीं पूछा है और क्या उन  
 ३० के पते नहीं जानते हो । कि नाश के दिन के लिये दुष्ट धरा है वे कोपों के  
 ३१ दिन में ले लिये जायेंगे । उस के मुंह पर कौन उस की चाल को वर्णन करेगा  
 ३२ और उस के किये हुए का पलटा कौन उसे देगा । वही समाधों में पहुंचाया  
 ३३ जायगा और ढेर में अगोरेगा । तराई के ठेले उस के लिये मीठे होंगे और वह  
 ३४ हर एक जन को अपने पीछे खींचेगा जैसा अग्नित के आगे थे । सो तुम लोग  
 क्यों मुझे वृथा शांति देते हो और तुम्हारे उत्तरों में अपराध धरा है ॥

बाईसवां पृष्ठ ।

३ तब तीमानी इलीफाज ने उत्तर देके कहा । क्या मनुष्य से सर्वशक्तिमान को  
 लाभ पहुंच सकता है जिस रीति से कि बुद्धिमान अपनी बुद्धि से लाभ प्राप्त करता

क्या तू आगे से यह नहीं जानता है जय से पृथिवी पर मनुष्य रक्षता गया । ४  
 कि दुष्टों का जय जय करना छोड़े तों है और कपटी का आनन्द पलमाय । ५  
 यद्यपि उस की कंचाई स्वर्ग लों पहुंचे और उस का मिर सेध से जा लगे । ६  
 तथापि वह अपने विष्टा की नाई सदा लों नाश हो जायगा जिन्हें ने उसे देखा ७  
 है सो कहेंगे कि वह कहां है । वह स्वप्न के समान उड़ जायगा और पाया न ८  
 जायगा हाँ रात के दर्शन के समान वह खेदा जायगा । जिस आँख ने उस पर ९  
 दृष्टि किई थी वह फिर उसे न देखेगी और उस का स्थान उसे फिर न देखेगा ।

उस के सन्तान कंगालों की प्रसन्नता टूटेंगे और उन के हाथ उस की संपत्ति फेर देंगे । १०  
 उस की हठियां उस की तन्हाई से भरी हैं पर वह भूल में उस के माथ सेट जायेंगी ॥ ११

यद्यपि दुष्टता उस के मुँह में सीठी लगे और वह उसे अपनी जीभ के गले १२  
 छिपावे । यद्यपि वह उसे बचावे और न छोड़े परन्तु अपने नाल के मध्य में १३  
 रखे । तथापि उस का भोजन उस के ओढ़ में पलटके नाश के विष के समान १४  
 हुआ है । वह धन को लील गया है परन्तु वह उसे फिर उगलेगा सर्वशक्तिमान १५  
 उस के ओढ़ से उसे निकालेगा ॥

वह नाश का विष चूनेगा और काले साँप की जीभ उसे नाश करेगी । वह १६  
 नदियों और सधु और दूध की बहती नालियों और धाराओं को न देखेगा ।  
 जिन वस्तुन के लिये उस ने परिश्रम किया है वह उन्हें फेर देगा और उन्हें न १८  
 लीलेगा उस की संपत्ति के समान पलटा होगा और वह आनन्दित न होगा ।  
 क्योंकि उस ने कंगालों को सताया और उन्हें त्यागा और जिस घर को उस ने १९  
 नहीं बनाया उसे दरदस्ती से ले लिया । क्योंकि उस ने अपने ओढ़ में धन न २०  
 पाया और जिस की उस ने इच्छा किई उस में से वह कुछ रख न छोड़ेगा । उस २१  
 के भोजन से कुछ न रहा इस लिये उस की संपत्ति न ठहरेगी । अपनी भरपूरी २२  
 की संतुष्टता में वह सकेंती में पड़ेगा दुष्ट का घर एक हाथ उस पर पड़ेगा ॥

अपना पेट भरते भरते ईश्वर अपने कोप का मौका उस पर डालेगा और २३  
 भोजन के समय उस पर बरसावेगा । वह लोटे के दण्डियार से भागेगा परन्तु २४  
 खेड़ी का धनुष उसे बंधेगा । वह ग्योँचा गया है और देह में से निकलता है हाँ २५  
 जगमगाता खड्ग उस के पित्ते से निकलता है भय उस पर पड़े हैं । उस के २६  
 भण्डारों में हर प्रकार की विपत्ति है दिन बरी आग उसे नाश करेगी उस के  
 तंत्र में जो छूटा है उस के लिये दुर्गाई छाँसी । स्वर्ग उस की दुर्गाई प्रगट करेगा २७  
 और पृथिवी उस के विरुद्ध उठेगी । उस के घर की बहती जाती रहेगी उस के २८  
 कोप के दिन में बहि जायगी । ईश्वर की ओर से दुष्टों का भाग यही है और २९  
 अधिकार जो सर्वशक्तिमान की ओर से उस के लिये ठहराया गया यही है ॥

एकूसत्रां पद्य ।

परन्तु श्रेष्ठ ने उत्तर देके कहा । मेरी कथा ध्यान से सुनो और यही तुम्हारी १  
 शक्ति काय । मुझे कहने देओ और मेरे कहने के पीछे चिढ़ाओ । मैं जो हूँ क्या २  
 मेरी दोहाई मनुष्य से है और यदि होता तो मेरा प्राण क्यों न घटता । मुझे ३  
 देखो और अचंभित होओ और हाथ मुँह पर धरो ॥ ४

८ करता और यों में सदा अपने न्यायी से बचता । देख मैं आगे जाता हूँ परन्तु वह  
९ नहीं और पीछे परन्तु उसे देख नहीं सकता । दाईं और जहाँ वह कार्य करता  
है परन्तु मैं उसे देख नहीं सकता वह आप को दहिनी और ऐसा छिपाता है  
१० कि मुझे सूझ नहीं पड़ता । क्योंकि यह मेरे मार्ग को जानता है जब वह  
११ मुझे परखे तब मैं सोने की नाई निकलूंगा । मेरे पांय ने उस के डग को धरा  
१२ है मैं ने उस के पथ को धारण किया है और न मुड़ा । मैं उस के होठों की  
आज्ञा से न छटा मैं ने उस के मुंह के बचन को आवश्यक भोजन से अधिक  
धर रक्खा है ॥

१३ परन्तु वह एक समान है और उसे कौन फेर सकता है और जो उस का जी  
१४ चाहता है सो वह करता है । क्योंकि जो मेरे लिये ठहराया गया वह उसे पूरा  
१५ करता है और ऐसी बहुत सी बातें उस के पास हैं । इस लिये मैं उस के साक्षात्  
१६ से ब्याकुल हूँ और मैं जब सोचता हूँ तो उससे डरता हूँ । और सर्वशक्तिमान  
१७ मेरे मन को कोमल करता है और सर्वसामर्थी मुझे ब्याकुल करता है । इस  
कारण कि मैं अधियारे के आने से आगे नहीं काटा गया और उस ने मेरे मुंह  
से अधियारे को नहीं छिपाया ॥

#### चौबीसवां पर्व ।

१ दण्ड के समय सर्वशक्तिमान की और से क्यों छिपे नहीं हैं और जो उसे  
२ जानते हैं सो उस के दिनों को क्यों नहीं देखते हैं । वे मेंडों को सरकाते हैं वे  
३ बरधस्ती से भुंडों को ले जाते और चराते हैं । वे अनाथों के गदहे को हांक  
४ लेते हैं वे बंधक में रांड का बैल लेते हैं । वे दरिद्रों को मार्ग से फेरते हैं और  
५ पृथिवी के कंगाल सब को सब अपने को छिपाते हैं । देख जैसे अरण्य में  
जंगली गदहे वे अपने अपने कार्य को निकलते हैं अहेर के लिये तड़के उठते  
६ हैं वन उन के और उन के सन्तानों के लिये आहार देता है । वे खेत में अपना  
७ अपना अन्न लवते हैं और दुष्ट के दाख घटोरते हैं । वे रात को बिन बस्त्र नग्न  
८ टिकते हैं और जाड़े में उन के आदना नहीं । वे पर्वत की झड़ी से भीगते हैं  
और आड़ के लिये पत्थर में लिपटते हैं ॥

९ वे अनाथों को छाती से छीनते हैं और कंगालों के बस्त्र बंधक रखते हैं ।  
१० वे बिन बस्त्र नग्न फिरते हैं और भूखे होके पूला उठा लाते हैं । वे अपने आंगनों  
में तेल घेरते हैं और अपने दाख के कोल्हू लताड़ते हैं और प्यासे रहते  
१२ हैं । नगर में से मरते हुए कहरते हैं और घायलों का प्राण दोहाई देता है और  
ईश्वर उन की प्रार्थना पर दृष्टि नहीं करता ॥

१३ कितने उन में हैं जो उंजियाले से बर रखते हैं उस के पथ को नहीं पहिचानते  
१४ और न उस के पथों पर ठहरते हैं । घातक भार को उठता है और कंगाल  
१५ और निर्धन को घात करता है और रात को चोर की नाई है । और क्लिने  
की आंखें गोधूली की बाट जोहती हैं वह कहता है कि किसी की आंख  
१६ मुझ पर न पड़ेगी और अपना रूप छिपाता है । अधियारे में वे घरों में संघ  
१७ मारते हैं और दिन को अपने तहें छिपाते हैं वे उंजियाला नहीं जानते । क्योंकि

है । क्या तेरे धर्मी होने से सर्वशक्तिमान को आनन्द है अथवा तेरे मार्ग मिट्ट ३  
करने में उसे लाभ है । क्या वह तेरे घर के मारे तुझे दपटेगा और क्या वह तेरे ४  
संग विचार में जायगा । क्या नेमी दुष्टता वहीं नहीं और तेरी दुर्गति अत्यन्त ५  
नहीं । क्योंकि तू अकारण अपने भाई से धरोहर मांग लेता है और नंग के वस्त्र ६  
को उतार लेता है । तू शक को जल नहीं पिनाता और न भूख को भोजन देता ७  
है । और जिस को बल है उस की भूमि है और महान उस में दमता है । तू ने ८  
रांडों को कूड़े हाथ फेर दिया है और अनाथों की भुजा तोड़ी गई । इस लिये १०  
तेरी चारों ओर जाल हैं और अज्ञानक भय तुझे मताता है । अथवा अधियारा ११  
जिस के कारण से तू देख नहीं सकता अथवा पानी की बाढ़ तुझे छिपा लेगी ।

क्या ईश्वर स्वर्ग की जंघाई पर नहीं और तारों के भिरों को देख कि वे १२  
कैसे जंचे हैं । और तू कहता है कि सर्वशक्तिमान क्या जानता है क्या वह काली १३  
घटा में से न्याय करेगा । गाढ़े मेघ उस के लिये ढपना हैं कि वह न देखेगा १४  
वह स्वर्ग के मंडल पर चलता है । क्या तू उस पुराने मार्ग को धाँस रक्खेगा १५  
जिस में दुष्ट जन चले हैं । जो अमस्य में फट गये बाढ़ उन की नेत्र पर बहाई १६  
गई । जो सर्वशक्तिमान से कहते थे कि हमारे पास से हट जा और सर्वमासर्घ्य १७  
हमारा क्या कर सकता है । तथापि उस ने अच्छी दम्नु में उन के घर को भर १८  
दिया और दुष्टों का परामर्श सुझ से दूर हो । धर्मी उन का अंत देखते और १९  
आनन्दित होते हैं और निर्दोष मनुष्य उन पर हंसते हैं । निश्चय हमारा धैरी २०  
काटा गया और उन के वचन हूँ को आग ने भस्म किया है ।

अब उससे परिचित हो तो तेरा कुशल होगा उससे तेरा भला होगा । उस के २१  
मुँह से व्यवस्था ने और उस के वचन अपने मन में धर रख । जो तू सर्वशक्ति- २२  
मान की ओर फिरेगा तो वन जायगा तू अपने दुःखों में घुसाई दूर करेगा । और २३  
भूमि पर सोना फँक दे और ओफीर का सोना नालों के पत्थरों में । तब सर्व- २४  
शक्तिमान तेरा सोना होगा और तेरे लिये चाँदी के भण्डार । क्योंकि तब तू २५  
सर्वशक्तिमान में आनन्द पावेगा और ईश्वर के आगे अपना मुँह उठावेगा । तू २६  
उस की प्रार्थना करेगा और वह तेरी सुनेगा और तू अपनी मनोतियों को पूरा २७  
करेगा । जो बात कि तू ठहरावेगा वह तेरे लिये वन पहुँगी और तेरे मार्गों २८  
पर संजियाला होगा । जब लोग गिरा दिये जायेंगे तब तू कहेगा कि महानता २९  
है और वह दीन जन को वचा लेगा । वह उसे जो निर्दोषी नहीं है वचावेगा ३०  
और वह तेरे छाथों की पवित्रता से वच जायगा ॥

तेईसवां पर्व ।

तब श्रेष्ठ ने उत्तर देके कहा । आज भी मेरा प्रिलाप कहूँगा है मेरी पीड़ा १  
मेरे कुटुंब से अधिक भारी है । हाथ कि मैं जानता कि मैं उसे कहां पाऊँ जिसमें २  
मैं उस के आसन लों जाता । मैं उस के आगे अपना विचार धरता और प्रमाणों ३  
से अपना मुँह भरता । जो कुछ वह मुझे उत्तर देता मैं उसे जान लेता और जो ४  
कुछ मुझ से कहता उसे समझ लेता । क्या वह अपने वह पराक्रम से मेरे साथ ५  
विवाद करेगा नहीं परन्तु वह मुझ पर दृष्टि करेगा । वहाँ धर्मी उससे विवाद ६

## सत्ताईसवां पर्व ।

१ तब श्रेष्ठ ने अपना दृष्टान्त बढ़ाया और कहा । कि जीवते सर्वशक्तिमान  
 २ की मोह जिस ने मेरा विचार ले लिया और सर्वसामर्थी कि जिस ने मेरे प्राण  
 ३ को जोकित किया । अब लो मेरा श्वास मुझ में है और परमेश्वर का आत्मा  
 ४ मेरे नष्टुनों में । तब लो मेरे टाँठ दुष्टता न कहेंगे और मेरी जीभ ऊँच न उठारेगी ।  
 ५ ईश्वर न करे कि मैं तुम्हें निर्दोष ठहराऊँ मैं मरने लो अपनी मराई को न  
 ६ छोड़ूँगा । मैं अपना धर्म दृढ़ता से धरता हूँ और उसे जाने न देऊँगा मेरा प्राण  
 ७ मेरे बीते हुए दिनों के विषय मुझे दोगी नहीं ठहराता है । मेरा बैरी दुष्ट की  
 नाईं दोग और जो मेरे विरोध में उठता है सो अधर्मी के समान ।

८ क्योंकि कपटी की क्या आशा है जब ईश्वर उसे काट डाले और उस का  
 ९ प्राण ले ले । क्या सर्वशक्तिमान उस का रोना सुनेगा जब उस पर दुःख पड़ेगा ।  
 १० क्या वह सर्वसामर्थी से आनन्दित होगा और क्या वह सदा ईश्वर की प्रार्थना  
 करेगा ।

११ सर्वशक्तिमान की सामर्थ्य में तुम्हें सिखाऊँगा जो सर्वसामर्थी के पास है मैं न  
 १२ क्षिपाऊँगा । लो तुम सबों ने यह देखा है तो क्यों यह सर्वथा व्यर्थ बातें बोलते  
 १३ हो । सर्वशक्तिमान से दुष्ट मनुष्य का यह भाग है और अंधेरियों का अधिकार जो  
 १४ वे सर्वसामर्थी से पावेंगे । यदि उस के सन्तान बढ़ जायें तो तलवार के लिये हैं  
 १५ और उस के लड़के बाने रोटी से तृप्त न होंगे । उन के वचे हुए लोग मृत्यु से  
 १६ गाड़े जायेंगे और उन की राईं विलाप न करेंगी । यद्यपि वह चांदी को धूल  
 १७ की नाईं ढेर करे और मिट्टी की नाईं बस्त सिद्ध करे । वह सिद्ध करे परन्तु  
 १८ धर्मी उसे पहिनेगा और निर्दोषी चांदी चाँट लेगा । वह कीट के समान अपना  
 १९ घर बनाता है और उस कुरिया की नाईं जो रगवाल ने बनाई । धनवान लेट  
 जाता है पर गाड़ा नहीं जाता अपनी आंखें खोलता है और वह है ही नहीं ।  
 २० भय जल के समान उसे पकड़ते हैं और रात को आंधी उसे चुरा ले जाती है ।  
 २१ पुरवा पवन उसे उड़ा ले जाती है और वह चला जाता है वह आंधी की नाईं  
 २२ उसे उस के स्थान से उड़ाती है । क्योंकि ईश्वर उस पर अपने तीर चलायेगा और  
 २३ दया न करेगा वह उस के हाथ से भागा चाहता है । लोग उस पर तालियाँ बजा-  
 देंगे और उस के स्थान में से उसे सीसकारेंगे ।

## अट्ठाईसवां पर्व ।

१ निश्चय चांदी के लिये खान और सोने के लिये स्थान है जहां निर्मल करते  
 २ हैं । लोहा भूमि से निकाला जाता है और पत्थर ताँबा बनाने के लिये गलाया  
 ३ जाता है । मनुष्य अधियारे का अंत ठहराता है और अधियारे और मृत्यु के  
 ४ छाया के पत्थर के लिये सारी नीचाइयों को खोज करता है । जहां मनुष्य रहते  
 हैं वहां से वह सोता खोल देता है पाँव से बिना सहारा वे डोलते हैं और मनुष्यों  
 ५ से अलग झूलते हैं । पृथिवी जिसे भोजन की उत्पत्ति है अपने नीचे से मानो  
 ६ आग की नाईं उलटाई जाती है । उस के पत्थर नीलमणि के स्थान हैं और उस  
 ७ में सोने की धूल है । उस के मार्ग को कोई पंखी नहीं जानता और गिद्ध की

विद्यान उन के लिये मृत्यु की छाया है क्योंकि ये मृत्यु की छाया के भय को  
पदिचानते हैं । ये पानियों के ऊपर शीघ्र चलते हैं पृथिवी पर उन का भाग १८  
स्थापित है वे दागों की दारी की ओर नहीं फिगते ॥

जैसे भुगदट और घाम पाला जन को भक्षण करते हैं वैसे ही पाताल १९  
प्रापियों को । कोय्र उसे भूल जायगी कीड़े आनन्द से उसे स्वार्थों वट फेर स्मरण २०  
न किया जायगा और दुष्टता प्रेड़ की नाईं तोड़ी जायगी ॥

वह वांछ को जो नहीं जनता है सताता है और रांड की भनाई नहीं २१  
करता । वह बलवानों को भी अपने पराक्रम से खींचता है वह उठता है और २२  
किसी को जीवन की आशा नहीं रहती । ईश्वर उन्हें चैन के लिये देता है २३  
और वे भरोसा करते हैं और उस की आश्वं उन के मार्गों पर लगते हैं । वे ठाये २४  
जाते हैं और घोड़ी वेर में हैं ही नहीं वे उतारे जाते हैं और समों की नाईं  
खटेरे जाते हैं और अन्न की पकड़ी घानों के समान काटे जाते हैं । और यदि २५  
अथ न हो तो कौन सुके भुटावगा और मेरा वचन व्यर्थ करेगा ॥

पच्चीसवां पद्य ।

तब शुद्धीती बिलदाद ने उत्तर देके कहा । कि प्रभुगा और डर उस के साथ १  
हैं वह अपने जंवे स्थानों में कुशल रखता है । क्या उस की मेनाओं की कुल २  
गिनती है और उस की ज्योति किस पर नहीं चमकती । फेर मनुष्य क्योंकर ३  
सर्वशक्तिमान के आगे निर्दोष ठहर सक्ता है अथवा जो स्त्री से उत्पन्न शुभा से  
क्योंकर पवित्र हो सक्ता है । देख चंद्रमा भी उस के आगे नहीं चमकता और ४  
हां तारे उस की दृष्टि में पवित्र नहीं हैं । फेर कितना घोड़ा मनुष्य जो कीड़ा है ५  
और मनुष्य का पुत्र जो कीड़ा ही है ॥ ६

छव्योसवां पद्य ।

परन्तु सेयूय ने उत्तर देके कहा । कि तू ने क्योंकर निर्बल का उपकार किया १  
तू ने क्योंकर निर्बल भुजा को बचाया है । निर्बुद्धि को तू ने किस रीति में मंत्र २  
दिया है और बुद्धि विस्तार से वर्णन किई है । किस के लिये तू ने वचन उच्चार ३  
है और किस का आत्मा तुझ से निकला है ॥ ४

उस के सामने मृतक नीचे में कांपते हैं पानी और उस के निवास भी । पाताल ५  
उस के आगे उधारा है और विनाश का रूपना नहीं है । वह उत्तर को शून्य ६  
के ऊपर फैलाता है और नाम्ति के ऊपर पृथिवी को टांगता है । वह अपने घने ७  
मेघों में जल को बांधता है और उन के नीचे मेघ नहीं फटता है । वह अपने ८  
मिंघासन का मुंह छिपाता है और अपना मेघ उस पर फैलाता है । उस ने जलों ९  
को सिवाने से घेरा है जहां लों कि उंजियाला अंधियारे में मिल जाता है । स्वर्ग १०  
के खंभे कांपते हैं और उस की दपट से आश्चर्यित हैं । वह अपने पराक्रम से ११  
समुद्र को धमकाता है और अपनी मसक से उस के आंचंकार को मारता है । उस १२  
ने अपने आत्मा से स्वर्गों को सुन्दर किया उस के घाय ने शीघ्र चलवैये सर्प को  
बनाया । देखो यही उस के मार्गों के सिवाने हैं परन्तु उसी के विषय में कैसा १३  
थोड़ा सुना जाता है पर उस के सामर्थ्य की गर्जन को कौन समझ सक्ता है ॥ १४



१३ उसे जिस का कोई उपकारी न था बचाया । उस की आशीस जो नाश होने पर था मुझ पर पड़ी और मैं बिधवा के मन के आनन्द के गान का कारण  
 १४ हुआ । मैं ने धर्म को पहिना और उस ने मुझे ठांपा मेरा बिचार बागा और  
 १५ मुकुट की नाईं था । मैं अंधे के लिये आंख था और लंगड़े के लिये पांव ।  
 १६ मैं कंगालों के लिये पिता था और उस का व्यवहार जिस को मैं जानता न था  
 १७ खोज लेता था । और मैं ने दुष्ट की डाढ़ें तोड़ीं और उस के दांतों से लूट  
 १८ कीनी । तब मैं ने कहा कि मैं अपने बसेरे में मरुंगा और मैं अपने जीवन के  
 १९ दिन बालू की नाईं बढाऊंगा । मेरी जड़ पानियों के लग फैली है और मेरी  
 २० डालियों पर रात भर ओस रहेगी । मेरा तेज मुझ में नवीन होगा और मेरा  
 धनुष मेरे हाथ में बल बढायेगा ॥

२१ लोग मेरी ओर कान धरते थे और बाट जोहते थे और मेरे मंत्र के लिये  
 २२ चुप हो रहते थे । मेरे वचन के पीछे फिर न बोलते थे और मेरा वचन उन  
 २३ पर टपकता था । और वे मेंह की नाईं मेरी बाट जोहते थे और वे अपना मुंह  
 २४ ऐसा पसारते थे जैसा कोई पिछले मेंह के लिये मुंह पसारता है । जब मैं उन  
 के साथ हंसता था तो वे प्रतीति न करते थे और मेरे मुंह की लाली न उतारते  
 २५ थे । जब मैं ने उन का मार्ग चुना तब अध्यक्ष के समान उन के मध्य में बैठा  
 और उस राजा के समान जो सेना में है और उस मनुष्य के समान जो बिलापियों  
 को शांति देता है रहता था ॥

तीसवां पृष्ठ ।

१ परन्तु अब वे जो मुझ से थोड़े दिन के हैं मेरी निन्दा करते हैं जिन के  
 २ पितरों को मैं अपने मुंड के कूकरों के साथ बैठाना तुच्छ जानता था । हां उन  
 के हाथों के बल से मुझे क्या लाभ जिन पर से समाप्त करने की शक्ति बीत गई ।  
 ३ क्योंकि कंगालपन और भूख से वे लीन हैं जो शून्य स्थानों की रात में उजाड़  
 ४ को काट खाते हैं । जो झाड़ी के लग लोनियां तोड़ते हैं और रतम की जड़ उन  
 ५ का भोजन है । वे मनुष्यों में से खेदे जाते हैं और चोर की नाईं उन के पीछे  
 ६ पीछे पुकारते हैं । वे भयानक तराइयों और पृथिवी के गडहों और चटानों में  
 ७ रहते हैं । वे झाड़ियों में रेंकते हैं भटकटैया के नीचे एकट्टे होते हैं । वे सूखों के  
 ८ सन्तान हां नामहीन के सन्तान हैं वे देश से निकाले जाते हैं । पर अब मैं उन का  
 १० गान हूं और मैं उन की कथनी हो गया । वे मुझ से घिनाते हैं वे मुझ से परे खड़े  
 ११ रहते हैं और मेरे मुंह पर शूकने से अलग नहीं रहते । क्योंकि वे अपनी बाग  
 छोड़ देते और मुझे दुःख देते हैं और मेरे आगे से बागडोरी फेंक देते हैं ।  
 १२ मेरी दहिनी ओर नीच लोग उठते हैं और मेरे पांव को ठेल देते हैं और अपने  
 १३ नाश के मार्गों को मेरे विरुद्ध बनाते हैं । वे मेरे पथ को बिगाड़ते मेरी विपत्ति  
 १४ की सहाय करते हैं वे जिन का कोई उपकारी नहीं । वे मानो चौड़े दरार में  
 १५ से मुझ पर आते हैं वे बन में मुझ पर पलट पड़ते हैं । भय मुझ पर उलट पड़े  
 हैं और पवन की नाईं मेरी भाग्यमानी का पीछा करते हैं और मेघ के समान  
 मेरा कुशल क्षेम जाता रहा ॥

आंखों ने उसे नहीं देखा । भयानक बनैले पशु ने उसे नहीं लगाड़ा और न मिट ८  
उस पर सं गया । मनुष्य अपना हाथ चटान पर धरता है और पटाड़ों को जड़ ९  
से उलटता है । चटानों में से यह नदियां निकालता है और उस की आंखें हर १०  
एक बहुमूल्य वस्तु को देखती हैं । वह करनेों को रमने से रोकता है और छिपी ११  
हुई वस्तु को उजियाले में लाता है ॥

परन्तु बुद्धि कहां पाई जायगी और समझ का स्थान कहां है । मनुष्य उस १३  
का माल नहीं जानता और जीवनों के देश में वह नहीं पाई जाती । गहिराय १४  
कहता है कि यह मुझ में नहीं है और समुद्र कहता है कि मेरे साथ नहीं है ।  
सोमना सोना उस के लिये दिया नहीं जा सक्ता और उस के माल के लिये चांदी १५  
तैली नहीं जाती । आफ़ीर के सोने को उससे क्या चुरावरी है बहुमूल्य वैदूर्य १६  
अथवा नीलमणि को । सोना और स्फटिक उस के तुल्य नहीं हो सक्ते और सोमने १७  
सोने के गहने भी उस का पलटा नहीं हो सक्ते । मृगों और विजौर का क्या १८  
वखान क्योंकि बुद्धि का माल मोतियों से अधिक है । कृष्ण का पोगराज उस १९  
के तुल्य नहीं और न सोमना सोना उस के माल का है ॥

फिर बुद्धि कहां से आती है और समझ का स्थान कहां है । यह तो मारे २०  
जीवनों की आंखों से गुप्त है और आकाश के णजियों से छिपी है । यिनाश और २१  
मृत्यु कहती हैं कि हम ने अपने कानों से उस की कीर्ति सुनी है ॥

ईश्वर उस का पय समझता है और वहीं उस का स्थान जानता है । क्योंकि २३  
वही पृथिवी के सिवाने लो देखता है मारे सूर्य के तले देखता है । जिसमें २४  
पवनो का तैले और पानियों का नपुन में नापे । जय उस ने सेंद के लिये आजा २५  
ठहराई और कड़कनेदारी विजली के लिये मार्ग । तब उस ने उसे देखा और २७  
उस का वर्णन किया उस ने उसे सिद्ध किया और उस ने उसे ठूंड निकाला ।  
और मनुष्य ने उस ने कहा कि देख ईश्वर का भय सोई बुद्धि है और सुराई २८  
छोड़ना वही समझ है ॥

### उन्नीसवां पद्य ।

फिर रेणुय ने अपना दृष्टान्त बढ़ाके कहा । हाथ कि मैं पिछले मामों के १  
समान होता उन दिनों की नाईं जय ईश्वर ने मेरी रक्षा किई थी । जय उस २  
का दीपक मेरे मिर पर चमकता था और उस की ज्योति में मैं अधिपारे में  
चलता था । जैसा मैं अपनी तरफाई के दिनों में था जय कि ईश्वर की संगति ४  
मेरे तंत्र में थी । जय सर्वमार्थों मेरे साथ था मेरे सन्मान मेरी चारों ओर । जय कि ५  
मैं अपने डगों को दृष्ट मे छोटा था और चटान मेरे लिये तेल की नदियां बहाती थी ॥

जय कि मैं नगर में टोके फाटक पर जाता था और चौक में अपना आसन ७  
रखता था । तरुण मुझे देखके आप को छिपाते थे और वृद्ध उठ खड़े होते थे । ८  
अध्यक्ष बोलने से रुक जाते थे और अपना हाथ मुंह पर धरते थे । कुलीन चुप ९  
होते थे और उन की जीभ उन के मुंह के तालू में लग जाती थी । जय कान १०  
सुनता था तब मुझे घर देता था और जय आंखें देखती थीं तब मेरे लिये साजों ११  
देती थीं । क्योंकि मैं ने कंगाल को जो दोहाई देता था और अनाथ को और १२

१६ जो मैं ने कंगालों को उन की इच्छा से रोका हो अथवा बिधवा की आंखों  
 १७ को धुंधला कर दिया हो । अथवा अपना कौर आप ही खा लिया हो और  
 १८ अनाथ ने उससे न खाया हो । क्योंकि मेरी लड़कई से वह मेरे साथ ऐसा पला  
 जैसा पिता के साथ और मैं ने अपनी माता के गर्भ ही मैं से बिधवा की अगु-  
 १९ आई किई । यदि मैं ने किसी को बिना वस्त्र नष्ट होते अथवा किसी कंगाल को  
 २० बिना ओढ़ना देखा हो । जो उस की कटि ने मुझे आशीस न दिई और उस ने  
 २१ मेरी भेड़ों की जन से गरमी न पाई हो । जो मैं ने अनाथ पर अपना हाथ उठाया  
 २२ हो इस लिये कि अपना सहायक फाटक मैं देखा । तो मेरा कंधा अपनी भुजा  
 २३ के घर से गिर पड़े हां मेरी बांहें जड़ से टूट जावें । क्योंकि सर्वशक्तिमान की  
 ओर से बिनाश मेरे लिये एक डर है और उस महत्व के आगे मैं कुछ नहीं  
 कह सकता ॥

२४ जो मैं ने कंचन पर अपनी आशा किई हो और चाखे सोने से कहा हो कि तू  
 २५ मेरी आशा का स्थान है । यदि मैं मगन हुआ कि मेरा धन बहुत बढ़ गया और  
 २६ कि मेरे हाथ ने बहुत पाया । जो मैं ने सूर्य को देखा जब वह चमकता था और  
 २७ ज्योतिमान चलनेहारे चन्द्रमा को । और मेरा मन चुपके से फुसलाया गया हो  
 २८ अथवा मेरे मुंह ने मेरे हाथ को चूमा हो । तो यह भी एक बुराई है जो न्यायियों  
 के दण्ड के योग्य है क्योंकि मैं उस सर्वशक्तिमान से जो ऊपर है मुकर जाता ।  
 २९ यदि मैं अपने बैरी के नाश से आनन्दित हुआ अथवा जब बुराई उस पर पड़ी तो  
 ३० फूला । और हां मैं ने अपने तालू से पाप होने न दिया कि उस के प्राण को  
 ३१ धिक्काऊं । क्या मेरे डरे के मनुष्यों ने नहीं कहा कि कौन है जो उस के मांस से  
 ३२ सन्तुष्ट नहीं हुआ । परदेशी रात को बाहर न टिका मैं ने अपने द्वारों को पथिक  
 ३३ के लिये खोला । क्या मैं ने आदम की नाईं अपने अपराधों को ठांपा कि अपनी  
 ३४ बुराई को अपनी गोद में छिपाऊं । जिसमें बड़ी मंडली से भयमान हो जाऊं अथवा  
 परिवारों की निन्दा मुझे डराये और मैं चुप हो रहूं और द्वार के बाहर न जाऊं ॥  
 ३५ हाय कि वह मेरी सुने देखो यह मेरी लिखावट है सर्वशक्तिमान मुझे उत्तर  
 ३६ देवे और मेरा बैरी अपना बिवाद लिखे । अवश्य मैं उसे अपने कांधे पर उठाता  
 ३७ और उसे मुकुट के समान अपने पर बांधता । मैं उससे अपने डगों की गिनती  
 बर्णन करता अध्यक्ष के समान मैं उस के पास जाता ॥  
 ३८ यदि मेरी भूमि मेरे विरुद्ध चिल्लावे अथवा उस की रेघारियां मिलके बिलाप  
 ३९ करें । यदि मैं ने बिना रोकड़ उस का फल खाया अथवा उस के स्वामियों के  
 ४० प्राणों को मसोसा हो । तो गोहूँ की संती-भरमांड उगें और जब की संती जंट-  
 कटारे । रेयूब के बचन समाप्त हुए ॥

अतीसवां पर्व ।

१ सो ये तीनों जन रेयूब को उत्तर देने से रह गये क्योंकि वह अपनी ही दृष्टि  
 में धर्मी ठहरा ॥

२ तब राम के घराने के बाराकेल बूजी के बेटे इलीहू का कोप भड़का रेयूब  
 पर उस का कोप भड़का क्योंकि उस ने अपने प्राण को ईश्वर से विशेष धर्मी

और अब मेरा प्राण आप को बढ़ाता है कष्ट के दिनों ने मुझे धर रक्खा है । १६ रात मेरी दृष्टियों को बंधती और मेरे पास से खींच लेती है और मेरे काट १७ खानेद्वारे चैन नहीं लेते । मेरे रोग की बहुनाई के कारण मेरा वस्त्र अपने को १८ पलट देता है मेरे कुरते के गले की नाईं मुझे जकड़ता है । उस ने मुझे खटले १९ में डाल दिया है और मैं धूल और राख की नाईं बना हूँ । मैं तेरी दोहाई देता २० हूँ और तू नहीं सुनना मैं तेरे आगे खड़ा होता हूँ और तू मेरी सुधि नहीं लेता । तू मेरे लिये क्रूर हो गया अपने शाय के धन से मुझ से बैर रखना है । २१ तू मुझे पवन पर उठाता और चढ़ाता है और मुझे पिछलाता और डराना है । २२ क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे मृत्यु में और उस सभा के दर में जो सारे जीवनों २३ के लिये है पहुंचावेगा । निश्चय प्रार्थना से कुछ लाभ नहीं जब वह अपना हाथ २४ बढ़ाता है और जब वह विनाश करता है तब दोहाई से इन को कुछ लाभ नहीं । क्या मैं ने दुःखियों के लिये विलाप न किया और क्या मेरे प्राण ने कंगाल २५ के लिये दुःख न कहा । क्योंकि मैं ने भलाई के लिये बातें जोड़ी और घुमाई २६ आई मैं ने उजियाले की बातें जोड़ी और अधिपारा आया ।

मेरी अंतर्द्वियां उबलती हैं और घमती नहीं कष्ट के दिन मुझ पर आ पड़े । २७ मैं श्यामवर्ण हो गया पर धूप में नहीं मैं खड़ा हुआ और मण्डनों में दोहाई २८ देता हूँ । मैं गीदड़ों का भाई और गुजरमुख का संगी हो गया । मेरा चाम २९ काला हो गया और मुझ पर खिंचता है और मेरी दृष्टियां घास से जल गईं । और मेरी बीशा विलाप से पलट गई और मेरी घांमुगी विनाशियों के शब्द से । ३० एकतीसवां पद्य ।

मैं ने अपनी आंखों से दांचा घांघ्री फिर घोंघर में कन्या पर दृष्टि करूं । १ पर ऊपर से ईश्वर की और से मेरा क्या भाग है और जंचाई में सर्वशक्तिमान २ से मेरा क्या अधिकार है । क्या दुष्टों के लिये नाश और कुकर्मियों के लिये नाला ३ विपत्ति नहीं है । क्या वह मेरी चालों को नहीं देखता और मेरे सारे उगों को ४ नहीं गिनता है । जो मैं कपट की चाल चला हूँ अथवा जो मेरा घरा हल की ५ और वेग पड़ा हो । तो वह मुझे न्याय की तुला में तौलें और ईश्वर मेरी खाई ६ को जाने । जो मेरा उग पथ में फिरा हो और मेरा मन मेरी आंखों के पीछे ७ गया हो और जो मेरे हाथों में कोई पथ लगी हो । तो मैं ब्र.जं और दूसरा खाय ८ और मेरी खेती उखाड़के फेंक दिई जाय । यदि मेरे मन ने किसी स्त्री से कल ९ खाया हो अथवा अपने परोसी के द्वार में बातें जोड़ी हो । तो मेरी पत्नी दूसरे १० के लिये चक्री पीसे और दूसरे उस पर भुजें । क्योंकि यह सदा पाप है जो यह ११ एक घुराई है जो न्यायियों के दण्ड के योग्य है । क्योंकि यह एक आग है जो १२ विनाश लों भस्म करेगी और मेरी सारी बढ़ती को उखाड़ डालेगी ॥

जो मैं ने अपने दास अथवा दासी के पद की जय वे मुझ से भगाइते थे निन्दा १३ किई हो । तो मैं क्या करूंगा जब सर्वशक्तिमान उठेगा और जब वह पूछेगा तब १४ मैं उसे क्या उत्तर देऊंगा । क्या जिस ने मुझे कोख में सृजा उसे नहीं सृजा और १५ एक ही ने कोख में हमारा डाल नहीं किया ॥

१३ तू क्यों उससे भगड़ता है क्योंकि वह किसी को अपने कार्यों का लेखा नहीं  
 १४ देता है । क्योंकि सर्वशक्तिमान एक बार कहता है हां दो बार सब मनुष्य नहीं  
 १५ ब्रह्मता । स्वप्न में रात के दर्शन में जब भारी नींद मनुष्यों पर पड़ती है जब वे  
 १६ धिड़ैलाने पर सोते हैं । तब वह मनुष्यों के कानों को खोलता है और उन के उप-  
 १७ देश पर क्राप करता है । जिससे मनुष्य को उस के कार्य से फिरावे और मनुष्य  
 १८ में अहंकार को क्लिपे । वह उस के प्राण को गड़हे से रोकता है और उस के  
 जीव को कि गड़हे से न निकले ॥

१९ फिर वह अपनी खाट पर पीड़ा से ताड़ना पाता है और उस की हड्डियों में  
 २० सदा की घबराहट से । यहां लों कि उस का प्राण रोटी से और उस का जीव  
 २१ रुचि भोजन से घिनाता है । उस का सांस शलके अदेख हो जाता है और उस  
 २२ की अदेख हड्डियां निकल आती हैं । सो उस का प्राण समाधि के पास और उस  
 २३ का जीव नाशकों कने पहुंचता है । यदि उस के पास कोई दूत दो भाषिया सदसों  
 २४ में से एक हो जा मनुष्य को उस के कार्य प्रगट करे । तब वह उस पर कृपाल  
 होगा और कहेगा कि उसे गड़हे में गिरने से बचा ले मैं ने प्रायश्चित्त पाया है ।  
 २५ उस की देह बालक की देह में भी अति पुष्ट होगी वह अपनी तरुणाई के दिनों  
 २६ में फिर आयगा । वह ईश्वर से यिनती करेगा और वह उस पर कृपाल होगा हां  
 वह आनन्द से उस का मुंह देखेगा और वह मनुष्य को उस के धर्म का प्रतिफल  
 २७ देगा । वह मनुष्यों के साम्हने गायेगा और कहेगा कि मैं ने पाप किया और सिद्ध  
 २८ को टेढ़ा किया और मुझे उस का बदला न मिला । उस ने मेरे प्राण को समाधि  
 में जाने से बचा लिया और मेरा जीव उंजियाले को देखता है ॥

२९ देखो ये सब कर्म दों बार तीन बार सर्वशक्तिमान मनुष्य के साथ करता है ।  
 ३० जिससे उस के प्राण को गड़हे से फेर लावे जिससे जीवतों के उंजियाले से उंजियाला हो ॥  
 ३१ हे रेयूव कान धर मेरी सुन चुपका रह और मैं बातें करंगा । जो तुझे कुछ  
 कहना हो तो मुझे उत्तर दे बातें कर क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराने चाहता हूं ।  
 ३३ यदि नहीं तो मेरी सुन चुपका रह और मैं तुझे बुद्धि सिखाऊंगा ॥

चौंतीसवां पर्व ।

१ फेर इलीहू ने उत्तर देके कहा । कि हे बुद्धिमानो मेरे वचन सुनो और हे ज्ञानियो  
 ३ मेरी ओर कान धरो । क्योंकि कान बातों को परखता है और मुंह भोजन को  
 ४ चीखता है । आओ हम विचार को अपने लिये चुन आएस में जानें कि क्या अच्छा  
 ५ है । क्योंकि रेयूव ने कहा है कि मैं धर्मी हूं और सर्वशक्तिमान ने मेरा विचार  
 ६ हटा दिया है । मैं अपने विचार में झूठा ठहरता हूं मेरा घाव असाध्य है यद्यपि  
 ७ मैं निरपराध हूं । कौन जन रेयूव के समान है जो निन्दा को पानी की नाई पीता  
 ८ है । और कुकर्मियों के संग संग जाता है और दुष्टों के साथ चलता है । क्योंकि  
 ९ उस ने कहा है कि मनुष्य को कुछ लाभ नहीं यदि वह ईश्वर की संगत में मगन हो ॥  
 १० इस लिये हे ज्ञानियो मेरी सुनो सर्वशक्तिमान से परे रहे कि वह दुष्टता करे  
 ११ और सर्वशामर्षी से कि बुराई करे । क्योंकि वह हर एक मनुष्य को उस के कार्य  
 का फल देता है और हर एक मनुष्य से उस की चाल के समान व्यवहार करता

ठहराया । और उस के तीनों मित्रों पर भी उस का कोप भड़का इस कारण कि ३  
उन्हीं ने उत्तर न पाया था तौभा गैयत्र को दीपी ठहराया । अब कर्नीट ने गैयत्र ४  
के वचनों की बात जोड़ी क्योंकि वे उम्मे जेठे थे । अब कर्नीट ने तीनों जन के ५  
मुंह में उत्तर न देखा तब उस का कोप भड़का ।

और वाराकेल बूजी के घटे कर्नीट ने उत्तर देकर कहा कि मैं घोड़े दिन का ६  
हूँ और तुम लोग पुर्निये हो इस लिये मैं भयमान हुआ और अपना ज्ञान तुम पर ७  
प्रगट करने से डरा । मैं ने कहा कि दिनी लोग बातें करें और बृद्ध युद्धि उच्चारें । ८  
निश्चय मनुष्य में आत्मा है और सर्वशक्तिमान् का प्रवास उन्में समझ देता है । ९  
मदत जन मदा युद्धिमान नहीं हैं न प्राचीन विचार बूझने हैं । इस लिये मैं ने १०  
कहा कि मेरी मुना में भी अपने मन की कहेंगा ।

देखा मैं ने तुम्हारे वचनों की बात जोड़ी और तुम्हारे प्रमाणों को सुनता रहा ११  
जब ली कि तुम बातें खोजते थे । और मैं तुम पर सुन लगाये रहा और देखा १२  
तुम्में से कोई नहीं जो गैयत्र को दीपी ठहराया अब उस के वचन का उत्तर १३  
देता । ऐसा कि तुम कहो कि हम ने युद्धि पाई सर्वशक्तिमान् उसे जीतेगा मनुष्य १४  
नहीं । उस ने तो मेरे विरुद्ध बातों को नहीं गढ़ा और न मैं तुम्हारे वचनों के १५  
समान उसे उत्तर देऊंगा ।

वे विस्मित हुए फेर उत्तर न दिया बातें कहने से चुप रहे । और मैं बात जोड़ता १६  
रहा क्योंकि उन्हीं ने और बातें न कियें क्योंकि वे ग्रह रहे और फिर उत्तर न दिया ।  
मैं भी अपनी पागी में उत्तर देऊंगा मैं भी अपने मन की सुनाऊंगा । क्योंकि मैं बातों १७  
से परिपूर्ण हूँ मेरे भीतर का आत्मा मुझे बजाता है । देखा मेरा घेठ उस दाखरम १८  
के समान है जो खाला नहीं गया नये कृष्णों की नाईं घट फटने पर है । मैं बातें २०  
कहूंगा और प्रवास लूंगा अपने हाँठों को खालूंगा और उत्तर देऊंगा । मैं किमी का २१  
पत्र न कहूँ और न मनुष्य को फुसलाने का पद देऊँ । क्योंकि फुसलाने का पद मैं २२  
नहीं जानता नहीं तो मेरा सृजनहार मुझे शीघ्र उठा लेता ।

तीसरी पद्य ।

मैं इस लिये ही गैयत्र मेरे वचन सुन और मेरी सब बातों पर कान धर । देख १  
मैं ने अपना मुँह खोला है मेरी जीभ मेरे तालू में बातें करती है । मेरी बातें मेरे २  
मन की खराई में होगी और मेरे हाँठ खाल खालके ज्ञान उच्चारेंगे । सर्वशक्ति- ३  
मान के आत्मा ने मुझे बनाया है और सर्वशक्तिमान् के प्रवास ने मुझे जीवन दिया ४  
है । यदि तुम से हो सके तो मुझे उत्तर दे अपने हाँठों मेरे मनुष्य लंस कर और ५  
खड़ा हो । देख मैं तेरे समान सर्वशक्तिमान् का बनाया हुआ हूँ मैं भी मिट्टी से ६  
बना हूँ । देख मेरा भय तुम न घबरायेगा और मेरा घास तुम पर भारी न होगा ७

निश्चय तू ने मेरे कानों में कहा है और तेरे वचन का शब्द मैं ने सुना है । ८  
कि मैं निरपराध पवित्र हूँ मैं निर्दोष हूँ और मुझ में दुर्गाई नहीं । देख वह मेरे ९  
विरुद्ध धैर का कारण छूँठता है वह मुझे अपना धैरी जानता है । मेरे पाँव को १०  
वह काठ में डालता है मेरे सारे मार्गों को चीन्ट रखता है । देख इस में तू धर्मी ११  
नहीं मैं तुमसे उत्तर देऊंगा क्योंकि ईश्वर मनुष्य से बड़ा है ॥ १२



५ स्वर्गों को ताक और मेघों को देख जो तुम से कहीं ऊंचे हैं । जो तू पाप  
करे तो उस के विरुद्ध गया करता है अथवा तेरे अपराध बढ़ जायें तो उस का  
७ दया विगड़ता है । जो तू धर्मी होय तो उसे दया देता है अथवा वह तेरे हाथ  
८ से दया लेता है । तेरी दुष्टता से उस को हानि हो सकती है जो तुम मरीखा मनुष्य  
९ है और तेरे धर्म से मनुष्य के पुत्र को लाभ है । अंधेरे की दृष्टि के कारण  
१० दुखियारे दोहाई देते हैं वे चलचलाओं की भुजा के मारे चिन्ताते हैं । परन्तु कोई  
११ नहीं कहता कि मेरा कर्मा कहां है जो रात को गान कराता है । जो पृथिवी के  
पशुओं में अधिक हमें मित्राता है और आकाश के पक्षियों में अधिक हमें बुद्धि-  
१२ मान बनाता है । यहां वे दुष्टों के अहंकार के मारे चिन्ताते हैं पर वह उत्तर  
नहीं देता ।

१३ निश्चय सर्वशक्तिमान् स्वर्ग्य यिनतो न मुनेगा और सर्वसामर्थी मन न लगावेगा ।  
१४ हां तब भी नहीं जय तू कहता है कि मैं उसे नहीं देख सकता न्याय उस के आगे  
१५ है और तू उस की घाट जोर । पर अब हम कारण कि उस ने अपने कोप में होके  
१६ दृष्टि न की है और पाप की अधिकारी का दृष्ट नही चीन्हा । इस लिये सेयूय  
वृथा अपना मुंह खोलता है और अज्ञानता से घात बढ़ाता है ।

कृतीभयां पृथक् ।

१ फिर इलीज़ ने अपनी घात बढ़ाई और कहा । कि तनिक ठहर जा और मैं  
३ तुम्हें दिखाऊंगा क्योंकि मुझे ईश्वर के लिये और घात कहनी हैं । मैं दूर से अपना  
४ ज्ञान लाऊंगा और अपने कर्मा को धर्मी ठहराऊंगा । क्योंकि निश्चय मेरे वचन  
मिथ्या न होंगे तेरे साथ पूरी बुद्धि का मनुष्य है ।

५ देख सर्वशक्तिमान् सामर्थी है और किसी की निन्दा नहीं करता बुद्धि की शक्ति  
६ में सामर्थी । वह दुष्ट को जीता न रखेगा और कंगालों का विचार करेगा ।  
७ वह अपनी आर्त धर्मी में न फरेगा परन्तु राजाओं के साथ सिंहासन पर हैं और  
८ वह उन्हें सदा के लिये बसाता है और वे बढ़ाये जाते हैं । और यदि वे सीकरो  
९ में जकड़े जायें और दुःख की रस्मियों में बांधे जायें । तब वह उन्हें उन का कार्य  
१० और उन का अपराध दिखाता है कि उन्हें न दुर्वचन कहा । और उन के कानों  
११ को भी उपदेश के लिये खोलता है और उन से कहता है कि घुराई से फिरो । जो  
वे मानें और सेवा करें तो वे अपने दिनों को कुशल में काटेंगे और अपने घरों  
१२ को आनन्द में । परन्तु जो वे न मानें तो तलवार से मारे जायेंगे और अज्ञानता  
से मरेंगे ।

१३ परन्तु मन के कपटी कोप डेर करते हैं वे ईश्वर की दोहाई न देंगे अब वह  
१४ उन्हें बांधता है । उन का प्राण तरुणाई में जाता रहेगा और उन का जीवन  
१५ अशुद्धों के साथ । वह दरिद्र को उस के दुःख से कुहाता है और कष्ट में उन के  
१६ कानों को खोलता है । और वह तुम्हें सकेती के मुंह से भी निकालेगा चौड़े स्थान  
में जहां सकेती नहीं और जो तेरे मंच पर रखा जाता है सो चिकनाई से भरा  
१७ होगा । परन्तु यदि तू दुष्ट के विचार को पूरा करे तो विचार और न्याय एक दूसरे  
१८ से लिपटेगा । क्योंकि उस के साथ कोप है ऐसा न हो कि वह अपनी ताड़ना से

है । हां निश्चय सर्वशक्तिमान दुष्टता न करेगा और सर्वसामर्थ्य न्याय को न फेरेगा । १२  
 किस ने उसे पृथिवी मेंपी और किस ने सारे नंसार को नेत्र डाली । यदि वह उस १३  
 पर अपना मन लगावे तो वह उस का आत्मा और उस का श्वाभ अपने पास १४  
 समेटेगा । तो सारे शरीर एक साथ नष्ट होंगे और मनुष्य के सन्तान फेर धूल में १५  
 मिल जायेंगे ॥

अब जो तुझ में खुद्वि है तो वह मुन सेरे वचनों के शब्द पर कान धर । क्या १६  
 सत्य का वैरी प्रभुता करेगा और क्या तू धर्ममय और सदान पर दोष लगावेगा ।  
 क्या राजा को दुष्ट और अध्वर्यों को अध्वर्मी कहना उचित है । तो उस को नहीं १७  
 जो अध्वर्यों का पक्ष नहीं करता और धर्मों को कंगाल से अधिक नहीं दृक्कता क्योंकि १८  
 मय के मय उसी के हाथ के कार्य हैं । ये पल भर में सर जायेंगे हां आधी रात २०  
 को लोग कांपेंगे और जाने रहेंगे और बिना हाथ लगाये चलवान दूर किये जायेंगे ।  
 क्योंकि उस की आंखें मनुष्यों की चालों पर हैं और वह उस की सारी चालों को २१  
 देखता है । न अध्वर्य है न मृत्यु की छाया जहां कृकर्म अपने को लिपार्य । २२  
 क्योंकि वह वेर लों मनुष्य पर ध्यान न लगावेगा जिनमें वह ईश्वर के आगे न्याय २३  
 में जाय । वह बिना पूछे चलवतों को टुकड़े टुकड़े करता है और उन के न्याय पर २४  
 दूसरों को ठहराता है । इस कारण कि वह उन के कार्यों को जानता है और वह रात २५  
 को उन्हें उलट देता है और वे नष्ट होते हैं । वह उन्हें उन को दुष्टता के पलटें २६  
 में मारता है देखनेदारों के आगे । क्योंकि वे उस के पीछे से फिर गये और उन २७  
 के सारे मार्गों में सुचेत न रहे । यहां लों कि वे कंगालों को उस के आगे धिलवाते २८  
 हैं और वह दुःखियों की होवाई को सुनता है । जब वह सुन देता है तब कौन २९  
 दोषी ठहरावेगा और जब वह अपना मुंड लिपाता है तब कौन उसे देख सक्ता  
 है चाहे जातिगण के विषय होवे चाहे केवल एक मनुष्य के । जिसमें कपटी राज्य ३०  
 न करे और प्रजा कंदे में न पड़े ॥

क्योंकि उचित है कि तू सर्वशक्तिमान से कहे कि मैं ने ताड़ना पाई है फेर ३१  
 पाप न कहेगा । जो मैं नहीं देखता तू मुझे निग्रा जो मैं ने दुराई किई है तो ३२  
 मैं फेर न कहेगा । क्या वह तेरी दृक्का के समान तुझे पलटा देगा चाहे तू माने ३३  
 चाहे न माने और वह नहीं इस लिये जो तू जानता है मो कह । जानी और ३४  
 खुद्विमान जो मेरी सुनते हैं मेरे विषय में कहेंगे । कि मेघूय अज्ञानता से धार्त ३५  
 करता है और उस की धार्त निर्दुष्टि की हैं । मेरी यह दृक्का है कि मेघूय अंत ३६  
 लों परगवा जाय इस कारण कि वह दुष्टों की नाई उत्तर देता है । क्योंकि वह ३७  
 अपने पापों में आज्ञा भंग करना मिलाता है और दूसरे मध्य में थोड़ा मारता  
 है और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध अपनी धार्त बढ़ाता है ॥

पैतीमयां पर्व ।

फिर इलीहू ने उत्तर दिया और कहा । क्या तू हमें ठीक समझता है जो तू ने १  
 कहा है कि मेरा धर्म सर्वशक्तिमान के धर्म से अधिक है । क्योंकि तू कहता २  
 है कि मुझे क्या बढ़ती और क्या लाभ होगा उससे अधिक कि मैं पाप करता । ३  
 मैं तुझे और तेरे संगियों को इन धार्तों का उत्तर देऊंगा ॥ ४

१० के आश्चर्य कार्य जो ज्ञानमय हैं । तबे यस्तु किस भाँति से गरमाते हैं जब यह  
 १८ दक्खिनहा पवन से पृथिवी पर घुमस करता है । क्या तू उस के साथ मेघों को  
 १९ फैला सकता है जो ठालुआ दर्पण की नाईं पोछे हैं । हमें यतला कि हम उसे  
 २० क्या कहें क्योंकि अधियारे के सारे हम यात बना नहीं सकते । क्या उसे यताया  
 जायेगा जो मैं यातें करूं यदि मनुष्य उसे कटे तो निश्चय वह निगला जायगा ।  
 २१ और अथ लोग उंजियाले को नहीं देख सकते जब यह मेघों में घुमकता है  
 २२ जब पवन बदती है और उर्न पवित्र करती है । उत्तर से सानहरी ज्योति आती  
 २३ है ईश्वर के पास भयंकर मोहमा है । हम सर्वज्ञानार्थी को नहीं पा सकते वह  
 २४ पराक्रम और विचार में बड़ा है और सच्चाई में महान वह न सतायेगा । इसी  
 लिये मनुष्य उसे डरें वह किसी बुद्धिमान पर पक्ष की दृष्टि न करेगा ।

अठतीसवां पद्य ।

१ तब परमेश्वर ने आंधी में से सेयूथ को उत्तर दिया और कहा । यह कौन है  
 २ जो अज्ञान की यातों से मेरे परामर्श को अधियारा कर देता है । अथ मनुष्य की  
 नाईं अपनी कटि कम क्योंकि मैं तुम्हें से पूछूंगा और तू मुझे उत्तर दे ।  
 ३ जब मैं ने पृथिवी की नवें ढालीं तब तू कहा था यदि तू बुद्धि रखता है तो  
 ४ यतला । किस ने उस का परिमाण किया है जो तू जानता है अथवा किस ने उस  
 ५ पर सूत खींचा । किस पर उस की नवें ढालीं गईं अथवा किस ने उस के कोने  
 ६ का पत्थर रक्खा । जब विद्यान के तारागणों ने मिलके गाया और ईश्वर के सारे  
 पुत्रों ने आनन्द के मारे ललकारा ।  
 ७ जब समुद्र फूटके गर्भ से निकल आया तब किस ने उस के द्वारों को बंद किया ।  
 ८ जब मैं ने मेघ को उस का दस्त बनाया और उस की घंटी के कारण गाढ़े मेघ को ।  
 ९ और अपनी आज्ञा को उस पर स्थिर किया और अड़ंगे और केवाड़े रखे । और कहा  
 कि यहां लो तू आना और आगे न बढ़ना और यहां तेरी अहंकार लहरें ठहरें ।  
 १२ क्या तू ने अपने दिनों में विद्यान को आज्ञा किई है और पै फटने को उस का  
 १३ ठिकाना जताया । जिसमें वह पृथिवी के अंतों को घेरे और दुष्ट उसे दूर किये जायें ।  
 १४ वह छाप की मिट्टी के समान पलट जाती है और सब वस्ते विभूषित होके खड़ी  
 १५ होती हैं । और दुष्टों से उन की ज्योति रोकी जाती है और ऊंची भुजा तोड़ी जाती है ।  
 १६ क्या तू समुद्र के सेतों में पैठा है अथवा गहिराई की थाह लेने गया है । क्या मृत्यु  
 के फाटक तेरे लिये खोले गये हैं अथवा तू ने मृत्यु की छाया के केवाड़ों को देखा  
 १८ है । क्या तू ने पृथिवी की चौड़ाई को देखा है यदि इन सभी को जानता हो तो कह ।  
 १९ जहां उंजियाला निवास करता है उस का मार्ग कहां है और अधियारे का स्थान  
 २० कहां है । जिसमें तू उसे उस के सिवाने लो पहुंचावे और उस के घर की पगडंडियों  
 २१ को जाने । तू जानता है क्योंकि तू उस समय उत्पन्न हुआ था और तेरे दिनों की  
 गिनती बहुत है ।  
 २२ क्या तू पाले के भंडारों में पैठा है अथवा ओले के भंडारों को तू ने देखा है ।  
 २३ जिन्हें मैं ने विपत्ति के लिये लड़ाई और संग्राम के दिन के लिये रख छोड़ा है ।  
 २४ कहां है वह मार्ग जिस से ज्योति का भाग किया गया और पुरुषा पवन

तुम्हें निकाल दे उस समय बड़ा प्रायश्चित्त तुम्हें न बचा सकेगा । क्या यह तेरा १८  
धन बूझेगा नहीं न सोने को और न धन के सारे बल को । उस रात को मत चाह २०  
जय लोग अपने अपने स्थान से उठ जाते हैं । चौकस रह घुराई पर मन मत लगा २१  
क्योंकि तू ने इसे दुःख से अधिक चाहा है ।

देख सर्वशक्तिमान अपने पराक्रम से आप को बढ़ाता है कौन उस के समान २२  
सिखवैया है । किस ने उसे उस का मार्ग बताया है अथवा कौन कह सका २३  
कि तू ने घुराई किई है । स्मरण कर कि तू उस के कार्य की महिमा कर जिस २४  
के विषय में मनुष्य गाते हैं । हर एक जन उस पर दृष्टि करते हैं मनुष्य दूर से उसे २५  
देखते हैं । देख सर्वशक्तिमान महान है और हम नहीं जानते उस के बरसों की २६  
गिनती का खोज नहीं हो सका । क्योंकि यह जल के बूंदों को रोकता है जो २७  
उस की भाप से टपकती हैं । जिन में मेघ बहते हैं और मनुष्य पर बहुताई से २८  
चुआते हैं । क्या उस के मेघों के फैलाने की रीति और उस के तंतू की कड़क २९  
को भी कोई समझ सकता है । देख यह अपना उजियाला अपने चट्टी और फैलाता ३०  
है और समुद्र की जड़ों से अपने को ठांपता है । क्योंकि यह उन से लोगों का ३१  
विचार करता है और भोजन बहुताई में देता है । यह अपने हाथों को बिजुली ३२  
से ठांपता है और उसे घेरी पर आज्ञा करता है । यह अपना शब्द उस पर सुनाता ३३  
है ठोर और सागपात पर भी ॥

सैंतीसवां पृष्ठ ।

हां इस पर भी मेरा मन धर्यराता है और अपने स्थान से उठलता है । मुनो १  
मुनो उस के शब्द की गर्जन और यह धूमधाम का शब्द जो उस के मुँह से २  
निकलता है । यह उसे सारे स्वर्ग के तले भंजता है और अपनी बिजुली की ३  
पृथिवी के अंत लों । उस के पीछे शब्द गर्जता है यह अपनी महिमा के शब्द ४  
से गर्जता है और जय उस का शब्द सुना जाता है तब यह उन्हें नहीं रोकता ।  
सर्वशक्तिमान अपने शब्द से अद्भुत रीति से गर्जना है जो बड़े बड़े कार्य करता ५  
है और हम नहीं बूझ सकते । क्योंकि यह पाले से कहता है कि तू पृथिवी पर हो ६  
जा और मंद की झड़ी से छा अपने बल की मंद की झड़ियों से । यह हर एक ७  
मनुष्य के हाथों को बंद कर देता है जिसमें सारे लोग जिन्हें उस ने बनाया उस ८  
को जानें । तब पशु अपनी माँदों में जाते हैं और अपने अपने ठिकाने में रहते ९  
हैं । दक्खिन से बयंडर आता है और उत्तर से जाड़ा । सर्वशक्तिमान के श्वास १०  
से पाला पड़ता है और फैला हुआ पानी मकेत हो जाता है । यह गाढ़ मेघ को भी ११  
मंद में गिरा देता है अपनी बिजुली के मेघ को छितराता है । और यह अपने मंत्र से १२  
उन्हें घुमाता फिराता है जिसमें पृथिवी में जगत पर वे सब कुछ करें जो यह उन्हें १३  
आज्ञा करता है । चाहे यह उन्हें दण्ड के लिये अथवा अपने देश के लिये अथवा १४  
कृपा के लिये निकाले ॥

हे रेयूय इस पर कान धर खड़ा हो और सर्वशक्तिमान के आश्चर्य कार्यों १४  
को सोच । क्या तू जानता है जय ईश्वर ने उन का ठिकाना किया और अपने १५  
मेघ की बिजुली को चमकाया । क्या तू मेघों के फैलाने की रीति जानता है उस १६

१६ वह अपने बच्चों पर कठोर है जैसा कि वे उस के नहीं हैं उस का परिश्रम व्यर्थ  
१७ और वह निर्भय है । इस कारण कि ईश्वर ने उसे दुष्टिहित किया है और उस  
१८ ने उसे समझ नहीं दिखे है । अब वह पंख मारके आप को उठाती है तब वह  
घोड़े और उस के चढ़ाये पर हंसती है ॥

१९ क्या तू घोड़े को बल देता है क्या तू उस के गले को कांपनेहारी चोटी से  
२० पहिनाता है । क्या तू उसे टिड्डी की नाईं कुदा सक्ता है उस को फुंकारना विभव-  
२१ भय और भयानक है । वह तराई में टापता है और अपने बल पर आनन्दित होता  
२२ है और शिथिल से मिलने को बढता है । वह भय पर हंसता है और नहीं डरता  
२३ और तलवार से नहीं डटता है । तूण उस पर हड़हड़ाते हैं और झलझलाता भाला  
२४ और बरकी । वह हुलड़ और धूमधाम क्रोध से भूमि को निंगलता है और प्रतीति नहीं  
२५ करता कि वह तुरही का शब्द है । वह तुरही का शब्द सुनते ही हाहा करता है  
और दूर से संग्राम को सूंघता है सेनापतिन के गर्जन और ललकार ॥

२६ क्या तेरी बुद्धि से बाज उड़ता है और दक्खिन की ओर अपने डैने फैलाता है ।  
२७ क्या तेरे बचन से गिद्ध ऊपर उड़ता है और जंघाई पर अपना घोंसला बनाता है ।  
२८ वह चटान पर रहता और बसेरा करता है चटान के किनारे और पड़ाई की चोटी  
२९ पर । यहां से वह अपना अहेर ठूंठता है और उस की आंखें दूर से देखती हैं ।  
३० और उस के बच्चे लोहू पीते हैं और जहां लोथ होती है तहां वह है ॥

चालीसवां पर्व ।

१ फिर परमेश्वर ने रेयूथ को उत्तर दिया और कहा । क्या सर्वसामर्थी का निन्दक  
उस्से भगाड़ेगा क्या ईश्वर का दोषदायक उस को उत्तर देगा ॥

३ तब रेयूथ ने परमेश्वर को उत्तर दिया और कहा । कि देख मैं तुच्छ हूं मैं तुम्हें  
५ क्या उत्तर देऊं मैं अपना हाथ अपने मुंह पर रखता हूं । एक धार में ने आते किंच  
पर उत्तर न देऊंगा हां दो धार और आगे न बढूंगा ॥

६ तब परमेश्वर ने बवंडर में से रेयूथ को उत्तर दिया और कहा । अब मनुष्य की  
८ नाईं अपनी कटि बांध मैं तुम्ह से प्रश्न करूंगा और तू मुझे बता । क्या सखमुच तू मेरे  
९ विचार को वृथा करेगा मुझ पर दोष लगायेगा जिससे तू धर्मी ठहरे । क्या सर्वशक्ति-  
१० मान के समान तेरी भुजा है और क्या तू उस के समान अपने शब्द से गर्जेगा । अब  
अपने को प्रभाव और उत्तमता से संवार सुन्दरता और विभव से आप को विभूषित  
११ कर । अपने कोप की जलजलाहट फैला और हर एक अहंकारी को देख और उसे  
१२ तुच्छ कर । हर एक अहंकारी को देखके उसे नीचे कर और दुष्टों को उन के स्थानों  
१३ में रौंद डाल । उन्हें एकही साथ धूल में बिपा और गुप्त में उन के मुंह बांध  
१४ तब मैं भी तेरे आगे मान लेऊंगा कि तेरा दाहिना हाथ तुम्हें बचा सक्ता है ॥

१५ बहेमोत को देख जिसे मैं ने तेरे साथ बनाया है वह बैल की नाईं धार  
१६ खाता है । अब देख उस का बल उस की कटि में है और उस का बल उस के  
१७ पेट की नसों में है । वह अपनी पूंछ को देवदारु की नाईं हिलाता है और उस के  
१८ जांघों की नसें समेटी हुई हैं । उस के हाड़ तांखे की नलियां हैं उस की इड्डिय  
१९ लोहे की कड़ की नाईं हैं । वह सर्वशक्तिमान को बनाये हुए में श्रेष्ठ है जिस ने उसे

पृथिवी पर फैलाई गई है । किस ने सेंद्र की धातुओं के लिये नदियां ठहराई और २५  
चमकनेवाली बिजुली के लिये मार्ग । जिसने पृथिवी पर दरमायि जहां मनुष्य २६  
नहीं और वन में जहां मनुष्य नहीं । जिसने उबालू और परती को तृप्त करे २७  
और कामल सारापात की कली को निकलवाये ।

क्या सेंद्र का कोई पिता है और ओम की धूँडों को किस ने बना है । पाला ३६  
किस की कोख में निकला और आकाश के घाने का पिता कौन है । जल माना ३७  
पत्थर के नीचे आप को छिपाता है और गरिमाय का संच उम जाता है ।

क्या तू कृतिका के धंधनों को बांध सकता है अथवा मृगांश का धंधन खान सकता ३८  
है । क्या तू राजचक्र को उस की श्रुति में निकाल सकता है अथवा भावुक उस के ३९  
देहों के साथ चला सकता है । क्या तू न्याय को विधि का जानता है और उस को ४०  
प्रभुता पृथिवी पर ठहराना है । क्या तू सेंद्रों का अपना व्यव उठा सकता है जिसमें ४१  
जल को बाढ़ तुझे छापे । क्या तू बिजुलियों को भेज सकता है जिसमें वे आके तुझे ४२  
फटें कि देख इस गहों हैं । किस ने हृदय में बुद्धि डाला है अथवा किस ने मन में ४३  
समझ दिई है । कौन बुद्धि में सेंद्रों का गिनना करता है और कौन न्याय के कुर्यां ४४  
को उंहेलता है । जय धून चहले में बहि जाती है और रुने निपट जाती है । ४५

क्या तू मिट्टी के लिये अरु करेगा अथवा गुआ मिट्टी का जो भर देगा । ४६  
जय वे अपनी मांदां में झुकते हैं और भाड़ी में घान में घेरने हैं । कौन घनेले ४७  
कौरों के लिये आधार मिट्ट करेगा है जय उस के कर्त्तव्य सर्वशक्तिमान को पूजा- ४८  
रते हैं जय वे भोजन दिना भमते हैं ।

उन्नालीमयां पद्य ।

क्या तू उस समय को जानता है जय पहली वक्रियां जनती हैं अथवा हरि- ४९  
जियों के जन्मे की पीड़ा को बता सकता है । क्या तू उन मासों को जिन्हें वे ५०  
पूरा करती हैं गिन सकता है अथवा उन के जन्मे का समय जानता है । वे निहृदुगी ५१  
हैं अपने बच्चे जनती हैं और अपने जन्मे के दुःख को दूर करती हैं । उन के प्रभु गिष्ट ५२  
गुष्ट होते हैं स्वत में बढ़ते हैं निकल जाते हैं और उन के घाम फिर नहीं आते ।

किस ने घनेले गदहे को निर्वन्ध मेजा है और किस ने घनेले गदहे के धंधनों ५३  
को खोला है । जिस का घर में ने वन को घनाया और नानदार खान उस का ५४  
निवास । यह नगर की भीड़ पर हमला है और जंघ्रियों के शब्द को नहीं मानता । ५५  
पर्वतों की दौड़ उस की चराई का स्थान है और यह हर मक्ष हरयाली को हंडना है । ५६

क्या आना तेरी सेवा की इच्छा करेगा क्या तेरी घरनी के निमट रात भर रहेगा । क्या ५७  
तू अरने को उस के धंधन में रेवारी में बांध सकता है क्या यह तेरे पीछे पीछे तराशियां ५८  
में देगा करेगा । क्या तू उस पर आशा रखेगा इस लिये कि यह सदावली है अथवा ५९  
क्या तू अपने परिश्रम का काम उस पर छोड़ेगा । क्या तू उस पर भरोसा रखेगा ६०  
कि यह तेरा दोषा हुआ फिर लखेगा और तेरे खलिदान में बकट्टा करेगा ।

शुतुरमुर्ग का पंख आनन्द के साथ चलता है क्या लगनग के से पंख और डेने ६१  
उस के नहीं । क्योंकि यह अपने खंडे भूमि पर छोड़ जाती है और धान में उन्ने ६२  
सेधती है । और भूल जाती है कि पांथ उन्ने फुलगा और वनपशु उन्ने रोदेगा । ६३



३० उस के नीचे चौखी चौखी ठीकरियां हैं और यह अपना करवरा चास कांदो पर  
 ३१ बिकाता है । यह गहिराई को छंदे की नाईं उखालता है और मसुद को तेल के छंदे  
 ३२ की नाईं बनाता है । यह अपने पीछे की लोकको चमकाता है मानो मनुष्य समझेगा कि  
 ३३ गहिराई के पक्के बाल हैं । पृथियों पर कोई उस के समान नहीं है जो निर्भय बनाया गया ।  
 ३४ वह सारी जंजी वस्तुन को देखता है वह अहंकारियों के सारे सन्तानों का राजा है ।

### चालीसवां पृष्ठ ।

- १ तब रेयूय ने परमेश्वर को उतर दिया और कहा । मैं जानता हूं कि तू सब कुछ  
 २ कर सक्ता है और तेरी कोई धिंता नहीं रुक सकती । यह कौन है जो परामर्श को  
 ३ अज्ञानता से छिपाता है इस लिये मैं ने यह उच्चारण जो नहीं समझा मेरे लिये बड़े  
 ४ आश्चर्य की बातें जो नहीं जानता था । कृपा करके सुन और मैं बातें कहूंगा मैं  
 ५ तुम्ह से प्रश्न कहूंगा और तू सुझे दता । सुनी सुनाई बातों से मैं ने तेरे विषय में अपने  
 ६ कान से सुना था पर अब मेरी आंखों ने तुम्हें देखा है । इस लिये मैं अपने से घिनाता  
 ७ हूं और धूल और राख पर बैठके पश्चात्ताप करता हूं ॥
- ८ और यों हुआ कि जब परमेश्वर ये बातें रेयूय से कह चुका तो परमेश्वर ने तीसानी  
 ९ इलीफाज से कहा कि मेरा कोप तुम्ह पर और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है क्योंकि  
 १० तुम ने मेरे दास रेयूय के समान मेरे विषय में सच्ची बातें नहीं कहीं । सो अब अपने  
 ११ लिये सात बैल और सात मेंढे लेके मेरे दास रेयूय पास जाओ और अपने लिये बलि-  
 १२ दान की भेंट चढ़ाओ और मेरा दास रेयूय तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा क्योंकि मैं उसे  
 १३ गृहण कहूंगा न हो कि मैं तुम्हारी मूर्खता के समान तुम्हारे संग व्यग्रदार कहूं क्यो-  
 १४ कि तुम ने मेरे दास रेयूय के समान मेरे विषय ठीक बातें नहीं कहीं ॥
- १५ सो इलीफाज तीसानी और बिलदाद शुद्धी और जोफार नामाती गये और जैसा पर-  
 १६ मेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसा उन्होंने किया और परमेश्वर ने रेयूय को गृहण किया ॥
- १७ और जब रेयूय ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना किई तब परमेश्वर ने रेयूय की धंधु-  
 १८ आई को पलट दिया और परमेश्वर ने रेयूय को आगे से दूना धन दिया । तब उस  
 १९ के सारे भाई और उस की सारी बहिनें और उस के सारे आगे के जान पहिचानों ने  
 २० आके उस के घर में उस के संग भोजन किया और उस के लिये विलाप किया और उस  
 २१ सारी विपत्ति के लिये जो परमेश्वर ने उस पर डाली थी उसे शांति दिई और हर एक  
 २२ जन ने उसे एक एक टुकड़ा चांदी और हर एक ने उसे सोने की एक एक सुंदरी दिई ॥
- २३ सो परमेश्वर ने रेयूय के अंत को उस के आरंभ से अधिक बर दिया क्योंकि उस  
 २४ के चौदह सहस्र भेड़ बकरी और छः सहस्र जंत और एक सहस्र जोड़े गाय बैल और  
 २५ एक सहस्र गदहियां थीं । और उस के सात बेटे और तीन बेटियां थीं । और उस ने  
 २६ जेठी का नाम जमीसा और दूसरी का नाम कसीआ और तीसरी का नाम करन-  
 २७ हप्पूक रक्खा । और उस सारे देश में कोई स्त्री रेयूय की बेटियों के समान सुन्दर न  
 २८ थी और उन के पिता ने उन्हें उन के भाइयों के साथ अधिकार दिया ॥
- २९ और उस के पीछे रेयूय एक सौ चालीस बरस जीया और अपने बेटे और अपने  
 ३० पोते चार पीढ़ी लें देखे । और रेयूय बृद्ध और पूरे दिनों का होके मर गया ॥

सूत्रा यह उसे उस की तलवार देता है । क्योंकि पर्यन्त उस को चारा देते हैं जहाँ २०  
 सारे वनपशु कलोल करते हैं । यह कृतनार पेड़ों के नीचे नरकट की आड़ और २१  
 दलदल में लेटता है । कृतनार पेड़ उसे अपनी छाया में छाँपते हैं नाले की धँतें २२  
 उसे घेरती हैं । देख नदी यादू पर है पर यह नदी डरता यह चैन में है जय परदन २३  
 उस के मुँह पर यह निकले । क्या कोई उस के देखते हुए उसे पकड़ सकता है २४  
 अथवा उस की नाक को नकेल से रूढ़ सकता है ॥

गकतालीमयां पृथ्वी ।

क्या तू कंटिया में लयिषागान को बाहर खींच सकता है और रस्सी से उस १  
 की जीभ को बांध सकता है । क्या तू उस की नाक में रस्सी लगा सकता है २  
 अथवा उस की डाढ़ को काँटे में रुद्ध सकता है । क्या यह तेरी दाहून भी चित्तियां ३  
 करेगा क्या यह तुझ से कोमल बातें करेगा । क्या यह तुझ से बाधा बांधेगा ४  
 क्या तू उसे सदा के दास के लिये लेगा । क्या सिद्धिया के समान तू उम्मेन खेलेगा ५  
 और अपनी कन्यों के लिये उसे बांधेगा । क्या सहस्र मिनके उस के लिये पंदा ६  
 लगाते हैं क्या उसे व्यापारियों में बाँटते हैं । क्या तू उस की खान को शंकरियों से ७  
 अथवा उस के भिर को सहस्रों के भानों में भर सकता है । अपना दाघ उस पर ८  
 धर संग्राम को स्मरण कर तू फिर ऐसा न करेगा । देख उस की आशा मिथ्या है ९  
 क्या उसे देखते ही मनुष्य गिर न पड़ेगा । कोई ऐसा निर्भय नहीं है कि उसे १०  
 लगाये और कौन ऐसा है जो मेरे आगे खड़ा हो सकता है । किस ने मुझे पाँहने ११  
 कुछ दिया है कि मैं उसे फेर देऊँ स्वर्ग के गने सब कुछ मेरा है ॥

मैं उस के अंग और उस के घन और उस की नजायद की सुन्दरता के चिपय १२  
 चुप न रहूँगा । किस ने उस के दन्त का रूप उधारा है उस के दोहरे जखों में १३  
 कौन जा सकता है । उस के मुँह के फेदाओं का किस ने मोना है उस के दाँतों १४  
 की पाँतियां भयंकर हैं । उस का पराक्रम उस की पोढ़ ठालें हैं जो मानो दृढ़ १५  
 काप से बंद हैं । वे एक दूसरे से ऐसे गुये हैं कि उन के मध्य पर्यन्त का प्रवेश नहीं । १६  
 वे एक दूसरे में सिने हुए हैं वे एकट्ठे ऐसे मटे हैं कि अलग नहीं हो सकते । उस १७  
 की कीक ज्योति चमकाती है और उस की आँखें छिहान के पनकों की नारें हैं ।  
 उस के मुँह से बरसे हुए दीर्घ निकलने हैं और आग की चिनगावियां उकल पड़ती १८  
 हैं । उस के नथुनों से भाफ निकलती है जैसा उमिने के हँडे अथवा कहाड़ी से । २०  
 उस की श्वास में कीड़लें घर उठते हैं और उस के मुँह में लहर निकलती है । उस २१  
 के गले में बल रहता है और उस के आगे शंका नाचती है । उस के मांस के परत २२  
 मिले हुए हैं वे उस पर सटे हुए हैं और दिन नहीं सकते । उस का मन पत्थर की २३  
 नारें पोढ़ है हाँ चक्की के नीचे के पाट की नारें कहा है ॥

उस के उठने से बलवन्त डरते हैं हाँ शय के सारे वे घबरा जाते हैं । यदि कोई उस २४  
 पर खड़ा चलाये तो यह न लगेगा न बरकी न मांग न फरी । यह लोहे की पुआल और २५  
 राखे की सड़ी लकड़ी जानता है । बाण उसे भगा नहीं सकते डेलवांस के पत्थर उस के २६  
 आगे भूमी हो जाते हैं । सोंटे उस के आगे भूमी की नारें गिने जाते हैं और बरकी के २७  
 हिलाने से यह हँसता है ॥

५ मैं लेट गया और सो रहा और जाग उठा हूँ क्योंकि परमेश्वर मेरी रक्षा करता है । मैं जातिगण के सहस्रों के सहस्र से न डरूंगा जिन्हें उन्होंने ने चारों ओर मेरे विरोध में रक्खा है ॥

७ हे परमेश्वर उठ हे मेरे ईश्वर मुझे बचा क्योंकि तू ने मेरे सारे वैरियों के गाल पर थपेड़े मारे हैं तू ने अधर्मियों के दांत तोड़े हैं । परमेश्वर ही से मुक्ति है तेरे लोगों पर तेरी आशीस हो । सिलाह ॥

### चौथा गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर दाऊद का गीत ॥

१ हे मेरे धर्म के ईश्वर जब मैं पुकारूँ तब मुझे उत्तर दे कष्ट में तू ने मुझे छुड़ाया मुझ पर दया कर और मेरी प्रार्थना सुन ले ॥

२ हे मनुष्य के पुत्रो कब लों मेरी प्रतिष्ठा लाज में बदलती जायगी कब लों तुम वृथा को प्रीति करोगे और झूठ के पीछे रहोगे । सिलाह । और जानो कि परमेश्वर ने धर्मी को अपने लिये अलग कर लिया है जब मैं परमेश्वर को पुकारूँ तब वह सुन लेगा ॥

४ क्रोध करके पाप न करो अपने बिलौने पर अपने मन में कहे और चुप रहो ।

५ सिलाह । धर्म के बलिदान चढ़ाओ और परमेश्वर पर भरोसा करो ॥

६ बहुतेरे कहते हैं कि हमें कौन भलाई दिखावेगा हे परमेश्वर अपने स्वरूप की

७ ज्योति हम पर उदय कर । जिस समय से उन का अनाज और उन का दाखरस

८ अधिक हो गया तू ने मेरे मन को अति आनन्द किया है । चैन मैं मैं एक ही साथ लेटूंगा और सो जाऊंगा क्योंकि तू ही हे परमेश्वर अकेला मुझे चैन में रहने देगा ॥

### पाँचवाँ गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये अधिकारों के विषय में दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मेरी बातों पर कान धर मेरे सोच पर ध्यान रख । हे मेरे राजा और मेरे ईश्वर मेरी दोहाई के शब्द को सुन क्योंकि मैं तुझ ही से प्रार्थना करूंगा ।

३ हे परमेश्वर तू बिहान को मेरा शब्द सुनेगा बिहान को मैं अपनी प्रार्थना को सिद्ध करूंगा और ताकता रहूंगा ॥

४ क्योंकि तू वह सर्वशक्तिमान नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो दुष्ट तेरे साथ न रहेगा । घमंडी तेरी आंखों के साम्हने खड़े न रहेंगे तू सारे कुकर्मियों से घिन करता है । तू मिथ्यावादियों को नाश करेगा अधिक और क्ली से परमेश्वर घिन रखेगा । और मैं तेरी दया की बहुताई से तेरे घर में आऊंगा तेरे पवित्र मन्दिर की ओर तेरे डर के साथ दण्डवत करूंगा ॥

८ हे परमेश्वर मेरे वैरियों के कारण से अपने धर्म में मेरी अगुआई कर मेरे आगे अपने मार्ग को सीधा कर । क्योंकि उस के मुँह में कुछ सच्चाई नहीं उन का मन ही दुष्ट है उन का गला खुली हुई समाधि है वे अपनी जीभ को चिकनी करते हैं । हे ईश्वर उन्हें दोषी ठहरा वे अपने परामर्शों से आप ही गिर जायेंगे उन के अपराधों की बहुताई में उन्हें धकिया दे क्योंकि उन्होंने ने तुझ से विरोध किया है ॥

# गीता की पुस्तक ।

## पहिला गीत ।

यह सनुष क्या ही धन्य है जो पापियों के मत पर नहीं चला और अपराधियों १  
के पथ पर नहीं खड़ा हुआ और निन्दकों की सभा में नहीं बैठा है । परन्तु पर- २  
मेश्वर की व्यवस्था में उस की प्रसन्नता है और उस की व्यवस्था पर वह दिन  
रात ध्यान करेगा ॥

और वह उस पेड़ के समान होगा जो जल की धारों पर लगाया गया हो ३  
अपना फल अपने जड़ पर देगा और उस के पत्ते न सुखावेंगे और जो वह करेगा  
सब भाग्यमानी ने करेगा । अधर्मी उसे नहीं परन्तु उस भूमे के समान है जिसे ४  
व्यार उड़ा ले जाती है ॥

इस कारण से अधर्मी न्याय में और अपराधी धर्मियों की सभा में खड़े न रहेंगे । ५  
क्योंकि परमेश्वर धर्मियों का मार्ग जानता है पर अधर्मियों का मार्ग नष्ट हो जायगा ॥ ६

## दूसरा गीत ।

अन्यदेशी किस लिये हुस्न मचाने हैं और लोग अनर्थ चिन्ता करने हैं । जगत ७  
को राजा सामंता करते हैं और प्रधान परमेश्वर और उस के समीप के विरुद्ध  
आपस में परामर्श करते हैं । कि आओ हम उन के बंधनों को तोड़ डालें और ८  
उन की शक्तियों को अपने घाम से फेंक दें ॥

स्वर्ग पर बैठा हुआ वह हमें परमेश्वर उन्हीं ठठ्ठों में उड़ावेगा । तब वह ९  
अपने कोप में उन से बातें करेगा और अपने महा कोप में उन्हीं कंपावेगा । और ६  
मैं ने अपने राजा को अपने पवित्र पटाड़ मैदान पर स्थिर किया है ॥

मैं नियम को वर्णन करूंगा परमेश्वर ने सुभ से कहा कि तू मेरा पुत्र है मैं ने ७  
आज तुझे उत्पन्न किया । सुभ से मांग और मैं अन्यदेशियों को तेरे वश में और ८  
पृथिवी के मित्त्रों को तेरे अधिकार में देऊंगा । तू उन्हीं लोहे के राजदण्ड से ९  
तोड़ेगा कुस्तर के पात्र की नाईं उन्हीं चूर चूर कर डालेगा ॥

और अब हे राजाओ दुष्टिमान होओ हे पृथिवी के न्यायियों उपदेश को १०  
गृहण करो । हर के साथ परमेश्वर की सेवा करो और कांपते हुए आनन्द करो । ११  
पुत्र को चूसो कि वह गिमिया न जाय और तुम वगदके नाण हो क्योंकि उस का १२  
क्रोध गीद भड़केगा उस के समस्त भरोसा रखनेवाले क्या ही धन्य हैं ॥

## तीसरा गीत ।

दाऊद का गीत जब वह अपने बेटे अविमलम के मास्ते से भागा ॥

हे परमेश्वर मेरे दुःखदायक क्या ही बढ़ गये बहुतरे मेरे विरुद्ध उठते हैं । बहुतरे १  
मेरे प्राण को कहते हैं कि उस के लिये ईश्वर से कुछ मुक्ति नहीं है । सिलाह ॥ २

और तू हे परमेश्वर मेरे चहुँओर डाल मेरी प्रतिष्ठा और मेरा कंधा करनेवाला ३  
है । जब मैं अपने शब्द से परमेश्वर को पुकारता हूँ तब वह अपने पवित्र पटाड़ ४  
पर से मुझे उत्तर देता है । सिलाह ॥

१३ किया है । और उस ने उस की और मृत्यु के इथियार साधे हैं वह अपने बाणों को जलनेवाले बनावेगा ॥

१४ देखो उसे बुराई की पीड़ होगी और उसे अपकार का गर्भ रहेगा और झूठ १५ को जनेगा । उस ने कुआ खोदा और उसे गहिरा किया है और उस गड़हे में १६ आप ही गिरा है जिसे वह बनाता है । उस का अपकार उस के सिर पर लौट १७ आयेगा और उस की खोपड़ी पर उस का उपद्रव उतरिगा । मैं परमेश्वर की स्तुति उस के धर्म के समान करूंगा और परमेश्वर अति महान के नाम की स्तुति में गाऊंगा ॥

### आठवां गीत ।

प्रधान वज्रनिये के लिये गितीत पर दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही बिभवमय है अपनी २ इस महिमा को स्वर्गों के ऊपर प्रकाश कर । तू ने अपने वैरियों के लिये जिसते वैरी और पलटालेनेहारे को चुप करे बालकों और दूधपीवकों के मुंह से शक्ति की नेत्र डाली है ॥

३ जब मैं तेरे स्वर्गों तेरे हाथों की क्रिया चांद और तारों को जिन्हें तू ने ४ ठहराया है देखता हूं । तो स्मरणहार मनुष्य क्या है कि तू उस का चेत करे और ५ मनुष्य का पुत्र क्या कि तू उस पर दृष्टि करे । और उसे ईश्वरता से थोड़ा सा ६ छोटा करे और विश्व और प्रतिष्ठा का मुकुट उस पर रखे । और अपने हाथ के ७ कार्यों पर उसे प्रभुता देवे तू ने सब कुछ उस के पांवों के नीचे रक्खा है । मुंड ८ और गाय बैल सब के सब और जंगल के बनपशु भी । आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां और जो समुद्र के पथों में चलते हैं ॥

९ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही बिभवमय है ॥  
नवां गीत ।

प्रधान वज्रनिये के लिये पुत्र की मृत्यु पर दाऊद का गीत ॥

१ मैं अपने सारे मन से परमेश्वर की स्तुति करूंगा तेरे सारे आश्चर्यों को वर्णन २ करूंगा । मैं तुझ में आनन्द और आह्लाद करूंगा हे अति महान मैं तेरे नाम की स्तुति में गाऊंगा ॥

३ जब मेरे बैरी पलट जायेंगे तब वे तेरे आगे से ठोकर खायेंगे और नाश होंगे । ४ क्योंकि तू ने मेरा झगड़ा और मेरा न्याय चुकाया है तू सच्चाई से न्याय करते हुए ५ सिंहासन पर बैठा है । तू ने अन्यदेशियों को दपटा दुष्ट को नष्ट किया उन का नाम ६ सदा के लिये मिटा डाला है । बैरी की दुष्टतायें सर्वदा के लिये समाप्त हुईं और तू ने उन के नगरों को उजाड़ा है उन का स्मरण उन्हीं के साथ मिट गया । ७ और परमेश्वर सदा लों बिमान पर बैठा रहेगा उस ने न्याय के लिये अपने सिंहासन को स्थापित किया है । और वही धर्म के साथ संसार का विचार करेगा ८ खराई के साथ लोगों का न्याय करेगा । और परमेश्वर सत्ताये हुए के लिये ऊंचा ९ स्थान होगा ऊंचा स्थान दुःख के समयों में । और तेरे नाम के ज्ञानेहारे तुझ पर भरोसा रखेंगे क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपने खोजियों को नहीं छोड़ा है ॥

और तेरे सारे भरोसा रखनेहारे मगन होंगे वे सदा आनन्द करेंगे और तू उन ११  
पर आड़ करेगा और तेरे नाम के प्रीति रखनेहारे तुझ से आनन्दित होंगे । क्योंकि १२  
हे परमेश्वर तू ही धर्म की आशीर्ष देगा डाल की नाईं तू उसे कृपा से ढाँपेगा ॥

छठवां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये तार के वाजों के साथ आठवीं तर गाया जाय

दाऊद का गीत ॥

हे परमेश्वर अपनी रिस से मुझे मत दपट और न अपने कोप की तम से मुझे १  
दगड दे । हे परमेश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मैं कुम्हला गया हे परमेश्वर २  
मुझे चंगा कर क्योंकि मेरी हड्डियां शर्यगती हैं । और मेरा प्राण प्रचुत शर्यराता ३  
है और तू हे परमेश्वर कर लो । हे परमेश्वर फिर या मेरे प्राण को छुड़ा अपनी ४  
दया के कारण मुझे बचा । क्योंकि मृत्यु में तेरा कुछ स्मरण नहीं समाधि में ५  
कौन तेरा धन्यवाद करेगा । मैं अपने कराहने से थक गया हूँ रात अपने थकाने ६  
को भिगाऊँगा अपनी सेज अपने आंसुओं से भिगाऊँगा । मेरी आँख गिजाहट से ७  
धुंधला गई मेरे सारे वैरियों के कारण दुःख गई ॥

हे सारे कुकर्मियों मुझ से दूर होओ क्योंकि परमेश्वर ने मेरे राने का शब्द सुना ८  
है । परमेश्वर ने मेरी चिन्ता सुनी है परमेश्वर मेरी प्रार्थना श्रवण करेगा । ९  
मेरे सारे वैरी लज्जित और अत्यन्त शर्यरा जायेंगे वे पलट जायेंगे और अकस्मात् १०  
लज्जित होंगे ॥

सातवां गीत ।

दाऊद की हंवांहेली का गीत जो उस ने परमेश्वर के लिये दिनयमीनी कूश  
के बत्तनों के विषय में गाया ॥

हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मेरे सारे सतानेहारों १  
से मुझे बचा और मुझे छुड़ा । न दैवे कि वह सिंघ की नाईं मेरे प्राण को फाड़े २  
टुकड़े टुकड़े करे और कोई होड़वैया न हो ॥

हे परमेश्वर मेरे ईश्वर यदि मैं ने यह किया हो यदि मेरे हाथों में टेढ़ाई ३  
हो । यदि मैं ने अपने मित्र से छुराई किई हो और जो अकारण मेरा वैरी या ४  
उसे लूटा हो । तो वैरी मेरे प्राण का पीछा करे और पकड़ ले और मेरे जीवन ५  
को पूर्णवधि पर लताड़े और मेरी प्रतिष्ठा को धूल में मिलावे । सिलाह ॥

हे परमेश्वर अपने क्रोध में उठ मेरे वैरियों के कोपों के मध्य में आप को ६  
जंचा कर और मेरे लिये जाम न्याय की आज्ञा तू ने किई है । और लोगों की ७  
मेंडली तुझे घेरे और तू उस के ऊपर ऊँचे पर फिर जा । परमेश्वर लोगों का ८  
न्याय करेगा हे परमेश्वर मेरे धर्म और मेरी खराई के समान जो मेरे ऊपर है ९  
मेरा न्याय कर । दाय कि दुष्टों की छुराई नाश हो और तू धर्म की दृढ़ करे १०  
और हे धर्म ईश्वर तू मनों और अन्तःकरों का जांचनेहारा है ॥

मेरी डाल ईश्वर पर है जो मेरे मनों का बचानेहारा है । ईश्वर धर्म का ११  
विचार करता है और सर्वशक्तिमान प्रतिदिन क्रोधित है । यदि वह न फिरे तो १२  
वह अपनी तलवार पर धाड़ धरेगा उस ने अपने धनुष को चढ़ाया और उसे लैस



१६ परमेश्वर सनातन से सनातन लों राजा रहेगा जातिगण उस की भूमि से नष्ट  
 १७ हुए । हे परमेश्वर तू ने दीनों की इच्छा सुनी है तू उन के मनो को दृढ़ करेगा  
 १८ अपना कान धरके सुनेगा । जिसमें अनाथ और सताये हुए का न्याय करे मरण-  
 हार मनुष्य जो पृथिवी से है फिर विरुद्ध न करेगा ॥

ग्यारहवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रख्खा है तुम क्योंकर मेरे प्राण से कहेगो कि  
 २ चिड़िया की नाईं तुम अपने पहाड़ पर भाग जाओ । क्योंकि देखो दुष्ट धनुष को  
 ३ छड़ाया चाहते हैं उन्हें ने अपना बाण पनच पर छड़ाया है जिसमें खरे मनवालों  
 ४ को अंधेरे में मारे । क्योंकि खंभा गिरा चाहते हैं धर्मी ने क्या किया है ॥  
 ५ परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में है परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग पर है उस  
 ६ की आंखें देखती हैं उस की पलकें मनुष्य के सन्तानों को परखती हैं । परमेश्वर  
 ७ धर्मी को जांचता है और दुष्ट और अंधेरे के प्रेमी से उस का आत्मा घिन करता  
 ८ है । वह दुष्टों पर फंदे आग और गंधक बरसावेगा और भयंकर आंधी उन के  
 ९ कटोरे का भाग होगी । क्योंकि परमेश्वर धर्मी है वह धर्म को प्यार करता है  
 १० उस का रूप खरे जन को देखता है ॥

बारहवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये आठवीं पर दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर वचा क्योंकि साधु जन हो चुका क्योंकि विश्वासी मनुष्य के  
 २ सन्तान में से क्षीण हो गये । वे हर एक अपने परोसी से झूठ बोलते हैं चापलूसी  
 ३ के होठ और दोहरे मन से धार्ति करते हैं । परमेश्वर सारे चापलूसी के होठों को  
 ४ और उस जीभ को जो बड़ा बोल बोलती है काट डाले । जिन्होंने ने कहा है  
 ५ कि हम अपनी जीभ से जीतेंगे हमारे होठ हमारे साथ हैं कौन हमारा प्रभु है ॥  
 ६ दुःखियों की दरिद्रता से और कंगालों की ठंडी सांस से परमेश्वर बाला  
 ७ चाहता है कि अथ मैं उठूंगा मैं उसे जो उस के लिये हांफता है चैन में रखूंगा ।  
 ८ परमेश्वर की धार्ति पवित्र धार्ति हैं पृथिवी के महान मनुष्य के लिये तार्ई हुई हैं  
 ९ सात बार निर्मल किई हुई चांदी हैं । हे परमेश्वर तू ही उन्हें रक्षा में रखेगा  
 १० तू उसे इस पीढ़ी से सदा लों बचावेगा । दुष्ट चारों ओर चलते फिरते हैं पर  
 ११ मनुष्य के सन्तान के लिये उन की यह नीचाई मानो ऊंचाई है ॥

तेरहवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर तू कब लों मुझे सनातन लों भूला रहेगा तू कब लों अपना मुंह  
 २ मुझ से छिपावेगा । मैं कब लों अपने प्राण में परामर्श और अपने मन में शोक  
 ३ प्रतिदिन रखूंगा मेरा वैरी कब लों मुझ पर जंचा रहेगा ॥  
 ४ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर दृष्टि कर मेरी सुन मेरी आंखें उंजियाली कर कदाचित्  
 ५ मैं मृत्यु में सोऊं । कदाचित् मेरा वैरी कहे कि मैं ने उसे जीता और मेरे बिरोधी  
 ६ जय में टल जाऊंगा आनन्द करे ॥

परमेश्वर जो मैदून में घास करता है उस की स्तुति में गाओ लोगों में उस ११  
के बड़े कार्यों का वर्णन करो । क्योंकि लोह का नेखा नेते हुए उस ने उस का १२  
स्मरण किया है वह दुःखियों की दोहाई को नहीं भूला ॥

हे परमेश्वर मुझ पर दया कर मेरे दुःख को जो मेरे चैरियों से है देख तू कि १३  
मृत्यु के द्वारों से मेरा उठानेधारा है । जिसमें मैं मैदून की घेटी के द्वारों में तेरी १४  
सारी स्तुति वर्णन करूँ तेरी मुक्ति से आनन्दित होऊँ ॥

अन्यदेशी उस गड़हे में लिये उन्हीं ने खोदा धर्म गये उस फंदे में जिसे उन्हीं ने १५  
छिपाया उन्हीं का पांव फंसा । परमेश्वर जाना गया उस ने न्याय किया है दुष्ट १६  
अपने ही छावों के कार्य में फंस गया । छिगायून । सिलाह ॥

दुष्ट समाधि लो पलट जायेंगे हाँ ईश्वर को भूलनेधारे सारे जातिगार । क्यों- १७  
कि अंगाल सदा भुलाया न जायगा और न दीनों की आशा सदा लो नष्ट होगी ॥

उठ हे परमेश्वर मरगदर मनुष्य प्रयत्न न होने पाये अन्यदेशियों का विचार १८  
तेरे आगे किया जाये । हे परमेश्वर उन्हीं भय में डाल जातिगार लार्द कि हम २०  
मरगदर मनुष्य हैं । सिलाह ॥

### दसवां गीत ।

हे परमेश्वर तू किस लिये दूर गढ़ा रहता है सकंती के समयों में अपने लार्द १  
छिपाता है । दुष्ट के अहंकार से दुःखी जलता है वे उन जगुतों में जो उन्हीं ने २  
निकाली हैं फंस जाते हैं । क्योंकि दुष्ट अपने प्राण की लालसा पर बड़ाई किया ३  
करता है और अपनी बच्छा पूरी करके परमेश्वर को धन्य कहता और उस  
की निन्दा करता है । दुष्ट अपने अहंकार में परमेश्वर का खोजी न होया उस ४  
की सारी चिंतायें ये हैं कि ईश्वर है ही नहीं । उस के मार्ग घर छड़ी गिर रहते ५  
हैं तेरे न्याय उस की दृष्टि से ऊंचे हैं वह अपने सारे चैरियों पर फूंक सारता है ।  
उस ने अपने मन में कहा है कि मैं न टूटूंगा पीढ़ी में पीढ़ी लो मैं बड़ी हूँ जो ६  
विपत्ति में न पहुँगा । उस का मुँह धिक्कार और कपट और अंधेर से भरा है उस ७  
की जीभ के तले अपकार और बुराई है । वह गांव के ठूकों में बैठता है गुप्त ८  
स्थानों में निर्दोष को घात करता है उस की आंखें दुःखी के लिये छिपती हैं ।  
वह मित्र की नाईं जो अपनी भाड़ी में हो गुप्त स्थान में ठूके में रहता है वह ९  
दुःखी के पकड़ने के लिये ताक में रहता है दुःखी को अपने जाल में खँचके  
पकड़ना है । और वह दबके बैठ जाता है और उस के बलवंतों से दुःखी गिर १०  
पड़ते हैं । उस ने अपने मन में कहा है कि सर्वशक्तिमान भूल गया उस ने अपना ११  
मुँह छिपाया है उस ने कभी नहीं देखा ॥

हे परमेश्वर उठ हे सर्वशक्तिमान अपना हाथ बड़ा दुःखियों को न भूल । १२  
किस कारण से दुष्ट ने ईश्वर को तुच्छ जाना और अपने मन में कहा है कि तू पृष्ठ- १३  
पाठ न करेगा । तू ने देखा है क्योंकि तू अपकार और खिजाहट को देखता है १४  
जिसमें अपने हाथ में रखे दुःखी तुझ पर अपना बोझ छोड़ता है अनाथ का उप-  
कारी तू ही दुष्टा है । दुष्ट की भुजा ताड़ और दुरे मनुष्य की दुष्टता को तू १५  
ठूँड़ेगा और उसे न पायेगा ॥

१ क्योंकि वह मेरे दहिने हाथ है मैं न टूलंगा । इस लिये मेरा मन मगन हुआ  
 १० और मेरे बिभव ने आनन्द किया हाँ मेरा शरीर चैन से रहेगा । क्योंकि तू मेरा  
 ११ प्राण समाधि को न सौंपेगा तू अपने धर्ममय को सड़ने न देगा । तू मुझे जीवन  
 का मार्ग बतलावेगा तेरे आगे आनन्द की भरपूरी है तेरे दहिने हाथ में सनातन  
 का विलास है ॥

सत्रहवां गीत ।

दाऊद की प्रार्थना ॥

१ हे परमेश्वर धर्म को सुन मेरे उस चिल्लाने पर सुरत लगा मेरी उस प्रार्थना  
 २ पर कान धर जो निष्कपट होंठों से है । मेरा न्याय तेरे आगे से होगा तेरी आंखें  
 ३ खराबियों को देखेंगी । तू ने मेरे मन को परखा रात को तू मेरे पास आया तू  
 ४ ने मुझे ताया तू कुछ न पावेगा मेरा मुंह मेरे ध्यान से अधिक न बढेगा । तेरे  
 होंठों के वचन के द्वारा से जो मनुष्य के सन्तान के कार्यों के विषय में है मैं ने  
 ५ अपने को नाशक के पथों से बचा रक्खा है । मेरे डगों ने तेरे पथों को पकड़ा  
 मेरे पांव नहीं टले ॥

६ मैं ने तुझे पुकारा है क्योंकि हे सर्वशक्तिमान तू मुझे उत्तर देगा अपना कान  
 ७ मेरी और भुका मेरी बात सुन । हे तू कि अपने दहिने हाथ से अपने आश्रितों  
 ८ को उन के वैरियों से बचाता है उन पर अपनी दया को मुख्य कर । आंख  
 की पुतली की नाईं मेरी रक्षा कर तू अपने पंखों के छाया तले मुझे छिपावेगा ।  
 ९ दुष्टों के साम्हने से जिन्होंने मुझे बिगाड़ा है मेरे प्राण के वैरी मुझे घेर लेंगे ।  
 १० वे अपनी चिकनाई में ठप गये उन्हीं ने अपने मुंह से घमंड में शब्द उच्चारित है ।  
 ११ अब उन्हीं ने हमारे दर डग पर हमें घेरा है वे अपनी आंखें लगाये रहेंगे जिसमें  
 १२ भूमि पर सीधे मार्ग से हट जायें । उस का सादृश्य सिंह का सा है वह फाड़ने  
 १३ चाहता है और युवा सिंह का सा जो गुप्त स्थानों में बैठता है । हे परमेश्वर उठ  
 उस का साम्हना कर उसे भुका दे अपनी तलवार से मेरे प्राण को दुष्ट से बचा ।  
 १४ अपने हाथ से हे परमेश्वर मेरे प्राण को मनुष्यों से बचा हाँ मनुष्यों से और संसार  
 से उन का भाग इसी जीवन में है और तू अपने किये हुए धन से उन का पेट  
 भर देगा वे लड़कों से संतुष्ट होंगे और अपनी बचती अपने बच्चों के लिये कोड़  
 १५ जायेंगे । मैं धर्म में तेरा मुंह देखूंगा जब मैं जागूंगा तब तेरे रूप से तृप्त होऊंगा ॥

अठारहवां गीत ।

प्रधान बजिनिये के लिये परमेश्वर के सेवक दाऊद का गीत जिस ने परमेश्वर  
 से इस गीत की बातें कहीं जिस दिन परमेश्वर ने उसे उस के सारे वैरियों  
 के पंजे से और साजल के हाथ से कुड़ाया और कहा ॥

१ हे परमेश्वर मेरे बल में तुझे प्यार करूंगा । परमेश्वर मेरी चटान और मेरा  
 गढ़ और मेरा कुड़वैया है मेरा सर्वशक्तिमान मेरी चटान है मैं उस पर भरोसा  
 ३ रखूंगा मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का सींग मेरा ऊंचा स्थान । मैं परमेश्वर को  
 जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा और अपने वैरियों से बच जाऊंगा ॥  
 ४ मृत्यु के बंधनों ने मुझे घेरा है और दुष्टता की बाढ़ें मुझे डराया करेंगी ।

और मैं ने तेरी दया पर भरोसा रक्खा है मेरा मन तेरी मुक्ति से आनन्द करे । ५  
मैं परमेश्वर की स्तुति गाऊंगा क्योंकि उस ने मुझे अक्का उपवहार किया है । ६  
चौदहवां गीत ।

प्रधान अज्ञानिये के लिये दाऊद का गीत ॥

सूत्र ने अपने मन से कहा है कि ईश्वर है ही नहीं उन्हीं ने बिगाड़ किया १  
धिनैने कार्य किये हैं कोई सुकर्म नहीं । परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्य के २  
सन्तान पर भांका जिसमें देखे कि कोई बुद्धिमान है अर्थात् ईश्वर को ठूँटता  
अथवा नहीं । वे सब के सब भटक गये वे एक ही साथ बिगाड़ गये कोई धर्म ३  
नहीं एक भी नहीं ॥

व्या यह सारे कुकर्म नहीं जानते जो मेरे लोगों को खाते जैसे रोटी खाते ४  
हैं और परमेश्वर का नाम नहीं लेते । वहाँ वे बहुत ही दूरे क्योंकि ईश्वर धर्म ५  
के वंश में है । तुम दुःखी के परामर्श का निरादर करोगे क्योंकि परमेश्वर उस ६  
का शरणस्थान है ॥

हाय कि परमेश्वर के अपने बंधुवै लोगों के पास फिर आने में मैटून से इस- ७  
रायल की मुक्ति हो तब यशकूय आनन्दित और इनरायल नगन हो ॥

पंद्रहवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

हे परमेश्वर तेरे तंत्र में कौन रहेगा तेरे पवित्र पहाड़ में कौन व्यास करेगा । १  
अपने मन से सीधा चलते हुए और धर्म करते हुए और सब बोलते हुए । २  
उस ने अपनी जीभ से चुगली नहीं किई अपने परोसी की हानि नहीं किई और ३  
अपने परोसी पर अपवाद नहीं लगाया । निकम्मा उस की आंखों में निन्दित है ४  
और वह परमेश्वर के दरवाजों की प्रतिष्ठा करता है उस ने अपनी हानि करनेदारी  
क्रिया गवाई और न पलटेगा । उस ने अपनी रोकड़ टपाज के लिये नहीं दिई ५  
और न निर्दोषी के लिये अकोर लिया है यही करते हुए वह सदा लों न टलेगा ॥

सोलहवां गीत ।

दाऊद का भेद ॥

हे सर्वशक्तिमान मेरी रखवाली कर क्योंकि मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है १  
हे मेरे प्राण तू ने परमेश्वर से कहा है कि तू ही प्रभु है मेरी भलाई तुझ २  
बिना नहीं । उन साधुन के संग जो पृथिवी पर हैं और उत्तमों के जिन में मेरा ३  
सारा आनन्द है ॥

उन के शोक बहुत होंगे जिन्होंने ने आन देय के संग गठिबंधन किया है उन ४  
के लोटू के तपावन में न तपाऊंगा और न अपने छोटे में उन के नाम लूंगा ।  
परमेश्वर मेरा ठहराया हुआ भाग और मेरा कटोरा है तू ही मेरे पास का बढती ५  
देगा । नापने की रस्मियां मेरे लिये सनभावने स्थानों में पड़ी हैं हां मेरा अधिकार ६  
सुधरा है ॥

मैं परमेश्वर का धन्य मानूंगा जिस ने मुझे संय दिया है हां रात को मेरे ७  
अंतःकरण ने मुझे मिखाया है । मैं ने परमेश्वर को सदा अपने सामने रक्खा है ८

३३ ने मेरा मार्ग शुद्ध किया है । जो मेरे पाँव को हरिणियों के से बनाता है और  
 ३४ मेरी जंघाओं पर मुझे खड़ा करता है । जो मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता  
 ३५ है और मेरी बांहों ने पीतल का धनुष भुकाया है । और तू ने मुझे अपनी मुक्ति  
 की ठाल दिई है और तेरा दाहिना हाथ मुझे संभालेगा और तेरी कोमलता मुझे  
 ३६ बढावेगी । तू मेरे डगों को मेरे नीचे बढावेगा और मेरे घुटने न हटेंगे ।  
 ३७ मैं अपने बैरियों का पीछा करूँगा और उन्हें जा लूँगा और पीछे न फिरेगा जब  
 ३८ लों वे नाश न हों । मैं उन्हें पटक दूँगा और वे उठ न सकेंगे वे मेरे पाँव के  
 ३९ नीचे गिर पड़ेंगे । और तू ने संग्राम के लिये मेरी कटि दृढ़ता से बाँधी है तू मेरे  
 ४० बिरोधियों को मेरे नीचे भुकावेगा । और तू ने मेरे बैरियों की पीठ मुझे दिखाई  
 ४१ और मैं अपने शत्रुओं को नाश करूँगा । वे दोहाई देंगे और कोई बचानेद्वारा  
 ४२ नहीं परमेश्वर को और वह उन की नहीं सुनता है । और मैं उन्हें धूल की नाई  
 जो व्यापार के आगे है पीस डालूँगा मार्गों की कीच की नाई उन्हें फेंक दूँगा ।  
 ४३ तू मुझे लोगों के झगड़ों से कुड़ावेगा तू मुझे अन्यदेशियों का अध्यक्ष ठहरावेगा  
 ४४ जिन लोगों को मैं ने नहीं जाना वे मेरी सेवा करेंगे । कान से सुनते ही वे मुझे  
 ४५ मानेंगे परदेशियों के वंश मुझ से झूठ बोलेंगे । परदेशियों के वंश मुरझा जायेंगे  
 और अपने बाड़ों से धर्ररा जायेंगे ॥

४६ परमेश्वर जीवता है और धन्य मेरी चटान और मेरी मुक्ति का ईश्वर महान  
 ४७ होगा । अर्थात् सर्वशक्तिमान जो मेरा पलटा लेता है और जिस ने जातिगणों  
 ४८ को मेरे नीचे दबाया है । जो मुझे मेरे बैरियों से कुड़ाता है हाँ मेरे बिरोधियों  
 ४९ से तू मुझे जंचा करेगा अंधेरी मनुष्य से तू मुझे कुड़ावेगा । इस लिये हे परमे-  
 श्वर मैं जातिगणों में तेरा धन्य मानूँगा और तेरे नाम की स्तुति में गीत गाऊँगा ।  
 ५० जो अपने राजा को बड़ी बड़ी मुक्ति देता है और अपने अभिषिक्त अर्थात् दाऊद  
 और उस के वंश पर सनातन लों दया करता है ॥

### उन्नीसवां गीत ।

प्रधान बजानिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ स्वर्ग सर्वशक्तिमान की महिमा वर्णन करते हैं और आकाश उस के हाथों के  
 २ कर्म का संदेश देते हैं । एक दिन दूसरे दिन से बातें वर्णन किया करता है और  
 ३ एक रात दूसरी रात को ज्ञान देती रहती है । न उन का कुछ शब्द है और न  
 ४ उन की कोई बातें उन का शब्द तनिक भी नहीं सुना जाता । सारी पृथिवी में  
 उन की रेखा पड़ी है और जगत के अंत लों उन की बातें हैं सूर्य के लिये  
 ५ उस ने उन में तंबू खड़ा किया है । और वह दुल्हे की नाई अपने एकान्त स्थान  
 ६ से निकलता है अलवन्त की नाई मार्ग में दौड़ने से आनन्दित रहता है । स्वर्गों  
 के खूंट से उस का निकलना और उस का चक्र उन के अंत लों है और उस की  
 घाम से कुछ किया नहीं है ॥

७ परमेश्वर की व्यवस्था शुद्ध आत्मा को यथावस्थित करनेवाली है परमेश्वर  
 ८ की साक्षी सच्ची भोक्तों को बुद्धिमान करनेवाली है । परमेश्वर की विधि ठीक मन  
 को मगन करनेवाली है परमेश्वर की आज्ञा पवित्र आंखों को उजियाला

समाधि के बंधनों ने मुझे घेरा मृत्यु के जंदों ने मेरा साम्हना किया है । मैं अपनी १  
 सकलता में परमेश्वर को पुकारूंगा और अपने ईश्वर की दोहाई दूंगा वह अपने  
 मन्दिर से मेरा शब्द सुनेगा और मेरी दोहाई उस के आगे हाँ उस के कानों में २  
 पहुँचेगी । तब पृथिवी कांपे और शर्यगाई और पहाड़ों की नैर्घ हिल गईं और ३  
 शर्यरा गईं क्योंकि वह क्रोधित था । उस के क्रोध से धूआँ उठा और उस के ४  
 मुँह की आग भस्म करती है अंगारे उल्ले धधके । और उस ने स्वर्गों को झुकाया ५  
 और नीचे उतारा और उस के पाँव तले घटा थी । और वह करोधी पर चढ़ा १०  
 और उड़ा और उस ने पयन के डैनों पर उड़ान किया । उस ने अपने चारों ओर ११  
 अधियारे को अपनी आँठ ठहराया अपनी आड़ पानी का अधेरा बादलों की  
 घटाये । उस धमक से जो उन के आगे थी उस के बादल छट गये आने और १२  
 अंगारे । तब परमेश्वर स्वर्गों में गर्जा और अति सदान ने अपना शब्द उच्चार १३  
 आले और अंगारे । तब उस ने अपने दाग चलाये और उन्टं छिन्न भिन्न किया १४  
 और विजुलियाँ चमकाईं और उन्टं छवरा दिया । तब हे परमेश्वर तेरी हाँट से १५  
 और तेरे क्रोध के श्वास के झोंके से पानी की नालियाँ देख पड़ीं और जगत की  
 नैर्घ खुल गईं ॥

वह ऊपर से अपना हाथ बढ़ावेगा मुझे ले लेगा मुझे दहे पानी में से खँच १६  
 लेगा । वह मेरे बैरी से मुझे छुड़ावेगा क्योंकि वह बलवंत है और मेरे हाँट १७  
 रखनेदारों से क्योंकि वे मुझ से अति बली हैं । वे मेरी विपत्ति के दिन मेरा १८  
 साम्हना करेंगे और परमेश्वर मेरे लिये ठेक हुआ है । और मुझे फैलाव स्थान १९  
 में लाया वह मुझे बचावेगा क्योंकि वह मुझे प्रसन्न है ॥

परमेश्वर मेरे धर्म के समान मुझ से व्यवहार करेगा मेरे हाथों की पवित्रता २०  
 के समान वह मुझे प्रतिफल देगा । क्योंकि मैं ने परमेश्वर के मार्गों को मनन २१  
 किया है और अपने ईश्वर से न फिरा । क्योंकि उस के मारे न्याय मेरे साम्हने २२  
 हैं और उस की विधि को मैं अपने से दूर न करूँगा । और मैं उस के साथ २३  
 निर्दोष रहा और आप को अपनी घुराई से बचा रक्खा । और परमेश्वर ने मेरे २४  
 धर्म के समान और मेरे हाथों की पवित्रता के समान जो उस की आँखों के  
 साम्हने थी मुझे प्रतिफल दिया है ॥

साधु के साथ तू अपने तहें साधु दिखावेगा सज्जन मनुष्य के साथ तू अपने २५  
 तहें सज्जन दिखावेगा । पवित्र किये हुए के साथ तू अपने तहें पवित्र दिखावेगा २६  
 और टेढ़े के साथ तू अपने तहें टेढ़ा दिखावेगा । क्योंकि तू ही दुःखी लोगों को २७  
 बचावेगा और ऊँची आँखों को नीची करेगा । क्योंकि तू ही मेरा दीपक चारेगा २८  
 परमेश्वर मेरा ईश्वर मेरे अधियारे को उलियाला करेगा । क्योंकि मैं तेरी सहाय २९  
 से जथा पर दौड़ूँगा और अपने ईश्वर की सहायता से भीन फाँदूँगा । अर्थात् ३०  
 सर्वशक्तिमान से जिस का मार्ग शुद्ध है परमेश्वर का वचन ताया गया है वह  
 अपने मारे आश्रितों के लिये काल है । क्योंकि परमेश्वर को छोड़ कौन ईश्वर है ३१  
 और हमारे ईश्वर को छोड़ कौन चटान है ॥

अर्थात् सर्वशक्तिमान को छोड़ जो मेरी कटि दृढ़ता से बांधता है और जिस ३२



१० खा जायगी । तू उन का फल पृथिवी से और उन का वंश मनुष्य के सन्तान में  
 ११ से नष्ट करेगा । क्योंकि उन्हें ने तेरे विरुद्ध में घुराई फैलाई है उन्हें ने मेरी  
 १२ जुगुत बांधी है जिसे समाप्त न कर सकेंगे । क्योंकि तू उन की पीठ दिखावेगा  
 जब तू उन की साम्हने अपने पनच को चढ़ावेगा ॥

१३ हे परमेश्वर अपने ही बल से महान हो हम तेरी सामर्थ्य की स्तुति में गावेंगे  
 और बढ़ाई करेंगे ॥

### घाईसवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये विहान की हरिणी के विषय में दाऊद का गीत ॥

१ हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया है तू क्यों मेरी मुक्ति  
 २ और मेरे कहरने की बातों से दूर खड़ा रहता है । हे मेरे ईश्वर मैं दिन को पुकारता  
 हूं और तू उत्तर नहीं देता और रात को और मुझे चैन नहीं है ॥

३ और तू इसराएल की स्तुति में वास करनेहारा पवित्र है । हमारे पितरों ने  
 ४ तुझ पर भरोसा किया उन्होंने ने भरोसा किया और तू ने उन्हें कुड़ाया । उन्होंने  
 ने तुझ को पुकारा और कुड़ाये गये उन्होंने ने तुझ पर भरोसा रक्खा और लज्जित  
 ५ न हुए । पर मैं कोड़ा हूं और न मनुष्य मनुष्यों की निन्दा और लोगों में लज्जा ।  
 ६ मेरे सारे देखनेहारे मुझ पर हंसते हैं ये यह कहते हुए होंठ विचकाते और सूड़  
 ७ हिलाते हैं । कि परमेश्वर पर डाल दे वह उसे कुड़ावेगा उस को निर्वन्ध करेगा  
 ८ क्योंकि उससे प्रसन्न है । क्योंकि तू ही गर्भ से मेरा तिकासनेहारा था मेरी माता के  
 १० स्तनों पर मुझे आशा देनेहारा । कोख से मैं तुझ पर डाला गया मेरी माता के  
 गर्भ से मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है ॥

११ मुझ से दूर मत रह क्योंकि संकट निकट है और इस लिये कि कोई सहायक  
 १२ नहीं । बहुत से वेलों ने मुझे घेरा है वसनिषा के सांडों ने मुझे घेरा है । उन्होंने  
 १३ ने फाड़ने और गर्जनेवाले सिंह होके मुझ पर अपना मुंह पसारा है । मैं पानी  
 की नाईं उंडेला गया हूं और मेरी सारी हड्डियां अलग हो गईं मेरा मन मोम  
 १४ की नाईं हो गया मेरी अंतर्द्वियों के मध्य में पिघल गया । मेरा बल ठीकरे की  
 नाईं सूख गया और मेरी जीभ मेरे तालू से लग गई और मृत्यु की धूल में तू मुझे  
 १५ उतारेगा । क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेरा है दुष्टों की मंडली ने मुझे घेर लिया उन्होंने  
 १६ ने मेरे हाथों और मेरे पांवीं को छेदा है । मैं अपनी सारी हड्डियों को गिन सक्ता  
 १७ हूं वे ताकते रहते और मुझे घूरते हैं । वे मेरे कपड़े आपुस में बांटा चाहते हैं  
 और मेरे ढागे पर बिट्टी डाला चाहते हैं ॥

१८ पर तू हे परमेश्वर दूर मत रह हे मेरे बल मेरी सहाय के लिये शीघ्र कर ।  
 १९ मेरे प्राण को तलवार से और मेरे प्रिय को कुत्ते के हाथ से बचा । मुझे सिंह के  
 मुंह से बचा और तू ने भैंसों के सींगों से मेरी सुनी है ॥

२० मैं अपने भाइयों से तेरा नाम बर्णन करूंगा मंडली के मध्य तेरी स्तुति करूंगा ।  
 २१ हे परमेश्वर के डरवैयो उस की स्तुति करो हे यशकूब के सारे वंश उस की  
 २२ प्रतिष्ठा करो और हे इसराएल के सारे वंश उससे भय रक्खो । क्योंकि उस ने  
 दुःखी के दुःख को तुच्छ न जाना और न उससे घिन किई और न उससे अपना

करनेवाली है । परमेश्वर का भय पवित्र सर्वदा लीं ठहरता है परमेश्वर के र  
विचार मझे और सम्पूर्ण धर्ममय हैं । जो मेने और बहुत सोखे मेने से अधिक १०  
चाहने के योग्य और मधु और उस के कृतों के टपकनेवाले से अधिक मोठे हैं ।  
इस्से अधिक तेरा दास उन से डंजियाला पाता है उन के कंठ करने में बड़ा ही ११  
फल है ।

भूल चूक के पापों को कौन समझेगा तू मुझे इन गुप्त पापों से शुद्ध ठहरा । १२  
अपने दास को साक्ष के पापों में भी बचा रख उन्हें मुझ पर राज्य करने मत १३  
दे नव मैं मिट्ट होऊंगा और बहुत अपराध से निर्दोष होऊंगा । तब है परमेश्वर १४  
मेरी चटान और मेरे आशुकरता मेरे मुँह को दातें और मेरे मन का सौच जो तेरे  
सामने है ग्राह्य होंगे ।

### घोषदां गीत ।

प्रधान वज्रनिधे के लिये दाऊद का गीत ।

परमेश्वर विपत्ति के दिन तेरी मुने पशुदूत के ईश्वर का नाम तुझे जंघाई पर १  
रख्ये । पवित्र स्थान से तुझे सहाय भेजे और सैदून से तुझे संभाले । तेरी सारी २  
मेंढों को स्मरण करे और तेरे दास के दानदान को ग्राह्य करे । मिलाह । तेरे ४  
मन के समान तुझे देवे और तेरे सारे परामर्शों को पूरा करे । हम तेरी मुक्ति ५  
से आनन्दित होयें और अपने ईश्वर के नाम से भंडा खड़ा करें परमेश्वर तेरी  
सारी विनतियां पूरी करे ।

अब मैं ने जाना है कि परमेश्वर ने अपने दाहिने हाथ के मुक्ति देनेदारे बल ६  
से अपने अभिषिक्त को बचाया है अब अपने पवित्र स्थानों में उस को सुनेगा । ये ७  
शाङ्खियों का और ये घोड़ों का और हम परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम का  
स्मरण करेंगे । ये भुके और गिर पड़े हैं और हम उठें और सीधे खड़े हुए हैं ८

है परमेश्वर बचा जिस दिन कि हम पुकारें राजा हमारी सुने । ९

### इक्कीसवां गीत ।

प्रधान वज्रनिधे के लिये दाऊद का गीत ।

हे परमेश्वर राजा तेरे बल से आनन्द होगा और तेरी मुक्ति से क्या ही बहुत १  
मगन होगा । तू ने उस के मन को हल्ला हमें दिई है और उस के होठों की २  
विनती को उस्से नहीं रोका । मिलाह । क्योंकि तू भलाई की आशीसों के साथ ३  
उस के आगे आवेगा उस के मिर पर चांखे सेने का मुकुट रखेगा । उस ने ४  
तुझ से जीवन मांगा तू ने उसे जीवन की बढ़ती सर्वदा के लिये दिई । तेरी मुक्ति ५  
से उस का विभव बढ़ा होगा प्रतिष्ठा और महिमा तू उस के ऊपर रखेगा ।  
क्योंकि तू उसे सर्वदा के लिये आशीर्ष ठहरावेगा तू अपने रूप से उस को आनन्द ६  
से आनन्दित करेगा । क्योंकि राजा परमेश्वर पर भरोसा करता है और अति ७  
महान की दया से वह न टलेगा ॥

तेरा हाथ तेरे सारे बैरियों को ढूँढ निकालेगा तेरा दाहिना हाथ तेरे घेर रखने- ८  
द्वारों को पकड़ लेगा । तू अपनी सम्मुखता के समय उन्हें जलते हुए भट्टे के ९  
समान ठहरावेगा परमेश्वर अपने कोप में उन्हें निगल लेगा और आगे उन को

## पद्मोसवां गीत ।

## दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मैं अपने प्राण को तेरी ओर उठाता हूँ । हे मेरे ईश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा किया है मुझे लज्जित न होने दे मेरे वैरियों को मुझ पर फूलने न दे ।  
 ३ तेरे सारे जोड़नेहारों में से कोई भी लज्जित न होगा वे लज्जित होंगे जो अकारण छल करते हैं । हे परमेश्वर अपने मार्ग मुझे दिखला अपने पथ मुझे बतला ।  
 ५ अपनी सत्यता के मार्ग पर मुझे ले चल और मुझे शिक्षा दे क्योंकि मेरा मुक्ति-  
 ६ दाता ईश्वर तू ही है मैं ने सारे दिन तेरी याद जोड़ी है । हे परमेश्वर अपनी  
 ७ दया और कृपा को स्मरण कर क्योंकि वे सनातन से हैं । मेरी तरुणाई के पापों  
 और अपराधों को स्मरण मत कर तू अपनी दया के लिये अपनी भलाई के समान  
 मुझे स्मरण कर ॥

८ परमेश्वर अच्छा और सीधा है इस लिये वह मार्ग में पापियों की अशुआई  
 ९ करेगा । वह विचार में दीनों की अशुआई करेगा और अधीनों को अपने मार्ग  
 १० बतलावेगा । परमेश्वर के सारे मार्ग उन के लिये जो उस के नियम और साक्षी  
 ११ के पालन करनेहार हैं दया और सच्चाई हैं । हे परमेश्वर अपने नाम के लिये तू  
 १२ दया करेगा और मेरी दुराई को क्षमा करेगा क्योंकि वह बहुत है । वह कौन सा मनुष्य  
 है जो परमेश्वर से डरता है वह उस मार्ग में जिसे चुन लेगा उस की अशुआई  
 १३ करेगा । उस का प्राण सुख में रहेगा और उस का वंश पृथिवी का अधिकारी  
 १४ होगा । परमेश्वर की मित्रता उस के डरवैयों के साथ और उस का नियम उन्हें  
 पहिचान देने को है ॥

१५ मेरी आंखें सदा परमेश्वर की ओर हैं क्योंकि वही मेरे पांवों को फंदे में से  
 १६ निकालेगा । मेरी ओर फिर और मुझ पर दया कर क्योंकि मैं अकेला और दुःखी  
 १७ हूँ । मेरे मन के दुःख बढ़ गये मेरे दुःखों से मुझे निकाल । मेरे दुःख और मेरी  
 १८ पीड़ा को देख और मेरे सारे पापों को क्षमा कर । मेरे वैरियों को देख क्योंकि वे  
 २० बहुत हैं और बड़े वैर के साथ उन्होंने मुझ से वैर रक्खा है । मेरे प्राण की रक्षा  
 कर और मुझे छुड़ा मुझे लज्जित न होने दे क्योंकि मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा  
 २१ है । धर्म और खराई मेरी रक्षा करेंगी क्योंकि मैं ने तेरी याद जोड़ी है । हे  
 २२ ईश्वर इसराएल को उस के सारे दुःखों से छुड़ा ॥

## ह्वोसवां गीत ।

## दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मेरा विचार कर क्योंकि मैं अपने धर्म में चला हूँ और मैं ने  
 २ परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न टलूंगा । हे परमेश्वर मुझे परख और मुझे  
 ताड़ मेरे अन्तःकरण को और मेरे मन को जांच ले ॥

३ क्योंकि तेरी दया मेरी आंखों के आगे है और मैं तेरी सच्चाई में चला हूँ । मैं  
 ४ मिथ्यावादी मनुष्यों के संग नहीं बैठा और कपटियों के साथ न चलूंगा । मैं ने  
 ५ कुकर्मियों की मंडली से छिन रक्खा है और दुष्टों के साथ न बैठूंगा । हे पर-  
 मेश्वर मैं अपने हाथों को निष्कपटता में धोऊंगा और तेरी वेदी की प्रदक्षिणा

सुंदर छिपाया है और जब उस ने उस की दोहाई दिई तब उस ने सुना । तेरी २५  
सहाय मे मैं बड़ी मंडली में तेरी स्तुति कहंगा उस के हरनेदारों के साम्हने अपनी  
मनौती पूरी कहंगा ॥

दोन लोग खायेंगे और तृप्त होवेंगे परमेश्वर के खोजी उस की स्तुति करेंगे २६  
तुम्हारा मन सदा लों जीता रहे । जगत के सारे खूंट चर्चा करेंगे और परमेश्वर २७  
की ओर फिरेंगे और जातिगणों के सारे घराने तेरे साम्हने झुकेंगे । क्योंकि राज्य २८  
परमेश्वर का है और वह जातिगणों पर अभ्यस्त है । पृथिवी के सारे पुष्टों ने २९  
खाया और सेवा किई है सारे धूल में मिलनेदारे उस के आगे झुकेंगे और वह भी  
जो अपने प्राण को नहीं बचा सक्ता था । आनेवाला वंश उस की सेवा करेगा ३०  
आनेवाली पीढ़ी को परमेश्वर के विषय में बतलाया जायगा । वे आयेंगे और उन ३१  
लोगों को जो उत्पन्न होंगे उस के धर्म का वर्णन करेंगे कि उस ने यह किया है ॥

तेईसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

परमेश्वर मेरा गढ़रिया है मुझे घटती न होगी । वह मुझे कौनल घास की १  
चराई में बिठलावेगा मुझे स्थिर जल के लग ले जायेगा । वह मेरे प्राण को २  
यथावस्थित करेगा अपने नाम के लिये धर्म के पथों पर मेरी अगुआई करेगा ।  
इस के उपरान्त जब मैं मृत्यु की छाया की तराई में चलूंगा तब भी विपत्ति से ४  
न डरूंगा क्योंकि तू ही मेरे साथ होगा तेरी बड़ी और मेरी लाठी बड़ी मुझे  
शान्ति देगी । तू मेरे वैरियों के आगे मेरे साम्हने मंच विशावेगा तू ने तेल से ५  
मेरे सिर का चिकना किया है मेरा कटोरा कलकता है । केवल भलाई और दया ६  
जीवन भर मेरा पीछा करेंगी और मैं जीवन की बड़ती लों परमेश्वर के घर में रहूंगा ॥

चौबीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

पृथिवी और उस को भरपूरी जगत और उस के दामी परमेश्वर के हैं । क्योंकि १  
उसी ने उस की नेत्र समुद्रों पर डाली और उसे धारों पर स्थिर किया है ॥

परमेश्वर के पदाट पर कौन चढ़ेगा और उस के पवित्र स्थान में कौन स्थिर रहेगा ॥ ३

जिस का हाथ शुद्ध और मन पवित्र है जिस ने अपना जी मिथ्या पर नहीं ४  
लगाया और कल देने के लिये किरिया नहीं खाई । वह परमेश्वर से आशीस ५  
और अपने मुक्तिदाता ईश्वर से धर्म प्राप्त करेगा ॥

यह वंश उस का छूटनेहारा है तेरे रूप के खोजी पशुपूज हैं । सिलाह ॥ ६

हे फाटको अपने सिरों को ऊंचा करो और हे सनातन के द्वारे ऊंचे हो जाओ ७  
और विभव का राजा प्रवेश करेगा ॥

यह विभव का राजा कौन है परमेश्वर पराक्रमी और बलवंत परमेश्वर संग्राम ८  
में बलवंत । हे फाटको अपने सिरों को ऊंचा करो और हे सनातन के द्वारे ९  
उन्हे ऊंचा करो और विभव का राजा प्रवेश करेगा ॥

यह विभव का राजा कौन है परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर वही विभव का १०  
राजा है । सिलाह ॥

अपने परीसियों के साथ कुशल की बातें करते हैं पर उन के मन में घुराई है ।  
 ४ उन की क्रिया के समान और उन के कार्यों की दुष्टता के समान उन्हें दे उन के  
 ५ हाथों के कार्य के समान उन्हें दे उन का व्यवहार उन्हीं पर पलट दे । इस  
 लिये कि वे परमेश्वर के कार्यों और उस के हाथों की क्रिया पर ध्यान न करेंगे  
 वह उन्हें ठायेगा और उन्हें न बनायेगा ॥

६ परमेश्वर धन्य हो क्योंकि उस ने मेरी धिनतियों का शब्द सुना है । परमेश्वर  
 मेरा बल और मेरी ढाल है मेरे मन ने उस पर भरोसा किया और मैं ने सहाय  
 पाई है और मेरा मन अत्यन्त आनन्दित होगा और मैं अपने हृद में उस की  
 ८ स्तुति करूंगा । परमेश्वर उन के लिये बल है और वही अपने अभिषिक्त के लिये  
 ९ वचाव का गढ़ है । अपने लोगों को वचा और अपने अधिकार को आशीस दे  
 और उन्हें चरा और उन्हें सदा के लिये जंचा कर ॥

उनतीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ हे सर्वशक्तिमान के पुत्रो परमेश्वर को दो परमेश्वर को महिमा और बल  
 २ दो । परमेश्वर को उस के नाम की प्रतिष्ठा दो पवित्रता की सुन्दरता के संग  
 परमेश्वर को दण्डवत करो ॥

३ परमेश्वर का शब्द पानियों पर है महिमा का सर्वशक्तिमान गर्जना परमेश्वर  
 ४ बड़े पानियों पर है । परमेश्वर का शब्द बल के साथ परमेश्वर का शब्द विभव  
 ५ के साथ है । परमेश्वर का शब्द देवदारों को तोड़ता है और परमेश्वर ने लुवनान  
 ६ के देवदार पेड़ों को तोड़ डाला है । और उन्हें खड़े की नाईं लुवनान और  
 ७ सुरियून को मैसों के बट्टों की नाईं कुदाया है । परमेश्वर का शब्द आग की  
 ८ लवरेणों के द्वारा से चीरता है । परमेश्वर का शब्द वन को कंपा सक्ता परमेश्वर  
 ९ कादिश के वन को कंपा सक्ता है । परमेश्वर का शब्द हरिणियों के गाभ गिरा  
 सक्ता और जंगलों को पतझड़ कर सक्ता है और उस के मन्दिर में हर एक उस  
 १० के विभव की बात कहता है । परमेश्वर बाढ़ पर बैठा था और परमेश्वर राजा  
 ११ सदा लों सिंहासन पर बैठा रहेगा । परमेश्वर अपने लोगों को बल देगा परमेश्वर  
 अपने लोगों को कुशल की आशीस देगा ॥

तीसवां गीत ।

गीत । मन्दिर के स्थापन करने के लिये दाऊद का भजन ॥

१ हे परमेश्वर मैं तेरी महिमा करूंगा क्योंकि तू ने मुझे बढाया है और मेरे  
 २ वैरियों को मेरे विषय में आनन्द करने नहीं दिया । हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं ने  
 ३ तेरी दोहाई दिई और तू ने मुझे चंगा किया । हे परमेश्वर तू ने मेरे प्राण को  
 समाधि से उठाया तू ने गड़हे के गिरनेहारों में से मुझे जिलाया है ॥  
 ४ हे उस के धर्मियों परमेश्वर की स्तुति में गान करो और उस की पवित्रता के  
 ५ स्मरण में उस का धन्यवाद करो । क्योंकि उस की रिस पल भर की है उस की  
 कृपा में जीवन है बिलाप सांभ को ठिकेगा और विहान को आनन्द ॥  
 ६ और मैं ने अपनी बढती में कहा कि कभी न टूलूंगा । हे परमेश्वर तू ने

कहेगा । जिसमें धन्यवाद के शब्द के साथ तेरे सारे आश्चर्यों का मुहाड़ा और ७  
 धर्षण करे । हे परमेश्वर मैं तेरे घर के नियास और मेरे विभव के संपूर्ण के स्थान ८  
 से प्रेम रखता हूँ । मेरे प्राण का पापियों के संग और मेरे जीवन का दुष्टों के ९  
 संग मत मिला । जिन के हाथों में सुराई है और उन का दण्डना हाथ प्रहार १०  
 से भरा है । और मैं अपनी गिराई में चूनेगा मुझे दुष्ट और मुझ पर दया ११  
 कर । मेरा प्राण समय-स्थान पर स्थिर हुआ है मैं मंदलियों में परमेश्वर हूँ १२  
 धन्य कहूँगा ॥

सत्तार्थमयों गीत ।

दाऊद का गीत ॥

परमेश्वर मेरा उजियाला और मेरी मुक्ति है मैं जिसमें हूँ परमेश्वर मेरे जीवन १  
 का गढ़ है मैं किसी भय रह्युँ । जब दुष्ट मेरे विरोध में निकट आए जिसमें मेरा २  
 सांस था तब जब मेरे विरोधी और मेरे घरी मेरे निकट आए तब दुष्टों ने होकर ३  
 खाई और तार पड़े । यद्यपि सेना मेरे विरुद्ध घटाई करे तो मेरा मन न लगेगा ४  
 यदि संग्राम मेरे विरुद्ध उभरे इसमें भी मैं धैर्यवान रहूँगा । मैं ते परमेश्वर में ५  
 एक प्रश्न किया है मैं उसी के स्वाज्ञ में रहूँगा कि परमेश्वर के घर में अपने जीवन ६  
 भर रहूँ जिसमें परमेश्वर की सुन्दरता का देखा करे और उन के सौन्दर्य में हुँका ७  
 करे । क्योंकि यह विपत्ति के दिन मुझे अपने संपूर्ण में विपायगा अपने हरे की दाढ़ ८  
 में मुझे आड़ देगा मुझे छटान की जंघाई पर रखेगा । और जब मेरा तार तेरे ९  
 चारों ओर के बैरियों के ऊपर उंचा होगा और मैं उस के संपूर्ण में कामन्दित शब्द १०  
 के साथ बलि चढ़ाऊँगा मैं परमेश्वर की स्तुति में गाऊँगा और प्रजाऊँगा ११

हे परमेश्वर मुन मैं अपने शब्द में पुकारता हूँ और मुझ पर दया कर और मुझे १  
 उत्तर दे । जब तू ने कहा है कि मेरे मुँह के मोर्छों का तब मेरे मन में कहा कि २  
 हे परमेश्वर मैं तेरे मुँह का खोजी हूँगा । मुझ में अपना मुँह मत देना जोर में ३  
 अपने दास को मत घटा तू मेरा सहायक हुआ है हे मेरे मोक्ष के ईश्वर मुझे मत ४  
 त्याग और मुझे मत छोड़ । क्योंकि मेरे पिता और मेरा माता ते मुझे प्यारा है ५  
 पर परमेश्वर मुझे अपने घर में लेगा । हे परमेश्वर मुझे अपना मार्ग प्रशस्त और ६  
 मेरे बैरियों के कारण सीधे मार्ग पर मुझे ले चल । मुझे मेरे बैरियों का दण्ड पर ७  
 न छोड़ क्योंकि भूटे साक्षी और अंधेर की साँव सेनेधारे मुझ पर उठे हैं ।

यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवन की भूमि पर परमेश्वर की भलाई की १  
 देखूँ तो नाश होता । परमेश्वर की घाट जोड़ दूँ और धर तेरे मन का २  
 चल देवे हाँ परमेश्वर की घाट जोड़ ॥

अष्टार्थमयों गीत ।

दाऊद का गीत ॥

हे परमेश्वर मैं तुझे पुकारूँगा हे मेरी छटान मुझ में चूषका मत हो न दोष १  
 कि तू मुझ से चुप हो रहे और मैं गढ़ों में शिरमंथालों की नाई हो जाऊँ । जब २  
 मैं तेरी दोहाई हूँ और अपने हाथ तेरे पापिप्र सन्दिर की और उठाऊँ तब मेरी ३  
 विनतियों का शब्द सुन । मुझे दुष्टों के साथ और कुकर्म्मियों के साथ न सीध हो ४



२० और अपने भरोसा रखनेहारों पर मनुष्य के सन्तानों के आगे प्रगट किई है । तू  
 मनुष्य की जुगुत्ता से अपने रूप की ओट में उन्हें छिपायेगा जीभों के झगड़े से  
 २१ उन्हें आड़ में छिपा लेगा । परमेश्वर धन्य हो क्योंकि उस ने मुझे दृढ़ नगर में  
 २२ लाके अपनी कृपा मेरे लिये आश्चर्य किई है । और मैं ने अपनी घबराहट में  
 कहा कि मैं तेरी आंखों के साम्हने से कट गया परन्तु जब मैं ने तेरी दोहाई  
 दिई तब तू ने मेरी ब्रित्तियों का शब्द सुना ॥

२३ परमेश्वर से प्रेम रखो हे उस के सारे साधुओ परमेश्वर सत्य का रखवाल  
 २४ है और अहंकारी को बहुताई से पलटा देता है । हे तुम सब कि परमेश्वर के  
 आश्रित हो दृढ़ हो और वह तुम्हारे मन को दृढ़ करे ॥

वत्तीसवां गीत ।

दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत ॥

१ वह दया ही धन्य है जिस का अपराध क्षमा किया गया जिस का पाप ठांपा  
 २ गया । वह मनुष्य दया ही धन्य है जिस के लिये परमेश्वर अधर्म लेखा नहीं करता  
 और उस के प्राण में कुछ छल नहीं है ॥

३ क्योंकि मैं चुप हो रहा और मेरे सारे दिन के कहरने से मेरी हड्डियां गल गईं ।  
 ४ क्योंकि रात दिन तेरा हाथ मुझ पर भारी रहता है मेरी तरावट गरमी की भुरा-  
 ५ हट से पलट गई । सिलाह । मैं ने कहा कि अपनी बुराई तुझ पर प्रगट करूंगा  
 और अपना अधर्म नहीं छिपाया मैं ने कहा कि परमेश्वर के आगे अपने अपराधों  
 ६ को मान लूंगा और तू ही ने मेरे पाप का अधर्म क्षमा किया । सिलाह । इसी  
 लिये हर एक साधू जब तक तू मिल सक्ता है तेरी ओर फिरके प्रार्थना करे निश्चय  
 ७ जब बड़े पानियों के बाढ़ हों तब उस लों न पहुँचेंगे । तू ही मेरे लिये आड़ है  
 तू मुझे सकेती से बचावेगा बचाव के गानों से मुझे घरेगा । सिलाह ॥

८ मैं तुझे शिक्षा देऊंगा और जिस मार्ग पर तू चलेगा तेरी अगुआई करूंगा मैं  
 ९ तुझे मन्त्र दूंगा मेरी आंख तुझ पर लगी रहेगी । छोड़े के समान खप्पर के समान  
 न हो जिन में कुछ समझ नहीं बाग और लगाम में उन का सिङ्गार है जिसमें उन  
 १० का मुँह पकड़े क्योंकि वे तेरे समीप नहीं आते । दुष्ट पर बहुत विपत्ति हैं और  
 ११ जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है वह उसे दया से घरेगा । हे धर्मियो परमेश्वर  
 से आह्लादित हो और आनन्द करो और हे सारे खरे अन्तःकरणियो आनन्द के  
 मारे चिल्लाओ ॥

तीसवां गीत ।

१ हे धर्मियो परमेश्वर में आनन्दित होओ स्तुति करना सज्जनों को सजता है ।  
 २ वीणा के संग परमेश्वर की स्तुति करो दस तार की सारङ्गी के संग उस की स्तुति  
 ३ में गाओ । उस के लिये नया गीत गाओ मंगल के शब्द के साथ भली रीति  
 बजाओ ॥

४ क्योंकि परमेश्वर का वचन ठीक है और उस का सारा कार्य सच्चाई के साथ  
 ५ किया गया । वह धर्म और न्याय से प्रेम रखता है पृथिवी परमेश्वर की दया  
 ६ से भरी है । परमेश्वर के वचन से स्वर्ग बने और उस के मुँह के श्वास से उन

अपनी कृपा से मेरे पड़ाइ के लिये बल स्थापन किया तू ने अपना मुँह छिपाया मैं  
 छवरा गया । हे परमेश्वर मैं तुझ को पुकारूँगा और परमेश्वर को दया के लिये  
 पुकारूँगा । मेरे जोहू में क्या लाभ जब मैं गड़हे में गिरूँगा क्या धूल तेरी स्तुति  
 करेगी क्या वह तेरी सत्यता वर्णन करेगी । हे परमेश्वर सुन और मुझ पर दया  
 कर हे परमेश्वर मेरा सहायक हो । तू ने मेरे लिये मेरे गोक को नाच से पलट  
 डाला है तू ने मेरा टाट खोला और आनन्द से मेरी काँट बाँधी हैं । जिसमें  
 विभव तेरी स्तुति में भजन करे और चुपका न रहे हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं सर्वदा  
 तों तेरा धन्यवाद करूँगा ॥

एकतीनवां गीत ।

प्रधान वज्रनिधे के लिये दाऊद का गीत ॥

हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मुझे मदा नों लज्जित न होने दे  
 अपने धर्म से मुझे छुड़ा । अपना कान मेरी और झुका झटपट मुझे छुड़ा मेरे  
 लिये गढ़ की चटान और आढ़ का घर हो जिसमें मुझे बचाये । क्योंकि तू ही  
 मेरी चटान और मेरा गढ़ है और तू अपने नाम के लिये मुझे ले चलेगा और मेरा  
 अगुआ होगा । तू मुझे डम जाल से जो उन्हीं ने मेरे लिये छिपाया है निकालेगा  
 क्योंकि तू ही मेरा गढ़ है । मैं अपने आत्मा को तेरे हाथ में सौंपता हूँ हे परमे-  
 श्वर सत्यता के सर्वशक्तिमान तू ने मुझे छुड़ाया है । मैं ने झूठ की धृष्टता  
 के साक्षेदारों से धिन किया है और मैं ने परमेश्वर पर भरोसा किया है । मैं तेरी  
 दया में आनन्दित और आह्लादित हूँगा तू जिस ने मेरे दुःख को देखा मेरे प्राण  
 की विपत्तों को पहिचाना है । और मुझे धैरी के हाथ में बँध नहीं किया पर मेरे  
 पाँव को फैलावस्थान में खड़ा किया है ॥

हे परमेश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मुझ पर विपत्ति है मेरी आँख खिजाहट  
 से लीन हो गई मेरा आत्मा और मेरा पेट भी । क्योंकि मेरा जीवन गोक में  
 और मेरी वय कराहने में नाश हो गई मेरे पाप के कारण से मेरे बल ने डग-  
 मगाहट खाई है और मेरी छड़ियाँ सूख गई । मैं अपने मारे धैरियों के कारण से  
 दुर्नाम हुआ और अपने परीसियों के निकट बहुत और अपने जान पहिचानों के  
 निकट भय मुझे बाहर देखते ही वे मुझ में भागे । मैं मृतक की नाई मन से भुला  
 दिया गया मैं टूटे हुए पात्र के तुल्य हुआ । क्योंकि मैं ने बापुतों से निन्दा सुनी  
 भय चारों ओर था जब कि उन्हीं ने आपुस में मेरे विरोध परामर्श किया तब  
 उन्हीं ने मेरे प्राण लेने की युक्ति बिई ॥

और हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा किया मैं ने कहा कि तू ही मेरा ईश्वर  
 है । मेरे समय तेरे हाथ में हैं मेरे धैरियों के हाथ से और मेरे पीछा करनेहारों से  
 मुझे छुड़ा । अपना रूप अपने सेवक पर चमका अपनी दया से मुझे बचा । हे  
 परमेश्वर मुझे लज्जित न होने दे क्योंकि मैं ने तुझे पुकारा है दुष्ट लज्जित हों  
 समाधि में चुपके पड़े रहें । झूठे झोंठ जो धर्मी के विरुद्ध घमण्ड और निन्दा  
 करते हुए ठिठाई से बोलते हैं गुंमे किये जावें ॥

क्या ही बड़ी तेरी कृपा है जो तू ने अपने श्रवणों के लिये छिपा रखी है १८

१४ रख । घुराई से फिर आ और भलाई कर कुशल को छूँ और उस को पीका कर ॥

१५ परमेश्वर की आँखें धर्मियों की ओर हैं और उस के कान उन की दोहाई १६ की ओर । परमेश्वर का मुँह कुकर्मियों के विरुद्ध है जिससे उन की चर्चा पृथिवी १७ पर से मिटा दे । वे चिल्लाये और परमेश्वर ने सुना और उन के सारे दुःखों से १८ उन्हें छुड़ाया । परमेश्वर चूर्ण मनों के निकट है और जिन का आत्मा कुचला १९ हुआ है उन्हें बचावेगा । धर्मी पर बहुत सी विपत्ति पड़ती हैं पर परमेश्वर उन २० सभों से उसे छुड़ावेगा । जो उस की सारी हड्डियों का रक्ताक है उन में से एक २१ भी टूटने नहीं पाती । क्लेश दुष्ट को मृत्यु तक पहुँचावेगा और धर्मी के वैरी दोषी २२ ठहरेंगे । परमेश्वर अपने सेवकों के प्राण को बचाता है और उस के सारे भरोसा रखनेहारों में से एक भी दोषी न ठहरेंगा ॥

पैंतीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मेरे लड़नेहारों से लड़ मेरे निगलनेहारों को निगल जा । छाल २ और फरी को घाम और मेरी सहाय के लिये खड़ा हो । और भाला निकाल और मेरे पीका करनेहारों के सामने में मार्ग रोक मेरे प्राण से कह कि मैं तेरी मुक्ति ४ हूँ । मेरे प्राण के गादक लज्जित और संकोचित हों मेरी घुराई के चाँदनेहारे पंके ५ छटाये जायें और लज्जित हों । वे भूसे की नाईं हों जो वशर के सामने है और ६ परमेश्वर का दूत उन्हें मारता हो । उन का मार्ग अधियारा और फिसलदा होवे ७ और परमेश्वर का दूत उन्हें रगदता हो । क्योंकि उन्होंने ने अकारण मेरे लिये गड़हे में अपना जाल छिपाया उन्हें ने अकारण मेरे प्राण के लिये खोदा ॥

८ उस पर अचानक विनाश आवे और उस का जाल जिसे उस ने छिपाया है ९ उसे फंसा ले वह विनाश के साथ उस में गिरे । और मेरा प्राण परमेश्वर में आन- १०न्दित होगा उस की मुक्ति में मगन होगा । मेरी सारी हड्डियाँ कहेंगी कि हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है जो दुःखी को उस मनुष्य से जो उससे बलवान है हाँ दुःखी और कंगाल को उस के लूटनेहारे से छुड़ाता है ॥

११ अंधेर के साक्षी उठते हैं वे मुझ से उस के विषय में प्रश्न करते हैं जिस को १२ मैं ने नहीं जाना । वे भलाई की संतो मुझे घुराई का पलटा देते हैं वरन मेरे १३ प्राण के लिये नष्टता । और मैं जब वे रोगी हुए तब मेरा पहिराव टाट था मैं ने व्रत से अपने प्राण को दुःख दिया और मेरी प्रार्थना मेरी गोद में फिर आवेगी । १४ मेरी चाल ऐसी थी कि वह मेरा हितु मेरा भाई था जैसा कोई माता के लिये १५ विलाप करे वैसा ही मैं मैला कुचैला होकर झुक गया । और वे मेरे लंगड़ाने से आनन्दित हुए और एकट्ठे हो गये लंगड़े मेरे विरोध में एकट्ठे हुए और मैं ने न १६ जाना उन्होंने ने फाड़ा और चुप न रहे । उन निकम्मों के साथ जो रोटी के लिये ठट्ठा करते हैं जिन्होंने मुझ पर अपने दाँत पीसे ॥

१७ हे प्रभु तू कब लों देखेगा मेरे प्राण को उन की घुराई से फेर ला मेरे अकेले १८ को तरुण सिंहीं से । मैं बड़ी मंडली में तेरा धन्यवाद करूँगा बलवान लोगों में

की सारी सेना । वह समुद्र के जल को ठहर की नाईं एकट्ठा करता है गहिरापी ७  
को भंडारों में रख छोड़ता है । सारी पृथिवी के रहनेवाले परमेश्वर से डरें संसार ८  
के सारे वामी उस का भय रखें । क्योंकि उसी ने कहा कि हो और हो गया ९  
उसी ने आज्ञा किई और बड़ा हुआ । परमेश्वर ने अन्यदेशियों के परामर्श को १०  
व्यर्थ किया लोगों की युक्ति को मिथ्या किया है । परमेश्वर का मन्त्र सर्वदा लों ११  
स्थिर रहेगा उस के मन की चिन्तायें पीछी से पीछी लों ॥

वह जाति क्या ही धन्य है जिस का ईश्वर परमेश्वर है वह लोग जिसे उस १२  
ने अपने अधिकार के लिये चुन लिया । परमेश्वर ने स्वर्ग पर से दृष्टि किई उस १३  
ने मनुष्य के सारे सन्तान को देखा । अपने निवासस्थान से उस ने पृथिवी के सारे १४  
निवासियों की ओर ताका । जो उन के सारे अन्तःकरणों को बनाता है जो उन १५  
के सारे कायों की ओर ध्यान रखता है । राजा वन को बहुतार्ह से कभी नहीं १६  
वचता वीर वन को बहुतार्ह से कुड़ाया न जायेगा । छोड़ा वचाने के लिये यूया १७  
है और वह अपने वन को बहुतार्ह से न बदयेगा ॥

देखो परमेश्वर की अग्नि उस के डरनेवालों की ओर है उन के लिये जो उस १८  
की दया के जादनेवाले हैं । जिसमें सृष्टि से उन के प्राण को कुड़ाये और उन्हें १९  
अकाल में जीना रखे । हमारे प्राण ने परमेश्वर का घाट जोया है हमारा उठ- २०  
कार और हमारी डाल बढ़ी है । क्योंकि हमारा अन्तःकरण उन्में आनन्दित २१  
होगा इस कारण कि हम ने उस के पवित्र नाम पर भरोसा रखया है । हे परमे- २२  
श्वर तेरी दया हम पर छाये जैसा हम ने तेरा आजा किई है ॥

छाँतामयाँ गीत ।

दाऊद का गीत जब उस ने अविनाशिक के मास्ते अपनी

समुझ को बदल डाला और उस ने उसे निकलवा दिया

और वह चला गया ॥

मैं हर समय परमेश्वर को धन्य कहूँगा उस की स्तुति नवा मेरे मुँह से होगी । १  
मेरा प्राण परमेश्वर पर फूलना रहेगा दीन मुनेंगे और आनन्दित होंगे । मेरे साथ २  
परमेश्वर की बड़ी स्तुति करो और हम मिलके उस का नाम जंघा करें ॥ ३

मैं ने परमेश्वर को खोजा और उस ने मेरी मुनी और मेरे सारे भय से मुझे ४  
कुड़ाया । उन्हीं ने उस की ओर दृष्टि किई और देखयाला हो गये और उन के ५  
मुँह लज्जित न हों । यह दुःखी चित्ताया और परमेश्वर ने सुना और उसे उस की ६  
सारी विपत्तों से बचाया । परमेश्वर का हृत्त उस के डरनेवालों के चहँओर हावनी ७  
किये है और उस ने उन्हें कुड़ाया है । चाँखो और देखो कि परमेश्वर भला है वह ८  
मनुष्य क्या ही धन्य जो उस पर भरोसा रखता है । हे उस के संतो परमेश्वर से ९  
डरो क्योंकि उस के डरनेवालों को कुछ कभी नहीं । तरुण सिँह दाँजित और भूखे १०  
हुए पर परमेश्वर के खोजी किसी अच्छी वस्तु के आकाँक्षित न होंगे ॥

आओ हे लड़के मेरी मुनी मैं तुम्हें परमेश्वर का भय सिखाऊँगा । वह कौन ११  
मनुष्य है जो जीवन को चाहता और दिनों से प्रेम रखता है जिसमें भलाई को १२  
देखे । अपनी जीभ को बुराई से और अपने हाँठों को झूठ बोलने से रोक १३

२ न खा । क्योंकि घास की नाईं वे भट से काटे जायेंगे और हर्याली की नाईं  
 ३ सुरक्षावेंगे । परमेश्वर पर भरोसा रख और भलाई कर पृथिवी पर वास कर और  
 ४ सत्यता पर चढ़ कर । और परमेश्वर पर अपने तईं मगन कर और वह तुझे तेरे  
 ५ मन की इच्छा पूरी करेगा । अपना मार्ग परमेश्वर पर छोड़ दे और उस पर  
 ६ भरोसा कर और वह आप बना लेगा । और तेरे धर्म को उजियाले की नाईं  
 और तेरे न्याय को दो पत्थर की नाईं निकालेगा ॥

७ परमेश्वर के आगे चुप रह और उस की बात जोह उस पर जो अपने मार्ग  
 को भाग्यवान करता है अपने तईं मत कुढ़ा उस मनुष्य पर जो कुसंभवा करता  
 ८ है । क्रोध को छोड़ और कोप को त्याग दे तू केवल बुराई करने के लिये  
 ९ अपने तईं न कुढ़ा । क्योंकि कुकर्मों काट डाले जायेंगे और परमेश्वर के  
 १० आश्रित वे ही पृथिवी के अधिकारी होंगे । और घोड़ी वर में और दुष्ट है ही  
 ११ नहीं और तू उस के स्थान पर सोच करेगा वह भी किंचित नहीं । और दोन  
 पृथिवी के अधिकारी होंगे और चैन की दृढ़ताईं से अपने तईं मगन करेंगे ॥

१२ दुष्ट धर्मों के लिये युक्ति बांधता है और उस पर अपने दांत किचकिचाता  
 १३ है । प्रभु उस पर हंसता है क्योंकि उस ने देखा है कि उस का दिन आयेगा ।  
 १४ दुष्टों ने तलवार निकाली और अपनी कमान खिंची है जिसमें दुःखी और कंगाल  
 १५ को गिरा दें और उन्हें जिन का मार्ग सीधा है बध करें । उन की तलवार  
 उन्हीं के हृदय में पैरेगी और उन के धनुष तोड़े जायेंगे ॥

१६ थोड़ा सा जो धर्मों का है बहुत दुष्टों के टूटकार से भला है । क्योंकि दुष्टों  
 की भुजा तोड़ी जायेगी और धर्मियों का संभालनेद्वारा परमेश्वर है ॥

१७ परमेश्वर खरों के दिनों को जानता है और उन का अधिकार सर्वदा लों  
 १८ रहेगा । वे विपत्ति के समय लज्जित न होंगे और अकाल के दिनों में तृप्त रहेंगे ।  
 २० क्योंकि दुष्ट नष्ट होंगे और परमेश्वर के वैरी मेभा की चिकनाई की नाईं जाते  
 २१ रहे वे धूर्त में जाते रहे । दुष्ट उधार लेता है और भर नहीं देता और धर्मों  
 २२ दया करता है और देता है । क्योंकि उस के आशीर्वादी लोग पृथिवी के अधि-  
 कारी होंगे और उस के सापित काट डाले जायेंगे ॥

२३ भले मनुष्य के डग परमेश्वर से स्थिर हुए और वह उस के मार्ग में आनन्दित  
 २४ होगा । क्योंकि वह गिरेगा परन्तु पड़ा न रहेगा क्योंकि परमेश्वर उस का हाथ  
 २५ थामता है । मैं बालक था वृद्ध भी हुआ और मैं ने धर्मों को अव्यवहारित  
 २६ और उस के वंश को रोटी मांगते न देखा । वह सारे दिन दया करता है और  
 उधार देता है और उस का वंश आशीस का कारण है ॥

२७ बुराई से अलग हो और भलाई कर और सदा लों वास कर । क्योंकि  
 परमेश्वर न्याय से प्रीति रखता है और अपने अनुग्रहीतों को छोड़ न देगा वे  
 २८ सदा लों रक्षित हैं और दुष्टों का वंश कट गया । धर्मों भूमि के अधिकारी  
 होंगे और सदा लों उस पर वास करेंगे ॥

२९ धर्मों का मुंह बृद्धि वर्णन करता है और उस की जीभ न्याय का वचन  
 ३० बोलती है । उस की ईश्वर की व्यवस्था उस के मन में है उस के डग न हटेंगे ।

तेरी स्तुति कहेंगा । मेरे झूठ कहनेद्वारे तैरी सुझ पर आनन्दित न होने पायें और १९  
 जो अकारण मेरे तैरी हैं वे आंख न मारने पायें । क्योंकि वे कुशल की बात २०  
 नहीं करते और पृथिवी के मुखियों के विरोध कल की बातें सोचते हैं । और २१  
 उन्हीं ने मुझ पर अपना मुंह बिचकाया है उन्हीं ने कहा है कि अहा अहा हमारी  
 आंखों ने देखा है ॥

हे परमेश्वर तू ने देखा है चुपका मन रह है प्रभु मुझ से दूर मत रह । मेरे २२  
 विचार के लिये और मेरे आवाहे के लिये हे मेरे ईश्वर और मेरे परमेश्वर अपने २३  
 तर्ह जगा और चौंका । हे परमेश्वर मेरे ईश्वर अपने धर्म के समान मेरा विचार २४  
 कर और वे मेरे विषय में आनन्दित न होने पायें । वे अपने मन में न कहने पायें २५  
 अहा हमारे मन की इच्छा वे न कहने पायें कि हम उसे निंगल गये । मेरी २६  
 विपत्ति में आनन्द करनेद्वारे एक ही माय लज्जित और संकाशित हो जो मेरे  
 विरुद्ध में आप को बढ़ाते हैं वे लाज और दुर्नामी का परिणाम पतिर्ने । मेरे धर्म २७  
 के चाहनेद्वारे ललकारें और आनन्द करें और नित कहा करें कि परमेश्वर सदान  
 हो जो अपने सेवक के कुशल का चाहनेद्वारा है । और मेरी जीभ तेरे धर्म का २८  
 हां सब दिन तेरा स्तुति का चर्चा किया करेगा ॥

छत्तीसवां गीत ।

प्रधान वज्रनिघे के लिये परमेश्वर के सेवक दाऊद का गीत ॥

मुझ दुष्ट से तेरे मन के भीतर घुसाई बात करती है उस की आंखों के आगे १  
 ईश्वर का भय तनिक भी नहीं । क्योंकि उस ने अपने अधर्म के ठूँठ निकालने २  
 के विषय और उम्मे दिन करने के विषय अपनी समुझ में अपने विषय में चिकनी  
 चिकनी बातें किई हैं । उस के मुँह की बातें झूठ और कल हैं वह ज्ञान की ३  
 बातें करने और भलाई करने से फिरा है । वह अपने बिलाने पर झूठ सोचा ४  
 करता है वह अपने तर्ह उस मार्ग पर खड़ा करता है जो अच्छा नहीं है वह  
 चुनई को नहीं छोड़ता ॥

हे परमेश्वर तेरी दया स्वर्गी पर है और तेरी मझाई नेत्रों में । तेरा धर्म ५  
 सर्वशक्तिमान के पर्यंतों की नाई है तेरे न्याय बड़े सहिराय हैं हे परमेश्वर तू ६  
 मनुष्य और पशुन को बचाता है । हे ईश्वर तेरी दया क्या ही बहुमूल्य है और ७  
 मनुष्य के सन्तान तेरे पंखों की छाया के नीचे आश्रय ले सक्ते हैं । वे तेरे घर की ८  
 चिकनाई से सन्तुष्ट होके पर्यंतों और तू अपने बिलामों की नदी में उन्हे तृप्त करेगा ।  
 क्योंकि जीवन का सोता तेरे पास है तेरे उंजियाने में हम उंजियाने को देखेंगे ॥ ९  
 अपना दया को अपने पहिचानेद्वारों के लिये और सूधे मनवानों के लिये अपने १०  
 धर्म को बढ़ाता रह । घसगड का पाँच मुझ पर आने न पायें और दुष्टों का ११  
 हाथ मुझे दंशान्तर करने न पाये ॥

कुकर्मों वहाँ गिर पड़े हैं वे ढकेले गये और उठ नहीं सक्ते ॥

१२

सैंतीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

कुकर्मियों के कारण से तू अपने तर्ह न कुढ़ा और घुसाई करनेद्वारों पर डाह १



२० मेरे प्राण के वैरी बलवन्त हैं और जो अकारण मेरे वैरी हैं वे बड़ गये । और वे जो भलाई की संती बुराई का बदला देते हैं वे इस कारण से मेरे विरोधी हैं कि  
 २१ मैं भलाई का पीछा करता हूँ । हे परमेश्वर मुझे मत त्याग हे मेरे ईश्वर मुझे से  
 २२ दूर मत रह । मेरी सदाय के लिये शीघ्र कर हे मेरी मुक्ति के प्रभु ॥

उन्तालीसवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये अर्थात् यदूतन के लिये दाऊद का गीत ॥

१ मैं ने कहा कि अपने भागी की चौकसी करुंगा जिसमें अपनी जीभ से पाप न करूँ  
 २ जब लों कि दुष्ट मेरे साम्हने है मैं अपने मुँह पर खोंच लगाऊंगा । मैं गूंगा होके  
 ३ चुप हो रहा भलाई से अपना मुँह मूँद लिया और मेरा जोक उभारा गया । मेरा  
 मन मेरे भीतर जल उठा जब मैं सोचता हूँ तब आग भड़कती है मैं अपनी  
 जीभ से बोल उठा ॥

४ कि हे परमेश्वर मेरे अंत का मुझे ज्ञान दे और मेरे दिनों का प्रमाण कि  
 ५ वह किनना है मैं जानूँ चाहता हूँ कि किस समय समाप्त हूंगा । देख तू ने मेरे  
 दिन बितों से दिये हैं और मेरी स्थापिता तेरे साम्हने माना निकर्मा है सारे मनुष्य  
 ६ केवल रुव्या वृथा स्थापित हुए हैं । निलाह । मनुष्य केवल स्वरूप में चलता  
 फिरता है वे केवल जग भर धूमधाम करते हैं वह धन का ठेर करता है और  
 नहीं जानता कि कौन उन्हें बटार ले जायगा ॥

७ और अब मैं ने किस की वाट जोही है हे प्रभु मेरी आशा तुझी पर है ।  
 ८ मुझे को मेरे सारे अपराधों से छुड़ा मुझे मूर्खों की निन्दा न बना । मैं चुपका  
 ९ हो गया हूँ अपना मुँह न खोलूंगा क्योंकि तू ही ने यह किया है । अपनी  
 १० ताड़ना मुझे पर से हटा ले मैं तो तेरे हाथ की मार से नाश हो गया । तू  
 अधर्म के कारण से दण्डों के साथ मनुष्य को दण्ड देता है और उस की  
 वाञ्छित वस्तु को कीड़े के समान नाश कर डालता है सारे मनुष्य केवल वृथा  
 हैं । सिलाह ॥

१२ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन ले और मेरी दोहाई पर कान धर मेरे आंसुओं  
 १३ से चुप मत रह क्योंकि मैं तेरे साथ परदेशी हूँ अपने सारे पितरों की नाईं पात्री । मुझे  
 से क्रोध की दृष्टि फेर ले और मैं मगन हूँ उस्से पहिले कि मैं जाऊँ और फिर न रहूँ ॥

चालीसवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ मैं ने धीरज के साथ परमेश्वर की वाट जोही है और उस ने अपना कान  
 २ मेरी ओर झुकाया और मेरी दोहाई सुनी । और मुझे भयंकर गहिराव से और  
 दलदल की कीच से उठा लिया और मेरे पाँवों को चटान पर स्थिर किया  
 ३ उस ने मेरे डगों को अचल किया । और मेरे मुँह में नया गीत डाला अर्थात्  
 हमारे ईश्वर की स्तुति बहुतेरे देखेंगे और डरेंगे और परमेश्वर पर भरोसा  
 ४ रखेंगे । वह मनुष्य क्या हो धन्य है जिस ने परमेश्वर को अपनी आड़ का  
 स्थान ठहराया है और अहंकारियों की और उन की ओर जो झूठ की और  
 बगवते हैं नहीं फिरा ॥

दुष्ट धर्मों की छात में लगा रहता है और उसे छात करने चाहता है । परमेश्वर ३३  
उसे उस के हाथ में न छोड़ेगा और जब उस-का न्याय किया जाय तब उसे  
देखी न ठहरावेगा । परमेश्वर के लिये आशा कर और उस के मार्ग को घास ३४  
और वह तुम्हें पृथिवी के अधिकारी होने के लिये बढ़ती देगा जब दुष्ट काट  
डाले जायेंगे तब तू देखेगा ॥

मैं ने दुष्ट को डरौना और देगी हरे पेड़ की नाईं अपने तर्ह फैलते हुए ३५  
देखा । और वह जाता रहा और देख वह था ही नहीं और मैं ने उसे टूँडा ३६  
और वह न मिला । मित्र मनुष्य को ताक रख और खरे को देख क्योंकि ३७  
कुशल चाहनेहारे मनुष्य के लिये श्रंत है । और अपराधी एक ही संग नष्ट हुए ३८  
दुष्टों का श्रंत कट गया । और धर्मियों की मुक्ति परमेश्वर से है दुःख के समय ३९  
वह उन का गढ़ है । और परमेश्वर ने उन की सहायता किई और उन्हे छुड़ाया ४०  
है वह उन्हे दुष्टों से छुड़ावेगा और उन्हे बचावेगा क्योंकि उन्हीं ने उस पर  
भरोसा रक्खा है ॥

अठतीसवां गीत ।

स्मरण कराने के लिये दाऊद का गीत ।

हे परमेश्वर अपने क्रोध से मुझे मत दण्ड और न अपने क्रोध की तपन से १  
मुझे दण्ड दे । क्योंकि तेरे दाग मुझ में चुभ गये हैं और तेरा हाथ मुझ पर बल २  
के साथ पड़ा है ॥

तेरे क्रोध के कारण से मेरी देह में कहीं आरोग्यता नहीं मेरे पाप के कारण ३  
से मेरी हड्डियों में कहीं बल नहीं । क्योंकि मेरे अधर्म मेरे मिर पर से ऊपर हो गये ४  
भारी दाग की नाईं वे मेरे लिये भारी हैं । मेरी मूर्खता के कारण से मेरे घाव ५  
घास करने लगे और बढ़ते हैं । मैं गँठ गया अति झुक गया मैं मारे दिन मैला ६  
कुचैला चलता फिरता रहा । क्योंकि मेरी कटि शुष्क से भर गई और मेरी देह ७  
में कहीं आरोग्यता नहीं । मैं ठिठुर गया और अति पिस गया हूँ अपने मन के ८  
चिल्लाने से गर्ज उठा हूँ ॥

हे प्रभु मेरी मांगी इच्छा तेरे आगे है और संग कराटना तुझ से छिपा नहीं । ९  
मेरा मन धड़कता है मेरे व्यूत ने मुझे छोड़ दिया है और मेरी जिन आँखों में १०  
ज्योति थी वे भी मेरे साथ नहीं हैं । मेरे मित्र और मेरे साथी मेरी ताड़ना के ११  
आगे से अलग खड़े हैं और मेरे कुटुम्ब दूर खड़े हुए हैं । और जो मेरे प्राण के १२  
गाहक हैं उन्हीं ने फंदे लगाये हैं और मेरी जानि के चाहकों ने दुराई की बातें  
कही हैं और मारे दिन बल की जुगत सोचते हैं । और मैं दाँहिरे के समान नहीं १३  
सुनता और गुंघे के समान हूँ जो अपना मुँह नहीं खोलता । और मैं उस मनुष्य की १४  
नाईं हुआ जो नहीं सुनता और जिस के मुँह में कुछ उत्तर नहीं ॥

क्योंकि हे परमेश्वर मैं ने तेरी बात जानी है प्रभु मेरे ईश्वर तू ही उत्तर देगा । १५  
क्योंकि मैं ने कहा न हो कि वे मुझ पर आनन्दित होय मेरे पाँच के टलने में वे १६  
मुझ पर फूले हैं । क्योंकि मैं लंगड़ाने पर हूँ और मेरा गोक सदा मेरे आगे है । क्योंकि १७  
मैं अपना अधर्म मान लेता हूँ अपने पाप के कारण से उदास रहता हूँ । और १८

१० और तू हे परमेश्वर मुझ पर दया कर और मुझे उठाके खड़ा कर और मैं उन  
 ११ से बदला लूंगा । इससे मैं ने जाना है कि तू मुझ से प्रसन्न हुआ कि मेरा वैरी मुझ  
 १२ पर जय नहीं पा सकता । और मैं जो हूँ तू ने मेरी खराई में मुझे धाँभा और मुझे  
 १३ अपने साम्हने सदा लों रक्खा है । परमेश्वर इसराएल का ईश्वर सनातन से  
 सनातन लों धन्य होवे । आमीन और आमीन ॥

### बयालीसवाँ गीत ।

प्रधान बजलिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये उपदेश का गीत ॥

१ जैसा हरिणी पानी की नदियों के लिये हांफती है वैसा ही मेरा प्राण हे ईश्वर  
 २ तेरे लिये हांफता है । मेरा प्राण ईश्वर के लिये जीवते सर्वशक्तिमान के लिये  
 ३ पिपासा है मैं कब आऊंगा और ईश्वर के आगे आके उपस्थित होऊंगा । मेरा आसू  
 रात दिन मेरे लिये रोटी हुआ है जब वे सारे दिन मुझ से कहते थे कि तेरा  
 ४ ईश्वर कहाँ है । मैं इन बातों को स्मरण करूँगा और मन ही मन मैं सोच ओ  
 विचार करूँगा जब मंडलों में चलूँगा आनन्द और स्तुति के शब्द और पर्व के  
 धूमधाम से उन के संग ईश्वर के घर में जाऊँगा ॥

५ हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और मुझ में धूम मचायेगा ईश्वर  
 की बात जोह क्योंकि मैं उस के मुँह की मुक्ति के लिये फिर उस की स्तुति करूँगा ॥

६ हे मेरे ईश्वर मेरा प्राण मुझ में आप को झुकाया करता है इस कारण मैं  
 यरदन और हरसूनीस की भूमि से और मिस्रार के पहाड़ से तुझे स्मरण करूँगा ।

७ तेरे परनालों के शब्द से गहिराव गहिराव को पुकारता है तेरी सारी लहरें  
 ८ और तेरे ढेव मेरे ऊपर से चले गये हैं । दिन को परमेश्वर अपनी दया और

रात को अपना गीत मेरे साथ रहने को आज्ञा करेगा मेरे जीवन के सर्वशक्ति-  
 ९ मान से मेरी प्रार्थना होगी । मैं सर्वशक्तिमान से जो मेरी चटान है कहूँगा कि

१० तू मुझे क्यों भूल गया मैं क्यों बैरी के अंधेर से विलाप करता चलूँ । मेरी  
 हड्डियों की टूटन के संग मेरे बैरियों ने मुझ पर निन्दा किई है जब वे सारे दिन  
 मुझ से कहते थे कि तेरा ईश्वर कहाँ है ॥

११ हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और क्यों मुझ में धूम मचाया  
 करेगा ईश्वर की बात जोह क्योंकि मैं फिर उस की स्तुति करूँगा जो मेरे मुँह  
 की मुक्ति और मेरा ईश्वर है ॥

### तीतालीसवाँ गीत ।

१ हे ईश्वर मेरा न्याय कर और निर्दई जातिगण से मेरे विवाद में मेरी सहाय  
 २ कर क्लौ और टेढ़े मनुष्य से तू मुझे छुड़ावेगा । क्योंकि मेरे गऊ का ईश्वर तू ही

है किस कारण तू ने मुझे छोड़ा है किस कारण मैं बैरी के अंधेर से शोक करता  
 ३ फिर । अपनी ज्योति और अपनी सच्चाई को भेज वे ही मेरी अगुआई करेंगी

४ मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे तंबुओं के पास पहुँचायेंगी । और मैं ईश्वर की  
 वेदी के पास आऊँगा सर्वशक्तिमान के पास जो मेरा बड़ा आनन्द है और हे ईश्वर

मेरे ईश्वर मैं बीणा के संग तेरी स्तुति करूँगा ॥  
 ५ हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और क्यों मुझ में धूम मचायेगा

हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू ने बहुत से काम किये हैं हो नहीं सकता कि तेरे ५  
 अनूठे और तेरी चिंतां को जो हमारे विषय में हैं तेरे मास्तेने क्रम से बखान  
 कर सकें मैं चर्चा और वर्णन किया चाहता हूं परन्तु वे गिनती से बाहर हैं ।  
 बलि और भेंट से तू प्रसन्न नहीं तू ने मेरे कान छेदे हैं बलिदान की भेंट और ६  
 पाप की भेंट को तू ने नहीं चाहा । तब मैं ने कहा देख मैं आता हूं पुस्तक ७  
 के पत्रों में मेरे विषय में लिखा है । हे मेरे ईश्वर मैं तेरी इच्छा मान्ने से ८  
 आनन्दित हुआ हूं और तेरी व्यवस्था मेरे मन के भीतर है । मैं ने बड़ी मंडली ९  
 में धर्म को प्रचारा है देख मैं अपने हांठों को न रोकूंगा हे परमेश्वर तू  
 जानना है । मैं ने तेरे धर्म को अपने मन के भीतर नहीं छिपाया मैं ने तेरी १०  
 सच्चाई और तेरी सुक्ति को वर्णन किया है मैं ने तेरी दया और तेरी सच्चाई को  
 बड़ी मंडली से नहीं छिपाया ॥

हे परमेश्वर तू अपनी दया मुझ से रोक न रखेगा तेरी दया और तेरी ११  
 सच्चाई नित मेरी रक्षा करेंगी । क्योंकि अगणित दुःखों ने मुझे घेरा है मेरे १२  
 पापों ने मुझे पकड़ लिया है और मैं देख नहीं सकता वे मेरे निर के बालों से  
 अधिक हैं और मेरे मन ने मुझे छोड़ दिया है । हे परमेश्वर मुझे छुटकारा १३  
 देने पर प्रसन्न हो हे परमेश्वर मेरी सहायता के लिये शीघ्र कर । वे जो १४  
 मेरे प्राण के चाहते हैं कि उने नाश करें एक साथ लज्जित और संकोचित होंगे  
 मेरे दुःख के चाहनेवाले पीछे हटायें और लज्जित किये जायेंगे । जो मुझ पर १५  
 अहा अहा कहते हैं वे अपनी लाज के कारण से उजड़ जायेंगे । तेरे सारे खोली १६  
 तुझ से आनन्दित और सगन होंगे तेरी सुक्ति के प्रेमी नित कहा करेंगे कि  
 परमेश्वर महान हो । और मैं दुःखी और कंगाल हूं परमेश्वर मेरी चिंता १७  
 करेगा मेरा सहायक और मेरा छुड़ानेवाला तू ही है हे मेरे ईश्वर विलम्ब न कर ॥

सकतालीसवां गीत ।

प्रधान बलनिय के लिये दाऊद का गीत ॥

वह क्या ही धन्य है जो कंगाल के विषय में दुःखिमानो करता है परमेश्वर १  
 विपत्ति के दिन उसे छुड़ावेगा । परमेश्वर उस की रक्षा करेगा और उसे जीता २  
 रखेगा वह भूमि पर आशीर्षित रहेगा और तू उसे उस के वैरियों की इच्छा  
 पर न छोड़ । परमेश्वर उसे रोग के विछेन पर संभालेगा तू ने उस की वैरासी ३  
 में उस के सारे विछेन को उलटके बिछाया है ।

मैं ने कहा है कि हे परमेश्वर मुझ पर दया कर मेरे प्राण को चंगा कर क्योंकि मैं ४  
 ने तेरा पाप किया है । मेरे वैरी मेरे विषय में पुरा कहते हैं कि वह कब मरेगा और ५  
 कब उस का नाम मिट जायेगा । और यदि वह देखने को आये तो मिथ्या बोलेंगा ६  
 वह अपने मन में अपने लिये अधर्म बढाता है वह बाहर जायेगा और मार्ग में  
 बखान करेगा । मेरे सारे वैरी आपुस में मेरे विरोध में फुसफुसाते हैं वे मेरे विषय में ७  
 मेरी हानि की परामर्श करते हैं । दुष्टता की बात उस में उडेली गई और जो ८  
 वहां पड़ा है वह फेर न उठेगा । जिस्में मैं मिलाप रखता था जिस पर मेरा भरोसा ९  
 था जो मेरी रोटी खाता था उस मनुष्य ने भी मुझ पर लात उठाई है ॥

## पेंतालीसवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये सोसनों के विषय में कोरह के पुत्रों के लिये  
उपदेश का गीत पियारियों का गान ॥

- १ मेरा मन उबल रहा है मैं अच्छी बात कहता हूँ मेरे कार्य्य राजा के लिये
- २ हों मेरी जीभ चटक लेखक की लेखनी हो । तू मनुष्य के मन्तानों में अति सुन्दर ओ स्वरूप है तेरे हाँठों में अनुग्रह उंडेला गया है इसी लिये ईश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीस दी है ॥
- ३ हे शक्तिमान अपनी तलवार कटि पर बांध अपने विभव और अपने
- ४ माहात्म्य समेत । और अपने माहात्म्य में सत्यता और कोमलता ओ धर्मता के कारण चढ़के आगे बढ़ और तेरा दहिना हाथ तुझे भयंकर कार्य्यों का
- ५ मार्ग दिखावेगा । राजा के वैरियों के अंतःकरण में तेरे बाण बोखे किये गये हैं लोग तेरे नीचे गिरेंगे ॥
- ६ हे ईश्वर तेरा सिंहासन सनातन से सनातन लों है तेरे राज्य का राजदण्ड
- ७ सच्चाई का दण्ड है । तू ने धर्म को प्रेम रक्खा और दुष्टता से घिन किया है इसी कारण से ईश्वर तेरे ईश्वर ने आनन्द के तेल से तेरे संगियों से अधिक तुझे अभिषिक्त किया है ॥
- ८ तेरे सारे पहिरावे बेल और अगर और तज हैं हाथीदांत के भवनों से वही
- ९ से उन्हीं ने तुझे आनन्दित किया है । राजा की बैठियां तेरी बहुमूलियों में हैं
- १० रानी ओफीर के सोने से मंजारी जाके तेरे दहिने हाथ बैठलाई गई है । हे
- बेटी सुन और देख और अपना कान झुका और अपनी जाति और अपने पिता
- ११ के घर को भूल जा । और राजा तेरी सुन्दरता का अभिलाषी हो क्योंकि वही
- १२ तेरा प्रभु है और तू उस को दण्डवत कर । और सूर की बेटी अर्थात् सब से धनवान लोग भेंट के द्वारा से तेरी कृपा की विनता करेंगे ॥
- १३ राजा की बेटी भवन के भीतर सम्पूर्ण पराक्रमी है उस का पहिराव सेनहला
- १४ बूटेदार है । बहुरंगी पहिराव में वह राजा के पास पहुंचाई जायगी उस के पीछे
- १५ पीछे उस की संगी कुंआरियां तुझ पास लाई गईं । वे संगल और सगनता के संग
- १६ पहुंचाई जायेंगी राजा के भवन में आयेंगी । तेरे पितरों की संतो तेरे सन्तान
- १७ होंगे तू उन्हें सारी पृथिवी पर अध्यक्ष ठहरावेगा । मैं सारी पीढ़ियों में तेरे नाम का स्मरण कराऊंगा इस कारण से लोग सर्वदा लों तेरा स्वीकार करेंगे ॥

## छियालीसवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये कुमारियों के शब्द  
के संग । गान ॥

- १ ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान और बल है वह विपत्तों में बड़ा ही सहायक
- २ पाया गया । इसी कारण से पृथिवी के बदल जाने और पर्वतों के समुद्रों के
- ३ अंतःकरण में हिल जाने से हम न डरेंगे । उस के पानी हड़हड़ावे और फेनारें
- ४ उस के बढ़ने से पर्वत शर्करावें । सिलाह । एक नदी है जिस की धारें ईश्वर के नगर अर्थात् अति महान के निवासें के पवित्र स्थान को आनन्दित करेंगी ।

इंश्यर की वाट जाह क्योंकि मैं फिर उस की स्तुति करूँगा जो मेरे मुँह की मुक्ति  
और मेरा इंश्यर है ॥

### चरानोमयां गीत ।

प्रधान वज्रनिष्ठ के लिये कोयल के पुत्रों के लिये उपदेश का गीत ॥

हे इंश्यर हम ने अपने कानों में सुना हमारे पितरों ने हम से वह कार्य वर्णन १  
किया है जो तू ने उन के दिनों में अगले समर्थों में किया । तू ने अपने हाथ में २  
जातिगणों को विन अधिकार किया और इन्हें जमाया लोगों को दबाया और  
इन्हें फैलाया । क्योंकि वे अपनी ही तलवार में पृथिवी के अधिकारी नहीं हुए ३  
और न उन की भुजा ने इन्हें मुक्ति दिई परन्तु तेरे दृष्टिने हाथ और तेरी भुजा  
और तेरे रूप की ज्योति ने यह किया क्योंकि तू उन में प्रसन्न था ॥

हे इंश्यर तू ही मेरा राजा है यद्यक्य के लिये कुटकारे की आज्ञा कर । तेरी ४  
हों मटाय में हम अपने मतानेदारों को टेल देंगे हम तेरे नाम से अपने विरोधियों  
को लतारेंदन करेंगे । क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूँगा और मेरी तल- ५  
वार मुझे कुटकारा न देगी । क्योंकि तू ने हमें हमारे मतानेदारों में बचाया और  
हमारे शत्रुन को लज्जित किया है । हम ने मारे दिन इंश्यर पर फूलना किया है ६  
और मदा तेरे नाम का स्वीकार करेंगे । मिलाह ॥

परन्तु तू ने हमें त्यागा और लज्जित किया है और हमारी मेनाओं के साथ ७  
न चलेगा । तू मतानेदारों के सामने मे हमें पाँच के पीछे करेगा और हमारे शत्रुओं ८  
ने अपने लिये लूट पाई है । तू हमें भोजन की भेंटों के समान बनायेगा और ९  
जातिगणों के मध्य तू ने हमें छिन्न भिन्न किया है । तू अपने लोगों को संत चेन्न १०  
डालेगा और तू ने उन के मेल में अपने धन को नहीं बढ़ाया है । तू हमें हमारे ११  
परानियों के लिये निन्दा बनायेगा हमारे अड़सपड़सवालों के लिये ठट्टा और  
हंसी । तू हमें जातिगणों में कटावत बनायेगा लोगों में मिर दिलाने का कारण । १२  
मारे दिन मेरा अपमान मेरे सामने है और लाज न मेरे मुँह को ढाँप १३  
लिया है । दाँपक और ठट्टा करनेदारों के शब्द से घरी और पलटा लेनेदारों १४  
के मार्ग में ॥

यह सब हम पर बीता और हम तुझे नहीं भूले और न तेरी वाचा से बराद १५  
गये हैं । हमारा मन पीछे नहीं फिरा और न हमारा डग तेरे मार्ग में जटा । १६  
कि तू ने हमें गोदड़ों के स्थान में कुचला है और नृत्य की छाया में हमें ढाँपा है । १७  
यदि हम अपने इंश्यर के नाम को भूले और उपरो देख की ओर अपने हाथ २०  
फैलाये हों । यथा इंश्यर हमें टूट न निकालेगा क्योंकि वही मन के भेदों को २१  
जानता है । क्योंकि हम तेरे लिये सारे दिन खात हुए हैं हम खात होने का भेड़ २२  
को नाईं गिने गये हैं ॥

जाग हे प्रभु तू किस लिये सोता रहेगा जाग मदा लों दूर न कर । तू किस २३  
लिये अपना मुँह छिपायेगा हमारे दुःख और हमारी विपत्ति को भुला देगा ।  
क्योंकि हमारा प्राण धूल लों भुक्त गया हमारा पेट भूमि से छिपक गया । हमारी २४  
सहाय के लिये उठ और अपनी दया के कारण से हमें उठार दे ॥ २५



- १२ सैहून का चक्र करो और उस के और पार फिरो उस के गुम्बेटों को गिना ।  
 १३ अपना मन उस के परकोट पर लगाओ उस के भवनों का वर्णन करो जितने  
 १४ तुम आनेदारी पीढ़ी से वर्णन करो । क्योंकि यह ईश्वर सनातन लों हमारा ईश्वर  
 है वही मृत्यु लों हमारा अगुआ होगा ॥

उंचासवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये कोरह के पुत्रों का गीत ॥

- १ हे सारे लोगो यह सुनो हे जगत के सारे वामियो कान लगाओ । क्या छोटे  
 २ क्या बड़े धनी और कंगाल एक ही साथ । मेरा मुँह बुद्धि की बातें करेगा और मेरे  
 ३ मन का सोच बुद्धि है । मैं अपना कान दृष्टान्त की और लगाऊंगा बीणा के  
 साथ अपनी पहिली खालके कटूंगा ॥  
 ४ मैं क्लेश के दिनों में किस लिये डरूं अब मेरे लताड़नेहारों की घुराई मुझे  
 ५ घेरेगी । जो अपने बल पर भरोसा करते हैं और अपनी संपत्ति की बहुताई पर  
 ६ फूलते हैं । मनुष्य अपने भाई का कुटकारा किसी प्रकार न दे सकेगा और न  
 ७ ईश्वर को अपना प्रायश्चित्त देगा । और उन के प्राण का प्रायश्चित्त बहुमूल्य  
 ८ है और वह सर्वदा के लिये उससे असाध्य है । कि सदा लों जीता रहे और सड़न  
 को न देखे ॥  
 ९ क्योंकि वह उसे देखेगा बुद्धिमान मरेंगे मूढ़ और पशुवत एक ही संग नष्ट  
 १० होंगे और अपनी संपत्ति औरों के लिये छोड़ जायेंगे । उन के मन की चिंता  
 यह है कि हमारे घर सदा लों स्थिर रहेंगे हमारे निवास पीढ़ी से पीढ़ी लों  
 ११ उन्हीं ने अपने अपने खेतों पर अपने नाम रक्खे हैं । पर मनुष्य प्रतिष्ठा में न  
 १२ टिकेगा वह पशु की नाईं ठहराया गया है वे नाश हुए । यह उन की चाल है  
 उन की ऐसी मूर्खता है और उन के पीछे आनेदारे उन की बातों से आनन्दित  
 १३ होंगे । सिलाह । वे भुंड की नाईं समाधि की और हंकाये जाते हैं मृत्यु  
 उन का चरवाहा होगा और विद्वान को धर्म्मा उन पर प्रभुता करेंगे और उन का  
 १४ स्वरूप समाधि में गल जायेगा वे अपने निवास से उस में उतरते हैं । केवल  
 ईश्वर समाधि के हाथ से मेरे प्राण का कुटकारा देगा क्योंकि वह मुझे उससे  
 निकाल लेगा । सिलाह ॥  
 १५ इससे मत डर कि मनुष्य धनवान हो जाय कि उस के घर का विभव बढ़े ।  
 १६ क्योंकि वह अपनी मृत्यु में कुछ न ले जायगा उस का विभव उस के पीछे उतरेगा ।  
 १७ क्योंकि वह अपने जीवन में अपने प्राण को आशीस देगा और लोग तेरी स्तुति  
 १८ करेंगे इस कारण से कि तू अपने लिये भला करता है । तू अपने पितरों की पीढ़ी  
 १९ में मिल जायगा वे सदा लों उंजियाले को न देखेंगे । जो मनुष्य का सन्तान  
 विभव में है और समझ नहीं रखता वह उन पशुओं की नाईं ठहराया गया है  
 जो नाश होते हैं ॥

पचासवां गीत ।

आरुफ का गीत ॥

- १ सर्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर ने उच्चारण किया है और पृथिवी को सूर्य के

ईश्वर उस के मध्य में है वह न टलेगा ईश्वर विद्यान होते ही उस की सहाय ५  
करेगा । जातिगणों ने हुआ सचाया राज्य कंप उठे उस ने अपना शब्द दिया है ६  
पृथिवी पिघल जायगी । परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे साथ है यशकूच ७  
का ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान है । मिलाह ॥

आओ परमेश्वर के कार्यों को देखा जिस ने पृथिवी पर उजाड़ किया है । ८  
जो पृथिवी के अंत में लड़ाइयों को उठा डालता है वह धनुष को तोड़ेगा ९  
और बर्छों को टुकड़े टुकड़े करेगा रथों को आग में जलावेगा । यम जाओ १०  
और जानो कि मैं ईश्वर हूँ मैं जातिगणों में प्रतिष्ठित होऊंगा पृथिवी पर महान  
होऊंगा । परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे साथ है यशकूच का ईश्वर हमारे ११  
लिये शरणस्थान है । मिलाह ॥

### संतालीसवां गीत ।

प्रधान वज्रनिधे के लिये कोरह के पुत्रों का गीत ॥

हे मय लोगो तालियां बजाओ जय के शब्द में ईश्वर के लिये ललकारो । १  
क्योंकि परमेश्वर महान भयंकर है वह सारी पृथिवी पर महाराजा है । वह २  
जातिगणों को हमारे नीचे दवावेगा और लोगों को हमारे पांव के नीचे । वह ३  
हमारे लिये हमारे अधिकार को चुनेगा यशकूच की जंघाई को जिसे उस ने प्यार ४  
किया है । मिलाह ॥

ईश्वर ललकार के साथ चढ़ गया है परमेश्वर तुरही के शब्द के साथ । ५  
ईश्वर की स्तुति में भजन करो भजन करो हमारे राजा की स्तुति में भजन करो ६  
भजन करो । क्योंकि ईश्वर सारी पृथिवी पर राजा है उपदेश देनेहारे गान से ७  
उस की स्तुति में भजन करो । ईश्वर जातिगणों पर राजा हुआ ईश्वर अपने ८  
पवित्र सिंहासन पर बैठा है । लोगों के अध्यक्ष अधिराज के ईश्वर के लोग ९  
होकर सकट्टा हुए क्योंकि पृथिवी को ठाने ईश्वर की हैं वह अत्यन्त महान हैं ॥

### अठतालीसवां गीत ।

कोरह के पुत्रों का गीत और गान ॥

हमारे ईश्वर के नगर में अपने पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर महान और अति स्तुति १  
के योग्य है । जंघाई में सुन्दर सारी पृथिवी का आनन्द उत्तर की अलंग में सैदून पर्वत २  
महाराज का नगर है । ईश्वर उस के भयनों में शरण का स्थान जाना गया है ॥ ३

क्योंकि देखा राजा आपुम में मिले थे एक साथ ही चले गये । ज्योंही उन्हे ४  
ने देखा वहाँ आश्चर्यित हुए घबरा गये भाग निकले । वहाँ जन्नेहारी की पीड़ा ५  
की नाईं कंपकंपी ने उन्हे पकड़ा । तू तर्मीस के जहाजों को पूरवी पवन से ६  
तोड़ेगा । जैसा हम ने सुना था वैसा ही हम ने परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के नगर ७  
में अपने ईश्वर के नगर में देखा है ईश्वर उसे सदा लों स्थिर रखेगा । मिलाह ॥ ८

हे ईश्वर हम ने तेरे मन्दिर के मध्य तेरी दया पर सोच किया है । हे ईश्वर ९  
जैसा तेरा नाम वैसा ही तेरी स्तुति पृथिवी के अंत में है तेरा दहिना हाथ धर्म १०  
से भरा है । तेरे न्यायों के कारण से सैदून पहाड़ आनन्दित और यहूदाह की ११  
बेटियां भगन होंगी ॥

- ५ तू अपनी यात में सच्चा रहे और अपने विचार में शुद्ध ठहरे । देख मैं अधर्म में उत्पन्न हुआ और पाप के संग मेरी माता ने मुझे गर्भ में लिया ।
- ६ देख तू ने अंतर में सच्चाई चाही है और गुप्त में तू मुझे बुद्धि की पहिचान देगा । तू मुझे जूफा में पावन करेगा और मैं पवित्र होऊंगा मुझे धो डालेगा
- ७ और मैं पाला से अधिक उजला हो जाऊंगा । तू मुझे आनन्द और मगनता का संदेश सुनावेगा तब वह हड्डियां जिन्हें तू ने कुचला है आनन्दित होंगी । मेरे
- १० पापों से अपना मुंह क्लिपा और मेरे सारे अधर्मों को मिटा दे । हे ईश्वर मेरे
- ११ लिये पवित्र मन उत्पन्न कर और स्थिर आत्मा मेरे भीतर में नवीन बना । मुझे
- १२ अपने आगे से मत निकाल और अपना पवित्र आत्मा मुझ से मत ले । अपनी मुक्ति की आनन्दता मुझे फिर दे और प्रसन्न आत्मा से मुझे संभाल ।
- १३ तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊंगा और पापी तेरी ओर फिरंगे ।
- १४ हे ईश्वर मेरी मुक्ति के ईश्वर हत्या से मुझे छुड़ा और मेरी जीभ तेरे धर्म के
- १५ गीत गावेगी । हे प्रभु तू मेरे घोंठों को खालेगा और मेरा मुंह तेरी स्तुति वर्णन
- १६ करेगा । क्योंकि तू बलिदान से प्रसन्न नहीं होता नहीं तो मैं देता हूँ बलि-  
१७ दान से तू प्रसन्न नहीं है । ईश्वर के बलिदान चूर्ण आत्मा हैं चूर्ण अंतःकरण और कुचल हुए को हे ईश्वर तू तुच्छ न जानेगा ।
- १८ अपनी प्रसन्नता से सैहून पर दया कर तू यश्मलम की भीतों को बनावेगा ।
- १९ तब तू धर्म के बलिदानों और होम और पूरी भेंटों से आनन्दित होगा तब वे तेरी वेदी पर बैल चढ़ावेंगे ।

### यावनयां गीत ।

प्रधान वज्रनिये के लिये दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत जब अहूमी

दायेगा आया और साऊल को संदेश दिया और उससे कहा कि

दाऊद अखिमलिक के घर में आया है ॥

- १ हे बलवान तू क्यों खुराई पर फूलता है सर्वशक्तिमान की कृपा सारे दिन
- २ रहती है । तीक्ष्ण किये हुए कुरे की नाईं जो छल से अपना कार्य करता है तेरी
- ३ जीभ खुराईयां निकाला करती है । तू ने भलाई से अधिक खुराई को और सत्य
- ४ बोलने से अधिक झूठ को प्यार किया है । सिलाह । हे छल की जीभ तू ने सारी नाश करनेहारी बातों को प्यार किया है ॥
- ५ सर्वशक्तिमान भी तुझे सदा के लिये ठा देगा वह तुझे भाड़ डालेगा और तुझे तेरे तंबू से निकाल फेंकेगा और तुझे जीवन की भूमि से उखाड़ डालेगा ।
- ६ सिलाह । और धर्मी देखेंगे और डरेंगे और उस पर हंसेंगे । देख उस बलवान को जो ईश्वर को अपना शरणस्थान नहीं ठहराता और अपने धन की अधिकाई पर भरोसा रखता है और अपनी दुष्टता में प्रवल रहता है ।
- ७ परन्तु मैं ईश्वर के मन्दिर में हरे जलपाई के पेड़ की नाईं हूं मैं ने ईश्वर की दया पर जो सदा सर्वदा लों रहेगी भरोसा रक्खा है । मैं सर्वदा तेरी स्तुति करूंगा क्योंकि तू ने यह किया है और तेरे संतों के साम्हने तेरे नाम की बाट जोहूंगा क्योंकि वह भला है ॥

उदय से उम के अस्ता लों बुलाया है । मैदून में जो सुन्दरता की सम्पूर्णता है ईश्वर २  
उजागर हुआ है । हमारा ईश्वर आवेगा और चुपचाप न रहे आस उस के सामने या ३  
जायगी और उम के आसपास बड़ी चंचल आ तान्त्रिक होगी । वह ऊपर मर्यादा को ४  
और पृथिवी को बुलायेगा जिसमें अपने लोगों का न्याय करे । मेरे माधुर्या को ५  
जो वनिदान पर मुझ से याचा था धरते हैं मेरे लिये एकट्ठा करेंगे । और अब मर्यादा ६  
ने उस के धर्म को प्रगट किया है क्योंकि ईश्वर आप ही न्यायी है । मिलाट ॥

हे मेरे लोगो मुनो और मैं उच्चारण करेगा हे इमराएल और मैं तुझ पर ७  
मानवी देखेगा ईश्वर तेरा ईश्वर मैं ही हूँ । मैं तेरे वनिदानों और तेरे जलाने ८  
की भेंटों के कारण जो नित मेरे सामने होता है तुझे धिक्कार न करेगा । मैं ९  
तेरे घर से दौल और तेरे भेड़पालने से बकरे न लेऊंगा । क्योंकि यन के सारे १०  
पशु और पहाड़ों पर सदसों डार मेरे हैं । मैं पहाड़ों के दर पक्षी को जानता ११  
हूँ और चौरागान के पशु मेरे पास हैं । यदि मैं भूया हूँ तो तुझ से न कहूंगा १२  
क्योंकि जगत् और उम की भग्नी मेरी है । क्या मैं चनें का मांस खाऊंगा १३  
और बकरों का लहू पीऊंगा । ईश्वर के लिये धन्यवाद की भेंट चढ़ा और १४  
अति महान के लिये अपनी सन्तानियां पूरी कर । और विपत्ति के दिन मुझे पुकार १५  
मैं तुझे बुझाऊंगा और तू मेरी महिमा प्रगट करेगा ॥

और ईश्वर ने दुष्ट से कहा है कि तुझे क्या है कि मेरी विधि का प्रगट १६  
करे और मेरी याचा को अपनी जीभ पर लाये । और तू ने उपदेश से दूर १७  
रख्या और मेरे बचनों को अपने पीछे डाल दिया है । जब तू ने चौर १८  
को देखा तो उसमें प्रमत्त हुआ और दृष्टिचारीयों का साक्षी हुआ । तू १९  
ने अपना मुँह बुराई के समर्पण किया है और तेरी जीभ छल का उपाय  
वांछी । तू बैठके अपने भाई के विरोध बातें करता है अपनी माता के घंटे का २०  
धक्का देता है ॥

तू ने ये कार्य किये और मैं चुपका हो रहा तू ने समझा कि मैं सर्वथा तुम्हीं २१  
सा हूँ मैं तुझे दण्डूंगा और तेरे पापों को तेरी आंखों के सामने संभारके धरेगा ।  
हे ईश्वर के विमुखियों में विनती करता हूँ सोचा न हो कि मैं फाड़ूँ और कोई २२  
कुड़वेया न हो ॥

जो गुणानुवाद की भेंट चढ़ाना है वह मेरी महिमा प्रगट करेगा और जो २३  
अपना मार्ग ठीक रखता है मैं उसे ईश्वर की मुक्ति दिखलाऊंगा ॥

गकावनयां गीत ।

प्रधान यजनिषे के लिये दाऊद का गीत जब नातन भविष्यद्वक्ता उस पास  
आया जब कि वह विन्तमय्य पास गया था ॥

हे ईश्वर अपनी दया के समान मुझ पर कृपा कर अपनी दया की अधिकारी १  
के समान मेरे अपराधों को मिटा दे । मेरे अधर्म से मुझे भली भाँति छो और २  
मेरे पाप से मुझे पावन कर ॥

क्योंकि मैं अपने अपराधों को जानता हूँ और मेरा पाप मझा मेरे सामने है । ३  
मैं ने तेरा केवल तेरा ही अपराध किया है और तेरी दृष्टि में बुराई किई है जिसमें ४

९ हे प्रभु उन्हें निगल जा उन की जीभ भाग भाग कर क्योंकि मैं ने नगर में  
१० अंधेर और भगड़ा देखा है । वे दिन और रात उसे उस की भीतों पर घेरते हैं  
११ और बुराई और घटी उस के मध्य में हैं । बुराईयां उस के मध्य में हैं और उस  
के चौक से अंधेर और कपट अलग नहीं होते ॥

१२ क्योंकि न मेरा बैरी मेरी निन्दा करेगा नहीं तो मैं सह लेता न मेरे डाही ने  
१३ मेरे बिरुद्ध से अपनी बड़ाई किई है नहीं तो मैं आप को उससे छिपाता । परन्तु  
१४ तू मेरे बगेवर का जन मेरा मित्र और मेरा चिन्तार । जिस्मे हमें आपुन में  
१५ मोठा परामर्श करते हैं ईश्वर के घर में पर्व के धूमधाम से चलते हैं । उन  
पर विनाश आ पड़े वे जीते जी समाधि में गिरेंगे क्योंकि उन के निवास में और  
उन के अन्तःकरण में बुराईयां हैं ॥

१६ मैं ईश्वर को पुकारूंगा और परमेश्वर मुझे बचा लेगा । मांझ और बिहान  
१७ और मध्यान्ह को मैं सोचूंगा और चित्ताजंगा और उस ने मेरा शब्द सुना है ।  
१८ जो लड़ाई मुझ पर थी उस ने उससे कुशल में मेरे प्राण को मोक्ष दिई क्योंकि  
मेरे विरोधी बहुत थे ॥

१९ सर्वशक्तिमान मुनेगा और उन्हें उत्तर देगा और जो सनातन से सिंहासन पर  
बैठा है । सिलाह । वह मुनके उन्हें उत्तर देगा जिन के लिये बदले न होंगे  
२० और जो ईश्वर से नहीं डरते । उस ने अपने मित्रों के विरोध में अपने हाथ  
२१ बढ़ाये हैं अपनी वाचा को तोड़ डाला है । उस के मुंह की लुपड़ी बातें चिकनी  
चुपड़ी हैं पर उस का मन लड़ाई है उस की बातें तेल से अधिक कोमल हैं पर  
वे खैची हुई तलवारें हैं ॥

२२ परमेश्वर पर अपना बोझ डाल दे और वह तेरी पालना करेगा वह धर्म की  
२३ सदा लों टलने न देगा । और तू हे ईश्वर उन्हें सड़न के कूप में गिरा देगा हत्यारा  
और कुली मनुष्य अपनी आधी वय लों न पहुँचेंगे और मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा ॥

कृष्णनवां गीत ।

प्रधान वज्रनिषे के लिये परदेशियों के मध्य गुंगी पिण्डुकी के बिषय दाऊद  
का भेद जब फिलिस्तियों ने उसे जात में पकड़ा ॥

१ हे ईश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मरणहार मनुष्य न मुझ पर मुंह फैलाया है  
२ निगलनेहारा सारे दिन मुझे दबाया करता है । मेरे बैरियों ने सारे दिन मुंह फैलाया  
है क्योंकि हे अति महान मेरे निगलनेहारे बहुत हैं ॥

३ जिस दिन मैं डरूंगा मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा । मैं ईश्वर की स्तुति में  
उस के वचन की बड़ाई करूंगा मैं ने ईश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा  
मनुष्य मेरा क्या करेगा ॥

४ वे सारे दिन मेरी बातों को बिगाड़ते हैं मेरे बिरुद्ध मैं उन की सारी चिन्ता  
५ बुराई के लिये हैं । वे एकट्ठे होंगे अपने तई छिपावेंगे वेही मेरे गिरानेवाले ठूके  
६ मे बैठेंगे जिस रीति कि वे मेरे प्राण की वाट जोह चुके हैं । अधर्म पर उन का  
७ वचना धरा है हे ईश्वर क्रोध में जातिगणों को गिरा दे । तू ने मेरे भ्रमण को  
गिना है मेरे आंसुओं को अपने पात्र में रख क्या वे तेरी बर्ही में नहीं हैं ॥

## तिरपनवां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये मेरा के विषय दाऊद का उपदेश देनेद्वारा गीत ।

मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर है ही नहीं उन्हीं ने बुराई किई और १  
घिनित बुराई किई है कोई भलाई करनेद्वारा नहीं । ईश्वर ने स्वर्ग पर २  
मे मनुष्य के संतान पर भांका जितने देखे कि कोई बुद्धिमानी करेगा अर्थात्  
ईश्वर को ड़ंढता है अथवा नहीं । वे सब के सब फिर गये वे एक ही साथ ३  
विगड़ गये कोई मुक़्क़र्मी नहीं एक भी नहीं ॥

क्या ये कुक़र्मी नहीं जानते जो तेरे लोगों को खाते जैसे रोटी खाने हैं और ईश्वर ४  
का नाम नहीं लेते । वहाँ वे अत्यन्त ड़रे जहाँ ड़र न था क्योंकि ईश्वर ने तेरे कावनी ५  
करनेहारों की दृष्टियों को विधराया है तू ने उन्हे लज्जित किया क्योंकि ईश्वर ने उन्हे  
त्यागा है । हाय कि ईश्वर के अपने बंधु लोगों के पास फिर आने में मैदून से ६  
हमराएल का वट्टार हो तब यन्नकूय आनन्दित और इसराएल सगन हो ॥

## चौदनवां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये तार के बाजों पर दाऊद का उपदेश देनेद्वारा गीत  
जय जिफ़ीम ने आके साऊल से कहा कि क्या दाऊद आप को हमारे साथ  
नहीं छिपाता है ॥

हे ईश्वर अपने नाम से मुझे बचा और तू अपने बल से मेरा न्याय करेगा । १  
हे ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन मेरे मुँह की बातों पर कान धर । क्योंकि परदेशी मेरे २  
विरोध में उठते हैं और सताऊ मेरे प्राण के ग्राहक हुए उन्हीं ने ईश्वर को अपने  
सामने नहीं रक्खा । सिलाह ॥

देखा ईश्वर मेरा सहायक है प्रभु मेरे प्राण के संभारनेहारों में है । वट बुराई ४  
मेरे वैरियों पर लौट आयेगी अपनी सच्चाई में उन्हे नष्ट ओ ध्वस्त कर । मैं आप ५  
से आप तेरे लिये बलि चढ़ाऊंगा हे परमेश्वर मैं तेरे नाम की स्तुति करूंगा क्योंकि  
वट भला है । क्योंकि उस ने सारी विपत्ति से मुझे छुड़ाया और मेरा आँख ने ७  
मेरे वैरियों पर दृष्टि किई है ॥

## पचपनवां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये तार के बाजों के संग दाऊद का उपदेश  
देनेद्वारा गीत ॥

हे ईश्वर मेरी प्रार्थना पर कान धर और मेरी विनती से आप को सत छिपा । १  
मेरा आता हो और मेरी सुन मैं अपने मोच में अपने मन को भरमाऊंगा और २  
चिल्लाऊंगा । वैरी के शब्द के कारण से और दुष्ट के अंधेर के कारण से क्योंकि ३  
वे मेरे ऊपर दानि पहुँचाते हैं और कोप में मेरा विरोध करते हैं ॥

मेरा मन मेरे भीतर में ससोमता है और मृत्यु के भय मेरे ऊपर पड़े हैं । ४  
ड़र और थरथराहट मुझ में आया चाहती है और कंपकंपी मुझ पर प्रबल आई ५  
है । और मैं ने कहा हाय कि मेरे पंख कपोत के से छेते तो मैं उड़ जाता ६  
और चैन पाता । देख मैं दूर तक फिरा करता और जंगल में रहता । सिलाह । मैं ७  
प्रचण्ड आंधी से और भकूड़ से अपने लिये बचाव वेग करूंगा ॥



७ डाढ़ों को कुचल डाल । वे पानी की नाईं पिघल जायें अपने मार्ग चले जायें  
 ८ वह अपने वाण लगाये माने कि वे कट जायें । जिस रीति कि घोंघा पिघल  
 जाता है वह भी चला जाये स्त्री के गर्भपात की नाईं उन्हें ने सूर्य को नहीं  
 ९ देखा । उससे आगे कि तुम्हारी हांडियों में कांटे की आंच लगे क्या कच्चा हो  
 क्या पक़ा वह उसे उड़ा ले जावेगा ॥

१० धर्म्मी आनन्दित होगा क्योंकि उस ने प्रतिफल को देखा है वह अपने चरणों  
 ११ को दुष्ट के लोहू में डुबायेगा । और मनुष्य कहेगा कि हां धर्म्मी के लिये प्रति-  
 फल है हां पृथिवी पर न्याय करनेहारा ईश्वर है ॥

उनसठवां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद जय साऊल ने  
 भेजा और उन्होंने ने घर की चौकसी किई जिसमें उसे  
 घात करे ॥

१ हे मेरे ईश्वर मुझे मेरे वैरियों से कुड़ा तू मुझे मेरे विरोधियों से जंचा करेगा ।  
 २ मुझे कुकर्मियों से कुड़ा और हत्यारे मनुष्यों से मुझे बचा ॥

३ क्योंकि देख वे मेरे प्राण के लिये घात में लगे हैं बलवन्त मेरे विरोध पर  
 ४ एकट्ठा होते हैं वे परमेश्वर न मेरा अपराध है और न मेरा पाप । मेरे दोषों  
 के बिना वे दौड़ते हैं और अपने तर्ह लैस करते हैं मुझ से मिलने के लिये जाग  
 ५ और देख । और तू हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के स्यामी इसराएल के ईश्वर  
 सारे जातिगणों पर कृपा करने के लिये जाग किसी दुष्ट अपराधी पर दया मत  
 ६ कर । सिलाह । वे सांभ को फिरें कुत्ते की नाईं भूँकें और नगर में घूमते फिरें ॥

७ देख वे अपने मुंह से निकालते हैं तलवारें उन के होंठों पर हैं क्योंकि कौन  
 ८ सुनता है । और तू हे परमेश्वर उन पर हंसेगा तू सारे जातिगणों को ठट्टे में  
 ९ उड़ावेगा । मैं तेरे लिये उस के बल की रक्षा करूँगा क्योंकि ईश्वर मेरा  
 १० शरणस्थान है । मेरा ईश्वर अपनी दया से मेरे आगे आवेगा ईश्वर मेरे वैरियों  
 पर मुझे जयदान कर दिखावेगा ॥

११ उन्हें प्राण से न मार ऐसा न हो कि मेरे लोग भूल जायें हे प्रभु हमारी  
 १२ ढाल अपने पराक्रम से उन्हें क्षिप्त भिन्न कर और उन्हें गिरा दे । उन के होंठों  
 का बचन उन के मुंह का पाप है और वे अपने अहंकार में और अपनी क्रिया  
 १३ से और उस झूठ से जो वे बोलेंगे पकड़े जायेंगे । क्रोध से उन्हें नाश कर नाश  
 कर और वे ध्वस्त हो जायें और लोग पृथिवी के अंत लों जानें कि ईश्वर  
 १४ यशस्कृष में राज्य करता है । सिलाह । और वे सांभ को फिरें कुत्ते की नाईं  
 १५ भूँकें और नगर में घूमते फिरें । वे खाने के लिये भ्रमते फिरेंगे और यदि तृप्त  
 न हों तो रात भर दौड़ते रहेंगे ॥

१६ और मैं तेरे पराक्रम का हृन्द गाऊँगा और बिहान को तेरी दया का गान  
 करूँगा क्योंकि तू मेरे लिये जंचा स्थान हुआ और मेरी विपत्ति के दिन मैं मेरा  
 १७ शरणस्थान । हे मेरे बल मैं तेरे लिये गाऊँगा क्योंकि ईश्वर मेरा शरणस्थान और  
 मेरा दयावान ईश्वर है ॥

जिस दिन मैं पुकारूँगा उसी समय मेरे तैरी पीछे दौटूँगे यह मैं जानता हूँ कि ८  
 ईश्वर मेरी ओर है । ईश्वर की स्तुति मैं मैं इन वचन की बहाई करूँगा परसे- १०  
 श्वर की प्रशंसा मैं मैं इस वचन की स्तुति करूँगा । मैं ने परमेश्वर पर भरोसा ११  
 रखा है मैं न डरूँगा आदमी मेरा क्या करेगा । हे ईश्वर तेरी सनौतियाँ सुन पर १२  
 हैं मैं तेरी स्तुति करूँगा । क्योंकि तू ने मेरे प्राण को मृत्यु से बचाया है क्या तू १३  
 मेरे प्राण को ठोकर खाने से छुटकारा न देगा जिससे मैं जीवन के उजियाले में  
 ईश्वर के सामने चला फिरा करूँ ॥

### सत्तावनवां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद जब वह साजल

के सामने से कंदला में भगा ॥

सुन पर दया कर हे ईश्वर सुन पर दया कर क्योंकि मेरे प्राण ने तुझ में गरम १  
 ठूँका है और मैं तेरे डैनों की छाया के नीचे गरम लेजंगा जब लों ये संकष्ट टल  
 न जायें । मैं ईश्वर अति सहान की पुकारूँगा इस सर्वशक्तिमान की जो अपने २  
 वचनों की मेरे विषय में पूरा करता है । वह स्वर्गों से भेजेगा और मुझे बचावेगा ३  
 जिस पर मेरे निगलनेवाले ने निन्दा किई है । सिलाह । ईश्वर अपनी दया और  
 अपनी सच्चाई को भेजेगा ॥

मेरा प्राण सिंघों के मध्य में है मैं जलनेवालों अर्थात् मनुष्य के पुत्रों की ४  
 मध्य लेटूँगा उन के दांत भाने और तीर हैं और उन की जीभ चाखी  
 तलवार ॥

हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर सहान हो सारी पृथिवी के ऊपर तेरा विभव ५  
 हो । उन्हीं ने मेरे डोंगों के लिये जाल सिद्ध किया उन ने मेरे प्राण को ६  
 दया डाला उन्हीं ने मेरे सामने गढ़वा खड़ा है उस के बीच मैं गिर  
 पड़े । सिलाह । हे ईश्वर तेरा मन स्थिर है मेरा मन स्थिर है मैं गाऊँगा और ७  
 बजाऊँगा । हे मेरे विभव जाग हे द्रोणा और मितार जाग मैं विद्यान को ८  
 बगाऊँगा । हे प्रभु मैं लोगों में तेरा धन्य करूँगा जातिगणों के मध्य तेरी स्तुति ९  
 मैं बजाऊँगा । क्योंकि तेरी दया स्वर्गों लों सहान है और तेरी सच्चाई मेघों १०  
 लों । हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर सहान हो सारी पृथिवी के ऊपर तेरी ११  
 महिमा हो ॥

### अट्ठावनवां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद ॥

हे मनुष्य के पुत्रो क्या तुम सधसुध दूंगे रहते हो जब अग्रथ है कि धर्म से १  
 दोलो और सच्चाई से विचार करो । हाँ तुम मन में दुष्टता करते हो अपने २  
 हाथों का अंधेर पृथिवी पर तौलते हो । दुष्ट काय ही से पराये हुए वे झूठ बोलते ३  
 हुए घेत ही से भटक गये । उन का विष सर्प के विष के समान है वह अपने जान ४  
 को उस बहिर नाश की नाईं भूँद लेगा । जो मंत्र पढ़नेवालों को शब्द न सुनेगा ५  
 कौसी ही बुद्धिमानों से मंत्र क्यों न फूँकता हो ॥

हे ईश्वर उन के दांत उन के मुँह में ताड़ डाल हे परमेश्वर युवा सिंघों की ६

मरने के निमित्त पीछा करोगे जो भुकी हुई भीत और ठाई हुई खाई के समान  
४ है । केवल उस के महत्व से वे उसे ठकेलने का परामर्श करते हैं वे झूठ से  
आनन्दित हैं वे अपने मुंह से आशीस देते हैं पर अपने अंतःकरण में सापते हैं ।  
सिलाह ॥

५ हे मेरे प्राण केवल ईश्वर की ओर फिरके चुप रह क्योंकि उसी से मेरी आशा  
६ है । केवल वही मेरी छटान और मेरी मुक्ति है मेरा शरणस्थान मुझे हलचल न  
७ होगी । मेरी मुक्ति और मेरा बिभ्र ईश्वर में है मेरे बल की छटान और मेरा शरण-  
८ स्थान ईश्वर में है । हे जातिगण सदा उस पर भरोसा रखो अपने अंतःकरण  
उस के आगे उंडेल दो ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान है । सिलाह ॥

९ नीच लोग केवल वृथा हैं ऊंचे पदवाले झूठ वे तुला में उठ जायेंगे वे सब  
१० के सब वृथा से हलुक हैं । अन्धेर पर भरोसा न करो और अन्याय में निरर्थक  
११ न बनो धन यद्यपि छोड़े उस पर मन न लगाओ । ईश्वर ने एक बात कही ये  
१२ दो बातें मैं ने सुनीं कि पराक्रम ईश्वर का है । और हे प्रभु दया तेरी है क्योंकि  
तू हर एक मनुष्य को उस के कार्यों के समान पलटा देगा ॥

तिसठवां गीत ।

दाऊद का गीत जब वह यहूदाह के खन में था ॥

१ हे ईश्वर मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है मैं तड़के तुझे ढूंढूंगा मेरा प्राण तेरे लिये  
प्यासा है मेरा शरीर सूखी भूमि में और थका बिन पानी तेरा लालसित है ।  
२ जिसते तेरे पराक्रम और तेरे बिभ्र को देखूं जैसा कि मैं ने धर्मधाम में देखा  
३ है । क्योंकि तेरी कृपा जीवन से भली है मेरे हाँठ तेरी स्तुति किया करेंगे । सो मैं  
४ जीवन भर तुझे धन्य कहा करूंगा तेरा नाम ले लेके अपने हाथ उठाऊंगा । मेरा  
प्राण मानो मज्जा और चिकनाई से तृप्त होगा और आनन्दित हाँठों से मेरा मुंह  
स्तुति करेगा ॥

६ जब मैं अपने बिल्लाने पर तुझे स्मरण करता हूँ तो रात के पहरे में तुझ पर  
७ ध्यान किया करता हूँ । क्योंकि तू मेरे लिये सहाय हुआ है और मैं तेरे पैरों की  
८ छाया तले आनन्द करूंगा । मेरा प्राण तेरे पीछे लिपटा है तेरा दहिना हाथ  
९ मुझे संभालता है । और वे अपने बिनाश के लिये मेरे प्राण के गाहक होते हैं  
१० वे पृथिवी के नीचे के स्थान को जायेंगे । वे तलवार से खेत आयेंगे गीदड़ों के  
११ ग्रास होंगे । और राजा ईश्वर से आनन्दित होगा हर एक मनुष्य जो उस की किरिया  
खाता है उससे दर्प करेगा क्योंकि झूठ बोलनेहारों के मुंह बन्द किये जायेंगे ॥

चौंसठवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ हे ईश्वर मेरी दोहाई में मेरा शब्द सुन तू मेरे प्राण को बैरी के डर से बचा  
२ रखेगा । तू मुझे दुष्टों की छिपी हुई सम्मति से और कुकर्म्मियों के हुल्लार से  
छिपावेगा ॥

३ जिन्होंने तलवार की नाई अपनी जीभ चाखी किई है और अपना तीर चिल्ल  
४ पर चढ़ाया है अर्थात् कड़वी बात । जिसते गुप्त स्थानों में सिद्ध मनुष्य को मारें

## साठवाँ गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये साक्षी के सोमन के विषय दाऊद का भेद मिथिलाने  
के लिये जय उस ने अराम नहराइन पर और अराम जोबाब पर जय पाई  
और यूथ्रल लौटा और लोन की तराई में वारह सहस्र अदूमी मारे ॥

हे ईश्वर तू ने हमें त्यागा हममें फूट डाली है तू क्रोधित हुआ तू हमें फिर १  
यथावस्थित करेगा । तू ने पृथिवी को कंपाया हमें चीरा है उस की दगरे को २  
सुधार क्योंकि वह हिल गई । तू ने अपने लोगों को कठोरता दिखलाई हमें ३  
लड़खड़ाने की सदिरा पिलाई है । तू ने अपने हस्त्रियों को एक ध्वजा दिया है ४  
जिम्हें तेरी सच्चाई के कारण से खड़ा किया जाय । मिलाष्ट । जिम्हें तेरे प्रेमी ५  
छुड़ाये जायें तू अपने दाहिने हाथ से वचा और हमारी सुन ॥

ईश्वर ने अपनी पवित्रता के संग वचन किया इस कारण मैं फूलंगा मिकम को ६  
विभाग कदंगा और सुकूरा की तराई को नापुंगा । जिलिअद मेरा है सुनस्नी ७  
भी मेरा और इफरायम मेरे मिर का गढ़ यहूदाह मेरा व्यवस्थादायक । मोअव ८  
मेरे धोनेधाने का पात्र है मैं अदूम पर अपनी जूती फेंकूंगा हे फिलिस्त मेरे लिये ९  
जयजयकार कर ॥

कौन मुझे दृढ़ नगर में लायेगा किस ने मुझे अदूम में पाहुँचाया है । क्या तू १०  
ही ने नहीं हे ईश्वर जिस ने हमें त्यागा और हे ईश्वर तू जा हमारी सेनाओं के  
संग न चलेगा । विपत्ति में हमारी सहाय कर क्योंकि मनुष्य की ओर से वचाव ११  
घृथा है ॥

ईश्वर से हम बल पावेंगे और वही हमारे सतानेहारों को लताड़ेगा ॥ १२

## एकसठवाँ गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये तार के वाजे पर दाऊद का गीत ॥

हे ईश्वर मेरा चिल्लाना सुन मेरी प्रार्थना पर सुरत लगा । मैं अपने मन के १  
शोक में पृथिवी के खूंट से तेरी ओर पुकारूंगा उस चटान पर जो मुझ से ऊँची २  
है तू मेरी अगुआई करेगा । क्योंकि तू मेरे लिये शरणस्थान हुआ है तेरी ओर मैं ३  
दृढ़ गढ़ । मैं तेरे तंत्र में सदा लों रहा कदंगा तेरे पंखों की छाया के नीचे मैं ४  
शरण लेऊंगा । मिलाष्ट ॥

क्योंकि हे ईश्वर तू ही ने मेरी मनोतियों को ग्रहण किया अपने नाम से ५  
हस्त्रियों का अधिकार मुझ दिया है । तू राजा की वय पर वय बढ़ावेगा उस के ६  
वरस पीढ़ी से पीढ़ी लों । वह सदा लों ईश्वर के साब्दने सिंहासन पर बैठा ७  
रहेगा तू दया और सत्यता भावमान रख वे उस की रक्षा करेंगी । सो मैं सदा ८  
लों तेरे नाम की स्तुति करूंगा जिम्हें प्रतिदिन अपनी मनोतियां पूरी करूं ॥

## दासठवाँ गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये यहूतून के ऊपर दाऊद का गीत ॥

केवल ईश्वर की ओर फिरने से मेरा प्राण चैन में है उसी से मेरी मुक्ति है । १  
केवल वही मेरी चटान और मेरी मुक्ति है मेरा शरणस्थान मुझे अत्यन्त हिलान २  
न होगा । तुम कब लों एक मनुष्य पर चढ़ाई करोगे तुम सब के सब उस के ३

६ पर भयंकर है । उस ने समुद्र को सूखी से पलट डाला वे नदी से पाँच पाँच  
७ चले जायेंगे वहाँ हम उस्से आनन्दित होंगे । जो अपने बल से सदा लों राज्य  
करता है उस की आंखें जातिगणों को देखती हैं दंगल अपने को न उभारें ।  
सिलाह ॥

८ हे लोगों हमारे ईश्वर का धन्यवाद करो और उस की स्तुति का शब्द सुनाओ ।  
९ जो हमारे प्राण को जीता रखता है और जिस ने हमारे पाँव को टलने नहीं  
१० दिया है । क्योंकि हे ईश्वर तू ने हमें परखा तू ने हमें सेसा ताया है जैसा रूपा  
११ ताया जाये । तू ने हमें जाल में फंसाया हमारी काँटि पर भार रखवा है । तू ने  
१२ मरणद्वार मनुष्य को हमारे सिर पर चढ़ाया है हम आग और पानी में आये और  
अब तू ने हमें आनन्द की भरपूरी में पहुँचाया है ॥

१३ मैं बलिदानों के साथ तेरे घर में आऊंगा अपनी मनौतियाँ तुझे पूरी करूँगा ।  
१४ जिन्हें मेरे हाँठों ने उद्धारा और मेरी विपत्ति में मेरा मुँह बोला । मैं पुष्ट मेमों  
के बलिदानों मेंटों की चिकनाई समेत तुझे चढ़ाऊँगा दैल बकरो समेत बलि  
करूँगा । सिलाह ॥

१६ हे सारे ईश्वर के डरनेहारे आओ सुनो और मैं वर्णन करूँगा जो उस ने  
१७ मेरे प्राण के लिये किया है । मैं ने अपने मुँह से उस को पुकारा और बड़ी बड़ी  
१८ मेरी जीभ के नीचे थी । यदि मैं अपने मन में अधर्म की और ताकता तो प्रभु  
१९ न सुनता । परन्तु ईश्वर ने सुना है उस ने मेरी प्रार्थना के शब्द पर कान धरा  
२० है । ईश्वर धन्य हो जिस ने न मेरी प्रार्थना फेरी है और न मेरी ओर से अपनी दया ॥

सतसठवां गीत ।

प्रधान बजानिये के लिये तार के बाजों पर गीत और गान ॥

१ ईश्वर हम पर दया करे और हमें आशीस दे और अपना मुख हम पर चम-  
२ कावे । सिलाह । जिसने तेरा मार्ग पृथिवी में जाना जाय सारे जातिगणों में तेरी  
३ मुक्ति । हे ईश्वर जातिगण तेरी स्तुति करेंगे सारे जातिगण तेरी स्तुति करेंगे ।  
४ जातिगण आनन्दित होंगे और जय जय करेंगे क्योंकि तू धर्म से लोगों का विचार  
५ करेगा और पृथिवी पर जातिगणों की अशुआई करेगा । सिलाह । हे ईश्वर  
६ जातिगण तेरी स्तुति करेंगे जातिगण तेरी स्तुति करेंगे सब के सब । पृथिवी ने  
७ अपनी बड़ती दिई है और ईश्वर हमारा ईश्वर हमें आशीस देगा । ईश्वर हमें  
आशीस देगा और पृथिवी के सारे सिवाने उस्से डरेंगे ॥

अठसठवां गीत ।

प्रधान बजानिये के लिये दाऊद का गीत और गान ॥

१ ईश्वर उठेगा उस के बैरी किन्नु भिन्न होंगे और उस के बैर रखनेहारे उस के  
२ आगे से भागेंगे । जैसे धूआँ मिट जाता है तैसा तू उन्हें मिटा देगा जैसे मोम  
३ आग के आगे पिघल जाता है तैसा दुष्ट ईश्वर के आगे नाश होंगे । और धर्मी  
आनन्दित होंगे ईश्वर के आगे आह्लादित होंगे और आनन्द के सारे हार्यत होंगे ॥

४ ईश्वर का गान करो उस के नाम की स्तुति गाओ उस के लिये मार्ग सिद्ध  
करो जो अपने नाम याह से बनों से चढ़के आता है और उस के आगे आनन्द

वे अज्ञानक उसे सारंग और न डरेंगे । वे अपने लिये दुर्ग यात स्थिर करते हैं ५  
छिपके छंदे सारने की यातचीत करते हैं वे कहते हैं कि कौन हमें देखेगा । वे ६  
सुरे कर्मों की खोज करते हैं कहते हैं कि हम लैस हैं दया की अच्छी युक्ति और  
हर यज्ञ का अन्तर और मन गहिरा है ॥

परन्तु ईश्वर ने उन्हीं अज्ञानक यात से सारा है दाय उन्हीं के हो गये । ७  
और वे गिराये गये उन की जीभ उन्हीं पर पड़ी मय कोई उन पर दृष्टि करते ८  
हुय भागेंगे । और सारे मनुष्य डरने हैं और कहते हैं कि यह ईश्वर का किया ९  
हुआ है और हमें उसी का कार्य समझने हैं । धर्मा परमेश्वर ने आनन्दित होगा १०  
और उस पर भरोसा रखेगा और नारे गये मनवाले उन्से दर्प करेंगे ॥

पंचम्यां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये वाजद का गीत और गान ॥

हे ईश्वर मैदून में छुपके छुपके तेरी स्तुति किई जाती है और तेरे लिये १  
मनाती पूरी किई जायगी । हे प्रार्थना के चोता नारे गरीर तेरे पान आयेगे । २  
अधर्म की बातें मुझ से अति प्रबल हैं हमारे अपराधों का बलिदान तू ही ३  
देगा । वह दया ही धन्य है जिसे तू चुने और समीपी करेगा जिनमें तेरे आंगनों में ४  
रहें हम तेरे घर अर्थात् तेरे पवित्र सन्दिह की भलाई से तृप्त होंगे । हे हमारे ५  
मुक्तिदाना ईश्वर पृथिवी और समुद्र के सारे अति दूर स्थानों की आशा तू धर्म  
से हमें भयंकर उत्तर देगा ।

जो भामर्ष से कोट बांधके अपने घन से पछाड़ों को दृढ़ करता है । जो ६  
समुद्रों के गर्गगदद उन की लहरों के गर्गरादद और लोगों की धूमधाम को ७  
स्थिर करता है । तब पृथिवी के अना के यमनेदारे तेरे चिन्तों से डरे तू सांझ ८  
और बिहान के निकामस्थानों से आनन्द करायेंगा । तू ने पृथिवी पर दृष्टि किई ९  
और उसे सींचा है तू उसे अति फलदायक करेगा ईश्वर की नदी जल से परिपूर्ण  
है तू उन के अनाज को सिद्ध करेगा क्योंकि तू उसे हम रीति से सिद्ध करता १०  
है । हम की रेधारियों को सींच उस के ढेलों को समथर कर तू उसे मैदानों में ११  
कामल करेगा उस की कोंपलों पर आशीम देगा । तू ने अपनी भलाई से वरस १२  
पर मुकुट रक्खा है और तेरे पक्षों से चिकनाई टपकती है । घन की चराइयां १३  
टपकती हैं और टीले आनन्द से गुये हैं । चराई ने झुंडों का पहिरावा पहिना १४  
है और तराइयां अन्न से ढंप जायेंगी वह आनन्द से ललकारेंगी हां वे गाया करेंगी ॥

छियामठ्यां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये गीत और गान ॥

हे सारी पृथिवी ईश्वर की और ललकारो । उस के नाम के विभव में गान १  
करो उस की स्तुति में उसे पराक्रम देंगे । ईश्वर से कहे कि तेरे कार्य दया ही २  
भयंकर हैं तेरे घन की दृढ़ताई से तेरे वरी तुझ से दय जायेंगे । सारी पृथिवी के ३  
रचनेदारे तुझे दण्डवत करेंगे और तेरी स्तुति में गान करेंगे वे तेरे नास के लिये ४  
गान करेंगे । मिलाह ॥

आशा और ईश्वर के कार्यों को देखो जो अपने कार्य में मनुष्य के पुत्रों ५



- के बरुड़ों सहित जो चांदी के टुकड़े लिये हुए निहुर जाते हैं निरस्कार कर उस  
 ३१ ने जातिगणों को जो संग्राम से मगन रहते हैं छिन्न भिन्न किया है । अर्धरात्रि लोग  
 मिस से आर्यो कूश अपने हाथ ईश्वर की ओर बढ़ावेगा ॥
- ३२ हे पृथिवी की राजधानियों ईश्वर का गान करो प्रभु की स्तुति में गाओ ।  
 ३३ सिलाह । उस के लिये गाओ जो सनातन के स्वर्गों के स्वर्ग पर अश्वार है देखो  
 ३४ वह अपना शब्द सारा शब्द उच्चारता है । ईश्वर को बल देओ उस का साहाय्य  
 ३५ इसराएल के ऊपर है और उस का बल मेघों पर । हे ईश्वर तू अपने धर्मधामों  
 से अंकुर है इसराएल का सर्वशक्तिमान बही जातिगण को बल और सामर्थ्य  
 देता है ईश्वर धन्य हो ॥

### उनदत्तरथां गीत ।

प्रधान यजनियों के लिये सोमनों के विषय दाऊद का गीत ॥

- १ हे ईश्वर मुझे बचा क्योंकि पानी मेरे प्राण लों पहुंच गया है । मैं गहिराव  
 की कीच में धस गया हूं और खड़े होने का स्थान नहीं है मैं पानी के गहिरावों  
 ३ में आया और बाढ़ ने मुझे दबा लिया है । मैं पुकारते पुकारते बच गया हूं  
 मेरा गला सूख गया अपने ईश्वर की बाट जोड़ते जोड़ते मेरी आंखें धुंधला  
 ४ गईं । जो अकारण मुझ से दूर रखते हैं वह मेरे सिर के बालों से अधिक हैं  
 मेरे नागक मेरे धोखा देनेहारे वैरी बली हैं जो मैं ने नहीं लूटा मैं आगे को उन्हें  
 भर दूंगा ॥
- ५ हे ईश्वर तू मेरी सूर्यता को जानता है और मेरे अपराध तुझ से किये नहीं  
 ६ हैं । हे प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर तेरी बाट जोड़नेहारे मेरे कारण से  
 लज्जित न हों हे इसराएल के ईश्वर तेरे खोजी मेरे कारण से अपमानित न  
 ७ हों । क्योंकि मैं ने तेरे लिये उलहना सदा लाज न मेरे मुंह को ठांप लिया है ।  
 ८ मैं अपने भाइयों के निकट परदेशी हो गया और अपनी माता के पुत्रों में  
 ९ ऊपरी । क्योंकि तेरे घर के उबलन ने मुझे खा लिया है और तेरे अपवाद  
 १० करनेहारों के अपवाद मुझ पर आ पड़े । और मैं ने व्रत में रो रो अपने प्राण को  
 ११ निकाला और वह भी मेरे लिये-अपवादों का कारण हुआ । और मैं ने टाट का  
 १२ बस्त पहिना और उन के लिये कहावत बना । फाटक पर के बैठवैये मेरे बिस्व  
 सोचते हैं और मदिरा के पिअकूड़ गान करते हैं ॥
- १३ और मैं हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना तुझ से है हे ईश्वर तेरी दया की बहुताई  
 १४ में ग्राह्य का समय हो अपनी मुक्ति की सत्यता में मेरी सुन ले । मुझे कीच से  
 निकाल और मैं धसने न पाऊं मैं अपने बैरियों से और पानी के गहिराव से बचाया  
 १५ जाऊं । पानी की बाढ़ मुझे दबाने न पावे और गहिराव मुझे निगलने न पावे  
 १६ और कूआ अपना मुंह मुझ पर बंद न करने पावे । हे परमेश्वर मेरी सुन क्योंकि  
 १७ तेरी दया भली है अपनी दया की बहुताई के समान मेरी ओर फिर । और अपने  
 १८ दास से अपना मुंह न छिपा क्योंकि मैं विपत्ति में हूं शीघ्र कर मेरी सुन । मेरे  
 प्राण के निकट आ उसे बचा मेरे बैरियों के कारण मुझे बचा ॥
- १९ तू ही ने मेरा उलहना और मेरी लज्जा और मेरे अनादर को जाना है मेरे

करो । ईश्वर अपने धर्मधाम में अनाथों का पिता और राहों का धिचारी है । ५  
ईश्वर अकेलों का गृहस्थ बनाता है बंधुओं का बंधीगृह से भाग्यमानों में निकाल ६  
लाता है केवल दंगलत भूर स्थान में रहने हैं ॥

हे ईश्वर जब तू अपने लोगों के आगे चल निकला जब तू ने धन में परा ७  
धरा । मिलाह । तब पृथिवी धर्यराहें हां स्वर्ग भी ईश्वर के आगे टपके यह ८  
सीता पर हुआ ईश्वर अर्थात् हमराएल के ईश्वर के मामूने । हे ईश्वर तू सेंट ९  
के दान का मंड बरखाता है तू ही अपने अधिकार हां अपने निर्वल अधिकार को  
स्थिर करता है ॥

तेरा भुंड उस में बसा है हे ईश्वर तू अपनी दया से कंगान के लिये मिट्ट १०  
करेगा । प्रभु संदेश देता है उस को प्रचारक बड़ी सेना हैं । सेनाओं के राजा ११  
भाग भाग जायेंगे और घर की रहनेहारी लूट खांदेगी । जब तुम पृथिवी के १२  
विद्वानों के मध्य लेटोगे तब तुम चांदी से सड़ी हुई कपान के हैंनां और उस के  
पीले सुनहले पंखों के समान होओगे । जब सर्वसामर्थी उस भूमि में राजाओं १३  
को छिन्न भिन्न करता है तब जिन्नमून में चाला गिरता है । यमनिया का पहाड़ १४  
ईश्वर का पहाड़ है यमनिया का पहाड़ चोटियों का पहाड़ है । हे पहाड़ो हे १५  
चोटियों उस पहाड़ के लिये जिसे ईश्वर ने अपने रहने के लिये चाहा है तुम क्यों  
घात में बैठते हो हां परमेश्वर उस में सर्वदा लों रहेगा ॥

ईश्वर की रथें बीस सत्त सत्तों पर सत्त हैं प्रभु उन में है और सीता १६  
धर्मधाम में । तू ऊंचे पर चढ़ गया है तू ने बंधुओं का बंधुआ किया है हे १७  
परमेश्वर ईश्वर तू ने आदम के सन्तान में हां दुष्टों में भी भेंट ले लिये जिसमें  
यहां उसे ॥

प्रभु प्रतिदिन धन्य होवे जब मनुष्य उस पर धोम रखेगा तब सर्वशक्तिमान १८  
हमारी मुक्ति होगा । मिलाह । सर्वशक्तिमान हमारी मुक्ति के लिये सर्वसामर्थी १९  
है और मृत्यु में कुड़ाना परमेश्वर प्रभु हां का काम है । निश्चय ईश्वर अपने वैरियों २०  
का सिर कुचलेगा उस बालघाली खापड़ी को जो अपने अपराधों में चलती फिरती  
है । प्रभु ने कहा कि मैं उन्टें यमनिया से फेर लाऊंगा समुद्र के गहिरावों से फेर २१  
लाऊंगा । जिसमें तू उन्टें कुचले और तेरा पांथ लाहूलुहान और तेरे कुनों की २२  
जीभ वैरियों के लाहू से हां उमी में लाहूलुहान हो ॥

हे ईश्वर उन्टों ने तेरी धूमधामी चालों को मेरे सर्वसामर्थी और मेरे राजा २३  
की धूमधामी चालों को धर्मधाम में देखा है । मृदंग बजाती हुई कुमारियों के २४  
मध्य गायक आगे आगे और बजलिये पीछे पीछे चले । अरे तुम कि इसराएल के २५  
सेते से हो मंडलियों में ईश्वर प्रभु को धन्य कहे । वहां छोटा दिनयमीन उन २६  
पर दवानेहारा है यहूदाह के अध्यक्ष उन के पत्थरबाद करवैयें हैं जयलून के  
अध्यक्ष नफताली के अध्यक्ष ॥

तेरे ईश्वर ने तेरे बल को ठहराया है हे ईश्वर जिस ने हमारे लिये यह किया २७  
है दृढ़ हो । तेरे मन्दिर के कारण से जो यहसलम के ऊपर है राजा तेरे पास भेंट २८  
लावेंगे । तू जंगल के घनपशु को और बलघनत बैलों की मंडली को जातिगायों २९  
३०

६ मैं कोख से तुझ से ग्रामा गया तू ही ने मुझे मेरी माता के पेट से निकाला मेरी स्तुति नित्य तेरे विषय में है ॥

७ मैं बहुतों के लिये अचंभा हुआ पर तू ही मेरा दृढ़ शरणस्थान है । मेरा मुंह तेरी स्तुति से और सारे दिन तेरे विभव से भरा रहेगा । छुड़ाये में मुझे कंक न दे १० जब मेरा बल घटे तब मुझे दूर न कर । क्योंकि मेरे वैरियों ने मुझ से यों कहा ११ है और जो मेरे प्राण के घात में हैं उन्हें ने आपुस में युक्ति बांधी हैं । और कहते हैं कि ईश्वर ने उसे त्यागा है उस का पीछा करो और उसे पकड़ ले १२ क्योंकि कोई कुछैसा नहीं है । हे ईश्वर मुझ से दूर मत हो हे मेरे ईश्वर मेरी १३ सहाय के लिये चटक कर । मेरे प्राण के वैरी लज्जित और नष्ट हो जायेंगे मेरी बुराई के चाहक निन्दा और अनादर से ठप जायेंगे ॥

१४ और मैं नित्य आशा रखूंगा और तेरी सारी स्तुति पर बढ़ाता जाऊंगा । १५ मेरा मुंह तेरे धर्म का और सारे दिन तेरी मुक्ति का वर्णन किया करेगा १६ क्योंकि मैं उन की गिनती नहीं जानता । मैं प्रभु परमेश्वर के पराक्रम कर्मों के १७ साथ आऊंगा मैं तेरी केवल तेरे ही धर्म की चर्चा करूंगा । हे ईश्वर तू ने मेरी युवा अवस्था से मुझे सिखाया और अब लों मैं तेरी आश्चर्य किया वर्णन किया १८ करता हूँ । और बड़ाये और बाल पकने लों भी हे ईश्वर मुझे मत त्याग जब लों कि मैं आनेहारी पीढ़ी से तेरे हाथ का और हर एक अवैया से तेरे पराक्रम १९ का बखान न करूँ । और हे ईश्वर तेरा धर्म अति ऊँचा है हे ईश्वर तू जिस ने बड़े बड़े कार्य किये हैं तेरे तुल्य कौन है ॥

२० तू जिस ने हमें बहुत कठिनताएं और विपत्ति दिखलाई हैं फिर आके हमें २१ जिलावेगा और पृथिवी के गहिरावों से फिर आके हमें उठा लेगा । तू मेरी २२ महिमा को बढ़ावेगा और फिरके मुझे शान्ति देगा । हे मेरे ईश्वर मैं भी तेरी सत्यता के लिये बीणा बजाके तेरी स्तुति करूंगा हे इसराएल के धर्ममय में २३ सितार के संग तेरी स्तुति में गान करूंगा । जब मैं तेरी स्तुति में बजाऊंगा तब २४ मेरे होंठ और मेरा प्राण जिसे तू ने छुड़ाया है गावेंगे । मेरी जीभ भी सारे दिन तेरे धर्म को रटा करेगी क्योंकि मेरी बुराई के चाहक निन्दित और लज्जित हो गये हैं ॥

### बहतरवां गीत ।

#### सुलेमान का गीत ॥

१ हे ईश्वर राजा को अपने बिचार और राजा के पुत्र को अपना धर्म दे ॥  
२ वह धर्म के साथ तेरे लोगों का और बिचार के साथ तेरे दुःखियों का न्याय ३ करेगा । तब धर्म से पहाड़ और पहाड़ियां लोगों के लिये कुशल उपजावेंगी ।  
४ वह लोगों के दुःखियों का न्याय करेगा कंगाल के सन्तानों को बचावेगा और ५ अन्धेरी को कुचलेगा । जब लों कि सूर्य और चन्द्रमा ठहरेंगे पीढ़ी से पीढ़ी लों ६ वे तुझ से डरा करेंगे । वह मैंह की नाईं जो कटी हुई घास पर हो और भड़ी ७ की नाईं जो पृथिवी को सींचती है उतरेगा । उस के दिनों में जब लों चांद ८ रहेगा धर्मी उगेगा और कुशल की अधिकाई होगी । और वह समुद्र से समुद्र

मारे सताऊ तेरे आगे हैं । अपवाद ने मेरा मन तोड़ा है और मैं बेगरी हूँ और मैं ने २०  
 दया की बाट जोड़ी और कुछ नहीं और शान्तिदायकों की घर नहीं पाया । और २१  
 उन्हें ने मेरे भोजन में पित्त दिया और सेरी घाम बुझाने का मुझे सिरका  
 पिलाया । उन का मंच उन के लिये फंदा हो जाये और उन के लिये जो कुशल २२  
 में हैं जाल होयें । उन को आँखें अंधी हो जायें जिनमें न देखें और उन की २३  
 कटि सदा झुकी रख । अपना क्रोध उन पर उँहेल और तेरे कोप की जलजलाहट २४  
 उन्हें पकड़ ले । उन का घर उल्टा हो जाये उन के तंतुओं में कोई बसवैया २५  
 न हो । क्योंकि उन्हें ने उन्हीं सताया जिन्हें तू ने मारा है और तेरे घायलों के २६  
 शोक के विषय वे यानें करते हैं । उन के अधर्म पर अधर्म का दण्ड दे और वे २७  
 तेरे धर्म में आने न पायें । वे जीवितों की दही में मिटाये जायें और धर्मियों २८  
 के संग न लिये जायें ॥

और मैं विपत्ति का मारा और दुःखी हूँ हे ईश्वर तेरी मुक्ति मुझे जंदाई घर २९  
 रख्ये । मैं गीत में ईश्वर के नाम की स्तुति कहेगा और धन्यवाद से उस की ३०  
 सटिमा कहेगा । और यह परमेश्वर के लिये कीर्तन और खुशीने त्रैल और वरध ३१  
 में अधिक भला होगा । दीन लोगों ने देखा है और आनन्दित होंगे अर्थात् तुम ३२  
 जो ईश्वर के खोजी हो और तुम्हारा मन जीता रहे । क्योंकि परमेश्वर कंगालों ३३  
 की सुनगा है और उस ने अपने वंधुओं को तुच्छ नहीं जाना । आकाश और ३४  
 पृथिवी उस की स्तुति करें समुद्र और उन में के सारे रंगनेदार । क्योंकि ईश्वर ३५  
 महान की वचावेगा और यहूदाय के नगरों को बनावेगा और वे उस में बसेंगे और  
 उसे अधिकार में लेंगे । और उस के सेवकों के वंश उस के अधिकारी होंगे और ३६  
 उस के नाम के प्रेमी उस में रटा करेंगे ॥

मनस्वों गीत ।

प्रधान वज्रनिये के लिये स्मरण के लिये दाढ़द का गीत ॥

हे ईश्वर मेरे वचाय के लिये हे परमेश्वर मेरी सहायता के लिये चटक कर । १  
 वे जो मेरे प्राण के ग्राहक हैं लज्जित और संकोचित होंगे मेरी विपत्ति के २  
 छाटनेदार पीछे घटायें और अपमानित किये जायेंगे । जो अछा अछा कहते हैं ३  
 वे अपने लाल के कारण दलटे फिरेंगे । तेरे मारे खोजी तुझ में आनन्दित और ४  
 सगन होंगे और तेरी मुक्ति के प्रेमी मदा कटा करेंगे कि ईश्वर महान हो । और ५  
 मैं दुःखी और कंगाल हूँ हे ईश्वर मेरे लिये शीघ्र कर मेरा सहायक और मेरा  
 मुक्तिदाता तू ही है हे परमेश्वर विलम्ब न कर ॥

एकदशवां गीत ।

हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रखया है मुझे कधी लज्जित होने न दे । १  
 तू अपने धर्म से मेरा छुटकारा करेगा और मुझे छुड़ावेगा अपना कान मेरी और २  
 सुका और मुझे बचा । तू मेरे निवास की चटान हो कि मैं नित्य आया कहूँ तू ३  
 ने मुझे बचाने की आज्ञा किई है क्योंकि तू ही मेरी चटान और मेरा गढ़ है । हे ४  
 मेरे ईश्वर दुष्ट के हाथ से और अधर्मी और क्रूर मनुष्य के पंजे से मुझे छुड़ा ।  
 क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर मेरी आज्ञा तू ही है मेरी युवा अवस्था से मेरा शरणस्थान । ५

मनुष्य लुट गये वे अपनी नींद में सो गये हैं और सारे बलवान मनुष्यों में से  
 ६ किसी ने अपना हाथ नहीं पाया । हे यशकूब के ईश्वर तेरी दपट से रथ और  
 ७ घोड़े नींद में पड़ गये । तुझ से हां तुझी से डरा चाहिये और जब तू क्रोध करे  
 ८ तब कौन तेरे आगे खड़ा रहेगा । तू ने स्वर्ग पर से विचार सुनाया पृथिवी  
 ९ डर गई और घम गई । जब ईश्वर न्याय के लिये उठा जिसमें पृथिवी के सारे  
 कोमलों को बचावे । सिलाह ॥

- १० क्योंकि मनुष्य का क्रोध तेरी स्तुति करेगा और कोषों का श्रेष्ठ तू काटि पर  
 ११ बांधेगा । हे तुम सब कि उस के आसपास हो परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये  
 मनोतियां मानो और पूरी करो उस भयंकर ईश्वर के आगे लोग भेंट लायें ।  
 १२ वह अध्यक्षों के प्राण को काट डालेगा वह पृथिवी के राजाओं के लिये  
 भयंकर है ॥

### सतचत्वरवां गीत ।

प्रधान बजानिये के लिये यदूतून के ऊपर आसफ का गीत ॥

- १ मैं अपना शब्द ईश्वर की ओर उठाऊंगा और पुकारूंगा अपना शब्द ईश्वर  
 २ की ओर उठाऊंगा और वह मेरी ओर कान धरेगा । मैं ने अपनी विपत्ति के  
 दिन प्रभु को ठूँठा मेरा हाथ रात को फैला रहा और निर्वल न हो गया मेरे  
 ३ प्राण ने शान्ति पाने से नाह किया । मैं ईश्वर को स्मरण करता और हाहाकार  
 ४ करता हूँ चिन्ता करता हूँ और मेरा प्राण मूर्छा में पड़ा है । सिलाह । तू ने  
 मेरी आंखें खुली रखी हैं मैं मारा गया और बाल नहीं सक्ता ॥

- ५ मैं ने अगिले दिनों पर और प्राचीन घरों पर सोच किया । मैं अपने रात के  
 गान को स्मरण करूंगा अपने मन में सोच करूंगा और मेरा आत्मा खोज करता  
 ६ है । कि क्या प्रभु सदा के लिये त्यागेगा और फिर कभी प्रसन्न न होगा । क्या  
 उस की दया सदा के लिये जाती रही उस की याचा पीढ़ी से पीढ़ी लों कट गई ।  
 ७ क्या सर्वशक्तिमान अनुग्रह करना भूल गया क्या उस ने क्रोध में अपनी दया को  
 बन्द कर रक्खा है । सिलाह ॥

- १० और मैं ने कहा कि यह मेरी निर्वलता है अति महान के दहिने हाथ के  
 ११ वर्ष । मैं परमेश्वर के कार्यों का वर्णन करूंगा क्योंकि मैं तेरे प्राचीन आश्चर्यों  
 १२ को स्मरण करूंगा । और मैं तेरे सारे कार्यों को ध्यान करूंगा और तेरी कीर्ति  
 पर सोच करूंगा ॥

- १३ हे ईश्वर तेरा मार्ग पवित्रता में है ईश्वर के समान कौन बड़ा महेश्वर है ।  
 १४ तू ही वह सर्वशक्तिमान है जो आश्चर्य कर्म किया करता है तू ने लोगों में  
 १५ अपना बल प्रगट किया है । तू ने अपनी भुजा से अपने लोग यशकूब और यूसुफ  
 १६ के सन्तानों को छुड़ाया । सिलाह । हे ईश्वर पानियों ने तुझे देखा पानियों ने  
 १७ तुझे देखा वे शर्षराते हैं हां गहिराव कांप उठते हैं । मेघों ने जल उंडेल दिया  
 १८ बादलों ने शब्द दिया हां तेरे बाण चारों ओर उड़ते हैं । तेरे गर्जन का शब्द खंडर  
 में हुआ बिजलियों ने भूमंडल को उंजियाला कर दिया तब पृथिवी शर्षराई और  
 १९ कांप गई । तेरा मार्ग समुद्र में था और तेरे पथ बड़े पानियों में और तेरे पांव

लों और नदी से पृथिवी के अंत लों प्रभुता करेगा । वनवासी लोग उस के आगे ९  
 भुजेंगे और उस के बैरी माटी चाटेंगे । तस्मीम और टापुओं के राजा भेंट १०  
 भेजेंगे मन्ना और सिन्धु के राजा भेंट घोलदान में लायेंगे । और सारे राजा उस ११  
 को दण्डवत् करेंगे सारे जातिगण उस की सेवा करेंगे । क्योंकि वह दोहाई १२  
 देनेहारे कंगाल को और दुःखी और जिन का कोई सहायक नहीं बचावेगा । वह १३  
 दरिद्र और कंगाल पर दया करेगा और कंगालों का प्राण बचावेगा । वह उन १४  
 के प्राण को अन्धेर और उपद्रव से छुड़ावेगा और उन का मोह उस की दृष्टि  
 में बहुमूल्य होगा । और वह जीता रहेगा और मरने के सेने में से उसे दिया १५  
 करेगा और वह उस के लिये सदा प्रार्थना किया करेगा वह सारे दिन उस का  
 धन्यवाद करेगा । पृथिवी में पहाड़ों की चाटी पर केवल मुट्ठी भर अनाज है १६  
 उस का फल लुब्धनान की नाईं छड़छड़ावेगा और नगर में से वे पृथिवी की घास  
 की नाईं लदलदावेंगे । उस का नाम सदा लों रहेगा जब लों कि मूर्ख रहेगा १७  
 तब लों उस का नाम फैलता जायेगा और लोग उन्हे आशीस पायेंगे सारे  
 जातिगण उसे धन्य कहेंगे ॥

परमेश्वर ईश्वर हमरागल का प्रभु जो अकेला आश्चर्य कार्य करता है धन्य १८  
 हो । और उस का विभवमय नाम सदा लों धन्य हो और सारी पृथिवी उस के १९  
 विभव से परिपूर्ण होवे आमीन और आमीन ॥

यस्सी के बेटे दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुईं ॥

२०

तिवत्तग्या गीत ।

आमक का गीत ॥

ईश्वर हमरागल के लिये ग्यरे अन्तःकरणियों के लिये केवल भला है । और मैं १  
 निकट था कि मेरे प्रांख टल जायें निकट था कि मेरे पग फिसल जायें ।  
 क्योंकि मैं अहंकारियों से डाढ़ करता था और कहता था कि दुष्टों का कुणल ३  
 देखा कहेगा ॥

क्योंकि उन के लिये मृत्यु के समय किसी प्रकार के बंधन नहीं हैं और उन ४  
 का घल पुष्ट है । वे मनुष्य की नाईं दुःख में नहीं हैं और मनुष्य के पुत्र के संग ५  
 मार नहीं खाते । इस लिये घमंड उन के गले की हनुली हुआ अन्धेर के वस्त्र ६  
 ने उन्हीं ढांप लिया है । उन की आंखें चिकनाई से उभरी हुई हैं उन के मन की ७  
 चिन्तायें निकलती हैं । वे छिढ़ाते और दुष्टता के संग वार्तें करते हैं घमंड से ८  
 अन्धेर की वार्तें करने हैं । उन्हीं ने अपना मुंह स्वर्ग पर रखवा है और उन की ९  
 जीभ पृथिवी पर घूमती है । इस लिये वह अपने लोगों को यद्यं फेर लाता है और १०  
 मुंहामुंह पानी उन पर निचोड़ा जाता है । और वे कहते हैं कि सर्वशक्तिमान ११  
 क्योंकर जाने और क्योंकर अति महान को हम का ज्ञान हो । देखो ये अधर्मी १२  
 हैं और सदा के भाग्यवान् उन्हीं ने अपनी संपत्ति बढ़ाई है ॥

केवल वृथा मैं ने अपने मन को शुद्ध किया है और निर्मलता मैं अपने छात्र १३  
 धोये हैं । और मैं सारे दिन मार खाता रहा और हर विद्वान को सेरी ताड़ना १४  
 हुई । यदि मैं ने कहा हो कि यां वर्णन कहेगा तो देख मैं ने तारे बालकों की १५



२४ को द्वार खोले । और उन पर खाने के लिये मन्न धरसाया और उन्हें स्वर्गीय अन्न  
 २५ दिया । हर एक ने दूतों की रोटी खाई उस ने उन्हें बहुताई से मार्ग के लिये  
 २६ भोजन भेजा । वह स्वर्ग में पुरखी पवन चलाता है और अपने बल से दक्षिणी  
 २७ पवन बहाता है । और उस ने उन पर धूल की नाईं मांस और समुद्र के बालू की नाईं  
 २८ पक्षी बरसाये । और उन की छावनी के बीच में उन के घरों के आसपास गिराये ।  
 २९ और उन्होंने ने खाया और अति तृप्त हुए और वह उन्हें उन्हीं की इच्छा देता है ।  
 ३० वे अपनी लालसा से अलग न हुए अब लो ! उन का भोजन उन के मुंह ही में था ।  
 ३१ कि ईश्वर का कोप उन पर भड़का और उन के पुष्टों में से मारा और इसराएल  
 के तसणों को गिरा दिया ॥

३२ तिस पर भी उन्होंने ने फिर पाप किया और उस के आश्चर्य कार्यों का  
 ३३ विश्वास न किया । इस लिये उस ने उन के दिनों को अनर्थ में और उन के बरसों  
 को भय में बिताया ॥

३४ जब उस ने उन्हें मारा तब उन्होंने ने उसे हूँठा और पश्चात्ताप किया और  
 ३५ शीघ्र सर्वशक्तिमान को खोजी हुए । और चेत किया कि ईश्वर उन की चटान  
 ३६ और सर्वशक्तिमान महेश्वर उन का मुक्तिदाता था । पर उन्होंने ने अपने मुंह से  
 ३७ उस्से लल्लोपत्तो किई और अपनी जीभ से उस्से झूठ बोले । और उन का मन  
 ३८ उस के साथ स्थिर न रहा और वे उस की छावा पर विश्वास न लाये । और  
 वह दयालु अधर्म को क्षमा करता है और सर्वथा नाश नहीं करता है और उस  
 ३९ ने अपने क्रोध को बारम्बार रोका और अपने सारे क्रोध को न भड़काया । और  
 उस ने स्मरण किया कि वे मांस हैं और चलनेहारी पवन जो फेर न आवेगी ॥

४० वे वन में उस्से क्या ही वेर वेर दंगा करते हैं और अरण्य में उसे उदास करते  
 ४१ हैं । और उन्होंने ने फिर सर्वशक्तिमान को परखा और इसराएल के पवित्रमय पर  
 ४२ अनादर का चिन्ह लगाया । उन्होंने ने उस के हाथ को स्मरण न किया उस दिन  
 ४३ को जब उस ने उन्हें सतानेहारे से कुड़ाया । जिस ने मित्र में अपने चिन्ह और  
 ४४ जुअन के चौगान में अपने आश्चर्य प्रगट किये । और उन की नदियों को लोहू  
 ४५ कर डाला और वे अपनी धाराओं से पी नहीं सक्ते । वह उन में मक्खियां भेजता  
 ४६ है और वे उन्हें खा लेती हैं और मंडुक और वे उन्हें नष्ट करते हैं । और उस ने  
 ४७ उन के फल कीड़े को और उन का परिश्रम टिड्डी को दिया । वह उन के दाख  
 ४८ को ओलों से और उन के गूलरों को पाले से मारता है । और उस ने उन के ठोर  
 ४९ ओलों को और उन के मुंड बिजुलियों को सोंपे । वह उन पर अपने कोप की  
 उबलन क्रोध और जलजलाहट और व्याकुलता अर्थात् आपत्ति के दूतों की  
 ५० जथा भेजता है । वह अपने क्रोध के लिये मार्ग सिद्ध करता है उस ने उन के  
 ५१ प्राण को मृत्यु से नहीं बचाया और उन के प्राण सरी को सोंपे । और मित्र में  
 हर एक पहिलौठे को हाम के तंतुओं में उन के बलों के पहिले फल को मारा ।  
 ५२ और अपने लोगों को भेड़ों की नाईं चलाया और मुंड की नाईं वन में उन की  
 ५३ अगुआई किई । और कुशल के संग उन की अगुआई किई ऐसा कि वे न डरे  
 ५४ और समुद्र ने उन के वैरियों को ठांप लिया । और उन्हें अपने पवित्र सिवाने लो

के चिन्त नहीं जाने गये । तू ने सूसा और टाइन के टाय से मुँह की नाईं अपने २० लोगों की अगुआई किई ॥

अठहत्तरवां गीत ।

आसफ का उपदेशदायक गीत ॥

हे मेरे लोगो मेरी व्यवस्था पर कान धरो मेरे मुँह की बातों पर अपने कान १ लगाओ । मैं अपना मुँह दृष्टान्त में खोलूंगा प्राचीन भेदों को प्रगट करूंगा । २ जिन्हें हम ने सुना और उन्हें जाना और हमारे पितरों ने हम से वर्णन किया । ३ हम उन्हें उन के बालकों से न छिपायेंगे परन्तु अवैया पीढ़ी से परमेश्वर की स्तुतियों ४ का और उस के बल का और उस के आश्चर्यों का जो उस ने किये वर्णन करते रहेंगे ॥

और उस ने यश्कूत्र में साची ठहराई और इसराएल में व्यवस्था स्थिर ५ किई जिन के विषय उस ने हमारे पितरों को आज्ञा किई कि उन्हें अपने बालकों को सिखायें । जिसमें अवैया पीढ़ी जानें बालक उत्पन्न होयें और ६ उठकर अपने बालकों से वर्णन करें । और ईश्वर पर अपना आन्तरिक और ७ सर्वशक्तिमान के कार्यों को न भूलें और उस की आज्ञाओं को पालन करें । और ८ अपने पितरों की नाईं मगरे और दंगस्त पीढ़ी न होयें ऐसी पीढ़ी कि जिस ने अपने मन को सिद्ध न रखया और जिस का आत्मा सर्वशक्तिमान पर पूरा भरोसा न रखता था ॥

इफरायम के मन्तान दशियार बांधे हुए धनुष चढ़ाये हुए लड़ाई के दिन ९ में लौट आये । उन्हें ने ईश्वर की आज्ञा को स्मरण न किया और उस की १० व्यवस्था पर चलने से नाह किया । और उस के कार्यों को और उस के आश्चर्यों ११ को जो उस ने उन्हें दिखाये भूल गये ॥

उन के पितरों के आगे मिस्र देश में जुशन के चौगान में उस ने आश्चर्य १२ कर्म किये । उस ने समुद्र को दो भाग कर दिया और उन्हें पार पहुँचाया १३ और पानी को छेर की नाईं खड़ा कर दिया । और दिन को मेघ से और रात १४ भर आग की ज्योति से उन की अगुआई किई । वह वन में चटानों को चीरता १५ है और उन्हें पीने को मानो बड़े गहिराव देता है । और चटान से धारें निकास १६ लता है और नदी की नाईं पानी बहा देता है ॥

पर उन्हें ने उस की विरुद्धता में और अधिक पाप किया और वन में अति १७ मन्तान के आगे बहुत दंगा किया । और अपने मन में सर्वशक्तिमान को यों परखा १८ कि अपनी इच्छा के अनुसार भोजन मांगें । और ईश्वर के विरुद्ध बोले और कहा १९ कि क्या सर्वशक्तिमान वन में मंघ सिद्ध कर सकेगा । देखो उस ने चटान को मारा २० और पानी बहाता है और धारें फूट निकलती हैं पर क्या वह रोटी भी दे सक्ता है अथवा अपने लोगों के लिये मांस सिद्ध कर सक्ता है । इस लिये परमेश्वर ने सुना २१ और अति क्रोधित हुआ और यश्कूत्र में आग भड़की और इसराएल पर भी क्रोध उभरा । क्योंकि वे ईश्वर पर विश्वास न लाये और उन्हें ने उस की सुक्ति २२ पर भरोसा न रखया । यद्यपि उस ने ऊपर से मेघों को आज्ञा किई और स्वर्ग २३

- ८ अगिली पीढ़ियों के पापों का स्मरण हमारे विषय न कर शीघ्र कर तेरी दया  
 ९ हमारे आगे आये क्योंकि हम बहुत क्षीण हो गये । हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर  
 अपने नाम की महिमा के लिये हमारी सहाय कर और अपने नाम के लिये हमें  
 १० ठुड़ा और हमारे पापों को क्षमा कर । अन्यदेशी किस लिये कहें कि उन का  
 ईश्वर कहां है अन्यदेशियों के मध्य हमारी दृष्टि के आगे तेरे दासों के उस लोहू  
 का पलटा जो बहाया गया है प्रगट हो ॥
- ११ बंधुए का कराहना तेरे आगे पहुंचे अपनी भुजा की महिमा के समान मृत्यु  
 १२ के बालकों को जीता रहने दे । और जिस रीति कि उन्हें ने हे प्रभु तेरी निन्दा  
 किई तू उन की इस निन्दा का पलटा शतगुण हमारे परोसियों की गोद में रख  
 १३ दे । और हम तेरे लोग और तेरी चराई की भेड़ें सदा तेरा धन्य मानेंगे पीढ़ी  
 से पीढ़ी लों तेरी स्तुति वर्णन करेंगे ॥

अस्सीवां गीत ।

प्रधान वज्रनिघे के लिये सोसनों के विषय । साक्षी । आसफ का गीत ॥

- १ हे इसराएल के चरवाहे जो भुंड की नाईं यूसुफ की अगुआई करता है कान  
 २ धर हे करोबीम पर के बैठवैये बिभूषित हो । इफरायम और खिनयमीन और  
 ३ मुनस्सी के आगे अपने बल को जगा और हमारे बचाव के लिये आ । हे ईश्वर  
 हमें फिर स्थिर कर और अपने मुख को हम पर चमका और हम बच जायेंगे ॥
- ४ हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के ईश्वर तू ने कब से अपने लोगों की प्रार्थना  
 ५ पर धूआं उठाया है । तू ने उन्हें आंसुओं की रोटी खिलाई और उन्हें मटके भर  
 ६ भर आंसू पिलाये हैं । तू हमें हमारे परोसियों के लिये भगड़े का कारण ठहराता  
 ७ है और हमारे बैरी अपने को मुदित करते हैं । हे ईश्वर सेनाओं के ईश्वर हमें  
 फिर स्थिर कर और अपना मुख चमका और हम बच जायेंगे ॥
- ८ तू एक लता मित्र से निकालता अन्यदेशियों को दूर करता और उसे लगाता  
 ९ है । तू ने उस के आगे ठिकाना सिद्ध किया और उस ने जड़ पकड़ लिई और  
 १० पृथिवी को भर दिया । पहाड़ उस की छाया से ठंण गये और उस की डालियों  
 ११ से सर्वशक्तिमान के देवदारु । वह अपनी डालियां समुद्र लों पहुंचाता है और  
 १२ अपनी टहनियां नदी लों । तू ने उस के खाड़ों को किस कारण तोड़ डाला कि  
 १३ सारे पथिक उसे खसोटते हैं । बनैला सूअर उसे उजाड़ता है और खनपशु उसे  
 चर जाता है ॥
- १४ हे ईश्वर सेनाओं के ईश्वर दया करके फिर आ स्वर्ग से दृष्टि कर और देख और  
 १५ इस लता पर दृष्टि कर । और जो तेरे दहिने हाथ ने लगाया है उसे स्थिर कर और  
 १६ उस बेटे पर जिसे तू ने अपने लिये पोसा है रक्षा कर । वह आग से जलाया गया  
 १७ काटा गया वे तेरे मुख की दपट से नाश होते हैं । तेरा हाथ अपने दहिने हाथ  
 के मनुष्य पर हो उस मनुष्य के पुत्र पर जिसे तू ने अपने लिये पोसा है ॥
- १८ तो हम तुझ से न फिरेंगे तू हमें जिलावेगा और हम तेरा ही नाम पुकारेंगे ।  
 १९ हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के ईश्वर हमें फिर स्थिर कर अपना मुख चमका और  
 हम बच जायेंगे ॥

इस पहाड़ पर जिसे उस के दहिने हाथ ने माल लिया पहुंचाया । और उन के ५५ आगे से जातिगणों को दूर किया और रस्सी के साथ उन जातिगणों को अधिकार ठहराया और इसरायल की गोष्टियों को उन के तंतुओं में बसाया ॥

तिस पर भी उन्हें ने ईश्वर अति मदान को परखा और उसे फिर गये और उस ५६ की सान्धियों को पालन न किया । और फिर गये और अपने पितरों की नाईं कल ५७ किया वे धरे हुए धनुष की नाईं फिर गये । और अपने ऊंचे म्यानों के कारण से ५८ उस को गिराया और अपनी खोदी हुई मूर्तों के कारण से उसे ज्वलित किया ॥

ईश्वर ने मुना और कोषित हुआ और इसरायल से अति घिन किया । और ५९ सैला के निधाम को उस तंतु को जिसे उस ने मनुष्यों के मध्य में खड़ा किया था त्यागा । और अपने बल को बंधुआई में दिया और अपने विभव को धेरी के ६० हाथ में । और अपने लोगों को तलवार को सोंपा और अपने अधिकार पर झुंड ६१ हुआ । आग ने उस के तरुणों को भस्म किया और उस की कुंआरियों के ६२ विवाह के गीत गाये न गये । उस के याज्ञक तलवार से मारे गये और उन की ६३ राईं विलाप नहीं करती ॥

तब प्रभु उस की नाईं जो नींद से चौंके जागा उस सदाधीर के समान जो ६४ मदिरा के असल से ललकारता है । और उस ने अपने दैरियों को मारके पीछे ६५ दटा दिया सदा की लज्जा उन्हें दिई ॥

और यूसुफ के तंतु से घिन किई और इफरायम की गोष्टी को न चुना । और ६६ यहूदाह की गोष्टी को सैतून के पहाड़ को जिसे उस ने प्यार किया चुन लिया । और ऊंचे पहाड़ों के समान पृथिवी की नाईं जिस की नेत्र उस ने सदा के लिये ६७ डाली अपने धर्मधाम को बनाया । और दाऊद को अपना सेवक बनाने के लिये ७० चुन लिया और उसे झुंडों के भेड़शालों में से निकाल लाया । उस ने बच्चेवाली ७१ भेड़ियों के पीछे से उसे ले लिया जिसमें उस के लोग यशकूब को और उस के अधिकार इसरायल को चरावे । सो उस ने अपने मन की खराई के समान उन्हें ७२ चराया है और अपने हाथों की गुणता से उन की अगुआई किया करेगा ॥

उनासीवां गीत ।

आसफ का गीत ॥

हे ईश्वर अन्यदेशी तेरे अधिकार में आये हैं उन्हें ने तेरे पवित्र मन्दिर को १ अशुद्ध किया यरुसलम को ठेर ठेर कर दिया है । उन्हें ने तेरे सेवकों की लोथी २ को आकाश के पक्षियों का और तेरे साधुन का मांस पृथिवी के वनपशुन का आहार ठहराया है । उन्हें ने उन का लोह यरुसलम की चारों ओर पानी की ३ नाईं बचाया है और कोई गाड़नेद्वारा नहीं है । हम अपने परीसियों के लिये ४ निन्दा अपने आसपासियों के लिये ठट्ठा और उपहास हो गये हैं ॥

हे परमेश्वर तू कब लों सदा रिसियाता रहेगा और तेरा ज्वलन आग की नाईं ५ धरा करेगा । अपना कोष उन जातिगणों पर उंडेल जिन्हें ने तुझे नहीं जाना ६ और उन राज्यों पर जिन्हें ने तेरा नाम लेके नहीं पुकारा है । क्योंकि उन्हें ने ७ यशकूब को निगल लिया और उस के निवास को उजाड़ कर दिया है ॥

२ क्योंकि देख तेरे बैरी दुल्लू करतें हैं और तुझ से डाढ़ रखनेहारे सिर उठाते  
 ३ हैं । वे तेरे लोगों पर कल का परामर्श करते हैं और तेरे किये हुआ के विरुद्ध  
 ४ चिन्ता करते हैं । उन्होंने ने कहा है कि आओ और हम उन्हें काट डालें जिसमें  
 ५ वे एक जाति न रहें और इसराएल का नाम फिर स्मरण न हो । क्योंकि उन्होंने  
 ६ ने आपुस में मन से परामर्श किया है वे तेरे विरुद्ध नियम बांधते हैं । अर्थात्  
 ७ अदूम के तंखू और इसमअएली मोअय और हाजरी । जियल और अमून और  
 ८ असालीक फिलिस्त सूर के दासी समेत । असूर भी उन के संग मिल गया वे लूत  
 के सन्तान की बांढ हो गये । सिलाह ॥

९ तू उन से ऐसा कर जैसा मिदियान से जैसा सीसरा से जैसा यायीन से कैमून  
 १० की तराई में तू ने किया । वे सेनदार में नाश हुए पृथिवी के लिये खाद हो  
 ११ गये । उन्हें हां उन के कुलीनों को गुराव की नाईं और जियल की नाईं कर  
 १२ और जियल की नाईं और जिलमनअ की नाईं उन के समस्त आध्यक्षों को । जिन्होंने  
 १३ ने कहा है कि हम अपने लिये ईश्वर के भयनों को अधिकार में लें । हे मेरे  
 १४ ईश्वर उन्हें यंत्रंडर की नाईं कर भूसे की नाईं पथन के सन्मुख । जैसे आग धन  
 १५ को भस्म करती है और जैसे लवर पहाड़ों को दहन करता है । वैसा ही तू अपनी  
 १६ आंधी से उन का पीछा करेगा और अपनी भंकोर से उन्हें डरावेगा । उन का  
 १७ मुंह लाल से भर दे तब हे परमेश्वर लोग तेरे नाम का पीछा करेंगे । वे सदा लों  
 १८ लज्जित और भयमान रहेंगे और लज्जित और नाश होंगे । और लोग जानेंगे कि  
 तू ही जिस का नाम परमेश्वर है अकेला सारी पृथिवी पर महान है ॥

चौरासीवां गीत ।

प्रधान वजनिये के लिये । गीतीत पर । कोरह के पुत्रों के लिये गीत ॥

१ हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर तेरे तंखू कैसे मनभावने हैं । मेरा प्राण परमे-  
 श्वर के आंगनों के लिये अभिलाषी और मूर्छित भी है मेरा मन और मेरा तन  
 ३ जीवते सर्वशक्तिमान के लिये आनन्द का शब्द करता है । हां गौरैया ने घर पाया  
 और सुपाविना ने अपने लिये खांशा जहां वह अपने गेदे रखती है अर्थात् तेरी  
 ५ खेदियों को हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मेरे राजा और मेरे ईश्वर ॥

६ तेरे घर के निवासी क्या ही धन्य हैं वे सदा तेरी स्तुति किया करेंगे । सिलाह । क्या  
 ७ ही धन्य वह मनुष्य जिस का बल तुझ से है जिस के मन में मार्ग हैं । वे राने की  
 ८ तराई में चलते चलते उसे कुण्ड ठहराते हैं हां मार्गदर्शक आशीसों से ठंप जाता है । वे  
 ९ बल पर बल बढ़ाते हुए चला करेंगे ईश्वर के आगे सैहून में प्रगट होंगे ॥

१० हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन हे यश्कूब के ईश्वर कान  
 ११ धर । सिलाह । हे हमारी ढाल देख हे ईश्वर और अपने अभिषिक्त के मुंह पर  
 १२ दृष्टि कर । क्योंकि एक दिन तेरे आंगनों में सहस्र से भला है मैं ने अपने ईश्वर  
 के घर की डेवठी पर खड़ा रहना चुन लिया है उससे अधिक कि दुष्टता के तंखुओं  
 १४ में रहूं । क्योंकि परमेश्वर ईश्वर सूर्य और ढाल है परमेश्वर अनुग्रह और विभव  
 १५ देगा जो खराई से चलते हैं वह उन से भलाई न रख छोड़ेगा । हे परमेश्वर  
 १६ सेनाओं के प्रभु क्या ही धन्य वह मनुष्य जो तुझ पर भरोसा रखता है ॥

## यकामीयां गीत ।

प्रधान यजनिये के लिये । गितीत पर । आसफ का गीत ॥

ईश्वर के लिये जो हमारा बल है पुष्कारके गाथो यशकूब के ईश्वर की १  
और आनन्द मे ललकारो । गीत उठाओ और तबला बजाओ मनोहर धीरा २  
मिनार समेत । पर्यमास में पूर्णमासी में और हमारे पर्य के दिन में तुरही फुंको ॥ ३

क्योंकि यह हमरायल के लिये आज्ञा और यशकूब के ईश्वर का अधिकार ४  
है । उस ने उसे यूसुफ में सानी के लिये ठहराया जय यह मिस की भूमि पर से ५  
ढाके निकला जहां में ने एक ऐसी भाषा सुनी जो नहीं जानता था ॥

मैं ने उस के कांधे पर से बोझ उतारा उस के हाथ टोकरी से निर्बंध होते ६  
हैं । तू ने विपत्ति में पुकारा और मैं ने तुम्हें बुढ़ाया है मैं गर्जन के आठ में ७  
ढाके तुम्हें उतर दूंगा मरीच के पानी पर तुम्हें परखूंगा । मिलाट । हे मेरे ८  
लोग सुन और मैं ने तेरे विरुद्ध नाची दूंगा हे हमरायल मैं बोलूंगा यदि तू मेरी  
सुनेगा । तेरे मध्य और कोई सर्वशक्तिमान न हो और तू अन्य सर्वशक्तिमान की ९  
पूजा न कर । मैं ही परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस देश से बाहर लाया १०  
अपना मुंह फैला और मैं उसे भर दूंगा । पर मेरे लोग मेरे शब्द के सुनेहारे न ११  
हुए और हमरायल ने मुझे न माना । और मैं ने उन्हीं उन के मन की कठोरता १२  
पर होंड़ दिया वे अपने ही मतों पर चलने दें ।

हाथ कि मेरे लोग मेरी सुनें और हमरायल मेरे मार्गों पर चलें । तो मैं शीघ्र १३  
उन के वैरियों को झुकाऊंगा और उन के सतानेहारों पर अपना हाथ फेंदूंगा । पर- १४  
मेश्वर के वैर रखनेहारे उम्मे दब जायेंगे और उन का समय सदा लों रहेगा ।  
और वह उसे अच्छे से अच्छा गँहूँ खिलायेगा और पत्थर की मधु से मैं तुम्हें तृप्त १५  
करूंगा ॥

## यकामीयां गीत ।

आसफ का गीत ॥

ईश्वर सर्वशक्तिमान की मंडली में खड़ा होता है वह देवों के मध्य में १  
विचार करेगा । तुम सब लों अधर्म मे विचार करोगे और दुष्टों का पक्ष २  
करोगे । मिलाट । दुर्बल और अनाथ का विचार करो दुःखी और कंगाल का ३  
न्याय करो । दुर्बल और कंगाल को बुढ़ाओ दुष्टों के हाथ से उसे बचाओ ॥ ४

वे नहीं जानते और न समझेंगे वे अधियारे में चला करेंगे पृथिवी की सारी ५  
नेवें हिल जायेंगी । मैं ने तो कहा कि तुम देख दो और तुम सब कोई अति ६  
सहान के पुत्र हो । पर निश्चय तुम मनुष्य के समान मरोगे और राजपुत्रों में से ७  
एक की नाईं गिरेगें ॥

हे ईश्वर उठ पृथिवी का विचार कर क्योंकि तू ही सारे जातिगणों का ८  
अधिकार में लेगा ॥

## तिरासीयां गीत ।

आसफ का गान और गीत ॥

हे ईश्वर चुप मत हो चुपका मत रह और चैन न ले दे सर्वशक्तिमान ॥ १



२३ न पहुँचायेगा और दुष्टता का सन्तान उसे क्लेश न देगा । और मैं उस के सम्मुख  
 २४ उस के दुःखदायकों को कुचल डालूँगा और उस के वैरियों को माहूँगा । और मेरी  
 सच्चाई और मेरी दया उस के संग रहेगी और मेरे नाम से उस का संग जंचा होगा ।  
 २५ और मैं उस का हाथ समुद्र पर रखूँगा और उस का दहिना हाथ नदियों पर ।  
 २६ वह मुझे पुकारेगा कि मेरा पिता तू ही है मेरा सर्वशक्तिमान और मेरी मुक्ति की  
 २७ चटान । मैं भी उसे अपना पालैलाठा ठहराऊँगा पृथिवी के राजाओं से महान ।  
 २८ मैं सदा अपनी दया उस के लिये रखूँगा और मेरी वाचा उस के साथ दृढ़ है ।  
 २९ और मैं उस के वंश को सदा लों और उस के सिंहासन को स्वर्ग के दिनों के  
 समान स्थिर करूँगा ॥

३० यदि उस के बालक मेरी व्यवस्था को त्याग देंगे और मेरे न्यायों पर न  
 ३१ चलेंगे । यदि वे मेरी विधि को अपवित्र करेंगे और मेरी आज्ञाओं को पालन न  
 ३२ करेंगे । तो मैं कड़ी के साथ उन के पापों का और कोड़ों से उन के अधर्म का  
 ३३ दण्ड देऊँगा । तथापि अपनी दया उससे दूर न करूँगा और अपनी सच्चाई में  
 ३४ झूठा न होऊँगा । मैं अपनी वाचा को भंग न करूँगा और जो मेरे मुँह से निकला  
 ३५ उसे न पलटूँगा । मैं ने अपनी पवित्रता के साथ एक बात की किरिया खाई है  
 ३६ मैं दाऊद से झूठ न बोलूँगा । उस का वंश सदा लों और उस का सिंहासन मेरे  
 ३७ आगे सूर्य की नाईं बना रहेगा । जिस रीति कि चन्द्रमा सदा लों स्थिर रहेगा  
 और स्वर्ग पर वह साक्षी सच्चा है । सिलाह ॥

३८ पर तू ने तो दूर और घिन किया है तू तो अपने अभिप्रेत पर क्रुद्ध हुआ ।  
 ३९ तू ने अपने दास से नियम को तोड़ा भूमि पर उस का मुकुट अपवित्र कर दिया  
 ४० है । तू ने उस के सारे बाड़ों को तोड़के गिरा दिया उस के गढ़ों को विनाश कर  
 ४१ दिया है । सारे पथिक उसे लूटते हैं वह अपने परोसियों के निकट निन्दा हुआ ।  
 ४२ तू ने उस के शत्रुन का दहिना हाथ जंचा किया उस के सारे वैरियों को मगन  
 ४३ किया है । तू उस की तलवार की धार को भी मोड़ देता है और उसे युद्ध में  
 ४४ ठहरने नहीं देता । तू ने उसे उस के बिभव से दूर कर दिया और उस के सिंहासन  
 ४५ को भूमि पर गिरा दिया है । तू ने उस की तरुणाई के दिनों को अल्प किया तू  
 ने उसे लाज से ढाँपा है । सिलाह ॥

४६ हे परमेश्वर तू कब लों सदा के लिये आप को छिपायेगा कब लों तेरे  
 ४७ क्रोध आग की नाईं धधकता रहेगा । चेत कर कि मैं कितना जीवन रखत  
 ४८ हूँ तू ने किस लिये सारे मनुष्य के सन्तानों को व्यर्थ उत्पन्न किया । कौन  
 मनुष्य जीता रहेगा और मृत्यु को न देखेगा और अपने प्राण को समाधि  
 ४९ के हाथ से बचावेगा । सिलाह । हे प्रभु तेरी अगिली दया जिन की तू  
 ५० दाऊद से अपनी सच्चाई में किरिया खाई कहां हैं । हे प्रभु अपने दासों के  
 निन्दा को स्मरण कर और यह कि मैं अपनी गोद में बहुत जातिगणों को लिए  
 ५१ हूँ । मैं जिसे हे परमेश्वर तेरे उन वैरियों ने तुच्छ समझा है जिन्होंने ने तेरे  
 ५२ अभिप्रेत के पांव के चिन्ह की निन्दा की है । परमेश्वर सदा लों धन्य हो  
 आमीन और आमीन ॥

### पञ्चासीयां गीत ।

प्रधान वज्रनिये के लिये । कोरु के पुत्रों का गीत ॥

हे परमेश्वर तू ने अपनी भूमि पर प्रसन्नता प्रगट किई तू यज्ञकूप की १  
बधुग्राह की दगा में फिर आया । तू ने अपने लोगों के अधर्म को क्षमा किया २  
उन के सारे पाप को ठाँप लिया । मिलाह । तू ने अपने सारे कोप को उठा ३  
लिया अपने क्रोध की उबलन में फिर गया ॥

हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर हमारे पास फिर आ और अपनी रिस को हम ४  
पर से रोक । क्या तू सदा लों हम से रिसियावेगा पीढ़ी से पीढ़ी लों अपने ५  
क्रोध को बढ़ाता रहेगा । क्या तू न फिरेगा और हमें जिलावेगा और क्या ६  
तेरे लोग तुझ से आनन्द न होंगे । हे परमेश्वर अपनी दया हमें दिखला और ७  
निश्चय तू अपनी मुक्ति हमें देगा ॥

मैं सुनूँगा कि सर्वगतिमान परमेश्वर क्या कहेगा क्योंकि वह अपने लोगों ८  
के लिये और अपने साधुन के लिये कुशल का उचन कहेगा पर वे मूर्खता की ९  
ओर न फिरें । केवल उस के इच्छाओं के पास उस की मुक्ति है जिसमें विभय १०  
हमारी भूमि में व्याप्त करे । दया और सद्भाव मिल गई हैं धर्म और कुशल १०  
सूसा ले चुके हैं । सद्भाव पृथिवी से उगता है और धर्म स्वर्ग से भाँकता है । ११  
परमेश्वर भलाई भी देगा और हमारी भूमि अपना फल देगा । धर्म उस के १२  
आगे आगे चला करेगा और हमें उस के लोगों के मार्ग पर चलेगा ॥

### छियासीयां गीत ।

#### दाऊद की प्रार्थना ॥

हे परमेश्वर अपना कान धर और मेरी सुन क्योंकि मैं दुःखी और कंगाल १  
हूँ । मेरे प्राण की रक्षा कर क्योंकि मैं तेरा अनुगृहीत हूँ हे तू मेरे ईश्वर अपने २  
दास को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है । हे प्रभु मुझ पर दया कर क्योंकि ३  
मैं प्रतिदिन तुझ को पुकारता ही रहूँगा । अपने दास के प्राण को आनन्दित ४  
कर क्योंकि हे प्रभु मैं अपने प्राण को तेरी ओर उठाता हूँ । क्योंकि तू ही है ५  
प्रभु भला और समाधान है और अपने सारे पुकारों पर दया से बहुत । हे ६  
परमेश्वर मेरी प्रार्थना पर कान धर और मेरी विनितियों के शब्द पर ध्यान रख । मैं ७  
अपनी विपत्ति के दिन तुझे पुकारूँगा क्योंकि तू मेरी सुनेगा ॥

हे प्रभु देवों में तेरे तुल्य कोई नहीं और तेरे से कार्य कहीं नहीं । सारे ८  
जातिगण जिन्हें तू ने सिरजा है आर्चेंगे और तेरे आगे दण्डवत् करेंगे हे प्रभु और ९  
तेरे नाम की बड़ाई करेंगे । क्योंकि तू ही महान और आश्चर्यकर्ता है तू ही १०  
अकेला ईश्वर है । हे परमेश्वर अपना मार्ग मुझे दिखला मैं तेरी सद्भाव से चलूँगा ११  
मेरे मन को सकार कर जिसमें तेरे नाम से हूँ । हे प्रभु मेरे ईश्वर मैं अपने १२  
सारे मन से तेरी स्तुति कहेगा और सदा लों तेरे नाम की बड़ाई किया कहेगा । १३  
क्योंकि तेरी दया मुझ पर बड़ी थी और तू ने मेरे प्राण को अति नीचे पाताल १४  
से छुड़ाया है ॥

हे ईश्वर अहंकारी मेरे विरुद्ध उठे हैं और अधेरियों की मंडली मेरे प्राण की १४

१२ मार्गी में तेरी रक्षा करें । वे अपने हाथों पर तुझे उठा लेंगे जिसमें न हो कि तू  
१३ अपना पाँव पत्थर पर पटकें । तू भिड़ और साँप को लताड़ेगा सिंह के दंष्ट्रे और  
अजगर को कुचलेगा ॥

१४ क्योंकि वह मुझे पर मोहित हुआ और मैं उसे कुड़ाकंगा उसे ऊँचे पर रखूँगा  
१५ क्योंकि उस ने मेरे नाम को जाना है । वह मुझे पुकारेगा और मैं उस की सुनूँगा  
१६ विपत्ति में मैं उस के संग हूँ मैं उसे कुड़ाकंगा और उसे प्रतिष्ठा दूँगा । मैं उसे अप  
की दृष्टि से सन्तुष्ट करूँगा और अपनी मुक्ति उसे दियूँगा ॥

दानवेष्टा गीत ।

विश्राम दिन के लिये गीत और गान ।

१ परमेश्वर का धन्य माना और है अति सदान तेरे नाम की स्तुति में गान  
२ करना भला है । कि विद्वान को तेरी दया का और रातों का तेरी मृदुई का  
३ वर्णन करें । दस तार का बाजा और दश वाद्य के संग साथ और विनार से  
४ बजा बजाके । क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपने कार्य से मुझे आनन्दित किया है  
मैं तेरे हाथों की क्रिया से आनन्द के शब्द करूँगा ॥

५ हे परमेश्वर तेरे कार्य क्या ही बड़े हैं तेरी चिन्ता अति गहरी है । पशुवत  
६ जन न जानेगा और मूर्ख इसे न समझेगा । जय दुष्ट घास की नाईं उगते और  
७ सारे कुकर्म फूलते हैं तो यह उन के सदा के नाश होने के लिये है । और हे  
परमेश्वर तू ही सर्वदा लो अति सदान है ।

८ क्योंकि देख तेरे घरी हे परमेश्वर क्योंकि देख तेरे घरी नाश होंगे सारे कुकर्म  
९ अपने को क्षिप्तभिन्नता में डालेंगे । और तू ने मेरे सींग को रोड़े की नाईं जंवा  
१० किया मैं ने टटके तेल से अपने सिर को चिकना किया है । और मेरी आंख ने  
मेरे घेरियों पर दृष्टि किई है मेरे कान उन दुष्टों के विषय सुनूँगे जो मेरे विरोध  
में उठते हैं ।

१२ धर्मी खतूर के पेड़ की नाईं लहलहावेगा लुधनान के देवदारु वृक्ष के समान  
१३ बढ़ेगा । परमेश्वर के घर में लगाये हुए वे हमारे ईश्वर के आंगनों में लहलहा-  
१४ वेंगे । वे खुड़ाये में भी फला करेंगे मोटे और हरे रहेंगे । जिसमें वर्णन करें कि  
परमेश्वर खरा है और मेरी छटान और उस में अनीति नहीं है ॥

तिरानवेष्टा गीत ।

१ परमेश्वर राज्य करता है उस ने विभव का वस्त्र पहिना है परमेश्वर ने खल  
का वस्त्र पहिना और उस ने अपनी कटि बांधी है जगत भी स्थिर रहेगा और न  
३ टलेगा । तेरा सिंहासन सदा से स्थिर है सनातन से तू ही है । नदियों ने उठाया  
हे परमेश्वर नदियों ने अपना महाशब्द उठाया है नदियाँ अपना महाशब्द उठा-  
४ वेंगी । बड़े और बलवन्त पानियों को महाशब्द से समुद्र की लहरों से परमेश्वर  
५ उचुता में अति बलवान है । तेरी साक्षियाँ अत्यन्त सच्ची हैं हे परमेश्वर सर्वदा  
लो तेरे घर की पवित्रता फवती है ॥

चौरानवेष्टा गीत ।

१ हे पलटा लेनेहारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर हे पलटा लेनेहारे सर्वशक्तिमान

## नव्येयां गीत ।

ईश्वर के जन सूसा की प्रार्थना ॥

हे प्रभु घीड़ी मे घीड़ी लों हमारा शरणस्थान तू ही रहा है । उम्मे पहिले १  
 कि पढाह उत्पन्न हुए और तू ने पृथिवी और जगत को सिरजा और सनातन मे २  
 सनातन लों तू ही सर्वशक्तिमान है । तू मनुष्य को धूर लों फिर पहुंचाता है और ३  
 कहता है कि हे मनुष्य के सन्तानो फिरो । क्योंकि तेरी दृष्टि में सहस्र वरम कल ४  
 की नाईं हैं जो दीत गया और रात का एक पहर । तू उन्हें बचा ले जाता है ५  
 वे मानो नींद हैं विद्वान को वे घास की नाईं जाते रहते हैं । विद्वान को बच ६  
 फूलता तब जाता रहता है क्योंकि मंथ्या को बच काटा जाता और मृग्य जाता ७  
 है । क्योंकि हम तेरे क्रोध से नाश हो गये और तेरे कोप से दयाकुल हो गये । ८  
 तू ने हमारे अधर्मी को अपने आगे रक्खा है हमारे गुप्त पाप को अपने रूप के ९  
 प्रकाश में । क्योंकि हमारे सारे दिन तेरे क्रोध में दीत गये हम अपने घरों को १०  
 ध्यान की नाईं धिताते हैं । हमारे जीवन के दिन उन में सत्तर घरम हैं और यदि ११  
 बल से अस्सी घरम हो तथ्यापि उन का अटंकार क्रोध और दुःख है क्योंकि हम १२  
 शीघ्र टंकाये जाते और चढ़ जाते हैं । तेरे क्रोध के पराक्रम का और तेरे डर के १३  
 समान तेरे कोप का कौन जानकार है । हमें ऐसा ज्ञान दे जिसमें अपने दिनों १४  
 को मिलें और हम दुष्टिमान मन भेंट के लिये नार्थगे ॥

हे परमेश्वर हमारी और फिर कथ लों हमें छोड़े रहेगा और अपने सेवकों १५  
 के विषय प्रकटा । विद्वान को हमें अपनी दया में तृप्त कर तो हम अपने १६  
 जीवन भर आनन्द करेंगे और सगन रहेंगे । उन दिनों के समान जिन में तू ने हमें १७  
 दुःख में रक्खा और उन घरमों के समान जिन में हम ने घुराई देखी है हमें १८  
 आनन्दित कर । तेरा कार्य तेरे दासों को प्रगट हो और तेरा विभव उन के घंटों १९  
 पर । और प्रभु हमारे ईश्वर की सुन्दरता हम पर हो और हमारे हाथों के कार्य २०  
 हम पर दृढ़ कर हां हमारे हाथों का कार्य दृढ़ कर ॥

एकानव्यां गीत ।

अति सदान के ओझल में बैठनेद्वारा सर्वशक्तिमान की छाया के नीचे रहा १  
 करेगा । मैं परमेश्वर से कहूंगा कि मेरा शरणस्थान और मेरा गढ़ मेरा ईश्वर २  
 तू ही है जिस पर मैं भरोसा रखूंगा । क्योंकि वह तुझे व्याधा के जाल में और ३  
 नाशक मरी से मुक्ति देगा । वह अपने पर से तुझे ढांप लेगा और उस के पंखों ४  
 के नीचे तू शरण पायेगा उस की सच्चाई फरी और ठाल है । तू रात के भय से ५  
 न डरेगा न उस धान से जो दिन को उड़ता है । न उस मरी से जो अधियारे में ६  
 चलती है न उस विनाश से जो मध्यान्त में उजाड़ करता है । तेरे लग सदन ७  
 तिरंगे और तेरे दाहिने हाथ सदनो के सहस्र पर यह विपत्ति तुझ लों न पहुंचेगी । ८  
 तू केवल अपनी आंखों से दृष्टि करेगा और दुष्टों के पलटे का देखेगा ॥ ९

क्योंकि हे परमेश्वर तू ही मेरा शरणस्थान है तू ने अति सदान को अपना १०  
 शरण ठहराया है । विपत्ति तुझ लों आने न पायेगी और मरी तेरे निवास के पास ११  
 न आवेगी । क्योंकि वह तेरे लिये अपने दूतों को आज्ञा करेगा जिसमें तेरे सारे १२

२ की भेड़ें आज यदि तुम उस का शब्द सुनो । अपने मन को कठोर मत करो  
 ९ मरीचः की नाईं मस्सः के दिन के समान वन में । जहां तुम्हारे पितरों ने मुझे  
 १० परखा मेरी परीक्षा किई मेरे कार्य को भी देखा । मैं चालीस वरस लों उस  
 ११ घुरी पीछी से उदास रहता हूं और मैं ने कहा कि वे एक मन फिरी हुई जाति  
 हैं और उन्हीं ने मेरे मार्गों को नहीं जाना । जिन से मैं ने अपने क्रोध में  
 किरिया खाई कि वे मेरे विश्राम में कभी प्रवेश न करेंगे ॥

क्षियानवेवां गीत ।

१ परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ हे सारी पृथिवी परमेश्वर के लिये गाओ ।  
 २ परमेश्वर के लिये गाओ उस के नाम का धन्य मानो प्रतिदिन उस की मुक्ति  
 ३ का प्रगट करो । अन्यदेशियों में उस की महिमा प्रगट करो सारे लोगों में उस  
 ४ के आश्चर्यकर्म । क्योंकि परमेश्वर महान है और अति स्तुति के योग्य वह सारे  
 ५ देवों के ऊपर भयमान है । क्योंकि जातिगणों के सारे देव तुच्छ हैं और परमेश्वर  
 ६ ने स्वर्ग को बनाया । प्रतिष्ठा और महिमा उस के आगे हैं बल और सुन्दरता  
 ७ उस के धर्मधाम में ॥

८ परमेश्वर को दो हे जातिगणों के परिवारो परमेश्वर को प्रतिष्ठा और बल  
 ९ दो । परमेश्वर को उस के नाम की प्रतिष्ठा दो भेंट लाओ और उस के आंगनों  
 १० में आओ । पवित्रताई की सुन्दरता के संग परमेश्वर को दण्डवत करो हे सारी  
 पृथिवी उस के आगे कांपो । अन्यदेशियों के मध्य में कहो कि परमेश्वर राज्य  
 करता है हां जगत स्थिर रहेगा और न टलेगा वह खराबों के संग जातिगणों  
 का विचार करेगा । स्वर्ग आनन्द करें और पृथिवी मगन हो समुद्र और उस की  
 भरपूरी गर्जन करे । खेत और सब जो उस में है आनन्दित होवे तब वन के सारे  
 पेड़ आनन्द के शब्द करेंगे । परमेश्वर के आगे क्योंकि वह आता है क्योंकि वह  
 पृथिवी का न्याय करने को आता है वह धर्म के साथ जगत का और अपनी  
 सच्चाई के साथ जातिगणों का न्याय करेगा ॥

सतानवेवां गीत ।

१ परमेश्वर राज्य करता है पृथिवी आनन्दित हो सारे टापू आह्लादित होवें ॥  
 २ मेघ और काली घटा उस के आसपास है धर्म और न्याय उस के सिंहा-  
 ३ सन का स्थान । आग उस के आगे चलती है और उस के बैरियों को चारों ओर  
 ४ जलाती है । उस की बिजलियों ने जगत को उजियाला किया तब पृथिवी ने  
 ५ देखा और थरथरा गई । पहाड़ परमेश्वर के आगे सारे जगत के प्रभु के आगे  
 ६ सोम की नाईं पिघल गये । स्वर्ग उस के धर्म को प्रगट करते हैं और सारे लोग  
 ७ उस के विभव को देखते हैं । खोदी हुई मूर्ति के सारे पूजनेवाले जो तुच्छ वस्तुन  
 पर फूलते हैं लज्जित होंगे हे सारे देवगण उस को दण्डवत करो ॥

८ सेहून सुनती और मगन होती है और यहूदाह की बेटियां आनन्दित होती हैं  
 ९ हे परमेश्वर तेरे विचारों के लिये । क्योंकि हे परमेश्वर तू ही सारी पृथिवी के  
 ऊपर महेश्वर है तू सारे देवों के ऊपर अत्यन्त ही बड़ा है ॥

१० हे परमेश्वर के प्रेमियो बुराई से घिन करो वह अपने साधुओं के प्राणों का

प्रकाशित हो । हे जगत के विचारी अपने तर्हें उठा घमंडियों पर उन का २  
व्यवहार पलट दे ॥

हे परमेश्वर दुष्ट कब लों कब लों दुष्ट फूला करेंगे । सारे कुकर्मा कब लों ३  
वचन निकालेंगे कठोरता से बातें करेंगे और फूला करेंगे । हे परमेश्वर वे तेरे ५  
लोगों को पीस डालते हैं और तेरे अधिकार को दुःख देते हैं । वे रांड और ६  
परदेशी को घात करते हैं और अनाथों को वधन करते हैं । और वे कहते हैं ७  
कि परमेश्वर न देखेगा और यशकृय का ईश्वर न समझेगा ॥

अरे प्रगुवत लोगो ममभो और अरे सूर्यो तुम कब युद्धिमान होओगे । क्या ८  
कान का उत्पन्न करनेद्वारा न सुनेगा अथवा आंख का बनानेद्वारा न देखेगा ।  
क्या जातिगणों का शिक्षक ताड़ना न करेगा मनुष्य को ज्ञान देनेद्वारा क्या वह १०  
हर एक को नहीं शिक्षा दे सक्ता । परमेश्वर मनुष्य की चिन्ताओं को जानता ११  
है कि वे मिथ्या हैं ॥

हे परमेश्वर वह मनुष्य क्या ही धन्य है जिसे तू ताड़ना करता है और १२  
अपनी व्यवस्था से उसे सिखाता है । जिसमें उसे विपत्ति के दिनों में वलाके १३  
चैन देवे जब लों कि दुष्ट के लिये गड़वा खोदा जाय । क्योंकि परमेश्वर अपने १४  
लोगों को छोड़ न देगा और अपने अधिकार को न त्यागेगा । क्योंकि विचार १५  
धर्म लों फिर आयेगा और उस के पीछे सारे खरे अंतःकरणी चलेंगे ॥

कौन मेरे लिये दुष्टों पर उठेगा कौन मेरे लिये अधर्मियों का नाम्रा करेगा । १६  
यदि परमेश्वर मेरे लिये सहायक न होता तो शीघ्र मेरा प्राण सुनसानी में १७  
चुपका हो जाता । यदि मैं कहूं कि मेरा पांव फिसलता है तो हे परमेश्वर १८  
तेरी दया मुझे संभालेगी । जब मेरे मन में मेरी चिन्ताएं बढ़ जाती हैं तब तेरी १९  
शान्ति मेरे प्राण को आनन्दित करती है ॥

क्या अधर्मी का सिंहासन जो व्यवस्था की रीति दुगई उत्पन्न करता है २०  
तेरा सक्ती होगा । वे धर्मी के प्राण के विरोध में एकट्ठे होते हैं और निर्दोष २१  
के लोहू बहाने की आज्ञा करते हैं । परन्तु परमेश्वर मेरा ऊंचा स्थान हुआ २२  
और मेरा ईश्वर मेरे शरण की चटान । और वह उन का अधर्म उन्हीं पर फेर २३  
देता है और वह उन्हें उन की दुष्टता में नष्ट करेगा हां परमेश्वर हमारा ईश्वर  
उन्हें नष्ट करेगा ॥

### पंचानवेधां गीत ।

आओ परमेश्वर के लिये गान करें अपनी मुक्ति की चटान की ओर १  
ललकारें । धन्यवाद के साथ उस के आगे यावें और गीतों के संग उस की २  
ओर ललकारें । क्योंकि परमेश्वर बड़ा महेश्वर है और सारे देवों के ऊपर ३  
सहाराजा । जिस के हाथ में पृथिवी की गहिराइयां और पहाड़ों की ऊंचाइयां ४  
उस की हैं । समुद्र उस का है और उसी ने उसे बनाया और उस के हाथों ने ५  
स्थल को बनाया ॥

आओ दण्डवत करें और भुक्त परमेश्वर अपने कर्ता के आगे छुटने टेकें । ६  
क्योंकि वही हमारा ईश्वर है और हम उस की चराई के लोग और उस के हाथ ७



३ की सेवा करो जयध्वनि के संग उस के आगे आओ । जानो कि परमेश्वर वही ईश्वर है उसी ने हमें अपनी जाति और अपनी चरार्द्ध की भेड़ें बनाया और हम ४ ने नहीं । धन्यवाद करते हुए उस के फाटकों में और स्तुति करते हुए उस के ५ आंगनों में प्रवेश करो उस का धन्य मानो उस के नाम को धन्यवाद करो । क्योंकि परमेश्वर भला है सदा लों उस की दया और पीछी से पीछी लों उस की सच्चाई है ॥

एकसा पहिला गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ मैं दया और न्याय का गीत गाऊंगा तेरी स्तुति में हे परमेश्वर बजाऊंगा ।  
 २ मैं सिद्ध मार्ग में चौकसी दिखलाऊंगा तू कब मेरे पास आवेगा मैं अपने घर ३ के भीतर सिद्ध मन से चला कहेगा । मैं अपनी आंखों के आगे घुराई की बात न रखूंगा कुटिलता करने से मैं दूर रखता हूँ वह मुझ से न लिपटेगी ।  
 ४ कुटिल अन्तःकरण मुझ से जाता रहेगा मैं घुराई को न जानूंगा । जो छिपके अपने परोसी पर दोष लगाता है मैं उसे नाश कहेगा जो जंजी दृष्टि और ५ अभिमानी है मैं उस की न सहूंगा । मेरी आंखें पृथिवी के विश्वस्तों पर हैं जिसमें वे मेरे संग रहें जो सिद्ध मार्ग में चलता है वही मेरी सेवा करेगा ।  
 ६ मेरे घर के भीतर क्ली और झूठ बोलनेद्वारा न रहेगा वह मेरी आंखों के ७ साम्हने न ठहरेगा । विद्वान को मैं पृथिवी के सारे दुष्टों को नाश किया कहेगा जिसमें परमेश्वर के नगर से सारे कुकर्मियों को काट डालूँ ॥

एकसा दूसरा गीत ।

दुःखी की प्रार्थना जब यह शीकित है और परमेश्वर के आगे अपनी दोहाई देता है ॥

१ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन और मेरी दोहाई तुझ लों पहुंचे । मुझ से अपना मुंह न छिपा मेरी विपत्ति के दिन मेरी ओर अपना कान धर जिस दिन मैं पुकारूँ शीघ्र मेरी सुन ॥  
 ३ क्योंकि मेरे दिन धूँए में बीत गये और मेरी हड्डियाँ लुकटी की नाईं जल गईं ।  
 ४ मेरा मन घास की नाईं कुम्हला गया और सूख गया क्योंकि मैं अपनी रोटी खाना ५ भूल गया । मेरे कराहने के शब्द से मेरी हड्डियाँ मेरे मांस से सट गईं । मैं जंगली ६ गरुड़ के तुल्य हूँ मैं खंडहरों के उल्लू के समान हो गया । मैं जागता रहा और ७ उस बिड़िया की नाईं हो गया जो अकेली कूत के ऊपर रहती है । सारे दिन मेरे बैरियों ने मुझ पर निन्दा किई है जो मेरे विरोध में उन्मत्त हैं वे मेरे नाम से ८ कोसते हैं । क्योंकि मैं ने रोटी के समान राख फाँकी और अपने पानी में आंसू ९ मिलाया है । तेरे जलजलाहट और तेरे कोप के कारण से क्योंकि तू ने मुझे उठाकर फेंक दिया है ॥  
 ११ मेरे दिन काया के समान बीत गये और मैं घास के समान कुम्हलाने पर हूँ ।  
 १२ और तू हे परमेश्वर सदा लों सिंहासन पर बैठा रहेगा और तेरा स्मरण पीछी से १३ पीछी लों । तू उठेगा सैहून पर दया करेगा क्योंकि उस पर कृपा करने का समय १४ हाँ उस का ठहराया हुआ समय आया है । क्योंकि तेरे सेवक उस की प्रत्यर्थों से

रक्षक है दुष्टों के हाथ से उन्ते कुड़ायेगा । धर्मी मनुष्य के लिये उँझियाला ११  
 बोया गया और खरे अन्तःकरणियों के लिये आनन्द । हे धर्मियो परमेश्वर से १२  
 आनन्दित होओ और उस की पवित्रता का वर्णन करते हुए धन्यवाद करो ॥

अठानवेवां गीत ।

गीत ॥

परमेश्वर के लिये गाओ नया गीत गाओ क्योंकि उस ने आश्चर्यकार्य किये १  
 हैं उस के दृष्टिने हाथ और उस के पवित्र भुजा ने उस के लिये उस के लोगों  
 को बचाया है ॥

परमेश्वर ने अपनी सुक्ति को प्रगट किया है अन्यदेशियों की दृष्टि में अपने २  
 धर्म को प्रगट किया है । उस ने अपनी दया और अपनी सच्चाई को हमराएल ३  
 के घराने के लिये स्मरण किया है पृथिवी के सारे खूंटों ने हमारे ईश्वर की सुक्ति  
 को देखा है ॥

हे सारी पृथिवी परमेश्वर की ओर ललकारो फूट निकलो और आनन्द करो ४  
 और गाओ बजाओ । बीणा के संग परमेश्वर के लिये गाओ बजाओ बीरा ५  
 और गान के शब्द के साथ । तुरहियों और नरनिंगों के शब्द के संग परमेश्वर ६  
 राजा के आगे ललकारो । समुद्र और उस की भरपूरी गर्जन करे जगत और ७  
 उस के रत्नवाले । नदियें ताल दें पछाड़ मिलके आनन्द करें । परमेश्वर के आगे ८  
 क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने आता है वह धर्म के साथ जगत का और  
 खरादियों के संग लोगों का न्याय करेगा ॥

निनानवेवां गीत ।

परमेश्वर राज्य करता है जातिगण घर्घराते हैं वह करोवीस पर बैठा हुआ १  
 राज्य करता है पृथिवी कांपती है । परमेश्वर मैहून में सदान है और सारे जाति- २  
 गणों के ऊपर बड़ी ओष्ठ है । वे तेरे बड़े और भयंकर नाम का स्वीकार करेंगे ३  
 कि पवित्र वही है । और राजा का बल विचार में प्रीति रखता है तू ही ने ४  
 खरादियों को स्थिर किया है न्याय और धर्म यत्रकूच में तू ही ने किया है ।  
 परमेश्वर हमारे ईश्वर की बड़ाई करो और उस के घराने के नीचे की चौकी ५  
 को दण्डवत् करो पवित्र वही है ॥

सूसा और हाइन उस के याजकों के मध्य और समुएल उन के बीच जो उस ६  
 का नाम लेते हैं परमेश्वर की ओर पुकारते हैं और वह उन की सुनता है । वह ७  
 मेष के खंभे में से उन से वार्त्त करता है उन्हे ने उस की साक्षियों को और उस  
 आज्ञा को जो उस ने उन्हे दिई पालन किया । हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तू ८  
 ही ने उन की सुनी तू उन के लिये समा करनेवाला सर्वशक्तिमान था और उन  
 के घुरे कार्यों का पलटा लेनेद्वारा । परमेश्वर हमारे ईश्वर की बड़ाई करो और ९  
 उस के पवित्र पछाड़ को दण्डवत् करो क्योंकि परमेश्वर हमारा ईश्वर पवित्र है ॥

सौवां गीत ।

धन्यवाद का गीत ॥

हे सारी पृथिवी परमेश्वर की ओर ललकारो । आनन्दता के संग परमेश्वर १

१६ वैसा ही वह फूलता है । क्योंकि पवन उस पर बही और वह है ही नहीं ।  
 १७ और उस का ठौर फिर उसे न पहिचानेगा । और परमेश्वर की दया उस के  
 डरवैयों पर सनातन से सनातन लों है और उस की सच्चाई सन्तानों के सन्तानों  
 १८ पर । उस के नियम के धारण करवैयों पर और उस की विधों के स्मरण  
 करवैयों पर जिसमें नन्दे पूरा करें ॥

१९ परमेश्वर ने स्वर्गों पर अपना सिंहासन स्थिर किया और उस का राज्य  
 २० सब पर प्रभुता करता है । परमेश्वर का धन्य मानो हे उस के दूतो धल में  
 सामर्थी उस के वचन पर इस रीति से चलनेहारो कि उस के वचन का शब्द  
 २१ सुनो । परमेश्वर का धन्य मानो हे उस की सारी मेनाओ उस के सेवको उस  
 २२ की इच्छा पर चलनेहारो । परमेश्वर का धन्य मानो हे उस के सारे कार्यों उस  
 के राज्य के सारे स्थानों में हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान ॥

एकसा चौथा गीत ।

१ हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू अति महान  
 २ है तू प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य से विभूषित है । वह ज्योति को वस्त्र की नाईं  
 ३ पहिरता है स्वर्गों को छूँघट की नाईं फैलाता है । पानी से अपनी ऊपर की  
 कोठरियों को बनाता है मेघों को अपना रथ बनाता पवन के डैनों पर चलता  
 ४ है । पवनों को अपने दूत बनाता है जलती आग अपने सेवक ॥

५ उस ने पृथिवी की नेवें उस के ठौरों पर डालीं वह सनातन लों न टलेगी ।  
 ६ तू ने उसे वस्त्र की नाईं गहिराव से ठांपा पानी पहाड़ों के ऊपर खड़े होते हैं ।  
 ७ वे तेरी दपट से भाग जाते हैं तेरे गर्जन के शब्द से शीघ्र करते हैं । वे पहाड़ों  
 पर चढ़ते हैं तराइयों में बहते हैं इस स्थान लों जिस की नेत्र तू ने उन के लिये  
 ८ डाली है । तू ने सिखाना बांधा वे उससे पार न जायेंगे पृथिवी को ठांपने के  
 लिये न फिरेंगे ॥

१० वह नालों में सेते बहाता है वे पहाड़ों के बीचोंबीच बहते हैं । वे वन के  
 ११ हर एक पशुन को पिलाते हैं उन से वनैले गदहे अपनी पियास मिटाते हैं । उन  
 १२ के ऊपर आकाश के पत्नी बसते हैं डालियों के बीच में से वे चढ़चढ़ाते हैं । अपनी  
 ऊपर की कोठरियों से पर्वतों को सींचता है पृथिवी तेरे कार्य के फल से तृप्त  
 होती है ॥

१४ वह पशु के लिये घास उगाता है और हरियाली मनुष्य के जोतने वाने के  
 १५ लिये जिसमें पृथिवी से रोटी निकाले । और मदिग मनुष्य के मन को मगन  
 करती है जिसमें उस के मुँह को तेल से अधिक चमकावे और रोटी मनुष्य के  
 १६ मन को बल देती है । परमेश्वर के पेड़ रस से परिपूर्ण हैं लुबनान के देवदारु  
 १७ जिन्हें उस ने लगाया है । जहां छोटी चिड़ियां खींचते बनाती हैं लगलगा जो है  
 १८ सरो उस का घर है । पहाड़ ऊँचे पहाड़ पहाड़ी बकरी के लिये हैं चटान खरहों  
 के लिये शरणस्थान हैं ॥

१९ उस ने चन्द्रमा को ठहराई हुई ऋतुओं के लिये बनाया सूर्य अपने अस्त होने  
 २० को पहिचानता है । तू अधियारे को उत्पन्न करता है और रात हो जाती है उस

मगन हैं और उस की धूल पर अनुग्रह करते हैं । और जातिगण परमेश्वर के १५ नाम से डरेंगे और पृथिवी के सारे राजा तेरे विश्व से ।

१६ क्योंकि परमेश्वर ने सैद्धन को बनाया है अपने विश्व में प्रगट हुआ है । वह १७ कौशल की प्रार्थना की और फिरा है और उन ने उन की प्रार्थना को तुच्छ नहीं जाना है । यह अवैया पीढ़ी के लिये लिखा जायगा और उत्पन्न होनेवाले १८ जाति परमेश्वर की स्तुति करेगी । क्योंकि उस ने अपने धर्मधाम की कंठाई पर १९ से भांका परमेश्वर ने स्वर्ग पर से पृथिवी की और दृष्टि किई है । जिसमें वंधुस २० का कराटना सुने जिसमें मृत्यु के सन्तानों को बुढ़ावे । जिसमें सैद्धन में परमेश्वर २१ का नाम वर्णन किया जाये और यक्षलस में उस की स्तुति । सब जातिगण २२ आपुस में एकट्टे होंगे और राज्य जिसमें परमेश्वर की सेवा करें ।

उस ने मार्ग में उस दुःखी का चल घटा दिया मेरी वय को छटा दिया है । २३ मैं कहूंगा कि हे मेरे सर्वशक्तिमान मेरी आधी वय में मुझ न उठा ले पीढ़ी से २४ पीढ़ी लों तेरे वरस हैं । तू ने आरंभ से पृथिवी की नेत्र डाली और स्वर्ग तेरे २५ हाथों के कार्य हैं । वे नाश होंगे और तू स्थिर रहेगा और वे सब वस्त्र की २६ नाईं पुराने हो जायेंगे तू वस्त्र की नाईं उन्हें पलटोगा और वे पलट जायेंगे । और २७ तू बढी है और तेरे वरसों का अन्त न होगा । तेरे सेवकों के लड़के बने रहेंगे २८ और उन के वंश तेरे आगे स्थिर रहेंगे ।

एकमाँ तीसरा गीत ।

दाऊद का गीत ।

हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य कह और सब जो मुझ में हैं उस के पवित्र १ नाम को । हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य कह और उस के सारे उपकारों २ को न भूल ।

जो तेरे सारे अधर्मी को जमा करता है जो तेरे सारे रोगों को खंसा करता ३ है । जो समाधि से तेरे प्राण को बुढ़ाता है जो तुझ पर अनुग्रह और दया ४ का सुकुट रखता है । जो तेरे प्राण को भलाई से तृप्त करता है तब तेरी ५ तरुणाई गिद्ध की नाईं अपने तर्ह नये भिरे में नष्टीन करती है ।

परमेश्वर सारे संताये हुएों के लिये धर्म और विचार करता है । वह सूसा ६ को अपने मार्गों की इसराएल के सन्तान को अपने बड़े कार्य जनाता है । परमेश्वर दयालु और कृपालु है क्रोध में धीमा और दया में बड़ा । न ७ मदा लों वह झगड़ा करेगा और न मदा लों कोप रखवेगा । उस ने हमारे १० पापों के समान हमारे साथ नहीं किया और न हमारे अधर्मी के समान हम से व्यवहार किया है । क्योंकि जैसा स्वर्ग पृथिवी के ऊपर ऊंचा है वैसा ही उस ११ की दया उस के दरवैयों के ऊपर दृढ़ है । जैसा पूरव पच्छिम से दूर है वैसा १२ ही उस ने हमारे पापों को हम से दूर किया है । जैसा पिता बालकों पर मया १३ करता है वैसा ही परमेश्वर अपने दरवैयों पर दया करता है ।

क्योंकि यही हमारी बनावट को जानता है स्मरण करता है कि हम नाटी १४ हैं । सरणहार मनुष्य जो है उस के दिन घास की नाईं हैं जैसा वन का फूल १५

१५ धिक्कारा । कि मेरे अभिषिक्तों को न क्रुश्रो और मेरे भविष्यदुक्तों को हानि न  
१६ पहुँचाओ । और उस ने देश पर अकाल की आज्ञा किई रोटी के हर टेकन को  
तोड़ डाला ॥

१७ उस ने एक मनुष्य को उन के आगे भेजा यूसुफ येचा गया कि दास हो ।  
१८ उन्हें ने ब्रेही से उस के पाँवों को दुःख दिया उस का प्राण लोहे में पड़ा ।  
१९ उस समय लें कि उस का वचन पूरा हुआ परमेश्वर के वचन ने उसे परखा ।  
२० राजा ने भेजके उसे छुड़ाया लोगों के अध्यक्ष ने भेजा और उसे निर्बंध किया ।  
२१ उस ने उसे अपने घर का अधिपति और अपने मारे अधिकार का प्रधान ठहराया ।  
२२ जिसर्तें अपनी इच्छा से उस के अध्यक्षों को बाँधे और उस के महत्तों को बुद्धि-  
मान बनाये ॥

२३ और इसराएल मिस्र में आया और यअकूब हाम के देश में परदेशी हुआ ।  
२४ और उस ने अपने लोगों को बहुत घी बढ़ाया और उन्हें उन के बैरियों से अधिक  
२५ बलवान किया । उस ने उन के मनो को फेरा जिसर्तें उस के लोगों से वैर रखें  
२६ उस को सेवकों से बल करें । उस ने मूसा अपने दास को भेजा हासन को जिसे  
उस ने चुन लिया ॥

२७ उन्हें ने उन के मध्य उस के चिन्तों के वचन और हाम के देश में आश्चर्य  
२८ प्रगट किये । उस ने अधिपति भेजा और अधिकार कर दिया और उन्हें ने उस  
२९ के वज्रों की विरुद्धता न किई । उस ने उन के पानियों को लोहू कर डाला  
३० और उन की मछलियों को मार डाला । उन की भूमि मेंहकों से भर गई और  
३१ वे उन के राजाओं की कोठरियों में आये । उस ने आज्ञा किई और मक्खियाँ  
३२ और मच्छड़ उन के सारे सिवानों में आये । उस ने उन पर मेंह की संती  
३३ ओले बरसाये उन के देश में जलती आग । और उन के दाख और उन के गूलर  
३४ के वृक्षों को बिनाश किया और उन के सिवानों के पेड़ों को तोड़ डाला । उस  
३५ ने आज्ञा किई और टिट्टियाँ आईं और कीड़े और वे असंख्य थे । और उन्हें  
ने उन के देश की सारी हरियाली को खा लिया और उन के खेत के फल को  
३६ भक्षण कर लिया । और उस ने उन के देश में हर पहिलौठे को उन के सारे बल  
३७ के पहिले फल को मार डाला । और उन्हें खाँदी और सोने के साथ निकाल  
३८ लाया और उन की गोष्टियों में ठोकर खानेहारा कोई न था । मिस्र उन के निक-  
३९ लने से आनन्दित था क्योंकि उन का भय उन पर पड़ा था । उस ने हाथे  
४० के लिये मेघ फैलाया और रात को उंजियाला देने के लिये आग । लोगों ने मांगा  
४१ और उस ने बटेर पहुँचाये और स्पर्धायि रोटी से उन्हें तृप्त किया । उस ने चटान  
को खोल दिया और पानी बह निकला वह सूखी भूमि पर नदी की नाईं चला ॥  
४२ क्योंकि उस ने अपने उस पवित्र वचन को स्मरण किया जो अब्रिहाम उस के  
४३ दास के साथ था । और अपनी जाति को आनन्द के संग अपने चुने हुएों को  
४४ गाते बजाते निकाल लाया । और उन्हें अन्यदेशियों का देश दिया और वे  
४५ जातिगणों का परिश्रम अधिकार में पाते हैं । जिसर्तें वे उस की विभिन्न को मनन  
करें और उस की व्यवस्थाओं को मानें । हलिलूयाह ॥

में जंगल का हर एक पशु चलने लगाता है । सिंह के बच्चे अट्टर के लिये गर्जते २१  
हुए और सर्वशक्तिमान से अपना अट्टर छूटने के लिये । मृग्य उदय होते ही वे २२  
एकट्टे हो जाते हैं और अपनी अपनी माँझों में लेट जाते हैं । मनुष्य अपने काम २३  
काज के लिये बाहर निकलता है और अपने परिश्रम के लिये साँझ लौ ॥

हे परमेश्वर तेरी रचना क्या ही बड़ो है तू ने उन सभी को बुद्धि के साथ २४  
बनाया पृथिवी तेरे धन से परिपूर्ण है । यह समुद्र है बड़ा और हर और २५  
से चौड़ा वहाँ अगणित रंगवैभे हैं कौटो जन्तु वहाँ समेत । वहाँ नार्वे चलती २६  
हैं और घट लिवियातान जिसे तू ने उस में कलोल करने के लिये बनाया । वे २७  
सब तुझ पर भरोसा रखते हैं जिसमें समय पर उन का आहार देवे । तू उन्हें देता २८  
है वे उठा लेते हैं तू अपनी मुट्ठी खोलता है वे उत्तम वस्तु से तृप्त होते हैं । तू २९  
अपना मुँह छिपाता है वे व्याकुल होते हैं तू उन का श्वास फेर लेता है वे सर  
जाते हैं और अपनी माटी में फिर मिल जाते हैं । तू अपना आत्मा भेजता है वे ३०  
उत्पन्न होते हैं और तू पृथिवी के स्वरूप को नवीन करता है ॥

परमेश्वर का ऐश्वर्य सर्वदा लौं हो परमेश्वर अपनी क्रिया पर आनन्दित ३१  
रहे । जो पृथिवी पर दृष्टि करता और वह शर्षगाती है पहाड़ों को छूता है और ३२  
उन से धूँआँ उठता है । मैं अपने जीवन भर परमेश्वर के लिये गाऊँगा अपने ३३  
जीते रहने लौं अपने ईश्वर के लिये गान करूँगा । मेरा उस के विषय सोच ३४  
करना अच्छा होगा मैं परमेश्वर से भगत रहूँगा । पापी भूमि पर से नाश ३५  
होगे और दुष्ट आगे को है दो नदों के मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान ।  
हलिलूयाह ।

एकमाँ पाँचवाँ गीत ।

परमेश्वर का धन्य मानो उसे उस के नाम से पुकारो जातिगणों में उस के १  
बड़े कार्यों को प्रगट करो । उस के लिये गाओ उस के लिये बजाओ उस के २  
सारे आश्चर्य कार्यों पर सोच करो । उस के पवित्र नाम से फूलो परमेश्वर के ३  
ग्याजियों का मन आनन्दित रहेगा । परमेश्वर और उस के बल को छूँटो रुदा ४  
उस के रूप के ग्याजनेदारे रहो । उस के अचम्भित कार्यों को जो उस ने किये ५  
उस के आश्चर्यों को और उस के मुँह के विचारों को स्मरण करो । हे उस के ६  
दास अद्विष्टाम के वंश यशस्कृष के सन्तान उस के चुने हुए ॥

वही परमेश्वर हमारा ईश्वर है सारी पृथिवी पर उसी के न्याय है । उस ने ७  
अपने नियम को मदा के लिये उस बचल को जो उस ने सहस्र पीढ़ियों के लिये ८  
कटा चेत किया । जिस नियम को उस ने अद्विष्टाम के संग बाँधा और अपनी ९  
क्रिया को जो बलदाक से खाई । और उसे यशस्कृष के संग व्यवस्था हमाराएल १०  
के संग सर्वदा का नियम उदराया । यह कहते हुए कि मैं तुम्हें जनान की भूमि ११  
तुम्हारी अधिकार के भाग में देऊँगा ॥

जब उन की गिनती हो सक्ती थी थोड़े से और उस में परदेशी थे । और वे १२  
जातिगण से जातिगण में और एक राज्य से दूसरे लोगों में फिरा किये । उस ने १३  
किसी मनुष्य को उन पर अधिकार करने नहीं दिया और उन के लिये राजाओं को



- ३२ और उन्होंने ने उसे मरीचः के पानियों पर रिस दिलाई और उन के कारण से  
 ३३ सूखा की हानि हुई । क्योंकि उन्होंने ने उस के आत्मा से दंगा किया और उस ने  
 अपने हाँठों से अनुचित धार्त कहीं ॥
- ३४ उन्होंने ने उन जातिगणों को नाश न किया जिन के विषय में परमेश्वर ने उन्हें  
 ३५ आज्ञा किई । और उन्होंने ने अपने तर्ह जातिगणों में मिला दिया और उन के  
 ३६ स्वभाव सीखे । और उन की मूर्तिन की सेवा किई और वे उन के लिये फंदा  
 ३७ हो गई । और उन्होंने ने अपने छेटीं और अपनी छेटीयों को पिशाचों के लिये  
 ३८ बलिदान किया । और उन्होंने ने निर्दोष लोहू अर्थात् अपने छेटीं और अपनी  
 छेटीयों का लोहू बहाया जिन्हें उन्होंने ने कनआन की मूर्तिन के लिये बलि किया  
 ३९ और देश लोहू से अशुद्ध हुआ । और वे अपने कार्यों से अविविच हो गये और  
 अपनी बुराइयों से व्यभिचारी ॥
- ४० तब परमेश्वर का कोप अपने लोगों पर भड़का और उस ने अपने लोगों से  
 ४१ छिन किया । और उस ने उन्हें जातिगणों के हाथ में सौंपा और उन के बैरी  
 ४२ उन पर अधिकृत हो गये । और उन के शत्रुन ने उन पर व्यवस किया और वे  
 ४३ उन के हाथ की नीचे दब गये । उस ने कई बार उन्हें कुड़ाया और उन्होंने ने अपने  
 परामर्श से उस्से दंगा किया और वे अपने अधर्म के कारण से हीन हो गये ।  
 ४४ और उस ने उन की इस कठिनता पर दृष्टि किई है जब उस ने उन का रोना  
 ४५ सुना । और उस ने उन के लिये अपनी दया का स्मरण किया और अपनी दया  
 ४६ की अधिकारी के समान प्रकृताया है । और उस ने उन के सारे बंधुआई करवैयों  
 को उन पर दयावन्त किया है ॥
- ४७ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर हमें बचा और हमें जातिगणों में से छेटीर जिसर्तें  
 ४८ तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें और तेरी स्तुति में बढ़ाई करें । परमेश्वर  
 इसराएल का ईश्वर धन्य हो सनातन से सनातन लों और सारे लोग कहते हैं  
 आमीन । हलिलूयाह ॥

### एकसौ सातवां गीत ।

- १ परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वह भला है क्योंकि उस की दया सदा ले  
 २ है । परमेश्वर के वे कुड़ाये हुए यह कहते हैं जिन्हें उस ने कष्ट के हाथ से कुड़ाया  
 ३ है । और उन्हें देशों से एकट्ठा किया है पुरख और पच्छिम से उत्तर और समुद्र से  
 ४ वे वन में सूने मार्ग में भ्रमते फिरे उन्होंने ने बखाने के लिये कोई नगर  
 ५ पाया । वे भूखे प्यासे भी हैं उन का प्राण उस में मूर्छित होता है । और उन्हें  
 ने अपनी विपत्ति में परमेश्वर को पुकारा उस ने उन के कठिन ल्हेयों से उन्हें  
 ६ कुड़ाया । और उस ने सीधे पथ पर उन की अगुआई किई जिसर्तें रहने के लिये  
 नगर में पहुँचे ॥
- ७ वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य कर्मों  
 ८ के लिये जो मनुष्य के सन्तान के लिये हैं स्तुति करें । क्योंकि उस ने लालसित  
 प्राण को तृप्त किया और भूखे प्राण को भलाई से चन्तुष्ट किया है ॥
- १० अंधेरे और मृत्यु की छाया में रहते थे दुःख और लोहे के घंघायमान ।

## एकमा कठवां गीत ।

ललितूयाच । परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वह भला है क्योंकि उस की १  
दया मदा नों है । कौन परमेश्वर के पराक्रमों का वर्णन करेगा कौन उस की २  
सारी स्तुति सुनायेगा । विचार के पालन कावैषे क्या हां धन्य हैं और वह जो ३  
सदाकाल धर्म करता है ॥

हे परमेश्वर जो अनुग्रह तू अपने लोगों पर प्रगट करता है उस के संग मुझे ४  
स्मरण कर मुझ पर कृपा करके मुक्ति दे । जिसने तेरे चुने हुएों की भलाई को ५  
देखें तेरे लोगों के आनन्द से आनन्दित होऊँ तेरे अधिकार के संग बढ़ाई करूँ ॥

हम ने अपने पितरों समेत पाप किया बढ़ाई किई दुष्टता किई । हमारे पितर ६  
मित्र में तेरे आश्चर्य कार्यों को न मझके उन्हीं ने तेरी दया की अधिकारी को ७  
स्मरण न किया और समुद्र पर अर्थात् लाल समुद्र पर फिर गये । और उस ने ८  
उन्हीं अपने नाम के लिये बचाया जिसने अपने पराक्रम को प्रगट करे । और उस ९  
ने लाल समुद्र को दफटा और वह सूख गया और उन्हीं गहिराव में नैमा बनाया  
जैसा वन में । और उस ने उन्हीं जल के छाव में बचाया और उन्हीं बैरी के छाव १०  
से छुड़ाया । और पानी ने उन के बैरियों को टाँप लिया उन में से एक भी न ११  
बचा । तब वे उस की वानों पर विश्वास लाये उस की स्तुति गाई । उन्हीं ने १२  
भट उस के कार्यों को भुना दिया उस के मंत्र की घाट न लोही । और उन्हीं १३  
ने जंगल में कुड्ढा के संग दृष्टा किई और वन में सर्वशक्तिमान को परखा । और १४  
उस ने उन की छाँछा पूरी किई पर उन के प्राण में जीवता भेजी ॥

और उन्हीं ने सूसा में और परमेश्वर के निद्र टाटन में डाट किया । तब पृथिवी १५  
ने अपना मुँह खोला और दानान को निंगल गई और अविनाश की लया को टाँप १६  
लिया । और आग ने उन की जया को खा लिया लहर ने उन दुष्टों को भस्म किया ॥ १८

उन्हीं ने दारेव में बछड़ा बनाया और लाली हुई मूर्ति को दण्डवत किई । १९  
और अपने ऐश्वर्य को घाम खानेहारे दल की मूर्ति से बदल डाला । उन्हीं ने २०  
सर्वशक्तिमान को भुना दिया जिस ने उन्हीं बचाया मित्र में बड़े बड़े कार्य २१  
किये । हम के देश में आश्चर्य कार्य लाल समुद्र पर भंकर कर्म । और उस २२  
ने कहा कि मैं उन्हीं नाश करूँगा यदि उस का पुता हुआ ससा उन के अनुग्रह २३  
द्वार में खड़ा न होता जिसने उस के कोप को नाश करने में करे ॥

और उन्हीं ने तनीनीत भूमि को तुच्छ जाना वे उस के बचन पर विश्वास न २४  
लाये । और अपने तंहुओं से कुड़कुड़ाये वे परमेश्वर के शब्द के ओता न हुए । २५  
तब उस ने किरिया खाने में उन की और अपना छाव उठाया कि उन्हीं वन २६  
में गिरा दे । और उन के वंश को जातिगणों में गिरा दे और उन्हीं देशों में २७  
विधरावे ॥

और वे वज्रनपिकर से मिल गये और मृतकों के यत्निदानों को खाया । और २८  
उन्हीं ने अपने घुरे कर्मों से उसे रिसाया और मरी उन में टूट पड़ी । तब २९  
फिनिटान खड़ा हुआ और न्याय किया और मरी थम गई । और यह उस के ३०  
लिये धर्म सिना गया पीढ़ी से पीढ़ी लों सर्वदा के लिये ॥

४१ भ्रमाया है । और कंगाल को दुःख से उठाया और घरानों को मुंह की नाई  
 ४२ बनाया है । खरे जन देखेंगे और आनन्दित होंगे और सारी अधर्मता अपना मुंह  
 ४३ घंद करेगी । कौन बुद्धिमान है कि इन बातों का सोच करेगा और कौन बुद्धि-  
 मान लोग परमेश्वर की दया पर ध्यान करेंगे ॥

एकसौ आठवां गीत ।

दाऊद का गान और गीत ॥

१ हे ईश्वर मेरा मन स्थिर है मैं गाऊंगा और बजाऊंगा हां मेरा विभव भी ।  
 २ हे वीणा और सितार जाग मैं भोर को जगाऊंगा । हे परमेश्वर मैं जातिगणों  
 ३ में तेरी स्तुति करूंगा और देशगणों में तेरी स्तुति गाऊंगा । क्योंकि तेरी दया  
 ४ स्वर्गों के ऊपर कुंजी है और तेरी सच्चाई मेघों में । हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर  
 ५ महान हो और सारी पृथिवी के ऊपर तेरा विभव हो । जिसमें तेरे प्रिय कुड़ाये  
 जायें तू अपने दहिने हाथ से दया और हमारी नून ॥

६ ईश्वर ने अपनी पवित्रता के संग वचन कहा इस कारण मैं आनन्दित  
 ७ होऊंगा सिक्क के विभाग करूंगा और मुक़ात की तराई को नापूंगा । जिल्लिअद  
 मेरा है मुनस्सी मेरा और इफरायम मेरे गिर का गढ़ यहूदाह मेरा व्यवस्था-  
 ८ दायक । मोअव मेरे धोनेधाने का पात्र है मैं अहूम पर अपनी जूती फेंकूंगा  
 फिलिस्त पर जयजयकार करूंगा ॥

१० कौन मुझे दृढ़ नगर में ले जायगा किस ने मुझे अहूम में पहुंचाया है ।  
 ११ क्या ईश्वर नहीं है तू जिस ने हमें छोड़ दिया है और हे ईश्वर तू जो हमारी  
 १२ सेनाओं के संग न चलेगा । विपत्ति में हमारी सहाय कर क्योंकि गनुषीय सुक्ति  
 १३ वृथा है । ईश्वर से हम शूरता पावेंगे और वही हमारे वीरियों की रौंद डालेगा ॥

एकसौ नवां गीत ।

प्रधान वजानिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ हे मेरे स्तुति के ईश्वर चुप मत हो । क्योंकि उन्होंने ने दुष्ट मुंह और हल  
 २ का मुंह मुझ पर खोला है वे मेरे साथ झूठ की जीभ से बोले हैं । और उन्होंने  
 ३ ने वीर की बातों से मुझे घेरा है और अकारण मुझ से लड़े हैं । मेरे प्रेम की  
 ४ सन्ती वे मेरी बिरुद्धता करते हैं और मैं प्रार्थना में हूँ । और भलाई की सन्ती  
 वे मुझ पर बुराई लगाते हैं और मेरे प्रेम की सन्ती वीर ॥

५ उस पर दुष्ट को करोड़ा ठहरा और वीर उस के दहिने हाथ पर खड़ा रहे ।  
 ६ जब उस का बिचार किया जायेगा तो वह दोषी ठहरेगा और उस की प्रार्थना  
 ७ पाप गिनी जायगी । उस के दिन थोड़े हों उस का पद दूसरा कोई ले । उस  
 ८ के वस्त्रे अनाथ हों और उस की स्त्री रांड हो । और उस के वस्त्रे धमते फिरें  
 ९ और भीख मांगें और अपने उजाड़ों से अपना भोजन ठूँकें । ब्याज लेनेहारा  
 १० उस का सब कुछ फँसा ले और परदेशी उस की कमाई को लूट लें । उस पर  
 कोई दया बढानेहारा न हो और उस के अनाथों पर कोई अनुग्रह करवैया न  
 ११ हो । उस का वंश काटा जाय अवैया पीछी में उन का नाम मिटाया जाय ।  
 १२ उस के पितरों का अधर्म परमेश्वर के आगे स्मरण किया जावे और उस की

क्योंकि उन्होंने ने सर्वशक्तिमान के चरणों में विश्रुता किई और अति महान के ११  
मंत्र को तुच्छ जाना । और उस ने उन के अन्तःकरण को परिश्रम से घटाया १२  
उन्होंने ने ठाकर खाई और कोई सहायक न था । और उन्होंने ने अपनी विपत्ति १३  
में परमेश्वर को पुकारा उस ने उन के कांठन क्लेशों में उन्हें बचाया । वह उन्हें १४  
अंधियारे और मृत्यु की छाया में निकालता है और उन के बंधनों को तोड़  
हालता है ॥

वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य कर्मों १५  
के लिये जो मनुष्य के मन्तान के लिये हैं स्तुति करें । क्योंकि उन ने पीतल के १६  
फाटकों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और लोहे के बंधों को काट डाला है ॥

सूर्य अपने अपराध के मार्ग में और अपने अधर्म के कारण से अपने तई १७  
दुःख देते हैं । उन का प्राण हर प्रकार के भोजन में दिन करता है और वे १८  
छोके मृत्यु के फाटकों के निकट पहुंचते हैं । तब वे अपनी विपत्ति में परमेश्वर १९  
को पुकारते हैं वह उन्हें उन के कांठन क्लेशों में बचाता है । वह अपना बचन २०  
भजता है और उन्हें चंगा करता है और उन्हें उन के नाशों में हृष्टता है ॥

वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य कर्मों के २१  
लिये जो मनुष्य के मन्तान के लिये हैं स्तुति करें । और धन्यवाद के बलिदान २२  
बलि करें और आनन्द के शब्द के संग उस के कार्यों का वर्णन करें ॥

समुद्र में नावों पर बड़े हुए बड़े पालियों में कार्य करते हुए । उन्होंने ने परमे- २३  
श्वर के कार्यों को और गहिराव में उस के आश्चर्यों को देखा । और उस ने २४  
कहा और प्रचण्ड प्रचन उठी और उस ने अपनी लहरों को उठाया । वे स्वर्ग २५  
लो पहुंचते हैं गहिराव में नीचे जाते हैं उन का प्राण अपने तई सुराई से गला देता  
है । वे सतवाले की नाईं दगमगाते और लड़खड़ाते हैं और उन का सम्पूर्ण ज्ञान २७  
लोप हो जाता है । और उन्होंने ने अपनी विपत्ति में परमेश्वर को पुकारा और २८  
उस ने उन्हें उन के कांठन क्लेशों में निकाला । वह आंधी को गान्ति कर देता है २९  
और उन की लहरें घस जाती हैं । तब वे महान होते हैं कि आनन्द में हैं और ३०  
वह उन्हें उन की इच्छा के घाट में पहुंचाता है ॥

वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य कर्मों के ३१  
लिये जो मनुष्य के मन्तान के लिये हैं स्तुति करें । और जातिगणों की मंडली ३२  
में उन की बड़ाई करें और प्राचीनों की सभा में उस की स्तुति करें ॥

वह नदियों को घन और पानी के सोतीं को सूखी भूमि कर देता है । फल- ३३  
वन्त भूमि को नानखार उन की सुराई के कारण से जो उस में रहते हैं । वह ३४  
घन को भील कर देता है और सूखी भूमि को पानी के सोती । और उस ने वहाँ ३५  
भूमि को बसाया है और उन्होंने ने अमन के लिये नगर मिट्ट किया है । और खेतों ३७  
को बोया है और दाख की बारी लगाई है और बढ़ती के फल कमाये हैं । और ३८  
उस ने उन्हें आर्शंस दिया और वे बहुत बढ़ गये हैं और वह उन के पशुन को  
घटने नहीं देता । और वे आंध्र सुराई और शोक के मारे घट और दोन ३९  
हो गये । और अध्यक्षों पर तुच्छता उंदेलते हुए उस ने उन्हें अपथ अरण्य में ४०

३ इच्छाओं के समान खोज किये गये हैं । उस का कार्य प्रतिष्ठित और ऐश्वर्यवान्  
 ४ है और उस का धर्म सर्वदा लों स्थिर । उस ने अपने आश्चर्य कार्यों के लिये  
 ५ चिन्त रक्खा है परमेश्वर कृपालु और दयालु है । उस ने अपने डरवैयों को अहेर  
 ६ दिया है वह सदा अपनी वाचा को स्मरण रखेगा । उस ने अपने कार्यों का  
 ७ बल अपने लोगों से वर्णन किया है जिससे उन्हें अन्यदेशियों का अधिकार देवे ।  
 ८ उस के हाथ की क्रिया सत्यता और विचार हैं उस की भारी आज्ञाएं सत्य हैं ।  
 ९ सर्वदा के लिये स्थिर सद्भाव के संग किई गईं और सीधी हैं । उस ने अपने लोगों  
 १० को मुक्ति दिई है सदा के लिये अपनी वाचा को स्थिर किया है उस का नाम  
 पवित्र और भयंकर है । परमेश्वर का भय बुद्धि का आरंभ है उन सभी के मान्ने-  
 हारों की उत्तम बुद्धि है उस की स्तुति सदा लों स्थिर है ।

एकसौ चारहवां गीत ।

१ हलिलूयाह । वह मनुष्य क्या ही धन्य जो परमेश्वर से डरता है उस की  
 २ आज्ञाओं पर अत्यन्त आनन्दित होता है । उस का यंग पृथिवी पर यज्ञवन्त  
 ३ होगा खरों के मन्तान आजीवित होगा । उन के घर में धन और सम्पत्ति है और  
 ४ उस का धर्म सदा लों स्थिर । खरों के लिये अधिपति में उजियाला उदय  
 ५ होता है जो कृपालु और दयालु और धर्मी हैं । क्या ही धन्य वह मनुष्य जो  
 ६ अनुग्रह करता और ऋण देता है वह अपने कामकाज को विचार से सुधारेगा ।  
 ७ क्योंकि वह सदा लों न टलेगा सदा लों उस का धर्मी होना स्मरण किया  
 ८ जायगा । वह कुसमाचार से भय न करेगा उस का मन दृढ़ है परमेश्वर पर  
 ९ भरोसा रखता हुआ । उस का मन स्थिर है वह न डरेगा यहां लों कि अपने  
 १० वैरियों पर दृष्टि करे । उस ने विधराया कंगालों को दिया है उस का धर्म सदा  
 लों स्थिर उस का सींग प्रतिष्ठा के मंग जंचा होगा । दुष्ट देखेगा और कुढ़ेगा  
 अपने दांत किड़किड़ावेगा और गल जायगा दुष्टों का अभिलाष नाश हो  
 जायगा ।

एकसौ तेरहवां गीत ।

१ हलिलूयाह । स्तुति करो हे परमेश्वर के दासो परमेश्वर के नाम की स्तुति  
 २ करो । परमेश्वर का नाम अब से और सदा लों धन्य हो । मूर्ख के उदय से  
 ३ लेके उस के अस्त लों परमेश्वर के नाम की स्तुति हो । परमेश्वर सारे जातिगणों  
 पर महान है और स्वर्ग पर उस का विभव ॥

४ परमेश्वर हमारे ईश्वर की नाईं स्वर्ग और पृथिवी पर कौन है । जो जंचाई  
 ५ पर रहता जो नीचे देखता है । जो कंगाल को धूल से उठा लेता है धूरे से  
 ६ दोन को जंचा करेगा । जिससे उसे अध्यक्षों के संग अपने लोगों के अध्यक्षों के  
 ७ संग बैठेगा । जो घर की रहनेहारी बांभ की पत्नी की आनन्द करनेहारी माता  
 बनाकर बिठलाता है । हलिलूयाह ॥

एकसौ चौदहवां गीत ।

१ जब इसराएल मिस्र से और यशकूब का घराना परदेशी भाषा की जाति में  
 २ से निकला । तब यहूदाह उस का धर्मधाम और इसराएल उस का राज्य हो

माता का पाप मिटाया न जाय । वे परमेश्वर के आगे नित्य रहें और वह १५  
पृथिवी पर से उन का स्मरण काट डाले ॥

इस कारण कि उस ने दया करना स्मरण न किया और दुःखी और कंगाल १६  
मनुष्य को मनाया और चूर्ण अन्तःकरण को जितने उसे बध करे । और उस ने १७  
साप को चाहा और वह उस पर पड़ने गया है और वह आशीस से प्रसन्न नहीं  
हुआ सो वह उससे दूर हो गई है । और उस ने साप को अपने वस्त्र की नाई १८  
पटिना है और वह पानी की नाई उस के भीतर आया है और तेल की नाई उस  
की दृष्टियों में । वह उस के लिये उस वस्त्र के समान हो जिसे वह पटिनता १९  
है और पटुके के समान वह मदा उसे बांधे । मेरे घेरियों का पलटा परमेश्वर की २०  
और मे और उन का जो मेरे प्राण के विरोध में घुरा कहते हैं घड़ी हो ॥

और तू हे परमेश्वर प्रभु अपने नाम के लिये मेरे संग व्यवहार कर क्योंकि २१  
तेरी दया भली है मुझे हुड़ा । क्योंकि मैं दुःखी और कंगाल हूँ और मेरा अन्तः- २२  
करण मुझ में व्याप्त है । छाया की नाई जब वह फिर जाती में जाता रहता २३  
में टिही की नाई चंकाया गया । मेरे घुटने उपवास से हगमगाते हैं और मेरा २४  
मांस ऐसा घट गया कि मोटा नहीं । और मैं उन के लिये निन्दा हुआ वे मुझे २५  
देखते हैं अपना सिर दिलाते हैं ॥

हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मेरी सहाय कर अपनी दया के समान मुझे बचा । २६  
और वे जानेंगे कि यह तेरा दाय है हे परमेश्वर तू ही ने यह किया है । वे २७  
साप देंगे और तू आशीस देगा वे उठें हैं और लज्जित होंगे और तेरा काम  
आनन्दित होगा । मेरे दंगे दुर्नानी का वस्त्र पहिनेंगे और वस्त्र के समान अपनी २८  
लज्जा को पहिनेंगे । मैं अपने मुँह से परमेश्वर का अत्यन्त धन्य मानूँगा और २९  
बहुतों के मध्य उस की स्तुति करूँगा । क्योंकि वह कंगाल के दहिने दाय पर ३०  
बैठा होगा जिससे उसे उस के प्राण के विचारियों से बचावे ॥

एकमौ दमयां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

परमेश्वर मेरे प्रभु से कहता है कि मेरे दहिने दाय पर बैठ जब लों कि मैं १  
तेरे घेरियों को तेरे चरण की पीढ़ी न करूं । परमेश्वर तेरे बल का राजदण्ड २  
सैन्धुन में भेजेगा तू अपने घेरियों के मध्य से प्रभुता कर । तेरी सागर्य के दिन ३  
तेरे लोग पवित्रता की सुन्दरता के संग प्रसन्नता की भेंट होंगे विद्यान के क्रोध  
से तेरे लिये तेरी तनगाई की आस है । परमेश्वर ने किरिया खाई है और न ४  
पछतावेगा कि तू मलिकिमिदक के समान मदा लों याजक रहेगा । प्रभु ने तेरे ५  
दहिने दाय पर अपने काप के दिन राजाओं का मारा है । वह जातिगणों में ६  
विचार करेगा उस ने उन्ने लाघों से पूर्ण किया है उस ने बहुत देशों में सिरों को  
कुचला है । वह मार्ग में नाले में पीयेगा इस कारण से वह सिर को ऊंचा करेगा ॥ ७

एकमौ श्मारदयां गीत ।

दलिलूयाठ । मैं सारे अन्तःकरण से परमेश्वर की स्तुति करूँगा साधुन की १  
सभा और संहली में । परमेश्वर के कार्य सदान हैं और उन साधुन की सारी २



८ है । क्योंकि तू ने मेरा प्राण मृत्यु से मेरी आंखों को आंसू बटाने से मेरे पांवों  
 ९ को फिसलने से बचाया है । मैं परमेश्वर के आगे जीवनों के देशों में चला फिरा  
 १० कहेगा । मैं विश्वास लाया क्योंकि यों बोलता हूं मैं बड़ा दुःखी हुआ । मैं ने  
 ११ अपनी घबराहट में कहा कि सारे मनुष्य भूठे हैं ॥

१२ मैं किस रीति परमेश्वर को उस के सारे पदार्थों के लिये जो मुझ पर हैं पलटा  
 १३ दूंगा । मैं मुक्ति का कटोरा उठाऊंगा और परमेश्वर के नाम को पुकारूंगा ।  
 १४ मैं परमेश्वर के लिये अपनी मनोतिथियां पूरी करूंगा उस के सारे लोगों के आगे मैं  
 बिनती करता हूं ॥

१५ परमेश्वर की दृष्टि में उस के साधुन की मृत्यु बहुत ही है । हे परमेश्वर मैं  
 १६ बिनती करता हूं क्योंकि मैं तेरा दास हूं मैं तेरा दास हूं तेरी दासी का पुत्र तू ने  
 १७ मेरे बंधनों को खोला है । मैं तुझे धन्यवाद का बलि चढ़ाऊंगा और परमेश्वर के  
 १८ नाम को पुकारूंगा । मैं अपनी मनोतिथियां परमेश्वर के लिये पूरी करूंगा उस के  
 १९ सारे लोगों के आगे मैं बिनती करता हूं । परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों में हे  
 यरूशलम तुझ में । हलिलूयाह ॥

एकसौ सत्रहवां गीत ।

१ हे सारे जातिगणो परमेश्वर की स्तुति करो हे सारे लोगो उस का धन्य  
 २ मानो । क्योंकि उस की दया हम पर बहुत है और परमेश्वर की सद्भाव सदा  
 लों है । हलिलूयाह ॥

एकसौ अठारहवां गीत ।

१ परमेश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है क्योंकि उस की दया सदा  
 २ लों है । हाय कि इसराएल कहे क्योंकि उस की दया सदा लों है । हाय कि  
 ३ हाबोन का घराना कहे क्योंकि उस की दया सदा लों है । हाय कि परमेश्वर  
 ४ के डरवैये कहें क्योंकि उस की दया सदा लों है ॥

५ मैं ने सकेती मैं परमेश्वर को पुकारा परमेश्वर ने विस्तारित स्थान में मेरी  
 ६ सुनी । परमेश्वर मेरी ओर है मैं न डरूंगा मनुष्य मेरा क्या करेगा । परमेश्वर  
 ७ मेरे सहायकों में मेरी ओर है और मैं अपने वैरियों पर दृष्टि करूंगा । परमेश्वर  
 ८ पर भरोसा करना मनुष्य पर भरोसा करने से भला है । परमेश्वर पर भरोसा करना  
 ९ अध्यक्षां पर भरोसा करने से भला है । सारे जातिगणों ने मुझे घेर लिया है  
 १० परमेश्वर के नाम से मैं किरिया खाता हूं कि उन्हें नाश करूंगा । उन्हें ने मुझे  
 ११ घेर लिया हां मुझे घेर लिया परमेश्वर के नाम से मैं किरिया खाता हूं कि उन्हें  
 १२ नाश करूंगा । उन्हें ने मधुमाखियों की नाईं मुझे घेर लिया है वे कांटों की आग  
 के समान धुझ गये परमेश्वर के नाम से मैं किरिया खाता हूं कि उन्हें नाश करूंगा ।

१३ तू ने ठकेला मुझे ठकेला जिसमें मैं गिर पड़ूं और परमेश्वर ने मेरी सहाय किई ॥  
 १४ मेरा बल और मेरा गान परमेश्वर है और वह मेरी मुक्ति हो गया है ।  
 १५ आनन्द और मुक्ति का शब्द धर्मियों के तंबुओं में है परमेश्वर के दहिने हाथ ने  
 १६ शूरता किई है । परमेश्वर का दहिना हाथ जंचा परमेश्वर का दहिना हाथ  
 १७ शूरता करता है । मैं न मरूंगा परन्तु जीता रहूंगा और परमेश्वर की क्रिया बर्खान

गया । समुद्र ने देखा और भागा यरदन उलटी बटी । पहाड़ मेंढों की नाईं ३  
उठले पहाड़ियां भेड़ के बच्चों की नाईं ॥ ४

हे समुद्र तुझे क्या हुआ कि तू भागता है और हे यरदन तुझे क्या हुआ कि ५  
तू उलटी बटती है । हे पहाड़ों क्या हुआ कि तुम मेंढों की नाईं उठलते हो ६  
और हे पहाड़ियां भेड़ के बच्चों की नाईं । हे पृथिवी प्रभु के आगे कांप यशस्कूच ७  
के ईश्वर के आगे । जो पत्थर को पानी का कुण्ड बनाता है और कड़े पाषाण ८  
को पानियों के सेते ॥

एकसा पन्दरहवां गीत ।

हम को नहीं है परमेश्वर हम को नहीं परन्तु अपने नाम को महिमा दे १  
अपनी दया के कारण अपनी खड़ाई के कारण । जातिगण क्यों कहें कि अथ उन २  
का ईश्वर कहाँ है । हमारा ईश्वर तो स्वर्ग पर है जो उस ने चाहा सो सब ३  
किया है ॥

उन की मूर्तें चांदी और सोना हैं मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई । वे मुंढ रखती ४  
हैं पर बोलती नहीं आंखें रखती हैं पर देखती नहीं । कान रखती हैं पर सुनती ५  
नहीं नाक रखती हैं पर सूंघती नहीं । उन के हाथ हैं पर छूती नहीं उन के ७  
पांख हैं पर चलती नहीं वे अपने गले से कुछ शब्द नहीं निकालतीं । उन्हीं के ८  
समान उन के बनवैये होंगे और हर एक जो उन पर भरोसा रखता है ॥

हे हमारा परमेश्वर पर भरोसा रख उन की सहाय और उन की ढाल बही ९  
है । हे शत्रुन के घराने परमेश्वर पर भरोसा रखो उन की सहाय और उन की १०  
ढाल बही है । हे परमेश्वर के डरवैये परमेश्वर पर भरोसा रखो उन की ११  
सहाय और उन की ढाल बही है ॥

परमेश्वर ने हमें स्मरण किया है वह आशीस देगा इसराएल के घराने को आशीस १२  
देगा शत्रुन के घराने को आशीस देगा । वह परमेश्वर के डरवैयों को आशीस देगा १३  
छोटों को बड़ों सहित । परमेश्वर तुम को बढ़ती देवे तुम को और तुम्हारे लड़कों १४  
को । तुम परमेश्वर के निकट स्वर्ग और पृथिवी के बनानेहारे के निकट आशीषित हो ॥ १५

स्वर्ग परमेश्वर के लिये स्वर्ग हैं और उस ने मनुष्य के वंश को पृथिवी दीई १६  
है । न मृतक परमेश्वर की स्तुति करेंगे और न वे सब जो समाधि में उतरते हैं । १७  
और हम अथ से और सदा लों परमेश्वर की स्तुति किया करेंगे । हलिलूयाह ॥ १८

एकसा सोलहवां गीत ।

मैं प्यार करता हूँ क्योंकि परमेश्वर मेरा शब्द मेरी दिनतियां सुनता है । क्योंकि १  
उस ने अपना कान मेरी और बुझाया है और मैं अपने सारे दिनों में उसे पुकारता २  
रहूंगा । मृत्यु के बंधनों ने मुझे घेरा समाधि के कष्टों ने मुझे पकड़ लिया मैं ३  
दुःख और शोक को पाता हूँ । और मैं परमेश्वर के नाम को पुकारता हूँ कि हे ४  
परमेश्वर मैं दिनती करता हूँ मेरे प्राण को बचा ले ॥

परमेश्वर अनुग्राहक और धर्मी हैं और हमारा ईश्वर दया दिग्बलाता है । ५  
परमेश्वर सूखे लोगों का रक्षक हैं मैं दीन हो गया और उस ने मुझे सोल दिई । ६  
हे मेरे प्राण अपने चैनस्थानों में फिर क्योंकि परमेश्वर ने तुझ पर भलाई किई ७

२० पर परदेशी हूँ अपनी आज्ञाओं को मुझ से मत छिपा । मेरा प्राण हर घड़ी तेरे  
 २१ न्यायों की लालसा के मारे टूटा जाता है । तू ने अहंकारियों को साक्षियों को  
 २२ जो तेरी आज्ञाओं से भटकते हैं दण्डा है । मेरे ऊपर से निन्दा और तुच्छता  
 २३ उलट दे क्योंकि मैं ने तेरी साक्षियों को पालन किया है । अध्यक्ष भी बैठे और  
 २४ मेरे विमूढ़ में वातें किहूँ तेरा सेवक तेरी विधि पर ध्यान लगाये है । तेरी  
 साक्षियों मेरे लिये आनन्द भी हैं और मेरी मंत्र देनेहारी ॥

दालेश ॥

२५ मेरा प्राण धूल से लिपट गया है अपने वचन के समान मुझे जिला । मैं ने  
 २६ अपने पथों को वर्णन किया और तू ने मेरी मुनी अपनी विधि की मुझे शिक्षा  
 २७ दे । अपनी आज्ञाओं का मार्ग मुझे समझा और मैं तेरे आश्रयों पर ध्यान  
 २८ लगाऊंगा । मेरा प्राण जोक के मारे आँसू बहाता है अपने वचन के समान मुझे  
 २९ उठा । झूठ के मार्ग को मुझ से अलग कर और अपनी व्यथस्या कृपा करके मुझे  
 ३० दे । मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है और तेरे न्यायों को अपने मनुख रक्खा  
 ३१ है । मैं तेरी साक्षियों से लिपटा हुआ हूँ हूँ परमेश्वर मुझे लज्जित न कर ।  
 ३२ मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूंगा क्योंकि तू मेरे मन को बकावगा ॥

हे ॥

३३ हे परमेश्वर मुझे अपनी विधि का मार्ग दिखा और मैं अन्त लों उसे पालन  
 ३४ करूंगा । मुझे समझ दे और मैं तेरी व्यथस्या को पालन करूंगा और सारे मन से  
 ३५ उसे मानूंगा । मुझे अपनी आज्ञाओं के मार्ग पर चला क्योंकि मैं उस में  
 ३६ आनन्दित हूँ । मेरे मन को अपनी साक्षियों की ओर फिरा और न लालच की ओर ।  
 ३७ मेरी आँखों को झूठ पर दृष्टि करने से उलट दे अपने मार्ग में मुझे जिला ।  
 ३८ अपने सेवक के लिये अपने उस वचन को स्थिर कर जो तेरे डरवैयों के लिये है ।  
 ३९ मैं अपनी लज निन्दा से डरता हूँ उसे फेर दे क्योंकि तेरे न्याय उत्तम हैं ।  
 ४० देख मैं तेरी आज्ञाओं का लालसित हूँ अपने धर्म में मुझे जिला ॥

याव ॥

४१ और हे परमेश्वर तेरी दया मुझ पर आवे तेरी मुक्ति तेरे वचन के समान ।  
 ४२ तो मैं अपने निन्दक से उत्तर का वचन बोलूंगा क्योंकि मैं तेरे वचन पर भरोसा  
 ४३ रखता हूँ । और सच्चाई का यह वचन मेरे मुँह से सर्वथा क्लृप्त न ले क्योंकि मैं  
 ४४ तेरे विचारों का आशावान् हूँ । और मैं तेरी व्यथस्या को सदा सर्वदा लों पालन  
 ४५ करूंगा । और मैं निर्वधता से चला फिरा करूंगा क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाएं ठूँकी  
 ४६ हैं । और मैं राजाओं के आगे तेरी साक्षियों की चर्चा करूंगा और लज्जित न  
 ४७ होऊंगा । और मैं तेरी उन आज्ञाओं में जिन्हें प्यार करता हूँ अपने तई आनन्दित  
 ४८ करूंगा । और मैं अपने हाथ तेरी उन आज्ञाओं की ओर जिन्हें प्यार करता हूँ  
 उठाऊंगा और तेरी विधि पर ध्यान लगाऊंगा ॥

जैन ॥

४९ अपना वचन अपने सेवक के लिये स्मरण कर क्योंकि तू ने मुझे आशावान्  
 ५० किया है । यह मेरी शान्ति मेरे दुःख में है कि तेरे वचन ने मुझे जिलाया है ।

कहेगा । परमेश्वर ने अति ताड़ना से मुझे ताड़ना किई पर मुझे मृत्यु को १८ नहीं दिया ॥

मेरे लिये धर्म के फाटक खोलो मैं उन में प्रवेश कहेगा परमेश्वर की स्तुति १९ कहेगा । यह वह फाटक जो परमेश्वर का है धर्मी उस में जायेंगे । मैं तेरी २० स्तुति कहेगा क्योंकि तू ने मेरी सुनी है और मेरी मुक्ति हो गया है । जिस पन्थर २१ को यवइयाँ ने निकम्मा ठहराया वह कोने का मिरा हो गया है । परमेश्वर से २२ यह हुआ वह हमारी दृष्टि में आश्चर्यित है । यह वह दिन है जिसे परमेश्वर ने २३ बनाया है हम उस में आनन्द करेंगे और मगन होंगे । हे परमेश्वर हम दिनतो २४ करते हैं कृपा करके वधा हे परमेश्वर हम दिनतो करते हैं कृपा करके भाग्यमानी दे । जो आता है वह परमेश्वर के नाम से धन्य हो हम ने परमेश्वर के घर में २५ तुम्हें आर्णाम दिई है ॥

परमेश्वर शक्तिमान है और उस ने हमें संजियाला दिया है धलिदान को २६ रस्सियों से बांधा यज्ञवेदी के मीलों लों । मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है और मैं २७ तेरी स्तुति कहेगा मेरा ईश्वर मैं तेरी प्रतिष्ठा कहेगा । परमेश्वर का धन्यवाद २८ करो क्योंकि वह भला है क्योंकि उन की दया मदा लों है ॥

यकसौ उनीनचां गीत ।

अनिफ ॥

क्या ही धन्य हो जो मार्ग में मिट्टे हैं जो परमेश्वर की व्यवस्था पर चलते १ हैं । क्या ही धन्य हम की साक्षियों के पालन करनेवाले जो सारे मन से उसे २ ढूँढ़ते हैं । वे खराब भी नहीं करते और उस के मार्गों पर चलते हैं । तू ने अपनी ३ आज्ञाएं प्रचारों कि हम उन्हें दृढ़ता से पालन करें । टाय कि मेरे मार्ग तेरी ४ विधिनु को पालन करने के लिये स्थिर हों । नय मैं लज्जित न होऊंगा जब ५ तेरी सारी आज्ञाओं पर दृष्टि कहेगा । मैं मन की खराब से तेरी स्तुति कहेगा ६ जब तेरे धर्म के विचारों को सीखूं । मैं तेरी विधिनु को पालन कहेगा तू मुझे ७ सर्वथा न त्याग ॥

चेत ॥

तत्पण किस रीति अपने मार्ग को पवित्र रखने जिसमें तेरे वचन के समान १ उसे पालन करे । मैं ने अपने सारे मन से तुम्हें ढूँढ़ा मुझे अपनी आज्ञाओं से २ भरमने सत दे । मैं ने अपने मन में तेरे वचन को छिपाया है जिसमें तेरे विरुद्ध ३ पाप न करूं । हे परमेश्वर तू धन्य हो अपनी विधिनु की मुझे शिक्षा दे । मैं ४ ने तेरे मुँह के सारे न्याय अपने छाँटों से वर्णन किये हैं । मैं तेरी साक्षियों के ५ मार्ग में आनन्दित हुआ जैसे कि सारी बढ़ती पर । मैं तेरी आज्ञाओं पर ध्यान ६ कहेगा और तेरे मार्गों पर दृष्टि कहेगा । मैं तेरी विधिनु में अपने तई मगन ७ कहेगा तेरे वचन को न भूलूंगा ॥

गीमल ॥

अपने मेवक पर भलाई कर जिसमें मैं जीऊँ और तेरे वचन को मानूँ । मेरी १ आँखों को खोल और मैं देखा कहेगा तेरी व्यवस्था से आश्चर्य । मैं पृथिवी २

## काफ ॥

८१ मेरा प्राण तेरी मुक्ति के लिये सूर्यित है मैं तेरे वचन पर आशावान् रहता  
 ८२ हूँ । मेरी आंखें तेरे वचन के वाट जोहने में सूर्यित हुईं यह कहते हुए कि तू  
 ८३ कब मुझे शान्ति देगा । क्योंकि मैं उस चर्मरूपी जलपात्र के समान हुआ जो  
 ८४ धूरें में है मैं ने तेरी विधि को नहीं भुलाया । तेरे सेवक के दिन कितने हैं तू  
 ८५ कब मेरे सतानेहारों पर न्याय प्रगट करेगा । अहंकारियों ने मेरे लिये गड़हे खोदे  
 ८६ हैं जो तेरी व्यवस्था के समान नहीं हैं । तेरी सारी आज्ञाएं विश्वासमय हैं वे  
 ८७ झूठ से मुझे सताते हैं मेरी सहाय कर । निकट था कि वे मुझे पृथिवी पर से  
 ८८ मिटा डालते पर मैं ने तेरी आज्ञाओं को त्याग न किया । अपनी दया के समान  
 मुझे जीता रख और मैं तेरे मुंह की साक्षियों को पालन करूंगा ॥

## लामद ॥

८९ हे परमेश्वर तेरा वचन सर्वदा स्वर्ग पर स्थिर है । तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी  
 ९० लों है तू ने पृथिवी को स्थिर किया और वह स्थिर है । वे तेरे न्यायों के कारण  
 ९१ आज लों स्थिर हैं क्योंकि सब तेरे सेवक हैं । यदि तेरी व्यवस्था मेरी आनन्दता  
 ९२ न होती तो मैं अपनी विपत्ति में नाश हो जाता । मैं कभी तेरी आज्ञाओं को न  
 ९३ भूलूंगा क्योंकि तू ने उन के द्वारा से मुझे जिलाया है । मैं तेरा हूँ मुझे बचा क्योंकि  
 ९४ मैं ने तेरी आज्ञाओं को खोज किया है । दुष्ट मेरी घात में लगे हैं जिसमें  
 ९५ मुझे नाश करें मैं तेरी साक्षियों पर ध्यान लगाऊंगा । मैं ने सारी सिद्धता का अंत  
 देखा पर तेरी आज्ञा अत्यन्त चौड़ी है ॥

## मीम ॥

९६ वाह मैं तेरी व्यवस्था से क्या ही प्रीति रखता हूँ सारे दिन मेरा ध्यान वही  
 ९७ है । तेरी आज्ञाएं मुझे मेरे द्वैतियों से अधिक बुद्धिमान बनाती हैं क्योंकि वे सदा  
 ९८ मेरे लिये हैं । मैं अपने सारे उपदेशकों से अधिक समझ रखता हूँ क्योंकि तेरी  
 ९९ साक्षियों पर मेरा ध्यान है । मैं प्राचीनों से अधिक समझता हूँ क्योंकि मैं ने तेरी  
 १०० आज्ञाओं को पालन किया है । मैं ने अपने पांव को हर कुमार्ग से रोक रखा  
 १०१ है जिसमें तेरे वचन को पालन करूं । मैं तेरे विचारों से नहीं हटा क्योंकि तू ही  
 १०२ ने मेरी अगुआई किई है । तेरी वातें मेरे तालू में क्या ही मीठी लगती हैं मधु  
 १०३ से अधिक मेरे मुंह में । मैं तेरी आज्ञाओं से समझ पाता हूँ इस लिये मैं ने हर  
 झूठे मार्ग से घिन किया है ॥

## नून ॥

१०४ तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक है और मेरे मार्ग के लिये उजियाला ।  
 १०५ मैं ने किरिया खाई है और उसे पूरा करूंगा कि तेरे धर्म के विचारों को पालन  
 १०६ करूंगा । मैं अति दुःखी हूँ हे परमेश्वर अपने वचन के समान मुझे जिला ।  
 १०७ हे परमेश्वर मैं बिनती करता हूँ मेरे मुंह की मनमनता की भेंटों से प्रसन्न हो  
 १०८ और अपने न्यायों का मुझे ज्ञान दे । मेरा प्राण सदा मेरी हथेली पर है पर मैं  
 १०९ ने तेरी व्यवस्था को नहीं बिसराया । दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है पर मैं  
 ११० तेरी आज्ञाओं से भटक नहीं गया । मैं ने सदा के लिये तेरी साक्षियों को

अभिमानीयों ने मुझे अति ठट्टे में उड़ाया है मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा । ५१  
हे परमेश्वर मैं ने तेरे पुरातन विचारों को स्मरण रक्खा है और अपने को शान्ति ५२  
दिई है । कोषाग्नि ने मुझे पकड़ लिया है उन दुष्टों के कारण से जो तेरी व्य- ५३  
वस्था को त्यागते हैं । मेरे यान्त्रालय में तेरी विधि मेरे लिये गान हुई हैं । ५४  
हे परमेश्वर मैं रात को तेरे नाम को स्मरण करता और तेरी व्यवस्था को ५५  
पालन करता हूँ । यह मुझ से बन पड़ा क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को पालन ५६  
किया है ॥

खेत ॥

हे परमेश्वर मैं ने कहा कि मेरा भाग यह है कि तेरे वचनों को पालन करूँ । ५७  
मैं ने सारे मन से तेरे रूप की पाचना किई है अपने वचन के समान मुझ पर ५८  
दया कर । मैं ने अपने मार्गों पर सोच किया है और अपने पाँच तेरी साक्षियों ५९  
की और फिर फेरें हैं । मैं ने तेरी आज्ञाओं को पालन करने में फुरती किई और ६०  
आलस्य न किई । दुष्टों के बंधनों ने मुझे घेरा पर मैं ने तेरी व्यवस्था को नहीं ६१  
भुलाया । मैं आधी रात को उठूंगा जिसमें तेरे धर्म के विचारों के कारण तेरा ६२  
धन्य मानूँ । मैं उन सभी का संगी हूँ जो तुझ से डरते हैं और उन का जो तेरी ६३  
आज्ञाओं को मानते हैं । हे परमेश्वर पृथिवी तेरी दया से पूर्ण है अपनी विधि ६४  
की मुझे शिखा दे ॥

तेज ॥

हे परमेश्वर तू ने अपने वचन के समान अपने सेवक से अच्छा व्यवहार किया ६५  
है । सुविचार और ज्ञान की मुझे शिखा दे क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं पर विश्वास ६६  
लाया हूँ । उससे पहिले कि मैं ने दुःख पाया मैं भटका हुआ था पर अब मैं ने ६७  
तेरे वचन को पालन किया है । तू भला है और भलाई करता है अपनी विधि ६८  
का मुझे ज्ञान दे । अहंकारियों ने मेरे विरुद्ध झूठ बना रक्खा है मैं सारे मन से ६९  
तेरी आज्ञाओं को पालन करूंगा । उन का मन चिकनाई के समान चिकना है मैं ७०  
तेरी व्यवस्था से आनन्दित हूँ । मेरे लिये भला है कि मैं दुःख में पड़ा जिसमें ७१  
तेरी विधि को जानूँ । तेरे सुंद की व्यवस्था मेरे लिये साने और चांदी के सहस्रों ७२  
से अच्छी है ॥

योद ॥

तेरे हाथों ने मुझे बनाया और मुझे सिद्ध किया मुझे समझ दे और मैं तेरी ७३  
आज्ञाओं का ज्ञान प्राप्त करूंगा । तेरे डरवैये मुझे देखेंगे और आनन्दित होंगे ७४  
क्योंकि मैं तेरे वचन का आशावान् रहा । हे परमेश्वर मैं जानता हूँ कि तेरे विचार ७५  
सत्य हैं और तू ने सत्यता के संग मुझे दुःख दिया है । अपने उस वचन के समान ७६  
जो अपने सेवक से किया हाय कि तेरी दया मुझे शान्ति देने के लिये हो । तेरी ७७  
कृपायें मुझ पर आर्व तो मैं जीता रहूंगा क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरी आनन्दता  
है । अहंकारी लज्जित हों क्योंकि उन्हे ने झूठ से मेरे विवाद को टेढ़ा किया है ७८  
मैं तेरी आज्ञाओं पर ध्यान रखूंगा । तेरे डरवैये मेरी और फिर और तेरी साक्षियों ७९  
को जानें । मेरा मन तेरी विधि में सिद्ध हो जिसमें मैं लज्जित न होऊँ ॥ ८०



१४२ पर तेरी आज्ञाओं को नहीं भूलता । तेरा धर्म सर्वथा सच्चा है और तेरी  
१४३ व्यवस्था सत्य । सकेंती और कष्ट ने मुझे ले लिया है तेरी आज्ञाएं मेरी आनन्दता  
१४४ हैं । तेरी साक्षियां सनातन लों सच्ची हैं मुझे ज्ञान दे तो मैं जीता रहूंगा ॥

काफ ।

१४५ मैं सारे मन से पुकारता हूं हे परमेश्वर मेरी मुन में तेरी विधि का पालन  
१४६ करूंगा । मैं तुम्हें पुकारता हूं मुझे दया और मैं तेरी साक्षियों का ताकना रहूंगा ।  
१४७ मैं पौ फटने के समय तेरे आगे आता हूं और दोहाड़ देता हूं तेरे वचनों का  
१४८ आशावान् हूं । मेरी आंखें रात के पहरों को आगे से ले लेती हैं जिससे तेरे  
१४९ वचन पर ध्यान रखूं । अपनी दया के समान मेरा जन्म मुन है परमेश्वर अपने  
१५० विचारों के अनुसार मुझे जिला । घुराई के पीछा करवैया समीप हैं वे तेरी  
१५१ व्यवस्था से दूर हैं । हे परमेश्वर तू ही निकट है और तेरी सारी आज्ञाएं सत्य  
१५२ हैं । मैं ने आगे से तेरी ही साक्षियों से जाना है कि तू ने उन्हें सदा के लिये  
स्थिर किया है ॥

रेज ॥

१५३ मेरी विपत्ति को देख और मुझे कुछा क्योंकि मैं ने तेरी व्यवस्था को  
१५४ नहीं भुलाया है । मेरे पद के विघाट ने मेरी सहायता कर और मुझे कुछा  
१५५ अपने वचन के समान मुझे जिला । मुक्ति दुष्टों से दूर है क्योंकि वे तेरी  
१५६ विधि का नहीं ठूंकते । हे परमेश्वर तेरी दया बहुत है अपने न्यायों के  
१५७ समान मुझे जिला । मेरे संतानेदारे और दुःखदेनेदारे बहुत हैं मैं तेरी साक्षियों  
१५८ से नहीं घटा । मैं उन परंपरियों को देखता और धिन करता हूं जो तेरे  
१५९ वचन का पालन नहीं करते । देख कि मैं तेरी आज्ञाओं से प्रीति रखता हूं  
१६० हे परमेश्वर अपनी दया के समान मुझे जिला । तेरे वचन का आरंभ सत्य है  
और तेरी सच्चाई का हर एक विचार सदा के लिये है ॥

गीत ॥

१६१ अध्यक्ष अकारण मेरे पीछे पड़े हैं और मेरा मन तेरे वचनों से भयमान  
१६२ है । मैं बहुत लूट पानेदारों की नाईं तेरे वचन पर भगन रहता हूं । मैं झूठ  
१६३ से धिन करता और धैर रखता हूं तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं । मैं तेरे  
१६४ धर्म के न्याय के कारण प्रतिदिन सात घेर तेरी स्तुति करता हूं । तेरी व्यवस्था  
के प्रेमियों को बड़ा चैन है और उन के लिये किसी प्रकार की ठोकर नहीं है ।  
१६५ हे परमेश्वर मैं तेरी मुक्ति का आशावान् हूं और तेरी आज्ञाओं के अनुसार करता  
१६६ हूं । मेरा प्राण तेरी साक्षियों का पालन करता है और मैं उन से अत्यन्त प्रेम  
१६७ रखता हूं । मैं तेरी आज्ञाओं और तेरी साक्षियों का पालन करता हूं क्योंकि  
मेरी सारी चाल तेरे आगे हैं ॥

ता ॥

१६८ हे परमेश्वर मेरा विलाप तेरे आगे पहुंचे अपने वचन के समान मुझे  
१६९ समझ दे । मेरी खिन्ती तेरे आगे आये अपने वचन के समान मुझे कुछा ।  
१७० मेरे होठ स्तुति बर्णन किया करेंगे क्योंकि तू अपनी विधि का मुझे ज्ञान देगा ।

अधिकार में लिया है क्योंकि मेरे मन का आनन्द वेही है । मैं ने अपने मन ११७  
को भुकाया है कि सदा लों हां अन्त लों तेरी विधि का पालन करूं ॥

सासिग्य ॥

मैं कुभावनाओं में धिन करता हूं और तेरी व्यथस्या से प्रेम रखता हूं । ११३  
मेरे छिपने का स्थान और छाल तू ही है मैं तेरे वचन का आशावान् हूं । हे ११४  
कुक्कर्मियों मेरे पास से दूर होओ और मैं अपने इंद्र की आत्माओं को मानूंगा । ११५  
अपने वचन के समान मुझे संभाल और मैं जीता रहूं और मेरी आशा से मुझे ११६  
लज्जित न कर । मुझे पास ले और मैं यथा रहूंगा और सदा तेरी विधि पर ११७  
दृष्टि रखूंगा । तू अपनी विधि के सारे भटके हथों को तुच्छ जानता है ११८  
क्योंकि उन का छल मिथ्या है । तू ने पृथ्वी के सारे दुष्टों को सोने चांदी के ११९  
मैल को नाई मिटा डाला है इस लिये मैं तेरी साक्षियों से प्रीति रखता हूं ।  
मेरा गरीर तेरे डर से धर्यराता है और मैं तेरे न्यायों से डरता हूं । १२०

गन ॥

मैं ने न्याय और धर्म किया है मुझे मेरे मतानेवालों के वग से न छोड़ । १२१  
भलाई के लिये अपने सेवक का व्यवहार हो अहंकारी मुझे न मताये । मेरी १२२  
आंखें तेरी सुक्ति के और तेरे धर्म के वचन की बात जोड़ने में मूर्खित हो गईं । १२३  
अपनी दया के समान अपने सेवक से व्यवहार कर और अपनी विधि का मुझे १२४  
ज्ञान दे । मैं तेरा सेवक हूं मुझे समझ दे जिनमें तेरी साक्षियों को जानूं । परमे- १२५  
श्वर के लिये कार्य करने का समय है वे तेरी व्यथस्या को भंग करते हैं ।  
इस लिये मैं तेरी आज्ञाओं को सोने हां सोखे सोने से अधिक प्रिय करता हूं । १२६  
इस लिये मैं तेरी सारी आज्ञाओं को सभों के विषय ठीक जानता हूं और भूट १२७  
के दर मार्ग से धिन करता हूं ॥

ये ॥

तेरी साक्षियां आश्चर्यित हैं इस लिये मेरा प्राण उन्हे पालन करता है । १२८  
तेरे वचनों का खुल जाना मूर्ख मनों को समझाके उलियाला करना है । मैं अपना १२९  
मुंह फैलाता और हांफता हूं क्योंकि तेरी आज्ञाओं के लिये अभिलाषी हूं । अपने १३०  
नाम के प्रेमियों के आचरण के समान मेरी और दृष्टि कर और मुझ पर दया कर ।  
अपने वचन के कारण से मेरे दुर्गों को स्थिर कर और जोई अधर्म मुझ पर राज्य १३१  
न करे । मनुष्य के अंधेर से मुझे हड़्डा और मैं तेरी आज्ञाओं को पालन किया १३२  
कदंगा । अपने सेवक पर अपने मुंह को चमका और अपनी विधि का मुझे १३३  
ज्ञान दे । मेरी आंखें पानी की नदियां होके बह जाती हैं इस कारण कि वे तेरी १३४  
व्यथस्या को पालन नहीं करते ॥

जादि ॥

हे परमेश्वर तू ही धर्मी है और अपने विचारों में सद्वा । तू ने अति १३५  
धर्म और सद्वा के संग अपनी साक्षियां प्रचारी हैं । मेरी उजलन मुझे खा १३६  
लेती है क्योंकि मेरे विरोधी तेरे वचनों को भुला देते हैं । तेरा वचन भली १३७  
भांति लाया गया और तेरा दास उस्से प्रेम रखता है । मैं अधम हूं और तुच्छ १३८

एकसौ तेईसवां गीत ।

यात्राओं का गान ।

- १ मैं अपनी आंखें तेरी ओर उठाता हूँ हे स्वर्ग पर बैठनेहारे । देख जिस रीति से कि सेवक अपने स्वामियों के हाथों को ताकते हैं जिस रीति से कि दासी अपनी स्वामिनी के हाथों को ताकती है उसी रीति हमारी आंखें परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर हैं जय लो कि वह हम पर दया न करे ।
- २ हम पर दया कर हे परमेश्वर हम पर दया कर क्योंकि हम निन्दा से अत्यन्त परिपूर्ण हुए । हमारे प्राण सुखियों की निन्दा से अहंकारियों के ठट्ठे से अपने लिये अत्यन्त परिपूर्ण हुए ॥

एकसौ चौबीसवां गीत ।

यात्राओं का गान । दाऊद का ॥

- १ यदि परमेश्वर न होता जो हमारी ओर हुआ हाथ कि इसराएल कहे ।
- २ यदि परमेश्वर न होता जो हमारी ओर हुआ जब मनुष्य के सन्तान हमारे विरोध में उठे । तो वे उसी समय हमें जीता निंगल जाते जब उन का क्रोध
- ३ हम पर भड़का । उसी समय पानी हम पर बह जाता और धारा हमारे प्राण के ऊपर जाती । उस समय पानी उमड़ता हुआ पानी हमारे प्राण के ऊपर जाता ॥
- ४ परमेश्वर धन्य हो जिस ने हमें उन के दांतों में अहेर के समान नहीं दिया ।
- ५ हमारा प्राण चिड़िया की नाईं व्याधों के जाल से छूट गया फंदा टूट गया
- ६ और हम छूट गये । हमारी सहाय परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी के बनानेहारे के नाम से है ॥

एकसौ पचीसवां गीत ।

यात्राओं का गान ।

- १ परमेश्वर पर भरोसा रखनेहारे सैहून पर्वत की नाईं हैं जो न टलेगा परन्तु
- २ सदा लो स्थिर रहेगा । यहसलम उस के आसपास पर्वत हैं और परमेश्वर अपने
- ३ लोगों के चहुँओर है अब से और सदा लो । क्योंकि दुष्टता का दण्ड धर्मियों के भाग पर न रहेगा जिसने धर्मी अपने हाथ खुराई पर न बढावे ॥
- ४ हे परमेश्वर भलों से भलाई कर और उन से जो अपने अन्तःकरणों में खरे
- ५ हैं । और जो अपने टेढ़े टेढ़े मार्गों की ओर बहक जाते हैं उन्हें परमेश्वर कुकर्म्मियों के संग चलावेगा इसराएल पर कुशल हो ॥

एकसौ छत्तीसवां गीत ।

यात्राओं का गान ।

- १ जब परमेश्वर सैहून के फिरनेहारों की ओर फिरा तब हम स्वप्नदर्शियों की
- २ नाईं थे । उसी समय हमारा मुँह हंसी से और हमारी जीभ आनन्द के शब्द से भर गई उसी समय उन्होंने जातिगणों में कहा कि परमेश्वर ने इन के साथ
- ३ बड़े कार्य किये हैं । परमेश्वर ने हमारे साथ बड़े कार्य किये हैं हम आनन्दित हैं ॥
- ४ हे परमेश्वर हमारी बंधुआई की ओर फिर उन धारों की नाईं जो दाहिण में
- ५ हैं । जो आंसुओं के साथ बोलते हैं वे आनन्द के साथ लवेंगे । वह अपने बीज

मेरी जीभ तेरे वचन का यह चतर दे कि तेरी सारी आज्ञाएं मची हैं । तेरा ११३  
 हाथ मेरी सहायता के लिये निकट रहे क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को अंगीकार ११३  
 किया है । हे परमेश्वर मैं तेरी मुक्ति की लालसा रखता हूँ और तेरी व्यवस्था ११४  
 मेरे आनन्द हैं । मेरा प्राण जीता रहे और तेरी स्तुति करे और तेरे न्याय मेरी ११५  
 सहायता करें । मैं खोई हुई भेड़ की नाईं भटक गया अपने दास को ढूँढ़ क्योंकि ११६  
 मैं ने तेरी आज्ञाओं को नहीं भुलाया ॥

एकसौ बीसवां गीत ।

यात्राओं का गान ॥

मैं ने अपनी मक्केली में परमेश्वर को पुकारा और उस ने मेरी सुनी । हे १  
 परमेश्वर मेरे प्राण को झूठ के दाँठ से और छली जीभ से छुड़ा ॥ २

हे छली जीभ वह तुझे क्या देगा और तुझे क्या अधिक करेगा । चलवान के ३  
 चौखे किये हुए वाण रतमयूज के कोएले सदित ॥ ४

छाय सुक पर कि मैं मसक के संग परदेशी हूँ और किदार के तंयुओं के ५  
 निकट रहता हूँ । मेरा प्राण कुशल के वर रखनेहारे के संग अपनी भलाई के ६  
 लिये अवेर लों रहा है । मैं कुशल हूँ और जय धातं करता हूँ तब ये लड़ाई ७  
 के लिये लैस होते हैं ॥ ८

एकसौ एकूँसवां गीत ।

यात्राओं का गान ॥

मैं अपनी आँखें पहाड़ों की ओर उठाता हूँ मेरी सहाय कहां से आवेगी । १  
 मेरी सहाय परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी के बनानेहारे से है । वह तेरे पाँच २  
 को टलने न दे तेरा रक्षक न जंघे । देव्य इमराएल का रक्षक न जंघेगा और ३  
 न सेवेगा । परमेश्वर तेरा रक्षक है परमेश्वर तेरे दहिने हाथ पर तेरा काया ४  
 है । दिन को सूर्य तुझे कुछ दुःख न देगा और रात को चन्द्रमा । परमेश्वर ५  
 तुझे सारी घुमाई से वचावेगा तेरे प्राण को वचावेगा । परमेश्वर तेरे आने जाने ६  
 में तुझे वचावेगा अब से सदा लों ॥ ७

एकसौ बाईसवां गीत ।

यात्राओं का गान । दाऊद का ॥

मैं उन से आनन्दित हूँ जो सुक से कहते हैं कि परमेश्वर के मन्दिर में १  
 चलें । हे यरुसलम हमारे पाँच तेरे फाटकों में खड़े होते हैं । यरुसलम में २  
 जो ऐसे नगर की नाईं बनाया गया जो अपने घरों में आप में संयुक्त है । जहां ३  
 गोष्ठियां परमेश्वर की गोष्ठियां इमराएल को साक्षी देने के लिये ऊपर चढ़ती हैं ४  
 जिनमें परमेश्वर के नाम का धन्यवाद करें । क्योंकि वहां न्याय के लिये सिंहासन ५  
 दाऊद के घराने के लिये सिंहासन धरे हुए हैं ॥ ६

यरुसलम के कुशल के लिये प्रार्थना करो तेरे प्यार करनेहारे कुशल से रहें । ७  
 तेरी भीतों के भीतर कुशल हो तेरे भवनों में जैन । मैं अपने भाइयों और अपने ८  
 संगियों के लिये कहूँ कि तुझ में कुशल हो । मैं परमेश्वर अपने ईश्वर के मन्दिर ९  
 के कारण तेरी भलाई का खोजी रहूँगा ॥ १०

५ मैं परमेश्वर की याद जोहता हूँ मेरा प्राण याद जोहता है और मैं उसके  
६ वचन का आशावान् हूँ । मेरा प्राण विद्वान के याद जोहनेहारों से हाँ विद्वान के  
याद जोहनेहारों से अधिक प्रभु की याद जोहता है ॥

७ हे इसराएल परमेश्वर पर आशा रख क्योंकि परमेश्वर के पास दया है  
८ और उस के पास मुक्ति का बहुताई । और वही इसराएल को उस के सारे  
अधर्मी से छुड़ावेगा ॥

एकसाँ एकतीसवाँ गीत ।

यात्राओं का गान । दाऊद का ॥

१ हे परमेश्वर मेरा मन अहंकारी नहीं है और मेरी आँखें ऊँची नहीं हैं और मैं  
बड़ी बातों में और उन में जो मेरे लिये आश्चर्यित हैं नहीं लवलीन होता ।  
२ यदि मैं ने अपने प्राण को सदृश और चुपचाप नहीं किया है जैसा दूध छुड़ाया  
हुआ बालक अपनी माता पर विश्राम करता है तो ईश्वर जानता है दूध छुड़ाये  
३ हुए बालक के समान मेरा प्राण मुझ पर विश्राम करता है । हे इसराएल परमे-  
श्वर का आशावान् हो अब से और सदा लो ॥

एकसाँ दत्तीसवाँ गीत ।

यात्राओं का गान ॥

१ हे परमेश्वर दाऊद के लिये उस के सारे क्लेशित होने को स्मरण कर । जिस  
२ ने परमेश्वर से किरिया खाई और यश्कूव के शक्तिमान को मनौती मानी । कि  
३ यदि मैं अपने घर के डरे में जाऊँ अपने विह्वल की खाट पर चढ़ूँ । यदि  
४ अपनी आँखों में नींद अपने पलकों में आँधारे का आने दूँ । जब लो परमेश्वर  
के लिये स्थान यश्कूव के शक्तिमान के लिये निवासस्थान न पाऊँ तो ईश्वर  
५ दूँगे । देखो हम ने इसराएल में उस के विषय में सुना हम ने उसे अरण्य के  
६ खेतों में पाया । हम उस के तंत्रुओं में आँखें उस के प्राँव के नीचे की पीढ़ी को  
दण्डवत् करें ॥

७ हे परमेश्वर अपने निवासस्थान को उठ तू और तेरे पराक्रम की मंजूपा ।  
८ तेरे याजक सच्चाई का वस्त्र पहिरे हों और तेरे साधु आनन्द का शब्द करें ।  
९ अपने दास दाऊद के कारण सुन अपने अभिषिक्त के मुँह को न फिरा ॥

१० परमेश्वर ने सच्चाई के साथ दाऊद से किरिया खाई है और उससे न फिरेगा  
११ कि मैं तेरी देह के फल से तेरे लिये सिंहासन पर बैठाऊँगा । यदि तेरे लड़के  
मेरी बाँचा को पालन करेंगे और मेरी साधियों को जो मैं उन्हें सिखाऊँगा तो  
१२ उन के लड़के भी सदा लो तेरे लिये सिंहासन पर बैठे रहेंगे । क्योंकि परमेश्वर  
१३ ने सैहून को चुन लिया है और चाँहा कि वह उस के लिये निवास हो । यह  
सदा लो मेरा निवासस्थान है यहीं मैं वास करूँगा क्योंकि मैं ने उसे चाँहा है ।  
१४ मैं उस के भोजन पर आशीस देऊँगा आशीस देऊँगा उस के कंगालों को रोटी  
१५ से तृप्त करूँगा । और उस के याजकों को मुक्ति का वस्त्र पहिराऊँगा और उस  
१६ के साधु आनन्द का शब्द करेंगे आनन्द का शब्द करेंगे । वहाँ मैं दाऊद के लिये  
१७ सींग जमाऊँगा मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये दीपक सिद्ध किया है । मैं उस के

का धोम उठाये हुए रोता हुआ चला जायगा अपने पूरे उठाये हुए आनन्द के साथ आयेगा आयेगा ॥

एकमौ सत्ताईसवां गीत ।

यात्राओं का गान । मुलेमान का ॥

यदि परमेश्वर घर न बनावे तो उस के बनवैया अकारण उस में परिश्रम करते हैं यदि परमेश्वर नगर की रक्षा न करे तो उस का रखवान व्यर्थ जागता है । तुम्हारे लिये वृथा है कि तुम लड़के उठते अघोर में बैठते परिश्रमों की रोटी खाते हो वह तो ऐसी व्यर्थ अपने प्यार करनेवाले को नोट में देता है ॥

देखो लड़के परमेश्वर की ओर से अधिकार हैं गर्भ का फल प्रतिफल है । जैसे बलवान के हाथ में धागू तैसे ही तरुणाई के लड़के हैं । क्या ही धन्य वह मनुष्य जिस ने अपने तूख को उन से भर दिया है वे लज्जित न होंगे जब अपने शत्रुओं से द्वार पर वार्ता करेंगे ॥

एकमौ अट्ठाईसवां गीत ।

यात्राओं का गान ॥

परमेश्वर का हर एक डरवैया क्या ही धन्य है जो उस के मार्गों पर चलता है । जब तू अपने हाथों की कमाई खायेगा तब तू क्या ही धन्य और तेरे लिये भलाई । तेरी पत्नी फलवन्त दाख की नाईं तेरे घर के भीतर तेरे बच्चे तेरे मंच की चारों ओर जलपाई की पौधों की नाईं होंगे ॥

देख कि जो मनुष्य परमेश्वर से डरता है वह इसी रीति से धन्य होगा । परमेश्वर तुम्हें सैहून से आशीस दे और तू जीवन भर यक्षसलम की भलाई पर दृष्टि किया कर । और अपने बच्चों के बच्चों को देख इसराएल पर कुशल हो ॥

एकमौ उत्तीसवां गीत ।

यात्राओं का गान ॥

मेरी तरुणाई से उन्हीं ने बहुधा मुझे मताया हाथ कि इसराएल कहे । मेरी तरुणाई से उन्हीं ने बहुधा मुझे मताया तब भी मुझ पर प्रवल न हुए । चलवालों ने मेरी पीठ पर चल जाता उन्हीं ने अपनी रेघारियां लंघी किईं । परमेश्वर धर्मी है उस ने दुष्टों की रस्सी को काट डाला ॥

सैहून के सारे वीर रखनेवाले लज्जित होंगे और पीछे हटाये जायेंगे । वे कतों की घास की नाईं होंगे जो उसमें पड़िले कि कोई उसे उखाड़े सूख जाती है । जिस्से लखनेवाला अपने हाथ को नहीं भरता और पूनों का बंधवैया अपनी अंकुश को । और मार्ग के जवैया नहीं कहते हैं कि परमेश्वर की आशीस तुम पर आवे हम तुम को परमेश्वर के नाम से आशीस देते हैं ॥

एकमौ तीसवां गीत ।

यात्राओं का गान ॥

हे परमेश्वर मैं गद्दिराओं में से तुम्हें पुकारता हूँ । हे प्रभु मेरा शब्द सुन तेरे कान मेरे शब्द की ध्वनियों पर लगे रहें । हे परमेश्वर यदि तू अधर्मी पर दृष्टि करे तो हे प्रभु कौन खड़ा रहेगा । क्योंकि तेरे पास क्षमा है जिसने तुम्हें से डरे ॥



१९ हे इसराएल के घराने परमेश्वर को धन्यवाद कहो हे हाइन के घराने परमे-  
 २० श्वर को धन्यवाद कहो । हे लावी के घराने परमेश्वर को धन्यवाद कहो हे  
 २१ परमेश्वर को डरनेहारो परमेश्वर को धन्यवाद कहो । परमेश्वर जो यरूसलम में  
 बास करता है सैहून से धन्य हो । हलिलूयाह ॥

एकसौ कत्तीसवां गीत ।

१ परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वह भला है क्योंकि उस की दया सर्वदा  
 २ है । ईश्वरों के ईश्वर का धन्य मानो क्योंकि उस की दया सर्वदा है । प्रभुओं  
 के प्रभु का धन्य मानो क्योंकि उस की दया सर्वदा है ॥

४ उस का जो अकेला आश्चर्य और बड़े काम करता है क्योंकि उस की दया  
 ५ सर्वदा है । उस का जिस ने स्वर्ग को बुद्धि के साथ बनाया क्योंकि उस की दया  
 ६ सर्वदा है । उस का जिस ने पृथिवी को पानी के ऊपर फैलाया क्योंकि उस की  
 ७ दया सर्वदा है । उस का जिस ने बड़ी बड़ी ज्योति बनाई क्योंकि उस की दया  
 ८ सर्वदा है । सूर्य को दिन पर प्रभुता के लिये क्योंकि उस की दया सर्वदा है ।

९ चन्द्रमा और तारागण को रात पर प्रभुता के लिये क्योंकि उस की दया सर्वदा है ॥

१० उस का जिस ने मिस्र को उन के पहिलौठों की मृत्यु में मारा क्योंकि उस

११ की दया सर्वदा है । और इसराएल को उन के मध्य से निकाल लाया क्योंकि

१२ उस की दया सर्वदा है । प्रबल हाथ और फैली हुई भुजा से क्योंकि उस की

१३ दया सर्वदा है । उस का जिस ने लाल समुद्र को दो भाग किया क्योंकि उस की

१४ दया सर्वदा है । और इसराएल को उस के मध्य से पार कर दिया क्योंकि उस

१५ की दया सर्वदा है । और फिरजन और उस की सेना को लाल समुद्र में झाड़

१६ डाला क्योंकि उस की दया सर्वदा है । उस का जिस ने अरण्य में अपने लोगों

की अगुआई किई क्योंकि उस की दया सर्वदा है ॥

१७ उस का जिस ने बड़े राजाओं को मार डाला क्योंकि उस की दया सर्वदा

१८ है । और बलवान राजाओं को मार डाला क्योंकि उस की दया सर्वदा है ।

१९ असूरियों के राजा सीहून को क्योंकि उस की दया सर्वदा है । और ऊज बसनिये

२० के राजा को क्योंकि उस की दया सर्वदा है । और उनके भूमि अधिकार के

२१ समान दिई क्योंकि उस की दया सर्वदा है । अपने सेवक इसराएल का अधिकार

क्योंकि उस की दया सर्वदा है ॥

२३ जिस ने हमारी दुर्दशा में हमें स्मरण किया क्योंकि उस की दया सर्वदा है ।

२४ और हमें हमारे बैरियों से छोन लिया क्योंकि उस की दया सर्वदा है । जो सारे

२५ शरीर को भोजन देता है क्योंकि उस की दया सर्वदा है । स्वर्ग के सर्वशक्तिमान

का धन्यवाद करो क्योंकि उस की दया सर्वदा है ॥

एकसौ सैंतीसवां गीत ।

१ बाबुल की नदियों पर वहां जख हम ने सैहून को स्मरण किया तो बैठे और

२ रोये भी । बेत के वृक्षों पर उस के मध्य हम ने अपनी वीणों को लटका दिया ।

३ क्योंकि वहां हमारे बंधुआ करवैये गीतों के बचनों के और हमारे लूटनेहारो

आनन्द के चाहक हुए कि हमारे लिये सैहून के गीतों से कुछ गाओ ॥

वैरियों को लाज का वस्त्र पहिराऊंगा और उस पर उस का मुकुट खिला रहेगा ॥

एकसौ तैंतीसवां गीत ।

यात्राओं का गान । दाऊद का ॥

देखो क्या ही भला और क्या ही मनोहर भाइयों का साथ साथ रहना है । उस तेल उस अच्छे तेल की नाई है जो सिर पर और दाढ़ी अर्थात् चामन की दाढ़ी पर बहि जाता है जो उस के पहिराये के खूंट लों बहि जाता है । हरमून की ओस की नाई वह ओस है जो सैहून के पहाड़ों पर गिरती है क्योंकि वहां पर-मेश्वर ने आशीस अर्थात् जीवन का सदा के लिये आज्ञा किया ॥

एकसौ चौतीसवां गीत ।

यात्राओं का गान ॥

देखो हे परमेश्वर के सारे सेवकों जो रातों को परमेश्वर के घर में खड़े रहते हो परमेश्वर को धन्यवाद कहो । अपने हाथ धर्मधाम की ओर उठाओ और परमेश्वर को धन्यवाद कहो । परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी का बनानेद्वारा सैहून से तुम्हें आशीस दे ॥

एकसौ पैंतीसवां गीत ।

दलिलूयाह । परमेश्वर के नाम की स्तुति करो हे परमेश्वर के सेवकों उस की स्तुति करो । जो परमेश्वर के घर में हमारे ईश्वर के घर के आंगनों में खड़े रहते हो । दलिलूयाह । क्योंकि परमेश्वर भला है उस के नाम की स्तुति गाओ क्योंकि वह सुन्दर है ॥

क्योंकि परमेश्वर ने यश्मूय को चुन लिया इसराएल को अपने विशेष अधिकार के लिये । क्योंकि मैं जानता हूं कि परमेश्वर महान है और हमारा प्रभु सारे देवों से श्रेष्ठ । जो कुछ परमेश्वर चाहता है वह सब स्वर्ग और पृथिवी में समुद्रों में और गहिराओं में करता है । पृथिवी की सीमों से भाकों को उठाता है मंद के लिये उस ने विजलियों को बनाया पवन को अपने भंडारों से निकालता है । जिस ने मिस्र के पहिलौठों को मनुष्य से लेके पशु लों मार डाला । लक्षण और आश्चर्य हे मिस्र तेरे मध्य फिरऊन और उस के सारे सेवकों पर भेजे । जिस ने बहुत जातिगणों को मार डाला और पराक्रमी राजाओं को घात किया । अर्थात् अमूरियों के राजा सीहून को और यसनिया के राजा ऊज को और कनयान के सारे राज्यों को । और उन का देश अधिकार मैं अपने लोगों इसराएल को अधिकार में दिया ॥

हे परमेश्वर तेरा नाम सर्वदा है हे परमेश्वर तेरा स्मरण पीढ़ी से पीढ़ी लों है । क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करेगा और अपने सेवकों के लिये पकतायेगा । अन्यदेशियों की मूर्ति रूपा और सोना हैं मनुष्य के हाथों की क्रिया । वे मुंह रखती हैं पर बोलती नहीं आंखें रखती हैं पर देखती नहीं । कान रखती हैं पर सुनती नहीं हां उन के मुंह में कुछ श्वास नहीं है । उन्हीं के समान उन के वनवैषे होंगे और हर एक जो उन पर भरोसा रखता है ॥

१३ नाईं चमकती है जैसा अधियारा वैसा उंजियाला । क्योंकि तू मेरे अन्तःकरण  
१४ का स्वामी है मेरी साता की कोख में तू ने मुझे ठाँप लिया । मैं तेरी स्तुति  
करता हूँ क्योंकि मैं आश्चर्य रीति से बनाया गया हूँ तेरे कार्य अद्भुत हैं और  
१५ यह मेरा प्राण भली भाँति जानता है । मेरा पिण्डा तुझ से छिपा न रहा जब  
१६ मैं गुप्त में बनाया गया पृथिवी की नीचाई में बिना गया । तेरी आँखों ने मेरे  
अधूरे मूल को देखा और तेरी दृष्टि में मेरे सय दिन लिखे आते चित्रकारी हो जाते  
थे यद्यपि उन में से एक भी भावधान न था ॥

१७ और हे सर्वशक्तिमान मेरे निकट तेरे संकल्प क्या ही बहुमूल्य हैं उन का समु-  
१८ दाय क्या ही बड़ा है । मैं उन्हें गिने चाहता हूँ पर वे बालू से कहीं अधिक हैं  
मैं जागा और अब लों तेरे साथ हूँ ॥

१९ हे ईश्वर दाय कि तू दुष्ट को नाश करे और हे दृष्ट्यारे मनुष्यो मेरे पास से  
२० दूर हो । जो दुष्टता के लिये तेरा स्मरण करते हैं और तेरे वैरी तेरा नाम झूठ पर  
२१ लगाते हैं । हे परमेश्वर क्या मैं तेरे वैरियों से वैर न रखूँ और तेरे विरोधियों  
२२ से घिन न करूँ । अत्यन्त वैर के साथ मैं उन से वैर रखता हूँ वे मेरे निकट वैरी  
२३ समान हैं । हे सर्वशक्तिमान मेरा खोज कर और मेरे अन्तःकरण को जान मुझे  
२४ ताड़ और मेरी चिन्ताओं को जान । और देख यदि मुझ में दुःख का मार्ग है  
और सनातन के मार्ग पर मेरी अगुआई कर ॥

एकमौ चालीसवां गीत ।

प्रधान वज्रनिये के लिये । टाकड़ का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मुझे दुष्ट मनुष्य से हट्टा अंधेरी मनुष्य से तू मेरी रक्षा करेगा ।  
२ जो मन में घुराइयों की चिन्ता करते हैं वे नित लड़ाइयों के लिये एकट्ठा होते  
३ हैं । उन्हीं ने साँप की नाईं अपनी जीभ को चोखा किया है नाग का विष उन  
४ के होंठों के नीचे है । सिलाह । हे परमेश्वर मुझे दुष्ट के हाथों से बचा अंधेरी  
मनुष्य से तू मेरी रक्षा करेगा जिन्होंने मेरे पाँवों को ठा देने की चिन्ता किई  
५ है । अहंकारियों ने मेरे लिये फंदा और रस्सियाँ छिपाई हैं उन्हीं ने मार्ग की ओर  
जाल बिछाया है उन्हीं ने मेरे लिये फंदे लगाये हैं । सिलाह ॥  
६ मैं ने परमेश्वर से कहा है कि मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है हे परमेश्वर  
७ मेरी विनतियों के शब्द पर कान धर । हे परमेश्वर प्रभु मेरी मुक्ति के  
८ पराक्रम तू ने संग्राम के दिन मेरे सिर को ठाँपा है । हे परमेश्वर दुष्ट की  
इच्छाओं को पूरी न कर उस की युक्ति को पूरी न कर नहीं तो वे ऊँचे होंगे ।  
सिलाह ॥

१० मेरे घेरनेहारों के सिर को उन के होंठों की घुराई ठाँपेगी । उन पर अंगारे  
डाले जायेंगे वह उन्हें आग में गिरायेगा और गहिरा पानियों में जहाँ से वे न  
११ उठेंगे । कुवक्ता मनुष्य पृथिवी पर स्थिर न रहेगा और न अन्धेरी जन वह दुष्ट को  
१२ बिनाश लों अहेर करेगा । मैं जानता हूँ कि परमेश्वर दुःखी का न्याय और  
१३ दरिद्रों का विचार करेगा । केवल धर्मी तेरे नाम का धन्य मानेंगे खरे जन तेरे  
आगे बैठेंगे ॥

हम क्योंकर पराई भूमि पर परमेश्वर का गीत गावें । हे यरुसलम यदि मैं १  
 तुझे भूल जाऊँ तो मेरा दहिना हाथ अपनी खुट्टि को भूल जाय । यदि मैं २  
 तुझे स्मरण न करूँ यदि मैं यरुसलम को अपनी बड़ी से बड़ी आनन्दता पर श्रेष्ठ ३  
 न जानूँ तो मेरी जीभ मेरे तालू से लग जाय ॥

हे परमेश्वर अदम के सन्तान के दण्ड के लिये यरुसलम के दिन को स्मरण कर १  
 जो कहते थे कि इस की जड़ मूल लो उजाड़ करो उजाड़ करो । हे बाबुल की २  
 बेंटी जो उजाड़ी गई क्या दी धन्य वह जो तुझे उस व्यवहार का पलटा देगा ३  
 जो व्यवहार तू ने हमारे साथ किया । क्या दी धन्य वह जो तेरे बालकों को ४  
 पकड़ लेगा और पत्थर पर पटकेंगा ॥

एकमौ अठतीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति करूँगा देवों के आगे तेरी स्तुति गाऊँगा । १  
 मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूँगा और तेरे नाम की स्तुति करूँगा २  
 तेरी दया और तेरी सत्यता के कारण क्योंकि तू ने अपने सारे नाम के ऊपर अपने ३  
 वचन का अधिक बढ़ाया है । जिस दिन मैं ने पुकारा तू ने मेरी सुनी तू मुझे मेरे ४  
 आत्मा में बल के साथ बलवन्त करता है । हे परमेश्वर पृथिवी के सारे राजा ५  
 कि वे तेरे मुँह के वचन सुन चुके हैं तेरा स्वीकार करेंगे । और वे परमेश्वर के ६  
 मार्गों में गावेंगे क्योंकि परमेश्वर का श्रेष्ठत्व महान होगा ॥

क्योंकि परमेश्वर महान है और नम्र को देखता है और अहंकारी को दूर से १  
 जानता है । यदि मैं संकट के मध्य चलूँ तो तू मुझे जीता रखेगा मेरे वैरियों के २  
 क्रोध के ऊपर अपना हाथ बढ़ावेगा और अपने दहिने हाथ से मुझे बचावेगा । ३  
 परमेश्वर ने जो मेरे लिये आरंभ किया है उसे पूरा करेगा हे परमेश्वर तेरा दया ४  
 सदैव है अपने हाथों की क्रिया को त्याग न कर ॥

एकमौ उतालीसवां गीत ।

प्रधान वज्रनिये के लिये । दाऊद का गीत ॥

हे परमेश्वर तू ने मेरा खोज किया और जानता है । तू ही मेरे बैठने और उठने १  
 को जानता है दूर से मेरी चिन्ता को दूर करता है । तू मेरे मार्ग और मेरे शयन २  
 को जानता है और मेरे सारे मार्गों को परिचानता है । क्योंकि मेरी जीभ पर ३  
 कोई सही बात नहीं है देख जिसे हे परमेश्वर तू सर्वथा नहीं जानता । तू आगे ४  
 पीछे मुझे घेरता है और अपना हाथ मुझ पर रखता है ॥

यह ज्ञान मेरे लिये आश्चर्यजनक है और जंचा मैं उस लो नहीं पहुँच सकता । १  
 तेरे आत्मा से मैं किधर जाऊँ और तेरे आगे से किधर भागूँ । यदि स्वर्ग पर चढ़ २  
 जाऊँ तो वहाँ तू है और समाधि को थिक्काना बनाऊँ देख तू वहाँ भी है । मैं ३  
 विद्वान के पंथों को फैलाऊँगा समुद्र के अन्त सिवाने में रहूँगा । वहाँ भी तेरा ४  
 हाथ मेरी अगुआई करेगा और तेरा दहिना हाथ मुझे पकड़ेगा । और मैं कहता ५  
 हूँ कि केवल अंधियारा मुझे दबाये डालता है और उजियाला मेरे आसपास रात ६  
 हो गया । अंधियारा भी तुझ पर अंधियारी नहीं कर देता और रात दिन की ७

५ मैं मूर्खित है मेरा मन मुझ में उजड़ गया । मैं अगिले दिनों को स्मरण करता हूँ  
 ६ तेरे सारे कार्यों पर सोच करता हूँ तेरे हाथ की रचना पर ध्यान करता हूँ । मैं  
 ७ अपने हाथ तेरी ओर फैलाता हूँ मेरा प्राण सूखी भूमि की नाईं तेरा प्यासा  
 ८ है । सिलाह ॥

९ हे परमेश्वर शीघ्रता कर मेरी सुन मेरा प्राण क्षीण हो गया अपना मुँह मुझ  
 १० से मत क्षिप्य नहीं तो मैं गड़हे में गिरनेहारों के साथ मिलाया जाऊँगा । बिहान  
 ११ को मुझे अपनी दया सुना क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ मुझे वह मार्ग  
 १२ बता जिस पर चलूँ क्योंकि मैं अपना प्राण तेरी ओर उठाता हूँ । हे परमेश्वर  
 १३ मुझे मेरे वैरियों से कुड़ा मैं तेरे पास अपने को क्षिपता हूँ । मुझे सिखला कि  
 १४ तेरी इच्छा के समान करूँ क्योंकि तू ही मेरा ईश्वर है तेरा आत्मा भला है  
 १५ वह मुझे समथर भूमि पर अगुआई करे । हे परमेश्वर तू अपने नाम के लिये  
 १६ मुझे जिलावेगा तू अपने धर्म के साथ मेरे प्राण को सकेती से निकालेगा । और  
 १७ तू अपनी दया के साथ मेरे वैरियों को नाश करेगा और मेरे प्राण के दुःख  
 १८ देनेहारों को नाश करेगा क्योंकि मैं तेरा सेवक हूँ ॥

१९ एकसाँ चौतालीसवाँ गीत ।

२० दाऊद का गीत ॥

१ परमेश्वर मेरी चटान धन्य हो जो मेरे हाथों को युद्ध करना मेरी अंगुलियों  
 २ को लड़ना सिखलाता है । मेरा अनुग्रह करनेहारा और मेरा गढ़ मेरा जंघा  
 ३ स्थान और मेरा कुड़ानेवाला मेरी काल और मैं उस पर भरोसा रखता हूँ जो  
 ४ मेरे लोगों को मेरे नीचे करता है ॥

५ हे परमेश्वर मनुष्य क्या है कि तू उसे जाने मनुष्य का पुत्र कि तू उस का  
 ६ सोच करे । मनुष्य व्यर्थ वस्तु की नाईं है उस के दिन बीतते हुए क्राये के  
 ७ समान हैं ॥

८ हे परमेश्वर अपने स्वर्गों को भुका और नीचे आ पहाड़ों को कू और उन  
 ९ से धूआँ उठे । बिजुली गिरा और उन्हें बिथरा अपने बाण चला और उन्हें  
 १० घबरा दे । अपने हाथ ऊपर से बढ़ा मुझे बचा और मुझे कुड़ा बहुत पानियों  
 ११ से परदेशी सन्तानों के हाथ से । जिन का मुँह वृथा कहता है और उन का  
 १२ दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है ॥

१३ हे ईश्वर मैं तेरे लिये नया गीत गाऊँगा दस तार के वीन के साथ तेरे  
 १४ लिये गाऊँगा । जो राजाओं को मुक्ति देता है जो दाऊद अपने दास को  
 १५ दुःखदायक की तलवार से कुड़ाता है । मुझे बचा और मुझे कुड़ा परदेशियों के  
 १६ वंश के हाथ से जिन का मुँह वृथा कहता है और उन का दहिना हाथ झूठ  
 १७ का दहिना हाथ है । जिसमें हमारे बेटे पौधों की नाईं अपनी तरुणाई में  
 १८ बड़े हों हमारी बेटियाँ कोने के पत्थरों की नाईं मन्दिर की बनावट के लिये  
 १९ खोदी जायें । हमारे खते पूर्ण नाना प्रकार का अनाज देते हों हमारी भेड़ें  
 २० हमारे क्षेत्रों में लख्खा सहस्र जनती रहें । हमारे बैल लदे हुए हों और कुक  
 २१ हानि और बिगाड़ न हो और हमारे मार्गों में कुक बिलाप न हो । क्या ही

एकसौ एकतालीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ।

हे परमेश्वर मैं तुम्हें पुकारता हूँ मेरी ओर शीघ्रता कर जब मैं तुम्हें पुकारूँ तब १  
मेरे शब्द पर कान धर । मेरी प्रार्थना सुगंध की नाईं तेरे आगे उपस्थित हो मेरे २  
हाथों का उठाना सांभ की भेंट की नाईं । हे परमेश्वर मेरे मुँह पर पहर धैर्य ३  
मेरे हाँठों के द्वार की रक्षा कर । मेरे मन को दूरी बात की ओर न झुकने दे ४  
कि कुकर्मियों के संग दुष्ट कर्म करूँ उन मनुष्यों के संग जो दुराई करते हैं और  
मैं उन के स्वादित भोजनों में से न खाऊँ । धर्मी ईश्वर मुझे कृपा के संग मारे ५  
और दपटे मेरा सिर सिर के तेल से नाद न करे क्योंकि यह फिर अवश्य होगा  
और मेरी प्रार्थना उन की दुराइयों के मध्य फिर किई जायेगी ॥  
उन के न्यायी पत्थर के हाथों में गिराये गये तब उन्हें ने मेरी बातें सुनीं ६  
कि वे मीठी हैं । जैसा मनुष्य पृथिवी को दूर से जातता और चीरता है वैसा ७  
ही हमारी हड्डियाँ समाधि के मुँह पर बिथराई गईं । क्योंकि हे परमेश्वर ८  
प्रभु मेरी आँखें तेरी ओर हैं मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मेरे प्राण को न  
छेँदेल । उस फंदे के हाथों से जो उन्हें ने मेरे लिये बनाया है और कुकर्मियों ९  
के जालों से मुझे बचा रख । दुष्ट अपने फंदों में गिरें जिस समय कि मैं बच १०  
जाऊँ ॥

एकसौ वयालीसवां गीत ।

दाऊद का उपदेशदायक गीत जब वह ग्याह में था । प्रार्थना ।

मैं अपने शब्द से परमेश्वर को पुकारता हूँ अपने शब्द से परमेश्वर से चिन्ती १  
करता हूँ । मैं अपना सौत्र उस के आगे प्रगट करता हूँ अपना दुःख उससे २  
बर्णन करता हूँ । इस कारण कि मेरा प्राण मेरे भीतर व्याकुल है और तू मेरे ३  
मार्ग को जानता है उस मार्ग में जिस में मैं चलता हूँ उन्हें ने मेरे लिये डिपाके  
फंदा लगाया है । दहिनी ओर ताक और देख कि मेरा परिचानेद्वारा नहीं है ४  
शरण मुझ से जाता रहा कोई मेरे प्राण का पुछयेया नहीं । हे परमेश्वर मैं ने ५  
तुझ को पुकारा है मैं ने कहा कि तू ही मेरा शरणस्थान है जीवन के देश में  
मेरा भाग । मेरे रोने पर सुरत लगा क्योंकि मैं बहुत दुर्बल हो गया मुझे मेरे ६  
सतानेहारों से छुड़ा क्योंकि वे मुझ से बली हैं । मेरे प्राण को दन्दीगृह से ७  
छुड़ा जिसमें तेरे नाम की स्तुति किई जाय धर्मी मुझे घेरेंगे जब तू मुझ पर  
कृपा का व्यवहार करेगा ॥

एकसौ तैंतालीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ।

हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन मेरी चिन्तियों पर कान रख अपनी सच्चाई के १  
साथ मेरी सुन और अपने धर्म के साथ । और अपने सेवक के संग लड़ने के लिये २  
विचार में मत आ क्योंकि तेरे सन्मुख कोई प्राणी निर्दोष न ठहरेगा ॥  
क्योंकि तेरी मेरे प्राण के पीछे पड़ा है मेरे जीवन को भूमि लों लताड़ता है ३  
मुझ अगिले मृतकों की नाईं अधियारे स्थानों में बैठता है । और मेरा प्राण मुझ ४



६ का भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है । जिस ने स्वर्ग और पृथिवी समुद्र और  
७ जो कुछ उन में है सब बनाया जो सदा सर्वदा सच्चाई का रक्षक है । जो सताये  
हुओं के लिये विचार करता है भूखों को रोटी देता है परमेश्वर बंधुओं को  
खोल देता है ॥

८ परमेश्वर अंधों की आंखें खोल देता है परमेश्वर भुके हुओं को उठाता है  
९ परमेश्वर धर्मियों को प्यार करता है । परमेश्वर परदेशियों का रखवाल है अनाथ  
१० और रांड को संभालता है और दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा करता है । परमेश्वर  
सनातन लों राज्य करेगा तेरा ईश्वर हे सैहून पीढ़ी से पीढ़ी लों । हलिलूयाह ॥

एकसौ सैंतालीसवां गीत ।

१ हलिलूयाह । क्योंकि हमारे ईश्वर के लिये स्तुति गाना भला है क्योंकि वह  
२ मनोहर है और स्तुति करना सुन्दर है । परमेश्वर यरुसलम को बनाता है इसरा-  
३ एल के बिकुरे हुओं को एकट्ठा करता है । जो चूर्ण अन्तःकरणियों को चंगा करता  
४ है और उन के छावों को बांधता है । जो तारों की गिनती बतलाता है वह उन  
५ सभी को नाम ले ले बुलाता है । हमारा प्रभु मदान है और महा सामर्थ रखता है  
६ और उस की समस्त अगणित । परमेश्वर दीनों को उठाता है दुष्टों को भूमि पर  
दे मारता है ॥

७ परमेश्वर को धन्यवाद के संग उत्तर दो हमारे ईश्वर के लिये वीणा के संग  
८ गाओ । जो स्वर्ग को मेघों से ठांपता है जो पृथिवी के लिये मंह सिद्ध करता  
९ है जो पहाड़ों पर घास उगाता है । जो पशु को उस का आहार देता है कौवे  
१० के बच्चों को जो चिल्लाते हैं । वह घोड़े को बल से आनन्दित नहीं है पुरुष की  
११ पिंडुलियों से प्रसन्न नहीं है । परमेश्वर अपने डरवैयों से प्रसन्न है उन से जो  
उस की दया के आश्रित हैं ॥

१२ हे यरुसलम परमेश्वर की स्तुति कर हे सैहून अपने ईश्वर की स्तुति कर ।  
१३ क्योंकि उस ने तेरे फाटकों के अड़ंगों को दृढ़ किया है तेरे मध्य तेरे बालकों  
१४ को आशीर्वाद दिया है । जो तेरे सिवानों को चैन ठहराता है तुम्हें गेहूं की  
१५ चिकनाई से तृप्त करता है । जो अपनी आज्ञा पृथिवी पर भेजता है उस का  
१६ बचन बहुत शीघ्र दौड़ा जाता है । जो हिम ऊन की नाईं देता है वह पाला  
१७ राख की नाईं बिथराता है । जो ग्रास की नाईं अपना तुपार फेंकता है उन  
१८ की शीत के आगे कौन खड़ा हो सक्ता है । वह अपना बचन भेजता है और  
१९ उन्हें पिघलाता है वह अपना पवन चलाता है पानी बह जाता है । वह अपना  
बचन यश्कूब से बर्णन करता है अपनी विधि और अपने न्याय इसराएल  
२० से । उस ने किसी जातिगण से ऐसा नहीं किया है और वे उस के न्यायों को  
नहीं जानते हैं । हलिलूयाह ॥

एकसौ अठतालीसवां गीत ।

१ हलिलूयाह । स्वर्गों से परमेश्वर की स्तुति करो जंवाइयों पर उस की स्तुति  
२ करो । हे उस के सारे दूत उस की स्तुति करो हे उस की सारी सेनाओ उस की  
३ स्तुति करो । हे सूर्य और चांद उस की स्तुति करो हे सारे ज्योतिमय तारे उस

धन्य वे लोग जिन की यह दशा है क्या ही धन्य वे लोग जिन का ईश्वर परमेश्वर है ॥

एकसौ पैंतालीसवां गीत ।

दाऊद की स्तुति ।

हे मेरे ईश्वर राजा मैं तेरी बड़ाई कहूँगा और मैं सदा सूर्यदा तेरे नाम का धन्यवाद कहूँगा । मैं प्रतिदिन तेरा धन्यवाद कहूँगा और सदा सूर्यदा तेरे नाम की स्तुति कहूँगा । परमेश्वर महान और अत्यन्त स्तुति के योग्य है और उस की महिमा खोज में बाहर । एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से तेरे कार्यों की स्तुति करती रहेगी और लोग तेरे मदत कार्यों का वर्णन किया करेंगे । मैं तेरी महिमा की विभवमय सुन्दरता पर और तेरे आश्चर्य कार्यों की बातों पर सोच किया कहूँगा । और वे तेरे भयंकर कार्यों के घल की चर्चा करेंगे और मैं तेरी बड़ाइयों का वर्णन कहूँगा । वे तेरी अत्यन्त भलाई की चर्चा किया करेंगे और तेरी सच्चाई पर गान करेंगे ॥

परमेश्वर कृपालु और दयालु है धैर्यवान और दया में बड़ा । परमेश्वर सब के लिये भला है और उस की दया उस के सारे कार्यों पर है । हे परमेश्वर तेरी सारी क्रिया तेरी स्तुति करती हैं और तेरे साधु तेरा धन्यवाद करते हैं । वे तेरे राज्य के ऐश्वर्य की चर्चा करते हैं और तेरे सामर्थ्य की बातें करते हैं । जिसमें मनुष्य के सन्तान का उस के महान कार्यों का और उस के राज्य की सुन्दरता के विभव का ज्ञान है । तेरा राज्य सनातन का राज्य है और तेरी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी ली ॥

परमेश्वर सारे गिरवियों का घामनेहारा और सारे झुके हुएों का उठानेहारा है । सबों की आँखें तेरी ओर लगी रहती हैं और तू समय पर उन्हें उन का भोजन देता है । तू अपनी सुट्टी खालता है और हर एक जीवधारी को उस की इच्छा से सन्तुष्ट करता है । परमेश्वर अपने सारे मार्गों में धर्मी और अपने सब कार्यों में दयालु है ॥

परमेश्वर अपने सारे पुकारनेहारों के निकट है सबों के निकट जो सच्चाई के साथ उसे पुकारते हैं । वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करेगा और उन की बोझाई सुनेगा और उन्हें बचावेगा । परमेश्वर अपने सारे प्रेमियों का रक्षक है और सारे दुष्टों को नाश करेगा । मेरा मुँह परमेश्वर की स्तुति की बातें करेगा और सारे प्राणी सदा सूर्यदा उस के पवित्र नाम का धन्यवाद कहा करेंगे ॥

एकसौ छियालीसवां गीत ।

हलिलूयाह । हे मेरे प्राण परमेश्वर की स्तुति कर । मैं जय लीं जीता रहूँगा परमेश्वर की स्तुति कहूँगा अपने अस्ति रहने लीं अपने ईश्वर के लिये मैं गाऊँगा । अध्यक्षां पर भरोसा न करो मनुष्य के सन्तान पर जिसमें कुटकारा कुछ नहीं । उस का श्वास निकल जाता है वह अपनी मिट्टी में फिर जाता है उसी दिन उस की चिन्ता नाश हो जाती है ॥

क्या ही धन्य वह जिस का उपकारक यशकृत्य का सर्वशक्तिमान है और उस

# सुलेमान के दृष्टान्त ।

पहिला पर्व ।

- १ दाऊद के बेटे इसराएल के राजा सुलेमान के दृष्टान्त । बुद्धि और उपदेश  
 २ ज्ञान के और समुझ की बातें बूझने के । बुद्धि धर्म और विचार और खराई  
 ३ का उपदेश ग्रहण करने के । भोलों के चतुराई और तरुण के ज्ञान और समुझ  
 ४ देने के । बुद्धिमान सुनके विद्या बढ़ावेगा और समुझवेया बुद्धि का मंत्र प्राप्त  
 ५ करेगा । जिसमें दृष्टान्त और उस के अर्थ और बुद्धिमान की बातें और उन की  
 ६ गुण कहावतों को समुझे ॥
- ७ परमेश्वर का डर ज्ञान का आरंभ है परन्तु मूढ़ लोग बुद्धि और उपदेश की  
 ८ निन्दा करते हैं । हे मेरे बेटे अपने पिता के उपदेश को सुन और अपनी माता  
 ९ की आज्ञा को त्याग मत कर । क्योंकि वे तेरे सिर के लिये अनुग्रह का मुकुट  
 और तेरे गले की सीकरें होंगे ॥
- १० हे मेरे बेटे यदि पापी तुझे फुसलावें तो मत मान । यदि वे कहें कि हमारे  
 ११ संग आ हम रक्तपात के लिये घात में लगे और अकारण निर्दोष के लिये छिपके  
 १२ बैठें । हम पाताल की नाई उन्हीं जीता और उन की नाई जो गड़हे में गिरते  
 १३ हैं समूचा निगल जायें । हमें सब बहुमूल्य संपत्ति मिलेगी लूट से हम अपना  
 १४ घर भरेंगे । तेरा भाग हमारे मध्य में गिरे एक ही शैली हम सभी के लिये  
 १५ हो । हे मेरे बेटे तू मार्ग में उन के साथ मत चल उन के पथ से अपने पांवों  
 १६ को रोके रह । क्योंकि उन के पांव बुराई पर दौड़ते हैं और लोहू बढ़ाने में  
 १७ शीघ्रता करते हैं । क्योंकि पंखी की दृष्टि में जाल बिछाना वृथा है । और वे  
 १८ अपने लोहू के लिये ठूके में हैं वे अपने प्राणों के लिये घात में हैं । हर एक जो  
 धन का लोभी है उस की चाल ऐसी ही है कि वह अपने स्यामियों के प्राण  
 को ले लेता है ॥
- २० बुद्धि बाहर खड़ी पुकारती है वह सड़कों में अपना शब्द करती है । वह  
 २१ सभास्थान में फाटकों के निकास में पुकारती है नगर में वह अपने वचन  
 २२ उच्चारती है । हे भोले लोगो कब लो भोलपन से प्रीति रखेंगे और निन्दक  
 २३ अपनी निन्दा में आनन्द करेंगे और मूढ़ ज्ञान से बैर रखेंगे । मेरी दपट से  
 फिरो देखो मैं अपने आत्मा को तुम पर डालूंगा मैं अपने वचन तुम्हें जनाऊंगा ॥
- २४ इस कारण कि मैं ने बुलाया पर तुम ने नाह किया मैं ने अपना हाथ बढ़ाया  
 २५ पर किसी ने न माना । पर तुम ने मेरे समस्त मंत्र को तुच्छ जाना और मेरी  
 २६ दपट को न माना । मैं भी तुम्हारी विपत्ति पर हंसूंगा जब तुम पर भय आवेगा  
 २७ मैं ठट्ठे मारूंगा । जब तुम्हारा भय उजाड़ की नाई आवेगा और तुम्हारा  
 विनाश खंडर की नाई आ जायेगा जब कष्ट और दुःख तुम पर पड़ेगा ।  
 २८ तब वे मुझे पुकारेंगे परन्तु मैं उत्तर न देऊंगा वे मुझे तड़के ठूँटेंगे परन्तु मुझे  
 २९ न पावेंगे । इस लिये कि उन्हीं ने ज्ञान से बैर रखा और परमेश्वर का भय

की स्तुति करो । हे सूर्यों के सूर्यों और हे पानियों ओ सूर्यों के ऊपर हो उस ४  
की स्तुति करो । ये परमेश्वर के नाम की स्तुति करें क्योंकि उसी ने आकाश किई ५  
और वे उत्पन्न हुए । और उन्हें सनातन के लिये स्थिर किया उस ने सीमा ठहराई ६  
और वे उस के पार नहीं जा सकते ॥

पृथिवी पर से परमेश्वर की स्तुति करो हे बड़ी मछलियों और सारी गाँविया- ७  
इयाँ । आग और आले हिम और कुँडिरे बड़ी आँधी जो उस के यत्न का पालन ८  
करती है । पहाड़ों और सब पहाड़ियों फलदान पेड़ और सारे देवदेवताओं । वन- ९  
पशु और सारे चौपाये रंगरंगे और उड़नेवाले पक्षी । पृथिवी के राजाओं और १०  
सारे लोगों अध्यक्षों और पृथिवी के सारे न्यायियों । तरुणों और कुंवारीयों ११  
भी बृद्धों बालकों समेत । ये सब परमेश्वर के नाम की स्तुति करें क्योंकि उस का १२  
नाम अकेला श्रेष्ठ है उस का श्रेष्ठार्थ पृथिवी और सूर्यों के ऊपर है । और उस ने १३  
अपने लोगों के लिये एक मीठा अपने सारे मिष्टों के लिये स्तुति ऊँची किई १४  
है अर्थात् इसराएल के सन्तान अपने समीपों लोगों के लिये । हलिलूयाह ॥

एकसा उंचासथां गीत ।

हलिलूयाह । परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ और उस की स्तुति उस के १  
सिद्धों की सभा में । इसराएल अपने सृष्टिकर्ता से आनन्दित हो सैद्धन के वंग २  
अपने राजा से मगन हो । वे नाच में उस के नाम की स्तुति करें तबले और ३  
धीमा के साथ उस के लिये गान करें । क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों से प्रसन्न ४  
है वह दीनों को मुक्ति से विभूषित करता है ॥

सिद्ध लोग प्रतिष्ठा में आनन्दता से बजायें अपने विह्वलों पर आनन्द के ५  
शब्द करें । सर्वशक्तिमान की बड़ी स्तुति उन के मुँह में हो और दोधारा खड्ग ६  
उन के हाथ में । जिममें जातिगणों में पलटा और लोगों में डँड चलाने । ७  
जिममें उन के राजाओं को सीकरो में और उन के अध्यक्षों को लोहे की चेड़ियों ८  
से बँकड़ । जिममें लिखा हुआ विचार उन पर करें वही विचार उस के सारे ९  
सिद्धों के लिये प्रतिष्ठा है । हलिलूयाह ॥

एकसा पचासथां गीत ।

हलिलूयाह । सर्वशक्तिमान की स्तुति उस के धर्मधाम में करो उस के सामर्थ्य १  
के आकाश में उस की स्तुति करो । उस के महत्कार्यों के लिये उस की स्तुति २  
करो उस की महिमा की उत्तमता के समान उस की स्तुति करो । तुरन्ती के शब्द ३  
के साथ उस की स्तुति करो बाँगा और घरघरा के साथ उस की स्तुति करो । ४  
तबले और नाच के साथ उस की स्तुति करो तार और बाँसुरी के साथ उस की ५  
स्तुति करो । बड़े शब्द की भाँभा के साथ उस की स्तुति करो आनन्द के शब्द ६  
काँ भाँका के साथ उस की स्तुति करो । हर एक श्वासधारी परमेश्वर की स्तुति ७  
करे । हलिलूयाह ॥

- ६ न कर । अपने सारे मार्गों में उस को पहिचान और वह तेरे पथों को सुधारेगा ।  
 ७ अपनी दृष्टि में बुद्धिमान मत हो परमेश्वर से डर और घुराई से अलग हो । यह तेरी नाभी के लिये आरोग्यता और तेरी हड्डियों के लिये तरावट होगी ।  
 ८ अपनी संपत्ति में से और अपनी सारी बढ़ती के पहिले फल से परमेश्वर की प्रतिष्ठा कर । तो तेरे खते बहुताई से भर जायेंगे और तेरे कोल्हू नई मदिरा से फूट निकलेंगे ॥
- ९ हे मेरे बेटे परमेश्वर की ताड़ना की निन्दा मत कर और उस के दंड से घबरा मत जा । क्योंकि परमेश्वर जिसे प्यार करता है उसे ताड़ना करता है जिस रीति बाप उस पुत्र को जिस्से वह प्रसन्न है ॥
- १३ क्या ही धन्य वह मनुष्य जिस ने बुद्धि को पाया और वह मनुष्य जिस ने समुक्त को प्राप्त किया है । क्योंकि उस का व्यापार चांदी के व्यापार से और उस का लाभ चाखे सोने के लाभ से अच्छा है । वह रत्नों से बहुमूल्य है और समस्त वस्तु जिन की तू लालसा कर सक्ता है उस के तुल्य नहीं । दिनों की बढ़ती उस के बहिने हाथ है धन और प्रतिष्ठा उस के धार में है । उस के मार्ग आनन्दता के मार्ग हैं और उस के समस्त पथ कुशल हैं । वह उन के लिये जो उसे ग्रहण करते हैं जीवन का वृक्ष है हर एक जो उसे ग्रामता है धन्य है । परमेश्वर ने बुद्धि से पृथिवी की नैव डाली समुक्त से स्वर्ग को स्थिर किया । उस के ज्ञान से गहिराइयां फूट निकली हैं और मेघों से आस टपकती है ॥
- २१ हे मेरे बेटे उन्हें अपनी आंखों से अलग मत होने दे बुद्धि और सोच को धर रख । सो वे तेरे प्राण के लिये जीवन और तेरे गले के लिये अनुग्रह होंगे । तब तू अपने मार्ग में कुशल से चलेगा और तेरा पांव ठोकर न खायेगा । जब तू लेट जायेगा तब न डरेगा हां तू लेट जायेगा और तेरी निद्रा मीठी होगी । अचानक भय से और दुष्टों के उजाड़ से जब वह आता है मत डर । क्योंकि परमेश्वर तेरा भरोसा होगा और तेरे पांव की रक्षा करेगा कि फंदे में न पड़े ॥
- २७ भलाई उन से जो भलाई के योग्य हैं अलग मत रख जब कि तेरे हाथ में करने को सामर्थ्य हो । जब तेरे पास हो तो अपने परोसी को यह मत कह कि जा फिर आइया और मैं कल देजंगा । अपने परोसी से घुरा व्यवहार मत कर जब वह चैन से तेरे पास रहता है ॥
- ३० किसी मनुष्य से अकारण मत भागड़ यदि उस ने तुझ से कुछ खोटाई न किई हो ॥
- ३३ अंधेरी से डार मत कर और उस के सारे मार्गों को मत चुन । क्योंकि दोही से परमेश्वर का घिन है परन्तु उस की मित्रता धर्मियों से है । परमेश्वर का साप दुष्ट के घर पर है परन्तु धर्मियों के निवास पर वह आशीस देगा । निश्चय वह निन्दकों की निन्दा करता है पर दीनों पर दया करता है । बुद्धिमान विभव के अधिकारी होंगे परन्तु मूर्खों की बढ़ती लाज होगी ॥

चौथा पर्व ।

- १ हे बालको पिता के उपदेश को सुनो और ज्ञान के प्राप्त करने पर ध्यान

न चुना । उन्होंने ने मेरे मित्र को न माना उन्हें ने मेरी सारी द्रष्ट की निन्दा ३०  
 किया । सो वे अपनी ही चाल का फल खावेंगे और अपनी ही भावनाओं से ३१  
 पूर्ण होवेंगे । क्योंकि भोलों का भटकना उन्हें नाश करेगा और भक्तियों की ३२  
 भाग्यमानी उन्हें नाश करेगी । परन्तु जो मेरी सुनता है सो चैन से रहेगा और ३३  
 घुराई के भय से बचा रहेगा ॥

### दूसरा पद्य ।

हे मेरे बेटे यदि तू मेरे यत्नों को मानेगा और मेरी आज्ञाओं को अपने १  
 पास छिपा रखेगा । कि तू अपने कान को बुद्धि की और भुकावे और समुक्त २  
 की और अपना मन लगावे । क्योंकि यदि तू ज्ञान के लिये पुकारेगा और समुक्त ३  
 के लिये अपना शब्द बढ़ावेगा । यदि तू चांदी की नाई उसे खोजेगा और छिपे ४  
 हुए धन की नाई उसे ढूँढ़ेगा । तब तू परमेश्वर के भय को समुक्तगा और ईश्वर ५  
 के ज्ञान को पावेगा ॥

क्योंकि परमेश्वर बुद्धि देता है उस के मुँह से ज्ञान और समुक्त है । यह ६  
 धर्मियों के लिये चाखी बुद्धि धर रखता है यह उन के लिये जो खराई से चलते ७  
 हैं एक ढाल है । जिसमें विचार के पथों को रक्षा करे और यह अपने साधुओं ८  
 के मार्ग को चौकसी करता है । तब तू ठीक धर्म और विचार और खराई का ९  
 हर एक अच्छे पथ को समुक्तगा ॥

जब बुद्धि तेरे मन में प्रवेश करेगी और ज्ञान तेरे जीव को अच्छा लगेगा । १०  
 तब सोच तेरी रक्षा करेगा और समुक्त तेरी रखवाली करेगी । जिसमें तुझे दुष्ट ११  
 के मार्ग से और उस मनुष्य से जो हल की बातें करता है बचावे । उन में जो १२  
 खराई के पथ को छेड़ देते हैं जिसमें अधियारे मार्गों पर चलें । जो घुराई करने १३  
 से आनन्दित होते हैं और दुष्ट के हल में मगन होते हैं । जिन की चालें टेढ़ी १४  
 हैं और वे अपने पथों में तिरके हैं । कि तुझे परस्त्री से बचावे उस उपरी स्त्री १५  
 से जो अपने यत्न में फुसलाती है । जो अपनी तरुणाई के मित्र को त्याग १६  
 करती है और अपने ईश्वर की वाचा को विसराती है । क्योंकि उस का घर १७  
 मृत्यु की ओर और उस के मार्ग मृतकों की ओर भुके हैं । कोई उन में से जो १८  
 उस पास गये सो फिर नहीं लौटे और वे जीवन के मार्गों को नहीं पहुँचे । जिसमें २०  
 तू भोलों के मार्ग पर चले और धर्मियों के पथों को धरे रहे । क्योंकि खरे देश २१  
 में बसेंगे और सिद्ध उस में बने रहेंगे । परन्तु दुष्ट पृथिवी पर से काट डाले जायेंगे २२  
 और धोखा देनेवाले उन्हें उखाड़े जायेंगे ॥

### तीसरा पद्य ।

हे मेरे बेटे मेरी व्यवस्था को मत भूल परन्तु तेरा मन मेरी आज्ञाओं को १  
 पालन करे । क्योंकि दिनों की बढ़ती और जीवन के बरस और कुशल वे तुझे २  
 बढ़ायेंगे । दया और सत्यता तुझे त्याग न करें उन्हें अपने गले में लपेट उन्हें ३  
 अपने मन की पटिया पर लिख । और ईश्वर और मनुष्य की दृष्टि में अनुग्रह ४  
 और अच्छा ज्ञान पा ॥

अपने सारे मन से परमेश्वर पर भरोसा रख और अपनी ही समुक्त पर आसा ५



८ के वचन से अलग मत हो । अपना मार्ग उस से दूर बना और उस के घर के  
 ९ द्वार के पास मत जा । ऐसा न होवे कि तू अपनी प्रतिष्ठा औरों को और अपने  
 १० बरस क्रूर को देवे । न होवे कि पराये लोग तेरे बल से पूर्ण होवें और तेरा सारा  
 ११ परिश्रम उपरी के घर में हो । और तू अन्त में खिलाप करेगा जब तेरा मांस  
 १२ और तेरी देह क्षीण हो जायेगी । और कहेगा कि हाय मैं ने उपदेश से क्यों बैर  
 १३ रक्खा और मेरे मन ने दण्ड की क्यों निन्दा किई । और अपने उपदेशों के  
 शब्द को न माना और जो मुझे उपदेश देते थे मैं ने उन की ओर कान न भुकाये ।  
 १४ निकट था कि मैं मंडली और सभा के मध्य हर प्रकार की दुराई में पड़ूं ।  
 १५ अपने ही कुण्ड से पानी पी और अपने ही कूप से बहता पानी । तेरे सोते  
 १६ बाहर फैलें और मार्गों में पानी की नदियां । वे अकेले तेरे ही लिये हैं और  
 १७ कोई पराया तेरा साथी न हो । तेरे सोते में आशीस हो और अपनी तरुणाई की  
 १८ पत्नी से आनन्दित हो । वह प्रिय हरिणी और मनोहर भृग के समान हो उस के  
 २० स्तन हर समय में तुझे संतुष्ट करें और उस की प्रीति में सर्वदा मग्न हो । सो  
 हे मेरे बेटे तू किस लिये परस्त्री से आह्लादित होवेगा और उपरी को किस लिये  
 २१ गोद में लेगा । क्योंकि मनुष्य की चालें परमेश्वर की आंखों के आगे हैं और  
 २२ वह उस के सारे चलनों को जांचता है । दुष्ट की दुराइयां उसी को पकड़ लेंगे  
 २३ और वह अपने ही पाप की डोरियों से जकड़ा जायगा । वह बिना शिक्षा से मर  
 जायगा और अपनी अति मूढ़ता में भटकता फिरेगा ॥

कठवां पद्य ।

१ हे मेरे बेटे यदि तू अपने मित्र का विचवई हुआ हो यदि किसी परदेशी से  
 २ हाथ मारा हो । यदि तू अपने ही मुंह की बातों से फंस गया हो और अपने ही  
 ३ मुंह की बातों से पकड़ा गया हो । तो हे मेरे बेटे अब यह कर और आप को  
 बचा कि तू अपने मित्र के हाथ में पड़ा है तो जा आप को नम्र कर और अपने  
 ४ मित्र को विन्ती कर । अपनी आंखों को नींद मत दे और अपनी पलकों को  
 ५ जंघने मत दे । अपने को हरिण की नाईं व्याधा के हाथ से और चिड़िया के  
 समान चिड़ीमार के हाथ से बचा ॥

६ हे आलसी चिउंटी के पास जा उस के मार्गों को ब्रूक और बुद्धिमान हो ।  
 ७ यद्यपि उस का कोई अगुआ अध्यक्ष और राजा नहीं । तथापि वह ग्रीष्म में  
 ८ अपने लिये भोजन सिद्ध करती है और लवने में अपना आहार बटोरती है । हे  
 १० आलसी तू कब लों सोवेगा तू कब अपनी नींद से उठेगा । थोड़ा सोना थोड़ा  
 ११ जंघना थोड़ा और हाथों को नींद के लिये समेटना । सो तेरा कंगालपन पथिक  
 की नाईं आवेगा और तेरी दरिद्रता हथियारबन्द की नाईं ॥

१२ क्रूर जन और दुष्ट मनुष्य मुंह की हठ से चलता है । वह अपनी आंखें मारता  
 १४ है अपने पांवों से बोलता है अपनी अंगुलियों से बताता है । टेढ़ाई उस के मन  
 १५ में है वह सदा दुराई सोचता है वह बिगाड़ फैलाता है । सो उस पर अचानक  
 विपत्ति आ पड़ेगी वह एकाएक टूट जायगा और कुछ औपधि न होगी ॥

१६ परमेश्वर इन कथों से बैर रखता है हां स्मृत से उस का जीव घिन करता

रख्यो । क्योंकि मैं तुम्हें अच्छा उपदेश देता हूँ तुम मेरी व्यवस्था को त्याग मत करो । क्योंकि मैं अपने पिता का बेटा था अपनी माता का एकलौता लाइला । ३  
उस ने भी मुझे सिखलाया और मुझ से कहा कि मेरे वचन तेरे मन में धरे रहें ४  
मेरी आज्ञाओं को पालन कर और जीता रह ।

बुद्धि को प्राप्त कर समझ को प्राप्त कर उसे न भूल और मेरे मुंह की बातों से ५  
मुंह मत फेर । उसे त्याग मत कर और वह तेरी रक्षा करेगी उसे प्यार कर और ६  
वह तुझे बचावेगी । बुद्धि सब से मूल वस्तु है बुद्धि को प्राप्त कर और अपनी ७  
समस्त सामर्थ्य से समझ प्राप्त कर । तू उस की प्रतिष्ठा कर और वह तुझे बड़ावेगी ८  
वह तुझे प्रतिष्ठा देगी जब तू उसे गोद में लेगा । वह तेरे सिर पर अनुग्रह का ९  
आभूषण रखेगी वह तुझे विभव का सुकट देगी । हे मेरे बेटे सुन और मेरी १०  
बातों को ग्रहण कर और तेरे जीवन के घरम बहुत छोंगे । मैं ने बुद्धि के मार्ग ११  
में तेरी अगुआई किंचि ठाँक पथों में तुझे चलाया है । जब तू चलेगा तब तेरे डग १२  
मकेत न होंगे और जब तू टौड़ेगा तब तू टोकर न खायेगा । उपदेश को दृढ़ता १३  
से धर रख उसे जाने मत दे उसे रख छोड़ क्योंकि वह तेरा जीवन है ॥

दुष्टों के पथ में मत पैठ और दुरों के मार्ग में मत जा । उसे छोड़ दे उस १४  
पर मत चल उधर से फिर और निकल जा । क्योंकि जब लों वे घुराई न कर १५  
लेवें तब लों सेते नहीं और जब लों किसी को गिरा न देवें तब लों उन्हें नोद  
नहीं आती । क्योंकि वे दुष्टता की रीटी खाते हैं और अंधेरे की सदिरा पीते हैं । १६  
परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती ज्योति के समान है जो मध्यान्ह लों १७  
चमकती चली जाती है । दुष्टों का मार्ग अंधेरे के समान है वे नहीं जानते हैं १८  
कि किस्से टोकर खायेंगे । हे मेरे बेटे मेरी बातों पर ध्यान रख और मेरी कटावतों २०  
पर अपना कान झुका । उन्हें अपनी दृष्टि से जाने मत दे उन्हें अपने अन्तःकरण २१  
में धारण कर । क्योंकि वे उन के लिये जो उन्हें प्राप्त करते हैं जीवन और उन २२  
के सारे शरीर के लिये आरोग्यता हैं । अपने अन्तःकरण को समस्त धारण से २३  
धारणा कर क्योंकि जीवन की धारें इसी से हैं । मुंह के दूध को अपने से अलग २४  
कर और हाँठों की टेढ़ाई अपने पास से दूर रख । तेरा आँखें आगे देखा कर २५  
और तेरी पलकें तेरे साम्हने देखें । अपने पाँव के पथ को तैल तो तेरे सारे मार्ग २६  
ठीक किये जायेंगे । न दाहिने न बायें हाथ का मुड़ अपने पाँव को घुराई २७  
से दटा ॥

#### पाँचवां पद्य ।

हे मेरे बेटे मेरी बुद्धि पर ध्यान रख और मेरी समझ की ओर अपना कान १  
धर । जिसमें तू सोचे और तेरे हाँठ ज्ञान को धारण करें ॥ २  
क्योंकि परस्त्री के हाँठ मधु के समान टपकते हैं और उस का तालू तेल से ३  
अधिक चिकना है । पर उस का अन्त नागदीना की नाई कड़ुआ है दोधारे ४  
खड्ग की नाई चाखा । उस के पाँव मृत्यु में उतरते हैं उस की डग पाताल को ५  
धारण करती हैं । जिसमें न हो कि तू जीवन के पथ को तैले उस के मार्ग ६  
चलायमान हैं कि तू उन्हें न जाने । सो अब हे बालको मेरी सुनो और मेरे मुंह ७

१४ कहा । कि मेरे यहां कुशल की भेंट हैं आज के दिन मैं ने अपनी मनोतियां  
 १५ पूरी किई हैं । इस लिये मैं तुम्ह से मिलने को निकली हूं कि यद्य से तुम्हें  
 १६ छूटूं और मैं ने तुम्हें पाया है । मैं ने अपने बिक्राने को मिसर के बूटे काटे हुए  
 १७ भीने वस्त्र से संवारा है । मैं ने अपने बिक्राने को मुर और अगर और दारचीनी  
 १८ के सुगंध से सुगंधित किया है । आ प्रातःकाल लों प्रेम से मिलके उन्नत होवें  
 १९ आपुस में प्यार से जो बहलावें । क्योंकि पति तो घर में नहीं है उस ने दूर  
 २० की यात्रा किई है । वह एक पैला रोकड़ अपने हाथ में ले गया है और परिवार  
 २१ को घर आवेगा । सो यहां लों कि उस ने अपने कूल की बातों से उसे बश में  
 २२ किया और अपने हांठों के फुसलाने से उसे खींचा । वह अचानक उस के पीछे  
 २३ चला जाता है जैसे बैल घात होने को जाता है अथवा मूढ़ की नाईं जो पांव  
 २४ में सीकरे पहिनके अपने दंड के लिये जाता है । यहां लों कि बरकी उस के  
 २५ कलेजे के पार हो गई उस चिड़िया के समान जो जाल की ओर शीघ्र जाती है  
 २६ और नहीं जानती कि वहां उस का प्राण जायगा ॥

२७ सो अब हे बालको मेरी सुनो और मेरे मुंह के बचनों पर ध्यान रखवो ।  
 २८ अपने मन को उस के मार्गों पर झुकने मत देवो भटककर उस के पथों में मत  
 २९ जाओ । क्योंकि उस ने बहुतों को घायल करके गिरा दिया है हां बहुत  
 ३० से सूर उससे जूझ गये हैं । उस का घर नरक के मार्ग हैं जो मृत्यु के भवनों में  
 पहुंचाते हैं ॥

#### आठवां पर्व ।

३१ क्या बुद्धि नहीं पुकारती और क्या समुझ अपना शब्द नहीं उठाती । वह  
 ३२ ऊंचे स्थानों की चोटी पर मार्गों के मिरे पर और चौराहों के बीच में खड़ी  
 ३३ रहती है । वह फाटकों पर और नगर के पैठ पर और भीतर आने के द्वारों पर  
 ३४ पुकारती है । कि हे लोगो मैं तुम्हें बुलाती हूं और मनुष्य के सन्तानों के लिये  
 ३५ मेरा शब्द है । हे भोला बुद्धि को समुझो और हे मुखो समुझ का मन रखवो ।  
 ३६ सुनो क्योंकि मैं उत्तम बातें कहूंगा और मेरे हांठों के खुलने से ठीक बातें  
 ३७ निकलेंगी । क्योंकि मेरा मुंह सच सच कहेगा और दुष्टता से मेरे हांठों को धिन  
 ३८ है । मेरे मुंह की सारी बातें धर्म की हैं उन में टेढ़ा तिरछी कोई वस्तु नहीं ।  
 ३९ समुझवैये के लिये सब खुला है और ज्ञानी के लिये सब ठीक । मेरे उपदेश को  
 ४० ग्रहण करो और रूपे को नहीं और ज्ञान को चाखे सोने से अधिक चुनो । क्योंकि  
 ४१ बुद्धि मोतियों से भी अच्छी है और समस्त वस्ते जिन की लालसा किई जाती है  
 ४२ उस के तुल्य हो नहीं सक्ती ॥

४३ मैं जो बुद्धि हूं चौकसी के साथ रहती हूं और चतुराई के भेद के ज्ञान को  
 ४४ प्राप्त करती हूं । चुराई से धिन करना परमेश्वर का भय है और मैं अहंकार और  
 ४५ अभिमान और कुमार्ग और कुबचन से दूर रखती हूं । मंत्र और ठीक बुद्धि मेरी  
 ४६ हैं मैं ही समुझ हूं सुभी में बल है । मुझ से राजा राज्य करते हैं और राजद्वार  
 ४७ विचार करते हैं । मुझ से प्रधान और अध्यक्ष और पृथिवी के सारे न्यायी प्रभुता  
 ४८ करते हैं । मैं उन से प्रेम करती हूं जो मुझ से प्रेम रखते हैं और वे जो मुझ

है । अहंकारी आँखें झूठी जीभ और दाँव जो निर्दोष का लोहूँ बहाते हैं । १७  
मन जो दुरा विचार बाँधता है पाँव जो दुराई के लिये वेग दौड़ाते हैं । झूठा १८  
साक्षी जो झूठ बोलता है और भाव्यों में बिगाड़ बोलता है ।

हे मेरे बेटे अपने पिता की आज्ञा का पालन कर और अपनी माता की २०  
व्यवस्था को त्याग न कर । उन्हें मर्यादा अपने मन में बाँध ले उन्हें अपने गले २१  
में लपेट । जब तू चलेगा तब वह तेरी अगुआई करेगी जब तू सोवेगा तब २२  
वह तेरी रक्षा करेगी और जब तू जागेगा तब वह तुझे से बचाने करेगी । क्योंकि २३  
आज्ञा एक दीपक है और व्यवस्था अँजियाला और उपदेश की दण्ड जीवन  
के मार्ग । जिसमें तुझे दुरी स्त्री से अलग रखने पराई स्त्री की जीभ की २४  
फुमलाहट से । अपने मन में उस की सुन्दरता की इच्छा मत कर और वह तुझे २५  
अपनी पलकों में पकड़ने न पाये । क्योंकि व्यभिचारिणी के कारण से पुरुष टुकड़े २६  
सांगता फिरता है और व्यभिचारिणी सदा मौल प्राण की अहेर करती है । क्या २७  
मनुष्य अपनी गोद में आग लेवे और उस के कपड़े न जलें । क्या कोई २८  
अंगारों पर चले और उस के पाँव न जलें । ऐसा ही वह जो अपने परेमी २९  
की पत्नी के पाम जाता है और जो कोई उसे कृता से निर्दोष न रहेगा । मनुष्य ३०  
चोर की जो भूया होके चोरी करे निन्दा नहीं करते हैं । पर यदि वह पकड़ा ३१  
जाय तो सातगुण भर देगा वह अपने घर की समस्त संपत्ति देगा । परन्तु वह ३२  
जो किसी की स्त्री से व्यभिचार करता है सो निर्बुद्धि है जो वह करता है वही  
अपने प्राण का नाश करने के लिये करता है । वह घाय और निरादर पावेगा ३३  
और उस का कलंक मिटाया न जायगा । क्योंकि हाट से मनुष्य को कोप ३४  
होता है और वह पलटे के दिन न कोड़ेगा । वह किसी भाँति के कुड़ावे को न ३५  
मानेगा और प्रसन्न न होगा यद्यपि तू उसे घूम पर घूम देवे ।

सातवां पद्ये ।

हे मेरे बेटे मेरी बातों का धारण कर और मेरी आज्ञाओं को अपने पाम १  
छिपा रख । मेरी आज्ञाओं का धारण कर और जीता रह और मेरी व्यवस्था २  
को अपनी आँखों की पुतली की नाई कर । उन्हें अपनी अँगुलियों पर बाँध ३  
उन्हें अपने मन की पटरी पर लिख । बुद्धि से कह कि तू मेरी बचिन है और ४  
समुझ को अपना कुटुम्ब जान । जिसमें वे तुझे परस्त्री से और उस उपरी से ५  
जो तुझे अपनी बातों से फुमलाती है बचा रखे ।

क्योंकि मैं ने अपने घर की गिरङ्गी में बैठे हुए भरोखे से भाँका । और ६  
भकुओं में से एक को देखा और बेटों में से एक अज्ञान तरुण पर ध्यान ७  
क्रिया । वह गली में उस के कोने के निकट चला जाता था और उस ने उस ८  
के घर का मार्ग लिया । गोधूली में साँक को बड़ी अधिपारी रात को । ९  
और देखा कि वहाँ वेश्या के पहिरावे में उसे एक स्त्री मिली जो बड़ी चतुर १०  
थी । वह चिह्नाती है और ठाँठ है उस के पाँव उस के घर में नहीं ठहरते । ११  
कभी बाहर है कभी चौकों में है और हर कोने के निकट घात में लगी है । १२  
सो उस ने उसे पकड़ा और उस का चूमा लिया और टकटकी बाँधके उसे १३

१२ अधिक देंगे । यदि तू बुद्धिमान होवे तो तू अपने ही लिये बुद्धिमान होगा और तू जो निन्दा करता है तो तू ही अकेला सहेगा ।

१३ मूठ स्त्री भगाड़ालू है वह मूठ है और कुछ नहीं जानती । और वह अपने घर  
१४ के द्वार पर नगर के ऊँचे स्थानों में पीढ़ी पर बैठी है । जिसमें पणिकों को जो अपने  
१५ सीधे मार्गों पर चले जाते हैं बुलाये । कि जो कोई भोला हो सो इधर फिरे  
१६ और जो बुद्धिहीन है वह उसमें फटती है । कि चोरी का पानी मीठा है और  
१७ जो रोटी क्लिपके खाई जाय वह बड़ी स्वादित है । परन्तु वह नहीं जानता कि  
वहाँ मृतक हैं और उस के पाटुन नरक के गहिरावे में हैं ।

दसवां पृष्ठ ।

१ सुलेमान के दृष्टान्त । बुद्धिमान बेटा पिता को आनन्दित करता है परन्तु मूठ  
२ बेटा अपनी माता को उदास करता है । दुष्टता के भंडार से कुछ प्राप्त नहीं  
३ परन्तु धर्म मृत्यु से बड़ाता है । परमेश्वर धर्म के प्राण को भूख से मरने न  
४ देगा परन्तु वह दुष्ट की इच्छा को दूर करेगा । जो ठीले दाय से कार्य करता  
५ है सो कंगाल है परन्तु चतुरों का हाथ धन बटोरेगा । जो ग्रीष्म में बटोरता है  
६ सो बुद्धिमान पुत्र है परन्तु जो लगनी में सोता है सो लाज देवैया पुत्र है । धर्म के  
७ के सिर पर आशीस हैं परन्तु अंधेर दुष्टों के मुंह को ठांपता है । धर्म का  
८ स्मरण धन्य है परन्तु दुष्टों का नाम सड़ जायगा । अन्तःकरण का बुद्धिमान  
९ आज्ञा मानेगा परन्तु होठों का मूर्ख गिराया जायगा । जो खराई से चलता है  
१० सो कुशलता से चलता है परन्तु जो अपने मार्गों को बिगाड़ता है सो प्रगट हो  
११ जायगा । जो आंखें मटकाता है सो शोक करता है परन्तु गप्पी मूर्ख गिराया  
१२ जायगा । धर्म का मुंह जीवन का कूआ है परन्तु अंधेर दुष्टों के मुंह को ठांपेगा ।  
१३ बैर भगाड़ा उठाता है पर प्रेम सारे पापों को ठांपता है । समुझीये के होठों में  
१४ बुद्धि पाई जाती है परन्तु जो मूर्ख है उस की पीठ के लिये कड़ी है । बुद्धिमान  
१५ ज्ञान को बटोरते हैं परन्तु मूर्ख का मुंह नाश के समीप है । धनवान का धन  
१६ उस का दृढ़ नगर है परन्तु कंगालों का कंगालपन उन का नाशक है । धर्म का  
१७ परिश्रम जीवन के लिये है परन्तु दुष्ट का फल पाप के लिये है । जो उपदेश  
धारण करता है सो जीवन के मार्ग पर है परन्तु जो दपट को नहीं मानता है  
१८ सो चूक करता है । जो झूठे होठों से वैर छिपाता है और जो अपवाद लगाता  
१९ है सो मूर्ख है । बचन की बहुताई पाप के बिना नहीं होती परन्तु जो अपने  
२० होठों को रोकता है सो बुद्धिमान है । धर्म की जीभ चुनी हुई चांदी है दुष्टों  
२१ का मन न्यूनता की नाई है । धर्मियों के होठ बहुते को खिलाते हैं परन्तु  
२२ मूर्ख लोग मूर्खता से मरते हैं । परमेश्वर ही की आशीस धनी करती है और वह  
२३ उस में कुछ परिश्रम नहीं बढ़ाती । बुराई करना मूर्ख के लिये ठूठा है परन्तु समु-  
२४ झीये के पास बुद्धि है । दुष्ट का भय वही उस पर पड़ेगा परन्तु धर्मियों की  
२५ इच्छा पूर्ण होगी । जिस रीति से बगुला जाता रहता है वैसा ही दुष्ट न बचेगा  
२६ परन्तु धर्म सनातन की जेब है । जैसा दांति के लिये सिरका और आंखों के  
२७ लिये धूआं ऐसा ही आलसी उन के लिये है जो उसे भेजते हैं । परमेश्वर का भय

तुम्हें लुंछते हैं मुझे पावेंगे । धन और प्रतिष्ठा हां दृढ़ धन और धर्म मेरे साथ १८  
हैं । मेरा फल सोने से हां चाखे सोने से और मेरी प्राप्ति चाखी चांदी से भली १९  
है । मैं धर्म के मार्ग में और विचार के पथ के मध्य में ले जाती हूं । जिनमें २०  
मैं उन्हें जो मुझे प्यार करते हैं संपत्ति का अधिकारी कहूं और मैं उन के भंडार २१  
भर दूँ ।

परमेश्वर अपने मार्ग के आरंभ में अपने प्राचीन कार्यों से आगे मुझे रखता २२  
था । मैं सनातन से स्थापित किई गई आरंभ से पृथिवी के होने से आगे । २३  
जब गहिराय न थे मैं उत्पन्न हुई जब पानी से भरे साते न थे । मैं पहाड़ों के २४  
स्थिर होने से पहिले पहाड़ियों से आगे उत्पन्न हुई । जब तों उस ने पृथिवी न २५  
बनाई थी न चागान न अगत की रेणु का मिरा । जब कि उस ने सूर्य बनाये २६  
और गहिराय के मुँह को घेर लिया मैं वहाँ थी । जब उस ने ऊपर सेघों को २७  
टहराया और जब कि उस ने गहिराय के सातों को दृढ़ किया । जब उस ने २८  
समुद्र को आजा दिई कि पानी उस की आजा से बाहर न जावे जब उस ने  
पृथिवी की नैवेँ डालीं । तब मैं उस के पास प्रतिपालित के समान थी और मैं २९  
प्रतिदिन आनन्दित थी और सदा उस के आगे आनन्द करती थी । मैं उस की ३०  
पृथिवी के मण्डल पर आनन्द करती थी और मेरा आनन्द मनुष्य के सन्तान के  
साथ था ।

मो अब हे बालको मेरी सुनो क्योंकि जो मेरे मार्ग को धारण करने हैं सो ३१  
क्या ही धन्य हैं । उपदेश को सुनो और बुद्धिमान होओ और उसे टाल मत ३२  
देओ । क्या ही धन्य वह मनुष्य जो मेरी सुनता है और जो प्रतिदिन मेरे पाठकों ३३  
पर बाट जोहता है और मेरे द्वारों के खंभों पर टहरता है । क्योंकि जिस किसी ३४  
ने मुझे पाया उस ने जीवन को पाया और परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करेगा ।  
परन्तु जो मेरा पाप करता है सो अपने प्राण का घेर करता है वे सब जो मुझ ३५  
से दूर रखते हैं मृत्यु से प्रेम करते हैं ।

नवमः पर्वः ।

बुद्धि ने अपना घर बनाया है उस ने अपने मात खंभे गढ़े हैं । उस ने अपने १  
पशुन को बध किया है उस ने अपनी मदिरा को मिलाया है उस ने अपना मंच २  
भी बिछाया है । उस ने अपनी महिलियों को भेजा है वह नगर के ऊँचे से ऊँचे ३  
स्थानों पर पुकारती है । जो कोई भोला हो सो बधर फिरे जो असमुझ है वह ४  
घस्से कहती है । कि आ और मेरी रोटी में से खा और उस मदिरा को पी जिसे ५  
मैं ने मिलाया है । मूढ़ों की संगत को त्यागो और जीओ और समुझ के मार्ग में ६  
जाओ । जो निन्दक को झिड़कता है सो अपने लिये लाज प्राप्त करता है और ७  
जो दुष्ट को दण्डता है सो आप ही कलंक पाता है । निन्दक को मत झिड़क न ८  
हो कि वह तुझ से दूर करे बुद्धिमान को झिड़क तो वह तुझ से प्रेम रखेगा ।  
बुद्धिमान को उपदेश कर तो वह अधिक बुद्धिमान होगा धर्मी को सिखला तो ९  
वह विद्या में बढ़ेगा । परमेश्वर का भय बुद्धि का आरंभ है और पवित्रमय का १०  
ज्ञान समुझ है । क्योंकि मुझ से तेरे दिन बढ़ जायेंगे और तेरे जीवन के वरस ११



२७ होगी । जो यत्न से भलाई ढूँढ़ता है सो अनुग्रह प्राप्त करता है परन्तु जो बुराई  
 २८ को ढूँढ़ता है वह उसी पर आवेगी । जो अपने धन पर भरोसा रखता है सो  
 २९ गिर पड़ेगा परन्तु धर्मी पत्नी की नाईं लटलटावेगी । जो अपने घराने को बताता  
 है सो पवन का अधिकारी होगा और मूर्ख जन बुद्धिमान अंतःकरण का सेवक  
 ३० होगा । धर्मी का फल जीवन का वृद्ध है और जो धर्म से प्राणों को मोल लेता  
 ३१ है वह बुद्धिमान है । देख धर्मी को पृथिवी पर पलटा दिया जायगा तो कितना  
 अधिक दुष्ट और पातकी को ॥

### द्वारद्वय पद्य ।

१ जो उपदेश से प्रेम रखता है सो ज्ञान से प्रेम रखता है परन्तु जो दण्ड से  
 २ वैर रखता है सो पशुवत है । उत्तम मनुष्य परमेश्वर से अनुग्रह पाता है परन्तु  
 ३ दुष्ट जुगती मनुष्य को वह दोषी ठहरावेगा । दुष्टता से मनुष्य स्थिर न किया  
 ४ जायगा परन्तु धर्मियों की जड़ टलाई न जायगी । मुकर्मि स्त्री अपने पति  
 के लिये मुकुट है परन्तु जो लज्जित करती है सो उस की दंडियों में सड़ाहट  
 ५ की नाईं है । धर्मियों की चिन्ता ठीक है परन्तु दुष्टों का परामर्श कपट  
 ६ है । दुष्टों की बातें यही हैं कि घात में बैठके लोहू वटावे पर खरों का मुँह  
 ७ उन्हें छुड़ावेगा । दुष्ट उलट दिपे जाते हैं और हैं ही नहीं पर धर्मियों का घर  
 ८ स्थिर रहेगा । मनुष्य का सराहना उस की बुद्धि के समान होगा परन्तु जो  
 ९ अंतःकरण का टेढ़ा है सो निन्दित है । वह जो तुच्छ किया जाता है और जिस  
 का सेवक है उसे श्रेष्ठ है जो अपनी प्रतिष्ठा करता है और रोटी का आधीन  
 १० है । धर्मी अपने पशुन के प्राण की चिन्ता करता है परन्तु दुष्टों की कोमल दया  
 ११ फटोरता है । जो अपनी भूमि को जोता बोया करता है सो रोटी से तृप्त होगा  
 १२ परन्तु जो तुच्छ लोगों का पीछा करता है सो मूर्ख है । दुष्ट की डक्का यह है  
 १३ कि बुराई का जाल बिछाये परन्तु धर्मियों की जड़ फल देगी । हाँठों के पाप  
 १४ से दुष्ट बसाया जाता है परन्तु धर्मी दुःख से निकल आवेगा । अपने मुँह के  
 अच्छे फलों से मनुष्य तृप्त किया जायगा और मनुष्य के हाथों का प्रतिफल उसे  
 १५ दिया जायगा । मूढ़ की चाल उस की दृष्टि में भली है परन्तु जो मंत्र को मानता  
 १६ है सो बुद्धिमान है । मूर्ख का क्रोध तुरंत जाना जाता परन्तु चतुर लाज को  
 १७ ढाँपता है । जो सच बोलता है सो धर्म को प्रगट करता है परन्तु झूठा साक्षी  
 १८ कल देता है । किसी की बोली ऐसी है जैसे खड्ग का चुभना परन्तु बुद्धिमान की  
 १९ जीभ कुशल है । सच्चाई का हाँठ सदा स्थिर रहेगा परन्तु झूठी जीभ पल भर  
 २० की है । कुचिन्तक के मन में कल है परन्तु मिलाप के मंत्रियों को आनन्द है ।  
 २१ धर्मी पर कोई विपत्ति आने न पायेगी परन्तु दुष्ट बुराई से पूर्ण होंगे । झूठे  
 हाँठों से परमेश्वर को धिन है परन्तु जो सच्चा व्यवहार करते हैं सो उस की  
 २३ प्रसन्नता है । चतुर मनुष्य ज्ञान को छिपाता है परन्तु मूर्खों के मन मूर्खता  
 २४ प्रचारते हैं । चालाकों का हाथ प्रभुता करेगा परन्तु आलसी कर के बश में  
 २५ होगा । मनुष्य के मन का शोक उसे निहुड़ाता है परन्तु सुवचन मगन करता  
 २६ है । धर्मी अपने परोसी की अगुआई करता है परन्तु दुष्टों का मार्ग उन्हें

यय को बढ़ाता है परन्तु दुष्टों के धर्म घटाये जायेंगे । धर्मियों की आशा २८  
आनन्द है परन्तु दुष्टों की आशा नाश होगी । परमेश्वर का मार्ग खरे मनुष्य के २९  
लिये गढ़ है परन्तु कुकर्मियों के लिये विनाश । धर्म का भोग टलाया न जायेगा ३०  
परन्तु दुष्ट पृथिवी के अधिकारी न होंगे । धर्म के मुँह से दुष्ट निकलती है ३१  
परन्तु टेढ़ी जीभ काट डाली जायेगी । धर्म के हाँठ जानते हैं कि ग्राह्य के ३२  
योग्य क्या है परन्तु दुष्ट का मुँह टेढ़ा है ।

ग्यारहवाँ पर्व ।

छल की तुला से परमेश्वर को घिन है परन्तु पूरी तौल उस की प्रसन्नता है । १  
अहंकार जब आता है तब लज्जा आती है परन्तु नम्रता के साथ दुष्ट है । मीधों २  
की खराई उन की अगुआई करेगी परन्तु अपराधियों की टेढ़ाई उन्हें नाश ३  
करेगी । कौष के दिन धन से लाभ नहीं होता परन्तु धर्म मृत्यु से बड़ाता है । ४  
मिथ का धर्म उस के मार्ग का सुधारेगा परन्तु दुष्ट अपनी दुष्टता से गिर पड़ेगा । ५  
खरों का धर्म उन्हें बड़ावेगा परन्तु अपराधी नटखटी से पकड़े जायेंगे । जब ६  
दुष्ट मनुष्य सरता है तब उस की आशा नष्ट होती है और असत्य का आसरा नष्ट ७  
होता है । धर्म संकट से बड़ाया जाता है और उस की मंती दुष्ट आता है । ८  
अधर्म मनुष्य मुँह से अपने परेमी को नाश करता है परन्तु धर्म जान के द्वारा ९  
से बड़ाये जाते हैं । धर्मियों की मरनता में नगर आनन्दित होता है और जब १०  
दुष्ट नष्ट होते हैं तब चिन्तना होता है । खरों की आशाम से नगर बड़ाया जाता ११  
है परन्तु दुष्टों के मुँह से बलटाया जाता है । मूर्ख अपने परेमी की निन्दा करता १२  
है परन्तु समुक्तवैषा चुप्पा रहता है । लुतड़ा मनुष्य चनते फिरते भेद प्रगट १३  
करता है परन्तु जिन का विषयन्त प्राण है सो बात छिपाता है । जहाँ परामर्श १४  
नहीं तहाँ लोग गिर पड़ते हैं परन्तु मंत्रियों की बहुताई में बचाव है । जो १५  
परदेशी का मध्यस्थ होता है उस का बड़ा टूटा होगा और जो विचित्र है होने  
से दूर रखता है सो निर्भय है । अनुग्रहीत स्त्री प्रतिष्ठा रख छोड़ती है और १६  
वलवन्त पुरुष धन को रख छोड़ता है । दयाल मनुष्य अपने ही प्राण पर भलाई १७  
करता है परन्तु कठोर अपने ही मांस को दुःख देता है । दुष्ट छल के कार्य १८  
करता है परन्तु जो धर्म होता है सो सच्चा प्रतिफल पावेगा । जैसा धर्म से १९  
जीवन है वैसा जो बुराई का पीछा करता है सो अपनी ही मृत्यु के लिये है ।  
जिन के मन टेढ़े हैं वे परमेश्वर के आगे घिनित हैं परन्तु जिन की चाल खरी २०  
है सो उस का आनन्द है । यद्यपि दाय से दाय मिले तथापि दुष्ट निर्दंड न २१  
जायगा परन्तु धर्मियों का वंश बड़ाया जायगा । रूपवती स्त्री जो लाज को २२  
छोड़ती है सो उस मूर्ख की नाई है जिस की श्रृण्वनी में सोने की नथुनी है ।  
धर्मियों की लालसा केवल भलाई है परन्तु दुष्टों की आशा क्रोध है । कोई तो २३  
बेसा है जो विधराता है तथापि बहुत बढ़ाता है और कोई उचित से अधिक  
रख छोड़ता है परन्तु केवल दरिद्रता के कारण हो जाता है । आशीस का २४  
अंतःकरण मोटा होगा और वह जो सींचता है आप भी सींचा जायगा । जो २५  
अन्न रख छोड़ता है उस का मनुष्य खाप देंगे परन्तु बेचवैष के सिर पर आशीस

४ दौंठ उन की रक्षा करेंगे । जहाँ दौल नहीं तहाँ घरनी दूही हैं परन्तु अनाज की  
 ५ अधिकार दौल के दल से है । दिश्यान्त मात्नी भूठ न घालेगा परन्तु भूठा मात्नी भूठ  
 ६ उन्नारण करेगा । निन्दक बुद्धि की खाज करता है और नहीं पाता परन्तु ज्ञान समुझ-  
 ७ वैसे के लिये सहज है । जय तू ज्ञान के दौंठ नहीं देखता है तब मूर्ख से अलग  
 ८ हो जा । चतुर की बुद्धि यह है कि अपना मार्ग बूझे परन्तु दुष्टों की मूर्खता कपट  
 ९ है । मूर्ख पाप को ठट्ठा जानते हैं परन्तु धर्मियों में कृपा है । प्राण की कड़-  
 १० वादट को प्राण ही जानता है और उपरी मनुष्य उस की आनन्दता में हाथ नहीं  
 ११ डालता है । दुष्टों का घर नष्ट हो जायगा परन्तु सूरों का तंयू लहलहावेगा । एक  
 १२ मार्ग है जो मनुष्य को ठीक दिखाना देता है परन्तु उस का अन्त मृत्यु का  
 १३ मार्ग है । संमन में भी मन जोकित है और उस आनन्द का अन्त उदासी है ।  
 १४ भटका हुआ मन अपने ही मार्गों में त्रुप्त हो जायगा और उत्तम मनुष्य आप ही  
 १५ से । भोला हर एक वचन को प्रतीति करता है परन्तु चतुर देखके चलता है ।  
 १६ बुद्धिमान डरता है और दुराई से भागता है परन्तु मूर्ख कोपित और निर्भय है ।  
 १७ जो शीघ्र क्रोध करता है सो मूर्खता से व्यग्रवार करता है और दुष्ट जुगती से वैर है ।  
 १८ भक्त मूर्खता के अधिकारी हैं परन्तु चतुरों के मिर पर ज्ञान का मुकुट है । दुरे भलों  
 १९ के आगे और दुष्ट धर्मों के फाटकों के आगे झुकते हैं । कंगाल से उस का परासी भी  
 २० वैर रखता है परन्तु धनी के दहत में मित्र हैं । जो अपने परासी की निन्दा करता  
 २१ है सो पाप करता है परन्तु जो कंगालों पर दया करता है सो धन्य है । जो दुरी  
 २२ युक्ति करते हैं क्या ये चूक नहीं करते परन्तु दया और मृत्यु उन पर है जो भले युक्ती  
 २३ हैं । समस्त परिश्रम में लाभ होगा परन्तु हाँठों की बोली से केवल दरिद्रता है ।  
 २४ बुद्धिमानों का धन उन का मुकुट है परन्तु मूर्खों की मूर्खता मूर्खता ही रहती है ।  
 २५ सच्चा साक्षी प्राणों को बचाता है परन्तु कलौ भूठ बोलता है । परमेश्वर के डर  
 २६ में दृढ़ विश्वास है और उस के बालकों को शरणस्थान मिलेगा । परमेश्वर का  
 २७ डर जीवन का सेता है जिससे मृत्यु के फंदों से अलग होवे । लोगों की बहुताई  
 २८ में राजा की प्रतिष्ठा है परन्तु लोगों के न होने में राजपुत्र का नाश है । जो  
 २९ क्रोध में धीमा है बड़ा बुद्धिमान है परन्तु जो शीघ्र क्रोध करता मूर्खता प्रगट  
 ३० करता है । शरीर का जीवन शुद्ध मन है परन्तु डाढ़ शब्दियों की सड़ाहट है ।  
 ३१ जो कंगाल पर अंधेर करता है सो उस के कर्ता की निन्दा करता है परन्तु जो  
 ३२ उस को प्रतिष्ठा करता है कंगाल पर दया करता है । दुष्ट अपनी दुष्टता में  
 ३३ खदेड़ा जाता है परन्तु धर्मों अपनी मृत्यु में आशा रखता है । समुझवैये के मन  
 ३४ में बुद्धि चुपचाप रहता है और मूर्खों के मन की दशा प्रगट होती है । धर्म  
 ३५ जातिगण को बड़ाता है परन्तु पाप लोगों के लिये कलंक है । बुद्धिमान सेवक  
 पर राजा की कृपा है परन्तु जो लाज दिलाता है उस का क्रोध उस पर है ॥

पंदरहवां पद्ये ।

१ कोमल उत्तर क्रोध को फेर देता है परन्तु कटुक वचन क्रोध को उभाड़ते  
 २ हैं । बुद्धिमानों की जीभ ज्ञान को उत्तम रीति से काम में लाती है परन्तु मूर्खों  
 ३ का मुँह मूर्खता उगलता है । परमेश्वर की आंखें हर स्थान में दुरों भलों को

भटकाता है । आलसी अपनी अहेर को नहीं भूँजता परन्तु चालाक मनुष्य की २१  
संपत्ति बहुमूल्य है । धर्म के मार्ग में जीवन है और उस के पथ मृत्यु नहीं ॥ २२  
तेरहवां पर्व ।

बुद्धिमान बेटा अपने पिता का उपदेश सुनता है परन्तु निन्दक दण्ड को १  
नहीं सुनता । मनुष्य अपने मुँह के फल में से अच्छा खाया परन्तु अपराधियों २  
का प्राण अंधेर को । जो अपने मुँह को संभालता है सो अपने प्राण की रक्षा ३  
करता है जो अपने हाँठों को पसारता है सो नाश होगा । आलसी का मन ४  
बहुत कुछ चाहता है और कुछ नहीं पाता परन्तु चालाकों का मन पुष्ट होगा ।  
धर्मी जन झूठी बात से दूर रखता है परन्तु दुष्ट दुराई करता और लाज ५  
पहुँचाता है । धर्म उस की जिस का मार्ग सीधा है रक्षा करता है परन्तु दुष्टता ६  
पापी को उलट देती है । एक तो आप को धनी बनाता है तथापि उस के पास ७  
कुछ नहीं एक आप को कंगाल करता है तथापि बड़ा धनी है । मनुष्य के ८  
प्राण का प्रायश्चित्त उसी का धन है परन्तु कंगाल दण्ड को नहीं सुनता । धर्मियों ९  
का दिया जलता रहेगा परन्तु दुष्टों का दीपक बुझाया जायगा । झगड़ा केवल १०  
अहंकार से उठता है परन्तु सुमंत्रों के साथ बुद्धि है । जो धन कि अनर्थ से प्राप्त ११  
किया गया सो घट जायगा परन्तु जो परिश्रम से घटोरता है सो बढ़ जायगा ।  
आशा का टालना मन को रोगी करता है परन्तु आशा का पूर्ण होना जीवन १२  
का वृत्त है । जो कोई वचन की निन्दा करता है सो नाश किया जायगा परन्तु १३  
वह जो आज्ञा से डरता है कुशल से रहेगा । ज्ञानी की व्यवस्था जीवन का १४  
सेता है जिसमें मृत्यु के जालों से अलग होवे । अच्छी समझ अनुग्रह देती है १५  
परन्तु अपराधियों का मार्ग कठिन है । हर एक चतुर जन ज्ञान से व्यवहार करता १६  
है परन्तु मूर्ख अपनी मूर्खता फैलाता है । दुष्ट दूत दुराई में पहुँचाता है परन्तु १७  
विश्वस्त दूत कुशल है । कंगालपन और लाज उस के लिये हैं जो उपदेश को १८  
नहीं मानता परन्तु जो दण्ड को मानता है सो प्रतिष्ठा पायेगा । दुष्ट का पूर्ण १९  
होना प्राण को माँठा है परन्तु दुराई का छोड़ना मूर्खों का धिन है । जो बुद्धि- २०  
मानों के संग चलता सो बुद्धिमान होगा परन्तु मूर्खों का संगी चूर्ण होगा । विपत्ति २१  
पापियों के पीछे दौड़ती है परन्तु धर्मियों का उत्तम प्रतिफल मिलेगा । उत्तम २२  
अपने पातों के लिये अधिकार छोड़ जाता है परन्तु पापी का धन धर्मों के लिये  
धरा है । कंगालों के जातने जाने से बहुत सा भोजन मिलता है परन्तु ऐसा भी २३  
होता है कि धन विचार के न होने से उड़ाया जाता है । जो अपनी छड़ी को २४  
रोकता है सो अपने बेटे से दूर रखता है परन्तु जो उसे प्यार करता है सो उस  
को आगे से ताड़ना करता है । धर्मी अपने प्राण की संतुष्टता के लिये खाता है २५  
परन्तु दुष्टों का पेट नहीं भरता ॥

छांदहवां पर्व ।

बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है परन्तु अज्ञान उसे अपने हाथों से ढाती १  
है । जो अपनी खगाई से चलता है सो परमेश्वर से डरता है परन्तु कुमार्गी उस २  
की निन्दा करता है । मूर्खों के मुँह में घमंड की लाठी है परन्तु बुद्धिमानों के ३

२ हर एक मनोरथ में डेढ़ता है । मूर्ख को समुक्त प्रसन्न नहीं परन्तु जब कि उस का  
 ३ मन आप को प्रगट करे । जब दुष्ट आता है तब निन्दा भी आती है और दुर्गति  
 ४ के साथ अपयश आता है । मनुष्य के मुँह की धातें गहिरें जल हैं और बुद्धि का  
 ५ सोता बहता नाला है । धर्मी को न्याय में पलटने को दुष्ट का पक्ष करना अच्छा  
 ६ नहीं है । मूर्ख के होठ विवाद में पैठते हैं और उस का मुँह अपेड़ा मांगता है ।  
 ७ मूर्ख का मुँह उस का विनाश है और उस के होठ उस के प्राण के लिये फंदे ।  
 ८ फुसफुसाहट की धातें सींठे ग्रास की नाईं हैं और वे अन्तःकरण के भीतर पैठ  
 ९ जाती हैं । जो अपने कार्य में आलसी है सो वृथा उठान करवैये का भाई है ।  
 १० परमेश्वर का नाम एक दृढ़ गढ़ है धर्मी उस में दौड़के बच रहता है । धनी  
 मनुष्य का धन उस का दृढ़ नगर और उसी की समुक्त में एक लंछी भीत की  
 १२ नाईं है । विनाश के आगे मनुष्य का मन फूलता है और प्रतिष्ठा के आगे दीन-  
 १३ ताई है । जो बिन सुने वचन कह बैठता है उस के लिये मूर्खता और लाज है ।  
 १४ मनुष्य का प्राण उस की निर्यलता को संभाल सक्ता है पर टूटे प्राण को कौन  
 १५ सह सक्ता है । चतुर का मन ज्ञान प्राप्त करता है और बुद्धिमानों के कान ज्ञान  
 १६ को ठूँठते हैं । मनुष्य का दान उस के लिये ठिकाना कर लेता है और उसे  
 १७ महज्जनों के पास पहुंचाता है । जो अपने ही पद में पहिला है सो धर्मी जाना  
 १८ जाता है परन्तु उस का परीसी आके उसे जांचता है । चिट्ठी डालना भगड़ों को  
 १९ मिटा देता है और बलवानों को अलग करता है । उदास भाई को मिला लेना  
 दृढ़ नगर को लेने से कठिन है और उन के भगड़े गढ़ के अड़ंगे की नाईं हैं ।  
 २० मनुष्य का पेट उस के मुँह के फल से तृप्त होता है वह अपने होठों की प्राप्ति से  
 २१ संतुष्ट होता है । जीवन और मरण जीभ के वश में हैं और जो उस्से प्रीति रखते  
 २२ हैं वे उस का फल खाते हैं । जो पत्नी को प्राप्त करता है सो उत्तम वस्तु प्राप्त  
 २३ करता है और परमेश्वर से अनुग्रह पाता है । कंगाल बिल्ली क्रिया करता है  
 २४ परन्तु धनी कड़ा उत्तर देता है । मनुष्य के मित्र हानि के लिये हैं परन्तु एक जन  
 जो प्रेम रखता है सो भाई से अधिक सटा रहता है ॥

उन्नीसवां पद्य ।

१ जो कंगाल अपनी सच्चाई में चलता है सो उस्से अच्छा है जो टेढ़े होठ से  
 २ चलता है और मूढ़ है । प्राण का अज्ञान रहना भी अच्छा नहीं और जो पांवों  
 ३ से बेग करता है सो पाप करता है । मनुष्य की मूर्खता उस के मार्ग बिगाड़ती  
 ४ है और उस का मन परमेश्वर से उदास होता है । धन बहुत से मित्र बनाता  
 ५ है परन्तु कंगाल अपने मित्र से अलग किया जाता है । झूठा साक्षी निर्दोष  
 ६ न ठहरेगा और मिथ्यावादी न बचेगा । बहुत से लोग राजपुत्र की दया के लिये  
 ७ बिल्ली करेंगे और सब उस मनुष्य के मित्र हैं जो दान देता है । कंगाल के तो  
 सारे भाई उस्से बैर रखते हैं सो कितना अधिक उस के मित्र उस्से दूर जायेंगे  
 ८ वह गिड़गिड़ाके उन का पीछा करता है परन्तु वे नहीं मानते । जो बुद्धि को  
 प्राप्त करता है सो अपने प्राण को प्यार करता है जो समुक्त रखता है सो भलाई  
 ९ पावेगा । झूठा साक्षी बिना दंड न कूटेगा और मिथ्यावादी नाश हो जायगा ।

देखती हैं । कुशलता की जीभ जीवन का वृक्ष है परन्तु उस की चिकनी चुपड़ी ४  
 धातु आत्मा के लिये घाति है । मृग्य अपने पिता के उपदेश को तुच्छ जानता है ५  
 परन्तु जो बुढ़की को मान लेता है सो चतुर है । धर्मी के घर में बहुत धन है ६  
 परन्तु दुष्ट की प्राप्ति में दुःख है । युद्धिमान के हाँठ चाद फैलाते हैं परन्तु मृग्य ७  
 का मन ऐसा नहीं है । दुष्ट के यन्त्रिदान से परमेश्वर को घिन है परन्तु खरे की ८  
 प्रार्थना उस की प्रसन्नता है । दुष्ट की चाल से परमेश्वर को घिन है परन्तु जो ९  
 धर्म का पीछा करता है वह उम्मे प्रेम रखता है । जो मार्ग को छोड़ देता है १०  
 ताड़ना उस के लिये भारी है और जो दण्ड से डर रखता है सो सर जायगा ।  
 प्रातान और नाश परमेश्वर के आगे हैं तो कितना अधिक मनुष्य के गुन्तान के ११  
 अन्तःकरण न होंगे । निन्दक अपने दण्डनेदारे में प्रेम न करेगा और युद्धिमानों १२  
 के पाम न जायगा । मगलमन स्व को आनन्द करता है परन्तु मन के मोह से मन १३  
 टूट जाता है । समुक्त्यै का मन ज्ञान को खोजता है परन्तु मृग्य का मुँह मृग्यता १४  
 आहार करता है । दुःखी के जीवन के दिन दुःख हैं परन्तु जिम का मन मगल १५  
 है उस के लिये मदा जेवनार है । थोड़ा मा जो परमेश्वर के भय के माघ हो १६  
 उस बड़े भगदार से जो क्लेश के संग हो भला है । सागपान का भोजन प्रेम के १७  
 माघ उम्मे भला है कि पाला दुश्मा बरद वर के माघ । क्रोधी मनुष्य कगड़ा १८  
 उभाड़ता है परन्तु जो क्रोध में धीमा है सो कगड़े को मिटाता है । आलसी का १९  
 मार्ग कांटों के बाड़े के समान है परन्तु धर्मियों का मार्ग सँवा मार्ग है । युद्धिमान २०  
 लड़का पिता को आनन्दित करेगा है परन्तु मृग्य अपनी माता की निन्दा करता  
 है । मृदुता निर्बुद्धि के लिये आनन्द है परन्तु समुक्त्यै मनुष्य खराने में चलता २१  
 है । बिना परामर्श सनोरथ वृथा दौते हैं परन्तु मंत्रियों की बहताई से वे दूढ़ दौते २२  
 हैं । मनुष्य अपने मुँह के उत्तर से आनन्दित होता है और समय पर की बात २३  
 कौसी अच्छी है । जीवन का मार्ग युद्धिमान के लिये सँवा है जितने वह नीचे २४  
 प्रातान में निकल जाय । परमेश्वर घमंडियों का घर ला देगा परन्तु वह गंड २५  
 के खियाने का स्थिर करेगा । दुष्ट की चिन्ता से परमेश्वर को घिन है परन्तु २६  
 पावनों की बातें मनाहर हैं । जो लाभ का लालच करता है सो अपने घराने २७  
 को दुःख देता है परन्तु जो धर्म से डर रखता है सोई जीयेगा । धर्मी का मन २८  
 उत्तर देने को सोचता है परन्तु दुष्टों का मुँह बुराहियाँ उगलता है । परमेश्वर दुष्टों २९  
 से दूर है परन्तु वह धर्मियों की प्रार्थना सुनता है । आंखों की ज्योति मन को ३०  
 आनन्द करती है और सुमंदेश दृष्टियों को पुष्ट करता है । जो कान जीवन की ३१  
 किड़की सुनता है सो युद्धिमानों में रहेगा । जो उपदेश को नहीं मानता सो अपने ३२  
 छो प्राण को तुच्छ करता है परन्तु जो दण्ड को मानता है सो युद्धि प्राप्त करता है ।  
 परमेश्वर का भय युद्धि का उपदेश है और प्रतिष्ठा के आगे दोनतार्दे है ॥ ३३

सोलहवां पर्व ।

मनुष्य के मन का उपाय और जीभ का उत्तर परमेश्वर की ओर से हैं । १  
 मनुष्य की सारी चालें उस की आंखों के आगे पवित्र हैं परन्तु परमेश्वर २  
 आत्माओं को तालता है । अपने कार्यों को परमेश्वर को सौंप तो तेरी चिन्ताएं ३



१४ कहता है कि बाहर सिंह है मैं गलियों में फाड़ा जाऊँगा । पराई स्त्रियों का मुँह एक गहिरा गड़हा है उस में यह गिरता है जिसे परमेश्वर छिन करता है ।  
 १५ मूढ़ता बालक के मन में बंधी हुई है परन्तु ताड़ना की कड़ी उसे उस में से दूर  
 १६ करेगी । जो कंगाल पर अन्धे करता है कि अपना धन बड़ावे और जो धनी को देता है वह निश्चय दरिद्र होगा ॥

१७ अपना कान झुका और बुद्धिमानों के वचन सुन और मेरे ज्ञान पर अपना  
 १८ मन लगा । क्योंकि यह अच्छी बात है कि तू उन्हें अपने हृदय में धारण करे  
 १९ और वे तेरे होंठों में सर्जेंगे । जिसमें तेरा भरोसा परमेश्वर पर होवे मैं ने आज  
 २० के दिन तुझे हाँ तुझी को जताया है । क्या मैं ने तुझे अच्छे अच्छे परामर्श और  
 २१ ज्ञान नहीं लिखे । जिसमें मैं सच्ची बातों को निश्चय तुझे जनाऊँ कि तू उन की  
 उत्तर में जिन्होंने ने तुझे भेजा है सच्ची बातों का उत्तर दे सके ।

२२ कंगाल को मत लूट इस कारण से कि यह कंगाल है और फाटक में दुःखी  
 २३ को मत सता । क्योंकि परमेश्वर उन की पद का विवाद करेगा और उन की  
 २४ प्राणों को लूटेगा जिन्होंने ने उन को लूटा है । क्रोधी मनुष्य से मित्रता मत कर  
 २५ और अति कोपित के साथ मत जा । न हो कि तू उस की चालें सीखे और  
 अपने प्राण को फंदे में फंसावे ।

२६ तू उन में मत हो जो हाथ मारते हैं अथवा उन में जो ऋण के कारण  
 २७ विचरवई होते हैं । यदि तुझ पास कुछ भर देने को न हो तो किस लिये तेरे  
 २८ नीचे का बिछौना खींच ले जावे । पुराने सिवाने को जो तेरे पितरों ने बांधे हैं  
 मत तोड़ ॥

२९ जिसे तू अपने काम में चतुर देखता है वह राजाओं के आगे खड़ा होगा  
 वह तुच्छ जनों के आगे खड़ा न होगा ॥

तेईसवां पद्य ।

१ जब तू आज्ञाकारी के साथ भोजन पर बैठे तो चौकसी से सोच कि तेरे  
 २ आगे क्या है । यदि तू पैटू है तो अपने गले पर कूरी लगा । उस के स्वादित  
 भोजन का लालच मत कर क्योंकि वह कल का भोजन है ॥

३ धनी होने के लिये परिश्रम मत कर अपनी ही बुद्धि से थम जा । क्या तू  
 अपनी आंखें उस पर दौड़ावेगा जो कुछ नहीं है क्योंकि धन निश्चय अपने लिये  
 ४ पंख बनाता है और गिद्ध की नाई आकाश की ओर उड़ जाता है । कुट्टि की  
 ५ रोटी मत खा और उस के स्वादित भोजनों की लालसा मत कर । क्योंकि जैसा  
 वह अपने मन में चिन्ता करता है वह वैसा ही है वह तुझे कहता है खा और  
 ६ पी परन्तु उस का मन तेरे संग नहीं है । ग्रास जो तू ने खाया है उसे उगल देगा  
 और अपनी मोठी बातें गंवायेगा ॥

७ मूढ़ के कानों में अपनी बातें मत कह क्योंकि वह तेरी बुद्धि के वचन की  
 निन्दा करेगा ॥

८ पुराने सिवाने को मत टाल और अनाथों के खेत में मत पैठ । क्योंकि उन  
 का मुक्तिदाता सामर्थ्य है वही तुझ से उन के पद का विवाद करेगा ॥

आनन्दता मूर्ख को नहीं सजती तो कितना अधिक कि सेवक कुंअर पर राज्य १०  
करे । मनुष्य की चतुराई उस के क्रोध को टालती है और अपराध पर दृष्टि ११  
न करने में उस की प्रतिष्ठा है । राजा का कोष सिंह के गर्जने की नाई है १२  
परन्तु उस की कृपा घास पर की ओस की नाई है । मृदु पुत्र अपने पिता १३  
की विपत्ति है और पत्नी का भगड़ा रगड़ा नित्य का टपकना है । घर और १४  
धन पितरों का अधिकार है और दुष्टियती पत्नी परमेश्वर से मिलती है । आलस १५  
भारी नींद में डाल देता है और आलसी प्राणी भूखा मरेगा । जो आज्ञा को १६  
पालन करता है सो अपने प्राण की रक्षा करता है और जो अपनी चालों को  
तुच्छ जानता है सो मारा जायगा । जो कंगाल पर दया करता है सो परमेश्वर १७  
को उधार देता है और जो उस ने दिया होगा वह उसे फेर देगा । जय लो कि १८  
आशा है तब लो अपने घेरे को ताड़ना किये जा और उस के मार डालने पर  
अपना मन मत लगा । अति कोपित मनुष्य दंड ही पावेगा क्योंकि यदि तू १९  
उसे कुड़ाये तो तुझे वह दारदार करना पड़ेगा । मंत्र को सुन और उपदेश को २०  
गृहण कर जिससे अपने अन्न में तू दुर्द्धमान पाये । मनुष्य के मन में बहुत सी २१  
युक्ति हैं परन्तु परमेश्वर का मंत्र वही ठहरेगा । मनुष्य की इच्छा उस की दया २२  
है और झूठे से कंगाल अच्छा है । परमेश्वर का भय जीवन के लिये है और जिस २३  
में वह है सो तृप्त रहेगा दुराई उस के पास न आवेगी । आलसी अपना दाघ २४  
भोजनपात्र में छिपाता है और इतना नहीं करता कि उसे अपने मुँह लो लाये ।  
ठठलू को मार तो भोला चतुर हो जायगा और समुझैये को दपट तो वह ज्ञान २५  
को समुझेगा । जो अपने पिता को लूटता है और अपनी माता को मरदेहता है २६  
सो पुत्र लाज दिलाता है और कलंक लाता है । छे मेरे घेरे ऐसे उपदेश को मत २७  
मान जो ज्ञान की बातों में फिरता है । झूठा साक्षी न्याय की निन्दा करता है २८  
और दुष्ट का मुँह दुराई निगलता रहता है । ठठलू के लिये दंड की आज्ञा धरी २९  
है और सूर्यों की पीठ के लिये कोड़े ॥

### दोसवां पद्य ।

सदिरा ठठलू बनाती है और सद कोपित करता है और जो कोई इस में १  
अमित है सो दुर्द्धमान नहीं है । राजा का भय सिंह के गर्ज के समान है जो २  
कोई उसे रिसियाता है सो अपने प्राण का घातक है । मनुष्य की प्रतिष्ठा इसी ३  
में है कि भगड़े में अलग रहे परन्तु घर एक मूढ़ कुँड़ा करता है । आलसी मनुष्य ४  
जाड़े के मारे न जातेगा इस कारण वह लवनों में भीख माँगेगा और न पावेगा ।  
मनुष्य के मन का मंत्र गहिरें जल के समान है परन्तु समुझैया मनुष्य उसे ५  
खोजेगा । बहुधा मनुष्य अपनी भलाई प्रचारते हैं परन्तु विश्वस्त मनुष्य को कौन ६  
पा सकता है । धर्मी मनुष्य अपनी खराई पर चलता है उस के पीछे उस के ७  
बालक धन्य हैं । राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठता है सो अपनी आंखों से ८  
सारी दुराई को दूर करता है । कौन कह सकता कि मैं ने अपने मन को पावन ९  
किया है मैं अपने पाप से पावित्र हूँ । नानाप्रकार के घटखरे और नानाप्रकार के १०  
तौल वे दोनों के दोनों परमेश्वर को धिनिता हैं । बालक भी अपनी चाल से ११

- १९ मूर्खता की चिन्ता पाप है और ठठेल से मनुष्यों को घिन है ॥
- १० यदि तू विपत्ति के दिन मूर्खित हो जावे तो तेरा बल थोड़ा है ॥
- ११ यदि तू उन्हें जो मृत्यु के लिये खेंचे गये हों और उन्हें जो मारे जाने पर
- १२ लैस हैं अपना हाथ खेंचे । यदि तू कहे कि देखो हम जानते न थे तो क्या वह जो अन्तःकरण को जांचता है यह नहीं सोचता और जो तेरे प्राण का रक्षक है सो क्या नहीं जानता और क्या मनुष्य को उस के कार्य के समान पलटा न देगा ॥
- १३ हे मेरे बेटे तू मधु खा क्योंकि वह अच्छा है और मधु का कृता जो तेरे तालू
- १४ में मीठा है । सो बुद्धि का ज्ञान तेरे प्राण को होगा जब तू उसे पावे उस का प्रतिफल होगा और तेरी आशा वृथा न होगी ॥
- १५ हे दुष्ट धर्मी के निवास की घात में मत लग उस के चैन के स्थान को मत
- १६ लूट । क्योंकि धर्मी सात बार गिरता है और फिर उठता है परन्तु दुष्ट घुराई में
- १७ गिर जायेंगे । जब तेरा बैरी गिर पड़े तब आनन्दित मत हो और जब वह ठोकर
- १८ खाय तो तेरा मन मगन न हो । जिसमें न हो कि परमेश्वर देखे और उस की
- १९ दृष्टि में घुरा लगे और अपना क्रोध उस पर से उठा लेवे । दुष्टों के कारण से तू
- २० अपने तई मत कुड़ा और दुष्टों से डाह मत कर । क्योंकि घुरे का अंत सुफल न होगा और दुष्टों का दीपक बुझ जायेगा ॥
- २१ हे मेरे बेटे तू परमेश्वर से और राजा से डर और दंगड़ों के संग मत रह ।
- २२ क्योंकि उन की विपत्ति अचानक आ पड़ेगी और उन दोनों के विनाश को कौन जानता है ॥
- २३ ये भी बुद्धिमानों की बातें हैं न्याय में पक्ष करना भला नहीं । जो दुष्ट से
- २४ कहता है कि तू धर्मी है लोग उसे साप देंगे और जातिगण उसे घिन करेंगे ।
- २५ परन्तु जो उसे दपटते हैं वे आनन्दित होंगे और उन पर अच्छी आशीस होगी ॥
- २६ जो ठीक उत्तर देता है उस के हाँठ चूमे जायेंगे ॥
- २७ बाहर में अपना कार्य सिद्ध कर और अपने लिये खेत में उसे ठीक कर और उस के पीछे अपना घर बना ॥
- २८ अपने परोसी पर अकारण सानी मत हो और अपने हाँठों से मत छल ।
- २९ मत कह कि मैं उसे ऐसा कबूंगा जैसा उस ने मुझ से किया मैं मनुष्य को उस के काम के समान पलटा देऊंगा ॥
- ३० मैं आलसी के खेत के पास से और असमझ के दाख की खाटिका के पास से
- ३१ गया । और देखो वह कांटों से समस्त का रहा था और भटकटैया उसे ठाँपे हुए
- ३२ थीं और उस की पत्थर की भीत टूटी हुई थी । तब मैं ने देखा और मन से
- ३३ बूझा मैं ने उस पर दृष्टि किई और उपदेश पाया । थोड़ा सोना और थोड़ा
- ३४ जंघना और सोने के लिये हाथ को समेटना । सो तेरी दरिद्रता पथिक की नाई और तेरी दीनता ठलैत मनुष्य के समान आवेगी ॥
- पच्चीसवां पृष्ठ ।
- १ ये भी सुलेमान के दृष्टान्त हैं जिन्हें यहूदाह के राजा हिजकियाह के लोगों ने उतारा ॥

उपदेश से अपना मन लगा और ज्ञान की बातों पर कान धर ॥ १२

यानक से ताड़ना अनग मत रख क्योंकि यदि तू उसे छड़ी मारेगा तो १३

वह मर न जायेगा । तू उसे छड़ी से मार और उस के प्राण को समाधि से बचा ॥ १४

हे मेरे बेटे यदि तेरा मन बुद्धिमान हो तो मैं ही हूँ मेरा मन ही आनन्दित १५

होगा । और जब तेरे हाँडों से सच्ची बातें निकलेंगी तब मेरा हृदय आनन्दित होगा ॥ १६

तेरा मन पापियों से डाढ़ करने न पाये परन्तु तू मारे दिन परमेश्वर से डरता १७

रह । क्योंकि निश्चय आगे एक प्रोत्फल है और तेरी आस घट न जायेगी ॥ १८

हे मेरे बेटे तू सुन और बुद्धिमान हो और मार्ग में अपने मन को चला । तू १९

सद्वर्षों में और उन में जो अपने मांस गंधात हैं मत जा । क्योंकि सद्वर्ष और २०

पेटू कंगान हो जायेंगे और नाँद चियड़े पहिनायेंगी ॥

अपने पिता की बात जो तेरा जनक है सुन और जब तेरी माता बृद्ध होये २१

तब उस की निन्दा मत कर । सच्चाई को मोल न और मत बँच बुद्धि और २२

उपदेश और समुक्त भाँ । धर्मी का पिता अत्यन्त आनन्दित होगा और जो २३

बुद्धिमान पुत्र उत्पन्न करता है सो उसके आनन्द पायेगा । तेरे माता पिता आनन्द २४

होगे और जो तुझे जनो सो आनन्दित होगी ॥

हे मेरे बेटे अपना मन मुझे दे और तेरी आँखें मेरे मार्गों से प्रसन्न होयें । २५

क्योंकि वेश्या एक गंदीरी खाई है और उपरी स्त्री सकल कूयाँ हैं । वह बटमार २६

की नाई घात में लगी है और मनुष्यों में अपराधों को बढ़ाती है ।

किस पर संताप है किस पर शोक है कौन भगाड़े में पड़ता है किस को २७

लुतड़ापन है और किस को घाय अकारण हैं और किस की आँखें लाल हैं । वे २८

जो मदिरा के पास अवेर लो ठहरने हैं वे जो मिली हुई मदिरा की खोज में

रहते हैं । जब मदिरा लाल होये और उस का रंग कटोरे में देख पड़े और जब २९

वह अच्छी भाँति में छिलती है तब उसे मत ताक । अन्त को यह नाग के समान ३०

काटिगी और सर्प के नाई डंसेगी । तेरी आँखें पराई स्त्रियों को देखेंगी और ३१

तेरा मन अनुचित ध्यान निकालेगा । और तू उस के समान हो जायेगा जो गमुद्र ३२

के मध्य में पड़ा रहता है अथवा उस की नाई जो गुनरग्रा की चाँटी पर लेटता

है । तू कहेगा कि उन्हीं ने तो मुझे मागा है पर मैं तो पीड़ित न हुआ उन्हीं ने ३३

मुझे पीटा मैं नहीं जानता कि कब उठूँगा मैं फिर उसे खोजूँगा ॥

चौथीं पद्य ।

बुरे मनुष्यों से डाढ़ मत कर और उन की संगत की घाह मत रख । १

क्योंकि उन के मन विनाश का मोच करते हैं और उन के हाँड बुराई बोलते २

हैं । बुद्धि से घर बनाया जाता है और समुक्त से वह टूटूँ किया जाता है । और ३

ज्ञान से कोठरियाँ बहुमूल्य और सुन्दर धन से भर जायेंगी ॥ ४

बुद्धिमान मनुष्य बली है हाँ ज्ञानी मनुष्य बल बढ़ाता है । क्योंकि बुद्धि ५

के संत्र से तू अपना युद्ध करेगा और मंत्रियों की बहताई से बचाव है ॥ ६

बुद्धि मूर्खों के लिये अति खंची है वह फाटक पर अपना मुँह न खोलेगा ॥ ७

जो बुराई की चिन्ता करता है सो विगाडू जन कहलायेगा ॥ ८

४ लिये ढड़ी । मूर्ख को उस की मूर्खता के समान उत्तर मत दे न हो कि तू भी  
 ५ उस के समान हो जाय । मूर्ख को उस की मूर्खता के समान उत्तर दे न हो कि  
 ६ वह अपनी दृष्टि में बुद्धिमान होवे । जो मूर्ख के हाथ से संदेश भेजता है सो  
 ७ पांव काटता है और अंधेर पीता है । जैसा लंगड़े की टांगें लटकती हैं वैसा  
 ८ मूर्खों के मुंह में दृष्टान्त है । जैसे मणि की थैली पत्थरों के ढेर में वैसा ही वह  
 ९ जो मूर्ख को प्रतिष्ठा देता है । जैसा कांटा सदाय के हाथ में गड़ जाता है वैसा  
 १० मूर्खों के मुंह में दृष्टान्त है । अति महान जो सब का सृष्टिकर्ता है वह मूर्खों  
 ११ और अपराधियों दोनों को प्रतिफल देता है । जैसा कुत्ता अपने क्रांट को फिर  
 १२ खाता है वैसा मूर्ख अपनी मूर्खता फिर फिर प्रगट करता है । क्या तू मनुष्य को  
 १३ जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हो देखता है तो उस के विषय में मूर्ख से अधिक  
 १४ आशा है । आलसी कहता है कि मार्ग में सिंह है सिंह गलियों में है । जैसा  
 १५ द्वार अपनी चूलों पर फिरता है वैसा आलसी अपने बिछाने पर । आलसी अपना  
 १६ हाथ पात्र में छिपाता है और उसे मुंह में फेर लाना बड़ा दुःख है । आलसी  
 अपनी समुक्त में सात मनुष्यों से जो विचार ला सकते हैं आप को अधिक बुद्धि-  
 मान जानता है ॥

१७ जो चल निकलने में औरों के भगड़े से छेड़ता है सो ऐसा है जैसा कोई कुत्ते  
 १८ का कान धर लेता है । जैसा बौड़हा जो लघर को और बाण और मृत्यु को  
 १९ फेंकता है । वैसा ही वह मनुष्य है जो अपने परोसी को हल देकर कहता है  
 २० कि मैं ने तो ठट्ठा किया । ईंधन बिना आग बुझ जाती है वैसे जहां लुतड़ा नहीं  
 २१ तहां भगड़ा मिट जाता है । जैसा अंगारों पर कोइले और आग पर ईंधन वैसा  
 २२ भगड़ालू मनुष्य भगड़ा उठाने में । फुसफुसाऊ की घातें सीठे घासों की नाई हैं  
 और वे अन्तःकरण के भीतर जाती हैं ॥

२३ जलते होठ और दुष्ट मन चांदी के मेल से ठपे हुए ठीकरे के समान हैं ।  
 २४ जो बैर रखता है सो होठों से कपट करता है कि मानो नहीं जानता पर मन में  
 २५ हल रख छोड़ता है । जब वह अनुग्रह की घातें करता है तब उस की प्रतीति  
 २६ न कर क्योंकि उस के मन में सात घिन हैं । जिस की डाह गुप्त में छिपी है उस  
 २७ की दुष्टता मंडली के आगे दिखाई जायेगी । जो गड़हा खादता है सो उस  
 २८ में गिरेगा और जो पत्थर ठलकाता है वह पलटके उसी पर पड़ेगा । झूठी जीभ  
 उन से डाह रखती है जो उसे ताड़ना करते हैं और लुतड़े का मुंह बिनाश करता है ॥

सत्ताईसवां पर्व ।

१ घमंड मत कर कि कल यों कदंगा क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में  
 २ क्या होगा । दूसरा तेरी बड़ाई करे और न तेरा ही मुंह ऊपरी और न तेरे ही  
 ३ होठ । पत्थर भारी है और बालू गरु परन्तु मूढ़ का कोप दोनों से भारी है ।  
 ४ क्रोध क्रूर है और रिस एक बढियाल परन्तु कौन है जो डाह के आगे ठहर सक्ता  
 ५ है । प्रगट झिड़की गुप्त प्रेम से उत्तम है । स्त्री की घाव विश्वस्त हैं परन्तु बैरी  
 ६ के चूमे छली हैं । अधाया मन मधु को लताड़ता है परन्तु भूखे प्राणी के लिये हर  
 ७ एक कड़वी वस्तु सीठी है । जो मनुष्य अपने स्थान से भ्रमता है वह चिड़िया के

बात को छिपाना ईश्वर का विभव है परन्तु राजा की प्रतिष्ठा बात को खोल  
 लेने में है । जैसे सूर्य की लंछाई और पृथिवी की नीचाई वैसे राजाओं के मन  
 का भेद नहीं मिलता । रुपये का मूल कांट डाल तो मुनार के लिये एक पात्र  
 निकल आवेगा । दुष्ट को राजा के पाम से दूर कर तब उस का सिंहासन धर्म  
 से दृढ़ होगा । राजा के आगे अपना विभव सत दिखा और सदानों के स्थान  
 पर खड़ा मत हो । क्योंकि भला है कि तुझ से कदा जाय कि ऊपर या उससे  
 कि तू कुंवर के आगे जिसे तेरी आंखों ने देखा है घटाया जाय । भगाड़ने को  
 शीघ्र मत निकल न हो कि तू उस के अन्न को न जाने कि तू क्या करे जब तेरा  
 परोसी तुझे लज्जित करे । तू अपने परोसी से अपने पद का विवाद कर ने और  
 दूसरे के गुण को प्रगट न कर । न हो कि मुनवैया तुझे लज्जित करे और तेरा  
 अपयज किसी रीति से न सिटे । समय पर कटा हुआ खचन सोने के आतों के  
 समान है जो चांदी के चित्र पर खुदे हों । जैसे सोने की चाली और चाखे  
 सोने का गहना जैसे ही-बुद्धिमान घुड़कवैया अधीन कान के लिये है । जैसे पाने  
 का गीत लवनी में जैसे ही विश्वस्त दूत अपने भेजवैयों के लिये है क्योंकि वह  
 अपने स्वामियों के मन को जानित करता है । जो कोई भुटार्ह के दान पर अपनी  
 धड़ाई करता है वह उन सेधों और पयनों के समान है जिन के साथ धर्या न  
 हो । बड़े धीरज से कुंवर मान लेता है और कोसल जीभ हठी को तोड़ती है ।  
 क्या तू ने मधु पाया तू इतना ग्रा जितना तेरे लिये कम है न छोटे कि तू अधिक  
 खा जाय और उछाल डाले । अपने परोसी के घर में अपने पांघों को रोक न हो  
 कि वह तुझ से अछा जाय और तुझ से घेर रख्ये । जो मनुष्य अपने परोसी पर  
 झूठी मान्यता देता है सो प्रथाड़ा और एक गव्हा और चाख्रा वाला है । दुःख में  
 अविश्वस्त मनुष्य का भरोसा रखना टूटे दांत और नंगाड़े पांघों के समान है ।  
 जैसा जाड़े में वस्त्र उतार लेना और जयगार पर मिरका वैसा है जैसा राग गाना  
 शोकार्त मन के आगे । यदि तेरा घरी भूखा होवे तो उसे शेटी खाने का दे  
 और यदि वह प्यासा होवे तो उसे पानी पीने का दे । क्योंकि तू उस के मिर  
 पर आग के अंगारों का डेर करेगा और परमेश्वर तुझे प्रतिफल देगा । जिस रीति  
 में उत्तरदिशा प्रचन मेंध को उड़ा ले जातो है वैसा ही क्रोधित रूप चलाई जीभ  
 को । घर की छत के एक कोने में रहना और भी भला है कि भगाड़ालू स्त्री के  
 साथ चौड़े घर में । जैसे प्यासे के लिये ठंडा पानी वैसा ही वह मंगलसमाचार  
 है जो दूर देश से आवे । धर्मी मनुष्य का दुष्ट के आगे झुकना ऐसा है जैसे  
 गंदला सोता अथवा विगड़ी धारा । जैसा बहुत मधु खाना अच्छा नहीं है वैसा  
 अपना विभव छुड़ना ठीक नहीं है । जो अपने प्राण को वश में नहीं रखता सो  
 एक नगर के समान है जो गिरा हुआ दिन भीत का हो ।

छब्बीसवां पद्य ।

जैसा तपन में पाला और लवनी में मेंध वैसा सूर्य को प्रतिष्ठा नहीं सजती ।  
 जैसे चिड़ियों का मसना और सुपायीना दा उड़ते फिरना वैसा अकारण साध न  
 आवेगा । घोड़े के लिये कोड़ा और मददे के लिये लट्टी और सूर्य की पीठ के



८ है । जो व्यवस्था के सामने से अपने कान को फेर देता है उस की प्रार्थना भी  
 १० घिनित है । जो धर्मियों को भटकाके उन्हें दुरे मार्ग पर चलाता है सो अपने  
 गड़हे में आप ही गिरेगा परन्तु खरे अच्छी वस्तुन के अधिकारी होंगे ।  
 ११ धनी मनुष्य अपनी दृष्टि में बुद्धिमान है परन्तु कंगाल जो बुद्धिमान है उसे  
 १२ पहिचान लेता है । जब धर्मी आनन्द करते हैं तब बड़ा विभव है परन्तु  
 १३ जब दुष्ट उभड़ते हैं तब मनुष्य हूँढ़ा जाता है । जो अपने पापों को छापता है  
 सो भाग्यमान न होगा परन्तु जो उन्हें मान लेता है और उन्हें छोड़ता है सो  
 १४ दया पावेगा । क्या ही धन्य वह मनुष्य जो सदा डरा करता है परन्तु जो अपने  
 १५ मन को कठोर करता है सो खराई में गिरेगा । जैसा गर्जता हुआ सिंह और  
 १६ भ्रमता हुआ रीछ वैसा ही दुष्ट आज्ञाकारी कंगाल पर है । असमुझ प्रधान भी  
 १७ महा अंधेरी है परन्तु जो लाभ से दूर रखता है सो अपनी वय बड़ावेगा । जो  
 मनुष्य किसी मनुष्य के लोहू से दवा हुआ है सो भागके गड़हे में गिरेगा उसे  
 १८ कोई न थांभेगा । जो खराई से चलता है सो बच जायेगा परन्तु जो कुचाली  
 १९ है सो अकस्मात् गिर पड़ेगा । जो अपना खेत जोता बोया करता है सो बहुत  
 भोजन प्राप्त करेगा परन्तु जो वृथा लोगों का पीछा करता है सो कंगालपन से  
 २० पूर्ण होगा । विश्वस्त मनुष्य आशीसों से उभड़ेगा परन्तु जो धनी होने के लिये  
 २१ उतावली करता है निर्दंड न जायेगा । मनुष्यों का पक्ष करना अच्छा नहीं क्यों-  
 २२ कि ऐसा मनुष्य रोटी के टुकड़े के लिये पाप करेगा । जो दुरी आंख रखता है  
 सो धनी होने को उतावली करता है और नहीं सोचता कि दरिद्रता उस पर आ  
 २३ पड़ेगी । जो मनुष्य को दपटता है सो आगे को उस्से जो अपनी जीभ से फुस-  
 २४ लाता है अधिक अनुग्रह पावेगा । जो अपनी माता अथवा पिता को लूटता है  
 २५ और कहता है कि यह अपराध नहीं सो विनाशक का संगी है । जिस के मन में  
 घमंड है सो झगड़ा उभाड़ता है परन्तु जिस का भरोसा परमेश्वर पर है सो पूष्ट  
 २६ किया जायेगा । जो अपने मन पर भरोसा रखता है सो मूर्ख है परन्तु जो बुद्धि  
 २७ से चलता है सोई कुड़ाया जायेगा । जो कंगाल को देता है उस की घटी न  
 २८ होगी परन्तु जो अपनी आंखें छिपाता है बहुत साप पावेगा । जब दुष्ट उभड़ते  
 हैं तब मनुष्य आप को छिपाते हैं परन्तु जब वे नष्ट होते हैं तब धर्मी बढ़ते हैं ।  
 उनतीसवां पर्व ।

१ दपटा हुआ मनुष्य जो अपने गले को कठोर करता है सो बिना औषध  
 २ अकस्मात् मारा जायगा । जब धर्मी बढ़ते हैं तब लोग आनन्दित होते हैं परन्तु  
 ३ जब दुष्ट प्रभुता करता है तब लोग शोक करते हैं । जो मनुष्य बुद्धि से प्रेम  
 रखता है सो अपने पिता को मगन करता है परन्तु जो वेश्यों की संगत करता  
 ४ है सो अपनी संपत्ति उड़ाता है । राजा न्याय से अपने देश को स्थिर करता है  
 ५ परन्तु भेंटों का जन उसे विगाड़ता है । जो मनुष्य अपने परोसी से मिथ्या प्रशंसा  
 ६ करता है सो उस के डगों के लिये जाल बिछाता है । दुष्ट मनुष्य के अपराध में  
 ७ एक जाल है परन्तु धर्मी गाता है और मगन होता है । धर्मी मनुष्य कंगालों के  
 ८ पद को बूझता है परन्तु दुष्ट जानने की चिन्ता नहीं करता । निन्दक नगर में

समान है जो अपने ग्वांते से भ्रमती है । सुगंध तेल और धूप मन को आनन्दित ८  
करते हैं वैसा मनुष्य के लिये उस के मित्र के प्राण के मंत्र सीधे हैं । अपने मित्र १०  
और अपने पिता के मित्र को त्याग मत कर और अपनी विपत्ति के दिन अपने  
भाई के घर मत जा क्योंकि समीप का परोसी दूर के भाई से अच्छा है । हे मेरे ११  
बेटे बुद्धिमान हो और मेरे मन को आनन्दित कर जिसमें मैं उसे जो मुक्त उलाहना  
देता है उत्तर दे सकूँ । चतुर आगे से घुराई को देखता है और आप को छिपाता १२  
है परन्तु भोले बड़े जाके दण्ड पाते हैं । जो परदेशी का विचरने का नृ २४ के १३  
कपड़े ले ले और उसमें जो उपरी स्त्री का हो बंधक रख ले । जो विद्वान को १४  
उठके अपने मित्र को बड़े शब्द से आशीस देता है सो उस के लिये एक माप  
गिना जायेगा । झड़ी के दिन का सदा टपकना और झगड़ानू स्त्री दोनों एक १५  
हैं । जो उसे छिपाता है सो पथन को छिपाता है और अपने दोहने छाव की १६  
सुगंध जो आप को प्रगट करती है । जैसा लोहा लोहे को चोखा करता है १७  
वैसा मनुष्य अपने मित्र के रूप को चोखा करता है । जो गृन्तर के वृक्ष को रक्षा १८  
करता है सो उस का फल खायेगा और जो अपने स्वामी को रक्षा करता है सो  
प्रतिष्ठा पायेगा । जैसा पानी में मुँह मुँह के समान दिखाई देता है वैसा मनुष्य १९  
का मन मनुष्य के समान । पाताल और नाश नदों भरते वैसा ही मनुष्य की आँखें २०  
तृप्त नहीं होती । जिस रीति से चाँदी के लिये घड़िया और मोने के लिये भट्टी है २१  
उसी रीति में मनुष्य की बड़ाई मनुष्य के लिये । यद्यपि तू मृदु को गोद के माथ २२  
आखली में डालके मूल से कूटे तथापि उस की मृदुता उससे दूर न होगी ।  
अपने भुँडों की दशा को जानने में यत्न कर और अपने ठोरे पर मन लगा । २३  
क्योंकि संपत्ति सदा नहीं रहती और क्या मुकूट पीढ़ी से पीढ़ी लो । तृण चटाया २४  
जाता है और कामल घास दिखाई देती है और पहाड़ों के सागवान बटोरे जाते २५  
हैं । मेरे तेरे परिचाया के लिये हैं और बकरे तेरे ग्वेत के माल हैं । और बकरियों २६  
का दूध तेरे खाने के लिये और तेरे घराने के लिये और तेरी लोडियों की जात्रिका  
के लिये हैं ॥

### अट्टाईसवां पद्य ।

दुष्ट जब कोई उन का पीछा नहीं करता तब भागते हैं परन्तु धर्मी सिंह १  
के समान माहसी हैं । देश के अपराधों के कारण उस के बहुत से कुंशर होने २  
हैं परन्तु मनुभवैषा और बुद्धिमान से बच स्थिर हो जायेगा । जो मनुष्य ३  
कंगाल है और कंगालों पर अन्धेर करता है सो वैकार की नाई है जो अन्न को  
नाश करता है । जो व्यवस्था को त्याग करते हैं सो दुष्ट की स्तुति करते हैं ४  
परन्तु व्यवस्था के पालक उन से विरुद्ध करते हैं । दुरे मनुष्य न्याय को नहीं ५  
समुझते पर जो परमेश्वर के खोजी हैं सो सब कुछ समझते हैं । कंगाल जो अपनी ६  
खराई पर चलता है उससे भला है जो अपने मार्गों से भटका हुआ और बड़ धनी  
है । जो व्यवस्था को पालन करता है सो बुद्धिमान पुत्र है परन्तु जो खाज को ७  
गिलाता है सो अपने पिता को लज्जित करता है । जो व्याज और अधर्म से ८  
अपनी संपत्ति को बड़ाता है सो उस के लिये जो कंगालों पर दया करेगा बढोढ़ता

१० सेवक को उस की स्वामी की आगे कलंक मत लगा न हो कि वह तुझे साप  
 ११ दे और तू दोषी ठहरे । एक पीढ़ी ऐसी है जो अपने पिता को साप देती है और  
 १२ अपनी माता को धन्य नहीं कहती । एक पीढ़ी अपनी ही दृष्टि में पवित्र है  
 १३ परन्तु अपनी मलीनता से धोई नहीं गई । एक पीढ़ी है हाथ उस की आंखें  
 १४ उभड़ी हुई हैं और उस की पलकों उठी हुई हैं । एक पीढ़ी ऐसी है जिस के दांत  
 खड़्ग हैं और उस की ढाढ़ें कुरियां जिसमें कंगालों को पृथिवी पर से और दरिद्रों  
 १५ को मनुष्यों में से भक्षण करे । मैसिया जोंक की दो बेटियां हैं जो दे दे पुकारती  
 १६ हैं तीन हैं जो कभी तृप्त नहीं होतीं चार नहीं कहती कि बस । समाधि और  
 आंश और पृथिवी जो जल से पूर्ण नहीं और आग नहीं कहती है कि बस ॥

१७ वह आंख जो अपने पिता को चिढ़ाती है और अपनी माता को माना तुच्छ  
 जानती है तराई के कौवे उसे निकाल लेंगे और गिट्ट के चिंगने उसे खा लेंगे ।  
 १८ मेरे लिये तीन अति अचंचित हैं हां चार जो मैं नहीं समझता । गिट्ट का मार्ग  
 आकाश में और सांप की चाल चटान पर और समुद्र के मध्य में जहाज की चाल  
 २० और मनुष्य की चाल कन्या के साथ । व्यवहारिणी का मार्ग ऐसा है कि वह  
 खाती है और अपना मुंह पोंछती है और कहती है मैं ने कुछ दुष्टता नहीं कीई ॥

२१ तीन वस्तुन से पृथिवी दुःखित है हां चार का भार उठा नहीं सकती । सेवक  
 २२ जब वह राजा हो जाय और मूढ़ जब वह भोजन से तृप्त हो । निर्लज्ज से जब  
 २३ वह ध्याही जावे और दासी से जो अपनी स्वामिनी की अधिकारिणी होवे । चार  
 २४ हैं जो पृथिवी पर छोटी हैं परन्तु अति बुद्धिमान हैं । चिउंटी बलवान नहीं तथापि  
 २५ वे अपने लिये भोजन तपन में बटोरती हैं । खरहा निर्बल है तथापि पहाड़ियों में  
 २६ अपनी मांद बनाता है । टिड्डियों का राजा नहीं तथापि वे एकट्ठी होके निकलती  
 २७ हैं । और सर्कड़ी जो अपने हाथों से पकड़ती है और राजाओं के भवनों में है ॥

२८ तीन हैं जो सुरीति से चलती हैं हां चार की चाल सुन्दर है । सिंह जो पशुन  
 २९ में प्रबल है और किसी के साम्ने से फिरता नहीं । पराक्रमी अश्व और बकरा भी  
 और राजा जिस के साथ लोग हैं ॥

३० यदि तू ने मूढ़ता से आप को उभाड़ा अथवा यदि तू ने बुरी चिन्ता कीई तो  
 ३१ हाथ अपने मुंह पर रख । निश्चय दूध मथने से मक्खन निकलता है और नाक  
 मरोड़ने से लोहू निकलता है वैसा कोप को केंड़ने से भगड़ा उठता है ॥

एकतीसवां पर्व ।

१ लमूएल राजा के बचन अर्थात् वह भविष्यवाणी जो उस की माता ने उसे  
 सिखाई ॥

२ हे मेरे बेटे क्या और हे मेरी कोख के बेटे क्या और हे मेरी मनोतियों के  
 ३ बेटे क्या कहूं । अपना बल स्त्रियों को मत दे और अपनी चाल उसे जो राजाओं  
 को नष्ट करती है ॥

४ हे लमूएल राजाओं को मद्यपान करना ठीक नहीं और तीक्ष्ण पान राजपुत्रों  
 ५ को उचित नहीं । न होवे कि वे पीवें और व्यवस्था को भूल जायें और दुःखित  
 ६ के समस्त पुत्र के न्याय को पलट डालें । तीक्ष्ण पान उसे देओ जो नाश होने

आग लगाते हैं परन्तु दुष्टिमान क्रोध को फेर देते हैं । यदि दुष्टिमान मूर्ख से ९  
 विवाद करे चाहे कोप से चाहे हंसी से तो यहां चैन नहीं । घातक खुरे से घेर १०  
 रखते हैं परन्तु सज्जन उस का प्राण बचाता है । मूर्ख अपना सारा मन उध्वारता है ११  
 परन्तु दुष्टिमान आगे के लिये रोकता है । यदि आज्ञाकारक झूठी बात को सुना १२  
 करे तो उस को समस्त सेवक दुष्ट हो जाते हैं । कंगाल और व्याजग्राहक एकट्ठे १३  
 होते हैं परमेश्वर उन दोनों की आंखें उंजियाली करता है । जो राजा धर्म से १४  
 कंगालों का न्याय करता है उस का सिंहासन सदा स्थिर रहेगा । कड़वी और दण्ड १५  
 दुष्टि देती हैं परन्तु छोड़ा हुआ बालक अपनी माता को लज्जित करता है ।  
 जब दुष्ट/बड़ जाते हैं तब अपराध बढ़ता है परन्तु धर्मी उन का गिरना देखेंगे । १६  
 अपने घेरे को ताड़ना कर और वह तुम्हें चैन देगा हां वह तेरे आत्मा को १७  
 आनन्दित करेगा । जहां दर्शन नहीं तहां लोग बिना विचार हो जाते हैं परन्तु १८  
 जो व्यवस्था को पालन करता है सो धन्य है । सेवक वचन से ताड़ना न पायेगा १९  
 क्योंकि यद्यपि वह समझे तथापि वह न मानेगा । तू देखता है कि मनुष्य अपनी २०  
 बातों से शीघ्रता करता है तो मूर्ख से उससे अधिक आगा है । जो लड़काई से २१  
 अपने सेवक को सुकुआरी से पालता है अन्त को वह उस का घेरा हुआ  
 चाहेगा । क्रोधी मनुष्य भगड़ा उभाड़ता है और कांपिन मनुष्य अपराध में घाट २२  
 नहीं । मनुष्य का अहंकार उसे नीचा करेगा परन्तु प्रतिष्ठा दीनात्मा को संभालेगी । २३  
 जो चोर का सामी है सो अपने ही प्राण का घेरो है वह स्वप्न सुनता है और २४  
 उसे प्रगट नहीं करता । मनुष्य का हर जाल लाता है परन्तु जो परमेश्वर पर २५  
 भरोसा रखता है सो रक्षित होगा । बहुत हैं जो आज्ञाकारक का रूप छुंड़ते हैं २६  
 परन्तु मनुष्य का न्याय परमेश्वर से है । अधर्मी मनुष्य धर्मियों के लिये घिन है २७  
 और खरा दुष्ट के लिये घिन ॥

### तीसरा पद्य ।

याकीद के घेरे आगुर के वचन अर्थात् भविष्यवाणी जो उस ने एतियाल हां ९  
 एतियाल और जकाल से कही ॥

निश्चय मैं मनुष्य से अधिक पशुवत हूं और मनुष्य की सो दुष्टि मुझ में नहीं । २  
 और मैं ने न दुष्टि सीखी न धर्मियों की पहिचान प्राप्त किई । कौन स्वर्ग पर ३  
 चढ़ गया और उतरा किस ने पथन को अपनी सुट्टी में एकट्ठा किया किस ने ४  
 पानियों को वस्त्र में बांधा किस ने पृथिवी के सारे सिंघानों को दृढ़ किया यदि ५  
 तू कह सके उस का नाम क्या और उस के घेरे का नाम क्या । ईश्वर का हर ५  
 एक वचन शुद्ध किया गया है जिन का भरोसा उस पर है वह उन के लिये ढाल ६  
 है । तू उस के वचन में कुछ मत मिला न हो कि वह तुम्हें दपटे और तू ६  
 झूठा ठहरे ॥

मैं ने तुझ से दो बातें चाही हैं सो जीते जो मुझ से अलग मत रख । वृथा ७  
 और झूठ को मुझ से अलग कर और मुझे न कंगालपन न धन दे मेरे पोषण मुझे ८  
 भोजन दे । न होवे कि मैं तृप्त हो जाऊं और मुझको कहूं कि परमेश्वर कौन अथवा ९  
 कंगाल होके चोरी करे और अपने ईश्वर का नाम अकारण लेऊं ॥

# उपदेशक की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

१ यरुसलम के राजा दाऊद के बेटे उपदेशक के वचन । उपदेशक कहता है  
कि व्यर्थों का व्यर्थ व्यर्थों का व्यर्थ सब व्यर्थ है ॥

३ अपने सारे परिश्रम से जो सूर्य के नीचे मनुष्य करता है उन से क्या लाभ है ।

४ एक पीढ़ी बीती जाती है और दूसरी आती है परन्तु पृथिवी सदा बनी रहती

५ है । सूर्य उदय भी होता है और सूर्य अस्त होता है और जहां से उदय हुआ

६ तहां के लिये शीघ्रता करता है । पवन दक्षिण की ओर बहती है और उत्तर

को घूम जाती है वह नित्य घूमा करती है और फिर अपने चक्र के समान फिर

७ आती है । सारी नदियां समुद्र में जा मिलती हैं तथापि समुद्र भरता नहीं जहां

८ से नदियां निकलती हैं तहां वे फिर जाती हैं । सब कार्य परिश्रम से भरा है ऐसा

कि मनुष्य कह नहीं सकता आंख देखने से और कान सुने से तृप्त नहीं होते ॥

९ जो बस्तु हुई है सोई टोवेगी और जो बना है सोई बनेगा और सूर्य के नीचे

१० कुछ नया नहीं । क्या कोई ऐसी वस्तु है जिस के विषय में कहा जाय देख यह

११ नई है हमारे आगे पुरातन समय से यह हुआ है । अगिली वस्तु का स्मरण

नहीं है और उन का स्मरण भी जो होंगे उन के बीच न रहेगा जो उन के पीछे होंगे ॥

१२ मैं उपदेशक यरुसलम में इसराएल का राजा था । और स्वर्ग के नीचे के

सारे कार्य के विषय में बुद्धि से ठूँढ़ने और खोजने को मैं ने अपना मन लगाया

यह अति कष्ट ईश्वर ने मनुष्य के पुत्रों को व्ययहार के लिये दिया है ॥

१४ सूर्य के नीचे जो काम होते हैं मैं ने उन सभी को देखा है और देखा कि

१५ सब व्यर्थ और जो का भंगट है । जो टूटा है सो सीधा नहीं हो सक्ता और

१६ जो घाट है सो गिना भी नहीं जा सक्ता । मैं ने अपने जी में कहा कि देख मैं

ने उन सब से जो मुझ से आगे यरुसलम में हो गये हैं अधिक बड़ी बुद्धि प्राप्त

१७ किई है हां मेरे अन्तःकरण ने बुद्धि और ज्ञान बहुत देखा है । और मैं ने बुद्धि

और बौद्ध्यापन और मूढ़ता जानने को मन लगाया मैं ने जान लिया कि यह भी मन

१८ का भंगट है । क्योंकि अधिक बुद्धि में बड़ा शोक है और जो ज्ञान में बढता है

सो दुःख में बढता है ॥

दूसरा पर्व ।

१ मैं ने अपने मन में कहा कि आ मैं तुझे सुख विलास से परखूंगा इस लिये

२ सुख भोग और देखा यह भी वृथा है । मैं ने हंसी के विषय में कहा कि तू

बौद्धो है और सुख विलास से कि क्या करता है ॥

३ मैं ने अपने मन से चाहा कि अपने शरीर को मद्य से खींचूं तथापि अपने

मन को बुद्धि से स्थिर रख्खा और मूढ़ता को धरने चाहा जब तों देखूं कि वह

कौन सी भली वस्तु है जिस के लिये मनुष्य के पुत्र स्वर्ग के नीचे जीवन भर

४ परिश्रम करते हैं । मैं ने अपने बड़े बड़े कार्य किये अपने लिये घर बनाये और

पर है और दाम्बरस उन्हें जिन का मन उदास है । जिसमें यह उसे पीये और ७  
अपने कंगालपन को भूल जाये और अपनी विपत्ति को फिर चेत न करे ।

अपना मुँह गूँसे के लिये खोल और उन के पुत्रों के पद के लिये जो नाश ८  
होने पर हैं । अपना मुँह खोलके धर्मन्याय कर और दीन और कंगाल के पद ९  
के लिये विचार कर ॥

धर्मी स्त्री को जौन पा सकता है क्योंकि उस का सोल सोलियों से अधिक १०  
है । उस के पति का मन चैन से उस की प्रतीति करता है कि वह लाभ का ११  
अधीन न होगा । यह अपने जीवन भर उसने भनाई करेगी और घुसाई नहीं । १२  
यह उन और सब ठंडती है और अपने छाये से बाँझ के माथ कार्य करती है । १३  
यह व्यापारियों के जहाजों के समान है अपना भोजन दूर में ले आती है । और १४  
बढ़ रात रहने हुए उठती है और अपने घराने को भोजन देती है और अपनी १५  
कन्याओं को भाग देती है । यह एक रीत की चिन्ता करती है और उसे ले १६  
लेती है अपने छाये के फल से दाम्य की बाटिका लगाती है । यह अपनी कटि १७  
को वन में कमती है और अपनी मुजाओं को पोछ करती है । उस को जान १८  
पड़ता है कि वेग व्यापार भला है रात को उस का दीपक नहीं बुझता । यह १९  
तकले पर अपने छाया चलाती है और उस के छाया अटेरन पकड़ते हैं । यह २०  
कंगाल की और अपना छाया बढ़ाती है हाँ वह अपना छाया अधीन की और  
कैलाती है । यह अपने घराने के लिये पाला में नर्गं डरती क्योंकि उस के मनस्त २१  
घराने लाल वस्त्र पहिने हैं । यह अपने लिये सूटा काढ़े हुए का आठना बनाती २२  
है उस का वस्त्र पीताम्बर और चंजती है । उस का पति प्रसिद्ध है जब वह २३  
फाटकों में देश के प्राचीनों के संग बैठना है । यह भीना कपड़ा बनाती है और २४  
चेचती है और कटिबंध व्यापारियों को सौंपती है । यह और प्रतिष्ठा उस का २५  
परिचाय है और आनेवाले दिनों में आनन्दित होगी । यह अपना मुँह दुष्टि से २६  
खोलती है और उस की जीभ में दया की व्यथम्या है । यह अपने घराने की चाल २७  
को अच्छी रीति से देखती है और आलस की रोटी नहीं खाती । उस के बालक २८  
उठते हैं और उसे धन्य कहते हैं उस का पति भी उठता है और उसे मराहता  
है । बहुवैरी घोटियों ने अच्छे कार्य किये हैं परन्तु तू उन सब से उत्तम है । २९  
मुशीलता छली है और मुन्दरता वृथा परन्तु वह स्त्री जो परमेश्वर से दूरती है ३०  
मराही जायेगी । उसे उस के छाये का फल देओ और उसी के कार्य फाटकों ३१  
में उसे मराहें ॥



और मन को अपने परिश्रम में आनन्द करने से शला नहीं यह भी मैं ने देखा कि  
 २५ ईश्वर की ओर से है । क्योंकि मुझ से अधिक कौन खा सकता और कौन मगन  
 २६ हो सकता है । क्योंकि जो जन ईश्वर के आगे भला है उसे ईश्वर वृद्धि और  
 ज्ञान और आनन्द देता है परन्तु पापी को बढोरने और ढेर करने को परिश्रम  
 देता है जिससे वह उसे देवे जो ईश्वर के आगे भला है यह भी वृथा और जीव  
 का भ्रम है ॥

### तीसरा पर्व ।

१ हर एक वस्तु के लिये एक समय है और आकाश के नीचे की हर एक वाज्झा  
 २ के लिये एक काल है । जन्मे का एक समय है और मरने का एक समय है लगाने  
 ३ का एक समय है और लगावे हुए के उखाड़ने का एक समय है । घात करने का  
 एक समय है और चंगा करने का एक समय है छाने का एक समय है और बनाने  
 ४ का एक समय है । विलाप करने का एक समय है और हंसने का एक समय है  
 ५ हाथ हाथ करने का एक समय है और नाचने का एक समय है । पत्थर फेंक देने  
 का एक समय है और पत्थर बढोरने का एक समय है मिलने का एक समय है  
 ६ और अलग होने का एक समय है । पाने का एक समय है और खाने का एक  
 ७ समय है रखने का एक समय है और फेंक देने का एक समय है । फाड़ने का  
 एक समय है और सीने का एक समय है चुप होने का एक समय है और बोलने  
 ८ का एक समय है । प्रेम करने का एक समय है और घिनाने का एक समय है संग्राम  
 करने का एक समय है और मिलाप करने का एक समय है ॥

९ जिस में मनुष्य परिश्रम करता है उस में उसे क्या लाभ है ॥

१० मैं ने उस परिश्रम को देखा है जो ईश्वर ने मनुष्य के पुत्रों को व्यवहार के  
 ११ लिये दिया है । अपने अपने समय में उस ने हर एक को सुन्दर बनाया है हां  
 उस ने संसार को उन के मन में रक्खा है यहां लों कि जो कार्य ईश्वर करता  
 १२ है मनुष्य उसे आदि से अन्त लों नहीं पा सकता । मैं जानता हूं कि उन में कुछ  
 १३ अच्छा नहीं परन्तु यह कि आनन्द होके अपने जीवन में भलाई करें । और यह  
 भी कि हर एक मनुष्य खाय पीये और अपने सारे परिश्रम की भलाई भोगे यही  
 १४ ईश्वर का दान है । मैं जानता हूं कि जो कुछ ईश्वर करता है सो सदा के लिये  
 है उस में कुछ बढ़ाया नहीं जा सकता न उसे घटाया जा सकता और ईश्वर ऐसा  
 १५ करता है जिससे मनुष्य उस के आगे डरे । जो है सो आगे था और जो होना है  
 सो आगे हुआ है और जो बीत गया ईश्वर उस का लेखा चाहता है ॥

१६ और मैं ने सूर्य के नीचे विचारस्थान भी देखा कि वहां दुष्टता थी और धर्म  
 १७ का स्थान कि वहां बुराई । मैं ने अपने मन में कहा कि ईश्वर धर्मी और दुष्ट  
 का विचार करेगा क्योंकि हर एक वाज्झा के लिये और हर एक कार्य के लिये  
 वहां एक समय है ॥

१८ मैं ने अपने मन में मनुष्य के पुत्रों की दशा के विषय में कहा कि ईश्वर उन  
 १९ का खोज करे कि उन्हें सूझ पड़े कि हम पशु हैं । क्योंकि जो मनुष्य के पुत्रों पर  
 बीता है सो पशु पर बीता है और सभी पर एक ही सा बीता है जैसा यह मरता

अपने लिये दास्य की धारियां लगाईं । मैं ने अपने लिये दाटिके और धारियां ५  
 बनाईं और उन में हर प्रकार के फलदार पेड़ लगाये । मैं ने अपने लिये जल के ६  
 कुंड बनाये जिसमें उन से उम्र बन को सींचूं जो पेड़ों को उपजाता है । मैं ने ७  
 दाम और दासियां प्राप्त किईं और घर ही के दास मेरे पास थे और जो सुक मे  
 आगे यक्ष्मलम में थे उन सभों ने अधिक छोटे छोटे चौपायों की संपात्त रक्कत ८  
 था । मैं ने चांदी और सोना भी और राजाओं और यक्ष्मजों का विशेष धन ९  
 अपने लिये बटोरा मैं ने गानेकारे और गानेकारियां और मनुष्य के पुत्रों के आनन्द  
 रानी और गानियां अपने लिये ठहराईं । सो मैं महान हुआ और सभों से जो १०  
 यक्ष्मलम में मेरे आगे थे बड़ गया मेरी बुद्धि भी मेरे ही साथ रही । और जो १०  
 कुछ मेरी आंग्यों ने चाहा मैं ने उन से न रोका मैं ने किसी आनन्दता को अपने  
 मन से न रोका क्योंकि मेरे सारे परिश्रम से मेरा मन आनन्दित हुआ और मेरे  
 सारे परिश्रम का यही फल हुआ । तब मैं ने अपने दास के सारे कार्यों को और ११  
 उस परिश्रम को जो परिश्रम मैं ने किया था देखा और क्या देखा कि सब  
 वृथा और जीव का भ्रंश और मूर्ख के नीचे कुछ लाभ नहीं ॥

तब मैं ने बुद्धि और बौद्धिमान और मूर्खता देखने को अपने को फेरा क्योंकि १२  
 जो जन राजा के पीछे आयेगा सो जो ही चुका है उसमें अधिक क्या करेगा ।  
 तब मैं ने देखा कि जैसा बंजियाला अधियारे से उत्तम है तैसी मूर्खता से बुद्धि १३  
 उत्तम है । बुद्धिमान को आंग्वं उस के सिर में है परन्तु मूर्ख अधियारे में चलता १४  
 है और मैं ने आप ही देखा कि एक ही बात उन सभों पर दीप्ति है ॥

तब मैं ने अपने मन में कहा कि जैसी मूर्ख पर दीप्ति है तैसी सुक पर भी दीप्ति १५  
 है फिर मैं अधिक बुद्धिमान क्यों हुआ तब मैं ने अपने मन में कहा कि यह भी  
 वृथा है । क्योंकि बुद्धिमान का स्मरण मूर्ख से अधिक सदा न किया जायेगा १६  
 क्योंकि जो अर्थ है सो अवैधे समयों में भुलाया जायेगा और जैसा बुद्धिमान मूर्ख  
 की नाईं मरता है । इस लिये मैं जीवन से उदास हुआ क्योंकि जो कार्य मूर्ख के १७  
 नीचे बना है सो मेरे लिये शोकसय है क्योंकि सब वृथा और जीव का भ्रंश  
 है । और मैं अपने सारे परिश्रम से जो मूर्ख के नीचे किया था उदास हुआ क्योंकि १८  
 जो जन मेरे पीछे होगा मुझे उस के लिये कोड़ना पड़ेगा । और जान जान कि १९  
 वह बुद्धिमान अथवा मूर्ख होवे तथापि वह मेरे सारे परिश्रम पर प्रभुता करेगा  
 जिन पर मैं ने परिश्रम किया है और जिन में मैं ने मूर्ख के नीचे अपने तईं बुद्धि-  
 मान दिखाया है, यह भी वृथा है ॥

इस लिये मैं ने मूर्ख के नीचे सारे परिश्रमों से अपने मन को निरास कराया । २०  
 क्योंकि एक जन है जिस का परिश्रम बुद्धि में और ज्ञान में और नीति में है २१  
 तथापि वह उस जन के लिये अपना भाग छोड़ जायेगा जिस ने परिश्रम नहीं  
 किया वह भी वृथा और बड़ी दुराई है । क्योंकि उस के सारे परिश्रम से और २२  
 मन के सारे भ्रंश से जो उस ने मूर्ख के नीचे परिश्रम किया है मनुष्य के लिये  
 क्या है । क्योंकि उस का सारा समय दुःख और उस का परिश्रम उदास था उस २३  
 का मन रात को भी चैन नहीं पाता यह भी वृथा है । मनुष्य के लिये खाने पीने २४

३ होयें । क्योंकि कार्य की बहुतार्थ से स्पष्ट होगा है और यजन की बहुतार्थ से  
 ४ सूर्य का शब्द जाना जाता है । जय तु ईश्वर के लिये मनोती माने तब पूरा  
 करने को मत टाल क्योंकि सूर्यो से यह प्रमाण नहीं है जो तु ने माना है सो पूरा  
 ५ कर । मनोती न मानें में भला है कि तु मनोती माने और पूरा न करे । अपने  
 मंद से अपने शरीर को पाप करने न दे और न दूत के आगे कह कि यह धृक्  
 ६ श्री किस लिये ईश्वर तेरे शब्द से मिमियाके तेरे हाथों के कार्य को नष्ट करे ।  
 ७ क्योंकि स्पष्ट की और यजन की बहुतार्थ में भी युवा है परन्तु तु ईश्वर में कर ।  
 ८ यदि तु इन्द्र पर अंधेर और देश में अति अिन्द्र न्याय और अितार देखे तो  
 उस घात में आश्चर्यित मत हो क्योंकि जो मन्त्र में कंचे में कंचा है सो देवता  
 ९ है और उस में कंचे भी हैं । और देश का लाभ मन्त्र के लिये है राजा भी रोग में  
 माना जाता है ॥

१० जो खाँडी में प्रीति रखता है सो खाँडी में तुपु न होगा और न वह जो बहु-  
 ११ ताई में प्रीति रखता है बहुतार्थ में यह भी युवा है । जय संपत्ति बहुतो है तो  
 उस के सर्वेष भी बहुतो है और उस के मन्त्रामियों का वडा लाभ है केवल यह कि  
 १२ वे उसे अपने प्रीति में देते । परिश्रमों को नीचे खाँडी सोना न्याय खाँडे बहुत  
 १३ मीठो है परन्तु धनवान की बहुतार्थ उसे माने न देगा । एक प्रीति युवाई है जो  
 १४ में ने सूर्य के नीचे देखी है कि धन अपने मन्त्रामियों की दानि के लिये धरा है ।  
 १५ परन्तु नेमे धन दुरे परिश्रम में नष्ट होने हैं और यह पुन जन्मागा है और उस के  
 १६ दास में कुछ नहीं । केना यह अपनी मा की कोय में आगा वीसा ही नंगा वह  
 फिर जायेगा और यह अपने दास में अपने परिश्रम का कुछ फल अपने में न ले  
 १७ जायेगा । और यह भी खाँडी युवाई है कि मन्त्र दातो में जैसा यह आया तैसा  
 १८ जायेगा और जिस ने यजन के लिये परिश्रम किया है उसे क्या लाभ है । यह  
 अपने जीवन भर भी अंधिपारे में गता है और दुःख और कोप में बहुत क्रेश  
 पाता है ॥

१९ तो मैं ने यह देखा है कि खाने पीने और सारे परिश्रम में जो सूर्य के नीचे  
 जीवन भर मनुष्य करता है जो ईश्वर उसे देता है उस का फल भोग यह भला  
 २० और शुभ है क्योंकि उस का भाग है । फिर यदि ईश्वर किसी मनुष्य को धन  
 संपत्ति देता है और उसे पराक्रम देता है कि उसे खाये और अपना भाग लेवे  
 २१ और अपने परिश्रम में आनन्द होवे तो यह भी ईश्वर का दान है । क्योंकि वह  
 अपने जीवन के दिनों को बहुत स्मरण न करेगा क्योंकि उस के मन की आनन्दता  
 में ईश्वर उस के मन को आनन्द करता है ॥

कथयां पथ्य ।

- १ एक युवाई है जो मैं ने सूर्य के नीचे देखी है और वह लोगों में प्रसिद्ध है ।
- २ कि ईश्वर ने किसी मनुष्य को धन और संपत्ति और जड़िमा दिई है यहां लो कि  
 उस के मन की सारी खाँका में छटी नहीं है तिम पर भी ईश्वर ने उसे खाने की  
 सामर्थ्य नहीं दिई है परन्तु उपरी उसे खाता है यह व्यर्थ और दुरा रोग है ।
- ३ यदि मनुष्य के सो पुत्र हो और बहुत वरस लो जीवे यहां लो कि उस के जीवन

है वैसा वह सरता है हां सभी का एक प्रवास है यहां लों कि पशुन से मनुष्य की कुछ श्रेष्ठता नहीं है क्योंकि सब वृथा है । सब एक ही स्थान को जाते हैं सब २० धूल से हैं और सब धूल में फिर जाते हैं । कि मनुष्य के पुत्रों का प्राण जो जेवर २१ जाता है और पशु का प्राण जो पृथिवी में उतरता है कौन जानता है । सो मैं २२ ने देखा कि इन्से भला कुछ नहीं कि मनुष्य अपने ही कार्य में आनन्द करे क्योंकि यह उस का भाग है क्योंकि उस के पीछे जो होगा सो उसे दिखाने का कौन लायेगा ४ चौथा पर्व ।

सो मैं फिर और सूर्य के नीचे के सारे अंधेरी को देखा और क्या देखता हूं १ कि सताये हुए का आंसू और उन का कोई शान्तिदायक नहीं और उन के २ अंधेरी के दाय में पराक्रम परन्तु उन का कोई शान्तिदायक न था । सो मैं ने ३ मृतकों की जो सर चुके हैं उन जीवतों से जो अथ जाते हैं अधिक स्तुति किई । और वह उन दोनों से अच्छा है जो अथ लों नहीं हुआ है और जिस ने सूर्य के ३ नीचे के घुरे कार्यों को नहीं देखा है ॥

फिर मैं ने सारे परियम और सारे कार्य की खगई मोर्चा कि इस बात के ४ लिये मनुष्य अपने परोसी के हाथ में पड़ता है यह भी वृथा और जीव का भंभट है । सूर्य अपने दाय समेटके अपना ही सांस खाता है । कुशल के साथ सुट्टी ५ भर भला है कि परियम और जीव के भंभट के साथ दो सुट्टी भर ॥

तब मैं फिर और सूर्य के नीचे वृथा को देखा । एक है और दूसरा नहीं हां ६ उस के न बालक हैं न भाई तथापि उस के परियम का अन्त नहीं न उस की आंग्र धन से नृप हैं न वह कहता है कि मैं किस के लिये परियम करता हूं और अपने प्राण के मुख को खाता हूं यह भी वृथा हां अति परियम है । दो एक से ८ भले हैं हम कारण कि वे अपने परियम का फल पाते हैं । क्योंकि यदि वे गिरें १० तो एक अपने संगी को उठावेगा परन्तु जो जन अकेला होके गिरता है उस पर सन्ताप क्योंकि उसे उठाने का दूसरा नहीं । फिर यदि दो एक साथ लें तो ११ गरमाते हैं परन्तु अकेला क्योंकि गरमा सक्ता है । और यदि एक उस के विरुद्ध १२ प्रवल होवे तो दो उस का साम्रा करेंगे और तेजरी रस्सी काट नहीं टूटती ॥

वृद्ध और सूर्य राजा जो चिताया न जाय उससे कंगाल और दुष्टिमान लड़का १३ भला है । क्योंकि वह बन्दीगृह से राज्य करने को आता है पर जो उस के राज्य १४ में उत्पन्न होता है सो कंगाल होता है । मैं ने सूर्य के नीचे के जीवधारियों को १५ उस दूसरे बालक सहित जो उसकी मन्ती उठेगा देखा । उन सब लोगों का अन्त १६ नहीं जिन का वह अगुआ हुआ है वे भी जो पीछे आते हैं उससे आनन्दित न १७ होंगे क्योंकि यह भी वृथा और जीव का भंभट है ॥

पांचवां पर्व ।

जय तू ईश्वर के मन्दिर में जाय तब अपना पांच चौकसी से रख और सूर्य १ के यलि चढ़ाने से सुने को अधिक विद्व हो क्योंकि वे नहीं सोचते कि हम बुरा करते हैं । अपने मुंह से उतावली मत कर और मन में ईश्वर के आगे शीघ्रता २ से मत बोल क्योंकि ईश्वर स्वर्ग पर और तू पृथिवी पर इस लिये तेरे बचन छोड़े

१५ मैं ने अपने वृथा के दिनों में यह सब कुछ देखा है कि एक धर्मी अपने  
 १६ धर्म में नष्ट होता है और एक दुष्ट अपनी दुष्टता में बढ़ता है । अति धर्मी मत  
 १७ हो और आप को अति बुद्धिमान मत कर तू क्यों उजाड़ होवे । अति दुष्ट मत  
 १८ हो और मूर्ख भी मत हो असमय में क्यों मरे । इसे ग्रहण करना तेरे लिये भला  
 है हाँ इससे भी अपने हाथ मत उठा क्योंकि जो जन ईश्वर से डरता है सोई  
 उन सभी से बच निकल आवेगा ॥

१९ बुद्धिमान को बुद्धि-नगर के दस बलवन्त से अधिक बलवन्त करती है । क्यों-  
 २० कि पृथिवी में एक धर्मी नहीं है जो भला करता हो और पाप न करे ।

२१ फिर सब बातों पर जो कही जाती हैं अपना मन मत लगा न हो कि तू सुने  
 २२ कि तेरा दास तुझे सापता है । क्योंकि तेरा मन भी बहुधा जानता है कि तू ने  
 २३ भी औरों को सापा है । मैं ने बुद्धि से यह सब परखा है मैं ने कहा कि मैं बुद्धि-  
 २४ मान होऊँगा परन्तु वह मुझ से दूर थी । जो बहुत दूर और अति गहिरा है उसे  
 कौन पा सकता है ॥

२५ मैं ने अपने मन को जानने और विचारने को और बुद्धि और कारण  
 २६ छुड़ने को और मूर्ख की दुष्टता और ढाँढ़े की मूर्खता जानने को लगाया । और  
 मैं ने उस स्त्री को मृत्यु से अति कड़ुई पाया जिस का मन फन्दा और जाल और  
 उस के हाथ बन्धन हैं जो ईश्वर के आगे भला है सो उससे बचेगा परन्तु पापी  
 २७ उससे पकड़ा जायेगा । देख उपदेशक कहता है कि कारण पाने को मैं ने एक  
 २८ एक बात को तैला और मैं ने यह पाया । जिसे अब भी मेरा प्राण खोजता है  
 पर मैं नहीं पाता सहस्र मनुष्य में से मैं ने एक पाया है परन्तु इन सभी में एक  
 २९ स्त्री को न पाया । देख केवल यही पाया है कि ईश्वर ने मनुष्य को खरा बनाया  
 परन्तु उन्हें ने बहुत सी युक्ति निकाली हैं ॥

आठवां पर्व ।

१ बुद्धिमान के तुल्य ज्ञान है और बात का अर्थ ज्ञान जानता है मनुष्य की  
 बुद्धि उस के मुँह को प्रकाश करती है और उस के मुँह को दृढ़ता पलट जायेगी ।  
 २ मैं तुझे कहता हूँ कि तू ईश्वर की किरिया के कारण राजा की आज्ञा को  
 ३ पालन कर । उस की हृष्टि से अलग होने को उतावली मत कर और दुरी बात  
 ४ पर खड़ा मत हो क्योंकि जो वह चाहेगा सो करेगा । जहाँ राजा का बचन है  
 तहाँ राज्य है और ज्ञान उसे कहेगा कि तू यह क्या करता है ॥

५ जो आज्ञा को मानता है सो विपत्ति न जानेगा बुद्धिमान का मन समय को  
 ६ और विचार को वृक्षता है । क्योंकि हर एक ठहराए हुए का समय है और विचार  
 ७ है इस लिये मनुष्य का दुःख उस पर बढ़ा है । क्योंकि जो कुछ होगा सो वह  
 नहीं जानता है क्योंकि उसे ज्ञान कह सक्ता है कि कब होगा ॥

८ कोई मनुष्य आत्मा पर पराक्रम नहीं रखता कि आत्मा को रख छोड़े और  
 मरने के दिन में भी पराक्रम नहीं रखता और उस लड़ाई में बचाव नहीं और  
 दुष्टता अपने स्वाभियों को न बचावेगी ॥

९ यह सब मैं ने देखा है और अपने मन को सूर्य के नीचे के सारे कार्यों पर

के दिन बहुत धैर्य और उस का मन भलाई से न भरे और वह गाढ़ा भी न जाय तो मैं कहता हूँ कि गर्भपात उन्मे भला है । क्योंकि वह वृथा आता है और ४  
अंधियारे में जाता है और उस का नाम अंधियारे से ठाँपा जायेगा । उस ने सूर्य ५  
को भी न देखा न जाना यह अगिले से अधिक मुख पाता है । और यदि वह ६  
दो सहस्र घरस जीवे तभी कुछ मुख नहीं देखता क्या सब के सब एक ही स्थान  
को नहीं जाते ॥

मनुष्य का सारा परिश्रम उस के मुँह के लिये है तिस पर भी उस का जी नहीं ७  
भरता । क्योंकि बुद्धिमान सूर्य से क्या अधिक रखता है और दुःखी जो जीवतां ८  
के आगे चलने को जानता है सो क्या रखता है । आँखों का देखा हुआ मन के ९  
भ्रमने से अच्छा है वह भी व्यर्थ और जीव का संभट है ॥

जो हुआ है उस का नाम टो टुका और जाना गया कि वह मनुष्य है वह १०  
अपने से बलवान का सामना न करे । क्योंकि वृथा बढ़ानेवाली बहुत वस्तु हैं ११  
मनुष्य को क्या फल है । क्योंकि मनुष्य जो अपने जीवन के सारे दिन विनश्वर १२  
छाया के समान वृथा गंवाता है कौन जानता है कि मनुष्य के लिये क्या भला है  
क्योंकि मनुष्य को कौन कह सकता है कि सूर्य के नीचे उस के पीछे क्या होगा ॥

सातवां पद्य ।

घटुमूल्य सुगंध से सुनाम भला है और जन्म दिन से मरने का दिन अच्छा है ॥ १  
विलाप के घर जाना जेवनार के घर में जाने से भला है क्योंकि वह घर एक २  
जन का अन्त और वह जो जीता है अपने मन में सोचेगा । हँसो से शोक भला ३  
है क्योंकि मुँह की मलीनता से मन सुधर जाता है । बुद्धिमानों का मन विलाप ४  
के घर में है परन्तु मूर्खों का मन सुख अभिलाष के घर में ॥

बुद्धिमान की दृष्टि सुना मनुष्य के लिये मूर्खों के गीत सुने से अति भला है । ५  
क्योंकि जैसा हांडी के नीचे काँटों का पटपटाना तैसा मूर्खों का हँसना है वह ६  
भी व्यर्थ है ॥

क्योंकि अंधेर करना बुद्धिमान को धाँड़ना करता है और घूस मन को नाश ७  
करता है ॥

हर एक वस्तु का अन्त उस के आरंभ से भला है और संतोषी अहंकारी से ८  
भला है ॥

अपने मन में शीघ्र कोपित मत हो क्योंकि मूर्खों की गोद में क्रोध बसता है ॥ ९  
मत कह कि अगिले दिन इन से क्यों भले थे क्योंकि तू इस के विषय में बुद्धि १०  
के साथ नहीं बूझता ॥

बुद्धि अधिकार के साथ भली है और सूर्य के दर्शी के लिये लाभ है । क्योंकि ११  
बुद्धि एक आड़ है और रोकड़ एक आड़ है परन्तु ज्ञान की उत्तमता यह है कि १२  
अपने स्वामियों को जीवन देती है ॥

ईश्वर का कार्य सोच क्योंकि जो उस ने सीधा किया है उसे टेढ़ा कौन कर १३  
सकता है । मुदशा के दिन मैं आनन्दित हो परन्तु दुर्दशा के दिन मैं सोच कि ईश्वर १४  
ने उन्हें भी उस के सम्मुख रक्खा है जिससे मनुष्य न जाने कि आगे क्या है ॥



- ७ अपना मार्ग ले आनन्द से अपनी रोटी खा और मगन मन से अपना दाखरस  
 ८ पी क्योंकि अब ईश्वर तेरे कार्य को ग्रहण करता है । तेरा वस्त्र सदा उजला  
 ९ होवे और तेरे सिर की चिकनाई कधी न घटे । अपनी प्रिय पत्नी के साथ अपने  
 १० धर्म के जीवन के सारे दिन जो उस ने सूर्य के नीचे तुझे दिये हैं अपने वृथा के  
 ११ सारे दिन आनन्द से रह क्योंकि जीवन में और सूर्य के नीचे के परिश्रम में यही तेरा  
 १२ भाग है । जो कुछ तेरे हाथ से हो सके सो अपनी सामर्थ्य भर कर क्योंकि समाधि  
 १३ में जहां तू जाता है तहां न कार्य है न युक्ति न ज्ञान न बुद्धि है ।  
 १४ मैं फिर आया और सूर्य के नीचे देखा कि चालाकों के लिये दांव और बल-  
 १५ वन्त के लिये संग्राम नहीं और न बुद्धिमानों के लिये रोटी और न ज्ञानियों के  
 १६ लिये धन और न गुणियों के लिये कृपा परन्तु समय और दोनद्वार इन सभी पर  
 १७ छीता है । क्योंकि मनुष्य भी अपना समय नहीं जानता जैसे मकलियां घुरे जाल  
 १८ में पकड़ी जाती हैं और जैसे पंखी फन्दे में बन्धाय जाते हैं तैसा ही घुरे समय में  
 १९ मनुष्यों के सन्तान बन्धाय जाते हैं जब अज्ञानक उन पर पड़ती है ।  
 २० यह भी बुद्धि में ने सूर्य के नीचे देखी है और वह मेरे लिये बड़ी है ।  
 २१ एक छोटा नगर था और उस में थोड़े मनुष्य थे और उस के विरोध में एक महा-  
 २२ राज ने आके उसे घेर लिया और उस के सन्मुख बड़े बड़े गढ़ बनवाये । अब  
 २३ उस में एक कंगाल बुद्धिमान मिला जिस ने अपनी बुद्धि से उस नगर को बचाया  
 २४ तिस पर भी उस कंगाल मनुष्य को किसी ने स्मरण न किया । तब मैं ने कहा कि  
 २५ बल से बुद्धि अच्छी है तिस पर भी कंगाल की बुद्धि की निन्दा होती है और  
 २६ उस की बात सुनी नहीं जाती ।  
 २७ बुद्धिमानों की धीमी बातें जो उन के चिल्लाने से सूर्यों पर प्रभुता करती हैं  
 २८ अधिक सुनी जाती हैं ।  
 २९ संग्राम के हथियार से बुद्धि अच्छी है परन्तु एक पापी बहुत सी भलाई को  
 ३० नाश करता है ।

दसवां पृष्ठ ।

- १ जैसा सूई माछी से गंधी का तेल बसाता है तैसा ही तनिक मूढ़पना उस के  
 २ लिये जो बुद्धि और प्रतिष्ठा में प्रसिद्ध है ।  
 ३ बुद्धिमान का मन उस की दाहिनी ओर है परन्तु मूर्ख का मन उस के  
 ४ बाईं ओर ।  
 ५ हां मूर्ख जब मार्ग में भी जाता है उस का मन घट जाता है और वह सब  
 ६ से कहता फिरता है कि मैं मूर्ख हूँ ।  
 ७ जो अध्यक्ष का मन तेरे विरुद्ध उठे तो अपना स्थान मत छोड़ क्योंकि मान  
 ८ लेना बड़े बड़े दोष को शांति करता है । एक बुराई है जो मैं ने सूर्य के नीचे  
 ९ देखी एक चूक की नाईं जो अध्यक्ष से निकलती है । कि मूर्खता महात्मा पर  
 १० धरी है और धनी नीच स्थान पर बैठता है । मैं ने सेवकों को घोड़ों पर और  
 ११ अध्यक्षों को सेवकों की नाईं भूमि पर चलते देखा है ।  
 १२ जो गड़हा खोदता है सो उस में गिरेगा और जो बाड़ा तोड़ता है उसे सांप डंसेगा ।

लगाया है ऐसा समय है कि एक जन दूसरे जन पर अपनी ही धुराई के लिये प्रभुता करता है । और इसी रीति से मैं ने दुष्टों को शाहू जाते देखा और पवित्र १० म्यान से आये गये थे और जिस नगर में उन्हीं ने यह कार्य किया था उस में वे दिवसाये गये यह भी दृष्टा है ॥

उन कारण से कि दुरे धर्म के लिये बंड की आज्ञा शीघ्र नहीं दिई जाती ११ इस लिये मनुष्यों के पुत्रों के मन दुगड करने की और दौड़ते हैं । यद्यपि पापी १२ नौ बार धुराई करे और उस का समय बढ़ जाय तथापि मैं निश्चय जानता हूं कि उन्हीं का भला होगा जो ईश्वर से दूरते हैं जो उन के आगे दूरा करने हैं । परन्तु दुष्ट का भला न होगा और यह क्राया के समान अपने दिन न बढ़ावेगा १३ क्योंकि वह ईश्वर के आगे नहीं दूरता ॥

पृथिवी पर एक दृष्टा जिंड जाती है कि धर्मी पर दुष्टों के कार्य के समान १४ दीक्षा है फिर दुष्टों पर धर्मी के कार्य के समान दीक्षा है मैं ने कहा कि यह भी दृष्टा है । तब मैं ने मुख बिलान का मगाया इस कारण कि सूर्य के १५ नीचे मनुष्य को धर्म अधिक भला नहीं कि ग्राये पाये और आनन्द करे क्योंकि उस के जीवन के दिनों में जो ईश्वर ने उसे सूर्य के नीचे दिये हैं यही उस के साथ रहेगा ॥

जब मैं ने अपने मन को बुद्धि जानने को और पृथिवी पर जो कार्य किया १६ गया है देखने को लगाया क्योंकि ऐसा भी है कि रात दिन उस की आंखें नांद नहीं देखनीं । तब मैं ने ईश्वर के गारे आर्यों को देखा कि मनुष्य उन कार्य १७ को जो सूर्य के नीचे किया जाता है नहीं जान सकता है इस कारण मनुष्य यद्यपि उसे परियस करके दूँके तथापि न पावेगा हां बुद्धिमान भी जो उसे जानने चाहे तब पर भी उसे न पावेगा ॥

नवां पृष्ठ ।

क्योंकि इन बातों के लिये मैं ने मन लगाया अर्थात् सभी का वर्णन करने १ को कि धर्मी और बुद्धिमान और उन के कार्य ईश्वर के हाथ में हैं अपने आगे की गारी बातों में कोई मनुष्य प्रेम अथवा दूर को नहीं जानता । सब के लिये २ सब समान हैं धर्मी पर और दुष्ट पर भले और पवित्र और अपवित्र पर जो बलि चढ़ाता है उस पर और जो बलि नहीं चढ़ाता है उस पर एक ही बात दीक्षी है जैसा भला तैसा दुरा जैसा किरियक तैसा अकिरियक । सूर्य के नीचे सब जो ३ किया जाता है उस में यह दुरा है कि जब पर एक ही बात दीक्षी है हां मनुष्य के पुत्रों का मन भी धुराई से भरा है और जब नां जीते हैं तब लो उन के मन में दौड़भापन है और उस को पीछे मृतकों में जाते हैं । क्योंकि जो जीवतों में ४ सिला है उस के लिये आशा है इस लिये कि जीता कुत्ता मरे मिट्ट से भला है । क्योंकि जीते जानते हैं कि हम सर्वों परन्तु मृतक कुछ भी नहीं जानते और फिर ५ उन का प्रतिफल नहीं क्योंकि उन का स्मरण भी बिस्मर जाता है । उन का प्रेम ६ भी उन का दूर भी उन की डाढ़ भी अब नष्ट हैं फिर सदा के लिये सूर्य के नीचे की वस्तुन में उन का कुछ भाग नहीं है ॥

## धारकवां पर्व ।

१ और अपनी तन्हाई के दिनों में अपने मिरजनगर को स्मरण कर जब नौ  
 २ बुराई के दिन और वे वरग न आ लें जब तू कहेगा कि इन में सुख आनन्द  
 ३ नहीं है । जब लों सूर्य अथवा उजियाला अथवा चन्द्रमा अथवा तारे अंधियारे  
 ४ न होवें और बरसने के पीछे मेघ फेर न आवें । उस दिन में कि जब घर के रख-  
 ५ वाल अर्थगने लगेंगे और पलकन्ता जन कुचड़े होवेंगे और पिगघैये घोड़े के कारण  
 ६ घट जायेंगे और जो खिड़की से देखते हैं धुंधले हो जायेंगे । और गली के  
 ७ किवाड़े बन्द हो जायें जब लकड़ी का शब्द धीमा हो जायेगा और मनुष्य धंकी के  
 ८ शब्द के करते ही उठेगा और गान की सारी कन्या घट जायेंगी । लोग उंची  
 ९ वस्तु से भी डरेंगे और मार्ग में भय होगा और दादास का पैड़ तुच्छ होगा और  
 १० फनगा भारी होगा और इच्छा घट जायेगी क्योंकि मनुष्य अपने सनातन के घर  
 ११ को जानेवाला है और बिनापी गली गली फिरनेवाले हैं । पहिले वस्से कि चांदी  
 १२ की डोरी खोली जाय और सोने की कटोरी फट जाय और सोते में चढ़ा तोड़ा  
 १३ जाय और कुंड में रदट टूट जाय । तब धूल पृथिवी में फिर जायेगी जैसी थी  
 १४ और आत्मा ईश्वर पास फिर जायेगा जिस ने उसे दिया है ॥

१५ उपदेशक कहता है वृथा पर वृथा सब वृथा है । और इन के उपरान्त जैसा  
 १६ कि उपदेशक बुद्धिमान था उस ने लोगों को हर प्रकार का ज्ञान सिखाया हां मन  
 १७ लगाया और खोज खोजके बहुत से दृष्टांतों को सिद्ध किया । उपदेशक ने मन-  
 १८ भावनी बात पाने को झूठा और लिखा हुआ ठीक और सत्य बचन है । बुद्धिमानों  
 १९ के बचन अरई और उन कीलों की नाई हैं जो सभाओं के स्वामियों से दृढ़ किई  
 २० गई हैं जिन को एक ही गड़रिये ने एकट्टे किया है । और इन के उपरान्त है  
 २१ मेरे बेटे इन बातों से सीख बहुत पुस्तक बनाने का अन्त नहीं और बहुत पढ़ना  
 २२ शरीर को थकाता है ॥

२३ अब आओ सारी बातों का अभिप्राय मुने ईश्वर से हर और उस की आज्ञा  
 २४ पालन कर क्योंकि यह सब मनुष्य के लिये अवश्य है । क्योंकि ईश्वर हर एक  
 २५ कार्य का और हर एक गुप्त बात का न्याय करेगा चाहे भला हो चाहे बुरा ॥

## गीतों का गीत ।

## पहिला पर्व ।

१ सुलेमान के गीतों का गीत । वह अपने मुंह के चूमें से मुझे चूमे क्योंकि  
 २ तेरा प्रेम दाखरस से भला है । तेरे सुगंधों के बास के कारण तेरा नाम सुगंध  
 ३ के समान उड़ेला हुआ है इस लिये कन्या तुझ से प्रेम रखती हैं । मुझे खींच हम  
 ४ तेरे पीछे दौड़ेंगी राजा मुझे अपनी कोठरी में लाया है हम तुझ से आनन्द और  
 ५ मगन होंगी हम तेरे प्रेम को दाखरस से अधिक स्मरण करेंगी खरे जन तुझ से  
 ६ प्रेम रखते हैं ॥

जो जन पायों की टारता है सो उन से चोट पावेगा और जो लकड़ी चीरता है उसी से लोखिस में पड़ेगा ॥

यदि लोहा भोता होवे और सान पर उस की धार न चढ़ावे तो अधिक बल १०  
आवश्यक है परन्तु बताने के लिये बुद्धि लाभ है ॥

निश्चय मंत्र बिना सांप डंसेगा और बड़बड़िया उससे अच्छा नहीं । बुद्धिमान ११  
के मुंह के बचन कृपा हैं परन्तु मूर्ख के हाँठ उसी को लील जायेंगे । उस के मुंह १२  
के बचन का आरंभ मूर्खता है और उस के मुंह का अन्त नटखटी और चौड़हापन  
है । मूर्ख भी बचन बढ़ाता है मनुष्य नहीं कह सक्ता कि क्या होगा और जो १३  
कुछ उस के पीछे होगा उसे कौन कह सक्ता है । मूर्खों का परिग्रम उन में से १४  
हर एक को ब्रह्मा डालता है क्योंकि वह नगर में जाने को नहीं जानता ॥

हे देश जय तेरा राजा बालक हो और तेरे अध्यक्ष विद्वान को खाते हैं तब १५  
तुझ पर गंताप । हे देश जय तेरा राजा कुलीनों का चेला हो और तेरे अध्यक्ष १६  
समय पर बल के लिये खाते हैं और मतवाले होने को नहीं तू धन्य है ॥

अति आलस के कारण लोड़ाई घटी जाती है और छाया के आलस के मारे १७  
घर गिर पड़ता है ॥

आनन्दता के लिये जेवनार होनी है और दाखरस जीवन को मगन करता १८  
है परन्तु रोकड़ सब कार्य की है ॥

राजा को अपने मन में भी साध न दे और धनी को अपने गयनस्यान में साध न २०  
दे क्योंकि आकाश का पंछी शब्द पहुँचावेगा और पर्यन्त बात कह देगा ॥

ग्यारहवाँ पर्व ।

पानियों के ऊपर अपनी रोटी फेंक दे क्योंकि बहुत दिनों के पीछे तू उसे पावेगा । १  
सात जन को हाँ आठ को भी भाग दे क्योंकि पृथिवी में जो जो विपत्ति होगी २  
सो सो तू नहीं जानता । यदि मेघ वर्षा से भरे हैं नव वे पृथिवी पर कृष्ण होते हैं ३  
और यदि दक्खिन अथवा उत्तर की ओर पेड़ गिरे तो जहाँ पेड़ गिरेगा तहाँ पड़ा ४  
रहेगा । जो वायु का पारखी है सो न बोधेगा और जो मेघों को देखता है सो ५  
न लवेगा । तू जैसे पवन के मार्ग को और गर्भिणी की काख में के छाड़ बढ़ने को ६  
नहीं जानता तैसा तू ईश्वर के कार्य को नहीं जानता जो सब बनाता है । विद्वान ७  
को अपना बीज दो और साँझ को भी अपना छाथ मत उठा क्योंकि तू नहीं ८  
जानता कि कौन ठीक होगा यह अथवा वह अथवा दोनों के दोनों भले होंगे ॥

निश्चय उल्लिखला सीठा है और आँखों का सूर्य का दर्शन उत्तम है । ९  
क्योंकि यदि मनुष्य बहुत दिन जीवे और उन सभी में आनन्द करे तथापि अंधि- १०  
यारे दिनों को चेत रखे क्योंकि बहुत होंगे सब जो जाता है सो बृथा है ॥

हे तरुण जन अपनी तरुणाई में मगन हो और तेरी तरुणाई के दिनों में तेरा १  
मन तुझे आनन्दित करे और अपने मन के साँगी पर और अपनी आँखों की दृष्टि २  
में चल परन्तु जान रख कि इन सारी बातों के लिये ईश्वर तेरा विचार करेगा ।  
और अपने मन से शोक को दूर कर और अपने शरीर से बुराई निकाल डाल १०  
क्योंकि लड़काई और तरुणाई बृथा है ॥

- ११ चली आ । क्योंकि देख जाड़ा थीत गया दरया हो गई और जाती रही ।  
 १२ पृथिवी पर फूल दिखाते हैं दाख के बटोरने का समय आया है और हमारे देश  
 १३ में कपोत का शब्द सुना जाता है । गूलरपेड़ फलता है और अंगूर फूलते और  
 १४ उन से सुगंध निकलती है हे मेरी प्रिया सो उठ हे मेरी सुन्दरी चली आ । हे मेरे  
 कपोत चटान की दगरे में और करारे की ओमल में अपना रूप मुझे दिखा  
 अपना शब्द मुझे सुना क्योंकि तेरा शब्द मीठा और तेरा रूप सुन्दर है ॥
- १५ लोमड़ियों को छोटी छोटी लोमड़ियों को जो लता को नष्ट करती हैं हमारे  
 लिये पकड़ लो क्योंकि हमारी लता पर कोमल अंगूर लगे हैं ॥
- १६ मेरा प्रिय मेरा है और मैं उस की छूँ बह सौमनों में चगाता है ॥
- १७ जब दिन ठले और छाया जाती रहे तब हे मेरे प्रिय लौट और हरिण की  
 और पर्वतों के दरारों के युवा हरिण की नाईं हो ॥

## तीसरा पर्व ।

- १ रात को मैं ने अपने बिक्राने पर अपने प्राण प्रिय को खोजा मैं ने उसे खोजा  
 २ पर न पाया । अब मैं उठूंगी और नगर में गली गली फिरंगी और चौड़े मार्गों  
 ३ में अपने प्राण प्रिय को ढूँढ़ूंगी मैं ने उसे ढूँढ़ा पर उसे न पाया । रखवाले जो  
 ४ नगर में फिरते हैं मुझे मिले उन से मैं ने पूछा कि तुम ने मेरे प्राण प्रिय को देखा  
 ५ है । जब मैं उन से तनिक आगे बढ़ गई थी तो अपने प्राण प्रिय को पाया मैं  
 ने उसे पकड़ा और उसे न छोड़ा जब लों मैं उसे अपनी माँ के घर में और अपनी  
 जननी की कोठरी में न ले गई ॥
- ६ हे यरूसलम की पुत्रियाँ मैं तुम्हें हरिण और जंगली हरिणियों की किरिया  
 देता हूँ कि तुम मेरी प्रिया को मत उठाओ और मत जगाओ जब लों बह  
 आप न चाहे ॥
- ७ यह कौन है जो धूँधों की उठान की नाईं मुर और लोवान और गंधी के  
 ८ सारे गंधरस द्रव्य से सुगंधित होके वन से आती है । देखो सुलेमान का बिक्राना  
 ९ उस के आसपास इसराएल के वीरों में से साठ वीर हैं । ये सब के सब खड्ग-  
 धारी और संग्राम में निपुण हर एक जन रात के डर के सारे अपनी जाँघ पर तलवार  
 १० लटकाये हुए है । सुलेमान राजा ने अपने लिये लुवनान के काष्ठ का एक चौ-  
 ११ पाला बनवाया । उस ने उस के खंभे चाँदी के बनवाये उस के उसीसे सोने के  
 उस का चंदवा बैजनी बनवाया और उस का भीतरवार यरूसलम की पुत्रियों के  
 १२ प्रेम से बिक्रिया हुआ था । हे सैहून की पुत्रियाँ निकलके सुकुट पहिरे हुए सुले-  
 मान राजा को देखो जो उस की माँ ने उस के ब्याह के दिन में और उस के  
 मन की मगनता के दिन में उसे पहिराया ॥

## चौथा पर्व ।

- १ लो हे मेरी प्रिया तू सुन्दरी है लो तू सुन्दरी है तेरी ओढ़नी के नीचे तेरी  
 आँखें कपोतों की सी हैं तेरे बाल बकरियों के भुँड की नाईं हैं जो जिलिश्द के  
 २ पहाड़ की घाटी पर बैठती हैं । तेरे दाँत कतरे हुए भुँड की नाईं हैं जो नहान  
 से निकला हर एक उन में से जोड़ा जनती हैं और उन में कोई बाँध नहीं

हे यकसलम की पुत्रियों में काली हूँ परन्तु सुन्दरी हूँ कीदार के तंतुओं की ५  
नाईं सुलेमान के शोभलों की नाईं । मुझे मत देखो क्योंकि मैं काली हूँ इस ६  
कारण कि मूर्ख मुझ पर पड़ा है मेरी माँ के बालक मुझ से बहुत रिमियाय उन्हीं  
ने मुझ से दाख की दारी की रखवाली कावाई परन्तु मैं ने अपने ही दाख  
की दारी की रखवाली न कीई ॥

हे मेरे मन के प्रिय मुझे बताइये कि आप कहां चरते हैं मध्यान्ह में कहां ७  
विश्वास देते हैं क्योंकि मैं उस की नाईं क्यों वनूं जो आप के संशयों के झुंड के  
अलंग के आइ में हों ॥

हे तू जो स्त्रियों में अति सुन्दरी है जो तू न जाने तो झुंड के पराचिन्दों ८  
पर जा और अपने मेमों को गड़रियों के तंतुओं के लग चरा । हे मेरी प्रिया मैं ९  
ने तुम्हें फिरकन के ग्यों के छोड़ों की जया में उपसा टिई है । तेरे गाल गहनों १०  
की पांती में और तेरा गला कीकरो से गोभित है । हम तेरे लिये साने के दार ११  
चांदी की छुंटी मोहित बनावेंगे ॥

जय जो राजा अपने मंच पर है जय जो मेरी जटामासी से सुगंध निकलती १२  
है । मेरा प्रिय तेरे लिये गंधरम की पोतली है वह रात भर मेरी छातियों के १३  
मध्य में पड़ा रहेगा । मेरा प्रिय मेरे लिये सेनजदी के दाख की दारी के कपूर १४  
का गुच्छा है ॥

हे मेरी प्रिया देख तू सुन्दरी है देख तू सुन्दरी है तेरी आंखें कपातों की १५  
सी हैं ॥

हे मेरी प्रिया देख तू सुन्दरी है हां मनभावनी या हमारा विह्वाना भी दूरा १६  
है । हमारे घर के लट्टे देवदार के और धरन मेरी की हैं ॥ १७

दूसरा पर्व ।

मैं शाहन की सेवती और ताराइयां का सौसन हूँ । लैसा सौसन कांटों में १  
तैसी मेरी प्रिया पुत्रियों में है ॥ २

जैसा वन के पेड़ों में सेव का पेड़ तैसा मेरा प्रिय पुत्रों में मैं छड़ी आनन्दता ३  
से उस की छाया तले बैठी और उस का फल मेरे तालू में मीठा था । वह मुझे ४  
दाखरश के घर में ले गया और उस का गंढा मेरे ऊपर प्रेम था । दाख की ५  
टिक्रियों से मुझे संभालो सेव से सुक मगन करो क्योंकि मैं प्रेम से रोगी हूँ । उस ६  
का दायां छाथ मेरे मिर के नीचे है और उस का दाहिना छाथ मुझे समेटता है ॥

हे यकसलम की पुत्रियों में वन के हरिण और हरिणियों की किरिया तुम्हें ७  
देती हूँ कि मेरे प्रिय को मत उठाओ और मत जगाओ जब जो वह आप  
न चाहे ॥

मेरे प्रिय का शब्द देखो वह पर्वतों पर उछलते और टीलों पर कुदक्का ८  
सारते आता है ॥

मेरा प्रिय हरिण की अथवा युवा हरिण की नाईं है देखो वह हमारी भीत ९  
के पीछे खड़ा है वह खिड़कियों से देखता है शंकरियों से से आप को दिखाता  
है । मेरा प्रिय यह कहके मुझ से बोला कि हे मेरी प्रिया हे मेरी सुन्दरी उठ १०



७ उत्तर न दिया । रखवालों ने जो नगर में फिरते थे सुभे पाया उन्हें ने सुभे मारा  
८ और घायल किया भीतों के रखवालों ने सुभ मे मेरा घूंघट ले लिया । हे यरू-  
सलम की पुत्रियों में तुम्हें किरिया देती हूँ जो मेरे प्रिय को पाओ तो उसे कहियो  
कि मैं प्रेम की रोगी हूँ ।

९ तेरा प्रिय और प्रिय से अधिक क्या है हे सारी स्त्रियों से सुन्दरी तेरा प्रिय  
और प्रिय से अधिक क्या है जो तू हमें यों किरिया देती है ॥

१० मेरा प्रिय गोरा और लाल है दस सच्छों में प्रसिद्ध । उस का मिर चोखा  
११ सोना है उस की अलकें गुच्छे और काले कौचे की नाईं हैं । उस की आंखें उन  
कपोतों की नाईं हैं जो पानी की नदियों पर हैं दूध से धोई हुई और भरी पुरी ।  
१२ उस के गाल सुगंध द्रव्य की कियारी की और फूलों के गुम्मत की नाईं उस के  
१३ होठ सौसन की नाईं सुवास गंधरस टपकाते हैं । उस के हाथ पद्मराग मणि जड़ी  
हुई सोने की आंगूठियों की नाईं हैं उस का घेठ नीलकान्त मणि से मढ़े हुए बसकते  
१४ हाथीदांत की नाईं हैं । उस के पांख चोखे सोने की चूलों पर बैठे हुए मर्मर  
के खंभों की नाईं उस का रूप लुघनान की नाईं और देवदारु पेड़ों की नाईं उत्तम ।  
१५ उस का तालू अति मीठा है हां यह सर्वथा प्रिय है हे यरूसलम की पुत्रियों यही  
मेरा प्रिय और यही मेरा मित्र है ॥

छठवां पद्य ।

१ हे स्त्रियों में अति सुन्दरी तेरा प्रिय कहा गया तेरा प्रिय किधर सुड़ा जो  
तेरे संग हम भी उसे ढूँढ़ें ॥

२ मेरा प्रिय अपनी वारी में सुगंध द्रव्य की कियारियों में वारियों में चरने  
३ को और सौसन घटोरने को उतर गया । मैं अपने प्रिय को हूँ और मेरा प्रिय मेरा  
है वह सौसनों के मध्य चराता है ॥

४ हे मेरी प्रिया तू तरजा की नाईं रूपयती है यरूसलम की नाईं सुन्दरी और  
५ ध्वजा सहित की नाईं भयावनी है । अपनी आंखें सुभ से अलग कर क्योंकि उन्हें  
ने सुभे मोह लिया है तेरा बाल चकरियों के भुंड की नाईं है जो जिलिअद के  
६ पहाड़ के उतार पर बैठती हैं । तेरे दांत भेड़ियों के भुंड की नाईं जो नद्यान से  
निकलीं जिन में से हर एक जोड़ा जोड़ा जनती हैं और उन में से एक भी बांभ  
७ नहीं । तेरी ओढ़नी के नीचे तेरी कनपटियां अनार के टुकड़े की नाईं हैं ॥

८ साठ रानियां और अस्सी सहेलियां और अगणित कुमारियां हैं । पर मेरा  
कपोत मेरा शुद्ध एक ही है वह अपनी माता की एक ही है अपनी जननी की  
लाइली है पुत्रियों ने उसे देखा और उसे धन्य कहा हां रानियां और सहेलियां  
९ और उन्हें ने उसे सराहा । यह कौन है जो बिहान के तुल्य चन्द्रमा के समान  
सुन्दरी सूर्य की नाईं निर्मल और ध्वजा सहित की नाईं भयावनी दिखाई  
देती है ॥

११ मैं तराई के फूलों को देखने को और कि यदि लता लहलहाती हैं और  
१२ अनार में कली लगी हैं मैं देखने को रगोज की वारी में उतर गया । मैं जानता  
न था पर मेरे प्राण ने सुभे मेरे आंकित लोगों के रथों पर बैठाया ॥

है । तेरे होठ लाल सूत की नाई हैं तेरा मुँह मुन्दर है और तेरी कनपटियाँ तेरे ३  
 अलकों के नीचे अनार के टुकड़े की नाई हैं । तेरा गला डाऊड के गुम्मत की ४  
 नाई है जो अस्त्र के लिये बनाया गया उस पर सबस डालें लटकाई गई हैं सब ५  
 महावीरों की डालें । तेरे दो स्तन दो तरुण हरिण की नाई हैं जो जोड़ा होखें ५  
 और मौसनों में चरते हैं । दिन ठलने और छाया के बढने लों में गंधरस के पर्वन ६  
 पर और लोचन के टीले लों जाऊंगा । हे मेरी प्रिया तू निर्धार सुन्दरी है और ७  
 सुभ में कोई पय नहीं ॥

हे दुल्लिन लुघनान से मेरे संग लुघनान से मेरे संग आ अमानः की चौटी ८  
 पर से शनीर और दरमून की चौटी पर से सिंघों की माँदों में से और चीतों के ९  
 पर्वतों में से देख । हे मेरी बहिन हे मेरी पत्नी तू ने मेरे मन को मोह लिया ९  
 अपनी एक आँख से अपने गले की एक सीकर से मेरे मन को मोह लिया । हे १०  
 मेरी बहिन हे मेरी पत्नी तेरे प्रेम कैसे सुन्दर हैं दाग्रस से तेरा प्रेम कितना ११  
 भला है और तेरे सुगंध के वास सारे सुगंधों से । हे मेरी पत्नी तेरे होठ मधु के १२  
 कूते की नाई टपकते हैं तेरी जीभ तले मधु और दूध है और तेरे वस्त्र की वास १३  
 लुघनान की वास की नाई है । मेरी बहिन मेरी पत्नी एक घेरी हुई चारी बंधा १४  
 हुआ सोता और छाप किया हुआ भग्ना है । तेरे पौधे अनारों की चारी हैं जिन १५  
 में मनभावने फल हैं कपूर और जटामासी सहित । जटामासी और केसर और १६  
 गौरगाऊ और दारचीनी और लोचन के सारे पेड़ सहित गंधरस और गलुआ सारे १७  
 उत्तम सुगंध द्रव्य सहित । चारियों का सोता अमृत जल का कूआँ और लुघनान १८  
 से धारे ॥

हे उत्तर की पथन जाग और हे दक्खिन की पथन आ मेरी चारी पर बह १९  
 निमते उस का सुगंध द्रव्य सहित अथ मेरा प्रिय अपनी चारी में आये और अपने २०  
 मनभावन फल खाय ॥

#### पाँचवां पद्य ।

हे मेरी बहिन हे मेरी पत्नी मैं अपनी चारी में आया हूँ मैं ने अपना गंधरस १  
 और सुगंध द्रव्य समेत बटोरा है मैं ने अपने मधु के साथ अपना मधु कना २  
 खाया है मैं ने अपने दूध के साथ अपना दाखरस पीया है हे मित्रो खाओ पीओ ३  
 हे प्रिय बहुताई से पीओ ॥

मैं मोती हूँ पर मेरा मन जागता है मेरे प्रिय का शब्द जो द्वार पर खटखटाता ४  
 है मेरी बहिन मेरी प्रिया मेरे कपोत मेरे शुद्ध मेरे लिये खोल क्योंकि मेरा सिर ५  
 आस से भर गया है और मेरी अलक रात के वृंदों से । मैं ने अपना वस्त्र उतारा ६  
 है मैं उसे क्योंकि पढ़िन् मैं ने अपने पाँव धोये हैं मैं उन्हें क्योंकि अशुद्ध कदं । ७  
 मेरे प्रिय ने भरोखे में से अपना हाथ डाला और मेरा मन उस के लिये उभड़ा । ८  
 अपने प्रिय के लिये मैं खोलने को उठी और मेरे हाथों से गंधरस टपका और ९  
 मेरी अंगुलियों ने ताली की कड़ियों पर सुवास गंधरस । मैं ने अपने प्रिय के १०  
 लिये खोला परन्तु मेरा प्रिय फिरके चला गया था उस की बोली से मेरा प्राण ११  
 मूर्छित हुआ मैं ने उसे डूँढ़ा परन्तु पा न सकी मैं ने उसे पुकारा परन्तु उस ने मुझे १२

- ८ हमारी एक छोटी बहिन है और उस के स्नान नहीं हम अपनी बहिन के लिये  
 ९ उस दिन क्या करें जब उस की बात चलेगी । जो वह भीत होवे तो हम उस  
 पर चांदी का भवन बनावेंगी और जो वह द्वार होवे तो हम उसे देवदारु की  
 पटियों से ढांपेंगी ॥
- १० मैं भीत हूँ और मेरे स्नान गुम्मतों की नाईं तब मैं उस की दृष्टि में कुशल  
 ११ पाये हुए की नाईं हुई । बालहमून में सुलेमान की एक दाख की दारी थी उस  
 ने उस दाख की दारी को रखवालों को सौंपा जिस के फल के लिये हर एक को  
 १२ उसे सदस टुकड़ा चांदी देना पड़ता था । मेरी दाख की दारी जो मेरी है मेरे आगे  
 है हे सुलेमान तू सदस ले और जो उस के फल की रखवाली करते हैं दो सौ ॥
- १३ हे तू जो दारियों में घास करती है जथा तेरा शब्द सुनती हैं मुझे भी सुना ॥
- १४ हे मेरे प्रिय बड़ जा और हरिण अथवा सुगंध द्रव्य के पर्वतों पर की हरिणी  
 की नाईं हो जा ॥

## यसअियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

### पहिला पर्व ।

- १ अमूर के बेटे यसअियाह का दर्शन जो उस ने यहूदाह और यहसलम के  
 विषय में यहूदाह के राजाओं उज्जियाह और यूताम और आखज और हिजकियाह  
 के दिनों में देखा ॥
- २ हे आकाशो सुनो और हे पृथिवी कान लगा क्योंकि परमेश्वर कहता है कि  
 ३ मैं ने लड़कों को पाला और पोसा और वे मुझ से फिर गये । वेल अपने स्वामी  
 को पहिचानता है और गदहा अपने प्रभु की चरनी को इसराएल नहीं जानता  
 मेरे लोग नहीं सोचते ॥
- ४ हाय पापमय जातिगण पाप से लदे हुए लोग कुकर्मियों के वंश बिगाड़  
 लड़के उन्हीं से परमेश्वर को छोड़ दिया इसराएल के धर्ममय को तुच्छ जाना है  
 ५ वे पीछे हटके पराये हो गये । तू किस अंग पर और मार खाओगे जो अधिक  
 ६ फिरते जाते हो सारा सिर रोगी हो गया और साश मन दुर्बल । पांव के तलवे  
 से लेके सिर ताईं उस में कहीं आरोग्यता नहीं परन्तु घाव और चोट और नवीन  
 घाव वे न दबाये गये और न बांधे गये और किसी ने तेल से नम्र नहीं किया है ।
- ७ तुम्हारा देश उजाड़ है तुम्हारे नगर आग से जल गये तुम्हारा खेत तुम्हारे आगे  
 परदेशों उसे खाते जाते हैं और वह परदेशियों के उजाड़ किये हुए के समान  
 ८ उजाड़ हो गया । और सैहून की पुत्री दाख की बाटिका में भोंपड़ी की नाईं  
 ९ ककड़ी के खेत में कुरिया के समान घरे हुए नगर की नाईं बच गई है । यदि  
 परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे लिये बहुत छोटा शेषभाग न छोड़ देता तो  
 हम सड़स की नाईं हो जाते अमूरः से उपमा दिये जाते ॥

लौट आ लौट आ हे मुलामी लौट आ लौट आ जिसमें इस तुझ पर दृष्टि १३  
करें तुम मुलामी में क्या देखोगी जैसे दो सेना का नाच ॥

सातवां पद्य ।

हे राजकन्या जूती से तेरे पांय कैसे सुन्दर हैं तेरी जांघ की गांठें आभूषण १  
की नाईं गुनकारी के हाथ के कृत्य हैं । तेरी नाभी एक गोल पात्र की नाईं है २  
जिस में दाखरस की घटी नहीं तेरा पेट गोष्ठ के ढेर की नाईं है जो मांसनों से ३  
घेरा हुआ है । तेरे दो स्तन दो यमल गुया छरिण की नाईं हैं । तेरा गला ४  
दायीदांत के गुम्मत की नाईं है तेरी आंखें अतरविस फाटक के नग के हणवून  
के कुंडों की नाईं हैं तेरी नाक लुयनान के गुम्मत की नाईं जो दमिगक की ओर  
देखता है । तेरा सिर करमिल की नाईं है और तेरे सिर का बाल बंजनी की ५  
नाईं है राजा तेरी अलकों में बंधा है । हे प्रिया तू कैसी सुन्दरी और आनन्दों ६  
के लिये मनभावनी है । तेरी यह डोल खजूर पेड़ की नाईं और तेरे स्तन गुच्छों ७  
की नाईं हैं । मैं ने कहा कि मैं खजूरपेड़ पर चढ़ंगा मैं उस की डारों को पक- ८  
डूंगा अब भी तेरे स्तन लता के गुच्छों की नाईं होंगे और तेरी नाक का गंध  
चक्रातरो की नाईं । और तेरा नालू अच्छे दाखरस की नाईं है जो मेरे प्रिय के ९  
लिये सीधे चलती है और उन के हांठों पर जो सोते हैं सींठे सींठे बच जाती १०  
है । मैं अपने प्रिय की हूं और उस की बांका मेरी और । हे मेरे प्रिय चलो खेत ११  
में जायें गांवों में टिकें । चलो तड़के दाख की धारियों में जायें आओ देखें यदि १२  
लता लहलहाती है यदि कामल दाख लगा है और अनार में कली लगी हैं वहां १३  
मैं अपना प्रेम तुम्हें देऊंगी । दुदायीम सदाकतें हैं और हमारे फाटकों पर समस्त १४  
रीति के मनभावन नये पुराने फल हैं जो हे प्रिय मैं ने तेरे लिये धर रखे हैं ॥

आठवां पद्य ।

हाथ कि तू मेरे भाई की नाईं होना जिस ने मेरी माता के स्तनों को चूसा १  
जब मैं तुम्हें बाहर पाती तो तुम्हें चूमती हूं मेरी निन्दा न होती । मैं तुम्हें अपनी २  
माता के घर में ले जाऊंगी कि तू मुझे सिखाये मैं तुम्हें अपने अनार के रस के सुगंध  
दाखरस से पिलाऊंगी ॥

उस का दायां हाथ मेरे सिर के नीचे और उस का दहिना हाथ मुझे समे- ३  
टता है ॥

हे यक्षमलम की पुत्रियो मैं तुम्हें किरिया देता हूं कि मेरी प्रिया को मत जगाओ ४  
और मत उठाओ जब लो कि वह आप न चाहे ॥

यह कौन है जो धन से अपने प्रिय पर ओठंगती हुई ऊपर आती है मैं ने ५  
तुम्हें सेव के पेड़ तले से उठाया जहां तेरी माता तुम्हें जनी जहां तेरी जननी तुम्हें  
जनी । तुम्हें अपने मन में छाप की नाईं रख अपनी मुजा पर की छाप की नाईं ६  
क्योंकि प्रेम मृत्यु की नाईं प्रवल है डाह समाधि की नाईं कठिन है उस के  
अंगारे आग के अंगारे हैं एक अति धधकती हुई लहर । बहुत से जल प्रेम को ७  
बुझा नहीं सक्ते और बाढ़ उसे डूबा नहीं सकती यदि मनुष्य अपने घर की सारी  
संपत्ति प्रेम के लिये देता तो सर्वथा निन्दा होती ॥

## दूसरा पर्व ।

१ वह वचन जो अमूस के बेटे यसत्रियाह ने यहूदाह और यरुमलम के विषय  
 २ दर्शन में देखा । और पिछले दिनों में ऐसा होगा कि परमेश्वर के घर का पहाड़  
 पहाड़ों की चोटी पर स्थापित होगा और टीलों से ऊंचा किया जायेगा और सारे  
 ३ जातिगण उस की ओर रेले चले जायेंगे । और बहुत सी जातें चल खड़ी होंगी  
 और कहेंगी कि आओ और हम परमेश्वर के पहाड़ की ओर और यश्रकूय के  
 ईश्वर के घर की ओर चढ़ चलें और वह हमें अपना मार्ग बतलायेगा और हम  
 उस के पथों पर चलेंगे क्योंकि सैहून से व्यवस्था और परमेश्वर का वचन यरुमलम  
 ४ से निकलेगा । और वह जातिगणों के मध्य न्याय करेगा और बहुत आतों का  
 विचार करेगा और वे अपनी तलवारों को तोड़के फाले और अपने भालों को  
 हंसुवे बना डालेंगी जाति जाति पर तलवार न उठायेगी और वे फिर लड़ाई  
 ५ न सीखेंगे । हे यश्रकूय के घराने आओ और हम परमेश्वर की ज्योति  
 में चलें ॥

६ क्योंकि तू ने अपने लोगों अर्थात् यश्रकूय के घराने को छोड़ दिया है क्योंकि  
 वे पूरव के टोने से और फिलिस्तिणों के समान टोने से भरे हैं और परदेशियों के  
 ७ लड़कों से पूर्ण हैं । और उन की भूमि सोने रूपे से भरपूर हो गई है और उन के  
 भंडारों का कुछ अंत नहीं और उन का देश घोंड़ों से भर गया है और उन के  
 ८ रथों की कुछ गिनती नहीं । और उन की भूमि मूर्तों से भर गई है वे अपने हाथों  
 ९ के कार्य को पूजते हैं उस को जो उन की अंगुलियों ने बनाया है । और छोटा  
 मनुष्य झुक गया और बड़ा मनुष्य नीचे हो गया और तू उन्हें क्षमा न कर ॥

१० चटान में घुस जा और अपने तई धूल में छिपा परमेश्वर के भय के साम्हने और  
 ११ उस की महिमा के विभव से । मनुष्य को ऊंची आंखें नीची हो गईं और मनुष्यों  
 १२ का अहंकार उतारा गया और परमेश्वर अकेला उस दिन महान ठहरा । क्योंकि  
 सेनाओं के परमेश्वर का दिन हर अहंकारी और ऊंची वस्तु के ऊपर और हर  
 १३ उभड़ी हुई वस्तु के ऊपर है और वह नीचे आयेगी । और लुवनान के सारे ऊंचे  
 और उभड़े हुए देवदारु वृक्षों के ऊपर और बसनिया के सारे बलूतों के ऊपर ।  
 १४ और सारे ऊंचे पहाड़ों के ऊपर और सारे ऊंचे टीलों के ऊपर । और हर ऊंचे गुम्मत  
 १५ के ऊपर और हर दृढ़ भीत के ऊपर । और तरसीस के सारे जहाजों के ऊपर  
 १६ और सारे सुन्दर चित्रों के ऊपर । और मनुष्य की ऊंचाई नीची किई जायेगी और  
 लोगों का अभिमान उतारा जायेगा और परमेश्वर अकेला उस दिन महान होगा ।  
 १७ और मूर्तें सर्वथा जाती रहेंगी । और लोग परमेश्वर के भय के साम्हने और उस  
 १८ की महिमा के विभव से पत्थरों के कंदलों में और भूमि के छेदों में घुस जायेंगे  
 जब वह उठेगा जिसमें पृथिवी को कंपाये ॥

२० उस दिन मनुष्य अपनी रूपहली मूर्तों और अपनी सुनहरी मूर्तों को जो उस  
 २१ की पूजा के लिये बनाई गईं कुकूंदरों और चमगुदड़ों के आगे फेंक देगा । जिसमें  
 परमेश्वर के भय से और उस के विभव की महिमा से पत्थरों के दरारों में और  
 चटानों के छेदों में घुस जाये जब वह उठेगा जिसमें पृथिवी को कंपाये ॥

हे सद्धर्म के न्यायियों परमेश्वर का धन मुने हे अमरः के लोगो हमारे १०  
 ईश्वर की व्यवस्था पर कान लगाओ । परमेश्वर कहता है कि तुम्हारे बलिदानों ११  
 की बहुतों मेरे किस काम की है मैं मंडे के दोस की मंडों से और पुष्ट चौपायों  
 की चिकनाई से ठक गया हूँ और बैलों और भैरों और बकरों के लोह से प्रसन्न  
 नहीं हूँ । जब तुम आते हो कि मेरे मन्सुख मन्निधान होओ तो कौन तुम्हारे १२  
 हाथों से इस का खोजी हुआ है कि मेरे आंगनों को रौंदो । मिट्टी की मंड १३  
 तुम मत लाया करो । लोहान से मुझे धिन आती है नये चांद और विश्वास के  
 दिन और मण्डली के पुलाने से भी मैं कुकर्म और पूजा दोनों को सह नहीं  
 सकता । तुम्हारे नये चांदों और तुम्हारी मण्डली से मेरा प्राण धिन करता है वे १४  
 मेरे ऊपर बोझ हो गये मैं उन के उठाने से थक गया । और जब तुम अपने हाथ १५  
 फैलाओगे तब मैं तुम से अपनी आंखें फेर लूंगा हाँ जब तुम प्रार्थना पर प्रार्थना  
 करोगे तो मैं न सुनूंगा तुम्हारे हाथ लोहनादान हैं । अपने को धोओ आप को १६  
 पवित्र करो अपने कर्मों की दुहाई को मेरी आंखों के सामने से दूर करो कुकर्म से  
 फिरो । मुकर्म सीखा न्याय के खोजी हो अन्धेर को सुधारो अनाथ का न्याय करो १७  
 विधवा का उपकार करो ॥

परमेश्वर कहता है कि अब आओ और इस आपुस में विवाद करें यदि १८  
 तुम्हारे पाप लाल रंग पर हों पर पाने की नाईं श्वेत हो जायेंगे यदि धँजनी रंग  
 के समान लाल हों उन के समान हो जायेंगे । यदि तुम सम्मति हो और मुने १९  
 तो तुम भूमि की बढ़ती न्याओगे । और यदि तुम नाह और दंगा करोगे तो २०  
 खड्ग का कौर हो जाओगे क्योंकि परमेश्वर के मुँह ने कहा है ॥

विश्वासमय दम्ती क्योंकर व्यवहारिणी हो गई वह न्याय से भरी श्री धर्म २१  
 उस में निवास करता था और अध्वर्यु हत्यारी । तेरा रूपा सैल हो गया तेरे दाखरस २२  
 में पानी मिल गया । तेरे अध्वर्यु दंगलत और चोरों के साथी हैं उन में से हर २३  
 एक अकार का मित्र और दान का खोजी है वे अनाथ का न्याय नहीं करते और  
 विधवा का विवाद उन तक नहीं पहुँचता ॥

इस लिये प्रभु सेनाओं का परमेश्वर हमरागल का सर्वशक्तिमान कहता है कि हाथ २४  
 में अपने विरोधियों से शान्ति पाऊंगा और अपने वैरियों से पलटा लेऊंगा । और २५  
 मैं अपना हाथ तुम पर फेरूंगा और संपूर्ण तेरे सैल को निकालूंगा और तेरे मारे रांगों  
 को दूर करूंगा । और मैं तेरे न्यायी जैसे पहिले थे और तेरे मंत्री जैसे आरंभ में थे २६  
 फिर स्थापित करूंगा उस के पीछे तू धर्म का नगर विश्वस्तमय दस्तो कहलायेगा ।  
 सैद्धन न्याय में उद्धार पायेगा और उस के फिरे हुए धर्म में । और उसी के साथ दंग- २७  
 हता और पापियों की हार होगी और परमेश्वर के त्यागनेहारे नष्ट हो ध्वस्त  
 होंगे । क्योंकि वे उन दुस्मयों से लज्जित होंगे जिन की तुम ने इच्छा किई और २८  
 तुम उन वाटिका से लज्जित होगे जिन्हें तुम ने चुना है । क्योंकि तुम उस दुस्म- ३०  
 य की नाईं दोगे जिस के पने भड़ जाते और उस वाटिका की नाईं जिन में  
 कुछ जल नहीं है । और बलवन्त खन हो जायेंगे और उस का कार्य चिनगारी ३१  
 और वे दोनों एक साथ जल जायेंगे और कोई बुझैया न होगा ॥



- २३ भूतों और दुष्टों और घटुओं । आरसियों और महीन वस्त्रों और सिरवन्धनों  
 २४ और घूंघटों की शोभा को दूर करेगा । और ऐसा होगा कि सुगंध की संती  
 दुर्गन्ध होगी और घटुके की संती रस्सी और गुंधे हुए बाल की संती गंजापन  
 २५ और ओढ़नी की संती टाट की चोली और दाह रूप की संती । तेरे पुरुष तलवार  
 २६ से गिरेंगे और तेरी सामर्थ्य युद्ध में । और उस के फाटक खिलाप और रोदन करेंगे  
 और वह उजाड़ होके धूल पर बैठ जायेगा ॥

चौथा पर्व ।

- १ और उस दिन सात स्त्रियां यह कहती हुई एक पुरुष को पकड़ेंगी कि हम  
 अपनी रोटी खायेंगी और अपने वस्त्र पहिनेंगी केवल हम तेरे नाम की कहलायें  
 हमारे अपयश को दूर कर ॥  
 २ उस दिन परमेश्वर की डाली इसराएल की वचती के लिये प्रतिष्ठा और विभव  
 ३ होगी और भूमि का फल उत्तमता और शोभा । और ऐसा होगा कि जो सैदून  
 में छोड़ा जायेगा और यरूसलम में वच रहेंगा वह पवित्र कहलायेगा हर एक जो  
 ४ यरूसलम में जीवन के लिये लिखा हुआ । जब प्रभु न्याय के आत्मा और जलन  
 के आत्मा से सैदून की पुत्रियों के मेल को धोयेगा और यरूसलम के लोहू को  
 ५ उस के मध्य से दूर करेगा । और परमेश्वर सैदून पर्वत के समस्त निवास के ऊपर  
 और उस की सभाओं के ऊपर दिन को मेघ और धूआं उत्पन्न करेगा और रात  
 को अग्नि की लहर की चमक क्योंकि उस सारे विभव के ऊपर ठकना होगा ।  
 ६ और दिन को तपन से छाया के लिये चंदोआ होगा और भड़ी और मेंह से आड़  
 और शरण का स्थान ॥

पांचवां पर्व ।

- १ मैं अपने प्रिय के विषय गाया चाहता हूँ अपने प्रिय का कंद उस की खाटिका  
 २ के विषय मेरे प्रिय की दाख की खाटिका अति फलवान पहाड़ पर थी । और  
 उस ने उसे खादा और उस के पत्थर दूर किये और उस में अच्छे से अच्छा दाख  
 लगाया और उस के बीचोंबीच गर्गज बनाया और कुण्ड भी उस में खादा और  
 खाट जोही कि दाख फले पर उस में दूरे दाख फले ॥  
 ३ और अब हे यरूसलम के दासी और यहूदाह के पुरुष कृपा करके मेरे और  
 ४ मेरी दाख की खाटिका के मध्य न्याय करो । मुझे अपने दाख की खाटिका से  
 और क्या करना है कि मैं ने उस में नहीं किया है मैं ने क्यों खाट जोही  
 ५ कि वह दाख फले और उस में दूरे दाख फले । और अब मैं तुम्हें वह बताया  
 चाहता हूँ जो अपनी दाख की खाटिका से करवैया हूँ उस के खाड़े को दूर करना  
 और वह भक्षण किई जायेगी उस की भीत को तोड़ डालना और वह रौंदने का  
 ६ स्थान हो जायेगी । और मैं उसे उजाड़ कर डालूंगा वह न क्रांटी जायेगी और  
 न उस के थाले गोड़े जायेंगे और कांटे और कटौले उगेंगे और मैं मेघों को  
 ७ आज्ञा करूंगा कि उस पर मेंह न बरसायें । क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर की दाख  
 की खाटिका इसराएल का घराना है और यहूदाह का मनुष्य उस के आनन्दों का पैधा  
 और उस ने न्याय की खाट जोही और देखो अन्धेर धर्म का और देखो चिल्लाना ॥

मनुष्य कि जिस का श्वास उस के नयनों में है उससे दाय वंशायो क्योंकि यह २२  
किस लेख में है ॥

### तीसरा पर्व ।

क्योंकि देखो प्रभु सेनाओं का परमेश्वर यमसलम और यहूदाह से टेक और १  
टेकन को दूर करता है रोटी की हर टेक को और पानी की हर टेक को । और २  
और योद्धा मनुष्य न्यायी और भविष्यदक्ता और ज्योतिषी और प्राचीन को ।  
पञ्चान के प्रधान को और प्रतिष्ठित और मंत्री और प्रयोग कार्यकारी और चतुर ३  
टोनहे को । और मैं लड़कों को उन पर प्रधान बनाऊंगा और चिथिले उन पर ४  
प्रभुता करूँगे । और लोग आपस में चपड़च करूँगे मनुष्य मनुष्य पर और मनुष्य ५  
अपने परोसी पर वे घमंड करूँगे लड़का बृद्ध ने और तुच्छ प्रतिष्ठित से ॥

जब मनुष्य अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़ेगा यह कहके कि तेरे ६  
पास वस्त्र है तू इसीका अध्यक्ष होगा और यह नष्टता तेरे दाय के नीचे होगी ।  
उस दिन वह अपना शब्द उठायेगा यह कहते हुए कि मैं बँध न दूँगा और मेरे ७  
घर में न कुछ रोटी है और न कुछ कपड़ा तुम मुझे लोगों का अध्यक्ष न ठहराओ ।  
क्योंकि यमसलम उजाड़ हुआ और यहूदाह मिर गया क्योंकि उन की बालबाल ८  
और उन के कर्म परमेश्वर के विरुद्ध हैं जिसमें उस की विभूषित आंखों का मास्टना  
करें । उन के मुँह का रूप उन पर गान्धी देता है और वे सद्रूम की नाई अपना ९  
पाप वर्णन करते हैं और उसे नहीं छिपाते उन के प्राणों पर संताप क्योंकि उन्होंने  
ने अपनी जाति से कुव्यवहार किया है ॥

धर्मों से कहा कि उस का कल्याण होगा क्योंकि यह अपने कर्मों का फल १०  
खायेगा । दुष्ट पर संताप उस का दुग होगा क्योंकि उस के दायों का व्यवहार ११  
उसने किया जायेगा । दाय मेरे लोग उस के मताज चिथिले हैं और म्त्रियां उन १२  
पर प्रभुता करती हैं हे मेरे लोग तेरे अगुवा भुलानेकारे हैं और तेरे पथों के मार्ग  
को निगलते हैं ॥

परमेश्वर विद्याद करने के लिये उठता है और लोगों का न्याय करने के लिये १३  
खड़ा होता है । परमेश्वर अपने लोगों के प्राचीनों और उन के अध्यक्षों के संग १४  
विचार में आयेगा और तुम ने दाय की घाटिका को चट कर लिया है दुःखों की  
लूट तुम्हारे घरों में है । प्रभु सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम्हें क्या १५  
हुआ कि तुम मेरे लोगों को टुकड़े टुकड़े करते हो और दुःखियों के मुँह को  
कुचलते हो ॥

और परमेश्वर ने कहा इस लिये कि सैतून की पुत्रियां अहंकारी हैं और ग्रीवा १६  
उठाके चलती हैं और आंखें मटकानी हैं और ठुसक चाली में चलती हैं और  
पाँवों से अपना धुंधुल ठनठनाती हैं । इस लिये प्रभु सैतून की पुत्रियों की चांद १७  
को गंजी कर डालेगा और परमेश्वर उन के गुप्सखानों को उधारेगा । उस दिन १८  
प्रभु उन के धुंधुलियों और जालियों और चांदों की शोभा को दूर करेगा । और १९  
भुमकों और खड़कों और धूँधलों । मुकुटों और पायलों और पटुकों और सुगंध- २०  
पात्रों और विजायठों । अंगूठियों और नाक की नथों । बूटेदार पहिराओं और २१

२० उस के लिये सीटी बजाता है और देखो शीघ्र ही फुरती से वह आयेगा । उस में कोई थका और ठोकर खानेदारा नहीं है वह न ऊँचेगा न सोयेगा और उस २८ का पटुका नहीं खुलता और उस के जूतों का तस्मा नहीं टूटा । जिस के बाण छोखे किये गये और उस के सारे धनुष खींच गये उस के घोड़ों के खुर चक्रमाक २९ के पत्थर की नाईं गिने गये और उस के पटिये चगलें के समान । उस की गर्ज सिंघनी के समान है और वह सिंघ के बछों की नाईं गर्जेगा और गुरायेगा और अहेर को पकड़ेगा और उसे अनन्तत पहुंचायेगा और कोई कुड़ानेदारा न होगा । ३० और वह उस दिन समुद्र की गड़गड़ाहट की नाईं उस पर गड़गड़ायेगा और वह पृथिवी की ओर देखेगा और देखे अधकार सकेती और उज्जियाला उस के सेंधों में अधियारा हो गया ।

कठयां पर्व ।

१ जिस वरस उज्जियाह राजा मर गया मैं ने परमेश्वर को एक ऊँचे और महान २ सिंहासन पर बैठे देखा और उस के वस्त्र के खूंट मन्दिर की भर देते थे । सराफीम उस के ऊपर खड़े थे और हर एक के हः हः पंख थे हर एक दो पंखों से अपने मुंह को ढाँपे रहा और दो से अपने पाँवों को ढाँपे रहा और दो से उड़ता ३ रहा । और एक ने दूसरे को पुकारा और कहा पवित्र पवित्र पवित्र सेनाओं का परमेश्वर सारी पृथिवी उस के विमर्श से परिपूर्ण है ॥

४ तब उस पुकारनेवाले के शब्द से चौखटों की नर्वें हिल गईं और घर धूर्य से ५ भर गया । तब मैं ने कहा कि हाय मुझ पर क्योंकि मैं नष्ट हुआ क्योंकि मैं अशुद्ध ६ होठों का मनुष्य हूँ और अशुद्ध होठ जाति के मध्य मैं बसता हूँ क्योंकि मेरी ७ आँखों ने राजा सेनाओं के परमेश्वर को देखा है । तब उन सराफीमों में से एक मेरी ओर उड़ा जिस के हाथ में अंगारा था उस ने बिमटे से उसे यज्ञवेदी पर ८ से उठा लिया । और उस ने उसे मेरे मुंह पर लगा दिया और कहा कि देख इस ने तेरे होठों को कूआ है और तेरे कुकर्म दूर हुए और तेरे पाप का प्रायश्चित्त किया जायेगा ॥

९ तब मैं ने प्रभु का शब्द यह कहते हुए सुना कि मैं किस को भेजूँ और कौन हमारी ओर से जायेगा और मैं ने कहा कि देख मैं उपस्थित हूँ मुझे भेज ॥

१० और उस ने कहा कि जा और इस जाति से कह कि सुनते रहो परम समझो ११ और देखते रहो पर न जानो । इस जाति के मन को मोटा बना और उस के कानों को भारी कर और उस की आँखों को मूँद न हो कि वह अपनी आँखों से देखे और अपने कानों से सुने और उस का मन समझे और वह फिर और चंगी हो ॥

१२ और मैं ने कहा कि हे प्रभु यह कब लें और उस ने कहा कि यहां लें कि वसनेहारे के न होने से नगर उजाड़ हो जायें और मनुष्यों के न होने से घर १३ और भूमि उजाड़ हो जाये और तहसनहस । और यहां लें कि परमेश्वर मनुष्यों १४ को दूर करे और इस देश में परती भूमि बहुत हो । और अब भी उस में वसवां भाता बच रहेगा और वह फिर नाश किया जायेगा पर बुत्मवृक्ष और बलूत की

उन पर संताप जो घर घर से मिला देते हैं खेत को खेत के निकट कर देते हैं ।  
यहां लों कि कुछ स्थान न रह जाये और तुम भूमि के मध्य में अकेले रह जाओ ।

मेरे कानों में सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मन्त्रमुक्त बहूतरे घर में  
बड़े और सुन्दर घर बनाइ हो जायेंगे इस कारण से कि उन में कोई बमबैया  
न रहेगा । क्योंकि दाख की चाटिका के दम विधों से एक बत दाखरस प्राप्त १०  
होगा और हमूरा बीज से रेफा अनाज ।

उन पर संताप जो भार को उठते हैं मद का पीछा करते हैं सांझ को अंधेर ११  
करते हैं यहां लों कि मदिरा उन्हें चन्मत्त करे । और बीणा और बीन डोलक १२  
और बांसली और मदिरा उन के लेवनार हैं और वे परमेश्वर के कार्य पर दृष्टि  
नहीं करते और उन्हीं ने उस के हाथों की क्रिया को नहीं देखा है ।

इस लिये मेरे लोग अज्ञानता में बंधुआई में गये हैं और उन के प्रतिष्ठित १३  
भूखे मनुष्य हैं और उन की जगह प्यास में भूरी । इस लिये समाधि ने अपने तर्ह १४  
बढ़ाया और अपना मुंह वेपरिमाण पसारा है और उन के विभय और उन का  
घृणा और उन की भीड़ और जो उन में आनन्द करता है सब के सब उस में गिरते  
हैं । और छोटा मनुष्य झुक गया और बड़ा मनुष्य नीचे हो गया और ऊंचों की १५  
आंखें नीची हो गईं । और सेनाओं का परमेश्वर न्याय में सदान है और सर्वशक्ति- १६  
मान धर्ममय धर्म में पवित्र है । और मेरे मानो अपनी चराई में चरेंगे और मोटों १७  
के उजाड़ खेतों को परदेगी खा लेंगे ॥

उन पर संताप जो शूठ की रस्मियों में अधर्म को खींचते हैं और पाप को १८  
मानो गाड़ी की रस्मी में । जो कहते हैं कि वह जीव करे फुरती में अपना १९  
काम करे जिसमें हम देखें और इसराएल के धर्ममय का मंत्र समीप आये और  
पहुंचे जिसमें हम जानें ॥

उन पर संताप जो दुरे को भला और भले को दुरा कहते हैं अधियारा उंजि- २०  
याले की संती और उंजियाला अधियारे की संती रखते हैं कहुआ मिठास की  
संती और मिठास कहुआ की संती रखते हैं । उन पर संताप जो अपनी दृष्टि में २१  
बुद्धिमान और अपनी समझ में चतुर हैं । उन पर संताप जो मदिरा पीने में बली २२  
और असल की वस्तु मिलाने में और मनुष्य हैं । जो दुष्ट को घूस के कारण से २३  
सच्चा ठहराते हैं और धर्मियों का धर्म उन से दूर करते हैं ॥

सो जिस रीति आग की लहर भूमे को खा लेती है और जलती हुई घास २४  
गिर जाती है उसी रीति उन की जड़ सर्वथा गड़ जायेंगी और उन का फूल धूल  
की नाईं उड़ जायेगा क्योंकि उन्हीं ने सेनाओं के परमेश्वर की उपद्रव्या को तुच्छ  
जाना और इसराएल के धर्ममय के वचन की निन्दा किई है । इस लिये परमे- २५  
श्वर का कोप अपने लोगों पर भड़का है और उस ने अपना हाथ उन के धिरोध  
में बढ़ाया और उन्हें मारा और पड़ाइ कांये और उन की लोचें उस कूड़े की नाईं  
हैं जो मार्गों के मध्य में है इन सब के उपरान्त उस का क्रोध दूर नहीं हुआ  
परन्तु उस का हाथ अब लों फैला हुआ है ॥

और वह जातिगणों की ओर दूर से भंडा उठाता है और पृथिवी के अंत से २६

- १८ और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर उस मक्खी के लिये जो मिस्र की नदियों के तीर पर है और उस खर्र के लिये जो असूर की भूमि में है सीटी बजा-  
 १९ येगा । और वे आवेंगे और वे सब के सब कराड़ों की निचाइयों में और चटानों की दरारों में और सारे कटीले स्थानों और सारे चराइयों के स्थानों में बैठेंगे ॥  
 २० उसी दिन प्रभु उस कुरे से जो नदी के पार से भाड़े में लिया गया अर्थात् असूर के राजा से सिर और पांछों के बाल को मूड़ेगा और दाढ़ी को भी वह मूड़ डालेगा ॥  
 २१ और उस दिन ऐसा होगा कि एक मनुष्य एक कोंटी गाय और दो भेड़ें बचा  
 २२ रखेगा । और ऐसा होगा कि दूध की अधिकार्य से वह मक्खन खायगा क्योंकि हर एक जो इस भूमि में बच रहेगा सो मक्खन और मधु खाया करेगा ॥  
 २३ और उस दिन ऐसा होगा कि हर एक स्थान जहां सहस्र रुपये की सहस्र लतार्यें होंगी-सों कांटे और कटीले हो जायेंगी । लोग धनुष और बाण लेके  
 २४ वहां आवेंगे क्योंकि वह सारी भूमि कांटे और कटीले होगी । और सारे पहाड़ जो कुदाली से खोदे जाते हैं तू-कांटे और कटीले के भय से उधर न आवेगा और गाय बैल वहां भेजे जायेंगे और भेड़ें उन्हें रौदेंगे ॥

आठवां पर्व ।

- १ और परमेश्वर ने मुक्त से कहा कि अपने लिये एक बड़ी पट्टी ले और उस  
 २ पर मनुष्य की लेखनी से लिख कि महेरशालालहाशबज के लिये । और मैं अपनी साक्षी के लिये विश्वस्त साक्षियों को लूंगा अर्थात् जरियाह याजक और यवरकियाह  
 ३ के बेटे जकरियाह को । और मैं ने आगमज्ञानिनी से समीपता किई और वह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और परमेश्वर ने मुक्त से कहा कि उस का नाम  
 ४ महेरशालालहाशबज रख । क्योंकि उस्से आगे कि वह लड़का वप्पा अम्मा बोल सके दमिशक का धन और समरन की लूट असूर के राजा के आगे उठा ले जायेंगे ॥  
 ५ और परमेश्वर ने यह कहते हुए फिर मुक्त से बार्ते किई । इस कारण से कि इस जाति ने सिलोआह के पानी का जो धीरे बहता है निरादर किया है और  
 ६ रसीन और रमलियाह के बेटे के विषय उस को आनन्द है । तो इस लिये देखो प्रभु उन पर नदी के पानी को जो तरखा और बहुत है चढ़ा लायेगा अर्थात्  
 ७ असूर के राजा और उस की सारी महिमा को और वह अपने सारे सेतों पर चढ़ आयेगा और अपने सारे कढ़ारों पर बहि निकलेगा । और यहूदाह के भीतर  
 ८ से जायेगा बाढ़ के साथ बहेगा और चला जायेगा गले लों पहुंचेगा और उस के परो के फैलाओं से हे इम्मानूएल तेरी भूमि सर्वथा भर जायेगी ॥  
 ९ हे लोगो दुष्टता करो और हार जाओ और हे पृथिवी के सारे दूरदेशियो कान धरो अपनी कटि बांधो और हार जाओ अपनी कटि बांधो और हार जाओ ।  
 १० परामर्श करो और वह खण्डन किया जायेगा बात बनाओ और न ठहरेगी क्यों-  
 ११ कि सर्वशक्तिमान हमारे संग है । क्योंकि परमेश्वर ने मुक्त से यों कहा जब उस का हाथ मुक्त पर प्रवल था और मुक्त जताया कि इन लोगों के मार्ग पर न चलूं

भाई जिन में शिरने के समय जमने की शक्ति रह जाती है वैसा ही पवित्र यंश उस के जमने की शक्ति होगा ॥

मातयां पर्व ।

और यहूदाह के राजा यूताम के बेटे उज्जियाह के बेटे आखज के समय में १  
ऐसा हुआ कि अराम का राजा रसीन और इफरायम का राजा रमलियाह का  
बेटा फिकः यहूयलम पर चढ़ आया जिसने उससे युद्ध करे पर उसने युद्ध न कर  
सका । और दाऊद के घराने को यह संदेश दिया गया कि अराम इफरायम पर २  
सहारा करता है और उस का मन और उस के लोगों का मन हिल गया जैसे  
वन के वृक्ष पवन के साम्हने हिल जाते हैं । तब परमेश्वर ने यशोधरा से कहा ३  
कि तू और तेरा बेटा शियारयासूख ऊपर के पोखरे की नाली के कोने पर धोयी  
के खेत की सड़क पर आखज से मिलने को जा ॥

और उसने कह कि सोचते हो और स्थिर रह मत डर और तेरा मन इन ४  
लुकाटियों की धूआंवाली पूछों के कारण से न घबराये जब रसीन और अराम  
और रमलियाह के बेटे का क्रोध भड़के । इस लिये कि अराम इफरायम और ५  
रमलियाह के बेटे ने यह कहके तेरे विरोध में कुचिन्तार किया है । कि हम यहू- ६  
दाह पर चढ़ें और उसे सतायें और उस में अपने लयमान होने के लिये फूट डालें  
और उस के मध्य एक राजा को सिंहासन पर बैठावें अर्थात् तविएल के बेटे को ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यह न ठहरेगा और न ऐसा होगा । क्योंकि ७  
अराम की राजधानी दमिश्क है और दमिश्क का अध्यक्ष रसीन और पैमठ यरम ८  
के भीतर इफरायम जाति होने से ताड़ा जायेगा । और इफरायम की राजधानी  
समरन है और समरन का अध्यक्ष रमलियाह का बेटा यदि तुम विश्वास न  
लाओगे तो अवश्य कि चैन में न रहेगा ॥

और परमेश्वर ने फिर आखज से ये बातें कहते हुए आते किई । कि परमे- १०  
श्वर अपने ईश्वर के पास से अपने लिये चिन्ह मांग चाहे नीचाई से मांग चाहे ११  
ऊँचाई से । पर आखज ने कहा कि मैं न मांगूंगा और परमेश्वर की परीक्षा न १२  
करूंगा ॥

और उस ने कहा कि हे दाऊद के घराने सुनो क्या मनुष्यों को शकाना तुम्हारे १३  
लिये थोड़ा है जो तुम मेरे ईश्वर का भी शक़ाया चाहते हो । इस लिये परमे- १४  
श्वर आप तुम को एक चिन्ह देगा देखो वह कुआरी गर्भिणी है और बेटा जनती १५  
है और उस का नाम इस्मानूएल रखती है । वह सकयन और मधु खायगा जब १६  
तों कि घुगाई से घिन करना और भलाई को चुन लेने में विराध न जाने । क्योंकि- १७  
कि उसने पहिले कि वह लड़का घुगाई से घिन करना और भलाई को चुन लेने  
का ज्ञान जाने वह भूमि जिस के दो राजाओं के कारण से तू भयमान है उजाड़  
हो जायेगी ॥

परमेश्वर तुझ पर और तेरे लोगों पर और तेरे पिता के घराने पर ऐसे समय १७  
लावेगा जो उस दिन से नहीं आये जब इफरायम यहूदाह से अलग हुआ अर्थात्  
असूर के राजा को ॥



२ परमेश्वर ने यश्मकूव में एक वचन भेजा और वह इसराएल पर उतरा । और वे उसे जानते हैं सारे लोग अर्थात् इफरायम और समरुन के वासी जो गर्व और मन के अहंकार के साथ कहते हैं । कि ईंटें गिर गईं पर हम कटाऊ पत्थरों के घर बनायेंगे गूलर के वृक्ष काटे गये पर हम उन की संतो देवदारु वृक्ष लगायेंगे ।  
१० और परमेश्वर उस के ऊपर रसीन के सतानेहारों को उठाता है और उस के ११ वैरियों को भी भड़कायेगा । अर्थात् अराम आगे से और फिलिस्त पीछे से और वे इसराएल को मुंह फैलाके भक्षण कर जायेंगे तथापि उस का क्रोध उतर नहीं गया पर उस का हाथ अब लों फैला हुआ है ॥

१२ और लोग अपने सारनेहारे की ओर नहीं फिरे हैं और सेनाओं के परमेश्वर को १३ उन्हें ने नहीं छुड़ा है । और परमेश्वर ने एक ही दिन में इसराएल के सिर और पूंछ १४ ताड़ और नरकट को काट डाला है । जो मदान और प्रतिष्ठित है वही सिर है और १५ जो आगमज्ञानी झूठ सिखलाता है सोई पूंछ है । क्योंकि इस जाति के अगुआ १६ भटकानेहारे हुए हैं और जिन्होंने उन से शिक्षा पाई वे नष्ट हो गये । इस लिये प्रभु उस के तरुणों पर आनन्दित न होगा और उस के अनाथों पर और उस की विधवाओं पर दया न करेगा क्योंकि वे मव वेधर्म और कुकर्मी हैं और हर एक मुंह सूढ़ता की बातें करता है तथापि उस का क्रोध उतर नहीं गया पर उस का हाथ अब लों फैला हुआ है ॥

१७ क्योंकि दुष्टता आग की नाईं जलती है कांटे और कटीले को भस्म करती है तब वन की भाड़ी में वर उठती है और वे लोग धूरें का खंभा होकर चक्र १८ मारते हुए ऊपर चढ़ते हैं । सेनाओं के परमेश्वर के क्रोध के मारे यह देश अंधि-यारा हो गया और लोग ईंधन की नाईं हो गये लोग एक दूसरे पर दया नहीं १९ करते हैं । और वे दहिनी और नोचते हैं और भूखे रहते हैं और बाईं ओर खा जाते हैं और वे लोग तृप्त नहीं हुए वे हर एक अपने बाहु का मांस खाते हैं । २० अर्थात् मुनस्सी इफरायम को और इफरायम मुनस्सी को और वे मिलके यहूदाह के बिरुद्ध हैं तथापि उस का क्रोध उतर नहीं गया पर उस का हाथ अब लों फैला हुआ है ॥

### दसवां पर्व ।

१ उन पर संताप जो अन्याय की व्यवस्था को लिखते हैं और उस अंधेर के २ बिचार लिखते हैं जिसे उन्होंने ने स्थापन किया है । जिसमें दीनों को न्याय से दूर रखें और मेरे लोगों के दरिद्रों का पद कीन लें जिसमें विधवाओं को घात ३ करें और वे अनाथों को लूटते हैं । और पलटा लेने के दिन और उस विपत्ति में जो दूर से आवेंगी तुम क्या करोगे तुम सहायता के लिये किस के पास भागोगे ४ और कहां अपना बिभव रखोगे । यद्यपि वे बंधुओं के नीचे नहीं झुके तथापि तुम्हारे अध्यक्ष घात किये हुआ के नीचे गिर पड़ेंगे पर तौभी इस सब के उप-रान्त उस का क्रोध उतर नहीं गया परन्तु उस का हाथ अब लों फैला हुआ है । ५ और परमात्मा मेरे क्रोध का सोंटा है और जो लठ उन के हाथ में है का हाथ मुझ पर प्रबल अधर्मी जाति पर भेजूंगा और उन लोगों के विरोध

यह कहते हुए । कि तुम उस मय को युक्ति मत कहो जिसे ये लोग युक्ति कहते १२  
हैं और जिसे वे डरते हैं न डरो और न भय रखो । सेनाओं का परमेश्वर उसी १३  
को पवित्र जाना और उसी से डरो और उसी से भयमान होओ । और वह पवित्र १४  
जाना जायेगा और इसराएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और  
टेस की चटान और यरूशलेम के निवासियों के लिये फंदा और जाल । और यह- १५  
तेरे उन-में से ठोकर खायेंगे और गिरेंगे और टूट जायेंगे और जाल में फँसेंगे और  
पकड़े जायेंगे । मेरे शिष्यों में साक्षी के पत्र को खंड कर व्यवस्था पर काय कर । १६

और मैं परमेश्वर की बात जोहता रहूँगा जो अपना मुँह यश्कूथ के घराने १७  
से छिपाता है और उस की आशा करता रहूँगा । देख मैं और वे लड़के जिन्हें १८  
परमेश्वर ने मुझे दिया है सेनाओं के परमेश्वर की ओर से जो मैहून के पहाड़  
में रहता है इसराएल में चिन्हेँ और आश्चर्यों के लिये हैं ॥

और जब वे तुम से कहें कि टोनाहों और ओम्मां से प्रश्न करो जो चहचहाते १९  
और यह्यड़ाते हैं तो कहो क्या लोग अपने ईश्वर से प्रश्न न करें क्या जीवितों  
के लिये मृतकों से प्रश्न करें । व्यवस्था और साक्षी के पत्र से प्रश्न करो यदि वे २०  
इस वचन के समान न कहें तो वह मेसा मनुष्य है जिस के लिये विद्वान नहीं  
हैं । और वे उस देश में दुःखी और भूखे होके फिरेंगे और मेसा होगा कि जब २१  
वे भूखे होंगे तो अपने तर्हें खिजायेंगे और अपने राजा और अपने ईश्वर को  
धिकारेंगे और ऊपर देखेंगे । और पृथिवी की ओर तार्कंग और देखो सकती और २२  
अंधकार सकती और अंधकार की अधिपारी दटारें गई ॥

क्योंकि जो भूमि अभी कष्ट में है वह सदा अंधकार में न रहेगी जैसा कि आगिले २३  
समय ने जूज़लून की भूमि और नफताली की भूमि को तुच्छ किया जैसा ही पिछला  
समय समुद्र के मार्ग परदन के तौर अन्यदेशियों के जलौल को प्रतिष्ठित करेगा ॥

नयां पद्य ।

जो लोग अधिपारे में चलते हैं उन्हें ने वही ज्योति देखी है जो मृत्यु की १  
छाया के देश में रहते हैं उन पर ज्योति चमक गई है । तू ने जातिगण को २  
बढ़ाया है तू ने उस का आनन्द अधिक किया है वे तेरे आगे आनन्दित होते  
हैं उस आनन्द के समान जो लयनी के समय होता है और जिस रीति लोग लूट  
घांटने में आनन्द करते हैं । कि तू ने उस के भारी जूए को और उस के कांधे ३  
के लठ को उस के हांकनेदारे को कड़ी को मिदियान के दिन की नाई तोड़  
डाला है । क्योंकि जो अधिपारवन्द युद्ध में जाता है उस के सारे अधिपार और ४  
जो वस्त्र कि लोह में डूबे हैं सो जलाये जायेंगे और बंधन हो जायेंगे ॥

क्योंकि हमारे लिये एक जालक उत्पन्न हुआ हम को एक पुत्र दिया गया और ५  
प्रभुता उस के कांधे पर है और उस का नाम आश्चर्य मंत्री सर्वशक्तिमान सना-  
तन का पिता कुशल का प्रधान कहलाता है । दाऊद के सिंहासन पर और उस ६  
के राज्य पर इस राज्य की बढ़ती और कुशल का अन्त न होगा जिसमें न्याय  
और धर्म के साथ अब से सदा लों उस स्थिर और स्थापना दे सेनाओं के परमेश्वर  
का तेज यह करेगा ॥

२४ इस कारण सेनाओं का प्रभु यों कहता है कि हे मेरी जाति जो सैहून में  
 २५ बस्ती है असुर से मंत डर वह तो तुझे लठ से मारेगा और अपनी कड़ी तेरे ऊपर  
 २६ मिस्र की नाईं उठायेगा । क्योंकि थोड़ी ही देर और है कि क्रोध थम जाये और  
 २७ मेरा कोप उन के विनाश के लिये चले । और सेनाओं का परमेश्वर उस के ऊपर  
 २८ कोड़ा उठायेगा जिस रीति कि मिदयान जरेख की पहाड़ी पर मारा गया और  
 २९ उस की कड़ी फिर नदी के ऊपर होगी और वह उसे मिस्र की नाईं उठावेगा ।  
 ३० और उस दिन ऐसा होगा कि उस का बोझ तेरे कांधे पर से और उस का जूआ  
 ३१ तेरे गले पर से दूर हो जायेगा और वह जूआ तेल के साम्हने तोड़ा जायेगा ।  
 ३२ वह सेयत लों आया है मिजरून से पार गया है मिकमास में अपनी सामा  
 ३३ सौंपता है । वे घाटी से पार गये जिवअ में रात भर टिके रामः कांपता है  
 ३४ जिबिआ साजल भागा जाता है । हे जलीम की पुत्री चीख मार हे लैस सुन  
 ३५ हाथ शोकमय अनातूत । मदमनः हट गया जवीम के बासी अपनी सामा हटाते  
 ३६ हैं । आज वह नूब में खड़ा हुआ चाहता है और वहां से सैहून के पहाड़ के  
 ३७ घर यरुसलम के पहाड़ पर अपना हाथ हिलायेगा ।

३८ देखो प्रभु सेनाओं का परमेश्वर इस बड़े पेड़ की डाली को भयानक रीति  
 ३९ से काटनेहारा है और जो पेड़ ऊंचाई में लंबे हैं सो काट डाले जायेंगे और जो  
 ४० ऊंचे हैं सो नीचे किये जायेंगे । और वह इस बन की झाड़ी को लोहे से काट  
 ४१ डालेगा और यह लुबनान बलवन्त के हाथ से गिर जावेगा ॥

ग्यारहवां पर्व ।

१ और यस्सी के ठूँठ से एक कोपल निकलेगी और उस की जड़ों से एक डाली  
 २ उगोगी । और उस पर परमेश्वर का आत्मा रहेगा ज्ञान और बुद्धि का आत्मा  
 ३ मंत्र और सामर्थ्य का आत्मा ज्ञान और परमेश्वर के भय का आत्मा । और वह  
 ४ परमेश्वर के भय की बास सूंघेगा और अपनी आंखों के देखने के समान न्याय न  
 ५ करेगा और अपने कानों के सुने के अनुसार चुकाव न करेगा । परन्तु वह धर्म  
 ६ के साथ दीनों का न्याय करेगा और सच्चाई के संग पृथिवी के नम्रों का विचार  
 ७ करेगा और वह अपने मुंह की लाठी से पृथिवी को मारेगा और अपने हाँठों के  
 ८ श्वास से दुष्ट को मार डालेगा । और धर्म उस की कटि का पटुका होगा और  
 ९ सच्चाई उस की कटि का बंधन ॥

१० और भेड़िया मेसा के संग रहेगा और चीता बकरी के बच्चे के संग बैठेगा  
 ११ और बकिया और सिंहबच्चे और पुष्ट पशु साथ साथ और नन्हा बालक उस की  
 १२ अगुआई करेगा । और गाय और भल्लुक मिलके चरेंगे उन के बच्चे साथ साथ  
 १३ बैठेंगे और सिंह बैल की नाईं भूसा खायेगा । और दूधपीवक बालक सांप  
 १४ की बांवी पर खेलेगा और दूध कुड़ाया हुआ लड़का काले की बांवी में अपना  
 १५ हाथ डालेगा । वे मेरे पवित्र पर्वत पर हानि न करेंगे और न बिगाड़ेंगे क्योंकि  
 १६ पृथिवी परमेश्वर के ज्ञान से परिपूर्ण हो गई जिस रीति से पानी समुद्र को ढांपता है ॥  
 १७ और उस दिन यस्सी की जड़ जो खड़ी होती है लोगों के लिये भंडा होगी  
 १८ जातिगण उस का प्रीक्षा करेंगे और उस का आश्रय विभवमय होगा ॥

मैं जिन पर मेरा क्रोध है आजा देखंगा जिसमें नाश करे और लूट ले और उस जाति की मारों की कोच की नाईं लताड़े । परन्तु वह ऐसा सोच न रखेगा और उस का मन ऐसी चिन्ता न करेगा क्योंकि उस के मन में है कि नाश करे और धृष्ट से जातिगणों को काट डाले ॥

क्योंकि वह कहता है कि क्या मेरे अध्वज सय के मध्य राजा नहीं हैं । क्या कलना करकमीस की नाईं नहीं क्या दमात अरपाद की नाईं नहीं अथवा समरन दमिशक की नाईं नहीं । जैसा मेरे हाथ ने मूर्तिपूजकों के राज्यों को पाया जिन की खोदी हुई मूर्तें यस्मलम और समरन की मूर्तों से कहीं अधिक थीं । क्या जैसा मैं ने समरन और उस की मूर्तिन से किया है वैसा ही मैं यस्मलम और उस की मूर्तिन से न करूंगा ॥

और ऐसा होगा कि प्रभु सैहून के पहाड़ के पास और यस्मलम के पास उस के समस्त कार्य को काट डालेगा हां वहां में असूर के राजा के गर्वित अंतःकरण के फल की और उस की जंजीर आंखों के विभव का दण्ड देखेगा ॥

क्योंकि वह कहता है कि मैं ने अपनी भुजा के बल से यह सब किया है और अपनी बुद्धि से क्योंकि मैं बुद्धिमान हूँ और जातिगणों के सिंघानों को मरकाता हूँ और उन के भंडारों को लूटता हूँ और बलवानों की नाईं छोड़कर उन के बसने-घानों को गिरा देता हूँ । और मेरे हाथ ने घाँसले की नाईं जातिगणों के धन को पाया है और जैसा कोई पड़े हुए अंडों का ममेठता है वैसा ही मैं ने समस्त पृथिवी को समेट लिया और कोई पंख फैलानेद्वारा और मुँह खोलनेद्वारा और चहचहानेद्वारा न था ॥

क्या कुल्हाड़ा उस के आगे जो उसने काटता है डोंग मारेगा अथवा आरा आराखिचवैय के ऊपर अपने तईं बढ़ायेगा यह ऐसा है कि लठ अपने उठानेदारों को हिलावे और ऐसा कि छड़ी उसे उठाये जो लकड़ी नहीं है । इस कारण प्रभु सेनाओं का परमेश्वर उस के मोटों पर दुर्जलता भेजेगा और उस की सटिमा के नीचे एक जलन आग की तपन की नाईं धरेगा । और इसराएल की ज्योति आग हो जायेगी और उस का धर्मसमय लवर और वह उस के कांटे और कटीले का एक ही दिन में खा जायेगा । और उस के जंगल और उस की वारी की सुन्दरता को वह प्राण से सांस लों भस्म करेगा और रोगी के क्षय हो जाने के समान होगा । और उस के बल के रहे हुए वृक्ष थोड़े ही होंगे और बालक उन्हें लिये सकेगा ॥

और उस दिन ऐसा होगा कि इसराएल के वचे हुए और यश्कूव के घराने के वचे हुए अपने मारनेदारों पर फिर सतारा न करेंगे परन्तु परमेश्वर इसराएल के धर्मसमय पर सच्चाई के साथ भरोसा करेंगे । वचे हुए यश्कूव के वचे हुए सर्व-शक्तिमान अति बलवान की ओर फिरेंगे । क्योंकि यद्यपि तेरे लोग है इसराएल समुद्र की बालू की नाईं होंगे पर उस में से केवल वचे हुए फिरेंगे उन का विनाश ठहरा हुआ है जो धर्म के साथ वहि चलेगा । क्योंकि सेनाओं का प्रभु सारी भूमि के मध्य में विनाश हां ठहराया हुआ विनाश प्रगट करनेवाला है ॥

पकड़ लेंगी जनेहारी स्त्री के समान वे रेंठेंगे वे हर एक अपने पड़ोसी पर आ-  
श्चर्यित होंगे उन के मुंह लवर के मुंह होंगे ॥

९ देखो परमेश्वर का दिन आता है कठोरता और जलजलाहट और ज्वलत्कोप  
से भरा जिसते देश को उजाड़ करे और वह उस के पापियों को उस में से नाश  
१० करेगा । क्योंकि स्वर्ग के तारे और उस के नक्षत्र अपनी ज्योति न देंगे सूर्य उदय  
११ होते होते अंधकार हो गया है और चन्द्रमा अपनी ज्योति न देगा । और मैं  
जगत को उस की बुराई का और दुष्टों को उन के कुकर्म का दण्ड दूंगा और  
अभिमानियों के अभिमान को मिटा दूंगा और भयंकरों के अहंकार को नीचा  
१२ करूंगा । मैं मनुष्य को चाखे सेने से और पुरुष को ओफीर के सेने से अधिक  
१३ बहुमूल्य बनाऊंगा । इस कारण मैं स्वर्गों को कंपाऊंगा और पृथिवी अपने ठिकाने  
से टल जायेगी सेनाओं के परमेश्वर की जलजलाहट से और उस के ज्वलत्कोप  
१४ के दिन में । और ऐसा होगा कि रगदी हुई हरिणी के समान और उस मुंड की  
नाई जिस का बटुरवैया कोई नहीं है वे हर एक अपनी जाति की ओर फिरेंगे  
१५ और हर एक अपने देश की ओर भागेंगे । हर एक जो वहां पाया जायेगा सो  
बेधा जायेगा और हर एक जो उन से मेल रखेगा सो खड़ से मारा पड़ेगा ।  
१६ और उन के बालक उन की आंखों के आगे पटके जायेंगे और उन के घर लूटे  
जायेंगे और उन की पत्नियों की पत लिई जायेगी ॥

१७ देखो मैं उन के विरोध में मादियों को उठाता हूं जो रूपे को कुछ न समझेंगे  
१८ और सेने से आनन्दित न होंगे । और धनुष लड़कों को टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे  
और वे गर्भ के फल पर दया न करेंगे उन की आंखें बालकों पर मया न करेंगी ।  
१९ और बाबुल जो राज्यों का सौंदर्य और कसदियों की सुन्दरता और विभव है  
२० उस की दशा ईश्वर के सद्म और अमरा के उलट देने की नाई होगी । वह  
कभी बसाया न जायेगा और पीछी से पीछी लों कोई उस में न बसेगा और न  
वहां कोई अरब डेरा खड़ा करेगा और न चरवाहे वहां अपने मुंडों को बैठायेंगे ।  
२१ पर वहां बन्धुपशु बैठेंगे और उन के घर भयानक शब्दों से भर जायेंगे और वहां  
२२ शूतरमुर्ग रहेंगे और बड़े बालवाले पशु वहां नार्चेंगे । और भेड़िये उस के भवनों में  
और गीदड़ सुन्दर स्थानों में हूहा करेंगे और उस का समय आने के समीप है और  
उस के दिन बढ़ाये न जायेंगे ॥

चौदहवां पर्व ।

१ क्योंकि परमेश्वर यश्कूब पर दया करेगा और फिर इसराएल को चुनेगा और  
उन्हें उन के देश में चैन देगा और परदेशी उन से जा मिलेंगे और परदेशी यश्-  
२ कूब के घराने से मिल जायेंगे । और जातिगण उन्हें ले लेंगे और उन्हें उन के  
स्थान में पहुंचावेंगे और इसराएल का घराना परमेश्वर के देश में उन्हें अधिकार  
में लेगा जिसते उस के दास और दासियां हों और वे अपने बंधुआ करवियों की बंधुआ  
करेंगे और अपने अंधेरियों पर प्रभुता करेंगे ॥

३ और ऐसा होगा कि जिस दिन परमेश्वर तुम्हें तेरे दुःख से और तेरी घबराहट  
४ से और उस कठोर दासता से जो तुम्हें से लिई गई चैन देगा । तब तू बाबुल के

और उस दिन ऐसा होगा कि प्रभु दूसरी बार अपना हाथ बढ़ायेगा जिनमें ११  
 अपने लोगों के वचे हुएों को मार ले जो असुर और मिम और फतरस और  
 कुश और गेलाम और मिनआर और हमत और समुद्र के टापुओं से वच रहेंगे ।  
 और वह देशगणों की दृष्टि में भंडा उठायेगा और निकाले हुए इसरायेलियों को १२  
 एकट्ठे करेगा और बिचरे हुए यहुदियों को पृथिवी के चारों खंड से बटोर लेगा ।  
 और इफरायम का हाथ मिट लायेगा और यहुदाह के विरोधी काट डाले जायेंगे १३  
 इफरायम यहुदाह से हाथ न रखेगा और यहुदाह इफरायम को कष्ट न पहुँचा-  
 वेगा । और वे पच्छिम की ओर फिलिस्तिनों के कंधे पर भपट्टा मारेंगे वे साथ १४  
 साथ पूरब के वासियों को लूटेंगे अरब और मोअब पर हाथ डालेंगे और अमोन  
 के संतान उन के आधीन होंगे । और परमेश्वर मिय की नदी की जीम को सुखा १५  
 डालेगा और अपनी आधी के बल से अपना हाथ नदी पर ढिलावेगा और उसे  
 मात नाले कर देगा और अपने लोगों को जूतें पहिने हुए उस में चलावेगा ।  
 और उस के लोगों के वचे हुएों के लिये जो असुर से वच रहेंगे एक सड़क होगी १६  
 जिस रीति इसराएल के लिये थी जिन दिन कि वह मिन की भूमि से चढ़ा ॥

चारहवां पर्व ।

और तू उस दिन कहेगा कि हे परमेश्वर मैं तेरा धन्यवाद कहूँगा क्योंकि १  
 यद्यपि तू मुझ पर क्रुद्ध हुआ तथापि तेरा क्रोध उतर गया और तू मुझे शांति  
 देता है । देखो सर्वशक्तिमान मेरी मुक्ति है मैं आशा रखूँगा और न डरूँगा २  
 क्योंकि मेरा बूता और मेरा गान ईश्वर परमेश्वर है और वह मेरी मुक्ति हुआ  
 है । और तू म आनन्द के साथ मुक्ति के स्रोतों से पानी भरेगा ॥ ३

और तू उस दिन कहेगा कि परमेश्वर का धन्य मानो उस का नाम पुकारो ४  
 जातिगणों में उस के कार्य प्रगट करो उन्हें चेत दिलाओ कि उस का नाम महान  
 है । परमेश्वर की स्तुति में गान करो क्योंकि उस ने सद्यः कार्य किया है समस्त ५  
 पृथिवी में यह प्रगट हो जाये । हे सैदून की निवासिनी चिल्ला और ललकार क्योंकि ६  
 तेरे मध्य इसराएल का धर्ममय महान है ॥

तिरहवां पर्व ।

बाबुल का वोभ जिसे अमूम के बेटे यसत्रिंशत्त ने दर्शन में देखा । नंगे १  
 पहाड़ पर भंडा उठाओ उन की ओर शब्द उंचा करो हाथ ढिलाओ और वे  
 अध्वनों के फाटकों में आयें । मैं ने अपने ठहराए हुएों को आज्ञा किई है हां ३  
 अपने कोप के लिये अपने वीरों को अपने अभिमानी घमण्ड करवैयों को तुलाया है ॥

पहाड़ों में भीड़ का शब्द बड़ी जाति के समान एकट्ठे हुए जातिगणों के ४  
 राज्यों के हुल्लड़ का शब्द सेनाओं का परमेश्वर लड़ाई के लिये सेना की गिन्ती  
 लेता है । दूर देश से स्वर्गों के अन्त से आते हैं परमेश्वर और उस के क्रोध के ५  
 हथियार जिनमें सारे देश को नाश करें ॥

बिलाप करो क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है शक्तिमान की ओर से वह ६  
 शक्ति के समान आयेगा । इस लिये सारे हाथ नीचे हो जायेंगे और हर मनुष्य ७  
 का मन पिघल जायेगा । और वे भयातुर होंगे शोक और जन्ने की पीड़ा उन्हें ८



अपने देश में हारमान करूं और मैं अपने पहाड़ों पर उसे लताडूंगा और उस का  
जूआ-उन के ऊपर से अलग हो जायेगा और उस का बोझ उस के कंधे पर से  
२६ टल जायेगा । यह वह इच्छा है जो सारी पृथिवी पर ठहराई गई और यह वह  
२७ हाथ है जो समस्त जातिगणों के ऊपर बढ़ाया गया । क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर  
ने इस को ठहराया है और कौन उस की इच्छा को टाल सकेगा और उस  
ही का हाथ है जो बढ़ाया गया और कौन उसे फेरेंगे ॥

२८ जिस वरस कि आखज राजा मर गया उसी वरस यह बोझ वर्धन हुआ ।  
२९ कि हे सारी फिलिस्त तू इस लिये आनन्द मत कर कि तेरा मारनेवाला लठ  
तोड़ा गया क्योंकि सर्प के मूल से एक काला निकलेगा और उस का वंश एक  
३० प्रज्वलित उड़वैया सांप होगा । और कंगालों के पहिलौठे भुंड के समान चरेंगे  
और दरिद्र चैन से बैठेंगे और मैं तेरी जड़ को आकाल से नाश कराऊंगा और  
३१ तेरे बच्चे हुआं को आकाल मार डालेगा । हे फाटक विलाप कर हे नगर चिल्ला  
हे फिलिस्त तू सर्वथा पिघल गया क्योंकि उत्तर से धूआं आता है और उस की  
३२ सेनाओं में कोई भटका हुआ नहीं है । और देश के दूतों को क्या उत्तर दिया  
जायेगा कि परमेश्वर ने सैहून की नैव डाली है और उस में उस के लोगों के  
दरिद्र शरण पायेंगे ॥

#### पंदरहवां पर्व ।

१ मोआब का यह बोझ है कि रात को आरमोआब उजाड़ दिया गया सुनसान  
हो गया कि रात को कीरमोआब उजाड़ दिया गया सुनसान हो गया ।  
२ वे देवालय में चढ़ जाते हैं और दीवान जंचे स्थानों पर रोने के लिये नख पर  
और मेदिना पर मोआब विलाप करता है उस के सारे सिर सुड़ाये गये हर  
३ एक दाढ़ी कट गई । उस के मार्गों में उन्हें ने टाट का पटुका बांधा है उस  
की कृतों पर और उस के चौकों में वह सर्वथा रोने के साथ उतरते हुए विलाप  
४ करता है । और हसबान और अलिआले चिल्लाते हैं यहज लों उन का शब्द सुना  
गया इस लिये मोआब के शस्त्रधारी चिल्लाते हैं उस का प्राण उस में बेचैन है ।  
५ मेरा मन मोआब के लिये चिल्लाता है उस के भगेडू जुग लों भाग गये वह अब  
तीन वरस की बकिया है क्योंकि लूहीत पर चढ़नेहारा रोने के साथ उस पर  
६ चढ़ता है क्योंकि होरोनैम के मार्ग पर वे हार का शब्द उठाते हैं । क्योंकि  
निमरीम की धाराएं सूखी पड़ी हैं क्योंकि घास सूख गई वनस्पति भुरा गई और  
७ हरियाली कुछ नहीं है । इस लिये जो कुछ किसी ने प्राप्त किया उस की खचती  
८ और अपना धन वे बेंतों की नदी के पार उठा ले जायेंगे । क्योंकि उस का  
चिल्लाना मोआब के सिवाने को घेरता है अजलैम लों उस का विलाप सुना गया  
९ और बिअरऐलीम लों उस का हाहाकार । क्योंकि दीमान के जल लोहू से भर  
गये क्योंकि मैं दीमान पर अधिक बिपत्तें डालूंगा मोआब के बच्चे हुआं पर और  
उस देश के बच्चे हुआं पर सिंह भेजूंगा ॥

#### सोलहवां पर्व ।

१ तुम सिलअ से वन की ओर सैहून की पुत्री के पहाड़ लों देश के अध्वस

राजा पर यह दृष्टान्त उठायेगा और कहेगा कि बलवान क्योंकर नष्ट हो गया  
 सोनहरा नगर नष्ट हो गया । परमेश्वर ने दुष्टों का लठ और आजाकारियों का ५  
 दण्ड तोड़ डाला है । जो जातिगणों को क्रोध के साथ उस मार से जो थमती नहीं ६  
 मारता था जो जातिगणों पर कोप के साथ उन अंधेर से जिसे कोई नहीं रोकता  
 था प्रभुता करता था । सारी पृथिवी विश्राम और चैन में है ये आनन्द की लल- ७  
 कार में फूट निकलते हैं । मरे के वृत्र भी तेरे विषय आनन्द करते हैं और नुय- ८  
 नान के देवदारु और यह कहते हैं इस लिये कि तू गिराया गया कोई लकड़हारा  
 हमारे विरुद्ध न चढ़ेगा । पाताल नीचे से तेरे लिये टिन उठा है जिसमें तेरे आने ९  
 की अगौनी करे वह तेरे लिये रफाईस को पृथिवी के सारे अध्यन्तों को जगाता  
 है यह जातिगणों के सारे राजाओं को उन के सिंहासनों पर से उठाता है । ये १०  
 सब कोई उत्तर देंगे और तुझ से कहेंगे कि तू भी हमारे समान दुर्बल हो गया  
 हमारे समान बनाया गया । तेरा ऐश्वर्य और विभव तेरी योगों का वज्रना ११  
 पाताल में गिराया गया तेरे नीचे कृमि छिड़ाया गया तेरा ओढ़ना कीड़ा है । हे १२  
 शुक्र प्रातःकाल के पुत्र तू क्योंकर स्वर्ग पर से गिर पड़ा तू कि जातिगणों पर  
 अंधेर करता था क्योंकर पृथिवी पर गिराया गया । और तू अपने मन में कहता १३  
 था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा सर्वशक्तिमान के तारों के ऊपर अपना सिंहासन  
 उठाऊंगा और मंडली के पहाड़ पर उत्तर की अलंग में बैठूंगा । मैं मंद्यों की १४  
 जंघाड़ियों पर चढ़ूंगा अपने तर्हि अति महान के तुल्य बनाऊंगा । पर तू केवल १५  
 पाताल में गड़हे की गहिराइयों में गिराया जायगा । जो तुझे देखेंगे सो तुझ को १६  
 घूरेंगे तुझ पर ध्यान से दृष्टि करेंगे और कहेंगे क्या यह बड़ी सनुष्य है जो पृथिवी  
 को टिलाता और राज्यों को कंपाता था । जिस ने जगत को जंगल के समान १७  
 बनाया और उस के नगरों को उजाड़ किया उस के वंशुओं को उन के घर की  
 ओर न जाने दिया । जातिगणों के समस्त राजा गाड़े जाकर विभव में लेटते हैं १८  
 हर एक अपने अपने घर में । पर तू अपनी समाधि में फँका गया घिनित डाली १९  
 की नाईं उन मंधारितों के वस्त्र की नाईं जो खड्ग से कटे गये जो गड़हे के पत्थरों  
 में गिरते हैं लताड़ी हुई लोथ की नाईं । तू उन के संग समाधि में जाकर गाड़ा २०  
 न जायेगा क्योंकि तू ने अपने देश को उजाड़ किया अपनी प्रजा को घात किया  
 कुकर्मियों के वंश का फिर सदा लो चर्चा न हो । उस के बालकों के लिये घात २१  
 सिद्ध करो उन के पितरों के पाप के कारण से ये न उठें और पृथिवी को वश में  
 न करें और जगत को नगरों से न भर दें ।

और मैं आप उन के विरुद्ध में उठूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और २२  
 घाबुल से हर नाम और चिन्ह को और वंश और संतान को फाट डालूंगा  
 परमेश्वर कहता है । और मैं उसे साही का अधिकार और पानी की भीलें २३  
 ठहराऊंगा, और उसे नाश की युद्ध से युद्ध डालूंगा सेनाओं का परमेश्वर  
 कहता है ।

सेनाओं के परमेश्वर ने यह कहके किरिया खाई है कि निश्चय जैसा मैं ने २४  
 चाहा वैसा ही हुआ और जैसा मैं ने ठाना वही स्थिर रहेगा । कि अमूर को २५

खड़े हुए अनाज को बटोरे और उस का हाथ बालों को लवे और ऐसा होगा  
 ६ जैसा कोई रफाईस की तराई में सिला बीने । और उस में सिला बीने के लिये  
 कुछ बच रहेगा जैसा कि जलपाई के वृक्ष हिलाने के समय दो तीन दाने फुनगी  
 के ऊपर चार पांच फलवन्त पेड़ की डालों पर परमेश्वर इसराएल का ईश्वर  
 कहता है ॥

७ उस दिन मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता की ओर फिरेगा और उस की आंखें इसराएल  
 ८ के धर्ममय की ओर दृष्टि करेंगी । और वह यज्ञवेदियों अर्थात् अपने हाथों के  
 कार्य की ओर दृष्टि न करेगा और जो उस की अंगुलियों ने बनाया वह उस पर  
 ९ और विधातृदेवियों पर और सूर्य की प्रतिमाओं पर दृष्टि न करेगा । उस दिन  
 उस के दृढ़ नगर उस के समान होंगे जो भाड़ी और फुनगी में बच गया अर्थात्  
 वह नगर जो वे छोड़ देते हैं जब इसराएल के संतानों के आगे से फिर जाते हैं और  
 १० देश उजाड़ होगा । कि तू ने अपने मुक्तिदाता ईश्वर को मुला दिया और अपनी  
 शरण की चटान को चेत नहीं किया इस लिये तू मनभावने पौधों को लगावेगा  
 ११ और उस में परदेशी कोपल जमावेगा । जिस दिन तू उसे लगायेगा तू उस के  
 चहुँओर बाड़ा बांधेगा और बिहान को अपने बीज से फूल दिखावेगा पर उदासी  
 और अत्यन्त शोक के दिन उस का फल जाता रहेगा ॥

१२ सुनो बहुत से जातिगणों का हूहाकार समुद्रों के शब्द की नाई वे हाहा  
 करते हैं और जातिगणों का रेला बड़े पानियों के रेले के समान वे रौला करते  
 १३ हैं । जातिगण बहुत पानियों के रेले के समान रौला मचाते हैं और वह उसे  
 दपटता है और वह दूर से भाग जाता है और पर्वतों की भूमी के समान आंधी  
 १४ के आगे और घूमती हुई वस्तु के समान बगूले के साम्हने रगोदा जाता है । सांभ  
 के जून और देखो भय और बिहान से पहिले वह है ही नहीं यह हमारे लूटने-  
 हारों का भाग और हमारे नाश करनेहारों का अधिकार होगा ॥

### अठारहवां पर्व ।

१ अरे हे फड़फड़ानेहारी पंखों की भूमि जो कूश की नदियों के उस पार है ।  
 २ जो समुद्र पर और पटोरे की नौकों में पानियों के ऊपर दूतों को भेजती है हे शीघ्र  
 चलवैये दूतों लंबी और सिर मुंडी हुई जाति के पास जाओ एक जाति के पास  
 जो आरंभ से अब लों भयानक है दूने बल और रौंदनेहारी जाति जिस के देश  
 ३ की नदियां दो भाग कर देती हैं । हे जगत के समस्त वासियो और पृथिवी के  
 निवासियो तुम मानो पर्वत पर ध्वजा उठाना देखोगे और मानो तुरही फूंकना  
 सुनेगे ॥

४ क्योंकि परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि मैं अपने निवास में चुपचाप रहूंगा  
 और ताक रखूंगा मध्यम ग्रीष्म के समान जो हरियाली पर है और ओस टप-  
 ५ कानेहारे बादल के समान जो लवनी की तपन में है । क्योंकि लवनी से पहिले  
 जब कली पूर्ण हो और फूल पकनेहारा दाख होने पर हो तब वह हंसुओं से  
 डालियों को काट डालता है और टहनियों को काटके अलग कर देता है ।  
 ६ वे एक ही साथ पहाड़ों के अहेरी पक्षियों के लिये और पृथिवी के बनेले पशुओं

के पास सेना भेजे । और ऐसा होगा कि भटकी हुई चिड़िया के समान फेंके २  
हुए खोते की नाईं मोआय की घोटियां और अर्नन के घाट होंगे । परामर्श दो ३  
विचार करो ठीक दोपहर को अपनी छाया रात के समान बना निकाले हुए  
को छिपा ले भटके हुए को प्रगट न कर । मेरे अर्थात् मोआय के भटके हुए ४  
तुम्ह में रहें तू उन के लिये नाशक के सामने आइ हो क्योंकि अंधेरी हो चुका  
व्यग्रस्ती मिट गई भूमि पर से रौंदवैया नष्ट हुआ । और सिंघासन दया से स्थिर ५  
किया जायेगा और उस पर दाऊद के तंत्र में मृत्यु के मंग वह बैठेगा जो न्याय  
करवैया और विचार का चाहक और धर्म में चतुर होगा ॥

हम ने मोआय के अर्थात् उस बड़े अहंकारी के अहंकार का संदेश सुना है ६  
उस का घमंड और उस का गर्व और उस का क्रोध और उस की निरर्थक बातों  
का ये ठिकाने होना ॥

हम लिये मोआय मोआय के लिये विलाप करेगा उस का सर्वथा विलाप ७  
करेगा तुम सर्वथा सारे जाके कीरहरसत की दाख की लिट्टियों के लिये दाय ८  
मारोगे । क्योंकि इस्यान के खेत सूख गये जातिगणों के अधीनों ने सिंघासन ९  
की दाख की उत्तम हालियों को तोड़ डाला वे यश्वेतर ने पटुंछी जंगल में विग्रर  
गई उस की हालियां फैल गई समुद्र के पार गई । इस लिये मैं सिंघासन की ९  
दाख के लिये यश्वेतर के रोने के साथ रोऊंगा हे हमदान और हे अलिआले मैं  
तुम्हें अपने आंशुओं से भिगाऊंगा क्योंकि तेरे फलों के घटारने पर और तेरे अनाज  
के काटने पर ललकार पड़ी है । और वाटिका से सगनता और आनन्दता ले लिई १०  
गई और दाख की वाटिका में फिर गाया न जायेगा और ललकारा न जायेगा रौंदवैया  
दाख की कोल्हियों में फिर न रौंदेगा मैं ने ललकार को चुप कर दिया है । हम लिये मेरी ११  
अंतःछियां मोआय के लिये बीगा के समान विलाप करेंगी और मेरा अंतःकरण  
कीरहरस के लिये । और ऐसा होगा कि जब मोआय अपने देवों के सामने देखा १२  
जायेगा जब जंघे स्थान पर अपने तईं निर्लाभ की प्रार्थनाओं से अक्रायेगा तब  
वह अपने मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये आयेगा पर उत्तर न पा सकेगा ॥

यह वह वचन है जो परमेश्वर ने मोआय के विषय में प्राचीन में कहा । १३  
और अब परमेश्वर यह कहता है कि तीन वरस में अनिहार के वरसों के समान १४  
मोआय का विभव अपने सारे बड़े हुल्लड़ सहित तुच्छ हो जायेगा और उस का  
बचा हुआ छोटा और थोड़ा होगा और बहुत नहीं ॥

सतरहवां पृष्ठ ।

दिमिशक का बोझ देखो दिमिशक ऐसा नष्ट हुआ कि नगर नहीं है और १  
टीला और उजाड़ हो गया । अरआयर के नगर छोड़ दिये गये वे भुंडों के लिये २  
होंगे और वे वहां बैठेंगे और उन का कोई डरानेदारा न होगा । तब इफराईम ३  
से गढ़ जाता रहेगा और दिमिशक और अराम की वचती से राज्य वे वचें हुए  
इसराएल के संतानों के विभव की नाईं हो जायेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है ।

और उस दिन ऐसा होगा कि यश्कूब का विभव दुर्बल हो जायेगा और उस ४  
की पुष्ट देह दूबर हो जायेगी । और ऐसा होगा जैसा कोई लवनी करते हुए ५

सेनाओं के परमेश्वर से सेवा की किरिया खानेहारे होंगे और एक विनाश का नगर कहा जायेगा ॥

१९ उस दिन मिश्र के देश के मध्य में परमेश्वर के लिये वेदी और उस के सिंघाने  
२० पर परमेश्वर के लिये खंभा होगा । और यह मिश्र के देश में सेनाओं के परमेश्वर  
का चिन्ह और साक्षी होगा कि वे अंधेरियों के आगे परमेश्वर को पुकारेंगे और  
वह उन के लिये एक मुक्तिदाता और लड़नेहारा भेजेगा और उन्हें छुड़ावेगा ।  
२१ और परमेश्वर मिश्र में जाना जायेगा और मिश्री उस दिन परमेश्वर को जानेंगे और  
बलिदानों और भेंटों के साथ सेवा करेंगे और परमेश्वर से मनोमानी मानेंगे और उसे  
२२ पूरी करेंगे । और परमेश्वर मिश्र को मारेगा मारके चंगा करेगा और वे परमेश्वर की  
और फिरेंगे और वह उन की प्रार्थना सुनेगा और उन्हें चंगा करेगा ॥

२३ उस दिन मिश्र से असूर लों एक बड़ी सड़क होगी और असूर मिश्र में आवेगा  
और मिश्र असूर में और मिश्री असूर के साथ सेवा करेंगे ॥

२४ उस दिन इसराएल मिश्र और असूर के संग एक तीसरा होगा और पृथिवी के  
२५ मध्य आशीष का कारण । जिसे सेनाओं के परमेश्वर ने यह कहते हुए आशीष  
दिई है कि धन्य हो मेरे लोग मिश्र और मेरे हाथों के कार्य असूर और मेरा  
अधिकार इसराएल ॥

### बीसवां पर्व ।

१ जिस वरस कि तरतान अशदूद में आया जब असूर के राजा सरजून ने उसे  
२ भेजा और वह अशदूद से लड़ा और उसे ले लिया । उस समय परमेश्वर ने असूर  
के वेटे यसश्रियाह के द्वारा यह कहते हुए वार्त किई कि जो और अपनी कटि  
पर से टाट खोल डाल और अपने पांवां से अपनी जूती उतार और उस ने ऐसा  
३ ही किया कि नग्न और नंगे पांवां होके चला फिरा । और परमेश्वर ने कहा कि  
जिस रीति से मेरा सेवक यसश्रियाह नग्न और नंगे पांवां होके चला फिरा है  
४ जिसमें मिश्र और कूश के लिये तीन वरस लों चिन्ह और लक्षण रहे । इसी रीति  
से असूर का राजा मिश्र के वंधुओं को और कूश के देशत्यागियों को तरुणों और  
वृद्धों सहित नग्न और नंगे पांवां और उन के चूतड़ों को नंगा करके मिश्र की  
५ लज्जा के लिये ले जायेगा । और वे कूश से जो उन की आशा का स्थान और  
६ मिश्र से जो उन की प्रतिष्ठा थी भयमान और लज्जित होंगे । और उस दिन इस  
तट के वासी कहेंगे कि देखो हमारी आशा के स्थान की यह दशा है जहां हम  
सहाय के लिये भागे जिसमें असूर के राजा के साम्हने से छुटकारा पायें सो हम  
किस रीति से बर्चेंगे ॥

### एकौसवां पर्व ।

१ समुद्र के अरण्य का वोभ दक्षिणी बल करनेहारे बगूलों के समान वह अरण्य  
से भयंकर देश से आता है ॥  
२ एक डरावने दर्शन का मुक्त से वर्णन किया गया कि धोखा देनेहारा धोखा  
देता है और लुटेरा लूटता है हे ऐलाम चढ़ाई कर हे मादै घेर ले मैं ने सारे  
३ कराहने को जो उस के कारण से हुआ बंद कर दिया है । इस कारण से मेरी

के लिये छोड़ी जायेंगी और अहेरी पत्नी उन पर ग्रीष्म का समय काटेंगे और पृथिवी के सारे वनैले पशु उन पर जाड़ा काटेंगे । उस समय सेनाओं के परमेश्वर के पास एक भेंट पहुंचाई जायेगी अर्थात् एक लंबी और सिर मुंडी हुई जाति और एक जाति के द्वारा मे जो आरंभ से अब लों भयानक है और देने बनवाली और रौंदनेहारी जाति जिस के देश को नदियां दो भाग कर देती हैं सेनाओं के परमेश्वर के नाम के स्थान अर्थात् मैदून के पर्वत पर ४

उन्नीसवां पर्व ।

मिस्र का चेक देखा परमेश्वर हलकी बदली पर चढ़के मिस्र में आता है १ और मिस्र की मूर्तें उस के आगे कांपती हैं और मिस्र का मन उस के भीतर पिघल जाता है । और मैं मिस्र को मिस्र पर उसकाजंगा और वे लड़ेंगे हर एक अपने २ भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से नगर नगर से और राज्य राज्य से । और मिस्र का आत्मा उस के भीतर घट जायेगा और मैं उस की चतुराई को निगल जाऊंगा और वे मूर्तें और गणकों और टोनों और आत्माओं में प्रश्न करेंगी । और मैं मिस्र को क्रूर अध्यक्ष के हाथ में जकड़ूंगा और बनवान राजा उन पर ४ राज्य करेगा परमेश्वर सेनाओं का प्रभु कहता है । और समुद्र का जल घट जायेगा ५ और नदी भूरी और निर्जल हो जायेगी । और धाराएं दुर्गंध करेंगी मिस्र की ६ नदियां कृष्ण और भूरी हो गईं नल और जर कुम्हला गये । कछार नदी पर नदी ७ के मोहाने पर और नदी की सारी जुतार भूमि सारी जाके सूख जायेगी और फिर न होगी । और मछ्रिये टाय सारेंगे और बिनाप करेंगे नील नदी के सारे वंसी ८ फंफनेहारे और पानी के ऊपर के सारे जान फलानेहारे कुम्हला गये । और निर्मल ९ किये हुए पटसन के गिल्पी और म्येत वस्त्रों के बिनेहारे लज्जित हैं । और उस १० के ग्रंथे तोड़े गये सारे वनिदार दुःखित हैं । जोश्रन के अध्यक्ष सय के सब मूर्ख ११ हैं फिरजन के मंत्रियों के बुद्धिमान जो हैं उन का मंत्र पशुवत हो गया तुम क्योंकि फिरजन से कहोगे कि मैं बुद्धिमानों का पुत्र प्राचीन राजाओं का बेटा हूं । वे कदां हैं तेरे बुद्धिमान कदां हैं अब हाथ कि तुम्हें बतलायें और नहीं तो जानें १२ कि सेनाओं के परमेश्वर ने मिस्र के विषय में क्या ठहराया है । जोश्रन के अध्यक्ष १३ मूर्ख हो गये नृप के अध्यक्ष हल ग्या गये और जो उस की गोष्ठी के प्रधान हैं उन्हें ने मिस्र को भसा दिया है । परमेश्वर ने उस के मध्य में उलटनेहारा आत्मा १४ मिलाया है और उन्हें ने मिस्र को उस के सारे कार्यों में डगमगा दिया जिस रीति कि मद्यप अपनी छांट की दगा में डगमगाता है । और मिस्र का ऐसा १५ कोई काम न होगा जो सिर और पूंछ ताड़ और नरकट कर सकेगा ॥

उस दिन मिस्र स्त्रियों की नाईं होगा और डरेगा और कांपेगा सेनाओं के १६ परमेश्वर के हाथ के उस हिलाने से जो वह उस के ऊपर छिलाता है । और १७ यहूदाई की भूमि मिस्र के लिये भय का कारण होगी हर एक जिस्से उस की चर्चा किई जायेगी वह सेनाओं के परमेश्वर के उस मनोरथ से डरेगा जो वह उस के विरुद्ध में रखता है ॥

उस दिन मिस्र के देश में पांच नगर कनयान की भापा बोलनेहारे और १८



६ जायेंगी और लोग पर्वत की ओर सहाय के लिये दोहाई देंगे । और सेलाम ने  
 रथों और पदातियों और घोड़चढ़ों के साथ तूण उठाया और कीर ने ढाल  
 ७ निकाली । और सेला हुआ कि तेरी चुनी हुई तराई रथों से भर गई और घोड़-  
 ८ चढ़ों ने फाटक की ओर डेरा किया । और यहूदाह का ओट खोला गया और  
 ९ तू ने उस दिन खन के घर के हथियारस्थान पर दृष्टि रखी । और तू ने दाऊद  
 १० के नगर की दरारों को देखा कि वे बहुत थीं और तू ने नीचे के पोखरे के  
 ११ पानी को एकट्ठा कर लिया । और तू ने यरूसलम के घरों को गिन लिया और  
 १२ घरों को ढा दिया जिसमें भीतों को फिर सुधारो । और तू ने प्राचीन सरोवर  
 १३ के पानी के लिये दोहरी भीतों के मध्य में कुण्ड बनाया और उस के मुख्यकर्ता  
 १४ की ओर दृष्टि नहीं रखी और जो प्राचीन से उस का बनानेहारा है तू ने उसे  
 १५ नहीं देखा । और प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने उस दिन रोने और बिलाप  
 १६ करने और बार नाचने और टाट बांधने को बुलाया । और देखो आनन्द और  
 १७ आल्हाद गाय बैल बध करना और भेड़ बकरी का मारना मांस खाना और  
 १८ मदिरा पीना खाये और पीये क्योंकि कल हम मरेगे । और सेनाओं के परमे-  
 १९ श्वर ने मेरे कानों में यह प्रकाश किया कि निश्चय तुम्हारे मरने लो तुम्हारे  
 २० इस कुकर्म का प्रायश्चित्त न लिया जायेगा प्रभु परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर  
 २१ कहता है ॥

२२ प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने यों कहा कि जा इस भंडारी के पास  
 २३ शिबना के पास जो भवन का प्रधान है भीतर जा । और कह कि तेरा यहां  
 २४ क्या है और तेरा यहां कौन है कि तू ने यहां अपने लिये समाधि खोदी है यह  
 २५ जो ऊंचाई पर अपनी समाधि खोदता है चटान में अपना निवासस्थान काटता  
 २६ है । हे मनुष्य देख परमेश्वर बल के साथ तुम्हें सर्वथा गिरा देता है और तुम्हें  
 २७ सर्वथा वेष्टन से वेष्टित करता है । लपेटते लपेटते वह तुम्हें लपेट लेगा गंद के  
 २८ समान जो चौड़ी भूमि में लुढ़काया गया वहां तू जाके मरेगा और वहां तेरे  
 २९ विभव के रथ तुम्हें ले जायेंगे अरे तू कि अपने स्वामी के घर की लज्जा है ।  
 ३० और मैं तुम्हें तेरे ठिकाने से निकाल दूंगा और तू अपने पद से गिराया जायेगा ।  
 ३१ और उस दिन ऐसा होगा कि मैं अपने सेवक खिलकियाह के बेटे इलियाकीम  
 ३२ को बुलाऊंगा । और मैं तेरा वस्त्र उसे पहिनाऊंगा और तेरे पटुके से उसे दृढ़  
 ३३ करूंगा और तेरा राज्य उस के हाथ में सौंपूंगा और वह यरूसलम के वासियों  
 ३४ और यहूदाह के घराने को पिता हो जायेगा । और मैं दाऊद के घर की  
 ३५ कुंजी उस के कांधे पर धरूंगा सो वह खेलेगा और कोई बंद करवैया न होगा  
 ३६ और बंद करेगा और कोई खोलवैया न होगा । और मैं उसे खूंटी की नाई दृढ़  
 ३७ स्थान में स्थापन करूंगा और वह अपने पिता के घराने के लिये सहिमा की चौकी  
 ३८ हो जायेगा । और उस के पिता के घराने का सारा विभव लड़केवाले और  
 ३९ बालबच्चे सारे छोटे छोटे पात्र कटोरे से लेके सारे बड़े पात्रों तक उस पर  
 ४० लटकाये जायेंगे ॥

४१ परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर कहता है कि उस दिन जो खूंटी दृढ़ स्थान में

कंठि बड़ी पीड़ा से सर गई छेदकारी स्त्री के जने की पीड़ा के समान जने की पीड़ा ने मुझे पकड़ लिया है मैं ऐसा बैठ गया हूँ कि सुन नहीं सकता घबरा गया हूँ कि देख नहीं सकता । मेरा मन घबरा गया डर मुझ पर आ पड़ा उस ने मेरे विलाम की सांझ को मेरे लिये डर ठहराया है । मंच लगाई गई भोजनग्रामनीयवस्त्र पहनाया गया वे खाते पीते हैं वे अध्यक्षा उठो ठाल पर तेल मला ॥

क्योंकि प्रभु ने मुझ से याँ कहा है कि जा पदर खड़ा कर जो वह देखे सो करताये ॥

और जो वह घोड़खटों को घोड़े के दो दो घोड़खटों को गदहे के चढ़ने-द्वारों को जंट के चढ़नेद्वारों को देखे तो बड़ी चौकसी के साथ कान धरे । और घट सिंघ की नाईं पुकारता है कि ये प्रभु में गुदा दिन को पहिरे के गुस्मट पर खड़ा रहता हूँ और सब रातों को अपनी चौकी पर बना रहता हूँ । और देखो ये मनुष्य चढ़े हुए आते हैं दो दो अश्वार और वह उत्तर देके कहता है कि घायल गिर पड़ा गिर पड़ा है और उस के देवों की सारी हूर्तों को उस ने मूम पर चूर चूर कर डाला है ॥

हे मेरे माँड़े हुए और मेरे खलिहान के अनाज जो मैं ने सेनाओं की परमेश्वर दसराल के ईश्वर से सुना है सो तुम से ध्यान किया है ॥

दूसः का बोझ गहिर से काँधे मुझे पुकारता है कि ये पदर कितनी रात है घे पदर कितनी रात ॥

पदर कहता है कि विद्यान होता है और रात भी यदि तुम पूछा चाहते हो तो फिर आके पूछो ॥

अथ का बोझ है दवानियों के यात्रियों तुम अथ की भाड़ियों में रात बिताओगे । तैसा के देश के वासी पानी लेके प्रियासे की अगौनी करते हैं और भगवैये के लिये रोटी लेकर उसमे मिलने को निश्रणते हैं । क्योंकि ये खड्ग के आगे से नंगे खड्ग के सामने से और छड़ाये हुए धनुष से और गुड की बहुताई के कारण से भागे । क्योंकि प्रभु मुझ से याँ कहता है कि एक और घर में यनिहार के घरों के समान कीदार का सारा विभव जाता रहेगा । और धनुषधारियों की गिल्ली में से जो बच्चे हुए हैं अर्थात् कीदार के संतानों के पीर घट जायेंगे क्योंकि परमेश्वर दसराल के ईश्वर ने कहा है ॥

धार्दसवां पद्य ।

दर्शन की तराई का बोझ अथ तुम्हें क्या हुआ कि तू सर्वथा हत्तों के ऊपर चढ़ गई है । अरे कालाहल से भगी छुल्लड़ करनेद्वारे नगर आनन्द करनेद्वारी वस्ती तेरे जूझे हुए खड्ग के जूझे हुए नहीं और न गुड के सारे हैं । तेरे सारे अध्यक्ष एक ही साथ भागे वे धनुषधारियों के वंधुग हुए जो तुम में मिले वे सब एक ही संग बांधे गये वे दूर से भागे । इसी लिये मैं ने कहा कि मेरी ओर से मुँह फेर लो मैं विलम्ब विलम्बके रोडंगा मुझे मेरी जाति की बेटों के उजाड़ के विषय शांति देने की चिंता न करो । क्योंकि प्रभु सेनाओं का परमेश्वर दर्शन की तराई में कालाहल और रौंदने और घबराहट का दिन रखता है भीत तोड़ डाली ॥

चौबीसवां पृष्ठ ।

१ देखो परमेश्वर देश को सूना करता और उसे सर्वथा छूटा करता है और वह  
 २ इसे चलाट देगा और उस के वासियों को छिन्न भिन्न करेगा । और ऐसा होगा कि  
 ३ जैसी जाति वैसा याजक जैसा सेवक वैसा उस का स्वामी जैसी दासी वैसी  
 ४ उस की स्वामिनी जैसा गाइक वैसा विचरैया जैसा ऋण देनेदारा वैसा ऋण  
 ५ लेनेदारा जैसा व्याजग्राहक वैसा व्याजदायक होगा । देश सर्वथा छूटा किया  
 ६ जायेगा और हर प्रकार से लूटा जायेगा क्योंकि परमेश्वर ने यह वचन कहा है ।  
 ७ देश विलाप कर रहा सुरक्षा रहा है जगत कुम्हला गया सुरक्षा रहा है देश के लोगों  
 ८ के बड़े पदवीवाले कुम्हला गये । और देश अपने वासियों के नीचे अशुद्ध हो गया  
 ९ क्योंकि उन्होंने ने व्यवस्था से उत्तुंगन किया विधि को पलट डाला और सदा की याचा  
 १० को तोड़ डाला है । इस लिये साप ने देश को भक्ष लिया और उस के वासी अपराधी  
 ११ ठहरे इसी लिये देश के वासी भस्म हो गये और थोड़े मनुष्य बच रहे । नया दाखरस  
 १२ विलाप करता है दाख कुम्हला गया सारे आनन्दित अंतःकरणी क्षय मारते हैं ।  
 १३ मृदम का आनन्दित शब्द हो चुका जय करवैयों का शब्द जाता रहा बीणा  
 १४ का आनन्दित शब्द हो चुका । वे गा गाके दाखरस न पीयेंगे तीक्ष्ण मदिरा  
 १५ उस के पीनेहारों के लिये कड़वी होगी । विनाश नगर टूट गया हर एक घर मुंद  
 १६ गया कि कोई भीतर नहीं जा सकता । मार्गों में दाखरस के लिये चिल्लाना है  
 १७ सारी आनन्दता अधियारी हो गई देश की आनन्दता दूर किई गई । जो नगर  
 १८ में बचती होइ दिई गई सो उजाड़ है और फाटक तोड़के नष्ट किये गये ।  
 १९ क्योंकि देश के मध्य में लोगों के बीच ऐसा होगा जैसे जलपाई का वृक्ष दिलाया  
 २० जाये और दाख के तोड़े जाने के पीछे बीना । वे अपना शब्द उठावेंगे गावेंगे  
 २१ वे परमेश्वर की बड़ाई के कारण से समुद्र से ललकारते हैं । इस लिये तुम  
 २२ संजियालों में परमेश्वर की समुद्र के टापुओं में परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के  
 २३ नाम की बड़ाई करो । पृथिवी के अन्त से इस ने गान अर्थात् धर्मी की प्रतिष्ठा  
 २४ के गान सुने हैं और मैं ने कहा कि मेरी दुर्गति मेरी दुर्गति मुझ पर संताप छलियों  
 २५ ने कल किया है हां कल के साथ कलियों ने कल किया है । हे देश के वासी भय  
 २६ और गड़हा और जाल तुझ पर है । और ऐसा होगा कि जो डर के शब्द से  
 २७ भागता है सो गड़हे में गिरेगा और जो गड़हे के बीच में से निकलता है सो  
 २८ जाल में पकड़ा जायेगा क्योंकि ऊपर से खिड़कियां खुल गईं और पृथिवी की  
 २९ नेवें हिल गईं । पृथिवी टुकड़े टुकड़े हो गई पृथिवी चूर चूर हो गई पृथिवी  
 ३० हिल हिल गई । पृथिवी डगमगाती सतवाले के नाई डगमगाती है और  
 ३१ हिंडोले के नाई हिल गई और उस की बुराई उस पर भारी है और वह गिरेगी  
 और फिर न उठेगी ॥

३२ और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर ऊंचे स्थान में महान स्थान की सेना  
 ३३ को और पृथिवी पर पृथिवी के महाराजाओं को दण्ड देगा । और जिस रीति  
 ३४ बन्धुए गड़हे में खटोरे जाते हैं वे खटोरे जायेंगे और बन्दीगृह में बन्द किये  
 ३५ जायेंगे और बहुत दिनों के पीछे उन पर दृष्टि किई जायेगी । और चन्द्रमा घबरा

स्थापित किई गईं सो सरक जायेगी और काटी जायेगी और गिर पड़ेगी और ओ ब्रह्म उस पर था सो काट दिया जायेगा क्योंकि परमेश्वर ने कश है ॥

तेईसवां पर्व ।

मूर का ब्रह्म है तरसीस के जहाजे विलाप करो क्योंकि यहां लों उजाड़ १  
दिया गया कि न घर न प्रवेश करने का स्थान है कितीस के देश से उन को  
प्रगट हुआ । हे टापू के वासियो चुप रहो मैदा के वैपारी जो समुद्र पार जाते २  
ये तुम्ह में भर गये । और बड़े प्राणियों में नील का अनाज होता था उसी नदी ३  
का लाभ उस की प्राप्ति थी और वह जातिगलों का व्यापारस्थान था । हे मैदा ४  
लज्जित हो क्योंकि समुद्र हां समुद्र की गहरी घों कदती है मुझे जने की पीड़ा  
नहीं हुई और मैं नहीं जनी और तरसों को नहीं पाला कुंवारीयों को नहीं पोसा ।  
जिस रीति कि मित्र के संदेश से लोग प्रीड़ित हुए वैसा ही मूर के संदेश से ५  
प्रीड़ित होंगे । तरसीस की ओर पार उतर जाओ हे टापू के वासियो विलाप  
करो । क्या यह तुम्हारी आनन्द करनेहारी बस्ती है अगिले मसयों से उस की ७  
प्राचीनता है उस के पांच उमे दूर लों प्रदेश में घसने के लिये ले जायेंगे । किन्तु ८  
ने यह मंत्र मूर मुकुट देनेहारे नगर के विरोध में बांधा है जिस के व्यापारी  
अध्यक्ष हैं और उस के वणिक् भूमि के कुलीन । परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने ९  
यह मंत्र किया है कि सारी सुन्दरता की बढ़ाई को नष्ट करे पृथिवी के सारे  
कुलीनों का निन्दित करे । अपने देश पर नील नदी के समान बढ़ जा हे तरसीस १०  
की पुत्री अब और कुछ बंधन नहीं है । उस ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर फैलाया ११  
राज्यों को हिला दिया परमेश्वर ने कनयान के विषय में आज्ञा किई है कि उस  
के दृढ़ म्यानों को ठा टें । और उस ने कहा कि हे मैदा की पुत्री अप्रति किई १२  
हुई कुंवारी तू फिर कभी अभिमान न करेगी कितीस की ओर उठ पार उतर  
जा यहां भी तुम्हें चैन न मिलेगा । कसदियों के देश को देखो ये जाति न थी १३  
अमूर ने वनवासियों के लिये उस की नेत्र डाली उन्हें ने अपने गर्गज बनाये हैं उन्हें  
ने उस के भयनों को जगा दिया है उस ने उन्हें उजाड़ ठहराया है । हे तरसीस १४  
के जहाजे विलाप करो क्योंकि तुम्हारा गढ़ उजाड़ दिया गया ॥

और उस दिन ऐसा होगा कि मूर सत्तर बरस लों एक राजा के समय के १५  
समान भुला दिया जायेगा सत्तर बरस के पीछे मूर की दशा वेश्या के गीत के  
समान होगी । हे भूली हुई वेश्या बीरा ले नगर में फिरा कर भली भांति बजा १६  
बहुत गा कि तू फिर चेत किई जाय ॥

और ऐसा होगा कि सत्तर बरस के पीछे परमेश्वर मूर पर दृष्टि करेगा और १७  
वह अपने हिनाले की वृत्ति के कमाने के लिये फिरेगी और जगत की सारी  
राजधानियों के संग जो पृथिवी के ऊपर हैं हिनासा करेगी । और उस के व्याप- १८  
पार का फल और उस की हिनाले की वृत्ति परमेश्वर के लिये पवित्र होगी  
वह न छेर किई जायेगी और न रग्य छोड़ी जायेगी क्योंकि उस की वासिद्वय  
का फल उन के लिये होगा जो परमेश्वर को सन्मुख रहते हैं जिसमें भोजन करके  
तृप्त हों और टिकार्क वस्त्र पोषण ॥

५ क्योंकि उस ने ऊंचे स्थान के वासियों और ऊंचे नगर को नीचा कर दिया है वह  
 ६ उसे नीचा करेगा उसे भूमि लों नीचा करेगा उसे धूल लों पटुं चायेगा । वह पांव  
 ७ से रेंदा जायेगा दरिद्रों के पांवों से दीनों के डगों से । धर्मी का मार्ग सच्चाइयां  
 ८ हैं तू कि खरा है साधुन के मार्ग को समथर करेगा । हां तेरे न्यायों के मार्ग में  
 ९ हे परमेश्वर हम ने तेरी बाट जोही तेरे नाम और तेरे स्मरण की और हमारे  
 १० मन की अभिलाषा थी । मैं रात को अपने मन में तेरा अभिलाषी रहा हां मैं  
 अपने आत्मा से अपने भीतर में भोर को तुझे ढूंढूंगा क्योंकि जब तेरे न्याय  
 पृथिवी पर आते हैं तब जगत के वासी धर्म सीखते हैं । यद्यपि दुष्ट पर दया  
 किई जावे तथापि वह धर्म को न सीखेगा सच्चाइयों की भूमि में वह टेढ़ाई  
 करेगा और परमेश्वर की ऊंचाई को न देखेगा । हे परमेश्वर तेरा हाथ ऊंचा है  
 वे देखा नहीं चाहते हैं पर वे तेरे उस ताप को जो तेरे लोगों के लिये है देखेंगे  
 और लज्जित होंगे हां वह आग जो तेरे शत्रुन के लिये है उन्हें भस्म कर  
 डालेगी । हे परमेश्वर तू हमें कुशल देगा क्योंकि तू ने हमारे सब के सब काम  
 हमारे लिये किये हैं । हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तुझे छोड़ और प्रभु हमारे स्वामी  
 रहे हैं पर आगे को हम केवल तेरा तेरे ही नाम का स्मरण करेंगे । वे मृतक  
 हैं फिर न जीयेंगे रफाईम हैं फिर न उठेंगे इस लिये तू ने दृष्टि किई और उन्हें  
 नाश किया है और उन का सारा स्मरण मिटा डाला है । तू ने लोगों को बड़ाया  
 है हे परमेश्वर तू ने लोगों को बड़ाया है तू ने अपने तई महान प्रगट किया है  
 तू ने उस देश के सारे सिवाने को दूर लों बड़ाया है ॥

१६ हे परमेश्वर वे विपत्ति में तेरी और फिरे उन्हीं ने दीनताई के साथ प्रार्थना  
 १७ किई जब तेरा दण्ड उन पर था । जिस रीति कि जब गर्भिणी स्त्री जन्मे के  
 निकट पहुंचती है वह जन्मे की पीड़ा में होती है अपनी पीड़ों में चिल्लाती है  
 १८ वैसा ही हे परमेश्वर हम तेरे आगे से निकाले हुए रहते हैं । हम पीड़ों में थे  
 जन्मे की पीड़ा में पड़े माने हम पवन जने हम देश को कुटकारे नहीं दे सक्ते  
 १९ थे और जगत के वासी न गिरते थे । तेरे मृतक जी उठेंगे मेरी लोथें उठ खड़ी  
 होंगी हे धूल के वासियो आगे और गाओ क्योंकि तेरी ओस उस ओस की  
 नाईं जो हरियालियों पर पड़ती है और तू उसे पृथिवी पर और रफाईम पर  
 गिरावेगा ॥

२० हे मेरी जाति जा अपनी काठरियों के भीतर जा और अपने बाहर के द्वार  
 मूंद ले अपने तई जगमात्र के लिये छिपा यहां लों कि जलजलाहट उतरे जाये ।

२१ क्योंकि देखो परमेश्वर अपने स्थान से बाहर आता है जिसते पृथिवी के वासियों  
 के अपराध का दण्ड उन्हें दे और पृथिवी अपने लोहू को प्रगट करेगी और फिर  
 अपने जूके हुआं को न छिपायेगी ॥

सत्ताईसवां पर्व ।

१ उस दिन परमेश्वर अपनी तलवार से उस कठोर और बड़ी और बली तल-  
 वार से लिवयातान शीघ्रगामी सर्प को और लिवयातान पेचीला सर्प को दण्ड  
 २ देगा और उस अजगर को जो नदी में है नार डालेगा । उस दिन दाख की

जायेगा और मूर्ख लज्जित क्योंकि परमेश्वर सेनाओं का प्रभु मैदून के पहाड़ में और यदुसलम में राजा हुआ और उस के प्राचीनों के आगे विभव है ॥

पञ्चीनवां पर्व ।

हे परमेश्वर मेश ईश्वर तू ही है मैं तेरी बड़ाई करूँगा तेरे नाम की स्तुति १  
करूँगा क्योंकि तू ने प्राश्चर्यित कार्य पुरातन से मंत्र दृढ़ भक्ति और सत्यता  
किये हैं । क्योंकि तू ने उसे नगर में डेर कर डाला गढ़वाली यस्ती को उजाड़ २  
औरों के भवन को ऐसी दशा में कि नगर नहीं रहा वह सदा लों न बसाया  
जायेगा । इसी कारण से चलवाली जाति तेरी बड़ाई करेगी भयंकर जातिगणों ३  
का नगर तुम्ह में डेर रखेगा । क्योंकि तू दरिद्री के लिये गढ़ हुआ जंगल के ४  
लिये उस की विपत्ति में गढ़ में की आंधी में गरमग्यान गरमी में छाया जब  
अंधेरियों की आंधी उस में के झुंझ के समान थी जो भीत पर आता है ।  
जिस रीति झूरा में गरमी छाँद में दब जाती है वैसा ही तू पग्देणियों के हृत्ता ५  
को दबायेगा जिस रीति गरमी में छाँद में दब जाती है वैसा ही अंधेरियों  
का गान दबाया जायेगा ॥

और सेनाओं का परमेश्वर इस पहाड़ पर मारे लोगों के लिये पूष्ट यस्तुन का ६  
जेवनार विद्ध करेगा तलछट में निथरे हुए दाखरस की पूष्ट मज्जावाली यस्तुन  
की तलछट से निथरे हुए और भली भाँति छाने हुए दाखरस का जेवनार । और ७  
जो ओट मारे लोगों पर है वह इस पहाड़ पर उस ओट के मान्दने का मिटा  
देगा और उस छूँछट को जो मारे जातिगणों पर बिना हुआ है । उस ने सर्वदा ८  
के लिये मृत्यु का निगल लिया है और प्रभु परमेश्वर मारे मुँहों पर से आंसू पों-  
कता है और वह अपने लोगों के अपमान को सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा  
क्योंकि परमेश्वर ने कहा है ॥

और उस दिन लोग कहेंगे कि देखो हमारा ईश्वर यही है हम ने उस की ९  
छाट जोड़ी और वह हमें मुक्ति देगा यही परमेश्वर है हम ने उस की छाट  
जोड़ी हम उस की मुक्ति से आनन्द और मगन हों ॥

क्योंकि परमेश्वर का हाथ इस पहाड़ पर रहेगा और सोआव अपने नीचे १०  
सेमा लताड़ा जायेगा जैसे पुआल छूरे के पानी में लताड़ा जाये । और वह ११  
अपने हाथ उस के मध्य में सेमा फैलावेगा जैसे पैराक पैरने को फैलाता है और  
वह उस के अहंकार को उस के छाथों के कुल बल समेत नीचा करेगा । और १२  
उस ने तेरी भीतों के ऊँचे गर्गजवाले गढ़ को ढा दिया गिरा दिया भूसि लों हां  
धूल लों पहुँचा दिया है ॥

छथीमवां पर्व ।

उस दिन यहूदाष्ट के देश में यह गीत गाया जायेगा कि हमारे लिये एक १  
दृढ़ नगर है वह मुक्ति को भीत और परिकोट ठहरायेगा । फाटकों को खाली २  
जिसमें धर्मी और सच्चे लोग भीतर आएं । जिस अंतःकरण का भरोसा तुम्ह ३  
पर है तू उसे कुशल में रखेगा क्योंकि वह तेरा दृढ़ भक्त है । परमेश्वर पर ४  
सर्वदा भरोसा रखो क्योंकि तुम्हारे लिये याह परमेश्वर में सदा की चटान है ।



है न्याय का आत्मा और उन के लिये जो लड़ाई को द्वार पर लौटा देते हैं वह होगा । पर ये भी मदिरा से भटक गये और मद्यपान से भटक गये याजक और भद्रिष्यवृक्ता मद्यपान से भटक गये मदिरा ने उन्हें खा लिया मद्यपान से भटक गये दर्शन में भटक गये विचार में डगमगा गये । क्योंकि सारे मंच छांट से और मल से भर गये बिना निर्मल स्थान ।

८ वह किस को ज्ञान सिखावेगा और किस को सुनी हुई बात समझायेगा क्या उन १० को जिन का दूध छुड़ाया गया जो स्तनों से अलग किये गये । क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा ११ आज्ञा पर आज्ञा पांती पर पांती पांती पर पांती थोड़ा यहाँ थोड़ा वहाँ । क्यों- १२ कि तुतले हाँठों से और अन्य भाषा से वह इस जाति से बातें करेगा । जिस ने उन से कहा कि यही विश्राम है यके को विश्राम देओ और यही चैन है पर १३ उन्हें ने सुने को न चाहा । और परमेश्वर का वचन उन को आज्ञा पर आज्ञा आज्ञा पर आज्ञा पांती पर पांती पांती पर पांती थोड़ा यहाँ थोड़ा वहाँ था जिसमें वे चलें और ठोकर खाके चित गिर पड़ें और टूट जायें और फंस जायें और पकड़े जायें ॥

१४ सो हे ठट्टा करनेहारे मनुष्यो इस जाति के न्यायियो जो यरुसलम में हो १५ परमेश्वर का वचन सुनो । इस लिये कि तुम ने कहा है कि हम ने मृत्यु से बाचा बांधी और पाताल से हम ने नियम किया है डुबानेहारा कोड़ा जब आरंपार जायेगा तब हम पर न आयेगा क्योंकि हम ने भूठ को अपना शरणस्थान ठहराया १६ है और कुल में अपने को छिपाया है । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं सैहून में नेव के लिये एक पत्थर रखता हूँ एक परीक्षा किया हुआ पत्थर १७ कोने के सिरे का बहुमूल्य पत्थर एक स्थिर नेव विश्वासी शीघ्र न करेगा । और मैं शलाका पर न्याय और साहुल पर धर्म रखूँगा और ओला भूठ के शरणस्थान १८ को ठा देगा और छिपने के स्थान को जल डुबा देगा । और तुम ने जो मृत्यु से बाचा बांधी सो टूट जायेगी और पाताल से जो तुम ने नियम किया वह स्थिर न रहेगा डुबानेहारा कोड़ा जब आरंपार जायेगा तब तुम उस के नीचे रेंदे जाओगे । १९ वह अपने आरंपार जाते ही तुम को ले जायेगा क्योंकि वह हर विहान को आरंपार जायेगा दिन और रात को और केवल भय तुम को सुनी हुई बात २० समझायेगा । क्योंकि खाट ऐसी छोटी है कि कोई उस पर आप को लम्बा नहीं कर सक्ता और ओढ़ना ऐसा संकेत है कि कोई आप को उस में लपेट नहीं सक्ता । २१ क्योंकि प्रासीम के पहाड़ की नार्वे परमेश्वर उठेगा उस तराई के समान जो जिवजने में है क्रुद्ध होगा जिसमें अपना काम अपना अनूठा काम करे और अपना कार्य २२ अपना अनाखा कार्य करे । और अब ठट्टा न करो न होवे कि तुम्हारे बंधन दृढ़ हो जायें क्योंकि सारी भूमि पर बिनाश हाँ ठहराये हुए बिनाश का संदेश मैं ने प्रभु सेनाओं के परमेश्वर से सुना है ॥

२३ कान धरके मेरा शब्द सुनो ध्यान धरके मेरी बात सुनो । क्या हरबाहा वीने के लिये प्रतिदिन हर जोत्ता है क्या वह प्रतिदिन अपनी भूमि को हिंगता और २४ समथर किया करता है । जब वह उस की धरातल को समथर कर चुका तो

घाटिका के समान उसे दया दे । मैं परमेश्वर उस की रक्षा करता हूँ मैं हर ३  
घड़ी उसे मीठा करूँगा जिसमें न हो कि कोई उसे हानि पहुंचावे मैं रात दिन  
उस की रक्षा किया करूँगा । जलन सुक्त में नहीं है हाथ कि लड़ाई में कांटे और ४  
कटीले मेरे साखने रखे जायें जिसमें मैं उन पर दौड़ूँ और उन्हें एक ही साथ  
जला दूँ । अथवा वह मेरे गढ़ की शरय पकड़े और सुक्त से मिलाप करे मिलाप ५  
सुक्त से करे ॥

आनेदारे दिनों में यशस्कृत जड़ पकड़ेगा और इसराएल कांपल लायेगा और ६  
फूलेगा और वे जगत को फल से भर देंगे । क्या उस ने उसे ऐसा मारा जैसा ७  
उस के मारनेदारे को मारा क्या वह उस के घातकों के घात की नाईं घात किया  
गया । उस के निकलने में तू प्रमाण के साथ उम्मे लहना है वह पुरवा पवन ८  
के दिन अपनी प्रचंड आंधी से उसे दूर कर देता है । इस लिये इस ताड़ना के ९  
कारण से यशस्कृत के पाप का प्रायश्चित्त किया जायेगा और वह उस का सारा  
फल है कि उस के पाप को दूर करे जैसा जान पड़ेगा जब वह यज्ञदेवी के सय १०  
पत्थरों को चूने के चूर चूर किये हुए पत्थरों के समान कर देगा यहां लों कि  
विधातृदेवी की मूर्ति और सूर्य की मूर्ति फिर खड़ी न होंगी । क्योंकि दृढ़ नगर १०  
उजाड़ होगा एक सूनी वस्ती और उन के समान छोड़ी हुई वहां बलड़ा चरेगा  
और वहां लेट जायेगा और उस की हानियां खा जायेगा । जब उस की हाल ११  
सूख जायेगी तब तोड़ी जायेगी और स्त्रियां आके उन्हें जला देंगी क्योंकि वह  
निरुद्धि जाति है इस लिये उस का सिरजनहार उस पर दया न करेगा और उस  
का बनानेदारा उस पर दयालु न होगा ॥

और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर नदी की घाट से लेकर सिन की नाली १२  
लों वृक्ष का छिलाके फल घटेरेगा और तुम से इसराएल के संतानो सय के सय  
रकट्टे किये जायेंगे । और उस दिन ऐसा होगा कि बड़ा नरसिंगा फूँका जायेगा १३  
और जो असूर के देश में छिन्न भिन्न थे और जो सिन की भूमि में देशान्तर थे वे  
आयेंगे और पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर को दंडयत करेंगे ॥

अट्टाईमवां पर्व ।

संताप हफरायस के मतवालों के जंघ सुकुट पर और कुम्हलाते हुए फल उस १  
की तेजवती सुन्दरता पर जो मदिग के सारे हुत्रों की फलवंत तराई के सिरे  
पर है । देखो प्रभु एक पराक्रमी और बली मनुष्य रखता है जिस ने आलों के २  
मंद और नाशक प्रचंड वायु के समान मद्या हुवानेदारे पानियों के मंद की नाईं  
अपने हाथ से उसे भूमि पर गिरा दिया है । हफरायस के मतवालों का जंघा ३  
सुकुट पांथ से रौंदा जायेगा । और उस की तेजवती सुन्दरता का सुरभाता हुआ ४  
फूल जो फलवंत तराई के सिरे पर है सो पहिले पक्के मूलर के समान होगा अतु  
से पहिले जिसे उस का देखवैया देखता है और जब उस के हाथ ही में है तब  
उसे निगल जाता है ॥

उस दिन सेनाओं का परमेश्वर अपनी जाति के वचे हुत्रों के लिये सुन्दरता ५  
का सुकुट और तेजस्वी किरौट होगा । और उस के लिये जो न्याय पर बैठता ६

- १३ और प्रभु ने कहा इस कारण से कि ये लोग अपने मुंह से मेरी निकटता चाहते हैं और ये लोग अपने हांठों से मेरी प्रतिष्ठा करते हैं पर ये लोग अपना मन मुझ से दूर रखते हैं और उन का मुझ से भय रखना मनुष्यों की आज्ञा और
- १४ सिखलाई बात है । इस लिये देखो मैं इस जाति से आश्चर्यित व्ययहार करता जाऊंगा बड़ा ही आश्चर्य और अचंभे के साथ और उस के बुद्धिमानों की बुद्धि नाश हो जायेगी और उस के पंडितों की पंडिताई अपने को लुप्त करेगी ॥
- १५ उन पर सन्ताप जो गहिराई में जाते हैं जिसमें परमेश्वर से मंत्र क्षिपयें और उन के कामकाज अधियारे में हैं और वे कहते हैं कि कौन हमें देखता और
- १६ कौन हमें पहिचानता है । आज्ञा का तुम्हारा क्या ही उलटना है क्या कुम्हार मिट्टी की नाईं गिना जायेगा कि कृत्य कर्ता के विषय में कहे कि उस ने मुझे नहीं बनाया और निर्माण किई दुई वस्तु अपने निर्माणकर्ता के विषय कहे कि वह निर्वुद्धि है ॥
- १७ अब क्या थोड़ी बेर मैं ऐसा न होगा कि लुधनान घाटिका हो जायेगा और
- १८ घाटिका भाड़ी में गिनी जायेगी । और उसी दिन बहिर पुस्तक की घातें सुनेंगे
- १९ और अंधों की आंखें अधियारे में से और तिमिर में से देखेंगी । और कोमल परमेश्वर से अधिक आनन्द करते रहेंगे और मनुष्यों के दीन इसराएल के धर्ममय
- २० से आह्लादित होंगे । क्योंकि उपद्रवी हो चुका और ठठेलू नष्ट हो गया और
- २१ सारे घुराई के जोहक काट डाले गये । जो मनुष्य को घात में दोषी ठहराते थे और उस के लिये जो फाटक पर वाद करता था फंदा लगाते थे और धर्मी को झूठ के बल से हटा देते थे ॥
- २२ इस लिये परमेश्वर जिस ने अविरहाम को मुक्ति दिई यश्कूव के घराने से यों कहता है कि अब यश्कूव लज्जित न होगा और अब उस का मुंह पीला न
- २३ होगा । क्योंकि जब वह अपने मध्य में अपने सन्तानों को जो मेरे हाथों के बनाये हुए हैं देखेगा तब वे मेरे नाम को पवित्र करेंगे हां यश्कूव के धर्ममय को
- २४ पवित्र मानेंगे और इसराएल के ईश्वर से डरेंगे । तब आत्मा के भ्रमी ज्ञान प्राप्त करेंगे और क्रूर लोग उपदेश ग्रहण करेंगे ॥

तीसवां पर्व ।

- १ परमेश्वर कहता है कि उन दंगड़त वालकों पर सन्ताप जो ऐसा परामर्श करते हैं जो मेरी ओर से नहीं और ऐसा घूँघट विनते हैं जो मेरे आत्मा से नहीं
- २ है जिस्ते पाप पर पाप बढ़ावें । जो मिख में उतर जाने के लिये चले जाते हैं और मेरे मुंह से प्रश्न नहीं किया जिस्ते फिरजन के गढ़ में बचने के लिये भागें
- ३ और मिख की छाया में शरण लें । और फिरजन का गढ़ तुम्हारे लिये लाज होगा
- ४ और मिख की छाया में शरण लेना दुर्नामी । क्योंकि उस के अध्यक्ष जुअन में हैं
- ५ और उस के दूत हानेस में पहुंचते हैं । वे सब उस जातिगण के कारण से लज्जित हैं जो उन्हें कुछ लाभ न पहुंचायेगा उस जातिगण से जो न सहाय के लिये और न लाभ के लिये पर लज्जा के लिये और निन्दा के लिये भी होगा ॥
- ६ दक्षिण के पशुन का क्या ही बोझ बिपत्ति और कष्ट की भूमि में जहां से

क्या वह अजवायन को नहीं छींटता और जीरे को नहीं छिनकाता और गोंदू को पांतिघों में लगाना और जव को उस के ठहराये हुए टौर में और सुढ़िया गोंदू को अपने ठिकाने में । यों उस का ईश्वर ठीक रीति में उसे मिखाता है और उसे ज्ञान देता है । क्योंकि अजवायन दावने की वस्तु से नहीं दाई जाती है और न गाड़ी का पड़िया जीरे पर घुमाया जाता है पर अजवायन लाठी से झाड़ी जाती है और जीरा छड़ी से । रोटी का अन्न कुचलवाया जाता है क्योंकि वह सदा उसे दावना न रहेगा पर वह उस पर अपनी गाड़ी का पड़िया चलाना है पर अपने घोड़ों से उसे नहीं कुचलवाता । यह भी सेनाओं के परमेश्वर से आता है वह मंत्र में आश्चर्यित बुद्धि में महान है ॥

चनतीसवां पद्य ।

अरिगल पर अरिगल पर संताप उस नगर पर जिस में दाऊद ने घास किया था वरस पर वरस बढ़ने देखा पद्य क्रम क्रम से आया करें । और में अरिगल को दुःख देजंगा और उदासी और विलाप होगा और वह मेरे लिये अरिगल की नाई होगा । और में तेरे चारों ओर छावनी खड़ी कसंगा और सेना से तुझे घेरंगा और तेरे विरोध में गढ़ बनाजंगा । और तू नीचे उतारा जायेगा और धूल से घात करेगा और धूल से तेरी वाली धीमी होगी और तेरा शब्द टोन्हे के समान भूमि से होगा और धूल से तेरी वाली चटचटायेगी । तब तेरे शत्रुन की मंडली मूढम धूल की नाई होगी और उपद्रवियों की मंडली उड़नेछारे भूमि की नाई और वह जगमात्र एक पल में होगा । सेनाओं के परमेश्वर की ओर से गर्जन और भूमिकंप से और बड़े शब्द आंधी और भक्कड़ और भस्मक आग की लहर से उस पर दृष्टि किई जायेगी । तब स्वप्न और रात के दर्शन की नाई उन सारे जातिगणों की भीड़ होगी जो अरिगल के सन्मुख संग्राम करते हैं हां सब जो उम्मे और उस की गढ़ियों से लड़ते हैं और उसे दुःख देते हैं । और ऐसा होगा जैसा भूखा स्वप्न में है और क्या देखता है कि खाता है और जाग उठा और उस का पेट कूड़ा है और जैसा प्यासा स्वप्न में है और क्या देखता है कि पीता है और जाग उठा और क्या देखता है कि बका और उस का पेट बच्छुक है जैसा ही उन सारे जातिगणों की भीड़ होगी जो मैदान के पछाड़ के विरोध में युद्ध करते हैं ॥

शङ्कित रहे और आश्चर्यित हो अपने को सगन रखे और अन्धे बन जाओ वे मतबारे हैं पर मदिरा से नहीं वे लड़खड़ाते हैं पर तीक्ष्ण मदिरा से नहीं । क्योंकि परमेश्वर ने तुम पर भारी नोद का आत्मा उंडेला है और तुम्हारी आंखें बंद किई भविष्यवृत्तों को हां तुम्हारे आध्यक्षों को दर्शियों को उस ने ठांप लिया है । और सारे दर्शियों का दर्शन तुम्हारे लिये उस पुस्तक की बातों के समान हो गया जो छाप से बंद हो जिसे वह कहके पढ़े लिखे को देते हैं कि आप इसे पढ़िये और वह उत्तर देवे कि मैं नहीं पढ़ सकता क्योंकि उस के ऊपर छाप किई हुई है । और पुस्तक वह कहके उस को दिई जाये जो बिन पढ़ा लिखा है कि आप इस को पढ़िये और वह कहे कि मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं ॥

वह तेरे उस बीज के लिये मेंह देगा जो तू भूमि में बोयेगा और रोटी भूमि का फल और वह चिकनी और चुपड़ी होगी तेरे पशु उस दिन फ़ैलाव चराई के स्थान २४ में चरेंगे । और तैल और गदहे भूमि के जोतनेहारे सलोनी सानी खायेंगे जो २५ चलनी और सूप से उसाई गई है । और हर एक ऊँचे पहाड़ और हर एक ऊँचे टीले पर प्रनाले और पानी की धाराएं होंगी महा संहार के दिन गढ़ों के गिरने २६ के समय । और चंद्रमा की ज्योति सूर्य की ज्योति के समान होगी और सूर्य की ज्योति शतगुणी होगी सात दिनों के प्रकाश के समान जिस दिन परमेश्वर अपनी जाति के टूटे फूटे को सुधारेगा और वह उस की मार के घाव को चंगा करेगा ॥

२७ देखा परमेश्वर का नाम दूर से आता है और उस का क्रोध जलानेहारा और उठनेहारी अत्यन्त लवर है उस के होठ कोप से भरे हैं और उस की जीभ २८ भस्मक आग की नाई है । और उस का आत्मा डुबानेहारी धारा की नाई गले लों दो भाग कर देगा जिस्तें देशगणों को झूठ की चलनी में काने और जाति- २९ गणों की दाढ़ों में भरमानेहारी बाग होगी । तुम्हारा गाना ऐसा होगा जैसा पर्व के पवित्र माझे की रात और मन का आनन्द जैसा उस का जो बांसुरी लिये हुए चलता है जिसतें परमेश्वर के पर्वत में इसराएल की चटान के पास ३० जाये । और परमेश्वर अपने शब्द का तेज सुनावेगा और अपने हाथ का नीचे आना दिखावेगा कोप की जलन और भस्मक आग की लवर के साथ महा झड़ी ३१ और वर्षा और ओले । क्योंकि परमेश्वर के शब्द से असूर हारमान होगा वह ३२ छड़ी से उसे मारेगा । और प्रारब्ध के दंड का हर प्रहार जो परमेश्वर उस पर लगावेगा सो दमासों और बीणों के साथ होगा और धूमधाम की लड़ाइयों के ३३ साथ उससे संग्राम किया जाता है । क्योंकि तुफ्त कल से सिद्ध है हां वह राजा के लिये सिद्ध हुआ है उस ने उसे गहिरा किया चौड़ा किया है उस का ढेर अग्नि और बहुत सी लकड़ी है परमेश्वर का श्वास गंधक की धारा के समान उस को सुलगाता है ॥

### एकतीसवां पर्व ।

१ उन पर सन्ताप जो सहायता के लिये मिश्र को उतर जाते हैं और घोड़ों पर भरोसा करते हैं और रथों पर आशा रखते हैं क्योंकि वे बहुत हैं और घोड़चढ़ों पर क्योंकि वे बड़े बलवंत हैं और इसराएल के धर्ममय की ओर नहीं फिरते २ और परमेश्वर के खोजी नहीं हैं । और वह भी बुद्धिमान है और विपत्ति लाता है और अपने बचनों को टलने नहीं देता और दुष्टों के घराने की विरुद्धता पर ३ और कुकर्मियों के उपकार के विरोध में खड़ा होता है । और मिस्री तो मनुष्य हैं और सर्वशक्तिमान नहीं और उन के घोड़े मांस हैं और आत्मा नहीं और पर-मेश्वर अपना हाथ बढ़ावेगा और उपकारक ठोकर खायेगा और उपकृत गिर पड़ेगा और वे सब के सब एकट्ठे नाश हो जायेंगे ॥

४ क्योंकि परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि जैसा सिंह और तरुण सिंह अपने अहेर को दबोचके गर्जता है जिस की विरुद्धता पर गड़रियों की जथा खुलाई

सिंहिनी और सिंह नाम और आगिया उड़वैया मर्ष आता है वे अपना धन तमम गदहों की पीठ पर और अपने रोकड़ कंटों के पालानों पर उठा ले जाते हैं उस जतिगण के लिये जो कुछ लाभ न पहुँचायेगा । और सिनी वृथा और ७ अनर्थ सहायता करेंगे इस लिये मैं ने इस देश के लोगों के विषय में यह कहा है कि वे अभिसानी बैठे रहेंगे ॥

अब जा उन के आगे उसे पाटी पर लिख और पुस्तक में उसे लिख रख ८ और वह आनेहारे दिन के लिये सदा के लिये सर्वदा रहे । क्योंकि वह दंगदत ९ जाति है झूठे लड़के लड़के जो परमेश्वर की वयवस्था को मुझे नहीं चाहते । जो दर्शकों को कहते हैं कि दर्शन न देखो और भविष्यद्वक्ता से यह कि हमें १० सच्ची बातों का संदेश न दो हम से चिकनी चुपड़ी बातें करो झूठे संदेश दो । मार्ग से भटक जाओ प्रथ से एक और दो जाओ इसराएल के धर्मसभ्य को हमारी ११ दृष्टि से दूर करो ।

इस लिये इसराएल का धर्मसभ्य यों कहता है कि इस कारण से कि तुम १२ ने इस वचन को तुच्छ जाना है और अंधेर और वक्रता पर भरोसा किया है और उन पर आशा किये हो । इस लिये यह अपराध तुम्हारे लिये गिरनेहारे १३ दरार को नाई देगा जो कंचो भीत में कूबड़ पड़ जाता है जिम का फटना अकस्मात् एक पलमात्र हो सका । और वह ऐसी टूट गई जैसे कुम्हार का पात्र १४ टूट जाता है चूर चूर हो जाता और उस के चूरों में से ऐसी टीकरी नहीं पाई जाती जिसमें चूल्हे में आग उठाये और कुण्ड से पानी भर लें ॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर इसराएल का धर्मसभ्य यों कहता है कि फिर आने और १५ जैन में तुम अब जाओगे चुपके रहने और भरोसा करने में तुम्हारा घल होगा पर तुम ने नहीं चाहा । और तुम ने कहा कि नहीं क्योंकि हम घोड़ों पर चढ़के १६ भाग जायेंगे इस लिये तुम भाग जाओगे और शीघ्रगामी पशुओं पर चढ़ोगे इस लिये तुम्हारे पीछा करनेहारे शीघ्रगामी होंगे । एक सहर एक की घुरकी से पांच १७ की घुरकी से दस तुम भागोगे यहां लों कि तुम उस स्तंभ के समान रह जाओगे जो पहाड़ की चोटी पर है और उस ध्वजा के समान जो टीले पर है ॥

और इस लिये परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करने के लिये ताकता रहेगा और १८ इस लिये वह तुम पर दया करने के लिये उठेगा क्योंकि परमेश्वर न्याय का ईश्वर है क्या ही धन्य उस के सारे आश्रित ॥

क्योंकि जाति सैहून और यदसलम में वास करेगी तू फिर विलाप न करेगी १९ यह तेरी दुहाई का शब्द सुनके तुझ पर यही कृपा करेगा वह सुनते ही तुझे उत्तर देगा । और प्रभु तुम्हें कष्ट की रोटी और दुःख का पानी देगा और तेरे उपदेशक २० फिर अपने को न छिपावेंगे परन्तु तेरी आंखें तेरे उपदेशकों का देखती रहेंगी । और तेरे कान तेरे पीछे से यह वचन सुनेंगे कि मार्ग यही है इसी पर चलो अब २१ कि तुम दहिने और जब कि तुम बायें सुड़े । और तुम अपनी गढ़ी हुई मूर्ति २२ का रुपहला वस्त्र और अपनी ठाली हुई प्रतिमा के सोनहरे आभरण को अशुद्ध जानोगे तू उन्हें अशुद्ध वस्तु की नाई फेंक देगा तू उसे कहेगा कि दूर हो । और २३



१६ वन के समान गिनी जावे । और न्याय वन में वसेगा और धर्म बाटका में निवास  
 १७ करेगा । और धर्म का कार्य कुशल होगा और धर्म का ल स्थिरता और  
 १८ निश्चिन्तता सदा के लिये । और मेरी जाति कुशल के भवन में और निश्चिन्तता  
 १९ के निवासों में और चैन के स्थानों में रहेगी । और भाड़ी के गिरने के समय  
 २० आले पड़ेंगे और वह नगर नीचाई में नीचा होगा । तुम का दी धन्य हो जो  
 सारे पानियों के पास जाते हो वहां बैल और गदहे के पां जाने देते हो ॥

तीसवां पर्व ।

- १ तुम लुटेरे पर संताप और तू लूटा न गया और तुम क्लेश पर और तू ने क्लेश  
 नहीं खाया जब तू लूट चुकेगा तब तू लूटा जायेगा और जब तू क्लेश दे चुकेगा  
 तब तू क्लेश जायेगा ॥
- २ हे परमेश्वर हम पर दयालु हो हम तेरी याद लेते हैं हर विद्वान को उन  
 ३ की भुजा हो हां विपत्ति के समय में हमारी मुक्ति हुल्लड़ के शब्द से जातिगण  
 भाग गये तेरे उठने से जातिगण किन्न भिन्न हो गये
- ४ और तुम्हारी लूट ऐसी एकट्ठी किई जायेगी जैसे भक्षण करनेवारी टिड्डी  
 ५ बटोरती है टिड्डियों के दौड़ने के समान कोई च पर दौड़ता होगा । परमेश्वर  
 महान प्रगट हुआ क्योंकि जंचाई पर रहता है स ने सैहून को न्याय और धर्म  
 ६ से भर दिया है । और वह तेरे समयों का रक्षक होगा उद्धारों का बल बुद्धि और  
 ज्ञान परमेश्वर का भय वही उस का भण्डार ॥
- ७ देखो उन के बलवान बाहर चिल्लाते हैं लाप के दूत बिलख बिलखके रोते  
 ८ हैं । राजमार्ग सुनसान हो गये यान्त्रिक जा रहा उस ने वाचा भंग किई है  
 ९ नगरों को तुच्छ जाना मनुष्य को लेखे नहीं लाया । देश विलाप करता है  
 भुरा गया लुवनान लज्जित हुआ कुमल गया सखन वन की नाई हो गया और  
 वसनिया और करमिल पत्ते भाड़ते हैं ।
- १० परमेश्वर कहता है कि अब मैं उठूंगा अब मैं जंचा हो जाऊंगा अब मैं आप  
 ११ को महान करूंगा । तुम्हें भूसे क गर्भ होगा तुम पुआल जनोगे तुम्हारा श्वासा  
 १२ आग के समान तुम्हें खा लेगा और जातिगण चूने की भट्टियां होंगे कटे हुए  
 कांटे होकर वे आग में जलये जायेंगे ॥
- १३ अरे तुम कि दूर हो जे मैं ने किया है उसे सुनो और अरे तुम कि समीप हो  
 १४ मेरी साक्ष्य को जानो । सैहून में पापी भयमान हुए कपकपी ने कपटियों को  
 प्रकट लिया है कौन हमसे भस्मक अग्नि में रहेगा कौन हमसे सनातन की  
 जलन में रहेगा ॥
- १५ धर्म के साथ चलते हुए और खराबों की बातें करते हुए अंधेरे के लाभ को  
 तुच्छ करते हुए अक्रोर लेखे अपने हाथ भाड़ते हुए हत्या की बातें सुने से अपना  
 १६ कान मूंदते हुए और बाई पर दृष्टि करने से अपनी आंखें मूंदते हुए । वही जंचे  
 स्थानों में बास करेगा स्थानों के गढ़ उस के जंचे स्थान होंगे उस को रोटी दिई  
 १७ गई उस के लिये ज का प्रण किया गया । तेरी आंखें राजा को उस के विभव  
 में देखेंगी वे दूर के देश पर दृष्टि करेंगी ॥

गई उन के शब्द से वह नहीं डरता और उन के कोलाहल में नहीं डरता वैसे ही सेनाओं का परमेश्वर मैदान के पछाड़ और उस के टीले पर संग्राम करने के लिये उतरेगा । जे चिड़ियां अपने घासलों के ऊपर उड़ती हैं वैसे ही सेनाओं का परमेश्वर यदुसक को ठांपेगा ठांपेगा और हुड़ावेगा आरंभार जायेगा और बचायेगा ॥

उस की ओर फिर जिस्मे इसराएल के संतान बहुत ही भटक गये । क्योंकि उस दिन वे हर एक अपनी सपहली सुतीं और अपनी मोनहली प्रतिमाओं को जिन्हें तुम्हारे हाथों ने तुम्हारे लिये पाप की मासा बनाई फेंक देंगे । और अमूर उस की तलवार से गिरेगा जे पुरुष नहीं है और उस का खड्ग जो मनुष्य नहीं है उसे खा जायेगा और वह खड्ग के सन्मुख में भागेगा और उस के तरुण करदायक हो जायेंगे । और उस की चेतन भय के सारे जाती रहेगी और उस के अध्यक्ष ध्वजा से घबरा जायेंगे परमेश्वर कहता है जिस की आमा मैदान में है और उस का भट्ठा यदुसलम में ॥

### वत्तीसवां पर्व ।

देखो धर्म के लिये एक राा राज्य करेगा और अध्यक्ष न्याय के लिये प्रभुता करेंगे । और एक मनुष्य आंधी रक्षास्थान की नाईं होगा और मंद से छिपने का स्थान पानी की धाराओं की नाईं मरुस्थल देश में भारी चटान की छांच की नाईं बकाई की भूमि में । और देखनेदारों की आंखें न धुंधलायेंगी और श्रोतों के कान भली भांति सुनेंगे और अविद्येकी का मन ज्ञान को समझेगा और तोतले की जिह्वा भली भांति चलने के लिये शीघ्रता करेगी । सूर्य प्रतिष्ठित न कहलायेगा और न कृपण दाता लगेगा । क्योंकि सूर्य सूर्यता की वार्त करेगा और उस का अन्तःकरण दुगुन होगा जिन्हें दुष्कर्म करे और परमेश्वर की विपरीतता में भटकने की वार्त करे तर्क भूख के पेट को हूँका रखे और वह प्यास के पानी को थोड़ा कर देगा । और कृपण के हाथियार दुरे हैं वह दुरी युक्ति बांधना है जिमसे झूठी वार्तों पे प्र लोगों को फंसावे हां जब कि कंगाल न्याय की वार्त करता है । पर दाता दाता का विचार करता है और वह दातृता पर स्थिर रहेगा ॥

हे निडर स्त्रियो गवड़ी हो मेरा शब्द सुनो हे निश्चिन्त बेठियो मेरी बात पर कान धरो । हे निश्चिन्त स्त्रियो एक घरस और एक दिनों के उपरांत तुम शर्ष-राशोगी क्योंकि दास्य की श्रुतु जानी रही समेटने का समय न आवेगा । हे निडर स्त्रियो शर्षराशो हे निश्चिन्त बेठियो कांपो अपने को उधारे और नंगा करो और टाट अपनी कटि पर बांधो । सुदर स्त्रियों के लिये फलवान दास्य के लिये छातियां पीटती छुईं । मेरी जाति की भूमि पर कांटे पर कटीले उगेंगे क्योंकि हे हर्षित नगर वे तेरे सारे संगलस्थानों में उगेंगे । क्योंकि भयन त्यागा गया नगर का हुल्लड़ कौड़ दिया गया टीला और गढ़ थोछों के फंदार मना के लिये हो गये और जंगली गदहों के आनन्दस्थान भुंडों के चर्दस्थान । जब लों कि ऊपर से आत्मा हम पर उड़ेला न जाये और दल बाटिका जाय और बाटिका

- को जिन में कोई नहीं है वे राज्य कहेंगे और उस के सारे अध्यक्ष जाते रहेंगे ।  
 १३ और उस के भवनों में कांटे उगेंगे विकुर और जंटकटारे उस के गढ़ों में और  
 १४ वह भेड़ियों का निवास और शूतुरमुर्गी की राजधानी होगी । और वनपशु हूहा  
 करनेहारे पशुओं से भेंट करेंगे और बालवाला अपने संगी को पुकारेगा केवल वहां  
 १५ निशाचर पशु चैन करता है और अपने लिये शयनस्थान पाता है । वहां उछाल  
 करवैया सर्प खांवी बनायेगा और अंडे देगा और सेवेगा और अपनी छाया के  
 नीचे रक्ता करेगा केवल वहां गिद्ध एकट्टे होंगे हर एक अपने साथी के साथ ॥  
 १६ परमेश्वर की पुस्तक में ठूंडा और सुनाओ उन में से एक भी नहीं घटा है  
 वे एक दूसरे को विकुरा हुआ नहीं पाते हैं क्योंकि मेरे मुंह ही ने आज्ञा किई  
 १७ है और उसी के आत्मा ही ने उन्हें एकट्टा किया है । और उसी ने उन के लिये  
 चिट्ठी डाली है और उस के हाथ ने रस्सी डालके उसे उन के लिये भाग कर दिया  
 है वे सदा के लिये उसे अधिकार में रखेंगे पीढ़ी से पीढ़ी लों उस में बसा  
 करेंगे ॥

### पैंतीसवां पर्व ।

- १ वन और उजाड़ उन के लिये मगन होंगे और जंगल आनन्दित होगा और
- २ फूल की नाईं फूलेगा । वह बहुत फूलेगा और आनन्द करेगा हां मगनता और  
 आनन्दता के साथ लुबनान का बिभव उसे दिया गया है करमिल और सरून की
- ३ सुन्दरता वे ही परमेश्वर का तेज देखेंगे हमारे ईश्वर की सुन्दरता । गिरते हुए  
 हाथों को बल देओ और डगमगाते हुए घुटनों को दृढ़ करो ॥
- ४ अधीर्षों से कहे कि बलवान होओ मत डरो देखो तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे  
 निमित्त है और पलटा आया चाहता है ईश्वर की ओर से बदला वही आया  
 चाहता है और तुम्हें बचावेगा ॥
- ५ तब अंधों की आंखें खोली जायेंगी और बहिरों के कान खोले जायेंगे ।
- ६ तब लंगड़ा हरिण के समान चौकड़ियां भरेगा और गूंगे की जीभ गावेगी क्योंकि
- ७ जंगल में पानी फूट निकले हैं और शून्य स्थान में धारें । और मरीचिका पोखरा  
 हो जायेगी और पियासी भूमि पानियों के सोते हां भेड़ियों के घर में उन की गुफा
- ८ में नल और नरकट के स्थान में । और वहां सड़क और मार्ग होगा और वह  
 धर्ममय का मार्ग कहा जायेगा उस पर अपावन मनुष्य न चलेगा और वह उन्हीं
- ९ के लिये होगा मार्गगामी और अज्ञान भटक न जायेगे । वहां सिंह न होगा और  
 हिंसक पशु उस पर न चढ़ेगा न वहां पाया जायेगा परन्तु वहां कुड़ाये गये लोग
- १० चलेंगे । और परमेश्वर के मोल लिये हुए लोग फिरेंगे और ललकार के साथ  
 सैहून में आवेंगे और नित्यानंद उन के सिरों पर होगा और आनन्द और आह्लाद  
 उन्हें प्राप्त होगा और शोक और कहरना भागेगा ॥

### छत्तीसवां पर्व ।

- १ और ऐसा हुआ कि हिजकियाह राजा के चौदहवें बरस असूर का राजा सन-
- २ हेरीष यहूदाह के सारे दृढ़ नगरों पर चढ़ आया और उन्हें ले लिया । और असूर-
- रियों के राजा ने रब्बसाकी को बड़ी सेना के साथ लकीस से हिजकियाह राजा

तेरा मन भय पर मोच करेगा कहां गिनवैया कहां तुलवैया कहां गहों का १८  
गिनवैया है । तू उस बली जाति को फिर न देखेगा उस जाति को जिस की १९  
दोनों ऐसी अनाखी है कि समझ में नहीं आती जिस की भाषा विदेशी और  
निरर्थ है ।

हमारे पर्वों के नगर सैहून पर दृष्टि कर तेरी आंखें यमसलम को देखेंगी कि २०  
अथ चैन का निवास है एक तंबू जो न टलेगा उस के खंटे कभी उखाड़े न  
जायेंगे और उस की डोरियों में से एक भी न तोड़ी जायेगी । परन्तु वहां परमेश्वर २१  
हमारे लिये बली होगा उस स्थान में जहां धाराएं दोनों और चौड़ी धाराएं हैं  
उस में डांड की नौका न चलेगी और न सुन्दर जहाज उस में टोके पार जायेगा ।  
क्योंकि परमेश्वर हमारा न्यायी परमेश्वर हमारा व्यवस्थादायक परमेश्वर हमारा २२  
राजा वही हमें मुक्ति देगा ॥

तेरी रस्सियां ढीली फिरे गईं वे अपने समतूल को खड़ा नहीं रख सकतीं वे २३  
पाल को नहीं फैलातीं तब लूट की सामा यद्युताई से बांटी जाती है लंगड़े लूट  
को लूटते हैं । और उसनेहारा न कहेगा कि मैं रोगी तू जो जाति उस में रहती २४  
है उस का पाप क्षमा किया गया ।

#### चौंतीमवां पर्व ।

हे जातिगणो मुझे के लिये समीप आओ और हे लोगो कान धरो पृथिवी और १  
उस की भगपूरी मुने जगत और सब वस्तु जो उससे निकलती हैं । क्योंकि परमे- २  
श्वर का कोप सारे जातिगणों पर है और उस का क्रोध उन की सारी सेना पर  
उस ने उन्हें खाप के नीचे रक्खा उन्हें संहार के लिये मींघ दिया है । और उन के ३  
संहारित फेंक दिये जायेंगे और उन की लाशों की दुर्गंध उठेगी और पछाड़ उन  
के लोहू से पिघल जायेंगे । और स्वर्ग की सारी सेनाएं गल जायेंगी और स्वर्ग ४  
गाते की नाईं लपेटे जायेंगी और उन की सारी सेनाएं सुरक्षा जायेंगी जैसा दाख  
का पत्ता सुरक्षा जाता है और गूलर के वृक्ष के सुरक्षाते हुए पत्ते के समान ।  
क्योंकि मेरा खड्ग स्वर्ग में परिणुत हो गया देखो वह अदूम पर उतरेगा और उस ५  
जाति पर जो मेरे आप के नीचे है न्याय के लिये । परमेश्वर का एक खड्ग है वह ६  
लोहू से भरा है चिकनाई से चिकना किया गया है मंठों और बकरों के लोहू  
से मंठों के गुर्दों की चिकनाई से क्योंकि युवराज में परमेश्वर के लिये एक बलि-  
दान है और अदूम के देश में महा संघार । और वनैले भैंसे उन के साथ गिरेंगे ७  
और बेल सांड़ों के साथ और उन का देश कंधिर से परिणुत हो जायेगा और उन  
की धूल चिकनाई से चिकनाई जायेगी । क्योंकि परमेश्वर के पलटा लेने का दिन ८  
है और सैहून के कारण के लिये पलटा लेने का वरस । और उस के नाले राल हो ९  
जायेंगे और उस की धूल गंधक और उस का देश जलतो हुई राल हो जायेगा ।  
रात दिन वह कभी न रुकेगी सर्वदा लों उस का धूआं उठता रहेगा पीछी से १०  
पीछी लों वह उजाड़ रहेगा सनातन लों उस में कोई यात्री न होगा । तब ११  
सारस और साड़ी उसे अधिकार में लेंगे और गरुड़ और काग उस में बसेंगे और  
उस पर उजाड़ का मूत और शून्यता के पत्थर फैलाये जायेंगे । उस की मांढों १२

न पावे जो कहता है कि परमेश्वर हमें मुक्ति देगा भला जातिगणों के देवों में  
 १९ से कोई अपने देश को असूर के राजा के हाथ से बचा सका है । हमारा और  
 अरपाद के देव कहां हैं सिफ्वाईस के देव कहां और कब और कहां हुआ कि  
 २० उन्हें ने समरुन को मेरे हाथ से बचाया । कौन इन देशों के सब देवों में से  
 है जो अपने देश को मेरे हाथ से बचा सके कि परमेश्वर भी यरुसलम को मेरे  
 हाथ से बचावेगा ॥

२१ और वे चुपके हो रहे और उत्तर में उसे एक बात न कही क्योंकि राजा की  
 आज्ञा यह थी कि उसे उत्तर मत दीजियो ॥

२२ तब खिलकियाह का बेटा इलयाकीम जो घर का अध्यक्ष था और शबना  
 लेखक और आसफ का बेटा यूअख स्मारक अपने वस्त्र फाड़े हुए हिजकियाह के  
 पास आये और उन्होंने ने रब्बसाकी की बातें उसे कह सुनाई ॥

सैंतीसवां पर्व ।

१ और ऐसा हुआ कि जब हिजकियाह राजा ने ये बातें सुनीं तब उस ने अपने  
 २ कपड़े फाड़े और टाट ओढ़ा और परमेश्वर के मन्दिर में आया । और उस ने  
 इलयाकीम को जो घर का अध्यक्ष था और शबना लेखक और याजकों के  
 प्राचीनों को टाट ओढ़ाके असूर के बेटे यसत्रियाह भविष्यद्वक्ता के पास भेजा ।  
 ३ और उन्होंने ने उससे कहा कि हिजकियाह यों कहता है कि आज का दिन दुःख  
 और दण्ड और अपमान का दिन है क्योंकि बालक उत्पन्न होने के स्थान पर  
 ४ आये और जूने का बल नहीं है । यदि परमेश्वर तेरा ईश्वर रब्बसाकी की बातें  
 सुनेगा जिसे उस के प्रभु असूर के राजा ने भेजा कि जीते ईश्वर की निन्दा करे  
 ५ और इन बातों का दण्ड देवे जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने सुनी हैं तब तू इन बचे  
 हुएों के लिये जो अब हैं प्रार्थना करेगा ॥

६ तब हिजकियाह राजा के सेवक यसत्रियाह के पास आये । और यसत्रियाह  
 ने उन से कहा कि तुम अपने स्वामी से यों कहो कि परमेश्वर यों कहता है कि  
 तू इन बातों से जो तू ने सुनीं जिन से असूर के राजा के सेवकों ने मेरी निन्दा  
 ७ की है भय मत कर । देख मैं उस में एक आत्मा डालता हूं और वह एक  
 ८ सन्देश सुनेगा और अपने देश की ओर लौटेगा और मैं उसे उस के देश में खड़ा  
 ९ से सरवा डालूंगा ॥

८ और रब्बसाकी लौटा और असूर के राजा को लिखनः से लड़ते पाया क्योंकि  
 ९ उस ने सुना कि वह लकीस से चला गया था । और उस ने कूश के राजा तिर-  
 हाकः के विषय में यह सुना कि वह तुम से लड़ने आता है और जब उस ने  
 १० सुना तब उस ने दूतों को हिजकियाह के पास यह कहते हुए भेजा । कि तुम  
 यहूदाह के राजा हिजकियाह से यों कहो कि तेरा ईश्वर जिस पर तू भरोसा  
 रखता है तुमको कुल न देवे जब कहता है कि यरुसलम असूर के राजा के हाथ में  
 ११ न दिया जायेगा । देख तू ने सुना जो कि असूर के राजाओं ने सारे देशों से किया  
 १२ कि उन्हें सर्वथा नाश करें और तू बच जायेगा । क्या देशगणों के देवों ने उन्हें  
 बचाया जिन्हें मेरे पितरों ने बिनाश किया अर्थात् जोजान को और हारान को और

के पास यक्षसलम की भेजा और वह ऊपर के कुण्ड की नाली पर धोयी के खेत की सड़क पर खड़ा था । और द्विजक्रियाह का वेटा डलपाकीम जो घर का अध्यक्ष था और शवना लेखक और आसफ का वेटा यूअख स्मारक उस के पास आये ॥

तब रत्नसाकी ने उन से कहा कि जाके द्विजक्रियाह से कहो कि महाराज ४  
अमूरियों का राजा यह कहता है वह कौन सी आशा है जिस पर तू भरोसा रखता है । मैं कहता हूँ कि युद्ध के लिये तुम्हारे मंत्र और सामर्थ्य केवल मुँह ५  
की बातें हैं अब किस पर तेरा भरोसा है कि तू मेरे विरोध में फिर गया है । देख तू ने इस टूटे हुए नल की लाठी पर अर्थात् मिस पर भरोसा रखता है ६  
जिस पर यदि कोई मनुष्य आसा करे तो वह उस के हाथ में जाके उसे घेरीगी वैसे ही मिस का राजा फिरकन उन सभी के लिये है जो उस पर भरोसा रखते हैं । और यदि तू मुझ से कहे कि हमारा भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है ७  
व्या वह नहीं कि जिस के ऊँचे स्थानों और जिस की यज्ञवेदियों को द्विजक्रियाह ने दूर किया और यहूदाह और यक्षसलम से कहा कि तुम इस यज्ञवेदी के आगे पूजा किया करो । सो अब मेरे प्रभु अमूर के राजा से दोड़ बांधिये और मैं तुम्हें ८  
दो महस घोड़े दूँगा यदि तू उन पर चढ़वैये बैठ सके । सो तू क्योंकर एक ९  
आज्ञाकारी को मेरे प्रभु के दासों में से छोटे से छोटे का दृष्टा देगा और यों तू मिस पर गाड़ियों और घोड़चढ़ों के लिये भरोसा रखता है । और अब क्या मैं परमेश्वर १०  
बिना इस देश को नाश करने आया हूँ परमेश्वर ही ने तो मुझ से कहा कि उस देश पर चढ़ जा और उसे नाश कर ॥

तब डलपाकीम और शवना और यूअख ने रत्नसाकी से कहा कि हम तेरी ११  
विनती करते हैं कि आराम की बोली में अपने दासों से बात कीजिये क्योंकि हम इसे समझते हैं और लोगों के सुने में तो भीत पर हैं यहूदी भाषा में हम से न कहिये । तब रत्नसाकी बोला क्या मेरे प्रभु ने मुझे तेरे प्रभु के पास अबवा तेरे १२  
पास ये बातें कहने की भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों के पास जो भीत पर बैठे हैं नहीं भेजा कि वे तुम्हारे साथ अपना विष्ठा खावें और सूत्र पीवें ॥

और रत्नसाकी खड़ा रहा और यहूदी भाषा में बड़े शब्द से पुकारके बोला १३  
और कहा कि महाराज की अर्थात् अमूर के राजा की बात सुनो । राजा यों १४  
कहता है कि द्विजक्रियाह तुम्हें कल न देवे क्योंकि वह तुम्हें बचा न सकेगा । और द्विजक्रियाह तुम्हें यह कहके उभारने न पावे कि तुम परमेश्वर पर भरोसा १५  
रखो कि परमेश्वर निश्चय हमें बचावेगा यह नगर अमूर के राजा के हाथ में न सौंपा जायेगा । द्विजक्रियाह की न सुनो क्योंकि अमूर का राजा यों कहता १६  
है कि मुझ से मिलाप करके मेरे पास बाहर निकल आओ और तुम में से हर एक अपने अपने दाख का और अपने अपने गूलरवृक्ष का फल खावे और अपने अपने कुण्ड का पानी पीवे । जब लों कि मैं आज और तुम्हारे देश १७  
की नाईं तुम्हें एक देश में ले जाऊँ अन्न और दाखरस के देश में रोटी और दाख की बारी के देश में । चौकस रहा जिसने द्विजक्रियाह तुम्हें कल देने १८



- ३० और यह तेरे लिये चिन्ह होगा इस बरस में उसे खाओ जो आप से उगता है और दूसरे बरस में उसे जो उसी से उगता है और तीसरे बरस में वोओ और लवो और दाख की खारियों को लगाओ और उन के फल खाओ । और यहूदाह के घराने के बचे हुए जो बच रहे हैं सो फिर नीचे जड़ पकड़ेंगे और ऊपर फल देंगे । क्योंकि यहूसलम से बचे हुए निकलेंगे और सैहून पर्वत से बचे हुए सेनाओं के परमेश्वर का ताप यह करेगा ॥
- ३३ इस लिये परमेश्वर असूर के राजा के विषय में यों कहता है कि यह इस नगर लों न आवेगा और यहां बाख न चलावेगा और ठाल के साथ इस के साम्हने न आवेगा और न इस के आगे मेंड़ बांधेगा । जिस मार्ग से वह आया उसी से वह लौटेगा और इस नगर लों न आवेगा परमेश्वर कहता है । और मैं अपने लिये और अपने सेवक दाऊद के लिये इस नगर पर उसे बचाने के लिये रक्षा करूंगा ॥
- ३६ और परमेश्वर का दूत निकला और असूर की ह्रावनी में एक लाख पचासी सहस्रों को प्राण से मारा और वे बिहान को तड़के उठे और देखो वे सब मरे पड़े थे । तब असूर के राजा सनहेरीब ने डेरा उठाया और चला गया और फिर गया और नीनवः में ठहरा । और वह अपने देव अर्थात् निसरुक के मन्दिर में पूजा करता रहा और अदरम्सलिक और सराजर उस के बेटों ने उसे खड्ग से मार डाला और उन्होंने ने अरारात के देश में अपने को बचाया और असरहदून उस का बेटा उस की संती राजा हुआ ॥

#### अठतीसवां पृष्ठ ।

- १ उन्हीं दिनों में हिजकियाह को मृत्यु का रोग हुआ और अमूस का बेटा यसत्रियाह भविष्यवृत्ता उस के पास आया और उससे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि अपने घराने को आज्ञा कर क्योंकि तू मरता है और न जीयेगा । तब हिजकियाह ने अपना मुंह भीत की ओर फेर लिया और परमेश्वर से प्रार्थना की किई । और कहा कि अब हे परमेश्वर स्मरण कर मैं बिन्ती करता हूं कि मैं सच्चाई से और सिद्ध मन से तेरे आगे चला फिरा हूं और जो तेरी दृष्टि में भला था सो मैं ने किया और हिजकियाह बिलख बिलखके रोया ॥

- ४ और परमेश्वर का बचन यसत्रियाह के पास आया और कहा । कि जा और हिजकियाह से कह कि परमेश्वर तेरे पिता दाऊद का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी मैं ने तेरे आंसू देखे देख मैं तेरी आयुर्दा पंदरह बरस और बढ़ाता हूं । और मैं तुम्हें और इस नगर को असूर के राजा के हाथ से बचाऊंगा और इस नगर की रक्षा करूंगा । और यह तेरे लिये परमेश्वर की ओर से वह चिन्ह होगा कि परमेश्वर इस बचन को जो उस ने कहा है पूरा करेगा । देख मैं हाथे को वे कायायंत्रक्रम जो वह आखज के कायायंत्रक्रमों में सूर्य के साथ उतर गया है दस क्रम पीछे फिरा देता हूं सो सूर्य दस क्रम फिरा उन कायायंत्रक्रमों पर जिन पर उतर गया था ॥

- ९ यहूदाह के राजा हिजकियाह का लिखा हुआ जब वह रोगी हुआ और अपने रोग से चंगा हुआ ॥

रसफ और अदन के संतान को जो तिलम्सार में हैं । हमारा का राजा और अरपाद १३ का राजा और मिफ्वाईस के नगर का राजा देना और इब्बा का राजा कहा है ॥

और हिजकियाह ने वह पत्नी दूतों के हाथ से ली और उसे पढ़ा और पर- १४ मेश्वर के मन्दिर में ऊपर चढ़ गया और हिजकियाह ने उसे परमेश्वर के आगे फैलाया । तब हिजकियाह ने परमेश्वर के आगे आके प्रार्थना की और कहा । १५ कि हे मेनाशों के परमेश्वर हमाराएल के ईश्वर करोवीम पर बैठनेदारे तू वहीं १६ ईश्वर है तू ही अकेला पृथिवी के समस्त राज्यों के लिये है तू ही ने आकाश और पृथिवी को सृजा । हे परमेश्वर अपना कान सुना और मुन हे परमेश्वर १७ अपनी आंखें खोल और देख और अनदेखी की सारी बातें मुन जिस ने जीवते ईश्वर की निन्दा करने के लिये भेजा है । हे परमेश्वर सत्य है कि अमूर के १८ राजाओं ने सारे देशों को और उन की भूमि को विनाश कर दिया है और उन के देशों को आग में भोंक दिया है । क्योंकि वे ईश्वर न थे पर मनुष्यों के हाथ १९ के बनाये हुए लकड़ी और पत्थर और उर्ध्व मर्यादा नाश किया । और अब हे २० परमेश्वर हमारे ईश्वर हमें उस के हाथ से बचा और पृथिवी के सारे राज्य जानेंगे कि तू ही अकेला परमेश्वर है ॥

तब अमूर के बेटे यमश्रियाह ने यह कहते हुए हिजकियाह के पास भेजा कि २१ परमेश्वर हमाराएल का ईश्वर यों कहता है कि तू ने अमूर के राजा के विषय में मुझ से प्रार्थना की है ॥

यह वह वचन है जो परमेश्वर ने उस के विषय में कहा है कि मैहन की २२ कुंवारी बेटी ने तेरी निन्दा की है तुझे ठट्टे में उड़ाया है यमलस की बेटी ने तेरे पीछे सिर टिलाया है । तू ने किस की निन्दा की है और किसे कुचन कहा २३ और तू ने किस के विरोध में अपना शब्द उठाया है और अपनी आंखें इसराएल के धर्ममय के विरोध में चढ़ाईं । तू ने अपने सेवकों के हाथ से प्रभु की निन्दा २४ करके कहा है कि मैं अपने रथों की बहुताई से पहाड़ों की ऊंचाई पर लुथनान की ओर चढ़ गया हूं और मैं उस के ऊंचे देवदारुओं उस के चुने हुए सरोवृक्षों को काट डालूंगा और उस के मिवाने की ऊंचाई पर उस के घन को दारों को आऊंगा । मैं ने खेदा और पानी पिया और अपने पांवों के तलवों से मित्र की २५ सारी नदियों को सुखा दूंगा ॥

व्या तू ने नहीं मुना दूर से मैं ने उसे किया प्राचीन दिनों से और उसे बनाया २६ अब मैं ने उसे पहुंचाया और वह बृह नगरों को उजाड़ डेरों में नाश करने के लिये होगा । और उन के निवासी अल्प चलवान हैं वे हारमान और व्याकुल २७ हों गये वे खेत की घास और हरियाली हो गये कतों की घास और वन के खड़े अनाज से आगे वे सुखा गये । पर तेरा बैठना और तेरा जाना और तेरा आना २८ मैं जानता हूं और तेरा मेरे विरुद्ध अपने को कोष में लाना । तेरा मेरे विरुद्ध २९ अपने को कोष में लाने के कारण से और इस कारण से कि तेरा कोष मेरे जानों को पहुंचा है मेरा मैं अपनी नकेल तेरी नाक में लगाऊंगा और अपनी दाढ़ी तेरे मुंह में और जिस मार्ग से तू आया है उसी पर तुझे फिराऊंगा ॥

मेरे घर में है उन्हें ने देखा है कोई वस्तु नहीं जो मैं ने अपने भंडारों में उन्हें नहीं दिखाई ।

- ५ तब यसश्रियाह ने हिजकियाह से कहा कि सेनाओं के परमेश्वर की बात  
 ६ सुन । देख वे दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है और जिसे तेरे पितरों  
 ७ ने आज के दिन लो एकट्ठा किया है बाबुल को पहुंचाया जायेगा कि कोई वस्तु  
 ८ छोड़ी न जायेगी परमेश्वर कहता है । और तेरे बेटों से जो तुझ से निकलेंगे जो  
 तुझ से उत्पन्न होंगे वे ले जायेंगे और वे बाबुल के राजा के भवन में नपुंसक होंगे ।  
 ९ तब हिजकियाह ने यसश्रियाह से कहा कि भला है परमेश्वर का वचन जो तू  
 ने कहा है और उस ने कहा क्योंकि मेरे दिनों में कुशल और चैन रहेगा ॥

चालीसवां पर्व ।

- १ तुम शान्ति दो मेरे लोगों को शान्ति दो तुम्हारा ईश्वर कहता है । यरूसलम  
 २ के मन के समान बातें करो और उस को पुकारो कि तेरा संग्राम समाप्त हो गया  
 और तेरे पाप का प्रायश्चित्त हुआ और तू ने परमेश्वर के हाथ से अपने सारे  
 पापों के पलटे में दूना पाया ॥  
 ३ एक पुकारनेहारे का शब्द कि वन में परमेश्वर के मार्ग को सुधारो जंगल में  
 ४ हमारे ईश्वर के लिये राजमार्ग सिद्ध करो । हर एक नीचाई ऊंची किई जायेगी  
 और हर एक पहाड़ और पहाड़ी नीचे किये जायेंगे और ऊंचा नीचा बरोबर हो  
 ५ जायेगा और ब्रीहड़ चौगान । और परमेश्वर का विभव प्रगट किया जायेगा और  
 ससस्त मांस एक ही संग उसे देखेंगे क्योंकि परमेश्वर के मुंह ने कहा है ॥  
 ६ एक शब्द कहता है कि पुकार और उस ने कहा कि क्या पुकारूं सारे मांस  
 ७ तो घास हैं और उस की सुन्दरता खेत के फूल की नाईं । घास सूख गई फूल  
 कुम्हला गया क्योंकि परमेश्वर के श्वास ने उस पर फूंक मारी है निश्चय लोग  
 ८ घास हैं । घास तो सूख गई फूल कुम्हला गया पर हमारे ईश्वर का वचन सदा  
 लों स्थिर रहेगा ॥  
 ९ ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा हे मंगलसमाचार प्रचारनेहारी सैहून पराक्रम के साथ  
 अपना शब्द उठा हे मंगलसमाचार प्रचारनेहारी यरूसलम ऊंचा कर मत डर  
 १० यहूदाह की बस्तियों से कह कि देखो तुम्हारा ईश्वर । देखो प्रभु परमेश्वर  
 बलवाले में होके आता है और उस की भुजा उस के लिये राज्य करती है देखो  
 ११ उस का पलटा उस के साथ है और उस का प्रतिफल उस के आगे । चरवाहे के  
 समान वह अपने झुंड को चरावेगा अपनी भुजा में सेमों को एकट्ठा करेगा और  
 उन्हें अपनी गोद में उठायेगा और दूध पिलानेहारियों की अगुआई करेगा ॥  
 १२ किस ने पानियों को अपने चुलू से नापा और आकाशों को बिता से परिमाण  
 किया और पृथिवी की धूल को पात्र में भरा और पहाड़ों को पलड़े में और  
 १३ पहाड़ियों को तुला में तौला । किस ने परमेश्वर के आत्मा को परिमाण किया  
 १४ और कौन उस का मंत्री होके उसे सिखलायेगा । उस ने किस्से परामर्श पाया  
 और उस ने उसे समझाया और उसे न्याय का पथ बताया और उसे बिद्या बताई  
 और समझ कि मार्ग कौन उसे सिखलायेगा ॥

मैं ने कहा कि अपने दिनों के उदर जाने में मैं समाधि के फाटकों में प्रवेश १०  
करूंगा मैं अपने घरों के रहे हुए ने निरास हो गया । मैं ने कहा कि परमेश्वर ११  
को न देखूंगा परमेश्वर को जीवनों की भूमि में मनुष्य को जगत के वासियों के  
साथ फिर न देखूंगा । मेरा निवास उखाड़ा गया और मुझ पर खोला गया १२  
है गड़ारिये के डरे के समान मैं ने जुलाहे के समान अपने जीवन को लपेट लिया  
वह मुझे तांत से काट डालेगा दिन से रात लों तू मुझे समाप्त कर डालेगा । मैं ने १३  
उसे विद्वान लों मिष्ट की नाई अपने सामने रखवा वह कहता हुआ कि वह ऐसा ही  
मेरी सारी छद्मियों को तोड़ डालेगा दिन से रात लों तू मुझे समाप्त कर डालेगा ।  
सुपायिना के या सारस के समान वैसा ही मैं चटचटाता हूँ पेंडूकी के समान १४  
कूकू करता हूँ ऊपर की ओर देखने से मेरी आंखें घट गईं हे परमेश्वर मैं टव  
गया मेरा उपकारी हो ॥

मैं क्या करूँ वह ने तो मुझ से कहा और उसी ने किया है मैं अपने प्राण की १५  
कड़वाहट के कारण से अपने सारे घरों में दौले दौले चला करूंगा । हे १६  
प्रभु उन्हीं पर वे जीते हैं और हर एक के विषय में जो उन में है मेरे आत्मा  
का जीवन है और तू मुझे चंगा करेगा और जीता रखेगा । देख मेरी अधम १७  
कड़वाहट घन में पलट गई और तू ने मेरे प्राण को विनाश के गढ़ने से प्यार  
किया क्योंकि तू ने अपनी पीठ के पीछे मेरे सारे पापों को फेंक दिया है । क्योंकि १८  
समाधि तेरा स्वीकार न करेगी न मृत्यु तेरा धन्य मानेगी गढ़ने में उतारनेवाले  
तेरी सच्चाई के विषय बात न जोहेंगे । जीवता जीवता वही तेरी स्तुति करेगा १९  
जैसा मैं आज के दिन करता हूँ पिता पुत्रों को तेरी सच्चाई के विषय मदेश  
देगा । परमेश्वर मुझे बचाने के लिये आया और हम अपनी छन्दों को अपने २०  
जीवन के सब दिन परमेश्वर के मन्दिर में बजाया करेंगे ॥

और यमश्रियाह ने कहा कि वे मूल्यों को टिकिया लें और उन जोड़े पर लेप २१  
चढ़ावें और वह चंगा हो जायेगा । और हिजकियाह ने कहा कि क्या चिन्त है २२  
कि मैं परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ जाऊंगा ॥

वंतालीसवां पर्व ।

उस समय बलदान के घेरे मरुदक बलदान ने जो बाबुल का राजा था हिज- १  
कियाह के लिये पत्री और भेंट भेजी क्योंकि उस ने सुना कि वह रोगी था और  
चंगा हुआ । और हिजकियाह उन के आने से आनन्दित हुआ और उन्हें अपना २  
भंडारस्थान अर्थात् कपा और मोना और सुगंध द्रव्य और मधुसोमल तेल और  
अपने नारे दशियारस्थान और सब कुछ जो उस के भंडारों में था उन्हें दिखलाया  
उस के घर में और उस के राज्य में कोई ऐसी वस्तु न थी जो हिजकियाह ने  
उन्हें नहीं दिखलाई ॥

तब यमश्रियाह भविष्यद्वक्ता हिजकियाह राजा के पास आया और उन्से ३  
पूछा कि इन मनुष्यों ने क्या कहा और कहाँ से तेरे पास आये और हिजकियाह  
ने कहा कि दूर देश से बाबुल से वे मेरे पास आये । और उस ने कहा ४  
कि उन्हीं ने तेरे घर में क्या देखा है और हिजकियाह ने कहा कि सब कुछ जो

३ धनुष को देगा । यह उन का पीछा करेगा कुशल के साथ पार हो जायेगा यह  
४ मार्ग में अपने पाँवों के साथ न जायेगा । किस ने पीछियों को आरंभ से बुलाते  
हुए बनाया और यह काम किया है मैं परमेश्वर पहिले और पिछले के साथ मैं  
वही हूँ ॥

५ टापुओं ने देखा और डर गये पृथिवी के अन्त कांपते हैं वे निकट आये और  
६ घटुँच गये हैं । वे हर एक अपने पड़ोसी की सहाय करेंगे और हर एक अपने  
७ भाई से कहेगा कि हियाव कर । और सूर्ति बनानेहारे ने सुनार को और द्यौढ़े  
से बरोबर करनेहारे ने निदाई पर गठनेहारे को दृढ़ किया है यह जोड़न के  
विषय कहता है कि वह अच्छा हुआ है और उस ने उसे कीलों से दृढ़ किया है  
वह हिलाई न जायेगी ॥

८ और तू हे इसराएल मेरे दास हे यश्मकूब जिसे मैं ने चुन लिया है मेरे मित्र  
९ अविरहाम के वंश । जिसे मैं ने जगत के अन्तों से खँच लिया और उस के सिधानों  
से तुझे बुलाया और तुझ से कहा कि तू ही मेरा दास है मैं ने तुझे चुन लिया  
१० और तुझे नहीं त्यागा । तू मत डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ मत घबरा क्योंकि मैं  
तेरा ईश्वर हूँ मैं ने तुझे दृढ़ किया हूँ तेरी सहायता किई हूँ तुझे अपने धर्म  
११ के दहिने हाथ से संभाला है । देख वे सब जो तुझ पर जलते हैं लज्जित होंगे  
और निन्दित किये जायेंगे जो तुझ से लड़ते हैं वे मिट जायेंगे और नाश होंगे ।  
१२ जो तुझ से झगड़ा करते हैं तू उन्हें हूँढ़ेगा और उन्हें न पायेगा जो तुझ से संग्राम  
१३ करते हैं वे मिट जायेंगे और नास्ति की नाई होंगे । क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा  
ईश्वर तेरा दहिना हाथ धरता हूँ जो तुझ से कहता हूँ कि मत डर मैं ने तेरी  
१४ सहायता किई है । हे कीड़े यश्मकूब मत डर और हे इसराएल के मनुष्यो मैं ने  
तेरी सहायता किई है परमेश्वर और तेरा मुक्तिदाता इसराएल का धर्ममय कहता  
१५ है । देख मैं ने तुझे नया चेखा दांतेदार दावने का दृषियार ठहराया है तू  
पहाड़ों को दावेगा और उन्हें चूर चूर करेगा और टीलों को भूसे की नाई बना-  
१६ वेगा । तू उन्हें आसावेगा और पवन उन्हें उड़ा ले जायेगी और बवंडर उन्हें  
बिथरा देगा पर तू परमेश्वर से आनन्दित होगा और इसराएल के धर्ममय पर  
फूलेगा ॥

१७ दुःखी और कंगाल पानी के खोजी हैं और कुछ नहीं है उन की जिह्वा मारे  
प्यास के सूख गई मैं परमेश्वर उन की सुनूंगा मैं इसराएल का ईश्वर उन्हें न  
१८ छोड़ूंगा । मैं उधारे टीलों पर नदियां और तराइयों के बीच में सोते खोलूंगा मैं  
१९ बन को पानी की भील और सूखी भूमि को पानी के सोते बनाऊंगा । मैं बन में  
देवदारु और बबूर और मेंहदी और जंगली जैतूनवृक्ष लगाऊंगा मैं शून्यस्थानों में  
२० सरो सनोबर और शमशादवृक्ष एक साथ लगाऊंगा । जिस्ते वे देखें और जानें  
और मन लगायें और एक ही साथ समझें कि परमेश्वर के हाथ ने यह किया है  
और इसराएल के धर्ममय ने उसे सृजा है ॥

२१ अपना विवाद समीप लाओ परमेश्वर कहता है अपने दृढ़ प्रमाणों को मेरे  
२२ आगे लाओ यश्मकूब का राजा कहता है । वे आगे लावें और हमें बतायें जो

देखो जानिगण डोल की एक छंद की नाई हैं और पल्लों की धूल के समान १५  
गिने गये देव्य वह टापुओं को अणु की नाई उठायेगा । और नुग्रमान ईधन के १६  
लिये वम नहीं और उस के पशु यज्ञ के लिये वम नहीं । समस्त जानिगण उस के १७  
आगे कुछ वस्तु नहीं हैं नास्ति से कम और वृथा उस के निकट गिने गये ॥

सो तुम किस्से सर्वशक्तिमान को उपमा देओगे और उससे क्या उपमा ठहरा- १८  
ओगे । उस मूर्ति को जिये कार्यकारी ने ढालके बनाया है और सुनार उसे मोने १९  
से मढ़ेगा और रूपे की सीकरियां वह ढालना है । जो धनिदान चढ़ाते चढ़ाते २०  
दरिद्र हो गया वह ऐसे धृज को चुन नेता है जो न चुनेगा वह उस के लिये चतुर  
कार्यकारी ठूंढ़ता है जिस्ते ऐसी मूर्ति गव्ही करे जो टिलाई न जायेगी ॥

क्या तुम न जानोगे क्या तुम न सुनोगे क्या आरंभ से तुम को संदेश नहीं २१  
दिया गया क्या तुम ने धरती की नेत्रों को न समझा । जो भूमि के मंडल पर २२  
बैठता है और उस के वामी ठिठों के समान हैं जो आकाशों को सूक्ष्म वस्त्र की  
नाई फैलाता है और उन्हे उस नेत्र की नाई जो निवास के लिये है फैलाना है ।  
जो अध्यक्षां को तुच्छ कर देता है पृथिवी के न्यायों को उस ने व्यर्थ ठहराया २३  
है । हां वे न लगाये गये हां वे न बाँधे गये हां उन के मूल ने भूमि में जड़ नहीं २४  
पकड़ी और उस ने केवल उन पर झूंक सारी और वे मृग्य गये और वगूला उन  
को भूमे की नाई उड़ा ले जायेगा ॥

सो अब तुम किस्से मुझे उपमा देओगे और मैं किस के बरोबर हूं धर्मसय २५  
कहता है । अपनी आर्ष्य ऊंचाई पर उठा और देख किम ने इन्ते सिरजा और २६  
वह कौन है जो उन को मेला को गिनके निकालता है वह उन सभी को नाम  
लेके बुलायेगा बल के महन्त्र से और पराक्रम से बलवान होकर उन में से एक  
भी नहीं रह जाता ॥

हे यशस्कृप तू किस लिये कहेगा और हे इसराएल तू क्यों ये बातें करेगा कि २७  
मेरा मार्ग परमेश्वर से छिपाया गया और मेरा विचार मेरे ईश्वर के पास से पार  
हो जायेगा । क्या तू ने नहीं जाना क्या तू ने नहीं सुना मनातन का ईश्वर पर- २८  
मेश्वर पृथिवी के सियानों का सृष्टिकर्ता न निर्वल होगा और न थकेगा उस की  
बुद्धि अशेष है । निर्वल को बल देता है और दुर्वल के बल को बढ़ायेगा । २९  
और तबल निर्वल हो जायेगे और थक जायेगे और चुने हुए युवा सन्तुष्य सर्वथा ३०  
हगमगार्यगे । पर परमेश्वर के भरोसा रखनेवाले नया बल प्राप्त करेंगे वे सिद्धों ३१  
की नाई बाल और पर फैलायेगे और दौड़ेंगे और न थकेंगे चले जायेंगे और  
निर्वल न होंगे ॥

एकतालीसवां पर्व ।

हे टापुओं मेरे आगे चुप हो रहो और जातिगण नया बल प्राप्त करें वे पास १  
आर्ष्य नव बातें करें हम एक ही साथ विवाद के लिये समीप आये ॥

किस ने पूरव से जगाया है धर्म उस को अपने पांच के पास बुलायेगा वह २  
जातिगणों को उस के आगे कर देगा और उसे राजाओं पर अधिकारी करेगा  
वह उन्हे धूल के समान उस के खड्ग को और उड़ाये हुए भूसे के समान उस के



- १३ वे परमेश्वर की प्रतिष्ठा दें और टापुओं में उस की स्तुति बतायें । परमेश्वर और के समान निकलेगा युद्धकारी मनुष्य के समान अपनी उबलन को जगायेगा वह ललकारेगा हाँ चिल्लायेगा अपने शत्रुओं के विरुद्ध मैं अपनी वीरता दिखलावेगा ॥
- १४ मैं एक बड़े काल से चुप हो रहा यह कहता हुआ कि मैं चुप रहूँगा अपने को रोऊँगा पर अब जनेहारी स्त्री की नाईं चिल्लाऊँगा हाँफूँगा और एक ही
- १५ साथ मुँह फैलाऊँगा । मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को उखाड़ कर ढालूँगा और उन पर की घास को सुखा ढालूँगा और नदियों को टापू कर दूँगा और पोखरों
- १६ को सुखा ढालूँगा । और मैं अंधों को उस मार्ग पर ले जाऊँगा जिसे वे नहीं जानते हैं और उन पहाड़ियों पर जिन से वे अज्ञान हैं उन की अगुआई करूँगा मैं उन के आगे अंधकार को ज्योति और टेढ़े मार्गों को सीधा कर ढालूँगा ये ही वे बातें हैं मैं ने उन्हें पूरा किया है और उन्हें नहीं छोड़ा ॥
- १७ वे पीछे हटाये गये सर्वथा लाज से लज्जित होंगे जो खोदी हुई मूर्ति का भरोसा रखते हैं जो ठाली हुई मूर्ति से कहते हैं कि तुम्हीं हमारे देव हो ॥
- १८ हे बहिरा सुनो और हे अंधो दृष्टि करो जिससे तुम देखो । मेरे दास को छोड़ कौन अंधा है और बहिरा मेरे दूत के समान जिसे मैं भेजूँगा कौन अनुग्रहित के
- २० समान अंधा और परमेश्वर के दास के समान अंधा । तू ने बहुत बातों को देखा है और उन की कुछ चिन्ता न करेगा कानों को खोलने के लिये वह भेजा गया
- २१ पर न सुनेगा । परमेश्वर अपने धर्म के लिये प्रसन्न है वह व्यवस्था की महिमा
- २२ करेगा और उसे प्रतिष्ठा देगा । पर वह लूटी हुई और क्षीनी हुई जाति है सब के सब गुफाओं में फँस गये और बन्दीगृहों में छिप गये वे अहर के लिये हैं और कोई कुड़वैया नहीं लूट के लिये और कोई नहीं कहता कि फेर दे ॥
- २३ कौन तुम्हें से इस पर कान धरेगा आगे के लिये ओता होगा और सुनेगा ।
- २४ किस ने यश्मकूब को लूट के लिये दिया और इसराएल को अहर करवैयों को क्या परमेश्वर ने नहीं जिस के विरोध में हम ने पाप किया और वे उस के मार्गों पर
- २५ चलने नहीं चाहते थे और उस की व्यवस्था के ओता न हुए । और उस ने उस पर कोप अर्थात् अपना क्रोध और युद्ध की प्रबलता उस पर ढाली और उस ने उसे चारों ओर जला दिया और उस ने नहीं जाना और उसे भस्म कर दिया और वह मन में न रक्खेगा ॥

तीतालीसवां पृष्ठ ।

- १ और अब हे यश्मकूब परमेश्वर तेरा सृजनहार और हे इसराएल तेरा बनाने-हारा यों कहता है कि मत डर क्योंकि मैं ने तुम्हें कुड़ाया है मैं ने तेरा नाम लेके
- २ तुम्हें बुलाया है तू ही मेरा है । जब तू पानियों में से चलेगा तब मैं तेरे साथ हूँगा और नदियों में से तब वे तुम्हें न डुवायेंगी जब तू आग में चलेगा तब
- ३ जलाया न जायेगा और लवर तुम्हें भस्म न करेगी । क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर इसराएल के धर्ममय तेरे मुक्तिदाता ने तेरे प्रायश्चित्त में मिस दिया है
- ४ कृश और सवा तेरे बदले में । इस लिये कि तू मेरी दृष्टि में बहुमूल्य है तू ने प्रतिष्ठा पाई और मैं ने तुम्हें प्यार किया है और मनुष्य तेरी संती में और जाति-

यातें दोगी व्यतीत यातें क्या थीं यतला दो और हम अपना मन लगायेंगे और उन का अन्त जानेंगे अथवा अवैया समाचार हमें मुनाओ । जो आगे को आने- २३  
हारी यस्तें हैं यतला दो और हम जानेंगे कि तुम देख दो हां भला करो अथवा  
दुरा करो और हम विचार करेंगे और एक ही साथ दृष्टि करेंगे । देखो तुम तुच्छ २४  
से छोटे और तुम्हारा कार्य अथस्तु से लघु जो तुम्हें चुन लेगा सो धिनोना है ।

मैं ने उत्तर से एक को जगा दिया और वह आया है मूर्ख के उदय से वह २५  
मेरा नाम लेगा और वह आध्यक्षों पर गारे की नाईं आयेगा और जैसे कुम्हार  
माटी को रींदता है ॥

किस ने आरंभ से यताया दर्शन करो और हम जानेंगे और पहिले से और २६  
हम कहेंगे कि सत्य है हां कोई यतानेदारा न था हां कोई मुनानेदारा न था  
हां कोई तुम्हारी बातों का सुनेदारा न था । मैं पहिले नैटून को मंगलसमाचार २७  
देता हूं कि देखो उन्हें देख और यत्फलम को मैं मंगलसमाचार देनेदारा देखंगा ।  
और मैं देखूंगा पर कोई नहीं है और इन में से पर कोई संघी नहीं और मैं उन २८  
से प्रश्न करूंगा और वे वचन का उत्तर देंगे । देखो वे सब नास्ति हैं तुच्छ उन २९  
के कार्य प्रयत्न और व्यर्थ उन की ठाली हुई मूर्तें ॥

वयालीसवां पञ्च ।

देखो मेरा दास मैं इसे संभालूंगा मेरा चुना हुआ जिस्से मेरा प्राण संतुष्ट १  
है मैं ने अपना आत्मा उस पर रखवा है न्याय वह जातिगणों में चलायेगा ।  
वह न चिलायेगा और न अपना शब्द उठायेगा और न अपना शब्द बाहर २  
सुनावेगा । वह मसने हुए सेंडे को न तोड़ेगा और न धुंधली यत्ती को युक्तायेगा ३  
वह सच्चाई के संग न्याय को चलायेगा । न वह धुंधलायेगा और न समला जायेगा ४  
जब लों कि पृथिवी पर न्याय को स्थापित न करे और टापू उस को दयवस्था  
की बाट जोड़ेंगे ॥

सर्वशक्तिमान परमेश्वर लो स्रगों को सिरजता है और उन्हें तानता है पृथिवी ५  
और उस की वगनेदारी वस्तु को बिराता है उस जाति को जो उस पर है श्वास  
देता है और आत्मा उन्हें जो उस पर चलते हैं यां कहता है । कि मैं परमेश्वर ६  
ने तुम्हें को धर्म में युलाया है और तेरा हाथ धामूंगा और तेरी रक्षा करूंगा और  
तुम्हें लोगों के लिये बाधा और जातिगणों के लिये ज्योति ठहराऊंगा । जिस्ते तू ७  
अंधी आंखों को खोल दे जिस्ते बन्धुआई से बन्धुण को और बन्दीमूह से अधि-  
यारे के बैठनेदारी को निकाल दे । मैं परमेश्वर हूं वह मेरा ही नाम है और मैं ८  
अपना विभव हमारे को न दूंगा और न अपनी स्तुति खादी हुई मूर्तों को ।  
अगिली बातें देखो वे आ चुकीं और नईं बातें मैं यतलाता हूं चस्से पहिले कि ९  
वे उगीं में तुम्हें मुनाऊंगा ॥

परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ पृथिवी के अन्त से उस की स्तुति करो १०  
हे तुम जो समुद्र पर चलते हो और उस की भरपूरी सहित हो टापुओ और उन  
के वसत्रेयो । वन और उस की वस्तिपां शब्द उठायेगी वे बाड़े जिन में कीदार ११  
वसता है पतरा के वासी आनन्द का शब्द करेंगे पहाड़ों की चाटी पर से ललकारेंगे ।

२७ ठहरे । तेरे पहिले पिता ने पाप किया और तेरे बलवा करनेदारे मुझ से फिर गये ।  
२८ और मैं पवित्र अध्यातों को अशुद्ध करूँगा और यशकूच को साप के लिये और  
इसराएल को निन्दा के लिये दूँगा ।

चौतालीसवां पृष्ठ ।

- १ और अब हे यशकूच मेरे सेवक मुन और हे इसराएल जिसे मैं ने चुन लिया ।
- २ परमेश्वर यों कहता है कि तेरा सृष्टिकर्ता और गर्भ से तेरा बनानेदारा तेरी सहा-
- ३ यता करेगा हे मेरे दास यशकूच और यशूदन जिसे मैं ने चुना है मत डर । क्योंकि
- मैं प्यासे पर पानी उँढेलूँगा और थकते पानी सूखी भूमि पर मैं अपना आत्मा
- ४ तेरे वंश पर उँढेलूँगा और अपनी आशीष तेरे संतानों पर । और वे घास के
- ५ बीच में जमेगे घेत की नाई पानियों की धाराओं में । एक तो यह कहेगा कि
- मैं परमेश्वर का हूँ और दूसरा यशकूच का नाम लेगा और तीसरा अपने हाथ से
- लिखेगा कि मैं परमेश्वर का हूँ और आप को इसराएल के नाम से प्रसिद्ध करेगा ।
- ६ परमेश्वर इसराएल का राजा और उस का मुक्तिदाता सेनाओं का परमेश्वर
- यों कहता है कि मैं आदि और मैं अन्त हूँ और मुझे कोई ईश्वर नहीं है ।
- ७ और कौन मेरे समान पुकारेगा और उसे बतायेगा और मेरे लिये क्रम से उस का
- वर्णन करेगा जय से मैं ने आगिली जाति को स्थापन किया और आनेदारी बर्त्त
- ८ और जो घेतदार हैं उन के लिये बतलायेगा । तू न शर्चरा और मत डर क्या मैं
- ने तब से तुझे न मुनाया और बताया और तुम मेरे साक्षी हो क्या मुझे कोई
- ईश्वर है और कोई चटान नहीं है मैं किसी को नहीं जानता ।
- ९ मूर्तियों के बनानेदारे सब के सब वृथा हैं और उन की मनोहर बर्त्त उन्हें कुछ
- लाभ न देंगी और उन को साक्षी आप न देखेंगे और न जानेंगे जिसमें लज्जित
- १० हों । किस ने सर्वशक्तिमान को बनाया और मूर्ति को ठाला कि कुछ लाभ न
- ११ करे । देखो उस के सारे संगी लज्जित होंगे और मूर्ति के गढ़नेदारे वे तो आप मनुष्य
- हैं वे सब के सब एकट्ठे होंगे खड़े होंगे शर्चरायेंगे एक साथ लज्जित होंगे ।
- १२ उस ने लोहे को केनी से काटा और अंगारों से उसे कमाया है और हथौड़ों
- से उसे बनायेगा और अपनी बलवाली भुजा से उसे कमायेगा यह भूखा भी है
- और उस में बल नहीं है उस ने पानी नहीं पीया और मूर्क्षित है ॥
- १३ उस ने लकड़ी काटी है मूत खींचा है सूजे से उस पर लकीर खींचेगा रुखानियों
- से उसे बनायेगा और परकार से उस पर चिन्द करेगा तब पुरुष के स्वरूप पर
- १४ मनुष्य की सुन्दरता पर बनायेगा जिसमें घर में रहे । यह देवदारुओं को काटता
- है और अब उस ने सरो और बलूत को लिया है और उन के वृक्षों में उसे अपने
- काम के लिये दृढ़ता दिई है उस ने सरोवरवृक्ष लगाया है और मेंह उसे बढायेगा ।
- १५ और वह मनुष्य के ईंधन के लिये होगा और उस ने उन में से कुछ लिया और
- तापा है हां वह सुलगायेगा और रोटी पकावेगा हां वह सर्वशक्तिमान को बना-
- वेगा और मुँह के बल गिरेगा उस ने उसे ठाली हुई मूर्ति बनाया और उसे दण्डवत
- १६ किया है । उस का आधा उस ने आग में जलाया है उस के आधे के ऊपर वह
- मांस खायेगा मांस भूनेगा और तृप्त होगा हां वह तापेगा और कहेगा कि वाह मैं

गलों को तेरे प्राण के पलटे में देऊंगा । तू मत डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ पूर्य ५  
 से मैं तेरे वंश को लाऊंगा और पच्छिम से तुझे एकट्ठा करूंगा । मैं उत्तर से करूंगा ६  
 कि वे डाल और दक्षिण से कि रख मत छोड़ मेरे बेटों को दूर से ला और मेरी  
 बेटियों को पृथिवी के अन्त से । हर एक जो मेरे नाम से बुलाया जाता है और ७  
 मैं ने उसे अपने विषय के लिये सृजा है मैं ने उसे बनाया है हाँ उसे सिद्ध  
 किया है ॥ ---

उस ने ग्रंथी जाति को निकाला है और उन की आंग्रे हैं और बाहिरों को ८  
 और उन के कान हैं । सारे जातिगण एक ही साथ एकट्ठा किये गये और देश- ९  
 गण एकट्ठे किये जायेंगे कौन उन में इसे वर्णन करेगा और वे हमें पहिली बातें  
 सुनायें वे अपने साक्षी निकालें और निर्दोष ठहरें और मुनें और कहें कि सच है ॥

तुम मेरे साक्षी हो परमेश्वर कहता है और मेरा दास जिने मैं ने चुना जिसमें १०  
 तुम जानो और सुभ पर विश्वास लाओ और समझो कि मैं बड़ी हूँ सुभ से आगे  
 कोई सर्वशक्तिमान न बनाया गया और मेरे पीछे कोई न होगा । मैं मैं परमेश्वर ११  
 बड़ी हूँ और सुभ छोड़ कोई मुक्तिदाता नहीं । मैं ने बताया और बताया और १२  
 सुनाया और तुम्हें कोई परदेशी देव नहीं है और तुम मेरे साक्षी हो परमेश्वर  
 कहता है और मैं सर्वशक्तिमान हूँ । हाँ आरंभ से मैं बड़ी हूँ और मेरे छात्र से १३  
 कोई कुड़ानेचारा नहीं है मैं काम करूंगा और जौन उसे मरेगा ॥

परमेश्वर तुम्हारा मुक्तिदाता इसराएल का धर्ममय यों कहता है कि मैं ने तुम्हारे १४  
 लिये बाबुल लो भेजा है और मय भगोहों को नीचे कर दिया है और कसदियों  
 को जिन के जहाजों पर उन की ललकार है । मैं परमेश्वर तुम्हारा धर्ममय इस- १५  
 राएल का सृष्टिकर्ता तुम्हारा राजा हूँ ॥

परमेश्वर यों कहता है लो समुद्र में मार्ग बनाता है और महाजलों में पथ । १६  
 लो रख और छोड़ा पराक्रम और बलवान निकालता है वे एक साथ लोट रहेंगे १७  
 और न उठेंगे वे बुझ गये बत्ती की नाईं ठगड़े हो गये । पहिली बातों को स्मरण १८  
 न करो और पुरानी बातों को सोच न करो । देखो मैं एक नई बात करता १९  
 हूँ अब बट उगेगी क्या तुम उसे न जानोगे हाँ मैं वन में मार्ग और अरण्य में धारें  
 बनाऊंगा । वन्यपशु मेरी प्रतिष्ठा करेगा गीदड़ और शुतरमुख क्योंकि मैं ने अरण्य २०  
 में पानी और वन में नदियां निकाली हैं जिस्ती अपनी चुनी हुई जाति को पिलाऊँ ।  
 यह जाति मैं ने अपने लिये बनाई है वे लोग मेरी स्तुति वर्णन करेंगे ॥ २१

पर हे यशकूय तू ने मुझे नहीं बुलाया क्योंकि हे इसराएल तू मुझ से थक २२  
 गया । तू अपने होम के बलिदानों की भेड़ बकरी मेरे पास नहीं लाया और अपने २३  
 बलिदानों से मेरा आदर नहीं किया मैं ने भेंट से तुझ से सेवा नहीं कराई और  
 लोथान से तुझे नहीं थकाया । तू ने रुपये से मेरे लिये सुगंधित सरकण्डा सोल नहीं २४  
 लिया और अपने बलिदानों की चिकनाई से मुझे तृप्त नहीं किया तू ने केवल  
 अपने पापों से मुझ पर भार दिया अपने कुकर्मों से मुझे थकाया । मैं मैं ही अपने २५  
 कारण तेरे अपराधों को मिटाता हूँ और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा । मुझे २६  
 स्मरण कर हम आपस में विवाद करें तू अपनी दशा वर्णन कर जिस्ती तू निर्दोष

- गुप्त स्थानों के द्विपे हुए भंडारों को दूंगा जिस्ती तू जाने कि मैं परमेश्वर जो तेरा  
 ४ नाम लेके तुझे बुलाता हूँ इसराएल का ईश्वर हूँ । अपने दाम यशस्कृत्य और अपने  
 चुने हुए इसराएल के कारण इस लिये मैं तेरा नाम लेके तुझे बुलाऊंगा मैं तुझे  
 ५ पदवी दूंगा और तू ने मुझे नहीं जाना । मैं परमेश्वर हूँ और कोई दूसरा नहीं  
 मुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं मैं तेरी कटि बांधूंगा और तू ने मुझे नहीं जाना ।  
 ६ जिस्ती सूर्य के उदय से पच्छिम लौ लाग जानें कि मुझे छोड़ कुछ नहीं है मैं पर-  
 ७ मेश्वर हूँ और कोई दूसरा नहीं । मैं उजियाला बनाता और अधियारा सृजता कुशल  
 निर्माण करता और विपत्ति उत्पन्न करता मैं परमेश्वर यह सब किया करता हूँ ।  
 ८ हे आकाशो ऊपर से टपक पड़े और मेघ धर्म बरसायें पृथिवी खुल आवे  
 और मुक्ति और धर्म फलें यह उन्दें एक ही संग उपजाये मैं परमेश्वर ने उसे  
 सृजा है ॥
- ९ हाय उस पर जो अपने सृष्टिकर्ता से लड़ता है ठीकरा मिट्टी के ठीकरों के  
 साथ क्या माटी अपने बनानेहारे से कहे कि तू क्या करता है और तेरा कार्य कि  
 १० उस के हाथ नहीं हैं । हाय उस पर जो पिता से कहता है कि तू क्या उत्पन्न  
 करेगा और स्त्री से कि तू क्या जनेगी ॥
- ११ परमेश्वर इसराएल का धर्ममय और उस का कर्ता यों कहता है कि आने-  
 हारी बातों के विषय मुझ से प्रश्न करो तेरे बालकों के विषय और मेरे हाथों  
 १२ के कार्य के विषय तुम मुझे आज्ञा दो । मैं ही ने पृथिवी को बनाया और मनुष्य  
 उस पर सृजा मैं ही मेरे हाथों ने आकाशों को फैलाया और उन की समस्त सेना  
 १३ को आज्ञा दिई । मैं ही ने उसे धर्म में जगाया और उस के सारे मार्गों को  
 समथर कहेगा वही मेरे नगर को बनावेगा और मेरे बंधुओं को बिना दाम  
 और बिना भेंट लिये हुए उन की जन्मभूमि में भेज देगा सेनाओं का परमेश्वर  
 कहता है ॥
- १४ परमेश्वर यों कहता है कि मिस्र की कमाई और कूश के व्यापार का लाभ  
 और सखा के लोग लंवे मनुष्य तेरे पास आगे आयेंगे और तेरे होंगे तेरे पीछे  
 चलेंगे सीकरो में तेरे आगे आयेंगे और तेरी ओर दण्डवत करेंगे तेरी ओर प्रार्थना  
 करेंगे और कहेंगे कि केवल तुझ में सर्वशक्तिमान है और कोई दूसरा नहीं दूसरा  
 ईश्वर नहीं ॥
- १५ निश्चय तू ही सर्वशक्तिमान आप को द्विपाता है हे इसराएल के ईश्वर  
 १६ मुक्तिदाता । वे लज्जित हुए वे सब के सब संकोचित भी किये गये मूर्ति के  
 १७ निर्माण करनेहारे एक ही साथ संकोच में चले गये । इसराएल अनन्त मुक्ति के  
 साथ परमेश्वर में बचाया गया तुम न लज्जित होगे और न संकोची किये जाओगे  
 हां सनातन लों ॥
- १८ क्योंकि परमेश्वर आकाशों का उत्पन्न करनेहारा वही ईश्वर है पृथिवी का बनाने-  
 हारा और उस का कर्ता उसी ने उसे स्थिर किया न शून्य होने के लिये उसे उत्पन्न  
 किया बसाने के लिये उसे बनाया यों कहता है कि मैं परमेश्वर हूँ और कोई दूसरा  
 १९ नहीं । मैं ने गुप्त में एक स्थान में जो अधिकार का देश है बातें नहीं किई मैं ने

तात हुआ मैं ने आग को देखा है । और उस का वचा हुआ उस ने एक सर्व- १७  
शक्तिमान मैं अपनी खोदी हुई मूर्ति में बनाया है वह उसे दग्धवत करेगा और  
मुँह के बल गिरेगा और उससे प्रार्थना करेगा और कहेगा कि मुझे वचा क्योंकि  
तू ही मेरा सर्वशक्तिमान है ॥

उन्हीं ने नहीं जाना और ये न समझेंगे क्योंकि उस ने उन की आंखें लेस १८  
दिई हैं कि नहीं देखते उन के अन्तःकरणों को कि नहीं समझते । और वह १९  
अपने मन पर न लगायेगा और न ज्ञान और न समझ है कि कहे कि उस का आधा  
मैं ने आग में जलाया और उस के अंगारों पर रोटी भी पकाई है मैं मांस भूँगा  
और खाऊँगा और उस का वचा हुआ मैं घिनित वस्तु बनाऊँगा पेड़ की पीढ़  
को मैं दग्धवत करूँगा । राख चरता हुआ उस का मन ठल खाया हुआ है उसे २०  
वहकाया है और वह अपने प्राण को वचा नहीं सक्ता और न कहेगा कि क्या  
मेरे दाँहिने हाथ में झूठ नहीं है ॥

इन बातों को स्मरण कर है यशकूय और है इमराएल क्योंकि तू ही मेरा २१  
दास है मैं ने तुझे बनाया तू ही मेरे लिये सेवक है है इमराएल तू मुझ से  
घिमराया न जायेगा । मैं ने घटा के समान तेरे अपराधों को और मेघ के समान २२  
तेरे पापों को मिटा दिया है मेरी ओर फिर क्योंकि मैं ने तुझे ठुड़ा लिया है ॥

हे आकाश आलापो क्योंकि परमेश्वर ने यह किया है है पृथिवी की नीचाइयो २३  
ललकारो है पछाड़ो ललकार में फूट निकलो है धन और उस के हर एक पेड़  
क्योंकि परमेश्वर ने यशकूय को ठुड़ा लिया है और इमराएल में अपना विभव  
प्रगट करेगा ॥

परमेश्वर तेरा आणकर्ता और गर्भ से तेरा निर्माण करनेदारा मैं परमेश्वर सद्य २४  
का उत्पन्न करनेदारा अकेला आकाशों का फैलानेदारा पृथिवी का घिकानेदारा  
यां कहता है कि कौन मेरे साथ है । जो टोन्टों के चिन्ह ब्रूया कर देता है और २५  
दैवज्ञों को सिद्धी बनायेगा जो बुद्धिमानों को पीछे घटा देता है और वह उन के  
ज्ञान को अज्ञानता ठहरायेगा । जो अपने दास के वचन को स्थिर करता है और २६  
वह अपने दूतों के मंत्र को पूरा करेगा जो यरुसलम के विषय में कहता है कि  
वह यमाई जायेगी और यहूदाह के नगरों के विषय में कि ये बनाये जायेंगे और  
मैं उस के खंडहरों को उठाऊँगा । जो गदिराव से कहता है कि सूख जा और २७  
मैं तेरी नदियों को सुखा डालूँगा । जो खेरस के विषय कहता है कि वह मेरा २८  
घरवाहा है और वह मेरे ममस्त अभिलाष को पूरा करेगा हाँ यरुसलम से यह  
कहते हुए कि तू बनाई जायेगी और मन्दिर से यह कि तेरी नेव डाली जायेगी ॥

पैंतालीसवां पर्व ।

परमेश्वर अपने अभिषिक्त खेरस से जिस का ददिना हाथ मैं ने पकड़ा है जिस्ते १  
उस के आगे जातिगणों को लताडूँ और राजाओं की कटि में खालूँगा जिस्ते उस  
के आगे दोधरे द्वारों को खाल दूँ और फाटक बंद न किये जायेंगे । मैं तेरे आगे २  
चलूँगा और टेढ़े स्थानों को समथर करूँगा पीतल के द्वारों को टुकड़े टुकड़े करूँगा  
और लोहे के अड़ंगों को काट डालूँगा । और मैं तुझे अधियारे के धन को और ३



१३ हे कठोर अंतःकरणियो जो धर्म से दूर हो मेरी सुनो । मैं ने अपने धर्म को समीप पहुंचाया है वह दूर न होगा और अपनी मुक्ति को वह बिलम्ब न करेगी और मैं सैदून में अपनी मुक्ति देखूंगा और इसराएल को अपना विभय ।

सैतालीसवां पद्य ।

- १ नीचे उतर आ और धूल पर बैठ हे बाधुल की कुंवारी घेटी भूमि पर बैठ कोई सिंहासन नहीं है हे कसीदीम की पुत्री क्योंकि लोग फिर तुम्हें कोमल और
- २ सुकुमारी न कहेंगे । चकिया ले और आटा पीस अपनी आठनी अलग कर तिलक-
- ३ वस्त्र उतार टांग को नंगी कर नदियों के पार उतर जा । तेरी नग्नता उधारी बाधे छां तेरी लाज प्रगट किई आये मैं पलटा लूंगा मनुष्य से भेंट न करूंगा ।
- ४ दमाश मुक्तिदाता जो है सेनाओं का परमेश्वर उस का नाम है इसराएल का
- ५ धर्ममय । चुपकी हो बैठ और अंधकार में जा हे कसीदीम की पुत्री क्योंकि
- ६ लोग तुम्हें फिर राज्यों की रानी न कहेंगे । मैं अपनी जाति पर क्रुद्ध हुआ मैं ने अपने अधिकार को अशुद्ध कर दिया और उन्हें तेरे हाथ में दिया तू ने उन पर
- ७ दया न किई घृष्ट पर तू ने अपना जूआ बहुत भारी कर दिया । और तू ने कहा कि मैं सदा लो रानी बनी रहूंगी जब लो कि तू ने इन बातों पर मन न लगाया
- ८ उस का समय सोच नहीं किया । और अब यह सुन हे भोगयितासिनी जो निश्चित बैठी है जो अपने मन में कहती है कि मैं ही हूं और मुझे कोई दूसरा नहीं
- ९ मैं रांड छोके न बैठूंगी और लड़कों के खो जाने को न जानूंगी । और ये दोनों बातें अचानक एक ही दिन में तुझ पर आवेंगी अर्थात् लड़कों का खो जाना और रांड होना तेरे दोनों की बहुताई में तेरे मंत्रों की बढ़ी अधिकाई में वे अपनी
- १० भरपूरी के साथ तुझ पर आ पड़ें । और तू अपनी बुराई में खेसाव है तू ने कहा है कि कोई मुझे नहीं देखता है तेरी दुष्टि और तेरा ज्ञान उसी ने तुम्हें बहकाया और तू ने अपने मन में कहा है कि मैं ही हूं और मुझे कोई दूसरा नहीं ।
- ११ और यों तुझ पर दुःख आता है तू उस के विद्वान को न जानेगी और तुझ पर विपत्ति आवेगी तू उस का प्रार्थित्व न कर सकेगी और अचानक तुझ पर नाश
- १२ आवेगा जिसे तू न जानेगी । अपने मंत्रों और अपने दोनों की बहुताई में जिन में तू ने अपनी युवावस्था से परिश्रम किया है कृपा करके खड़ी रह क्या जाने तू
- १३ लाभ उठा सकेगी क्या जाने तू साम्हना करेगी । तू अपने परामर्शों की बहुताई में थक गई हाथ कि आकाश के विचारी नक्षत्रों के दर्शक जो अमावास्या का भविष्य कहते हैं उन वस्तुओं के विषय जो तुझ पर आवेंगी खड़े हों और तुम्हें
- १४ खचावें । देख वे भूसे की नाई हैं आग ने उन्हें भस्म कर लिया है वे अपने प्राण को लवर के हाथ से बचा नहीं सक्ते यह तापने के लिये अंगारा नहीं है आग
- १५ उस के साम्हने बैठने के लिये । यों वे तेरे लिये हैं जिन के विषय तू ने परिश्रम किया तेरे वैपारी तेरी युवावस्था से हर एक अपनी अपनी ओर भटक गये तेरा खचानेहारा कोई नहीं है ।

अठतालीसवां पद्य ।

- १ यह सुनो हे यश्कूब के घराने जो इसराएल के नाम से बुलाये गये और

इसराएल के संतान से नहीं कहा कि अकारण मेरा खोज करो मैं परमेश्वर सत्य का वचन बोलता सत्यताओं का प्रचार करता हूँ । एकट्ठे हो और आओ एक २० ही साथ निकट आओ वे देशगणों के वचने हुए थे नहीं जानते जो लकड़ी अपनी खोदी हुई मूर्ति उठाते हैं और ऐसे सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हैं जो नहीं बचा सक्ता । वर्णन करो और पाम लाओ हाँ वे एक ही साथ परामर्श करें किस २१ ने आगे से यह सुनाया आरंभ से उस का वर्णन किया क्या मैं परमेश्वर नहीं और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं धर्मी और मुक्तिदाता सर्वशक्तिमान मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं ॥

मेरी और फिरो और मुक्ति पाओ वे जगत के समस्त अंगों क्योंकि मैं ही सर्व- २२ शक्तिमान हूँ और कोई दूसरा नहीं । मैं ने अपनी किरिया खाई धर्म के मुंह से २३ वचन निकलना है और न फिरेगा कि मेरे आगे हर एक घुटना झुकेगा हर जीभ किरिया खायेगी ॥

मनुष्य कहता है कि केवल परमेश्वर मैं मेरा धर्म और सामर्थ्य है उस के २४ पास मनुष्य आदिगा और सब जो उस के विरोध में थे लज्जित होंगे । परमेश्वर २५ मैं इसराएल के समस्त वंश धर्मी ठहरेंगे और बढ़ाई करेंगे ॥

छिपालीसवां पृष्ठ ।

बेल झुक गया नव निहड़ता है उन की मूर्ति पशुओं और चौपायों पर लादी १ गहें तुम्हारा बोझ लादा गया उनके हुए पशु के लिये बोझ । वे एक ही साथ २ निहड़े झुक गये वे बोझ को बचा नहीं सक्ते वे आप बंधुआई में गये ॥

हे यशकूब के घराने मेरी सुनो और हे इसराएल के घर के सारे वचने हुए ३ लोगो जो गर्भ में बोझ किये गये ओढ़ से उठाये गये । और दुड़ाये लों में बड़ी ४ हूँ और बाल पकने लों में तुम्हें उठाऊंगा मैं ने यह किया और मैं ले जाऊंगा और उठाऊंगा और तुम्हें बचाऊंगा ॥

तुम मुझे किसी उपमा देओगे और तुल्य करोगे और मुझे सिलाओगे किसी इस ५ समान दोगें । उदाऊ लोग सोना पैली से निकालके और रूपा तखरी से तौलेंगे वे ६ मूर्ति के बनानेहारों को बनी देंगे और वह उसे सर्वशक्तिमान बनायेगा वे झुकेंगे हाँ मुंह के चल गिरेंगे । वे उसे कांधे पर उठा लेंगे उसे ले जायेंगे और उसे ७ उस के स्थान में खड़ा करेंगे और वह वहाँ खड़ा रहेगा अपने स्थान से न टलेगा हाँ कोई उसे पुकारेगा और वह उत्तर न देगा वह उसे उस के दुःख से न बचा सकेगा ॥

इसे चेत करो और आप को पुरुष दिखाओ हे फिरो हुए ध्यान से इसे ८ सोचो । अगिली बातों को प्राचीन से स्मरण करो क्योंकि मैं ही सर्वशक्तिमान ९ हूँ और कोई दूसरा नहीं ईश्वर और मेरे तुल्य कोई नहीं । आरंभ से अंत का १० प्रारंभ बनाता हूँ और आगे से वे काम जो नहीं किये गये हैं यह कहते हुए कि मेरा मंत्र स्थिर रहेगा और मैं अपनी समस्त इच्छा पूरी करूँगा । पुरुष से एक ११ अद्वैती पत्नी को पुलाता हूँ दूर देश से अपने मंत्र के पुरुष को हाँ मैं ने कहा हाँ मैं उसे पूरा करूँगा मैं ने ठहराया हाँ उसे समाप्त करूँगा ॥

सुनाओ उसे पृथिवी के अंत लों पहुंचा दो कहो कि परमेश्वर ने अपने सेवक  
 २१ यशकूब को बुलाया है । और वे प्यासे न हुए उन जंगलों में जिन में उस ने उन्हें  
 चलाया उस ने पानी पत्थर से उन के लिये बहाया और उस ने पत्थर को चीरा और  
 २२ पानी फूट निकला । परमेश्वर कहता है कि दुष्टों के लिये कुशल कुछ नहीं है ॥  
 उंचासवां पर्व ।

१ हे टापोओ मेरी सुनो और हे जातिगणो दूर से मेरे ओता हो परमेश्वर ने  
 २ कोख से मुझे बुलाया मेरी माता के गर्भ से मेरे नाम का चर्चा किया । और  
 उस ने मेरे मुंह को चोखे खड्ग के समान बनाया उस ने मुझे अपने हाथ की काया  
 ३ में छिपाया और मुझे चमकता बाण बनाया अपने तूण से मुझे छिपाया । और मुझ  
 से कहा कि तू ही मेरा दास है इसराएल जिस में मैं अपना बिभव प्रगट करूंगा ॥  
 ४ और मैं ने कहा कि मैं ने वृथा परिश्रम किया वृथा वस्तु के लिये और अकारण  
 अपना बल गंवाया है पर मेरा बिचार परमेश्वर के साथ है और मेरा कार्य मेरे  
 ईश्वर के साथ ॥

५ और अब परमेश्वर कहता है कोख से मेरा निर्माण करनेहारा जिस्ते उस का दास  
 हूँ जिस्ते यशकूब को उस को और फिरा दूँ पर इसराएल बटोरा न जायेगा और मैं  
 परमेश्वर की दृष्टि में श्रेष्ठमान होऊंगा और मेरा ईश्वर मेरा बल हुआ है ॥

६ और उसी ने कहा कि हलकी बात है कि तू मेरा दास हो जिस्ते यशकूब की  
 गोष्ठियों को उठावे और इसराएल के बच्चे हुआं को फिरा दे और मैं ने तुम्हें  
 अन्यदेशियों की ज्योति ठहराया है जिस्ते मेरी मुक्ति पृथिवी के अंत लों हो ॥

७ परमेश्वर इसराएल को मुक्तिदाता उस का धर्ममय मन से तुच्छ जात्रे के  
 बिषय धिन दिलानेहारी जाति के बिषय अध्यत्नों के सेवक के बिषय यों कहता  
 है कि राजा देखेंगे और उठ खड़े होंगे अध्यत्न देखेंगे और दण्डवत करेंगे परमे-  
 श्वर के कारण जो सच्चा है इसराएल के धर्ममय के लिये जिस ने तुम्हें चुना है ॥

८ परमेश्वर कहता है कि ग्राह्य के समय में मैं ने तेरी सुनी है और मुक्ति के  
 दिन तेरी सहायता किई है और मैं तेरी रक्षा करूंगा और तुम्हें जाति का नियम  
 ठहराऊंगा जिस्ते पृथिवी को स्थिर रखे जिस्ते उजाड़ अधिकारों को स्वामियों

९ को देवे । जिस्ते बंधुओं को कहे कि निकलो उन से जो अधियारे में हैं कि आप  
 को दिखलाओ वे पथों पर देखेंगे और सारी नंगी पहाड़ियों पर उन के चराई  
 १० के स्थान होंगे । वे न भूखे और न प्यासे होंगे और न मरीचिका और न धूप उन  
 को मारेगा क्योंकि जो उन पर दया करता है वह उन की अगुआई करेगा और  
 ११ उन्हें पानी के सोतों के पास ले जायेगा । और मैं अपने सारे पहाड़ों को पथ  
 १२ बनाऊंगा और मेरे राजमार्ग ऊंचे होंगे । देखो ये दूर से आयेंगे और देखो ये उत्तर  
 से और पच्छिम से और ये सीनीम के देश से ॥

१३ हे स्वर्गो ललकारो और हे पृथिवी आनन्द हो पहाड़ ललकार में फूट निकलें क्योंकि  
 परमेश्वर ने अपने लोगों को शांति दिई है और अपने दुःखियों पर दया करेगा ॥

१४ पर सैहून ने कहा कि परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया और प्रभु मुझे भूल गया है ॥

१५ क्या स्त्री अपने दूध पीते हुए बच्चे को भूलेगी कि अपनी कोख के बालक पर

यहूदाइ के सोते से निकले हो जो परमेश्वर के नाम से किरिया खाते हो और इस-  
राएल के ईश्वर का स्मरण करते हो न मझाई में और न धर्म में । क्योंकि ये २  
प्रवित्र नगर के लोग कहलाते हैं और इसराएल के ईश्वर पर भरोसा रखते हैं सेनाओं  
का परमेश्वर उस का नाम है । पहिली बातें मैं ने पुरातन से बतलाई और ये ३  
मेरे मुंह से निकलीं और मैं उन्हें सुनाता हूं अकस्मात मैं करता हूं और ये देखने  
में आती हैं । इस कारण से कि मैं ने जाना कि तू कठोर मन है और लोहे का ४  
पट्टा तेरी ग्रीवा है और तेरा ललाट पीतल । इस कारण मैं ने पहिले ही से तुम्हें ५  
बतला दिया उससे आगे कि देखने में आवे तुम्हें सुना दिया कदापि तू कहे कि  
मेरी मूर्ति ने यह काम किये मेरी खोदी हुई मूर्ति और मेरी ठाली हुई मूर्ति ने उन  
की आज्ञा किई । तू ने सुना है देख यह सब देखने में आया और क्या तुम न ६  
यताश्रयो में ने तुम्हें नई बातें सुनाईं अथ से और गुप्त बातें और तू ने उन्हें नहीं  
जाना । अभी ये उत्पन्न किई गईं और प्राचीनता से नहीं और आज के दिन से ७  
आगे तू ने तो उन्हें नहीं सुना था न हो कि तू कहे कि देख मैं उन्हें जानता  
था । हां तू ने नहीं सुना था हां तू ने नहीं जाना था हां आरंभ से तेरा कान ८  
नहीं खुला था क्योंकि मैं जानता था कि तू सर्वथा बल का काम करेगा और  
पेट ही से तू ईश्वरत्यागी कहा गया । अपने नाम के लिये मैं अपने क्रोध ९  
में अवर कदंगा और अपनी स्तुति के कारण उसे तेरे विषय में रोकूंगा जिससे तुम्हें  
न काट डालूं । देख मैं ने तुम्हें ताया पर चांदी न निकली मैं ने तुम्हें कष्ट के भट्टे १०  
में चुना । अपने लिये हां अपने ही लिये मैं कदंगा क्योंकि किस रीति मेरा नाम ११  
धुरा ठहराया जाये और मैं अपना विभव दूसरे को न देऊंगा ।

हे यशकूय और हे इसराएल मेरे बूलाये हुए मेरी सुन मैं बढी हूं मैं आदि हूं १२  
हां में अंत हूं । हां मेरे हाथ ने पृथिवी की नेत्र डाली और मेरे बहिर्ने हाथ ने १३  
स्वर्ग को वित्त से नापा मैं उन को बुलाता हूं और ये एक ही साथ खड़े होंगे ।  
तुम सब के सब एकट्ठे हो जाओ और सुनो उन में से किस ने ये बातें बतलाईं १४  
परमेश्वर उसे प्यार करता है वह अपनी इच्छा बाबुल में करेगा और उस का  
हाथ कसदियों पर होगा । मैं मैं ही ने बचन कहा हां मैं ने उसे बुलाया मैं उसे १५  
अस्ति में लाया और उस ने अपने मार्ग को भाग्यमान किया ।

मेरे निकट आओ यह सुनो आरंभ से द्विपके मैं ने बचन नहीं कहा उस को समय १६  
के होने से मैं बढी था और अथ प्रभु परमेश्वर और उस के आत्मा ने मुझे भेजा  
है । परमेश्वर तेरा मुक्तिदाता इसराएल का धर्मसभ्य यों कहता है कि मैं परमे- १७  
श्वर तेरा ईश्वर हूं जो तुम्हें लाभ प्राप्त करने के लिये सिखलाता हूं उस मार्ग पर  
तेरी अगुआई करता हूं जिस पर तुम्हें चलना होगा । हाथ कि तू मेरी आज्ञाओं १८  
का श्रोता होता तो तेरा कुशल नदी की नाईं होता और तेरा धर्म समुद्र की  
लहरों की नाईं । तो तेरा वंश बालू के समान होता और तेरे गर्भ के संतान उस १९  
के गर्भ के संतानों के समान उस का नाम मेरे आगे से न काटा जायेगा और न  
मिटाय जायेगा ।

बाबुल से निकलो कसदियों से भागो आनन्द के शब्द के साथ बतला दो यह २०

- ५ जिस्ते बिद्यार्थियों की नाईं सुनूं । प्रभु परमेश्वर ने मेरे लिये कान खोला  
 ६ और मैं दंगड़त न था और पीछे न हटा । मैं ने अपनी पीठ ताड़कों को दिई  
 और अपने गाल नाचनेहारों को मैं ने अपना मुंह लाजों और शूक से न छिपाया ।  
 ७ और प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करेगा इस लिये मैं निन्दित नहीं होता इस  
 लिये मैं ने अपना मुंह पथरी के समान धरा और मैं जानता हूं कि मैं लज्जित न  
 ८ हूंगा । मेरा धर्मी ठहरानेहारा निकट है कौन मेरे साथ लड़ेगा हम एक साथ  
 ९ खड़े हों कौन मेरा बैरी है वह मेरे निकट आवे । देखो प्रभु परमेश्वर मेरी सहा-  
 यता करेगा वह कौन है जो मुझे दोषी ठहरावेगा देखो वे सब के सब अस्त्र के  
 समान पुराने हो आयेंगे कीड़ा उन्हें खा लेगा ॥
- १० तुम्हें कौन परमेश्वर से डरनेहारा उस के सेवक के शब्द का सुनेहारा जो  
 अन्धकार में चलता है और उस के लिये कुछ ज्योति नहीं है वह परमेश्वर के  
 नाम पर भरोसा रखे और अपने ईश्वर पर सहारा रखे ॥
- ११ देखो तुम सब के सब जो आग को सुलगाते और चिनगारियां कटि पर  
 बांधते हो अपनी आग की ज्योति में और उन चिनगारियों में जिन्हें तुम ने  
 सुलगाया मेरे हाथ से यह तुम्हारे लिये होगा कि पीड़ा के स्थान में लेट जाओगे ॥  
 एकावनवां पर्व ।
- १ मेरी सुनो हे धर्म के पीछा करनेहारे परमेश्वर के खोजी उस पत्थर की और  
 दृष्टि रखो जिस्से तुम काटे गये और उस गड़हे के केंद की और जिस्से तुम  
 २ खोदे गये । अपने पिता अबिरहाम की और दृष्टि रखो और सरः की और जो  
 तुम्हें जनी क्योंकि मैं ने उसे एक बुलाया और मैं उसे आशीष दूंगा और उसे  
 ३ बढाऊंगा । क्योंकि परमेश्वर ने सैहून को शान्ति दिई उस के सारे उजाड़-स्थानों  
 को शान्ति दिई है और उस ने उस का वन अदन की नाईं और उस के शून्य-  
 स्थान परमेश्वर की बाटिका की नाईं बनाया है आनन्द और आह्लाद उस में  
 पाया जायेगा धन्यवाद और स्तुति का शब्द ॥
- ४ हे मेरी जाति मेरी और कान धर और हे मेरे जातिगण मेरी और कान लगा  
 क्योंकि व्यवस्था मेरी और से जायेगी और मैं अपना न्याय जातिगणों की ज्योति  
 के लिये स्थिर रखूंगा ॥
- ५ मेरा धर्म निकट है मेरी मुक्ति चल निकली है और मेरी भुजा जातिगणों का  
 न्याय चुकायेगी टापू मेरी बाट जोहेंगे और मेरी भुजा की आशा करेंगे ॥
- ६ अपनी आंखें स्वर्ग की और उठाओ और नीचे पृथिवी की और दृष्टि करो  
 क्योंकि स्वर्ग धुंरं के समान मिट जायेंगे और पृथिवी अस्त्र की नाईं पुरानी हो  
 जायेगी और उस के बासी उसी रीति से नष्ट होंगे पर मेरी मुक्ति सनातन लों  
 ठहरेगी और मेरा धर्म लोप न होगा ॥
- ७ हे धर्म के जानेहारे मेरी सुनो हे जाति जिस के हृदय में मेरी व्यवस्था है  
 दुर्गत मनुष्य की निन्दा से मत डरो और उन की अपनिन्दों से ब्याकुल न हो ।  
 ८ क्योंकि अस्त्र की नाईं कीड़ा उन्हें खाट लेगा और ऊर्ध्वस्त्र की नाईं कृमि उन्हें  
 खा लेगा पर मेरा धर्म सनातन लों रहेगा और मेरी मुक्ति पीढ़ी से पीढ़ी लों ॥

मया न करे हां यह तो भूल जायेंगी पर मैं तुम्हें न भूलूँगा । देख मैं ने तुम्हें अपनी १६  
 हथेलियों पर खोटा है तेरी भीति प्रतिदिन मेरी दृष्टि में है । तेरे घटे आने में गोत्र १७  
 करते हैं तेरे विगाड़नेवाले और तेरे उजाड़ करनेवाले तुझ में मे निकल जायेंगे ।  
 अपनी आँख चारों ओर उठा और देख वे सब के सब एकट्ठा हुए और तेरे पास १८  
 आये हैं परमेश्वर कहता है कि मेरे जीवन से कि आभूषण के समान तू उन सभी  
 को पहिन लेगी और हूल्लित की नाईं आप को उन से मंचारेगी । क्योंकि तेरे अँधेरे १९  
 और तेरे शून्यम्यान और तेरे मन्यानाश क्रिये गये देश ऐसे न रहेंगे क्योंकि अब तू रहने-  
 दारों के लिये सकेत दोगी और तेरे निगलनेवाले दूर हो जायेंगे । तेरी निःसंतानता के २०  
 लड़के तेरे कानों में छिर फिर कटा करेंगे कि स्थान मेरे लिये सकेत है मुझे स्थान  
 दे कि मैं ब्रूँ । तब तू अपने मन में कहेगी कि किस ने इन्हीं मेरे लिये उत्पन्न २१  
 किया है और मैं निःसंतान और याँझ बंधुयो और दूर थी और इन्हीं किस ने  
 पाला देख मैं अकेली रह गई ये कहाँ थे ।

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं अपना हाथ देशगंगा की ओर उठा- २२  
 जंगा और जातिगणों की ओर अपना झंडा ऊँचा करूँगा और वे तेरे घटों को  
 मोड़ में लायेंगे और तेरा घटियाँ काँधे पर उठाई जायेंगी । और राजा तुम्हें गोद २३  
 में उठानेहारे होंगे और उन की रानियाँ तेरी दूध पिलानेहारियाँ पृथिवी पर मुँह  
 रखके वे तेरे आगे दबडबत करेंगे और तेरे पाँवों की धूल चाटेंगे और तू जानेगी  
 कि मैं परमेश्वर हूँ जिस के आश्रित लज्जित न होंगे ॥

क्या बलवंत की लूट छीन लिई जायेगी और धर्मी के बंधुम कुड़ाये जायेंगे । २४  
 क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि हाँ बलवंत के बंधुम छीन लिये जायेंगे और २५  
 भयानक की लूट ले लिई जायेगी और मैं तेरे लड़नेहारों के साथ लड़ूँगा और तेरे  
 बालकों को मैं ही बचाऊँगा । और मैं तेरे अंधेरियों का उन्दी का मौस खिला- २६  
 जंगा और वे नई मदिरा की नाईं अपने ही लाह से मतवाले होंगे और सारे  
 प्राणी जानेंगे कि मैं परमेश्वर तेरा आशुकर्ता हूँ और तेरा मुक्तिदाता हमराएल  
 का शक्तिमान हूँ ॥

#### पञ्चमवां पृष्ठ ।

परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारी मा का त्यागपत्र कहाँ है जिसे मैं ने छोड़ १  
 दिया अथवा कौन मेरे धनिकों से है जिस को मैं ने तुम्हें बेच डाला देखा तुम  
 ने अपने पापों के कारण अपने को बेच डाला और तुम्हारे अपराधों के कारण  
 से तुम्हारी मा छोड़ दिई गई । जब मैं आया तो कोई मनुष्य क्यों न था जब मैं २  
 ने पुकारा तो कोई उत्तर देनेवाला क्यों न था क्या मेरा हाथ कुड़ाने में बहुत छोटा  
 है और मुझ में मुक्ति देने का बल नहीं देखा मैं अपनी घुरकी से समुद्र का सुखा  
 देता हूँ नदियों को बर कर देता हूँ उन की मछलियाँ पानी न होने के कारण  
 से दुर्गन्ध करें और प्यास के सारे सर जायें । मैं स्वर्गों को कालिक से घटि- ३  
 नाऊँगा और टाटवस्त्र उन का ओढ़ना ठहराता हूँ ॥

प्रभु परमेश्वर ने मुझे बुद्धिमानों की जीभ दिई है जिससे शक्ति दूर की बात से ४  
 सदाय करने जानूँ यह विद्वान का जगावेगा विद्वान को मेरे लिये कान जगावेगा



- २ फिर न आयेगा । अपनी धूल भाड़ दे खड़ी हो बैठ जा दे यस्सलम अपने गले के बंधनों को खोल दे हे मैदून की बंधुया कन्या ।
- ३ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि तुम नंत में खेते गये और बिना दास के कुड़ाये जाओगे । क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि आरम्भ में मेरी जाति मिस्र में यहाँ यात्री के समान रहने के लिये उतर गई और अमूर ने अकारण उस पर अन्धेर किया । और मेरा यहाँ क्या है परमेश्वर कहता है कि मेरी जाति सेंट से ले लिये गई उस के राज्य करवैया नलकारते हैं परमेश्वर कहता है और प्रति-दिन मेरे नाम की निन्दा किए जाते हैं । इस लिये मेरी जाति मेरा नाम जानेगी इस लिये उमी दिन जानेगी कि मैं यही हूँ जो कहता हूँ कि मुझे देख ।
- ४ यहाँ पर संगल सुनानेहारे के पाँच ब्या ही सुन्दर हैं जो कुशल का प्रचार करता है भलाई का संदेश देता है मोक्ष का उपदेश करता है मैदून से कहता है कि तेरा ईश्वर राज्य करता है । तेरे रथवानों का शब्द वे शब्द उठाते हैं एक साथ ललकारेंगे क्योंकि आंग्र से आंग्र मिलाके वे देखेंगे जब परमेश्वर मैदून से फिर आयेगा । आनन्द में फूट निकलने मिनके शब्द करो हे यस्सलम के खंड-धरो क्योंकि परमेश्वर ने अपनी जाति को शान्ति दिई उस ने यस्सलम को मुक्ति दिई है । परमेश्वर ने अपनी पवित्र भुजा के समस्त जातिगणों की दृष्टि में उधारा है और पृथिवी के सारे सिवानों ने हमारे ईश्वर की मुक्ति को देखा है ।
- ५ अलग छोआ अलग छोआ यहाँ से निकलने अपवित्र को मत कृपे उस के मध्य से निकलने अपने को पवित्र करो हे परमेश्वर के उधियार के उठानेहारे ।
- ६ क्योंकि तुम शीघ्रता के संग न निकलोगे और भागने के समान न चलोगे क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे आगे आगे चलता है और दूसराएल का ईश्वर तुम्हारे पीछे पीछे चलेगा ॥
- ७ देखो मेरा दास घुड़मानी करेगा ऊँचा होगा अपने को उठायेगा और बहुत ऊँचा होगा । जैसा बहुतरे तुम्हें देखके आश्चर्यित हुए वैसा ही उस का रूप रेखा बिगड़ गया कि मनुष्य नहीं रहा और उस की मूर्ति कि मनुष्य के चेहरे में से नहीं है । वैसा वह बहुत ने जातिगणों पर कड़केगा राजा उस के विषय अपना मुँह बंद करेंगे क्योंकि जो उन से दर्शन नहीं किया और जो उन्हें ने नहीं सुना उसे उन्होंने ने जान लिया ॥

तिरपनयां पत्र्य ।

- १ कौन हमारे संदेश पर विश्वास लाया और परमेश्वर की भुजा किस पर प्रगट
- २ हुई । और वह उस के आगे कोपल की नाई बड़ा और जड़ की नाई सूखी भूमि से उस में न कुछ डौल था और न सुन्दरता और अब हम उसे देखेंगे तब कुछ रूप नहीं कि हम उसे चाहें । वह निन्दित किया गया और मनुष्यों से त्यक्त दुःखों का मनुष्य और शोक से परिचित और हम से अपना मुँह छिपाऊ की नाई निन्दित
- ३ किया गया और हम उसे कुछ लेखे में न लाये । निश्चय उस ने हमारे रोग उठा लिये और हमारे दुःख ले गया और हम ने उसे प्रहारित ईश्वर का मारा
- ४ कूटा और दुखाया हुआ समझा । और वह हमारे अपराधों के लिये कड़ा गया

जाग जाग थल से विभूषित हो हे परमेश्वर की भुजा अगिले दिनों और ९ प्राचीन पीढ़ियों की नाईं क्या तू यही नहीं है जिस ने रथ्य को काट डाला और अजगरों को घायल कर दिया । क्या तू यही नहीं है जिस ने समुद्र को बड़े १० गहिराय के पानी को मुख्रा डाला जिस ने समुद्र के गहिराय को कुढ़ाये हुयों के पार जाने के लिये मार्ग कर दिया ।

और परमेश्वर के माल लिये हुए लोग फिरंगे और ललकारते हुए मैदान में ११ आर्चंगे और मनातन का आनन्द उन के सिरे पर होगा और आनन्द और आह्लाद चन्द मिलेगा और जोक और विलाप भाग गया ।

मैं मैं यही हूँ जो तुम्हें शान्ति देता हूँ तू कौन है जो दुर्गत मनुष्य से जो १२ मरेगा डरता है और मनुष्य के पृथ से जो घाम के समान किया जायेगा । और १३ परमेश्वर अपने कर्ता को भूला है जो स्वर्गों का फैलानेद्वारा और पृथिवी की नेत्र डालनेद्वारा है और सदा प्रतिदिन अंधेरी के कोप के आगे से डरता रहा जब यह नाश करने के लिये लैस होता था और अब अंधेरी का कोप कहाँ है । भुका हुआ १४ यह निर्वन्ध देने के लिये जीव करता है और यह गड़हे में न गिरेगा और उस की रोटी न घटेगी । और मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर हूँ समुद्र को धीमा करनेद्वारा १५ जब उस की लहरें धूमधाम करती हैं मनाओं का परमेश्वर उस का नाम है । और मैं ने अपनी बातें तेरे मुँह में डाली हैं और तुझे अपने हाथ की छाया तले १६ छाँपा है जिससे तू स्वर्गों को लगाये और पृथिवी की नेत्र डाले और मैदान से कहे कि तू मेरी जाति है ।

अपने को जगा अपने को जगा खड़ी हो हे यरुसलम तू जिस ने परमेश्वर के १७ हाथ से उस के कोप का कटोरा पीया है तू ने लटखड़ाहट के कटोरे का तलछट पीया तू ने उन्हें निचाड़ा है । उन सारे घंटों में से जिन्हें यह जनी कोई उस की १८ अगुआई करनेद्वारा नहीं है और उन सारे लड़कों में से जिन्हें उस ने पाला कोई उस का हाथ पकड़नेद्वारा नहीं है । ये दो बातें तुझ पर आनेद्वारी हैं कौन तेरे १९ लिये विलाप करेगा उजाड़ और नाश और अकाल और खूब मुँह छोड़ कौन तुझे शान्ति देगा । तेरे घंटे सुर्जित हैं सारे मार्गों के सिरे पर पड़े हैं जंगली वेल के २० समान फन्दे में परमेश्वर के कोप में तेरे ईश्वर के दण्ड से भरे हुए ।

इस लिये हाथ कि तू यह मुने हे दुःखित और मतवाली पर मदिरा से नहीं । २१ तेरा प्रभु परमेश्वर और तेरा ईश्वर यों कहता है यह अपनी जाति की सहाय २२ करेगा देख मैं ने तेरे हाथ से लटखड़ाने का कटोरा अपने कोप के कटोरे का तलछट ले लिया है तू फिर कभी उसे न पीयेगी । और उसे तेरे दुःख देनेद्वारा २३ के हाथ में जिन्हीं ने तेरे प्राण से कहा कि भुका जा जिससे हम पार हो जायें और तू ने पार जानेद्वारा के लिये अपनी पीठ भूमि की नाईं और मार्ग की नाईं रखी ॥

यावनयां पर्व ।

जाग जाग अपना थल पहिन ले हे मैदान अपने सिंगार के वस्त्र पहिन ले हे १ यरुसलम पवित्र नगर क्योंकि तुझ में कोई अखतानिक और अपवित्र मनुष्य कभी

## सत्तावनवां पृष्ठ ।

- १ धर्मी नाश होता है और कोई मनुष्य उसे सोच में नहीं लाता और दया करनेहारे मनुष्य उठा लिये जाते जब कोई नहीं सोचता कि धर्मी विपत्ति के
- २ साम्हने से उठा लिया जाता है । वह कुशल में प्रवेश करेगा वे अपने बिक्रानों पर चैन करेंगे हर-एक सीधा अपने साम्हने चलनेहारा ॥
- ३ और तुम यहां निकट आओ हे टोनहिन के बेटो किनलो और किनाल के
- ४ वंश । तुम किस्से अपने को आनन्दित करते हो किस पर मुंह फैलाते जीभ निका-
- ५ लते हो क्या तुम पाप के बालक नहीं मिथ्या के वंश । अपने को मूर्तों के मध्य
- ६ हर एक हरे पेड़ के नीचे जलाते हो तराइयों में घटानों की कंदरों में बालकों
- ७ को घात करते हो । नाले के चिकने पत्थरों के मध्य तेरा वंश है वे वहीं तेरे
- ८ भाग हैं हां उन के लिये तू ने तर्पण किया है तू ने अर्पण किया क्या मैं ऐसे कार्यों
- ९ के विषय शांति पाऊंगा । अति ऊंचे पर्वत के ऊपर तू ने अपना बिक्राना बिक्रया
- १० है हां वहां बलिदान करने के लिये तू चढ़ा है । और द्वार और चौखट के पिछ-
- ११ वाड़े तू ने अपने स्मरण का चिन्ह स्थापन किया क्योंकि मुझ से अलग तू ने अपने
- १२ को गंगा किया और तू खाट पर चढ़ गई अपने बिक्राने को फैलाया और उन से
- १३ बाचा बांधी तू ने उन के बिक्राने को प्रीति रक्खा स्थान सिद्ध किया है । और
- १४ तू राजा के पास तेल लगाके गई और अपने को भली रीति से सुगन्धित किया
- १५ और अपने दूतों को बहुत दूर भेजा और नीचे पाताल लों गई । तू अपने मार्ग
- १६ की अधिकाई में थक गई पर तू ने नहीं कहा कि कुछ आशा नहीं तू ने अपने
- १७ हाथ का जीवन पाया इस लिये तू निर्वल नहीं हो गई । और तू किस्से भयमान हुई
- १८ और डरी कि झूठ बोली और तू ने मुझे स्मरण नहीं किया और अपने मन में
- १९ नहीं रक्खा क्या इस लिये नहीं कि मैं चुपका रहा हां बहुत दिन से कि तू मुझ
- २० से न डरेगी । मैं तेरे धर्म और तेरे कार्य बतलाऊंगा और वे तुझे कुछ लाभ न
- २१ पहुंचायेंगे । जब तू पुकारे तब तेरे लाभ की वस्ति तुझे छुड़ावे पर पवन उन सभी
- २२ को उड़ा ले जायेगा और स्वास ले जायेगी और जो मुझ पर भरोसा रखता है
- २३ वह देश को प्राप्त करेगा और मेरे पवित्र पहाड़ का अधिकारी होगा । और वह
- २४ कहेगा कि ऊंचा करो ऊंचा करो मार्ग सिद्ध करो ठोकर खिलानेहारी वस्तु
- मेरी जाति के मार्ग से उठा ले जाओ ॥
- २५ क्योंकि ऊंचा और अति महान सनातन का निवास करनेहारा और उस का
- नाम धर्ममय है यों कहता है कि मैं ऊंचे पर और पवित्र रहूंगा और कुचले हुए
- और दीन आत्मावाले के साथ जिस्ती दीनों के आत्मा को उभाड़ूँ और कुचले
- २६ हुआं के अन्तःकरण को जिलाऊँ । क्योंकि मैं सदा लों अपवाद न करूंगा और
- सदा लों कोष न रखूंगा क्योंकि आत्मा मेरे आगे से मूर्छा में आ गया और वे
- २७ प्राण जो मैं ने बनाये । उस के लोभ की बुराई के कारण से मैं कोष में हूँ और
- उसे मारूंगा आप को क्षिपाऊंगा और कोष में रहूंगा क्योंकि वह अपने मन के
- २८ मार्ग पर भटकके चला गया । मैं ने उस की चालों को देखा और उसे चंगा
- करूंगा और उस का अगुआ होऊंगा और उस को और उस के बिलापियों को

हमारी दुरादृष्टियों के कारण से कुचला गया हमारे कुशल के लिये उस पर ताड़ना  
हुई और उस के सार ग्याने से हम चंगे हो गये । हम सब के सब भेड़ों की नाईं ६  
भटक गये थे तर्म्म में हर एक अपने अपने मार्ग पर फिर गया था और परमेश्वर  
ने हम सभी का कुजर्म्म उस पर लाद दिया । वह क्लेशित था और आप अपने ७  
को दुःख में डाला और वह अपना मुँह न खोलेगा जैसा मेम्रा घात के लिये  
पहुँचाया जाता है और जैसे भेड़ अपने रोम कटवैये के आगे चुपचाप रहती है  
वैसा ही वह अपना मुँह न खोलेगा । वह अंग्रे और विचार से लिपा गया और ८  
उस की पीढ़ी में कौन साँच करेगा कि वह भरी जाति के अपराध के कारण से  
जीवतों की भूमि से काट डाला गया जिम्मे उस के लिये दण्ड हो । और उस ९  
की समाधि दुष्टों के साथ ठहराई गई पर वह अपनी मृत्यु के समय धनवान  
के संग रहा क्योंकि उस ने कुछ अनुचित न किया और न उस के मुँह में छल था ।  
और परमेश्वर का अच्छा लगा कि उसे कुचल डाले उस ने उसे क्षुणित किया जब १०  
उस का प्राण प्राणश्चित्त का बलि करेगा तो वह अपने वंश को देखेगा अपनी  
आयुर्दा को बढ़ावेगा और परमेश्वर का मनोरथ उस के हाथ में फलेगा । वह ११  
अपने प्राण की पीड़ा का फल देखेगा और संतुष्ट होगा तेरा धर्म्म सेवक अपने ज्ञान  
से बहुतों को धर्म्मा ठहरावेगा और वह आप उन की दुरादृष्टियों को उठा लेगा ।  
इस लिये मैं उस को बहुतों के साथ भाग देऊँगा और बलवन्तों के साथ वह १२  
लूट का भाग लेगा इस के बदले कि उस ने अपने प्राण को मृत्यु के लिये नंगा  
कर दिया और वह अपराधियों के साथ गिना गया और उस ने आप बहुतों का  
पाप उठा लिया और अपराधियों के लिये विन्ती करेगा ॥

चौत्रयथां पर्व ।

हे बाँझ जो न जन्ती थी आनन्द कर हे तू कि जन्मे की पीड़ा में न थी आनन्द १  
में फूट निकल क्योंकि अनाथ के बालक विधातिता के बालकों से अधिक हैं पर-  
मेश्वर कहता है । अपने तंत्र के स्यान को चौड़ा कर दे और तेरे निधानों को २  
कैला हैं मत रोक अपनी रस्मियों को लम्बी कर और अपने खंडों को हट कर ।  
क्योंकि तू दहिने और बायें फूट निकलेगी और तेरे वंश जातिगणों के अधिकार ३  
प्राप्त करेंगे और उजाड़ नगरों को वसावेंगे । मत डर क्योंकि तू लज्जित न होगी ४  
संकोचित मत हो क्योंकि तू अपमानित न किई जायेगी क्योंकि तू अपनी तनखाई  
की लाज को भूलेगी और अपने रंडापे के अपमान को फिर स्मरण न करेगी ।  
क्योंकि तेरा पति तेरा कर्त्ता है सेनाओं का परमेश्वर उस का नाम है और ५  
तेरा सुक्तिदाता इसराएल का धर्ममय है वह भारी प्रियत्री का ईश्वर कहा जायेगा ।  
क्योंकि त्यक्त किई हुई और दुग्धिन स्त्री की नाईं परमेश्वर ने तुझे चुलाया और ६  
युवावस्था की स्त्री की नाईं क्योंकि वंश त्यक्त किई जायेगी परमेश्वर ने कहा  
है । एक पल भर के लिये मैं ने तुझे त्यागा और बड़ी दया के साथ तुझे बटोर ७  
लूँगा । क्रोध की दाढ़ में एक पलमात्र के लिये मैं ने अपना मुँह तुझ से छिपा लिया ८  
और सनातन की दया के साथ मैं ने तुझ पर दया किई परमेश्वर तेरा सुक्तिदाता  
कहता है । क्योंकि यह मेरे निकट नूद का प्रलय है जो मैं ने फिरिया खाई कि ९

दिन में न करे और विश्राम के दिन को आनन्द और परमेश्वर के पवित्र दिन को प्रतिष्ठित करे और उसे प्रतिष्ठित करे कि अपने काम काज न करे और अपने १४ अभिलाष को न पावे और वृथा बातचीत न करे । तब तू परमेश्वर में अपने को आनन्दित करेगा और मैं तुम्हें पृथिवी के ऊँचे स्थानों पर चढ़ाऊँगा और तुम्हें तेरे पिता यशकूब का अधिकार खिलाऊँगा क्योंकि परमेश्वर के मुख ने बखन कहा है ।

उनसठवां पृष्ठ ।

१५ देखो परमेश्वर का हाथ बचाने से छोटा नहीं है और उस का कान सुने से भारी नहीं है । परन्तु तुम्हारी बुराइयां, तुम्हारे और तुम्हारे ईश्वर में विभाग डालती रहीं और तुम्हारे पापों ने उस का मुँह तुम से छिपा दिया, ऐसा कि वह ३ नहीं सुनता । क्योंकि तुम्हारे हाथ लोह से और तुम्हारी अंगुलियां बुराई से अशुद्ध हैं तुम्हारे होठों ने झूठी बातें किई और तुम्हारी जीभ दुष्टता धर्षन करेगी ॥

१६ कोई धर्म के साथ बिषाद नहीं करता और सच्चाई के साथ नहीं लड़ता वे तुम पर भरोसा रखते हैं और झूठी बातें करते हैं उन्हें बुराई का गर्भ है और १७ वे पाप जनते हैं । उन्होंने ने नाग के अंडों को सेया है और मकड़ी के जालों को बिनेंगे जो उन के अंडों में से कुछ खाता है वह मरेगा और कुचले हुए अंडे से १८ सपोला सेया जायेगा । उन के जाले बस्त्र के लिये न होंगे और वे अपने कामों से अपने को न छिपायेंगे उन के कार्य अधर्म के कार्य हैं और अंधेर का कार्य १९ उन के हाथों में है । उन के पांव बुराई की और दौड़ेंगे और वे निर्दोष लोह बचाने के लिये शीघ्रता करेंगे उन की चिन्ताएं बुराई की चिन्ताएं हैं नाश और २० बिपत्ति उन के मार्गों में हैं । उन्होंने ने कुशल के मार्ग को नहीं जाना और उन के मार्गों में न्याय नहीं है उन्होंने ने अपने लिये अपने मार्ग टूट कर दिये हर एक २१ उन में चलनेहारा कुशल को नहीं जानता ॥

२२ इस लिये न्याय हम से दूर है और धर्म हमें न पहुंचेगा हम ज्योति की छाट जोहते हैं परन्तु देखो अंधकार जगमगाहटों की परन्तु अंधियारे में चलते हैं । २३ हम अंधों की नाईं भीत को टटोलते हैं और उन की नाईं जिन के आंख नहीं टटोलते हैं हम मध्यान्ह को मानो संध्याकाल की नाईं ठोकर खाते हैं और अति २४ अंधकार में मृतकों की नाईं । हम सब के सब भालुओं की नाईं गर्जते हैं और पिण्डुकों की नाईं कू कू करते हैं हम न्याय की छाट जोहते हैं परन्तु नहीं है और २५ मुक्ति की पर वह हम से दूर है ॥

२६ क्योंकि हमारे अपराध तेरे आगे छड़ गये हैं और हमारे ही पाप हम पर साक्षी देते हैं क्योंकि हमारे पाप हमारे साथ हैं और हम अपनी बुराइयों को २७ जानते हैं । पाप करना परमेश्वर के बिरुद्ध झूठ बोलना और हमारे ईश्वर के पीछे से फिर जाना अंधेर और भटक जाने की बातें करना और मन से मिथ्या बातों २८ का गर्भ रहना और उद्धारना । और बिचार पीछे हटाया गया और धर्म दूर से खड़ा रहता है क्योंकि सत्य सड़क में गिर पड़ा है और खराई प्रवेश नहीं हो २९ सकती । तब सत्यता लुप्त हो गई और बुराई से अलग होनेहारे ने अपने को लूट ठहराया तब परमेश्वर ने देखा और उस की दृष्टि में बुरा था कि कुछ न्याय नहीं

फिर शान्ति देखेगा । कि मैं हाँडों के फल का उत्पन्न करनेवाला कुशल कुशल दूर १८  
को और समीप को परमेश्वर कहता है और मैं उसे चंगा करता हूँ ।

और दुष्ट तरंगित समुद्र के समान हैं क्योंकि यह स्थिर नहीं हो सक्ता और २०  
जल के जल चढ़ना और कीचड़ उठालते हैं । मेरा ईश्वर कहता है कि दुष्टों के २१  
लिये कुशल नहीं है ।

अष्टावन्त्रां पथ्य ।

गंगा काढ़के चिला उड़र मत तुरही के समान अपना शब्द उठा और मेरी १  
जाति को उन के अपराध और हमरायल के घगने को उन के अपराध बतला ।  
और ये प्रतिदिन मुझे डंकते हैं और मेरे मार्गों की पहिचान चाहते हैं उन जाति २  
के समान जिस ने धर्म का कार्य किया और अपने ईश्वर की विधि का नहीं  
होड़ा है वे धर्म की विधि के विषय में मुझ से पूछेंगे ईश्वर के निकट आने ३  
में आनन्दित हैं । हम किस लिये व्रत करने हैं और तू नहीं देखता अपने प्राण ४  
को कष्टित करते हैं और तू नहीं जानता देखो तुम अपने व्रत के दिन में आनन्द  
पाते हो और अपने मद्य काम अंधेर में लेते हो । देखो लड़ाई और भागड़े के ५  
कारण तुम व्रत रखते हो और जिस दुष्टता के व्रमे सारे तुम आज के दिन व्रत  
न रखोगे कि जेबे पर अपना शब्द सुना दो । क्या इस के समान यह होगा ६  
जिसे मैं चुनूँगा यह दिन जिस में मनुष्य अपने प्राण को दुःख दे क्या भाऊ की  
नाई अपना सिर झुकाना और टाट और राख बिछाये क्या तू इसे व्रत और परमे-  
श्वर के लिये प्रसन्नता का दिन कहेगा ।

क्या यह वह व्रत नहीं जिसे मैं चुनूँगा कि दुष्टता के अंधनों को म्याल दे जूए ७  
की रस्मियों को तोड़ डाले और पैसे दुष्टों को निर्यन्त्र करे और हर एक जूए को  
तुम तोड़ डालो । क्या यह नहीं कि अपनी रोटी भूख को खिलाये और दुखियों ८  
और अनाथों को घर में लाये क्योंकि तू नंगे को देखेगा और उसे पहिनावेगा  
और अपने मांस से आप को न छिपावेगा ९

तब तेरी ज्योति प्रातःकाल के समान फूट निकलेगी और तेरे घाय जीव चंगे १०  
होंगे और तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा और परमेश्वर का तेज तेरे पीछे पीछे  
चलेगा । तब तू पुकारेगा और परमेश्वर उत्तर देगा तू दुष्टाई देगा और व्रत कहेगा ११  
कि मुझे देख यदि तू अपने मध्य में मे जूए को और अंगुली दिखाने को और  
कुचन बालन को दूर करेगा । और यदि तू अपना प्राण भूखों को देगा और १२  
दुखित प्राण को संतुष्ट करेगा तब तेरी ज्योति अंधकार में उड्य होगी और तेरा  
अंधकार मध्याह्न के समान । और परमेश्वर मदा तेरी आशाई करेगा और भुरा- १३  
हट के समय में तेरे प्राण को संतुष्ट करेगा और तेरी छद्मियों को धनी करेगा  
और तू मीची हुई यादिका के और पानी के साते के समान जिस के जल कधी  
न घटेगा होगा । और तुझ से निकलके वे पुराने खंडहरों को बना डालेंगे और १४  
तू पुरातन की नेवों को उठावेगा और तू टूटी हुई भीत का सुधारक और बसने  
के लिये पथों का बनवैया कहावेगा ।

यदि तू विश्राम के दिन से अपना पांथ फिराये कि अपना अभिलाष मेरे पवित्र १५



- १२ लाये हुए । क्योंकि यह जाति और यह राज्य जो तेरी सेवा न करेंगे सो नाश हो जायेंगे और वे देशगण सर्वथा नष्ट हो जायेंगे ॥
- १३ लुखनान का विभव तुझ पास आवेगा देखदार सनोवर और शसशाद एक ही साथ जिस्ते अपने पवित्र स्थान को विभूषित करें और मैं अपने चरणों के स्थान को शोभित करूँगा ॥
- १४ तब तेरे सारे अंधेर करनेहारों के संतान निहड़े हुए तुझ पास आवेंगे तब तेरे सारे निन्दा करनेहार तेरे चरणों के तलवों के पास प्रणाम करेंगे और तुझे परमेश्वर का नगर सैहून को इसराएल का धर्ममय कहेंगे । तेरे त्यक्त होने और धिनिष्ठ होने की संती जब तुझ में कोई तेरे मध्य जानेद्वारा न होगा मैं तुझे सदा की कंधाई और सनातन की पीढ़ियों के आनन्द का कारण बनाऊँगा ॥
- १६ और तू जातिगणों का दूध पीयेगी और राजाओं के स्तन चूस लेगी और तू जानेगी कि मैं परमेश्वर तेरा मुक्तिदाता हूँ और तेरा निस्तारकर्ता यश्कूब का सामर्थ्यमय ॥
- १७ पीतल की संती मैं सेना लाऊँगा और लोहे की संती रूपा लाऊँगा और काष्ठ की संती पीतल और पत्थरों की संती लोहा और मैं तेरे राज्य को शांति और तेरे करग्राहकों को धर्म ठहराऊँगा । तेरे देश में आगे को अंधेर न सुना जायेगा विनाश और विपत्ति तेरे सिंघाने में और तू अपनी भीतों को मुक्ति और अपने फाटकों को स्तुति कहेशी ॥
- १८ सूर्य तेरे लिये फिर दिन को ज्योति के लिये न होगा और चमक के लिये चन्द्रमा तुझे ज्योति न देगा और परमेश्वर तेरी सनातन की ज्योति हो जायेगा ॥
- २० और तेरा ईश्वर तेरी महिमा । तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा और तेरा चन्द्रमा न घटेगा क्योंकि परमेश्वर तेरी नित्य की ज्योति हो जायेगा और तेरे विलाप के दिन जाते रहेंगे ॥
- २१ और तेरी जाति सब की सब धर्मी होकर सदा लो देश की अधिकारी रहेशी मेरी लगाई हुई टहनी मेरे हाथों की क्रिया जिस्ते अपना ऐश्वर्य प्रगट करें ॥
- २२ एक छोटा सहस्र हो जायेगा और एक तनिक सा एक बलवन्त जाति मैं परमेश्वर उस के समय में उसे शीघ्र पहुंचाऊँगा ॥

एकसठवां पर्व ।

- १ प्रभु परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है क्योंकि परमेश्वर ने मुझे अभिषिक्त किया कि दीनों को मंगलसमाचार सुनाऊँ उस ने मुझे भेजा कि चूर्ण अंतःकरणों को बांधूँ जिस्ते बंधुओं के लिये मोक्ष का और बंधे हुएों के लिये बन्दीगृह से कुट्टी पाने का प्रचार करूँ । कि परमेश्वर के लिये ग्राह्य के खरस की और हमारे ईश्वर के लिये पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ कि सारे शोक्तियों को शांति देऊँ । कि सैहून के विलापियों को बस्त्र पहिना दूँ कि उन को राख की संती मुकुट आनन्द की चिकनाहट शोक की संती और स्तुति का बस्त्र मन की उदासी की संती और वे धर्म के बलवन्त कहें जायेंगे परमेश्वर के लगाये हुए जिस्ते यह अपने को विभवमय करे ॥

है । और उस ने देखा कि कोई मनुष्य नहीं है और अति जोकिन हुआ कि कोई १६  
 विचित्रई नहीं और उस की भुजा ने उस के लिये बचाया और उस का धर्म उसी ने  
 उसे संभाला । और उस ने धर्म को किलस की नाईं पटिन लिया और मुक्ति का १७  
 टोप अपने सिर पर और उस ने धर्म के लिये पलटा लेने के पहिगावे पटिन लिये  
 और चलन को उत्तरीय वस्त्र की नाईं आढ़ा । उन के कार्यान् के समान उन्हीं १८  
 की नाईं यह प्रतिफल देगा कोष अपने बैरियों के लिये प्रतिफल अपने बैरियों के  
 लिये टापुओं को यह पूरा प्रतिफल देगा । और पश्चिम के दामी परमेश्वर के १९  
 नाम से हरेंगे और पूरव के निवामी उस की महिमा से क्योंकि नकरी नदी की  
 नाईं यह आवेगा जब परमेश्वर का आत्मा झंडा खड़ा करता है । तब मैदून के २०  
 लिये और यशकूय में अधर्म से पञ्चात्ताप करनेहारों के लिये मुक्तिदाता आवेगा  
 परमेश्वर कहता है । और मैं जो हूँ उन के साथ मेरी यह याचा है परमेश्वर २१  
 कहता है कि मेरा आत्मा जो तुझ पर है और मेरी यात जो मैं ने तेरे मुंह में  
 डाली है तेरे मुंह से और तेरे वंश के मुंह से और तेरे वंश के वंश के मुंह से इस  
 समय से सनातन लो जाती न रहेगी परमेश्वर कहता है ॥

साठवां पद्य ।

उठ ज्योतिमान हो क्योंकि तेरी ज्योति आ गई और परमेश्वर का तेज तुझ १  
 पर उदय हुआ । क्योंकि देख अंधकार पृथिवी को छांप लेगा और अंधियारी २  
 अन्यदेशियों को और तुझ पर परमेश्वर उदय होगा और उस का तेज तेरे ऊपर  
 देखा जायेगा । और देशगण तेरी ज्योति में चलेंगे और राजगण तेरे उदय की ३  
 धमक में ॥

अपनी आंखें चारों ओर उठा और देख वे मय के सब रक्तुं हो गये तेरे ४  
 पास आते हैं तेरे बेटे दूर से आवेंगे और तेरी बेटियां गोद में उठाई जायेंगी ।  
 तब तू देखेगी और ज्योतिमय होगी और तेरा अंतःकरण हिलेगा और बट जायेगा ५  
 क्योंकि समुद्र का धन तुझ पास लाटा दिया जायेगा जातिगणों का दल तुझ  
 में आवेगा । जंटों का झुंड तुझे छांपेगा मिदयान और रेफा की मांढलियां वे ६  
 सब के मय मिदया से आवेंगे सोना और नोवान लावेंगे और परमेश्वर की स्तुति  
 का प्रचार करेंगे । कीदार के भारे झुंड तेरे लिये रक्तुं होंगे नवायूत के संहें तेरी ७  
 सेवा करेंगे वे ग्राह्य के साथ मेरी यज्ञवेदी पर चढ़ेंगे और मैं अपनी जाभा के  
 घर का जोमित कबंगा ॥

ये कौन हैं जो मेघ की नाईं उड़ते हैं और कपोतों की नाईं अपनी खिड़कियों ८  
 की ओर । क्योंकि टापू मेरी वाट जोहते हैं और तरमीस को जहाज पहिले जिस्ते ९  
 तेरे बेटों को दूर से लावे उन की चांदी और उन का सोना उन के साथ परमेश्वर  
 तेरे प्रभु के नाम के लिये और इसराएल के धर्ममय के लिये क्योंकि उस ने तुझे  
 रेश्वर्यमान किया है । और परदेशियों के बेटे तेरी भीनों को उठावेंगे और उन १०  
 के राजा तेरी सेवा करेंगे क्योंकि मैं ने अपने क्रोध में तुझे भारा और अपने अनु-  
 ग्रह में तुझ पर दया किई है । और तेरे फाटक नित खुले रहेंगे वे रात दिन कभी ११  
 बंद न होंगे कि देशगणों का द्रव्य तुझ पास लावे और उन के राजा बन्दीगृह में

- चैन न दो जय लो कि वह स्थिर न करे और जय लो कि वह यरसलम को पृथिवी पर स्तुति न ठहराये ॥
- ८ परमेश्वर ने अपने दहिने हाथ की और अपनी बलवती मुजा की किरिया खाई है कि यदि मैं तेरा अन्न फिर तेरे शत्रुओं को भोजन के लिये दूंगा और यदि परदेशी के लड़के तेरे नये दाखरस को पीयेंगे जिस में तू ने परिश्रम किया है तो मैं ईश्वर नहीं । क्योंकि उस के लवनेदारे उसे खायेंगे और परमेश्वर की स्तुति करेंगे और जो उस को एकट्ठा करते हैं मेरे पवित्र आंगनों में पीयेंगे ॥
- १० चले आओ फाटकों से से चले आओ लोगों के लिये मार्ग सुधारो ऊंचा करो सड़क ऊंची बनाओ चस्से पत्थर दूर करो जातिगणों के ऊपर झंडा खड़ा करो ॥
- ११ देखो परमेश्वर ने पृथिवी के अंत लो यह सुना दिया है कि सैहून की कन्या से कहो कि देख तेरी मुक्ति आती है देख उस का प्रतिफल उस के साथ है और
- १२ उस की मुक्ति उस के आगे । और वे उन्हें पवित्र जाति परमेश्वर के हुड़ाये हुए कहेंगे और तू दखगाह अर्थात् जाति याचित ईर-लो-निअजिबाद अर्थात् अत्यक्त नगर कहलायेगा ॥

### तिरसटवां पर्व ।

- १ यह कौन है जो अदूम से आता है दुसरा से अपने वस्त्रों में धमकनेद्वारा यह जो अपने पहिरावे में श्रेष्ठ्यमान अपने बल के महत्त्व में भुक्ता है मैं धर्म में ध्वन कदनेद्वारा बचाने के लिये बलवान ॥
- २ तू क्यों अपने पहिरावे में रक्तवर्ण है और तेरे पहिरावे उस के पहिरावे की नाई हैं जो कोल्दू में लताड़ता है । मैं ने अकेले कोल्दू में लताड़ता है और लोगों में से कोई ; मनुष्य मेरे साथ न था और मैं अपने क्रोध में उन्हें लताड़ूंगा और अपनी जलजलाहट में उन्हें रौंदूंगा और उन के रस का मेरे वस्त्रों पर क्रीटा
- ४ पड़ेगा और मैं ने अपने सारे पहिरावों को डुबाया है । क्योंकि पलटा लेने का
- ५ दिन मेरे मन में है और मेरे मोल लिये हुओं का वरस आया है । और मैं देखता हूं और कोई सहायक नहीं और अति शोकांत हूं और कोई संभालनेवाला नहीं और मेरी भुजा मेरे लिये मुक्ति का कार्य करती है और मेरी जलजलाहट वही
- ६ मुक्त संभालती है । और मैं अपने क्रोध में जातिगणों को लताड़ता हूं और अपनी जलजलाहट में उन्हें मतवाला करता हूं और उन का रस भूमि पर गिरा देता हूं ॥
- ७ मैं परमेश्वर की कृपाओं परमेश्वर की स्तुतियों की चर्चा कराऊंगा उस सब के समान जो परमेश्वर ने हम से व्यवहार किया है और इसराएल के धराने के लिये वे खड़ी बढ़ाई जो उस ने उन से व्यवहार किया है उस की दयाओं के समान और उस की कृपाओं के समान ॥
- ८ और उस ने कहा कि केवल वही मेरी जाति हैं मेरे लड़के झूठ न बोलेंगे और
- ९ वह उन का मुक्तिदाता हो गया । उन के सारे वैर में वह वैरी न था और उस के आगे के दूत ने उन्हें बचाया अपने प्रेम में और अपनी खड़ी दया में उसी ने उन्हें मुक्ति दी है और उस ने उन्हें चढाया और सारे प्राचीन दिनों में उन्हें ले गया ॥

और ये मनासन के उजाड़ों को घनावेग और प्राचीनों के उजाड़े स्थानों को ४  
उठावेग और उजाड़े हुए नगरों को नया करेग पुरातन के उजाड़ों को ।

तब परदेशी खड़े होंगे और तुम्हारे झुंडों को चरावेग और परदेशी के पुत्र तुम्हारे ५  
किमान और अंगूर के माली होंगे । और तुम परमेश्वर के याज्ञक कहला- ६  
ओगे हमारे ईश्वर के सेवक कहे जाओगे तुम जातिगणों का धन खाओगे और बदले  
की नाई उन के विभव में प्रवेश करोगे ।

तुम अपनी लाज को संती दूना पाओगे और संकोच की संती वे अपने भाग ७  
के लिये आनन्द की ललकार मारेंगे इस लिये वे अपने देश में दूना अधिकार  
पावेग और उन्हें सदा का आनन्द होगा ।

क्योंकि मैं परमेश्वर न्याय से प्रेम रखता हूं और अनर्थ लूटी हुई वस्तु में घिन ८  
करता हूं और मैं उन के कार्य का प्रतिफल मज्जाई से दूंगा और उन के साथ  
एक सदा की यात्रा दायेंगा । तब उन का वंश अन्वर्द्धियों में और उन के ९  
सन्तान जातिगणों में प्रसिद्ध होंगे सब जो उन्हें देखेंगे उन का मान लेंगे कि वे  
परमेश्वर के आशीर्वादी वंश हैं ।

मैं परमेश्वर से निपट आनन्दित होऊंगा मेरा मन मेरे ईश्वर से मगन हो १०  
क्योंकि उस ने मुक्ति के वस्त्रों से मुझे विभूषित किया और धर्म का दागा उस  
ने मुझे पहिना दिया है जिस रीति से दुल्हा अपने याज्ञकीय मुकुट से आप को  
संवारता है और जिस रीति से दुल्हिन अपने गहनों से अपने को संवारती है ।  
क्योंकि जिस रीति से पृथिवी अपनी ओर हुई हुई वस्तु को उगाती है और जिस ११  
रीति से घाटिका जो उस में बोया गया है उसे उगाती है इसी रीति से प्रभु पर-  
मेश्वर धर्म और स्तुति को समस्त जातिगणों के साक्षात् उगावेगा ॥

चासठवां पद्य ।

सैदून के कारण मैं चुप न रहूंगा और यरुसलम के लिये मैं चैन न लूंगा जब १  
लौं कि उस का धर्म ज्योति के समान न चमके और उन की मुक्ति उस दीपक  
के समान जो बरता है । और देशगण तेरे धर्म को देखेंगे और समस्त राजा तेरे २  
विभव को और तू एक नये नाम से पुकारें जायेगी जिसे परमेश्वर का मुंह उच्चा-  
रेगा । और तू परमेश्वर के हाथ में एक सुन्दर मुकुट होगी और अपने ईश्वर की ३  
दृष्टि पर एक राजकीय अध्यक्ष ॥

तू अजुवाह अर्थात् छोड़ी हुई फिर न कही जायेगी और तेरी भूमि शमामाह ४  
अर्थात् उजाड़ फिर न कही जायेगी पर तू हफजीवाह अर्थात् मेरा आनन्द उस  
में है पुकारी जायेगी और तेरी भूमि बकलाह अर्थात् व्याही हुई क्योंकि परमेश्वर  
तुझ से आनन्दित है और तेरी भूमि व्याही जायेगी ॥

क्योंकि जैसे तरुण मनुष्य कुंआरी को व्याह लाता है इसी रीति से तेरे बेटे ५  
तुझे व्याह लायेंगे और जिस रीति से दुल्हा दुल्हिन से आनन्दित है उसी रीति से  
तेरा ईश्वर तुझ पर आनन्दित होगा ॥

हे यरुसलम मैं न तेरी भीतों पर पहलू बैठलाये हूं सारे दिन और सारी रात ६  
वे चुप न रहेंगे वे परमेश्वर के स्मरण दिलानेहारो तुम्हें चैन न हो । और उसे ७

८ कुम्हार हैं और सब के सब तेरे हाथ के कार्य हैं । हे परमेश्वर अत्यन्त ही  
कोपित मत हो और सदा कुकर्म को स्मरण न कर देख दृष्टि कर हम तेरी  
१० बिन्ती करते हैं हम सब के सब तेरी जाति हैं । तेरे पवित्र नगर अरण्य हो  
११ गये सैहून जंगल हो गया यरुसलम उजाड़ । हमारा पवित्र और विभवमय मन्दिर  
जिस में हमारे पितर तेरी स्तुति करते थे आग से जलाया गया और हमारे  
१२ सारे बाजिकृत स्थान उजाड़ हो गये । हे परमेश्वर क्या तू इन बातों के कारण  
आप को रोके रखेगा और क्या तू चुपका होके हमें अब लों निपट सताता  
रहेगा ।

### पैंसठवां पर्व ।

१ मैं ने उन्हें पूछने की अनुमति दी जिन्होंने ने प्रश्न न किया था मैं उन को मिला  
जिन्होंने ने मुझे नहीं ठूँड़ा था मैं ने एक जाति से कहा कि मुझे देख मुझे देख  
२ जो मेरे नाम से बुलाई न गई थी । मैं ने सारे दिन अपने हाथ फैलाये एक दंग-  
इत जाति की और जो उस मार्ग पर जो अच्छा नहीं है अपनी ही इच्छा पर  
३ चलती है । उस जाति की और जो नित्य मेरे मुँह पर मुझे खिजाती है और  
४ बाटिकों में बलि करती है और ईंटों पर सुगंध जलाती है । जो समाधि में बैठती  
है और खोहों में बस्ती है जो सूअर का मांस खाती है और धिनित वस्तुओं का  
५ जूस उन के पात्रों में है । जो मनुष्य कहते हैं कि अलग खड़ा रह मेरे पास मत  
आ क्योंकि मैं तुझ से पवित्र हूँ ये मेरे कोप में धूआँ हैं एक आग जो दिन भर  
६ जला करती है । देखो मेरे आगे लिखा है मैं चुप न रहूँगा क्योंकि पलटा अवश्य  
७ लूँगा हाँ उन की गोद में प्रतिफल दूँगा । तुम्हारी बुराइयों का और तुम्हारे  
पितरों की बुराइयों का एक ही साथ परमेश्वर कहता है जिन्होंने ने पहाड़ों पर  
सोखान जलाया और पहाड़ियों पर मेरा अनादर किया और मैं उन का आगला  
कार्य उन की गोद में नापूँगा ॥

८ परमेश्वर यों कहता है जैसे दाख के गुच्छे में रस पाया जाता है और मनुष्य  
कहता है कि उसे नष्ट न कर क्योंकि उस में आशीष है वैसे मैं अपने सेवकों  
९ के कारण कहूँगा जिससे सब को नाश न करे । और मैं यश्कूब से वंश निकालूँगा  
और यहूदाह से अपने पहाड़ों का अधिकारी और मेरे चुने हुए उस के अधिकारी  
१० होंगे और मेरे सेवक वहाँ बसेंगे । और सबन मुँडों का निवास हो जायेगा और  
अकूर की तराई गाय बैलों के चैन के स्थान मेरी जाति के लिये जिस ने मुझे  
खोजा है ॥

११ और तुम परमेश्वर के त्यागनेहारे जो मेरे पवित्र पहाड़ को भूलते हो जो  
भाग्यमानी के लिये मंच सिद्ध करते हो और प्रालब्ध के लिये मिलाया हुआ  
१२ दाखरस भर देते हो । सो मैं ने तुम्हें तलवार का सौंप दिया और तुम सब के  
सब संहार होने के लिये झुक जाओगे इस कारण कि मैं ने बुलाया और तुम ने  
उत्तर न दिया मैं वाला और तुम ने न सुना परन्तु तुम ने मेरी आँखों के सामने  
बुराई कीई और वह वस्तु चुनी कि जिसे मैं आनन्दित न था ॥

१३ सो प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मेरे सेवक खायेंगे परन्तु तुम भूखे

परन्तु वे फिर गये और उस के पवित्र आत्मा को खिजाया और यह उन का १०  
शत्रु हो गया यही उन से लड़ा ॥

और उस ने प्राचीन दिनों को मूसा और उस की जाति को स्मरण किया ११  
कहाँ है यह जो उन्हें समुद्र से उठा लाया अपने मुँह के गड़ारियों को कहाँ है  
यह जिस ने उस के मध्य में अपने पवित्र आत्मा को डाला । उन्हें मूसा के दर्शने १२  
द्वारा अपने विभव की भुजा में ले चलता था उन के आगे से पानियों को चीरता  
था कि अपने लिये एक सनातन का नाम करे । उन्हें गड़ाराइयों में ले चलता था १३  
घोड़े की नाईं चौगान में वे ठोकर न खाएंगे । जिस रीति से पशु तराई में उतर १४  
जायेगा उसी रीति परमेश्वर का आत्मा उसे खिजाम में पहुँचायेगा इसी रीति तू  
ने अपनी जाति की अगुआई किई कि अपने लिये एक संज्ञा स्वी नाम बनाये ।

स्वर्ग पर मे दृष्टि कर और अपने पवित्र और महिमा के स्थान से देख १५  
तेरा उद्योग और तेरा बल कहाँ है तेरे हृदय की मरोड़ ने और तेरे कामल प्रेम  
ने अपने को मुक्त से रोक रक्खा है । क्योंकि तू ही हमारा पिता है क्योंकि १६  
इसराएलीम ने हमें न उत्पन्न किया और इसराएल हमें न पहिचानेगा तू ही परमे-  
श्वर हमारा पिता है हमारा मुक्तिदाता सनातन से तेरा नाम है । हे परमेश्वर १७  
तू क्यों हमें अपने मार्गों से भटकने देगा और क्यों हमारे मन को अपने दूर से  
कटार करेगा अपने सेवकों के लिये अर्थात् अपने अधिकार की गोटियों के  
कारण फिर आ । घोड़ी बर के लिये तेरी पवित्र जाति तेरे पवित्र स्थान की १८  
अधिकारी रही तेरे विरोधियों ने उसे लताड़ा है । हम सदा से हैं तू ने उन १९  
पर प्रभुता न किई तेरा नाम उन पर नहीं रक्खा गया ॥

चौमठयां पञ्च ।

छाय कि तू स्वर्गों को फाड़े और उतर आये छाय कि पहाड़ तेरे आगे १  
पिघल जायें । जिस रीति से आग लकड़ी को सुलगाती है और जैसा कि २  
आग पानी को उबालती है कि तेरा नाम तेरे बैरियों पर प्रगट होये जातिमान  
तेरे आगे अर्थरा जायेंगे । तेरे आश्चर्यकार्य करने में जिन की घाट हम नहीं ३  
जोड़ते छाय कि तू नीचे उतरे कि पहाड़ तेरे आगे से पिघल जायें ॥

और सनातन से उन्होंने ने नहीं सुना उन के कानों में नहीं पहुँचा और तुझे ४  
छोड़ आंग्र ने एक ईश्वर को नहीं देखा जो अपने आश्रित के लिये कार्य करेगा ।  
तू उस्से मिल गया है जो आनन्दित होता और धर्म करता है तेरे मार्गों में ५  
वे तुझे स्मरण करेंगे देख तू क्रुद्ध हुआ है और हम ने पाप किया है उन में  
नित्यता है और हम बच जायेंगे ॥

और हम सब के सब अशुद्ध की नाईं थे और हमारे सारे धर्म त्यक्त वस्त्र की ६  
नाईं और पत्ते के समान सुरक्षा गये और हमारी घुराइयां पवन की नाईं हमें उड़ा  
ले जायेंगी । और कोई तेरा नाम लेनेद्वारा नहीं है जो अपने को जगाये कि ७  
तुझे पकड़े क्योंकि तू ने अपना मुँह हम से छिपाया है और हमें हमारी घुराइयों  
के दाय से पिघलाया है ॥

और अब हे परमेश्वर हमारा पिता तू ही है हम माटी हैं और तू हमारा ८



- १० देख आज के दिन मैं ने तुम्हें जातिगणों और राज्यों को उखाड़ने और ढाने और नाश करने और उलटने और बनाने और लगाने को पराक्रम दिया है ।
- ११ और परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा कि हे यरमियाह तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि बदाम के पेड़ की एक कड़ी मैं देखता हूं ।
- १२ तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि तू ने ठीक देखा है क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिये सावधान हूं । और दूसरी बार परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा कि तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि उबलता हुआ हंडा देखता हूं और उस का मुंह उत्तर की ओर है ।
- १३ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि इस देश के सारे वासियों पर उत्तर से बुराई निकल आवेगी । क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देख मैं उत्तर के राज्यों के सारे परिवारों को बुलाता हूं और वे आवेंगे और हर एक उन अपना अपना सिंहासन यरुसलम के फाटकों की पैठ में और उस की चारों ओर की भीतों पर और यहूदाह के सारे नगरों पर रखेंगे । और उन की सारी दुष्टता के लिये मैं उन के विरुद्ध अपना विचार उच्चासंगा क्योंकि उन्होंने ने मुझे त्याग किया है और आन देवों के लिये धूप जलाया है और अपने हाथ के कृत्य की सेवा किई है ॥
- १४ सो तू अपनी काटि बांधके उठ और सब जो मैं तुम्हें आज्ञा करूं सो उन से कह उन से मत डरना न हो कि मैं उन के आगे तुम्हें डराऊं । और देख आज मैं ने तुम्हें इस सारे देश के विरुद्ध यहूदाह के राजाओं के विरुद्ध और उस के राजपुत्रों के विरुद्ध और उस के याजकों के विरुद्ध और देश के लोगों के विरुद्ध दृढ़ किये हुए नगर की नाई और लोहे के खंभे की नाई और पीतल की भीतों की नाई बना रखवा है । और वे तेरे विरुद्ध लड़ेंगे परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि तुम्हें कुड़ाने को मैं तेरे साथ हूं ।

### दूसरा पत्र ।

- १ और परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास आया । कि तू जाके यरुसलम के कानों में पुकारके कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं तेरे विषय तेरी तरुणाई की दया और तेरे दयाह के प्रेम को स्मरण करता हूं जब तू बन में
- २ बिन जाते दोये देश में मेरे पीछे पीछे चली । इसराएल और उस के पहिले फल की बढ़ती परमेश्वर के लिये पवित्र थी उस के सारे भक्षण करनेहारे अपराधी होंगे उन पर बुराई आवेगी परमेश्वर कहता है ॥
- ३ हे यश्मूब के घर और हे इसराएल के घर के सारे परिवारो परमेश्वर का वचन सुनो । परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारे पितरों ने मुझ में कौन सी बुराई पाई जो वे मुझ से दूर हुए और वृथा के पीछे जाके व्यर्थ हुए । और उन्होंने ने नहीं कहा कि परमेश्वर कहाँ है जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया जिस ने अरम्य में हमें चलाया अर्थात् बड़े उजाड़ देश और गढ़हे में और अवृष्टि और मृत्यु की छाया के देश में ऐसे देश में जिस में कोई नहीं गया और जहाँ कोई मनुष्य न बसा । और मैं तुम्हें फलवंत देश में लाया कि तुम उस के फल और उस की अच्छी वस्तुन को खाओ परन्तु तुम लोगों ने उस में पहुंचके

रहोगे देखो मेरे सेवक पीरोंगे परन्तु तुम प्यासे रहोगे देखो मेरे सेवक आनन्दित  
 होंगे परन्तु तुम लज्जित होओगे । देखो मेरे सेवक मन की आनन्दता से गायेंगे १४  
 परन्तु तुम मन की उदासी के कारण रोओगे और चूर्ण अंतःकरण के शोक से तुम  
 चिल्लाओगे । और तुम अपना नाम मेरे चुने हुएों के लिये क्रिया के लिये छोड़ोगे १५  
 और प्रभु परमेश्वर तुझे घात करेगा और अपने सेवकों को दूसरे नाम से पुकारेगा ।  
 जिस्से जो मनुष्य पृथिवी पर अपने को आशीष देवे वह सच्चाई के ईश्वर से अपने १६  
 को आशीष देगा और जिस्से जो मनुष्य पृथिवी पर किरिया खाये वह सच्चाई के  
 ईश्वर की किरिया खायेगा क्योंकि अगिली खिजाहटें भुलाई गईं और मेरी आंखों  
 से छिपाई गईं ॥

क्योंकि देखो मैं नये स्वर्ग और नई पृथिवी बनाता हूं और अगिली वर्त्ती १७  
 स्मरण न किई जायेंगी और मन में न आवेंगी । पर सदा लो उस में आह्लादित १८  
 और मगन रह जो मैं सृजता हूं क्योंकि देखो मैं यरुसलम को आनन्द और उस  
 की जाति को आह्लाद उत्पन्न करता हूं । और मैं यरुसलम में मगन होऊंगा और १९  
 अपनी जाति से आनन्दित और उस में फिर रोने और विलाप का शब्द न सुना  
 जायेगा ॥

और वहां से फिर घोड़ी वय का कोई बालक न होगा न कोई बृद्ध जो अपने २०  
 दिनों को पूरा न करेगा क्योंकि लड़का मौ वरम का टोके मरेगा और पापी मौ  
 घरम का टोके मापित होगा । और वे घर बनायेंगे और उन में वर्सेंगे और दाख २१  
 की दारी लगायेंगे और उस के फल खायेंगे । और वे न बनायेंगे कि दूसरा २२  
 दास करे वे न लगायेंगे कि दूसरा खायेगा क्योंकि मेरे लोगों के दिन वृद्ध के दिन  
 के समान होंगे और मेरे चुने हुए अपने हाथों के कार्य से अधिक लीयेंगे । वे २३  
 वृथा परिश्रम न करेंगे और घबड़ाहट के लिये न लनंगे और घोड़ी आयुर्दा के  
 वंश उन से उत्पन्न न होंगे क्योंकि वेही परमेश्वर के आशीषों के वंश हैं और उन  
 के संतान उन के साथ ॥

और ऐसा होगा कि वे अन्न लो न पुकारेंगे और मैं उत्तर देऊंगा अन्न लो वे २४  
 दातें कहते होंगे और मैं सुनूंगा । भेड़िया और सेमा एक साथ चरेंगे और सिंह वेल २५  
 के समान भूसा खायेगा और सर्प अपने भोजन की सन्ती धूल वे मेरे सारे पवित्र  
 घड़ाड़ पर न दुःख देंगे और न नाश करेंगे परमेश्वर कहता है ॥

क्रियासठवां पद्य ।

परमेश्वर यों कहता है कि स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे चरणों की १  
 पीढ़ी है कहां है वह घर जो तुम मेरे लिये बनाओगे और कहां है मेरा चैन-  
 स्थान । और इन सभों को मेरे हाथ ने बनाया और ये सब हुए परमेश्वर कहता २  
 है और इस पर मैं दृष्टि रखूंगा दुःखी और चूर्ण अंतःकरण पर और उस घर  
 जो मेरे वचन से बर्थाता है ॥

वेल का घात करनेद्वारा मनुष्य का घात करनेद्वारा भेड़ी का वलि करनेद्वारा ३  
 कुत्ते का गला तोड़नेद्वारा भैंस का चढ़ानेद्वारा सूअर के लोटू का चढ़ानेद्वारा  
 स्मरण के लिये लाधान चढ़ानेद्वारा नास्ति का धन्य कहनेद्वारा है हां उन्हों ने अपने

- नहीं है ऐसा न करूंगी क्योंकि मैं ने उपरियों से प्रीति किई है और उन्हीं के पीछे जाऊंगी ॥
- २६ जैसा पकड़े जाने में चार लज्जित है तैसा इसराएल का घराना वे उन के राजा उन के प्रधान और उन के याजक और उन के भविष्यद्वक्ते लजाये गये हैं । जो पेड़ से कहते हैं कि तू मेरा पिता और पत्थर से कि तू मुझे जनी क्योंकि उन्हीं ने मेरी ओर पीठ फेरी और मुंह नहीं और वे अपने दुःख के समय में कहेंगे कि उठके हमें बचा ॥
- २७ परन्तु तेरे देव कहाँ हैं जिन्हें तू ने अपने लिये बनाया है वे उठें यदि तेरे दुःख के समय तुझे बचा सकें क्योंकि हे यहूदाह तेरे नगरों की गिन्ती के समान तेरे देव हुए हैं । तुम लोग किस बात के लिये मुझ से विवाद करोगे तुम सब के सब मेरे विरुद्ध फिर गये हो परमेश्वर कहता है । वृथा मैं ने तुम्हारे बालकों को मारा है उन्हीं ने उपदेश नहीं ग्रहण किया है तुम्हारी ही तलवार ने नाशक सिंह के समान तुम्हारे भविष्यद्वक्ताओं को भक्षण किया है ॥
- २८ हे इस पीढ़ी के लोगो तुम परमेश्वर के यजन को देखो क्या मैं इसराएल के लिये अरण्य अथवा अंधियारा देश हुआ हूँ मेरे लोगों ने क्यों कहा है कि हम अपने ही स्वामी हैं हम तेरे पास फिर न आवेंगे । क्या कुंवारी अपने आभूषण को भूल सकती है अथवा दुल्लिप्त अपना पहिरावा तथापि मेरी आति अनगिनित दिन से मुझे बिसरा रही ॥
- २९ प्रेम ठूँठने के लिये तू क्यों अपने मार्ग को सिद्ध करेगी इस लिये तू ने अपना मार्ग दुष्टों को सिखाया है । तेरे अंचलों में भी लोहू पाया गया है अर्थात् दरिद्र निर्दोषों के प्राण मैं ने उन्हें खोदे हुए स्थान में नहीं पाया परन्तु इन सबों पर ॥
- ३० तथापि तू ने कहा है कि मेरे निर्दोष होने के कारण निश्चय उस का कोप मुझ से जाता रहेगा देख मैं तेरा विचार करूंगा क्योंकि तू ने कहा है कि मैं ने पाप नहीं किया ॥
- ३१ तू अपनी चाल को पलटने के लिये क्यों ऐसा दौड़ती है मिस्र के कारण भी तू लज्जाई जायेगी जैसे असूर के कारण लज्जाई गई है । यहाँ से भी तू अपने सिर पर हाथ रखे हुए निकल जायेगी क्योंकि परमेश्वर ने तेरे भरोसा को बस्तुन को त्याग किया है और तू उन में भाग्यमान न होगी ॥
- तीसरा पृष्ठ ।
- १ कहते हैं कि यदि मनुष्य अपनी पत्नी को त्यागे और वह उस के पास से जाके दूसरे पुरुष की हो जाये तो क्या वह उसे फिर ग्रहण करेगा क्या वह देश सर्वथा अशुद्ध न होगा परन्तु तू ने बहुत से जारों से किनाला किया है तथापि २ अब भी मेरी ओर फिर परमेश्वर कहता है । ऊँचे स्थानों पर अपनी आंखें उठा और देख कहाँ तू अशुद्ध न किई गई तू उस अब की नाई जो बन में है उन के लिये मार्गों पर बैठी और तू ने अपने किनालों से और अपनी दुष्टता से देश ३ को अशुद्ध किया है । सो भड़की रोकी गई और अन्त की वरषा भी नहीं हुई

मेरे देश को अशुद्ध किया और मेरे अधिकार को घिनित कर डाला । यात्रकों ने नहीं कहा कि परमेश्वर कहाँ है और व्यवस्था के जातों ने मुझे नहीं जाना उन के रखवाले भी मुझ से फिर गये और भविष्यद्वक्ता ने बबल के नाम से भविष्य कहा और निर्लभ वस्तु के पीछे चले गये ॥

इस लिये परमेश्वर कहता है कि मैं तुम से फिर विवाद करूँगा और तुम्हारे सन्तानों के सन्तानों से विवाद करूँगा । क्योंकि पार उत्तरके कितीम के टापुओं १० को देखो और कीडार में लोगों को भेजके अच्छी रीति से बूझो और देख रखो कि जो ऐसी वस्तु हुई है । क्या किसी जातिगम ने अपने देवों को बदला है ११ यद्यपि वे देव न थे परन्तु मेरी जाति ने उस की मूर्तिमा को उस के लिये बदला जिस्से लाभ नहीं । हे स्वर्गो इससे अचम्भित होओ और डर जाओ और १२ अत्यन्त घबराओ परमेश्वर कहता है । क्योंकि मेरी जाति ने दो घुराइयाँ १३ किई हैं उन्हीं ने मुझ अमृतजल के सोते को त्यागा है और अपने लिये टूटे कुण्ड खोदे हैं जिन में जल नहीं ठहरता ॥

क्या इसराएल दास है अथवा घट घर का बालक है तो फिर क्यों लूटा १४ गया । युद्धा मिनट उस पर गर्जते हैं उन्हीं ने अपना शब्द उठाया है और उस १५ के देश को एक उजाड़ बनाया है उस के नगर जल गये ऐसा कि कोई निवासी न रहा । मरुफ के और तहफनीस के सन्तान भी तेरी खापट्टी के चाम को खा १६ लेते हैं । क्या तू इसे अपने लिये नहीं करता है कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर १७ को त्यागा जिस समय वह मार्ग में तेरी आगुआई करता था ॥

और अब सैहर का जल पीने को तुझे मिस्र के मार्ग में क्या काम है अथवा १८ नदी के पानी पीने को तुझे अमूर के मार्ग में क्या काम है । तेरी ही दुष्टता १९ तुझे ताड़ना करेगी और तेरा फिर फिर जाना तुझे दपटंगा से जान और देख कि परमेश्वर अपने ईश्वर को विहराना घुरा और कड़वा है और मेरा भय तुझ में नहीं प्रभु सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

क्योंकि सनातन से मैं ने तेरा लूया तोड़ा तेरे बंधनों को भटक डाला है २० और तू ने कहा है कि सेवा मैं न करूँगी क्योंकि हर एक ऊँचे टीले पर और हर एक घरे पेड़ तले तू छिनाला करती थी । और मैं ने तुझे उत्तम दाख सर्वथा २१ सत्य चीज दिया था फिर तू क्योंकिर उपरी लता का बिगड़ा हुआ पेड़ मेरे लिये हुई है । यद्यपि तू आप को रेह से धोवे और बहुत सा साधुन लेवे तथापि २२ तेरी घुराई मेरे आगे छिपी है प्रभु परमेश्वर कहता है ॥

तू क्योंकिर कह सकती है कि मैं अपवित्र नहीं हूँ मैं बबलीम के पीछे नहीं २३ गई हूँ अपनी चाल को तराई में देख और अपने किये हुए को मान ले तू एक चालाक साँड़नी की नाई है जो अपने मार्गों पर दौड़ती है । तू वन २४ परिचित जंगली गदही की नाई है जो अपने प्राण की धाँका में पवन को मुक्तता है उस के प्रयोजन में कौन उसे फेर सकता है उस की खोज में कोई नहीं आप को बकाबगा उस के मास में वे उसे पावेंगे । तू अपने पाँव को २५ नंगाई से और अपने गले को प्यास से अलग रख परन्तु तू ने कहा है कि आशा

जातिगणों के अच्छे से अच्छा अधिकार तब मैं ने कहा तू मुझे पिता करके पुका-  
 २० रेगा और मेरे पीछे आने से फिर न जायेगा । निश्चय जैसा कि स्त्री अपने पति  
 से अविश्वासिनी होती है तैसा हे इसराएल के घराने तुम लोगों ने मेरी ओर से  
 विश्वास घात किया है परमेश्वर कहता है ॥

२१ ' ऊँचे स्थानों में शब्द सुना गया है कि इसराएल के सन्तान खिलाप करते हैं  
 और विनती करते हैं इस कारण कि उन्हें ने अपनी चाल को बिगाड़ा है और  
 २२ अपने ईश्वर परमेश्वर को विसराया है । हे फिर हुए बालको फिर आओ मैं  
 तुम्हारे धर्मत्यागियों को चंगा कंसा देख हम तेरी ओर आते हैं क्योंकि तू ही  
 २३ परमेश्वर हमारा ईश्वर है । निश्चय टीलों और बहुत से पर्वतों का आसा वृषा  
 २४ है निश्चय परमेश्वर हमारे ईश्वर में इसराएल की मुक्ति है । और हमारी तर-  
 न्गणार्ह से लज्जित वस्तु ने हमारे पितरों की संपत्ति को उन के भुंड और उन के  
 २५ ठोर और उन के बेटे बेटियों को भक्षण किया है । हम अपनी लाज में पड़े रहेंगे  
 और हमारा लज्जित कर्म हमें ढांपेगा क्योंकि हम ने और हमारे पितरों ने अपनी  
 तरनगार्ह से आज लो परमेश्वर अपने ईश्वर के विरुद्ध पाप किया है और परमे-  
 श्वर अपने ईश्वर का शब्द नहीं माना है ॥

चौथा पर्व ।

१ हे इसराएल यदि तू फिर आवेगा तो परमेश्वर कहता है कि मेरी ओर फिर  
 और यदि तू अपनी धिनितों को मेरी दृष्टि से दूर करेगा तो तू भरमाया न  
 २ जायेगा । परन्तु तू सद्गार्ह से और विचार से और धर्म से परमेश्वर के जीवन  
 की किरिया खायेगा और जातिगण उस में आप आप को आशीष देंगे और उसी  
 की स्तुति करेंगे ॥

३ क्योंकि परमेश्वर यहूदाह और यरुसलम के लोगों से यह कहता है कि अपनी  
 ४ खंजर भूमि को खेत करो और कांटों में मत बोओ । हे यहूदाह के मनुष्यो और  
 हे यरुसलम के आसियो परमेश्वर के लिये खतनः कराओ और अपने अपने मन की  
 खलड़ी को अलग करो न होवे कि तुम्हारी चाल की बुराइयों के कारण मेरा  
 क्रोध आग की नाई फूट निकले और ऐसा बर उठे कि कोई उसे बुता न सके ॥

५ यहूदाह में प्रगट करो और यरुसलम में यह कहके प्रचारो और देश में तुरही  
 का शब्द करो सर्वत्र प्रचारके कहो कि एकट्टे होओ और हम बाढ़ित नगरों में  
 ६ चलें । सैहून की ओर ध्वजा खड़ा करो और हटो खड़े मत होओ क्योंकि मैं  
 ७ उत्तर से बुराई और बड़ा बिनाश लाता हूँ । सिंह अपनी भाड़ी से निकला है  
 और जातिगणों का नाशक अपने मार्ग में है वह तेरा देश उजाड़ने को अपने  
 ८ स्थान से निकला है और तेरे नगर बिना निवासी उजाड़ होंगे । इस लिये टाट  
 पहिनो छाती पीटो और विलाप करो क्योंकि परमेश्वर का महा कोप उसे फिर  
 ९ नहीं गया है । और परमेश्वर कहता है कि उस दिन ऐसा होगा कि राजा का  
 मन और राजपुत्रों के मन घट जायेंगे और राजक आश्चर्यित होंगे और भवि-  
 १० प्यवृत्ता अचंभित ॥

१० ... तब मैं ने कहा हाय प्रभु परमेश्वर निश्चय तू ने इन लोगों को और यरुसलम

और तू येथ्या का कपाल रखती है क्योंकि तू लाज नहीं मानती । क्या अब ४  
 से तू ने मुझे नहीं पुकारा है मेरे पिता तू मेरी तरुणार्ध का अगुआ है । क्या यह ५  
 सदा लों अपना क्रोध रक्खेगा अथवा क्या यह सर्वदा लों उसे स्मरण करेगा  
 देख तू ने कहा और दुष्टता किई है और प्रचल हुई है ॥

और यसमियाह राजा के दिनों में परमेश्वर ने मुझ से कहा कि क्या तू ने देखा ६  
 है कि फिरे हुए इसराएल ने क्या किया है यह हर एक ऊँचे पर्वत पर चढ़ गई ७  
 है और हर एक घरे पेड़ तले और वहाँ छिनाला किया है । और इस के पीछे ८  
 कि उस ने ये सारी बातें किई मैं ने कहा कि मेरी ओर फिर परन्तु यह न फिरी  
 और उस की अविश्वासिनी वहिन यहूदाह ने देखा । और जब मैं ने देखा कि ९  
 फिरे हुए इसराएल के सारे छिनाले के सारे जो उस ने किया था मैं ने उसे त्यागा  
 और उसे त्यागपत्र दिया तौभी उस की अविश्वासिनी वहिन यहूदाह न डरी परन्तु  
 उस ने भी जाके छिनालकर्म किया । और ऐसा हुआ कि उस ने अपने निर्लज्ज १०  
 छिनालपने से देश को अशुद्ध किया और पत्थर और लकड़ी के साथ दण्डिचार  
 किया । और इस मय पर भी उस की अविश्वासिनी वहिन यहूदाह अपने सारे १०  
 मन से मेरी ओर न फिरी परन्तु ऊल से परमेश्वर कहता है ॥

और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि अविश्वासिनी यहूदाह से भी अधिक फिरे ११  
 हुए इसराएल ने आप को निर्दोष ठहराया है ॥

तू उत्तर को और जाके यह प्रचारके कह कि हे फिरे हुए इसराएल फिर आ १२  
 परमेश्वर कहता है और मैं तुझ पर क्रोधित न हूँगा क्योंकि मैं दयाल हूँ परमेश्वर  
 कहता है मैं सदा लों क्रोध न रक्खूँगा । केवल अपनी दुरार्ध को मान ले क्योंकि १३  
 तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर का अपराध किया और हर एक घरे पेड़ के तले  
 उपरियों से मनमंता चली और तुम ने मेरे शब्द को नहीं माना है परमेश्वर  
 कहता है । परमेश्वर कहता है कि फिरे हुए सन्तानो फिर आओ क्योंकि मैं १४  
 तुम्हारा पति हुआ हूँ और तुम्हें नगर में से एक को और गोष्ठी में से दो को  
 निश्कालके सैदून में लाऊँगा । और मैं अपने ही मन के समान तुम्हें गढ़रिये देऊँगा १५  
 और वे तुम्हें ज्ञान और समझ से चरावेंगे ॥

और परमेश्वर यों कहता है कि उन दिनों में रेखा होगा कि जब तुम लोग १६  
 देश में बढ़ोगे और फलोगे तब वे फिर न कहेंगे कि परमेश्वर के नियम की  
 संज्ञा और वह उन के मन में न आवेगा और वे उसे स्मरण न करेंगे और उस  
 की चिंता न करेंगे और वह फिर बनाया न जायेगा । उस समय यहसलम पर- १७  
 मेश्वर का सिंहासन कदावेगा और सारे जातिगण परमेश्वर के नाम के लिये  
 यहसलम में एकट्ठे होंगे और वे फिर अपने दुरे मन की कठोरता के समान  
 न चलेंगे ॥

उन्हीं दिनों में यहूदाह का घराना इसराएल के घराने में जायेगा और वे १८  
 उत्तर देश में से एकट्ठे होके इस देश में आवेंगे जो मैं ने तुम्हारे पितरों का अधि-  
 कार किया था ॥

और मैं ने कहा कि मैं तुम्हें वेटों में क्योंकर रक्खूँ और बांझित देश तुम्हें देऊँ १९



- ५ हम पर क्योंकि दिन ठलता है क्योंकि सांभ की काया बड़ गई है । उठो और रात को चढ़ जायें और उस के भयनों को नाश करें ॥
- ६ क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर ने कहा है कि पेड़ों को काटो और यरूसलम के विरुद्ध टीला उठाओ यह नगर पलटा पाने पर है उस के मध्य में हर प्रकार का अंधेरा है । जैसा सोता अपना पानी बहाता है तैसा वह अपनी दुष्टता फैलाती है उपद्रव और लूट उस में सुना जाता है शोक और मारपीट सदा मेरे साक्षात् है ॥
- ७ हे यरूसलम सुधर जा ऐसा न होवे कि मेरा मन तुझ से अलग हो जाय न हो कि मैं तुम्हें एक उजाड़ और सूना देश बनाऊँ ॥
- ८ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि वे इसराएल के उबरे हुए को लता की नाईं सर्वथा विनैंगे दाख के बटोरवैये की नाईं टोकरों में अपने हाथ फेर दे । मैं किस्से कहूँ और चिताऊँ जिसमें वे सुनें देखो उन का कान अश्रुतनः है यहाँ लों कि वे सुन नहीं सक्ते देखो परमेश्वर का वचन उन में वृथा बस्तु हुआ है वे उससे आनन्दित नहीं होते ॥
- ९ और मैं परमेश्वर के कोप से भगपूर हूँ सहने से शक गया हूँ मार्ग में लड़के पर उंडेल और युवा पुरुषों की मंडली पर भी पत्नी समेत पति भी और पुरानिये
- १० पूर्ण वय सहित धरे जायेंगे । और उन के घर और उन की भूमि स्त्री सहित औरों के हो जायेंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देश के वासियों पर मैं अपना हाथ बढाऊंगा ॥
- ११ क्योंकि उन के छोटे से उन के बड़े लों सब के सब कामाभिलाष में लिप्त हैं
- १२ और भविष्यवृत्ता से लेके याजक लों वे सब के सब झूठ कर्म करते हैं । और उन्हें ने मेरी जाति की पुत्री के घाय को यह कहिके बाहरी बाहर चंगा किया
- १३ है कि कुशल कुशल जब कुशल न था । क्या धिनित कार्य करके वे लज्जित हुए नहीं वे तनिक लज्जित न हुए वे लाज न कर सके इस लिये वे एक पर एक गिरेंगे परमेश्वर कहता है कि अपने पलटे के समय में वे गिराये जायेंगे ॥
- १४ परमेश्वर यों कहता है कि मार्गों पर खड़े होके देखो और पुराने पथों के विषय में पूछो कि वह उत्तम मार्ग कहां है और उसी में चलो और अपने जी में
- १५ जी पाओ परन्तु उन्हें ने कहा कि हम न चलेंगे । और मैं तुम पर पहरे बैठाऊंगा तुरही का शब्द सुनो परन्तु उन्हें ने कहा कि हम न सुनेंगे ॥
- १६ इस लिये हे जातिगणे सुनो और हे मंडली जो उन में है जान । हे पृथिवी सुन देखो मैं इस जाति पर घुराई लाता हूँ अर्थात् उन्हीं की भावना का फल क्योंकि उन्हें ने मेरे वचनों को न सुना और मेरी व्यवस्था जो है उसे उन्हीं ने त्यागा
- १७ है । मेरे लिये धूप सिखा से क्यों पहुंचाया जाय अथवा दूर देश से सुगन्ध द्रव्य तुम्हारी बलिदान की भेंटें ग्राह्य नहीं और तुम्हारी बलि भी मुझे प्रसन्न नहीं ॥
- १८ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं इस जाति के आगे ठोकरें धरता हूँ और पिता और पुत्र उन से ठोकर खायेंगे निवासी और उस का संगी एकट्ठे नष्ट होंगे ॥
- १९ परमेश्वर यों कहता है कि देखो उत्तर देश से एक जाति आती है और

को यह कहके बुलाया है कि तुम लोग कुशल प्राप्ति को यद्यपि तलवार प्राण लें पहुँचती है ।

उस समय यरुसलम के और इन लोगों के विषय में यह कहा जायेगा कि ११ मेरी जाति की पुत्री की और वन के चौगानों पर एक उष्ण पवन चलती है कुछ खुदरने और पावन करने को नहीं आती । एक पवन इन से अधिक पूर्ण मेरे १२ लिये वहेगी अब मैं भी उन का न्याय करूँगा । देख वह मेघों की नाईं चढ़ आता १३ है और उस के रथ व्यवहार की नाईं उस के छोड़े गिट्ट से भी वेगवन्त हैं दाय दम पर क्योंकि हम उजाड़े गये । हे यरुसलम अपने मन को दुष्टता से पवित्र कर जिस्ते १४ तू मुक्ति पावे कब नों तेरी घुराई की पुक्ति तुझ में बनी रहेगी । क्योंकि दान से १५ एक शब्द प्रगट करता है और इफरायम पछाड़ से घुराई प्रचारता है । जातिगणों १६ में प्रचारो देखा यरुसलम के विरुद्ध सुनाओ कि दूर देग से पछर आते हैं और यहूदाह के नगरों के विरुद्ध अपना शब्द उठाते हैं । खेत के खेतीवालों की नाईं १७ वे इस के विरुद्ध चारों ओर हैं क्योंकि वह मेरे विरुद्ध फिर गई है परमेश्वर कहता है । तेरी चाल और तेरे कर्म की कसाई ये हैं यही तेरी घुराई है क्योंकि १८ वह कड़वी है क्योंकि तेरे अंतःकरण लों पहुँची है ।

मेरी अंतर्द्वियां मेरी अंतर्द्वियां मेरे अंतःकरण की भीर्त पीड़ित हैं और मेरा १९ अंतःकरण मुझे व्याकुल करता है मैं चुप रह नहीं सक्ता इस लिये कि तू ने हे मेरे प्राण तुरही का शब्द और लड़ाई की ललकार सुनी है । नाश पर नाश सुनाया २० जाता है क्योंकि सारा देश नाश हुआ है मेरे तंत्र अचानक लुट गये हैं मेरे आभल पलमात्र में । कब लों मैं ध्वजा को देखूँ तुरही का शब्द सुनूँ । २१

क्योंकि मेरी जाति मूर्ख है उस ने मुझे नहीं पहिचाना वे मूर्ख बालक हैं २२ और वे अज्ञान हैं वे कुकर्म में दुष्टिमान परन्तु सुकर्म में अरुमक हैं ।

मैं ने पृथिवी को देखा और क्या देखता हूँ कि उजाड़ और सुनसान है २३ और आकाश की ओर और उंजियाला नहीं । मैं ने पर्वतों को देखा और क्या २४ देखता हूँ कि वे धर्यराये और सारे ढीले टिल गये । मैं ने देखा और क्या २५ देखता हूँ कि कोई मनुष्य नहीं और आकाशों के सारे पंखी उड़ गये । मैं ने २६ देखा और क्या देखता हूँ कि फलवन्त खेत अरण्य हो गया है और परमेश्वर के आगे उस के कोप के अति तपन के आगे उस के सारे नगर गिराये गये हैं ।

क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि सारा देश उजाड़ हो जायेगा तथापि मैं २७ समाप्त न करूँगा । इस बात के लिये पृथिवी विलाप करेगी और ऊपर आकाश २८ काले हो जायेंगे क्योंकि मैं कह चुका और ठाना है और न पछताऊँगा और न उस्ते हटूँगा । छोड़चढ़ों और धनुषधारियों के शब्द के सारे दर एक नगर भागता है वे २९ घने वन में जा रहे हैं और वे टीलों पर चढ़ गये हैं हर एक नगर त्यागा गया है और उन में कोई पुरुष वास नहीं करता । और लूटे जाने पर तू क्या करेगी ३० कि तू आप को लाल वस्त्र से विभूषित करेगी कि तू सोने के आभूषण से आप को सजारेगी कि तू अपनी आंखों में सुग्मा लगावेगी तथापि वृथा तू अपनी सुन्दरता प्रगट करती है तेरे जारों ने तुझ त्यागा है वे तेरे प्राण के मादक होंगे ।

था जहां अगिले समय में मैं ने अपना नाम स्थापन किया था और देखो मैं ने अपने इसराएल लोगों की दुष्टता के कारण उससे क्या किया है ॥

१३ और अब इस कारण कि तुम लोगों ने ये सारे कार्य किये हैं परमेश्वर कहता है और मैं तड़के उठ उठके तुम से कहा करता रहा परन्तु तुम ने न सुना और  
१४ मैं ने तुम्हें पुकारा परन्तु तुम ने उत्तर न दिया । इस लिये मैं इस मन्दिर से जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है जिस पर तुम लोग भरोसा करते हो और इस स्थान से जो मैं ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया वही कबूंगा जैसा मैं ने सैला से किया  
१५ है । और मैं तुम्हें अपने आगे से दूर कबूंगा जैसा मैं ने तुम्हारे सारे भाईबन्द इफरायम के सारे सन्तानों को दूर किया ॥

१६ पर तू जो है इस जाति के लिये प्रार्थना मत कर और उन के निमित्त प्रार्थना अथवा बिनती मत कर और मुझ से बिचवई की बिनती मत कर क्योंकि  
१७ मैं तेरी न सुनूंगा । क्या तू नहीं देखता कि यहूदाह के नगरों में और यहूसलम  
१८ की सड़कों में ये लोग क्या करते हैं । कि लड़के ईंधन बटोरते हैं और पितर आग बारंते हैं और स्त्री आटा गूंधती हैं जिस्तें स्वर्ग की रानी के लिये रोटी  
१९ बनावे और उपरी देवों के लिये तर्पण करें जिस्तें मुझे रिस दिलावे । क्या वे मुझे रिस दिलाते हैं क्या वे अपने ही मुंह की घवराहट के लिये आप ही नहीं रिसियावते हैं परमेश्वर कहता है ॥

२० इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो इस स्थान पर और मनुष्य पर और पशुन पर और चौगान के पेड़ों पर और भूमि के फलों पर मेरी रिस और मेरा कोप उंडेला जायेगा और वह बरेगा और खुताया न जायेगा ॥

२१ इसराएल का ईश्वर सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग  
२२ अपने बलिदानों में अपने बलि की भेंट मिलाओ और मांस खाओ । क्योंकि जिस दिन मैं तुम्हारे पितरों को मिस्र के देश में से निकाल लाया मैं ने उन्हें बलिदान और बलि की भेंट के निमित्त नहीं कहा और उन्हें आज्ञा न किई ।

२३ परन्तु इसी बात के लिये मैं ने उन्हें आज्ञा करके कहा कि मेरे शब्द को मानो और मैं तुम्हारे लिये ईश्वर होऊंगा और तुम मेरे लिये एक जाति होओगे और उस सारे मार्ग में चलो जो मैं तुम्हें आज्ञा कबूंगा जिस्तें तुम्हारा भला  
२४ होवे । परन्तु उन्होंने ने न सुना और न अपना कान झुकाया परन्तु अपने बुरे मन के परामर्श और कठोरता के समान चले और पीछे हटे और आगे न बढ़े ।

२५ जिस दिन से तुम्हारे पितर मिस्र के देश से निकल आये आज लो मैं ने तुम्हारे पास अपने सारे सेवक भविष्यद्वक्ताओं को प्रतिदिन तड़के उठ उठके भेजा है ।

२६ परन्तु उन्होंने ने मेरी न सुनी और न अपने कान झुकाये परन्तु अपने गले को कठोर किया और अपने पितरों से भी अधिक दुष्ट कर्म किया ॥

२७ अब जब तू यह सारी बातें उन्हें कहेगा वे तेरी न सुनेंगे और अब तू उन्हें  
२८ पुकारेगा वे तुझे उत्तर न देंगे । इस लिये तू उन से कहियो कि यह वह जातिगण है जिस ने अपने ईश्वर परमेश्वर के शब्द को न सुना और ताड़ना न मानी सच्चाई छट गई और उन के मुंह से जाती रही ॥

एक थड़ी जाति पृथिवी के अंतों से उभारी जायेगी । वे धनुष और भाँसे २३ को हाथ में लेंगे वे बड़े क्रूर हैं और दया न दिखायेंगे उन का शब्द समुद्र की नाईं हा हा करेगा और वे घोड़े पर चढ़ेंगे सो हे सैदून की पुत्री वे तेरे बिल्व योद्धाओं की नाईं प्रांती वांधेंगे ।

हम ने उस का समाचार सुना है हमारे हाथ दुर्बल हुए हैं पीड़ित स्त्री २४ की पीड़ा की नाईं दयाकुलता ने हमें पकड़ रख्या है । खेत में मत्त निकल २५ जाओ और राजमार्ग में मत्त फिरो क्योंकि बैरी के पास खन्न है चारों ओर भय । हे मेरी जाति की पुत्री टाट पहिन और राख में लोट दुलारे बालक के लिये २६ दाय दाय और अत्यन्त विलाप कर क्योंकि लुटेरा हम पर अचानक आयेगा ॥

मैं ने तुम्हें ठहराया है कि मेरी जाति के सोने के विषय में परीक्षा करो जब तू २७ उन की चाल को परखेगा तो जानेगा । वे सब के सब अति फिरे हुए हैं वे २८ कलंक लगाते हुए चलते हैं वे पीतल और लोहे हैं वे सब के सब पिगाड़नेवाले हैं । भ्रौंफनी जल गई सीसा भस्म हो गया ठलथैले ने व्यर्थ गन्नाया है क्योंकि २९ धुरे अलग नहीं हुए । लोग उन्हें खोटी चांदी कहेंगे क्योंकि ईश्वर ने उन्हें ३० त्यागा है ॥

### सातवां पर्व ।

यह वचन जो परमेश्वर की ओर से यह कहने हुए यसमियाह की पास पहुँचा । १ तू परमेश्वर के मन्दिर के फाटक में खड़ा हो और वहाँ हम वचन को प्रचारके २ कह कि हे सारे यहूदाह जो परमेश्वर की सेवा के लिये इन फाटकों से भीतर जाते हो परमेश्वर का वचन सुना । सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर ३ यों कहता है कि अपनी अपनी चालों और अपनी अपनी करणियों को सुधारो और मैं इस म्यान में तुम्हें बसाऊंगा । झूठी बातों पर भरोसा मत करो यह ४ कहके कि परमेश्वर का मन्दिर परमेश्वर का मन्दिर परमेश्वर का मन्दिर ये ही हैं ॥

क्योंकि जो तुम लोग अपनी अपनी चालों और अपनी अपनी करणियों को ५ निर्धार सुधारोगे और जो तुम मनुष्य में और उस के परोसी के मध्य में सर्वथा न्याय करोगे । यदि तुम लोग परदेजी और अनाथ और विधवा पर अंधेर न ६ करोगे और इस म्यान में निर्दोष लोह न बहाओगे और अपनी घटी के लिये उपरी देवों का पीछा न करोगे । तो मैं इस देश में जो तुम्हारे पितरों को दिया ७ इस म्यान में सनातन से सनातन लों बसाऊंगा ॥

देखा तुम झूठी बातों पर जो व्यर्थ हैं भरोसा रखते हो । क्या खोरी और ८ दरवा और परम्प्रीगमन करते हो और झूठी किरिया खाते हो और बयल के लिये धूप जलाने हो और उपरी देवों के पीछे जिन्हें तुम ने न जाना जाते हो । और ९ मेरे आगे इस मन्दिर में जो मेरे नाम से कहा जाता है आके खड़े-होगे और कहेंगे कि हम ने कुछकारा पाया कि ये सारे घिनित कार्य करें । यह मन्दिर जो १० मेरे नाम से प्रसिद्ध है क्या तुम्हारी दृष्टि में खोरी की माँद है परमेश्वर कहता है कि देखा मैं ने हाँ में ही ने देखा है । क्योंकि अब मेरे स्थान में जा जो सैला में १२

- उन की पत्नियाँ औरों को देखेंगी और उन के खेत उन्हें जो उन के अधिकारी होंगे क्योंकि छोटे से बड़े लों वे सर्वथा कामाभिलाषी भविष्यद्वक्ता से लेके
- ११ याज्ञक लों हर एक झूठा व्यवहार करता है । और उन्होंने ने मेरी जाति की पुत्री के घाव को बाहरी बाहर यह कहके चंगा किया है कि कुशल कुशल
- १२ जब कि कुशल न था । क्या वे अपने धिनित कर्म से लज्जित थे नहीं वे लज्जित होने न जानते थे इस लिये वे गिरनेवालों में गिरेंगे वे अपने दण्ड के समय
- १३ गिराये जायेंगे परमेश्वर कहता है । परमेश्वर कहता है कि मैं सर्वथा उन्हें नाश करूँगा लता में दाख न होंगे और गूलरपेड़ में गूलर न होंगे पत्ते भी सुरभायेंगे क्योंकि मैं ने ठहराया है कि ये जाते रहें ॥
- १४ हम क्यों चुपके बैठ रहे हैं आओ एकट्ठे होवें और दृढ़ नगरों में बैठें और वहाँ चुपके ठहरें क्योंकि हमारे ईश्वर परमेश्वर ने हमें चुप किया है और ब्रिय का अल हमें पीने को दिया है क्योंकि हम ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया
- १५ है । हम ने कुशल की बात जोही परन्तु कुछ भलाई नहीं है चंगा होने के समय के लिये और देख भय ॥
- १६ दान से उस के घोड़ों का फराना सुना जाता है उस के बलवन्त घोड़ों के हिनहिनाने के शब्द से सारा देश शर्यरा रहा है वे आये भी हैं और देश को और
- १७ सब को जो उस में हैं नगर और उस में के वासियों को खा गये हैं । क्योंकि देख मैं तुम्हारे विरुद्ध सर्पों को अर्थात् नागों को भेजता हूँ जो मोहे नहीं जा सक्ते और वे तुम्हें डसेंगे परमेश्वर कहता है ॥
- १८ हाय कि सुख मेरे शोक पर आवे मेरा मन मुक्त में मूर्छित है । देखो मेरी जाति की पुत्री का शब्द दूर देश से क्या परमेश्वर सैहून में नहीं क्या उस का राजा उस में नहीं तो उन्होंने ने क्यों मुझे अपनी खोदी हुई मूर्तिन से और अपनी
- २० उपरी व्यर्थता से खिजाया है । लवनी हो गई ग्रीष्म जाता रहा तथापि हम बचाये न गये ॥
- २१ अपनी जाति की लड़की के घाव के कारण से मेरा मन चूर हो रहा है मैं
- २२ बिलाप करता हूँ घबराहट ने मुझे ग्रासा है । क्या गिलियाद में औपध नहीं है वहाँ कोई वैद्य नहीं फिर मेरी जाति की लड़की का घाव क्यों नहीं अच्छा हुआ ॥

नवां पर्व ।

- १ हाय कि मेरा सिर जल हो जाता और मेरी आंखें आंसुओं का सोता जिसमें मैं अपनी जाति की लड़की के जूमे-हुओं के लिये बिलाप करूँ ॥
- २ हाय कि वन में मेरे लिये पथिकों का टिकाव होता जिसमें मैं अपनी जाति को छोड़के उन के पास से चला जाता क्योंकि वे सब परस्त्रीगामी हैं और बल
- ३ व्यवहारक की मंडली । और धनुष की नाईं उन्होंने ने अपनी जीभ खींची है झूठ से और सत्य के समान नहीं वे देश में बलवन्त हुए हैं क्योंकि वे दुष्टता से
- ४ दुष्टता में बढ़ गये हैं और मुझे नहीं जाना परमेश्वर कहता है । हर एक वन अपने अपने संगी से चौकस रहे और कोई भाई पर भरोसा न करे क्योंकि हर

अपने घाल मुँहा और फेंक दे और ऊँचे स्थानों में विलाप कर क्योंकि परमेश्वर ने अपने कोष की पीढ़ी को त्यागा और फेंक दिया है । परमेश्वर कहता है कि यहूदाह के मन्तानों ने मेरी दृष्टि से दुराई की है उन्होंने ने अपने धनियों को उस घर में जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है अपवित्र करने का स्थापन किया है । और उन्होंने ने अपने बेटे बेटियों को आग में जलाने को तुफान के ऊँचे ऊँचे स्थानों को जो हिन्नुम के बेटे की तराई में है स्थापन किया है जो मैं ने आज्ञा न की है और न मेरे लिये ग्राह्य था । इस लिये परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं कि वह तुफान और हिन्नुम के बेटे की तराई फिर न कटावेगी परन्तु जूक की तराई और वे तुफान में यहाँ लों गारुंगे कि स्थान न मिलेगा । और इन लोगों की लोथें आकाश के पंखियों के लिये और पृथिवी के पशुन के निषे भोजन होंगी और कोई उन्हें न टाँकेगा । और मैं यहूदाह के नगरों से और परमलस की महलों से आनन्द का शब्द और सुखविलास का शब्द दुल्हा और दुल्हिन का शब्द उठवाऊँगा क्योंकि देश उजाड़ हो जायेगा ॥

आठवां पत्र ।

परमेश्वर कहता है कि उस समय में वे यहूदाह के राजाओं की हठियों को और उन के राजपुत्रों की हठियों को और राजकों की हठियों को और भविष्य-वृत्तों की हठियों को और यरुमलस के निवासियों की हठियों को उन की समाधिन में से निकाल फेंकेंगे । और मृग्य और चाँद और सूर्य की सारी सेना के आगे उन्हें फैलावेँगे जिन से उन्हें ने प्रीति की है और जिन की सेवा की है और जिन के पीछे गये हैं और जिन की खोज की है और जिनमें दंडवत की है वे बटोरी न लायेंगी और गाड़ी न लायेंगी परन्तु वे भूमि पर के मल की नाई-होंगी । और मारे बघरे हुए जो इस घरे घराने से हर एक स्थान में रह लायेंगे जहाँ जहाँ मैं ने उन्हें खेदा है मृत्यु को जीवन से अधिक चाहेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है ।

तु उन से यह भी कह कि परमेश्वर कहता है जो शिरों से क्या फिर न उठेंगे अथवा जो जाना है सो फिर न आवेगा । यरुमलस के वे लोग मदा के धर्मत्याग से क्रिम लिये फिर गये उन्हें ने छल को दृढ़ता से पकड़ रक्खा है और फिर आने को नाह किया है । मैं ने ध्यान से सुना कि उन्हें ने ठीक न कहा और यह कहके कोई अपनी दृष्टता से नहीं पकड़ता कि मैं ने क्या किया है हर एक अपनी चाल पर चलता है जैसा छोड़ा लड़ाई से घुमता है । आकाश की लगलग भी अपने समय को जानती है और पिंडुकी और सुपावीना और मारस अपने आने की श्रुति को जानती हैं परन्तु मेरी जाति परमेश्वर के न्याय को नहीं वृक्षती है ॥

तुम शींकर करते हो कि हम युद्धिमान हैं और परमेश्वर की व्यवस्था हमारे पास है देख व्यर्थ लेखकों की झूठी लेखनी ने उसे झूठ बना रक्खा है । युद्धिमान जन छवरा गये विस्मित हुए और पकड़े गये देखो उन्हें ने परमेश्वर के वचन की अवज्ञा की है और उन में से किस बात की युद्धि है । इस लिये मैं



है बोल कि मनुष्यों की लोथ खाद की नाईं खेतों में गिरेंगी और लवैयों की मुठिया की नाईं जिन का कोई उठानेवाला न हो ॥

२३ परमेश्वर यों कहता है कि बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर बड़ाई न करे और बल-  
२४ वान अपने बल पर घमंड न करे धनवान अपने धन पर न फूले । परन्तु जो बड़ाई करता है सो मेरी समझ और ज्ञान रखने में बड़ाई करे कि मैं परमेश्वर पृथिवी पर दया और न्याय और सच्चाई का व्यवहार करता हूँ क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं इन बातों से आनन्दित हूँ ॥

२५ परमेश्वर कहता है कि देख वे दिन आते हैं कि मैं खतनः किये हुएों को  
२६ उन के साथ जिन का खतनः किया नहीं गया है दण्ड देऊंगा । सिस को और यहुदाह को और अरूम को और अस्मून के सन्तानों को और मोआव को और सब को जिन की दाढ़ी के कोने मुड़े हुए हैं जो वन में घास करने हैं क्योंकि सारे जातिगण अखतनः हैं और इसराएल के सारे घराने मन के अखतने हैं ।

दसवां पर्व ।

१ हे इसराएल के घराने जो वचन परमेश्वर ने तुम से कहा है सुनो । परमेश्वर यों कहता है कि अन्यदेशियों की चाल मत सीखो और स्वर्ग के चिन्तों से विस्मित मत होओ क्योंकि अन्यदेशी उन से विस्मित होते हैं । क्योंकि लोगों के ठहराये हुए कार्य पृथा ही हैं क्योंकि वे घन में पेड़ काटते हैं और कार्यकारी उसे बसूले से बनाता है । वे चांदी और सोने से उसे विभूषित करते हैं कीलों और हथौड़ियों में उसे दृढ़ करते हैं जिस्ते वह न डगमगावे । वे खजूरपेड़ की नाईं पोढ़ हैं परन्तु बोल नहीं सक्ते उन्हें सर्वथा ले जाने पड़ेगा क्योंकि वे चल नहीं सक्ते उन से मत डरो क्योंकि वे दुःख नहीं दे सक्ते और भलाई करने में वे अशक्त हैं ॥

६ हे परमेश्वर तेरे तुल्य कोई नहीं तू महान है और पराक्रम में तेरा नाम बड़ा है । हे जातिगणों के राजा तुम से कौन न डरेगा इस लिये कि तुम्हें योग्य है क्योंकि जातिगणों में और सारे बुद्धिमानों में और उन के सारे राज्यों में तेरे तुल्य कोई नहीं । और वे सर्वथा भट्टे और मूढ़ हैं उन की शिक्षा वृथा है वह काष्ठ है । पीटी हुई चांदी तरसीस से और सोना जफाज से पहंचाया जाता है सोनार के और ठठेरों के हाथों के कार्य हैं नीला और बैजनी उन का पहिरावा है वे सब के सब गुणी के कार्य हैं । परन्तु परमेश्वर सत्य ईश्वर वही जीवता ईश्वर और सना-  
१० तन का राजा है उस के कोप से पृथिवी धर्यरावेगी और जातिगण उस की जल-  
११ जलाहट को नहीं सह सकेंगे । उन्हें इस रीति से कहो कि जिन देवों ने स्वर्ग और पृथिवी को नहीं बनाया वे पृथिवी पर से और इन स्वर्गों के तले से नष्ट  
१२ होंगे । उस ने अपनी सामर्थ्य से पृथिवी को सृजा है अपनी बुद्धि से जगत को  
१३ स्थिर किया और अपनी समझ से स्वर्गों को फैलाया है । जब वह अपने शब्द को बठाता है तब जल का कोलाहल आकाश में होता है और पृथिवी के सिंघानों से मेघों को उठाता है वह मेघ के साथ बिजुली निकालता है और अपने भंडारों से  
१४ पवन निकालता है । हर एक मनुष्य अपनी समझ से मूर्ख होता है हर एक कार्य-

एक भाई निश्चय कूल से व्यवहार करेगा और हर एक संगी दीप लगाता  
 फिरेगा । और हर एक जन अपने अपने संगी को कूलगा और ये सब सब न ५  
 कहेंगे उन्हें ने अपनी जीभ को झूठ बोलना सिखाया है और पाप करने करते  
 थक गये । तेरा निवासस्थान कपट के मध्य में है कूल के सारे मुखे आगे में ६  
 उन्हें ने नाह किया है परमेश्वर कहता है ।

इसी लिये सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं उन्हें पिछलाके ७  
 जांचूंगा कि क्योंकर अपनी जाति की लड़की के विषय में व्यवहार करें । उन ८  
 की जीभ घातक वाण के समान है वह कपट से वचन बोलती है वह अपने  
 संगी से कुशल की बात सुँह से कहेंगी परन्तु अपने मन में उस की घात में  
 बैठती है । परमेश्वर कहता है कि क्या इन बातों के लिये मैं उन्हें दण्ड न ९  
 देऊंगा और मेरा प्राण ऐसी जातिगण से पलटा न लेगा । मैं यहाँ पर रोना १०  
 पीटना डालूंगा और चौराग की चराई पर विलाप क्योंकि ये यहाँ लों जल गये  
 कि कोई उस में से नहीं जाता और ठार का शब्द नहीं सुना जाया परन्तु  
 आकाश के पंछी और पशु भाग गये थे जाने रहे । और मैं यक्षपतन का दूध ११  
 और गीदड़ों की माँद बनाऊंगा और यहूदाह के नारों का उखाड़ करूँगा ऐसा  
 कि कोई निवासी उस में न रहेगा ।

द्युष्टिमान कौन है जो इसे दूके और परमेश्वर के सुँह से फिले कहा कि यह १२  
 प्रगट कर सके देश किस लिये नाश हुआ है और अरम्य की नाई यहाँ लों जल  
 गया है कि कोई उस में से नहीं जाता ।

और परमेश्वर ने कहा इस कारण कि उन्हें ने मेरी व्यवस्था को रखा है १३  
 जो मैं ने उन के आगे रखी और मेरे शब्द को नहीं माना और उस के समान  
 नहीं चले । परन्तु अपने अपने मन की कठोरता के पीछे चले गये और यज्जलीन १४  
 के पीछे जो उन के पितरों ने उन को सिखाया । इस लिये सेनाओं का परमे- १५  
 श्वर और इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस जाति को नागदीना  
 खिलाऊँगा और विपजल पीने को देऊँगा । और मैं उन्हें जातिगणों में किंग्म भिन्न १६  
 करूँगा जिन्हें ने उन्हें ने उन के पितरों ने जाना है और मैं उन के पीछे तल-  
 चार भेजूँगा जय लों मैं उन्हें सिटा न डालूँ ।

सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मोचे और खिलापिनियों को दुनाओ १७  
 और ये आये और गुणकारनियों को दुनया भेज और ये आये । और ये शीघ्र १८  
 इस पर विलाप आरंभ करें जिन्हें हमारी आंग्रे आंनू यहाँ और हमारी पानकें  
 जल डालें । क्योंकि विलाप का शब्द मैहन से सुना गया है कि हम कौन नष्ट हुए १९  
 हैं हम अति घबरा गये हैं क्योंकि हम ने देश को छोड़ दिया है क्योंकि उन्हें ने  
 हमारे निवासों को छा दिया है । इस लिये हे म्त्रियों परमेश्वर का वचन सुनो २०  
 और तुम्हारे कान उस के सुँह की बात ग्रहण करें और अपनी लड़कियों को विलाप  
 सिखाओ और हर एक अपने अपने संगी को विलाप सिखाये । क्योंकि गुरगु २१  
 हमारी खिड़कियों में से चटु आई है और हमारे भवनों में पैठी है जिन्हें लड़क  
 में से बालक को और चौकों में से तरुणों को काट डाले । परमेश्वर यों कहता २२

न अपना कान भुंकाया पर हर एक अपने अपने दुष्ट मन की कठोरता पर चला इस लिये मैं इस बाबा की सारी धमकियों को उन पर लाया जो मैं ने उन्हें पालने को आज्ञा किई परन्तु उन्होंने ने न पाला ॥

८ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि यहूदाह के मनुष्यों में और यरूशलम के १० आसियों में कुयुक्ति पाई गई है । वे अपने प्राचीन पितरों की बुराईयों में फिर पलट गये हैं जिन्हें ने मेरे बचन पालने को नाह किया है और वे उपरी देवों के पीछे उन की सेवा करने को गये हैं इसराएल के घराने और यहूदाह के घराने ने मेरी बाबा को भंग किया है जो मैं ने उन के पितरों से किई थी ॥

११ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं उन पर विपत्ति लाने पर हूँ १२ जिस्से वे अपने को छुड़ा न सकेंगे और यद्यपि वे मेरी प्रार्थना करें तथापि मैं उन की न सुनूंगा । और यहूदाह के नगर और यरूशलम के निवासी जायेंगे और उन देवों की प्रार्थना करेंगे जिन के लिये वे धूप जलाते हैं परन्तु उन की १३ विपत्ति के समय में वे उन्हें कुछ न बचावेंगे । क्योंकि हे यहूदाह तेरे नगरों की गिनती के समान तेरे देव हुए हैं और यरूशलम की सड़कों की गिनती के समान एक लज्जित वस्तु के लिये वेदी और बअल के लिये धूप जलाने को वेदी तुम ने १४ स्थापन किई हैं । इस लिये तू इस जाति के लिये प्रार्थना मत कर और न उन के निमित्त बिनती अथवा प्रार्थना कर क्योंकि उन की विपत्ति के समय में मैं उन की प्रार्थना न सुनूंगा ॥

१५ मेरे घर से मेरी प्रिया का क्या काम जब सों यह बहुतों से दुष्टता करती है और पवित्र मांस तुझ से वीत जायेगा क्योंकि तू अपनी विपत्ति के समय में १६ आनन्द करेगी । परमेश्वर ने तेरा नाम हरी जलपाई और सुन्दर फलवन्त पेड़ रक्खा था उस ने बड़े हुल्लड़ के शब्द से उस पर आग जारी है और उस की १७ डालियां तोड़ी गईं । और सेनाओं के परमेश्वर ने जिस ने तुझे रोपा तुझ पर बुराई उछारी है उस बुराई के लिये जो इसराएल के घराने और यहूदाह के घराने ने अपने बिरुद्ध किई कि मुझे रिस दिलाने का बअल के लिये धूप जलाया ॥

१८ और परमेश्वर ने मुझ पर प्रगट किया और मैं ने जाना तब तू ने उन का १९ व्यवहार मुझे दिखाया । क्योंकि मैं धरैले मेमे की नाईं था जो घात के लिये पहुंचाया जाता है पर मैं ने न जाना कि उन्होंने ने मेरे बिरुद्ध यह कहके युक्ति खांधी थी कि फल सहित पेड़ का नाश करें और जीवतों के देश में से उसे काट २० डालें जिस्ते उस का नाम फिर न लिया जाये । परन्तु हे सेनाओं के परमेश्वर जो धर्म से बिचार करता है जो गुदीं और मन को जांचता है मैं तेरा बैर लेना उन पर देखूं क्योंकि मैं ने अपना वाद तेरे आगे धरा है ॥

२१ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि अनतात के मनुष्यों के बिषय में जो यह कहके तेरे प्राण के ग्राहक हैं परमेश्वर के नाम से भविष्य मत कह जिस्ते २२ तू हमारे हाथ से मारा न जाये । इस कारण सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं उन पर दण्ड बिचार करने पर हूँ तरुण मनुष्य तलवार से मारे २३ जायेंगे और उन के बेटे बेटियां अकाल से मरेंगे । और उन में से कोई न

कारी मूरत से लजा जाता है क्योंकि उस की काली हुई मूर्ति मिट्या है और उन में कुछ श्वास नहीं । वे श्वासे हैं भूल चक्र के कार्य अपने पलटा के समय में वे १५ नाश होंगे । यशकृष्ण का भाग उन की नाई नहीं है क्योंकि वह सर्वलोक का कर्ता १६ और इसराएल उस के अधिकार का दण्ड है उस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है ॥

हे गढ़ के निवासी देश से अपनी सामग्री को बटार । क्योंकि परमेश्वर १७ यों कहता है कि देखो मैं अब की बार देश के निवासियों को कैलवासों में माहंगा और मैं उन्हें यहां लों सकें कहंगा कि वे पकड़े जायेंगे ।

मेरी चाट के कारण टाय मुझ पर मेरा घाव दुखता है परन्तु मैं ने कहा १८ है कि निश्चय यह कष्ट है तथापि मैं उसे सहंगा । मेरा तंत्र उजाड़ पड़ा है और २० मेरी सारी रस्मियां टूटी हैं मेरे बेटे मुझ से मे निकल गये और नहीं हैं फिर मेरा तंत्र खड़ा करने को अबदा ओभलेों को हांगने को कोई नहीं । क्योंकि चरवाहे २१ पशुवत हुए और उन्हें ने परमेश्वर को नहीं हंडा इस लिये वे भासपयान न हुए और उन के मारे कुंड छिन्न भिन्न हुए हैं । देखो धूम का शब्द आया है यहूदाह के २२ नगरों को उजाड़ने और गीदहों का निवास करने को उत्तर देश से एक बड़ा जोलाहल पड़ा आता है ॥

हे परमेश्वर मैं जानता हूं कि मनुष्य की चाल आप से नहीं है और चलने- २३ वाले मनुष्य से नहीं कि अपने डग को सुधारे । हे परमेश्वर मुझे ताड़ना कर २४ परन्तु बिचार से अपने क्रोध में नहीं न दोवे कि मुझे चूर कर डाले । अन्यदेशियों २५ पर जिन्होंने ने मुझे नहीं जाना है अपना कोप उठेल और घरानों पर जिन्होंने ने मेरे नाम की प्रार्थना नहीं की है क्योंकि उन्होंने ने यशकृष्ण को ख्याया और उन्होंने ने उसे भक्षण करके भस्म किया है और उस के निवासस्थान को उजाड़ा है ॥

ग्याहवां पर्व ।

परमेश्वर का वचन यह कहते हुए परमियाह के पास आया ॥ १  
कि इस वाचा के वचन मुनो और यहूदाह के मनुष्यों से और यहूदलम के २  
निवासियों से कहो । और तू उन से कह कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर ३  
यों कहता है कि वह जन नापित है जो इस वाचा के वचनों को न सुनेगा ।  
जो मैं ने तुम्हारे पितरों से उस दिन कदा तब मैं उन्हें मिस देश से नोहे के ४  
भट्टे से यह कहके निकाल लाया कि मेरा शब्द मुनो और मेरी सारी आज्ञा  
पालन करो सो तुम मेरे लिये एक जाति होओगे और मैं भी तुम्हारा ईश्वर  
होऊंगा । जिस्त मैं अपनी उस किरिया को पूरी करूं जो मैं ने तुम्हारे पितरों ५  
से खाई है कि मैं दूध और मधु से बढ़ते हुए देश उन्हें देऊं जैसा आज के  
दिन है तब मैं ने उत्तर देके कहा कि हे परमेश्वर ऐसा ही होवे ॥

और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि इन सारी बातों को यहूदाह के नगरों ६  
में और यहूदलम की मढ़कों में प्रचारके कह कि इस वाचा के वचनों को मुनो  
और उन्हें पालन करो । क्योंकि मैं ने तुम्हारे पितरों को बड़े यत्न से चिताया ७  
उस दिन से कि उन्हें मिस देश से निकाल लाया आज लों मैं ने तहके उठके  
उन्हें चिता चिताके कहा कि मेरे शब्द को मुनो । परन्तु उन्होंने ने न माना और ८

- का निस्तारक तू देश में क्यों परदेशी को समान होता है और पापिक की नाईं जो रात भर के टिकने के लिये बिठाता है । तू क्यों व्याकुल मनुष्य के समान और वीर की नाईं है जो खचाने का पराक्रम नहीं रखता है परमेश्वर तू तो हमारे मध्य में है और हम तेरे नाम से पुकारे जाते हैं तू हमें मत छोड़ ।
- १० परमेश्वर ने इस जाति से यों कहा है कि वे भ्रमने ऐसा चाहते हैं उन्हें ने अपने पांव को नहीं रोका है इस लिये परमेश्वर उन्हें ग्रहण नहीं करता अब वह उन की बुराई को स्मरण करेगा और उन के पापों का लेखा लेगा ।
- ११ और परमेश्वर ने सुभ से कहा कि इस जाति की भलाई के लिये प्रार्थना मत कर । वे जब व्रत करें तब मैं उन की प्रार्थना न सुनूंगा और जब वे बलिदान की अथवा मांस की भेंट चढ़ावें तो मैं उन्हें ग्रहण न करूंगा क्योंकि तलवार से और अकाल से और मरी से उन्हें मिटा डालूंगा ॥
- १२ तब मैं ने कहा कि हाय हे प्रभु परमेश्वर देख भविष्यद्वक्ते उन से कहते हैं कि तुम तलवार न देखोगे और तुम पर अकाल न पड़ेगा क्योंकि निश्चय मैं तुम्हें इस स्थान में कुशल देखूंगा ।
- १३ तब परमेश्वर ने सुभ से कहा कि भविष्यद्वक्ते मेरे नाम से झूठ भविष्य कहते हैं मैं ने उन्हें नहीं भेजा और न उन्हें आज्ञा किई और न उन से कहा वे झूठा दर्शन और गणकता और वृथा और अपने ही मन की कुटिलता तुम पर प्रगट करते हैं । इस लिये उन भविष्यद्वक्ताओं के विषय में जो मेरे नाम से भविष्य कहते हैं यद्यपि मैं ने उन्हें नहीं भेजा परन्तु वे आप से आप कहते हैं कि इस देश पर तलवार और अकाल न होगा परमेश्वर यों कहता है कि तलवार १४ और अकाल से वे ही भविष्यद्वक्ता नाश होंगे । और जिन लोगों से वे भविष्य कहते हैं सो अकाल और तलवार के द्वारा से यहसलम की सड़कों में फँके जायेंगे और उन्हें और उन की पत्नियों को और उन के बेटे बेटियों को गाड़ने को कोई न होगा और मैं उन्हीं की दुष्टता उन पर उडेलूंगा ॥
- १५ और तू उन से यह वचन कह कि मेरी आंखें रात दिन आंसू टपकाया करें और न थमें क्योंकि मेरी जाति की कुंवारी लड़की ने बड़ा दुःख पाया है अति पीड़ित चोट पाई है । यदि मैं बाहर खेत में जाऊं तो उन्हें देखता हूँ कि तलवार से जूझे हैं और जब नगर में भीतर आऊं तो क्या देखता हूँ कि अकाल से गले हुए तथापि भविष्यद्वक्ता और याजक भी देश में फिरते हैं और सुध नहीं रखते ॥
- १६ क्या तू ने यहूदाह को सर्वथा त्यागा है क्या तेरा मन सैहून से घिनाया है तू ने हमें ऐसा क्यों मारा है जिस का कुछ उपाय नहीं हम कुशल की बात जोहते हैं और भलाई नहीं है और चंगा होने के समय के लिये परन्तु भय देखता हूँ । २० हे परमेश्वर हम अपनी दुष्टता और अपने पितरों की बुराई मान लेते हैं क्योंकि २१ हम लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप किया है । तू अपने नाम के लिये हमारा अपमान मत कर अपने विभव के सिंहासन का निरादर मत कर स्मरण कर और अपने २२ नियम को जो हम से है मत तोड़ । क्या अन्यदेशियों के वृथाओं में कोई है जो

वचेगा क्योंकि मैं अनतात के मनुष्यों पर दुराई और उन के पलटे का धरस लाऊंगा ।

यारहवां पर्व ।

हे परमेश्वर जब मैं तुझ से अपवाद कहूं तू घस्मी है तथापि विचार १  
के विषय मैं मैं तुझ से संवाद कहूंगा कि दुष्टों का मार्ग क्यों भाग्यवान होता है  
क्या सब के सब चैन में हैं जो कल से व्यवहार करते हैं । तू ने उन्हें लगाया २  
उन्होंने ने लड़ भी पकड़ी है वे बड़ गये और फल लाये तू उन के सुंद के पास है  
परन्तु उन के मन से दूर है । परन्तु हे परमेश्वर तू ने मुझे जाना है तू मुझे देखेगा ३  
और जांचने से तू ने मेरा मन अपनी ओर पाया है उन्हें घात के लिये भेड़ों की  
नाईं निकाल और घात के दिन के लिये उन्हें बलग कर । उस में के घासियों ४  
की दुष्टता के सारे कय लों देश विनाश करेगा और हर एक खेत की घास भुरा  
जायेगी पशु पंछी तो मिट गये क्योंकि उन्होंने ने कहा है कि वह हमारा अन्त न  
देखेगा ।

यदि पगइत के संग दौड़ने में उन्होंने ने तुझे बकाया फिर तू घोड़ों के साथ ५  
क्योंकर दौड़ेगा और यद्यपि कुशल के देश पर तुझे भरोसा हो तथापि यरदन के  
बाढ़ में तू क्या करेगा । जब कि तेरे भाईयन्तों ने भी और तेरे पिता के घराने ६  
अर्थात् इन्हीं ने भी तुझ से कल का व्यवहार किया है और इन्हीं ने भी लल-  
कारते ललकारते तेरा पीछा किया है उन की प्रतीति मत कर जा वे तुझ से  
मित्रता से घात करें ॥

मैं ने अपने घर को त्यागा है मैं ने अपने अधिकार को छोड़ दिया है अपने ७  
प्राण के प्रिय को उस के वैरियों के हाथ में दिया है । मेरे लिये मेरा अधिकार ८  
उन में के मित्र की नाईं हुआ है उस ने मेरे विरुद्ध अपना शब्द बकाया है इस  
लिये मैं ने उसे घिन किया । क्या मेरा अधिकार मेरे लिये वनपशु हां लकड़वाघे ९  
के समान हुआ वनपशु उस के विरुद्ध चारों ओर से हैं वे खेत के सारे पशुओ  
एकट्टे छोके खाने आओ । बहुत से चरवाहों ने मेरी दाख की धारियों को नष्ट १०  
किया इन्हीं ने मेरे अधिकार को पांव तले रेंडा है और मेरा सुन्दर अधिकार  
उजाड़ अरण्य कर डाला है । इन्हीं ने उसे एक उजाड़ बनाया है वह उजाड़ ११  
छोके मेरे लिये रोता है सारा देश उजाड़ हुआ है तथापि कोई उसे नहीं  
साधता है । उन के सारे ऊंचे स्थानों पर लुटेरे आये हैं क्योंकि तलवार परमेश्वर १२  
के ठहराने से भक्षण करती है देश की एक ओर से दूसरी ओर लों किसी कां  
कुशल नहीं है । इन्हीं ने गोहूँ बोये हैं पर कांटे लगे हैं वे परिश्रम करते हैं १३  
परन्तु लाभ न पावेंगे और वे परमेश्वर के बड़े कोप के सारे तुम्हारे अनाज से  
लज्जित होंगे ॥

मेरे सारे घुरे परासियों के विषय में जो अधिकार को छोड़ते हैं जो मैं ने इस- १४  
राएल अपने लोगों का अधिकार किया है परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं  
उन्हें उन के देश से उखाड़ डालूंगा और यहूदाह के घराने को उन के मध्य में से  
उखाड़ूंगा ॥



१६ ले जा जाम रख तेरे ही कारण निन्दित हुआ हूँ । तेरे वचन पाये गये और मैं ने उन्हें धारण किया और तेरे वचन मेरे मन के लिये आनन्द और मगनता थे  
 १७ क्योंकि हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मैं तेरे नाम से पुकारा जाता हूँ । मैं सुख विलासियों में नहीं बैठा और तेरे कोप के कारण आनन्द न किया मैं अकेला  
 १८ बैठा इस कारण कि तू ने मुझे जलजलाहट से भर दिया । मेरा शोक निरन्तर क्यों हुआ है और मेरा घाव मारु है जो चंगा नहीं होता क्या तू मेरे लिये सर्वदा घोखे के पानियों की नाई होगा जिन का ठिकाना नहीं ।

१९ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि यदि तू फिर तो मैं तुझे फिराऊंगा और तू मेरे आगे खड़ा होगा और यदि तू बहुमूल्य को तुच्छ से अलग करेगा तो तू मेरे मुँह के समान होगा और ये तेरी और फिरें और तू उन की और न फिरना ।  
 २० और मैं तुझे इन लोगों के सम्मुख पीतल की एक दृढ़ भीत बनाऊंगा जब वे तुझ से लड़ेंगे तो तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि तुझे  
 २१ बचाने का और तुझे कुड़ाने का मैं तेरे साथ हूँगा । और दुष्टों के हाथ से मैं तुझे कुड़ाऊंगा और मैं तुझे भयंकरों की मुट्ठी से निकाल लेऊंगा ॥

सोलहवां पृष्ठ ।

१ और परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुँचा । कि तू इस स्थान में अपने लिये पत्नी मत कर और नूँ वेटे वेटियां तेरे लिये होवें । क्योंकि वेटों और वेटियों के विषय में जो इस स्थान में उत्पन्न हुए हैं और उन की माताओं के विषय में जो उन्हें जनीं और उन के पिताओं के विषय में जिन से वे उत्पन्न हुए हैं परमेश्वर  
 २ कहता है । कि वे मारु रोगों से मरेंगे उन के लिये बिलाप न किया जायेगा न वे गाड़े जायेंगे वे भूमि पर खाद होंगे और तलवार से और अकाल से नाश किये जायेंगे और उन की लोथें आकाश के पंखी और खनैले पशुओं के भक्षण के लिये होंगी ॥

३ क्योंकि परमेश्वर ने यों कहा है कि बिलाप के घर में मत पैठ और उन के बिलाप और शोक करने का मत जा क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपना  
 ४ कुशल और कृपा प्रेम और कोमल दया इस जाति से उठा लिई है । और बड़े छोटे इस देश में मरेंगे वे गाड़े न जायेंगे और कोई उन के लिये बिलाप न करेगा और कोई उन के लिये आप को न काटेगा न कोई उन के लिये आप को मुँड़ावेगा ।  
 ५ और मृतकों के लिये उन्हें शांति देने का बिलाप मैं उन के निमित्त रोटी न तोड़ूँगी और उन की माता अथवा पिता के लिये शांति का कटोरा न दूँगी ॥

६ और उन के साथ बैठके खाने पीने का जेवनार के घर मत जाइयो । क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देख तुम्हारी आंखों के आगे और तुम्हारे दिनों में मैं इस स्थान से आनन्द का शब्द और हर्ष का शब्द और दुल्हे का शब्द और दुल्हन का शब्द मिटाने पर हूँ ॥

७ और सेवा होगा कि जब तू इस जाति पर ये बातें प्रगट करेगा और वे तुझ से कहें कि परमेश्वर ने क्यों यह सारी बड़ी बुराई हमारे विरुद्ध उच्चारि है और हमारी बुराई क्या और हमारा पाप क्या जो हम ने अपने ईश्वर परमेश्वर के विरुद्ध किया है ।

करमा सकता है अथवा आकाश भङ्गी दे सकता है हे परमेश्वर हमारे ईश्वर क्या तू यह नहीं है इस लिये हम तेरी याद जोहेंगे क्योंकि तू ही ने इन घातों को किया है ।

पंदरहवां पद्य ।

और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि यद्यपि मूसा अथवा समूएल मेरे आगे १  
थड़े होवें तौभी इन लोगों पर कृपा करने को मेरा मन नहीं झुकता मेरे आगे  
से उन्हे दूर कर कि वे खले जायें । और यों होगा कि जब वे तुझ से कहें कि २  
हम किधर जायें तो उन से कहियो कि परमेश्वर यों कहता है कि जो मृत्यु के  
लिये हैं सो मृत्यु को और जो तलवार के लिये हैं सो तलवार को और जो  
अकाल के लिये हैं सो अकाल को और जो बंधुआई के लिये हैं सो बंधुआई  
को । और मैं उन के विन्हे चार प्रकार ठहराऊंगा परमेश्वर कहता है घात ३  
करने को तलवार और घसीटने को कुत्ते और भक्षण और नाश करने को आकाश  
के पंक्तिओं को और वनैले पशुओं को । और मैं उन्हे पृथिवी के सारे राज्यों में ४  
भ्रमण के लिये सौंपूंगा घट्टाघट के राजा द्विजकिषाह के बेटे मुनस्सी के लिये उस  
के कारण जो उस ने यस्सलम में किया ।

क्योंकि हे यस्सलम तुझ पर कौन मया करेगा और कौन तेरे साथ बिनाश ५  
करेगा और कौन अलग जाके तेरा कुशल जेस पूछेगा । तू ने मुझे त्यागा है पर- ६  
मेश्वर कहता है तू पीछे घट गई इस लिये तुझे नाश करने को मैं ने तेरे विरुद्ध  
अपना हाथ बढ़ाया है जमा करने से मैं बच गया हूं । इस लिये मैं उन्हे मूप से ७  
भूमि के फाटकों में फटकूंगा और मैं उन्हे विनाश करूंगा मैं अपनी जानि को  
नाश करूंगा कि वह अपने मार्गों से नहीं फिरी । उन की विधवा समुद्र की ८  
छालू से भी अधिक मेरे आगे बढ़ाई गई हैं मैं साना और तरुण पर मध्यान्ह  
में एक नावक लाया हूं मैं ने उन पर अचानक एक बैरी और भय पहुंचाया है ।  
जो सात जनी है सो दुबल हुई है और प्राण त्यागा है दिन रहते उस का सूर्य ९  
अस्त हुआ है वह लजाती और घबराती है उन्हे बैरी के मुँह के आगे मैं उन  
के बच्चे हुए तलवार को सौंपूंगा परमेश्वर कहता है ॥

हे मेरी माता मुझ पर संताप कि तू मुझे एक विशादी पुत्रप जनी है और सारे १०  
देश में एक भगड़ालू पुत्रप जनी है मैं ने व्याज के लिये कृण नहीं दिया न उन्हीं  
ने मुझ से व्याज लिया तथापि वे सब मुझ पर साप करते हैं ॥

परमेश्वर ने कहा निश्चय मैं भलाई के लिये तुझे बचा रखूंगा निश्चय दुराई ११  
के समय में और दुःख के समय में बैरी को तुझ से विन्ता करवाऊंगा । क्या मोहा १२  
उत्तर के लोहे और पीतल को तोड़ेगा । तेरी संपत्ति और तेरे भंडार में बिना मोल १३  
तेरे सारे पापों के कारण तेरे सारे मिथानों में लूट के निमित्त देऊंगा । और मैं उन्हे १४  
तेरे शत्रुन के साथ एक देश में जिसे तू ने नहीं जाना है पहुंचाऊंगा क्योंकि एक  
आग मेरे क्रोध में धरी है जो तुम पर जलेगी ॥

हे परमेश्वर तू जानता है मुझे स्मरण कर और मेरी भेंट को आ और मेरे १५  
सतानेवालों से मेरे लिये पलटा ले और अपने धोरज की अधिकार में मुझे मत

हे और मींस को अपनी मुजा खनाता है और जिस का मन परमेश्वर से हट  
ई जाता है । क्योंकि वह अरुण्य के भुराये हुए पेड़ की नाईं होगा जो भलाई आने से  
अचेत है परन्तु वह सूखे स्थान और खारी भूमि में रहेगा जहां निवासी नहीं ।  
७ धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है और जिस का विश्वास  
८ परमेश्वर है । क्योंकि वह उस पेड़ के तुल्य होगा जो पानी के लग लगाया जाय  
जो धारा के पास अपनी जड़ फैलाता है और घाम आने से नहीं डरता परन्तु  
उस का पत्ता हरा होगा और अवृष्टि के खरस में वह निश्चिन्त है और फल फलने  
में चूक नहीं करता ॥

९ मन सारी वस्तुन से अधिक क्ली और असाध्य है उसे कौन जान सक्ता है ।  
१० मैं परमेश्वर मन को जांचता हूं और गुर्दों को परखता हूं जिस्ते हर एक जन को  
उस की चाल के समान और उस की करणी के फल के तुल्य देखूं ॥

११ जैसा तीतरी उपरी अंडे को सेवती है तैसा ही जो अधर्म से धन प्राप्त करता  
है सो अपने दिनों के मध्य में उसे छोड़ देगा और अपने अन्त में मूर्ख होगा ॥

१२ तेजस्वी सिंहासन आरम्भ से हमारा पवित्र स्थान है । हे परमेश्वर इसराएल  
की आशा सब जो तुम्हें त्यागते हैं सो लज्जित होंगे और वे सब जो मुझ से  
फिर जाते हैं धूल पर टांके जायेंगे क्योंकि उन्होंने ने अमृतबलों के सोते परमेश्वर  
को त्यागा है ॥

१३ हे परमेश्वर मुझे चंगा कर और मैं चंगा हूंगा मुझे बचा और मैं बचूंगा क्यों-  
१४ कि तू मेरी स्तुति है । देख वे मुझ से कहते हैं कि परमेश्वर का बचन कहां है  
१५ वह अभी आवे । और मैं तेरी अगुआई से चरवाहा होने से न हटा और मैं ने  
बिपत्ति का दिन न चाहा तू जानता है जो मेरे हांठों से निकला सो तेरे आगे  
१६ हुआ है । तू मेरे लिये भय मत हो बिपत्ति के दिन तू मेरा शरण है । मेरे सताऊ  
१७ लज्जित होवे परन्तु मुझे लज्जित होने न दे वे बिस्मित हो जायें परन्तु मुझे बिस्मित  
होने न दे बिपत्ति का दिन उन पर ला और दूने नाश से उन्हें नाश कर ॥

१८ परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि लोगों के सन्तानों के फाटकों में जिस में से  
यहूदाह के राजा बाहर भीतर आया जाया करते हैं और यरुसलम के सारे फाटकों  
२० में खड़ा हो । और उन से कह कि हे यहूदाह के राजा और सारे यहूदाह और  
यरुसलम के सारे बासियो जो इन फाटकों में से जाते हो परमेश्वर का बचन  
२१ सुनो । परमेश्वर यों कहता है कि तुम आप आप से चौकस रहो और विश्राम के  
२२ दिन में बोझ मत ढोओ और यरुसलम के फाटकों में से मत लाओ । और  
विश्राम दिन में अपने अपने घर से बोझ मत ले जाओ और कुछ व्यवहार मत  
२३ रखो । पर उन्होंने ने न सुना और न अपना कान लगाया परन्तु अपनी गरदन  
को कठोर किया जिस्ते न सुने और उपदेश न मारें ॥

२४ परमेश्वर कहता है कि यदि निश्चय तुम लोग मेरी सुनोगे यहां लों कि विश्राम  
दिन में इस नगर के फाटकों में से कोई बोझ न लावे और बिना व्यवहार करने  
२५ से विश्राम दिन को पावन रखे । तो इस नगर के फाटकों से राजा और अध्यक्ष

तब तू उन से कहियो कि परमेश्वर कहता है इस कारण कि तुम्हारे पितरों ११  
ने मुझे त्यागा है और उपरी देवों के पीछे गये हैं और उन की सेवा और पूजा  
किई है और मुझे त्यागा है और मेरी व्यवस्था पालन न किई । और तुम लोगों १२  
ने आप अपने पितरों से अधिक दुष्टता किई है और देखो मुझे न मानके तुम  
सब अपने ही दुष्ट मन की कठोरता पर चलते हो । इस लिये मैं तुम्हें इस देश १३  
से उस देश में निकाल ले जाऊंगा जिसे न तुम ने न तुम्हारे पितरों ने जाना है  
और वहां तुम लोग रात दिन उपरी देवों की सेवा करोगे इस कारण कि मैं  
तुम पर कृपा न करूंगा ।

इस लिये देख दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जिन में फिर कदा न जायेगा १४  
कि जीवते ईश्वर सोद जो हमराएल के मन्तानों को मिस्र देश से निकाल  
लाया । परन्तु जीवते परमेश्वर सोद जो हमराएल के मन्तानों को उत्तर देश से १५  
और सारे देशों में से जिधर जिधर उस ने उन्हें खेद दिया था निकाल लाया  
क्योंकि मैं वन्हीं के देश में उन्हें फिर पहुंचाऊंगा जो मैं ने उन के पितरों को  
दिया था ॥

देख मैं बहुत से मनुष्यों को बुलवा भेजूंगा परमेश्वर कहता है और वे उन्हें १६  
वधावेंगे और उस के पीछे मैं बहुत से अहेरियों को बुलवा भेजूंगा जो हर एक  
पछाड़ और पछाड़ियों से और कंदलों में से उन्हें अहेर करेंगे । क्योंकि मेरी आंखें १७  
उन की सारी चालों पर हैं वे मेरे आगे से छिपी नहीं हैं और उन की घुराई मेरी  
दृष्टि से गुप्त नहीं । और मैं पहिने उन की घुराई और उन के पापों का दूना १८  
पलटा देऊंगा क्योंकि वन्हीं ने मेरे देश को अशुद्ध किया है वन्हीं ने अपनी निन्दित  
और धिनित वस्तुन की लाशों से मेरे अधिकार को भर दिया है ॥

हैं परमेश्वर मेरा बल और मेरा गढ़ और विपत्ति के दिन मैं मेरा शरण जाति- १९  
गग पृथिवी के अन्तों से तेरे पास आवेंगे और कहेंगे कि निश्चय हमारे पितरों  
ने झूठ और वृथा और उन वस्तुन को जिन में लाभ नहीं अधिकार में लिया ।  
यथा मनुष्य अपने लिये देवों को बनावेगा और वे देव नहीं हैं । इस लिये देख २०  
मैं उन्हें अब की बार समझाऊंगा और मैं उन पर अपनी मुजा और अपना बल  
जनाऊंगा और वे जानेंगे कि परमेश्वर मेरा नाम है ॥

सत्रहवां पृष्ठ ।

यहूदाह का पाप लोहे की लेखनी से और धीरे की नोक से लिखा गया १  
उन के अंतःकरण की प्रविष्टि पर और उन की चेदियों के सींगों पर खोदा गया  
है । जब उन के बालक छरे पेड़ों के लग और सब से ऊंचे टीलों पर अपनी २  
चेदियों और विधातृ देवियों को स्मरण करते हैं । हे मेरे पथ्यत खेत में तेरी संपत्ति ३  
तेरे सारे भंडार और तेरे दृढ़ गढ़ तेरे सारे सिवानों में तेरे पापों के लिये मैं लुटा  
देऊंगा । और तू आप से उस अधिकार से जो मैं ने तुम्हें दिया है विदा दोगा ४  
और मैं तुम्हें से तेरे वैरियों की एक ऐसे देश में सेवा कराऊंगा जिसे तू ने नहीं  
जाना है क्योंकि तुम ने मेरी रिस की आग भड़काई जो नित जला करेगी ॥

परमेश्वर यह कहता है कि सापित है वह मनुष्य जो मनुष्य पर भरोसा रखता ५

१६ मैं उन्हें ठोकर दिलाया जिस्ती खड़बिड़ पथों पर उन्हें चलावे । वे अपने देश को उजाड़ और नित्य का फुफकार बनाते हैं हर एक जो उधर से जाता है आश्चर्य मानेगा और अपना सिर धुनेगा । पुरवा पवन की नाईं में उन्हें उन के वैरियों के आगे कितराजंगा उन के नाश के दिन में मैं अपनी पीठ उन की ओर फेंका अपना मुंह नहीं ॥

१८ तब उन्होंने ने कहा कि आओ और हम यरमियाह की बिरुद्धता में युक्ति बांधें क्योंकि याजक से व्यवस्था घट न जायेगी और न खुद्विमान से परामर्श और न भविष्यद्वक्ता से वचन सो आओ और हम उसे जीभ से मारें उस का कोई वचन न मानें ॥

१९ हे परमेश्वर मेरी ओर सुरत लगा और मेरे भगड़नेवालों का शब्द सुन । क्या भलाई की सती बुराई किई जायेगी क्योंकि उन्होंने ने मेरे प्राण के लिये गड़हा खोदा है सो स्मरण कर मैं तेरे आगे उन की भलाई के लिये विन्ती करने को २१ खड़ा हुआ हूँ जिस्ती तेरा कोप उन से फिर जाये । इस लिये उन के लड़कों को अकाल को सौंप और तलवार के द्वारा से उन्हें खींच ले और उन की स्त्रियां निर्बंश और रांड होवें और उन के पुरुष मरी से मारे जायें उन के तरुण संग्राम में तलवार से जुझाये जायें । जब तू अचानक उन पर एक जथा लावेगा तो उन के घरों से रोना पीटना सुना जायेगा क्योंकि उन्होंने ने मेरे फंसाने को गड़हा खोदा है और चुपके से मेरा पांव बझाने के लिये जाल बिछाया है । परन्तु हे परमेश्वर मेरे प्राण के बिरुद्ध तू उन का सारा परामर्श जानता है तू उन की बुराई के लिये प्रायश्चित्त ग्रहण न कर और अपने आगे से उन के पाप को मत मिटा परन्तु तेरे साक्षात् वे उलटाये जायें अपने कोप के समय में तू उन से ऐसा कर ॥

### उन्नीसवां पर्व ।

१ परमेश्वर ने यों कहा कि तू जाके कुम्हार का एक मिट्टी का पात्र और लोगों में के प्राचीनों में से और याजकों के प्राचीनों में से ले । और हिब्रुम के बेटे की तराई में निकल जा जो तपन फाटक के आगे है और जो वचन में तुझे कहूंगा सो वहां प्रचारियो ॥

३ और कहियो कि हे यहूदाह के राजाओ और यरुसलम के निवासियो परमेश्वर का वचन सुनो सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं इस स्थान पर ऐसी बिपत्ति लाता हूँ कि जो कोई उसे सुनेगा उस के कान भंभना उठेंगे । क्योंकि उन्होंने ने मुझे छोड़ा और इस स्थान को उपरियों के लिये छोड़ दिया और उस में उपरी देवों के लिये धूप जलाया जिन्हें न उन्होंने ने न उन के पितरों ने न यहूदाह के राजाओं ने जाना और इस स्थान को निर्दापियों के लोह से भर दिया है । और बअल के ऊंचे स्थानों को खड़ा किया है जिस्ती अपने बेटों को बअल के बलिदानों की भेंट के लिये आग में जलावें जो मैं ने आज्ञा न किई और न कहा न मेरे मन में आया ॥

५ इस लिये परमेश्वर कहता है कि वह समय आता है जब कि यह स्थान फिर

प्रवेश करेंगे कि दाऊद के सिंहासन पर बैठें वे और उन के अध्यक्ष यहूदाह के लोग और यरुसलम के वासी रथों और घोड़ों पर चढ़ेंगे और यह नगर सदा स्थिर रहेगा । और यहूदाह के नगरों से और यरुसलम की चारों ओर से और त्रिनयमीन के देश २६ से और चौगान से और पर्वत से और दक्खिन से बलिदान की भेंट और बलि और मांस की भेंट और धूप ले ले और स्तुति की भेंट लिये हुए परमेश्वर के मन्दिर में आचेंगे ॥

परन्तु यदि त्रिशम दिन को पवित्र रखने को और कोई दोष ठोके यरुसलम २७ के फाटकों में से जाने को मेरी न सुनोगे तब मैं उस के फाटकों में एक आग दारुंगा और वह यरुसलम में के भयनों को भस्म करेगी और वह सुताई न जायेगी ॥

### अठारहवां पर्व ।

वह वचन जो परमेश्वर की ओर से यरमियाह के पास यह कहते हुए पहुँचा । १ कि उठके कुम्हार के घर को उतर जा और मैं वहाँ अपने वचन तुम्हें सुनाऊँगा ॥ २

तब मैं कुम्हार के घर को उतर गया और क्या देखता हूँ कि वह चाक पर ३ कुड़ बना रहा है । और जो मिट्टी का वर्तन वह बना रहा था सो कुम्हार के हाथ से बिगड़ गया तब उस ने उससे फिर एक वर्तन बनाया जैसा कुम्हार की ४ दृष्टि में अच्छा लगा । तब यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा ॥ ५

कि हे इसराएल के घराने क्या मैं तुम्हारे विषय में इस कुम्हार की रीति नहीं ६ कर सकता परमेश्वर कहता है कि हे इसराएल के घराने देखो जैसा मिट्टी कुम्हार के वश में है तैसा तुम लोग मेरे वश में हो । जब कभी मैं किसी जातिगण के ७ अथवा राज्य को उखाड़ने के और गिरा देने के और नाश करने के विषय में कहूँ । और जिस जातिगण के विषय में मैं ने कहा है सो अपनी दुष्टता से फिरे तो जो ८ घुराई मैं ने उस पर करने को ठानी थी उससे पकताऊँगा । और जब कभी मैं ९ किसी जातिगण के अथवा राज्य के बनाने और लगाने के विषय में कहूँ । और १० वह बड़ी करे जो मेरी दृष्टि में घुराई है जिस्ती मेरे शब्द को न माने तो जो भलाई मैं ने उस के निमित्त करने को कहा था उससे मैं पकताऊँगा ॥

और अब यहूदाह के मनुष्यों से और यरुसलम के वासियों से कह कि परमे- ११ श्वर यों कहता है कि देख मैं तुम्हारे विरुद्ध घुराई ठहराता हूँ और तुम्हारे विरुद्ध युक्ति बाँधता हूँ सो तुम हर एक अपनी अपनी घुरी चाल से फिरो और अपनी अपनी चालों और अपने अपने व्यवहारों को सुधारो । परन्तु उन्हीं ने कहा कि १२ आशा नहीं है क्योंकि हम अपनी अपनी भावना पर चलेंगे और हम अपने अपने घुरे मन की कठोरता पर चलेंगे ॥

इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि अब अन्यदेशियों में पूछो किस ने ऐसी १३ ऐसी बातें सुनी हैं कि इसराएल की कुंवारी ने बड़ा बड़ा भयानक कार्य किया है । क्या लुवनान का पाला खेल के चटान से बन्द हो जायेगा क्या सकेत नाली १४ का ठण्डा वहता पानी सूख जायेगा । क्योंकि मेरे लोगों ने मुझे बिसराया है १५ और धर्म के लिये धूप जलाया है और उन्हीं ने पुरातन पथों से उन की चालों १६



हाथ से सताये हुए को कुड़ाओ और परदेशी और अनाथों और रांडों से कुल न  
४ करो और अंधेर से न सताओ और न इस स्थान में निर्दोष लोहू बहाओ । क्योंकि  
जो निश्चय तुम लोग इस वचन के समान करोगे तो दाजद के सिंहासन पर  
बैठवैये राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए इस घर के फाटकों में से भीतर  
५ जायेंगे वह और उस के सेवक और उस के लोग । परन्तु यदि तुम लोग इन बातों  
को न मानोगे तो मैं अपनी ही किरिया खाता हूँ परमेश्वर कहता है कि निश्चय  
यह घर उजाड़ हो जायेगा ॥

६ क्योंकि यहूदाह के राजा के घराने के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि  
मेरे लिये तू जिलियद है और लुबनान की चोटी निश्चय में तुझे एक उजाड़ और  
७ अबसाव नगर बनाऊंगा । और मैं तेरे विरोध में नाशकों को भेजूंगा हर एक  
जन को अपना अपना हथियार लिये हुए और वे चुन चुनके तेरे देवदारुओं को  
८ काटेंगे और आग में डालेंगे । और बहुत जातिगण इस नगर के पास से जायेंगे  
और वे आपुस में कहेंगे कि परमेश्वर ने इस बड़े नगर पर यों क्यों किया है ।  
९ तब वे उत्तर देके कहेंगे इस लिये कि उन्होंने ने परमेश्वर अपने ईश्वर की वाचा  
को त्यागा है और उपरी देवों की पूजा और सेवा किई ॥

१० मृतक के लिये विलाप और शोक मत करो परन्तु उस के लिये बहुत रोओ  
जो चला गया है क्योंकि वह फिर न आवेगा और अपनी जन्मभूमि न देखेगा ।  
११ क्योंकि यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे सलूम के विषय में जो अपने पिता  
यूसियाह की सन्ती राज्य पर बैठा जो इस स्थान से निकल गया परमेश्वर यों  
१२ कहता है कि वह इधर फिर न आवेगा । परन्तु जहां वे उसे बन्धुआई में ले  
गये हैं तहां वह मरेगा और इस देश को फिर न देखेगा ॥

१३ हाय उस पर जो अधर्म से अपना घर और अंधेर से अपनी ऊपर की कोठरियां  
बनाता है और खेत से अपने परोसी से काम कराता है और उसे बनी नहीं देता ।  
१४ जो कहता है कि मैं अपने लिये बड़ा घर और ऊंची ऊंची कोठरियां बनाऊंगा  
जो अपने लिये खिड़कियां भी काटता है और देवदारु की लकड़ी से छत ठांपता  
१५ है और सिन्दूर से रंगता है । क्या तू देवदारु से आप को घेरके राज्य करेगा  
क्या तेरे पिता ने खा पीके न्याय और धर्म नहीं किया तब वह भाग्यमान हुआ ।  
१६ उस ने दुःखी और दरिद्रों के वाद का पक्ष किया तब वह भाग्यमान था क्या यह  
१७ तेरी पहिचान न थी परमेश्वर कहता है । क्योंकि तेरी आंखें और तेरा मन  
केवल अपनी लालच पर है और निर्दोष लोहू बहाने पर और अंधेर पर और  
उत्पात पर ॥

१८ इसी लिये परमेश्वर यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के विषय में  
कहता है कि वे उस के लिये यह विलाप न करेंगे कि हाय मेरे भाई और हाय  
बहिन वे उस के लिये यों विलाप न करेंगे कि हाय प्रभु अथवा हाय उस का  
१९ विभव । वह गदहे के गड़ाव से गाड़ा जायेगा और यरूसलम के फाटकों के  
बाहर घसीटा और फेंका जायेगा ॥

२० लुबनान पर जाके चिल्ला और वसन्त पर अपना शब्द उठा और घाटियों से

तुफन न कहावेगा अथवा हिनुम के घेठे की तराई परन्तु जूझ की तराई ।  
 क्योंकि मैं इस स्थान में यहूदाह का और यरुसलम का परामर्श वृथा करूँगा और ७  
 मैं उन्हे उन के घेरियों के आगे और जो उन के प्राण के साहक हैं तलवार से  
 गिराऊँगा और मैं उन की नावों को आकाश के घेरियों के और घनेले पशुन के  
 आहार के लिये देऊँगा । और मैं इस नगर को उजाड़ूँगा और फुफकार का ८  
 कारण बनाऊँगा हर एक जो इस के पास से जाता है उस की सारी मर्गियों के  
 लिये आश्रयित होके फुफकारेगा । और मैं उन्हे उन के घेठों का मांस और उन ९  
 की घेरियों का मांस खिलाऊँगा और घरे जाने में और विपत्ति में बिन से उन  
 के घरे और उन के प्राण के साहक उन्हे नकेती में डालूँगे हर एक अपने अपने  
 संगी का मांस खायेगा ॥

तब उस वर्तन का उन पुरुषों के आगे जो तेरे साथ चलते थे तोड़ डाल । १०  
 और तू उन से कहिया कि मेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं इस जाति ११  
 को और इस नगर को ऐसा तोड़ूँगा जैसा वह फुहार के पान को फोड़ता है जो  
 फिर नमूचा नहीं हो सक्ता और लोग तुफन में गहूँगे लघ लो गहूँगे का स्थान  
 न रहे । परमेश्वर कहता है कि मैं इस स्थान को और उस में के घामियों को १२  
 ऐसा करूँगा हाँ इस नगर को तुफन की नाई बनाऊँगा । और यरुसलम के घर १३  
 और यहूदाह के राजाओं के घर तुफन की नाई उन सारे घरे घरे मघिन लिन की  
 छतों पर उन्हे ने स्वर्ग की सारी मेनाओं के लिये और उपरी देवों के लिये अर्पण  
 किया और धूप जलाया अशुद्ध होंगे ।

तब यरमियाह तुफन से आया जिधर परमेश्वर ने उसे भविष्य कहने का भेजा १४  
 था और परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में खड़े होके सारे लोगों से कहा । कि १५  
 मेनाओं का परमेश्वर हमरागन का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस नगर  
 पर और इस में के सारे नगरों पर सारी दुगाई जो मैं ने इस के विरुद्ध उझागी  
 है लाता हूँ क्योंकि उन्हे ने अपने गले को कठार किया है जिस्ती मेरे घबने को  
 न मुने ॥

### चौमथां पर्व ।

जब अमीर याजक के घेठे फसिहूर ने यरमियाह की भविष्य बातें सुनीं क्योंकि १  
 वह भी ईश्वर के मन्दिर का प्रधान था । तो फसिहूर ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता २  
 को मारा और उसे काठ में डाल दिया जो दिनयमीन के ऊपर के फाटक में  
 परमेश्वर के मन्दिर के लग था ॥

और दूसरे दिन यों हुआ कि जब फसिहूर ने यरमियाह को काठ से छोड़ ३  
 दिया तब यरमियाह ने उस्मे कहा कि परमेश्वर ने तेरा नाम फसिहूर नहीं रक्खा  
 परन्तु मागोरमिस्सावीव अर्थात् चारों ओर भय । क्योंकि परमेश्वर यों कहता ४  
 है कि देख मैं तुम्हा को अपने लिये और तेरे सारे मित्रों के लिये भय बनाता  
 हूँ और वे अपने घेरियों की तलवार से गिरेंगे और तेरी आंख भी देखा  
 करेगी और सारे यहूदाह को मैं बाबुल के राजा के हाथ में सौंपेगा और वह  
 उन्हे बंधुआई में बाबुल को ले जायेगा और वहाँ उन्हे तलवार से घात

को उत्तर देश से और सारे देशों से जहां जहां में ने उन्हें खेदा था निकाल लाया और उन्हें ले गया जिस्तें वे अपनी ही भूमि में वास करें ॥

९ भविष्यद्वक्तों के विषय में मेरा अन्तःकरण मुझ में चूर हो रहा है मेरी सारी हड्डियां हिलती हैं और परमेश्वर के कारण और उस के पवित्र वचनों के कारण मैं मतवाले जन की नाईं हुआ हूं और उस जन की नाईं जिसे मद्य ने वश में किया । क्योंकि देश परस्त्रीगामियों से भरा है कि साप करने के कारण देश बिलाप करता है और अरण्य की चराई भुरा गई और उन की दौड़ दुष्टता है और उन की सामर्प्य ठीक नहीं । क्योंकि भविष्यद्वक्ता और याज्ञक दोनों अशुद्ध हैं हां में ने उन की दुष्टता को अपने मन्दिर में पाया है परमेश्वर कहता है । इस लिये उन का मार्ग उन के लिये फिसलहा होगा अंधियारे में वे ठकेले जायेंगे और उस में गिरेंगे क्योंकि मैं उन पर बुराई लाऊंगा अर्थात् उन के दण्ड पाने का वरस परमेश्वर कहता है ॥

१३ और मैं ने समरुन के भविष्यद्वक्तों में मूर्खता देखी उन्हें ने बअल के नाम से १४ भविष्य कहा और मेरे इसराएल लोगों को भुलाया है । और यरुसलम के भविष्यद्वक्तों में मैं ने एक भयानक वस्तु देखी है वे परस्त्रीगमन करते और झूठ से चलते वे दुष्टों के हाथों को भी दृढ़ करते हैं जिस्तें कोई अपनी दुष्टता से न फिरे वे सब के सब मेरे लिये सद्रूम की नाईं और उस के निवासी अमूरः की नाईं हुए हैं ॥ १५ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर भविष्यद्वक्तों के विषय में यों कहता है कि देखो मैं उन्हें नागदौना खिलाऊंगा और पित्त का जल पिलाऊंगा क्योंकि यरुसलम के भविष्यद्वक्तों से हठ सारे देश में फैला है ॥

१६ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि भविष्यद्वक्तों के वचनों को मत सुनो जो तुम्हें भविष्य कहते हैं वे तुम से वृथा कराते हैं वे अपने ही मन के दर्शन उच्चारते हैं परमेश्वर के मुंह के समान नहीं कहते । वे उन को जो सुके तुच्छ जानते हैं कहा करते हैं कि परमेश्वर ने कहा है कि तुम पर कुशल होगा और हर एक जन को जो अपने अपने मन की कठोरता के समान चलता है वे कहते हैं कि तुम पर कधी बुराई न आवेगी । क्योंकि परमेश्वर के मंत्र में कौन खड़ा हुआ है और किस ने उस की बात को देखा सुना है अथवा किस ने सुरत लगाके १८ उस के वचन को सुना है । देख परमेश्वर का बवंडर वह कोप से निकलता है २० हां एक भयानक बवंडर जो दुष्टों के सिर पर उतरेगा । परमेश्वर की रिस न फिरेगी जब लों वह कार्य न करे और जब लों वह अपने मन के ठहराये हुए को पूरा न करे पिछले दिनों में तुम लोग अच्छी रीति से बूझोगे ॥

२१ मैं ने इन भविष्यद्वक्तों को नहीं भेजा परन्तु वे आप से आप दौड़ गये मैं ने २२ उन से नहीं कहा पर उन्हें ने आप से आप भविष्य कहा । परन्तु जो वे मेरे मंत्र में खड़े होते तो वे मेरे लोगों को मेरे वचन सुनाते और उन्हें उन के बुरे मार्ग से और उन के कार्यों की दुष्टता से फिराते ॥

२३ परमेश्वर कहता है कि क्या मैं समीप का ईश्वर हूं और दूर का ईश्वर नहीं । २४ परमेश्वर कहता है कि क्या कोई अपने को ऐसे गुप्त स्थानों में छिपा सकता है

पुकार क्योंकि तेरे सारे प्रेमी नाश हुए हैं । तेरे कुशल के समयों में मैं ने तुझ से २१  
कहा पर तू ने कहा मैं न मुनूंगी तमनाई से यही तेरी रीति थी क्योंकि तू ने मेरे  
शब्द को नहीं माना है । एक भौंका तेरे सारे गववालों को बहा ले जायेगा और २२  
तेरे मित्र वंशुआई में जायेंगे क्योंकि तब तू लज्जित हो जायेगी और अपनी सारी  
दुष्टता के कारण घबरा जायेगी । हे लुवनान की निवासिनी जो देवदारुओं पर २३  
अपना वसेरा बनाती है जब तुझ पर पीड़ित स्त्री की नाईं पीड़ें लगेंगी तब तू  
कैसे दीन होगी ॥

परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोच यद्यपि यहूदाह के राजा यहूयकीम २४  
का घेठा कुनियाह मेरे दहिने हाथ की आंगूठी होता तथापि मैं यहां से तुझे  
निकालता । और मैं तुझे तेरे प्राण के साहकों को सौंप देऊंगा और जिन से तू डरता २५  
है उन के हाथ में तुझे सौंप देऊंगा अर्थात् बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ  
में और कसदियों के हाथ में । और मैं तुझे और तेरी जननी को परदेश में निकाल २६  
फेंकूंगा जहां तुम उत्पन्न नहीं हुए और तहां मरेगो । परन्तु जिस देश में उन्होंने ने २७  
फिरने का मन लगाया है उस में फिर न आवेंगे । क्या यह जन कुनियाह टूटी २८  
हुई धिनित मूर्ति है अथवा एक पात्र जिसमें कोई प्रमन्न नहीं वह और उस का  
वंश किस लिये बाहर निकाले गये और जिस देश से वे अज्ञान थे उस में फेंके गये ॥

हे धरती हे धरती हे धरती परमेश्वर का वचन सुन । परमेश्वर यों कहता है ३०  
कि इस जन को निर्देश लिख रख्यो यह जन अपने दिनों में भाग्यमान न होगा  
क्योंकि उस का कोई वंश दाऊद के सिंहासन पर बैठते हुए और यहूदाह पर  
फिर राज्य करते हुए भाग्यमान न होगा ॥

तेहमवां पर्व ।

उन गढ़रियों पर संताप जो मेरी चराई की भेड़ों को नाश और किन्न भिन्न १  
करते हैं परमेश्वर कहता है । इस लिये परमेश्वर इसराएल का ईश्वर उन गढ़- २  
रियों के विषय में जो मेरी जाति को चराने हैं कहता है तुम ने मेरे भुंड को किन्न  
भिन्न किया और उन्हें खेद दिया है और उन की रखवाली न किई देखो मैं तुम्हारे ३  
दुरे कार्यों के लिये तुम्हें प्रतिफल देता हूँ परमेश्वर यों कहता है । और मैं अपने ३  
भुंड के दुरे हुएों को सारे देशों से जहां जहां मैं ने उन्हें खदेड़ा है बढोऊंगा  
और उन्हीं के भुंड में उन्हें फिर लाऊंगा और वे फलवंत होके बढ़ेंगे । और मैं ४  
उन के लिये गढ़रियों को टहराऊंगा जो उन्हें चरायेंगे और वे फिर न डरेंगे और  
न विस्मित होंगे और उन पर घटी न पड़ेगी परमेश्वर कहता है ॥

देखो वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जब मैं दाऊद के लिये एक धर्मी ५  
आया का उदय करूंगा और एक राजा राज्य करेगा और भाग्यमान होगा और  
देश में न्याय और धर्म करेगा । उस के दिनों में यहूदाह बचाया जायेगा और ६  
इसराएल कुशल से रहेगा और इसी नाम से पुकारा जायेगा कि परमेश्वर हमारा  
धर्म । इस लिये देखो वे दिन आवेंगे परमेश्वर कहता है जब कि वे फिर न ७  
करेंगे कि परमेश्वर के जीवन सोच जो इसराएल के संतान को मिस देश से निकाल  
लाया । परन्तु परमेश्वर के जीवन सोच जिस ने इसराएल के घराने के वंश ८

आगे धरे थे उस के पीछे कि बाबुल का राजा नबूखुदनजर यहूदाह के राजा यहूयकीम के बेटे यकुनियाह को और यहूदाह के अध्यात्माओं को और कार्यकारियों २ को और अस्त्रकारों को यरूशलम से बाबुल को बंधुआई में ले गया । एक टोकरी में अच्छे से अच्छे गूलर थे पहिले पक़े हुए गूलर की नाई और दूसरी ३ टोकरी में गूलर खुरे से खुरे थे जो खुराई के सारे खाये न जा सकें । तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि हे यरमियाह तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि गूलर अच्छे गूलर बहुत ही अच्छे और खुरे बहुत ही खुरे जो खुराई के सारे खाये नहीं जा सक्ते ॥

४ तब परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा । कि परमेश्वर यरूशलेम का ईश्वर यों कहता है कि मैं इन अच्छे गूलरों की नाई यहूदाह की बंधुआई को पहचानूंगा जिन्हें मैं ने इस स्थान से कषदियों के देश में भलाई के ६ लिये भेजा है । और मैं भलाई के लिये उन पर दृष्टि करूंगा और उन्हें इस देश में फिर लाऊंगा और उन्हें बनाऊंगा और ठा न देऊंगा और उन्हें लगाऊंगा पर ७ न उखाड़ूंगा । और मैं उन्हें मन देऊंगा कि मुझे पहिचानें कि मैं परमेश्वर हूं और वे मेरी जाति होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा क्योंकि वे मेरी ओर अपने सारे मन से फिरेंगे ॥

८ परन्तु खुरे गूलर जो खुराई के सारे खाये नहीं जा सक्ते निश्चय परमेश्वर यों कहता है कि मैं यहूदाह के राजा सिदक्याह को और उस के अध्यात्माओं को और यरूशलम के उबरे हुआओं को जो इस देश में छूटे हैं और जो मिस्र के देश में बसते ९ हैं ऐसा ही करूंगा । और मैं उन्हें जगत के सारे राज्यों में भ्रमण और क्रेश के लिये सौंपूंगा कि सब स्थानों में जहां मैं उन्हें खेदूंगा वहां वे निन्दा और कहावत १० और ठट्ठा और साप के लिये होवें । और मैं उन में तलवार और अकाल और मरी यहां लों भेजूंगा कि वे उस देश पर से जो मैं ने उन्हें और उन के पितरों को दिया है मिट जायें ॥

### पचीसवां पर्व ।

१ वह वचन जो यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के चौथे बरस में जो बाबुल के राजा नबूखुदनजर का पहिला बरस था यहूदाह के सारे लोगों के २ बिषय में यरमियाह के पास आया । जिसे यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने यह कहके यहूदाह के सारे लोगों को और यरूशलम के सारे वासियों को कहा ॥

३ यहूदाह के राजा अम्मन के बेटे यूसियाह के तेरहवें बरस से आज लों अर्थात् तेईस बरस लों परमेश्वर का वचन मेरे पास आया और मैं ने तुम्हें कहा तबके ४ उठ उठके कहा पर तुम लोगों ने न माना । और परमेश्वर ने अपने सारे भविष्यद्वक्ता सेवकों को कहके तुम्हारे पास भेजा तबके उठ उठके भेजा परन्तु तुम ने ५ न सुना और सुने के लिये अपना कान न भुकाया । यह कहते हुए कि हर एक अपने अपने खुरे मार्ग से और अपने कार्यों की दुष्टता से फिरो और उस देश में ६ बसो जिसे परमेश्वर ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को सदा के लिये दिया है । और उपरी देवों के पीछे उन की सेवा और पूजा करने को मत जाओ और अपने

जो मैं उसे न देखूँ परमेश्वर कहता है कि क्या स्वर्ग और पृथिवी मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं ॥

मैं ने सुना है जो भविष्यद्वक्ता ने कहा है जो यह कहके मेरे नाम से झूठा २५ भविष्य कहते हैं कि मैं ने स्वप्न देखा है स्वप्न देखा है । कब लों यह भविष्य- २६ द्वक्ता के मन में होगा जो झूठ भविष्य कहते हैं हाँ वे अपने मन के छल के भविष्यद्वक्ता हैं । वे जुगत करते कि अपने स्वप्नों से जितने हर एक अपने अपने २७ परीामी के आगे वर्णन करता है मेरे लोगों से मेरे नाम को सुनवाते जैसा उन के पितरों ने मेरे नाम को यशस के कारण से विमराया । जिस भविष्यद्वक्ता के पास २८ स्वप्न है सो स्वप्न कहे परन्तु जिस के पास मेरा वचन है सो मेरे वचन को सच्चाई से कहे गेहूँ को भूमी से क्या काम परमेश्वर कहता है । मेरे वचन का पराक्रम २९ क्या आग के समान नहीं परमेश्वर कहता है और छद्मोद्गी की नाई नहीं जो घटान को टुकड़े टुकड़े करती है ।

इस लिये देख मैं भविष्यद्वक्ता के विरुद्ध हूँ परमेश्वर कहता है जो हर एक ३० अपने अपने परीामी से मेरे वचनों को जुगते हैं । देख मैं उन भविष्यद्वक्ता के विरुद्ध ३१ हूँ परमेश्वर कहता है जो अपनी ही जीभ से कहते हैं कि उम ने कहा है । देख ३२ मैं उन के विरुद्ध हूँ परमेश्वर कहता है जो झूठे स्वप्नों से भविष्य कहते हैं और उन्हे वर्णन करते हैं और अपनी झुठलाई और छलकापन से मेरे लोगों को भटकाते हैं परन्तु मैं ने उन्हे नहीं भेजा और न उन्हे आजा दिई इस लिये इन लोगों को कुछ लाभ नहीं परमेश्वर कहता है ॥

और जय ये लोग अथवा भविष्यद्वक्ता अथवा याज्ञक यह कहके तुम से पूर्ण ३३ कि परमेश्वर का वोभ क्या है तब उन से कहियो क्या वोभ यह कि मैं ने तुम को त्यागा परमेश्वर कहता है । और भविष्यद्वक्ता और याज्ञक और लोग जो ३४ कहेंगे कि परमेश्वर का वोभ मैं उमी जन को और उस के घराने को दंड देऊंगा । हर एक मनुष्य अपने अपने परीामी से और अपने अपने भाई से यों कहेगा कि ३५ परमेश्वर ने क्या उत्तर दिया है और परमेश्वर ने क्या कहा है । परन्तु तुम परमे- ३६ श्वर का वोभ फिर न कहोगे क्योंकि हर एक का वचन उसी का वोभ होगा क्योंकि जीवते ईश्वर सेनाओं के परमेश्वर हमारे ईश्वर के वचन को तुम ने विगाड़ा है । तू भविष्यद्वक्ता से यों कह कि परमेश्वर ने तुम्हें क्या उत्तर दिया ३७ है और परमेश्वर ने क्या कहा है । परन्तु जो तुम लोग कहोगे कि परमेश्वर का ३८ वोभ तो इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग जो यह वचन कहते हो कि परमेश्वर का वोभ और मैं ने यह कहके तुम्हारे पास भेजा कि तुम परमेश्वर का वोभ मत कहो । इस लिये देख मैं तुम्हें सर्वथा उठा लेऊंगा और मैं तुम्हें ३९ उस नगर संहित जो मैं ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया था अपने आगे से त्याग करूंगा । और मैं तुम पर सनातन की निन्दा और नित का अपमान लाऊंगा ४० जो भुलाया न जायेगा ॥

चौथीसवां पृष्ठ ।

परमेश्वर ने मुझे दिखाया और देखो दो टोकारी गूलर परमेश्वर के मन्दिर के १



को जो निकट हैं और दूर हैं एक दूसरे के साथ और पृथिवी के सारे राज्यों को जो भूमि पर हैं और शेषाक का राजा उन के पीछे पीयेगा ॥

२० और तू उन से कहना कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि उस तलवार के आगे जो मैं तुम पर भेजता हूँ पीयो और मत घाले होओ और क्रांति करो और ऐसा गिरो कि फेर न उठे ॥

२० और यों होगा कि जो वे पीने को तरे दाघ से कटोरा लेने को नाह करें तो तू उन से कहियो कि सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम निश्चय पीयोगे ।

२१ क्योंकि देखो मैं उस नगर पर जो मेरे नाम से कहा जाता है घुराई लाने को आरंभ करता हूँ और क्या तुम सर्वथा अर्द्धित रहोगे तुम अर्द्धित न रहोगे क्योंकि मैं पृथिवी के सारे निवासियों के विरुद्ध तलवार को लाता हूँ सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

२० और तू इन सारी बातों को उन से भविष्य कह और उन से बोल कि परमेश्वर ऊपर से गर्जगा और अपने पवित्र निवास से अपने शब्द को उच्चारेगा वह अपने चैनस्थान के विरुद्ध गर्जगा वह दाघ के लताड़नेहारों की नाई पृथिवी के सारे निवासियों के विरुद्ध ललकारेगा । पृथिवी के अन्त लों दौरा पहुँच गया है क्योंकि परमेश्वर का भगड़ा देशगरो से है वह सारे मनुष्यों का विचार करेगा और दुष्टों को तलवार के दाघ में मौपेगा परमेश्वर कहता है ॥

२२ परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर यों कहता है कि देखो जाति से जाति पर घुराई निकलती है और पृथिवी के अंतों से एक बड़ा खंड उठेगा । और उस दिन

परमेश्वर के जुभाये हुए पृथिवी के एक खंड से पृथिवी के दूसरे खंड लों होंगे उन के लिये विलाप न किया जायेगा और वे एकट्टे न किये जायेंगे और न गाड़े

२४ जायेंगे वे भूमि पर धूर की नाई होंगे । वे गढ़रियो विलाप करके रोओ और वे भुंड के प्रधानों राख में लोटो क्योंकि तुम्हारे जूझने के और क्षिन्न भिन्न होने

२५ के दिन पूरे हुए और तुम बहुमूल्य पात्र के समान गिरोगे । और भागने के उपाय

२६ गढ़रियों से और बचने के उपाय भुंड के प्रधानों से कट जायेंगे । गढ़रियों के चिल्लाने का और भुंड के प्रधान के विलाप करने का शब्द क्योंकि परमेश्वर

२७ उन की चराई को उजाड़ता है । और परमेश्वर के भयंकर कोप के सारे कुशल

२८ के निवास उजड़ गये । सिंह के समान उस ने अपना लुकान छोड़ा है क्योंकि उस के महा कोप के सारे और उत्कट ज्वलन के सारे उन का देश एक उजाड़ हुआ है ॥

### कुब्बीसवां पर्व ।

१ यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के राज्य के आरंभ में यह कहते हुए परमेश्वर का वचन पहुँचा ॥

२ परमेश्वर यों कहता है कि परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में खड़ा हो और यहूदाह के सारे नगरों से जो परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने को आते हैं वे सारी बातें जो मैं ने तुम्हें कहने को आज्ञा किई हैं उन्हें कह बात भर मत घटा ।

३ क्या जाने वे सुनें और हर एक जन अपने अपने कुमार्ग से फिरे जिस्ते में इस

हाथों के कार्य से मुझे रिस मत दिनाओ और मैं तुम्हें दुःख न देऊंगा । परन्तु ७  
तुम ने मेरी न सुनी परमेश्वर कहता है जिन्हें तुम अपने दुःख के लिये अपने ही  
हाथों के कार्य से मुझे रिस दिनाओ ॥

इस लिये सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम लोगों ने ८  
मेरी बातों को नहीं माना । देखो मैं उत्तर के सारे घरानों को और अपने दाम ९  
वायुल के राजा नवृगुदनजर को लेके भेजता हूँ परमेश्वर कहता है और इस देश  
के और उस के निवासियों के और चारों ओर के इन सारे देशगणों के विरुद्ध  
लाऊंगा और उन्हें सर्वथा नाश-कदंगा और उन्हें एक आश्चर्यित और फुफकार  
और नित का उजाड़ बनाऊंगा ॥

और मैं उन में से आनन्द का शब्द और आह्लाद का शब्द दुल्ला और दुल्यिन १०  
का शब्द चक्की का शब्द और दीपक की ज्योति मिटाऊंगा ॥

और यह सारा देश एक उजाड़ और आश्चर्यित होगा और ये जातिगण सत्तर ११  
वर्षों में वायुल के राजा की सेवा करेंगे ॥

परमेश्वर कहता है कि यों होगा जब सत्तर वर्ष पूरे होंगे तब मैं वायुल के १२  
राजा और उसी जातिगण को और कसदियों के देश को उन के पाप का दंड  
देऊंगा और उसे सनातन का उजाड़ करूंगा । और अपने सारे वचनों की जा में १३  
ने उस के विषय में कहा है सब जा इस पुस्तक में लिखा है जो परमियाह ने  
जातिगणों के विषय में भविष्य कहा है मैं उसी देश पर लाऊंगा । क्योंकि उन से १४  
अर्थात् इन्हीं से बहुत से जातिगण और बड़े बड़े राजा सेवा लेंगे और उन की  
क्रिया के समान और उन के हाथ के कार्य के समान मैं उन्हें पलटा देऊंगा ॥

क्योंकि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने मुझ से यों कहा कि मेरे हाथ से १५  
इस कोप की सदिरा के कटारे को ले और उसे सारे जातिगणों की जिन के पास मैं  
तुम्हें भेजूंगा पीने को दे । और वे पीयेंगे और हगमगावेंगे और उत्सन्न होंगे उस १६  
तलवार के कारण जो मैं उन पर भेजने पर हूँ ॥

तब मैं ने उस कटारे को परमेश्वर के हाथ से लेके उन सारे देशगणों को जिन १७  
के पास परमेश्वर ने मुझे भेजा था पीने को दिया । अर्थात् यरुसलम और यरूदाह १८  
के नगरों और उस के राजाओं और उस के अध्यक्षों को कि वह उन्हें उजाड़ और  
आश्चर्यित और फुफकार और नाश बनावे जैसा आज के दिन है । मिस्र के राजा १९  
फिरऊन और उस के दासों और उस के अध्यक्षों और उस के सारे लोगों को ।  
और सारे मिले जुले लोगों और ऊज के देश के सारे राजाओं और फिलिस्ती- २०  
नियों के देश के सारे राजाओं और अमकलन और अज्जः और अकदन और अश-  
दूद के सबरे हुयों को । अरूम और मोआव और अम्मून के संतानों को । और २१  
सूर के सारे राजाओं और सैदा के सारे राजाओं को और समुद्र के उस पार के २२  
टापुओं के सारे राजाओं को । ददान और तैमा और बूज और सभी को जो दाढ़ी २३  
के कानों को मुड़वाते हैं । और अरब के सारे राजाओं और जंगल के मिले जुले २४  
निवासी लोगों के सारे राजाओं को । और ज़िमरी के सारे राजाओं और सेलाम २५  
के सारे राजाओं और मादी के सारे राजाओं को । और उत्तर के सारे राजाओं २६

- डरके उस की कृपा न चाही और परमेश्वर उस घुराई से पकताया जो उस ने उन के विरुद्ध उच्चारि थी परन्तु हम लोग अपने प्रार्थों पर बड़ी घुराई लाते हैं ॥
- २० और भी एक जन था जिस ने परमेश्वर के नाम से भविष्य कहां करयतुल-  
यश्वरमी से समरेयाह के बेटे जरियाह जिस ने इस नगर और इस देश के विरुद्ध
- २१ यरमियाह की सारी बातों के समान भविष्य कहा । और जब यहूयकीम राजा  
और उस के सारे मद्यतजन और सारे अध्वियों ने उस की बातें सुनीं तब राजा ने
- २२ उसे घात करने चाहा परन्तु जरियाह सुनके डर गया और मिस को भागा । परन्तु  
यहूयकीम राजा ने मिस में मनुष्यों को अर्थात् अकबूर के बेटे अलनतन को और
- २३ उस के साथ कितने जनों को भेजा । और वे मिस से जरियाह को निकाल लाये  
और उसे यहूयकीम राजा के पास पहुंचाया जिस ने उसे तलवार से घात किया
- २४ और उस की लोथ को लोगों के सन्तान की समाधिस्थान में फेंक दिया । परन्तु  
साफन के बेटे अखिकान का हाथ यरमियाह पर था जिस्तें वह घात के लिये  
लोगों के हाथ में सौंपा न जाये ॥

सत्ताईसवां पट्टा ।

- १ यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के राज्य के आरंभ में परमेश्वर  
का वचन यरमियाह के पास यह कहता हुआ पहुंचा ॥
- २ परमेश्वर ने मुझ से यों कहा है कि तू अपने लिये बंधन और जूआ बना  
३ और उन्हें अपने गले पर धर । और उन्हें अदूम के राजा के पास और मोआब  
के राजा के पास और अम्मून के सन्तान के राजा और सूर के राजा के पास  
और सैदा के राजा के पास दूतों के हाथ से जो यहूदाह के राजा सिदक्याह  
४ के पास यरुसलम में आये हैं भेज । और उन के स्त्रियों के पास यह संदेश  
५ अपने अपने प्रभुओं से यह कहो । कि मैं ने पृथिवी को और मनुष्यों को और  
पशुन को जो पृथिवी पर हैं अपने बड़े पराक्रम से और अपनी बढ़ाई हुई भुजा  
६ से सिरजा है और जिसे मैं ने चाहा उसे दिया है । और अब मैं ने इन सारे  
देशों को अपने दास बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ में दिया है और उस  
७ की सेवा के लिये मैं ने खेत के पशुन को भी उस के वश में किया है । और  
सारे जातिगण उस की और उस के बेटे की और उस के पोते की सेवा करेंगे  
जब लों उस के देश का समय हां उसी का न आवे और बहुत से जातिगण  
८ और बड़े बड़े राजा उस्से सेवा लेंगे । और ऐसा होगा कि जो जातिगण और  
राज्य बाबुल के राजा नबूखुदनजर की सेवा न करेगा और अपना गला बाबुल  
के राजा के जूआ तले न रखेगा परमेश्वर कहता है मैं उसी जातिगण पर  
तलवार से और अकाल से और मरी से दंड भेजूंगा जब लों मैं उस के हाथ से  
उन्हें नाश न करूं ॥
- ९ और तुम अपने भविष्यद्वक्ताओं की और अपने दैवज्ञों की और अपने स्वप्न  
व्यवहारियों की और अपने गणकों की और मोहकों की न सुनो जो तुम से  
१० कहते हैं कि तुम बाबुल के राजा की सेवा न करोगे । क्योंकि वे तुम्हारे आगे

धुराई से पकताऊँ तो मैं उन के कुकर्मों के कारण से उन पर करने को उठता हूँ । और तू उन से यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि जो तुम लोग मेरी न सुनोगे कि मेरी वरदान पर चना जो मैं ने तुम्हारे आगे रखी । वित्तों मेरे सेवक भविष्यदुक्तों के वचन सुनो जिन्हें मैं तुम्हारे पास भेजता हूँ तबके उठके भेजा परन्तु तुम ने नहीं माना है । तो मैं इस घर को मैला की नाई बनाऊँगा और पृथ्वी के सारे जातिगणों में मैं इस नगर को नापित करूँगा ॥

और याज्ञक और भविष्यदुक्ता और सारे लोगों ने परमियाह को ईश्वर के मन्दिर में यह वचन कहते सुना । और यों हुआ कि जब परमियाह मर्य यातें कह चुका जो परमेश्वर ने उसे सारे लोगों से कहने को आता किई थीं तब याज्ञकों ने और भविष्यदुक्तों ने और सारे लोगों ने उसे पकड़के कहा कि तू निश्चय मारा जायेगा । तू ने यह कहके परमेश्वर के नाम से क्यों भविष्य कहा है कि यह मन्दिर मैला की नाई होगा और यह नगर बिना निवासी उजाड़ दिया जायेगा और सारे लोग परमेश्वर के मन्दिर में परमियाह के विरुद्ध बहुर गये ॥

जब यहूदाह के अध्यक्षों ने ये बातें सुनीं तब वे राजा के घर से परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ गये और परमेश्वर के मन्दिर के नये फाटक की पैठ में बैठ गये । तब याज्ञकों और भविष्यदुक्तों ने अध्यक्षों से और सारे लोगों से कहा कि यह जन सारे जाने के योग्य है क्योंकि हम ने इस नगर के विषय में भविष्य कहा है जैसा तुम ने अपने अपने कानों से सुना है ॥

तब परमियाह सारे अध्यक्षों और सारे लोगों से कहके बोला कि जो सारी बातें तुम लोगों ने सुनी हैं सो परमेश्वर ने इस मन्दिर के और इस नगर के विषय में मुझे भविष्य कहने को भेजा है । परन्तु अब अपने अपने मार्गों और चालों को सुधारो और परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द मानो और परमेश्वर उस धुराई से जो उस ने तुम्हारे विरुद्ध में कही है पकतावेगा । और मैं जो हूँ देखो मैं तुम्हारे वश में हूँ जो तुम्हारी दृष्टि में भला और ठीक होवे सो मुझ से करो । केवल निश्चय जान रखो जो तुम लोग मुझे घात करोगे तो निर्दोष लोहू को अपने ऊपर और इस नगर पर और उस के वासियों पर लाओगे क्योंकि परमेश्वर ने निश्चय मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि तुम्हारे कानों में ये सारी बातें कहूँ ॥

तब अध्यक्षों ने और सारे लोगों ने याज्ञकों से और भविष्यदुक्तों से कहा कि यह जन सारे जाने के योग्य नहीं क्योंकि इस ने परमेश्वर हमारे ईश्वर के नाम से हमें कहा है ॥

तब देश के कितने प्राचीनों ने भी उठके लोगों की मारी सभा से कहा । मारामयी मीकायाह ने यहूदाह के राजा हिजकियाह के दिनों में भविष्य कहा और यहूदाह के सारे लोगों से यह कहा कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि सैहून खेत की नाई जोता जायेगा और यरुसलम ढेर ढेर होगा और इस घर का पर्वत वन के ऊँचे ऊँचे स्थानों की नाई होगा । क्या यहूदाह के राजा हिजकियाह ने और सारे यहूदाह ने उसे घात किया उस ने क्या परमेश्वर को

सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने बाबुल के राजा ३ का जूआ तोड़ डाला है । परमेश्वर के मन्दिर के सारे पात्र जिन्हें बाबुल का राजा नबूखुदनजर इस स्थान से बाबुल को ले गया मैं उन्हें दो वरस के भीतर ४ भीतर इस स्थान में फिर लाऊंगा । और मैं यहूदाह के राजा यहूयकीम के बेटे यकुनियाह को और यहूदाह के सारे बंधुओं को जो बाबुल में पहुंचाये गये मैं इस स्थान में फिर लाऊंगा परमेश्वर कहता है क्योंकि बाबुल के राजा के जूए को तोड़ूंगा ॥

५ तब यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने याजकों के और सारे लोगों के आगे जो परमे-  
६ श्वर के मन्दिर में खड़े थे हननियाह भविष्यद्वक्ता से कहा । और यरमियाह भवि-  
ष्यद्वक्ता ने कहा आमीन परमेश्वर ऐसा ही करे परमेश्वर तेरी बातों को पूरा करे  
जिन का तू ने भविष्य कहा कि परमेश्वर के घर के पात्रों को और सारे बंधुओं  
७ को बाबुल से इस स्थान में फिर लावे । तिस पर भी यह बचन सुन जो मैं तेरे  
८ कानों में और सारे लोगों के कानों में कहता हूँ । भविष्यद्वक्ता ने भी जो  
सुझ से और तुझ से आगे प्राचीन समय में ये वंदुत से देशों के और बड़े बड़े  
९ राज्यों के विषय में संग्राम और विपत्ति और मरी का संदेश दिया था । जो भवि-  
ष्यद्वक्ता कुशल का भविष्य कहेगा उस भविष्यद्वक्ता को बचन के पूरे होने से जाना  
जायेगा कि निश्चय परमेश्वर ने उसे भेजा है ॥

१० तब हननियाह भविष्यद्वक्ता ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता के गले पर से जूआ  
११ उतारके तोड़ डाला । और हननियाह ने सारे लोगों के आगे यह कहा कि पर-  
मेश्वर यों कहता है कि दो वरस के भीतर भीतर मैं इसी रीति से बाबुल के राजा  
नबूखुदनजर का जूआ सारे देशगणों के गले से तोड़ूंगा तब यरमियाह भविष्यद्वक्ता  
अपने मार्ग चला गया ॥

१२ जब कि हननियाह भविष्यद्वक्ता ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता के गले पर से जूआ  
१३ तोड़ा था तब यह कहते हुए परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास पहुंचा । कि  
जा और हननियाह से कह परमेश्वर यों कहता है कि तू ने तो लकड़ी के जूओं  
१४ को तोड़ा है परन्तु उस की संती तू लोहे के जूए बना । क्योंकि सेनाओं का  
परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने इन सारे देशगणों के गले  
पर लोहे का जूआ रक्खा है जिस्तें वे बाबुल के राजा नबूखुदनजर की सेवा करें  
और वे उस की सेवा करेंगे और मैं ने चौगान के पशुन को भी उसे दिया है ॥

१५ और यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने हननियाह भविष्यद्वक्ता से भी कहा कि हे  
हननियाह सुन परमेश्वर ने तुझे नहीं भेजा है परन्तु तू ने इन लोगों को झूठ की  
१६ प्रतीति कराई है । इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुझे भूमि पर से  
फेंकता हूँ तू इसी वरस मर जायेगा क्योंकि तू ने परमेश्वर से फिर जाने को कहा  
१७ है । और उसी वरस के सातवें मास में हननियाह भविष्यद्वक्ता मर गया ॥

उत्तीसवां पृष्ठ ।

१ और ये उस पत्री की बातें हैं जिसे यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने यहूसलम से  
प्राचीनों के बच्चे हुआओं को जो बंधुआई में गये थे और याजकों और भविष्यद्वक्तों

मिथ्या भविष्य कहते हैं जिस्तीं तुम्हें तुम्हारे देश से दूर करें और मैं तुम्हें बाहर खेद देऊँ और तुम नष्ट हो जाओ। परन्तु जो जातिगण अपने गनें का बाबुल ११ के राजा के जूय तले धरेगा और उस की सेवा करेगा परमेश्वर कहता है कि मैं उसे उसी के देश में कुशल से रहने देऊँगा और वह उस में जाते आवेगा और उस में रहेगा ॥

और इन सारी बातों के समान मैं ने यहूदाह के राजा सिदक्याह से कहा १२ कि अपने अपने गनें का बाबुल के राजा के जूय तले लाओ और उस की और उस के लोगों की सेवा करो और जीते रहो। क्यों तुम तलवार से और अकाल १३ से और सरी से सारे जाओगे नृ और तरे लोग परमेश्वर के वचन के समान जो उस ने इस जातिगण के विषय में कहा है जो बाबुल के राजा की सेवा करेगा। और भविष्यद्वक्ता की बातों को जो तुम से कहते हैं कि तुम बाबुल के राजा १४ की सेवा न करोगे मत मानियो क्योंकि वे तुम से मिथ्या भविष्य कहते हैं। क्योंकि १५ परमेश्वर कहता है कि मैं ने उन्हें नहीं भेजा है परन्तु वे मेरे नाम से मिथ्या भविष्य कहते हैं जिस्तीं मैं तुम्हें खेद देऊँ और तुम लोग और भविष्यद्वक्ता जो तुम्हें भविष्य कहते हैं नष्ट हो जाओ ॥

और मैं ने याजकों और इन सारे लोगों से यह वचन कहा कि परमेश्वर यों १६ कहता है कि तुम लोग अपने भविष्यद्वक्ता की बातें मत मानियो जो तुम से कहते हैं कि देखो परमेश्वर के सन्दिर के पात्र छोटे दिन के पीछे बाबुल से फिर लाये जायेंगे क्योंकि वे तुम से झूठा भविष्य कहते हैं। उन की बात मत सुनो १७ बाबुल के राजा की सेवा करो और जाओ यह नगर किस लिये उजाड़ हो जाये। परन्तु यदि वे भविष्यद्वक्ता दावे और परमेश्वर का वचन उन के पाम दाये तो वे १८ सेनाओं के परमेश्वर ने विन्ती करें कि जो पात्र परमेश्वर के सन्दिर में और यहूदाह के राजा के घर में और यरुसलम में छुटे हैं बाबुल को जाने न पावें ॥

क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है उन ग्यों के विषय और उस समुद्र १९ के विषय और उन आधारे के विषय और और पात्रों के विषय में जो इस नगर में रह गये हैं। जिन्हें बाबुल का राजा नबूखुदनजर ने ले गया था जब वह यहूदाह के राजा यहूयकाम के बेटे यकनियह को और यहूदाह और यरुसलम के सारे कुलीनों को यरुसलम से बाबुल को बंधुआई में ले गया। क्योंकि उन पात्रों २० के विषय में जो परमेश्वर के सन्दिर में और यहूदाह के राजा के घर में और यरुसलम में बच रहे हैं सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है। कि वे बाबुल में पहुंचाये जायेंगे और जब लों में उन पर दृष्टि न करे तब लों २१ वे बचा रहेंगे परमेश्वर कहता है उस के पीछे मैं उन्हें फिर लाऊँगा और इस स्थान में पहुंचाऊँगा ॥

अट्ठारहवां पट्टर ।

और उसी वरम में यहूदाह के राजा सिदक्याह के राज्य के आरंभ में चौथे १ वरम के पाँचवें मास में रेभा हुआ कि जियजनीअज़र के बेटे हननियह भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के सन्दिर में याजकों के और सारे लोगों के आगे सुक्त से कहा। कि २



अपने सेवक भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उन के पास भेजा विद्वान ही को उठके भेजा पर तुम ने न सुना परमेश्वर कहता है ॥

२० इस लिये हे बंधुआई के सारे लोगो जिन्हें मैं ने यहूदलम से बाबुल में भेजा है परमेश्वर का वचन सुनो । कौलायाह के बेटे अखिअथ के विषय में और मश-  
२१ सियाह के बेटे सिदकयाह के विषय में जो मेरे नाम से तुम्हीं मिथ्या भविष्य कहते हैं सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है देखो मैं उन्हें बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ में सौंपूंगा और वह उन्हें तुम्हारी आंखों के आगे  
२२ मार डालेगा । और उन से जो बाबुल में यहूदाह के सारे बंधुओं में हैं यह साथ लिया जायेगा कि परमेश्वर तुम्हें सिदकयाह और अखिअथ की नाईं बनावे जिन्हें  
२३ बाबुल के राजा ने आग में भूना था । क्योंकि उन्होंने ने इसराएल में मूर्खता की है और अपने परीसियों की पदियों से व्यवहार किया है और मेरे नाम से मिथ्या कहा है जो मैं ने उन्हें आज्ञा न की है मैं जानता हूं और साक्षी हूं परमेश्वर कहता है ॥

२४ और नखलामी समरेयाह से यह कहके बोल । कि सेनाओं का परमेश्वर इस-  
२५ राएल का ईश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने अपने नाम से यहूदलम के सारे लोगों के पास और मशसियाह याजक के बेटे सफनियाह के और सारे याजकों  
२६ के पास यह कहके पत्री भेजी है । कि यहूदः याजक की सन्ती परमेश्वर ने तुम्हें याजक किया है जिस्तें परमेश्वर के मन्दिर में तुम प्रधान द्रोओ और हर एक  
२७ वैद्वह को और जो अपने को भविष्यद्वक्ता बनाता है तू उसे बन्दीगृह और काठ में डाले । और अब किस लिये तू ने अनताती यरमियाह को नहीं दपटा जो  
२८ अपने को तुम्हारे आगे भविष्यद्वक्ता दिखाता है । क्योंकि उस ने यह कहके हमारे पास बाबुल में कहला भेजा है कि बहुत दिन हैं घर बना बनाके खसो और बारी  
२९ लगाके उन के फल खाओ । और सफनियाह याजक ने इस पत्री को यरमियाह भविष्यद्वक्ता के सुने में पड़ा ॥

३० और परमेश्वर का वचन यह कहता हुआ यरमियाह के पास पहुंचा । कि  
३१ बंधुआई के सारे लोगों को कहला भेज नखलामी समरेयाह के विषय में परमे-  
श्वर यों कहता है इस लिये कि समरेयाह ने तुम्हें भविष्य कहा और मैं ने उसे  
३२ नहीं भेजा और उस ने तुम्हें झूठ पर भरोसा करवाया है । इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं नखलामी समरेयाह को और उस के वंश को दंड देऊंगा और उस के परिवार का एक भी उस के लोगों में न रहने पावेगा और जो भलाई में अपने लोगों पर कहेगा परमेश्वर कहता है वह उसे न देखेगा क्योंकि उस ने परमेश्वर से फिर जाने को कहा है ॥

तीसवां पर्व ।

१ यह कहते हुए परमेश्वर का वचन यरमियाह के पास पहुंचा । परमेश्वर इस-  
राएल के ईश्वर ने यों कहा है कि सारे वचन जो मैं ने तुम्हें कहा है पुस्तक में  
२ लिख । क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं जब कि मैं अपने इसराएल और यहूदाह के लोगों की बंधुआई को पलटूंगा और परमेश्वर कहता

को और उन सारे लोगों को जिन्हें न्यूगुदनजर यरुसलम में बाबुल की बंधुआई में ले गया था । उस के पीछे कि यकूनियाह राजा और रानी और नरुंगक और यहूदाह और यरुसलम के अध्यक्ष और बड़े और नोत्तार यरुसलम में चले गये । साफन के बेटे इलियासः के और गिलकियाह के बेटे जसरियाह के हाथों में कहते हुए भेजा जिन्हें यहूदाह के राजा मिकक्याह ने बाबुल में बाबुल के राजा न्यूगुदनजर के पास भेजा ॥

सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर सारी बंधुआई में यों कहता है जिन्हें मैं ने यरुसलम में बाबुल की बंधुआई में पहुंचाया । घर बना बना यमो और दारी लगा लगा उन के फल खाओ । बिपाह करो और बेटे बेटियां जन्माओ और अपने बेटों के लिये पविषां लेओ और अपनी बेटियों का बिपाह करो जिन्हें वे बेटा बेटा लने और बच्चा बच्चा और मत घेटा । और जिम नगर में मैं ने तुम्हें बंधुआई में पहुंचाया उस का कुशल चाहे और उस के लिये परमेश्वर में प्रार्थना करो क्योंकि उस के कुशल में तुम्हारा कुशल है ॥

क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम्हारे भविष्यद्वक्ता जो तुम्हारे मध्य में हैं और तुम्हारे दैवज्ञ तुम्हें कल न देने पायें और अपने स्वप्न व्यवहारियों को मत मानो जिन्हें तुम स्वप्न दिखवाने हो । क्योंकि वे मेरे नाम से तुम से मिथ्या भविष्य कहते हैं मैं ने उन्हें नहीं भेजा है परमेश्वर कहता है । क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि बाबुल में सत्तर वर्ष घरे होने के पीछे मैं तुम से भेंट करूंगा और तुम्हें इस स्थान में फिर लाने का तुम पर अपनी अच्छी प्रतिज्ञा पूरी करूंगा । क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में अपने मन की यांका जानता हूं अर्थात् कुशल की परन्तु दुःख की यांका नहीं जिसे तुम्हारी पिछली दशा को याग की बनाऊं । तब तुम लोग मुझे पुकारोगे और जाके मेरी प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा । और तुम मुझे ढूंढोगे और पाओगे क्योंकि तुम अपने सारे मन से मुझे ढूंढोगे । और मैं तुम से पाया जाऊंगा परमेश्वर कहता है और तुम्हारी बंधुआई का पलट देऊंगा और तुम्हें सारे जातिगणों में से और सारे स्थानों में से जहां जहां मैं ने तुम्हें खदेड़ा है मैं तुम्हें बटोरूंगा परमेश्वर कहता है और तुम्हें उस स्थान में जहां से मैं ने तुम्हें बंधुआई में पहुंचाया फिर लाऊंगा ॥

क्योंकि तुम ने कहा कि परमेश्वर ने हमारे लिये बाबुल में भविष्यद्वक्ताओं को खड़ा किया है । क्योंकि परमेश्वर राजा के विषय में जो दाऊद के सिंहासन पर बैठा है और इस नगर के सारे निवासियों के विषय में और तुम्हारे भाईवंद के विषय में जो तुम्हारे साथ बंधुआई में न गये थे यों कहता है । सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है देखो मैं उन पर तलवार और अकाल और सरी भेजने पर हूं और उन्हें घुरे गूलरों की नाईं बनाऊंगा जो घुराई के सारे ग्याये नहीं जा सकें । और मैं उन्हें तलवार से और अकाल से और सरी से सताऊंगा और मैं उन्हें पृथिवी के सारे राज्यों में भ्रमण के लिये सौंपूंगा कि वे सारे जातिगणों में जिन में मैं ने उन्हें खेदा माप और आश्चर्य और फुफकार और निन्दा के कामगार दायें । इस लिये कि उन्हें ने मेरे वचनों को न सुना परमेश्वर कहता है बिन्तें मैं ने ॥

२१ होगी और मैं उन के अंधेरकों को दंड देऊंगा । और उस का अध्यास उसी के कुल में का होगा और उस का प्रधान उस के मध्य में से निकलेगा और मैं उसे खींचूंगा जिस्तें वह मेरे पास आवे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि कौन है जिसने मेरे पास आने को अपना मन सिद्ध किया है । और तुम मेरे लोग होओगे और मैं तुम्हारा ईश्वर हूंगा ॥

२३ देखो परमेश्वर का खवंडर वह कोप से निकलता है हां एक भयानक खवंडर २४ जो दुष्टों के सिर पर उतरेगा । परमेश्वर का महा कोप फिर न आवेगा जब लो कार्य न करे और अपने मन का ठाना हुआ पूरा न करे प्रकृति दिनों में तुम लोग उस पर सोच करोगे ।

### एकतीसवां पर्व ।

१ परमेश्वर कहता है कि उस समय मैं मैं इसराएल के सारे परिवारों का ईश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे । परमेश्वर यों कहता है कि तलवार से उबरे हुए लोगों ने अर्थात् इसराएल ने वन में कृपा पाई जब कि मैं उसे चैन देने गया । दूर से परमेश्वर ने मुझे दिखाई देते हुए कहा कि मैं ने सनातन के प्रेम से तुम्हें प्रेम किया इसी लिये मैं ने तुम्हें पर दया बढ़ाई है । हे इसराएल की कन्या तथापि मैं तुम्हें फिरके बनाऊंगा और तू वन जायेगी तू फिर अपने मृदंग से आप को सिंगारेगी और आनन्दित लोगों के साथ नाच में जायेगी । तू फिरके समरुन के पर्वतों पर दाख की बारी लगायेगी लगानेवाले लगावेंगे और भोगेंगे । ६ क्योंकि दिन आया है इफरायम पहाड़ के पदरु ने प्रचारा है कि उठो हम परमेश्वर अपने ईश्वर के पास सैहून पर चढ़ जायें ॥

७ क्योंकि परमेश्वर ने कहा है कि यश्कूब के लिये आनन्द से गाओ और जातिगणों के श्रेष्ठ के साथ जय जयकार करो प्रचारा स्तुति करके कहो कि हे परमेश्वर अपने लोगों को अर्थात् इसराएल के उबरे हुएों को बचा । देख मैं उत्तर देश से उन्हें लाऊंगा और पृथिवी के खंडों से उन्हें एकट्ठा करूंगा और उन में अन्धे और लंगड़े और गर्भिणी और जो पीर में हैं एक बड़ी मंडली फिर आवेंगी । ९ वे बिलाप करते करते आवेंगे और गिन्ती करते करते मैं उन्हें लाऊंगा मैं उन्हें जल की धारों पर समथर मार्ग से चलाऊंगा जिस में वे ठोकर न खायेंगे क्योंकि मैं इसराएल का पिता हुआ हूँ और इफरायम मेरा पहिलौठा था ॥

१० हे अन्यदेशियो परमेश्वर का बचन सुनो और दूर के टापुओं में सुनाके कहो कि जिस ने इसराएल को छिन्न भिन्न किया वही उसे बटोरेगा और जैसे गड़रिया अपनी भुंड की तैसा वह उस की रखवाली करेगा । क्योंकि परमेश्वर ने यश्कूब को कुड़ा लिया है और जो उससे बलवन्त हैं उस के हाथ से कुड़ावेगा । इस लिये वे आके सैहून के टीले पर गावेंगे और परमेश्वर की अच्छी बस्तुन को अर्थात् अन्न और दाखरस और तेल और लेंठे के और भुंड के बच्चों को भाग लेने को एकट्ठे होंगे और उन का प्राण सींची बारी की नाई होगा और वे फिर उदास न होंगे । तब कन्या नाच में और तरुण और पुरनिया एकट्ठे आनन्दित होंगे और मैं उन के बिलाप को आनन्द से पलट डालूंगा और उन के शोक के

है कि मैं उन्हें उस देश में फिर लाऊंगा जो उन के पितरों को दिया था और वे उस के अधिकारी होंगे । और यह वे बचन हैं जो परमेश्वर ने इसराएल और 8 यहूदाह के विषय में कहे हैं ॥

कि परमेश्वर यों कहता है कि हम ने यर्याहट का शब्द सुना है भय है और ५ कुशल नहीं । अब पूछो और देखो यदि पुरुष जन सत्ता है क्यों मैं ने हर एक पुरुष ६ को पीड़ित स्त्री को नाई अपनी अपनी कटि पर हाथ धरे हुए देखा है कि सब के मुँह पीले हो रहे हैं । हाथ क्योंकि वह दिन बढ़ा है यहाँ लों कि उस के तुल्य ७ नहीं है वह यश्शूय की विपत्ति का समय होगा परन्तु वह उम्मे बच जायेगा ॥

और उस दिन ऐसा होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं उस का ८ जूआ तेरे गले पर से तोड़ देऊंगा और उस के बंधनों को भटक देऊंगा और परदेशी उम्मे फिर सेवा न करावेंगे । परन्तु वे परमेश्वर अपने ईश्वर की और ९ अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे जिसे मैं उन के लिये उठाऊंगा । इस लिये १० वे मेरे दास यश्शूय मत डर परमेश्वर कहता है और वे इसराएल विस्मित मत हो क्योंकि देख दूर से मैं तुम्हें कुशल से पहुँचाऊंगा और तेरे बंधों को उन की बंधुआई के देश से और यश्शूय फिरेगा और चैन करेगा और निर्भय से भी रहेगा और उसे कोई न डरावेगा । क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ परमेश्वर कहता है कि तुम्हें ११ बचाऊँ क्योंकि मैं सारे देशगलों को जहाँ जहाँ मैं ने तुम्हें बिथराया है मिटाऊँगा पर मैं तुम्हें सर्वथा न मिटाऊँगा परन्तु तुम्हें परिमाण से ताड़ना कहेगा और तुम्हें निर्दोष न छोड़ूँगा ॥

क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि तेरी चोट असाध्य है तेरा घाव दुःख- १२ दायक । कोई नहीं जो तेरा न्याय करे कि तू बांधा जाये अच्छा करने की १३ आप्रध तुझ पर कोई नहीं लगाता । तेरे सारे मित्र तुम्हें भूल गये वे तेरी खोज १४ नहीं करते तेरे पाप बड़े होने के और तेरे अपराध बहुत होने के कारण निश्चय मैं ने एक बड़ी ताड़ना से तेरी की मार से तुम्हें मारा है । अपनी चोट के सारे १५ क्यों चिल्लाता है तेरा कष्ट असाध्य है तेरे पाप बड़े होने के और तेरे अपराध बहुत होने के कारण मैं इन बातों को तुम्हें पर लाया । इस लिये सब जो तुम्हें १६ भक्तते हैं पीछे आप भक्ते जायेंगे और तेरे सारे बंधी बंधुआई से जायेंगे और जो तुम्हें लूटते हैं वे आप लूट लेंगे और जो तुम्हें नष्ट करते हैं उन्हें मैं नष्टता को सौंपूँगा । क्योंकि मैं तुम्हें फिर चंगा कहेगा और तेरा घाव अच्छा कहेगा परमेश्वर कहता १७ है क्योंकि उन्होंने तेरा नाम अजाती सैदून रक्खा है जिस की सुधि कोई नहीं लेता ॥

परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं यश्शूय के तंधुओं की बंधुआई को पलटूँगा १८ और उस के निवासस्थानों पर दया कहेगा और नगर अपने ढेर पर बनाया जायेगा और राजभवन अपने ठिकाने पर बनाया जायेगा । और उन में से धन्यवाद और १९ आनन्दित लोगों का शब्द निकलेगा और मैं उन्हें बहाऊँगा और वे घटायें न जायेंगे और मैं उन्हें प्रतिष्ठा देऊँगा और वे तुच्छ न होंगे ॥

और उस के बालक आगे की नाई होंगे और उस की मंडली मेरे आगे स्थिर २०

३२ से और यहूदाह के घराने से एक नई छात्रा यांधूंगा । उस छात्रा के समान नहीं  
 जो मैं ने उन के पितरों से किई थी जब कि मैं उन के हाथ पकड़के उन्हें मिस्र  
 ३३ का प्रति या परमेश्वर कहता है । क्योंकि यह वह छात्रा है जो मैं इसराएल के  
 घराने से यांधूंगा उन दिनों के पीछे परमेश्वर कहता है मैं अपनी व्यवस्था उन  
 के अन्तःकरण में डालूंगा और उन के मन में उसे लिखूंगा और मैं उन का ईश्वर  
 ३४ हूंगा और वे मेरे लोग होंगे । और वे फिर अपने अपने परेसी और अपने अपने  
 भाई को यह कहके न सिखावेंगे कि परमेश्वर को जानो क्योंकि छोटे से बड़े लों  
 सब मुझे जानेंगे परमेश्वर कहता है क्योंकि मैं उन की खुराई को समा करूंगा  
 और उन का पाप फिर स्मरण न करूंगा ॥

३५ परमेश्वर यों कहता है जो दिन के उजियाले के लिये सूर्य को ठहराता है  
 और रात के उजियाले के लिये चांद और तारों की विधि करता है जो समुद्र को  
 यहां लों लहराता है कि उन के ठेक दाहा करते हैं उस का नाम सेनाओं का  
 ३६ परमेश्वर है । जो ये व्यवस्था मुझ से जाती रहें परमेश्वर कहता है तो इसराएल  
 ३७ के वंश भी मेरे आगे नित्य एक जाति होने से जाते रहेंगे । परमेश्वर यों कहता  
 है कि यदि ऊपर स्वर्ग नापा जा सके अथवा पृथिवी के नीचे की नलों की ग्राह  
 लिई जाये तो मैं भी उन की सारी करनी के कारण इसराएल के सारे वंश को  
 त्यागूंगा परमेश्वर कहता है ॥

३८ देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है कि इननिएल के गुम्मत से कोने के  
 ३९ फाटक लों परमेश्वर के लिये नगर बनाया जायेगा । और नापने की रस्सी  
 ४० जरीख पहाड़ के ऊपर से होके जुशः को घेर लेगी । और लोथों की और राख  
 की सारी तराई और सारे खेत कंदहन नाली लों पूरख के छोड़फाटक के कोने लों  
 परमेश्वर के लिये प्रवित्र होंगे वह उखाड़ा और फिर कधी गिराया न जायेगा ॥

वर्तीसवां पर्व ।

१ यहूदाह के राजा सिदकयाह के दसवें बरस जो नव्वखुदनजर का अठारहवां  
 बरस था परमेश्वर का वचन यरमियाह के पास पहुंचा ॥

२ और उस समय बाबुल के राजा की सेना ने यरुसलम को घेर रक्खा था  
 ३ और यरमियाह भविष्यद्वक्ता बन्दीगृह के आंगन में जो यहूदाह के राजा के भवन  
 ३ में था बन्द था । क्योंकि यहूदाह के राजा सिदकयाह ने यह कहके उसे बंधन  
 में रक्खा कि तू ने क्यों यह भविष्य कहा है कि परमेश्वर यों कहता है कि  
 देख मैं इस नगर को बाबुल के राजा के हाथ में सौंपता हूं और वह इसे ले  
 ४ लेगा । और यहूदाह का राजा सिदकयाह कसदियों के हाथ से न कूटेगा  
 परन्तु निश्चय बाबुल के राजा के हाथ में सौंपा जायेगा और वह उसे मुंह मुंह  
 ५ बोलेंगा और इस की आंखें उस की आंखों को देखेंगी । और वह सिदकयाह  
 को बाबुल में ले जायेगा और जब लों मैं उसे पलटा न लेऊं तब लों वह  
 वहीं रहेगा परमेश्वर कहता है जब तुम लोग कसदियों से संग्राम करोगे तो  
 भाग्यमान न होओगे ॥

पीछे मैं उन्हें शान्ति देके मगन करूँगा । और मैं बालकों के प्राण को पदार्थों से १४  
अघाऊँगा और मेरे लोग मेरी अच्छी वस्तुन से संतुष्ट होंगे परमेश्वर कहता है ॥

परमेश्वर यों कहता है कि रामः मैं एक शब्द सुना गया अति खिलाप का १५  
हाहाकार राखिल अपने बालकों के लिये रोती है और शान्ति नहीं देती क्योंकि  
वे नहीं हैं ॥

परमेश्वर यों कहता है कि अपने खिलाप के शब्द को और आंखों से आंसू १६  
को रोक ले क्योंकि तेरे कार्य का प्रतिफल होगा परमेश्वर कहता है और वे  
छेरियों के देश में फिर आँवेंगे । और परमेश्वर कहता है कि तेरे अन्त में भरोसा १७  
है और तेरे बालक अपने ही सिवाने में आँवेंगे ॥

निश्चय मैं ने इफरायम को खिलाप करते सुना है कि तू ने मुझे ताड़ना किई १८  
है और मैं ने बिन निकाले हुए बरुड़े की नाईं ताड़ना पाई तू मुझे फिरा और मैं  
फिदंगा क्योंकि तू ही परमेश्वर मेरा ईश्वर है । निश्चय मेरे फिराये जाने से मैं १९  
पकनाया और चिताये जाने के पीछे अपनी जाँघ पर छाँय मारा मैं लज्जित हुआ  
और लाज में भर गया क्योंकि मैं ने अपनी तरुणाई की निन्दा सही ॥

व्या इफरायम मेरा प्रिय पुत्र नहीं क्या यह हुलारा बालक नहीं क्योंकि मेरा २०  
बचन ज्यों ही उस के मन में पहुँचा मैं ने उसे फिर स्मरण किया इस लिये  
मेरा मन उस के लिये व्याकुल हुआ निश्चय मैं उस पर दया करूँगा परमेश्वर  
कहता है ॥

पश्चिन्द अपने लिये स्थापन कर अपने लिये ग्वंभे खड़े कर राजमार्ग की २१  
और मन लगा है इसराएल की कन्या जिस मार्ग से तू गई फिर आ अपने इन  
नगरों की और फिर आ । हे सगरी कन्या तू कब लौ फिर फिर जायेगी क्योंकि २२  
परमेश्वर पृथिवी में एक नई बात सिरजने पर है कि स्त्री पुस्य को घरेगी ॥

सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जब मैं उन की २३  
बंधुआई को पलटूँगा तब वे यहूदाह देश में और उस के नगरों में यह बचन  
करेंगे कि हे धर्म के निवास हे अति धार्मिक के पर्वत परमेश्वर तुम्हें आशीष  
देगा । और यहूदाह और उस के सारे नगर किसान होके एक साथ उस में छरेंगे २४  
और वे झुंडों का लिये हुए फिरेंगे । क्योंकि मैं ने प्रियासे प्राणी को संतुष्ट किया २५  
है और हर एक मरभूख प्राणी को तृप्त किया है । उस्से मैं जाग उठा और देखा २६  
और मेरी नींद सुख की थी ॥

परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं कि मैं इसराएल के घराने को २७  
और यहूदाह के घराने को मनुष्य के और पशु के बीज से बरूँगा । और यों होगा २८  
कि जैसा मैं उन्हें उखाड़ने का और ठाने का और उलटने का और नाश करने का  
और दुःख देने का चौकस हुआ हूँ तैसा उन्हें बनाने और बाने का चौकस हूँगा  
परमेश्वर कहता है । उन दिनों मैं वे फिर न करूँगे कि पितरों ने खट्टा अंगूर २९  
खाया है और बालकों के दाँत खट्टे हुए हैं । परन्तु हर एक जन अपनी ही बुराई ३०  
के लिये मरेगा जिस जन ने खट्टा अंगूर खाया है उस के दाँत खट्टे होंगे ॥

परमेश्वर कहता है कि देख वे दिन आते हैं जिस में मैं इसराएल के घराने ३१



नगर कसदियों के हाथ में जो उस के विरुद्ध लड़ते हैं तलवार के और अकाल के और मरी के कारण दिये गये हैं और तो देखता है कि जो कुछ तू ने कहा है सो पूरा हुआ है । और हे प्रभु परमेश्वर तू ने मुझ से कहा है कि रोकड़ से अपने लिये खेत मोल ले और साक्षी करा यद्यपि नगर कसदियों के हाथ में दिया गया है ।

तब परमेश्वर का खचन यह कहके परमियाह के पास पहुँचा । देख मैं परमेश्वर सारे प्राणियों का ईश्वर क्या मेरे लिये कुछ कठिन हो सकता है । इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं यह नगर कसदियों के हाथ में और बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ में देता हूँ और वह उसे ले लेगा । और कसदी जो इस नगर से लड़ते हैं पैठेंगे और इस नगर में आग लगावेंगे और उसे और उन घरों को जिन की कृतों पर मुझे रिस दिलाने को उन्होंने ने बअल के लिये धूप जलाया है और उपरी देवों के लिये तर्पण किया है जला देंगे । क्योंकि इसराएल के संतान और यहूदाह के संतान अपनी युवायस्था से वही बात करते हैं जो मेरी दृष्टि में लुगी है कि इसराएल के संतान अपने ही हाथों के कार्यों से मुझे रिस दिला रहे हैं परमेश्वर कहता है । क्योंकि यह नगर जब से उन्होंने ने बनाया है आज लो मेरे कोप और मेरी जलजलाहट का कारण हो रहा है कि मैं उसे अपनी दृष्टि से निकालूँ । इसराएल के संतानों की और यहूदाह के संतानों की समस्त दुष्टता के कारण जो उन्होंने ने और उन के राजाओं ने और उन के अध्यक्षों ने और उन के याजकों ने और उन के भविष्यद्वक्ताओं ने और यहूदाह के मनुष्यों ने और यहसलम के निवासियों ने किई । क्योंकि उन्होंने ने मेरी और पीठ फेरी और मुँह नहीं और जब मैं ने उन्हें भार को उठ उठके उपदेश किया और सिखाया तो उपदेश ग्रहण करने को किसी ने न सुना । और जो घर मेरे नाम से कहावता है उसे अशुद्ध करने को उन्होंने ने उस में घिनौनी वस्तुन को स्थापन किया है । और उन्होंने ने बअल के लिये जंवे जंवे स्थान बनाये जो हिन्नूम के बेटे की तराई में है जिस्तें अपने बेटे बेटियों को मालिक के लिये आग में से चलावें जिसे मैं ने उन्हें बर्जा था और जो मेरे मन में नहीं आया था कि वे यहूदाह पर अपराध लगाने को ऐसा घिनित कार्य करें ।

और अब इस लिये परमेश्वर इसराएल का ईश्वर इस नगर के विषय में जिस की अवस्था में तुम लोग कहते हो कि तलवार से और अकाल से और मरी से बाबुल के राजा के हाथ में सौंपा गया है यों कहता है । देख जहाँ जहाँ मैं ने उन्हें अपनी रिस में और जलजलाहट में और महा कोप में खेदा है मैं उन्हें उन सारे देशों से बटोहूँगा और फिर उन्हें इस स्थान में लाके निर्भय से बसाऊँगा । और वे मेरे लोग होंगे और मैं उन का ईश्वर हूँगा । और मैं उन्हें एक मन और एक ही मार्ग उन की भलाई के लिये और उन के पीछे उन के संतानों की भलाई के लिये देखूँगा जिस्तें मुझ से नित्य डरा करें । और मैं उन की भलाई करने को उन से एक सनातन की खाचा खाँधूँगा जो मैं उन से उठा न लेऊँगा और मैं अपना भय उन के मन में डालूँगा जिस्तें वे मुझ से

और परमियाह ने कहा कि यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । ६  
 देख तेरे चचा मूलम का घेडा इनमियल यह कहते हुए तेरे पास आयेगा कि ७  
 मेरा खेत जो अनतात में है अपने लिये मोल ले क्योंकि उसे छुड़ाने का तेरा ८  
 अधिकार है । तब मेरे चचा के बेटे इनमियल ने परमेश्वर के वचन के समान ९  
 बन्दीगृह के आंगन में आके मुझ में यह कहा कि मैं तेरी बिल्ली करता हूं कि १०  
 मेरा खेत जो बिनपमीन देश के अनतात में है मोल ले क्योंकि तेरा अधिकार है ११  
 और छोड़ाना तेरा है तू अपने लिये मोल ले तब मैं ने जाना कि यह परमेश्वर १२  
 का वचन है । इस लिये मैं ने उस खेत को जो अनतात में था अपने चचा इन- १३  
 मियल के बेटे से मोल लिया और उसे रोकड़ दिया अर्थात् सत्तगढ़ शेरकल घांटी । १४  
 और विक्रयपत्र लिखके छापा और साची करवाई और रोकड़ को ताल दिया । १५  
 और मैं ने छाप किये हुए विक्रयपत्र को लिया अर्थात् व्यवस्था और रीति के १६  
 समान छापा हुआ था और जो खुना था । और यह विक्रयपत्र मेरे चचा के बेटे १७  
 इनमियल के आगे और विक्रयपत्र के साक्षियों के आगे और मारे बहूदियों के आगे १८  
 जो बन्दीगृह के आंगन में बैठे थे परमियाह के बेटे नैपरियाह के बेटे बरक को १९  
 सांप दिया । और उन के आगे मैं ने बरक को यह कहके आज्ञा किई । कि २०  
 सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि इन लिखे २१  
 हुए विक्रयपत्रों को ले छापे हुए को और खुले हुए को और उन्हें एक मिट्टी २२  
 के पात्र में रख जिस्ते बहुत दिन ठहरें । क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल २३  
 का ईश्वर यों कहता है कि घर और खेत और दाम की दारी इस देश में फिर २४  
 पाई जायेंगी ।

तब मैं ने नैपरियाह के बेटे बरक को यह विक्रयपत्र सांप दिया तब यह २५  
 कहके मैं ने परमेश्वर की प्रार्थना किई । हाय प्रभु परमेश्वर देख तू ने अपने महा २६  
 पराक्रम से और अपनी बड़ाई हुई भुजा से स्वर्ग और पृथिवी को सृजा है तेरे २७  
 लिये कुछ कठिन नहीं है । जो सन्तों पर दया करता है और पितरों की धुराई २८  
 उन के पीछे उन के बालकों की गोद में जो उन के पीछे आते हैं पलटा देता है २९  
 अत्यन्त महान और अत्यन्त पराक्रमी ईश्वर जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर ३०  
 है । परामर्श में महान और कार्यों में बलवन्त जिस की आंखें मनुष्य के पुत्रों ३१  
 की सारी चालों पर खुली हैं जिस्ते घर एक को उस की चालों के समान ३२  
 और उस के कार्यों के प्रतिफल के तुल्य देखे । जिस ने मिस्र देश में और इसरा- ३३  
 एल में और मनुष्यों में आज लो लक्षण और आश्चर्य दिखाये हैं और अपने लिये ३४  
 आज के समान नाम कर रक्खा है । और अपने इसराएल लोगों को मिस्र देश से ३५  
 लक्षण और आश्चर्य और दृढ़ घाघ से और फैलाई हुई भुजा से और बड़े भय ३६  
 से निकाल लाया है । और यह देश उन्हें दिया है जिस के विषय में तू ने उन के ३७  
 पितरों से किरिया खाई थी कि दूध और मधु का देश उन्हें देंगा । और वे ३८  
 प्रवेश करके उस के अधिकारी हुए परन्तु उन्हें ने तेरा शब्द न माना और तेरी ३९  
 व्यवस्था पर न चले और तेरी आज्ञाओं को उन्हें ने पालन न किया इसी कारण ४०  
 तू यह मारी विपत्ति उन पर लाया है । देख नगर लेने को मोर्चे बड़े आते हैं और ४१

करो क्योंकि परमेश्वर भला है और उस की दया सदा लों है और उन का शब्द जो परमेश्वर के मन्दिर में स्तुति की भेंट लाते हैं क्योंकि मैं पहिले के समान देश की बंधुआई को फेर देऊंगा परमेश्वर कहता है ॥

१२ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि इस स्थान में जो मनुष्य बिना और पशु बिना उजाड़ है और उस के सारे नगरों में गड़रिये निवास करेंगे जो अपनी भेड़ बकरियों को बैठावेंगे । पर्वत देश के नगरों में और चौगान के नगरों में और दक्खिन के नगरों में और दिनयमीन के देश में और यरूसलम के आसपास के स्थानों में और यहूदाह के नगरों में भुंड फिर गिनवैये के हाथ के नीचे बीतेंगे परमेश्वर कहता है ।

१४ देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जो मैं ने इसराएल के घराने के और यहूदाह के घराने के विषय में कहा है उस अच्छी बात को पूरा करूंगा । उन दिनों में और उस समय में मैं दाऊद के लिये एक धर्म की डाली उभाड़ूंगा और वह देश में विचार और न्याय करेगा । उन दिनों में यहूदाह मुक्ति पावेगा और यरूसलम निर्भय से बसेगा और वह इस नाम से पुकारा जायेगा कि परमेश्वर हमारा धर्म । क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल के घराने के सिंहासन पर बैठने को दाऊद से एक भी न घटेगा । और बलिदान की भेंट और होम की भेंट मेरे आगे चढ़ाने को और नित्य बलि चढ़ाने को लावी याजकों से एक न घटेगा ॥

१८ यह कहते हुए भी परमेश्वर का वचन यरमियाह के पास पहुंचा । परमेश्वर यों कहता है कि जो तुम लोग दिन के मेरे नियम को और रात के मेरे नियम को वृथा कर सको यहां लों कि प्रतिदिन प्रतिरात समय में न होवे । तो मेरे दास दाऊद से मेरा नियम वृथा होगा कि उस के सिंहासन पर राज्य करने को पुत्र न होवे और याजक लावियों से जो मेरी सेवा करते हैं । जैसे स्वर्ग की सेना गिनी नहीं जा सकती है और समुद्र की बालू तौली नहीं जा सकती तैसा मैं अपने दास दाऊद के वंश को और लावियों को जो मेरी सेवा करते हैं बढ़ाऊंगा ॥

२३ परमेश्वर का वचन यह भी कहते हुए यरमियाह के पास पहुंचा । क्या तू ने नहीं देखा कि जिन दो घरानों को परमेश्वर ने चुना है उस ने उन्हें भी त्यागा है कि ये लोग क्या कहते हैं इस रीति उन्होंने ने मेरे लोगों को तुच्छ जाना यहां लों कि वे एक जातिगण उन के साम्हने नहीं हैं । परमेश्वर यों कहता है जो दिन और रात से मेरा नियम न हो और स्वर्ग पृथिवी जो मैं ने ठहराई है बिधि न हो । तो मैं यश्कूब के वंश को और अपने दास दाऊद को त्यागूंगा यहां लों कि अबिरहाम और इजहाक और यश्कूब के वंश के लिये उन के वंश में से प्रभुता के लिये न लेऊं क्योंकि मैं उन की बंधुआई को पलट डालूंगा और उन पर दया करूंगा ॥

चौतीसवां पर्व ।

१ जब बाबुल का राजा नबूखुदनजर और उस की सारी सेना और पृथिवी के

फिर न जायें । और उन पर भलाई के लिये मैं उन से आनन्दित हूँगा और ४१  
निश्चय मैं उन्हें अपने सारे अन्तःकरण और अपने सारे प्राण से इस देश में  
बसाऊँगा ॥

क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि जैसा मैं उन लोगों पर यह सारी सजा ४२  
विपत्ति लाया हूँ तैसा ही मैं उन पर सारी भलाई लाऊँगा जो मैं ने उन के  
विषय में कही है । और इस देश में खेत फिर मोल लिया जायेगा जिस के ४३  
विषय में तुम लोग कहते हो कि वह भिन मनुष्य और भिन पशु उजाड़ है और  
कसदियों के हाथ में दिया गया है । भिनयमीन देश में और यरुसलम के आसपास ४४  
और यहूदाह के नगरों में और पर्वत देश के नगरों में और चांगान के नगरों में  
और दक्खिन के नगरों में मनुष्य रोऊँगे से खेत मोल लेंगे और मोल लेने का  
पत्र भी लिखके छापकर साक्षी करावेंगे क्योंकि मैं उन की बंधुआई को फेरूँगा  
परमेश्वर कहता है ॥

तीसरा पर्व ।

और परमियाह के बन्दीगृह के आंगन में बन्द रहते ही परमेश्वर का वचन १  
उस के पास यह कहते हुए दूसरी बार पहुँचा ॥

उस का कारण परमेश्वर यों कहता है उस का सृष्टिकर्ता परमेश्वर जो उसे २  
स्थिर भी करता है परमेश्वर उस का नाम है । मेरी बिल्ली कर और मैं तुम्हें उत्तर ३  
देऊँगा और बड़े बड़े कार्य और छिपी छिपी वस्तु जो तू नहीं जानता तुम्हें बत-  
लाऊँगा । क्योंकि इस नगर के घरों के और यहूदाह के राजाओं के घरों के विषय ४  
में जो मोर्ची से और तलवार से गिराये गये हैं परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों  
कहता है । जो कसदियों से संग्राम करने को आये हैं और उन्हें मनुष्यों की लाशों ५  
से भरने को जिन्हें मैं ने अपनी रिस और क्रोध में नारा है और जिन की सारी  
दुष्टता के कारण मैं ने अपना मुँह इस नगर से छिपाया है । देखो मैं उस पर लक्ष ६  
लगाऊँगा और औषध मे चूँगा कर्मगा और कुशल और सच्चाई की अधिकारी प्रगट  
करूँगा । और मैं यहूदाह की और इसराएल की बंधुआई को फेर लाऊँगा और ७  
पाँहिले के समान उन्हें बनाऊँगा । और मैं उन की सारी दुराई से जो उन्हें ने ८  
मेरे विरुद्ध अपराध किया है उन्हें पवित्र करूँगा और उन की सारी दुराइयों को  
जो उन्हें ने मेरे विरोध अपराध किया है और जो उन्हें ने हठ से मेरा विरोध ९  
किया है क्षमा करूँगा । और वह मेरे लिये आनन्द का नाम और स्तुति और विश्व ९  
होगा पृथिवी के सारे जातिगणों में जो मेरी सारी भलाई को जो मैं उन पर करता  
हूँ मुनेंगे और उस सारी भाग्यमानी और कुशलता के कारण जो मैं उन्हें देता हूँ  
वे डरेंगे और काँपेंगे ॥

परमेश्वर यों कहता है कि इस स्थान में जिस के विषय में तुम लोग कहते १०  
हो कि मनुष्य बिना और पशु बिना उजाड़ है यहूदाह के नगरों में और यरुसलम  
के मार्गों में जो मनुष्य बिना उजाड़ हैं अर्थात् निवासी और पशु बिना । आनन्द ११  
का शब्द और सुखविलास का शब्द और दुल्हा का शब्द और दुल्हन का शब्द  
और उन का शब्द मुना जायेगा जो कहते हैं कि सेनाओं के परमेश्वर की स्तुति

१७ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तुम ने मेरी न मानी कि हर एक अपने अपने भाई और अपने अपने परोसी पर कुटकारा प्रचारे देख परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे लिये तलवार और मरी और अकाल को कुटकारा प्रचारता हूँ १८ और तुम्हें पृथिवी के सारे राज्यों में संकट में डालूंगा । और जिन लोगों ने मेरी वाचा को उल्लंघन किया है जिन्होंने ने उस वाचा की बातों को पूरा न किया जो उन्होंने ने मेरे आगे किई थी जब वे बकड़े को दो टुकड़े करके उन के मध्य १९ में होके गये थे । अर्थात् यहूदाह के अध्यक्षों को और परसलम के अध्यक्षों को और नपुसकों को और याजकों को और देश के सारे लोगों को जो बकड़े २० के टुकड़ों के मध्य में से गये थे । सो मैं उन्हें अर्थात् उन्हीं को बैरियों के हाथ में और उन के प्राण के ग्राहकों के हाथ में सौंपूंगा और उन की लोच २१ आकाश के पंखियों के लिये और पृथिवी के पशुन के लिये भोजन होगी । और यहूदाह के राजा सिदक्याह को और उस के अध्यक्षों को उन के बैरियों के हाथ में और उन के प्राण के ग्राहकों के हाथ में सौंपूंगा अर्थात् बाबुल के २२ राजा की सेना के हाथ में जो तुम से उठ गई । देखो मैं आज्ञा करूंगा परमेश्वर कहता है और उन्हें इस नगर में फिर लाऊंगा और वे इससे लड़ेंगे और उसे लेके आग से जलावेंगे और मैं यहूदाह के नगरों को एक उजाड़ और निवासी रहित बनाऊंगा ।

### पैंतीसवां पर्व ।

१ वह बचन जो यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के समय में परमे-  
२ श्वर की ओर से यह कहते हुए यरमियाह के पास पहुंचा । कि तू रैकाबियों के घर जा और उन से कहके उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में की एक कोठरी में ले जा और उन्हें पीने को दाखरस दे ॥

३ तब मैं ने हवसनियाह के बेटे यरमियाह के बेटे याजनियाह को और उस के भाइयों को और उस के सारे बेटों को और रैकाबियों के सारे परिवार के ४ लिया । और उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में ईश्वर के जन यज्जदलियाह के बेटे हन्नान के बेटों की कोठरी में लाया जो अध्यक्षों की कोठरी के लग थी जे ५ द्वारपाल सलूम के बेटे मशसियाह की कोठरी के ऊपर थी । और मैं ने रैकाबियों के घराने के पुत्रों के आगे हंडे भर भर दाखरस और कटोरियां धर दिये और उन से कहा कि दाखरस पीओ ॥

६ पर उन्होंने ने कहा कि हम दाखरस न पीयेंगे क्योंकि हमारे पितर रैकाब वं बेटे यूनदब ने हमें यह कहके चिताया कि तुम और तुम्हारे बेटे कभी दाखरस ७ न पीना । और न घर बनाना न बोज बाना न दाख की खारी लगाना न उस के अधिकारी होना परन्तु अपने जीवन भर तंबुओं में रहा करो जिस्ते देश में ८ जहां तुम परदेशी हो बहुत दिन लों जीओ । और हम ने अपने पितर रैकाब के बेटे यहूनदब की बात मानी सारी बातों में जो उस ने हमें आज्ञा कि कि हम और हमारी पत्नियां और हमारे बेटे और हमारी बेटियां अपने जीवन ९ भर दाखरस न पीवें । और न अपने लिये निवासस्थान बनावें और न हम दाख

सारे राज्य जो उस के अधीन थे और सारे लोग यरुसलम के और उस के सारे नगरों के विरुद्ध संग्राम कर रहे थे तब परमेश्वर का वचन यह कहते हुए यरमियाह के पास पहुँचा ।

परमेश्वर इसराएल का ईश्वर था कहता है कि तू जाके यहूदाह के राजा सिदक्याह से कह कि परमेश्वर था कहता है कि देख मैं बाबुल के राजा के हाथ में यह नगर सौंपना हूँ और वह उसे आग से जला देगा । और तू उस के हाथ से न बचेंगा परन्तु निश्चय पकड़ा जायेगा और उस के हाथ में सौंपा जायेगा और तेरी आँखें बाबुल के राजा की आँखें देखेंगी और वह मुझे मुँह तुझ से कहेगा और तू बाबुल को जायेगा ॥

तथापि हे यहूदाह के राजा सिदक्याह परमेश्वर का वचन सुन परमेश्वर ने तेरे विषय में था कहा है कि तू तलवार से मारा न जायेगा । तू कुशल से रहेगा और जिस रीति से तेरे पिता अग्नि ने राजाओं के लिये सुगंध जलाने थे तेरे लिये जलायेगा और तेरे लिये था विलाप करेंगे कि हाय प्रभु क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने वचन कहा है ।

और यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने यहूदाह के राजा सिदक्याह से ये सारी बातें यरुसलम में कही । और जब बाबुल के राजा की सेना यरुसलम के और यहूदाह के सारे रहे हुए नगरों के विरुद्ध और लक्ष्मीय के और अजीकः के विरुद्ध लड़ रही थी क्योंकि यहूदाह के नगरों में ये चाहित नगर रह गये थे ।

यह वचन जो परमेश्वर की ओर से यरमियाह के पास पहुँचा जब सिदक्याह राजा ने सारे लोगों के साथ जो यरुसलम में थे छुटकारा प्रचारने के लिये नियम किया । कि हर एक अपने अपने दूधरी दाम दासी को छोड़ देवे और कोई अपने यहूदी भाई से सेवा न लेवे । और सारे अध्यक्षा ने और सारे लोगों ने जिन्होंने अपने ही दाम दासी को छोड़ने का और उन से सेवा न लेने का नियम किया था उसे सानक उन्टें छोड़ दिया । परन्तु उन के पीछे उन्टों ने अपने दाम दासियों को जिन्हें उन्टों ने छोड़ दिया था फिर लिया ।

इस लिये परमेश्वर का वचन परमेश्वर ने यरमियाह के पास पहुँचा । परमेश्वर इसराएल का ईश्वर था कहता है कि जिस दिन मैं तुम्हारे पिताओं का सिग देश से बंधुग्राह के घर से निकाल लाया मैं ने यह कहके उन के साथ एक वाचा बांधी । कि सात सात बरस पीछे हर एक जन अपने अपने दूधरी भाई को जो तेरे पास बेचा गया हो जाने दे और जब उस ने तेरे पास छः बरस तेरी सेवा किई तू उसे छोड़ दे परन्तु तुम्हारे पिताओं ने मेरा वचन न सुना और अपना कान न लगाया । और आज जब कि तुम लोग फिर और हर एक जन ने अपने अपने परोसी पर छुटकारा प्रचारने को मेरी दृष्टि में भलाई किई थी और इस मन्दिर में जो मेरे नाम से कहा जाता है मेरे साथ नियम किया । परन्तु तुम फिर और मेरे नाम को अशुद्ध किया और हर एक जन ने अपने अपने दाम और हर एक अपनी दासी को जिन्हें तुम ने उन की इच्छा पर चलने को छोड़ दिया था फिरके लिया और उन्टें अपने वश में लाये कि वे तुम्हारे लिये दास और दासियां बनें ॥



- ४ तब यरमियाह ने नैयरियाह के बेटे बरुक को बुलाया और बरुक ने परमेश्वर की सारी बातें यरमियाह के मुंह से जो उस ने उसे कही थीं एक बीड़े में लिखीं ॥
- ५ और यरमियाह ने यह कहके बरुक को आज्ञा दी कि मैं बंद हूँ मैं परमेश्वर के मन्दिर में जा नहीं सकता । इस लिये तू जा और उस बीड़े में से जो तू ने मेरे मुंह से लिखा है परमेश्वर की बातें परमेश्वर के घर में व्रत के दिन लोगों को पढ़ सुना और सारे यहूदाह को भी जो अपने नगरों से आये हों तू उन्हें पढ़ सुनाना । क्या जानें वे प्रार्थना में परमेश्वर के आगे दंडवत करें और हर एक जन अपने अपने कुमार्ग से फिरे क्योंकि परमेश्वर का कोप और जलजलाहट बड़ा है जो परमेश्वर ने इन लोगों के विरुद्ध कहा है ॥
- ८ तब नैयरियाह के बेटे बरुक ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता की सारी आज्ञा के समान किया और परमेश्वर के मन्दिर में पुस्तक में परमेश्वर के वचन को पढ़ा ।
- ९ और यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के पांचवें वरस के नवें मास में ऐसा हुआ कि यहूसलम के सारे लोगों ने और सारे लोगों ने जो यहूदाह के नगरों से निकल आये थे यहूसलम में परमेश्वर के आगे व्रत प्रचारा । तब बरुक ने यरमियाह के वचनों को परमेश्वर के मन्दिर में राजा के लेखक साफन के बेटे जमरियाह की कोठरी के बड़े आंगन में परमेश्वर के मन्दिर के नये फाटक की पैठ में सारे लोगों को पढ़ सुनाया ॥
- ११ और साफन के बेटे जमरियाह के बेटे मीकायाह ने उस पुस्तक से परमेश्वर के सारे वचनों को सुना । तब वह राजा के घर को लेखक की कोठरी में उतर गया और देखा कि सारे अध्यक्त अर्थात् इलिसमः लेखक और समरियाह का बेटा दिलायाह और अकबूर का बेटा अलनतन और साफन का बेटा जमरियाह और हननियाह का बेटा सिदकयाह और सारे अध्यक्त वहां बैठे हैं । तब मीकायाह ने उन सारे वचनों को जो उस ने सुना था जब बरुक ने लोगों के सुने में पुस्तक पढ़ी उन के आगे दुहराया ॥
- १४ तब सारे अध्यक्तों ने कूशी के बेटे सलमियाह के बेटे नतनियाह यहूदी को बरुक के पास यह कहके भेजा कि जो बीड़ा तू ने लोगों को पढ़ सुनाया है उसे हाथ में लेके आ तब नैयरियाह का बेटा बीड़ा अपने हाथ में लिये हुए उन के पास आया । और उन्होंने ने उससे कहा कि बैठिये और हमें पढ़ सुनाइये तब बरुक ने उन्हें पढ़ सुनाया ॥
- १६ और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने ने सारी बातें सुनीं तो डर के मारे एक दूसरे को देखने लगा और बरुक से कहा कि इन सारी बातों के विषय में निश्चय हम राजा से कहेंगे । और उन्होंने ने यह कहके बरुक से पूछा कि अब हम से कह तू ने ये सारी बातें क्योंकर उस के मुंह से लिखीं । तब बरुक ने उन से कहा कि उस ने ये सारी बातें अपने मुंह से मेरे आगे दुहराईं और उस के पीछे पीछे मैं ने इस पुस्तक में सियाही से लिखीं । तब अध्यक्तों ने बरुक से कहा कि जा किये रह तू और यरमियाह और कोई जानें न पावे कि तुम कहां हो ॥
- २० और वे आंगन में राजा के पास गये परन्तु उन्होंने ने उस बीड़े को इलिसमः

की थारी न खेत न बीज रखते हैं । परन्तु हम तंबूओं में रहते हैं और अपने १०  
पितर यूनदव की सारी आज्ञा के समान हम ने किया है । परन्तु यों हुआ कि ११  
अब बाबुल का राजा नबूखुदनजर देश पर चढ़ आता था तब हम लोगों ने  
कहा कि कसदियों की सेना के डर के सारे और यरमियों की सेना के डर के  
सारे आओ हम यरुसलम में चलें तब ही से हम यरुसलम में रहते हैं ॥

तब परमेश्वर का वचन यरमियाह के पास यह कहते हुए पहुंचा । कि १३  
सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तू जा और यहूदाह  
के लोगों और यरुसलम के निवासियों से कह क्या तुम लोग मेरे वचनों को  
सुनके उपदेश ग्रहण न करोगे परमेश्वर कहता है । जो वचन रैकाव के घेरे १४  
यहूदव ने अपने घेरे को दाखरस न पीने को आज्ञा दी थी सो हूढ़ता से  
पाली गई क्योंकि उन्होंने ने आज्ञा लों दाखरस नहीं दिया है परन्तु अपने पितरों की  
आज्ञा मानी है मैं ने तुम से भी कहा है तड़के उठ उठके कहा पर तुम ने मुझे  
नहीं माना । और मैं ने अपने सारे भविष्यद्वक्ता सेवकों का तुम्हारे पास भेजा है १५  
तड़के उठ उठके यह कहला भेजा कि तुम्हें से हर एक जन अपने अपने कुमार्ग  
से फिरे और अपनी चालों का सुधारे और उपरी देवों की सेवा के लिये उन के  
घोड़े न जाये और जो देश मैं ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया है उस में  
वसो पर तुम ने अपना कान न झुकाया और न मेरी सुनी । क्योंकि रैकाव के १६  
घेरे यहूदव के घेरे ने अपने पिता की आज्ञाओं को पूरी किया जो उस ने  
उन्हें दी थी परन्तु इन लोगों ने मेरी बात न मानी । इसी लिये परमेश्वर १७  
सेनाओं का ईश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं यहूदाह पर  
और यरुसलम के सारे निवासियों पर यह सारी घुमाई जो मैं ने उन के विरुद्ध  
में कही है लाता हूँ इस कारण कि मैं ने उन से कहा है पर उन्होंने ने न माना  
और मैं ने उन्हें घुलाया पर उन्होंने ने उत्तर न दिया ॥

और यरमियाह ने रैकावियों के घराने से कहा कि सेनाओं का परमेश्वर इस- १८  
राएल का ईश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम ने अपने पिता यहूदव की  
आज्ञा मानी है और उस की सारी शिक्षा को माना है और उस की सारी आज्ञा  
के समान चले हो । इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता १९  
है कि रैकाव के घेरे यूनदव में से मेरे आगे नित खड़े होने के लिये एक भी  
न घटेगा ॥

छतीसवां पृष्ठ ।

और यहूदाह के राजा यूसियाह के घेरे यहूदकीम के चौथे वरस यों हुआ कि १  
परमेश्वर का वचन यरमियाह के पास यह कहते हुए पहुंचा ॥

एक बींड़ा अपने लिये ले और सारी बातें जो मैं ने तुम्हें इसराएल के और यहूदाह २  
के और सारे जातिगणों के विषय में कही हैं उस दिन से लेके कि मैं तुम्हें से कहने  
लगा यूसियाह के दिनों से लेके आज लों उस में लिख । क्या जानें यहूदाह के घराने ३  
सारी घुमाइयों का जो मैं ने उन पर लाने को ठानी हैं मानें यहां लों कि हर एक  
अपने अपने कुमार्ग से फिरे और मैं उन का अपराध और पाप क्षमा करूं ॥

३ और सिदकयाह राजा ने सलमियाह के छोटे यहुकन और मशमियाह, याजक  
के छोटे मफनियाह से परमियाह भविष्यद्वक्ता को कहला भेजा कि अब हमारे लिये  
४ परमेश्वर हमारे ईश्वर से प्रार्थना कर । और परमियाह लोगों में बाहर भीतर  
५ आया जाया करता था और उन्हीं ने उसे बन्दीगृह में न डाला था । और फिरउन  
की सेना सिग में निकल आई थी और अब यरूशलम के घेरवये कमदियों ने उन  
का समाचार सुना तो वे यरूशलम के आगे से कूच कर गये ।

६ तब यह कहते हुए परमेश्वर का वचन परमियाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुँचा ।  
७ परमेश्वर इशराएल का ईश्वर यों कहता है कि यहूदाह के राजा का किम ने  
मुझ से झूझने का तुम भेजा है यों कहना कि देख फिरउन की सेना जो तुम्हारे  
८ सहाय के लिये आई है सिग में अपने ही देश को फिर जायेगी । और कमदी  
फिर आके इस नगर में लड़ेंगे और हमें न लेंगे और उसे आग में जला देंगे ।  
९ परमेश्वर यों कहता है कि यह कहके अपने का मात कल दे कि कमदी निश्चय  
१० हम से जाते रहेंगे क्योंकि वे न जायेंगे । परन्तु यद्यपि गुप्त लोगों ने कमदियों  
की सारी सेना को जो तुम से लड़ते हैं मारा होता और उन में कथल घायल  
लोग अपने अपने तबू में रह जाते तथापि वे लड़के इस नगर को आग से  
जला देंगे ॥

११ और ऐसा हुआ कि अब फिरउन की सेना के कारण से कमदियों की सेना  
१२ यरूशलम के आगे से कूच कर गई । तब परमियाह यिनयमीन के देश में जाने  
१३ का यरूशलम से बाहर निकल गया जिसमें यहाँ लोगों में से भाग लेवे । और  
अब यह यिनयमीन के फाटक में पहुँचा तब हननियाह का छोटा सलमियाह  
का छोटा हरियाह नामक पदरे का प्रधान यहाँ था और उस ने यह कहके  
१४ परमियाह को पकड़ा कि तू कमदियों के पास जाता है । तब परमियाह ने  
कहा कि झूठ में कमदियों के पास नहीं जाता हूँ परन्तु उस ने न माना और  
१५ हरियाह परमियाह को पकड़के उसे अध्यक्षा के लाया । तब अध्यक्षा ने  
परमियाह को रिसियाह के मारा और उसे यहूनतन लेखक के घर में बंद किया  
क्योंकि उन्हीं ने उसे बन्दीगृह बना रक्खा था ॥

१६ अब परमियाह बन्दीगृह और भकसी की कोठरियों में गया और यहाँ बहुत  
१७ दिन रहा । तब सिदकयाह राजा ने उसे बुला मंगाया और राजा ने अपने घर  
में उसे एकान्त में यह कहके पूछा कि परमेश्वर की ओर से कोई वचन है और  
परमियाह ने कहा कि है और उस ने कहा है कि तू बालुल के राजा के हाथ  
१८ में सौंपा जायेगा । फिर परमियाह ने सिदकयाह राजा से कहा कि मैं ने तेरा  
और तेरे सेवकों के अथवा इन लोगों के विरुद्ध क्या अपराध किया कि तुम  
१९ लोगों ने मुझे बन्दीगृह में डाला है । अब तुम्हारे भविष्यद्वक्ता कहाँ हैं जिन्होंने  
तुम्हारे आगे भविष्य कहा था कि बालुल का राजा तुम्हारे विरुद्ध और इस देश  
२० के विरुद्ध न आवेगा । हे मेरे प्रभु राजा अब मेरी सुनिये और मेरी विन्ती तेरे  
आगे ग्राह्य होवे और मुझे यहूनतन लेखक के घर में फिर न भेजवाइये न हो  
२१ कि मैं वहाँ मरूँ । तब सिदकयाह राजा ने आज्ञा किई कि परमियाह को

लेखक की कोठरी में धर रखवा और राजा के आगे ये सारी बातें कहों । तब २१ राजा ने यहूदी को बौंहा लाने को भेजा और वह जाके इलिसमः लेखक की कोठरी में से निकाल लाया और यहूदी ने राजा को और सारे अध्यक्षों को जो राजा के आसपास खड़े थे पढ़ सुनाया । और नव-मास में राजा जाड़े की कोठरी २२ में बैठा था और उस के आगे अंगोठी में बरता हुआ कोइला था । और रेमा २३ हुआ कि जब यहूदी ने तीन चार भाग पढ़ा तब राजा ने लेखक की छूरी से उसे काट डाला और अंगोठी की आग में डाल दिया यहां लों कि सारा बौंहा अंगोठी की आग से भस्म हुआ । परन्तु न तो राजा न उस के कोई सेवक जिन्होंने इन २४ बातों को सुना था डरे न अपने कपड़े फाड़े । और यद्यपि अलनतन ने और २५ दिलायाह ने और जमरियाह ने राजा से विन्ती किई कि इस बौंहे को मत जलाइये तथोपि उस ने उन की न मानी । और राजा ने अपने बेटे यरमियाह को और २६ अजरियाह के बेटे शिरायाह को और अद्रियाह के बेटे सलमियाह को आज्ञा किई कि वरक लेखक को और यरमियाह भविष्यद्वक्ता को पकड़ लाओ परन्तु परमेश्वर ने उन्हें छिपाया ॥

और उस के पीछे जब राजा ने उस बौंहे को और जो वचन कि वरक ने २७ यरमियाह के मुंह से लिखा था जला दिया परमेश्वर का वचन यह कहता हुआ यरमियाह के पास पहुंचा । कि तू फिर एक दूसरा बौंहा ले और उस में सारे २८ वचन जो अगिले बौंहे में थे जो यहूदाह के राजा यहूयकीम ने जलाया है उस में लिख । और यहूदाह के राजा यहूयकीम से कह कि परमेश्वर यों कहता है २९ कि तू ने यह कहके इस बौंहे को जलाया है कि तू ने उस में रेमा क्यों लिखा है बाबुल का राजा निश्चय आवेगा और इस देश को नष्ट करेगा और इस में से मनुष्य को और पशु को मिटा डालेगा ॥

इस लिये यहूदाह के राजा यहूयकीम के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि ३० दाऊद के सिंहासन पर बैठने को उस के लिये एक भी न रहेगा और उस की लोग दिन के घाम में और रात के पाले में बाहर फंकी जायेगी । और मैं उससे और ३१ उस के वंश से और उस के सेवकों से उन के अपराधों का पलटा लेंगा और मैं उन पर और यरमलम के नियामियों पर और यहूदाह के मनुष्यों पर यह सारी बुराई लाऊंगा जो मैं ने उन के विरुद्ध चक्षारी पर उन्हीं ने न सुना ॥

तब यरमियाह ने एक दूसरा बौंहा लिया और उसे यरमियाह के बेटे वरक ३२ लेखक को दिया और उस ने उस में यरमियाह के मुंह से इस पुस्तक की सारी बातें लिखीं जो यहूदाह के राजा यहूयकीम ने आग में जलाई थीं और वैसे ही बहुत सी बातें उस में मिलाई गईं ॥

सैंतीसवां पृष्ठ ।

और कुनियाह के बेटे यहूयकीम के स्थान पर यूसियाह के बेटे सिदकयाह ने १ राज्य किया जिसे बाबुल के राजा नबूखुदनजर ने यहूदाह देश में राजा किया था । परन्तु न तो उस ने न उस के सेवकों ने और न देश के लोगों ने परमेश्वर २ के वचन पर जो उस ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था मन लगाया ॥

पास तीसरे पैठ में जो परमेश्वर के मन्दिर में है मंगाया लिया और राजा ने यरमियाह से कहा कि मैं तुझ से एक बात पूछता हूँ मुझ से कुछ मत छिपा ॥

१५ तब यरमियाह ने सिदकयाह से कहा कि जो मैं तुझ से कहूँ तो क्या निश्चय तू मुझे घात न करेगा और जब मैं तुझ को मंत्र दूँ तो तू मेरी न मानेगा ॥

१६ तब सिदकयाह राजा ने गुप्त में यरमियाह से किरिया खाके कहा कि परमेश्वर के जीवन सोह जिस ने हमारा प्राण सृजा है मैं तुझे घात न करूँगा और न तुझे उन मनुष्यों के हाथ में सौंपूँगा जो तेरे प्राण के ग्राहक हैं ॥

१७ और यरमियाह ने सिदकयाह से कहा कि सेनाओं का ईश्वर इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जो तू निश्चय बाबुल के राजा के अध्यक्षों के पास जायेगा तो तेरा प्राण बचेगा और यह नगर आग से जलाया न जायेगा

१८ परन्तु तू अपने परिवार सहित बच जायेगा । परन्तु जो तू बाबुल के राजा के अध्यक्षों के पास न जायेगा तो यह नगर कसदियों के हाथ में सौंपा जायेगा और वे उसे आग से जला देंगे और तू आप उन के हाथ से न बचेगा ॥

१९ तब सिदकयाह राजा ने यरमियाह से कहा कि मैं उन यहूदियों से डरता हूँ जो कसदियों के पास गये हैं क्या जाने वे मुझे उन के हाथ में सौंपें और वे मेरी हंसी करें ॥

२० परन्तु यरमियाह ने कहा कि वे तुझे न सौंपेंगे मैं तेरी बिनती करता हूँ कि परमेश्वर का शब्द जो मैं तुझ से कहता हूँ मान-जिस्ती तेरा भला होवे और तेरा

२१ प्राण बचे । परन्तु जो तू बाहर जाने को नाह करे तो परमेश्वर ने यही बचन

२२ मुझ पर प्रगट किया है । कि देख सारी स्त्रियाँ जो यहूदाह के राजा के भवन में रह गई हैं बाबुल के राजा के अध्यक्षों के पास पहुँचाई जायेंगी और वे यह कहेंगी कि तेरे परमहितों ने तुझे उभाड़ा और तुझ पर प्रबल हुए उन्होंने ने तेरा

२३ पाँव दलदल में फंसाया है और फिर गये हैं । और तेरी सारी पत्नियों को और तेरे बालकों को वे कसदियों के पास पहुँचावेंगे और तू उन के हाथ से न बचेगा परन्तु बाबुल के राजा के हाथ से पकड़ा जायेगा और तू इस नगर के आग से जलाने का कारण होगा ॥

२४ तब सिदकयाह ने यरमियाह से कहा कि यह बचन कोई न जाने और तू मारा

२५ न जायेगा । परन्तु जो अध्यक्ष सुने कि मैं ने तुझ से बातचीत किई है और तेरे पास आके कहें कि तू ने राजा से जो कहा है सो हमें बता और हम से मत छिपा और हम तुझे घात न करेंगे और राजा ने जो तुझे कहा है सो भी कह ।

२६ तब उन से कहियो कि मैं ने नम्रता से राजा की बिन्ती किई कि यह मुझे यहूनतन के घर मरने को फिर न भेजे ॥

२७ और सारे अध्यक्ष यरमियाह के पास आये और उससे पूछा और उस ने उन्हें राजा की आज्ञा के समान सारे बचन कहे और वे उससे और न बोले क्योंकि २८ बातचीत न सुनी गई । और जिस दिन लो यरूसलम लिया गया यरमियाह बन्दीगृह के आंगन में रहा और जब यरूसलम लिया गया वह वही था ॥

उतालीसवां पर्व ।

१ यहूदाह के राजा सिदकयाह के नवें बरस के दसवें मास में बाबुल का

बन्दीगृह के आंगन में रखें और जय लेां नगर में से सारी रोटी चुक न जाये उमे रोटी पोथक की सड़क में से एक एक रोटी प्रतिदिन मिला करे और यरमियाह बन्दीगृह के आंगन में रहा किया ॥

अठतीसवां पर्व ।

तब सत्तान के बेटे सफतियाह ने फसिहूर के बेटे जिदनयाह ने और सल- १  
मियाह के बेटे यूकल ने और सलकियाह के बेटे फसिहूर ने यरमियाह की चे-  
याति सुनीं जो वह यह कहके सारे लोगों से कहा करता था । परमेश्वर यों २  
कहता है कि जो कोई इस नगर में रहेगा सो तलवार से और अकाल से और  
सरी से सरेगा परन्तु जो कोई कमदियों कने जायेगा सो जीता रहेगा और उस  
का प्राण उस के लिये लूट के समान देगा और वह जीयेगा । परमेश्वर यों ३  
कहता है कि यह नगर निश्चय बाबुल के राजा की सेना के हाथ में सीपा  
जायेगा और वह उसे ले लेगा ॥

तब अध्वजों ने राजा से कहा कि इस आप की विन्ती करते हैं कि यह जन ४  
घात किया जाये क्योंकि वह योद्धाओं के हाथों को जो इस नगर में रहते हैं और  
सारे लोगों के हाथों को ऐसे ऐसे बचन कह कहके दुर्वन करता है निश्चय यह  
जन इन लोगों का भला नहीं चाहता परन्तु बुरा । तब मिदकयाह राजा ने कहा ५  
कि देखो वह तुम्हारे वश में है क्योंकि तुम्हारे विपरीत राजा कुछ नहीं कर सक्ता ।  
तब उन्होंने ने यरमियाह को लिया और हम्लक के बेटे मलकियाह की भकसी ६  
में जो बन्दीगृह के आंगन में थी डाल दिया और उन्होंने ने यरमियाह को रस्सों  
से नीचे उसे डाल दिया और भकसी में पानी न था परन्तु दलदल से यरमियाह  
दलदल में फंस गया ॥

जय नपुंसक कूशी अवदमलिक ने जो राजा के घर में उस समय था सुना ७  
कि उन्होंने ने यरमियाह को भकसी में डाला और वह दिनयमीन के फाटक में  
बैठा था । तब अवदमलिक राजा के घर से बाहर जाके राजा से यह कहके ८  
बोला । हे मेरे प्रभु राजा इन लोगों ने जो कुछ यरमियाह भविष्यद्वक्ता से किया ९  
जिसे उन्होंने ने भकसी में डाला है बुरा किया और जहां वह है भूख से सरेगा  
क्योंकि नगर में रोटी नहीं है । तब राजा ने कूशी अवदमलिक को यह कहके १०  
आज्ञा किई कि तू यहां से तीस जन अपने संग ले और यरमियाह भविष्यद्वक्ता  
को मरने से आगे भकसी में से निकाल ॥

तब अवदमलिक ने उन लोगों को अपने साथ लिया और राजा के भवन ११  
के भंडार की कोठरी के नीचे गया और उस में से गले फटे पुराने चीथड़े लिये  
और उन्हें रस्सियों से भकसी में यरमियाह के पास लटका दिया । और कूशी १२  
अवदमलिक ने यरमियाह से कहा कि अब इन गले फटे और पुराने चीथड़ों को  
रस्सी के नीचे अपनी कांख तले डाल और यरमियाह ने वैसा ही किया । और १३  
उन्होंने ने रस्सियों से यरमियाह को भकसी में से खींच लिया और यरमियाह  
बन्दीगृह के आंगन में रहा किया ॥

तब मिदकयाह राजा ने सेवकों को भेजके यरमियाह भविष्यद्वक्ता को अपने १४



## चालीसवां पन्ना ।

- १ परमेश्वर का वचन जो यरमियाह के पास उस के पीछे पहुंचा, जब कि पहरुओं के प्रधान नबूसरअदान ने उसे लेके रामः से छोड़ दिया क्योंकि यरसलम के और यहूदाह के सारे बंधुओं में जो बाबुल में बंधुआई में पहुंचाये गये वह सीकरों से उन में बंधा था ।
- २ और पहरुओं के प्रधान ने यरमियाह को लेके उससे कहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने इस स्थान के विरुद्ध विपत्ति प्रगट किई है । अब परमेश्वर ने आके अपने कहने के समान पूरा किया है क्योंकि तुम ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था और उस का वचन नहीं माना इस लिये तुम पर यह पड़ा है । और देख मैं ने आज तेरी हथकड़ी से तुम्हें कुड़ाया है जो मेरे संग बाबुल में जाने को तुम्हें अच्छा लगे तो चल और मैं तेरी सुधि लेऊंगा परन्तु जो मेरे संग बाबुल में जाने को तुम्हें बुरा लगे तो रह जा देख सारा देश तेरे आगे है जिधर जाने को अच्छा लगे और जिधर तेरी दृष्टि में जाने को ठीक होवे तिधर जा । और जब वह फिरने पर न था उस ने कहा इस लिये साफन के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह के पास फिर जा जिसे बाबुल के राजा ने यहूदाह के नगरों पर अध्यक्ष किया है और उस के संग लोगों के मध्य में रह अथवा जिधर तेरी दृष्टि में जाने को अच्छा लगे तिधर जा और पहरुओं के प्रधान ने उसे भोजन और दान देके बिदा किया । तब यरमियाह अखिकाम के बेटे जिदलयाह के पास मिस्रफः में गया और उस के संग उन लोगों में रहा जो देश में छोड़े गये ॥
- ७ जब सारे सेनापतियों और उन के लोगों ने जो चौगान में थे सुना कि बाबुल के राजा ने अखिकाम के बेटे जिदलयाह को देश पर अध्यक्ष किया और कि उस ने पुरुष और स्त्री और लड़केबाले उसे सौंप दिये अर्थात् देश बं
- ८ कितने एक कंगालों को जो बाबुल को बंधुआई में न पहुंचाये गये । तब वे अर्थात् नतनियाह का बेटा इसमअरल और करीह के बेटे यूहनान और यूनतन और तनहूमत का बेटा शिरयाह और नतूफती रेफा के बेटे और मश्काकत का बेटा यजनियाह वे और उन के जन मिस्रफः में जिदलयाह के पास आये ।
- ९ तब साफन के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह ने उन से और उन के जन से किरिया खाके कहा कि तुम लोग कसदियों की सेवा करने को मत उरे देश में रहो और बाबुल के राजा की सेवा करो और तुम्हारा भला होगा । और मैं जो हूं देखो जो कसदी हमारे पास आवेंगे उन के आगे खड़ा होने को है मिस्रफः में रहूंगा परन्तु तुम लोग दाखरस और ग्रीष्मफल और तेल एकट्ठा करके अपने अपने पात्रों में रक्खो और अपने अपने नगरों में जो तुम ने लिया है बसो ।
- ११ जब सारे यहूदियों ने भी जो मोआब में और अम्मून के संतानों में और अदूम में और जो सारे देश में थे सुना कि बाबुल का राजा यहूदाह में कुछ लोग छोड़ गया और कि उस ने साफन के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह को उन पर
- १२ अध्यक्ष किया था । तब सब यहूदी सारे स्थानों से जहां जहां वे खेदे गये ॥

राजा न्यूबुदनजर अपनी सारी सेना समेत यरुसलम पर आया और उसे घेर लिया ।

सिदकयाह के श्यामद्वं यरम के चौथे मास की नवौं तिथि में नगर तोड़ा २ गया । और बाबुल के राजा के सारे अध्यक्ष अर्थात् नेगलमरअजर समज्रनयू ३ सरमाकिन खमागीम और नेगलमरअजर खमाग और बाबुल के राजा के सारे रहे हुए अध्यक्ष पैठ के मध्य के फाटक से बैठे ॥

और रेमा हुआ कि तब यहूदाह के राजा सिदकयाह और सारे वीरों ने उन्हें ४ देखा तो भागके रातों रात राजा की चारी के मार्ग में दो भीतों के मध्य के फाटक से दो नगर से बाहर जैशान की ओर निकल गये । परन्तु कमदियों की ५ सेना ने उन का पीछा किया और यरीह के जंगानों में सिदकयाह को जा लिया और उसे पकड़के डसात देग के रिवलः में बाबुल के राजा न्यूबुदनजर के पास लाये और उस ने उस पर न्याय किया । और बाबुल के राजा ने सिदकयाह के ६ चेटी के रिवलः में उस की आंखों के आगे धान किया और बाबुल के राजा ने यहूदाह के सारे कुर्नानों को भी मार डाला । और उस ने सिदकयाह की आंखें ७ निकाल डालीं और उसे बाबुल में ले जाने के लिये दो पीतल की सोझरों से जकड़ा । और कमदियों ने राजभवन को और लोगों के घरों को आग से जला ८ दिया और यरुसलम की भीतें तोड़ डालीं ॥

तब न्यूसरअद्वान पहरियों के प्रधान ने नगर के रहे हुए लोगों को और जो ९ भागके उन के पास गये थे अर्थात् बचे हुए लोगों को जो बच रहे थे बाबुल में ले गया । परन्तु न्यूसरअद्वान पहरियों के प्रधान ने तुच्छ लोगों को जिन को १० संपत्ति न थी यहूदाह देश में छोड़ दिया और उसी दिन उन्हें खेत और दाख की चारियां दिईं ॥

और बाबुल के राजा न्यूबुदनजर ने यरसियाह के विषय में न्यूसरअद्वान ११ पहरियों के प्रधान से यह कहके आज्ञा दिई । कि उसे लेके देखा कर और उसे १२ किसी रीति का दुःख मत दे परन्तु उस के कटे के समान उससे व्यवहार कर । तब राजा के पहरियों के प्रधान न्यूसरअद्वान और न्यूचशयान खमागीम और १३ नेगलमरअजर खमाग और बाबुल के सारे प्रधान । भेजके यरसियाह को १४ बन्दोशूह के आंगन से निकाल लाये और साफन के घेरे अग्निकाम के घेरे सिदकयाह को उसे घर पहुंचाने को सौंपा और वह लोगों के मध्य में रहा ॥

और जिस समय यरसियाह बन्दोशूह के आंगन में बंद था परमेश्वर का वचन १५ उस के पास पहुंचा । कि जा और कृणी अथदमलिक से कह कि सेनाओं का १६ परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस नगर पर अपने वचन को बुराई के लिये लाता हूं और सलाई के लिये नहीं और उस दिन वे तेरे आगे होंगे । परन्तु उसी दिन मैं तुझे बचाऊंगा परमेश्वर कहता है और जिन लोगों १७ से तू डरता है उन लोगों के हाथ तू सौंपा न जायेगा । क्योंकि निश्चय मैं तुझे १८ हुड़ाऊंगा और तू तलवार से न मरेगा और सुक पर भरोसा रखने के कारण तेरा प्राण लूट की नाईं तुझे दिया जायेगा परमेश्वर कहता है ॥

और मिस्रफः के सारे रहे हुओं को जिन्हें नदूसरअदान पहरुओं के प्रधान ने अखिकाम के बेटे जिदलयाह को सौंपा था और उन्हें नतनियाह का बेटा इसमअरल बंधुआ करके अम्मून के संतान के देश की ओर चल निकला ।

११ परन्तु जब करीह के बेटे यूहनान ने और उस के साथ के सारे सेनापतियों ने  
 १२ सारी खुराई सुनी जो नतनियाह के बेटे इसमअरल ने कीई थी । तब वे सारे लोगों को लेकर नतनियाह के बेटे इसमअरल से लड़ने को निकले और बिबजन  
 १३ के महा जलों पर उसे जाही लिया । और ऐसा हुआ कि जब इसमअरल के संग के लोगों ने करीह के बेटे यूहनान को और उस के संग उन के सारे अध्यक्षों  
 १४ को देखा तो आनन्दित हुए । तब जितने लोगों को इसमअरल ने मिस्रफः से  
 १५ बंधुआ किया था वे लौटके करीह के बेटे यूहनान के पास गये । परन्तु नतनियाह का बेटा इसमअरल आठ जन के संग यूहनान से बच निकलके अम्मूनियों के संतानों को मार गया ।

१६ तब करीह के बेटे यूहनान ने और उस के संग के सेनाओं के सारे अध्यक्षों ने लोगों के सारे बचे हुओं को लिया जिन्हें उस ने अखिकाम के बेटे जिदलयाह के घात होने के पीछे मिस्रफः से नतनियाह के बेटे इसमअरल के हाथ से कुड़ाया था बलवंत योद्धाओं को और स्त्रियों को और बालकों को और नपुंसकों को जिन्हें  
 १७ वह बिबजन से फेर लाया था । और वे किमहाम के निवासस्थान में जो बैतलहम  
 १८ के लग है जा रहे जिस्ती मिस्र को जायें । कसदियों के मारे क्योंकि वे उन से डरे इस कारण कि नतनियाह के बेटे इसमअरल ने अखिकाम के बेटे जिदलयाह को जिसे बाबुल के राजा ने देश पर अध्यक्ष किया था घात किया ।

#### बयालीसवां पर्व ।

१ तब सारे सेनापति और करीह का बेटा यूहनान और हूसअयाह का बेटा  
 २ यजनियाह और छोटे बड़े सारे लोग पास आये । और यरमियाह भविष्यद्वक्ता से कहा कि हमारी बिन्ती तेरे आगे पहुंचे और हमारे लिये अर्थात् इन सारे बचे हुओं के लिये परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रार्थना कर क्योंकि बहुत से हम थोड़े  
 ३ रह गये जैसा तेरी आंखें हमें देखती हैं । जिस्ती परमेश्वर तेरा ईश्वर हमें बतावे कि किस मार्ग पर हम चलें और कौन सा कार्य करें ॥

४ तब यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने उन से कहा कि मैं ने सुना सो देखो तुम्हारे वचनों के समान मैं परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर की प्रार्थना करता हूं और जो कुछ परमेश्वर उत्तर देगा मैं तुम पर प्रगट करूंगा और मैं तुम से कुछ बात न छिपाऊंगा ॥

५ तब उन्होंने ने यरमियाह से कहा कि परमेश्वर हमारे मध्य में सच्चा और विश्वस्त साक्षी होवे यदि हम उन सारी बातों के समान न करें जिन के लिये परमेश्वर  
 ६ तेरा ईश्वर तुम्हें हमारे पास भेजेगा । चाहे भला हो चाहे बुरा हम परमेश्वर अपने ईश्वर का जिस के पास हम तुम्हें भेजते हैं शब्द मानेंगे जिस्ती जब हम परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द मानें तब हमारा भला होवे ॥

७ और दस दिनों के पीछे यों हुआ कि परमेश्वर का वचन यरमियाह के पास पहुंचा । तब उस ने करीह के बेटे यूहनान को और उस के साथ के सेनापतियों

यहूदाह के देश मिस्रफः में जिदलयाह के पास आये और दाखरस और ग्रीमफल  
यहुताई से एकट्टे किये ॥

और करीह का बेटा यूहनान और सेना के सारे प्रधान जो चौगान में थे १३  
मिस्रफः में जिदलयाह के पास आये । और उससे कहा कि तुम्हें चेत है कि १४  
अम्मून के संतान के राजा यशलीस ने नतनियाह के बेटे इसमअएल को तेरा  
प्राण लेने को भेजा है परन्तु अश्विकाम के बेटे जिदलयाह ने उन की प्रतीति  
न कीई । तब करीह के बेटे यूहनान ने मिस्रफः में जिदलयाह से चुपके से कहा १५  
कि मैं तेरी बिनती करता हूँ कि मुझे जाने दो जिस्ती में नतनियाह के बेटे  
इसमअएल को घात करूँ और कोई न जानेगा वह किस लिये तेरा प्राण लेवे  
और सारे यहूदाह जो तेरे पास एकट्टे हुए हैं यहूदाह के रहे हुए नष्ट हों । परन्तु १६  
अश्विकाम के बेटे जिदलयाह ने करीह के बेटे यूहनान से कहा कि तू यह काम  
मत कर निश्चय तू इसमअएल के विषय में झूठ करता है ॥

एकतालीसवाँ पृष्ठ ।

और सातवें मास में ऐसा हुआ कि राजवंश इलिसमः के बेटे नतनियाह का १  
बेटा इसमअएल और राजा के बड़े बड़े प्रधान दस जन उन के संग मिस्रफः में  
अश्विकाम के बेटे जिदलयाह के पास आये और उन्हीं ने मिस्रफः में एकट्टे २  
रोटी खाई । तब नतनियाह का बेटा इसमअएल और उस के संगी दस जन ३  
बेटे और साफन के बेटे अश्विकाम के बेटे जिदलयाह को जिसे दायून के राजा  
ने देश पर अध्यात किया था गद्ग से मारके घात किया । और सारे यहूदी जो ३  
जिदलयाह के संग मिस्रफः में थे और कमदी योह्ना जो वहां पाये गये उन्हें  
इसमअएल ने घात किया ॥

और जिदलयाह के घात करने के दूसरे दिन जय लो काई न जानता था ४  
जो हुआ । कि लोग निकम से और मैला ने और समरन से अस्सी जन दाकी ५  
मुड़ाये हुए और कपड़े फाड़े हुए और अपने को काटे हुए परमेश्वर के मन्दिर  
में नैवेद्य और धूप अपने हाथ में लिये हुए आये । तब नतनियाह का बेटा ६  
इसमअएल मिस्रफः से रोते उन से भेंट करने को गया और उन से भेंट होते ही  
उस ने उन से कहा कि अश्विकाम के बेटे जिदलयाह के पास चलो । और जो ७  
हुआ कि जय वे नगर के मध्य में आये तब नतनियाह के बेटे इसमअएल और  
उस के संगियों ने उन्हें घात करके एक गड़हे में डाल दिया । परन्तु उन में दस ८  
जन पाये गये जिन्होंने ने इसमअएल से कहा कि हमें घात मत कर क्योंकि हमारे  
पास खेतों में गोधूँ और जय और तेल और मधु किये हुए धरे हैं इस लिये उस ने  
उन के भाइयों से उन्हें घात न किया ॥

अब जिस गड़हे में इसमअएल ने उन मनुष्यों की लोथों को फेंका था जिन्हें ९  
उस ने जिदलयाह के साथ घात किया वही था जिसे राजा असा ने इसराएल  
के राजा दशरथा के कारण बनाया था नतनियाह के बेटे इसमअएल ने उसे  
जुम्मे हुयों से भर दिया ॥

और मिस्रफः के वचे हुयों को धंधुयाई में ले गये अर्थात् राजपुत्रियों को १०

मैं किया था जब हमारा भोजन बहुत था और हम भाग्यमान थे और विपत्ति न  
 १८ देखते थे तैसा हम निश्चय करेंगे । परन्तु जब से हम लोगों ने स्वर्गों की रानी  
 के लिये धूप जलाना और तपावन करना छोड़ दिया तब से हमारे लिये हर बात  
 १९ की घटती हुई और हम तलवार से और अकाल से क्षीण हुए हैं । और जब हम  
 स्वर्गों की रानी के लिये धूप जलाते थे और उस के लिये तपावन करते थे तब  
 क्या हम ने अपने पुरुषों को छोड़के उस की पूजा के लिये रोटी बनाई और उस  
 के लिये तपावन तपाये ॥

२० तब यरमियाह ने सारे लोगों को क्या पुरुष क्या स्त्रियों को अर्थात् सारे  
 लोगों को जिन्होंने ने उसे उत्तर दिया था यह कहा ॥

२१ वह धूप जो तुम ने यहूदाह के नगरों में और यरुसलम की सड़कों में तुम ने  
 और तुम्हारे पितरों ने और तुम्हारे राजाओं ने और तुम्हारे अध्यात्मीयों ने और देश  
 के लोगों ने जलाया था तो क्या परमेश्वर ने उसे स्मरण नहीं किया और क्या वह

२२ उस के मन में आया । परन्तु तुम्हारी क्रियों की दुष्टता के कारण और तुम्हारे  
 धिनित कार्यों के लिये जो तुम ने किये परमेश्वर सह न सका इस लिये तुम्हारा

देश एक उजाड़ और आश्चर्य और साप हुआ है यहां लों कि आजके दिन की  
 २३ नाईं निवासी रहित है । इस कारण कि तुम ने धूप जलाया है और परमेश्वर

का अपराध किया है और परमेश्वर का शब्द नहीं माना और उस की व्यवस्था  
 और उस की विधि और उस की साक्षियों के समान नहीं चले इस लिये यह  
 विपत्ति तुम लोगों पर पड़ी जैसा आज है ॥

२४ और यरमियाह ने उन सारे लोगों और उन सारी स्त्रियों से यह भी कहा कि  
 २५ हे सारे यहूदाह जो मिस्र देश में हो परमेश्वर का वचन सुनो । सेनाओं का

परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम लोगों ने और तुम्हारी  
 स्त्रियों ने जिन्होंने ने तुम्हारे द्वारा से कहा है और तुम लोगों ने अपने हाथों से

यह कहके पूरा किया है कि अपनी मनैतियों को जो हम ने स्वर्गों की रानी  
 के लिये धूप जलाने को और तपावन तपाने को मानी हैं निश्चय पूरी करेंगे

तुम निश्चय अपनी मनैतियां पूरी करोगे हां तुम निश्चय अपनी मनैतियां पूरी  
 २६ करोगे । इस लिये हे सारे यहूदाह जो मिस्र देश में रहते हो परमेश्वर का

वचन सुनो कि देखो मैं ने अपने महत नाम की क्रिया खाई है परमेश्वर  
 कहता है कि मेरा नाम यहूदाह के किसी जन की जीभ से मिस्र के सारे देश

में यह कहके फिर लिया न जायेगा कि परमेश्वर के जीवन से । देखो मैं  
 बुराई के लिये उन्हें अगोखंगा और भलाई के लिये नहीं और यहूदाह के सारे

लोग जो मिस्र देश में हैं तलवार से और अकाल से क्षीण होंगे जब लों वे नाश  
 २८ न हो जायें । और तलवार से बचे हुए जो मिस्र देश से यहूदाह के देश में

फिर आवेंगे गिनती में छोड़े होंगे और यहूदाह के सारे उबरे हुए लोग जो मिस्र  
 में रहने को आये हैं जानेंगे कि किस का वचन ठहरेगा मेरा अथवा उन का ॥

२९ और यह तुम्हारे लिये एक प्रता होगा परमेश्वर कहता है कि मैं ही इस स्थान  
 में तुम्हें पलटा देऊंगा जिस्ते तुम जानो कि मेरे वचन निश्चय तुम्हारे दुःख के

को और छोटे से बड़े सारे लोगों को बुलाया । और उन से कहा कि परमेश्वर १  
हमरायल का ईश्वर जिस के पास तुम ने अपनी विन्ती पहुँचाने का मुझे भेजा  
याँ कहता है ॥

कि जो तुम लोग निश्चय इस देश में बने रहोगे तो मैं तुम्हें बनाऊंगा और १०  
न ढाऊंगा और मैं तुम्हें लगाऊंगा और न उखाड़ूंगा क्योंकि मैं उस युगाई से  
पकताता हूँ जो मैं तुम पर लाया । बाबुल के राजा से जिससे तुम डरते हो ११  
मत डरो इससे मत डरो परमेश्वर कहता है क्योंकि तुम्हें उधार करने का और  
उस के हाथ से छुड़ाने का मैं तुम्हारे साथ हूँ । और मैं तुम पर दया करूँगा १२  
और वह तुम पर दया करेगा और तुम्हें तुम्हारे ही देश में फिर लावेगा ॥

परन्तु जो तुम लोग कहो कि हम इस देश में न रहेंगे यहाँ तो कि परमेश्वर १३  
अपने ईश्वर का शब्द न मानेगा । और कहो कि नहीं परन्तु हम मिस्र के देश १४  
को जायेंगे जिन्हीं हम लड़ाई न देखें और तुरही का शब्द न सुनें और रोटी के  
सारे भूखे न होवें और बच्चे रहेंगे । और अब इस लिये हे यहूदाह के बच्चे हुए १५  
लोगो परमेश्वर का बचन सुनो सेनाओं का परमेश्वर हमरायल का ईश्वर याँ  
कहता है कि जो तुम लोग सर्वथा मिस्र में जाने को रुक्य करोगे और वहाँ  
रहने को जाओगे । तो ऐसा होगा कि जिस तलवार से तुम लोग डरते हो १६  
वही तुम्हें मिस्र में जाही लेगी और जिस अकाल के तुम लोग खटके में हो  
वह तुम्हारे पीछे पीछे मिस्र में जायेगा और तुम लोग वहाँ मरोगे । और याँ १७  
होगा कि सारे लोग जिन्हीं ने हमने के लिये मिस्र में जाने को रुक्य किया है  
सो तलवार से और अकाल से और मरी से मरेंगे और उन में से एक भी न  
रहेगा और उस युगाई से जो मैं उन पर लाऊंगा न बचेगा ॥

क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर हमरायल का ईश्वर याँ कहता है कि जैसा १८  
मेरा कोप और मेरा क्रोध यरुसलम के निवासियों पर उड़ोला गया वैसा जब तुम  
लोग मिस्र में जाओगे मेरा कोप तुम पर उड़ोला जायेगा और तुम लोग एक दिन  
और आश्चर्य और साप और निन्दा होओगे और इस स्थान को फिर न देखोगे ॥

हे यहूदाह के बच्चे हुए लोगो परमेश्वर तुम्हारे विषय में याँ कहता है मिस्र १९  
को मत जाओ तुम लोग निश्चय जानोगे कि आज मैं ने तुम्हारे आगे साक्षी दिई  
है । क्योंकि तुम ने अपने प्राण के बिरुद्ध कल किया है क्योंकि मुझे यह कहके २०  
तुम लोगों ने परमेश्वर अपने ईश्वर के पास भेजा कि हमारे लिये परमेश्वर हमारे  
ईश्वर की प्रार्थना कर और सब जो परमेश्वर हमारा ईश्वर कहेगा सो हम से  
कह और इस मानेंगे । और आजके दिन मैं ने तुम से वर्णन किया है परन्तु तुम २१  
ने परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द और इस वान को जिस के लिये उस ने मुझे  
तुम्हारे पास भेजा है नहीं माना है । और अब निश्चय जानो कि जिस स्थान को २२  
तुम लोगों ने घास करने का और जाने का चुना है उस में तुम तलवार से और  
अकाल से और मरी से मरोगे ॥

तैंतालीसवां पर्व ।

और याँ हुआ कि जब यरमियाह सारे लोगों को परमेश्वर उन को ईश्वर के १



- ११ हे मिश की कुंवारी पुत्री जिलियद को खड़ का और औपध से तू ने वृषा  
 १२ औपध बटोरी है तू चंगी न होगी । जातिगणों ने तेरा अपमान सुना है और तेरे  
 चिल्लाने से पृथिवी भर गई है क्योंकि बलवंतों ने बलवंतों पर टोकर खाई है वे  
 दोनों एकट्टे गिरे हैं ॥
- १३ यह बचन जो परमेश्वर ने परमियाह भविष्यद्वक्ता से बालुल के राजा नयू-  
 खुदनजर के आने और मिश के देश के मारने के विषय में कहा ।
- १४ मिश में प्रगट करो और मिजदाल में प्रचारो नोफ में भी और तिहफनिटीस  
 में प्रचारो और कटो स्थिर खड़ा रह और आप को लैस कर क्योंकि तलवार  
 तेरी चारों ओर के लोगों को खायेगी ॥
- १५ तेरे बलवंत क्यों गिराये गये वे न ठहरे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें ठकेल  
 १६ दिया । उस ने बलुतों को टोकर खिलाया हाँ एक दूसरे पर गिरा और वन्हेों  
 ने कहा कि उठो और हम अंधेर की तलवार से अपने अपने लोगों में और  
 १७ अपनी जन्मभूमि में फिर लायें । वहाँ वे चिल्लाये कि मिश का राजा फिरजन  
 १८ नाश हुआ ठहराया हुआ समय बीत गया है । यह राजा जिस का नाम सेनाओं  
 का परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोच जैसे पट्टियों में तयूर और  
 १९ जैसे करमिल समुद्र के लग वैसा निश्चय यह आवेगा । हे मिश की नियासिनी  
 सुत्री बंधुआई में जाने को अपनी संपत्ति मिह्न कर क्योंकि नोफ एक उजाड़  
 हो जायेगा यह नाश भी किया जायेगा जिस्ती कोई नियासी न होवे ॥
- २० मिश एक सुन्दर रूप केलोर है नाश आता है उत्तर से आता है । उस के  
 भड़कत लोग भी उस के मध्य में मोटे पैरों की नाई हैं तथापि ये भी अपनी  
 पीठ फेरे हैं वे एकट्टे भागे हैं और न ठहरे क्योंकि उन के नाश का दिन उन  
 २२ पर आया उन के पलटा का दिन । उस का शब्द सर्प के समान निकलेगा  
 २३ क्योंकि वे बल के संग चलेंगे और कुल्हाड़ी लिये हुए उस पर आवेंगे । वन्हेों ने  
 उस का वन काट डाला परमेश्वर कहता है यद्यपि उस का खोज नहीं हो  
 २४ सक्ता क्योंकि वे टिट्टियों में भी अधिक अनगणित हैं । मिश की कन्या घबरा  
 गई वह उत्तर के लोगों के हाथ में सौंपी गई ॥
- २५ सेनाओं के परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने कहा है कि देखो मैं अमून  
 को ना में और फिरजन को और मिश को और उन के देवों को और उन के  
 २६ राजाओं को अर्थात् फिरजन को और उस के आश्रितों को दण्ड देऊंगा । और  
 मैं उन्हें उन के प्राण के ग्राहकों के हाथ अर्थात् बालुल के राजा नयूखुदनजर  
 के हाथ और उस के सेवकों के हाथ सौंपूंगा और उस के पीछे वह आगले दिनों  
 के समान बसाया जायेगा परमेश्वर कहता है ॥
- २७ परन्तु हे मेरे दास यश्मकूब तू मत डर और हे इसराएल तू मत घबरा क्योंकि  
 देख मैं तुझे बड़ी दूर से और तेरे वंश को उन की बंधुआई के देश से लाऊंगा  
 और यश्मकूब फिर चैन पावेगा और वह निर्भय से रहेगा और उसे कोई न  
 २८ डरावेगा । हे मेरे दास यश्मकूब तू मत डर परमेश्वर कहता है क्योंकि मैं तेरे  
 साथ हूँ जहाँ जहाँ मैं ने तुझे खेदा है मैं वहाँ के सारे देशगणों का अंत करूँगा

लिये पूरे होंगे । परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं मिस्र के राजा फिरकन ३०  
हुफरश्र को उस के वैरियों के हाथ और उस के प्राण के माहकों के हाथ सौंपूंगा  
जैसा मैं ने यहूदाह के राजा सिदकपाह को उस के वैरी बालुल के राजा नबूखुद-  
नजर के हाथ में सौंपा जो उस के प्राण का माहक था ॥

पैंतालीसवां पर्व ।

यह यजन जो यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने यरमियाह के बेटे बरुक से कहा उस १  
के पीछे कि उस ने इन बातों को यरमियाह के मुँह से पुस्तक में लिखा था  
यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के चौथे धरम में । हे बरुक तेरे २  
विषय में परमेश्वर इसरायल का ईश्वर यों कहता है । कि तू ने कहा है कि हाय ३  
मुझ पर क्योंकि परमेश्वर ने मेरे दुःख पर शोक मिलाया है मैं अपनी ठंडी सांसें  
से थक गया और चैन न पाया ॥

तू उसे यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देख जो मैं ने बनाया है सो ४  
ढाता हूँ और जो मैं ने लगाया है सो उखाड़ता हूँ अर्थात् यह सारा देश । और ५  
क्या तू अपने लिये बड़ी बातें खोजता है मत खोज कि देख मैं सब प्राणियों पर  
पुराई लाता हूँ परमेश्वर कहता है परन्तु तू जहाँ कहीं जायेगा मैं तेरे प्राण को  
लूट के लिये तुझे देऊंगा ॥

छियालीसवां पर्व ।

परमेश्वर का यजन जो जातिगणों के विषय में यरमियाह भविष्यद्वक्ता के १  
पास पहुँचा । मिस्र के विषय में मिस्र के राजा फिरकननिकोह की सेना के २  
विषय में जो फुरात नदी के पास करकिमीस में थी जिसे यहूदाह के राजा  
यूसियाह के बेटे यहूयकीम के चौथे धरम बालुल के राजा नबूखुदनजर ने  
मारा था ॥

तुम फरी और ढाल मिट्ट करो और संग्राम के लिये बढो । घोड़ों को जोतो और ३  
अश्वों पर चढो और टोप पहिन लैस हो रहो भालों को चमकाओ किलम पहिनो ॥  
मैं ने उन्हें क्यों शंकित और पीछे हटते हुए देखा है उन के बलवन्त मारे पड़े ५  
और भाग गये हैं और उन्होंने ने पीछे नहीं ताका चारों ओर भय है परमेश्वर  
कहता है । घालाक न भागेगा और बलवन्त बचने न पायेगा उत्तर की ओर ६  
फुरात नदी के लग उन्होंने ने ठोकर खाई और गिर पड़े ॥

यह कौन है जो नदियों की नाईं उमड़ा आता है जिस के पानी बाढ़ की ७  
नाईं बढ़ते हैं । नदी की नाईं मिस्र उठता है और उस के पानी बाढ़ की नाईं ८  
बढ़ते हैं और यह कहता है कि मैं बढ़ूंगा और देश को का लूंगा और नगर  
को उस के निवासी सहित नाश करूंगा । घोड़ों पर चढो और रथ गर्जें और ९  
बाँधे निकलें अर्थात् कूश और फूट ढाल लिये हुए और लूदीम जो धनुष लेके  
तीर लगाते हैं । क्योंकि यही प्रभु का दिन है सेनाओं के परमेश्वर के पलटे का १०  
दिन जिस्तें अपने वैरियों से पलटा लेवे और तलवार खा लेगी यह उन के लोह  
में बोरी जाके अघायेगी क्योंकि उत्तर देश में फुरात नदी के लग प्रभु सेनाओं  
के परमेश्वर का एक यज्ञ है ॥

- ११ मोआव अपनी तरुआई से चैन में और अपने तरुट पर बैठा है और पात्र से पात्र में नहीं उंडेला गया और वह धंधुआई में न गया इस लिये उस का
- १२ स्वाद उस में बना है और उस का वास नहीं पलटा । इस लिये देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जय कि मैं उस के पाम उंडेलवैयों को भेजूंगा जो
- १३ उसे उंडेलेंगे और वे उस के पात्र कूड़े करेंगे और उन के कुप्पे फाड़ डालेंगे । जैसा इसराएल का घराना अपनी आखा वैतएल से लज्जित हुआ तैसा मोआव कमूस से लज्जित होगा ॥
- १४ तुम लोग क्योंकर कहोगे कि हम यलवंत और संग्राम के लिये वीर वन हैं ।
- १५ मोआव लूटा गया है और उस के नगर उठ गये और उस के तरुण घात के लिये उतर गये हैं वह राजा जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है यों कहता है ।
- १६ मोआव का विनाश पहुंचता है और उस की विपत्ति शीघ्र बढ़ी आती है ।
- १७ हे उस के सारों और के सारे लोगो खिलाप करो तुम सब जो उस का नाम
- १८ जानते हो कहो कि यल का राजदंड और सुन्दर कड़ी कैसी टूटी पड़ी है । हे दैवून की निवासिनी पुत्री अपने रेश्वर्य से उतर और प्यासी बैठ क्योंकि मोआव
- १९ का नाशक तेरे विरुद्ध छड़ आया है वह तेरे दृढ़ गढ़ों का नाशक । हे अरआयर की निवासिनी मार्ग के लग खड़ी होकर देख और भगवैयों से और वचे हुए से पूछ और कह कि क्या हुआ है ॥
- २० मोआव घबराया है क्योंकि वह ढाया गया है खिलाप करो और रोओ अरनून
- २१ में प्रचारो कि मोआव लुट गया । समथर भूमि पर दंड विचार आता है
- २२ होलून पर और यदास पर और मेफथत पर । और दैवून पर और नधू पर और
- २३ वैतदिवलतैन पर । और करयतैन पर और वैतजमूल पर और वैतमजन पर ।
- २४ और करयत पर और दूसरः पर और मोआव के देश के सारे नगरों पर जो दूर हैं
- २५ और पास हैं । मोआव का सींग कट गया है और उस की मुजा टूटी है परमेश्वर कहता है ॥
- २६ उसे मतवाला करो क्योंकि उस ने आप को परमेश्वर के विरोध में फुलाया
- २७ और मोआव अपने क्रांठ में लहेगा उस की भी निन्दा होगी । क्या इसराएल तेरे लिये निन्दा न था क्या वह चारों में पाया गया कि जितनी घेर तेरी धार्त उस के
- २८ विषय में थीं तू ने अपना सिर धुना । हे मोआव के निवासिनी नगरों को कोड़के घटान पर वसो और एक पंडुकी की नाई हो जो गड़हे के मुंह के अलंगों में अपना खोता बनाती है ॥
- २९ हम ने मोआव का घमंड सुना है वह अति घमंडी है उस का फूलना और
- ३० उस की खड़ाई भी और उस का अहंकार और उस के मन का उभड़ना । मैं उस का महा कोप जानता हूं परमेश्वर कहता है परन्तु उस की सामर्थ्य ऐसी नहीं है वह पूरा करने में ऐसी नहीं है ॥
- ३१ इस लिये मैं मोआव के लिये खिलाप करूंगा हां मैं सारे मोआव के लिये
- ३२ चिल्लाऊंगा कीरिहर्स के मनुष्यों के लिये खिलाप होगा । हे सिबमः के दाख मैं तेरे लिये यझजीर के खिलाप से खिलाप करूंगा और तेरी लता समुद्र पार चली

तथापि तेरा अंत सर्वथा न कटंगा परन्तु मैं तुझे न्याय से ताड़ना कटंगा और सर्वथा दण्ड रहित तुझे न छोड़ूंगा ॥

सैंतालीसवां पर्व ।

फिरजन के अज्जः सारने से आगे परमेश्वर का वचन फिलिस्तिनों के विषय १ में यरमियाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा ॥

परमेश्वर यों कहता है देख उत्तर से जल चले आते हैं और उमड़ती हुई एक २ धारा होगी और देश को और सब को जो उस में हैं और नगर को और उस के निवासियों को डुबावेगी तब मनुष्य चित्तावेगों और देश के सारे निवासी विलाप करेंगे । उस के बली छोड़ों के खुरों की पोइयों के शब्द से और उस ३ की रथों के चढ़ाहाने से और उस की पटियों के गड़गड़ाने से और पिता अपने हाथ की ठीलाई के कारण से अपने बालकों की और न फिरंगे । उस दिन के ४ कारण जो आता है कि फिलिस्तिनों को उजाड़े और सूर और सैदा से हर एक मन्दायक को जो बचा है काट डाले क्योंकि परमेश्वर फिलिस्तिनों को कफतूर टापू के बचे हुआं को उजाड़ करेगा । अज्जः पर चंदलापन आया है असकलून ५ अपनी तराई के समेत सुनमान हुआ तू आप को कब लों चिरेगा ॥

हे परमेश्वर की तलवार तू कब लों चैन न करेगी तू अपनी काठी में फिर ६ जा वियाम ले और स्थिर हो ॥

वह क्योंकर चैन करेगी क्योंकि परमेश्वर ने असकलून पर और समुद्र के किनारे ७ पर उसे आजा दिई है वहां उसे ठहराया है ॥

अठतालीसवां पर्व ।

मोआब के विषय में सेनाओं का परमेश्वर हमराएल का ईश्वर यों कहता १ कि हाय नछू पर क्योंकि वह लूटा गया है करयतैन छवराया हुआ और लिया गया है मिसजाय छवराया हुआ और विस्मित हुआ है । मोआब की बड़ाई २ फिर न होगी इसबून में उन्हें ने यह कटके उस पर चुरी युक्ति बांधी है कि आओ हम जातिगण होने से उसे काटें तू भी ते समान चुप किया जायेगा एक तलवार तेरे पीछे पड़ेगी । हारानैम में रोने का शब्द होगा उजाड़ और ३ बड़ा विनाश । मोआब तोड़ा गया उस के कोटों ने रोना सुनाया है । क्योंकि ४ लौटियत की छठाई में विलाप उठेगा निश्चय हारानैम के उतार में मेरे बैरियों ने नाश का शब्द सुना है ॥

भागों अपना प्राण बचाओ और अरण्य में भुराये हुए पेड़ की नाईं हो ६ जाओ । क्योंकि तू ने अपनी कसाई और धन पर भरोसा किया है इस लिये ७ तू पकड़ा जायेगा और कमूस अपने पुरोहित और अध्यक्ष सहित बंधुआई में जायेगा । और लुटेरा भी हर एक नगर पर आवेगा और कोई नगर न बचेगा ८ परमेश्वर के कहने के समान तराई नष्ट हो जायेगी और चौगान उजाड़ा जायेगा । मोआब को पंख दे कि उड़ जावे और भागे कि उन के नगर उजाड़ देंगे और उन ९ में कोई निवासी न होगा । स्थापित वह मनुष्य है जो कल से परमेश्वर का कार्य १० करता है और स्थापित वह है जो अपनी तलवार को लोहू से रख छोड़ता है ॥

में संग्राम का भय सुनाऊंगा और वह उजाड़ का एक ठेर होगा और उस की पुत्रियां आग से नष्ट होंगी तब इसराएल उन का अधिकार होगा जैसा वे उस के अधिकार से परमेश्वर कहता है ॥

३ हे हंसबून बिलख बिलख करे क्योंकि श्री लूटा गया है रव्वः की पुत्रियो रोओ और टाटवस्त कसे बिलाप करो और वाडों के भीतर इधर उधर दौड़ो क्योंकि मिलकूम बंधुआई में जायेगा अपने पुरोहितों और अध्वर्यों सहित ॥

४ हे हठीली कन्या यद्यपि तेरी तराई फलवंत है तू तराइयों की क्यों बड़ाई करती है जो अपने धन पर बड़ाई करती है और अपने मन में कहती है कि

५ कौन मेरे पास आवेगा । प्रभु सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख अपनी चारों ओर से तुझ पर एक भय लाऊंगा और तुझ से हर एक उस के आगे आगे खेदा जायेगा और भागे हुए को कोई नहीं पटोर सकेगा ॥

६ परन्तु इस के पीछे मैं अम्मून के सन्तान की बंधुआई को फेंका परमेश्वर कहता है ॥

७ अदूम के विषय में सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि क्या तैमन में और बुद्धि न रही और क्या चतुरों से मंत्र जाता रहा क्या उन की बुद्धि लोप हो गई ।

८ हे ददान के निवासियो भागो अपनी अपनी पीठ फेरो बसने को गहिरें उतर जाओ क्योंकि मैं एसौ की विपत्ति अर्थात् उस के दंड का समय उस पर लाया हूँ ॥

९ जो दाख के बटोरक तेरे पास आवें तो क्या वे विनिया न छोड़ेंगे जो रात

१० को चार तो क्या वे लूटके न अघावेंगे । क्योंकि मैं ने एसौ को छूटा किया उस के गुप्त स्थानों को उधारा है यहां लों कि वह आप को छिपा नहीं सक्ता उस के बीज और उस के भाईबंद और उस के अरोसी परोसी लूटे गये हैं और उस का

११ कुछ नहीं बचा । अपने अनाथ बालकों को छोड़ मैं उन के जीवन की रक्षा करूंगा और तेरी रांडें मुझ पर विश्वास करें ॥

१२ क्योंकि परमेश्वर ने निश्चय यों कहा है कि देख जिन का भाग पीना न था उन्हें ने कटोरे से निश्चय पीया है और क्या तू अर्थात् तू ही सर्वथा निर्दंड

१३ रहेगा तू निर्दंड न रहेगा क्योंकि तू निश्चय पीयेगा । क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपनी ही किरिया खाई है कि दूसरः आश्चर्यित और निन्दित और उजाड़ और घिनित होगा और उस के सारे नगर सदा उजाड़ रहेंगे ॥

१४ मैं ने परमेश्वर से एक प्रचार सुना है और एक दूत जातिगणों के पास यह कहते हुए भेजा गया कि आप आप को एकट्टे करके उस के विरुद्ध चढ़ो और

१५ संग्राम के लिये उठो । क्योंकि देख मैं ने तुम्हें जातिगणों में छोटा और मनुष्यों

१६ में अत्यन्त निन्दित किया है । तेरी भयानकता और तेरे मन के अहंकार ने तुम्हें छला है हे घटान की खाह के निवासी जो पहाड़ की चोटी पर रहता है यद्यपि तू गिद्ध की नाई अपने खोले को ऊंचा बनावे तौभी वहां से मैं तुम्हें उतारूंगा परमेश्वर कहता है ॥

१७ और अदूम उजाड़ होगा हर एक जो उस के पास से जायेगा सो आश्चर्यित

१८ होगा और उस की सारी विपत्ति के लिये फुफकारी मारेगा । सदूम और अमूरः

गई थे यशजीर के समुद्र लों पहुंच गईं तेरे ग्रीष्मफलों पर और तेरे दाख के फलों पर लुटेरा पड़ा है । और फलवंत स्वत से अर्घात् मोश्राव के देश से आनन्द और ३३ मगनता उठाई जायेगी और कोल्हियों में से मैं ने दाख के रस को रोका है लताडू न लताड़ेगा और उन का ललकारना न होगा । दसयून को रोने से इलियाली ३४ लों और यदस लों और सुग से दैरानैस लों तीन दरस के बड़ड़े की नाईं उन्हीं ने अपना शब्द बड़ाया है क्योंकि निमरिस के जल भी जाते रहेंगे ॥

परमेश्वर कहता है कि जो मनुष्य ऊंचे स्थान में भेंट चढ़ाता है और अपने ३५ देवों के लिये धूप जलाता है मैं उसे मोश्राव से मिटाऊंगा । इस लिये मेरा ३६ मन मोश्राव के लिये धांसुलियों की नाईं बजेगा और कीरिहर्म के मनुष्यों के लिये मेरा मन धांसुलियों की नाईं शब्द करेगा क्योंकि धन जो उस ने प्राप्त किया था नष्ट हुआ है । क्योंकि हर एक मिर मुंडा है और हर एक दाढ़ी ३७ फतरी है सब चायों पर कटा कटा है और कटि पर टाटवस्त्र है । मोश्राव ३८ की सारी छतों पर और उस की सड़कों में भरपूर विनाप है क्योंकि मोश्राव को मैं ने ऐसा तोड़ा है जैसा पात्र जिस्से कोई प्रसन्न नदी परमेश्वर कहता है । वह ३९ जैसा तोड़ा गया है वे चिल्लाये हैं कि मोश्राव ने जैसी पीठ फेंरी है मोश्राव लज्जित है और अपने चारों ओर के सारे लोगों के लिये एक ठट्टे का और भय का चिन्त होगा ॥

क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देख गिट्ट की नाईं एक चड़ेगा और ४० मोश्राव पर अपने पंख फैलावेगा । करघत लिया गया और दृढ़ गढ़ अकस्मात् ४१ लिये गये और मोश्राव के बलवंत जनों के मन उस दिन पीड़ित स्त्री के मनों को नाईं होंगे । और मोश्राव ऐसा नाश हो जायेगा कि फिर एक जाति न रहेगा ४२ क्योंकि उस ने अपने को परमेश्वर के विरुद्ध फुलाया है । हे मोश्राव के नियासी ४३ डर और गड़छा और जाल तुझ पर हैं परमेश्वर कहता है । जो भय से भागता ४४ है सो गड़छे में गिरेगा और जो गड़छे से निकलता है सो जाल में पकड़ा जायेगा क्योंकि मैं मोश्राव पर विलाप अर्थात् उस के दंड पाने का वरस लाऊंगा परमेश्वर कहता है । जो भाग गये सो बल के लिये दसयून की छाया तले ठहर गये ४५ परन्तु एक आग दसयून से और एक लवर मैटून के मध्य से बाहर निकलेगी और मोश्राव के काने को और कोलाहल के पुत्रों के मिर की खापड़ी को खा जायेगी ॥

हाथ तुझ पर है मोश्राव कमूस के लोग नष्ट हुए क्योंकि उन्हीं ने तेरे पुत्रों ४६ को बंधुआ किया है और तेरी पुत्रियों को भी बंधुई ॥

परन्तु पिछले दिनों में मैं मोश्राव की बंधुआई को फेंकेगा परमेश्वर कहता है ४७ यदा मोश्राव का विचार है ॥

उंचासयां पृष्ठ ।

अस्मून के सन्तानों के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि क्या इसराएल को १ छेदे नहीं क्या उस का कोई अधिकारी नहीं फिर सिलकूम ने जद को क्यों बश में किया है और उस के लोग उस के नगरों में बसे ॥

इस लिये देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है कि मैं अस्मूनियों के रज्ज: २



- ३५ के आरंभ में ऐलाम के विषय में यरमियाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा । सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं ऐलाम के धनुष उन के बल के श्रेष्ठ  
 ३६ भाग को तोड़ता हूँ । और मैं स्वर्ग के चारों खूंटेों से चार पथनों को ऐलाम के विरुद्ध लाजंगा और उन सारी पथनों के आगे उन्हें किन्न भिन्न करूंगा और  
 ३७ कोई ऐसा जातिगण न होगा जिस में ऐलाम का निकाला हुआ न आवे । और मैं ऐलाम को उन के बैरियों के आगे और उन के प्राण के ग्राहकों के सन्मुख घबराऊंगा और मैं उन पर घुराई अर्थात् अपना प्रचण्ड कोप लाजंगा परमेश्वर कहता है और जब लों में उन्हें नष्ट न करूं तब लों उन के पीछे पीछे तलवार  
 ३८ भेजूंगा । और मैं अपना सिंहासन ऐलाम में रखूंगा और राजा को और अध्यक्षों को वहां से नष्ट करूंगा परमेश्वर कहता है ॥
- ३९ परन्तु दिनों के अन्त में यों होगा कि मैं ऐलाम की बंधुआई को फेर देऊंगा परमेश्वर कहता है ॥

### पचासवां पृष्ठ ।

- १ परमेश्वर का वह बचन जो यरमियाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से बाबुल और कसदियों के देश के विषय में पहुंचा ॥
- २ कि जातिगणों में कहो और प्रचारो और ध्वजा खड़ी करो प्रचारो मत क्षिपाओ कहो कि बाबुल लिया गया है और वेल मूर्ति घबरा गई है मरुदक टूट गया है उस की मूर्तें घबरा गईं और उस की घिनित बस्तें तोड़ी गई हैं ।
- ३ क्योंकि उत्तर से उस के विरुद्ध एक जातिगण चढ़ आया है जो उस के देश को उजाड़ करेगा यहां लों कि उस में कोई निवासी न होगा मनुष्य और पशु भाग गये हैं वे चले गये ॥
- ४ परमेश्वर कहता है कि उन दिनों और उस समय में इसराएल के सन्तान आवेंगे और यहूदाह के सन्तान एकट्टे आवेंगे वे जायेंगे वे रोते रोते जायेंगे और अपने
- ५ ईश्वर परमेश्वर को खोजेंगे । वे अपना रुख सैहून की ओर करते करते उसे खोजेंगे वे आवेंगे और सर्वदा की वाचा में परमेश्वर से मिल जायेंगे जो भुलाई न जायेगी ॥
- ६ मेरे लोग खोई हुई भेड़ें हैं उन के गहरियों ने उन्हें भटकाया उन्हें ने उन्हें छोड़ दिया है वे पर्वतों से टीलों पर फिरे हैं वे अपने चैनस्थान को भूल गये हैं ।
- ७ जितनों ने उन्हें पाया उन सभी ने उन्हें भक्षण किया और उन के बैरियों ने कहा कि हम अपराध नहीं करते इस कारण कि उन्हें ने धर्म के धाम परमेश्वर के विरुद्ध अर्थात् अपने पितरों के भरोसा परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है ॥
- ८ बाबुल में से निकल जाओ और कसदियों के देश से बाहर जाओ और मुंडों के आगे के बकरों की नाई होओ । क्योंकि देखो मैं बाबुल के विरुद्ध उत्तर देश से बड़े बड़े जातिगणों की मंडली को उठाऊंगा और लाजंगा और उन के विरुद्ध उन से पांती बांधूंगा जिसे वह लिया जायेगा उन के बाण निपुण संग्रामियों की
- ९ नाई होंगे कूड़े न फिरेंगे । और कसदिया लूट के लिये होगा सब जो उसे लूटेंगे तृप्त होंगे परमेश्वर कहता है ॥
- १० हे मेरे अधिकार के लुटेरो इस लिये कि तुम लोगों ने आनन्द किया और मगन

और आसपास के स्थानों के चलने के समान उस में एक मनुष्य न बसेगा हाँ मनुष्य का पुत्र भी उस में न रहेगा परमेश्वर कहता है । देख जैसा एक सिंह १९ परदन के समझने से एक चलवंत के निवासस्थान पर आता है परन्तु मैं उसे उस के आगे से अकस्मात् भगवाजंगा और कौन चुना गया है जो उस पर स्थापित करे क्योंकि कौन मेरे समान है जो मुझे बतावेगा अथवा कौन वह गड़रिया है जो मेरे आगे खड़ा हो सक्ता ॥

इस लिये परमेश्वर के परामर्श को सुनो जो उस ने अदम के विरुद्ध किया है २० और उस की युक्ति को जो उस ने तैमन के निवासियों के विरुद्ध ठहराई है निश्चय भुंड के छोटे छोटे में से खींचे जायेंगे निश्चय वह उन के निवास का उन के संग उजाड़ करेगा । उन के गिरने के शब्द से पृथिवी धर्याती है उन के २१ चिल्लाने का शब्द लाल समुद्र लों सुना जाना है । देखा वह सिंह की नाईं २२ चढ़के उड़ेगा और घूमर पर अपने डैने फैलावेगा और अदम के चलवंतों का मन उस दिन जन्मेवाली के मन की नाईं होगा जो पीड़ा में है ॥

दमिश्क के विषय में हमारा और अरफाद घबरा गये हैं क्योंकि उन्हीं ने २३ कुमदेश सुना है वे मूर्ख हैं समुद्र पर व्याकुलता है वह स्थिर नहीं हो सक्ता । दमिश्क दुर्वल हुआ है और भागने के लिये फिरा है और अर्थराष्ट ने उसे २४ जकड़ा है पीड़ा और क्षेण ने जन्मेवाली स्त्री की नाईं उसे पकड़ा है । क्यों उन्हीं २५ ने उसे एक मृत्ति का नगर मेरे आनन्द का नगर नहीं छोड़ा है ॥

इस लिये उस के तक्षण उस की मड़कों में गिरेंगे और सारे संग्रामी उस दिन २६ छुप किये जायेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

और मैं दमिश्क की भीत पर एक आग दासंगा और वह विनष्टद के भयनों २७ को भस्म करेगी ॥

कीदार के विषय और हमूर के राज्यों के विषय में जिन्हें बाबुल के राजा नबूखुद- २८ नजर ने मारा परमेश्वर ने यों कहा है कि उठो कीदार को चढ़ जाओ और पूर्वी लोगों को लूटो । उन के रांघुओं को और भुंडों को ले जायेंगे उन के आभूषण और २९ उन की सारी संपत्ति और उन के जंत अपने ही कार्य के लिये ले जायेंगे और वे चिल्लावेंगे कि चारों ओर डर है । हे हमूर के निवासियों भागो शीघ्र उठो और ३० गाँठे उसने का उतरो परमेश्वर कहता है क्योंकि तुम्हारे विरोध में बाबुल के राजा नबूखुद-नजर ने परामर्श किया है और तुम्हारे विरोध में एक युक्ति बांधी है ॥

उठो और उस देश के विरुद्ध चढ़ जाओ जो चैन से और निर्भय से रहता है ३१ परमेश्वर कहता है जिन के न फाटक न अड़ंग हैं वे अलग निवास करते हैं । और उन के जंत लूट के लिये होंगे और उन के डेर की बहुताई लूट के लिये ३२ और मैं उन्हें जो अपनी दाढ़ी का कोना काटते हैं चारों ओर बिड़ भिड़ करंगा और उन के सारे अलंगों से मैं उन पर विपत्ति लाऊंगा परमेश्वर कहता है । और ३३ हमूर गाँवों का निवास मदा उजाड़ होगा कोई जन उस में न बसेगा और न कोई मनुष्य का वंश उस में वास करेगा ॥

परमेश्वर का वचन जो यह कहते हुए यहूदाह के राजा सिदकपाह के राज्य ३४

से भागके बच गये हैं कि परमेश्वर हमारे ईश्वर का पलटा अर्थात् उस के मन्दिर का पलटा सैहून में प्रचारे ॥

३१ धनुषधारियों को बाधुल के विरुद्ध बुलाओ तुम सब जो धनुष खींचते हो उस के विरुद्ध चारों ओर कावनी करो और कोई बचने न पावे उस के कार्य के समान उसे पलटा देओ उस के सारे किये हुए के समान उस्से करो क्योंकि उस ने परमेश्वर के विरुद्ध अहंकार से कार्य किया है अर्थात् इसराएल के धर्म-  
३० मय के विरुद्ध । इस लिये उस के तरुण उस की सड़कों में गिरेंगे और उस के सारे घोड़ा उस दिन काट डाले जायेंगे परमेश्वर कहता है ॥

३१ हे अहंकारी देख मैं तुझ पर आता हूँ प्रभु सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं तेरे विरुद्ध हूँ क्योंकि तेरा दिन अर्थात् तेरे दण्ड का समय आया है ।

३२ और अहंकारी ठोकर खाके गिरेगा और उसे उठाने को कोई न होगा और मैं उस के नगरों में आग वाहंगा और वह उस के चारों ओर भस्म करेगी ॥

३३ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल के सन्तान और यहूदाह के सन्तान एकट्ठे सताये गये और सभी ने जो उन्हें बंधुआई में ले गये उन्हें

३४ दृढ़ता से पकड़ रक्खा उन्हें ने उन्हें छोड़ने को नाह किया । उन का मुक्तिदायक बली है उस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है वह निश्चय उन के पद का पक्ष करेगा यहां लों कि पृथिवी में कुशल देवे और बाधुल के निवासियों को कंपवावे ॥

३५ परमेश्वर कहता है कि कसदियों पर और बाधुल के निवासियों पर और उस के अध्यक्षों पर और उस के बुद्धिमानों पर तलवार । हलदायकों पर खड्ग और

उन की बुद्धि मारी जायेगी उन के खीरों पर तलवार और वे विस्मित होंगे ।

३७ उन के घोड़ों पर और उन के रथों पर और उन की सारी मिली हुई मंडली पर जो उस के मध्य में हैं तलवार और वे स्त्रियों की नाईं हो जायेंगे उन के भंडारों

३८ पर तलवार और वे लूटे जायेंगे । उन के जलों पर सुखाहट और वे सूख जायेंगे

३९ क्योंकि वह खोदी हुई मूर्तिन का देश है और वे मूर्तिन से बौढ़हे हैं । इस कारण बनबिलाव सियारों के साथ रहेंगे जंटपत्ती की चिंगनियां भी उस में रहेंगी वह फिर कधी बसाया न जायेगा और पीढ़ी से पीढ़ी लों वहां कोई न रहेगा ।

४० परमेश्वर यों कहता है कि जैसा ईश्वर ने सद्रूम और अमूरः और उस के आसपास के स्थानों को उलट दिया तैसा उस में कोई न बसेगा और मनुष्य का कोई पुत्र उस में बास न करेगा ॥

४१ देख उत्तर से एक बड़ी जाति आती है और बहुत से लोग और बहुत से

४२ राजा पृथिवी के अन्तों से उभड़ेंगे । वे धनुष और बरकी हाथ में लेंगे वे क्रूर हैं और दया न दिखावेंगे उन का शब्द समुद्र की नाईं गर्जेगा और वे घोड़ों पर

४३ चढ़ेंगे हे बाधुल की पुत्री वे तेरे विरुद्ध संग्रामियों की नाईं पांती बांधेंगे । बाधुल के राजा ने उन की चर्चा सुनी है और उस के हाथ दुर्बल हुए हैं जननी की पीड़ा

४४ के समान पीड़ा ने उसे पकड़ा है । देख जैसा एक सिंह यरदन के उभड़ने से एक बलवंत के निवासस्थान पर आता है परन्तु मैं उसे उस के आगे से अकस्मात् भगवाजंगा और कौन चुना गया है जो उस पर स्थापित करूं क्योंकि मेरी नाईं

हुए कि तुम घास खाऊ बछड़े की नाईं मोटे हुए हो और घोड़ों की नाईं हिमहिमाते हो । तब तुम्हारी माता बहुत घबरावेगी तुम्हारी जमनी लज्जित हो जायेगी १२ देख अन्त में जातिगणों को शरण्य और भुराया हुआ देश और वन । परमेश्वर १३ के कोप के सारे बह फिर बसाया न जायेगा परन्तु वह सर्वथा उजाड़ होगा हर एक जो वायुल के पास से जायेगा आश्चर्यित होगा और उस की सारी विपत्तों के कारण फफकारेगा ॥

अपने तैंदें वायुल के विरुद्ध चारों ओर से लैस हो रहो तुम जो धनुष १४ खींचते हो उस पर बाण चलाओ बाण को मत रख छोड़ो क्योंकि उस ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है । उस के चारों ओर ललकारो इस ने अपना १५ हाथ दिया है उस की नैवे गिरी हैं उस की भीतें काई गई हैं क्योंकि वह परमेश्वर का पलटा है सो उससे पलटा लेओ जैसा उस ने किया है तैसा उससे करो । बाँवैये को और उसे जो लवनी में दंसुआ पकड़ता है वायुल में से काट १६ डालो हर एक उन में से नागक की तलवार के सारे अपने अपने लोगों में फिर जायेगा और उन में हर एक अपने अपने देश को भाग जायेगा ॥

इसराएल - किन्न भिन्न भेद है मिटों ने फाड़ा है पहिले अमूर के राजा ने उसे १७ भक्षण किया और इस पहिले ने अर्थात् वायुल के राजा नबूखुदनजर ने उस के घोड़ों को तोड़ा है । इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों १८ कहता है कि देखो जैसा मैं ने अमूर के राजा को दण्ड दिया है तैसा वायुल के राजा को और उस के देश को दण्ड देऊंगा । परन्तु मैं इसराएल को उसी १९ के स्थान में फेर लाऊंगा और वह करमिल और वसन पर चराई करेगा और उस का प्राण इफरायम पर्वत पर और जिलिश्द पर तृप्त होगा । परमेश्वर कहता है २० कि उन दिनों में और उस समय में इसराएल की सुराई खाजी जायेगी और पाई न जायेगी और यहूदाह के पापों का विचार किया जायेगा परन्तु पापे न जायेंगे क्योंकि जिनमें मैं ने रख छोड़ा है उन को क्षमा करूंगा ॥

दो ठेर दंगडत देश पर हां उस पर चढ़ जा और दण्ड के निवासियों पर २१ उजाड़ कर और उस के वंश को नष्ट कर परमेश्वर कहता है और मेरी सारी आज्ञा के समान कर । देश में मंग्राम का और बड़े नाग का शब्द है । सारी २२ पृथिवी की हथौड़ी कैसी काटी और तोड़ी गई देशगणों में वायुल कैसा एक उजाड़ हुआ है । हे वायुल जब तू अचेत था तब मैं ने तेरे लिये जाल बिछाया २३ है और तू पकड़ा भी गया है तू पाया गया है और अज्ञानक पकड़ा गया है क्योंकि तू ने परमेश्वर की विरुद्धता किई है ॥

परमेश्वर ने अपना अस्त्रस्थान खोला है और अपनी जलजलाष्ट के शशियार २४ निकाले हैं क्योंकि कसदियों के देश में प्रभु सेनाओं के परमेश्वर का यह कार्य है । दूर सिवाने से उस पर चढ़ आओ उस के भंडारों को खोलो उसे ठेर ठेर २५ करो और उसे नष्ट करो कुछ भी उससे न बचे । उस के सारे वेलों को बध २६ करो और उन्हें घात के लिये उतरने देओ हाथ उन पर क्योंकि उन का दिन आया है अर्थात् उन के दण्ड पाने का समय । उन का शब्द जो वायुल देश २७

खाई कि मैं निश्चय तुम्हें मनुष्यों से जैसा टिट्टियों से भर देऊंगा और वे तेरे विरुद्ध ललकारेंगे ॥

१५ उस ने अपने पराक्रम से पृथिवी को सृजा है अपनी युद्धि से जगत को स्थिर  
१६ किया है और अपने ज्ञान से उस ने स्वर्गों को फैलाया है । जय यह अपना शब्द  
बढ़ाता है तब आकाशों में जलों का फैलावत होता है और पृथिवी के अन्त  
से यह मेघों को उठाता है वृष्टि के साथ विजुलियां निकालता है और यह अपने  
१७ भंडारों से पवन निकालता है । हर एक जन अपनी समझ से सूर्य होता है हर  
एक कार्यकारी मूर्ति से लखा जाता है क्योंकि उस की ठाली हुई मूर्तें मिथ्या  
१८ हैं और उन में श्वास नहीं । ये वृथा हैं उन का कार्य जो बहुत बृक करते हैं  
१९ अपने दण्ड आने के समय में वे नष्ट होंगे । यशकृत्य का भाग ऐसा नहीं क्योंकि  
यह सृष्टि का कर्ता है और इसराएल उस के अधिकार का दण्ड उस की नाम  
सेनाओं का परमेश्वर है ॥

२० हे संग्राम की कुल्हाड़े तू मेरे संग्राम का घण्टियार होगा और जातिगणों को  
२१ मैं तुम्हीं से तोड़ूंगा और तुम्हीं से राज्यों को नष्ट करूंगा । और तुम्हीं से मैं घोड़े  
को और उस के चढ़ावों को तोड़ूंगा और तुम्हीं से रथ को और उस के सारथी  
२२ को तोड़ूंगा । और तुम्हीं से पति पत्नी को तोड़ूंगा और तुम्हीं से धूँड़े और लड़के  
२३ को तोड़ूंगा और तुम्हीं से तरुण पुरुष और कुंवारी को तोड़ूंगा । और तुम्हीं से  
गड़रिये और उस के भुंड को तोड़ूंगा और तुम्हीं से मैं किसान को और उस के जोड़े  
२४ बैल को तोड़ूंगा और तुम्हीं से मैं आध्यक्षों और आज्ञाकारियों को तोड़ूंगा । और मैं  
बाबुल को और कसदीम के सारे निवासियों को उन की सारी घुराई का जो उन्होंने  
ने सैदून में किई हैं तुम्हारी आंखों के आगे प्रतिफल देऊंगा परमेश्वर कहता है ॥

२५ देख मैं तेरे विरुद्ध हूँ परमेश्वर कहता है हे नाशक पर्वत जो सारी पृथिवी  
को नाश करता है और अपना शाय तुझ पर बढ़ाऊंगा और तुम्हें टीलों पर से  
२६ लुढ़काऊंगा और तुम्हें एक जला हुआ पर्वत बनाऊंगा । और वे तुझ से कोने के  
लिये एक पत्थर अथवा नेत्र के लिये पत्थर न लेंगे परन्तु तू सदा का उजाड़  
होगा परमेश्वर कहता है ॥

२७ देश में ध्वजा खड़ी करो जातिगणों में तुरही बजाओ उस के विरुद्ध जातिगणों को  
भरती करो और अरारात और मिन्नी और असकनाज के राज्यों को उस के विरुद्ध  
धुलाओ उस के विरुद्ध सेनापति को ठहराओ घोड़चढ़ों को भयंकर टिट्टी की नाई  
२८ उन पर मंगवाओ । मादी के राजाओं और उस के सारे आध्यक्षों और उस के सारे  
२९ प्रधानों और उस के राज्य के सारे देशों को उस के विरुद्ध सिद्ध करो । और देश  
अर्थराके पीड़ित होवे क्योंकि परमेश्वर का ठहराया हुआ बाबुल के विरोध में  
स्थिर है जिस्ते बाबुल के देश को बिना निवासी एक उजाड़ बनावे ॥

३० बाबुल के बीर संग्राम से थम गये वे दृढ़ स्थानों में रह गये उन का बल घट  
गया वे स्त्रियों की नाई हुए हैं उस के निवास जल गये उन के अड़ंगे टूट गये ।  
३१ दौड़हा दौड़हे से मिलने को दौड़ेगा और दूत दूत से भेंट करने को जिस्ते बाबुल  
को राजा को संदेश देवे कि उस का नगर एक अलंग से दूसरे लों लिया गया

कौन है अथवा कौन मुझे बतावेगा अथवा कौन यह गहरिया है जो मेरे आगे खड़ा होगा ॥

इस लिये परमेश्वर का परामर्श सुनो जो उस ने बाबुल के विरुद्ध युक्ति किई ४५ है और उस के ठहराये हुए जो उस ने कसदिया के निवासियों के विरुद्ध ठहराया है वे झुंड के छोटे छोटे में से खींचे जायेंगे वह निश्चय उन के निवासी को उन के संग उजाड़ करेगा । बाबुल लिया गया इस बात के शब्द से पृथिवी सरक ४६ गई और उस का चिह्नाना अन्यदेशियों लों सुना गया है ॥

एकावनवां पर्व ।

परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं बाबुल के विरुद्ध और कसदीम के निवा- १  
सियों के विरुद्ध एक नाशक पवन उभाड़ूंगा । और मैं बाबुल के विरुद्ध आसवैयों २  
का भेजूंगा और वे उसे आसावैयों और उस का देश छूटा करेंगे क्योंकि विपत्ति के दिन वे उस के विरुद्ध चारों ओर होंगे । खींचनेवाले पर धनुषधारी अपना ३  
धनुष खींचें और उन पर जो आप को अपने किलम में उभाड़ता और उस के तरुणों को मत छोड़ो उस की सारी सेना को सर्वथा नाश करो । और वे कस- ४  
दीम के देश में जूझ जायेंगे और उस की सड़कों में गोदे हुए गिरेंगे ॥

क्योंकि न इसराएल न यहूदाह अपने ईश्वर सेनाओं के परमेश्वर से त्यागा ५  
गया है क्योंकि उन का देश इसराएल के धर्ममण के विरुद्ध अपराध से परिपूर्ण है ॥

बाबुल के मध्य में से भाग निकलो और हर एक अपना अपना प्राण बचाओ ६  
जिस्ती उस के दण्ड में तुम लोग काटे न जाओ क्योंकि परमेश्वर के पलटे का समय है वह उसे प्रतिफल देगा । परमेश्वर के हाथ में बाबुल एक सेने का ७  
कटोरा है जिस ने सारी पृथिवी को सतयाली किया अन्यदेशियों ने उस में का दाखरस पीया है इस लिये अन्यदेशी वैड़हे हो गये हैं । कि बाबुल अधानक ८  
गिर पड़ा है और टूट गया उस के लिये चित्ताओ उस के दुःख के लिये औपध लेओ क्या जाने वह चंगा हो जाये ॥

हम ने बाबुल पर औपध लगाई है परन्तु वह चंगी न हुई उसे छोड़ देओ ९  
और चलो हर एक अपने अपने देश को जायें क्योंकि उस का दण्ड स्वर्ग लों पहुंचा है और आकाश लों उठ गया है । परमेश्वर ने हमारे बचाव प्रगट किये हैं १०  
आओ हम सैहून में अपने ईश्वर परमेश्वर का कार्य प्रगट करें ॥

बाण जगसगाओ ठालों को धरो परमेश्वर ने सादी के राजाओं को मन को ११  
उभाड़ा है क्योंकि बाबुल को नष्ट करने को उस ने ठहराया है निश्चय वह परमेश्वर का पलटा अर्थात् उस के मन्दिर का पलटा है । बाबुल की भीतों पर १२  
ध्वजां खड़ी करो और दृढ़ पद रखो पहरें बैठाओ और ठूकियों को लैस करो क्योंकि परमेश्वर ने ठहराया है और जो कुछ उस ने बाबुल के निवासियों के विषय में कहा सो उस ने पूरा किया ॥

अरे तू जो बहुत से जलों के अलंग में रहती है जिस में धन मुक्ता है तेरा १३  
अन्त पहुंचा तेरी लालच हो चुकी । सेनाओं के परमेश्वर ने अपनी ही किरिया १४



- ५० तुम जो तलवार से बख निकले हो आओ खड़े मत होओ दूर से परमेश्वर  
 ५१ को स्मरण करो और यरुसलम तुम्हारे मन में आये । इस घबरा गये हैं क्योंकि  
 हम ने निन्दा सुनी है लाज ने हमारे मुंह को ढांपा है क्योंकि परदेशी परमेश्वर  
 के मन्दिर के पवित्रस्थान में बैठे हैं ॥
- ५२ इस लिये परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं कि मैं उन की खोदी  
 हुई मूर्तियों को दण्ड देऊंगा और उस के सारे देश में घायल लोग कहेंगे ।
- ५३ यद्यपि बाबुल स्वर्ग लों चढ़ी हुई हो और वह अपने बल को ऊंचा बाढ़ित  
 किये हो तौभी मुझ से लुटेरे उस के पास आवेंगे परमेश्वर कहता है ॥
- ५४ बाबुल में से चिह्नाने का और कसदी के देश से बड़ा यिनाश का शब्द ।
- ५५ क्योंकि परमेश्वर बाबुल को नष्ट करता है और उससे महाशब्द को नाश करता  
 है उन की लहरें भी बड़े पानियों की नाईं गर्जती हैं उन के शब्द के कारण
- ५६ कोलाहल हुआ । क्योंकि उस के विरुद्ध अर्थात् बाबुल के विरुद्ध एक नाशक आया  
 है और उस के बलवन्त जन पकड़े जायेंगे उन का हर एक धनुष टूटेगा क्योंकि
- ५७ पलटा का सर्वशक्तिमान परमेश्वर निश्चय पलटा लेगा । और मैं उन के अध्यक्षों  
 को और उन के बुद्धिमानों को उस के सेनापतियों को और उस के आज्ञाकारियों  
 को और उस के बलवन्तों को मतवाला कहूंगा और वे सनातन की नींद से सोया  
 करेंगे और कभी न जागेंगे राजा जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर से कहता है ॥
- ५८ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि बाबुल की चौड़ी भीत सर्वथा ढाई  
 जायेगी और उस के ऊंचे ऊंचे फाटक आग से जलाये जायेंगे और लोग वृथा  
 परिश्रम करेंगे और जातिगण आग में और वे शक जायेंगे ॥
- ५९ यरमियाह भविष्यद्वक्ता का वह ध्वन जो उस ने मरिसियाह के बेटे नैरियाह  
 के बेटे शिरायाह को आज्ञा किई थी जब वह यहूदाह के राजा सिदकयाह  
 के संग उस के राज्य के चौथे बरस में बाबुल को गया था क्योंकि शिरायाह
- ६० नम्र अध्यक्ष था । और यरमियाह ने सारी बुराई को जो बाबुल पर कीतनी थी
- ६१ एक पुस्तक में लिखी ये सारी बातें बाबुल के वियप में लिखीं । और यरमियाह  
 ने शिरायाह से कहा कि जब तू बाबुल में पहुंचे तब देखके इन सारी बातों को
- ६२ पढ़ना । और कहना कि हे परमेश्वर तू ने इस स्थान के काट डालने के वियप  
 में कहा है यहां लों कि उस में कोई निवासी मनुष्य अथवा पशु न रहेगा
- ६३ क्योंकि सनातन उजाड़ रहेगा । और यों होगा कि जब तू इस पुस्तक को पढ़  
 ६४ चुकेगा तब उस में एक पत्थर बांधके फुरात के मध्य में फेंक देना । और कहना  
 कि यों बाबुल डूब जायेगा और उस बुराई के कारण जो मैं उस पर लाता हूं  
 फिर न उठेगा और वे शक जायेंगे यहां लों यरमियाह के ध्वन ॥

बाबनवां पर्व ।

- १ सिदकयाह एकूँस बरस का था जब राज्य करने लगा और उस ने यरुसलम  
 में ग्यारह बरस राज्य किया और उस की माता का नाम हमतल जो लिखनाही
- २ यरमियाह की बेटरी थी । और उस ने यहूकीम की सारी क्रिया के समान परमे-  
 ३ श्वर की दृष्टि में बुराई किई । क्योंकि यरुसलम और यहूदाह के विरोध में

है । और घाट बंद हुए नरकटस्थानों को भी आग से जला दिया और संग्रामी ३२ भयातुर हुए ।

क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसरायल का ईश्वर यों कहता है कि यावुल ३३ की पुत्री खलिदान की नाई है उस के झाड़ने का समय तनिक और और यह आ पहुँचता है और उस के लवने का समय ।

यावुल के राजा नवखुदनजर ने मुझे भक्षण किया है और नष्ट किया है ३४ उस ने मुझे छूटे पात्र किये हैं वह अन्नगर के समान मुझे लील गया है और उस ने अपने पेट को मेरी अच्छी यस्तुन से भर दिया उस ने मुझे निकाल दिया है । मैदान की निवासिनी यों कहेंगी कि जो अंधेर मुझ पर और मेरे शरीर पर ३५ किये गये हैं सो यावुल पर होवें और यहसलम कहेंगी कि मेरा लोहू कसदीम के निवासियों पर होवे ॥

इस लिये परमेश्वर यह कहता है कि देख मैं तेरा पक्षवादी होऊंगा और ३६ मैं तेरा पलटा लेंऊंगा और मैं उस के समुद्र को मुखाङ्गा और उस के सोते को निर्जल करूँगा । और यावुल छेर छेर हो जायेगा गीदहों का निवास और ३७ आश्चर्य का और फुफकारने का कारण और दिन निवास होगा । वे मिटों के ३८ समान एक साथ गजेंगे वे मिट के बच्चों की नाई शब्द करेंगे । उन के ताप में ३९ मैं उन्हें पिनाङ्गा और मैं उन्हें मतवाला करूँगा जिन्हें वे मगन होवें और सनातन की नींद में पड़े रहें और फिर न जागें परमेश्वर कहता है । मेरी और ४० मेंहों के समान बकरे सहित घात करने के लिये मैं उन्हें उताऊँगा ॥

गेशक कैसा लिया गया है और सारी पृथिवी की स्तुति कैसी अकस्मात लिई ४१ गई है देशगणों में यावुल कैसा आश्चर्यित हुआ है । यावुल पर समुद्र चढ़ ४२ आया है वह उस की लहरों की अधिकाई से ढाँपा गया है । उस के नगर ४३ उजाड़ हो रहे हैं भूरा देश और वन एक देश जिस में कोई न बसता और समुद्र के पुत्र उस में से न जायेंगे । और यावुल में बेल को मैं दण्ड देऊँगा और ४४ जो उस ने लीला सो उस के मुँह से निकालूँगा और देशगण उस के पास फिर न बसुरेंगे यावुल की भीत भी गिर गई ॥

हे मेरे लोगो इस के मध्य में से निकल जाओ और हर एक अपने अपने ४५ प्राण को परमेश्वर के उवलित कोप से बचाओ । न हो कि तुम्हारा मन घट ४६ जाये और तुम उस चर्चा से डर जाओ जो देश में सुनी जायेगी क्योंकि एक वरस में चर्चा होगी और उस के पीछे दूसरे वरस में दूसरी चर्चा होगी और देश में अंधेर और आज्ञाकारी के विरुद्ध आज्ञाकारी ॥

इस लिये देखो वे दिन आते हैं जिन में मैं यावुल की खादी हुई मूर्तिन ४७ को दण्ड देऊँगा और उस का मारा देश लज्जित हो जायेगा और उस के सारे लूँगे हुए उस के मध्य में मारे पड़ेंगे । तब स्वर्ग और पृथिवी और सब जो उन ४८ में हैं यावुल पर ललकारेंगे क्योंकि लुटेरे उस के विरोध में उत्तर से आवेंगे परमेश्वर कहता है । जैसा यावुल ने इसरायल के जुझाये हुएों को गिरवाया है ४९ तैसा यावुल में सारी पृथिवी में से लूँक जायेंगे ॥

- २१ और खंभे एक एक खंभे की ऊंचाई अठारह हाथ थी और बारह हाथ की  
 २२ रस्सी उस की गोलाई थी और पोला होके वह चार अंगुल मोटा था । और  
 उस पर पीतल का मथाल था और एक मथाल की ऊंचाई पांच हाथ और मथाल  
 की चारों ओर जालकाण्य और अनार थे और सब पीतल के और इसी-रीति से  
 २३ दूसरे खंभे पर भी अनार । और एक एक और क़ियानवे अनार और जालकाण्य  
 पर के चारों ओर के अनार एक सौ ॥
- २४ और पहरुओं के प्रधान ने शिरायाह प्रधान याजक को और दूसरे याजक  
 २५ सफनियाह को और तीन द्वारपालों को लिया । और नगर में से उस ने एक  
 नपुंसक को जो योहाना का प्रधान था और सात जन राजा के समीपियों में से  
 जो नगर में पाये गये और सेना के प्रेष लेखक को जो देश के लोगों की गिन्ती  
 २६ करता था और देश में के साठ जन को जो नगर के मध्य पाये गये । और  
 नबूसरअद्वान पहरुओं का प्रधान उन्हें लेके रियलः में बाबुल के राजा के पास ले  
 २७ आया । और बाबुल के राजा ने उन्हें मारा और हमान देश के रियलः में उन्हें  
 घात किया और यहूदाह को उन के देश में से बंधुआई में ले गया ॥
- २८ ये वे लोग हैं जिन्हें नबूखुदनजर सातवें बरस में बंधुआई में ले गया अर्थात्  
 २९ तीन सहस्र तेईस यहूदी । नबूखुदनजर के अठारहवें बरस में वह यरुसलम से  
 ३० आठ सौ बत्तीस जन को ले गया । नबूखुदनजर के तेईसवें बरस में नबूसरअद्वान  
 पहरुओं का प्रधान सात सौ पैंतालीस यहूदियों को बंधुआई में ले गया सारे  
 लोग चार सहस्र छः सौ थे ॥
- ३१ और यहूदाह के राजा यहूयकीम की बंधुआई के सैंतीसवें बरस के बारहवें मास  
 की पचीसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि बाबुल के राजा अबीलमरूदक ने अपने राज्य  
 के पहिले बरस में यहूदाह के राजा यहूयकीम को बंधाया और उसे बन्दीगृह से निकाल  
 ३२ लाया । और उससे अनुग्रह की बातें किई और उस के सिंहासन को अपने संग के  
 ३३ राजाओं के सिंहासन से जो बाबुल में थे सभों से ऊंचा किया । और उस ने उस के  
 बन्दीगृह के वस्त्रों को फलट डाला और वह अपने जीवन भर नित्य उस के आगे  
 ३४ भोजन करता रहा । और उस के जीवन भर की जीविका मरने लों नित्य की  
 जीविका बाबुल के राजा की आज्ञा से प्रतिदिन परिमाण से दिई जाती थी ॥

## यरमियाह का विलाप ।

पहिला पृष्ठ ।

- १ लोगों से भरी हुई नगरी क्यों अकेली बैठी है वह विधवा की नाई हो गई  
 जो जातिगणों में बड़ी थी और प्रदेशों में रानी थी सो करदायक हुई ॥
- २ वह रात को बिलख बिलख रोती है और उस के आंसू उस के गालों पर  
 उस के सारे प्रेमियों में उस का शांतिदायक कोई नहीं उस के सारे मित्रों ने  
 उसे छल का व्यवहार किया है वे उस के बैरी हुए हैं ॥

परमेश्वर के कोप के कारण ऐसा हुआ था कि उस ने उन्हें अपनी दृष्टि से दूर किया सिद्धकपाह राजा वायुल के राजा के विरुद्ध फिर गया ।

और उस के राज्य के नवें वरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि वायुल का राजा नव्वसुदनवर यह और उस की सारी सेना यस्सलम के विरुद्ध आई और उस के सामने छावनी किई और उस के विरुद्ध चारों ओर गड़ बनाये । और सिद्धकपाह राजा के ग्यारहवें वरस में नगर घेरा रहा ॥

चौथे मास की नवीं तिथि में जय नगर में बड़ा अकाल था और देश के लोगों के लिये रोटी न रही । तब नगर तोड़ा गया और सारे घोड़ा भागे और दोनों भीतों के फाटक में से जो राजा की दारी के लग है रात को नगर से निकल गये और वे चौगान की ओर गये जय नगर की चारों ओर थे । परन्तु कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया और यरीहो के चौगानों में सिद्धकपाह को जाली लिया और उस की सारी लूट लूटे छिन्न भिन्न थी । और उन्होंने ने राजा को पकड़ा और उसे दमात देश रिखल में वायुल के राजा के पास लाये और उस ने उस का विचार किया । और वायुल के राजा ने सिद्धकपाह की आंखों के आगे उस के पुत्रों को घात किया और उस ने रिखल में यहूदाह के सारे अश्वजनों को भी मार डाला । और उस ने सिद्धकपाह की आंखें निकाली और उसे पीतल की सीकरों से जकड़ा और वायुल का राजा वायुल में ले गया और उस के मरने में उसे बन्दीगृह में रक्खा ।

और वायुल के राजा नव्वसुदनवर के उन्नीसवें वरस के पाँचवें मास की दसवीं तिथि में वायुल के राजा का समीपी पहरियों का प्रधान नव्वसरअद्दान यस्सलम में आया । और परमेश्वर के मन्दिर को और राजा के भवन को जला दिया और यस्सलम के सारे घरों को और हर एक बड़े घर को आग से जला दिया । और पहरियों के प्रधान के संग के कसदियों की सारी सेनाओं ने यस्सलम की चारों ओर की सारी भीतें तोड़ डालीं ।

तब पहरियों के प्रधान नव्वसरअद्दान ने लोगों में के कितने कंगालों और नगर में के रहे हुए लोगों को और भगदुओं को जो वायुल के राजा की ओर गये अर्थात् रहीं हुई मंडली बंधुआई में ले गया । परन्तु पहरियों के प्रधान नव्वसरअद्दान ने देश के कितने एक कंगालों को दाख की दारी के और किसनई के लिये छोड़ दिया । और परमेश्वर के मन्दिर में के पीतल के खंभे और आधार और परमेश्वर के मन्दिर में के पीतल का समुद्र कसदियों ने तोड़ डाला और उन का सारा पीतल वायुल को ले गये । वे कड़ाहे भी और फावड़े और कतरनियाँ और कटोरे और करकुल और सारे पीतल के पात्र जिन से वे सेवा करते थे ले गये । और दर्तन और धूपाचरी और कटोरे और कड़ाहे और दीअट और करकुल और कटोरियाँ और जो कुछ सोने का था सोने का और जो कुछ चांदी का था चांदी को पहरियों का प्रधान ले गया । दो खंभे और समुद्र और पीतल के दारघ चैल जो नीचे थे और आधार जिन्हें मुलेमान राजा ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाया था इन पात्रों का पीतल बेंतल था ॥

- १५ प्रभु ने मेरे मंध्य में सारे बलवन्त जनों को रौंदा है उस ने मेरे तन्मों को चूर करने को मेरे विरुद्ध जथा बुलाई है प्रभु ने यहूदाह की कुंवारी पुत्री को दास्य के कोल्हू में रौंदा है ॥
- १६ इन बातों के लिये मैं खिलाप करती हूं मेरी आंख मेरी आंख जल बहाती है क्योंकि मेरे प्राण के सहायक शांतिदायक दूर हैं मेरे बालक उजड़ गये हैं क्योंकि वैरी प्रबल हुए हैं ॥
- १७ सैहून अपने छाव फैलाती है उस का शांतिदायक कोई नहीं परमेश्वर ने यशकूब के विषय में आज्ञा फिरे है उस के वैरी उस के चारों ओर हैं उन में यरुसलम अशुद्ध स्त्री की नाईं हुई है ॥
- १८ परमेश्वर धर्मी है क्योंकि मैं उस की आज्ञा में फिर गया हूं हे सारे लोगो सुन रक्खो और मेरे दुःख को देखो मेरी कुंवारियां और मेरे तन्म बंधुआई में पहुंचाये गये हैं ॥
- १९ मैं ने अपने प्रेमियों को बुलाया पर ये मुझ से कली ठहरे मेरे याजक और मेरे प्राचीनों ने अपना अपना जीव पालने का अपने लिये भोजन खावते खावते नगर में प्राण त्यागा ॥
- २० हे परमेश्वर देख कि मुझ पर दुःख है मेरी अंगदियां समोड़ती हैं मुझ में मेरा अन्तःकरण चलट पलट हुआ है क्योंकि मैं ने तेरे विरुद्ध अति सिर उठाया है बाहर तलवार नष्ट करती है और भीतर मृत्यु की नाईं है ॥
- २१ उन्हीं ने सुना है कि मैं छाव छाव करता हूं मेरा शांतिदायक कोई नहीं मेरे सारे वैरियों ने मेरी विपत्ति को सुना और आनन्दित हुए हैं क्योंकि तू ने यह किया है जो तू ने उद्यारा मोटे दिन तू लाया है और ये मेरे समान होंगे ॥
- २२ उन की सारी दुष्टता तेरे आगे आई और जैसा तू ने हम से सारे अपराधों के लिये व्यवहार किया है तू उन से ऐसा व्यवहार कर क्योंकि मेरा हाव हाव करना बहुत और मेरा मन निर्बल है ॥

### दूसरा पर्व ।

- १ प्रभु ने अपनी रिस से सैहून की कन्या को घटा से जैसे ठांपा है उस ने इसराएल की शोभा को स्वर्ग से पृथिवी पर डाल दिया है और अपनी रिस के दिन अपने पांच की पीढ़ी को स्मरण नहीं किया है ॥
- २ प्रभु ने यशकूब के सारे स्थानों को निर्दयता से बिगाड़ा है उस ने अपने कोप से यहूदाह की लड़की के दृढ़ गठों को गिरा दिया है उस ने उन्हें भूमि पर उतार दिया है उस ने राज्य को और उस के अध्यक्षों को अशुद्ध किया है ॥
- ३ उस ने अपनी अति रिस से इसराएल को हर एक सींग को काट डाला है उस ने वैरियों के आगे से अपना दाहिना हाथ खींचा है और उस ने यशकूब में धधकती आग की नाईं बारा है जो चारों ओर भक्षण करती है ॥
- ४ उस ने वैरी की नाईं अपना धनुष खींचा है उस का दाहिना हाथ वैरी की नाईं बढ़ाया हुआ है और हर एक आंख की सारी बांका को सैहून की पुत्री के तंबू में घात किया है उस ने आग की नाईं अपने कोप को उंडेला है ॥

अति कष्ट के मारे और सेवा के कारण बहूदाह बंधुआई में गया है वह ६  
अन्यदेशियों में वास करता है वह चैन नहीं पाता उस के मारे खेदनेहारों ने उसे  
सकली में जाही लिया ॥

मैहून के मार्ग विलाप करते हैं क्योंकि बड़े पर्व में कोई नहीं आता उस के ४  
मारे फाटक उजाड़ हैं उस के याजक हाथ हाथ करते हैं उस की कुंवारीयां  
कष्टित हैं और वह आप कड़वाहट में है ॥

उस के बैरी ओष्ठ उस के शत्रु भाग्यमान हुए हैं क्योंकि उस के अपराधों की ५  
बहुताई के लिये परमेश्वर ने उसे दुःख दिया है उस के बालक बैरी के आगे  
बंधुआई में गये हैं ॥

और मैहून की कन्या से उस की मारी सुन्दरता जाती रही उस के अध्वज ६  
उन हरियों की नाईं हैं जो चराई नहीं पाते और खेदनेहारे के आगे निर्वल  
चले गये ॥

यहमलम ने अपने दुःख और विपत्ति के दिनों में अपने पुरातन दिनों की ७  
सारी मनभावनी वस्तुन का चेत किया है जब उस के लोग बैरी के हाथ में पड़े  
और उस का सहायक कोई न हुआ बैरियों ने उसे देखा और उस के विश्राम  
दिनों पर हंसे ॥

यहमलम ने बहुत ही पाप किया है इस लिये वह अलग किई गई उस के ८  
मारे आदरदायकों ने उस की निन्दा किई है क्योंकि उन्हीं ने उस की नग्नता  
देखी है हां वह हाथ हाथ करते करते मुंह फिराती है ॥

उस की अपवित्रता उस के अंचलों में थी उस ने अपने अन्त को नहीं सोचा ९  
इसी लिये वह आश्चर्यित से उतारी गई उस का शांतिदायक कोई नहीं है पर-  
मेश्वर मेरे कष्ट का देख क्योंकि बैरी ने आप को बड़ाया है ॥

बैरी ने उस की सारी मनभावनी वस्तुन पर अपना हाथ फैलाया है क्योंकि १०  
उस ने जातिगणों का अपने पवित्रस्थान में बैठते देखा है जिन के विषय में तू ने  
आज्ञा किई है कि वे मेरी मंडली में न बैठेंगे ॥

उस के सारे लोग हाथ हाथ करते हैं वे रोटी ठूंकते हैं उन्हीं ने अपना जीव ११  
पालने का भोजन के लिये अपने माल की वस्तु दिई है हे परमेश्वर देख और  
सोच क्योंकि मैं तुच्छ बना हूँ ॥

हे सारे पणिकों क्या यह तुम्हें कुछ नहीं है दृष्टि काके देखो क्या कोई दुःख १२  
मेरे दुःख के समान है जो मुझ पर हुआ है जिसे परमेश्वर ने अपने महाकोप के  
दिन में मुझे कष्टित किया है ॥

ऊपर से उस ने मेरी हड्डियों में आग भेजी है और वह उन पर प्रवल होती १३  
है उस ने मेरे पांश के लिये छाल बिछाया है उस ने मुझे उलटा फेर दिया है उस  
ने मुझे उजाड़ा और दिन भर घटाया है ॥

मेरे अपराधों का ज्ञान उसी के हाथ से बांधा गया वे लिपटे हुए मेरे गले पर आ रहे १४  
उस ने मेरे बल का घटाया है प्रभु ने मुझे उन के हाथों में सौंपा है मैं उठ नहीं  
सक्ती हूँ ॥



१० परमेश्वर ने अपनी युक्ति को कर डाला उस ने अपने वचन को पूरा किया है जो उस ने अगिले दिनों में ठहराया सो उस ने नाश किया और न छोड़ा परन्तु उस ने एक बैरी को तुझ पर आनन्द कराया है उस ने तेरे बैरियों के सींग को उभाड़ा है ॥

१८ उन का मन प्रभु के आगे चिल्लाता है हे मैहून की पुत्री रात दिन धारा की नाईं अपने आंसू बहने दे आप को चैन मत दे अपनी आंख की पुतली को स्थिर मत होने दे ॥

१९ उठ रात्री के पहरे के आरम्भ में चिल्ला चिल्ला रो अपना मन पानी की नाईं प्रभु के आगे उंडेल अपने नन्दे बालकों के प्राण के लिये अपने हाथ उठा जो सारे मार्गों के सिरे में भूख के मारे मूर्छित हैं ॥

२० हे परमेश्वर देख और दृष्टि कर कि तू ने किस्से यह व्यवहार किया है क्या स्त्री अपने कोख का फल जो बालक हाथ में नचाया गया भसेगी क्या यात्रक और भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के पवित्रस्थान में मारे जायेंगे ॥

२१ बालक और बृद्ध मार्गों में पड़े हुए हैं मेरी कुंवारियां और मेरे युवा पुरुष तलवार से गिरे हैं तू ने उन्हें अपनी रिस के दिन में घात किया है तू ने उन्हें मार डाला है और दया न किई ॥

२२ तू ने जैसा पवित्र दिन में मेरे भय को चारों ओर बटोरा है यहां लों कि परमेश्वर की रिस के दिन में कोई न छूटा न बचा जिन्हें मैं ने पाला पोसा था वे सब मेरे बैरी हुए ॥

### तीसरा पृष्ठ ।

१ मैं वह मनुष्य हूं जिस ने उस के कोप के दण्ड का दुःख देखा है । उस ने मेरी अगुआई किई और अधियारे में चलाया है परन्तु उंजियाले में नहीं । निश्चय वह मेरे विरुद्ध बैठा है वह दिन भर अपना हाथ फेरता है ॥

४ उस ने मेरा मांस और मेरा चाम गला दिया है उस ने मेरी हड्डियों को तोड़ा है । उस ने मुझे पर जुड़ाई किई है और कड़ुआहट और परिश्रम ने मुझे घेरा है । उस ने उन की नाईं जो पुरातन से सर गये हैं मुझे अधियारे के मध्य में रहने कराया है ॥

७ उस ने मेरी चारों ओर बाड़ा बांधा है कि मैं निकल नहीं सक्ता उस ने मेरी सीकरें भारी किई हैं । हां जब मैं चिल्ला चिल्ला पुकारता हूं तब वह मेरी प्रार्थना को रोकता है । उस ने गड़े हुए पत्थर से मेरे मार्गों को बन्द किया है उस ने मेरे पथों को टेढ़ा किया है ॥

१० वह घात में लगे हुए भालू की और क्लिपे हुए सिंह की नाईं मेरे लिये है । ११ उस ने मेरे मार्गों को टेढ़ा किया है और मुझे टुकड़े टुकड़े किया है उस ने मुझे उजाड़ा है । उस ने अपना धनुष खींचा है और मुझे बाण के लिये चिन्ह कर रक्खा है ॥

१३ उस ने अपने तूण के बाण को मेरे गुदों में चलाया है । मैं अपने सारे लोगों १५ के लिये स्वांग और दिन भर उन का गान हुआ हूं । उस ने मुझे कड़ुआहट से भर दिया है और नागदौना मुझे पिलाया है ॥

प्रभु बैरी की नाईं हुआ है उस ने इसगल को उजाड़ा है उस ने उस के ५  
सारे भवनों को उजाड़ा है उस ने उस के दृढ़ गढ़ों को नाश किया है और  
यहूदाह की पुत्री में हाहाकार और विलाप बढ़ाया है ॥

और उस ने अपनी छी दाड़ित दाढ़ी पर दखस किया है उस ने अपनी ६  
मंडली को नष्ट किया है परमेश्वर ने सैदून में पवित्र पर्वों और वियाम दिनों  
को भुलवाया है और अपनी रिस की जलजलाहट से उस ने राजा को और याजक  
को तुच्छ जाना है ॥

परमेश्वर ने अपनी चेदी को त्यागा है अपना पवित्रस्थान स्थापित किया है ७  
उस ने उस के भवनों की भीतों को बैरी के हाथ में सौंपा है पवित्र पर्वों के  
दिनों की नाईं उन्हें ने परमेश्वर के मन्दिर में शब्द उठाया है ॥

परमेश्वर ने सैदून की पुत्री की भीत को नाश करने को ठाना है उस ने ८  
रस्सी फैलाई है उस ने नाश करने में अपना हाथ नहीं उठाया है परन्तु उस ने  
काट और भीत से विलाप कराया है वे मिलके घट गये हैं ॥

उन के फाटक भूमि में गिर गये हैं उस ने उस के अङ्गों को ताड़के बिनाश ९  
किया है उस का राजा और उस के अध्यक्ष अन्यदेशियों में हैं व्यवस्था नहीं है  
उस के भविष्यद्वक्ते भी परमेश्वर से दर्शन नहीं पाते हैं ॥

सैदून की पुत्री के प्राचीन भूमि पर बैठे हैं वे चुपचाप हैं उन्हें ने अपने सिरों १०  
पर धूल डाली है उन्हें ने टाटवस्त्र कसा है यरसलम की कुंवारियों ने भूमि  
लों सिरों को झुकाया है ॥

आंसुओं से मेरी आंखें छट गई हैं मेरी अंतर्द्वियां समोड़ती हैं मेरे लोगों की ११  
पुत्री के दरार के सारे मेरा कलेजा भूमि पर उंडेला गया है जब लों बालक और  
दूधपीवक नगर की गलियों में सूरित पड़े हैं ॥

जब वे नगर की गलियों में के घायलों की नाईं सूरित हैं जब उन की माता १२  
की गोद में उन का प्राण निकलता है तब वे अपनी अपनी माता से कहते हैं अन्न  
और दाखरम कहाँ ॥

हे यरसलम की पुत्री मैं तुझे कौन सी बात से उपदेश देऊँ और किस्से उपमा १३  
देऊँ हे सैदून की कुंवारी पुत्री तुझे शांति देने को मैं तुझे किस के तुल्य करूँ  
क्योंकि तेरा दरार समुद्र की नाईं चौड़ा है कौन तुझे चंगा कर सकता है ॥

तेरे भविष्यद्वक्ता ने तेरे लिये भविष्य कहा है जो वृथा और मिथ्या है और १४  
उन्हें ने तेरी बंधुआई फेर लाने को तेरे आगे तेरी दुर्गाह प्रगट नहीं किई है  
परन्तु उन्हें ने तेरे लिये वृथा बोझ और देश निकाले जाने का भविष्य कहा है ॥

मार्ग के सारे पथिकों ने तुझ पर थोपाड़ी मारी है वे यरसलम की पुत्री पर १५  
सिर धुनके फुफकारी मार मार कहते हैं क्या यह वही नगरी है जो पूरी सुन्दरी  
और सारी पृथिवी का आनन्द फटलाती थी ॥

तेरे सारे बैरियों ने तेरे विरुद्ध मुंह खोला है उन्हें ने फुफकारी मार और १६  
दांत किचकिचाके कहा कि हम उसे लाल गये हैं निश्चय हम इसी दिन की  
बाट जोहते थे हम ने पाया है हम ने देखा है ॥

५४ को गड़हे में काटा है और मुझ पर पत्थर धर दिया है । मेरे सिर के ऊपर से पानी बह गये मैं ने कहा कि मैं कट गया हूँ ॥

५५ हे परमेश्वर मैं ने नीचे की भकसी में से तेरा ही नाम लिया । तू ने मेरा ५६ शब्द सुना है मेरे रोने पर और सहाय करने में अपना कान मत छिपा । जब मैं ने तुझे पुकारा पास आके तू ने कहा कि मत डर ॥

५८ हे प्रभु तू ने मेरे प्राण के वाद का विवाद किया है तू ने मेरे जीव को ५९ छुड़ाया । हे परमेश्वर जो अनोति मुझ पर दुई सो तू ने देखी है मेरा न्याय ६० कर । तू ने उन के सारे वैर और सारी युक्तियों को मेरे विरुद्ध देखा है ॥

६१ हे परमेश्वर तू ने उन की निन्दा और मेरे विरुद्ध उन की मारी युक्तियों को ६२ सुना है । वैरियों के हाँठ और उन का कुड़कुड़ाना मेरे विरुद्ध दिन भर । उन के बैठने उठने को देख मैं उन का गान हूँ ॥

६४ हे परमेश्वर उन के हाथों के कार्य को समान तू उन्हें प्रतिफल दे । तू उन्हें ६६ मन की कठोरता दे तेरा धिक्कार उन पर । हे परमेश्वर तू रिस से उन का पीछा कर और स्वर्ग के तले से उन्हें नाश कर ॥

चौथा पर्व ।

१ सोना क्यों मलीन हुआ चाखे से चाखा सोना क्योंकर पलटा गया पवित्र पत्थर गलियों के दर एक सिरे पर कितरे हैं ॥

२ सैहून के अत्युत्तम पुत्र जो चाखे सोने के तुल्य थे कुम्हार के बनाये हुए मिट्टी के घड़े की नाईं क्यों समझे जाते हैं ॥

३ सियारिनी भी अपने स्तनों को निकाल निकाल अपने बच्चों को पिलाती है मेरे लोगों की पुत्री अरण्य के जंटपत्तियों की नाईं कर है ॥

४ दूध के बालक की जीभ प्यास के मारे तालू से लगी है नन्हे बालक रोटी मांगते हैं परन्तु कोई उन्हें नहीं देता ॥

५ जो सुस्वाद खाते थे वे सड़कों में त्यक्त हैं जो लाल बस्त्र पर पाले गये थे सो घूरे पर लोटते हैं ॥

६ और मेरे लोगों की पुत्री का पाप सड़क के अपराध से भी बढ़ा है जो पल-मात्र के तुल्य उलटाया गया और उस में हाथों ने कार्य न किया ॥

७ उस के कुलीन पाले से भी शुद्ध थे वे दूध से अति श्वेत थे उन की हड्डी पट्टरागमणि से भी लाल उन का डौल नीलमणि की नाईं था ॥

८ अब उन का रूप कालिख से काला है वे सड़कों में जाने नहीं जाते उन का चमड़ा उन के हाड़ों से सटा हुआ है वह काठ की नाईं भुरा गया है ॥

९ जो तलवार से मारे गये हैं सो अकाल से मारे हुएों से अच्छे हैं क्योंकि वे श्वेत के फलों की घटी से घुले जाते हैं ॥

१० मयालु स्त्रियों के हाथों ने अपने ही बालकों को उखिना है जो मेरे लोगों की पुत्री के नाश में उन के लिये भोजन हुए ॥

११ परमेश्वर ने अपने कोप को प्रगटा है उस ने अपनी रिस की जलजलाहट उंडेली है और सैहून में एक आग बारी है और उस ने उस की नेवों को भस्म किया है ।

और उस ने कंकड़ से मेरे दांतों को भी तोड़ा है उस ने मुझे राख पर लोटाया १६ है । और मेरा प्राण कुशल से दूर किया गया मैं भलाई को भूल गया । तब मैं १७ ने कहा कि परमेश्वर से मेरा बल और मेरी आशा जानी रही ॥

मेरे क्लेश और मेरी विपत्ति नागदौना और पित्त का स्मरण कर । मेरा प्राण १८ स्मरण करता है और सुक में निहुरता है । यह मैं अपने मन में दुहराता हूं इस २१ लिये मैं आशा रखूंगा ॥

परमेश्वर की दया से हम क्षय नहीं होते क्योंकि उस की दया नहीं घटती २२ है । वे कृपा हर विद्वान को नहीं हैं तेरी सत्यता बड़ी है । मेरा प्राण कहता २३ है कि परमेश्वर मेरा भाग इस लिये मैं उस पर भरोसा रखूंगा ॥

परमेश्वर हम पर कृपाल है जो उस की बात जोहता है और जो प्राणी उसे २४ ग्याजता है । भला है कि मनुष्य आशा रखे और परमेश्वर की सुक्ति की बात २६ चुपके से जोटे । भला है कि मनुष्य अपनी तरुणार्ध में जूझा उठावे ॥ २७

कि वह चुपका और सकांत बैठा रहे क्योंकि वह उसे हम पर रखता है । २८ वह अपने मुँह को धूल पर रखे ग्या जाने आशा होवे । वह थपड़ाऊ की और ३० गाल फेरे वह अपमान से भरपूर होवे ॥

क्योंकि प्रभु सदा त्याग न करेगा । परन्तु यद्यपि वह क्लेश देवे तथापि वह ३१ अपनी दया की बहुताई के समान मया करेगा । क्योंकि वह आनन्द से मनुष्य को ३३ पुत्रों को दुःख नहीं देता अथवा न शोकित करता ॥

कि देश के सारे वंधुओं को अपने पाँव तले रौंदे । और महा शक्तिमान ३४ के आगे मनुष्य के विचार को फेर देवे । और मनुष्य का पद बिगाड़ने में प्रभु को ३६ नहीं भावता ॥

किस ने कहा है और पूरा हुआ है जब प्रभु ने आज्ञा न दिई । क्या अति ३७ महान के मुँह से भला बुरा नहीं निकलता । जीवता मनुष्य क्यों कुड़कुड़ाता है हर ३९ एक अपने पाप के लिये कुड़कुड़ावे ॥

आओ हम अपने मार्गों को कुँटें और परखें और परमेश्वर की ओर फिरें । ४० आओ हम अपने अन्तःकरण और दृष्टि स्वर्ग को सर्वशक्तिमान की ओर उठावें । ४१ हम ने अपराध किया है और फिर गये हैं तू ने क्षमा नहीं किई है ॥ ४२

तू ने अपनी रिस से आप को छिपाया है और हमें खेदा है तू ने घात किया ४३ है और नहीं छोड़ा है । तू ने अपनी चारों ओर मेघ से घेरा है जिस्ती प्रार्थना ४४ प्रवेश न करे । तू ने हमें लोगों के मध्य में बेहारेन और कूड़ा किया है ॥ ४५

हमारे सारे वैरियों ने हमारे विरुद्ध मुँह खोले हैं । भय और गड़हा और ४६ उजाड़ और नाश हम पर पड़ा है । मेरे लोगों की पुत्री के नाश के कारण मेरी ४८ आंखें जल की धारा बहाती हैं ॥

मेरी आंखें टपकती हैं और नहीं थमतीं यहां लों कि उसे चैन नहीं । जब ४९ लों परमेश्वर स्वर्ग से न झाँकें और न देखे । मेरे नगर की सारी पुत्रियों के कारण ५१ मेरी आंखों से प्राण को कष्ट होता है ॥

मेरे वैरी मुझे चिढ़िया की नाईं अकारण खेदते हैं । उन्हें ने मेरे प्राण ५२ ५३

१० भयानक अकाल के मारे हमारे चाम भट्टी की नाईं भौंसि गये । सैहून में स्त्रियों  
 १२ पर और यहूदाह के नगरों में कुंवारियों पर खलात्कार किया है । उन के हाथ से  
 १३ राजपुत्र लटकाये गये और प्राचीनों की प्रतिष्ठा न हुई । तरुणों को चक्री पीसने  
 १४ पड़ा और लड़कों लकड़ी तले दब गये । प्राचीन फाटक में से और तरुण अपने  
 १५ बाजे से रह गये हैं । हमारे मन का आनन्द जाता रहा है हमारा नाच खिलाप  
 १६ से पलट गया है । हमारे सिर से मुकुट गिरा है हाथ हम पर क्योंकि हम ने पाप  
 किया है ॥

१७ इसी कारण हमारा मन घट गया है इन बातों के कारण हमारी आंखें  
 १८ धुंधला गईं । सैहून पहाड़ के कारण जो उब्लाड़ है लोमड़ियां उस में चलती  
 फिरती हैं ॥

१९ हे परमेश्वर तू सदा स्थिर रहेगा तेरा सिंहासन पीढ़ी से पीढ़ी लों । तू क्यों  
 २० हमें सर्वथा भूलेगा क्या तू हमें बहुत दिन लों त्यागोगा । हे परमेश्वर हमें अपनी  
 २१ ओर फिरा और हम फिरेंगे आगे की नाईं हमारे दिनों को नवीन कर । क्या तू  
 ने हमें सर्वथा त्यागा है तू हम पर अत्यन्त कोपित रहेगा ॥

## हिजकिएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्व ।

१ अब तीसवें बरस के चौथे मास की पांचवीं तिथि में ऐसा हुआ कि खबूर  
 नदी के लग जब मैं बंधुआई में था तब स्वर्ग खुल गये और मैं ने ईश्वर के दर्शन  
 २ पाये । यहूयकीन राजा की बंधुआई के पांचवें बरस के मास की पांचवीं तिथि  
 ३ में । खबूर नदी के लग कसदीम के देश में बूज के बेटे हिजकिएल याजक के  
 पास परमेश्वर का बचन पहुंचा और परमेश्वर का हाथ वहां उस पर था ॥

४ और मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हूं कि उत्तर से एक बवंडर एक महा  
 मेघ और बरती हुई आग और उस के आसपास एक चमक थी और उस के मध्य  
 में से अर्थात् आग में से चमकते पीतल का सा रंग ।

५ और उस के मध्य में से चार जीवधारियों का आकार निकला और यह उन  
 ६ का रूप और उन्हें मनुष्य का आकार था । और हर एक के चार चार मुंह और  
 ७ हर एक के चार चार डैने थे । और उन के पांव सीधे पांव और उन के पांव  
 ८ के तलवे बकर के पांव के तलवे की नाईं और वे चमकते पीतल की नाईं  
 ९ चमकते थे । और उन के चारों अलंग डैनों के नीचे मनुष्य के हाथ थे और उन  
 १० चारों के मुंह और डैने थे । उन के डैने एक एक से जोड़े हुए थे चलने में वे  
 ११ फिरते न थे उन में हर एक अपने मुंह के साम्हने चलता था । और उन के  
 दाहिने अलंग उन चारों के मुंह मनुष्य के मुंह की नाईं और सिंह के मुंह की  
 नाईं थे और बाईं अलंग उन चारों के मुंह बैल के से थे और उन चारों के  
 १२ मुंह गिद्ध के से भी थे । और उन के मुंह यां हीं और उन के डैने ऊपर से

पृथिवी के राजाओं ने और जगत के सारे वामियों ने प्रतीति न किई कि धैरी १२  
और शत्रु यदुसलम के फाटकों में पैदंगे ॥

उस के भविष्यद्वक्तों के पापों और उस के यात्रकों की घुराइयों के कारण १३  
जिन्होंने धर्मियों का लोह उस में बचाया था हुआ ॥

वे ग्रन्थों की नाईं गलियों में भटकते फिरे उन्हीं ने आप को लोह से अशुद्ध १४  
किया ऐसा कि लोग उन के कपड़े नहीं ठूते ॥

उन्हे पुकार पुकारके कहते थे कि अरे अपवित्र दूर जाओ दूर जाओ दूर १५  
जाओ कूँआ सत क्योंकि वे भागे वे भटक भी गये जातिगणों में कदा जाता है  
कि वे फिर वहाँ न टिकेंगे ॥

परमेश्वर के रूप ने उन को विभाग किया है वट उन पर फिर दृष्टि न करेगा १६  
उन्हीं ने यात्रकों का आदर नहीं किया उन्हीं ने प्राचीनों पर कृपा न दिखाई ॥

हम जो हैं सो हमारी आँखें मिथ्या सहायता के लिये घट गईं पदरे के १७  
गुम्मट पर हम ने एक जाति की घाट जोड़ी जो बचा नहीं सक्ती ॥

वे हमारे दुःख अहेरने थे यहाँ लों कि हम अपने मार्गों में चल न सक्ते थे १८  
हमारा अन्त था पहुँचा हमारे दिन पूरे हुए क्योंकि हमारा अन्त आया है ॥

हमारे खेदवैषे आकाश के सिद्धों में अधिक बेगवान थे उन्हीं ने हमें पर्वतों १९  
पर खेदा वे जंगल में हमारे टूके में लगे हैं ॥

हमारे नथुनों का ग्याम परमेश्वर का अभिषिक्त उन के गड़दों में पकड़ा २०  
गया जिस के विषय में हम ने कहा कि हम उस की छाया के तले अन्यदेशियों  
में जियेंगे ॥

हे अदम की पुत्री जो ऊँज के देश में वास करती है तू आनन्द कर और २१  
मगन हो कटोरा तुझ पर भी पहुँचेगा तू भी सतधाली होगी और अपनी नग्नता  
उधारेगी ॥

हे मैतून की पुत्री तेरे दण्ड का अन्त हुआ है वट तुझे फिर कभी बंधुआई २२  
में न पहुँचावेगा हे अदम की पुत्री वट तेरे पापों का प्रतिकूल देगा तेरे पापों  
के कारण तुझे बंधुआई में ले गया है ॥

पाँचवाँ पर्व ।

हे परमेश्वर जो कुछ हम पर दीता है सो स्मरण कर विचार और हमारे १  
अपमान को देख ॥

हमारा अधिकार उपरियों को हमारे घर पर्वदेशियों को मिले । हम अनाथ ३  
हूए और पितारहित और हमारी सातायें विधवाओं की नाईं हुईं । हम ने रोकड़ ४  
वे वे जल पीया है हमारा ईश्वर मोल से आता है । हमारे गलों पर जूए हैं जिन ५  
से हम मताये जाते हैं हम परिश्रम करते हैं और हमें विश्वास नहीं मिलता । हम ६  
ने मिथियों और असुरियों को छाथ दिया जिससे हम भोजन से तृप्त होयें । हमारे ७  
पितरों ने पाप किया है और वे नहीं हैं हम ने उन की घुराइयों का दण्ड भोगा  
है । सेवकों ने हम पर प्रभुता किई है और उन के छाथ से हमें छुड़ाने का कोई ८  
नहीं । उन की तलवार के सारे हम अपनी रोटी जी के जोखिम से पाते हैं । ९



## दूसरा पर्व ।

- १ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अपने पाँव के बल खड़ा हो  
 २ और मैं तुझ से कहूँगा । और जब वह कहता था तब आत्मा ने मुझ में प्रवेश  
 किया और मुझे पाँव के बल खड़ा किया और जो मुझ से कह रहा था मैं ने उस  
 की सुनी ॥
- ३ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र मैं तुझे इसराएल के संतानों  
 के पास दंगइत जातिगणों के पास जो मुझ से फिर गये हैं भेजता हूँ उन्हें ने  
 ४ और उन के पितरों ने आज लों मेरा अपराध किया है । क्योंकि वे ठीठ और  
 कठोर मन के संतान हैं मैं तुझे उन के पास भेजता हूँ और उन से कहियो कि  
 ५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है । और चाहे वे सुनें चाहे न सुनें क्योंकि वे दंगइत  
 घराने हैं तथापि वे जानेंगे कि एक भविष्यद्वक्ता उन के मध्य में है ॥
- ६ और हे मनुष्य के पुत्र तू उन से मत डर और न उन के वचनों से डर क्योंकि  
 दंगइत और कांटे तेरे साथ हैं और तू विच्छुओं में घास करता है उन के वचनों  
 से मत डर और उन की दृष्टि से विस्मित मत हो क्योंकि वे दंगइत घराने  
 ७ हैं । और मेरे वचन उन से कहियो चाहे वे सुनें चाहे न सुनें क्योंकि वे  
 दंगइत हैं ॥
- ८ परन्तु हे मनुष्य के पुत्र तू मेरा कहना सुन तू उस दंगइत घराने के समान  
 ९ दंगइत मत हो जो मैं तुझे देता हूँ उसे अपना मुँह खोलके खा । और दृष्टि  
 करके क्या देखता हूँ कि एक हाथ मेरी ओर बढ़ाया गया और क्या देखता हूँ  
 १० कि उस में एक पुस्तक का बीड़ा है । और उस ने मेरे आगे उसे खोला और  
 बाहर भीतर लिखा था उस में विलाप और शोक और सन्ताप लिखा था ॥

## तीसरा पर्व ।

- १ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र जो तू पावे सो खा इस बीड़े  
 २ को खा और जाके इसराएल के घराने से कह । और मैं ने मुँह खोला और उस  
 ३ ने वह बीड़ा मुझे खिलाया । फिर उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र  
 उस बीड़े से जो मैं तुझे देता हूँ अपने पेट को खिला और उसे अपना उदर  
 भर तब मैं ने खाया और वह मेरे मुँह में सधु की नाईं-सीठा था ॥
- ४ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के घराने के पास  
 ५ जा और मेरे वचन उन से कह । क्योंकि उपरी भाषा और कठिन बोली के लोगों  
 ६ के पास तू नहीं भेजा-जाता है परन्तु इसराएल के घराने के पास । उपरी भाषा  
 और कठिन बोली के बहुत से लोगों के पास नहीं जिन के वचन तू समझ नहीं  
 ७ सक्ता जो मैं तुझे उन के पास भेजता तो वे निश्चय तेरी मानते । परन्तु इसराएल  
 के घराने तेरी न सुनेंगे क्योंकि मेरी न सुनेंगे क्योंकि इसराएल के सारे घराने ठी  
 ८ और कठोर अन्तःकरण के हैं । देख उन के मुँह के आगे मैं ने तेरे मुँह को दृ  
 ९ किया है और तेरे कपाल को उन के कपाल के सम्मुख दृढ़ किया है । मैं ने ते  
 १० कपाल को हीरे की नाईं चक्मक से भी करेर किया है उन से मत डर और उ  
 के रूप से विस्मित मत हो क्योंकि वे दंगइत घराने हैं ॥

विभक्त थे हर एक के दो डैने एक दूसरे से जोड़े हुए थे और दो उन की देख  
ठाँपते थे । और उन में से हर एक अपने मुँह के माँहने चला जाता था जिधर १२  
आत्मा को जाना था उधर वे जाते थे वे जाने में फिरते न थे । और उन १३  
जीवधारियों का स्वरूप जो था सो आग के जलते अंगारों की नाईं और देखने  
में दीपकों की नाईं जीवधारियों में ऊपर नीचे जाते थे और वह आग तेज थी  
और उस आग में से बिजली निकलती थी । और वे जीवधारी देखने में बिजली १४  
की चमक की नाईं दौड़ते थे और फिर आते थे ॥

सो जब मैं उन जीवधारियों को देख रहा था तो क्या देखता हूँ कि उन १५  
जीवधारियों के लग पृथिवी पर चार मुँह का एक एक चक्र है । चक्र और उन का १६  
कार्य वैदूर्य रंग के समान और चारों एक ही समान थे और उन के देखने  
और उन के कार्य में चक्र के मध्य में चक्र की नाईं थे । चलने में वे अपने चारों १७  
अलंगों पर चलते थे चलने में वे फिरते न थे । और उन की गोलाई जो थी सो १८  
ऐसी ऊँची थी कि वे भयंकर थे और उन की गोलाई में चारों ओर आँखें भरी  
हुई थीं ॥

और जीवधारियों के चलने में चक्र उन के आसपास जाते थे और जब जीव- १९  
धारी पृथिवी से उठायें जाते थे तब चक्र भी उठायें जाते थे । जहाँ कहीं आत्मा २०  
को जाना था तहाँ वे जाते थे जहाँ आत्मा को जाना था और उन के सन्मुख  
चक्र उठायें जाते थे क्योंकि जीवधारी का आत्मा चक्रों में था । उन के चलने में २१  
चलते थे और उन के ठहरने में ठहरते थे और जब वे पृथिवी से उठायें जाते  
थे तब चक्र उन के सन्मुख उठायें जाते थे क्योंकि चक्रों में जीवधारी का  
आत्मा था ॥

और उन जीवधारियों के सिरों पर आकाश की नाईं भयंकर स्फटिक के रंग २२  
के समान उन के सिरों के ऊपर फैला था । और आकाश के तले उन के डैने २३  
सीधे एक दूसरे की ओर हर एक के दो दो थे जो इस अलंग को ठाँपते थे और  
हर एक के दो दो थे जो उन के शरीरों के उस अलंग को ठाँपते थे । और जब २४  
वे चलते थे तब मैं ने उन के डैनों का शब्द जैसे बहुत से पानियों का शब्द सुना  
सर्वगक्तिमान के शब्द की नाईं बोली का शब्द सेना के शब्द की नाईं खड़े होने  
में वे डैने सिकोड़ लेते थे । और जब वे खड़े होते और पर को सिकोड़ते थे २५  
तब उन के सिर के ऊपर आकाश से शब्द होता था ॥

और उन के सिरों पर के आकाश के ऊपर देखने में नीलकांत की नाईं एक २६  
सिंहासन था और सिंहासन के रूप पर मनुष्य के रूप की नाईं उस के ऊपर था ।  
और उस के भीतर चारों ओर आग की नाईं चमकते पीतल की नाईं मैं ने देखा २७  
अर्थात् उस की कटि के स्वरूप ऊपर लों और उस की कटि से नीचे लों मैं ने  
आग की नाईं देखा और उस की चारों ओर चमक थी । उस धनुष की नाईं २८  
जो धरमने के दिन मेघ पर होता है चारों ओर की चमक देखने में वैसी ही थी  
परमेश्वर का विभव देखने में ऐसा ही था और देखते ही मैं आँधे मुँह गिरा और  
एक के कहने का मैं ने शब्द सुना ॥

## चौथा पट्टा ।

- १ और तू हे मनुष्य के पुत्र एक खपरा ले और उसे अपने आगे रख और उस  
 २ पर यरूसलम नगर का चित्र उतार । और उस के विरुद्ध घेर और उस के सम्मुख  
 गढ़ बना और उस के विपरीत मोर्चा बांध और उस के विरुद्ध कायनी भी कर  
 ३ और उस के विरुद्ध धारों और ठाठक लगा । और तू अपने लिये एक लोहे की  
 कड़ाही ले और अपने और नगर के मध्य में उससे एक लोहे की भीत खड़ी कर  
 और उस के विरुद्ध हो और घट घेरा बायेगा और तू उस के विरुद्ध उसे घेरना  
 यही इसराएल के घराने के लिये एक चिन्हा होगा ॥
- ४ और तू अपनी खाईं करघट भी लेटना और इसराएल के घराने की बुराई  
 उस पर धर तू अपने लेटने के दिनों की गिनती के समान उन की बुराई को  
 ५ सधना । क्योंकि मैं ने तुझ पर उन की बुराइयों के दरसों के दिनों की गिनती  
 के समान तीन सौ नव्वे दिन धरे हैं और तू इसराएल के घराने की बुराई को  
 ६ सधेगा । और उन्हें पूरा करके फिर अपने दहिने करघट लेट जा और चालीस  
 दिन लों यहूदाह के घराने की बुराई को सधना मैं ने दरस दरस के लिये तुझे  
 एक एक दिन दिया है ॥
- ७ इस लिये तू यरूसलम के घेरे जाने की ओर मुंह फेर और तेरी भुजा  
 उधारी हुई और उस के विरुद्ध भविष्य कह । और देख मैं तुझ पर बंधन  
 डालूंगा और अपने घेरे जाने के दिनों के समाप्त लों करघट से करघट लों न  
 फिरेगा ॥
- ८ और तू अपने लिये गोहूँ और जव और उर्द और तिल और वाजरा और  
 मसूर ले और उन्हें एक पात्र में रख और अपनी करघट के दिनों की गिनती के  
 १० समान उन की रोटी बना तू तीन सौ नव्वे दिन लों उन्हें खाया कर । और  
 तेरा भोजन जो तू खायेगा तैल के बीस शेकल भर दिन भर में हो तू उसे जब  
 ११ तब खाया करना । और तू एक दिन का कठवां भाग तैल तैल के जल भी  
 १२ जब तब पीया करना । और तू जव का फुलका खाना और तू उन की दृष्टि में  
 मनुष्यों के बिष्टा से उसे पकाया कर ॥
- १३ और परमेश्वर ने कहा कि मैं जिधर उन्हें खेदूंगा इसराएल के सन्तान इसी  
 रीति से अपनी अशुद्ध रोटी अन्यदेशियों में खायेंगे ॥
- १४ तब मैं ने कहा कि हाय प्रभु परमेश्वर देख मेरा प्राण अशुद्ध नहीं हुआ है  
 क्योंकि तरुणार्द्ध से अब लों मरा हुआ अथवा फाड़ा हुआ मैं ने नहीं खाया है  
 और न धिनित मांस मेरे मुंह में पड़ा ॥
- १५ तब उस ने मुझ से कहा कि देख मैं ने मनुष्य के बिष्टा की सन्ती गोहंटे  
 तुझे दिये हैं और तू अपनी रोटी उन पर पकाया कर ॥
- १६ उस ने मुझ से यह भी कहा कि हे मनुष्य के पुत्र देख मैं यरूसलम में रोटी  
 की टेक तोड़ डालूंगा और वे चिन्ता से रोटी तैल तैल खायेंगे और आश्चर्य  
 १७ से जल नाप नाप पीयेंगे । जिसते वे अन्न जल के मारे हों और एक दूसरे से  
 विस्मित हो और अपने पाप के मारे क्षीण हो जावें ॥

और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र सारे वचनों को जो मैं तुझ से १० कहूँगा उन्हें अपने मन में ग्रहण कर और अपने कानों से सुन । और उठके अपने ११ लोगों के मन्तानों के बंधुआड़ों के पास जा और उन से कहके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है चाहे वे सुनें चाहे न सुनें ।

फिर आत्मा ने मुझे उठा लिया और मैं ने अपने पीछे एक बड़े सन्नाटे का १२ शब्द सुना कि अपने स्थान से परमेश्वर के साक्षात्कार का धन्यवाद । और मैं ने १३ जाँचधारियों के भिड़े हुए हैनों का शब्द भी सुना और उन के सामने के चक्रों का शब्द और एक बड़े सन्नाटे का शब्द । और आत्मा मुझे उठाके ले गया और मैं १४ अपने मन की रिम की अति कड़वाहट से गया परन्तु परमेश्वर का हाथ मुझ पर बलवान था । तब मैं तल्लुअदीय में ख़ूबर नदी के तीरे बंधुआड़ों के पास पहुँचा १५ और जहाँ वे बैठे थे तहाँ मैं बैठ गया और उन में सात दिन लों आश्चर्यित रह गया ।

और सात दिनों के पीछे यों हुआ कि परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे १६ पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र मैं ने तुझे हमराएल के घराने के लिये ख़याल १७ बनाया है इस लिये मेरे मुँह से वचन सुन और संगी और मैं उन्हें चिता । जब १८ मैं हुए से कहूँ कि तू निश्चय मरेगा और तू उसे न चिताये और हुए को उस का प्राण बचाने को उस को हुएना से फिराने को न चिताये तो वह हुए अपनी घुराई में मरेगा परन्तु मैं उस का लोहू तेरे हाथ से माँगूँगा । तथापि यदि तू १९ हुए को चिताये और वह अपनी हुएता से और अपने हुए मार्ग से न फिरे तो वह अपनी घुराई में मरेगा परन्तु तू ने अपना प्राण छुड़ाया है ॥

फिर जब धर्मी अपने धर्म से फिर जाये और घुराई करे और मैं उस के २० आंग टोकर रखूँ तो वह मरेगा क्योंकि तू ने उसे नहीं चिताया वह अपने पाप में मरेगा और उस का धर्म कर्म जो उस ने किया स्मरण न किया जायेगा परन्तु मैं उस के लोहू का पलटा तेरे हाथ से लेऊँगा । परन्तु यदि तू धर्मी को चिताये २१ कि पाप न करे और धर्मी पाप न करे तो वह चिताये जाने के कारण से अवश्य जीवेगा और तू ने भी अपना प्राण छुड़ाया ॥

और वहाँ परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और उस ने मुझ से कहा कि उठ २२ चौगान का जा और वहाँ मैं तुझ से बातें करूँगा । तब मैं उठके चौगान में गया २३ और कहा देखता हूँ कि परमेश्वर का साक्षात्कार उस साक्षात्कार की नाई जो मैं ने ख़ूबर नदी के तीरे देखा था खड़ा है और मैं मुँह के बल गिरा । तब आत्मा ने मुझ २४ से प्रवेण करके मुझे मेरे पाँच घर खड़ा किया और मुझ से कहके बोला कि जा अपने घर में आप को बंद कर । परन्तु हे मनुष्य के पुत्र देख वे तुझ पर बन्धन २५ डालेंगे और उन से तुझे बाँधेंगे और तू उन में फिर बाहर न जायेगा । और तुझे २६ मृगा करने का मैं तेरी जीभ को तेरे तालू से लगाऊँगा और तू उन का दपटवैया न होगा क्योंकि वे दंगलत घराने हैं । परन्तु जब मैं तुझ से कहूँ तब मैं तेरा मुँह २७ खोलूँगा और तू उन से कहना कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जो सुनता है सो सुने और जो न सुने सो न सुने क्योंकि वे दंगलत घराने हैं ॥

भेजूंगा और वे तुझे नियंत्रण करेंगे और मरी और लोहू तुझ में से प्रवेश करेंगे और मैं तलवार तुझ पर लाऊंगा मैं ही परमेश्वर ने कहा है ।

कटवां पर्व ।

- १ और परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पसुंदा । कि हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के पर्वतों की और अपना मुँह फेर और उन के विरुद्ध भविष्य कह ॥
- ३ और बोल कि हे इसराएल के पर्वतों प्रभु परमेश्वर का वचन सुनो प्रभु परमेश्वर पर्वतों का और टीलों का और नदियों का और तराईयों का कहता है कि देखो मैं ही तुम पर तलवार लाके तुम्हारे ऊँचे स्थानों का नाश करेगा ।
- ४ और तुम्हारी वेदियां उखाड़ जायेंगी और तुम्हारी मूर्तें तोड़ी जायेंगी और तुम्हारी
- ५ प्रतिमा के आगे मैं तुम्हारे जूँके हुएों का डाल देऊंगा । और मैं इसराएल के सन्तानों की साथ उन की प्रतिमाओं के आगे रक्खूंगा और मैं तुम्हारे हाइों
- ६ का तुम्हारी वेदियों की चारों ओर कितराऊंगा । तुम्हारे सारे निवासों में नगर खंडहर किये जायेंगे और ऊँचे स्थान उखाड़े जायेंगे जिन्हें तुम्हारी वेदियां खंडहर किई जायें और उखाड़ी जायें और तुम्हारी प्रतिमा तोड़ी जायें और न रहें और
- ७ तुम्हारी मूर्तें काटी जायें और तुम्हारे कार्य मिटाये जायें । और जूँके हुए लोग तुम्हारे मध्य में गिरेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥
- ८ तथापि मैं वचे हुएों का लोहूंगा जिन्हें जय कि तुम लोग देगों में छिन्न भिन्न
- ९ होगो तब जातिगणों में तलवार में वचे हुए तुम्में छावें । और जो तुम्में से वच निकलेंगे सो जातिगणों में जहाँ जहाँ वे अधुआर में पहुँचाये जायेंगे मुझे स्मरण करेंगे क्योंकि मैं उन के वेश्याई मन से तो मुझ से फिर गया है और उन की मूर्तिन के पश्चाद्गामी आँखों से टूटा हुआ हूँ और वे अपनी सारी घुराइयों के लिये जो
- १० उन्हें ने अपने सारे धिनितों में किई हैं वे आप से घिनावेंगे । और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ और मैं ने यह घुराई उन पर लाने का वृथा न कहा ॥
- ११ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपना हाथ पीठ और अपना पांव दे दे मार और कह कि इसराएल के घराने की घुरी धिनितों के लिये हाथ क्योंकि वे
- १२ तलवार से और अकाल से और मरी से गिरेंगे । जो दूर है सो मरी से मरेगा और जो पास है सो तलवार से गिरेगा और जो रह गया है और घेरा हुआ है सो अकाल से मरेगा इस रीति से मैं अपना कोप उन पर पूरा करूंगा ॥
- १३ और जब उन के जूँके हुए उन की मूर्तिन में उन की वेदी की चारों ओर हर एक ऊँचे पर्वत पर और पर्वतों के सारे टीलों पर और हर एक हरे पेड़ तले और हर एक मोटे सुत्सवृक्ष तले जिस स्थान में उन्हें ने अपनी सारी प्रतिमा के लिये सुगंध जलाया था होंगे तब तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर
- १४ हूँ । इस रीति से मैं उन पर अपना हाथ बढाऊंगा और उन के देश को उन के सारे निवासों में दिवलः वन से अधिक उखाड़ करेगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

सातवां पर्व ।

- १ और परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुँचा । और तू हे मनुष्य

## पांचवां पर्व ।

और हे मनुष्य के पुत्र तू एक चाखी कुर्गी ले और एक नापित का कुर्गा ले १  
और उन्हें अपने सिर पर और दाढ़ी पर चला तब तौलने और भाग करने की  
तुला ले । जब घरे जाने के दिन पूरे होयें तब नगर के मध्य में तू तीसरा भाग २  
आग से जला और तीसरा भाग लेकर उस के आसपास कुर्गी मार और तीसरा  
भाग पवन में उड़ा और मैं उन के पीछे तलवार खींचूंगा । और तू उन में से ३  
गिनती में थोड़ा सा लेकर अपने खूंट में बांध । और उन में से लेकर आग में डाल ४  
और आग से उन्हें जला उससे आग सारे इसराएल के घराने पर निकलेगी ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यही यरूशलम है मैं ने उसे चारों ओर के जाति- ५  
गणों और देशों के मध्य में रक्खा है । और जातिगणों से अधिक उस ने मेरे न्यायों ६  
को दृष्टता से और अपने चारों ओर के देशों से मेरी विधि का अधिक पलट डाला  
है क्योंकि उन्होंने ने मेरे न्यायों को नाश किया और मेरी विधि पर नहीं चले ।  
इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम लोग अपनी चारों ओर ७  
के जातिगणों से दूर गये और मेरी विधि पर न चले और न मेरे न्यायों को  
पाला है और न चारों ओर के जातिगणों के न्याय के समान किया है । इस ८  
लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं हों तेरे विरुद्ध हूँ और अन्यदेशियों  
की दृष्टि में तेरे मध्य में न्याय करूंगा । और तेरे सारे घिनित कार्यों के कारण ९  
मैं तुझ में वही करूंगा जो मैं ने कभी नहीं किया है और ऐसा फिर कभी न  
करूंगा । इस लिये तेरे मध्य में पिता पुत्रों को खायेंगे और पुत्र पिताओं को १०  
खायेंगे और मैं तुझ में दण्ड का न्याय करूंगा और तुम्हारा सारा पचा हुआ  
चौदिसा में छितरा देऊंगा ॥

इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोच निश्चय जैसा तू ने ११  
अपनी सारी तुच्छ और सारी घिनित वस्तुन से मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया  
है तैसा मैं भी तुझे घटाऊंगा और मेरी आंग्र न छोड़ेगी और मैं सया न करूंगा ।  
तेरा तीसरा भाग सरी से मरेगा और तेरे मध्य में अकाल से घोर हो जायेंगे और १२  
तीसरा भाग तेरी चारों ओर की तलवार से गिरेगा और मैं सारे पवन में तीसरे  
भाग को छितरा देऊंगा और उन के पीछे तलवार खींचूंगा । इस रीति से मैं १३  
अपनी रिस पूरी करूंगा और मैं अपना कोप उन पर धरूंगा तब मैं शान्ति पाऊंगा  
और जब मैं अपने कोप का उन पर उतार चुकूंगा तब वे जानेंगे कि मुझ से  
परमेश्वर ने अपने व्यवहन में कहा है ॥

और मैं तुझे चारों ओर के जातिगणों में और सारे पणिकों की दृष्टि में १४  
उजाड़ और निन्दा बनाऊंगा । जब मैं रिस और कोप और जलजलाहट और १५  
दण्ड मैं तुझे दण्ड देऊंगा तो तू चारों ओर के जातिगणों के लिये एक निन्दा  
और ठट्ठा और चितावनी और आश्चर्य होगा मैं ही परमेश्वर ने कहा है । जब १६  
कि मैं उन पर अकाल के घुरे बाण भेजूंगा जो नाश के लिये होंगे जिन्हें मैं  
तुम्हें नाश करने का भेजूंगा और मैं अकाल को तुम पर बड़ाऊंगा और तुम्हारी  
हाडी की टोक तोड़ूंगा । इसी रीति से मैं तुम पर अकाल और क्रूर पशुन को १७



के लिये पादेशियों के हाथ और लूट के लिये पृथिवी के दुष्टों को सौंपूंगा और वे उसे अशुद्ध करेंगे । मैं अपना मुंह भी उन से फेरूंगा और वे मेरा गुप्स्थान अशुद्ध करेंगे क्योंकि बटमार उस में पैठके उसे अशुद्ध करेंगे ॥

२३ एक सीकर बना क्योंकि देश लोहू के अपराधों से और नगर अंधेर से भरा हुआ है । इस लिये मैं अति बुरे अन्यदेशियों को लाऊंगा और वे उन के घर को बर्ष में करेंगे और मैं बलवन्तों का बिभव मिटाऊंगा और उन के पवित्रस्थान अशुद्ध किये जायेंगे । नाश आता है और वे मिलाप चाहेंगे और न होगा । दुर्दशा पर दुर्दशा आवेगी और चर्चा पर चर्चा होगी तब वे भविष्यद्वक्ता से दर्शन चाहेंगे और याज्ञक से ठपवस्था और प्राचीनों से मंत्र जाता रहेगा । राजा शोक करेगा और राजपुत्र घबराहट से पहिराया जायेगा और देश के लोगों के हाथ कांपेंगे उन की चाल के समान मैं उन से कर्हूंगा और उन के बिचार के संमान उन से बिचार करूंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

आठवां पर्व ।

१ और कठवें बरस के कठवें मास की पांचवीं तिथि में ऐसा हुआ कि मैं अपने घर में बैठा था और यहूदाह के प्राचीन मेरे आगे बैठे थे कि प्रभु परमेश्वर का हाथ वहां मुझ पर पड़ा । तब मैं ने दृष्टि किई और क्या देखता हूँ कि आग का सा सरूप उस की कटि से नीचे लों आग की सी और उस की कटि से ऊपर लों चमक की सी चमकते हुए पीतल के रंग की नाई । और उस ने हाथ का सा डौल बाहर निकाला और मेरे सिर की चोटी पकड़ लिई और आत्मा ने मुझे अंधड़ में उठा लिया और ईश्वरीय दर्शनों से मुझे यरूसलम में उत्तर की ओर के भीतर के फाटक के द्वार पर पहुंचाया जहां भल की मूर्ति का आसन था जो भल करावती है । और क्या देखता हूँ कि जो दर्शन मैं ने जौगान में देखा था वैसा ही इसराएल के ईश्वर का बिभव वहां था ॥

५ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र उत्तर के मार्ग की ओर अपनी आंखें उठा सो मैं ने उत्तर के मार्ग की ओर अपनी आंखें उठाईं और क्या देखता हूँ कि भल की यही मूर्ति उत्तर की ओर यज्ञवेदी के फाटक की पैठ में थी ॥

६ फिर उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू उन की क्रिया देखता है अर्थात् बड़े बड़े धिनित जो इसराएल के घराने यहां करते हैं जिसमें मैं अपने पवित्रस्थान से दूर जाऊं परन्तु तू फिर इन से अधिक धिनित कार्य देखेगा ॥

७ तब वह मुझे आंगन के द्वार पर लाया और देखते हुए मैं ने देखा और देखा भीत में एक छेद । तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अब भीत खोद तब मैं ने भीत खोदी और एक द्वार देखा । फिर उस ने मुझ से कहा कि भीतर जा और जो जो धिनित वे यहां करते हैं उन्हें देख । तब मैं ने भीतर जाके देखा और क्या देखता हूँ कि चारों ओर भीत पर हर एक रंगवैये वस्तु के रूप और धिनित पशु और इसराएल के घराने की सारी मूर्तिन के चित्र हैं । और इसराएल के घराने के प्राचीनों के सत्तर जन उन के आगे खड़े हैं और उन के

के पुत्र प्रभु परमेश्वर हमरागल के देश से भी यों कहता है कि एक अन्न देश  
के चारों कोनों पर अन्न आया है । अथ तुझ पर अन्न आ पहुँचा है और मैं ३  
अपनी रिस तुझ पर भेजूँगा और तेरी चालों के समान तेरा विचार कदंगा और  
तेरे सारे धनितों का पलटा तुझे देऊँगा । और मेरी आंख तुझे न छोड़ेगी और ४  
मैं मया न कदंगा क्योंकि तेरी चालों का पलटा तुझे देऊँगा और तेरे धन तेरे  
मध्य में होंगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि घुराई एक घुराई देखो वह आई है । ५  
अन्न पहुँचा है अन्न पहुँचा है जो तेरे विन्ध्य जागता है देखो वह आ पहुँचा ६  
है । हे देश के निवासी पारी तुझ पर पहुँची है समय पहुँचा है घबराहट का ७  
दिन पास आया है और पर्वतों का प्रतिगच्छ नहीं । अथ मैं तुझ पर अपना ८  
कोप उडेलूँगा और अपनी रिस तुझ पर पूरी कदंगा और तेरी चालों के समान  
तेरा विचार कदंगा और तेरे सारे धनितों का पलटा तुझे देऊँगा । और मेरी ९  
आंख न छोड़ेगी और मया न कदंगा तेरी चालों और तेरे धनितों के समान  
जो तेरे मध्य में हैं मैं तुझे पलटा देऊँगा और तुम लोग जानोगे कि मैं दण्डदायक  
परमेश्वर हूँ ॥

वह दिन देखो देखो वह पहुँचा है पारी निकल चली है छड़ी फूली है अछं- १०  
कार से कली निकली है । अंधेर दुष्टता की छड़ी बन गया है न उन में से और ११  
न उन के दंगल से और न उन के जया से कोई बचेगा और न उन के लिये शोक  
किया जायेगा । समय आया है दिन आ पहुँचा किनवैया आनन्द न करे और न १२  
वेचवैया शोक करे क्योंकि उस की सारी मंडली पर कोप है । क्योंकि वेचवैया १३  
वेचने हुए की और न फिरगा यद्यपि अथ नों जीवनों के मध्य में उस का जीवन  
होता क्योंकि वर्जन जो उन की सारी मंडलियों के विषय में है न लाटेगा और  
न कोई अपनी घुराई के जीवन में आप को दृढ़ करेगा । उन्होंने ने तुरही १४  
फूँकी और सब लैम हैं परन्तु कोई संग्राम को नहीं जानता क्योंकि उस की सारी  
मंडली पर सेरा कोप है । तलवार बाहर और अकाल और सरी भीतर खेत १५  
में का तलवार से मारा जायेगा और नगर में का अकाल और सरी से भक्षा  
जायेगा ॥

परन्तु जो उन में से वन्न निकलेंगे सो वन्न निकलें और हर एक अपनी अपनी १६  
घुराई के लिये तराइयों के पंहुकों की नाईं सब के सब पर्वतों पर कूकू करेंगे ।  
सारे हाथ दुर्बल होंगे और सारे छुटने पानी हो जायेंगे । और वे अपने पर टाट १७  
लपेटेंगे और भय उन्हें छांपेगा और सभों के मुँह पर लाज होगी और सभों के  
सिरों पर मुँडापन । वे अपनी अपनी चांदी सड़कों में फँक देंगे और उन का १८  
सोना मैल हो जायेगा और परमेश्वर के क्रोध के दिन में उन का चांदी सोना  
उन्हें न बचा सकेगा वे अपने प्राण को तृप्त न करेंगे न अपने पेट भरेंगे क्योंकि  
वह उन के ठोकर खाने की घुराई है । और वे उस की सुन्दरता के आभूषण को २०  
घमंड के लिये रखते हैं और अपने धनितों की और अपनी तुच्छ वस्तुन की मूर्ति  
उस में बनाते हैं इस लिये मैं उसे उन के लिये मैल कदंगा । और मैं उसे अक्षर २१

- मे आरंभ करो तब उन्होंने ने प्राचीन जनों से जो घर के आगे मे आरंभ किया ।  
 ७ और उस ने उन से कहा कि घर को पण्डित करो और लूके हुएों से आंगन को भर देओ और उन्होंने ने निकलके नगर में घात किया ॥  
 ८ और जब वे उन्हें घात कर रहे थे और में कौड़ा गया तब यों हुआ कि मैं मुंह के धल गिरा और धिक्काके कदा कि हाथ प्रभु परमेश्वर अपने कोप को यक्ष-सलस पर उंडेलते हुए क्या हमराएल के सारे यत्ने हुएों को तू नाश करेगा ।  
 ९ तब उस ने मुझ से कहा कि यहूदाह और हमराएल के घराने की बुराई अत्यन्त बड़ी है और देश लोह में भरा हुआ है और नगर अन्याय से भरा है क्योंकि वे कहते हैं कि परमेश्वर ने पृथिवी को रयागा है और परमेश्वर नहीं देखता । और मैं भी जो हूं मेरी आंख न कौड़ेगी मया न कहेगा मैं ने इन के सिर पर उन की घाल का पलटा दिया है ।  
 १० और क्या देखता हूं कि जो जन सूती यस्त्र पहिने था जिस की कटि पर ससिपात्र था उस ने यह कहके उत्तर दिया कि तारी आशा के समान मैं ने किया है ।

दसवां पृष्ठ ।

- १ जब मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हूं कि करोखियों के सिर के ऊपर के आकाश में उन के ऊपर नीलकांतमणि का सा दिखाई दिया जो देखने में  
 २ सिंहासन का सा था । और यह सूती यस्त्र पहिने हुए जन से कहके बोला कि कश्य के नीचे चक्रों के मध्य में जा और अपने सुतू को करोखियों के मध्य से आग के आगारे से भर और नगर के ऊपर हिड़क और यह मेरे देखने में चला गया ।  
 ३ जब यह जन भीतर गया तब करोखी घर के दहिने अलंग खड़े हुए और  
 ४ भीतर का आंगन मेघ से भर गया । तब परमेश्वर का विभव कश्य पर से उठाया गया और घर की छेदरी पर हुआ और घर मेघ से भर गया और परमेश्वर के विभव  
 ५ की चमक से आंगन पूर्ण हुआ । और करोखियों के परों का शब्द बाहर के आंगन  
 ६ लों सुना गया सर्वशक्तिमान ईश्वर के शब्द की नाईं जब यह बोलता है ।  
 ७ और यों हुआ कि जब उस ने सूती यस्त्र पहिने हुए जन को यह कहके आशा किई कि करोखियों के मध्य के चक्रों के बीच में से आग ले तब यह भीतर जाके  
 ८ चक्रों के लग खड़ा हुआ । तब करोखियों के मध्य में से एक कश्य ने अपना हाथ उस आग की ओर बढ़ाया जो करोखियों के मध्य में थी और लेके सूती  
 ९ यस्त्र पहिने हुए जन के हाथ में रख्या जो लेके बाहर गया । और करोखियों में  
 १० उन के पंख के तले मनुष्य के हाथ का डौल दिखाई दिया ॥  
 ११ और जब मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हूं कि करोखियों के लग चार चक्र  
 १२ एक कश्य के लग एक चक्र और दूसरे कश्य के लग दूसरा चक्र और चक्र देखने में सरकतमणि का सा दिखाता था । और चारों एक सा दिखाई देते थे जैसा  
 १३ कि चक्र के मध्य में चक्र । जब वे चलते थे तब वे अपने चारों अलंग पर जाते थे और चलने में वे फिरते न थे परन्तु जिधर सिर का रुख था उधर ही वे उस  
 १४ के पीछे पीछे जाते थे चलने में वे फिरते न थे । और उन की सारी देह और

मध्य में साफन का बेटा याज्जिन्याह खड़ा है हर एक जन धूपावरी हाथ में लिये हुए और धूप का एक घना मेघ उठ रहा है ॥

तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू ने देखा है जो इसराएल १२ के घराने के प्राचीन ग्रंथियारे में हर एक जन अपनी अपनी मूर्तिन की कोठरियों में करता है क्योंकि वे कहते हैं कि परमेश्वर हमें नहीं देखता परमेश्वर ने तो पृथिवी को त्यागा है । उस ने मुझ से यह भी कहा कि तू फिर इन से अधिक १३ धिनित कर्म देखेगा ।

तब यह परमेश्वर के मन्दिर की उत्तर ओर के फाटक पर मुझे ले आया और १४ क्या देखता हूँ कि स्त्रियाँ तम्बुज के लिये वहाँ बैठके बिलाप कर रही हैं ॥

तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू ने यह देखा है तू फिर इन से १५ भी अधिक धिनित देखेगा ।

फिर वह मुझे परमेश्वर के मन्दिर के भीतर के आंगन में लाया और क्या १६ देखता हूँ कि परमेश्वर के मन्दिर के आंगन के और बंदी के मध्य के द्वार पर एक पचीस जन पीठ परमेश्वर के मन्दिर की ओर किये हुए और उन के मुँह पूरव की ओर और पूरव की ओर वे सूर्य पूजते थे ।

तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू ने यह देखा है क्या १७ यहूदाह के घराने के लिये यह सबल बात है कि वे धिनित कार्य करे जो यहाँ करते हैं क्योंकि उन्होंने ने देश को अंधेर से भर दिया है और मुझे फिर रिस दिलाते रहते हैं और देखो वे अपनी नाक पर डाली लगाते हैं । इस लिये मैं भी कोप १८ से व्यवहार करूँगा मेरी आंख न छोड़ेगी और मया न करूँगा और यद्यपि वे मेरे कानों में चिल्ला चिल्ला रोवें तथापि मैं उन की न सुनूँगा ॥

नवां पर्व ।

उस ने यह कहते हुए बड़े शब्द से भी मेरे कानों में पुकारा कि जिन के यश १ में नगर है उन्हें निकट लाओ हर एक जन अपना नाशक हथियार अपने हाथ में लिये हुए । और क्या देखता हूँ कि छः जन ऊपर के फाटक के मार्ग में से जो २ उत्तर की ओर है चले आये और हर एक जन के हाथ में घात का हथियार और उन में से एक पर सूती वस्त्र था और उस की कटि पर लेखक का ससिपात्र और वे भीतर गये और पीतल की वेदी के लग खड़े हुए । और इसराएल के ईश्वर ३ का विभव कष्ट के ऊपर से जिस पर यह था उठके मन्दिर की डेहरी पर गया और उस ने उस जन को जो सूती वस्त्र पहिने था जिस की कटि में लेखक का ससिपात्र था पुकारा । और परमेश्वर ने उन्से कहा कि नगर के मध्य में से यह ४ सलस के मध्य में से जा और हर एक जन के कपाल पर जो उस के मध्य के सारे धिनित कार्यों के लिये ठंडी सांस भरते और रोते हैं चिन्ह कर । और उस ने मेरे ५ मुँह में औरों से कहा कि तुम लोग उस के पीछे पीछे नगर के आरंभपर जाओ और मारो तुम्हारी आंख न छोड़े और मया मत करो । पुरनियों को युवों को ६ और कुंवारियों को और नन्दे बालकों और स्त्रियों को नाश लां घात करो परन्तु जिन पर चिन्ह है उन में से किसी जन के पास मत जाओ और मेरे पवित्रस्थान

९ और मैं तुम्हें उस के मध्य में से निकाल लाऊंगा और तुम्हें परदेशियों के हाथ  
 १० में सौंपूंगा और तुम्हें दण्ड देऊंगा । तुम लोग तलवार से गिरोगे मैं इसराएल  
 के सिवाने में तुम्हारा न्याय करूंगा और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ ।  
 ११ यह तुम्हारा कड़ाहा न होगा और न तुम लोग उस में के मांस में इसराएल के  
 १२ सिवाने में तुम्हारा न्याय करूंगा । और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ कि  
 तुम लोग मेरी विधि पर नहीं चले और न मेरे विचारों को माना है परन्तु  
 धारों और के अन्यदेशियों की रीति पर चले हो ॥

१३ और मेरे भविष्य कहने से यों हुआ कि यिनायाह का घेठा फलतियाह मर  
 गया तब मैं मुँह के बल गिरा और बड़े शब्द से चिल्लाकर कहा कि हाय प्रभु  
 परमेश्वर क्या तू इसराएल के बचे हुएों को सर्वथा मिटा डालेगा ॥

१४ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । कि हे मनुष्य के  
 पुत्र तेरे भाई तेरे ही भाईयंद तेरे कुनये के जन और इसराएल के सारे घराने  
 सब की सब जो हैं उन से यरूशलम के निवासियों ने कहा है कि परमेश्वर से  
 परे हो जाओ देश हमारे यश में किया गया है ॥

१६ इस लिये कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं ने उन्हें अन्यदेशियों में  
 दूर फेंका है और जब मैं ने उन्हें देशों में छिन्न भिन्न किया है तब जिस जिस देश  
 १७ में वे जायेंगे मैं उन के लिये थोड़े समय लों पाँचत्रस्थान हूँगा । इस लिये कह कि  
 प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं तुम्हें लोगों में से एकट्ठा करूँगा और तुम लोग  
 जिस जिस देश में बिखराये गये हो मैं उन में से तुम्हें बटोरूँगा और इसराएल  
 का देश तुम्हें देऊँगा ॥

१८ और वे वहाँ आवेंगे और वे वहाँ से सारी तुच्छता और सारी घिनितों को  
 १९ दूर करेंगे । और मैं उन्हें एक ही मन देऊँगा और तुम्हें एक नया आत्मा डालूँगा  
 और उन के मांस में से पत्थरैला मन निकालूँगा और उन में एक मांसिक मन  
 २० डालूँगा । जिस्त वे मेरी विधि पर चलें और मेरी छवयियों का पालन करें और  
 उन्हें मानें और वे मेरे लोग होंगे और मैं उन का ईश्वर हूँगा ॥

२१ परन्तु जिन का मन अपनी तुच्छ और घिनित वस्तु पर चलता है प्रभु परमे-  
 श्वर कहता है कि मैं उन की चाल का पलटा उन्हीं के सिर पर देऊँगा ॥

२२ तब करोबियों ने अपने अपने पंख उठाये और चक्र उन के लग और इसराएल  
 २३ के ईश्वर का बिभव उन के ऊपर था । और परमेश्वर का बिभव नगर के मध्य  
 में से उठ गया और नगर के पूरब अलंग पहाड़ पर खड़ा हुआ ॥

२४ तब आत्मा ने मुझे उठाया और ईश्वर का आत्मा दर्शन से मुझे कसदीम में  
 २५ बंधुओं के पास लाया और जो दर्शन मैं ने देखा सो ऊपर जाता रहा । फिर  
 जो परमेश्वर ने मुझे दिखाया था सो मैं ने भी बंधुओं को कह सुनाया ॥

बारहवां पर्व ।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । कि हे मनुष्य के  
 पुत्र तू एक दंगड़त लोगों में खास करता है जो देखने की आंख रखते हैं पर  
 नहीं देखते और सुने के कान रखते हैं पर नहीं सुनते क्योंकि वे दंगड़त घराने

उन की पीठ और उन के हाथ और उन के डैने और चक्र चारों ओर आंखों में भरे थे अर्थात् उन चारों के चक्र । और चक्र जो थे वे मेरे मुँह में पुकारे गये कि हे १३ चक्र । और हर एक के चार चार मुँह थे पहिला मुँह एक कश्यप का मुँह और १४ दूसरा मुँह मनुष्य का मुँह और तीसरा सिद्ध का मुँह और चौथा गिह का मुँह । और कश्यप उठाये गये इसी जीवधारी को मैं ने खडूर नदी के लग देखा था ॥ १५ और जब करोवी चलते थे तब चक्र उन के लग जाते थे और जब करोवी १६ पृथिवी पर से उठने को पंख उठाते थे तब वे चक्र भी उन के पास से न फिरते थे । उन के उठने में उठते थे और जब वे उठाये जाते थे तब आप को उठाते १७ थे क्योंकि जीवधारी का आत्मा उन में था ।

तब परमेश्वर का विभय घर के डेहरी पर से जाता रहा और करोवियों १८ के ऊपर उहर गया । और करोवियों ने अपने डैने उठाये और मेरे देखने में १९ पृथिवी पर से उठ गये वे जब निकल गये तब चक्र भी उन के लग थे और हर एक परमेश्वर के मन्दिर के पूर्य फाटक के द्वार पर खड़ा हुआ और इसराएल के ईश्वर का विभय उन के ऊपर था । मैं ने इसी जीवधारी को खडूर नदी के २० लग इसराएल के ईश्वर के नीचे देखा था और मैं ने जाना कि वे करोवी थे । हर एक के चार चार मुँह थे और हर एक के चार चार डैने और उन के डैने २१ के नीचे मनुष्य के हाथ सा । और वे ही और उन के स्वरूप और उन के मुँह २२ वे ही मुँह थे जो मैं ने खडूर नदी के लग इसराएल के ईश्वर के नीचे देखा था और मैं ने जाना कि वे करोवी थे । हर एक के चार चार मुँह थे और हर एक २३ के चार चार डैने और उन के डैने के नीचे मनुष्य के हाथ सा । वे ही और उन २४ के स्वरूप और उन के मुँह वे ही मुँह थे जो मैं ने खडूर नदी के लग देखा था उन में से हर एक बराबर आगे बढ़ता था ॥

ग्यारहवां पर्व ।

और आत्मा ने मुझे उठाके परमेश्वर के मन्दिर के पूर्य और के पूर्य फाटक १ पर पहुँचाया और क्या देखता हूँ कि पचास पुरुष फाटक के द्वार पर हैं जिन में मैं ने लोगों के अध्यक्ष अतूर के बेटे याजनियाह और विनायाह के बेटे फलतियाह को देखा । तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र ये ही लोग २ घुरी जुगत बांधते हैं और इस नगर में कुमंत्र देते हैं । जो कहते हैं कि पास ३ नहीं है हम घर बनायें वह कहाँ और हम सांस । इस लिये उन के विरुद्ध ४ भविष्य कह हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कह । तब परमेश्वर का आत्मा मुझ पर ५ पड़ा और मुझ से कहा कि बोल परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराएल के घराने तुम लोगों ने यों कहा है और मैं हर एक बात को जो तुम्हारे मन में ६ आती है जानता हूँ । तुम ने अपने जूके हुओं को इस नगर में बड़ाया है और ७ उस की मड़कों को जूके हुओं से भर दिया है । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों ८ कहता है कि तुम्हारे जूके हुए जिनमें तुम ने इस के मध्य में धरा है सो मांस ९ हैं और वह कहाँ परन्तु मैं तुम्हें उस के मध्य में से निकालूँगा । तुम लोग १० तलवार से हरे हो और प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुम पर तलवार लाऊँगा ।



२१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र  
 २२ तुम लोग इसराएल के देश में क्या कहावत रखते हो कि तुम कहते हो कि  
 २३ दिन बढ गये और हर एक दर्शन घट गया । इस लिये उन से कह कि प्रभु  
 परमेश्वर यों कहता है कि मैं इस कहावत को मिटा डालूंगा और वे इसराएल  
 में उसे कहावत के समान फिर न कहा करेंगे परन्तु उन से कहो कि दिन और  
 २४ हर एक दर्शन का बचन समीप है । क्योंकि फिर वृथा दर्शन अथवा भुलाने का  
 २५ मंत्र इसराएल के घराने में न होगा । क्योंकि मैं परमेश्वर कहूंगा और जो बचन  
 में कहूंगा सो पहुंचेगा वह बिलंब न करेगा-क्योंकि हे दंगड़त घराने प्रभु परमेश्वर  
 कहता है कि तुम्हारे दिनों में मैं बचन कहूंगा और पूरा करूंगा ॥

२६ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा । कि हे मनुष्य के  
 २७ पुत्र देख इसराएल के घराने यह कहते हैं कि जो दर्शन वह देखता है सो बहुत  
 दिनों के लिये है और वह दूर समयों का भविष्य कहता है ॥

२८ इस लिये उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मेरा कोई बचन फिर  
 बिलंब न करेगा परन्तु प्रभु परमेश्वर कहता है कि जो मैं ने कहा सो होगा ॥  
 तेरहवां पर्व ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र  
 इसराएल के भविष्यद्वक्ता के विरुद्ध जो भविष्य कहते हैं भविष्य कहके उन से  
 ३ बचन सुनो । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मूर्ख भविष्यद्वक्ता पर संताप जो  
 ४ अपने मन के समान चलते हैं और कुछ नहीं देखा है । हे इसराएल तेरे भविष्य-  
 ५ द्वक्ते खंडहरों में गीदड़ों की नाईं हैं । तुम लोग दरारों पर चढ़ नहीं गये और पर-  
 मेश्वर के दिन में संग्राम में खड़ा होने को इसराएल के घराने के लिये बाड़े को  
 ६ बाड़ित न किया । वे झूठ और मिथ्या दैवज्ञता देखके कहते हैं कि परमेश्वर  
 कहता है और परमेश्वर ने उन्हें नहीं भेजा है और उन्होंने ने औरों को आशा  
 ७ दी है जिस्ते बचन को स्थिर करें । क्या तुम ने झूठा दर्शन नहीं देखा क्या तुम  
 ने मिथ्या दैवज्ञता न कही यद्यपि तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर ने कहा है  
 यद्यपि मैं ने नहीं कहा ॥

८ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोगों ने जो व्यर्थ कहा और  
 मिथ्या देखा इस लिये देखो प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ ।  
 ९ और मेरा हाथ भविष्यद्वक्ता पर जो व्यर्थ दर्शन देखते और मिथ्या मंत्र कहते हैं  
 फैलेगा वे मेरे लोगों की सभा में न रहने पावेंगे न वे इसराएल के घराने के लिखे  
 हुए में लिखे जायेंगे और न वे इसराएल के देश में पहुंचेंगे और तुम जानोगे कि  
 १० मैं प्रभु परमेश्वर हूँ । इस कारण हां इस कारण कि उन्होंने ने मेरे लोगों को  
 भ्रमाया है और कहा है कि कुशल और कुशल न था और किसी ने भीत उठाई  
 ११ और देखो दूसरों ने उसे कच्चा पोता है । जो कच्चा पोते हैं उन से कह कि  
 गिरेगी उवली हुई झड़ी होगी और तुम हे बड़े बड़े ओले पड़ोगे और आंधी  
 १२ उसे तोड़ेगी । और देखो जब वह भीत गिरेगी तब तुम से कहा न जायेगा कि

हैं । इस लिये हे मनुष्य के पुत्र मिथारने के लिये सामग्री मिट्ट कर और उन के देखते ही दिन को मिथार और तू अपने स्थान से दूसरे स्थान को उन के देखते ही मिथार यद्यपि वे दंगड़त घराने हैं क्या जानें कि वे सार्च । और तू दिन में उन के आगे अपनी सामग्री को मिथारने की सामग्री के समान निकाल ला और सांभ को उन के देखते देखते उन के समान निकल जा जा मिथारने को निकल आते हैं । उन के देखते ही भीत को खोदके उस में से निकाल ले आ । उन के देखते ही तू उसे अपने कंधे पर उठा और गोधूली में ले जा तू अपना मुँह ढाँप ले जिस्ती भूमि न देखे क्योंकि इसराएल के घराने के लिये मैं ने तुम्हें एक चिन्ह बना रक्खा है ॥

और आज्ञा के समान मैं ने किया और मिथारने के लिये सामग्री के समान मैं ने दिन को अपनी सामग्री बाहर निकाली और सांभ को मैं ने अपने छाथ से अपने लिये भीत खोदी और मैं ने गोधूली में उसे निकाला और उन के देखते ही कंधे पर उठा लिया ॥

और विद्यान को यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । कि हे मनुष्य के पुत्र क्या इसराएल के घराने ने वह दंगड़त घराने ने तुम्हें से नहीं कहा कि तू क्या करता है । उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यरूशलेम के अध्यक्ष का और उन में के इसराएल के सारे घराने का यह बोझ है ॥

कह कि मैं तुम्हारे लिये चिन्ह हूँ जैसा मैं ने किया है तैसा उन से किया जायेगा वे मिथारके बंधुआई में जायेंगे । और जो अध्यक्ष उन में है सो अपने कंधे पर उठाये हुए गोधूली में निकल जायेगा वे बाहर ले जाने को भीत खोदेंगे और जिस्ती आंगियों से भूमि न देखे वह अपना मुँह ढाँपेगा । मैं अपना जाल भी उस पर बिछाऊँगा और वह मेरे फंसे में दब जायेगा और मैं उसे कमदियों के देश में धाबुल को लाऊँगा परन्तु वह उसे न देखेगा और वहाँ मरेगा । और मैं उस के आसपास के सारे सहायकों को और उस की सारी जथाओं को हर एक दिशा में छिन्न भिन्न करूँगा और मैं उन के पीछे तलवार खींचूँगा । और जत्र मैं उन्हें जाति-गणों में छिन्न भिन्न करूँगा और देशों में उन्हें बिधराऊँगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

परन्तु मैं तलवार से और अक्रान्त से और मरी से उन में से गिन्ती के घोड़े जनों को छोड़ूँगा जिस्ती वे अपनी छिनितों को अन्यदेशियों में जहाँ जहाँ वे पहुँचें प्रगट करें और वे जानें कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र तू बर्षराते हुए अपनी रोटी खा और कांपते हुए चिन्ता के साथ अपना जल पी । और देश के लोगों से कह कि यरूशलेम के बासियों के और इसराएल देशियों के विषय में प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि वे अपनी रोटी चिन्ता के साथ खायेंगे और अपना जल आश्चर्य के साथ पीयेंगे जिस्ती उस के सारे बासियों के उपद्रव के कारण उन के देश अपनी भरपूरी से उजड़ जायें । और उसे हुए नगर उजाड़े जायेंगे और देश उजाड़ा जायेगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

- ५ उस की मूर्तियों की बहुताई के समान उसे उत्तर देजंगा । जिस्ती में इसराएल के घराने को उन्हीं के मन ही में पकड़ूं क्योंकि वे सब के सब अपनी मूर्तियों के लिये मुझ से फिर गये हैं ॥
- ६ इस लिये इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि पश्चात्ताप करके अपनी मूर्तियों से फिरो और अपने सारे धिनितों से अपने अपने
- ७ मुंह फेरो । क्योंकि इसराएल के घराने के हर एक अथवा इसराएल का परदेशी निवासी जो मुझ से अलग होता है और अपने मन में अपनी मूर्तियों को रोपता है और अपनी बुराई के ठोकर को अपने आगे धरता है और मेरे बिषय में ब्रूकने को भविष्यद्वक्ता के पास आता है उसे मैं ही परमेश्वर आप ही उत्तर देजंगा ।
- ८ और मैं अपना मुंह उसी जन के विरुद्ध फेरूंगा और उसे चिन्ह और कहावत के लिये उजाड़ बनाऊंगा और अपने लोगों के मध्य में से उसे उखाड़ूंगा और तुम लोग जानोगे कि मैं ही परमेश्वर हूं ।
- ९ और यदि भविष्यद्वक्ता कोई बात कहके भरमाया जाये तो मुझ परमेश्वर ने उस भविष्यद्वक्ता को भरमाया है और मैं अपना हाथ उस पर बड़ाऊंगा और अपने
- १० इसराएल लोगों के मध्य में से उसे नष्ट करूंगा । और वे अपनी बुराई का दण्ड
- ११ भोगेंगे पुइवैये का दण्ड भविष्यद्वक्ता के दण्ड के समान होगा । जिस्ती इसराएल का घराना फिर मुझ से भटक न जाये और अपने सारे अपराधों से अशुद्ध न हो जाये परन्तु प्रभु परमेश्वर कहता है जिस्ती वे मेरे लोग होंगे और मैं उन का ईश्वर ॥
- १२ तब यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र
- १३ जब अति अपराध करने के कारण से देश मेरे विरुद्ध पाप करे तब मैं अपना हाथ उस पर बड़ाऊंगा और उस के भोजन की टेक तोड़ डालूंगा और उस पर
- १४ अकाल भेजूंगा और मनुष्य को और पशु को उससे मिटा डालूंगा । प्रभु परमेश्वर कहता है कि यद्यपि ये तीन जन अर्थात् नूह और दानिएल और रेयूब उस में होते तो वे अपने धर्म से केवल अपने ही प्राण बचाते ॥
- १५ यदि मैं फइवैये पशुन को देश में से प्रवेश कराऊं और वे उन्हें ऐसा नष्ट करें कि वह ऐसा उजाड़ हो जाये कि अनपशुन के सारे कोई मनुष्य उस में से
- १६ न जाये । प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोइ जो ये तीन जन उस के मध्य में होते तो बेटे बेटियों को न बचाते केवल वे ही बच जाते परन्तु देश उजाड़ होता ॥
- १७ अथवा जो मैं उस देश पर तलवार लाऊं और कहूं कि हे तलवार देश में
- १८ प्रवेश कर जिस्ती मैं उससे मनुष्यों को और पशुन को नष्ट करूं । प्रभु परमेश्वर कहता है अपने जीवन सोइ जो ये तीन जन उस में होते तो न बेटे न बेटियों को कुड़ा सक्ते परन्तु वे अकेले ही बचते ॥
- १९ यदि मैं मरी उस देश में भेजूं और मनुष्यों को और पशुन को उससे नाश करने
- २० के लोह से अपना क्रोध उस पर उंडेलूं । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोइ जो नूह और दानिएल और रेयूब उस में होते तो वे बेटा बेटों को न कुड़ाते वे अपने ही धर्म से अपने ही प्राण को कुड़ाते ॥

अथ यह पोतना कहां है जिस्से तुम ने पोता है । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों १३ कहता है कि मैं अपने कोष में आंधी से उसे फाड़ूंगा और मेरी रिस में उबली हुई झड़ी होगी और नाश करने को मेरे कोष में बड़े बड़े ओले पड़ेंगे । यों मैं १४ भीत को जिसे तुम ने कच्ची पोतनी से पोता है तोड़ूंगा और उसे भूमि लों गिरा-कंगा यहां लों कि उस की नेत्र उधारी जायेगी और यह गिरेगी और तुम उस के बीच नष्ट होओगे और जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

यों मैं उस भीत पर और उन पर जिन्हों ने कच्चा पोता है अपना क्रोध १५ पूरा करूंगा और तुम से कटूंगा कि न भीत न उस के पोतवैये हैं । इसराएल के १६ भविष्यद्वक्ते जो यरूशलेम के विषय में भविष्य कहते हैं और उस के लिये कुशल का दर्शन देखते हैं और प्रभु परमेश्वर कहता है कि कुशल नहीं ॥

और तू हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों की पुत्रियों के विरुद्ध जो अपने ही मन से १७ भविष्य कहती हैं अपना मुंह फेर और उन के विरुद्ध भविष्य कह । और बोल कि १८ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि संताप तुम पर जो सारी कहेनियों के लिये उसीसा होती हो और प्राण को अहेर करने के लिये दर एक हील के मिर के लिये बिछैना बनाती हो क्या तुम मेरे लोगों के प्राण को अहेर करोगी और क्या तुम अपनी और के प्राणियों को बचाओगी । और तुम लोग सुट्टी भर भर जय के लिये १९ और रोटी के टुकड़ों के लिये मुझे मेरे लोगों में अशुद्ध करोगी कि तुम उन प्राणों को घात करती हो जिन का मरना न था और उन प्राणों को जीने देती हो जिन को जीना न था कि तुम मेरे लोगों से जो झूठ सुनते हैं झूठ बोलती हो ॥

इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं तुम्हारे उसीसा के विरुद्ध हूं २० जिन से तुम प्राणों को उढ़ाने के लिये अहेरती हो और जिन प्राणों को उढ़ाने के लिये तुम अहेरती हो मैं उन्हें तुम्हारे दाहों से फाड़ूंगा और प्राणों को कुड़ाऊंगा । और मैं तुम्हारे बिछैनों को भी फाड़ डालूंगा और अपने लोगों को तुम्हारे २१ हाथ से कुड़ाऊंगा और अहेर के लिये वे फिर तुम्हारे हाथ में न होंगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं । इस कारण कि तुम लोगों ने धर्मी के मन को २२ झूठ से उदास किया जिन्हें मैं ने उदास न किया और दुष्ट के हाथ में बल दिया जिन्हें बल अपने दुष्ट मार्ग से न फिरे और जीवन पावे । इस लिये तुम वृथा न २३ देखोगे और न दैववाणी कहेगे और मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथों से कुड़ाऊंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

चौदहवां पर्व ।

तब इसराएल के प्राचीनों में से कई जन मेरे आगे आ बैठे । और यह कहते २ हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र इन मनुष्यों ने अपनी ३ अपनी मूर्तिन को अपने मन में स्थापन किया है और अपनी घुराई के ठोकर को अपने आगे धर रक्खा है क्या मैं ऐसों से यूभा जाऊं । इस लिये उन से कह ४ और उन से बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल के घराने में से हर एक जो अपने अन्तःकरण में अपनी मूर्तिन को स्थापन करके अपनी घुराई का ठोकर अपने आगे धरता है और भविष्यद्वक्ता के पास आता है मैं परमेश्वर

बढ़ते महान हुई और तू उत्तम गोमा को पहुँची और तेरे स्तन फूल उठे और तेरा बाल बढ़ गया है पर आगे तू नग्न और उधारी थी ॥

८ जब मैं तेरे पास से जाता था और तुझ पर दृष्टि किई और क्या देखता हूँ कि तेरा समय प्रेम का समय है और मैं ने अपना आंचल तुझ पर फैलाया और तेरी नग्नता छापी हाँ मैं ने तुझ से किरिया खाई और तेरे साथ आचा खाँधी प्रभु परमेश्वर कहता है और तू मेरी हुई । और मैं ने तुझे जल से धोया हाँ मैं १० ने तेरा लोहू तुझ से धो डाला और तुझ पर तेल मला । और मैं ने बूटाकार्य से तुझे पहिराया और तुझे सुखसुचाम की जूती पहिनाई और मैं ने तेरी कटि पर ११ भीना वस्त्र लपेटा और मैं ने तुझे चवली ओढ़ाई । और मैं ने तुझे गहनों से १२ आभूषित किया और तेरे छाथों में कंकण और तेरे गले में हार पहिनाया । और मैं ने तेरी नाक में नथ पहिनाई और तेरे कानों में कर्णफूल और तेरे सिर पर १३ सुन्दर सुकुट धरा । और इस रीति से तू सोना चाँदी से शोभित हुई और तेरे वस्त्र भीने और चवली और बूटे काढ़े हुए थे तू ने चोखा पिसान और मधु और १४ तेल खाया और तू परम सुन्दरी हुई और तू एक राज्य से भाग्यवती हुई । और तेरी कीर्ति सुन्दरता के कारण अन्यदेशियों में फैली क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मेरी सुन्दरता के कारण जो मैं ने तुझ पर रखी अत्यन्त सम्पूर्ण हुई ।

१५ परन्तु तू ने अपनी सुन्दरता पर भरोसा रख्या और अपनी कीर्ति के कारण वेश्याई किई और हर एक जवैये पर अपने व्यभिचार को उँढेला वह उस का १६ हुआ । और तू ने अपने वस्त्रों से लेके अपने ऊँचे स्थानों को नाना प्रकार के रंग १७ से शोभित किया और उन पर वेश्याई किई ऐसा न आवेगा और न होगा । और तू ने मेरे दिये हुए सोने चाँदी के गहने ले ले अपने लिये पुरुष की मूर्ति बनाई १८ और उन से व्यभिचार किया । और अपने बूटे काढ़े हुए वस्त्र को लेके उन्हें १९ ओढ़ाया और मेरा तेल और धूप उन के आगे धरा । और मेरा दिया हुआ भोजन भी और जिस चोखे पिसान और तेल और मधु से मैं ने तुझे खिलाया तू ने उन्हें सुगन्ध के लिये उन के आगे धरा है प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यों ही हुआ ॥

२० और तू ने अपने घेरे घेदियों को जिन्हें तू मेरे लिये जनी थी लिया और उन २१ के भत्त के लिये बलि चढ़ाया है तेरी यह वेश्याई क्या शोड़ी है । कि तू ने मेरे २२ बालकों को घात किया है और सौंपके उन के लिये आग में से खलाया है । और अपने सारे धिनितों में और वेश्याई में तू ने अपने युवा के दिनों को स्मरण न किया जब कि तू नग्न और उधारी थी और अपने लोहू में लोटती थी ॥

२३ और तेरी सारी दुष्टता के पीछे यों हुआ प्रभु परमेश्वर कहता है कि संताप २४ संताप तुझ पर । और तू ने अपने लिये वेश्यास्थान भी बना रक्खा है और हर २५ एक सड़क में ऊँचा स्थान बना रक्खा है । मार्ग के हर एक निकास में तू ने अपना ऊँचा स्थान बना रक्खा है और अपनी सुन्दरता को धिनौना किया है और हर एक के लिये जो तेरे पास से जाता है अपने पाँव पसारा है और अपना किनाल २६ पन बढ़ाया है । अपने परोसी और मिसियों के साथ जो बड़े मांस के हैं तू ने व्यभिचार भी किया है और मुझे रिसियाने को अपना किनालपन बढ़ाया है ॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता तो कितना अधिक जय में यरुसलम पर मनुष्यों २१  
और पशुन को नष्ट करने के लिये अपने चार बड़े दण्ड अर्थात् तलवार और अकाल  
और फड़वैये पशु और मरी को भेजूं । तथापि देख वेटे वेटियों का बचा हुआ २२  
उस में छोड़ा जायेगा जो बाहर किये जायेंगे और देखो वे तुम्हारे पास बाहर  
आवेंगे और तुम उन की छाल और उन के उपग्रहार देखोगे और सारी घुराई के  
विषय में जो मैं यरुसलम पर लाया हूं तुम लोग शान्ति पाओगे अर्थात् सभी के  
विषय में जो मैं उस पर लाया । और जब तुम उन की छाल और उपग्रहारों को २३  
देखोगे तो वे तुम्हें शान्ति देंगे और प्रभु परमेश्वर कहता है कि यह सब तुम  
जानोगे जो मैं ने उस में किया सो बिना कारण नहीं ।

पंदरहवां पर्व ।

और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र १  
दाखपेड़ दूसरे पेड़ से अधिक क्या है अथवा दान के पेड़ों में की डाली से । क्या ३  
किसी काम के लिये उससे लकड़ी लिये जायेगी अथवा किसी वस्तु के टांगने के  
लिये कोई उससे खूंटी लेगा । देख यह आग में ईंधन के लिये डाला जाता है ४  
और आग उस के दोनों सिरों को भस्म करती है और उस के मध्य को जला देती  
है क्या यह किसी काम का है । देख जब यह समूची थी यह किसी काम की न ५  
थी कितना अधिक अथ यह किसी काम की नहीं जब आग उसे भस्म कर गई  
और यह जल गई ।

इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जैसा दान के पेड़ों में दाख की लता ६  
को जो मैं ने आग के ईंधन के लिये दिया है तैसा मैं यरुसलम को नियासियों को  
देऊंगा । और मैं अपना मुंह उन के विरुद्ध फेंका वे एक आग में से निकलेंगे ७  
और दूसरी आग उन्हें भस्म करेगी और जब मैं अपना मुंह उन के विरुद्ध फेंक  
सब तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं । और प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ८  
उन के अपराध करने के कारण देश को उजाड़ डालूंगा ।

सोलहवां पर्व ।

फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र १  
यरुसलम को उस की घिनित किया जना ।

और कह कि प्रभु परमेश्वर यरुसलम से यों कहता है कि तेरा नियास और ३  
तेरा जन्म कनआन देश का है तेरा पिता अमूरी और तेरी माता छिती । और ४  
तेरा जन्म जो है जब तू उत्पन्न हुई तेरी नाभी काटी न गई और जब मैं  
ने तुझे देखा तब तू जल से न चढ़ाई न गई थी और तुझ पर लोह लगाया न  
गया था और कपड़ों से लपेटी न गई थी । किसी की आंख तुझ पर न लगी ५  
कि सया से तुझ पर कुछ ऐसा करे परन्तु अपने जन्मदिन में अपने घिन के लिये  
तू बाहर खेत में फेंकी गई थी ।

और जब मैं तेरे पास से होके गया और तुझे तेरे ही लोह में लोटते देखा ६  
तब मैं ने तुझ से तेरे लोह में होते हुए कहा कि जी हां मैं ने तुझ से तेरे लोह  
में कहा कि जी । मैं ने खेत की कली की नाईं तुझे बड़ाया है और तू बढ़ते ७



४४ देख हर एक जो कहावत कहता है यही कहावत तेरे विरुद्ध कहेगा कि जैसी  
 ४५ माता तैसी पुत्री । तू अपनी माता की पुत्री जो अपने पति और बालकों से घिन  
 करती है और तू अपनी बहिनों की बहिन है जिन्होंने ने अपने अपने पति और  
 बालकों से घिन किया है तुम्हारी माता बहिन और तुम्हारा पिता असूरी था ।  
 ४६ और तेरी जेठी बहिन समझन है यह और उस की पुत्रियां जो तेरी दाई और  
 रहती हैं और तेरी लहुरी बहिन जो तेरी बहिनों और रहती है सो सद्म और  
 ४७ उस की पुत्रियां । यद्यपि तू उन की बाल पर न खली और उन के घिनित के  
 समान न किया तथापि थोड़ी वस्तु के समान तू अपनी सारी बालों में उन से  
 अधिक सड़ गई ।

४८ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन में तेरी बहिन सद्म ने न किया  
 ४९ न उस ने न उस की बेटियों ने जैसा तू ने और तेरी पुत्रियों ने किया है । देख  
 तेरी बहिन सद्म की बुराई यह थी उस में और उस की पुत्रियों में अहंकार और  
 भोजन की भरपूरी और आलस की बुराई थी और उस ने कंगाल और दरिद्र  
 ५० के हाथ को बल न दिया । और उन्होंने ने अभिमानी होके मेरे आगे घिनितकर्म  
 किया इस लिये जैसा मैं ने देखा तैसा उन्हें दूर किया ।

५१ समझन ने भी तेरे पाप का आधा न किया परन्तु तू ने अपने घिनितों को  
 उन से अधिक बढ़ाया है और अपने सारे किये हुए घिनितों से अपनी बहिनों  
 ५२ को निर्दोष ठहराया है । सो तू अपनी ही लाज भोग तू ने अपनी बहिनों का  
 विचार किया तू भी अपने पाप के कारण जो तू ने उन से अधिक घिनितकर्म  
 किया है अपनी ही लाज भोग वे तुझ से भी धर्मी हैं हां तू भी घबरा जा  
 ५३ और तू ने जो अपनी बहिनों को निर्दोषी ठहराया है । जब मैं उन की बंधुआई  
 को फेर लाऊंगा अर्थात् सद्म और उस की बेटियों की और समझन की और  
 उस की बेटियों की बंधुआई तब मैं तेरी बंधुआई के बंधुओं को उन के मध्य  
 ५४ में लाऊंगा । जिस्तें तू अपनी ही लाज भोगे और अपने सारे किये हुए कार्य  
 में घबरा जाये तू उन के लिये शान्ति है ।

५५ जब तेरी बहिन सद्म और उस की बेटियां अपनी अगिली दशा में फिर  
 आवेंगी और समझन और उस की बेटियां अपनी अगिली दशा में फिर आवेंगी  
 तब तू और तेरी बेटियां अपनी अगिली दशा में फिरोगी ।

५६ तेरे अहंकारों के दिन मैं तेरी बहिन सद्म तेरे मुंह से सुनाई न गई । तेरी  
 ५७ दुष्टता के प्रगट होने से आगे उस समय के समान जब कि तू ने अराम की  
 बेटियों की और उस के सारे चारों ओर के फिलिस्तियों की बेटियों से निन्दा  
 ५८ पाई जो तेरी चारों ओर तुझे तुच्छ जानती थीं । परमेश्वर कहता है कि तू  
 अपने घिनितों और लंपटता को भोगती है ।

५९ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तेरी करनी के समान मैं तुझ से भी  
 ६० व्यवहार करूंगा कि तू ने नियम को भंग करके किरिया की निन्दा किई है । तिस  
 पर भी मैं तेरे साथ तेरी युवावस्था के नियम को स्मरण करूंगा और तेरे साथ  
 ६१ एक समाप्तन का नियम स्थिर करूंगा । जब तू अपनी जेठी और लहुरी बहिनों

इस लिये देख मैं ने अपना हाथ तुम पर बढ़ाया है और तेरे प्रतिदिन का २७ भोजन घटाया है और तुम्हें फिनिशियों की घोटियों को जो तेरी वेश्याई चाल से लज्जित हैं और तुम से दूर रखती हैं उन की इच्छा पर तुम्हें सौंपा है ॥

अपने असन्तोष के कारण तू ने अमूरियों से भी द्विनालकर्म किया है हां तू ने २८ उन से द्विनालकर्म किया है तथापि मन्तुष्ट्र न हुई । कनयान देश में कसदिया लीं २९ तू ने अपने व्यभिचार को भी अधिक बढ़ाया है और उससे भी तू मन्तुष्ट्र न हुई ॥

प्रभु परमेश्वर कहता है कि तेरा मन कैसा निर्बल है जो तू ये सारे कर्म ३० करती है जो निर्लज्ज द्विनाल के कर्म हैं । तू जो हर एक मार्ग के सिरे पर अपना ३१ वेश्यास्थान बनाती है और हर एक सड़क में ऊंचा स्थान बनाती है और इस बात में वेश्या की नाईं न हुई कि तू खरची को तुच्छ जानती है । परन्तु व्यभिचारिणी ३२ पत्नी की नाईं जो अपने पति की सन्ती-उपरी को लेती है । लोग सारी वेश्या ३३ को खरची देते हैं पर तू अपने जारों को दान देती है और जिस्तीं वे चारों और से तेरे द्विनालपने से तेरे पास आवें तू उन्हें दूध देती है । और अपने द्विनालपन ३४ में तू और स्त्रियों से विरुद्ध है क्योंकि व्यभिचारकर्म के लिये तेरे पीछे कोई नहीं जाता और इस में कि तू खरची देती है और तुम्हें खरची नहीं दी गई जाती इस लिये तू विपरीत है ॥

इस लिये अरे वेश्या परमेश्वर का वचन सुन । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि ३५ तेरे जारों के और तेरी सारी घिनित मूर्तियों के साथ तेरे द्विनालकर्म के कारण तेरी अशुद्धता उठेली गई और तेरी नग्नता उघारी गई और अपने बालकों के लोहू के कारण जो तू ने उन्हें दिया है । इस लिये देख मैं तेरे सारे जारों को ३६ जिन से तू आनन्दित हुई है और सब को जिन से तू ने प्रीति किई है और सभी को जिन से तू ने घिन किया है घटोखंगा हां मैं उन्हें तेरे विरुद्ध तेरी चारों और एकट्टे करूंगा और उन पर तेरी नग्नता उघाखंगा जिस्तीं वे तेरी सारी नग्नता देखें । और मैं तेरा न्याय रेमा करूंगा जैसा विवाहभंजक और हिंसक स्त्रियों के ३७ न्याय किये जाते हैं और मैं कोप से और झल से तुम्हें लोहू का पलटा लेंगा । और मैं तुम्हें उन के हाथ में भी सौंपूंगा और वे तेरे वेश्यास्थान को ढा देंगे और ३८ तेरे ऊंचे स्थानों को तोड़ देंगे वे तेरे कपड़े भी उतार लेंगे और तेरे सुन्दर गहने छीन लेंगे और तुम्हें नंगी और उघारी छोड़ेंगे । और वे तेरे विरुद्ध एक जथा ३९ लावेंगे और तुम्हें पत्थर से पथरावेंगे और अपनी तलवारों से तुम्हें घेरेंगे । और वे ४० तेरे घर आग में जलावेंगे और बहुत सी स्त्रियों के देखने में तुम्हें दण्ड देंगे और मैं तुम्हें द्विनालकर्म से कुड़ाऊंगा और तू फिर खरची न देगी ॥

इस रीति से मैं अपने कोप को तेरी और शान्त करूंगा और मेरा झल तुम्हें से ४१ जाता रहेगा और मैं शान्त होऊंगा और फिर न रिसिपाऊंगा ॥

इस कारण कि तू ने अपनी युवावस्था के दिनों को स्मरण न किया परन्तु ४२ इन सब बातों में मुझे रिसाया है इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि देख मैं तेरे सिर पर तेरी चाल का पलटा देऊंगा और अपने सारे घिनितों से अधिक तू यही लंपटता न करेगी ॥

१६ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन में निश्चय जिस स्थान में राजा ने उसे राजा किया जिस की किरिया की उस ने निन्दा किई और जिस का नियम  
 १७ उस ने तोड़ा उस के साथ वह व्याकुल में मरेगा । अपनी पराक्रमी सेना और बड़ी जथा से बहुत से लोगों को जुमाने के लिये मोर्चा और गढ़ बना बनाके फिर उन  
 १८ से संग्राम में उस के लिये कुछ न बन पड़ेगा । क्योंकि नियम भंग करके उस ने किरिया की निन्दा किई और देख कि उस ने अपना हाथ दिया था और इन सब बातों को करके वह न थचेगा ॥

१९ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन में निश्चय मेरी किरिया जिस की उस ने निन्दा किई और मेरा नियम जो उस ने भंग किया है  
 २० उसी का पलटा में उसी के सिर पर देऊंगा । और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊंगा और वह मेरे फंदे में पकड़ा जायेगा और मैं उसे व्याकुल को लाऊंगा और उस के अपराध के लिये जो उस ने मेरे विरुद्ध अपराध किया है मैं वहां  
 २१ उससे विवाद करूंगा । और उस के सारे भगोड़ और सारी जथा तलवार से मारी जायेंगी और वचे हुए चौदिसा में किन्नु भिन्न होंगे और तुम लोग जानोगे कि मुझ परमेश्वर ने क्या है ॥

२२ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ऊंचे देवदारुपेड़ की ऊंची से ऊंची फुनगी लेके लगाऊंगा और ऊपर की कोमल टहनियों में से एक को काटूंगा और उसे  
 २३ एक ऊंचे और सटान पर्वत पर लगाऊंगा । इसराएल के ऊंचे पहाड़ पर मैं उसे लगाऊंगा और उससे डालियां निकलेंगी और फलेंगी और सुन्दर देवदारुपेड़ होगा और हर डेने के सारे पंखी उस के तले बसेंगे उस की डालियों की छाया तले वे  
 २४ बसेंगे । और उन के सारे पेड़ जानेंगे कि मुझ परमेश्वर ने ऊंचे पेड़ को उतारा और नीचे पेड़ को बढ़ाया मैं ने हरे पेड़ को सुखा दिया और सूखे पेड़ को लहलहाया मुझ परमेश्वर ने यह कहा है और किया है ॥

अठारहवां पर्व ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा । तुम लोगों का यह अभिप्राय क्या जो इसराएल के देश के विषय में यह कहावत कहते हो कि पितरों ने खट्टा दाख खाया है और बालकों के दांत खट्टे हुए ॥

२ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन में तुम लोग फिर इसराएल में  
 ३ इस कहावत का कारण न पाओगे । देख सारे प्राण मेरे हैं पिता के प्राण के  
 ४ समान पुत्र का प्राण भी मेरा है जो प्राणी पाप करता है सोई मरेगा । परन्तु  
 ५ यदि मनुष्य धार्मिक होवे और न्याय और धर्म करे । उस ने पहाड़ों पर भोजन न किया और इसराएल के घराने की मूर्तियों की ओर आंखें न उठाईं और अपने  
 ६ परोसी की पत्नी को अशुद्ध न किया और रजस्वला स्त्री के पास न जायेगा । और वह किसी को न सतावेगा ऋण का बन्धक फेर देगा अन्धेर से किसी को न लूटेगा भूखे को अपनी रोटी खिलावेगा और उधारे हुए को कपड़ा ओढ़ावेगा ।  
 ७ विवाज पर न देगा और कुछ बढती नहीं लेगा बुराई से अपना हाथ खींच लेगा  
 ८ मनुष्य और मनुष्य के मध्य में ठीक विचार करेगा । वह मेरी विधि पर चलेगा

को ग्रहण करेगी तब तू अपनी आत्मा को स्मरण करके लज्जित होगी और मैं उन्हें पुत्रियों के लिये तुम्हें देऊंगा परन्तु तेरे नियम से नहीं । और मैं अपने नियम ६२ को तुम्हें से स्थिर करूँगा और तू जानेगी कि मैं ही परमेश्वर हूँ । जिसने तू ६३ स्मरण करे और लज्जित होये और लाज के मारे अपना मुँह न खोले जब कि मैं तेरी सारी करनी को क्षमा करूँ प्रभु परमेश्वर कहता है ॥

सत्रहवां पृष्ठ ।

और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । कि हे मनुष्य के १ पुत्र एक पहेली निकाल और इसराएल के घराने से एक दृष्टान्त कह । और ३ वोले कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यह हैने का एक बड़ा गिट्ट लंबे पंख का पर से भरा हुआ बूटेदार रंग का लुथनान में आके देवदारुपेड़ की फुनगी ले गया । उस ने उस की कोमल कनखियों की फुनगी चाँच डाली और वैपार ४ के देश में ले गया और उसे वैपारियों के नगर में लगाया । और यह उस देश ५ का बीज भी ले गया और उसे फलदान खेत में लगाया और उसे बड़े पानियों के लग लगाया और घंतेपेड़ की नाईं उसे बोया । और यह यहके फैलती छोटी ६ जाति की लता हुई जिस की डालियां उस की ओर मुड़ीं और उस की सार भी उस के नीचे हुई यह यों दाख की लता हो गई और डालियां निकालीं और कनखियां फुटवाईं ॥

और यह बड़े बड़े हैने और बहुत पर का एक दूसरा बड़ा गिट्ट था और देखा इस लता ७ ने अपनी सारें उस की ओर झुकाईं और उस की ओर अपनी डालियां बढ़ाईं जिस्ती अपनी कियारी की नाली से उसे सोँचे । और यह बड़े बड़े पानियों के लग अच्छी ८ मिट्टी में लगाई गईं जिस्ती डालियां फूटें और फल फले और अच्छी लता होये ॥

तू कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्या यह लटलटावेगी उसे सुखाने के ९ लिये क्या यह उस की जड़ न उखाड़ेगा और उस का फल न काटेगा जिस्ती यह सूख जाये उस के दाख के सारे पत्ते सूख आयेंगे हाँ जड़ से बिना पराक्रम अथवा बहुत लोग से उखाड़ी जायेगी । हाँ देख लगाईं आके क्या यह लटलटावेगी १० क्या जब पुरुषा पवन उस पर लगेगी यह सूर्यया सूख न जायेगी यह नाली में जहाँ रगी तहाँ सूख जायेगी ॥

फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । अब दंगदत घराने ११ से कह क्या तुम लोग इन बातों का अर्थ नहीं जानते कह कि देखो दायुल का १२ राजा यरुसलम पर आया है और उस के राजा को और उस के अधियों को पकड़ा है और उन्हें अपने साथ साथ दायुल को ले गया है । और राजा के वंश १३ में से एक लिया है और उससे नियम बाँधा और उससे किरिया लिई और देश के वलवंतों को भी ले गया । जिस्ती राज्य तुच्छ होये और आप को न उभाड़े कि १४ उस के नियम को पाले और उस पर स्थिर होये । परन्तु यह दूतों को मित में १५ भेजके उन से छोड़े और बहुत से लोग मंगवाके उस की धिक्क फिर गया क्या यह भाग्यमान होगा क्या ऐसा कार्यकारी बचेगा अथवा नियम को तोड़के यह कूट जायेगा ॥

- २८ करे तो अपना प्राण जीता रखेगा । क्योंकि उस ने सोचा और अपने किये हुए सारे अपराध से फिरा वह निश्चय जीवेगा वह न मरेगा ॥
- २९ तथापि इसराएल के घराने कहते हैं कि प्रभु का मार्ग स्थिर नहीं है इसराएल के घराने क्या मेरे मार्ग स्थिर नहीं क्या तुम्हारे मार्ग स्थिर नहीं ॥
- ३० इसी लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि हे इसराएल के घराने मैं हर एक की चाल के समान तुम्हारा विचार करूँगा पकताओ और अपने अपने सारे अपराधों से फिरो और दुराई तुम्हारे नाश के लिये न होगी । जिस जिस अपराध से तुम सभी ने अपराध किया है उन्हें त्याग करो और अपने लिये नया मन और नया ३२ आत्मा बनाओ क्योंकि हे इसराएल के घराने तुम क्यों मरेगो । क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मरणीय की मृत्यु से मैं प्रसन्न नहीं सो फिरो और जीओ ॥

उन्नीसवां पर्व ।

- १ और तू इसराएल के अध्यक्षों के लिये एक विलाप उठा । और कह कि तेरी माता क्या एक सिंघिनी वह सिंघों में लेट गई उस ने युवा सिंघों में अपने बच्चों को पाला । और उस ने अपने एक बच्चे का प्रतिपाल किया और वह युवा सिंघ ३ हुआ और अंदर पकड़ना सीखा वह मनुष्यों को भक्षने लगा । जातिगणों ने भी उस का समाचार पाया वह उन के गाड़ में पकड़ा गया और वे उसे सीकरों से मिस्र देश में लाये ॥
- ४ और जब उस ने देखा कि मैं ने घाट जोड़ी और आशा जाती रही तब उस ने अपने बच्चों में से दूसरे को लिया और उसे युवा सिंघ किया । और वह सिंघों में फिरते फिरते तरुण सिंघ हुआ और अंदर पकड़ना सीखा और मनुष्यों को ७ भक्षने लगा । और उस ने उन के उजाड़ भवनों को आना और उन के नगरों को उजाड़ किया और देश और उस की भरपूरी उस के गर्जने के शब्द से उजाड़ गई ॥
- ८ तब चारों ओर के प्रदेशों से जातिगण उस के विरुद्ध हुए और उस पर अपना ९ जाल फैलाया वह उन के गाड़ में पकड़ा गया । और उन्होंने ने उसे सीकर से बांधके बांधनों में किया और उसे बाबुल के राजा के पास ले गये उन्होंने ने उसे गढ़ों में डाला जिस्त उस का शब्द इसराएल के पर्वतों पर फिर सुना न आये ॥
- १० तेरी माता दाख की लता के समान तेरी नाई जल के लग लगाई गई है ११ वह मुक्ता जल के सारे फलमय होके डालों से भर गई । और आज्ञाकारियों के राजदण्डों के लिये उस की कड़ें पोढ़ थीं और वह घनी डालियों में बड़ गई वह अपनी डालियों की बहुताई से अपनी ऊंचाई से देखी जाती थी ॥
- १२ परन्तु वह कोप से उखाड़ी जाके भूमि पर फेंकी गई और पुरुषा पवन ने उस के फल को झुरा दिया उस की पोढ़ कड़ें टूटके सूख गई आग ने उन्हें भस्म १३ किया । और अब वह सूखी और तृपित भूमि में खन में लगाई गई है । और १४ उस की डालियों में की एक कड़ से आग निकली है जिस ने उस के फलों को भक्षण किया यहां लो कि प्रभुता करने की राजदण्ड के लिये उस की कोई पोढ़ कड़ न रही यह विलाप है और विलाप का कारण होगा ॥

और उस ने सच्चाई से उपवहार करने को मेरे विचार को पालन किया है सो धर्मी है प्रभु परमेश्वर कहता है कि वह निश्चय जीयेगा ॥

और यदि उसने बेटा उत्पन्न होवे जो बटमार और घातक और इन में से १० कोई बात के समान पाप करे । और उन में की कोई बातों को उस ने न ११ किया हो परन्तु उस ने पहाड़ों पर खाया और अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध किया है । कंगाल और दरिद्र को उस ने सताया अन्धेर से लूटा बन्धक को फेर १२ नहीं देगा और मूर्तिन की और उस ने अपनी आंखें उठाई और धिनित कार्य किया । उस ने दियाज पर दिया और बढ़ती लिई तो क्या वह जीयेगा वह न १३ जीयेगा उस ने ये सारे धिनित कार्य किये हैं वह निश्चय मरेगा उस का लोहू उस पर पड़ेगा ॥

और यदि उसने बेटा उत्पन्न होवे जो अपने पिता के किये हुए सारे पापों को १४ देखे और सोचके ऐसा न करे । पहाड़ों पर उस ने नहीं खाया और इमरागल के १५ घराने की मूर्तिन पर अपनी आंखें नहीं उठाई और अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध न किया । और किसी को न सताया और बन्धक को बन्धक न रक्खा और १६ न अन्धेर से लूटा परन्तु अपनी रोटी भूखे को दिया और उधारे हुए को वस्त्र ओढ़ाया । अपना हाथ कंगालों पर सें उतारा और दियाज और बढ़ती नहीं लिया १७ मेरे न्यायों को पालन किया मेरी विधि न पर चला वह अपने पिता की घुराई के लिये न मरेगा निश्चय वह जीयेगा ॥

उस के पिता ने क्रूरता से सताके अन्धेर से अपने भाई को लूटा और अपने १८ लोगों में जो भलाई न थी सो उस ने किई देख वह अपनी घुराई में मरेगा ॥

तथापि तुम लोग कहते हो कि किस लिये क्या बेटा व्याप की घुराई नहीं भोगता १९ जय बेटे ने उचित और ठीक किया है और मेरी सारी विधि न को पाला है और उन्हे माना है वह अवश्य जीयेगा । जो प्राणी पाप करता है सोई मरेगा बेटा २० व्याप की घुराई न भोगेगा और न व्याप बेटे की घुराई भोगेगा धर्मी का धर्म उसी पर होगा और दुष्ट की दुष्टता उसी पर पड़ेगी ॥

परन्तु यदि दुष्ट अपने किये हुए सारे पापों से फिरे और मेरी सारी विधि न को २१ पाले और उचित और ठीक करे तो वह निश्चय जीयेगा वह न मरेगा । उस के २२ सारे अपराधकर्म उसे सुनाये न जायेंगे वह अपने धर्म कर्म में जीयेगा । प्रभु २३ परमेश्वर कहता है कि क्या दुष्ट की मृत्यु मे मैं किसी बात में प्रसन्न हूं और इससे नहीं कि वह अपनी जाल से फिरे और जीये ॥

परन्तु जय धर्मी अपने धर्म से फिरे घुराई करे और दुष्ट के समान सारे २४ धिनित कार्य करे क्या वह जीयेगा उस के सारे धर्मकार्य न कहे जायेंगे वह अपने किये हुए अपराध से और अपने किये हुए पाप में मरेगा ॥

तब भी तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर का मार्ग स्थिर नहीं सो है हमरा- २५ रल के घराने अब सुना क्या मेरा मार्ग स्थिर नहीं क्या तुम्हारे मार्ग स्थिर नहीं । जय धर्मी अपने धर्म से फिरे और अधर्म करे और उस में मरे वह अपनी किई २६ छई घुराई में मरेगा । फिर जय दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरे और उचित और ठीक २७



और मेरी विधिनु या न समझे और मेरे विचारों को समझ लिया क्योंकि उन का मन उन की मूर्तिन के पीछे चले जाता है

१७ परन्तु आज काल में मेरी मूर्तिन में उन्हें डेढ़ दिया और मैं ने उन में उन्हें सिखा न जाना ।

१८ परन्तु आज मैं उन के मूर्तिन को कहा कि तुम लोग अपने पिता की विधिनु या न समझ और उन के मूर्तिन को न समझ और उन की मूर्तिन में आप

१९ की कद्रु न करें । मैं ही परमेश्वर तुम्हारा देवता हूँ और विधिनु या न समझ

२० और मेरे मूर्तिन को समझ और समझ । और मेरे विचारों को समझ समझ और मैं ही और तुम्हारे साथ है किन्तु सोचें किन्तु तुम जाना कि मैं ही परमेश्वर तुम्हारा देवता हूँ ।

२१ तब तो मैं उन के मूर्तिन में विद्वत् दिया और मैं ही विधिनु या न समझ और मेरे मूर्तिन या मूर्तिन को न समझ किन्तु और कद्रु न समझ तो उन में औरता और मेरे विचारों को समझ दिया तब मैं ने कहा कि कद्रु न समझ मैं उन पर

२२ मेरी कद्रु की कद्रु कोय उन पर देखाया । तबतो मैं ने कद्रु हाथ की दिया और कद्रु नाम के पिता कद्रु दिया किन्तु कद्रुको को दृष्टि में किन्तु के कद्रु मैं उन्हें कद्रु मूर्तिन कद्रु न होने पावे ।

२३ मैं ने उन में भी कद्रु हाथ उन पर कद्रु कि मैं उन्हें कद्रुको में मूर्तिन और मेरी में विद्वत् मूर्तिन करें । तब तब कि उन्हें मैं मेरे मूर्तिन को न समझ परन्तु मेरी विधिनु को दिया किन्तु ही और मेरे विचारों को समझ दिया और उन की कद्रु कद्रु पिता की मूर्तिन के पीछे चले जावे ही ।

२४ तब तब मैं ने भी उन्हें विधिनु देई तो कद्रु न ही और गया किन्तु वे न जानें । और मैं ने उन्हें कद्रु के मूर्तिन में कद्रु किन्तु कि काल में मेरे परमेश्वर तुम्हारी कद्रु मैं जाना में कद्रु है किन्तु मैं उन्हें कद्रु कि वे जानें कि मैं परमेश्वर हूँ ।

२५ तब तब मैं कद्रु की कद्रु हूँ कद्रुको के मूर्तिन को पर कद्रु कोय कि प्रभु परमेश्वर ही कहता है कि तब आज मैं भी कद्रुको पिता मैं मेरे विद्वत्

२६ परमेश्वर कद्रु मेरी कद्रुको किन्तु । तबतो अथ मैं उन्हें उन देश में लाया किन्तु उन्हें होने को मैं ने कद्रु हाथ उठाया तो तब उन्होंने ने हर एक कद्रु कद्रु को और मेरे घने पंखों को देखा और उन्होंने ने कद्रु अपने घने कद्रु और कद्रु उन्होंने ने कद्रु कि कद्रु की मूर्तिन कद्रु और कद्रु उन्होंने ने कद्रु मूर्तिन भी कद्रु और उन्हीं मूर्तिन में कद्रु को मूर्तिन उठेती । तब मैं ने उन में कहा कि किन्तु उन्हें मूर्तिन में तुम जानें हो नाभी उस का नाम आज तो कद्रु स्थान है ॥

२७ तब तब मैं कद्रुको के मूर्तिन में कद्रु कि प्रभु परमेश्वर ही कहता है वया तुम अपने पिता की समान कद्रु हूँ और तुम भी उनके विचारों के समान

२८ कद्रुको है । तब तब मैं आज तो अथ तुम लोग मूर्तिन कद्रु हो और अपने घने की आग में से कद्रुको तब तुम अपनी मूर्तिन मूर्तिन में आप की

## पौंसयां प्रवर्ग ।

और सातवें वरस के पांचवें मास की दसवीं तिथि में यों हुआ कि परमेश्वर १  
 से दूकने को इसराएल के कई प्राचीन मेरे आगे आ बैठे । तब यह कहते हुए २  
 परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के प्राचीनों से ३  
 यह कहके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग मुझ से दूकने को  
 आये हो प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोँह में तुम से दूकना न लाऊंगा ।  
 हे मनुष्य के पुत्र क्या तू उन से विवाद करेगा क्या तू विवाद करेगा उन के पितरों ४  
 के धिनित कार्य उन्हें बना ॥

और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस दिन मैं ने इसराएल ५  
 को चुना और यश्कूव के वंश के लिये अपना हाथ उठाके किया खाई और  
 मिस्र देश में आप को उन पर प्रगट किया जब मैं ने उन के लिये हाथ उठाया  
 और कहा कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ । उसी दिन मैं ने उन के लिये अपना ६  
 हाथ उठाया कि उन्हें मिस्र देश से उस देश में निकाल लाऊँ जो मैं ने उन  
 के लिये देख रक्खा था जिस में मधु और दूध बढ़ता है और सब देशों से  
 अधिक जोभायमान है । और मैं ने उन से कहा कि तुम्हें से हर एक जन अपनी ७  
 अपनी आँखों की धिनित वस्तुन को त्यागें और मिस्र की मूर्तिन से अपने को  
 अशुद्ध न करें मैं ही परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूँ ॥

परन्तु वे मेरे विरुद्ध फिर गये और मेरी न जानी उन में से हर एक ने अपनी ८  
 अपनी आँखों की धिनित वस्तुन को न फेंका और मिस्र की मूर्तिन को न त्यागा  
 तब मैं ने कहा कि मिस्र देश के मध्य में अपनी रिस पूरी करने को उन के  
 विरुद्ध अपना कोप उन पर उँढेलूँगा ॥

परन्तु मैं ने अपने नाम के लिये कार्य किया कि अन्यदेशियों के आगे जिन में ९  
 वे थे जिन की दृष्टि में मिस्र देश से बाहर लाने में मैं ने आप को उन पर बनाया  
 वे मेरा नाम अशुद्ध न करें ॥

इसी कारण मैं उन्हें मिस्र देश से निकालके वन में लाया । और अपनी विधि १०  
 उन्हें दिई और अपने न्याय को उन्हें बनाया जिन्हें यदि मनुष्य पालन करे तो उन  
 में जीयेगा । और मैं ने उन्हें अपने विश्रामों को भी दिया कि वे मेरे और उन के १२  
 मध्य में चिन्हें होवें जिन्हें वे जानें कि मैं परमेश्वर उन्हें प्रविष्ट करता हूँ ॥

परन्तु इसराएल के घगने वन में मेरे विरुद्ध फिर गये और वे मेरी विधि १३  
 न चले और मेरे न्यायों की निन्दा किई जिन्हें यदि मनुष्य पालन करे तो वह उन  
 में जीयेगा और उन्होंने मेरे विश्रामों को अति अशुद्ध किया तब मैं ने कहा कि  
 मैं उन्हें नष्ट करने के निमित्त अपना कोप उन पर वन में उँढेलूँगा ॥

परन्तु मैं ने अपने नाम के लिये कार्य किया जिन्हें अन्यदेशियों के आगे जिन १४  
 की दृष्टि में मैं उन्हें निकाल लाया मेरा नाम अशुद्ध न होवे ॥

तब भी मैं ने अपना हाथ वन में उन के लिये उठाया कि जिस देश को मैं ने १५  
 उन को दिया था जिस में दूध और मधु बढ़ता है जो सारे देशों से जोभायमान  
 है मैं उस में उन्हें न लाऊँ । इस कारण कि उन्होंने मेरे न्यायों की निन्दा किई १६

४८ में दक्खिन से उत्तर लों सभीों का मुंह जल जायेगा । और सारे शरीर देखेंगे कि  
४९ मुक्त परमेश्वर ने उसे धारा है यह न खुभेगी । तब मैं ने कहा कि हाथ प्रभु पर-  
मेश्वर वे मेरे विषय में कहते हैं कि क्या यह दृष्टान्त नहीं कहता ॥

एकीसवां पट्ठ ।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र  
अपना मुंह यत्थसल्ल की ओर फेर और पवित्र स्थानों की ओर उन्नार और इसरा-  
३ एल के देश के विरुद्ध भविष्य कह । और इसराएल के देश से कह कि परमेश्वर  
यों कहता है कि देख मैं तेरे विरुद्ध हूँ और अपनी तलवार को काठी से निका-  
४ लूंगा और धर्म्मा और दुष्ट को तुझ में से नष्ट करूंगा । सो जैसा कि मैं तेरे मध्य  
से धर्म्मा और दुष्ट को नष्ट करूंगा इस लिये मेरी तलवार अपनी काठी से उत्तर  
५ से दक्खिन लों सारे शरीरों पर निकलेगी । जिस्ते सारे शरीर जानें कि मुक्त  
परमेश्वर ने अपनी तलवार काठी से निकाली है यह फिर न लौटेगी ॥

६ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र अपनी कटि के टूटने से हाथ हाथ कर और उन  
७ की आंखों के आगे धिलख धिलखके हाथ हाथ कर । और ऐसा होगा कि जब  
वे तुझ से पूर्ण कि तू क्यों हाथ हाथ करता है तब उत्तर देना कि संदेशों के लिये  
क्योंकि यह आता है और हर एक का मन पिघल जायेगा और सारे हाथ दुर्बल  
होंगे और हर एक अन्तःकरण मूर्छित होगा और सारे छूटने पानो हो आर्येंगे प्रभु  
परमेश्वर कहता है कि देख यह आता है और पहुंचाया जायेगा ॥

८ और यह कहते हुए फिर परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के  
पुत्र भविष्य कह और बोल कि परमेश्वर यों कहता है कि एक तलवार धार किई  
१० गई और चमकाई भी गई । यह बड़ी जूझ के लिये चाखी किई गई है यह चमकाई  
गई है जिस्ते जगमगावे तो क्या हम आनन्द करें यह तेरे घेरे की लाठी है यह  
११ हर एक पेड़ की निन्दा करता है । और उस ने तलवार दिई कि चमकाई जाये  
और हाथ से चलाई जाये और यह चाखी किई गई और जगमगाई गई है कि  
घातक के हाथ में दिई जाये ॥

१२ हे मनुष्य के पुत्र रो रोके चिल्ला क्योंकि यह मेरे लोगों पर होगी यह इसरा-  
एल के सारे अध्यक्षों पर होगी वे मेरे लोगों के संग तलवार को सोंपे गये हैं इस  
१३ लिये जांघ पीट । क्योंकि परीक्षा हुई और दया यह निन्दित दंड भी न होगा प्रभु  
१४ परमेश्वर कहता है । और तू हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कह और हाथ पीट और  
तीसरी बार तलवार जूझे हुए की तलवार दुहराई जाये यह तलवार महत जूझे  
१५ हुआ की है जो उन की कोठरियों में पैठती है । मैं ने डरावनी तलवार उन के  
सारे फाटकों पर धरी है जिस्ते मन पिघल जावे और जूझे हुए बढाये जायें हाथ  
१६ वह चमकने के लिये बनाई गई है यह जुझाने के लिये चाखी किई गई है । तू  
एक और अथवा दूसरी और दहिने अथवा बायें जा जिधर तेरा मुंह होवे ।  
१७ मैं अपना हाथ भी पीटूंगा और अपना कोप धीमा करूंगा मुक्त परमेश्वर ने  
कहा है ॥

१८ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र

अशुद्ध करते हो सो हे इसराएल के घराने क्या मैं तुम से दूँका जाऊँ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोँट मैं तुम से दूँका न जाऊँगा । जो तुम्हारे ३२ मन में आता है सो कधी न होगा क्योंकि तुम कहते हो कि काठ और पत्थर की सेवा मैं इस अन्यदेशियों के और देश के घरानों के समान दोगे ।

प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोँट पराक्रमी हाथ से और बड़ाई हुई भुजा से और उँढेले हुए कोप से मैं तुम पर राज्य करूँगा । और मैं तुम्हें लोगों ३४ में से बाहर निकाल लाऊँगा और जिस जिस देश में तुम छिन्न भिन्न हो मैं तुम्हें पराक्रमी हाथ से और बड़ाई हुई भुजा से और उँढेले हुए कोप से एकट्ठा करूँगा । और मैं तुम्हें लोगों के वन में लाऊँगा और सुँटे सुँटे तुम में बियाद करूँगा । ३५ जैसा मैं ने तुम्हारे पितरों के साथ जिस देश के वन में बियाद किया था प्रभु ३६ परमेश्वर कहता है तैसा मैं तुम से भी बियाद करूँगा । और मैं तुम्हें बगड के ३७ नीचे से चलाऊँगा और तुम्हें निस के बंधन में लाऊँगा । और तुम्हीं से दंगड़तों ३८ को और उन्हें जो मेरे विरुद्ध अपराध करते हैं दूर करूँगा और उन के टिकने के देश में उन्हें निकाल लाऊँगा और वे इसराएल के देश में प्रवेश न करेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

हे इसराएल के घराने प्रभु परमेश्वर तुम्हारे विषय में यों कहता है कि तुम ३९ लोग जाओ और हर एक जन अपनी अपनी मूर्ति की सेवा करे और इस के पीछे जो मेरी न सुनो और अपनी भेंटों और अपनी सूरतों से मेरे पवित्र नाम को फिर अशुद्ध न करो । क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मेरे पवित्र पर्वत ४० पर इसराएल के ऊँचे पहाड़ पर सारे इसराएल के घराने सब के सब देश में मेरी सेवा करेंगे वहाँ मैं उन्हें ग्रहण करूँगा और वहाँ मैं तुम्हारी भेंट और तुम्हारे नैवेद्य का पक्विला फल तुम्हारी सारी पवित्र वस्तुन के साथ चढ़ाऊँगा ॥

जब मैं तुम्हें लोगों में से निकाल लाऊँगा और देशों में से जिन में तुम छिन्न ४१ भिन्न हुए हो बटाऊँगा तब मैं तुम्हें तुम्हारे सुगन्धद्रव्य सहित ग्रहण करूँगा और अन्यदेशी लोगों के आगे तुम लोगों में पवित्र किया जाऊँगा । और जब मैं तुम्हें ४२ इसराएल की भूमि में इस देश में जिसे तुम्हारे पितरों का देने का मैं ने अपना हाथ उठाया था लाऊँगा तब तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ । और वहाँ तुम ४३ अपनी अपनी चालों को और अपनी सारी क्रिया को जिन में अशुद्ध हुए हो स्मरण करोगे और अपनी किई हुई सारी बुराइयों के लिये आप को अपनी ही दृष्टि में घिनाओगे । और हे इसराएल के घराने प्रभु परमेश्वर कहता है कि जब मैं ४४ तुम्हारी दुष्ट चालों के समान और तुम्हारे कुकर्म के समान तुम्हें से व्यवहार न करूँगा परन्तु अपने नाम के लिये तब तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ ॥

फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र ४५ अपना सुँह दक्षिण और कर और दक्षिण और उन्नार और दक्षिण के चौगान के वन के विरुद्ध भविष्य कह । और दक्षिण के वन से कह कि परमेश्वर का वचन ४७ मुन प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुम्हें से एक आग बाँधूँगा और वह हर एक छरे पेड़ और हर एक सूखे पेड़ को भस्मी करती लहर न बुझेगी और उस

- अपने दिन समीप करवाये हैं और अपने खरस लों पहुंचा है इस लिये मैं ने तुम्हें  
 ५ अन्यदेशियों के लिये निन्दित और सारे देशों के लिये एक ठट्ठा बनाया है । जो  
 लोग कि तेरे निकट अथवा तुझ से दूर हों तुम्हें चिढ़ावेंगे कि तेरा नाम अशुद्ध  
 और तू विपत्ति में ॥
- ६ देख इसराएल के अध्यक्ष अपनी सामर्थ्य भर लोहू बढ़ाने के लिये हर एक तेरे  
 ७ मध्य में थे । तुम्हीं में उन्होंने ने माता पिता को तुच्छ जाना है तेरे मध्य में उन्होंने  
 ने परदेशियों से कुल व्यवहार किया है तुझ में उन्होंने ने अनाथ और रांडों को  
 ८ संताया है । तू ने मेरी पवित्र वस्तुन की निन्दा किई है और मेरे विश्रामों को अशुद्ध  
 ९ किया है । तुझ में लोहू बढ़ाने को मिथ्या अपघादी हैं और तुझ में पर्वतों पर भोजन  
 १० करते हैं वे तेरे मध्य में लंपटता करते हैं । तुझ में उन्होंने ने अपने पिता की नग्नता  
 उधारी है तुझ में वे हैं जिन्होंने ने अशुद्धता के लिये अलग किई गईयों को ग्रहण  
 ११ किया है । हर एक ने अपने परोसी की पदी से घिनित कर्म किया है और किसी  
 ने लंपटता से अपनी पतोह को ग्रहण किया है और किसी ने तुझ में अपने पिता  
 १२ की कन्या अर्थात् अपनी बहिन को नस किया है । तुझ में उन्होंने ने लोहू बढ़ाने  
 को घूस लिया है तू ने व्याज और बढ़ती लिई है तू ने अपने परोसी को अंधेर  
 से लूटा है प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू ने मुझे त्यागा है ॥
- १३ देख तेरे हाथ की अधर्म कमाई पर और तेरे मध्य में के लोहू पर मैं ने  
 १४ अपना हाथ मारा है । क्या तेरा मन सह सकेगा अथवा जिन दिनों में मैं तुझ से  
 १५ व्यवहार करूंगा क्या तेरे हाथ प्रबल होंगे मुझ परमेश्वर ने कहा और करूंगा । और  
 मैं तुम्हें अन्यदेशियों में विथराऊंगा और देशों में तुम्हें बिन्न भिन्न करूंगा और  
 १६ तेरी अपवित्रता तुझ में से मिटा डालूंगा । और अन्यदेशियों के मध्य में तू आप  
 में अशुद्ध होगी और तू जानेगी कि मैं परमेश्वर हूँ ॥
- १७ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र  
 १८ इसराएल का घराना मेरे लिये मैल हो रहा है वे सब घरिये के मध्य में पीतल  
 और जस्ता और लोहा और सीसा हुए हैं और चांदी के मैल हैं ॥
- १९ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्योंकि तुम सब मैल हुए हो सो अब  
 २० देखो मैं तुम्हें यरुसलम के मध्य में एकट्ठा करूंगा । जैसा चांदी और पीतल और  
 लोहा और सीसा और जस्ता को घरिया के मध्य में पिघलाने को एकट्ठा करते  
 हैं तैसा मैं अपने कोप और रिस में तुम्हें बटोरूंगा और उस में धरके पिघलाऊंगा ।  
 २१ और मैं तुम्हें बटोरूंगा और अपने क्रोध की आग से तुम्हें फूकूंगा और तुम उस  
 २२ के मध्य में पिघलाये जाओगे । जैसा चांदी घरिया में गलाई जाती है तैसा तुम  
 लोग उस के मध्य में गलाये जाओगे और तुम आनाओगे कि मुझ परमेश्वर ने  
 अपना कोप तुम पर उंडेला है ॥
- २३ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र  
 २४ उससे कह कि तू वही देश जो पवित्र नहीं किया गया और जलझलाहट के दिन  
 २५ में तुझ पर बरसाया नहीं गया । उस के मध्य में उस के भविष्यद्वक्ता का एका  
 करना अहेर के कड़वैये गर्जनदारे सिंह की नाई उन्होंने ने प्राणों को भक्षण किया

तू भी अपने लिये दो मार्ग ठहरा जिस्तें धायुल के राजा की तलवार आवे एक  
ही देश से दोनों निकलेंगे तू एक चिन्ह बना नगर के पथ के सिरे पर उसे बना ।  
एक मार्ग ठहरा जिस्तें तलवार अस्मूनिओं के ख्याय पर और बाहिरत यक्षमलम २०  
में यहूदाह पर तलवार आवे ।

क्योंकि धायुल का राजा मार्ग के भाग पर दोनों मार्ग के सिरे पर गणना २१  
करवाने को खड़ा हुआ उस ने अपने दास को चमकाया उस ने मूर्तिन से मंत्र  
लिया है और उस ने कनेजे में देखा । उस की दहिनी और यक्षमलम के लिये २२  
गणना हुई कि जूझ में मुँह खोलने को और शब्द से ललकारने को सेनापतिन को  
ठहरावे टीला और गढ़ उठाने को कि फाटकों के सामे ठाटक ठहरावे । और २३  
उन की दृष्टि में इन के लिये वह सूटी गणना की नाईं होगी अर्थात् जिन्हों ने  
क्रिया खाई है परन्तु वह उस घुराई को स्मरण करेगा कि पकड़े जायें ।

इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्योंकि तुम अपने अपराधों को स्मरण २४  
करवाते हो सेवा कि तुम्हारे पाप प्रगट हैं यहाँ लों कि तुम्हारे पाप देख पड़ते  
हैं क्योंकि तुम अपने को स्मरण करवाते हो तुम उमी दास से पकड़े जाओगे ।  
अरे इसगल के अक्षर्म दुष्ट अध्यास जिस का दिन घुराई के अन्त के समय में २५  
आता है । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मुकुट दूर कर और किरीट को उतार २६  
यह आगे को न रहेगा नीचे को उभाड़ और ऊँचे को घटा । मैं उसे बिगाड़ूंगा २७  
बिगाड़ूंगा बिगाड़ूंगा और वह न रहेगा जय लों वह न आवे जिस का पद है  
और मैं उसे देऊंगा ॥

और हे मनुष्य के पुत्र तू भविष्य प्रचारके कह कि प्रभु परमेश्वर अस्मूनिओं २८  
के विषय में और उन की निन्दा के विषय में यों कहता है कि तू कह कि  
तलवार तलवार खींची गई जुझाने के लिये जगमगाई गई और नाश करने को  
चमकाई गई । तुझे दुष्टों के जूझे हुएों के गले पर पहुँचाने को वे तेरे लिये २९  
वृथा देखते हैं और मिथ्या आगम कहते हैं जिस का दिन घुराई के अन्त के  
समय में आता है ।

क्या मैं उसे उस की काटी में फिरयाऊँ मैं उस स्थान में जहाँ तू उत्पन्न हुआ ३०  
तेरे जन्मदेश में तेरा न्याय करूँगा । और मैं अपनी जलजलाष्ट तुझ पर उँटेलूँगा ३१  
मैं अपने कोप की आग तेरे विरुद्ध दारूँगा और तुझे पशुघत जन के और निपुण  
नाशक के दास में सौंपूँगा । तू आग के लिये ईंधन होगा तेरा लोहू देश के मध्य ३२  
में होगा और तू फिर स्मरण किया न जायेगा क्योंकि मुझ परमेश्वर ने कहा है ।  
घाईखवां पर्व ।

वह कहते हुए फिर परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुँचा । कि हे मनुष्य के पुत्र ३  
क्या तू इन के लिये विवाद करेगा क्या तू इस घातक नगर के लिये विवाद करेगा  
और तू उसे उस के सारे विनिर्गत कार्य जना । और तू कह कि प्रभु परमेश्वर ३  
यों कहता है कि जिस्तें इस नगर का समय आवे वह अपने मध्य में लोहू दशाता है  
और आप को अशुद्ध करने के लिये अपने विरुद्ध मूर्ते बनाता है । तू लोहू दहाके ४  
देपी हुआ है और अपनी बनाई हुई मूर्तिन से आप को अशुद्ध किया है और



- १२ अधिक बढ़ गई । वह अपने परोसी असूरियों पर जो भड़कीले से बिभूषित और  
 १३ घोड़ों पर चढ़े हुए घोड़चढ़े सब के सब मनोहर युवा पुरुष सेना और आज्ञा-  
 १४ कारियों पर मर रही थी । तब मैं ने देखा कि वह अशुद्ध हुई दोनों एक ही  
 १५ मार्ग में गई । और उस ने अपने व्यभिचारकर्म बढ़ाये क्योंकि जब उस ने मनुष्यों  
 १६ को चित्रित अर्थात् कमदियों की सूरत सिन्दूर से चित्रित भीत पर देखा । कटि  
 १७ में पटुका बंधा हुआ अति रंगीली पगड़ी उन के सिरों पर सब के सब अपनी जन्म-  
 १८ भूमि कमदी के बाबुलियों की नाईं देखने में अध्यक्ष । देखते ही वह उन पर मरने  
 १९ लगी और उन के पास कसदियों में उन्हें ने दूत भेजे । और बाबुल के सन्तान  
 २० उस के पास प्रीति के बिक्राने पर आये और उन्हें ने अपने व्यभिचार से उसे अशुद्ध  
 २१ किया और वह उन के संग अशुद्ध हुई और उस का मन उन से फिर गया । यों  
 २२ उस ने अपने व्यभिचार उधारे और अपनी नग्नता उधारी सो जैसा मेरा मन उस  
 २३ की बहिन से हट गया तैसा उससे भी हटा । तथापि अपनी तरुणाई के दिनों को  
 २४ स्मरण करके जिन में मिस देश में बेश्याई किई थी उस ने अपने व्यभिचार  
 २५ बढ़ाये । क्योंकि वह अपने जारों पर मरने लगी उन का मांस गदहों का सा मांस  
 २६ और उन का बीर्य घोड़ों का सा । अपनी तरुणाई के स्तनों को मिसियों से अपनी  
 २७ छाती मिसाने में तू ने अपनी लंपटता को स्मरण किया ॥
- २८ इस लिये हे अहलिवः प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तेरे जारों को  
 २९ तेरे बिरुद्ध उभाड़ूंगा जिन से तेरा मन हटा है और मैं उन्हें चारों ओर से तेरे  
 ३० बिरुद्ध लाऊंगा । बाबुलूनी और सारे कमदी प्रीकूद और सूअर और कूअर और उन  
 ३१ के संग सारे असूरी सब के सब मनोहर युवा पुरुष सेनापति और आज्ञाकारी  
 ३२ और बड़े बड़े नामी अध्यक्ष सब के सब घोड़े पर चढ़े हुए । और वे रथों को  
 ३३ और छकड़ों को और चक्रों को बहुत से लोगों को साथ लेके तेरे बिरुद्ध आवेंगे  
 ३४ और ढाल और फरी और टोप चारों ओर तेरे बिरुद्ध होंगे और मैं उन के आगे  
 ३५ न्याय रखूंगा और वे अपने बिचार के समान तेरा बिचार करेंगे । और मैं अपना  
 ३६ झल तेरे बिरुद्ध रखूंगा और वे अति कोप से तुझ से व्यवहार करेंगे वे तेरी  
 ३७ नाक कान काटेंगे और तेरे बचे हुए लोग तलवार से मारे जायेंगे वे तेरे बेटे  
 ३८ बेटियों को लेंगे और तेरे बचे हुए आग से भस्म होंगे । वे तेरे बस्त भी तुझ से  
 ३९ उतारेंगे और तेरा अच्छा आभूषण ले लेंगे । और मैं तेरी लंपटता और मिस  
 ४० देश के व्यभिचार को मिटा डालूंगा यहां लों कि तू अपनी आंखें उन की ओर  
 ४१ न उठावेगी और फिर मिस को स्मरण न करेगी ॥
- ४२ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख जिन से तू घिन करती है और  
 ४३ जिन से तेरा मन हटा हुआ है मैं तुझे उन के हाथ में सौंपूंगा । और वे घिन से  
 ४४ तेरे संग व्यवहार करेंगे और तेरा सारा परिश्रम ले जायेंगे और तुझे नंगी और  
 ४५ उधारी छोड़ेंगे और तेरे व्यभिचार का नंगापन तेरी लंपटता और तेरे व्यभिचार  
 ४६ देखे जायेंगे ॥
- ४७ मैं इस कारण यह कार्य तुझ से करूंगा कि तू अन्यदेशियों की ओर व्यभि-  
 ४८ चार के लिये चली गई है और इस कारण कि तू उन की मूर्तिन से अशुद्ध हुई

हे उन्हीं ने धन और बहुमूल्य वस्तु लिया है उन्हीं ने उस के मध्य में वस्तुओं को  
विधवा किया है । उस के यात्रकों ने मेरी व्यवस्था पर अंधेरे किया है और मेरी २६  
पवित्र वस्तुओं को अशुद्ध किया है और उन्हीं ने अपवित्र में और पवित्र में कुछ भेद  
नहीं किया है न शुद्ध अशुद्ध में कुछ भेद किया है और मेरे विश्रामों में अपनी  
आंखें छिपाई हैं और मैं उन में अशुद्ध हुआ हूँ । उस के मध्य में उस के अध्वन २७  
के घात करने में और प्राणों को नाश करने में और अधर्म कमाई में अहरे के  
फट्टे-बैठे हुंकार की नाई हैं । और उस के भविष्यद्वक्ता ने व्यर्थ देख देख और २८  
मिथ्या गणित कर कर उन पर कड़ा गारा पोता है और कहते हैं कि प्रभु परमे-  
श्वर यों कहता है और परमेश्वर ने नहीं कटा है । देश के लोगों ने छल कारके २९  
बटसारी किई है और दण्डों को और दीनों को खिजाया है और उन्हीं ने वृथा  
परदेशियों को सताया है ।

और बाढ़ा बनाने को और देश के लिये मेरे आशे दरार में गढ़ा देने को मैं ३०  
ने उन में एक जन को छुड़ा जित्ना उन्हीं नाश न करे परन्तु किसी को न पाया ।  
इस लिये मैं ने उन पर अपनी जनदलाहट उठेली है मैं ने अपने कोप की आग ३१  
से उन्हीं भस्म किया है प्रभु परमेश्वर कहता है कि उन की चाल का पलटा मैं ने  
उन के सिर पर डाला है ।

तेईंमयां पृष्ठ ।

फिर परमेश्वर का वचन यों कहते हुए मेरे पास पहुँचा । हे मनुष्य के पुत्र १  
तो स्त्रियां एक माता की पुत्रियां थीं । और उन्हीं ने भिन्न में व्यवभिचार किया ३  
और उन्हीं ने अपनी तरुणाई में व्यवभिचार किया वहां उन के स्नान मले गये  
और वहां उन्हीं ने अपने कुंवारापन के स्नान मर्दन करवाये । और उन में की ४  
लंठी का नाम अहलः और उस की बहिन अहलियः ये मेरी थीं और ये बेटे  
बेटियां जनीं और उन के ये नाम अहलः समस्त हैं और अहलियः यस्मन्म ॥

और मेरे दाते हुए अहलः ने वेष्टाई किई और वह अपने लार परोसी असूरी ५  
पर मर रही थी । तो सेनापति और आजाकारी नीला पहिने हुए घोड़ों पर ६  
छड़े हुए घोड़चढ़े मय के मय सेनाधर युवा पुण्य थे । यों उस ने अपने व्यवभिचारों ७  
को उन्हीं सौंपा असूर के संतान के चुने हुए के संग और मभों पर वह मर रही  
थी उन की सारी मूर्तिन से उस ने आप को अशुद्ध किया । उस ने भिन्न से भी ८  
अपने व्यवभिचार को न त्यागा क्योंकि उस की तरुणाई में उन्हीं ने उससे कुकर्म  
किया और उन्हीं ने उस के कुंवारापन के स्नानों को सीसा और अपना व्यवभिचार  
उस पर उठेला ।

इस लिये मैं ने उसे उस के लारों के हाथ में मोंपा अर्थात् असूरियों के हाथ ९  
जिन पर वह मर रही थी । उन्हीं ने उस का नंगापन उधारा उन्हीं ने उस के १०  
बेटे बेटियों को लिया और उसे तलवार से घात किया और वह स्त्रियों में नामी  
हुई क्योंकि उन्हीं ने उस पर दण्ड की आज्ञा किई थी ॥

और जब उस की बहिन अहलियः ने देखा तो उस ने अपने अति मोह से ११  
उससे अधिक अशुद्ध किया और अपने व्यवभिचार में अपनी बहिन के व्यवभिचार से